

Barcode : 99999990312101  
Title - Shree Gnatadharma Kathanga Sootram Bhag-3  
Author - Maharaj, Ghasilalji  
Language - sanskrit  
Pages - 1227  
Publication Year - 1963  
Barcode EAN.UCC-13







जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पू-यश्री-घासीलालजी-महाराज-  
विरचितया अनगारधर्माभृतवर्षिण्यारयया व्याख्यया समलङ्कृत

हिन्दी-गुर्जर-भाषाऽनुवादसहितम्-

श्री-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम् ।

SHREE GNĀTĀDHARMA  
KATHĀNGA SOOTRAM

( तृतीयो भागः )

नियोजक

संस्कृत-प्राकृतज्ञ-जैनागमनिष्णात-प्रियव्याख्यानि-  
पण्डितमुनि-श्रीकन्हैयालालजी-महाराज

प्रकाशक

‘ मद्रासनिवासी—श्रीमान—शेठ—ताराचदजी—साहेब  
गेलडा ’ तत्प्रदत्त-द्रव्यसाहाय्येन ज० भा० श्वे०  
स्था० जैनशास्त्रोद्धारसमितिप्रमुख श्रेष्ठि-  
श्रीशान्तिलाल-मङ्गलदासभाई-महोदयः

मु० राजकोट

प्रथमा-आवृत्ति  
प्रति १२००

वीर-सचत्  
२४८९

विश्वम-सचत्  
२०२०

ईसवीसन्  
१९६३

मूल्यम्-रु० २५-०-०



दक्षिण भारत में जैन समाज के प्रखर नेता दानवीरशेठ  
स्व० श्रीमान् ताराचंदजी साहेब गेलडाकी

### जीवनझलक

दक्षिण भारत के प्रवास पर आये हुए किसी भी व्यक्ति के दिलमें, मद्रास जैसे शहर के जैन समाज की शिक्षण और-वैद्यकीय संस्थाओं का सुव्यवस्थित क्रम और प्रगति देखकर आनंद हुए बिना नहीं रह सकता। और स्वतः ही जैन समाज की दान-दिशा को इस ओर ले जाने वाले व्यक्तिके रूपमें दानवीर शेठ स्व० श्रीमान् ताराचंदजी साहेब गेलडाका नाम व व्यक्तित्व नजरमें आये बिना नहीं रहता।

मध्यम ऊँचाई का इकहटा बदन, खादीकी धोती, खादीका कुरता और खादी की टोपी, पैरमें केन्वासके पादत्राण हाथमें छोटीसी लकड़ी-चमकती तेज आखें और ७० वर्ष की अवस्थामें भी-जवानों की तेजी-ये आप के अमिन्न गुणों के सूचक थे। उनके यह सादगी अतः समय तक भी कायम रही थी।

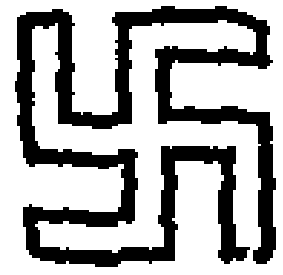
सन १९३७ में आप राजकोट प्यारे थे वहाँ अनेक शिक्षण संस्थाओंको देखकर आपने अपने मनमें तय किया कि मैं मद्रास जाकर शिक्षाकी ऐसीही संस्थाएँ बनाऊंगा। उनके विचारों की पुष्टि के रूपमें श्रीमान् विरदीचंदजी सा मलेचाने ५००००) रुपया दान दिया और यहाँकी श्री एस एस. जैन एज्युकेशन सोसायटी की स्थापना हुई। इस सोसायटी के विकास के लिये आपने अपने व्यापार से भी-निवृत्ति ले ली और-क्रमशः इसका विकास करते रहे। इस सोसायटी के तत्वावधानमें क्रमशः प्राथमरी स्कूल, योर्डिंग होम, हाईस्कूल एवं कॉलेज भी-स्थापित हुए और आज भी सुचारु रूपसे चल रहे हैं। जब तक ये संस्थाएँ पूर्णरूपसे आत्म-निर्भर नहीं हुईं तबतक आप सोसायटी के प्रारंभ कालसे मंत्री बने रहे। इतनाही नहीं प्रत्येक संस्था के लिये आपने दान दिया था ही-किन्तु ताराचंद गेलडा जैन विद्यालयके लिये ३१०००) रु का भव्य दान दिया। इसके उपरांत भी २२००० रु. का और दान आपका होनेसे आप

भणवानुं ठेकाए  
श्री अ. भा. अवे. स्थानकेवासी  
नैन शाओद्धार समिति,  
ठे. गरेडिया कुवा रोड, श्रीन दोन  
पासे, राजकोट, ( सौराष्ट्र )

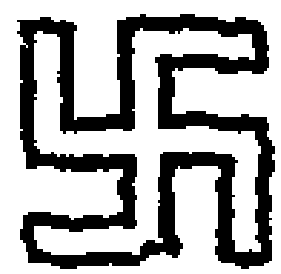
Published by •  
Shri Akhil Bharat S S  
Jain Shastrodhdhara Samiti,  
Garedia Kuva Road, RAJKOT,  
( Saurashtra ), W Ry, India



ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञा,  
जानन्ति ते किमपि तान् प्रति नैप यत्नः ।  
उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानवर्मा,  
कालो ह्येव निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ॥ १ ॥



हरिगीतच्छन्दः



करते अवज्ञा जो हमारी यत्न ना उनके लिये ।  
जो जानते है तत्त्व कुछ फिर यत्न ना उनके लिये ॥  
जनमेगा मुझसा व्यक्ति कोई तत्त्व इससे पायगा ।  
है काल निरवधि विपुल पृथ्वी ध्यान मे यह लायगा ॥ १ ॥

मूल्य ३. २५=००

प्रथम आवृत्ति प्रत १२००  
पीर सप्त २४८६  
विक्रम सप्त २०१६  
धसपीसन १६६३

मुद्रक  
भणिलाल छगनलाल शाह  
नवप्रभात प्रिन्टीग प्रेस,  
धी काटा रोड, अमदावाद

७८ वर्ष की आयुमें आपका पण्डित-मरण हुआ जो आपके यशस्वी जीवन की यशकला की समान था । अर्थात् यशस्वी पुरुषों के शिरोमणि थे ।

आपके सुपुत्र श्रीमान् भागचंदजी सा गेलडा भी कर्मठ कार्यकर्ता हैं । जैन एन्ड नेशनल सोसायटी के आप सदस्य एवं पदाधिकारी रह चुके हैं—वर्तमानमें आप सोसायटीके सभापति हैं । गोसेवा और पाजरापोल के कार्यके लिये आप घर २ जाकर चंदा करने में सकोच महमूस नहीं करते और विगत आठेक वर्षों से आप मद्रास पाजरापोलके मंत्री हैं और उसका बहुत ही विकास किया है । द्वितीय पुत्र श्री नेमचंदजी स्वर्गवासी हुए हैं किन्तु आप भी औषधालय निमित्त दस्त करके गये हैं । तृतीय पुत्र श्री खुगालचंदजी व्यापार-कुशल हैं और कार्य-भार सम्हाले हुए हैं ।

इस आगम प्रकाशन के लिये जब आपके पास डेप्यूटेशन पहुँचा तब इन सुपुत्रोंने उदारता से ५००१) रु दिये हैं एतदर्थ धन्यवाद है । अन्य सज्जन भी उनका अनुकरण करे यही अभ्यर्थना है ।

सेक्रेट्री  
शास्त्रोद्धार समिति

सोसायटी के पेइन ( सरक्षक ) बने । सन १९५६ में अर्थों को भी-कार्य संचालन का अनुभव हो एतर्था आप निवृत्त हुए, किन्तु अब समय तक सोसायटी के प्रत्येक कार्य के लिये आप सलाह देते रहे और वह समान का गौरव था कि आप जैसे कुशल एवं विचक्षण सलाहकार मिले ।

दानके प्रवाह को शुभ मार्गमें वहाने का आप का प्रयास अत्यंत अनुकरणीय रहा । और मद्रास के जैन समाजने वैदकीय राहत क्षेत्रमें “ जैन मेडिकल रिलीफ सोसायटी ” स्थापित की-जिसके तत्त्वाग्रगण्यमें कई डीसपेंसरिया और एक प्रसूतिगृह चल रहा है । आप उसकी कार्य कारिणी के पदाधिकारी व सदस्य रहे ।

इतनाही नहीं आपने अपने व्यापार क्षेत्रको नहीं भूला और सैदापेट (भूदान) में शुद्ध आयुर्वेदिक औषधालय-जिनेश्वर औषधालय खोला जिसके साथ आगे जा कर अपनी पत्नीके नामपर रामपुरजवाई गेलडा प्रसूतिगृह भी खोला । एतदर्थ आपने अपने द्वितीय पुत्र स्व. नेमीचंदजी की इच्छाके अनुसार अलग ट्रस्ट बना दिया है ।

आपने अपनी जन्मभूमि कुचेरा के लिये भी कुठ करने के विचार से वहा पर भी छात्रालय शुरू १९४२ में करवाया और उसके प्रारम्भकाल से आपकी ओर से २५० मासिक सहायता उसे दी जा रही है-जो अब भी चालू है ।

तदुपरांत ताराचंद गेलडा ट्रस्ट भी आपने कायम किया जिससे कई उदीयमान जैन समाज के विद्यार्थियों की आशाओं को प्रोत्साहन दिया गया और दिया जा रहा है ।

उनके अदम्य उत्साह और जोश के साथ उनके दृढ मनोबल का परिचय न दिया जावे तो उनका व्यक्तित्व अधूरा रहेगा । वे अपने आप आगे बढ़ने वाले थे । बहुत ही छोटी उम्र में उन्होंने ने व्यापार किया और ताराचंद गेलडा एन्ड सन्स, टी वी ज्वेलरीज एवं महेन्द्र स्टोर्स आदि व्यापारिक फर्म चले । सामान्य पूजीसे लेकर वे लाखोपति बने । सामान्य शिक्षा ज्ञान के बाद भी चार भाषा की जानकारी और प्रबल व्यापारिक ज्ञान आपकी विशेषता थी ।

आजीवन खादीप्रिय, हाथवटी का पीसा हुआ धान और गायका दूध-घी फठिन घृत वे आजीवन निभाते रहे । समान-सुधारणा भी आपने कई प्रकारसे की ।

१७ द्वितीय श्रुतस्कंधका उपक्रम प्रथम वर्ग-पहला अध्ययन	
१८ कालीदेवीका वर्णन दूसरा अध्ययन	७६१-८०५
१९ रात्रीदेवीका वर्णन तीसरा अध्ययन	८०६-८१०
२० रजनी दारिका के चरित्रका निरूपण दूसरा वर्ग	८११-८१४
२१ शुभानिशुभादि देवीयोंके चरित्रका वर्णन तीसरा वर्ग	८१५-८१९
२२ अलादि देवियोंके चरित्रका वर्णन चौथा वर्ग	८२०-८२५
२३ रूपादि देवियों के चरित्रका वर्णन पाचवा वर्ग	८२५-८२८
२४ कमलादि देवियों के चरित्रका वर्णन छठा वर्ग	८२९-८२३
२५ उत्तरदिशाके इन्द्र महाकाल आदिकोंकी अग्रमहिपियों का वर्णन सातवा वर्ग	८३४-८३५
२६ सूरप्रभादि देवियों के चरित्रका वर्णन आठवा वर्ग	८३६-८३८
२७ चन्द्रप्रभादि देवियों के चरित्रका वर्णन नववा वर्ग	८३९-८४२
२८ पद्मादिदेवियों के चरित्रका वर्णन दशवां वर्ग	८४२-८४५
२९ कृष्णादि देवियोंके चरित्रका वर्णन	८४६-८५१
३० शास्त्र प्रशस्ति	८५२

# ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रं तृतीय भा की विषयानुक्रमणिका

क्रमाङ्क

विषय

११

पेज

## चौदहवा अध्ययन

१ तेतलीपुत्र प्रधानके चरित्रका वर्णन

१-१८

## पंद्रहवा अध्ययन

२ नदिफलके स्वरूपका निरूपण

१८३-१८४

## सोलहवा अध्ययन

३ धर्मरुचि अनगारके चरित्र निरूपण

१८५-१८६

४ सुकुमारिका के चरित्रका वर्णन

१८७-१८८

५ द्रौपदी के चरित्रका निरूपण

१८९-१९०

६ द्रौपदी पूजा चर्चा

१९१-१९२

७ द्रौपदी के चरित्रका वर्णन

१९३-१९४

## सत्रहवा अध्ययन

८ नावसे व्यापार करने वाले वणिजोंका वर्णन

१९५-१९६

९ नावके नियामक का दिङ्मूढ होनेका कथन

१९७-१९८

१० कालिक द्वीपमें सुवर्ण आदिका वर्णन

१९९-२००

११ कालिक द्वीपमें हिरण्य आदिसे पोतकाभरना

२०१-२०२

१२ कालिक द्वीपमें रहे आकीर्णाश्वों का वर्णन

२०३-२०४

१३ आकीर्णाश्वोंके द्रष्टाको दार्ष्टान्तिक के साथ योजना

२०५-२०६

## अठारहवा अध्ययन

१४ सुसमा दारिका के चरित्रका वर्णन

२०७-२०८

## उन्नीसवा अध्ययन

१५ पुडरीक-कडरीक मुनिके चरित्रका वर्णन

२०९-२१०

## द्वितीय श्रुतस्कंध

१६ द्वितीय श्रुतस्कंध का मङ्गलाचरण

२११-२१२



१७ द्वितीय श्रुतस्कंधका उपक्रम	
प्रथम वर्ग-पहला अध्ययन	
१८ कालीदेवीका वर्णन	७६१-८०५
दूसरा अध्ययन	
१९ रात्रीदेवीका वर्णन	८०६-८१०
तीसरा अध्ययन	
२० रजनी दारिका के चरित्रका निरूपण	८११-८१४
दूसरा वर्ग	
२१ शुभानिशुभादि देवीयोंके चरित्रका वर्णन	८१५-८१९
तीसरा वर्ग	
२२ अलादि देवियोंके चरित्रका वर्णन	८२०-८२५
चौथा वर्ग	
२३ रूपादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८२५-८२८
पाचवा वर्ग	
२४ कमलादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८२९-८३३
छठा वर्ग	
२५ उत्तरदिशाके इन्द्र महाकाल आदिकोंकी अग्रमहिषियों का वर्णन	८३४-८३५
सातवा वर्ग	
२६ सूरप्रभादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८३६-८३८
आठवां वर्ग	
२७ चन्द्रप्रभादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८३९-८४२
नववा वर्ग	
२८ पद्मादिदेवियों के चरित्रका वर्णन	८४२-८४५
दशवां वर्ग	
२९ कृष्णादि देवियोंके चरित्रका वर्णन	८४६-८५१
३० शास्त्र प्रशस्ति	८५२

તા ૧૫-૭-૬૩ ના રોજ કલાસવાર

## મેમ્બરોની સંખ્યા.

૨૭	આદ્ય મુરખીશ્રી, ૫૦૦૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૩૨	મુરખીશ્રી, ૧૦૦૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૧૩૩	સહાયક મેમ્બરો, ૫૦૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૫૮૬	લાઇફ મેમ્બરો, ૨૫૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૪૯	બીજા ન બરના જુના મેમ્બરો, ૧૫૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
<hr/> ૮૨૭	કુલ મેમ્બરો

રૂપિયા બસો પચાસ તથા રૂપિયા પાચસો-વાળા મેમ્બરો લેવાનું હવે બંધ છે ક્રમ ૩ ૧૦૦૧ થી મુરખીશ્રી માટે ૭૦ સીતેર જગ્યા ખાલી છે અને આદ્ય મુરખીશ્રી ૩ ૫૦૦૧ થી દાખલ કરવામાં આવે છે.

મેમ્બરોની સંખ્યા પૂરતા જ શાઓ છપાય છે જેથી પાછળથી દાખલ થનારને સૂત્રો મળવા મુશ્કેલ છે માટે જુગાસુ બાંધવો તથા બહેનોને અમારી વિનંતી છે કે તેઓ મુરખીશ્રી અથવા આદ્ય મુરખીશ્રીમાં પોતાનું નામ જલ્દી મોકલી આપે.

રાજકોટ  
તા ૧૫-૭-૬૩

નમ્ર સેવક,  
સાકરચંદ્ર બાઈચંદ્ર શેઠ  
મંત્રી

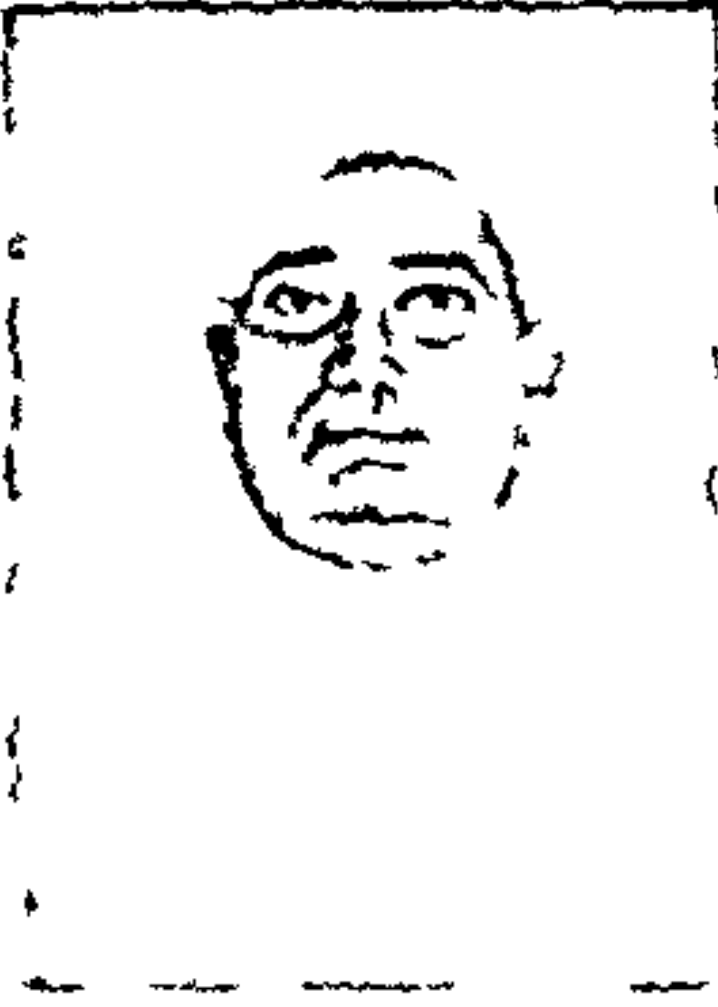
# आद्यमुखीश्री



शेठ साहेबश्री ताराचंदजी साहेब, गेलडा  
मद्रास



# આનંદમુરખીશ્રીઓ



(૨૫) ગોકશ્રી હનુચંદ કાલીદામ નાગિયા  
ભાવનંદ



ચૌધરી હનુગોવિંદ જેય દલાઈ  
રાજકોટ.



ગોકશ્રી શાંતિલાલ મગજદાસલાઈ  
અમદાવાદ



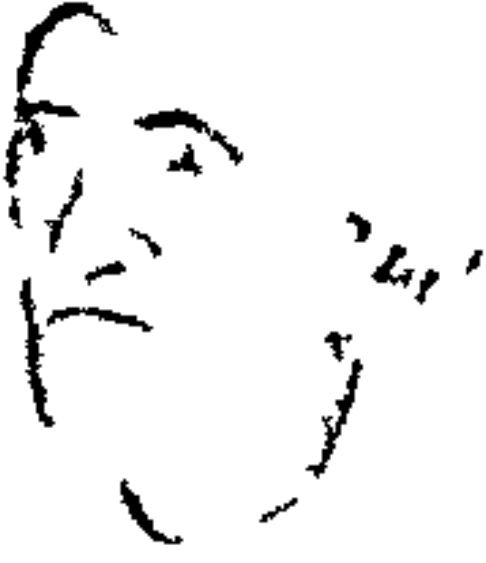
(૨૬) ગોકશ્રી માંગીલાલ જીવણલાલ  
બારસી



(૨૭) ગોકશ્રી જગન્નાથ ગામજીદામ ભાવસાન  
અમદાવાદ

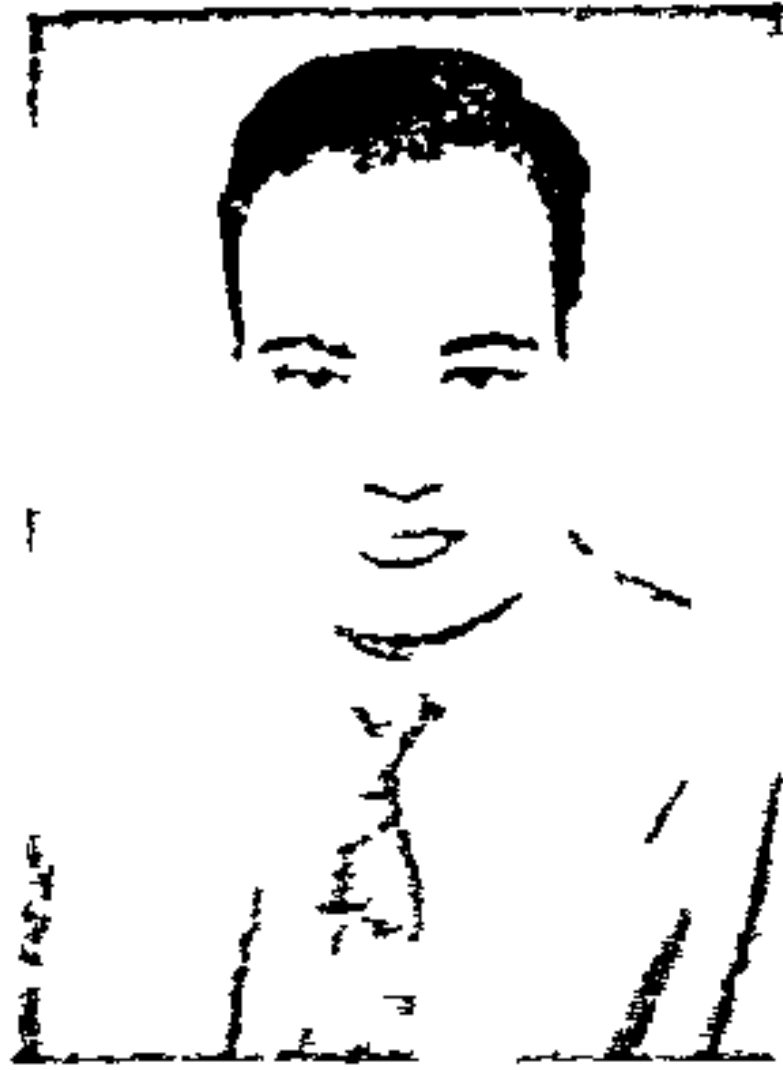


# આવમુઃજીશ્રીઓ



(૨૧) ગે. ગંગાભાઈ મોહનલાલ ગાદ  
અમદાવાદ

૨૧ શ્રીમાન ગે.શ્રી મુન્નયદત્ત મા  
બાલિયા પાત્રી મારવાડ.



(૨૧) ગે.શ્રી દિનેશભાઈ કાલિયાલ ગાદ  
અમદાવાદ



ગે.શ્રી દેવિગભાઈ વોયાલાલભાઈ  
અમદાવાદ



૨૧ ગે.શ્રી આત્માનંદ મારુજીવાલ  
અમદાવાદ.



(૨૫) ગેઠશ્રી શામજીભાઈ વેવજીભાઈ વીંગણી  
રાજકોટ



ગેઠશ્રી રામજીભાઈ શામજીભાઈ વીંગણી  
રાજકોટ.



(૨૬) વિનોદકુમાર વીંગણી  
રાજકોટ.  
(દીલા દીધા પહેના શાસ્ત્રાભ્યાસ કરતા)



ગેઠશ્રી મિશ્રીવાવજી લાલચદજી સાં લુણિયા  
તથા ગેઠશ્રી જેનતરાજજી લાલચદજી સાં



# આધ્યમુરખખીશ્રીઓ

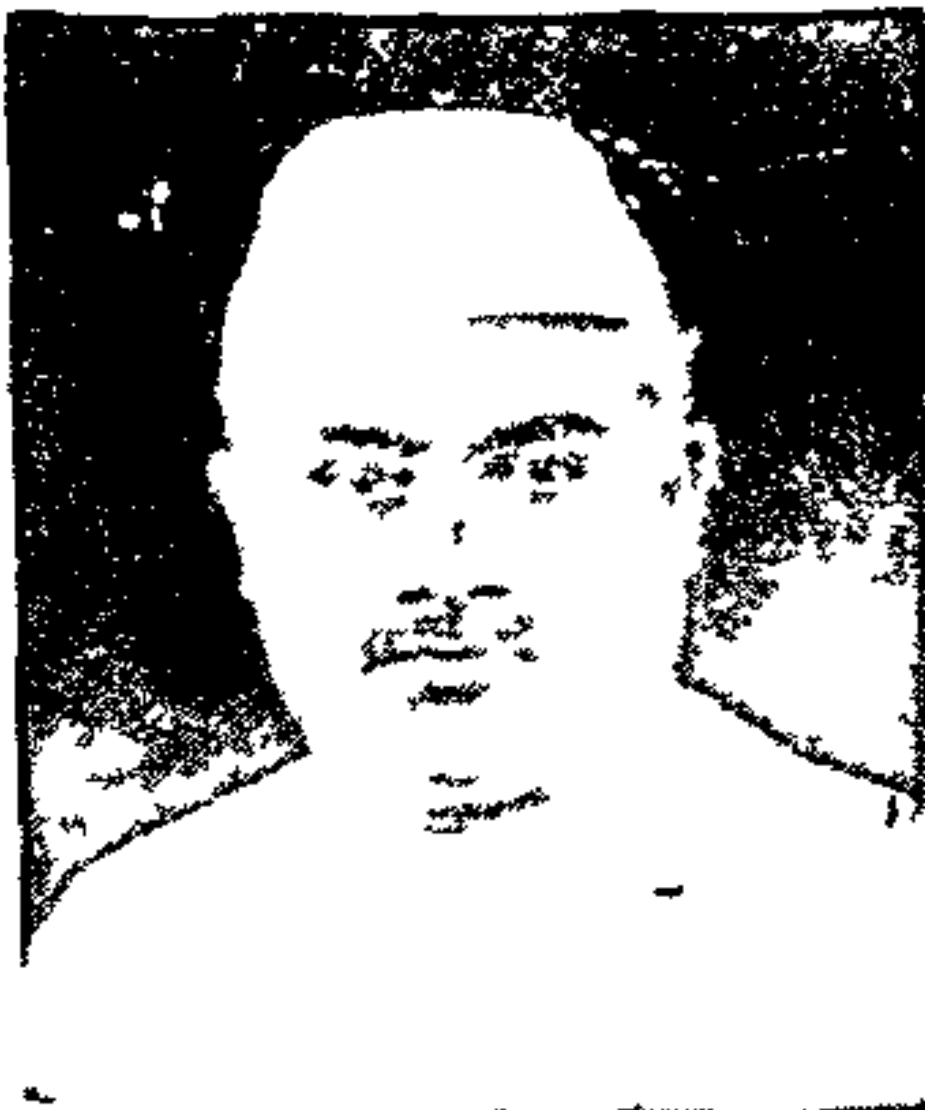


૨૫. શ્રીમાન ગે.શ્રી મુનયદત્ત મા  
ખાલિયા પાત્રી મારવાડ.

(૨૫) ગે. ગજભાઈ મોહનલાલ શાહ  
અમદાવાદ



(૨૫) ગે.શ્રી દિનેશભાઈ કાલિલાલ શાહ  
અમદાવાદ



ગે.શ્રી નેમિગભાઈ પોચાવાલભાઈ  
અમદાવાદ



૨૫. ગે.શ્રી આત્માગમ મોહનલાલ  
અમદાવાદ.

## આધમુરખીશ્રીઓ



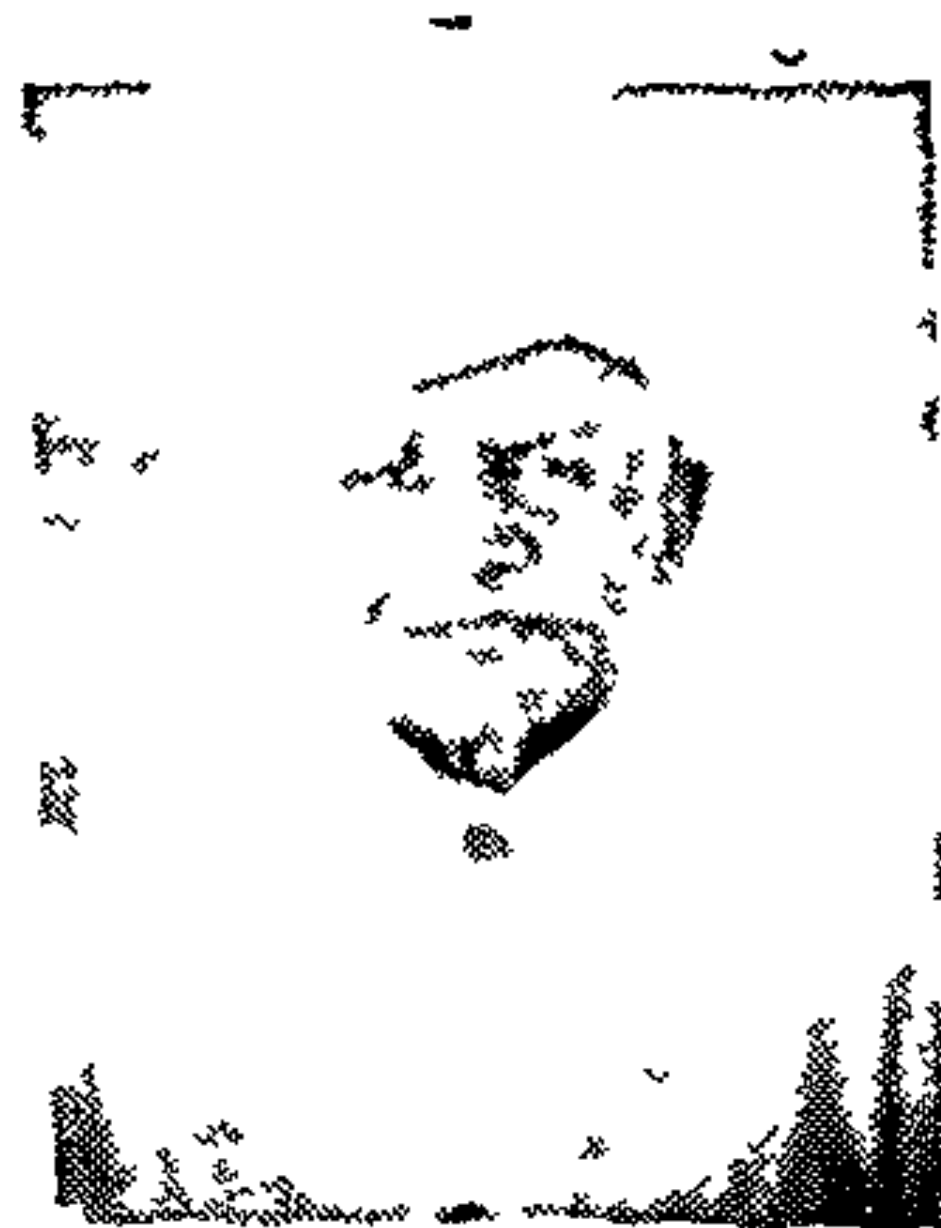
રોઠ સાહેબ શ્રી કીશનચ દણ સાહેબ  
જોહરી દિલ્હી



સ્વ. ગેઠશ્રી હરિવાલ અનોપચ દ ગાહ  
ખભાત



૧ ૫મ્મે બેઠેલા મોટાભાઈ શ્રીમાન  
મૃત્યુદણ જવાહીરલાલજી ખરાડયા  
૨ બાલુમા બેઠેલા મિશ્રીલાલજી  
ખરડિયા  
૩ ઉભેલા સોધી નાનાભાઈ પૂનમચ દ  
ખરડિયા



શ્રી વૃજલાલ દુલ્લજી પારેખ  
રાજકોટ.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

श्रीजैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-वासीलालप्रतिविरचितया अनंगार-  
धर्मामृतपरिण्याख्यया व्याख्यया समलङ्कृत

# श्री-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम्

तृतीयो भागः

अथ चतुर्दशा ययन प्रारभ्यते

अस्य व्याख्यायमानचतुर्दशाध्ययनस्य व्याख्यातेन त्रयोदशेनाययनेन सहाय-  
ममिसम्बन्धः-पूर्वस्मिन् अभ्ययने सता गुणाना गुणाभिर्द्वैकवद्गुण्यदेगरूप-  
सामग्र्यभावे हानिरुक्ता, इदं-तथाविधसामग्रीसद्भावे गुणसपदुपजायते, इत्यभि-  
धीयते, इत्येव पूर्वेण सहाभिमवद्भस्यास्येदमादिसूत्रम्-‘जडण भते इत्यादि ।

मूलम्-जडणं भते । समणेणं भगवया महावीरेण जाव  
संपत्तेणं तेरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते, चौद-  
समस्स णं भते । णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महा-  
वीरेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते? एव खलु जवू । तेणं

चौदहवा अध्ययन प्रारभः-

इस चौदहवें अध्ययन का तेरहवें अध्ययन के साथ इस प्रकार का  
संबन्ध है-तेरहवें अध्ययन में जो यह बात कही गई है कि आत्मा में  
सम्यग्दर्शन आदि प्रकट भी हो गये, हों परन्तु यदि उन को बढाने वाली  
सद्गुरु आदि की उपदेश रूप सामग्री का अभाव रहे तो उन गुणों की  
हानि हो जाति है । इस अध्ययन में अब सूत्रकार यह स्पष्ट करेंगे कि  
यदि जीव को तथाविध सामग्री प्राप्त होती रहती है तो गुण सपत्ति  
भी बढती रहती है.-‘जडण भते ’ इत्यादि ।

चौदसु अध्ययन प्रारभ-

चौदमा अध्ययनना तेग्मा अध्ययननी साथे आ जातना नणध ठे के  
तेरमा अध्ययनमा ले आ वातनु स्पष्टीकरण करवामा आण्डु छे के आत्मा  
सम्यग्दर्शन वगेरे प्रकट पण थछ गया होय छता ले सद्गुरु वगेरेनी उप-  
देश रूप तेमनु वर्धन करनार सामग्री होय नछि तो ते गुणानी हानि थछ  
जाय छे आ अध्ययनमा सूत्रकार हवे ओ न वात स्पष्ट करवा मागे छे के  
एवने ले तथाविध सामग्री मणती रहे छे तो गुण सपत्ति पण वधती गडे छे

‘जडण भते ’ इत्यादि-

કાલેણં તેણં સમણ તેયલિપુરં નામ નગરં પમયવણે ડજાણે  
 કણગરહે રાયાં । તસ્સ ણં કણગરહસ્સ પડમાવર્ડે દેવી ।  
 તસ્સ ણં કણગરહસ્સ તેયલિપુત્તે ણામ અમચ્ચે સામદંડ-  
 દવલ્લે । તત્થ ણ તેયલિપુરે કલાદે નામ મૂસિયારદારણહોત્થા  
 અદ્દે જાવ અપરિમૂણ । તસ્સ ણ ભદ્દા નામ મારિયા । તસ્સ  
 ણ કલાયસ્સ મૂસિયારદારયસ્સ ધૂયા, મદ્દાણ અત્તયા  
 પોટ્ટિલા નામ દારિયા હોત્થા રુવેણ ય જોઢવણેણ ય લાવ-  
 ણેણ ય ડકિટ્ઠા ડકિટ્ઠસરીરા । તણં પોટ્ટિલા દારિયા  
 અન્નયા કયાઈ પહોયા સઠ્ઠાલકારવિમૂસિયા ચેડિયાચક્ક-  
 વાલમ્પરિવુડા ડપ્પિ પાસાયવરગયા આગાસતલગંસિ કણ-  
 ગમણ તિદ્દુસણ કીલમાળીં વિહરઈ ॥ સૂ. ૧ ॥

ટીકા—જમ્બૂસ્વામી પૂછતિ—યદિ સ્વલ્પ ભદન્ત ! શ્રમણેન ભગવતા મહા-  
 વીરેણ યાવત્સંપાપ્તેન ત્રયોદશસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય અયમર્થઃ પ્રજ્ઞપ્ત ચતુર્દશસ્ય સ્વલ્પ  
 ભદન્ત ! જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્સંપાપ્તેન કોડર્ય

ટીકાર્થ—જમ્બૂ સ્વામી પૂછતે હૈં કિ ( ભતે—જહ્ણ સમણેણ ભગવયા  
 મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ ) હે ભદત ! યદિ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરને કિ  
 જિન્હોને સિદ્ધિગતિ નામ કા સ્થાન પ્રોપ્ત કર લિયા હૈં (તેરસમસ્સ ણાય-  
 ઝ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે ચોદસમસ્સ ણ ભતે ! ણાયઝ્ઞયણસ્સ સમણેણ  
 ભગવયા મહાવીરે ણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પણ્ણત્તે ) તેરહવે જ્ઞાતાધ્યયન  
 કા પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કિયા હૈં—તો હે ભદત ! ચોદહવે જ્ઞાતા-  
 ધ્યયન વા ડન્હો શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કયા અર્થ નિરૂપિત કિયા

ટીકાર્થ—જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે કે ( ભતે ! જહ્ણ સમણેણ ભગવયા મહા-  
 વીરેણ જાવ સપત્તેણ ) હે ભદત ! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે—કે જો એ સિદ્ધિ  
 ગતિ સ્થાનને મેળવી ચૂકયા છે

( તેરસમસ્સ ણાયઝ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે, ચોદસમસ્સ ણ ભતે ! ણાયઝ્ઞ-  
 યણસ્સ સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પણ્ણત્તે )

તેરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદત ! તે  
 શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે જ આ ચોદમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ?

महत्तः । सुधर्मा स्वामी कथयति-एव खलु जम्बू । तस्मिन् काले तस्मिन् समये तैतलिपुरं नाम नगरम् आसीत् । तत्र प्रमदवन नाम उद्यानमासीत् । तस्य नगरस्य कनकरथो नाम राजाऽसीत् । तस्य खलु कनकरथस्य राज्ञः पद्मावती नाम देवी । तस्य खलु कनकरथस्य राज्ञः तैतलिपुत्रो नाम अमात्यः 'सामदण्डदक्खे' साम दण्डदक्ष = अत्र सामदण्डग्रहणाद् दानभेदयोरपि ग्रहण तेन सामदानभेददण्डात्मक-चतुर्विंशोपायनिपुण इत्यर्थः आसीत् ।

तत्र खलु तैतलिपुरे कलादो नाम 'मूसियारदारण' मूषीकारदारकः = सुवर्णकारदारकः, 'मूषी' इति मूषापर्यायः, गौरादित्वाद्डीप यत्र सुवर्णादि है ? ( एव खलु जम्बू । तेण कालेण तेण समएण तेयलिपुर नाम नगर पमयवणे उज्जाणे कणगरहे राया, । तस्स ण कणगरहस्स पउमावई देवी ) श्री सुधर्मा स्वामी अब श्री जम्बू स्वामी के इस प्रश्न का उत्तर देने के अभिप्राय से कहते हैं-जम्बू !, सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार से है-उस काल और उस समय में तैतलिपुर नाम का नगर था । उस में प्रमदवन नाम का उद्यान था । उस नगर के राजा का नाम कनकरथ था । इस कनकरथ राजा की रानी का नाम पद्मावती देवी था । ( तस्स ण कणगरहस्स तेयलिपुत्ते णाम अमन्चे सामदण्डदक्खे । तत्थ ण तेयलिपुरे कलादे नाम मूसियारदारण होत्था अड्डे जाव अपरिभूए ) उस कनकरथ राजा का अमात्य था जिस का नाम तैतलिपुत्र था । यह साम, दान, भेद और दण्ड इन चार प्रकार की राजनीति में विशेष पटु निपुण था । उसी तैतलिपुर में कलाद नाम का

( एव खलु जम्बू । तेण कालेण तेण समएण तेयलिपुर नाम नगर पमयवणे उज्जाणे कणगरहे राया । तस्स ण कणगरहस्स पउमावई देवी )

श्री सुधर्मास्वामी डवे श्री जम्बूस्वामीने आ प्रश्नोना जवाण आपवानी छिछ्छि थी छुछे छे छे छे जम्बू ! सालणे। तभारा प्रश्नोना जवाण आ प्रभाणे छे छे ते छाने अने ते समये तैतलिपुर नामे नगर छतु तेभा प्रमदवन नामे उद्यान छतु ते नगरना राजानु नाम कनकरथ छतु ते कनकरथ राजानी राजीनु नाम पद्मावती छतु

( तस्स ण कणगरहस्स तेयलिपुत्ते णाम अमन्चे सामदण्डदक्खे । तत्थ ण तेयलिपुरे कलादे नाम मूसियारदारण होत्था अड्डे जाव अपरिभूए )

ते कनकरथ राजानो अक अमात्य ( मंत्री ) छतो जेतु नाम तैतलिपुत्र छतु ते साम, दान, दण्ड अने दण्ड अये आरे प्रकारनी नीतिमा सविशेष निपुण-कुशल छतो ते तैतलिपुरमा कलाद नामे मूषीकार दारक ( सोनीने पुत्र )

કાલેણં તેણં સમણેણ તેયલિપુર નામ નગરં પમયવણે ઉજ્જાણે  
 કણગરહે રાયાં । તસ્સ ણં કણગરહસ્સ પડમાવર્ઘે દેવી ।  
 તસ્સ ણં કણગરહસ્સ તેયલિપુત્તે ણામ અમચ્ચે સામદંડ-  
 દક્ખે । તત્થ ણં તેયલિપુરે કલાદે નામં મૂસિયારદારણ્ણ હોત્થા  
 અઢ્ઢે જાવ અપરિભૂણ્ણ । તસ્સ ણા ભદ્ધા નામ ભારિયા । તસ્સ  
 ણં કલાયસ્સ મૂસિયારદારયસ્સ ધૂયા, ભદ્ધાણ્ણ અત્તયા  
 પોટ્ટિલા નામ દારિયા હોત્થા રુવેણ ય જોઽવ્વણેણ ય લાવ-  
 ણ્ણેણ ય ઉક્કિટ્ટા ઉક્કિટ્ટસરીરા । તણ્ણં પોટ્ટિલા દારિયા  
 અન્નયા કયાઙ્ગ પહોયા સઠ્ઠાલકારવિભૂસિયા ચેડિયાચક્ક-  
 વાલસપરિવુડા ઉપ્પિ પાસાયવરગયા આગાસતલગંસિકણ-  
 ગમણ્ણં તિંદૂસણ્ણં કીલમાણીં ધિહરઙ્ગ ॥ સૂ. ૧ ॥”

ટીકા—જમ્બૂસ્વામી પૂછતિ—યદિ खलु भदन्त! श्रमणेन भगवता महा-  
 वीरेण यावत्सम्प्राप्तेन त्रयोदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तं चतुर्दशस्य खलु  
 भदन्त! ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थ

ટીકાર્થ—જમ્બૂ સ્વામી પૂછતે હૈં કિ ( ભતે—જહ્ણ સમણેણ ભગવયા  
 મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ ) હે ભદત ! યદિ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરને કિ  
 જિન્હોને સિદ્ધિગતિ નામ કા સ્થાન પ્રાપ્ત કર લિયા હૈ (તેરસમસ્સ ણાય-  
 જ્ઞયણસ્સ અયમઢ્ઢે પણ્ણત્તે ચોદસમસ્સ ણ ભતે ! ણાયજ્ઞયણસ્સ સમણેણ  
 ભગવયા મહાવીરે ણ જાવ સપત્તેણ કે અઢ્ઢે પણ્ણત્તે ) તેરહવે જ્ઞાતાધ્યયન  
 કા પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કિયા હૈ—તો હે ભદત ! ચોદહવે જ્ઞાતા-  
 ધ્યયન વા ઉન્હો શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે ને કયા અર્થ નિરૂપિત કિયા

ટીકાર્થ—જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે કે ( ભતે ! જહ્ણ સમણેણ ભગવયા મહા  
 વીરેણ જાવ સપત્તેણ ) હે ભદત ! જો શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે—કે જોએ સિદ્ધ  
 ગતિ સ્થાનને મેળવી ચૂકયા છે

( તેરસમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમઢ્ઢે પણ્ણત્તે, ચોદસમસ્સ ણ ભતે ! ણાયજ્ઞ  
 યણસ્સ સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ કે અઢ્ઢે પણ્ણત્તે )

તેરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત કે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદત ! તે  
 શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે જ આ ચોદમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ?



‘चेडियाचक्रवालसपरिवुडा’ चेडिकाचक्रवालसपरिवृता=चेडिकाः=दास्यस्तासा यच्चक्रवाल मण्डल तेन सपरिवृता=सहिता दासीसमूहपरिवेष्टितेत्यर्थः, उपरिभासा-द्वरगता प्रासादोपरिस्थिता-आकाशतले=अनादृतप्रदेशे ‘छत्त’ इति प्रसिद्धे कनकमयेन=स्वर्णनिर्मितेन ‘तिंदूसएण’ तिन्दूसकेन=कन्दुकेन क्रीडन्ती र विहरति ॥ सू० १ ॥

मूलम्-इमं च ण तेयलिपुत्ते अमच्चे पहाए आसखंधवरगए महया भडचडगरवदपरिविखत्ते आसवाहणियाए णिज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेण वीइव-यइ। तएण से तेयलिपुत्ते मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामत्तेणं वीइवयमाणे२ पोहिलं दारिय उप्पि पासायवरगय आगासतलगंसि कणगतिदूसएणं कीलमाणी पासइ, पासित्ता पोहिलाए दारि-याए रूवे य जाव अज्झोववन्ने कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता। एवं वयासी - एसा णं देवाणुप्पिया। कस्स दारिया? किं नामधेज्जा?। तएणं कोडुवियपुरिसा तेयलिपुत्तं एवं वयासी-एसा ण सामी। कलायस्स मूसियारदारगस्स धूया, भद्दाए अत्तयापोहिला नाम दारिया रूवेण य जाव उक्किट्ट-सरीरा। तएणं से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे

विभूसिया चेडियाचक्रवालसपरिवुडा उप्पि पासायवरगया आगास तलगसि कणगमएण तिंदूसएण कीलमाणी २ विहरइ ) एक दिन की बात है कि यह स्नान कर के तथा समस्त आभरणों से विभूषित हो करके अपनी दासियोंके साथ प्रासाद के ऊपर छत्त पर सुवर्ण निर्मि-त कन्दुक ( गेंद ) से क्रीडा कर रही थी । सूत्र ॥ १ ॥

એક દિવસે તે સ્નાન કર્યા બાદ પોતાના બધા અંગોને ઘરેણાઓથી શણગારીને પોતાની દાસીઓની સાથે મહેલની ઉપરની અગાશીમાં સોનાથી બનાવવામાં આવેલી હડીથી રમી રહી હતી ॥ સત્ર “ ૧ ”

માલ્યતે સા, તાં કરોતિ=સાધનમામગ્રીત્વેન નિષ્પાદયતિ, इतिव्युत्पत्तया मूषीकार-  
इति सुवर्णकारे योगारूढोऽय शब्दः । ' होत्था ' आसीत् । यो हि आढ्यो यावत्-  
परिभूतः । तस्य खलु कलादस्य मूषिकारदारकस्य दुहिता भद्राया आत्मजा  
पोट्टिला नाम दारिका आसीत्, याहि रूपेण च=आकृत्या, यौवनेन च=तारुण्येन  
च लावण्येन च=शरीरोत्कृष्टकान्ति विशेषेण उत्कृष्टा अतएव उत्कृष्टशरीराऽसीत् ।  
ततः खलु पोट्टिला दारिका अ यदा कदाचित् स्नात्वा सर्वालङ्कारविभूषिता

મૂષીકાર દારક-સુવર્ણકાર કા પુત્ર-રહતા થા । મૂષી શબ્દ કા અર્થ  
સાંચા હૈ । इस मे सुवर्णादि द्रव्य पिघलाये जाते हैं । इस सांचे को जो  
बनाता है उस का नाम मूषीकार है । इस व्युत्पत्ति के अनुसार यह  
शब्द सुवर्णकार ( सोनार ) मे योगारूढ हुआ है । यह मूषीकार दारक  
आढ्य यावत् अपरिभूत था । ( तस्स ण भद्रा नाम भारिया, तस्स ण  
कलायस्स मूसियारदारयस्स धूया, भद्दाए अत्तया पोट्टिला नाम दारि-  
या होत्था, रूपेण य जोवणेण य लावण्येण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ  
सरीरा ) इस मूषिकार दारक कलाद-सौनी की अत्यन्त प्रिय पोट्टिला  
नाम की लडकी थी जो इस की पत्नी भद्रा को कुक्षि से उत्पन्न हुई  
थी । यह आकृति से, यौवन से एव लावण्य से-शारीरिक उत्कृष्ट कान्ति  
से-बहुत ही अधिक मनोहर थी-अतः इस का शरीर बहुत अधिक  
उत्तम था । ( तएण पोट्टिला दारिया अन्नया कयाइ ण्हाया सन्वालकार-

રહેતો હતો ' મૂષી ' શબ્દનો અર્થ સાંચો ( ખીખુ ) છે તેમા સોનુ વગેરે  
દ્રવ્યો 'ઓગાળવામા આવે છે આ સાચાને બનાવનારનુ નામ મૂષીકાર છે આ  
વ્યુત્પત્તિને લઈને આ શબ્દ સુવર્ણકાર ( સોની ) માટે યોગારૂઢ થઈ ગયો છે  
તે મૂષિકારદારક આઢ્ય ( ધનવાન ) યાવત્ અપરિભૂત હતો

( તસ્સ ણ ભદ્રા નામ ભારિયા તસ્સ ણ કલાયસ્સ મૂસિયારદારયસ્સ ધૂયા  
ભદ્દાએ અત્તયા પોટ્ટિલા નામ દારિયા હોત્થા, રૂપેણ ય જોવણેણ ય લાવણ્યેણ  
ય ઉક્કિટ્ઠા ઉક્કિટ્ઠસરીરા )

તે મૂષિકારદારક કલાદ સોનીની ખૂબ જ વડાલી પોટ્ટિલા નામે પુત્રી હતી  
જે તેની પત્ની ભદ્રાના ગભથી ઉત્પન્ન થઈ હતી તે આકૃતિથી, યૌવનથી,  
લૌવણ્યથી-શરીરની ઉન્નત-કાંતિથી બહુ જ મનોહર હતી, એથી તેનું શરીર  
ખૂબ જ ઉત્તમ હતું

( તएण પોટ્ટિલાદારિયા અન્નયાકયાइ ण्हाया सन्वालकारविभूषिता चेडिया  
'चक्रवालसपरिवुडा उप्पि पासायवरगया आगासतलगसि कणगमएण तिंदुस-  
एण कीलमाणी २ विहरइ )



रदारयस्स गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमिच्चा, जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता, तेयलि-  
पुत्तस्स अमच्चस्स एयमट्ट निवेदेति ॥ सू० २ ॥

टीका—‘इम च ण’ इत्यादि । अस्मिन् खलु समये तेतलिपुत्रोऽमात्यः स्नातः  
‘आसखधवरगए’=अश्वस्फुण्डवरगतः=अश्वारूढः ‘महया भटचडगरवदपरिक्खित्ते’  
महाभटचटकरवृन्दपरिक्षिप्तः महान्तो भटचटकराः=भटसमूहाः तेषां वृन्दैः=समूहैः  
परिक्षिप्तः=परिवृतः सन् ‘आसवाहणियाए’ अश्ववाहनिकायै=अश्ववाहनेन क्रीड-  
नायं ‘णिज्जायमाणे’=निर्यान्=निर्गच्छन् कलादस्य मूषीकारदारकस्य गृहस्य  
अदूरसामन्तेन पार्श्वभागेन ‘वीइवयइ’=व्यतिप्रजति=गच्छति । ततः खलु स  
तेतलिपुत्रो मूषीकारदारकस्य गृहस्य अदूरसामन्तेन व्यतिप्रजन् पोडिल्लं दारिकाम्

‘इम च ण तेयलि पुत्ते अमच्चे’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(इम च ण) इसी समय (तेयलिपुत्ते अमच्चे ण्हाए आसख-  
धवरगए महया भटचडगरवदपरिक्खित्ते आसवाहणियाए णिज्जाय-  
माणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामतेण वीइवयइ)  
तेतलि पुत्र अमात्य स्नान से निवट कर घोड़े पर चढा हुआ बड़े २ भट  
समूहों के वृन्दों से घिरा होकर अश्वक्रीडा के लिये मूषीकारदारक कला-  
दके (सोनार) मकान के पास से निकला । ( तएण से तेयलिपुत्ते मूसि-  
यारदारगस्स गिहस्स अदूरसामतेण वीइवयमाणे २ पोडिल दारिय  
उप्पि पासायवरगय आगासतलगसि कणगतिदूसएणं कीलमाणी  
पासइ ) मूषीकारदारक कलाद के मकान के पास से होकर जाते हुए

इम च ण तेयलिपु अमच्चे’ इत्यादि—

टीकार्थ—( इम च ण ) ते वञ्चते

(तेयलिपुत्ते अमच्चे ण्हाए आसखधवरगए महया भटचडगरवदपरिक्खित्ते  
आसवाहणियाए णिज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसाम-  
तेण वीइवयइ )

तेतलिपुत्र अमात्य स्थानथी परवाणीने घोडा उपर सवार थया )अने  
त्यारपणी विशाण लटो (थोद्धाओ ) ना समूहोथी वीटणाधने अश्वक्रीडा भाटे  
मूषीकारदारक कलादना घरनी पास थाने नीडल्या  
(तएण से तेयलिपुत्ते मूसियादारगस्स गिहस्स अदूरसामतेण वीइवयमाणे २ पोडिल  
दारिय उप्पि पासायवरगय आगासतलगसि कणगतिदूसएण कीलमाणी पासइ )

अब्भितरट्ठाणिजे पुरिसे सदावेइ, सदावित्ता, एव वयासी-  
 गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया । कलादस्स मूसियारदारयस्स  
 धूयं भद्दाए अत्तय पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह ।  
 तएणं ते अब्भंतरट्ठाणिजा पुरिसा तेतलिणा एव वुत्ता समाणा  
 हट्ठुट्ठा करयलपरिग्गहिथ सिरसावत्त मत्थए अजलिं कहु  
 तहन्ति किच्चा जेणेव कलायस्स मूसियारस्स गिहे तेणेव उवा-  
 गया । तएणं से कलाए मूसियारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे  
 पासइ, पासित्ता हट्ठुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्त-  
 ट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता, आसणेणं उवणिमंतेइ उव-  
 णिमत्तित्ता, आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी-  
 सदिसंतु ण देवाणुप्पिया । किमागमणपओयण ? तएण ते  
 अब्भितरट्ठाणिजा पुरिसा कलाय मूसियदारयं एव वयासी-  
 अम्हे णं देवाणुप्पिया । तव धूयं भद्दाए अत्तय पोट्टिल दारिय  
 तेयलिपुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो, त जइ णं जाणोसि देवाणु-  
 प्पिया । जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो सजोगो ता  
 दिज्जउण पोट्टिला दारिया तेयलिपुत्तस्स, तो भण देवाणुप्पिय ।  
 किंदलामो सुक्क ? तएण कलाए मूसियारदारए ते अब्भित-  
 रट्ठाणिजे पुरिसे एव वयासी-एस चेव णं देवाणुप्पिया ! मम  
 सुक्के, जन्न तेयलिपुत्ते मम दारिया निमित्तेणं अणुग्गह करेइ ।  
 ते अब्भितरट्ठाणिजे पुरिसे विपुलेणं असणपाणखाइमसाइ-  
 म्मेणं पुप्फवत्थ जाव मल्लालकारेण सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्का  
 रिक्का सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ । तएणं ते

यावत्-उत्कृष्टशरीरा अस्ति । तत खलु स तेतलिपुत्र अश्वमाहनिक्कायाः प्रति  
निवृत्त' = प्रत्यागत सन् ' अर्द्धिभतरठाणिज्जे ' अभ्यन्तरस्थानीयान् = अन्तरङ्गप्रेष्य  
पुरुषा शब्दयति, सन्दयित्वा एवमयदन्-गच्छत खलु यूयं देवानुप्रियाः । कलादस्य  
मृषीकारदारकस्य दुहितर भद्राया आत्मजा पोदिला दारिका मम भार्यात्वेन  
वृणुत । हे देवानुप्रिया यूय तथा प्रयत यम्, यथा स मृषीकारदारकः स्वदुहितर  
मम भार्यात्वेन मद्य दद्यादिति भाव । तत खलु ते अभ्यन्तरस्थानीया पुरुषास्ते-  
तलिना एवमुक्ताः सन्तो हृष्ट तुष्टा ' करतल्पपरिवृहीत गिर आवर्त्त मस्नकेऽञ्जलि  
कृत्वा, ' तदति ' तथेति तथा करिष्यामीति ' क्रिया ' कृत्वा = स्वीकृत्य यत्रैव कला

इस का नाम पोदिला है । रूप आदि से यह बहुत ही उत्कृष्ट शरीर  
वाली है । ( तण्ण से तेयलिपुत्ते आसवाहणिणओ पडिनियत्ते समाणे  
अर्द्धिभतरठाणिज्जे पुरिसे सदावेह, सदावित्ता एव वयासी, गच्छहणं  
तुव्वे देवाणुप्पिया ! कलादस्म सन्नियारदारयस्म धूय भद्दाए अत्तय  
पोदिल दारिय मम भारियत्ताए वरेह ) इस के बाद वह तेतलि पुत्र  
अमात्य, अश्वमाहनिक्का से पीछे जब लौटा तो लौटते ही उसने अपने  
अन्तरंग प्रेष्य पुम्पो को बुलाया-और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-  
हे देवानुप्रियों ? तुम लोग जाओ-और मृषीकार दारक कलाद की पुत्री  
जिसका नाम पोदिला है, जो भद्रा की कुक्षि से उत्पन्न हुई है उसे मेरी  
भार्यारूप से वरआओ । तात्पर्य उस का यह है कि तुमलोग वहा  
जाकर ऐसा प्रयत्न करो कि जिस से वह मृषीकारदारक कलाद अपनी  
पुत्री को पत्नी के रूप में मुझे दे देव । ( तण्ण से अर्द्धिभतरठाणिज्जा  
पुरिसा तेतलिणा एव वुत्ता समाणा हृष्ट तुष्टा करतल परिगृहिय सिरसा

छे तेनु नाम पोदिला छे ते इय वगेरेथा भूमए उत्कृष्ट शरीरवाणी छे

( तण्ण से तेयलिपुत्ते आसवाहणिणओ पडिनियत्ते समाणे अर्द्धिभतरठाणिज्जे  
पुरिसे सदावेह सदावित्ता एव वयासी गच्छह ण तुव्वे देवाणुप्पिया ! कलादस्स  
मूसियारदारयस्स धूय भद्दाए अत्तय पोदिल दारिय मम भारियत्ताए वरेह )

त्यारपणी ते तेतलिपुत्र अमात्य अश्वमाहनिक्काथी वर पाठे आन्थे  
त्याडे आवतानी माथे ए तेण्णे पोताना-अन्तरंग प्रेष्य पुत्रपोने ओलाव्या अने  
ओलावीने तेमने आ प्रमाणे इह्यु डे डे देवानुप्रियो ! तमे नन्थो अने मृषी  
कारदारक कलादनी पुत्री डे-डे नेनु नाम पेदिला छे, अने ने लद्राना गमथी  
उत्पन्न थर्छ छे-तेने लार्था उपमा मने आपो तात्पर्य आ प्रमाणे छे डे तमे  
लोडो त्या नर्छने ओरी डोगिग करे डे नेथी ते मृषीकारदारक कलाद पोतानी  
पुत्रीने पत्नी उपमा मने आपी डे

ઉપરિ પ્રાસાદવરગતામાશતલે કનકતિન્દુસકેન ક્રીડન્તી પદ્યતિ, દદ્વા, પોટ્ટિ  
 લાયા દારિકાયા રૂપે ચ યૌવને ચલાવળ્યે ચ 'જાવ અજ્ઞોવવન્ને' યાવત્-મૂર્છિતઃ,  
 મૃદ્ધ, ગ્રથિતઃ, અધ્યુપપન્ન = અત્યન્તસક્તાશ્ચિત્યર્થે કૌટુમ્બિકપુરુષાઃ શબ્દયતિ,  
 શબ્દયિતા, એમવદત્-એવા સ્વલુ દેવાનુપ્રિયાઃ ! કમ્ય દારિકા કિં નામપ્રેયા ? ।  
 તતઃ સ્વલુ કૌટુમ્બિકપુરુષા તેતલિપુત્રમ્ એમવદન્-એવા સ્વલુ સ્વામિન્ । કલાદસ્ય  
 મૂષીકારદારકસ્ય દુહિતા, મદ્રાયા આત્મજા પોટ્ટિલા નામ દારિકા રૂપેણ ચ  
 હસં તેતલિપુત્ર અમાત્ય ને પ્રાસાદ કે ઉપર છત પર સુવર્ણ કી કન્ઝુક  
 ( મૈદ ) સે ક્રીડા કરતી હુઈ ઉસ પોટ્ટિલા દારિકા કો દેખા । (પામિત્તા  
 પોટ્ટિલાએ દારિયાએ રૂવે ય જાવ અજ્ઞોવવન્ને કોટુવિયપુરિસે સદાવેદ  
 સદાવિત્તા એવ વયાસી-એસા ણ દેવાણુપ્પિયા કસ્સ દારિયા ? કિં નામ  
 ધેજ્જા ?) દેખ કર વહ ઉસ પોટ્ટિલા દારિકા કે રૂપ, યૌવન એવ લાવળ્ય મેં  
 મૂર્છિત, મૃદ્ધ, ગ્રથિત ઘનકર ઉસ પર અત્યન્ત આસક્તિ સે યુક્ત હો  
 ગયા । ઉસી સમય ઉસ ને કૌટુમ્બિકપુરુષોં કો બુલાયા-બુલાકર ઉન  
 સે હસ પ્રકાર કહા-હે દેવાનુપ્રિયો ! કહો યહ કન્યા કિસકી હૈ ઓર  
 હસકા નામ કયા હૈ ? ( તણ કોટુવિયપુરિસા તેયલિપુત્ત એવ  
 વયાસી-એસા ણ સામી ! કલાયસ્સ મૂસિયારદારગસ્સ ધૂયા મદ્રાએ  
 અત્તયા પોટ્ટિલા નામ દારિયા રૂવેણ ય જાવ ઉક્કિદ્ધસરીરા ) ઉન કૌટુ-  
 મ્બિક પુરુષોં ને તેતલી પુત્ર સે એસા કહા-હે સ્વામિન્ ! યહ મૂષીકાર  
 દારક કલાદ કી પુત્રી હૈ જો મદ્રા માર્યાં કી કુક્ષિ સે ઉત્પન્ન હુઈ હૈ ।

મૂષિકારદારક કલાદના ઘરની પાસે થઈને જતા તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે  
 મહેલના ઉપરની અગાથી ઉપર સોનાની દડીથી રમતી તે પોટ્ટિલા દારિકાને જોઈ  
 ( પામિત્તા પોટ્ટિલાએ દારિયાએ રૂવે ય જાવ અજ્ઞોવવન્ને કોટુવિયપુરિસે સદા-  
 વેદ સદાવિત્તા એવ વયાસી એસા ણ દેવાણુપ્પિયા કસ્સ દારિયા ? કિં નામધેજ્જા ? )

તે પોટ્ટિલા દારિકાને જોઈને તે તેના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યમા મૂર્છિત  
 મૃદ્ધ, ગ્રથિત બનીને અત્યંત આસક્ત થઈ ગયો તરત જ તેણે કૌટુમ્બિક  
 પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેણે તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવા  
 નુપ્રિયો ! બોલો, આ કન્યા કોની છે અને એનું શું નામ છે ?

(તણ કોટુવિયપુરિમા તેયલિપુત્ત એવ વયાસી-એસા ણ સામી ! કલાયસ્સ  
 મૂસિયારદારગસ્સ ધૂયા, મદ્રાએ અત્તયા પોટ્ટિલા નામ દારિયા રૂવેણ ય જાવ  
 ઉક્કિદ્ધ સરીરા )

તે કૌટુમ્બિક પુરુષોએ તેતલિપુત્રને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામિન્ !  
 તે મૂષિકારદારક કલાદની પુત્રી છે અને મદ્રામાર્યાના ગર્ભથી તેનો જન્મ થયો

યાવત્-ઉત્કૃષ્ટગરીરા અસ્તિ । તત સલુ ન તેતલિપુત્ર અશ્વવાહનિકાયાઃ પ્રતિ  
નિવૃત્તઃ=પ્રત્યાગત સન્ 'અર્ધિમતરઠાણિજ્જે' અમ્યન્તરસ્થાનીયાન્=અન્તરદ્વમેષ્ય-  
પુરુષા ગન્દયતિ, શન્દયિત્વા એવમવદત્-ગચ્છત સલુ યુય દેવાનુપ્રિયા' કલાદસ્મ  
મૂષીકારદારકમ્ય દુહિતર મદ્રાયા આત્મના પોટિલા દારિકા મમ માર્યાત્વેન  
વૃણુત । હે દેવાનુપ્રિયા યુય તયા પ્રવત ૧૫, યથા સમૂષીકારદારક સ્વદુહિતર  
મમ માર્યાત્વેન મય દયાન્તિતિનાવ. । તત' સલુ તે આમ્યન્તરસ્થાનીયા પુરુષાસ્તે-  
તરિન્ના એવમુક્તાઃ મન્નો હૃષ્ટ તુષ્ટા' કરતલ્પગિઘ્નીત ગિર આવર્તે મસ્તકેઽન્નલિ  
કૃત્વા, 'તદત્તિ' તથેતિ તથા કરિષ્યામીતિ 'કિંચા' જત્વા=ચીકૃત્વ યત્રેવ મયા

હમ્મ કા નામ પોટિલા છે । સ્વ આટિ સે વહ વહુત હી ઉત્કૃષ્ટ ગરીર  
વાલી છે । ( તણ્ણ સે તેયલિપુત્તે આસવાહણિયાઓ પઢિનિયત્તે મમાણે  
અર્ધિમતરઠાણિજ્જે પુરિસે સદાવેદ, સદાવિત્તા એવ વયાસી, ગચ્છહ્ણ  
તુવ્મે દેવાણુપ્પિયા ! કલાદસ્મ મૂસિયારદારયસ્મ ધૂય મદ્રાણ અત્તય  
પોટિલ દારિક મમ મારિયત્તાણ વરેદ ) એસ કે વાદ વહ તેતલિ પુત્ર  
અમાત્ય, અશ્વવાહનિકા સે પીઠે જવ લૌટા તો લૌટતે હી એસને અપને  
અન્તરગ પ્રેમ્ય પુરુષો કો બુલાગ-ઝૌર બુલાકર એસને હમ્મ પ્રકાર કહા-  
હે દેવાનુપ્રિયો ? તુમ લોગ જાઓ-ઝૌર મૂષીકાર દારક કલાદ કી પુત્રી  
જિમ્મકા નામ પોટિલા છે, જો મદ્રા કી કુલિ સે ઉત્પન્ન હૃદ્ છે એસે મેરી  
માર્યાત્વ સે વરઆઓ । તાત્પર્ય એસ વા વહ છે કિ તુમલોગ વહાં  
જાકર એવા પ્રયત્ન કરો કિ જિમ્મ સે વહ મૂષીકારદારક કલાદ અપની  
પુત્રી કો પત્ની કે સ્વપ્ન મેં મુદ્દે દે દેવ । ( તણ્ણ તે અર્ધિમતરઠાણિજ્જા  
પુરિસા તેતલિણા એવ બુત્તા સમાણા હૃદ્ તુષ્ટા કરતલ પરિગ્ગહિય મિરમા

છે તેનુ નામ પોટિલા છે તે ૩૫ વગેરેથી ખૂબ જ ઉત્કૃષ્ટ ગરીરવાળી છે

( તણ્ણ સે તેયલિપુત્તે આસવાહણિયાઓ પઢિનિયત્તે મમાણે અર્ધિમતરઠાણિજ્જે  
પુરિસે સદાવેદ મદાવિત્તા એવ વયાસી ગચ્છહ્ણ ણ તુવ્મે દેવાણુપ્પિયા ! કલાદસ્મ  
મૂસિયારદારયસ્મ ધૂય મદ્રાણ અત્તય પોટિલ દારિક મમ મારિયત્તાણ વરેદ )

ત્યાગ્પટ્ટી તે તેતલિપુત્ર અમાત્ય અશ્વવાહનિકાવી વેગ પાડે આવ્યો  
ત્યાગે આવતાની આવે જ તેણે પોતાના-અન્તરગ પ્રેમ્ય પુત્રપોને બોલાવ્યા અને  
બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે જાઓ અને મૂષી  
કારદારક કલાદની પુત્રી કે-કે જેનું નામ પોટિલા છે, અને જે ભદ્રાના ગર્ભથી  
ઉત્પન્ન થઈ છે-તેને ભાર્યા રૂપમાં મને આપો તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે તમે  
લોકો ત્યા જઈને એની કોળિંગ કરો કે જેની તે મૂષીકારદારક કલાદ પોતાની  
પુત્રીને પત્ની રૂપમાં મને આપી દે

दस्य मूषीकारदारकस्य गृह तत्रैव उवागताः । ता सलु म कलादो मूषीकारदारकः  
तान् अभ्यन्तरस्थानीयान् पुरुषानेजमानान् पश्यति, दृष्ट्वा हृष्टतुष्टोऽतिशयममुदितः  
आसनात् अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय तान् सम्मानयितुं तेषामभिमुख्य गताष्टपदानि

वत्त मत्थण अजलिं रुद्धुं तहत्ति किञ्चा जेणेव कलायस्स मूसियारस्स  
गिहे तेणेव उवागया ) उस प्रकार तेतलि पुत्र के ठारा कहे गये वे  
अन्तरंग प्रेक्ष्य पुरुष हृष्ट तुष्ट होते हुए वहा से निकल कर मूषीकार  
कलाद का जहा घर था वहा आये । आते समय उन्होंने तेतलि पुत्र  
को दोनों हाथों की अजलि बनाकर और उसे मस्नक पर रख कर नम  
स्कार किया-और हम आपने जैसा कहा है वैसा ही करेंगे इस बात  
को उसे आश्वासन देकर स्वीकार किया था । ( तएण से कलाय मूसि-  
यारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ट तुट्ठे आसणाओ  
अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता आसणे  
ण उवणिमतेइ, उवणिमतित्ता आसत्थे वीसन्थे सुहासणवरगण एव  
वयासी सदिसत्तु ण देवाणुप्पिया । किमागमणपओयण-तएण ते अ-  
र्ब्भितरठाणिज्जा पुरिसा कलाय मूसियदारय एव वयासी ) जब उस  
मूषीकार दारककलादने उन पुरुषों को आपने घर की ओर आते हुए  
देखा-तो वह देखकर हृष्ट तुष्ट हो अपने आमन पर से उठ बैठा-उठ

( तएण ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा तेतलिणा एव वुत्ता समाणा हट्टुट्ठा  
करयलगरिगहिय सिरसावत्त मत्थण अजलिं रुद्धुं तहत्ति किञ्चा जेणेव कलायस्स  
मूसियारस्स गिहे तेणेव उवागया )

आ रीते तेतलिपुत्रे जेज्जोने आदेश आयेो छे जेवा ते अन्तरंग प्रेक्ष्य  
पुरुष हृष्ट तुष्ट थता त्याथी खाना थछने मूषीकार कलादनु ज्ज्या घर हत्तु त्या  
पछोय्या तेतलिपुत्रनी पासोथी पाछा इरता तेज्जोये छने छायोनी अजलि  
बनावीने अने तेने भस्तके भूझीने नमस्कार कर्या अने अमे आये जेभ हुकम कर्यो  
छे तेने यथावत पालन करीशु आ रीते तेभनी आशा तेज्जोये स्वीकारी

( तएण से कलाय मूसियारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता  
हट्टुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता  
आसणेण उवणिमतेइ, उवणिमतित्ता आसत्थे सुहासणवरगण एव वयासी सदिसत्तु  
ण देवाणुप्पिया । किमागमणपओयण-तएण ते अर्ब्भितरठाणिज्जा पुरिसा  
कलाय मूसियदारय एव वयासी )

मूषीकारदारक कलादे ज्जारे ते पुरुषोने पोताना घर तरइ आवता जेवा  
त्यारे ते जेछने हृष्ट तुष्ट थछने पोताना आसन उपरथी ज्जो थर्ग गये अने



गत्वा तान्ग्रे कृत्वा स्वयम् 'अणुगच्छ' अनुगच्छति, तेषा पृष्ठवर्तीभूत्वा गच्छति, अनुगम्य, आसनेन उपनिमन्त्रयति=आसनदानेन तान् पुरुषानुपवेशयति, उपनिमन्त्र्य, आस्यस्व, विस्वस्थः एतेषाममात्यपुष्पाणा मत्कारो यथावज्जात इति हेतोः स्वस्थमनाः भूत्वा सुखासनपरगतः=स्वयमपि स्वकीयासने सुखोपविष्टः सन् एवमवदत्-सदिशतु खलु हे देवानुप्रियाः! भवता किमागमनप्रयोजनम्? ततः खलु ते आभ्यन्तरस्थानीयाः पुरुषाः कलाद मूषीकारदारकम् एवमवदन्-वयं खलु देवानुप्रिय! तव दुहितर भद्राया आत्मजा पोष्टिला दारिका तेतलिपुत्रस्य भार्यात्वेन वृणुम, तद् यदि खलु त्व 'जाणसि' जानासि=मन्यसे, हे देवानुप्रिय! यद् अस्माकमेतत्तत्कन्याविषयकं वाचनं 'जुत्त वा' युक्तं वा=उचितम् 'पत्त वा' प्राप्तं वा मनसिसल्लग्नं वा 'सलाहणिज्जं वा' श्लाघनीयं वा=प्रशसनीयं वा अपि च 'सरिसो वा सजोगो' सदृशो वा सयोगः तेतलिपुत्रेण सह तव कन्याया वैवाहिक

कर फिर वह सात आठ डग प्रमाण आगे उन का सत्कार करने के लिये गया। वहा से उन्हें आगेकर के वह स्वयं उनके पीछे २ आया। आकर के फिर उसने उन्हें आसनों पर बैठाया-बैठा कर आश्वस्त विश्वस्त होकर बाद में वह स्वयं दूसरे अपने आसन पर शान्ति पूर्वक बैठ गया। बैठ जाने के बाद फिर उसने इस प्रकार कहा- हे देवानुप्रियो! कहिये-किस कारण से आप यहा पधारे है-आपलोगों के आने का क्या प्रयोजन है-इस प्रकार उसके पूटने पर उन अभ्यन्तर स्थानीय पुरुषों ने उस सुवर्णकार के पुत्र कलाद से इस प्रकार कहा (अम्हे ण देवाणुप्पिया! तव धूय भद्दाए अत्तय पोष्टिल दारिय तेयलिपुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो, त जइण जाणसि देवाणुप्पिया! जुत्त वा पत्त वा सलाहणिज्ज वा सरिसो वा सजोगो ता दिज्जउण पोष्टिला दारिया तेयलि

जेलो थईने तेमना स्वागत माटे सात आठ पगला सामे गये। त्याथी तेले आवनाराओने आगज कनीने ओटले डे पोते तेओनी पाछण पाछण आलतो। त्या आओ। अने आवीने तेले तेओने आमने। उपर जेमाडया तयारपछी आश्वस्त विश्वस्त थईने ते पोते जीला आमन उपर शांतिपूर्वक जेसी गये। जेसीने तेले तेओओ विनय पूर्वक कह्यु डे डे देवानुप्रियो! जेलो, तमे शा कारणुथी अही आओ। ओ? तमे शा प्रयोजनथी आव्या ओ? आ रीते कलाद (सुवर्णकार) नी वात सालगीने ते आश्वतर स्थानीय पुरुषोओ तेने आ प्रमाणे कह्यु डे

(अम्हेण देवाणुप्पिया! तव धूय भद्दाए अत्तय पोष्टिल दारिय तेयलि पुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो, त जइण जाणसि देवाणुप्पिय! जुत्त वा पत्त वा सलाहणिज्ज

સમ્યન્ધો યોગ્યો ભવતીતિ, યદિ જાનાસિ તદા દીયતા મત્તુ પોદ્દિયા દારિકા તેત-  
લિપુત્રાય 'તો' તર્હિ મળ=નૂહિ, હે દેવાનુપ્રિય ! કિં દનઃ । હમ્ સમ્માનપુરસ્કારં  
ભવતે કિં સમર્પયામઃ । તતઃ સ્વલુ કન્યાદો મૂપીરદારક' અન્યતરસ્થાનીયાન્  
પુરુષાન્ એવમવદત્-એતદેવ સ્વલુ દવાનુપ્રિયાઃ । મન શુભમ્, યત્સ્વલુ તેતત્ત્રિપુત્રો  
મમ દારિકાનિમિત્તેન અનુગ્રહ=દયા કરોતિ । ત્યુત્તરાઽપાતાન્ અન્યતરસ્થાની-

પુત્રસ્સ તો મળ દેવાણુપ્પિયા ! કિં દલામો સુવક ? તણ કલાણ મૂસિ  
યાર દારણ તે અર્ધિમતરઠાણિજ્જે પુરિસ ણ વયાસી ) હે દેવાનુપ્રિય હમ  
લોગ તુમ્હારી પુત્રી પોદ્દિલા દારિકા કો કિ જો મદ્રાકી કુદ્ધિ સે ઉત્પન્ન  
હુઈ હૈ તેતલી પુત્ર અમાત્ય કી વહ માર્યા અને હસ રૂપ સે વરણ કરને  
કે લિયે આયે હુણ હે-તો યદિ તુમ હે દેવાનુપ્રિય ! હમારી હસ યાચના  
કો ઉચિત, પ્રાપ્ત, ઔર કલાપનીય-પ્રદાસનીય માનતે હો ઔર યહ સમ  
જાતે હો કિ યહ તેતલિપુત્ર કે માથ તુમ્હારી કન્યા કા વૈવાહિક સબધ  
યોગ્ય હૈ-તો પોદ્દિલા દારિકા તેતલિ પુત્ર કે લિયે પ્રદાન કર દો-ઔર  
સાથ મેં યહ મી કહ દો કિ હમ આપકે લિયે હસ નિમિત્ત કયો સમ્માન  
પુરસ્કાર દેવેં । હસ પ્રકાર ડન સવ કી એસી વાતે સુનકર ડસ સુવર્ણ  
કાર પુત્ર કલાદને ડન આયે હુણ અન્યતર સ્થાનીય પુરુષોં સે હસ પ્રકાર  
કહા-(એસ ચેવ ણ દેવાણુપ્પિયા ! મમ સુવકે જન્ન તેયલિપુત્તે-  
મમ દારિયા નિમિત્તેણ અણુગ્રહ કરેહ, તે અર્ધિમતરઠાણિજ્જે પુરિસે

વા સરિસો વા સજોયો તા દિજ્જડુણ પોદ્દિલા દારિયા તેયલિપુત્તસ્સ તો મળ  
દેવાણુપ્પિયા ! કિંદલામો સુવક તણ કલાણ મૂસિયારદારણ તે અર્ધિમતરઠાણિજ્જે  
પુરિસ એવ વયાસી )

હે દેવાનુપ્રિય ! તમારી ભદ્રા ભાયોના ગર્ભથી જન્મ પામેલી તમારી  
પોદ્દિલા દારિકા અમાત્ય તેતલીપુત્રની ભાર્યા થાય આ જાતની માગણી કરવા  
અમે તમારી પાસે આવ્યા છીએ હે દેવાનુપ્રિય ! તમે તેતલિપુત્રની માગણી  
ઉચિત, શલાધનીય અને પ્રદાસનીય માનતા હોય તેમજ એમ પણ તમને થતુ  
હોય કે અમાત્ય તેતલિપુત્રની માથેનો આ લગ્ન સબધ યોગ્ય છે તો તમે  
અમાત્ય તેતલિપુત્રને પોદ્દિલાદારિકા આપી દો અને એની સાથે તમે અમને  
એમ પણ જણાવી દો કે તમને અમે એના બદલ સન્માન પુરસ્કારના રૂપમા  
શુ આપીએ ? આ રીતે તેઓ બધાની વાત સાંભળીને તો સુવર્ણકારના પુત્ર  
કહાહે આન્યતર સ્થાનીય પુરુષોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

( એસ ચેવ ણ દેવાણુપ્પિયા ! મમ સુવકે જન્ન તેયલિપુત્તે મમ દારિયા



યાન્ પુરુષાન્ વિપુલેન અગ્નપાનસ્વાદ્યસાગ્નેન પુષ્પસ્તગન્ધમાલ્યાન્કારેણ ચ સત્ક  
રોતિ, સન્માનયતિ, સત્કૃત્ય સન્માન્ય, પ્રતિવિસર્જયતિ । તત- સ્વલુ તે=આશ્વન્તર  
સ્થાનીયા પુરુષા કૃત્તદસ્ય મૂળીકારદારકસ્ય ગૃદાત્ પ્રતિનિષ્ક્રામ્યન્તિ, પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય  
યત્રૈય તેતલિપુત્રોઽમાત્યસ્ત્રૈયોપાગન્ત્તિ, ઉપાગત્ય તેતલિપુત્રાય અમાત્યાય ' એય  
મદ્ ' એતમર્થમ્=વિગ્રાહસ્ય સ્વીકૃતિરૂપમર્થ નિવેદયન્તિ ॥ મૂ. ૨ ॥

વિપુલેણ અસળપાળસ્વાદમસાઢમેણ પુષ્પવત્ય જાવ મલ્લાલકારેણ  
સત્કારેઢ, સન્માણેઢ, સત્કારિત્તા, સન્માણિત્તા પઢિ વિસર્જજેઢ । તણે  
તે કલાયસ્મ મૃસિયારદારયસ્મ ગિહાઓ પઢિનિક્લમતિ, પઢિનિક્લ-  
મિત્તા જેણેવ તેયલિપુત્તે અમચ્ચે, તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા  
તેયલિપુત્તસ્સ અમચ્ચસ્સ એયમદ્ નિવેદેતિ ) હે દેવાનુપ્રિયો ! મેરા  
સન્માન પુરસ્કાર યહી હૈ કિ જો તેતલિ પુત્ર દારિકા કે નિમિત્તા સે મેરે  
ઊપર એસી દયા કર રહે હૈ-અર્થાત્ મેરી પુત્રી કો જો વે અપની પત્ની  
વનાને કી ચાહના કર રહે યહી સત્ર સે વહા ઉન કી ઓર સે મેરે લિયે  
સન્માન પુરસ્કાર પ્રદાન ક્રિયા જા રહા હૈ । ઇસ પ્રકાર કહ કર ઉસ  
કલાદ ને ઉન અશ્વતરસ્થાનીય પુરુષોં કા વિપુલ અશન, પાન, સ્વાદ્ય,  
સ્વાદ્ય સે એવ પુષ્પ, વસ્ત્ર, ગધ માલા એવ અલકારોં સે સ્વૃચ સત્કાર  
ક્રિયા-સન્માન ક્રિયા । સત્કાર એવ સન્માન કરને કે વાદ ફિર ઉસને  
ઉન્હે વિસર્જિત કર દિયા । વહા સે વિસર્જિત હોકર વે અશ્વતર સ્થાનીય

નિમિત્તેણ અશુભ્ગહ કરેઢ, તે અર્થિમતરદ્વાણિજ્જે પુરિસે વિપુલેણ અસળપાળસ્વાદમ-  
સાઢમેણ પુષ્પવત્ય જાવ મલ્લાલકારેણ સત્કારેઢ, સન્માણેઢ, સત્કારિત્તા, સન્મા-  
ણિત્તા પઢિવિસર્જજેઢ । તણે તે કલાયસ્મ મૃસિયારદારયસ્મ ગિહાઓ પઢિનિક્લ-  
મતિ, પઢિનિક્લમિત્તા જેણેવ તેયલિપુત્તે અમચ્ચે, તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગ-ચ્છિત્તા  
તેયલિપુત્તસ્સ અમચ્ચસ્સ એયમદ્ નિવેદતિ )

હે દેવાનુપ્રિયો ! અમાત્ય તેતલિપુત્ર મારી દારિકાને સ્વીકારવા રૂપ જે મારા  
ઉપર દયા બતાવી ગયા છે તે જે બરેબર મારા માટે સન્માન અને પુરસ્કારની  
જ વસ્તુ છે એટલે કે તેઓ મારી પુત્રીને પોતાની પત્ની પત્ની તરીકે  
ધૃષ્ટી રહ્યા છે, એજ તેમના તરફથી મારા માટે સન્માન અને પુરસ્કાર રૂપ  
છે આ રીતે ડહીને તે ડલાદે આશ્વતર સ્થાનીય પુરુષોનો વિપુલ અશન, પાન,  
ખાદ્ય, સ્વાદ્યથી અને પુષ્પ, વસ્ત્ર, ગધ, માળા અને અલકારોથી ખૂબ જ સરસ  
રીતે સત્કાર કર્યો અને તેમનું સન્માન કર્યું સત્કાર અને સન્માન કર્યા પછી  
તેણે તેમને વિદાય આપી ત્યારપછી તે આશ્વતર સ્થાનીય પુરુષો તે સુવર્ણ



पोटिला दारिका स्नता सर्वाङ्गारभूषिता 'सीय' शिविका दूरोहयति=भारोहयति, दूरोह=भारोह 'मित्तणाइ सपरिवुडे' मित्रज्ञाति सपरिवृत = मित्रज्ञाति स्वजनसमन्विप रिवेष्टितः, सर्वान् वैवाहिकान् मभारान्=विवाहसंस्कारोचित सामग्रीन् गृहीत्वा स्वकाद् गृहात् प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य 'सन्विडूणै' सर्वज्ञाना=सर्वप्रकारिकया ऋद्ध्या सह 'तेयलिपुर' तेतलीपुरम् म-यमभ्येन निर्गच्छन् यत्रैव तेतलेगृहं तत्रैव उपा गच्छति, उपागत्य पोटिला दारिका तेतलिपुराय स्वयमेव भार्यात्वेन ददाति । ततः खलु तेतलिपुरोऽमात्यः पोटिला दारिका स्वभार्यात्वेन 'उपणीय' उपनी-

पोटिल दारियं ण्हाय सन्वाळकारभूमिय मीय दुरुहइ ) शुभ तिथि नक्षत्र, मुहूर्त्त में पोटिला दारिका को स्नान करा कर समस्त अलकारों से विभूषित किया और विभूषित कर के फिर उसे शिविका पर बैठा दिया-( दुरुहित्ता मित्तणाइ सपरिवुडे सातो गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सन्विडूणै तेयली पुर मज्झ मज्झे ण जेणेव तेयलिस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोटिल दारियं तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयइ ) बैठा कर फिर वह मित्र, जाति, स्वजन, सन्धी परिजनों से परिवेष्टित होकर एव वैवाहिक समस्त सामग्री को लेकर अपने घर से निकला । निकल कर सर्व प्रकार की अपनी ऋद्धि के साथ २ तेतलि पुर के बीच से होता हुआ जहा तेतलि का घर था वहा पहुँचा । वहा पहुँच कर उसने अपनी पुत्री पोटिला दारिका को तेतलि पुत्र को अपने आप से भार्या रूप से प्रदान कर दी । ( तण्ण

( सोहणसि तिहिनक्खत्तमुहुत्तसि पोटिल दारियं ण्हायं सन्वाळकार, भूमिय सीय दुरुहइ )

शुभ तिथि नक्षत्र, मुहूर्त्तमा पोटिला दारिकाने स्नान करवीने ण्ही जतना अलकारेथी गणुगारीने तेने पावणीमा जेसाडी दीपी

( दुरुहित्ता मित्तणाइसपरिवुडे सातो गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्ख मित्ता सन्विडूणै तेयलीपुर मज्झ मज्झेण जेणेव तेयलिस्स गिहे तेणेव उवाग- च्छइ, उवागच्छित्ता पोटिल दारियं तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयइ )

जेसाडीने ते पोताना मित्र, जाति, स्वजन, सन्धी अने परिजनोंनी साथे लग्ननी ण्धी साधन सामग्री लाने रेखी नीळ्ळ्ये नीळ्ळीने ते सर्व प्रकारनी पोतानी ऋद्धिनी साथे तेतलिपुरनी वर्ये थामने ल्या तेतलिप्रान घर

મૂલમ્—તણ્ણં કલાણ્ણ મૂસિયારદારણ્ણ અન્નયા કયાઈં  
 સોહણંસિ તિહિનમ્મલ્લત્તમુહુત્તસિ પોટ્ટિલં દારયં પહાય સઙ્ગા-  
 લકારમૂસિયં સીય દુરુહહં, દુરુહિત્તા મિત્તણાહસંપીરવુડે સાતો  
 ગિહાઓ પડિનિક્કલમહં, પડિનિક્કલમિત્તા સઙ્ગિઠ્ઠીણ્ણ તેયલીપુરં  
 મજ્ઞ મજ્ઞેણ જેણેવ તેયલિસ્સગિહે, તેણેવ ઉવાગચ્છહં, ઉવા-  
 ગચ્છિત્તા, પોટ્ટિલ દારિય તેયલિપુત્તસ્સ સયમેવ મારિયત્તાણ  
 દલયહં । તણ્ણ તેયલિપુત્તં પોટ્ટિલ દારિયં મારિયત્તાણ ઉવ-  
 ણીય પાસહં, પાસિત્તા પોટ્ટિલાણ સઙ્ગિ પટ્ટયં દુરુહહં, દુરુહિત્તા  
 સેયપીણ્ણિ કલસેહિ અપ્પાણ મજ્ઞાવેહં, મજ્ઞાવિત્તા અગ્નિ-  
 હોમ કરાવેહં, કરાવિત્તા પાણિગ્ગહણ કરેહં, કરિત્તા પોટ્ટિલાણ  
 મારિયાણ મિત્તણાહં જાવ પરિજણ વિઉલેણં અસગપાણલાહમ  
 સાહમેણ પુપ્પ જાવ પડિવિસજ્જેહં । તણ્ણ સે તેયલિપુત્તે પોટ્ટિ-  
 લાણ મારિયાણ અણુરત્તે અવિરત્તે ઉરાલાહં જાવ વિહરેહં ॥ સૂ. ૦૩ ॥

ટીકા—‘તણ્ણ’ इत्यादि, तत खलु कलादो मूषीकारदारकं अयदा कदाचित्  
 ‘सोहणसि’ शोभने=शुभाग्रहे विवाहयोग्ये ‘तिहिनमल्लत्तमुहूत्तमि’ तिथिनक्षत्रमुहूर्ते

पुरुष उक्त सुवर्णकार पुत्र कलाद के घर से निकले और निकल कर जहां  
 तेतलि पुत्र अमात्य या वहां आये—वहां आकर उन्होंने ने तेतलि पुत्र अमा-  
 त्य को विवाह स्वीकृति रूप अर्थ की खबर दी । सूत्र ॥ २ ॥

“ તણ્ણ કલાણ્ણ મૂસિયારદારણ ” इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(તણ્ણ) इस के बाद ( मूसियारदारण ) मूषीकार दारक ने  
 ( अन्नया कयाह ) किसी एक समय (सोहणसि तिहिनमल्लत्तमुहूत्तसि

કાર પુત્ર કલાદના ઘરથી નીકળ્યા અને ત્યાંથી જ્યાં અમાત્ય તેતલિપુત્ર હતો  
 ત્યાં પહોંચ્યા અમાત્ય તેતલિપુત્રની પાસે જઈને તેઓએ રકતસંબંધ સ્વીકા-  
 રવા રૂપ ખબર આપી ॥ સૂત્ર “ ૨ ” ॥

તણ્ણ કલાણ્ણ મૂસિયારદારણ ’ इत्यादि—

ટીકાર્થ—( तण्ण ) तयारपत्री ( मूसियारदारण ) मूषीकार दारक ( अन्नया  
 कयाह ) केरु ओक वખते

‘पुष्पजाव’ पुष्पयावत्=पुष्पयत्नादिना यागमाल्यालङ्कारादिना सत्कारयति, सत्कार्यं ‘पडिनिमज्जे’ प्रति निमज्जयति । ततः खलु स तेतलिपुत्रोऽमात्यः पोद्दिलाभाभार्यायाम् ‘अणुरक्ते’ अनुरक्तः=आमक्तः ‘अविरक्ते’ अविरक्तः=अत्यन्तानुरक्त इत्यर्थः, ‘उरा-॥ जा’ उरागन् यावत्=उदारान् भोगभोगान्=विषयभोगान् भुञ्जानो विहरति ॥ सू०२ ॥

मूलम्—तएण से कणगरहे राया रज्जे य रट्टे य वले य वाहणे य कोमे य कोट्टानारे य अत्तेउरे य मुच्छिण्ण जाए पुत्ते वियगेइ, अप्पेगडयाण हत्थगुलियाआ छिदइ, अप्पेगडयाणं हत्थगुट्टए छिदइ, एव पायगुलियाओ पायगुट्टएवि, कन्नसक्कुलीएवि, नासापुडाइ फालेइ, अंगमगाइ वियंगेइ । तएणं तीसेपउमावईए देवीए अन्नया पुठ्ठवरत्तावरत्तकालसमयांसि अयमेयाख्वं अज्झतियए५ समुप्पज्जितथा—एव खलु कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियगेइ, जाव अंगमगाइ वियगेइ । त जइ अह दारय पयायामि, सेय खलु ममं त दारग कणगरहस्स रहस्सिय चेव सारक्खेमाणीए संगो-

पोद्दिलाभार्या के मित्र, जाति, स्वजन सवन्धि परिजनो दा अशन, पान, खान् एव खान् रूप चतुर्विध आहार से तथा पुष्प, वस्त्र यावत् माल्य अलङ्कार आदि से सत्कार करवाया, सत्कार करवाने के बाद फिर उन सब को चर्चा से विदा कर दिया । इसके पश्चात् पोद्दिलाभार्या में आसक्त एवं अनुरक्त बने हुए इम तेतलिपुत्र अमात्य ने उसके साथ पञ्चेन्द्रिय सङ्ग्री सुखों का अनुभव करने लगा । सूत्र ॥ ३ ॥

पोद्दिलाभार्याना मित्र जाति, स्वजन सवन्धि अने परिजनोना अशन, पान, पाय अने पय द्रव्य अत्र भक्षण आहारयी तेमज पुष्प, वस्त्र यावत् माल्य अलङ्कार वगेर्यी सत्कार करवावड्यो अने सत्कार करवावड्यो पडी तेले अधाने पोताना घेरथी विदाय अपी त्यारपडी पोद्दिलाभार्यामा आमक्त अने अनु रक्त थयेले ते अमात्य तेतलिपुत्र तेनी भाये पञ्चेन्द्रिय सवन्धि सुभोना

તામ્ ઉપનયનીક્રતા પદ્યતિ, દૃષ્ટ્વા પોટિલાયા સાદ્દં પટક દુગેદતિ, દુરુણ ' સેય પીર્ણિ ' શ્વેતપીતૈ ' = રજતસુવર્ગનિર્મિતૈ. ' કલસેહિ ' કલશોઃ = ઘટે આત્માન ' મઙ્ગાવેદ ' મઙ્ગતિ = ગમયતિ, મઙ્ગવિત્તા અગ્નિસાક્ષિકો વિવાહ ઇતિ હેતોઃ ' અગ્નિહોમ કરાવેદ ' અગ્નિહોમ કારયતિ, કારયિત્તા ' પાણિગ્રહણ ' પાણિગ્રહણ = વિવાહ કરોતિ, કૃત્વા પોટિલાયા ભાર્યાયાઃ ' મિત્તગાઢ જાવ પરિજણ ' મિત્ર જ્ઞાતિસ્વજનમમ્યન્નિપરિજનમ્ ત્રિપુલેન અશનવાનવાયસ્યાધેન ચતુર્વિધાદારેણ

તેયલિપુત્તે પોટિલ દારિય ભારિયત્તાણ ઉચ્ચનીય પાસદ, પામિત્તા પોટિલાણ સર્દિ પટ્ટય દુરુહડ ) તેતલિપુત્ર અમાત્ય ને પોટિલા દારિકા કો અપની ભાર્યા રૂપ સે અપને લિયે પ્રદાન કી દુર્હ દેવ્યા તો દેવ્ય કર વહ ઉસ પોટિલા દારિકા કે સાય પટક પર વેઠ ગયા । ( દુરુહિત્તા સેયવીર્ણિ કલસેહિ અપ્પાણ મઙ્ગાવેદ, મઙ્ગાવિત્તા અગ્નિહોમ કરાવેદ, કરાવિત્તા પાણિગ્રહણ કરેદ કરિત્તા પોટિલાણ ભારિયાણ મિત્તગાઢ જાવ પરિજણ વિઝલેણ અસણ પાણ સ્વાદમ સાદમેણ પુષ્ક જાવ પડિવિસજ્જેદ । તણ સે તેયલિપુત્તે પોટિલાણ ભારિયાણ અણુરત્તે અવિરત્તે ડરાલાઢ જાવ વિહરેદ ) બેઠ કર ફિર ઉસને રજત એવ સુવર્ણ સે નિર્મિત કલશોં ઢારા અપના અભિષેક કરવાયા । અભિષેક કરવા કર " અગ્નિ સાક્ષિક વિવાહ હોતા હૈ " હસ રણાલ સે ફિર ઉસને અગ્નિ મે હોમ કરવાયા । કરવા કર વાદ મેં ઉસને ઉસ પોટિલા દારિકા કા પાણિ ગ્રહણ કર લિયા । વિવાહ હો ચુકને કે અનન્તર ફિર ઉસ તેતલિ પુત્ર અમાત્ય ને

( તણ તેયલિપુત્તે પોટિલ દારિય ભારિયત્તાણ ઉચ્ચનીય પાસદ, પામિત્તા પોટિલાણ સર્દિ પટ્ટય દુરુહડ )

તેતલિપુત્ર અમાત્યે પોટિલા દારિકાને તે િ ભાર્યા રૂપમા આપેલી ભેદને તે પોટિલા દારિકાની સાથે પટક ઉપર બેસી ગયે ।

( દુરુહિત્તા સેયવીર્ણિ કલસેહિ અપ્પાણ મઙ્ગાવેદ, મઙ્ગાવિત્તા અગ્નિહોમ કરાવેદ કરાવિત્તા પોટિલાણ ભારિયાણ મિત્તગાઢ જાવ પરિજણ વિઝલેણ અસણ પાણ સ્વાદમ સાદમેણ પુષ્ક જાવ પડિવિસજ્જેદ । તણ સે તેયલિપુત્તે પોટિલાણ ભારિયાણ અણુરત્તે અવિરત્તે ડરાલાઢ જાવ વિહરેદ )

બેસીને તેણે આદી અને રોનાના ઝળશે વડે પોતાનો અભિષેક કરાવડાવ્યો । અભિષેક કરાવડાવીને તેણે ' અગ્નિ સાક્ષિક લગ્ન થાય છે ' આમ વિચરીને તેણે અગ્નિમા હવન કરાવડાવ્યો । ત્યારપછી તેણે પોટિલા દારિકાનું પાણિ ગ્રહણ કર્યું । લગ્નની વિધિ પૂરી થયા બાદ તે અમાત્યે



करोतीति व्यङ्ग्यति=अद्वहीनान् करोति । ' विइतेइ ' इति पाठे विकर्तयति छिनत्ति  
इत्यर्थो बोध्य । तत्प्रकारमाह—अप्येकेपा=केपाचिदुत्पन्नाना पुत्राणा हस्ताङ्गुली-  
छिनत्ति, अप्येकेपा=केपाचित् बालाना हस्ताङ्गुष्ठान् छिनत्ति । एव पादाङ्गुलिकाः  
पादाङ्गुष्ठान् अपि, एव ' कण्णसकुलीए वि ' कर्णशङ्कुलीरपि=कर्णानपि तथा नासा-  
पुटानि च ' फालेइ ' पाटयति=छिनत्ति, इत्यर्थः । अनेन प्रकारेण एव कनकरथो  
राजा बालानाम् ' अगमगाइ ' अङ्गानि अङ्गानि मर्माङ्गानि व्यङ्ग्यति=छिनत्ति ।  
तत खलु अनेन प्रकारेण समुत्पन्नाना पुत्राणा विनाशनन्तरम् ' तीसे ' तस्याः  
कनकरथस्य राज्याः पद्मावत्या देव्या अन्यदा ' पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि '   
पूर्वरात्रापररात्रकालमयमे=रात्रेः पश्चिमे भागे अयमेतद्रूप आ यात्मिकः=आत्मगतो

उत्पन्न हुए अपने पुत्रों को अगहीन कर देता । ( अप्पेगइयाण हत्थ  
गुलियाओ छिदइ, अप्पेगइयाण हत्थगुट्टण, छिदइ, एव पायगुलि-  
याओ पायगुट्टण वि कन्नमक्कुलीए वि, नासापुडाइ फालेइ, अग-  
मगाइ विरियगेइ ) किननेक बालकों के वह हाथों की अंगुलियों  
को छेद देता था, किननेक बालकों के हाथों के अंगूठों को-  
काट देता था, इसी तरह वह पैरों की अंगुलियों को पैरों के अंगूठों को,  
कानों को नासा पुटों को छेद देता था । इस तरह यह कनक रथ राजा  
बालकों के अंगों का भगकर देता था । ( तएण तीसे पाउमावईए देवीए  
अन्नया पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि अयमेवासुवे अज्जत्थिए ५ समु-  
प्पज्जित्वा ) इस प्रकार समुत्पन्न पुत्रों के विनाश के बाद उस कनकरथ  
राजा की रानी पद्मावती देवी के किसी एक समय रात्रि के पश्चिम  
भाग में यह इस प्रकार का आध्यात्मिक यावन् मनोगत सकल्प उत्पन्न

( अप्पेगइयाण हत्थगुलियाओ छिदइ अप्पेगइयाण हत्थगुट्टण छिदइ, एव पायगु-  
लियाओ पायगुट्टण वि कन्नमक्कुलीए वि, नासापुडाइ फालेइ, अगमगाइरियंगेइ )

केटलाइ जाणडेनी ते हाथेनी आगणीओ कपावी न आवतो इतो,  
केटलाइ जाणडेना हाथेना अगुहाओ कपावी न आवतो इतो, आ रीते ते  
पणेनी आगणीओने, पणेना अगुहाओने, डानेने, नाउने कपावी न आवतो  
इतो आभ ते कनकरथ राज्ञ जाणडेना अगेनु ते छेदन कपावी न आवतो इतो

( तएण तीसे पाउमावईए देवीए अन्नया पुव्वरत्तावरत्तकालमयसि  
अयमेवासुवे अज्जत्थिए ५ समुप्पज्जित्वा )

आ प्रभावे जन्मेला पुत्रेना विनाश पत्री ते कनकरथ राज्ञानी राज्ञी  
पद्मावती देवीने डोअ ओक समये रात्रिना छेत्ता पडोरमा आ जतने आध्या-  
त्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न थये के—

વેમાળીએ વિહરિત્તે તિકદુ એવ સપેહેડ, સંપેહિત્તા તેયલિ-  
પુત્ત અમચ્ચ સદાવેડ, સદાવિત્તા એવ વયાસી એવ ચલુ દેવા-  
ણુપિયા । કળગરહે રાયા રજ્જે ય જાવ વિયગેડ, ત જડ ણં  
અહં દેવાણુપિયા । દારગં પયાયામિ । તણેણ તુમ દેવાણુ-  
પિયા । કળગરહસ્સ રહસિસયં ચેવ અણુપુલ્લેણં સારવલે-  
માળે સગોવેમાળે સવહેહિ । તણં સે દારણ ઉમ્મુક્કત્તલ-  
ભાવે જોલ્લવણગમણુપ્પત્તે તવ ય મમ ય ભિવ્વખાભાયણં  
ભવિસ્સડ । તણેણ મે તેયલિપુત્તે પડમાવર્ડેણ યયમદ્દ પડિ-  
સુણેડ, પડિસુણિત્તા પડિગણ ॥ સૂ. ૪ ॥

ટીકા—‘તણેણ સે’ इत्यादि । ततः खलु स कनकरथो राजा राज्ये च=राष्ट्रे  
च=देशे बले=सैन्ये च, वाहने=अश्वादिषु च कोशे=भाण्डारे च धान्यादीना  
कोष्ठागारे च अन्तःपुरे च, ‘मुच्छिउए’ मुच्छित्तः=मोह प्राप्त, गृद्ध=आसक्तः  
ग्रथितः=विशेषेणासक्तः, अध्युपपन्न=सर्वथा तत्परायण, जाए २=जातान् २=  
उत्पन्नान् २ पुत्रान् ‘वियगेड’ व्यङ्गयति=विगतानि अङ्गानि येषा तान् व्यङ्गयान्

‘તણેણ સે કળગરહે રાયા’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(તણેણ) इसके बाद (से कलगरहे राया रज्जे य रट्टे य बले य  
वाहणे य कोसे य कोष्ठागारे य अतेउरे य मुच्छिउए ४) वह कनकरथ  
राजा राज्य में राष्ट्र में सैन्य में अश्वादि वाहन में, धान्यादिकों के  
कोष्ठागार में एव अन्तःपुर में मूर्च्छित गृद्ध अ यन अनुरक्त एव  
अध्युपपन्न—सर्वथा तत्परायण बन गया । सो (जाए पुत्ते वियगेड)

તણેણ સે કળગરહે રાયા इत्यादि—

( તણેણ ) त्थारभाह

ટીકાર્થ—( સે કળગરહે રાયા રજ્જેય રટ્ટે ય બલે ય વાહણે ય કોષ્ટાગારે ય  
અતેઉરે ય મુચ્છિઉ ૪)

તે કનકરથ રાજા રાજ્ય રાજ્યમા, રાષ્ટ્રમા, સૈન્યમા, અશ્વ વગેરે વાહ  
નોમા, ધાન્ય વગેરેની બાબતમા, કોષ્ટાગારમા અને રણવાસમા મૂર્છિત, ગૃદ્ધ,  
ધણો જ આસક્ત અને અધ્યુપપન્ન અખૂર્ણપણે તત્પર થઈ ગયો એથી ( જાણ  
પુત્ર વીયગેડ ) તે જન્મેલા પોતાના પુત્રોને અગડીત બનાવી દેતો .



‘અણુપુન્વેગ’ આનુપૂર્વ્યેગ=યથાક્રમમ્ સરક્ષન્ ધૂમટ્ટયાદિતઃ સગોપાયન્ ભૂપકૃતો પદ્મવાત્ ત દારક ‘સવદ્દેઃ’ સવર્દ્ય, તસ્ય ચાલસ્ય દૃદ્ધિમુપનય । તતઃ સ્વલુ સ દારક ‘ઉમ્મુક્કચાલભાવે’ ઉન્મુક્તચાલભાવ=ઉન્મુક્ત પરિત્યક્તો ચાલભાવો ચાલત્વ યેન સ, ‘જોઘ્વણગમણુપ્પત્તે’ યૌવનક્રમનુપ્રાપ્ત=પ્રાપ્તતારુણ્યઃ તવ મમ ચ

ળ સારક્ષેમાણે સગોવેમાણે સવદ્દેહિં । તણ સે દારણ ઉમ્મુક્કચાલ ભાવે જોઘ્વણગમણુપ્પત્તે તવ ય મમ ય મિલ્લામાયણ ભવિસ્સહ તણ્ણ સે તેયલિપુત્તે પડમાવડણ ણ્યમદ્ધ પડિસુણેટ, પડિસુણિત્તા પડિગણ ) તો યદિ મેરે યહાં પુત્ર ઉત્પન્ન હોતા હૈ—મેં પુત્ર કો ઉત્પન્ન કરતી હૈ—તો મુઝે યહી યોગ્ય હૈ કિ મે રાજા કનકરથ કો સ્વચર ન પડે હસ રૂપ સે ઉસકી રક્ષા કરૂં—ઉનકી દૃષ્ટિ સે —ઉસે બચાકર રહૂ—એસા ઉસને મન સે વિચાર કિયા । વિચાર કર ફિર ઉસને અમાત્ય તેતલિપુત્ર કો બુલાયા—બુલાકર ઉસ સે એસા કહા—હે દેવાનુપ્રિય ! કનકરથ રાજા રાજ્ય આદિ મેં ઇતના અવિક મૂર્છિત ગૃદ્ધ—અત્યત અનુરક્ત એવ અધ્યુ પપન્ન બના હુઆ હૈ જો વહ ઉત્પન્ન હુણ ચાલકો કો અગ હીન કર દેતા હૈ—ઉનકે હાથો કી અંગુલિયોં આદિ અઙ્ગોં કો કાટ દેતા હૈ । તો હે દેવા નુપ્રિય ! યદિ મે પુત્ર કો ઉત્પન્ન કરતી હૈ તો દેવાનુપ્રિય તુમ ઉસે રાજા કો સ્વચર ન પડે હસ રૂપ સે રક્ષિત કરતે હુણ ઓર ઉનકી દૃષ્ટિ સે બચાતે હુણ ક્રમશઃ વૃદ્ધિગત કરો । જન વહ ચાલક—ક્રમશઃ સવર્દિત હોતા હુઆ ચાલ્યાવસ્થા સે રહિત હોકર યૌવનાવસ્થા ચાલા બન જાયગા

માણે સગોવેમાણે સવદ્દેહિં । તણ સે દારણ ઉમ્મુક્ક ચાલભાવે જોઘ્વણગમણુ પત્તે તવ ય મમ ય મિલ્લામાયણ ભવિસ્સહ તણ સે તેયલિપુત્તે પડમાવડણ ણ્યમદ્ધ પડિસુણેટ પડિસુણિત્તા પડિગણ )

હવે મને પુત્ર ઉત્પન્ન થવાનો જ છે, તો મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે કનકરથ રાજાને ખબર પડે નહિ તે રીતે બાળકની રક્ષા કરે તેમની કુદૃષ્ટિથી તેને બચાવું આ પ્રમાણે તેણે મનમાં વિચાર કર્યો વિચાર કરીને તેણે અમાત્ય તેતલિપુત્રને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! રાજા કનકરથ રાજ્ય વગેરેના કામમાં આટલો બધો મૂર્છિત, ગૃદ્ધ—ખૂબજ આસક્ત અને અધ્યુપપન્ન થઈ પડ્યો છે કે તે જન્મેલા બાળકોના અગો કપાવી નાખે છે તેમના હાથોની આગળીઓ વગેરે અગોને કપાવી નાખે છે જો હે દેવા નુપ્રિય ! હું પુત્રને જન્મ આપું તો દેવાનુપ્રિય તમે રાજાને ખબર પડે નહીં તેમ તેમની કુદૃષ્ટિથી બાળકની રક્ષા કરતા તેનું ભરણુ—પોષણુ કરજો, જો તે

વિચારો યાવત્ મનોગત સમ્પત્તિઃ, 'સમુપ્પજિન્તયા' મમુપ્પત્તિ । સમ્પત્તિપ્રકાર  
માદ- 'એવ સ્વલુ' इत्यादि-एव स्वलु कनकरथो राजा राज्ये च यावत् व्यङ्गयति ।  
यावत् अङ्गानि अङ्गानि व्यङ्गयति अनेन प्रकारेण कृत्स्नतमारेण मारयति । तद्यदि  
स्वलु अहं दारक 'पयायामि' प्रजनयामि, सेयं स्वलु मम तं दारगं कणगरहस्स  
रहस्सियं चेव सारक्खेमाणीए सगोवेमाणीए विहरित्तए 'येय. स्वलु मम तं दारक  
कनकरथस्य 'रहस्सियं चेव' रहस्सियकमेव=गुप्तमेव आपदं सरन्त्या 'सारक्ख  
माणीए' सरक्षन्त्या. भूपट्टपादे, 'सगोवेमाणीए' सगोपायन्त्या भूपकृतोप-  
द्रवात् विहर्तुम्, 'त्तिङ्गु' इति कृत्वा=इति मनसि कृत्वा एव संपेक्षते=एव  
विचारयति संपेक्ष्य=विचार्य तेतलिपुत्रममात्यं प्रयानं शब्दयति, शब्दयित्वा  
एवमवदत्-एव स्वलु देवानुप्पिय ! कनकरथो राजा 'रज्जेयं जाव विंयगेइ'  
राज्ये च यावद् व्यङ्गयति=राज्यादिषु च मूर्च्छितो जातान् पुत्रान् विकृताङ्गान्  
करोति एव तेषामङ्गोपाङ्गानि खण्डयति । अनया रीत्या पुत्रान्मारयति, तद्यदि स्वलु  
अहं देवानुप्पिय ! दारक प्रजनयामि । तत स्वलु ह्य कनकरथस्य रहस्सियकमेव

हुआ-(एव स्वलु कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते विंयगेइ, जाव अङ्ग  
मगाइ विंयगेइ) यह कनकरथ राजा राज्य आदिमें मूर्च्छित गृह्य, अत्य-  
न्त अनुरक्त एव अभ्युपपन्न अत्यन्त तत्पर चनकर पुत्रों को काट देता  
हैं-बुरी तरह से उन्हें मार डालता है (त जइ अहं दारय पायायामि,  
सेय स्वलु मम तं दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव सारक्खेमाणीए  
सगोवेमाणीए विहरित्तए त्ति कट्ठु एव सपेहेइ, सपेहित्ता, तेयलिपुत्त  
अमच्च सदावेइ, सदाचित्ता एव वयासी-एव स्वलु देवाणुप्पिया ! कण  
गरहे राया रज्जे य जाव विंयगेइ त जइण अहं देवाणुप्पिया ! दारगं प-  
यायामि, तएण तुम देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुब्बे

(एव स्वलु कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते विंयगेइ, जाव अङ्ग मगाइ विंयगेइ)

કનકરથ રાજા રાજ્ય વગેરેની બાબતમાં મૂર્છિત ગૃહ્ય, ખૂબજ આસક્ત અને  
અધ્યુપપન્ન-અત્યન્ત તત્પર થઈને-પુત્રોને અગહીન કરાવી નાખે છે યાવત્ તેમના  
અંગોને કપાવી ન ખાવે છે અને ખરાબ હાલતમાં તેઓને મરાવી ન ખાવે છે

(ત જઈ અહ દારય પાયાયામિ, સેય સ્વલુ મમ તં દારગ કણગરહસ્મ રહ-  
સ્સિય ચેવ સારક્ખેમાણીએ સગોવેમાણીએ વિહરિત્તએ ત્તિઙ્ગુ એવ સપેહેઈ, સપેહિત્તા  
તેયલિપુત્ત અમચ્ચ સદાવેઈ, સદાચિત્તા એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા !  
કણગરહે, રાયા રજ્જે ય જાવ વિંયગેઈ ત જઈણ અહ દેવાણુપ્પિયા ! દારગ પયા  
યામિ, તણ તુમ દેવાણુપ્પિયા ! કણગરહસ્મ રહસ્સિય ચેવ અણુપુબ્બેણ સારક્ખે-

‘અણુપુત્રેણ’ આનુપૂર્વ્યેણ=યવાક્રમમ્ સરક્ષન્ શૂરદૃષ્ટ્યાદિતઃ સગોપાયન્ શૂપકૃતો પદ્મવાત્ ત દારક ‘સવદ્દેઃ’ સવર્દ્ધય, તમ્ય ગાલસ્ય દૃદ્ધિમુપનય । તતઃ સ્વલુ સ દારક ‘ઉમ્મુક્કગાલભાવે’ ઉન્મુક્તગાલભાવ=ઉન્મુક્ત પરિત્યક્તો ગાલભાવો ગાલત્વ યેન સ’, ‘જોઘ્વણગમણુપ્પત્તે’ યૌવનક્રમનુપ્રાપ્ત=પ્રાપ્તતારુણ્ય. તવ મમ ચ

ળ સારક્ષેમાણે સગોવેમાણે સવદ્દેહિં । તણ્ણ સે દારણ ઉમ્મુક્કગાલ ભાવે જોઘ્વણગમણુપ્પત્તે તવ ય મમ ય મિત્ત્વામાયણ મિત્તિસ્સહ તણ્ણ સે તેયલિપુત્તે પડમાવટ્ટણ્ણમદ્ધ પડિસુણેઠ્ઠ, પડિસુણિત્તા પડિગણ ) તો યદિ મેરે યહાં પુત્ર ઉત્પન્ન હોતા હૈ—મેં પુત્ર કો ઉત્પન્ન કરતી હૂં— તો મુઝે યહી યોગ્ય હૈ કિ મે રાજા કનકરચ કો સ્વર ન પડે હસ રૂપ સે ઉસકી રક્ષા કરૂં—ઉનકી દૃષ્ટિ સે —ઉસે ચચાકર રહૂં—એસા ઉસને મન સે વિચાર ક્રિયા । વિચાર કર ફિર ઉસને અમાત્ય તેતલિપુત્ર કો ઘુલાયા—બુલાકર ઉસ સે ણેસા કહા—હે દેવાનુપ્રિય ! કનકરચ રાજા રાજ્ય આદિ મેં હતના અવિક સૃષ્ટિત ગૃહ્—અત્યત અનુરક્ત એવ અધ્યુ પપન્ન વના હુઆ હૈ જો વહ ઉત્પન્ન હુણ વાલકો કો અગ હીન કર દેતા હૈ—ઉનકે હાથો કી અંગુલિયોં આદિ અઙ્ગોં કો કાઢ દેતા હૈ । તો હે દેવા નુપ્રિય ! યદિ મેં પુત્ર કો ઉત્પન્ન કરતી હૂં તો દેવાનુપ્રિય તુમ ઉસે રાજા કો સ્વર ન પડે હસ રૂપ સે રક્ષિત કરતે હુણ ઓર ઉનકી દૃષ્ટિ સે ચચાતે હુણ ક્રમશઃ વૃદ્ધિગત કરો । જવ વહ વાલક—ક્રમશઃ સવર્દ્ધિત હોતા હુઆ વાલ્યાવસ્થા સે રહિત હોકર યૌવનાવસ્થા વાલા વન જાયગા

માણે સગોવેમાણે સવદ્દેહિં । તણ્ણ સે દારણ ઉમ્મુક્કગાલભાવે જોઘ્વણગમણુ પત્તે તવ ય મમ ય મિત્ત્વામાયણ મિત્તિસ્સહ તણ્ણ સે તેયલિપુત્તે પડમાવટ્ટણ્ણમદ્ધ પડિસુણેઠ્ઠ પડિસુણિત્તા પડિગણ )

હવે મને પુત્ર ઉત્પન્ન થવાનો જ છે, તો મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે કનકરચ રાજાને ખબર પડે નહિ તે રીતે ખાળકની રક્ષા કર તેમની કુદૃષ્ટિથી તેને બચાવુ આ પ્રમાણે તેણે મનમાં વિચાર કર્યો વિચાર કરીને તેણે અમાત્ય તેતલિપુત્રને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! રાજા કનકરચ રાજ્ય વગેરેના ડામમાં આટલો બધો મૂર્ચ્છિત, ગૃહ—ખૂબજ આસક્ત અને અધ્યુપપન્ન થઈ પડ્યો છે કે તે જન્મેલા ખાળકોના અગો કપાવી નાખે છે તેમના હાથોની આગળીઓ વગેરે અગોને કપાવી નાખે છે જો હે દેવા નુપ્રિય ! હું પુત્રને જન્મ આપુ તો દેવાનુપ્રિય તમે રાજાને ખબર પડે નહીં તેમ તેમની કુદૃષ્ટિથી ખાળકની રક્ષા કરતા તેનું ભરણુ—પોષણુ કરજો, જો તે



‘મિલ્લાભાવણ’ મિલ્લાભાવનમ્=મિલ્લાયા આગરભૂતો મળિયતિ । તતઃ સ્વલુ  
સ તેતલિપુત્ર પદ્માવત્યાઃ પદ્મર્થે પ્રતિશ્રુણોતિ=સ્વીકરોતિ, પ્રતિશ્રુત્ય=સ્વીકૃત્ય  
પદ્માવત્યા સમીગત્ પ્રતિગત સ્વગૃહે ગતવાન્ ॥૪૦૪॥

મૂલમ્—તદ્દેવ પદમાવર્ણ્ય ય દેવી પોટિલા ય અમચ્ચી સય-  
મેવ ગઘ્ભં ગિણહ્, સયમેવ પરિવહહ । તદ્દેવ સા પદમાવર્ણ્ય  
નવણ્હ માસાણં જાવ પિયદસણં સુરુવ દારગ પયાયા, જ રયણિ  
ચ ણં પદમાવર્ણ્ય દારય પયાયા તં રયણિ ચ ણ પોટિલા ત્રિ  
અમચ્ચી નવણ્હ માસાણં ત્રિણિહાયમાવણ્હ દારિય પયાયા ।  
તદ્દેવ સા પદમાવર્ણ્ય દેવી અમ્મધાઈ સદાવેહ સદાવિત્તા એવ  
વયાસી—ગચ્છહ ણં તુમે અમ્મો । તેતલિગિહે તેતલિપુત્તં અમચ્ચ  
રહસિસયં ચેવ સદાવેહ । તદ્દેવ સા અમ્મધાઈ તહત્તિ પાડિસુણેહ,  
પાડિસુણિત્તા અંતેરસસ અવહારેણ ણિગ્ગચ્છહ, ણિગ્ગચ્છિત્તા,  
જેણેવ તેતલિસસ ગિહે જેણેવ તેતલિપુત્તે તેણેવ ઉવાગચ્છહ,  
ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ જાવ એવ વયાસી—એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ।  
પદમાવર્ણ્ય દેવી સદાવેહ । તદ્દેવ તેતલિપુત્તં અમ્મધાઈ એ અતિણ  
એમદ્ધ સોચ્ચા હટ્ટુતુટ્ટે અમ્મધાઈ એ સદ્ધિ સાઓ ગિહાઓ  
ણિગ્ગચ્છહ, ણિગ્ગચ્છિત્તા અંતેરસસ અવહારેણ રહસિસયં ચેવ  
અણુપ્પવિસહ, અણુપ્પવિસિત્તા જેણેવ પદમાવર્ણ્ય દેવી તેણેવ

તો હમારે તુમ્હારે દોનોં કે લિયે મિલ્લા પાત્ર—મિલ્લા કા આધાર ભૂત-  
બન જાયગા હમ—પ્રકાર પદ્માવતી કે હસ કયન રૂપ અર્થ કો ઉસ તેત  
લિપુત્ર અમાત્યને સ્વીકાર કર લિયા । ઓર સ્વીકાર કરકે ફિર વહ  
પદ્માવતી દેવી કે પાસ સે અપને ઘર પર ચલા આયા ॥ સૂ ૪ ॥

બાળક આખરે મોટો થઈ જશે અને બચપણ વટાવીને બુધાન થઈ જશે તો  
મારા અને તમારા બંનેને માટે લિક્ષાપાત્ર લિક્ષાનો આધારભૂત થઈ જશે  
આ રીતે પદ્માવતીના આ કથન રૂપ અર્થને તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે સ્વીકાર  
કરીને તે પદ્માવતી દેવીની પાસેથી વિદાય લઈને પોતાને ઘેર આવી ગયો । સૂ ૪

उवागए करयलपरिगहियं दसणह सिरसावत्तं मत्थए अंजलि  
 कट्टु एवं वयासी-सदिसत्तु णं देवाणुप्पिया । ज मए कायव्वं ?  
 तएणं पउमावडं तेतलिपुत्त एवं वयासी-एवं खलु कणगरहे  
 राया जाव वियगेइ, अहं च णं देवाणुप्पिया । दारग पयाया  
 त तुम णं देवाणुप्पिया । एयं दारग गेणहाहि जाव तव मम  
 य भिक्खाभायणे भविस्सइ त्ति कट्टु तेतलिपुत्तं दलयइ । तएणं  
 तेतलिपुत्ते पउमावडंए हत्थाओ दारग गेणहइ गिणहत्ता उत्त-  
 रिज्जेणं पिहेइ, पिहित्ता अतेउरस्स रहस्सियं अव्हारेणं णिग्गच्छइ,  
 णिग्गच्छित्ता, जेणेव सये गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया, तेणेव  
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिल एव वयासी-एवं खलु देवा-  
 णुप्पिया । कणगरहे राया रज्जे य जाव वियगेइ, अय च णं दारए  
 कणगरहस्सपुत्ते पउमावडंए अत्तए, त ण तुम देवाणुप्पिया ।  
 इम दारग कणगरहस्स रहस्सिय चेव अणुपुव्वेणं सारक्खाहि  
 य सगोवाहि य सव्वेहि य । तएणं एस दारए उमुक्कवालभावे  
 तव य मम य पउमावडंए य आहारे भविस्सइ त्ति कट्टु पोट्टि-  
 लाएपासे णिक्खिवइ, णिक्खिवित्ता, पोट्टिलाओ पासाओ विनि-  
 हायमावन्निय दारिय गेणहइ, गेणहत्ता उत्तरिज्जेण पिहेइ, पिहित्ता  
 अतेउरस्स अव्हारेण अणुप्पविसइ अणुप्पविसित्ता जेणेव पउ-  
 मावडं देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमावडंए देवीए  
 पासे ठावेइ, ठावित्ता जाव पडिणिग्गए । तएण तीमे पउमा-  
 वडंए अगपरियारियाओ पउमावडं देवि विणिहायमावन्न च

‘ભિક્ષાભાગ’ ભિક્ષાભાગનમ્=ભિક્ષાયા આશરભૂતો ગણિયતિ । તતઃ સ્વલુપ્તસ તેતલિપુત્ર પદ્માવત્યા પદ્મર્થ પ્રતિશ્રુત્યોતિ=સ્વીકરોતિ, પ્રતિશ્રુત્ય=સ્વીકૃત્ય પદ્માવત્યા સમીપાત્ પ્રતિગત સ્વગૃહે ગતવાન્ ॥૫૦૮॥

મૂલમ્—તણ્ણં પડમાવર્ઘ્ઘં ય દેવી પોટ્ટિલા ય અમચ્ચી સયમેવ ગંઘંભં ગિણ્ણહરૂ, સયમેવ પરિવહરૂ । તણ્ણ સા પડમાવર્ઘ્ઘં નવણ્ણ માસાણં જાવ પિયદસણં સુરુત્તં દારગ પયાયા, જ રયણિં ચ ણં પડમાવર્ઘ્ઘં દારય પયાયા ત રયણિં ચ ણ પોટ્ટિલા વિ અમચ્ચી નવણ્ણ માસાણ વિણિહાયમાવત્ત દારિય પયાયા । તણ્ણં સા પડમાવર્ઘ્ઘં દેવી અમ્મધાઈં સદાવેદ્ સદાવિત્તા એવ વયાસી—ગચ્છહ ણ તુમે અમ્મો । તેતલિગિહે તેતલિપુત્ત અમચ્ચ રહસિસયં ચેવ સદાવેહ । તણ્ણ સા અમ્મધાઈં તહત્તિ પાડિસુણેદ્, પાડિસુણિત્તા અતેરસસ અવહારેણ ણિગ્ગચ્છહ, ણિગ્ગચ્છિત્તા, જેણેવ તેતલિસસ ગિહે જેણેવ તેતલિપુત્તે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ જાવ એવ વયાસી—એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા । પડમાવર્ઘ્ઘં દેવી સદાવેદ્ । તણ્ણ તેતલિપુત્ત અમ્મધાઈં એ અંતિયે એમહ સોચ્ચા હટ્ટુતુટ્ટે અમ્મધાઈં એ સદ્ધિ સાઓ ગિહાઓ ણિગ્ગચ્છહ, ણિગ્ગચ્છિત્તા અતેરસસ અવહારેણ રહસિસયં ચેવ અણુપ્પવિસદ્, અણુપ્પવિસિત્તા જેણેવ પડમાવર્ઘ્ઘં દેવી તેણેવ

તો હમારે તુમ્હારે દોનોં કે લિયે ભિક્ષા પાત્ર—ભિક્ષા કા આધાર ભૂત—બન જાયગા હમ—પ્રકાર પદ્માવતી કે હસ કથન રૂપ અર્થ કો હસ તેતલિપુત્ર અમાત્યને સ્વીકાર કર લિયા । ઓર સ્વીકાર કરકે ફિર વહ પદ્માવતી દેવી કે પાસ સે અપને ઘર પર ચલા આયા ॥ સૂ. ૪ ॥

બાળક આખરે મોટો થઈ જશે અને બચપણુ વટાવીને જુવાન થઈ જશે તો મારા અને તમારા બંનેને માટે ભિક્ષાપાત્ર ભિક્ષાનો આધારભૂત થઈ જશે આ રીતે પદ્માવતીના આ કથન રૂપ અર્થને તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે સ્વીકાર કરીને તે પદ્માવતી દેવીની પાસેથી વિદાય લઈને પોતાને ઘર આવી ગયો સૂ. ૪

उवागए करयलपरिगहियं दसणह सिरसावत्त मत्थए अंजलि  
 कट्टु एव वयासी-सदिसत्तु णं देवाणुप्पिया । ज मए कायव्वं ?  
 तएणं पउमावई तेतलिपुत्त एवं वयासी-एव खलु कणगरहे  
 राया जाव वियगेइ, अहं च ण देवाणुप्पिया । दारग पयाया  
 त तुम णं देवाणुप्पिया । एय दारग गेणहाहि जाव तव मम  
 य भिक्खाभायणे भविस्सइ त्ति कट्टु तेतलिपुत्तं दलयइ । तएणं  
 तेतलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारग गेणहइ गिणहत्ता उत्त-  
 रिज्जेणं पिहेइ, पिहित्ता अतेउरस्स रहस्सिय अवदारेणं गिग्गच्छइ,  
 गिग्गच्छित्ता, जेणेव सये गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया, तेणेव  
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिल एव वयासी-एवं खलु देवा-  
 णुप्पिया । कणगरहे राया रज्जे य जाव वियगेइ, अय च णं दारए  
 कणगरहस्सपुत्ते पउमावईए अत्तए, त ण तुम देवाणुप्पिया ।  
 इम दारग कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेण सारक्खाहि  
 य सगोवाहि य सबड्ढेहि य । तएणं एस दारए उमुक्कवालभावे  
 तव य मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइ त्ति कट्टु पोट्टि-  
 लाएपासे णिक्खिवइ, णिक्खिवित्ता, पोट्टिलाओ पासाओ विनि-  
 हायमावन्निय दारिय गेणहइ, गेणहित्ता उत्तरिज्जेण पिहेइ, ~~पिहित्ता~~  
 अतेउरस्स अवदारेण अणुप्पविसइ अणुप्पविमिन्ना ~~अप्रे ४ ५८~~



दारिद्र्य पासति, पासित्ता जेणेव कणगरह राया तेणेव उवाग  
 च्छति उवागच्छित्ता करयलपरिगहिय दमनह सिग्सावत्तं म-  
 त्थेए अजलि कट्टु एव वयासी एव सल्लु सामी । पउमावई  
 देवी मइल्लियं दारियं पयाया । तण्णं कणगरहे राया तीसे  
 मइल्लियाए दारियाए नीहरण करेइ, वट्टणि लोइयाइं मयकि-  
 च्चाइ करेइ करित्ता कालेण विगयसोए जाए । तएण से तेत-  
 लिपुत्ते कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता, एव वयासी-खिप्पा-  
 मेव चारगसोहण जाव ठिडवडिय, जम्हाण अम्ह एस दारए  
 कणगरहस्स रजे जाए, त होउ ण दारए, नामेण कणगज्झए  
 जाव भोगसमत्थे जाए ॥ सू० ५ ॥

टीका—‘तएण’ इत्यादि । तत खलु पद्मावती च देवी पोटिला च अमात्यौ  
 सममेव गर्भं गृह्णाति, सममेव गर्भं परिवहति=धारयति । तत खलु सा पद्मावती  
 ‘नवण्ह मासाण जाव’ नवाना मासाना नवसु मासेसु व्यतीतेषु यावत् सत्सु  
 ‘पियदसण’ पियदर्शनम्=पिय चेतोहर दर्शनमवलोकन यस्य त = दर्शकजन-  
 चेतोहादनक स्वरूप दारक ‘पयाया’ प्रजाता=प्रजनितवती । यस्या रजन्या च

‘तएण पउमावई य देवी’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (पउमावई य देवी पोटिलाय अमच्चौ  
 सयमेव गर्भं गिण्हइ) पद्मावती देवी और पोटिला अमात्यी ने साथ ही  
 गर्भ धारण किया । (तएण सा पउमावई नवण्ह मासाण जाव पियद  
 सण सुरूव दारग पयाया) पद्मावती देवी ने जब नौ मास अच्छी तरह  
 गर्भ के समाप्त हो चुके तब दर्शकजन चित्ताह्लाद जनक अच्छे रूप  
 शाली पुत्र को जन्म दिया । (ज रयणि च ण पउमावई दारय पयाया

‘तएण पउमावई य देवी’ इत्यादि—

टीकार्थ—तएण) त्धारयत्री (पउमावई य देवी पोटिला य अमच्चौ सयमेव गर्भं  
 गिण्हइ) पद्मावती देवी अने पोटिला अमात्यीजे साथे साथे न गर्भधारणु कर्थे  
 (तएण सा पउमावई नवण्ह मासाण जाव पियदसण सुरूव दारग पयाया)  
 त्थारे नव मास सारी रीते पसार थर्ध गया त्थारे पद्मावती देवीजे  
 जेनाराओ जेधने प्रसन्न थर्ध जय जेवा इपाणा पुत्रने जन्म आये।



खलु पद्मावती दारक प्रजाता तस्या रजन्या च खलु पोष्टिकापि अमात्यी ' नवण्ड-  
मासाण ' नवाना मासानाम्=नरसु मासेषु व्यतीतेषु ' विणिहायमावन्न ' विनि-  
घातमापन्नाम्=मृताम् दारिका प्रजाता=जनितवती । ' तएण ' तन खलु पुत्रजन्मा  
नन्तर सा पद्मावती देवी अम्मधार्त्री शब्दयति, शब्दयित्वा एवममदत्-गच्छत  
खलु यूयमम्भ ! ' तेतलिगिहे ' तेतलिगृहे=तेतलेरमात्यस्य गृहे तेतलिपुत्रसमात्य  
रहस्यिकम्=अन्यैरपरिज्ञातमेव शब्दयत=आह्वयत । तनः खलु सा अम्मधार्त्री तयेति  
प्रतिश्रुति,=अङ्गीकरोति, प्रश्रुत्य अन्त पुरस्य ' अवदारेण ' अपद्वारेण=पृष्ठ-  
द्वारेण निर्गच्छति, निर्गत्य, यत्रैव तेतलेर्गृहम्, यत्रैव तेतलिपुत्रस्तत्रैव उपा  
गच्छति, उपागत्य करतल यावद् अञ्जलिपुट कृत्वा एवमवादीत्-एवं खलु हे

त रयणि च ण पोष्टिलावि अमची नवण्ड मासाण विणिहायमावन्नं  
दारिय पयाया ) जिस रात्रि में पद्मावती देवी ने पुत्र को जन्म दिया था  
उसी रात्रि में पोष्टिला अमात्यी ने भी नौ मास व्यतीत हो जाने पर  
एक मरी हुई कन्या को जन्म दिया (तएण सा पडमावई अम्मवाय  
सदावेह, सदावित्ता एव वयासी गच्छह ण तुमे अम्मो ! तेतलिगिहे  
तेतलीपुत्त अमच्च रहसिय चेव सदावेह ) हम के बाद उस पद्मावती  
ने अम्मधार्त्री को बुलवाया और बुलवाकर उससे ऐसा कहा है अम्म !  
तुम तेतलि अमात्य के घर पर जाओ । और किसी को पता न पड़े  
इस रूप से तुम तेतलि पुत्र अमात्य को बुला लाओ । (तएण सा अ  
म्मवाई तहत्ति पडिसुणेह पडिसुणित्ता अतेउरस्स अवदारेण णिग्ग-  
च्छह णिग्गच्छित्ता जेणेव तेतलिस्सगिहे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवा  
गच्छह, उवागच्छित्ता करयल जाव एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया

(ज रयणि च ण पडमावई दारिय पयाया त रयणि च ण पोष्टिला वि अमची  
नवण्ड मासाण विणिहायमावन्न दारिय पयाया )

ने रात्रिमे पद्मावती देवीमे पुत्रने जन्म आप्थे । ते न रात्रिमे पोष्टिला  
अमात्यीमे पणु नन मास पूरा यवाथी ओउ भरेली कन्याने जन्म आप्थे ।

( तएण सा पडमावई अम्मवाय सदावेह, सदावित्ता एवं वयासी गच्छह ण  
तुमे अम्मो ! तेतलिगिहे तेतलिपुत्त अमच्च रहसिय चेव सदावेह )

त्याग्यधी ते पद्मावतीमे अजधार्त्रीने जोलावी अने जोलावाने तेने  
आ प्रभाणे इधु डे डे अम्म ! तमे तेतलि अमात्यने घर-जाने अने डोलेने  
जयर पडे नडि तेम तेतलिपुत्र अमात्यने तमे अहाँ जोलावी लावे ।

( तएण सा अम्मवाई तहत्ति पडिसुणेह, पडिसुणित्ता अतेउरस्स अवदारेण  
णिग्गच्छह णिग्गच्छित्ता जेणेव तेतलिस्स गिहे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवा-

देवानुप्रिय ! पद्मावती देवी भगन्त गच्छयति । ततः गच्छु तेतलिपुत्रः ' अवधार्ष  
अतिष् ' अम्भधात्र्या भन्तिरे=अम्भधात्र्याः सकाशात् पतमर्थं श्रुत्वा दृष्टुष्टोऽम्भ  
धात्र्या साद्वं स्वकाद् गृहाद् निर्गच्छति, निर्गत्य अन्तपुरस्य अपद्वारेण रहस्यिक-  
मेव=प्रच्छन्नमेव अनुमतिशति, अनुमतिशय, यत्रैव पद्मावती देवी तत्रैव ' उवागए'  
उवागतः=समाप्तः करयलपरिगृहीत दशनख शिरसावर्त मन्त्रकेऽञ्जलि कृत्वा एवं=  
वक्ष्यमाणप्रकारेण अयदत्- ' सदिसतु ' सदिसतु=आज्ञापयतु सतु हे देवानुप्रिये !

पद्मावती देवी सदावेह । तएण तेतलिपुत्ते अम्भधार्षण अंतिष् एयमह  
सोच्चा दृष्टुष्टे अम्भधार्षण मद्धि साओ गिहाओ णिगच्छइ ) पद्मा  
वती देवी के इस प्रकार वचन सुनकर उस अम्भधात्री ने तथेति  
' कह कर उसकी आज्ञा को स्वीकार कर लिया । स्वीकार कर के फिर  
वह अतः पुर के अपठार से-पीछे के दरवाजे से बाहिर निकली-निकल  
कर जहाँ तेतलि का घर और उसमें भी जहा तेतलिपुत्र था वहा गई।  
वहा जाकर पहिले उसने तेतलिपुत्र अमात्य को दोनों हाथ जोड़ कर  
नमस्कार किया-बाद में बोली-हे देवानुप्रिय ! आपको पद्मावती देवी  
बुला रही हैं । अम्भधात्री के मुख से इस प्रकार वचन सुन कर व  
तेतलि पुत्र हर्षित एव तुष्ट होता हुआ अम्भधात्री के साथ ही अपने  
घर से निकला । ( णिगच्छित्ता अतेउरस्स अवदारेण रहस्सिय चेव  
अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पद्मावती देवी तेणेव उवागए  
करयलपरिगृहीत दसनह शिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु एव वया  
गच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! पद्मावती  
देवी सदावेह । तएण तेतलिपुत्ते अम्भधार्षण अतिष् एयमह सोच्चा दृष्टुष्टे अम्भ  
धार्षण मद्धि साओ गिहाओ णिगच्छइ )

आ रीते पद्मावती देवीनी बात साबणीने अम्भधात्रीणे ' तथेति ' (सा३)  
आम कहीने तेमनी आज्ञा स्वीकारी लीधी स्वीकारीने ते रणुवासना पाछला  
आरखेथी अठार नीउणी अने नीकणीने ज्या तेतलिपुत्रनु घर अने तेमा पछ  
ज्या तेतलिपुत्र अमात्य छता त्या पडेथी त्या पडेथीने तेले सौ पडेलां  
अने हाथ जोडीने तेतलिपुत्रने नमस्कार कर्था अने तयारपछी तेले कछु के छे  
हेवानुप्रिय ! तमने पद्मावती देवी बोलावे छे अम्भधात्रीना मुण्ठथी आ जतनी  
बात साबणीने तेतलिपुत्र हर्षित तेमज सतुष्ट थतो अम्भधात्रीनी साथे  
साथे ज ते पोताना घेरथी रणुवास तरइ रवाना थये।

( णिगच्छित्ता अतेउरस्स अवदारेण रहस्सिय चेव अणुप्पविसइ अणुप्प  
विसित्ता जेणेव पद्मावती देवी तेणेव उवागए, , , , , -दमणह सिर-

‘ज मए कायव्व’ यन्मया कर्तव्यम्, ततः खलु पद्मावती देवी तैतलिपुत्रमेवमव-  
दत् ‘एव खलु कणगरहे राया वियगेइ’ एव खलु कनकरथो राजा व्यङ्ग्यार्थ=  
हे देवाणुप्रिय ! मया पूर्वमेवकथित-यत्कनकरथ उत्पन्नान्पुत्रान् विकृताऽङ्गान्  
कृत्वा मारयति । अह च खलु देवानुप्रिय । दारक प्रजाता=प्रजनितवती, ‘त’  
तस्मात् कारणात् त्व खलु देवानुप्रिय । एत दारक गृहाण यावत् तत्र च मम च

सी संदिसतु णं देवाणुप्पिया ! जंमए कायव्व ? तएणं पउमावई तैतलि  
पुत्तं एव वयासी-एवं खलु कणगरहे राया जाव वियगेइ, अह च णं  
देवाणुप्पिया दारग पयाया त तुम णं देवाणुप्पिया ! एय दारग गेणहाहि)  
चलकर वह अतः पुर के पृष्ठ भाग के द्वार से किसी को आने का पता  
न लगे इस रूप से वहा प्रविष्ट हुआ । प्रविष्ट होकर जहाँ पद्मावती देवी  
थी वहाँ गया । वहा जाकर उसने दोनों हाथ जिसमें जुड़े हुए हैं और  
दशौंनख जिसमें हैं ऐसी अजलिको दक्षिण तरफ से घुमाकर बाये  
तरफ लेजाकर और मस्तकपर अजलि को रखकर कहा-अर्थात् नम-  
स्कार कर पूजा हे देवानुप्रिये ! जो मुझे करने योग्य कार्य है उस के  
करने की आप आज्ञा दीजिये । इस के बाद पद्मावती देवी ने तैतलिपुत्र  
से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! मैंने तुमसे पहिले ही कह रक्खा है  
कि कनकरथ उत्पन्न हुए पुत्रों को विकृत अंग बनाकर मार डालता है ।  
और मैंने हे देवानुप्रिय ! पुत्र को उत्पन्न किया है । इसलिये तुम हे देवा-

सावत्त मत्थए अजलिं वड्डु एव वयासी-स दिसतु ण देवाणुप्पिया ! जंमए कर-  
णिज्ज तएण परमाणीइ देवी वयासी-एव खलु कणगरहे राया जाव वियगेइ अह  
च ण देवानुप्रिया ! दारग पयाया त तुम ण देवाणुप्पिया ! एव दारग गेणहाहि )

त्या પહોચીને રણવાસના પાછલા બારણેથી કોઇને ખબર પડે નહિ તેમ  
રણવાસના પ્રવિષ્ટ થઈ ગયો । પ્રવિષ્ટ થઈને તે જ્યાં પદ્માવતી દેવી હતી ત્યાં  
પહોચ્યો । ત્યાં પહોચીને તેણે દશે નખો જેમા છે એવા બંને હાથ જોડીને  
અજલિ બનાવીને તેને જમણી બાજુથી ફેરવીને ડાબી બાજુ તરફ લઈ જઈને  
મસ્તક ઉપર અજલિ મૂકીને આ પ્રમાણે કહ્યું-એટલે નમસ્કાર કરીને પૂછ્યું  
કે-હે દેવાનુપ્રિયે ! મારે લાયક જે કંઈ પણ કામ હોય તે મને કહો ત્યાર  
પછી પદ્માવતી દેવીએ તૈતલિપુત્રને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય !  
તમને મેં પહેલેથી કહી રાખ્યું છે કે રાજા કનકરથ ઉત્પન્ન થયેલા પુત્રોને  
અગહીન કરી નાખે છે અને હે દેવાનુપ્રિય ! મારે પુત્ર થયો છે હે દેવા-  
નુપ્રિય ! એ બાળકને તમે લઈ જાઓ.



મિશ્તાભાજનમિવ મિશ્તાભાજન, યથા મિશ્તાભાજનં જીવન નિર્વાહયતિ તથાઽયમપિ જીવનંનિર્વાહકો ભવિષ્યતિ 'ત્તિકટ્ટુ' इति कृत्वाः इत्युक्त्वा 'तेतलिपुत्त' तेतलिपुत्राय પ્રાકૃતંત્વાદત્ર દ્વિતીયા દદાતિ=તેતલિપુત્રમ્ય હસ્તે દારકમર્પયતિ । તત્. સ્વહ તેતલિપુત્રઃ પદ્માવત્યા હસ્તાભ્યાં દારક ગૃહ્ણતિ, ગૃહ્ણત્યા ઉત્તરીયેણ=ઉત્તરીયવસ્ત્રેણ સં 'પિહેહ' પિદધાતિ=આન્નદાયતિ. 'પિહિત્તા' પિધાય અન્તઃ-પુરસ્ય 'રહસ્સિય' રહસ્સિય=પ્રચ્છન્ન યથા સ્પાત્તથા અવહારેણ નિર્ગચ્છતિ, નિર્ગત્ય યત્રીવ સ્વક પુર યત્રીવ પોટિલા ભાર્યા તત્રીવ ઉપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય પોટિલામેવમવાદીત્-एव सख हे देवानुमिये ! कनकरयो राजा राज्ये च यावद् व्यद्वयति स्वपुत्रान् मारयति अय च खलु मम हस्तस्थितो दारक कनकरयस्य पुत्रः पद्मावत्या आत्मजो मया उन्नानीतः, 'त' तस्मात् कारणात् खलु हे देवानुमिये ! इमे दारक 'कणगरहस्स

નુમિય' ! इमं बालक को लेलो (जाव तव मम य भिक्षाभायणे भविस्सइत्तिकट्टु तेतलिपुत्त दलयह) 'यावत् यह हमारे तुम्हारे लिये भिक्षा का भाजन हो जायगा जिस प्रकार भिक्षा भाजन जीवन निर्वाहक होता है-उसी तरह यह भी जीवन निर्वाहक होवेगा इस प्रकार कहकर उसने तेतलिपुत्र के हाथमें आपने पुत्र को दे दिया । (तएण तेतलिपुत्ते पउमारईण हत्थाओ दारग गेण्हइ) तेतलिपुत्र ने भी पद्मावती देवीके हाथसे बालक को ले लिया । (गिण्हित्ता उत्तरिज्जेण पिहेह, पिहित्ता अ ते उरस्सरहस्सिय अवहारेण णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव पोटिला भारिया-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता-पोटिल एव वयासी एव खलु देवानुमिये ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियगेइ, अय

(जाव तव मम य भिक्षाभायणे भविस्सइत्तिकट्टु तेतलिपुत्त दलयह)

એ 'મારા અને તમારા માટે 'ભિક્ષાભાજન' થશે એટલે કે જેમ ભિક્ષાનુભાજન જીવનને ટકાવનાર હોય છે તેમજ આ બાળક પણ જીવન નિર્વાહક થશે આ પ્રમાણે કહીને તેણે તેતલિપુત્રના હાથમા પોતાના નવ જાત પુત્રને સોંપી દીધો (તેણે તેતલિપુત્રે પડમારૈણ હેત્થાઓ દારગ ગેણ્હઇ)

તેતલિપુત્રે પણ પદ્માવતી દેવીના હાથમાથી બાળક લઇ લીધું

(ગિણ્હિત્તા ઉત્તરિજ્જેણ પિહેહ પિહિત્તા અતેઉરસ્સ રહસ્સિય અવહારેણ ણિગ્ગચ્છઇ, ણિગ્ગચ્છિત્તા જેણેવ સણ ગિહે જેણેવ પોટિલા ભારિયા-તેણેવ ઉવાગચ્છઇ, ઉવાગચ્છિત્તા, પોટિલ'एव वयासी, एव 'खलु देवानुमिये ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियगेइ, अय च ण 'दारक 'कणगरहस्सपुत्ते'पउमारईण' अस्तए

रहस्मिय चेव ' कनकरथस्य रहस्यिकमेव=कनकरथो यथा न जानीयात्तथैव ' अणु-  
पुव्वेण' आनुपूर्व्येण=अनुक्रमेण तत्कृतोपद्रवतश्च 'सारववाहि य' सरक्ष्य कनकरथनृ-  
पद्विष्टः संगोपाय च तत्कृतोपद्रवतः, तथा सवड्वेहिय ' सवर्ग्य च=स्तन्यपानादि  
नाऽस्य बालस्य वृद्धिमुपनय । ततः खलु एष दारकः उन्मुक्तबालभावः तव च मम  
च पद्मावत्याश्च 'आदारे' आधार=आधारस्वरूपो मविष्यति ' तिकट्टु ' इतिकृत्वा

च ण दारए कणगरहस्स पुत्ते पडमावईण अत्ताए, त णं तुम दारगं  
कणगरहस्स रहस्मियं चेव अणुपुव्वेण सारववाहिं य संगोवाहिं य स-  
वड्वेहिय ) लेकर फिर उसे अपने दुपट्टे से ढक लिया और ढककर  
प्रच्छन्न गुप्तरूप से अतः पुर के पीछे के दरवाजे से बाहर निकल गया ।  
निकल कर जहा अपना घर और पोहिला भार्या थी वहा गया । वहाँ  
जाकर उसने पोहिला भार्या से इस प्रकार कहा-देवानुप्रिये ! कनकरथ  
राजा राज्य आदि में इतना अधिक मूर्च्छित हो रहा है कि वह उत्पन्न  
हुए अपने बालकों को अङ्ग विच्छेद कर मार डालता है । यह जो पुत्र  
मेरे हाथ में है वह कनकरथ राजा का पुत्र है यह पद्मावती देवी की  
कुक्षि से उत्पन्न हुआ है । इसलिये हे देवानुप्रिये ! तुम इस पुत्र को  
कनकरथ को खबर न पड़े इस तरह प्रच्छन्न रूप से क्रमशः रक्षित  
करती रहो-पालती रहो उसकी दृष्टि से बचाती रहो और स्तन्यपान  
आदि से बढ़ाती रहो । (तएणं एस दारए उन्मुक्कवालभावे तव य

त णं तुम देवानुप्पिया ! इमं दारगं कणगरहस्स रहस्मियं चेव अणुपुव्वेण सार-  
ववाहिं य संगोवाहिं य सवड्वेहिय )

लधने तेले जेसभा ढाडी दीधु, अने ढाडीने छुपी रीते रणुवासता पाछला  
भारलेथी भडार मीकणी गये। भडारनीउणीने जया पोतानु घर अने मोहिला  
लार्या छती त्या गये। त्या पडोचीने तेले 'पोहिला लार्याने जेभ कछु डे-डे  
देवानुप्रिये ! राजा कनकरथ राज्य वगेरेनी भावतभा अट्टेला भये। आसक्त थय  
गये। छे के ते जन्म पायेला पोताना भाणजेना अगेने उपावीने भारी नज्जे  
छे भारा डायभा जे भाणक छे ते पणु कनकरथ राजाने ज पुत्र छे पद्मावती  
'देवीना गर्भमाथी आने जन्म थये। छे जेथी छे देवानुप्रिय ! कनकरथ राजाने  
अणु थाय नछि ते प्रभावे तमे छुपी रीते आ पुत्रव रक्षण करता रहे,  
पोषण करता रहे, राजनी कुदृष्टिथी अने हर राभता रहे। अने स्तन्यपान  
अट्टे के दूध वगेरे भीवडावीने अने भाटे। करे।

इत्युत्तमा पोष्टिलायाः पार्श्वे ' निमित्रः ' निमिषति=स्थापयति, तथा पोष्टि  
लायाः पार्श्वे ता ' विनिहायमावण्ण ' विनिहातमावणा=मृतां दारिद्र्यं गृह्णाति,  
गृहीत्वा उत्तरीयेण पिदधाति, पिधाय अन्नः पुरस्य अपद्वारेण अनुममिषति, मनु  
प्रविश्य यत्रैव पद्मावती देवी तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पद्मावत्याः देव्याः  
पार्श्वे स्थापयति, स्थापयित्वा ताम् ' पडिनिग्गण ' प्रतिनिर्गतः प्रतिनिव र्य स्वयम्

મમ ય પડમાવર્દેય ય આહારે ભવિસ્સટ્તિ કદ્દુ પોટિલાણ પાસે નિ  
વિલ્લવદ્, નિવિલ્લવિત્તા પોટિલાઓ પાસાઓ વિનિહાયમાવણ્ણિયં દારિય  
ગેણ્હદ્, ગેણ્હિત્તા ઉત્તરિજ્જેણં પિહેદ્ પિહિત્તા, અંતેઝરસ્સ અવહારેણ  
અણુપ્પવિસદ્ ) હસ તરહ કમસા. ઘૃદ્ધિગત્ત હોના હુઆ યદ્ વાલક જય  
વાલ્યાવસ્થા સે રહિત્ત હો જાવેગા તો હમારા તુમ્હારા ઓર પદ્માવતી દેવી  
કા આધાર હોગા, એસા કહકર ઉસ તેતલિપુત્ર અમાત્ય ને ઉસ પુત્ર કો  
પોટિલા કે પાસ રલ્લ દિયા । ઓર પોટિલા કે પામ સે મરી હુદ્ કન્યા  
કો ઉઠા લિયા-ઉઠાકર ઉસે અપને ઉત્તરિયવસ્સ સે ઢંક લિયા, ઢંક કર  
ફિર અતઃ પુર કે પિઝલે દરવાજે સે વહા આયા (અણુપ્પવિસિત્તા જેણેવ  
પડમાવર્દે દેવી તેણેવ ઉવાગચ્છદ્, ઉવાગચ્છિત્તા પડમાવર્દેય દેવીણ પાસે  
ઠાવેદ્, ઠાવિત્તા જાવ પડિનિગ્ગણ ) વહા આકર જહાં પદ્માવતી દેવી થી  
વહા પહુંચા, વહાં પહુંચ કર ઉસને ઉસ મૃત કન્યા કો પદ્માવતી દેવી કે

( તણ્ણ એસ દારણ ઉમ્મુલ્લકગાલભાવે તવ ય મમ ય પડમાવર્દેય ય આહારે  
ભવિસ્સદ્ ત્તિ કદ્દુ પોટિલાણ, પાસેનિવિલ્લવદ્, નિવિલ્લવિત્તા પોટિલાઓ પાસાઓ  
વિનિહાયમાવણ્ણિય દારિય ગેણ્હદ્, ગેણ્હિત્તા ઉત્તરિજ્જેણં પિહેદ્, પિહિત્તા, અંતેઝરસ્સ  
અવહારેણ અણુપ્પવિસદ્ )

અને આ રીતે અનુક્રમે મોટો થતો આ બાળક જ્યારે બચપણ વટાવીને  
જુવાન થઈ જશે ત્યારે આ મારો, તમારો અને પદ્માવતી દેવીનો આધાર  
થશે આ પ્રમાણે હીને તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે તે બાલકને પોટિલાની પાસે  
મૂકી દીધો અને પોટિલાની પાસેથી મરી ગયેલી બાળકીને ઉપાડી લીધી  
ઉપાડીને તેને પોતાના ખેસથી ઢાકી દીધી અને ત્યારપછી તે રણુવાસના પાછલા  
બારણેથી પદ્માવતી દેવીના મહેલમા ગયો.

( અણુપ્પવિસિત્તા જેણેવ પડમાવર્દે દેવી તેણેવ ઉવાગચ્છદ્, ઉવાગચ્છિત્તા,  
પડમાવર્દેય દેવીણ પાસે ઠાવેદ્, ઠાવિત્તા જાવ પડિનિગ્ગણ )

ત્યા જઈને જ્યા પદ્માવતી દેવી હતી ત્યા ગયો અને ત્યા પહોંચીને તેણે  
તે મરી ગયેલી બાળકીને પદ્માવતી દેવીના પડખામા મૂકી દીધી અને ત્યા  
મૂકીને તે ત્યાથી પાછો ફર્યો અને ત્યારપછી તે પોતાને ઘેર આવી ગયો.



गतवान् । 'तएण' तत्र खलु तस्याः पद्मावत्याः 'अगपरियारियाओ' अङ्गपरि-  
चारिका 'दाम्य' पद्मावतीदेवीं विनिधातमापन्ना प्राणरहितां दारिका च पश्यन्ति,  
दृष्ट्वा यत्रैव कनकरथो राजा, तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य करयलपरिगृहीत दश-  
नख शिर आवर्त्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा 'एव' = वक्ष्यमाणरीत्या अवदत्-हे  
स्वामिन् ! पद्मावतीदेवी 'मडल्लिया' मृता दारिका 'पयाया' प्रजाता=प्रजनित-  
वती । 'तएण' इति, तत्र खलु दामीमुखान्मृतयालिकाजमश्रवणानन्तर कनकरथो  
राजा तस्या 'मडल्लियाए' मृतायाः दारिकाया 'नीहरण' निर्हरण 'निष्काशन  
' करेइ' करोति, कृत्वा गृह्णति लौकिकानि मृतकृत्यानि करोति, कृत्वा 'कालेण'  
पास रख दिया । और रत्नकर फिर वह वहा से चल दिया चलकर

अपने घर आ गया । ( तएण तीसे पडमावईए अंगपरियारियाओ पड-  
मावड देवि विणिहायमावन्न दारिय पासति, पासित्ता जेणेव कणगरहे  
राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयलपरिगहिय दसनह  
सिरसावत्त मत्यए अजलिं कट्ठु एव वयासी एव खलु सामी पडमावई  
देवी मडल्लिय दारिय पयाया ) इसके बाद पद्मावती देवी की अंगपरि-  
चारिकाओंने पद्मावती देवी को और मरी हुई उस कन्या को देवा देव  
कर वे सब जहा कनक रथ राजा थे वहाँ गई-वहा जाकर उन्होंने दो  
नों हाथों की अजलि बना कर और उसे मस्तक पर घुमाकर-अर्थात्  
नमस्कार कर इस प्रकार कहा हे स्वामिन् ! पद्मावती देवी ने मृत कन्या  
को जन्म दिया है । ( तएण कणगरहे राया तीसे मडल्लियाए दारियाए नीह-  
रण करेइ, गृह्णति लोइयाइ मयकिच्चाइ करेइ करित्ता कालेण विगयसोए  
जाए ) इस प्रकार उन के मुख से सुनकर कनक रथ राजाने उस मृत

( तएण तीसे पडमावईए अंगपरियारियाओ पडमावड देवि विणिहायमावन्न  
दारिय पासति पासित्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता  
करयलपरिगहिय दसनह सिरसावत्त मत्यए अजलिं कट्ठु एव वयासी-एव खलु  
सामी पडमावईदेवी मडल्लिय दारिय पयाया )

त्याग्याह पद्मावती देवीनी अंग-परियागिआओये पद्मावती देवी तेमज्ज  
ते भरेली उन्धाने नेध नेधने तेओ अधी न्या कनकरथ राजा उता त्या गध  
अने त्या नधने तेओ अने उाथोथी अजलि अनावीने अने तेने मस्तक  
उपर इरवीने आ प्रभाओ उधु उ उ स्वामी ! देवी पद्मावताओ भरेली  
उन्धाने जन्म आप्यो छे

( तएण कणगरहे राया तीसे मडल्लियाए दारियाए नीहरण करेइ, गृह्णति  
लोइयाइ मयकिच्चाइ करेइ करित्ता कालेण विगयसोए जाए )

इत्युक्त्वा पोटिलायाः पार्श्वे ' निविशतः ' निविशति=स्थापयति, तथा पोटि  
लायाः पार्श्वे ता ' विनिहायमावृण्ण ' विनिहातमावृण्ण=मृतां दारिकां गृह्णाति,  
गृहीत्वा उत्तरीयेण पिदधाति, पिधाय अन्तः पुरस्य अपदारेण अनुप्रविशति, अनु  
प्रविश्य यत्रैव पद्मावती देवी तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पद्मावत्याः देव्याः  
पार्श्वे स्थापयति, स्थापयित्वा ताम् ' पडिनिगम' प्रतिनिर्गतः प्रतिनिर्गम्य स्वयम्

मम य पडमावईए य आहारे भविस्सइत्ति कइहु पोटिलाए पासे नि  
विखवइ, निविखवित्ता पोटिलाओ पासाओ विनिहायमावन्निय दारिय  
गेणइइ, गेणित्ता उत्तरिज्जेण पिहेइ पिहित्ता, अतेउरस्स अवहारेण  
अणुप्पविसइ ) इस तरह क्रमशः वृद्धिगत होता हुआ यह बालक जब  
बाल्यावस्था से रहित हो जावेगा तो हमारा तुम्हारा और पद्मावती देवी  
का आधार होगा, ऐसा कहकर उस तेतलिपुत्र अमात्य ने उस पुत्र को  
पोटिला के पास रख दिया। और पोटिला के पाम से मरी हुई कन्या  
को उठा लिया-उठाकर उसे अपने उत्तरियवस्त्र से ढँक लिया, ढँक कर  
फिर अतः पुर के पिछले दरवाजे से वहाँ आया (अणुप्पविसित्ता जेणेव  
पडमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडमावईए देवीए पासे  
ठावेइ, ठावित्ता जाव पडिनिगम ) वहाँ आकर जहाँ पद्मावती देवी थी  
वहाँ पहुँचा, वहाँ पहुँच कर उसने उस मृत कन्या को पद्मावती देवी के

( तएણ एस દારણ ઉમ્મુવકમાલભાવે તવ ચ મમ ચ પડમાવઈણ ચ આહારે  
ભવિસ્સઈ ત્તિ કઈહુ પોટિલાણ, પાસેણિવિખવઈ, નિવિખવિત્તા પોટિલાઓ પાસાઓ  
વિનિહાયમાવન્નિય દારિય ગેણઈ, ગેણિત્તા ઉત્તરિજ્જેણ પિહેઈ, પિહિત્તા, અતેઉરસ્સ  
અવહારેણ અણુપ્પવિસઈ )

અને આ રીતે અનુક્રમે મોટો થતો આ બાળક જ્યારે બથપણ વટાવીને  
જુવાન થઈ જશે ત્યારે આ મારો, તમારો અને પદ્માવતી દેવીનો આધાર  
થશે આ પ્રમાણે જહીને તે તેતલિપુત્ર અમાલ્યે તે બાલકને પોટિલાની પાસે  
મૂકી દીધો અને પોટિલાની પાસેથી મરી ગયેલી બાળકીને ઉપાડી લીધી  
ઉપાડીને તેને પોતાના ખેસથી ઢાકી દીધી અને ત્યારપછી તે રણવાસના પાછલા  
બારણેથી પદ્માવતી દેવીના મહેલમાં ગયો.

( અણુપ્પવિસિત્તા જેણેવ પડમાવઈ દેવી તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા,  
પડમાવઈણ દેવીણ પાસે ઠાવેઈ, ઠાવિત્તા જાવ પડિનિગમ )

ત્યા જઈને જ્યા પદ્માવતી દેવી હતી ત્યા ગયો અને ત્યા પહોંચીને તેણે  
તે મરી ગયેલી બાળકીને પદ્માવતી દેવીના પડખામાં મૂકી દીધી અને ત્યા  
મૂકીને તે ત્યાંથી પાછો ફર્યો અને ત્યારપછી તે પોતાને ઘેર આવી ગયો.



अस्माकमेव दारकः कनकरयस्य राज्ये जातः, 'त' तस्मान् भवतु खलु दारको नाम्ना 'कनकध्वजः' इति । अनन्तरमगौ दारकः क्रमेण वृद्धिं गच्छन् यावद् 'भोगसमर्थे जाए' भोगमगर्गे जात = ताह्य प्राप्त इत्यर्थः ॥ सू० ५ ॥

मूलम्—तएणं सा पोहिला अन्नया कयाई तैतलिपुत्तस्स अणिट्ठा ५ जाया यावि होत्था, नेच्छइ य तैतलिपुत्ते पोहिलाए नाम गोत्तमवि सवणयाए, किपुणदारिसणं वा परिभोग वा ? । तएण तीसे पोहिलाए अन्नया कयाई पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि इमेयारूवे अज्झतिथिए जाव समुपज्जित्था—एव खलु अह तैतलिस्स पुर्व्वि इट्ठा ५ आसि इयाणि अणिट्ठा ५ जाया, नेच्छइ य तैतलिपुत्ते मम नाम जाव परिभोग वा ओहयमणसकप्पं जाव झियायइ । तएण तैतलिपुत्ते पोहिल ओहयमणसकप्प जाव झियायमाणि पासइ, पासित्ता एव वयासी—मा णं तुम देवाणुप्पिया । ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि । तुम च णं मम महाणससि विउल असणपाणखाइमसाडम उवक्खडावेहि, उवक्खडावित्ता वहूणं

भारी उत्तमव किया । तथा भोजन आदि द्वारा मित्र ज्ञाति द्वारा प्रमुख जनों का सत्कार सन्मान करके फिर उसने उनके समक्ष इस प्रकार कहा—यह हमारा पुत्र कनक रय राजा के राज्य में उत्पन्न हुआ है—इस लिये यह “कनकध्वज” इस नामसे प्रसिद्ध होवे । इस के बाद यह पुत्र क्रमशः वृद्धिगत हुआ यावत्—भोग समर्थ हो गया—अर्थात् जवान युवा—बन गया ॥ सू० ५ ॥

सुधी लारे उत्तमव उज्जये। तेमज्ज भोजन वगेरेयी मित्र ज्ञाति वगेरे प्रमुख लोकाने। सत्कार अने सन्मान करीने तेणे तेजोनी समक्ष आ प्रमाणे कहु के आ अगारे। पुत्र राजा कनकरयना राज्यमा उत्पन्न थयो। छे अथी अे “कनकध्वज” नामे प्रसिद्ध थाय त्याग पछी ते कनकध्वज समय पमाग थता धीमे धीमे मोटो थता यावत् भोग स र्थ थई गयो अेट्ठे के युवान थई गयो ॥ सू० ५ ॥

कोलेन समये व्यतीते 'विगयसोण' विगतशोकः=शोकहितो जात' । तत' स्व  
स तेतलिपुत्र कोटुम्बिकपुरुषान् शङ्कयति, शब्दयित्वा एवमवदत्- 'सिप्पामेव'  
क्षिप्रमेव 'चारगसोहण' चारगशोधन=यन्दीजनमोक्षण यावन्मानोमानवर्द्धनम्  
पुत्रजन्मोत्सवनिमित्तक राजकर्मचारिणां चेतनवृद्ध्यादिना सम्कारसम्मानवर्द्धन  
कुरुते, इत्येवरूपामाज्ञां दत्त्वा स्वयं 'ठिड्वडिय' स्थितिपतिता कुन्मर्यादान्तर्गता  
पुत्रजन्मनिर्दशदिवससाध्यमोत्सवरूपां प्रक्रियां करोति । पुनश्चाशनाग्निना मित्र  
ज्ञातिप्रमुखां सत्कृत्य सम्मान्य तन्पुत्र एव वक्ष्यति- 'जम्हाण' यस्मात्स्व

कन्या का निर्हरण-उमशान में ले जाना-क्रिया । निर्हरण कर के फिर  
अनेक लौकिक मृतकृत्य क्रिये । मृत कृत्य कर चुकने के बाद धीरे-  
धीरे विगत शोक हो गये । ( तएणसे तेतलिपुत्ते कोटुवियपुरिसे सदा-  
वेइ, सदावित्ता एव वयासी-सिप्पामेव चारगसोहण जाव ठिड्वडिय  
जम्हाण अम्हें एस दारण कणगरहस्म रज्जे जाए त होउण दारण नामेण  
कणगज्झए जाव भोगसमत्थे जाए ) इस के बाद तेतलिपुत्र अमात्यने  
कोटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-शीघ्र  
ही तुम लोग चारक शोधन करो-यन्दीजनों को मुक्त करो यावत् मानो-  
मन का वर्द्धन, और पुत्र जन्मोत्सव के निमित्त को लेकर राज कर्म  
चारिय के चेतन की वृद्धि आदि करके उनके सम्मान का वर्द्धन करो-  
इस प्रकार आज्ञा देकर स्वयं उस तेतलिपुत्र अमात्यने अपनी कुल  
भर्यादा के अनुसार पुत्र का जन्म होने के कारण दश दिवस तक बड़ा

आ रीते सेमना भुण्थी आ पात सालणीने कनकथ राज्ञे ते भरेली  
कन्याने श्मशानमा पडोयाडी अने त्यागणाइ तेणु भरणु पछीनी घणु डियाओ  
पूरी करी भरणु डियाओने पताप्या पछी राज्ञ कनकथ धीमे धीमे शोक  
शब्दित थछ गथा

( तएणें से तेतलिपुत्ते कोटुवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-  
सिप्पामेव चारगसोहण जाव ठिड्वडियें, जम्हाणं अम्ह एस दारण कणगरहस्स  
रज्जे जाए त होउणें दारण नामेण कणगज्झए जाव भोगसमत्थे जाए )

त्यागणाइ तेतली पुत्र अमात्ये पोताना कोटुम्बिक पुरुषोंने ओलाव्या  
अने ओलावीने तेमने आ प्रमाणे कह्यु के-तमे लोके सत्तरे चारक शोधन  
करो-अटवे के नेलपानामाथी केहीओने छोडी भूके यावत् मानोमाननुं वर्द्धन  
तेमज पुत्र जन्मोत्सव पहल राजकर्मचारीओना पगार वगेरेनी वृद्धि करीने  
सेमना स माननु वर्द्धन करो आ रीते कोटुम्बिक पुरुषोंने आज्ञा आपीने  
तेतलिपुत्रे नते पोतानी कुल भर्यादा भुण्ण पुत्र जन्म होवा पहल दश दिवसे

तत्कालसमय ' पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रेः पश्चिमे भागे ' इमेयारूचे ' अय  
मेतद्रूपः=वक्ष्यमाणप्रकारः ' अज्झत्थिए जाव ' आध्यात्मिको यावत् मनोगत  
सकल्पः ' समुप्पजित्था ' समुद्रपद्मत्, सकल्पप्रकारमाह-एव खलु अह ' तेतलिस्स '   
तेतलेः=तेतलिपुत्रस्यामात्यस्य पूर्वम् इष्टा, कान्ता, प्रिया, मनोज्ञा, मनोऽमा  
' आसि '=आसम्, परन्तु ' इयाणि ' इदानीम् अनिष्टा यावद्-अमनोऽमा जाता ।  
नेच्छति च तेतलिपुत्रः मम नाम यावत् परिभोग वा=मम नाम गोत्रमपि श्रोतु  
नेच्छति किंपुन मम दर्शन मया सह परिभोग वा । इत्थमेवा पोट्टिला ' ओहय-  
मणसकप्पा ' अपहृतमनः सकल्पा=अपहृतो=दुःस्वावेगवशाद् रुद्धो, मनः सकल्पो=  
मानसिको विचरो यस्या सा, ' जावझियायड ' यावद् प्यायति=यावदार्त्तध्यान  
करोति । ततः खलु तेतलिपुत्र पोट्टिलामपहृतमनः सकल्पा ' जाव झियायमार्णि '

या कयाड पुब्बावरत्तकालसमयसि इमेयारूचे अज्झत्थिए जाव समुप्प-  
जित्था ) जय पोट्टिलाने अपनी तरफ तेतलि पुत्र अमात्य की इतनी  
अधिक उपेक्षा-अनादरता देखी तो एक दिन किसी समय उसे रात्रि  
के मध्यभाग में इस प्रकार का आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प  
उत्पन्न हुआ-( एव खलु अह तेतलिस्स पुब्बि इट्ठा ५ आसिं, इयाणि  
अणिट्ठा ५ जाया नेच्छइ य तेतलिपुत्ते मम नाम जाव परिभोग वा ओ  
हयमणसकप्पा जाव झियायड ) में तेतलि पुत्र अमात्य के लिये पहिले  
इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज एवं मनोम थी, परन्तु इस समय में-उन्हे  
अनिष्ट यावत् अमनोम बन रही हैं । वे तेतलि पुत्र अमात्य देखने और  
परिभोग करने की तो बात नौन कहे मेरे नामगोत्र तक को भी सुनना  
पसद नहीं करते हैं । इस तरह वह अपहृतमनसकल्प हाकर यावत्  
अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था )

ज्यादे अमात्य तेतलिपुत्रने पोट्टिटला ओ पोताना प्रत्ये आटली जधी  
उपेक्षा अने अनादरता जेध त्यारे जेध वणते ओड द्विस्स रात्रिना मध्यभा  
गमा तेना मनमा आ जतने आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न येथा डे

( एव खलु अह तेतलिस्स पुब्बि इट्ठा ५ आसिं इयाणि अणिट्ठा ५ जाया  
नेच्छइ य तेतलिपुत्ते मम नाम जाव झियायड )

पडेवा हु तेतलिपुत्र अमात्यने भाटे इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ अने मनोम  
हुती पणु डमण्णा हु तेमना भाटेअनिष्ट यावत् अमनोम यड पडी हु तेतलि  
पुत्र अमात्य ज्यादे भारु नाम गोत्र सुद्धा मालगवु धंछता नथी त्यारे भारी  
साथे जेवानी अने भारी साथे परिलोगनी तो बात न शी करवी ? आ रीते  
ते पोडिज्जा अण्डित मन सकल्प थडने यावत् आध्यात्मिक करती जेडी हुती



સમણમાહણ જાવ વળીમગાળં દેવમાળી ચ દવાવેમાળી ચ  
વિહરાહિ।તણ સા પોટિલા તેતલિપુત્તેળં ઇવં વુત્તાસમાળા  
હટ્ઠુટ્ઠા તેયલિપુત્તસ્સ ઇયમંટુ પડિસુણિત્તા, વલ્લાકલ્લિ  
મહાણસસિ વિપૂલ અસણ જાવ દવાવેમાળી વિહરડ ॥સૂંદા॥

ટીકા—‘તણ’ ઇત્યાદિ । તતઃ ચલુ મ પોટિલા અયદા કદાચિત્  
કેનાપિ કારણેન તેતલિપુત્રસ્ય અનિષ્ટા, અકાન્તા, અપ્રિયા, અમનોજ્ઞા, અમનોઽમા  
જાતા ચાપ્યઽમયત્ । નેચ્છિત્તિ ચ તેતલિપુત્રઃ પોટિલાયા નામ ગોત્રમપિ ‘સવળ  
યાણ’ શ્રવણતાયૈ=શ્રૂયતેઽનેનેતિ શ્રવણં કર્મ’, તસ્ય કર્મ શ્રવણતા તસ્ય, શ્રવણ  
વિષયોક્તૃત્વમ્ ઇત્યર્થ કિં પુનઃ તસ્યા ‘દરિસણ વા’ દર્શન વા તયા મહપરિમોગ વા,  
વાઙ્છેત્, અપિતુ ન । તત્ ચલુ તસ્યાઃ પોટિલાયા અન્યદા કદાચિત્ પુનરત્તાવર

તણ સા પોટિલા ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—(તણ) ઇસકે વાદ (સા પોટિલા) વહ પ્રધાનકી સ્ત્રી પોટિલા  
(અન્નયા કયાઈ) કિસી સમય-કોઈ નિમિત્ત કો લેકર-કિસી મી  
કારણ સે—(તેતલિપુત્તસ્સ અણિટ્ટા જાયા યાવિ હોત્થા) તેતલિપુત્ર કે  
લિયે અનિષ્ટ, અકાન્ત, અપ્રિય, અમનોજ્ઞ એવ અમનોમ વન ગઈ । ( જે  
ચ્છઈ તેતલિપુત્તે પોટિલાણ નામ ગોત્તમવિ સવળયાણ કિં પુણદરિસણ  
વા પરિમોગ વા ) ઇસ પ્રકાર વહ તેતલિપુત્ર ડસ પોટિલા કે નામ ગોત્ર  
તક કો મી સુનનો પસદ નહીં કરતા તો ફિર ડસકે ડેગ્વને ઓર પરિ-  
મોગ પાસ જાને કી તો વાત હી કયા હૈ । (તણ તીસે પોટિલાણ અન્ન

તણ સા પોટિલા ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—(તણ) ત્યાર પછી (સા પોટિલા) તે અમાત્યની પત્ની પોટિલી (અ  
ન્નયા કયાઈ) ડોઈ વખતે ગમેતે કારણે (તેતલિપુત્તસ્સ અણિટ્ટા ય જાયા યાવિ  
હોત્થા) તેતલિ પુત્રને માટે અનિષ્ટ, અકાન્ત, અપ્રિય અમનોજ્ઞ અને  
અમનોમ થઈ પડી

( જેચ્છઈ તેતલિપુત્તે પોટિલાણ નામ ગોત્તમવિ સવળયાણ કિં પુણદરિસણ વા  
પરિમોગ વા )

એથી તેતલિપુત્ર અમાત્યને તેનું નામ ગોત્ર સુદ્ધા સાભળવું પણ પસદ  
પડતું ન હતું ત્યારે તેને ભેવાની અને તેની પાસે જવાની તો વાત જ શી ?

(તણ તીસે પોટિલાણ અન્નયા કયાઈ પુનરાવરત્તકાલમયસિ ઇમેયારુવે

પોટ્ટિલા તેતલિપુત્રેણ 'એવ' પૂર્વોક્તપ્રકારેણ ઉક્તા સતી હૃદયુષા તેતલિપુત્રસ્ય 'એવમટ્ટ' એતમર્થમ્=અન્નદાનરૂપમભિપ્રાય 'પડિસુમહ' પ્રતિશ્રુણોતિ=સ્વીકરોતિ, 'પડિસુણિતા' પ્રતિશ્રુત્ય=સ્યોકૃત્ય, 'કરલાકલિ' કરલાલિય=પ્રતિદિનમ્, મહા-  
નસે ત્રિપુલમ્ 'અમણ જાવ' અશન યાવત્=અશનપાનલાઘવસ્વાદ્ય ચતુર્નિધમાહાર  
પુપસ્કાર્ય દદતી ચ 'દવાવેમાણી' દાપયન્તી ચ વિહરતિ ॥ ૬ ॥

મૂલમ્—તેણં કાલેણ તેણં સમણં સુવ્વયાઓ નામં અજ્ઞાઓ  
ઈરિયા સમિયાઓ જાવ ગુત્તવભયારિણીઓ વહુસ્સુયાઓ વહુપરિ-  
વારાઓ પુવ્વાણુપુવ્વિંચરમાણાગામાણુગામ દુઙ્ગમાણાજેણામેવ  
તેતલિપુરે ણયરે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા, અહાપેડિ-  
રૂવં ઉગ્ગહં ઉગ્ગિણ્હંતિ, ઉગ્ગિણિહત્તા, સજમેણં તવસાં અપ્પાણં  
ભાવેમાણિઓ વિહરતિ । તણતાસિં સુવ્વયાણં અજ્ઞાણ એગે સંઘા-  
ડણ પઢમાણ પોરિસીણ સઙ્ગાય કરેઙ્ગ જાવ અહમાણે તેતલિસ્સ  
ગિહ અણુપવિટ્ટે । તણસા પોટ્ટિલાતાઓ અજ્ઞાઓ એજમાણીઓ  
પાસઙ્ગ, પાસિત્તા, હટ્ટુટ્ટા આસણાઓ અવ્વમુટ્ટેઙ્ગ, અવ્વમુટ્ટિત્તા, વદઙ્ગ,  
ણમસઙ્ગ, વદિત્તા ણમસિત્તા, વિઝલ અસણ જાવ પડિલાભેઙ્ગ, પડિ-  
લાભિત્તા, એવ વયાસી—એવં સ્વલુ અહં અજ્ઞાઓ તેતલિપુત્તસ્સ પુઠ્ઠં

સે દિલવાઓ । ઇસ તરહ તેતલિપુત્ર અમાત્યને જઘ ઉમ પોટ્ટિલા સે  
કહા—તો વહુ વહુત અવિક્ર પ્રસન્ન એવ સતુપ્પ હુઈ । ઔર ઉમને તેતલિ-  
પુત્રકી ઇસ વાતકો માન લિયા । માન કરકે વહુ પ્રતિદિન ભોજન શાલા  
મેં ચારો પ્રકાર કા આહાર વનવા કર ઉસે અમણ, માહણ આદિ જનોંકે  
લિયે સ્વય દેને લગી ઔર દૂસરોં સે દિલવાને લગી ॥ સૂ૦ ૬ ॥

યાવત્ યાચકોને પોતે આપો અને ખીજઓને હુકમ કરીને અપાવો તેતલિ  
પુત્ર અમાત્યે જ્યારે આ પ્રમાણે પોટ્ટિલાને ડહુ ત્યારે તે ખૂબજ પ્રસન્ન તેમજ  
સતુપ્પ થઈ ગઈ અને તેણે તેતલિપુત્રની આ વાત સ્વીકારી લીધી અને તે  
દરરોજ ભોજન શાળામાં ત્યારે જાતના આહારો બનાવડાવીને અમણ પ્રાદ્યણ  
વગેરે ને પોતે આહાર આપવા લાગી અને ખીજઓ દ્વારા અપાવવા લાગી સૂ૬

યાવદ્ધ્યાયન્તીમ્=યાવદાર્તધ્યાન કર્તુમર્થો પદ્યતિ, દૃષ્ટ્વા ણ્યમયદન્-મા સ્વલુ ત્વ  
 હે દેવાનુપ્રિયે ! અપહતમનઃ સમૃત્પા ' જાવ શ્રિયાહિ ' યાવદ્ધ્યાય=યાવદાર્તધ્યાને  
 માકુરુ । હે દેવિ । ત્વ ચ સ્વલુ મમ ' મહાણસસિ ' મહાનસે=મોજનશાલાયામ્  
 વિપુલમ્ ' અસણ જાવ ' અશન યાવત્=મગ્નપાન સ્વાદિમ સ્વાદિમ ચતુર્વિધમાહારમ્  
 ' ઉવક્ષ્વડાવેહિ ' ઉપસ્કારય, ' ઉવક્ષ્વડાવિત્તા ' ઉપસ્કાર્ય ' વહૂણ સમણ માહણ  
 જાવ વળીપગાણં ' વહુભ્ય શ્રમણનામ્ભગ યાવદ્ યનીપકેભ્ય=યાનકેભ્યઃ, સ્વયં  
 દેયમાણી ' દદતી ચ, અન્યૈઃ ' દવાવેમાણી ' દાવન્તી ચ વિહર । તત' સ્વલુ સા

આર્તધ્યાન કર રહી શ્રી-(તણ તેતલિપુત્તે પોટિલ ઓહયમણસંકપ્પ  
 જાવ શ્રિયાયમાણિ પાસઢ, પાસિત્તા ણ્વ વયાસી માણ તુમ દેવાણુપ્પિયા  
 ઓહયમણસકપ્પા જાવ શ્રિયાહિ, તુમ ચ ણ મમ મહાણસસિ વિઝલ  
 અસણપાણ સ્વાહમ સાહમ ઉવક્ષ્વડાવેહિ, ઉવક્ષ્વડાવિત્તા વહૂણ સમ-  
 ણ માહણ જાવ વળીપગાણ દેયમાણી ય દવાવેમાણી ય વિહરાહિ, તણ્ણ  
 સા પોટિલા તેતલીપુત્તેણ ણ્વ વુત્તા સમાણા હઠ્ઠુ તુટ્ઠા તેયલિપુત્તસ્સ  
 ણ્યમઢ્ઠ પડિસુણેહ, પડિસુણિત્તા કલ્લાકલિલ મહાણસસિ વિપુલ અસણ  
 જાવ દવાવેમાણી વિહરઢ ) ઇતને મે તેતલિપુત્ત ને ઉસ અપહતમનઃ  
 સકલ્પ હોકર આર્તધ્યાન કરતી હુહ પોટિલા કો દેવા-તો દેવકર ઉસને  
 ઉસસે કહા-હે દેવાનુપ્રિયે તુમ અપહતમન સકલ્પ હોકર આર્તધ્યાન  
 મત કરો-તુમ તો મેરી મોજનશાલા મેં વિપુલમાત્રા મેં અગ્ન, પાન,  
 સ્વાદિમ એવ સ્વાદિમ હસ તરહ ચતુર્વિધ અહાર વનવાઓ વનવાકર ઉસે  
 અનેક શ્રમણ બ્રાહ્મણ યાવત્ યાચકજનોં કે લિયે સ્વયં દો ઓર દૂસરોં

( તણ તેતલિપુત્તે પોટિલ ઓહયમણસકપ્પ જાવ શ્રિયાયમાણિ પાસઢ  
 પાસિત્તા ણ્વ વયાસી માણ તુમે દેવાણુપ્પિયા ઓહયમણસકપ્પા જાવ શ્રિયાહિ, તુમ  
 ચ ણ મમ મહાણસસિ વિઝલ અમણપાણ સ્વાહમ સાહમ ઉવક્ષ્વડાવેહિ, ઉવક્ષ્વડાવિત્તા  
 વહૂણ સમણમાહણ જાવ વળીપગાણ દેયમાણી ય દવાવેમાણી ય વિહરાહિ તણ સા  
 પોટિલા તેતલિપુત્તેણ એવ વુત્તા સમાણા હઠ્ઠુતુટ્ઠા તેયલિપુત્તસ્સ ણ્યમઢ્ઠ પડિસુણેહ,  
 પડિસુણિત્તા કલ્લાકલિલ મહાણસસિ વિપુલ અસણ જાવ દવાવેમાણી વિહરઢ )

આટલામા અપહતમન સકલ્પ થઇને આર્તધ્યાન કરતી તે પોટિલાને  
 અમાત્ય તેતલિપુત્તે જોઇ અને જોઇને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-હે દેવાનુપ્રિયે !  
 તમે અપહતમનસકલ્પ થઇને આર્તધ્યાન કરો નહિ-તમે મારી ભોજન  
 શાળામા જઇને પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન, પાન, પાદિમ અને સ્વાદિમ આમ  
 ચાર બાતના આહારો બનાવડાવો અને બનાવડાવીને તેને ઘણા શ્રમ



पोट्टिला तेतलिपुत्रेण 'एव' पूर्वोक्तप्रकारेण उक्ता सती हृष्टतुष्टा तेतलिपुत्रस्य 'एवमदृ' एतमर्थम्=भन्नदानरूपमभिप्राय 'पडिसुमइ' प्रतिश्रुणोति=स्वीकरोति, पडिसुणिता 'प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य, 'करलाकलि' करवालिप=प्रतिदिनम्, महानसे त्रिपुलम् 'असण जाव' अशन यावत्=अशनपानखाद्यस्त्राय चतुर्विधमाहार सुपस्कार्य ददती च 'दावेमाणी' दापयन्ती च विहरति ॥ ६ ॥

मूलम्—तेण कालेणं तेणं समएणं सुव्वयाओ नाम अज्जाओ ईरिया समियाओ जाव गुत्तवभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्वि० चरमाणागामाणुगाम दुइज्जमाणा जेणामेव तेतलिपुरे णयरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता, अहापडि-रूव उगगहं उग्गिण्हंति, उग्गिण्हिता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणिओ विहरंति । तएण तासिं सुव्वयाणं अज्जाण एगे सघा-डए पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ जाव अडमाणे तेतलिस्स गिहं अणुपविट्ठे । तएण सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता, हट्टुट्टा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता, वदइ, णमंसइ, वदित्ता णमसित्ता, विउलं असण जाव पडिलाभेइ, पडि-लाभित्ता, एव वयासी—एवं खलु अहं अज्जाओ तेतलिपुत्तस्स पुव्वं

से दिलवाओ । इस तरह तेतलिपुत्र अमात्यने जब उस पोट्टिला से कहा—तो वह बहुत अधिक प्रसन्न एवं सतुष्ट हुई । और उसने तेतलि-पुत्रकी इस बातको मान लिया । मान करके वह प्रतिदिन भोजन शाला में चारों प्रकार का आहार बनवा कर उसे श्रमण, माहण आदि जनोंके लिये स्वयं देने लगी और दूसरों से दिलवाने लगी ॥ सू० ६ ॥

यावत् याचकेने पोते आपो अने भील्लओने हुकम करीने अपावो तेतलि पुत्र अमात्ये न्यारे आ प्रमाणे पोट्टिलाने कहु त्थारे ते भूणञ्ज प्रसन्न तेमञ्ज सतुष्ट थध गध अने तेण्णे तेतलिपुत्रनी आ वात स्वीकारी लीधी अने ते हररेण लोणन शाणामा न्यारे नतना आहारो णनावडावीने श्रमण आहण माहार आपवादागी अने भील्लओ द्वारा अपाववा लागी सूरे

इट्ठा ५ आसि, इयारिणि अणिट्ठा ५ जाव दसण वा परिभोगं वा,  
तं तुव्भेणं अज्जाओ सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपढियाओ  
बहुणि गामागर जाव आहिडह वट्ठणं राईसर जाव गिहाइ  
अणुपविसह, त अत्थि आइ भे अज्जाओ । केह कहिंचि चुम्भ  
जोए वा मंतजोए वा कम्मणजोए वा हिय उट्ठावणे वा काउ  
डुवणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा  
भूइकम्मे वा मूले कदे छल्ली वल्ली, सिलिया वा गुलिया वा  
ओसहे वा भेसजे वा उवलद्धपुव्वे वा जेणाह तेतलिपुत्तस्स  
पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि । तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए  
एव वुत्ताओ समाणीओ दो वि हत्थे कन्ने ठवेति ठवित्ता,  
पोट्टिल एव वयासी—अम्हे ण देवाणुप्पिया । समणीओ निग्गं-  
थिओ जाव गुत्तवभयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्ह एयप्प-  
यारं कन्नेहि वि णिसामेत्तए, किमग पुण उवदिसित्तए वा  
आयरित्तए वा ? अम्हेणं तव देवाणुप्पिया । विचित्त केवलि-  
पन्नत्त धम्म पडिकहिज्जामो । तएण सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ  
एव वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ । तुम्ह अतिए केवलिपन्नत्त  
धम्म निसामेत्तए, तएण ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्त  
धम्म परिकहेति । तएण सा पोट्टिला धम्म सोच्चा निसम्म  
हट्ठुट्ठा एव वयासी—सद्वहामि णं अज्जाओ । णिग्गंथ पावयण  
जाव से जहिय तुव्भे वयह, इच्छामि ण अह तुव्भ अतिए  
पचाणुव्वइय जाव गिहिधम्म पाडिवाज्जित्तए, तएण



सा पोहिला तासि अज्जाण अतिए पचाणुव्वइय जाव गिहि-  
धम्म पडिवज्जइ, ताओ अज्जाओ वंदइ णमसइ, वडित्ता णे-  
संसित्ता पडिविसज्जेइ । तएणं सा पोहिला तमणोवासिया  
जाया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ ॥ सू० ७ ॥

टीका—‘तेण कालेण’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये सुत्रतानाम  
आर्या ईर्यासमिता यावद् गुप्तब्रह्मचारिण्यो बहुश्रुता बहुपरिवाराः ‘पुव्वाणुव्वि’  
स्वानुपूर्व्या=तीर्थङ्करपरम्परया विचरन्त्य ‘जेणामेव’ यत्रैव तेतलिपुरनगरतत्रैवो-  
पागच्छति, उपागत्य ‘अहापडिरूव’ यथाप्रतिरूपम्=यथाकल्पम् ‘उग्गह’  
अग्रहम्=वसत्यर्थमाज्ञाम् ‘उग्गिण्हति’ अगृह्णन्ति=याचन्ते, अगृह्य ‘सजमेण’  
समयेन सप्तदशविधेन, ‘तवसा’ तपसा द्वादशविधेन आत्मानं भावयन्त्यो

‘तेण कालेण तेण समएण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समयमें  
(सुव्वयाओ नाम अज्जाओ ईरिया समियाओ जाव गुत्तवभयारिणीओ  
वहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्वि० जेणामेव तेयलिपुरे णयरे तेणेव  
उवागच्छइ) सुत्रता नामकी आर्या तीर्थंकर परपरा के अनुसार विहार  
करती हुई उस तेतलिपुर नगर में आई । ये ईर्यासमिति आदि पांच  
समितियों की पालक थी—गुप्त ब्रह्मचारिणी थीं । बहुश्रुत थी । अनेक  
परिवार से युक्त थीं । (उवागच्छित्ता अहा पडिरूव उग्गह उग्गिण्हति,  
उग्गिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणीओ विहरति तएणं

तेण कालेण तेण समएण इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये  
(सुव्वयाओ नाम अज्जाओ ईरिया समियाओ जाव गुत्तवभयारिणीओ वहुस्सु  
याओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्वि० जेणामेव तेतलिपुरे णयरे तेणेव उवागच्छइ)  
सुत्रता नामकी आर्या तीर्थंकर परपरा मुज्जम विहार करती तेतलिपुर  
नगरमा आयी ते ईर्यासमिति वगेरे ५ (पाच) समितियोंनु पालनकरनारी  
हुती तेमज्ज शुभ ब्रह्मचारिणी हुती ते बहुश्रुत तेमज्ज धन्या परिवारे थी  
वीट्ठायेली हुती

(उवागच्छित्ता अहापडिरूव उग्गह उग्गिण्हति, उग्गिण्हित्ता सजमेणं तवसा

इट्ठा ५ आसि, इयाणि अणिट्ठा ५ जाव दसण वा परिभोगं वा,  
तं तुब्भेणं अज्जाओ सिम्वियाओ बहुनायाओ बहुपठियाओ  
बहुणि गामागर जाव आहिडह बहुणं राईसर जाव गिहाइ  
अणुपविसह, त अत्थि आइ भे अज्जाओ । केइ कहिंत्ति चुन्न-  
जोए वा मतजोए वा कम्मणजोए वा हिय उड्ढावणे वा काउ  
डुवणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा  
भूइकम्मे वा मूले कदे छल्ली वल्ली, सिलिया वा गुलिया वा  
ओसहे वा भेसजे वा उवलद्धपुव्वे वा जेणाह तेतलिपुत्तस्स  
पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि । तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए  
एव वुत्ताओ समाणीओ दो वि हत्थे कन्ने ठवेंति ठवित्ता,  
पोट्टिल एव वयासी—अम्हे ण देवाणुप्पिया । समणीओ निग्गं-  
थिओ जाव गुत्तवभयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्ह एयप्प-  
यार कन्नेहि वि णिसामेत्तए, किमग पुण उवदिसित्तए वा  
आयरित्तए वा ? अम्हेणं तव देवाणुप्पिया । विचित्त केवल्लि-  
पन्नत्त धम्म पडिकहिज्जामो । तएण सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ  
एव वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ । तुम्ह अतिए केवल्लिपन्नत्त  
धम्म निसामेत्तए, तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्त  
धम्म परिकहेति । तएण सा पोट्टिला धम्म सोच्चा निसम्म  
हट्टुट्ठा एव वयासी—सद्वहामि णं अज्जाओ । णिग्गंथ पावयण  
जाव से जहिय तुब्भे वयह, इच्छामि ण अह तुब्भ अतिए  
पच्चाणुव्वइय जाव गिहिधम्म पाडिवाज्जित्तए, तएण

नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा, विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्यरूपं चतुर्विधमाहार  
'पडिलाभेड' प्रतिलम्भयति=ददाति, प्रतिलम्भ्य, एवमदत्-एव खलु अहं हे  
आर्याः ! तैत्तिरीयपुत्रस्य पूर्वमिष्टा, कान्ता, प्रिया, मनोज्ञा, मनोऽमा, आसम्,  
परन्तु 'इयार्णि' इदानीम् 'अणिष्टा' जाव दंसर्णं परिभोगं वा' अनिष्टा यावत्  
दर्शनं परिभोगं वा=साम्प्रत तैत्तिरीयपुत्रस्याऽहमनिष्टा अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा,  
अमनोऽमा जाता, तस्मादेव तैत्तिरीयपुत्रो मम नामगोत्रमपि श्रोतुं नेच्छति, किं  
पुनर्हे आर्याः ! स मम दर्शनं मया सह परिभोगं वा कथं वाञ्छेत् ? । 'त तुभ्येण

चुष्टेह ) देखकर वह बहुत अधिक प्रसन्न हुई, और अपने स्थान से  
उठी (अच्युष्टिता वदह णमसइ, वदित्ता, णमसित्ता विउल अमण जाव  
पडिलाभित्ता एव वयासी ) उठकर उसने उसको वदना की-नमस्कार  
किया । वन्दना नमस्कार करके फिर उसने उन्हें विपुल मात्रा में अशन  
पान आदि चतुर्विध आहार दिया-और दे कर वह इस प्रकार कहने  
लगी-( एव खलु अहं अज्जाओ । तैत्तिरीयपुत्रस्स पुव्व इद्दा ५ आसि,  
इयार्णि अणिष्टा ५ जाव दंसर्णं वा परिभोगं वा-त तुभ्येणं अज्जाओ  
सिक्खियाओ वहुनायाओ वहुपडियाओ वहुणि गामागार जाव अहिं-  
डइ, वहुणं राईसर जाव गिहाइ अणुपविसइ ) हे आर्याओ ! पहिले मैं  
तैत्तिरीयपुत्र अमात्य के लिये बहुत ही इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एव  
मनोम थी परन्तु अब इस समय मैं उनके लिये अनिष्ट, अकान्त,  
अप्रिय, अमनोज्ञ एव अमनोम बन रही हूँ । वे मेरा नाम गोत्र तक  
'भी सुनना पसंद नहीं करते हैं तो फिर मेरे साथ परिभोग करने की

( अच्युष्टिता वदह णमसइ, वदित्ता, णमसित्ता विउल असण जाव पडिलाभेड  
'पडिलाभित्ता एव वयासी )

जैसी थछने तेछे तेभने नभन कर्या वदन अने नभन करीने तेछे तेभने  
पुण्डण प्रमाणुमा अरान, पान वजेरे चार जतना आहारो आर्या अने  
आपीने ते आ प्रमाणे कडेवा लागी ठे—

( एव खलु अहं अज्जाओ । तैत्तिरीयपुत्रस्स पुव्व इद्दा ५ आसि, इयार्णि ५  
दंसर्णं वा परिभोगं वा त तुभ्येणं अज्जाओ सिक्खियाओ वहुनायाओ वहुपडि-  
याओ वहुणि गामागार जाव अहिंडइ, वहुणं राईसर जाव गिहाइ अणुपविसइ )

हे आर्याओ ! हे पडिला तैत्तिरीयपुत्र अमात्यना माटे भूषण छे छे, कान्त,  
प्रिय, मनोज्ञ अने मनोम छती पणु छेवे हे तेभना माटे अनिष्ट, अकान्त,  
अप्रिय, अमनोज्ञ अने अमनोम थछ पडी छु तेछो मारा नाम गोत्र सुद्धा  
सामणना छेउता नथी त्यारे मारी सामे परिभोग करवानी अने भने जेवानी



विहरन्ति । तत खलु तासा सुव्रतानामार्याणामेकः सघाटकः प्रथमाया पौरुष्याम्  
स्वाध्याय=प्रथमपठनरूप करोति, 'जाव अडमाणे' यावदटन्त्याः, याव उच्चात्  
'द्वितीयस्यां पौरुष्या सूत्रार्थचिन्तनरूप ध्यान करोति, तृतीयस्या पौरुष्यां  
सुव्रतामार्यामापृच्छ्य उच्चनीचमध्यमकुलेषु गृहमापुदानिकमिक्षार्थमटन् इत्यर्थो  
बोध्यः, तेतलेगृहमनुमविष्टः । तत खलु सा पोष्टिला ताः सघाटकस्थाः आर्या  
एजमानाः पश्यति, दृष्ट्वा, हृष्टतुष्टा आसनात् अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय वन्दते

तासि सुव्रायाण अज्जाणं एगे सघाडण पढमाण पोरिसीण सज्झाय करेइ,  
जाव अडमाणे तेतलिस्स गिहं अणुपविट्ठे) वहा आ कर उन्होने यथाकल्प  
ठहरने की आज्ञा मागी-मांग कर फिर वे १७ सतरह प्रकारके समय और  
१२ बारह प्रकार के तपसे अपने आपको वासित करती हुई ठहर गई ।  
इन सुव्रता आर्या का एक सघाटक था जो प्रथम पौरुषी में स्वाध्याय  
करता-द्वितीय पौरुषीमें सूत्रार्थका चिन्तनरूप ध्यान करता और तृतीय  
पौरुषीमें सुव्रता आर्या की आज्ञासे ऊँच नीच एवं मध्यम कुलोंमें भिक्षा  
के लिये अटन करता । इस तरह वह सघाटक (सघाडा) तृतीय पौरुषीमें  
इन उच्चादि घरों में भिक्षार्थ अटन करता हुआ तेतलिपुत्र अमात्य के  
घर पर आया (तएण सा पोष्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पा  
सइ) इनने में उस पोष्टिलाने उन सघाटकस्थ आर्याओ को ज्यों ही  
अपने घर पर आया हुआ देखा तो (पासित्ता हट्टतुट्ठा आसणाओ अ

अप्पाण भावेमाणीओ विहरति तएण तासि सुव्रायाण अज्जाण एगेसघाडण  
पढमाण पोरिसीण सज्झाय करेइ जाव अडमाणे तेतलिस्स गिहं अणुपविट्ठे)

त्या आवीने तेमण्णे यथाकल्प (साधुकल्प प्रमाणे) रडेवानी आज्ञा मागी अने  
त्यारपछी ते १७ जतना समय अने १२-जतना तप वडे पोता ॥ जतने  
वासित करता ते त्या रोकछ सुव्रता आर्यानी ओर सघाटक हुने जे प्रथम  
पौरुषीमा स्वाध्याय करतो हुतो, द्वितीय पौरुषीमा सूत्रार्थनु चिन्तन रूप ध्यान  
करतो अने तृतीय पौरुषीमा सुव्रता आर्यानी आज्ञा मेणवीने जिया, नीचा  
अने मध्यम कुलोमा गेयरी भाटे जाता हुता आ प्रमाणे ते सघाटक तृतीय  
पौरुषीमा उपरोक्त जिया वगेरे कुलोना घरमा गेयरी भाटे करता करता ।  
तेतलिपुत्र अमात्यने त्या आव्यो (तएण सा पोष्टिला ताओ अज्जाओ एज्ज  
माणीओ पासइ) पोष्टिलाओ ज्वारे सघाटकस्थ आर्याओने पोताने घर आवेची  
जेथ त्यारे ते (पासित्ता हट्ट तुट्ठा आसणाओ अमुदडेइ) जेने ते प्रथम  
प्रसन्न थछ अने पोताना आसनथा जेथी थछ

नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा, त्रिपुलमशनपानखाद्यस्वाद्यरूप चतुर्विधमाहार  
'पडिलाभेद' प्रतिनम्भयति=ददाति, प्रतिलम्भय, एवमवदत्-एव खलु अहं हे  
आर्याः ! तैत्तिरीयपुत्रस्य पूर्वमिष्टा, कान्ता, प्रिया, मनोज्ञा, मनोऽमा, आसम्,  
परन्तु 'इयार्णि' इदानीम् 'अणिष्टा' जाव दसर्णं परिभोग वा' अनिष्टा यावत्  
दर्शनं परिभोग वा=साम्प्रत तैत्तिरीयपुत्रस्याऽहमनिष्टा अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा,  
अमनोऽमा जाता, तस्मादेव तैत्तिरीयपुत्रो मम नामगोत्रमपि श्रोतुं नेच्छति, किं  
पुनर्हं आर्याः ! स मम दर्शनं मया सह परिभोगं वा कथं वाञ्छेत् ? । 'त तुव्येण

वसुधेह ) देखकर वह बहुत अधिक प्रसन्न हुई, और अपने स्थान से  
उठी (अव्युत्थिता वदह णमंसइ, वदित्ता, णमसित्ता विउल असण जाव  
पडिलाभित्ता एव वयासी ) उठकर उसने उसको वदना की-नमस्कार  
किया । वन्दना नमस्कार करके फिर उसने उन्हें त्रिपुल मात्रा में अशन  
पान आदि चतुर्विध आहार दिया-और दे कर वह इस प्रकार कहने  
लगी-( एव खलु अहं अज्जाओ ! तैत्तिरीयपुत्रस्स पुव्व इद्वा ५ आसि,  
इयार्णि अणिष्टा ५ जाव दसर्णं वा परिभोग वा-तं तुव्येण अज्जाओ  
सिक्खियाओ वहुनायाओ वहुपडियाओ वहुणि गामागार जाव अहिं-  
डइ, वहुण राईसर जाव गिहाइ अणुपविसइ ) हे आर्याओ ! पहिले मैं  
तैत्तिरीयपुत्र अमात्य के लिये बहुत ही इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एव  
मनोमयी परन्तु अब इस समय मैं उनके लिये अनिष्ट, अकान्त,  
अप्रिय, अमनोज्ञ एव अमनोमयी बन रही हूँ । वे मेरा नाम गोत्र तक  
भी सुनना पसन्द नहीं करते हैं तो फिर मेरे साथ परिभोग करने की

( अव्युत्थिता वदह णमंसइ वदित्ता, णमसित्ता विउल असण जाव पडिलाभेद  
पडिलाभित्ता एव वयासी )

उत्थिता यद्यने तेणे तेमने नमन कर्था वदनं अने नमन करीने तेणे तेमने  
पुञ्ज प्रभाषुमा अरान, पान वगेरे आर वतना आहारो आभ्या अने  
आपीने ते आ प्रभाषे कडेवा लागी डे—

( एव खलु अहं अज्जाओ ! तैत्तिरीयपुत्रस्स पुव्व इद्वा ५ आसि, इयार्णि ५  
दसर्णं वा परिभोगं वा तं तुव्येण अज्जाओ सिक्खियाओ वहुनायाओ वहुपडि-  
याओ वहुणि गामागार जाव अहिंडइ, वहुण राईसर जाव गिहाइ अणुपविसइ )

हे आर्याओ ! तु पडिला तैत्तिरीयपुत्र अमात्यना माटे भूषण छे छे, शान्त,  
प्रिय, मनोज्ञ अने मनोमयी होती पणु डेवे तु तेमना माटे अनिष्ट, अकान्त,  
अप्रिय, अमनोज्ञ अने अमनोमयी थई पडी छु तेओ . मारा नाम गोत्र सुद्धा  
सामणना छेउता नथी त्यारे मारी सामे परिभोग करवानी अने मने लेवानी

अज्जाओ ' इति, तत्=तस्मात् कारणात् यूयं खलु हे आर्याः ! ' निविस्वयाओ ' शिक्षिता=शिक्षां माता, ' बहुणायाओ ' बहुज्ञाताः=अनेकशास्त्रज्ञाननिपुणाः ' बहुपठियाओ ' बहुपठिता=नाताविधविद्याकुशलाः स्थः पुनः ' बहुणि ग्रामाग्र जाय अदिदह ' बहुनि ग्रामाग्र यावत् आदिण्डय=बहुपु ग्रामाग्रनगरादिषु परि भ्रमण कुरुथ । तथा च ' बहुण राईसर जाव गिहाइ अणुपविमइ ' बहुना राजेश्वर यावद् गृहाणि अनुपविशथ=हे आर्याः ! यूयं बहुना राजेश्वर तत्परश्रेष्ठि सेना-पत्यादीना गृहे प्रवेश कुरुथ, ' त ' तत्=तस्मात् कारणात् ' अत्थि अइ मे अज्जाओ । ' अस्ति आइ युप्मावमार्या ! ' थाइ ' इति वाक्यालङ्कारे देशी शब्दः । हे आर्याः ! अस्ति ' केइ कहिं चि ' कोऽपि कुत्रचित्=युप्माक ज्ञानविषये ' चुन्नजोए वा ' चूर्णयोगो वा=चूर्णानां द्रव्यचूर्णानां योगः, स्तम्भनादिकर्मकारी, ' मतजोए वा ' मन्त्रयोगो वा=मन्त्राणां योगो व्यापारो वा वशीकरणादि मन्त्रयोग ' कम्मणजोए

और देखने की उनकी बात ही क्या कहूँ इस लिये हे आर्याओ । आप सब तो शिक्षित हैं, बहुज्ञाता हैं-अनेक शास्त्रों के ज्ञानसे निपुण हैं-बहुपठित हैं-नाना प्रकार की विद्याओं में कुशल हैं-अनेक ग्राम, आकर आदि स्थानों में विहार करती रहती हैं, अनेक राजेश्वर आदिको के घरों में आती जाती रहती हैं ( त अत्थिआइ मे अज्जाओ ) तो हे आर्याओ ! ( केइ कहिं चि चुन्नज्जोएवा ) कही कोई चूर्ण योग-द्रव्य चूर्णों का स्तम्भनादि कर्मकारी योग ( मतजोए वा कम्मणजोए वा हिय उड्डावणे वा, काउड्डावणे वा अभिओगिए वा वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूइकम्मे वा मूले, कदे छल्ली, बल्ली, सिलिया, वा, गुलिया वा, ओसहे वा, मेसज्जे वा, उवलद्वपुव्वे वा जेणाह तेतलिपुत्त स्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि ) मन्त्र योग-वशीकरण आदि मन्त्रों का

तो बात क्या रही ? अथी हे आर्याओ, तमे सौ शिक्षिता हो, बहुज्ञाता हो-अटले के धणा शास्त्रों का ज्ञानभी निपुण हो, बहुपठिता हो-अनेक ज्ञान की विद्याओं का कुशल हो, धणा ग्राम, आकर स्थानों का विहार करता रहो हो, अने धणा राजेश्वर वगैरें का भडेलों का आवण करता रहो हो ( त अत्थि-आइ मे अज्जाओ ) तो हे आर्याओ ! ( केइ कहिं चिचुन्नज्जोएवा ) क्या कि जमे ते चूर्ण योग-द्रव्य चूर्णों का स्तम्भन वगैरें का योग,

( मतजोएवा कम्मणजोए वा हिय उड्डावणे वा, काउड्डावणे वा अभिओगिए वा वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूइकम्मे वा मूले कदे छल्ली बल्ली सिलिया, वा गुलिया वा, ओसहे वा, मेसज्जे वा उवलद्वपुव्वे वा जेणाह तेतलिपुत्तस्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि )



वा ' कामेणयोगो वा=उच्चाटनादिकर्मयोगो वा, ' हिय उड्डायणे वा '=हृदयो-  
ड्डायन वा=चित्ताकर्षकवस्तुविशेषो वा ' काउड्डायने वा ' कायोड्डायन वा=शरीरा-  
कर्षकवस्तुविशेषो वा ' आभियोगिए वा ' आभियोगिको वा,=पराभवकरणयोगो  
वा, ' वशीकरणे वा ' वशीकरण वा=वशीकरणयोगो वा, ' कोउयकम्मे वा ' कौतुक-  
कर्म वा=सौभाग्यवर्द्धकस्नानादि वा ' भूइकम्मे वा ' भूतिकर्म वा=मन्त्राभिमन्त्रित-  
भस्मप्रक्षेपण वा तथा-औषधीना ' मूले ' मूलम् ' कदे ' कन्दः ' छल्ली ' त्वक्  
' पल्ली ' लता ' सिलिया वा ' शिलिका=तृणविशेषः, ' गुलिया ' गुलिका=  
गुटिका ' मोसहे वा भेसज्जे वा ' औषध वा भैषज्य वा, इत्यादिक वस्तुजात  
युष्माभिः उपलब्धपुत्रे ' उपलब्धपूर्वम्=प्राप्तपूर्वम्, हे आर्याः । भवत्य एषु किमपि  
उपलब्धपूर्वम् अवश्य भवेयुः, तत्कृपया मह्यमर्पय, ' जेगाह ' येनाहम्, यत्सेवनादह  
तेतलिपुत्रस्य पुनरपि इष्टा कान्ता प्रियामनोज्ञामनोऽमा भवेयम् । ततः खलु ता  
आर्याः पोट्टिलाया एवमुक्ताः सत्यो द्वात्रिंश हस्तौ कर्णे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा

योग कामेण योग-उच्चाटन आदि मन्त्रो का योग हृदयोड्डायन-  
चित्ताकर्षक वस्तु विशेष का योग, कायोड्डायन-शरीराकर्षक वस्तु  
विशेषका योग, आभियोगिक-पराभव करन का योग, वशीकरण-  
वशीकरण योग, कौतुक कर्म-सौभाग्यवर्द्धक स्नान आदि का योग,  
भूति कर्म-मन्त्रादि से अभिमन्त्रित भस्म के प्रक्षेपण करने रूप योग तथा  
औषधियों के मूल, कद त्वक-छाल तथा लता, शिलिका-तृण विशेष  
गोली, औषध-भैषज्य इत्यादि वस्तुओं का योग आरके देखने में अवश्य  
आया होगा-इस लिये कृपाकर इनमें से कोई न कोई योग आप हम  
अवश्य-अवश्य प्रदान करे कि जिसमें म-जिम के सेवन से मैं-तेत  
लिपुत्र को पुनरपि इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एव मनोम वन जाऊँ (तएण  
तामा अज्जाओ पाट्टिलाए एव वुत्ताओ समाणाओ दावि हत्थे कन्ने ठवे ति,

मन्त्रयोग-वशीकरण वगैरे मन्त्रोना योग-कामेणयोग, उन्धारण वगैरे  
मन्त्रोना योग, हृदयोड्डायन-चित्ताकर्षक वस्तु विशेषना योग, आभियोगिक-  
पराभव करवाना योग, वशीकरण-वशीकरण योग, कौतुककर्म-सौभाग्यवर्द्धक  
स्नान वगैरेना योग, भूतिकर्म-मन्त्र वगैरया अभिमन्त्रित करीने लभ्य  
( राणोडी ) तु प्रक्षेपण रूप योग तेमज औषधीओना मूल, कद, त्वक ( छाल )  
तेमज लता, शिलिका-तृण विशेष गोली, औषध, भैषज्य वगैरे वस्तुओना  
योग तनारा जेनामा चाकस आओ ज हरो ओटला भाटे तमे कृपा करीने  
ओमावा गमे ते योग भन्ने चाकस आपा के जेना सेवनथा हु करी तेतवि  
यत्तनी छिन्ना शत जिय यत्तनी यत्तनी मनोम थर्ष नजि



अज्जाओ ' इति, तत्=तस्मात् कारणात् यूय ससु हे आर्याः ! ' निस्सियाओ ' शिसिता=शिक्षां प्राप्ता, ' बहुणायाओ ' बहुज्ञाताः=अनेकशास्त्रज्ञाननिपुणाः ' बहुपठियाओ ' बहुपठिता=नाताविधविद्याकुशलाः स्थः पुनः ' बहुणि गामागर जाव अदिडह ' बहुनि ग्रामाकर यावत् आदिण्डय=बहुपु ग्रामाकरनगरादिषु परि भ्रमण कुरुथ । तथा च ' बहुण राईसर जाव गिहाइ अणुपविमड ' बहुना राजेश्वर यावद् गृहाणि अनुपविशथ=हे आर्याः ! यूय बहुना राजेश्वर तत्परश्रेष्ठि सेना-पत्यादीना गृहे प्रवेश कुरुथ, ' त ' तत्=तस्मात् कारणात् ' अत्थि अइ मे अज्जाओ ! ' अस्ति आइ युप्मावमार्या ! ' थाइ ' इति वाक्यालङ्कारे देशी शब्दः । हे आर्याः ! अस्ति ' केइ कहिं चि ' कोऽपि कुत्रचित्=युप्माक ज्ञानविषये ' चुन्नजोए वा ' चूर्णयोगो वा=चूर्णाणां द्रव्यचूर्णानां योगः, स्तम्भनादिकर्मकारी, ' मतजोए वा ' मन्त्रयोगो वा=मन्त्राणां योगो व्यापारो वा वशीकरणादि मन्त्रयोग ' कम्मणजोए

और देखने की उनकी बात ही क्या कहूँ इस लिये हे आर्याओ ! आप सब तो शिक्षित हैं, बहुज्ञाता हैं-अनेक शास्त्रों के ज्ञानसे निपुण हैं-बहुपठित हैं-नाना प्रकार की विद्याओं में कुशल हैं-अनेक ग्राम, आकर आदि स्थानों में विहार करती रहती हैं, अनेक राजेश्वर आदिकों के घरों में आती जाती रहती हैं ( त अत्थिआइ मे अज्जाओ ) तो हे आर्याओ ! ( केइ कहिं चि चुन्नज्जोएवा ) कही कोई चूर्ण योग - द्रव्य चूर्णों का स्तम्भनादि कर्मकारी योग ( मतजोए वा कम्मणजोए वा हिय उड्डावणे वा, काउड्डावणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूइकम्मे वा मूले, कदे छल्ली, बल्ली, सिलिया, वा, गुलिया वा, ओसहे वा, भेसज्जे वा, उवलद्धपुव्वे वा जेणाह तेतलिपुत्त स्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि ) मन्त्र योग-वशीकरण आदि मन्त्रों का

तो बात क्या रही ? अर्थात् हे आर्याओ ! तम सौ शिक्षित हो, बहुज्ञाता हो-अनेक के धरा शास्त्रों का ज्ञान भी निपुण हो, बहुपठित हो-अनेक बातों की विद्याओं का कुशल हो, धरा ग्राम, आकर स्थानों का विहार करता रहो हो, अने धरा राजेश्वर वगैरें का मंडेलों का आवण करता रहो हो ( त अत्थि आइ मे अज्जाओ ) तो हे आर्याओ ! ( केइ कहिं चि चुन्नज्जोएवा ) क्या ठ गमे तो यूय योग-द्रव्य यूयों का स्तम्भन वगैरें का योग,

( मतजोएवा कम्मणजोए वा हिय उड्डावणे वा, काउड्डावणे वा अभि ओगिए वा वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूइकम्मे वा मूले कदे छल्ली बल्ली सिलिया, वा गुलिया वा, ओसहे वा, भेसज्जे वा उवलद्धपुव्वे वा जेणाह तेतलि पुत्तस्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि )

वा ' कर्मणयोगो वा=उच्चाटनादिकर्मयोगो वा, ' ह्रिय उड्वावणे वा '=हृदयो-  
ड्वायन वा=चित्ताकर्षकवस्तुविशेषो वा ' काउड्वायने वा ' कायोड्वायन वा=शरीरा-  
कर्षकवस्तुविशेषो वा ' आभियोगिण वा ' आभियोगिको वा,=पराभवकरणयोगो  
वा, ' वशाकरणे वा ' वशीकरण वा=वशीकरणयोगो वा, ' कोउयकम्मे वा ' कौतुक-  
कर्म वा=सौभाग्यवर्द्धकस्नानादि वा ' भूइकम्मे वा ' भूतिकर्म वा=मन्त्राभिमन्त्रित-  
भस्मप्रक्षेपण वा तथा-औषधीना ' मूले ' मूलम् ' कदे ' कन्दः ' छल्ली ' त्वक्  
' वलडी ' लता ' सिलिया वा ' शिलिका=तृणविशेषः, ' गुलिया ' गुलिका=  
गुटिका ' गोसहे वा भेसज्जे वा ' औषध वा भैषज्य वा, इत्यादिक वस्तुजात  
युग्माभिः ' उवलद्धपुब्बे ' उपलब्धपूर्वम्=माप्तपूर्वम्, हे आर्याः । भवत्य एषु किमपि  
उपलब्धपूर्वम् अवश्य भवेयुः, तत्कृपया मह्यमर्पय, ' जेगाह ' येनाहम्, यत्सेवनादह  
तैत्तलिपुत्रस्य पुनरपि इष्टा कान्ता प्रियामनोज्ञामनोऽमा भवेयम् । ततः खलु ता  
आर्याः पोड्डिलाया एवमुक्ताः सत्यो द्वात्रिंशो हस्तो कर्णे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा

योग कर्मण योग-उच्चाटन आदि मन्त्रो का योग हृदयोड्वायन-  
चित्ताकर्षक वस्तु विशेष का योग, कायोड्वायन-शरीराकर्षक वस्तु  
विशेषका योग, आभियोगिक पराभव करन का योग, वशीकरण-  
वशीकरण योग, कौतुक कर्म-सौभाग्यवर्द्धक स्नान आदि का योग,  
भूति कर्म-मन्त्रादि से अभिमन्त्रित भस्म के प्रक्षेपण करने रूप योग तथा  
औषधियों के मूल, कंद त्वक-छाल तथा लता, शिलिका-तृण विशेष  
गोली, औषध-भैषज्य इत्यादि वस्तुओं का योग आपके देखने में अवश्य  
आया होगा-इस लिये कृपाकर इनमें से कोई न कोई योग आप हम  
अवश्य-अवश्य प्रदान करें कि जिससे मैं-जिसके सेवन से मैं-तैत्त-  
लिपुत्र को पुनरपि इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एवं मनोमय बन जाऊँ (तृण  
तामा अज्जाओ पाड्डिलाए एवमुक्ताओ समाणाओ दावि हत्थे कन्ने ठवे ति,

मन्त्रयोग-वशाकरण वगैरे मन्त्रोना योग-कामंशुयोग, उन्धारण वगैरे  
मन्त्रोना योग, हृदयोड्वायन-चित्ताकर्षक वस्तु विशेषना योग, आभियोगिक-  
पराभव करवाना योग, वशाकरण-वशीकरण योग, कौतुककर्म-सौभाग्यवर्द्धक  
स्नान वगैरेना योग, भूतिकर्म-मन्त्र वगैरथी अभिमन्त्रित करीने लभ  
( राणोडी ) तु प्रक्षेपण रूप योग तेमन्त्र औषधीओना भूग, कंद, त्वक ( छाल )  
तेनञ्ज लता, शिलिका-तृण विशेष गोणी, औषध, भैषज्य वगैरे वस्तुओना  
योग तनारा नेवामा आकल आन्धो न हरो ओटला भाटे तमे कृपा करीने  
ओमावा गमे ते योग भन ओकल आपा ठ नेना सेवनथा हु इरी तेतति  
चरनी चरित, प्रिय, मनोज्ञ अने मनोमय यर्थ लज्ज

પોટિલામ્ એવમવદન-ચય સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિયે ! શ્રમણ્યો નિર્ગ્રન્થ , વાત્યાભ્યન્તરગ્રન્થિ રહિતા , યામદ્ ગુપ્તવસ્ત્રવારિણ્યઃ, નો સ્વલુ કલ્પતેઽસ્માકમ્ ' ઇયપ્પયાર ' એતત્ત્વ-કાર=મ્ણોરપિ ' નિસામેત્તણ ' નિશામયિતુ=શ્રોતુ ન કલ્પતેતિ પૂર્વેણ સમ્બન્ધઃ । ' અહ્મં' એતિ સમ્પ્રોધને ' હે પોટિલે ! કિં=કથં પુનઃ, ' ઉવદિસિત્તણ વા ' ઉપદેશુમ્ વા, સ્વયમ્ ' આયરિત્તણ વા ' આચરિતુ ના કલ્પતે । ન કલ્પતેત્યર્થઃ, ચય સ્વલુ તવ હે દેવાનુપ્રિયે ! વિચિત્ર કેવલિપ્પન્નત્ત ધમ્મં પરિકથયામઃ । તતઃ સ્વલુ સા પોટિલા

ઠાવિત્તા પોટિલ એવ વયાસી-અમ્હેણ દેવાણુપ્પિયા ! સમણીઓ નિગ્ગથીઓ જાવ ગુત્તથમયારિણીઓ, નો સ્વલુ કલ્પદ્ અમ્હ ઇયપ્પયારકન્નેહિ વિ નિસામિત્તણ કિમગ ઉવદિસિત્તણ વા, આયરિત્તણ વા । અમ્હ ણ તવ દેવાણુપ્પિયા ! વિચિત્ત કેવલિપ્પન્નત્ત ધમ્મ પઢિકહિજ્જામો ) હસ પ્રકાર ઉસ પોટિલા કે દ્વારા કહીં ગઈં ઉન આર્યાઓં ને અપને દોનોં કાનોંપર હાથ રલ્લ લિયે-ઔર રલ્લ કર પોટિલા સે હસ પ્રકાર કહને લગીં-હે દેવાનુપ્રિયે ! હમ તો નિર્ગ્રન્થ શ્રમણિયાં હૈં, નવ કોટિ સે પૂર્ણ બ્રહ્મચર્યકો હમ પોલતી હૈં । હમ્મેં તુમ્હારી એસી ચાતે કાનોં સે સુનના ઓ કલ્પિત નહીં હૈં તો ફિર હે પુત્રિ ! હમ હનકા ઉપદેશ તુમ્હેં કેસે દે સકતે હૈં-ઔર સ્વય ઓ હનકા આચરણ કેસે કર સકતા હૈં । અર્થાત્ હન વાતોં કા ઉપદેશ દેના ઔર સ્વય હનકો અપને આચરણ મેં લાના યહ સબ હમારે કલ્પ કે અનુસાર નિષિદ્ધ હૈં । હમ તો હે દેવાનુપ્રિયે ! તેરે હિતકે

(તણ તાઓ અજ્ઞાઓ પોટિલાએ એવુત્તાઓ સમાણીઓ દો વિ હત્થે કન્ને ડેવતિ, ઠાવિત્તા પોટિલ એવ વયાસી અમ્હેણ દેવાણુપ્પિયા ! સમણીઓ નિગ્ગથીઓ જાવ ગુત્તથમયારિણીઓ, નો સ્વલુ કલ્પદ્ અમ્હ ઇયપ્પયારકન્નેહિ વિ નિસામિત્તણ કિમગ ઉવદિસિત્તણ વા, આયરિત્તણ વા । અમ્હ ણ તવ દેવાણુપ્પિયા ! વિચિત્ત કેવલિપ્પન્નત્ત ધમ્મ પઢિકહિજ્જામો )

આ પ્રમાણે પોટિલાની વાત સાંભળીને તે આર્યાઓએ પોતાના બંને કાનો ઉપર હાથ મૂકી દીધા અને મૂકીને એમ ડહેવા લાગી હે દેવાનુપ્રિયે ! અમે તો નિર્ગ્રન્થ શ્રમણીઓ છીએ નવવાડ સહિત બ્રહ્મચર્યનું અમે પાલન કરીએ છીએ હે પુત્રિ ! તમારી એવી વાતો અમારા માટે કાનથી સાંભળવી પણ યોગ્ય લેખાય નહિ ત્યારે તેના વિશે ઉપદેશની વાત તો સાવ અયોગ્ય જ છે અમે આ વિશે તમને કોઈ પણ જાતનો ઉપદેશ પણ આપી શકીએ નહીં તો પછી જાતે આનું આચરણ કેવી રીતે કરી શકીએ ? એટલે કે આ બાબ તને ઉપદેશ આપવો તેમજ પોતે આનું આચરણ કરવું તે



ता आर्या एवमवादीत्-इच्छामि खलु हे आर्याः । युष्माकमन्तिके केवलप्रज्ञप्त धर्म निशामयितुम्=श्रोतुम् । ततः खलु सा पोद्दिला धर्म श्रुत्वा ' निसम्म ' निशम्य=हृदयेनाधार्य हृष्टतुष्टा एवमवादीत्-श्रद्धामि खलु हे आर्या ! नैर्ग्रन्थ्य प्रवचन यावत् ' से ' तत् तथैव यथैतद् यूय वदथ । हे आर्याः ! ' इच्छामि ' इच्छामि खलु अह युष्माकमन्तिके ' पचाणुव्वइय जाव गिहिधम्म ' पञ्चाणुत्रतिक यावत् गृहिधर्म ' पडिवज्जित्तए ' प्रतिपत्तु=स्वीकृतुम् । अनन्तर ता आर्या एवमवा

लिये विचित्र केवल प्रज्ञप्त धर्मका उपदेश कहते हैं ( सो तू सुन )- (तएण सा पोद्दिला ताओ अज्जाओ एव वयासी इच्छामि ण अज्जाओ ! तुम्ह अतिण केवलपन्नत्ते धम्म निसामेत्तए-तएण ताओ अज्जाओ पोद्दिलाए विचित्तधम्म परिकहेति ) उनकी इस प्रकार बात सुन कर उस पोद्दिलाने उनसे कहा-हे आर्याओ ! मैं आप लोगों के सुख से केवल प्रज्ञप्त धर्म सुनना चाहती हू । पोद्दिला की ऐसी प्रार्थना सुन कर उन आर्याओं ने उस पोद्दिला के लिये विचित्र केवल प्रज्ञप्त धर्म सुनाया ( तएण सा पोद्दिला धम्म सोच्चा निसम्म हट्टतुट्ठा एव वयानी ) उन के मुखसे केवल प्रज्ञप्त धर्म सुन कर और उसे अपने हृदयमे अवधृत कर अत्यन्त हर्षित एव सतुष्ट हुई उस पोद्दिलाने उनसे ऐसा कहा ( सदहामि ण अज्जाओ ! णिग्गथ पावयणं जाव से जहिय तुब्भे वयह, इच्छामि ण अह तुब्भ अतिण पचाणुव्वइय जाव गिहिधम्म पडिवज्जित्तए-अहासुह, तएण सा पोद्दिला तासि अज्जाण अतिण पचाणुव्वइय

भुज्ज अथोग्ग गणाय छे छे देवानुप्रिये ! अमे तो तारा छित भाटे विचित्र केवलिप्रज्ञप्त धर्मनो उपदेश आपीये छीये तेने तुं सालण

( तएण सा पोद्दिला ताओ अज्जाओ एव वयासी इच्छामि ण अज्जाओ ! तुम्ह अतिण केवलपन्नत्ते धम्म निसामेत्तए-तएण ताओ अज्जाओ पोद्दिलाए विचित्त धम्म परिकहेति )

तेमनी आ जतनी बात सालणीने ते पोद्दिलाये तेमने ओम कहु के छे आर्याओ । तमारा भुज्जथी हु केवली प्रज्ञप्त धर्मने सालणवा धम्म छु पोद्दिलानी ओवी विनती सालणीने ते आर्याओये तेने विचित्र केवलि प्रज्ञप्त धर्मनो उपदेश आप्ये । ( तएण सा पोद्दिला धम्म सोच्चा निसम्म हट्ट-तुट्ठा एव वयासी ) तेमना भुज्जथी केवली प्रज्ञप्त धर्मनु श्रवण करीने तेने हृदयमाधारण करीने भूषण हर्षित अने सतुष्ट थती ते पोद्दिलाये तेमने ओम कहु के

( सदहामि ण अज्जाओ ! णिग्गथ पावयणं जाव से जहिय तुब्भे वयह, इच्छामि ण अह तुब्भ अतिण पचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्म पडिवज्जित्तए-अहा-

પોદિલામ્ એવમવદન્-યય સ્વલુ દેવાનુપ્રિયે । શ્રમણો નિર્ગ્રન્થ , યાતાઅયન્તરગ્રન્થિ  
રહિતા , યાઅદ્ ગુપ્તવ્રજવારિણ્યઃ, નો સ્વલુ વત્પતેઽસ્માકમ્ ' ઇયપ્પયાર ' પતલ્લ-  
કાર=ફળોરપિ ' નિસામિત્તણ્ ' નિશામયિતુ=શ્રોતુ ન વત્પતેતિ પૂર્વેણ સમ્બન્ધઃ ।  
' અદ્ધાં' इति सम्बोधने ' हे पोदिले ! किं=कथं पुनः ' उवदिसित्तए वा ' उपदेशदुम्  
वा, स्वयम् ' आयरित्तए वा ' आचरितुं वा कल्पते । न कल्पतइत्यर्थः, यय सल्ल  
तव हे देवानुप्रिये ! विचित्र केवलपन्नं धम्मं परिकल्पयामः । ततः स्वल्ल सा पोदिला

ઠાવિત્તા પોદિલ એવ વયાસી-અમ્હેણ દેવાણુપ્પિયા ! સમણીઓ નિર્ગમ્થીઓ  
જાવ ગુત્તવ્રજવારિણીઓ, નો સ્વલ્લ કપ્પઈ અમ્હ ઇયપ્પયારકન્નેહિ વિ  
નિસામિત્તણ્ કિમગ ઉવદિસિત્તણ્ વા, આયરિત્તણ્ વા । અમ્હ ણં તવ  
દેવાણુપ્પિયા ! વિચિત્ત કેવલિપન્નત્ત ધમ્મ પઢિકહિજ્જામો ) હસ પ્રકાર  
ઉસ પોદિલા કે દ્વારા કહીં ગઈં ઉન આર્યાઓં ને અપને દોનોં કાનોંપર  
હાથ રલ્લ લિયે-ઔર રલ્લ કર પોદિલા સે હસ પ્રકાર કરને લગીં-હે  
-દેવાનુપ્રિયે ! હમ તો નિર્ગ્રન્થ શ્રમણિયાં હં, નવ કોટિ સે પૂર્ણ વ્રહ્મચર્યકો  
હમ પાલતી હૈં । હમ્મેં તુમ્હારી એસી વાતે કાનોં સે સુનનાં મી કલ્પિત  
નહીં હૈં તો ફિર હે પુત્રિ ! હમ હનકા ઉપદેશ તુમ્હેં કેસે દે સકતે હૈં-  
ઔર સ્વયં મી હનકા આચરણ કેસે કર સકતા હૈં । અર્થાત્ હન વાર્તા  
કા ઉપદેશ દેના ઔર સ્વયં હનકો અપને આચરણ મેં લાનાં યહ સબ  
હમારે કલ્પ કે અનુસાર નિષિદ્ધ હૈં । હમ તો હે દેવાનુપ્રિયે ! તેરે હિતકે

(તણ તાઓ અજ્ઞાઓ પોદિલાએ એવવુત્તાઓ સમાણીઓ દો ત્રિ હત્યે કન્ને  
ઠવેતિ, ઠાવિત્તા પોદિલ એવ વયાસી અમ્હેણ દેવાણુપ્પિયા ! સમણીઓ નિર્ગમ્થીઓ  
જાવ ગુત્તવ્રજવારિણીઓ, નો સ્વલ્લ કપ્પઈ અમ્હ ઇયપ્પયારકન્નેહિ વિ નિસામિત્તણ્  
કિમગ ઉવદિસિત્તણ્ વા, આયરિત્તણ્ વા ! અમ્હ ણ તવ દેવાણુપ્પિયા ! વિચિત્ત  
કેવલિપન્નત્ત ધમ્મ પઢિકહિજ્જામો )

આ પ્રમાણે પોદિલાની વાત સાંભળીને તે આર્યાઓએ પોતાના અંને  
કાનો ઉપર હાથ મૂકી દીધા અને મૂકીને એમ કહેવા લાગી હે દેવાનુપ્રિયે !  
અમે તો નિર્ગ્રન્થ શ્રમણીઓ છીએ નવવાડ સહિત બ્રહ્મચર્યનું અમે પાલન  
કરીએ છીએ હે પુત્રિ ! તમારી એવી વાતો અમારા માટે કાનથી સાંભળવી  
પણ ચેત્ત્ય લેખાય નહિ ત્યારે તેના વિશે ઉપદેશની વાત તો સાવ અયોગ્ય જ  
છે અમે આ વિશે તમને કોઈ પણ જાતનો ઉપદેશ પણ આપી શકીએ નહીં  
તો પછી જાતે આનું આચરણ કેવી રીતે કરી શકીએ ? એટલે કે આ બાબ  
તનો ઉપદેશ આપવો તેમજ પોતે આનું આચરણ કરવું તે બધું અમારા કલ્પ

मूलम्—तएणं तीसे पोहिलाए अन्नया क्याइं पुठवरत्तावर-  
त्तवालस्मयसि बुद्धवजागरिय जागरमाणीए अयमेयारुवे  
अज्झतिथिए जाव समुप्पन्नं । एव खलु अह तेयलिपुत्तस्म पुठ्व  
इटा ५ आसि, इयाणिं अणिट्टा ५ जाव परिभोग वा, त सेय  
खलु मम सुव्वयाणं अज्जाणं अतिए पठवइत्तए, एव सपेहेइ,  
सपेहिता, कह्ण जाव पाउप्पभायाए जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव  
उवागच्छइ, उवागाच्छित्ता, - करयलपरिग्गहिय दसनहं  
सिरसावत्त मत्थए अंजलिं बहु एवं वयासी — एव खलु  
देवाणुप्पिया । मए सुव्वयाण अज्जाण अंतिए धम्मे णिसंते  
जाव अवभणुन्नाया पठवइत्तए । तएण तेयलिपुत्ते पोहिले एव  
वयासी—एव खलु तुमं देवाणुप्पिए । मुंडा पठवइया समाणी  
कालमासे काल किच्चा अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उवव-  
ज्जिहिसि, तं जइ णं तुम दवाणुप्पिए । मम ताओ देवलो  
याओ आगम्म केवल्लि पन्नत्ते धम्मे वोहेहि, तोह विसज्जेमि,  
अह णं तुम मम ण सवोहेसि, तो ते ण विसज्जेमि । तएण  
सा पोहिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठ पडिसुणेइ । तत. खलु तेत-  
लिपुत्ते विपुल असण४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता, मित्तणइ  
जाव आसतेइ, आसत्तिता, जाव सम्माणेइ, सम्माणित्ता, पो-  
हिल पहाय जाव पुरिससहस्सवाहिणि सोय दुरुइइ, दुरुहिता ।

लाभेमाणी विहरइ ) इस प्रकार श्रमणोपासिका बनी हुई वह पोहिला  
निर्ग्रन्थ श्रमणजनोक्तोपव निर्ग्रन्थ श्रमणियो को दान-चारों प्रकार का  
आहार देती हुई अपना समय व्यतीत करने लगी ॥ सू० ७ ।



દિણુ:- અહાસુહ 'યથા સુખ, હે દેવાનુપ્રિયે ! । તત સ્વલુ સા પોટિલા તાસા માર્યાણામતિકે પચ્ચાણુવતિક યાવ્દુ યુદ્ધિધર્મપતિપદ્યતે, પુનસ્તા આર્યા વન્દતે નમસ્યતિ, વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા પ્રતિવિસર્જયતિ । તતઃ સા પોટિલાશ્રમગોપાસિકા જાતા, 'જાવ પહિલામેમાણિ' યાવ્દુ પ્રતિલમ્મવન્તી=નિર્ગ્રન્થેન્નપ' શ્રમણેભ્યઃ શ્રમણીભ્યશ્ચ ચતુર્વિધમાહાર દદતી વિહરતિ ॥ મૂ૦ ૭ ॥

જાવ ગિહિધમ્મ પહિવજ્જેહ, તાઓ અજ્જાઓ વદહ, ણમસહ વદિત્તા ણમસિત્તા પહિવિસર્જેહ ) હે આર્યાઓ ! મેં હવે નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન પર શ્રદ્ધા કરતી છું યાવતે તેમનાં માનતી છું કે યહ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન જેસા આપ કહતી હૈ વૈસા હી હૈ । અતઃ હે આર્યાઓ ! અથ મેં આપકે પાસે પચાણુ વ્રત માત શિક્ષાવ્રત આદિ રૂપ ૧૨ ધારણ પ્રકાર કા ગૃહસ્થ ધર્મ કો ધારણ કાનાં ચાહતી છું । હમ તરહ પોટિલા કી ભાવના જાન કરે એન આર્યાઓને એસસે કહા-યથા સુખ દેવાનુપ્રિયે ! તુજે તિસ તરહ સુખ હો વૈસા તૂ કર-શ્રમસ્કર કાર્યમેં વિલમ્બ કરના યોગ્ય નહીં હૈ-હમ પ્રકાર એન આર્યાજનોની આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરે એસ પોટિલાને એન્હીં આર્યાઓં કે પાસ સે જાવકધર્મ પચ અણુવતિ એવ મોન શિક્ષાવ્રતોનો ધારણ કરે લિયા । હમ પ્રકાર શ્રમગોપાસિકા બની હુઈ એસ પોટિલા ને એન આર્યાઓં કો વન્દના એવ નમસ્કાર કી-વન્દના નેમસ્કાર કરેકે ફિર એન્હેં વિસર્જિત કર દિયા । (તણ સા પોટિલા સમગોપાસિયા જાયા જાવ પહિ

સુહ તેણ સા પોટિલા તાસિ અજ્જાણ આતેણ પચાણુવદ્ય જાવ ગિહિધમ્મ પહિ વેજ્જેહ તાઓ અજ્જાઓ વદહ, ણમસહ વદિત્તા ણમસિત્તા પહિવિસર્જેહ )

હે આર્યાઓ ! આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન ઉપર હું શ્રદ્ધા કર છું યાવતે આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન જેવું તમે કહો છો તેવું જ હું એથી હે આર્યાઓ ! હવે હું તમારી પાસેથી પાંચ અણુવ્રત વગેરેનો 'ગૃહસ્થ ધર્મ' ધારણ કરવા ઇચ્છુ છું આ રીતે પોટિલાના વિચારો બાણીન તે આર્યાઓએ તેને કહ્યું કે 'યથાસુતમ્' એટલે કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તને જેમા સુખ પ્રાપ્ત થાય તેન તુ કર સાર કામમા વિલગ કરવો જોઈએ નહિ આ પ્રમાણે તે આર્યાઓની આજ્ઞા મેળવીને તે પોટિલાએ તે આર્યાઓની પાસથી શ્રાવક-ધર્મ-પાંચ અણુવ્રતો અને સાત શિક્ષાવ્રતોને ધારણ કરી લીધો આ રીતે શ્રમણોપાસિકા થઈ ગયેલી તે પોટિલાએ તે આર્યાઓને વદન તે જ નમઃ કર્યા એને વદન તથા નેમન કરીને તેમને વિદાય આપી (તણ સ પોટિલા સમગોપાસિયા જાયા જાવ પહિલામેમાણો વિહરહ) આ રીતે શ્રમણોપાસિકા થઈ ગયેલી તે પોટિલા



रिय जागरमाणीए ' कुडुञ्जजागरिकां जाग्रत्या अयमेतद्भूष ' अज्झत्थिए जाव ' आध्यात्मिको यावत्=आध्यात्मिक=आत्मगतो यावन्मनोगत सकल्प समुत्पन्नः । सरूपप्रकारमाह-एव खलु अहं तैत्तिलिपुत्रस्य पूर्वम् इष्टा कान्ता प्रिया मनोज्ञा मनोऽमा आमम्, इदानीमनिष्टा, अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा, अमनोऽमा यावत् परिभोगं वा । अस्याभिप्रायः-अहो मनुष्याणां मनोवृत्तेरस्थिरता । पूर्व, यस्यादम् इष्टा कान्ता प्रियाऽदिकाऽसम्, सैवाहमस्यानिष्टाऽकान्ताऽप्रियादिका जाताऽस्मि । अयं तैत्तिलिपुत्रो मम नाम गोत्रश्रवणमपि नेच्छति किं पुनर्ममदर्शनं मया सह परिभोगं वाञ्छेत् अपितु नेत्यर्थः । ' त ' तत्=तस्मात्कारणात् ' सेय '

यसि ) रात्रि के पिछले भागमें (कुडुञ्जजागरिय-जागरमाणीए अयमेया-रूपे अज्झत्थिए जाव समुत्पन्ने ) कुडुञ्ज की, चिन्ता से जाग रहा थी इस प्रकार का आध्यात्मिक यावन्मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ- ( एव खलु अहं तैत्तिलिपुत्रस्स पुब्बि इद्वा ५ आसि इयाणि अणिद्वा ५ जाव परिभोगं वा, तं सेय खलु मम सुव्वयाण अज्जाण अतिए पव्वइत्तए ) मैं पहिले तैत्तिलिपुत्र को बहुत ही अधिक इष्ट, कान्त प्रिय, मनोज्ञ एव मनोम धी-परन्तु अब मैं ऐसी नहीं रही हूँ-अनिष्ट आदि घन गई हूँ । और बातों की बात ही क्या है-वे तो अब मेरा मुख तक नहीं देखना चाहते हैं-देखो मनुष्यों की मनोवृत्ति कितनी अस्थिर है-पूर्व मैं जिसे इष्ट, कान्त, प्रिय, आदि रूप थी-अब वही मैं उसके लिये अनिष्ट अप्रिय आदि घन गई हूँ । यह तैत्तिलिपुत्र तो मेरी नाम गोत्र तक भी सुनना नहीं चाहता है तो फिर मेरे साथ रहने की तो चाहना ही

आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उद्भवो ३

( एव खलु अहं तैत्तिलिपुत्रस्स पुब्बि इद्वा ५ आसि इयाणि अणिद्वा ५ जाव परिभोगं वा तं सेय खलु मम सुव्वयाण अज्जाण अतिए पव्वइत्तए )

पडेला हु तैत्तिलिपुत्रने भूमज धइकात, प्रिय, मनोज्ञ अने मनोम डती पण डवे हु तेमना मटे तेवी रही नथी अनीष्ट वगेरे थड पडी छु भारी साथे वातथीतनी वात तो हरे रही पण तेओ भारी भो पण लेवा भागता नथी जेरणर पुन्धोनी मनोवृत्ति केटली बभी यथज डाय छे ? जेने पडेला जे हु इष्ट, कान्त, प्रिय, वगेरेना इयम डती, डवे तेने तेज हु अनिष्ट अप्रिय वगेरे थड पडी छु आ तैत्तिलिपुत्र भारी नामगोत्र सुद्धा साल जेवा भागता नथी त्यारे मने लेवानी अने भारी साथे रहेवानी तो तेमने पाछवा पडोरभा ( कुडुञ्जजागरिय जागरमाणीए अयमेया-रूपे अज्झत्थिए जाव समुत्पन्ने ) घर-गृहस्थीना विचाररती जगी रही डती त्यारे-आ जातनी

मित्तणाइ जाव संपरिवुडे सविविण्णिए जाव रवेणं नेयालिपुरस्स  
 मज्झं मज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छइ ।  
 पोहिला सीयाओ पच्चोरुहइ । तेतलिपुत्ते पोहिलं पुरओ कहु  
 जेणेव सुव्वया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ  
 नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ।  
 मम पोहिला भारिया इट्ठा ४, एसणं, संसारभउव्विगा जाव  
 पव्वइत्तए, पडिच्छतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणीभिक्खं अहा-  
 सुहं मा पडिवध करेहि । तएण सा पोहिला सुव्वयाहि अज्जाहि  
 एवंवुत्ता समाणा हट्ठुट्ठा उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ,  
 अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ, ओमुइत्ता,  
 सयमेव पच्चमुट्ठिय लोयं करेइ, करित्ता, जेणेव सुव्वयाओ तेणेव  
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदइ, णमसइ, वदित्ता णमसित्ता,  
 एव वयासी-आलित्ते णं भत्ते- । लोए एव जहा देवाणदा जाव  
 एक्कारसअगाइ अहिज्जइ, बहूणि वासाणि सामन्नरियागं पाउणइ,  
 पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता सट्ठि भत्ताइ  
 अणसणाए छेदित्ता, आलोइयपडिक्कता समाहिपत्ता कालमासे  
 कालकिच्चा अपणतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा ॥सू०८॥

टीका—‘तएणं तीसे’ इत्यादि । तत खलु तस्या पोहिलाया, ‘पुव्व  
 रत्तावरत्तकालसमयसि’ पूर्वरत्रावरत्रकालसमये=रात्रे पश्चिमेभागे ‘कुडुब जाग

तएण—‘तीसे पोहिलाए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तीसे पोहिलाए) उम पोहिला के  
 जघ नि वह (अन्नया क्याइ किमी एक दिन (पुव्वारत्तकालमम

‘तएण—तीस पोहिलालाए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्थार पछी (तीसे पोहिलाए) ते पोहिलाने-के क्यादे ते  
 (अन्नया क्याइ) डेअ ओअ द्विसे (— २॥

रिय जागरमाणीए ' कुडुम्भजागरिस्तं जाग्रत्या अयमेतद्भूय ' अज्झत्थिए जाव ' आध्यात्मिको यावत्=आध्यात्मिक=आत्मगतो यावन्मनोगत सकल्प समुत्पन्नः । सकल्पप्रकारमाह-एव खलु अहं तैत्तिरीयस्य पूर्वम् इष्टा कान्ता प्रिया मनोज्ञा मनोऽमा आमम्, इदानीमनिष्टा, अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा, अमनोऽमा यावत् परिभोग वा । अस्याभिमान-अहो मनुष्याणा मनोवृत्तेरस्थिरता । पूर्व, यस्यादम् इष्टा, कान्ता, प्रियाऽदिकाऽसम्, सैवाहमस्यानिष्टाऽकान्ताऽप्रियादिका जाताऽस्मि । अयं तैत्तिरीयुत्रो मम नाम गोत्रश्रवणमपि नेच्छति किं पुनर्ममदर्शनं मया सह परिभोग वाञ्छेत् अपितु नेत्यर्थः । ' त ' तत्=तस्मात्कारणात् ' सेय '

यसि ) रात्रि के पिछले भागमें (कुडुम्भजागरिय-जागरमाणीए अयमेया-रूवे अज्झत्थिए जाव समुत्पन्ने ) कुडुम्भ की, चिन्ता से जाग रहा थी इस प्रकार का आध्यात्मिक यावन्मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ- ( एव, खलु अहं तैत्तिरीयस्य पुर्वि इष्टा ५ आसि इयाणि अणिट्ठा ५ जाव परिभोग वा, त सेय खलु मम सुव्रयाण अज्जाण अतिए पव्वइत्तए ) मैं पहिले तैत्तिरीयुत्र को बहुत ही अधिक इष्ट, कान्त प्रिय, मनोज्ञ एवं मनोम थी-परन्तु अब मैं ऐसी नहीं रही हूँ-अनिष्ट आदि घन गई हूँ । और यातो की बात ही क्या है-वे तो अब मेरा मुख तक नहीं देखना चाहते हैं-देखो मनुष्यों की मनोवृत्ति कितनी अस्थिर है-पूर्व मैं जिसे इष्ट, कान्त, प्रिय, आदि रूप थी-अब वही मैं उसके लिये अ-निष्ट अप्रिय आदि घन गई हूँ । यह तैत्तिरीयुत्र तो मेरो नाम गोत्र तक भी सुनना नहीं चाहता है तो फिर मेरे साथ रहने की तो चाहना ही

आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उद्भवोऽयं ।

( एव खलु अहं तैत्तिरीयस्य पुर्वि इष्टा ५ आसि इयाणि अणिट्ठा ५ जाव परिभोग वा त सेय खलु मम सुव्रयाण अज्जाण अतिए पव्वइत्तए )

पडेला हु तैत्तिरीयुत्रने भूमज्ज धंकात, प्रिय, मनोज्ञ अने मनोम डती पणु डवे हु तेमना मटे तेवी रडी नथी अनीष्ट वगेरे थध पडी हु भारी साथे वातथीतनी वात तो दूर रडी पणु तेओ भाइ भो पणु जेवा भागता नथी जेरअर पुन्धोनी मनोवृत्ति डेटली अथी यथज डाय छे ? जेने पडेला जे हु इष्ट, कान्त, प्रिय, वगेरेना इपमा डती, डवे तेने तेज हु अनिष्ट अप्रिय वगेरे थध पडी हु आ तैत्तिरीयुत्र भारा नामगोत्र सुद्धा साल जेवा भागता नथी तयारे मने जेवानी अने भारी साथे रडेवानी तो तेमने भाछवा पडेला ( कुडुम्भजागरिय जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुत्पन्ने ) मर-जिह्वा-जीना विचाररती जगती रडी डती तयारे-आ जगतनी



શ્રેયઃ=ઉચિતં સ્વલુ મમ સુવ્રતાનામાર્યાણામન્તિકે પ્રવ્રજિતુમ્, એવ સપક્ષતે=વિચાર  
યતિ, સપ્રેક્ષ્ય=વિચાર્ય 'કલ્લ જાવ પાઉપ્પમાયાએ' કલ્લ યાવત્ પ્રાદુપ્પમાતા  
યામ્=પ્રાતઃ સૂર્યોદયસમયે યત્રેવ તેતલિપુત્રસ્તત્રેવ ઉવાગચ્છતિ ઉવાગન્ય 'કરયલ-  
પરિ' કરતલપરીગૃહીત મસ્તનેઽઙ્ગલિ કૃત્વા એવમવદત્-એવ સલુ હે દેવાણુપ્પિયા!  
મયા સુવ્રતાનામાર્યાણામન્તિકેધર્મઃ 'ણિસતે' નિશાન્તઃ=શ્રુત, 'જાવ અમણુ

હસે કૈસે હો સકતી હૈ । હસ લિયે મુઝે અથ યહી ઉચિત હૈ કિ મૈ  
સુવ્રતા આર્યિકા કે પાસ પ્રવ્રજિત હો જાઁ । ( એવ સપેહેહ, સપેરિસા  
કલ્લ જાવ પાઉપ્પમાયાએ જેણેવ તેયલિપુત્તે તેણેવ ઉવાગચ્છહ ) હસ  
પ્રકાર જથ વહ વિચાર કર ચુકી તો વિચાર કરકે ફિર જવ પ્રાત કાલ  
હુઆ ઓર સૂર્ય કા ઉદય હો ચુકા તથ જહાં તેતલિપુત્ર થા વહા પહુચી  
( ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ૦ એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! મએ  
સુવ્વઘાણં અજ્ઞાણં અતિએ ધમ્મે ણિસતે જાવ અવ્ભણુન્નાયા પવ્વહત્તાએ,  
તએણ તેયલિપુત્તે પોટ્ટિલ એવ વયાસી-એવ સ્વલુ-તુમ દેવાણુપ્પિએ !  
મુંડા પવ્વહયા સમાણી કાલમાસે કાલ કિચ્ચા અન્નયરેસુ દેવલોએસુ  
દેવત્તાએ ઉવવજ્જિહિસિ, ત જહ ણતુમ દેવાણુપ્પિએ ! મમ તાઓ દેવલો  
યાઓ આગમ્મ, કેવલિપવ્વત્તે ધમ્મે વોહેહિ તો હ વિસજ્જેમિ ) વહા જા  
કર હસને દોનોં હાથ જોડ કર હસ કો નમસ્કાર કિયા-વાદ મે વહ  
હસ પ્રકાર હસસે કહને લગી હૈ દેવાણુપ્રિય ! વાત એસી હૈ કિ મૈને

હરકાર જ શી હોય ? એથી મને હવે એજ ચોખ્ખ લાગે છે કે હુ સુવ્રતા  
આર્યિકાઓની પાસે પ્રવ્રજિત થઇ જાઉં

( એવ સપેહેહ, સપેહિત્તા કલ્લ જાવ પાઉપ્પમાયાએ જેણેવ તેયલિપુત્તે તેણેવ  
ઉવાગચ્છહ )

આ રીતે જ્યારે તેણે ચોક્કસ વિચાર કરી લીધો ત્યારે તે સવારે સૂર્યોદય  
થતા જ્યાં તેતલિપુત્ર અમાત્ય હતો ત્યાં પહોચી

( ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ૦ એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! મએ સુવ્વ  
યાણ અજ્ઞાણ અતિએ ધમ્મે ણિસતે જાવ અવ્ભણુન્નાયા પવ્વહત્તાએ, તએણ તેયલિપુત્તે  
પોટ્ટિલ એવ વયાસી-એવ સ્વલુ તુમ દેવાણુપ્પિએ ! મુંડા પવ્વહયા સમાણીકાલમાસે  
કાલ કિચ્ચા અન્નતરેસુ દેવલોએસુ દેવત્તાએ ઉવવજ્જિહિસિ ત જહણં તુમ દેવાણુ  
પ્પિએ ! મમ તાઓ દેવલોયાઓ આગમ્મ, કેવલિપવ્વત્તે ધમ્મે વોહેહિ તો હ વિસજ્જેમિ )

ત્યાં જઈને તેણે તેમને બંને હાથ જોડીને નમસ્કાર કર્યા અને ત્યારપછી  
તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગી કે હે દેવાણુપ્રિય ! મે સુવ્રતા

પાસેથી

णाया पद्मइत्तए ' याददभ्यनुज्ञाता प्रजितुम्=स धर्मो मम मनसि रुचितः तस्माद्भवताऽभ्यनुज्ञातासती प्रजितुमिच्छामीतिभावः । ततः खलु तेतलिपुत्रः पोद्दिला-मेवमदत्-एव खलु त्व देवानुप्रिये ! मुण्टा प्रजिता सती कालमासे कालं कृत्वाऽन्यतरेषु देवलोकेषु देवतया उपपत्स्यते । ' त ' तदा यदि खलु त्व देवानुप्रिये ! मा ततो देवलोकादागत्य केवलप्रज्ञस धर्मं बोधये , ' तोहं ' तदाऽह त्वा ' विसज्जेमि ' प्रजितुमाज्ञापयामि । ' अह ण ' अथ खलु यदि खलु त्व मा ' ण सरोहेसि ' न सरोधयसि=केवलप्रज्ञरूपित धर्मं बोधयितुं प्रतिज्ञां न करोषि ' तो ' तदा ' ते ' त्वा न विसज्जामि=प्रजितुं नाज्ञापयामि । ' तएण ' तत खलु=तेतलिपुत्रस्य एतद्ग्रन्थचरणानन्तम् , सा पोद्दिला तेतलिपुत्रस्य ' एयमट्ठ ' एतमर्थं=धर्मं प्रति बोधनरूपमर्थं ' पडिसुणेइ ' प्रतिश्रुणोति=स्वीकरोति । ततः खलु तेतलिपुत्रो विपुलमशनपानखाद्यस्त्राय चतुर्विधमाहारम् , ' उवक्खडावेइ ' उपस्कारयति=निपादयति, ' उवक्खडावित्ता ' उपस्कार्य ' मित्तणाइ जाव आमतेइ ' मित्रज्ञाति

सुव्रता आर्थिका के पास धर्म का उपदेश सुना है वह धर्म मुझे बहुत ही अधिक रुचिकर प्रतीत हुआ है । इस लिये मैं आपसे आज्ञा लेकर दीक्षित होना चाहती हूँ । पोद्दिला की ऐसी बात सुन कर तेतलिपुत्रने उससे कहा—देवानुप्रिये ! बात ऐसी है कि तुम दीक्षित हो कर जब काल अवसर काल करोगी ( यह निश्चित है ) अन्यतर देवलोक में देवता की पर्याय से उत्पन्न होओगी—तब यदि देवानुप्रिय ! मुझे वहाँ से आ कर तुम केवलप्रज्ञस धर्म समझाओ—तो मैं तुम्हें प्रजित होने के लिये आज्ञा दे सकना हूँ (अह ण तुम मम ण सरोहेसि तो ते ण विसज्जेमि तएण सा पोद्दिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठ पडिसुणेइ, ततः खलु तेयलिपुत्ते विपुल असण ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ जाव

धर्मोऽपदेशं साधयेत् । छे अने ते भने गभी गये छे, ओटला भाटे हु तमारी आज्ञा भोगीने दीक्षा ग्रहण करवा छे छे छे पोद्दिलानी आ जतनी बात साधणीने तेतलिपुत्रे तेने कहु के छे देवानुप्रिये ! तमे दीक्षित थधने त्थारे काणना समये काण करशे । अने अन्यतर देवलोकमा देवताना पर्यायथी जन्म पावशे । त्थारे ने तमे छे देवानुप्रिये ! त्थथी आवीने भने केवणि प्रज्ञस धर्म समज्जये तो हु तमने त्थारे शुशीथी प्रजितुत थवानी आज्ञा आपी शकु तेम छे

( अह ण तुम मम णं सरोहेसि तो ते ण विसज्जेमि तएणं सा पोद्दिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठ पडिसुणेइ, ततः खलु तेतलिपुत्ते विपुल असण ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता, मित्तणाइ जाव आमतेइ, आमंतित्ता, मित्तणाइ सम्माणित्ता पोद्दिल



શ્રેયઃ=ઉચિતં સ્વલુ મમ સુવ્રતાનામાર્યાણામન્તિકે પ્રવ્રજિતુમ્, ૫૨ મપ્રક્ષતે=વિચાર  
યતિ, સપ્રેક્ષ્ય=વિચાર્ય 'કલ્લ જાવ પાઉપ્પમાયાણ' કલ્લ યાવત્ પ્રાદુપ્પમાયા  
યામ્=માતઃ સૂર્યોદયસમયે યત્રૈવ તેતલિપુત્રસ્તત્રૈવ ઉવાગચ્છતિ ઉવાગત્ય 'કરયલ-  
પરિ' કરતલપરીગૃહીત મસ્તમેડ્ઝલિં કૃત્વા ૫૨મવદત્-૫૨ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિય !  
મયા સુવ્રતાનામાર્યાણામન્તિકેધર્મઃ 'ણિસતે' નિશાન્તઃ=શ્રુત, 'જાવ અબ્બણ

હસે કૈસે હો સકતી હૈ । હસ લિયે મુદ્દે અથ યહી ઉચિત હૈ કિ મૈ  
સુવ્રતા આર્યિકા કે પાસ પ્રવ્રજિત હો જાઁ । ( ૫૧ સપેહેહ, સપેહિત્તા  
કલ્લ જાવ પાઉપ્પમાયાણ જેણેવ તેયલિપુત્તે તેણેવ ઉવાગચ્છહ ) હસ  
પ્રકાર જથ વહ વિચાર કર ચુકી તો વિચાર કરકે ફિર જથ પ્રાત કાલ  
હુઆ ઓર સૂર્ય કા ઉદય હો ચુકા તથ જહાં તેતલિપુત્ર થા વહા પહુંચી  
( ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ૦ ૫૨ વયાસી-૫૨ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! મણ  
સુવ્વયાણં અજ્ઞાણં અતિણ ધમ્મે ણિસતે જાવ અબ્બણુનાયા પવ્વહત્તણ,  
તણ્ણ તેયલિપુત્તે પોટ્ટિલ ૫૨ વયાસી-૫૨ સ્વલુ-તુમ દેવાણુપ્પિણ !  
મુડા પવ્વહયા સમાણી કાલમાસે કાલ કિચ્ચા અન્નયરેસુ દેવલોણ્ણુ  
દેવત્તાણ ઉવવજ્જિહિસિ, ત જહ્ણ તુમ દેવાણુપ્પિણ ! મમ તાઓ દેવલો  
યાઓ આગમ્મ, કેવલિપન્નત્તે ધમ્મે વોહેહિ તો હ વિસજ્જેમિ ) વહા જા  
કર હસને દોનોં હાથ જોડ કર હસ કો નમસ્કાર કિયા-વાદ મેં વહ  
હસ પ્રકાર હસસે કહને લગી હૈ દેવાનુપ્રિય ! વાત એસી હૈ કિ મૈને

દરકાર જ શી હોય ? એથી મને હવે એજ યોગ્ય લાગે છે કે હું સુવ્રતા  
આર્યિકાઓની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ જાઉં

( ૫૨ સપેહેહ, સપેહિત્તા કલ્લ જાવ પાઉપ્પમાયાણ જેણેવ તેયલિપુત્તે તેણેવ  
ઉવાગચ્છહ )

આ રીતે જ્યારે તેણે ચોક્કસ વિચાર કરી લીધો ત્યારે તે સવારે સૂર્યોદય  
થતાં જ્યાં તેતલિપુત્ર અમાત્ય હતો ત્યાં પહોંચી

( ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ૦ ૫૨ વયાસી-૫૨ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! મણ સુવ્વ  
યાણ અજ્ઞાણ અતિણ ધમ્મે ણિસતે જાવ અબ્બણુનાયા પવ્વહત્તણ, તણ્ણ તેયલિપુત્તે  
પોટ્ટિલ ૫૨ વયાસી-૫૨ સ્વલુ તુમ દેવાણુપ્પિણ ! મુડા પવ્વહયા સમાણીકાલમાસે  
કાલ કિચ્ચા અન્નયરેસુ દેવલોણ્ણુ દેવત્તાણ ઉવવજ્જિહિસિ ત જહ્ણ તુમ દેવાણુ  
પ્પિણ ! મમ તાઓ દેવલોયાઓ આગમ્મ, કેવલિપન્નત્તે ધમ્મે વોહેહિ તો હ વિસજ્જેમિ )

ત્યાં જઈને તેણે તેમને બંને હાથ જોડીને નમસ્કાર કર્યો અને ત્યારપછી  
તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગી કે હે દેવાનુપ્રિય ! મેં સુવ્રતા આર્યિકાઓની પાસેથી

‘દ્રોહ’=આરોહ ‘મિત્ર’નાહ જાવે સેપરિવુડે ‘મિત્ર’જ્ઞાતિ પાત્ સપરિવૃત્તઃ=મિત્ર-  
જ્ઞાતિસ્વજનસમ્પન્નિપરિજનાદિભિર્યુક્તઃ ‘સન્વિદ્વો’ ‘સર્વદ્વર્ચા’ ‘જાત રવેણ’  
‘યાવદ્રવેણ’=મેર્યાદિનિનાદેને સહ તેતલિપુરસ્ય મંયમધ્યેન યત્રૈવ સુત્રતાનામુપોશ્રય  
સ્તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ । સા પોટિલા શિવિકાતઃ ‘પંચોરુહ’ મત્યવ્રોહતિ=અવતરતિ ।  
તેત સ તેતલિપુત્ર પોટિલા પુરતઃ કૃત્વા યત્રૈવ સુત્રતા આર્યા તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ,  
ઉપોગત્ય, વન્દતે નમસ્યતિ, વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા એમવદત્-એવ સ્વલુ હે  
દેવાનુપ્રિયાઃ મમ પોટિલામાર્યા ઇષ્ટા કાન્તા પ્રિયા મનોજ્ઞા મનોડમા, વર્તતે,

ઘેઠા કર મિત્ર, જ્ઞાતિ સ્વજન સમ્પન્ની પરિજનોં સે ‘યુક્ત’ હોકર અપંની  
સમસ્ત વિભૂતિ કે અનુસાર ગાજે ‘વાજે’કે સાથ તેતલિપુર નગર કે વીચો-  
‘વીચ’ ચલે કર વહ જર્હા સુત્રતા આર્યાના કો ઉપાશ્રય યા વહા ‘પહુ’ચા ।  
( ‘પોટિલા સીયાઓ પંચોરુહ, તેતલિપુત્રે પોટિલ પુરો કટ્ટુ જેણેવ  
‘સુવ્વયા અજ્ઞાઓ તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા, વન્દઈ નમસઈ વન્દિત્તા  
‘નમસિત્તા એવ વયાસી, એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા । મમ પોટિલા મારિયા ઇદ્ધા  
૫ એસણ સસારમહાવિગ્ગા જાવ પવ્વહત્તણ પહિચ્છતુ ણ દેવાણુપ્પિયા !  
સિસ્સિણીભિક્ખ અહાસુહ મા પહિવધ કરેહિ ) પોટિલા શિવિકા સે  
ઉત્તરી-તેતલિપુત્ર પોટિલાકો આગે કરકે જર્હા સુત્રતા આર્યા થીં વહાં  
ગયા । જા કર ઉસને ઉત્તરીકો વન્દનાંકી નમસ્કાર ક્રિયા । વન્દનાં નમસ્કાર  
કરકે ફિર હસ પ્રકાર કહને લગો હે દેવાનુપ્રિયે ! યહ મેરી પોટિલા નામ  
કી પત્ની હૈ । યહ મુજ્ઞે ઇષ્ટ, કાન્ત, પ્રિય, મનોજ્ઞ એવ મનોમ હૈ । ઉસને

પાલખીમા બેમાડીને મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન સમ્પન્ની પરિજનોને સથે લઇને  
તે પોતાની સમસ્ત વિભૂતિ મુજબ ગાળવાળની સાથે તેતલિપુર નગરની  
‘વર્ચોવચ્ચ’ થઇને જ્યા તે સુત્રતા આર્યાના ઉપાશ્રય હતો ત્યા પહોચ્યો  
( ‘પોટિલા સીયાઓ પંચોરુહ, તેતલિપુત્રે પોટિલ પુરો કટ્ટુ જેણેવ સુવ્વયા અજ્ઞાઓ  
તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા, વન્દઈ, નમસઈ, વન્દિત્તા નમસિત્તા એવ વયાસી એવ  
સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા । મમ પોટિલા મારિયા ઇદ્ધા ૫ એસણ સસારમહાવિગ્ગા જાવ  
પવ્વહત્તણ પહિચ્છતુ ણ દેવાણુપ્પિયા ! સિસ્સિણીભિક્ખ અહાસુહ મા પહિવધ કરેહિ )  
પોટિલા પાલખીમાથી નીચે ઉતરી પડી, તેતલિપુત્ર અમાત્ય પોટિલાને  
‘આગળ રાખીને’ જ્યા સુત્રતા આર્યા હતી ત્યા ગયો ત્યા જઈને તેણે તેમને  
‘વન્દના તેમજ નમસ્કાર કર્યા, વન્દના અને નમસ્કાર કરીને તેણે આ પ્રમાણે  
કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! આ પોટિલા નામે મારી પત્ની છે અને એ ઇષ્ટકાંત,  
પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ છે એણે તમારી પાસેથી ‘ધર્મ’નું શ્રવણ કર્યું છે

યાવંદામન્ત્રયતિ, મિત્રજ્ઞાતિસ્વજનસમ્બન્ધિપરિજનાન્ આમન્ત્રયતિ, 'આમંત્રિતા' આમન્ત્ર્ય 'જાવ સમાણેઃ' યાવત્-સમાનયતિ=મશનેશનાદિ ચતુર્વિધાદારેણ સમાન્ય, 'પોટિલ પ્હાય જાવ પુરિસસહસ્સવાહિણિ સીય' પોટિલા સ્નાતા યાવત્ પુરુષસહસ્સવાહિની શિવિકામ્, 'દુરોદ્દેહ' દુરોદ્ધયતિ=આરોહયતિ, 'દુરુહિતા' આમંતેઃ આમતિતા જાવ સમ્માણેઃ, સમ્માણિતા પોટિલ પ્હાય જાવ પુરિસસહસ્સવાહિણિ સીય દુરુદ્દેહ, દુરુહિતા મિત્તાણાઃ જાવ સંપડિ-વુડે સન્વિહીણ જાવ રવેણ તેયલિપુરસ્સ મજ્ઞ મજ્ઞેણ જેણેવ સુન્વયાણ ઉવસ્સણ તેણેવ ઉવાગચ્છઃ ) યદિ તુમ મુદ્ધે સંયોધિત નહીં કરોગી અર્થાત્ કેવલિ પ્રજસ ધર્મ કો મુદ્ધે સમજ્ઞાને કી પ્રતિજ્ઞા નહીં કરોગી તો મેં તુમ્હે દીક્ષિત હોને કી આજ્ઞા નહીં દેગા—ઇસ પ્રકાર કે તેતલિપુત્રકે ઇસ કથનકો ઉસ પોટિલાને સ્વીકાર કર લિયા । અર્થાત્ મેં દેવલોક મેં જાઝગા તો વહા સે આ કર આપ કો પ્રતિયોધ દેગી ઇસ પ્રકાર જય પોટિલા ને સ્વીકાર કર લિયા । ઇસ કે ઘાંદ તેતલિપુત્ર ને વિપુલ માત્રા અનંશનાદિ રૂપ ચારો પ્રકાર કા આહાર નિર્વપ્ન કરવાયા-કરવા કરકે ફિર ઉસને અપને મિત્ર, જ્ઞાતિ, આદિ જનો કો આમંત્રિત કિયા । મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન સબન્ધી પરિજનોકો આમંત્રિત કરકે યાવત્ અશન પાના દિરૂપે ઇસ ચતુર્વિધ આહાર સે ઉનકા સન્માન કરકે ઉસને પોટિલાકો સ્નાન કરવા કર યાવત્ ઉસે પુરુષ સહસ્સવાહિની શિવિકા પર બેઠાયા,

પ્હાય જાવ પુરિસસહસ્સવાહિણિ સીય દુરુદ્દેહ દુરુહિતા મિત્તાણાઃ જાવ સંપડિવુડે સન્વિહીણ જાવ રવેણ તેયલિપુરસ્સ મજ્ઞ મજ્ઞેણ જેણેવ સુન્વયાણ ઉવસ્સણ તેણેવ ઉવાગચ્છઃ )

જો તમે મને સબોધશો નહિ એટલે કે જો તમે મને કેવળિ પ્રજસ ધર્મને સમજાવવાની પ્રતિજ્ઞા કરશો નહિ તો તમને હું કોઈપણ સંભોગમા પંજી દીક્ષા સ્વીકારવાની આજ્ઞા આપીશ નહિ આ રીતે કહેવાથી પોટિલાએ તેતલિપુત્રના કથનને સ્વીકારી લીધું એટલે કે પોટિલાએ તેમને આ પ્રમાણે પ્રતિજ્ઞાબદ્ધ થઈને કેહ્યું કે હું દેવલોકમા જઈશ અને ત્યાંથી આવીને તમને ધર્મનો બોધ આપીશ આમ જ્યારે પોટિલાએ સ્વીકારી લીધું ત્યારપછી તેતલિપુત્રે મુખેણ પ્રમાણમા અશન વગેરેના રૂપમા ચાર જાતના આહારો ખનાવડાવ્યા અને ત્યારબાદ તેણે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ, વગેરે સ્વજનોને આમંત્રણ આપ્યું મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન સબન્ધી પરિજનોને આમંત્રણ આપીને યાવત્ અશન પાન વગેરે ચાર જાતના આહારોથી તેમનું સન્માન કરીને તેણે પોટિલાને સ્નાન કરાવડાવ્યું અને યાવત્ તેને પુરુષ સહસ્સવાહિની પાલિ સાડી,



દૂરોહ્ય=આરોહ્ય ' મિત્રણાહ જાવ સેપરિવુડે ' મિત્રજ્ઞાતિ યાત્ સપરિવૃતઃ=મિત્ર-  
જ્ઞાતિસ્વજનસમ્પન્ધિપરિજનાદિભિર્યુક્તઃ ' સન્વિદ્ધોએ ' સર્વદર્શી ' જાત રવેણ '  
યાવદ્રવેણ=મેર્યાદિનિનાદેન સહ તેતલિપુરસ્ય મ'યમધ્યેન યત્રૈવ સુત્રતાનામુપોશ્રય  
સ્તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ । સા પોટિલા શિવિકાતઃ ' પચ્ચોરુહઢ ' પ્રત્યવરોહતિ=અવતરતિ ।  
તેત સ તેતલિપુત્ર પોટિલા પુરતઃ કૃત્વા યત્રૈવ 'સુત્રતા આર્યા તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ,  
ઉપોગત્ય, ચન્દતે નમસ્યતિ, વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા એમવદત્-એવં સ્વલુ હે  
દેવાનુપ્રિયાઃ મમ પોટિલાભાર્યા ઇષ્ટા કાન્તા પ્રિયા મનોજ્ઞા મનોડમા, વર્તતે,  
થેઠા કર મિત્ર, જ્ઞાતિ સ્વજન સમ્પન્ધી પરિજનોં સે 'યુક્ત' હોકર અપની  
સમસ્ત વિભૂતિ કે અનુસાર ગાજે વાજેકે સાથ તેતલિપુર નગર કે વીર્ચો-  
'વીર્ચ' ચલ કર વહ જહાં સુત્રતા આર્યાકા કા ઉપાશ્રય થા વહા 'પહુંચા ।  
( 'પોટિલા સીયાઓ પચ્ચોરુહઢ, તેતલિપુત્રે પોટિલ પુરઓ કદ્દુ જેણેવ  
'સુવ્વયા અંજાઓ તેણેવ ઉવાગચ્છઢ, ઉવાગચ્છિત્તા, વંદઢ નમસઢ વદિત્તા  
'નમસિત્તા એવ વયાસી, એવં સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા 'મમ પોટિલા ભારિયા ઇટ્ઠા  
૫ 'એસણ સસારમહાવિગ્ગા જાવ પવ્વહિત્તણ પહિચ્છતુ ણ દેવાણુપ્પિયા !  
સિસ્સિણીભિક્ખ અહાસુહ માં પહિવધ કરેહિ ) પોટિલા શિવિકા સે  
ઉત્તરી-તેતલિપુત્ર પોટિલાકો આગે કરકે જહાં સુત્રતા આર્યાકા થીં વહાં  
ગયા । જા કર ઉસને ઉનકો વંદનાંકી નમસ્કાર ક્રિયા । વંદનાં નમસ્કાર  
કરકે ફિર હસ પ્રકાર કહને લગો હે દેવાનુપ્રિયે ! યહ મેરી પોટિલા નામ  
કી પત્ની હૈ । યહ મુજે ઇષ્ટ, કાન્ત, પ્રિય, મનોજ અને મનોમ હૈ । હસને

પાલખીમા બેઠાડીને મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન સમ્પન્ધી પરિજનોને સથે લઇને  
તે પોતાની સમસ્ત વિભૂતિ મુજબ ગાળવાળની સાથે તેતલિપુર નગરની  
'વચ્ચોવચ્ચ' થઇને જ્યાં તે સુત્રતા આર્યાકાનો ઉપાશ્રય હતો ત્યાં પહોંચ્યો  
( 'પોટિલા સીયાઓ પચ્ચોરુહઢ, તેતલિપુત્રે પોટિલ પુરઓ કદ્દુ જેણેવ 'સુવ્વયા અંજાઓ  
તેણેવ ઉવાગચ્છઢ, ઉવાગચ્છિત્તા, વંદઢ, નમસઢ, વદિત્તા 'નમસિત્તા એવ વયાસી એવ  
સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! મમ 'પોટિલા ભારિયા' ઇટ્ઠા ૫ 'એસણ સસારમહાવિગ્ગા જાવ  
પવ્વહિત્તણ પહિચ્છતુ ણ દેવાણુપ્પિયા ! સિસ્સિણીભિક્ખ અહાસુહ માં પહિવધ કરેહિ )  
'પોટિલા પાલખીમાથી નીચે ઉતરી પડી, તેતલિપુત્ર 'અમાત્ય પોટિલાને  
આગળ રાખીને જ્યાં સુત્રતા આર્યાકા હતી ત્યાં ગયો ત્યાં જઇને તેણે તેમને  
'વંદના તેમજ નમસ્કાર કર્યા, 'વંદના અને 'નમસ્કાર કરીને તેણે આ પ્રમાણે  
'કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! આ પોટિલા નામે મારી પત્ની છે અને એ ઇષ્ટકોત,  
પ્રિય, મનોજ અને મનોમ છે એણે 'તમારી પાસેથી 'ધર્મ'નું શ્રવણ કર્યું છે

एषा खलु भवतीना ममीपे धर्मे श्रुता, धर्मश्रवणजनितवैराग्यशतात् समारमयो  
 द्विगुणा ' जाव पञ्चइत्तए ' यावत् प्रवर्जितुम् भीता जन्म मरणेभ्यो भवतीनामन्तिके  
 प्रवर्ज्या ग्रहीतुमिच्छति, तस्मात् ' पठिच्छु ' प्रतीच्छन्तु=स्वीकुर्वन्तु खलु देवानु  
 प्रियाः ! इमा शिष्याभिक्षाम्, सुवतार्या प्राह-यथासुखम् मा प्रतिवन्द्य कुरुष्व ।  
 ततः खलु सा पोट्टिला सुवताभिरार्याभिरेवमुक्ता सती हृष्टतुष्टा उत्तरपौरस्थ  
 दिग्भागम्=ईशानकोणम् अवक्राम्यति=गच्छति, अवक्रम्य स्वयमेव आभरणमाल्या  
 लकारमवमुञ्चति, अवमुन्य स्वयमेव पञ्चमुष्टिक लोच करोति, कृत्वा यत्रैव सुवता  
 आर्यास्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्वित्वा एवमव  
 दत्- ' आलित्तेण भते ! लोए ' आदीप्तः खलु मदन्त ! लोकः-हे आर्ये ! एष  
 लोको जन्मनरामरणादिभिर्दुःखै प्रज्वलितः, ' एव ' अनेन प्रकारेण ' जहा देवाणदा'  
 यथा देवानन्दा=देवानन्देव एषापि सुवतानामन्तिके प्रवर्जिता, यावत्-एकादश  
 अङ्गानि अधीते, बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा मासिकया

आपके पास धर्म सुना है सो उसके प्रभाव से यह ससार भय से  
 उद्धिग्न हो कर जन्म मरण से भीत, व्रस्त हो कर आपके पास दीक्षित  
 होना चाहती है । इसलिये हे देवानुप्रिये ! आप मेरे द्वारा दी गई इस  
 शिष्य भिक्षाको अंगीकार कीजिये । तब सुवता आर्यिका ने कहा—  
 यथा सुख मा प्रतिवध कुरुष्व—(तएण सा पोट्टिला-सुव्वयाहिं अज्जाहिं  
 एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्क  
 मित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव, पच  
 मुट्ठिय लोय करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ तेणेव उवागच्छइ, उवा  
 गच्छित्ता वदइ नमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—अलित्ते ण  
 भते । लोए एव जहा देवाणदा जाव एक्कारसअगाइ अहिज्जइ, बहूणि

તેના પ્રભાવથી એ સસારભયથી વ્યાકુળ થઈને જન્મ-મરણથી ભીત અને વ્રસ્ત  
 થઈને તમારી પાસેથી દીક્ષા ગ્રહણ કરવા ઇચ્છે છે એટલા માટે હે દેવાનુ  
 પ્રિયે ! મારા વડે અપાતી આ શિષ્યા રૂપી ભિક્ષાનો સ્વીકાર કરો ત્યારે  
 જવાળમા સુવતા આર્યિકાએ તેને કહ્યું કે ' યથાસુખ મા પ્રતિવધ કુરુષ્વ '  
 ( તણ સા પોટ્ટિલા સુવ્વયાહિં અજ્જાહિં એવ વુત્તા સમાણા હટ્ઠતુટ્ઠા ઉત્તર  
 પુરત્થિમં દિસી ભાગ અવક્કમઈ, અવક્કમિત્તા સયમેવ આભરણ-મલ્લાલકાર  
 ઓમુયઈ, ઓમુઈત્તા સયમેવ, પચમુટ્ઠિય લોય કરેઈ, કરિત્તા જેણેવ સુવ્વયાઓ  
 તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા વદઈ નમમઈ, વદિત્તા, ણમસિત્તા એવ વયાસી-  
 અલિત્તેણ ભતે ! લોએ એવ જહા દેવાણંદા જાવ એકકારસઅંગાઈ અહિજ્જઈ, બહૂણિ



સહેલનયા આત્માન જુદા પડિ ભક્તાનિ અનશનેન છિત્વા, ' આલોહ્યપડિકતા ' આલોચિત પ્રતિકાન્તા ' સમાહિપતા ' સમાધિપ્રાપ્તા કાલમાસે કાલ કૃત્વા અન્ય-તરેષુ દેવગ્રોકેષુ દેવતયા ઉપપન્ના । સુ.૮ ॥

વાસાણિ સામન્નપરિયાગ પાડણહ, પાડણિત્તા માસિયાણ સહેહણાણ અત્તાણ જ્ઞોસેત્તા સદ્ધિભત્તાહ અણસણાણ છેદિત્તા આલોહ્યપડિકતા સમાહિપત્તા, કાલમાસે કાલ કિચ્ચા અણ્ણતરેસુ — દેવલોણસુ દેવત્તાણ ઉવવણ્ણા ) इस प्रकार सुव्रता आर्यिका के द्वारा कही गई वह-पोटिला बहुत अधिक हृष्टतुष्ट हुई। बाद में वह ईशान कोणमें गई। वहां जाकर उसने अपने हाथों से शरीर पर रहे हुए आभरण, माल्य एवं अलंकारों को उतार दिया। उतार कर अपने आप पंचमुष्टिक वेशों का लुचन किया-लुचन कर फिर वह जहां सुव्रता आर्षा थीं वहां आई। आते ही उसने उन्हें वन्दना एवं नमस्कार करके फिर वह इस प्रकार बोली— हे भदन्त ! यह लोक जरा मरण आदि दुःखों से प्रवृत्त हो रहा है, इस प्रकार से देवानदा की तरह यह सुव्रता आर्षा के पास दीक्षित हो गई। याचत् उसने ११ अंगों का अध्ययन भी कर लिया। बहुत वर्षों तक आमण्य पर्याय को पालन किया। प्रीतिपूर्वक अन्त में एक मास की सहेखना धारण कर ६०, भक्तों का अनशन द्वारा छेद

વાસાણિ સામન્નપરિયાગં પાડણહ, પાડણિત્તા માસિયાણ સહેહણાણ અત્તાણ જ્ઞોસેત્તા સદ્ધિ ભત્તાહ અણસણાણ છેદિત્તા આલોહ્યપડિકકંતા સમાહિપત્તા, કાલમાસે કાલ કિચ્ચા અણ્ણતરેસુ દેવલોણસુ દેવત્તાણ ઉવવણ્ણા )

આ રીતે સુવ્રતા આર્યિકા વડે આજ્ઞા અપાયેલી પોટિલા ખૂબ જ હૃષ્ટ-તુષ્ટ થઈ ગઈ ત્યારપછી તે ઈશાન કોણ તરફ ગઈ અને ત્યાં જઈને તેણે પોતાના હાથથી જ શરીર ઉપરના આભરણો, માળાઓ અને અલંકારો ને ઉતાર્યા અને ઉતારીને પોતાની મેળે જ પાંચ મુઠી કેશોનુ લુચન કર્યું લુચન કર્યા પછી તે જ્યાં સુવ્રતા આર્ષા હતી ત્યાં આવતી રહી ત્યાં આવીને તેણે તેમને વદન અને નમસ્કાર કર્યા, વદના અને નમસ્કાર કરીને તે આ પ્રમાણે વિનંતી કરવા લાગી કે હે ભદન્ત ! આ સંસાર જરા ( ઘડપણ ) મરણ વગેરે દુ ખોથી સળગી રહ્યો છે આ રીતે પોટિલા દેવાનદાની જેમ સુવ્રતા આર્ષાની પાસે દીક્ષિત થઈ ગઈ અને અનુક્રમે તેણે અગિયાર અંગોનુ અધ્યયન પણ કરી લીધું તેણે ઘણા વર્ષો સુધી આમણ્ય પર્યાયનુ પાલન કર્યું છેવટે પ્રીતિપૂર્વક એક માસની સહેખના ધારણ કરીને અનશન વડે સાઠ લક્ષોનુ છેદન કર્યું

एषा खलु भवतीना समीपे धर्मे शुभा, धर्मश्रवणजनितवैराग्यवशात् समारम्भयो  
 द्विग्ना 'जाव पञ्चइत्तए' यावत् प्रव्रजितुम् भीता जन्म मरणेभ्यो भवतीनामन्तिके  
 प्रव्रज्या ग्रहीतुमिच्छति, तस्मात् 'पडिच्छतु' प्रतीच्छन्तु=स्वीकुर्वन्तु गलु देवानु  
 प्रियाः । इमा शिष्याभिक्षाम्, सुव्रतार्या प्राह—यथासुखम् मा प्रतिवन्ध कुरुष्व ।  
 ततः खलु सा पोडिला सुव्रताभिरार्याभिरेवमुक्ता सती हृष्टतुष्टा उत्तरपौरस्य  
 दिग्भागम्=ईशानकोणम् अवक्राम्यति=गच्छति, अवक्रम्य स्वयमेव आभरणमाल्या  
 लकारमवमुञ्चति, अवमुच्य स्वयमेव पञ्चमुष्टिक लोच करोति, कृत्वा यत्रैव सुव्रता  
 आर्यास्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमव  
 दत्—'आलित्तेण भते । लोए' आदीप्तः खलु भदन्त ! लोकः—हे आर्ये ! एष  
 लोको जन्ममरणादिभिर्दुःखैः प्रज्वलितः, 'एव' अनेन प्रकारेण 'जहा देवाणदा'  
 यथा देवानन्दा=देवानन्देव एषाऽपि सुव्रतानामन्तिके प्रव्रजिता, यावत्—एकादश  
 अङ्गानि अधीते, बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा मासिक्या

आपके पास धर्म सुना है सो उसके प्रभाव से यह ससार भय से  
 उद्विग्न हो कर जन्म मरण से भीत, ग्रस्त हो कर आपके पास दीक्षित  
 होना चाहती है । इसलिये हे देवानुप्रिये ! आप मेरे द्वारा दी गई इस  
 शिष्य भिक्षाको अगीकार कीजिये । तत्र सुव्रता आर्यिका ने कहा—  
 यथा सुख मा प्रतिवध कुरुष्व—(तएण सा पोडिला—सुव्वयाहिं अज्जाहिं  
 एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा उत्तरपुरत्थिम दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्क  
 मित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव, पच्च  
 मुट्ठिय लोय करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ तेणेव उवागच्छइ, उवा  
 गच्छित्ता वदइ नमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—अलित्ते ण  
 भते । लोए एव जहा देवाणदा जाव एक्कारसअगाइ अहिज्जइ, बहूणि

तेना प्रभावथी ये ससारलयथी व्याकुल थयने जन्म-मरणथी भीत अने ग्रस्त  
 थयने तमागी पासेथी दीक्षा ग्रहण करवा छिठे छे अटला भाटे छे देवानु  
 प्रिये ! मेरा वडे अपाती आ शिष्या इपी भिक्षानो स्वीकार करे । त्वारे  
 जवाणमा सुव्रता आर्यिकाये तेने कह्यु के 'यथासुख मा प्रतिवध कुरुष्व'  
 (तएण सा पोडिला सुव्वयाहिं अज्जाहिं एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा उत्तर-  
 पुरत्थिम दिसी भाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्लालकार  
 ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव, पच्चमुट्ठिय लोय करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ  
 तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदइ नमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—  
 अलित्तेण भते । लोए एव जहा देवाणदा जाव एक्कारसअगाइ अहिज्जइ, बहूणि

जाव उवणेइ, उवणित्ता, एवं वयासी-एस णं देवाणुप्पिया ।  
 कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए अत्तए कणगज्झए नाम  
 कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रन्धो  
 रहस्सियं सवड्ढिए, एयं णं तुब्भे महयार रायाभिसेएणं अभि-  
 सिचह । सव्व च से उट्ठाणपरियावणिय परिकहेइ । तएणं ते  
 ईसर० कणगज्झयं कुमार महयार रायाभिसेएणं अभिसिचंति ।  
 तएणं से कणगज्झए कुमारे राया जाए, महया हिमवंत मलय०  
 वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ । तएणं सा पउमा-  
 वई देवी कणगज्झय रायं सदावेइ, सदावित्ता, एवं वयासी-  
 एस णं पुत्ता । तव रज्जे य जाव अतेउरे य० तुम च तैतलि-  
 पुत्तस्स अमच्चस्स पहावेण, तं तुमं ण तेयलिपुत्तं अमच्चं  
 आढाहि परिजाणाहि सक्कारेहि सम्माणेहि इत अब्भुट्ठेहि, ठियं  
 पज्जुवासाहि, वयंतं पडिससाहेहि, अच्चासणेणं उवणिमंतेहि  
 भोग च से अणुवड्ढेहि । तएणं से कणगज्झए राया पउमावईए  
 देवीए तहत्ति पडिसुणेइ जाव भोगं च से अणुवड्ढेइ ॥सू० ९॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः खलु स कनकरथो राजा अन्यदा  
 कदाचित् । ‘कालग्गमुगा सजुत्ते’ कालवर्मेण सयुक्तः= मृतश्चाप्यभवत् । ततः

‘तएण से कणगरहे राया’ इत्यादि ।

टीकार्थ—( तएणं ) इसके बाद ( से कणगरहे राया अन्नया कयाइ )  
 वह कनकरथ राजा किसी एक दिन काल कवलित हो गया ( तएण

‘तएण से कणगरहे राया’ इत्यादि

टीकार्थ—( तएण ) त्था२५४ ( से कणगरहे राया अन्नया कयाइ ) ते कनकरथ

कवलित थय गयो अटले के मृत्यु पाभ्ये ।



मूलम्—तएण से कणगरहे राया अन्नया कयाइ कालभम्मुण  
 सजुत्ते यावि होत्था । तएण राईसर जाव णीहरणं करेत्ति,  
 करित्ता, अन्नमन्न एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए । कणग-  
 रहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियगित्था, अम्हेणं देवाणुप्पिया ।  
 रायाहीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा अय च णं तेतली  
 अमच्चे कणगरहस्स रत्तो, सव्वट्ठाणेषु सव्वभूमियासु लद्ध-  
 च्चए दिन्नवियारे सव्वकज्जवट्ठावए यावि होत्था, त सेय खलु  
 अम्ह तेतलिपुत्त अमच्चं कुमारं जाइत्तएत्ति कट्ठु अन्नमन्नस्स  
 एयमट्ठ पडिसुणेत्ति, पडिसुणित्ता, जेणेव तेतलिपुत्ते अमच्चे  
 तेणेव उवागच्छत्ति, उवागच्छित्ता, तेतलिपुत्त अमच्च एव  
 वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे  
 य जाव वियगेइ । अम्हे य णं रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा,  
 तुम च णं देवाणुप्पिया । कणगरहस्स रण्णो सव्वट्ठाणेषु जाव  
 रज्जधुराचितए, तं जइण देवाणुप्पिया । अत्थि केइ कुमारे  
 रायलक्खणसपन्ने अभिसेयारिहे, तण्णं तुम अम्ह दलाहि ।  
 जाणं अम्हे महयार रायाभिसेएणं अभिसिचामो । तएणं  
 तेतलिपुत्ते तेसिं ईसरं एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता, कण-  
 गज्झय कुमार पहाय जाव सस्सिरीय करेइ, करित्ता तेसिं ईसर

दिया । छेद कर आलोचित प्रतिक्रान्त बनी हुई यह समाधि प्राप्त हो  
 गई और काठ अवसर काल कर अन्यतर देवलोकमें देवता की पर्याय  
 से उत्पन्न हो गई । सू० ८ ॥

छेद कर आलोचित प्रतिक्रान्त बनी हुई यह समाधि प्राप्त थी यह गार्ध अने काण  
 अवसरे काण करीने अन्यतर देवलोकमा देवताता पर्यायधी जन्म पायी सू '८'



जाव उवणेइ, उवणित्ता, एवं वयासी-एस ण देवाणुप्पिया ।  
 कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए अत्तए कणगज्झए नाम  
 कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रत्तो  
 रहस्सियं सवड्ढिए, एयं णं तुव्वमे महयार रायाभिसेएणं अभि-  
 सिचह । सव्व च से उट्ठाणपरियावणिय परिकहेइ । तएणं ते  
 ईसर० कणगज्झयं कुमारं महयार रायाभिसेएणं अभिसिचंति ।  
 तएणं से कणगज्झए कुमारे राया जाए, महया हिमवंत मलय०  
 वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ । तएणं सा पउमा-  
 वई देवी कणगज्झय रायं सदावेइ, सदावित्ता, एव वयासी-  
 एस णं पुत्ता । तव रज्जे य जाव अंतेउरे य० तुम च तेतलि  
 पुत्तस्स अमच्चस्स पहावेण, त तुमं ण तेयलिपुत्त अमच्चं  
 आढाहि परिजाणाहि सक्कारेहि सम्माणेहि इंत अब्भुट्ठेहि, ठियं  
 पज्जुवासाहि, वयंतं पडिससाहेहि, अद्धासणेणं उवणिमंतेहि  
 भोग च से अणुवड्ढेहि । तएणं से कणगज्झए राया पउमावईए  
 देवीए तहत्ति पडिसुणेइ जाव भोग च से अणुवड्ढेइ ॥सू० ९॥

टीका—‘ तएण से ’ इत्यादि । ततः खलु स कनकरथो राजा अन्यदा  
 कदाचित् । ‘ कालगम्मुगा सजुत्ते ’ काळवर्मेण सयुक्तः= मृतश्चाप्यभवत् । ततः

‘तएण से कणगरहे राया’ इत्यादि ।

टीकार्थ—( तएणं ) इसके बाद ( से कणगरहे राया अन्नया कयाइ)  
 वह कनकरथ राजा किसी एक दिन काल कवलित हो गया ( तएण

‘ तएण से कणगरहे राया ’ इत्यादि

टीकार्थ—( तएण ) त्थारपणी (से कणगरहे राया अन्नया कयाइ) ते कनकरथ  
 राजा कोई दिवसे कालकवलित थय गयो अटले के मृत्यु पाभ्ये।

खलु 'राईसर० जाव' = राजेश्वर० यावत् = राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकादि  
सार्धवाहप्रभृतयः तस्य 'णीहरणं' निहरणं = मृतककृत्य कुर्वन्ति, कृत्वा भव्यो  
ऽन्यमेवमयदन्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः । कनकरथो राजा 'रज्जे य जाव पुत्ते'  
राज्ये च यावत् पुत्रान् = राज्यादिषु मूर्च्छित उत्पन्नान् पुत्रान् 'वियगित्था'  
अव्यङ्ग्यत् = विकृताङ्गान् कृतगान् मारितयानित्यर्थः । 'अम्हेण' वयं खलु देवानु  
प्रिया ! 'रायाहीणा' राजाधीनाः = राजशशवर्तिनः, 'रायाहिद्विया' राजाऽधि  
ष्ठिता = राजाश्रिता इत्यर्थः, 'रायाहीणकज्जा' राजाधीनकार्याः, रामाधीन कार्य

राईसर जाव णीहरण करे नि, करित्ता अन्नमन्न एव वयासी-एव खलु  
देवाणुप्पिए । कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियगित्था ) राजेश्वर,  
तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, सार्धवाह आदि व्यक्तियों ने मिल कर  
उसका दाह संस्कार किया । दाह संस्काररूप मृतक कृत्य करने के बाद  
फिर उन लोगों ने परस्पर में इस प्रकार का विचार किया । हे देवानु  
प्रियो ! देखो कनकरथ राजाने तो राज्य आदि में मूर्च्छित हो कर  
उत्पन्न हुए समस्त पुत्रों को विकृत अंग करके मार डोला है ( अम्हे ण  
देवाणुप्पिया ! रायाहीणा रायाहिद्विया रायाहीणकज्जा अय च ण तेत  
लीअमच्चे कणगरहस्स रन्नो सव्वद्वाणेषु-सव्वभूमियासु लद्धपच्चए,  
दिन्नविचारे-सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ) अब इस समय कोई राजा  
है नहीं अतः हमलोगों का क्या होगा क्योंकि हम लोग तो हे देवा  
नुप्रियो ! राजा वशवर्ती हैं, राजा के आश्रित ही रहते आये हैं, हमारा

( तएण राईसर जाव णीहरण करेति, करित्ता अन्नमन्न एव वयासी-एव  
खलु देवाणुप्पिए ! कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियगित्था )

राजेश्वर, तलवर, माडम्बिक कौटुम्बिक, सार्धवाह वगैरे लोकेश्वे भणीने  
तेने अग्नि-संस्कार कर्यो अग्नि-संस्कार आदि मृत्यु विधि पतावीने ते लोकेश्वे  
परस्पर भणीने आ प्रमाणे विचार कर्यो के हे देवानुप्रियो ! बुद्धो, राजा  
कनकरथे तो राज्य वगैरेनी भावतमा लोभुप तेभज्ज भोदित थयने उत्पन्न  
थयेला पोताना भधा पुत्राना अगो कापीने मारी नाज्या छे

( अम्हेण देवाणुप्पिया ! राया हीणा रायाहिद्विया रायाहीणकज्जा, अय च  
ण तेतलीअमच्चे कणगरहस्स रन्नो सव्वद्वाणेषु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए, दि  
विचारे सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था )

हवे अत्यारे केध राजा छे नडि तो अमारी शी दशा थशे ? हे  
देवानुप्रियो ! अमे तो राजाना वशवर्ती छीये, राजाने अधीन रहैवामा न

येषां ते तथा, सर्वमस्माकं कृत्य राजाधीन वर्तते इति भावः । अयं च खलु तैत्ति-  
रिमात्यः कनकरथस्य राज्ञः 'सर्वव्यापिषु' सर्वस्थानेषु=सधिविग्रहादिषु सर्वेषु  
कार्येषु, 'सर्वभूमिषु' सर्वभूमिषु = स्वाम्यमात्यगणदुर्गकोषवलसुहृत्पौर-  
श्रेणिरूपाष्टविधासु 'लब्धपक्षे' = लब्धप्रत्यय - लब्धः = प्राप्त प्रत्ययो विश्वासो  
यस्य सः, सकलजनविश्वासपात्रमित्यर्थः, 'दिनविचारे' दत्तविचारः, दत्तः =  
राज्ञे त्रितीयाः, विचारः=शोभनो विचारो येन म, लोकोपकारि विचारदायक इति-  
भावः, 'सर्वकृज्जवद्वाच' सर्वकार्यवर्द्धक = राज्ये समस्तकार्यसम्पादनश्चापि  
'होत्या' अस्ति । 'त' तत् = तस्मात् कारणात् 'सेय' श्रेयः = उचितं खलु अस्माकं  
तैत्तिरीयमात्य कुमार 'जाह्नव' याचितुम्, अयमभिप्रायः - यद्यममात्यो  
राज्ञः सकलकार्यनिर्वाहकः, अतस्तत्समीपे गत्वा 'कोऽपि राजलक्षणसम्पन्न  
कुमारो राजपदे स्थापनीयः' इति वार्तालापमुपक्रम्य, समागते प्रसङ्गे, तत्पुत्रो  
राजपदे स्थापयितुं याचनीयः, 'त्तिकृद्' इति कृत्वा = इति मनसि कृत्वा अन्यो-  
ऽन्यस्य एतमर्थं 'पडिसुणेंति' प्रतिशृण्वन्ति = स्वीकुर्वन्ति, 'पडिसुणित्ता' प्रति  
श्रुत्य, यत्रैव तैत्तिरीयमात्यस्तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य, एवमवदन् - एव खलु

जितना भी कार्य होता है वह सब राजाधीन ही होता आया है । इस-  
लिये तैत्तिरीय जो अमात्य है चलो उनके पास चले क्यों कि वे ही  
कनकरथ राजाके लिये सधिविग्रह आदि समस्त कार्यों में एव स्वामी,  
अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग कोश, वल, सुहृत् और पौरश्रेणीरूप आठ भूमियों  
में विश्वसनीय थे । राजा के लिये ये ही लोकोपकारी कार्यों में सलाह  
दिया करते थे और ये ही राज्यमें समस्त कार्यों के संपादक हैं ( त सेय  
खलु अहं तैत्तिरीय अमन्त्र कुमार जाह्नव त्ति कृद् अन्नमन्त्रस्त एव  
मह पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव तेनलिपुत्ते अमन्त्रे तेणेव उवाग-  
च्छन्ति, उवागच्छित्ता तैत्तिरीय अमन्त्र एव वयासी - एव खलु देवाणु -

देवाद्यं जयेत्वा धीमे अमारा यथा कामे राजधीन न होय छे अथी आत्मा  
आपणे सौ भगाने अमात्य तैत्तिरीयनी पासे नय्ये, उमके तेयो न राज  
कनकरथना सधिविग्रह वगेरे यथा कामेमा अने स्वामी अमात्य, राष्ट्र दुर्ग,  
कोश, सुहृत् अने पौर श्रेणिरूप आठ भूमियोमा ते विश्वसनीय छे लोकाना  
हित माटे तैत्तिरीय अमात्य न सलाह आपता गेता छता तेम न राज्यना  
यथा कामेने पार पाडनारा पण तेयो न छे

( तसेय खलु अहं तैत्तिरीय अमन्त्र कुमार जाह्नव त्ति कृद् अन्नमन्त्रस्त  
एवमह पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव तैत्तिरीय अमन्त्रे तेणेव उवागच्छन्ति,  
उवागच्छित्ता तैत्तिरीय अमन्त्र एव वयासी - एवं खलु देवाणुष्पिया ! कणगरहे



હે દેવાનુપ્રિય ! કનકરથો રાજા રાજ્યે ચ રાષ્ટ્રે ચ યાત્રા વ્યવર્તિ, ત્રય ચ સત્ત્વ  
હે દેવાનુપ્રિય ! રાજાધીના યાત્રા રાજાધીનકાર્યાઃ, સ્વ ચ સત્ત્વ હે દેવાનુપ્રિય !

પિયા ! કળગરહે રાયા રજ્જે ય રદ્ધે ય જાવ વિયગેઠ, અમ્હે ય ણ રાયા  
હીણા જાવ રાયહીણકજ્ઞા, તુમ ચ ણ દેવાણુપિયા ! કળગરહસ્સ રણ્ણો  
સન્વદ્ધાણેસુ જાવ રજ્જધુરા ચિત્તે—ત જહ્ણ દેવાણુપિયા ! અત્થિ કેહ  
કુમારે રાયલક્ષણસપન્ને અભિસેયારિહે, તણ્ણ તુમ અમ્હ દલાહિ)  
હસલિયે હમકો ઉચિત્ત હે કિ હમ તેતલિપુત્ર અમાત્ય સે કુમાર કી  
યાચના કરે. તાત્પર્ય હસ કા યહ હે કિ યે તેતલિપુત્ર અમાત્ય રાજા કે  
સકલ કાર્ય નિર્વાહક હૈ—હસલિયે ઉનકે પાસ ચલકર “કોઈ રાજ  
લક્ષણ સપન્ન કુમાર રાજપદ મેં સ્થાપનીય હે” હસ યાત કી હમ ચર્ચા  
કરે. હસ ચર્ચા કે પ્રસંગ મેં ઉનસે યહ ભી નિવેદન કરેગે કિ આપ  
અપને પુત્ર કી હી રાજ પદ મેં સ્થાપિત કર દીજિયે. હસ પ્રકાર કા  
વિચાર ઉન્હોને કિયા. જઘ વિચાર સ્થિર હોચુકા—તઘ સવને હસ ઘાત  
કો એક મત સે સ્વીકાર કર લિયા. સ્વીકાર કર કે ફિર વે સવકે સઘ  
જહા અમાત્ય તેતલિપુત્ર થે વહા ગયે. વહા જાકર ઉન્હોને એસા કહા—  
હે દેવાનુપ્રિય ! કનક રથ રાજાને રાજ્ય ઔર રાષ્ટ્ર આદિ મેં વિશેષ મૂ  
ર્ચિત્ત બનકર ઉત્પન્ન હુએ અપને સમસ્ત પુત્રો કો અગમગ કર મારઢાલા

રાયા રજ્જે ય રદ્ધે ય જાવ વિયગેઠ, અમ્હે ય ણ દેવાણુપિયા ! કળગરહસ્સ રણ્ણો  
સન્વદ્ધાણેસુ જાવ રજ્જધુરા ચિત્તે—ત જહ્ણ દેવાણુપિયા ! અત્થિ કેહ કુમારે  
રાયલક્ષણસપન્ને અભિસેયારિહે, તણ્ણ તુમ અમ્હ દલાહિ)

એથી અમને એ ઉચિત લાગે છે કે અમે તેતલિપુત્ર અમાત્યની પાસે  
જઈને રાજકુમારની યાચના કરીએ. ડારણ કે તેતલિપુત્ર અમાત્ય રાજાના બધા  
કામોને સારી રીતે પાર પાડનારા છે, એટલા માટે તેમની પાસે જઈને રાજ  
થવા યોગ્ય રાજ-લક્ષણ યુક્ત કોઈ કુમાર મળી શકે તેમ છે કે કેમ ? તે  
વિશે અર્થા કરીએ આ જાતની વિચારણા કરતા કરતા અમે બધા તેમને એવી  
વિનતી પણ કરીશું કે તમે પોતાના પુત્રને જ રાજગાદીએ બેસાડી દો. આમ  
તે હોકાએ મળીને વિચાર કર્યો. આમ વિચાર પાકે થઈ ગયો ત્યારે સૌએ  
એકમત થઈને તેને સ્વીકારી લીધો. સ્વીકાર કરીને તેઓ બધા ત્યાથી જ્યા  
અમાત્ય તેતલિપુત્ર હતો ત્યા ગયા, ત્યા જઈને તેમણે તેતલિપુત્રને ડહુ કે હે  
દેવાનુપ્રિય ! કનકરથ રાજાએ રાજ્ય અને રાષ્ટ્ર વગેરેમાં અવિશેષ મૂર્ચિત્ત એટલે કે  
મોહવશ થઈને જન્મ પામેલા પોતાના બધા જ પુત્રોના અગે કાપીને ને મારી



कनकरथस्य राज्ञः सर्वस्थानेषु यावत् 'रज्जधुराचितए' राज्यस्य धूः राजधुरा, तस्याधिन्तकः, राज्यभारनिर्वाहकश्चामि, तद् यदि खलु देवानुप्रिय ! अस्ति कोऽपि कुमारो राजलक्षणसपन्नः 'अभिसेयारिहे' अभिपेकार्हो राज्याभिपेक्याग्यः, 'त ण' त खलु त्वमस्मभ्य 'दलाहि' देहि 'जो' यस्मात् 'ण' त 'अम्हे' वय मढता २ 'रायाभिसेएण' राज्याभिपेकेण=राजयोग्येनाभिपेकेण अभि पिञ्चामः राज्ये स्थापयाम इत्यर्थः । ततः खलु तेतलिपुत्रः तेषाम् 'ईसर०=ईश्वर०= ईश्वरतलपरमाडम्पिकादि सार्थवद्भृतीनाम् एतमर्थ 'पडिसुणेड' प्ररिश्रुणोति= स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य=स्वाकृत्य, कनकध्वज कुमार 'ण्हाय सस्सिरीय' स्नात यावत् सश्रीक, स्नात=कृतस्नानम्, यावत् सश्रीकम्=सर्वालङ्कारनिभूषित शोभा- समन्वित च करोति, कृत्वा तेषाम् 'ईसर जाव' ईश्वर यावत्=ईश्वरादीना सम्मुखे 'उवणेइ' उपनयति, उपनीय एयमगादीव-एव खलु हे देवानुप्रिया ।

है । अब इस समय राज पद में कोई नहीं है । हमलोग तो हे देवानुप्रिय ! राजाधीन यावत् राजाधीन कार्य वाले हैं । और देवानुप्रिय ! कनक रथ राजा के लिये सधि विग्रह आदि समस्त स्थानों में एव स्वामी अमा- त्य आदि आठ भूमियों में विश्वसनीय रहें हैं । राजा के लिये लोकोप- कारी कार्यों में आप सलाह देते रहे हैं । और आप ही राज्य भार के निर्वाहक हैं । इसलिये हमारी आपसे यह प्रार्थना है कि हे देवानुप्रिय ! यदि राज्यलक्षण सपन्न कोई कुमार राज्य पद में अभिपेक करने के योग्य होवे तो उसे आप हमें देवे । ( जो ण अम्हे महयार रायाभिसे एण अभिसिंचामो । तएण तेतलिपुत्ते तेसि ईसरएयमढ पडिसुणेइ, पडिसुगित्ता कणगज्झय कुमार ण्हाय जाव सस्मिरीय करेइ, करित्ता तेसि ईसर जाव उवणेइ, उवणित्ता एव वयासी ) कि जिससे हम उसे

नाभ्या छे डवे अत्थारे राजपद भाटे कोइ रह्यु नथी छे देवानुप्रिय ! अमे लोको तो राजाधीन रहीने न रह्येता आव्या छीअे अने छे देवा नुप्रिय ! तमे राज कनकरथना सधिविग्रह वगेरे णधा कामेमा अेटये छे स्वामी अमात्य, विग्रह विगेरे तमाम कामेमा डमेशा विश्वासपात्र रह्या छे, लोडहितनी णाणनमा तमे राजने सलाह आपता रह्या छे, अने तमेन राज्यना णधा कामेने पार पाडता आव्या छे अथी अमे तमने अेवी विनति करीये छीअे छे छे देवानुप्रिय ! राज-लक्षणोवाणे अने अलिपिक्त थअने राजगाहीअे असवा येअ्य कोइ कुमार डाय तो तेने तमे अभने सोये ( जे ण अम्हे महया २ रायाभिसेएण अभिसिंचामो । तएण तेतलिपुत्त तेसि ईसर एयमढ पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता कणगज्झय कुमार ण्हाय जाव सस्मिरीये करेइ, करित्ता तेसि ईसर जाव उवणेइ, उवणित्ता एव वयासी )

કનકરથસ્ય રાજા પુનઃ પદ્માવત્યા દેવ્યા આત્મજા કનકરથજો નામ કુમારઃ અભિ  
ષેકાર્હો રાજલક્ષણસમ્પન્નો મયા કનકરથસ્ય રાજો 'રહસિય' રહસિયક=મન્ત્રમ  
યથા સ્યાત્તથા સર્વદિત, એત સ્વલુ યુય મહતા ૨ રાજાભિષેકેણ અભિષિચ્ચત ।  
પુનઃ સં સર્વે ચ 'સે' તસ્ય 'ઉદ્ઘાણપરિયાવણિય' ઉત્થાનપરિયાવણિય=

રાજ યોગ્ય અભિષેક દ્વારા અભિષિચ્ચત કર રાજ્ય મેં સ્થાપિત કરે । इस  
तरह के उन ईश्वर, तलवर, माण्डविक आदि सार्थवाद वगैरह के इस  
कथन रूप अर्थ को उस तेतलिपुत्र अमात्य ने स्वीकार कर लिया और  
स्वीकार करके कनक वज कुमार को उसने नहा बुवाकर मर्वालकारों  
से विभूषित किया । विभूषित करके फिर वह उसे उन ईश्वर तलवर  
आदिकों के समक्ष ले आया । लाकर के उनसे उसने ऐसा कहा—(एस  
ण देवानुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए अत्तए कणगज्झए  
णाम कुमारे अभिसेयारिहे रायलखणसपन्ने मए कणगरहस्स रण्णो  
रहस्सिय सवड्डिए एय ण तुव्वे महया महया रायाभिसेएण अभिसि  
चह ) हे देवानुप्रियो ! यह कनकरथ राजा का पुत्र है जो पद्मावती की  
कुक्षि से जन्मा है । इसका नाम कनक वज कुमार है । अभिषेक के  
योग्य है और राजलक्षण संपन्न है । मैंने इसको कनकरथ राजा से छिपा  
कर पालापोषा है और वृद्धिगत किया है । इसे आपलोग बड़े भारी  
राजयोग्य अभिषेक के साथ राज्य में स्थापित कीजिये । ( सव्व च से

કે જેથી અને તેનો રાજ્યાસને અભિષેક કરી શકીએ આ રીતે અમાત્ય  
તેતલિપુત્રે તે ઈશ્વર, તલવર, માણિક, સાર્થવાહ વગેરેના કથનને સ્વીકાર્યું  
અને સ્વીકારીને તેણે કનકવજ કુમારને સ્નાન કરાવ્યું અને ત્યારપછી બધા  
અલકારેથી તેને શણગાર્યો ત્યારબાદ અમાત્ય તેતલિપુત્રે સુમનજ થયેલા  
કુમારને ઈશ્વર, તલવર વગેરેની સામે લાવ્યો અને તેઓને કહ્યું કે—

( एसण देवानुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए अत्तए कणगज्झए  
णाम कुमारे अभिसेयारिहे रायलखणसपन्ने मए कणगरहस्स रण्णो रहस्सिय  
सवड्डिए एय ण तुव्वे महया महया रायाभिसेएण अभिसिचह )

હે દેવાનુપ્રિયો ! આ કનકરથ રાજાનો પુત્ર છે અને પદ્માવતી દેવીના  
ગર્ભથી આવેલો જન્મ થયો છે કનકવજ કુમાર આનું નામ છે આ કુમાર  
રાજ્યાસને ખેસાડવા યોગ્ય તેમજ રાજલક્ષણોથી યુક્ત છે રાજા કનકરથને આ  
ખાખતની બાબત નથી, એ આનું પાલન તેમજ રક્ષણ છુપી રીતે કર્યું છે  
તમે ભારે મહોત્સવની માથે આ કુમારને રાજગાદીએ બેસાડો

उत्थान=जन्म, परियापनिका=जन्मानन्तरमद्यावधिका सवर्द्धनादिपरिस्थितिः,  
उत्थान च परियापनिका च=उत्थानपरियापनिकम्=जीवनचरित परिकथयति ।  
तत खलु 'ईसर०' ईसरतलवरमाडम्विकादयः कनकध्वज कुमार महता २  
राजाभिषेकेण अभिषिञ्चन्ति । ततः खलु स कनकध्वज कुमारो राजा जातः, स  
च कनकध्वजो राजा 'महया हिमवत्त०' महाहिमवद्=महाहिमवन्महामलय  
मन्दरमहेन्द्रसारः '=महाहिमवन्महामलयमन्दरमहेन्द्राणां सार इव सारो यस्य सः,

उद्घाणपरियावणिय परिकहेइ, तएण ते ईसर० कणगज्झय कुमार महया  
२ रायाभिसेएण अभिसिञ्चति । तएणं से कणगज्झए कुमारे राया  
जाए, महया हिमवत्त मलय० वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ,  
तएण मा पउमावई देवी कणगज्झय राय सदावेइ, सदावित्ता एव  
वयासी ) तेसा कहकर फिर उन तेतलिपुत्र अमात्य ने उस कनकध्वज  
कुमार का उत्थान-जन्म और परियापनी का-जन्म से लेकर अभी तक  
की समस्त पालन पोषण सवर्द्धन आदि परिस्थिति रूप-जीवन चरित्र  
उन्हें कह सुनाया-इस के बाद उन ईश्वर, तलवर, माडम्विक एव कौटु  
म्बिक आदिकोंने कनकध्वज कुमार का बड़े जोर शोर के साथ राज्या  
भिषेक किया । राज्य में अभिषिक्त होने के बाद वे कनकध्वज कुमार  
अब राजा बन गये । इसका सार-बल लोकमर्यादा कारी होने के कारण  
महा हिमवत्त जैसा, यश और कीर्ति के फैलाव के कारण महामलय

॥( सव्व च से उद्घाणपरियावणिय परिकहेइ, तएण ते ईसर० कणगज्झय कुमार  
महया २ रायाभिसेएणं अभिसिञ्चति । तएण से कणगज्झए कुमारे राया जाए,  
महया हिमवत्ता मलय० वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ, तएण सा पउमा-  
वई देवी कणगज्झय रायं सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी )

आ प्रम षे कहीने तेतलिपुत्र अमात्ये ते कनकध्वज कुमारनु उत्थान-  
जन्म अने परियापनिका अटवे के जन्मथी भाडीने अत्यार सुथीनी पोषण  
सवर्द्धन वगेरेनी श्रवण चरित्र सभधी जधी विगत अथधी धति सुधी कही  
सलणावी त्यारभाह ते ईश्वर, तलवर, माडम्विक अने कौटु म्विक वगेरे लोकेअ  
कनकध्वज कुमारनो जहु ज भोटा पाया उपर उत्सव उज्जवीने राज्याभिषेक  
कर्यो अभिषिक्त थवा भाह कनकध्वज राजा थर्ग गया हुता तेमनु जण लोक  
मर्यादाने रक्षनार होवा जहल महाहिमवत्त जेवु हुतु तेमना यश अने कीर्ति  
ओमेर प्रसरेला हुता तेथी ते महामलय जेवा हुता तेमज तेओ हूठ प्रति-



લોકમર્યાદાકારિત્વેન મહાહિમવત્સદૃશ, મણ્ડપતઃ કીર્તિત્વેન મહામલયતુલ્ય, દૃઢપ્રતિજ્ઞત્વેન કર્તવ્યદિગ્દર્શકત્વેન ચ મન્દરમહેન્દ્રતુલ્ય, 'વળ્લખો' વર્ણક વિશેષ રૂપેણ અન્યતોઽવસેયઃ, 'જાવ રજ્જ પમાસેમાળે' યાવદ્રાજ્ય પ્રશામદ્ વિહરતિ રાજ્ય કુર્વન્નાસ્તે । તતઃ સ્વલુ સા પદ્માવતીદેવી કનકધ્વજ રાજાન શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમવદત્-એતત્ સ્વલુ હે પુત્ર ! તવ 'રજ્જે ય જાવ અતેઝરે ય૦' રાજ્ય ચ યાવદન્તઃ પુર ચ એતત્સર્વ તેતલિપુત્રસ્ય પ્રમાણેન ર્ત્તને 'ત' તત્=કારણાત્ ત્વ સ્વલુ તેતલિપુત્રમમાત્ય 'આઢાહિ' આદિયસ્વ=આદર કુરુત્વ 'પરિજાણાહિ', પરિજાનાહિ=અવેક્ષસ્વ તદનુમત્યા સર્વં કાર્યં સમ્પાદયેત્યર્થઃ સત્કાર્ય વસ્ત્રાદિના, સમ્માનય માલ્યાદિના, 'ઇત' યન્તમ્=આગન્ઠન્તમેત તેતલિપુત્રમ્ 'અબ્ધુદેહિ' અભ્યુત્તિષ્ઠ=અભ્યુત્થાનાદિના વિનય પ્રદર્શયેત્યર્થ 'ઠિય પજ્જુવાસાહિ' સ્થિત પર્યુપાસ્ય=સેવસ્વ, 'વયત' વ્રજન્ત=ગન્ઠન્તમ્ 'પહિસંપાહેહિ' પ્રતિસંમાધય=અનુગમનાદિના પ્રસાદય, તથા 'અદ્દામણેણ ઉવણિમતેહિ' અગ્રીસનેન ઉપનિમન્ત્રય=સ્વસ્થાસને તમુપવેષય, ભોગ=સુખસામગ્રીરૂપ ચ 'સે' તસ્ય અનુવર્દ્ધય । તતઃ સ કનકધ્વજ 'પડમાવર્દ્ધે દેવીણ' પદ્માવત્યા દેવ્યાઃ વચન 'તઠત્તિ'

કે જેમ્ણા, દૃઢપ્રતિજ્ઞા વાલે એવ કર્તવ્ય કા દિગ્દર્શન કરાને વાલે હાંને કે કારણ મન્દર મહેન્દ્ર-મેરુ કે જેમ્ણા થા । ઓર મી ઇન રાજા કે વિષય કા વિશેષ વર્ણન દૂમરોં શાસ્ત્રોં સે જાન લેના ચાહિયે । યાવત્ ઇસ તરહ યે કનકધ્વજ કુમાર અપને રાજ્ય કે શાસન કરને મેં તત્પર બન ગયે । ઇસકે ઘાદ ઇસ રાજમાના પદ્માવતીદેવો ને ઇન કનકધ્વજ રાજાકો અપને પાસ બુલાંયા-ઓર બુલાકર ફિર ઇનસે ઇસને ઇસ પ્રકાર કહા-(તણ પુત્તા ! તવ રજ્જે ય જાવ અતેઝરેય૦ તુમચ તેતલિપુત્તસ્સ અમચ્ચસ્સ પદ્માવેણ, ત તુમ ણ તેતલિપુત્ત અમચ્ચ આઢાહિ, પરિજાણાહિ, સકારેહિ, સમ્માણેહિ, ઇત અબ્ધુદેહિ ઠિય પજ્જુવાસાહિ, વયત પહિસસાહેહિ, અદ્દામણેણ

જાણાના અને કર્તવ્યને જાતાવનાર હોવા બદલ મન્દર મહેન્દ્ર-મેરુ જેવા હતા રાજા કનકધ્વજ વિશે સવિશેષ વર્ણન બીજા શાસ્ત્રોમા વર્ણવ્યું છે, જીજ્ઞાસુઓએ ત્યાથી બાણી લેવું જોઈએ આ પ્રમાણે તે કનકધ્વજ કુમાર પોતાના રાજ્યના વહીવટને સલાખવા માટે સાવધ થઈ ગયા ત્યારપછી રજમાતા પદ્માવતીદેવીએ કનકધ્વજ રાજાને પોતાની પાસે બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે

( તણ પુત્તા ! તવ રજ્જે ય જાવ અતેઝરેય૦ તુમ ચ તેતલિપુત્તસ્સ અમચ્ચસ્સ પદ્માવેણ, ત તુમ ણ તેતલિપુત્ત અમચ્ચ આઢાહિ, પરિજાણાહિ, સવકારેહિ. મમ્મા



तथेति='तथास्तु' इतिकृत्वा प्रतिश्रुणोति-स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य तथैव कुर्वाण  
यावद् भोगं च तस्य अनुवर्द्धयति ॥ ९ ॥

उवणिमतेहि, भोगंच से अणुवद्धेहि । तएण से कणगज्झए राया पउमाव-  
ईए देवीए तहत्ति पडिसुणेइ, जाव भोगंचसे अणुवद्धेइ ) हे पुत्र ! यह तुम्हारा  
राज्य और अतः पुर तथा तुम स्वयं यह जो कृत्वा है वह सब तैत्तलिपुत्र  
अमान्य के प्रभाव से ही है इसलिये तुम तैत्तलिपुत्र अमात्य का आदर  
करते रहो, उनकी अनुमति से काम किया करो उनका वस्त्रादि द्वारा  
नमय २ पर सत्कार करते रहो, अभ्युत्थानादि सन्मान करते रहो और  
जब तैत्तलिपुत्र तुम्हें आते हुए दिखलाई दे तो तुम उठकर इनके प्रति  
अपना विनय प्रदर्शित किया करो । जब ये जावे-तब तुम बैठ  
कर इनकी सेवावृत्ति किया करो, जब ये चलने लगे तो तुम इनके पीछे  
२ थोड़ी दूर तक अपने महलों में पहुँचाने जाया करो, अपने बैठने के  
आसन पर इन्हें अर्धभाग में बैठाया करो और जो भी सुख साधनकी  
सामग्री है यह इनकी बढ़ा दो । इसे प्रकार राजमाता पद्मावती देवी के  
वचनों को "तथास्तु" कहकर कनकवज्र राजाने स्वीकार कर लिया ।

णेहि इत अणुवद्धेहि ठिय पज्जुवासाहि वय त पडिससाहेहि, अद्रामणेण उवणिम  
तेहि, भोग च से अणुवद्धेहि । तएण से कणगज्झए राया पउमावईए देवीए  
तहत्ति पडिसुणेइ, जाव भोग च से अणुवद्धेइ )

हे पुत्र ! आ तमाइ राज्य रत्तुवास तेमज तमे पोते आ अणु ने कछ  
छे, ते सर्वे तैत्तलिपुत्र अमात्यना प्रसावथी ज छे जेथी तमे ते  
लिपुत्र अमात्यने सदा आदर करता रहे, दरेक काम तेमनी आज्ञाथी करता  
रहे, वस्त्रो वगैरे आपीने यथा अभय तेमने सत्कार करता रहे, तेमनु  
सन्मान करता रहे । अने अमात्य तैत्तलिपुत्र तमने आवता देणाय त्थारे तमे  
उलायने तेमना प्रति विनय युक्त थमने व्यवहार कगे । ज्यारे तेओ जवा  
तैयाः थाय त्थारे तमे जेसीने तेमनी सेवा करता रहे । अने ज्यारे तेओ  
आलवा माडे त्थारे तमे तेमनी पाछण पाछण थोडे दूर सुधी पोताना भडेल  
माज विदाय आपवा माटे तेमनु अनुसरणु करेता । जज्जे तमे तेमने पोताना  
आसनना अर्धालाग उपर जेसाडे अने तेमनी जधी सुअमगवडनी सामग्री  
मा वधारो करी आपो आ रीते राजमाता पद्मावती देवीनी आज्ञाने कनक  
वज्र राजाने "तथास्तु" कहीने स्वीकारी लीधी, स्वीकार्यो पत्री तेआओ ते

લોકમર્યાદાકારિત્વેન મહાહિમવત્સદૃશ, મસૂતપતઃ કીર્તિત્વેન મહામલયતુલ્ય,  
 દૃઢપ્રતિજ્ઞત્વેન કર્તવ્યદિગ્દર્શકત્વેન ચ મન્દરમહેન્દ્રતુલ્યઃ, 'વણ્ણમ્મો' વર્ણક વિશેષ  
 રૂપેણ અન્યતોઽવસેયઃ, 'જાવ રજ્જ પમાસેમાણે' યાવદ્ગ્રાજ્ય પ્રણામદ્ વિહરતિ  
 રાજ્ય કુર્વન્નાસ્તે । તતઃ સ્વલુ સા પશ્ચાવતીદેવી કનકધ્વજ ગજાન શબ્દયતિ,  
 શબ્દયિત્વા એવમવદત્-એતત્ સ્વલુ હે પુત્ર ! તવ 'રજ્જે ય જાવ અતેરેય' 'ત  
 રાજ્ય ચ યાવદન્ત' પુર ચ એતત્સર્વ તેતલિપુત્રસ્ય પ્રમાણેન વર્તેતે 'ત' તત્=કાર  
 ણાત્ ત્વ સ્વલુ તેતલિપુત્રમમાત્ય 'આદાહિ' આદિયસ્ય=આદર કુરુણ્ય 'પરિ  
 જાણાહિ, પરિજાનાહિ=અવેક્ષસ્વ તદનુમત્સ્યા સર્વં કાર્યં સમ્પાદયેત્યર્થઃ સત્કારય  
 વસ્ત્રાદિના, સમ્માનય માલ્યાદિના, 'ઇત' ચન્તમ્=પ્રાગ્ચન્તમેત તેતલિપુત્રમ્  
 'અબ્ધુદેહિ' અભ્યુત્તિષ્ઠ=અભ્યુત્થાનાદિના વિનય પ્રદર્શયેત્યર્થ 'ઠિય પજ્જુવાસાહિ'  
 સ્થિત પર્યુપાસ્ય=સેવસ્ય, 'વયત' ઘજન્ત=ગચ્છન્તમ્ 'પહિસંપાદેહિ' પ્રતિસંપા  
 ધય=અનુગમનાદિના પ્રસાદય, તથા 'અદ્ધામણેણ ઉવણિમતેહિ' અર્ધાસનેન ઉપનિ  
 મન્ત્રય=સ્વસ્થાસને તમુપવેપય, ભોગ=સુખસામગ્રીરૂપ ચ 'સે' તસ્ય અનુવર્દ્ધય ।  
 તતઃ સ કનકધ્વજ 'પપમાવર્ણે દેવીણ' પશ્ચાવત્યા દેવ્યાઃ વચન 'તદ્વત્તિ'

કે જેમા, દૃઢપ્રતિજ્ઞા ચાલે એવ કર્તવ્ય કા દિગ્દર્શન કરાને ચાલે હાંને  
 કે કારણ મન્દર મહેન્દ્ર-મેરુ કે જેસા થા । ઓર ખી इन राजा के विषय  
 का विशेष वर्णन दूसरों शास्त्रों से जान लेना चाहिये । यावत् इस तरह  
 ये कनकध्वज कुमार अपने राज्य के शासन करने में तत्पर बन गये ।  
 इसके बाद उस राजमाना पश्चावतीदेवी ने उन कनकध्वज राजाको अपने  
 पास बुलाया-और बुलाकर फिर उनसे उसने इस प्रकार कहा-(तएण  
 पुत्ता ! तव रज्जे य जाव अतेउरेय० तुमच तेतलिपुत्तस्स अमच्चस्स पहा  
 वेण, त तुम ण तेतलिपुत्त अमच्च आदाहि, परिजाणाहि, सकारेहि, सम्मा  
 णेहि, इत अब्भुद्वेहि ठिय पज्जुवासाहि, वयत पडिससाहेहि, अद्धासणेण

જાણના અને કર્તવ્યને બતાવનાર હોવા બદલ મન્દર મહેન્દ્ર-મેરુ જેવા હતા  
 રાજા કનકધ્વજ વિશે સવિશેષ વર્ણન બીજા શાસ્ત્રોમા વર્ણવ્યું છે, અસાસુઓએ  
 ત્યાથી બાણી લેવું બોધ્યું આ પ્રમાણે તે કનકધ્વજ કુમાર પોતાના રાજ્યના  
 વહીવટને સલાખવા માટે સાવધ થઇ ગયા ત્યારપછી રજમાતા પશ્ચવતીદેવીએ  
 કનકધ્વજ રાજાને પોતાની પાસે બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે

( તएण पुत्ता ! तव रज्जे य जाव अतेउरेय० तुम च तेतलिपुत्तस्स अमच्चस्स  
 पहावेण, त तुम ण तेतलिपुत्त अमच्च आदाहि, परिजाणाहि, सकारेहि, सम्मा

अव्भुट्टेइ, अणाढायमाणे, अपरियाणमाणे, अणव्भुट्टायमाणे,  
परम्पुहे संचिड्डइ । तएणं तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अजलिं  
करेइ । तएणं से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुसिणीए  
परम्पुहे संचिड्डइ । तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झय विप्परिणयं  
जाणिता भीए जाव संजायभए एव वयासी—रुट्टेण मम कण-  
गज्झए राया हीणे णं मम कणगज्झए राया, अवज्झाए णं  
ममं कणगज्झए, राया त ण नज्जइ णं मम केणइ कुमारेण  
मारेहिइ त्ति कट्टु भीए तत्थे५ जाव सणियर पच्चोसकइ, पच्चो-  
सकित्ता, तमेव आसखध दुरुहेइ, दुरुहित्ता, तेतलिपुर मज्झ-  
मज्झेणं जेणेव सए गिहे, तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तएणं  
तेतलिपुत्त जे जहा ईसर जाव पासंति, ते तहा नो आढायति  
नो परिघाणंति नो अव्भुट्टेति नो अंजलिपरिगह करेति, इट्ठाहिं  
जाव णो संलवति नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ  
य समणुगच्छंति । तएण तेतलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव  
उवागच्छइ । उवागच्छित्ता जावि य से तत्थ बाहिरिया परिसा  
भवइ, त जहा—दासेइ वा पेसेइ वा भाइल्लएइ वा सावि य  
णं नो आढाइ नो परिघाणाइ नो अव्भुट्टेइ, जाविय से अविभ-  
तरिया परिसा भवइ, त जहा — पियाइ वा मायाइ वा  
जाव सुणहाइ वा सावि य ण नो आढाइ, नो परिघाणाइ,  
नो अव्भुट्टेइ । तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सए  
सयणिजे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सयणिजांसि णिसी-



मूलम्-तएणं से पोट्टिले देवे तेतलिपुत्तं अभिक्खणं २  
 केवलपन्नत्ते धम्मे संवोहेइ, नो चेव णं से तेतलिपुत्ते संवु  
 ज्झइ । तएणं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारुवे अज्झरियए ५  
 एवं खलु कणगज्झए राया तेतलिपुत्तं अढाइ जाव भोग च से  
 वड्ढेइ तएणं से तेतलीपुत्ते अभिक्खणं २ सवोहिजमाणे वि धम्मे  
 नो संवुज्झइ, त सेय खलु मम कणगज्झय रायं तेतलिपुत्ताओ  
 विप्परिणामेत्तए तिकट्टु एव सपेहेइ, सपेहिता, कणगज्झयं तेत-  
 लिपुत्ताओ विप्परिणामेइ । तएणं तेतलिपुत्ते कट्ठं ण्हाए जाव  
 पायच्छित्ते आसखधवरगए वड्ढहि पुरिसेहिं सपरिवुडे साओ  
 गिहाओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव  
 पहारेत्थए गमणाए । तएणं० तेतलिपुत्त अमच्च जे जहा बहवे  
 राईसरतलवर जाव पभियाओ पासति, ते तहेव आढायंति,  
 परिजाणति, अब्भुट्ठेति, आढाइत्ता, परिजाणित्ता, अब्भुट्ठित्ता,  
 अंजलिपरिग्गहं करेति, इट्ठाहि कंताहि जाव वग्गूहि आल-  
 वेमाणा य सलवेमाणा य पिट्ठुओ य पासओ य मग्गओ य  
 समणुगच्छति तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए राया  
 तेणेव उवागच्छइ । तएणं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्त  
 एज्जमाणं पासइ, पासित्ता, नो अढाइ, नो परियाणाइ, नो

स्वीकार करके फिर उन्होंने वैसा ही सब कुछ करते हुए तेतलिपुत्र  
 अमात्य की यावत् सुख साधन सामग्री बढ़ा दी ॥ सू० ९ ॥

प्रभाक्षेन गधु कुरता तेतलिपुत्र अमात्यनी सुधसगवड वगेरिनी सामग्रीमा  
 वधादे। करी आभ्यो ॥ सू० ९ ॥



रिए, तत्थ वि से धारा ओपह्ठा को मेयं सदहिस्सइ । तेतलि-  
पुत्तेणं पासगं गीवाए वंधेत्ता जाव रज्जू छिन्ना को मेय सदहि-  
स्सइ ? तेतलिपुत्तेणं महइमहालयं जाव वंधित्ता अत्थाहे जाव  
उदगसि, अप्पासुक्के, तत्थ वि य णं थाहे जाए को मेयं सद-  
हिस्सइ ? तेतलिपुत्तेणं, सुक्कसि तणकूडसि अगणिकायं पक्खि-  
वित्ता अप्पासुक्को तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए, को मेयं  
सदहिस्सइ ? ओहयमणसंकप्पे जाव झियाइ ॥ सू० १० ॥

टीका—‘तएण से पोट्टिले’ इत्यादि । तत् खलु स पोट्टिलोदेवस्तेतलि-  
पुत्रम् ‘अभिक्षण २’ अभीक्षणम् २=पुनः पुनः केवलप्रज्ञप्ते धर्मे संयोजयति ।  
परन्तु नो चेत्त खलु स तेतलिपुत्र ‘संबुज्झइ’ सम्बुध्यते=प्रतिबोध प्राप्नोति ।  
ततः खलु तस्य पोट्टिलदेवस्य ‘इमेयारूवे’ अयमेतद्रूप=पुरउच्यमानः ‘अज्झ-  
त्थिए’ ५=आध्यात्मिकः चिन्तितः प्रार्थितः मनोगत सकल्प, समुद्रपथत ।  
सकल्पप्रकारमाह—‘एव खलु’ इत्यादि । एव खलु कनकवज्रो राजा तेतलि-  
पुत्र आद्रियते यावत् भोग च समर्द्धयति, ततः खलु स तेतलिपुत्रोऽभीक्षण २ मया

‘तएण से पोट्टिले’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से पोट्टिले देवे) वह पोट्टिलाका जीव देव  
(तेतलिपुत्त अभिक्षण २ केवलप्रज्ञप्ते धर्मे संयोजेइ, नो चेव ण से  
तेतलिपुत्ते संबुज्झइ) तेतलिपुत्र अमात्यको बार बार केवलप्रज्ञप्त धर्ममें  
प्रतिबोधित करने लगा परन्तु तेतलिपुत्र प्रतिबोध को प्राप्त नहीं हुआ ।  
(तएण तस्स पट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५—एव खलु कणज्झए  
राया तेतलिपुत्त अदाइ, जाव भोग च संबुद्धेइ, तएण से तेतलिपुत्ते अ-

तएण से पोट्टिले इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थार ५४ ( से पोट्टिले देवे ) ते पोट्टिलानो एव देव  
( तेतलिपुत्त अभिक्षण २ केवलप्रज्ञप्ते धर्मे संयोजेइ नो चेव ण से तेतलि  
पुत्ते संबुज्झइ )

तेतलिपुत्र अमात्यने बारबार देवणि प्रज्ञप्तधर्ममा प्रतिबोधित करवा  
लाग्ये । पण तेतलिपुत्रने प्रतिबोध प्राप्त थये नहि

( तएण तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५—एव खलु कणज्झए  
राया तेतलिपुत्त अदाइ, जाव भोग च संबुद्धेइ, तएण से तेतलिपुत्ते अभिक्षणं

यइ, णिसीइत्ता, एवं वयासी-एव खलु अहं सयाओ गिहाओ  
 णिग्गच्छामि, त चेव जाव अविभतरिया, पुरिसा नो आढाइ  
 नो परिजाणाइ, नो अब्भुठेइ, तं सेयं खलु मम अप्पाणं जी  
 वीयाओ ववरोवित्तएत्तिकहु, एवं सपेहेइ, संपेहिता तालउडं विसं  
 आसगंसि पक्खिवइ, से य विसे णो संक्रमइ । तएणं तेतलि-  
 पुत्ते नीलुप्पल जाव असि खधंसि ओहरइ, तत्थ वि य से धारा  
 ओपह्ला । तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव  
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासगं गीवाए वधइ, वधित्ता अप्पाणं  
 मुयइ, तत्थ वि य से रज्जू छिन्ना । तएणं से तेतलिपुत्ते महइ  
 महालय सिल गीवाए वधइ, वधित्ता अत्थाहमतारमपोरिसि-  
 यसि उदगंसि अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि से थाहे जाए । तएणं  
 से तेतलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडसि अगणिकाय पक्खिवइ, पक्खि-  
 वित्ता मुयइ, तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए । तएण से  
 तेतलोपुत्ते एव वयासी-सद्धेय खलु भो समणा वयंति, सद्धेय  
 खलु भो माहणा वयति, सद्धेय खलु भो समणामाहणा वयति,  
 अह एगो असद्धेयं वयामि, एव खलु अहं सहपुत्तेहिं अपुत्ते  
 को मेय सदहिस्सेइ ? सहमित्तेहिं अमित्ते, को मेय सदहिस्सइ,  
 एव अत्थेणं दारेण दासेहिं परिजणेणं एव खलु तेतलिपुत्तेणं  
 अमच्चे कणगज्झएणं रन्ना अवज्झाएणं समाणेणं तेतलिपुत्तेणं  
 तालपुडगे विसे आसगसि पक्खित्ते, से वि य णो कसइ को  
 मेय सदहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेणं नीलुप्पल जाव खसि, ओ ह-

रिए, तत्थ वि से धारा ओपल्ला को मेयं सदहिस्सइ । तेतलि-  
पुत्तेणं पासगं गीवाए वधेत्ता जाव रज्जू छिन्ना को मेयं सदहि-  
स्सइ ? तेतलिपुत्तेणं महइमहालयं जाव वंधित्ता अत्थाहे जाव  
उदगसि, अप्पासुक्के, तत्थ वि य णं थाहे जाए को मेयं सद-  
हिस्सइ ? तेतलिपुत्तेणं, सुक्कसि तणकूडसि अगणिकायं पक्खि-  
वित्ता अप्पासुक्को तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए, को मेयं  
सदहिस्सइ ? ओहयमणसंकप्पे जाव झियाइ ॥ सू० १० ॥

टीका—‘तएण से पोट्टिले’ इत्यादि । तत् खलु स पोट्टिलोदेवस्तेतलि  
पुत्रम् ‘अभिक्षण २’ अभीक्षणम् २=पुनः पुनः केवलप्रज्ञप्ते धर्मे संयोजयति ।  
परन्तु नो चैव खलु स तेतलिपुत्र ‘संबुज्झइ’ सम्बुध्यते=प्रतिबोध प्राप्नोति ।  
ततः खलु तस्य पोट्टिलदेवस्य ‘इमेयारूवे’ अयमेतद्रूप =पुरउच्यमानः ‘अज्झ-  
त्थिए’ ५=आध्यात्मिक चिन्तितः प्रार्थितः मनोगत सकल्पः समुद्रपद्यत ।  
सकल्पप्रकारमाह—‘एव खलु’ इत्यादि । एव खलु कनकभञ्जो राजा तेतलि-  
पुत्र आद्रियते यावत् भोग च सार्द्धयति, ततः खलु स तेतलिपुत्रोऽभीक्षण २ मया

‘तएण से पोट्टिले’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से पोट्टिले देवे) वह पोट्टिलाका जीव देव  
(तेतलिपुत्त अभिक्षण २ केवलप्रज्ञप्ते धर्मे संबोहेइ, नो चैव ण से  
तेतलिपुत्ते संबुज्झइ) तेतलिपुत्र अमात्यको बार बार केवलप्रज्ञप्त धर्ममें  
प्रतिबोधित करने लगा परन्तु तेतलिपुत्र प्रतिबोध को प्राप्त नहीं हुआ ।  
(तएण तस्स पट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५—एव खलु कणज्झए  
राया तेतलिपुत्त अढाइ, जाव भोग च सवड्डेइ, तएण से तेतलिपुत्ते अ-

तएण से पोट्टिले इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थार ५७ (से पोट्टिले देवे) ते पोट्टिलाने एव देव  
(तेतलिपुत्त अभिक्षण २ केवलप्रज्ञप्ते धर्मे संबोहेइ नो चैव ण से तेतलि  
पुत्ते संबुज्झइ)

तेतलिपुत्र अमात्यने बारबार देवणि प्रज्ञप्तधर्मा प्रतिबोधित करवा  
लाग्ये। यण तेतलिपुत्रने प्रतिबोध प्राप्त थये। नहि

(तएण तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५—एव खलु कणज्झए  
राया तेतलिपुत्त अढाइ, जाव भोग च संबड्डेइ, तएण से तेतलिपुत्ते अभिक्षण



‘સયોહિજ્જમાણેવિ’ સંયો યમાનોઽપિ ધર્મો નો સચુચ્ચતે=પ્રતિબોધ ન માનોતિ ।  
 ‘તં તત્=યમાન કારણાત્ શ્રેયઃ સ્વલુ મમ કનકધ્વજ રાજાન તેતલિપુત્રાદ્ વિગરિ  
 [નમયિતુમ્=તેતલિપુત્રવિષયે કનકધ્વજસ્ય માનસિકો માયો યયા વિપણિતો ભવે  
 તથા વર્તુવૃત્તિતમ્, ઇતિશ્રુત્વા=ઈતિ મનસિ વિચાર્ય ણ સમેવતે વિચારયતિ  
 સપ્રેક્ષ્ય કનકધ્વજ તેતલિપુત્રાદ્ વિપરિણમયતિ=વિપરીત કરોતિ । તતઃ સ્વલુ  
 તેતલિપુત્ર ‘કલ્લ’ કલ્લે દ્વિતીયસ્મિન્ દિને પ્રાયઃ ‘ઘ્ઠાણ જાત્ર પાયચ્છિત્તે’  
 સ્નાનો યાવન્ પ્રાયચિત્ત =સ્નાત =કનસ્નાનઃ યાસ્ત્ પદન કૃતચન્નિકર્મા=માકાદિ  
 નિમિત્ત કૃતાન્નભાગ કૃતકૌતકમાગલ્યપ્રાયચિત્તઃ=કૃતાનિ કૌતુકાનિ દુઃસ્વપ્નાદિ  
 દોષનિવારણાં મપીણુદ્ઘાદીનિ-માદ્વલ્પાદીનિ = મદ્ગન્ધકારણાણિ દુર્વાક્ષતાદીનિ  
 =પ્રાયચિત્તમદ્યશ્યં કર્તવ્ય્યાનિ યેન સઃ, ‘આમસ્થવરગણ’ અશ્વસ્કન્ધ  
 વરગત =અશ્વાસ્કન્ધ વહુભિ પુરુષૈ સપરિવૃતઃ સ્વસ્માદ્ ગૃદાદ્ નિર્ગન્ઠતિ, નિર્ગત્ય

મિક્ષણ ૨ સયોહિજ્જમાણે વિ ધર્મમે નો સચુચ્ચત્, ત સેય સ્વલુ મમ  
 કણગજ્ઞય રાય તેતલિપુત્તાઓ વિપ્પરિણમેત્તણ ત્તિ કદ્દુ ણ્વ સપેહેઈ)  
 તવ ઉસ પોદ્દિલ દેવકો જેમા આ યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ ઉત્પન્ન  
 હુઆ કનકધ્વજ રાજા તેતલિપુત્ર અમાત્યકા આદર કરતે હૈં યાવત્ વે  
 ઉનકે સુખ સાધનની સામગ્રી વધા દિયા હૈ-હસલિયે મેરે દ્વારા વાર વાર  
 પ્રતિબોધિત કરને પર ખીવે ધર્મ મે પ્રતિબુદ્ધ નહી થન રહે હૈં-પ્રતિબોધ  
 કો પ્રાપ્ત નહીં હો રહે હૈં । હમલિયે સુજ્ઞે અથ એસો કરના વાદિયે કિ  
 જિસસે તેતલિપુત્ર કે વિષય મેં કનકધ્વજ રાજા કા માનસિક વિચાર  
 વદન્ જાવે । હસ પ્રકાર કા વિચાર ઉસ દેવકે મનમેં જગા ( સપેહિત્તા  
 કણગજ્ઞય તેતલિપુત્તાઓ વિપ્પરિણામેઈ, તણ તેતલિપુત્તે કલ્લ ઘ્ઠાણ

૨ સયોહિજ્જમાણે વિ ધર્મમે નો સચુચ્ચત્, ત સેય સ્વલુ મમ કણગજ્ઞય રાય  
 તેતલિપુત્તાઓ વિપ્પરિણામેત્તણ ત્તિ કદ્દુ ણ્વ સપેહેઈ )

ત્યારે તે દેવકી પોદ્દિલાના જીવ દેવને એવો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનો  
 ગત સકલ્પ ઉભયો કે રાજા કનકધ્વજ અમાત્ય તેતલિપુત્રનો આદર કરે છે  
 યાવત્ તેઓએ તેમની બધી જાતની સુખસગવડની સામગ્રીમા વધારો પણ  
 કરી આપ્યો છે, એથી મારાવડે વારવાર પ્રતિબોધિત કરવા છતાં  
 તેઓ ધર્મમા પ્રતિબુદ્ધ થઈ જતા નથી એટલે કે તેમને વારવાર પ્રેરણા  
 આપવા છતાં પ્રતિબોધ થયો નથી એટલા માટે હું હવે એ પ્રમાણે કઈક  
 કરું કે જેથી રાજા કનકધ્વજના માનસિક વિચારો અમાત્ય તેતલિપુત્રને માટે  
 અતિકૂળ થઈ જાય તે દેવે મનમા આ જાતનો વિચાર કર્યો

( સપેહિત્તા કણગજ્ઞય તેતલિપુત્તાઓ વિપ્પરિણામેઈ તણ તેતલિપુત્તે કલ્લ  
 ઘ્ઠાણ જાત્ર પાયચ્છિત્તે આસલ્યવરગણ, વહુઈ પુરિસેઈ સપરિવૃત્તે, ગિહાઓ,



પૈવ કનકધ્વજો રાજા તર્જે ' પહારેત્થ ગમણા' પ્રાધારયદ્ ગમનાય-પ્રસ્થિત-  
વાન્ । તત્ સ્વલ્પ તેતલિપુત્રમમાત્ય ' જેજહા ' યે યથા=યેન પ્રકારેણ વદ્ધવો ' રાઈ  
સરતલવરજાવપમિયાઓ ' રાજેશ્વરતલવર યાત્મભૂતયઃ, રાજેશ્વરતલવરા યઃ પશ્યન્તિ,  
તે તથૈવ તમમાત્યમાદ્રિયન્તે નમસ્કારાદિના પરિજાનન્તિ=શુભાગમનમિત્યનુમો-  
દયન્તિ, અભ્યુત્તિષ્ઠન્તિ=અભ્યુત્થાન કુર્વન્તિ, આદૃત્ય પરિજ્ઞાય, અભ્યુત્થાય અજ્ઞલિ-  
પશ્ચિદ્ કુર્વન્તિ, તથા ઇષ્ટાભિઃ કાન્તાભિઃ યાત્-પ્રિયાભિર્મનોજ્ઞાભિર્મનોઽમાભિઃ '

જાવ પાયચ્છિત્તે આસસ્વધવરગણ, ઘટ્ટિં પુરિસેદ્ધિં સપરિવુદે, સામો  
ગિહાઓ, ણિગ્ગચ્છહ, ણિગ્ગચ્છિત્તા જેણેવ કણગજ્જણ રાયા તેણેવ  
પહારેત્થ ગમણા, તણ્ણં તેતલિપુત્ત અમચ્ચં જે જહા વહવે રાઈસરત  
લવર જાવ પમિયાઓ પાસતિ તે તહેવ આઢાયતિ પરિયાણતિ, અબ્બુ-  
દ્દેત્તિ ) દસ વિચાર કે આતે હી ઉસ દેવને કનકધ્વજ રાજા કો તેતલિ  
પુત્ર અમાત્ય કે પ્રતિ વિપરીત પરિણમાદિયા । જય દ્વિતીય દિન પ્રાતઃ  
કાલ સ્નાન કર ઘલિકર્મ, કર-કાકાદિ નિમિત્ત અન્ન કા વિભાગ કર,  
કૌતુક, મંગલ, પ્રાયશ્ચિત્ત કર-દુઃસ્વપ્ન આદિ દોષો કો નિવારણ કરને  
કે ઈલ્યે મધી પુણ્ડાદિ ઔર મગલ કારક દ્વાક્ષિતાદિ તથા પ્રાયશ્ચિત્તકી  
તરહ આવશ્યક કૃત્ય સમાપ્ત કર-વહ તેતલિપુત્ર અમાત્ય ઘોડે પર ચેઠ  
કર જય અનેક પુરુષો કે સાથ સાથ અપને ઘર સે નિકલા તવ નિકલ  
કર વહ ઝસ ઔર ગયા જહા કનકધ્વજ રાજા થે । તેતલિપુત્ર અમાત્ય  
કો જ્યો હી રાજેશ્વર આદિ કો ને આતા હુઆ દેસ્યા તો ઝન્દોને પહિલે  
કી તરહ હી ઝસકા આદર કિયા, ઝમકે આગમન કી સરાહના કી

ણિગન્ઠિદ્ ણિગ્ગચ્છિત્તા જેણેવ કણગજ્જણ રાયા તેણેવ પહારેત્થ ગમણા, તણ્ણં  
તેતલિપુત્ત અમચ્ચ જે જહા વહવે રાઈસર તલવર જાવ પમિયાઓ પાસતિ તે  
તહેવ આઢાયતિ પમિયાણતિ, અબ્બુદ્દેત્તિ )

આ જાતનો વિચાર ઉત્પન્ન થતાજ તે દેવે અમાત્ય તેતલિપુત્ર ને માટે  
રાજા કનકધ્વજને પ્રતિકૂળ બનાવીદીધો બીજા દિ ને સવાર થતા સ્નાન, બ વિ  
કર્મ, ( ક ગડા વગેરે પક્ષાઓ માટે અનભાગ અપણ ) કૌતુક, મ ગણ, પ્રાય  
શ્ચિત્ત-એટલે કે દુસ્વપ્ન વગેરેના દોષોના ઉપરામન માટે મધી પુણ્ડ વગેરે  
તેમજ મ ગણ ડારક દુર્વા અશ્વત્થ ( ચાખા ) વગેરેથી પ્રાયશ્ચિત્તની આવશ્યક  
વિધિઓ પતાવાને ઘણા પુરુષોથી વીટળાઈને અમાત્ય તેતલિપુત્ર ઘોડા ઉપર  
સવાર થઈને જ્યાં કનકધ્વજ રાજા હતા ત્યાં ગયો અમાત્ય તેતલિપુત્રને આ-  
વતા જોતાની સાથે જ રાજેશ્વર વગેરે લોકોએ પહેલાની જેમ જ તેમને આદર  
કર્યા તેમજ આગમનની સરાહના કરી અને બધાએ ઉભાથઈને તેમને વધાવી લીધા

‘संयोजिज्जमाणेवि’ संयो यमानोऽपि धर्मो नो स बुध्यते=प्रतिबोध न प्राप्नोति ।  
 ‘तं तत्=रमान कारणात् श्रेयः खलु मम कनकध्वज राजान तेतलिपुत्राद् विपरि  
 णमयितुम्=तेतलिपुत्रविषये कनकध्वजस्य मानसिको भावो यथा विपरिणतो भवे  
 तथा कर्तुमुचितम्, इति श्रुत्वा=इति मनसि विचार्य एव सप्रेषते विचारयति  
 सप्रेक्ष्य कनकध्वज तेतलिपुत्राद् विपरिणमयति=विपरीत करोति । ततः खलु  
 तेतलिपुत्र ‘कल्ल’ कल्ले द्वितीयस्मिन् दिने प्रायः ‘ण्हाण जाव पायच्छित्ते’  
 स्नानो यावत् प्रायश्चित्त=स्नात=कनस्नातः यावत् पदेन कृतप्रत्यक्षम=शामादि  
 निमित्त कृतान्नभागः कृतशौचकमागल्यप्रायश्चित्तः=कृतानि कौतुमानि तु स्वप्नादि  
 दोषनिवारणार्थं मपीपुण्ड्रादीनि-माङ्गल्यादीनि = मङ्गलकारकाणि दूर्वादितादीनि  
 =प्रायश्चित्तप्रदवश्यं कर्तव्यानि येन सः, ‘आमखधवरगए’ अश्वस्कन्ध-  
 वरगतः=अश्वारूढ बहुभि पुम्पै सपरिवृतः स्वस्माद् गृहाद् निर्गच्छति, निर्गत्य

भिक्षुखण २ संयोजिज्जमाणे वि धम्मे नो स बुज्झइ, त सेय खलु मम  
 कणगज्झय राय तेतलिपुत्ताओ विप्परिणमेत्ताए त्ति कट्ठु एव सपेहेइ)  
 तब उस पाट्टिल देवको पेमा आ यात्तिक यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न  
 हुआ कनकध्वज राजा तेतलिपुत्र अमात्यका आदर करते हैं यावत् वे  
 उनके सुख साधनकी सामग्री बढ़ा दिया है-इसलिये मेरे द्वारा बार बार  
 प्रतिबोधित करने पर भी वे धर्म में प्रतिबुद्ध नहीं बन रहे हैं-प्रतिबोध  
 को प्राप्त नहीं हो रहे हैं । इसलिये मुझे अब ऐसा करना चाहिये कि  
 जिससे तेतलिपुत्र के विषय में कनकध्वज राजा का मानसिक विचार  
 बदल जावे । इस प्रकार का विचार उस देवके मनमें जगा ( सपेहिता,  
 कणगज्झय तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ, तएणं तेतलिपुत्ते कल्लं ण्हाए

२ संयोजिज्जमाणे वि धम्मे नो स बुज्झइ, त सेय खलु मम कणगज्झय राय  
 तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेत्ताए त्ति कट्ठु एव सपेहेइ )

त्यारे ते देवइय पाट्टिलाना एव देवने ओयो आध्यात्मिक यावत् मनो  
 गत संकल्प उल्लेख के राजा कनकध्वज अमात्य तेतलिपुत्रने आदर उरे छे  
 यावत् तेओओ तेमनी अधी जतनी सुखसंगवडनी सामग्रीमा वधारो पणु  
 कही आओ छे, ओथी भारवडे बार बार प्रतिबोधित करवा छताओ  
 तेओ धर्ममा प्रतिबुद्ध थई जता नथी ओटले के तेमने बार बार प्रेरणा  
 आपवा छता प्रतिबोध थयो नथी ओटला भाटे हु छे ओ प्रभाणु कछि  
 कछे के ओथी राजा कनकध्वजना मानसिक विचारो अमात्य तेतलिपुत्रने भाटे  
 प्रतिकूल थई जय ते देवे मनमा आ जतने विचार कथो

( सपेहिता कणगज्झय तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ तएणं तेतलिपुत्ते कल्लं  
 ण्हाए जाव पायच्छित्ते आसखधवरगए, बहूहि पुरिसेहि सपरिवुडे, । गिहाओ,

माञ्जुवन् 'अपरिजाणमाणे' अपरिजानन्, तदागमनमननुमोदयन् अनभ्युत्तिष्ठन्=अभ्युत्थानाद्यकुर्वन् 'परम्मुहे' पराङ्मुखः=विमुख सन् सतिष्ठते । ततः खलु तैत्तिलिपुत्रः कनकध्वजस्य राज्ञः तदुखे अजलिं करोति । 'तएण' ततः खलु=तैत्तिलिपुत्रेण अजलिकरणानन्तरमपि स कनकवज्रो राजा अनाद्रियमाणः, अपरिजानन्, अनभ्युत्तिष्ठन् तप्णीक पराङ्मुखः सतिष्ठते । ततः खलु तैत्तिलिपुत्रः कनकध्वजं विपरिणत=विपरीतं ज्ञात्वा 'भीणं जाय सजायभणं' भीतो यावत् सजातभयं, एवमपदत्=मनस्यकथयत्-रुष्टः खलु मम=मम विषये कनकवज्रो राजा,

उसका कोई आदर किया-न उसके आनेकी कोई सराहना की और न उठकर उसे लिया ही । इस तरह अनादर अननुमोदन एवं अनभ्युत्थान करते हुए वे राजा प्रत्युत उस ओरसे अपना मुँह फेर कर बैठ गये । (तएण तैत्तिलिपुत्ते कणगज्झयस्स अजलिं करेइ) तैत्तिलिपुत्र ने आते ही राजा कनकध्वज को नमस्कार किया-(तएण से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुमिणीए परम्मुहे सचिद्धइ) तौ भी उन कनकध्वज राजा ने उस अजलि करने का भी कोई आदर नहीं किया केवल चुपचाप ही विमुख बना हुआ बैठा रहा-(तएण तैत्तिलिपुत्ते कणगज्झय विपरिणय जाणित्ता भीणं सजायभण एव वयासी) तब तैत्तिलिपुत्र ने कनकध्वज राजा को विपरीत जानकर भीत (भय पाया हुआ) यावत् सजात भय होकर मनमें ऐसा विचार किया-(रुद्धे ण मम कणगज्झए राया) कनकध्वज राजा मेरे ऊपर रुष्ट हो गये हैं । (हीणे ण मम कण-

आदर न कर्हो, तेमना आववानी सराहना न करी अने उला थधने तेमने सत्कार्या पणु नहि आ गीते अनादर, अननुमोदन अनभ्युत्थान करता ते राजा तेमना तन्द थी मो देरवीने जेभी गया (तएण तैत्तिलिपुत्ते कणगज्झयस्स अजलिं करेइ) तैत्तिलिपुत्रे आवतानी साथे न राजा कनकध्वजने नमस्कार कर्हो

(तएण से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुमिणीए परम्मुहे सचिद्धइ) छताओ राजा कनकध्वजने तेमना नमस्कारने पण उचित मत्कार कर्हो नहि द्रष्ट तेओ चुपचाप मोदेरवीने जेभी न रहा

(तएण तैत्तिलिपुत्ते कणगज्झय विपरिणय जाणित्ता भीणं जाय सजायभण एव वयासी)

त्यारे तैत्तिलिपुत्र अमात्ये राजा कनकध्वजने प्रतिफललथध गये वा (नाराज थयेला) ज्ञानीने लयलीत यावत् सज्जतलय वाणा थना मनमा विचार कर्हो के (रुद्धेण मम कणगज्झए राया) कनकध्वज राजा मारा उपर नाराज



वाग्भिः आलपन्तः सलपन्तश्च=ओलाप=संभाषणं, सलाप=परस्परसंभाषणं  
कुर्वन्तश्च पुरतः=अग्रं च पृष्ठतः=पश्चाद्भागतश्च, पार्श्वतः=पार्श्वभागतश्च, मार्गतः=  
यस्मान्मार्गात् तेतलिपुत्रो निर्गच्छति, तन्मार्गतश्च 'समणुगच्छति' समणुग-  
च्छन्ति । ततः खलु स तेतलिपुत्रो यत्रैव कनकध्वजस्तत्र उपागच्छति । ततः  
खलु स कनकध्वजो राजा तेतलिपुत्रमेजमानं पश्यति, दृष्ट्वा नो आद्विश्यते, नो परि-  
जानाति, नो अभ्युत्तिष्ठति । अनन्तरं 'अणाढायमाणे' अणाढायमाणः=आस्मादरं

सबने उठकर उसे लिया- ( आढाहत्ता, परिजाणित्ता अण्भुद्वित्ता अजलि  
परिगृह् करेति, इद्वहिं कनारिं जाव वग्गुहिं आलवेमाणा य सलवे  
माणा य पुरओ य पिद्वओ य पासओ य मग्गओ य समणुग छंति  
तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए राया तेणेव उवागच्छइ, तएण  
से कणगज्झए राया तेतलिपुत्त एज्जमाण पासइ, पासित्ता नो आढाह  
नो परिआणाइ, नो अण्भुद्वेइ, अणाढायमाणे अपरिआणमाणे अण्भु  
द्वायमाणे परम्भुहे सच्चिद्वइ ) आदर देकर शुभाग्मन की अनुमोदनाकर  
तथा उठकर उन सबने फिर दोनों हाथों की अजलि जोड़कर उसे  
नमस्कार किया । बाद में इष्ट, कात यावत् प्रिय-मनोज-मनोम  
वाणियों से आलाप - संभाषण, सलाप परस्पर संभाषण - करते  
हुए वे सबभागे, पीछे आजू बाजू होकर जिस मार्ग से वह आरहा  
था उसी मार्ग से उसके साथ साथ चले आये । चलते २ तेतलिपुत्र  
अमात्य जहाँ कनकध्वज राजा बैठे थे वहाँ आया । कनकध्वज  
राजा ने उन्हें आता हुआ देखा-तौभी पहिले की तरह देखकर न

( अढाहत्ता, परिजाणित्ता अण्भुद्वित्ता अजलि परिगृह् करेति इद्वहिं, कनारिं  
जाव वग्गुहिं आलवेमाणा य सलवेमाणा य पुरओ य, पिद्वओ य, पासओ य,  
मग्गओ य, समणुगच्छति तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए राया तेणेव  
उवागच्छइ, तएण से कणगज्झए राया तेतलिपुत्त एज्जमाण पासइ, पासित्ता  
नो आढाह, नो परिआणाइ, नो अण्भुद्वेइ, अणाढायमाणे अपरिआणमाणे अण्भु  
द्वायमाणे परम्भुहे सच्चिद्वइ )

तेमने आदर आपीने, शुभागमनने अनुमोदित करीने तेओ अधा उला  
थया अने त्थार पट्टी मने डायोनी अजलि जनावीने तेमने नमस्कार कया  
त्थार जाइ धंष्ट, कांत, यावत् प्रिय, मनोज अने मनोम वातोथा आलाप-  
सलापण सलाप-परस्पर सलापण करता तेओ सरे आगग, पाछग अने  
तेमनी अने आणुओ थंने ने मार्गी तेओ आवता छता ते मार्गी ने तेनी  
साथे साथे आइवा लाया तेतलिपुत्र अमात्य आइता आइता जया राजा कनकध्वज  
जहा छता त्या आव्या पणु कनकध्वज राजा ते तेमने ने



मात्रुवन् 'अपरिजाणमाणे' अपरिजानन्, तदागमनमननुमोदयन् अनभ्युत्तिष्ठन्=अभ्युत्थानाद्यकुर्वन् 'परम्मुहे' पराङ्मुखः=विमुख सन् सतिष्ठते । ततः खलु तेतलिपुत्रः कनकध्वजस्य राज्ञः पशुखे पञ्चर्षिं करोति । 'तएण' ततः खलु=तेतलिपुत्रेण अञ्जलिकरणानन्तरमपि न कनकवज्रो राजा अनाद्रियमाणः, अपरिजानन्, अनभ्युत्तिष्ठन् तूष्णीकं पराङ्मुखः सतिष्ठते । ततः खलु तेतलिपुत्रः कनकध्वजं विपरिणत=विपरीतं ज्ञात्वा 'भीणं जाय सजायभए' भीतो यावत् सजातभयं, एवमपदत्=मनस्यकथयत्-रुष्टः खलु मम=मम विषये कनकवज्रो राजा,

उसका कोई आदर किया-न उसके आनेकी कोई सराहना की और न उठकर उसे लिया ही । इस तरह अनादर अननुमोदन एवं अनभ्युत्थान करते हुए वे राजा प्रत्युत उस ओरसे अपना मुँह फेर कर बैठ गये । (तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अजळिं करेइ) तेतलिपुत्र ने आते ही राजा कनकध्वज को नमस्कार किया-(तएण से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुमिणीए परम्मुहे सचिद्धइ) तौ भी उन कनकध्वज राजा ने उस अजलि करने का भी कोई आदर नहीं किया केवल चुपचाप ही विमुख बना हुआ बैठा रहा-(तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झयं विप्परिणय जाणित्ता भीए जाय सजायभए एव वयासी) तब तेतलिपुत्र ने कनकध्वज राजा को विपरीत जानकर भीत (भय पाया हुआ) यावत् सजात भय होकर मनमें ऐसा विचार किया-(रुद्धे ण मम कणगज्झए राया) कनकध्वज राजा मेरे ऊपर रुष्ट हो गये हैं । (हीणे ण मम कण-

आदर न कर्हो, तेमना आववानी सराहना न करी अने उला थएने तेमने सत्कार्या पणु नहि आ गीते अनादर, अननुमोदन अनभ्युत्थान करता ते राजा तेमना तरइ थी भो ईश्वरीने जेमी गया (तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अजळिं करेइ) तेतलिपुत्रे आवतानी साथे न राजा कनकध्वजने नमस्कार कर्हो (तएण से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुमिणीए परम्मुहे सचिद्धइ) छताओ राजा कनकध्वजने तेमना नमस्कारने पण उचित सत्कार कर्हो नहि इच्छत तेओ सुपथाप भोईश्वरीने जेमी न गहा

(तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झयं विप्परिणयं जाणित्ता भीए जाय सजायभए एव वयासी)

त्यारे तेतलिपुत्र अमात्ये राजा कनकध्वजने प्रतिकूलवार्थ गये वा (नाराज थयेला) जालीने लयलीत यावत् मन्त्रालय वाजा थता मनमा विचार कर्हो डे (रुद्धे ण मम कणगज्झए राया) कनकध्वज राजा मेरा ऊपर नाराज

‘હીણે ણ’ હીનઃ સ્વલુ=પ્રીતિહીનઃ સ્વલુ મમોપરિ ઝનક રજો રાજા ‘અવજ્ઞાણ’  
 અપધ્યાત=દુર્માત્મમ્પન્નો જાત સ્વલુ મમ પ્રિયે ક્ષાત્ત્વાજો રાજા ‘ત’ તત્=  
 તસ્માત્ ‘ન નજ્ઞઈ’ ન નાયતે સ્વલુ ણ મા કેન તીઝેન કુમારેણ=કુતિમતેન મારેણ  
 ‘મારેહિઈ’ મારયિષ્યતિ ‘ત્તિ કટ્ટુ’ ઇતિ ક્રત્વા=ઈતિ પ્રિતિ-ત્ય મીતસસ્તઃ યાત્-  
 ત્રસિતઃ, ઉદ્વિગ્નઃ, સજ્ઞાતમય મન્ ‘મણિય’ ઝન’ ૨ ‘પચ્ચોમકકઈ’ મત્યવસ્વપ્કતે  
 =મત્યવસર્પતિ=પશ્ચાદ્ગતિ મત્યવસ્વપ્કત્ય, તમેવ ‘આસવધ’=અસવધ દુરો-  
 હિતિ, દુરુહ્ય ‘તેતલિપુર’ અત્ર પટ્ટયેયે ઢિતીયા, તેતલિપુરસ્યેત્યર્થ, મધ્યમયેન  
 યત્રેવ સ્વક ગૃહ તત્રેવ પ્રાધારયદ્ ગમનાત્ર । તતઃ સ્વલુ ત તેતલિપુત્ર ‘જેઝઠા’

ગજ્ઞાણ રાયા ) કનકધ્વજ રાજા મેરે ડપર પ્રીતિ સે રહિત હો ગયે હૈ ।  
 ( અવજ્ઞાણ ણ મમ કણગજ્ઞાણ રાયા ) કનકધ્વજ રાજા મેરે પ્રિય મેં  
 સજ્ઞાવ રહિત ઘન ગયે હૈ । ( ત ણ નજ્ઞઈ ણ મમ કેણઈ કુમારેણ મારે  
 હિઈ ત્તિ કટ્ટુ મીણ તત્ત્યે પૂજાવસણિય ૨ પચ્ચોમકકઈ ) તો ન માલૂમ  
 યહ મુજ્ઞે કિસ કુતિસિત મરણ સે મરવા ડાલે, ણેસા વિચાર કર વહ  
 મીત ( મયયુક્ત ) હો ગયા ત્રસ્ત યાત્ સજ્ઞાત મયગોલા ઘન ગયા ।  
 ઓરે ધીરે ૨ વહાં સે પીઠાહટ કર ચલા આયા-( પચ્ચોસક્ષિત્તા તમેવ  
 આસવધ દુરુહેઈ, દુરુહિત્તા તેતલિપુર મજ્ઞ મજ્ઞેણ જેણેવ સણિહે  
 તેણેવ પહારેત્થ ગમણાણ ) આકર કે વહ અપને ડસી ઘોડે પર વેઠકર  
 તેતલિપુર કે વીચ સે હોતા હુઆ અપને ઘર કી તરફ ચલ દિયા ( તણ  
 તેતલિપુત્ત જે જહાં ઈસર જાવ પાસતિ તે તહા નો આઢાયતિ, નો પરિયા

થઈ ગયા છે ( હીણેણ મમ કણગજ્ઞાણ રાયા ) કનકધ્વજ રાજાને હવે મારા  
 ઉપર પ્રેમ રહ્યો નથી ( અવજ્ઞાણ ણ મમ કણગજ્ઞાણ રાયા ) કનકધ્વજ રાજા  
 મારા પ્રત્યે સદ્ભાવના રહિત થઈ ગયા છે

( ત ણ નજ્ઞઈ ણ મમ કેણઈ કુમારેણ મારેહિઈ ત્તિ કટ્ટુ મીણ તત્ત્યે જાવ  
 સણિય ૨ પચ્ચોમકકઈ )

તો કોણુ બાણે ડ્યારે તેઓ મને કમોતે મરાવી ન આવે આરીતે વિચાર  
 કરીને તે ભયભીત થઈ ગયો, તે ત્રસ્ત યાવત સજ્ઞાત ભયવાળો થઈ ગયો  
 અને ધીમેધીમે ત્યાથી પાછો ફરીને આવતો રહ્યો

( પચ્ચોસક્ષિત્તા તમેવ આસવધ દુરુહેઈ, દુરુહિત્તા તેતલિપુર મજ્ઞ મજ્ઞેણ  
 જેણેવ સણિહે તેણેવ પહારેત્થ ગમણાણ )

ત્યાથી આવીને તે પોતાના ઘોડા ઉપર સવાર થઈને તેતલિપુરની વચ્ચે  
 થઈને પોતાના ઘર તરફ રવાના થયો

તણ તેતલિપુત્ત જે જહાં ઈસર જાવ પાસતિ તે તહા નો નો

ये यथा=ये यथास्थिताः ' ईमरजाय ' ई वर यावत्=ईश्वरतलवरमाडम्बिकादयः पश्यन्ति, ' ते तद्देव ' ते तथा स्थिता एव सन्तो नो आद्रियन्ते, नो परिजानन्ति, नो अभ्युत्तिष्ठन्ति, नो अञ्जलिपरिग्रहं कुर्वन्ति, इष्टाभिर्वावद्वाग्भिर्नो सलपन्ति, नो पुरतश्च पृष्ठतश्च पार्श्वतश्च मार्गतश्च समनुगच्छन्ति । तत खलु तेतलिपुत्रो यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैव उपागच्छति । यापि च ' से ' तस्य ' तत्थ ' तत्र भवने प्राप्ता पण्डित् भवति, तद् यथा-' दासाइ वा ' दासाइति वा, णति, नो अब्भुट्ठेति ) मार्गं मे तेतलिपुत्र को आते हुए जिन ईश्वर तलवर, माडम्बिक आदिको ने देखा तो उन्होंने अब पहिले की तरह न उमका आदर किया न उसके आगमन की अनुमोदना की और न उसे देखकर वे उठे ही ( नो अञ्जलिपरिग्रहं करेति, इद्वाहिं जाव णो सलपति नो पुरओ य पिट्ठओय पासओय मग्गओय समणुग० ) और न उसे हाथ जोड़ कर नमस्कार ही किया । न इष्ट प्रिय वाणियों से उससे आलाप, सलाप किया, और न आजू बाजू से होकर वे उसके साथ मार्ग में ही चले । ( तण्ण तेनलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ ) इस तरह चलता हुआ वह तेनलिपुत्र अमात्य अपने घर पर आ गया । उवागच्छित्ता जाविसे तत्थ वाहिरिया परिसा भवइ, तज्जहा दासेइ वा पेसेइ वा भाइलणइ वा सा वि य ण नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ ) वहा पर भी जो दास घर के काम काज करने परियाणति, नो अब्भुट्ठेति )

मार्गमा जाता तेनलिपुत्रने ईश्वर तलवर माडम्बिक वगेरे दोडोअे जेथे पणु डोअे पडेलानी जेम तेने आदर न डर्यो, तेना आगमननी अनुमोदना न करी अने तेने जेधने तेओे बिभा न थथा

( नो अञ्जलि परिग्रहं करेति, इद्वाहिं जाव णो सलपति नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य समणुग० )

अने तेओेअे हाथ जेडीने तेने नमस्कार पणु न डर्यो इष्ट, प्रिय, वयनोथी तेओेअे तेनी साथे आलाप न डर्यो, मलाप न डर्यो अने अने आबुअे थपने तेओे मार्गमा तेनी साथे साथे आया पणु नडि ( तण्ण तेनलिपुत्ते जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ ) आ प्रभाणे आलतो आलतो तेनलिपुत्र अमात्य पोताने घर आनी गये।

( उवागच्छित्ता जाविसे तत्थ वाहिरिया परिसा भवइ, तज्जहा दासेइ वा पासेइ वा भाइलणइ वा, सा वि य ण नो आढाइ नो परियाणाइ, न अब्भुट्ठेइ ) त्या पणु जे दासो-धरमा काम उरतारा नोडरो, त्रैथो-धरना काम भाटे



‘હીણે ણ’ હીનઃ સ્વલુ=પ્રીતિહીન. સત્તુ મમોપરિ રનરૂપજો રાજા ‘અવજ્ઞાપ’  
 અપધ્યાત=દુર્ભાવમમ્પન્નો જાત સ્વલુ મમ પ્રિયે રનરૂપજો રાજા ‘ત’ તત્=  
 તસ્માત્ ‘ન નજ્જહ’ ન નાયતે સ્વલુ ણ મા કેન તીજેન રમારેણ=કુરિયતેન મારેણ  
 ‘મારેહિહ’ મારયિવ્યતિ ‘તિરુદ્દુ’ ઇતિ ક્ત્વા=ઇતિ પ્રિયિન્ય ધીતમસ્તઃ યાવત્-  
 ત્રસિતઃ, ઉદ્વિગ્ન, સજ્ઞાતભય મન્ ‘મણિય’ ગંનઃ ૨ ‘પગોમકેહ’ પ્રત્યરસ્વપતે  
 =પ્રત્યરસર્પતિ=પથાદ્વચ્છનિ પ્રત્યરસ્મર્ય, તમેવ ‘માયમય’=મથમ્મન્ય દુરો-  
 હતિ, દુરુહ્ય ‘તેતલિપુર’ અત્ર પઠ્યર્થે દ્વિતીયા, તેતલિપુરસ્યેત્યર્થઃ, મધ્યમન્થેન  
 યત્રૈવ સ્વક ગૃહ તત્રૈવ માધારયદ્ ગમનાત્ર । તત્ ગ્વલુ ત તેતલિપુર ‘જેનહા’

ગજ્ઞાપ રાયા ) કનકધ્વજ રાજા મેર ઉપર પ્રીતિ સ રહિત હો ગયે હૈ ।  
 (અવજ્ઞાપ ણ મમ કણગજ્ઞાપ રાયા ) કનકધ્વજ રાજા મેરે પ્રિય મેં  
 સજ્ઞાવ રહિત થન ગયે હૈ । (ત ણ નજ્જહ ણ મમ કેણહ કુમારેણ મારે  
 હિહ ત્તિ કદ્દુ મીણ તત્થે પૂજાત્રમણિય ૨ પચ્ચોમકકહ ) તો ન માલૂમ  
 યહ મુજ્ઞે કિસ કુત્તિસત મરણ સે મરવા ડાલે, એસા વિચાર કર વહ  
 ભીત (ભયયુક્ત) હો ગયા ત્રસ્ત યાવત્ સજ્ઞાત ભયગાલા થન ગયા ।  
 ઔરે ધીરે ૨ વર્તા સે પીઠાહટ કર ચલા આયા-(પચ્ચોસક્કિત્તા તમેવ  
 આસલ્લધ દુરુહેહ, દુરુહિત્તા તેતલિપુર મજ્ઞ મજ્ઞેણ જેણેવ સણગિહે  
 તેણેવ પહારેત્થ ગમણાણ ) આકર કે વહ અપને ડસી ઘોડે પર ઘેઠકર  
 તેતલિપુર કે ચીચ સે હોતા હુઆ અપને ઘર કી તરફ ચલ દિયા (તણ  
 તેતલિપુત્ત જે જહાં ઈસર જાવ પાસતિ તે તહા નો આઢાયતિ, નો પરિયા

થઈ ગયા છે (હીણેણ મમ કણગજ્ઞાપ રાયા ) કનકધ્વજ રાજાને હવે મારા  
 ઉપર પ્રેમ રહ્યો નથી (અવજ્ઞાપ ણ મમ કણગજ્ઞાપ રાયા ) કનકધ્વજ રાજા  
 મારા પ્રત્યે સદ્ભાવના રહિત થઈ ગયા છે

(ત ણ નજ્જહ ણ મમ કેણહ કુમારેણ મારેહિહ ત્તિ કદ્દુ મીણ તત્થે જાવ  
 સણિય ૨ પચ્ચોમકકહ )

તો કોણુ જાણુ ડ્યારે તેઓ મને કમોતે મરાવી ન ખાવે આરીતે વિચાર  
 કરીને તે ભયભીત થઈ ગયો, તે ત્રસ્ત યાવત સજ્ઞાત ભયવાળો થઈ ગયો  
 અને ધીમેધીમે ત્યાથી પાછો ફરીને આવતો રહ્યો

(પચ્ચોસક્કિત્તા તમેવ આસલ્લધ દુરુહેહ, દુરુહિત્તા તેતલિપુર મજ્ઞ મજ્ઞેણ  
 જેણેવ સણગિહે તેણેવ પહારેત્થ ગમણાણ )

ત્યાથી આવીને તે પોતાના ઘોડા ઉપર સવાર થઈને તેતલિપુરની વચ્ચે  
 થઈને પોતાના ઘર તરફ રવાના થયો

તણ તેતલિપુત્ત જે જહાં ઈસર જાવ પાસતિ તે તહા નો , નો



ये यथा=ये यथास्थिताः ' ईसरजाय ' ईश्वर यावत्=ईश्वरतल्वरमाडम्बिकादयः  
पश्यन्ति, ' ते तद्देव ' ते तथा स्थिता एव सन्तो नो आद्रियन्ते, नो परिजानन्ति,  
नो अभ्युत्तिष्ठन्ति, नो अञ्जलिपरिग्रहं कुर्वन्ति, दृष्टामिर्वावद्वाग्भिर्नो सञ्पन्ति,  
नो पुरतश्च पृष्ठतश्च पार्श्वतश्च मार्गतश्च समनुगच्छन्ति । ततः खलु तेतलिपुत्रो  
यत्रैव स्युः गृहं तत्रैव उपागच्छति । यापि च ' से ' तस्य ' तत्थ '   
तत्र भवने प्राधा परिपद् भवति, तद् यथा—' दासाड वा ' दासाइति वा,  
णति, नो अब्भुद्धेति ) मार्गं मे तेतलिपुत्र को आते हए जिन ईश्वर  
तल्वर, माडम्बिक आदिको ने देखा तो उन्होंने अत्र पहिले की तरह  
न उसका आदर किया न उसके आगमन की अनुमोदना की और न  
उसे देवकर वे उठे ही ( नो अञ्जलिपरिग्रहं करेति, इद्वाहिं जाव णो  
सलवति नो पुरओ य पिट्ठओय पासओय मग्गओय समणुग० ) और  
न उसे हाथ जोड़ कर नमस्कार ही किया । न इष्ट प्रिय वाणियों से  
उससे आलाप, संलाप किया, और न आजू बाजू से होकर वे उसके  
साथ मार्ग में ही चले । ( तण्ण तेतलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव उवा-  
गच्छड ) इस तरह चलता हुआ वह तेतलिपुत्र अमात्य अपने घर पर  
आ गया । उवागच्छित्ता जावि से तत्थ वाहिरिया परिसा भवड, तज्जहा  
दासेड वा पेसेड वा भाइलएड वा सा वि य ण नो आढाड, नो परिया-  
णाड, नो अब्भुद्धे ) वहा पर भी जो दास पर के काम काज करने  
परियाणति, नो अब्भुद्धेति )

मार्गमा जाता तेतलिपुत्रने ईश्वर तल्वर माडम्बिक वगैरे लोकेश्वरे लोये  
पणु डोअये पडेलानी जेम तेना आदर न ड्यो, तेना आगमननी अनुमोदना  
न करी अने तेने लोअने तेओ लोअ न थया

( नो अञ्जलि परिग्रहं करेति, इद्वाहिं जाव णो सलवति नो पुरओ य पिट्ठओ  
य पासओ य मग्गओ य समणुग० )

अने तेओओे हाथ लोअने तेने नमस्कार पणु न ड्यो, इष्ट, प्रिय,  
वयनोथी तेओओे तेनी साथे आलाप न ड्यो, संलाप न ड्यो अने अने  
आजुओे थअने तेओओे मार्गमा तेनी साथे साथे आया पणु नडि ( तण्ण  
तेतलिपुत्ते जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छड ) आ प्रमाणे आलतो आलतो  
तेतलिपुत्र अमात्य पोताने घर आनी गये।

( उवागच्छित्ता जावि से तत्थ वाहिरिया परिसा भवड, तज्जहा दासेड वा  
पासेड वा भाइलएड वा, सा वि य ण नो आढाड नो परियाणाड, न अब्भुद्धे )  
त्या पणु जे दासो-धरमा काम करनारा नोडरो, प्रैण्यो-धरमा काम भाटे

રાસાઃ=ગૃહકાર્યકારિણોભૂત્યા, પેમાદરા' પ્રેમ્યાઈતિ તા, પ્રેમ્યાઃ ગૃહકાર્ય કર્તુમન્યત્ર પ્રેપનીયા ભૂત્યાઃ, 'માઈલ્લપિતિ તા' માઈલ્લાઈતિ તા, 'માઈલ્લ' इति देशीशब्द, હાલિકઃ માગિનશ્ચેતિ તદર્થઃ હાલિકા' = ભૂમિકર્ષણાર્થ નિયુક્તા ભૂત્યાઃ, માગિનઃ, = સ્વવ્યયેનાઽન્યસ્ય ક્ષેત્રે કૃપિ કૃત્વા ઉપજાતાન્નસ્યાર્ધભાગ ગ્રાહિણ, एतद्रूपा या परिपत् साऽपि च एत नो आद्रियते, नो परिजानाति, नो अभ्युत्तिष्ठते । याऽपि च तस्य आभ्यन्तरिको परिपद् भवति, 'त जहा' तद् यथा 'पियाइ त्' पिताइति त्, ' मायाइ वा ' माता इति वा, ' जाव सुण्हाइ वा ' यावत् स्नुषाइति वा, स्नुषा = पुत्रवध्व, तद्रूपापि च परिपद् एन नो आद्रियते, नो परिजानाति, नो अभ्युत्तिष्ठति । तत खलु स तेतलिपुत्रो यत्रैव वासगृह यत्रैव स्वरु शयनीय तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य,

વાલે નૌકર પ્રેમ્ય, ઘર કે કામ કે લિયે જિન્હે ઘાટર મેજા જાતા હૈ એસે ભૂત્ય, તયા માઈલ્લ-હાલિક-ભૂમિ કર્ષણાર્થ નિયુક્ત ભૂત્ય, અથવા ભાગીદાર-અપને વ્યય સે અન્ય કે સેત મેં કૃપિકરકે ઉત્પન્ન અન્ન કે અર્ધ ભોગ કો લેને વાલે વટિયાજન હનરૂપ જો વાહ્ય પરિપત્ થી ઉમ્મને મીં ઉસકા આદર નહીં કિયા, ઉસકે આગમન કી અનુમોદના નહીં કી ઔર ન વહ ઉસકે આને પર અપને અધિષ્ઠિત સ્થાન સે ઉઠે । (જાવિય સે અર્ઘિમતરિયા પરિસા મવડ-તજહા-પિયાઈ વા માયાઈ વા જાવ સુણ્હાઈ વા સા વિ ય ણ નો આઢાઈ, નો પરિયાણાઈ, નો અબ્ધુદ્દેઈ) હસી તરેઈ જો ઉસકી અન્તરગ પરિપદ થી જૈસે પિતા માતા યાવત્ સ્નુષા-પુત્રવધૂ આદિ જન હન્હોને મીં ઉસકા આદર નહીં કિયા, આગમન કા અનુમોદન નહીં કિયા ઔર ન ચે કોઈ મીં ઉસકે આને પર અપને સ્થાનસે

જેઓને બહાર મોકલવામા આવે છે તે ભૂત્યો, તથા ભાઈલ્લ-હાળીકો એટલે કે ખેડવા માટે નિયુક્ત કરાયેલા ભૂત્યો અથવા તે ભાગીદારો-કે જે 'પોતાના ખર્ચે' જ ખીજના ખેતરોમા અનાજ વાવે છે અને વળતરમા ખેતરના માલિક પાસેથી અર્ધોભાગ મેળવે છે-એવા જે બાહ્ય પરિપત સબધી લોકો હતા તેઓ એ પણ તેનો આદર કર્યો નહિ, તેના આગમનને અનુમોદન આપ્યું નહિ અને ન તેના આવવા બદલ પોતાના સ્થાનેથી સત્કાર માટે તેઓ ઊભા થયા (જા વિ ય સે અર્ઘિમતરિયા પરિસા મવડ-તજહા-પિયાઈ વા માયાઈ વા જાવ સુણ્હાઈ વા સા વિ ય ણ નો આઢાઈ, નો પરિયાણાઈ, નો અબ્ધુદ્દેઈ) અને આ પ્રમાણે જ તેની અતરગ પરિપદના લોકો જેમ કે પિતા માતા યાવત્ સ્નુષા-બેટા વહુ-વગેરે લોકોએ પણ તેનો આદર કર્યો નહિ, તેના આગમનને અનુમોદન આપ્યું નહિ અને તેઓમાથી કોઈ પણ તેના આવવા બદલ પોતાના સ્થાનથી ઊભા થયા નહિ.

શયનીયે નિષીદતિ, નિપદ્ય, એવમવદત્=મનસ્વકથયન્-એવ સ્વલુ=યયા અથ તથૈવાન્યસ્મિન્નપિ દિવસે, અહ સ્વકાઢ્ ગૃહાત્ નિર્ગચ્છામિ, ' ત ચેવ જાવ અર્ઘિમ-તરિયા પરિસા નો આઢાઢ, નો પરિયાણાઢ નો અઘ્મુદ્દેઢ ' તદેવ યાવત્ આઘ્યન્તરિકી પરિપદ્ નો આદ્રિયતે, નો પરિજાનાતિ, નો અઘ્યુત્તિષ્ઠતિ, અસ્યાયમભિપાયઃ-પૂર્વસ્મિન્ દિવસે રાત્રિપ્રસન્ને મા દૃષ્ટ્વા રાજેશ્વરાદયઃ મર્વે આદ્રિયન્તે સ્મ,પરિજાના-ન્તિ સ્મ અઘ્યુત્તિષ્ઠન્મિ સ્મ,અગ્રાઢપિ ગૃહનિર્ગત માં તે તથૈવ સત્કારયન્તિસ્મ । પરન્તુ રાત્રિ અઠ્ઠસ્માત્ અપ્રસન્ને રાજેશ્વરતલપરમાઢમ્પિરુકૌઢુમ્પિકમમૃતયઃ તથા મદીય બ્રાહ્માઘ્યન્તરા ચ પરિપદપિ સર્વેઢપિ ચ મા નાદ્રિયન્તે, નો પરિજાનન્તિ, નો

ઉઠે । (તણ સે તેતલિપુત્તે જેણેવ વાસઘરે જેણેવ સણ સયણિજ્જે તેણેવ ઉવાગચ્છઢ) ઇમ તરહ ઘર પર આઠર વહ તેતલિપુત્ર અમાત્ય જહા અપના વાસગૃહ ઓર ઉસમેં મી જહા અપની શય્યા યી વહાં ગયા (ઉવાગચ્છિત્તા સયણિજ્જસિ નિસીયઢ, ણિસીઢિત્તા એવ વયાસી) વહા જાકર વહ ઉસ પર વેઢ ગયા-ઓર મનહી મન વિચાર કરને લગા-(એવ સ્વલુ અહ સયાઓ ગિહાઓ ણિગ્ગચ્છામિ, ત ચેવ જાવ અર્ઘિમતરિયા પુરિસા નો આઢાઢ, નો પરિજાણાઢ નો અઘ્મુદ્દેઢ-તં સેય સ્વલુ મમ અપ્પાણ જીવિયાઓ વવરોવિત્તાપ્તિ વઢુ એવ સપેહેઢ) પહિલે કે દિનોં મેં જઘ મેં અપને ઘર સે નિકલતો થા તો લોગ-રાજેશ્વર આદિ સમસ્ત જન મુક્ષ પર રાજા કી પ્રસન્નતા હોને કે કારણ આતા જાતા હુઆ દેવકર મેરા આદર કરતે થે-મેરે આગમન આદિ કી અનુમોદન કરતે થે ઉઠ-કર અપને વિનય પ્રદર્શિત કરતે થે-તયા આજ મી જવ મેં ઘરસે નિકલ

( તણ સે તેતલિપુત્તે જેણેવ વાસઘરે જેણેવ સણ સયણિજ્જે તેણેવ ઉવાગચ્છઢ )

આ રીતે ઘેર આવીને તેતલિપુત્ર અમાત્ય ન્યા તેની રહેવાની ઓરડી અને તેમા પણ ન્યા પોતાની પથારી હુતી ત્યાં ગયો । (ઉવાગચ્છિત્તા સયણિ-જ્જસિ નિસીયઢ, ણિસીઢિત્તા એવ વયાસી) ત્યાં જઈને તે તેના ઉપર બેઠી ગયો અને મનમા જ વિચાર કરવા લાગ્યો કે

( એવ સ્વલુ અહ સયાઓ ગિહાઓ ણિગ્ગચ્છામિ, ત ચેવ જાવ અર્ઘિમતરિયા પુરિસા નો આઢાઢ, નો પરિજાણાઢ, નો અઘ્મુદ્દેઢ-ત સેય સ્વલુ મમ અપ્પાણ જીવિ-યાઓ વવરોવિત્તાપ્તિ કઢ્ઢુ એવ સપેહેઢ )

પહેલાં ન્યારે હુ ઘેરથી બહાર નીકળતો હતો ત્યારે લોકો-રાજેશ્વર વગેરે બધા લોકો-રાજા મારા ઉપર ખુશ હતા એટલી-આવતા જતા બેઠને મારો આદર કરતા હતા, મારા આમનનુ અનુમોદન કરતા હતા તેમજ ઊભા થઈને વિનય પ્રદર્શિત કરતા હતા અને આજે પણ હુ ન્યારે ઘેરથી નીકળાને



અભ્યુત્તિષ્ઠન્તિ । ' ત ' તત્=તસ્માત્ ધારણાત્, શ્રેયઃ સ્વત્રુ મમ આત્માન જીવિ  
તાદ્ વ્યપરોપયિત્રમ્, ઇતિ ક્રત્યા, એવ સમેશતે, સંપદ્ય તાત્રપુટ વિપમ્ ' આસ-  
ગસિ ' આસ્યે=મુખે પ્રક્ષિપતિ, વિપ નો મનામ્યતિ=વિપત્તેન નો પરિણમતિ ।  
તતઃ સ્વલુ સ તેતલિપુનો ' નીલુપ્પલ જાવ અસિ ' નીલોત્પલ યાવદસિ=નીલોત્પલ  
ગવલગુલિકસમપ્રભ=નીલોત્પલ=નીલકમલમ્ ગવલ્=માદિપ શૃદ્ધમ્, ' ગુલિક '   
નીલરદ્ધવિશેષ, તૈ. સમા પ્રભાતેતલિ કાન્તિર્યસ્ય સ ત તાદૃશ યાવદસિ=તીક્ષ્ણ  
સ્વરૂપ ' સ્વત્રે ' સ્કન્ધે=મ્થાપૂછે ' ઓદરદ્ ' અવહરતિ=નિપાતયતિ । તત્રાઽપિ ચ

કર રાજા કે પાસ ગયા-તથા મી ઢન સપલોગોં ને પૂરવત્ મેરા આદર  
આદિ સવ કુઠ ક્રિયા-પરન્તુ અકસ્માત રાજા કે કષ્ટ હોને પર જબ મેં  
વહા સે લોટકર વાપિમ અપને સ્થાન પર આને લગા-તો કિમી ને મી  
મેરા આદર આદિ કુઠ મી સત્કાર નહોં ક્રિયા । યદા તક કિ જો મેરી  
બાહ્ય ઓર આભ્યન્તર પરિપદ હૈ-મીતર વાહરકે નોકર ચાકર એવ માતા  
' પિતા આદિ જન હૈ-ઁસને મી આજ હસ મમય આને પર મુજે કુઠ  
' નહોં સમજા-અતઃ મુજે અવ ઁસી સ્થિતિ સે મરના હી ઉત્તમ હૈ । હસ  
પ્રકાર કા ઁસને અપને મન મે વિચાર ક્રિયા-( સપેદિત્તા તાલડડ વિસ  
આસગસિ પન્નિલવદ્, સેય વિસે ણો સકમદ્, તણ સે તેતલિપુત્તે નીલુ  
પ્પલ જાવ અસિ સ્વધસિ ઓદરદ્, તત્થ વિય સે ધારા ઓપલ્લા, તણ સે  
તેતલિપુત્તે જેણેવ અસોગવણિયા તેણેવ ડ૦ ) વિચાર કરકે ઁસને તાલ  
પુટવિપ કો અપને મુલ મે ડાલા-પરન્તુ ઁસને અપના કુઠ મી પ્રભાવ

રાજાની પાસે ગયો ત્યારે પણ એ બધાએ પહેલાની જેમજ મારો આદર  
વગેરે બધું કર્યું હતું પણ એચિના રાજાને નારાજ થઈ જવા બદલ બ્યારે  
હું ત્યાથી પાછો ફરીને પોતાને ઘેર આવવા લાગ્યો ત્યારે કેાંએ પણ મારો  
આદર કે સત્કાર કયો નહિ મારી બાહ્ય અને આભ્યન્તર પરિવદ એટલે કે  
બહારના નોકરો-ચાકરો અને માતા પિતા વગેરે-એ તેઓએ પણ આજે અત્યારે  
મારા આવવા બદલ કંઈ પણ કિંમત કરી નહિ એથી એની પરિસ્થિતિમા  
મારૂં મરણ જ ઉત્તમ ઉપાય છે

( સપેદિત્તા તાલડડ વિસ આસગસિ પન્નિલવદ્, સેય વિસે ણો સકમદ્, તણ  
સે તેતલિપુત્તે નીલુપ્પલ જાવ અસિ સ્વધસિ ઓદરદ્, તત્થ વિય સે ધારા ઓપલ્લા,  
તણ સે તેતલિપુત્તે જેણેવ અસોગવણિયા તેણેવ ડ૦ )

આ જાતનો વિચાર કરીને તેણે તાલપુટ વિપ ( એર ) ને ન ।



‘से’ तस्य खड्गस्य धारा ‘ओपल्ला’ कुण्ठिता, ‘ओपल्ल’ इति देशी शब्दः तलपुटेन त्रिपेण, कण्ठे निपातितेनापिनाऽपि च तदभिलपित मरण न जातम् । ततः खलु=तदनन्तरं स तेतलिपुत्रो यत्रैव अशोकवनिका=अशोकवाटिका तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पाशक ग्रीवाया वध्नाति, वद्ध्या ‘स्वख’ वृक्ष ‘टुरुड्, दुरो’ इति=आरोहति, दूरुह्य पाश वृक्षे वध्नाति, वद्ध्या आत्मानं ‘मुयड्’ मुञ्चति=अधः पातयति । ‘तत्थवि’ तत्राऽपि=एतस्मिन् मरणोपाय कृतेऽपि च ‘से’ तस्य रज्जुच्छिन्ना=म यत् एव पाशस्तुटित । ततः खलु स तेतलिपुत्रः ‘महम्महालय’ महातिमहतीम्=अति विशाला शिला ग्रीवाया वध्नाति, वद्ध्या ‘अत्था-हमतारमपोमियसि’ अस्तात्रातागपोम्पेये=नास्ति स्वात्र’ यस्य तन् अस्तात्रम्=

नहीं दिखलाया-अर्थात् वह विष रूप से परिणत नहीं हुआ । इसके बाद उस तेतलिपुत्रने नीलोत्पल गवल, गुलिक की प्रभा जैसी प्रभावाली अत्यन्त नीलवर्ण वाली-ऐसी तलवार को कि जिसकी धार बहुत तीक्ष्ण थी-अपनी गर्दन पर रखा-अर्थात् उसे गर्दन पर चलाई-परन्तु उसने भी अपना काम नहीं किया-वह भी-कुटित हो गई-इस तरह जब इन दोनों वस्तुओं से अपना अभिलपित मरण सा य नहीं हुआ-अब वह तेतलिपुत्र जहा अशोकवनिका-अशोकवाटिका-थी वहा गया (उवागच्छित्ता पासगगीवाए वधइ) वहा जाकर उसने अपनी ग्रीवामें फटा डाला-वाधा (वधित्ता अप्पाण मुयड्, तत्थ वि से रज्जू छिन्ना) चान्व कर फिर वह वृक्ष पर चढ़ गया और वहा से अपने आपको नीचे लटका दिया परन्तु वहा पर भी उसकी रज्जू बीच में से टूट गई (तण्ण से तेतलिपुत्ते

मुण्णमा नाभ्यु पणु तेणु उधं अमर जतानी नडि अट्ठे के ते विअ इपमा परिणुभ्यु नडि त्थार पडी ते तेतलिपुत्रे, नीलोत्पल गवल, गुलिकना जेवी प्रभावाणी तेमज्ज तीक्ष्ण धारवाणी तववाग्ने पोतानी डोड उपर भूडी अट्ठे के तेना वडे तेणु पोतानी डोड उपर धा उर्यो पणु तेनाथी पणु उधं जाम थयु नडि अट्ठे के तरवार पणु भूडी थधं गधं डुती ‘ओपल्ल’ आ कुठित (भूडी) अर्थ भाटे वपरायेडो देशी शब्द छे ज्यारे आ रीते ते जने वस्तुओथी तेनी छिन्ना पूरी थधं नडि अट्ठे के तेनु भरण थउ राउथु नडि त्थारे ते ज्ज्या अशोक वनिडा-अशोक वाटिका-डुती त्था गये (उवागच्छित्ता पासग गीवाए वधइ) त्था जधने तेणु पोतानी डोडमा क्षामे लेखीने आभ्ये (वधित्ता अप्पाण मुयड् तत्थ वि से रज्जू छिन्ना) आधीने ते वृक्ष उपर चढी गये अने त्थावी पोतानी भेजे ज ते लटकी गये परन्तु अडो पणु क्षामात्त दोरड वन्थेथी तूटी गयु डुतु

અભ્યુત્તિષ્ઠતિ । ' ત ' તત્=તસ્માત્ ધારણાત્, શ્રેયઃ સ્વદુ મમ આત્માન જીવિ  
તાદ્ વ્યપરોપયિતુમ્, ઇતિ કૃત્વા, એવ સમેક્ષતે, સમેક્ષ્ય તાન્પુટ રિપમ્ ' આસ-  
ગસિ ' આસ્યે=મુખે પ્રક્ષિપતિ, રિપ નો મત્રામ્યતિ=રિપત્વેન નો પરિણમતિ ।  
તતઃ સ્વલુ સ તેતલિપુતો ' નીલુપ્પઞ્ઞ જાવ અસિં ' નીલોત્પલ્લ યાવદસિં=નીલોત્પલ  
ગવલગુલિકસમપ્રભ=નીલોત્પલ્લ=નીલકમલમ્ ગવત્=માદિપ શૃદ્ધમ્, ' ગુલ્લિક '   
નીલરુદ્ધવિશેષ, તૈ. સમા પ્રભાતેતલિ કાન્તિર્યસ્ય સ ત તાદૃશ યાવદસિં=તીક્ષ્ણ  
સ્વરૂપ ' સ્વરે ' સ્કન્ધે=મ્ણ્ઠપૂછે ' ઓહરહ ' અવહરતિ=નિપાતયતિ । તત્રાઽપિ ચ

કર રાજા કે પાસ ગયા-ત્યે ખી ઠન સવલોગોં ને પૂર્વવત્ મેરા આદર  
આદિ સય કુઝ ક્રિયા-પરન્તુ અરુસ્માન રાજા કે રુદ્ધ હોને પર જય મેં  
વહા સે લોટકર વાપિમ અપને સ્થાન પર આને લગા-તો કિમી ને ખી  
' મેરા આદર આદિ કુઝ ખી સત્કાર નહોં ક્રિયા । યદા તદ્ધ કિ જો મેરી  
બાહ્ય ઓર આભ્યન્તર પરિષદ હૈ-ખીતર વાહરકે નોકર ચાકર એવ માતા  
' પિતા આદિ જન હૈ-ઉસને ખી આજ હસ મમય આને પર મુજે કુઝ  
નહોં સમજા-અતઃ મુજે અવ જેસી સ્થિતિ સે મરના હી ઉત્તમ હૈ । હસ  
પ્રકાર કા ઉસને અપને મન મે વિચાર ક્રિયા-( સપેહિત્તા તાલુડ વિસ  
આસગસિ પવિલ્લવહ, સેય વિસે ણો સકમહ, તણ સે તેતલિપુત્તે નીલુ  
પ્પલ જાવ અસિં સ્વધસિ ઓહરહ, તત્ય વિય સે ધારા ઓપલ્લા, તણ સે  
તેતલિપુત્તે જેણેવ અસોગવણિયા તેણેવ ઉ૦ ) વિચાર કરકે ઉસને તાલ  
પુટવિષ કો અપને મુખ મેં ઢાલા-પરન્તુ ઉસને અપના કુછ ખી પ્રભાવ

રાજાની પાસે ગયો ત્યારે પણ એ બધાએ પહેલાની જેમજ મારો આદર  
વગેરે બધું કર્યું હતું પણ એચિના રાજાને નારાજ થઈ જવા બદલ ત્યારે  
હું ત્યાંથી પાછો ફરીને પોતાને ઘેર આવવા લાગ્યો ત્યારે કોઈએ પણ મારો  
આદર કે સત્કાર કયો નહિ મારી બાહ્ય અને આભ્યન્તર પરિષદ એટલે કે  
બહારના નોકરો-ચાકરો અને માતા પિતા વગેરે-છે તેઓએ પણ આજે અત્યારે  
મારા આવવા બદલ કંઈ પણ કિંમત કરી નહિ એથી એની પરિસ્થિતિમા  
મારૂં મરણ જ ઉત્તમ ઉપાય છે

( સપેહિત્તા તાલુડ વિસ આસગસિ પવિલ્લવહ, સેય વિસે ણો સકમહ, તણ  
સે તેતલિપુત્તે નીલુપ્પઞ્ઞ જાવ અસિં સ્વધસિ ઓહરહ, તત્યવિય સે ધારા ઓપલ્લા,  
તણ સે તેતલિપુત્તે જેણેવ અસોગવણિયા તેણેવ ઉ૦ )

આ બીજાનો વિચાર કરીને તેણે તાલપુટ વિષ ( ઝેર ) ને પોતાના

દીત્=ચિત્ત સગો ય મનસ્યેનમકથયત્-મો ચિત્ત ! શ્રમણા યદ્ વદન્તિ તત્સ્વલુ  
શ્રદ્ધેય=શ્રદ્ધા યોગ્ય, શ્રદ્ધેય સ્વલુ મોઃ બ્રાહ્મણા વદન્તિ, શ્રદ્ધેય સ્વલુ મોઃ !  
શ્રમણ બ્રાહ્મણા વદન્તિ । અય મ્હાત-જાત્મપરલોકાદ્યર્થ પ્રતિવોધક શ્રમણાદીના વચન  
શ્રદ્ધેય ભવતિ, અતીન્દ્રિયસ્યાપ્યાત્મપરલોકાદિરવસ્થુપસ્યાનુમાનાદિ પ્રમાણવિષય-  
તયા શ્રદ્ધાવિષયત્વાત્ । પરન્તુ અદમેમો અસહાયઃ અશ્રદ્ધેયમ્ અવિશ્વમનીય  
વદામિ । યદ્યપિ મદીય વચન સર્વથા સત્યમ્, તથાપિ અમમ્ભાવ્યતયા જનૈઃ  
પ્રત્યેતુમશક્યમ્ । તદેવાહ-‘ એવ સ્વલુ ’ રૂપાદિના ‘ એવ સ્વલુ ’ મયિ અશ્રદ્ધેય

ચીચ હી મેં બુદ્ધ ગઈ । હમ તરહ હન સમસ્ત અનભવનોં કી સમવના  
કે ઘાદ તેતલિપુત્રને અપને આપનો સવોધિત કરતે હુમ મન મે વિચાર  
કિયા-હે ચિત્ત ! શ્રમણજન જો કહતે હેં વહ શ્રદ્ધેય હે । બ્રાહ્મણજન જો  
કહતે હેં વહ શ્રદ્ધેય હેં હસી પ્રકાર શ્રમણમાહણજન જો કહતે હેં વહ શ્રદ્ધેય  
હે । હસકા ભાવ યહ હેં કિ આત્મા, પરલોક આદિ પદાર્થ જો કિ અતીન્દ્રિય  
હેં વે અનુમાન આદિ પ્રમાણ કિ વિષયભૂત હો જાતે હે-હમલિયે વે શ્રદ્ધાકે  
વિષય વન જાતે હે-અતઃ હન અતીન્દ્રિય આત્મ, પરલોક આદિ પદાર્થો  
કો પ્રતિપાદિત કરને વાલે શ્રમણ માહણ આદિકોં કે વચન મી શ્રદ્ધેય  
હો જાતે હેં, પરન્તુ મેં જો કહ રહા હેં વહ અશ્રદ્ધેય કહ રહા હેં એક  
અસહાય હેં-હસલિયે-મુજે હસ વિષયમેં કિસી કો મી સહાયતા મિલને  
વાલી નહી હે । હન શ્રમણ માહણ આદિજનોં કે વચનોં કે સહાયક તો  
અનુમાન આદિ પ્રમાણ હે-પરન્તુ મેરા સહાયક કોઈ પ્રમાણ હી નહીં  
હોતા હે, યન્યપિ મેં સર્વથા સત્ય કહતા હેં પરન્તુ વહ મેરા વચન અસ-  
ભવિત અસહાય-હોને કી વજહ સે મનુષ્યો કે લિયે શ્રદ્ધેય નહીં વન

આ રીતે આ બધા અમભવનોની મભાનના બાદતે તેલિપુત્રે પોતાની બતનેજ  
સબોધિત કરતા મનમા વિચાર કર્યો કે હે ચિત્ત ! શ્રમણજનો જે કંઈ કહે છે  
તે શ્રદ્ધેય છે, બ્રાહ્મણો જે કંઈ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે આ પ્રમાણે શ્રમણ માહણજનો  
જે કંઈ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે આનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે આત્મા પરલોક વગેરે  
પદાર્થો જેઓ કે અતીન્દ્રિય છે-તેઓ અનુમાન વગેરે પ્રમાણના વિષયભૂત થઈ બંધ  
છે એટલા માટે તે પદાર્થો શ્રદ્ધાના વિષય બની બંધ છે એવી આ બધા  
અતીન્દ્રિય આત્મ, પરલોક વગેરે પદાર્થોનું પ્રતિપાન કરનાર શ્રમણ માહણ  
વગેરેના વચનો પણ શ્રદ્ધેય થઈ બંધ છે, પણ હું જે કંઈ કહી રહ્યો છું તે -  
અશ્રદ્ધેય કહી રહ્યો છું એક અસહાય છું એથી મને આ બાબતમા કોઈની  
મદદ પણ મળી રાકે તેમ નથી તે શ્રમણ માહણ વગેરેના વચનોના મહાયક  
તો અનુમાન વગેરે પ્રમાણ છે પણ મારા કથનનું સહાયભૂત થાય તેવું કોઈ  
પ્રમાણ જ નથી જે કે હું જે કંઈ પણ કહી રહ્યો છું તે સંપૂર્ણ રીતે યથાર્થ  
મારા તે વચનો અસભવિત અસહાય હોવા બદલ



अतलस्पर्शि, अतारम्=अतरणीयम्, अपौरुषेयम्=पुरुष प्रमाणं यस्य तत् पौरुषेयम्= न पौरुषेयम्=अपौरुषेयम्=पुरुषप्रमाणरहितम्, एतेषां धर्मधारय, तस्मिन् अतिम-  
भीरे इत्यर्थः, उदके आत्मान मुञ्चति । तत्रापि=तस्मिन्नुदकेऽपि च 'से'  
तस्य=तेतलिपुत्रस्य 'थाहे' स्ताघो जातः । तत खलु स तेतलिपुत्रः शुष्के  
तृणकूटे=तृणपुञ्जे 'अगणिकाय' अग्निकायं पक्षिप्य, तत्र आत्मान मुञ्चति ।  
तत्रापि=शुष्के तृणेऽपि सोऽग्निकायो 'विज्ज्ञाण' विज्यात=उपगन्त । 'तएण'  
ततः खलु=एतस्य सर्वस्य असम्भाव्यस्य सम्भावनानन्तरम् स तेतलिपुत्र एवमवा

महद्महालयं सीलं गीवाण-बध्दं बधित्ता अत्थाह मनारमपोरिमियसि  
उदगसि अप्पाणं सुयइ, तत्थं वि से थाहे जाण ) इमके बाद उस तेत-  
लिपुत्र ने एक बहुत विशालकाय शिला को अपने गले में बांधा-और  
बांध कर अपने आपको अत्थाह-अतार एव अपुण्य प्रमाण जल में छोड़  
दिया-परन्तु वह जल भी उसके लिए रताध थाह युक्त-वन गया-(तएण  
से तेतलिपुत्ते सुक्कसि तणकूडसि अगणिकायं पक्खिववडं पक्खिवित्ता  
सुयइ, तत्थं वि से अगणिकाए विज्झाए-तएण से तेतलिपुत्ते एव-  
वयासी-सद्धेयं खलु भो समणा वयंति सद्धेयं-खलु भो माहणा वयंति,  
सद्धेयं खलु भो समणमाहणा वयंति, अहं एगो असद्धेयं वयमि एव  
खलु अहं सह पुत्तेहिं अपुत्ते को मेयं सदहिस्सइ ? सहमित्ते हिं अमित्ते  
को मेयं सदहिस्सइ ) इसके बाद तेतलिपुत्रने शुष्क घासके ढेर में  
अग्नि लगाई-और उसमें अपने आपको डाल दिया-परन्तु वह भी

( तएण से तेतलिपुत्ते महद्महालयं सीलं गीवाए बध्दं, बधित्ता अत्थाहमतारम  
पोरिमियसि उदगसि अप्पाणं सुयइ, तत्थं वि से थाहे जाण )

त्यार पछी ते तेतलिपुत्ते ओक णहुं मोटी लारे शिवा ( पथरो ) ने  
घातानी जतने अत्थाह-अतार अने अपुरुष प्रमाणे पाणीमा नाणी दीधी  
परतु ते ओहु पाणी पणु तेना भाटे थाह वाणु ओटले के छीछु थर्धं अथु

( तएण से तेतलिपुत्तं सुक्कसि तणकूडमि अगणिकायं पक्खिववडं, पक्खिवित्ता  
सुयइ, तत्थं वि से अगणिकाए विज्झाए-तएण से तेतलिपुत्ते एव वयासी सद्धेयं  
खलु भो समणा वयंति सद्धेयं-खलु भो माहणा वयंति, सद्धेयं खलु भो समण  
माहणा वयंति, अहं एगो असद्धेयं वयमि एव खलु अहं सह पुत्तेहिं अपुत्ते को  
मेयं सदहिस्सइ ? सहमित्तेहिं अमित्ते को मेयं सदहिस्सइ )

त्यार पछी तेतलिपुत्ते सूका घासना ढगलाभा अग्निं प्रगटाव्ये अने  
घातानी जतने तेमा नाणी दीधी परतु ते पणु वर्येथी जं । गणु



દીત્=ચિત્ત સમોચ મનસ્યેનમક્રમયત્-મો ચિત્ત ! શ્રમણા યદ્ વદન્તિ તદ્સ્વલુ  
શ્રદ્ધેય=શ્રદ્ધા યોગ્ય, શ્રદ્ધેય ગલુ મોઃ બ્રાહ્મણા વદન્તિ, શ્રદ્ધેય સ્વલુ મોઃ !  
શ્રમણ બ્રાહ્મણા વદન્તિ । અય માર-જાત્મપરલોકાદ્યર્થ પ્રતિરોધક શ્રમણાદીના વચન  
શ્રદ્ધેય ભવતિ, અતીન્દ્રિયસ્યાપ્યાત્મપરલોકાદિરવસ્થાપ્યાનુમાનાદિ પ્રમાણવિષય-  
તયા શ્રદ્ધાવિષયત્વાત્ । પરન્તુ અદમેમો અસહાયઃ અશ્રદ્ધેયમ્ અવિશ્વમનીય  
વદામિ । યદ્યપિ મદીય વચન મર્વથા સત્યમ્, તયાપિ અમમાન્યતયા જનૈઃ  
પ્રત્યેતુમશક્યમ્ । તદેવાહ-‘ એવ ગલુ ’ ઇત્યાદિના ‘ એવ સ્વલુ ’ મયિ અશ્રદ્ધેય

ચીચ હી મેં ઘુણ ગઈ । હમ તરહ હન સમસ્ત અભવનોં કી સમવના  
કે ઘાદ તેતલિપુત્રને અપને આપનો સમોધિત કરતે હુમ મન મે વિચાર  
કિયા-હે ચિત્ત ! શ્રમણજન જો કહતે હેં વહ શ્રદ્ધેય હ । બ્રાહ્મણજન જો  
કહતે હેં વહ શ્રદ્ધેય હેં હમી પ્રકાર શ્રમણમાહણજન જો કહતે હેં વહ શ્રદ્ધેય  
હેં । હસકા ભાવ યહ હેં કિ આત્મા, પરલોક આદિ પદાર્થ જો કિ અતીન્દ્રિય  
હેં વે અનુમાન આદિ પ્રમાણ કિ વિષયભૂત હો જાતે હેં-હમલિયે યે શ્રદ્ધાકે  
વિષય વન જાતે હેં-અતઃ હન અતીન્દ્રિય આત્મ, પરલોક આદિ પદાર્થો  
કો પ્રતિપાદિત કરને વાલે શ્રમણ માહણ આદિકોં કે વચન મી શ્રદ્ધેય  
હો જાતે હેં, પરન્તુ મેં જો કહ રહા હેં વહ અશ્રદ્ધેય કહ રહા હેં એક  
અસહાય હેં-હસલિયે-મુજે હમ વિષયમેં કિસી કો મી સહાયતા મિલને  
વાલી નહીં હેં । હન શ્રમણ માહણ આદિજનોં કે વચનોં કે સહાયક તો  
અનુમાન આદિ પ્રમાણ હેં-પરન્તુ મેરા સહાયક કોઈ પ્રમાણ હી નહીં  
હોતા હેં, યન્યપિ મેં મર્વ થા સત્ય કહતા હેં પરન્તુ વહ મેરા વચન અસ-  
ભવિત અસહાય-હોને કી વજહ સે મનુષ્યો કે લિયે શ્રદ્ધેય નહીં વન

આ રીતે આ બધા અમભવનોની મલાવના બાદ તે તલિપુત્રે પોતાની બાતનેજ  
સમોધિત કરતા મનમા વિચાર કર્યો કે હે ચિત્ત ! શ્રમણજનો જે કહ કહે છે  
તે શ્રદ્ધેય છે બ્રાહ્મણો જે કહ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે આ પ્રમાણે શ્રાણ માહણજનો  
જે કહ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે આનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે આત્મા પરલોક વગેરે  
પદાર્થો જેઓ કે અતીન્દ્રિય છે-તેઓ અનુમાન વગેરે પ્રમાણના વિષયભૂત થઈ બચ  
છે એટલા માટે તે પાથો શ્રદ્ધાના વિષય બની બચ છે એવી આ બધા  
અતીન્દ્રિય આત્મ, પરલોક વગેરે પદાર્થોનું પ્રતિપાન કરનાર શ્રમણ માહણ  
વગેરેના વચનો પણ શ્રદ્ધેય થઈ બચ છે, પણ હું જે કહ કહી રહ્યો છું તે -  
અશ્રદ્ધેય કહી રહ્યો છું એક અસહાય છું એવી મને આ બાબતમા ડોઈની  
મદદ પણ મળી રહે તેમ નથી તે શ્રમણ માહણ વગેરેના વચનોના મહાયક  
તો અનુમાન વગેરે પ્રમાણો છે પણ મારા કથનનું સહાયભૂત થાય તેવું કોઈ  
પ્રમાણ જ નથી ને કે હું જે કહ પણ કહી રહ્યો છું તે સંપૂર્ણ રીતે યથાર્થ  
સત્ય-કહી રહ્યો છું પણ મારા તે વચનો અમભવિત અસહાય હોવા બદલ

वचने सती यदि अहमेव=एवभूत मत्यगपि वदामि, यत्-अह 'सहपुत्रेहि अपुत्र' सहपुत्रैरपि अपुत्रः=पुत्रेषु विद्यमानैरपि अह पुत्ररहित एवामि 'तस्मादतत्त्वान् कः 'मेय' ममेद=इद मदीय वचन 'सन्निभः' अदाम्यति=अत्येयति, न कोऽपि, तथा अह 'सहमितेहिअमिते' सहमित्रैरमित्र=मित्रेषु विद्यमानैरपि 'मित्ररहितोऽह' को 'मेद' ममेद वचन अदाम्यति ? एवम्=अनेन प्रकारेण अर्थेन दारै दासै, परिजनेन च महितोऽपि, तं रहितोऽस्मि, इद मदीय वचन क. अदाम्यति, अपितु न कोऽपि । 'एव' अमुना प्रकारेण रा यद्यह व्रीमि-यत् 'तेतलिपुत्रे' तेतलिपुत्र नामधेये खलु मयि अमात्ये कनकध्वजेन राज्ञा 'अवज्ञाएण समाएण' अपघ्यातेन=दुश्चिन्तकेन सता, अर्थात् कनकध्वजो राजा

सकना है जैसा मैं यह सत्य भी कहूँ कि मैं पुत्रों के विद्यमान होने पर भी अपुत्र पुत्र रहित-हूँ, तो यौव मेरी इस बात को श्रद्धा से देखेगा-इसी तरह मैं यह कहूँ कि मैं मित्रों के विद्यमान होने पर भी मित्र रहित हूँ-तो कौन मेरे इन वचनों पर विश्वास करेगा-(एव अत्येण दारेण दासेहि परिजणेण एव खलु तेतलिपुत्रेण अमच्छे कणगज्झएण रत्ताअवज्झाएण समाणेण तेतलिपुत्रेण तालपुडगे विसे आसगसि पक्खित्ते से वि य णो कमइ को मेय सहहिस्सइ ? तेतलिपुत्रेण नीलुप्पल जाव खधसि ओहरिण तत्थ वि से धारा ओपला को मेय सहहिस्सइ ) इस तरह अर्थ, दारा, दास, परिजन, इन से युक्त होने पर भी मैं-इन से रहित हूँ, कौन मेरे इस वचन को मानेगा ? अर्थात् कोई नहीं मानेगा इसी तरह यदि मैं ऐसा कहूँ कि मुझे तेतलिपुत्र अमात्य के ऊपर कनक

भाण्डो भाटे श्रद्धा यथ शडे तेम नथी जेम डे हु अत्यारे आ जतनी साथी वात पणु डहु डे पुत्रो डोवा छताओ हु पुत्र वगरनो छु तो डोणु भारी आ वातने श्रद्धानी दृष्टिओ लेशे ? आ प्रमाणे ज हु डहु डे मित्रो डोवा छताओ हु मित्र वगरनो छु तो डोणु भारी आ वात उपर श्रद्धा धरावशे ?

( एव अत्येण दारेण दासेहि परिजणेण एव खलु तेतलिपुत्रेण अमच्छे कण गज्झएण रत्ता अवज्झाएण समाणेण तेतलिपुत्रेण तालपुडगे विसे आसगसि पक्खित्ते से वि य णो कमइ, को मेय सहहिस्सइ ? तेतलिपुत्रेण नीलुप्पल जाव खधसि ओहरिण तत्थ वि से धारा ओपला को मेय सहहिस्सइ )

आ रीते अर्थ ( धन ), दाग ( पत्नी ) दास, परिजन ओ पधा डोवा छता पणु हु ओभना वगर छु भारी आ वात उपर डोणु विश्वास भूडवा रीथार थशे ? ओटवे डे डोणु पणु विश्वास करशे ज नडि आ रीते ज लो हु आभ डहु डे भारी उपर गण्ड डनड वज्ज नाराज थथ गया डता ओटला भाटे

तेतलिपुत्रे दुश्चिन्तको जातः इतिहेतोः, तेतलिपुत्रेण तालपुटक विषम् 'आसगसि' आस्ये=मुखे प्रक्षिप्तम्, 'से वि ष' तदपि च विष नो 'कमड न क्राम्यति=विषत्वेन न परिणमति को जन 'मेद' ममेद मत्यमपि उचन श्रद्धास्यति न कोऽपि, तथा 'तेतलिपुत्रेण' नीलोत्पल जाव खयसि ओहरिए 'तेतलिपुत्रेण नीलोत्पल यावत् स्कन्धे अपहतः=तेतलिपुत्रेण नीलोत्पलगवलगुलिकमप्रभाऽसि 'स्कन्धे कण्ठमूले 'अवहत' प्रहतः 'तत्त्वनि' तत्रापि=तस्मिन् मरणोपाये कृतेऽपि च' तस्य=असेः धारा ओपल्ला=कुण्ठीभूता को 'मेद ममेद श्रद्धास्यति । एवमेव यद्यह द्रूयाम् यन्मया 'तेतलिपुत्रेण पामगं गीवाए उधेत्ता जाव रज्जुछिन्ना को मेय सदहिस्सइ' तेतलिपुत्रेण पागक ग्रीवाया उद्वा यावत् रज्जुछिन्ना, को ममेद श्रद्धास्यति ? तेतलिपुत्रेण अतिविशाला गिला यावद् वद्वा अस्ताधयाव-

भवज राजा दुश्चित्तक वन गये-इसलिये मने तालपुट विष मुख में डाल दिया परन्तु वह विषरूप से परिणमित नहीं हुआ । मने विष खाया-पर मैं मरा नहीं-कौन मनुष्य मेरी इस सत्य बात को श्रद्धा की दृष्टी से देखेगा । तथा मैंने नीलोत्पल, गवल एव गुलिका की प्रभा जैसी प्रभाव वाली तीक्ष्ण तलवार अपनी गर्दन पर मरने के लिये चलाई-परन्तु वह भोटी धारवाली वन गई-कुण्ठित हो गई-उमसे मेरी गर्दन नहीं कटी-कौन मेरी इस बात को मानने के लिये तैयार हो सकेगा ( तेतलिपुत्रेण पासग इत्यादि ) इसी तरह यदि मे यह कहूँ कि मुझ तेतलिपुत्रने अपने गले में पाशक डाला और वृक्षपर चढ़कर वहां से नीचे मैं लटक पड़ा और फटा बीच में से टट गया तो कौन इन वचनों पर विश्वास करेगा । ( तेतलिपुत्रेण महमहालय जाव वधित्ता अत्याह जाव उदगसि अप्पा

मे तालपु विष ( अर ) आधु डतु पणु ते विषना इयमा परिणुत थयु नथी अट्ठे के विष लक्षणे उरवा छताये हु मरण पाभ्यो नहि आ वात उपर क्यो भाणुस विश्वास भूवा तैयार थशे ? तेभज नीलोत्पल, गवल अने गुलिकाना जेवी प्रभावाणी तीक्ष्ण धारवाणी तत्वारनो मे मरवा भाटे भारी डोड उपर धा क्यो पणु ते तरवार ज भूडी धारवाणी थज गछ-कुठित थछ गर्ज-तेनाथी भारी डोड उपाव नहि भारी आ वात उपर डोणु विश्वास कवा तैयार थशे ? ( तेतलिपुत्रेण पासग इत्यादि ) आ रीते ज हु आभ डहु के मे तेतलिपुत्रे पोताना गणामा क्षयो नाभ्यो अने वृक्ष उपर अढरो वृक्ष उपर यद्दिने त्याथी नीचे लट्ठी पडरो पणु क्षयो वच्येरी ज तूरी गये तो डोणु भागी आ वात उपर विश्वास भूशे ?

( तेतलिपुत्रेण महमहालय जाव वधित्ता अत्याह जाव उदगसि अप्पा मुक्के,

હૃદયે આત્મા મુક્તઃ, તત્રાપિ ચ સ્વલુ રતાયો જાતઃ, કો મમેદ શ્રદ્ધાસ્યતિ=મયા  
સ્વકળે મહાશિલા વદ્ધા અગાયે હૃદયે આત્મા મુક્તઃ, પરન્તુ તસ્મિન્નુદયેઽપિ  
મમ તલસ્પર્શે જાતઃ, ઇતિ મમ વચન કઃ શ્રદ્ધાસ્યતિ ? પુનઃ-તેતલિપુત્રેણ  
મયા શુષ્કે તળકૂટે=તળપુજ્જેઽગ્નિઘાય પ્રક્ષિપ્ય પ્રજ્વલિતે તસ્મિન્ આત્મા મુક્તઃ,  
પરન્તુ સોઽગ્નિઘાય 'ચિઆ' વિધ્યાતઃ=ઉપશાન્ત, ઇત્યેવસ્પમપિ મદીય વચન  
કઃ શ્રદ્ધાસ્યતિ ? ન કોઽપિ, ઇત્યેવ સ તેતલિપુત્ર. 'ઓહ્યમણસકળ્પે' અપહ-  
તમનઃ સકળ્પ=ભગ્નોત્સાહ' સન્ યાવદ્ ધ્યાયતિ=આર્તધ્યાન કરોતિ ॥મૂ૦ ૧૦॥

મુક્કો, તત્થ વિ ણ થાહે જાણ કો મેય સદહિસ્સઢ ? તેતલિપુત્તેણ સુક્કસિ  
તળકૂડસિ અગ્નિકાય પક્ષિવિત્તા અપ્પા મુક્કો તત્થ વિ સે અગ્નિકાણ  
વિજ્ઞાણ કો મેય સદહિસ્સઢ ? ઓહ્યમણસકળ્પે જાવ ધિયાયઢ ) મુક્ક  
તેતલિપુત્રને એક વહુત વઢી શિલા કા ગલેમેં તાધી ઓર તાદ મેં અથાહ  
અતાર અપુરુષ પ્રમાણ જલ મેં કૂદ પડા પરન્તુ વહ જલ કૂદતે હી થાહ  
વાલા બન ગયા અથાહ નહીં રહા મેરી હસ સત્થ વાત પર ખી કૌન  
શ્રદ્ધા કરેગા । હસી તરહ મુક્ક તેતલિપુત્રને એક વહે મારી શુષ્ક ઘાસ  
કે ઢેર મેં અગ્નિ લગાઈ ઓર હસ મેં અપને આપ કો પ્રક્ષિપ્ત કર દિયા-  
પરન્તુ વહ અગ્નિ બુક્ક ગઈ હસને મુક્કે ભસ્મ નહીં ક્રિયા મેરી હસવાત કો  
કૌન શ્રદ્ધા રૂપ સે સ્વીકાર કરેગા । હસ પ્રકાર અપહત મન સંકળ્પ  
વાલા બન કર-ઉત્સાહ રહિત હોકર વહ તેતલિપુત્ર અમાત્ય આર્તધ્યાન  
મેં પડ ગયા ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

તત્થ વિ ણ થાહે જાણ કો મેય સદહિસ્સઢ ? તેતલિપુત્તેણ સુક્કસિ તળકૂડસિ  
અગ્નિકાય પક્ષિવિત્તા અપ્પા મુક્કો તત્થ વિ સે અગ્નિકાણ વિજ્ઞાણ કો મેય  
સદહિસ્સઢ ? ઓહ્યમણસકળ્પે જાવ ધિયાયઢ )

મે તેતલિપુત્રે એક બહુ ભારે મોટી શિલા ( પથરો ) ગામા બાધી  
અને ત્યાર પછી હું અથાહ ( બિડા ) અતાર અપુરુષ પ્રમાણ જેટલા પાણીમા  
કૂદી ગયો । પણ કૂદતાની સાથે જ પાણી થાહવાળું ( છીછરું ) થઈ ગયું, અથાહ  
( બિડું ) રહ્યું નહિ મારી આ વાત ઉપર પણ કેાણ વિશ્વાસ મૂકશે ? આ  
પ્રમાણે જ મે તેતલિપુત્રે એક બહુ મોટા ભારે સૂકા ઘાસના ઢગલામા અગ્નિ  
પ્રગટાવ્યો અને તેમા મે પોતાની જાતને અપવાવી દીધી પણ તે અગ્નિ ઓલવાઈ  
ગયો તેણે મને ભસ્મ કયો નહિ મારી આ વાતને કેાણ શ્રદ્ધેય માનીને  
સ્વીકારવા તૈયાર થશે ? આ રીતે તે અપહતમન સંકળ્પવાળો ( હતાશ ) થઈને  
નિરુત્સાહી બની ગયો અને આર્તધ્યાનમા રૂખી ગયો ॥ “ / - ' ॥



मूलम्—तएणं से पोदिले देवे पोदिलारुव विउव्वइ, विउ-  
व्वित्ता, तेतलिपुत्तस्म अदूरत्तामंते ठिच्चा एवं वयासी—ह  
भो । तेतलिपुत्ता । पुरओ पवाए पिट्ठओ हत्थिभयं, दुहओ  
अचक्खुफासे, मज्झे सराणि वरिसंति, गामे पलित्ते रत्ते  
झियाइ, रत्ते पलित्ते गामे झियाइ । आउसो तेतलिपुत्ता ।  
कओ वयामो ?, तएणं से तेतलिपुत्ते पोदिलं एव वयासी—  
भीयस्स खलु भो । पव्वज्जा सरणं, उक्कठियस्स सद्देसगमणं  
लुहियस्स अन्नं, तिसियस्स पाणं, आउरस्स भेसज्ज, माइ-  
यस्स रहस्स अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं, अच्चाणपरिसंतस्स  
वाहणगमणं, तरिउकामस्स पव्वहणकिच्चं, पर अभिउज्जिउ  
कामस्स सहायकिच्चं खतस्स दत्तस्स जिइदियस्स एत्तो  
एगमवि णं भवइ । तएणसे पोदिले देवे तेयलिपुत्तं अमच्च  
एव वयासी—सुदूढु णं तुम तेयलिपुत्ता । एयमद्व आयाणाहि  
त्तिकद्वु दोच्चपि तच्चंपि एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिस  
पाउव्वभूए, तामेव दिस पडिगए ॥ सू० ११ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ‘तएण’ तत् खलु तेतलिपुत्रे आर्तध्यान  
स्ते सति स पोदिलोदेव’ ‘पोदिलारुव’ पोदिलारूप विकुर्वति=वैक्रियशक्त्या

‘तएण से पोदिले देवे’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से पोदिले देवे) उस पोदिल देवने  
(पोदिला रुव विउव्वइ) पोदिला के रूप की विकुर्वणा की—अर्थात् वैक्रिय  
शक्ति के प्रभाव से उसने पोदिला का रूप धारण किया (विउव्वित्ता

‘तएण से पोदिले देवे’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्था २ पञ्जी (से पोदिले देवे) ते पोदिलदेवे (पोदिला रुव  
विउव्वइ) पोदिलाना इयणी विकुर्वणा उरी ओटवे के वैक्रिय शक्तिना प्रभावथी

હુદકે આત્મા મુક્તઃ, તત્રાપિ ચ સ્વલુ ગ્તાત્રો જાતઃ, કો મમેઽ શ્રદ્ધાસ્યતિ=મયા  
સ્વકળ્થે મહાશિલા વદ્ધ્યા ઝગાવે ઉદકે આત્મા મુક્તઃ, પન્તુ તસ્મિન્નુદકેઽપિ  
મમ તલસ્પર્શો જાતઃ, ઇતિ મમ વચન ક' શ્રદ્ધામ્યતિ ? પુનઃ-તેતલિપુત્રેણ  
મયા શુષ્કે તૃણકૂટે=તૃણપુઞ્જેઽગ્નિભાગ્ય પ્રક્ષિપ્ય પ્રજ્વલિતે તસ્મિન્ આત્મા મુક્ત,  
પરન્તુ સોઽગ્નિભાગ્ય ' ત્રિજાણ ' ત્રિધ્યાતઃ=ઉદશાત, ઇત્યેવરૂપપ્રપિ મર્દાય વચન  
કઃ શ્રદ્ધાસ્યતિ ? ન કોઽપિ, ઇત્યેવ સ તેતલિપુત્રઃ ' ઓદ્યમણસરૂપે ' અપહ-  
તમનઃ સંકલ્પ =ભગ્નોત્સાહ' સન્ યાવદ્ ધ્યાયતિ=આર્તધ્યાન કરોતિ ॥સૂ૦ ૧૦॥

મુક્તકો, તત્થ ત્રિ ણ થાહે જાણ કો મેય સદ્દિહિસ્સઠ ? તેતલિપુત્તેણ સુક્કસિ  
તણકૂડસિ અગ્નિભાગ્ય પક્ષિવિત્તા અપ્પા મુક્કો તત્થ ત્રિ સે અગ્નિભાગ્ય  
વિજ્ઞાણ કો મેય સદ્દિહિસ્સઠ ? ઓદ્યમણસરૂપે જાવ ઈયાયદ્ ) મુક્ક  
તેતલિપુત્રને એક વહુત વઢી શિલા કા ગલેમેં તાધી ઓર વાર મેં અથાહ  
અતાર અપુરુષ પ્રમાણ જલ મેં કૂદ પડા પરન્તુ વહ જલ કૂદતે રી થાહ  
વાલા બન ગયા અથાહ નહીં રહા મેરી ઇસ સન્ય વાત પર મી કૌન  
શ્રદ્ધા કરેગા । ઇસી તરહ મુક્ક તેતલિપુત્રને એક વહે ભારી શુષ્ક ઘાસ  
કે ઢેર મેં અગ્નિ લગાઈ ઓર ડસ મેં અપને આપ કો પ્રક્ષિપ્ત કર દિયા-  
પરન્તુ વહ અગ્નિ વુક્ક ગઈ ડસને મુક્કે ભસ્મ નહીં ક્રિયા મેરી ડસવાત કો  
કૌન શ્રદ્ધા રૂપ સે સ્વીકાર કરેગા । ઇમ પ્રકાર અપહત મન સંકલ્પ  
વાલા બન કર-ઉત્સાહ રહિત હોકર વહ તેતલિપુત્ર અમાત્ય આર્તધ્યાન  
મેં પડ ગયા ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

તત્થ ત્રિ ણ થાહે જાણ કો મેય સદ્દિહિસ્મદ્ ? તેતલિપુત્તેણ સુક્કસિ તણકૂડસિ  
અગ્નિભાગ્ય પક્ષિવિત્તા અપ્પા મુક્કો તત્થ ત્રિ સે અગ્નિભાગ્ય વિજ્ઞાણ કો મેય  
સદ્દિહિસ્સદ્ ? ઓદ્યમણસરૂપે જાવ ઈયાયદ્ )

મે તેતલિપુત્રે એક બહુ ભારે મોટી શિલા ( પથ્થર ) ગાળામા બાધી  
અને ત્યાર પછી હું અથાહ ( ઊડા ) અતાર અપુરુષ પ્રમાણ જેટલા પાણીમા  
કૂદી ગયો પણ કૂદતાની સાથે જ પાણી થાહવાળું ( છીછરું ) થઈ ગયું, અથાહ  
( ઊંડું ) રહ્યું નહિ ભારી આ વાત ઉપર પણ કોણ વિશ્વાસ મૂકશે ? આ  
પ્રમાણે જ મે તેતલિપુત્રે એક બહુ મોટા ભારે સૂકા ઘાસના ઢગલામા અગ્નિ  
પ્રગટાવ્યો અને તેમા મે પોતાની જાતને અપવાવી દીધી પણ તે અગ્નિ ઓલવાઈ  
ગયો તેણે મને ભસ્મ કર્યો નહિ ભારી આ વાતને કોણ શ્રદ્ધેય માનીને  
સ્વીકારવા તૈયાર થશે ? આ રીતે તે અપહતમન સંકલ્પવાળો ( હતાશ ) થઈને  
નિરુત્સાહી બની ગયો અને આર્તધ્યાનમા ડૂબી ગયો ॥ “ સૂ- ” ॥

मेवमवादीत् ' भो ' हे पोष्टिले ! भीतस्य खलु प्रवज्याशरण भवति तत्र दृष्टान्तः,  
माह-यथा-' उक्कडियस्म ' उत्कण्ठितस्य=परदेशवर्ति=वाद् सुकस्य स्वदेशगमन,  
' दुहियस्म ' क्षुधितस्य अन्नम्, ' तिसियस्म ' तपितस्य पान, ' आउरस्म आतु-  
रस्य=रोगिण ' भेमज्ज ' भैषज्य ' मायिस्म ' मायिकस्य=मायादिन. रहस्य=गोपनम्,  
' अभिजुनस्म ' अभियुक्तस्य = दोषापवादयुक्तस्य ' पच्चयकरण = प्रत्ययकरण  
तन्निराकरणेन स्वविषये निर्दोषताप्रतीत्युत्पादनम्, ' अट्ठाणपरिसतस्स ' अ-वपरिश्रान्त-  
स्य=मार्गगमनपरिस्त्रिप्तस्य ' वाहणगमण ' वाहनगमन, शकटादिना गमन ' तरि  
तेतलिपुत्ते पोष्टिल एव वयासी-भीतस्म खलु भो पवज्जा-सरण-उक्क-  
डियस्म स्वदेशगमण दुहियस्म अन्न, तिसियस्स पाण, आउरस्स भेस-  
ज्ज, माइयस्स रहस्स, अभिजुत्तस्स पच्चयकरण, अट्ठाण परिसतस्स  
वाहणगमण, तरिउकामस्स पहवणकिच्च. पर अभिउजिउकामस्स  
सहायकिच्चं सतस्स दनस्स जिडदियस्स एत्तो एगमवि ण भवइ ) इस  
प्रकार पोष्टिला की बात सुनकर तेतलिपुत्र अमात्य ने उससे ऐसा कहा  
हे पोष्टिले ! भीन ( भय युक्त ) के लिये प्रवज्या शरण भूत होती है,  
जैसे-परदेश वर्ती उत्सुक व्यक्ति के लिये स्वदेश गमन शरण भूत  
होना है, भूखे के लिये अन्न शरण भूत होता है प्यासे के लिये पानी,  
आतुर रोगी के लिये भैषज्य, मायावी के लिये मायाचारी, अभियुक्त-  
दोषापवाद वाले के लिये दोषों के निराकरण से अपने विषय में निर्दो-  
षता की प्रतीति का उत्पादन, शरण भूत होता है । मार्ग आन्त के लिये  
वाहन से गमन, करना शरण भूत होता है, तैरने की इच्छा वाले के

( तएण से तेतलिपुत्ते पोष्टिल एव ययासी-भीतस्म खलु भो पवज्जासंरण  
उक्कडियस्स स्वदेशगमण दुहियस्स अन्न तिसियस्स पाण, आउरस्स भेसज्ज,  
माइयस्स रहस्स, अभिजुत्तस्स पच्चयकरण, अट्ठाणपरिसतस्स वाहणगमण, तरिउ  
कामस्स सहायकिच्चं सतस्स जिडदियस्स एत्तो एगमवि ण भवइ )

आ रीते पोष्टिलानी बात सावणीने तेतलिपुत्र अमात्ये तेने कह्यु के हे  
पोष्टिले ! लखलीन थयेवाने भाटे प्रवज्या शरण भूत होय छे-जेम-परदेशमा  
रहेती उत्सुक व्यक्तिने भाटे पोताने हेरा पाछा करवु शरण भूत होय छे भूख्या  
ने भाटे अन्न शरण भूत होय छे आ प्रमाणे ज तरस्याने भाटे पाणी, आतुर-  
रोग-ने भाटे भैषज्य-दवा, मायावीने भाटे माया य री अभियुक्त-दोषापवाद  
वाणा-ने भाटे दोषाना निराकरणथी पोताना विने निर्दोषतानी प्रतीतिनु उत्पादन  
शरण भूत होय छे मार्गमा यावता थानी गयेवाने भाटे वाहनने उपयोग  
शरण भूत होय छे, तरवानी इच्छा धरावता मायुमने भाटे नाव वजेरे जलयाम

ધારયતિ, નિકુર્વિત્યા તેતલ્પિપુત્રસ્ય અદૂરસામન્ત=નાતિદૂરે નાતિનિશ્ચયે સ્થિત્વા  
 પંચમસાદીત્-હમો તેતલ્પિપુત્ર ! ' હમો ' इत्यामन्त्रणे, हे तेतल્पिपुत्र ! ' પુરઓ '  
 પુરતઃ=અગ્રતઃ ' ' પનાણ ' પ્રપાતઃ=ગતઃ, અતો નિર્ગમનમસમ્મતિ, પૃષ્ઠતઃ હસ્તિ  
 મયર્મ્, અતો પ્રત્યાવર્તન ચાસમતિ, ' દુહમો ' ઉભયતઃ=ઉમયત=ઉમયોઃ  
 પાર્શ્વયોઃ ' અચક્ષુફાસે' અચક્ષુસ્પર્શ=અન્ધકાર, ' મજ્ઞો ' મ યે=યત્ર યયમાસ્મહે  
 તત્ર ' સરાણિ' શરા=ચાણા, ' વરિસતિ ' વર્ષન્તિ=નિપતન્તિ । ' ગામે પલિત્તે '  
 ગ્રામે પ્રદીપ્તે=પ્રજ્વલિતે સતિ રણો ' અણ્ય=અન ' જિયાઃ ' ધ્યાયતિ=ગન્તુ  
 ચિન્તયતિ, અણ્યે પ્રદીપ્તે ગ્રામ ધ્યાયતિ=ગન્તુ ચિન્તયતિ, ' આઉમો તેતલ્પિપુત્તા '  
 હે આયુષ્મન્ તેતલ્પિપુત્ર ! ' ઉમઓ પલિત્તે ' ઉમયત પ્રદીપ્તે=ઉમયસ્મિન્ પ્રજ્વલિતે  
 વય ' કઓ વયામો ' કુતો વ્રજામ=કગન્ત્રામ । તતઃ ચલુ સ તેતલ્પિપુત્રઃ પોટિલા

તેતલ્પિપુત્તસ્સ અદૂરસામતે ઠીઠ્ઠા એવ વયાસી ) ધારણ કર કે વહ  
 તેતલ્પિપુત્ર કે સમીપ ગયી । વર્ષા જાકર ઉસને ઉસમે હસ પ્રકાર  
 કહો-( હ મો તેતલ્પિપુત્તા ! પુરઓ પવાર પિટ્ઠઓ હતિયમય ) અરે ઓ  
 તેતલ્પિપુત્ર ! આગે પ્રપાત ચઢ્ઢા હૈ ઓર પીઠે દાવી કા મય હૈ । ( દુહઓ  
 અચક્ષુફાસે, મજ્ઞો સરાણિ વરિસતિ ) દોનો ઓર અન્ધેરા હૈ ઓર  
 જહા હમલોગ ઠહરે હુણ હૈ વહા ચાળોં કી વૃષ્ટિ હો રહી હૈ । ( ગામે  
 પલિત્તે રણો જિયાઈ, રત્નો પલિત્તે ગામે જિયાઈ ) ગ્રામ મેં આગલગને  
 પર મનુષ્ય જગલ મેં ચલે જાને કો સોચતા હૈ-ઓર જગલ મેં આગ  
 લગને પર ગ્રામ મેં ચલે આને કે લિયે વિચારતા હૈ । ( આઉસો તેતલ્પિ  
 પુત્તા ! ઉમઓ પલિત્તે કઓ વયામો ) પરન્તુ જય દોનો મેં આગ લગ  
 જાવે તો હે આયુષ્મન તેતલ્પિપુત્ર ! કહો ! હમ કહા જાવે ? ( તણ સે

તેણે પોટિલાનુ ૩૫ ધારણ કયુ ( તિલ્લિપુત્તા તેતલ્પિપુત્તસ્સ અદૂરસામતે ઠીઠ્ઠા  
 એવ વયાસી ) ધારણ કરીને તે તેતલ્પિપુત્રની પાસે ગઈ ત્યા જઈને તેણે તેને  
 આ પ્રમાણે કહ્યું કે ( હ મો તેતલ્પિપુત્તા ! પુરઓ પવાર પિટ્ઠઓ હતિયમય ) અરે,  
 ઓ ! તેતલ્પિપુત્ર ! તમારી સામે પ્રપાત-ધોધ છે અને તમારી પાછળ હાધીનો  
 ક્ષય છે ( દુહઓ અચક્ષુફાસે, મજ્ઞો સરાણિ વરિસતિ ) બંને તરફ અધાઈ  
 છે અને જ્યાં અમે ઊભા છીએ ત્યાં તીરો વર્ષો રહ્યા છે ( ગામે પલિત્તે રણો  
 જિયાઈ રત્નો પલિત્તે ગામે જિયાઈ ) ગામમાં આગ લાગતા માણુમ જગલમાં  
 નાશી જવાનો વિચાર કરે છે અને જગલમાં આગ લાગતા ગામમાં આવતા  
 રહેવાનો વિચાર કરે છે ( આઉસો તેતલ્પિપુત્તા ઉમઓ પલિત્તે કઓ વયામો )  
 પણ જ્યારે બંને તરફ આગ સળગી ઉઠે ત્યારે હે આયુષ્મન્ત તેતલ્પિપુત્ર !  
 બોલો, અમે કયા જઈએ ?



મેવમવાદીત્ ' મો ' હે પોટિલે ! મીતસ્ય સ્વલુ પ્રવજ્યાશરણ ભવતિ તત્ દૃશાન્ત-  
માહ-યથા- ' ઉઝ્ઠિયસ્મ ' ઉત્ક્રાન્થિતસ્ય=પરદેશવર્તિત્વાદુ સુપ્તસ્ય સ્વદેશગમન,  
' હુઠિયસ્મ ' ક્ષુધિતસ્ય અન્નમ્, ' તિસિયસ્મ ' તપિતસ્ય પાન, ' આઊરસ્મ આતુ-  
રસ્ય=રોગિણ ' મેમજ્જ ' મૈષજ્ય ' માયિસ્મ ' માયિકસ્ય=માયાદિનઃ રહસ્ય=ગોપનમ્,  
' અભિજુતસ્મ ' અભિયુક્તમ્ = દોષાપવાદયુક્તસ્ય ' પચ્ચયકરણ = પ્રત્યયકરણં  
તન્નિરાકરણેન સ્વવિષયે નિર્દોષતાપ્રતીત્યુત્પાદનમ્, ' અદ્વાણપરિસતસ્સ ' અ વપરિશ્રા-  
ન્તસ્ય=માર્ગગમનપરિસ્થિતસ્ય ' વાહણગમણ ' વાહનગમન શકટાદિના ગમન ' તરિ  
તેતલિપુત્તે પોટિલિ એવ વયામી-મીત્તસ્મ સ્વલુ મો પવજ્ઞા-સરણ-ઉત્ક્ર-  
ઠિયસ્સ સદેસગમણ હુઠિયસ્મ અન્ન, તિસિયસ્સ પાણ, આઊરસ્સ મેસ-  
જ્જ, માહ્યસ્સ રહસ્સ, અભિજુત્તસ્મ પચ્ચયકરણ, અદ્વાણ પરિસતસ્સ  
વાહણગમણ, તરિઉકામસ્સ પહવણકિચ્ચ પર અભિઉ જિઉકામસ્સ  
સહાયકિચ્ચ સતસ્સ દત્તસ્મ જિઉઠિયસ્મ એત્તો એગમવિ ણ ભવ્વહ )

ઇસ પ્રકાર પોટિલા કી વાત સુનકર તેતલિપુત્ર અમાત્ય ને ઉસસે એસા કહા  
હે પોટિલે ! મીન ( મય યુક્ત ) કે લિયે પ્રવજ્યા શરણ મૂત હોતી હૈ,  
જૈસે-પરદેશ વર્તી ઉત્સુક વ્યક્તિ કે લિયે સ્વદેશ ગમન કારણ મૂત  
હોના હૈ, મૂલે કે લિયે અન્ન કારણ મૂત હોના હૈ પ્યાસે કે લિયે પાની,  
આતુર રોગી કે લિયે મૈષજ્ય, માયાવી કે લિયે માયાચારી, અભિયુક્ત-  
દોષાપવાદ વાલે કે લિયે દોષોં કે નિરાકરણ સે અવને વિષય મે નિર્દો-  
ષતા કી પ્રતીતિ કા ઉત્પાદન, કારણ મૂત હોના હૈ । માર્ગ શ્રાન્ત કે લિયે  
વાહન સે ગમન, કરના કારણ મૂત હોના હૈ, તૈરને કી ઇચ્છા વાલે કે

( તણ સે તેતલિપુત્તે પોટિલિ એવ વયામી-મીત્તસ્મ સ્વલુ મો પવજ્ઞા-સરણ-  
ઉત્ક્રઠિયસ્મ સદેસગમણ હુઠિયસ્મ અન્ન નિસિયસ્સ પાણ, આઊરસ્સ મેસજ્જ,  
માહ્યસ્સ રહસ્સ, અભિજુત્તસ્સ પચ્ચયકરણ, અદ્વાણપરિસતસ્સ વાહણગમણ, તરિઉ  
કામસ્સ સહાયકિચ્ચ સતસ્સ જિઉઠિયસ્સ એત્તો એગમવિ ણ ભવ્વહ )

આ રીતે પોટિલાની વાત સાંભળીને તેતલિપુત્ર અમાત્યે તેને કહ્યું કે હે  
પોટિલે ! ભગવાન થયેલાને માટે પ્રવજ્યા શરણ ભૂત હોય છે-જેમ-પરદેશમા  
રહેતી ઉત્સુક વ્યક્તિને માટે પોતાને દેશ પાછા ફરવું શરણ ભૂત હોય છે ભૂખ્યા  
ને માટે અન્ન શરણ ભૂત હોય છે આ પ્રમાણે જ તરસ્થાને માટે પાણી, આતુર-  
રોગ-ને માટે મૈષજ્ય-દવા, માયાવીને માટે માયા ચ રી અભિયુક્ત-દોષાપવાદ  
વાળા-ને માટે દોષોના નિરાકરણથી પોતાના વિષે નિર્દોષતાની પ્રતીતિ ઉત્પાદન  
શરણ ભૂત હોય છે માર્ગમા ચાલતા વાહી ગયેલાને માટે વાહનનો ઉપયોગ  
શરણ ભૂત હોય છે, તરવાની ઇચ્છા ધરાવતા માણસને માટે નાવ વગેરે જલયાન

समेर्षं कम्मरयविकरणरर अपुञ्चकरण पविट्टस्स केवलवर-  
णाणदसणे समुप्पण्णे ॥ सू० १२ ॥

टीका — 'तएण तस्म' इत्यादि । ततः गच्छु तस्य तेनलिपुत्रस्य शुभेन  
परिणामेण जातिस्मरणम्=पूर्वभवान्न समुपपन्नम् । ततः गच्छु तस्य तेनलिपुत्रस्य  
अयमेतद्रूप आध्यात्मिक मार्थितः चिन्तितः कल्पितो मनोगतः सरस्वः समुद्रपद्म  
एवं खलु अहम् इहेव जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहेवर्षे पुष्कलावती विजये पुण्डरी  
किण्यो राजधान्या महापद्मो नाम राजा आसम् । ततः खलु अहं स्यत्रिराणामत्तिके  
मुण्डो भूत्या यावत् 'चोद्दमपुव्वाइ०' चतुर्दशपूर्वाणि०=चतुर्दशपूर्वाणि अयीत  
वान्, बहूनि वर्षाणि 'सामन्नपरियाय०' ग्रामण्यपर्याय०=सारित्रपर्याय पालित

'तएण तस्स तेतलिपुत्तस्स' इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तेतलिपुत्तस्स) तेनलिपुत्र को (सुभेण  
परिणामेण जाइ सरणे समुप्पण्णे) शुभपरिणाम से जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न  
हो गया । (तएण तस्स तेतलिपुत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समु  
प्पज्जित्था—एव खलु अहं इहेव जम्बूद्वीपे दीपे महाविदेहे वासे पोक्खला  
वई विजए पोडरिगिणीए रायहाणीए महापद्मे नाम राया होत्था )  
उसके प्रभाव से उसने अपने पूर्वभव को जान लिया—उसने जाना  
कि मैं इसी जम्बूद्वीप नामके द्वीप में महाविदेह क्षेत्र में पुष्कलावती  
विजय में पुण्डरीकिणी नामकी राजधानी में महापद्म नाम का राजा था  
(तएण अहं येराण अतिए मुडे भविस्सा जाव चोद्दमपुव्वाइ० बहूणि

'तएण तस्स तेतलिपुत्तस्स' इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थारभाइ (तेतलिपुत्तस्स) तेतलिपुत्रने (सुभेण परिणामेण  
जाइ सरणे समुप्पण्णे ) शुभ परिणामथी जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न थई गच्छु

(तएण तस्स तेतलिपुत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था—एव  
खलु अहं इहेव जम्बूद्वीपे दीपे महाविदेहे वासे पोक्खलावई विजए पोडरिगिणीए  
रायहाणीए महापद्मे नाम राया होत्था )

तेना प्रभावथी तेणु चोत्ताना पूर्व भवने जाणी लीघो तेने आ जातनु  
ज्ञान थयु डे ते आ जम्बूद्वीप नामना द्वीपमा भइ विदेह क्षेत्रमा पुष्क लावती  
विजयमा पुण्डरीकिणी नामनी राजधानीमा महापद्म नामे राजा हते ।

(तएण अहं येराण अतिए मुडे भविस्सा जाव चोद्दमपुव्वाइ० बहूणि वासाणि

वान् । अनन्तरं मासिक्या सलेखनया कालमासे काल कृत्वा ' महाशुके कल्पे ' महाशुके कल्पे=सप्तमे देवल्लोके ' देवे ' देव =देवत्वेनोत्पन्नः । ततः खलु अहं तस्माद् देवल्लोकात् ' आयुःक्षयण ३ ' आयुः क्षयेण ३=आयुर्भवस्थिति क्षयानन्तरम् इहैव तेतलिपुरे तेतलेरमात्यस्य भद्राया भार्याया ' दारगत्ताए ' दारगन्वेन=पुत्रतया ' पच्चायाए ' प्रत्यायात =उत्पन्नः, तत्=तस्मात् श्रेयः खलु मम पूर्वदृष्टानि=पूर्वभवपालितानि ' महव्याड ' महाव्रतानि=पञ्चमहाव्रतानि स्वयमेव उपसंपद्य विहर्तुम्, एव सप्रेत्यते सप्रेक्ष्य स्वयमेव महाव्रतानि आरोहति=स्वीकरोति, आरुह्य, यत्रैव प्रमदवनम्=उद्यानं तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य असौगवरापाय-

वोसाणि सामन्त्रपरियाय० मासियाए सलेहणाए महाशुक्के कल्पे देवे-तएण अहं ताओ देवल्लोयाओ आयुःक्षयण ३ इहैव तेतलिपुरे तेतलिस्स अमच्चस्स भद्राए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाए ) वहाँ मेने स्वविरो के पास मुडित होकर दीक्षा धारण की थी और ग्यारह अगों का अध्ययन कर विशिष्ट तपस्या की थी अन्त में अनेक वर्षोंतक श्रामण्य पर्यायिका पालन कर एक मासकी सलेखना धारण कर मैं काल अवसर काल कर सातवा महाशुक्क कल्पमे देवकी पर्यायसे उत्पन्न हो गया । वहाँ की आयुष्य स्थिति भवस्थिति स्थितिके क्षयके अनन्तर मैं वहाँसे चलकर इस तेतलिपुर में तेतलि अमात्य के यहा भद्रा भार्या की कुक्षि से पुत्र रूप में अवतरित हुआ । ( त सेय खलु मम पुव्वदिट्ठाइ महव्याड सयमेव उवसपज्जित्ताण विहरित्ताए-एव सपेहेइ, सपेहिता सयमेव महव्याड आरुहेइ, आरुहिता जेणेव पमयवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छेइ,

सोमन्त्रपरियाय० मासियाए सलेहणाए महाशुक्के कल्पे देवे-तएण अहं ताओ देवल्लोयाओ आयुःक्षयण ३ इहैव तेतलिपुरे तेतलिस्स अमच्चस्स भद्राए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाए )

त्या मे मुडित थछने स्थविरोनी पासेथी दीक्षा धारणु करी डती अने अजियार अ गोलु अध्ययन करीने विशिष्ट तपस्या करी डती एवटे धणु वर्षो सुधी श्रामण्य पर्यायनु पालन करीने ओउ भडिनानी भलेणना धारणु करी अमे त्यारे पछी काल अवसरे काल करीने मातमा भडा शुके उत्पन्ना देवना पर्यायथी हु जन्म पाभ्यो त्यानी भवस्थिति उ ( तएण ) ना क्षय थवा णटत हु त्याथी आवीने आ तेतलिपुरमा तेतलि अमात्यने त्या भद्रा भार्याना गर्भथी पुत्र रूपमा जन्म पाभ्यो

( त सेय खलु मम पुव्वदिट्ठाइ महव्याड सयमेव उवसपज्जित्ताण विहरि एव सपेहेइ, सपेहिता सयमेव महव्याड आरुहेइ, आरुहिता जेणेव पमयवणे

वस्स 'अशोकवरपायस्य=अशोकवृक्षस्य 'अह' अयः पणितशिलोपरि 'सुह  
निसन्नस्स' सुखनिपणस्य=सुखोपरिष्ठस्य 'अणुचिन्तेमाणस्स' अनुचिन्तयत=  
पूर्वभवे कृतमध्ययनादिक स्मरत 'पुग्वाहीयाइ' पूर्वाधीतानि=पूर्वभवे पठितानि  
सामायिकादीनि चतुर्दशपूर्वाणि स्वयमेव 'अभिसमन्नागयाइ' अभिसमन्नागतानि=  
ज्ञानविषयतया सजातानि । ततः खलु तस्य तेतलिपुत्रस्य अनगरस्य शुभेन परि  
णामेन 'जाव' यावत्-प्रशस्तैरभ्यसयै, प्रशस्ताभिर्लब्धाभि विभुद्वयमानाभिः  
'तयावरणिज्जाण' तदावरणीयाना=ज्ञानावरणीयादीना वर्मणा 'सयोवसमेण'

उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविस्सिलापट्टयसि सुहनि-  
सन्नस्स अणुचिन्तेमाणस्स पुग्वाहीयाइ सामाइयमाइयाइ चोदस्सपुग्वाइ  
सयमेव अभिसमन्नागयाइ ) इसलिये अब मुझे यही उचित है कि मैं  
पूर्व भव में पालित किये पच महाव्रतो को अपने आप धारण कर लू ।  
ऐसा उसने विचार किया । विचार करके फिर उसने अपने आपही  
महाव्रतों को धारण कर लिया । धारण करके फिर वह जहाँ प्रमदवन  
नामका उद्यान था वहाँ चला गया । वहाँ जाकर वह अशोक वृक्ष के  
नीचे रक्खे हुए पृथिवी शिलापट्टक पर पटाकार से परिणत शिला के  
ऊपर-आनन्द के साथ बैठ गया और पूर्व भव में कृत अध्ययन आदि  
का बार-बार चिन्तन करने लगा । इस तरह विचार करते-उसके पूर्व भव  
में पठित सामायिक आदि चौदह पूर्व ज्ञान के विषय भूत बन गये ।  
( तण्ण तस्स तेतलिपुत्तस्स अणगरस्स शुभेण परिणामेण जाव तया-

उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवरपायस्य अहे पुढविस्सिला  
पट्टयसि सुहनिसन्नस्स अणुचिन्तेमाणस्स पुग्वाहीयाइ सामाइयमाइयाइ चोदस्स  
पुग्वाइ सयमेव अभिसमन्नागयाइ )

ओहला भाटे हुवे भने ओअ थोअ लागे छे के पूर्व लवभा ने  
पाथ भडावतोने मे धारणु करेला तेने पोतानी भेजे अ धारणु करी लई  
आ रीते तेणे विचार क्यो विचार क्यो भाद तेणे पोतानी भेजे अ पाथ  
भडावतो धारणु करी लीधा धारणु क्यो पत्री ते न्या प्रमदवन नामे उद्यान  
हुतु त्या नतो रह्यो त्या नधने ते अशोक वृक्षनी नीचे भूजायेला पृथिवी  
शिला पट्टक उपर-पटाकार इपथी परिणत शिला उपर-आनंद अनुभवतो जेसी  
गयो अने पूर्व लवभा ने कथं अध्ययन कथुं हुनु तेनु बारबार चिंतन करवा  
लाग्यो आ रीते चिंतन करता करता पूर्वलवभा लखेला सामायिक वगेरे चौद  
पूर्वज्ञान तेने विषयभूत थई गया



क्षयोपशमेन=उदिताना कर्मणा क्षयेण अनुदिताना कर्मणामुपशमेन=निरुद्धोदयत्वेन  
'कम्मरयविकरणकर' कर्मरजो विकरणकरम् 'अपुव्वकरण' अपूर्वकरणम्=अष्टम  
गुणस्थानम् पविट्टस्य तस्य केवलरज्ञानदर्शनं समुत्पन्नम् ॥सू० १२॥

मूलम्-तएण तैतलिपुरे नयरे अहा संनिहिण्हि वाणमं-  
तरेहि देवेहि देवीहिय देवदुंदुभीओ समाहयाओ, दसद्धवन्ने  
कुसुमे निवाडिए, दिव्वे देवगीयगधव्वनिनाए कए यावि  
होत्था । तएणं से कणगज्झए राया इमीसे कहाए लद्धहे  
समाणे एव वयासी-एव खल्लु तैतलिपुत्ते मए अवज्झाए  
मुंडे भवित्ता पव्वइए, त गच्छामि ण तैतलिपुत्तं अणगार  
वंदामि नमंसामि वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ विणएणं भुज्जो  
२ खामेमि, एव संपेहेइ, सपेहित्ता पहाए० चाउरगणीए

वरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण कम्मरयविकरणकर अपुव्वकरण  
पविट्टस्स केवलचरणाणदसणे समुप्पण्णे ) इस प्रकार शुभ परिणामों से  
यावत् प्रसस्त अध्यवसायों से विशुद्धमान लेश्याओं से, उसके ज्ञाना-  
वरणी आदि कर्मों का क्षयोपशम-उदित कर्मों का क्षय एवं अनुदित  
कर्मों का उपशम-हो गया-सो इस के प्रभाव से वे कर्मरज को दूर  
करने वाले अष्टम अपूर्व करण नामके गुणस्थान में प्राप्त हो गये ।  
बाद में बाहरवे गुणस्थान के अंत में और तेरहवे गुणस्थान के प्रारंभ  
में उन्हें केवलज्ञान और केवलदर्शन उत्पन्न हो गया ॥सू० १२॥

( तएण तस्स तैतलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेण परिणामेण जाय तयावरणि-  
ज्जाण कम्माण खओवसमेण कम्मरयविकरणकर अपुव्वकरण पविट्टस्स केवल-  
चरणाणदसण समुप्पण्णे )

आ रीते शुभ परिणामोत्थी, यावत् प्रसस्त अध्यवसायोत्थी, विशुद्धमान  
लेश्याओत्थी तेना ज्ञानावस्थीय वगेरे कर्मोना क्षयोपशम-उदित कर्मोना क्षय  
अने अनुदित कर्मोना उपशम थर्ह गये। अेना प्रभावथी तेओ कर्मरज्जे  
विकरणु करनारा अष्टम अपूर्व करणु नामना गुणस्थानमा प्राप्त थर्ह गया तयार  
पछी आरमा गुणस्थानना अंतमा अने तेरमा गुणस्थानना प्रारंभमा तेमने  
केवलज्ञान अने केवल दर्शन उत्पन्न थर्ह गया ॥ सूत्र " १२ " ॥

વસ્સ 'અશોકવરપાદપસ્ય=અશોકવૃક્ષમ્ય ' અહે ' અથઃ પરિણતશિલોપરિ ' સુર  
નિસન્નસ્સ ' સુહનિપણ્ણસ્ય=સુહોપવિપ્લમ્ય ' અણુચિત્તેમાણમ્મ ' અનુચિન્તપત =  
પૂર્વભવે કૃતમધ્યયનાદિક સ્મરત ' પુવ્વાહીયાઢ ' પૂર્વાધીતાનિ=પૂર્વભવે પઠિતાનિ  
સામાયિકાદીનિ ચતુર્દશપૂર્વાણિ સયમેવ ' અભિસમન્નાગયાઢ ' અભિમગ્ન્યાગતાનિ=  
જ્ઞાનત્રિપયતયા સજાતાનિ । તત્. સલુ તસ્ય તેતલિપુત્રસ્ય અનગારસ્ય સુમેન પરિ  
ણામેન ' જાવ ' યાવત્-મશસ્તૈરધ્યયસાયે', મશસ્તાગિર્લેદયામિ ત્રિથુદ્ધયમાનામિઃ  
' તયાવરણિજ્જાણ ' તદાવરણીયાના=જ્ઞાનાવરણીયાદીનાં કર્મણા ' સયોવસમેણ '

ઉવાગચ્છિત્તા અસોગવરપાયવસ્સ અહે પુઠ્ઠવિસિલાપટ્ટયસિ સુહનિ-  
સન્નસ્સ અણુચિત્તેમાણસ્સ પુવ્વાહીયાઢ સામાઙ્યમાઙ્યાઢ ચોદસપુવ્વાઢ  
સયમેવ અભિસમન્નાગયાઢ ) ઇસલિયે અવ મુઝે યહી ઉચિત હૈ કિ મૈ  
પૂર્વ ભવ મૈં પાલિત કિયે પચ મહાવ્રતો કો અપને આપ ધારણ કરલૂ ।  
એસા ઉસને વિચાર કિયા । વિચાર કરકે ફિર ઉમને અપને આપહી  
મહાવ્રતો કો ધારણ કર લિયા । ધારણ કરકે ફિર વહ જહાં પ્રમદવન  
નામકા ઉદ્યાન થા વહાં ચલા ગાયા । વહા જાકર વહ અશોક વૃક્ષ કે  
નીચે રક્ષે હુણ પૃથિવી શિલાપટ્ટક પર પટાકાર સે પરિણત શિલા કે  
ઉપર-આનન્દ કે સાથ બેઠ ગયા ઓર પૂર્વ ભવ મૈં કૃત અધ્યયન આદિ  
કા બાર-ચિન્તવન કરને લગા । ઇસ તરહ વિચાર કરતે-ઉસકે પૂર્વ ભવ  
મૈં પઠિત સામાયિક આદિ ચૌદ્ધ પૂર્વ જ્ઞાન કે વિષય ભૂત બન ગયે ।  
( તણ્ણ તસ્સ તેતલિપુત્તસ્સ અણગારસ્સ સુમેણ પરિણામેણ જાવ તયા-

ઉજ્જાણે તેણેવ ઉવાગચ્છદ, ઉવાગચ્છિત્તા અસોગવરપાયવસ્સ અહે પુઠ્ઠવિસિલા  
પટ્ટયસિ સુહનિસન્નસ્સ અણુચિત્તેમાણસ્સ પુવ્વાહીયાઢ સામાઙ્યમાઙ્યાઢ ચોદસ  
પુવ્વાઢ સયમેવ અભિસમન્નાગયાઢ )

એટલા માટે હવે મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે પૂર્વ ભવમા જે  
પાત્ર મહાવ્રતોને મે ધારણ કરેલા તેને પોતાની મેળે જ ધારણ કરી લઉં  
આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો વિચાર કર્યા બાદ તેણે પોતાની મેળે જ પાત્ર  
મહાવ્રતો ધારણ કરી લીધા ધારણ કર્યા પછી તે જ્યા પ્રમદવન નામે ઉદ્યાન  
હતું ત્યા જતો રહ્યો ત્યા જઈને તે અશોક વૃક્ષની નીચે મૂકાયેલા પૃથિવી  
શિલા પટ્ટક ઉપર-પટ્ટાકાર રૂપથી પરિણત શિલા ઉપર-આનન્દ અનુભવતો બેસી  
ગયો અને પૂર્વ ભવમા જે કઈ અધ્યયન કર્યું હતું તેનું વારંવાર ચિંતન કરવા  
લાગ્યો આ રીતે ચિંતન કરતા કરતા પૂર્વભવમા લાણેલા સામાયિક વગેરે ચૌદ  
પૂર્વજ્ઞાન તેને વિષયભૂત થઈ ગયા

दशार्द्धवर्णानि=पञ्चवर्णाणि अचित्तपुण्याणि निपातितानि=वर्णितानि, दिव्यः=मनो  
हरः गीतगन्धर्व निनादः कृतश्चापि अभवत् । ततः खलु स कनकध्वजो राजा  
'इमीमे कहाए लद्धहे समाणे ' यस्याः कथाया लब्धार्थः मया दुष्टचिन्ता विषयी  
कृतस्तेतलिपुत्रः अमात्यः प्रव्रज्य प्रमदवने केवलपरज्ञानदर्शनसम्पन्नो जात इति  
वृत्तान्ताभिज्ञः सन् एवमवादीत्-एव खलु तेतलिपुत्रो मया ' अवज्झाए ' अप-  
घ्यातः=दुष्टचिन्ताविषयीकृतः सन् मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितः 'त' तत्=तस्मात् कार-  
णात् नमस्यित्वा ' एयमट्ठ ' एतमर्थः=मया कृतमपमानरूपमर्थं विनयेन भूयो भूयः  
' खामेमि ' क्षमयामि, एव सप्रेक्षते सप्रेक्ष्य ' ण्हाए ' स्नातः कृतस्नानः ' चाउ  
रगिणीए सेणाए ' चतुरङ्गिण्या सेनया सार्द्धं यत्रैव प्रमदवन उद्यान यत्रैव तेतलि-

होत्या ) यथा सनिहित आसन्न भूत हुए वाण, व्यन्तर देवो ने और  
देवियो ने आकाश में देवदुन्दुभिया बजाई । पञ्चवर्ण के अचित्त कुसुमो  
की वृष्टि की । मनोहर गीत गन्धर्व निदान भी किया । ( तण्ण से कण  
गज्झाए राया इमीसे कहाए लद्धहे समाणे एव वयामी ) जब यह  
समाचार कनकध्वज राजा को ज्ञात हुआ मेरी दुष्ट विचारणा के विषय  
भूत बने हुए, तेतलिपुत्र अमात्य ने दीक्षित होकर प्रमदवन में केवल  
ज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त कर लिया है-इस प्रकार का वृत्तान्त जब  
उसे मालूम पड़ा-तब उसने अपने मन में विचार किया (एव खलु तेत  
लि पुत्ते मए अवज्झाए मुडे भवित्ता पव्वडए, त गच्छामि ण तेतलिपुत्त  
अणगार वदामि नमसामि, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ विणएण भुज्जो २  
खामेमि एव सपेहेड-सपेहित्ता ण्हाए० चाउरगिणीए सेणाए जेणेव पमय  
वणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेतलि

यथा सनिहित आसन्नभूत थयेला वाणु० यतर देवेअने अने देवीअने अने  
आकाशमा देवदुन्दुभिअने वगाडी, पाय रगना अचित्त पुण्योनी वर्णा करी अर  
मनोहर गीत गन्धर्व निनाद ( ध्वनि ) पणु कर्यो ( तण्ण से कणग जए राया  
इमीसे कहाए लद्धहे समाणे एव वयासी ) अथारे आ ममाथारेनी जणु नंज  
कृतक ध्वजने थर्ध के भारी हुण विचरणुने लीधे तेतलिपुत्र अमात्ये दीक्षित  
थर्धने प्रमदवनमा केवलज्ञान अने केवल दर्शन प्राप्त करी लीधा छे एवारे  
तेणे मनमा विचार कर्यो के

( एव खलु तेतलिपुत्ते मए अवज्झाए मुडे भवित्ता पव्वडए त गच्छामि ण  
तेतलिपुत्त अणगार वदामि नमसामि, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ विणएण भुज्जो २  
खामेमि एव सपेहेड-सपेहित्ता ण्हाए० चाउरगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे  
उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेतलिपुत्त अणगार

सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव  
 उवागच्छइ उवागच्छिता तेतलिपुत्तेअणगार वदइ नमंसइ  
 वंदिता नमसिता एयमट्ट विणएण भुज्जो२ खामेइ, नच्चा-  
 सेन्ने जाव पज्जुवासइ । तएणसे तेतलिपुत्ते अणगारे कण-  
 गज्झयस्मं रत्तो तीसे य महइमहालयाए० धम्म परिकहेइ ।  
 तएणं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तस्स केवलस्स अंतिए  
 धेम्मं सोच्चा णिसम्म, पचाणुव्वडयं सत्तसिक्खावडयं सावग-  
 धम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जिता समणोवासए जाए जाव  
 अहिगयं जीवाजीवे । तएणं तेतलिपुत्ते केवली वट्ठणि वासाइ  
 केवलपरियाग पाउणिता जाव सिद्धे । एव खलु जंवू ।  
 समणेणं भगवयां महावीरेणं जाव सपत्तेणं चोदसमस्स  
 णायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते तिवेमि ॥ सू० १३ ॥

॥ चउदस अज्झयणं समत्ते ॥

टीका—‘तएण’ इत्यादि । तत खलु तेतलिपुरे नगरे ‘अहासनिहिहि’  
 यथा सनिहितै=आसन्नै, ‘वाणमतरेहि’ वाणव्यन्तरै, देवै देवीभिश्च देवदुन्दुभय  
 समाहिता=आक्रान्ते देवै, देवीभिश्च देवदुन्दुभयो वादिता इत्यर्थ, दसद्वयणे  
 कुसुमे निवाडिए’ दर्शोद्भवर्णे कुसुम निपातितम्, अत्र जाति प्रिवक्षायामेकवचनम्,

‘तएण तेतलिपुरे नगरे’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तेतलिपुरे नगरे) तेतलिपुर नगरमें  
 (अहासनिहिहि वाणमतरेहि देवेहि देवीहिय देवदुदुभीओ समाहयाओ,  
 दसद्वेन्ने कुसुमे निवाडिए, दिव्वे देवगीयगधव्वनिनाए कए यावि

‘तएण तेतलिपुरे नगरे’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थार पछी (तेतलिपुरे नगरे) तेतलिपुर नगरमें  
 (अहासनिहिहि वाणमतरेहि देवेहि देवीहिय देवदुदुभीओ समाहयाओ,  
 दसद्वेन्ने कुसुमे निवाडिए, दिव्वे देवगीयगधव्वनिनाए कए यावि



दशार्द्धवर्णानि=पञ्चवर्णाणि अचित्तपुण्याणि निपातितानि=वर्षितानि, दिव्यः=मनो  
हरः गीतगन्धर्व निनादः कृतश्चापि अभवत् । ततः खलु स कनकध्वजो राजा  
'इमीसे कहाए लद्धहे समाने ' यस्याः कथाया लब्धार्थः मया दुष्टचिन्ता विषयी  
कृतस्तेतलिपुत्रः अमात्यः प्रव्रज्य प्रमदवने केवलवर्जानदर्शनसम्पन्नो जात इति  
वृत्तान्ताभिज्ञः सन् एवमासीत्-एव खलु तेतलिपुत्रो मया ' अवज्झाए ' अप-  
घ्यातः=दुष्टचिन्ताविषयीकृतः सन् मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितः 'त' तत्=तस्मात् कार-  
णात् नमस्यित्वा ' एयमट्ट ' एतमर्थः=मया कृतमपमानरूपमर्थं विनयेन भूयो भूयः  
' स्वामेमि ' क्षमयामि, एव सप्रेक्षते सप्रेक्ष्य ' ण्हाए ' स्नातः कृतस्नानः ' चाउ-  
रगिणीए सेणाए ' चतुरङ्गिण्या सेनया सार्द्धं यत्रैव प्रमदवन उद्यान यत्रैव तेतलि-

होत्या ) यथा सनिहित आसन्न भूत हुए बाण, व्यन्तर देवो ने और  
दवियों ने आकाश में देवदुन्दुभियां बजाईं । पचवर्ण के अचित्त कुसुमो  
की वृष्टि की । मनोहर गीत गन्धर्व निदान भी किया । ( तएण से कण  
गज्झए राया इमीसे कहाए लद्धहे समाने एव वयासी ) जब यह  
समाचार कनक वज राजा को ज्ञात हुआ मेरी दुष्ट विचारणा के विषय  
भूत बने हुए, तेतलिपुत्र अमात्य ने दीक्षित होकर प्रमदवन में केवल  
ज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त कर लिया है-इस प्रकार का वृत्तान्त जब  
उसे मालूम पड़ा-तब उसने अपने मन में विचार किया (एवं खलु तेन  
लि पुत्ते मए अवज्झाए मुडे भवित्ता पव्वट्टए, त गच्छामि ण तेतलिपुत्त  
अणगार वदामि नमसामि, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ट विणएण भुज्जो  
स्वामेमि एव सपेहेड-सपेहिट्ता ण्हाए० चाउरगिणीए सेणाए जेणेव पमय  
वणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छड, उवागच्छिट्ता तेतलि

यथा सनिहित आसन्नभूत थयेला बाणु०तर देवोअे अने देवीअे अे  
आकाशमा देवदुन्दुभिया वगाडी, पाय रगना अचित्त पुण्येनी वर्षा करी अर  
मनोहर गीत गन्धर्व निनाद ( ध्वनि ) पशु कर्यो ( तएण से कणगज्झए राया  
इमीसे कहाए लद्धहे समाने एव वयासी ) ज्यारे आ समाचारोनी ज्ञाय राग  
कृतक ध्वजने थर्ष के भारी हु० विचरणाने लीधे तेतलिपुत्र अमात्ये दीक्षित  
थर्षने प्रमदवनमा केवलज्ञान अने केवल दर्शन प्राप्त करी लीधा छे ज्यारे  
तेणे मनमा विचार कर्यो के

( एव खलु तेतलिपुत्ते मए अवज्झाए मुडे भवित्ता पव्वट्टए त गच्छामि ण  
तेतलिपुत्त अणगार वदामि नमसामि, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ट विणएण भुज्जो र  
स्वामेमि एव सपेहेड-सपेहिट्ता ण्हाए० चाउरगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे  
उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छड, उवागच्छिट्ता तेतलिपुत्त अणगार

पुत्रोऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तेतलिपुत्रमनगारं वन्दते नमस्यति,  
 वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमर्थं=स्वकृताज्परावलम्बण विनयेनभूयो भूयः क्षमयति=  
 क्षमां कारयति, तथा 'नञ्चासन्ने०' नात्पामन्ने नातिदूरे यावत् पशुपास्ते=  
 सेवां करोति । ततः खलु म तेतलिपुत्रोऽनगारः कनकध्वजाय राज्ञे तस्या च

पुत्र अणगार वदइ, नममइ, वदित्ता नमसित्ता एममट्ट विणण्ण भुज्जो  
 २ खामेइ नञ्चासन्ने जाव पज्जुवामइ ) मैंने तेतलिपुत्र को अपनी दुष्ट  
 चिन्ता का विषयभूत बनाया है-सो वह मुद्रित होकर दीक्षित हो गया  
 है । इसलिये मैं अब उसके पास जाऊँ और उन तेतलिपुत्र अनगार को  
 वदना करूँ-नमस्कार करूँ । वदना नमस्कार कर मैं अपने द्वारा किये  
 अपमान रूप अपराधकी वडे विनय के साथ बार २ उनसे क्षमा मागूँ-  
 इस प्रकार ज्योंही उसने विचार किया-कि उसी समय वह उठा और  
 स्नान किगा-बार में अपनी चतुरंगीनी सेना के साथ जहा प्रमदवन था  
 -उसमें जहा तेतलिपुत्र अनगार विराजमान थे वहा पहुँचा-वहाँ पहुँच  
 कर उसने तेतलिपुत्र अनगार को वदना की नमस्कार किया । वदना  
 नमस्कार करके फिर अपने द्वारा कृत अपमान रूप अपराध की वडे  
 विनय के साथ बार २ उनसे क्षमा कराई और समुचित स्थान पर बैठ  
 कर उनकी सेवा सुश्रूषा की ( तण्ण से तेतलिपुत्ते अणगारे कणगज्झ

वदइ, नममइ, वदित्ता नमसित्ता एममट्ट विणण्ण भुज्जो २ खामेइ नञ्चासन्ने  
 जाव पज्जुवामइ )

तेतलिपुत्र अमात्यने मे पोतानी दुष्ट चित्ताने विषयभूत ( लक्ष्य )  
 बनाव्ये छे तेथी ज ते मुद्रित थरने दीक्षित थर गये छे ओटला भाटे डवे  
 हु तेनी पासे जडि अने तेतलिपुत्र अनगारने वदना करि नमस्कार करि वदना  
 अने नमस्कार करीने हु भारा वडे थर गयेला अपमान रूप अपराध भदल  
 भहु ज नम्रपणे तेमनी पासेथी क्षमा याचना करि आ रीते विचार थतानी  
 साथे तरत ज ते जिनो थये अने स्नान करुं त्थार पछी पोतानी चतुरंगिणी  
 सेनाने साथे जथा प्रमदवन छतु अने तेमा पणु जथा तेतलिपुत्र अनगार  
 विराजमान छता त्था पडेव्ये त्था पडेव्यीने तेले तेतलिपुत्र अनगारने  
 वदना करि अने नमस्कार करि वदना अने नमस्कार करीने तेले तेना वडे  
 थर गयेला अपमान रूप अपराधनी भहु ज नम्रपणे क्षमा मागी अने त्थार  
 पछी तेले उचित स्थान उपर बेसीने तेमनी सेवा तेमज सुश्रूषा करी

( तण्ण से तेतलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स रणगा तीसे य महइ महाल  
 याए० धम्म परिकहेइ )

‘महम्महालयाए०’ महातिमहत्या परिपदि धर्म ‘परिहरेड’ परिकथयति= उपदिशति । ततः खलु स कनक राजा तेतलिपुत्रस्य केवलिनोऽन्तिके धर्म श्रुत्वा निशम्य पञ्चाणुव्रतिक मत्तशिक्षात्रतिक इत्येव द्वादशविध श्रावकधर्म प्रतिपद्यते, प्रतिपद्य श्रमणोपासको जातः । कीदृश ?—अभिगत जीवा-जीवः=परिज्ञात-यस्स रण्णो तीसे य महम्महालयाए० धम्म परिहरेड ) इसके बाद उन तेतलिपुत्र अनगार केवली ने कनकवजराजा को उपस्थित परिपद को विशाल धर्म का उपदेश दिया—( तएण से कणज्झएण राया तेतलिपुत्तस्स केवलिस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय सावगवम्म पडिविज्जड पडिविज्जिता समणोवासए जाए जाव अहिगयजीवाजीवे । तएण तेतलिपुत्ते केवली बहूणि वासाइ केवलिपरियाग पाउणिता जाव सिद्धे । एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण चोदसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति वेमि ) उपदेश सुनने के बाद कनकवज राजाने तेतलिपुत्र केवलि के समीपश्रुतचारित्ररूप धर्म के प्रभाव से प्रेरित होकर और उस श्रुत धर्म का अच्छी तरह हृदय से विचार कर पाच अणुव्रत एवं सात शिक्षा रूप श्रावक धर्म धारण कर लिया । धारण करके वे श्रमणोपासक बन गये—यावत् जीव और अजीव तत्त्व का क्या स्वरूप है इसके भी वे ज्ञाता हो गये । बाद में तेतलिपुत्र केवलीने अनेक वर्षों तक केवलि

त्यार पछी ते तेतलिपुत्र अनगार डेवणीअे कनकवज राजाने तेमअे उपस्थित परिपदने मविन्तः धर्म विधे उपदेश आये।

( तएण से कणज्झए राया तेतलिपुत्तस्स केवलिस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय सावगवम्म पडिविज्जड पडिविज्जिता समणोवासए जाए जाव अहिगयजीवाजीवे । तएण तेतलिपुत्ते केवलि बहूणि वासाइ केवलिपरियाग पाउणिता जाव सिद्धे । एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण चोदसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिवेमि।)

उपदेश सुनने के बाद कनकवज राजाने तेतलिपुत्र केवलीना श्रुतचारित्ररूप धर्मना प्रभावशील प्रेरणने ते श्रुतचारित्ररूप धर्म विधे मनमा मारी गीते विचार कराने तेमनी पसेथी पाच अणुव्रत अने सात शिक्षारूप श्रावकधर्म धारण करी लीधा धारण करीने तेअे श्रमणोपासक थई गया अने यावत् एव तेमअे अवतत्त्वनु स्वरूप थुछे ? तेनु पणु तेअेने जान थई गथु त्यार पछी तेतलिपुत्र केवलीअे षण्ण वर्षा सुधी केवली पयोयनु पालन कथु अने आभ तेअेअे यावत् सिद्धपद

પુત્રોડનગારસ્તર્જય ઉપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય તેતલિપુત્રમનગાર યન્દ્રતે નમસ્યતિ,  
વન્દિતગ નમસ્યિત્થા એમર્થ = સ્વકૃતાગ્વિપાકલક્ષણ વિનયેનપૂર્વો ધૂયઃ સમયતિ =  
ક્ષમાં કારયતિ, તથા ' નચ્ચાસન્ને ' નાત્પાસન્ને નાતિદૂરે યાત્ પર્યુવાસ્તે =  
સેવાં કરોતિ । તત્ સ્વલુ મ તેતલિપુત્રોડનગારઃ કનકધ્વજાય રાજે તસ્યા ચ

પુત્ર અણગાર વદહ, નમસહ, વદિત્તા નમસિત્તા એમઘટ્ટ ત્રિણળળ મુજ્જો  
૨ સ્વામેહ નચ્ચાસન્ને જાવ પજ્જુવામહ ) મૈને તેતલિપુત્ર કો અપની દુષ્ટ  
ચિન્તા કા વિષયભૂત ચનાગા હૈ-સો વહ મુદિત હોકર દીક્ષિત હો ગયા  
હૈ । હમલિયે મેં અથ ઉમકે પામ જાઁઁ ઓર ઉન તેતલિપુત્ર અનગાર કો  
વદના કરૂં-નમસ્કાર કરૂં । વદના નમસ્કાર કર મેં અપને દારા કિયે  
અપમાન રૂપ અપરાધની વહે વિનય કે સાથ ઘાર ૨ ઉનસે ક્ષમા માગૂ-  
હસ પ્રકાર ડ્યોહી ઉસને વિચાર કિયા-કિ ઉસી સમય વહ ઉઠા ઓર  
સ્નાન કિયા-વાદ મેં અપની ચતુરગીની સેના કે સાથ જહા પ્રમદવન થા  
-ઉસમેં જહા તેતલિપુત્ર અનગાર વિરાજમાન યે વહા પહુંચા-વહાં પહુંચ  
કર ઉસને તેતલિપુત્ર અનગાર કો વદના કો નમસ્કાર કિયા । વદના  
નમસ્કાર કરકે ફિર અપને દારા કૂન અપમાન રૂપ અપરાધ કો વહે  
વિનય કે સાથ ઘાર ૨ ઉનસે ક્ષમા કરાઈ ઓર સમુચિત સ્થાન પર બેઠ  
કર ઉનકી સેવા સુશ્રૂષા કી ( તળળ સે તેતલિપુત્રે અણગારે કળગજ્ઞ

વદહ, નમમહ, વદિત્તા નમસિત્તા એમઘટ્ટ ત્રિણળળ મુજ્જો ૨ સ્વામેહ નચ્ચાસન્ને  
જાવ પજ્જુવામહ )

તેતલિપુત્ર અમાત્યને મે ચેતાની દુષ્ટ ચિંતાને વિષયભૂત ( લક્ષ્ય )  
ખતાવ્યો છે તેથી જ તે મુદિત થઈને દીક્ષિત થઈ ગયો છે એટલા માટે હવે  
હું તેની પાસે જઈ અને તેતલિપુત્ર અનગારને વદન કરૂં નમસ્કાર કરૂં વદના  
અને નમસ્કાર કરીને હું મારા વડે થઈ ગયેલા અપમાન રૂપ અપરાધ બદલ  
બહુ જ નમ્રપણે તેમની પાસેથી ક્ષમા ચાચના કરૂં આ રીતે વિચાર થતાની  
સાથે તરત જ તે ઊભો થયો અને સ્નાન કર્યું ત્યાર પછી પોતાની ચતુરગિણી  
સેનાને સાથે જ્યાં પ્રમદવન હતું અને તેમા પણ જ્યાં તેતલિપુત્ર અનગાર  
વિરાજમાન હતા ત્યાં પહોંચ્યો ત્યાં પહોંચીને તેણે તેતલિપુત્ર અનગારને  
વદના કરી અને નમસ્કાર કર્યા વદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે તેના વડે  
થઈ ગયેલા અપમાન રૂપ અપરાધની બહુ જ નમ્રપણે ક્ષમા માગી અને ત્યાર  
પછી તેણે ઉચિત સ્થાન ઉપર બેઠીને તેમની સેવા તેમજ સુશ્રૂષા કરી

( તળળ સે તેતલિપુત્રે અણગારે કળગજ્ઞયસ્સ રળ્લા તીસે ય મહહ મહાલ  
યાણં ધમ્મ પરિરુહેહ )



## ॥ અથ પચ્ચદશમધ્યયનં પ્રારંભ્યતે ॥

ગત ચતુર્દશમધ્યયન સમ્પત્તિ પચ્ચદશમારંભ્યતે, પૂર્વાયયનેઽપમાનાદ્ વિષય-  
ત્યાગઃ પ્રદર્શિતઃ, અત્ર તુ સ જિનોપદેશાદ્ ભવતીતિ પ્રતિપાદયિષ્યતેઽતસ્તસ્ય  
સદ્ભાવેઽર્થપ્રાપ્તિઃ, અસદ્ભાવેત્વનર્થપ્રાપ્તિર્ભવતીત્યેવ પૂર્વેણ સમ્બન્ધઃ તત્તોદમા-  
દિસૂત્રમ્—‘જઙ્ઞ મતે’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—જઙ્ઞ મતે ! સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં જાવ  
સપત્તેણં ચોદસમસ્સ નાયઙ્ઞણસ્સ અયમદ્દે પપ્પણત્તે પન્નરસ-  
મસ્સ ણં મંતે ણાયઙ્ઞયણસ્સ સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં  
જાવ સંપત્તેણ કે અદ્દે પન્નત્તે ?, એવં સ્વલ્લુ જંવૂ । તેણ કાલેણં  
તેણં સમણં ચપા નામ નયરી હોત્થા, પુત્તભદ્દે ચેદ્દે જિય-  
સત્તૂ રાયા । તત્થ ણ ચપાણ નયરીણ ધણે ણામં સત્થવાહે  
હોત્થા અદ્દે જાવ અપરિભૂણ । તીસે ણં ચંપાણ નયરીણ  
ઉત્તરપુરત્થિમે દિસીમાણ અહિચ્છત્તા નામ નયરી હોત્થા.

—:નન્દિફલ નામકા પન્દરવા અધ્યાયન પ્રારંભ:-

ચૌદહર્વા અધ્યયન સમાપ્ત હો ચુકા—અવ પન્દરવા અધ્યયન પ્રારંભ  
હોતા હૈ । પૂર્વ અધ્યયન મેં તેતલિ પ્રધાન કે આખ્યાન દ્વારા અપમાન સે  
મી વિષયોં કા ત્યાગ કર દિયા જાતા હૈ યહ વાત સમજાઈ ગઈ હૈ ।  
હસ અધ્યયન મેં યહ વિષય ત્યાગ જિનકે ઉપદેશ સે હોતા હૈ યહ કહા  
જાવેગા । હસ લિયે ઉસકે સદ્ભાવ મેં અર્થ પ્રાપ્તિ ઓર અસદ્ભાવ મેં  
અનર્થ પ્રાપ્તિ હોતી હૈ હસ તરહ સે પૂર્વ અધ્યયન કે સાથ હસકા સબન્ધ  
ધન જાતા હૈ.—જઙ્ઞ મતે ! સમણેણ ઇત્યાદિ ॥

નન્દિફળ નામે પદરમુ અધ્યયન પ્રારંભ

ચૌદમુ અધ્યયન પુરૂ થયુ છે હવે પદરમુ અધ્યયન શરૂ થાય છે  
પહેલાના અધ્યયનમા તેતલિપ્રધાનના આખ્યાન વડે એ વાત સમજાવવામા  
આવી છે કે અપમાનથી પણ વિરોધનો યાગ કરવામા આવે છે આ અધ્યયનમા  
આ વિષય ત્યાગ જેમના ઉપદેશથી થાય છે તે વિષે કહેવામા આવશે એટલા  
માટે તેના સદ્ભાવમા અર્થ પ્રાપ્તિ અને અસદ્ભાવમા અનર્થ પ્રાપ્તિ હોય છે,  
આ રીતે પૂર્વ અધ્યયનની સાથે આનો સબન્ધ સમજી રાકાય છે

ટીકાર્થ—‘જઙ્ઞ મતે ! સમણેણ’ ઇત્યાદિ ।

સકલજીરાજોવતત્ત્રાઽપિ જાતઃ । તત્ સ્વલુ તેતલિપુત્રઃ કેવલી બહુનિ વર્ષાણિ  
કેવલિપર્યાય પાલયિત્વા યાત્ સિદ્ધ = મોક્ષ ગત ।

સુધર્માસ્વામી પ્રાહ-એવ સ્વલુ હે જન્મૂઃ ! શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ ચતુર્દશસ્ય  
જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય 'અયમદ્દે' અયમર્થઃ=પૂર્વોક્તો ભાવ પ્રજ્ઞપ્ત = પ્રરૂપિત, 'તિ વેમિ' इति  
વ્રવીમિ=ભગવત્સમીપે યથા શ્રુત તથા ત્વા પ્રતિકથયામિ । एतेन अध्ययनेन इद-  
માયાત યત્-પ્રાણિનો યાત્દ દુ સ્વં માનશ્રય ચ ન પ્રાપ્નુવન્તિ તાયદ્ બહુશ  
પ્રવોધિતા અપિ ધર્મે ન સ્વીકુર્વન્તિ, યથા તેતલિપુત્રઃ ॥ સૂ. ૧૩ ॥

इति श्री-विश्वरूपात-जगद्गुरुभ-प्रसिद्धराचरुपञ्चदशभाषाकलितकलितक-

लापालापक-प्रविशुद्धगत्रपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-रादिमातमर्दक-श्रीशाहच्छ

त्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराज

गुरु-गालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री-घासीलाल-

प्रतिविरचिताया ' ज्ञाताधर्मकथाज्ञ ' सूत्रस्यानगारधर्ममृतव

र्षिण्याख्याया व्याख्यायां चतुर्दशमध्ययन सपूर्णम् ॥ १४ ॥

પર્યાય કા પાલન કર યાત્ સિદ્ધ પદ પ્રાપ્ત કર લિયા । સુધર્માસ્વામી  
કહેતે હૈં-હે જન્મૂ ! શ્રમણભગવાન મહાવીર ને હસ ચૌદહવે જ્ઞાતાધ્યયન  
કા યહ પૂર્વોક્તરૂપ સે ભાવ અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ । સો જૈસા મૈને ઉન  
ભગવાન કે સમીપ મેં સુના હૈ યહ વૈસા હી તુમસે કહા હૈ । હમ અધ્ય  
યન સે હમેં યહ જ્ઞાન હો જાતા હૈ કિ સસાર મેં તેતલિપુત્ર કી તરહ  
એસે બી પ્રાણી હૈં કિ વે જલ તક દુઃસ્વ ઓર અપમાન કો નહીં પાલતે  
હૈં તલ તક અનેક ઘાર પ્રતિવોગિત કરને પર બી-ધર્મ કો સ્વીકાર  
નહીં કરતે હૈં ॥ સૂ. ૧૩ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત

“ જ્ઞાતાધર્મકથાજ્ઞસૂત્ર ” કી અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાકા

ચૌદહવા અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૪ ॥

મેળવી લીધુ સુધર્માસ્વામી કહે છે કે હે જન્મૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે  
આ ચૌદમા જ્ઞાતાધ્યયનો પૂર્વોક્ત રૂપથી ભાવ-અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે જેવો અર્થ  
મેં તેઓશ્રી પાસેથી સાંભળ્યો છે તેવોજ તમને કહ્યો છે આ અધ્યયનથી  
અમને આ જાતનું જ્ઞાન થાય છે કે સસારમા તેતલિપુત્રની જેમ એવા પણ પ્રાણી  
ઓ છે કે તેઓ જ્યાં સુધી દુઃખી અને અપમાનિત થતા નથી ત્યાં સુધી ઘણા  
વખત પ્રતિબોધિત કરતા છતાં ધર્મને સ્વીકારતા નથી ॥ સૂત્ર ‘ ૧૩ ’ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી

વ્યાખ્યાનું ચૌદમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૪ ॥

ऽर्थः प्रज्ञप्तः सुधर्मस्वामी कथयति-एवं खलु हे जम्बू !  
 तये चम्पा नाम नगरासीत् । तत्र पूर्णभद्र चैत्य जितशत्रू  
 चम्पाया नगर्या वन्यो नाम सार्थवाह आसीत् । स  
 यावद् अपरिभूतः प्रभूतशक्तिशालीत्यर्थः । तस्या खलु  
 रस्त्ये दिग्भागे अहिच्छत्रा नाम नगर्यासीत् । सा कीदृशी ?-  
 मेद्धा ' ऋद्धस्तिमितसमृद्धा, तत्र ऋद्धा=नभः स्पशिवहु-  
 ा = स्वपरचक्रभयरहिता, समृद्धा=धनधान्यादि परिपूर्णा,  
 गरी वर्णनपाठोऽत्रवाच्य, स तु ओषपातिः सूत्रादवसेयः ।  
 नगर्या कनककेतुर्नाम राजाऽऽसीत् । 'महया वण्णओ'

। ज्ञानाध्ययन का क्या अर्थ निरूपित किया है ।  
 वण कालेण तेण सम्पण चपानाम नयरी होत्था )  
 ामी के प्रश्न के समाधान निमित्त श्री सुधर्मा स्वामी  
 क जम्बू ! सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-  
 स समय में चंपा नाम की नगरी थी ( पुनर्भवे चेहए  
 तत्थ ण चपाए नयरीए धण्णे नामे सत्थवाहे होत्था  
 भूए ) पूर्णभद्र नाम का उसमें उद्यान था । जितशत्रु  
 ममें रहता था । उसी चंपा नगरी में धन्य नामका सार्थ-  
 या । यह जन धन धान्यादि संपन्न था । एवं लोकमान्य  
 ण चपाए नयरीए उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता  
 त्था, रिद्धत्थिमिय समिद्धा वन्नओ-तत्थण अहिच्छत्ताए

जम्बू ! तेण कालेण तेण सम्पण चपा नाम नयरी होत्था )  
 जम्बू स्वामीना प्रश्नना समाधान भाटे श्री सुधर्मा स्वामी  
 ने हे जम्बू ! सावधान, तुम्हारा प्रश्नना जवाब आ प्रमाण  
 अने ते समये चपा नामे नगरी હતી  
 ए जियसत्तू राया, तत्थ ण चपाए नयरीए धण्णे नामे सत्थवाहे  
 ( अपरिभूए )

ए लद्र नामे ઉદ્યાન હતું તેમા જિતશત્રુ નામે રાજા રહેતો  
 નો ' 'હાલે પણ તે ચપા નગરીમા જ રહેતો હતો તે જન,  
 હતો, તેમજ લોક માન્ય પણ હતો।  
 उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नाम नयरी  
 न्नओ-तत्थणं अहिच्छत्ताए नयरीए कणगक्केउ

बोटा  
 होता है  
 भी विश  
 इस अ  
 जावेगा  
 अनर्थ  
 धन ८

पडे  
 आनी  
 आ ।  
 भाटे  
 आ २

રિદ્ધિરિથિમિયસમિદ્ધા વન્નઓ । તત્થ પં અહિચ્છત્તાણ નય-  
 રીણ કળગકેઝ નામ રાયા હોત્થા, મહયા વન્નઓ । તસ્સ  
 ધણસ્સ સત્થવાહસ્સ અન્નયા કયાઙ્ગ પુવ્વરત્તાવરત્તકાલસ-  
 મયસિ ઇમેયારૂઢે અઙ્ગારિથિણ ચિંતિણ પતિથિણ કપિણ મળો-  
 ગણ સકપ્પે સમુપ્પજ્જિત્થાસેય સ્વલ્લ મમ વિપુલ પણિયમંડ-  
 સાયાણ અહિચ્છત્ત નગરિં વાણિજ્ઞાણ ગમિત્તણ, એવ સંપેહેઙ્ગ  
 સંપેહિત્તા ગણિમચ્છ ચ્ચઉઢ્ઠિવહ મહ ગેણહઙ્ગ, સગડીસાગડ  
 સજ્જેઙ્ગ સજ્જિત્તા સગડીસાગડ મરેતિર કોહુવિયપુરિસે  
 સદાવેઙ્ગ સદાવિત્તા એવ વયાસી-ગચ્છહ પં તુઢ્ઠમે દેવાણુ-  
 પ્પિયા । ચંપાણ નગરીણ સિઘાહગ જાવ પહેસુ ઘોસણં  
 ઘોસેહ ॥ સૂ. ૧ ॥

ટીકા—જમ્બૂસ્વામી પૂછતિ—યદિ સ્વલ્લ મદન્ત ! શ્રમણેન ભગવતા મહા  
 વીરેણ થાવત્ સિદ્ધિગતિમાનધેય સ્થાન સમ્પાપ્તેન ચતુર્દશસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય અય  
 મર્થ = પૂર્વોક્તો ભાવઃ પ્રજ્ઞપ્ત' તર્હિ પચ્ચદશસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય શ્રમણેન ભગવતા મહા

ટીકાર્થ—જમ્બૂસ્વામી પૂછતે હૈં કિ (જહ્ણ મતે । સમણેણ ભગવયા મહા  
 વીરેણ જાવ સપત્તે ણ ચોદસમસ્સ નાયઙ્ગયણસ્સ અયમદ્દે વણ્ણત્તે પન્નર-  
 સમસ્સ ણ મતે નાયઙ્ગયણસ્સ સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તે  
 ણ કે અદ્દે વણ્ણત્તે ) મદત્ત ! યદિ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો  
 મોક્ષપ્રાપ્ત કર ચુકે હૈં ચોદહવેં જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ  
 પ્રતિપાદિત કિયા હૈં—તો હે મદત્ત ! મુક્તિ પ્રાપ્ત હુણ ઉન્હી શ્રમણ ભગવાન

જમ્બૂસ્વામી પૂછે છે કે—

( જહ્ણ મતે ! સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ ચોદસમસ્સ નાય-  
 ઙ્ગયણસ્સ અયમદ્દે વણ્ણત્તે પન્નરસમસ્સ ણ મતે નાયઙ્ગયણસ્સ સમણેણ ભગવયા  
 મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે વણ્ણત્તે )

હે મદત્ત ! જે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે—કે જેઓ મોક્ષ પ્રાપ્ત કરી ચુક્યા  
 છે—તોદમ જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપથી અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે તો હે  
 મદત્ત ! મુક્તિ પ્રાપ્ત કરેલા તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પદરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો  
 જ્ઞા અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે



वीरेण यावत्तन्माप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः । सुधर्मस्वामी कथयति—एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगरासीत् । तत्र पूर्णभद्र चैत्य जितशत्रु राजा चाभवत् । तत्र खलु चम्पाया नगर्या वन्यो नाम सार्थवाह आसीत् । स कीदृशः ? इत्याह—आढ्यो यावद् अपरिभूतः प्रभूतशक्तिशालीत्यर्थः । तस्या खलु चम्पाया नगर्या उत्तरपूरस्त्ये दिग्भागे अहिच्छत्रा नाम नगर्यासीत् । सा कीदृशी?—  
त्याह—‘रिद्धत्थिमियममिद्धा’ ऋद्धस्तिमितसमृद्धा, तत्र ऋद्धा=नभः स्पृशिवहु-  
प्रासादयुक्ता, स्तिमिता = स्वपरचक्रभयरहिता, समृद्धा=धनधान्यादि परिपूर्णा,  
‘वण्णओ’ वर्णकः=नगरी वर्णनपाठोऽत्राच्य, स तु औपपातिस्मृत्तादवसेयः ।  
तत्र खलु अहिच्छत्रार्या नगर्या कनककेतुर्नाम राजाऽऽसीत् । ‘महया वण्णओ’

महावीर ने पन्द्रहवें ज्ञानाध्ययन का क्या अर्थ निरूपित किया है ।  
( एवं खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समण्ण चपानाम नयरी होत्था )  
इस प्रकार जम्बू स्वामी के प्रश्न के समाधान निमित्त श्री सुधर्मा स्वामी  
उन से कहते हैं कि जम्बू ! सुनो—तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है—  
उस काल और उस समय में चंपा नाम की नगरी थी ( पुनर्भदे चेद्दए  
जियसत्तू राया, तत्थ ण चपाए नयरीए धण्णे नामे सत्थवाहे होत्था  
अड्डे जाव अपरिभूए ) पूर्णभद्र नाम का उसमें उद्यान था । जितशत्रु  
नामका राजा उसमें रहता था । उसी चंपा नगरी में धन्य नामका सार्थ-  
वाह भी रहता था । यह जन धन धान्यादि संपन्न था । एव लोकमान्य  
भी था । ( तीसे ण चपाए नयरीए उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता  
नामं नयरी होत्था, रिद्धत्थिमिय समिद्धा वण्णओ—तत्थण अहिच्छत्ताए

( एवं खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समण्ण चपा नाम नयरी होत्था )

आ रीते ज्जु स्वामीना प्रश्नना समाधान भाटे श्री सुधर्मा स्वामी  
तेमने कहे छे के छे ज्जु । सालणे, तमार प्रश्नने ज्जवाण आ प्रमाणे  
छे के ते काले अने ते समये चंपा नामे नगरी હતી

( पुनर्भदे चेद्दए जियसत्तू राया, तत्थ ण चपाए नयरीए धण्णे नामे सत्थवाहे  
होत्था अड्डे जाव अपरिभूए )

तेमा पूर्ण भद्र नामे उद्यान હતુ તેમા જિતશત્રુ નામે રાજા રહેતો  
હતો । ધન્ય નામે એક સાર્થવાહ પણ તે ચંપા નગરીમા જ રહેતો હતો । તે જન,  
ધન, ધાન્ય, વગેરેથી સંપન્ન હતો, તેમજ લોક માન્ય પણ હતો ।

( तीसेण चंपाए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नाम नयरी  
होत्था, रिद्धत्थिमिय समिद्धा वण्णओ—तत्थण अहिच्छत्ताए नयरीए कणगक्केउ  
‘नामं राया होत्था महया वण्णओ’ )

મહાંવર્ણક = સ ચ ' મહયાદિમત્તમહત્તમલયમદરમર્દિદસારે ' મહાદિમત્તમશમ  
 લયમન્દરમહેન્દ્રસાર, ઇત્યાદિરૂપોડ્ર વિત્તેયઃ । તસ્ય ધન્યસ્ય સાર્થિત્રાહસ્ય અન્યદા  
 કદાચિત્ પૂર્વરાત્રાપરરાત્રમાલસમયે=રાત્રે પશ્ચિમે પ્રહરે અયમેતદ્રૂપ આધ્યાત્મિક-  
 શ્રિન્તિતઃ પ્રાર્થિતઃ કલ્પિતો મનોગતઃ સકલ્પઃ=ત્રિચારઃ સમુદપત્રત-ત્રેયઃ=ઉચિત  
 સ્વલુ મમ ત્રિપુલ=પચુર ' પણિયમઢં ' પ્રણિતમાઢં=ગણિમાદિક્રય વિક્રયવસ્તુમાઢં  
 ' આયાણ ' આદાય=ગૃહીત્વા અહિચ્છત્રા નગરીં વાણિજ્યાય ગન્તુમ્, ગણિમાદિ  
 પણ્યવસ્તુજાત ગૃહીત્વા વ્યાપારાયાહિચ્છત્રા નગરીં મયા ગન્તવ્યમિતિ માત્રઃ । એ  
 ' સપેહેદ્ ' સપ્રેક્ષતે=વિચારયતિ, સપ્રેક્ષ્ય ગણિમ ૪-ગણિમ ધરિમ મેય પરિ-  
 ચેત્યેવરૂપ ચત્તર્વિધ માઢં=પણ્યવસ્તુજાત ગૃહાતિ, ગૃહીત્વા ' સગડીસાગડ ' સકટી

નગરીણ કળગકેઝ નામ રાયા હોત્યા, મહયા વન્નઓ ) ઉસ ચપા નગરી  
 કે ઈશાન કોણ મેં અહિચ્છત્રા નામકી નગરી થી । યહ નમસ્તલસ્પર્શી  
 પ્રાસાદોં સે યુક્ત સ્વચક્ર ઓર પરચક્ર કે મયસે રહિત તથા ધન ધાન્ય  
 આદિ વિભવ સે વિશેષ સમૃદ્ધ થી । નગરી કે વર્ણન કા પાઠ ઔપપા  
 તિક સૂત્ર મેં જૈસા નગરી કા વર્ણન કિયા ગયા હૈ વૈસા હી યહા જનના  
 ચાહિયે । ઉસ અહિચ્છત્રા નગરી મેં કનકકેતુ નામકા રાજા રહના થા ।  
 હસ રાજા કે વર્ણન મેં " મહયા દિમવત્તમહત્તમલયમદરમર્દિદસારે "   
 ઇત્યાદિરૂપ પાઠ યહા લગા લેના ચાહિયે । ( તસ્સ ધન્નસ્સ સત્થવાહસ્સ  
 અન્નયા કયાહ પુવ્વરત્તાવરત્તકાલમમયસિ હમેયારુવે અજ્ઞત્થિણ વીતિણ  
 પત્થિણ, કપ્પિણ, મળોગણ સકલ્પે સમુપ્પજ્જિત્થા-સેય સ્વલુ મમ વિઝલ  
 પણિયમઢમાયાણ અહિચ્છત્ત નયરિં વાણિજ્જાણ ગમિત્તણ, એવ સપેહેદ્,  
 સપેહિત્તા ગણિમચ ૪ ચત્તરિવિહ મઢે ગેણ્હ, સગડી સાગડ સજ્જેદ્ સ

તે ચપા નગરીના ઈશાન કોણમા અહિચ્છત્રા નામે નગરી હતી આકાશને  
 સ્પર્શતા એવા ઊંચા પ્રાસાદોથી આ નગરી યુક્ત હતી તેમજ સ્વચક્ર અને પરચક્ર  
 ના લયથી રહિત તથા ધન ધાન્ય વગેરે વૈભવથી આ નગરી સવિશેષ સમૃદ્ધ  
 હતી ઔપપાતિક સૂત્રમા નગરીના વિષે જેવું વર્ણન કરવામા આવ્યું છે તેવું  
 જ અહીં પણ બાણી લેવું જોઈએ તે અહિચ્છત્રા નગરીમા કનકકેતુ નામે રાજા  
 રહેતો હતો, આ રાજાના વર્ણન માટે ( મહયા દિમવત-મહત-મલય-મદર-  
 મર્દિદસારે ) વગેરે પાઠ અહીં સમજવો જોઈએ

(તસ્સ ધન્નસ્સ સત્થવાહસ્સ અન્નયા કયાહ, પુવ્વરત્તાવરત્તકાલસમયસિ હમેયારુવે  
 અજ્ઞત્થિણ વીતિણ, પત્થિણ કપ્પિણ, મળોગણ સકલ્પે સમુપ્પજ્જિત્થા-સેય સ્વલુ  
 મમ વિઝલ પણિયમઢમાયાણ અહિચ્છત્ત નયરિં વાણિજ્જાણ ગમિત્તણ એવ સપેહેદ્,  
 સપેહિત્તા ગણિમ ચ ૪ ચત્તરિવિહ મઢે ગેણ્હ સગડીસા-

शाकट=लघुमहच्छकटसमूह सज्जयति,=पगुणी करोति सज्जयित्वा शकटीशाकट भरेति, भृत्वा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, आहूय परमयादीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुमिया ! चम्पाया नगर्याः 'सिंघाडगजावपहेसु' शृङ्गाटक-त्रिकचतुष्क चत्वरमहापथपथेषु घोषणाम्=घोषयत ॥ सू० १ ॥

जित्ता सगडीसागड भरेइ भरित्ता कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-गच्छहण तुब्भे देवाणुप्पिया ! चपाण नयरीण सिंघाडग जाव पहेसु घोसण घोसेइ ) एक दिन की बात है कि उस धन्यसार्थवाह को रात्रि के पश्चिम प्रहर में यह इस प्रकार का आध्मात्मिक चिन्तित, प्रार्थित कल्पित मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ कि मैं गणिमादि रूप विपुल पण्य वस्तु को लेकर व्यापार के लिये जो अहिच्छत्रा नगरी में जाऊँ तो बहुत अच्छी बात है । इस प्रकार उसने विचार किया-ऐसा विचार करके उसने गणिम, धारिम, मेय और परिच्छेद्य रूप चार प्रकार का भाण्ड लिया । भाण्ड लेकर फिर उसने गाड़ी और गाड़ों को तैयार करवाया-जय वे गाड़ी गाड़े तैयार हो चुके तब उसने उस पण्य (विक्रेय वस्तु) को उनमें भरा-भर कर फिर उसने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उसने ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों ! तुम लोग जाओ-और चपा नगरी के शृङ्गाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर, महापथ इन सब मार्गों में घोषणा करो । क्या घोषणा करना-यह बात नीचे के सूत्र से सूत्रकार प्रदर्शित करते हैं ॥ सू० १ ॥

सगडीसागड भरेइ, भरित्ता कोडुवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एव वयासी गच्छहण तुब्भे देवाणुप्पिया । चपाण नयरीण सिंघाडग जाव पहेसु घोसणं घोसेइ )

એક દિવસે તે ધન્ય સાર્થવાહને રાત્રિના છેલ્લા પહોરમાં આ જાતનો આધ્યાત્મિક, ચિન્તિત, પ્રાર્થિત, કલ્પિત, મનોગત સકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે પુષ્કળ પ્રમાણમાં ગણિમ વગેરે વેચાણની વસ્તુઓ લઈને વેપાર એકવા માટે જો હું અહિચ્છત્રા નગરીમાં જાઉં તો બહુ સારું થાય આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો આવો વિચાર કરીને તેણે ગણિમ, ધરિમ, મેય અને પરિચ્છેદ્ય રૂપ ચાર પ્રકારની વસ્તુઓ વાસણોમાં ભરી ચારે જાતની વસ્તુઓ વાસણોમાં ભરીને તેણે ગાડી તેમજ ગાડાઓને તૈયાર કરાવ્યા જ્યારે ગાડી અને ગાડાઓ તૈયાર થઈ ચૂક્યા ત્યારે તેણે તે વેચાણની વસ્તુઓને ગાડી અને ગાડાઓમાં ભૂંડી ત્યાર પછી તેણે પોતાના કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે જાઓ, અને ચપા નગરીના શૃંગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક, ચત્વર, મહાપથ આ બધા માર્ગોમાં ઘોષણા કરો ઘોષણા કરતા શું કહેવું તે નીચેના સૂત્ર વડે સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે ॥ સૂત્ર “ ૧ ” ॥

घोषणास्वरूपमाह—‘ एव खलु ’ इत्यादि ।

मूलम्—एव खलु देवाणुप्पिया । धण्णे सत्थवाहे विउलं पणिय मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए त जो णं देवाणुप्पिया । चरए वा चीरिए वा चम्मसडिए वा भिच्छुडे वा पडुरगे वा गोयमे गोव्वइए वा गिहिधम्म-चित्तए वा अविरुद्ध विरुद्धवुद्धमावगरत्तपडनिग्गथप्पभिइपा-सडत्थे वा गिहत्थे वा धण्णेण सत्थवाहेण सद्धिं अहिच्छत्त नगरि गच्छइ तस्स णं धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलाइ अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ अकुडियस्स कुडियं दलयइ अपत्थयणस्स पत्थयण दलयइ अपक्खेवगस्स पक्खेव दलयइ अंतराऽविय से पडियस्स वा भग्गलुग्गस्स साहेज्जं दलयइ सुहसुहेण य ण अहिगच्छत्त सपावेइ तिकट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसेह घोसित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुविय पुरिसा जाव एव वयासी-हदिसुणंतु भवतो चपानगरीवत्थत्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणाति ॥सू०२॥

टीका—एव खलु हे देवानुप्पियाः ! धन्यं सार्थवाहं विपुलान् पणितभाण्डान् ‘आयाए’ आदाय इच्छति अहिच्छन्ना नगरी ‘वाणिज्जाए’ वाणिज्याय=

‘ एव खलु देवाणुप्पिया ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—( एव खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउल पणिय मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए ) हे देवाणुप्पियो !

एव खलु देवाणुप्पिया इत्यादि ।

( एव खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउल पणिय मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए )

हे देवानुप्पियो ! तमे लोको शृगाटक वगेरे भार्गोमा आ नतनी घोषणा



व्यापाराय गन्तु तत्=तस्मात् य. खलु हे देवानुप्रिया ! कोऽपि धन्येन सार्थवाहेन सार्द्धमहिच्छत्रा नगरीं 'गच्छती' त्युत्तरेण सम्बन्धः, कोऽपि, यस्तेन सार्द्धं गच्छे-  
दित्याह—'चरण' इत्यादिना 'चरण वा' चरक = गृहस्थस्य गृहे निष्पन्नस्योदनादे-  
र्योऽग्रभागो दानार्थं पृथक्कृत्य स्थाप्यते तस्य भिक्षावृत्त्याग्राहक, 'चीरिए वा'  
चीरिकमार्गपतितशटितचीवरपरिधारक, 'चम्मखडिए वा' चर्मखण्डिकः=चर्म-  
धारक, 'भिच्छुडे वा' भिक्षोण्ड = अन्यानीतभिक्षानभोजी, 'पटुरगे वा' पाण्डु-  
राङ्गः=भस्मलिप्तशरीरः, 'गोयमे वा' गौतमः=वृषभमधिकृत्य कणभिक्षाग्राही,  
'गोव्वइए वा' गोव्रतिकः=गोचर्यानुकारी यथा यथा गौः स्थानासनादिक्रिया  
करोति तथा तथा सोऽपि करोतीति भाव, 'गिहिधम्मचित्तए वा' गृहिधर्म-  
चिन्तकः=गृहिणो=गृहस्थस्य धर्मो गृहिधर्मस्त चिन्तयतीति तथा, 'गृहस्थधम्मएव-  
श्रेयान् नान्यः' उक्तञ्च—

तुम लोग श्रृगाटक आदि मार्गों में खड़े होकर इस प्रकार की घोषणा  
करना—कि धन्य सार्थवाह विपुल मात्रा में पणित ( विक्रय वस्तु ) को  
लेकर अहिच्छत्रा नगरी में व्यापार के लिये जाना चाहता है ( त'जो  
ण देवाणुप्पिया ! चरण वा चीरिए वा चम्मखडिए वा भिच्छुडे वा  
पटुरगे वा गोयमे गोव्वइए वा गिहिधम्मचित्तए वा अविरुद्धविरुद्ध बुद्ध  
सावगरत्तपडनिग्गयप्पभिडपासडत्थे वा गिहत्ये वा धण्णेण सत्थवा  
हेण सद्धि अहिच्छत्त नयरिं गच्छइ तस्म ण धण्णे सत्थवाहे अच्छत्त-  
गस्स छत्तग दलाइ ) इसलिये हे देवाणुप्रियो ! जो भी कोई धन्य सार्थ-  
वाह के साथ अहिच्छत्रा नगरी जाना चाहता हो—चाहे वह चरक हो  
चीरिक हो, चर्मखडपारी हो, भिक्षोण्ड हो, पाण्डुरङ्ग हो, गौतम हो,  
गोव्रतिक हो, गृहस्थधर्म चिन्तक हो, अविरुद्ध हो, विरुद्ध हो, बृद्ध-

केश के धन्य सार्थवाह पुण्डर प्रमाणमा पणित ( देवाणुनी वस्तुओ ) लधने  
अहिच्छत्रा नामे नगरीमा वेपार जेउवा भाटे जवा धिछे ते

( त'जो ण देवाणुप्पिया ! चरण वा चीरिए वा चम्मखडिए वा भिच्छुडे वा पटुरगे  
वा गोव्वइए वा गिहिधम्मचित्तए वा अविरुद्धविरुद्धबुद्धसावगरत्तपडनिग्गय  
प्पभिड पासडत्थे वा गिहत्ये वा धण्णेण सत्थवाहेण सद्धि अहिच्छत्त नयरिं गच्छइ-  
तस्स ण ण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तग दलाइ )

जेउवा भाटे ते देवानुप्रियो ! धन्य सार्थवाहनी साथे जे केअ जवा  
धिछतो डाय—लवे ते चरक डाय, चीरिड डाय, चर्म खड धारी डाय, भिक्षोड  
डाय, पाण्डुरग डाय, गौतम डाय, गोव्रतिक डाय, गृहस्थ धर्म चितक डाय,

घोषणास्वरूपमाह—‘ एव खलु ’ इत्यादि ।

मूलम्—एव खलु देवाणुप्पिया । धण्णे सत्थवाहे विउलं  
पणियं मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए  
त जो णं देवाणुप्पिया । चरण वा श्रीरिए वा चम्मसडिए  
वा भिच्छुडे वा पंडुरंगे वा गोयमे गोव्वइए वा गिहिधम्म-  
चित्तए वा अविरुद्ध विरुद्धबुद्धमावगरत्तपडनिग्गयप्पभिइपा-  
संडत्थे वा गिहत्थे वा धण्णेण सत्थवाहेण सडिं अहिच्छत्त  
नगरि गच्छइ तस्स णं धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं  
दलाइ अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ अकुडियस्स कुडिय  
दलयइ अपत्थयणस्स पत्थयण दलयइ अपक्खेवगस्स पक्खेव  
दलयइ अतराऽविय से पडियस्स वा भग्गलुग्गस्स साहेज्जं  
दलयइ सुहसुहेण य ण अहिगच्छत्त सपावेइ तिक्कट्टु दोच्चपि  
तच्चपि घोसेह घोसित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह,  
तएण ते कोडुविय पुरिसा जाव एव वयासी-हदिसुणत्तु भवतो  
चंपानगरीवत्थव्वा वहवे चरगा य जाव पच्चपिणत्ति ॥सू०२॥

टीका—एव खलु हे देवानुप्रियाः ! धन्यं सार्थं गच्छ विपुलान् पणितभाण्डान्  
‘आयाए’ आदाय इच्छति अहिच्छन्ना नगरी ‘वाणिज्जाए’ वाणिज्याय=

‘ एव खलु देवाणुप्पिया ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—( एव खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउल पणियं  
मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए ) हे देवाणुप्रियो !

एव खलु देवाणुप्पिया इत्यादि ।

( एव खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउल पणियं मायाए इच्छइ  
अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए )

हे देवानुप्रियो ! तमे लोके शृंगारक वगेरे भागेमा आ नतनी घोषणा

व्यापाराय गन्तु तत्=तस्मात् यः खलु हे देवानुप्रिया ! कोऽपि धन्येन सार्थवाहेन सार्द्धमहिच्छत्रा नगरीं 'गच्छती' त्युत्तरेण सम्बन्धः, कोऽसौ, यस्तेन सार्द्धं गच्छे-  
दित्याह—'चरण' इत्यादिना 'चरण वा' चरक = गृहस्थस्य गृहे निष्पन्नस्योदनादे  
'योऽग्रभागो दानार्थं पृथक्कृत्य स्यात्' इति तस्य भिक्षावृत्त्याग्राहक, 'चीरिए वा'  
'चीरिकमार्गपतितशटितचीरपरिवारक', 'चम्मखडिए वा' चर्मखण्डिकः=चर्म  
धारक, 'भिच्छुडे वा' भिक्षोण्ड = अन्यानीतभिक्षान्नभोजी, 'पडुरगे वा' पाण्डु-  
राङ्गः=भस्मलितशरीरः, 'गोयमे वा' गौतमः=वृषभमधिकृत्य कणभिक्षाग्राही,  
'गोव्वइए वा' गोव्रतिकः=गोचर्यानुकांगी यथा यथा गौः स्थानासनादिक्रियां  
करोति तथा तथा सोऽपि करोतीति भावः, 'गिहिधम्मचित्तए वा' गृहिधर्म-  
चिन्तकः=गृहिणो=गृहस्थस्य यमो गृहिधर्मस्त चिन्तयतीति तथा, 'गृहस्थधर्मएव-  
'श्रेयान् नान्यः' उक्तञ्च—

तुम लोग शृगाटक आदि मार्गों में खड़े होकर इस प्रकार की घोषणा  
करना—कि धन्य सार्थवाह विपुल मात्रा में पणित ( विक्रय वस्तु ) को  
लेकर अहिच्छत्रा नगरी में व्यापार के लिये जाना चाहता है ( त जो  
ण देवाणुप्पिया ! चरण वा चीरिए वा चम्मखडिए वा भिच्छुडे वा  
पडुरगे वा गोयमे गोव्वइए वा गिहिधम्मचित्तए वा अविरुद्धविरुद्ध बुद्ध  
सावगरत्तपडनिग्गथप्पभिडपासडत्थे वा गिहत्थे वा धण्णेणं सत्थवा-  
हेण सद्धिं अहिच्छत्त नयरिं गच्छइ तस्म ण धण्णे सत्थवाहे अच्छत्त-  
गस्स छत्तग दलाइ ) इसलिये हे देवाणुप्रियो ! जो भी कोई धन्य सार्थ-  
वाह के साथ अहिच्छत्रा नगरी जाना चाहता हो—चाहे वह चरक हो  
चीरिक हो, चर्मखडधारी हो, भिक्षोण्ड हो, पाण्डुरङ्ग हो, गौतम हो,  
गोव्रतिक हो, गृहस्थधर्म चिन्तक हो, अविरुद्ध हो, विरुद्ध हो, वृद्ध-

इति हे धन्य सार्थवाह पुण्डर प्रमाणमा पणित ( देवाणुनी वस्तुओ ) लब्धने  
अहिच्छत्रा नामे नगरीमा वेपार जेडवा भाटे ज्जवा धिच्छे छे  
( त जो ण देवाणुप्पिया ! चरण वा चीरिए वा चम्मखडिए वा भिच्छुडे वा पडुरगे  
वा गोव्वइए वा गिहिधम्मचित्तए वा अविरुद्धविरुद्धबुद्धसावगरत्तपडनिग्गथ  
प्पभिड पासडत्थे वा गिहत्थे वा धण्णेण सत्थवाहेण सद्धिं अहिच्छत्त नयरिं गच्छइ-  
तस्स ण धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स नत्तग दलाइ )

अटवा भाटे हे देवानुप्रियो ! धन्य सार्थवाहनी साथे जे डेअर्जवा  
धिच्छतो डोय—लवे ते चरक डोय, चीरिक डोय, चर्म खडधारी डोय, भिक्षोड  
डोय, पाण्डुरग डोय, गौतम डोय, गोव्रतिक डोय, गृहस्थ धर्म चित्तक डोय,

ધોષનાસ્વરૂપમાદ્—‘ એવ સ્વલુ ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા । ધળે સત્થવાહે વિઝલં  
પણિય માયાએ ઇચ્છઈ અહિચ્છત્તે નયરિં વાણિજ્ઞાણ ગમિત્તણ  
ત જો ણં દેવાણુપ્પિયા । ચરણ વા સ્ત્રીરિણ વા ચમ્મસંહિણ  
વા મિચ્છુદે વા પહુરગે વા ગોયમે ગોઠ્ઠવઈણ વા મિહિધમ્મ-  
ચિંતણ વા અવિરુદ્ધ વિરુદ્ધબુદ્ધસાવગરત્તપહનિગ્ગથપ્પભિદ્ધપા-  
સહત્થે વા મિહત્થે વા ધળેણં સત્થવાહેણ સંઠિં અહિચ્છત્ત  
નગરિ ગચ્છઈ તસ્સ ણં ધળે સત્થવાહે અચ્છત્તગસ્સ છત્તગં  
દલાઈ અણુવાહણસ્સ ઉવાહણાઓ દલયઈ અકુડિયસ્સ કુડિય  
દલયઈ અપત્થયણસ્સ પત્થયણ દલયઈ અપમ્મેવગસ્સ પમ્મેવ  
દલયઈ અંતરાઽવિય સે પહિયસ્સ વા મગ્ગલુગ્ગસ્સ સાહેજં  
દલયઈ સુહંસુદ્ધેણ ય ણં અહિગચ્છત્ત સપાવેઈ તિક્કદ્ધુ દોચ્ચપિ  
તંચ્ચપિ ઘોસેહ ઘોસિત્તા સમ એયમાણત્તિય પચ્ચપ્પિણહ,  
તણં તે કોહુવિય પુરિસા જાવ એવ વયાસી-હદિસુણતુ ભવતો  
ચંપાનગરીવત્થઠ્ઠા વહવે ચરગા ય જાવ પચ્ચપ્પિણતિ ॥સૂ.૦૨॥

ટીકા—એવ સ્વલુ હે દેવાણુપ્પિયાઃ । ધન્ય સાર્થવાદ ત્રિપુલાન પણિતમાળાન  
‘ આયાણ ’ આદાય ઇચ્છતિ અહિચ્છત્તા નગરી ‘ વાણિજ્ઞાણ ’ વાણિજ્યાય=

‘ એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—( એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! ધળે સત્થવાહે વિઝલ પણિય  
માયાએ ઇચ્છઈ અહિચ્છત્ત નયરિં વાણિજ્ઞાણ ગમિત્તણ ) હે દેવાણુપ્પિયો !

એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ઇત્યાદિ ।

( એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! ધળે સત્થવાહે વિઝલ પણિય માયાએ ઇચ્છઈ  
અહિચ્છત્ત નયરિં વાણિજ્ઞાણ ગમિત્તણ )

હુ દેવાણુપ્પિયો ! તમે લોકો શ્રુગાટક વગેરે માર્ગોમા આ જાતની ધોષણા



अथवा ' भगलुगस्त ' भग्नरुगाय भग्नाय = त्रुटितहस्तपादाद्यवयवाय  
रुगाय = रोगाक्रान्ताय रोगग्रस्ताय वा ' साहेज्ज ' साहाय्यम् = औषधो-  
पचारादि करणरूप ददाति, तथा - सुख - सुखेन = सुखपूर्वक च तम्  
अहिच्छत्रा नगरीं ' सपावेऽ ' संप्रापयति = संप्रापयिष्यतीत्यर्थः । ' तिमट्टु ' इति  
कृत्वा एवमुच्चार्य द्वितीयमपि तृतीयमपि तार घोषयत, घोषयित्वा मम ' एय  
माणत्तिये ' एतामाज्ञप्तिकाम् = एतद्रूपा ममाज्ञा ' पच्चप्पिणह ' प्रत्यर्पयत = मद्रुक्ता  
घोषणा कृत्वा पुनर्मह्य निवेदयतेत्यर्थः । ततः खलु ते कौडुम्बिकपुरुषाः ' तथाऽस्तु-

सुहसुहेण अहिच्छत्त सपावेऽ, त्ति कट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसेह ) पद-  
घ्राण (जूता) रहित है तो जूता (पदघ्राण ) देगा जलपात्ररहित होगा उसे  
जलपात्र देगा, कलेवा (भोजन) रहित है तो कलेवा (भोजन) देगा, शम्भ  
लपाथेय पूरक द्रव्यसे रहित है तो उसे शम्भल पाथेय-भाता पूरक द्रव्य  
देगा, अर्थात् चलतेर नीच मार्गमें ही जिसका कलेवा (भोजन) समाप्त हो  
जावेगा उसे उसके योग्य द्रव्यप्रदान करेगा, मार्गके मध्यमें चलतेर यदि  
वह घोड़ेसे गिर गया होगा, अथवा पैदल चलतेर यदि वह पैर फिसल  
कर गिर गया होगा और इस तरह से उसके हाथ पैर आदि टूट गये  
होंगे तो उसकी सार समाल करेगा-रोगी की दवाई करेगा, और घड़े  
आनन्द के साथ उसे अहिच्छत्रा नगरीमें पहुँचा देगा । इस प्रकार की  
इस घोषणा को तुम लोग दो तीन बार करना । और ( घोसित्ता मम  
एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ) करके फिर हमे पीछे इसकी खबर देना  
( तएण ते कौडुम्बियपुरिसा जाव एव वयासी हदि सुणतु भवतो चपा

भगलुगस्त साहेज्ज दलयइ, सुह सुहेणं अहिच्छत्त सपावेऽ, त्ति कट्टु दोच्चपि  
तच्चपि घोसेह )

जेडा वगरने। डुशे तेने जेडा आपशे, जभवानी सगवड डुशे नडि नेने  
जभवानी सगवड करी आपशे शणन-पाथेय-पूरड द्रव्य वगरने। डुशे तेने  
शणन-पाथेय-पूरड द्रव्य आपशे ओटले के भार्गमा अधवन्थे लातु पलास  
थई गयु डुशे तेने योग्य धन आपशे भार्गमा अधवन्थे आलता आलता  
जे ते घोडा छपरवी पडी जशे अथवा पगे आलता आलता जे ते पग लपमवाथी  
पडी जशे अने तेथी तेना डुथ पग वगेरे लागी गया डुशे तो तेनी ते  
सुश्रूषा करशे-रोगनी हवा करशे अने सुणेरी तेने अहिच्छत्रा नगरीमा पडेया-  
डुशे आ रीते तमे जे त्रय वपत घोषणा डरे अने ( घोसित्ता मम एयमाण  
त्तिय पच्चप्पिणह ) घोषणा करीने अमने अमर आये।

( तएण ते कौडु वियपुरिसा जाव एव वयासी हदि सुणतु भवतो चपानयरी

“ ગૃહાશ્રમસમો ધર્મો, - ન ભૂતો ન ભવિષ્યતિ ।

પાલયતિ નરાઃ શૂન્યાઃ સ્ત્રીયા પાપણ્ડમાશ્રિતાઃ ॥ ૧ ॥ ”

इत्यभिसन्धाय तथा चिन्तितशीलः, ‘ अविरुद्धविरुद्धवृद्धमायगरक्तपटनिर्गन्ध-  
पभिडपासडत्ये वा ’ अविरुद्धविरुद्धवृद्धश्रावकरक्तपटनिर्गन्धप्रभृतिपापण्डस्यः तत्र-  
‘ अविरुद्ध ’ अविरुद्ध ‘ विरुद्ध ’ वस्त्रादशीत्यविरुद्ध = विनयवादी क्रीयावादीत्यर्थः,  
परलोकाभ्युपगमात्, ‘ विरुद्ध ’ विरुद्ध. विरुद्ध = विरुद्धवादोऽस्यास्तीति-अर्थ  
आदित्वादच, विरुद्धवादी आक्रियावादीत्यर्थः परलोमानभ्युपगमात्, ‘ वृद्धमायग ’  
वृद्धश्रावकः=ब्राह्मण, वृद्धः=वृद्धकालिको यः श्रावक. सः, भरतादिराले पूर्व  
श्रावकसत्त्वेन पश्चाद् ब्राह्मणत्वभावात्, ‘ रक्तपट ’ रक्तपट=गैरिकवस्त्रधारीपरि-  
व्राजक, ‘ निगन्धपभिड ’ निर्गन्धप्रभृति = साधुप्रभृतिरन्यः कोऽपि कपिलादि-  
पापण्डस्थो वा गृहस्थो वा, इति यदि एषु यः कोऽपि गन्धेत् तस्मै खलु धन्यः  
सार्थवाह अच्छत्रकाय=छत्ररहिताय छत्रक ददानि=दास्यतीति भावः, एव सर्वत्र  
विज्ञेयम् ‘ अणुवाहणस्स ’ अनुवाहनहे=पादत्राणरहिताय ‘ उवाहणाओ ’ उपानहौ  
ददाति, अकुण्डिकाय=जलपात्ररहिताय कुण्डिका=जलपात्र ददाति । ‘ अपत्यय-  
णस्स ’ अपत्ययदनाय शम्बलरहिताय ‘ पत्ययण ’ पत्ययदन = शम्बल ददाति ।  
‘ अपक्खेवगस्स ’ अपक्षेपकाय, प्रक्षेपकः = पूर्तिद्रव्य, तद्रहिताय मध्यमार्गे न्यून  
शम्बलाय प्रक्षेपक=शम्बलपूरक द्रव्य ददाति । ‘ अतराविय ’ अन्तराऽपि च=  
मार्गान्तरालेऽपि च ‘ से ’ तस्मै पतिताय = वाहनाद् पादादिस्खलनेन वा, वा=

શ્રાવક હો, ગૈરિકવસ્ત્રધારી પરિવ્રાજક હો, નિર્ગન્ધ હો, પાખડી હો,  
ચાહે ગૃહસ્થ હો કોઈ મી વર્ષો ન હો, ઉસકે લિયે ધન્ય સાર્થવાહ યદિ  
વહ છત્રરહિત હૈ તો છત્ર દેગા ( અણુવાહણસ્સ ઉવાહણાઓ દલયહ અ  
કુણ્ડિયસ્સ કુંડિય દલયહ અપત્યયણસ્સ પત્યયણ દલયહ અપક્ષેવગસ્સ  
પક્ષેવ દલયહ અતરાઽવિય સે પહિયસ્સ વા અગલુગ્ગસ્સ સાહેજ્જં દલયહ,

‘ અવિરુદ્ધ હોય, વિરુદ્ધ હોય, વૃદ્ધ શ્રાવક હોય, ગૈરિક વસ્ત્ર ધારી પરિવ્રાજક હોય,  
નિર્ગન્ધ હોય, પાખડી હોય અને ગૃહસ્થ હોય કોઈ પણ કેમ ન હોય તેના  
માટે જો તે છત્ર વગરનો હોય તેવાને ધન્ય સાર્થવાહ છત્ર આપશે

( અણુવાહણસ્સ ઉવાહણાઓ દલયહ, અકુણ્ડિયમ્મ કુંડિય દલયહ અપત્યયણસ્સ  
પત્યયણ દલયહ અપક્ષેવગસ્સ પક્ષેવ દલયહ અતરાઽવિય સે વા

अथना ' भगलुगसम ' भग्नरुगाय भगनाय = त्रुटितदस्तपादाद्यवयवाय  
रुगाय = रोगाक्रान्ताय रोगग्रस्ताय वा ' साहेज्ज ' साहाय्यम् = औषधो-  
पचारादि करणरूप ददाति, तथा - सुख - सुखेन = सुखपूर्वक च तम्  
अहिच्छत्रा नगरीं ' सपावेइ ' समापयति = समापयिष्यतीत्यर्थः । ' तिम्हु ' इति  
कृत्वा एवमुच्चार्य द्वितीयमपि तृतीयमपि चार घोषयत, घोषयित्वा मम ' एय  
माणत्तिये ' एतामाज्ञप्तिकाम् = एतद्रूपा ममाज्ञा ' पच्चप्पिणह ' प्रत्यर्पयत = मद्रुक्ता  
घोषणा कृत्वा पुनर्मह निवेदयतेत्यर्थः । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः ' तथाऽस्तु-

सुहसुहेण अहिच्छत्त सपावेइ, त्ति रुद्धु दोच्चपि तच्चपि घोसेह) पद-  
घ्राण (जूता) रहित है तो जूता (पदघ्राण) देगा जलपात्ररहित होगा उसे  
जलपात्र देगा, कलेवा (भोजन) रहित है तो कलेवा (भोजन) देगा, शम्भ  
लपाथेय पूरक द्रव्यसे रहित है तो उसे शम्भल पाथेय-भाता पूरक द्रव्य  
देगा, अर्थात् चलतेर ग्रीच मार्गमें ही जिसका कलेवा (भोजन) समाप्त हो  
जावेगा उसे उसके योग्य द्रव्यप्रदान करेगा, मार्गके मध्यमें चलतेर यदि  
वह घोड़ेसे गिर गया होगा, अथवा पैदल चलतेर यदि वह पैर फिसल  
कर गिर गया होगा और इस तरह से उसके हाथ पैर आदि टूट गये  
होंगे तो उसकी सार सभाल करेगा-रोगी की दवाई करेगा, और बड़े  
आनन्द के साथ उसे अहिच्छत्रा नगरीमें पहुँचा देगा । इस प्रकार की  
इस घोषणा को तुम लोग दो तीन बार करना । और ( घोसित्ता मम  
एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ) करके फिर हमे पीछे इसकी खबर देना  
( तएण ते कौटुम्बियपुरिसा जाव एव वयामी हदि सुणतु भवतो चपा

भगलुगसस साहेज्ज दलयइ, सुह सुहेण अहिच्छत्त सपावेइ, त्ति रुद्धु दोच्चपि  
तच्चपि घोसेह )

जेडा वगरने। हुशे तेने जेडा आपशे, जमवानी सगवड हुशे नडि तेने  
जमवानी सगवड करी आपशे शण-पाथेय-पूरक द्रव्य वगरने। हुशे तेने  
शणल-पाथेय-पूरक द्रव्य आपशे ओटले के मार्गमा अधवन्थे लातु जलास  
थई गयु हुशे तेने योग्य धन आपशे मार्गमा अधवन्थे आलता आलता  
जे ते घोडा उपरवी पडी जशे अथवा पगे आलता आलता जे ते पग लपमवाथी  
पडी जशे अने तेथी तेना हाथ पग वगेरे लागी गया हुशे तो तेनी ते  
सुश्रूषा करशे-रोगनी दवा करशे अने सुजेरी तेने अहिच्छत्रा नगरीमा पडोआ-  
हुशे आ रीते तमे जे त्रय वज्रत घोषणा उरो अने ( घोसित्ता मम एयमाण  
त्तिय पच्चप्पिणह ) घोषणा करीने अभने अमर आयो ।

( तएण ते कौटुम्बियपुरिसा जाव एव वयामी हदि सुणतु भवतो चपानयरी

સ્ત્યુક્ત્વા ચમ્પાનગર્યાં મૃગાટકાદિમહાપથપથેષુ સમાગમ્ય-વ્યવસાયિણુઃ-‘હદિ’  
 इत्यामन्त्रणे तेन हे लोकाः । शृण्वन्तु-भयन्तः-यत् चम्पानगरी यास्तव्या बहवः  
 ‘चरगाय जाव’ इति-चरकचीरिकादयो धन्येन सार्थवाहन सार्द्धमहिच्छत्रा नगरीं  
 गच्छन्ति तेभ्यो धन्यः सार्थवाहश्छत्रादिक सर्वं दास्यति, मार्गे च सवलितेभ्यो  
 रोगादिग्रस्तेभ्यश्च औषधोपचारादिना साहाय्य करिष्यति, सुखपूर्वकमहिच्छत्रा  
 नगरीं प्रापयिष्यति च, इत्यव-घोषयित्वा धन्यसार्थवाहाय ‘पच्चप्पिणति’  
 प्रत्यर्पयति-निवेदयन्ति ॥ सू० २ ॥

નગરીવત્યઢ્યા વહવે ચરગા ય જાવ પચ્ચપ્પિણતિ ) ઇમ પ્રકાર ધન્યસા-  
 ર્થવાહ કી'વાત કો ડન કૌટુમ્બિક પુરુષોં ને “તયાસ્તુ” કહકર સ્વીકર  
 લિયા ઓર ચપાનગરી મેં શ્રુગાટક આદિ મહાપથ પથનકે સમસ્ત માર્ગોં  
 મેં જાકર ઇસ પ્રકાર કી ઘોષણા કી, હે લોકો ! સુનો-જો કોઈ ચપા  
 નગરી કા નિવાસી ચરક આદિ જન ધન્ય સાર્થવાહ કે સાથ અહિચ્છત્રા  
 નગરી કો જાના યાહતા હો ડસકે લિયે ધન્યસાર્થવાહ છત્રાદિ સબ  
 દેગા તથા જો માર્ગ મેં પતિત હો જાવેગે અથવા રોગાક્રાંત યન જાવેગે  
 ડનકી ઔષધિ આદિ દ્વારા સહાયતા ખી કરેગા ઓર ઇસ તરહ વહ  
 ડનકે લિયે સકુશલ અહિચ્છત્રા નગરી મેં પહુંચા દેગા-ઇસ પ્રકાર  
 કી' ઘોષણા કરકે ડન લોગોં ને ઇસકી યવર ધન્ય સાર્થવાહ કે પાસ  
 મેજ દી. ગૃહસ્થ કે ઘર નિષ્પન્ન હુવ ઔદનાદિક યાચ વસ્તુઓં કા જો  
 સર્વ પ્રથમ હિસ્સા દાનકે લિયે પૃથક કર રલ લિયા જાતા હૈ, ડસ

વત્યન્વા વહવે ચરગા ય જાવ પચ્ચપ્પિણતિ )

આ રીતે ધન્ય સાર્થવાહની આજ્ઞાને તે કૌટુમ્બિક પુરુષોએ સ્વીકારી,  
 લીધી અને ચપા નગરીના શ્રુગાટક વગેરે મહાપથોમા જઈને આ રીતે તેઓએ  
 ઘોષણા કરી કે હે લોકો ! સામજો, ચપા નગરીમા રહેનાર ચરક, વગેરે ગમે  
 તે માણસ ધન્ય સાર્થવાહની સાથે અહિચ્છત્રા નગરીમા જ તેને ધન્ય  
 સાર્થવાહ છત્ર વગેરે બધું આપશે, તેમજ માર્ગમા કોઈ પડી જશે અથવા  
 તો માદો થઈ જશે તો ધન્ય સાથવાહની તેની બરોબર માવજત કરાવીને તેની  
 સહાય કરશે અને તેને સકુશળ અહિચ્છત્રા નગરીમા પહોંચાડશે આ રીતે  
 ઘોષણા કરીને તે લોકોએ ધન્ય સાર્થવાહને ઘોષણાનુ કામ પુરૂ થઈ જવાની  
 બબર આપી ગૃહસ્થને ઘેર તૈયાર કરાવેલા ભાત વગેરે ખાદ્ય વસ્તુઓનો જે  
 સૌ પહેલા દાન માટે જૂદો કરીને રાખવામા આવે છે તે ભાગને જે ભીખ  
 માગીને લઈ લાય છે તેને ચરિક કહે છે માર્ગમા પડેલા કાંટેલા વૃક્ષો, જે



હિંસે કો જો ભિક્ષા વૃત્તિ સે લે જાતેહે ઉનકા નામ ચરિક હૈ । માર્ગ  
મેં ગિરે દુષ્ટ પટેચિટે વસ્ત્ર કો લેકર જો પહિનતે હૈં ઉનકા નામ  
ચીરિક હૈ । ચમદે કો જો અપને પહિરને કે ઉપયોગ મેં લાતે હૈં વે  
ધર્મ સ્વઢિક હૈ । દુસરે કે દ્વારા લાગી ગઈ ભિક્ષા સે જો અપના નિર્વાહ  
કરતે હૈં વે ભિક્ષોણ્ડ હૈં । અપને શરીર પર જો ભસ્મ લપેટે રહતે હૈં વે  
પાંડુરગ હૈં । ચેલ કો લેકર જો દુસરોં કે ઘરોં સે અનાજ માંગતે હૈં વે  
ગૌતમ હૈ । દિલીપ રાજા કી તરહ જો ગાયકી સેવા કરને મેં લગે રહતે  
હૈં—જય વજ્ર ચેઠતી હૈ તય વે ચેઠતે હૈં—વહ સ્વહી રોતી હૈ તો વે ભી સ્વહે  
હો જાતે હૈં ઇત્યાદિ રૂપ સે ગોચર્યાનુકારી જો જન હોતે હૈં વે ગોત્રતિક  
હૈં । ગૃહસ્થ ધર્મ હી શ્રેષ્ઠ હૈ, હસ પ્રકાર માન કર જો-ઉસમેં  
રહ રહતે હૈં વે ગૃહધર્મ ચિન્તક હૈ । જૈસે-ગૃહસ્થાશ્રમ કે સમાન  
ધર્મ ન હુઆ હૈ ઓર ન આગે હોગા હી । જો શૂરવીર મનુષ્ય  
હોતે હૈં વે હી ઇસે પાલતે હૈં । પાપક ધર્મ કો પાલને વાલે મનુષ્ય શૂરવીર  
નહીં હૈં કિન્તુ વે તો કલીન-નપુસક હૈં । એસી ઇનકી માન્યતા હોતી હૈ ।  
અવિરુદ્ધ શબ્દ કા અર્થ વિરુદ્ધ નહીં રહતે હૈં સવકા સમાનરૂપ સે વિનય  
કરતે હૈં । વિરુદ્ધ શબ્દ કા અર્થ અક્રિયાવાદી હૈ । યે અક્રિયા વાદી પર-

પહેરે છે તેનું નામ ચીરિક છે ચામડાને જે વસ્ત્ર તરીકે પહેરવામા કામમા  
વે છે તે ધર્મ ખડિત છે ખીનઓ વડે લાવવામા આવેલી ભિક્ષાથી જે  
પોતાનું ઉદર પોષણ કરે છે તે ભિક્ષોણ છે પોતાના શરીર ઉપર જે રાખ ચોળે  
છે તે પાંડુરગ છે બળદને સાથે લઇને જેઓ ખીનઓના ઘરોથી અનાજ  
માગે છે તેઓ ગૌતમ કહેવાય છે રાજા દિલીપની જેમ જેઓ ગાયની સેવા  
કરવામા વ્યસ્ત રહે છે—જ્યારે ગાય બેસે છે ત્યારે તેઓ બેસે છે, જ્યારે ગાય  
ભીલી થાય છે ત્યારે તેઓ પણ બીલા થઈ જાય છે વગેરે રૂપમા જેઓ ગોચર-  
યાનુકારી જન હોય છે તેઓ ગોત્રતિક કહેવાય છે ગૃહસ્થ ધર્મજ અરેખર ઉત્તમ  
ધર્મ છે આમ ચોક્કસ પણ માનીને તેમા દત્ત ચિત્ત રહે છે તેઓ ગૃહધર્મ-  
ચિત્તક છે જેમકે—ગૃહસ્થાશ્રમ જેવો ધર્મ થયો નથી અને આગળ ભવિષ્યમા  
થવાની સલાવના પણ નથી જેઓ શૂરવીર માણસો હોય છે તેઓ જ આ  
ધર્મનું પાલન કરે છે પાપક ધર્મને પાલન કરનારા માણસો શૂરવીરો નથી  
પણ તેઓ તો નપુસક છે ગૃહસ્થીઓની આ જાતની માન્યતા હોય છે અવિરુદ્ધ  
શબ્દનો અર્થ ક્રિયાવાદી છે કેમ કે જેઓ ડોઠ પણ માણસથી વિરુદ્ધ આચરણ  
કરતા નથી તેઓ બધાની સાથે સરખી રીતે વિનયપૂર્ણ વ્યવહાર કરે છે  
વિરુદ્ધ શબ્દનો અર્થ અક્રિયાવાદી છે અક્રિયાવાદી લોકો પરલોક જેવી વસ્તુમા

શ્ત્યુક્ત્વા ચમ્પાનગરી શ્રુગાટકાદિમહાપથપથેષુ સમાગમ્ય-પુનઃચરિષુઃ- 'હરિ'   
 इत्यामन्त्रणे तेन हे लोकाः । शृणन्तु-भयन्त- यत् चम्पानगरी वास्तव्या. बहवः   
 'चरगाय जात्र' इति-चरकचीरिकादयो धन्येन सार्धवाहेन सार्द्धमहिच्छत्रां नगरीं   
 गच्छन्ति तेभ्यो धन्यः सार्धवाहश्छत्रादिक सन् । दाम्यति, मार्गे च स्तलितेभ्यो   
 रोगादिग्रस्तेभ्यश्च औषधोपचारादिना माहाग्न्य हरिष्यति, सुखपूर्वकमहिच्छत्रां   
 नगरीं प्रापयिष्यति च, इत्येव घोषयित्वा धन्यसार्धवाहाय 'पञ्चप्पिणंति'   
 प्रत्यर्पयति-निवेदयन्ति ॥ सू० ७ ॥

નગરીવંત્યન્વા વહવે ચરગા ય જાત્ર પચ્ચપ્પિણંતિ ) હમ્મ પ્રકાર ધન્યસા-   
 र्धवाह की 'वात' को उन कौटुम्भिक पुम्पों ने "तथास्तु" कहकर स्वीकर   
 लिया और चम्पानगरी में श्रुगोटक आदि महापथ पर्यंतके समस्त मार्गों   
 में जाकर इस प्रकार की घोषणा की, हे लोको ! सुनो-जो कोई चंपा   
 नगरी का निवासी चरक आदि जन धन्य सार्धवाह के साथ अहिच्छत्रा   
 नगरी को जाना चाहता हो उसके लिये धन्यसार्धवाह छत्रादि सब   
 देगा तथा जो मार्ग में पतित हो जावेंगे अथवा रोगाक्रांत बन जावेंगे   
 उनकी औषधि आदि द्वारा सहायता भी करेगा और इस तरह वह   
 उनके लिये सकुशल अहिच्छत्रा नगरी में पहुँचा देगा-इस प्रकार   
 की घोषणा करके उन लोगों ने इसकी खबर धन्य सार्धवाह के पास   
 भेज दी। गृहस्थ के घर निष्पन्न हुए औदनादिक खाद्य वस्तुओं का जो   
 सर्व प्रथम हिस्सा दानके लिये पृथक् कर रख लिया जाता है, उस

વત્યન્વા વહવે ચરગા ય જાત્ર પચ્ચપ્પિણંતિ )

આ રીતે ધન્ય સાર્ધવાહની આજ્ઞાને તે કૌટુમ્બિક પુરુષોએ સ્વીકારી   
 લીધી અને ચંપા નગરીના શ્રુગાટક વગેરે મહાપથોમા જઈને આ રીતે તેઓએ   
 ઘોષણા કરી કે હે લોકો ! સામળો, ચંપા નગરીમા રહેનાર ચરક, વગેરે ગમે   
 તે માણસ ધન્ય સાર્ધવાહની સાથે અહિચ્છત્રા નગરીમા જ તેને ધન્ય   
 સાર્ધવાહ છત્ર વગેરે બધું આપશે, તેમજ માર્ગમા ડોઈ પડી જશે અથવા   
 તો માદો થઈ જશે તો ધન્ય સાથવાહની તેની બરોબર માવજત કરાવીને તેની   
 સહાય કરશે અને તેને સકુશળ અહિચ્છત્રા નગરીમા પહોંચાડશે આ-રીતે,   
 ઘોષણા કરીને તે લોકોએ ધન્ય સાર્ધવાહને ઘોષણાનું કામ પુરૂ થઈ જવાની   
 બખર આપી ગૃહસ્થને ઘેર તૈયાર કરાયેલા ભાત વગેરે આદ્ય વસ્તુઓનો જે   
 સૌ પહેલા દાન માટે જૂદો કરીને રાખવામા આવે છે તે ભાગને જે લીખ   
 માગીને લઈ જાય છે તેને ચરિક કહે છે. માર્ગમા પડેલા ફાટેલા વસ્તુ, જે



इत्युक्त्वा चम्पानगरीं शृङ्गाटकादिमहापथपथेषु समागत्य-पञ्चमरादिषु - 'हृदि'  
 इत्यामन्त्रणे तेन हे लोकाः । शृण्वन्तु-भयन्तः-यत् चम्पानगरीं यास्त्वप्या, बहवः  
 'चरगाय जाव' इति-चरकचीरिकादयो धन्येन सार्थवाहेन सार्द्धमहिच्छत्रां नगरीं  
 गच्छन्ति तेभ्यो धन्यः सार्थवाहश्छत्रादिक सर्वं दास्यति, मार्गे च सप्रलितेभ्यो  
 रोगादिग्रैस्तेभ्यश्च औषधोपचारादिना माहाग्न्य करिष्यति, सुखपूर्वकमहिच्छत्रां  
 नगरीं प्रापयिष्यति च, इत्येव घोषयित्वा धन्यसार्थवाहाय 'पञ्चप्पिणति'  
 प्रत्युपपत्ति-निवेदयन्ति ॥ सू० २ ॥

नगरीवत्यन्वा बहवे चरगा य जाव पञ्चप्पिणति ) इस प्रकार धन्यसा-  
 र्थवाह की 'वात को उन कौटुम्बिक पुरुषों ने "तथास्तु" कहकर स्वीकर  
 लिया और चम्पानगरी में शृङ्गाटक आदि महापथ पर्यंतके समस्त मार्गों  
 में जाकर इस प्रकार की घोषणा की, हे लोको ! सुनो-जो कोई चम्पा  
 नगरी का निवासी चरक आदि जन धन्य सार्थवाह के साथ अहिच्छत्रा  
 नगरी को जाना चाहता हो उसके लिये धन्यसार्थवाह छत्रादि सब  
 देगा तथा जो मार्ग में पतित हो जावेंगे अथवा रोगाक्रान्त बन जावेंगे  
 उनकी औषधि आदि द्वारा सहायता भी करेगा और इस तरह वह  
 उनके लिये सकुशल अहिच्छत्रा नगरी में पहुँचा देगा-इस प्रकार  
 की घोषणा करके उन लोगों ने इसकी खबर धन्य सार्थवाह के पास  
 भेज दी। गृहस्थ के घर निष्पन्न हुए औदनादिक खाद्य वस्तुओं का जो  
 सर्व प्रथम हिस्सा दानके लिये पृथक् कर रख लिया जाता है, उस

वत्यन्वा बहवे चरगा य जाव पञ्चप्पिणति )

आ रीते धन्य सार्थवाहनी आशाने ते कौटुम्बिक पुरुषोऽपि स्वीकारी -  
 लीधी अने चम्पा नगरीना शृङ्गाटक वगेरे महापथोभा जधने आ रीते तेज्जोऽपि  
 घोषणा करी के डे दोके । सामणो, चम्पा नगरीमा रडेनार चरक, वगेरे गमे,  
 ते भाणुस धन्य सार्थवाहनी साथे अहिच्छत्रा नगरीमा ज तेने धन्य-  
 सार्थवाह छत्र वगेरे जधु आपसे, तेमज मार्गमा केध पडी जशे अथवा  
 तो माहो, थध जशे तो धन्य साथवाहनी तेनी अशेअर मावजत करावीने तेनी,  
 सहाय, करशे अने तेने सकुशल अहिच्छत्रा नगरीमा पहुँचाइशे आ-रीते,  
 घोषणा करीने ते लोकेशे धन्य सार्थवाहने घोषणु काम पुइ थध जवानी  
 अणर आपी गृहस्थने घर तैयार करायेला लात वगेरे आध वस्तुओने ज  
 सो पडेला दान भाटे जूहो करीने । राधवाभा आवे छे ते लागने जे लीअ  
 भागीने लध, जय छे तेने अणिक कडे छे । मार्गमा पडेला शेटेला, वओ, जे



जणवय मज्झ मज्झेणं जेणेव देसग्गं तेणेव उवागच्छइ उवा-  
गच्छित्ता सगडीसागड मोयावेइ मोयावित्ता सत्थणिवेस करेइ  
करित्ता कोडुवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एव वयासी-तुब्भे णं  
देवाणुप्पिया। मम सत्थनिवेससि महया महया सदेणं उग्घोसेमाणा  
२ एव वयह-एवं खलु देवाणुप्पिया । इमीसे आगमियाए  
छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए बहुमज्झदेसभाए वहवे  
णंदिफला नाम रुक्खा पन्नत्ता किण्हा जाव पत्तिया पुप्फिया  
फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अईव अईव उवसोभेमाणा  
चिट्ठाति मणुण्णावन्नेणं४ जाव मणुन्ना फासेणं मणुन्ना छायाए,  
त जो णं देवाणुप्पिया । तेसि नदिफलाण मूलाणि वा । कद०  
तय० पत्त० पुप्फ० फल० वीयाणि वा हरियाणि वा आहारेइ  
छायाए वा वीसमइ तस्स णं आवाए भद्दए भवइ तओ पच्छा  
परिणममाणा२ अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेति, तं माणं  
देवाणुप्पिया । वेइ तेसि नदिफलाणं मूलाणि वा जाव छायाए  
वा वीसमउ, मा णं सेऽवि अकाले चेव जीवियाओ ववरो-  
विज्जिस्सइ, तुब्भेणं देवाणुप्पिया । अन्नेसि रुक्खाण मूलाणि-  
य जाव हरियाणि य आहारेह छायासु वीसमहत्ति घोसणं  
घोसेह जाव पच्चप्पिणत्ति, तएण से धण्णे सत्थवाहे सगडी-  
सागड जोएइ२ जेणेव नदिफला रुक्खा तेणेव उवागच्छइ  
उवागच्छित्ता तेसि नदिफलाण अदूरसामने सत्थणिवेस करेइ  
करित्ता दोच्चपि तच्चपि कोडुवियपरिसे मदावेइ मदावित्ता

મૂળ-તણં તેસિં કોડુવિય પુરિમાણ અતિણ ઇયમદ્દ  
 સોચ્ચા ણિસમ્મચંપાનયરી વત્થવા વહેવે ચરગા ય જાવ ગિહત્થા  
 ય જેણેવ ધણે સત્થવાહે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ તણં સે ધણે  
 સત્થવાહે તેસિં ચરમાણ ય જાવ ગિહત્થાણ ય અચ્છત્તગસ્સ  
 છત્ત' દલયઇ જાવ પત્થય ણ દલાઇ દલઇત્તા એવ વયાસી-  
 ગચ્છહે ણં તુભ્મે દેવાણુપ્પિયા । ચપાણ નયરીણ વહિયા અંગુ-  
 જાણંસિ સમ પહિવાલેમાણા ચિટ્ટહ, તણં તે ચરગા ય જાવ  
 ગિહત્થા ય ધણેણં સત્થવાહેણં એવ તુત્તા સમાણા જાવ ચિટ્ટતિ,  
 તણં ધણે સત્થવાહે સોહણસિ તિહિકરણનમ્મલ્લત્તસિ વિઝલ  
 અસણં ૪ ઉવવલ્લહાવેઇ ઉવમ્મલ્લહાવિત્તા મિત્તનાઇં આમતેઇ  
 આમંતિત્તા ભોયણં ભોયાવેઇ ભોયાવિત્તા આપુચ્છઇ આપુચ્છિત્તા  
 સગહીસાગહ જોયાવેઇ જોયાવિત્તા ચપાનગરીઓ નિગ્ગચ્છઇ  
 નિગ્ગચ્છિત્તા ચરગા ય જાવ ગિહત્થા ય સદ્ધિ ઘેત્તૂણ ણાઇવિ  
 પ્પઇદ્દેહિં અદ્ધાણેહિ વસમાણેર સુહેહિ વસહિ પાયરાસેહિ અંગં

લોક નહીં માનતે હૈં । વૃદ્ધશ્રાવક-બ્રાહ્મણ-અર્થ કા વાચક હૈ । વયોં કિ  
 યે પહિલે ભરત ચક્રવર્તીં કે સમય મેં શ્રાવક થે-પશ્ચાત્ બ્રાહ્મણ બન  
 ગયે इसलिये “ वृद्धकालिको यः श्रावकः ” इस व्युत्पत्ति के अनुसार  
 वृद्धश्रावक शब्द ब्राह्मण अर्थ का वाची बन जाता है । बाकी अवशिष्ट  
 शब्दों का अर्थ स्पष्ट है ॥ सू० २ ॥

વિશ્વાસ કરતા જ નથી વૃદ્ધ શ્રાવક-બ્રાહ્મણ અર્થને સ્પષ્ટ કરે છે કેમ કે એઓ  
 પહેલા ભરત ચક્રવર્તીના વખતે શ્રાવક હતા ત્યાર પછી એઓ બ્રાહ્મણ થઈ  
 ગયા એટલા માટે ‘ વૃદ્ધ કાલિકો ય શ્રાવક સ્વ વૃદ્ધ શ્રાવક ’ આ વ્યુત્પત્તિ  
 મુજબ વૃદ્ધ શ્રાવક શબ્દ બ્રાહ્મણ અર્થનો વાચક થઈ જાય છે બીજા શેષ  
 શબ્દોના અર્થ તો સ્પષ્ટ જ છે ॥ સૂત્ર “ ૨ ” ॥

निगंथी वा जाव पव्वइए पचसु कामगुणेषु सज्जेइ सज्जित्तो  
जाव अणुपरियद्विस्सइ जहा वा ते पुरिसा ॥ सू० ३ ॥

टीका—‘तएण तेसि’ इत्यादि । तत खलु तेषा कौटुम्बिकपुरुषाणा-  
मन्तिके एतमर्थ=पूर्वोक्तमद्विच्छाननगरीगमनार्थघोषणारूपं भाव श्रुत्या=कर्ण-  
विषयोक्त्य, निशम्य=हृद्यन्वायं चम्पानगरी गन्तव्या अद्विच्छाननगरीगन्तुकामा  
बह्वथरकाश्च यावद् गृहस्थाश्च यत्रैव धन्य सार्थवाह-स्तत्रैवोपागच्छन्ति । ततः  
खलु स धन्यः सार्थवाहस्तेषा चरकाणां च यावद् गृहस्थानां च मये अन्तत्रकाय-  
छत्रं ददाति यावत् पव्वदन=गम्यन् ददाति, एवमवादीत्=कथयति गच्छत खलु  
युय हे देवानुप्पिया । चम्पाया नगर्यां गहि ‘अग्गुज्जाणमि’ अग्रयोद्याने भा  
‘पडिवालेमाण्णा’ प्रतिपात्यन्त =प्रतीक्षमाणास्तिष्ठत । ततः खलु ते चरकाश्च=

—तएण तेसि इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तेसि कौटुम्बिकपुरिसाण अति ए एयमद्व  
सोच्चा णिसम्म चपानगरी वत्थव्वा वहवे चरगाय जाव गिहत्था य जेणेव  
धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति ) उन कौटुम्बिक पुरुषों के मुखों से  
इस घोषणारूप अर्थ को सुनकर और उसे हृदय में धारणकर चंपा  
नगरी निवासी अनेक चरक से लेकर गृहस्थ पर्यंत मनुष्य जहाँ धन्य  
सार्थवाहक था वहाँ आये ( तएण से धण्णे सत्थवाहे तेसि चरगाणं य  
जाव गिहत्थाण अन्तत्तगस्स छत्त दलय जाव पत्थयण दलाइ दलइत्ता  
एव वयामी-गच्छह ण तुम्हे देवानुप्पिया । चम्पाए नगरीए गहिवा अ-  
ग्गुज्जाणसि मम पडिवाले माणा चिद्धेह ) इसके बाद धन्य सार्थवाह

‘तएण तेसि’ इत्यादि ।

टीकार्थ—( तएण ) त्थार पछी

( तेसि कौटुम्बिक पुरिसाण अति ए एयमद्व सोच्चा णिसम्म चपानगरी वत्थव्वा  
वहवे चरगाय जाव गिहत्था य जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति )—

ते कौटुम्बिक पुरुषोन्ना भुज्जथी आ घोषणा-इय अथने-साक्षीने अने  
तेने हृदयमा धारय करीने य पा नगरीना धणा अरकथी भाडीने गृहस्थ सुधीना  
अथा भाणुसो ज्या धन्य सार्थवाह इता त्था आव्या

( तएण से धण्णे सत्थवाहे तेसि चरगाणं य जाव गिहत्थाण अन्तत्तगस्स  
छत्त दलयड, जाव पत्थयण दलाइ, दलइत्ता एव वयामी-गच्छह ण तुम्हे देवानु-

१ एव वयासो-तुच्चेणं देवाणुप्पिया ।-मम सत्यनिवसंति महया  
 २ महया सहेणं उग्घोसेमाणा २ एव वयह-एणं देवाणुप्पिया ।  
 ३ ते णंदिफला रुक्खा किण्हा जाव मणुन्ना छायाए त जो णं  
 ४ देवाणुप्पिया ।-एएसिं णदिफलाण रुक्खाणः मूलाणि वा कंदं  
 ५ पुष्पं तयं पत्तं फलं जाव-अकाले चेव-जीवियाओ ववरो-  
 ६ वेइ, त-माणं तुच्चे जाव दूरे दूरेणं परिहरमाणा वीसमह, मा  
 ७ ण-अकाले-चेव जीवियाओ ववरोविस्सइ, अन्नेसिं रुक्खाण  
 ८ मूलाणि य-जाव वीसमहत्तिकट्टु घोसणं जाव पच्चप्पिणति, तरथ  
 ९ णं अप्पेगइया पुरिसा धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्टु सदहति  
 १० पत्तियंति रोयति एयनट्टु सदहमाणा ३ तेसिं नंदिफलाणं ० दूरं  
 ११ दूरेण परिहरमाणा २ अन्नेसिं रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमति  
 १२ तेसिं णं आवाए-नो-भदए-भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा २  
 १३ सुहरुवत्ताए भुज्जो २ परिणमति, एवामेव समणाउसो । जो  
 १४ अम्ह निगंथो निगंथी वा जाव पच्चसु कामगुणेसु नो सज्जेइ नो  
 १५ रज्जेइ से णं इहभवे चेव वहुणं समणाणं अच्चणिज्जे ५ पिरलोए  
 १६ नो आगच्छइ जाव वीइवइस्सइ, जहा य ते पुरिसा तत्थ णं  
 १७ अप्पेगइया पुरिसा धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्टु नो सदहति ३  
 १८ धणस्स एयमट्टु असदहमाणा ३ जेणेव ते नदिफला तेणेव  
 १९ उवागच्छति-उवागच्छिता तेसिं नदिफलाण मूलाणि य जाव  
 २० वीसमति तेसिं ण आवाए-भदए-भवइ तओ पच्छा परिणममाणा  
 २१ जाव-ववरोवेति, एवामेव समणाउसो । जो अम्ह



सिगंथी वा जाव पव्वइए पचसु कामगुणेषु सज्जेइ सज्जित्तो  
जाव अणुपरियट्ठिस्सइ जहा वा ते पुरिसा ॥ सू० ३ ॥

टीका—‘तएण तेसि’ इत्यादि । ततः खलु तेषां कौटुम्बिकपुरुषाणा-  
मन्तिके एतमर्थं=पूर्वोक्तमहिच्छत्रानगरीगमनार्थघोषणारूप भावः श्रुत्वा=कर्ण-  
विषयोक्त्य, निशम्य=हृद्यन्वयार्थं चम्पानगरी गन्तव्या अहिच्छत्रानगरीगन्तुकामा  
बहवश्चरकाश्च यावद् गृहस्थाश्च यत्रैव धन्य सार्थवाह-स्त्रैवोपागच्छन्ति । ततः  
खलु स धन्यः सार्थवाहस्तेषां चरकाणां च यावद् गृहस्थानां च मये अच्छत्रकाय-  
छत्रं ददाति यावत् पञ्चदश=शम्भल ददाति, एवमवादीत्=कथयति गच्छत खलु  
युय हे देवानुप्रिया ! चम्पाया नगर्यां वहि ‘अग्गज्जाणमि’ अग्रयोधाने मां  
‘पडिवालेमाणा’ प्रतिपाद्यन्तः=प्रतीक्षमाणास्तिष्ठन्तः । ततः खलु ते चरकाश्च=

—तएण तेसि इत्यादिः—

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तेसि कौटुम्बिकपुरिसाण अति ए एयमद्व  
सोच्चा णिसम्म चपानगरी वत्थव्वा वहवे चरगाय जाव गित्था य जेणेव  
धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छन्ति ) उन कौटुम्बिक पुरुषों के मुखों से  
इस घोषणारूप अर्थ को सुनकर और उसे हृदय में धारण कर चंपी  
नगरी निवासी अनेक चरक से लेकर गृहस्थ पर्यंत मनुष्य जहां धन्य  
सार्थवाहक था वहां आये (तएण से धण्णे सत्थवाहे तेसि चरगाण य  
जाव गित्थाण अच्छत्तगस्स छत्त दलइ जाव पत्थयण दलाउ दलइत्ता  
एव वयासी-गच्छइ ण तुम्हे देवाणुप्पिया । चपाए नयरीए बाहिया अ-  
ग्गज्जाणसि मम पडिवाले माणा चिहेह ) इसके बाद धन्य सार्थवाह

‘तएण तेसि’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्थार पछी

(तेसि कौटुम्बिक पुरिसाण अति ए एयमद्व सोच्चा णिसम्म चंपानगरी वत्थव्वा  
वहवे चरगाय जाव गित्था य जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छन्ति )—

ते कौटुम्बिक पुरुषोन्मा मुञ्जथी आ-घोषणा ३५ अर्थने-साधुजीने अने  
तेने हृदयमा धारय करीने य पा नगरीना धणु चरकथी भाडीने गृहस्थ सुधीना  
अधा भाणुसे न्या धन्य सार्थवाह छत्ता त्या आव्या

(तएण से धण्णे सत्थवाहे तेसि चरगाण य जाव गित्थाण अच्छत्तगस्स  
छत्त दलयइ, जाव पत्थयण दलाइ, दलइत्ता एव वयासी-गच्छइ ण तुम्हे देवाणु-  
प्पिया) चपाए नयरीए बाहिया अग्गज्जाणसि मम पडिवालेमाणा चिहेह )

ચરકાદયો યાવદ્ ગૃહસ્થા ધન્યેન સાર્થવાહેન-પ્રમુક્તા સન્નઃ 'જાવ' યાવદ્-  
ધન્ય સાર્થવાહ પ્રતીક્ષમાણાસ્તિષ્ઠતિ । તત્ સ્વલુ ધન્યઃ સાર્થવાહ શોભને તિથિ  
કરણનક્ષત્રે=શુભદિવસે વિપુલમશનાદિક ચતુર્વિધાહારમ્ ઉપસ્કારયતિ=નિષ્પાદયતિ  
ઉપસ્કાર્ય મિત્રજ્ઞાતિસ્વજનસમ્યન્ધિપરિજનાન્ આમન્ત્રયતિ, ભોજન ભોજયતિ=કાર

ને ઉન ચરક આદિ સે લેખર ગૃહસ્થ પર્યન્ત કે મનુષ્યોં મેં જિસકે પાસ  
છત્તા આદિ નહીં યા ઉસે છત્તા દિયા યાવત્ જિસ કે પાસ કલેવા નહીં  
થા ઉસકો કલેવા-માર્ગ ભોજન-દિયા । યાદ મેં ઇસને ઉન સયસે કહા  
હે દેવાનુપ્રિયોં ! તુમ યહાં સે ચલો ઓર મુખ્ય ઉદ્યાન મેં મેરી પ્રતીક્ષા  
કરતે હુએ ટહરે રહો-(તણ તે ચરગાય જાવ ગિહત્યા ય ધળેણ સત્ય  
વાહેણ એવ વુત્તા સમાણા જાવ ચિદ્ધતિ, તણ ધળે સત્યવાહે સોહણસિ  
તિહિકરણનક્ષત્તસિ વિઝલ અસણ ૪ ઉવક્ષ્વડાવેહ, ઉવક્ષ્વડાવિત્તા  
મિત્તનાહ૦ આમતેહ, આમતિત્તા ભોયણ ભોયાવેહ, ભોયાવિત્તા આપુ  
ચ્છહ, આપુચ્છિત્તા સગડીસગડ જોયાવેહ, જોયાવિત્તા ચંપાનગરીઓ  
નિગ્ગચ્છહ ) ઇંસ પ્રકાર ધન્યસાર્થવાહ કે દ્વારા કહે ગયે વે ચરકાદિ  
ગૃહસ્થ પર્યન્ત સમસ્તજન વહા સે ચલકર મુખ્ય ઉદ્યાન મેં ગયે-ઓર  
ધન્યસાર્થવાહ કી પ્રતીક્ષા કરતે હુએ વહાં ટહર ગયે । ધન્યસાર્થવાહ ને  
શુભ તિથિ, કરણ, એવ નક્ષત્ર મેં વિપુલ માત્રા મેં અશન આદિ રૂપ  
ચારોં પ્રકાર કા આહાર નિષ્પન્ન કરવાયા । જય આહાર નિષ્પન્ન હો

ત્યાર પછી ધન્ય સાર્થવાહે તેઓ ચરક વગેરેથી માડીને ગૃહસ્થ મુખીના  
બધા માણસોમાથી જેની પાસે છત્રી વગેરે ન હતી તેને છત્રી વગેરે અને  
જેની-પાસે માર્ગ માટેનું ભોજન ન હતું તેને ભોજન આપ્યું ત્યાર બાદ  
તેણે બધા ને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે અહીંથી મુખ્ય ઉદ્યાનમાં જાઓ  
અને ત્યાં મારી પ્રતીક્ષા કરો.

( તણ તે ચરગાય જાવ ગિહત્યાય ધળેણ સત્યવાહે ણ એવ વુત્તા સમાણા  
જાવ ચિદ્ધતિ, તણ ધળે સત્યવાહે સોહણસિ તિહિકરણનક્ષત્તસિ વિઝલ  
અસણ ૪ ઉવક્ષ્વડાવેહ, ઉવક્ષ્વડાવિત્તા મિત્તનાહ આમતેહ, આમતિત્તા ભોયણ  
ભોયાવેહ, ભોયાવિત્તા આપુચ્છહ, આપુચ્છિત્તા સગડીસગડ જોયાવેહ, જોયાવિત્તા  
ચંપાનગરીઓ નિગ્ગચ્છહ )

આ રીતે ધન્ય સાર્થવાહ વડે આજ્ઞાપિત થયેલા ચરક ગૃહસ્થ વગેરે  
બધા માણસો ત્યાંથી મુખ્ય ઉદ્યાનમાં ગયા અને ધન્ય સાર્થવાહની રાહ જોતા  
તેઓ ત્યાં જ રોકાયા ધન્ય સાર્થવાહે શુભ તિથિ, કરણ, અને  
પચ્છણ પ્રમાણમાં અશન વગેરે રૂપ ચારે જાતના આહારો

पति, भोजयित्वा आपुच्छद् ' आपृच्छति=विदेशगमनार्थमाज्ञा प्रार्थयति, आपु-  
च्छद्=आज्ञा प्राप्य शकटीशाकटं योजयति, योजयित्वा चम्पा नगरीतो निर्ग-  
च्छति=निस्सरति, निर्गत्य चरकान् यावत् गृहस्थांश्च सार्द्धं गृहीत्वा 'नाद्विष्पगिद्वेहि'  
नाद्विष्पकृष्टेषु=नातिदूरेषु यथोचितेषु 'अद्वाणेहि' अध्वसु=मार्गेषु 'वसमाणे २'  
वसन्-वसन् स्थाने स्थाने निवासं कुर्वन् 'सुहेहि' शुभैः=प्रशस्तैः 'वसहिपायरा-  
सेहि' वसतिमातराशैः=निवासस्थाने प्रातःकालीनलघुभोजनैः सह अद्भजन-  
पदस्य=अद्भदेशस्य मध्य-मध्येन यत्रैव 'देसग्ग' देशाग्न्य=अद्भदेशसीमा वर्तते  
तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य शकटीशाकटं मोचयति, मोचयित्वा 'सत्थनिवेस'  
सार्थनिवेशं करोति, कृत्वा कौटुम्भिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति शब्दयित्वा=  
आह्वय एवमवादीत्—"हे देवानुपियाः ! यूयं खलु मम सार्थनिवेशे महता-महता  
शब्देन=उच्चस्वरेण उद्घोषयन्तः=सन्तः एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण वदत=कथयत-

शुका-तत्र उसने अपने मित्र, ज्ञाति आदि परिजनोको आमंत्रित किया।  
आमंत्रित करके फिर उन सबको उसने उस चतुर्विध आहारको भोजन  
कराया भोजन कराके फिर उन सबसे परदेश गमन करने की उसने  
आज्ञा मांगी। आज्ञा प्राप्त करके उसने गाड़ी और गाड़ों को जुनवाया  
जुनवा कर फिर वह चंपा नगरी से बाहिर निकला। चरकादि गृहस्थ  
पर्यन्त समस्त जन को अपने साथ में ले लिया—(निगच्छित्ता चरगाय  
जाव गिहत्थाय सद्धिं चेतूण णाद्विष्पगिद्वेहि अद्वाणेणि वसमाणे २  
सुहेहि वसहिपायरासेहि अग जणवय मज्झ मज्झेण जेणेव देसग्ग  
तेणेव उवागच्छद्, उवागच्छित्ता सगडीसागड मोयावेद् मोयावित्ता  
सत्थनिवेस करेद् करित्ता कौटुम्भियपुरिसे सदावेद् सदावित्ता एवं  
वधासी — तुवमेण देवाणुपिया ! मम सत्थनिवेससि महया २

आह्वारे तैयार थर्छ गया त्थारे तेले पोताना मित्र, ज्ञाति वगेरे परिजनोने  
आमंत्रित कया आमंत्रित करीने तेले णधाने थारे ज्ञानता आह्वारे जमाडथा  
त्थार पछी तेले सौनी पासैथी परदेश जवानी आज्ञा मागी आम तेले  
णधानी पासैथी आज्ञा भेजवीने गाडी तेमज गाडाओ जेताराव्या अने त्थार  
पछी ते चंपा नगरी थी णडार नीज्यो तेले उग्रानमा राड जेनारा णधा  
थरड गृहस्थ वगेरे भाणुसोने पणु साथे लई लीधा डता

(निगच्छित्ता चरगाय जाव गिहत्थाय सद्धिं चेतूण णाद्विष्पगिद्वेहि  
अद्वाणेहि वसमाणे २ सुहेहि वसहिपायरासेहि अग जणवय मज्झ मज्झेण  
जेणेव देसग्ग तेणेव उवागच्छद्, उवागच्छित्ता सगडीसागड मोयावेद्,  
मोयावित्ता मन्थनिवेस करेद् करित्ता कौटुम्भियपुरिसे सदावेद्, सदावित्ता

एव खलु हे देवानुप्रिया ! ' इमीसे ' अस्याः ' अगामियाण ' = ग्रामरहितायाः  
 ' छिन्नावायाए ' छिन्नपातायाः ' त्रिज ' आपातो = जनसञ्चारे यत्र सा, तस्या  
 जनसञ्चाररहितायाः ' दीहमद्वाए ' दीर्घाया - दीर्घः = बहुकाठम्यः अद्वा =  
 मार्गो यत्र सा, तस्याः - चिरकालरुहनीयाया, एतादृश्या अट्ट्या ' बहुमध्यदेश-  
 भागे = अतिमध्यभागे, ' एत्थ ण ' अत्र खलु बहवो नदिफलानामट्टाः मङ्गलाः =  
 लोकैः कथिताः । कीदृशास्ते ? इत्याह - ' किण्हा ' इत्यादि = कृष्णाः = कृष्णवर्णाः,  
 कृष्णावभासाः = अतिनीलत्वेन कृष्णच्छटावम्बनाः यावत् - नीलादिवर्णयुक्ताः,

-सहेण उग्धोसेमाणार एव वयह-एव खलु देवानुप्रिया ! इमीसे अगा  
 मियाए छिन्नावायाए दीहमद्वाए अडवीए बहुमज्झदेसभाए बहवे णदिफ  
 लानाम रुक्खा पन्नत्ता किण्हा जाव पत्तिगा, पुष्पिका, फलिया हरियगरेरि  
 ज्जमाणा सिरीए अईवर उवसोभेमाणा चिट्ठति) निकल कर नाति विप्र  
 कृष्ट-यथोचित-मार्गोंमें ठहरता २ और वहाँ २ प्रातः कालीन कलेचा करता  
 हुआ वह जहा अगदेश की सीमा थी वहा पर आया । वहाँ आकर के  
 उसने अपने शकटी शकटों को ढील दिया और ढील करके फिर अपने  
 सार्थ को ठहरा दिया । ठहरा देने के बाद फिर उसने अपने कौटुम्बिक  
 पुरुषों को बुलाया-और उनसे इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! तुम  
 लोग हमारे सार्थनिवेश में बड़े जोर २ से घोषणा करते हुए ऐसा कहो  
 कि-हे देवानुप्रियो ! सुनो जन सचार रहित दीर्घ मार्ग वाली इस आगे  
 की अटवी के मध्यभाग में लोग कहते हैं कि अनेक नदीफल नाम के

एव वयासी - तुम्हेण देवानुप्रिया ! मम सत्थ निवेससि महया २  
 सहेण उग्धोसेमाणा २ एव वयह-एव खलु देवानुप्रिया ! इमीसे अगामियाए  
 छिन्नावायाए दीहमद्वाए अडवीए बहुमज्झदेसभाए बहवे णदिफलानाम रुक्खा  
 पन्नत्ता किण्हा जाव पत्तिगा, पुष्पिका फलिया, हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए  
 अईवर उवसोभेमाणा चिट्ठति )

१२ - त्याची स्वाना थधने ते भार्गवा यथास्थाने नलुक नलुकना स्थणो उपर  
 विश्राम करतो अने त्या सवार थता जलपान ( नास्ते ) वगेरे करतो ते  
 अगदेशनी डड उपर पडोव्यो त्या पडोव्यीने तेले गाडी अने गाडाओने  
 छोडी भूक्या अने त्या पोताना सार्थने रोक्यो रोक्या पछी तेले पोताना  
 इन्हीदु गिक पुरुषोने जोलाव्या अने जोलावीने तेओने आ प्रमाणे कहु-हे हे  
 देवानुप्रियो ! आभारा सार्थ सनिवेशमा तमे लोडे मोटेथी आ प्रमाणेनी  
 घोषणा करता कडे के हे देवानुप्रियो ! साजणो ! डवे आगण आवतार  
 साजा भार्गवाणा निज न वनमा लोडे ओम कडे छे के तेमा धव्या नदिक्ष



તથા—‘પત્તિયા’ પત્રિતા=પત્રવહુલા, ‘પુષ્પિયા’ પુષ્પિતા=પુષ્પવહુલા,  
‘ફલિયા’ ફલિતા=ફલવહુલા ‘હરિયગરેરિઞ્જમાગા’ હરિતકરારઙ્ગમાના=  
‘હરિતકેન=હરિતવર્ણેન’ મૃદા શોભમાના ‘સિરીષ’ ત્રિયા=હરિતપલ્લવાદિશોભયા  
અતીગતીવ ઉગ્રશોભમાનાસ્તિષ્ઠન્તિ=વર્તન્તે । પુન કીદગાસ્તે ‘ઇત્યાહ—મનોજ્ઞા—  
વર્ણેન, ‘જાવ’ યાવત્—ગન્તેન, રસેન સ્પર્શેન, મનોજ્ઞાઽઞાયયા, રમ્યવર્ણાદિના  
રમ્ય ઞાયયા ચ યુક્તા ઇત્યર્થ, ‘ત’ તત્=તસ્માત્ નન્દિદૃશ્યાણા સૌન્દર્યાદિકારણ-  
પ્રેરણાત્ ‘જોળ’ યઃ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિયા ! તેષા નન્દિફલાના=નન્દિફલાભિધાના  
દૃશ્યાણા મૂલાનિ વા કન્દાનિ વા ત્વચો વા, પત્રાણિ વા, પુષ્પાણિ વા, ફલોનિ વા,  
બીજાનિ વા, હરિતાનિ વા ‘આહારેઢ’ આહારયતિ, તેષા ઞાયયા વા ‘વીસ-  
મઃ’ વિશ્રામ્યતિ તસ્ય સ્વલુ આયાણ’ આપાતે=પૂર્વે ભયણાદિ સમયે ‘મદ્દણ’

વૃક્ષ હૈં । યે વૃક્ષ કૃષ્ણ વર્ણવાલે હૈં ઓર દેખને પર મી અતિ હરિત હોને  
કે કારણ કૃષ્ણ હી પ્રતીત હોતે હૈં । પત્ર, પુષ્પ ંવ ફલોં સે વે યુક્ત હૈં ।  
વે હરિત વર્ણસે વહે સુહાવને લગતે હ । ઉનકે પલ્લવ આદિ નવ હરે ર  
હૈં । હમસે ઉન કી શોભા વહી નીરાલી પની દૃઢ હૈં । (મણુણા વન્નેણ  
જાવ મણુન્ના ફાસેણ મણુન્ના ડાયાણ, ત જો ણ દેવાણુપ્પિયા ! તેમિ  
નદિફલાણ રુક્ષવાણ મૂલાણિવા કદં તયં પત્તં પુષ્કં ફલં વીયાણિ  
વા હરિયાણિ વા આહારેઢ, ડાયાણ વા વીસમઃ, તસ્સ ણં ઓવાણ મદ્દણ  
ભવઢ, તઓ પચ્છા પરિણમમાણા ૨ આકાલે ચેવ જોવિયાઓ વવરી  
વેતિ ) વર્ણ, રસ, ગંધ ંવ સ્પર્શ સે વે વહે મનોજ્ઞ હૈં । ઞાયયા મી ઉનકી  
પટી મનોજ્ઞ હૈં । હમ્ લિયે હે દેવાનુપ્રિયો ! જો કોઈ ઉન કી સુંદરતા  
આદિ કારણ કે વશસે આકૃષ્ટ હોકર ડન નદિફલ વૃક્ષોં કે મૂલોં કો  
કટોં કો છાલોં કો, પત્રોં કો, ફલોં કો વીજોં કો અથવા હરિત અકુરોં

નામે વૃક્ષો છે તે વૃક્ષો કૃષ્ણ વર્ણવાળા છે અને ખૂબજ લીલા હોવાથી કૃષ્ણ  
વર્ણના જેવા જ લાગે છે પત્રો, પુષ્પો અને ફળોથી તેઓ સમૃદ્ધ છે લીલા  
છમ હોવાથી તેઓ અત્યંત સુંદર લાગે છે તેમના પત્રો વગેરે બધા લીલા  
છે તેથી તેમની શોભા એકદમ અનોખી છે

( મણુણા વન્નેણ જાવ મણુન્ના ફાસેણ મણુન્ના ડાયાણ ત જો ણ દેવાણુ-  
પ્પિયા ! તેમિ નદિફલાણ રુક્ષવાણ મૂલાણિ વા કદં તયં પત્તં પુષ્કં ફલં  
વીયાણિ, વા હરિયાણિ વા આહારેઢ, ડાયાણ વા વીસમઃ તસ્સ ણં ઓવાણ મદ્દણ  
ભવઢ, તઓ પચ્છા પરિણમમાણા ૨ અઠાઠે ચેવ જોવિયાઓ વવરીવેતિ )

વર્ણ, રસ, ગંધ અને સ્પર્શથી તેઓ ખૂબજ મનોજ્ઞ છે ઞાયડો પણ  
તેઓનો અત્યંત મનોજ્ઞ છે એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! કોઈ પણ માણસ  
તેમની સુંદરતા વગેરે કારણોથી આકર્ષાઈને તે નન્દિફળ વૃક્ષોના મૂળોને, કદોને  
છાલને પાહડાઓને, પુષ્પોને, બિયાઓને અથવા તેા લીલી કૃષ્ણોને આશ્રે હે

યુય, સ્વલુ હે દેવાનુપિયા. । મમ સાર્થનિવેશે મહતા-મહતા શબ્દન ઉદ્ઘોષયન્તઃ ૨  
 એવં વદત-“ એતે સ્વલુ હે દેવાનુપિયાઃ । તે ઇમો નન્દિફલાગ્રસાઃ યદ્યપિ, પૂર્વમ્  
 પદિષ્ટમ્ કૃષ્ણા યાત્-મનોજાગ્રયા, તદ્ યો સ્વલુ હે દેવાનુપિયાઃ । એતેષા  
 નન્દિફલાના વૃક્ષાણા મૂલાનિ ચા કન્દાનિ ચા પુષ્પાણિ ચા, ત્વયો વા, પત્રાણિ ચા,  
 ફલ્લાનિ ચા, યાત્-તાનિ મૂલકન્દાદીનિ ત જીવિતાન્ વ્યપરોપયન્તિ, તત્ મા  
 સ્વલુ યુય ‘ જાત્ ’ યાત્-તેષા મૂલકન્દાદીનિ મા આહારયત, મા ચ તેષા છાયાસુ  
 વિશ્રામ્યત કિન્તુ તાન દૂર-દૂરેણ=દૂરત યત્ ‘ પરિહરમાણા ’ પરિહરન્ત =વર્જયન્ત

ત્રીન વાર ઘુલાયા-ઘુલાકર ઉસને એસા કહા-હે દેવાનુપિયા । તુમ મેરે  
 સાર્થ નિવેશ મેં જાકર જોર ૨ સે એમી ઘોષણા કરો-કિ હે દેવાનુપિયો  
 જિન નદિફલ વૃક્ષોં કે વિષય મેં પહિલે સૂચના દી ગઈ હૈ-વે યેહી  
 કૃષ્ણ યાવત છાયા સે મનોજ નદિફલ વૃક્ષ હૈ । ત જો જ દેવાનુપિયા ।  
 એસિં નદિફલાણ રુક્ષાણ મૂલાણિવા કંદં પુષ્પં તયં પત્રં ફલં  
 જાવ અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વરોવેડ, ત માણ તુમ્હે જાવ દૂર દૂરે  
 પરિહરમાણા વીસમહ માણ અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વરોવિસ્સઈ, અ  
 ન્નેસિ રુક્ષાણ મૂલાણિ ચ જાવ વીસમહત્તિ કદ્દુ ઘોમણ જાવ પચ્ચ  
 પ્પિણતિ ) હિસ લિયે હે દેવાનુપિયો ! તુમ લોગ મેં સે કોઈ મી વ્યક્તિ  
 હિન નદિફલવૃક્ષોંકે મૂલોંકો, કંદોંકો, પુષ્પોંકો, છાલોંકો, ફલોંકો નહી  
 જાવે ઓર ન વહ હિનકી ઝાંયામે વિશ્રામ હી કરે-નહીતો વહ અકાલમે  
 હી કાલકવલિન અર્થાત્ મર જાવેગા હો જાવેગા । હિસ લિયે હિન્હે બહુત  
 દૂર છોડકર દુસરી જગહ તુમ લોગ વિશ્રામ કરો હિસસે જીવન સે રહિત

મારા સાર્થ નિવેશમા જઈને મોટેથી તમે આ પ્રમાણે ઘોષણા કરો કે હે  
 દેવાનુપિયો ! જે નદિફલ વૃક્ષોના વિષે પહેલા તમને જાણુ કરવામા આવી હતી  
 તે એજ જાણુ તેમજ છાયાથી મનોજ લાગતા નદિફલ વૃક્ષો છે

( ત જો જ દેવાનુપિયા ! એસિં નદિફલાણ રુક્ષાણ મૂલાણિવા કંદં  
 પુષ્પં તયં પત્રં ફલં જાવ, અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વરોવેડ ત માણ તુમ્હે  
 જાવ દૂર દૂરેણ પરિહરમાણા વીસમહ, માણ અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વરોવિસ્સઈ,  
 અન્નેસિ રુક્ષાણ મૂલાણિ ચ જાવ, વીસમહત્તિ કદ્દુ ઘોમણ જાવ પચ્ચપ્પિણતિ )

જેટલા માટે હે દેવાનુપિયો ! તમારામાથી કેઈ પણ માણુમ નદિફલ  
 વૃક્ષોના મૂળોને, કંદોને, પુષ્પોને, છાલને, ફળોને ખાય નહિ અને તેમની  
 છાયામા પણ વિશ્રામ લે નહિ, નહિતર તે અકાલેજ મર જાયે એટલા  
 જ એમનાથી ખૂબ દૂર રહીને વિશ્રામ લેશે

सन्तोऽन्यत्र 'वीसमद्' विश्राम्यत=विश्राम कुरुत तेन न खलु यूय जीविताद् व्यपरोपिष्यध्वे, तथा-अ येषां वृक्षाणा मूलानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयत, छायासु विश्राम्यत" इति कृत्वा येषां घोषयत, यावत्-ते घोषणा घोषयित्वा धन्यसार्थवाहाय तदाता प्रन्यर्पयन्ति । तत्र=अलु सार्ये अप्येके पुरुषा धन्यस्य सार्य वाहस्य एतमर्थम्=एतद्व्यपदेश श्रद्धति, प्रतिगति-रोचयन्ति, एतमर्थं श्रद्धानाः=श्रद्धाविपचिकुर्वाणाः प्रतियन्त रोचयन्त तेषां नन्दिफलवृक्षाणा मूलादीनि छाया च दूर-दूरेण=दूरतएव परिहरन्तः=परिवर्जयन्तोऽन्येषा वृक्षाणा मूलानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयन्ति, अन्यवृक्षाणा छायासु च विश्राम्यन्ति, तेषां खलु

नहीं होंओगे । तथा इनसे अनिरिक्त और जो दूसरे वृक्ष हैं उनके मूलों को यावत् कन्दादिको को खाओ और उनकी छाया में विश्राम करो । इस प्रकार की घोषणा कर दो-उन्होंने धन्य सार्यवाह की आजानुसार वैसा ही किया और इसकी उसे खबर भी दे दी । ( तत्थ ण अप्पेग-इया पुरिसा धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ सदहति, पत्तियति रोयति, एयमट्ठ सदहमाणाइ तेसि नदिफलाण० दूर दूरेण परिहरमाणा २ अ-न्नेसि रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमति ) कहा सार्य में के कितनेक मनुष्यों ने धन्य सार्यवाहके इस सूचना रूप अर्थको स्वीकार कर लिया । उस पर श्रद्धा जमाई उसे अपनी प्रतीति का विषय बनाया तथा उन्हें वह बात अच्छी तरह रुचि कर भी हुई । इसलिये इस बात पर श्रद्धा आदि सपत्त देने हुए उन लोगों ने उन नदि फल वृक्षों के मूलादिकों को और उनकी छाया को बहुत दूर से छोड़कर अन्य वृक्षों के मूलादि

पण मुश्केली नउशे नडि तेमन् आ वृक्षो सिवायना भीन् वृक्षो छे, तेमना भूण उह वगेरे तमे भाव अने तेमना छायाडामा विश्राम करे। तेओओ धन्यसार्थवाहनी आज्ञा प्रमाणे ज घोषणा करीने तेने अणर आपी

( तत्थ ण अप्पेगइया पुरिसा धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ सदहति, पत्ति-यति, रोयति, एयमट्ठ सदहमाणाइ तेसि नदिफलाण० दूर दूरेण परिहरमाणा २ अन्नेमि रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमति )

तथा अर्थमा आवेला डेटलाड भाणुओओ धन्यसार्थवाहनी सूचना इय आ वातने स्वीकारी लीधी अने तेने श्रद्धानी अपेक्षाओ पोताना हृदयमा स्थान आपता अरोगर तेनी उपर प्रतीति जी लीधी ते लोडोने ते वात इचिकर पणु थर्ष पडी आ गीते श्रद्धाग्रस्त थयेला ते लोडोओ ते नदिफल वृक्षोना भूण वगेरेगी अने तेमनी छायावी भूज ज दूर रहीने भीन् वृक्षोना भूण तेमन् उह वगेरेने आधा तथा तेमनी छायामा विसामे लीधी





सन्तोऽन्यत्र 'वीसमद्' विश्राम्यत=विश्राम कुरुत तेन न सलु गूय जीविताद् व्यपरोपिष्यन्वे, तथा-अ येपा वृक्षाणा मूल्यानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयत, छायासु विश्राम्यत" इति वृक्षा योपणां योपयत, यावत्-ते योपणा योपयित्वा धन्यसार्थवाहाय तदाता प्रत्यर्पयन्ति । तत्र=सलु सार्थे अप्येके पुरुषा धन्यस्य सार्थ वाहस्य एतमर्थम्=एतद्वृषदेशे श्रद्धति, प्रतिगति-रोचयन्ति, एतमर्थं श्रद्धधानाः=श्रद्धाविपयिकुर्वाणाः प्रतियन्तः रोचयन्तः तेषा नन्दिफलवृक्षाणा मूलादीनि छायां च दूर-दूरेण=दूरतएव परिहरन्तः=परिवर्जयन्तोऽन्येषा वृक्षाणा मूल्यानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयन्ति, अन्यवृक्षाणा छायासु च विश्राम्यन्ति, तेषां खलु

नहीं होंओगे । तथा इनसे अनिरिक्त और जो दूसरे वृक्ष हैं उनके मूलों को यावत् कन्दादिको को खाओ और उनकी छाया में विश्राम करो । इस प्रकार की घोषणा कर दो-उन्होंने धन्य सार्थवाह की आज्ञानुसार वैसा ही किया और इसकी उसे खबर भी दे दी । ( तत्थ ण अप्पेगडया पुरिसा धणगस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ सदहति, पत्ति यति रोयति, एयमट्ठ सदहमाणाइ तेसि नदिफलाण० दूर दूरेण परिहरमाणा २ अन्नेसि रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमति ) वहा सार्थ में के कितनेक मनुष्यों ने धन्य सार्थवाहके इस सूचना रूप अर्थको स्वीकार कर लिया । उस पर श्रद्धा जमाई उसे अपनी प्रतीति का विषय बनाया तथा उन्हें वह बात अच्छी तरह रुचि कर भी हुई । इसलिये इस बात पर श्रद्धा आदि सपत्त बने हुए उन लोगों ने उन नदि फल वृक्षों के मूलादिकों को और उनकी छाया को बहुत दूर से छोड़कर अन्य वृक्षों के मूलादि

पणु मुरडेली नउशे नडि तेमज आ वृक्षो सिवायना भीज वृक्षो छे, तेमना भूण उह वगेरे तेमे भाव अने तेमना छायाउभा विश्राम करे। तेअअ धन्यसार्थवाहनी आशा प्रभाणे ज घोषणा करीने तेने अणर आपी

( तत्थ ण अप्पेगडया पुरिसा धणगस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ सदहति, पत्ति यति, रोयति, एयमट्ठ सदहमाणाइ तेसि नदिफलाण० दूर दूरेण परिहरमाणा २ अन्नेसि रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमति )

त्या मर्थमा आवेला डेटलाइ भाणुमोअे धन्यसार्थवाहनी सूचना इप आ वातने स्वीकारी लीधी अने तेने श्रद्धानी अपेक्षाअे पोताना हृदयमा स्थान आपता अरेणर तेनी उपर प्रतीति की लीधी ते लोकाने ते व त इयिकर पणु थर्ध पडी आ गीते श्रद्धायुक्त थयेला ते लोकाने ते नदिफल वृक्षोना भूण वगेरेथी अने तेमनी छायाथी भूण ज दूर रहीने भीज वृक्षोना भण तेअे अने अनेने आधा तथा तेमनी छायाभा विसामे लीधे।

ભાષાતે=પૂર્વમાહારસમય નો મદ્રક મતિ=વિશિષ્ટસ્વાદાદિલાભો ન મવતિ કિન્તુ  
તતઃ પશ્ચાદ્=મક્ષણવિન્યામાનન્તર પરિણમ્યમાનાનિ ૨ રસાદિરૂપેણ પરિણતાનિ  
મૂલકન્દાદીદિ શુભરૂપતયા=ગદ્રક્તયા ધૂયો ધૂય પરિણમન્તિ ।

અથોપનય દર્શયન્ સુધર્મસ્વામી માદ-‘ એવામેવે ’ સ્વાદિના । ‘ એવામેવ ’  
એવામેવ=અનેનૈવ પૂર્વોક્તપ્રકારેણ હે આયુષ્માન્તઃ શ્રમણાઃ ? યોઽસ્માક નિર્ગ્રન્થો વા  
નિર્ગ્રન્થી વા ‘ જાવ ’ યાવત્-આચાર્યોપાધ્યાયનામન્તિકે મુખ્ડા મૂત્વા પ્રવ્રજિતસ્તે  
પામુપદેશં શ્રદ્ધાધાનઃ સન્ પચ્ચસુ કામગુણેષુ=શબ્દાદિવિષયેષુ ‘ નો સજ્જેહ ’ નો

કોં કો યાવત્ કદોં કો સ્વાગા ઓર ઉનકી છાયા મેં વિશ્રામ ક્રિયા ।  
( તેસિં ણ આવાળ ણો મદ્દા મવદ્, તઓ પચ્છા પરિણમમાણા ૨ સુહ  
રૂવત્તાણ મુજ્જો ૨ પરિણમતિ, એવામેવ સમણાઉસો જો અમ્હ નિગ્ગંથો  
વા નિગ્ગંથી વા જાવ પચસુ કામગુણેસુ નો સજ્જેહ, નો રજ્જેહ, સે ણ  
ઇહમવે ચેવ વહૂણ સમણાણ ૪ અચ્ચણિજ્જે પરલોણ નો આગચ્છહ,  
જાવ વીઈવયસ્સહ, જહા વા તે પુરિમા) પરન્તુ હન પુરુષોંકો ઉનકે મૂલા  
દિકોં કે સ્વાને કે સમય વિશિષ્ટ સ્વાદાદિ કો પ્રાપ્તિરૂપ મદ્રક કા લાભ  
તો નહીં હુઆ-કિન્તુ ઉસકે યાદ જય સ્વાયે હુણ ઉન મૂલાદિકોં કા  
રસાદિ રૂપ સે પરિણમન હુઆ તથ ઉન્હે વાર ૨ શુભ રૂપ પરિણમન  
હોને સે આનન્દ આયા ઓર જીવન સુરક્ષિત રહા-અય સુધર્માસ્વામી  
હસકા ઉપનય ( દષ્ટાન્ત કે અર્થ કો પ્રકૃતિ મેં જોડના ) દિશ્વન્તાતે હુણ  
કહતે હેં કિ હસી તરહ સે હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો । જો હમારે નિર્ગ્રન્થ  
શ્રમણ એવં શ્રમણિયાજન હેં વે આચાર્ય ઉપાધ્યાયકે પાસ મુડિત હોકર  
દીક્ષિત હો જાતે હેં ઓર ઉનકે ઉપદેશ કો શ્રદ્ધા આદિ કા વિષયમૂત

( તેસિં ણ આવાળ ણો મદ્દા મવદ્, તઓ પચ્છા પરિણમમાણા ૨ સુહરૂવ-  
ત્તાણ મુજ્જો ૨ પરિણમતિ, એવામેવ સમણાઉમો જો અમ્હ નિગ્ગંથો વા નિગ્ગંથી વા  
જાવ પચસુ કામગુણેસુ નો સજ્જેહ, નો રજ્જેહ, સે ણ ઇહમવે ચેવ વહૂણ સમણાણ ૪  
અચ્ચણિજ્જે પરલોણ નો આગચ્છહ, જાવ વીઈવયસ્સહ જહા વા તે પુરિમા )

તે માણસોને વૃક્ષોના મૂળ કદ વગેરે ખાતી વખતે સવિશેષ સ્વાદ વગે  
રેની અનુભૂતિ તો થઈ શકી નહિ પણ ખાધા પછી તે મૂળ કદ રસ વગેરે  
રૂપમા પરિણત થયા ત્યારે તેમને સુખ મળ્યું અને સાથે સાથે તેમના જીવન  
પણ સુરક્ષિત રહ્યા સુધર્મા સ્વામી હવે એજ વાતને દષ્ટાન્તના રૂપમા સ્પષ્ટ  
કરતા કહે છે કે હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! આ પ્રમાણે જ જે અમારા નિર્ગ્રન્થ  
શ્રમણીઓ, આચાર્ય તેમજ ઉપાધ્યાયની પાસે મુડિત થઈને

स्वजते=आसक्तो भवति, 'नो रज्जेद्' नो रज्यते नो अनुरक्तो भवति म खलु  
इह भवएव बहूना श्रमणाना श्रमणीना गहूना साधूना साध्वीना मध्ये-अर्चनीय'=  
माननीयः सन् परलोके=भवान्तरे नो आगच्छति=जन्म न प्राप्नोति किन्तु-  
यावत्-अस्मिन्नेव भवे चातुरन्तसमारकात्तार व्यतिप्रतिप्यति=उल्लङ्घयिष्यति,  
मोक्ष प्राप्स्यतीत्यर्थः 'जहा वा ते पुरिसा' यथा वाते पुरुषाः-यथा वा=येन प्रका-  
रेण धन्यसार्थवाहोपदेशश्च द्रव्या ते=नन्दिफलवृक्षमूलकन्दादि परिवर्जनेन तत्कथ-  
नानुसारसमाचरणशीलाः पुम्पाः=सार्थपुरुषाः सुखपूर्वकमहिच्छन्ना नगरीं प्राप्स्यन्ति  
तयेत्यर्थः । अथ श्रद्धा रहितान् वर्णयति-'तत्थ ण' इत्यादि । तत्र खलु सार्थे अप्ये-  
के=ये तेचित् पुरुषाः धन्यस्य सार्थवाहस्य एतमर्थं=नन्दिफलभक्षणादि निषेधरूप

बनाते हुए पांच काम गुणों में-शब्दादि विषयों में आसक्त नहीं बनते  
हैं अनुरक्त नहीं बनते हैं वे इस भवमें ही अनेक साधु और साध्वियों  
के बीचमें माननीय होते हुए परलोक में जन्म से रहित हो जाते हैं-  
अर्थात् पुन उन्हें जन्म धारण नहीं करना पड़ता है । कारण वे इसी  
भव में चतुर्गति रूप इस संसार कान्तार को पार करने वाले बन जाते  
हैं-उन्हें मोक्ष प्राप्त हो जावेगा ऐसे वे तैयार हो जाते हैं । जिस प्रकार  
धन्य सार्थवाह के उपदेश पर श्रद्धा करने से ये सार्थ के कितनेक पुरुष  
नदि वृक्षों के मूलकन्दादिकों का परिहार-त्याग करते हुए और उसके  
कथनानुसार अपना आचरण बनाते हुए सकुशल अहिच्छन्ना नगरी  
को प्राप्त कर लेंगे ऐसे बन गये । अब जिन्होंने धन्य सार्थवाहके वचनों  
पर श्रद्धा नहीं की-उनकी क्या दशा हुई इस बात का वर्णन सूत्रकार  
करते हैं-(तत्थ ण अप्पेगइया पुरिसा धणस्स सत्थवाहस्स एय-

शुक्ता यधने पाच काम गुणेषां शब्दादि विषयेषां-अनासक्त रहें छे ओटले  
के अनुरक्त थता नथी, तेओ आ लवमा न धणा साधुओ तेमज साध्वीओनी  
मध्ये सम्माननीय थता परलोकमा जन्मरहित थध जय छे ओटले के इरी तेओनी  
जन्म थतो नथी केमके तेओ आ लवमा न चतुर्गति इय आ ससार  
कातारने पार करवा लायक सामर्थ्य मेजवी ले छे तेओ मोक्ष मेजववा योग्य  
थध जय छे, जेम धन्यसार्थवाहना उपदेश उपर श्रद्धा भूडीने सार्थना केटलाउ  
पुइयोओ नदि वृक्षोना भूण कइ वगेरेने त्यज्जने तेनी सूयना मुज्ज आथ  
रक्षु करता अहिच्छन्ना नगरीमा पडोयी शडे तेवा थध गया डवे जे पुइयोओ  
धन्यसार्थवाहनी बात उपर श्रद्धा भूडी नडि तेओनी शी डालव थध तेनु  
वर्णन करता सूत्रकार कइ छे-

(तत्थ ण अप्पेगइया पुरिसा धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ नो सद्वति ३

નો શ્રદ્ધયતિ નો રોચયન્તિ નો પ્રતિયતિ । ને ધન્યસ્ય-અનમર્થમ્ અથરુધાના અરોચ  
યન્તઃ, અપતિયન્ત વગેરે નદિફલા વૃક્ષામ્નૈરોપાગ-લન્તિ, ઉપાગત્ય તેષાં નદિ  
ફલાના મૂલાનિ ચ યાવત્-કન્દાદીનિ આદારયન્તિ, તન્ના ડાયાયુ ચ વિશ્રામ્યન્તિ  
તેષાં સ્વલુ આપાતં=પૂર્ણ ફલભક્ષણાદિમર્થે મટક મરતિ=શુભવ્યાદાદિલાભોમવતિ  
કિન્તુ 'તમો પચ્છા' તતઃ પથાત્=ફલભક્ષણાદ્યનન્તર પરિણમ્યમાના =રસાદિરૂપેણ

મદ્દ નો મદ્દતિ ૩ ધન્યસ્ય અયમદ્દ અમદ્દમાણા ૩ જેણેવ તે નદિફલા  
તેણેવ ઉવાગચ્છિતિ ઉવાગચ્છિત્તા તેસિં નદિફલાણ મૂલાણિ ચ જાવ  
વીસમતિ, તેસિ ણ આગાળ મદ્દળ મવડ, તઓ પચ્છા પરિણમમાણા  
જાવ વરોવેતિ એવામેવ સમણાડસો ! જો અમ્હં નિગ્ગયો વા નિગ્ગથી  
વા જાવ પચ્છાણ પચ્છુ કામગુણેસુ મજ્જેહ, મજ્જિત્તા જાવ અણુપરિય  
દિસ્સહ જહા વા તે પુરિસા ) વહા પર કિનનેક પુરુષોં ને ધન્યસાર્થવાહ  
કે હસ કથન કો કિ નદિફલ વૃક્ષોં કે કદમૂલાદિ નહોં તાના ચાહિયે  
ઔર ન ઉત્તકો ડાયામેં તે વિશ્રામ કરના ચાહિયે શ્રદ્ધાકી દષ્ટિસે નહોં  
દેસા ઉસ પર અપની શ્રદ્ધા નહોં જમાઈ, ઉસે અપની રુચિ કા પ્રતીતિ  
કા વિષય નહીં ઘનાયા-વે પુરુષ- ધન્યસાર્થવાહ કે હસ કથન કો અશ્ર  
દ્ધેય આદિ માનકર જહા પર નદિફલ વૃક્ષ થે- વહા ગયે વહા જાકર  
ઉન્હોંને ઉત્તકે મૂલ કદાદિ કોં કો સ્વાયા ઉત્તકો છાયા મેં વિશ્રામ કિયા  
ઉસ સમય ઉન્હેં વહા આનન્દ આયા- સ્વાદ જન્ય કોઈ અપૂર્વ સુખ મિલા  
-કિન્તુ જય ઉત્તકા પરિપાક કાલ આયા જય વે સ્વાયે હુણ મૂલકન્દાદિ

ધણ્ણસ્ય અયમદ્દ અમદ્દમાણા ૩ જેણેવ તે નદિફલા તેણેવ ઉવાગચ્છિતિ, ઉવા  
ગચ્છિત્તા તેસિં નદિફલાણ મૂલાણિ ચ જાવ વીસમતિ, તેસિ ણ આગાળ મદ્દળ,  
મવડ, તઓ પચ્છા પરિણમમાણા જાવ વરોવેતિ એવામેવ સમણાડસો ! જો અમ્હ  
નિગ્ગયો વા નિગ્ગથી વા જાવ પચ્છાણ પચ્છુ કામગુણેસુ મજ્જેહ, મજ્જિત્તા  
જાવ અણુપરિયદિસ્સહ, જહા વા તે પુરિમા )

ત્યા કેટલાક માણસોએ ધન્યસાર્થવાહના નદિફળ વૃક્ષોના કદમૂળો વગેરે  
ખાધા જોઈએ નહિ તેમજ તે વૃક્ષોની છાયામાં પણ વિસામો લેવો નહિ આ  
જ્ઞાતાના ઉત્તર પ્રત્યે શ્રદ્ધાવાન થયા નથી, તેના ઉપર વિશ્વાસ મૂક્યો નહિ અને  
પ્રતીતિપૂર્વક તેમાં પોતાની અભિરૂચી ખતાવી નહિ તે માણસો ધન્યસાર્થવાહના  
કથન અશ્રદ્ધેય માનીને જ્યાં નદિફળ વૃક્ષો હતા ત્યાં ગયા ત્યાં જઈને તેમણે  
તેમના મૂળ કદ વગેરે ખાધા અને તેમના છાયામાં વિસામો લીધો તે સમયે  
તો તેમને ખૂબ જ આનંદ પ્રાપ્ત થયો, ફળોના સ્વાદમાં અપૂર્વ સુખ મળ્યું,  
પણ જ્યારે તેઓની પાચન ક્રિયા થવા માડી એટલે કે ખાધું વગેરે



પરિણામ પ્રાપ્નુવન્તઃ. સન્તઃ કન્દાદય યાત્-તાન્ જાનિતાદ્ વ્યપરોપયન્તિ ।  
 'એવમેવ' એવામેવ=અનેનૈવ પ્રકારેણ હે આયુષ્મન્તઃ શ્રમણાઃ ચોઽસ્માક નિર્ગ્રન્થો  
 વા નિર્ગ્રન્થી વા યાત્ પ્રવ્રજિતઃ સન પચ્ચમુ ચામણેષુ=શબ્દાદિકામભોગેષુ સ્વ-  
 જતે, રજ્યતે-કામભોગાસક્તો ભવતિ યાત્-સ સ્વલુ ડ્ઘભવે વદ્દના ગમણ-શ્રમ-  
 ણીના, વદ્દના શ્રાવકશ્રાવિકાના મ'યે હિલનીયો, નિન્દનીય', વિસનીયો ભવતિ,  
 પરલોકે=ચ ભવાન્તરે ચાતુરન્તસસારકાન્તારમ્ અનુપર્યટ્ટિપ્યતિ ચાતુર્ગતિસસાર  
 એવ સ્થાસ્યતિ ન તુ મોક્ષ પ્રાપ્સ્યતીત્યર્થ । યેન પ્રકારેણ તે=ધન્યોપદેશમશ્રદ્ધાનાઃ  
 પુરુષાઃ=સાર્થસ્થિતા જના નન્દિફલવૃક્ષમૂલકન્દાદિભક્ષણેન તત્રૈવ મ્રિયન્તે નતુ-  
 અહિચ્છત્રાં નગરીં પ્રાપ્નુવન્તીતિ ભાવઃ ॥ સૂ. ૩ ॥

મૂલમ્—તણ સે ધણે સત્થવાહે સગડીસાગડ જોયાવેઙ્  
 જોયાવિત્તા જેણેવ અહિચ્છત્તા નયરી તેણેવ ઉવાગચ્છઙ્ ઉવા-

રસારૂપ સે પામિમને લગે-તવ વે સવ અપનેર જીવન સે રહિત હો ગયે  
 -મર ગયે-। इसी तरह हे आयुष्मत श्रमणो । जो हमारा निर्ग्रन्थ व  
 निर्ग्रन्थी साध्वीजन यावत् प्रव्रजित होकर पचकाम गुणो मे-पचड न्द्रियों  
 के शब्दादि विषयों मे-आसक्त बन जाता है-अनुरक्त हो जाता है, वह  
 इस भवमें अनेक श्रमण श्रमणियोंके बीच हीलनीय, निंदनीय एव खिस-  
 नीय होता है एव वह भवान्तर में जो इस चतुर्गति रूप ससार कान्तार  
 में ही घूमता रहेगा-मोक्ष प्राप्त नहीं करेगा । जिस प्रकार धन्य सार्यवाह  
 के उपदेश पर श्रद्धा नहीं करने वाले सार्य के ये कितनेक पुरुष नदिफल  
 वृक्षों के मूलादि के खाने से वहीं पर मर गये-अहिच्छत्र नगरी नहीं  
 जा सके ॥ सू० ३ ॥

રસ વગેરે રૂપમા પરિણુત થવા લાગ્યા ત્યારે તેઓ બધા નિર્જીવ થઈ ગયા,  
 મૃત્યુ પામ્યા આ પ્રમાણે જ હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ  
 સાધુઓ કે નિર્ગ્રંથ સધિઓ પ્રવ્રજિત થઈને પાચ કામ ગુણોમા અર્થાત્  
 પાચે ઇન્દ્રિયોના શબ્દાદિ વિષયોમા આસક્ત થઈ પડે છે-એટલે કે અનુરક્ત  
 થઈ બંધ છે, તે આ ભવમા ઘણા શ્રમણો અને ઘણી શ્રમણીઓની વચ્ચે  
 હીલનીય, નિંદનીય, અને ખિસનીય હોય છે અને બીજા ભવમા પણ-આ  
 ચતુર્ગતિ રૂપ સસાર-કાન્તારમા જ ભ્રમણ કરતો રહેશે તેને મોક્ષ પ્રાપ્ત થશે  
 નહિ ધન્યસાર્યવાહના ઉપદેશને શ્રદ્ધેય ન માનનારા કેટલાક માણસો જેમ નદિ  
 ક્ષણ વૃક્ષોના મૂળ વગેરે ખાઈને ત્યાં જ મરણ પામ્યા, અહિચ્છત્રા નગ  
 રીમા પહોંચી શક્યા નહિ, તેમજ તેઓની પણ સ્થિતિ થાય છે ॥ સૂ. ૩ ॥

નો શ્રદ્ધાંતિ નો રોગયન્તિ નો પ્રતિયતિ । તે ધન્યસ્થ-ગતમર્ગમ્ અથવાના અતોચ  
યન્તઃ, અપ્રતિયન્ત ચર્ગોચ નન્દિફલા ગ્રામ્યગૌપોવાગન્તિ, ઉવાગત્ય તેષાં નન્દિ  
ફલાના મૂલાનિ ચ યાવત્-કન્દાદીનિ આહારયન્તિ, તથા ગ્રાયામુ ચ વિશ્રામ્યન્તિ  
તેષાં સ્વલુ આપાતે=પૂર્વ ફલમ્ભણાદિમર્ગે મટક મરતિ=શુભવાદાદિલામોમરતિ  
કિન્તુ 'તથો પચ્છા' તતઃ પથાત્=ફલમ્ભણાદ્યનન્તર પરિણમ્યમાના =રસાદિરુપેણ

મદ્દ નો મદ્દતિ ૩ ધર્મગસ્મ ઇયમદ્દ અમદ્દમાણા ૩ જેણેવ તે નદિફલા  
તેણેવ ઉવાગન્તિ ઉવાગન્તિ તેસિં નદિફલાણ મૂલાણિ ચ જાવ  
વીસમતિ, તેસિં ણ આપાણ મદ્દા મરડ, તથો પચ્છા પરિણમમાણા  
જાવ વરોવેતિ એવામેવ સમણાઉસો ! જો અમ્હ નિગ્ગથો વા નિગ્ગથી  
વા જાવ પચ્છા પચ્છા કામગુણેસુ મજ્જેડ, સજ્જિત્તા જાવ અણુપરિય  
દિસ્સડ જહા વા તે પુરિસા ) વહા પર કિત્તનેક પુરુષો ને ધન્યસાર્થવાહ  
કે હસ કથન કો કિ નદિફલ વૃક્ષો કે કદમૂલાદિ નહોં લાના ચાહિયે  
ઔર ને ઉનકો ગ્રાયામેં હી વિશ્રામ કરના ચાહિયે શ્રદ્ધાકી દષ્ટિસે નહોં  
દેખા ઉસ પર અપની શ્રદ્ધા નહોં જમાઈ, ઉસે અપની રુચિ કા પ્રતીતિ  
કા વિષય નહીં ધનાયા-વે પુરુષ- ધન્યસાર્થવાહ કે હસ કથન કો અશ્ર-  
દ્ધેય આદિ માનકર જહા પર નદિફલ વૃક્ષ થે- વહા ગયે વહા જાકર  
ઉન્હોંને ઉનકે મૂલ કદાદિ કોં કો રાયા ઉનકી છાયા મે વિશ્રામ કિયા  
ઉસ સમય ઉન્હેં વહા આનન્દ આયા- સ્વાદ જન્ય કોઈ અપૂર્વ સુખ મિલા  
-કિન્તુ જબ ઉનકા પરિપાક કાલ આયા જબ વે રાચે હુણ મૂલકન્દાદિ

ધર્મગસ્મ ઇયમદ્દ અમદ્દમાણા ૩ જેણેવ તે નદિફલા તેણેવ ઉવાગન્તિ, ઉવા  
ગન્તિ તેસિં નદિફલાણ મૂલાણિ ચ જાવ વીસમતિ, તેસિં ણ આપાણ મદ્દા,  
મરડ, તથો પચ્છા પરિણમમાણા જાવ વરોવેતિ એવામેવ સમણાઉસો ! જો અમ્હ  
નિગ્ગથો વા નિગ્ગથી વા જાવ પચ્છા પચ્છા કામગુણેસુ મજ્જેડ, સજ્જિત્તા  
જાવ અણુપરિયદિસ્સડ, જહા વા તે પુરિસા )

ત્યા કેટલાકે માણસોએ ધન્યસાર્થવાહના નદિફલ વૃક્ષોના કદમૂળો વગેરે  
ખાવા બેઠેએ નહિ તેમજ તે વૃક્ષોની છાયામા પણ વિસામો લેવો નહિ આ  
બાતના કથન પ્રત્યે શ્રદ્ધાવાન થયા નથી, તેના ઉપર વિશ્વાસ મૂક્યો નહિ અને  
પ્રતીતિપૂર્વક તેમા પોતાની અભિરૂચી બતાવી નહિ તે માણસો ધન્યસાર્થવાહના  
કથન અશ્રદ્ધેય માનીને જ્યાં નદિફલ વૃક્ષો હતા ત્યાં ગયા ત્યાં જઈને તેમણે  
તેમના મૂળ કદ વગેરે ખાધા અને તેમના છાયામા વિસામો લીધો તે સમયે  
તો તેમને ખૂબ જ આનંદ પ્રાપ્ત થયો, ક્ષણોના સ્વાદમા અપૂર્વ સુખ મળ્યું,  
પણ જ્યારે તેઓની પાચન ક્રિયા થવા માડી, એટલે કે ખાં વગેરે,

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः खलु म ध यः सार्ववाहः शकटीशावटं योजयति, योजयित्वा यज्ञेयादिच्छत्रा नगरी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य अहिच्छत्राया नगर्या वहिः अग्र्योद्याने=मुख्योद्याने सार्वनिवेशं करोति, कृत्वा शकटी-शावटं मोचयति । ततः खलु स धन्य सार्ववाहः ‘महत्थ’ महार्थ=महाप्रयोजनकः ‘महग्घ’ महार्थ=महामूल्य, ‘महरिह’ मग्घं=महता योग्य ‘रायारिह’ राजाहं=राजयोग्य प्राप्तं गृह्णाति, गृहीत्वा बहुभिः पुरुषैः सार्द्धं सपरिवृतं अहिच्छत्रा नगरिं मज्झमज्जेन अनुगच्छति, अनुगच्छित्य यज्ञेयं कनककेतुं राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य ‘करयल जाय वद्धावेड’ करतलं यावद् वर्धयति—कर-

‘तएण से धण्णे सत्थवाहे’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इत्येके वाद (से धण्णे सत्थवाहे) उस धन्यसार्थवाहने (सगडी सागड जोयावेड जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता नगरी तेणेव उवागच्छइ) वहा से अपने गाडी और गाडों को जुनवाया और जुनवा कर जहा अहिच्छत्रा नगरी थी उस ओर चल दिया । (उवागच्छत्ता अहिच्छत्ताए नगरीए वहिया अगुज्जाणे सत्थनिवेश करेइ) धीरे धीरे अहिच्छत्रा नगरी में वह पहुँच गया । वहा पहुँच कर उसने बाहर रहे हुए प्रधान वगीचे में अपने सार्थ को ठहरा दिया । (करित्ता सगडी सागड जोयावेड) और वही पर अपनी गाडी और गाडों को ढील दिया । (तएण से धण्णे सत्थवाहे महत्थ ३ रायारिह पाहुड गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुहिं पुरिसेहिं सद्धि सपरिवुडे अहिच्छत्त नगरिं मज्झ मज्झे ण अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवाग

तएण से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारणाह (से धण्णे सत्थवाहे) ते धन्यसार्थवाडे (सगडी सागड जोयावेड जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता नगरी तेणेव उवागच्छइ) तथाथी पोतानी गाडीओ अने गाडाओने जेतरीनीने जे तरइ अहिच्छत्रा नगरी छती ते दिशा तरइ खाना थये । (उवागच्छत्ता अहिच्छत्ताए नगरीए वहिया अगुज्जाणे सत्थनिवेश करेइ) अने धीमे धीमे अहिच्छत्रा नगरीमा पहुँची गये । तथा पहुँचीने तेणे नगरीनी जडार आवेला प्रधान उद्यानमा पोताना सार्थने सुखाम नाथ्ये । (करित्ता सगडीसागड जोयावेड) अने तथा जे पोतानी गाडीओ अने गाडाओने छोडावी नाथ्ये ।

(तएण से धण्णे सत्थवाहे महत्थ ३ रायारिह पाहुड गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुहिं पुरिसेहिं सद्धि सपरिवुडे अहिच्छत्त नगरिं मज्झ मज्झेण अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता

गच्छित्ता अहिच्छित्ताए णयरीए वहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं  
 करेइ करित्ता सगडीसागड मोयावेइ, तएण से धण्णे सत्थवाहे  
 महत्थं३ रायरिहं पाहुड गेणहइ गेण्हित्ता बहुहि पुरिसंहिं सच्चि  
 संपरिवुडे अहिच्छित्त नयरिं मज्झ मज्झेणं अणुप्पविसइ अणुप्प-  
 विसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेउवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
 करयल जाव वद्धावेइ, वद्धापित्ता तं महत्थं३ पाहुड उवणेइ,  
 तएण से कणगकेऊ, राया हट्टुट्टु० धण्णस्स सत्थवाहस्स तं  
 महत्थं३ जाव पडिच्छइ पडिच्छित्ता धण्ण सत्थवाह सक्कारेइ  
 सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता उस्सुक्क वियरइ २ पडिविस-  
 जेइ । तएणं से धण्णे सत्थवाहे भडविणिमयं करेइ करित्ता पडि-  
 भड गेणहइ गेण्हित्ता सुहसुहेण जेणेउवागच्छइ उवागच्छित्ता  
 भित्तनाइ० अभिसमन्नागए विउलाइं माणुस्सगाइ  
 कामभोगाइं भुजमाणे विहरइ, तेण कालेण तेणं समएण थेरा-  
 गमणं धण्णे सत्थवाहे धम्मे सोच्चा जेट्टुप्पत्ते कुडुवे ठावेत्ता  
 पठवइए सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ वहुणि वासाणि  
 सामण्णपरियाग पाउणइ पाउणित्ता मासियाए सं० अन्नतरेसु  
 देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव  
 अत्तं करेहिइ । एव खलु जंबू । समणेण भगवया महावीरेण  
 जाव सपत्तेण पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्टे पणत्ते  
 त्तिवेमि ॥ सू० ४ ॥



टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः खलु म धन्यः सार्ववाह शकटीशान्ठ  
योजयति, योजयित्वा यज्ञोपाधिच्छत्रा नगरी तत्रोपागच्छति, उपागत्य अहिच्छ  
त्रायां नगर्या रहिः अग्रयोधाने=मुख्योधाने सार्थनिवेश करोति, कृत्वा शकटी-  
शान्ठ मोचयति । ततः खलु स धन्य सार्ववाहः ‘महत्त्य’ महार्थ=महाप्रयो  
जनक. ‘महग्घ’ महार्थ=महामूल्य, ‘महरिह’ मर्याद=महता योग्य ‘रायरिह’  
राजाह=राजयोग्य प्राप्त टह्णाति, टणीत्वा बहुभिः पुरुषै सार्द्धं सपरिवृत  
अहिच्छत्रा नगरीं मज्जम येन अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यज्ञं कनकवेतू राजा  
तत्रोपागच्छति, उपागत्य ‘करयल जाव वद्धावेड’ करतल यावद् पर्ययति—कर-

‘तएण से धण्णे सत्थवाहे’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) हमके पाद (से धण्णे सत्थवाहे) उस धन्यमार्थवाहने  
(सगडी सागड जोयावेड जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता नगरी तेणेव  
उवागच्छइ) वहा से अपने गाडी और गाडो को जुनवाया और जुनवा-  
कर जहां अहिच्छत्रा नगरी थी उस ओर चल दिया । (उवागच्छत्ता  
अहिच्छत्ताए नगरीए बहिया अगुज्जाणे सत्थनिवेश करेइ) धीरे धीरे  
अहिच्छत्रा नगरी में वह पहुँच गया । वहा पहुँच कर उसने बाहर रहे  
हुए प्रधान घगीचे में अपने सार्थ को ठहरा दिया । (करित्ता सगडी  
सागड मोयावेइ) और वहीं पर अपनी गाडी और गाडों को ढील  
दिया । (तएण से धण्णे सत्थवाहे महत्त्य ३ रायरिह पाहुड गेण्हइ,  
गेण्हित्ता बहुहिं पुरिसेहिं सद्धि सपरिवुडे अहिच्छत्त नगरिं मज्झ मज्झे  
ण अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव कणमकेऊ राया तेणेव उवाग

तएण से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारणाह (से धण्णे सत्थवाहे) ते धन्यसार्थवाडे  
(सगडी सागड जोयावेइ जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता नगरी तेणेव उवागच्छइ  
त्थाथी पोतानी गाडीओ अने गाडाओने जेतरीने ने तरइ अहिच्छत्रा  
नगरी छती ते दिसा तरइ खाना थये । (उवागच्छत्ता अहिच्छत्ताए नगरीए  
बहिया अगुज्जाणे सत्थनिवेश करेइ) अने धीमे धीमे अहिच्छत्रा नगरीमा  
पडोथी गये । त्या पडोथीने तेणे नगरीनी णडार आवेला प्रधान उधानमा  
पोताना सार्थने सुकाम नाथ्ये । (करित्ता सगडीसागड मोयावेइ) अने  
त्या न पोतानी गाडीओ अने गाडाओने छोडावी नाथ्या ।

(तएण से धण्णे सत्थवाहे महत्त्य ३ रायरिह पाहुड गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुहिं  
पुरिसेहिं सद्धि सपरिवुडे अहिच्छत्त नगरिं मज्झ मज्झेण अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता

તલપરિગૃહીત શિરભાવર્તે જગતસ્ય મમતકં ડગ્ગિ જત્વા રાજાનં જયવિજયકચ્ચેન  
વર્દયતિ, વર્દયિત્વા તન્મહાર્યં મહાર્યં મહાર્થં પ્રામૃતમ્ ઉપનયનિત્વાત્ સમીપે સ્થા  
પયતિ । તત સ્વલુ મ કનકકેતુ રાજા દ્વષ્ટુષ્ટદરયો દર્પયગ્નિર્ગર્પટહમ્બો ધન્યસ્ય  
સાર્થસાહસ્ય તમહાર્યં ૩ યાવત્ પ્રામૃત । ‘પટિચ્છદ્ધ’ પ્રતીચ્છનિ=સ્વીકરોતિ,  
પ્રતીપ્ય ધન્ય મોર્ષસાહ સત્તાયનિ સમ્માનયતિ, મ જન્ય સમ્માન્ય તમૈ ‘ઉસ્તુક’  
ઉચ્છુલ્લ=શુભસામાયત્વ ‘કેનાપિ રાજપુરુષેનાત્માતરો ન ગ્રામઃ’ ક્ત્યેતદ્વરૂપમા  
જ્ઞાપત્ર વિતરનિ=દદાતિ, વિતીર્ય ત પ્રતિવિસર્જયતિ ।

છઠ્ઠ, ઉવાગચ્છિત્તા કરચલ જાવ વદ્ધાવિત્તા ત મહત્થ ૩ પાહુડ ઉવળેહ )  
ઇસ કે ઘાદ ઉમ ધન્ય સાર્થસાહ ને મહાર્થ માવક, મહામૃત્ય  
એવ મહા પુરુષો કે યોગ્ય-પ્રામૃત-મેટ કો માથ મેં લિયા, ઓર ઢેકર  
અનેક પુરુષો કે સાથ ૨ અહિચ્છત્રા નગરી મેં વીચ સે હોતા હુઆ પ્રવિષ્ટ  
હુઆ । નગરી મેં પ્રવિષ્ટ હોકર વત જહા કનક કેતુ રાજા ચે વહા ગયા  
વહાં જાકર ઉમને રાજા કો દોનોં હાથ જોડ કર નમસ્કાર ક્રિયા, ઓર  
જય વિજય શબ્દો કો ઉચ્ચારણ કરતે હુગ ઉન્હેં વધાઈ દી । વધાઈ દેકર  
ઉસને ફિર રાજા કે સમક્ષ અપની મેટ રસ્તદી । ( તણ સે કળગકેઝ  
રાયા હટ્ઠ તુટ્ઠ ૦ ધળગસ સત્થવાહસસ ત મહત્થ ૩ જાવ પહિચ્છદ્ધ પહિ  
ચ્છિત્તા ધળગ સત્થવાહ સવકારેહ સમ્માળેહ, સવકારિત્તા સમ્માણિત્તા  
ઉસ્તુકક વિચરહ ૨ પહિવિસજ્જેહ ) કનકકેતુ રાજાને હર્ષિત એવ સતુષ્ટ  
હોકર ધન્યસાર્થસાહ કો ઉમ મહાર્થ સાધક મહામૃત્ય રાજ યોગ્ય મેટ  
જેળેવ કળગકેઝ રાયા તળેવ ઉવાગચ્છદ્ધ, ઉવાગચ્છિત્તા કરચલ જાવ વદ્ધાવેહ,  
વદ્ધાવિત્તા ત મહત્થ ૩ પાહુડ ઉવળેહ )

ત્યારપછી તે ધન્યસાર્થવાહે મહાર્થ સાધક બહુ કિમતી અને મહા પુરુ  
ષોને યોગ્ય ભેટ સાથે લઈને ઘણા માણુઓની સાથે અહિચ્છત્રા નગરીની  
વચ્ચેના ભાગે ( રાજભાગ ) ધઈને નગરીમા પ્રવિષ્ટ થયો । નગરીમા પ્રવેશીને  
તે જ્યા કનકકેતુ રાજા હતા ત્યા ગયો । ત્યા જઈને તેણે રાજાને બને હાથ  
જોડીને નમસ્કાર કર્યા અને જય વિજય શબ્દો ઉચ્ચારણ કરતા તેમને વધાર્થ  
આપી વધાર્થ આપ્યા પછી તેણે રાજાની સામે પોતાની ભેટ મૂકી દીધી

( તણ સે કળગકેઝ રાયા હટ્ઠ તુટ્ઠ ૦ ધળગસ સત્થવાહસસ ત મહત્થ ૩  
જાવ પહિચ્છદ્ધ પહિચ્છિત્તા ધળગ સત્થવાહ સવકારેહ સમ્માળેહ, સવકારિત્તા સમ્મા  
ણિત્તા ઉસ્તુકક વિચરહ ૨ પહિવિસજ્જેહ )

કનકકેતુ રાજાએ હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થઈને મહાર્થ સાધક મહામૃત્ય  
વાળી અને રાજાઓને માટે યોગ્ય ભેટ સ્વીકારી લીધી સ્વીકાર્યા બાદ

ततः खलु सधन्य सार्थवाहस्तत्र 'भडविणिमय' भाण्डविनिमय=भाण्डानां=  
क्रयाणकवस्तूनां विनिमयम्=आदानप्रदानं करोति, कृत्वा 'पडिभड' प्रतिभाण्ड=  
विनिमयेन प्राप्त वस्तुजात गृह्णाति, गृहीत्या शकटीशाकटे भरति भूत्वा शकटीशाकट  
योजयति, योजयित्वा सुखं=सुखेन=सुखपूर्वक यज्ञेन चम्पानगरी=स्वनिवासस्थानं  
तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य मित्रज्ञातिस्वजनसम्पन्नि परिजनैः सह 'अभिसमन्नागए'  
अभिसमन्नागत =समिलितो विपुलान् मानुष्यकान् कामभोगान् भुज्जानो विहरति ।

को स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके फिर उन्होंने ने धन्यसार्थवाह  
का सत्कार एवं सन्मान किया। सत्कार सन्मान करके "किसी भी  
राज पुरुष को इन से कर नहीं लेना चाहिये इस प्रकार का शुल्क भाव  
विषयक आज्ञा पत्र" उसके लिये प्रदान किया और प्रदान करके बाद  
में उसे वहाँ से विदा कर दिया। (तएण से धण्णे सत्यवाहे भडवि-  
णिमये करेह, करित्ता पडिभड गेण्हइ, गेण्हित्ता सुहं सुहेण जेणेव  
चपा नयरी तेणेव उवागच्छइ) इसके बाद धन्यसार्थवाह ने वहाँ रह  
कर अपनी क्रयाणक वस्तुओं का विक्रय किया और उससे प्राप्त द्रव्य  
से और दूसरी वस्तुओं को खरीदा। खरीद कर उसने उन्हें गाड़ी और  
गाड़ों में भरा भरकर उन्हें जुनवाया और जुनवाकर फिर वह वहाँ से  
चपानगरी की ओर वापिस चल दिया। (उवागच्छित्ता मित्तनाइ० अ  
भिसमन्नागए विउलाइ माणुस्सगाइ कामभोगाइ भुज्जमाणे विहरइ)

तेमणे धन्यसार्थवाहने सत्कार तेमज सन्मान कथुं सत्कार अने सन्मान  
करीने राज्ञे 'उवागच्छ राजपुत्र तेमनी पासिणी राजकर ले नहि' ते प्रभा-  
लेनी व्यवस्था करता तेमने गुण्य भाक्षीनु आज्ञापत्र लणी आयु त्यारपछी  
तेने त्याथी जवानी आज्ञा आयी

(तएण से धण्णे सत्यवाहे भडविणिमय करेह, करित्ता पडिभड गेण्हइ,  
गेण्हित्ता सुहं सुहेण जेणेव चपानयरी तेणेव उवागच्छइ)

त्यारआह धन्यसार्थवाह त्या रुडीने पोतानी कयाण्ड वस्तुओंने बेची  
अने तेनाथी जे धन भण्यु तेनाथी जीण वस्तुओं अरीही लीधी वस्तुओंनी  
अरीह करीने तेले अधी वस्तुओंनी अरीही करीने तेले अधी वस्तुओंने गाडी  
तेमज गाडाओंसा लरी अने त्यारपछी गाडी अने गाडाओंने नेतरावीने  
त्याथी त्या नगरी तरह पाछे खाना थये

(उवागच्छित्ता मित्तनाइ० अभिसमन्नागए विउलाइ माणुस्सगाइ काम  
भोगाइ भुज्जमाणे विहरइ)

तस्मिन् काले तस्मिन् समये स्थिरागमनम् । धन्यः सार्वभागे धर्मश्च  
 प्रतिबुद्धः सन् ज्येष्ठपुत्रं कुटुम्बे स्थापयित्वा प्रवर्तितः, सामागिकादीनि पञ्चाङ्गा  
 न्नान्यधीते । बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा मासिन्या सले  
 खनया ऽऽत्मानं जुष्टां पट्टिं भक्तानि अनशनेन त्रित्वा कालमात्रे गालं कृत्वा-  
 चपानगरी में आकर वह अपने मित्र, ज्ञानि, स्वजन, सखन्धी परिजनों  
 से मिला और विपुल मनुष्य भव सखन्धी काम भोगों को भोगने लगा  
 ( तेण कालेण तेण समणं थेरागमणं, धण्णे सत्थवाहे धम्म सोच्चा  
 जेद्व पुत्त कुटुवे ठवेत्ता पव्वइए, सामाइयमाइयाइ एकारस अगाइ बहूणि  
 वासाणि सामणपरियाग पाउणिता मासियाए सलेहणाए अन्नतरेसु  
 देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे वासे सिज्झहिइ जाव अंत  
 करेहिइ । एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण  
 पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमहे पणत्ते त्तिवेमि ) उसी काल और  
 उसी समय में वहा पर स्थिचिरो का आगमन हुआ । धन्यसार्ववाह ने  
 उनसे धर्म का व्याख्यान सुना सुनकर वह प्रतिबुद्ध हो गया और  
 प्रतिबुद्ध हो करके फिर वह कुटुम्ब में अपने ज्येष्ठ पुत्र को रखकर दीक्षित  
 होकरके उसने सामायिक आदि ग्यारह अंगोंका अध्ययन किया । अनेक  
 वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन कर १ मास की सलेखना से ६०  
 भक्तों का अनशन द्वारा छेदन करके काल अवसर काल करके देव

थ पा नगरीमा आवीने ते पोताना मित्र ज्ञाति, स्वजन, सखन्धी  
 परिजनेने भज्ये अने विपुल मनुष्य । लवना कामभोगो लोगववा लाग्ये

( तेण कालेण तेण समणं थेरागमणं धण्णे सत्थवाहे धम्म सोच्चा जेद्व  
 पुत्त कुटुवे ठवेत्ता पव्वइए, सामाइयमाइयाइ एकारसअगाइ बहूणि वासाणि  
 सामणपरियाग पाउणइ, पाउणिता मासियाए सलेहणाए अन्नतरेसु देवलोएसु  
 देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे वासे सिज्झहिइ, जाव अंत करेहिइ । एव खलु जवू !  
 समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण पन्नरसमस्स अयमहे पणत्ते त्ति वेमि )  
 ते काले अने ते समये ते नगरीमा स्थिचिरो पधार्था धन्यसार्ववाहे तेथोना  
 भुज्जथी धर्मं तु व्याख्यानं सांख्यं अने सांख्यीने तेने प्रतिषेधं थये । प्रतिबुद्ध  
 थधने तेले पोताना कुटुम्बना वडा तरीके पोताना भोटा पुत्रनीनीमणुक करीने  
 दीक्षा अडुषु करी दीक्षा अडुषु उर्या भाइ तेले सामायिक वगेरे अगियार अ गोन  
 अध्ययन कथुं अने धणा वर्षो सुधी श्रामण्य पर्यायं पालन करीने अक  
 भासनी सलेखनाथी ६० भक्तोनु अनशन वडे छेदन करीने, वधते



अन्यतरेषु देवल्लोकेषु 'देवताए' देवतया=देवत्वेन उपपन्नः । महाविदेहे वर्षे  
सेत्स्यति यावत्-सर्वदुःखानामन्त करिष्यति । एव खलु हे जम्बू । श्रमणेन भग-  
वता महावीरेण यावत्-सिद्धिगतिनामत्रेय स्थान सम्प्राप्तेन पञ्चदशस्य ज्ञाताध्यय-  
नस्य अयमर्थ = पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्त 'त्तिनेमि' इति ब्रवीमि व्याख्या पूर्ववत् । सू० ४ ।

इति श्री विश्वविख्यात - जगद्बल्लभ-प्रसिद्धाचकपञ्चदशभाषाकलित-  
ललितकलापालापक - प्रविशुद्धेयपत्रनैकग्रन्थनिर्मापक-यादिमानमर्दक  
श्रीशाह उग्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त 'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-  
कोल्हापुरराजगुरु-पालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री  
घासीलालप्रतिविरचिताया श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्माभृ-  
तवर्षिण्याख्याया व्याख्याया पञ्चदशमध्ययन समाप्त ॥ १५ ॥

लोक में देव की पर्याय से उत्पन्न हो गया । महाविदेह क्षेत्र से यह  
सिद्ध अवस्था को प्राप्त करेगा-यावत् समस्त दुःखों का अन्त करने वाला  
होगा इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो सिद्धगति  
नाम के स्थान को प्राप्त कर चुके हैं इस पदार्थ के ज्ञाताध्ययन का यह  
पूर्वोक्त भाव प्रज्ञप्त किया है । ऐसा मैंने उनके मुख से सुना है सो यह  
वैसा तुमसे कहा है ॥ सू० ४ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराजकृत "ज्ञाता-  
धर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगारधर्माभृतवर्षिणी व्याख्याका पदार्थ  
अध्ययन समाप्त ॥ १५ ॥

કાળ કરીને દેવલોકમાં દેવતા પર્યાયથી જન્મ પામ્યો । મહાવિદેહ ક્ષેત્રથી તે  
સિદ્ધ અવસ્થા પ્રાપ્ત કરશે યાવત્ બધા દુઃખોનો તે અન્ત કરનાર થશે આ  
રીતે હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓએ સિદ્ધિગતિ નામના  
સ્થાનને મેળવી લીધું છે-આ પદરમાં જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત ભાવ નિરૂ-  
પિત દર્શ્યો છે એ જે પ્રમાણે તેઓશ્રીના મુખથી સાંભળ્યું છે તે પ્રમાણે જ  
તમારી આગળ રજુ કર્યું છે ॥ સૂત્ર ૪ ॥

જૈનાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાધ્યયન સૂત્રની  
અનગારધર્માભૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ પદરમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥૧૫॥

તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ ગમયે સ્થિરાગમનમ્ । ધન્યઃ સાર્વભાઉ ધર્મશ્રવ્યા  
 પ્રતિબુદ્ધઃ સન્ જ્યેષ્ઠપુત્રં કુટુમ્બે સ્થાપયિત્વા પ્રવ્રજિતઃ, સામાયિકાત્તેનિ ષ્ણાદ્દશા  
 જ્ઞાન્યધીતે । વહ્નિ વર્ષાણિ શ્રામણ્યપર્યાય પાલયતિ પાલયિત્વા માગિન્યા સલે-  
 સ્વનયા ઽઽત્માન જુષ્ઠા પદિ મક્તાનિ અનગનેન તિચ્છા કાલમાસે જાલ કન્વા-  
 ચપાનગરી મેં આકર વહ અપને મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન, સમબ્ધી પરિજનો  
 સે મિલ્લા ઓર વિપુલ મનુષ્ય ભવ સમબ્ધી કામ ભોગોં કો ભોગને લગા  
 ( તેણ કાલેણં તેણ સમણ ઘેરાગમણ, ઘણે સત્થવાહે ધમ્મ સોચ્છા જેઠ  
 પુત્ત કુટુબે ઠવેત્તા પવ્વહણ, સામાહ્યમાહ્યાહ ઇકારસ અગાહ વહ્નિ  
 વાસાણિ -સામણપરિયાગ પાઠણિત્તા માસિયાણ સલેહણાણ અન્નતરેસુ  
 દેવલોણસુ દેવત્તાણ ઉવવન્ને મહાવિદેહે વાસે સિઙ્ગિહિહ જાવ અંત  
 કરેહિહ । એવ સ્વલુ જબૂ । સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણં જાવ સપત્તેણ  
 પન્નરસમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે તિવેમિ ) ડસી કાલ ઓર  
 ડસી સમય મેં વહા પર સ્થવિરોં કા આગમન હુઆ । ધન્યમાર્થવાહ ને  
 ડનસે ધર્મ કા વ્યાખ્યાન સુના સુનકર વહ પ્રતિબુદ્ધ હો ગયા ઓર  
 પ્રતિબુદ્ધ હો કરકે ફિર વહ કુટુબ મેં અપને જ્યેષ્ઠ પુત્ર કો રલ્લકર દીક્ષિત  
 હોકરકે ડસને સામાયિક આદિ ગ્યારહ અગોકા અધ્યયન કિયા । અનેક  
 વર્ષોં તક શ્રામણ્ય પર્યાય કા પાલન કર ૧ મામ કી સલેલના સે ૬૦  
 ભક્તોં કા અનશન દ્વારા હેદન કરકે કાલ અવસર કાલ કરકે દેવ

અથ નગરીમા આવીને તે પોતાના મિત્ર જ્ઞાતિ, સ્વજન, સમબ્ધી  
 પરિજનોને મળ્યો અને વિપુલ મનુષ્ય ભવના કામભોગો ભોગવવા લાગ્યો

( તેણ કાલેણ તેણ સમણ ઘેરાગમણ ઘણે સત્થવાહે ધમ્મ સોચ્છા જેઠ  
 પુત્ત કુટુબે ઠવેત્તા પવ્વહણ, સામાહ્યમાહ્યાહ ઇકારસઅગાહ વહ્નિ વાસાણિ  
 સામણપરિયાગ પાઠણહ, પાઠણિત્તા માસિયાણ સલેહણાણ અન્નતરેસુ દેવલોણસુ  
 દેવત્તાણ ઉવવન્ને મહાવિદેહે વાસે સિઙ્ગિહિહ, જાવ અંત કરેહિહ । એવ સ્વલુ જબૂ !  
 સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ પન્નરસમસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે તિવેમિ )  
 તે કાળે અને તે સમયે તે નગરીમા સ્થવિરો પધાર્યા ધન્યમાર્થવાહિ તેઓના  
 મુખથી ધર્મનું વ્યાખ્યાન સાંભળ્યું અને સાંભળીને તેને પ્રતિબોધ થયો પ્રતિબુદ્ધ  
 થઈને તેણે પોતાના કુટુમ્બના વડા તરીકે પોતાના મોટા પુત્રનીનીમણુક કરીને  
 દીક્ષા અહણુ કરી દીક્ષા અહણુ કર્યા બાદ તેણે સામાયિક વગેરે અગિયાર અગોત્ર  
 અધ્યયન કર્યું અને ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કરીને એક  
 માસની સલેખનાથી ૬૦ ભક્તોનું અનશન વડે હેદન કરીને વખતે

सुकुमाल जाव तेसि णं माहणाणं इट्ठाओ ५, विपुले माणु-  
 स्सए जाव विहरंति । तएण तेसि माहणाण अन्नया कयाई  
 एगयओ समुवागयाणं जाव इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे  
 समुप्पज्जित्था, एव खलु देवाणुप्पिया । अम्हं इमे विउले  
 धणे जाव सावतेज्जे अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ  
 पकाम दाउं पकाम भोत्तु पकामं परिभाएउं त सेय खलु अम्हं  
 देवाणुप्पिया । अन्नमन्नस्स गिहेसु कल्लाकल्लि विउल असण  
 पाण खाइम साइमं उवक्खडाविउ उवक्खडावित्ता परिभुज-  
 माणाणं विहरित्तए, अन्नमन्नस्स एयमट्ट पडिसुणेंति परिसु-  
 णित्ता कल्लाकल्लि अन्नमन्नस्स गिहेसु विपुल असण४ उव-  
 क्खडावेति, उवक्खडावित्ता परिभुजमाणा विहरति, तएणं  
 तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नया भोयणवारएजाए यावि  
 होत्था, तएण सा नागसिरी विपुल असणं४ उवक्खडेति  
 उवक्खडित्ता एगं महं सालइय तित्तालाउय बहुसभारसंजुत्तं  
 नेहावगाढ उवक्खडेइ उवक्खडित्ता एग विदुय करयलसि  
 आसाएइ आसाइत्ता त खारं कडुयं अक्खज्ज अभोज्ज  
 विसंवेभूय जाणित्ता एवं वयासी—धिरत्थु ण मम नागसिरीए  
 अहन्नाए अपुन्नाए दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगोणिवोलियाए  
 जीएणं मए सालइए बहुसंभारसभिए नेहावगाढे उवक्ख-  
 डिए, सुवहुदब्बक्खए, नेहक्खए य कए, तं जइणं ममं  
 जाउयाओ जाणिस्सति तो णं मम खिसिस्सति त जाव  
 ताव मम जाउयाओ ण जाणंति ताव मम सेय एयं साल-

## ॥ अथ षोडशाध्ययनं प्रारभ्यते ॥

उक्त पञ्चदशाध्ययनम्, तत्र विषयगद्गोऽनर्थस्य कारणमित्युपदिष्टम् इह षोड-  
शाध्ययने तु तद्विषयनिदानमनर्थस्य मूलं मयतीत्युच्यते, इत्येव संबन्धेन प्रसङ्गः  
प्राप्तस्यास्याध्ययनस्य प्रथमं सूत्रमाह—'जङ्घा भते !' इत्यादि ।

मूलम्—जङ्घा णं भते । समणेणं भगवया महावीरेणं जाव  
सपत्तेण पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते सोल-  
समस्स णं भते णायज्झयणस्स णं समणेण भगवया महा-  
वीरेण जाव संपत्तेणं के अट्ठे पणत्ते !, एवं खलु जवू ।  
तेणं कालेणं तेणं समएण चपा नामं नयरी होत्था, तीसेणं  
चपाए नयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमेदिसिभाए सुभूमिभागे  
उज्जाणे होत्था, तत्थ णं चपा नयरीए तओ माहणा भायरी  
परिवसंति, तं जहा-सोमे सोमदत्ते सोमभूर्इ, अड्ढा जाव  
अपरिभूया रिउव्वेय जाव सुपरिनिट्ठिया, तेसि ण माहणाणं  
तओ भारियाओ होत्था, तजहा-नागसिरी भूयसिरी जक्खसिरी

### सोलहवा अध्ययन प्रारभ

पन्द्रहवा अध्ययन समाप्त हो चुका—अब सोलहवा अध्ययन प्रारभ  
होता है । पन्द्रहवे अध्ययन में विषयसंग 'अनर्थ' का कारण कहा गया  
है—अब सोलहवे अध्ययन में 'विषय' निदान 'अनर्थ' का कारण होता है  
'यह स्पष्ट किया जायगा ।' इस संबन्ध से आया हुआ इस अध्ययन का  
प्रथम सूत्र है 'जङ्घा भते ।' इत्यादि ।

### सोणमु अध्ययन प्रारंभ

पंद्रहवा अध्ययन पुर थाय छे छवे सोणमु अध्ययन प्रारंभ थाय छे  
पंद्रहवा अध्ययनमा विषयसंगने अनर्थनु कारणं भताववाभा आयु छे छवे  
सोणमा अध्ययनमा विषय-निदान अनर्थनु कारणं डोय छे, आ वात स्पष्ट  
करवाभा आवशे आ विषयने लगतु आ अध्ययननु पडेनु सूत्र आ छे —

जङ्घा भते इत्यादि—



श्रीसुधर्मास्वामी कथयति—‘एव खलु जत्र’ इत्यादि । एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगरी आसीत्, तस्याः खलु चम्पाया नगर्या वहिरुत्तरपारस्त्ये दिग्भागे सुभूमिभागनाम उद्यानमासीत्, तत्र खलु चम्पाया नगर्या त्रयो ब्राह्मणा भ्रातरः परिवसन्ति. तद् यथा—(१) सोमः, (२) सोमदत्तः, (३) सोमभूतिः, ते किं भूताः—आढ्याः—‘यनवन्त’ यावद्—अपरिभूताः, तथा—‘रिउव्वेय जाव’ ऋग्वेद—यजुर्वेदमापवेदाथर्ववेदेषु साङ्गोराङ्गेषु सुपरि-निष्ठिताः । तेषां खलु ब्राह्मणानां तिस्रोभार्या आसन्, तद् यथा—(१) नागश्रीः,

सोलहवे जाता यन का ह भदंत ? उन्ही श्रमण भगवान महावीरने कि जो सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हो चुके हैं क्या भाव अर्थ प्रति-पादित किया है ? इस प्रकार के जम्बू स्वामी के प्रश्नका उत्तर देते हुए सुधर्मास्वामी उनसे कहते हैं कि जम्बू ! (तेणं कालेण तेण समएण चपा नाम नगरी होत्था, तीसेण चपाए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए सु भूमिभागे उज्जाणे, होत्था, तत्थ ण चपाए नगरीए तओ माहणा भायरा परिवसति ) उस काल और उस समय में चपा नामकी नगरी थी । उस चपा के बाहिर ईशान कोण में सुभूमि भाग नाम का उद्यान था । उसी चपा नगरी में तीन ब्राह्मण भाइ रहते थे ( त जहा ) उनके नाम ये हैं—( सोमे सोमदत्ते सोमभूई ) सोम, सोमदत्त, और सोमभूति ( अड्डा जाव अपरिभूया ) ये सब धन धान्यादि सपन्न एवं जन मान्य ( रिउव्वेय, जाव सुपरिनिष्ठिता ) ये सबके सब ऋग्वेद आदि चारों वेदों

महावीर—हे जेओ, सिद्धिगति भेणवी थूक्या छे—सोणमा साताध्वयनने शो अर्थ निरूपित कयो छे ? आ रीते जणू स्वामीना प्रश्नने सालणीने सुधर्मा स्वामी तेभने उत्तर आपता कडे छे उ डे जे जणू ।

( ते ण कालेण तेण समएण चपा नाम नगरी होत्था, तीसेण चपाए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए सुभूमिभागे उज्जाणे, होत्था तत्थ ण नगरीए तओ माहणा भायरा परिवसति )

ते काले अने ते समये चपा नामे नगरी હતી તે ચપા નગરીની બહાર ઇશાન કોણમાં સુભૂમિભાગ નામે ઉદ્યાન હતું તે ચપા નગરીમાં ત્રણ બ્રાહ્મણ ભાઈઓ રહેતા હતા ( તજહા ) તેમના નામ આ પ્રમાણે છે—( સોમે સોમદત્તે સોમભૂઈ ) સોમ, સોમદત્ત, અને સોમભૂતિ ( અડ્ઢા જાવ અપરિભૂયા ) તેઓ ત્રણે ધનધાન્ય વગેરેથી સપન્ન તેમજ જનમાન્ય હતા ( રિઉવ્વેય, જાવ સુપરિનિષ્ઠિયા ) તેઓ ત્રણે ઋગ્વેદ વગેરે ચારે વેદોના આરા સાતા હતા ( તેસિ... માહણા ણ તઓ મારિયાઓ હોત્યા ત જહા—નાગસિરી, મૂયસિરી

ઇયં તિત્તાલાઉ ચ વહુસંભારણેહકયં પગતે ગોવેત્તણ અન્ન  
સાલઙ્ગયં મહુરાલાઉયં જાવ નેહાવગાઠં ઉવવસ્થડેત્તણ, एवं  
સંપેહેઇ સંપેહિત્તા ત સાલઙ્ગય જાવ ગોવેઇ, અન્ન સાલઙ્ગયં  
મહુરાલાઉયં ઉવસ્થડેઇ, તેસિં માહણાળં પહાયાળં જાવ  
સુહાસણવરગયાળ તં વિપુલં અસણં ૪ પરિવેસેઇ, તણં તે  
માહણા જિમિયમુત્તુત્તરાગયા સમાળા આયંતા ચોમ્મયા પરમ-  
સુઇમૂયા સકમ્મસપઉત્તા જાયા યાવિ હોત્થા, તણ તાઓ  
માહણોઓ પહાયાઓ જાવ વિમૂસિયાઓ ત વિપુલ અસણં  
૪ આહારેતિ આહારિત્તા જેનેવ સયાઇ ૨ ગેહાઇ તેનેવ ઉવા-  
ગચ્છઇ ઉવાગચ્છિત્તા સકમ્મસપઉત્તાઓ જાયાઓ ॥સૂ.૦૧॥

ટીકા—શ્રીજમ્બૂસ્વામી શ્રીસુધર્મસ્વામિન પૃચ્છતિ—યદિ સ્વલુ હે ભદન્ત ! =  
હે ભગવન્ શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્ સિદ્ધિગતિનામત્રેય સ્થાન સંપાદ્ધેન  
પન્નદશસ્ય અયમ્=ઉક્તરૂપ., અર્થઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, પોઢશસ્ય સ્વલુ જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય શ્રમણેન  
ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્ સિદ્ધિગતિનામધેય સ્થાન સંપાદ્ધેન કોઽર્થઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ?

ટીકાર્થ—( જહ્ણ ભતે । સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ  
પન્નરસમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પળ્લત્તે સોલસમસ્સ ણ ભતે ? નાય  
જ્ઞયણસ્સ ણ સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પળ્લત્તે ?  
एवं સ્વલુ જમ્બૂ ? ) શ્રી જમ્બૂ સ્વામી સુધર્માસ્વામી સે પૂછતે હૈં કિ ભદત ।  
શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરને જો કિ સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાનકો પ્રાપ્ત હો  
ચુકે હૈં પન્નદશવેં જ્ઞાતાધ્યયનકા યદ્ પૂર્વોક્તરૂપસે અર્થ નિરૂપિત કિયા હૈ—તો

ટીકાર્થ—( જહ્ણ ભતે । સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણે પન્નરસ-  
મસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પળ્લત્તે સોલસમસ્સ ણ ભતે ! નાયજ્ઞયણસ્સ ણ  
સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પળ્લત્તે ? એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! )

શ્રી જમ્બૂ સ્વામી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે ભદત । શ્રમણ ભગ-  
વાન્ મહાવીરે કે-જેઓ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચૂક્યા છે-પદરમા  
જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કયો છે તો તે

પ્રકામ દાતુ, પ્રકામ ભોક્તુ પ્રકામ પરિભાજયિતુમ્ તતઃ = તસ્માત્ શ્રેય =  
શ્રેયસ્કર સ્વલુ અસ્માક હે દેવાનુપ્રિયા ! અન્યોન્યસ્ય = પરસ્પરસ્ય ગૃહેષુ  
'કલ્યાકલ્લિ' કલ્યાકલ્ય પ્રતિદિસ વિપુલ = તુલ્યમ્, અશન પાન સ્વાદ્યં સ્વાદ્યં  
'ઉવક્ષ્ણડાઉ' ઉપસ્કાર્યુપરિભુજાનાનાં વિહર્તુમ્ । અન્યોન્યસ્ય=પરસ્પરસ્ય એત-  
મયે તે ત્રયો ભ્રાતરો વ્રાહ્મણાઃ પ્રતિશ્રુવન્તિ=સ્વીકુર્વન્તિ પ્રતિશ્રુત્ય 'કલ્યાકલ્લિ'

વસાઓ પ્રકામ દાઉ પ્રકામ ભોક્તુ પ્રકામ પરિભાજ-ત સેય સ્વલુ  
અમ્હ દેવાણુપ્પિયા ! અન્નમન્નસ્સ ગિહેસુ કલ્યાકલ્લિ વિપુલ અમણ પાણ  
સાહમ સાહમ ઉવક્ષ્ણડાવિઉ) હે દેવાનુપ્રિયો ! અપને પાસ વિપુલમાત્રા  
મેં, ગણિમ, ધરિમ, મેય, એવ પરિચ્છેયરૂપ ચારોં પ્રકાર કા ધન હૈ,  
યાવત્ પદ્મરાગ આદિરૂપસ્વાપત્ય મી હેં, કનક, સુવર્ણ, રત્ન, મણિમૌક્તિક  
આદિ સવ કુઝ હૈ-ઔર વહ દતના અધિક હૈ કિ સાત પીઠી તક મી  
યદિ સ્વૂવ દાન દિયા જાવે, ઘેઠ ૨ સ્વૂવ સ્વાયા જાવે-ઔર ઉસકા  
હિસ્સા ભાગ મી કર દિયા જાવે-તૌ મી વહ સમાપ્ત નહી હો સકતા હૈ ।  
હસલિયે હમ લોગોં કો ઉચિત હૈ કિ હમ લોગ પ્રતિ દિન એક દૂસરે કે  
ઘર પર અશન, પાન, સ્વાદ્ય એવ સ્વાદ્યરૂપ ચતુર્વિધ આહાર વિપુલ માત્રા  
મેં વનવાવે ઔર ( ઉવક્ષ્ણડાવિત્તા પરિભુજમાણાણ વિહરિત્તણ ) ઘનવા  
કર ઉસ કા ભોજન કરે । ( અન્નમન્નસ્સ એવમદ્દ પલ્લિસુણેતિ ) હસ પ્રકાર  
કા આપસ કા વિચાર ઉન્હોને એક દૂસરે કા સ્વીકાર કર લિયા ।

જાવ આસત્તમાઓ કુઠ્ઠમોઓ પ્રકામ દાઉ પ્રકામ ભોક્તુ પ્રકામ પરિભાજ-ત સેય  
સ્વલુ અમ્હ દેવાણુપ્પિયા ! અન્નમન્નસ્સ ગિહેસુ કલ્યાકલ્લિ વિપુલ અમણ પાણ સાહમ  
સાહમ ઉવક્ષ્ણડાવિઉ )

હે દેવાનુપ્રિયો ! આપણી પાસે પુણ્ડળ પ્રમાણુમા ગણિમ, ધરિમ, મેય,  
અને પરિચ્છેય રૂપ ચારે જાતનુ ધન છે યાવત્ પદ્મરાગ વગેરે રૂપ સ્વાપત્ય  
પણુ છે કનક, સુવર્ણ, રત્ન, મણિ, મોતી, વગેરે બધુ છે-અને જે કંઈ છે  
તે એટલુ બધુ કે સાત પેઠી સુધી પણ જો પુણ્ડળ પ્રમાણુમા દાન કરવામા  
આવે છતા તે ખૂટશે નહિ એથી અમને એ યોગ્ય લાગે છે કે અમે બધા  
દરરોજ એકબીજાને દેર અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ ચાર જાતના  
આહારો પુણ્ડળ પ્રમાણુમા બનાવડાવીએ અને ( ઉવક્ષ્ણડાવિત્તા પરિભુજમાણાણ  
વિહરિત્તર ) બનાવડાવીને જમીએ ( અન્નમન્નસ્સ એવમદ્દ પલ્લિસુણેતિ ) આ રીતે  
બધાએ એકમત થઈને વાત સ્વીકારી લીધી

(૨) ભૂતશ્રી, (૩) યક્ષશ્રી, તાઃ કિં ભૂતાઃ-સુકુમારપાણિપાદા, યાવત્-સર્વાન્ન-સુન્દર્યઃ, તેષાં સ્વલુ બ્રાહ્મણાનામિષ્ટાઃ=કમતીયાઃ, ત્રિપુલ્લે માનુષ્યકાન યાવત્ કામભોગાન્ શુદ્ધાના વિહરન્તિ ।

તતઃ સ્વલુ તેષાં બ્રાહ્મણાનામન્યદા યદાવિદેહતઃ સમુપાગતાના યાવત્ અથ મેતદ્દૂષ=વશ્યમાણસ્વરૂપ, મિથ=પરસ્પર, કથામણ્ડાપઃ=ચર્ચાલાપઃ સમુદય-ઘટ-એવ સ્વલુ હે દેવાનુપિયાઃ ! અસ્માકમિદ ત્રિપુલ ધન ગણિમધરિમમેયપરિ-ચ્છેદ્ય ભેદાન્ચતુર્વિધ યાવત્ 'સાવતેજ્જે' સ્વાપતેય - પદ્મરાગાદિરૂપ વા, અથ યાવત્પદ્મોદય-કનકસુવર્ણરત્નાદિક તથા-મૌક્તિકાદિક ચ વિદ્યતે, કિંભૂત તદિ-ત્યાહ-'અલાહિ' પર્યાપ્ત=પરિપૂર્ણ-યાવત્-આસત્તમાત્ કુઠ્ઠવશાત્=સમમગ્નપર્યન્ત

કે અચ્છે જાનકાર યે । ( તેસિણ માહણાણ તમો આરિયાઓ તોન્થા-ત જહા-નાગસિરી, ભૂયસિરી, જમ્ભસિરી, સુકુમાલ જાવ તેસિ ણ માહણાણ ઇદ્ધાઓ ૫ ત્રિપુલે માં જાવ વિહરતિ ) હન તીનો બ્રાહ્મણોં કી તીન સ્ત્રિયા થી । ઉનકે નામ યે હે ।-નાગ શ્રી, ભૂત શ્રી, ઓર યક્ષ શ્રી, યે સવ સુકુમાર કરચરણવાલી થી યાવત્ સર્વાન્ન સુન્દર થી । યે તીનોં બ્રાહ્મણ હનકે સાથ મનુષ્યભવ સવન્ધી કામ ભાગોં કો ભોગતે હુણ આનન્દ સે રહતે થે । ( તણ તેસિ માહણાણ અન્નયા કયાઈં ઇગય ઓ સમુવાગયાણ જાવ હમેયારૂવે મિહો કહાસમુલ્લાવે સમુપ્પજિત્યા ) એક દિન કી વાત હૈ કિ જવ યે તીનોં આઈં એક જગહ વૈઠે હુણ થે તથા હનકા પરસ્પર મેં હસ પ્રકાર કા વિચાર ચલા-( એવ સ્વલુ દેવાણુપિયા ! અમ્હ હમે વિહરે ધણે જાવ સાવતેજ્જે અલાહિજાવ આસત્તમાઓ કુલ-

જમ્ભસિરી, સુકુમાર જાવ તેસિ ણ માહણાણ ઇદ્ધાઓ ૫ ત્રિપુલે માં જાવ વિહરતિ) આ ત્રણે બ્રાહ્મણોને ત્રણ સ્ત્રીઓ હતી તેમના નામો આ 'પ્રમાણે' છે નાગશ્રી, ભૂતશ્રી, અને યક્ષશ્રી તેઓ ત્રણે સુકુમાર હાથ અને પગવાળી હતી અને બધા અગો તેમના સુન્દર હતા ત્રણે બ્રાહ્મણો તેમની સાથે મનુષ્ય ભવના કામભોગો ભોગવતા સુખેથી રહેતા હતા

( તણ તેસિ માહણાણ અન્નયા કયાઈં ઇગય ઓ સમુવાગયાણ જાવ હમેયારૂવે મિહો કહાસમુલ્લાવે સમુપ્પજિત્યા )

એક દિવસની વત છે કે તેઓ ત્રણે ભાઈ એક સ્થાને બેઠા હતા ત્યારે તેઓ પરસ્પર આ બાતનો વિચાર કરવા લાગ્યા કે—

—( એવ સ્વલુ દેવાણુપિયા ! અમ્હ હમે વિહરે ધણે જાવ



આસાદયતિ, અસ્વાય તત્ શાર કટુકમસ્વાાત્રમભોજ્ય વિપભૂત જ્ઞાતા એવમવાદીત્-  
 ધિગસ્તુ મા નાગશ્રિયમઅન્યામપુણ્યાદુર્ભગા 'દુર્ભગસત્તાએ' દુર્ભગસત્વાદુર્ભગ=નિષ્ફલ  
 સત્ત્વ=વલ યત્યાઃ સા તા વ્યર્થપરિણામિત્યર્થઃ 'દુર્ભગર્ણિયોલિએ' દુર્ભગનિમ્બ  
 ગુલિકાનિમ્બફલિકા, તદ્વદ્ દુર્ભગા તા=જનૈરનાદરણીયામિત્યર્થઃ, અત્ર દ્વિતીયાર્થે  
 પછી માકૃતત્વાત્, 'જીએ' યયા સ્વલુ મયા શારદિક વહુસમારદ્રવ્યસમૃત સ્નેહાવ-  
 (ઉવક્ષ્ણહિત્તા એગ વિદુય કરચલસિ આસાએઠ) જવ વહ તૈયાર શાક  
 હો ચુકા-તવ ઉસને ઉસમેં સે ઇક વિન્દુ માત્ર શાક અપની હથેલી પર  
 રખા ઓર ફિર ઉસે ચત્વા-(આસાદત્તા ત સ્વાર કટુય અક્ષજ્જ અભોજ્જ  
 વિસંભૂય જાણિત્તા એવ વયાસી-વિરત્થુ ણ મમ નાગસિરીએ અહન્નાએ,  
 અપુન્નાએ દુર્ભગાએ દુર્ભગસત્તાએ દુર્ભગર્ણિયોલિયાએ જીએણ મએ સાલહએ  
 વહુસમારસમિએ નેહાવગાઢે ઉવક્ષ્ણહિએ) ચક્ષુર ઉસે જ્ઞાત હુઆ  
 કિ યહ શાક તો વહુન સ્વારા હૈ, વહુત અધિક કટુઆ હૈ। જ્ઞાને કે  
 યોગ્ય નહી હૈ ભોજન મેં લેને કે લાયક નહી હૈ, યહ તો વિષ જૈસા હૈ  
 એસા જાનકર ઉસને મન હી મન વિચાર ક્રિયા ઉસ વિચાર મેં ઉસને  
 કહા-મુક્ક નાગશ્રી કો ધિક્કાર હૈ, મેં અધન્યા ઓર અપુણ્યા હૂં। જનો  
 કે દ્વારા આદર પાને યોગ્ય નહી હૂં। મેરે હમ વલ કો વાર ૨ ધિક્કાર  
 હો-મેરા યહ વલ ચિલકુલ નિષ્ફલ હૈ મેને જો હસ શાક કે બનાને મેં  
 હતના ઉચ્ચમ ક્રિયા હૈ વહ મેરા સર્વથા નિષ્ફલ ગયા। જિસ પ્રકાર નીમ-

ઉપર ધી તરતુ હું (ઉવક્ષ્ણહિત્તા એગ વિદુય કરચલસિ આસાએઠ) જ્યારે  
 શાક તૈયાર થઈ ગયું ત્યારે તેણે તેમાથી ક્ષત એક ટીપા જેટલું શાક પોતાની-  
 હથેળી ઉપર લઈને ચાખ્યું

( આસાદત્તા ત સ્વાર કટુય અક્ષજ્જ અભોજ્જ વિસંભૂય જાણિત્તા એવ  
 વયાસી-વિરત્થુ ણ મમ નાગસિરીએ અહન્નાએ, અપુન્નાએ, દુર્ભગાએ 'દુર્ભગસત્તાએ'  
 દુર્ભગર્ણિયોલિયાએ જીએણ મએ સાલહએ વહુસમારસમિએ નેહાવગાઢે ઉવક્ષ્ણહિએ)

ચાખવાથી તેને લાગ્યું કે આ શાક તો ખૂબ જ ખાર છે, ખૂબ જ કટવું  
 છે, ખાવાલાયક નથી, લોજનમા કામ લાગે તેવું નથી, આ તો ઝેર જેવું છે,  
 આમ બાણીને તેણે પોતાના મનમા જ વિચાર કર્યો અને વિચાર કરતા તેણે  
 પોતાની બાતને જ આ પ્રમાણે કહ્યું કે-મને-નાગશ્રીને-ધિક્કાર છે, હું ખરેખર  
 અધન્યા તેમજ અપુણ્યા છું હું લોકો દ્વારા આદર મેળવવા લાયક નથી  
 મારા આ બળને વારવાર ધિક્કાર છે, મારું આ બળ સાવ નકામું છે શાક  
 તૈયાર કરવામા જેટલો મેં શ્રમ કર્યો છે તે બધો નકામો ગયો જેમ લીમ-

फलमाकलयं=प्रतिदिनसम् अन्योन्यरूपं चक्षुषु विपुलमगनादिकमुपस्कारयन्ति । उप  
स्कार्यं परिशुद्धानां विहरन्ति । ततः गच्छन्तु तस्या नागश्रीः ब्राह्मणा अन्यथा=  
कदाचिदन्यस्मिन् समये ' भोयणवारण ' भोजनवारक =भोजयितुं नियमितो दिवसो  
भोजनवारक जातः=समायातथाप्यभयत्, ततः सन्तु सा नागश्रीः विपुलमगनं  
पानं खाद्यं स्वाद्यमुपस्कारोति=निष्पादयति, उपस्कृत्य एकं महत् ' सालइय '   
सारचित्त-सारेण रसेन चित्तं युक्तं गदा-शरदिकु=शरदुत्तमं ' तित्तालाउअ '   
तित्तालाधुकु=निष्पादयत् तित्तरसयुक्ततुम्बीफलं, बहुसंभारसयुक्तं=बहुभिः=  
अनेकविधैः संभारद्रव्यैः=साकाशं स्यादसुगन्धविशेषार्थं दिहुमेथिकाजीरमादीनि  
व्याघारद्रव्याणि निक्षिप्यन्ते, तैर्मिश्रितं, ' णेहावगाढ ' स्नेहावगाढ=घृतादिमिश्रि-  
तम् (युक्तम्) ' उपक्खडेइ ' उपस्करोति, उपस्कृत्यैकं पिन्दुकं वरवले समादाय

( पडिसुणित्ता कल्ला कल्लिं अन्नमन्नस्स गिहेसु विउल असण ४ उवक्ख  
डावेति ) स्वीकार करके अब वे एक दूसरे के घर पर विपुल मात्रा में  
निष्पन्न हुए अशनादिरूप चतुर्विध आहार को खाने पीने लगे । ( तएण  
तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नया भोयणवारण जाए यावि होत्था )  
किसी एक दिन नागश्री ब्राह्मणी की भोजन बनाने की बारी आई  
( तएण सा नागसिरी विउल असण ४ उवक्खडेइति ) सो उस दिन  
उसने विपुल मात्रा में चारों प्रकार का आहार बनाया ( उवक्खडित्ता  
एग मह सालइय तित्तालाउअ बहुसंभारसयुक्तं णेहावगाढ उवक्खडेइ )  
आहार बनाकर फिर उसने शरदकतु में उत्पन्न हुई अथवा रस से  
सरस बनी हुई तित्तरसतुम्बी का शाक बनाया-और उसमें स्वाद एवं  
सुगन्धि के निमित्त हींग, मैथी, जीरे आदि का बंधार दिया । उसे खूब  
अधिक घृत में छोंका था-इसलिये घृत उसके ऊपर तैर रहा था ।

( पडिसुणित्ता कल्ला कल्लिं अन्नमन्नस्स गिहेसु विउल असण ४ उवक्खडावेति )

स्वीकारीने तेणो ओउणीज्जने घेर पुण्डण प्रभाणुमा अशनपान वगेरे चार  
जतना आहारोने भावा-पीवा लाब्धा

( तएण तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नया भोयणवारण जाए यावि होत्था )

कैह ओउ दिवसे नागश्री ब्राह्मणीने लोअन तैयार करवाने वारे आब्धे  
( तएण सा नागसिरी विउल असण ४ उवक्खडेइति ) तेणु ते दिवसे पुण्डण  
प्रभाणुमा चारे जतना आहारो जनाव्वा

( उवक्खडित्ता एग मह सालइय तित्तालाउअ बहुसंभारसयुक्तं णेहावगाढ उवक्खडेइ )

आहार जनाव्वा तेणु शरद कतुमा उत्पन्न थयेली अथवातो रसथी  
सरस थयेली तित्तरसवाणी तुम्बीनु शाक जनाव्वा अने तेमा स्वाद अने  
सुगन्धीना भाटे हींग, मैथी, जीरे वगेरेने बंधार दीया ते ॥

આસ્વાદયતિ, અસ્વાગ તત્ સાર કટુકમસ્યાગ્રમમોજ્ય વિષમ્ભૂત જ્ઞાતા એમવાદીત્-  
ધિગસ્તુ મા નાગશ્રિયમઅન્યામપુણ્યા દુર્ભગા 'દુર્ભગસત્તાએ' દુર્ભગસત્તા દુર્ભગ=નિષ્ફલ  
સર્વ=વલ યસ્યાઃ સા તા વ્યર્થપરિશ્રમામિત્યર્થઃ 'દુર્ભગર્ણિયોલિએ' દુર્ભગનિમ્બ-  
ગુલિકાનિમ્બફલિકા, તદ્વદ્ દુર્ભગા તા=જનૈરનાદરણીયામિત્યર્થ, અત્ર દ્વિતીયાર્થે  
પછી પ્રાકૃતત્વાત્, 'જીએ' યયા સ્વલુ મયા શારદિક વહુસમારદ્રવ્યસમૃત સ્નેહાવ-

( ઉવસ્વલિત્તા એગ વિદુય કરયલસિ આસાણ્ઠ ) જવ વહ તૈયાર શાક  
હો ચુકા-તવ ઉસને ઉસમેં સે ઇક વિન્દુ માત્ર શાક અપની હથેલી પર  
રખા ઓર ફિર ઉસે ચલા-(આસાણ્ઠત્તા ત સ્વોર કટુય અસ્વજ્ઞ અમોજ્ઞ  
વિસમ્ભૂય જાણિત્તા એવ વયાસી-ધિરત્યુ ણ મમ નાગસિરીએ અહનાએ,  
અપુનાએ દુરમગાએ દુર્ભગસત્તાએ દુર્ભગર્ણિયોલિયાએ જીએણ મએ સાલહએ  
વહુસમારસભિએ નેહાવગાઢે ઉવસ્વલિત્તા ) ચલકર ઉસે જ્ઞાત હુઆ  
કિ યહ શાક તો વહુન ગ્યારા હૈ, વહુત અધિક કટુઆ હૈ। જાને કે  
યોગ્ય નહીં હૈ ઓજન મેં લેને કે લાયક નહીં હૈ, યહ તો વિષ જૈસા હૈ  
એસા જાનકર ઉસને મન હી મન વિચાર ક્રિયા ઉસ વિચાર મેં ઉસને  
કહા-મુજ્ઞ નાગશ્રી કો ધિક્કાર હૈ, મેં અધન્યા ઓર અપુણ્યા હૂં। જનોં  
કે દ્વારા આદર પાને યોગ્ય નહીં હૂં। મેરે હમ વલ કો વાર ૨ ધિક્કાર  
હો-મેરા યહ વલ બિલકુલ નિષ્ફલ હૈ મેને જો હસ શાક કે વનાને મેં  
હતના ઉયમ ક્રિયા હૈ વહ મેરા સર્વથા નિષ્ફલ ગયા। જિસ પ્રકાર નીમ-

ઉપર ધી તરતુ હુતું ( ઉવસ્વલિત્તા એગ વિદુય કરયલસિ આસાણ્ઠ ) બ્યારે  
શાક તૈયાર થઈ ગયું ત્યારે તેણે તેમાથી કટત એક ટીપા જેટલું શાક પોતાની  
હથેળી ઉપર લાગે ચાખ્યું

( આસાણ્ઠત્તા ત સ્વોર કટુય અસ્વજ્ઞ અમોજ્ઞ વિસમ્ભૂય જાણિત્તા એવ  
વયાસી-ધિરત્યુ ણ મમ નાગસિરીએ અહનાએ, અપુનાએ, દુરમગાએ 'દુર્ભગસત્તાએ  
દુર્ભગર્ણિયોલિયાએ જીએણ મએ સાલહએ વહુસમારસભિએ નેહાવગાઢે ઉવસ્વલિત્તા )

ચાખવાથી તેને લાગ્યું કે આ શાક તો ખૂબ જ ખાર છે, ખૂબ જ કટકું  
છે, ખાવાલાયક નથી, લોજનમા કામ લાગે તેવું નથી, આ તો ઝેર જેવું છે,  
આમ જાણીને તેણે પોતાના મનમા જ વિચાર કર્યો અને વિચાર કરતા તેણે  
પોતાની બાતને જ આ પ્રમાણે કહ્યું કે-મને-નાગશ્રીને-ધિક્કાર છે, હું ખરેખર  
અધન્યા તેમજ અપુણ્યા છું હું લોકો દ્વારા આદર મેળવવા લાયક નથી  
મારા આ બળને વારવાર ધિક્કાર છે, મારા આ બળ સાથે નકામું છે શાક  
તૈયાર થાય છે તે મેં શ્રમ કર્યો છે તે બધો નકામો ગયો જેમ સીમ-

ગાઢમુપસ્કૃત, તેન સુમદ્રગ્નયસય:-હિન્દુનીરતાદિદ્રગ્નનાગ:, સ્નેહસય:=ઘૃતાદિ  
સયથકૃત:, તત્=તસ્માત્ યદિ સ્વહ મમ 'જાડયાઓ' યાત્રકા:, દેવરમાર્ગા:  
જ્ઞાસ્યન્તિ, 'તોળ' તર્હિ સ્વહ મમ 'લિસિસ્મતિ' લિગિયન્તિ-નિન્દાં કોપ ચ  
કરિષ્યન્તિ, તત્-તસ્માત્ યાગ્નમ યાત્રકા ન જાનન્તિ, તાગ્નમ શ્રેય:-ઉચિત  
એતત્ શારદિક તિક્તોલાયુક મધુમારસ્નેહકૃતમ્ એકાન્તે 'ગોવેત્તણ' ગોપયિશુમ્,  
અન્યત્ શારદિક મધુમારલાયુક મધુરતુમ્બીફલ યાગ્ન સ્નેહાવગાઢમુપસ્કૃતમ્ । એવ

કી નિવૌલી કિસી મનુષ્ય કી દૃષ્ટિ મેં આદર પાને યોગ્ય નહીં હોતી  
હે વસી પ્રકાર મેં મી જનો દ્વારા અનાદરણીય ઘની હૈ । જો મેંને શરદ  
કાલિક અથવા સરસ હસ તુમી ફલ કા હિંદુ, જીરકાદિ દ્રવ્યોં સે  
યુક્ત ઓર ઘૃતાદિ સે યુક્ત શાક ઘનાયા હૈ (સુમદ્રદવ્વક્ષણ, નેહક્ષણ  
ય કણ) હસ કે ઘનાને મેં મેંને વ્યર્થ હી વહુત સે હિંદુ જીરે મેથી આદિ  
દ્રવ્ય કા ઓર ઘૃત કા વિનાગ ક્રિયા હૈ । (ત જહ્ણ મમ જાડયાઓ  
જાણિસ્સતિ, તો, ણ મમ લિસિસ્સતિ) હસ ઘાત કો યદિ મેરી દેવરાની  
જાનેગી તો વે મેરે ઉપર ગુસ્તા હોગી ઓર મેરી નિંદા કરેગી । (ત જાવ  
તાવ મમ જાડયાઓ ણ જાણતિ તાવ મમ સેય ણય સાલહયં તિત્તા  
લાડય વહુસમારણેહ કય ણગતે ગોવેત્તણ) હસલિયે મુજે અવ યહી ઉચિત  
હૈ કિ મેં હસ શારદિક તિક્તોલાયુ કે શાક કો જો વહુત સમાર એવ  
ઘૃત ઢાલકર ઘનાયા હૈ કિસી એકાન્ત સ્થાન મેં છુપાકર રાખ દૂ ઓર

ડાની લીંબોળી માણસોની સામે આદર મેળવવા ચોખ્ખ ગણાતી નથી તે પ્રમાણે  
હુ પણ માણસો દ્વારા આદર પ્રાપ્ત કરવા લાયક રહી નથી એટલે કે હુ  
લોકોની સામે અનાદરણીય થઈ ગઈ છુ મે શરદ કાલિક અથવા સરસ  
તુમીના ફળતુ હીંગ, જીર વગેરે દ્રવ્યોથી યુક્ત અને ધી વગેરેથી યુક્ત શાક  
ખનાવ્યું છે (સુમદ્ર દવ્વક્ષણ નેહક્ષણ ય કણ) એને તૈયાર કરવામા મે  
વ્યર્થ હીંગ, જીર, મેથી વગેરે તેમજ ધી વગેરે વસ્તુઓનો હુવ્યર્થ વ્યર્થ છે  
(ત જહ્ણ મમ જાડયાઓ જાણિસ્સતિ, તો ણ મમ લિસિસ્સતિ) ને મારા  
દેશણીને આ વાતની જાણ થશે તો તેઓ ચોક્કસ મારા ઉપર ગુસ્સે ધશે અને  
મારી નિંદા કરશે

(ત જાવ તાવ મમ જાડયાઓ ણ જાણતિ તાવ મમ સેય ણય સાલહયં  
તિત્તોલાડય વહુ સમારણેહકય ણગતે ગોવેત્તણ)

એથી અત્યારે મને એજ ચોખ્ખ લાગે છે કે આ શારદિક તિક્તોલાયુ  
(કડવી તુબડી) ના શાક ને-કે જે ખૂબ જ સરસ ધી નાખીને વધારવામા  
આવ્યું છે-એક તરફ છુપાવીને મૂકી દઉં અને તેની જગ્યાએ

સાલહય



सप्रेक्षते=विचारयति, सप्रेक्ष्य तत् शारदिक यावद् तिक्तालावुक गोपयति=कचित् समाच्छाद्य धरति अन्यत् शारदिक मधुरालावुकमुपस्करोति=रन्धयति शेषमारादिभिः संस्करोति । तेषां ब्राह्मणानां यावत् सुखासनवरगतानां निजनिजामने-सुखोपविष्टानां तद् विपुलमशनपान साद्य स्वाद्य परिवेषयति=तेषां भोजनावसरे भोजनपात्रे ददातीत्यर्थः । ततः खलु ते ब्रह्मणाः 'जिमियभुत्तुत्तरगया' जिमित-

उसके र शानपर (अन्न सालइय मधुरालाउय जाव नेहावगाढ उवक्ख डेत्तए) दूसरी शारदिक मधुर तुंबड़ी का शाक हींग, जीरे और मैथी का वधार लगाकर घृत में तैरता हुआ बनालूँ (एव सपेहेइ, सपेहत्ता त सालइ य जाव गोपेइ अन्न सालइय मधुरालाउय उवक्खडेइ तेसिं महणाण ण्हायाण जाव सुहासनवरगयाण त विपुल असण ४ परिवे सेइ) ऐसा उसने विचार किया-विचार करके उस शारदिक कडवी तुबली के बहुत सभार एव घृत युक्त शाक एकान्त में छुपाकर रख दिया-और दूसरी शारदिक मधुर तुंबड़ी - का शाक हींग जीरे और मैथी का वधार लगाकर घृत में तैरता हुआ बना लिया । इनने में वे तीनों ब्राह्मण स्नान आदि से निवृत्त कर भोजन शाला में आकर अपने २ आसन पर शांति के साथ बैठ गये । उनके बैठते ही उसने उन्हें अशन आदिरूप चारों प्रकार का आहार यालो में परोसा (तएण ते माहणा जिमिय भुत्तुत्तरागया समाणा आयता, चोक्खा परम सुइ-

मधुरालाउय जाव नेहावगाढ उवक्खडेत्तए) भी७ शारदिक भीडी तूणडीनु धी उपर तरी रह्यु छे ओवु शाक डींग, ७३ अने मेथीमा ववारीने जनाउ

(एव सपेहेइ, सपेहत्ता त सालाइ य जाव गोवेइ, अन्न सालइय मधुराला-उय उवक्खडेइ, तेसिं माहणाणं ण्हायाणं जाव सुहासनवरगयाण त विपुल असण ४ परिवेसेइ)

आ जतने। तेले विचार कथो, विचार करीने ते शारदिक कडवी तूण डीना सरम धीमा वधारेल। शाकने ओक तरइ छुपावीने भूडी दीधु अने भी७ शारदिक भीडी तूणडी-दूधी-नु डींग, ७३ अने मेथीने। वधार करीने उपर धी तरतुं शाक जनाव्यु ओटलाभा तो तेओ त्रले प्राह्मणे। स्नान वगेरेथी परवारीने बोजनशाणाभा आवीने पोतपोताना आसन उपर शांतिथी जेसी गया तेभने जेसता न तेले तेओने अशन वगेरे इप थारे जतने। आहार थाणीमा पीरथे।

ગાઢમુપસ્કૃત, તેન સુવદ્નવ્યક્ત્યઃ-દિદ્ધીતીત્વાદિદ્વ્યનાશઃ,  
 સયથકૃતઃ, તત્-તસ્માત્ યદિ સત્ત મમ 'જાડયાઓ' યા  
 જ્ઞાસ્યન્તિ, 'તોળ' તર્હિ સત્ત મમ 'સિસિસ્સતિ' મિમિપ્પ્યઃ  
 કરિપ્પ્યન્તિ, તત્-તસ્માત્ યાગ્મમ યાત્તા ન જ્ઞાનન્તિ, તાવન્મ.  
 એતત્ શારદિક તિત્તોલાવુક મધુમારસ્નેહકૃતમ્ પ્પકાન્તે 'ગોવેત્તપ્પ  
 અન્યત્ શારદિક મધુમાલાવુક મધુસ્તુમ્વીફલ યામ્ સોદાવગાઢમુપ  
 ફી નિવૌલી કિસી મતુપ્પ કી દષ્ટિ મેં આદર પાને મોગ્ય  
 હૈ ઉસી પ્રકાર મેં મી જનો ઢારા અનાદરણીય ઘની હૈ । જો  
 કાલિક અથવા સરસ હમ તુવી ફલ કા દિદ્ધુ, જીરકાદિ  
 યુક્ત ઓર ઘૃતાદિ સે યુક્ત શાક ધનાયા હૈ (સુવદ્નવ્યક્ત્યપ્પ,  
 ય કપ્પ) હમ કે ધનાને મેં મને વ્યર્થ હી વદ્ધત સે દિદ્ધુ જીરે  
 દ્રવ્ય કા ઓર ઘૃત કા વિનાજ ક્રિયા હૈ । (ત જહ્ણ મમ  
 જાણિસ્સતિ, તો, ણ મમ સિસિસ્સતિ) હમ ઘાત કો યદિ મેરી  
 જાનેગી તો વે મેરે ઉપર ગુસ્સા હોગી ઓર મેરી નિંદા કરેગી  
 તાવ મમ જાડયાઓ ણ જાણતિ તાવ મમ સેયં પ્પ સાલહ  
 લાડય વહુસભારણેહ કય પ્પગતે ગોવેત્તપ્પ) હસલિયે મુક્કે અવ ય  
 હૈ કિ મેં હસ શારદિક તિત્તોલાવુ કે શાક કો જો વદ્ધત સ  
 ઘૃત હાલકર ધનાયા હૈ કિસી એકાન્ત સ્થાન મેં છુપાકર ર

ડાની લીંબોળી માણસોની સામે આદર મેળવવા યોગ્ય ગણાતી નથી  
 હુ પણ માણસો દ્વારા આદર પ્રાપ્ત કરવા લાયક રહી નથી એ  
 લોકોની સામે અનાદરણીય થઈ ગઈ હુ મેં શરૂ કાલિક અ  
 તુળીના ફળનુ હીંગ, ૨૩ વગેરે દ્રવ્યોથી યુક્ત અને ઘી વગેરેથી  
 બનાવ્યું છે (સુવદ્ન દ્રવ્યક્ષપ્પ નેહક્ષપ્પ ય કપ્પ) એને તૈયાર  
 વ્યર્થ હીંગ, ૨૩, મેથી વગેરે તેમજ ઘી વગેરે વસ્તુઓનો દુબ-  
 (ત જહ્ણ મમ જાડયાઓ જાણિસ્સતિ, તો ણ મમ સિસિસ્સતિ)  
 દેરાણીને આ વાતની બાણ થશે તો તેઓ ચોક્કસ મારા ઉપર ગુસ્સે  
 મારી નિંદા કરશે

(ત જાવ તાવ મમ જાડયાઓ ણ જાણતિ તાવ મમ સેયં પ્પ  
 તિત્તોલાડય વહુ સભારણેહકય પ્પગતે ગોવેત્તપ્પ)

એથી અત્યારે મને એ જ યોગ્ય લાગે છે કે આ શારદિક  
 (કડવી તૂબડી) ના શાક ને-કે જે ખૂબ જ સરસ ઘી નાખીને  
 આવ્યું છે-એક તરફ છુપાવીને મૂકી દઉં અને તેની જગ્યા

सप्रेक्षते=विचारयति, सप्रेक्ष्य तत् शारदिक यावद् तित्कालावुक्त गोपयति=कचित्  
समाच्छाद्य धरति अन्यत् शारदिक मधुरालावुक्तमुपस्करोति=रन्वयति शेषशारा  
दिभिः संस्करोति । तेषां ब्राह्मणानां यावत् सुखासनवरगतानां निजनिनामने-  
सुखोपविष्टानां तद् विपुलमशनपानं स्वाद्य परिवेषयति=तेषां भोजनावसरे  
भोजनपात्रे ददातीत्यर्थः । ततः खलु ते ब्रह्मणाः 'जिमियभुत्तुत्तरगया' जिमित-

उसके रानपर (अन्न सालइय मधुरालाउय जाव नेहावगाढ उक्खव  
डेत्तए) दूसरी शारदिक मधुर तुण्डी का शाक हींग, जीरे और मेंघी  
का बघार लगाकर घृत में तैरता हुआ बनाल्ले (एव सपेहेइ, सपेहिता  
त सालइ य जाव गोपेइ अन्न सालइय मधुरालाउय उक्खवडेइ तेसिं  
महाणां पहायाणं जाव सुहासनवरगयाणं त विपुल असण ४ परिवे  
सेइ) ऐसा उसने विचार किया-विचार करके उस शारदिक कडवी  
तुण्डी के बहुत सभार एवं घृत युक्त शाक एकान्त में छुपाकर रख  
दिया-और दूसरी शारदिक मधुर तुण्डी - का शाक हींग जीरे  
और मेंघी का बघार लगाकर घृत में तैरता हुआ बना लिया। इनने में  
वे तीनों ब्राह्मण स्नान आदि से निवृत्त कर भोजन शाला में आकर  
अपने २ आसन पर शांति के साथ बैठ गये। उनके बैठते ही उसने  
उन्हें अशन आदिरूप चारों प्रकार का आहार यालो में परोसा (तएण  
ते माहणां जिमिय भुत्तुत्तरागया समाणा आयता, चोक्खा परम सुइ-

मधुरालाउय जाव नेहावगाढ उक्खवडेत्तए) भीउ शारदिक भीडी तुण्डीतु  
धी उपर तरी रहु छे ओंखु शाक हींग, ओइ अने मेंघीमा बघारीने बनाउ

(एव सपेहेइ, सपेहिता त सालाइ य जाव गोपेइ, अन्न सालइय मधुराला-  
उय उक्खवडेइ, तेसिं माहणां पहायाणं जाव सुहासनवरगयाणं त विपुल  
असण ४ परिवेसेइ)

आ जतने तेले विचार क्यो, विचार करीने ते शारदिक कडवी तुण  
डीना सरअ धीमा बघारेला शाकने ओक तरइ छुपावीने भूडी दीधु अने भीउ  
शारदिक भीडी तुण्डी-इंधी-तु हींग, ओइ अने मेंघीने बघार करीने उपर  
धी तरतु शाक बनाउथु ओइलाभा तो तेओ नले प्राहणे स्नान वगेरेधी  
परवारीने भोजनशालाभा आवीने पोतपोताना आसन उपर शांतिथी ओसी  
गया तेमने ओसतां न तेले तेओने अशन वगेरे इय थारे जतने आहार

ગાદમુપસ્કૃત, તેન સુરુદ્રવ્યસયઃ-દિઙ્નીરસારિદ્રગ્નાશઃ, સ્નેહસયઃ=ઘૃતાદિ  
સયશ્વકૃતઃ, તત્=તસ્માત્ યદિ સ્વઙ મમ 'જાડયાઓ' યાત્રધા, દેવરમાયાઃ  
જ્ઞાસ્યન્તિ, 'તોળ' તર્દિ સ્વઙ મમ 'લિલિસ્સતિ' લિલિગ્ન્યન્તિ-નિન્દા કોપ ચ  
કરિષ્યન્તિ, તત્-તસ્માત્ યાગ્નમ યાત્રકા ન જ્ઞાનન્તિ, તાવન્મમ શ્રેયઃ-ઉચિતં  
એતત્ શારદિક તિક્તોલાણુક મધુમારસ્નેહકૃતમ્ એકાન્તે 'ગોવેત્તણ' ગોષપિરુમ્,  
અન્યત્ શારદિક મધુમાલાણુક મધુસ્તુમ્થીફલ યાત્ર સ્નેહાગાદમુપસ્કૃતમ્ । એ

કી નિચૌલી કિસી મનુષ્ય કી દષ્ટિ મેં આદર પાને યોગ્ય નહીં હોતી  
હૈ ઉસી પ્રકાર મેં બી જનોં દ્વારા અનાદરણીય ધની હૈ । જો મેંને શરદ  
કાલિક અથવા સરસ હસ તુમી ફલ કા દિઙ્ગુ, જીરકાદિ દ્રવ્યોં સે  
યુક્ત ઓર ઘૃતાદિ સે યુક્ત શાક ધનાયા હૈ (સુવહુ દવ્વક્ષણ, નેહક્ષણ  
ય કણ) હસ કે ધનાને મેં મને વ્યર્થ હી વહુત સે દિઙ્ગુ જીરે મથી આદિ  
દ્રવ્ય કા ઓર ઘૃત કા વિનાશ ક્રિયા હૈ । (ત જહણ મમ જાડયાઓ  
જાણિસ્સતિ, તો, ણ મમ લિલિસ્સતિ) હસ ઘાત કો યદિ મેરી દેવરાની  
જાનેગી તો વે મેરે ઉપર ગુસ્સા હોગી ઓર મેરી નિંદા કરેગી । (ત જાવ  
તાવ મમ જાડયાઓ ણ જાણતિ તાવ મમ સેય ણય સાલડય તિત્તા  
લાડય વહુસભારણેહ કય ઇગતે ગોવેત્તણ) હસલિયે મુજે અવ યરી ઉચિત  
હૈ કિ મેં હસ શારદિક તિત્તોલાણુ કે શાક કો જો વહુત સભાર એવ  
ઘૃત ઢાલકર ધનાયા હૈ કિસી એકાન્ત સ્થાન મેં છુપાકર રખ દૂ ઓર

હાની લીંબોળી માણસોની સામે આદર મેળવવા થોડ્ય ગણાતી નથી તે પ્રમાણે  
હુ પણ માણસો દ્વારા આદર પ્રાપ્ત કરવા લાયક રહી નથી એટલે કે હુ  
લોકોની સામે અનાદરણીય થઈ ગઈ છુ મેં શરદ કાલિક અથવા સરસ  
તુમીના ડ્રગ્નુ હીંગ, ૭૩ વગેરે દ્રવ્યોથી યુક્ત અને ધી વગેરેથી યુક્ત શાક  
ખનાવ્યું છે (સુવહુ દવ્વક્ષણ નેહક્ષણ ય કણ) એને તૈયાર કરવામા મેં  
વ્યર્થ હીંગ, ૭૩, મેથી વગેરે તેમજ ધી વગેરે વસ્તુઓનો દુર્વ્યય કર્યો છે  
(ત જહણ મમ જાડયાઓ જાણિસ્સતિ, તો ણ મમ લિલિસ્સતિ) બે મારા  
દેશણીને આ વાતની બાણુ થશે તો તેઓ ચોક્કસ મારા ઉપર ગુસ્સે ધશે અને  
મારી નિંદા કરશે

(ત જાવ તાવ મમ જાડયાઓ ણ જાણતિ તાવ મમ સેય ણય સાલડય  
તિત્તોલાડય વહુ સભારણેહકય ઇગતે ગોવેત્તણ)

એથી અત્યારે મને એજ થોડ્ય લાગે છે કે આ શારદિક તિત્તોલાણુ  
(કડવી તૂબડી) ના શાક ને-કે જે ખૂબ જ સરસ ધી નાખીને વધારવામા  
આવ્યું છે-એક તરફ છુપાવીને મૂકી દઉં અને તેની જગ્યાએ ( સાલડય



उज्जाणे तेणेव उवागच्छति २ अहापडिरुवं जाव विहरंति,  
 परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया, तएणं  
 तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे  
 ओराले जाव तेउलेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरइ,  
 तएणं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए  
 पोरिसिए सज्झाय करेइ वीयाए पोरिसीए एव जहा गोयमसा-  
 भी तहेव उग्गाहेइ उग्गाहिता तहेव धम्मघोसे येरं आपुच्छइ  
 जाव चपाए नयरीए उच्चनीयमज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे  
 जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएण  
 सा नागसिरी माहणी धम्मरुई एजमाण पासइ पासित्ता  
 तस्स सालइयस्स बहुसंभारसंभियस्स णेहावगाढस्स तित्त-  
 कडुयस्स पट्टवणट्ठयाए हट्टुट्ठा उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठित्ता जेणेव  
 भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त सालइय तित्त-  
 कडुय च बहुसंभारसंभिय णेहावगाढ धम्मरुइस्स अणगा-  
 रस्स पडिग्गहसि सव्वमेव निसिरइ, तएणं से धम्मरुई  
 अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु णागसिरीए माहणीए गिहाओ  
 पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता चपाए नयरीए मज्झ मज्झेणं  
 पडिनिक्खमइ जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवाग-  
 च्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामते अन्नपाण  
 पडिलेहेइ पडिलेहिता अन्नपाण करयलसि पडिदमेइ, तएणं  
 ते धम्मघोसा थेरा सालइयस्सं जाव नेहावगाढस्स गवेणं

भुक्तोत्तरगताः भोजनानन्तरं रहिरागताः मन्तः 'आयता' आगताः कृतञ्जुलकाः  
'चोक्त्वा' चोक्ताः=प्रक्षालितहस्नमुवाः परमशुचिभूताः 'सकम्मसपउत्ता'  
स्वकर्मसमयुक्ता=स्वस्वकार्यसल्लग्ना जानागप्यमयत् । ततः सलु ताः ब्राह्मण्यः  
स्नाता यायत् प्रक्षालकारविभूषितास्तद् विपुलमशन पान खाप स्वाद्यम् आहार  
यन्ति=आहारकुर्वन्ति भुञ्जते स्म । आहत्य, यजीव स्वानि स्वानि गृहाणि=  
आवासभवनानि तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य स्वकर्मसमयुक्ता जाता ॥ सू० १ ॥

मूलम्-तेण कालेणं तेणं समणं धम्मघोसा नाम थेरा  
जाव बहुपरिवारा जेणेव चंपा नाम नयरी जेणेव सुभूमिभागे

भूया सकम्मसपउत्ता जाया यावि होत्था) आहार जव परोसा जा  
चुका-तव उन सयने उसे खाया पीया-और खा पीकर जव वे निपट  
चुके तव उन्नोंने कुछा आदि कर अपने मुह का प्रक्षालन किया-और  
हाथो को साफकर वे अपने २ कार्य में लग गये । (तएण ताओ माहः  
णीओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ त विपुल असण ४ आहारैति,  
आहारित्ता जेणेव सयाइ-२ गेहाइ तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता  
सकम्म सपउत्ताओ जायाओ) इसके बाद उन ब्रह्मणियोंने जो कि  
पहिले से ही स्नान कर चुकी थी और अपने २ शरीर को सुन्दर वेष  
भूषा से सुसज्जित किये हुए थी, उस विपुल अशनादिरूप चतुर्विध  
आहार को खाया-और खाकर के फिर वे अपने २ वासभवनों में  
चली गई-वहा जाकर अपने २ वे सब काममें लग गई ॥ सूत्र १ ॥

( तएण ते माहणा जिमिय भुत्तुत्तरागया समाणा आयता, चोक्त्वा परमसु  
भूया, सकम्मसपउत्ता जाया यावि होत्था )

आहार न्यारे पीरसाई गयो त्यारे तेओ । त्रहे नभ्या अने नमी पर  
वारीने डोगणा वगेरे करीने हाथ भो साई कथो अने हाथ भो साई करीने  
तेओ । त्रहे पोतपोताना काममा परेवाई गया

(तएण ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ त विपुल असण ४ आहारित्ता  
जेणेव सयाइ २ गेहाइ, तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सकम्मसपउत्ताओ जायाओ)

त्यारभाडे ते अ हाणीओओ-डे न्नेओओ पडेला स्नान करीने पोताना  
शरीरने सुहर वओथी शणुगार्थु डतु-ते पुञ्जण प्रमाणमा अनाववाभा आवेले,  
अशन वगेरे इप चार नतने । आहार कथो आहारथी परवारीने तेओ  
पोतपोताना वासलवनमा नती रही अने त्या नधने तेओ सचे पोतपोताना  
काममा परेवाई गई ॥ सू० १ ॥

उज्जाणे तेणेव उवागच्छति २ अहापडिरुवं जाव विहरति,  
 परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिग्गया, तएण  
 तेसिं धम्मघोसाण थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे  
 ओराले जाव तेउलेस्से मासं मासेण खममाणे विहरइ,  
 तएणं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए  
 पोरिसिए सज्जाय करेइ वीयाए पोरिसीए एव जहा गोयमसा-  
 मी तहेव उग्गाहेइ उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोसे थेरं आपुच्छइ  
 जाव चंपाए नयरीए उच्चनीयमज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे  
 जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएण  
 सा नागसिरी माहणी धम्मरुई एजमाण पासइ पासित्ता  
 तस्स सालइयस्स बहुसंभारसभियस्स णेहावगाढस्स तित्त-  
 कडुयस्स पट्टवणट्टयाए हट्टुट्टा उट्टाए उट्टेइ उट्टित्ता जेणेव  
 भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त सालइय तित्त  
 कडुय च बहुसंभारसंभिय णेहावगाढ धम्मरुईस्स अणगा-  
 रस्स पडिग्गहसि सव्वमेव निसिरइ, तएण से धम्मरुई  
 अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु णागसिरीए माहणीए गिहाओ  
 पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता चंपाए नयरीए मज्झ मज्झेणं  
 पडिनिक्खमइ जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवाग-  
 च्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामते अन्नपाण  
 पडिलेहेइ पडिलेहित्ता अन्नपाण करयलसि पडिदम्मेइ, तएणं  
 ते धम्मघोसा थेरा सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स गधेण

શુક્તોત્તરાગતાઃ મોનનાનન્તરં રહિગમતા' મન્તઃ ' આયતા ' આનાતાઃ કૃતચુકાઃ  
' ચોક્ષ્વા ' ચોસાઃ=પસાન્નિદમ્પાનના' પરમશુચિભૂતાઃ ' મરુમ્મસપડતા '   
સ્વર્મ્મસપડતા =સ્વસ્વર્ગ્યતઝ્ઞના જાતામપ્યમરુ । તાઃ સ્વહુતાઃ બ્રાહ્મણ્યઃ  
સ્નાતા યાત્ રત્નાલકારશિખીતાન્તદ્ વિપુલમગ્ન પાન યાપ સ્વાયમ્ આહાર  
યતિ=આહારકુરંતિ શુઙ્ગતે સ્મ । આહત્ય, યગીય સ્વાનિ સ્વાનિ ગૃહાણિ=  
આવાસમયનાનિ તથૈવોપાગ-ઁન્તિ, ઉપાગત્ય સ્વર્મ્મસપડતા જાતા ॥ સૂ. ૧ ॥

મૂલમ્-તેણં કાલેણ તેણં સમપ્પણ ધમ્મઘોસા નામ થેરા  
જાવ વહુપરિવારા જેણેવ ચપા નામ નયરી જેણેવ સુભૂમિભાગે

ભૂયા સકમ્મસપડતા જાયા યાત્રિ હોત્યા) આતોર જય પરીસાં જા  
ચુકા-તય ઉત સચને ઉસે ચાયા પીયા-ઔર ચા પીકર જય વે નિપટ  
ચુકે તય ઉન્હોને કુછા આદિ કર અપને મુંહ કા પ્રક્ષાલન કિયા-ઔર  
દાર્થોં કો સાફકર વે અપને ૨ કાર્ય મેં લગ ગયે । (તપ્પણ તાઓ માહ  
ળીઓ ણ્હાયાઓ જાવ વિભૂસિયાઓ ત વિપુલ અસણ ૪ આહારેતિ,  
આહારિત્તા જેણેવ સયાઈ-૨ ગેહાઈ તેણેવ ઉવાગચ્છતિ ઉવાગચ્છિત્તા  
સકમ્મ સપડતાઓ જાયાઓ) હસકે ઘાદ ઉત બ્રહ્મણિયોંને જો કિ  
પહિલે સે હી સ્નાન કર ચુકી થી ઔર અપને ૨ શરીર કો સુન્દર વેષ  
ભૂયા સે સુસજ્જિત કિયે હુણ થી, ઉસ વિપુલ અશનાદિરૂપ ચતુર્વિધ  
આહાર કો સ્વાયા-ઔર સ્વાકર કે ફિર વે અપને ૨ વાસમબલોં મેં  
ચલી-ગઈ-વહા જાકર અપને ૨ વે સબ કામમેં લગ ગઈ ॥ સૂત્ર ૧ ॥

( તપ્પણ તે માહળા, જિમિય શુક્તોત્તરાગયા સમાળા આયતા, ચોક્ષ્વા પરમશુ  
ભૂયા, સકમ્મસપડતા, જાયા, યાત્રિ હોત્યા )

આહાર બ્યારે પીરસાઈ ગયો ત્યારે તેઓ ત્રણે જમ્યા અને જમી પર  
વારીને ડોગળા વગેરે કરીને હાથ મેા સાફ કર્યા અને હાથ મેા સાફ કરીને  
તેઓ ત્રણે પોતપોતાના કામમાં પરોવાઈ ગયા

(તપ્પણ તાઓ માહળીઓ ણ્હાયાઓ જાવ વિભૂસિયાઓ ત વિપુલ અસણ ૪ આહારિત્તા  
જેણેવ સયાઈ-૨ ગેહાઈ, તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા સકમ્મસપડતાઓ જાયાઓ)

ત્યારબાદ તે બ્રાહ્મણીઓએ-કે જેઓએ પહેલા સ્નાન કરીને પોતાના  
શરીરને સુઠર વસ્ત્રોથી શણગાર્યું હતું-તે પુષ્કળ પ્રમાણમાં ખનાવવામાં આવેલો  
અંશન વગેરે રૂપ ચાર બતનો આહાર કર્યો આહારથી પરવારીને તેઓ  
પોતપોતાના વાસભવનમાં જતી રહી અને ત્યાં જઈને તેઓ સર્વે પોતપોતાના  
કાર્યોમાં પરોવાઈ ગઈ ॥ સૂ. ૧ ॥



उज्जाणे तेणेव उवागच्छति २ अहापडिरुवं जाव विहरति,  
 परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिग्गया, तएणं  
 तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे  
 ओराले जाव तेउलेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरइ,  
 तएणं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए  
 पोरिसिए सज्झाय करेइ वीयाए पोरिसीए एव जहा गोयमसा-  
 मी तहेव उग्गाहेइ उग्गाहिता तहेव धम्मघोसे थेर आपुच्छइ  
 जाव चंपाए नयरीए उच्चनीयमज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे  
 जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएण  
 सा नागसिरी माहणी धम्मरुई एजमाण पासइ पासित्ता  
 तस्स सालइयस्स बहुसंभारसंभियस्स णेहावगाढस्स तित्त-  
 कडुयस्स पट्टवणट्टयाए हट्टुट्टा उट्टाए उट्टेइ उट्टित्ता जेणेव  
 भत्तवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त सालइय तित्त-  
 कडुय च बहुसंभारसंभियं णेहावगाढ धम्मरुईस्स अणगा-  
 रस्स पडिग्गहसि सब्वमेव निसिरइ, तएणं से धम्मरुई  
 अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु णागसिरीए माहणीए गिहाओ  
 पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता चंपाए नयरीए मज्झ मज्झेणं  
 पडिनिक्खमइ जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवाग-  
 च्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामते अन्नपाणं  
 पडिलेहेइ पडिलेहिता अन्नपाण करयलसि पडिदम्मेइ, तएणं  
 ते धम्मघोसा थेरा सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स गधेण

अभिभूया समाणा तओ सालइयाओ जाव नेहावगाढाओ  
 एगं विंदुणं गहाय करयलासि आमाणइ । तित्तगं खारं कडुय  
 अखज्जं अभोज्जं विसभूयं जाणित्ता धम्मरुइ अणगारं एवं  
 वयासी-जइणं तुमं देवाणुप्पिया ! एव सालइय जाव  
 नेहावगाढ आहारेसि तो णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ  
 ववरोविज्जसि, त मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं सालइयं  
 जाव आहारेहि, मा णं तुम अकाले चेव जीवियाओ वव-  
 रोविज्जेहि, त गच्छ णं तुम देवाणुप्पिया ! इमं सालइयं  
 एगंतमणावाए अच्चित्ते थडिले परिट्टवेहि परिट्टवित्ता अन्न  
 फासुय एसणिज्ज असणंपाण खाइमं साइमं पडिगहित्ता  
 आहार आहारेहि ॥ सू० २ ॥

टीका—‘ तेण कालेण ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये धम्मघोषा  
 नाम स्थविरा यावत्-बहुपरिवारा-बहुसाधुपरिवारेण सहिता यत्रैव चम्पा नाम  
 नगरी, यत्रैव सुभूमिभागमुद्यान तत्रैवोपागच्छन्ति, अत्र ‘ धम्मघोषा ’ इति बहु-  
 वचनमादरार्थं प्रयुक्तम्, उपागत्य यथा प्रतिरूप यावन्-अवगहमवगृह्य स यमेन

तेण कालेण तेण समएण इत्यदि ॥

टीकार्थ—( तेण कालेण तेण समएण ) उस काल और उस समय में  
 ( धम्मघोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चपा नाम नयरी जेणेव  
 सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरुव  
 जाव विहरति-परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ परिसा पडिगया-तएण  
 तेसि धम्मघोसाण थेराण अतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराले

( ते ण कालेण तेण समएणं ) इत्यादि ।

टीकार्थ—( तेण कालेण तेण समएण ) ते काले अने ते समये

( धम्मघोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चपा नाम नयरी जेणेव  
 सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरुव जाव विहरति  
 परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसापडिगया, तएण तेसि थेराण

તપસાઽઽત્માન ભાવયન્તો વિહરતિ-આસતેસ્મ । પરિપદ્ નિર્ગતા ધર્મઃ કથિત = ધર્મકથા કથિતા પરિપદ્ પ્રતિગતા = ધર્મકથા શ્રવણાનન્તર પ્રતિનિવૃત્તા । તતઃ સ્વલુ તેષા ધમઘોષાણા સ્થવિરાણામન્તેવાસી ધમરુચિર્નામાનગારઃ ઉદારઃ પ્રધાનો યાવત્ સક્ષિપ્તવિપુલતેજોલેશ્યઃ = સક્ષિપ્તા શરીરાન્ત સઙ્ગોચિતા, વિપુલા = અનેકયોજન પ્રમિતક્ષેત્રસ્થિતસ્તુદહનસમર્થા, તેજોલેશ્યા = વિશિષ્ટતપોજન્યલઘ્વિવિશેષો યેન સઃ

જાવ તેડલેસે માસ માસેણ સ્વમમાણે વિહરઈ) ધર્મ ઘોષ નામકે સ્થવિર યાવત્ અનેક પરિવાર સે યુક્ત હોકર જહા ચપા નગરી, ઓર ઉસમે જહાં વહ સુભૂમિભાગ નામ કા ઉગ્યાન થા વહાં આયે । વહા આકર કે ઉન્હોં ને વહાં ટહરને કે લિયે અપને કટપાનુસાર આજા માંગી વાદ મે વે વહા સપમ ઓર તપ સે આત્માકો ભાવિત કરતે હુગ ઠહર ગયે । ચપાનગરી કે મમસ્ત જન ઉનકો વઢના ણવ ધર્મકથા સુનાને કે લિયે વહાં આયે । ઉન્હોંને શુતચારિત્ર રૂપ ધર્મકા ઉપદેશ દિયા । ઉપદેશ શ્રવણ કર પરિપદ્ અપને ૨ સ્થાન પર પીલે ગઈ । ઇસ્કે અનન્તર ઇન ધર્મઘોષ સ્થવિર કે અ તેવાસી જિનકા નામ ધર્મરુચિ અનાગાર યા વડે ઉદાર પ્રકૃતિ કે થે વિશિષ્ટ તપસ્યાઓં કો કિયા કરતે થે-ઉસકે પ્રમાવ સે ઇન્હેં તેજોલેશ્યા કી પ્રાપ્તિ હો ગઈ થી ઓર વહ તેજોલેશ્યા ઇન્હોંને અપને શરીર કે મીતર સક્ષિપ્ત કર રક્તગ્ની થી ઇસ તેજોલેશ્યા કા યહ સ્વભાવ હોતા હૈ કિ જવ વહ શરીર મે યાહિર નિદલતી હૈ તો અનેક પોજન પ્રમિત ક્ષેત્ર મેં રહી હુઠ વસ્તુઓં કો નસ્મકર દેતી હૈ । નાસ અપણ કી ઉપવાસ રૂપ તપસ્યા

અંતેવાસી ધર્મરુચિ નામ અણશારે ઓરાલે જાવ તેડલેસે માસ માસેણ સ્વમમાણ વિહરઈ

ધર્મઘોષ નામના સ્થવિર પોતાના ઘણા પરિવારોની સાથે જ્યા અપા નગરી અને તેમા પણ જ્યા તે સુભૂમિભાગ નામે ઉગ્યાન હતું ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે ત્યા રોકાવાની પોતાના આચાર મુજબ આજ્ઞા માંગી ત્યાર છી તેઓ ત્યા પોતાના આત્માને તપ અને સયમથી ભાવિત કરતા રહેતા હતા અપા નગરીના બધા લોકો તેમના વઢન તેમજ ધર્મકથા શ્રવણ માટે ત્યા આવ્યા તેઓશ્રીએ શુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો ઉપદેશ સાંભળીને લોકો પોતપોતાના નિવાસ સ્થાને જતા રહ્યા ત્યારપછી ધર્મઘોષ સ્થવિરના અંતેવાસી-જેમનું નામ ધર્મરુચિ અનાગાર હતું, જેઓ ખૂબ જ ઉદાર પ્રકૃતિના હતા, વિશિષ્ટ તપસ્યાઓ કરતા રહેતા હતા જેના પ્રભાવની એમણે તેજોલેશ્યા મેળવી હતી અને તેજોલેશ્યાને તેમણે પોતાના શરીરમા જ સંકેતી રાખી હતી આ તેજો-લેશ્યાનો પ્રભાવ આ જાતનો હોય છે કે જ્યારે તે શરીરની બહાર નીકળે છે ત્યારે ઘણા ચોરનો સુધીના ક્ષેત્રમા મૂકેલી વસ્તુઓને લસ્મ કરી નાખે છે-માસદ્વપણની ઉપવાસ રૂપ તપસ્યાથી તેઓ

અભિભૂયા સમાણા તઓ સાલહયાઓ જાવ નેહાવગાઢાઓ  
 ઇગં વિંદુણં ગહાય કરયલાસિ આસાપ્પહ । તિત્તગં સાર કહુયં  
 અસ્વજ્જં અભોજ્જં તિસ્સમૂયં જાણિત્તા ધમ્મરુહ અળગાર એવં  
 વયાસી-જહ્ણં તુમં દેવાણુપ્પિયા ! એવ સાલહય જાવ  
 નેહાવગાઢ આહારેસિ તો ણં તુમં અકાલે ચેવ જીવિયાઓ  
 વવરોવિજ્જસિ, તં મા ણ તુમ દેવાણુપ્પિયા ! હમં સાલહય  
 જાવ આહારેહિ, મા ણં તુમં અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વવ-  
 રોવિજ્જેહિ, ત ગચ્છ ણં તુમ દેવાણુપ્પિયા ! હમ સાલહય  
 ઇગંતમણાવાએ અચ્ચિત્તે થહિલે પરિટ્ટવેહિ પરિટ્ટવિત્તા અન્ન  
 ફાસુય ઇસણિજ્જ અસણંપાણ સ્વાહમ સાહમ પહિગહિત્તા  
 આહારં આહારેહિ ॥ સૂ. ૨ ॥

ટીકા—‘ તેણ કાલેણ ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये धर्मघोषा  
 नाम स्थविरा यावत्-बहुपरिवारा-बहुसाधुपरिवारेण सहिता यत्रैव चम्पा नाम  
 नगरी, यत्रैव सुभूमिभागमुद्यान तत्रैवोपागच्छन्ति, अत्र ‘ धर्मघोषा ’ इति बहु  
 वचनमादरार्थं प्रयुक्तम्, उपागत्य यथा प्रतिरूप यावत्-अवगहमवगृह्य समयमेव

તેણ કાલેણ તેણ સમણેણ इत्यदि ॥

ટીકાર્થ—( તેણ કાલેણ તેણ સમણેણ ) उस काल और उस समय में  
 ( धर्म घोषा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चपा नाम नगरी जेणेव  
 सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छह, उवागाच्छित्ता अहापडिरुव  
 जाव विहरति-परिसा निगया, धम्मो कहिओ परिसा पडिगया-तएण  
 तेसि धम्मघोसाण थेराण अतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराळे

( તે ણ કાલેણ તેણ સમણેણ ) इत्यादि ।

ટીકાર્થ—( તેણ કાલેણ તેણ સમણેણ ) ते काले अने ते समये

( धर्मघोषा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चपा नाम नगरी जेणेव  
 सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता अहापडिरुव जाव विहरति  
 परिसा निगया, धम्मो कहिओ, परिसापडिगया, तएण तेसि थेराण



यावत्-न्याया नगर्यागुचनीचमध्यमकुशानि यावदटन् यत्रैव नागश्रिया ब्राह्मण्या  
सृत् तत्रैवाहपिष्टः ।

ततः गच्छ सा नागश्री ब्राह्मणी धर्मरुचिमनगारम् एजमानम्-आगच्छन्त  
पश्यति, दृष्ट्वा तस्मै 'सालइयस्स' शारदिकस्य तित्तरुडुकस्य=तित्तरुडुकतुम्ब-  
कस्य बहुस भारस भृतस्य स्नेहावगाढस्य 'पट्टवणट्टयाए' प्रस्थापनार्थ=परिष्ठा-  
'पनार्थं हट्टुट्टा 'उट्टाए' उत्थया=उत्थानक्रिया उत्तिष्ठति, उत्थाय यत्रैव भक्तगृह  
तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तद् शारदिक तित्तरुडुकतुम्बक बहुस भारस भृत  
स्नेहावगाढ धर्मरुचेरनगारस्य 'पडिग्गहसि' पतद्ग्रहे-पात्रे, सर्वमेव 'निसिरइ'

जिस प्रकार गौतम स्वामी श्री महावीर स्वामी से पूछकर आहार लेने  
के लिये जाते थे उसी प्रकार इन्होंने धर्मघोष स्थविर से आहार लाने  
के लिये आज्ञा मागी । आज्ञा प्राप्तकर ये चंपानगरी में उच्च नीच एवं  
मध्यमकुलो में भ्रमण करते हुए जहाँ नागश्री ब्राह्मणी का घर था वहाँ  
गये । नागश्री ब्राह्मणी ने इन्हें ज्योही आने हुए देखा (पासित्ता तस्स  
सालइयस्स बहु सभारसभियस्स णेहावगाढस्स तित्तरुडुकस्य पट्टवण-  
ट्टयाए हट्टुट्टा उट्टाए उट्टेइ उट्टित्ता जेणेव भत्तवरे तेणेव उवागच्छइ )  
त्योही यह बहुसभारसभृत एव स्नेहावगाढ उसकडवी तुम्बडीका आहार  
देने के लिये उत्थान क्रिया द्वारा-उठी-अर्थात् अपने में रही हुई उठने  
की शक्ति से उठी और हट्टु टुष्ट होनी हुई जहाँ भोजन-गृह था वहाँ  
गई । ( उवागच्छित्ता तं सालइयतित्तरुडुक च बहुसभारसभिय णेहा-  
वगाढं धम्मरुडयस्स अणगारस्स पडिग्गहसि सत्थमेव निसिरइ ) वहाँ

स्वामीने पूत्रीने आहार लाववा भाटे नीकगता हुता तेमज तेओओ पणु  
आहार लाववा भाटे धर्मघोष स्थविरनी पासे आज्ञा मागी आज्ञा मेणवीने  
तेओओ यंथा नगरीमा उच्चनीच अने मध्यम कुलोमा भ्रमण करता न्या  
नागश्री ब्राह्मणीतु घर हुतु त्या गया नागश्री ब्राह्मणीओ तेओओने आवता न्येया  
'(पासित्ता तस्म सालइयस्स बहुसभारसभियस्स णेहावगाढस्स तित्तरुडुकस्य  
पट्टवणट्टयाए हट्टुट्टा उट्टाए उट्टेइ उट्टित्ता जेणेव भत्तवरे तेणेव उवागच्छइ )  
'त्यारे तरतज भरस पधारेलो धी तरने कडवी तुम्बडीने आहार आपवा  
भाटे उत्थान क्रिया वडे जेली थर ओटले के पोतानामा रुडेवी जेमा ववांनी ताकातथी  
'ते जेली यध अने हट्ट तेमज तुष्ट थती न्या भोजनथाणा हुती त्या गर्ध

( उवागच्छित्ता त सालइय तित्तरुडुक च बहुसभारसभिय णेहावगाढ ध-  
म्मरुडयस्स अणगारस्स पडिग्गहसि सत्थमेव निसिरइ )

તથા, માસ=ત્રિશદ્દોરાત્મક કાલ માસેન=માસપૂર્ણેન માનોપાસરૂપત્વઃ  
 કર્મણા 'સ્વમમાણે' સ્વપન્ન=ચાપન્ન વિદ્વરતિ । તતઃ ત્વત્તુ મ ધર્મરુચિરનગારો  
 માસક્ષણપારણકે પ્રથમાયા પૌરુષ્યા 'સજ્જત મં' સ્વાધ્યાય સૂત્રપાઠરૂપ કરોતિ,  
 દ્વિતીયાયા પૌરુષ્યા ધ્યાનમ્ સૂત્રાર્થચિન્તનરૂપ ધ્યાયતિ-કરોતિ, ત્રય યથા ગૌતમ-  
 સ્વામી, તથૈવ ગૌતમસ્વામીયત્ તૃતીયપૌરુષ્યા ભાજનસ્નાનિપમાર્જયતિ, પ્રમાર્જ્ય  
 ભાજનાનિ 'ઉગ્ગાહેઃ' અપટ્ટહાતિ, અપટ્ટપ યત્રૈવ ધર્મઘોષસ્થવિરમ્તત્રૈવોપાગન્ઠતિ,  
 ઉપાગત્ય તથૈવ શ્રીમહાવીરસ્વામીન ગૌતમસ્વામિયદેવ ધર્મઘોષ સ્થવિરમાપૃન્ઠતિ,

સે, ચે અપને ત્રિશત અહોરાત્રાત્મક કાલ કો ઉમ્મ સમય વ્યતીત કર  
 રહે થે । અર્થાત્ એક મહીને કી તપસ્યા હન્દોને ઉસ સમય કર રહે થે-  
 ( તણ સે ધમ્મરુદ્ધ અણગારે માસસ્વમણપારણગસિ પઢમાણ પોરિસીણ  
 સજ્જાય કરેઃ વીયાણ પોરિસીણ એવ જહા ગોયમસામી તહેવ ઉગ્ગાહેઃ,  
 ઉગ્ગાહિત્તા તહેવ ધમ્મઘોસ થેર આપુચ્છહ, જાવ ચપાણ નયરીણ ઉચ્ચ  
 નીય મઙ્ગિલ્લમકુલાહ જાવ અહમાણે જેણેવ નાગસિરીણ માહણીણ ગિહે  
 તેણેવ અણુપવિદ્ધે, તણ સા નાગસિરી માહણી ધમ્મરુદ્ધ એજમાણ  
 પાસહ ) ચે ધર્મરુચિ અનગાર માસક્ષણ કી પારણા કે દિનપ્રથમ પૌરુષી  
 મેં સૂત્રપાઠ રૂપ સ્વાધ્યાય, દ્વિતીય પૌરુષી મેં સૂત્રાર્થ ચિન્તન રૂપ ધ્યાન  
 ઓર તૃતીય પૌરુષી મેં ગૌતમ સ્વામી કી તરહ ચત્રપાત્રો કા પ્રમાર્જન  
 કરતે । હસ તરહ હન્દોને તૃતીય પૌરુષી મેં ચત્ર પાત્રો કા પ્રમાર્જન કર  
 અપને પત્રોં કો ઉઠાયા ઓર ઉઠકર ચે ધર્મઘોષ સ્થવિર કે પાસ ગયે ।

પોતાના ત્રિશત અહોરાત્રાત્મક કાળને તે સમયે પસાર કરી રહ્યા હતા-એટલે  
 કે તેઓ તે સમયે એક માસની તપસ્યા કરી રહ્યા હતા

( તણ સે ધમ્મરુદ્ધ અણગારે માસસ્વમણપારણગસિ પઢમાણ પોરિસીણ સ  
 જ્ઞાય કરેઃ, વીયાણ પોરીસણ એવ જહા ગોયમસામી તહેવ ઉગ્ગાહેઃ, ઉગ્ગાહિત્તા  
 તહેવ ધમ્મઘોસ થેર આપુચ્છહ, જાવ ચપાણ નયરીણ ઉચ્ચનીય મઙ્ગિલ્લમકુલાહ જાવ  
 અહમાણે જેણેવ નાગસિરીણ માહણીણ ગિહે તેણેવ અણુપવિદ્ધે, તણ સા નાગસિરી  
 માહણી ધમ્મરુદ્ધ એજમાણ પાસહ )

ધર્મરુચિ અનગાર ગૌતમ સ્વામીની જેમ પ્રથમ પૌરુષીમા સૂત્રપાઠ રૂપ  
 સ્વાધ્યાય, દ્વિતીય પૌરુષીમા સૂત્રાર્થ ચિન્તન રૂપ ધ્યાન અને તૃતીય પૌરુષીમા  
 વસ્ત્ર અને પાત્રોનું પ્રમાર્જન કરતા હતા, માસ ક્ષણના પોતાના પારણાના  
 દિવસે પણ તેઓએ તૃતીય પૌરુષીમા વસ્ત્ર-પોતાનું પ્રમાર્જન કરીને પોતાના  
 પાત્રોને લીધા અને લઈને તેઓ ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસે ગૌતમ



तथा, मास=त्रिंशद्द्वोरात्रात्मक काल मासेन=मासपणेन मासोपवासरूपतः  
 कर्मणा 'स्वमाणे' क्षयन्=यायन् विहरति । ततः सन्तु म धर्मरुचिरनगारे  
 मासक्षपणपारणके प्रथमाया पौरुष्या 'सज्जतं' स्वाध्याय सूत्रपाठरूप करोति,  
 द्वितीयाया पौरुष्या ध्यानम् सूत्रार्थचिन्तनरूप ध्यायति-करोति, तत्र यथा गौतम-  
 स्वामी, तथैव गौतमस्वामीयत् तृतीयपौरुष्या भाजनास्त्राणिप्रमार्जयति, प्रमार्ज्य  
 भाजनानि 'उग्गाहेइ' अगृह्णाति, अगृह्य यत्रैव धर्मघोषस्थविर्गतत्रैवोपागच्छति,  
 उपागत्य तथैव श्रीमहावीरस्वामीन गौतमस्यामित्रदेव धर्मघोष स्थविरमापृच्छति,

से, ये अपने त्रिंशत् अहोरात्रात्मक काल को उस समय व्यतीत कर  
 रहे थे । अर्थात् एक महीने की तपस्या इन्होंने उस समय कर रखे थे-  
 (तएण से धम्मरूइ अणगारे मासखमणपारणगसि पढमाण पोरिसीए  
 सज्झाय करेइ बीयाए पोरिसीए एव जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेइ,  
 उग्गाहिता तहेव धम्मघोस थेर आपुच्छइ, जाव चपाए नयरीए उच्च  
 नीय मज्झिमकुलाइ जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे  
 तेणेव अणुपविट्ठे, तएण सा नागसिरी माहणी धम्मरूइ एज्जमाण  
 पासइ ) ये धर्मरुचि अनगार मासक्षपण की पारणा के दिनप्रथम पौरुषी  
 में सूत्रपाठ रूप स्वाध्याय, द्वितीय पौरुषी में सूत्रार्थ चिन्तन रूप ध्यान  
 और तृतीय पौरुषी में गौतम स्वामी की तरह वस्त्रपात्रों का प्रमार्जन  
 करते । इस तरह इन्होंने तृतीय पौरुषी में वस्त्र पात्रों का प्रमार्जन कर  
 अपने पत्रों को उठाया और उठकर ये धर्मघोष स्थविर के पास गये ।

पोताना त्रिंशत् अहोरात्रात्मक कालने ते समये पसार करी रह्या छता-अटवे  
 के तेओ ते समये ओक मासनी तपस्या करी रह्या छता

( तएण से धम्मरूइ अणगारे मासखमणपारणगसि पढमाण पोरिसीए स  
 ज्झाय करेइ, बीयाए पोरिसीए एव जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेइ, उग्गाहिता  
 तहेव धम्मघोस थेर आपुच्छइ, जाव चपाए नयरीए उच्चनीय मज्झिमकुलाइ जाव  
 अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएण सा नागसिरी  
 माहणी धम्मरूइ एज्जमाण पासइ )

धर्मरुचि अनगार गौतम स्वामीनी जेभ प्रथम पौरुषीमा सूत्रपाठ रूप  
 स्वाध्याय, द्वितीय पौरुषीमा सूत्रार्थ चिन्तन रूप ध्यान अने तृतीय पौरुषीमा  
 वस्त्र अने पात्रोनु प्रमार्जन करता छता, मास क्षपणना पोताना पाण्डुना  
 द्विपुसे पण तेओओ तृतीय पौरुषीमा वस्त्र-पोतानु प्रमार्जन करीने पोताना  
 पात्रोने बीधा अने लधने तेओ धर्मघोष स्थविरनी पास । जेभ गौतम



રુચિનગારમેવમવદન્ન યદિ સલ્લ ત્વં હે દેવાનુપ્રિય । એતદ્ શારદિકં યાવત્-  
તિત્તકદુક્કતુમ્પક યાવત્ સ્નેહાગ્ગાદમ્ આહારયસિ=આહાર કરિપ્યસિ, તર્હિ સલ્લ  
ત્વમકાલે એવ જીવિતાદ્ વ્યપરોપિપ્યસે' એતદશનેન મરણમવશ્ય પ્રાપ્સ્યસીત્યર્થ ।  
તત્=તસ્માત્ મા સલ્લ ત્વં હે દેવાનુપ્રિય ! એતદ્ શારદિકં યાવદાહાગ્ગ, મા સલ્લ

નિકલ કર ચવાનગરી કે ઘીચો ઘીચસે હોકર ચલ દિયે સો જહા સુભૂ-  
મિભાગ નામ કા ઉગ્યાન થા વહા આ ગયે । વહા આકર વે અપને આ  
ચાર્ય ધર્મઘોષ સ્થવિર કે પાસ આયે વહા આકર ઉન્હોને ભિક્ષામે પ્રાપ્ત  
હુઆ આહાર વતાયા ઔર વતાને કે ઘાદ ઉસ શારદિક કડવી તુ વડી  
કે યાવત્ સ્નેહાગ્ગાદ શાક કી ગધ સે અભિભૂત હોતે હુણ ઉન ધર્મઘોષ  
આચાર્ય ને ઉસ શારદિક યાવત્ સ્નેહાગ્ગાદ શાક મેં સે એક ધિન્દુ માત્ર  
કો અપને હાથ કી હથેલી પર રખ કર ચલા ( તિત્તગ સ્વાર કહુય  
અલ્લજ્જ અમોજ્જ વિસમ્ભૂયં જાણિત્તા ધમ્મરુદ્ અગગાર એવ વયાસી  
-જ્ઞણ તુમ દેવાણુપ્પિયા । એય સાલહય જાવ ને હાવગાદ આહારેમિ તો  
ણ તુમ અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વવરોવિજ્જસિ ) ચલ્લતે હી " યહ  
તિત્ત હેં ક્ષાર સે યુક્ત હેં કદુક હેં અલાઘ એવ અમોજ્જ હેં તથા વિપમૂત  
હે " એસા જાનર ધર્મરુચિ અનગાર સે ઉન્હોને એમા કહા હે દેવાનુ  
પ્રિય ! યદિ તુમ શારદિક કડવી તુ વડી કે બહુ સમાર સમૂત એવં  
સ્નેહાગ્ગાદ હમ શાક કા આહાર કરોમે-તો નિશ્ચય સે વિના મૃત્યુ કે

નીકળીને ચ પા નગરીની વચ્ચેના માર્ગથી પસાર થના બના સુભૂમિભાગ  
નામે ઉગ્યાન હતુ ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓ પોતાના આચાર્ય ધર્મઘોષ  
સ્થવિરની પામે આવ્યા અને ત્યા આવીને તેમણે ભિક્ષામા પ્રાપ્ત થયેલા  
આહારને ખતાવ્યો અને ખતાવીને તે શારદિક કડવી તૂબડીના સરસ વધારેલા  
ઘી તરતા શાકની સુવાસથી અભિભૂત થતા તે ધર્મઘોષ આચાર્યે તે શારદિક  
સરસ વધારેલા ઘી તરતા શાકને હવેળી ઉપર મૂકીને વાળ્યુ

( તત્તગ સ્વાર કહુય અલ્લજ્જ અમોજ્જ વિસમ્ભૂયં જાણિત્તા ધમ્મરુદ્ અગગાર  
એવ વયાસી-જ્ઞણ તુમ દેવાણુપ્પિયા । એય સાલહય જાવ નેહાગ્ગાદ આહારેસિ  
તો ણં તુમ અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વવરોવિજ્જસિ )

આખતા જ " આ તિત્ત છે, ખાઈ છે, કડવું છે, અખાલ તેમજ અલોભ્ય  
છે તથા વિપમૂત છે " આવુ બાણીને ધર્મરુચિ અનગારને તેઓએ આ પ્રમાણે  
કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! જો તમે શારદિક કડવી તૂબડીના સરસ વધા  
રેલા ઘીતરતા શાકનો આહાર કરશો તો ચોક્કસ તમે કંમેતે મરી જશો.

निष्ठजति=परिष्ठापयति । ततः गच्छ म धर्मरुचिरनगार 'अहापज्जत्त' यथा पर्याप्तम्-उदरपूर्तये पूर्णमेतद् इति कृत्वा=इति मनसि विभाव्य, नागश्रिया ब्राह्मण्या गृहात् प्रतिनिष्क्रामति-निर्गच्छति प्रतिनिष्क्रम्य चम्पाया नगर्या मध्यमत्वेन प्रति- निष्क्राम्यति प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सुभूमिभागप्रधान नैवोपागच्छति, उपागत्य धर्म घोषस्य स्थविरस्य 'अदूरसामन्ते =नातिदूरे नातिमहीपे, अन्नपान 'पडिलेहेइ' प्रति लेखयति प्रतिलेख्य अन्नपान करतले पात्र मत्वा प्रतिदर्शयति । ततः सल्लु ते धर्मोपाः स्थविरास्तस्य शारदिकस्य तिक्तकटुतुम्बकस्य यावद् स्नेहावगाढस्य गधेनाऽभि भूतासन्तस्तस्माच्छारदिकाद् यावद् स्नेहावगाढादेक बिन्दुक गृहीत्वा करतले कृत्वा आस्रादयति । तिक्तक क्षार कटुकम् अवाद्यमभोज्य निपभूत तात्वा धर्म-

जाकर उसने उस शारदिक कड़वी तुण्डी का चट्टु सभार सभृतन एव स्नेहावगाढ शाक धर्मरुचि अनगार के पात्र में सब का सब डाल दिया ( तएण सेधम्मरुइ अणगारे अहापज्जत्तमित्ति कट्टु णागसिरीए माह- णीए गिहाओ पडिनिक्खमइ ) इसके बाद वे धर्मरुचि अनगार " यह उदर पूर्ति के लिये पर्याप्त है " ऐसा मन में समझ कर नागश्री ब्राह्मणी के घर से बाहर निकले पडिस्त्रिमित्ता चपाण नयरीए मज्झ मज्झेण पडिनिक्खमइ, जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे - तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामन्ते अन्नपोण पडिलेहेइ, पडिले हित्ता अण्णपाण करयलसि पडिदसेइ, तएण से धम्मघोसा येरा तस्स सालइस्स जाव नेहावगाढस्स गधेण अभिभूया समाणा ताओ साल इयाओ जाव नेहावगाढाओ एग बिंदुग गहाय करयलसि आसाएइ )

त्या जने तेणे ते शारदिक कडवी तुण्डीनु पूण ज सरस रीते वधा रेणु तेमज धी तरतु शाक लई आवी अने त्यारपछी धर्मरुचि अनगारना पात्रमा णधु नाणी दीधु

( तएण धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमित्ति कट्टु णागसिरीए महिणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ )

त्यारपछी ते धर्मरुचि अनगार " आ उदर पोषणु भाटे पर्याप्त छे " ओणु जालीने नागश्री ब्राह्मणीना घेरथी णडार नीडण्था

( पडिनिक्खमित्ता चपाण नयरीए मज्झ मज्झेण पडिनिक्खमइ, जेणेव सुभूमि भागे उज्जाणे-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामन्ते अन्न पाण पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता अण्णपाण करयलसि पडिदसेइ, तएण से धम्म- घोसायेरा तस्स सालइस्स जाव नेहावगाढस्स गधेण अभिभूया समाणा ताओ सालइयाओ जाव नेहावगाढाओ एग बिंदुग गहाय

રુચિમનગારમેવમવદન્ન યદિ સલુ ત્વ હે દેવાનુપ્રિય । એતદ્ શારદિક યાવત્-  
તિક્તમ્કુતુમ્બક યાવત્ સ્નેહાવગાઢમ્ આહારયસિ=આહાર કરિપ્યસિ, તર્હિ સલુ  
ત્વમકાલે એવ જીવિતાદ્ વ્યપરોપિપ્યસે' એતદશનેન મરણમવશ્ય પ્રાપ્સ્યસીત્યર્થ ।  
તત્=તસ્માત્ મા સલુ ત્વ હે દેવાનુપ્રિય ! એતદ્ શારદિકં યાવદાદાગ્, મા સલુ

નિકલ કર ચવાનગરી કે ઘીચો ઘીચસે હોકર ચલ દિયે સો જહા સુભૂ-  
મિભાગ નામ કા ઉત્પાન થા વહા આ ગયે । વહા આકર વે અપને આ-  
ચાર્ય ધર્મઘોષ સ્થવિર કે પાસ આયે વહા આકર ઉન્હોને ભિક્ષામે પ્રાપ્ત  
હુઆ આહાર વતાયા ઓર વતાને કે યાદ ઉસ શારદિક કડવી તુ વડી  
કે યાવત્ સ્નેહાવગાઢ શાક કી ગધ સે અભિભૂત હોતે હુણ ઉન ધર્મઘોષ  
આચાર્ય ને ઉસ શારદિક યાવત્ સ્નેહાવગાઢ શાક મે સે ણકુ ચિન્દુ માત્ર  
કો અપને હાથ કી હથેલી પર રખ કર ચલા ( તિત્તગ સ્વાર કહુય  
અણ્જજ અમોજ્જ વિસમ્ભૂય જાણિત્તા ધમ્મરુદ્ અણગાર એવ વયાસી  
-જણ તુમ દેવાણુપ્પિયા । એય સાલહય જાવ ને હાવગાઢ આહારેમિ તો  
ણ તુમ અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વવરોવિજ્જસિ ) ચલ્લતે હી “ યહ  
તિક્ત હે ક્ષાર સે યુક્ત હે કટુક હે અગ્વાય એવ અમોજ્જ હે તથા વિપમૂત  
હે ” એસા જાનર ધર્મરુચિ અનગાર સે ઉન્હોને એમા કહા હે દેવાનુ  
પ્રિય । યદિ તુમ શારદિક કડવી તુ વડી કે વહુ સમોર સમૂત એવં  
સ્નેહાવગાઢ હસ શાક કા આહાર કરોગે-તો નિશ્ચય સે વિના મૃત્યુ કે

નીકગીને ચ પા નગરીની વચ્ચેના માર્ગથી પસાર થતા બના સુભમિભાગ  
નામે ઉત્પાન હતુ ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓ પોતાના આચાર્ય ધર્મઘોષ  
સ્થવિરની પાસે આવ્યા અને ત્યાં આવીને તેમણે ભિક્ષામા પ્રાપ્ત થયેલા  
આહારને ખતાવ્યો અને ખતાવાને તે શારદિક કડવી તૂબડીના સરસ વધારેલા  
ધી તરતા શાકની સુવાસથી અભિભૂત થતા તે ધર્મઘોષ આચાર્યે તે શારદિક  
સરસ વધારેલા ધી તરતા શાકને હથેળી ઉપર મૂકીને આખ્યુ

( તત્તગ સ્વાર કહુય અણ્જજ અમોજ્જ વિસમ્ભૂય જાણિત્તા ધમ્મરુદ્ અણગારં  
એવ વયાસી-જણ તુમ દેવાણુપ્પિયા । એય સાલહય જાવ નેહાવગાઢ આહારેમિ  
તો ણ તુમ અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વવરોવિજ્જસિ )

આખતા બ “ આ તિક્ત છે, ખાઈ છે, કડવું છે, અગ્વાય તેમજ અભોજ્ય  
છે તથા વિપમૂત છે ” આવુ બોલુને ધર્મરુચિ અનગારને તેઓએ આ પ્રમાણે  
કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! જે તમે શારદિક કડવી તૂબડીના સરસ વધા  
આહાર કરશો તો થોડસ તમે કમોતે મરી જશો,

સ્વાકાન્તર જીવિતાદ વ્યપતોષ્વમ્મા નિગસર । તત્ત્વનાદ ગચ્છ સ્વહુ ત્વ  
 'હે દેવાનુપ્રિય । ૧૬ શારદિક 'એગતમળાવાપ્' ઇશાન્તેડનાવાતે=પ્રકાન્તે=  
 'નિર્જનસ્થાને, અનાવાતે-આવાત.-ઘ્રીન્દ્રિયાદિપ્રાણિનાં સયોગમ્તદ્વર્જિતે, અચિત્તે=  
 'જીવરહિતે, સ્થળિહલે=ભૂમી 'પરિદ્વેદિ' પરિષ્ઠાપય, પરિષ્ઠાપ્યાન્યત્ પ્રાસુકમેવળીય=  
 દ્વાવત્વારિશરોપરહિત, શુદ્ધ-અશનપાનલાઘસ્યાપ્રમ્ પતિગૃહ જાહારમાહારયા॥સૂ० ૨॥

મૂલ્ય-તણાં સે ધમ્મરુદ્ધ અળગારે ધમ્મઘોમેણ થેરેણં एवं  
 વુત્તે સમાણે ધમ્મઘોસસ્સ થેરસ્સ અંતિયાઓ પડિનિકલ્પમંદે,  
 પડિનિકલ્પમિત્તા સુમ્મમિભાગાઓ ઉજ્જાણાઓ અદૂરસામતે ધડિલ્લ

મરજાઓમે-( ત મા ણ તુમે દેવાણુપ્પિયા । હમં સાલ્હય જાવ આહારેહિ  
 મા ણ તુમ અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વવરોવિજ્જહિ ત ગચ્છણ તુમ  
 'દેવાણુપ્પિયા । હમ સાલ્હયં એગતમળાવાપ્ અચ્ચિત્તે ધડિલે પડિદ્વેદિ,  
 પરિદ્વિત્તા અન્નં ફાસુય એમણિજ્જં અસર્ણ પાણ સ્વાહમ સાહમ પડિ  
 ગાહેત્તા આહાર આહારેહિ ) હમલિયે હે દેવાનુપ્રિય ! તુમ શારદિક  
 કંઢવી તુવડી કે શાક કિસી એકાન્ત સ્થાનમેં કિ જહા ઘ્રીન્દ્રિયાદિ  
 પ્રાણિયોંકો સચરણ નહો-—ઔર જો અચિત્ત હો એસી ભૂમિ પર પરિ-  
 ષ્ઠાપના કર આઓ । ઔર પરિષ્ઠાપનાં કરકે ફિર પ્રાસુક એવળીય ૪  
 -૪૨-દોષો સે રહિત શુદ્ધ અશન, પાન' સ્વાદ્ય' સ્વાદ્ય રૂપ' દૂર્મરે આહાર  
 કો લેકર ભોજન કર લો ॥ સૂ० ૨ ॥

( ત માણ તુમ દેવાણુપ્પિયા ! હમ સાલ્હય જાવ આહારેહિ માણ તુમ અકાલે  
 ચેવ જીવિયાઓ વવરોવિજ્જહિ ત ગચ્છણ તુમ દેવાણુપ્પિયા । હમ સાલ્હય એગ  
 તમળાવાપ્ અચ્ચિત્તે ધડિલે પડિદ્વેદિ, પરિદ્વિત્તા અન્નં ફાસુય એમણિજ્જં અસર્ણ  
 પાણ સ્વાહમ સાહમ પડિગાહિત્તા આહાર આહારેહિ )

એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ શારદિક તૂળડીના શાકને ખાશો નહિ  
 તેથી અકાળે તમોર મરણુ પશુ થશે નહિ મારે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ  
 આ શારદિક કંઢવી તૂળડીના શાકની કોઈપણ એકાન્ત-નિર્જન સ્થાનમાં કે બીજા  
 ઘ્રીન્દ્રિયાદિ પ્રાણીઓનું સચરણ હોય નહિ અને જે અચિત્ત હોય એવી ભૂમિ  
 ઉપર પરિષ્ઠાપના કરી આવો અને પરિષ્ઠાપના કર્યા બાદ પ્રાસુક એવળીય ૪૨  
 દોષોથી રહિત શુદ્ધ અશન, પાન, આદ્ય-સ્વાદ્ય રૂપ બીજા આહાર દેવાથી તે  
 આહાર પ્રાસુક કરે ॥ સૂત્ર " ૨ " ॥

पडिलेहेइ, पडिलेहिता तओ सालइयाओ, एगं- विदुग गहेइ  
 गहिता थंडिलंसि निसिरइ तो पां तस्स सालइयस्स तित्तकडु-  
 यस्स बहुनेहावगाढस्सगंधेण वहुणि पिपीलियासहस्साणि पाउ-  
 व्भूयाइ जा जहा य पां पिपीलिका आहारेइ सा तहा अकाले  
 चेव जीवियाओ ववरोविज्जइ तएणं तस्स धम्मरुइस्स अणगा-  
 रस्स इमेयारूवे अज्झरिथए ५ जाव ताव इमस्स सालइयस्स  
 जाव एगंमि विदुगंमि पक्खित्तमि अणेगाइं पिपीलियासहस्साइं  
 ववरोविज्जाति तं जइ पां अह एय सालइय थंडिलसि सव्व  
 निसिरामि तएणं वहुण पाणाणं ४ वहकारणं भविस्सइ, त  
 सेय खलु ममेय सालइय जावगाढ सयमेव आहारेत्तए, मम  
 चेव एएणं सरारेणं णिज्जाउत्तिकट्टु एव संपेहेइ सपेहिता मुह-  
 पोत्तिय पडिलेहेइ, पडिलेहिता ससीसोवरियं काय पमज्जेइ २ तं  
 सालइय तित्तकडुयं बहुनेहावगाढ विलमिव पन्नगभूतणं अ-  
 प्पाणेणं सव्व सरारकोट्टुसि पक्खिवइ, तएणं तस्स धम्मरुइस्स  
 त सालइय जाव नेहावगाढ आहारियस्स समाणस्स मुहुत्ततरेण  
 परिणममाणंसि सरारगंसि वेयणा पाउव्भूया उज्जला जाव दुरहि-  
 यासा, तएण से धम्मरुची अणगारे अथामे अवले अवीरिए  
 अपुरिसक्कारपरक्कमे आधारणिज्जमितिकट्टु आयारभडग एगंते  
 ठवेइ ठवित्ता थंडिल पडिलेहेइ, पडिलहिता दव्भसथारगं  
 संथारेइ सथारित्ता दव्भसंथान्ग दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरस्थाभि-  
 मुहे सपलियकनिसुत्ते करंयलपरिग्गहिय एव वयासी-नमोऽत्थु,



સ્વપ્રકાશવ જીવિતાદ્ વ્યપરોપ્યમ્=મા ત્રિયસ્ય । તન્=તસ્માદ્ ગચ્ઠ સ્વત્ત્વ  
 'હે દેવાનુપ્રિય । ૬૬ શારદિક 'પ્રગતમળાવાળ' પાકાન્તેડનાપાતે=પ્રકાન્તે=  
 'નિર્જનસ્થાને, અનાપાતે-આપાત:-દ્વીન્દ્રિયાદિપ્રાણિનાં સયોગસ્થદ્વર્જિતે, અધિતે=  
 'જીવરહિતે, સ્થળિલે=ભૂમી 'પરિદ્વેદિ' પરિષ્ઠાપય, પરિષ્ઠાપ્યાન્યત્ પ્રાસુકમેષ્ણીયં=  
 દ્વાવત્વારિશ્લોપરહિત, શુદ્ધમ્-અશનપાનત્વાયસ્યપ્રમ્ પ્રતિગૃત આહારમાદારયા ॥ સૂ. ૨ ॥

મૂલમ્-તથા સે ધમ્મરુદ્ધ અળગારે ધમ્મઘોસેણ થેરેણ યં  
 વુત્તે સમાણે ધમ્મઘોસસ્સ થેરસ્સ અતિયાઓ પડિનિવલ્લમ્મંદ,  
 પડિનિવલ્લમિત્તા સુમ્મમિભાગાઓ ઉજ્જાણાઓ અદૂરસામતે થડિલ્લ

મરજાઓગે-( ત મા ણ તુમં દેવાણુપ્પિયા । ૬૬ સાલહ્ય જાવ આહારેહિ  
 મા ણ તુમ અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વવરોવિજ્જહિ ત ગચ્ઠણ તુમ  
 'દેવાણુપ્પિયા । ૬૬ સાલહ્ય પ્રગતમળાવાળ અચ્ચિત્તે થડિલે પડિદ્વેદિ,  
 પરિદ્વિત્તા અન્ન ફાસુય ઇમણિજ્જ અસણં પાણ સ્વાહમ સાહમ પડિ  
 ગાહેત્તા આહાર આહારેહિ ) ૬૬મલિયે હે દેવાનુપ્રિય ! તુમ શારદિક  
 કંડવી તુલડી કે શાક કિસી પ્રકાન્ત સ્થાનમેં કિ જહા દ્વીન્દ્રિયાદિ  
 પ્રાણિઓકો સચરણ નહોં-—ઔર જો અચિત્ત હો એસી ભૂમિ પર પરિ-  
 ષ્ઠાપના કર આઓ । ઔર પરિષ્ઠાપના કરકે ફિર પ્રાસુક એષ્ણીય ૪  
 ૪૨-દોષો સે રહિત શુદ્ધ અશન, પાન-સ્વાદ્ય સ્વાદ્ય રૂપ દૂર્મરે અહીર  
 કો લેકર ભોજન કર લો ॥ સૂ. ૨ ॥

( ત મા ણ તુમ દેવાણુપ્પિયા । ૬૬ સાલહ્ય જાવ આહારેહિ મા ણ તુમ અકાલે  
 ચેવ જીવિયાઓ વવરોવિજ્જહિ ત ગચ્ઠણ તુમ દેવાણુપ્પિયા । ૬૬ સાલહ્ય પ્રગ  
 તમળાવાળ અચ્ચિત્તે થડિલે પડિદ્વેદિ, પરિદ્વિત્તા અન્ન ફાસુય ઇમણિજ્જ અસણં  
 પાણ સ્વાહમ સાહમ પડિગાહેત્તા આહાર આહારેહિ )

એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ શારદિક તૂળડીના શાકને ખાશો નહિ  
 તેથી અધાણે તમારે મરણ પણ થશે નહિ માટે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ  
 આ શારદિક કંડવી તૂળડીના શાકની કોઈપણ એકાતિ=નિર્જન સ્થાનમાં કે બીજા  
 દ્વિન્દ્રિયાદિ પ્રાણીઓનું સચરણ હોય નહિ અને જે અચિત્ત હોય એવી ભૂમિ  
 ઉપર પરિષ્ઠાપના કરી આવો અને પરિષ્ઠાપના કર્યા બાદ પ્રાસુક એષ્ણીય ૪૨  
 દોષોથી રહિત શુદ્ધ અશન, પાન, આદ્ય-સ્વાદ્ય રૂપ બીજા આહાર દ્વારા તે  
 આહાર શ્રદ્ધા કરો. ॥ સૂ. ૨ ॥

तिक्तकटुकस्य तुम्बकस्य बहुसमारसभृतस्य स्नेहावगाढस्य गन्धेन बहूनि पिपीलिका-  
सहस्राणि प्रादुर्भूतानि, या यथा च 'ण' त=शारदिकस्य तिक्तकटुक तुम्बकस्य  
विन्दुक पिपीलिका आहरति, सा तथा अकाले एव "जीवियाओ ववरोविज्जइ"  
जीविताद् व्यपरोप्यते=प्राणेभ्यो विद्युज्यते 'म्रियते' इत्यर्थः, ततः खलु=पिपी-  
लिकाविराधनमवलोक्य धर्मरुचेरनगारस्यायमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः आध्या-  
त्मिकः=५ आत्मगतः चिन्तितः=स्मरणरूपः, प्रार्थितः=अभिलापरूपः, कल्पितः=  
कल्पनारूपः, मनोगतः=अन्तः प्रकाशितः सकल्पो विचारः समुदपद्यत यदि तावदस्य  
शारदिकस्य यावत्-तिक्त तुम्बकस्य एकस्मिन् विन्दुके प्रक्षिप्ते सति, अनेकानि  
पिपीलिकासहस्राणि 'व्यपरोपिज्जति' व्यपरोप्यन्ते=प्राणेभ्यो विद्युज्यते म्रियन्ते ।

स्स बहूनेहावगाढस्स गन्धेण बहूणि पिपीलिगासहस्साणि पाउब्भूयाइ  
जा जहायण पिपीलिका आहारेइ सा तथा अकाले चेव जीवियाओ ववरो  
विज्जइ ) और आकर के उन्होंने सुभूमिभाग उद्यान से न अतिदूर  
और न अति समीप भूमि की प्रतिलेखना की । प्रतिलेखना करके फिर  
उन्होंने उस शारदिक-तिक्तकटु-तुवड़ी के शाक में से एक विन्दुमात्र  
शाक लिया-और लेकर उसे भूमि पर डाल दिया । तो इतने में ही  
शारदिक तिक्तकटुवी तुवड़ी के उस बहुस्नेहावगाढ शाक की गंध से  
बहा हजारों कीड़िया एकट्ठी-एकत्रित-हो गई । उनमें से जिस कीड़ीने  
जिस समय उसे खाया वह कीड़ी उसी समय वहां मर गई । ( तएणं  
तस्स धम्मरुइयस्स अणगारस्स इमेयारुवे अज्झत्थिए ५-जइ ताव इम-  
स्स सालइयस्स जाव एगमि विन्दुगमि पक्खित्तमि अणेगाइ पिपीलिया

सहस्साणि पाउब्भूयाइ जा जहायण पिपीलिका आहारेइ सा तथा अकाले चेव  
जीवियाओ ववरोविज्जइ )

अने आवीने तेभण्णे सुभूमिभाग उद्यानथी वधारे द्वर पणु नहि अने  
वधारे नण्णक पणु नहि अेवा स्थाने भूमिनी प्रतिलेखना करी प्रतिलेखना  
करीने तेअेअे ते शारदिक-तिक्त कटुवी तुवडीना शाकमाथी अेक टीपा जेट्ठुं  
शाक लीधु अने लधने ते भूमिभाग उपर नाणी दीधु नाणतानी साथे ज  
था शारदिक तिक्त-कटुवी तुवडीना धी तरता शाकनी सुवासथी हजारे कीडीअे  
अेकडी थर्ध गध तेअेमाथी जे जे कीडीअे ते शाकने भाधु छर्तु ते ते-तरताज  
था भरी गध

तएण तस्स धम्मरुइयस्स अणगारस्स इमेयारुवे अज्झत्थिए ५ जइ ताव इम-  
स्स सालइयस्स जाव एगमि विन्दुगमि पक्खित्तमि अणेगाइ पिपीलिया सहस्साइ

णं अरहताण जाव संपत्ताणं, णसोऽत्थु णं धम्मघोसाणं थेराणं  
 सम धम्मायरियाण धम्मोवएसगाणं, पुढ्विपि णं मए धम्म-  
 घोसाणं थेराण अतिए सव्वेपाणाइवाए पच्चक्खामए जावजीवाए  
 जाव परिग्गहे, इयाणिपि ण अह तेसि चैव भगवंताण अंतियं  
 सव्व पाणाइवाइ पच्चक्खामि जाव परिग्गह पच्चक्खामि जाव-  
 जीवाए, जहा खंदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामिति-  
 कट्टु आलोइयपडिक्खते समाहिपत्ते कालगए ॥ सू० ३ ॥

टीका—तत्र खट्व स धर्मरुचिरनगारो धर्मघोषेण स्थविरेणैवमुक्तः सन् धर्म  
 घोषस्य स्थविरस्यान्तिमात्=समीपात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य सुभूमिभागा  
 द्यानाद् अदूरसामन्ते=नानिदूरे नातीसमीपे स्थण्डिलं प्रतिलेखयति, प्रतिलेख्य  
 ततः=तस्माद् शारदिकात् निक्कट्टुमात् तुम्भसादेकं बिन्दुकं गृह्णाति, दृष्ट्वा  
 स्थण्डिले=भूमौ 'निसरइ' निवृजति=परिष्ठापयति । ततः खट्व तस्य शारदिकस्य

तएण से धम्मरुई अणगारे इ यादि ॥

टीकार्थ—( तएण ) इसके बाद ( से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसे ण  
 थेरेण एव वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अतिघाओ पडिनिक्खमइ ) वे  
 धर्म रुचि अनगार धर्म घोष से इस प्रकार कहे जाने पर धर्मघोष के  
 पास से चले आये ( पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ  
 अदूर सामते थडिल पडिलेहेइ, पडिलेहिता तओ सालइयाओ एग बिंदुग  
 गहेइ, गहिता थडिलसि निसिरइ, तो ण तस्स सालइयस्स तित्त कडुय-

त एण से धम्मरुई अणगारे इत्यादि

टीकार्थ—( त एण ) त्थारपणी

( से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेण थेरेण एव वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स  
 थेरस्स अतिघाओ पडिनिक्खमइ )

ते धर्मरुचि अनगार धर्मघोषनी आ वात सावणीने तेभनी पासैथी  
 आवता रहा

( पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ अदूरसामते थडिल पडिले-  
 हेइ, पडिलेहिता तओ सालइयाओ एग बिंदुग गहेइ, गहिता थडिलसि निसिरइ,  
 तो ण तस्स सालइयस्स तित्तकडुयस्स बहुनेहारगाइस्स गधेण च विहील्लिगा

तिक्तकटुकस्य तुम्बकस्य बहुसमारसंभृतस्य स्नेहावगाढस्य गन्धेन बहूनि पिपीलिका-  
सहस्राणि पादुर्भूतानि, या यथा च 'ण' त=शारदिकस्य तिक्तकटुक तुम्बकस्य  
विन्दुकं पिपीलिका आहरति, सा तथा अकाले एव "जीवियाओ ववरोविज्जइ"  
जीविताद् व्यपरोप्यते=प्राणेभ्यो वियुज्यते 'म्रियते' इत्यर्थः, ततः खलु=पिपी-  
लिकाविराधनमवलोक्य धर्मरुचेरनगारस्यायमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः आध्या-  
त्मिकः=५ आत्मगतः चिन्तितः=स्मरणरूपः, प्रार्थितः=अभिलापरूपः, कल्पितः=  
कल्पनारूपः, मनोगतः=अन्तः प्रकाशितः सकल्पो विचारः समुदपद्यत यदि तावदस्य  
शारदिकस्य यावत्-तिक्त तुम्बकस्य एकस्मिन् विन्दुके प्रक्षिप्ते सति, अनेकानि  
पिपीलिकासहस्राणि 'ववरोविज्जति' व्यपरोप्यन्ते=प्राणेभ्यो वियुज्यते म्रियन्ते ।

स्स बहूनेहावगाढस्स गन्धेण बहूणि पिपीलिगासहस्साणि पाउब्भूयाइ  
जा जहायण पिपीलिका आहारेइ सा तथा अकाले चेव जीवियाओ ववरो  
विज्जइ ) और आकर के उन्होंने सुभूमिभाग उद्यान से न अतिदूर  
और न अति समीप भूमि की प्रतिलेखना की । प्रतिलेखना करके फिर  
उन्होंने उस शारदिक-तिक्तकटु-तुवड़ी के शाक में से एक विन्दुमात्र  
शाक लिया-और लेकर उसे भूमि पर डाल दिया । तो इतने में ही  
शारदिक तिक्तकटु तुवड़ी के उस बहुस्नेहावगाढ शाक की गंध से  
बहा हजारों कीड़ियाँ एकट्ठी-एकत्रित-हो गई । उनमें से जिस कीड़ीने  
जिस समय उसे खाया वह कीड़ी उसी समय वहाँ मर गई । ( तएण  
तस्स धम्मरुइयस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५-जइ ताव इम-  
स्स सालइयस्स जाव एगमि विन्दुगमि पक्खित्तमि अणेगाइ पिपीलिया

सहस्साणि पाउब्भूयाइ जा जहायण पिपीलिका आहारेइ सा तथा अकाले चेव  
जीवियाओ ववरोविज्जइ )

अने आवीने तेभण्णे सुभूमिभाग उद्यानथी वधारे इर पणु नहि अने  
वधारे नल्लक पणु नहि अेवा स्थाने भूमिनी प्रतिलेखना करी प्रतिलेखना  
करीने तेअेअे ते शारदिक-तिक्त कटवी तुण्डीना शाकमाथी अेक टीमा नेटवुं  
शाक लीधु अने लधने ते भूमिभाग उपर नाणी दीधु नाणतानी साथे  
था शारदिक तिक्त-कटवी तुण्डीना धी तरता शाकनी सुवासथी हल्लरे कीडीअे  
अेकडी थर्ध गध तेअेमाथी ने ने कीडीअे ते शाकने भाधु छतु ते ते तरत  
था भरी गध

तएण तस्स धम्मरुइयस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५ जइ ताव इम-  
स्स सालइयम्म जाव एगमि विन्दुगमि पक्खित्तम्मि अणेगाइ पिपीलिया सहस्साइ

તત્=તસ્માદ્ यदि खल्वहमेतद् शारदिकं 'धंडिलंसि' स्पष्टिष्ठे=भूमौ सर्व  
 'निसिरामि' निष्ठाजामि=परिष्ठापयामि, 'तोण' तर्हि खलु बहूनां प्राणानां  
 प्राणाः सन्त्येषामिति प्राणाः=माण्यन्तस्तेषां, तथाभूताना जीवाना तत्=तस्माद्  
 भेयः=भेयस्करं खलु ममेदं शारदिकं तिक्तकटुकालाघुकं यावत्-स्नेहावगाढ स्वय-  
 मेव आहारयितुं=भोक्तुम्, ममैव 'एण' एतेन=तिक्ततुम्यकादारेण 'सरीरेण'  
 शरीर खलु 'णिज्जाउ' निष्ठातु=निर्गच्छतु नश्यतु 'तिरुद्' इति कृत्वा इति  
 मनसि निधाय एवम्=अनेन प्रकारेण सप्रेक्षते=पुनः पुनर्विचारेण शरीरनिर्माणं कर्तुं

સહસ્સાઈં વવરોવિજ્જતિ, ત જહ્ણં અહં ણ્ય સાલહ્ય થડલસિ સન્ન  
 'નિસિરામિ તણં બહુણ પાણાણ ૪ વહં કારણં ભવિસ્સહ ત સેયં સ્વલ્લુ  
 મમેય સાલહ્ય જાવ ગાઢ સયમેવ આહારેત્તણં) હસ તરહ પિપીલિકાઓ  
 'કી વિરાધના, દેવકર, ધર્મરુચિ અનગાર કો હસ પ્રકાર આધ્યાત્મિક  
 યાવત્ મનોગત સકલ્પ-વિચાર હુઆ-યહા સકલ્પકે ચિન્તિત, પ્રાર્થિત,  
 કલ્પિત હન તીન વિશેષણોં કો ગ્રહણ કર ને કે નિમિત્ત સૂત્ર મેં ૫ કા  
 બક દિયા હૈ । જય હસ શારદિક તિક્ત કડવી તુવડી કી શાક કી  
 'એક બિન્દુ માત્ર જમીન પર ઢાલને પર અનેક પિપીલિકા સહસ્ર પ્રાણોં  
 સે વિયુક્ત હો જાતી હૈં તો મૈં જય હસ શારદિક તિક્ત કડવી તુવડી કે  
 શાકકોં પૂરેરુપમેં જમીન પર પરિષ્ઠાપિત કર દેંગા તો અનેક પ્રણિયોં ૪  
 કે વહ વિરાધના કા કારણ હોગા હસલિયે મુજે યચિત હૈ કિ મૈં હીં  
 હસ શારદિક તિક્ત કડવી તુવડી કે હસ બહુત મસાલેદાર એવ સ્નેહ-  
 ષગાઢ બહુત ધૂતસે યુક્ત શાક કો સ્વય આહાર કર જાઉં । (મમ એવ  
 એણ સરીરેણ ણિજ્ઞાઉત્તિકદ્દુ એવં સપેહેહ સપેહિત્તા મુહપોત્તિય ૨

વવરોવિજ્જતિ, ત જહ્ણં અહં ણ્ય સાલહ્ય થડલસિ સન્ન નિસિરામિ તણં બહુણ  
 પાણાણં ૪ વહં કારણં ભવિસ્સહ ત સેયં સ્વલ્લુ મમેય સાલહ્ય જાવ ગાઢ સયમેવ આહારેત્તણં

આ પ્રમાણે કીડીઓની વિરાધના બેઠને ધર્મરુચિ અનગારને આ બાતને।  
 આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ-વિચાર-ઉદ્ભવ્યો અહીં સકલ્પના ચિન્તિત,  
 પ્રાર્થિત, કલ્પિત આ ત્રણે વિશેષણોના અહણુ માટે સૂત્રમા પ ને। અક આપ  
 વામા આવ્યો છે-કે ત્યારે આ શારદિક તિક્ત કડવી તૂબડીના શાકના શક્ત  
 એક ટીપાને પૃથ્વી ઉપર નાખવાથી ઘણી કીડીઓ હબરે પ્રાણીથી વિયુક્ત  
 થઈ બચ છે ત્યારે હુ શારદિક કડવી તૂબડીના બધા શાકને પૃથ્વી ઉપર  
 નાખીશ ત્યારે તે અનેક પ્રાણીઓ ૪ ની વિરાધનાનું કારણ થશે એથી મને  
 એજ ચોખ્ખ લાગે છે કે હુ આ શારદિક તિક્ત કડવી તૂબડીના આ સરસ  
 મસાલાવાળા અને ધી તરતા શાકને ચોતે જ આઈ બહ



નિશ્ચિનુતે । સપ્રેક્ષ્ય-‘ મુદ્ધપોત્તિય ’ મુલ્લપોત્તિકા=સદોરકમુલ્લવલ્લિકા રજોહરણં ચ  
પતિલેલ્લયતિ, પ્રતિલેલ્લય ‘ સસીસોવરિય ’ સશીષોપરિક=ચરણતલાદ્ મસ્તકોપરિ-  
ભાગ્યન્ત કાય=શરીર, ‘ પમજ્જેહ ’ પ્રમાર્જયતિ, પ્રમાર્જ્ય તદ્ શારદિક તિક્તકઢુક  
વહુસમાસભૂત સ્નેહાવગાઢ વિલમિવ પન્નગભૂતેન આત્મના સર્વે શરીરકોઠુકે=ઉદરે  
પ્રક્ષિપતિ મુલ્લસ્ય પાર્શ્વદ્વયસ્પર્શરહિતમાહારયતીત્યર્થઃ । તતઃ સ્વલ્લુ તસ્ય ધર્મરુચેસ્તદ્

પડિલેહેહ, પડિલેહિત્તા સસીસોવરિય કાય પમજ્જેહ પમજ્જિત્તા તં સા-  
લ્લય તિક્તકઢુય વહુનેહાવગાઢ વિલમિવ પન્નગભૂણ અપ્પાણેણ સર્વ  
સરીરકોટ્ઠસિ પક્કિલ્લવહ ) મેરા હી શરીર હસ તિક્ત કઢુ તુવડી કે  
આહાર સે નાશ હોવે હસ પ્રકાર ઉન્હોને અપને મનમેં ચાર ૨ સોચા  
સોચકર અપને શરીર કે નિર્યાણ કરને કા ઉન્હોને નિશ્ચય કર લિયા ।  
નિશ્ચય કરને કે અનન્તર સદોરક મુલ્લવલ્લિકા એવ રજોહરણ હનકી  
ઉન્હોને પ્રતિલેલ્લના કરકે ફિર વે ચરણ તલ સે લેકર મસ્તકોપરિભાગ  
પર્યન્ત તક કે સમસ્ત અપને શરીર કી પ્રમાર્જના કરકે ઉન્હોને હસ  
શારદિક તિક્ત કઢવી તુવડી કે વહુત મસાલા સે યુક્ત એવ સ્નેહાવગાઢ  
વહુત ઘી સે યુક્ત સમસ્ત શાક કા આહાર કર લિયા-જિસ પ્રકાર  
સર્પ જય ઘિલ મેં પ્રવિષ્ટ હોતા હૈ તય ઘિલ કે દોનોં પર્શ્વભાગોં કો સ્પર્શ  
નહીં કરના હુઆ । હસમેં સોધા પ્રવિષ્ટ હો જાતા હૈ-હસી તરહ વહ  
શાક રૂપ સર્પ મો મુલ્લ રૂપ ઘિલ કે દોનોં પાર્શ્વભાગોં કો સ્પર્શ નહીં  
કરતા હુઆ સીધા ગલે સે હોકર પેટ મેં ચઢા ગયા । (તણં તસસ

( મમ ચેવ ણ્ણ સરીરેણ ણિજ્ઞાઉત્તિ કઢ્ઢુ એવ સપેહેહ, સપેહિત્તા મુદ્ધપો-  
ત્તિય ૨ પડિલેહેહ, પડિલેહિત્તા સસિસોવરિય કાય પમજ્જેહ પમજ્જિત્તા ત  
સાલ્લય તિક્તકઢુય વહુનેહાવગાઢ વિલમિવ પન્નગભૂણ અપ્પાણેણં સર્વ સરીર  
કોટ્ઠસિ પક્કિલ્લવહ )

માર શરીર જ આ તિક્ત કઢવી તૂબડીના આહારથી નષ્ટ થાય આ રીતે  
તેણે પોતાના મનમા વારવાર વિચાર કર્યો વિચારીને પોતાના શરીરને નષ્ટ  
કરવાનો તેમણે મધ્ધમ વિચાર કર્યો બાદ તેણે સદોરક મુલ્લવલ્લિકા અને રજો-  
હરણની તેમણે પ્રતિલેખના કરી પ્રતિલેખના કરીને તેમણે પગના તળિયાથી  
માંડીને મસ્તક સુધીના પોતાના આખા શરીરની પ્રમાર્જના કરી ત્યારે તેમણે  
તે શારદિક તિક્ત કઢવી તૂબડીના સરસ મસાલાવાળા અને ઉપર ઘી તરતા  
બધા શાકનો આહાર કરી લીધો જેવી રીતે સાપ જ્યારે દરમા પ્રવેશે છે  
ત્યારે દરના બને પાર્શ્વભાગનો સ્પર્શ કર્યા વગર તેમા સીધો પ્રવિષ્ટ થઈ  
જાય છે તેમજ તે શાક રૂપી સાપ પણ મુખ રૂપી દરના બને પાર્શ્વભાગને  
સ્પર્શ્યા વગર સીધું ગળામા થઈને પેટમા જઈ રહ્યું

તત્-તસ્માદ્ यदि खल्वहमेतद् शारदिकं 'धंडिलसि' स्थण्डिले=भूमौ सर्व  
 'निसिरामि' निष्ठागामि=परिष्ठापयामि, 'तोणं' तर्हि खलु घट्नां प्राणानां  
 प्राणाः सन्त्येषामिति प्राणाः=प्राणवन्तस्तेषां, तथाभूतानां जीवानां तत्-तस्माद्  
 श्रेयः=श्रेयस्कर खलु ममेदं शारदिकं तिक्तकटुकाण्डाशुकं यावत्-स्नेहावगाढ स्वय-  
 मेव आहारयितुं=भोवतुम्, ममैव 'एण' एतेन=तिक्ततुम्भ्यकादारेण 'सरीरेण'  
 शरीर खलु 'णिज्जाउ' निर्यातुं=निर्गच्छतु नश्यतु 'तिग्गु' इति कृत्वा इति  
 मनसि निधाय एवम्=अनेन प्रकारेण सप्रेक्षते=पुनः पुनर्विचारेण शरीरनिर्याणं कर्तुं

સહસ્સાઈં વવરોવિજ્જતિ, ત જહણં અહં ણ્ય સાલહય ધંડલસિ સબ્બ  
 'નિસિરામિ તણ્ણં ઘણ્ણ પાણાણ ૪ ઘટ્ઠ કારણં ભવિસ્સહ ત સેય સ્વલુ  
 મમેય સાલહય જાવ ગાઢ સયમેવ આહારેણ) હસ તરફ પિપીલિકાઓ  
 'કી વિરાધના, દેવકર, ધર્મરુચિ અનગાર કો હસ પ્રકાર આધ્યાત્મિક  
 યાવત્ મનોગત સકલ્પ-વિચાર હુઆ-યહા સકલ્પકે ચિન્તિત, પ્રાર્થિત,  
 કલ્પિત હન ત્રીન વિશેષણોં કો ગ્રહણ કર ને કે નિમિત્ત સૂત્ર મેં ૫ કા  
 બક દિયા હૈ । જય હસ શારદિક તિક્ત કડવી તુબડી કી શાક કી  
 'એક બિન્દુ માત્ર જમીન પર ઢાલને પર અનેક પિપીલિકા સહસ્ર પ્રાણોં  
 સે વિયુક્ત હો જાતી હૈં તો મેં જય હસ શારદિક તિક્ત કડવી તુબી કે  
 શાકકો, પૂરેરૂપમેં જમીન પર પરિષ્ઠાપિત કર દેંગા તો અનેક પ્રણિયોં ૪  
 કે વહ વિરાધના કા કારણ હોગા હસલિયે મુજે ઉચિત હૈ કિ મેં હી  
 હસ શારદિક તિક્ત કડવી તુબડી કે હસ ઘટ્ટ મસાલેદાર એવ સ્નેહા-  
 વગાઢ ઘટ્ટ ધૂતસે યુક્ત શાક કો સ્વય આહાર કર જાઉં । (મમ એવ  
 ણ્ણ સરીરેણ ણિજ્ઞાઉત્તિકટ્ટુ એવં સપેહેહ સપેહિત્તા મુહપોત્તિય ૨

વવરોવિજ્જતિ, ત જહણં અહં ણ્ય સાલહય ધંડલસિ સબ્બ નિસિરામિ તણ્ણં ઘણ્ણ  
 પાણાણં ૪ વહ કારણં ભવિસ્સહ ત સેય સ્વલુ મમેય સાલહય જાવ ગાઢ સયમેવ આહારેણ

આ પ્રમાણે કીડીઓની વિરાધના બેઠને ધર્મરુચિ અનગારને આ બાતને।  
 આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સ કલ્પ-વિચાર-ઉદ્ભવ્યો અહીં સ કલ્પના ચિન્તિત,  
 પ્રાર્થિત, કલ્પિત આ ત્રણે વિશેષણોના ગ્રહણ માટે સૂત્રમાં ૫ નો અક આપ  
 વામાં આવ્યો છે-કે બ્યારે આ શારદિક તિક્ત કડવી તુબડીના શાકના રૂક્ષ  
 એક ટીપાને પૃથ્વી ઉપર નાખવાથી ઘણી કીડીઓ હબરો પ્રાણોથી વિયુક્ત  
 થઈ બચ છે ત્યારે હુ શારદિક કડવી તુબડીના બધા શાકને પૃથ્વી ઉપર  
 નાખીશ ત્યારે તે અનેક પ્રાણીઓ ૪ ની વિરાધનાનું કારણ થશે એથી મને  
 એજ ચોખ્ખ લાગે છે કે હુ આ શારદિક તિક્ત કડવી તુબડીના આ સરસ  
 મસાલાવાળા અને ધી તરતા શાકને ચોતે જ આઈ બઉ

मित्यर्थः, एकान्ते 'सावयणि, स्वापवित्ता रयिडिळ्=सत्तारम्भनि प्रतितेव्वयति,  
प्रतिलेख्य दर्शनस्तारक 'सधारेड' सत्तुणाति=मात्तुत्त उग्गेनि सस्तीर्य, धर्म-  
सस्तारक दूरोदति=मारोदति, दूस्स पौरस्त्याभिमुत्त =दूर्वदिगभिमुत्त, 'मपलियं-  
कनिमन्ने' सपल्यङ्ग निपण्णः=पञ्चामनयानिपिडः, 'रात्तपयि ट्ठित=मगोजितहस्त  
तल्लय मसात्तेडालि दत्ता एव=रक्षणाप्रमाणेण अवासीत्=त्वमाम्पुक्तवान्,

“ नमोऽत्थुण अरिहताण जाव सपत्ताण,—

—णमोऽत्थुण धम्मघोसाण थेराण मम धम्मायरियाण धम्मोवणमयाण ”

नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो भगवद्भ्यो यावत् गमाप्तेभ्यः, नमोस्तु खलु धर्मघोषेभ्यः  
स्थविरेभ्यो मम उपाचार्येभ्यो उपापदेशकेभ्यः, पूर्वमपि दीक्षागृहणालेऽपि खलु  
मया उर्ध्वोपागा स्थविराणामन्तिके सर्वं प्राणान्निपात प्रत्याख्यातो यावज्जीव  
'यावत् परिग्रहः' अत्र यावच्छब्देन-सर्वो मृषावाद सर्वमदत्तादान सर्वं मैथुन च  
प्रत्याख्यातम्, तथा-सर्वं परिग्रहं प्रत्याख्यातम् । इदानीमपि खलु अहं तेषामेव  
भगवतामन्तिके सर्वं प्राणान्निपातं प्रत्याख्यामि यावत् परिग्रहं प्रत्याख्यामि यावत्  
प्रतिलेखना कीं प्रतिलेखना करके फिर उसके ऊपर उन्होंने दर्शन-  
स्तारक को बिजाया-पिछाकर फिर वे उसपर बैठकर फिर पूर्वदिशा  
की ओर मुखकर पर्यङ्कामन से उस पर विराजमान हो गये  
विराजमान होकर उन्होंने अपने दोनों हाथों को जोड़ा और मस्तक पर  
उसकी अजलि रखकर इस प्रकार अपने मन ही मन वे कहने लगे-  
( नमोत्थुण अरिहताण जाव सपत्ताण, णमोत्थुण धम्मघोसाण थेराण  
मम धम्मायरियाण धम्मोवणमयाण पुब्बिपि ण मए धम्मघोसाण थेराण  
अतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावजीवाए जाव परिग्गहे इयानि  
पि अहं तेसिच्चैन भगवताण अतिच सव्व पाणाइवाए पच्चक्खामि जाव

लाउने-वञ्च पात्र वगेरेने अर्कानमा भूडी दीधा भूक्या णाह तेओओ सस्ता  
रक भूमिनी प्रतिलेखना करी प्रतिलेखना करीने तेनी उपर तेमणे हल सस्ता  
रक कथी हल सस्तारक पाथगीने तेओ तेनी उपर ओसीने पूर्वदिशा तरश्च मुख  
करीने पर्यङ्कामनया तेनी उपर विराजमान थर्ग गया विराजमान थर्गने तेओओ  
पोताना णने डाथेने नेडया अने तेमनी अजली णतापीने मस्तक उपर  
भूडी अने पोताना मनमा न् उडेवा लाग्या

( नमोत्थु ण अरिहताण जाव सपत्ताण णमोत्थुण धम्मघोसाण थेराण मम  
धम्मायरियाण धम्मोवणमयाण पुब्बिपि ण मए धम्मघोसाण थेराण अतिए सव्वे  
पच्चक्खाए जाव जीवाए जाव परिग्गहे, इयानि पि अहं तेसि चैव

आरदिफ यावत्-स्नेहावगाढम् आहारिगस्य=सुक्तयतः, सतो मुहुर्तान्तरेण परिण-  
म्यमाने=आहारे परिणाम प्राप्तं सति शरीरे वेदना प्रादुर्भूता, सा कीदृशी? त्वार-  
उज्ज्वला=तीव्रा, यावत् 'दुरहि्यासा' दुरध्यासा=दुरधिसदा-अमर्त्यार्थः । ततः  
खलु स धर्मरुचिरनगारो ऽस्यामा, दीनपराक्रमः, अवलः=मनोबलरहितः अवीर्यः=  
हतोत्साहः अपुरुषकारपराक्रमः,=पुरुषार्थहीनः, 'अधारणिज्जमिति कट्टु' अपार  
णीयमिति कृत्या-धारयितुमशक्यमिदं शरीरमिति मनसि विचार्य 'आयारमडग'  
आचारभाण्डकम्-आचागय आचारपाळनार्थं भाण्डक=भाण्डोपकरणं वस्त्रपात्रादिक

धम्मरुहस्स त सालइय जाव नेहावगाढ आहारियस्स समाणस्स मुहुत्त  
तरेण परिणममाणसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुर-  
हियासा-तएण से धम्मरुई अणगारे अथामे अवले अवीरिए अपुरिस  
क्कारपरक्कमे आधारणिज्जमिति कट्टु अपारमडग एगते ठवेइ, ठवि  
त्ता थडिल्ल पडिलेहेइ, पडिलेहिता दब्भसथारग सथारेइ, सथारित्ता  
दब्भसथारग, दुरुहइ, दुरुहिता पुरत्थाभिमुहे सपलियकनिसन्ने कर-  
यल परिगहिय एवं वयासी ) शाक उन धर्मरुचि अनगार के पेट में  
पहुँचते ही एक मुहुर्त के बाद जब वह पचने लगा तब उनके शरीर  
में उज्ज्वल यावत् दुरधिध्यास वेदना प्रकट हुई । इस से वे धर्मरुचि  
अनगार पराक्रम से हीन, मनोबल से विहिन, हतोत्साह होकर पुरु-  
षार्थ रहित बन गये । यह शरीर अब धारण करने से अशक्य हो रहा  
है ऐसा जब उन्होंने प्रतीत होने लगा तब उन्होंने अपने आचारभाण्डक  
पचविध आचार पालने के लिये जो - वस्त्र - पात्रादिक ये उनको  
-एकान्त में रख दिया-रखकर फिर उन्होंने ने सस्तारकभूमि की

( तएण तस्स धम्मरुहस्स त सालइय जाव नेहावगाढ आहारियस्स समा  
णस्स मुहुत्ततरेण परिणममाणसि सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव  
दुरहियासा-तएण से धम्मरुई अणगारे अथामे, अवले अवीरिए अपुरिसकारपर  
क्कमे आधारणिज्जमिति कट्टु आयारमडग एगते ठवेइ, ठवित्ता थडिल्ल पडि  
लेहेइ, पडिलेहिता दब्भसथारग सथारेइ, सथारित्ता दब्भसथारग दुरुहइ,  
दुरुहिता पुरत्थाभिमुहे सपलियकनिसन्ने करयलपरिगहिय एवं वयासी )  
शाक ते धर्मरुचिना चेत्ता पडोयत्ता ज ओइ मुहुत्तं पछी न्यारे तेनु  
पायन शइ थयु न्यारे तेमना शरीरमा उज्ज्वल यावत् दुरधिध्यास वेदना थवा  
भाडी तेथी ते धर्मरुचि अनगार पराक्रम वगर, मनोबल वगर हतोत्साही  
थधने पुरुषार्थ वगर गनी गया हुवे आ शरीर टकलु अशक्य थय पइयु  
छे ओवी न्यारे तेओने प्रतीति थवा लागी न्यारे तेमणे चे आचार

मित्यर्थः, एतान्ते रागपयति, रागपयित्वा रगिडि=सस्तार-मूर्तिं प्रतिवेचयति,  
प्रतिवेच्य दर्शमस्तारक 'सथारेड' सस्तृणाति=मात्तुत जगेति सस्तीर्य, दर्श-  
सस्तारक दूरोदति=मारोहति, दूख्य पौरस्त्याभिमुख =पूर्वदिशभिमुखः, 'सपलियं-  
कनिमन्ने' सपल्यङ्क निपण्णः=पञ्चामनसनिविष्टः, जरालयि ट्ठीत=मज्जितहस्त  
तलद्वय मस्तकेऽजलि कृत्वा एव=वक्ष्यमाणप्रमाणेन जरादीन्=स्वमात्म्युक्तवान्,

“ नमोऽत्युण अरिहताण जाव सपत्ताण,—

—णमोऽत्युण धम्मप्रोसाण जेगण मम धम्मायरियाण धम्मोवएसयाण ”

नमोऽस्तु सखु जहंइयो भगवद्भयो पात्तु ममाप्तेभ्यः, नमोस्तु खलु धर्मघोषेभ्यः  
स्थविरेभ्यो मम उपाचार्येभ्यो नमोपदेगकेभ्यः, पूर्वमपि दीपावहणमालेऽपि खलु  
मया धर्मघोषाणां स्थविराणामन्तिके सर्व प्रागातिपात प्रत्यान्वानो यावज्जीव  
'यावत् परिग्रहः' अत्र यावच्छब्देन-समो मृगायाद् सर्वमदत्तादान सर्वमैयुन च  
प्रत्यारयातम्, तथा-सर्व परिग्रह प्रत्यारयातः। इदानीमपि सखु अह तयामेव  
भगवतामन्तिके सर्व प्रागातिपात प्रत्यान्वानि या त परिग्रह प्रत्यान्वामि याव  
प्रतिवेचना की प्रतिवेचना करके फिर उसके ऊपर उन्होंने दर्शन-  
स्तारक को दिखाया-दिखाकर फिर वे उसपर बैठकर फिर पूर्वदिशा  
की ओर मुखकर पर्यङ्कामन से उस पर विराजमान हो गये  
विराजमान होकर उन्होंने अपने दोनों हाथों को जोड़ा ओर मस्तक पर  
उसकी अजलि रखकर इस प्रकार अपने मन ही मन वे कहने लगे-  
( नमोत्युण अरिहताण जाव सपत्ताण, नमोत्युण धम्मप्रोसाण थेराण  
मम धम्मायरियाण धम्मोवएसयाण पुब्बिं पि ण मए धम्मप्रोसाण थेराण  
अतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावजीवण जाव परिग्रहे इयानि  
पि अह तेसिचेन भगवताण अतिथ सव्व पाणाइवाए पच्चक्खामि जाव

लाउने-वस्त्र पात्र वगेरेने जेगतभा भूझी दीधा भूझ्या गाह तेज्योअे भस्ता  
रक भूमिनी प्रतिवेचना करी प्रतिवेचना करीने तेनी उपर तेभये दर्श सस्ता  
रक कर्यो दर्शभस्तारक पाथनीने तेज्यो तेनी उपर जेसीने पूर्वदिशा तरङ्ग मुख  
करीने पर्यङ्कामनया तेनी उपर विराजमान धर्य गया विराजमान थने तेज्योअे  
पोताना जने छाथीने जेडया अने तेमनी अजली जनावीने भस्तक उपर  
भूझी अने पोताना भनभा ज डडेवा लाय्या।

( नमोत्यु ण अरिहताण जाव सपत्ताण नमोत्युण धम्मप्रोसाण थेराण मम  
धम्मायरियाण धम्मोवएसयाण पुब्बिं पि ण मए धम्मप्रोसाण थेराण अतिए सव्वे  
पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव जीवाए जाव परिग्रहे, इयानि पि अह तेसि चेव



જીવ, યથા-સ્કન્દકઃ=સ્કન્દકઃ ચાત્મચાર્મ-ચન્દ્રગૈઃ, 'ચોસિરામિતિકદ્દુ' વ્યુત્સજામિ=શરીર પરિત્યજામિ' इति कृत्वा 'आलोश्य पट्टिकते' आलोचितप्रति क्रान्तः=पूर्वकृत यदतीतारजात तदालोचित, पुनरकरणमतिशया मतिक्रान्तं येन त तथाभूतः समाधिप्राप्तः=आत्मसमाधियुक्तः कालगतः=मरण प्राप्त ॥सू०३॥

મૂલમ્-તएण ते धम्मघोसा थेरा धम्मरुडं अणगारं चिरं  
गय जाणित्ता समणे निग्गथे सदोवेति सदावित्ता एववयासी

परिग्रह पञ्चक्खामि जाव जीवाण जहा खदओ जाव चरिमेहिं उस्सा  
सेहिं चोसिरामित्ति कद्दु आलोश्य पट्टिकते समाधिपत्ते कालगए )  
यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए अरिहन् भगवतो के लिये  
मेरा नमस्कार हो-धर्मोपदेशक मेरे धर्माचार्य श्री धर्मोपस्थविर के  
लिये मेरी नमस्कार हो मैंने पहिले दीक्षा ग्रहण के समय उन धर्मोप  
स्थविर के समीप समस्त प्राणातिपात, समस्त मृपावाद, समस्त अद  
त्तादान, समस्त मैथुन तथा समस्त परिग्रह जीवन पर्यन्त प्रत्याख्यान  
कर दिया है । अब भी मैं उन्हीं भगवतो के समक्ष समस्त प्राणातिपात  
यावत् समस्त परिग्रह का यावज्जीव प्रत्याख्यान करता हूँ । यावत्  
अन्तिम श्वासोत्तक स्कन्दककी तरह इस शरीरका परित्याग करता हूँ ।  
इस प्रकार मन ही मन कह कर वे धर्मरुचि अनागार आलोचित प्रति  
क्रान्त बनकर आत्मसमाधिमें तल्लीन होते हुए मरण प्राप्त हुवे ॥सू०३॥

भगवताण अतिय सङ्ग पागाइमाय पच्चक्खामि जाव परिग्रह पच्चक्खामि जाव  
जीवाए जहा खदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहिं चोसिरामित्ति कद्दु आलोश्यपट्टि-  
क्कते समाधिपत्ते कालगए )

यावत् सिद्धिगति भोजवेલા અરિહત લગવતોના માટે મારા નમસ્કાર છે  
ધર્મોપદેશક મારા ધર્માચાર્ય શ્રી ધર્મઘોષ સ્થવિરના માટે મારા નમસ્કાર છે  
પહેલા દીક્ષા ગ્રહણ કરતી વખતે મે તે ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસે સમસ્ત પ્રાણા  
તિપાતો, સમસ્ત મૃપાવાદો, સમસ્ત અદત્તાદાનો સમસ્ત મૈથુનો તથા સમસ્ત  
પરિગ્રહોનું પ્રત્યાખ્યાન કર્યું હતું અત્યારે પણ તે જ લગવતોની સામે સમસ્ત  
પ્રાણાતિપાત યાવત્ સમસ્ત પરિગ્રહોનું યાવજીવ પ્રત્યાખ્યાન કરું છું જીવ-  
નના છેલ્લા શ્વાસ સુધી સ્કન્દકની જેમ આ શરીરનો ત્યાગ કરું છું આ રીતે  
પોતાના મનમાં જ કહીને તે ધર્મ-રુચિ અનાગાર આલોચિત પ્રતિકાત થઈને  
આત્મસમાધિમાં તલ્લીન થતા મરણ પામ્યા ॥ સૂત્ર “ ૩ ” ॥

-एव खलु देवाणुप्पिया । धम्मरुद्धं अणगारे मासखमण-  
 पारणगंसिं सालइयस्स जावगाढस्स णिसरणट्ठयाए वहिया  
 निग्गए चिरगए त गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया । धम्म-  
 रुद्धस्स अणगारस्स सच्चओ समंता मग्गणगवेसणं करेह,  
 तएणं ते समणा निग्गंथा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता  
 धम्मघोसाणं थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमति, पडिनि-  
 क्खमित्ता धम्मरुद्धस्स अणगारस्स सच्चओ समता मग्गण-  
 गवेसणं करेमाणा जेणेव थंडिल्लं तेणेव उवागच्छति उवा-  
 गच्छित्ता धम्मरुद्धस्स अणगारस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं  
 जीवविप्पजढं पासंति पासित्ता हा हा अहोअकज्जमितिकट्ठु  
 धम्मरुद्धस्स अणगारस्स परिनिट्ठाणवत्तिय काउस्सग्ग करेति  
 करित्ता धम्मरुद्धस्स आयारभडग गेण्हति गेण्हित्ता जेणेव  
 धम्मघोसा थेरा तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता गमणा-  
 गमणं पडिक्कमांति पडिक्कमित्ता एव वयासी-एव खलु अम्हे  
 तुब्भअतियाओ पडिनिक्खमामो२ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स  
 परिपेरतेण धम्मरुद्धस्स अणगारस्स सच्च जाव करेमाणे जेणेव  
 थंडिल्ले तेणेव उवा०२ जाव इह हव्वमागया, त कालगए  
 णं भते । धम्मरुद्धं अणगारे इमे से आयारभडए, तएणं  
 ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओग गच्छति गच्छित्ता  
 समणे निग्गथे निग्गथीओयसद्दावेति सद्दावित्ता एव वयासी  
 -एव खलु अज्जो ! मम अतेवासी धम्मरुची नाम अणगारे

જીવ, યથા-સ્કન્દકઃ=સ્કન્દસ્વર્ ગાચ્ચરમૈ-સ્કન્દમૈઃ, 'વોમિરામિતિક્કદુ' ષ્પુત્સજામિ=શરીર પરિત્યજામિ' इति कृत्वा 'आलोष्य पट्टिकते' आलोचितप्रति क्रान्तः=पूर्वकृत यदतीतारजात तदालोचित, पुनरकरणप्रतिज्ञया प्रतिक्रान्तं येन स तथाभूतः समाधिप्राप्त =आत्मसमाधिपुक्तः कालगतः=मरण प्राप्त ॥सू०३॥

મૂલમ્-તણ તે ધમ્મઘોસા થેરા ધમ્મરુઢં અણગારં ચિર  
ગય જાણિત્તા સમણે નિગ્ગંથે સદ્ધાવેતિ સદ્ધાવિત્તા એવવયાસી

પરિગ્રહ પચ્ચક્ખામિ જાવ્ જીવાણ જહા ચદઓ જાવ્ ચરિમેહિં ઉસ્સા  
સેહિં વોસિરામિત્તિ કદ્દુ આલોષ્ય પટ્ટિકતે સમાહિપ્તે કાલગણ )  
યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુવ અરિહત ભગવતો કે લિયે  
મેરા નમસ્કાર હો-ધર્મોપદેશક મેરે ધર્માચાર્ય શ્રી ધર્મવોપસ્થવિર કે  
લિયે મેરી નમસ્કાર હો મેને પઠિછે દીક્ષા ગ્રહણ કે સમય उन धर्मवोप  
स्थविर के समीप समस्त प्राणातिपात, समस्त मृषावाद, समस्त अद  
त्तादान, समस्त मैथुन तथा समस्त परिग्रह जीवन पर्यन्त प्रत्याख्यान  
कर दिया है । अब भी मैं उन्हीं भगवतो के समक्ष समस्त प्राणातिपात  
यावत् समस्त परिग्रह का यावज्जीव प्रत्याख्यान करता हूँ । यावत्  
अन्तिम श्वासोत्तक स्कन्दककी तरह इस शरीरका परित्याग करता हूँ ।  
इस प्रकार मन ही मन कह कर वे धर्मरुचि अनागार आलोचित प्रति  
क्रान्त बनकर आत्मसमाधिमें तल्लीन होते हुए मरण प्राप्त हुवे ॥सू०३॥

ભગવતાણ અતિય સઘ્વ પાગાડયાય પચ્ચક્ખામિ જાવ્ પરિગ્રહ પચ્ચક્ખામિ જાવ  
જીવાણ જહા ચદઓ જાવ્ ચરિમેહિં ઉસ્સાસેહિં વોમિરામિત્તિ કદ્દુ આલોષ્યપટ્ટિ-  
ક્કતે સમાહિપ્તે કાલગણ )

યાવત્ સિદ્ધિગતિ મેળવેલા અરિહત ભગવતોના માટે મારા નમસ્કાર છે  
ધર્મોપદેશક મારા ધર્માચાર્ય શ્રી ધર્મવોપ સ્થવિરના માટે મારા નમસ્કાર છે  
પહેલા દીક્ષા ગ્રહણ કરતી વખતે મે તે ધર્મવોપ સ્થવિરની પાસે સમસ્ત પ્રાણા  
તિપાતો, સમસ્ત મૃષાવાદો, સમસ્ત અદત્તાદાનો સમસ્ત મૈથુનો તથા સમસ્ત  
પરિગ્રહોનું પ્રત્યાખ્યાન કર્યું હતું અત્યારે પણ તે જ ભગવતોની સામે સમસ્ત  
પ્રાણાતિપાત યાવત્ સમસ્ત પરિગ્રહોનું યાવજ્જીવ પ્રત્યાખ્યાન કરું છું એવ  
નના છેલ્લા શ્વાસ સુધી સ્કન્દકની જેમ આ શરીરનો ત્યાગ કરું છું આ રીતે  
પોતાના મનમાં જ કહીને તે ધર્મ-રુચિ અનાગાર આલોચિત પ્રતિક્રાંત થઈને  
આત્મસમાધિમાં તલ્લીન થતા મરણ પામ્યા ॥ સૂત્ર “ ૩ ” ॥

शब्दयित्वा, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादिपुः=उक्तवन्तः, एव खलु हे देवानु-  
प्रियाः ! धर्मरुचिरनगारो मासखणपारणके शारदिकस्य तिक्तकटुफुल्लस्य  
यावत्-स्नेहावगाढस्य ' गिसिरणद्वयाए ' निसृजनार्थं तदिर्निर्गतश्चिरगतः=तस्मिन्  
गते सति बहुतरः कालो व्यतीत इत्यर्थः । तत्-तस्माद् गच्छत खलु यूयं हे देवानु-  
प्रियाः ! धर्मरुचैरनगारस्य सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषण=सम्यगन्वेषण कुरुत ।  
तत् खलु ते श्रमणा निर्ग्रन्था यावत् प्रतिशृण्वन्ति=तथा करिष्यामीत्युक्त्वा तामाज्ञां  
स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य धर्मवोषाणां स्वश्रमणामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनि-

वयासी-एव खलु देवाणुप्रिया ! धम्मरुई अनगारे मासखमणपारण  
गसि सालइयस्स जाव गाढस्स गिसिरणद्वयाए वहिया निग्गए-चिरगए,  
त गच्छह ण तुम्हे देवाणुप्रिया ! धम्मरुइयस्स अनगास्स सव्वओ  
समता गवेसण करेह ) श्रमण निर्ग्रन्थो को बुलाया । बुलाकर उनोंने  
ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो ! धर्मरुचि अनगार आन मासखमण की  
पारणा के दिन शारदिक तिक्त कटुनी तुण्डी का बहुत सभार सभृत  
शाक कि जिसके ऊपर घृत तैर रहा या लाये थे-मैंने उसे परिष्ठापन के  
लिये उन्हें आज्ञा दिया सो वे उसे परिष्ठापन करने के लिये यहां  
से बाहिर चले गये-गये उन्हें बहुत देर हो गई-वे अभी तक नहीं  
आये इसलिये हे देवानुप्रियो ! तुम लोग जाओ और धर्मरुचि  
अनगार की सब तरफ चारों दिशाओं में मार्गणा एव गवेषणा करो ।  
( तएण ते समणा निग्गया जाव पडिस्सुणेति, पडि सुणित्ता धम्मघोसाण

( समणे निग्गये सदावेति सदावित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्रिया !  
धम्मरुई अनगार मासखमणपारणगसि सालइयस्स जाव गाढस्स गिसिरणद्वयाए  
वहिया निग्गयाए-चिरगए, त गच्छह ण तुम्हे देवाणुप्रिया ! धम्मरुइस्स अण-  
गारस्स सव्वओ समता मग्गणगवेसण करेह )

श्रमण निर्ग्रन्थोने जोलाव्वा जोलावीने तेमने आ प्रमाणे कहु-उं हे  
देवानुप्रियो ! धर्मरुचि अनगार आने मास श्रमणनी पारणाना दिवसे शार-  
दिक तिक्त कटुनी तुण्डीनु सरस वधारेणु उपर धी तरतुं साज आहार भाटे  
लाव्वा डता तेओने मे प्रतिष्ठापननी आज्ञा आपी छे, तेओ परिष्ठापन  
भाटे अर्धीधो जहार गया छे तेओने जहार गयाने जहु न वणत थये छे,  
इह तेओ आव्वा नथी ओथी हे देवानुप्रियो ! तमे दोउने जओ अने  
धर्मरुचि अनगाव्नी ओमेर मार्गणा तेमन गवेषणा करो

( तएण ते समणा निग्गया जाव पडिस्सुणेति, पडि सुणित्ता धम्मघोसाण

पगइभदण जाव निणीए साम्न मानेणं अणिगिबत्तेण तवो  
 कम्मेण जाव नागसिरीए माहणीए गिहे अणुपविट्ठे, तएणं  
 सो नागसिरी माहणी जाव निसीरट्ठ, तएण से धम्मरुई  
 अणगारे अहापजत्तमितिउहु जाव काल अणवकम्मेमाणे वि-  
 हरति, से ण धम्मरुई अणगारे उहुणि वासाणि सामन्नप-  
 रिवाग पाउणित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिउत्ते कालमासे  
 काल किन्ना उहु सोत्तम्मजाव सव्वट्ठसिद्धं महाणिमाणे देव-  
 त्ताए उववत्ते, तए ण अजहणमणुक्कोसेणं तेत्तीस साग-  
 रोवमाइ टिई पन्नत्ता, तए धम्मरुइस्सनि देवस्स तेत्तीसं  
 सागरोवमाइ टिई पणत्ता से ण धम्मरुई देवे ताओ  
 देवलोगाओ जाव महाविदेहे वामे सिज्झहिइ त विरथुणं  
 अज्जो ! नागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुन्नाए जाव णि  
 वोलियाए जाए ण तहारुवे साहु धम्मरुई अणगारे मास-  
 खमणपारणगमि सालइएण जाव गाढेण अहाले चैव जीवि-  
 याओ ववरोविए ॥ सू० ४ ॥

टीका—‘ तएणं त ’ इत्यादि । तत’ खलु=इतश्च ते धर्मघोषा स्थविरा  
 धर्मस्मिन्मगार चिर गत उहुकाज्जा गत ज्ञात्वा श्रमणान् निर्ग्रन्थान् शब्दयति,

तएण ते धम्मघोसा थेरा इत्यादि ॥

टीकार्थ—( तएण ) इसके बाद ( ते धम्मघोसा थेरा ) उन-धर्मघोष  
 स्थविरने( धम्मरुइ अणगार ) धर्मरुचि अनगार को ( चिरगय जाणित्ता )  
 बहुत देर के गये हुए जानकर ( नमणे निगथे सदावेत्ति, सदावित्ता एव

तएण ते धम्मघोसा थेरा इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्याग्याह (ते धम्मघोसा थेरा) ते धर्मघोष स्थविर (धम्म  
 रुइ अणगार) धर्मरुचि अनगारने (चिरगय जाणित्ता) बहुत देर के गये  
 गयेहा लखीने



શબ્દયિત્વા, એવ=વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ, અવાદિપુઃ=ઉક્તવન્તઃ, એવ સ્વલુ હે દેવાનુ-  
પ્રિયાઃ ! ધર્મરુચિરનગારો માસક્ષયણપારણકે શારદિકસ્ય તિક્તકદુઃસ્વકસ્ય  
યાવત્-સ્નેહાવગાદસ્ય ' નિસિરણદ્વયાપ ' નિસૃજનાર્થં વદિર્નિર્ગતશ્ચિરગતઃ=તસ્મિન્  
ગતે સતિ વહુતરં કાલો વ્યતીતઇત્યર્થઃ । તત્-તસ્માદ્ ગચ્છત સ્વલુ યૂય હે દેવાનુ-  
પ્રિયાઃ ! ધર્મરુચેરનગારસ્ય સર્વતં સમન્તાદ્ માર્ગણગવેષણ=સમ્યગન્વેષણ કુરુત ।  
તત સ્વલુ તે શ્રમણા નિર્ગમ્યા યાવત્ પ્રતિગ્વ્યન્તિ=તથા પરિપ્યામીત્યુક્તવા તામાજ્ઞા  
સ્વીકુર્વન્તિ, પ્રતિશ્રુત્ય ધર્મપ્રોષણાં સર્વાણામન્તિકાત્ પ્રતિનિષ્ક્રામન્તિ, પ્રતિનિ

વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! ધમ્મરુદ્ધ અનગારે માસસ્વમણપારણ  
ગમિ સાલહ્યસ્સ જાવ ગાઢસ્સ નિસિરણદ્વયાપ વહિયા નિગગા-ચિરગા,  
ત ગચ્છહ ણ તુમ્હે દેવાણુપ્પિયા ! ધમ્મરુદ્ધસ્સ અનગારસ્સ સન્વઓ  
સમતા ગવેસણ કરેહ ) શ્રમણ નિર્ગમ્યો કો બુલાયા । બુલાકર ઉનોને  
એસા કહા-હે દેવાનુપ્રિયો ! ધર્મરુચિ અનગાર આન માસસ્વમણ . કી  
પારણા કે દિન શારદિક તિક્ત કડવી તુવટી કા વહુ સમાર સમુત  
શાક કિ જિસકે ऊपर વૃત તર રહા યા લાયે થે-મૈને ઉસે પરિષ્ઠાપન કે  
લિયે ઉન્હે આજ્ઞા દિયા મો વે ઉસે પરિષ્ઠાપન કરને કે લિયે યહાં  
સે વાહિર ચલે ગયે-ગયે ઉન્હે વહુત ઢેર હો ગઈ-વે અભીતક નહીં  
આયે હસલિયે હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ જાઓ ઓર ધર્મરુચિ  
અનગાર કી સવ તરફ ચારો દિગાઓ મે માર્ગણા એવ ગવેષણા કરો ।  
( તણ તે સમણા નિગમ્યા જાવ પહિસુણેતિ, પહિ સુણિત્તા ધમ્મવોસાણ

( સમણે નિગમ્યે સદામેતિ સદાવિત્તા એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા !  
ધમ્મરુદ્ધ અનગાર માસસ્વમણપારણગમિ સાલહ્યસ્સ જાવ ગાઢસ્સ નિસિરણદ્વયાપ  
વહિયા નિગમ્યા-ચિરગા, ત ગચ્છહ ણ તુમ્હે દેવાણુપ્પિયા ! ધમ્મરુદ્ધસ્સ અન-  
ગારસ્સ સન્વઓ સમતા મગ્ગણગવેસણ કરેહ )

શ્રમણુ નિર્ગમ્યોને બોલાવ્યા બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું-હે હે  
દેવાનુપ્રિયો ! ધર્મરુચિ અનગાર આજે માસ ખમણની પાતણાના દિવસે શાર  
દિક તિક્ત કડવી તૂબટીનું મરસ વધારેલું ઉપર ધી તરતું ગાઢ આહાર માટે  
લાવ્યા હતા તેઓને મે પ્રતિષ્ઠાપનની આજ્ઞા આપી છે, તેઓ પરિષ્ઠાપન  
માટે અહીં બહાર ગયા છે તેઓને બહાર ગયાને બહુ જ વખત થયો છે,  
હજી તેઓ આવ્યા નથી એવી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો બધા અને  
ધર્મરુચિ અનગારની એમરે માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરો

( તણ તે સમણા નિગમ્યા જાવ પહિસુણેતિ, પહિસુણિત્તા ધમ્મવોસાણ

पगइभदण जाव पिणीए साम मासेण अणिग्गित्तेणं तवो-  
 कम्मेणं जाव नागसिरीण माहणीए गिहे अणुपविट्ठे, तएणं  
 सो नागसिरी माहणी जाव निसीगढ, तएण मे धम्मरुई  
 अणगारे अहापजत्तमितिकट्टु जाव काल अणवकम्मेमाणे वि-  
 हरति, से ण धम्मरुई अणगारे बद्धणि वासाणि सामन्नप-  
 रियाग पाउणित्ता आलोडयपटिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे  
 काल किञ्चा उड्डु साहम्मजाव सव्वट्टसि ऽ महाणिमाणे देव-  
 ताए उववन्ने, तस्य ण अजहणमणुक्कोसेण तेत्तील साग-  
 रोवमाड टिई पन्नत्ता, तस्य धम्मरुट्ठस्यणि देवस्स तेत्तीसं  
 सागरोवमाड टिई पणत्ता से ण धम्मरुट्ठं देवे ताओ  
 देवलोगाओ जाव गहाविदेहे वासे सिज्झिहिइ त विस्त्युणं  
 अज्जो । णागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुन्नाए जाव णि  
 वोलियाए जाए ण तहारुवे साहु धम्मरुई अणगारे मास-  
 खमणपारणमि सालइएण जाव गाढेण अकाले चैव जीवि-  
 याओ ववरोविए ॥ सू० ४ ॥

टीका—‘ तएण ते ’ इत्यादि । तत’ खलु=इतश्च ते धर्मघोषा स्थविरा  
 धर्मरुचिमन्गार चिर गत बहुकालो गत ज्ञात्वा श्रमणान् निर्ग्रन्थान् श-दयति,

तएण ते धम्मघोसा थेरा इत्यादि ॥

टीकार्थ—( तएण ) इसके बाद ( ते धम्मघोसा थेरा ) उन-धर्मघोष  
 स्थविरने( धम्मरुइ अणगार ) धर्मरुचि अनगार को ( चिरगय जाणित्ता )  
 बहुत देर के गये हुए जानकर ( स्वमणे निग्गथे सदावेति, सदावित्ता एव

तएण ते धम्मघोसा थेरा इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्याख्याह (ते धम्मघोसा थेरा) ते धर्मघोष स्थविर (धम्म  
 रुइ अणगार ) धर्मरुचि अनगारने ( चिरगय जाणित्ता ) बहुत पणतथी भडा  
 गयेला गेलीने

इतिकृत्वा-इतिखेद कृत्वा धर्मरुचेरनगारस्य 'परिनिव्वाणवत्तिय' परिनिर्वाण-  
प्रत्ययिकं=परिनिर्वाण मरणं तत्र यन्मृतशरीरस्य परिष्ठापनं तदपि परिनिर्वाणमेव  
तदेव प्रत्ययोद्देश्यस्य स परिनिर्वाणप्रत्ययिकः त तथा, मृतपरिष्ठापननिमित्तकमि-  
त्यर्थः कायोत्सर्गं कुर्वन्ति, कृत्वा धर्मरुचेरनगारस्याऽऽचारभाण्डकं=वस्त्रपात्रादिक  
गृह्णन्ति, गृहीत्वा यत्रैव धर्मघोषाः स्थविरास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य गमनागमनम्=  
इर्यापथिकीं प्रतिक्रामन्ति, प्रतिक्राम्यैवमवादिषुः एव खलु हे स्वामिन् । वयं युष्मा-  
कमन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामामः=प्रतिनिर्गताः, प्रतिनिष्क्रम्य सुभूमिभागस्योद्यानस्य

इस प्रकार कहकर उन्होंने वहीं पर मृत शरीर को वोसराने रूप कायो-  
त्सर्ग किया । ( करित्ता० उवागच्छ० ) कायोत्सर्ग करके फिर उन्होंने  
उन धर्मरुचि अनगार के आचार भांडको को वस्त्र पात्रादिकों को-उठा  
लिया-उठाकर वे जहां धर्मघोष स्थविर थे-वहां आये ( उवागच्छित्ता  
गमणागमण पडिक्कमत्ति, पडिक्कमित्ता एव वयासी-एव खलु अम्हे-  
तुवम अतियाओ पडि निक्खमामो २ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपे-  
रत्तेण धम्मरुहस्स अणगारस्स सव्व जाव करेमाणे जेणेव थडिल्ले तेणेव  
उवा० २ जाव इह हव्वमागया, तं कालगण्ण भत्ते ! धम्मरुहं अणगारे  
इमे से आयारभंडए - तएणं ते धम्मयोसा थेरा पुव्वगए उवओग  
गच्छति गच्छित्ता समणे निग्गंथे निग्गयोओ य सदावेति-सदावित्ता  
एव वयासी ) आकर के उन्होंने ईर्यापथिक प्रतिक्रमण किया ।  
प्रतिक्रमण करके फिर इस प्रकार वे कहने लगे हे स्वामिन् ! हम लोग  
आपके पास से यहां से गये-और जाकर सुभूमिभाग उद्यान की चारों

रीते छड़ीने तेमण्णे त्याज्ज मृत शरीरने वोसरवा इय कायोत्सर्गं कथं  
( करित्ता० उवागच्छ० ) कायोत्सर्ग करीने तेओअे धर्मरुचि अनगारना आचार  
भांडकाने तेमण्ण वस्त्रोने लब्धलीधा अने लब्धने जया धर्मघोष स्थविर छता त्या आओया  
( उवागच्छित्ता गमणागमण पडिक्कमत्ति, पडिक्कमित्ता एव वयासी-एव  
खलु अम्हे तुवम अतियाओ पडिनिक्खमामो २ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स  
परिपेरत्तेणं धम्मरुहस्स अणगारस्स सव्व जाव करेमाणे जेणेव थडिल्ले  
तेणेव उवा० जाव इह हव्व-मागया त कालगण्णं भत्ते ! धम्मरुहं अणगारे  
इमे से आयारभंडए तएणं ते धम्मयोसा थेरा पुव्वगए उवओग गच्छति  
गच्छित्ता समणे निग्गंथे निग्गयोओ य सदावेति-सदावित्ता एव वयासी )  
त्या आवीने तेमण्णे ईर्यापथिक प्रतिक्रमण कथं प्रतिक्रमण करीने तेओ  
आ प्रमाणे कडेवा लाग्या उ हे स्वामिन् ! अमे लोको अर्हथी आपनी  
पासेथी गया अने जधने सुभूमिभाग उद्याननी ओभेर इरता इरता धर्मरुचि

काम्य धर्मरुचेरनगारस्य सर्वत समन्ताद् मार्गणगवेपणं कुर्वन्तो यत्रैव स्थण्डिलं= स्थलं धर्मरुचेरनगारस्य काल्परणस्थानं तत्रोपागच्छन्ति, उपागत्य धर्मरुचेरनगारस्य शरीरक 'निष्पाण' निष्पाण=प्राणरहित, 'निच्चेट्ट' निश्चेष्ट=वेष्टारहित 'जवविप्पजड' जीव विमत्पक्त=जीवहीन पश्यन्ति, दृष्ट्वा हा ! हा ! अहो ! इति खेदे, 'अकज्जं' अकार्यम्=अनिष्ट जात यद्ध्यर्धमरुचिनगारो मृतः, 'विकट्टु'

थेराण अतिथाओ पटिनिक्खमति, पटिनिक्खमिच्छा धम्मरुहस्स-अणगाहस्स सव्वाओ समता मग्गणगवेसण करेमाणा जेणेव थण्डिल्ल तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता धम्मरुहस्स अणगारस्स शरीरग निष्पाण निच्चेट्ट जीवविप्पजड पासति, पासित्ता हा हा अकज्जमिति कट्टु धम्मरुहस्स अणगारस्स परि निव्वाणवत्तिय काउस्सग्ग-करेति ) उन निर्ग्रन्थ श्रमणों ने अपने धर्मचार्य की इस आज्ञा को यावत् स्वीकार कर लिया । और स्वीकार करके फिर वे धर्मघोष स्थविर के पास से निकले निकल कर उन्होंने धर्मरुचि अनागार की चारों दिशाओंमें सब प्रकार से मार्गणा गवेपणा की । इस तरह मार्गण गवेपणा करते हुए जहां वह स्थण्डिल था-धर्मरुचि अनागार की मृत्यु होने का स्थान था-वहां आये वहां आकर वे उन्होंने धर्मरुचि अनागार के शरीर को प्राणरहित, चेष्टा रहित और जीव रहित देखा । देखकर वे सहसा उनके मुख से हाय हाय यह खेद सूचक शब्द निकल पड़ा वे कहने लगे यह बड़ा अनिष्ट हुआ-जो धर्मरुचि अनागार का देहावसान हो गया ।

थेराण अतिथाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमिच्छा धम्मरुहस्स अणगारस्स सव्व ओ समता मग्गणगवेसण करेमाणा जेणेव थण्डिल्ल तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता धम्मरुहस्स अणगारस्स, शरीरग निष्पाणं निच्चेट्ट जीव विप्पजड पासति, पासित्ता हाहा अकज्जमिति कट्टु धम्मरुहस्स अणगारस्स परिनिव्वाणवत्तिय काउस्सग्ग करेति )

ते निर्ग्रन्थ श्रमणोंने जोताना धर्माचार्यनी आज्ञाने स्वीकारी लीधी अने स्वीकारीने तेणो धर्मघोष स्थविरनी पासैथी नीकणीने धर्मरुचि अनगारनी अधी रीते थोभेर मार्गणा तेभज गवेपणा करवा लाग्या आ रीते मार्गण गवेपण करता ज्या ते स्थण्डिल छतु-धर्मरुचि अनगारना मृत्युनु स्थान छतु त्या आव्या त्या आवीने तेणो धर्मरुचि अनगारना शरीरने निष्पाण निश्चेष्ट अने निर्व्व जेयु आ दृश्य जेतानी साथे ज तेणोना मुखथी हाय ! हाय ! ना जेठ सूचक शब्दो नीकणी पड्या तेणो कडेवा लाग्या के आ महुं ज थोडु यथु छे-धर्मरुचि अनगारनु

इतिकृत्वा-इतिखेद कृत्वा धर्मरुचेरनगारस्य 'परिनिव्वाणवत्तिय' परिनिर्वाण-  
प्रत्ययिकं=परिनिर्वाण मरण तत्र यन्मृतशरीरस्य परिष्ठापन तदपि परिनिर्वाणमेव  
तदेव प्रत्ययोहेतुर्यस्य स परिनिर्वाणप्रत्ययिकः त तथा, मृतपरिष्ठापननिमित्तकमि-  
त्यर्थः कायोत्सर्गं कुर्वन्ति, कृत्वा धर्मरुचेरनगारस्याऽऽचारभाण्डक=वस्त्रपात्रादिकं  
गृह्णन्ति, गृहीत्वा यत्रैव धर्मघोषाः स्थविरास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य गमनागमनम्=  
ईर्यापथिकीं प्रतिक्रामन्ति, प्रतिक्राम्यैवमवादिषुः एव खलु हे स्वामिन् । वय युष्मा-  
कमन्तिहात् प्रतिनिष्क्रामामः=प्रतिनिर्गताः, प्रतिनिष्क्रम्य सुभूमिभागस्योद्यानस्य

इस प्रकार कहकर उन्होंने वही पर मृत शरीर को वोसराने रूप कायो  
त्सर्ग किया । ( करित्ता० उवागच्छ० ) कायोत्सर्ग करके फिर उन्होंने  
उन धर्मरुचि अनागार के आचार भाण्डको को वस्त्र पात्रादिकों को-उठा  
लिया-उठाकर वे जहा धर्मघोष स्थविर थे-वहा आये ( उवागच्छित्ता  
गमणागमण पडिक्कमत्ति, पडिक्कमत्ति एव वयासी-एव खलु अम्हे-  
तुवम अतियाओ पडि निक्खमामो २ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपे-  
रत्तेण धम्मरुहस्स अणगारस्स सव्व जाव करेमाणे जेणेव थडिल्ले तेणेव  
उवा० २ जाव इह हव्वमागया, तं कालगणं भत्ते ! धम्मरुहं अणगारे  
इमे से आयारभण्डए - तएण ते धम्मवोसा थेरा पुव्वगए उवओग  
गच्छति गच्छित्ता समणे निगगथे निगगथोओ य सदावेति-सदावित्ता  
एव वयासी ) आकर के उन्होंने ईर्यापथिक प्रतिक्रमण किया ।  
प्रतिक्रमण करके फिर इस प्रकार वे कहने लगे हे स्वामिन् । हम लोग  
आपके पास से यहा से गये-और जाकर सुभूमिभाग उद्यान की चारों

रीते कहीने तेमण्हे त्याज्ज मृत शरीरने वोसरवा इप कायोत्सर्गं कथ्ये  
( करित्ता० उवागच्छ० ) कायोत्सर्गं कहीने तेओओ धर्मरुचि अनगारना आचार  
भाण्डकाने तेमज्ज वओने ल'लीधा अने लधने न्या धर्मघोष स्थविर छता त्या आओया  
( उवागच्छित्ता गमणागमण पडिक्कमत्ति, पडिक्कमत्ति एव वयासी-एव  
खलु अम्हे तुवमं अतियाओ पडिनिक्खमामो २ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स  
परिपेरत्तेण धम्मरुहस्स अणगारस्स सव्व जाव करेमाणे जेणेव थडिल्ले  
तेणेव उवा० जाव इह हव्व-मागया त कालगणं भत्ते ! धम्मरुहं अणगारे  
इमे से आयारभण्डए तएणं त धम्मवोसा थेरा पुव्वगए उवओग गच्छति  
गच्छित्ता समणे निगगथे निगगथीओ य सदावेति-सदावित्ता एव वयासी )  
त्या आवीने तेमण्हे ईर्यापथिक प्रतिक्रमण कथ्ये प्रतिक्रमण कहीने तेओ  
आ प्रमाणे कडेवा लाग्या के हे स्वामिन् ! अमे लोक ओहीथी आपनी  
पासेथी गया अने लधने सुभूमिभाग उद्याननी ओभेर करता करता धर्मरुचि



ધર્મરુચેરનાગારસ્ય સર્વત મમન્તાદ માર્ગગવેષણં કુર્વન્તો યત્રેવ સ્થિતિ-  
સ્થલં ધર્મરુચેરનાગારસ્ય કાલ્પકરણસ્થાન તત્રોપાગન્ઠન્તિ, ઉપાગત્ય ધર્મરુચેર-  
નાગારસ્ય શરીરક 'નિપ્પાણ' નિપ્પાણ=પાણરહિતં, 'નિચ્ચેદ્ધ' નિષ્પેદ=વેષ્ટાર-  
હિતં 'જવવિપ્પજઢ' જીર વિપત્ત્યક્ત=જીરહીન પદ્યન્તિ, દૃષ્ટ્વા હા ! હા ! અહો !  
इति खेदे, 'अकज्जं' अकार्यम्=अनिष्ट जात यद्ध्यर्मरुचिनगारी मृतः, 'तिक्कदु' "

થેરાણ અતિયાઓ પઢિનિક્ખમતિ, પઢિનિક્ખમિત્તા ધમ્મરુહસ્સ-  
અણગારસ્સ સન્વાઓ સમતા મગ્ગગવેસણ કરે માણા જેણેવ થંદિલ્લ  
તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા ધમ્મરુહસ્સ અણગારસ્સ સરીરગ  
નિપ્પાણ નિચ્ચેદ્ધ જીવવિપ્પજઢ પાસતિ, પાસિત્તા હા હા અકજ્જમિત્તિ  
કદ્દુ ધમ્મરુહસ્સ અણગારસ્સ પરિ નિવ્વાણવત્તિય કાઉસ્સગ્ગં-કરેતિ )  
उन निर्ग्रन्ध श्रमणों ने अपने धर्माचार्य की इस आज्ञा को यावत् स्वीकार  
कर लिया । और स्वीकार करके फिर वे धर्मघोष स्थविर के पास से  
निकले निकल कर उन्होंने धर्मरुचि अनागार की चारों दिशाओंमें सब  
प्रकार से मार्गणा गवेषणा की । इस तरह मार्गण गवेषणा करते हुए  
जहां वह स्थण्डिल था-धर्मरुचि अनागार की मृत्यु होने का स्थान था-  
वहा आये वहा आकर के उन्होंने धर्मरुचि अनगार के शरीर को प्राण-  
रहित, चेष्टा रहित और जीव रहित देखा । देखकर के सहसा उनके  
मुख से हाय हाय यह खेद सूचक शब्द निकल पड़ा वे कहने लगे यह  
बड़ा अनिष्ट हुआ-जो धर्मरुचि अनागार का देहावसान हो गया ।

થેરાણ અતિયાઓ પઢિનિક્ખમતિ, પઢિનિક્ખમિત્તા ધમ્મરુહસ્સ અણગારસ્સ સન્વ  
ઓ સમતા મગ્ગગવેસણ કરેમાણા જેણેવ થંદિલ્લ તેણેવ ઉવાગચ્છતિ ઉવાગ-  
ચ્છિત્તા ધમ્મરુહસ્સ અણગારસ્સ, સરીરગ નિપ્પાણ નિચ્ચેદ્ધ જીવ વિપ્પજઢ પાસતિ,  
પાસિત્તા હાહા અકજ્જમિત્તિ કદ્દુ ધમ્મરુહસ્સ અણગારસ્સ પરિનિવ્વાણ વત્તિય કાઉ  
સ્સગ્ગ કરેતિ )

તે નિર્ગ્રંથ શ્રમણોએ પોતાના ધર્માચાર્યની આજ્ઞાને સ્વીકારી લીધી અને  
સ્વીકારીને તેઓ ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસેથી નીકળીને ધર્મરુચિ અનાગારની  
અધી રીતે એમર માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરવા લાગ્યા આ રીતે માર્ગણ  
ગવેષણા કરતા જ્યાં તે સ્થંડિલ હતું-ધર્મરુચિ અનાગારના મૃત્યુનું સ્થાન હતું  
ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેઓએ ધર્મરુચિ અનાગારના શરીરને નિષ્પ્રાણ  
નિષ્કેષ્ટ અને નિર્જીવ જોયું આ દૃશ્ય જોતાની સાથે જ તેઓના મુખથી  
હાય ! હાય ! ના ખેદ સૂચક શબ્દો નીકળી પડ્યા તેઓ કહેવા લાગ્યા કે  
આ બહુ જ ખોટું થયું છે-ધર્મરુચિ અનાગારનું



‘પરિવેરતેણ’ પરિવર્થન્તેન=ચતુર્થિષુ પરિશ્રમન્તો ધર્મરુચિરનગારસ્ય ‘સવ્રજાત્ર’ સર્વતઃ સમન્તાદ્ માર્ગણગવેષણ કુર્વતો યર્જીર સ્થણ્ડિત્વ તર્મયોપાગન્ત્રામઃ, ઉપાગમ્ય યાવદ્ ઇદં દ્રવ્યમાગતાઃ મ કાઝગાઃ સ્વલુ હે મદન્ત । ધર્મરુચિરનગારઃ, રમાનિ ‘સે’ તસ્ય, આચારભાણ્ડકાનિ । તતઃ સઙ્ગુ તે ધર્મયોગા સ્થવિરાઃ ‘પુન્નગણ’ પૂર્વગતે=દૃષ્ટિવાદાન્તર્ગતશ્રુતાધિકારવિશેષે ઉપયોગ ગન્ઠન્તિ=લગવન્તિ યન્ના ધર્મ-રુચિરાહારમાનેતુ નગર્યાં ગતસ્તદ્વા વસ્તુ તદ્દે ગત ? કેનેદમાહારદત્ત ’ મિત્યાદિ જ્ઞાતુ સ્વકીયોપયોગ નયન્તીત્યર્થ, ગત્વા-સ્વકીયોપયોગ લગવિત્ત્વા, શ્રમણાન્ નિર્ગ્રન્થાન્ નિર્ગ્રન્થીશ્ચ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા પુનઃપ્રાપ્તીત્—એવ સ્વલુ હ આર્યાઃ । મમાન્તેવાસી=શિષ્યઃ, ધર્મરુચિર્નામાઽનગારઃ ‘પગ્મદ્દણ’ પ્રતિરુભદ્રકઃ=પ્રકૃત્યા

દિશાઓ મેં ફિરતે ૨ ધર્મરુચિ અનગાર કી સર્વ પ્રકાર સે માર્ગણ, ગવે પણા કરને લગે । માર્ગણા, ગવેપગા કરતે હુજ હમ લોગ ફિર ઉસ સ્થાન પર પહુંચે જહા ધર્મરુચિ અનગાર કા શર પઢા હુઓ ધા વહા સે અમી ૨ હમ લોગ આરહે હે । હે મદન ! હે ધર્મરુચિ અનગાર કાલગત હો ગયે હે—હે ઉનકે આચાર ભાણ્ડક વસ્ત્ર પાત્ર હે । હસ કે વાદ ઉન ધર્મયોગ સ્થવિર ને દૃષ્ટિ વાદ કે અતર્ગત શ્રુતાધિકાર વિશેષ મેં અપના ઉપયોગ લગાયા—તો ઉન્હે યહ જ્ઞાત હો ગયા કિ જય ધર્મરુચિ આહાર ‘હેને કે લિયે નગરી મેં ગયે તો હે કિસકે ઘર ગયે, કિસ ને યહ આહાર ‘ઉન્હે’ દિયા હત્યાદિ । અપને ઉપયોગ સે હસ વાત કો જાનકર ઉન્હેને નિર્ગ્રન્થ શ્રમણોં ઓર નિર્ગ્રન્થ શ્રમણિયોં કો બુલાયા ઓર બુલાકર ઉનસે એસા કહા—( એવ સ્વલુ અજ્ઞો મમ અતેવાસી, ધર્મરુચિ, ણામ

અનગારની બધી રીતે માર્ગણા ગવેપણા કરવા લાગ્યા માર્ગણા તેમજ ગવે પણા કરતા અમે લોકો તે જગ્યાએ પહોંચ્યા બધા ધર્મરુચિ અનગારનું મહદ્ પડયું હતું અમે લોકો અત્યારે ત્યાંથી જ આવી રહ્યા છીએ હે ભદ્રત ! તે ધર્મરુચિ અનગાર મરણ પામ્યા છે તેઓશ્રીના આ આચાર ભાણ્ડ વસ્ત્રપાત્રો છે, ત્યારપછી તે ધર્મયોગ સ્થવિરે દૃષ્ટિવાદના અતર્ગત શ્રુતાધિકાર વિશેષમાં પોતાનો ઉપયોગ લગાવ્યો તેમાથી તેઓને આ વાતની બાબત થઈ કે બધારે ધર્મરુચિ આહાર લાવવા માટે નગરીમાં ગયા હતા, ત્યારે તેઓ કેના ઘેર ગયા હતા, આ આહાર તેમને કેણે આપ્યો હતો વગેરે પોતાના ઉપયોગથી આ બધી વિગત બાણીને તેમણે નિર્ગ્રન્થ શ્રમણો અને નિર્ગ્રન્થ શ્રમણીઓને પોતાની પાસે બોલાવી અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

( એવ સ્વલુ અજ્ઞો મમ અતેવાસી, ધર્મરુચિ ણામ અનગારે )

સ્વભાવેન ભદ્રઃ-શાન્તઃ, યાવદ્-યાવત્ કરુણાદિદ્ દ્રષ્ટવ્યમ્-'પગઈ ઉવસતે, પગઈ-પયણુ કોહમાણમાયાલોહે, મિત્તમદવસપણ્ણે, આલીણે, મદ્દણ, ઇતિ । પ્રકૃત્યુ-પશાન્ત', પ્રકૃતિ પ્રતનુક્રોધમાનમાયા લોભઃ, મૃદુ માર્દવસપન્નઃ, આલીનઃ, મદ્રઃ, ઇતિ । વિનીતઃ 'મામ માસેણ' માસ વ્યાપ્ય માસેન=મામશ્વપણનામકેન, અનિશ્ચિ-પ્તેન=અતરહિતેન, અવિશ્રાન્તનેત્યર્થઃ તપઃ કર્મગા વિચરન્ પારણકદિને યાવત્-નાગશ્રિયા બ્રાહ્મણ્યાગૃહમનુપવિષ્ટ', તતસ્તદનન્તર સા નાગશ્રી બ્રાહ્મણી યાવત્-શારદિકં તિક્તકાલાયુક 'નિસિરઈ' નિસૃજનિ=પાત્રે નિશ્ચિપતિસ્મ । તતઃ ધર્મરુચિ-

અણગારે પગઈમદ્દણ જાવ વિણીણ માસ માસેણ અણિચિવત્તેણ તવોક-કમેણ જાવ નાગસિરીણ માહ્ણીણ ગિહે અણુપવિષ્ટે તણ સા નાગમિરી માહ્ણી જાવ નિસીરઈ, તણ્ણ સે ધમ્મરૂઈ અણગારે અહાપજ્જત્તમિત્તિ કઠ્ઠુ જાવ કાલ અણવકલેમાણે વિહરઈ, સેણ ધમ્મરૂઈ અણગારે વહ્ણિ વાસાણિ સામન્નપરિયાગ પડણિત્તા આલોડયપડિક્કતે સમાહિ પત્તે કાલમાસે કાલ કિચા ઉડ્ડુ સોહમ્મ જાવ સવ્વઠ્ઠસિદ્ધે મહાવિમાણે દેવત્તાણ ઉવવન્ને ઠિઈ પણ્ણત્તા ) આર્યો ! સુનો વાત એસી હૈ મેરે અન્તે વાસી શિષ્ય-ધર્મરુચિ અનગાર સ્વભાવ સે હી ભદ્ર પરિણામી થે । યાવત્ શબ્દ સે હસ પાઠ કા યહા સગ્રહ હુઆ હૈ " પગઈ ઉવસતે પગઈ પગણુ કોહમાણમાયા લોહે મિત્તમદવસપણ્ણે આલીણે મદ્દણ " । યે અવિશ્રાન્ત અતર રહિત-માસ મામલ્લમણ પારણા કરતે થે । આજ ઉનકે પારણા કા દિન થા-સો ગોચરીકે લિયે ભ્રમણ કરતે હુણ યે નાગશ્રી બ્રાહ્મણીકે ઘર

વિણીણ માસ માસેણ અણિચિવત્તેણ તવો કમેણ જાવ નાગસિરીણ માહ્ણીણ ગિહે અણુપવિષ્ટે તણ સા નાગસિરિ માહ્ણી જાવ નિસીરઈ, તણ્ણ સે ધમ્મરૂઈ અણગારે અહાપજ્જમિત્તિ કઠ્ઠુ જાવ કાલ અણવકલેમાણે વિહરઈ, સેણ ધમ્મરૂઈ અણગારે વહ્ણિ વાસાણિ સામન્નપરિયાગ પડણિત્તા આલોડયપડિક્કતે સમાહિપત્તે કાલમાસે કાલં કિચા ઉડ્ડુ સોહમ્મ જાવ સવ્વઠ્ઠસિદ્ધે મહાવિમાણે દેવત્તાણ ઉવવન્ને ઠિઈ પણ્ણત્તા)

આર્યો ! સાલણો, વાત એવી છે કે મારા અતેવાસી શિષ્ય-ધર્મરુચિ અનગાર સ્વભાવથી જ ભદ્ર પરિણામી હતા યાવત્ શબ્દથી અહીં આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે-" પગઈ ઉવસતે " (પગઈપયણુકોહમાણમાયાલોહે મિત્તમદવસપણ્ણે આલીણે મદ્દણ) તેઓ અવિશ્રાન્ત-અતર રહિત-(નિરતર) માસ ખમણ કરતા રહેતા હતા આને તેમનો પારણાનો દિવસ હતો, તેઓ આહાર માટે ખમણ કરતા નાગશ્રી બ્રાહ્મણીના ઘેર ગયા હતા બ્રાહ્મણીએ શારદિક તિક્ત

રનગારો યથાપર્યાપ્તિગિતિરૂત્વા=પ્રધાનિવૃત્તયં પૂર્ણમિતિ મત્વા યાવત્-કાલમ્  
 'અવ્રણકલ્પમાણે' અનરકાદ્દશમાણઃ વિદ્ધરતિ, સ ચત્તુ ધર્મરુચિરનગારો વહ્નિ  
 વર્ષાણિ શ્રમણ્યપર્યાય પાલયિત્વા, આલોચિત પ્રતિક્રાન્તઃ સમાધિપ્રાપ્તઃ કાલમાસે  
 કાલ કૃત્વા ઝર્ષે 'સોદગ્મ જાવ સચ્ચદ્ધસિદ્ધે' સૌધર્માદયો દ્વાદશદેવલોકાઃ, તત્  
 ઉર્ધ્વં નવગ્રૈવેયકાનિ તદુપરિ યાવત્ સર્વાર્થસિદ્ધે, મહાધિમાને દેવત્વેનોપપન્ન =દેવમં  
 પ્રાપ્તવાન્ । તત્=તસ્મિન્ સર્વાર્થસિદ્ધિમાને, ચત્તુ 'અજહણ્ણમણુક્કોસેણ' અજઘ-  
 ન્યાનુત્કુપ્પેન=જઘન્યોત્કુપ્પર્જિતેન તત્ર હિ સર્વેણ દેવાનાં સ્થિતિઃ સમાનૈવ ભવતિ ન  
 તુ ન્યૂનાઽધિકકાલત્વા વિષમેતિમાયઃ । ત્રયસ્તિશત્ સાગરોપમાનિ સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞતા,  
 તત્ર ધર્મરુચેરપિ દેવસ્ય ત્રયસ્તિશત્ સાગરોપમાનિ સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞતા, સ ચત્તુ ધર્મરુચિ  
 દેવસ્તસ્માદ્ દેવલોકાદ્=સર્વાર્થસિદ્ધિમાનાદ્ યાવદ્ વ્યુત સન્ યાવદ્ મહાવિદેહે  
 વર્ષે સિજ્ઞિહિહ' સેત્સ્યતિ, સિદ્ધિ પ્રાપ્સ્યતિ । તત્=તસ્માદ્ ત્રિગસ્તુ ચત્તુ

પહુંચે । યાવન્ ઉસને શારદિક તિસ્ત કઢવે તુવે કી શાકુ અને  
 પાત્ર મેં બોદરાયા વર્નરુચિ અનગાર ને ઉસકો છુયાનિવૃત્તિ કે લિય  
 પર્યાપ્તિ માન કર લિયા । અને ધર્મરુચિ અનગારને અનેક વર્ષોં તક  
 શ્રમણ્ય પર્યાય કા પાલન કિયા, ઓર પાલન કરકે આલોચિત  
 પ્રતિક્રાન્ત હોકર વે સમાધિ મેં લીન હો ગયે । કાલ અવસર કાલ  
 કરકે અવ વે સૌવર્ન આદિ ૧૨ દેવલોકો સે ઉપર નવગ્રૈવેય  
 કો સે મી આગે જો સર્વાર્થસિદ્ધિ નામ કા વિમાન હૈ કિ જિસમેં ૩૩  
 સાગર કી સ્થિતિ હૈ-ઓર યહ સ્થિતિ જહા સવ દેવા કી સનાન હેં ઉસમેં  
 ૩૩ સાગર કી સ્થિતિવાલે દેવ હુર હેં । "અજહણ્ણમણુક્કોસેણ" જઘ-  
 ન્ય ઓર ઉત્કુપ્પ તેત્રીસ સાગરોપમ કી સ્થિતિ હૈ । (સેણ ધમ્મરુદ્ધે  
 દેવે તાઓ દેવલોગાઓ જાવ મહાવિદેહે-વાસે સિજ્ઞિહિહ, ત ચિરત્થુ

કડવી તૂબડીનુ શાક તેમના પાત્રમા વહોરાવ્યુ ધર્મરુચિ અનગારે  
 તેને છુધા નિવૃત્તિ માટે પર્યાપ્ત જાણીને તેને સ્વીકારી લીધુ તે ધર્મરુચિ  
 અનગારે ઘણા વર્ષોં સુધી શ્રમણ્ય પર્યાયનુ પાલન કર્યું છે અને,  
 પાલન કરીને આલોચિત પ્રતિક્રાન્ત થાને તેઓ સમાધિમા લીન થા ગયા છે  
 કાળ સમયે કાળ કરીને હવે તેઓ સૌધર્મ વગેરે બાર દેવલોકોથા ઉપર નવ  
 ગ્રૈવેયકોથી પણ આગળ જે સર્વાર્થસિદ્ધિ નામે વિમાન છે તે જેમા ૩૩ સાગરની  
 સ્થિતિ છે અને આ સ્થિતિ જના બધા દેવોની સરખી છે, તેઓ તેમા ૩૩  
 સાગરની સ્થિતિવાળા દેવ થયા છે "અજહણ્ણમણુક્કોસેણ" જઘન્ય અને  
 ઉત્કુપ્પ ૩૩ સાગરોપમની સ્થિતિ છે

(સેણ ધમ્મરુદ્ધે દેવે તાઓ દેવલોગાઓ જાવ મહાવિદેહે-વાસે સિજ્ઞિહિહ,



आर्याः ! नागश्रिय ब्राह्मणीमधन्यामपुण्या यावद् दुर्भग निम्बगुलिकाम्, यथा-  
खलु नागश्रिया ब्राह्मण्यातथारूपं प्रकृतिभद्रत्वादिगुणयुक्तः साधु धर्मरुचिरनगारो  
मासखमणपारणके शारदिकेन तिक्तालावुकेन यावत् स्नेहावगाढेनाऽकाल एव  
जीविताद् व्यपरोपितः ॥सू० ४॥

मूलम्-तएणं ते समणा निगंथा धम्मघोसाणं थेराण अंतिए  
एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म चंपाए सिंघाडगतिग जाव बहुजणस्स  
एवमाइक्खंति-धिरत्थु णं देवाणुप्पिया । नागसिरीए माहणीए  
जाव णिवोलियाए जाए णं तहारूवे साहू साहूरूवे सालइएणं  
जीवियाओ ववरोवेइ, तए णं तेसिं समणाण अतिए एयमट्ठं  
सोच्चा णिसम्म बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ एव भासइ

ण अज्जो ! नागसिरीए माहणीए अधन्नाए, अपुन्नाए, जाव णिवोलियाए  
जाए णं तहारूवे साहू धम्मरूई अणगारे मासखमणपारणगसि सालइए  
णं जाव गाढेण अकाले चेव जीवियाओ ववरोविण ) वे धर्मरुचि देव  
इस देवलोक से चवकर यावत् महाविदेह क्षेत्र से सिद्धिको प्राप्त करेंगे  
आर्यो ! अधन्य, अपुण्य यावत् दुर्भग निम्बगुलिका जैसी अनादरणीय  
उस नागश्री ब्राह्मणी को धिक्कार हो-कि जिसने तथारूप, प्रकृति भद्र-  
त्वादि गुणों से सपन्न साधु धर्मरुचि अनगर को मासखमण के पारणा  
के दिन शारदिक तिक्त कडवी तुषी का शाक यावत् स्नेहावगाढ बना-  
कर दिया-कि जिससे वे अकाल में मरण को प्राप्त हुए ॥ सू० ४ ॥

त धिरत्थुण अज्जो ! नागसिरीए माहणीए अधन्नाए, अपुन्नाए, जाव णिवोलि  
याए जाए णं तहारूवे साहू धम्मरूई अणगारे मासखमणपारणगसि सालइएण  
जाव गाढेण अकाले चेव जीवियाओ ववरोविण )

ते धर्मरुचि देव ते देवलोकाधी यवीने यावत् महाविदेह क्षेत्री सिद्धिने  
भोगवशे छे आर्यो ! अधन्य, अपुण्य, यावत् दुर्भग निम्बगुलिका जैसी अना-  
दरणीय ते नागश्री ब्राह्मणीने धिक्कार छे छे जेले तथारूप, प्रकृति भद्रत्व  
वगेरे गुणोपाणा साधु धर्मरुचि अनगरने भास भमणुना पारणाना दिनसे  
शारदिक तिक्त कडवी तूणडीतु शाक-छे जे सरस वधादेले, जेनी उपर धी तरतुं  
छेतु-वडासाधु, जेने लीधे अकाले ज तेमोतु भरण थयु ॥ सू० "४" ॥

धिरत्थु णं नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरोविए,  
तएणं ते माहणा चंपाए नगरीए बहुजणस्स अंतिए एयमहं  
सोच्चा निसम्म आसुत्ता जाव भिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी  
माहणी तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता णागसिरी माहणी  
एव वयासी—हं भो ! नागमिरी ! अपरिथय परिथय दुरंत पत-  
लखणे हीणपुण्णचाउदसे धिरत्थु णं तव अधन्नाए अपुन्नाए  
जाव णिवोलियाए जाव णा तुमं तहारूवे साहू साहूरूवे मास-  
खमणपारणसि सालइएणं जाव ववरोविए, उच्चावय्याहिं  
अक्कोसणाहि अक्कोसेंति उच्चावय्याहिं उद्धंसणाहि उद्धसेंति  
उच्चावय्याहि णिब्भत्थणाहि णिब्भत्थति उच्चावय्याहि णिच्छोड-  
णाहि निच्छोडेति तज्जेति तालेंति तज्जेत्ता तालेत्ता सयाओ  
गिहाओ निज्जुभंति, तएण सा नागसिरी सयाओ गिहाओ  
निच्छूढा समाणी चंपाए नगरीए सिघाडगतियचउक्कचच्चर  
चउम्मुहं बहुजणेणं हीलिज्जमाणी खिसिज्जमाणी निदिज्जमाणी  
गरहिज्जमाणी तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी धिक्कारिज्जमाणी  
थुक्कारिज्जमाणी कत्थइ ठाणं वा निलय वा अलभमाणीर दडि-  
खडनिवसणा खडमल्लयखडघडगहत्थगया फुट्टहडाहडसीसा  
मच्छियाचडगरेण अग्निज्जमाणमग्गागेह गेहेणं देह वलियाए  
वित्ति कप्पेमाणी विहरइ, तएण तीसे नागसिरीए माहणीए  
तवभवंसि चेव सोलस रोयायका पाउळभूया, त जहा—सासे  
कासे जोणीसूलं जाव कोढे, तएण सा नागमिरी माहणी

સોલસહિ રોયાયકેહિ અભિભૂયા સમાળી અટ્ટદુહદ્વસદ્દા કાલ-  
માસે કાલ કિચ્ચા છટ્ઠીએ પુઢવીએ ઉવ્કોસેણં વાવીસસાગરો-  
વમદ્દિદ્દેસુ નેરેસુ નેરદ્દયત્તાએ ઉવવન્ના ॥ સૂં ૫ ॥

ટીકા—‘તણ તે’ ઇત્યાદિ । તતઃ સ્વલુ તે શ્રમણાઃ નિર્ગન્થા ધર્મઘોષાણાં  
સ્થવિરાણામન્તિકે એતમ્ય શ્રુત્વા નિગમ્ય ચમ્પાયાં શ્રુગાટક-યાવન્મહાપથેષુ વહુ-  
જનસ્ય એવમાગ્ચાન્તિ ધિગસ્તુ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! નાગશ્રિય બ્રાહ્મણીં યાવદ્  
દુર્મગનિમ્મગુલિકામ્ , યયા સ્વલુ તથારૂપઃ સાધુઃ સાધુરૂપો ધર્મરુચિરતગારઃ શાર-  
દિકેન યાવત્તિક્કાલાયુકેન જીવિતાદ્ વ્યપરોપિતઃ । તતઃ સ્વલુ તેપા શ્રમણાનામન્તિકે

‘તણ તે સમણા નિગ્ગંથા’ ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—(તણ) હમકે ઘાદ (તે સમણા નિગ્ગથા ધમ્મઘોસા થેરાણ  
અંતિએયમદ્દ સોચા નિસમ્મ ચપાએ સિંઘાડગતિગ જાવ વહુજણસ્સ એવ  
માહવસ્થિ-ધિરત્થુણં દેવાણુપ્પિયા ! નાગસિરીએ જાવ ણિવોલિયાએ જાણેણ  
તહારૂવે સાહ સાહરૂવે સાલદ્દણે જીવિયાઓ વવરોવેહ ) હન શ્રમણ  
નિર્ગન્થોને ધર્મઘોષ સ્થવિર કે મુખ સે હસ સમાચાર કો સુનકર ઓર  
હસકા હૃદય મેં વિચાર કર ચપાનગરી મેં શ્રુગાટક યાવત્ મહાપથો મેં  
વહુજનોં સે એસા કહા હે દેવાનુપ્રિયોં ! બ્રાહ્મણી નાગશ્રી કો ધિકાર હૈ  
યાવત્ નિમ્મ કી નિવોલી જૈસી અનાદરણીય હૈ કિ જિસને તથા રૂપ  
સાધુ-સાધુરૂપ ધર્મરુચિ અનગાર કો શારદિક યાવત્ કહવે તુમ્હે કા  
શાક દેકર જીવન સે રહિત કરદિયા હૈ । (તણ તે સિ સમણાણ અં-

‘તણ તે સમણા નિગ્ગથા’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ (તણ) ત્યારબાદ

(તે સમણા નિગ્ગથા ધમ્મઘોસા થેરાણ અંતિએયમદ્દ સોચા નિસમ્મ ચપાએ  
સિંઘાડગતિગ જાવ વહુજણસ્સ એવ માહવસ્થિ-ધિરત્થુણં દેવાણુપ્પિયા ! નાગ  
સિરીએ માહણીએ જાવ ણિવોલિયાએ જાણેણ તહારૂવે સાહ સાહરૂવે સાલદ્દણે  
જીવિયાઓ વવરોવેહ )

તે શ્રમણ નિર્ગન્થોએ ધર્મઘોષ સ્થવિરના મુખથી આ વાત સાંભળીને  
અને તેને હૃદયમાં ધારણ કરીને અપાનગરીમાં શ્રુગાટક મહાપથો વગેરેમાં ઘણા  
માણસોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! બ્રાહ્મણી નાગશ્રીને ધિકાર છે  
અને તે લીમડાની લીબોળાની જેમ અનાદરણીય છે કેમકે તેણે તથારૂપ સાધુ સાધુ  
રૂપ ધર્મ રુચિ અનગારને શારદિક કહવી તબડીત શાક આપીને મારી નાખ્યા છે

एतमर्थं श्रुत्वा निगम्य बहुजनोऽन्योन्यस्य=परस्परस्य णामाभ्याति-एव भासते  
एव प्रज्ञापयति, एव प्ररूपयति धिगस्तु ग्लु नागभिग्रा ब्राह्मण्याः, यया धर्मरुचि-  
नगर शारदिकेन यावद् जीविताद् व्यपरोपितः । ततः ग्लु ते ब्राह्मणा चपाया  
नगर्या बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निगम्य, आधुरस्ताः=जीवं क्रोधाविष्टाः  
यावत् मिसमिसन्त =क्रोधानलेन प्रज्वलन्त, यधैर नागश्रीर्ब्राह्मणी, तगीत्रीपागच्छन्ति,

लिए एयमट्ट सोचा बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, एवं भासइ  
धिरत्थुणं नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरोविण, तण्णं ते  
माहण चंपाए नयरीए बहुजणस्स अतिण एयमट्ट सोच्चा निसम्म आ-  
सुरत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवाग  
च्छन्ति ) उन श्रमणजनों के मुख से इस समाचार को सुनकर और  
उसे हृदय में धारण करके अनेक मनुष्य आपस में इस प्रकार कहने  
लगे घोलने लगे प्रज्ञापना करने लगे प्ररूपणा करने लगे कि ब्राह्मणी  
नागश्री को धिक्कार है जिसने धर्मरुचि अनगर को शारदिक-तिक्त  
कडवे तुंवे के शाक से जीवन रहित कर दिया है । इस प्रकार उन  
ब्राह्मणों ने तथा सोम, सोमदत्त, सोमभूति आदि ने जय चपानगरी में  
अनेक मनुष्यों के मुख से इस घात को सुना-तो वे सुनकर और उसे  
अपने २ हृदय में धारण कर इकदम क्रोध से तम तमा उठे और  
यावत् क्रोधानल से जलते हुए जहा नागश्री ब्राह्मणी थी वहा आये-

( तण्णं तेसिं समणानं अतिण एयमट्ट सोचा बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइ  
क्खइ, एवं भासइ धिरत्थुण नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरोविण,  
तण्णं ते माहणा चंपाए नयरीए बहुजणस्स अतिण एयमट्ट सोच्चा निसम्म आसु  
रत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवागच्छन्ति )  
ते श्रमण लोकेना मुखी आ समाचार सावणीने अने तेने हृदयमा  
धारण करीने धण्ण माणुसे। ऐकणीननी साथे आ रीते वातव्यीत करवा लाग्या,  
प्रज्ञापना करवा लाग्या, प्ररूपणा करवा लाग्या के ब्राह्मणी नागश्रीने धिक्कार  
छे जेणे धर्मरुचि अनगारने शारदिक-तिक्त कडवी तूणडीना शाकथी भारी  
नाभ्या आ रीते ते ब्राह्मणे।ऐ ऐटले के सोम, सोमदत्त अने सोमभूति।ऐ  
न्यारे तथा नगरीना अनेक माणुसेना मुखी आ वात सावणी त्यारे तेओ  
सावणीने अने तेने हृदयमा धारण करीने ऐकदम क्रोधाविष्ट थई गया अने  
क्रोधपी अभिमा सजगता न्या नागश्री ब्राह्मणी डती त्या आव्या.

ઉપાગત્ય નાગશ્રિય વ્રાહ્મણીમેત્રમવાદિપુ:-ઉક્તનન્તઃ, હ મો ! નાગશ્રીઃ ! અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિકે ! મરણાભિઘાપિણિ ! દુરન્તપ્રાન્તલક્ષણે ! હીનપુણ્યચાતુર્દશિકે ! ધિગસ્તુ સ્વલુ તવ અધન્યાયાઃ અપુણ્યાયાઃ યાવદ્-દુર્ભગનિમ્વગુલિકાયાઃ, અત્ર દ્વિતીયાર્થે ષષ્ઠી આર્વત્વાત્, યયા સ્વલુ ત્વયા તથારૂપઃ સાધુ સાધુરૂપો ધર્મરુચિરનગારો માસક્ષમણપારણકે શારદિકેન તિક્તાલાગુકેન યાવદ્ વ્યપરોપિતઃ, 'ઉચ્ચાવયાર્હિ' ઉચ્ચાવચામિઃ=ઉચ્ચનીચામિઃ 'અક્રોસનાર્હિ' આક્રોશનામિઃ=નિન્દાવચૈઃ નીચા ઽસિ ત્વમિત્યાદિભિર્વચનૈઃ 'અક્રોસતિ' આક્રોશન્તિ-ફટકારયન્તિ ઉચ્ચાવચામિઃ ઉદ્ધંસનામિ' દુષ્કુલોત્પન્નાઽસિત્યાદિવચનૈઃ, 'ઉદ્ધંસેતિ' ઉદ્ધસયન્તિ=કુલાદિ-

( ઉવાગચ્છિત્તા નાગસિરી માહર્ણી એવ વયામી ) હ મો ! નાગસિરી ! અપત્થિયપત્થિય દુરતપતલલક્ષણે, હીન પુણ્યચાઉદસે ધિરત્યુણ તવ અધ-નાએ અપુત્રાએ જાવ ગિવોલિયાએ જાએ ન તુમે તહારૂવે સાહ સાહૂરૂવે માસ સ્વમણપારણસિ સાલહણ જાવ વવરોવિએ ઉચ્ચાવણ્યાર્હિ અક્રોસનાર્હિ અક્રોસતિ ઉદ્ધસેતિ) વહા આકર ન્હોંને નાગશ્રી વ્રાહ્મણીસે કહા અરીઓ નાગશ્રી ! અરી અપ્રાર્થિત પ્રાર્થકે ! હે દુરન્તપ્રાન્ત લક્ષણે ! ઓ હીન પૂણ્ય ચાતુર્દશિકે ! તુજ અપુણ્ય અધન્યા કો ધિક્કાર હો ! તૂ દુર્ભગ નિમ્વગુલિકા જૈસી અનાદરણીય હૈ જો તૂને માસસ્વમણકે પારણા કે દિન ઘરપર આહાર લેને કે નિમિત્ત આયે હુએ તથા રૂપ સાધુરૂપ ધર્મરુચિ અનગાર કો શારદિક તિક્ત કડવે તુંને કા શાક દેકર જીવન સે રહિત કર દિયા હૈ ! તૂ ઘડી નીચ હૈ ઇત્યાદિ રૂપ ઝંચ, નીચ આક્રોશ નિન્દા-વચનોં સે ઉન્હોં ને ઉસે ફટકારા તૂ નીચ સ્વાનદાન કી

( ઉવાગચ્છિત્તા નાગસિરી માહર્ણી એવ વયામી-હ મો ! નાગસિરી ! અપત્થિ ય પત્થિય દુરતપતલલક્ષણે, હીનપુણ્યચાઉદસે ધિરત્યુ ન તવ અધનાએ અપુત્રાએ જાવ ગિવોલિયાએ જાએ ન તુમે તહારૂવે સાહ સાહૂરૂવે માસસ્વમણપારણસિ સાલ-હણ જાવ વવરોવિએ ઉચ્ચાવણ્યાર્હિ અક્રોસનાર્હિ અક્રોસતિ ઉદ્ધસેતિ) ત્યા આવીને તેમણે નાગશ્રી બ્રાહ્મણીને કહ્યું કે-કે મુઠ્ઠો આ નાગશ્રી ! અપ્રાર્થિત પ્રાર્થકે ! હે દુરત પ્રાન્ત લક્ષણે ! આ હીનપુણ્ય ચાતુર્દશિકે ! તારા જેવી પાપણી અધન્યાને ધિક્કાર છે તુ દુર્ભગ નિમ્વગુલિકા ( લિંગોળી જેવી અનાદરણીય છે કેમકે તેણે માસ-ખમણના પારણાના દિવસે ઘેર આહાર લેવા માટે આવેલા તથા રૂપ સાધુ સાધુરૂપ ધર્મરુચિ અનગારને શારદિક તિક્ત કડવી તૂબડીનું શાક આપીને મારી નાખ્યા છે તુ સાવ નીચ છે, આમ મણુ ઉચ્ચ-નીચ આક્રોશ-નિન્દા-ના વચનોથી તેઓએ તેને ફટકારી તુ નીચ



ગૌરવોત્પાતયન્તિ, ઉચ્ચારનામિર્નિર્મલસનામિઃ=ચક્રગતિઃ 'ગિન્મરથંતિ' નિર્મલ-  
યન્તિ, ઉચ્ચારચામિ 'ગિન્મરોદ્ધનાદિ' નિષ્કોટનામિઃ='અસ્મદ્ ગૃહામ્' નિસ્સર  
આદિ ચક્રે 'નિષ્કોટંતિ' નિષ્કોટયન્તિ = ગૃહાદિત્યાગમયોત્સા-  
હનેન ભોષયન્તિ, 'તજ્જેતિ' તજ્જયન્તિ 'જ્ઞામ્યસિ પાપે।' ઇત્યાદિવાક્યેર્ગુણી  
પ્રદર્શનપૂર્વક તાડનમય પ્રદર્શયન્તિ, 'તૌલેતિ' તાલેયન્તિ ચપેટાદિમિઃ, તજ્જયિત્વા  
તાલેયિત્વા, સ્વક્રાદ્ ગૃહાદ્ 'નિષ્ક્રમંતિ' નિષિપન્તિ = પ્રેદિર્નિ-સારયન્તિ ।  
તત્તેસ્તેદનંતર સા નાગશ્રીઃ સ્વક્રાદ્ ગૃહાર 'નિષ્ક્રમ સમાણા' નિસિપ્તામતી=નિ-  
સરિતાસંતી, ચમ્પાયા નગર્યાઃ શૃંગારક ત્રિકચતુરચત્વરચતુર્મુખમંદાપવપથેષુ યત્ર યત્ર

હૈં હસ તરંહ કી ઝંચી નીચી ઘાણિયોં સે હસે ખલો ધુરાં કંહા કુલોદિ  
કેં ગૌરેવ સે હસે પતિત કંહો । ( ઉચ્ચારચામિ ગિન્મરથંતિ ગિન્મરથંતિ  
ઉચ્ચારચામિ ગિન્મરોદ્ધનાદિ નિષ્કોટયન્તિ, તજ્જેતિ, તૌલેતિ, તજ્જેત્તા  
તાલેત્તા સયાઓ ગિહાઓ નિષ્ક્રમન્તિ ) ઝંચે નીચે કઠોર વચ્ચેનોં સે  
હસકો તિરસ્કાર કિયો । ખલે ધુરે વચ્ચેનોં સે હસે હરવાયા-હમારે ઘર  
સે તૂં બાહિર નિકલે જા હત્યાદિ ભયોત્પાદક શબ્દોં સે હસે ભય  
દિલ્લાયા । ઓ પાપિની ! તૂંજે મોલૂમ પડ જાયગા, હત્યાદિ વાક્યોં સે  
અંગુલી દિશા ૨ કર હસે મારને કો ભય દિલ્લાયા ઓર ચપેટા-થપ્પેટ  
આદિ સે હસે પીટા ખી । ઓર પીટપોટ કરે હસે હંદોંને ફિર અંપને ઘર  
સે બાહિર નિકાલે દિયો । ( તત્તેણં સા નાગસિરી સયાઓ ગિહાઓ  
નિષ્ક્રમ સમાણી ચમ્પાયા નગરીય સિંઘાડગતિગચઁકચચરચઁકચમુહં )

ખાનદાનની છે, આ જાતના ઉચ્ચાર નીચા વચ્ચેનોથી તેણે ખોટી ખરી સંભળાવી  
ફૂળ વગેરેના ગૌરવથી તેણે પતિતા કહ્યું

( ઉચ્ચારચામિ ગિન્મરથંતિ ગિન્મરથંતિ, ઉચ્ચારચામિ ગિન્મરોદ્ધનાદિ નિષ્કો-  
ટંતિ, તજ્જેતિ, તૌલેતિ તજ્જેત્તા તૌલેત્તા સયાઓ ગિહાઓ નિષ્ક્રમન્તિ )

ઉચ્ચાર નીચા વચ્ચેનોથી તેનો તિરસ્કાર કર્યો, ખોટા ખરા વચ્ચેનોથી તેને  
ખીવડાવી 'અમારા ઘરથી તું બહાર નીકળી જા' વગેરે ભયોત્પાદક વચ્ચેનોથી  
તેણીને ખીક ખતાવી 'એ પાપણી ! તને મળત ખતાવવી હઈશું ?' વગેરે વચ્ચે  
નોથી સામી આગળી કરીને તેને મારી નાખવાની ખીક ખતાવવા લાગ્યા અને  
શ્રેષ્ઠ લાક્ષણિક વગેરેથી તેને માર પણ માર્યો, મારપીટ કરીને તેઓએ તેને  
ખોતાના ઘરથી બહાર કાઢી મૂકી

( તત્તેણં સા નાગસિરી સયાઓ ગિહાઓ નિષ્ક્રમ સમાણી ચમ્પાયા નગરીય  
સિંઘાડગતિગચઁકચચરચઁકચમુહં બહુજણે )

गच्छेति तत्र तत्र सर्वत्र बहुजनेन 'हीलिज्जमाणी' हील्यमाना-जात्याद्युद्धादनेन,  
'खिसिज्जमाणी' खिस्यमाना-परोक्षदुत्सनेन, 'निदिज्जमाणी' निद्यमाना-  
तत्परोक्षम् 'गरहिज्जमाणी' गर्ह्यमाना-तत्समक्षमेव 'तज्जिज्जमाणी' तज्ज्यमाना-  
अगुलीचालनेन भयमुत्पादयमाना 'पव्वहिज्जमाणी' पव्वयमाना यष्ट्यादिता-  
डनेन 'विक्कारिज्जमाणी' विक्कियमाणा 'धुक्कारिज्जमाणी' धुक्कियमाणा कुत्रापि

बहुजणेण हीलिज्जमाणी खिसिज्जमाणी निदिज्जमाणी, गरहिज्जमाणी,  
तज्जिज्जमाणी, पव्वहिज्जमाणी, विक्कारिज्जमाणी, धुक्कारिज्जमाणी,  
कत्थइ ठाण वा निलय वा अलममाणी २ दडि खडा निवसणा खंड  
खंडमल्लय खंड खंड धउगहत्थगया फुटुहडाहडसीसा म च्छिउयाउगरेणं  
अग्निज्जमागमग्गा गेह गेहेण देह पलियाण वित्तिक्कप्पेमाणी विहरइ )  
अपने घर से बाहिरनिकल कर वह नागरी चपानगरी के शृंगाटक,  
त्रिक, चतुष्क, चत्वर चतुर्मुख महापथ आदि मार्गों पर जहा २ गेह,  
वहां २ सर्वत्र अनेक जनों ने उसकी " यह नीचजाति की है " इत्या-  
दिरूप से हीलना की। सब के सब उसपर बहुत क्रोधित हुए सबने  
उसकी परोक्ष में निंदा की। सामने सबने उसे मला बुरा कहा। अगुली  
संचालन पूर्वक उसे मारने पीटने का भय दिग्वलांघा। किन्हीं २ ने उसे  
लकड़ी आदिसे मारा पीटा भी। अनेकोंने उसे धिक्कारा। कितनेक  
जनों ने उसे देखकर उसपर थूक भी दिया। इस तरह की परिस्थिति

निदिज्जमाणी, गरहिज्जमाणी, तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी, विक्कारिज्जमाणी,  
धुक्कारिज्जमाणी, कत्थइ ठाण वा निलय वा अलममाणी २ दडिखडा निव-  
सणा खंडमल्लय खंड खंड धउगहत्थगया फुटुहडाहडसीसामच्छिउयाउगरेणं  
अग्निज्जमाणमग्गा गेह गेहेणं देह पलियाण वित्तिक्कप्पेमाणी विहरइ )

पोताना घरथी जडार नीकणीने ते ना। श्री यपा नगरीना शृंगाटक,  
त्रिक, चतुष्क, चत्वर, चतुर्मुख, महापथ वगेरे मार्गों उपर न्या गेह त्या  
त्या जधे धणु। भाएसोअे तेनी " आ नीय जतनी छे " वगेरे वयनोथी  
हीलना उरी जधा भाएसो तेनी उर भूण ज श्रुसे थया तेनी जेर डान  
रीमा बोडोअे तेनी भूण निंदा करी, तेनी सामे तेने जधाअे जरी ओटी  
स जणावी, आगणी यी धी यी धीने तेनी साथे मारपीट करवानी भीक जता-  
ववा लाज्या डोअ डोअे तो तेने लाकडी वगेरेनो इटो पणु भार्यो, धणु  
ओअे तेने इटकारी, डेटलाड भाएसोअे तेने जेधने तेनी उपर थूकी डीधु.

स्थानं वा निरासार्थं निज्य या-अल्पमालिङ्गामार्थस्थानम्, अन्यमाना २=मवा-  
 प्नुवती २, 'दन्तीखड्गनिरसगा' दण्डिगण्डनिधनना=दण्डि-कृतमन्यान जीर्णवस्त्र,  
 तस्य खण्ड, तदत्र निरसन-परिधान यस्याः सा तथा, 'खड्गमल्लपत्रवडगण्डास्त्र-  
 गया' खण्डमल्लक-खण्डपट्टदस्तगता=खण्डमल्ल=मिश्रार्थं शरायखण्ड खण्डपट्ट  
 कश्च पानार्थं घटखण्ड, तद् द्वय दस्तगत यस्या सा तथा, 'कुट्टदडाहृसीसा'  
 स्फुटितदडाहृशीर्षा-स्फुटित स्फुटितकेश 'दडाहृष्टम्' अर्थं शीर्षं शिरो यस्याः  
 सा तथा, विकीर्णकेशरतीत्यर्थ 'मल्लिगानदगरेण अमिज्जमाणमग्गा' मल्लिका  
 चटकरेण अन्यीयमानमार्गा मल्लिकासमूहेन अनुगम्यमानमार्गा शरीरवस्त्रादीना  
 मलिनत्वान् मल्लिकास्तत्पृष्ठतो धारतीत्यर्थ. गेह गेहेण देह बलिषाण' गृह गृहेण  
 देहबलिकया=प्रतिगृह देहनिर्वाहहेतोः उदरपूर्त्यर्थमेवेत्यर्थ-वृत्ति 'कल्पेमाणी'  
 कल्प्यमाना=कुर्वाणा सती मिहरति । ततस्तदनन्तर खलु तस्या नागत्रिधा ब्राह्मण्या  
 स्तस्मिन् भवे एव पौडश रोगातङ्काः प्रादुर्भूताः, तद्वयथा-(१) श्वासः, (२)  
 कासः, (३) ज्वरः, 'जायकुट्टे' यावत्-कुष्ठम्, (४) दाहः, (५) कृत्तिशूलम्, (६)

का सामना करती हुई वह कहीं पर भी बैठने के लिये स्थान को, और  
 ठहरनेके लिये-विश्राम करनेके लिये-जगह भी को नहीं प्राप्त करती फटे  
 हुए जीर्ण वस्त्र के टुकड़े को पहिरे हुए भिक्षा के लिये मिट्टी के खप्पर  
 को और पानी के लिये फूटे घड़े के टुकड़े को हाथ में लिये हुए इधर  
 उधर एक घर से दूसरे घर पर उदर पूर्ति के लिये फिरने लगी । इसके  
 शिर के चाल इधर उधर बिखरे हुए रहते थे । शरीर और वस्त्रादिकों  
 के मैले कुचैले होने के कारण मल्लिकाओं का समूह इसके पीछे पीछे २  
 भागता रहता था । ( तएण तीसे नागसिरीए माहणीए तवभवसि चेव  
 सोलसरोयायंका पाउब्भूया-त जहा सासे कासे जोणिसूले, जाव

आवी परिस्थितिने। मुकाबला करती केरु पणु स्थाने भेसवानी के रोकवानी  
 के विश्राम करवानी जग्या ते भेजवी शडी नडि, अने छेपटे शटेला जूना  
 वस्त्रोना ककडाने पीटाणीने लिखाना भाटे भाटीनु अप्पर अने पाणीना भाटे  
 दूटी भाटलीना ककडाने हाथमा लधने पेट लरवा भाटे आभतेम अक घेरथी  
 भीजे घेर लभवा लागी तेना भाथाना पाणे। आभ तेम अस्त व्यस्त रहेता  
 हुता, शरीर अने वस्त्रो वगेरे मेला डोवाने लीधे भाणीआना टोलेटोला तेनी  
 पाछण पाछण लभता रहेता हुता

( तएण तीसे नागसिरीए माहणीए तवभवसि चेव सोलसरोयायंका पाउ  
 भूया-त जहा सासे कासे जोणिसूले, जावकोदे तएण सा

भगन्दर, (७) अर्शः, (८) योनिशूलम्, (९) दृष्टिशूलम्, (१०) मूर्धशूलम्, (११) अरुचिः, (१२) अक्षिवेदना, (१३) कर्णवेदना, (१४) कण्डू, (१५) जलोदरम्, (१६) कुष्ठम् । ततस्तदनन्तर सा नागश्री ब्राह्मणी पौडशमी रोगातङ्कैरभिभूता-सती आर्तदुःखार्तवशात्तर्त्तु-शारीरिकमानसिकदुःखयुक्ता कालमासे कालं कृत्वा षष्ठ्या पृथिव्याम् 'उक्कोसेण' उत्कृष्टतः, द्वाविंशति सागरोपमस्थितिकेषु नर-केषु-नरकावासेषु नारकत्वेन उपपन्ना-उत्पन्ना ॥ सू० ५ ॥

मूलम्-सा णं तओऽणंतरंसि उव्वट्ठित्ता मच्छेसु उववन्ना,  
तत्थ णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा  
अहेसत्तमीए पुढवीए उक्कोसाए तेत्तीस सागरोवमट्ठिइएसु  
नेरइएसु उववन्ना, सा णं ततोऽणंतरं उवट्ठित्ता दोच्चपि

कोठे तएण सा नागसिरी माहिणी, सोलसहिं रोयायकेहिं अभिभूया  
समाणी अट्ठदुहट्ठवसट्ठा कालमासे काल किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसे  
ण बावीससागरोवमट्ठिइएसु नरएसु नेरइयत्ताए उववन्ना ) उस नागश्री  
ब्राह्मणी को उसी भव में ये सोलह रोगातक प्रकट हो गये-(१) श्वास  
(२) कास (३) ज्वर (४) दाह (५) कुक्षिशूल (६) भगन्दर (७) अर्श  
(८) योनिशूल (९) दृष्टिशूल (१०) मूर्धशूल (११) अरुचि (१२) अक्षि-  
वेदना (१३) कर्णवेदना (१४) कण्डू (१५) जलोदर (१६) कुष्ठ । इन १६  
सोलहरोगातको से अत्यन्त दुःखित हुई-शारीरिक एवं मानसिक व्य-  
थाओं से व्यथित हुई-वह नागश्री काल अवसर कालकर छठी पृथिवी  
में २२ सागर की उत्कृष्ट स्थितिवाले नरकावासों नैरयिक की पर्यायसेमें  
उत्पन्न हुई ॥ सू० ५ ॥

सोलसहिं रोयायकेहिं अभिभूया समाणी अट्ठ दुहट्ठवसट्ठा कालमासे काल किच्चा  
छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेण बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइयत्ताए उववन्ना )

ते नागश्री ब्राह्मणीने तेन ववमा आ सोण रोगातके प्रकट थया

(१) श्वास (२) कास (३) ज्वर (४) दाह (५) कुक्षिशूल (६) भगन्दर (७)  
अर्श (८) योनिशूल (९) दृष्टिशूल (१०) मूर्धशूल (११) अरुचि (१२)  
अक्षिवेदना (१३) कर्णवेदना (१४) कण्डू (१५) जलोदर (१६) कुष्ठ आ सोण  
रोगातकेथी अतीव दुःखी थयेली शारीरिक तेमज्ज मानसिक व्यथाओथी व्यथित  
थती ते नागश्री काल अवसर काल करीने छठी पृथिवीमा बावीस सागरनी  
उत्कृष्ट स्थितिवाला नरकावासेमा नैरयिकनी पर्यायथी जन्म पायी ॥ सू० ५ ॥

मच्छेसु उववज्जइ, तत्थ वि य ण सत्थनिज्जा दाहवक्कतीए  
 दोच्चंपि अहे सत्तमीण पुटवीण उक्कोस तेत्तीसमागरोवम-  
 ट्ठिइएसु नेरइएसु उववज्जइ, सा णं तओहिंतो जाव उव-  
 ट्ठित्ता तच्चंपि मच्छेसु उववन्ना तत्थ वि य णं सत्थपज्जा  
 जाव काल किच्चा दोच्चंपि छट्ठीए पुटवीण उक्कोमेणं०  
 तओऽणंतर उवट्ठित्ता मच्छेसु उरएसु एव जहा गोसाले  
 तहानेयव्व जाव रयणप्पभाओ सत्तसु उववन्ना तओ उव-  
 ट्ठित्ता जाइ इमाइ राहवर विहाणाइ जाव अटुत्तरं च णं खर  
 वायर पुठविकाइ यत्ताते तेसु अणेगसतसहम्स खुत्तो ॥सू०६॥

टीका—‘ सा ण ’ इत्यादि। सा=नागश्री ब्राह्मणी तलु तत =पृथ्या पृथिव्याः  
 अनन्तरम्=आयुर्मयस्थितिक्षये गति ‘ उवट्ठित्ता ’ उद्वर्त्य—निम्सृत्य मत्स्येपूत्पन्ना,  
 तत्र खलु मत्स्यभवे सा ‘ सत्थपज्जा ’ शस्त्रविद्धा ‘ दाहवक्कतीए ’ दाहव्युत्का-  
 न्त्या-दाहोत्पत्त्या, कालमासे कालक्रताऽथ मत्स्य्या पृथिव्यामुत्क्रुतस्यसि-  
 त्सागरोपमस्थितिकेषु ‘ नेरइएसु ’ नैरयिकेषु उत्पन्ना । सा खलु तत=सप्तम्याः  
 पृथिव्याः अनन्तरमुद्वर्त्य द्वितीयवारमपि मत्स्येपूत्पद्यते । तत्रापि च खलु शस्त्र-

‘ सा ण तओ ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(सा) वह नागश्री (तओऽणतरसि) उस उट्टी नरककी भव  
 स्थिति समाप्त होने पर ( उवट्ठित्ता ) वहा से निकली—और निकलकर  
 ( मच्छेसु उववन्ना तत्थण सत्थपज्जा दाहवक्कतीए कालमासे काल  
 किच्चा अहे सत्तमीए पुठवीण उक्कोसाण तेत्तीस सागरोवमट्ठिइएसु  
 नेरइएसु उववन्ना, सा ण ततोऽणतर उवट्ठित्ता दोच्चंपि मच्छेसु उवव

‘ सा ण तओ ’ इत्यादि—

टीकार्थ—( सा ) ते नागश्री (तओऽणतरसि) ते छडी नरकनी अवस्थिति  
 पूरी थया बाद ( उवट्ठित्ता ) त्यागी नीकणी अने नीकणीने

(मच्छेसु उववन्ना तत्थण सत्थपज्जा दाहवक्कतीए कालमासे काल किच्चा  
 अहे सत्तमीए पुठवीए उक्कोसाए तेत्तीस सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु उववन्ना  
 सा ण उववज्जइ )



विद्धा दाहव्युत्क्रान्त्या द्वितीयवारमपि अधः सप्तम्या पृथिव्यामुत्कृष्टतस्त्रयस्त्रिंशत्सा-  
गरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूपपद्यते, सा खलु 'तथोर्हितो' तस्याः=सप्तम्याः  
पृथिव्याः, यावद् उद्वर्त्य 'तच्चपि' तृतीयवारमपि मत्स्येषु उत्पन्ना । तत्रापि च  
खलु शस्त्रविद्धा 'जाव काल किञ्चा' यावत् दाहव्युत्क्रान्त्या कालमासे काल  
कृत्वा द्वितीयवारमपि पृष्ठ्या पृथिव्यामुत्कृष्टतो द्वाविंशतिसागरोपमस्थितिकेषु  
नरकेपृत्पन्ना, सा खलु तत =पृष्ठ्याः पृथिव्या अनन्तर 'उवद्वित्ता' उद्वर्त्य=  
निस्सृत्य उरःपरिसर्पेपृत्पन्नाः, तत्र शस्त्रव्या दाहव्युत्क्रान्त्यामुत्कृष्टतः सप्तदश-  
सागरोपमस्थितिकेषूपत्पन्ना । एव यथा गोशरलकस्तथा ज्ञातव्यम्=गोशालकनदस्या-

ज्जई ) तिर्यञ्चगति में मच्छ की पर्याय से उत्पन्न हो गई । वहां वह  
मत्स्य के भव में शस्त्र से विद्ध होकर दाह की उत्पत्ति से काल अवसर  
काल कर मरी सो नीचे सप्तम नरक में ३३ तेतीस सागर की उत्कृष्ट  
स्थितिवाले नरकावास में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई । वहां से  
निकलकर फिर वह मत्स्य की पर्याय से उत्पन्न हुई । ( तत्थ वि य णं  
सत्थविज्झादाहवक्कतीण दोच्चपि अहे सत्तमीए पु० ) वहां वह शस्त्र  
से पुनः विद्ध होकर दाहकी व्युत्क्रान्ति से मरी और मरकर द्वितीयवार  
भी सप्तम नरक में ( उक्कोस तेतीससागरोवमद्विइणसु नेरइए उवव  
ज्जई ) उत्कृष्ट-तेतीस सागर की स्थिति लेकर नैरयिक की पर्याय में  
उत्पन्न हुई । ( सा ण तओ हिं तो जाव उववद्वित्ता तच्चपि मच्छेसु उव-  
वन्ना, तत्थ वि य णं सत्थविज्झा जाव कालं किञ्चा दोच्चपि छट्ठीए पुठ-  
वीए उक्कोसे ण तओऽणन्तर उवद्वित्ता मच्छेसु उरएसु एव जहा गोसाले

तिर्यञ्च गतिमा मच्छथी पर्यायनी जन्म पाभी त्या ते मत्स्यना लवमा  
शस्त्र वडे वीधाधने दाहथी पीडाधने काल अवसरे काल करीने भरण पाभी अने  
नीचे सातमा नरकमा ३३ सागरनी उत्कृष्ट स्थितिवाणा नरकावासमा नैरयिकनी  
पर्यायथी जन्म पाभी त्याथी नीज्जानीने करी ते मत्स्यना पर्यायथी जन्म पाभी  
( तत्थ वि य णं सत्थविज्झा दाहवक्कतीए दोच्चपि अहे सत्तमीए पु० )  
त्या ते करी शस्त्र वडे विद्ध थधने दाहथी पीडाधने मरी अने मरीने  
भीण वधत पणु स तमा नरकमा ( उक्कोस तेतीससागरोवमद्विइणसु नेरइए उव-  
वज्जई ) उत्कृष्ट ३३ सागरनी स्थिति लधने नैरयिकनी पर्यायमा जन्म पाभी  
( सा ण तओहिं तो जाव उववद्वित्ता तच्चपि मच्छेसु उत्पन्ना, तत्थ वि य णं  
सत्थविज्झा जाव काल किञ्चा दोच्चपि छट्ठीए पुठवीए उक्कोसेण तओऽणन्तर

વર્ણનં ષોધ્યમિત્યર્થઃ, 'ચારણ્યપ્રમાણ મત્તુ ઉચ્ચા' યાવદ્ રત્નપ્રમાણ સમ-  
 મુત્પન્ના=અર્થ માત્ર -ઉરઃ પરિસર્પિતરો નિ મુત્ય પદ્મ્યા ધૂમપ્રમાણા પૃથિવ્યા  
 મુત્કૃષ્ટવઃ સપ્તશાગરોપમસ્થિતિકેષુ નૈરયિકેષુત્પન્ના, તતો નિ મુત્ય દ્વિતીય  
 ચારમુરઃપરિસર્પેષુત્પન્ને, તદ્વાપિ પૂર્વત્ કાલં કન્યા દ્વિતીયચારમપિ પદ્મ્યા પૃથિ  
 મંહા નેયન્વ જાવ ચણપ્રમાણો સત્તસુ ઉચ્ચયા, તઓ ઉચ્ચદ્વિત્તા જાહ  
 ર્માહ સ્વહાયર વિહાણાહ જાવ અદુત્તર ચ ણ સ્વચાયર પુદ્ગલિકાદયત્તા  
 તે તેસુ અણેગસતસહસ્સ સુત્તો ) વહાં સે મત્ર સ્થિતિ સમાપ્ત હોતે હી  
 વહ નિકલી-નિકલ કર તોસરી ચાર મી મત્સ્ય કી પર્યાય મેં ઉત્પન્ન  
 હુઈ । વહાં શસ્ત્ર વિદ્વ હોકર દાહ કી વ્યુત્ક્રાન્તિ સે મરી સો મર કર  
 દુયારા મી છઠી હી પૃથિવી મેં ૨૨ ધાવીમ સાગર કી ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ છે  
 કર ઉત્પન્ન હુઈ । વહાં કી ભવસ્થિતિ સમાપ્ત કર જવ વહ વહાં સે  
 નિકલી તો ઉર પરિસર્પ કી પર્યાય મેં ઉત્પન્ન હુઈ । વહાં પર મી વહ  
 શસ્ત્ર વિદ્વ હોકર દાહ કી વ્યુત્ક્રાન્તિ સે-ઉત્પત્તિ સે કાલ અવસર કાલ  
 કર ધૂમપ્રમા નામ કી પચમ પૃથિવી મેં નૈરયિક કી પર્યાય સે ઉત્પન્ન  
 હુઈ । વહા સત્તરહ સાગર કી ઉત્કૃષ્ટ-સ્થિતિ હસકી હુઈ । ગોશાલક  
 કી તરહ હસકા વર્ણન જાનના ચાહિયે । તાત્પર્ય હસકા હસ પ્રકાર હૈ-  
 ૧૭ સાગર કી ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ વાલે પચમ નરક સે નિકલ દ્વિતીય ચાર  
 મી વહ ઉરઃ પરિસર્પ કી પર્યાય સે ઉત્પન્ન હુઈ । વહા સે પૂર્વ કી તરહ

ઉચ્ચદ્વિત્તા મચ્છેસુ ઉરણુ એવ જહા ગોસાલે તહા નેયન્વ જાવ ચણપ્ર  
 માણો સત્તસુ ઉચ્ચન્ના, તઓ ઉચ્ચદ્વિત્તા જાહ ર્માહ સ્વહાયરવિહાણાહ જાવ  
 અદુત્તર, ચ ણ સ્વચાયરપુદ્ગલિકાદયત્તા તે તેસુ અણેગસતસહસ્સસુત્તો )  
 ત્યાની ભવસ્થિતિ પૂરી થતા જ તે ત્યાથી નીકળી અને નીકળીને ત્રીજી વાર  
 પણ માછલીના પર્યાયમા જન્મ પામી ત્યા શસ્ત્રથી વીધાઈને ત્યા દાહથી  
 પીડાઈને મરણુ પામી અને તે વખતે પણ છઠી પૃથિવીમા ૨૨ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ  
 સ્થિતિ લઈને ઉત્પન્ન થઈ ત્યાની ભવસ્થિતિ પૂરી કરીને ત્યારે તે ત્યાથી  
 નીકળી ત્યારે તે ઉર પરિસર્પના પર્યાયમા જન્મ પામી ત્યા પણ તે શસ્ત્રથી  
 વીધાઈને અને દાહથી પીડાઈને કાળ અવસરે કાળ કરીને ધૂમપ્રમા નામની  
 પચમ પૃથિવીમા નૈરયિકના પર્યાયથી જન્મ પામી ત્યા ૧૭ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ  
 સ્થિતિ તેની થઈ ગોશાલકની જેમ આતુ ધણુન જાણી લેણુ જોઈએ મતલબ  
 આની આ છે કે ૧૭ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા પચમ નરકથી નીકળીને  
 બીજી વખત પણ તે ઉર પરિસર્પના પર્યાયથી જન્મ પામી ત્યાથી પણ પહે-  
 લાની જેમજ કાળ અવસરે કાળ કરીને બીજીવાર પણ આ પૃથિવીમા

व्यामुत्कृष्टतः सप्तदशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेपूत्पन्ना । ततो निःसृत्य तृतीयवारमपि उरः परिसर्पेपूत्पद्यते, अत्र पूर्ववत् कालं कृत्वा चतुर्थ्या पङ्कप्रभायां पृथिव्यामुत्कृष्टतो - दशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेपूत्पन्ना, ततो निःसृत्य सिंहेपूत्पद्यते, तत्रापि पूर्ववत् कालं कृत्वा द्वितीयवारमपि चतुर्थ्या पृथिव्यामुत्कृष्टतो दशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेपूत्पन्ना । ततश्चतुर्थ्याः पृथिव्या निःसृत्य द्वितीयवारमपि सिंहेपूत्पद्यते, तत्र पूर्ववत् कालं कृत्वा तृतीयाया बाहुप्रभाया पृथिव्यामुत्कृष्टतः सप्तसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेपूत्पन्ना, ततो निःसृत्य पक्षिपूत्पद्यते, तत्र पूर्ववत् कालं कृत्वा द्वितीयवारमपि तृतीयाया पृथिव्यामुत्कृष्टतः

काल कर द्वितीयवार भी यह पचम पृथिवी मे १७ सागर की उत्कृष्ट स्थितिवाले नरकों में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई । वहां की स्थिति समाप्त कर जब यह वहां से निकली-तो तीसरी बार भी यह उरः परिसर्पों में उत्पन्न हुई । वहां से पूर्व की तरह काल कर चौथी पङ्क प्रभा पृथिवी में कि जहा १० सागर की नैरयिको की उत्कृष्ट स्थिति है वहां नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई । वहां से निकल कर यह सिंह की पर्याय में उत्पन्न हुई । पहिले की तरह वहां से भी मर कर द्वितीय बार भी यह चतुर्थ नरक में दश सागर की स्थिति वाले नरक में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई । चतुर्थ नरक से निकल कर यह दुबोरा भी सिंह की पर्याय से उत्पन्न हुई । वहां से अपने समय पर मर कर फिर यह बालुका प्रभा नाम की तीसरी पृथिवी में सात सागर की उत्कृष्ट स्थिति लेकर नैरयिक की पर्याय में उत्पन्न हुई । वहां से निकल कर फिर यह पक्षियों के कुल में उत्पन्न हुई । यहां से मर कर

१७ सागरनी उत्कृष्ट स्थितिवाणा नरकामा नैरयिकना पर्यायथी जन्म पाभी त्यानी स्थिति पूरी करीने ज्यारे ते त्याथी नीकणी तो त्रीण वार पण ते उर परिसर्पमा उत्पन्न थछ त्याथी पडेलानी जेम डाण करीने याथी पङ्क प्रभा पृथिवीमा-डे ज्यां दशसागरनी नैरयिकोनी उत्कृष्ट स्थिति छे, त्या नैरयिकनी पर्यायथी उत्पन्न थछ, त्याथी नीकणीने ते सिङ्गना पर्यायथी जन्म पाभी पडेलानी जेम त्याथी पण भरण पाभीने भीणवार पण चतुर्थ नरकमा दश सागरनी स्थितिवाणा नरकमा नैरयिकना पर्यायथी जन्म पाभी चतुर्थ नरकथी नीकणीने ते करी सिङ्गना पर्यायथी उत्पन्न थछ त्याथी भरण पाभीने करी ते बालुकाप्रभा नामनी त्रीण पृथिवीमा सात सागरनी उत्कृष्ट स्थिति लधने नैरयिकनी पर्यायमा जन्म पाभी, त्याथी नीकणीने ते करी ते पक्षीजोना कुलमा

સપ્તસાગરોપમસ્થિતિકેષુ નૈરયિકેષૂત્પન્ના । તત્તત્ત્રીયાયાઃ પૃથિવ્યા નિ સ્ત્ય  
 દ્વિતીયવારમપિ પશિષૂત્પદ્યતે, તત્રાપિ પૂર્વત્ કાઞ્ચ ઋત્વા દ્વિતીયાયા પૃથિવ્યા  
 ચર્કરપ્રભાયામુત્કૃષ્ટતસ્મિન્સાગરોપમસ્થિતિકેષુ નૈરયિકેષૂત્પન્ના । તતો નિઃસૃજ્ય સરી-  
 સ્પેષૂત્પદ્યતે, તત્રાપિ રત્નપ્રભા દાહ્યુત્કાન્ત્યા કાન્માસે કાઞ્ચ ઋત્વા દ્વિતીયવાર-  
 મપિ દ્વિતીયાયાં પૃથિવ્યામુત્કૃષ્ટતસ્મિન્સાગરોપમસ્થિતિકેષુ નૈરયિકેષૂત્પન્ના । તતો  
 દ્વિતીયાયાઃ પૃથિવ્યાઃ નિ સ્ત્ય ત્રિતીયવારમપિ સગીઘ્રપેષૂત્પદ્યતે, તત્રાપિ પૂર્વત્  
 કાલ કૃત્વા પ્રથમાયા પૃથિવ્યા રત્નપ્રભાયામુત્કૃષ્ટત્ત પરમાગરોપમસ્થિતિકેષુ નૈર-  
 યિકેષૂત્પન્ના, તતો નિઃ સૃજ્ય સગીધુ, તતો નિઃ સૃત્યાઽસન્નિષૂત્પદ્યતે, તતો નિઃ

ફિર યહ પુનઃ ત્રીસરે નરક મેં સાત સાગર કી ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ વાલે નૈર  
 યિકોં મેં નૈરયિક કી પર્યાય સે ઉત્પન્ન હુઈ । યહા સે નિકલ કર પુનઃ  
 યહ પશ્ચિયો કે કુલ મેં ઉત્પન્ન હુઈ । યહા સે મર કર ફિર યહ દુસરી  
 પૃથિવી જો ચર્કરા પ્રભા હૈ ઓર જિસકે નરકાવાસોં મેં ત્રીન સાગર કી  
 ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ હૈ વહા નૈરયિકો કી પર્યાય સે ઉત્પન્ની સ્થિતિ લેકર ઉ  
 ત્પન્ન હુઈ । વહાં સે નિકલ કર સરીસૃપોં મેં યહ દાહ કી વ્યુત્ક્રાન્તિ સે  
 મરી તો મર કર દ્વિતીય વાર મી દ્વિતીય પૃથિવી કે નરકાવાસોં મેં  
 ત્રીન સાગર કી ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ લેકર ઉત્પન્ન હુઈ । દ્વિતીય પૃથિવી સે  
 નિકલ કર દુવારા યહ સરીસૃપ મેં ઉત્પન્ન હુઈ । વહા સે અપને સમય  
 પર મર કર રત્નપ્રભા નામકી પ્રથમ પૃથિવી મેં ઉત્કૃષ્ટ એક સાગર કી  
 સ્થિતિ વાલે નરકાવાસોં મેં નૈરયિક કી પર્યાય સે ઉત્પન્ન હુઈ । વહાં કી  
 ભવસ્થિતિ સમાપ્ત હોને પર યહ વહા સે નિકલકર સજી જીવો મેં વહાં

જન્મ પામી ત્યાથી મરણ પામીને ફરી તે ત્રીજા નરકમા સાત સાગરની  
 ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા નૈરયિકોમા નૈરયિકના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઈ ત્યાથી નીક  
 ળીને ફરી તે પશ્ચિમોના કુળમા ઉત્પન્ન થઈ ત્યાથી મરણ પામીને ફરી તે  
 બીજી પૃથિવી જે ચર્કરાપ્રભા છે અને જેના નરકાવાસોમા ત્રણ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ  
 સ્થિતિ છે ત્યા નૈરયિકોના પર્યાયથી તેટલી જ સ્થિતિ લઈને જન્મ પામી  
 ત્યાથી નીકળીને સરીસૃપોમા તે ઉત્પન્ન થઈ ત્યા શસ્ત્રથી વીધાઈને તથા દાહથી  
 પીડાઈને મરણ પામી અને ત્યારપછી બીજીવાર પણ બીજી પૃથિવીના નરકા  
 વાસોમા ત્રણ સાગર જેટલી ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ લઈને ઉત્પન્ન થઈ બીજી પૃથિવથી  
 નીકળીને બીજીવાર તે સરીસૃપમા ઉત્પન્ન થઈ ત્યાથી યથા સમય મરણ પામીને  
 રત્નપ્રભા નામની પ્રથમ પૃથિવમા ઉત્કૃષ્ટ એક સાગરની સ્થિતિવાળા નરકા  
 વાસોમા નૈરયિકના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઈ ત્યાની ભવસ્થિતિ પૂરી કરીને તે  
 ત્યાથી નીકળીને સરી-સૃપોમા, ત્યાથી પણ મરણ પામીને

સૂત્ય દ્વિતીયગારમપિ પ્રથમાયા પૃથિવ્યા પલ્યોપમસ્યાઽસરયેયભાગસ્થિતિકેષુ નૈરયિકેષુ નૈરયિકતયોત્પન્ના ' ઇતિ ।

‘ તઓ ઉવટ્ટિત્તા ’ તત ઉદ્વર્ત્ય=રત્નપ્રભાતો નિઃ સૂત્ય યાનિ ઇમાનિ ‘ સ્વહ-  
યરવિદ્વાણાઃ ’ સ્વચરવિધાનાનિ ચર્મપક્ષ્યાદીનિ ભવન્તિ તેષુ, યાવત્ યવોત્તર ચ  
સહુ યાનીમાનિ સ્વરવાદરપૃથિવી કાયિકવિગાનાનિ તેષુ સ્વરવાદરપૃથિવીકાયિક-  
તયાઽનેકશતસહસ્રકૃત્વઃ સમુત્પન્ના ॥ સૂ.૦૬ ॥

મૂલમ્—સા ણં તઓઽણંતરં ઉવ્વટ્ટિત્તા ઇહેવ જંબૂદીવે દીવે  
ભારહેવાસે ચંપાણ નયરીણ સાગરદત્તસ્સ સત્થવાહસ્સ મહાણ  
મારિયાણ કુચ્છિસિ દારિયત્તાણ પચ્ચાયાયા તણં સા મદ્દા  
સત્થવાહી ણવણં માસાણં દારિયં પયાયા સુકુમાલકોમલિય  
ગયતાલુયસમાણ, તીસે દારિયાણ નિવ્વત્તવારસાહિયાણ અમ્મા-  
પિયરો ઇમં ઇયાલુવં ગોત્ત ગુણાનિપ્પન્ન નામધેજ્જં કરેતિ—જમ્હા  
ણં અમ્હં ઇસા દારિયા સુકુમાલા ગયતાલુયસમાણા ત હોડણં  
અમ્હં ઇમીસે દારિયાણ નામધેજ્જે સુકુમાલિયા, તણ તીસે  
દારિયાણ અમ્માપિયરો નામધેજ્જં કરેતિ સૂમાલિયત્તિ, તણં  
સા સૂમાલિયા દારિયા પંચધાઈ પરિગ્ગહિયા તં જહા—સ્વીરધાઈણ

સે મી મર કર અસજી જીવોં મે ઓર ફિર વહા સે મર કર ફિર  
દુધારા મી પ્રથમ પૃથિવી મેં ૧ એક પલ્ય કે અસખ્યાત વેં ભાગ પ્રમાણ  
સ્થિતિવાલે નરકાવાસોં મેં નૈરયિક કી પર્યાય સે ઉત્પન્ન હુઈ । ઉસ રત્ન  
પ્રભા પૃથિવી સે નિકલ કર ફિર ચહ જિતને યે પક્ષિભેદ હૈં—ચર્મ પક્ષી  
આદિ હૈં—અનમેં ઓર અનકે વાદ જો યે સ્વર—વાદર—પૃથિવીકાયાદિ ભેદ  
હૈં અનમેં સ્વરવાદર પૃથિવીકાયિકરૂપસે લાખોં વાર ઉત્પન્ન હુઈ ॥સૂ.૦૬॥

અને ફરી ત્યાથી મરણ પામીને બીજીવાર પણ પહેલી પૃથિવિમા ૧ એક પલ્યના  
અસખ્યાતમા ભાગ પ્રમાણ સ્થિતિવાળા નરકાવાસોમા નૈરયિકના પર્યાયથી  
જન્મ પામી તે રત્નપ્રભા પૃથિવિથી નીકળીને ફરી તે બેટલા પક્ષી ભેદો છે—  
ચર્મ પક્ષી વગેરે છે—તેઓમા અને ત્યારપછી ખર—ખાદર પૃથિવીકાય વગેરે ભેદ  
છે તેઓમા ખર—ખાદર પૃથિવિકાયિકતા રૂપમા લાખો વાર જન્મ પામી સૂ. ૬





‘पयाया’ प्रजाता=प्रजनितवती, किं भूता दारिकामित्याह—‘सुकुमालकोमलिय’ सुकुमारकोमलाम्—अतिमृदुलाम् गजतालुकसमाना अद्भुत्यातिकोमलतया गजतालुतुल्यामित्यर्थः। तस्या दारिकाया ‘निव्यत्तवारसाहियाए’ निवृत्तद्वादशाहिकायाः सम्प्राप्तद्वादशदिनसाया. अम्मापितरौ=मातापितरौ इदमेतद्रूप ‘गोणं’ गौणं=गुणेभ्य आगत=प्राप्त गुणनिष्पन्न=गुणबोधकं नामधेय कुरुतः कर्तुंविचारयतः तथाहि यस्मात् खलु अस्माकमेवा दारिका सुकुमारा गजतालुकसमाना जाता, तद्=तस्मात् भवतु खलु अस्माकमस्या दारिकाया नामधेयं ‘सुकुमारिका’ इति। ततः विचारकरणानन्तर खलु तस्या दारिकाया अम्मापितरौ नामधेय कुरुतः ‘सुकुमारिका’ इति। तत खलु सा सुकुमारिका दारिका पञ्चधारीपरिगृहीता—पञ्चसंख्यकाभिर्धात्रीभिः=उपमातृभिः सुरक्षिता जाता, तद् यथा=तासा पञ्चानां धात्रीणां नामानि दर्शयति ‘खीरधाईए जाव गिरकदर’ इति। क्षीरधात्र्या=स्तन्य-

वाहिके गर्भ के नौ मास तथा साढ़े सात दिन रात पूर्णरूप से व्यतीत हो चुके तब उसने पुत्रीको जन्म दिया। यह पुत्री अत्यन्त कोमल अग-वाली थी इसी लिये गजका तालु भाग जिस प्रकार मृदुल होता है यह वैसी ही कोमल थी। जब यह १२ घारह दिन की हो चुकी—तब इस के मातापिताने इसका ‘यथा नाम तथा गुण’ इस कहावतके अनुसार गुणों को लेकर नाम सस्कार करने का विचार किया। विचार करने के बाद उन्होंने इस खयाल से कि यह हमारी पुत्री अत्यन्त सुकुमार और गज तालु का के जैसी मृदुल है अतः इसका नाम सुकुमारिका रहे (तएण तीसे दारियाए अम्मा पिघरो नामधेज्ज करेति सूमालियत्ति) उस कन्या का नाम सुकुमारिका रख दिया (तएण सा सुकुमारियदारिया

अर्थात् सार्धवाहीना गर्भना नव मास अने साढा सात दिवस रात पूरा थई थूक्या तयारे तेण्ण पुत्रीने जन्म आय्ये। आ पुत्री अतीव कोमलागी इती हाथीना ताणवाने लाग जेवे सुकोमल होय छे, ते तेवीज कोमल इती ज्यारे ते भार दिवसनी थई गर्भ तयारे तेना मातापिताअे जेवु नाम तेवा शुष्णवाणी अे उडेवत मुज्ज शुष्णाना आधारे तेना नाम सस्कार करवाने। विचार कर्ये विचार कर्ये आह तेअेअे पोतानी पुत्रीनी सुकोमल दृष्टि समक्ष राणीने अेटले ई तेअेअे आ प्रभाण्ण विचारीने उे आ भारी पुत्री हाथीना ताणवा जेवी सुकोमल छे भाटे अेनु नाम सुकुमारी राणीअे

(तएण तीसे दारियाए अम्मापियरो नामधेज्ज करेति सूमालियत्ति)

ते कन्यानु नाम सुकुमारी राण्यु

जाव गिरिकंदरमालीणा इव चपकलया निव्याण निव्याघायंसि  
जाव परिवद्दुइ, तएणं सा सुमालियादारिया उम्मुक्खवालभावा  
जाव रुवेण य जोवणेण य लावणेण य उक्किट्टा उक्किट्ट  
सरीरा जाया यावि हांत्था ॥ सू० ७ ॥

टीका—‘सा ण तओ’ इत्यादि । सा गल्ल नागश्री, ततोऽनन्तरम् उद्धत्य  
जम्बूद्वीपे दीपे भारते वर्षे चम्पाया नगर्यां सागरदत्तस्य सार्धयादस्य भद्रया भार्यायाः  
कुक्षौ ‘पञ्चायाया’ पत्यायाता गर्भसमागता । ततः खड्ड मा भद्रा सार्धवाही  
नवसु मासेषु बहुमतिपूर्णेण अर्द्धाष्टमेषु रात्रिन्दिवेषु व्यतिक्रान्तेषु सत्सु दारिका

‘सा ण तओऽणतर’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(सा ण तओऽणतर उवट्ठिता) इसके बाद वह नागश्री खर  
पृथ्वी कायिका से निकल कर ( इहेव जम्बूद्वीपे दीपे भारहे वासे चपाए  
नयरीए सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसिदारियत्ताए  
पञ्चायाया ) इसी जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में स्थित भारतवर्ष नामके क्षेत्र  
में वर्तमान चपानगरी में सागरदत्त सेठ की धर्मपत्नी-भद्रा की कुक्षि में  
पुत्रीरूप से अवतरी ( तएण सा भद्दा सत्थवाही नवण्ह मासाण दारिय  
पयासा सुकुमालकोमलिय गयतालुयसमाण तीसे दारियाए निव्वत्त  
धारिसाहियाए अम्मापियरो इम एयारुव गोन्नं गुणनिप्फन्न नाम  
घेज्ज करेति, जम्हाण अम्ह एसा दारिया सुकुमाला गयतालुय समाणा  
त होउण अम्ह इमीसे दारियाए नामघेज्जे सुकुमालिया ) भद्रा सार्ध

‘सा ण तओऽणतर उवट्ठिता’ इत्यादि—

टीकार्थ—(सा ण तओऽणतर उवट्ठिता) त्थारपथी ते नागश्री ञर पृथ्विक्का  
यिक्कथी नीक्कणीने ( इहेव जम्बूद्वीपे दीपे भारहे वासे चपाए नयरीए सागरद  
त्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए पञ्चायाया )  
ओ ७ ७ जम्बूद्वीप नामना द्वीपमा आवेत्ता भारतवर्ष नामना क्षेत्रमा विधनान  
थ चपानगरीमा सागरदत्त सेठनी धर्मपत्नी भद्राना उदरमा पुत्री रूपमा अवतरी  
( तएण सा भद्दा सत्थवाही नवण्ह मासाण० दारिय पयाया सुकुमालकोम  
लिय गयतालुयसमाण तीसे दारियाए निव्वत्तधारिसाहियाए अम्मापियरो इम  
एयारुव गोन्नं गुणनिप्फन्न नामघेज्ज करेति, जम्हाण अम्ह एसा दारिया सुकु  
माला गयतालुयसमाणा त होउण अम्ह इमीसे दारियाए

भवइ तो णं अहं सागरस्स दारगस्स सूमालियं दलयामि-  
तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते  
समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्तां सांगे-  
रदारगं सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता । साग-  
रदत्ते सत्थवाहे मम एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ।  
सूमालिया । दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा त चेव तं जइ  
ण सागरदारए मम घरजामाउए भवइ ता दलयामि, तएणं  
से सागरए दारए जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे  
तुसिणीए, तएण जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइं सोहणंसि  
तिहिकरणदिवसणम्वत्तमुहुत्तसि विउले असंणपाणखाइमसा-  
इमं उवक्खडावित्ता मित्तणाइ० आमतेइ जाव सम्माणित्तां  
सागरं दारगं पहायं जाव सव्वालंकारविभूसिय करेइ, करित्तां  
पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरुहावेइ, दुरुहावित्ता मित्तणाइ  
जाव सपरिवुडे सव्विड्डीए साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्ग-  
च्छित्ता चंपानयेरि मज्झंमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव  
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहावेइ, पच्चोरुहा-  
वित्ता सागरगं दारगं सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेइ, तएणं सां-  
गरदत्ते सत्थवाहे विपुल असंणपाणखाइमसाइम उवक्खडा-  
वेइ उवक्खडावित्ता जाव सम्माणेत्ता सागरगं दारगं सूमालियाए  
दारियाए सद्धि पट्टय दुरुहावेइ दुरुहावित्ता सेयापीएहि कल-  
सेहि मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्निहोम करावेइ करोवित्ता सागरं  
दारयं सूमालियाए दारियाए पाणिं गिण्हावेइ ॥ सू० ८ ॥

से ? तएणं ते कोडुवियपुरिसा जिणदत्तेण सत्यवाहेण एवं  
 वुत्ता समाणा हट्ठ करयल जाव एवं वयासी—एस णं देवाणु-  
 प्पिया ! सागरदत्तस्स सत्यवाहस्स धया भद्दाए अत्तया सूमा-  
 लिया नाम दारिया सुकुमालपाणिपाया जाव उक्किट्टुसरीरा  
 तएणं से जिणदत्ते सत्यवाहे तेसिं कोडुवियाणं अंतिए एयमडं  
 सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए  
 जाव मित्तनाइ परिवुडे चंपाए० जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव  
 उवागच्छइ, तएणं सागरदत्ते सत्यवाहे जिणदत्तं सत्यवाहं  
 एज्जमाणं पासइ पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भु-  
 ट्ठित्ता आसणेणं उवणिमतेइ उवणिमंतित्ता आसत्थं वीसत्थं  
 सुहासणवरगयं एवं वयासी—भण देवाणुप्पिया ! किमाग-  
 म्मापओयण ? तएण से जिणदत्ते सत्यवाहे सागरदत्तं  
 सत्यवाहं एवं वयासी—एव खलु अह देवाणुप्पिया ! तव धूयं  
 भद्दाए अत्तियं सूमालिय सागरस्स भारियत्ताए वरेमि, जइ णं  
 जाणाह देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पुत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो  
 वा संजोगो दिज्जउण सूमालिया सागरस्स, तएणं देवा-  
 णुप्पिया किं दलयामो सुक्क सुमालियाए?, तएण से सागर-  
 दत्ते त जिणदत्त एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया सूमालिया  
 दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा जाव किमग पुण पासणयाए  
 त नो खलु अह इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि  
 विप्पओगं तजइण देवाणुप्पिया ! सागरदारए मम घरजामाउए



भवइ तो णं अहं सागरस्स दारगस्स सूमालियं दलयामि-  
तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते  
समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सांग-  
रदारगं सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता । साग-  
रदत्ते सत्थवाहे मम एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ।  
सूमालिया । दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा तं चेव त जइ  
णं सागरदारए मम घरजामाउए भवइ ता दलयामि, तएणं  
से सागरए दारए जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे  
तुसिणीए, तएण जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइ सोहणंसि  
तिहिकरणदिवसणखत्तमुहुत्तसि विउले असणपाणखाइमसां-  
इम उवक्खडावित्ता मित्तणाइ० आमंतेइ जाव सम्माणित्ता  
सागरं दारगं पहायं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्तीं  
पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहावेइ, दुरूहावित्ता मित्तणाइ  
जाव सपरिवुडे सव्विड्डीए साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्ग-  
च्छित्ता चंपानयरि मज्झमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव  
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहावेइ, पच्चोरुहा-  
वित्ता सागरगं दारगं सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेइ, तएणं सां-  
गरदत्ते सत्थवाहे विपुलं असणपाणखाइमसाइम उवक्खडा-  
वेइ उवक्खडावित्ता जाव सम्माणित्ता सागरगं दारगं सूमालियाए  
दारियाए सद्धि पट्टय दुरूहावेइ दुरूहावित्ता सेयापीएहिं कल-  
सेहिं मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्निहोम करावेइ करावित्ता सागरं  
दारयं मूमालियाए दारियाए पाणिं गिण्हावेइ ॥ सू० ८ ॥

टीका—‘तत्थ ण चपाण’ इत्यादि । तत्र गच्छु चपायां नगर्या जिनदत्तो नाम सार्थवाह आठयो यावद् अपरिभूत भामीन्, तस्य जिनदत्तस्य भद्रा भार्या आसीत्-या किम्भूता-सुकुमारा इष्टा यावद् मानुषकान् ‘पञ्चणुम्भवमाणा’ मत्पनुभवन्ती विहरति । तस्य गच्छु जिनदत्तस्य पुत्रो भद्राया भार्याया आत्मजः= अत्रजातः, सागरो नाम दारकः आसीत् स किम्भूतः-सुकुमारपाणिपादः, सर्व-लक्षणसम्पन्नः यावत्-सुरूपः । तत गच्छु ग जिनदत्तसार्थवाहः अथवा कदाचित्

‘तत्थ ण चपाण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—( तत्थ णं चपाण नयरीए जिणदत्ते नाम सत्यवाहे अड्डे, तस्स णजिणदत्तस्स भद्रा भारिया, सुमाला इष्टा जाव माणुस्सए काम भोए पञ्चणुम्भवमाणा विहरह ) उक्त चपा नगरीमें जिनदत्त नामको एक सार्थवाह रहता था जो धनधान्य आदि से विशेष परिपूर्ण एवं जनमान्य था । इसकी धर्मपत्नी का नाम भद्रा था । यह सर्वाङ्ग सुन्दरी थी । समस्त अग और उपाग इसके घड़े ही सुकुमार थे । यह अपने पतिको अत्यन्त इष्ट प्रिय थी । पति के साथ मनुष्य भव सम्बन्धी काम भोगों को भोगती हुई यह आनन्द के साथ अपने समय व्यतीत किया करती थी ( तस्स ण जिणदत्तस्स पुत्ते भद्राए भारियाए अत्तए सागरए नाम दारए सुकुमाले जाव सुरूवे ) भद्रा भार्या से उत्पन्न हुआ जिनदत्त सार्थवाहके एक पुत्र था-जिसका नाम सागर था । यह सुकुमाल यावत्

तत्थण चपाए इत्यादि—

टीकार्थ—(तत्थण चपाए नयरीए जिणदत्ते नाम सत्यवाहे अड्डे तस्सण जिण दत्तस्स भद्रा भारिया, सुमाला इष्टा जाव माणुस्सए कामभोए पञ्चणुम्भवमाणा विहरह) ते च पा नगरीमा जिनदत्त नामे ओक सार्थवाह रहतेो हतेो ते धन धान्य वगैरैथी सविशेष संपन्न तेभज समाजमा पूछतेो माणुस हतेो तेनी धर्मपत्नीनु नाम भद्रा हुतु, ते सर्वांग सुंदरी हुती तेना पत्ता अजो अने उपाजो णहुं सुकैमण हुता, ते पोताना पतिने णहुं वडावी हुती पतिनी साथे मनुष्य लवना कामलोगो भोगवती ते सुजेथी पोतानो वजत पसार करी रही हुती

( तस्सणं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्राए भारियाए अत्तए सागरए नाम दारए सुकुमाले जाव सुरूवे )

भद्राभार्याथी उत्पन्न थयेलेो भद्राभार्याने ओक पुत्र हुतेो तेनु नाम सागर हुत ते सुकुमार यावत् सुंदर उपवान हुतेो.

स्वकाद् गृहात् प्रतिनिष्क्रामति=निर्गच्छति, प्रतिनिष्क्रम्य, सागरदत्तस्य गृहस्य  
'अदूरसामन्ते' =नातिदूरे नातिसमीपे 'वीर्ध्वयई' व्यतिव्रजति=गच्छति,  
'इमचण' अस्मिन् समये सुकुमारिका दारिका स्नाता=कृतस्नाना 'चेडियासघ-  
परिवुडा' चेडिकासघपरिवृता=दासीसमूहमध्यगता, उपरि आकाशतलके-प्रासाद-  
स्याटालिकोपरि 'कणगतेदुसकेण' कनकतेदुससयेन 'तेदुसय' इतिदेशीशब्दः,  
सुवर्णमयकन्दुकेन 'कीलमाणी २' विहरति, ततः खलु स जिनदत्तः सार्थवाहः  
सुकुमारिका दारिका पश्यति, दृष्ट्वा सुकुमारिकाया दारिकाया रूपे च यौवने च  
लावण्ये च 'जाय विम्हए' यावत् विस्मितः=आश्चर्ययुक्तः सन् कौटुम्भिकपुरुषान्=  
आज्ञाकारिण पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-एषा खलु हे देवानु-  
प्पिया ! कस्य दारिका किं वा नामधेय 'से' इति तस्याः ? ततः खलु ते

अच्छे रूपवाला था । ( तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाई साओ  
गिहाओ पडिनिक्खमड पडिनिक्खमित्ता सागरदत्तस्स गिहस्स अदूर  
सामतेणं वीर्ध्वयई ) एक दिन जिनदत्त सार्थवाह अपने घरसे निकला  
और निकलकर सागरदत्तके घरके पाम से हो कर जा रहा था । ( इम  
च ण सुमालिया दारिया ण्हाया चेडियासघपरिवुडा उप्पिआगा  
सतलगसि कणगतेदुसएणं कीलमाणी२ विहरइ , इसी समय सुकु-  
मारिका दारिका नहा धो कर अपने प्रासाद की छत पर दासी समूहके  
साथ २ सुवर्णमय कडुक ( गेंद ) से खेल रही थी । ( तएण से जिण  
दत्ते सत्थवाहे सुमालिय दारिय पासइ पासित्ता सुमालियाए दारियाए  
रूवेय ३ जाय विम्हए कोडुविय पुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी  
एसण देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया किं वा-नामधेज्जं से ? तएण ते

तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाई साओ गिहाओ पडिनिक्खमड  
पडिनिक्खमित्ता सागरदत्तस्स गिहस्स अदूरसामतेण वीर्ध्वयई )

एक दिवसे जिनदत्त सार्थवाह पोताने घरथी भडार नीज्जथे अने  
नीकजीने सागरदत्तना घरनी पासे थधने जई रह्यो हते।

( इम च ण सुमालिया दारिया ण्हाया चेडियासघपरिवुडा उप्पि आगास-  
तलगसि कणगतेदुसएण कीलमाणी २ विहरइ )

ते वधते सुकुमारिका दारिका स्नान करीने पोताना भडेलनी अगाशी  
उपर धामी समूहनी साथे सुवर्णमय कडुक ( गेंद ) रभती हती

( तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सुमालिय दारिय पासइ पासित्ता सुमालियाए  
दारियाए रूवेय ३ जाय विम्हए कोडुविय पुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी  
एसण देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया किं वा नामधेज्जं से ? तएण ते कोडुविय

टीका—‘तत्थ ण चंपाण’ इत्यादि । तत्र गच्छु नग्वापां नगरी जिणदत्ते नाम सार्थवाह आगच्छो यावद् अपरिभूत आसीत्, तस्य जिणदत्तस्य भद्रा भार्या आसीत्-सा किम्भूता-सुकुमारा इष्टा यावद् मानुष्यकान् ‘पञ्चणुग्भवमाणा’ प्रत्यनुभवन्ती विहरति । तस्य गच्छु जिणदत्तस्य पुत्रो भद्राया भार्याया आत्मजः= अद्भुतः, सागरो नाम दारकः आसीत् स किम्भूतः-सुकुमारपाणिपादः, सर्व लक्षणसम्पन्नः यावत्-सुख्यः । तत्र खलु ग जिणदत्तमार्थवाहः अन्पदा कदाचित्

‘तत्थ णं चंपाण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—( तत्थ णं चंपाण नगरीण जिणदत्ते नाम सत्यवाहे अड्डे, तस्स णजिणदत्तस्स भद्रा भारिया, सुमाला इष्टा जाव माणुस्सण कामभोण पञ्चणुग्भवमाणा विहरह ) उस चंपा नगरीमें जिणदत्त नामको एक सार्थवाह रहता था जो धनधान्य आदि से विशेष परिपूर्ण एवं जनमान्य था । इसकी धर्मपत्नी का नाम भद्रा था । यह सर्वज्ञ सुन्दरी थी । समस्त अग और उपाग इसके बड़े ही सुकुमार थे । यह अपने पतिको अत्यन्त इष्ट प्रिय थी । पति के साथ मनुष्य भव सम्बन्धी काम भोगों को भोगती हुई यह आनन्द के साथ अपने समय व्यतीत किया करती थी ( तस्स णं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्राए भारियाए अत्तए सागरए नाम दारए सुकुमाले जाव सुरूवे ) भद्रा भार्या से उत्पन्न हुआ जिणदत्त सार्थवाहके एक पुत्र था-जिसका नाम सागर था । यह सुकुमाल यावत्

तत्थण चंपाए इत्यादि—

टीकार्थ—(तत्थण चंपाए नगरीए जिणदत्ते नाम सत्यवाहे अड्डे तस्सण जिणदत्तस्स भद्रा भारिया, सुमाला इष्टा जाव माणुस्सए कामभोए पञ्चणुग्भवमाणा विहरह) ते चंपा नगरीमा छनदत्त नामे ओक सार्थवाह रहते। हुते। ते धनधान्य वगेरेथी सविशेष सपन्न तेमज्ज सभान्ना पूछाते। माणुस हुते। तेनी धर्मपत्नीनु नाम लद्रा हुतुं, ते सर्वोण सुदरी हुती तेना अधा अगे अने उपागे। अड्डुज सुकामण हुता, ते पोताना पतिने अड्डुज बडावी हुती पतिनी साथे मनुष्य लवना कामलोगे लोगवती ते सुजेथी पोताने। वधत पसार करी रही हुती

( तस्सणं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्राए भारियाए अत्तए सागरए नाम दारए सुकुमाले जाव सुरूवे )

लद्राभार्याथी उत्पन्न थयेले। लद्राभार्याने ओक पुत्र हुते। तेनु नाम सागर हुतुं ते सुकुमार यावत् सुदर रूपवान हुते।

वाहस्तेषा कौटुम्बिकानामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति,  
उपागत्य स्नातो यावद् मित्रजातिपरिवृतश्चम्पाया नगर्या मध्ये भूत्वा यत्रैव सागर-  
दत्तस्य गृहं तत्रैवोपागच्छति, ततस्तदनन्तरम् सागरदत्तः सार्थवाहं खलु जिनदत्त  
सार्थवाहम् एजमानम्=आगच्छन्तं पश्यन्ति, दृष्ट्वाऽऽसनादुत्तिष्ठति, उत्थाय 'आस-  
णेणं उवणिमंतेह' आसनेनोपनिमन्त्रयति=आसन उपवेशनार्थं प्रार्थयति, उपनि-  
मन्त्रय, आसनोपर्युपवेशनानन्तरम्, आसस्थ=मार्गश्रमापगमात् श्रान्तिरहित, विस्व-  
स्थ=विशेषतो विश्रान्तिमुपगतं, सुखासनवरगत=सुखेन विशिष्टासनोपविष्ट, तं

अतिए एयमद्व सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता  
ण्हाए, जाव मित्तणाइपरिवुडे चंपाए० जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव  
उवागच्छइ, तएणं सागरदत्ते सत्थवाहे जिनदत्त सत्थवाह एजमाणं  
पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता आसणेणं उवणि-  
मंतेइ उवणिमत्तित्ता आसत्थ सुहासणवरगय एव वयासी ) जिनदत्त  
सार्थवाहने उन कौटुम्बिक पुरुषो के मुख से जब इस अर्थ को सुना तो  
सुनकर वह पहिले अपने घर गया—वहां जा कर उसने स्नान किया ।  
यावत् फिर वह अपने मित्र, जाति आदि परिजनो के साथर चंपानगरी  
के बीच से हो कर जहां सागरदत्त का घर था वहां पहुँचा—सागरदत्तने  
ज्यों ही अपने घर पर आते हुए जिनदत्त सार्थवाहको देखा — तो वह  
जल्दीसे अपने स्थान से उठा—और उठकर " आप यहा बैठिये " इस  
प्रकार उनसे कहने लगा जब वे यथोचित स्थान पर बैठ चुके और आस्व

( तएण से जिनदत्ते सत्थवाहे तेसिं कौटुम्बिकाण अतिए एयमद्व सोच्चा—  
जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए, जाव मित्तणाइ परिवुडे  
चंपाए० जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, तएण सागरदत्ते सत्थवाहे,  
जिनदत्त सत्थवाह एजमाण पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता  
आसणेण उवणिमंतेइ उवणिमत्तित्ता आसत्थ गीसत्थ सुहासणवरगय एव वयासी )

उनदत्त सार्थवाहे ते कौटुम्बिक पुरुषोना मुण्ठी आ वात  
साक्षणीने सौ पडेइ तेओ पोताने घेर गया त्या पडेअनीने तेभए  
स्नान कथुं यावत् पछी ते पोताना मित्र, जाति वगेरे पग्गिनेनी साथे  
थपा नगरीनी वन्थे थधने न्या सागरदत्तनु घर डतुं त्या पडेअ्या सागर  
दत्त उनदत्त सार्थवाहने पोताने घेर आवता नेधने त्वराथा ते पोताना  
आसन उपरथी जिले थध गये अने जिले थधने " तमे अडीं मेसे "



કોટુમ્બિકપુરુષા જિનદત્તન સાર્થવાહેનેયુક્તા સત્તો દ્વૃષ્ટાઃ-અભિમુદિતાઃ ' કર-  
યલ જાવ ' કરતલ્પરિગૃહીતં શિર આવતે દ્વનનમ્ મસ્તકેડ્ઝલિ કૃત્વા પત્રમથા;  
દિપુઃ-હે દેવાનુપ્રિયા ! एषા સાગરદત્તમ્પ માર્થવાહસ્ય ' ધૂયા ' દુહિતા=પુત્રી,  
ભદ્રાયા આત્મજા સુકુમારિયા નામ દારિકા સુકુમારપાણિપાદા યાવદ્-રૂપેણ ચ  
યૌવનેન ચ લાવણ્યેન ચ ઉત્કૃષ્ટા ડન્કૃષ્ટ શરીરા । તતઃ સ્વલુ સ જિનદત્તઃ સાર્થ

કોટુવિય પુરિમા જિનદત્તેણ સત્યવાહેણં એવ યુક્તાસમાણા હૃદ્ધ કરયલ  
જાવ એવ વયાસી-અસર્ણ દેવાણુપ્પિયા ! સાગરદત્તમ્પ મત્યવાહસ્સ ધૂયા  
ભદ્રાણ અત્તિયા સુમાલિયા નામ દારિકા સુકુમાલપાણિપાયા જાવ ઉક્કિદ  
સરીરા ) રેત્તતી હૃદ્ધ ઉસ કુમારિકા દારિકા કો જિનદત્ત સાર્થવાહ ને  
દેલા-દેલ્લકર વે સુકુમારિકા દારિકા કે રૂપ યૌવન એવ લાવણ્ય મેં  
આશ્ચર્યચક્કિન હો ગયે-ઑર આશ્ચર્ય સે યુક્ત હોકર ડન્તોને કૌટુમ્બિક  
પુરુષો કો બુલાયા-બુલાકર વે ડનસે હસ પ્રકાર કહને લગે-હે દેવાનુ  
પ્રિયો ! યહ કન્યા કિમકી હે હસકા નામ વયા હે । જિનદત્ત સાર્થવાહ  
કે દ્વારા પૂછે ગયે ડન કૌટુમ્બિક પુરુષો ને હર્ષિત હો કર ઑર અંપને  
દોનોં હાથો જોડ કર વહે વિનય કે સાથ ડનસે એસા કહા-હે દેવાનુ-  
પ્રિય ! યહ પુત્રી સાગરદત્ત સાર્થવાહકી હે । ભદ્રા માર્યા કો કુક્ષિ સે  
યહ જન્મી હે । હસકા નામ સુકુમારિકા હે । હસકે કર ચરણ વહે હી  
સુકુમાર હે યાવત્ રૂપ, યૌવન એવ લાવણ્યસે યહ સર્વોત્કૃષ્ટ હે ઑર  
સર્વાદ્ધ સુન્દરી હે । ( તર્ણ સે જિનદત્તે સત્યવાહે તેસિ કૌટુમ્બિયોણં

પુરિયા જિનદત્તેણ સત્યવાહેણં એવ યુક્તા સમાણા હૃદ્ધ કરયલ જાવ એવ વયાસી-  
અસર્ણ દેવાણુપ્પિયા । સાગરદત્તમ્પ સત્યવાહસ્સ ધૂયા ભદ્રાણ અત્તિયા સુમાલિયા  
નામ દારિકા સુકુમાલપાણિપાયા જાવ, ઉક્કિદ્ધસરીરા )

રમતી સુકુમાર દારિકાને જીનદત્ત સાર્થવાહે જોઈ જોઈને તેઓ સુકુમાર  
દારિકાના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યમા આશ્ચર્ય ચક્કિત થઈ ગયાં અને ત્યાર  
પછી તેમણે કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તે તેમને આ  
પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિયો ! આ કન્યા કોની છે ? એનું નામ શું  
છે ? જીનદત્ત સાર્થવાહ વહે એવી રીતે પૂછાએલા તે કૌટુમ્બિક પુરુષોએ હર્ષિત  
થઈને પોતાના બંને હાથ જોડીને બહુજ વિનયની સાથે તેમને આ પ્રમાણે  
કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! સાર્થવાહ સાગરદત્તની આ પુત્રી છે ભદ્રાલાયના ઉદરથી  
આનો જન્મ થયો છે સુકુમારિકા આનું નામ છે એના હાથપગ ખૂબ જ સુંદર  
મળ યાવત્ રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યથી આ સર્વોત્કૃષ્ટ છે સુન્દરી /

પાત્ર = 'કન્યા યોગ્યોઽય મત્પુત્રઃ સાગર' ઇતિ, 'સલાહિણિજ્જં વા' શ્લાઘનીયં = પ્રશસનીય તા 'સરિસો વા સજોગો' સદૃશો વા સંયોગઃ - અય કન્યાવરયો વૈવાહિકઃ સમ્બન્ધઃ કુલેન રૂપેણ ગુણેન વા તુલ્ય ઇતિ, 'તો' તર્હિ 'દિજ્જડ' દદાતુ મગાન્ સ્વલુ સુકુમારિકા દારિકાં સાગરાય = મત્પુત્રાયેતિભાવઃ । તતઃ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિય ! વ્રૂહિ - કિં દદ્ધ - કિં દદ્ધાં, શુલ્ક = સંમાનાર્થ દ્રવ્ય સુકુમારિકાયા દારિકાયાઃ ? તતઃ સ્વલુ સ સાગરદત્તઃ સાર્થવાદસ્ત જિનદત્તમેવમવાદીત્ - એવ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિય ! સુકુમારિકા દારિકા મમૈકા એકજાતા = એકૈવોત્પન્ના, તયા - ઇષ્ટા - અનુકૂલા, યાવત્ - કાન્તા = રૂપિતા, પ્રિયા = પ્રીતિપાત્રા, મનોજ્ઞા = મનોગતા તથા -

કન્યા કે યોગ્ય હૈ યહ સંબન્ધ પ્રશસનીય હૈ, કન્યા ઓર વર કા યહ વૈવાહિક સંબન્ધ કુલ રૂપ ઓર ગુણો કે અનુરૂપ હૈ તો આપ અપની પુત્રી સુકુમારિકા કો મેરે પુત્ર સાગર કે લિયે પ્રદાન કર દીજિયે - ( તણ દેવાણુપ્પિયા ! કિં દલ્લ્યામો સુલ્લ સુમાલિયાણ ? ) હે દેવાનુપ્રિય ! સાથ મેં યહ મી કહ્દીજિયે કિ સુકુમારિકા દારિકા કે સમાનાર્થ હમ કયા દ્રવ્ય દેવેં ( તણ સે સાગરદત્તે ત જિણદત્ત એવ વયાસી - એવં સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! સુમાલિયા દારિયા મમ એગા, એગજાયા રૂઢા જાવ કિમગણુણ પાસણયાણ ત નો સ્વલુ અહ રૂચ્છામિ, સુમાલિયાણ દારિયાણ સ્વળમત્તિ વિપ્પઓગ ત જહણ દેવાણુપ્પિયા ! સાગરદારણ મમ ધરજામાડણ મચ્છ, તો ણ અહ સાગરસ્સ સુમાલિય દલ્લ્યામિ ) સાગરદત્તણ ને જિનદત્ત સે તવ હસ પ્રકાર કહા - હે દેવાનુપ્રિય ! યહ સુકુમારિકા પુત્રી મેરે યહા એક હી લઢકી હૈ ઓર યહ એક હી ઉત્પન્ન હુઈ

છે, આ સંબન્ધ સારો છે, કન્યા તેમજ વરનો આ લગ્ન સંબન્ધ કુળ રૂપ અને ગુણોને અનુરૂપ છે તો તમે તમારી પુત્રી સુકુમારિકાને મારા પુત્ર સાગરને માટે આપો (તણ દેવાણુપ્પિયા ! કિં દલ્લ્યામો સુલ્લ સુમાલિયાણ ?) હે દેવાનુપ્રિય ! સાથે સાથે એ પણ અમને જણાવો કે સુકુમારી દારિકાના સમાનાર્થ અમે શુ દ્રવ્ય રૂપમા આપીએ ?

( તણ સે સાગરદત્તે ત જિણદત્ત એવ વયાસી એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! સુમાલિયા દારિયા મમ એગા એગ જાયા રૂઢા જાવ કિમગણુણ પાસણયાણ ત નો સ્વલુ અહ રૂચ્છામિ સુમાલિયાણ દારિયાણ સ્વળમત્તિ વિપ્પઓગ ત જહણ દેવાણુપ્પિયા ! સાગરદારણ મમ ધરજામાડણ મચ્છ, તો ણ અહ સાગરસ્સ દારગસ્સ સુમાલિય દલ્લ્યામિ ) ત્યારે સાગરદત્તે જિનદત્તને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! આ સુકુમારિકા દારિકા મારે એકની એક પુત્રી છે અને આ એક જ જન્મી છે

जिनदत्त सार्धसाहमेव=रक्ष्यमाणप्रकारेणागतीत्-हे देवानुप्रिय ! मण=कथय, किमा-  
गमनप्रयोजनम्=कस्मै प्रयोजनाय ममागतो भवान् ? ततः गच्छ स जिनदत्तः सार्ध  
वाह सागरदत्त सार्धसाहमेव=रक्ष्यमाणप्रकारेणागतीत्-एव गच्छ अहं हे देवानु  
प्रिय ! तत्र दृष्टितर=पुत्री, भद्राया आत्मनां सुकुमारिकां=सुकुमारिकानाम्नी  
सागरस्य=सागरनामकस्य भद्रपुत्रस्य भार्यात्वेन ' वरेमि ' वृणोमि=यान्त्रामि, यदि  
खलु त्वं जानीहि हे देवानुप्रिय ! ' जुत्त वा ' युक्तं वा=योग्यं वा-' एतत् कार्यं  
समुचितं भवति ' ति ' पत्त वा ' प्राप्तं वा=एतत् कार्यं कुलमर्यादामनुमाप्तं वा,

स्थविश्वस्थ पन चुके-तत्र विशिष्ट आसन पर शातिके साथ बैठे हुए उन  
जिनदत्त सार्धसाह से उसने इस प्रकार पूछा ।-( मण देवानुप्रिया !  
किमागमणप्रयोजन ) कहिये देवानुप्रिय ! यहा पधारने का आपका  
क्या प्रयोजन है ? किस प्रयोजन से आप यहा आये हैं-कहिये-( तणं  
से जिनदत्तसत्यवाहे सागरदत्त सत्यवाह एव वयासी-एव खलु अहं  
देवानुप्रिया ! तव धूय भद्राण अतिय सुमालिय सागरस्स भारियत्ताए  
वरेमि जइण जाणाह देवानुप्रिया ! जुत्त वा पत्त वा सलाहणिज्ज वा  
सरिसो वा सजोगो दिज्जउण सुमालिया सागरस्स ) जिनदत्त सार्धवा  
हने सागरदत्त सार्धसाहसे तब इस प्रकार कहा हे देवानुप्रिय ! मैं आपकी  
सुभद्रा की कुक्षिसे उत्पन्न हुई सुमालिका पुत्री को अपने पुत्र सागर की  
भार्या बनाना चाहता हूँ । यदि आप इसे स्वीकार करे कि यह कार्य  
योग्य है-उचित है-कुल मर्यादा के अनुसार है अथवा मेरा पुत्र आपकी

आ रीते तेभने कडेवा लाग्यो त्यारे तेओ उचित स्थाने जेसी गया अने  
आस्वस्थ विश्वस्थ थर्ग थूक्या त्यारे विशिष्ट आसन उपर शातिपूर्वक जेठेवा  
ते उनदत्त सार्धवाडने तेओ आ प्रभाओ कहु-( मण देवानुप्रिया ! किमागमण  
प्रयोजन ) हे देवानुप्रिय ! एतावे अही पधारवानी पाछण आपने शे डेतु  
छे ? क्या प्रयोजनथी आप अही आंव्या छे ?

( तण से जिनदत्त सत्यवाहे सागरदत्त सत्यवाह एव वयासी-एव खलु  
अहं देवानुप्रिया ! तव धूय भद्राण अतिय सुमालिय सागरस्स भारियत्ताए वरेमि  
जइण जाणाह देवानुप्रिया ! जुत्त वा पत्त वा सलाहणिज्ज वा सरिसो वा सजोगो  
दिज्जउण सुमालिया सागरस्स )

उनदत्त सार्धवाडे सागरदत्त सार्धवाडने त्यारे आ प्रभाओ कहु हे हे  
देवानुप्रिय ! हु तमारी सुभद्राना उदरथी जन्म पावेवी सुमालिका पुत्रीने भारी  
पुत्र सागरनी यत्नी जनाववा छव्छु छु आप जे भारी भागणी उचित सम  
जता छे, कुण-भयोहा योग्य तेमज भारी पुत्र तमारी माटे भोव्य

पात्र = 'कन्या योग्योऽय मत्पुत्रः सागर' इति, 'सलाहणिज्जं वा' श्लाघनीयं = प्रशसनीयं वा 'सरिसो वा सजोगो' सहगो वा संयोगः - अय कन्यावरयो वैवाहिकः सम्बन्धः कुलेन रूपेण गुणेन वा तुल्य इति, 'तो' तर्हि 'दिज्जउ' ददातु भगान् खलु सुकुमारिका दारिकां सागराय = मत्पुत्रायेतिभावः । ततः खलु हे देवानुप्रिय ! ब्रूहि - किं दत्त - किं दद्यां, शुल्क = समानार्थं द्रव्यं सुकुमारिकाया दारिकायाः ? ततः खलु स सागरदत्तः सार्ववादस्त जिनदत्तमेवमवादीत् - एव खलु हे देवानुप्रिय ! सुकुमारिका दारिका ममैका एकजाता = एकैवोत्पन्ना, तथा - इष्टा - अनुकूला, यावत् - कान्ता = ईप्सिता, प्रिया = प्रीतिपात्रा, मनोज्ञा = मनोगता तथा -

कन्या के योग्य है यह संबन्ध प्रशसनीय है, कन्या और घर का यह वैवाहिक संबन्ध कुल रूप और गुणों के अनुरूप है तो आप अपनी पुत्री सुकुमारिका को मेरे पुत्र सागर के लिये प्रदान कर दीजिये - (तएण देवाणुप्पिया ! किं दल्लयामो सुक्क सुमालियाए ?) हे देवानुप्रिय ! साथ में यह भी कह दीजिये कि सुकुमारिका दारिका के समानार्थ हम क्या द्रव्य दें (तएण से सागरदत्ते तं जिणदत्त एव वयासी - एव खलु देवाणुप्पिया ! सुमालिया दारिया मम एगा, एगजाया ईडा जाव किमगणुण पासणयाए त नो खलु अह इच्छामि, सुमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं त जइणं देवाणुप्पिया ! सागरदारए मम धरजामाउए भवइ, तो ण अह सागरस्स सुमालिय दल्लयामि) सागरदत्तए ने जिनदत्त से तब इस प्रकार कहा - हे देवानुप्रिय ! यह सुकुमारिका पुत्री मेरे यहां एक ही लड़की है और यह एक ही उत्पन्न हुई

छे, आ संबध सारे छे, ऊन्या तेमज वरने आ लग्न संबध पुण इय अने शुल्लोने अनुइय छे तो तमे तभारी पुत्री सुकुमारिकाने भार पुत्र सागरने भाटे आयो (तएण देवाणुप्पिया ! किं दल्लयामो सुक्क सुमालियाए ?) हे देवानुप्रिय ! साथे साथे ओ पणु अमने जइयो के सुकुमारी दारिकाना समानार्थ अमे शु द्रव्य इयमा आपीओ ?

(तएण से सागरदत्ते त जिणदत्त एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! सुमालिया दारिया मम एगा एग जाया ईडा जाव किमगणुण पासणयाए त नो खलु अह इच्छामि सुमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं त जइणं देवाणुप्पिया ! सागरदारए मम धरजामाउए भवइ, तो ण अह सागरस्स दारगस्स सुमालिय दल्लयामि) त्वादे सागरदत्ते जिनदत्तने आ प्रभावे उहु के हे देवानुप्रिय ! आ सुकुमारिका दारिका भारे ओकनी ओक पुत्री छे अने आ ओक ज जन्मी छे

मनोमा=मतसः स्थानभूता, किं यद्वा उदुम्बरपुष्पमिव 'उदुम्बरपुष्प केनापि  
 एषम्' इतिरत् भरणरिपयत्वेन सा दर्शना, किमह । पुन-दर्शनविषयतया, तत्-  
 तस्माद् नो खलु अहमिच्छामि सुकुमारिकाया दारिकायाः क्षणमपि विप्रयोगे-  
 वियोगम्, तत्=तस्माद् यदि खलु हे देवानुप्रिय । सागरदारको मम 'घरजामा  
 उप' गृहजामादकः=गृहवासीजागाता भवति 'तोण' तर्हि खलु अहं सागरस्य  
 दारकाय सुकुमारिका ददामि । ततः खलु स जिनदत्तः सार्थवाहः सागरदत्तेन  
 सार्थवाहेनैव मुक्त सन् यगैव स्वकं गृहं तत्रोपागच्छति, उपागत्य सागरदारकं=  
 स्वपुत्रं शब्दयति, शब्दयित्वा परमादीत्-एव खलु हे पुत्र । सागरदत्तः सार्थ  
 वाहो मम=मां प्रति, 'सम्बन्धसामान्ये पत्नी' एवं=प्रथमप्रकारेण अवादीत्-  
 एव खलु हे देवानुप्रिय । सुकुमारिका दारिका ममैका एक जाता इष्टा 'त चेव'

है । यह मेरे लिये ईष्ट याचतु मनोम है-कान्त है, प्रिय है और मनोज्ञ  
 है । अनुकूल होने से इष्ट, ईप्सित होने से कान्त प्रीतिपात्र होने से  
 प्रिय मनको रुचने वाली होने से मनोज्ञ एवं मन का स्थान भूत होने  
 से मनोज्ञ है । ज्यादा क्या कहूँ यह तो हमें उदुम्बर पुष्प के समान  
 दर्शन दुर्लभ थी-सुनने की तो बात ही क्या । अतः मैं इसे देना नहीं  
 चाहता हूँ । कारण इस सुकुमारिका दारिका के बिना मैं एक क्षण भी  
 नहीं रह सकता हूँ इसलिए हे देवानुप्रिय । सागर यदि घरजमाई बन  
 कर रहना चाहें तो मैं उन्हें यह अपनी सुकुमारिका पुत्री दे सकता हूँ ।  
 ( तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेण सत्थवाहेण एव वुत्ते समाणे  
 जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरदारगं सहावेइ,  
 सहावित्ता एव वयासी-एव खलु पुत्ता । सागरदत्ते सत्थवाहे मम एव

आ भने छष्ट याचतु मनोम छे-अटले डे कात छे, प्रिय छे, अने मनोम छे  
 अनुकूल होवा भइल छष्ट, ईप्सित होवाथी कात, प्रीतिपात्र होवा भइल प्रिय  
 अने मनने गमे अवी होवाथी मनोज्ञ तथा मनने आश्रय होवाथी मनोम  
 छे वधारे शुं कहु । आ तो अभने उदुम्बर पुष्पनी जेम दर्शन-दुर्लभ डती  
 सालजवानी तो बात न शी करवी । अथी आने हु आपवा छिछतो नथी  
 करेछु डे अना वगरे हु क्षणवारे पथु रेही शकतो नथी अटला भाटे डे देवा  
 नुप्रिय । सागर जे घर नभाई थधने भारी पासे रहैवा छिछतो डाय तो हु  
 आ भारी सुकुमारीका पुत्री तेभने आपी शक्नु तेम छु

( तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्ते णं सत्थवाहे ण एव वुत्ते समाणे  
 जेणेवं सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदारगं सहावेइ, सहावित्ता  
 एव वयासी-एव खलु पुत्ता । सागरदत्ते सत्थवाहे मम



तदेव=पूर्वोक्तवर्णनमेवात्र बोध्य यावत्-तस्माद् नो खल्वहमिच्छामि सुकुमारिकाया  
दारिकायाः क्षणमपि विप्रयोग, तत्=तस्माद् यदि खलु सागरदारको मम 'घर-  
जामाउए' गृहजामातृकाः=गृहवासी जामाताभवति, तर्हि ददामि । ततः खलु त  
सागरको दारको जिनदत्तेन तार्थवाहेनैवमुक्तः तन् तूष्णीकः=मौनावलम्बी  
सन् संतिष्ठते ।

वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया । सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया  
इट्ठा त चेव जइण सागरदारण मम घरजमाउए भवइ ता दलयामि )  
इस प्रकार सागरदत्त सार्थवहके कहे जाने पर जिनदत्त सार्थवाह  
जहा अपना घर था वहाँ आया-वहाँ आकर उसने अपने सागर  
पुत्र को बुलाया । बुला कर फिर उससे उसने ऐसा कहा-हे पुत्र-साग-  
रदत्त सार्थवाह ने मुझसे ऐसा कहा है कि आपका पुत्र सागर यदि मेरे  
घर जमाई बन कर रहना चाहें तो मैं अपनी सुकुमारिका उन्हें दे सकता  
हूँ । उनका घरजमाई बनाने का कारण यह है कि यह सुकुमारिका पुत्र  
पुत्री उसके एक ही पुत्री है-और एक ही उत्पन्न हुई हैं । यह उसे बहुत  
ही अधिक इष्ट यावत् मनोम है । इस तरह सागरदत्त का कहा हुआ  
समस्त कथन जिनदत्त ने अपने पुत्र सागर को सुना दिया । इसलिये  
वह उसका एक क्षण भी विप्रयोग सहन नहीं कर सकता है । अतः वह

देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा त चेव जइण सागर-  
दारण मम घरजमाउए भवइ ता दलयामि )

आ रीने अनदत्त सार्थवाड तेमनी आ वात साखणीने ते अनदत्त  
सार्थवाड न्या पोतानु घर डतु त्या आव्या, त्या आवीने तेले पोताना  
सागरपुत्रने ओलाव्यो ओलावीने तेले तेने आ प्रभावे कछु के डे पुत्र ।  
सागरदत्त सार्थवाडे भने आ प्रभावे कछु छे के तभारे पुत्र सागर जे भारे  
घर नभार्थ रडेवा कणूलतो डाय तो हु भारी पुत्री सुकुमारिका तेमने आपवा  
तेयार छु तेओ तमने घर नभार्थ जनाववा ओटला भाटे धिछे छे के सुकु-  
मारिका दारिका तेमनी ओकनी ओक पुत्री छे ते तेमने अतीव धष्ट यावत् मनोम  
छे आ रीते सागरदत्ते जे कछु कछु डतु ते जधु तेमले पोताना पुत्र सागर  
आगण रणू कछु अगे छेवटे कछु के ओटला भाटे न ते ओक क्षण पण  
पोतानी पुत्रीने विप्रयोग सहि शकतो नथी तमने ते आ कारखथी न घर  
नभार्थ जनाववा धिछे छे

मनोमा=मतसः स्थानभूता, किं यद्वा उद्ग्वरपुष्पमिव 'उद्ग्वरपुष्पं केनापि  
 एष्टुं' इतिरत्नश्रवणविषयत्वेन सा दुर्भा, किमङ्ग ! पुन-दर्शनविषयतया, तत्-  
 तस्माद् नो खलु अहमिच्छामि सुकुमारिकाया दारिकायाः क्षणमपि विप्रयोग-  
 वियोगम्, तत्=तस्माद् यदि खलु हे देवानुप्रिय ! सागरदारको मम 'घरजामा  
 उंए' गृहजामावृका=गृहवासीजागता मयति 'तोण' तर्हि खलु अहं सागराय  
 दारकाय सुकुमारिका ददामि । ततः खलु स जिनदत्तः सार्थवाहः सागरदत्तेन  
 सार्थवाहेनैव मुक्त सन् यत्रैव स्वरु गृह तत्रोपागच्छति, उपागत्य सगरदारकं=  
 स्वपुत्र शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-एव खलु हे पुत्र ! सगरदत्तः सार्थ-  
 वाहो मम=मा मति, 'सम्बन्धसामान्ये पृष्ठी' एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-  
 एव खलु हे देवानुप्रिय ! सुकुमारिका दारिका ममैका एक जाता इष्टा 'त चेव'

है । यह मेरे लिये ईष्ट यावत् मनोम है-कान्त है, प्रिय है और मनोज  
 है । अनुकूल होने से ईष्ट, ईप्सित होने से कान्त प्रीतिपात्र होने से  
 प्रिय मनको रुचने वाली होने से मनोज एव मन का स्थान भूत होने  
 से मनोज है । ज्यादा क्या कहूँ यह तो हमें उद्ग्वर पुष्प के समान  
 दर्शन दुर्लभ थी-सुनने की तो बात ही क्या । अतः मैं इसे देना नहीं  
 चाहता हूँ । कारण इस सुकुमारिका दारिका के बिना मैं एक क्षण भी  
 नहीं रह सकता हूँ इसलिए हे देवानुप्रिय ! सागर यदि घरजमाई बन  
 कर रहना चाहे तो मैं उन्हें यह अपनी सुकुमारिका पुत्री दे सकता हूँ ।  
 ( तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेण सत्थवाहेण एव वुत्ते समाणे  
 जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरदारगं सदावेइ,  
 सदावित्ता एव वयासी-एव खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे मम एव

आ मने छष्ट यावत् मनोम छे-अटले डे कात छे, प्रिय छे, अने मनोम छे  
 अनुकूल होवा भदल छष्ट, छप्सित होवाथी कात, प्रीतिपात्र होवा भदल प्रिय  
 अने मनने गमे अवी होवाथी मनोज तथा मनने आश्रय होवाथी मनोम  
 छे वधारे शु कहु ! आ तो अभने उद्ग्वर पुष्पनी जेम दर्शन-दुर्लभ हुती  
 सालणवानी तो वात न शी करवी । अथी आने हु आपवा छिछतो नथी  
 कारण डे अना वगेर हु क्षणवार पण रही शकतो नथी अटला माटे डे देवा  
 नुप्रिय ! सागर जे घर नमाई थमने भारी पासो रहैवा छिछतो होय तो हु  
 आ भारी सुकुमारीका पुत्री तेमने आपी शकु तेम छु

( तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्ते ण सत्थवाहे ण एव वुत्ते समाणे  
 जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदारगं सदावेइ, सदावित्ता  
 एव वयासी-एव खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे मम एव

तदेव=पूर्वोक्तवर्णनमेवात्रोध्य यावत्-तस्माद् नो खल्वहमिच्छामि सुकुमारिकाया  
दारिकायाः क्षणमपि विप्रयोग, तत्=तस्माद् यदि खलु सागरदारको मम 'घर-  
जामाउए' गृहजामातृकाः=गृहवासी जामाताभवति, तर्हि ददामि । ततः खलु त  
सागरको दारको जिनदत्तेन तार्थवाहेनैवमुक्तः तन् तूष्णीकः=मौनावलम्बी  
सन् संतिष्ठते ।

वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया । सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया  
इहा त चेव जइण सागरदारए मम घरजमाउए भवइ ता दलयामि )  
इम प्रकार सागरदत्त सार्थवाहके कहे जाने पर जिनदत्त सार्थवाह  
जहा अपना घर था वहां आया-वहां आकर उसने अपने सागेर  
पुत्र को बुलाया । बुला कर फिर उससे उसने ऐसा कहा-हे पुत्र-साग-  
रदत्त सार्थवाह ने मुझसे ऐसा कहा है कि आपका पुत्र सागर यदि मेरे  
घर जमाई बन कर रहना चाहें तो मैं अपनी सुकुमारिका उन्हें दे सकता  
हूँ । उनका घरजमाई बनाने का कारण यह है कि यह सुकुमारिका पुत्र  
पुत्री उसके एक ही पुत्री है-और एक ही उत्पन्न हुई हैं । यह उसे बहुत  
ही अधिक इष्ट यावत् मनोम है । इस तरह सागरदत्त का कहा हुआ  
समस्त कथन जिनदत्त ने अपने पुत्र सागर को सुना दिया । इसलिये  
वह उसका एक क्षण भी विप्रयोग सहन नहीं कर सकता है । अतः वह

देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया इहा त चेव जइण सागर-  
दारए मम घरजमाउए भवइ ता दलयामि )

आ रीने अनदत्त सार्थवाड तेमनी आ वात साबणीने ते अनदत्त  
सार्थवाड न्या पोतानु घर डतु त्या आव्या. त्या आवीने तेले पोताना  
सागरपुत्रने जोलाव्ये। जोलावीने तेले तेने आ प्रभाले कहु के डे पुत्र !  
सागरदत्त सार्थवाडे भने आ प्रभाले कहु छे के तमारो पुत्र सागर ने भारो  
घर जमाई रहेवा कपूलतो डाय तो हु भारी पुत्री सुकुमारिका तेमने आपवा  
तैयार छु तेओ तेमने घर जमाई जनाववा ओटला भाटे छिछे छे के सुकु-  
मारिका दारिका तेमनी ओकनी ओक पुत्री छे ते तेमने अतीव इष्ट यावत् मनोम  
छे आ रीते सागरदत्ते ने कछ कहु डतु ते पधु तेमले पोताना पुत्र सागर  
आगण रणू कथु अगे छेवटे कहु के ओटला भाटे ज ते ओक क्षण पण  
पोतानी पुत्रीने विप्रयोग सहि शकतो नथी तेमने ते आ कारणथी ज घर  
जमाई जनाववा मनोमे ते

मनोमा=मतसः स्यान्भूता, किं यद्वा उद्धरपुष्पमिव 'उद्धरपुष्प केनापि  
 एष्टम्' इति यत् श्रवणमिदमेतन्मा दुर्भा, किमहम् । पुनर्दर्शनविषयतया, तत्=  
 तस्माद् नो खलु अहमिच्छामि सुकुमारिकाया दारिकायाः क्षणमपि विप्रयोगं=  
 वियोगम्, तत्=तस्माद् यदि खलु हे देवानुप्रिय ! सागरदारको मम 'घरजामा  
 उप' गृहजामावृकः=गृहवासीजामाता भवति 'तोण' तर्हि खलु अहं सागरात्  
 दारकाय सुकुमारिका ददामि । ततः खलु स जिणदत्तः सार्यवाहः सागरदत्तेन  
 सार्यवाहेनैव मुक्तः सन् यज्ञेय स्वक गृह तत्रोपागच्छति, उपागत्य सागरदारकं=  
 स्वपुत्रं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमादीत्-एव खलु हे पुत्र ! सागरदत्तः सार्य  
 वाहो मम=मां प्रति, 'सम्बन्धसामान्ये पत्नी' एव=वध्यमाणमकारेण अवादीत्-  
 एव खलु हे देवानुप्रिय ! सुकुमारिका दारिका ममैका एक जाता इष्टा 'त वेव'

है। यह मेरे लिये ईष्ट यावत् मनोम है-कान्त है, प्रिय है और मनोज  
 है। अनुकूल होने से इष्ट, ईप्सित होने से कान्त प्रीतिपात्र होने से  
 प्रिय मनको रुचने वाली होने से मनोज एव मन का स्थान भूत होने  
 से मनोज है। ज्यादा क्या कहूँ यह तो हमें उद्धर पुष्प के समान  
 दर्शन दुर्लभ थी-सुनने की तो बात ही क्या। अतः मैं इसे देना नहीं  
 चाहता हूँ। कारण इस सुकुमारिका दारिका के बिना मैं एक क्षण भी  
 नहीं रह सकता हूँ इसलिए हे देवानुप्रिय ! सागर यदि घरजमाई बन  
 कर रहना चाहे तो मैं उन्हें यह अपनी सुकुमारिका पुत्री दे सकता हूँ।  
 (तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेण सत्थवाहेण एव वुत्ते समाणे  
 जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरदारगं सदावेइ,  
 सदावित्ता एव वयासी-एव खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे मम एव

आ मने छष्ट यावत् मनोम छे-अटले डे कात छे, प्रिय छे, अने मनोम छे  
 अनुकूल होवा भदल छष्ट, छप्पित होवाथी कात, प्रीतिपात्र होवा भदल प्रिय  
 अने मनने गमे अवी होवाथी मनोज तथा मनने आश्रय होवाथी मनोम  
 छे वधारे शु ठहु ! आ तो अभने उद्धर पुष्पनी जेम दर्शन-दुर्लभ डती  
 सालणवानी तो बात न शी करवी ! अथी आने हु आपवा छिछतो नथी  
 कारण के अना वगरे हु क्षणवार पणु रह्यो शकतो नथी अटला भाटे डे देवा  
 अनुप्रिय ! सागर जे घर नभाई थछने भारी पासे रह्यो छिछतो होय तो हु  
 आ भारी सुकुमारीका पुत्री तेमने आपी शकु तेम छु

(तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्ते ण सत्थवाहे ण एव वुत्ते समाणे  
 जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदारगं सदावेइ, सदावित्ता  
 एव वयासी-एव खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे मम

सम्मानयति समान्य सागर दारक स्नात यावत् सर्वालङ्कारविभूषित कारयति,  
कारयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनीं शिविकां दूरोहयति=आरोहयति, दूरोह मित्रज्ञाति  
स्वजन-सम्प्रन्धिभिर्यावत् परिवृतः सर्वद्वर्चा सकलविभवेन स्वकाद् गृहाद् निर्ग-  
च्छति, निर्गत्य चम्पाया नगर्या म यमन्येन=मध्येभूत्वा यत्रैव सागरदत्तस्य गृह  
तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य शिविकातः 'पञ्चोरुहावेह' प्रत्यवरोहयति, सागरदारकं  
स्वपुत्र प्रत्यवतारयति, प्रत्यवरोह सागरक दारक सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य उप  
नयति=ममीपमानयति ।

ततः खलु सागरदत्तः सार्थवाहो विपुलमशन पान खात्रं स्वाद्य=चतुर्विधमाहारम्  
उपस्कारयति=निष्पादयति, उपस्कार्य यावत् = मित्रादिसहित जिनदत्तमामन्य  
भोजयित्वा, सत्कृत्य, समानयति, समान्य सागरक दारक सुकुमारिकया दारिकाया  
सार्थ 'पट्टय' पट्टक 'दुरूहावेह' दूरोहयति=आरोहयति, दूरुह श्वेतपीतः=

सवका वस्त्रादिक से सत्कार किया सत्कार करके फिर उनका स्वागत  
यचानादिको द्वारा सम्मान किया- । सम्मान कर के बाद में उसने अपने  
सागरपुत्रको स्नान कराया- । स्नान कराकर उसने उसे समस्त अल-  
कारो से विभूषित कराया । विभूषित कराकर बाद में उसने उसे पुरुष  
सहस्रवाहिनी शिविका पर चढ़ाया चढ़ाकर मित्र, ज्ञाति, स्वजन सबधियो  
को साथ लेकर फिर वह सकल विभवके अनुसार अपने घर से निकला  
-निकलकर चपानगरी के बीचो बीच से होता हुआ सागरदत्त का जहाँ  
घर था वहाँ पहुँचा । ( उवागच्छित्ता सीयाओ पञ्चोरुहावेह, पञ्चोरु-  
हावित्ता सागरग दारग सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेह, तएण, सागरदत्ते  
सत्थवाहे विपुल असणपाण खाइम साइम उवक्खडावेह, उवक्खडावित्ता  
जाव सम्माणत्ता सागरग दारग सूमालियाए दारियाए सद्धि पट्टय

डीने अधाने वओ वगेरे आधीने सत्कार कथी, सत्कार करीने तेहे तेमनु स्वागत  
वयने। वडे सम्मान कथुं सम्मान कथी आह तेहे पोताना सागर पुत्रने स्नान  
करावु स्नान करावीने तेहे तेने अधा अवजारोथी शणुगार्थी, शणुगारीने  
तेहे तेने पुश्च-सहस्रवाहिनी पालणीमा जेसाउथे। त्याग्यजी मित्र, ज्ञाति,  
स्वजन सबधीओने साथे लधने ते पोताना सभूषुं वैभवनी साथे पोताना  
घेरथी नीकज्ये-नीकणीने थपा नगरीनी वय्ये थधने ते न्या सागरदत्तनु  
घर डतुं त्या पडाव्ये।

( उवागच्छित्ता सीयाओ पञ्चोरुहावेह, पञ्चोरुहावित्ता सागरग दारग सा-  
गरदत्तस्स सत्थ० उवणेह, तएण, सागरदत्ते सत्थवाहे विपुलअसणपाणखाइम  
साइम उवक्खडावेह, उवक्खडावित्ता जाव सम्माणत्ता सागरग दारग सूमालियाए



તતઃ સલુ નિનત્તઃ તાર્થવાદો ડ્યપદા વદોતિત્ત ધ્રોમને=શુભકાળે,  
 તિથિકરણનક્ષત્રગુહર્ત વિપુલપશન પાતં ગાય શ્વાયમુપસ્તાસ્યતિ, નિપાદયતિ,  
 ઉપસ્કાર્ય મિત્રજ્ઞાતિમૃતિનામન્ત્રયતિ, આમન્ત્ર્ય 'જાવ સમ્માણેઃ' ગાત્વ સમ્મા  
 નયતિ ભોજયતિ, ભોજયિત્વા ગ્તાદિગિ મ કરોતિ, મદદૃશ્ય સ્વાગતચનાદિના  
 તુમ્હે ઘરજમાઈ ઘનાના વાહતા છે । ( તણં સે સાગરણ દારણ જિણદસે  
 ણ સત્થવાહેણં ણ વુત્તે સમાણે તુમિણીણ સચ્ચિદ્દ, તણં જિણદસે સત્થ  
 વાહે અન્નયા કયાઢ સોહણસિ તિહિકરણદિવસણ સ્વચ્છામુહસસિ  
 વિહલ અસણ પાન પાદમ સાદમ ઉવચ્છવડાવેઢ, ઉવચ્છવડાવિત્તા  
 મિત્તણાઢ આમતેઢ, જાવ સમ્માણિત્તા સાગર દારણ ણાય જાવ સવ્વા  
 લકારવિભૂસિય કરેઢ, કરિત્તા પુરિમમત્તસ્મ પાપિણિ સીય દુરુહાવેઢ,  
 દુરુહાવિત્તા મિત્તણાઢ જાવ સપરિવુદે સચ્ચિદ્દીણ સાઓ ગિહાઓ નિગ  
 ચ્છઢ નિગચ્છિત્તા ચપા નયરિ મજ્ઞ મજ્ઞેણ જેણેવ સાગરદત્તસ્સ ગિહે  
 તેણેવ ઉવાગચ્છઢ ) જિનદત્ત સાર્થવાદ કે દ્વારા હસ પ્રકાર કરા જાને  
 પર વહ સોગર દારક સુપચાપ રહ ગયા ડમને છુટ્ત મી ઉત્તર નહોં દિયા ।  
 એક દિન જિનદત્ત ને શુભ, તિથિ કરણ, દિવસ નક્ષત્ર મુહૂર્ત્તમેં વિપુલ  
 માત્રા મેં અશન, પાન, શ્વાદ્ય ઓર શ્વાદ્યરૂપ ચતુર્વિધ આહાર ઘનવાયા  
 -ઘનવાકર ડસને અપને મિત્ર જ્ઞાતિ આદિમન્થુઓં કો આમત્રિત કિયા  
 આમત્રિત કરકે ફિર ડસને ડન સબકો ભોજનકરાયા-ભોજન કરાકર

( તણં સે સાગરણ દારણ જિણદસે ણ સત્થવાહે ણ વુત્તે સમાણે તુમિ  
 ણીણ સચ્ચિદ્દ, તણં જિણદસે સત્થવાહે અન્નયા કયાઢ સોહણસિ તિહિકરણદિવ  
 સણવચ્છમુહસસિ, વિહલ અસણપાન શ્વાદમ સાદમ ઉવચ્છવડાવેઢ, ઉવચ્છવડાવિત્તા  
 મિત્તણાઈ આમતેઢ, જાવ સમ્માણિત્તા સાગર દારણ ણાય જાવ સવ્વાલકારવિભૂ  
 સિયં કરેઢ, કરિત્તા પુરિસસહસ્પવાહિણિ સીય દુરુહાવેઢ, દુરુહાવિત્તા મિત્તણાઈ  
 જાવ સપરિવુદ સચ્ચિદ્દીણ સાઓ ગિહાઓ નિગચ્છઢ, નિગચ્છિત્તા ચપા નયરિ  
 મજ્ઞ મજ્ઞેણ જેણેવ સાગરદત્તસ્સ ગિહે તેણેવ ઉવાગચ્છઢ )

અનહત્ત સાર્થવાહ વડે આ પ્રમાણે કહેવાયેલો. સાગર પુત્ર એકદમ યુવ  
 થઈને બેસી જ રહ્યો તેણે કોઈ પણ જાતનો જવાબ આપ્યો નહિ એક દિવસ  
 અનહત્તે શુભતિથિ, કરણ, દિવસ, નક્ષત્ર મુહૂર્ત્તમા પુષ્કળ પ્રમાણુમા અશન,  
 પાન, આદ્ય અને શ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતનો આહાર બનાવડાવ્યો બનાવડાવીને  
 તેણે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે સબધીઓને આમત્રિત કર્યા  
 આમત્રિત કરીને તેણે તે બધા આવેલા સબધીઓને જમાડ્યા જમા

मूलम्—तएण सागरदारए सूमालियाए दारियाए इम  
 एयारूवं पाणिफास पडिसंवेदेइ से जहा नामए असिपत्तेइ  
 वा जाव सुम्पुरेइ वा एत्तो अणिट्टतराए चेव० पाणिफासं  
 पडिसंवेदेइ, तएणं से सागरए अकामए अवसव्वसे सुहु-  
 त्तमित्तं सच्चिट्ठइ, तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स  
 दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ० विउलेण असणपाणखा-  
 इमसाइमं पुप्फवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसंज्जइ, तएणं  
 सागरए दारए सूमालियाए सद्धि जेणेव वासघरे तेणेव उवाग-  
 गच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धि तलिंगंसि  
 निवज्जइ, तएण से सागरए दारियाए सूमालियाए दारि-  
 याए इमं एयारूव अगफास पडिसवेदेइ, से जहा नामए  
 असिपत्तेइ वा जाव अमणामयराग चेव अगफास पच्चणु-  
 वभवमाणे विहरइ, तएणं से सागरए अगफास असहमाणे  
 अवसव्वसे सुहुत्तमित्तं सच्चिट्ठइ, तएण से सागरदारए सूमा-  
 लियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए  
 पासोउ उट्टेइ, उट्टित्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवाग-  
 च्छइ, उवागच्छित्ता सयणीयसि निवज्जइ, तएणं सूमालिया  
 दारिया तओ सुहुत्ततरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइ-  
 मणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्टेइ, उट्टित्ता  
 जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरस्स  
 पासे णवज्जइ, तएण से सागरदारए सूमालियाए दारियाए

રાત્રતસૌર્ય કલશે = તારિર્ણર્ણદેમ્નયતિ = મનયતિ, મંજઞયિત્વા અગ્નિહોમ  
કારયતિ, કારયિત્વા માગરં દારુ મુકુમારિકાયા દારિયાયા પાર્ણિ પ્રાદયતિ ॥ ૮ ॥

દુરુહાવેદ, દુરુહાવિત્તા સેયોપીર્ણદિ કલસેદિ મંજઞાવેદ, મંજઞાવિત્તા  
અગ્નિહોમ કરાવેદ, કરાવિત્તા સાગર દારય મૂમાલિયાણ દારિયાણ પાર્ણિ  
ગિણ્દાવેદ ) વહા પહુંચકર ઉસને અપને પુત્ર સાગર કો પાલત્રી સે નીચે  
ઉતારા ઓર ઉતારકર સાગરદત્ત સાર્થવાદ કે પાસ ઉસે લેખાયા । સાગ  
રદત્ત સાર્થવાદને ખી પહિલેસે હી ત્રિપુલમાત્રા મેં અશન, પાન, ખાદ્ય,  
અન્વ સ્વાગ્રહ્ય ચતુર્વિધ આહાર તૈયાર કરવાલિયો થા મો ઉમસે મિત્રાદિ  
સહિત જિનદત્ત સાર્થવાદ કો આનંદ કે સાથ ગિલાયા ગિલાકર સબકા  
સત્કાર કિયા સન્માન કિયા । સત્કાર સન્માન કરને કે વાદ ફિર  
સાગરદત્તને સાગર દારુ કો અપની પુત્રી મુકુમારિકા કે સાથ એક  
પટ્ટક પર બેઠાયા-બેઠાકર સુવર્ણ ચાંદી કે કલશોસે ઉનકા અભિષેક  
કરાયા અભિષેક હો જાને કે વાદ અગ્નિહોમ કરાયા । અગ્નિહોમ જબ  
હો ચુકા તબ સાગરદત્તને અપની પુત્રી મુકુમારિકા કા સાગર કે રાથ મેં  
હસ્તમિલાપ કિયા-અર્થાત્ લગ્ન કર દિયા ॥ સૂ. ૮ ॥

દારિયાણ સદિ પટ્ય, દુરુહાવેદ, દુરુહાવિત્તા સેયોપીર્ણદિ કલસેદિ મંજઞાવેદ,  
મંજઞાવિત્તા અગ્નિહોમ કરાવેદ, કરાવિત્તા સાગરદારય મૂમાલિયાણ દારિયાણ  
પાર્ણિ ગિણ્દાવેદ )

ત્યા પહેચીને તેણે પોતાના પુત્ર સાગરને પાલખીમાથી નીચે ઉતાર્યો  
અને ઉતારીને સાગરદત્ત સાર્થવાહની પાસે લઈ ગયો । સાગરદત્ત સાર્થવાહ  
પણ પહેલેથી જ પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્નાન રૂપ આર  
ભતનો આહાર તૈયાર કરાવીને રાખ્યો હતો । તેણે મિત્ર વગેરે લોકોની સાથે  
જીનદત્ત સાર્થવાહને આનંદની સાથે જમાડ્યા અને ત્યારપછી તેણે સૌનો  
સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યો । સત્કાર અને સન્માન કર્યા બાદ સાગરદત્તે સાગર  
દારકને પોતાની પુત્રી મુકુમારિકાની સાથે એક પટ્ટક ઉપર બેસાડ્યો । બેસાડીને  
સોના-ચાંદીના કળશોથી તેમનો અભિષેક કરાવડાવ્યો । અભિષેકનું કામ પૂરું  
થયા બાદ તેણે અગ્નિહોમ કરાવ્યો । અગ્નિહોમની વિધિ પૂરી થઈ ગઈ ત્યારે  
સાગરદત્તે પોતાની પુત્રી મુકુમારિકાનો સાગરની સાથે હસ્તમેળાપ કરાવી દીધો ।  
એટલે કે લગ્ન કરાવી દીધા ॥ સૂ. ૮ ॥

मूलम्—तएण सागरदारए सूमालियाए दारियाए इम  
 एयारूवं पाणिफास पडिसंवेदेइ से जहा नामए असिपत्तेइ  
 वा जाव मुम्मुरेइ वा एत्तो अणिट्ठतराए चेव० पाणिफासं  
 पडिसंवेदेइ, तएणं से सागरए अकामए अवसव्वसे मुहु-  
 त्तमित्तं सचिट्ठइ, तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स  
 दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ० विउलेण असणपाणखा-  
 इमसाइमं पुप्फेवत्थे जाव सम्माणेत्ता पडिविसंज्जइ, तएणं  
 सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासघरे तेणेव उवाग-  
 गच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिंगंसि  
 निवज्जइ, तएण से सागरए दारियाए सूमालियाए दारि-  
 याए इमं एयारूव अंगफासं पडिसंवेदेइ, से जहा नामए  
 असिपत्तेइ वा जाव अमणामयराग चेव अंगफास पच्चणु-  
 वभवमाणे विहरइ, तएणं से सागरए अंगफास असहमाणे  
 अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं सचिट्ठइ, तएण से सागरदारए सूमा-  
 लिय दारिय सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए  
 पासाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवाग-  
 च्छइ, उवागच्छित्ता सयणीयसि निवज्जइ, तएणं सूमालिया  
 दारिया तओ मुहुत्ततरस्स पडिवुच्चा समाणी पइव्वया पइ-  
 मणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तंलिमाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता  
 जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरस्स  
 पासे पुवज्जइ, तएण से सागरदारए सूमालियाए दारियाए

तुच्चं पि इमं एयारूपं अंगफासं पडिसंवेदेह जाव अकामए  
अवसव्वसे सुहुत्तमित्तं संधिद्वेह, तएणं से सागरदारणसूमा-  
लियं दारियं सुहपमुत्तं जाणित्तासयणिज्जाओ उट्टेह उट्टित्ता  
वासघरस्स दार विहाडेह विहाडित्ता मारामुक्के विव काए  
जामेव दिसिं पाउव्वभूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू० १॥

टीका—‘तएणं’ इत्यादि । ततः खलु सागरदारणः सुकुमारिकाया दारि-  
काया इमेतद्रूप=रक्ष्यमाणप्रकार पाणिस्पर्श=करस्पर्श प्रतिसंवेदयति=अनुभवति,  
धीदृशः स करस्पर्श इति सदृष्टान्तमाह—‘से जहानामए’ इत्यादि । तद् यथा  
नामकम्=यथा दृष्टान्तम्-दृष्टान्तं प्रदर्शयति—‘असिपत्तेह वा’ इत्यादि । असि-  
पत्रमिति वा=असिपत्र-खड्गः, यथा खड्गधारायाः स्पर्शः सोढुमशक्यस्तद्वत् सुकु-  
मारिका दारिकायाः करस्पर्शं प्रतिसंवेद्यत इति भावः । ‘जाव मुग्गुरे इ वा०’  
यावत् मुग्गुरेति वा=अत्र यावत् करणादिद बोध्यम्—‘करपत्तेह वा सुरपत्तेह वा

‘तएण सागरदारण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके घाट—अर्थात् सागरदारकने जय हस्तमिलाए  
क्रिया तय (सागरदारण) उस सागर को (सूमालियाए दारियाए) सुकु-  
मारिकादारिकाका (पाणिपास) वह हस्तका स्पर्श (हम एयारूप पडिसवे-  
देह) इस प्रकार से लगा (से जहा नामए असिपत्तेह वा जाव मुग्गुरे-  
इवा, एत्तो अणिद्वत्तराए चेव० पाणिफासं पडिसवेदेह) जैसे वह  
असिपत्र तलवार का स्पर्श हो यावत् अग्नि कणमिश्रित भस्म का स्पर्श  
हो । यहा यावत् शब्दसे “कर पत्तेह” वा खुर पत्तेहवा, कलत्र चीरिया

‘तएण सागरदारण’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्वारपणी ओटले के सागरदारके व्यापे हस्तमेजाए कथी त्वारे  
(सागरदारण) ते सागरने (सूमालियाए दारियाए) सुकुमार दारिकाने (पाणि  
पास) ते हाथने स्पर्श (इमएया रूप पडिसवेदेह) आ प्रभाणे लाये के  
(से जहा नामए असि पत्तेह वा जाव मुग्गुरेइ वा, एत्तो अणिद्वत्तराए चेव  
पाणिफासं पडिसवेदेह)

लाये ते असिपत्र-तलवार-ने स्पर्श न होय, यावत् अग्निकण मिश्रित  
भस्मने स्पर्श न होय अर्ही ‘यावत्’ शब्दही

(करपत्तेह वा खुरपत्तेह वा, कलत्रचीरियापत्तेह वा सत्ति



કલંચીરિયાપત્તેઃ વા સત્તિઅગ્નેઃ વા કોતગ્નેઃ વા તોમરગ્નેઃ વા મિંદિમાલગ્નેઃ  
વા સૂચિકલાવણઃ વા વિચ્છુયડકેઃ વા કપિકચ્છુઃ વા હગાલેઃ વા મુમ્મુરેઃ વા  
અચ્ચોઃ વા જાલેઃ વા આલાઃ વા સુદાગણીઃ વા ભવેયારુવેસિયા ? નો ઇણદ્વે  
સમદ્વે, કરપત્રમિતિ વા હુરપત્રમિતિ વા કદમ્બચીરિકાપત્રમિતિ વા શક્ત્યગ્રમિતિ  
વા કુન્તાગ્રમિતિ વા તોમરાગ્રમિતિ વા મિન્દિપાલાગ્રમિતિ વા વૃથિકદશ્વ ઇતિ વા  
કપિકચ્છુરિતિ વા અદ્ધાર ઇતિ વા મુર્મુર ઇતિ વા અર્ચિરિતિ વા જ્વાલેતિ વા, અલાતમિતિ  
વા શુદ્ધાગ્નિરિતિ વા ભવેદેતદ્રૂપ - સ્યાત્ ? નાયમર્યઃ સમર્યઃ, ઇતિ । તત્ર કરપત્ર=  
કકચં ' કરવત્ ' ઇતિ પ્રસિદ્ધ હુરપત્ર= ' ઉસ્તરા ' ઇતિ પ્રસિદ્ધ, કદમ્બચી-  
રિકાપત્ર=કદમ્બચીરિકા-તૃણવિશેષ, અમ્યા અગ્રભાગોઽતિતીક્ષ્ણો ભવતિ તસ્ય  
પત્ર, શક્તિઃ=શસ્ત્રવિશેષઃ-ત્રિશૂલ વા તસ્યા અગ્રભાગઃ સ્વ કુન્તઃ ' માલા ' ઇતિ  
પ્રસિદ્ધ શસ્ત્રવિશેષઃ, તદગ્રભાગઃ, તોમરઃ=વાણ વિશેષસ્તદગ્રભાગ, મિન્દિપાલઃ=  
શસ્ત્રવિશેષઃ સૂચીકલાપકં સૂચીસમૂહસ્તસ્યાગ્રભાગઃ, વૃથિકદશ્વઃ=વૃથિક કષ્ટકઃ,  
કપિકચ્છુઃ-સ્વર્જુકારી વનસ્પતિવિશેષઃ, અદ્ધારઃ=જ્વાલારહિતોઽગ્નિ, મુર્મુર=અગ્નિ-

પત્તેઃ વા, સત્તિ અગ્નેઃ વા કોતગ્નેઃ વા તોમરગ્નેઃ વા, મિંદિમાલગ્ને વા  
સૂચિકલાવણઃ વા વિચ્છુય ડકેઃ વા કવિ કચ્છુઃ વા હગાલેઃ વા મુમ્મુરેઃ  
વા અચ્ચોઃ વા જાલેઃ વા આલાઃ વા સુદાગણીઃ વા ભવેયારુ વેસિયા ?  
નો ઇણદ્વે સમદ્વે ) કર પત્ર-કર વત, હુર પત્ર-ઉસ્તરા કદમ્બચીરિકા પત્ર  
છુરિયા ઘાસ-જિસકા અગ્રભાગ અધિક તીક્ષ્ણ હોતો હૈ શક્તિ-અગ્ર  
-શક્તિ-ત્રિશૂલ અથવા આયુધવિશેષ કા અગ્રભાગ કુન્તાગ્ર માલે કી  
નોક તોમરાગ્ર-વાણ કી અની મિન્દિપાલ-શસ્ત્ર વિશેષ-કા અગ્રભાગ-  
સૂચી કલાપકા અગ્રભાગ-વિચ્છુ કા ડક કપિકચ્છુ-કરેચ-જિસકે સ્પર્શ  
હોનેપર જુજલી આતી હૈ-જ્વાલા રહિત અગ્નિ, મુર્મુર-અગ્નિકણમિશ્રિત

તોમરગ્નેઃ વા, મિંદિમાલગ્ને વા સૂચિકલાવણ વા વિચ્છુય ડકેઃ વા, કપિકચ્છુઃ  
વા હગાલેઃ વા, મુમ્મુરેઃ વા અચ્ચોઃ વા જાલેઃ વા, આલાઃ વા સુદાગણીઃ વા  
ભવેયારુવે સિયા ? નો ઇણદ્વે સમદ્વે )

કરપત્ર-કરવત, હુરપત્ર - અશ્વો, કદમ્બચીરિકા પત્ર-છુરિકા કે બેનો  
અગ્રભાગ એકદમ તીક્ષ્ણ હોય છે, શક્તિ-અથ-શક્તિ, -ત્રિશૂળ અથવા આયુધ  
વિશેષનો અગ્રભાગ, કુન્તાગ્ર-માલાની અણી, તોમરાગ્ર-તીરની અણી, મિન્દિપાલ-  
વિશેષનો અગ્રભાગ, સૂચીકલાપનો અગ્રભાગ, વીંછીનો ડબ્બ, કપિકચ્છુ-કવચ-  
બેના સ્પર્શથી બળવાળ આવે છે, જ્વાળા રહિત અગ્નિ, મુર્મુર-અગ્નિકણ  
મિશ્રિત ભસ્મ, અર્ચિ-લાકડાઓથી સળગતી જ્વાળા, જ્વાળા-લાકડા વગરની

दुच्चंपि इमं एयारूयं अंगफास पडिसंवेदेइ जाय अकामए  
अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ, तएण मेसागरदारणसूमा-  
लियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्तासयणिज्जाआं उट्ठेइ उट्ठित्ता  
वासघरस्स दार विहाडेइ विहाडित्ता मारामुक्के विव काए  
जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू०९॥

टीका—‘तएण’ इत्यादि । ततः खलु सागरदारकः सुकुमारिकाया दारि-  
काया इममेतद्रूप=रक्ष्यमाणमकार पाणिस्पर्श=करस्पर्श प्रतिसवेदयति=अनुभवति,  
कीदृशः स करस्पर्शः इति सदृष्टान्तमाह—‘से जहानामए’ इत्यादि । तद् यथा  
नामकम्=यथा दृष्टान्तम्-दृष्टान्तं प्रदर्शयति—‘असिपत्तेइ वा’ इत्यादि । असि-  
पत्रमिति वा=असिपत्र-खट्वः, यथा खड्गधारायाः स्पर्शः सोढुमदायस्त्वद्वत् सुकु-  
मारिका दारिकायाः करस्पर्शं प्रतिसवेद्यत इति भावः । ‘जाय मुग्गुरे इ वा०’  
यावत् मुग्गुरेति वा=अत्र यावत् करणादिद बोध्यम्—‘करपत्तेइ वा खुरपत्तेइ वा

‘तएण सागरदारण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद—अर्थात् सागरदारकने जब हस्तमिलाप  
किया तब (सागरदारण) उस सागर को (सूमालियाए दारियाए) सुकु-  
मारिकादारिकाका (पाणिपास) वह हस्तका स्पर्श (इम एयारूय पडिसवे-  
देइ) इस प्रकार से लगा (से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाय मुग्गुरे-  
इवा, एत्तो अणिट्ठतराए चेव० पाणिफास पडिसवेदेइ) जैसे वह  
असिपत्र तलवार का स्पर्श हो यावत् अग्नि कणमिश्रित भस्म का स्पर्श  
हो । यहा यावत् शब्दसे “कर पत्तेइ” वा खुर पत्तेइवा, कलत्र चीरिया

‘तएण सागरदारण’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्वारपत्री ओटले के सागरदारके न्याये हस्तमेलाप कर्त्तव्ये त्वारे  
(सागरदारण) ते सागरने (सूमालियाए दारियाए) सुकुमार दारिकाने। (पाणि  
पास) ते हाथने। स्पर्श (इमएया रूय पडिसवेदेइ) आ प्रमाणे लाग्ये। के  
(से जहा नामए असि पत्तेइ वा जाय मुग्गुरेइ वा, एत्तो अणिट्ठतराए चेव  
पाणिफास पडिसवेदेइ)

आणु ते असिपत्र-तरवार-ने। स्पर्श न होय, यावत् अग्निकण मिश्रित  
भस्मने। स्पर्श न होय अर्थात् ‘यावत्’ शब्दार्थ।

(करपत्तेइ वा खुरपत्तेइ वा, कलत्रचीरियापत्तेइ वा सत्ति) वा कौतम्भे।

रिजनांश्च विपुलेनाशनपानखाद्यस्वाद्येन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्करोति  
समानयति सत्कृत्य समान्य प्रतिप्रिसर्जयति = प्रस्थापयति । ततः खलु सागरको  
दारकः सुकुमारिकाया सार्धं यत्रैव वासगृह-शयनगृहं तत्रैवोपागच्छति उवागत्य  
सुकुमारिकाया दारिकाया सार्धं 'तलिमसि' तलिमे देशीयोऽयशब्दः तल्पे-शयनीये  
'निवज्जह' निपीदति । ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया  
इममेतमद्रूपमद्गरपशं प्रतिसवेदयति-तद् यधानामक=तत् प्रतिसवेदन दष्टान्तोपन्या-  
सपूर्वकं प्रदर्शयते-असिपत्र वा यावद् अमनोमतरमेव सुकुमारिकाया अद्रस्पर्शं

अम्मापियरो मित्तणाइ० विउलेण असण पाणखाइम माइम पुष्पवत्थ  
जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति ) अतः वह सागर उसमें अभिलाषा  
से रहित बन गया । फिर भी वहा विवश होकर वह कुछ समय तक  
ठहरा रहा । सागरदत्त सार्धवाह ने सागर दारक के मातापिता का तथा  
उसके मित्र, ज्ञाति स्वजन, सवन्नी परिजनो का विपुल अशन, पान,  
खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार से एवं पुष्प वस्त्र, गन्ध, माला  
तथा अलङ्कार से खूब सत्कार किया-सन्मान किया । सत्कार सन्मान  
करके फिर उसने सबको अपने यहां से विदा कर दिया । ( तएण  
सागरए दारए सुमालियाए सद्धि जेणेव वासगिहे तेणेव उवागच्छइ  
उवागच्छिता सुमालियाए दारियाए सद्धि तलिगसि निवज्जह, तएण  
से सागरए दारए सुमालियाए दारियाए इम एवाह्व अगकास पडि-  
सवेदेइ से जहानामए असि पत्तेइवा जाव अमणामघरागचेव अगकास

गरदत्ते सत्यवाहे सागरस्स दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ० विउलेण अमण पाण  
खाइम साइम पुष्पवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति )

बैटला भाटे ते सागर तेना अलिवापाधी रहित जनी गये। छताये  
ते त्या दाआर थधने थोडा वणत सुधी राजये। सागरदत्त सार्धवाहे सागर  
दारकना मातापिताने। तेमज तेना मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सवन्नी परिजनोना  
विपुल अशन, पान, खाद्य अने स्वाद्य रूप आर जातना आहारथी अने पुष्प  
वस्त्र, गन्ध, माला तेमज अलङ्कारथी जाहु सत्कार अने सन्मान करुं सत्कार  
तेमज सन्मान करीने तेहे सोने पोताने त्याथी विदाय कर्या

( तएण सागरए दारए सुमालियाए सद्धि जेणेव वासगिहे तेणेव उवागच्छइ  
उवागच्छिता सुमालियाए दारियाए सद्धि तलिगसि निवज्जह, तएण से सागरए  
दारए सुमालियाए दारियाए इम एवाह्व अगकास पडिमवेदेइ से जहा नामए  
असिपत्तेइ वा जाव अमणामघराग चेव अगकास पच्चगुणवरमाणे विहरइ तएण

पणमिश्रितभस्म अग्नि = १. धन प्रतिपदा ज्वाला, ज्वाला-इन्धन-टिका, आभा  
 तम् = उत्सुक, शुद्धाग्निः लोहपिण्डस्थग्निः । असिपत्रादि-शुद्धाग्निपर्यन्ताना स्पर्श  
 इव सुकुमारिकायाः परस्पर्शो भवेत्तद्यथाविधिम् ? नागमर्गः समर्थः = अग दृष्टा तममूर  
 करस्पर्शे साम्य प्राप्तुं न समर्थः तर्हि कीदृशः ? इत्याह 'पक्षो भणिद्वतराप चैव'  
 एतस्माद् असिपात्रदीना स्पर्शादनिष्टतरक एव, अकान्ततरक एव = अत्यन्तमक  
 मनीय एव, अप्रियतरक एव = अतिदुःखजनक एव अमनोज्ञतरक एव = अतिशयेन मनो  
 विकृतिजनक एव अमनोमतरक एव = अतिशयेन मनः प्रतिकूल एव वर्तते, तमेवम्भूतं  
 पाणिस्पर्शं सुकुमारिकादारिकायाः परस्पर्शे प्रतिसंवेदयति = अनुभवति ।

तत खलु स सागरदारकः अकामकः = निरमिलापः 'अवसव्वसे' अपम्ववसे =  
 'अपगतस्यातन्व्यः विप्रशः सन् मुहूर्तमात्र = स्तोककाल सतिष्ठते ( ततः खलु स  
 सागरदत्तः सार्थवाह सागरस्य दारस्य अम्बापितरौ मित्राविस्मजनमम्बन्धिष

भस्म अग्नि-इन्धन प्रतिपदा ज्वाला, ज्वाला-इन्धन से रहित ज्वाला  
 अलात-उत्सुक शुद्धाग्नि-लोहपिण्डस्थ अग्नि । इन असिपत्र से लेकर  
 शुद्धअग्नि पर्यन्त पदार्थों का स्पर्श जैसा होता है वैसा ही सुकुमारिका  
 के कर का स्पर्श हो सकता था-परन्तु यहा यह अर्थ समर्थित नहीं है  
 -अर्थात् उसके सुकुमारिका के कर स्पर्श में इन दृष्टान्तों के स्पर्श की  
 समानता नहीं मिल सकती है क्यों कि वह स्पर्श तो इनके स्पर्श से भी  
 अधिक अनिष्टतर ही था, अकान्ततरक ही था-अत्यन्त अकमनीय था,  
 अप्रिय तरकही था-अत्यन्त दुःखजनक ही था, अमनोज्ञतरक ही था  
 -अत्यन्त मनो विकृतिजनक ही था, अमनोमतरक ही था-अत्यन्त  
 मनः प्रतिकूल ही था । ( तएण से सागरए अकामए अवसव्वसे  
 मुहुत्तमित्त सचिद्धइ, तएण से सागरदत्ते सत्यवाहे सागरस्स दारगस्स

ज्वाला, अलात-उत्सुक, शुद्ध अग्नि-लोहपिण्डस्थ अग्नि-आटली वस्तुओंानु श्रद्ध  
 करणु नेधये आ असिपत्रथी भाडीने शुद्ध अग्नि सुधीना पदार्थोने ने जतने  
 स्पर्श होय छे तेवो न सुकुमारिकाना होथने पण स्पर्श होतो  
 पण हुकीकतमा तो आ वस्तुओंानी समानता पण तेना तीक्ष्ण स्पर्शनी साथे  
 करी शकय तेम नथी केमके तेना होथने स्पर्श तो उक्त वस्तुओंाना स्पर्श  
 करता पण वधारे अनिष्टतर होतो, अकान्ततरक होतो, अतीव अकमनीय होतो,  
 अप्रियतरक होतो, अत्यन्त दुःखजनक होतो, अमनोज्ञतरक होतो, अत्यन्त मनो  
 विकृतिजनक होतो, अमनोम तरक होतो, अहु न मन प्रतिकूल होतो

( तएण से सागरए अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्त सचिद्धइ - एण से सा



रिजनांश्च त्रिपुलेनाशनपानखाद्यन्वाद्येन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्करोति  
समानयति सत्कृत्य समान्य प्रतिविसर्जयति = प्रस्थापयति । ततः खलु सागरको  
दारकः सुकुमारिकाया सार्धं यत्रैव वासगृह-शयनगृहं तत्रैवोपागच्छति उवागत्य  
सुकुमारिकाया दारिकाया सार्धं 'तलिमसि' तलिमे देशीयोऽयशब्दः तल्पे-शयनीये  
'निवज्जइ' निपीदति । ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया  
इममेतमद्रूपमद्गस्पर्शं प्रतिसवेदयति-तद् यधानामक=तत् प्रतिसवेदनदष्टान्तोपन्या-  
सपूर्वकं प्रदर्शयते-असिपत्रं वा यावद् अमनोमतरमेव सुकुमारिकाया अद्गस्पर्शं

अम्भापियरो मित्तणाइ० विउलेण असण पाणखाइम साइम पुष्पवत्थ  
जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति ) अतः वह सागर उसमें अभिलाषा  
से रहित बन गया । फिर भी वहा विवश होकर वह कुछ समय तक  
ठहरा रहा । सागरदत्त सार्थवाह ने सागर दारक के मातापिता का तथा  
उसके मित्र, ज्ञाति स्वजन, संबन्धी परिजनो का विपुल अशन, पान,  
खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार से एवं पुष्प वस्त्र, गन्ध, माला  
तथा अलङ्कार से खूब सत्कार किया-सन्मान किया । सत्कार सन्मान  
करके फिर उसने सबको अपने यहां से विदा कर दिया । ( तएणं  
सागरए दारए सुमालियाए सद्धि जेणेव वासगिहे तेणेव उवागच्छइ  
उवागच्छिता सुमालियाए दारियाए सद्धि तलिगसि निवज्जइ, तएण  
से सागरए दारए सुमालियाए दारियाए इम एयाह्व अगकासं पडि-  
सवेदेइ से जहानामए असि पत्तेइवा जाव अमणामयरागचेव अगकास

गरदत्ते सत्यवाहे सागरस्स दारगस्स अम्भापियरो मित्तणाइ० विउलेण असण पाण  
खाइम साइम पुष्पवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति )

ओटला भाटे ते सागर तेना अलिवापाथी रक्षित जनी जये। छताये  
ते त्या लाचार थधने थोडा वणत सुधी रोकाये। सागरदत्त सार्थवाडे सागर  
दारकना मातापिताने। तेमज तेना मित्र, ज्ञाति, स्वजन, संबन्धी परिजनोना  
विपुल अशन, पान, आद्य अने स्वाद्य रूप आर जातना आहारथी अने पुष्प  
वस्त्र, गन्ध, भाणा तेमज अलङ्कारथी जडु सत्कार अने सन्मान कथुं सत्कार  
तेमज सन्मान करीने तेणे सोने पोताने त्याथी विहाय कथा

( तएण सागरए दारए सुमालियाए सद्धि जेणेव वासगिहे तेणेव उवागच्छइ  
उवागच्छिता सुमालियाए दारियाए सद्धि तलिगसि निवज्जइ, तएणं से सागरए  
दारए सुमालियाए दारियाए इम एयाह्व अगकास पडिसवेदेइ से जहा नामए  
असिपत्तेइ वा जाव अमणामयराग चेव अगकास पञ्चगुणवमाणे विहरइ तएणं



મપત્નુમન્ વિદરતિ । તતઃ તન્નુ મ સાગરદારકસ્તન્મ્યા અગ્નિર્મમદમાનોઽપસ્વ  
 વતઃ=અગ્નિ સાગરદારક, મન મુદ્ધમાત્ર મતિષ્ઠો । તત્ તન્નુ મ સાગરદારકઃ  
 સુકુમારિકા દારિકા સુત્રપસુતાં સાગર દારિકાયા દારિકાયાઃ પાર્શ્વત ઉત્તિષ્ઠિતિ,  
 ઉત્થાય યથૈવ સ્વક ગ્રયનીયં તત્તોતોપાગન્નતિ, ઉત્થાય ગ્રયનીયે, ' નિવગ્ન'   
 નિષીદતિ સ્વરિતીત્યર્થઃ । તત્ તન્નુ સુકુમારિકા દારિકા તત્તો મુદ્ધતન્તરે મતિ-  
 ધુદ્ધા=નાગરિકા સતિ પતિવ્રતા ' પદ્મનુરતા' પ્રપન્નુક્તા સ્વપતિ પ્રપન્નુરાગિની,  
 પાર્શ્વે પતિમપદ્યન્તી ' તલિમાઽ ' તલ્પાત્=ગ્રયનીયાદ્ ઉત્તિષ્ઠિતિ, ઉત્થાય યથ

પચ્ચણ્મપ્રમાણે વિદરત્ તણ્ણ સે સાગરદારક અગ્નિર્મમદમાનો અવ  
 સન્વસે મુદ્ધત્તમિત્ત સચિદ્ધઃ ) હસકે યાદ સાગરદારક સુકુમારિકા કે  
 સાથ જહા વાસગૃહ-ઝાવન ધર-યા વહાં ગયા વહા જાકર વહ ઉસ સુકુ  
 મારિકાકે સાથર ઝક શાળાપર ઘેઠ ગયા । ઘેઠ જાને પર ઉસ સાગરદારક  
 કો સુકુમારિકા દારિકાકા અગસ્પર્શ દમસ્વરસે પ્રનીત હુઆ-જેસે માનો  
 અસિપત્ર આદિકા સ્પર્શ હો । હન અસિપત્ર (સ્વદ્ગકો યાવત્) આદિકો  
 કે સ્પર્શ સે મી ઉસકો વહ અગસ્પર્શ યાવત્ અમનામતરક હો ધા । હસ  
 પ્રકાર કા ઉસકા અગસ્પર્શ અનુભવતા હુઆ વહ સાગરદારક વિવશ  
 થનકર વહા કુઝ સમય તરુ ઠહરો યાદ મેં જય ઉસસે સહન નહી  
 હુઆ તો । ( તણ્ણ સે સાગરદારક સૂમાલિય દારિય સુદ્ધપસુત્ત  
 જાણિત્તા સૂમાલિયાદ દારિયાદ પાસાઽ ઉદ્દેહ, ઉદ્દિત્તાં જેનેવ સદ સય  
 ણિજ્જે તેનેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા સયણીયંસિ નિવજ્જહ, તણ્ણ  
 સૂમાલિયા દારિયા તત્તો મુદ્ધત્તતરસ્સ પડિવુદ્ધા સમાણી પહંવ્વયા પદ

સે સાગરદારક અગ્નિર્મમદમાનો અવસન્વસે મુદ્ધત્તમિત્ત સચિદ્ધઃ )

ત્યારપછી સાગર દારક સુકુમારિકાની સાથે જ્યા વાસગૃહ-શયનધર હેતુ  
 ત્યા ગયો, ત્યા જઈને તે સુકુમારિકાની સાથે એક શય્યા ઉપર બેસી ગયો  
 બેઠા બાદ તે સાગર દારકને સુકુમારિકા દારિકાનો અગ-સ્પર્શ એવા પ્રકારનો  
 જણાયો કે તે અસિપત્ર - તરવાર વગેરેનો સ્પર્શ ન હોય । અસિપત્ર  
 વગેરે કરતા પણ તેનો અગ સ્પર્શ યાવત અમનોમતરક હતો આ રીતે તેના  
 અગ સ્પર્શને અનુભવતો સાગર દારક લાચાર થઈને ત્યા થોડા વખત સુધી  
 રોકાયો અને ત્યારબાદ જ્યારે તેને તે સ્પર્શ અસહ્ય થઈ પડ્યો ત્યારે

( તણ્ણ સે સાગરદારક સૂમાલિય દારિય સુદ્ધપસુત્ત જાણિત્તા સૂમાલિયાદ  
 દારિયાદ પાસાઽ ઉદ્દેહ, ઉદ્દિત્તાં જેનેવ સદ સયણિજ્જે તેનેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવા-  
 ગચ્છિત્તા સયણીયંસિ નિવજ્જહ, તણ્ણ સૂમાલિયા )

‘ से ’ तस्य शयनीयं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य सागरदारकस्य पार्श्वे ( निवज्जई ) निपीदति=स्वपिति । ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया ‘ दुच्चपि ’ द्वितीयवारमपि इममेतद्रूपम् पूर्वोक्तप्रकारम् अङ्गस्पर्शं प्रतिसवेदयति यावद्-अक्रामकोऽपस्वशो मुहूर्तमात्रं सतिष्ठति, ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिका दारिका सुखप्रसुप्ता ज्ञात्वा शयनीयात्=गम्यात् उत्तिष्ठति, उत्थाय वासगृहस्य=शयनगृहस्य द्वार ‘ विधाटेड ’ विधाटयति = उद्धाटयति विधाटय ‘ मारामुक्के विव काए ’ मारामुक्त इव काकः=मार्यन्ते प्राणिनो यस्या सा मारा

मणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्टेइ उट्टित्ता उवागच्छइ ) वह सागरदारक उस सुकुमारिका दारिका को सुखसे सोई हुई जानकर उस सुकुमारिका दारिका के पास से उठ बैठा-और उठकर जहाँ अपनी शय्या थी वहाँ चला गया । वहाँ आकर उस पर पड़ गया इतने में ही एक मुहूर्त के बाद वह पति में अनुरक्त बनी हुई पतिव्रता सुकुमारिका दारिका जग गई और अपने पास पति को न देखकर अपने पलंग से उठ बैठी । उठकर वह जहाँ सागरदारक का पलंग था वहाँ गई । ( उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ ) वहाँ जाकर वह उसके पास सो गई । ( तएण से सागरदारए सुमालियाए दारियाए दुच्चपि इम एयारूवं अंगफासं पडिसवेदेइ जाव अक्रामए अवसव्वसे मुहुत्त मित्त सच्चिइ, तएण से सागरदारए सुमालिय दारिय सुहपसुत्त

पडिबुद्धा समाणी पइवया पइमणुरत्ता पत्तिपासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्टेइ उट्टित्ता उवागच्छइ )

ते सागर दारक ते सुकुमारिका दारिकाने सुजेथी सूतेली जणीने तेनी ‘ पासेथी उठ्यो, अने उठीने ज्या पोतानी शय्या उती त्या जेतो रह्यो त्या जधने ते तेनी उपर पडी गये अटलाभा अेक मुहूर्त पछी पतिमा अनुरक्त बनेली पतिव्रता सुकुमारिका दारिका जगी गई अने पोतानी पाये पति न लेता पोतानी शय्या उपरयी उठी अने जेठी गई तयारपछी ते उठीने ज्या सागर दारकनी शय्या उती त्या गध ( उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ ) त्यां जधने ते तेना पड्याभा सूध गध

( तएण से सागरदारए सुमालियाए दारियाए दुच्चपि इम एयारूवं अंगफासं पडिसवेदेइ जाव अक्रामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्त सच्चिइ, तएण से सागरदारए सुमा  
लिपि-रियं सुहपसुत्त जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्टेइ, उट्टित्ता वासवरस्स दार विहा-

મયત્નુગત્તરિ વિહરતિ । તતઃ સ્વત્તુ મ સાગરદારકમ્પ્યા અઙ્ગ સ્વર્ગમમદ્માનોડવસ  
 વસઃ=અગમી સ્વાતન્ત્ર્ય , મત્તુ મુદ્દર્શમાત્ર મનિષ્ટું । તત્તુ મ સાગરદારકઃ  
 સુકુમારિકાં દારિકાં સુવપસુતાં સામ્યા સુકુમારિકાયા દારિકાયાઃ પાર્શ્વેન ઉત્તિષ્ઠતિ,  
 ઉત્થાય યત્રૈવ સ્વક ગવનીયં તત્રૈવોપાગન્ત્તતિ, ઉવાગ વ ગવનીયે, ' નિવજ્જહ '   
 નિષીદતિ સ્વપિત્તીત્યર્થઃ । તતઃ સ્વત્તુ સુકુમારિકા દારિકા તત્તો મુદ્દર્શન્તરે પ્રતિ-  
 ધુદ્ધા=નાગરિકા સતિ પનિવ્રતા ' વશ્વગુરતા' પ્રવ્યનુક્તા સ્વપતિ મત્ત્યનુસાગિમી,  
 પાર્શ્વે પતિમવશન્તી ' તલિમાત ' તન્વાન્=ગવનીયાત્ ઉત્તિષ્ઠિતિ, ઉત્થાય યત્ર

પચ્ચણુભવમાણે વિહરત્ત તણ્ણ સે માગરણ અંગપામં અસહમાણે અવ  
 સન્વસે મુદ્દત્તમિત્ત સંચિદ્ધ ) હસકે પાદ માગરદારક સુકુમારિકા કે  
 સાથ જહા વાસગૃહ-શયન ગર-ધા વર્ણા ગયા વહા જાકર વહ ઉસ સુકુ  
 મારિકાકે સાથર ગ્ગ શાધ્યાવર ઘેટ ગયા । ઘેટ જાને પર ઉસ માગરદારક  
 કો સુકુમારિકા દારિકાકા અગસ્પર્શ હમ સ્વસે પ્રનીત છુઆ-જેસે માનો  
 અસિપત્ર આદિકા સ્પર્શ હો । ઠન અસિપત્ર (ગદ્ગકો યાવત) આદિકો  
 કે સ્પર્શ સે મી ઉસકો વહ અગસ્પર્શ યાવન્ અનનામતરક હી ધા । હસ  
 પ્રકાર કા ઉસકા અગસ્પર્શ અનુભવતા છુઆ વહ સાગરદારક વિવશ  
 થનકર વહા કુત્ર સમય તંક ઠહરો યાદ મેં જવ ઉસસે સહન નહી  
 છુઆ તો । ( તણ્ણ સે માગરદારણ સુમાલિય દારિય સુહપસુત્ત  
 જાણિત્તા સુમાલિયાણ દારિયાણ પાસાઉ ઉદ્દેહ, ઉદ્ધિત્તાં જેણેવ સણ સય  
 ણિજ્જે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા સયણીયસિ નિવજ્જહ, તણ્ણ  
 સુમાલિયા દારિયા તઓ મુદ્દત્તતરસ્સ પહિવુદ્ધા સમાણી પહન્વયા પહ

સે સાગરણ અંગપાસ અસહમાણે અવસન્વસે મુદ્દત્તમિત્ત સંચિદ્ધ )

ત્યારપછી સાગર દારક સુકુમારિકાની સાથે જ્યા વાસગૃહ-શયનઘર હેતુ  
 ત્યા ગયો, ત્યા જઈને તે સુકુમારિકાની સાથે એક શબ્દ ' ઉપર બેસી ગયો  
 બેઠા બાદ તે સાગર દારકને સુકુમારિકા દારિકાનો અગ-સ્પર્શ' એવા પ્રકારનો  
 જણાયો કે તે અસિપત્ર - તરવાર વગેરેનો સ્પર્શ ન હોય ! અસિપત્ર  
 વગેરે કરતા પણ તેનો 'અગ સ્પર્શ' યાવત અમનોમતરક હતો આ રીતે તેના  
 અગ સ્પર્શને અનુભવતો સાગર દારક લાચાર થઈને ત્યા થોડા વખત સુધી  
 રોકાયો અને ત્યારબાદ જ્યારે તેને તે સ્પર્શ અસહ્ય થઈ પડ્યો ત્યારે

( તણ્ણ સે સાગરદારણ સુમાલિય દારિય સુહપસુત્ત જાણિત્તા સુમાલિયાણ  
 દારિયાણ પાસાઉ ઉદ્દેહ, ઉદ્ધિત્તા જેણેવ સણ સયણિજ્જે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવા  
 ગચ્છિત્તા સયણીયસિ નિવજ્જહ, તણ્ણ સુમાલિયા તન્વાન્ અગમી સ્વાતન્ત્ર્ય )

‘से’ तस्य शयनीय तत्रैवोपागच्छति उपागत्य सागरदारकस्य पार्श्वे ( निवृज्जई )  
निर्पदति=स्वपिति । ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया  
‘दुच्चपि’ द्वितीयवारमपि इममेतद्रूपम् पूर्वोक्तप्रकारम् अङ्गस्पर्शं प्रतिसवेदयति  
यावद्-अकामकोऽपस्वयशो मुहूर्तमात्रं सतिष्ठति, ततः खलु स सागरदारकः  
सुकुमारिका दारिका सुप्तप्रसुप्ता ज्ञात्वा शयनीयात्=शय्यात् उत्तिष्ठति, उत्थाय  
वासगृहस्य=शयनगृहस्य द्वारं ‘विहाडेड’ विघाटयति = उद्धाटयति विघाटय  
‘मारामुक्के विव काए’ मारामुक्त इव काकः=मार्यन्ते प्राणिनो यस्या सा मारा

मणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्टेइ उट्टित्ता उवागच्छइ )  
वह सागरदारक उस सुकुमारिका दारिका को सुखसे सोई हुई जानकर  
उस सुकुमारिका दारिका के पास से उठ बैठा-और उठकर जहा अपनी  
शय्या थी वहां चला गया । वहां आकर उस पर पड़ गया इतने में ही  
एक मुहूर्त के बाद वह पति में अनुरक्त बनी हुई पतिव्रता सुकुमारिका  
दारिका जग गई और अपने पास पति को न देखकर अपने पलंग से  
उठ बैठी । उठकर वह जहा सागरदारक का पलंग था वहा गई ।  
( उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ ) वहा जाकर वह उसके पास  
सो गई । ( तएण से सागरदारए सुमालियाए दारियाए दुच्चपि इमं  
एयारूव अंगफास पडिसवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्त-  
मित्त सच्चिद्वइ, तएण से सागरदारए सुमालिय दारिय सुहपसुत्त

पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइमणुरत्ता पत्तिपासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्टेइ  
उट्टित्ता उवागच्छइ )

ते सागर दारक ते सुकुमारिका दारिकाने सुषेथी सूतेली जल्लीने तेनी  
पासेथी ठहयो, अने उठीने ज्जा पोतानी शय्या छती त्या जतो रह्यो त्या  
जधने ते तेनी उपर पडी गयो अट्ठाभा ओक मुहूर्त पछी पतिमा अनुरक्त  
बनेली पतिव्रता सुकुमारिका दारिका जगी गध अने पोतानी पासे पति न जेता  
पोतानी शय्या उपरथी ठी अने ओठी गध त्थारपछी ते उठीने ज्जा सागर  
दारकनी शय्या छती त्या गध ( उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ ) त्यां  
जधने ते तेना पडिआमा सूध गध

( तएण से सागरदारए सुमालियाए दारियाए दुच्चपि इम एयारूव अंगफासं  
पडिसवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्त सच्चिद्वइ, तएण से सागरदारए सुमा  
लिय दारिय सुहपसुत्त जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्टेइ, उट्टित्ता वासवरस्स दार विहा-

શૂના વધસ્થાન, તસ્યાશુક્તો નિર્મળાઃ કાઠ ઃવ, ૧ દ્વા-માગદૂ=મા-કલુપાશમુક્તઃ  
=નિર્મુક્ત ચિન્દુટિઃ કાઠો યથા વેગતો નિર્ગચ્છતિ તદ્વત્, યસ્મા ણવ દિશઃ  
પ્રાદુર્ભૂતસ્વામેર દિગ પ્રતિગતઃ ॥ સૂ. ૯ ॥

મૂલમ્-તર્ણસૂમાલિયા દારિયા તઓ મુદ્દુત્તંતરસ્સ પડિબુઢા  
પડવયા જાવ અપાસમાળી મયણિજાઓ ઉદ્દેહ સાગરસ્સ  
દારિયાપ સઠ્વઓ સમતા મગ્ગણમવેસળં કરેમાળોર વાસઘ  
રસ્સ દાર વિહાડિયં પાસહ પામિત્તા ણવ વયાસી-ગણ સે  
જાણિત્તા સયણિજાઓ ઉદ્દેહ, ઉટિત્તા વાસઘરસ્સ દાર વિહાઢેઈ,  
વિહાઢેત્તા મારામુરકે વિવ કાળ જામેવ દિસિ પાઠ્ઠમૂળ તામેવ દિસિ  
પડિગણ) સાગરદારક કો સુકુમારિકા દારિકા કા અગરાગં દુવા  
રામી વૈસા હી પૂર્વોક્તરૂપ સે અનુમત મેં આયા-અન. ઉસકે પાસ સોને  
કી હચ્છા ન હોને પર મી વહ વિવશતોરુર કુટ્ર સમય તક ઉસકે પાસ  
સોતા રહા-જય વહ અચ્છી તરહ સો ગહ-તય વહ ઉસે સુરત પ્રસુસજા  
નકર ઉસકે પાસ સે ઉઠો-ઔર ઉઠકર ઉસને ઉસ વાસ ગૃહ કે દરવાજે  
કો ઘોલા ઘોલકર જિસ પ્રકાર 'મારામુક્ત' કાઠ ઘડે વેગસે નિકલતા હૈ  
-ઉસી તરહ યહ મી ઘદુત જલ્દી વહા સે નિકલકર જિસ દિશા સે  
પ્રકટ હુઆ થા-ઉસી દિશા તરફ વોપિસ ચલા ગયા । જિસ મે પ્રાણી  
મારે જાતે હૈં ઉસકા નામ મારા-શૂના- વધસ્થાન હૈ । હસ મારા સે  
નિકલા હુઆ અથવા મારનેવાલે પુરુષ કે હાથ સે છુટા હુઆ-એસે વે દો  
અર્થ " મારમુક્ત " હસ શબ્દ કે હો સકતે હૈ । સૂ. ૯

ઢેઈ, વિહાડિત્તા મારામુવકે વિવ કાળ જામેવ દિસિ પાઠ્ઠમૂળ તામેવ દિસિ પડિગણ)

સાગર દારકને સુકુમારિકાનો ખીજવારનો અગ સ્પર્શ પશુ પહેલાની  
જેમજ લાગ્યો એટલા માટે તેની પાસે સૂવાની ઇચ્છા ન હોવા છતાં તે  
વિવશ થઈને થોડીવાર સુધી તેની પાસે પડી રહ્યો જ્યારે તે સારી રીતે સૂઈ  
ગઈ ત્યારે તે તેને સુખેથી સૂતી જાણીને તેની પાસેથી ઉઠ્યો અને ઉઠીને  
સેણે તે વાસગૃહના બારણાને ઉઘાડ્યું ઉઘાડીને જેમ મારા-મુક્ત કાગડો જલ્દી  
નીકળી જાય છે તેમજ તે પશુ બહુ જ ત્વરાથી ત્યાથી નીકળીને જે દિશા તરફથી  
આવ્યો હતો તે જ દિશા તરફ પાછો જતો રહ્યો જે સ્થાને પ્રાણીઓ મારી  
નાખવામાં આવે છે તેનું નામ " મારા " (વધસ્થાન) છે આ 'મારા' થી  
છૂટીને આમ જે અર્થો 'મારામુક્ત' શબ્દના થઈ શકે છે ॥ અવ. ૬ ॥



सागरे त्तिकट्टु ओहयमणसंक्रप्पा जाव झियायइ, तएणं सा  
 भदा सत्थवाही कल्लं पाउ० दास चेडियं सदावेइ सदावित्ता  
 एवं वयासी—गच्छह णं तुम देवाणुप्पिए । बहुवरस्स सुह-  
 धोवणियं उवणेहि, तएण सा दासचेडी भदाए एवं वुत्ता  
 समाणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणत्ति, सुहधोवणिय गेणहइ  
 गेणित्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता  
 सूमालियं दारियं जाव झियायमाणं पासइ पासित्ता एवं  
 वयासी — किन्नं तुम देवाणुप्पिया । ओहयमणसंक्रप्पा  
 जाव झियाहिसि ?, तएणं सा सूमालिया दारिया तं दास-  
 चेडी एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया । सागरए दारए  
 मम सुहपसुत्तं जाणित्ता मम पासाओ उट्ठेइ उट्ठित्ता वास-  
 घरदुवार अवगुणइ जाव पडिगए तएण तओ अह सुहुत्तं-  
 तरस्स जाव विहाडियं पासामि, गए ण से सागरएत्तिकट्टु  
 ओहयमण जाव झियायामि, तएण सा दासचेडी सूमालि-  
 याए दारियाए एयमट्ठ सोच्चा जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवा-  
 गच्छइ उवागच्छित्ता सागरदत्तस्स एयमट्ठ निवेएइ, तएणं  
 से सागरदत्ते दासचेडीए अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म  
 आसुरुत्ते जेणेव जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवाग-  
 च्छइ उवागच्छित्ता जिणदत्तं एव वयासी—किण्णं देवाणु-  
 प्पिया । एव जुत्तं वा पत्तं वा कुलाणुरूव वा कुलसरिसं  
 वा जन्न सागरदारए सूमालियं दारिय अदिट्ठदोस पइवयं

विप्पजहाय इहमागओ ब्रह्मिं सिञ्जणियाहि य रंउणियाहि  
य उवालभइ, तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठ सोच्चा  
जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता साग-  
रयं दारयं एवं वयासी—दट्ठुण पुत्ता ! तुमे कय सागरदत्तस्स  
गिहाओ इह हव्वमागते, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता !  
एवमवि गए सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिणदत्तं  
एव वयासी—अवि आइ अह ताओ । गिरिपडणं वा तरु-  
डणं वा मरुप्पवायं वा जलप्पवेस वा जलणप्पवेसं वा  
विसभवखणं वा सत्थोवाडण वा वेहाणस वा गिच्छापिट्ट वा  
पवज्ज वा विदेसगमण वा अवभुवगच्छिज्जामि नो खलु अहं  
सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा, तएण से सागरदत्ते सत्थवाहे  
कुडुतरिए सागरस्स एयमट्ठ निसामेइ निसामित्ता लज्जिए  
विलीए विडु जे जिणदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनि-  
क्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
सुकुमालिय दारिय सदावेइ सदावित्ता अके निवेसेइ निवे-  
सित्ता एव वयासी—किण्ण तुम पुत्ता ! सागरएण दारएणं  
मुक्का ?, अहणं तुम तस्स दाहामि जस्स णं तुम इट्ठा जावें  
मणामा भविस्ससित्तिसूमालिय दारिय ताहि इट्ठाहि वग्गूहि  
समासासेइ समासासित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १० ॥

टीका—‘ तएण ’ इत्यादि । ततः=तन्निर्गमनानन्तर खलु सुकुमारिका  
दारिका ततो मूर्ध्वान्तरे प्रतिबुद्धा=जागरिता सतो पतिव्रता यावत् पतिमपश्यन्ती

શયનીયાત્=શય્યાત ઉત્તિષ્ઠતિ, ઉત્થાપ સાગરસ્સ દારકસ્ય સર્વતઃ સમન્તાંદ માર્ગ  
 ણગવેષણ કુર્વતીર વાસગૃહસ્ય=શયનગૃહસ્ય દ્વાર ત્રિપાટિતમ્=ઉદ્ઘાટિત પશ્યતિ,  
 દૃષ્ટ્વા એવમગ્રાદીત્-ગતઃ સ સાગરદારકઃ, ઇતિ કૃત્વા 'ઓહયમણસકૃપ્પા' અપહ  
 તમનઃ સકલ્પા=નષ્ટમતોરગા, યાત્ ધ્યાયતિ=ભાર્ત્ત્યાન કરોતિસ્મ । તતસ્તદન  
 ન્તર ભદ્રા સાર્થવાહી 'કલ્હ' કલ્પે=દ્વિતીયદિવસે પ્રાહુઃ પ્રમાતાર્યા રજન્યા યાત્  
 તેજસા જ્વલતિ=દીપ્તમાને મૃર્યે ઉદિતે દામચેટીના=દામપુર્ણી શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા

‘તત્ત્વેણ સૂમાલિઆ દારિયા’ ઇત્યાદી ।

ટીકાર્થ—(તત્ત્વેણ) ડસકે વાદ (સૂમાલિયા દારિયા) સુકુમારિકા દારિકા  
 (તઓ મુદ્દત્તતરસ્સ પહિવુદ્ધા પહવયા જાવ અપાસમાણી) ઇક મુદ્દર્ત  
 કે વાદ જગ પહી—સો ડમ પતિવ્રતા ને વદા અપને પતિકો જવ નહી દેસ્વા  
 તથ (સયણિજ્જાઓ ઉદ્દેહ, સાગરસ્સ દારગસ્સ મવ્વાઓ સમતા મગ્ગણ  
 ગવેસણ કરેમાણી ૨ વાસવરસ્સ દાર વિહોડિય પામ્મહ, પામિત્તા એવ  
 વયાસી) પલગ સે ડઠી ડટકર ડસને સાગર દારક વી વહી પર સવ  
 ઓર વાર ૨ માર્ગણ ગવેષણા કી— । જવ ડસને શયન ગૃહ કે દરવાજે  
 કો ડવઢા હુઆ દેસ્ ।—તવ ડસે વિચાર આયા કિ (ગયે સે સાગરે તિ  
 કહુ ઓહયમણસકૃપ્પા જાવ ઝિયાવહ, તત્ત્વેણ સા મદ્દા સત્થવાહી કલ્હ  
 પાડ ૦ દાસચેડિય સદાવેહ) કિ સાગર ચલે ગયે હે । ઇસ પ્રકાર અપ-  
 હતમનઃસકલ્પ હોકર વદ વિચાર મે પહ ગઈ, ઇતને મે ભદ્રા સાર્થવા

(તત્ત્વેણ સૂમાલિયા દારિયા ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—(તત્ત્વેણ) ત્યારણાદ (સૂમાલિયા દારિયા) સુકુમારિકા દારિકા  
 (તઓ મુદ્દત્તતરસ્સ પહિવુદ્ધા પહવયા જાવ અપાસમાણી) એક મુદ્દર્ત પહી  
 બગી ગઈ તે પતિવ્રતાએ ત્યા પોતાના પતિને બ્યારે બેયા નહિ ત્યારે

(સયણિજ્જાઓ ઉદ્દેહ, સાગરસ્સ દારગસ્સ મવ્વાઓ સમતા મગ્ગણગવેસણ  
 કરેમાણી ૨ વાસવરસ્સ દાર વિહોડિય પામ્મહ, પામિત્તા એવ વયાસી)

સાથા ઉપરથી બીલી થઈ અને ત્યારપછી તેણે ત્યાજ આશ્પામ ચોમેર  
 સાગર દારકની માર્ગણા—ગવેષણા કરી બ્યારે તેણે શયનગૃહના ધારણાને  
 ઉઘારેલું બેયુ ત્યારે તેને વિચાર આવ્યો કે

(ગયે સે સાગરે તિરુદ્દુ ઓહયમણસકૃપ્પા જાવ ઝિયાવહ, તત્ત્વેણ સા  
 મદ્દા સત્થવાહી કલ્હ પાડ દામચેડિય સદાવેહ)

સાગર બતા રહ્યા છે આ રીતે અપહત મન સકલ્પવાળી થઈને તે

विप्पजहाय इहमागओ वृह्णिं सिञ्जणियाहि य मंउणियाहि  
य उवालभइ, तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमइ सोच्चा  
जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता साग-  
रयं दारयं एवं वयासी-दट्ठुण पुत्ता ! तुमे कयं सागरदत्तस्स  
गिहाओ इहं हव्वमागते, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता !  
एवमवि गए सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिणदत्तं  
एव वयासी-अवि आइ अह ताओ ! गिरिपडणं वा तरुप  
डण वा मरुप्पवाय वा जलप्पवेस वा जलणप्पवेस वा  
विसभवखण वा सत्थोवाडण वा वेहाणसं वा गिद्धापिट्ट वा  
पवज्ज वा विदेसगमण वा अब्भुवगच्छिज्जामि नो खलु अहं  
सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा, तएण से सागरदत्ते सत्थवाहे  
कुडुतरिए सागरस्स एयमइ निसामेइ निसामित्ता लज्जिए  
विलीए विड्डे जिणदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनि-  
क्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
सुकुमालिय दारिय सदावेइ सदावित्ता अके निवेसेइ निवे-  
सित्ता एव वयासी-किण्णं तुम पुत्ता ! सागरएण दारएणं  
मुक्का ?, अहं णं तुम तस्स दाहामि जस्स णं तुम इट्ठा जाव  
मणामा भविस्ससित्ति सूमालिय दारिय ताहि इट्ठाहि वग्गूहि  
समासासेइ समासासित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १० ॥

टीका—‘ तएण ’ इत्यादि । ततः=तन्निर्गमनानन्तर खलु सुकुमारिका  
दारिका ततो मूर्धन्यन्तरे प्रतिश्रुद्धा=जागरिता सती पतिव्रता यावत् पतिमपश्यन्ती

શયનીયાત્=ગમ્યાત ઉત્તિષ્ઠતિ, ઉત્વાપ સાગરસ્સ દારકસ્ય સર્વતઃ સમન્તાંઽ માર્ગ  
 ણગવેપણ કુર્વતી? વાસગૃહસ્ય=શયનગૃહસ્ય દાર વિપાટિતમ્=ઉદ્ધાટિત પશ્યતિ,  
 દૃષ્ટ્વા એવમગ્રાદીત્-ગતઃ સ સાગરદારકઃ, રતિ કૃત્વા 'ઓહયમણસકૃપ્પા' અપદ્  
 તમનઃ સકલ્પા=નષ્ટમતોરથા, યાત્ ધ્યાયતિ=આર્તધ્યાન કરોતિસ્મ । તતરતદન  
 ન્તર ભદ્રા સાર્થવાગી 'કલ્હ' કલ્પે=દ્વિતીયદિવસે પ્રાદુઃ પ્રમાતાર્યા રજન્યા યાત્  
 તેજસા જ્વલતિ=દીપ્યમાને ગ્ર્યે ઉદિતે દામચેટીના=દામપુર્તી શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા

‘તણ્ણ સૂમાલિઆ દારિયા’ ઇત્યાદી ।

ટીકાર્થ—(તણ્ણ) ડસકે ત્રાઢ (સૂમાલિયા દારિયા) સુકુમારિકા દારિકા  
 (તઓ મુદ્દત્તતરસ્સ પહિબુદ્ધા પદ્ધવયા જાવ અપાસમાણી) એક મુદ્દર્ત  
 કે યાદ જગ પહી—સો ઉસ પતિવ્રતા ને વહા અપને પત્નિકો જવ વહી દેઘ્વા  
 તથ (સયણિજ્જાઓ ઉદ્દેઢ, સાગરસ્સ દારગસ્સ સબ્બાઓ સમતા મગ્ગણ  
 ગવેસણ કરેમાણી ૨ વાસપરસ્સ દાર વિદ્ધાહિય પાસઢ, પાસિત્તા એવ  
 વયાસી) પલગ સે ઉઠી ઉઠકર ઉસને સાગર દારકની વહી પર સવ  
 ઔર ઘાર ૨ માર્ગણ ગવેપણા કી— । જવ ઉસને શયન ગૃહ કે દરવાજે  
 કો ઉઘઢા હુઆ દેર ।—તવ ઉસે વિચાર આયા કિ (ગયે સે સાગરે ત્તિ  
 કહુ ઓહયમણસકૃપ્પા જાવ ઝિયાયઢ, તણ્ણ સા ભદ્દા સત્થવાહી કલ્હ  
 પાઢ ૦ દામચેહિય સદાવેઢ) કિ સાગર ચલે ગયે હૈં । હસ પ્રકાર અપ-  
 હતમનઃસકલ્પ હોકર વહ વિચાર મે પહ ગઈ, ઇતને મે ભદ્રા સાર્થવા

(તણ્ણ સૂમાલિયા દારિયા ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—(તણ્ણ) ત્યારખાઢ (સૂમાલિયા દારિયા) સુકુમારિકા દારિકા  
 (તઓ મુદ્દત્તતરસ્સ પહિબુદ્ધા પદ્ધવયા જાવ અપાસમાણી) એક મુદ્દર્ત પહી  
 બગી ગઈ તે પતિવ્રતાએ ત્યા પોતાના પતિને બ્યારે બોયા નહિ ત્યારે

(સયણિજ્જાઓ ઉદ્દેઢ, સાગરસ્સ દારગસ્સ સબ્બાઓ સમતા મગ્ગણગવેસણ  
 કરેમાણી ૨ વાસપરસ્સ દાર વિદ્ધાહિય પાસઢ, પાસિત્તા એવ વયાસી)

શયના ઉપરથી બેઠી થઈ અને ત્યારપછી તેણે ત્યાજ આશ્પાસ એમેર  
 સાગર દારકની માર્ગણા—ગવેપણા કરી બ્યારે તેણે શયનગૃહના ધારણાને  
 ઉઘારેલું બોયું ત્યારે તેને વિચાર આવ્યો કે

(ગયે સે સાગરે ત્તિફૂદુ ઓહયમણમકૃપ્પા જાવ ઝિયાયઢ, તણ્ણ સા  
 ભદ્દા સત્થવાહી કલ્હ પાઢ દામચેહિય સદાવેઢ)

સાગર જતા રહ્યા છે આ રીતે અપહત મન સકલ્પવાળી થઈને તે



विष्पजहाय इहमागओ बहूहि विज्जणियाहि य रुंठणियाहि  
य उवालभइ, तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमद्व सोन्वा  
जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता साग-  
रयं दारय एवं वयासी-दट्ठुणं पुत्ता ! तुमे कय सागरदत्तस्स  
गिहाओ इह हव्यमागते, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता !  
एवमवि गए सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिणदत्त  
एवं वयासी-अवि आइ अह ताओ ! गिरिपडणं वा तरुप  
डण वा मरुप्पवायं वा जलप्पवेसं वा जलणप्पवेस वा  
विसभवखणं वा सत्थोवाडण वा वेहाणस वा गिद्धापिट्ट वा  
पवज्ज वा विदेसगमणं वा अब्भुवगच्छिज्जामि नो खलु अहं  
सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा, तएण से सागरदत्ते सत्थवाहे  
कुडुतरिए सागरस्स एयमद्व निसामेइ निसामित्ता लज्जिए  
विलीए विड्डे जिणदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनि-  
क्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
सुकुमालिय दारिय सदावेइ सदावित्ता अके निवेसेइ निवे-  
सित्ता एव वयासी-किण्णं तुम पुत्ता ! सागरएण दारएणं  
मुक्का ? अहंणं तुम तस्स दाहामि जस्स णं तुम इट्ठा जाव  
मणामा भविस्ससित्ति सूमालिय दारिय ताहि इट्ठाहि वग्गूहि  
समासासेइ समासासित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १० ॥

टीका—‘ तएण ’ इत्यादि । ततः=तन्निर्गमनानन्तर खलु सुकुमारिका  
दारिका ततो ब्रह्मवर्तरे प्रतिबुद्धा=जागरिता सतो पतिव्रता यावत् पतिमपश्यन्ती

હે દેવાનુપ્રિયે ! હે સુકુમારિકે ! કિં=કુતઃ ચલુ ત્વમ્ અપદતમનઃ સન્કલ્પા યાવત્  
ધ્યાયસિ ?, તતસ્તદનન્તર સા સુકુમારિકા દારિકા તા દામચેટીમેયમયાદીત્-હે  
દેવાનુપ્રિયે ! એવ ચલુ સાગરકો દારકો મા સુગ્ધપસુતા જ્ઞાત્યા મમ પાર્શ્વાદુત્તિષ્ઠતિ,  
ઉત્થાય વાસગૃહદ્વારમ્ ' અવગુણઃ ' જગુણયતિ=અપાટ્ટણોતિ ઉદ્પાટયતિ, 'યાવત્  
પ્રતિગત ' યસ્યાઃ એવ દિશઃ પ્રાદુર્ભૂતસ્તામેવ દિશ પ્રતિગત । તતસ્તદનન્તર ચલુ  
' તઓ ' તતો મુહૂર્તાન્તરેઽહ યાવત્-પ્રતિબુદ્ધા સતી સાગરદારકમપશ્યન્તી શયના  
દુત્તિષ્ઠામિ, ઉત્થાય તમ્ય માર્ગણગવેપણ કુર્વતી વાસગૃહસ્ય દ્વાર ત્રિપાટિત પશ્યામિ  
ગતઃ ચલુ સ સાગરકઃ ' इति कृत्वा=इति हेतोरहम् अपदतमनः सन्कल्पा यावद-

ચિન્તા મગ્ન દેખા-દેખકર ઉસને ઉસસે પૂછા કિ હે દેવાનુપ્રિયે ! કયા  
કારણ હૈ જો આપ અપદતમન' સન્કલ્પા હોકર ચિન્તા મગ્ન બની હુઈ  
હો ? હસ દાસચેટી કે પ્રશ્નકો સુનકર ઉસ સુકુમારિકા ને ઉસ સે  
કહા-દેવાનુપ્રિયે-સુનો-સાગરદારક મુજે સુગ્ધ પ્રસુસ જાનકર મેરે  
પાસ સે ઉઠે ઓર ઉઠકર વાસગૃહ કે દરવાજે કો ગ્યોલકર જહા  
સે આયે થે વહાં ચલે ગયે હૈ । ( તણ ણ તઓ અહ મુહુત્તરસ્મ  
જાવ વિહાડિય પાસામિ ગણ સે સાગરણ ત્તિકદુ ઓહયમાણ  
જાવ ક્ષિયાયામિ, તણ ણ સા દામચેડી સુમાલિયાણ દારિયાણ એયમદ્ધ  
સોચ્ચા જેણેવ સાગરદત્તે તેણેવ ઉવાગચ્છહ ) ઉસકે વાદ જ્યોહી મેં  
જગી-તો મેંને જવ સાગર દારક કો અપને પાસ નહી ઢેગ્વા-તો મં શય્યા  
સે ઉઠ વૈઠી-ઓર ઉઠકર મેને ઉનકી યહી પર સવ તરફ માર્ગણ ગવે-  
પણાકી ઉસમે મેને વાસગૃહ કે દરવાજે ઉવડા પાયા-તવ મેં સમજ્ઞ

જઘને તેણે સુકુમારિકા દારિકાને ચિન્તામા ગમગીન બોધ બોધને તેણે તેને  
પૂછ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! શા કારણથી તમે અપદત મન સન્કલ્પા થઈને  
ચિન્તામા બેઠા છો ? દાસચેટીના પ્રશ્નને સાંભળીને તે સુકુમારિકાએ તેને કહ્યું-  
હે હે દેવાનુપ્રિયે ! સાંભળો, સાગર દારક મને સુખેથી સૂતી બાણીને મારી  
પાસેથી ઉભા થયા અને ઉભા થઈને વાસગૃહના બારણાને ઉઘાડીને બ્યાથી  
આબ્યા હતા, ત્યા જતા રહ્યા છે

( તણ તઓ અહ મુહુત્તરસ્મ જાવ વિહાડિય પાસામિ ગણ સે સાગર  
ત્તિ કદ્દુ ઓહયમણ જાવ ક્ષિયાયામિ, તણ સા દાસચેડી, સુમાલિયાણ દારિયાણ  
એયમદ્ધ સોચ્ચા જેણેવ સાગરદત્તે તેણેવ ઉવાગચ્છહ )

ત્યાર પછી બ્યારે હું બગી ત્યારે મેં સાગર દારક ને મારી પાસે બોલ્યો  
નહિ, હું શય્યા ઉપર ઉઠી અને બેઠી થઈ ગઈ અને ત્યાર પછી મેં અહીં જ  
તેમની બધે માર્ગણ-ગવેપણા ડરી મેં બ્યારે વાસગૃહના બારણાને ઉઘાડું બોલ્યું  
કે તેઓ ચાલ્યા ગયા છે આ વિચારથી જ હું અપદત

પરમસારીન્-હે દેવાનુપ્રિયે ! મન્ત્ર મન્ત્ર તા ' મહુવરસ્મ ' મહુવરયો' સમીપે  
 ' મુહ્યોવણિય ' મુત્ર મારનિત્તં=દન્ત મારનાન્નિરુપાત્ ' ઉવણેદિ ' ઉવનય=માનય ।  
 તતઃ તલુ સા દાસચેટી મદ્યા સાથસાથા પરગુક્તામતી ' અયમદ્ ' અતમર્થમ્=  
 અતદ્વચન ' તવા ઝતુ ' ક્ષિત્તિ તા મનિપ્રનોનિ, મતિશ્રુ વ ' મુહ્યોવણિય ' મુખ  
 ધાવનિકાં રક્ષાતિ, ઘૃતીન્વા મથૈવ તાસગ્ઃ તૈરોરાગચ્છનિ, ઉવાગન્ય સુકુમારિકાં  
 દારિકામેઠાકિનીયાત્ પ્રાગતી-માર્તે વાન તૈર્તીપશ્યતિ દૃષ્ટ્વા પરમસારીન્-  
 હીને દ્વિતીય દિન પ્રાતઃ કાલ ભેતે તી દાસપુત્રી કો પુત્રાયા ( સદાવિત્તા  
 અવ વયાસી મચ્છદ્દ ણ તુમ દેવાણુપિય । મહુવરસ્મ મુહ્યોવણિય ઉવણેદિ  
 તણ સા દાસચેટી મદ્યા અયમદ્ અમાણી અયમદ્ તદ્વત્તિ પદિ  
 સુણતિ મુહ્યોવણિય મેઘદ્દ, ઉવાગચ્છિત્તા, સુમાલિય દારિય જાવ  
 ક્ષિયાયમાર્ણિ પાસદ્, પાસિત્તા અવ વયાસી-કિન્ન તુમ દેવાણુપિયા ।  
 ઓહમણસકપ્પા જાવ ક્ષિયાહિત્તિ ? તણ સા સુમાલિયા દારિયા ત  
 દાસચેટી અવ વયાસી-અવ મલ્લુ દેવાણુપિયા સાગરણ દારણ મમ  
 સુહપસુત્ત જણિત્તા મમ પાસાઓ ઉદ્દેદ્, ઉદ્દિત્તા વાસઘરદુવાર અવગુ  
 ણદ્, જાવ પદિગણ ) ઘુલાઠ્ઠર ઉસસે એસા કદ્દા કિ હે દેવાણુ પ્રિય 'તૂજા,  
 ઓર ઘઘુવર કે પાસ દ્વસ દન્ત ધાવન આદિરુપ મુખ ધાવનિકા કો લેજા  
 મદ્દા કે દ્વસ કથન કો ઉસ દાસચેટી ને " તદ્વત્તિ " કદ્દકર સ્વીકાર  
 કર લિયા-ઓર મુખ ધાવનિકા કો લે લિયા-ઓર લેકર ફિર વહ જહા  
 વાસગૃહ થા-વહા ગદ્દ । વહા પહુચકર ઉસને સુકુમારિકા દારિકા કો

ચિતામા ગમગીન થઈ ગઈ એટલામા બીજા દિવસે સવારે ભદ્રાસાથવાડીએ  
 દાસપુત્રીને બોલાવી

(સદાવિત્તા અવ વયાસી મચ્છદ્દ ણ તુમ દેવાણુપિય । મહુવરસ્મ મુહ્યોવણિય  
 ઉવણેદિ, તણ સા દાસચેટી મદ્યા અયમદ્ અમાણી અયમદ્ તદ્વત્તિ પદિસુણતિ  
 મુહ્યોવણિય મેઘદ્દ, મેઘિત્તા જેણેવ વાસઘરે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્, ઉવાગચ્છિત્તા,  
 સુમાલિય દારિય જાવ ક્ષિયાયમાર્ણિ પાસદ્ પાસિત્તા અવ વયાસી-કિન્ન તુમ  
 દેવાણુપિયા ઓહમણસકપ્પા જાવ ક્ષિયાહિત્તિ ? તણ સા સુમાલિયા દારિયા  
 ત દાસચેટી અવ વયાસી-અવ મલ્લુ દેવાણુપિયા ! સાગરણ દારણ મમ સુહપસુત્ત  
 જણિત્તા મમ પાસાઓ ઉદ્દેદ્, ઉદ્દિત્તા વાસઘરદુવાર અવગુણદ્, જાવ પદિગણ )

બોલાવાને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તુ વરવધૂની પાસે  
 આ હતધાવન વગેરે મુખધાવનિકા લઈ જા ભદ્રાના આ કથનને સાંભળીને  
 તે દાસચેટીએ " તદ્વત્તિ " બોલીને તેને સ્વીકારી લીધું અને મુખધાવનિકા  
 ( દાતણ ) ને લઈ લીધું અને લઈને ને જ્યાં વાસગૃહ હતું ત્યાં ગઈ ત્યાં

વિષદાય=ત્યજ્ઞા ઇદાગતઃ-કથમેતદ્ યુક્ત, યત્ નિર્દોષા સુકુમારિકા વિદાય સાગરદારકોડય સમાયાત ઇતિ । એવ વહોભિઃ ' સ્વિજ્જણિયાહિ ય ' સ્વેદનિકામિઃ=સ્વેદપૂર્ણાભિસ્તથા ' સ્વટ્ટણિયાહિ ય '=સ્વટ્ટણિયાભિઃ દેશીયોડય ઘઙ્ઙઃ, રોદનક્રિયાયુક્તાભિઃ વાગ્મિઃ ઉપાલ્ભતે=સાગરદત્તો જિનદત્તસ્ય ઉપાલ્ભમ કરોતીત્યર્થઃ ।

તત્ત સ્વલ્લુ જિનદત્તઃ સાર્થવાદ સાગરદત્તસ્ય સાર્થવાદમ્યાન્તિકે એતમર્થ શ્રુત્વા નિશમ્ય યત્રૈવ સાગરદારકસ્ત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સાગરક દારકં સ્વપુત્રમેવ=વસ્યમાણપ્રકારેણ અવાદીત્-હે પુત્ર ! ત્વયા સ્વલ્લુ દુષ્ટુ=અશોભન કૃતમ્ યત્-સાગરદત્તસ્ય સાર્થવાદસ્ય ગૃહાદિદ્દ હવ્યમાગતઃ, તત્=તસ્માદ્ ગચ્છ સ્વલ્લુ ત્વ હે પુત્ર ! એવમપિ=યત્થાસ્થિતસ્ત્રૈવ સાગરદત્તસ્ય સાર્થવાદસ્ય ગૃહમ્ । સાગરદારકો જિનદત્તં સાર્થવાદમેવમવાદીત્-હે તાત ! અપિ=નિશ્રવ્યેન ' આહ ' ઇતિ વાક્યાલકારે અહ

દારિય અદિદ્વદોસ પદ્ધવય વિપ્પજહાય્ ઇદ્દ માગઓ વદ્દહિં સ્વિજ્જણિયાહિ ય સ્વટ્ટણિયાહિ ય ઉત્ત્થાલભદ્ધ ) હે દેવાનુપ્રિય ! કયા પદ્ધ વાત યોગ્ય હૈ-અથવા કુલમર્યાદા કે લાયક હૈ, યા કુલ કી યોગ્યતા કે અનુસાર હૈ યા કુલ કો શોભિત કરે એસી હૈ, જો સાગરદારક વિના કિમી દોષકે દેલે-પતિવ્રતા સુકુમારિકા દારિકા કો ઝોડકર યદા આ ગયા હૈ હસ પ્રકાર અનેક સ્વેદપૂર્ણ ંવ રોદનક્રિયા યુક્ત વચનોંસે સાગરદત્તને અપને સન્ધી જિનદત્તકો ઠપકા-ઉલાહના દિયા । (તત્ત્વજિનદત્તે સાગરદત્તસ્સ એયમદ્દ સોચ્ચા જેણેવ સાગરે દારે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા સાગરય દારય એવવયાસી-દુદ્ધુણ પુત્તા તુમે કય, સાગરદત્તસ્સ ગિદ્દાઓ ઇદ્દ હવ્વમાગે, તેણ ત ગચ્છહ ણ તુમ પુત્તા ! એવમવિગે, સાગરદત્તસ્સ ગિદ્દે, તત્ત્વ સે સાગરે જિનદત્ત એવ વયાસી-અવિ આહ અહ તાઓ !

હે દેવાનુપ્રિય ! શુ આ વાત વાજી છે ? કુળ મર્યાદાને લાયક છે ? અથવા તો કુળની યોગ્યતા મુજબ છે ? કુળને શોભાવનારી છે ? કે જે સાગર દારક દોષ પણ બાતના દોષ જોયા વગર પતિવ્રતા સુકુમારીકા દારિકાને ત્યજીને અહીં આવી ગયો છે ? આ રીતે મનને દુભાવનારા તેમજ ગળગળા થાનિ રડતા રડતા ઘણા વચનોથી સાગરતે પોતાના વેવાઈ જિનદત્તને ઠપકો આપ્યો ( તત્ત્વ જિનદત્તે સાગરદત્તસ્સ એયમદ્દ સોચ્ચા જેણેવ સાગરે દારે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા સાગરય દારય એવ વયાસી-દુદ્ધુણ પુત્તા તુમે કય સાગરદત્તસ્સ ગિદ્દાઓ ઇદ્દ હવ્વમાગે, તેણ ત ગચ્છહ ણ તુમ પુત્તા ! એવમવિગે, સાગરદત્તસ્સ ગિદ્દે, તત્ત્વ સે સાગરે જિનદત્ત એવ વયાસી-અવિ આહ અહ

आर्तध्यानभ्यायामि । ततः स्रुतु सा दामचेटी सुकुमारिकाया गारिकाया अन्तिके  
 एतमर्थं श्रुत्वा, तत्रैव सागरदत्त सार्धवाह = सुकुमारिकाया पिता, तत्रैवोपा  
 गच्छति, उपागत्य त सागरदत्तमेतमर्थं निवेदयति । ततस्तदनन्तरं स सागरदत्तः  
 सार्धवाहो दासचेटीया अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निश्चम्य आशुम्भतः = ग्रीध क्रोधाविष्टः  
 सन् यत्रैव जिनदत्तस्य सार्धवाहस्य गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य जिनदत्त  
 सार्धवाहमेवमवादीत्-हे देवानुमिय ! किं = कथं स्रुतु एव युक्तम् = उचितं वा प्राप्तम् =  
 कुलमर्यादामनुभाष्य वा कुलानुरूपम् = कुलयोग्यतानुसूलं वा कुलवद्व्यञ्ज = कुलमाम्यापन्न  
 वा, यत् सल्ल सागरो दारयः सुकुमारिका दारिकामदृष्टदोषा = निर्दोषा पतिव्रता  
 गर्ह किं चे चले गये है इमं विचारं से मे अपहतमनः सकृत्प होकर  
 आर्तध्यान-चिन्ता-में पड़ रही हैं । इस प्रकार सुकुमारिका की बात  
 सुनकर वह दासचेटी बहुत सोच विचार करके वहाँ से सागरदत्त  
 के पास आई । ( उवागच्छित्ता सागरदत्तस्य एयमद्व निवेण्ड-तण्ण  
 से सागरदत्ते दासचेटीया अतिण एयमद्व सोच्चा निसम्म आसुरत्ते  
 जेणेव जिनदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ-उवागच्छित्ता  
 जिनदत्त एव वयासी ) वहाँ आकर उसने सागरदत्त से इस बात को  
 कहा-। इस तरह दासचेटी के मुख से इस बात को सुनकर और उसे  
 हृदय में धारण कर सागरदत्त बहुत अभिक्-क्रुद्ध हुआ-और उसी  
 समय जहाँ जिनदत्त सार्धवाह का घर था वहाँ गया । वहाँ जाकर  
 उसने जिनदत्त से इस प्रकार कहा-( किण्ण देवाणुप्पिया ! एव जुत्त  
 वा पत्त वा कुलाणुरूप वा कुलसरिस वा जन्न सागरदारणं समालिय

मनः सकृत्प यधने आर्तध्यान-चिन्ता-मा पडी छु आ रीते सुकुमारीकानी बात  
 साधनीने ते दास चेटी भूणञ्ज विचार करीने त्याथी सागरदत्तनी पासो गर्ह  
 उवागच्छित्ता सागरदत्तस्य एयमद्व निवेण्ड = तण्ण से सागरदत्ते दासचेटीया  
 अतिण एयमद्व सोच्चा निसम्म आसुरत्ते जेणेव जिनदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहे  
 तेणेव उवागच्छइ-उवागच्छित्ता जिनदत्त एव वयासी )

त्या आवी ने तेले सागरदत्तने आ बात करी आ रीते दास चेटीना  
 भुण्णथी भधी विगत साधनीने अने तेने हृदयमा धारण करीने सागर दत्त  
 अत्यंत गुस्से थयो अने तरत न न्या जिनदत्त सार्धवाहनु घर छेत्तु त्या  
 गयो त्या नधने तेले जिनदत्त सार्धवाहने आ प्रभावे कछु के

( किण्ण देवाणुप्पिया ! एव जुत्त वा पत्त वा कुलाणुरूप वा कुलसरिस वा  
 जन्न सागरदारणं समालियं दरियं अदिद्वदोस पइय विप्पजहाय इहमागओ  
 वहुहिं खिज्जणियाहि य रुद्धणियाहि य उवालमइ )



વિપ્રદાય=ત્યક્ત્વા રૂઢાગતઃ-કથમેત્તદ્ યુક્ત, યત્ નિર્દોષા સુકુમારિકા વિદાય સાગરદારકોઽત્ર સમાયાત ઇતિ । એવ વહ્નોભિઃ ' સ્વિજ્જણિયાહિ ય ' સ્વેદનિકામિઃ=સ્વેદપૂર્ણાભિસ્તથા ' રુટ્ઠણિયાહિ ય '=રુટ્ઠણિયાભિશ્ચ દેશીયોઽય શબ્દઃ, રોદનક્રિયાયુક્તાભિઃ વાગ્મિઃ ઉપાલભતે=સાગરદત્તો જિનદત્તસ્ય ઉપાલમ્ભ કરોતીત્યર્થઃ ।

તત્ત્વ સ્વલુ જિનદત્તઃ સાર્થવાદ સાગરદત્તસ્ય સાર્થવાદસ્યાન્તિકે એતમર્થ શ્રુત્વા નિશમ્ય યત્રેવ સાગરદારકસ્તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સાગરક દારક સ્વપુત્રમેવ=વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ અવાદીત્-હે પુત્ર ! ત્વયા સ્વલુ દુષ્ટુ=અશોભન કૃતમ્ યત્-સાગરદત્તસ્ય સાર્થવાદસ્ય ગૃહાદિહ હવ્યમાગતઃ, તત્=તસ્માદ્ ગચ્છ સ્વલુ ત્વ હે પુત્ર ! એવમપિ=યથાસ્થિતસ્તત્રૈવ સાગરદત્તસ્ય સાર્થવાદસ્ય ગૃહમ્ । સાગરદારકો જિનદત્તં સાર્થવાદમેવમવાદીત્-હે તાત ! અપિ=નિશ્ચયેન ' આહ ' ઇતિ વાક્યાલકારે અહ

દારિય અદિદ્વદોસ પહવય ચિપ્પજહાય રૂઢ માગઓ વહ્નિં સ્વિજ્જણિયાહિ ય રુટ્ઠણિયાહિ ય ઉવાલભહ ) હે દેવાનુપ્રિય ! કયા યત્ વાન યોગ્ય હૈ-અથવા કુલમર્યાદા કે લાયક હૈ, યા કુલ કી યોગ્યતા કે અનુસાર હૈ યા કુલ કો શોભિત કરે એસી હૈ, જો સાગરદારક વિના કિસી દોષકે દેખે-પતિવ્રતા સુકુમારિકા દારિકા કો છોડકર યહા આ ગયા હૈ હસ પ્રકાર અનેક સ્વેદપૂર્ણ એવ રોદનક્રિયા યુક્ત વચનોંસે સાગરદત્તને અપને સવધી જિનદત્તકો ઠપકા-ઉલાહના દિયા । (તણં જિનદત્તે સાગરદત્તસ્સ ઇયમદ્ધ સોચ્ચા જેણેવ સાગરે દારે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા સાગરય દારય એવ વયાસી-દુદ્ધુણ પુત્તા તુમે કય, સાગરદત્તસ્સ ગિહાઓ રૂઢ હવ્યમાગે, તેણ ત ગચ્છહ ણ તુમ પુત્તા ! એવમવિગે, સાગરદત્તસ્સ ગિહે, તણ સે સાગરે જિનદત્ત એવ વયાસી-અવિ આહ અહ તાઓ !

હે દેવાનુપ્રિય ! શુ આ વાત વાજબી છે ? કુળ મર્યાદાને લાયક છે ? અથવા તો કુળની યોગ્યતા મુજબ છે ? કુળને શોભાવનારી છે ? કે જે સાગર દારક કોઈ પણ જાતના દોષ જોયા વગર પતિવ્રતા સુકુમારિકા દારિકાને ત્યજીને અહીં આવી ગયો છે ? આ રીતે મનને દુભાવનારા તેમજ ગળગળા થઈને રડતા રડતા ધણુ વચનોથી સાગરતે પોતાના વેવાઈ જિનદત્તને ઠપકો આપ્યો । ( તણ જિનદત્તે સાગરદત્તસ્સ ઇયમદ્ધ સોચ્ચા જેણેવ સાગરે દારે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા સાગરય દારય એવ વયાસી-દુદ્ધુણ પુત્તા તુમે કય સાગરદત્તસ્સ ગિહાઓ રૂઢ હવ્યમાગે, તેણ ત ગચ્છહ ણ તુમ પુત્તા ! એવમવિગે, સાગરદત્તસ્સ ગિહે, તણ સે સાગરે જિનદત્ત એવ વયાસી-અવિ આહ અહ

તપાણયા ગિરિપતન યા તરુપાન યા મરુપપાત યા=નિર્ગતદેશગમન યા મરુપપાત  
 યા=અગાધજલે પતન યા, જલનપ્રવેશ યા હાત્પદગ્નો પ્રવેશ યા વિષમક્ષર્ણ યા,  
 'સત્યોવાહન યા' સુધારપાટન યા=ગ્રે ન ગરીરવિનાશ યા, 'વેદાણમ યા'  
 વૈદાયસ યા ધળે પાશઘ્રણ યા, તથા-મૃગાપૃષ્ઠ=ટુંકાઃ સ્પર્શનં મયા મનોદ્વા  
 દીના કલેરે પ્રવેશિતસ્ય ગરીરસ્ય મૃત્યુદ્ધ યા મૃત્યુર્મક્ષગ, તથા પ્રવૃજ્યા યા, વિદેશ-

ગિરિપટ્ઠ યા તરુપટ્ઠ યા મરુપ્પયાય યા જલપ્પવેસ યા જલ્પ્પવેસ યા  
 વિસમક્ષ્ણ યા સત્યોવાહન યા વેદાગમ યા ગિદ્ધાપિટ્ઠ યા પરજ્જ યા  
 વિદેસગમન યા અબ્ધુવગચ્છિજ્જામિ, નો ચલ્લુ અહ સાગરદત્તસ્સ ગિહ  
 ગચ્છિજ્જા ) જિનદત્ત સાગરદત્ત કે દસ ઉત્થાહને રૂપ અર્થે કો સુન  
 કરકે જહાં સાગરદારક થા ત્થાં ગગા-પટાં જાકર ઉસને સાગર દારક  
 સે હસ પ્રકાર કહા-હે પુત્ર ! યહ તુમને અચ્છા નર્હા ક્રિયા-જો તુમ  
 સાગરદત્ત કે ઘર સે યહા હતને જરૂરી આ ગયે । ઢમલિયે હે વેદા !  
 તુમ જૈસે યહા થૈટે હો વૈસે હી સાગરદત્ત કે ઘર ચલે જાઓ । તથા  
 સાગરદારકને અપને પિતા જિનદત્ત સે હન્ન પ્રકાર કહા-પિતાજી ! મેં  
 આપકી આજ્ઞા સે પર્વત સે ગિરના સ્વીકાર કર સકતા હું, વૃક્ષ સે  
 નીચે પડજાના સ્વીકારકર સકતા હું-મરુપપાત-નિર્જલપ્રદેશ મેં જાના  
 અગીકારકર સકતા હું, અગાધજલ મેં હવકર ઘરસકતા હું તથા જલતી  
 હુઈ અગ્નિ મેં પ્રવેશ કરના, વિષકામક્ષ્ણ કરના, શસ્ત્ર સે શરીર કા

તાઓ ! ગિરિપટ્ઠ યા તરુપટ્ઠ યા મરુપ્પયાય યા જલપ્પવેસ યા જલ્પ્પવેસ  
 યા વિસમક્ષ્ણ યા સત્યોવાહન યા વેદાગમ યા ગિદ્ધાપિટ્ઠ યા પરજ્જ યા  
 વિદેસગમન યા અબ્ધુવગચ્છિજ્જામિ, નો ચલ્લુ અહ સાગરદત્તસ્સ ગિહ ગચ્છિજ્જા)  
 જિનદત્ત સાગરદત્તના આ ઠપકાને સાલળીને જ્યા સાગર દારકે હોતો  
 ત્યા ગયો અને ત્યા જઈને તેણે સાગર દારકને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પુત્ર !  
 તમે આ જે કંઈ કંઈ છે, તે સારુ ન કહેવાય તમે સાગરદત્તના ઘેરથી  
 આટલા જલ્દી આવતા રહ્યા આ ઠીક નથી એથી હે બેટા ! તમે અત્યારે  
 જેવી સ્થિતિમા છો તેવી જ સ્થિતિમા સાગરદત્તને ઘેર જતા રહો ત્યારે  
 સાગર દારકે પોતાના પિતાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પિતાશ્રી ! તમારી આ  
 સાથી હું પર્વત ઉપરથી નીચે ગળડી પડવું સ્વીકારી શકું છું, વૃક્ષ ઉપરથી  
 નીચે પડી જવું સ્વીકારી શકું છું, મરુપપાત-નિર્જળ પ્રદેશમા જવું સ્વીકારી  
 શકું છું, ઊંડા પાણીમા ડૂબીને મરી શકું છું, તેમજ સળગતા અગ્નિમા  
 પ્રવેશવું, વિષનું ભક્ષણ કરવું, શસ્ત્રનાધારી શરીર ને કાપવું, ગળા સો

ગમનવા અભ્યુપગચ્છામિ=સ્વીકરોમિ કિંતુ સ્વલુ=નિશ્ચયેન સાગરદત્તસ્ય સાર્થવાદસ્ય  
ગૃહે નૈવગચ્છામિ । તતસ્તદા-સ સાગરદત્તઃ સાર્થવાદઃ કુડ્યાન્નરિત = મિત્તિવ્ય-  
વધાનેન સ્થિતઃ સાગરસ્ય દારકસ્ય એતમર્થમ્=ઉક્ત વચન નિશામપતિ=શૃણોતિ,  
નિશામ્ય લજ્જિત સ્વય, ટ્રીહિતઃ પરતઃ ' વિદે ' વિદુઃ=દેશીયોડય શબ્દઃ સ્વપ-  
રતોલજ્જિતઃ, જિનદત્તમ્ય ગૃહાત્ પ્રતિનિષ્ક્રામતિ=નિર્ગચ્છતિ । પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય  
યત્રૈવ સ્વક ગૃહ તત્તોપોગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સુકુમારિકા દારિકા શબ્દયતિ, શબ્દ-  
યિત્વા અદ્ધે=ઉત્સદે ' નિવેસેઃ ' નિવેગયતિ=ઉપવેગયતિ, નિવેશ્ય એવમગાદીત્-દે  
પુત્રી । કિં=કેન કારણેન સ્વલુ ત્વ માગણ દારકેણ ' મુક્તા ' મુક્તા=ત્વક્તા ? ।

વિદારણ કરના ગલે મેં ફામી લગાકર ધરજાના, ગજ, ઉષ્પ આદિ કે  
મૃતકલેવર મે મેં અપને આપનો પ્રવિષ્ટ કરાકર ઉસ શરીરકો નૃતયુદ્ધિ  
કો કલ્પના સે ગૃહ પક્ષિયો દ્વારા મક્ષણ કરવાના વહ સત્ર મેં સ્વીકાર  
કર સકતાઈ, ઇમી તરહ દીક્ષાગૃહણ કરના અથવા વિદેશ મેં ચલેજાના  
મી સ્વીકારકર સકતા હું-પરન્તુ મેં સાગરદત્ત કે ઘરજાનાસ્વીકાર નહી  
કર સકતા હું । અર્થાત્ યે સત્ર પૂર્વોક્ત આપકી આજાઈ મુજે વિના કિસી  
સકોચકે યા વિચારકે માય હૈ પરન્તુ સાગરદત્તકે ઘરજાના મુજે માન્ય  
નહીં હૈ । (તણ સે સાગરદત્તે સત્યવાહે કુહુતરિણ સાગરસ્સ એયમદ્ધ નિ  
સામેઝ, નિસામિત્તાલજ્જિણ, ત્રિલીણ, વિદ્ધે જિનદત્તસ્સ મિહાઓ પટિનિ-  
ક્વમ્મદ્ધ પટિનિક્વમિત્તા જેણેવ સણ મિહે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ધ, ઉવાગચ્છિત્તા  
સુકુમાલિયં દારિય સદાવેઝ, સદાવિત્તા અકેનિવેસેઢ, નિવેસિત્તા એવ  
વયાસી, કિણ્ણ તુમ પુત્તા સાગરણ દારણ મુક્કા? અહ ણ તુમ તસ્સ

ભેરવીને મરુ, હાથી જાટ વગેરેના મરેલા શરીરમા પ્રવેશ કરી મારા શરી  
રને મૃતયુદ્ધિની કલ્પનાથી ગીધ પક્ષીઓને ખવડાવવુ આ બધુ હુ સ્વીકારી  
શકુ તેમ છુ, તેવી જ રીતે દીક્ષા ગ્રહણ કરવી અથવા તેા પરદેશમા જતા  
રહેવુ પણ હુ સ્વીકારી શકુ છુ પણ હુ સાગરદત્તના ઘેર જવુ સ્વીકારવા તૈયાર  
નથી એટલે કે આ બધી ઉપરની તમારી આજ્ઞાઓ મને કોઈ પણ જાતના  
વિચાર કર્યા વગર માન્ય છે, પણ સાગરદત્તને ત્યા જવુ માન્ય નથી  
( તણ સે સાગરદત્તે સત્યવાહે કુહુતરિણ સાગરસ્સ એયમદ્ધ નિમામેઢ, નિસામિત્તા  
લજ્જિણ, ત્રિલીણ, વિદ્ધે, જિનદત્તમ્મ મિહાઓ પટિનિક્વમ્મદ્ધ, પટિનિક્વમિત્તા  
જેણેવ સણ મિહે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ધ, ઉવાગચ્છિત્તા સુકુમાલિયં દારિય સદાવેઢ,  
સદાવિત્તા અકે નિવેસેઢ, નિવેસિત્તા એવ વયાસી કિણ્ણ પુત્તા સાગરણ દારણ

તપાસ્યા ગિરિપતન યા તરુપાન યા મરુપપાત યા=નિર્જલપ્રદેશગમન યા જમ્પપાત  
 યા=અગાધજલે પતન યા, જલપ્રવેશ યા જલપ્રવેશ પ્રવેશ યા વિપક્ષગં યા,  
 ' સત્યોવાડણ યા ' મુદ્ધારવાટન યા=ગેત પ્રસારિતારણ યા, ' વેદાણમ યા '  
 વૈદ્યાયસ યા વળે પાશમ્પ્રદણ યા, તથા-મૃત્યુપ્પટ્ટ=મૃત્યુઃ સ્પર્શન મયા મનોદ્વા  
 દીના કલેરે પ્રવેગિતસ્ય ગરીસ્ય મૃત્યુરુદય મૃત્યુર્મક્ષણ, તથા પ્રવચ્ચા યા, વિદમ

ગિરિપટ્ટણ યા તરુપટ્ટણ યા મરુપ્પપાત યા જલપ્રવેશ યા જલણપ્રવેશ યા  
 વિપક્ષમ્પ્રવણ યા સત્યોવાડણ યા વેદાણમ યા ગિદ્ધાપિટ્ટ યા પવજ્જ યા  
 વિદેસગમણ યા અબ્ધુવગચ્છિજ્જામિ, નો સ્વલ્લુ અહ સાગરદત્તસ્સ ગિહ  
 ગચ્છિજ્જા ) જિનદત્ત સાગરદત્ત કે ઘરે ઉત્તારને રૂપ અર્થે કો સુન  
 કરકે જ્યાં સાગરદારક ધા વહા મગા-વર્તા જાકર ઉત્તારને સાગર દારક  
 સે હસ પ્રકાર કલા-હે પુત્ર ! યહ તુમને અચ્છા નહીં ક્રિયા-જો તુમ  
 સાગરદત્ત કે ઘર સે યહા હતને જલ્દી આ ગયે । હમલિયે હે વેદા !  
 તુમ જૈસે યહા ઘેટે હો વૈસે હી સાગરદત્ત કે ઘર ચલે જાઓ । તમ  
 સાગરદારકને અપને પિતા જિનદત્ત સે હમ પ્રકાર કલા-પિતાજી ! મેં  
 આપકી આજ્ઞા સે પર્વત સે ગિરના સ્વીકાર કર સકતા હૂં, વૃક્ષ સે  
 નીચે પડજાના સ્વીકારકર સકતા હૂં-મરુપપાત-નિર્જલપ્રદેશ મેં જાના  
 અંગીકારકર સકતા હૂં, અગાધજલ મેં દૂરકર મરસગતા હૂં તથા જલતી  
 હુઈ અગ્નિ મેં પ્રવેશ કરના, વિપક્ષામક્ષણ કરના, શસ્ત્ર સે શરીર કા

તાઓ ! ગિરિપટ્ટણ યા તરુપટ્ટણ યા મરુપ્પપાત યા જલપ્રવેશ યા જલણપ્રવેશ  
 યા વિપક્ષમ્પ્રવણ યા સત્યોવાડણ યા વેદાણમ યા ગિદ્ધાપિટ્ટ યા પવજ્જ યા  
 વિદેસગમણ યા અબ્ધુવગચ્છિજ્જામિ, નો સ્વલ્લુ અહ સાગરદત્તસ્સ ગિહ ગચ્છિજ્જા)

જિનદત્ત સાગરદત્તના આ ઠપકાને સાભળીને ત્યા સાગર દારક ઉતો  
 ત્યા ગયો અને ત્યા જઈને તેણે સાગર દારકને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પુત્ર !  
 તમે આ જે કંઈ કહ્યું છે, તે સારું ન કહેવાય તમે સાગરદત્તના ઘેરથી  
 આટલા જલ્દી આવતા રહ્યા આ ઠીક નથી એથી હે બેટા ! તમે અત્યારે  
 જેવી સ્થિતિમા છો તેવી જ સ્થિતિમા સાગરદત્તને ઘેર જતા રહો ત્યારે  
 સાગર દારકે પોતાના પિતાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પિતાશ્રી ! તમારી આ  
 સાથી હું પર્વત ઉપરથી નીચે ગળડી પડ્યું સ્વીકારી શકું છું, વૃક્ષ ઉપરથી  
 નીચે પડી જવું સ્વીકારી શકું છું, મરુપપાત-નિર્જલ પ્રદેશમા જવું સ્વીકારી  
 શકું છું, ઊંડા પાણીમા ડૂબીને મરી શકું છું, તેમજ સળગતા અગ્નિમા  
 પ્રવેશવું, વિષવું લક્ષણ કરવું, શસ્ત્રનાધારથી શરીર ને કાપવું, અજામ

जाव अन्निज्जमाणमग्ग, तएण से सागरदत्ते कोडुवियपुरिसे  
सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-तुब्भे ण देवाणुप्पिया ।  
एय दमगपुरिस विउलेण जमणपाणखाइमसाइम पलोभेहि  
पलोभित्ता गिह अणुप्पवेसेह अणुप्पवेसित्ता खडगमल्लग  
खडघडग ते एगते एडेह एडित्ता अलकारियकम्म कारेह  
कारित्ता पहाय कयवलि० जाव सव्वालकारविभूसिय करेह  
करित्ता मणुण्णं असणपाणखाइमसाइम भोयावेह भोया-  
वित्ता मम अतिय उवणैह, तएण कोडुवियपुरिसा जाव  
पडिसुणेंति पडिसुणित्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवा  
गच्छइ उवागच्छित्ता तं दमग असण उवप्पलोभेंति उवप्प-  
लोभित्ता सय गिह अणुपवेसिति अणुपवेसित्ता त खडगम-  
ल्लग खडगघडग च तस्स दमगपुरिसस्स एगते एडति,  
तएण से दमगे तसि खडमल्लगंसि खडघडगंसि य एगते  
एडिज्जमाणसि महयार सद्देण आरसइ, तएण से सागरदत्ते  
तस्स दमगपुरिरास्स त महयार आरसियसइ सोच्चा निसम्म  
कोडुवियपुरिसे एव वयासी-किण्ण देवाणुप्पिया । एस  
दमगपुरिसे महया महया सद्देण आरसइ ? तएण ते कोडु-  
वियपुरिसा एव वयासी-एस णं सामी । तसि खडमल्लगमि  
खडघडगसि एगते एडिज्जमाणसि महया महया सद्देण  
आरसइ, तएण से सागरदत्ते सत्थ० ते कोडुवियपुरिसे एव  
वयासी-मा ण तुब्भे देवाणुप्पिया । एयस्स दमगस्स त



અહ સ્વલુતાં તન્ને દાસ્યામિ ચમ્પ ચન્દ્ર દ્યુમિત્તા=ભવિષ્યતિ કાતા પ્રિયા મનોજા  
મનોમા=મનોગતા ભવિષ્યતિ. ઇતિ=અર્થ મુકુમારિકા દારિકાં તામિગિદ્દામિચંમિ  
'સમાસાસેઈ' સમાસાસયતિ સમાસાસ પતિનિર્ગજયતિ=મધ્યાપયતિ ॥ ૧૦ ॥

મૂલમ્-તપ્તણ સે માગરદત્તે યગ મહં દમગપુરિસ પાસઈ  
દડિસડનિવસણ સ્પડગમહુગચડગહરથમયં મચ્છિયામહસ્સેહિ

દહામિ જસ્સણ તુમ ઇટ્ટા જાગ મળામા ભવિસ્સમિત્તિ સુમાલિય દારિય  
તાહિ ઇટ્ટાહિ ચમ્પૂહિ સમાસાસેઈ, સગ નામિત્તા પડિવિસજ્જેઈ ) વર્ણ  
મિત્તિ કે પીઠે છુપા દુઆ માગરદત્ત સાર્થવાહ સાગર-કે ઉન ઘચનો કો  
સુન રહા થા । સો સુન કરેકે સ્વય ઘહા લજ્જિત દુઆ તથા વૂસરોસે મી  
ઉસે ઘહી શર્મ આઈ હસ તગ સ્વ ઓર પર સે લજાના દુઆ વહ જિન  
દત્ત કે ઘર સે ગાંઠર નિકળ ગયા । ઓર જાકર અપને ગર પહુંચા ।  
વહા પહુંચ કર ઉમને અપની પુત્રી સુકુમારિકા દારિકા કો બુલાયા  
-બુલાને પર જય ગા આ ગઈ તય ઉસે ઉમને અપની ગોદી મેં ઘેઠા લિયા  
ઘેઠાનેકે ગાદ ફિર ઉમને ઉમસે પૂઠા ઘેટી । માગરને તુમ્હેં કિસ કારણ  
સે છોડ દિયા હે મેં તુમ્હેં ઉસી કે દુગા । કિ જિમ કે લિયે તુમ અચ્છી  
તરહ ઇટ્ટા, કાન્તા, પ્રિયા, મનોજા ણવ મનોમા હોઓગી, હસ પ્રકાર ઉમને  
સુકુમારિકા દારિકાકો ઉનર ઇટ્ટ ઘચનો દ્વારા અચ્છી તરહ આશ્વાસન  
દિયા-ઘૈર્ય વધાયા-ઓર આશ્વાસન દેકર ઉસે વિસર્જિન કરદિયા । સૂ. ૧૦

મુક્કા ? અહ ણ તુમ તસ્સ દાહામિ જસ્સણ તુમ ઇટ્ટા જાગ મળામા ભવિસ્સમિત્તિ  
સુમાલિય દારિય તાહિ ઇટ્ટાહિ ચમ્પૂહિ સમાસાસેઈ, સમાસાસિત્તા પડિવિસજ્જેઈ )  
ત્યા જ લીંતની પાછળ છુપાઈને માગરદત્ત સાર્થવાહ સાગરની તે બધી  
વાતને સાંભળી રહ્યો હતો । સાંભળી તે બહુજ લજ્જિત થયો તેમજ બીજા  
ઓથી પણ તે ખૂબજ લજ્જિત થયો । આ રીતે 'જાતે' અને બીજાઓથી  
લજાતો તે જિનહત્તના ઘેરથી બહાર નીકળી ગયો । અને નીકળીને પોતાને ઘેર  
પહોંચ્યો । ત્યા જઈને તેણે પોતાની પુત્રી સુકુમારિકા દારિકાને બોલાવી જ્યારે  
તે સુકુમારિકા દારિકા આવી ગઈ ત્યારે તેને પોતાના બેળામા બેસાડી લીધી  
બેસાડીને તેણે તેને પૂછ્યું હે બેટી ! શા કારણથી સાગરે તને ત્યજી છે ? તને  
હુ તે પુરુષને જ આપીશ કે જેના માટે તુ મારી રીતે ઇંટા, કાતા પ્રિયા,  
મનોજા અને મનોમા થશે આ રીતે તેણે સુકુમાર દારિકાને પોતાના ઇંટ વચ્ચે  
નોથી સારીરીતે આશ્વાસન આપ્યું અને ત્યાર પછી તેને વિદાય આપી ~ ૧૦॥

जाव अन्निज्जमाणमग्गं, तएण से सागरदत्ते कोडुवियपुरिसे  
 सहावेइ सदावित्ता एव वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया ।  
 एयं दमगपुरिस विउलेण अमणपाणखाइमसाइम पलोभेहि  
 पलोभित्ता गिह अणुप्पवेमेह अणुप्पवेसित्ता खडगमल्लग  
 खडघडग ते एगते एडेह एडित्ता अलकारियकम्म कारेह  
 कारित्ता पहाय कयवलि० जाव सव्वालकारविभूसिय करेह  
 करित्ता मणुत्तणं असणपाणखाइमसाइम भोयावेह भोया-  
 वित्ता मम अतिय उवणेह, तएण कोडुवियपुरिसा जाव  
 पडिसुणेति पडिसुणित्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवा  
 गच्छइ उवागच्छित्ता त दमग असण उवप्पलोभेति उवप्प-  
 लोभित्ता सय गिह अणुपवेसिति अणुपवेसित्ता त खडगम-  
 ल्लग खडगघडग च तस्स दमगपुरिसस्स एगते एडति,  
 तएण से दमगे तसि खडमल्लगंसि खडघडगंसि य एगते  
 एडिज्जमाणसि महयार सद्देण आरसइ, तएण से सागरदत्ते  
 तस्स दमगपुरिसस्स तं महयार आरसियसइ सोच्चा निसम्म  
 कोडुवियपुरिसे एव वयासी-किण्णं देवाणुप्पिया । एस  
 दमगपुरिसे महया महया सद्देण आरसइ ? तएणं ते कोडु-  
 वियपुरिसा एव वयासी-एस ण सामी । तसि खडमल्लगनि  
 खंडघडगसि एगते एडिज्जमाणसि महया महया सद्देण  
 आरसइ, तएण से सागरदत्ते सत्थ० ते कोडुवियपुरिसे एव  
 वयासी-मा ण तुब्भे देवाणुप्पिया । एयस्स दमगस्स त

खंड जाव एडेह पासे ठवेह जहा णं पत्तिय भवइ, ते वि  
तहेय ठविति. तण्णं ते कोटुवियपुरिसा तस्स दमगस्स  
अलंकारियकम्मकरेति करित्ता सयपागसहस्सपागेहिं तिछेहिं  
अवभगेति अवभंगिण्. सुमाणे सुरभिगधुव्वट्ठणेणं गाय उव्व-  
ट्ठिति२ उसिणोदगेणं गधोदगेण सीतोदगेणं पहारेति पम्हल  
सुकुमाल गंधकासाइयाण । गायाइ ल्हति ल्हित्ता हंमल-  
क्खणं पट्टसाडगं परिहेति परिहित्ता सब्वालकारविभूसियं  
करेति करित्ता त्रिउल असणपाणखाइमसाइमं भोयावेति  
भोयावित्ता सागरदत्तस्स उवणेति, तएण सागरदत्ते सूमा-  
लिय दारिय पहाय जाव सब्वालकारविभूसियं करित्ता त  
दमगपुरिस एव वयासी-देवाणुप्पिया। मम धूया इट्ठा एय  
णं अह तव भारियत्ताए दलामि भद्वियाए भद्वओ भवि-  
ज्जासि, तएण से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठ पडिसु-  
णेति पडिसुणिता सूमालियाए दारियाए सद्धिं वासघर  
अणुपविसइ अणुपविसित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं  
तलिमसि निवज्जइ, तएण से दमगपुरिसे सूमालियाए इम  
एयारूव अगफास पडिसवेदेइ, सेसं जहा सागरस्स जाव  
सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता वासघराओ निग्गच्छइ  
निग्गच्छित्ता खंडमल्लग खडघडगं च गहाय मारामुक्के विव  
काए जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए, तएण  
सा सूमालिया जाव गएणं से दमगपुरिसे तिकट्ठु ओहय-  
मण जाव जियाउइ ॥ सू० ११ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु स सागरदत्त सार्वया  
होऽन्यदा=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले ‘उप्पि आगासतलगसि’ उपरि आका-  
शतल्लके=प्रासादोपरिभागे, सुहणिसण्णे ‘सुखेनोपविष्ट’, राजमार्गमवलोकमानः  
२ तिष्ठति । तत खलु स सागरदत्त एक महान्त ‘दमगपुरिस’ द्रमनपुरुष  
‘दमग’ इति देशीयः शब्दः दरिद्रपुरुष पश्यति, किम्भूतम् ? इत्याह—‘दडिखण्ड  
निवसण’ दण्डिखण्डनिवसन=दण्डि-कृतसन्धान जीर्णवस्त्र तस्य खण्ड तदेव निव-  
सन परिधानवस्त्र यस्य स दण्डिखण्डनिवसनस्तम्, तथा—, खण्डमल्लग घडगहत्थगय  
खण्डमल्लकघटकहस्तगत=खण्डमल्लक-खण्डशराव स्कुटितशराव मिश्रापान्न, तथा  
खण्डघटकश्च=खण्डरूपो घटः स्कुटितस्य घटस्य भागः स एव जलपात्र, एतद्  
द्वय हस्तगत यस्य तम्, ‘मच्छियामहस्सेहिं जाव अन्निज्जमाणमग्ग’ मक्षिकास  
हस्रै र्यावत् अन्वोद्यमानमार्गं, शरीरवस्त्रादेर्मलिनत्वात् तत्पृष्ठतो मक्षिका आप

‘तएण से सागरदत्ते’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण से सागरदत्ते)इसके बाद सागरदत्तने किसी एक समय  
“उप्पि आगासतलगसि” अपने प्रासाद के ऊपर सुख पूर्वक बैठी हुई  
स्थिति में राजमार्ग का अवलोकन करते समय (एग मह दमगपुरिस  
पासइ) एक अत्यंत दरिद्र पुरुष को देखा (दडिखण्डनिवसण खण्डगम  
ललगघडगहत्थगय मच्छियासहस्सेहिं जाव अन्निज्जमाणमग्ग) जो  
जीर्णवस्त्र के जुड़े हुए चियड़े को पहिने था और जिसके हाथ में खण्ड-  
मल्लकया-फुटा हुआ मिट्टि के खप्पर था—तथा पानी पीने के  
लिये फुटे हुए घट का एक खप्पर था । हजारों मक्खियां जिसके पीछे  
पीछे, शरीर और वस्त्रों के मलिन होने से भिन्न २ करती हुई उड़ रही

‘तएण से सागरदत्ते’ इत्यादि ॥

टीका०—(तएण से सागरदत्ते) त्थार भाइ सागरदत्त केई ओक वधूत (उप्पि आगा  
सतलगसि) पोताना भडेवनी उपर सुजेथी जेसीने राजमार्गनु अवलोउनउरते। हते।  
त्थारे तेजे (एग मह दमगपुरिस पासइ) ओउ भूणज दरिद्र-क गाण-पुरुषने जेथे।  
(दडिखण्डनिवसण खण्डगमललगघडगहत्थगय मच्छियासहस्सेहिं जाव अन्निज्जमा-  
णमग्ग) तेजे नूना वस्त्रना र्थिथराओ। पडेरेला। हता अने तेना हाथमा  
“अउमल्लक हतु” ओउते के हूटी गयेला भाटीना पासणुने। ओक ककडा। हते।  
तेमज्जपाणी पीवा भाटे हुटेदी। भाटदीनु ओउ जणपर हतु। हजरे। भाणीओ।  
तेनीपाछण पाछण-शरीर अने वस्त्रोनी भलीनताने लीधे। उडी रह्यी। हती,

तन्तीत्यर्थः । ततः गन्तुं सागरदत्तं कोटुवियपुर्णमात्रं द्रव्यमिति, गन्धविष्ठा  
 पत्रमादीत् हे देवानुप्रियाः । गृह्य गन्तुं एतत् द्रव्यपुर्णं चन्द्रपुर्णं, विपुलेन अन्न  
 नपानखाद्यस्यानेन प्रलोभयत प्रलोभ्य गृहमनुपवेशयत, अनुपवेश्य स्वहृदमल्लङ्घनं  
 खण्डगराव खण्डघटकं=रानीयपात्र ' से ' तस्य द्रव्यपुर्णस्य एकान्ते=एकान्त  
 स्थाने ' एदेह ' निक्षेपयत, निक्षेप्य अलभारिकर्म = केवलमन्त्रेदनादिक  
 नापितादिभिः कारयत, कारयित्वा स्नात कृतमलिकर्माण यावत् सर्वालङ्कार-  
 धी । ( तएण से सागरदत्ते कोटुवियपुर्णिसे सदावेह, सदावित्ता एवं  
 वयासी-तुम्हे ण देवाणुप्पिया ! एय दमगपुरिस विउलेण असणपाण-  
 खाइम साइम पलोमेह, पलोमित्ता गिह अणुपवेसेह, अणुपवेसित्ता  
 खडगमल्लग खडघटकं त एग ते एदेह एडित्ता अलकारिकम्म कारेह  
 कारित्ता ण्हाय कययलि० जाव मन्त्रालकारविभूसिय करेह करित्ता मणु  
 ण्ण असणपाणखाइमसाइम भोयावेह, भोयावित्ता मम अतियउवणेह )  
 इसके बाद सागरदत्तने आज्ञाकारी पुरुषों को बुलाया । बुलाकर उसने  
 इस प्रकार कहा देवानुप्रियो । तुम लोग इस दरिद्र पुरुषको विपुल अशन,  
 पान, खाद्य और स्वात्परूप चतुर्विध आहारका प्रलोभन दो-प्रलोभन देकर  
 फिर इसे घर में भीतर करलो । जब यह घरके भीतर हो जावेगा तब  
 तुमलोग इसके ये खडमल्ल (फटी लगेटी ) और खडघटक इससे छुड़ा  
 कर किसी एकान्त-सुरक्षित-स्थान में रखदो । बाद में नापित ( नाई )  
 को बुलाकर इसके सुन्दर ढग से चाल घनचाओ नखआदि जो बढ़ रहे

( तएण से सागरदत्ते कोटुवियपुर्णिसे सदावेह, सदावित्ता एय वयासी-तुम्हेण देवा  
 नुप्पिया ! एय दमगपुरिस विउलेण असणपाणखाइमसाइम पलोमेह, पलोमित्ता गिह  
 अनुपवेसेह, अणुपवेसित्ता खडगमल्लग खडघटकं त एग ते एदेह, एडित्ता अल  
 कारिकम्म कारेह कारित्ता ण्हाय कययलि० जाव मन्त्रालकारविभूसिय करेह करित्ता  
 मणुण्ण असणपाणखाइमसाइम भोयावेह, भोयावित्ता मम अतिय उवणेह )  
 त्थारपणी सागरदत्ते आज्ञाकारी पुत्रोने जालाव्या जालावीने तेमने आ  
 प्रमाणे कह्यु-हे हे देवानुप्रियो । तमे बोडो आ दरिद्र पुत्रने पुत्रेण प्रमा  
 णुमा अशन, पान, आद्य अने स्वाद्य रूप चार जतना आहारनी लालय आपो  
 लालय आपीने तेने घरनी अदर जालावी हो ज्यारे ते घरमा आवी जय  
 त्थारे तमे तेनी पासोना अउमल्ल अने अउघटक लधने तेने अज्ञात सुरक्षित  
 स्थानमा भूडी हो त्थारपणी उज्जमने जालावीने तेना सरस रीते वाण कपावी  
 नाणो अने वधी गयेला नय वगेरेने कपावी नाणो त्थार तेने स्नान



विभूषित कुरुत कृत्वा 'मणुण्ण' मनोज्ञ=रुचिरम् अशनपानस्वाद्यस्वाद्य भोजयत  
भोजयित्वा ममान्तिक=समीपमुपनयत । ततः खलु कौटुम्भिकपुरुषा यावत्-प्रति-  
शृण्वन्ति='तथाऽस्तु' इति कृत्वा तदाज्ञा स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य यत्रैव स द्रमकपु-  
रुषः=रङ्गपुरुषः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य त द्रमक रुचिरेण विपुलेनाशनादिना  
प्रलोभयन्ति प्रलोभ्य स्वक गृहमनुप्रवेशयन्ति, अनुप्रवेश्य त खण्डकमल्लक खण्डक-  
घटक च तस्य द्रमकपुरुषस्यैकान्ते 'एडति' निक्षेपयन्ति, तत खलु स द्रमक  
स्नस्मिन् खण्डमल्लके खण्डघटके च एकान्ते 'एडिज्जमाणसि' निक्षेप्यमाणे  
सति महता २ शब्देन 'आरसइ' आक्रन्दति । ततः खलु स सागरदत्तस्तस्य  
द्रमकपुरुषस्य त महान्त 'आरसियइ सद' आक्रन्दनशब्द श्रुत्वा निशम्य कौटु

हैं उन्हें कटवाओ । उमके प्रश्नात् इसे स्नान कराओ । बाद मे इससे पशु  
पक्षी आदिको अन्नादिका भागरूप बलिकर्म आदिकरवाओ-जब यह  
बलिकर्म आदिकर चुके तब तुमलोग इसे समस्त अलकारो से विभूषित  
करो, विभूषित करके फिर इसे मनोज्ञ अशन, पान, स्वाद्य, एव  
स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार खिलाओ-खिलाकर के बाद मे फिर  
हमारे पास इसे ले आओ । (तएण कौटुवियपुरिसा जाव पडि-  
सुणेंति, पडिसुणित्ता, जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छइ, उवाग  
च्छित्ता त दमग असण उवप्पलोभेंति, उवप्पलोभित्ता सय गिह  
अणुपवेसिति अणुपविसित्ता, त खडमल्लग खडगधडग च तस्स दम-  
गपुरिसस्स एगते एडेंति, तएण से दमगे तसि खडमल्लगसि, खड  
धडगसि य एगते एडिज्जमाणसि महया २ सद्देणं आरसइ, तएण  
से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स त महयार आरसियसद् सोच्चो

करावो स्नान कराव्या जाइ तेना डाथेथी पशु-पक्षी वगेरेने अन्न वगेरेने  
लाग आपवा इय अलिकर्म करावडावो न्यारे अलिकर्मनी विधि पती नय  
त्यारे तमे लोडो अने अधी नतना अलकारेथी शणुगारे शणुगारीने तेने  
मनोज्ञ, अशन, पान, आद्य अने स्वाद्य इय आर नतना आहारो नभाडो  
नभाडया पछी तेने अमारी पासो लई आवो

(तएण कौटुवियपुरिसा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव से दमग-  
पुरिसे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता त दमग असण उवप्पलोभेंते उवप्पलो-  
भित्ता सयगिह अणुपवेसिति, अणुपविसित्ता, त खडगमल्लग खडगधडग च  
तस्स दमगपुरिसस्स एगते एडेंति तएण से दमगे तसि खडमल्लगसि, खडधड-  
गसि य एगते एडिज्जमाणसि महया २ सद्देण आरसइ, तएण से सागरदत्ते तस्स  
दमगपुरिसस्स त महयार आरसियसद् सोच्चा नितम्मा कौटुवियपुरिसे एव वयासी)

तन्तीत्यर्थः । ततः स्वप्न म सागरदत्त नागपुत्रपुरुषात् शङ्क्यति, गन्धर्विणा  
 एवमादीन् दे देवानुप्रियाः । नृप गतु गत द्रमगपुरुष = द्रुपदपुरुष, विपुलेन अत्र  
 नपानखाद्यस्यानेन प्रयोगयत प्रलोभ्य गृहमनुपनेनयत, अनुपनेनय गृहकमल्लङ्घनं =  
 खण्डगराव खण्डघटक = गानीयपात्र ' से ' तस्य द्रमगपुरुषस्य पकान्ते = एकात  
 स्थाने ' एतेह ' निभषयत, निक्षेप्य अलकारिकम्म = केशनसन्नेदनादिक  
 नापितादिभिः काययत, कारयित्वा स्नात कृतपरिष्कारेण यावन् सर्वालङ्कार-

धी । ( तए ण मे सागरदत्ते कोट्टुप्पियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव  
 वयासी-तुम्हे ण देवानुप्पिया ! एय दमगपुरिस विउलेणं अमणपाण  
 खाइम साइम पलोमेइ, पलोमित्ता गिह अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेमित्ता  
 खडगमल्लग खडघटक त एग ते एतेह, एडित्ता अलकारिकम्म कारेह  
 कारित्ता ण्हाय कयवलि० जाव सन्वाल्कारविभूसिय करेह करित्ता मणु  
 ण्ण असणपाणखाइमसाइम भोयावेह, भोयावित्ता मम अतियउवणेह )  
 इसके बाद सागरदत्तने आज्ञाकारी पुरुषों को बुलाया । बुलाकर उसने  
 इस प्रकार कहा देवानुप्रियो । तुम लोग इस दरिद्र पुरुषको विपुल अशन,  
 पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहारका प्रलोभन दो-प्रलोभन देकर  
 फिर इसे घर में भीतर करलो । जब यह घरके भीतर हो जावेगा तब  
 तुमलोग इसके ये खडमल्ल (फटी लगोटी ) और खडघटक इससे छुड़ा  
 कर किसी एकान्त-सुरक्षित-स्थान में रखदो । बाद में नापित ( नार्ई )  
 को बुलाकर इसके सुन्दर ढग से चाल घनवाओ नखआदि जो बढ़ रहे

( तएण से सागरदत्ते कोट्टुप्पियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-तुम्हेण देवा  
 नुप्पिया ! एय दमगपुरिस विउलेण असणपाणखाइमसाइम पलोमेइ, पलोमित्ता गिह  
 अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेसित्ता खडगमल्लग खड घटक त एग ते एतेह, एडित्ता अल  
 कारिकम्म कारेह कारित्ता ण्हाय कयवलि० जाव सन्वाल्कारविभूसिय करेह करित्ता  
 मणुण्ण असणपाणखाइमसाइम भोयावेह, भोयावित्ता मम अतिय उवणेह )

त्यारपछी सागरदत्ते आज्ञाकारी पुरुषोंने ओलाव्या ओलावीने तेभने आ  
 प्रमाणे कछु-डे डे देवानुप्रियो । तमे बोडो आ दरिद्र पुरुषने पुण्डण प्रमा  
 णुमा अशन, पान, आद्य अने स्वाद्य रूप आर जतना आहारनी लालय आपो  
 लालय आपीने तेने घरनी अहर ओलावी दो न्यारे ते धम्मा आवी जय  
 त्यारे तमे तेनी पावेना अडमल्ल अने अडघटक लधने तेने ओकात सुरक्षित  
 स्थानमा भूडी हो त्यारपछी दुज्जमने ओलावीने तेना सरस रीते वाण कपावी  
 नाओ अने वधी गथेला नअ वगेरेने कपावी नाओ त्यारपछी तेने स्नान

विभूषित कुरुत कृत्वा ' मणुण ' मनोज्ञ=रुचिरम् अशनपानस्वाद्यस्वाद्य भोजयत  
भोजयित्वा ममान्तिक=समीपमुपनयत । ततः खलु कौटुम्बिकपुरुषा यावत्-प्रति-  
गृण्वन्ति=' तथाऽस्तु ' इति कृत्वा तदाज्ञा स्वीकुर्वन्ति प्रतियुत्य यत्रैव स द्रमकपु-  
रुषः=रङ्गपुरुषः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य त द्रमक रुचिरेण विपुलेनाशनादिना  
प्रलोभयन्ति प्रलोभ्य स्वक गृहमनुप्रवेशयन्ति, अनुप्रवेश्य त खण्डकमल्लक खण्डक-  
घटक च तस्य द्रमकपुरुषस्यैकान्ते ' एडति ' निक्षेपयन्ति, तत खलु स द्रमक-  
सस्मिन् खण्डमल्लके खण्डघटके च एकान्ते ' ' एडिज्जमाणसि ' निक्षेप्यमाणे  
सति महता २ शब्देन ' आरसड ' आक्रन्दति । ततः खलु स सागरदत्तस्तस्य  
द्रमकपुरुषस्य त महान्त ' आरसियड सद ' आक्रन्दनशब्द श्रुत्वा निगम्य कौटु-

हैं उन्हें कटवाओ । उसके प्रश्नात् इसे स्नान कराओ । बाद में इससे पशु  
पक्षी आदिको अ नादिका भागरूप बलिकर्म आदिकरवाओ-जब यह  
बलिकर्म आदिकर चुके तब तुमलोग इसे समस्त अलंकारों से विभूषित  
करो, विभूषित करके फिर इसे मनोज्ञ अशन, पान, स्वाद्य, एवं  
स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार खिलाओ-खिलाकर के बाद में फिर  
हमारे पास इसे ले आओ । ( तएण कौटुवियपुरिसा जाव पडि-  
सुणेंति, पडिसुणित्ता, जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छइ, उवाग  
च्छित्ता त दमगं असण उवप्पलोभेंति, उवप्पलोभित्ता सयं गिहं  
अणुपवेसिति अणुपविसित्ता, त खडमल्लग खडगघडग च तस्स दम-  
गपुरिसस्स एगते एडेंति, तएण से दमगे तसि खडमल्लगसि, खड  
घटगसि य एगते एडिज्जमाणसि महया २ सदेणं आरसड, तएण  
से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स त महया २ आरमियसद सोच्चो

करावो स्नान कराव्या आह तेना हाथेथी पशु-पक्षी वगेरेनो अन्न वगेरेनो  
लाग आपवा इप बलिकर्म उगवडावो न्यारे बलिकर्मनी विधि पती नय  
त्यारे तमे लोके अने अधी नतना अलंकारोधी शणुगारे शणुगारीने तेने  
मनोज्ञ, अशन, पान, आद्य अने स्वाद्य इप आर नतना आहारो नभाडे  
नभाडया पछी तेने अमारी पामे लई आवो

( तएण कौटुवियपुरिसा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव से दमग-  
पुरिसे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता त दमग असण उवप्पलोभेंते उवप्पलो-  
भित्ता सयागेह अणुपवेसिति, अणुपविसित्ता, त खडगमल्लग खडगघडग च  
तस्स दमगपुरिसस्स एगते एडेंति तएण से दमगे तसि खडमल्लगसि, खडघड-  
गसि य एगते एडिज्जमाणसि महया २ सदेण आरसड, तएण से सागरदत्ते तस्स  
दमगपुरिसस्स त महया २ आरमियसद सोच्चा नितम्भ कौटुवियपुरिसे एव वयासी)

म्विकपुम्पानेयमादीन्-हं देवानुमियाः । तिस्रैः कन पारणेन खलु एव द्रमपुम्पो  
महता २ शब्देन आरमति=आरन्दति ? । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः एव  
मयदन्-एव खलु हे स्वामिन ! तस्मिन् खलु द्रुक् गच्छन्ते गच्छन्ते गच्छन्ते निष्पन्न-  
माणे महता २ शब्देन आरमति=आरन्दति । ततः खलु ग मागदन्तः सार्धं वा  
स्तान् कौटुम्बिकपुरुषान् पञ्चमादीन्-हं देवानुमियाः । मा खलु यूय एतस्य

निसम्म कौटुम्बिकपुरिसे एव वयासी ) इस प्रकार की उन कौटुम्बिक  
ने सागरदत्त सेठ की इस आज्ञा को अच्छी तरह स्वीकार लिया और  
स्वीकारकर चला जाकर उन्होंने उस दमक को अशन पान आदिरूप  
चतुर्विध आहार से घार २ लुमाया लुमाकर वे उसे अपने घर तक  
ले आये और अत में अपने घर में उसे प्रवेश कराया । बाद में उन  
लोगों ने उस दमक पुरुष के फटे हुए मिट्टी के दीपक के खड को, तथा  
फटे हुए घड़े के सप्पर को उससे लेकर किसी सुरक्षित स्थान में रख  
दिया । जब उस दमकपुरुष ने अपने खडमल्लक (फटी लंगोटी) को और  
खडघटक को अपने से लेकर एकान्त स्थान में रखा जाता हुआ देखा-तो  
वह जोर जोरसे रोने लगा-उसके उस रोनेकी आवाजको सुनकर और  
उसे अपने चित्त में धारण कर सागरदत्त ने कौटुम्बिक पुरुषों से इस  
प्रकार कहा-( किण्ण देवाणुप्पिया ! एसदमगपुरिसे महया २ सहेण  
आरसह ३ तण्ण ते कौटुम्बिकपुरिसा एव वयासी एसग सामी ! तसि  
खडमल्लगसि खडघडगसि एगते एडिज्जमाणसि महया २ सहेण

आ जतनी सागरदत्तनी आज्ञाने ते कौटुम्बिक पुरुषोंने सारी रीते  
स्वीकारी लीधी स्वीकार्यो जाह तेओ हरिद्र भाणुसनी पासो गया त्या जधने  
तेमणे तेने बोलाव्यो अने अशन, पान वगेरे इप आर जतना आहारनी  
वारवार लाव्यो आपी ललथावीने तेओ तेने घर सुधी लध आव्यो अने  
छेवटे तेने घरभा हाणल करी दीधो त्यारपछी ते बोडोओ ते हरिद्र भाणुसनी  
पासेथी डूटेला माटीना वासणुने कटके तेमज डूटेला माटलाना अप्परने लधने  
सुरक्षित स्थाने भूकी दीधु ज्यारे ते हरिद्र भाणुसे पेताना अउमल्लकने अने  
अउधटने पोतानी पासोथी छीनवीने ओकात स्थानमा भूजता जेथु त्यारे ते  
ओटेथी घाटा पाडीने रडवा लाव्यो तेना रडवाना आवाजने सालणीने अने  
तेने पोताना चित्तमा धारण करीने सागरदत्त कौटुम्बिक पुरुषोंने आ प्रमाणे कहु  
( किण्ण देवाणुप्पिया ! एस दमगपुरिसे महया २ सहेण आरसह, तण्ण  
ते कौटुम्बिकपुरिसा एव वयासी एसग सामी ! तसि खडमल्लगसि खडघडगसि  
एगते एडिज्जमाणसि महया २ सहेण आरसह, तण्ण से

द्रमकपुरुषस्य तत् खण्डमल्लक खण्डघट्टक यावत्-एकान्ते ' एडेह ' निक्षेपयत अस्य परोक्षे मा स्थापयतेत्यर्थ, किन्तु पार्श्वे स्थापयत, यथा खलु ' पत्तिय ' प्रत्ययः= विश्वामो भवति । तेऽपि कोटुम्बिकपुरुषास्तथैव स्थापयन्ति । तत खलु ते कौटु-  
आरसह, तण्ण से सागरदत्ते मत्थवाहे ते कोडुविय पुरिसे एव वयासी )  
हे देवानुप्रियो ! क्या कारण है जो यह दमक पुरुष जोर २ से रो रहा है ? तब उन कौटुम्बिक पुरुषों ने ऐसा कहा कि हे स्वामिन् ! इसने ज्योंही अपने खड्गमल्लक को और घटखड को लेकर एक ओर सुरक्षित स्थान में रखे जाते हुए देखा वैसे ही यह बड़े जोर २ से रोने लगा है । ऐसा सुनकर सागरदत्त ने उन कौटुम्बिक पुरुषों से इस प्रकार कहा-  
( माण तुम्हे देवाणुप्पिया ! एयस्स दमगस्म त खड जाव एडेह, पासे ठवेह, जहाण पत्तिय भवइ, तेवि तहेव ठवेति, तण्ण ते कोडुविय पुरिसा तस्स दमगस्स अलकारियकम्म करेति, करित्ता सयपाग सहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भगेति, अब्भगिए समाणे सुरभिगधुव्व-  
इणेण गाय उव्वट्ठिति, २ उस्सिणोदगेण गधोदगेण सीतोदगेण ण्हावेति )  
हे देवानुप्रियो ! तुम लोग इस दमक पुरुष के फूटे हुए मिट्टी के दीपक के खड को और फूटे हुए घड़े के खप्पर को इससे लेकर परोक्ष में-  
अदृश्य स्थान में-मत रखो किन्तु इस के पास में ही-समक्षरखो, जिससे इसे अपना विश्वास बना रहे । इस प्रकार सागरदत्त की बात कोडुविय पुरिसे एव एव वयासी )

हे देवानुप्रियो ! शा डारलथी आ हरिद्र भाणुस भोटेथी घाटा पाडी पाडीने रडी रह्यो छे ? त्थारे ते कौटु णिक पुडपोअे आ प्रभाणु कहु के हे स्वामिन् ! पोताना अउमटलठ अने अउघटकने तेनी पामेथी लधने णीअ सुरक्षित स्थाने लध जता जेठने आ हरिद्र भाणुस भोटेथी रडवा लाग्यो छे आ प्रभाणु सालणीने सागरदत्ते कौटु णिक पुडपोने आ प्रभाणु कहु के—

( माण तुम्हे देवाणुप्पिया ! एयस्स दमगस्स त खड जाव एडेह पासे ठवेह, जहाण पत्तिय भवइ, तेवि तहेव ठवेति, तण्ण ते कोडुवियपुरिसा तस्स दमगस्स अलकारियकम्म करेति, करित्ता सयपागसहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भगेति अब्भगिए समाणे सुरभिगधुव्वइणेण गाय उव्वट्ठिति २ उस्सि णोदगेण गधोदगेण सीतोदगेण ण्हावेति )

हे देवानुप्रियो ! तमे बोडो आ हरिद्र पुडपना कूटेला भाटीना दीपकना कटकाने अने कूटेला घडाना अप्परने अनी पासेथी लधने हर अेकातमा भूकथो नडि पणु अनी पासे ज-अनी सामे ज भूकी राणो जेथी अने विश्वास रडे



म्विकपुष्पानेवमसादीत्-ह देवाणुप्पियाः । किंहेतुं काण्णेन गवु पण दमकपुष्पो  
 महता २ सद्देन आरसति=आनन्दति ? । ततः गवु ते कौटुम्बिकपुष्पा' एव  
 मयदन्-एव खलु हं स्मामि । तस्मिन् गवु-वत्तुं गवु-वत्तुं गवु-वत्तुं निक्षेप-  
 माणे महता २ सद्देन आरसति=आनन्दति । ततः गवु ग गागदत्तः सायंवाह  
 स्तान् कौटुम्बिकपुष्पान् परमवासीन्-हे देवाणुप्पिया' । मा खलु गृय पतरस्य  
 निसम्म कौटुम्बिकपुरिसे एव वयासी ) इस प्रकार को उन कौटुम्बिक  
 ने सागरदत्त सेठ की इस आज्ञा को अच्छी तरह स्वीकार लिया और  
 स्वीकारकर चला जाकर उन्होंने उस दमक को अशन पान आदिरूप  
 चतुर्विध आहार से पार २ दुमाया लुमाकर वे उसे अपने घर तक  
 ले आये और अत में अपने घर में उसे प्रवेश कराया । बाद में उन  
 लोगोंने उस दमक पुरुष के फटे हुए मिट्टी के दीपक के गड को, तथा  
 फटे हुए घड़े के स्वप्पर को उससे लेकर किसी सुरक्षित स्थान में रख  
 दिया । जब उस दमकपुष्पने अपने खडमल्लक (फटी लगोटी) को और  
 खडघडक को अपने से लेकर एकान्त स्थानमें रखा जाता हुआ देखा-तो  
 वह जोर जोरसे रोने लगा-उसके उस रोनेकी आज्ञाको सुनकर और  
 उसे अपने चित्त में धारण कर सागरदत्तने कौटुम्बिक पुष्पो से इस  
 प्रकार कहा-( किण्ण देवाणुप्पिया ! एसदमगपुरिसे महया २ सद्देण  
 आरसइ ३ तएण ते कौटुम्बिकपुरिसा एव वयासी एसण सामी ! तसि  
 खडमल्लगसि खडघडगसि एगते एडिज्जमाणसि महया २ सद्देण

आ जतनी सागरदत्तनी आज्ञाने ते कौटुम्बिक पुष्पोने सारी रीते  
 स्वीकारी लीधी स्वीडायो भाइ तेओ हरिद्र भाणुसनी पासे गया त्या जधने  
 तेमणे तेने जोलाव्यो अने अशन, पान वगेरे ३५ चार जतना आहारनी  
 बारबार लावच्य आपी लाव्यावीने तेओ तेने घर सुधी लई आव्या अने  
 छेवटे तेने घरभा हाणल करी दीधो त्यारपछी ते दोडोने ते हरिद्र भाणुसनी  
 पासेथी कूटेला भाटीना वासणुने कटके तेमज कूटेला भाटलाना अप्परने लधने  
 सुरक्षित स्थाने भूडी दीधु ज्यारे ते हरिद्र भाणुसे पेताना अउमटनकने अने  
 अउधटनने पोतानी पासेथी छीनवीने जेजत स्थानभा मूडता जेथु त्यारे ते  
 भोटेथी घाटा पाडीने रडवा लाव्यो तेना रडवाना आवाजने सालजीने अने  
 तेने पोताना चित्तभा धारण करीने सागरदत्ते कौटुम्बिक पुष्पोने आ प्रमाणे कथु  
 ( किण्ण देवाणुप्पिया ! एस दमगपुरिसे महया २ सद्देण आरसइ, तएण  
 ते कौटुम्बिकपुरिसा एव वयासी एसण सामी ' तसि खडमल्लगसि खडघडगसि  
 एगते एडिज्जमाणसि महया २ सद्देण आरसइ, तएण से सागरदत्ते सत्यवादे ते

रुक्षयित्वा 'हंसलक्षण' हंसलक्षण = हंसस्वरूप तदिव शुक्ल स्वरूप यस्य तत्, 'पट्टसाडगं' पट्टसाटक=क्षौमवस्त्र 'परिहेंति' परिधापयन्ति परिधाप्य सर्वालंकार-विभूषित कुर्वन्ति, कृत्वा विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्य भोजयन्ति, भोजयित्वा सागरदत्तस्योपनयन्ति । ततः खलु सागरदत्तः सुकुमारिका दारिद्र्या स्नाता यावत्-सर्वालङ्कारभूषिता कृत्वा त दमकपुरुषम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अयादीत्-हे देवानुप्रिय ! एषा खलु मम दुहिता इष्टा, एता खलु अह तव भार्यात्वेन ददामि

पट्टसाडगं परिहेंति, परिहित्वा सञ्चालकारविभूषितं करेति, करित्वा विडल असनपाणसाइमसाइम भोजयन्ति, भोजयित्वा सागरदत्तस्स उवर्णेति ) जब शारीरिक प्रत्येक अवयव ठीक २ अच्छी तरह से पोछाजा चुका-तब फिर उन्होंने हंस चिह्नवाला अथवा हंस के जैसा शुभ्रपट्टसाटक-क्षौमवस्त्र उसको पहिराया । क्षौमवस्त्र पहिराकर फिर उसको विपुल, अशन, पान, खाद्य एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार का भोजन कराया । भोजन कराकर फिर वे उसको सागरदत्त के पास ले गये ( तएण सागरदत्ते ममालिय दारिय ण्हाय जाव सञ्चालकार विभूषितं करित्वा त दमकपुरिस एव वयासी-एसण देवाणुप्पिया ! मम धूया इहा एय ण अह तव भारियत्ताए दलामि ) सागरदत्त ने अपनी सुकुमारिका दारिका को स्नान कराकर यावत् समस्त अलंकारों से विभूषित करके उस दमक पुरुष से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! यह मेरी लड़की है । और मुझे बहुत ही अधिक इष्ट, प्रिय, कान्त

( ल्हित्ता हंसलक्षणपट्ट साडग परिहेंति, परिहित्वा, सञ्चालकारविभूषितं करेति, करित्वा विडल असनपाणसाइमसाइम भोजयन्ति, भोजयित्वा, सागरदत्तस्स उवर्णेति )

ज्याहे शरीरना भवा अणो सरस रीते लुछाई गया त्याणे तेओओ हंसचित्रित अथवा तो हंस जेवु स्वरूप धोणु पट्टसाटक-क्षौम वस्त्र पहिराव्यु क्षौम वस्त्र पहिरावीने तेने विपुल अशन, पान, खाद्य अने स्वाद्य रूप आर नतना आहारो नभाउया नभाउया पळी तेओ तेने सागरदत्तनी पाने लळ गया

( तएण सागरदत्ते ममालिय दारिय ण्हाय जाव सञ्चालकारविभूषितं करित्वा त दमकपुरिस एव वयासी-एसण देवाणुप्पिया ! मम धूया इहा एय ण अह तव भारियत्ताए दलामि )

सागरदत्ते पोतानी सुकुमारिका दारिकाने स्नान करावीने यावत् अधी नतना अलंकारोधी शणुगारीने ते हरिद्र भाणुसने आ प्रभाणु कछु के हे देवानुप्रिय ! आ भारी पुत्री छे अने मने णहु न छिट, प्रिय, कान्त, मनोम

मित्रपुरुषास्तस्य द्रव्यस्य=रङ्गस्य मन्त्रादिरित्येव काव्यनि कारयिष्या अत्र  
पाक मन्त्रपाकस्तर्लभ्ययति मन्त्रयति । अन्वितः सत् गुरुभिर्गन्धोद्वर्तनेन=  
सुगन्धिपिष्टकेन गात्रमुद्वर्तयति, उज्ज्वलं उष्णोदकेन गन्धोदकेन शीतोदकेन  
स्नपयन्ति, स्नपयित्वा ' पद्मलसुकुमारगन्धकासाइयाए ' पद्मलसुकुमारगन्ध-  
काव्ययिष्या=पद्मल=रङ्गमयी मद्गुरुमुक्ता अत्र गुरुमुक्तारा तथा कपाणेन  
रक्ता साटी कावयिष्या तथा गात्राणि ' लूहि ' लूहि = प्रोच्छपति,

मुनिरुन उन आदेशकारी पुरुषों ने वैसा ही किया-अर्थात् उसके मन्त्रक  
रगड़ और प्रत्युत्त दोनो को ही उसके समक्ष उन्होंने रख दिया ।  
हमके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषोंने उस दमक पुरुषका आलंकारिक कर्म  
करवाया । अब उसका अन्त्री तरफ आलंकारिक कर्म निष्पन्न हो चुका-  
तब उसके बाद उस दमक पुरुष केशरीर को उन लोगों ने जलपाक और  
महस्र पाकवाले तैल से मालिश की-मालिश करनेके पश्चात्, सुगन्धि  
पिष्टक-सुगन्धितपिटी-से उसके शरीर का उपचन किया उस सुगन्धित  
पिटी को उसके शरीर पर रगड़ र कर मला इससे जो उसके शरीर  
पर मल जमा हुआ या वह चिकनाहट के सबन्ध से उस पिटीद्वारा  
निकल गया । जब उनके शरीर का उद्वर्तन हो चुका-तब फिर उन  
लोगों ने उसे उष्णोदक से गन्धोदक से, एवं शीतोदक से स्नान कराया ।  
स्नान कराकर बाद में उसका शरीर ( पद्मलसुकुमारगन्धकासाइयाए  
गाथाइ लूहि ) पद्मल-रङ्गवाली-मृदुरोमयुक्त-सुकुमार-नरम, रङ्गी  
हुई दवाल से-अगोड़ी-से-तौलिया से पोंछा । ( लूहिता हंसलक्षण

आ रीते सागरदत्तनी वात सावणीने ते आशाजगी पुत्रोन्ने ते प्रभाणु  
कथुं ओन्ने के तेना मन्त्रकण्ड अने घट्टण्डने तेनी सामे व मूडी दीधा  
त्यारपणी ते कौटुम्बिक पुत्रोन्ने ते हरिद्र भाणुसना वाण अने नथ कपाव्या  
व्यारे आकाम सरस रीते पुत्र थछ गथु त्यारे तेन्नाओ हरिद्र भाणुसना  
शरीरने शतपाक अने सङ्खपाकवाणा तेजथी मालिश कर्था आह  
सुगन्धिपिष्टक-सुगन्धित पीडी-तेना शरीरे ओणीने उपचन कथुं ओथी तेना  
शरीर उपर जेटवो भेल डतो ते पीडीनी स्निग्धताने लीधे साक्ष थछ गथे  
व्यारे तेना शरीरे पीडी ओणाछ गछ त्यारे ते छोकेओ तेने गरम पाणीथी,  
सुवासित पाणीथी अने ठंडा पाणीथी स्नान कराव्यु स्नान कराव्या आह तेना  
शरीरने ( पद्मल सुकुमार गन्ध कासाइयाए गाथाइ लूहि ) पद्मल-रङ्गवाली  
सुकुमार, नरम रङ्गीन दुवालथी लूछथु

रूपयित्वा 'हसलक्षण' हसलक्षण = हसस्वरूप तदिव शुक्ल स्वरूप यस्य तत्, 'पट्टसाडगं' पट्टशाटक=क्षौमवस्त्र 'परिहेंति' परिधापयन्ति परिधाप्य सर्वालंकार-विभूषित कुर्वन्ति, कृत्वा विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्य भोजयन्ति, भोजयित्वा सागरदत्तस्योपनयन्ति । ततः खलु सागरदत्तः सुकुमारिका दारिका स्नाता यावत्-सर्वालङ्कारभूषिता कृत्वा त दमकपुरुषम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे देवानुप्रिय ! एषा खलु मम दुहिता इष्टा, एता खलु अह तव भार्यात्वेन ददामि

पट्टसाडगं परिहेंति, परिहित्ता सव्वालकारविभूषित्यं करेति, करित्ता विउल असनपाणगाडमसाडम भोयावेंति, भोयावित्ता सागरदत्तस्स उवणेंति ) जब शारीरिक प्रत्येक अवयव ठीक २ अच्छी तरह से पोछाजा चुका-तब फिर उन्होंने हँस चिह्नुवाला अथवा हँस के जैसा शुभ्रपट्टशाटक-क्षौमवस्त्र उसको पहिराया । क्षौमवस्त्र पहिराकर फिर उसको विपुल, अशन, पान, खाद्य एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार का भोजन कराया । भोजन कराकर फिर वे उसको सागरदत्त के पास ले गये ( तएण सागरदत्ते ममालिय दारिय णाय जाव सव्वालकार विभू सिय करित्ता त दमगपुरिस एव वयासी-एसण देवाणुप्पिया ! मम धूया इट्ठा एय ण अह तव भारियत्ताए ददामि ) सागरदत्त ने अपनी सुकुमारिका दारिका को स्नान कराकर यावत् समस्त अलंकारों से विभूषित करके उस दमक पुरुष से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! यह मेरी लड़की है । और मुझे बहुत ही अधिक इष्ट, प्रिय, कान्त

( लूहित्ता हसलक्षणपट्ट साडग परिहेंति, परिहित्ता, सव्वालकारविभूषित्यं करेति, करित्ता विउल असनपाणगाडमसाडम भोयावेंति, भोयावित्ता, सागरदत्तस्स उवणेंति )

ज्यादे शरीरना जया अजो सरस रीते लुछाई गया त्याडे तेजोअ  
हसचित्रित अथवा तो डम जेवु २२७ धोणु पट्टशाटक क्षौम वस्त्र पहिरावु  
क्षौम वस्त्र पहिरावीने तेने विपुल अशन, पान, खाद्य अने स्वाद्य रूप चार  
जातना आहारो जमाडया जमाडया पटी तेजो तेने सागरदत्तनी पाने लई गया

( तएण सागरदत्ते ममालिय दारिय णाय जाव सव्वालकारविभूषित्यं करित्ता त दमगपुरिस एव वयासी-एसण देवाणुप्पिया ! मम धूया इट्ठा एय ण अह तव भारियत्ताए ददामि )

सागरदत्ते पोतानी सुकुमारिका दारिकाने स्नान करावीने यावत् जधी  
जातना अलंकारोधी शणुगारीने ते हरिद्र भाणुसने आ प्रभाणु कछु के  
हे देवानुप्रिय ! आ भारी पुत्री छे अने मने णहु ज छिट, प्रिय, कान्त, मनोका

‘મદિયાણ’ મદિકયા=માગ્યનાગિન્યાજનયાન્તમપિ મટતો માગ્યશાલી મવિન્યસિ ।  
 તતઃ સ્વલ્લ સ દમકપુરુષઃ માગ્યસામ્યેતદર્થ મવિગુણોતિ=મ્વીરગેતિ, પ્રતિશ્રુત્ય  
 સુકુમારિકયા દારિકયા સાર્ધ વાસગૃહમનુપ્રવિગતિ, સુકુમારિકયા દારિકયા સાર્ધ  
 ‘તલિગસિ’ તત્ત્વે=નયનીયે ‘નીરઝઙ્ઘ’ નિષીદતિ ઉપવિગતિ । તતઃ સ્વલ્લ સ દમક  
 પુરુષ સુકુમારિકાયા ઇમ=પૂર્વોક્તમ્ પત્નૃપ=પૂર્વોક્તસ્મરુપમ્ અદ્વૈતપદ્મ પટિસંવેદેર’  
 પ્રતિસંવેદયતિ=પ્રત્યનુભવતિ એવં યથા સાગરસ્મ=એવં વર્ણન સાગરદામ્નવત્ સોધ્યમ્,  
 યાવત્-અત્ર યાવન્નન્દ્યાદિદ દ્રષ્ટવ્યમ્-‘અગિષપ્રાદીના સ્પર્ગાદપ્યનિદ્વિતર તદ્વ  
 સ્પર્શ જ્ઞાત્યા સાગરદામ્નવત્ દમકપુરુષોઽપિ તાં સુકુમારિકા સુવપ્તગુપ્તા પ્રાપ્ત્યા,  
 શયનીયાદત્તિષ્ઠતિ, અભ્યુત્થાય વાસગૃહાદ્ નિર્ગન્ગતિ, નિર્ગન્ગ્ય સ્વલ્લમલ્લગ=ફુટિ

મનોજ પવે મનોમ હૈ । મેં અપની ઇમ પુત્રી કો તુમ્હે તુમ્હારી ભાર્યા કે  
 રૂપ મેં પ્રદાન કરતા હું ( મદિયાણ મદઓ મવિજ્જસિ, તણ્ણ સે દમક  
 પુરિસે સાગરદત્તસ્મ ઇયમદ્વ પટિં ૨ સુમાલિયાણ દારિયાણ સદ્ધિ વાસ  
 ઘર અણુપવિસદ્, અણુપવિસિત્તા સુમાલિયાણ દારિયાણ સદ્ધિ તલિગસિ  
 નિવજ્જઙ્ઘ ) હસ માગ્યશાલિની સે તુમ મી માગ્યશાલી વનજાઓમે ।  
 દમકપુરુષ ને સાગરદત્ત કે હસ કવચસ્થ અર્થ કો અગીકાર કરલિયા,  
 ઓર ફિર વહ ઉસ સુકુમારિકા દારિકા કે સાથ વાસગૃહ મેં પ્રવિષ્ઠ  
 હુઆ । વહા જાકર વહ ઉસ સુકુમારિકા દારિકા કે સાથ સાથ ઇક હી  
 પલગ પર-ચેઠ ગયા-સોગયા ( તણ્ણ સે દમકપુરિસે સુમાલિયાણ ઇમ  
 ઇયારુવ અગફાસ પટિ સવેદેઠ, સેમ જહા સાગરસ્મ જાવ મયણિજ્જાઓ  
 અબ્ધુદ્દેઠ, અબ્ધુદ્ધિત્તા વાસઘરાઓ નિગ્ગચ્છદ્, નિગ્ગચ્છિત્તા સ્વલ્લમલ્લગ

અને મનોમ છે હુ માગી આ પુત્રીને તમને તમારી પત્નીના રૂપમા અર્પુ છું.  
 મદિયાણ મદઓ મવિજ્જસિ, તણ્ણ સે દમકપુરિસે સાગરદત્તસ્મ ઇયમદ્વ પટિં ૨  
 સુમાલિયાણ દારિયાણ સદ્ધિ વાસઘર અણુપવિસદ્, અણુપવિસિત્તા સુમાલિયાણ  
 દારિયાણ સદ્ધિ તલિગસિ નિવજ્જઙ્ઘ )

આ ભાગ્યશીલાથી તમે પણ ભાગ્યશાળી થઈ જશો. તે દરિદ્ર પુરૂષે  
 સાગરદત્તની એ વાતને સ્વીકારી લીધી અને ત્યારબાદ તે સુકુમારિકા દારિકાની  
 સાથે વાસગૃહમાં પ્રવિષ્ઠ થયો. ત્યાં જઈને તે દરિદ્ર માણસ સુકુમારિકા દારિ  
 કાની સાથે એક જ શય્યા ઉપર બેસી ગયો.

( તણ્ણ સે દમકપુરિસે સુમાલિયાણ ઇમ ઇયારુવ અગફાસ પટિસવેદેઠ,  
 સેમ જહા સાગરસ્મ જાવ મયણિજ્જાઓ અબ્ધુદ્દેઠ, અબ્ધુદ્ધિત્તા વાસઘરાઓ નિગ્ગ  
 ચ્છદ્ નિગ્ગચ્છિત્તા સ્વલ્લમલ્લગ સ્વલ્લમલ્લગ વ મહાય મ



तमिक्षापात्र, खण्डघटक=स्फुटितपानीयपात्र च गृहीत्वा 'मारासुक्के वित्र काए' मारासुक्तइव काकः मारा-शूना प्राणिधरान्न ततो मुक्तः निःसृतः काक इव, अथवा-माराद्-मारकपुरुषात् तदीयहस्तादित्यर्थः मुक्त-विच्छुटित काक इव शीघ्रतया यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशः प्रतिगतः । ततः खलु सा सुकुमारिका यावद्-ततो मृहृत्तन्तर प्रतिगुडा सती पतिमपश्यन्ती शयनीयादुत्तिष्ठति, उत्थाय दमकपुरुषस्य मार्गेणगवेपण कुर्वाणा वामगृहस्य द्वार विधाटित पश्यति

खण्डघटग च गहाय मारासुक्के वित्र काए जामेव दिस पाउवभूण तामेव दिस पडिगण ) उस समय उस दमक पुरुष को उस सुकुमारिका दारिका का वह पूर्वोक्त तथा पूर्वोक्त स्वरूपवाला अगस्पर्शी अनुभव में आया । शेष वर्णन सागरदारक की तरह जानना चाहिये । इस तरह वह दमक पुरुष भी अग्निपत्रादिकों के स्पर्श से भी अविक्रान्तिष्ट उसके अगस्पर्शी को जानकरके, सागरदारक की तरह, सुख प्रसुप्त उस सुकुमारिका दारिका को जान उसे छोड़ने के लिये पलंग से उठा और उठकर उस वास घर से बाहर निकला-निकलकर खडमरलक-फूटे हुए भिक्षापात्र को तथा खण्डघटक-फूटे हुए पानी पीने के पात्र को-लेकर वधस्थान से अथवा मारक पुरुष के हाथ से मुक्त हुए काक की तरह वह बहुत जल्दी जहा से आया या उसी ओर चल दिया ( तण्ण सा मूमालिया जाव गण्ण से दमगपुरिसे त्ति कहुओहमण जाव श्रियायइ ) इसके थोड़ीदेर बाद वह सुकुमारिका दारिका जगी और पति को अपने पास न

दिस पाउवभूण तामेव दिस पडिगण )

ते वणते ते दग्धि भाणुसने सुकुमारिका दारिकाना अगेनो स्पर्श पडेता वणुन उरवाभा आव्या प्रमाणेनो कठोर न लाग्ये (अर्द्ध सागरदारक जेवु न वणुन समञ्ज नवु लेधये ) आ रीते ते दग्धि भाणुस पणु तरवारना स्पर्श करता पणु वधारे अनिष्टकर तेनो स्पर्श जालीने सागर दारकनी जेमज सुजेथी सुध गयेली ते सुकुमारिका दारिकाने लेज्जे, तेनो त्याग उरवा भाटे पलंग उपरथी जेला थये अने जेला थज्जे वामगृहनी णडार नीकज्यो अने नीकणीने अउमरलक-फूटेला भिक्षापात्र तेमज अउधरक-फूटेला पाणी पीवा भाटेना पात्रने लठने वधस्थानथी अथवा तो भारक ( डिमक ) पुरषना हाथथी मुक्त थयेला दागडानी जेम ते तराथी न्याथी ते आव्यो डनो ते तरक न जेतो रह्यो ( तण्ण सा मूमालिया जाव गण्ण से दमगपुरिसे त्ति कहुओहमण जाव श्रियायइ ) थोडावणत पछी ते सुकुमारिका दारिका जगी अने पतिने पोतानी यासे न लेधने

‘भद्रियाण’ भद्रिया=भाग्याग्निनाडनानामपि भद्रतो भाग्यशाली भद्रियमि ।  
 ततः खलु स दमकपुरुषः सागरदत्तस्य तमर्गं प्रतिगृह्णाति=ग्रीह्णाति, प्रतिश्रुत्य  
 सुकुमारिका दारिका सार्धं वासगृहप्रतिगति, सुकुमारिका दारिका सार्धं  
 ‘तलिगसि’ तत्त्वे=गयनीये ‘नीयन्ः’ निपीडयति उपनिगति । ततः खलु स दमक  
 पुरुष सुकुमारिकाया इम=पूरोक्तम् एतत्पुत्रं=पूरोक्तम् एतम् भद्रपश्यं पटिमवेदेर’  
 प्रतिसंवेदयति=प्रत्यनुभवति शेष यथा सागरस्य=शेदवर्णन सागरदागृहं नोध्यम्,  
 यावत्-अत्र यावत्-आदि द्रष्टव्यम्-‘अगिपशालीनां स्पर्शादप्यनिष्टतर तदत्र  
 स्पर्शं ज्ञात्वा सागरदागृहं दमकपुरुषोऽपि ता सुकुमारिका सुखप्रसुता भान्वा,  
 शयनीयादक्षिणति, अभ्युत्थाय वासगृहात् निर्गच्छति, निर्गत्य खड्मल्लग=फुटि

मनोज्ञ एवं मनोम है । मैं अपनी इस पुत्री को तुम्हें तुम्हारी भार्या के  
 रूप में प्रदान करता हूँ ( भद्रियाण भद्रओ भद्रिज्जसि, तण्णं से दमग  
 पुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठ पटि० २ सुमालियाण दारियाण सद्धिं वास  
 घर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता सुमालियाण दारियाण सद्धिं तलिगंसि  
 निवज्जइ ) इस भाग्यशालिनी से तुम भी भाग्यशाली बनजाओगे ।  
 दमकपुरुष ने सागरदत्त के इस कनकरूप अर्थ को अंगीकार कर लिया,  
 और फिर वह उस सुकुमारिका दारिका के साथ वासगृह में प्रविष्ट  
 हुआ । वहा जाकर वह उस सुकुमारिका दारिका के साथ साथ एक ही  
 पलंग पर-बैठ गया-सो गया ( तण्णं से दमगपुरिसे सुमालियाण इम  
 एयारुव अगफास पडि सवेदेइ, सेस जहा सागरस्स जाय सयणिज्जाओ  
 अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता वासघराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता खडमल्लग

अने मनोम छे हु भारी आ पुत्रीने तमने तमारी पत्नीना इयमा अपुं धु ।  
 भद्रियाण भद्रओ भद्रिज्जसि, तण्ण से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठ पटि० २  
 सुमालियाण दारियाण सद्धिं वासघर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता सुमालियाण  
 दारियाण सद्धिं तलिगंसि निवज्जइ )

आ भाग्यशालिनी तमे पपु भाग्यशाली थर्ध जशे ते हरिद्र पुरुषे  
 सागरदत्तनी ओ वातने स्वीकारी लीधी अने तयारणाह ते सुकुमारिका दारिकानी  
 साथे वासगृहमा प्रविष्ट थये। त्या जधने ते हरिद्र भायुस सुकुमारिका दारि  
 कानी साथे ओक ज शय्या उपर जेसी गये।

( तण्ण से दमगपुरिसे सुमालियाण इम एयारुव अगफास पडिसवेदेइ,  
 सेस जहा सागरस्स जाय सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता वासघराओ निग्ग  
 च्छइ निग्गच्छित्ता खडमल्लग खडघडगं च गहाय मारासुक्के )

तेजसा ज्वलति सूर्ये-उदिते दासचेटी शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-यावत् सागरदत्तरयैतमर्थं निवेदयति, अत्र यावच्छब्देन पूर्वसूत्रोक्तवर्णनमनुमन्वेयम्, तथा-वधूवरयोर्मुखधावनिकामुपनयेति । एवमुक्तासती दासचेटी वासगृहमुपागत्य सुकुमारिकामार्तध्यानं ध्यायन्ती पश्यति, दृष्ट्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रिये ! किं खलु त्वम् अपहतमनः संकल्पा ध्यायसि ? ततः सुकुमारिका ता दासचेटीमेवमवादीत्-स द्रमरूपुरुषो मां सुरामसुप्तां ज्ञात्वा मम पार्श्वोदुत्थाय निर्गतः, ततोमुहूर्तान्तरेऽहमुत्थाय तमपश्यन्ती ' गतः स द्रमरूपुरुषः, इति कृत्वा ऽऽर्त-यानं ध्यायामि

सदावेह, सदावित्ता एव वयासी जाव सागरदत्तरस एयमव निवेदेह ) सुकुमारिका दारिकाकी माता उस भद्रा ने द्वितीय दिन जब प्रातः काल हो गया था-और सूर्य उदित हो चुका था-तब अपनी दासचेटी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-यहा यावत् शब्द से यह पूर्वसूत्र गत वर्णन जोड़लेना चाहिये जैसे, भद्राने बुलाकर उससे ऐसा कहा कि तू वधू और वर के लिये यह सुख बोन की सामग्री दतौन आदि-लेजा जब भद्रा ने उससे ऐसा कहा तब वह दासचेटी वासगृह में गई-और वहां जाकर उसने सुकुमारिका को आर्तध्यान करती हुई देखा तब देखकर उसने उससे ऐसा कहा-देवानुप्रिये ! क्या कारण है जो अपहतमनः संकल्प होकर तुम आर्तध्यान कर रही हो-तब सुकुमारिका दारिका ने उस दासचेटी से इस प्रकार कहा-वह दमक पुरुष मुझे यहा सुख प्रसुप्त जान छोड़कर चला गया है ! जब मैं थोड़ी देरबाद उठी तो मैने उसे अपने पास नहीं देखा, वासभवन का द्वार खुला हुआ

वित्ता, एव वयासी जाव सागरदत्तरस एयमव निवेदेह ) सुकुमारिका दारिकानी माता लद्राये जीन्त दिवसे न्यारे सवार थर् गथु अने सूर्य उदय पाभ्यो त्यारे तेणु दासीने ओलावी अने ओलावीने आ प्रमाणु कहु-अर्ही यावत् शब्दथी पडेलाना सूत्रनी नेम न वर्षुन भमणु लेवु नेधने नेमके लद्राये तेने ओलावीने आ प्रमाणु कहु के वधू अने वरना भुण प्रक्षासन भाटे हातणु वगेरे लर्ध न न्यारे लद्राये तेने आ प्रमाणु कहु त्यारे ते दासी वासगृहमा गध अने त्या नर्धने तेणु सुकुमारिका दारिकाने आर्तध्यान करती नेध त्यारे आ प्रमाणु तेनी डालत नेधने तेणु कहु के हे देवानुप्रिये ! शा कारणथी तमे अपहतमन संकल्प थर्धने आर्तध्यान करी रह्या छे त्यारे सुकुमार दारिकाये ते दासीने आ प्रमाणु कहु-के ते दरिद्र भाणुन भने अर्ही सुजेथी सूतेवी छोडीने नतो रह्यो छे न्यारे थोडा वधत पछी हु नगी त्यारे मे तेने-भारी पासे नेथे नहि अने मे वासगृहना पारणाने पणु पुद्धु

दृष्ट्वा एवमयादीत् '—इति कृत्वा, अरुणमन गम्या यावद्-आर्तध्यान  
ध्यायति ॥ सू० ११ ॥

मूलम्—तएणं सा भद्रा कल्ल पाउ० दासचेडिं सदावेइ सदा-  
वित्ता एवं वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमट्ट निवेदेइ, तएणं  
से सागरदत्ते तहेव संभते समाने जेणेव वासहरे तेणेव उवा  
गच्छइ उवागच्छित्ता सुमालिय दारियअके निवेसेइ निवेसित्ता  
एवं वयासी—अहो ण तुम पुत्ता ! पुरा पोराणा णं जाव पच्चणु-  
वभवमाणी विहरसि त मा ण तुम पुत्ता ! ओहयमण जाव  
झियाहि तुम ण पुत्ता मम महाणससि विपुल असण४ जहा  
पुट्टिला जाव परिभाएमाणी विहराहि, तएण सा सुमालिया  
दारिया एयमट्ट पडिसुणेइ पडिसुणित्ता माहणससि विपुल  
असणं जाव दलमाणी विहरइ ॥ सू० ११ ॥

टीका—‘ तएण सा ’ इत्यादि । ततः खलु सा भद्रा सार्थवाही=सुकुमारिका  
दारिकाया जननी ‘ कल्ल ’ कल्पे द्वितीयद्विसे प्रादुः प्रभाताया रजन्या यावत्—

देखकर पलग से उठी । उठकर उसने उस दमकपुरुषकी मार्गणा एव  
गवेषणा की । उसमें उसने वासगृह के द्वार को खुला हुआ देखा । देख  
कर उसने विचारा कि वह दमक पुरुष अब चला गया है । ऐसा सोचकर  
वह अपहत मन, सकल्प होकर यावत् आर्त ध्यान करने लगी ॥ सू० ११ ॥

‘ तएण सा भद्रा कल्ल ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—( तएण ) इसके बाद ( सा भद्रा कल्ल पाउ० दासचेडिं

शय्या उपरथी जेभी थर् जेभी थर्ने तेणे ते हरिद्र भाणुसनी शोध जेण करी  
तेणे विचार क्यो के ते हरिद्र भाणुस तो जतो रह्यो छे आ रीते विचार करीने  
ते अपहतमन सकल्पा थर्ने यावत् आर्तध्यानमा इणी गछ ॥ सूत्र ११ ॥

‘ तएण सा भद्रा कल्ल ’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थारणाइ (सा भद्रा कल्ल पाउ० दासचेडिं— सदा

तेजसा ज्वलति सूर्ये-उदिते दासचेटीं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-यावत् सागरदत्तस्यैतमर्थं निवेदयति, अत्र यावच्छब्देन पूर्वसूत्रोक्तवर्णनमनुमन्वेयम्, तथा-वधूवरयोर्मुखधावनिकामुपनयेति । एवमुक्तासती दासचेटी वासगृहमुपागत्य सुकुमारिकामार्तध्यानं ध्यायन्तीं पश्यति, दृष्ट्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रिये ! किं खलु त्वम् अपहतमनः संकल्पा ध्यायसि ? ततः सुकुमारिका ता दासचेटीमेवमवादीत्-स द्रमरूपो मां सुरप्रसुप्तां ज्ञात्वा मम पार्श्वदुत्थाय निर्गतः, ततोमुहूर्तान्तरेऽहमुत्थाय तमपश्यन्ती ' गतः स द्रमरूपरूप, इति कृत्वा ऽऽर्त-यानं ध्यायामि

सदावेह, सदावित्ता एव वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमद्व निवेदेइ ) सुकुमारिका दारिकाकी माता उस भद्रा ने द्वितीय दिन जब प्रातः काल हो गया था-और सूर्य उदित हो चुका था-तब अपनी दासचेटी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-यहां यावत् शब्द से यह पूर्वसूत्र गत वर्णन जोड़लेना चाहिये जैसे, भद्राने बुलाकर उससे ऐसा कहा कि तू वधू और वर के लिये यह मुख बोलने की सामग्री दत्तौन आदि-लेजा जब भद्रा ने उससे ऐसा कहा तब वह दासचेटी वासगृह में गई-और वहां जाकर उसने सुकुमारिका को आर्तध्यान करती हुई देखा तब देखकर उसने उससे ऐसा कहा-देवानुप्रिये ! क्या कारण है जो अपहतमनः संकल्प होकर तुम आर्तध्यान कर रही हो-तब सुकुमारिका दारिका ने उस दासचेटी से इस प्रकार कहा-वह द्रमरूप पुरुष मुझे यहां सुख प्रसुप्त जान छोड़कर चला गया है ! जब मैं थोड़ी देर बाद उठी तो मैंने उसे अपने पास नहीं देखा, वासभवन का द्वार खुला हुआ

वित्ता, एव वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमद्व निवेदेइ ) सुकुमारिका दारिकानी माता भद्राणे जीवत दिवसे न्यारे सवार थर्ग गयु अने सूर्य उदय पाभ्यो त्यारे तेणे दासीने जोलावी अने जोलावीने आ प्रमाणे कह्यु-अहो यावत् शब्दथी पड़ेलाना सूत्रनी नेम न वर्णन समल लेवु नेधने नेमके लद्राणे तेने जोलावीने आ प्रमाणे कह्यु के वधू अने वरना मुण प्रक्षासन भाटे हातणु वगेरे लर्ध न न्यारे लद्राणे तेने आ प्रमाणे कह्यु त्यारे ते दासी वासगृहमा गध अने त्या नर्धने तेणे सुकुमारिका दारिकाने आर्तध्यान करती नेध त्यारे आ प्रमाणे तेनी डालत नेधने तेणे कह्यु के हे देवानुप्रिये ! शा कारणथी तमे अपहतमन संकल्प थर्धने आर्तध्यान करी रह्या छे त्यारे सुकुमार दारिकाणे ते दासीने आ प्रमाणे कह्यु-के ते दरिद्र भाणुम मने अहो सुणेथी सूतेली छोडीने नतो रह्यो छे न्यारे थोडा वणत पछी हु नगी त्यारे मे तेने-भारी पासे नेथो नडि अने मे वासगृहना पारणाने पण पुण्ड



તત્. સા દાસચેટી સાગરદત્ત સાગરદત્ત મગીવમાગમીવર્થ નિવદગતીતિ  
 યોજના વોધ્યા । તત્ સ્વડ ત સાગરદત્તમગીવ ' મમંતે ' સમ્રાન્ત = ઉદિગ્નઃ  
 સન્ યર્જીય યાગમૃદતર્જીયોવાગચ્છતિ, ઉવાગત્ય સુકુમારિકા દારિકામદ્ને નિવસ્યતિ,  
 નિવેશ્ય ણમયાતીન્-મદો । કમ્યાધર્મે ચલુ દે પુત્રિ ' દય ' પુત્રા ' પુત્રા = દૂરમવેષુ  
 ' પોરાણાણ ' પુરાણાનામ્ = મતીતકાલક્રાન્તો, યાત્રન્ = યત્ર યાત્ર-ઉદનેદ  
 વોધ્યમ્- ' દુષિણાણં દુષ્પણ તાણ પદ્ધાણં પાયાણ કમ્માણ પાયાણ પચ્ચિત્તિ

દેસા તથ મ સમજાઈ ગઈ કિ ચહ મહા સે ચલા ગયા હૈ । હમ પ્રકાર મે  
 ચિન્તા મે પડ રહી હૈ । સુકુમારિકા કો હમ ધાન કો સુનકર દાસચેટી  
 ને ડગી સમય વહા સે ઘાપિસ આકર સાગરદત્ત કો હમ ધાન કો  
 સ્વપર દી-'' હમ પ્રકાર ચહ પૂર્વોક્ત પાઠ યદા લગા લેના ચાહિયે-( તણ  
 સે સાગરદત્તે તહેવ સમતે સમાણે જેણેવ વાસહરે તેણેવ ઉવાગચ્છદ, ઉવાગ  
 ચ્છિત્તા સુમાલિય દારિય અકે નિવેસેદ, નિવેસિત્તા ણવ વયાસી,  
 અહોણ તુમ પુત્તા પુરા પોરાણાણ જાવ પચ્ચણુઽમયમાગી વિહરસિ ત માણ  
 તુમં પુત્તા ઓહયમણ જાવ ક્ષિયાહિ-તુમ ણ પુત્તા મમ મહાણસસિ વિપુલ  
 અસણ ૪ જહા પુટ્ટિલા જાવ પરિમાણમાણો વિહરાહિ) હસકે વાદ વહ સાગ  
 રદત્ત પહિલે જૈસા ઉદિગ્ન ચિત્ત હોકર જહા વાસમૃદ વા વહા ગયા । વહા જા  
 કર ડસને સુકુમારિકા દારિકા કો અપની મોદમે ઘેઠા લિયા ઓર ઘેઠાકર  
 કહને લગા-હેપુત્રિ ! તુમને પહિલે મયોમે જો દુશ્ચોર્ણ દુષ્પરાક્રાન્ત, (કઠિન  
 તાર્હસે મોગને યોગ્ય ણવ કૃત જ્ઞાનાવરણીય આદિ અશુભ કર્મ ઉપાર્જિત

જેથુ ત્યારે મને ચોક્કસપણે ખાત્રી થઈ ગઈ કે તે અહીંથી ચાલ્યો ગયો છે  
 આ રીતે હું ચિંતામાં પડી છું સુકુમારિકાની આ વાત સાંભળીને દાસીએ તરત જ  
 સાગરદત્તને ખબર આપી આ રીતે અહીં પહોંચાનો પાઠ બાણી લેવો બેઠીએ  
 તણ સે સાગરદત્તે તહેવ સમતે સમાણે, જેણેવ વાસહરે તેણેવ ઉવાગચ્છદ, ઉવાગ  
 ચ્છિત્તા સુમાલિય દારિય અકે નિવેસેદ, નિવેસિત્તા ણવ વયાસી અહો ણ તુમ પુત્તા ।  
 પુરા પોરાણાણ જાવ પચ્ચણુઽમયમાગી વિહરસિ ત માણ તુમ પુત્તા ઓહયમણ જાવ  
 ક્ષિયાહિ-તુમ ણ પુત્તા મમ મહાણસસિ વિપુલ અસણ ૪ જહા પુટ્ટિલા જાવ પરિમાણ  
 માણી વિહરાહિ )

ત્યારપછી સાગરદત્ત પહોંચાની જેમ વ્યાકુળ ચિત્તવાળો થઈને જ્યાં વાસ  
 મૃદ હતુ ત્યાં આવ્યો ત્યાં આવીને તેણે સુકુમારિકા દારિકાને પેતાના ખોળામાં  
 બેસાડી લીધી અને બેસાડીને કહેવા લાગ્યા કે હે પુત્રિ ! તે પહેલાં ભવમાં  
 જે કઈ દુશ્ચોર્ણ, દુષ્પરાક્રાન્ત અને કૃતજ્ઞાનાવરણીય વગેરે મેં ઉપા

पिसेस ' इति-दुश्चीर्णाना-दुश्चरिताना यादमनोजनित मृषावादादिकर्मणामित्यर्थः, किं भूताना तेषां दुष्पराक्रान्ताना-कायिकानां प्राणिर्हिंसाऽदत्तादानादीना, कृताना प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशभेदेन बद्धाना पापाना=अशुभाना कर्मणा=ज्ञानावरणीयादीना पापकम्-अशुभ, फलवृत्तिविशेषम्, प्रत्यनुभवन्ती=वेदयन्ती विहरसि=उत्तसे तत्=तस्माद् मा खलु त्व हे पुत्रि ! अपहतमनःमङ्गला यादद् ध्याय=आर्तव्यान मा कुरु इत्यर्थः, त्व खलु हे पुत्रि ! मम ' महाणससि ' महानसे-पाकशालाया विपुलमशन पान खाद्य स्वाद्य यथा पोष्टिला यावत् परिभाजयन्ती=श्रमणादिभ्यः प्रविभाग कुर्वती ' विहराहि ' विहर=तिष्ठ । ततः खलु सा सुकु-

किये-प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश व उनके भेदसे बांधे हैं-उन्हीं पुराने अशुभ ज्ञानावरणीय आदि कर्मों के तुम अशुभ फल विशेष को इस समय भोग रही हो । पूर्व भवों में जो पाप किये हैं वेही यहां " "पुराण " शब्द से गृहीत हुए हैं । पाप शब्द यहां अशुभ ज्ञानावरणीय आदि कर्मों का बोधक है । ये अशुभ ज्ञानावरणीय आदि कर्म जीव अशुभ मन, वचन और काय की प्रवृत्ति से जन्य मृषावाद आदि क्रियाओं से, तथा प्राणिर्हिंसा, अदत्तादान आदि कुकृत्यों से बाधता है । बांधते समय इनमें प्रकृति, स्थिति अनुभाग और प्रदेश वधरूप विभाग हो जाता है । अधिक स्थिति और अधिक अनुभाग वध इनमें सकलेश परिणामों से पड़ता है । इसलिये हे पुत्रि ! तुम अपहतमन सकल्प होकर यावत् आर्तव्यान मत करो । तुम तो मेरी भोजन शाला में चतुर्विध आहार तैयार करा कर पोष्टिला की तरह श्रमण आदि

कृत कृत्यां हता-प्रकृति, स्थिति, अनुभाग अने प्रदेश वधना लेखी जाव्या छे अत्यारे तु तेज पड़ेहाना अशुभ ज्ञानावरणीय वगेरे कर्मोंना अशुभ कृष्ण विशेषने भोगवी रही छे पूर्व भवमा छे पाप करवामा आव्या छेय तेने अर्द्धा " पुराण " शब्दवी अर्द्धा करवामा आव्या छे अर्द्धा पाप गण्ड अशुभ ज्ञानावरणीय वगेरे कर्मोंने स्पष्ट करे छे आ वधा अशुभ ज्ञानावरणीय वगेरे कर्मों छे अशुभ-मन, वचन, अने कायनी प्रवृत्तिथी जन्य मृषावाद वगेरे क्रियाओथी तेमज प्राप्तिओ नी हिंसा, अदत्तादान वगेरे कुकर्मोंवी बाधे छे बाधती वधते ओओमा प्रकृति, स्थिति, अनुभाग अने प्रदेश वधउप विभाग थछे जय छे अधिक स्थिति अने अधिक अनुभाग वध तेओमा सकलेश परिणामोंधी पडे छे ओथी छे पुत्रि ! तमे अपहत मन सकल्प थजने यावत्

તતઃ સા દાસચેટી સાગરદત્તસ્ય સાર્ગયાદસ્ય સમીપમાગયૈત્તમયં નિવદ્યતીતિ  
 યોજના વોધ્યા । તત્ સત્ત સ સાગરદત્તદર્શયૈત્ ' સમતે ' સમ્ભાત = ઉદ્દિગ્નઃ  
 સન્ યત્રૈવ યાસગૃહતર્જયોવાગતિ, ઉવાગત્ય સુકુમારિકાં દારિકામદ્વે નિવસ્યતિ,  
 નિવેશ્ય ઘરમગ્રાદીન્-ભદ્રો । ઇત્યાપર્યં ચલુ દે પુત્રિ । ત્વ ' પુત્રા ' પુત્રા = પુત્રમંત્રેષુ  
 ' પોરાણાણ ' પુરાણાનામ્ = મતીતકાલકૃતનાના, યાત્ = યત્ર યાત્ = ઇન્દ્રનેદ  
 વોધ્યમ્- ' દુષ્ટિણાણ દુષ્ટરણ તાણ વદ્ધાણ પાત્રાણ કમ્પાણ પાત્રમ કમ્પતિતિ

દેખા તથા મેં સમજાઈ ગઈ કે ત્યાં જ્યાં તે ચલા ગયા છે । હમ પ્રકાર મેં  
 ચિન્તા મેં પડ રહી છે । સુકુમારિકા કી હમ ધાન કો સુનકર દામચેટી  
 ને ઉમી સમય વળા સે ચાપિમ આકર સાગરદત્ત કો ઇસ ધાન કી  
 સ્વર દી- " હમ પ્રકાર ચહ પૂર્વોક્ત પાઠ યત્ લગા લેના ચાલિયે- ( તણ  
 સે સાગરદત્તે તહેવ સમતે સમાણે જેણેવ વાસહરે તેણેવ ઉવાગચ્છડ,  
 ઉવાગચ્છિત્તા સુમાલિય દારિય અકે નિવેસેડ, નિવેસિત્તા ણવ વયાસી,  
 અહોણ તુમ પુત્તા પુરા પોરાણાણ જાવ પચ્ચણુભવમાગી વિહરસિ ત માણ  
 તુમ પુત્તા ઓદયમણ જાવ ક્ષિયાહિ-તુમ ણં પુત્તા મમ મહાણસસિ વિપુલ  
 અસણ ૪ જહા પુટ્ટિલા જાવ પરિભાગમાણો વિહરાહિ) ઇસકે વાદ વહ સાગ  
 રદત્ત પહિલે જૈસા ઉદ્દિગ્ન ચિત્ત હોકર જહા યાસગૃહ યા વહા ગયા । વહાં જા  
 કર ઇસને સુકુમારિકા દારિકા કો અપની ગોદમેં ઘેઠા લિયા ઓર ઘેઠાકર  
 કહને લગા-હેપુત્રિ । તુમને પહિલે મયોમેં જો દુશ્ચીર્ણ દુષ્ટરાક્તાન્ત, (કઠિન  
 તાર્કસે ભોગને યોગ્ય ણવ કૂન જ્ઞાનાવરણીય આદિ અશુભ કર્મ ઉપાર્જિત

જેથુ ત્યારે મને ચોક્કસપણે ખાત્રી થઈ ગઈ કે તે અહીંથી ચાલ્યો ગયો છે  
 આ રીતે હું ચિંતામાં પડી છું સુકુમારિકાની આ વાત સાંભળીને દાસીએ તરત જ  
 સાગરદત્તને ખબર આપી આ રીતે અહીં પહેલાનો પાઠ બાણી લેવો જોઈએ  
 તણે સે સાગરદત્તે તહેવ સમતે સમાણે, જેણેવ વાસહરે તેણેવ ઉવાગચ્છડ, ઉવાગ  
 ચ્છિત્તા સુમાલિય દારિય અકે નિવેસેડ, નિવેસિત્તા ણવ વયાસી અહો ણ તુમ પુત્તા ।  
 પુરા પોરાણાણ જાવ પચ્ચણુભવમાગી વિહરસિ ત માણ તુમ પુત્તા ઓદયમણ જાવ  
 ક્ષિયાહિ-તુમ ણ પુત્તા મમ મહાણસસિ વિપુલ અસણ ૪ જહા પુટ્ટિલા જાવ પરિભાગ  
 માણી વિહરાહિ )

ત્યારપછી સાગરદત્ત પહેલાની જેમ બાકુળ ચિત્તવાળો થઈને જ્યાં વાસ  
 ગૃહ હતું ત્યાં આવ્યો ત્યાં આવીને તેણે સુકુમારિકા દારિકાને જે તાના જોખામાં  
 બેસાડી લીધી અને બેસાડીને કહેવા લાગ્યા કે હે પુત્રિ ! તે પહેલાં ભવમાં  
 જે કઈ દુશ્ચીર્ણ, દુષ્ટરાક્તા અને કૃતજ્ઞાનાવરણીય વગેરે મેં ઉપા

मिसेस ' इति-दुशीर्णाना-दुश्चरिताना गदमनोजनित मृपात्रादिकर्मणामित्यर्थः, किं भूताना तेषां दुष्पराक्रान्ताना-कायिकाना प्राणिहिंसाऽदत्तादानादीना, कृतानां प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशभेदेन चद्वाना पापाना=अशुभाना कर्मणा=ज्ञानावरणीयादीना पापम्-अशुभ, फलवृत्तिविशेषम्, प्रत्यनुभवन्ती=वेदयन्ती विहरसि=उत्तसे तत्=तस्माद् मा खलु त्व हे पुत्रि ! अपहतमनःम कल्पा यावद् ध्याय=आर्तध्यान मा कुरु इत्यर्थः, त्व खलु हे पुत्रि ! मम ' महाणससि ' महानसे-पाकशालाया विपुलमशनं पान खाद्य स्वाद्य यथा पोष्टिला यावत् परिभाजयन्ती=श्रमणादिभ्यः प्रविभाग कुर्वती ' विहराहि ' विहर=तिष्ठ । ततः खलु सा सुकु-

किये-प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश वधके भेदसे बांधे हैं-उन्हीं पुराने अशुभ ज्ञानावरणीय आदि कर्मों के तुम अशुभ फल विशेष को इस समय भोग रही हो । पूर्व भवों में जो पाप किये हैं वेही यहा " "पुराण " शब्द से गृहीत हुए हैं । पाप शब्द यहाँ अशुभ ज्ञानावरणीय आदि कर्मों का बोधक है । ये अशुभ ज्ञानावरणीय आदि कर्म जीव अशुभ मन, वचन और काय की प्रवृत्ति से जन्य मृपात्राद आदि क्रियाओं से, तथा प्राणिहिंसा, अदत्तादान आदि कुकृत्यों से बाधता है । बांधते समय इनमें प्रकृति, स्थिति अनुभाग और प्रदेश वधरूप विभाग हो जाता है । अधिक स्थिति और अधिक अनुभाग वध इनमें सकलेश परिणामों से पडता है । इसलिये हे पुत्रि ! तुम अपहतमनः सकल्प होकर यावत् आर्तध्यान मत करो । तुम तो मेरी भोजन शाला में चतुर्विध आहार तैयार करा कर पोष्टिला की तरह श्रमण आदि

मिति कथा उता-प्रकृति, स्थिति, अनुभाग अने प्रदेश वधना लेखी जाध्या छे अत्यारे तु तेज पडेलाना अशुल ज्ञानावरणीय वगेरे कर्मोना अशुल कृण विशेषने लागवी रही छे पूर्व लवमा ले पाप उरवामा आव्या डोय तेने अही " पुराण " शब्दथी अडुणु करवामा आव्या छे अही पाप गण्ड अशुल ज्ञानावरणीय वगेरे कर्मोने अपण्ट करे छे आ वधा अशुल ज्ञानावरणीय वगेरे कर्मो एव अशुल-मन, वचन, अने कायनी प्रवृत्तिथी जन्य मृपात्राद वगेरे क्रियाओथी तेमज प्राप्तिओनी डिमा, अदत्तादान वगेरे कुडर्मोयी जाधे छे जाधनी वधते ओओमा प्रकृति, स्थिति, अनुभाग अने प्रदेश वधरूप विभाग यध जाय छे अधिक स्थिति अने अधिक अनुभाग वध तेओमा सकलेश परिणामोथी पडे छे ओथी छे पुत्रि ! तमे अपहत मन सक प थजने यावत्

મારિકા દારિકા ણનર્થે મનિગ્રગોતિ=સ્તોરોતિ, મનિશ્રુત્ય મદાનમે વિપૂમસ  
નપાનસાધ ત્વાથ યાવ્ ' દમ્માણી ' દ્વદી વિહરતિ=આસ્મે મ્મ ॥ ૪૦૧૨ ॥

મૂળ—તેણ કાલેણ તેણં સુત્તાણં ગોવાલિયાઓ અજ્ઞાઓ  
વહુસુયાઓ एवं જહેવ તેયલિણાણ સુવ્વયાઓ તહેવ સનોસ  
હ્વાઓ તહેવ સંઘાહઓ જાવ અણુપવિદ્ધે તહેવ જાવ સૂમાલિયા  
પહિલામિત્તા એવ વયાસી—एवं સહુ અજ્ઞાઓ । અહ સાગરસ્સ  
અણિદ્ધા જાવ અમણામા નેચ્છઇ ણં સાગરણ મમ નામ વા જાવ  
પરિભોગં વા, જસ્સ ૨ વિ ય ણં દિજ્ઞામિ તસ્સ ૨ વિ ય ણં  
અણિદ્ધા જાવ અમણામા ભવામિ, તુવ્વમે ય ણં અજ્ઞાઓ । વહુ-  
નાયાઓ એવ જહા પુહિલા જાવ ઉવલલ્લહે જે ણ અહ સાગરસ્સ  
દારિયાણે દ્ધા કતા જાવ ભવેજ્ઞામિ, અજ્ઞાઓ તહેવ ભણંતિ  
તહેવ સાવિયા જાયા ચિતા તહેવ સાગરદત્ત સત્થવાહં આપુ-  
ચ્છઇ જાવ ગોવાલિયાણં અતિણ પઠ્ઠવિયા, તણ્ણ સા સૂમા-

જનોં કે લિયે વિતરણ કરતી રહો ( તણ્ણ સા સૂમાલિયા દારિયા એ  
મદ્ધ પહિસુણેદ્ધ પહિસુણિત્તા મહાણસસિ ત્રિપુલ અસણ જાવ દલમાળી  
વિહરદ્ધ ) હસ તરહ પિતા સાગરદત્ત કે સમજાને પર ઉમ્મ સુકુમારિકા  
દારિકા ને અપને પિતા કે હમ કયન કો સ્વીકાર કર કે વહ મહાનસ  
ભોજન શાલા મેં નિવ્વણ ચતુર્વિવ આહાર કો અમણાદિ જનોં કે લિયે  
વિતરણ મી કરને લગી ॥ સૂત્ર ૧૨ ॥

આર્તધ્યાન કરીશ નહિ તુ મારી ભોજન શાળામા ચાર જાતના આહારો  
તૈયાર કરાવડાવીને પોહિલાની જેમ અમણ વગેરે જનોને આપતી રહે

( તણ્ણ સા સૂમાલિયા દારિયા એમદ્ધ પહિસુણેદ્ધ, પહિસુણિત્તા મહાણસસિ  
ત્રિપુલ અસણ જાવ દલમાળી વિહરદ્ધ )

આ રીતે પિતા સાગરદત્ત વડે સમન્તવવામા આવેલી તે સુકુમારિકા દારિ  
કાએ પોતાના પિતાના કથનને સ્વીકારી લીધુ અને સ્વીકારીને તે ભોજનશાળામા  
તૈયાર થયેલા ચારે જાતના આહારોને અમણ વગેરેને આપરા ૬ સૂ ૧૨



लिया अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तवंभयारिणी बहूहिं  
चउत्थछट्टुम जाव विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा  
अन्नया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवाग-  
च्छइ उवागच्छित्ता वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी-  
इच्छामि णं अज्जाओ । तुव्वमेहि अब्भणुत्ताया समाणी चंपाओ  
वाहि सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्टुछट्टेणं अणि-  
क्खित्तेणं तवोकम्मेणं सूराभिमुही आयावेमाणा विहरित्तए,  
तएण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालिय एवं वयासी-  
अम्हे ण अज्जे । समणीओ निगंथीओ ईरियासमियाओ जाव  
गुत्तवंभयारिणीओ नो खलु अम्ह कप्पइ बहिया गामस्स जाव  
सण्णिवेसस्स वा छट्टर जाव विहरित्तए, कप्पइ ण अम्ह अतो  
उवस्सयस्स विइपरिविखत्तस्स सघाडिवद्धियाए णं समतल  
पइयाए आयावित्तए, तएणं सा सूमालिया गोवालियाए एय-  
मइ नो सहइ नो पत्तियइ नो रोएइ एयमट्टं अ०३ सुभूमि-  
भागस्स उज्जाणस्स अदूरसामते छट्टु छट्टेणं जाव विहरइ ॥सू०१३॥

टीका—‘ तेण कालेण ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये ‘ गोवा-  
लियाओ अज्जाओ ’ गोपालिका=गोपालिकानाम्भ्यः आर्याः=साध्व्यः, ‘ बहुस्सु-  
याओ ’ बहुश्रुता=श्रुतपारगामिन्य, एवम्=अनेन प्रकारेण यथैव ‘ तेतलिणाए ’  
तेतलिजाते=चतुर्दशे तेतलिपुत्राध्ययने वर्णिताः ‘ सुव्वयाओ ’ सुव्रताः=सुव्रता-

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—( तेण कालेण—तेण समएण ) उस काल और उस समय में  
( गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एव जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ

‘ तेण कालेण—तेण समएण ’ इत्यादि—

टीकार्थ—( तेण कालेण—तेण समएण ) ते काले अने ते समये  
( गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एव जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ

મારિકા દારિકા એનર્થે મનિગુણાતિ=મ્પોરોતિ, મનિશ્રુત્ય મદાનમે વિપુલમ્  
નપાનસ્વાય સ્વાય યામૂ ' દલ્માર્ણી ' શ્વેતી વિદરતિ=આસ્તે સ્મ ॥ સૂ. ૧૨ ॥

મૂલ્-તેણં કાલેણં તેણં સુનાણં ગોવાલિયાઓ અજ્ઞાઓ  
વહુસુયાઓ એવં જહેવ તેયલિણાણ સુઠ્ઠવયાઓ તહેવ સનોત  
હૂઓ તહેવ સંઘાડઓ જાવ અણુપતિદ્ધે તહેવ જાવ સૂમાલિયા  
પહિલાભિત્તા એવ વયાસી-એવં સલ્લુ અજ્ઞાઓ ! અહ સાગરસ્સ  
અણિટ્ટા જાવ અમણામા નેચ્છડ્ડ પં સાગરણ મમ નામં વા જાવ  
પરિભોગ વા, જસ્સ ૨ વિ ય પં ટિજ્ઞામિ તસ્સ ૨ વિ ય પં  
અણિટ્ટા જાવ અમણામા ભવામિ, તુઠ્ઠમે ય પં અજ્ઞાઓ ! વહુ-  
નાયાઓ એવ જહા પુટ્ટિલા જાવ ઉવલલ્લે જે પં અહ સાગરસ્સ  
દારિયાણ ઇટ્ટા કતા જાવ ભવેજ્ઞામિ, અજ્ઞાઓ તહેવ ભણંતિ  
તહેવ સાવિયા જાયા ચિતા તહેવ સાગરદત્ત સત્થવાહં આપુ-  
ચ્છડ્ડ જાવ ગોવાલિયાણં અતિણ પઠ્ઠવડ્ડયા, તણ્ણં સા સૂમા

જનોં કે લિયે વિતરણ કરતી રહો ( તણ્ણ સા સૂમાલિયા દારિયા એય  
મટ્ટ પહિસુણેહ પહિસુણિત્તા મહાણસસિ વિપુલ અસણ જાવ દલ્માર્ણી  
વિહરહ ) इस तरह पिता सागरदत्त के समझाने पर उम सुकुमारिका  
दारिका ने अपने पिता के इस कथन को स्वीकार कर के वह महानस  
भोजन शाला में निष्पन्न चतुर्विध आहार को श्रमणादि जनों के लिये  
वितरण भी करने लगी ॥ सूत्र १२ ॥

આર્તધ્યાન કરીશ નહિ તુ મારી ભોજન શાળામા ચાર જાતના આહારો  
તૈયાર કરાવડાવીને પોટિલાની જેમ શ્રમણુ વગેરે જનોને આપતી રહે

( તણ્ણ સા સૂમાલિયા દારિયા એયમટ્ટ પહિસુણેહ, પહિસુણિત્તા મહાણસસિ  
વિપુલ અસણ જાવ દલ્માર્ણી વિહરહ )

આ રીતે પિતા સાગરદત્ત વડે સમજાવવામા આવેલી તે સુકુમારિકા દારિ  
કાએ પોતાના પિતાના કથનને સ્વીકારી લીધુ અને સ્વીકારીને તે ભોજનશાળામા  
તૈયાર થયેલા ચારે જાતના આહારોને શ્રમણુ વગેરેને આપવા લાગી ॥ સૂ. ૧૨

लिया अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तवंभयारिणी बहुहिं  
चउत्थछट्टुम जाव विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा  
अन्नया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवाग-  
च्छइ उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-  
इच्छामि णं अज्जाओ ! तुवमेहि अवभणुन्नाया समानी चंपाओ  
वाहि सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्टु छट्टेणं अणि-  
विस्वत्तेणं तवोक्कमेणं सूराभिमुही आयावेमाणा विहरित्तए,  
तएण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालिय एवं वयासी-  
अम्हे ण अज्जे । समणीओ निगंथीओ ईरियासमियाओ जाव  
गुत्तवंभयारिणीओ नो खलु अम्ह कप्पइ वहिया गामस्स जाव  
सणिणवेसस्स वा छट्टं२ जाव विहरित्तए, कप्पइ ण अम्ह अतो  
उवस्सयस्स विइपरिविस्वत्तस्स संघाडिवद्धियाए णं समतल  
पइयाए आयावित्तए, तएणं सा सूमालिया गोवालियाए एय-  
मट्ट नो सदहइ नो पत्तियइ नो रोएइ एयमट्ट अ०३ सुभूमि-  
भागस्स उज्जाणस्स अदूरसामते छट्टु छट्टेणं जाव विहरइ ॥सू०१३॥

टीका—‘ तेण कालेण ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये ‘ गोवा-  
लियाओ अज्जाओ ’ गोपालिका=गोपालिकानामन्यः आर्याः=साध्व्यः, ‘ बहुस्सु-  
याओ ’ बहुश्रुता=श्रुतपारगामिन्य, एवम्=अनेन प्रकारेण यथैव ‘ तेतलिणाए ’  
तेतलिज्ञाते=चतुर्दशे तेतलिपुराध्ययने वर्णिताः ‘ सुव्वयाओ ’ सुव्रताः=सुव्रता-

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—( तेण कालेण—तेण समएण ) उस काल और उस समय में  
(गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एव जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ

‘ तेण कालेण—तेण समएण ’ इत्यादि—

टीकार्थ—( तेण कालेण—तेण समएण ) ते अणे अने ते समये  
( गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एव जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ

નામન્ય સાધ્યઃ, 'તહેવ સમોમદુઓ' તથેવ સમગતા=નુતનાવદુ ગોપાલિકાઃ  
સમાગતા' । 'તહેવ સંરાડઓ જાવ અણુપચિદે' તથેવ સરાડઓ યાવદુ અણુ  
પિષ્ટ' ગોપાલિકાનામાર્ગાભેદ મંધાત્કઃ ગાત્રુ મુદપારિકાયા રહેડનુપચિષ્ટઃ ।  
તથેવ યાવત્ સુકુમારિકા તા આર્યાં અગતાદિના પ્રતિલમ્બ્ય ઇવ=વ્યવમાણપ્રકા  
રેણ અગદીત્-હે આર્યાં ! ઇવ તદુ મદ માગરમ્ય દારદમ્યાનિષ્ટા યાવત્=  
અકાન્તા અપ્રિયા અમનોમા અમનોમા મન પ્રાજ્ઞાડમિ, નેચ્છતિ ગલુ સાગ  
રકો મમ નામ વા ગોત્ર વા શ્રોતુમ્, કિ પુનર્યાવન્ મયા મા પરિભોગ વા, યથ  
મમ નામાડપિ શ્રોતુ નેચ્છતિ તત્ર કા ચાર્તા પરિભોગસ્ય, અદ તુ તેન સર્વથા પરિ,  
ત્યક્તેતિ ભાવઃ । અપિ ચ યસ્મૈ યસ્મૈ ચ્વલુ 'દિજ્ઞામિ' દીયે=સ્વપિત્રા પ્રદત્તા  
મયામિ, તસ્ય તસ્યાપિ ચ ચ્વલુ અનિષ્ટા યાવદુ અમનોમા=મનઃ પ્રતિહૃતા મવામિ,  
હે આર્યાઃ । યુયં ચ ચ્વલુ 'વદુનામાઓ' વદુજાતાઃ જ્ઞાનાતિગયપુક્તાઃ, 'એવ

તહેવ સમોમદુઓ તહેવ સરાડઓ જાવ અણુપચિદે તહેવ જાવ સુમા  
લિયા પડિલમિત્તા ઇવ વયાસી ) ગોપાલિકા નામકી આર્યિકા જો શ્રુત  
પારગામિની થીં હસ પ્રકાર સે કિ જિસ પ્રકાર સે તેતલિ પ્રધાન નામક  
ચૌદહવે અધ્યયન મેં સુત્રતા સાધ્વી વર્ણિત છુદ્દે હૈ-થીં-વે ઉસી તરફ સે  
વહા આઈં । ઇનકા ઇક સગાડા થા, યાવત્ સુકુમારિકા કે ઘર મેં  
ગોચરી કે લિયે પ્રવેશ કિયા । સુકુમારિકા ને વહી ભક્તિ કે સાથ  
ઉન્હે આહાર પાની દિયા-ઔર દેકર વહ ફિર હસ પ્રકાર સે ઉનસે  
કહને લગી--( ઇવચ્વલુ અજ્ઞાઓ ! અદ સાગરસ અણિદ્વા, જાવ અમ  
ણામા, નેચ્છહ ણ સાગરણ મમ નામ વા જાવ પરિભોગ વા જસ ૨ વિ  
ય ણ દિજ્ઞામિ તસ-તસ વિ ય ણ અણિદ્વા, જાવ અમણામા મવામિ  
તુભમે ય ણ અજ્ઞાઓ ! વદુનામાઓ, ઇવ જહા પુદિલા જાવ ઉવલદ્દે  
તહેવ સમોમદુઓ તહેવ સરાડઓ જાવ અણુપચિદે તહેવ જાવ સુમાલિયા પડિ  
લમિત્તા ઇવ વયાસી )

ગોપાલિકા નામે આર્યિકા કે જે શ્રુત પારગામિની હતી તેતલિ પ્રધાન  
નામના ચૌદમા અધ્યયનની સુત્રતા સાધ્વી જેવી હતી તેવા જ તે પણ હતી  
સુત્રતા સાધ્વીની જેમ જ તે યાવત્ સુકુમારિકાના ઘેર તે ગોચરી માટે ગઈ  
સુકુમારિકાએ ખૂબ જ ભક્તિ-ભાવથી તેમને આહારપાણી આપ્યું અને આપીને  
તે તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગી—

( એવ ચ્વલુ અજ્ઞાઓ અદ સાગરસ અણિદ્વા, જાવ અમણામા નેચ્છહ ણ  
સાગરણ મમ નામ વા જાવ પરિભોગ વા જસ ૨ વિ ય ણ દિજ્ઞામિ તસ તસ  
વિ ય ણ અણિદ્વા, જાવ અમણામા મવામિ તુભમે ય ણ )

यथा पोष्टिला यावद् उपलब्धम् अयमर्थः—यथा तेतलिपुत्रभार्या पोष्टिला स्वमर्त-  
वसीकरणोपायमदर्शनार्थं सुव्रता साध्वी पृच्छतिस्म, तथा—सुकुमारिका दारिका  
गोपात्रिका मन्त्राटक पृष्ठयती, तादृश चूर्णयोगादिमुपलब्ध-ज्ञात मिधु ? येनाह  
सागरस्य दारकस्येष्टा सान्ता यावद् भवेय आर्यास्तथैव भणन्ति=यथा पोष्टिलि

जे ण अह सागरस्स दारगस्स इट्ठा कत्ता जाव भवेज्जामि, अज्जाओ  
तहेव भणति, तहेव माविआ जाया, तहेव चिंता, तहेव सागरदत्त सत्य-  
वाह आउच्छड जाव गोवालियाण अनिण पव्वड्ढा ) हे आर्याओ ।  
मैं अपने पति सागर दारक के अनिष्ट बनो हूँ यावत् अकान्त  
अप्रिय अमनोज एव अमनोम मनः प्रतिकूल बनी हुई हूँ । वे मेरा नाम  
गोत्र कुछ भी सुनना नहीं चाहते हैं । तो फिर उनके साथ परिभोग  
करने की तो बात ही क्या है । मुझे तो उन्होंने सर्वथा ही छोड़ दी है ।  
अपिच—मेरे पिता मुझे जिस २ व्यक्ति के लिये देते ह—मैं उस २ व्यक्ति  
के लिये भी अनिष्ट आदि बन जाती हूँ । हे आर्याओ ! आप तो बहु-  
श्रुत ह अनेक शास्त्रों की ज्ञाता हैं—ज्ञान के अतिशय से सपन्न हैं ।  
इस प्रकार उस सुकुमारिका ने पोष्टिला की तरह अपने पति को वश  
में करने के विषय में उनसे उपाय पूछा पोष्टिलाने अपने पति तेतलिपुत्र  
को वशमें करने को पहिले जैसे सुव्रता साध्वी के सगाटेसे उपाय पूछा  
था—और कहा आपको यदि कोई ऐसा चूर्ण आदि का प्रयोग उपलब्ध

एव जहा पुष्टिला जाव उपलब्धे जेग अह सागरस्स दारगस्स इट्ठा कत्ता जाव  
भवेज्जामि, अज्जाओ तहेव भणति, तहेव माविआ जाया, तहेव चिंता,  
तहेव सागरदत्त सत्यवाह आउच्छड जाव गोवालियाण अनिण पव्वड्ढा )

हे आर्याओ ! मेरा पति सागरदारक भाटे हूँ अनिष्ट बर्ण गयेली हूँ  
यावत् अकान्त, अप्रिय, अमनोज एव अमनोम बर्ण बूझी हूँ तेओ मेरा  
नाम गोत्र कुछ पणु सालणवा छिंता नहीं त्थारे तेमनी माथे परिभोग  
करवानी तो बात न शी करवी तेओओ मने ओकदम न ने छोडी दीधी छे  
अने मेरा पिताओ मने ने ने माणुसने आपे छे ते जधा भाटे पणु हूँ अनिष्ट  
वगेरे बर्ण लउ छे हे आर्याओ ! तमे तो णहुश्रुत छे, धणा शास्त्रोने  
लण्णो छे, ज्ञान स पन्न छे आ रीते पोष्टिलानी नेम न सुकुमारिका दारि-  
काओ पणु पतिने वशमा करवा भाटेना उपायोनी पूछपरछ करी पोष्टिलाओ  
पोताना पते तेतलिपुत्रने वशमा करवा भाटे पडेवा सुव्रता साध्वीना सधा  
सथी नेम उपायो पूछा डता तेमन तेओ पणु तेमने कहु छे—ने ओवे



कथा पृष्ठा सुप्रतायाः सपाटस्थिताः सा गन्तामरोचन्, तथैव गोपालिका  
सपाटस्थाः आर्या गणन्ति=रक्षन्ति स्मे दध । ' तथैव गोपालिका जाया ' तथैव  
श्राविका जाता=पोटिला वन् सुकुमारिका दारिकाऽपि श्राविका जाता । तथैव  
चिन्ता-पोटिलारथेव पथान्=मन्त्रज्या गृहीतु चिन्ता सुकुमारिकाया मनसि प्रादु  
र्भूता । सुकुमारिका सागरदत्त सार्धपाद=स्वपितर तथैव=कथा स्वपति पोटिला,  
तद्वद् आपृच्छति, यावद् गोपालिकानामन्तिके मन्त्रिता=दीक्षा गृहीतवती । ततः  
खलु सा सुकुमारिका आर्या=साध्वी जाता सा किं भूता-ईर्यासमिति यावद् गुप्त  
हो तो भी घता दीजिये कि जिससे मैं अपने पति सागरदारक को  
इष्ट, कान्त यावत् मनोम घनजाऊँ । गोपालिका के सघाडे की इन  
आर्याओं ने सुकुमारिका को, पोटिला को सुप्रता सात्री की तरह  
समझाया-वह उसी तरहसे श्राविका घन गई । पोटिला की तरह इस  
सुकुमारिका ने भी घाद में दीक्षा लेने का मन में विचार किया-  
पोटिलाने जिस तरह अपने पति से आज्ञा लेकर दीक्षा धारण की  
थी-उसी प्रकार इस सुकुमारिका ने भी अपने पिता सागरदत्त से  
पूछकर गोपालिका आर्या के समीप दीक्षा धारण कर ली । (तएण सा  
सूमालिया अज्जा जाया ईरिया समिया जाय गुत्तवभयारिणी बहूहिं  
चउत्थ छट्ठम जाव विहरइ, तएण सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइ  
जेणेव गोवालिया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ ) इस तरह वह सुकुमा  
रिका आर्या बन गई । वह ईर्यासमिति आदि का पालन करने लगी

कोई भूषण वगैरहो प्रयोग मणी शके तो पणु भने अतावी हो के जेथी हु  
भारा पति सागरदारकना भाटे करी छोट, कात, यावत् मनोम थर्छ नउ  
गोपालिका सघाडानी ते आर्याओओ-मुप्रता-साध्वीओ जेम पोटिलाने सभ  
नवरी तेमज सभनवरी अने छेवटे ते श्राविका अनी गध पोटिलानी जेमज  
ते सुकुमारिकाओ पणु तयारपछी दीक्षा लेवाने मनभा मल्लम विचार करी लीधे।  
पोटिलाओ जेम पोताना पतिनी आशा लधने दीक्षा धारण करी छती तेमज  
सुकुमारिकाओ पणु पोताना पति सागरदत्तने पूछीने गोपालिका आर्यानी  
पासेथी दीक्षा धारण करी लीधे।

( तएण सा सूमालिया अज्जा जाया इरिया जाव गुत्तवभयारिणी बहूहिं  
चउत्थ छट्ठम जाव विहरइ, तएण सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव  
गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ )

आ रीते । आर्या थर्छ गध, ते धर्या समिति वगैरह पालन  
करवा लागी । मल्लवतनी रक्षा

ब्रह्मचारिणी सा बहुभिश्चतुर्थपष्ठाष्टमभक्तैर्यात्-तप कर्मभिरात्मान भावयन्ती  
विहरति=आन्तेस्म । ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या अन्यदा कदाचिद् यत्रैव  
गोपालिका आर्यास्तत्रोपागच्छति उपागत्य वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा  
नमस्यित्वा एवमवादीत्=हे आर्या ! इच्छामि खलु युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती  
चम्पानगर्या वहिः सुभूमिभागस्योद्यानस्यादूरसामन्ते = नातिदूरे नातिनिकटे  
पष्ठपष्ठेन-पष्ठभक्तानन्तर पुन पष्ठभक्तेन ' अणिक्रित्तेण ' अनिष्टित्तेन  
=अविश्रान्तेन-अन्तररहितेन, तप.कर्मणा ' सूर्याभिमुखी ' सूर्याभिमुखी ' आया  
वेमाणी ' आतापयन्ती-आतापना कुर्वती विहर्तुम् ' इति । ततस्तदनन्तर  
ता गोपालिका आर्याः सुकुमानिकामार्यामेवमवादिषुः-हे आर्ये ! त्रय खलु श्रमण्यो

और नौ कोटी ब्रह्मचर्य से महाव्रत की रक्षा करने लगी । अनेक चतुर्थ,  
पष्ठ, अष्टम, भक्त आदि तपस्याओं से अपने आपको भावित  
भी करने लगी । एक दिन की बात है कि वह सुकुमारिका आर्या  
साध्वी-जहा गोपालिका आर्या विराज मान थी वहा गई-( उवाग-  
च्छित्ता वदह, नमसह, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी, इच्छामि ण अ-  
ज्जाओ ! तुभेहिं अन्मणुन्नाया समाणी चपाओ बाहिं सुभूमिभागस्स  
उज्जाणस्स अदूर सामते छट्ट छट्टेण अणिक्रित्ते णं तवोक्कम्मे ण सूर्या  
भिमुखी आयावेमाणी विहरित्तए ) वहां जाकर उसने उन्हें वदना  
की, नमस्कार किया । वदना एव नमस्कार कर फिर वह इस-  
प्रकार कहने लगी-हे भद्रत ! मे आप से आज्ञा प्राप्त कर चपा नगरी से  
बाहिर सुभूमिभाग नाम के उद्यान के समीप अतररहित छट्ट छट्ट  
की तपस्या से सूर्याभिमुखी होकर आतापना करना चाहती हूँ ।  
( तएण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सुमालिय एव वयासी-अम्हेण

चतुर्थ, पष्ठ, अष्टम भक्त वगैरे तपस्याओंकी पीताने लावित पणु करवा  
लागी ओक द्विसन्ती वात छे के ते सुकुमारिका आर्या साध्वी ज्या गोपालिका  
आर्या विराजमान होती त्या गछ ( उवागच्छित्ता वदह, नम सह, व दित्ता, नम-  
सित्ता एव वयासी, इच्छामि ण अज्जाओ ! तु भेहिं अन्मणुन्नाया समाणी च पाओ  
बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामते छट्ट छट्टेण अणिक्रित्तेणं तवो  
क्कम्मेण सूर्याभिमुखी आयावेमाणि विहरित्तए ) त्या जधने तेले तेभने वदना करी  
नमस्कार कर्या वदना तेभज नमस्कार करीने तेले आ प्रभाणु कहु के छे  
सदत ! आपनी आज्ञा भेजवीने हु थ पा नगरीमा गहार सुभूमिभाग नामना  
उद्याननी पामे अतर रहित छट्ट छट्टनी तपस्या करता सूर्याभिमुखी थधने  
आतापना करवा धिउ छु ( तएण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सुमालिय

कया पृष्टा सुवनायाः सघाटकस्थिताः सा 'गम्तामयीनम्', तथैव गोपालिका  
 सघाटया' आर्या भणन्ति=रदिति स्मेत्यर्थः । 'तथैव आर्या जाता' तथैव  
 आरिका जाता=पोटिला वत् सुकुमारिका दारिकाऽपि आरिका जाता । तथैव  
 चिन्ता-पोटिलारद्वेव पधान्=प्रवर्ज्या गदीउ पिठ्ठा सुकुमारिकाया मनसि मादु  
 भूता । सुकुमारिका सागरदत्त सार्थसाद=भ्रविर्तर तथैव=यथा स्वपतिं पोडिला,  
 तद्वद् आपृच्छति, यावद् गोपालिकानामन्तिके प्रवर्जिता=दीक्षा गृहीतवती । ततः  
 खलु सा सुकुमारिका आर्या=साध्या जाता सा किं भूता-ईर्ष्यासमिना यावद् गुप्त  
 हो तो भी घता दीजिये कि जिससे मैं अपने पनि सागरदारक को  
 इष्ट, कान्त यावत् मनोम घनजाऊँ । गोपालि का के सघाटे की इन  
 आर्याओं ने सुकुमारिका को, पोडिला को सुवना साध्या की तरह  
 समझाया-वह उसी तरहसे आरिका बन गई । पोडिला की तरह इस  
 सुकुमारिका ने भी घाद में दीक्षा लेने का मन में विचार किया-  
 पोडिलाने जिस तरह अपने पनि से आज्ञा लेकर दीक्षा धारण की  
 थी-उसी प्रकार इस सुकुमारिका ने भी अपने पिता सागरदत्त से  
 पूछकर गोपालिका आर्या के समीप दीक्षा धारण कर ली । (तएव सा  
 सुमालिया अज्जा जाया ईरिया समिया जाय गुत्तवभयारिणी बहूहि  
 चउत्थ छट्ठम जाव विहरइ, तएण सा सुमालिण अज्जा अन्नया कयाइ  
 जेणेव गोवालिया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ ) इस तरह वह सुकुमा  
 रिका आर्या बन गई । वह ईर्ष्यासमिति आदि का पालन करने लगी

कोई शूल वगैरेना प्रयोग नहीं सके तो पशु मने जाताही हो के नेथी हु  
 भारा पति सागरदारकता भाटे क्षरी छोट, कात, यावत् मनोम थर्ध नउ  
 गोपालिका सघाडानी ते आर्याओओ-सुवता-साध्वीओ नेम पोडिलाने सम  
 नवी तेमन समनवी अने छेवटे ते आरिका अनि गध पोडिलानी नेमन  
 ते सुकुमारिकाओ पशु तयारपछी दीक्षा लेवानो मनमा भल्लम विचार करी लीधे।  
 पोडिलाओ नेम पोताना पतिनी आज्ञा लधने दीक्षा धारण करी इती तेमन  
 सुकुमारिकाओ पशु पोताना पति सागरदत्तने पूछीने गोपालिका आर्यानी  
 पासैथी दीक्षा धारण करी लीधी

( तएण सा सुमालिया अज्जा जाया ईरिया जाय गुत्तवभयारिणी बहूहि  
 चउत्थ छट्ठम जाव विहरइ, तएण सा सुमालिया अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव  
 गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ )

आ दीते सुकुमारिका आर्या थर्ध गध, ते धर्या समिति वगेरेनु पालन  
 करवा लागी अने नवकोटीथी अन्नय्य भडावतनी रक्षा भण्ण

ब्रह्मचारिणी सा बहुभिश्चतुर्थपष्ठाष्टमभक्तैर्यात्-तप कर्मभिरात्मान भावयन्ती  
विहरति=भास्तेस्म । ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या अन्यदा कदाचिद् यत्रैव  
गोपालिका आर्यास्तत्रोपागच्छति उपागत्य वन्दते नमस्यति, उन्दित्वा  
नमस्यित्वा पद्ममयादीत्=हे आर्या ! इच्छामि खलु युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती  
चम्पानगर्या वदिः सुभूमिभागस्योद्यानस्यादूरसामन्ते = नातिदूरे नातिनिकटे  
पष्ठपष्ठेन-पष्ठमक्तानन्तर पुन पष्ठमन्तेन ' अणिक्वित्तेण ' अनिष्टित्तेन  
=अविश्रान्तेन-अन्तररहितेन, तप.कर्मणा ' सुराभिमुही ' सूर्याभिमुखी ' आया  
वेमाणी ' आतापयन्ती-आतापना कुर्वती विहर्तुम् ' इति । ततस्तदनन्तर  
ता गोपालिका आर्याः सुकुमानिकामार्यामेवमयादिषु.-हे आर्ये ! त्रय खलु श्रमण्यो

और नौ कोटी ब्रह्मचर्य से महाव्रत की रक्षा करने लगी । अनेक चतुर्थ,  
पष्ठ, अष्टम, भक्त आदि तपस्याओं से अपने आपको भावित  
भी करने लगी । एक दिन की बात है कि वह सुकुमारिका आर्या  
साध्वी-जहा गोपालिका आर्या विराज मान थी वहा गई-( उवाग-  
च्छित्ता वदह, नमसह, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी, इच्छामि ण अ-  
ज्जाओ ! तुभेहिं अभणुन्नाया समानी चपाओ वारिं सुभूमिभागस्स  
उज्जाणस्स अदूर सामते छट्ट छट्टेण अणिक्वित्ते णं तवोक्कमे ण सुरा  
भिमुही आयावेमाणी विहरित्तए ) वहा जाकर उसने उन्हें वदना  
की, नमस्कार किया ! वदना एव नमस्कार कर फिर वह इस-  
प्रकार कहने लगी-हे भदत ! मे आप से आज्ञा प्राप्त कर चपा नगरी से  
बाहिर सुभूमिभाग नाम के उद्यान के समीप अतररहित छट्ट छट्ट  
की तपस्या से सूर्याभिमुखी होकर आतापना करना चाहती हूँ ।  
( तएण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालिय एव वयासी-अम्हेण

चतुर्थ, पष्ठ, अष्टम लक्षा वगैरे तपस्याओंकी पीताने लावित पण्डु करवा  
लागी ओक द्विसन्नी बात छे के ते सुकुमारिका आर्या साध्वी जया गोपालिका  
आर्या विराजमान होती त्या गछ ( उवागच्छित्ता वदह, नम सह, वदित्ता, नम-  
सित्ता एव वयासी, इच्छामि ण अज्जाओ ! तुभेहिं अभणुन्नाया समानी चपाओ  
वारिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामते छट्ट छट्टेण अणिक्वित्तेणं तवो  
क्कमेण सुराभिमुही आयावेमाणि विहरित्तए ) त्या जधने तेण्ण तेभने वदना करी  
नमस्कार कर्या वदना तेभज नमस्कार करीने तेण्ण आ प्रभाण्णं कहु के छे  
भदत ! आपनी आज्ञा भेजवीने हु य पा नगरीमा गहार सुभूमिभाग नामना  
उद्याननी पाये अतर रहित छट्ट छट्टनी तपस्या करता सूर्याभिमुखी थधने  
। धिंशु छु ( तएण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालिय

निर्ग्रन्थः ईर्यामपिडा=ईर्यामपिडिपुक्ता, गारदू-गुप्तगारदू-स्म, तस्माद् नो खलु गारदू-क-रत-वर्णिता, यदि-प्रामाद गारदू सनिवशाद् पष्ठ पठेन 'जाव विहरित्तप' गारदू विदुर्गु प्रामादे यदि मद्रगे गाघीना स्थिति' शीलभगादिनारण मयतीति भावः । किं क-यते खलु अम्माकम् 'अता' अन्तः=अभ्यन्तर 'उवस्तयस्त' उपाधयस्य=यगतेः, विम्भूतस्य 'वितिपरि कित्तस्त' वृतिपरिचित्तस्य=मित्र्यादिना सर्वे, समाद्रास्य, 'सघाडिपडियाए' सघाडिका पतिवद्वायाः=पतिवद्वाटिकायाः गर्भवाऽनुदाटितगात्राया इत्यर्थ 'समतलपइयाए' समतलपदिकाया=भूमौ समतलपया स्थापितपरणपुगलाया आयावित्तए' आतापयितुम्=आतापना कर्तुं यन्पते इति पूर्ण मन्त्रः । ततः

अज्जे ! समणीओ निग्गथीओ ईरियासामियाओ जाव गुत्तावभचारिणीओ, नो खलु अम्ह कप्पइ बहियागामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठं जाव विहरित्तए ) इम प्रकार सुकुमारिका साध्वी का कथन सुनकर गोपालिका आर्या ने उस सुकुमारिका आर्या से इम प्रकार कहा है आर्ये ! हम लोग निर्ग्रन्थ श्रमणिया हैं । ईर्या आदि समितियों का पालन करती हैं । और नौ कोटि से ब्रह्मचर्य की रक्षा करती हैं । इस लिये हम लोगो को ग्राम से यावत् सन्निवेश से बाहिर रह कर पष्ठ पष्ठ की तपस्या करना यावत् सूर्याभिमुखी होकर आतापन योग धारण करना कल्पित नहीं है । कारण-ग्रामादि के बाहिरी प्रदेश में साध्वियों का रहना शीलभग आदि का निमित्त बन जाता है । (कप्पइ ण अम्ह अंतो उवस्तयस्स विहपरिक्खित्तस्स सघाडिपडियाए ण समतल पइ याए आयावित्तए ) हमें तो यही कल्पित है कि हम लोग उपाश्रय के

एव वयासी-अम्हेण अज्जे ! समणीओ निग्गथीओ ईरिया सामियाओ जाव गुत्तावभचारिणीओ, नो खलु अम्ह कप्पइ बहियागामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठं जाव विहरित्तए ) आ रीते सुकुमारिका साध्वीनु कथन सालणीने गोपालिका आर्याओ सुकुमारिका आर्याने आ प्रमाणे कहुं के आर्ये ! आपणु निअथ श्रमणीओ छीओ धर्या वगेरे समित्तिओनु पालन करीओ छीओ, अने नव कोटिथी अक्षयर्थनु रक्षण करीओ छीओ ओथी आपणु गामथी यावत् सन्निवेशथी णडार रहीने पष्ठ पष्ठनी तपस्या करवी यावत् सूर्याभिमुखी थधने आतापन योग धारण करवो कल्पित नथी कारण के-गाम वगेरेथी णडारना प्रदेशे शमा साध्वीओओ रडेवु शीलभग विगेरेनु निमित्त थध बन छे (कप्पइ ण अम्ह अंतो उवस्तयस्स विहपरिक्खित्तस्स सघाडिपडियाए ण समतलपइयाए आयावित्तए ) आपणुने तो ओ न कल्पित छे के आपणु कीत, ' ' ओमेर



खलु सा सुकुमारिका गोपालिनामार्थाणामेतमर्थं नो श्रद्धधाति ' नो पत्तियइ ' नो प्रत्येति=नो विश्वसिति, ' नो रोएइ ' नो रोचते, एतमर्थम् अश्रद्धाया अप्रतियन्ती, अरोचमाना सति सुभूमिभागस्य उद्यानस्य अदूरसामन्ते पष्ठ-पष्ठेन यावत्-तप रमणा सूर्याभिमुखी भूया-आतापना कुर्वती विहरति ॥ सू० १३ ॥

मूलम्-तत्थ णं चंपाए ललिया नाम गोटी परिवसइ, नरवइ दिण्णवियारा अम्मापिइनिययनिप्पिवासा वेसविहारकयनिकेया नाणाविहअविणयप्पहाणा अड्डा जाव अपरिभूया, तत्थ ण चंपाएदेवदत्ता नामंगणिया हांत्था सुकुमाला जहा अंडणाए, तएणं तीसे ललियाए गोटीए अन्नया पच गोट्टिलगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स

कि जो भित्ति आदि से सब तरफ से परिक्षिप्त है भीतर ही अपने शरीर को शाटिका से अच्छी तरह सवृत्त करती हुई और भूमि पर दोनों चरणों को बराबर स्थापित कर आतापना ले ( त ए ण सा सुमालिया गोवालियाए एयमट्ट नो सदहइ, नो पत्तियइ नो रोएइ एयमट्ट अ० ३ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामन्ते छट्ट छट्टेण जाव विहरइ ) इस गोपालिका आर्याके कथन ऊपर उस सुकुमारिका आर्या को श्रद्धा नहीं जमी उस पर उसे विश्वास नहीं आया, वह उसे रुचा नहीं । इस तरह वह उसे अश्रद्धा अप्रतीति और अरुचि का विषय बनाती हुई सुभूमिभाग नामक उद्यान के पास पष्ठ पष्ठ की तपस्या करती हुई वह सूर्याभिमुख होकर आतापना करने लगी ॥ सू० १३ ॥

परिक्षिप्त उपाग्रयनी अदूरं पोताना शरीरने शाटिका-साडीना आगी नीते ढाडीने आने भूमि उपर णने चरणोने बराबर स्थापित करीने आतापना लधये ( तएण सा सुमालिया गोवालियाए एयमट्ट नो सदहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एयमट्ट अ० ३ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामन्ते छट्ट छट्टेण जाव विहरइ ) गोपालिका आर्याना कथन उपर सुकुमार आर्याने श्रद्धा थरि नहि, तेना उपर तेने विश्वास थये नहि ते तेने गरुथु पणु नहि आ नीते ते ते कथन प्रत्ये अश्रद्धा, अप्रतीति आने अरुचि धरावती सुभूमिभाग नामना उद्याननी पास पष्ठ पष्ठनी तपस्या करती सूर्याभिमुखी थरिने आतापना करवा लागी ॥ सूत्र १३ ॥

निर्ग्रन्थः ईर्ष्यामित्रिणा=ईर्ष्यामित्रितियुक्ता, यावत्-तुल्यतापरिणः स्म., तस्माद् नो खलु अस्माकं कर्तव्यं- 'वहिया' यदि:-प्रामाद यावत् सन्निवेशाद् पृष्ठ पण्डेन 'जाव विहरित्ता' यावत् विहरेणु ग्रामादे र्थाद् मन्त्रे गाध्वीना स्थितिः शीलभगादिचारण गयीति भावः । किं कल्पते खलु अस्माकम् 'अतो' अन्तः=अभ्यन्तर 'उवस्सयस्स' उपाश्रयस्य=यमतेः, विम्बूतस्य 'वित्तिपरि विखत्तस्स' वृत्तिपरिसिद्धस्य=मित्र्यादिना गर्वनः समागृतस्य, 'सघाडिवद्वियाए' सद्वाटिका प्रतिरद्धाया=प्रतिरद्धाटिकायाः गर्ववाञ्छुदाटितगात्राया रत्यर्थ 'समतलपइयाए' समतलपदिकाया=भूमौ समतलउया स्थापितवरणयुगलाया आयावित्तए' जातावपितुम्=आतापना कर्त्तुं कल्पते इति पूर्वेण सम्बन्धः । ततः

अज्जे ! समणीओ निग्गथोआ ईरियासामियाओ जाव गुत्तधम्मचारिणीओ, नो खलु अम्ह कप्पइ वहिया गामस्स जाव सण्णिवस्सस्स वा उट्ठं जाव विहरित्तए ) इस प्रकार सुकुमारिका साध्वी का कथन सुनकर गोपालिका आर्या ने उस सुकुमारिका आर्या से उस प्रकार कहा है आर्ये ! हम लोग निर्ग्रन्थ भ्रमणिया हैं । ईर्ष्या आदि समितियों का पालन करती हैं । और नौ कोटि से ब्रह्मचर्य की रक्षा करती ह । इस लिये हम लोगो को ग्राम से यावत् सन्निवेश से बाहिर रह कर पष्ठ पष्ठ की तपस्या करना यावत् सूर्याभिमुखी होकर आतापन योग धारण करना कल्पित नहीं है । कारण-प्रामादि के बाहरी प्रदेश में साध्वियों का रहना शीलभग आदि का निमित्त बन जाता है । (कप्पइ ण अम्ह अतो उवस्सयस्स विहपरिक्खित्तस्स सघाडिवद्वियाए ण समतल पइ याए आयावित्तए ) हमें तो यही कल्पित है कि हम लोग उपाश्रय के

एव वयासी-अम्हेण अज्जे ! समणीओ निग्गथीओ ईरिया सामियाओ जाव गुत्त धम्मचारिणीओ, नो खलु अम्ह कप्पइ वहिया गामस्स जाव सण्णिवस्सस्स वा उट्ठं जाव विहरित्तए ) आ रीते सुकुमारिका साध्वीनु कथन सालणीने गोपालिका आर्याओ सुकुमारिका आर्याने आ प्रभाणे कहु के आर्ये ! आपणु निर्ग्रन्थ भ्रमणीओ छीओ धर्या वगेरे समितिओनु पालन करीओ छीओ, अने नव कोटिथी ब्रह्मचर्यनु रक्षण करीओ छीओ ओथी आपणु गामथी यावत् सन्निवेशथी णडार रडीने पष्ठ पष्ठनी तपस्या करवी यावत् सूर्याभिमुखी यधने आतापन योग धारण करवो कल्पित नथी कारण के-गाम वगेरेथी अडारना भडे शमा साध्वीओओ रडेवु शीलभग विगेरेनु निमित्त थर्ध जन छे (कप्पइ ण अम्ह अतो उवस्सयस्स विहपरिक्खित्तस्स सघाडिवद्वियाए ण समतलपइयाए आया वित्तए ) आपणुने तो ओ न कल्पित छे के आपणु भीत १०१ ओमेर

वेश्याविहारकृतनिकेता - वेश्यागृहकृतनिवासा, तथा- ' नाणाविहअविणयप्प-  
हाणा ' नानाविधाऽविनयप्रधाना, तथा-आढ्या=धनधान्यसम्पन्ना, यावद् अपरि-  
भूता=परैरनभिभूता, आसीत् । तत्र खलु चम्पाया नगर्या देवदत्ता नाम 'गणिया'  
गणिका=वेश्या, आसीत्, सा किम्भूतेत्याह-सुकुमारपाणिपादा, चतुष्पण्टिकला-  
विशारदा 'जहा अडणाए' यथा अण्डज्ञाते=अण्डनामके तृतीये ज्ञाताज्ययने  
यथाऽस्यावर्णनं तद्वदिह बोध्यम् । ततः खलु तस्या ललिताया गोष्ठ्या अन्यदा=  
अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्मये, पञ्च 'गोष्ठिगपुरिसा' गोष्ठिकपुरुषा=मण्डलीपुरुषाः  
समानवयस्का इत्यर्थः देवदत्तया गणिक्या नार्य सुभूमिभागस्योद्यानस्योद्यानश्रिय=  
उद्यानशोभा मत्त्यनुभवन्तो विहरन्ति । तत्र खलु एको गोष्ठिकपुरुषो देवदत्ता

नाणाविह अविणयप्पहाणा, अड्डा जाव अपरिभूया) इसने अपनी सेवासे  
राजानो प्रसन्न कर रखा था-सो उसकी कृपा से यह बिलकुल स्वच्छद  
थे । अपने माता पिता आदि कुटुम्बी जनो की यह परवाह नही किया  
करते थे-उनको इन पुरुषों से बिलकुल भय नही था । वेश्याओं के  
घर में पड़े रहना-यही इनका एक काम था । अनेक प्रकार के अविनय  
प्रधान रूप अनाचारों का सेवन करना यही उनका काम था ।  
पैसे की-द्रव्यकी उनके- पास कमी नही थी । कोई इनको कुछ कह  
सुन नही सकता था । ( तत्थ ण चपाए देवदत्ता नाम गणिया होत्था,  
सुकुमाला, जहा अडणाए, तएण तीसे ललियाए गोठ्ठीए अन्नया पच  
'गोष्ठिगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धि सुभूमिभागस्स उज्जा-  
णस्स उज्जाणसिरि पच्चणुवभवमाणा विहरति ) उसी चपा नगरी में

जाव अपरिभूया ) ते भउणीओ चे तानी भेवाथी राजने प्रसन्न करेलेो हते।  
तेमनी कृपाथी ते भउणी ओउदम स्वच्छदपणु आचरती हती पोताना माता  
पिता वगेरे कुटुम्बी लोगेनी पणु तेओ दरकार करता न हता तेओने आ  
वडीलेानी केधपणु जतनी भीउ हती नहि, वेश्याओना घेर पड्या रहेपु इक्षत  
ओअ ओमनु ओउ मात्र काम हतु अनेक प्रकारना अविनयपूणु आचरणेो उरवा  
ओअ तेओना अवननु मुज्य काम हतु धननी तेओनी पामे ओउ हती नहि  
केधपणु नागरिकनी ओउली पणु ताकात नहोती ते तेओ तेमने केधपणु उडे ।  
( तत्थ ण चपाए दे-दत्ता नाम गणिया होत्था, सुकुमाला, जहा अडणाए, तएण  
तीसे ललियाए गोठ्ठीए अन्नया पच गोष्ठिगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धि  
सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरि पच्चणु-भवमाणा विहरति ) तेअ चपा

उज्जाणस्स उज्जाणसिंरि पच्चणुब्भवमाणा विहरति, तत्थ ण  
एगे गोद्विलगपुरिस देवदत्तं गणियं उच्चङ्गे धरइ एगे पिट्ठओ  
आयवत्त धरइ एगे पुप्फपूरयं रगउ एगे पाण रगइ एगे  
चामरुक्खेवंकरेइ तएण मा सुमालिया अज्जा देवदत्तं गणिय  
तेहिं पंचहिं गोद्विलपुरिसेहिं सद्धि उरालाइं माणुस्सगाइं  
भोगभोगाइ भुंजमाणी पासइ तएण तीसे इमेयारूपेसंकप्पे  
समुप्पज्जितथा—अहो णंइसाइत्थिया पुरा पोरणाणं कम्माणं  
जाव विहरइ, तं जइ णं वेइ इमस्स सुत्तरियस्स तव-  
नियमवभचेरासस्स कल्लाणे फलवित्तिविमेमे अरिय तो  
णं अहमवि आगमिस्सेणं भग्गहणेणं इमेयारूपाइ उरा-  
लाइ जाव विहरिज्जामि तिमहु नियाणं करेइ करित्ता  
आयावणभूमिओ पच्चोरुहइ ॥सू० १४॥

टीका—‘ तत्थ ण चपाए ’ इत्यादि । तत्र खलु चम्पाया नगर्यां ललिता  
नाम्नी ‘ गोष्ठी ’ गोष्ठी=मण्डली परिवसति किं भूतो सा गोष्ठीत्याह—‘ नरवइदिण्ण  
वियारा ’ नरपतिदत्तविचारा नरपतिना दत्तो विचार. समतिर्यस्यै सा तथा—सेवा  
दिना सन्तुष्टान्नरपतेर्लब्धस्वतन्त्रता, तथा — ‘ अम्मापिइनिययनिप्पिवासा ’  
अम्मापितृनिजकनि पिपासा=मातापित्रादि निरपेक्षा, ‘ वेसविहारकय निकेया ’

‘ तत्थ ण चपाए ललिया नाम ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—( तत्थ ण चपाए ललिया नाम गोष्ठी परिवसइ ) उस  
चपानगरीमें ‘ ललिता ’ इस नामकी गोष्ठी-मण्डली-रहती थी । ( नरवइ  
दिण्णवियारा, अम्मापिइ नियय निप्पिवासा वेसविहारकयनिकेया,

‘ तत्थ ण चपाए ललिया नाम ’ इत्यादि—

टीकार्थ—( तत्थ ण चपाए ललिया नाम गोष्ठी परिवसइ ) ते च पा  
नगरीभा ‘ ललिता ’ नामे गोष्ठी ‘ मण्डली रहती होती ( नरवइ, दिण्णवियारा  
अम्मापिइ निययनिप्पिवासा, वेसविहारकयनिकेया, नाणाविहअविणयपरहाणा, अइत्ता

પુલ્લૈ માર્યમુદારાન=મેઘાન્ ભોગાન્ સુજ્ઞાના-કુર્વર્તીં પશ્યતિ, તતસ્તરયાઃ સુકુમારિકાયા યયમેતદ્વ = વસ્યમાણમ્પરુપઃ સંગ્લ્વ = વિચારઃ સમુદ્વપદ્યત-અહો ! સ્વલુ  
ઇવ સ્ત્રી પુત્રા=સ્વર્વમેવે ' પોરાગાણ ' પુરાગાનામ્-પુરાતનાના મચિતાના કર્મર્ણ  
પુત્રકર્મર્ણા યાવત્=કત્તૃત્તિવિશેષ મત્પ્રત્યુગમન્તી વિહરતિ તન્=તસ્માત્ કારણાદ્  
યદિ સ્વલુ કોઽપ્યસ્વ સુચરિતમ્ય તપોનિયમવ્રત્તચર્ચામસ્ય ત્વયાણ = ડૃષ્ટઃ શુભ-  
રુપ, કત્તૃત્તિવિશેષઃ અસ્તિ, ' તો ' તર્હિ સ્વલુ અહમપિ ' આગમિસ્ત્તેણ '  
આગામિતા ભવગ્રહણેન ડમાન્ એતદ્દૂપાન્ ઉદારાન્ ભોગાન્ યાવત્ સુજ્ઞાના ' વિઠ-

ઉસ પર ચમર હોરે । હમ તરહ સે ઉસ સુકુમારિકા આર્યા ને ઉન  
મહલી કે પાચ પુરુષો કે માય ઉસ દેવદત્તા ગણિકા નો ઉદાર મનુષ્ય  
ભવ સપન્ની કામ ભોગો નો ભોગતે હુણ દેખ્યા । ( તણ તીસે હમેયા-  
હ્વે સકપ્પે સમુપ્પજિત્યા-અહો ન હમા ઇતિયા પુરા પોરાણાણ કમ્માણ  
જાવ વિહરહ ) તા ઉમ સુકુમારિકા આર્યા નો હમ પ્રકાર કા ચહ  
વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ-અહો ! હમ સ્ત્રી ને પૂર્વભવ મેં જો પુણ્ય કર્મ કર્યાયે  
હેં ઉન્હોં પુરાને પુણ્ય કર્મોં કે યાવત્ કત્તૃત્તિ વિશેષ કો ચહ ભોગ રહી  
હેં । ( ત જહણ કેહ હમસ્સ સુચરિયસ્સ તવ નિયમમચેરવાસસ્સ કહ્લાણે  
ફલવિત્તિવિસેસે અત્થિ તો ન અહમવિ આગમિસ્સેણ ભવગ્રહણેણ  
હમેયાહ્વાહ ઉરાઝાહ જાવ વિહરિજ્ઞામિ, તિ કદ્દુ નિયાણ કરેહ, કરિત્તા  
આયાવગમ્મિઓ પચ્ચોરુહહ ) હસલિયે યદિ હન પાલિન તપ, નિયમ  
એવ વ્રત્તચરે વ્રતો કા કોઈ શુભરુપ ફલપ્રાપ્ત વિશેષ હેં તો મેં મી  
આગામી ભવ મેં હમી તરહ કે ઉદાર મનુષ્ય ભવ સપ્નધી કામ ભોગો

દેખ્યા આ રીતે તે સુકુમારિ આર્યાએ મહર્ણના પાચે માણસોની સાથે તે  
દેવદત્તા ગણિકાને ઉદાર મનુષ્યભવના કામભોગો ભોગવતા બોધ્યા ( તણ  
તીસે હમેયાહ્વે સકપ્પે સમુપ્પજિત્યા-અહો ન હમા ઇતિયા પુરા પોરાણાણ  
કમ્માણ જાવ વિહરહ ) ત્યારે તે સુકુમાર આર્યાને આ બતનેા વિચાર ઉત્પ-  
ન્ન્યો કે અહો ! આ સ્ત્રીએ પૂર્વભવમા જે પુણ્યકર્મ કર્યા છે તેમને લીધેજ  
એટલે કે તે જ પૂર્વભવના પુણ્ય-કર્મના યાવત્ ફળવિશેષને આ ભોગવી રહી  
છે ( ત જહણ કેહ હમસ્સ સુચરિયસ્સ તવ નિયમમચેરવાસસ્સ કહ્લાણે ફલ  
વિત્તિવિસેસે અત્થિ તો ન અહમવિ આગમિસ્સેણ ભવગ્રહણેણ હમેયાહ્વાહ ઉરા  
હાહ જાવ વિહરિજ્ઞામિ, તિ કદ્દુ નિયાણ કરેહ, કરિત્તા આયાવગમ્મિઓ  
પચ્ચોરુહહ ) આ બધા મારા વડે આપરવામા આવેલ તપ, નિયમ અને  
બ્રહ્મચર્ય વ્રતોનુ શુભ ફળ છે તો હુ પશુ આવતા ભવમા આ બતના જ ઉદાર  
મનુષ્ય સપન્ધી કામભોગોને ભોગવુ આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેણે નિહાન



ગણિકામુત્સન્ને ધરતિ એ ' પિટ્ઠો ' પૃથ્વિ: ' આયતન ' આયતન=અવ ધરતિ,  
 એક: ' પુષ્પપૂરયં ' પ્રપૂષય-પુષ્પાણા રાનાનિયેષ ' રાજ ' રત્નયતિ, ષક:  
 પાદો-અલક્ષ્યાદિના રુદ્ધયતિ । ષ: ' વામરારો ' વામરે રૂપ=વામરીકન  
 કરોતિ । તત્ કલુ મા મૃદુપાગિષ્ઠા આર્થ દેવતા ગણિકા તે ' પન્નમિર્ગોષ્ટક  
 દેવદત્તા નામ કી એક ગણિકા રાત્રી થી । યા વામરુ વલ્લાશ્રો મે  
 નિષ્ણાત થી । દસકે લાથ પેર આદિ સપ થી અવયવ ધરતી તે અધિક  
 સુકુમાર થે । મયૂર અટ નામ કે તૃતીય જ્ઞાનાધ્યયન મે ઉમરા જૈસા  
 ઘર્ણન કિયા ગયા હૈ-ધૈમા હી ઘર્ણન દસકા યતાં જાનના વાદિયે । એક  
 સમય કી ઘાત હૈ કિ ગોષ્ઠી કે ૫, દુરુપ કિ જો મમાન વચસવાહે થે  
 દેવદત્તા ગણિકા કે સાથે ઉસ સુભૂમિભાગ ઉપાન મે આયે-ઔર  
 ઘરા કી ઉપાન કી જોમા કા નિરીક્ષણ કરતે જુગ ડધર-ડધર ધૂમને  
 લગે-( તત્થ ણ એ ગોઠિલગ પુરિસે દેવદત્તા ગણિય ઉચ્છગે ધરદ, એ  
 પિટ્ઠો આયવત્ત ધરેદ, એ પુષ્પપૂરય રણદ, એ પાણ રણદ, એ  
 ચામરુવલેવ ધરેદ, તણ સા સૂમાલિયા અજ્ઞા દેવદત્તા ગણિય તેહિ  
 પચહિ ગોઠિલગપુરિસેહિ સદ્ધિ ઝગલાદ માણુસગાઢ મોગમોગાઢ મુજ  
 માળી પાસદ ) ઘરા એક ઉસ મડલી કે પુરુષ ને દેવદત્તા ગણિકા કો  
 અપની ગોદી મે બેઠાયા, એક દૂસરે-મડલી કે પુરુષ ને ઉસકે પીઠે સે  
 ઉમકે ઝપર ત્તા તાના, એક તીસરે પુરુષને ઉસકે નિમિત્ત પુષ્પો કી  
 રચના રચી, ચૌથે પુરુષ ને ઉસકે દોનો પૈરો મે માતુર લગાવા પાચવે ને

નગરીમા દેવદત્તા નામે એ ગણિકા રહેતા હતી તે ૬૪ કળાઓમા નિપુણ હતી,  
 તેના હાથ-પગ વગેરે બધા અંગો અતીવ સુઝોમળ હતા મથૂરી અડ નામના  
 ત્રીજા અધ્યયનમા દેવદત્તાનુ જેવુ વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે તેવુ જ વર્ણન  
 અહી પણ બાણી લેવુ જોઈએ એક દિવસની વાત છે કે ગોષ્ઠી-મડળીના  
 પાચ માણુસો કે જેઓ સરખા ઉમરવાળા હતા-દેવદત્તા ગણિકાની સાથે તે  
 સુભૂમિભાગ ઉપાનમા ગયા અને ત્યાની ઉપાન શોભાનુ નિરીક્ષણ કરતા આમ  
 તેમ ફરવા લાગ્યા ( તત્થ ણ એ ગોઠિલગપુરિસે દેવદત્તા ગણિય ઉચ્છગે ધરદ,  
 એ પિટ્ઠો આયવત્ત ધરેદ, એ પુષ્પપૂરય રણદ, એ પાણ રણદ, એ ચામરુવલે  
 વ કરેદ તણ સા સૂમાલિયા અજ્ઞા દેવદત્તા ગણિય તેહિ પચહિ ગોઠિલગપુરિ  
 સેહિ સદ્ધિ ઝગલાદ માણુસગાઢ માગમોગાઢ મુજમાળી પાસદ ) ત્યા તે મડ  
 ળીના એક માણુસે દેવદત્તા ગણિકાને પોતાના ખોળામા બેસાડી બીજા માણુસે  
 તેની ઉપર છત્રી તાણી, ત્રીજા માણુસે તેના માટે પુષ્પો ની રચના કરી, ચોથા  
 માણુસે તેના પગમા લાલ રંગ લગાવ્યો, પાચમા માણુસે તેના ઉપર આમર

माणीए इमेयारुवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, जयाणं  
अह अगारवासमज्जे वसामि तथा णं अह अप्पवसा, जया  
णं अह मुंडे भवित्ता पव्वइया तथा णं अहं परवसा, पुव्वि च  
णं ममं समाणीओ आढायतिर इयाणि नो आढंतिर त सेयं  
खल्ल मम कल्ल पाउ० गोवालियाण अतियाओ पडिनिक्खमित्ता  
पाडिएक उवस्सय उवसंपज्जित्ताण विहरित्तए त्तिकट्टु एव  
संपेहेइ संपेहित्ता कल्ल पा० गोवालियाणं अज्जाणं अंतियाओ  
पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता पडिएकं उवस्सय उवसपज्जि-  
त्ताणं विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा अणोहट्ठिया  
अनिवारिया सच्छदमई अभिक्खण अभिक्खणं हत्थे धोवेइ  
जाव चेएइ तत्थ वि य णं पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा  
ओसणविहारी कुसीलार संसत्तार वहुणि वासाणि सामण-  
परियागं पाउणइ अद्धमासियाए सल्लेहणाए तस्स ठाणस्स  
अणालोइयअपडिक्कंता कालमासे काल किच्चा ईसाणे कप्पे  
अणयरसि विमाणसि देवगणियत्ताए उववण्णा, तत्थेगइयाण  
देवीणं नव पलिओवमाईं ठिई पणत्ता, तत्थ णं सूमालियाए  
देवीए नव पलिओवमाईं ठिई पन्नत्ता ॥ सू० १५ ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि । ततः खल्ल सा सुकुमारिका आर्या ‘सरीर

‘तएण सा सूमालिया अज्जा’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इस के बाद (सा सूमालियाए अज्जा सरीर वडसा

‘तएण सा सूमालिया अज्जा’ इत्यादि—

(तएण) त्या२५४ (सा सूमालिया अज्जा सरीरवडसा जाया चावि

रिज्जामिति वट्ट ' ' विहरामि ' इति कृत्वा ' निगण ' निदान करोति, कृत्वा  
आतापनभूमितः प्रत्यरोहति-आतापना पत्थिज्जति ॥ सू० १४ ॥

मूलम्-तएणं सा सूमालिया अज्जा सरीरवउत्ता जाया  
यावि होत्था, अभिक्खण अभिक्खणंर हत्थे धोवेइ पाए धोवेइ  
सीसं धोवेइ सुहं धोवेइ थणंतराड धोवेइ कप्पंतराड धोवेइ  
गोज्झतराड धोवेइ जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा  
चेएइ तत्थ वि च णं पुव्वामेव उदएणं अवभुक्खइत्ता तओ  
पच्छा ठाणं वा३ चेइए, तएणं ताओ गोवालियाओ सूमालियं  
अज्ज एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया । अज्जे अम्हे सम-  
णीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव वभचेरधारिणीओ  
नो खलु कप्पइ अम्हं सरीरवाउसियाए होत्तए, तुम च णं  
अज्जे ! सरीरवाउसिया अभिक्खणं अभिक्खण हत्थे धोवेसि  
जाव चेएसि, तं तुम णं देवाणुप्पिए । तस्स ठाणस्स आलो-  
एहि जाव पडिवज्जाहि, तएण सा सूमालिया गोवालियाणं  
अज्जाणं एयमट्ठ नो आढाइ नो परिजाणइ अणाढायमाणी  
अपरिजाणमाणी विहरइ, तएण ताओ अज्जाओ सूमालिय  
अज्जं अभिक्खणं अभिक्खणं अभिहीलति जाव परिभवति,  
अभिक्खणं अभिक्खण एयमट्ठ निवोरेति, तएणं तीए सूमा-  
लियाए समणीहिं निग्गंथीहि हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्ज-

को भोगू । ऐसा विचार कर उसने निदान बध किया और करके फिर  
वह आतापन भूमि से आतापना लेकर अपने स्थान आगई ॥ सू० १४ ॥

अथ कथं अने करीने ते आतापन भूमिथी आतापना लधने पोताना स्थाने  
आवी गर्ह ॥ सूत्र १४ ॥

माणीए इमेयारुवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, जयाणं  
अह अगारवासमज्जे वसामि तथा णं अह अप्पवसा, जया  
णं अहं मुंडे भवित्ता पव्वइया तथा णं अहं परवसा, पुठ्वि च  
णं मम समाणीओ आढायतिर इयाणि नो आढतिर त सेयं  
खलु मम कल्ल पाउ० गोवालियाणं अतियाओ पडिनिक्खमित्ता  
पाडिएक्क उवस्सयं उवसपज्जित्ताण विहरित्तए त्तिकट्टु एव  
संपेहेइ संपेहित्ता कल्ल पा० गोवालियाणं अज्जाणं अंतियाओ  
पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता पाडिएक्कं उवस्सय उवसपज्जि-  
त्ताणं विहरइ, तएण सा सूमालिया अज्जा अणोहट्टिया  
अनिवारिया सच्छदमई अभिक्खण अभिक्खणं हत्थे धोवेइ  
जाव चेएइ तत्थ वि य णं पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा  
ओसणविहारी कुसीलार संसत्तार बहूणि वासाणि सामण-  
परियागं पाउणइ अद्धमासियाए सलेहणाए तस्स ठाणस्स  
अणालोइयअपडिक्कंता कालमासे काल किच्चा ईसाणे कप्पे  
अणयसि विमाणसि देवगणियत्ताए उववण्णा, तत्थेगइयाणं  
देवीणं नव पलिओवमाईं ठिई पणत्ता, तत्थ णं सूमालियाए  
देवीए नव पलिओवमाईं ठिई पन्नत्ता ॥ सू० १५ ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि । ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या ‘सरीर

‘तएण सा सूमालिया अज्जा’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इस के बाद (सा सूमालियाए अज्जा सरीर वडसा

‘तएण सा सूमालिया अज्जा’ इत्यादि—

(तएण) त्या२५जी (सा सूमालिया अज्जा सरीरवडसा जाया यावि

रिज्जामिति वट्ट ' ' तिहरामि ' इति कृत्वा ' भियाणं ' निदान करोति, कन्वा  
आतापनभूमि' प्रत्ययरोदति आतापना परिजति ॥ सू० १४॥

मूल्य-तएण सा सूमालिया अज्जा सरीरवउत्ता जाया  
यावि होत्था, अभिक्खण अभिक्खणर हत्थे धोवेइ पाए धोवेइ  
सीसं धोवेइ सुह धोवेइ थणंनराड धोवेइ कम्पतराइं धोवेइ  
गोज्झतराइ धोवेइ जत्थ ण ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा  
चेएइ तत्थ वि च णं पुढ्यामेव उदएणं अवमुक्खइत्ता तओ  
पच्छा ठाणं वा३ चेइए, तएण ताओ गोवालियाओ सूमालिय  
अज्ज एव वयासी-एव खल्ल देवाणुप्पिया । अज्जे अम्हे सम-  
णीओ निगंथीओ ईरियासमियाओ जाव वभचेरधारिणीओ  
नो खल्ल कप्पइ अम्हं सरीरवाउसियाए होत्तए, तुम च णं  
अज्जे ! सरीरवाउसिया अभिक्खण अभिक्खणं हत्थे धोवेसि  
जाव चेएसि, तं तुमं ण देवाणुप्पिए । तस्स ठाणस्स आलो-  
एहि जाव पडिवज्जाहि, तएण सा सूमालिया गोवालियाणं  
अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ नो परिजाणइ अणाढायमाणी  
अपरिजाणमाणी विहरइ, तएण ताओ अज्जाओ सूमालियं  
अज्जं अभिक्खणं अभिक्खणं अभिहीलति जाव परिभवति,  
अभिक्खणं अभिक्खण एयमट्ठं निवारेंति, तएणं तीए सूमा-  
लियाए समणीहिं निगंथीहिं हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्ज-

को भोगू । ऐसा विचार कर उसने निदान बध किया और करके फिर  
वह आतापन भूमि से आतापना लेकर अपने स्थान आगई ॥ सू० १४॥

अथ कुर्या अने करीने ते आतापन भूमिथी आतापना लधने पोताना स्थाने  
आवी गर्ह ॥ सूत्र १४ ॥



ततः खलु गोपात्रिका आर्याः सुकुमारिकामार्यामेवमवादिषुः एव खलु हे देवानुप्रिये ! आर्ये ! त्वय श्रमण्य - तपस्विन्यः निर्ग्रन्थ्यः ब्राह्मण्यन्तरग्रन्थि-  
रहिताः ईर्ष्यासमिता यावद् गुह्यब्रह्मचर्यधारिण्य' स्म', नो खलु कलातेऽम्मारु  
सरीरवाउसियाए' शरीरवाउसिया ' होत्तए' भवितुम् इति त्व च खलु हे  
आर्ये ! शरीरवाउसिका जाता अभोऽण=पुन पुनरतिशयेन हस्तौ धामि  
=प्रक्षालयसि, यावत्-स्थान वा शय्या वा स्वाध्यायभूमि वा जलेनाभ्युक्ष्य  
' चेणसि ' चेतयसि स्वानादिक करोषीत्यर्थः । तत्=तस्मात् त्व खलु हे देवानु  
प्रिये ! तत् स्थानम् ' आलोएहि ' आलोचय, स्वातिचार प्रकाशयेत्यर्थः । यावत्  
' पडिवज्जाहि ' प्रतिपन्नस्व=प्रायश्चित्त स्वीकुरु ' इत्यर्थः । ततः खलु सा सुकु-

लिका आर्या ने उस सुकुमारिका आर्या से कहा-( एव खलु देवाणुप्पि-  
या ! अज्जे अम्हे समणीओ निग्गंधीओ ईरियासमियाओ जाव यमचेर  
धारिणिओ, नो खलु कप्पइ अम्ह सरीरवाउसियाए होत्तए, तुमच णं  
अज्जे मरीरवाउसिया, अभिक्खण २ हत्थे धोवेसि, जाव चेणसि )  
हे देवानुप्रिये ! हम आर्याणि निर्ग्रन्थ श्रमणिया हैं । ईर्ष्या आदि पांच समि-  
नियोंका पालन करती हैं । नौकोटि ब्रह्मचर्य सहितमहाव्रतको पालन  
करती ह । अतः हम लोगों को अपने शरीर के स्पर्श करने में परा-  
यण बनना कल्पित नहीं हैं । हे आर्ये ! तुम शरीर स्पर्श करने में  
परायण बन चुकी हो । बार २ तुम हाथों को धोनी हो यावत् स्थान को  
शय्या को, और स्वाध्याय भूमि को पहिले से ही पानीसे धोकर नियत  
करती हो ( त तुम णं देवाणुप्पिए' तस्स ठाणस्स आलोएहि, जाव  
पडिवज्जाहि ) इस लिये हे देवानुप्रिये ! तुम उस स्थान की आलोचना  
करो-अपने अतिचारों को प्रकाशित करो यावत् उनका प्रायश्चित्त लो ।

सुकुमारिका आर्याने आ प्रभाण्णे उद्धु उ-( एव खलु देवाणुप्पिया ! अज्जे अम्हे  
समणीओ निग्गंधीओ ईरियासमियाओ जाव यमचे धारिणिओ नो खलु कप्पइ  
अम्हे मरीरवाउसियाए होत्तए, तुमच णं अज्जे सरीरवाउसिया, अभिक्खण  
२ हत्थे धोवेसि जाव चेणसि ) हे देव नुप्रिये ! अमे आर्याओ निर्ग्रन्थ श्रम  
णीओ छीओ, ईर्ष्या वगेरे पाथ मभित्तिओनु अणे पालन करीओ गीअ, नव  
कोटिओ ब्रह्मचर्य महाव्रत धारण करीओ छीओ ओया पोताना गरीरने स-  
स्पर्श ओ आपणा माटे योग्य जणाय नउ हे आर्ये ! तमे रानीना सस्पर्श  
मा परायण बनी चूरी छे तमे बारवा हाथाने धुओ छे यावत् स्थानने,  
शय्याने अने स्वाध्यायभूमिने पडिवेधी २ पाणीयो धोएने नछी उनी छे छे  
( त तुम णं देवाणुप्पिए' तस्स ठाणस्स आलोएहि, जाव पडिवज्जाहि ) अवा

वउत्ता ' सरीसृपता सरीसृपताग्रताया जाया गायताम्, अमीश्वर पुनः  
पुनः दृष्टौ ' धावेः ' धारति=वृत्तालरति, पार्श्व धारति ' सीग ' गोपं=शिर  
धारति, गुं धारति, ' भगाराड ' माता-तराणि धारति ' कर्त्ताग्राह ' कक्षा  
न्तराणि धारति, ' गोन्गाराड ' गुहान्तराणि गुहप्रदेश धारति, यत्र गतु ' ठाण  
वा ' न्यायम्-उपवेगनार्थ स्थान ' सेज्ज वा ' शय्या वा ' निसीहिय वा ' नैपे-  
धिकी स्वाध्यायभूमि वा ' चेण्ड ' चेतयति-दरोति, तत्रापि च गतु पूर्वमेवोदकेन  
' अम्भुस्त्वइत्ता ' अम्भुस्त्व=अग्निपित्त, तत्र पथात् ' ठाण वा ' स्थान वा शय्या  
वा नैपेधिरि वा चेण्ड ' चेतयति-दरोति ।

जाया यात्रि होत्था-अभिक्षण २ हत्थे धोवेइ, पाण धोवेइ, सीस  
धोवेइ, मुह धोवेइ, अणतराह धोवेइ, कक्खतराह धोवेइ, गोउअतराह  
धोवेइ) वह सुकुमारिका आर्या शरीर सस्कार करने में भी तत्पर बन  
गई। चार २ वह हाथ धोने लगी, पैर धोने लगी, शिर धोने लगी,  
मुख धोने लगी, स्तना-तरों को धोने लगी, कक्षाओं को धोने लगी  
और गुह प्रदेश को धोने लगी। ( जत्थ ण ठाण वा सेज्ज वा निसीहिय  
वा चेण्ड तत्थ वि य ण पुब्बामेव उदण्ण अम्भुस्त्वइत्ता तओ पच्छा ठाण  
वा ३ चेण्ड, तएण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालिय अज्ज एव  
वयासी ) इसी तरह वह जहां अपना बैठने के लिये स्थान बनाती,  
शय्या-पाथरती, स्वाध्याय स्थान करती, वहां भी वह पहिले से ही  
उसे जल से सींच देती-तब जाकर वहां वह अपना स्थान, शय्या एव  
स्वाध्याय भूमि नियत करती। इस प्रकार की परिस्थिति देख कर गोवा

होत्था-अभिक्षण २ हत्थे धोवेइ, पाण धावेइ, सीस धोवेइ, मुह धोवेइ, अणतराह  
धोवेइ, कक्खतराह धोवेइ गोउअतराह धोवेइ) तो सुकुमारिका आर्या शरीर-संस्कार  
पना काममा परोवाछ गछ वारवार हाथ धोवा लागी, पग धोवा लागी, माथु  
धोवा लागी, मुख धोवा लागी, स्तनोना वन्थेना स्थानने धोवा लागी, अगलेने  
धोवा लागी, अने शुभ स्थानोने धोवा लागी (जत्थ ण ठाण वा सेज्ज वा निसी  
हिय वा चेण्ड तत्थ वि य ण पुब्बामेव उदण्ण अम्भुस्त्वइत्ता तओ पच्छा ठाण  
वा ३ चेण्ड तए ण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालिय अज्ज एव वयासी)  
आ प्रभावे ज ते जना पोतानु भेसवानु स्थान नक्की करती, के पथरी पाथरती  
अथवा तो स्वाध्याय आटे भेसवानु स्थान नक्की करती त्या पडेयेथी ज ते स्थानने  
पाणी छोटती हुती अने त्थारपणी ते त्या पोतानु स्थान-शय्या अने स्वाध्याय  
स्थान नक्की करती हुती आ जतनी परिस्थिति जेधने गोवालिका ते

भूतः, यदा=यावत् काल खलु अहमगारवासमभ्ये वमामि, तदा=तावत् काल खल्वह 'अप्पवसा' आत्मवशा स्वाधीना आसम्, यदा खल्वह मुण्डा भूत्वा प्रव्रजिता तदा खल्वह परवशा पराधीना जाता । 'पुर्व्वि' पुरा पूर्व्वस्मिन् काले च खलु 'मम' मा श्रमण्यः 'आढायति' २ आद्रियन्त, तथा परिजानन्ति, इदानीं नो आद्रियन्ते नो परिजानन्ति, 'त' तत्=तस्मात् श्रेयः खलु मम कल्ये प्रादुर्भूत प्रभातया रजन्या यावज्ज्वलति सूर्ये अभ्युदते गोपालिकानामार्याणामन्तिमात् प्रतिनिष्क्रम्य 'पाडिक्क' पार्थक्य=पार्थक्याश्रय पृथग्भूतम् अन्यमित्यर्थः 'उव-

यह आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ-(जयाण अम्ह आगारवासमज्जे वमामि तयाण अह अप्पवसा जयाण अह मुडे भविता पव्वइया तयाण अह परवसा, पुर्व्वि च ण मम समणीओ आढायंति, इयाणि णो आढति २ तं सेय खलु मम कल्ल पाड० गोवालियाणं अतिथाओ पडिनिक्खमित्ता पडिक्क उवस्सयं उवसपज्जित्ताणं विहरित्तए त्ति कट्ठु एव सपेहेइ) जन तक मे घर में रही तब तक स्वाधीन रही-और अब जब से मुंडित होकर प्रव्रजित हुई हूँ तब से पराधीन बन रही हूँ । पहिले ये श्रमणिषा मेरा आदर करती थी-मेरी बात मानती थी परन्तु अबतो कोई भी न मेरा आदर करती है-और न मेरी बात ही मानती है । इस लिये सुझे अब वही उचित होगा कि मैं दूसरे दिन जब प्रातः काल होने पर सूर्य प्रकाश से चमकने लगे-तब मैं गोपालिका आर्याके पास रो निकल कर किसी दूसरे भिन्न उपा

शेक टोड डरी त्थारे तेने आ नतने आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ ( जयाण अम्ह आगारवासमज्जे वमामि तयाण अह अप्पवसा जयाण अह मुडे भविता पव्वइया तयाण अह परवसा पुर्व्वि च ण मम समणीओ आढायति, इयाणि णो आढति २ तं सेय खलु मम पाड० गोवालियाणं अति थाओ पडिनिक्खमित्ता पडिक्क उवस्सयं उवसपज्जित्ताणं विहरित्तए त्ति कट्ठु एव सपेहेइ ) न्या सुधी हु घरमा रही त्या सुधी स्वाधीन रही पणु न्यारथी मुडित थधने प्रव्रजित थध हु त्थारथी पराधीन थध गध हु पडेला आ श्रमणीओ भारे आदर करती छती, भारी बात मानती छती पणु अत्थारे तो केध पणु भारे आदर नथी करतु अने भारी बात पणु मानतु नथी तेथी भारे भाटे अने उचित छे के भी २ दिवसे भवारे सूर्य उदय पावता न हु गोपालिका आर्यानी पासैथी नीडणीने केध भीन उपाश्रये नती रहु अतने तेणु विचार करी ( सपेहिता ) विचार करीने ते ( कल्ल पा०

મારિકા આર્યા ગોપાલિકાનામાર્યાજામેનમર્થે ' નો આઢાહ ' નાટ્રિયતે, નો પરિજાનીતે તદ્વાને ધ્યાન ન દદાનિ. । અનાદ્રિયમાણા=અનાદર કરતી, અપરિજાનાના=પાનપદદાના વિહરતિ=પ્રાદેતે । તત્' ચલુ તાઃ ગોપાલિકા આર્યાઃ સુકુમારિકામાર્યામમીક્ષ્ય=પુનઃ પુનરભિદીતિ વિમન્તિ નિઝનિ યાત્ર પરિમરન્તિ । અમીક્ષ્ય=પુનઃ પુનઃ, ' ઇયમદ્વં ' ઇતમર્થમ્ ઉક્તમર્થે કરીયોમારુણ જલમક્ષેપાદિક નિચારવન્તિ=પતિપેતરન્તિ । તત્' ચલુ ' તીર્ણ ' તમ્યાઃ સુકુમારિકાયા શ્રમણીભિર્નિગ્રન્થીભિઃ દીન્યમાનાયા યાત્ર ચાર્યમાણાયા અયમેતદ્વૃપઃ=વક્ષ્યમાણસ્યસ્ય' આધ્યાત્મિકો યાત્રમનોગતઃ સવન્ધો-નિચારઃમમુદપદ્યત=માદુ

( તણ સા સુમાલિયા ગોવાલિયાણ અજ્ઞાણ ઇયમદ્વ નો આઢાહ, નો પરિજાણાહ, અણાઢાયમાણી, અપરિજાણમાણી, વિહરહ ) સુકુમારિકા આર્યા ને ગોપાલિકા આર્યા કે હમ્મ કચન રૂપ અર્થ કો આદર કી દષ્ટિ સે નહીં દેખા, અનેકે વચનો પર અનેકે કુછ મી ધ્યાન નહીં દિયા । હસ તરહ અનેકે વચનો કા અનાદર ઓર અને પર ધ્યાન નહીં દેતી હુઈ વહ રહેને લગી ( તણ તાઓ અજ્ઞાઓ સુમાલિય અજ્ઞ અમિક્ષણ ૨ ઇયમદ્વ નિવારેતિ, તણ તીસે સુમાલિયાણ સમણીહિ નિગ્ગયીહિ હીલિ હજ્જમાણીણ જાવ વારિજ્જમાણીણ હમેયાસ્થે અજ્જત્થિણ જાવ સમુપ્પજિજ ત્થા ) હસ કે પશ્ચાત્ અને ગોપાલિકા આર્યા ને હસ સુકુમારિકા આર્યા કી વાર ૨ અવહેલના કી, હસ પર વે શુસ્સા મી હુઈ અનેકી નિંદા મી કી યાવત્ હસકા તિરસ્કાર મી કિયા । વાર ૨ હસે શરીર કી શોભા કરને સે ઓર જલ કા સિંચન કરને સે રોકા । તત્ હસે હસ પ્રકાર કા

હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે તે સ્થાનની આલોચના કરો-પોતાના અતિચારને પ્રકાશિત કરો યાવત્ તેના માટે પ્રાયશ્ચિત્ત કરો (તણ સા સુમાલિયા ગોવાલિયાણ અજ્ઞાણ ઇયમદ્વ નો આઢાહ, નો પરિજાણાહ, અણાઢાયમાણી, અપરિજાણમાણી, વિહરહ ) સુકુમારિકા આર્યાએ ગોપાલિકા આર્યાના આ કથનરૂપ અર્થને આદરની દષ્ટિથી જોયો નહિ, તેમના વચનો ઉપર તેણે કંઈ પણ વિચાર કર્યો નહિ આ રીતે તેમના વચનોનો અનાદર અને તે પ્રત્યે બેદરકાર થઈને તે પોતાનો વખત પસાર કરવા લાગી ( તણ તાઓ અજ્ઞાઓ સુમાલિય અજ્ઞ અમિક્ષણ ૨ ઇયમદ્વ નિવારેતિ, તણ તીસે સુમાલિયાણ સમણીહિ નિગ્ગયીહિ હીલિહજ્જમાણીણ જાવ વારિજ્જમાણીણ હમેયાસ્થે અજ્જત્થિણ જાવ સમુપ્પજિજત્થા ) ત્યારપછી તે ગોપાલિકા આર્યાએ તે સુકુમારિકા આર્યાની વારવાર અવહેલના કરી, તેની તરફ તેમણે શુસ્સો પણ બતાવ્યો, તેની નિંદા કરી યાવત્ તેનો તિરસ્કાર પણ કર્યો તેને વારવાર શરીરને શોભાવવા બદલ તેમજ જળનું નિં





ससय ' उपाश्रयम् उपसंयय विदुर्मिति क्ता पय मंप्रेक्ष्य दन्त्ये मादुर्भूतसमा-  
ताया रजन्या यावज्जलनिघर्णे उदिते ति गोपालिकानामार्याणामन्तिकान् प्रति  
निष्प्रामति, प्रतिनिष्प्रम्य ' पाडिण्ड ' पार्थक्य-पृथग्भूतमन्यसुपाश्रयमुपसंयय  
खलु विहरति-आप्त स्त ।

ततः खलु ता सुकुमारिका आर्या ' अणोहट्टिया ' अनप्यघट्टिका अपवारक  
रहिता-उच्छद्गला अभिनयवतीति यावत् ' अनिवारिया ' अनिवार्या दुर्निवाण-  
' सच्छदमई ' सच्छदमतिः-गरिधर्मानुरोधरहितगाता, अमीक्ष्य-पुनः पुनः-  
ईस्तौ धावति=प्रक्षालयति यावत्=स्थान या शय्या या नैपेधिर्मी वा जलेनाभ्युक्ष्य-  
चेतयति=स्थानादिक करोतीत्यर्थः । तथापि च खलु पार्थक्या, पार्थक्यविहारिणी,

अथ मे चली जाऊँ इस प्रकार का उमने विचार किया (मपेहिष्ठा)  
ऐसा विचार करके (करल पा० गोवालियाण अज्जाण) दूसरे ही दिन-  
प्रातः काल जब सूर्योदय हो गया-तब वह गोपालिका आर्या के (अति-  
याओ) पास से (पडिनिस्सवमिच्छा) निकल कर-(पटिण्डक) भिक्ष,  
दूसरे (उवस्सय) उपाश्रय को (उवसपज्जित्ताण विहरइ) प्राप्त कर,  
वहा रहने लगी-अर्थात् दूसरे उपाश्रय में चली आई। (तण्ण सा  
सुमालिया अज्जा अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छदमई अभिस्सवण  
अभिस्सवण हत्थे धोवेइ जाव चेणइ) वहा वहा सुकुमारिका आर्या बिना,  
किसी रोक टोक के सच्छद धनकर रहने लग गई। वहाँ उसे कोई  
रोकने वाला रहा नहीं-सो जो मन में आया वह करने लग गई-इस  
तरह वह चोरिधर्म के भाव से रहित बन गई। बार २ अपने हाथों  
को धोती यावत् स्थान, शय्या, और स्वाध्याय की भूमि को धोकर वहा

गोवालियाण अज्जाण) जीने दिवसे सवारे न्यारे सूय उदय पाये। तयारे ते  
गोपालिका आर्यानी (अतियाओ)-पासेधी (पडिनिस्सवमिच्छा) नीकणीने (पटिण्डक)  
जीण (उवस्सय) उपाश्रयने (उवसपज्जित्ताण विहरइ) भेणवीने त्या रडेवा  
लागी, ओटवे डे जीण उपाश्रयभा नती रही (त एण सा सुमालिया अज्जा  
अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छदमई अभिस्सवण हत्थे धोवेइ जाव चेणइ) त्या  
ते सुकुमारिका आर्या डोईपणु नतनी रोक टोक वगर स्वच्छतापूर्वक रडेवा  
लागी त्या तेने डोई रोक-टोक करनार छु नडि ओटवे ने प्रभावे तेनी  
धुन्छा थती ते प्रभावे न ते आचरती छती आ रीते ते आरिधर्मना  
भावथी रहित णनी गछ बारबार ते पोताना डोथेने धोती छती यावत् स्थान,  
पथारी अने स्वाध्यायना स्थानने धोथेने त्या पोतानु स्थान नक्की करती छती

अवसन्ना, अवसन्नविहारिणी, कुशीला कुशीलविहारिणी, समक्ता, ससक्तविहारिणी, बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयति, पालयित्वा अर्धमामिक्या सलेखनया तस्य स्थानस्याऽनालोचिता अप्रतिक्रान्ता कालमासे काल कृत्वा, ईशाने कल्पेऽन्यत मस्मिन् विमाने मायुर्यादि ताचनाममये आचार्याणां विमानसख्याया विस्मरणेन निश्चयाभावादन्यतमस्मिन्नित्युक्तम्, देवगणित्तया उपपन्ना । तत्रैकैकासा-देवीना नवपल्योपगानि स्थितिः प्रवृत्ता ॥ सू० १५ ॥

अपना स्थान नियत करती । इस प्रकार ( तत्थ वि य ण पासत्था पासत्थ विहारी, ओसग्णा ओसणविहारी कुमीलार मसत्तार बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउण्ड ) वहा उम सुकुमारिका ने पार्श्वस्था पार्श्वस्थ विहारिणी, अवसन्ना, अवसन्न विहारिणी, कुशीला, कुशील विहारिणी, समक्ता, ससक्त विहारिणी बनकर अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया ( पाउणिक्ता अर्द्धमासियाए ) पालन करके वह अर्धमास की सलेखना धारण कर ( कालओत ) अपनी मृत्यु के अपसर ( काल किच्चा ) पर मरी-सो मरकर ( अणालोइय अपडिक्कता ) अपने पापों की अनालोचना करने से वह प्रतिक्रान्त नहीं बन सकने के कारण ( ईसाणे कप्पे ) ईशानकल्प में ( अण्णयरसि विमाणसि ) किसी एक विमान में ( देवगणियत्ताए उववण्णा ) देवगणिका के रूप में उत्पन्न हुई । ( तत्थेगइयाण देवीण नवपलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता, तत्थण सूमा-लियाए देवीए नव पलिओवमाइ ठिइ पण्णत्ता ) वहा कितनिक देवियों

आ रीते ( तत्थ वि य ण पासत्था पासत्थविहारी ओसग्णा ओसणविहारी कुशीलाऽसत्तार २ बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउण्ड ) त्या ते सुकु-मारिकाओ पार्श्वस्था, पार्श्वस्थ विहारिणी, अवसन्ना, अवसन्न विहारिणी, कुशीला, कुशील विहारिणी, समक्ता, ससक्त विहारिणी थधने धणुा वर्षो सुधी श्रामण्य पर्याय पालन कथुं ( पाउणिक्ता अर्द्धमासियाए ) पालन करीने ते अर्धमामिक्यी सलेखना धारण करीने ( कालमासे ) पोताना मृत्यु ठाणे ( कालकिच्चा ) ते मरेणु पाभी अने मरेणु पाभीने ( अणालोइय अपडिक्कता ) पोताना पापेनी आलोचना न करवाथी प्रतिक्रान्त न अनी शङ्कना ठारणे ते ( ईसाणे कप्पे ) ईशान कल्पमा ( अण्णयरसि विमाणसि ) ठाई ओक विमा-नमा ( देवगणियत्ताए उववण्णा ) देवगणिकाना रूपमा जन्म पाभी ( तत्थे गइयाण देवी ण नवपलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता, तत्थण सूमालियाए देवीए नव पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ) त्या उटलीक देवीओनी स्थिति नव पद्योपननी कडे

મૂલમ્—તેણં કાલેણ તેણ સમણં દહેવ જંબુદ્વીવે ભારહે વાસે  
 પંચાલેસુ જળવણસુ કપિલપુરે નામ નયરે હોત્યા, વન્નઓ તત્થ  
 ણં દુવણ નામં રાયા હોત્યા, વન્નઓ, તસ્સ ણં ચુલણીદેવી  
 ધટ્ટજ્જુણે કુમારે જુવરાયા, તણ્ણં સા સૂમાલિયાદેવી તાઓ  
 દેવલોયાઓ આઠઋણણં જાવ ચહિત્તા દહેવ જંબુદ્વીવે દ્વીવે ભારહે  
 વાસે પંચાલેસુ જળવણસુ કપિલપુરે નયરે દુવયસ્સ રણ્ણો ચુલ-  
 ણીણ દેવીણ કુચ્છિસિ દારિયત્તાણ પચ્ચાયાયા, તણ્ણ સા ચુલ-  
 ણીદેવી નવણ્હ માસાણ જાવ દારિયં પયાયા, તણ્ણં સા તીસે  
 દારિયાણ નિવ્વત્તવારસાહિયાણ્ણ ઇમ ણ્યારૂવ ગોણં ગુણાણિ પ્પક્કણં  
 નામધેજ્જં જમ્હાણ્ણ એસ દારિયા દુવયસ્સ રણ્ણો ધૂયા ચુલણીણ  
 દેવીણ અત્તયા ત હોઝ ણં અમ્હ ઇમીસે દારિયાણ નામધિજ્જે  
 દોવર્હ, તણ્ણં તીસે અમ્માપિયરો ઇમ ણ્યારૂવ ગુણ ગુણાણિ  
 પ્પક્કણ નામધેજ્જ કરિંતિ દોવર્હ, તણ્ણ સા દોવર્હ દારિયા પંચ  
 ધાઠ્ઠપરિગ્ગાહિયા જાવ ગિરિકદરમહ્લીણિ ઇવ ચપગલયા નિવાય

કી સ્થિતિ નૌ પલ્યોપમ કી કહી ગઈ છે—સો હસ સુકુમારિકાદેવી કી  
 વહા નૌ પલ્યોપમ કી સ્થિતિ હુઈ । યહા જો ” કિસી એક વિમાન મેં ”  
 એસા અનિશ્ચયાત્મક પદઆયો છે ઉસકા તાત્પર્ય યહ છે કિ માધુર્યાદિ  
 વાચના કે સમય મેં આચાર્યોં કો વિમાન સહ્યા કા વિસ્મરણ હો જાને  
 સે ઉસકા નિશ્ચય નહી રહા । અતઃ એસા કહાં ગયા છે ॥ સૂ. ૧૫ ॥

વામા આવી છે તો તે સુકુમારિકા દેવીની પણ ત્યા નવપલ્યોપમની સ્થિતિ  
 થઈ અહીં જે “કોઈ એક વિમાનમા” આ જાતનું અનિશ્ચયાત્મક પદ આવ્યું  
 છે તેનું કારણ આ પ્રમાણે છે કે માધુર્યાદિ વાચનાના સમયે આચાર્યોની વિમાન  
 સંખ્યાનું વિસ્મરણ થઈ જવાથી તે વિષે નિશ્ચય રહ્યો નહિ એથી આ પ્રમાણે  
 કહેવામા આવ્યું છે ॥ સૂત્ર ૧૫ ॥

निठ्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्डु । तएणं सा दोवई रायवरकन्ना  
उम्मुक्कवालभावा जाव उक्किट्टसरीरा जाया जावि होत्था, तएणं  
तं दोवई रायवरकन्नं अपणया कयाई अंतेउरियाओ पहायं  
जाव विभूसिय करेति करित्ता दुवयस्स रण्णोपाएवंदिउं पेसति  
तएण सा दोवइ राय० जेणेव राया तेणेव उवागच्छइ उवा-  
गच्छित्ता दुवयस्स रण्णो पायग्गहण करेइ, तएणं से दुवए  
राया दोवइ दारिय अके निवेसेइ निवेसित्ता दोवइए रायवर-  
कन्नाए रुवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जावविम्हए दोवइ  
रायवरकन्नं एव वयासी-जस्स णं अह पुत्ता । रायस्स वा जुवरायस्स  
वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि तत्थ ण तुम सुहिया वा  
दुक्खिया वा भविज्जासि, तएण मम जावजीवाए हिययडाहे  
भविस्सइ, तं ण अहं तव पुत्ता । अज्जयाए सयंवर विरियामि,  
अज्जयाए ण तुम दिण्णसयवरा जण्णं तुम सयमेव रायं वा  
जुवराय वा वरेहिसि से ण तव भत्तारे भविस्सइ त्तिरुहु ताहिं  
इत्ताहिं जाव आसासेइ आसासित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १६ ॥

टीका—‘ तेण कालेण ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव  
जम्बूद्वीपे भारते वर्षे पञ्चालेषु जनपदेषु काम्पिल्यपुर=काम्पिल्यपुरनामक नगर

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—( तेण कालेण तेण समएण ) उस काल और उस  
समय में (इहैव जम्बूद्वीपे भारते वासे पञ्चालेषु जनपदेषु कपिलपुरे नाम  
नगरे होत्था ) इसी जम्बूद्वीप में भारत वर्ष में पांचाल जनपद में

तेण कालेण तेण समएण इत्यादि—

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये (इहैव जम्बूद्वीपे  
भारतवासे पञ्चालेषु जनपदेषु कपिलपुरे नाम नगरे होत्था ) आ जम्बूद्वीपमा  
भारत वर्षमा पांचाल जनपदमा कपिलपुर नामे नगर छु ( वनजो ) आ  
नगरनु वर्षान औपपातिक सूत्रमा करवामा आबु छे त्याथी पाठकोअे नष्टी

मासीत्, वर्गक=अस्य नगरस्य वर्णनगोपपातिकसूत्राद् बोध्यम् । तत्र स्व  
 मुपदो नाम राजाऽसीत्, चुलनी नाम्नी त्री मायाऽभवत्, तस्या पुत्रः 'धृ  
 ज्जुणे' धृष्टद्युम्नो नाम कुमारो युवराजोऽभवत् ।

ततः खलु सा सुकुमारिका देवी तस्मात् देवलोकात्प्राप्य क्षयं यावत्-  
 च्युत्वा इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते त्रिपंचालेषु जनपदेषु कापिल्यपुरे नगरे  
 मुपदस्य राज्ञः=चुलनी देव्याः कुक्षौ दारित्तया=पुत्रीत्वेन 'पञ्चायाया' प्रया-  
 याता=नमुत्पन्ना । ततः खलु सा चुलनीदेवी नवानां गोमानां बहुमतिपुणानां  
 यावद् दारिका पूर्वीं प्रजाता=प्रजनितवती । ततः खलु सा तस्या दारिकाया

कापिल्यपुर नाम का नगर था । ( वनजो ) उम नगर का वर्णन औप-  
 पातिक सूत्र में किया गया है जो वर्ण से जान लेना चाहिये । ( तत्प-  
 ण दुवए नाम राया होत्था वनजो तस्म ण चुलनीदेवी, धट्टज्जुणे कुमार  
 जुवराया, तएण सा सुमालिया देवी ताओ देवलोकाओ आइस्सवण  
 जाव चइत्ता इहेव जवुहीवे दीवे, भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कपि-  
 लपुरे नगरे दुवयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिउसि दारियत्ताए  
 पञ्चायाया ) वहाके राजाका नाम मुपद था । राजाका वर्णन भी पहिले  
 जैसा ही जानना चाहिये । इस की रानी का नाम चुलनीदेवी था ।  
 कुमार का नाम धृष्टद्युम्न था-यह युवराज था । वह सुकुमारिका आर्या  
 का जीव उस दूसरे ईशान देवलोक से आयु आदि क्षय हो जाने के  
 कारण चक्कर इसी जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में भरत क्षेत्र में, पंचाल  
 जनपद में कापिल्यपुर नगर में मुपद राजा की चुलनीदेवी की कुक्षि में  
 पुत्री रूपसे अवतरित हुआ । ( तएण सा चुलणीदेवी नवण्ह मासाण जाव

देवु नेधये ( तत्प ण दुवए नाम राया होत्था, वनजो, तस्म ण चुलणी देवी  
 धट्टज्जुणे कुमारे, जुवराया, तएण सा सुमालिया देवी ताओ देवलोकाओ आ-  
 इस्सवण जाव चइत्ता इहेव जवुहीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कपिल  
 पुरे नगरे दुवयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिउसि दारियत्ताए पञ्चायाया ) त्वाना  
 राजानु नाम मुपद इत्तुं राजानु वर्णन पण्य औपपातिक सूत्रमा वञ्चित कोष्ठिक  
 राजानी नेमज्ज ज्ञाणी देवु नेधये - तेनी, राजीनु नाम चुलनी, देवी इत्तुं तेना  
 पुत्रनु नाम धृष्टद्युम्न इत्तु धृष्टद्युम्न, युवराज इतो, सुकुमारिका आर्यानां एव  
 ते आन्त देवलोकथी आयु वगेरे क्षय यत्ता अहल यवीने आन्त जम्बूद्वीप  
 नामना, द्वीपमा, भरत क्षेत्रमा, पञ्चादय जनपदमा, कापिल्यपुर नगरमा मुपद  
 राजानी चुलनी देवीना उदरमा पुत्री रूपे अवतरित थये । ( त एण सा चुलणी



‘निवृत्तवारसाहियाए’ निवृत्तद्वाधशाहिकाया=द्वादशेऽहनि संप्राप्ते इदमेतद्रूप  
नाम कृतवती यस्मात् खलु एषा दारिका रुपदस्य राक्षो ‘धूया’ दुहिता-पुत्री  
चुलनीया देव्या ‘अत्तिया’ आत्मजा=अद्भुता, तस्माद् भवतु खल्वस्माकमस्या  
दारिकाया नामधेय ‘द्रौपदी’ इति । ततः खलु तस्या अम्बापितरौ इममेतद्रूप  
गोणं=गुणं प्राप्तं गुणनिष्पन्न=गुणसंपन्न, नामधेयं कुरुतः । ततः सा द्रौपदी दारिका  
पञ्चधात्रीभिर्यावद् गिरिकन्दरमालीने चम्पकवृता निर्वातनिर्व्याघाते सुखेन  
सुखेन परिवर्धते स्म ।

दारिग्र्यं पयाया तएण सा तीसे दारियाए निवृत्तवारसाहियाए इम एया  
खलु गोण गुणनिष्पन्न नामधेज्ज जम्हाण एस दारिया दुवयस्स रण्णो  
धूया चुलनीए देवीए अत्तया त होउण-अम्ह इमीसे दारियाए नामधिज्जे  
दोवई ) गर्भ के जब नौ मास अच्छी तरह समाप्त हो चुके तब चुलनी-  
देवी ने एक पुत्री को जन्म दिया । पुत्री को उत्पन्न हुए १२ वां दिन  
लगा-तब चुलनी मानाने उसका इस रूप से गुणनिष्पन्न नाम रखवा क्यों  
कि यह रुपदराजा की पुत्री है और सुष्ठु चुलनी के उदर से उत्पन्न हुई  
है-इसलिये इस हमारी कन्या को नाम रुपदी रहो इस तरह के विचार-  
से ( तीसे अम्मा पियरो ) माता पिता ने उसका ( इम एयाखलु गुण  
गुणनिष्पन्न नामधेज्ज करिनि दोवई ) इस तरह का गुणनिष्पन्न नाम  
द्रौपदी रख दिया । ( तएण ) इसके बाद-( सा दोवई दारिया पचधाइ  
परिगहिया जाव गिरिकन्दरमल्लीणइव चम्पगलया निवायनिव्याघायसि  
सुह सुहेण परिवड्डेइ ) वह द्रौपदी दारिका पांच धायमानाओं से युक्त

देवी नवण्ह मासण जाव दारिग्र्यं पयाया तएण सा तीसे दारियाए निवृत्तवार  
साहियाए इम एयाखलु गोण गुणनिष्पन्न नामधेज्ज जम्हाण एस दारिया  
दुवयस्स रण्णो धूया चुलनीए देवीए अत्तया त होउण अम्ह इमीसे दारियाए  
नामधिज्जे दोवई ) गर्भना नवमास न्यारे ‘संपूर्णपणे’ समाप्त थया तयारे  
चुलनी देवीये अक पुत्रीने जन्म आय्यो पुत्रीना जन्म पथी न्यारे अगि  
यार द्विअं पूरा थया अने पारमे द्विअं गउ थयो तयारे चुलनी माताये  
विचार कयो के रुपद राजनी आ उन्हापुत्री छे अने भारा गर्भथा जन्म  
पाभी छे आ प्रभाणे आनु नाम द्रौपदी राधीये तो साइ आभ विचारीने  
( तीसे अम्मापियरो ) मातापिताये ( इम एयाखलु गुण गुणनिष्पन्न नाम  
धेज्ज करिनि दोवई ) आ जीते ते उन्हानु गुण निष्पन्न नाम द्रौपदी पाउथु  
( तएण ) तयारपथी ( सा दोवई दारिया पचधाइपरिगहिया जाव गिरिकन्दर  
मल्लीण इव चम्पगलया निवायनिव्याघायसि सुह सुहेण परिवड्डेइ ) द्रौपदी

मासीत्, वर्णकः=अस्य नगरस्य वर्णनमौपपातिकसूत्राद् बोध्यम् । तत्र 'सह  
द्रुपदो नाम राजाऽऽसीत्, चुलनी नाम्नी देवी भार्याऽभवत्, तस्य पुत्रः 'धृष्ट-  
जुणो' धृष्टद्युम्नो नाम कुमारो युवराजोऽभवत् ।

ततः खट्वा गा चुलमारिका देवी तस्माद् देवलोकादायु संयेग यावत्-  
द्युत्वा इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते तं पचालेषु जनपदेषु कापिल्यपुरे नगरे  
द्रुपदस्य राज्ञः=चुलन्या देव्या. कुक्षौ दारिद्र्यतया=पुत्रीभ्यः 'पञ्चायाया' प्रया-  
याता=उत्पन्ना । ततः गत्वा गा चुलनीदेवी नमाना गोमानां उद्वृत्तिपूर्णाया  
यावद् दारिका पुरीं प्रजाता=प्रजनितवती । ततः खलु गा तस्या दारिकाया

कापिल्यपुर नाम का नगर था । ( चन्नजो ) उम नगर का वर्णन औप-  
पातिक सूत्र में किया गया है सो जहाँ से जान लेना चाहिये । ( तत्थ  
ण दुवए नाम राया होत्था वन्नजो तस्स ण चुलनीदेवी, धट्टजुणे कुमारे  
जुवराया, तएण सा सुमालिया देवी ताओ देवलोयाओ आउक्खवण  
जाव चइत्ता इहेव जम्बूद्वीवे दीवे, भारहे वासे पचालेसु जणवएसु कपि-  
लपुरे नगरे दुवयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिसि दारियत्ताए  
पञ्चायाया ) वहाके राजाका नाम द्रुपद था । राजाका वर्णन भी पहिले  
जैसा ही जानना चाहिये । इस की रानी का नाम चुलनीदेवी था ।  
कुमार का नाम धृष्टद्युम्न था—यह युवराज था । वह सुकुमारिका आर्या  
का जीव उस दूसरे ईशान देवलोक से आयु आदि क्षय हो जाने के  
कारण चक्कर इसी जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में भरत क्षेत्र में, पचाल  
जनपद में कापिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की चुलनीदेवी की कुक्षि में  
पुत्री रूपसे अवतरित हुआ । ( तएण सा चुलणीदेवी नवण्ह मासाण जाव

देवु लेधंथे ( तत्थ ण दुवए नाम राया होत्था, वन्नजो, तस्स ण चुलणी देवी  
धट्टजुणे कुमारे, जुवराया, तएण सा सुमालिया देवी ताओ देवलोयाओ आ-  
उक्खवण जाव चइत्ता इहेव जम्बूद्वीवे दीवे भारहे वासे पचालेसु जणवएसु कपिल-  
पुरे नगरे दुवयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिसि दारियत्ताए पञ्चायाया ) त्याता  
राजानु नाम द्रुपद इत्तु राजानु वर्णन पण्ण औपपातिक सूत्रमा वर्णित ओषिक  
राजानी लेमण्ण लेणी देवु लेधंथे—तेनी, राणीनु नाम चुलनी देवी इत्तु तेना  
पुत्रनु नाम धृष्टद्युम्न इत्तु धृष्टद्युम्न, युवराज् इतो, सुकुमारिका आर्यानि एव  
ते आजा देवलोकथी आयु वगेरे क्षय थवा भूदल चवीने आत्त, जम्बूद्वीप  
नामना, द्वीपमा, भरतक्षेत्रमा, पाचादय—जनपदमा, कापिल्यपुर नगरमा द्रुपद  
राजानी चुलनी देवीना उदरमा पुत्री रूपे अवतरित थये । ( त एण सा चुलणी

निवेशयति, निवेश्य द्रौपद्या राजवरकन्याया रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च 'जायविम्हाए' जातविस्मयः=आश्चर्य प्राप्तः स द्रुपदो द्रौपदीं राजवरकन्या मेवमवादीत्-हे पुत्रि ! यस्य खलु अहं राज्ञो वा युवराजस्य वा भार्यात्वेन स्वयं मेव दास्यामि, तत्र खलु त्वं सुखिता वा दुःखिता वा भविष्यसि, ततः खलु मम 'जाव जीवाए' यावज्जीव 'हिययडाहे' हृदयदाहः-मनोदुःखं भविष्यति ।

तएण से दुवए राया दोवड दारिय अके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूपेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हाए दोवड, रायवरकन्त एव वयासी) सो वह राजवर कन्या द्रौपदी जहा द्रुपद राजा था वहा आई । वहा आकर उसने वदना करने के लिये द्रुपद राजा के ज्योही दोनो पैरो को पकड़ा कि इतने में उस द्रुपद राजाने उस द्रौपदी दारिका को अपनी गोदमें बैठा लिया । द्रौपदी के बैठते ही वह राजा उस राजवर कन्या द्रौपदी के रूप, यौवन और लावण्य से विशेष विस्मित हुआ-सो विस्मित होकर उसने उस राजवर कन्या द्रौपदी से इस प्रकार कहा-(जस्स ण अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि, तत्थ ण तुम सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएण मम जाव जीवाए हिययडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि ! मैं स्वयं तुम्हें जिस राजा को, अथवा युवराज को भार्या के रूप में दूंगा वहां तुम सुखी और दुःखी दोनों भी हो सकती हो । तो इससे मुझे यावज्जीव हृदय दाह-मानसिक दुःख रहेगा । (त ण अहं पुत्ता !

से दुवए राया दोवड दारिय अके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूपेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हाए दोवड रायवरकन्त एव वयासी) ते राजवर कन्या द्रौपदी न्या राजा द्रुपद उता त्या गर्ह त्या न्छने तेले द्रुपद राजाने वदन करवा भाटे णने पगे। पडउया त्यारे तेओओ द्रौपदी दारिकाने पोताना ओणाभा भेसाडी द्रौपदी न्यारे ओणाभा भेसी गर्ह त्यारे राजा ते राजवर कन्या द्रौपदीना रूप, यौवन अने लावण्यथी सविशेष विस्मित थये। अने विस्मित थधने तेले ते राजवर कन्या द्रौपदीने आ प्रभावे कहु— (जस्स ण अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि, तत्थ ण तुम सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएण मम जाव जीवाए हिय यडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि ! हु तने जे राजाने हे युवराजने लार्थाना रूपमा आपीश त्या तुं सुभी पणु थर्ह शके तेम छे अने हु भी पणु तेथी भने

ततः खलु सा द्रौपदी राजवरकन्या उन्मुक्तवाग्भावा यावत् दृक्कृष्टा, उरुकृष्ट  
 शरीरा जाता चाप्यमरा । ततः खलु सा द्रौपदी राजवरकन्यामन्यदा कदाचिद्  
 'अने उरियाओ' आन्त पुगिस्य = प्रन्ताः पुगर्तिन्यः स्त्रियः स्नाता यावत्-वस्त्रा  
 ककारविभूषितां कुर्वन्ति कृत्वा द्रुपदस्य राम पादौ गन्दितु 'पेसन्ति' प्रेषयन्ति,  
 ततः खलु सा द्रौपदी राजवरकन्या गर्भे द्रुपदो राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य  
 द्रुपदस्य राज्ञः पादग्रहण करोति, ततः खलु स द्रुपदो राजा द्रौपदीं दागिकामङ्गे

होकर इस तरह पलने पुपने लगी कि जिम तरह गिरि की कदरा के  
 प्रदेशमें उत्पन्न हुई चपकलता चाट रहित निरुपद्रव स्थानमें आनन्द के  
 साथ पलती पुपती है । ( तएण सा दोवई रायवरकन्या उन्मुक्कपाल  
 भावा, जाव उक्किट्टसरीरा जाया यावि होत्था, तएण त दोवई रायव-  
 रकन्नं अण्णया कयाई अते उरियाओ ण्हाय जाव विभूसिय करेति,  
 करित्ता दुवयस्स रण्णो पाए वदिउ पेसति ) वह राजवर कन्या द्रौपदी  
 बालभाव रहित होकर जब यौवन अवस्था वाली हो चुकी तब इस के  
 शरीर में लावण्य की चमक से विषय सौन्दर्य आ गया-अतः उस समय  
 यह विशेषरूप से उत्कृष्ट शरीर वाली बन गई । किसी एक दिन की बात  
 है कि अतः पुर की स्त्रियों ने द्रौपदी को स्नान कराकर यावत् बाल  
 कार से विभूषित किया-और विभूषित कर के द्रुपद राजा की चरण  
 वंदना करने के लिये भेज दिया ( तएण सा दोवई राय० जेणेव दुवए  
 राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, दुवयस्स रण्णो पायगग्हण करेइ,

हारिडा पाथ धायभाताओथी युक्ता थछने आ प्रभाणु लालित पालित थवा  
 भाडी जेमके पर्वतनी कदराना प्रदेशमा उपन्न थयेली चपकलता निर्वात,  
 निरुपद्रव स्थानमा सुणेथी भोटी थती न होय । ( तएण सा दोवई रायवर  
 कन्या उन्मुक्कपालभावा जाव उक्किट्टसरीरा जाया यावि होत्था, तएण त दोवई  
 रायवरकन्नं अण्णया कयाई अते उरियाओ ण्हाय जाव विभूसिय करेति करित्ता  
 दुवयस्स रण्णो पाए वदिउ पेसति ) ते राजवर कन्या, द्रौपदी अथपणु वटावीने  
 न्यारे युवावस्था सपन्न थछ गछ त्यारे तेना शरीरमा लावण्यना अभक्थी  
 सविशेष सौन्दर्य दीपी उठ्यु तेथी ते वणते ते विशेष रूपथी उत्कृष्ट शरीर  
 वाली थछ गछ हुती केछ ओक हिसनी बात छे के रघुवासनी श्रीओओ द्रौप  
 दीने स्नान कराओयु यावत् वस्त्रलकारेथी विभूषित करी अने विभूषित करीने  
 द्रुपद राजानी अण्णु वदण्णु करवा भाटे भोक्कली ( तएण सा दोवई राय० जेणेव  
 दुवए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, दुवयस्स रण्णो पाए तएण

निवेशयति, निवेश्य द्रौपद्या राजवरकन्याया रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च 'जायविम्हए' जातनिस्मयः=आश्चर्य प्राप्तं स द्रुपदो द्रौपदीं राजवरकन्या मेवमवादीत्-हे पुत्रि ! यस्य खलु अहं राज्ञो वा युवराजस्य वा भार्यात्वेन स्वयमेव दास्यामि, तत्र खलु त्वं सुखिता वा दुःखिता वा भविष्यसि, ततः खलु मम 'जाव जीवाए' यावज्जीव 'हिययडाहे' हृदयदाहः-मनोदुःख भविष्यति ।

तएण से दुवए राया दोवड दारिय अके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवड, रायवरकन्न एव वयासी) सो वह राजवर कन्या द्रौपदी जहा द्रुपद राजा था वहा आई । वहा आकर उसने वदना करने के लिये द्रुपद राजा के ज्योंही दोनों पैरों को पकड़ा कि इतने मे उस द्रुपद राजाने उस द्रौपदी दारिका को अपनी गोदमें बैठा लिया । द्रौपदी के बैठते ही वह राजा उस राजवर कन्या द्रौपदी के रूप, यौवन और लावण्य से विशेष विस्मित हुआ-सो विस्मित होकर उसने उस राजवर कन्या द्रौपदी से इस प्रकार कहा-(जस्स ण अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलडस्सामि, तत्थ ण तुम सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएण मम जाव जीवाए हिययडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि ! मैं स्वयं तुम्हें जिस राजा को, अथवा युवराज को भार्या के रूप में दूंगा वहां तुम सुखी और दुःखी दोनों भी हो सकती हो । तो हमसे मुझे यावज्जीव हृदय दाह-मानसिक दुःख रहेगा । (न ण अहं पुत्ता !

से दुवए राया दोवड दारिय अके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवड रायवरकन्न एव वयासी) ते राजवर कन्या द्रौपदी न्या राजा द्रुपद उता त्या गर्ह त्या न्छने तेले द्रुपद राजाने वदन करवा भाटे जने पगे पडुया त्यारे तेओओ द्रौपदी दारिकाने पोताना ओणाभा ओसाडी द्रौपदी न्यारे ओणाभा ओसी गर्ह त्यारे राजा ते राजवर कन्या द्रौपदीना रूप, यौवन अने लावण्यथी अविशेष विस्मित थयो अने विस्मित थछने तेले ते राजवर कन्या द्रौपदीने आ प्रभाए उछु— (जस्स ण अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलडस्सामि, तत्थ ण तुम सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएण मम जाव जीवाए हिय यडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि ! हु तने जे राजाने के युवराजने लायाना रूपमा आपीश त्या तुं सुभी पण थछं शके तेम छे अने दु भी पण तेथी भने



તત્ત્વમ્ સા દ્રૌપદી રાજવરકન્યા ડગ્ગુક્કવામ્મારા યાવત્ ટટ્કાટા, ઉત્કૃષ્ટ  
 ધરીરા જાતા ચાપ્યમર્ત્ત । તતઃ સ્વલુ તાં દ્રૌપદી રાજવરકન્યામન્યદા યન્નાત્રિદ  
 'અતે ડરિયાઓ' આન્તઃ પુમિસ્ય =મન્નાઃ પુરત્તિન્યઃ સ્ત્રિયઃ સ્નાતાં યાવત્-ચક્ષા  
 કક્ષારવિભૂષિતા કુર્વન્તિ કન્વા ધુપદસ્ય રાજા પાત્તી ચન્દિતુ 'પેમંતિ' પ્રેયન્તિ,  
 તતઃ સ્વલુ સા દ્રૌપદી રાજવરકન્યા યથૈવ ધુપદો રાજા તથૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય  
 ધુપદસ્ય રાજઃ પાદગ્રહણ કરોતિ, તતઃ સ્વલુ સ ધુપદો રાજા દ્રૌપદી દારિકામકે

હોકર હમ્મ તરફ પલને પુપને લગી કિ જિમ્મ તરફ ગિરિ કી કદરા કે  
 પ્રવેશમેં ઉત્પન્ન છુઈ અપકલતા ગાગ રહિત નિરુપદ્રવ સ્થાનમેં આનન્દ કે  
 સાથ પલતો પુપતો હૈ । ( તણ્ણ સા દોવઈ રાયવરકન્ના ઉમ્મુક્કવાલ  
 ભાવા, જાવ ઉક્કિટ્ઠસરીરા જાયા યાવિ હોત્થા, તણ્ણ ત દોવઈ રાયવ  
 રકન્ન અણ્ણયા કયાઈ અતે ડરિયાઓ પ્હાય જાવ વિમ્મુસિય કરેતિ,  
 કરિત્તા દુવયસ્સ રણ્ણો પાપ વદિત્ત પેસતિ ) વહ રાજવર કન્યા દ્રૌપદી  
 ઘાલભાવ રહિત હોકર જય યૌવન અવસ્થા વાલી હો ચુકી તય્ણ હસ કે  
 શરીર મેં લાવણ્ય કી ચમક સે વિષય સૌન્દર્ય આ ગયા-અતઃ ઉસ સમય  
 યહ વિશેષરૂપ સે ઉત્કૃષ્ટ શરીર વાલી ધનગઈ । કિસી ન્ક દિન કી વાત  
 હૈ કિ અતઃ પુર કો સ્ત્રિયોં ને દ્રૌપદી કો સ્નાન કરાકર યાવત્ વચ્છાલ  
 કાર સે વિભૂષિત કિયા-ઔર વિભૂષિત કર કે ધુપદ રાજા કી ચરણ  
 વંદના કરને કે લિયે મેજ દિયા ( તણ્ણ સા દોવઈ રાયઽ જેણેવ દુવણ  
 રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા, દુવયસ્સ રણ્ણો પાપગ્રહણ કરેઈ,

દારિકા પાથ ધાયમાતાઓથી યુક્ત થઇને આ પ્રમાણે લાલિત પાલિત થવા  
 માઠી જેમકે પર્વતની કદરાના પ્રદેશમા ઉત્પન્ન થયેલી અપકલતા નિર્વાત,  
 નિરુપદ્રવ સ્થાનમા સુખેથી મોટી થતી ન હોય ! ( તણ્ણ સા દોવઈ રાયવર  
 કન્ના ઉમ્મુક્કવાલભાવા જાવ ઉક્કિટ્ઠસરીરા જાયા યાવિ હોત્થા, તણ્ણ ત દોવઈ  
 રાયવરકન્ન અણ્ણયા કયાઈ અતે ડરિયાઓ પ્હાય જાવ વિમ્મુસિય કરેતિ કરિત્તા  
 દુવયસ્સ રણ્ણો પાપ વદિત્ત પેસતિ ) તે રાજવર કન્યા, દ્રૌપદી અથપણુ વટાવીને  
 બ્યારે યુવાવસ્થા સપન્ન થઈ ગઈ ત્યારે તેના શરીરમા લાવણ્યના ચમકથી  
 સવિશેષ સૌન્દર્ય દીપી ઉઠ્યુ તેથી તે વખતે તે વિશેષ રૂપથી ઉત્કૃષ્ટ શરીર  
 વાળી થઈ ગઈ હતી હોઈ એક દિવસની વાત છે કે રણુવાસની સ્ત્રીઓએ દ્રૌપ  
 દીને સ્નાન કરાવ્યુ યાવત્ વચ્છાલકારેથી વિભૂષિત કરી અને વિભૂષિત કરીને  
 ધુપદ રાજાની ચરણુ વદણુ કરવા માટે મોકલી ( તણ્ણ સા દોવઈ રાયઽ જેણેવ  
 દુવણ રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા, દુવયસ્સ રણ્ણો પાપ / તણ્ણ

निवेशयति, निवेश्य द्रौपद्या राजवरकन्याया रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च 'जायविम्हए' जातविस्मयः=आश्चर्य प्राप्तं स द्रुपदो द्रौपदीं राजवरकन्या मेवमवादीत्-हे पुत्रि ! यस्य खलु अहं राज्ञो वा युवराजस्य वा भार्यात्वेन स्वयं मेव दास्यामि, तत्र खलु त्वं सुखिता वा दुःखिता वा भविष्यसि, ततः खलु मम 'जाव जीवाए' यावज्जीव 'हिययडाहे' हृदयदाहः-मनोदुःखं भविष्यति ।

तएण से दुवए राया दोवड दारिय अके निवेशेइ, निवेशित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूपेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवड, रायवरकन्न एव वयासी) सो वह राजवर कन्या द्रौपदी जहा द्रुपद राजा था वहां आई । वहा आकर उसने वदना करने के लिये द्रुपद राजा के ड्योंही दोनों पैरों को पकड़ा कि इतने में उम द्रुपद राजाने उस द्रौपदी दारिका को अपनी गोदमें बैठा लिया । द्रौपदी के बैठते ही वह राजा उस राजवर कन्या द्रौपदी के रूप, यौवन और लावण्य से विशेष विस्मित हुआ-सो विस्मित होकर उसने उस राजवर कन्या द्रौपदी से इस प्रकार कहा-(जस्स ण अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि, तत्थ ण तुम सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएण मम जाव जीवाए हिययडाहे भविस्मइ) हे पुत्रि ! मैं स्वयं तुम्हें जिस राजा को, अथवा युवराज को भार्या के रूप में दूंगा वहां तुम सुखी और दुःखी दोनों भी हो सकती हो । तो इससे मुझे यावज्जीव हृदय दाह-मानसिक दुःख रहेगा । (तं ण अहं पुत्ता !

से दुवए राया दोवड दारिय अके निवेशेइ, निवेशित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूपेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवड रायवरकन्न एव वयासी) ते राजवर कन्या द्रौपदी न्या राजा द्रुपद उता त्या गर्भ त्या नधने तेले द्रुपद राजाने वदन करवा भाटे बने पगे। पकड्या तयारे तेओओ द्रौपदी दारिकाने पोताना ओणाभा भेसाडी द्रौपदी न्यारे ओणाभा भेसी गर्भ तयारे राजा ते राजवर कन्या द्रौपदीना रूप, यौवन अने लावण्यथी सविशेष विस्मित थयो अने विस्मित थधने तेले ते राजवर कन्या द्रौपदीने आ प्रभाए उछु— (जस्स ण अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि, तत्थ ण तुम सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएण मम जाव जीवाए हिय यडाहे भविस्मइ) हे पुत्रि ! तु तने जे राजाने के युवराजने लायाना रूपमा आपीश त्या त जणी पत्ता थर्भ शके तेभ छे अने दु भी पण तेथी भने

तत्तस्मात् खल्वहं हे पुत्रि ! तव ' अज्जयाण ' अज्जया-ण्णु दिग्गसेषु अण्णेषु  
दिग्गसेषु इत्यर्थः स्वयंवरं वरयामि-कारयामि अज्जयाण्णु दिग्गसेषु अण्णेषु  
' दिग्गसयवरा ' दत्तस्वयवरा=वियते इति वरः, अन्यथा स्वयं वृतः स्वयंवरः स  
दत्त कन्याया पित्रादिना यस्मै । दत्तस्वयवरा भविष्यतीति भावः । 'दत्तस्वय  
वरा' इतिपद व्यानक्षान् यथार्थात्- जण तुम' इत्यादि । य खलु तव स्वयमेव रा  
जान वा युवराज या वरिष्यसि, स खलु तव भर्ता भविष्यति ' इतिकृत्वा=उत्पु-  
ष्त्वा तामिरिष्टामिर्यावत्=शान्तिराश्वसयति, आश्वाम्य प्रतिशिमर्जयति ॥ मू० १६ ।

मूलम्-तएण से दुवण् राया दूयं सदावेइ सदावित्ता एव  
वयासी-गच्छ ण तुम देवाणुप्पिया । वारवइ नयरि तत्थ ण  
तुम कण्ह वासुदेवं समुद्विजयपामोक्खे दस दसारे वलदेव-  
पामुक्खे पच्चमहावीरे उग्गसेणपामोक्खे सोलसरायसहस्से  
पज्जुण्णपामुक्खाओ अद्रधुट्ठाओ कुमारकोडीओ सवपामोक्खाओ

अज्जयाए सयवर विरयामि, अज्जयाण ण तुम दिग्ग सयवरा जण्ण  
तुम सयमेव राय वा जुवराय वा वरेहिसि से ण तव भत्तारे भविस्सइ  
त्ति कद्दु ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेइ, असासित्ता पडिविसज्जेइ )  
इस लिये हे पुत्रि ! मैं थोड़े ही दिनों में तुम्हारा स्वयंवर करवाने  
वाला हूँ । तुम इन दिनों में दत्तस्वयवरा हो जाओगी, सो तुम जिस  
राजाको या युवराज को अपनी इच्छानुसार वरोगी वही तेरा भर्ता  
बन जायगा । इस तरह कहकर राजा ने अपनी पुत्री को इष्ट आदि  
विशेषणों वाली वाणी से आश्वासित किया और फिर आश्वासित  
करके उसे वहाँ से भेज दिया ॥ मू० १६ ॥

अवन पर्यन्त दु अ थया करशे ( त ण अह पुत्ता ! अज्जयाए सयवर विर  
यामि, अज्जयाए ण तुम दिग्गसयवरा जण्ण तुम सयमेव राय वा जुवराय  
वा वरेहिसी से ण तव भत्तार भविस्सइ, ति कद्दु ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेइ  
आसासित्ता पडिविसज्जेइ ) हे पुत्रि ! थोड़ा दिवसोभा न तु तमारा भाटे  
स्वयंवर करवाने। छु तयारे तु स्वयंवरभा दत्त स्वयंवर थर्ध नशे ने राज  
के युवराजने तु तारी पसङ्गी आपसे तेन तारे पति थसे आ प्रभाणे  
कहीने राजने पोतानी पुत्रीने छि वगेरे विशेषणोथी युक्त वथने। वडे  
आश्वासनथी आश्वासित करीने तेने त्याथी विदाय करी ॥ अत्र-१६ ॥

सट्टि दुदंतसाहस्सीओ वीरसेणपामोक्खाओ इक्कीसं वीरपुरिस-  
साहस्सीओ महसेणपामोक्खाओ छप्पन्नं वलवगसाहस्सीओ  
अन्ने य वहवे राईसरतलवरमाडंवियकोडुवियडब्भसिट्ठिसेणा-  
वइसत्थवाहपभिइओ करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त  
अंजलि मत्थए कट्ठु जएण विजएण वद्धावेहि वद्धावित्ता एव  
वयाहि—एव खलु देवाणुप्पिया । कपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स  
रणो धूयाए चुल्लणीए देवीए अत्तयाए धट्टज्जुणकुमारस्स  
भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयवरे भविस्सइ त ण  
तुब्भे देवाणुप्पिया । दुवयं राच अणुगिणहेमाणा अकालपरि-  
हीणं चेव कपिल्लपुरे नयरे समोसरह, तएण से दूए करयल  
जाव कट्ठु दुवयस्स रणो एयमट्ठ पडिसुणेति पडिसुणित्ता  
जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कोडुवियपुरिसे  
सदावेइ सदावित्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ।  
चाउग्घंट आसरह जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेति, उवट्ठवित्ता  
तएण से दूए पहाए जाव अलकार० सरीरे चाउग्घंट आसरह  
दुरुहइ दुरुहित्ता बहूहि पुरिसेहि सन्नद्ध जाव गहियाऽऽउह पह-  
रणेहि सट्ठि सपरिवुडे कपिल्लपुर नयरं मज्झ मज्झेणं निग्गच्छइ  
पचालजणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव देसप्पते तेणेव उवाग-  
च्छइ, सुरट्ठाजणवयस्स मज्झमज्झेणं जेणेव वारवइ नयरी तेणेव  
उवागच्छइ उवागच्छित्ता वारवइ नयरिं मज्झ मज्झेण अणुप-  
विसइ अणुपविसित्ता जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स वाहिरिया

उवद्वाणसाला तेणेव उवागच्छड उवागच्छिता चाउघंट आस-  
 रहं ठपेइ ठवित्ता रहाओ पच्चोण्हड पच्चोरुहित्ता नणुस्सग्गु-  
 रापरिनिवत्ते पायविहारचारेणं जेणेव कण्हं वासुदेवे तेणेव  
 उवागच्छड उवागच्छिता कण्हं वासुदेवे समुद्विजयपामोक्खे  
 य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल तं चेव जाव  
 समोसरह । तएण से कण्हं वासुदेवे तस्स दूयस्स अतिए  
 एयमद सोच्चा निसम्म हट्ट जाव हियएतं दूय सको इ सम्मा-  
 णेइ सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १७ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततश्चादनन्तरं स रुपदो राजा दूतं शब्दं  
 यति, शब्दपित्रा एवमरात्रीन्-गच्छ खलु एव हे देवानुमिष । द्वारवती=द्वारकां  
 नगरीम्, तत्र खलु त्वं कृष्ण वासुदेव, समुद्रविजयप्रमुखान् दश दशार्हीन्, बलदेव  
 प्रमुखान् पञ्च महावीरान्, उग्रसेनप्रमुखान् षोडश राजसदस्त्राणि, प्रमुन्नप्रमुखाः  
 अर्धचतुर्थीः कुमारकोटीः=प्रमुन्नप्रमुखान् सार्धत्रिकोटिराजकुमारान्, साम्बप्रमुखाः  
 पण्डिदुर्दान्तसाहस्री=साम्बप्रमुखान् पण्डिसहस्रदुर्दान्तान्, वीरसेनप्रमुखान् एक  
 विंशतिवीरपुरुषसाहस्री=वीरसेनप्रमुखान् एकविंशतिसहस्रवीरपुरुषान्, महासेन

‘तएणं से दुवण’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं से दुवणं राया दूय सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी  
 गच्छ ण तुम देवाणुप्पिया । बारवइ नयरिं-तत्थण तुम कण्हं वासुदेव समु-  
 द्विजय पामोक्खे दसदसारे बलदेव पामोक्खे पञ्च महावीरे उग्रसेन पामो-  
 क्खे सोलसरायसहस्से पज्जुणपामोक्खाओ अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ  
 सबपामोक्खाओ सट्ठि दुद्धत साहस्सीओ वीरसेन पामोक्खाओ इक्करीसं

‘तएण से दुवण’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण से दुवणं राया दूय सदावेइ सदावित्ता एव वयासी-गच्छ ण  
 तुम देवाणुप्पिया । बारवइ नयरिं-तत्थण तुम कण्हं वासुदेवसमुद्विजयपामोक्खे  
 दसदसारे बलदेवपामोक्खे पञ्च महावीरे उग्रसेनपामोक्खे सोलसरायसहस्से पज्जुण  
 पामोक्खाओ अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ सबपामोक्खाओ सट्ठि दुद्धत साहस्सीओ वीर  
 सेन पामोक्खाओ इक्करीस वीरपुरिससाहस्सीओ मरु बलव



प्रमुखाः पट्टपञ्चाशत् बलवत्साहस्रीः=महासेनप्रमुखान् पट्टपञ्चाशत्प्रमितबल  
वतो राज्ञः, अन्पाथ वहन् राजेश्वरतलवरमाडविक्रकौटुम्बिकेभ्यश्चेष्टिसेनापति सार्य-  
वहप्रभृतीन् करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्तमञ्जलि मस्तके कृत्वा जयेन विज-  
येन=जयविजयशब्देन 'वद्धावेहि' वर्धय=अभिनन्दय वर्धयित्वा एव ब्रूहि-हे  
देवानुप्रिया' । एव खलु काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपस्य राज्ञो दुहितुः=पुत्र्या, चुल्न्या  
देव्या आत्मजाया वृष्ट्युन्नकुमारस्य भगिन्या, द्रौपद्या राजवरकन्यकाया स्वय

वीर पुरिससाहस्रीभो महासेनपामोक्त्वाओ छप्पन्न बलवगसाहस्री  
ओ अन्नेय वहवे राई सरतलवरमाडवियकोडुंघियह्वभसेष्टिसेणावह  
सत्थवाहपभिइओ करयलपरिगहिय दसनह सिरसावत्त अजलिं  
मत्थए कट्टु जण्ण विजण्ण वद्धावेहि वद्धावित्ता एव वयाहि ) इस  
द्रुपद राजाने अपने एक दूत को बुलाया और बुलाकर उससे ऐसा  
कहा-देवानुप्रिय ! तुम द्वारका नगरीको जाओ वहा तुम कृष्ण पासुदेव  
को, समुद्र विजय प्रमुख दश दशार्हो को, बलदेव प्रमुख पाच महावीरों  
को, उग्रसेन प्रमुख सोलह हजार राजाओ को प्रद्युम्न प्रमुख ३॥ )  
साढे तीन करोड राजकुमारों को ६० हजार दुर्दान्त. साम्ब प्रमुखो  
को २१ हजार वीरसेन प्रमुख वीरों को ५६ हजार महासेन प्रमुख  
उलिष्ठ राजाओ को, तथा और भी अनेक राजेश्वर तलवर, माडविक,  
कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्यवाह आदिको को दोनों अपने  
हाथो की दशनखो वाली अजलि बनाकर और उसे मरतक से घुमाकर  
नमस्कार करना तथा "जय विजय" शब्दोच्चारण करते हुए उन्हें  
वधाई देना-उनका अभिनन्दन करना। वधाई देकरके फिर उन से ऐसा

गसाहस्रीओ अन्नेय वहवे राईसरतलवरमाडवियकोडुंघियह्वभसेष्टिसेणावहसत्थवाह  
पभिइओ करयल परिगहिय दसनह सिरसावत्त अजलिं मत्थए कट्टु जण्ण विज  
ण्ण वद्धावेहि, वद्धावित्ता एव वयाहि ) तयारपछी द्रुपद राजाने पोताना अज  
हतने पोताव्ये। अने पोतावीने तेने कछु डे डे देवानुप्रिय । तमे द्वारका  
नगरीभा न्ये। त्या तमे कृष्णवासुदेवने, अजदेव प्रमुख पाच महावीराने,  
उग्रसेन प्रमुख सोण डुअर राजाने, प्रद्युम्न प्रमुख साडो त्रणु डरोड राज  
कुमाराने, ६० डुअर दुर्दान्तसाथ प्रमुखाने, २१ डुअर वीरसेन प्रमुख वीराने,  
५६ डुअर महासेन प्रमुख उलिष्ठ राजाने तेमज नील पणु अधा गजेश्वर,  
तलवर, माडविक, कौटु भिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, साथवाह वगेदेने पोताना  
अने दश नपोवाणा छाथानी अजलि अतावीने तेने मस्तडे भूझीने नमस्कार  
करने तथा "जय विजय" शब्दोच्चारण करता अधाने तमे अलिन दित

उवट्टाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता चाउघट आस-  
 रहं ठवेइ ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता मणुस्सवणु-  
 रापरिनिवत्ते पायविहारचारेणं जेणेव कण्हं वासुदेवे तेणेव  
 उवागच्छइ उवागच्छिता कण्हं वासुदेवे समुदविजयपामुक्खे  
 य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ कण्णल त चेव जाव  
 समोसरह । तएण से कण्हं वासुदेवे तस्स दूयस्स अतिए  
 एयमठ सोच्चा निसम्म हट जाव हियएतदूय सको इ सम्मा-  
 णेइ सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १७ ॥

टीका—‘ तएण से ’ इत्यादि । तदस्मिन्नन्तर स द्रुपदो राजा दूत शब्द  
 यति, शब्दयित्वा एवमासीत्—गच्छ त्व दे देवानुमिय । द्वारपती=द्वारका  
 नगरीम्, तत्र खलु त्व कण्ण वासुदेव, समुद्रविजयप्रमुखान् दशदशार्हान्, बलदेव  
 प्रमुखान् पञ्च महावीरान्, उग्रसेनप्रमुखान् षोडश राजसहस्राणि, प्रद्युम्नप्रमुखाः  
 अर्धचतुर्थी, कुमारकोटीः=प्रद्युम्नप्रमुखान् सार्धत्रितोटिराजकुमारान्, साम्बप्रमुखाः  
 पण्डिदुर्दान्तमाहस्त्री,=साम्बप्रमुखान् पण्डिसहस्रदुर्दान्तान्, वीरसेनप्रमुखान् एक  
 विंशतिवीरपुरुषमाहस्त्री=वीरसेनप्रमुखान् एकविंशतिसहस्रवीरपुरुषान्, महासेन

‘ तएण से दुवण ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण से दुवण राया दूय सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी  
 गच्छ ण तुम देवाणुप्पिया । वारवइ नयरिं—तएण तुम कण्ह वासुदेव समु  
 द्रविजय पामोक्खे दसदसारे बलदेव पामोक्खे पच महावीरे उग्रसेन पामो  
 क्खे सोलसरायसहस्से पज्जुणपामोक्खाओ अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ  
 सबपामोक्खाओ सट्ठि दुद्धत साहस्सीओ वीरसेन पामोक्खाओ इक्करीस

‘ तएण से दुवण ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण से दुवण राया दूय सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी—गच्छ ण  
 तुम देवाणुप्पिया । वारवइ नयरिं—तएण तुम कण्ह वासुदेव समुद्र विजयपामोक्खे  
 दसदसारे बलदेवपामोक्खे पच महावीरे उग्रसेनपामोक्खे सोलसरायसहस्से पज्जुण  
 पामोक्खाओ अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ सबपामोक्खाओ सट्ठि दुद्धत साहस्सीओ वीर  
 सेन पामोक्खाओ इक्करीस वीरपुरिससाहस्सीओ महासेनपामोक्खाओ छप्पन बलव

स्नातः यावत्-सर्वालङ्कारविभूषितशरीरश्चतुर्घण्टमश्वरथ 'दुरुह' दूरोहति-आरो-  
हति । दूरुह्य बहुभिः पुरुषैः कीदृशैः पुरुषैरित्याह-'सन्नद्ध जाव गहिया' इति  
अत्र यावन्तुदेनैव गोध्यम्-सन्नद्धवद्धवर्मितकवचैर्हि, उत्पीलियसरासनपट्टगेहिं,  
पिण्डगेविज्जगद्धाविद्धिमिलवरचिन्धपट्टेहिं, गहियाऽऽउहपरणेहिं इति । सन्नद्ध-  
वद्धवर्मितकवचैः उत्पीडितशरासनपट्टकैः, पिण्डग्रेवेयकवद्धविद्धिमिलवरचिह्न-  
पट्टैः गृहीतायुधमहरणैः, सन्नद्धाः सज्जीकृता, वद्धा' = कशाग्रन्धनेन सवद्धा,  
वर्मिता. = भङ्गे परिहिताः कवचा यै स्ते सन्नद्धवद्धवर्मितकवचास्तैः, तथा-उत्पीडि-  
तशरासनपट्टकैः उत्पीडितानि = गुणारोपणेन वक्रीकृतानि शरासनपट्टानि धनुः  
प्रकाण्डानि यैस्ते उत्पीडितशरासनपट्टका रज्ज्वारोपणवक्रीकृतधनुर्वारिणस्तैः,

वह जहा अपना घर था वहाँ आया । वहा आकर उसने कौटुम्बिक  
पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियों ! तुम लोग  
शीघ्र ही चार घटों से युक्त अश्वरथ को घोड़े जोतकर यहा ले आओ ।  
उन्होंने आज्ञानुसार ऐसा ही किया । वे चार घटा वाले उस रथ में  
घोड़े जोतकर उसे वहा ले आये ( तएण से दूण ण्हाए जाव अलकार०  
सरीरे चाउघट आसरह दुरुहइ, दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव  
गहियाऽऽउहपरणेहिं सिद्धि सपरिवुडे कपिलपुरनयर मज्झ मज्जे ण  
निगगच्छइ ) इस के बाद दूतने स्नान किया, यावत् अपने शरीर को  
समस्त अलकारों से विभूषित किया । बाद में वह उस चतुर्घट वाले  
अश्वरथ पर सवार हो गया । उस के साथ सजाकर अपने शरीर पर  
कवच पहिर रखा है ऐसा अनेक पुरुष थे ज्योपर बाण को आरोपित  
करने से वक्री भूत हुआ धनुष जिनके हाथों में है ऐसे अनेक धनुर्धारी

पोतानु घर छतु त्या आव्यो त्या आवीने तेबु ओटु निउ पुइपोने पोलाव्या  
अने पोलावीने तेभने उहु के छे देवानुप्रिय ! तमे सत्तरे चार घटडीओवाणे  
अश्वरथ नेतरीने अही आवो ओटु निउ पुइपोओ तेभने उहु चार घटडी  
ओवाणे अश्वरथ नेतरीने त्या लछ आव्या ( तएण से दूण ण्हाए जाव  
अलकार० सरीरे चाउघट आसरह दुरुहइ, दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध  
जाव गहियाऽऽउहपरणे हिं सिद्धि सपरिवुडे कपिलपुरनयर मज्झ मज्जेण  
निगगच्छइ ) त्थारभाह इते स्नान उरु यावत् पोताना शरीरने अभी पततना  
अलकारेथी गणुगारु त्थारपणी ते इत चतुर्घटवाणा अश्वरथ उपर सवार  
थछ गये। ते इतनी नाये अणतरथी सुभन्न थयेला धनु पुइपो छता  
अन्थथा-उपर बाण अटाववाथी वड थछ गयेला धनुपो नेभना छथेभा छे

रसो भविष्यति, तत्=तस्मान् सत्यं यूप दे देवानुमियाः । द्रुपद राजानमनुवृण्व  
 'अकालपरिहीण चेव' कालचिन्त्यरहितमेव काम्पित्यपुरे नगरे समग्रगत, ततः  
 खलु स दूतः करवल० यावत्-अगच्छि मन्त्रके कन्या द्रुपदस्य सत्त एतमर्थं प्रति  
 शृणोति, प्रतिश्रुत्य ययैव स्वयं गृह तन्निरोपणं त्रिति उपागम्य कीदृशियपुरुषान्  
 शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-गिणमेव भो देवानुमिया चतुर्थेष्ट=यथाचतु  
 ष्ठययुक्तम् अश्वरथ युक्तमेवोपस्थापयत । यावत्-उपस्थापयति । ततः खलु स दूतः

कहना-(एव खलु देवानुमिया ! कपिलपुरे नगरे द्रुवयस्य रण्णो धूयाए  
 चुल्लीणीए देवीए अत्तयाए धट्टज्जुणकुमारस्स भगिणीए दोवईए रायवर  
 कण्णाए सयवरे भविस्सई, त ए तुम्हे देवानुमिया ! द्रुवय राय अणु  
 गिण्हे माणा अकालपरिहीण चेव कपिलपुरे नगरे समोत्तरह ) हे देवा  
 नुमियो ! कपिलपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री, चुलनी देवी की  
 आत्मजा, धृष्टद्युम्न कुमार की भगिनी राजवर कन्या द्रौपदी का स्वयवर  
 होनेवाला है, इसलिये हे देवानुमियो ! आप लोग द्रुपद राजा के ऊपर  
 अनुग्रह करके बहुत ही शीघ्र कपिलपुर नगर में पधारे । (तण्ण से  
 दूए करवल जाव कद्दु द्रुवयस्स रण्णो एवमट्ट पडिसुणेति पडिसुणित्ता  
 जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कीदृशियपुरिसे सहा-  
 वेइ, सहावित्ता एव वयासी, सिप्पामेव भो देवानुमिया ! चाउग्घट्ट  
 आसरह जुत्तामेव उवट्टवेइ जाव उवट्टवेति ) दूतने द्रुपद राजा के इस  
 कथन की दोनों हाथ जोड़कर स्वीकार कर लिया । स्वीकार करके फिर

करने अलिखित कथा पाठ तमे तेथेने आ प्रभाए विनती करने ( एव  
 खलु देवानुमिया ! कपिलपुरे नगरे द्रुवयस्स रण्णो धूयाए चुल्लीणीए देवीए  
 अत्तयाए धट्टज्जुणकुमारस्य भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयवरे भविस्सई, त  
 ए तुम्हे देवानुमिया ! द्रुवय राय अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीण चेव कपिल  
 पुरे नगरे समोत्तरह ) हे देवानुमियो ! कपिलपुर नगरमा द्रुपद राजानी पुत्री  
 चुलनी देवीनी आत्मजा, धृष्टद्युम्नकुमारनी पाडेन राजवर कन्या द्रौपदीनी  
 स्वयवर थवानो छे अथी हे देवानुमियो ! तमे द्रुपद राजा उपर दूपा करीने  
 सत्तरे कपिलपुर नगरमा पधारे । ( तण्ण से दूए करवल जाव कद्दु द्रुवयस्स  
 रण्णो एवमट्ट पडिसुणेति, पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवा  
 गच्छित्ता कीदृशियपुरिसे सहावेइ, सहावित्ता एव वयासी सिप्पामेव भो देवा  
 नुमिया ! चाउग्घट्ट आसरह जुत्तामेव उवट्टवेइ जाव उवट्टवेति ) द्रुपद राजानी  
 आज्ञाने होते एने हाथ जोडीने स्वीकारी लीधी स्वीकार कथा ते अथा



स्नातः यावत्-सर्वालङ्कारविभूषितशरीरश्चतुर्घण्टमश्वरथ 'दुरुहइ' दूरोदति-आरो-  
दति । दुरुह्य बहुभिः पुरुषैः कीदृशैः पुरुषैरित्याह-'सन्नद्ध जाव गहिया' इति  
अत्र यावच्छब्देनैव बोध्यम्-सन्नद्धवद्धवर्मितकवचैर्हि, उत्पीलियसरासनपट्टेर्हि,  
पिण्डगेविज्जगवद्धाविद्धविमलवरचिन्धपट्टेर्हि, गहियाऽऽउहपरणेर्हि इति । सन्नद्ध-  
वद्धवर्मितकवचैः उत्पीडितशरासनपट्टकैः, पिण्डग्रेवेयकवद्धविद्धविमलवरचिह्न-  
पट्टैः गृहीतायुधप्रहरणैः, सन्नद्धाः सज्जीकृताः, वद्धा = कशानन्धनेन सन्नद्धाः,  
वर्मिताः = भङ्गे परिहिताः कवचा ये स्ते सन्नद्धवद्धवर्मितकवचास्तैः, तथा-उत्पीडि-  
तशरासनपट्टकैः, उत्पीडितानि = गुणारोपणेन वक्रीकृतानि शरासनपट्टकानि धनुः  
प्रकाण्डानि यैस्ते उत्पीडितशरासनपट्टका रज्ज्वारोपणवक्रीकृतधनुर्वारिणस्तैः,

वह जहा अपना घर था वहाँ आया । वहाँ आकर उसने कौटुम्बिक  
पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियों ! तुम लोग  
शीघ्र ही चार घटों से युक्त अश्वरथ को घोड़े जोतकर यहाँ ले आओ ।  
उन्होंने आज्ञानुसार ऐसा ही किया । वे चार घटा वाले उस रथ में  
घोड़े जोतकर उसे वहाँ ले आये ( तएण से दूण ण्हाए जाव अलकार०  
सरीरे चाउग्घट आसरह दुरुहइ, दुरुहित्ता बहूहि पुरिसेहि सन्नद्ध जाव  
गहियाऽऽउहपरणेहि सिद्धि सपरिबुडे कपिलपुरनयर मज्झ मज्जे ण  
निग्गच्छइ ) इस के बाद दूतने स्नान किया, यावत् अपने शरीर को  
समस्त अलकारों से विभूषित किया । बाद में वह उस चतुर्घट वाले  
अश्वरथ पर सवार हो गया । उस के साथ सजाकर अपने शरीर पर  
कवच पहिर रखा है ऐसा अनेक पुरुष थे ज्योपर बाण को आरोपित  
करने से वक्री भूत हुआ धनुष जिनके हाथों में हैं ऐसे अनेक धनुर्धारी

पोतानु घर छतु त्या आव्यो त्या आवीने तेणे औटु भिक् पुइपोने ओलाव्या  
अने ओलावीने तेभने कहु के छे देवानुप्रिय । तमे सत्तवे चार घटडीओवाणे।  
अश्वरथ नेतरीने अछी आवो। औटु भिक् पुइपोने तेभने कहु चार घटडी  
ओवाणे। अश्वरथ नेतरीने त्या लछ आव्या ( तएण से दूण ण्हाए जाव  
अलकार० सरीरे चाउग्घट आसरह दुरुहइ दुरुहित्ता बहूहि पुरिसेहि सन्नद्ध  
जाव गहियाऽऽउहपरणे हि सिद्धि सपरिबुडे कपिलपुरनयर मज्झ मज्जेण  
निग्गच्छइ ) तयारमाद हुते स्नान कयु यावत् पोताना शरीरने णधी नतना  
अलकारोथी गणुगायु तयारपछी ते हुत चतुर्घटवाणा अश्वरथ उपर सवार  
थछ गये। ते हुतनी नाये णभतरथी सुमन्न थयेला धणु पुइपो छता  
प्रत्यया उपर बाणु यठाववाथी पछ थछ गयेला धनुषो नेमना छथे।मा छे



यो भविष्यति, तत्=तस्मान् राज्ञु गृय दे देवानुमियाः । द्रुपद राजानमनुगृह्णन्  
' अकालपरिहीण चेत् ' काश्विन्मरदितमेव काश्विन्मरदितमेव नगरे समवसरन्, ततः  
खलु स दूतः करतलं यायन्-अग्निलि मन्त्रके कृत्वा द्रुपदस्य राज्ञः पतयति मति  
शृणोति, प्रतिश्रुत्य यथैव स्वयं गृह तत्रैवोपागच्छति उपागत्य कीदृश्विकपुरुषान्  
शब्दयति शब्दयित्वा परमवादीत्-भिषगो भो देवानुमिया. चतुर्गृह=पञ्चगृह  
पृथगुक्तम् अभार्यं गृहमेवोपस्थापयत । यायन्-उपस्थापयति । ततः खलु स दूतः

कहना-(एव खलु देवानुमिया ! कपिलपुरे नगरे द्रुवयस्स रण्णो धूयाए  
चुल्लणीए देवीए अत्तयाए भट्टज्जुणकुमारस्स भगिणीए दोउईए रायवर  
कण्णाए सयवरे भविस्सई, त ण तुम्हे देवानुमिया । द्रुवय राय अणु  
गिण्हे माणा अकालपरिहीण चेत् कपिलपुरे नगरे समोसरह ) हे देवा  
नुमियो ! कापिलपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री, चुलनी देवी की  
आत्मजा, धृष्टद्युम्न कुमार की भगिनी राजवर कन्या द्रौपदी का स्वयवर  
होनेवाला है, इसलिये हे देवानुमियो ! आप लोग द्रुपद राजा के ऊपर  
अनुग्रह करके बहुत ही शीघ्र कापिलपुर नगर में पधारे । (तएण से  
दूए करयल जाव कइहु द्रुवयस्स रण्णो एयमट्ट पडिस्सुणेंति पडिस्सुणित्ता  
जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कीदुमिय पुरिसे सदा-  
वेइ, सदावित्ता एव वयासी, खिप्पामेव भो देवानुमिया ! चाउग्घट  
आसरह जुत्तामेव उवट्टवेइ जाव उवट्टवेति ) दूतने द्रुपद राजा के इस  
कथन को दोनों हाथ जोड़कर स्वीकार कर लिया । स्वीकार करके फिर

करने अलिनहित कयां णाह तमे तेओने आ प्रभावे वितती करने ( एव  
खलु देवानुमिया ! कपिलपुरे नगरे द्रुवयस्स रण्णो धूयाए चुल्लणीए देवीए  
अत्तयाए भट्टज्जुणकुमारस्स भगिणीए दोउईए रायवरकण्णाए सयवरे भविस्सई, त  
ण तुम्हे देवानुमिया । द्रुवय राय अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीण चेत् कपिल  
पुरे नगरे समोसरह ) हे देवानुमियो ! कापिलपुर नगरमा द्रुपद राजानी पुत्री  
चुलनी देवीनी आत्मजा, धृष्टद्युम्नकुमारनी णडेन राजवर कन्या द्रौपदीने  
स्वयवर थवानो छे ओथी हे देवानुमियो । तमे द्रुपद राजा उपर कृपा करीने  
सत्तरे कापिल नगरमा पधारे ( तएण से दूए करयल जाव कइहु द्रुवयस्स  
रण्णो एयमट्ट पडिस्सुणेति, पडिस्सुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवा  
गच्छित्ता कीदुमियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी खिप्पामेव भो देवा  
नुमिया ! चाउग्घट आसरह जुत्तामेव उवट्टवेइ जाव उवट्टवेति ) द्रुपद राजानी  
आज्ञाने हुते जने हाथ जोडीने स्वीकारी लीधी स्वीकार कयां णाह ते कया

बाहिरुपरस्थानशाला-आस्थानमण्डपः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चातुर्थेष्टमश्वरथ  
स्थापयति, स्थापयित्वा ' रहाओ ' रथात् ' पञ्चोरुहइ ' प्रत्यवरोहति-प्रत्यवत-  
रति, प्रत्यवस्थ ' मनुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते ' मनुष्यवागुरापरिक्खित्तः=मनुष्यसमूह  
परिवृतः, स दूतः पादविहारचारेण=पादाभ्यां गमनेन यत्रैव कृष्णवासुदेवस्तत्रैवो  
पागच्छति, उपगत्य कृष्ण वासुदेव समुद्रविजयप्रमुखाश्च दशदशार्हान् यावत्  
बलवत्साहस्री, परतल्पपरिगृहीतदशनख गिरावर्त मस्तके अञ्जलिं कृत्वा  
एवमवादीत्-' त चेव ' तदेव-अत्र पूर्वोक्तमेव वर्णनं यो यम् यावत्-सभ्यसरत

वासुदेवस्स बाहिरिया उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
चाउघट आसरह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पञ्चोरुहइ, पञ्चोरुहित्ता  
मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायविहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव  
उवागच्छइ ) वहा आकर द्वारावती नगरी में बीचोंबीच के मार्ग से  
होता हुआ प्रविष्ट हो कर वह जहां कृष्ण वासुदेव की बाहिर में उप-  
स्थानशाला-सभामण्डप या वहा गया । वहां पहुंचकर उसने अपने चार  
घटावाले अश्वरथ को खड़ा कर दिया । रोक दिया-उसके रुकते ही वह  
उससे नीचे उतरा । उतर कर वह मनुष्यों के समूह से परिक्षिप्त (युक्त) हो  
कर पैदल ही जहां कृष्ण वासुदेव थे वहा गया । ( उवागच्छित्ता कण्ह  
वासुदेवसमुद्रविजयपामुक्खे य दस दसारे जाय बलवगसाहस्सीओ  
करयल त चेव जाव नमोसरह ) वहां जा करके उसने कृष्ण वासुदेव को  
समुद्रविजय प्रमुख दश दशार्हों को यावत् महासेन प्रमुख ५६, हजार व-  
लिष्ठ राजाओं को दोनों हाथों की अञ्जलि कर और उसे मस्तक पर रखकर

देवस्स बाहिरिया उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउघट आस  
रह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पञ्चोरुहइ पञ्चोरुहित्ता मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पाय  
विहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ ) त्या आनीने ते द्वारा  
वती नगरीना मध्यमार्ग थधने नगरमा प्रविष्ट थये अने त्थारपछी ते त्या  
कृष्ण-वासुदेवनी आद्य उपस्थानशाला-दीवाने आभ-( मला म ३५ ) छती त्या  
गये। त्या पछोचीने तेणे पोताना आर घटडीओवाणा रथने ओलो राख्ये।  
अने पोते नीचे उतर्यो उतर्यो पछी ते पोताना नोकरो-सेवकनी आधे बना  
कृष्ण-वासुदेव छता त्या गये। ( उवागच्छित्ता कण्ह वासुदेवसमुद्रविजयपामुक्खे  
य दस दसारे जाय बलवगसाहस्सीओ करयल त चेव जाव नमोसरह ) त्या  
जधने तेणे कृष्ण-वासुदेवने समुद्र विजय प्रमुख दशार्होने यावत् महासेन  
प्रमुख ५६ हजार अलिप्त राजाओने जने हाथनी अञ्जलि अतावीने तेने

તથા-પિનઢગ્રૈવેપત્તદ્વાવિદરિમન્તરતિદ્વપટ્ટે - પિનઢાનિ - પરિપ્રતાનિ ગ્રૈવેપ  
 ફાણિ-કણ્ઠભૂષણાનિ યૈ સ્તે તથા, વદ્ધ.=આરોપિત સયોનિનઃ આવિદ્ધ=મસ્તક  
 પરિપ્રુત. ત્રિમલઃ=સ્વચ્છ. વરઃ ત્રિદ્વપટ્ટઃ-સ્વપક્ષબોધકચિહ્ન : યૈસ્તે તથા,  
 તત્તો દ્વિપદરુમધારયઃ, તથા-ગૃહીતાયુધપરિગ્ણૈ.=આયુધાનિ અસ્ત્રાણિ, પ્રહરણાનિ-  
 શસ્ત્રાણિ ગૃહીતાનિ યૈસ્તે ગૃહીતાયુધપરિગ્ણા સ્તૈ, સાર્થ સંપરિવૃતઃ કામ્પિલ્લપુર  
 નગર મધ્યમધ્યેન મધ્યમાર્ગેણ નિર્ગન્ઠતિ, પચ્ચાલજનપદસ્ય મધ્યમધ્યેન યગૈવ  
 'દેસપ્પતે' દેશમાન્ત-દેશસીમા તગૈયોપાગન્ઠતિ, ઉપાગત્ય 'સુરદ્વાજનવયસ્મ'  
 સૌરાષ્ટ્રજનપદસ્ય મધ્યમધ્યેન યગૈવ દ્વારવતી નગરી તગૈયોપાગન્ઠતિ ઉપાગત્ય  
 દ્વારવતી નગરી મધ્યમધ્યેન અણુપવિસદ્, અણુપવિસિત્ત યગૈવ વારવદ્ધ નયરી મધ્યમધ્યેન વાસુદેવસ્ય

પુરુષ થે, જિન્હોને ગલે મેં આભૂષણોં કો પરિરવરતે હં ઓર મસ્તક કે  
 ઉપર સ્વચ્છ, સ્વપક્ષબોધક ચિહ્ન ધારણ કિયા હે તેસે અનેક વ્યક્તિ  
 થે । તથા આયુધ યથ પ્રહરણોં કો લેકર અનેક સૈનિક જન ઇસકે  
 આસપાસ હો કર ચલ રહે થે । સો વર દૂત ઇન સય કે સાથ રે ઉસ  
 કામ્પિલ્લપુર નગર કે ધીર્ચોધીચ સે છોકર નિકલા । ( પચ્ચાલજનવયસ્મ  
 મજ્ઞ મજ્ઞેણ જેણેવ દેસપ્પતે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્-સુરદ્વા જનવયસ્મ મજ્ઞ  
 મજ્ઞેણ જેણેવ વારવદ્ધ નયરી તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ ) ચલતે રે વર પાચાલ  
 જનપદકે ધીર્ચોધીચ સે હોતા હુઆ જતા પર અપને દેશકી સીમા કા  
 અન્ત થા વહા આયા । વહા આકર વર સૌરાષ્ટ્ર દેશકે ધીર્ચસે નિક  
 લતા હુઆ જતા દ્વારવતી નગરી થી વર્ત આયા-( ઉવાગચ્છિત્તો વાર  
 વદ્ધ નયરી મજ્ઞ મજ્ઞેણ અણુપવિસદ્, અણુપવિસિત્તા જેણેવ વરવદ્ધ

એવા ધણા ધનુર્ધરો તેની સાથે હતા, જેઓએ ગળામા આભૂષણો પહેરેલા  
 અને મસ્તક ઉપર સ્વચ્છ સ્વપક્ષ બોધક ચિહ્ન પટો બાધી રાખેલા એવા પણ  
 અનેક પુરુષો તેની સાથે હતા આયુધ અને પ્રહરણોને ઉચકીને પણ ધણા સૈનિકો  
 તેની બંને બાજુએ ચાલી રહ્યા હતા આ રીતે તે દૂત તેઓ બધાની સાથે  
 કામ્પિલ્લપુર નગરની વચ્ચે થઈને નીકળ્યો । ( પચ્ચાલ જનવયસ્મ મજ્ઞ મજ્ઞેણ  
 જેણેવ દેસપ્પતે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ સુરદ્વા જનવયસ્મ મજ્ઞ મજ્ઞેણ જેણેવ વારવદ્ધ નયરી  
 તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ ) આમ પોતાની યાત્રા પૂરી કરીને તે દૂત પાચાલ જનપદની  
 વચ્ચેવચ્ચ જ્યા પોતાના દેશની હદ પૂરી થતી હતી ત્યા આંચો ત્યા આવીને  
 તે સૌરાષ્ટ્ર દેશની વચ્ચે થઈને જ્યા દ્વારવતી નગરી હતી ત્યા આંચો (ઉવાગ  
 ચ્છિત્તા વારવદ્ધ, નયરિ મજ્ઞ મજ્ઞેણ, અણુપવિસદ્, ૭

वाहिस्पस्थानशाला-आस्थानमण्डपः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चातुर्घण्टमश्वरथं  
स्थापयति, स्थापयित्वा 'रहाओ' रथात् 'पञ्चोरुह' मत्पनरोहति-प्रन्यवत्त-  
रति, प्रत्यवम्भ्य 'मनुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते' मनुष्यवागुरापरिक्षितः=मनुष्यसमूह  
परिवृतः, स दूतः पादविहारचारेण=पादाभ्यां गमनेन यत्रैव कृष्णवासुदेवस्तत्रैवो-  
पागच्छति, उपगत्य कृष्ण वासुदेव समुद्रविजयप्रमुखाश्च दशदशार्हान् यावत्  
वलवत्साहसीः, वस्तत्परिशृङ्गीतदशनख गिरिआवर्त मस्तके अञ्जलिं कृत्वा  
एवमनादीत्-'त चेव' तदेव-अत्र पूर्वोक्तमेव वर्णन नोन्यम् यावत्-समवसरत्

वासुदेवस्स बाहिरिया उवट्टाण साला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
चाउवट आम-  
रह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पञ्चोरुहइ, पञ्चोरुहित्ता  
मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायविहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव  
उवागच्छइ ) वहा आकर द्वारावती नगरी में बीचोंबीच के मार्ग से  
होता हुआ प्रविष्ट हो कर वह जहा कृष्ण वासुदेव की बाहिर में उप-  
स्थानशाला-सभामण्डप या वहां गया । वहां पहुंचकर उसने अपने चार  
घटावाले अश्वरथ को खड़ा कर दिया । रोक दिया-उसके रुकते ही वह  
उससे नीचे उतरा । उतर कर वह मनुष्योंके समूहसे परिक्षित (युक्त) हो  
कर पैदल ही जहां कृष्ण वासुदेव थे वहा गया । ( उवागच्छित्ता कण्ह  
वासुदेवसमुद्रविजयपामुक्खे य दम दसारे जाव वलवगसाहसीओ  
करयल त चेव जाव नमोसरह ) वहां जा करके उसने कृष्ण वासुदेव को  
समुद्रविजय प्रमुख दश दशार्होंको यावत् महासेन प्रमुख ५६, हजार ब-  
लिष्ठ राजाओंको दोनों हाथों की अञ्जलि कर और उसे मस्तक पर रखकर

देवस्स बाहिरिया उवाट्टाणमाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउवट आम-  
रह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पञ्चोरुहइ पञ्चोरुहित्ता मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पाय  
विहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ ) त्या आनीने ते द्वारा  
वती नगरीना मध्यभागे थधने नगरमा प्रविष्ट थये। अने त्यारपछी ते ज्या  
कृष्ण-वासुदेवनी भाव्य उपस्थानशाला-दीवाने आभ-( सभा मण्डप ) इती त्या  
गये। त्या पछोत्थीने तेले पोताना आर धटडीओवाणा रथने ओलो राभ्ये।  
अने पोते नीचे उतये। उतयो पछी ते पोताना नोकरे-मेवकनी माथे ज्या  
कृष्ण-वासुदेव उता त्या गये। ( उवागच्छित्ता कण्ह वासुदेवसमुद्रविजयपामुक्खे  
य दम दसारे जाव वलवगसाहसीओ करयल त चेव जाव नमोसरह ) त्या  
जधने तेले कृष्ण-वासुदेवने समुद्र विजय प्रमुख दशार्होने यावत् महासेन  
प्रमुख ५६ हजार बलिष्ठ राजाओने अने हाथनी अञ्जलि अतावीने तेने

इति पर्यन्तम्, अयमर्थः—काम्पिल्यपुरनगरे द्रुपदस्य राज्ञः पुत्र्या द्रौपद्याः स्वयंवरो भविष्यति, तस्माद् द्रुपदः राजानमनुश्रुतवाल्मीकिम्वरहितं काम्पिल्यपुरे नगरे समागन्तुमिति स दूतं प्रोक्तवान् इति ।

ततः खलु स कृष्णो वासुदेवस्य दूतम्यान्तिके गतमर्थं श्रुत्वा निश्चयं हृष्टतुष्टः यावत्—दर्पयशेन विसर्पः हृदयस्त दूतं गन्तव्यमिति तथा समानपति, सत्कार्यं समान्यं प्रतिप्रिगर्जयति ॥ सू० १७ ॥

मूलम्—तएण સે કળહે વાસુદેવે કોડુવિયપુરિસે સદાવેદ સદાવિત્તા એવ વયાસી—ગચ્છહ ણં તુમં દેવાણુપ્પિયા । સમાણ સુહમ્માણ સામુદાઇય ભેરિં તાલેહિ, તણ સે કોડુવિયપુરિસે કર ચલ જાવ કળહસ્સ વાસુદેવસ્સ ણયમદ્દ પડિસુણેહ પડિસુણિત્તા

નમસ્કાર ક્રિયા । યદા પર 'એવ ચલુ દેવાણુપ્પિયા,' સે લેકર સમોસરહ "તકકા પૂર્વોક્ત પાઠ ઇસકે દ્વારા કહા ગયા લગા લેના ચાલિયે—જિસકા તાત્પર્ય યહ હૈ કિ કાંપિલ્યપુર નગર મેં દ્રુપદ રાજા કી પુત્રી દ્રૌપદી કા સ્વયંવર હોને વાલા હૈ સો આપલોગ દ્રુપદ રાજા કે ઉપર કૃપા કર કે હસમેં શીઘ્ર પધારે । ઇસ પ્રકાર ( તણ સે કળહે વાસુદેવે તસ્સ દૂયસ્સ અતિણ ણયમદ્દ સોચ્ચા નિસમ્મ હદ્દ જાવ હિયણ ત દૂય સકકારેહ સમ્મા ણેહ સકકારિત્તા સમ્માણિત્તા પડિવિસજ્જેહ ) કૃષ્ણ વાસુદેવ ને હસ દૂત કે મુખસે જય ઇસ સમાચાર કો સુના—તો વે સુનકર ઔર હસે હૃદયમેં ધારણ કર વહુત હી અધિક હર્ષિત ણવ સતુષ્ટ હુણ । દૂતકા હન્હોને સત્કાર ક્રિયા, સન્માન ક્રિયા । વાદમે હસે વહા સે વિસર્જિત કર દિયા ॥સૂ० ૧૭॥

મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યો અહીં ' એવ ચલુ દેવાણુપ્પિયા ' થી સમોસરહ ' સુધીનો પાઠ હવે વડે કહેવામાં આવેલો છે એમ સમજી લેવું જોઈએ તેની મતલબ એ છે કે કાંપિલ્યપુર નગરમાં દ્રુપદ રાજાની પુત્રી દ્રૌપદીનો સ્વયંવર થવાનો છે તો આપ સૌ દ્રુપદ રાજા ઉપર મહેરબાની કરીને તેમાં સાત્વરે પધારો આ રીતે ( તણ સે કળહે વાસુદેવે તસ્સ દૂયસ્સ અતિણ ણયમદ્દ સોચ્ચા નિસમ્મ હદ્દ જાવ હિયણ ત દૂય સકકારેહ સમ્માણેહ સકકારિત્તા સમ્માણિત્તા પડિવિસજ્જેહ ) કૃષ્ણ-વાસુદેવે હવેના મુખથી આ જાતના સમાચારો સાંભળ્યા ત્યારે સાંભળીને અને તેઓને બરોબર હૃદયમાં ધારણ કરીને અત્યંત હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થઈને તેમણે હવેના સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યું ત્યારપછી તેમણે હવેને વિદાય કર્યો ॥ સૂત્ર ૧૭ ॥



जेणेव सभाए सुहम्भाए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ  
 उवागच्छिता सामुदाइय भेरि महया महया सदेणं तालेइ  
 तएणं ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समु-  
 दविजयपामोक्खा दस दसारा जाव महसेणपामुक्खाओ  
 छप्पणं चलवगसाहस्सीओ पहाया विभूसिया जहा विभव  
 इड्डिसक्कारसमुदएणं अप्पेगइया जाव पायविहारचारेण  
 जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छति उवागच्छिता कर-  
 यल जाव कण्हे वासुदेवे जएणं विजएणं वच्चावेति, तएणं  
 से कण्हे वासुदेवे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वया-  
 सी-खिप्पामेव भो । देवाणुप्पिया । अभिसेक्क हत्थिरयण  
 पडिकप्पेह हयगयजाव पच्चपिणंति, तएणंसे कण्हे वासुदेवे  
 जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता समुत्तजा-  
 लाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरिकूडसन्निभ गयवइ नरवई  
 दुरूढे, तएणं से कण्हे वासुदेवे समुदविजयपामुक्खेहि दसहि  
 दसारेहि जाव अणंगसेणापामुक्खेहि अणेगाहि गणियासाह-  
 स्सीहि सद्धि सपरिवुडे सव्विड्डीए जाव रवेण वारवइनयरि  
 मज्झंमज्झेण निग्गच्छइ निग्गच्छिता सुरट्टाजणवयस्स मज्झं  
 मज्झेण जेणेव देसप्पते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता  
 पंचालजणवयस्स मज्झं मज्झेण जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे  
 तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० १८ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । नत’ गल्लु म कण्णो वासुदेवः कौटुम्बिक पुरुष शब्दयति, गच्छयित्वा परमपदीन्-गच्छ गल्लु त्व हे देवानुप्रिय । समाया सुधर्माया ‘सामुदाइय’ सामुदायिकी भेरि ताडय, ततः गल्लु स कौटुम्बिक पुरुष करतळ० वासुद्-मस्तकेऽत्रिं कण्णो गाम् कण्णस्य वासुदेवस्यैतमर्थं प्रतिगृणोति, प्रतिश्रुत्य यत्रैव समाया सुधर्माया ‘सामुदाइया’ सामुदायिकी भेरी तत्रैवोपागच्छति, उपागम्य सामुदायिकी भेरी मइता २ शब्देन ताडयति, येन महाशब्दो भरति, तथा भेरी ताडयति भे’ इत्यर्थः, ततस्तदनन्तरं गल्लु तस्या

‘तएण से कण्णे वासुदेवे’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण इसके बाद (से कण्णे वासुदेवे) उन कृष्ण वासुदेवने (कौटुम्बिकपुरिस सदावेइ) अपने कौटुम्बिक पुरुष को बुलाया, बुला कर (एव वयासी) उनसे ऐसा कहा—(गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइय भेरि तालेहि) हे देवानुप्रिय तुम सुधर्मा समामें जाओ और वहा जाकर सामुदाय की भेरी को बजाओ (तएण से कौटुम्बिक पुरिसे करयल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमइ पडि सुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव ‘सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामुदाइय भेरि महया’ सहेण तालेइ) इस प्रकार की कृष्ण वासुदेव की आज्ञा को उस पुरुष ने बड़े विनय के साथ अपने दोनों हाथों को मस्तक पर रखकर स्वीकार कर लिया—और स्वीकार करके फिर वह सुधर्मा सभा में जहा वह सामुदायिकी भेरी थी वहा आया । वहा आकर उसने उस सामुदायिकी भेरी को इसतरह से

‘तएण से कण्णे वासुदेवे’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (से कण्णे वासुदेवे) ते कृष्ण-वासुदेवे (कौटुम्बिक पुरिस सदावेइ) पौताना कौटुम्बिक पुरुषोने ओलाव्या अने ओलावीने (एव वयासी) तेमने आ प्रभाण्णे कल्लु के—(गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइय भेरि तालेहि) हे देवानुप्रिय ! तमे सुधर्मा सलामा नओ अने त्या नधने सामुदायिकी भेरी बजाओ (तएण से कौटुम्बिकपुरिसे कर यल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयममइ पडिसुणेइ पडिसुणित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सामुदाइय भेरि महया २ सहेण तालेइ) अतनी कृष्ण-वासुदेवनी आज्ञाने ते पुरुषे पूज्य नम्र भूषीने स्वीकारी लीधी, स्वीकार कर्या पछी ते त्याथी भेरी डनी त्या नधने तेले मोटो अवाज बजाडी (तएण ताए भेरीए

सामुद्रायिक्या भेर्या/ताडिताया सत्या समुद्रविजयप्रमुखा दश दशार्ध यावत्-  
महासेन प्रमुखा पट्टपञ्चाशद्वलवत्साहस्रयाः=पट्टपञ्चाशत्-सहस्रप्रमिता वलवन्तो  
राजानः स्नाता यावद्-सर्वालकारविभूषिता यथाविभवर्द्धिसत्कारसमुदयेन  
'अप्येगइया' अप्येके-यावद्=केचिद् हयारूढा=श्वारूढाः केचिद् गजारूढाः,  
केचिद् रथारूढा, केचिद् पादविहारचारेण यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैवोपाग-  
च्छति, उपागत्य करतल० यावत् कृष्ण वासुदेव जयेन विजयेन=जयविजय  
शब्देन वर्धयन्ति । ततः खलु कृष्णो वासुदेव कोटुम्भिकपुरुषान् शब्दयति, शब्द-  
यित्वा एतमवादीन्-भो देवानुप्रियाः ! क्षिप्रमेव 'अभिसेवकं' आभिषेक्य गज

बड़े दल से बजायी कि जिससे उससे बड़ी भारी आवाज निकली  
(तण्ण ताए सामुद्राहयाए भेरीए तालियाण समानीए समुद्रविजय  
पामोक्खा दस दसारा जाव महासेण पामुक्खाओ छप्पण बलवगसाह  
स्सीओ ण्हाया जाव विभूसिया जहा विभव इड्ढी सक्कारसमुदएण  
अत्थेगइया जाव पायविहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवाग  
च्छति) इस तरह उस सामुयिकी भेरी के बजने पर समुद्रविजय आदि  
दश दशार्धों ने यावत् ५६ हजार महासेन प्रमुख बलिष्ठ राजाओं ने  
स्नान किया । यावत् समस्त अलकारों से विभूषित होकर एव सबके  
सब अपने विभव ऋद्धि और सत्कार के अनुसार जहा कृष्ण वासुदेव  
थे वहा आये । इनमें कितनेक घोड़ों पर कितनेक हाथियों पर कितनेक  
रथों पर बैठकर आये और कितनेक पैदल ही चलकर आये (उवाग-  
च्छित्ता करयल जाव कण्ह वासुदेव जएण विजएण बद्धावेति, तएणं से  
कण्हे वासुदेवे कोटुम्भिय पुरिसे सदावेइ सद्वित्ता एव वयासी, खिप्पामेव

तालियाए समानीए समुद्रविजयपामोक्खा दस दसारा जाव महासेण पामु  
क्खाओ छप्पण बलवगसाहस्सीओ ण्हाया जाव विभूमिया जहा विभव इड्ढी  
सक्कारसमुदएण अप्येगइया जाव पायविहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव  
उपागच्छति) आ रीते ते सामुयिकी भेरी वगाडवामा आवी त्थारे समुद्र विजय  
वगेरे दश दशार्धोअे यावत् ५६ हजार महासेन प्रमुख बलिष्ठ राजाओअे  
स्नान उरुं यावत् तेओ सबे समस्त अलकारोथी सुसज्ज थयने पोताना  
विभव अने सत्कारनी साथे न्था कृष्ण-वासुदेव उता त्या गया आमा डेटलाक  
घोडाओ। उपर, डेटलाक हाथीओ। उपर, डेटलाक रथे। उपर अवार थयने त्या  
पडोअ्या उता तो डेटलाक पगे आलीने न कृष्ण-वासुदेवनी पामे हाजर थया  
उता (उवागच्छित्ता करयल जाव कण्ह वासुदेव जएण विजएण बद्धावेति  
तएण से कण्हे वासुदेवे कोटुम्भियपुरिसे सदावेइ सद्वित्ता एव वयासी खिप्पा

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः गतु म कण्णो सामुदेवः कोटुम्बिक पुरुष गच्छयति, गच्छयित्वा एवमवादीन-ग-उ गतु त्व हे देवानुप्रिय । समाया सुधर्माया ‘सामुदाइय’ सामुदायिकि भेरि ताडय, ततः गतु म कोटुम्बिक पुरुष कस्तउ० यावद्-मस्तकउज्जि क्कमा मात्त क्कमाय सामुदेवस्यतमर्थ मतिगणोति, पतिश्रुत्य यत्तय समाया सुधर्माया ‘सामुदाइया’ सामुदायिकी भेरी तत्तौपोपागच्छति, उपागन्व सामुदायिकी भेरी महता २ गच्छन ताडयति, येन महागच्छो भवति, तथा भेरी ताडयति इमे’ इत्यर्थः, ततस्तदनन्तर सल्ल तस्या

‘तएण से कण्हे वासुदेवे’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) उन कृष्ण वासुदेवने (कोटुम्बियपुरिस सदावेइ) अपने कोटुम्बिक पुरुष को बुलाया, बुला कर (एव बयासी) उनसे ऐसा कहा—(गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइय भेरि तालेहि) हे देवानुप्रिय तुम सुधर्मा समामें जाओ और वहा जाकर सामुदाय की भेरी को बजाओ (तएण से कोटुम्बिय पुरिसे करयल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयममट्ट पडि सुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव ‘सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामुदाइय भेरि महया २ सहेण तालेइ) इस प्रकार की कृष्ण वासुदेव की आज्ञा को उस पुरुष ने बड़े विनय के साथ अपने दोनों हाथों को मस्तक पर रखकर स्वीकार कर लिया—और स्वीकार करके फिर वह सुधर्मा सभा में जहा वह सामुदायिकी भेरी थी वहा आया । वहा आकर उसने उस सामुदायिकी भेरी को इसतरह से

‘तएण से कण्हे वासुदेवे’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (से कण्हे वासुदेवे) ते कृष्ण-वासुदेवे (कोटु बिय पुरिस सदावेइ) पोताना कोटुम्बिक पुइयेने जालाव्वा अने जालावीने (एव बयासी) तेभने आ प्रभाण्णे कहु के—(गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइय भेरि तालेहि) हे देवानुप्रिय ! तमे सुधर्मा सभाभा ज्ञाणे अने त्या ज्ञाने सामुदायिकी भेरी बजाओ (तएण से कोटुम्बियपुरिसे कर यल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयममट्ट पडिसुणेइ पडिसुणित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सामुदाइय भेरि महया २ सहेण तालेइ) आ ज्ञतनी कृष्ण-वासुदेवनी आज्ञाने ते पुइये भूषण नम्र भण्णे जने जायेने मस्तके भूषीने स्वीकारी लीधी, स्वीकार कर्था पछी ते त्याथी ज्ञया सुधर्मा सभाभा सामुदायिकी भेरी डुती त्या ज्ञाने तेण्णे भोटो अवाज थाय तेम ते सामुदायिकी भेरीने बजाडी (तएण ताए भेरीए



वासुदेव समुद्रविजयप्रमुखैर्दशार्हं यावत् अनङ्गसेनाप्रमुखाभिरनेवाभिर्गणिका  
साहस्रीभिः सार्धं सपरिवृतः सर्वद्वर्गा=छत्रादिराजचिह्नरूपया यावत्-शङ्खपण-  
वपटहभेर्यादिरवेण द्वावती नगर्या मध्यमध्येन=निर्गच्छति, निगत्य सौराष्ट्रजन-  
पदस्य मध्यमध्येन यत्रैव देशप्रान्त-देशमीमा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पञ्चा-  
लजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव काम्पित्यपुर नगर तत्रैव प्राधारयद् गमनाय=  
गत्तु प्रवृत्तः ॥ सु० १८ ॥

कृष्ण वासुदेव जहा स्नान घर था वहा गये-वहा जाकर उन्होंने मुक्ताओं  
सहित गवाक्षो से सुन्दर उम स्नान घर में स्नान किया-स्नान करके  
फिर सर्व अलंकारों से विभूषित होकर वे नरपति अजन गिरि के शिखर  
जैसे-विशाल कृष्णवर्ण वाले गजपति पर आरुढ़ हो गये । ( तएणं से  
कण्हे वासुदेवे समुद्रविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणग  
सेणा पामुक्खेहिं अणेगाहिं गणिया साहस्सीहिं सद्धि सपरिवुडे सव्व  
ड्डीए जाव रवेण दारवडनयरिं मज्झ मज्झेण निगच्छइ, निगच्छित्ता  
सुरद्धा जणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव देसप्पते तेणेव उवागच्छइ,  
उवागच्छित्ता पचाल जणवयस्स मज्झ मज्जेण जेणेव कपिल्लपुरे नयरे  
तेणेव पहारेत्त गमणाए ) आरुढ़ होकर वे कृष्ण वासुदेव समुद्र विजय  
आदि दश दशार्हों यावत् अंगसेना प्रमुख हजारों गणिकाओं के साथ  
२ उग्र आदि राज चिह्नरूप विभूति से युक्त होकर शङ्ख, पणव, पटह,  
भेरी आदि बाजों की तुमुल ध्वनि पूर्वक द्वारावती नगरी के बीच से

त्यागपछी ते कृष्ण-वासुदेव जया स्नानघर छत्तु त्या गया त्या जेउने तेमणे  
भोती जडेला गवाक्षोथी रभाणीय लागता स्नानघरमा स्नान कथु अने त्या  
पछी मधा अलंकारोथी विभूषित थयने-नरपति अजनगिरिना शिखर जेवा  
विशाल कृष्ण वर्णवाणा गजपति उपर अवार यज गया ( तएण से कण्हे  
वासुदेवे समुद्रविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणगसेणा पामुक्खेहिं  
अणेगाहिं गणियामाहस्सीहिं सद्धि सपरिवुडे सज्जिड्डीए जाव रवेण दारवडनयरिं  
मज्झ मज्झेण निगच्छइ निगच्छित्ता सुरद्धा जणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव  
देसप्पते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पचालजणवयस्स मज्झ मज्जेण जेणेव  
कपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्त गमणाए ) अवार थय ने तेजो अमुद्र विजय  
वगेरे दश दशार्हो यावत् अंगसेना प्रमुख हजारों गणिकाओंनी साथे छत्र  
विगेरे राजचिह्न उप विभूतिथी युक्त थयने शङ्ख, पणव, पटह, भेरी वगेरे  
तुमुल ध्वनि स्थाने द्वारावती नगरीनी वरये यजने पसार थया त्याथी पसार



रत्न=मम सुगन्धस्तिन परिस्पृश्यत-मउ शिरः, हयगजगवपदातिरूप चतुरङ्गवत्  
सज्जीकृत, एतां गणां प्रत्यर्पयत, इति ततश्च कौटुम्बिकपुरुषाः ' तथास्तु '  
इत्युक्त्वा तदाशा स्वीकृत्य सर्व सपाय वाहन चल न मर्ग मज्जनमस्माभिरिति  
यावत् प्रत्यर्पयन्ति=निर्दयन्ति स्म । ततः खट्व म कृणो गामुदेयो गौं मज्जन  
गृह तर्जयोपाग-उति, मज्जनगृह रीत्यमित्याह-' ममृतजालाकुलाभिरामे ' समु  
क्तजालाकुलाभिराम मुक्ताभिः मरितानि जालानि गवा गाम्देरादु गृक्तमतपमा  
भिराम सुन्दरम्, उपागत्य स तत्र स्नान कृत्वा यावत्-मर्शलकारिभूषितः,  
अध्वनगिरिकूटसन्निभम्=उन्नतर द्यामर्णमित्यर्थ, गजपति=इस्तिपु गुग्गु इस्तिन  
नरपति.=श्री कृष्णवासुदेव. ' द्रुम्हे ' द्रुम्हः=गमान्द्र, ततः खट्व स कृणो

भो देवाणुप्पिया ! अभिसेरक हत्थिरयण पडिकप्पेह, हयगय जाव  
पच्चप्पिणति ) वटा आकर उन्नेने दोनों हाथ जोड़कर कृष्ण वासुदेव  
को नमस्कार करते हुए जय विजय शब्दों द्वारा वधाई दी-इसके बाद  
उन कृष्ण वासुदेव ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर उससे इस  
प्रकार कहा-भो देवानुप्पियो ! तुमलोग जीघ ही मेरे सुग्ग हाथी को  
सजाओ-तथा-हय, गज, रथ और पदातिरूप चतुरंग युक्त सेना को भी  
सजाकर तैयार करो । पीछे हमको इसको खबर दो । इसके बाद उन  
कौटुम्बिक पुरुषों ने-" तथास्तु " कहकर उनकी आज्ञा को स्वीकार लिया  
और स्वीकार करके चल और वाहन सब हमने सज्जित कर दिये हैं  
इस प्रकार की खबर उन्हें पीछे कर दी । ( तण्ण से कण्हे वासुदेवे जेणेव  
मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता समुत्तजालाकुलाभिरामे  
जाव अजणगिरि कूडसन्निभ गयवइ नरवई दुरुद्धे ) इसके पश्चात् वे

मेव भो देवाणुप्पिया ! अभिसेक हत्थिरयण पडिकप्पेह, हयगयजाव पच्चप्पिणति )  
त्या ज्जने तेओओ भने छाथ लेडीने ' जयविजय ' शब्दोंसे कृष्ण-वासुदेवने  
नमस्कार करता अलिनहित कथा त्थारपणी कृष्ण-वासुदेवे कौटुम्बिक पुरुषोंने  
बोलाव्या अने बोलावीने तेओने आ प्रभाणे कहु के छे देवानुप्पियो ! सत्वर  
तमे भारा मुग्ग छाथीने तेमज्ज जीण पणु घोडा, छाथी, रथ अने पायदलनी  
चतुरगिणी सेनाने सुसज्ज करे अने सेना सुमज्ज थर्ज जय त्थारे अभने अणर  
आपो त्थारपणी कौटुम्बिक पुरुषोंसे ' तथास्तु ' कहीने तेमनी आज्ञा स्वीकारी  
क्षीघ्री अने स्वीकारीने तेओ पोताना काममा परोवाई गया ज्थारे काम थर्ज  
गथु त्थारे तेओओ " सेना अने वाहन तैयार छे " आ जतनी अणर आपी  
( तण्ण से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता  
समुत्तजालाकुलाभिरामे जाव अजणगिरिकूडसन्निभ गयवइ नरवई दुरुद्धे )

वासुदेव समुद्रविजयप्रमुखैर्दशार्हं यावत् अनङ्गसेनाप्रमुखवाभिरनेकाभिर्गणिका  
साहस्रीभिः सार्धं सपरिवृतः सर्वद्वर्गा=छत्रादिराजचिह्नरूपया यावत्-शङ्खपण-  
वपटहभेर्यादिरवेण द्वारवती नगर्या मध्यमध्येन=निर्गच्छति, निर्गत्य सौराष्ट्रजन  
पदस्य मध्यमध्येन यत्रैव देशप्रान्त-देशमीमा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पञ्चा-  
लजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव काश्यापुर नगर तत्रैव माधारयद् गमनाय=  
गतु मृतः ॥ सू० १८ ॥

कृष्ण वासुदेव जहां स्नान घर था वहा गये-वहा जाकर उन्होंने मुक्ताओं  
सहित गवाक्षों से सुन्दर कम स्नान घर में स्नान किया-स्नान करके  
फिर सर्व अलङ्कारों से विभूषित होकर वे नरपति अजन गिरि के शिखर  
जैसे-विशाल कृष्णवर्ण वाले गजपति पर आरुढ़ हो गये । ( तण्ण से  
कण्हे वासुदेवे समुद्रविजयपामोक्सेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणंग  
सेणा पामुक्खेहिं अणेगाहिं गणिया माहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे सव्व  
डूण जाव रवेण द्वारवदनपरिं मज्झ मज्जेण निगच्छइ, निगच्छित्ता  
सुरट्ठा जणवयस्स मज्झ मज्जेण जेणेव देसप्पते तेणेव उवागच्छइ,  
उवागच्छित्ता पचाल जणवयस्स मज्झ मज्जेण जेणेव कपिलपुरे नगरे  
तेणेव पहारेत्थ गमणाण ) आरुढ़ होकर वे कृष्ण वासुदेव समुद्र विजय  
आदि दश दशार्हों यावन अगमेना प्रमुख हजारों गणिकाओं के साथ  
२ उन्न जादि राज चिह्नरूप विभूति से युक्त होकर शङ्ख, पणव, पट्ट,  
भेरी आदि बाजों की तुमुल ध्वनि पूर्वक द्वारवती नगरी के बीच से

त्यागपथी ते दृष्टु-वासुदेव त्या स्नानघर छतु त्या गया त्या जेने तेमणे  
भोती जडेला गवाथोथी रभाणीय लागता स्नानघरभा स्नान छतु अने त्या  
पथी भवा अथ जारेथी विभूषित थाने-नरपति अजनगिगिना शिखर जेवा  
विशाल दृष्टु वर्णवाणा गजपति उपर भवार थान गया ( तण्ण से कण्हे  
वासुदेवे समुद्रविजयपामोक्सेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणगसेणा पामुक्खेहिं  
अणेगाहिं गणियामाहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे सज्जिणीण जाव रवेण द्वारवद नपरिं  
मज्झ मज्जेण निगच्छइ निगच्छित्ता सुरट्ठा जणवयस्स मज्झ मज्जेण जेणेव  
देसप्पते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पचालजणवयस्स मज्झ मज्जेण जेणेव  
कपिलपुरे नगरे तेणेव पहारेत्थ गमणाण ) भवार २४ ने तेथो समुद्र विजय  
वगेरे दश दशार्हों यावत् अगमेना प्रमुख छत्रादि गणिकाओंनी साथे छत्र  
विगेरे गजचिह्न उप विभूतिथी युक्त थाने शङ्ख, पणव, पट्ट, भेरी वगेरे  
तुमुल ध्वनि आने द्वारवती नगरीनी वर्ये वाने पसार थया त्याथी पसार

मूलम्—तएण से दुवण राया दोयं दूयं सदावेइ सदावित्ता  
एव वयासी—गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउर नयरं  
तत्थ ण तुमं पंडुरायं सपुत्तय जुहिट्ठिलं भीमणेण अज्जुण  
नउल महदेव दुज्जोहणं भाइसयसमग्ग गगेय त्रिटुर टाणं  
जयइह सउणी किवं आमत्थाम करयल जाव कट्टु तहेव समो-  
सरह, तएण से दूण एव वयासी जहा वासुदेवे नवर भेरी  
नत्थि जाव जेणेव कपित्तपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए२।  
एएणेव कमेणं तच्चं दूय चंपानयरिं तत्थ णं तुमं कण्ह अग-  
राय सेह नदिराय करयल तहेव जाव समोसरह । चउत्थ दूय  
सुत्तिमइ नयरिं तत्थ ण तुमं तिसुपाल दमघोससुय पचभाइ-  
सयसपग्गिबुड करयल तहेव जाव समोसरह । पंचमग दूय  
हत्थसीसनयर तत्थ ण तुमं दमदत्त राय करयल तहेव जाव  
समोसरह । छट्टु दूयं महुर नयरिं तत्थ ण तुम धरं राय करयल  
जाव समोसरह । सत्तम दूयं रायगिहं नयरं तत्थ ण तुम सह-  
देव जरासिधुसुय करयल जाव समोसरह । अट्टमदूय कोडिण  
नयर तत्थ ण तुम रुप्पि भेसगसुय करयल तहेव जाव समो-  
सरह । नवम दूय विराडनयर तत्थ ण तुम कीयग भाउसय  
समग्गं करयल जाव समोसरह । दसमं दूय अवसेसेसु य गामागार

होते हुए निकले । निकलकर वे सौराष्ट्र देश के बीचो बीच से चलकर  
घटा आये जहाँ देश की सीमा थी । उस सीमा पर आकर के फिर वे  
पाचाल जनपद के मध्य से होते हुए जहा कापिल्य पुर नगर था उस  
और चल दिये ।

थधने

अथे थधने पोताना देशनी डड मुध्री पडोअ।

थधने जना कापिल्यपुर नगर डतु ते



नगरेसु अणेगाइ रायसहस्साइ जाव समोसरह । तएण से दूए  
तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर जाव समोसरह । तएण ताई  
अणेगाइ रायसहस्साइ तस्स दूयरस अतिए एयमट्ट सोच्चा  
निसम्म हट्ट० तं दूय सक्कारेति सक्कारित्ता सम्माणेति सम्मा-  
णित्ता पडिविसज्जिति, तएणं ते वासुदेवपामुक्खा वहवे रायस-  
हस्सा पत्तेयर ण्हाया सन्नद्धहत्थिखंधवरगया हयगयरह० महया  
भडचडगररहपहकर० सएहितोर नगरेहितो अभिनिग्गच्छतिर  
जेणेव पंचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० १९ ॥

टीका—‘ तएण से’ इत्यादि । तव गलु स दुपदो राजा द्वितीय दूत शब्द-  
यति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ गलु त्व पाण्डु राज मपुत्ररूपेणै महित

‘ तएण से दुवण राया ’ उत्थादि ॥

टीकार्थ—( तएण ) उस के बाद ( से दुवण राया ) उस दुपद राजाने  
( दोच्च दूय सदावेइ ) अपने दूसरे दूतको बुलाया ( सदावित्ता एव वयासी )  
बुलाकर उससे ऐसा कहा—गच्छण तुम देवाणुप्पिया हत्थिणाउर नयर  
तत्थ ण तुम पडुराय मपुत्तय जुहिट्ठिल्ल भीमसेण अज्जुण नडल सह-  
देव दुज्जोहण भाइसयसमग गगेय विदुर दोण जयदह मउणीकिव  
आसत्थाम करयल जाव कइहु तहेव समोसरह ) बुलाकर उससे ऐसा  
कहा हे देवानुप्रिय । तुम हस्तिनापुर नगर जाओ—वहा जाकर तुम पुत्र

‘ तएण से दुवण राया ’ इत्यादि—

टीकार्थ—( तएण ) त्याग्यो ( से दुवण राया ) ते दुपद राजाने ( दोच्च दूय  
सदावेइ ) योताना भीम इतने बोलाये। ( सदावित्ता एव वयासी ) बोला  
वीने तेने आ प्रभावे उहु डे ( गच्छण तुम देवाणुप्पिया हत्थिणाउर नयर,  
तत्थ ण तुम पडुराय मपुत्तय जुहिट्ठिल्ल भीमसेण अज्जुण नडल सहदेव दुज्जो  
हण भाइसयसमग गगेय विदुर दोण जयदह मउणी किं आसत्थाम करयल  
जाव कइहु तहेव समोसरह ) हे देवानुप्रिय । तमे हस्तिनापुर नगरमा जाये।

मूलम्—तण्ण से दुण्ण गया दोअं दूयं सदावेइ सदावित्ता  
 एव वयासी—गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया । हत्थिणाउर नयरं  
 तत्थ णं तुम पंदुराय सपुत्तय जुह्मिण्डल भीमनेणं अज्जुण  
 नउल महदेव दुज्जोहणं भाइसयसमग्गं गंगेयं विटुर दोणं  
 जयदह सउणी किव आगत्थाम करयल जाव कट्ठु तहेव समो  
 सरह, तण्ण से दूण एव वयासी जहा वासुदेवे नवर भेरी  
 नत्थि जाव जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए२ ।  
 एएणेव कमेणं तच्चं दूय चंपानयरिं तत्थ णं तुमं कण्ह अंग-  
 राय सेह नदिराय करयल तहेव जाव समोसरह । चउत्थ दूय  
 सुत्तिमइ नयरिं तत्थ णं तुम सिसुपाल दमघोससुय पंचभाइ  
 सयसपग्गिबुड करयल तहेव जाव समोसरह । पचमग दूय  
 हत्थसीसनयर तत्थ ण तुम दमदत्त राय करयल तहेव जाव  
 समोसरह । छट्ठ दूयं महुर नयरिं तत्थ ण तुम धर राय करयल  
 जाव समोसरह । सत्तम दूय रायगिहं नयर तत्थ ण तुम सह-  
 देव जरासिधुसुय करयल जाव समोसरह । अट्ठम दूय कोडिण  
 नयर तत्थ ण तुम रुप्पि भेसगसुय करयल तहेव जाव समो  
 सरह । नवम दूय विराडनयर तत्थ णं तुम कीयग भाउसय  
 समग्गं करयल जाव समोसरह । दसम दूय अवसेसेसु य गामागार

होते हुए निकले । निकलकर वे सौराष्ट्र देश के बीचो बीच से चलकर  
 घटा आये जहाँ देश की सीमा थी । उस सीमा पर आकर के फिर वे  
 पांचाल जनपद के मध्य से होते हुए जहा कापिल्य पुर नगर था उस  
 और चल दिये ।' सू० १८

थअने तेओ। सौराष्ट्र देशनी वन्थे थअने पोताना देशनी उइ सुभी पडोअ्या  
 त्याथी तेओ। पांचाल जनपदनी वन्थे थअने जहा कापिल्यपुर नगर उइ ते  
 तरइ खाना थया ॥ सूत्र १८ ॥



नयरे तेणेव पहारेत्य गमणाए २ एएणेव कमेण तच्च दूय चपानयरिं  
तत्थ ण तुम कण्ण अगाराय सेल्ल नदिराय करयल तहेव जाव समोसरह  
चउत्थ दूय सुत्तिमड नयरिं, तत्थ ण तुम सिंसुपाल दमघोमसुय पच-  
भाडसयसपरिवुड करयल तहेव जाव समोसरह ) इस के बाद दूत  
अपने राजा की आज्ञा प्रमाण कर वहा से हस्तिनापुर को चला गया ।  
वहाँ पहुँच कर उसने पांडुराजा आदि से बड़े विनय पूर्वक इस प्रकार  
कहा—कापिल्यपुर में द्रौपदी का स्वयवर होगा—सो आप सब कृपाकर  
शीघ्रतिशीघ्र वहा पगारे । इस तरहके समाचार देकर वह दूत पांडुराजा  
आदि से सन्मानित होकर वहा से वापिस हो गया । पांडुराज आदि  
स्नान कर सर्वालकारों से विभूषित होकर गजारूढ हो, चतुरगिणी  
सेना के साथ अपनी ऋद्धि आदि के अनुसार यावत् जहा कापिल्यपुर  
नगर था उस ओर चल दिये । इस तरह कृष्ण वासुदेव की तरह यहाँ  
पर सब पाठ लगा लेना चाहिये । उस पाठ से इस में विशेषता केवल  
इतनी है कि वे सब जब द्वारावती नगरी से कापिल्यपुर नगर को जाने  
के लिये निकले तो उनके साथ भेरी थी—यहा वह नहीं है । इसी क्रम  
से द्रुपद ने तीसरे दूत को बुलाया—बुलाकर उससे भी इसी प्रकार से

पुरे नयरे तेणेव पहारेत्य गमणाए २ एएणेव कमेण तच्च दूय चपानयरिं  
तत्थ ण तुम कण्ण अगाराय सेल्ल नदिराय करयल तहेव जाव समोसरह चउत्थ  
दूय सुत्तिमड नयरिं तत्थ ण तुम सिंसुपाल दमघोमसुय पचभाडसयसप-  
रिवुड करयल तहेव जाव समोसरह ) त्थारपणी इत पोताना राजनी आरा  
प्रमाणे त्थाथी हस्तिनापुर तरङ्ग रवाना थछ गये। त्था पछोथीने तेछे पाडु  
राज वगेरे राज्ञेने नम्रपछे आ रीते विनति करी के—कापिल्यपुरमा  
द्रौपदीने स्वयवर थछे तो आप सौ कृपा करीने सत्वर त्था पधारो आ  
रीते सभाचारो आपीने ते इत पाडुराज वगेरेथी सन्मान पाभीने त्थाथी  
पाछो क्यो पाडुराज वगेरे अधाओ पणु स्नान वगेरेथी परवारीने तेमज सर्वा  
ल कारोथी सुमज्ज थछने हाथीओ उपर सवार थया अने पोत पोतानी चतु-  
रगिणी सेना तेमज ऋद्धिनी साथे यावत् जे तरङ्ग कापिल्यपुर नगर हर्तु  
ते तरङ्ग रवाना थया आ प्रमाणे कृष्ण-वासुदेवनी जेमज अही पणु वरुन  
समज लेवु जेछओ कृष्ण-वासुदेवना पाठमा पाडुराज उरता अटवी विशेषता  
हती के तेओ न्यारे द्वारावती नगरीनी अडार नीकल्या त्थारे तेमनी साथे  
लेरी पणु हती, पाडुराजनी साथे लेरी न हती आ प्रमाणे द्रुपद राज्ञे  
त्राज इतने ओलाओ अने तेने पणु आ रीते कछु के छे देवानुप्रिय । तमे

युधिष्ठिर भीमसेनम् अर्जुन नकुल गादेय दुर्योधन भानुमानमग=गतभ्रातृभिः सहित, गादेय=भीष्म, विदुर द्रोण जयद्रथ शकुनि ' किय ' उपम=कृपाचार्य, अश्वत्थामान करतल० गात्र मस्तकेऽङ्गुलिं कृत्वा, तथैव गमयामास यथा पूर्वमुक्तं तथैवात्र ' समग्रमस्त ' इतिपर्यन्तं गोप्यम् अथ गात्रः-जयविजयशब्देन रथविजया एव द्रुहि-कापिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञः पुत्र्या द्रौपद्याः स्वयमतो भविष्यति तस्माद् खलु हे देवानुप्रियाः ! यूयं द्रुपद राजानमनुमृच्छन्तः कालविश्वरहितमेव कापिल्यपुरे नगरे समग्रमस्त । ततः स दूतो द्रुपदस्य रचनग्रीह्यदस्तिना पुर गत्वा पाण्डुराजादिष्वमेवमादीत्=' कापिल्यपुरे द्रौपद्या' स्वयमतो भविष्यति तत्र शीघ्रमागच्छत ' इति ततोऽसौ दूतः पाण्डुराजादिना सम्मानितो विमर्जितश्च ' जहा वासुदेवे ' यथा-वासुदेवः कृष्णस्तद्वदपि विज्ञेयम्-' नवर ' विशेषस्तु ' मेरी नत्थि ' मेरीनारित, कृष्णवासुदेव इव पाण्डुराजादिः स्नात मर्वाल्कार विभूषितो गजारुदश्चतुरङ्गसेनया सपरिहृतः सर्वदुर्घा युक्तो यागत् यज्ञैव कापिल्य पुर नगर तत्रैव आधारयद् गमनाय=गन्तुं प्रवृत्तः ।

सहित पाण्डुराज को, युधिष्ठिर को, भीमसेन को, अर्जुन को नकुल को, सहदेव को, सौभार्द्व्यों सहित दुर्योधन को, गागेय भीष्म पितामह को विदुर को, द्रोण को जयद्रथ को, शकुनि को, कृपान्चार्य को, और द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा को पहिले दोनों हाथों की अङ्गुलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर नमस्कार करना उन सबको जय विजय आदि शब्दों से वधा देना । वधाकर फिर इस प्रकार कहना कि कापिल्य पुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयवर है, इस लिये हे देवानुप्रियों ! आप सब द्रुपद राजा के ऊपर कृपा करके विना किसी विलम्ब के शीघ्रही कापिल्यपुर नगर में पधारें । ( तएण से दूए एव वयासी-जहा वासुदेवे नवर मेरी नत्थि, जाव जेणेव कपिलपुरे

अने त्या जेधने तमे पुत्रो सहित पाण्डुराजने, युधिष्ठिरने, भीमसेनने, अर्जुनने नकुलने सहदेवने, सो भाईयो सहित दुर्योधनने, गागेय भीष्म पितामहने, विदुरने, द्रोणने, जयद्रथने, शकुनिने, कृपाचार्यने अने द्रोणाचार्यना पुत्र अश्वत्थामाने सो पहिला करणद्ध थधने-अङ्गुलि बनावीने तेने मस्तके भूझीने नमस्कार करले अने ' जय विजय ' शब्दोथी तेज्याने अलिनिहित करले त्यारपळी तमे तेभने आ प्रभाषे विनती करले हे कापिल्यपुर नगरभा द्रुपद राजानी पुत्री द्रौपदीने स्वयवर थवानो छे जेथी हे देवानुप्रियो ! आप सो द्रुपद राजा ऊपर भडेरजानी करीने सत्वरें कापिल्य पुर पधारो ( तएण से दूए एव वयासी-जहा वासुदेवे नवर मेरी नत्थि

नयरे तेणेव पहारेत्य गमणाए २ एएणेव कमेण तच्च दूय चपानयरि  
तत्थ ण तुम कण्ण अग्राय सेल्ल नदिराय करयल तहेव जाव समोसरह  
चउत्थ दूयं सुत्तिमड नयरि, तत्थ ण तुम सिंसुपाल दमघोमसुय पच  
भाइसयसपरिवुड करयल तहेव जाव समोसरह) इस के बाद दूत  
अपने राजा की आज्ञा प्रमाण कर वहा से हस्तिनापुर को चला गया।  
वहाँ पहुँच कर उसने पांडुराजा आदि से बड़े विनय पूर्वक इस प्रकार  
कहा—कापिल्यपुर में द्रौपदी का स्वयंवर होगा—सो आप सब कृपाकर  
शीघ्रातिशीघ्र वहा पधारे। इस तरहके समाचार देकर वह दूत पांडुराजा  
आदि से नन्मानित होकर वहाँ से वापिस हो गया। पांडुराज आदि  
स्नान कर सर्वालकारों से विभूषित होकर गजावृद्ध हो, चतुरगिणी  
सेना के साथ अपनी ऋद्धि आदि के अनुसार यावत् जहा कापिल्यपुर  
नगर था उस ओर चल दिये। इस तरह कृष्ण वासुदेव की तरह यहा  
पर सब पाठ लगा लेना चाहिये। उस पाठ से इस में विशेषता केवल  
इतनी है कि वे सब जब द्वारावती नगरी से कापिल्यपुर नगर को जाने  
के लिये निकले तो उनके साथ भेरी थी—यहा वह नहीं है। इसी क्रम  
से द्रुपद ने तीसरे दूत को बुलाया—बुलाकर उससे भी इसी प्रकार से

पुरे नयरे तेणेव पहारेत्य गमणाए २ एएणेव कमेण तच्च दूय चपानयरि  
तत्थ ण तुम कण्ण अग्राय सेल्ल नदिराय करयल तहेव जाव समोसरह चउत्थ  
दूय सुत्तिमड नयरि तत्थ ण तुम सिंसुपाल दमघोमसुय पचभाइसयसप-  
रिवुड करयल तहेव जाव समोसरह) त्थारपणी इत पोताना राजनी आरा।  
प्रमाणे त्याथी हस्तिनापुर तरङ्ग रवाना थछ गये। त्या पडोथीने तेणे पांडु  
राजा वगेरे राजाओने नम्रपणे आ रीते विनति कगी के—कापिल्यपुरमा  
द्रौपदीने स्वयंवर थसे तो आप सौ कृपा करीने सत्तरे त्या पधारे आ  
रीते समाचार। आपीने ते इत पांडुराज वगेरेथी सन्मान पाभीने त्याथी  
पाछे क्यो पांडुराज वगेरे अधाओ पण स्नान वगेरेथी परवारीने तेमज सर्वा  
ल करीथी सुसज्ज थछने हाथीओ। छपर सवार थया अने पोत पोतानी थतु  
रगिणी सेना तेमज ऋद्धिनी साथे यावत् जे तरङ्ग कापिल्यपुर नगर छतुं  
ते तरङ्ग रवाना थया आ प्रमाणे कृष्ण—वासुदेवनी जेमज अही पण वणुन  
समज लेवु जेछओ कृष्ण—वासुदेवना पाठमा पांडुराज करता अटली विशेषता  
छती के तेओ। न्यारे द्वारावती नगरीनी पडार नीकल्या त्यारे तेमनी साथे  
लेरी पण छती, पांडुराजनी साथे लेरी न छती आ प्रमाणे द्रुपद राजाओ  
राज इतने जोलाओ। अने तेने पण आ रीते कछु के छे देवानुप्रिय। तमे



પતેનૈવ પ્રમેણ ઠતીય દૂત ગન્ધર્વિનિ, ગન્ધર્વિના ણમયાદીન્-ગન્ઠ ગ્લુ ત્વ  
 દે નેવાનુમિય ! ચમ્પાનગરીમ્, તત્ર ગત્તુ કર્ણ = કર્ણનામત્-અઠરાજમ્ = અઠદેશ-  
 સ્યાધિપતિ, તથા ' નેહ ' દ્રોણ = ધૈનનામત્. નન્દિગન = નન્દિદેશાધિપ કરતલ  
 પરિગૃહીત દશનમ્વા ગાયત્-મસ્તકેઽજલિ રૂપ્યા ઝવેર વિજયેન રવિયિન્ના એવ  
 દ્રુદિ- ' તદેવ ' તથૈવ = પૂર્વરત્ત ચોખ્યમ્-તત્થ યથા- " કામ્પિલ્યપુરે નગરે દ્રુપદસ્ય  
 રાજા પુત્ર્યા દ્રૌપદ્યા સ્વયવરો ભરિષ્યતિ, તસ્માદ્ ગત્તુ દે દેવાનુમિયાઃ । ગૂપ  
 દ્રુપદ રાજાનમનુગ્મત ગ્રીષમેવ કામ્પિલ્યપુરે નગરે ગમયમરત " ઇતિ ણ્વ દ્રુપદો  
 રાજા ચતુર્થ દૂત ગન્ધર્વિત્વા ણમયાદીન્-ગન્ઠ ગ્લુ ત્વ શુક્તિમતી નગરી, તત્ર  
 ગ્લુ ત્વ શિશુપાલ દમધોપમુત પથ્રાભ્રાતૃતમપગિટ્ત કરતય૦ ગાયન્મસ્તકેઽજલિ  
 કૃત્વા દ્રુદિ- ' તથૈવ ગાયત્ સમયમરત ' યથા પૂર્વમુક્ત તદ્વત્ત ' ગમયસરત ' ઇતિ

કહા-કિ દે દેવાનુમિય ! તુમ ચમ્પાનગરી જાઓ વન્ના અઠદેશ કે અધિ  
 પતિ કર્ણ રાજા કો તથા નન્દિદેશ કે અધિપતિ ધૈનયરાજા કો કર  
 તલ પરિગૃહીત દશનમ્વાલી અજલિ મસ્તક પર રખકર નમસ્કાર કરના  
 યાદ મેં જય વિજય શબ્દો સે ઝન્હેં ચધાર્દે દેકર પૂર્વ કી તરહ એસા  
 કહના-કિ કાપિલ્યપુર નગર મેં દ્રુપદ રાજા કી પુત્રી દ્રૌપદી કા સ્વયવર  
 હોને વાલા હૈ, સો હે દેવાનુમિયો ! આપલોગ દ્રુપદ રાજા પર કૃપા કરકે  
 જરૂરી સે જલ્દી કાપિલ્યપુર નગર પધારે । હસી તરહ દ્રુપદ ને ચૌથે દૂત  
 કો ખુલાકર ઝસસે એસા હી કહા-કિ તુમ શુક્તિમતી નગરી મેં જાઓ  
 વહા જાકર દમધોપ કે પુત્ર તથા પાચસૌ અપને ભાઈયો સે યુક્ત  
 શિશુપાલ રાજા સે કરતલ પરિગૃહીત દશનમ્વાલી અજલિ મસ્તક  
 પર રખકર કહના, પહિલે કી તરહ એસા કહના કિ કાપિલ્યપુર નગરમેં

અથા નગરીમા જાઓ, ત્યા અઠ દેશના અધિપતિ કણ્વે રાજાને તેમજ નદિ  
 દેશના અધિપતિ સૌંદર્યરાજાને હાથેની અજલિ બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને  
 નમસ્કાર કરજો અને જય-વિજય શબ્દોથી તેમને અભિનંદિત કરજો ત્યારપછી  
 તેમને વિનંતી કરજો કે કાપિલ્યપુર નગરમા દ્રુપદ રાજાની પુત્રી દ્રૌપદીને  
 સ્વયવર થવાનો છે તો હે દેવાનુમિયો તમે સૌ દ્રુપદ રાજા ઉપર કૃપા કરીને  
 અવિલંબ કાપિલ્યપુર નગરમા આવો આ રીતે દ્રુપદ રાજાએ એથા હૃતને  
 બોલાવ્યો અને તેને પણ આ પ્રમાણે કહ્યું કે તમે શક્તિમતી નગરમા જાઓ  
 અને ત્યા જઈને દમયોધના પુત્ર શિશુપાલ રાજાને જ પોતાના પાચસો  
 ભાઈઓ સહિતકરણદ્વય યઈને અજલિ મસ્તકે મૂકીને વિનંતી આ  
 પ્રમાણેના સમાચાર આપજો કે કાપિલ્યપુર નગરમા દ્રુપદ ૨

पर्यन्त वाच्यमित्यर्थः । एष द्रुपदो राजा पञ्चमक दूत शब्दयित्वा एवमवादीत्-  
गच्छ खलु त्व हस्तिशीर्षनगर, तत्र खलु त्व दमदन्त=दमदन्तनामक राजान कर-  
तलपरिगृहीतदशनम् यावन्मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा ब्रूहि-‘ तथैव यावत् समवसरत ’  
इति पूर्ववदेवात्रापि ‘ समवसरत ’ इतिपर्यन्त वान्यम् एव स द्रुपदो राजा षष्ठ दूत  
शब्दयित्वाऽवादीत्-गच्छ खलु त्व मथुरा नगरी, तत्र खलु त्व धर=धरनामक  
राजान ‘ करतल० यावत् समवसरत ’ अत्रापि पूर्ववद्दूतगमनादिक बोध्यम्, एव  
सप्तम दूत शब्दयित्वा एवमवदत्-गच्छ खलु त्व राजगृह नगरम्, तत्र खलु त्व  
सहदेव जरासिन्धुसुत ‘ करतल० यावत् समवसरत ’ इति पूर्ववत्-द्रौपद्याः स्वय-  
वरस्य मार्ता कथयित्वा ‘ काम्पिल्यपुरे नगरे समवसरत ’ इति ब्रूहि । तत्रा स

द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयवर होने वाला है-सो आप कृपा  
करके शीघ्र ही वहा पधारें । ( पचमग दूय हत्थिस्त्रीसनयर तत्थ ण तुम  
दमदत्त राय करयल तहेव जाव समोसरह, छट्ट दूय महुर नयरिं तत्थ ण  
तुम धर राय करयल जाव समोसरह सत्तम दूय रायगिह नयर तत्थण  
तुम सहदेव जरासिन्धुसुय करयल जाव समोसरह, अट्टम दूय कोडि-  
ण्णं नयर तत्थण तुम रुप्पि भेसगसुय करयल तहेव जाव समोसरह,  
नवम दूय विराडनयर तत्थ णं तुम कीयग भाउसयसमग्ग करयल जाव  
समोसरह, दसम दूय अवसेसेसु गामागरनगरेसु अणेगाइ रायसहस्साइ  
जाव समोसरह ) इसी तरह पाचवे दूत को हस्तिशीर्षनगर में दमदन्त  
नाम के राजा के पास छठे दूत को मथुरा नगरी में धर राजा के पास,  
सातवे दूत को राजगृह नगर में जरासिन्धु के पुत्र सहदेव के पास

दीने। स्वयवर थवानो छे ओथी तमे वृथा करीने अविशेष त्या पधारो  
( पचमग दूय हत्थिस्त्रीसनयर तत्थ ण तुम दमदत्त राय करयल तहेव जाव  
समोसरह छट्ट दूय महुर नयरिं तत्थण तुम धर राय करयल जाव समोसरह  
सत्तम दूय रायगिह नयर तत्थ ण तुम सहदेव जरासिन्धु सुय करयल जाव  
समोसरह अट्टम दूय कोडिण्ण नयर तत्थण तुम रुप्पि भेसगसुय करयल  
तहेव जाव समोसरह नवम दूय विराडनयर तत्थ ण तुम कीयग भाउसय  
समग्ग करयल जाव समोसरह, दसम दूय अवसेसेसु गामागर नगरेसु अणेगाइ  
रायसहस्साइ जाव समोसरह ) आ प्रभाण्णे पाचमा दूतने हस्तिशीर्ष नगरमा  
दमदन्त नामना राज्ञानी पासे, छट्ठा दूतने मथुरा नगरीमा धर राज्ञानी पासे,  
सातमा दूतने राजगृह नगरमा जरासिन्धुना पुत्र सहदेवनी पासे, आठमा  
दूतने कीडित्य नगरमा लीम्भकना पुत्र इक्ष्मि राज्ञानी पासे, नवमा दूतने



पतेनैव क्रमेण तृतीय दूत शब्दयति, शब्दयित्वा पयसादीन्-गच्छ गच्छ त्वं हे देवानुप्रिय ! चम्पानगरीम्, तत्र गच्छ कर्ण=कर्णनागरम्-अहिराजम्=महदेश-स्याधिपति, तथा 'मेतद्' शब्द=शैल्यनामकः नन्दिगन्त=नन्दिदेशाधिप करतल-परिगृहीत दशानग्व यावन्-मस्तकेऽञ्जलि कृत्वा जयेन विजयेन पर्यायित्वा एव ब्रूहि- 'तथैव' तथैव=पूर्ववत् भोग्यम्-तद् यथा-'' काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य राजः पुत्र्या द्रौपद्याः स्वयवरां भरिष्यति, तस्माद् गच्छ हे देवानुप्रिया ! गृह्य द्रुपद राजानमनुगृह्यतः शीघ्रमेव काम्पिल्यपुर नगरे गमयसरत'' इति एव द्रुपदो राजा चतुर्थ दूत शब्दयित्वा पयसादीन्-गच्छ गच्छ त्वं शुक्तिमती नगरी, तत्र गच्छ त्वं शिशुपाल दमघोषस्य पञ्चभ्रातृगतमपगृह्य करतलं यावन्मस्तकेऽञ्जलि कृत्वा ब्रूहि- 'तथैव यावत् समयसरत' यथा पूर्वमुक्तं तद्वद्वत् 'गमयसरत' इति

कहा-कि हे देवानुप्रिय ! तुम चम्पानगरी जाओ वहा अगदेश के अधिपति कर्ण राजा को तथा नन्दिदेश के अधिपति शैल्यराजा को करतल परिगृहीत दशानग्ववाली अञ्जलि मस्तक पर रखकर नमस्कार करना बाद में जय विजय शब्दों से उन्हें बधाई देकर पूर्व की तरह ऐसा कहना-कि कापिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयवर होने वाला है, सो हे देवानुप्रियों ! आपलोग द्रुपद राजा पर कृपा करके जल्दी से जल्दी कापिल्यपुर नगर पधारें । इसी तरह द्रुपद ने चौथे दूत को बुलाकर उससे ऐसा ही कहा-कि तुम शुक्तिमती नगरी में जाओ वहा जाकर दमघोष के पुत्र तथा पाचसौ अपने भाइयों से युक्त शिशुपाल राजा से करतल परिगृहीत दशानग्ववाली अञ्जलि मस्तक पर रखकर कहना, पहिले की तरह ऐसा कहना कि कापिल्यपुर नगरमें

यथा नगरीमा गच्छे, त्या अग हेराना अधिपति कर्ण राजने तेमज नदि देशना अधिपति शैल्यराजने छाथेनी अञ्जलि जनावीने तेने मस्तके भूझीने नमस्कार करले अने जय-विजय शब्दोथी तेमने अलिनिहित करले तयारपछी तेमने विनती करले के कापिल्यपुर नगरमा द्रुपद राजनी पुत्री द्रौपदीने स्वयवर थवानो छे तो छे देवानुप्रियो तमे सौ द्रुपद राजा उपर कृपा करीने अविलज्ज कापिल्यपुर नगरमा आवो आ रीते द्रुपद राजाये बोधा इतने जालाये अने तेने पञ्च आ प्रभाछे कहु के तमे शक्तिमती नगरमा गच्छे अने त्या जधने दमघोषना पुत्र शिशुपाल राजने ज पोताना, पाचसौ भाइये सङ्घितकरणा थधने अञ्जलि मस्तके भूझीने विनती करता आ प्रभाछेना समाचार आपजे के कापिल्यपुर नगरमा द्रुपद

सरति, निर्गत्य यत्रैव ग्रामाकरनगरेषु अनेकानि राजसहस्राणि, तत्रैवोपागच्छति  
उपागत्य यावत्-समवसरत, 'समवसरत' इति पर्यन्त दत्तवाक्य पूर्ववद् बोध्यम् ।  
ततः खलु तानि अनेकानि राजसहस्राणि तस्य दत्तम्यान्तिके एतमर्थं श्रु वा  
निशम्य हृष्टतुष्टाः सन्तः दूत सत्कारयन्ति=सत्कृत कुर्वन्ति समानयन्ति, सत्कार्य,  
समान्य प्रतिविसर्जयन्ति ।

ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसरयका राजानः,=प्रत्येक २ स्नाताः

जेणेव गामागर जाव समोसरह ) वह दशवा दूत उसी तरह से-  
पहिले के दूतों के समान कापिल्य नगर से निकला और निकल कर  
जहां ग्राम आकर और नगर थे-वहा पर अनेक राजसहस्रों के पास  
गया-वहा जाकर शिष्टाचार पूर्वक उसने सब से इस प्रकार कहा कि  
कापिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयवर होने वाला  
है-सो आपमत्र लोग द्रुपद राजा के ऊपर कृपा करके जल्दी कापिल्य  
पुर नगर पधारे (तएण ताइ अणेगाइ रायसहस्साइ तस्स दूयस्स  
अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म हट्टं त दूय सत्कारेति, सक्कारित्ता  
सम्माणेति, सम्माणित्ता पडिविसज्जेति ) इस प्रकार वे अनेक सहस्र  
राजा उस दूत के मुख से इस समाचार को सुन कर और उसे अपने  
अपने २ हृदयों में अवधारित कर बहुत ही अधिक आनन्द से प्रमुदित  
बनकर परम सतोष को प्राप्त हुए । उन्होंने उस दूत का सत्कार किया  
सत्कार करके सम्मान किया और सम्मान करके फिर उसे पीछे विसर्जित  
कर दिया-भेज दिया । (तएण ते वासुदेवप्रामुक्खा बहवे रायसहस्सा पत्तेय

समोसरह ) ते दशमे। दूत अधानी जेम कापिल्य नगरथी नीकल्ये। अने  
नीकणीने जया ग्राम आकर अने नगर उता त्या अनेक सहस्रो राजाथोनी  
पासे गये। त्या जधने नम्रपणें तेणें सहुने आ प्रमाणें द्रुपद के कापिल्य  
नगरमा द्रुपद राजाणी पुत्री द्रौपदीने स्वयवर थवानो छे तो आप सौ द्रुपद  
राज उपर कृपा उरीने अविलम्ब कापिल्य नगरमा पधारे। (तएण ताइ  
अणेगाइ रायसहस्साइ तस्स दूयस्स अतिए एयमट्ट सोच्चा निसम्म हट्टं त  
दूय सकारेति सक्कारित्ता, सम्माणेति, सम्माणित्ता, पडिविसज्जेति ) आ रीते  
सहस्रो राजाथो ते दूतना मुखथी आ समाचार सालणीने अने तेने  
पोताना हृदयमा धारण उरीने भूमज प्रसन्न तेमज परम सतुष्ट थया  
तेथोथे दूतने। सत्कार कथो अने सम्मान कथुं त्यारपणी दूतने तेथोथे  
विहारथी। (तएण ते वासुदेवप्रामुक्खा बहवे रायसहस्सा पत्तेय २ ण्वाया

द्रुपदो राजा अष्टम दूत शब्दयित्वाऽप्यर्शिन-गच्छ गच्छ त्व कौण्डिन्यनगर तत्र  
 खलु त्व ' रवि ' कश्चिन्न-मिमनामक भोग्यमुत्तर करतल तथैव यावत् समस्त  
 सरत पूर्वात् ' समस्तगत ' इति पर्यन्त गच्छ । एव स द्रुपदो राजा नाम दूत  
 शब्दयित्वाऽप्यर्शिन-गच्छ तत्र त्रिस्तम्भनगर, तत्र गच्छ त्व ' कीचक ' कीचक-  
 कीचकनामक राजान गतभातमदित करतल यावत् समस्तगत अत्रापि व्याख्या  
 पूर्वात् । एव स द्रुपदो राजा दशम दूत शब्दयित्वाऽप्यर्शिन-अग्नेयवृक्षग्रामात्  
 नगरेषु अनेकानि राजवत्स्राणि यावत् समस्तगत, अत्रापि व्याख्या पूर्वात्,  
 ततस्तदनन्तर खलु स दूतस्त्वैव=पूर्वोक्तदूत इति निर्गच्छति काम्पि-पतनगरता नि-  
 में आठवें दूत को कौण्डिन्य नगर में भीष्मक के पुत्र शक्तिम राजा के  
 पास में नौवें दूत को त्रिस्तम्भ नगर में मौ भाटयो से युक्त कीचक के  
 पास में, और दशम दूत को अग्नेयवृक्ष ग्रामों में आकरों में एव नगरों  
 में हजारों राजाओं के पास जाने के लिये कहा । इन दूतों को राजा  
 द्रुपद ने यह समझा दिया कि तुम लोग जब इन राजाओं के पास जाओ  
 तब पहिले उन्हें दानों दाय जोड़कर नमस्कार करना और कहना कि  
 कापिल्य पुर नगर में द्रुपदकी पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला है  
 सो आप लोग उस में द्रुपद राजा उपर दया कर के शीघ्र से शीघ्र  
 पधारें । राजाकी आज्ञानुसार तीसरे दूतसे लेकर नौवें दूत तक समस्त  
 दूत जिन्हे २ जहाँ २ जाने को कहा था-वे वहाँ चले गये । वहाँ जाकर  
 उन्होंने ने जैसा द्रुपद राजा ने इन से करने एव कहने को कहा था-वैसा  
 ही उन्हो ने वहाँ २ किया और कहा । इस तरह पहिले की तरह यहाँ  
 तक सब व्याख्या समझलेनी चाहिये । ( तण्ण से दूए तहेव निगच्छइ,

त्रिस्तम्भ नगरमा सो आठवोथी युक्त कीचकनी पासे अने दशमा दूतने जाकी  
 रही गयेला भीष्म आभोमा आकरोमा अने नगरोमा छत्तरो राजाओनी पासे  
 जवा हुकम क्यो आ जधा दूतने राजा द्रुपद जवा पडेला आ वात सरस  
 शीते समजवी दीधी छती के ज्यारे तमे राजाओनी पासे जओ त्यारे सो  
 पडेला पोताना जने हाथ जेडीने तेओने नमस्कार करजे अने तयारपछी तमे  
 तेमने विनती करजे के कापिल्य नगरमा द्रुपदनी पुत्री द्रौपदीने स्वयंवर थवाने  
 छे तो आप सो द्रुपद राजा उपर दया करीने अविलम्ब त्या पधारो राजानी  
 आज्ञा मुज्जम त्रीन दूतथी भाडीने नवमा दूत सुनीना जधा दूतो जवा जवा  
 तेओने जवानु छतु त्या त्या पडेला त्या पडेथीने तेओओ द्रुपद राजाओ  
 जेग आज्ञा करी छती तेमज तेओओ क्यु अने वहु, अहुँ - - - - - नी जेमज  
 समझ लेवु जेछे ( तण्ण से दूए तहेव निगच्छइ, जाव



सरति, निर्गत्य यत्रैव ग्रामाकरनगरेषु अनेकानि राजसदृशाणि, तत्रैवोपागच्छति  
उपागत्य यावत्-समवसरत, 'समवसरत' इति पर्यन्त दत्तवाक्य पूर्ववद् बोध्यम् ।  
ततः खलु तानि अनेकानि राजसदृशाणि तस्य दत्तम्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा  
निशम्य हृष्टतुष्टाः सन्तः दूत सत्कारयन्ति=सत्कृत कुर्वन्ति समानयन्ति, सत्कार्यं,  
समान्य प्रतिविमर्जयन्ति ।

ततः खलु ते वासुदेवमुखा बहुसदृशसत्तया राजान', =प्रत्येकं २ स्नाताः

जेणेव गामागर जाव समोसरह ) वह दशवां दूत उसी तरह से-  
पहिले के दूतों के समान कापिल्य नगर से निकला और निकल कर  
जहां ग्राम आकर और नगर थे-वहां पर अनेक राजसदृशों के पास  
गया-वहा जाकर शिष्टाचार पूर्वक उसने सब से इस प्रकार कहा कि  
कापिल्यपुर नगर में दुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला  
है-सो आपसब लोग दुपद राजा के ऊपर कृपा करके जल्दी कापिल्य  
पुर नगर पधारे (तएण ताड अणेगाड रायसदृसाड तस्स दूयस्स  
अतिए एयमदु सोच्चा निसम्म हट्टं त दूय सत्कारेति, सत्कारित्ता  
सम्माणेति, सम्माणित्ता पडिविसज्जेति ) इस प्रकार वे अनेक सदृश  
राजा उस दूत के मुख से इस समाचार को सुन कर और उसे अपने  
अपने २ हृदयों में अवधारित कर बहुत ही अधिक आनन्द से प्रमुदित  
बनकर परम सतोष को प्राप्त हुए । उन्होंने उस दूत का सत्कार किया  
सत्कार करके सम्मान किया और सम्मान करके फिर उसे पीछे विसर्जित  
कर दिया-भेज दिया । (तएण ते वासुदेवपामुक्खा यहवे रायसदृसा पत्तेय

समोसरह ) ते दशमे। दूत णधानी जेम कापील्य नगरथी नीकल्ये। अने  
नीकणीने जया ग्राम आकर अने नगर छता त्या अनेक महुओ राजाओनी  
पामे गये। त्या जधने नम्रपणे तेणे सहुने आ प्रमाणे कहु के कापिल्य  
नगरमा दुपद राजाणी पुत्री द्रौपदीने स्वयंवर थवाने। छे तो आप ओ दुपद  
राजा उपर कृपा उरीने अविलम्ब कापिल्य नगरमा पवारे। (तएण ताड  
अगणेगाड रायसदृसाड तस्स दूयस्स अतिए एयमदु सोच्चा निसम्म हट्टं त  
दूय सत्कारेति सत्कारित्ता, सम्माणेति, सम्माणित्ता, पडिविसज्जेति ) आ रीते  
सहुओ राजाओ ते इतना मुण्ठथी आ अमाचार सालणीने अने तेने  
पोताना। इदयमा धारण करीने भूमज प्रमन्न तेमज पग्ग मत्तुथ थया  
तेओओ इतने। सत्कार कर्यो अने सम्मान कर्यो त्यापणी इतने तेओओ  
विहाय आपी (तएण ते वासुदेवपामुक्खा यहवे रायसदृसा पत्तेय २ ण्हाया

સન્નદરદ્વરમિતકરના યાવત્ સુદીતાગુપ્તપ્રશ્નના' હસ્તિય-ધવરગતા હયગમરથ  
મહામટચટ્ટરમરુરગ્નપરિણામ' = ૫ ગમરથમહાપુમટમપૂરપરિણામ, મયકેશ્યઃ  
સ્વકેશ્યોમભિનિર્ગ-છન્તિ, અભિનિર્ગત્ય ચર્ચય પદ્માગે જનપદસ્ત્રેય માધાર્યન્  
ગમનાય=ગન્તુ મગ્નાઃ ॥ સૂ. ૧૯ ॥

મૂલમ્-તપ્પણ સે દુવણ રાયા કોહુવિયપુરિમે મહાવેડ સદા  
વિત્તા એવ વયાસી-ગચ્છહણં તુમં દેવાણુપ્પિયા । કંપિલ-  
પુરે નયરે વહિયા ગગાણ મહાનદીણ અદૂરસામતે ણમ મહ  
સયવરમંડવ કરેહ અણેગચંભસયસન્નિવિટ્ઠં લીલહિય સાલ  
ભજિઆગ જાવ પચ્છપ્પિણતિ, તપ્પણ સે દુવણ રાયા દોચ્ચંપિ  
કોહુવિયપુરિસે સદાવેડ સદાવિત્તા એવં વયાસી-લિપ્પામેવ

રણાયા સન્નદરદ્વરમિતકરના યાવત્ સુદીતાગુપ્તપ્રશ્નના' હસ્તિય-ધવરગતા હયગમરથ  
મહામટચટ્ટરમરુરગ્નપરિણામ' = ૫ ગમરથમહાપુમટમપૂરપરિણામ, મયકેશ્યઃ  
સ્વકેશ્યોમભિનિર્ગ-છન્તિ, અભિનિર્ગત્ય ચર્ચય પદ્માગે જનપદસ્ત્રેય માધાર્યન્  
ગમનાય=ગન્તુ મગ્નાઃ ॥ સૂ. ૧૯ ॥

સન્નદરદ્વરમિતકરના યાવત્ સુદીતાગુપ્તપ્રશ્નના' હસ્તિય-ધવરગતા હયગમરથ  
મહામટચટ્ટરમરુરગ્નપરિણામ' = ૫ ગમરથમહાપુમટમપૂરપરિણામ, મયકેશ્યઃ  
સ્વકેશ્યોમભિનિર્ગ-છન્તિ, અભિનિર્ગત્ય ચર્ચય પદ્માગે જનપદસ્ત્રેય માધાર્યન્  
ગમનાય=ગન્તુ મગ્નાઃ ॥ સૂ. ૧૯ ॥



भो देवाणुप्पिया । वासुदेवपामुक्खाण वहूणं रायसहस्साणं  
 आवासे करेह तेवि करेत्ता पच्चप्पिणांति, तएण दुवए  
 वासुदेवपामुक्खाण वहूणं रायसहस्साण आगम जाणेत्ता  
 पत्तेयर हत्थिखध जाव परिवुडे अग्घ च पज्ज च गहाय सवि-  
 ङ्गिए कपिल्लपुराओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता जेणेव ते वासु-  
 देवपामुक्खा वहव रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ उवाग-  
 च्छित्ता ताइ वासुदेवपामुक्खाइ अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेइ  
 सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता तेसि वासुदेवपामुक्खाण  
 पत्तेयर आवासे वियरइ, तएणं ते वासुदेवपामोक्खा जेणेव  
 सयार आवासा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिख-  
 धाहितो पच्चोरुहति पच्चोरुहित्ता पत्तेय खधावारनिवेस  
 करेन्ति करित्ता मएर आवासे अणुपविसति अणुपविसित्ता  
 मएसुर आवासंसु य आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्ना य  
 सत्तुयट्ठा य वहूहि गधवेहि य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य  
 उवणच्चिज्जमाणा य विहरति, तएणं से दुवए राया कपिल्ल-  
 पुर नगर अणुपविसइ अणुपविसित्ता विउल असण४ उवक्ख-  
 डावेइ उवक्खडावित्ता कोडुवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एव  
 वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया । विउल असण४ सुर  
 च मज्ज च मम च सीधु च पसण्ण च सुवहुपुप्फवत्थगंधम-  
 ल्लालकार च वासुदेवपामोक्खाण रायसहस्साण आवासेसु  
 साहरह, तेवि साहरति, तएण त वासुदेवपामुक्खा त विउलं

સન્નદ્યદ્વર્મિતકચા ચાચ્ચુ યુદ્ધીનાપુત્રપરગ્નાઃ દમ્ભિન્કભવરગતા હયગજરથ  
મહામટનટરપ્રકારગ્નપરિણામઃ=મહાગજરગમસાપુમટમપૂત્રપરિણામઃ, સ્વકેભ્યઃ  
સ્વકેભ્યોમિનિર્ગચ્છન્તિ, અમિનિર્ગત્ય ચત્રેવ પદ્માબો જનપત્તસ્ત્રેવ પ્રાધાન્યન  
ગમનાય=ગન્તુ પ્રગ્તાઃ ॥ સૂ. ૧૯ ॥

મૂલ્ય-તપ્પણ સે દુવણ રાયા કોહુંવિયપુરિસે સદાવેડ સદા  
વિત્તા એવ વયામી-ગચ્છહણ તુમં દેવાણુપ્પિયા । કપિલ્લ  
પુરે નયરે વહિયા ગંગાણ મહાનદીણ અદૂરસામંતે એગ મહ  
સયરમડવ કરેહ અણેગત્વંભસયસન્નિવિટ્ઠ લીલહિય સાલ  
ભજિઆગ જાવ પચ્ચપ્પિણતિ, તપ્પણં સે દુવણ રાયા દોચ્ચંપિ  
કોહુંવિયપુરિસે સદાવેડ સદાવિત્તા એવ વયામી-ચિપ્પામેવ

રણાયા સન્નદ્વ હથિયપ્રવરગયા હય ગયરહ૦ મહયા મહચઢગરરહપ-  
હકર૦ મળિંતો ૨ નગરેહિંતો અમિનિગ્ગચ્છતિ ૨ જેણેવ પાચોલે જણ  
વણ તેણેવ પહારેત્થ ગમણાણ ) આદર્મે જન દૂત સંમાચાર દેકર વાપિમ  
કાપિલ્લ પુર નગર મેં આચુકે તવ વાસુદેવ પ્રમુખ વે અનેક શસ્ત્રરાજા  
પ્રત્યેક સ્નાન સે નિવટે, ઓર મજાત્તર અપને ૨ કારીર પર કવચ પહિરા,  
ચાવત્ માયુધ ઓર પ્રહરણોં કો અપને ૨ સાવ લિયા, અપને ૨ પ્રધાન  
હાથોં પર ચઢે ઓર હાથી ઘોડે રથ ઓર મહામટોં ક સમુદાય સે  
ત્રિરે દુણ હોકર વે સવ અપને રાજ મહલોંસે-નગરોં સે-નિકલે-નિલકર  
જહા પાંચાલ જનપદ યા ઉસ ઓર ચલ દિયે ॥ સૂ. ૧૯

સન્નદ્વહથિયપ્રવરગયા હયગયરહ૦ મહયા મહચઢગરરહપહકર૦ સર્વહિંતો ૨  
નગરેહિંતો અમિનિગ્ગચ્છતિ ૨ જેણેવ પાચોલે જણવણ તેણેવ પહારેત્થ ગમણાણ )  
ત્યારપછી બ્યારે બધા હોતો સમાચાર આપીને કાપિલ્લપુર નગર પાછા  
આવી ગયા ત્યારે વાસુદેવ પ્રમુખ ઘણા હુજારો રાજાઓએ સ્નાન કર્યા  
અને ત્યારબાદ પોતાના શરીર ઉપર કવચો ધારણ કર્યા ચાવત્ માયુધો અને  
પ્રહરણોને પોતાની સાથે લીધા ત્યારપછી તેઓ બધા પોતપોતાના પ્રધાન  
હાથીઓ ઉપર સવાર થયા અને હાથી, ઘોડા, રથ અને મહામટોના સમુ  
દાયની સાથે પોતાના રાજમહેલથી-નગરોથી નીકળ્યા અને નીકળીને બ્યા  
પાંચાલ જનપદ હતો તે તરફ રવાના થયા ॥ સૂત્ર ૧૯ ॥

काइं आसणाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइ रएहर एयमाणत्तिय पच्च-  
प्पिणह, ते वि जाव पच्चप्पिणांति, तएणं ते वासुदेवपामुक्खा  
वहवे रायसहस्सा कल्ल पाउ० णहाया जाव विभूसिया हत्थि-  
संधवरगया सकोरट० सेयवरचामराहि हयगय जाव परिवुडा  
सव्विड्ढीए जाव रवेणं जेणेव सयंवरे तेणेव उवागच्छइ उवाग-  
च्छित्ता अणुपविसति अणुपविसित्ता पत्तेयर नामकिएसु आस-  
णेसु निनीयति ढोवड रायवरकण्ण पडिवालेमाणा चिट्ठति,  
तएण से पडुए राया कल्ल णहाए जाव विभूसिए हत्थिखध-  
वरगए सकोरट० हयगय० कपिलपुरे मज्झमज्झेण निग्गच्छंति  
जेणेव सयवरमडवे जेणेव वासुदेवपामुक्खा वहवे रायसहस्सा  
तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तेसि वासुदेवपामुक्खाण  
करयल० वद्धावेत्ता कणहस्स वासुदेवस्स सेयवरचामर गहाय  
उववीयमाणे चिट्ठति ॥ सू० २० ॥

टीका—‘ तएण से ’ इत्यादि । ततः खलु स दुपदो राजा कौटुम्बिकपुरु-  
षान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—गच्छत खलु यूय इ देवानुप्रिया !  
काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य बहि प्रदेशे गङ्गाया महानद्या अदूरसामन्ते=नातिदूरं  
नातिमनापे एह महान्त समम्बरमण्डपं कुरुत कोटशनित्याह—‘ अणेग ’ इत्यादि ।

‘ तएण से दूवए राया कोडुविय पुरि से ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (दूवए राया) दुपद राजा ने (कोडुविय  
पुरिसे सदावेइ) कौटुम्बिकपुरुषों को बुलाया (सदावित्ता एव वयासी)  
बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा—(गच्छइ ण तुम देवानुप्रिया ! कपिलपुरे  
नगरे बहिया गगाए महानईए अदूरसामते एग मह सयवरमडव करेइ,

‘ तएण से दूवए राया कोडुविय पुरिसे ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (दूवए राया) ६५० रा-अथे (कोडुवियपुरिसे  
सदावेइ) कौटुम्बिक पुरुषोंने बोला-या. (सदावित्ता एव वयासी) बोलावीने  
तेभने आ प्रभावे ३६५ ३ (गच्छइ ण तुम देवानुप्रिया ! कपिलपुरे नगरे  
बहिया गगाए महानईए अदूरसामते एग मह सयवरमडव करेइ, अणेगसमस-

असण४ जाव पसन्नं च आसाणमाणा४ विहरति, जिमियाभुत्तु-  
 त्तरागया वि य णं समाणा आयता जाव मुहासणवरगया  
 वहूहि गधव्वेहि जाव विहरति, तण्णं मे दुवण राया पुव्वाव-  
 रणहकालसमयांसि कोडुवियपुरिसे सदावेद सदावित्ता एव वयासी  
 गच्छह णं तुम देवाणुप्पिया ! कपिल्लपुरं सयात्तग जाव पहे  
 वासुदेवपासुवखाण य रायसहस्साण आवासेसु हत्थिखधवरगया  
 महयार सहेण जाव उग्घासेमाणा० एव वदह—एव खल्ल देवा-  
 णुप्पिया कल्ल पाट० दुवयस्स रण्णो धूयाए चुलणीए देवीए  
 अत्तयाए धट्टज्जुणस्स भगिणीए दोवड्ढए रायवरकण्णए  
 सयवरे भविस्सइ, त तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! दुवय रायाणं  
 अणुगिण्हेमाणा पहाया जाव विभूसिया हत्थिखधवरगया सको-  
 रट० सेयवरचामर० हयगयरह० महया भडच्चडगरेण जाव  
 परिकिखत्ता जेणेव सयवरमटवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता  
 पत्तेय २ नामकिएसु आसणेसु निसीयहर दोवइ रायकण्णपडि-  
 वालेमाणा२ चिट्ठह, घोसण घोसेहर मम एयमाणत्तियं पच्च-  
 प्पिणह, तएण ते कोडुविया तहेव जाव पच्चप्पिणति, तएण  
 से दुवण राया कोडुवियपुरिसे सदावेद सदावित्ता एव वयासी  
 —गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! सयवरमडप आसियसमजि-  
 ओवलित्तं सुगंधवरगंधियं पंचवण्णपुप्फपुजावयारकलिय काला-  
 गरुपवरकुदुरुक्कतुरुक्क जाव गधवट्ठिभूय संचाइमच्चकलिय करेह  
 करित्ता वासुदेवपासुवखाण वहुण रायसहस्साण





अनेकस्तम्भगतमनिविष्ट=भनेरनासाभनपुक्त, 'लीलट्टियसालमजिआग' लीला  
स्थितसालमजिआग=श्रीनगा गिआ गाउमजिआग-पुतलिकागमिआगदशं, गाउ-  
'तथास्तु' इति इत्या ते काटुमिरपुरुषाग्नराग स्त्रीरग्य तथैव सपाय,  
प्रत्यर्पयन्ति=मण्डपोनिर्मित इति निरूपयन्ति। ततः 'तद्वपुः' राजा 'दोचपि'  
द्वितीयगारमपि कोटुमिरपुरुषाग्नराग मजि, अन्धपि-रा परमरादोव-हे देवानु  
प्रियाः । भिप्रमेव गाउदेवपगुणाणा बहूना राजमदगाणां आवास-वासस्थान  
कुरुत=चयत, तंऽपि कोटुमिरपुरुषा 'वरता' क-रा=गाउदेवरादीना निवासार्थं  
पृथक् पृथक् योग्य वासस्थान विधाय प्रत्यर्पयन्ति=द्रुपदाय राते न्ययन्ति। ततः

अनेग यमसयसन्निविष्ट लीलट्टियसालमजिआग जाव पचचप्पिणति) हे दे  
वानुप्रियो ! तुमलोग जाओ-ओर कापित्तपुरनगरके बाहिर गंगा महा  
नदी के नअतिदूर ओर न अति समीप-उचित स्थान-में एक बड़ा भारी  
स्वयंवर मंडप बनाओ । जो अनेक नैनकों हाथोंसे पुक्त हो तथा जिसमें  
विविध प्रकार की क्रीडा करती हुई पुतलिकाएँ सजा कर लगाई गई  
हों । यावत् "तथास्तु" कह कर उन लोगों ने राजा की इस आज्ञा को  
मान लिया और उसी आज्ञाके अनुसार स्वयंवर मंडप बना कर इसकी  
खबर राजाको कर दी । (तएव से द्रुपद राया दोचपि कोटुमिरपुलिसे  
सदावेह सदावित्ता एव वयासी-खिप्पामेव देवाणुप्पिया । वासुदेव पासु  
कखाण बहूण रायसहस्साण आवासे करेह ते वि करत्ता पचचप्पिणति  
इसके बाद द्रुपद राजा ने दूसरे कोटुमिरक पुरुषों का बुलाया-बुलाकर  
उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो ! तुम लोग शीघ्रातिशीघ्र वासुदेव

यसन्निविष्ट लीलट्टियसालमजिआग जाव पचचप्पिणति) हे देवानुप्रियो ! कापित्त  
पुरनगरनी गडार भडा नदी गंगाथी वधारे दूर नडोतेमज वधारे नउठ पणु नडि  
ओवा योग्य स्थणे ओक ठारे विशाण स्वयंवर मंडप तैयार करे के जे धणु  
से कडे आललाओवाणे छाय, तेमज जेमा अनेक जतनी क्रीडा करती पूत  
णीओ सजवीने भूडवाभा आवी छाय ते लोकोओ पणु 'तथास्तु' कहीने  
राजनी आज्ञा स्वीकारी लीधी अने तयारपछी तेमनी आज्ञा मुजम ज स्वय  
वर मंडप तैयार करीने राजने तेनी गजर आवी (तएव से द्रुपद राया  
दोचपि कोटुमिरपुलिसे सदावेह, सदावित्ता एव वयासी-खिप्पामेव देवाणुप्पिया ।  
वासुदेव पासु कखाण बहूण रायसहस्साण आवासे करेह, ते वि करत्ता पचचप्पिणति)  
तयारपछी द्रुपद राजाओ जीम कोटुमिरक पुरुषोने जोलाओवा अने जोलावीने  
तेमने कहु के हे देवानुप्रियो ! तमे लोको अविलम वासुदेव

खलु द्रुपदो राजा वासुदेवप्रमुखाणा वहूना राजसहस्राणाम् आगम=आगमन  
ज्ञात्वा प्रत्येक २ हस्तिस्कधनरगतः, हयगजरथमहामटममूहपरिगृह्य, अर्घ्य=  
पानार्थं जल पाद्यं=चरणप्रक्षालनार्थमुद्रकं च गृहीत्वा सर्वद्वार्यं छत्रचामरादिरूपया  
काम्बिल्यपुरतो निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव ते वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रमुखका-  
राजानस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तानि वासुदेवप्रमुखाणि बहूनि राजमन्त्राणि=  
तान् बहुसहस्रसख्याकान् वासुदेवप्रमुखान् राज्ञः, अर्घ्येण च पात्रेण च सत्कार-

प्रमुख अनेक सहस्र राजाओं को बैठने के लिये पृथक् स्नान घनाओ ।  
उन्होंने राजाकी आज्ञानुसार बैसा ही किया और इसकी खबर राजा को  
कर दी । ( तएण द्रुपण वासुदेव प्रमुखाणा वहूण रायसहस्राण आगम  
जाणेत्ता पत्तेय २ हत्थिएव जाव पडिबुडे अग्घ च पज्ज च गहाय सव्वि  
डूप कपिल्लपुराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव ते वासुदेव प्रामोक्खा  
वहवे रायसहस्रा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताइ वासुदेव प्रामु-  
क्खाइ अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेइ, सम्माणेइ ) इसके बाद द्रुपद  
राजा वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं को आगमन जानकर अपने प्रधान  
हस्ती पर आरुढ़ हो हय, गज, रथ तथा महामटों के समूह के साथ २  
प्रत्येक राजा के लिये अर्घ्य-पीने के लिये पानी, पाद्य-चरण प्रक्षालन के  
जल-लेकर छत्रचामर आदि अपना राजविभूतिसे युक्त होकर काविल्य  
पुर नगर से निकले-निकलकर जहां वासुदेव प्रमुख हजारों राजा ये बहा  
गये । वहां जाकर उन्होंने उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं का अर्घ्य

छन्दरो राजाओंने जेसवा भाटे जुवा जुवा स्नान तैयार करे ते लोडोये पण  
राजानी आज्ञा मुज्जण न् जुव काम पतावी दीवु अने काम थि गथानी जमर  
राज सुधी पडोयाडी दीधी ( तएण द्रुपण वासुदेव प्रामुखाणा वहूण राय  
सहस्राण आगम जाणेत्ता पत्तेय २ हत्थिएव जाव पडिबुडे अग्घ च पज्ज च  
गहाय सव्विडूप कपिल्लपुराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव ते वासुदेव प्रामोक्खा  
वहवे रायसहस्रा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताइ वासुदेव प्रामुक्खाइ  
अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेइ, सम्माणेइ ) तयार १७ वासुदेव प्रमुख छन्दरो  
राजोंने आगमन सालगाने द्रुपद राजा पोतना प्रधान डाथी उपर सवार  
थया अने घोडा, डाथा, रथ तेमज भडालटोना समूडनी साथे दरेके दरेक  
राजने भाटे अर्घ्य-पीवा भाटे पाणी-सधने छत्र चामर वजेरे पोतानी राज-  
विभूतिथी युक्त थधने कापिल्यपुरथी जडार नीडणा अने नीडणीने जया  
वासुदेव प्रमुख छन्दरो राजाओं जना तया पडोया तया जने तेमये ते

यति, समानयति, सत्कार्यं गतारु ॥, नान्यत्तैर्वा तद्विषयमात्रा प्रत्यकर  
 पृथक् - आसाम 'विपरः' तिरति । ॥ ॥ ननु ते वासुदेवमनुवा यमेव सत्का  
 ०=निजा ० जावनान्वैशेषागच्छन्ति, उक्तं य इति स्मृत्यार् प्रत्यगेदन्ति  
 प्रत्यरुह्य प्रत्येक ० स्मृतात्तरनिगद्य कुर्यात्, न-त स्तके मके आसामेऽनुपनि  
 शन्ति, अनुपरिद्वय न्यतेषु स्वल्पु आसामेषु-आसामेषु च यदनेषु च सतिपणा  
 उपरिष्टाश्च तथा 'सनुयद्वा' स यर्गिना. परिवर्तितवार्था ॥ ननु निर्गन्तव्यं 'नाड  
 एहि य' नाटोश्च 'उरगिज्जमाणा य' उपगीयमानाया, 'उरगिज्जमाणा य'

और पात्र से सत्कार किया-सन्मान किया । (सत्कारित्ता, सम्मानित्ता,  
 तैर्वा वासुदेवमनुस्मरण पक्षेय २ आवासे विपरः, तण्ण ते वासुदेव  
 पासुस्मया जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता इति  
 सधाहि तो पच्योरुहति, पच्योरुहत्ता पक्षेय सवायारनिवेस करेति )  
 सत्कार सन्मान करके उन्होंने उन नव वासुदेव प्रसुप्तों का प्रत्येक के  
 लिये पृथक् आवास-स्थान-दिया, । इसके पश्चात् वे वासुदेव प्रसुप्तराजा  
 जहा अपना २ स्थान नियत या-करा गये । वहा जाकर के अपने २  
 हाथियों पर से नीचे उतरे और उतर करके उन्होंने अपनी २ स्कन्धा  
 वार स्थापित कर दी-अर्थात् सैन्य को ठहरा दिया । ( करित्ता सए २  
 आवासे अणु० ) ठहरा कर फिर वे अपने २ आवासों में प्रविष्ट हुए  
 ( अणुपविसित्ता सएसु २ आवासेसु य आसणेषु य सयणेषु य सन्नि  
 सन्ना य सनुयद्वा य बह्वहि गव्वेहि य नाडएहि य उरगिज्जमाणा य

वासुदेव प्रमुष्ण डमरो राज्ञोऽनु अर्ध्या अने पाद्यथी सत्कार तेभञ्ज सन्मान  
 कथुं ( सत्कारित्ता सम्मानित्ता तैर्वा वासुदेवमनुस्मरण पक्षेय २ आवासे विपरः,  
 तण्ण ते वासुदेवपासुस्मया जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छइ, उवा  
 गच्छिता इति सधाहितो पच्योरुहति, पच्योरुहत्ता पक्षेय सवायारनिवेस  
 करेति ) सत्कार तेभञ्ज सन्मान करीने तेभण्ण वासुदेव प्रमुष्ण दरेडे दरेड  
 राजने जुहु जुहु आवास स्थान आण्यु त्थारपछा वासुदेव प्रमुष्ण राज्ञो  
 न्या पोतपोतानु आवास स्थान नञ्जा करवाभा आण्यु छतु त्या गया त्या  
 न्छने तेओ पोतपोताना डायीओ उपरथी नीचे उतर्या अने उतरीने तेओओ  
 पोतपोतानी स्कन्धावार-छावणी स्थापित करी ओटले के सनाने पडाव नाभ्ये  
 ( करित्ता सए २ आवासे अणु० ) छावणी नाभीने तेओ पोतपोताना आवास  
 स्थानमा प्रविष्ट थया ( अणुपविसित्ता सएसु २ आवासेसु य आसणेषु य सयणे  
 सु य सन्निसन्ना य सनुयद्वा य बह्वहि गव्वेहि य नाडएहि य



उपनृत्यमानाश्च गीत श्राव्यमाणाश्च, नृत्य द र्यमानाश्च विहरन्ति । ततः रुद्रपदो राजा प्राग्विध्यपुर नगरमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य विपुलम्-अशन स्वाद्य स्वाद्यम् उपन्दारयति, मन्थारयति, उपन्दार्य कौटुम्बिकपुरपान् ॥ ८ ॥ शब्दयित्वा एवम-गदीत-गच्छत र लु यय हे देवाः पुत्रियाः ! विपुलम्, अशन ५ स्वाद्य स्वाद्य सुरा च मन्त्र च मांसं च सीधु च प्रसन्ना च सीधुः प्रसन्ना च मदि विज्ञेये, तदा सुप्रहृष्टपुष्पवस्त्रा धमाल्यालङ्कार च वासुदेवप्रमुखाणा राजसत्त्व आवासेषु ' साहरह सहरत=उपनयत, तेऽपि कौटुम्बिकपुरपास्तथैव सहरन्ति

उवणच्चिज्जमाणा य विहरति तण्णं से दुवण राया कपिल्लपुर ॥ अणुपविमह, अणुपविमिस्ता विउल असण ४ उवक्खडावेह ) होकर के वे अपने अपने आवास स्थानों में आसनों पर एव विस्तार पर जाकर अच्छी तरह बैठ गये लेट गये । वहाँ लेटे हुए उनकी अने गधवोंने, अनेक नाट्यकारों ने स्तुति की-उनकी प्रशंसा के गीत गाए, नाटक दिखलाया । इसके बाद द्रुपद राजा कापिल्यपुर नगर के भीतर आये-वहाँ आकर के उन्होंने विपुलमात्रा में अशन, पान, स्वाद्य एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार तैयार करवाया-पकवाया । ( उवक्खडाविस्ता कोटुम्बिकपुरिसे सदावेह सदाविस्ता एव वयामी-(गच्छह णं तुमे देवाणु पिया ! विउल असण ४ सुर च मज्ज च सीधु च पसण्ण च सुप्रहृष्टपुष्पवस्त्र गधम-लङ्कार च वासुदेवप्रामोदखाण रायसहस्रमाण आवासे सु साहरह ) तैयारकरवा कर फिर उन्होंने कौटुम्बिक पुरों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवाः पुत्रियो तुमलोग जाओ और इस

उवणच्चिज्जमाणा य विहरति, तण्णं से दुवण राया कपिल्लपुर ॥ अणुप विमह अणुपविसिस्ता विउल असण ४ उवक्खडावेह) प्रवेशीने तेजो पोतपोताना आसने। उपर नागी रीते जैसी गया, अर्ज गया त्या सुध गयेला तेजोनी धणा ग वयोने, धणा नाट्यकारोने स्तुति करी, तेमनी प्रशंसा गीतो गाया अने नाटको लखव्या तारपछी द्रुपद राजा प्राग्विध्यपुर नगरमा आया त्या आवीने तेजोने पुष्पवस्त्र प्रमाणमा अशन, पान पात्र अने स्वाद्य ३ । याज जतने। आहार तैयार उगवडाव्यो ( उवक्खडाविस्ता कोटुम्बिकपुरिसे सदावेह सदाविस्ता एव वयामी गच्छह णं तुमे देवाणुपिया ! विउल असण ४ सुर च मज्ज च मांसं च सीधु च पसण्ण च सुप्रहृष्टपुष्पवस्त्रगधमहालङ्कार च वासु देवप्रामोदखाण रायसहस्रमाण आवासेसु साहरह) तैयार करवाने तेमने कौटुम्बिक पुरोने जैसी जैसी आवासीने तेजोने जैसी जैसी देवाः पुत्रियो । तमे

यति, समानयति, सत्कार्यं सत्कारं कृत्वा, समान्यं तेषां वासुदेवप्रसूत्यां प्र यकर  
 पृथक् २ आवास 'वियरइ' दितरति । ततः गतु ते वासुदेवप्रसूत्या यत्रैव गता  
 २=निजा २ आवासान्नत्रोपागच्छन्ति, उपागन्त्य दग्निस्कन्त्यान् पन्थयरोहन्ति  
 प्रत्ययस्य प्रत्येकरं स्कन्तासारनिवेशं कुर्यान्ति, दृत्वा स्वके स्वके जायमानेऽनुप्रवि-  
 शन्ति, अनुप्रविश्य स्वकेषु स्वक्षेषु जायसेषु-आमनेषु च यदनेषु च सन्निपन्ना  
 उपविष्टाश्च तथा 'सतुयद्वा' सत्प्रवर्तिताः परिवर्तिताश्चो र वद्वर्णिर्गन्त्रैश्च 'नाड  
 एहि य ' नाडैश्च ' उवगिज्जमाणा य ' उपगीयमाना य, ' उवगच्छिज्जमाणा य '

और पाद से सत्कार किया-सन्मान किया । (सत्कारित्ता, सम्मानित्ता,  
 तेसिं वासुदेवप्रसूत्याण पत्तेय २ आवासे वियरइ, तएण ते वासुदेव  
 प्रसूत्या जेणेय सया २ आवासा तेणेय उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तहि  
 खधाहिं तो पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता पत्तेय सयासारनिवेशं कुर्यान्ति )  
 सत्कार सन्मान करके उन्होंने उन सब वासुदेव प्रसूत्यों को प्रत्येक के  
 लिये पृथक् २ आवास-स्थान-दिया, । इसके पश्चात् वे वासुदेव प्रसूतराजा  
 जहा अपना २ स्थान नियत था-वहा गये । वहा जाकर के अपने २  
 हाथियों पर से नीचे उतरे और उतर करके उन्होंने अपनी २ स्कन्धा-  
 वार स्थापित कर दी-अर्थात् सैन्य को ठहरा दिया । ( करित्ता सए २  
 आवासे अणु० ) ठहरा कर फिर वे अपने २ आवासों में प्रविष्ट हुए  
 ( अणुप्रविसित्ता सएसु २ आवासेसु य आसणेषु य सयणेषु य सन्नि-  
 सन्ना य सतुयद्वा य वद्वहिं गच्छ्वेहि य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य

वासुदेव प्रभुञ्ज डण्डे राज्येणु अर्थात् अने पादथी सत्कार तेमञ्ज सन्मान  
 कथुं ( सत्कारित्ता सम्मानित्ता तेसिं वासुदेवप्रसूत्याण पत्तेय २ आवासे वियरइ,  
 तएण ते वासुदेवप्रसूत्या जेणेय सया २ आवासा तेणेय उवागच्छइ, उवा  
 गच्छित्ता हत्थिखधाहितो पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता पत्तेय सयासारनिवेशं  
 कुर्यान्ति ) सत्कार तेमञ्ज सन्मान करीने तेमण्णे वासुदेव प्रभुञ्ज दरेके दरेके  
 राजने णुडु णुडु आवास स्थान आण्यु त्थारपछो वासुदेव प्रभुञ्ज राज्ये  
 जया पोतपोतानु आवास स्थान नञ्ज करवामा आण्यु छतु त्या गया त्या  
 जधने तेओ पोतपोताना डायीओ उपरथी नीचे उतर्या अने उतरीने तेओओ  
 पोतपोतानी स्कन्धावार-छावणी स्थापित करी ओटले के सनाने पडाव नाञ्जे  
 ( करित्ता सए २ आवासे अणु० ) छावणी नाञ्जीने तेओ पोतपोताना आवास  
 स्थानमा प्रविष्ट थया ( अणुप्रविसित्ता सएसु २ आवासेसु य आसणेषु य सयणे  
 सु य सन्निसन्ना य सतुयद्वा य वद्वहिं गच्छ्वेहि य नाडएहि य



पविष्टा बहुभिर्गन्धर्वैर्यादृ नाट्यैश्चोपगीयमाना उपनृत्यमानाश्च विहरन्ति=  
आसते स्म इत्यर्थः ।

तत रत्न स मुण्डो राजा पूर्वापराहजालसमये कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति,  
शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु हे देवानुप्रियाः ! काम्पित्यपुरे नगरे शृङ्गा-  
टक यावत्-त्रिचतुश्चत्वर महापथयेषु वासुदेवप्रमुखाणां च राजमहस्राणामात्रा  
सेषु आवासस्थलीषु हस्तिस्त्रयसरगता महता २ शब्देन=उच्चैः स्वरेण यावद्  
उद्गोषयन्तः २ एव वदत-एव खलु हे देवानुप्रियाः । स्वये-आगामीनि द्वितीय

गधर्वों ने नाना प्रकार के स्तुत्यात्मक गीत गाये और नाट्यकारों ने  
नृत्य दिखलाये । ( तपण से दूधण राधा पुञ्जावर्णकालसमयमि कौटु-  
म्बिकपुरिसे सदावेष्ट, सदावित्ता एव वयासी, गच्छत ण तुमे देवाणुप्रिया ।  
कपिलपुरे सिघोटग जाव पहेसु वासुदेवप्रमुखाण य राय महस्मान्  
य आवासेसु हस्तिस्त्रयसरगता महता २ महेण जाव उग्घोसेमाणा २  
एव वदह, एव खलु देवाणुप्रिया । तल पाउ० दूधयस्म रण्णो धूयाण  
चुलणीण देवीण अत्तयाण वट्टजुणम्म भागिणीण दोवईए रायवरकन्नाए  
सयवर भविस्मइ ) इसके बाद दूध-राजा ने पूर्वापराह जाल के समय  
में कौटुम्बिक पुरुषों को बुलवाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे  
देवानु प्रियों ! तुमलोग हाथी पर चढ़कर काम्पित्यपुर नगर में जाओ  
और वहाँ शृङ्गाटक यावत् त्रिच चतुष्क चत्वर महापथ आदि मार्गों में  
जो वासुदेव प्रमुख राजा के आवासस्थान हैं उनके समीप बड़े जोर २

उपर शांतिपूर्वक जेभी गया तेमना मनो-विनोद भाटे गधर्वोंजे अनेक  
जातना स्तुत्या भद्र जीनो गाथा अने नाट्यकारोंजे नृत्य करी जाताव्या

( तपण से दूधण राधा पुञ्जावर्णकालसमयमि कौटुम्बिकपुरिसे सदावेष्ट,  
सदावित्ता, एव वयासी, गच्छत ण तुमे देवाणुप्रिया । कपिलपुरे सिघोटग जाव  
पहेसु वासुदेवप्रमुखाण य महता २ महेण जाव उग्घोसेमाणा २ एव वदह,  
एव खलु देवाणुप्रिया । तल पाउ० दूधयस्म रण्णो धूयाण चुलणीण देवीण  
अत्तयाण वट्टजुणम्म भागिणीण दोवईए रायवरकन्नाए सयवर भविस्मइ )

त्यारपछो उप राजाजे पूर्वापराह जालना समये जेटुणिउ पुइयेने  
जेताव्या अने जेलाहीने तेमने आ प्रभाजे उब्बु डे हे देवानुप्रियो ! तमे  
होके जानी उप० जेभीने काम्पित्यपुर नगरमा जाओ अने त्याना शृङ्गाटक  
यावत् त्रिच चतुष्क चत्वर महापथ वजेदे भागीमा-हे भागीनी पासे वासुदेव  
प्रमुख राजाजोना आवास घरा छे तेनी पाने भट्ट भोट साहे आजातनी

ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखास्तद् विपुलम्, असन पान ग्राघ स्वाघ यावत्  
प्रसन्ना च 'आसायमाणा' आस्तादन्तो विहरन्ति, अपि च खलु 'जिमिया'  
जिमिताः-भुक्तवन्तः, 'भुत्तुत्तरागया' शुकोत्तरागताः शुकोत्तर=भोजनानन्तरम्  
आगताः भुवतेत्यत्र भावे क्तः भोजनस्थानादासपनदेगे मुखप्रक्षालनार्थमागताः सन्  
'आयता' आचान्ताः-कृतचुल्लुरा, यावत्-सुखामनसरगताः=आगनपरे सुखो-

अशन, पान, ग्राघ स्वाघरूप चतुर्विध आहार को सुरा मद्य, मीधु और  
प्रसन मदिरा को और अनेक विध इन पुष्पों को वस्त्रों को गन्धमाल्य  
एव अलङ्कारों को वासुदेव प्रमुख राजसहस्रों के आवास स्थानों पर ले  
जाओ। (ते वि साहरति) राजा की आज्ञानुसार वे सब उन  
अशनादिवस्तुओं को वहा पर ले गये। (तएण ते वासुदेवपामु-  
क्खा त विउल असण ४ जाव पसन्न च आसायमाणा ४ विहरति)  
इसके बाद उन वासुदेव प्रमुख राजाओं ने उस आनीत विपुल  
अशनादिरूप प्रसन्ना मदिरा तरु की आहार की सामग्री को ग्राघा  
(जिमिया भुत्तुत्तरागया वि य ण समाणा जाव सुहामणवरगया वहहिं  
गधव्वेहिं जाव विहरति) खा पी कर जब वे निश्चिन्त हो चुके और  
मुख प्रक्षालन के लिये भोजन स्थान से उठकर दूसरे निकट स्थान पर  
आये-तब उन्होंने कुल्ला किया-और फिर सुन्दर अपने २ आसनों पर  
शांति पूर्वक आकर बैठ गये। इनके बैठते ही मनोविनोद के लिये

लौकिक लोभो अने आ अशन, पान, ग्राघ, स्वाघ रूप चार लतना आडा  
रने सुरा, मद्य, मास, मीधु अने प्रसन्न मदिराने अने धणी लतना आ  
पुष्पाने, वस्त्राने, गन्धमाल्य अने अलङ्काराने वासुदेव प्रमुख राजसहस्रोंना  
आवास स्थाने पहुँचाडे (ते वि साहरति) राजनी आज्ञा प्रमाणे तेओ  
अध्याये ते ग्राघ पदार्थाने राजओना आवास स्थाने पहुँचाडी दीधा (तएण  
ते वासुदेवपामुक्खा त विउल असण ४ जाव पसन्न च आसायमाणा ४ विहरति  
त्यारपणी ते वासुदेव प्रमुख राजओओ त्या पहुँचाडवाभा आवेला पुण्ण  
प्रमाणमा अशन वगेरेथी भाडीने प्रसन मदिरा सुधीना अधी लतना आडार  
सामग्री वगेरेमु भूष इत्थिपूर्वक पान डरुं

(जिमिया भुत्तुत्तरागया वि य ण समाणा आयता जाव सुहामणवरगया  
वहरिं गधव्वेहिं जाव विहरति)

जमी परिवारीने ल्यादे तेओ निश्चित थध चूक्या त्यारे तेओ भूष  
प्रक्षालन भाटे लोअन स्थानथी णिआ थधने जीअ पासैना त्या  
तेओओ डोगणा थया अने त्यारपणी तेओ हरी पोतये।





દિવસે પ્રાદુર્ભૂતપ્રભાતાયા રજ યા તેજસા ઝરતિ સૂર્યેઽમ્યદ્રતે દ્રુપદસ્ય રાણો  
 હૃદિતુઃ=પુત્ર્યા, ચુલન્યાદેવ્યા આત્મજાયા, ધૃષ્ટદ્યુમ્નસ્ય મગિન્યા દ્રૌપદ્યા રાજર-  
 કન્યાયા સ્વયવરો મગિન્યતિ, તત્=તત્કાલ રુદ્ધ દે દેવાનુપ્રિયા ! મૃગ દ્રુપદ  
 રાજાનુમુદ્ધતઃ રનાતા યાવત્-સર્ગલક્ષ્મીરિભૂપિતા-હસ્તિચ્ચ-ધરગતાઃ સર્કો-  
 રણમાલ્યદામ્ના છત્રેણ પ્રિયમાણેન શ્વેતવરચામરૈરદધૂગમાનિથ્ય યુક્તાઃ દયગ-  
 જરથમહામટકરેણ ચતુરદ્ધવલેન યાવત્ પરિક્ષિપ્તા=પરિવૃત્તા યત્રૈવ સ્વયવર-

સે ऐसी घोषणा करते हुए कहो-कि हे देवानुप्रिय ! कल नृयोदय होने  
 पर द्रुपद राजा की पुत्री चुलनी देवी की आत्मजा और धृष्टद्युम्न की  
 यहिन राजवर कन्या-द्रौपदी का स्वयवर होगा ( त त्वमेण देवानुप्रिया !  
 दुपय रायाण अणुगिण्हेमाणा ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखधवरगया  
 सकोरण्ट० सेयवर चामर० हय गयरह० महया भटचडगरेण जाव  
 परिविखत्ता जेणेव सयवर मडवे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता पत्तेयर  
 नामकिण्सु आसणेसु निसीयह २ दोवड रायकण्ण पडिवालेमाणा २  
 चिट्ठह ) इस लिये हे देवानुप्रियो ! आपलोग द्रुपदराजा के ऊपर कृपा  
 करके स्नान आदि से निवट कर एव समस्त अलंकारों से विभूषित  
 होकर जहाँ स्वयवर मंडप है वहाँ पधारे । आते समय हाथियों पर  
 बैठकर आवे । कोरण्ट पुष्पों की मालाओं से सुशोभित छत्र उस  
 समय आप सब के ऊपर तने हों और श्वेत सुन्दर चामर ऊपर ढोरे जा  
 रहे हों । हय, गज, रथ एव महाभटों का समूहरूप चतुरगदल आप

ઘોષણા કરેા કે હે દેવાનુપ્રિયો ! આવતી કાલે સવાર થતા દ્રુપદ રાજાની પુત્રી  
 ચુલની દેવીની આત્મજા અને ધૃષ્ટદ્યુમ્નની ગહેન રાજવર કન્યા દ્રૌપદીને  
 સ્વયવર થશે

(ત તુભેણ દેવાનુપ્રિયા ! દુવય રાયાણ અણુગિણ્હેમાણા ણ્હાયા જાવ વિભૂ  
 સિયા હત્થિચ્ચધવરગયા સર્કોરણ્ટ० સેયવરચામર० હય ગય રહ० મહયા મહચડ-  
 ગરેણ જાવ પરિવિખત્તા જેણેવ સયવરમડવે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા  
 પત્તેય નામકિણ્ણસુ આસણેસુ નિસીયહ ૨ દોવહ રાયકણ્ણ પડિવાલે માણા ૨ ચિટ્ઠહ)

એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો દ્રુપદ રાજા ઉપર મહેરબાની કરીને  
 સ્નાન વગેરેથી પરવારીને તથા મમસ્ત અલંકારોથી વિભૂષિત થઈને જ્યા  
 સ્વયવર મંડપ છે, ત્યા હાથીઓ ઉપર મવાર થઈને પધારો કોરંટ પુષ્પોની  
 માળાઓની શોભતુ છત્ર તે વખતે તમારા ઉપર તાણેલુ હોલુ બેઠાં અને  
 સફેદ ચમરો પણ તમારા ઉપર ઢોળાતા હોવા બેઠાં હાથી, રથ અને મહા  
 ભટોના સમૂહ રૂપ ચતુરગિણી સેના તમારી સાથે હોવી વર

( तएग से दूवए राया कोडु वियपुरिमे सदावेड, सदावित्ता एवं वयामी-  
गळडह ण तुळ्हे देशणुपिया ! सगरानडव आभियनमज्जिओवलित्त सुगयवर  
सधिय पचवणपुष्कळ जाययारकलिप काळागुरुपवरकुदरुक्कतुरुक्क जाव सयवहि०



धूपदक्षमानमघमघायमानमन्योदधूताभिराम, तत्र कालागुरु' कृष्णागुरु, प्रवर-  
कुन्दुरु' - चीडानामको गन्धद्रव्यविशेषः, तुरुष्क च सितरु' प्रथम गन्धद्रव्यसंयोग  
जन इति द्वन्द्व', यथा-एतत्प्रमन्त्रं यो धूपधनस्य दायमानस्य च सुरभिर्मयमया  
यमानः-अतिशयवान्, मन्य उद्भूतस्तेनाभिरामो रमणीयः स तथा त तथा-  
ग यानि पूरा ग यानि-ग यन्मन्त्रोद्दिता तद्भूत-वत्सलता यो रम्यातिशयात् तथा-  
' मचाइमचकलिय ' मन्त्रातिमन्त्रमलित कुरत, कृत्वा वासुदेवममुत्वाणा नदूनां

करेह, करित्ता वासुदेव वासुदेवाग बहूग रायसहस्ताग पत्तेय २ नाम  
काइ आसगाइ अत्युपपन्न युगाइ रएह २ एवमाणत्ति पचवपिगह )  
इसके बाद धूपदराजा न कौटुम्भिक पुरुषा को बुझाया और बुलाकर  
उनसे ऐसा कहा-हे देवानुमित्रो ! तुम लोग जाओ-और स्वयंवर मंडप  
को आसित्त कर-जलसिंचन से नार्द्र करो, समार्जित करो-  
कचर आदि को उससे बाहिर कर उसे साफ करो एवं उपलिप्त  
करो मित्र तथा गावर से उसे लोपो । सुगन्धरगन्धिन करो उसमें-  
अगुरु, गुग्गुलु, कपूर आदि को जलाकर उनकी गन्ध से उसे सुगन्ध  
युक्त बनाओ पचवर्ग के पुष्पा के पुज उसमें जगह २ रखो । कृष्णा-  
गुरु प्रवर कुन्दरुष्क, तुरुष्क शोभान इनके चूर्ण को वहाँ आग्न में  
खूब जलाकर उनके गन्ध से उसे बहुत ही अधिक मनोभिराम  
बनाओ उपादा तथा-उस ऐसा करदा कि जिससे ऐसा ज्ञान हो कि  
यह एक सुगन्धित द्रव्य को वर्तिका है । वहाँ मचा के ऊपर मचों को

भूप मचाइमचकलिय करेह, करित्ता वासुदेव वासुदेवाग बहूग रायसहस्ताग पत्तेय  
२ नामकाइ आसगाइ अत्युपपन्न युगाइ रएह २ एवमाणत्ति पचवपिगह )

त्यारपणी ६५० राज्ञे ओटुमिक पुश्चोने जेलावा अने जेलावीने  
कहु के छे देवानुमित्रो । तमे लोक ज्ञेओ अने स्वयंवर मंडपने आनिक्त  
करा-पाणी छोटो, समार्जित करो, कचरा वगैरे साइ करो, अने उपलिप्त  
करो, ओटले के माटी तेमज छाणुथी लीपो सुगन्धर गन्धिन करो ओटले के  
ते स्थाने अगुरु, गुग्गुलु, कपूर वगैरेनो धूप करीने तेनी सुगन्धथी ते स्थानने  
सुवासित करो पचवर्षना पुष्पपुष्पना समूहो स्थाने स्थाने जोडवने तमे मंडपनी  
शोभाभा अलिपृद्धि करो कृष्णागुरु, प्रवर, कुन्दरुष्क, तुरुष्क, लोणान आ  
पाधा पहाथोना यूर्णने अग्निमा नापीने ते स्थानने सुगन्धथी पूजव रम  
णीय जनावी हो ते स्थानने तमे ओवु मन्त्र सुगन्धमय जना । ते ते जेथी  
ते सुगन्धित द्रव्योनी वर्तिका ( अगस्त्य ) जेवु लागे त

राजमहत्ताणा प्रत्येक २ नामाङ्कितान्यासनानि ' अत्युपपञ्चयुगाड ' आस्तुत  
प्रत्यवस्तृतानि=आच्छादित प्रत्याच्छादितानि ' रण्ड ' रचयत, रचयित्वा एतामा  
ज्ञप्तिं प्रत्यर्पयत, तेऽपि=कौटुम्भिकपुरुषाः, यावत् प्रत्यर्पयन्ति । ' तएण ते '  
वासुदेवप्रभुत्वाः बहुमहत्त्वमख्यकाराजान ' कठ ' कल्पे प्रादुर्भूतप्रमानाया रजन्वा  
यावन् तेजसा ज्वरति मूर्धञ्च्युग्गते स्नाता यावत् सर्वालकारविभूषिता हस्ति-  
रक्तवरागता सकोरटमाल्यदाम्ना ठोग त्रियमाणेन चेतसरचामररुद्रग्रयमानैश्च  
उक्ता ह्य गज-यावत्-रणपदानिममूहेन परिवृता सर्वद्रवां यावत् ' शङ्खगणपट  
हादीनां रवेण यत्रेन स्थाने स्वयमरण्डपस्तुगेरोगागच्छन्ति, उवागत्यानुपविशन्ति,  
अनुपविश्य प्रत्येक २ ' नामकिण्डु ' नामाङ्कितेषु=स्वरचनामात्रस्युक्तेषु भावनेषु  
निपीदन्ति=उपनिशन्ति, निपय द्रौपदी राजवरकन्या ' पडिवालेमाणा ' प्रति-  
पालयन्त =प्रतीक्षमाणास्तिष्ठन्ति ।

रखो । उन पर वासुदेव प्रभुत्व राजाओं के प्रत्येक के नाम क आसनो  
को आस्तुत-शुभवस्त्र से ढककर प्रत्यवस्तुत-और छितीव शुभ्रवस्त्र से  
आच्छादित कर रखो । रख कर फिर हमें पीछे इस सब कार्य के समाप्त  
होने की लखर दो । ( ते वि जाव पञ्चपिणति ) इस प्रकार राजा की  
आज्ञानुसार उन कौटुम्भिक पुरुषों ने सब कार्य उचित रूप में करके  
पीछे राजा को " सब कार्य आज्ञानुसार यथोचित हो चुका है " ऐसी  
खबर करदी । ( तएण ते वासुदेववासुदेवा वहवे रायसहस्सा कल्ल  
पाउ० ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखधवरगया सकोरट० सेयवर-  
चामरार्हि ह्य गय जाव परिवुडा सच्चिड्डीए जाव रवेण जेणेव सयवरे  
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अनुपविसति, अनुपविसित्ता पत्तेय  
नामकिण्डु आसणेसु निसीयति, दोवइ रायवरकण्ण पडिवालेमाणा २

मथोनी गोडवणु करे । त्या तमे वासुदेव प्रभुत्व हरके हरके राजना नामथी  
अदित थयेवा आसनोने आस्तुत-स्वच्छ वस्त्रथी ढाडीने, प्रत्यावस्तुत अने  
भीम स्वच्छ वस्त्रथी ढाडे । आ णधु काम पतावीने तमे अभने णणर आपो  
( ते वि जाव पञ्चपिणति ) आ गीते राजनी आशा मालणीने ते कौटुम्भिक  
पुरुषोने ते मुज्जम णधु काम पतावी दीधु अने त्यारपजी ' तमारी आशा  
मुज्जम काम णधु पती जयु छे ' ओरी णणर राजनी पासो पडोयाडी

( तएण ते वासुदेववासुदेवा वहवे रायसहस्सा कल्ल पाउ० ण्हाया जाव  
विभूसिया हत्थिखधवरगया सकोरट० सेयवरचामरार्हि ह्य गय जाव परिवुडा  
सच्चिड्डीए जाव रवेण जेणेव सयवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अनुपवि-  
सति, अनुपविसित्ता पत्तेय नामकिण्डु आसणेसु निसीयति, दोवइ रायवरकण्ण

ततः सख 'पट्ट' पाण्डु नामको राजा 'कल' प्रत्य-मात. काछे स्नातो  
यावत् सर्वाङ्गारविभूषितो दस्तिस्वन्वरगतः सकोरण्टमात्प्रदाभ्ना छत्रेण प्रिय  
माणेन श्वेतरचामरैरुद्धूयमानेन युक्तो हयगजरथपदातिनमूहेन परित्त. सर्व-  
द्वर्षा यावत्-रवेण काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य मध्यमयेन मयेभूत्या निर्गच्छति,  
निर्गत्य यत्रैव स्वयंरमण्डपो यत्रैव वासुदेवप्रमुखा बहुनदस्रसरयका राजानस्त-  
र्जवोपागच्छति, उपागत्य तेषां वासुदेवप्रमुखाणां करतल्यग्नितृहीतदशनस

चिह्नित ) इस के बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा दूसरे दिन जब  
रात्रि समाप्त हो चुकी प्रातः काल हो गया-सूर्य उदित हो चुका तब  
स्नान यावत् समस्त अलकारों से विभूषित होकर, हाथियों पर चढ़े  
हुए धियमाण वोरट पुष्पों की माला से विराजित छत्र से युक्त होते  
हुए उद्धूयमान श्वेन वरचामरो से वीज्यमान होते हुए एवं हय, गज  
यावत् रथ पदाति समूह से परिवृत्त होते हुए अपनी राज विभूति के  
अनुसार यावत् शय्य पणव पट्ट आदि के साथ २ जरा वह स्वयंवर  
मंडप धा-वही आये। वहा आकर वे सब उसके भीतर प्रविष्ट हुए।  
प्रविष्ट होकर वे प्रत्येक जन अपने २ नाम से अग्नि आसनों पर पृथक्  
२ बैठ गये और राजवर कन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करने लगे। (तएव  
से पट्टु राया कल्ल पहाण जाय विभूसिण सकारट० हयगय० कपिल्लपुर  
मज्झमज्झेण निर्गच्छति-जेणेव स्वयंवरमंडवे जेगेव वासुदेव पातु  
अग्रा वहवे रायमहस्सा तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता तेमि वासुदेव  
पट्टियालेमाणा २ चिह्नित )

त्यारपछी वासुदेव प्रमुख हुनरो राजाओ जीवत दिवसे न्यारे रात्रि  
पसार थछ गछ अने सवार थता सूर्य उदय पाभ्यो त्यारे स्नान वगेरेथी  
परवारीने पोताना शरीरने अघा आभूषणोथी शय्यगारीने, हाथोओ उपर  
शवार थ'ने, सुगंधित केरट पुष्पोनी भाजाओथी शोलिन अने छत्रथी युक्त  
थछ उत्तम श्वेत आभरोथी वीज्यमान थता तेमज घोडा, हाथी यावत् रथ  
पदाति समूहथी परिवृत्त थता पोताना राजन वैलव अनुसार यावत् शय्य  
पणव पट्ट वगेरे वासुदेव साथे नरा स्वयंवर मंडप हुतो त्या गया  
त्या नछने तेओ प्रविष्ट थता अने प्रविष्ट थछने तेओ पोत  
पोताना न ि अगने उपर जेभी गया अने राजवर कन्या  
द्रौपदीनी

जाय विभूसिए हतिखधरगए सकी  
पामुक्खा वहवे रायमहस्सा तेणेव



शिर आदत्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयेन विजयेन वर्धयित्वा कृष्णस्य वासुदेवस्य  
श्वेतवर्चामरं गृहीत्वा 'उदवीयमाणे' उपवीजयन् चामराद्धननेन सेवमान  
स्तिष्ठति ॥ सू० २१ ॥

पाशुपत्याण करयलवद्धावित्ता कृष्णस्य वासुदेवस्य सेववरचामर गङ्गाय  
उदवीयमाणे चिह्नति) इस के बाद पाशु नामक राजा प्रातः काल स्नान  
से निवृत्त कर और समस्त अलङ्कारों से विभूषित होकर अपने पट्ट  
गजराज पर चढ़ कर कापिल्य पुर नगर के बीच से होते हुए उस स्व-  
यवर मंडप में आये। जत्र ये गजराज पर चढ़े हुए आरहे थे उस समय  
इन के ऊपर कोरट पुष्पों की माला से विरजित छत्र, छत्रधारियों ने  
तान रखा था। चामर ढोरने वाले शुभ्र चामर ढोर रहे थे। हय, गज,  
रथ एक पदादि समूहरूप चतुरगिणी सेना इनके साथ चल रही थी।  
राजसी ढाटगाट से ये सुसज्जित थे। विविध राजे साथ में प्रजते हुए-  
आरहे थे। मंडप में आकर ये जहां वासुदेव प्रमुख हजारों राजा बैठे  
हुए थे-बहा गये। बहा जाकर उन्होंने उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं  
को दोनों हाथ जोड़ कर बड़ी नम्रता के साथ नमस्कार किया। जय  
विजय शब्दों द्वारा उन्हें बधाई दी। बधाई देकर फिर ये कृष्ण वासुदेव  
के ऊपर श्वेतचामर लेकर ढोरते हुए बहा बैठ गये ॥ सू० २० ॥

उवागच्छद्, उवागच्छित्ता तेमि वासुदेवपाशुपत्याण करयलवद्धावित्ता कृष्णस्य  
वासुदेवस्य सेववरचामर गङ्गाय उदवीयमाणे चिह्नति)

त्यारपछी पाशु नामक राजा सवारे स्नानधी परवागीने समस्त अलङ्का-  
रधी पोताना सरीरने शङ्खगागीने अने पोताना भुज्य गजराज उपर सवार  
थछने कापिल्यपुर नगरनी वन्द्येटी पमार थजिने स्वयवर मंडपमा आव्या  
ब्यारे तेओ गजराज उपर जेभीने आवता छता त्यारे डोऱट पुष्पोनी भाणा  
ओधी शोभित छत्र छत्रधारीओओ ताणेतु छतु आमर ढोरनाराओ श्वेत  
आमरे ढोणी रह्या छता, घोडा, छाथी, रथ अने पदाति समूह रूप चतुरगिणी  
सेना तेमनी साथे साथे आली ग्ही छती राजमा हाथी तेओ सुसज्जित  
छता, अनेक नतना वाज्यओ वागी रह्या छता मंडपमा आवीने तेओ ब्या  
वासुदेव प्रमुख छजरे राजओ जेठेला छता त्या गया ब्या वासुदेव प्रमुख  
राजओ जेठेला छता त्या तेमनी पामे जेने तओओ वासुदेव प्रमुख सर्व  
राजओने भुज्य न नम्रपणे जने छाथ जेडीने नमस्कार क्यो ब्य विजय  
शब्दोधी तेओने अलिनहित क्यो अलिनहित क्यो जाह तेओ कृष्ण वासु-  
देवनी उपर श्वेत आमर ढोणता त्या जेसी गया ॥ सूत्र २० ॥

ततः सल्लु 'पडुए' पाण्डु नामको राजा 'कल्लु' कल्ले-पाण. काले स्नातो यावत् सर्वालङ्कारविभूषितो हस्तिस्त्रयपरगतः सकोरष्टमाल्यदाम्ना श्वेन त्रियमाणेन श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैश्च युक्तो हयगजरथपदातिनमूढेन परिवृतः सर्वद्वर्षा यावत्-रथेण काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य मध्यमयेन मयेभूत्वा निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव सयवरमण्डपो यत्रैव वासुदेवप्रमुखा बहुनहस्यसंयक्ता राजानस्त-त्रैवोपागच्छति, उपागत्य तेषां वासुदेवप्रमुखाणां करतलपरिगृहीतशनस

चिह्नति) इस के बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा दूसरे दिन जब रात्रि समाप्त हो चुकी प्रातः काल हो गया-सूर्य उदित हो चुका तब स्नान यावत् समस्त अलंकारों से विभूषित होकर, हाथियों पर चढ़े हुए धियमाण कोरट पुष्पों की माला से विराजित छत्र से युक्त होते हुए उद्धूयमान श्वेत वरचामरों से वीज्यमान होते हुए एव हय, गज यावत् रथ पदाति समूह से परिवृत्त होते हुए अपनी राज विभूति के अनुसार यावत् शय्य पणव पट्ट आदि के साथ २ जहा वह सयवर मंडप था-वही आये। वहा आकर वे सब उसके भीतर प्रविष्ट हुए। प्रविष्ट होकर वे प्रत्येक जन अपने २ नाम से अक्षित आसनों पर पृथक् २ बैठ गये और राजवर कन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करने लगे। (तएण से पडुए राया कल्लु ण्हाण जाव विभूसिए सकारट्ठं हयगयं कपिल्लपुर मज्झमज्झेण निग्गच्छति-जेणेव सयवरमण्डवे जेणेव वासुदेव पाणु कत्वा बह्वे रायमहस्सा तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता तेनि वासुदेव

पडिवालेमाणा २ चिह्नति)

त्यारपछी वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं की २ दिवसे न्याये रात्रि भसार थर्ध गर्ध अने सवार थता सूय उदय पाभ्यो त्यारे स्नान वजेरेथी परवारीने पोताना शरीरने भधा आलूषणोथी शणुगारीने, हाथीओ उपर सवार थ'ने, सुगंधित कोरट पुष्पोनी भाणाओथी शोसित अने छत्रथी युक्त थर्ध उत्तम श्वेत आमरोथी वीज्यमान थता तेभज घोडा, हाथी यावत् रथ पदाति समूहथी परिवृत थता पोताना राजन पैलव अनुसार यावत् शय्य पणव पट्ट वजेरे वाजओनी साथे नना सयवर मंडप हुतो त्या गया त्या नधने तेओ भधा मंडपमा प्रविष्ट थना अने प्रविष्ट थने तेओ पोत पोताना नामाक्षित जुद्ध जुद्ध गाभने उर भेमी गया अने राजवर कन्या द्रौपदीनी प्रतीक्षा करवा लाग्या

(तएण से पडुए राया कल्लु ण्हाण जाव विभूसिए हस्तिस्त्रयपरगतः सकोरष्टमाल्यदाम्ना श्वेन त्रियमाणेन सयवरमण्डवे जेणेव वासुदेव पाणु कत्वा बह्वे



शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयेन विजयेन वर्धयित्वा कृष्णस्य वासुदेवस्य  
श्वेतवर्चामरं गृहीत्वा 'उपवीयमाणे' उपवीजयन् चामराद्धननेन सेवमान  
स्तिष्ठति ॥ सू० २१ ॥

पामुखाणां करयलवद्धावित्ता वण्डरस वासुदेवरस सेववरचामर गदाय  
उपवीयमाणे चिह्नि (इस के बाद पांडु नामक राजा प्रातः काल स्नान  
से निवृत्त कर और समस्त अलङ्कारों से विभूषित होकर अपने पट्ट  
गजराज पर चढ़ कर कांपिल्य पुर नगर के बीच से होते हुए उस स्व-  
यवर मंडप में आये। जब ये गजराज पर चढ़े हुए आ रहे थे उस समय  
उन के ऊपर कोरट पुष्पों की माला से विरजित छत्र, छत्रधारियों ने  
तान रखा था। चामर ढोरने वाले शुभ्र चामर ढोर रहे थे। हय, गज,  
रथ एक पदादि समूह रूप चतुरगिणी सेना उनके साथ चल रही थी।  
राजसी ढाटगाट से ये सुसज्जित थे। विविध राजे साथ में वजते हुए-  
आ रहे थे। मंडप में आकर ये जहां वासुदेव प्रमुख हजारों राजा बैठे  
हुए थे-वहां गये। जहां जाकर उन्होंने उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं  
को दोनों हाथ जोड़ कर बड़ी नम्रता के साथ नमस्कार किया। जब  
विजय शब्दों द्वारा उन्हें बगई दी। बगई देकर फिर ये कृष्ण वासुदेव  
के ऊपर श्वेतचामर लेकर ढोरते हुए वहां बैठ गये ॥ सू० २० ॥

उवागच्छ, उवागच्छित्ता तैर्मि वासुदेवपामुखाणां करयलवद्धावित्ता वण्डरस  
वासुदेवरस सेववरचामर गदाय उपवीयमाणे चिह्नि )

त्यारपछी पांडु नामक राजा सवारे स्नानथी परवारीने समस्त अलङ्का-  
रीची पोताना सरीरने शष्पगारीने अने पोताना शुभ्र गजराज उपर सवार  
थछे कांपिल्यपुर नगरनी वन्देची पमार थजिने स्वयंवर मंडपमा आव्या  
ज्यारे तेजो गजराज उपर जेमीने आवता हुता त्यारे डोट पुष्पेनी भाणा  
ओधी शोभित छत्र छत्रवागीजोओ ताणेतु हुतु चामर ढोरनाराओ श्वेत  
चामरो ढोणी रक्षा हुता, घोडा, हाथी, हय अने पदाति समूह उप चतुरगिणी  
सेना तेमनी आवे साथे आली गही हुती गजराज हाठ्यी तेजो सुसज्जित  
हुता, अनेक नतना वाजोओ वागी गद्या हुता मंडपमा आवीने तेजो ज्यो  
वासुदेव प्रमुख हुजारे राजाओ जेठेला हुता त्या गया ज्यो वासुदेव प्रमुख  
राजाओ जेठेला हुता त्या तेमनी पाओ जधने तजोओ वासुदेव प्रमुख सर्व  
राजाओने भूषण न नम्रपणे अने हाथ जेडीने नमस्कार कया जय विजय  
शब्दोची तेजोने अलिनहित कया अलिनहित ज्यां जाह तेजो कृष्ण वासु  
देवनी उपर श्वेत चामर ढोरता त्या जेसी गया ॥ सूत्र २० ॥

ततः सल्लु 'पट्ट' पाण्डु नामको राजा 'कल' गन्ध-मात्र माते स्नातो  
यावत् सर्वाङ्गद्वारविभूषितो दस्तिस्त्रयपरगतः सकोरष्टमाद्यदाम्ना मन्त्रेण त्रि-  
माणेन श्वेतरचामरैरुद्धूयमानेन युक्ता हयगजस्थपदातिनमूढेन परिवृतः सर्व  
द्वर्चा यावत्-स्त्रेण काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य मध्यमयेन मन्त्रेभूया निर्गच्छति,  
निर्गत्य यत्रैव सयवरमण्डपो यत्रैव वासुदेवप्रभुत्वा बहुनदस्यस्यका राजानस्त-  
त्रैवोपागच्छति, उपागत्य तेषां वासुदेवप्रभुत्वा नरतत्त्वमिष्टदीप्तशतस्य

चिह्नति) इस के बाद वे वासुदेव प्रभुत्व हजारों राजा दूसरे दिन जब  
रात्रि समाप्त हो चुकी प्रातः काल हो गया-सूर्य उदित हो चुका तब  
स्नान यावत् समस्त अलङ्कारों से विभूषित होकर, हाथियों पर चढ़े  
हुए धियमाण वीरट पुष्पों की माला से विराजित छत्र से युक्त होते  
हुए उद्धूयमान श्वेन चरचामरों से वीज्यमान होते हुए एवं हय, गज  
यावत् रथ पदाति समूह से परिवृत्त होते हुए अपनी राज विभूति के  
अनुसार यावत् शय्य पणव पट्ट आदि के साथ २ जरा वह सयवर  
मण्डप था-वहाँ आये। वहाँ आकर वे सब उसके भीतर प्रविष्ट हुए।  
प्रविष्ट होकर वे प्रत्येक जन अपने २ नाम से अकिन आसनो पर पृथक्  
२ बैठ गये और राजवर कन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करने लगे। (तएव  
से पट्टे राया कल्ल ण्हाण जाव विभूसिए सकारटं० हयगय० कपिल्लपुर  
मज्झमज्झेण निगच्छति-जेणेव सयवरमण्डवे जेणेव वासुदेव पातु  
क्खवा बहवे रायमहस्सा तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता तेसिं वासुदेव  
पडिवालेमाणा २ चिह्नति )

त्यारपणी वासुदेव प्रभुत्व हुजरो राज्ञो जीन द्विसे न्यारे गत्रि  
पसार थधं गधं अने सवार थता सूर्य उदय पात्र्यो त्यारे स्नान वगेरेथी  
परवारीने पोताना शरीरने जधा आभूषणोथी शय्यगारीने, हाथीओ उपर  
सवार थ'ने, सुगधित डेरट पुष्पोनी माणाओथी शोलित अने छत्रथी युक्त  
थधं उत्तम श्वेत आभरेथी वीज्यमान थता तेभय घोडा, हाथी यावत् रथ  
पदाति समूहथी परिवृत थता पोताना राजन वैलव अनुसार यावत् शय्य  
पणव पण्ड वगेरे वाजओनी साथे जना सयवर मंडप डतो त्या जना  
त्या जधने तेओ जधा मंडपमा प्रविष्ट थथा अने प्रविष्ट थधने तेओ पोत  
पोताना नामाडित जुढ जुढ आसने उपर जेभी गया अने राजवर कन्या  
द्रौपदीनी प्रतीक्षा करवा लाज्या

( तएव से पट्टे राया कल्ल ण्हाण जाव विभूसिए दस्तिस्त्रयपरगत सकोर  
स्टं० हय गय० सयवरमण्डवे जेणेव वासुदेव पातुक्खवा तेणेव

વસ્ત્રાણિ પરિધાય ' જિણપટિમાણ અચ્છળં કરેડ ' જિનપ્રતિમાના, કામદેવ પ્રતિ-  
માનામર્ચન કરોતિ વિવાહવિધિ નિર્વિધન સપન્નાર્થ મિતિ ભાવઃ ' કરિત્તા ' કૃત્વા  
' જેણેવ અતેરે તેણેવ ઉવાગચ્છડ ' યદ્રેવાન્તપુર તત્રૈવો- પાગચ્છતિ ॥ સૂ. ૨૧ ॥

### દ્રૌપદીચર્ચા

યત્તુ—“ જિણપટિમાણ અચ્છળં કરેડ ” ઇતિ પાઠ સમાશ્રિત્ય ભગવતોઽર્હતઃ  
પૂજન જૈનધર્માનુયાયિભિઃ કર્તવ્યમિત્યાહુસ્તમિત્યાત્વવિલસિતમ્, અસ્ય પાઠસ્ય  
ચરિતાનુવાદરૂપત્વેન વિધાયકત્વાસમ્ભવાત્ । વિધિવાચ્ય દિ જિનાજ્ઞાયા વોધક  
ત્વેન વિધાયકં ભવતિ, યથા—ભગવતા વિધેયતયોપદિષ્ટ પદ્ધતિવાચ્યક ચતુર્વિધ-  
જિન પ્રતિમા કા કામદેવ કી પ્રતિમા કા નિર્વિધન વિવાહકાર્ય કે લિયે  
અર્ચન કરતી હૈ અર્ચન કર કે ફિર વહ ( જેણેવ અતે રે તેણેવ ઉવા-  
ગચ્છડ ) જહાં અત પુર થા વહા ચલી ગઈ ॥ સૂ. ૨૧ ॥

### દ્રૌપદી ચર્ચા

જો “જિણપટિમાણ અચ્છળં કરેડ” ઇસ પાઠકા આશ્રય લેકર પ્રતિ-  
માપૂજન કી ઉપયોગિતા કહતે હુએ યહ કહતે હૈ, કિ “ અર્હત ભગવાન  
કી પ્રતિમા કી પૂજા જૈનધર્મ કે પાલકો કો કરના ચાહિયે” યહ ઉનકા  
કથન મિત્યાત્વ કા વિલાસ હી હૈ । વયો કિ યહ “ જિનપટિમાણ ”  
ઇત્યાદિ વાક્ય ચરિત કા હી અનુવાદક હૈ—અતઃ એસે વાક્ય કિસી  
મુખ્ય અર્થ કે વિધાયક નહોં હુઆ કરતે હૈ । ચારિતાનુવાદ સે તો મિર્ફ  
જિસ વ્યક્તિ ને જો ૨ આચરણ કિયા હૈ ઉસકા હી વોધ હોતા હૈ । શાસ્ત્ર  
વિહિત માર્ગકે નિર્દેશક વિધિવાક્ય હુઆ કરતે હૈ—કયોં કિ કિ એસે  
વાક્ય જિન ભગવાન કી આજ્ઞાકે વિધાયક હોતે હૈ । જિસ પ્રકાર પદ

પ્રતિમાનુ કામદેવની પ્રતિમાનુ નિર્વિધને વિવાહકાર્ય સપન્ન થવાના હેતુથી  
અર્ચન કરે છે, અર્ચન કરીને ( જેણેવ અતેરે તેણેવ ઉવાગચ્છડ )  
બધા રણુવાસ છે તે તરફ જતી રહી ॥ સૂત્ર ૨૧ ॥

### દ્રૌપદી અર્થ

કેટલાક “જિણપટિમાણ અચ્છળં કરેડ” આ પાઠના આધારે પ્રતિમા પૂજ-  
નની ઉપયોગિતા મિદ્ધ કરતા આ પ્રમાણે કહે છે કે “ અર્હત ભગવાનની  
પ્રતિમાનુ પૂજન જૈનધર્મ પાલન કરનારાઓએ કરવું જોઈએ ” તેમનુ આ  
કથન સત્યથી બહુ દૂર છે એટલે કે આ વાત સાવ અસત્યથી પૂર્ણ છે કેમકે  
આ “ જિનપટિમાણ ” વગેરે વાક્ય અગ્નિના જ અનુવાદક છે એટલા માટે  
એવા વચનો કોઈ વિશેષ અથને અપદ્ધ કરનારા હોતા નથી ચરિતાનુવાદથી  
તો ફક્ત જે માણ્યે જે તે આચરણ કર્યું છે, ફક્ત તેનુ જ જ્ઞાન થાય તેમ  
છે શાસ્ત્રવિહિત માર્ગને અતાવનારા તો વિધિ વાક્યો જ થાય છે જેવી રીતે



मूलम्—तएण सा दोवइ रायवरकन्ना जेणेव मज्जणघरे  
तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पहाया कयवलिकम्मा कय-  
कोउयमगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेमाइ मंगल्लाइ वत्थाइ  
पवरपरिहिया जिणपडिमाण अच्चण करेइ, करित्ता जेणेव  
अंतेउरे तेणेव उवागच्छइ ॥ सू० २१ ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर सा द्रौपदी राजवरकन्या  
यत्रैव मज्जनगृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्नाता ‘कयवलिकम्मा’ कृतवलि-  
कर्मो अन्नादिषु वायसादिप्राणिनां सविभागो वलिकर्म तन् कृतं यथा सा तथा  
कृतवौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता ‘सुद्धप्पावेमाइ’ शुद्धप्रवेश्यानि शुद्धानि स्वच्छानि  
प्रवेश्यानि—सभाया प्रवेष्टुं योग्यानि, यत्परिधानेन सभाया लोकाः प्रवेष्टुमर्हन्ती  
त्यर्थः, मङ्गलानि=शुभानि वस्त्राणि ‘पवरपरिहिय’ प्रवरपरितृप्ता—प्रवरविधिना  
प्रवरेण शोभाकारेण विधिना परिहिता=परिधानेन धृतवती अर्पित्यात् वर्त्तरिक्तः,

‘तएण सा दोवइ रायवर कन्ना’ इत्यादि ॥

टीका २—(तएण) इस के बाद (सा दोवइ रायवर कन्ना) वह राजवर  
कन्या द्रौपदी (जेणेव मज्जणघरे) जहां स्नान घर था (तेणेव उवागच्छइ)  
उस ओर गई (उवागच्छित्ता पहाया कयवलिकम्मा कयकोउयमगल  
पायच्छित्ता) वहां जाकर २ उसने स्नानघरमें स्नान किया, वतार कर फिर  
उसने कारु पक्षि आदि को अन्नोदि का भाग देने रूप वलि कर्म किया  
कौतुक मंगल प्रायश्चित्त किये । (सुद्धप्पावेमाइ मंगल्लाइ वत्थाइ पवर  
परिहिया) सभा में प्रवेश के योग्य ५ शुद्ध स्वच्छ मांगलिक वस्त्र  
अच्छी तरह विधि के अनुसार पहिरी हुई (जिणपडिमाण अच्चण करेइ)

‘तएण सा दोवइरायवरकन्ना’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्य २५छी (सा दोवइ रायवरकन्ना) ते राजवर कन्या द्रौपदी  
(जेणेव मज्जणघरे) जना स्नानघर छतु (तेणेव उवागच्छइ) त्या गर्ह  
(उवागच्छित्ता पहाया कयवलिकम्मा कय कोउयमगलपायच्छित्ता) त्या जधने  
तेणे स्नानघरमा स्नान कर्युं स्नान करी पाइ तेणे कागडा वगेर पक्षीओने  
अन्न वगेरेने भाग अर्पिने वलिकर्म कर्युं—कौतुक मंगल प्रायश्चित्त कर्युं  
(सुद्धप्पावेमाइ मंगल्लाइ वत्थाइ पवरपरिहिया मज्जणधराओ पडिनिक्खमइ)  
सभाया प्रवेशया योग्य स्वच्छ मांगलिक वस्त्रो तेणे सरभ रीते पडेया,  
त्या २५छी ते स्नानघरथी पडाइ नीकणी (जिणपडिमाण अच्चण करेइ) ॥ २१ ॥

વસ્ત્રાણિ પરિધાય ' જિણપટિમાણ અચ્છણં કરેહ ' જિનપ્રતિમાના, કામદેવ પ્રતિ-  
માનામર્ચન કરોતિ વિવાહવિધિ નિર્વિધ્ન સપન્નાર્થ મિતિ ભાવઃ ' કરિત્તા ' કૃત્વા  
' જેણેવ અતેઉરે તેણેવ ઉવાગચ્છહ ' યત્રૈવાતઃપુર તત્રૈવો- પાગચ્છતિ ॥સૂ૦૨૧॥

### દ્રૌપદીચર્ચા

યત્તુ—“ જિણપટિમાણ અચ્છણ કરેહ ” ઇતિ પાઠ સમાશ્રિત્ય ભગવતોઽર્હતઃ  
પૂજન જૈનધર્માનુયાયિભિઃ વર્તન્યમિત્યાહુસ્તન્મિત્યાત્વવિલક્ષિતમ્, અસ્ય પાઠસ્ય  
ચરિતાનુવાદરૂપત્વેન વિધાયકત્વાસમ્ભવાત્ । વિધિવાક્ય દિ જિનાજ્ઞાયા વોધક  
ત્વેન વિધાયક ભવતિ, યથા—ભગવતા વિધેયતયોપદિષ્ટ પદ્ધિવાક્યક ચતુર્વિધ-  
જિન પ્રતિમા કા કામદેવ કી પ્રતિમા કા નિર્વિધ્ન વિવાહકાર્ય કે લિયે  
અર્ચન કરતી હૈ અર્ચન કર કે ફિર વહ ( જેણેવ અતે ઉરે તેણેવ ઉવા-  
ગચ્છહ ) જહાં અત પુર થા વહાં ચલી ગઈ ॥ સૂ૦ ૨૧ ॥

### દ્રૌપદી ચર્ચા

જો “જિણપટિમાણ અચ્છણ કરેહ” હસ પાઠકા આશ્રય લેકર પ્રતિ-  
માપૂજન કી ઉપયોગિતા કહતે હુએ યહ કહતે હૈ, કિ “ અર્હત ભગવાન  
કી પ્રતિમા કી પૂજા જૈનધર્મ કે પાલકો કો કરના ચાહિયે” યહ ઉનકા  
કથન મિથ્યાત્વ કા વિલાસ હી હૈ । વયો કિ યહ “ જિનપટિમાણ ”  
હત્યાદિ વાક્ય ચરિત કા હી અનુવાદક હૈ—અતઃ એસે વાક્ય કિસી  
મુરય અર્થ કે વિધાયક નહોં હુઆ કરતે હૈ । ચારિતાનુવાદ સે તો મિર્ફ  
જિસ વ્યક્તિ ને જો ૨ આચરણ કિયા હૈ ઉસકા હી વોધ હોતા હૈ । શાસ્ત્ર  
વિહિત માર્ગકે નિર્દેશક વિધિવાક્ય હુઆ કરતે હૈ—કયોં કિ કિ એસે  
વાક્ય જિન ભગવાન કી આજ્ઞાકે વિધાયક હોતે હૈ । જિસ પ્રકાર પદ

પ્રતિમાનુ કામદેવની પ્રતિમાનુ નિર્વિધ્ને વિવાહકાર્ય સપન્ન યવાના હેતુયી  
અર્ચન કરે છે, અર્ચન કરીને ( જેણેવ અતેઉરે તેણેવ ઉવાગચ્છહ )  
જ્યા રણુવાસ છે તે તરફ જતી રહી ॥ સૂત્ર ૨૧ ॥

### દ્રૌપદી ચર્ચા

કેટલાક “જિણપટિમાણ અચ્છણ કરેહ” આ પાઠના આધારે પ્રતિમા પૂજ-  
નની ઉપયોગિતા સિદ્ધ કરતા આ પ્રમાણે કહે છે કે “ અર્હત ભગવાનની  
પ્રતિમાનુ પૂજન જૈનધર્મ પાલન કરનારાઓએ કરવું જોઈએ ” તેમનુ આ  
કથન સત્યથી ખહુ દૂર છે એટલે કે આ વાત સાવ અસત્યથી પૂર્ણ છે કેમકે  
આ “ જિનપટિમાણ ” વગેરે વાક્ય ચરિતના જ અનુવાદક છે એટલા માટે  
એવા વચનો કોઈ વિશેષ અર્થને અપદ્ધ કરનારા હોતા નથી ચરિતાનુવાદથી  
તો ફક્ત જે માણસે જે તે આચરણ કર્યું છે, ફક્ત તેનુ જ જ્ઞાન થાય તેમ  
છે શાસ્ત્રવિહિત માર્ગને ખતાવનારા તો વિધિ વાક્યો જ થાય છે જેવી રીતે



मूलम्—तएणं सा दोवई रायवरकन्ना जेणेव मज्जणघरे  
तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पहाया कयवलिकम्मा कय-  
कोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेमाइ मंगल्लाइ वत्थाइ  
पवरपरिहिया जिणपडिमाण अच्चण करेइ, करित्ता जेणेव  
अतेउरे तेणेव उवागच्छइ ॥ सू० २१ ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि । ततस्तन्मन्तर सा द्रोपदी राजवरन्या  
यत्रैव मज्जनगृह तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्नाता ‘कयवलिकम्मा’ कृतवलि-  
कर्मा अत्रादिषु प्रायसादिप्राणिना संविभागो वलिकर्म तन् कृत यथा सा तथा  
कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता ‘सुद्धप्पावेमाइ’ शुद्धप्रवेश्यानि शुद्धानि स्वच्छानि  
प्रवेश्यानि—सभाया प्रवेष्टु योग्यानि, यत्परिधानेन समाया लोकाः प्रवेष्टुमर्हन्ती  
त्यर्थः, मङ्गलानि=शुभानि वस्त्राणि ‘पवरपरिहिय’ प्रवरपरिहिता—प्रवरविधिना  
प्रवरेण शोभाकारेण विविना परिहिता=परिधानेन धृतवती आर्पित्यात् वर्तन्ति,

‘तएण सा दोवई रायवर कन्ना’ इत्यादि ॥

टीका १—(तएण) इस के बाद (सा दोवई रायवर कन्ना) वह राजवर  
कन्या द्रोपदी (जेणेव मज्जणघरे) जहा स्नान घर या (तेणेव उवागच्छइ)  
उस ओर गई (उवागच्छित्ता पहाया कयवलिकम्मा कयकोउयमंगल  
पायच्छित्ता) वहा जाकर २ उसने स्नानघरमें स्नान किया, नहाकर फिर  
उसने काक पक्षि आदि को अन्नोदि का भाग देने रूप वलि कर्म किया  
कौतुक मंगल प्रायश्चित्त किये । (सुद्धप्पावेमाइ मंगल्लाइ वत्थाइ पवर  
परिहिया) सभा में प्रवेश के योग्य ५ शुद्ध स्वच्छ मांगलिक वस्त्र  
अच्छी तरह विधि के अनुसार पहिरी हुई (जिणपडिमाण अच्चण करेइ)

‘तएण सा दोवईरायवरकन्ना’ इत्यादि—

टीका २—(तएण) त्य २५७ी (सा दोवई रायवरकन्ना) ते राजवर कन्या द्रोपदी  
(जेणेव मज्जणघरे) जहा स्नानघर हेतु (तेणेव उवागच्छइ) त्या गई  
(उवागच्छित्ता पहाया कयवलिकम्मा कय कोउयमंगलपायच्छित्ता) त्या जधने  
तेणे स्नानघरमा स्नान कयुं स्नान कया जाइ तेणे कागडा वगे पक्षीओने  
अन्न वगेरेना भाग अर्पाने अलिकर्म कयुं—कौतुक मंगल प्रायश्चित्त कया  
(सुद्धप्पावेमाइ मंगल्लाइ वत्थाइ पवरपरिहिया मज्जणघराओ पडिनिवसमइ)  
सभाया प्रवेशया योग्य स्वच्छ मांगलिक वस्त्रो तेणे सभ रीते पडेया,  
त्या २५७ी ते स्नानघरथी जाइर नीकगी (जिणपडिमाण अच्चण करेइ) उन

ચારિતાનુવાદવચનસ્ય વિધાયકત્વાદ્ગીકારે સૂર્યામદેવચરિતે શસ્ત્રાદિવસ્તુ-  
નામર્ચનસ્ય શ્રૂયમાણતયા તન્મતે તદપિ વિધેય સ્યાત્ ।

દ્રૌપદ્યપિ તત્ર સ્વલુ પ્રતિમાયા ભગવતોઽર્હતઃ પૂજન ન કૃતમ્, જૈનપ્રવચને  
પ્રતિમાપૂજનસ્ય વિધાનાભાગાત્, પ્રતિમાપૂજનસ્ય પટ્કાયજીવર્હિસાસા-યતયા જૈન  
ધર્મત્ત્વાભાવાચ્ચ ।

તથાહિ—પ્રતિમાપૂજાઽદ્ગીકારે તદર્થ પટ્કાયર્હિસાઽવશ્યભાવિની, એવ ચ  
જાતા હૈ કિ વહ્ ઉન્હીં મૈ ચિત્ત લગાકર ઓર મન કો તન્મય કરકે  
હસે ઉભય કાલ મેં અવશ્ય કરેં ।

ચરિત્ર કે અનુવાદક કથન કરને વાલે-વાક્ય કો યદિ વિધેય રૂપ  
સે સ્વીકાર કિયા જાય તો સૂર્યામદેવકે ચરિત્ર મેં શસ્ત્રાદિ શસ્ત્ર આદિ  
વસ્તુઓં કીં ભી પૂજા સુની જાતી હૈ-અન' ઉનમેં ભી પૂજ્યતા આજાની  
ચાહિયે ઓર હસ પ્રકાર સે પૂજન કે પક્ષપાતિયોં કો ઉનકા પૂજન ભી  
વિધેય કોટિ મે માનલેના ચાહિયે ।

દ્રૌપદી ને ભી વહા પ્રતિમા મે જો ભગવાન અર્હત કી પૂજન નહીં  
કો ઉસકા કારણ યહ્ હૈ કિ એક તો જૈન પ્રવચન મે પ્રતિમા પૂજન કે  
વિધાન કા અભાવ હૈ ઓર દૂસરે-યહ્ પ્રતિમા પૂજન પટ્ કાય કે જીવોં  
કી વિરાધના દ્વારા સાધ્ય હોતી હૈ, હસલિયે હસ પ્રતિમા પૂજન મે જિને-  
ન્દ્ર દ્વારા પ્રતિપ્રાદિત-ધર્મ આત્મકલ્પણસાધકરૂપ સમ્યગ્દર્શનાદિક કા  
અભાવ હૈ । પટ્ કાય કે જીવોં કી વિરાધના સે જો સાધ્ય હુઆ કરતા  
હૈ વહા સચ્ચે ધર્મ કે દર્શન તક ભી દુર્લભ હૈં અતઃ પ્રતિમા પૂજન

ન હોય તેની એ ફરજ થઈ પડે છે કે તે તેઓમા જ પોતાનુ ચિત્ત પરોવીને  
મનને તલ્લીન કરીને તેને બને કાળમા અવશ્ય આવશે

ચરિત્રને અનુવાદક રૂપે બતાવનાર વાક્યને જો વિધેય રૂપમા સ્વીકારવામા  
આવે તો સૂર્યામદેવના ચરિત્રમા શસ્ત્ર વગેરે વસ્તુઓની પણ પૂજની વાત  
સાબળવામા આવે છે એથી તેમનામા પણ પૂજ્યતા આવી જવી જોઈએ અને  
આ રીતે પૂજનના પક્ષપાતીઓએ તેમની પૂજા પણ વિધેયના રૂપમા માન્ય  
કરવી જોઈએ

દ્રૌપદીએ પણ ત્યા પ્રતિમામા લગવાન અર્હતનુ પૂજન કર્યું નથી  
તેનુ કારણ એ છે કે પ્રથમ તો જૈન પ્રવચનમા પ્રતિમા-પૂજનનુ વિધાન નથી  
અને બીજુ આ પ્રતિમા પૂજન પટ્કાયના જીવોની વિરાધના દ્વારા સપત્ર હોય  
છે, તેથી આ પ્રતિમા પૂજનમા જીનેન્દ્ર વડે પ્રતિપ્રાદિત ધર્મ-આત્મકલ્પણ  
સાધક રૂપ સમ્યગ્-દર્શન વગેરેનો અભાવ છે પટ્કાયના જીવોની વિરાધનાથી

સઘસ્ય કર્તવ્ય ભવતિ ।

તથા ચોક્તમ્—સમણેણ સારણં ય અવસ્સકાયવ્વયં દુવ્વં જમ્હા ।

અતો અહોનિસસસ ય, તમ્હા આરમ્મય નામ ॥ ૧ ॥ ઇતિ (અનુયોગદ્વાર)

છાયા—શ્રમણેન શ્રાવકેણ ચ અવશ્યકર્તવ્યક ભવતિ યસ્માત્ ।

અન્તેઽહર્નિશસ્ય ચ તસ્માદ્ આરમ્મયક નામ ॥ ૧ ॥

“ જ હમ સમણે વા સમણી વા સારણ વા સારિયા વા ।

તચ્ચિત્તે તમ્મણે જાવ ઉમઓકાલ છવ્વિહ આરસસય કરેતિ (અનુ०)

છાયા—યદિદ શ્રમણો વા શ્રમણી વા શ્રાવકો વા શ્રાવિકા વા ।

તચ્ચિત્તઃ તન્મના યાવદ્ ઉમયકાલ પઙ્કવિધમારમ્મયક નામ ॥ ૨ ॥

આવશ્યક કાર્યોં કો પ્રતિપાદન કરને વાલે વાચ્ય જિન પ્રભુ કી આજ્ઞા  
કે નિર્દેશક હોને સે સાધુ સાધ્વી શ્રાવક શ્રાવિકારૂપ ચતુર્વિધ સઘ  
કો ઉપાદેય માને જાતે હૈં । શાસ્ત્ર મેં મી યહી ઘાત કહી ગઈ હૈ

‘ સમણે ણ સારણં ય ’ ઇત્યાદિ

શાસ્ત્ર વિહિત પદ્ આવશ્યક કર્તવ્ય ચતુર્વિધ શ્રીસઘ કો રાત્રી  
એવ દિનકે અતિમ ભાગમેં અવશ્ય કરન ચોહિયે । ઉનકે કિયે વિના મુનિ  
કા મુનિપન નહીં ઓર શ્રાવકકા શ્રાવકપન નહીં । અતઃ પદ્ આવશ્યક  
કાર્ય અવશ્ય કરને યોગ્ય હોનેસે આવશ્યક રૂપ સે પ્રતિપાદિત હુવ હૈં ।

“ જ હમ સમણે વા સમણી વા સારણ વા સારિયા વા તચ્ચિત્તે  
તમ્મણે વા જાવ ઉમઓ કાલ ” ઇત્યાદિ ।

હસલિયે જવ યે આવશ્યક હૈં તવ વાહે સાધુ હો યા સાધ્વી હો  
શ્રાવક હો યા શ્રાવિકા હો કોઈ મી કયો ન હો ઉસકા યહ કર્તવ્ય હો

છ આવશ્યક કાર્યોના પ્રતિપાદન કરનારા વાક્યો જીન પ્રભુની આજ્ઞાના નિર્દે-  
શક હોવાને કારણે સાધુ સાધ્વી શ્રાવક શ્રાવિકા રૂપ ચતુર્વિધ સઘના માટે  
યોગ્ય ગણાય છે શાસ્ત્રમા પણ આ પ્રમાણે કહેવામા આવ્યું છે —

“ સમણેણ સારણં ય ’ ઇત્યાદિ

શાસ્ત્રવિહિત છ પ્રકારના આવશ્યક કર્તવ્યો ચતુર્વિધ સઘને રાત્રિ તેમજ દિવ  
સના અતિમ ભાગમા ચોક્કસ પણે આચરવા જોઈએ તેના આચરણ વગર મુનિનું  
મુનિપણુ નથી અને શ્રાવકનું શ્રાવકપણુ નથી એટલા માટે છ આવશ્યક કાર્ય  
ચોક્કસ કરવા યોગ્ય હોવાથી આવશ્યક રૂપથી પ્રતિપાદિત કરવામા આવ્યા છે

“ જ હમ સમણે વા સમણી વા સારણ વા સારિયા વા તચ્ચિત્તે તમ્મણે જાવ  
ઉમઓ કાલ ઇત્યાદિ—આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ ‘ આવશ્યક ’ છે, ત્યારે ભલે  
સાધુ હોય કે સાધ્વી હોય તેમજ શ્રાવક હોય કે શ્રાવિકા હોય



चारितानुवादवचनस्य विधायकत्वाद्भीकारे सूर्याभदेवचरिते शस्त्रादिवस्तु-  
नामर्चनस्य श्रूयमाणतया तन्मते तदपि विधेय म्यत् ।

द्रौपद्यऽपि तत्र सल्लु प्रतिमाया भगवतोऽर्हतः पूजन न कृतम्, जैनप्रवचने  
प्रतिमापूजनस्य विधानाभावात्, प्रतिमापूजनस्य पट्टकायजीवर्हिषासा-यतया जैन  
धर्मत्वाभावाच्च ।

तथाहि—प्रतिमापूजाऽङ्गीकारे तदर्थं पट्टकायर्हिषाऽवश्यभाविनी, एव च  
जाता है कि वह उन्हीं में चित्त लगाकर और मन को तन्मय करके  
इसे उभय काल में अवश्य करें ।

चरित के अनुवादक कथन करने वाले-वाक्य को यदि विधेय रूप  
से स्वीकार किया जाय तो सूर्याभदेवके चरित में सद्गमादि शस्त्र आदि  
वस्तुओं की भी पूजा सुनी जाती है-अतः उनमें भी पूज्यता आजानी  
चाहिये और इस प्रकार से पूजन के पक्षपातियों को उनका पूजन भी  
विधेय कोटि में मानलेना चाहिये ।

द्रौपदी ने भी वहा प्रतिमा में जो भगवान् अर्हत की पूजन नहीं  
की उसका कारण यह है कि एक तो जैन प्रवचन में प्रतिमा पूजन के  
विधान का अभाव है और दूसरे-यह प्रतिमा पूजन पट्ट काय के जीवों  
की विराधना द्वारा साध्य होती है, इसलिये इस प्रतिमा पूजन में जिने-  
न्द्र द्वारा प्रतिपादित-धर्म आत्मकल्याणसाधकरूप सम्यग्दर्शनादिक का  
अभाव है । पट्ट काय के जीवों की विराधना से जो साध्य हुआ करता  
है वहा सच्चे धर्म के दर्शन तक भी दुर्लभ हैं अतः प्रतिमा पूजन

न હોય તેની એ ફરજ થઈ પડે છે કે તે તેઓમા જ પોતાનુ ચિત્ત પરોવીને  
મનને તત્કલીન કરીને તેને બને ઝાળમા અવશ્ય આવશે

ચરિતને અનુવાદક રૂપે બતાવનાર વાક્યને જો વિધેય રૂપમા સ્વીકારવામા  
આવે તો સૂર્યાભદેવના ચરિતમા શસ્ત્ર વગેરે વસ્તુઓની પણ પૂજની વાત  
માલખવામા આવે છે એથી તેમનામા પણ પૂજ્યતા આવી જવી જોઈએ અને  
આ રીતે પૂજનના પક્ષપાતીઓએ તેમની પૂજા પણ વિધેયના રૂપમા માન્ય  
કરવી જોઈએ

દ્રૌપદીએ પણ ત્યા પ્રતિમામા લગવાન અર્હતનુ પૂજન કર્યું નથી  
તેનુ કારણ એ છે કે પ્રથમ તો જૈન પ્રવચનમા પ્રતિમા-પૂજનનુ વિધાન નથી  
અને બીજુ આ પ્રતિમા પૂજન પટ્ટકાયના જીવોની વિરાધના દ્વારા સપન્ન હોય  
છે, તેથી આ પ્રતિમા પૂજનમા જીનેન્દ્ર વડે પ્રતિપાદિત ધર્મ-આત્મકલ્યાણ  
સાધક રૂપ સમ્યગ્-દર્શન વગેરેનો અભાવ છે પટ્ટકાયના જીવોની વિરાધનાથી

સઘસ્ય કર્તવ્ય ભવતિ ।

તથા ચોક્તમ્—સમણેણ સાવણં ય અવસસકાયવસ્ય દગ્ધં જમ્હા ।

અતો અહોનિસસ્ય ય, તમ્હા આવસસય નામ ॥ ૧ ॥ ઇતિ (અનુયોગદ્વાર)

છાયા—શ્રમણેણ શ્રાવકેણ ચ અવસ્યકર્તવ્યક ભવતિ યસ્માત્ ।

અન્તેઽહર્નિશસ્ય ચ તસ્માદ્ આવસ્યક નામ ॥ ૧ ॥

“ જ હમ સમણે વા સમણી વા સાવણ વા સાવિયા વા ।

તચ્ચિત્તે તમ્મણે જાવ ઉભઓકાલ છવ્વિહ આવસસય કરેતિ (અનુ०)

છાયા—યદિદ શ્રમણો વા શ્રમણી વા શ્રાવકો વા શ્રાવિકા વા ।

તચ્ચિત્તઃ તન્મના યાવદ્ ઉભયકાલ પઙ્કવિધમાવસ્યક નામ ॥ ૨ ॥

આવસ્યક કાર્યોં કો પ્રતિપાદન કરને ચાલે વાચ્ય જિન પ્રભુ કી આજ્ઞા  
કે નિર્દેશક હોને સે સાધુ સાધ્વી શ્રાવક શ્રાવિકારૂપ ચતુર્વિધ સઘ  
કો ઉપાદેય માને જાતે હૈં । શાસ્ત્ર મેં બી યહી વાત કહી ગઈ હૈ

‘ સમણે ણ સાવણં ય ’ ઇત્યાદિ

શાસ્ત્ર વિહિત પદ્ આવસ્યક કર્તવ્ય ચતુર્વિધ શ્રીસઘ કો રાત્રી  
એવ દિનકે અતિમ ભાગમે અવસ્ય કરન ચાહિયે । ઉનકે કિયે વિના મુનિ  
કા મુનિપન નહીં ઓર શ્રાવકકા શ્રાવકપન નહીં । અતઃ પદ્ આવસ્યક  
કાર્ય અવસ્ય કરને યોગ્ય હોનેસે આવસ્યક રૂપ સે પ્રતિપાદિત હુવ હૈં ।

“ જ હમ સમણે વા સમણી વા સાવણ વા સાવિયા વા તચ્ચિત્તે  
તમ્મણે વા જાવ ઉભઓ કાલ ” ઇત્યાદિ ।

હસલિયે જવ યે આવસ્યક હૈં તવ ચાહે સાધુ હો વા સાધ્વી હો  
શ્રાવક હો વા શ્રાવિકા હો કોઈ બી વયો ન હો ઉસકા યહ કર્તવ્ય હો

છ આવસ્યક કાર્યોના પ્રતિપાદન કરનારા વાક્યો જીન પ્રભુની આજ્ઞાના નિર્દે-  
શક હોવાને કારણે સાધુ સાધ્વી શ્રાવક શ્રાવિકા રૂપ ચતુર્વિધ સઘના માટે  
યોગ્ય ગણાય છે શાસ્ત્રમા પણ આ પ્રમાણે કહેવામા આવ્યુ છે —

“ સમણેણ સાવણં ય ’ ઇત્યાદિ

શાસ્ત્રવિહિત છ પ્રકારના આવસ્યક કર્તવ્યો ચતુર્વિધ સઘને રાત્રિ તેમજ દિવ  
સના અતિમ ભાગમા ચોક્કસ પણે આચરવા જોઈએ તેના આચરણ વગર મુનિનુ  
મુનિપણુ નથી અને શ્રાવકનુ શ્રાવકપણુ નથી એટલા માટે છ આવસ્યક કાર્ય  
ચોક્કસ કરવા યોગ્ય હોવાથી આવસ્યક રૂપથી પ્રતિપાદિત કરવામા આવ્યા છે

“ જ હમ સમણે વા સમણી વા સાવણ વા સાવિયા વા તચ્ચિત્તે તમ્મણે જાવ  
ઉભઓ કાલ ઇત્યાદિ—આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ ‘ આવસ્યક ’ છે, ત્યારે ભલે  
સાધુ હોય કે સાધ્વી હોય તેમજ શ્રાવક હોય કે શ્રાવિકા હોય — ”



चारितानुवादवचनस्य विधायकत्वाद्भीकारे सूर्याभदेवचरिते शस्त्रादिवस्तु-  
नामर्चनस्य श्रूयमाणतया तन्मते तदपि विवेक्य स्यात् ।

द्रौपद्यऽपि तत्र खलु प्रतिमाया भगवतोऽर्हतः पूजनं न कृतम्, जैनप्रवचने  
प्रतिमापूजनस्य विधानाभावात्, प्रतिमापूजनस्य पट्टकायजीवर्हिसासा-यतया जैन  
धर्मत्वाभावाच्च ।

तथाहि—प्रतिमापूजाऽङ्गीकारे तदर्थं पट्टकायर्हिसाऽवश्यभाविनी, एव च  
जाता है कि वह उन्हीं में चित्त लगाकर और मन को तन्मय करके  
इसे उभय काल में अवश्य करें ।

चरित के अनुवादक कथन करने वाले-वाक्य को यदि विधेय रूप  
से स्वीकार किया जाय तो सूर्याभदेवके चरित में सङ्गादि शस्त्र आदि  
वस्तुओं की भी पूजा सुनी जाती है-अतः उनमें भी पूज्यता आजानी  
चाहिये और इस प्रकार से पूजन के पक्षपातियों को उनका पूजन भी  
विधेय कोटि में मानलेना चाहिये ।

द्रौपदी ने भी वहा प्रतिमा में जो भगवान् अर्हत की पूजन नहीं  
की उसका कारण यह है कि एक तो जैन प्रवचन में प्रतिमा पूजन के  
विधान का अभाव है और दूसरे-यह प्रतिमा पूजन पट्ट काय के जीवों  
की विराधना द्वारा साध्य होती है, इसलिये इस प्रतिमा पूजन में जिने-  
न्द्र द्वारा प्रतिपादित-धर्म आत्मकल्याणसाधकरूप सम्यग्दर्शनादिक का  
अभाव है । पट्ट काय के जीवों की विराधना से जो साध्य हुआ करता  
है वहा सच्चे धर्म के दर्शन तक भी दुर्लभ हैं अतः प्रतिमा पूजन

न होय तेनी ओ इरज थछ पडे छे के ते तेओमा न पोतानु चित्त परेवीने  
भनने तटलीन करीने तेने जने काणमा अवश्य आथरे

चरितने अनुवादक इपे जतावनार वाक्यने जे विधेय रुपमा स्वीकारवामा  
आवे तो सूर्याभदेवना चरितमा शस्त्र वगेरे वस्तुओनी पण पूजनी वात  
साखणवामा आवे छे ओथी तेमनामा पण पूज्यता आवी नवी जेधओ अने  
आ रीते पूजनना पक्षपातीओओ तेमनी पूज पण विधेयना रुपमा मान्य  
करवी जेधओ

द्रौपदीओ पण त्या प्रतिमामा लगवान् अर्हतनु पूजन करुं नथी  
तेनु कारण ओ छे के प्रथम तो जैन प्रवचनमा प्रतिमा-पूजननु विधान नथी  
अने भीनु आ प्रतिमा पूजन पट्टकायना ओवानी विराधना द्वारा सपत्त होय  
छे, तेथी आ प्रतिमा पूजनमा जेनेन्द्र वडे प्रतिपादित धर्म-आत्मकल्याण  
साधक रुप सम्यग्-दर्शन वगेरेना अभाव छे पट्टकायना ओवानी विराधनाथा

પ્રાણાતિપાતવિરમણવ્રતિના મુનીના પ્રતિમાપૂજોપદેશે સ્વધર્મસ્ય મૂત્રોચ્છેદ સ્યા  
 દેવ । અતઃપ્ર-જિનમણીતાગમે પ્રતિમાપૂજાયાવિધિર્નોપલભ્યતે । પ્રતિમાસ્થાપનાર્થ  
 ભગીકાર કરને મેં ઉસ પૂજન કે સમય મેં પદ્ કાચ કે જીવોં કી વિરા-  
 ધના જય અવશ્યભાવી હે તપ મલા । હમ હસે વિધેય માર્ગ કેસે માન  
 સકતે હેં, ઓર કેસે યહ સ્વીકાર ક્રિયા જા સકતા હે કિ હસ પૂજન  
 કા કર્તા સચ્ચે ધર્મ કા ઉપામક હે તથા પ્રતિમાપૂજન કો ધર્મ માના  
 જાવે તો એક વડા ભારી દોષ યહ મી આકર ઉપસ્થિત હોતા હે કિ સર્વ  
 પ્રકાર કે હિંસાદિક પાપોં સે સર્વથા વિરક્ત મહાવ્રતી મુનિજન જય હસ  
 પ્રતિમાપૂજનરૂપ ધર્મ કા ઉપદેશ કરેંગે તવ વે મી કારિતાદિરૂપ કરાને  
 આદિ રૂપ સે હસકે કર્તા હોને કે કારણ અપને મુનિધર્મ કે મૂલતઃ હી  
 વિધ્વસક માને જાયેંગે । મુનિજન હિંસાદિક સાવન્ય વ્યાપારોં કે કૃત,  
 કારિત એવ અનુમોદના હન ત્રીન કરણ એવ ત્રીન યોગ સે ત્યાગી હુઆ  
 કરતે હેં । જય યે પ્રતિમાપૂજન રૂપ ધર્મ કા ગૃહસ્થો કે લિયે વ્યાખ્યાન  
 દેંગે તવ ઉનકે વ્યાખ્યાન સે પ્રેરિત હો ગૃહસ્થ જન ઉસ ઓર અપની  
 પ્રવૃત્તિ ચાલૂ કરને વાલે હોંગે, ઓર ઉસ પ્રકાર કે ઉનકે વ્યવહાર સે  
 હસ કાર્ય મેં પદ્કાચ કે જીવોં કી વિરાધના હોને સે ઉસ વિરાધના

જે સાધ્ય થાય છે તેમા તો સાચા ધર્મના દર્શન સુદ્ધા હુલ્લ છે એટલા  
 માટે પ્રતિમા-પૂજન સ્વીકારવામા તે પૂજન કરતી વખતે પદ્કાચના જીવોની  
 વિરાધના જ્યારે થોડકસપણે થવાની છે ત્યારે અમે તેને વિધેય માર્ગ કયા  
 આધારે માન્ય કરીએ અને એની સાથે સાથે અમે એ પણ કેવી રીતે સ્વીકાર  
 કરીએ કે આ જાતનુ પૂજન કરનાર સાચા ધર્મનો ઉપાસક છે ? જે પ્રતિમા  
 પૂજનને ધર્મ રૂપે સ્વીકારીએ તો એમા એક ભારે દોષ એ છે કે સર્વ પ્રકાર  
 રના હિંમા વગેરે પાપોથી સર્વથા વિરક્ત મહાવ્રતી મુનિજનો જ્યારે આ  
 પ્રતિમા પૂજન રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ આપશે ત્યારે તેઓ પણ કારિતાદિ રૂપ  
 કરાવવા વગેરે રૂપથી એના કર્તા રૂપે હોવા બદલ પોતાના મુનિ ધર્મના મૂલત  
 વિધ્વસક ગણાશે મુનિજનો હિંસા વગેરે સાવન્ય વ્યાપારોના કૃત, કારિત અને  
 અનુમોદના આ ત્રણ કરણ અને ત્રણ યોગના ત્યાગી હોય છે જ્યારે તેઓ  
 પ્રતિમા-પૂજન રૂપ ધર્મનુ ગૃહસ્થોને માટે વ્યાખ્યાન આપશે ત્યારે તેમના  
 વ્યાખ્યાનથી પ્રેરાઈને ગૃહસ્થો તે પ્રમાણે આચરશે જ અને આ જાતના તેમના  
 આચરણોથી આ કામમા પદ્કાચ જીવોની વિરાધના હોવાથી તે વિરાધનાને  
 કરાવનારા આ ઉપદેશક મુનિઓ જ ગણાશે ત્યારે એમના અહિંસા વગેરે મહા  
 વ્રતો ત્રિયોગ અને ત્રિકરણ વિશુદ્ધ રૂપે કેવી રીતે રહી શકશે ? એથી ધર્મ  
 સાક્ષને ઇચ્છતા પણ તેઓ આ જાતના વિચારોની ભૂલમા જ ને ।

देवायतनप्रतिमाऽऽरामकृपादिकरणे तदुपदेशदाने च पृथिवीकायहिंसाया अवश्यमात्र. । देवायतनादिकरणे पूजाङ्गतयास्नान प्रतिमास्नपनस्रक्षालनादिकरणे च तदुपदेशदाने चापूकायविराधनमपि, तथा-पूजाङ्गधूपदीपारात्रिकसम्पादन चाग्निकायविराधनया विना न सम्भवति, वायुकायहिंसन तु धूपदीपारात्रिका के कराने चाले ये उपदेशक मुनिजन माने जायेगे-तब इनके अहिंसादि महाव्रत त्रियोग और त्रिकरण विशुद्ध कैसे रह सकेंगे ? अतः लाम की चाहना में इन विचारों की भूल में ही बड़ी भारी भूल होने से ये अपने धर्म के सच्चे आराधक नहीं माने जा सकेगे। इसलिये यह घात अवश्य माननी चाहिये कि जिन प्रणीत आगम में प्रतिमापूजन की विधि नहीं पाई जाती है।

इसी प्रकार प्रतिमा स्थापन, प्रतिमा प्रतिष्ठा करवाना, मंदिर वगैरह बनवाना एवं उस प्रतिमा की पूजा निमित्त वगीचा तथा कुआ आदि का करवाना ये बातें पृथिवी कायिक जीवों की हिंसा के कारण हैं अतः त्याज्य हैं। इनके बनवाने आदि का जो उपदेश करते हैं वे भी पृथिवीकायिक जीवों की हिंसा से मुक्त नहीं हो सकते हैं। इसी प्रकार पूजन का अंग होने से स्नान, प्रतिमा के अभिषेक तथा पूजन के बस्त्रों के धोने साफ करने में और उसके उपदेश देने में अपूकाय के जीवों की विराधना होती है, धूपखेना, दीपक जलाना, आरती उतारना ये सब बातें अग्निकायिक जीवों की विराधना के विना नहीं हो सकती है अर्थात् इनमें अग्निकायिक जीवों की विराधना अवश्यभाविनी है।

એસશે અને તેઓ પોતાના ધર્મના સાચા આરાધક ગણાશે નહિ એટલા માટે આ વાત ચોક્કસપણે માની જ લેવી જોઈએ કે 'જન પ્રણીત' આગમમાં પ્રતિમા-પૂજનની વિધિ મળતી નથી

આ પ્રમાણે પ્રતિમા-સ્થાપન, -પ્રતિમા-પ્રતિષ્ઠા કરાવવી, મંદિર વગેરે બનાવવા અને તે પ્રતિમાની પૂજા માટે ઉદ્યાન તેમજ વાવ વગેરે તૈયાર કરાવવા એ પૃથ્વી-કાયિક જીવોની હિંસાના કારણ છે-એટલા માટે ત્યાજ્ય છે તેને બનાવવા માટે જે લોકો ઉપદેશ આપે છે તેઓ પણ પૃથ્વી-કાયિક જીવોની હિંસાથી મુક્ત થઈ શકતા નથી આ રીતે જ પૂજનને માટે સ્નાન, પ્રતિમાનો અભિષેક તેમજ પૂજનના વસ્ત્રોને ધોવામાં અને તેના ઉપદેશમાં પણ અપૂકાયના જીવોની વિરાધના હોય છે ધૂપ કરવો, દીપક કરવો, આરતી ઉતારવી આ બધી વિધિઓ અગ્નિ-કાયિક જીવોની વિરાધના વગર સંભવી શકે તેમ નથી એટલે કે તેઓમાં અગ્નિ-કાયિક જીવોની વિરાધના ચોક્કસપણે



પ્રાણાતિપાતવિરમણવ્રતિના મુનીના પ્રતિમાપૂજનોપદેશે સ્વધર્મસ્ય મૂલ્યોચ્છેદ સ્યા  
દેવ । અતઃ૫૨-જિનમણીતાગમે પ્રતિમાપૂજાયારિથિર્નોપલભ્યતે । પ્રતિમાસ્થાપનાર્થ

ભગીકાર કરને મેં ઉસ પૂજન કે સમય મેં પદ્મ કાચ કે જીવોં કી વિરા  
ધના જય અવશ્યભાવી હૈ તય મલા । હમ હસે વિધેય માર્ગ કેસે માન  
સકતે હૈ, ઓર કેસે યહ સ્વીકાર ક્રિયા જા સકના હૈ કિ હસ પૂજન  
કા કર્તા સચ્ચે ધર્મ કા ઉપામક હૈ તથા પ્રતિમાપૂજન કો ધર્મ માના  
જાવે તો એક વડા ભારી દોષ યહ મી આકર ઉપસ્થિત હોતા હૈ કિ સર્વ  
પ્રકાર કે હિંસાદિક પાપોં સે સર્વથા વિરક્ત મહાવ્રતી મુનિજન જય હસ  
પ્રતિમાપૂજનરૂપ ધર્મ કા ઉપદેશ કરેંગે તય વે મી કારિતાદિરૂપ કરાને  
આદિ રૂપ સે હસકે કર્તા હોને કે કારણ અપને મુનિધર્મ કે મૂલત. હી  
વિધ્વસક માને જાયેંગે । મુનિજન હિંસાદિક સાવધ વ્યાપારોં કે કૃત,  
કારિત એવ અનુમોદના હન તોન કરણ એવ તોન યોગ સે ત્યાગી હુઆ  
કરતે હૈ । જય વે પ્રતિમાપૂજન રૂપ ધર્મ કા ગૃહસ્થો કે લિયે વ્યાખ્યાન  
દેંગે તય ઉનકે વ્યાખ્યાન સે પ્રેરિત હો ગૃહસ્થ જન ઉસ ઓર અપની  
પ્રવૃત્તિ ચાલૂ કરને વાલે હોંગે, ઓર ઉસ પ્રકાર કે ઉનકે વ્યવહાર સે  
હસ કાર્ય મેં પદ્મકાચ કે જીવોં કી વિરાધના હોને સે ઉસ વિરાધના

જે સાધ્ય થાય છે તેમા તો સાચા ધર્મના દર્શન સુદ્ધા દુર્લભ છે એટલા  
માટે પ્રતિમા-પૂજન સ્વીકારવામા તે પૂજન કરતી વખતે પદ્મકાચના જીવોની  
વિરાધના જ્યારે થોડકસપણે થવાની છે ત્યારે અમે તેને વિધેય માર્ગ કયા  
આધારે માન્ય કરીએ અને એની સાથે સાથે અમે એ પણ કેવી રીતે સ્વીકાર  
કરીએ કે આ જાતનુ પૂજન કરનાર સાચા ધર્મનો ઉપાસક છે ? જે પ્રતિમા  
પૂજનને ધર્મ રૂપે સ્વીકારીએ તો એમા એક ભારે દોષ એ છે કે સર્વ પ્રકાર  
રના હિંસા વગેરે પાપોથી સર્વથા વિરક્ત મહાવ્રતી મુનિજનો જ્યારે આ  
પ્રતિમા પૂજન રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ આપશે ત્યારે તેઓ પણ કારિતાદિ રૂપ  
કરાવવા વગેરે રૂપથી એના કર્તા રૂપે હોવા બદલ પોતાના મુનિ ધર્મના મૂલત  
વિધ્વસક ગણાશે મુનિજનો હિંસા વગેરે સાવધ વ્યાપારોના કૃત, કારિત અને  
અનુમોદના આ ત્રણ કરણ અને ત્રણ યોગના ત્યાગી હોય છે જ્યારે તેઓ  
પ્રતિમા-પૂજન રૂપ ધર્મનુ ગૃહસ્થોને માટે વ્યાખ્યાન આપશે ત્યારે તેમના  
વ્યાખ્યાનથી પ્રેરાઈને ગૃહસ્થો તે પ્રમાણે આચરશે જ અને આ જાતના તેમના  
આચરણોથી આ કામમા પદ્મકાચ જીવોની વિરાધના હોવાથી તે વિરાધનાને  
કરાવનારા આ ઉપદેશક મુનિઓ જ ગણાશે ત્યારે એમના અહિંસા વગેરે મહા  
વ્રતો ત્રિયોગ અને ત્રિકરણ વિશુદ્ધ રૂપે કેવી રીતે રહી શકશે ? એથી ધર્મ-  
લાભને ધ્વંષતા પણ તેઓ આ જાતના વિચારોની ભૂલમા જ "

દેવાયતનપ્રતિમાઽઽરામકૃપાદિકરણે તદુપદેશદાને ચ પૃથિવીકાયર્હિસાયા અવ-  
શ્યમાનઃ । દેવાયતનાદિકરણે પૂજાઙ્ગતયાસ્નાન પ્રતિમાસ્નપનપ્રસ્થાપનાદિક-  
રણે ચ તદુપદેશદાને ચાપ્કાયવિરાધનમપિ, તથા-પૂજાઙ્ગધૂપદીપારાત્રિકસમ્પા-  
દન ચાગ્નિકાયવિરાધનયા વિના ન સમ્ભવતિ, વાયુકાયર્હિસન તુ ધૂપદીપારાત્રિકા

કે કરાને વાલે યે ઉપદેશક મુનિજન માને જાયે ગે-તવ ઇન્કે અર્હિસાદિ  
મહાવ્રત ત્રિયોગ ઔર ત્રિકરણ વિશુદ્ધ કૈસે રહ સકેંગે ? અતઃ લાભ કી  
ચાહના મે ઇન વિચારોં કી ભૂલ મેં હી વહી ભારી ભૂલ હોને સે યે  
અપને ધર્મ કે સચ્ચે આરાધક નહી માને જા સકેંગે । ઇસલિયે યહ  
ઘાત અવશ્ય માનની ચાહિયે કિ જિન પ્રણીત આગમ મેં પ્રતિમાપૂજન  
કી વિધિ નહી પાઈ જાતી હૈ ।

હસી પ્રકાર પ્રતિમા સ્થાપન, પ્રતિમા પ્રતિષ્ઠા કરવાના, મદિર વગેરે  
બનાવના એવ ઉસ પ્રતિમા કી પૂજા નિમિત્ત વગીચા તથા કુઆ આદિ  
કા કરવાના યે વાતે પૃથિવી કાયિક જીવોં કી હિંસા કે કારણ હૈં અતઃ  
ત્યાજ્ય હૈં । ઇન્કે બનાવને આદિ કા જો ઉપદેશ કરતે હૈં વે ભી  
પૃથિવીકાયિક જીવોં કી હિંસા સે મુક્ત નહી હો સકતે હૈં । હસી પ્રકાર  
પૂજન કા અગ હોને સે સ્નાન, પ્રતિમા કે અભિષેક તથા પૂજન કે વસ્ત્રોં  
કે ધોને સાફ કરને મે ઔર ઉસકે ઉપદેશ દેને મેં અપ્કાય કે જીવો  
કી વિરાધના હોતી હૈ, ધૂપચેના, દીપક જલ્લાના, આરતી ઉતારના  
યે સચ વાતેં અગ્નિકાયિક જીવોં કી વિરાધના કે વિના નહી હો સકતી  
હૈ અર્થાત્ ઇનમેં અગ્નિકાયિક જીવો કી વિરાધના અવશ્યમાવિની હૈ ।

એસશે અને તેઓ પોતાના ધર્મના સાચા આરાધક ગણાશે નહિ એટલા માટે  
આ વાત ચોક્કસપણે માની જ લેવી જોઈએ કે ' જન પ્રણીત ' આગમમા  
પ્રતિમા-પૂજનની વિધિ મળતી નથી

આ પ્રમાણે પ્રતિમા-સ્થાપન, -પ્રતિમા-પ્રતિષ્ઠા કરાવવી, મદિર વગેરે  
બનાવવા અને તે પ્રતિમાની પૂજા માટે ઉદ્યાન તેમજ વાવ વગેરે તૈયાર  
કરાવવા એ પૃથ્વી-કાયિક જીવોની હિંસાના કારણ છે-એટલા માટે ત્યાજ્ય  
છે તેને બનાવવા માટે જે લોકો ઉપદેશ આપે છે તેઓ પણ પૃથ્વી-કાયિક  
જીવોની હિંસાથી મુક્ત થઈ શકતા નથી આ રીતે જ પૂજનને માટે સ્નાન,  
પ્રતિમાનો અભિષેક તેમજ પૂજનના વસ્ત્રોને ધોવામા અને તેના ઉપદેશમા પણ  
અપ્કાયના જીવોની વિરાધના હોય છે ધૂપ કરવો, દીપક કરવો, આરતી  
ઉતારવી આ બધી વિધિઓ અગ્નિ-કાયિક જીવોની વિરાધના વગર સંભવી  
શકે તેમ નથી એટલે કે તેઓમા અગ્નિ-કાયિક જીવોની વિરાધના ચોક્કસપણે



દિમિથામરાદિવીજનૈર્નૃત્યગીતવાદિત્રૈશ સવિશદ ભવતિ, વનસ્પતિકાયપિરાગન ચ પ્રતિમાપૂજાનિમિત્તકેઽનન્તકાયકોમલપિથિકાપુષ્પપત્રસપ્રદે નિયત ભવતિ । પૃથિ-  
વીકાયાઘાશ્રિતા વહુવિધનિરપગધહીનદીનદુર્બલપ્રકૃતિભીરુસગોપિતશરીરા દ્વીન્દ્રિ-  
યાદિ પચ્ચેન્દ્રિયાન્તાલ્પમા જીરા અપિ છેદાભેદનસ્યાભયપિનાશજનિતાનન્તદુઃખે  
સ્તીવ્રતરવેદનામુપલભ્યેતસ્તતઃ સ્વલિતપતિતા મ્રિયન્તે ।

ધૂપકેધુ આ સે, દીપ તથા આરતી કી જ્યોતિ સે ચમર આદિ કે ઢોરને  
સે, નૃત્ય કરને સે, ગીત ગાતે સમય મુલ્ય સે નિકલે હુગ ગર્મ વાયુ સે,  
એવ વાજોં કે ઘજાને સે વાયુકાયિક જીવોં કી વિરાધના હોતી હુઈ સ્પષ્ટ  
માલૂમ દેતી હૈ । વનસ્પતિ કાયિક જીવોં કી વિરાધના ખી ડસ સમય  
હસ પ્રકાર સે હોતી હૈ, ત્રિ-મૂર્તિ પૂજન કે લિયે ડસકે પૂજક અનન્ત  
કાયિક એસે કોમલ અનેક પ્રકાર કે ફલ, પુષ્પ ઓર પત્રોં કા  
સગ્રહ જો કરતા હૈ હસ પ્રકાર હસ પૂજન મેં પટ્કાયિક જીવોં કો હિંસા  
કા આરંભ સ્પષ્ટ દેખા જાતા હૈ । તથા ઘસ કાયિક જીવોં કા ખી હસકે  
નિમિત્તહનન હોતા હૈ ઓર વહ હસ પ્રકાર સે-કિ જવ પૃથિવીકાયિ  
કાદિ જીવોં કા આરંભ પ્રતિમા આદિ કે નિર્માણ મેં યા દેવ આયતન  
( મન્દિર ) આદિ કે કરાને મેં કિયા જાતા હૈ તો ડસ સમય ડસકે  
આશ્રિત જો વહુત સે અનેક જાતિ કે નિરપરાધી, હીન, દીન, દુર્બલ,  
પ્રકૃતિ સે ભયશીલ તથા સગોપિત શરીરવાળે એસે દ્વીન્દ્રિયાદિકસે લેકર  
પચ્ચેન્દ્રિય તક જિતને ખી ઘસ જીવ રહતે હૈં વે સવ કે સવ છેદન,  
ભેદન, એવ સ્વાશ્રય કે વિનાશ જનિત અનન્ત દુઃખોં સે સતસ હોકર

થવાની જ છે ધૂપના ધૂમાડાથી દીપક અને આરતીની જ્યોતથી ચમર વગેરેને  
ઢાળવાથી તેમજ વાન્તઓ વગાડવાથી વાયુકાયિક જીવોની વિરાધના થાય છે  
તેની દરેકને સ્પષ્ટ પ્રતીતિ થતી જ રહે છે વનસ્પતિ-કાયિક જીવોની વિરા  
ધના પણ તે વખતે આ પ્રમાણે થાય છે કે મૂર્તિ-પૂજન માટે પૂજા કરનારાઓ  
અનન્ત-કાયિક એવા કોમળ ઘણી જાતના ફળો, પુષ્પો અને પત્રોને એકઠા  
કરે છે આમ આ પૂજામાં પટ્ક-કાયિક જીવોની હિંસા સ્પષ્ટપણે દેખાય છે  
ઘસ-કાયિક જીવોનું પણ તેને લીધે હનન હોય છે જેમકે જ્યારે પૃથિવ-કાયિક  
વગેરે જીવોનો આરંભ પ્રતિમા વગેરેના નિર્માણમાં અથવા તો દેવ-આયતન  
( મંદિર ) વગેરે બનાવવામાં કરવામાં આવે છે ત્યારે તેના આશ્રિત જે ઘણા  
અનેક જાતના નિરપરાધિ, હીન, દીન, દુર્બલ, પ્રકૃતિથી બીકણુ તેમજ સગો  
પિત શરીરવાળા એવા દ્વીન્દ્રિયાદિકથી માડીને પચ્ચેન્દ્રિય સુધીના ઘસ  
જીવો રહે છે તેઓ સર્વે છેદન, ભેદન અને સ્વાશ્રયના

ધર્મસ્ય લક્ષણ ઢિ-જિનાજ્ઞાપ્રયોજ્યપટ્ટિષત્વમ્, “ આણાણ મામગ ધમ્મ ”  
 इति भगवद्वचनात्, किं च-अगारानगारभेदेन धर्मस्य द्वैविध्यमभिधाय-भग-  
 वता-“ अणगारधम्मो ताव ” इत्यादिना सर्वप्राणातिपातविरमणादि-रात्रिभो-  
 जनान्तान् अनगारधर्मानुपदिश्य तदनन्तरमिदं कथितम्—

‘अयमाउसो ! अणगारसामइए धम्मं पणत्ते एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उव-  
 द्विए निग्गये वा निग्गथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ’ (औपपातिसूत्रम्)

अयमायुप्पमन् ! अनगारसामायिकः=अनगारसिद्धान्तविषयः, धर्मः प्रज्ञप्त ।  
 एतस्य धर्मस्य ‘ शिक्षायामुपस्थितः ’=आराधकः, निर्ग्रंथो वा निर्ग्रंथी वा विहर-

और वहा से गिर पड़कर अन्त में मर जाते हैं ।

जिनेन्द्र की आज्ञा में प्रवृत्ति करना यही धर्म का लक्षण है । भग-  
 वान का भी आचाराङ्गसूत्र अ- ६ उ २ सू- ८ में यही कथन है  
 “ आणाए मामग धम्म ” इति । प्रभु ने जिस समय धर्म का उपदेश  
 दिया उस समय उन्होंने इस धर्मके दो भेद कहे हैं इनमें एक-  
 १ सागारी गृहस्थका धर्म और दूसरा अनगार-मुनिका धर्म । “ अन-  
 गार धम्मो ताव ” इत्यादि सूत्र से समस्त जीवों की विराधना आदि  
 से विरक्त होना यहा से लगाकर रात्रिभोजन का सर्वथा परिहार करना  
 यहा तक जो कुछ कहा है वह सब अनगार धर्म को लेकर कहा गया है  
 उसके बाद उन्होंने औपपातिक सूत्र में यह कहा है कि “ अयमाउसो  
 अणगारसामइए धम्मं पणत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए, उवद्विए  
 निग्गये वा निग्गथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ ” हे  
 आयुमन् ! यह अनगारसामायिक-मुनियो का सिद्धान्त विषयक

હુ ખોવા ન તમ થઈને અને ત્યાથી પડી જઈને, બ્રહ્મ થઈને અતે મૃત્યુને ભેટે છે

જિનેન્દ્રની આજ્ઞા પ્રમાણે અનુસરવું એ જ ધર્મનું લક્ષણ છે આચારાંગ  
 સૂત્ર અ-૬, ઉ-૨, સૂ-૮ માં પણ ભગવાને આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે “ આણાણ  
 મામગ ધમ્મ ઇતિ ” પ્રભુએ જ્યારે ધર્મ વિષે ઉપદેશ આપ્યો ત્યારે તેમણે  
 આ ધર્મના બે ભેદ બતાવ્યા છે ૧ સાગાર ગૃહસ્થનો ધર્મ અને ૨ અનગાર  
 મુનિનો ધર્મ “ અનગારધમ્મો તાવ ” વગેરે સૂત્રથી મમન્ત જીવેલી વિરા-  
 ધના વગેરેથી વિરક્ત થવું અહીંથી માડી રાત્રિ-ભોજનનો સંપૂર્ણપણે ત્યાગ  
 કરવો અહીં સુધી જે કંઈ કહ્યું છે તે બધું અનગાર ધર્મને ઉદ્દેશીને કહેવામાં  
 આવ્યું છે ત્યારપછી ઔપપાતિક સૂત્રમાં તેઓશ્રીએ આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે—  
 ( અયમાઉસો અણગારસામઇએ ધમ્મે પણત્તે, એયસ્સ ધમ્મસ્સ સિક્ખાએ, ઉવદ્વિએ  
 નિગ્ગયે વા નિગ્ગથી વા વિહરમાણે આણાએ આરાહએ ભવઇ ) હે આયુમન્ !

દિભિશ્ચામરાદિવીજનૈર્નૃત્યગીતવાન્નૈશ્ચ સન્નિશ્વર ભવતિ, વનસ્પતિશાયવિરાધન ચ પ્રતિમાપૂજાનિમિત્તકેઽનન્તકાયકોમલત્રિવિધફલપુષ્પપત્રસપદે નિયત ભવતિ । પૃથિવીકાયાઘાશ્રિતાં વહુત્રિધનિરપરાધહીનદીનદુર્બલપ્રકૃતિમીરુસગોપિતગરીષા ઘ્રીન્દ્રિયાદિ પચ્ચેન્દ્રિયાન્તાહ્વમા જીયા અપિ છેદનભેદનસ્યાભયવિનાશજનિતાનન્તદુઃખે સ્તીવ્રતરવેદનામુપલભ્યેતસ્તતઃ સ્વલિપતિતા ત્રિવન્તે ।

ધૂપકેધુ આ સે, દીપ તથા આરતી કી જ્યોતિ સે ચમર આદિ કે ઢોરને સે, નૃત્ય કાને સે, ગીત ગાતે સમય મુગ્ય સે નિકલે હુળ ગર્મ વાયુ સે, એવ વાજોં કે વજાને સે વાયુકાયિક જીવોં કી વિરાધના હોતી હુઈ સ્પષ્ટ માલૂમ દેતી હૈ । વનસ્પતિ કાયિક જીવોં કી વિરાધના ખી ઇસ સમય ઇસ પ્રકાર સે હોતી હૈ, કિ-મૂર્તિ પૂજન કે લિયે ડસકે પૂજક અનન્ત કાયિક એસે કોમલ અનેક પ્રકાર કે ફલ, પુષ્પ ઓર પત્રોં કા સગ્રહ જો કરતા હૈ ઇસ પ્રકાર ઇસ પૂજન મેં પદ્ધકાયિક જીવોં કી હિંસા કા આરંભ સ્પષ્ટ દેખા જાતા હૈ । તથા ઘ્રસ કાયિક જીવોં કા ખી ઇસકે નિમિત્તહનન હોતા હૈ ઓર વહ ઇસ પ્રકાર સે-કિ જવ પૃથિવીકાયિકાદિ જીવોં કા આરંભ પ્રતિમા આદિ કે નિર્માણ મેં યા દેવ આયતન ( મન્દિર ) આદિ કે કારાને મેં કિયા જાતા હૈ તો ડસ સમય ડસકે આશ્રિત જો વહુત સે અનેક જાતિ કે નિરપરાધી, હીન, દીન, દુર્બલ, પ્રકૃતિ સે ભયશીલ તથા સગોપિત શરીરવાલે એસે ઘ્રીન્દ્રિયાદિકસે લેકર પચ્ચેન્દ્રિય તક જિતને ખી ઘ્રસ જીવ રહતે હૈં વે સવ કે સવ છેદન, ભેદન, એવ સ્વાશ્રય કે વિનાશ જનિત અનન્ત દુઃખોં સે સતસ હોકર

થવાની જ છે ધૂપના ધૂમાડાથી દીપક અને આરતીની જ્યોતથી ચમર વગેરેને ઢાળવાથી તેમજ વાજાઓ વગાડવાથી વાયુકાયિક જીવોની વિરાધના થાય છે તેની દરેકને સ્પષ્ટ પ્રતીતિ થતી જ રહે છે વનસ્પતિ-કાયિક જીવોની વિરાધના પણ તે વખતે આ પ્રમાણે થાય છે કે મૂર્તિ-પૂજન માટે પૂજા કરનારાઓ અનન્ત-કાયિક એવા કોમળ ઘણી જાતના ફળો, પુષ્પો અને પત્રોને એકઠા કરે છે આમ આ પૂજામાં પણ-કાયિક જીવોની હિંસા સ્પષ્ટપણે દેખાય છે ઘ્રસ-કાયિક જીવોનું પણ તેને લીધે હનન હોય છે જેમકે જ્યારે પૃથિવ-કાયિક વગેરે જીવોને આરભ પ્રતિમા વગેરેના નિર્માણમાં અથવા તે દેવ-આયતન ( મંદિર ) વગેરે બનાવવામાં કરવામાં આવે છે ત્યારે તેના આશ્રિત જે ઘણા અનેક જાતના નિરપરાધિ, હીન, દીન, દુર્બલ, પ્રકૃતિથી ખીકણુ તેમજ સગોપિત શરીરવાળા એવા ઘ્રીન્દ્રિયાદિકથી માડીને પચ્ચેન્દ્રિય સુધીના જેટલા ઘ્રસ જીવો રહે છે તેઓ સર્વે છેદન, ભેદન અને સ્વાશ્રયના વિનાશથી અનન્ત



ધર્મસ્ય લક્ષણ ઠિ-જિનાજ્ઞાપયોજ્યપ્રવૃત્તિષત્વમ્, “ આણાણ મામગ ધમ્મ ”  
 इति भगवद्वचनात्, किं च-अगारानगारभेदेन धर्मस्य द्वैविध्यमभिधाय-भग-  
 वता-“ अणगारधम्मो ताव ” इत्यादिना सर्वप्राणातिपातविरुणादि-रात्रिभो-  
 जनान्तान् अनगारधर्मानुपदिश्य तदनन्तरमिदं कथितम्—

‘अयमाउसो ! अणगारसामङ्ग धम्मे पणत्ते एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उव-  
 ढिए निग्गये वा निग्गथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ’ (औपपातिसूत्रम्)

अयमायुष्मन् ! अनगारसामायिकः=अनगारसिद्धान्तविषयः, धर्मः प्रज्ञप्त ।  
 एतस्य धर्मस्य ‘ शिक्षायामुपस्थितः ’=आराधकः, निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा विहर-

और वहा से गिर पड़कर अन्त में मर जाते हैं ।

जिनेन्द्र की आज्ञा में प्रवृत्ति करना यही धर्म का लक्षण है । भग-  
 वान का भी आचाराङ्गसूत्र अ- ६ उ २ सू- ८ में यही कथन है  
 “ आणाए मामग धम्म ” इति । प्रभु ने जिस समय धर्म का उपदेश  
 दिया उस समय उन्होंने इस धर्मके दो भेद कहे हैं इनमें एक-  
 १ सागारी गृहस्थका धर्म और दूसरा अनगार-मुनिका धर्म । “ अन-  
 गार धम्मो ताव ” इत्यादि सूत्र से समस्त जीवों की विराधना आदि  
 से विरक्त होना यहा से लगाकर रात्रिभोजन का सर्वथा परिहार करना  
 यहा तक जो कुछ कहा है वह सब अनगार धर्म को लेकर कहा गया है  
 उसके बाद उन्होंने औपपातिक सूत्र में यह कहा है कि “ अयमाउसो  
 अणगारसामङ्ग धम्मे पणत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए, उवढिए  
 निग्गये वा निग्गथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ ” हे  
 आयुष्मन् ! यह अनगारसामायिक-मुनियो का सिद्धान्त विषयक

હ ખોથા ન તપ્ત થઈને અને ત્યાથી પડી જઈને, બ્રહ્મ થઈને અતે મૃત્યુને ભેટે છે

જીનેન્દ્રની આજ્ઞા પ્રમાણે અનુસરવું એજ ધર્મનું લક્ષણ છે આચારાંગ  
 સૂત્ર અ-૬, ઉ-૨, સૂ-૮ માં પણ ભગવાને આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે “ આણાણ  
 મામગ ધમ્મ ઇતિ ” પ્રભુએ જ્યારે ધર્મ વિષે ઉપદેશ આપ્યો ત્યારે તેમણે  
 આ ધર્મના બે ભેદ બતાવ્યા છે ૧ સાગાર ગૃહસ્થનો ધર્મ અને ૨ અનગાર  
 મુનિનો ધર્મ “ અનગારધમ્મો તાવ ” વગેરે સૂત્રથી સમસ્ત જીવોની વિરા-  
 ધના વગેરેથી વિરક્ત થવું અહીંથી માડી રાત્રિ-ભોજનનો સંપૂર્ણપણે ત્યાગ  
 કરવો અહીં સુધી જે કંઈ કહ્યું છે તે બધું અનગાર ધર્મને ઉદ્દેશીને કહેવામાં  
 આવ્યું છે ત્યારપછી ઔપપાતિક સૂત્રમાં તેઓશ્રીએ આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે—

( અયમાઉસો અણગારસામઙ્ગ ધમ્મે પણત્તે, એયસ્સ ધમ્મસ્સ સિક્ખાપ, ઉવઢિયે  
 નિગ્ગયે વા નિગ્ગથી વા વિહરમાણે આણાપ આરાહપ ભવઈ ) છે આયુષ્મન્ !

દિશિયામરાદિવીજનૈર્નૃત્યગીતવાદિત્રૈશ સચિશ્વર મયતિ, વનસ્પતિસાયપિરાધન ચ  
પ્રતિમાપૂજાનિમિત્તકેઽનન્તકાયકોમલપિરિચક્રપુષ્પપત્રસપ્રદે નિયત મયતિ । પૃથિ  
વીકાયાઘાશ્રિતા વહુશ્રિધનિરપરાધહીનદીનદુર્બલપ્રકૃતિભીરુસગોપિતગરીમા દ્વીન્દ્રિ-  
યાદિ પચ્ચેન્દ્રિયાન્તાક્ષમા જીમા અપિ છેદનભેદનસ્યાગયવિનાશજનિતાનન્તદુઃખે  
સ્તીવ્રતરવેદનામુપલભ્યેતસ્તતઃ સ્વલિતપતિતા શ્રિવન્તે ।

ધૂપકેધુ આ સે, દીપ તથા આરતી કી જ્યોતિ સે ચમર આદિ કે ઢોરને  
સે, નૃત્ય કરને સે, ગીત ગાતે સમય મુગ્ધ સે નિકલે હુગ્ધ ગર્મ વાયુ સે,  
એવ વાજોં કે ધજાને સે વાયુકાયિક જીવોં કી વિરાધના હોતી છુઈ સ્પષ્ટ  
માલુમ દેતી હૈ । વનસ્પતિ કાયિક જીવોં કી વિરાધના ખી ઇસ સમય  
ઇસ પ્રકાર સે હોતી હૈ, કિ-મૂર્તિ પૂજન કે લિયે ઉસકે પૂજક અનન્ત  
કાયિક એસે કોમલ અનેક પ્રકાર કે ફલ, પુષ્પ ઓર પત્રોં કા  
સંગ્રહ જો કરતા હૈ ઇસ પ્રકાર ઇસ પૂજન મેં પદ્ધકાયિક જીવોં કી હિંસા  
કા આરંભ સ્પષ્ટ દેખા જાતા હૈ । તથા ઇસ કાયિક જીવોં કા ખી ઇસકે  
નિમિત્તહનન હોના હૈ ઓર વહ ઇસ પ્રકાર સે-કિ જવ પૃથિવીકાયિક  
કાદિ જીવોં કા આરંભ પ્રતિમા આદિ કે નિર્માણ મેં યા દેવ આયતન  
( મન્દિર ) આદિ કે કરાને મેં કિયા જાતા હૈ તો ઉસ સમય ઉસકે  
આશ્રિત જો વહુત સે અનેક જાતિ કે નિરપરાધી, હીન, દીન, દુર્બલ,  
પ્રકૃતિ સે મયશીલ તથા સગોપિત શરીરવાળે એસે દ્વીન્દ્રિયાદિકસે લેકર  
પચ્ચેન્દ્રિય તક જિતને ખી ઇસ જીવ રહતે હૈં વે સચ કે સચ છેદન,  
ભેદન, એવ સ્વાશ્રય કે વિનાશ જનિત અનન્ત દુઃખોં સે સતસ હોકર

થવાની જ છે ધૂપના ધૂમાડાથી દીપક અને આરતીની જ્યોતથી ચમર વગેરેને  
ઢાળવાથી તેમજ વાલ્લઓ વગાડવાથી વાયુકાયિક જીવોની વિરાધના થાય છે  
તેની દરેકને સ્પષ્ટ પ્રતીતિ થતી જ રહે છે વનસ્પતિ-કાયિક જીવોની વિરા  
ધના પણ તે વખતે આ પ્રમાણે થાય છે કે મૂર્તિ-પૂજન માટે પૂજા કરનારાઓ  
અનન્ત-કાયિક એવા કોમળ ઘણી જાતના ફળો, પુષ્પો અને પત્રોને એકઠા  
કરે છે આમ આ પૂજામાં પદ્મ-કાયિક જીવોની હિંસા સ્પષ્ટપણે દેખાય છે  
ત્રસ-કાયિક જીવોનું પણ તેને લીધે હનન હોય છે જેમકે જ્યારે પૃથિવિ-કાયિક  
વગેરે જીવોનો આરભ પ્રતિમા વગેરેના નિર્માણમાં અથવા તો દેવ-આયતન  
( મંદિર ) વગેરેને બનાવવામાં કરવામાં આવે છે ત્યારે તેના આશ્રિત જે ઘણા  
અનેક જાતના નિરપરાધી, હીન, દીન, દુર્બલ, પ્રકૃતિથી બીકણ તેમજ સગો  
પિત શરીરવાળા એવા દ્વીન્દ્રિયાદિકથી માંડીને પચ્ચેન્દ્રિય સુધીના જેટલા ત્રસ  
જીવો રહે છે તેઓ સર્વે છેદન, ભેદન અને સ્વાશ્રયના વિનાશથી અનન્ત



છાયા—અયમાયુષ્મન્ ! અગારસામયિકો ધર્મઃ પ્રજ્ઞતઃ, એતસ્ય ધર્મસ્ય શિક્ષાયામુપસ્થિતઃ—આરાધકઃ શ્રમણોપાસકો વા શ્રમણોપાસિકા વા વિહરમાણા આજ્ઞાયા આરાધકો ભવતિ । ઇતિ ॥

અત્રાપિ એતસ્ય દ્વાદશત્રિધસ્ય ધર્મસ્યારાધક એવ શ્રમણોપાસક આજ્ઞાયા આરાધક ઇતિ વોધયતાઽઽગ્રેવ ધર્મસ્ય મૂલમિતિ વોધિતમ્ ।

આચારાદ્ગ્રન્થેઽપિ પ્રથમાઞ્ચયને તૃતીયોદેશે ભગવતાઽભિહિતમ્—“ જાણ સદ્ધાણિઃ સ્વતે તમેવમણુપાલિજ્ઞા—વિજહિત્તા વિમોત્તિય પુવ્વસંજોગ । પળયા વીરા મહાવીરિં । લોગ ચ આણાણ અભિસમેચા અકુતોભય ।” ઇતિ

આયુષ્યમન્ ! યહ ગૃહસ્થ કા ધર્મ કહા ગયા હૈ । હસ ધર્મ કી શિક્ષા મેં ઉપસ્થિત-શ્રમણોપાસક-મુનિજનોં કે ભક્ત એસે શ્રાવકજન અથવા શ્રાવિકાજન તીર્થંકર પ્રભુ કી આજ્ઞા કે આરાધક માને જાતે હૈં । હસ સૂત્ર મેં બી યહી પ્રકટ ક્રિયા ગયા હૈ કિ હસ ૧૨ પ્રકાર કે ધર્મ કા આરાધક હી શ્રમણોપાસક-શ્રાવક, શ્રાવિકા તીર્થંકર પ્રભુ કી આજ્ઞા કા આરાધક હૈ હસ પ્રકાર સમજાનેવાલે શ્રી જિનેન્દ્ર દેવ ને આજ્ઞા હી ધર્મ કા મૂલ હૈ યહ સમજાયા હૈ ।

આચારાગ સૂત્ર કે પ્રથમ અ યયનકે તૃતીય ઉદ્દેશે મેં ભગવાન ને યહ કહા હૈ “ જાણ સદ્ધાણિઃ સ્વતે તમેવ મણુપાલિજ્ઞા વિજહિત્તા વિમોત્તિય પુવ્વસંજોગ । પળયા વીરા મહાવીરિં લોગ ચ આણાણ અભિસમેચા અકુતોભય ” કિ જિસ શ્રદ્ધા ઉત્સાહ સે “અર્હંત પ્રભુ દ્વારા પ્રતિપાદિત સમ્યગ્દર્શનાદિક મોક્ષકે માર્ગ હૈ યા નહીં હૈ” હસ પ્રકાર સર્વ

આણાણ આરાહર મગ્ગ ” હે આયુષ્મન્ત । આ ગૃહસ્થ ધર્મ બતાવવામા આવ્યો છે આ ધર્મની શિક્ષામા ઉપસ્થિત શ્રમણોપાસક મુનિઓના ભક્ત-શ્રાવકો અથવા તો શ્રાવિકાઓ તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાના આરાધક ગણાય છે આ સૂત્રમા પણ આ પ્રમાણે જ સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યું છે કે ૧૨ પ્રકારના ધર્મના આરાધકો જ શ્રમણોપાસક શ્રાવક શ્રાવિકા તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાને આરાધકો છે આ રીતે સમજાવનારા શ્રી જિનેન્દ્રદેવે આજ્ઞા જ ધર્મનું મૂળ છે આમ સમજાવ્યું છે

આચારાગ સૂત્રના પહેલા અધ્યયનના ત્રીજા ઉદ્દેશકમા ભગવાને આ પ્રમાણે કહ્યું છે—“ જાણ સદ્ધાણિઃ સ્વતે તમેવમણુપાલિજ્ઞા વિજહિત્તા વિમોત્તિય પુવ્વસંજોગ । પળયા વીરા મહાવીરિં લોગ ચ આણાણ અભિસમેચા અકુતોભય ” કે જે શ્રદ્ધા-ઉત્સાહથી “ અર્હંત પ્રભુ વડે પ્રતિપાદિત સમ્યગ્ દર્શન વગેરે મોક્ષમાર્ગો છે કે નહિ ” આ રીતે સર્વ આગમ વિષયક સર્વ શંકા તેમજ

માણ આજ્ઞાયા આરાધકો ભવતિ । એતસ્ય ધર્મસ્યારાધક પવાજ્ઞાયા આરાધક  
ઇત્યુક્ત્યાઽઽજૈવ ધર્મસ્ય પ્રકાશકતવા મૂલમિતિ ચોધિતમ્ । તદનન્તર ચ ભગવત્-

“ અગારધમ્મ દુવાલસવિહ આદિક્વહ્ । ત જહા—પચ અણુવ્વયાઇ, તિણ્ણિ-  
ગુણવ્વયાઇ ચત્તારિ સિક્ખાવયાઇ ” ઇત્યાદિના દ્વાદશવિધં ધર્મ નિરુપ્ય કથિતમ્ ।

‘ અયમાડમો ! અગારસામણ્ણ ધમ્મે પળ્લન્તે ’ એયસસ ધમ્મસસ સિક્ખાણ ઉવ  
ટ્ઠિણ સમણોવાસણ વા સમણોવાસિયા વા વિહરમાણે આણાણ આરાહણ ભવહ્ ” ઇતિ ।

ધર્મ કહા ગયા હૈ—અર્થાત્ મુનિયોં કા ગૃહ ધર્મ કહા ગયા હૈ । ઇસ  
ધર્મ કી શિક્ષા મેં જો ઉપસ્થિત હોતા હૈ અર્થાત્ જો ઇસ ધર્મ કી-  
આરાધના કરતે હૈ—ચાહે વે સાધુ હોં ચાહે સાધ્વી હોં કોઢ બી હો વે  
જિનેન્દ્ર ભગવાન કી આજ્ઞા કે આરાધક હોતે હૈ । ઇસ ધર્મ કી આરા-  
ધના કરનેવાલા જીવ હી જિનેન્દ્ર કી આજ્ઞા કા આરાધક માના ગયા હૈ  
ઇસ કથન સે “ જિસ વાત મેં ભગવાન કી આજ્ઞા હો વહી ધર્મ કા મૂલ  
હૈ અન્ય આજ્ઞા વિરુદ્ધ પ્રવૃત્તિ હૈ ” યહ વાત સમજાઈ ગઈ હૈ ઇસ કે  
બાદ ભગવાન ને “ અગારધમ્મ દુવાલસવિહ આદિક્વહ્ તં જહા—પચ  
અણુવ્વયાઇ, તિણ્ણિગુણવ્વયાઇ ચત્તારિ સિક્ખાવયાઇ ” ઇસ સૂત્ર સે યહ  
પ્રકટ કિયા હૈ કિ ગૃહસ્થ કા ધર્મ ૧૨ પ્રકાર કા હૈ ૫ અણુવત, ૩ ગુણ  
વત ઓર ૪ શિક્ષાવત । ઇસ પ્રકાર સે કથન કર “ અયમાડમો અગાર  
સામણ્ણ ધમ્મે પળ્લન્તે એયસસ ધમ્મસસ સિક્ખાણ, ઉવટ્ઠિણ, સમણોવાસણ  
વા સમણોવાસિયા વા વિહરમાણે આણાણ આરાહણ ભવહ્ ” ઇતિ—હૈ

આ અનગાર સામાયિક મુનિઓનો સિદ્ધાન્ત વિષયક ધર્મ કહેવામા આવ્યો છે  
એટલે કે આ મુનિઓનો ધર્મ કહેવામા આવ્યો છે આ ધર્મની શિક્ષામા જે  
ઉપસ્થિત હોય છે એટલે કે આ ધર્મની આરાધના કરે છે—ભલે તેઓ સાધુ  
હોય કે સાધ્વીઓ ગમે તે કેમ ન હોય તેઓ જીનેન્દ્ર ભગવાનની આજ્ઞાના  
આરાધકો હોય છે આ ધર્મની આરાધના કરનારો જીવ જ જીનેન્દ્રના આરા-  
ધક ગણાય છે આ કથનથી એ વાત સમજાવવામા આવી છે કે જે વાતમા  
ભગવાનની આજ્ઞા હોય તે જ ધર્મ છે, આજ્ઞા વિરુદ્ધ બીજી આચરણ અધર્મ  
છે ત્યારપછી ભગવાન વડે “ અગારધમ્મ દુવાલસવિહ આદિક્વહ્ ત જહા પચ  
અણુવ્વયાઇ, તિણ્ણિ ગુણવ્વયાઇ ચત્તારિ સિક્ખાવયાઇ ” આ સૂત્ર દ્વારા એ સ્પષ્ટ  
કરવામા આવ્યું છે કે ગૃહસ્થનો ધર્મ ૧૨ પ્રકારનો છે—૫ અણુવત, ૩ ગુણવત  
અને ૪ શિક્ષાવત આ રીતે “ અયમાડમો અગારસામણ્ણ ધમ્મે પળ્લન્તે એયસસ  
ધમ્મસસ સિક્ખાણ ઉવટ્ઠિણ, સમણોવાસણ વા સમણોવાસિયા વા ”

હાયા—અયમાયુષ્મન્ ! અગારસામયિકો ધર્મઃ મજ્ઞસઃ, એતસ્ય ધર્મસ્ય શિક્ષાયામુપસ્થિતઃ—આરાધકઃ શ્રમણોપાસકો વા શ્રમણોપાસિકા વા વિહરમાણા આજ્ઞાયા આરાધકો ભવતિ । ઇતિ ॥

અત્રાપિ એતસ્ય દ્વાદશધિસ્ય ધર્મસ્યારાધક એવ શ્રમણોપાસક આજ્ઞાયા આરાધક ઇતિ વોધયતાડઙ્ગેન ધર્મસ્ય મૂલમિતિ વોધિતમ્ ।

આચારાદ્ગ્રન્થેડપિ પ્રથમાઞ્ચયને તૃતીયોદેશે ભગવતાડભિહિતમ્—“ જાણ સદ્ધાણિસ્સવતે તમેવમણુપાલિઙ્ગા—વિજહિત્તા વિમોક્તિય પુવ્વસંજોગ । પણયા વીરા મહાવીરિં । લોગ ચ આણાણ અભિસમેચ્છા અકુતોભય ।” ઇતિ

આયુષ્યમન્ ! યહ ગૃહસ્થ કા ધર્મ કહા ગયા હૈ । ઇસ ધર્મ કી શિક્ષા મેં ઉપસ્થિત-શ્રમણોપાસક-મુનિજનોં કે ભક્ત એસે શ્રાવકજન અથવા શ્રાવિકાજન તીર્થંકર પ્રભુ કી આજ્ઞા કે આરાધક માને જાતે હૈં । ઇસ સૂત્ર મેં બી યહી પ્રકટ ક્રિયા ગયા હૈ કિ ઇસ ૧૨ પ્રકાર કે ધર્મ કા આરાધક હી શ્રમણોપાસક-શ્રાવક, શ્રાવિકા તીર્થંકર પ્રભુ કી આજ્ઞા કા આરાધક હૈ ઇસ પ્રકાર સમજાનેવાલે શ્રી જિનેન્દ્ર દેવ ને આજ્ઞા હી ધર્મ કા મૂલ હૈ યહ સમજાયા હૈ ।

આચારાગ સૂત્ર કે પ્રથમ અ યયનકે તૃતીય ઉદ્દેશે મેં ભગવાન ને યહ કહા હૈ “ જાણ સદ્ધાણિસ્સવતે તમેવ મણુપાલિઙ્ગા વિજહિત્તા વિમોક્તિય પુવ્વસંજોગ । પણયા વીરા મહાવીરિં લોગ ચ આણાણ અભિસમેચ્છા અકુતોભય ” કિ જિસ શ્રદ્ધા ઉત્સાહ સે “અર્હંત પ્રભુ દ્વારા પ્રતિપાદિત સમ્યગ્દર્શનાદિક મોક્ષકે માર્ગ હૈ યા નહીં હૈ” ઇસ પ્રકાર સર્વ

આણાણ આરાહણ ભવહ ” હે આયુષ્મન્ત ! આ ગૃહસ્થ ધર્મ બતાવવામા આવ્યો છે આ ધર્મની શિક્ષામા ઉપસ્થિત શ્રમણોપાસક મુનિઓના ભક્ત-જન-શ્રાવકો અથવા તે શ્રાવિકાઓ તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાના આરાધક ગણાય છે આ સૂત્રમા પણ આ પ્રમાણે જ અપૂર્વ ડરવામા આવ્યું છે કે ૧૨ પ્રકારના ધર્મના આરાધકો જ શ્રમણોપાસક શ્રાવક શ્રાવિકા તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાને આગવકો છે આ રીતે અભન્તવનારા શ્રી જીનેન્દ્રદેવે આજ્ઞા જ ધર્મનું મૂળ છે આમ સમજાવ્યું છે

આચારાગ સૂત્રના પહેલા અધ્યયનના ત્રીજા ઉદ્દેશકમા ભગવાને આ પ્રમાણે કહ્યું છે—“ જાણ સદ્ધાણિસ્સવતે તમેવમણુપાલિઙ્ગા વિજહિત્તા વિમોક્તિય પુવ્વસંજોગ । પણયા વીરા મહાવીરિં લોગ ચ આણાણ અભિસમેચ્છા અકુતોભય ” કે જે શ્રદ્ધા-ઉત્સાહથી “અર્હંત પ્રભુ વડે પ્રતિપાદિત સમ્યગ્ દર્શન વગેરે મોક્ષના માર્ગો છે કે નહિ ” આ રીતે સર્વ આગમ વિષયક સર્વ શકા તેમજ



માણ આજ્ઞાયા આરાધકો ભવતિ । એતસ્ય ધર્મસ્યારાધક પવાજ્ઞાયા આરાધક  
ઇત્યુક્ત્વાઽઽગ્રેવ ધર્મસ્ય પ્રકાશકત્વા મૂળમિતિ યોધિતમ્ । તદનન્તર ચ મગવતા-

“ અગારધમ્મ દુવાલસવિહ આહસ્વઃ । ત જહા—પચ અણુવ્વયાઙ્, તિણ્ણિ-  
ગુણવ્વયાઙ્ ચત્તારિ સિક્ખાવયાઙ્ ” ઇત્યાદિના દ્વાદશવિધ ધર્મે નિરુપ્ય કથિતમ્ ।

‘ અયમાઉમો ! અગારસામણ્ણ ધમ્મે પળ્લન્તે ’ એવસ્સ ધમ્મસ્સ સિક્ખાણ ઉવ  
ટ્ઠિણ સમણોવાસણ વા સમણોવાસિયા વા વિહરમાણે આણાણ આરાહણ ભવઙ્ ” ઇતિ ।

ધર્મ કહા ગયા હૈ—અર્થાત્ મુનિયોં કા ગૃહ ધર્મ કહા ગયા હૈ । ઇસ  
ધર્મ કી શિક્ષા મેં જો ઉપસ્થિત હોતા હૈ અર્થાત્ જો ઇસ ધર્મ કી-  
આરાધના કરતે હૈ—ચાહે વે સાધુ હોં ચાહે સાધ્વી હોં કોઢ બી હો વે  
જિનેન્દ્ર ભગવાન કી આજ્ઞા કે આરાધક હોતે હૈં । ઇસ ધર્મ કી આરા-  
ધના કરનેવાલા જીવ હી જિનેન્દ્ર કી આજ્ઞા કા આરાધક માના ગયા હૈ  
ઇસ કથન સે “ જિસ વાત મેં ભગવાન કી આજ્ઞા હો વહી ધર્મ કા મૂલ  
હૈ અન્ય આજ્ઞા વિરુદ્ધ પ્રવૃત્તિ હૈ ” યહ વાત સમજાઈ ગઈ હૈ ઇસ કે  
બાદ ભગવાન ને “ અગારધમ્મ દુવાલસવિહ આહસ્વઢ ત જહા—પચ  
અણુવ્વયાઙ્, તિણ્ણિગુણવ્વયાઙ્ ચત્તારિ સિક્ખાવયાઙ્ ” ઇસ સૂત્ર સે યહ  
પ્રકટ કિયા હૈ કિ ગૃહસ્થ કા ધર્મ ૧૨ પ્રકાર કા હૈ ૫ અણુવત, ૩ ગુણ  
વત્ત ઓર ૪ શિક્ષાવત્ । ઇસ પ્રકાર સે કથન કર “ અયમાઉસો અગાર  
સામણ્ણ ધમ્મે પળ્લન્તે એવસ્સ ધમ્મસ્સ સિક્ખાણ, ઉવટ્ઠિણ, સમણોવાસણ  
વા સમણોવાસિયા વા વિહરમાણે આણાણ આરાહણ ભવઙ્ ” ઇતિ—હૈ

આ અનગાર સામાયિક મુનિયોના સિદ્ધાન્ત વિષયક ધર્મ કહેવામા આવ્યો છે  
એટલે કે આ મુનિઓના ધર્મ કહેવામા આવ્યો છે આ ધર્મની શિક્ષામા જે  
ઉપસ્થિત હોય છે એટલે કે આ ધર્મની આરાધના કરે છે—ભલે તેઓ સાધુ  
હોય કે સાધ્વીઓ ગમે તે કેમ ન હોય તેઓ જીનેન્દ્ર ભગવાનની આજ્ઞાના  
આરાધકો હોય છે આ ધર્મની આરાધના કરનારો જીવ જીનેન્દ્રના આરા-  
ધક ગણાય છે આ કથનથી એ વાત સમજાવવામા આવી છે કે જે વાતમા  
ભગવાનની આજ્ઞા હોય તે જ ધર્મ છે, આજ્ઞા વિરુદ્ધ બીજી આચરણ અધર્મ  
છે ત્યારપછી ભગવાન વડે “ અગારધમ્મ દુવાલસવિહ આહસ્વઙ્ ત જહા પચ  
અણુવ્વયાઙ્, તિણ્ણિ ગુણવ્વયાઙ્ ચત્તારિ સિક્ખાવયાઙ્ ” આ સૂત્ર દ્વારા એ અર્થ  
કરવામા આવ્યું છે કે ગૃહસ્થનો ધર્મ ૧૨ પ્રકારનો છે—૫ અણુવત, ૩ ગુણવત  
અને ૪ શિક્ષાવત આ રીતે “ અયમાઉસો અગારસામાણ્ણ ધમ્મે પળ્લન્તે એવસ્સ  
ધમ્મસ્સ સિક્ખાણ ઉવટ્ઠિણ, સમણોવાસણ વા સમણોવાસિયા વા વિહરમાણે

‘પગ્યા’ પ્રણતા = પ્રાપ્તાઃ કઠિનતરતપ સયમારાધનેન પ્રાપ્તવન્ત દૃષ્ટ્યર્થઃ । અય મેવ માર્ગો મોક્ષાગામિકરોઽશેષસપ્તમિસેવિતત્વાત્, તીર્થદ્ધરાદિમહાપુરુષા અપિ માર્ગેગિમમતુરીલિતવન્ત ઇતિ વિશ્વસનીયતયા શિષ્યાણા શ્રદ્ધાપૂર્વક પ્રવૃત્તિર્યથા સ્વાદિતિમાત્ર ।

કશ્ચિન્મન્દધીઃ શિષ્યોઽનેકદૃષ્ટાન્તૈર્વોચ્યમાનોઽપિ અપ્રકાયાદિજીવેષુ ન શ્રદ્ધાતીતિ તપુદિશ્ય કથયતિ-હે શિષ્ય ! ત્વ મતિર્યથાપિ અપ્રકાયજીવવિષયે ન

વીર દો પ્રકાર કે હોતે હૈ ? દ્રવ્યવીર ઓર દૂસરે ભાવવીર । સયમ કે અનુષ્ઠાન કરને મેં જો શક્તિસપન હૈં વે ભાવવીર હ । વે જીવ સમ્યગ્દર્શન આદિ લક્ષગત્વ હસ મહાવિસ્તૃતમાર્ગ કો કિ જો મહાપુરુષો દ્વારા સેવિત હુઆ હૈ કઠિનતર તપ ઓર સયમ કી આરાધના સે પ્રાપ્ત કર લિયા કરતે હૈં । કહનેકા સાર યહો હૈ કિ ભાવવીર યહી અપને ચિત્તમેં વિચાર ક્રિયા કરતે હૈં કિ સમ્યગ્જ્ઞાન, સમ્યગ્દર્શન, સમ્યગ્ચારિત્ર ઓર સમ્યગ્તપ રૂપ હી માર્ગ હૈ ક્યો કિ ડસી સે મુક્તિ કી પ્રાપ્તી હોતી હૈ-હસીલિયે હસ માર્ગકા સમસ્ત સયમીજીવોને પૂર્વ મેં સેવન કિયા હૈ ઓર તો ક્યા સ્વય તીર્થકર પ્રભુ ને બી ડસી માર્ગ કી પરિશીલના કી હૈ । હસલિયે હસ માર્ગ મેં પ્રવૃત્તિ સર્વહિત વિધાયી હૈ હસ પ્રકાર યહ માર્ગ વિશ્વાસ યોગ્ય હોને સે શિષ્યજન બી શ્રદ્ધાપૂર્વક હસમે પ્રવૃત્તિ કરે ।

કોઈ મન્દબુદ્ધિવાલા શિષ્ય અનેક દૃષ્ટાન્તો દ્વારા સમજાવે જાને પર બી યદિ અપ્રકાય આદિ જીવોં કી શ્રદ્ધા સે રહિત હોતા હૈ તો ઉસે

૧ દ્રવ્ય-વીર, ૨ ભાવ-વીર સયમના અનુષ્ઠાનમા જે શક્તિશાળી છે તે ભાવ વીર છે આ બધા જીવો સમ્યાગ્-દર્શન વગેરે લક્ષણ રૂપ આ વિસ્તૃતમાર્ગને કે જે મહાપુરુષો વડે સેવવામા આવ્યું છે-કઠણ તપ અને સયમની આરાધનાથી મેળવી લે છે કહેવાની મતલબ એ છે કે ભાવ-વીરો પોતાના મનમા આ પ્રમાણે જ વિચારો કરતા રહે છે કે ખરી રીતે સમ્યગ્ જ્ઞાન, સમ્યગ્ દર્શન, સમ્યગ્ ચારિત્ર રૂપ જ માર્ગ છે કેમકે મુક્તિની પ્રાપ્તિ એનાથી જ થાય છે એટલા માટે જ પહેલા થઈ ગયેલા બધા જીવોએ આ માર્ગનું જ અનુસરણ કર્યું હતું તીર્થકર પ્રભુએ જાતે પણ આ માર્ગની જ પરિશીલતા કરી છે એથી આ માર્ગમા પ્રવૃત્ત થવું તે બધી રીતે હિતાવહ છે આ પ્રમાણે આ માર્ગ વિશ્વમનીષ હોવા બદલ શિષ્યો પણ શ્રદ્ધા રાખીને તેમા પ્રવૃત્ત થાય

કેમકે મહ બુદ્ધિ ધરાવનાર શિષ્ય ઘણા દૃષ્ટાંતો વડે સ્પષ્ટ કરવામા આવવા છતાં પણ જો અપ્રકાય વગેરે જીવોની શ્રદ્ધાથી રહિત હોય છે તો



યયા શ્રદ્ધયા-સમ્યક્ત્વેન ' વિમોક્ષિય ' વિમ્બોત્તસિમાં=ગદ્ધાં-સર્વશક્તાં દેશ  
શક્તા ચેત્યર્થઃ, યથા-‘ કિમાર્હતો મોક્ષમાર્ગોઽસ્તિ ન ત્રા ’ ઇતિ સર્વાગમત્રિપયિકા  
શક્તા સર્વશક્તા, તથા-“ કિમપ્કાયાઽયો જીવાઃ સન્તિ ન ત્રા ” ઇતિ દેગશક્તા ।  
તથા ‘ પુનરસન્નિગં ’ પૂર્વસંયોગ=માતાપિત્રાદિસમ્યગ્ધં ધનધાન્યામ્વજનાદિસમ્યગ્ધ  
વા, ઇદમુપલક્ષણ-તેન પદ્માત્સયોગમપિ શ્વશુરોદિકૃત, ‘ વિજિજ્ઞા ’ વિજ્ઞાય=પરિ  
ત્યજ્ય ‘ ણિશ્વસ્તે ’ નિષ્ક્રાન્તઃ=પ્રવ્રજિતઃ । ‘ ત ’ ત્વા શ્રદ્ધામ્ ‘ અણુપાન્નિજ્ઞા  
એવ ’ અણુપાલયેદેવ-નિરતિચાર રક્ષેદિત્યર્થઃ ।

અથ-‘ પરિશીલિતમાર્ગોઽનુગમ્યતે ’ ઇતિ લોકરીત્યા શિષ્યશ્રદ્ધાદ્દીકરણાય  
પૂર્વમહાપુરુષાચરિતોઽય માર્ગ ઇતિ ।

વીરાઃ—ભાવવીરાઃ સંયમાનુષ્ઠાને ધીર્યવન્તઃ ‘ મહાવીરિ ’ મહાવીર્યિ=

મહાવીર્યિ-સમ્યગ્દર્શનાદિલક્ષણો મહામાર્ગ મહાપુરુષસેવિતત્વાત્, તામહાવીર્યિ  
આગમ વિષયક સર્વશક્તા કા તથા “ અપ્ કાયિકાદિક જીવ હૈં યા  
નહી ” ઇસ પ્રકાર કી દેગશક્તા ઓર માતા પિતા આદિ કે સાથ કે  
સબધરૂપ પૂર્વ સયોગ એવ ધન, ધાન્ય, સ્વજન આદિ સબધ, ઉપલક્ષણ  
સે શ્વશુર આદિરૂપ પ્રશ્નાત્ સયોગ કા પરિત્યાગ કર યહ જીવ સસાર  
આદિ પદાર્થો કો હેય સમજ્ઞા ઉનસે સર્વથા વિરક્ત હો જાતા હૈં ઉસ  
શ્રદ્ધા કા અતિચાર આદિ કો સે રક્ષા કરની ચાહિયે-ઉસ શ્રદ્ધા કા  
અતિચાર રહિત્ત હોકર મુનિ કો પાલન કરના ચાહિયે । જો માર્ગ પરિ-  
શીલિત હોતા હૈં ઉસ પર અનેક પ્રાણી ચલતે હૈં યહ લૌકિકરીતિ હૈં ।  
હસીરીતિ કે અનુસાર શિષ્યો કી શ્રદ્ધા કો દૃઢ કરને કે લિયે “ યહ  
માર્ગ પૂર્વ મેં મહાપુરુષો દ્વારા સેવિત ક્રિયા ગયા હૈં ” હમેં સમજ્ઞાને કે  
લિયે સૂત્રકાર “ પળયા વીરા મહાવીરિ ” ઇસ અશ કા કથન કરતે હૈં

“ અપ્કાયિક વગેરે જીવો છે કે નથી ” આ જાતની દેશ શક્તા અને માતા  
પિતા વગેરેની સાથેના સબધ રૂપ પૂર્વ સયોગ અને ધન, ધાન્ય, સ્વજન  
વગેરે સબધ ઉપલક્ષણથી ‘ શ્વશુર ’ વગેરે રૂપ પ્રશ્નાત્ સયોગનો પરિત્યાગ  
કરીને આ જીવ સસાર વગેરે પદાર્થોને હેય સમજીને તેમના તરફ મપૂપ્તપણે  
વિરક્ત થઈ જાય છે તે શ્રદ્ધાની અતિચાર વગેરેથી રક્ષા કરવી જોઈએ તે  
શ્રદ્ધાનું પાલન મુનિએ અતિચાર વગર થઈને કરવું જોઈએ તે માર્ગ પરિ-  
શીલિત હોય છે તે તરફ ધણા પ્રાણીઓ જાય છે, આ લૌકિક પ્રથા છે આ પ્રથા  
પ્રમાણે શિષ્યોની શ્રદ્ધાને મજબૂત બનાવવા માટે “ આ માર્ગ મહા પુરુષો  
વડે સેવામાં આવ્યો છે ” આ વાત સમજાવવા માટે સૂત્રકાર  
“ પળયા વીરા મહાવીરિ ” આ વચનને ટાકે છે વીર બે પ્રકારનું

‘પણ્યા’ પ્રણતા = પ્રાપ્તા: કઠિનતરતપ સયમારાધનેન પ્રાપ્તવન્ત દૃશ્યર્થઃ । અય મેવ માર્ગો મોક્ષાપાત્તિકરોડ્ગેપસયમિસેવિતત્વાત્, તીર્થઢ્ઢરાદિમહાપુરુષા અપિ માર્ગમિમમનુશીલિતવન્ત ઇતિ વિશ્વસનીયતયા શિષ્યાણા શ્રદ્ધાપૂર્વક પ્રવૃત્તિર્યથા સ્યાદિતિમાત્ર ।

કથિન્મન્દધીઃ શિષ્યોડ્ગેકદૃષ્ટાન્તૈર્ગોચ્યમાનોડપિ અપ્કાયાદિજીવેષુ ન શ્રદ્ધાતીતિ તમુદિશ્ય કથયતિ-હે શિષ્ય ! તવ મતિર્યદ્યપિ અપ્કાયજીવવિષયે ન

વીર દો પ્રકાર કે હોતે હેં ? દ્રવ્યવીર ઓર દૂસરે ભાવવીર । સયમ કે અનુષ્ઠાન કરને મેં જો શક્તિસપન્ન હેં વે ભાવવીર હ । વે જીવ સમ્યગ્દર્શન આદિ લક્ષગરૂપ હસ મહાવિસ્તૃતમાર્ગ કો કિ જો મહાપુરુષો ઢારા સેવિત જુઆ હૈ કઠિનતર તપ ઓર સયમ કી આરાધના સે પ્રાપ્ત કર લિયા કરતે હેં । કહનેકા સાર યહો હૈ કિ ભાવવીર યહી અપને ચિત્તમેં વિચાર ક્રિયા કરતે હેં કિ સમ્યગ્જ્ઞાન, સમ્યગ્દર્શન, સમ્યગ્ચોરિત્ર ઓર સમ્યગ્તપ રૂપ હી માર્ગ હૈ ક્યોં કિ હસી સે મુક્તિ કી પ્રાપ્તી હોતી હૈ-હસીલિયે હસ માર્ગકા સમસ્ત સયમીજીવોને પૂર્વ મેં સેવન ક્રિયા હૈ ઓર તો ક્યા સ્વય તીર્થકર પ્રભુ ને મી હસી માર્ગ કી પરિશીલના કી હૈ । હસલિયે હસ માર્ગ મેં પ્રવૃત્તિ સર્વહિત વિધાયી હૈ હસ પ્રકાર યહ માર્ગ વિશ્વાસ યોગ્ય હોને સે શિષ્યજન મી શ્રદ્ધાપૂર્વક હસમે પ્રવૃત્તિ કરે ।

કોઈ મન્દબુદ્ધિવાલા શિષ્ય અનેક દૃષ્ટાન્તો ઢારા સમઢાયે જાને પર મી યદિ અપ્કાય આદિ જીવો કી શ્રદ્ધા સે રહિત હોતા હૈ તો ઉસે

૧ દ્રવ્ય-વીર, ૨ ભાવ-વીર સયમના અનુષ્ઠાનમા જે શક્તિશાળી છે તે ભાવ વીર છે આ બધા જીવો સમ્યાગ્-દર્શન વગેરે લક્ષણ રૂપ આ વિસ્તૃતમાર્ગને કે જે મહાપુરુષો વડે સેવવામા આવ્યુ છે-કઠણ તપ અને સયમની આરાધનાથી મેળવી લે છે કહેવાની મતલબ એ છે કે ભાવ-વીરો પોતાના મનમા આ પ્રમાણે જ વિચારો કરતા રહે છે કે ખરી રીતે સમ્યગ્ જ્ઞાન, સમ્યગ્ દર્શન, સમ્યગ્ ચારિત્ર રૂપ જ માર્ગ છે કેમકે મુક્તિની પ્રાપ્તિ એનાથી જ થાય છે એટલા માટે જ પહેલા થઈ ગયેલા બધા જીવોએ આ માર્ગનુ જ અનુસરણ ક્યું હતું તીર્થકર પ્રભુએ જાતે પણ આ માર્ગની જ પરિશીલતા કરી છે એથી આ માર્ગમા પ્રવૃત્ત થયુ તે બધી રીતે હિતાવહ છે આ પ્રમાણે આ માર્ગ વિશ્વસનીય હોવા બદલ શિષ્યો પણ શ્રદ્ધા રાખીને તેમા પ્રવૃત્ત થાય

કેમકે મહ બુદ્ધિ ધરાવનાર શિષ્ય ધણા દૃષ્ટાંતો વડે અપ્રેરણા કરવામા આવવા છતાં પણ જે અપ્કાય વગેરે જીવોની શ્રદ્ધાથી રહિત હોય છે તે

પરિસ્ફુરતિ, તદ્વિષયે વિશેષજ્ઞાનાભાવાત્, તથાપિ મગરદાહયા શ્રદ્ધા નિતરાં વિધેયેત્યાગયેનાદ—“લોગ ચ આણાણ અભિસમેચ્ચા અકુતોભય” ઇતિ ।

“લોગ” લોકમ્ અત્ર લોકશબ્દેન પ્રકરણવશાદપ્કાય લોક એ ગૃહ્યતે, તમપ્કાયલોક, ચ શબ્દેન અન્યાશ્ચાપ્કાયાશ્રિતાન્ જીવાન્ “આણાણ” આશ્રયા તીર્થકર વચનેન “અભિસમેચ્ચા” અભિસમેત્ય આભિયુગ્ધેન સમ્યગ્જ્ઞાત્યા, અપ્કાયાદયો જીવા સન્તીત્યેસમયુ વેત્પર્યઃ, “અકુતોભય” નાસ્તિ કુતશ્ચિત્

સમજ્ઞાનેકે લિયે સૂત્રકાર કહતે હેં કિ હે શિષ્ય ! તુમ્હારી બુદ્ધિ અપ્કા યિક આદિ જીવોકી શ્રદ્ધા કરનેમેં ઉન વિષયક વિશેષજ્ઞાનકે અભાવસે યદિ સમર્થ નહીં હૈ, તો ખી મગવાન્ કી આજ્ઞા સે તુમ્હેં ઉનકે વિષય મેં અપની શ્રદ્ધા કો દૂષિત નહીં હોને દેના ચાહિયે—અર્થાત મગવાન કી આજ્ઞા પ્રમાણ માનકર તુમ્હેં ઉનકે વિષય મેં અપની અતિશય શ્રદ્ધા જાગ્રત કરની ચાહિયે । સૂત્રકાર હસી અભિપ્રાય સે કહતે હેં કિ “લોગ ચ આણાણ અભિસમેચ્ચા અકુતોભય” ઇતિ । અપ્કાય રૂપ લોક કો તથા “ચ” શબ્દ સે અન્ય અપ્કાય કે અશ્રિત જીવોં કો તીર્થકર પ્રભુ કી આજ્ઞા સે અછી તરહ જાનકર ઉનકી આજ્ઞાનુસાર ઉનકા અસ્તિત્વ માનકર આત્મકલ્યાણ કે અભિલાષી મુનિયોં કો સયમ કા પાલન કરના ચાહિયે । સૂત્રસ્થલોક શબ્દ યહા પ્રકરણ કે વશ સે અપ્કાય કા ઘોષક હૈ । “ચ” શબ્દ સે તદાશ્રિત અન્ય જીવોં કા ગ્રહણ હુઆ હૈ । “અકુતોભય” શબ્દ કા અર્થ સયમ હૈ કહોં સે ખી કિસી

તેને સમજાવવા માટે સૂત્રકાર કહે છે કે હે શિષ્ય ! તમારી બુદ્ધિ અધ્યાયિક વગેરે જીવોની શ્રદ્ધા કરવામાં તેમના વિષે સવિશેષ જ્ઞાનના અભાવના લીધે જો સમર્થ નથી તો પણ ભગવાનની આજ્ઞાથી તે પ્રત્યે તમે પોતાની શ્રદ્ધાને દૂષિત થવા દેશો નહિ એટલે કે ભગવાનની આજ્ઞા પ્રમાણ માનીને મદ બુદ્ધિવાળા શિષ્યોએ તેમના પ્રત્યે પોતાની વધારેમા વધારે શ્રદ્ધા ભગ્નત કરવી જોઈએ સૂત્રકાર આ પ્રયોજનથી જ કહે છે કે “લોગ ચ આણાણ અભિસમેચ્ચા અકુતોભય” ઇતિ । અધ્યાય ૩૫ લોકને તેમજ ‘ચ’ શબ્દથી બીજા અધ્યાયાશ્રિત જીવોને તીર્થકર પ્રભુની આજ્ઞાથી સારી પેઠે સમજીને તેમની આજ્ઞા મુજબ તેમનું અસ્તિત્વ માનીને આત્મકલ્યાણને ધન્યનારા મુનિઓએ સયમનું પાલન કરવું જોઈએ સૂત્રમાં આવેલો ‘લોક’ શબ્દ અહીં પ્રકરણ વશાત્ અધ્યાયનો વાચક છે ‘ચ’ શબ્દથી તદાશ્રિત બીજા જીવોનું શ્રદ્ધા થયું છે ‘અકુતોભય’ શબ્દનો અર્થ સયમ છે કેમકે પણ જગ્યા એથી કેમકે પણ રીતે જીવોને જોનાથી લય હોતો નથી તે અ.

કેનાપિ પ્રકારેણ પ્રાણિના મય ચસ્માત્સોઽકુતોમયઃ=સયમસ્તમ્, “અણુપાલિજ્ઞા” અનુપાલયેત્તિ પૂર્વોક્તેન સમ્બન્ધ. । સર્વદા જીવાભિરક્ષણરૂપસયમાનુપાલને સાવધાનતયા યત્નઃ કાર્યઃ इत्यर्थः ।

અત્ર “જાણ સદ્ધાણ નિકલવતે તમેવમણુપાલિજ્ઞા વિજહિત્તા વિસોત્તિય પુવ્વસજોગ” इत्यनेन શ્રદ્ધાયા આરાધ્યત્વે જિનાજ્ઞાયાઃ સદ્ધાયાત્ શ્રદ્ધાયા ધર્મત્વ સિદ્ધમ્ ।

શ્રદ્ધાદઢીકરણમપિ ચ ધર્મસ્તદર્થ “પણયા વીરા મહાવીરિ” इति भगवदुप देशस्य सद्भावात् ।

“લોગ ચ આણાણ અમિસમેચ્ચા” इत्यनेनाज्ञायाः पदकायजीवतत्त्वज्ञान-हेतुत्वेन वर्णनात् तत्त्वज्ञानस्य धर्मत्वम् ।

મો પ્રકાર સે જીવો કો જિસસે મય નહીં હોતા હૈ વહ અકુતોમય-સયમ હૈ ભાવ ઇસકા યહી હૈ કિ આત્મ કલ્યાણ કે ઇચ્છુક મુનિયોં કો જીવોં કે સરક્ષણ રૂપ સયમ કો આરાધના કરને મેં સાવધાનતા પૂર્વક પ્રયત્નશીલ રહના ચાહિયે । યહા “જાણ સદ્ધાણ નિકલવતે તમેવમણુપાલિજ્ઞા, વિજહિત્તા વિસોત્તિય પુવ્વસજોગ” હસ સૂત્રાશ સે યહ વાત સમજાઈ ગઈ હૈ કિ શ્રદ્ધા કો આરાધના મેં જિનેન્દ્ર કો આજ્ઞા કા સદ્ભાવ હૈ અનઃ વહા ધર્મ હૈ । અપિ ચ શ્રદ્ધા કો દઢતા કરના યહ મો ધર્મ હૈ । હસી નિમિત્ત “પણયા વીરા મહાવીરિ” યહ ભગવાન કા ઉપદેશ હૈ ।

“લોગ ચ આણાણ અમિસમેચ્ચા” હસ સૂત્રાશ સે યહ પ્રકટ હોતા હૈ કિ જવ જિનેન્દ્ર કો આજ્ઞા પદ્ધ કાયિક જીવોં કે વાસ્તવિક જ્ઞાન હોને મેં હેતુરૂપ સે વર્ણિત દુઈ હૈ તો હસ સ્થિતિ મે તત્ત્વજ્ઞાન ધર્મ હૈ ।

છે મતલબ એ છે કે આત્મકલ્યાણ ઇચ્છનારા મુનિઓને જીવોની રક્ષા રૂપ સયમની આરાધના કરવામા સાવધાન થઈને પ્રયત્ન કરતા રહેવું જોઈએ અહીં “જાણ સદ્ધાણ નિકલવતે તમેવમણુપાલિજ્ઞા, વિજહિત્તા વિસોત્તિય પુવ્વસજોગ” આ સૂત્રાશ વડે આ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવી છે કે શ્રદ્ધાની આરાધનામા જિનેન્દ્રની આજ્ઞાનો મહભાવ છે એટલા માટે તેજ ધર્મ છે અને શ્રદ્ધાને મળખૂત બનાવવી તે પણ ધર્મ છે આ નિમિત્તે જ “પણયા વીરા મહાવીરિ” આ ભગવાનનો ઉપદેશ છે

“લોગચ આણાણ અમિસમેચ્ચા” આ સૂત્રાશ વડે આ વાત સ્પષ્ટ થાય છે કે જ્યારે જિનેન્દ્રની આજ્ઞા પદ્ધકાયિક જીવો વિષે વાસ્તવિક જ્ઞાન કરાવવા માટે જ કરવામા આવી છે ત્યારે આવી પરિસ્થિતિમા તત્ત્વજ્ઞાન ધર્મ છે.

પરિસ્ફુરતિ, તદ્વિપયે વિશેષજ્ઞાનાભાવાત્, તથાપિ ભગવદાજ્ઞયા શ્રદ્ધા નિતરાં વિધેયેત્યાશયેનાદ—“લોગ ચ આણાણ અભિસમેચા અકુતોમય ” ઇતિ ।

“લોગ ” લોકમ્ અત્ર લોકશબ્દેન પ્રકરણવશાદપ્કાય લોક એ ગૃણ્ણતે, તમપ્કાયલોક, ચ શબ્દેન અન્યાથાપ્કાયાશ્રિતાન્ જીવાન્ “ આણાણ ” આજ્ઞયા તીર્થકર વચનેન “ અભિસમેચા ” અભિસમેત્ય આભિમુખ્યેન સમ્યગ્જ્ઞાત્યા, અપ્કાયાદયો જીવા સન્તીત્યેયમવગુ યેત્યર્થઃ, “ અકુતોમય ” નાસ્તિ કુતશ્ચિત્

સમજ્ઞાનેકે લિયે સૂત્રકાર કહતે છે કે હે શિષ્ય ! તુમ્હારી બુદ્ધિ અપ્કા યિક આદિ જીવોની શ્રદ્ધા કરનેમેં ઉન વિષયક વિશેષજ્ઞાનકે અભાવસે યદિ સમર્થ નહીં હૈ, તો મી ભગવાન્ની આજ્ઞા સે તુમ્હેં ઉનકે વિષય મેં અપની શ્રદ્ધા કો દૂષિત નહીં હોને દેના ચાહિયે—અર્થાત્ ભગવાનની આજ્ઞા પ્રમાણ માનકર તુમ્હેં ઉનકે વિષય મેં અપની અતિશય શ્રદ્ધા જાગ્રત કરની ચાહિયે । સૂત્રકાર હસી અભિપ્રાય સે કહતે હૈ કે “ લોગ ચ આણાણ અભિસમેચા અકુતોમય ” ઇતિ । અપ્કાય રૂપ લોક કો તથા “ ચ ” શબ્દ સે અન્ય અપ્કાય કે અશ્રિત જીવોં કો તીર્થકર પ્રભુની આજ્ઞા સે અચ્છી તરહ જાનકર ઉનકી આજ્ઞાનુસાર ઉનકા અસ્તિત્વ માનકર આત્મકલ્યાણ કે અભિલાષી મુનિયોં કો સયમ કા પાલન કરના ચાહિયે । સૂત્રસ્થલોક શબ્દ યહા પ્રકરણ કે વશ સે અપ્કાય કા બોધક હૈ । “ ચ ” શબ્દ સે તદાશ્રિત અન્ય જીવોં કા ગ્રહણ હુઆ હૈ । “ અકુતોમય ” શબ્દ કા અર્થ સયમ હૈ કહી સે મી કિસી

તેને સમજાવવા માટે સૂત્રકાર કહે છે કે હે શિષ્ય ! તમારી બુદ્ધિ અપ્કાયિક વગેરે જીવોની શ્રદ્ધા કરવામાં તેમના વિષે સવિશેષ જ્ઞાનના અભાવના લીધે જો સમર્થ નથી તો પણ ભગવાનની આજ્ઞાથી તે પ્રત્યે તમે પોતાની શ્રદ્ધાને દૂષિત થવા દેશો નહિ એટલે કે ભગવાનની આજ્ઞા પ્રમાણ માનીને મદ બુદ્ધિવાળા શિષ્યોએ તેમના પ્રયે પોતાની વધારેમાં વધારે શ્રદ્ધા જાગ્રત કરવી જોઈએ સૂત્રકાર આ પ્રયોજનથી જ કહે છે કે “ લોગ ચ આણાણ અભિસમેચા અકુતોમય ” ઇતિ । અપ્કાય રૂપ લોકને તેમજ ‘ ચ ’ શબ્દથી બીજા અપ્કાયાશ્રિત જીવોને તીર્થકર પ્રભુની આજ્ઞાથી સારી પેઠે સમજીને તેમની આજ્ઞા મુજબ તેમનું અસ્તિત્વ માનીને આત્મકલ્યાણને ધ્યેયનારા મુનિઓએ સયમનું પાલન કરવું જોઈએ સૂત્રમાં આવેલો ‘ લોક ’ શબ્દ અહીં પ્રકરણ વશાત્ અપ્કાયનો વાચક છે ‘ ચ ’ શબ્દથી તદાશ્રિત બીજા જીવોનું શ્રદ્ધા થયું છે ‘ અકુતોમય ’ શબ્દનો અર્થ સયમ છે કેઈ પણ જગ્યાએથી કેઈ પણ રીતે જીવોને જેનાથી લય હોતો નથી તે



सर्वे पाणा, सर्वे भूया, सर्वे जीवा, सर्वे सत्ता न हतव्या न अज्जावेयव्या, न किलायव्या, न उद्वेयव्या ।

एष धर्मे सुद्धे णिति ए सासए, समेच्चा लोयं खेयन्नेहि पवेइए ।

आर्हतधर्मएव श्रद्धेय इति बोधयितुं श्रीसुधर्मास्वामीप्राह—“ से वेमि ” इत्यादि । तीर्थं परै स्वस्वशिष्येभ्यो यत् सम्यक्त्वमुक्तं तदहं ब्रवीमि । यद्वा— ‘ से ’ इत्यस्य ‘ स ’ इतिच्छाया । येन मया भगवतः श्री वर्धमानरघामिनरतीर्थ-वरस्य सप्तांशे तद्वदनंतरतत्त्वज्ञानं लब्धं, सोऽहं ब्रवीमि ।—भगदुक्तार्थमेव कथयामि, तस्मान्मम वाक्यं श्रद्धेयमिति भावः ।

पाणा, सर्वे भूया, सर्वे जीवा, सर्वे सत्ता न हतव्या, न अज्जावेयव्या, न परिघेत्तव्या, न परितावेयव्या न किलामेयव्या, न उद्वेयव्या । एष धर्मे सुद्धे णिति ए समेच्चा लोयं खेयन्नेहि पवेइए ” (आ. सू० अ-४ उ १ सू० १ ) श्री सुधर्मा स्वामी इस सूत्र द्वारा जम्बूस्वामी को यह समझाते हैं कि अर्हतप्रभु द्वारा प्रतिपादित धर्म ही श्रद्धा करने योग्य हैं—वे इसमें कहते हैं कि तीर्थंकर देवो ने अपने २ शिष्यों के लिये जिस सम्यक्त्व का कथन किया है वही तत्त्व उन तीर्थंकर प्रभु के वचनो द्वारा श्रवण कर मैं तुम्हें समझाता हूँ अर्थात् मैं अपनी निजी कल्पना से इस विषय में कुछ भी न कह कर जो कुछ तुम्हें समझाऊँगा वह तीर्थंकर प्रभु की मान्यतानुसार ही समझाऊँगा अतः इस में सदेह के लिये थोड़ी सी भी जगह नहीं है—इसलिये इस मेरे कथन का मूल-स्रोत जब श्री तीर्थंकर प्रभु का उपदेशश्रवण है तब यह श्रद्धेय—श्रद्धा करने योग्य आवश्यक है भगवान् का यह आदेश है—कि जितने भी

पाणा, सर्वे भूया, सर्वे जीवा, सर्वे सत्ता न हतव्या, न अज्जावेयव्या, न परिघेत्तव्या, न परितावेयव्या, न किलामेयव्या, न उद्वेयव्या । एष धर्मे सुद्धे णिति ए समेच्चा लोयं खेयन्नेहि पवेइए ” ( आ सू अ ४ उ १ सू १ ) श्री सुधर्मा स्वामी आ सूत्र वडे श्री जम्बू स्वामीने आ प्रमाणे समज्जवे छे के अर्हत प्रभु वडे प्रतिपादित धर्म ज श्रद्धेय छे, तेओ आ सूत्रमा कडे छे के तीर्थंकर देवोओ पानपोताना जिण्यो भाटे ज सम्यक्त्वनु निरूपण कथुं छे ते ज तत्त्व तीर्थंकर प्रभुना मुण्णथी श्रवण उर्या पाह छे तमने समज्जवी रह्यो छे ओटले के छे पोतानी भेजे आमा उर्य पण उमेर्या वगर तीर्थंकर प्रभुनी मान्यता मुण्ण ज तमने समज्जवीश ओरी आमा राकाने भाटे मडेज पण स्थान नथी आ प्रमाणे न्यारे मारा कथनो मूण स्रोत श्री तीर्थंकर प्रभुनु उपदेश छे तारे ते श्रद्धेय ज छे भगवान्नी आ प्रमाणे आशा छे के

‘અકુતોભય’ इत्यस्य-“अणुपालिञ्जा” इत्यनेनान्यथाद् अकृतोभय-सयमम् अनुपालयेदित्यपि भगवद्वाक्यैः, तथा च सयमस्याऽऽराध्यतया विज्ञानात् सयमस्य धर्मत्वं बोध्यम् ।

अपर च-उत्तराध्ययनसूत्रे-“धम्माण कासवो मुह” इत्युक्तम् “धम्माण” धर्माणां श्रुतधर्माणां चारित्र्यमाणां च “कासवो” काश्यपः काश्यपगोत्रीयः श्रीमहावीरवर्धमानस्वामी “मुह” मुखं वक्ता वर्तते ।

अहिंसादौ खलु भगवतोऽर्हत आज्ञा वर्तते, पश्यागमेषु । यथा-आचाराङ्गसूत्रे-  
“से वेमि-जे य अतीता, जे य पडुप्पन्ना, जे य आगमिस्सा अरहता भगवतो, ते सव्वेवि एवमाइस्सवति एव भासति एव पण्णवेति एव पल्लवेति—

‘अकृतोभय’ इस पद का “अणुपालिञ्जा” इस क्रियापद के साथ अन्वय करने से यह अर्थ होता है कि अकृतोभयरूप सयम का पालन करना चाहिये, यह भी जब भगवान को आज्ञा ही है तो इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि भगवान को आज्ञा से सयम आराधन करने लायक होने से धर्म रूप है । अपर च-उत्तराध्ययन सूत्र में “धम्माण कासवो मुह” यह कहा है इसका भाव यह है कि श्रुत एवं चारित्र्य धर्मों के मुख-वक्ता-काश्यप गोत्रीय श्री महावीर वर्धमान स्वामी हैं । देखो उन्हो ने आगमों में अहिंसादिक महाव्रतों के पालने का सुमुश्रुओं= मोक्षाभिलाषियों के लिये इस प्रकार आज्ञा प्रदान की है “से वेमि-जे य अतीता जे य पडुप्पन्ना जे य आगमिस्सा अरहता भगवतो ते सव्वे वि एवमाइस्सवति एव भासति एव पण्णवेति एव पल्लवेति” सव्वे

‘अकृतोभय’ આ પદનો ‘અણુપાલિજ્ઞા’ આ ક્રિયાપદની સાથે અન્વય કરવાથી આ પ્રમાણે અર્થ થાય છે કે અકુતોભય રૂપ સયમનું પાલન કરવું જોઈએ આ પણ ભગવાનની જ આજ્ઞા છે તે એનાથી આ વાત સ્પષ્ટ થઈ જાય છે કે ભગવાનની આજ્ઞાથી ‘સયમ’ આરધવા યોગ્ય હોવાથી ધર્મરૂપ છે અને વળી ‘ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર’ માં “ધમ્માણ કાસવો મુહ” આ પ્રમાણેનો ઉલ્લેખ છે એનો અર્થ એમ થાય છે કે શ્રુત અને ચારિત્ર ધર્મોના મુખ્ય-વક્તા-કાશ્યપ ગોત્રીય શ્રી મહાવીર વર્ધમાન સ્વામી છે તેઓશ્રીએ અહિંસા વગેરે મહાવ્રતોના પાલન કરનારા મોક્ષ ઇચ્છનારા લોકોને માટે આગ-મોખા આ જાતની આજ્ઞા કરી છે કે —

“સે વેમિ-જે ય અતીતા જે ય પડુવ્વન્ના જે ય આગમિસ્સા અરહતા ભગવંતો તે સવ્વે વિ એવમાઈસ્સવતિ એવ ભાસતિ એવ પણ્ણવેતિ એવ પલ્લવેતિ” સવ્વે

તયોરપિ ગ્રહણમ્, તથા ચ-‘ એમાચચ્ચુ, એમાચ્ચાસ્યન્તિ ’ ઇત્યપિ યોજની-  
યમ્ । એ સર્વાસુ ક્રિયાસુ યોજનીયમ્ । તથા-એવ “ ભાસન્તિ ” ભાવન્તે=સુર-  
નરપરિપદિ સર્વજીવાના સ્વસ્વભાષાપરિણામિન્યાઽર્થમાગધ્યા ભાષ્યા દ્રુવન્તિ ।  
તથા-એવ “ પણ્ણવેતિ ” પ્રજ્ઞાપયતિ=હેતુદૃષ્ટાન્તાદિના પ્રકર્ષેણ યોધયન્તિ । તથા-  
એવ ‘ પચ્ચવેતિ ’ પ્રરૂપયન્તિ=તત્તદ્વેદ પ્રદર્શ્ય પ્રકર્ષેણ નિર્ણયન્તિ ।

નનુ સર્વેઽપ્યર્હન્તો ભગવન્તઃ-કિમાચ્ચાન્તીત્યાદિજિજ્ઞાસાયમાહ-‘ સન્વે-  
પાણા ’ ઇત્યાદિ । સર્વે=નિરપેક્ષાઃ, પ્રાણાઃ=પ્રાણિનઃ, પૃથિવ્યાદયઃ સ્થાવરા

કર પરિગ્રહ રૂપ સે સગ્રહ કરને યોગ્ય, અન્ન, પાન આદિ કે નિરોધ એવ  
ગર્મીસર્દી આદિમેં રાખને સે કમી મી પીડા પહુંચાને યોગ્ય ઓર વિષપ્ર  
દાન એવ શસ્ત્ર કે આઘાત સે વિનાશ કરને યોગ્ય નહી હે ।

સૂત્ર મેં “ આદિક્ષતિ-આચ્ચાન્તિ ” યદ્ વર્તમાનકાલિક-ક્રિયા  
પદ અતીત ઓર અનાગતકાલિક ક્રિયાપદ કા ઉપલક્ષક હે । અતઃ  
હસ સે યદ્ અર્થ પ્રતીત હોતા હે કિ ઉન તીર્થકર પ્રભુઓ ને વર્તમાન  
મેં જૈસા કહા હે વૈસા હી ઉન્હોં ને યા અન્ય ભૂત કાલિક તીર્થકરોં  
ને ભૂત કાલ મેં મી કહા હે એવ આગામી કાલમે મી વે વૈસા હી કહેંગે ।  
હસી પ્રકાર “ ભાસતિ, પણ્ણવેતિ ” ઇત્યાદિ ક્રિયાપદો કે સાથ મી  
અતીત ઓર અનાગત કાલિક ક્રિયાદોંકા સબધ કર લેના ચાહિયે । હસ  
કથન સે સૂત્રકાર ને ઉનકે કથન મેં પરસ્પર મેં વિરુદ્ધ અર્થકી પ્રરૂપણા  
કા અભાવ પ્રદર્શિત કિયા હે જો કુછ ઉન્હો ને કહા હે । વદ્ ભૂત,  
ભવિષ્યત ઓર વર્તમાન કાલ મેં સે કિસી મી કાલ મેં કિસી મી

એણુ સમજીને પરિગ્રહ રૂપથી સગ્રહ કરવા યોગ્ય, કે અન્ન, પાન વગેરેનો  
નિરોધ અને ગર્મી, ઠંડી વગેરેમા રાખીને ઠોઠ પણુ વખતે પીડિત કરવા યોગ્ય  
અને વિષ આપીને તેમજ શસ્ત્રના આઘાતથી વિનાશ કરવા યોગ્ય નથી

સૂત્રમા “ આદિક્ષતિ આચ્ચાન્તિ ” આ વર્તમાનકાલિક ક્રિયાપદ અતીત  
તેમજ અનાગત કાલિક ક્રિયાપદનુ ઉપલક્ષક છે એથી એના વડે આ જાતના  
અર્થની પ્રતીતિ થાય છે કે તે તીર્થ કર પ્રભુઓએ વર્તમાનકાળમા જે પ્રમાણે  
કહ્યું છે, તે પ્રમાણે જ તેઓએ અથવા તે બીજા ભૂતકાલિક તીર્થ કરોએ ભૂત-  
કાળમા પણ કહ્યું છે અને ભવિષ્યકાળમા પણ તેઓ તે પ્રમાણે જ કહેશે આ  
રીતે “ ભાસતિ, પણ્ણવેતિ ” વગેરે ક્રિયાપદોની સાથે પણ અતીત અને અના-  
ગત કાલિક ક્રિયાપદોનો સબધ જોડવો જોઈએ આ કથનથી સૂત્રકારે તેમના  
કથનમા પરસ્પરમા વિરુદ્ધ અર્થની પ્રરૂપણાનો અભાવ બતાવ્યો છે તેમણે જે

ભગવદુક્તાર્થમાદ-“ જે ચ અતીતા ” ઇત્યાદિ । ચે ચ અતીતાઃ=અતીતકાલિયાઃ, ચે ચ ‘ પદુપન્ના ’ પ્રત્યુત્પન્નાઃ=વર્તમાનકાલિકાઃ પશ્ચમરતેષુ પશ્ચમરતેષુ પશ્ચમદાવિદેહેષુ વર્તમાનાઃ, ચે ચ “ આગમિસ્મા ” આગામિનઃ-ભવિષ્યત્કાલમામિનઃ, તે સર્વેઽપિ અર્હન્તો ભગવન્તઃ ૧૪=રક્ષમાણપ્રકારેણ “ આશ્વસતિ ” આશ્વાન્તિ=પરપ્રશ્નાસરે વધયન્તિ । અત્ર વર્તમાનગ્રહણમુપલક્ષણં તેનાતીતાનાગ-

ભૂતકાલ મેં તીર્થ કર હુજ હે, વર્તમાન કાલ મેં મી પાંચ ભરત, પાચ એરવત તથા પાંચ મદાવિદેહ સમ્બન્ધી જિતને મી તીર્થ કર હે ઓર ભવિષ્યત કાલ મેં જો તીર્થ કર હોગે ઉન મવ ને જવ ઉનસે કિમી ને પ્રશ્ન ક્રિયા, તો એક યહી ઉત્તર દિયા હે દેવ એવ મનુષ્યોં કો સમા મેં અપની સર્વભાષા મેં પરિણમિત હુઈ અર્ધમાગધીરૂપ દિવ્યધ્વનિ દ્વારા ઉન્હો ને સમસ્ત જીવો કો યહી સમક્ષાયા હે, ઓર હેતુ, દૃષ્ટાન્તો દ્વારા હસી વાત કી પુષ્ટિ કી હે । વક્તવ્ય વિષય કે ભેદ ઓર પ્રભેદોં કો પ્રકટ કરતે હુજ ઉન્હોં ને અચ્છી તરહ સે યહી પ્રરૂપણા કી હે કિ સમસ્ત પ્રાણી પૃથિવી આદિક એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોં સે લેકર દ્વીન્દ્રિયાદિક પચેન્દ્રિય જીવ પર્યન્ત ત્રસ જીવ, ચતુર્દશ ભૂતગ્રામરૂપ સમસ્ત ભૂત, નરકગતિ, તિર્યચ્છગતિ, મનુષ્યગતિ એવ દેવગતિ કે સમસ્ત જીવ, એવ અપને દ્વારા ક્રિયે ગયે કર્મોં કે ઉદય કે ફલ સ્વરૂપ સુખ દુઃખ આદિ કા અનુભવ કરને વાલે સમસ્ત સત્ત્વ દળદ આદિ દ્વારા કર્મોં મી તાહન કરને યોગ્ય, ઘાત કરને યોગ્ય, ચે મેરે આધીન હેં એમા રહ્યાલ

ભૂતકાળમા જેટલા તીર્થ કર થયા છે, વર્તમાનકાળમા પણ પાચ ભરત, પાચ એવત તથા પાચ મદાવિદેહ સમ્બન્ધી જેટલા તીર્થ કરો છે અને ભવિષ્યકાળમા જેટલા તીર્થ કરો થશે તે બધામાથી જ્યારે કોઈએ પ્રશ્ન કર્યો ત્યારે એક જ ઉત્તર આપ્યો છે, દેવ અને માણસોની મલામા પોતાની સર્વ ભાષામા પરિણમિત થયેલી અર્ધ માગધી રૂપ દિવ્યધ્વનિમા તેઓએ બધા જીવોને એજ વાત સમજાવી છે અને હેતુ તેમજ દૃષ્ટાંતો વડે આ વાતનુજ સમર્થન કર્યું છે વક્તવ્ય વિષયનો ભેદ અને પ્રભેદોને સ્પષ્ટ કરતા તેઓએ સરમ રીતે એજ પ્રરૂપણા કરી છે કે સમસ્ત પ્રાણીઓ પૃથિવ વગેરે એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોથી માંડીને દ્વીન્દ્રિય વગેરે પચેન્દ્રિય જીવ સુધીના ત્રસ જીવ, ચતુર્દશ ભૂતગ્રામ રૂપ સમસ્ત ભૂત, નરક ગતિ તિર્યચ્છ ગતિ, મનુષ્ય ગતિ અને દેવ ગતિના બધા જીવો, અને પોતાના વડે કરવામા આવેલા કર્મોના ઉદયના ફળ સ્વરૂપ સુખ દુઃખ વગેરેને અનુભવતા બધા સત્ત્વો દડ જે ૧-કોઈ પણ વખત તાહન કરવા યોગ્ય કે ઘાત યોગ્ય, કે એઓ /

તયોરપિ ગ્રહણમ્, તથા ચ—‘ એમાચર્યુ, એમાર્યાસ્યન્તિ ’ ઇત્યપિ યોજની-  
યમ્ । એ સર્વાસુ ક્રિયાસુ યોજનીયમ્ । તથા—એવ “ ભાસન્તિ ” ભાવન્તે=સુર-  
નરપરિપદિ સર્વજીવાના સ્વસ્વભાષાપરિણામિન્યાઽર્ધમાગમ્યા ભાષયા ધ્રુવન્તિ ।  
તથા—એવ “ પળ્લવેતિ ” પ્રજ્ઞાપયન્તિ=હેતુદૃષ્ટાન્તાદિના પ્રકર્ષેણ રોધયન્તિ । તથા—  
એવ ‘ પરુવેતિ ’ પ્રરૂપયન્તિ=તત્તદ્વેદ પ્રદર્શ્ય પ્રકર્ષેણ નિર્ણયન્તિ ।

નનુ સર્વેઽપ્યર્હન્તો ભગવન્તઃ—કિમાર્યાન્તીત્યાદિજિજ્ઞાસાયમાહ—‘ સર્વે-  
પાળા ’ ઇત્યાદિ । સર્વે=નિસ્વશેષાઃ, પ્રાળાઃ=પ્રાણિનઃ, પૃથિવ્યાદયઃ સ્થાવરા

કર પરિગ્રહ રૂપ સે સગ્રહ કરને યોગ્ય, અન્ન, પાન આદિ કે નિરોધ એવ  
ગર્મીસર્દી આદિમેં રલ્લને સે કમી મી પીડા પહુંચાને યોગ્ય ઓર વિપ્ર-  
દાન એવ શસ્ત્ર કે આગાત સે વિનાશ કરને યોગ્ય નહી હે ।

સૂત્ર મેં “ આદિક્ષતિ-આર્યાન્તિ ” યહ વર્તમાનકાલિક-ક્રિયા  
પદ અતીત ઓર અનાગતકાલિક ક્રિયાપદ કા ઉપલક્ષક હે । અતઃ  
હસ સે યહ અર્થ પ્રતીત હોતા હે કિ ઉન તીર્થકર પ્રભુઓ ને વર્તમાન  
મેં જૈસા કહા હે વૈસા હી ઉન્હોં ને યા અન્ય ભૂત કાલિક તીર્થકરોં  
ને ભૂત કાલ મેં મી કહા હે એવ આગામી કાલમે મી વે વૈસા હી કહેંગે ।  
હસી પ્રકાર “ ભાસતિ, પળ્લવેતિ ” ઇત્યાદિ ક્રિયાપદોં કે સાથ મી  
અતીત ઓર અનાગત કાલિક ક્રિયાદોંકા સબધ તર લેના ચાહિયે । હસ  
કથન સે સૂત્રકાર ને ઉનકે કથન મેં પરસ્પર મેં વિરુદ્ધ અર્થકી પ્રરૂપણા  
કા અભાવ પ્રદર્શિત ક્રિયા હે જો કુલ્લ ઉન્હો ને કહા હે । વહ ભૂત,  
ભવિષ્યત ઓર વર્તમાન કાલ મેં સે કિસી મી કાલ મેં કિસી મી

એણુ સમજીને પરિગ્રહ રૂપથી સગ્રહ કરવા યોગ્ય, ડે અન્ન, પાન વગેરેનો  
નિરોધ અને ગર્મી, ઠડી વગેરેમા રાખીને કોઈ પણ વખતે પીડિત કરવા યોગ્ય  
અને વિષ આપીને તેમજ શસ્ત્રના આઘાતથી વિનાશ કરવા યોગ્ય નથી

સૂત્રમા “ આદિક્ષતિ આર્યાન્તિ ” આ વર્તમાનકાલિક ક્રિયાપદ અતીત  
તેમજ અનાગત કાલિક ક્રિયાપદનુ ઉપલક્ષક છે એથી એના વડે આ જાતના  
અર્થની પ્રતીતિ થાય છે કે તે તીર્થકર પ્રભુઓએ વર્તમાનકાળમા જે પ્રમાણે  
કહ્યું છે, તે પ્રમાણે જ તેઓએ અથવા તેા ખીન્ન ભૂતકાલિક તીર્થકરોએ ભૂત  
કાળમા પણ કહ્યું છે અને ભવિષ્યકાળમા પણ તેઓ તે પ્રમાણે જ કહેશે આ  
રીતે “ ભાસતિ, પળ્લવેતિ ” વગેરે ક્રિયાપદોની સાથે પણ અતીત અને અના-  
ગત કાલિક ક્રિયાપદોનો સબધ જોડવો જોઈએ આ કથનથી સૂત્રકારે તેમના  
કથનમા પરસ્પરમા વિરુદ્ધ અર્થની પ્રરૂપણાનો અભાવ બતાવ્યો છે તેમણે જે



ભગવદુક્તાર્થમાદ-“ જે ય અતીતા ” इत्यादि । ये च अतीताः=अतीतकालिनाः, ये च ‘पहुपक्षा’ प्रत्युत्पन्नाः=वर्तमानकालिकाः पञ्चभरतेषु पञ्चैव वतेषु पञ्चमहाविदेहेषु वर्तमानाः, ये च “ आगमिष्या ” आगामिनः=भविष्यत्कालभाविनः, ते सर्वेऽपि अर्हन्तो भगवन्तः ॥ ५ ॥ =रक्ष्यमाणप्रकारेण “ आरुखति ” आरुखान्ति=परमश्रावसरे पथयन्ति । अत्र वर्तमानग्रहणमुपलक्षणं तेनातीतानाम-

ભૂતકાલ મેં તીર્થકર હુગ હું, વર્તમાન કાલ મેં મી પાંચ ભરત, પાંચ ઐરવત તથા પાંચ મહાવિદેહ સમ્બન્ધી જિતને મી તીર્થકર હું ઓર ભવિષ્યત કાલ મેં જો તીર્થકર હોગે ઉન સવ ને જય ઉનસે કિસી ને પ્રશ્ન ક્રિયા, તો એક યહી ઉત્તર દિયા હૈ દેવ ઈવ મનુષ્યોં કો સભા મેં અપની સર્વભાષા મેં પરિણમિત હુઈ અર્ધમાગધીરૂપ દિવ્યધ્વનિ દ્વારા ઉન્હો ને સમસ્ત જીવોં કો યહી સમજાયા હૈ, ઓર હેતુ, દૃષ્ટાન્તો દ્વારા હસી વાત કી પુષ્ટિ કી હૈ । વક્તવ્ય વિષય કે ભેદ ઓર પ્રભેદોં કો પ્રકટ કરતે હુગ ઉન્હોં ને અચ્છી તરફ સે યહી પ્રરૂપણા કી હૈ કિ સમસ્ત પ્રાણી પૃથિવી આદિક એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોં સે લેકર દ્વીન્દ્રિયાદિક પચેન્દ્રિય જીવ પર્યન્ત ત્રસ જીવ, ચતુર્દશ ભૂતગ્રામરૂપ સમસ્ત ભૂત, નરકગતિ, તિર્યચ્ચગતિ, મનુષ્યગતિ ઈવ દેવગતિ કે સમસ્ત જીવ, એવ અપને દ્વારા ક્રિયે ગયે કર્મોં કે ઉદય કે ફલ સ્વરૂપ સુખ દુઃખ આદિ ક્રા અનુભવ કરને વાલે સમસ્ત સત્ત્વ ઘણ્ડ આદિ દ્વારા કર્મોં મી તાહન કરને યોગ્ય, ઘાત કરને યોગ્ય, યે મેરે આધીન હું એસા રહ્યાલ

ભૂતકાળમા જેટલા તીર્થ કર થયા છે, વર્તમાનકાળમા પણ પાંચ ભરત, પાંચ ઐરવત તથા પાંચ મહાવિદેહ સંબંધી જેટલા તીર્થ કરે છે અને ભવિષ્યકાળમા જેટલા તીર્થ કરે થશે તે બધામાથી જ્યારે કોઈએ પ્રશ્ન કર્યો ત્યારે એક જ ઉત્તર આપ્યો છે, દેવ અને માણસોની સભામા પોતાની સર્વ ભાષામા પરિણમિત થયેલી અર્ધ માગધી રૂપ દિવ્યધ્વનિમા તેઓએ બધા જીવોને એજ વાત સમજાવી છે અને હેતુ તેમજ દૃષ્ટાંતો વડે આ વાતનું જ સમર્થન કર્યું છે વક્તવ્ય વિષયનો ભેદ અને પ્રભેદોને સ્પષ્ટ કરતા તેઓએ સરસ રીતે એજ પ્રરૂપણા કરી છે કે સમસ્ત પ્રાણીઓ પૃથિવ વગેરે એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોથી માંડીને દ્વીન્દ્રિય વગેરે પચેન્દ્રિય જીવ મુધીના ત્રસ જીવ, ચતુર્દશ ભૂતગ્રામ રૂપ સમસ્ત ભૂત, નરક ગતિ તિર્યચ ગતિ, મનુષ્ય ગતિ અને દેવ ગતિના બધા જીવો, અને પોતાના વડે કરવામા આવેલા કર્મોના ઉચ્ચતા રૂપ સ્વરૂપ સુખ દુઃખ વગેરેને અનુભવતા બધા સત્ત્વ ઘણ્ડ વગેરે આદિ પણ વખત તાહન કરવા યોગ્ય કે ઘાત કરવા યોગ્ય, કે એઓ

તયોરપિ ગ્રહણમ્, તથા ચ-‘ એવમાચચ્ચુ, એવમાચાસ્યન્તિ ’ ઇત્યાપિ યોજની-  
યમ્ । એવ સર્વાસુ ક્રિયામુ યોજનીયમ્ । તથા-એવ “ ભાસન્તિ ” ભાવન્તે=સુર-  
નરપરિપદિ સર્વજીવાના સ્વસ્વભાષાપરિણામિન્યાઽર્ધમાગધ્યા ભાષયા ધ્રુવન્તિ ।  
તથા-એવ “ પળ્લવેતિ ” પ્રજ્ઞાપયન્તિ=હેતુદૃષ્ટાન્તાદિના પ્રકર્ષેણ રોધયન્તિ । તથા-  
એવ ‘ પસ્વેતિ ’ પ્રરૂપયન્તિ=તત્તદ્વેદ પ્રદર્શ્ય પ્રકર્ષેણ નિર્ણયન્તિ ।

નનુ સર્વેઽપ્યર્હન્તો ભગવન્તઃ-ક્રિમાણ્યાન્તીત્યાદિજિજ્ઞાસાયમાહ-‘ સન્વે-  
પાણા ’ ઇત્યાદિ । સર્વે=નિસ્વશેષાઃ, પ્રાણાઃ=પ્રાણિનઃ, પૃથિવ્યાદયઃ સ્થાવરા

કર પરિગ્રહ રૂપ સે સગ્રહ કરને યોગ્ય, અન્ન, પાન આદિ કે નિરોધ એવ  
ગર્મીસર્દી આદિમેં રાખને સે કમી મી પીડા પહુંચાને યોગ્ય ઓર વિષપ્ર  
દાન એવ શસ્ત્ર કે આઘાત સે વિનાશ કરને યોગ્ય નહી હૈ ।

સૂત્ર મેં “ આદિક્ષતિ-આણ્યાન્તિ ” યહ વર્તમાનકાલિક-ક્રિયા  
પદ અતીત ઓર અનાગતકાલિક ક્રિયાપદ કા ઉપલક્ષક હૈ । અતઃ  
હસ સે યહ અર્થ પ્રતીત હોતા હૈ કિ ઉન તીર્થકર પ્રભુઓ ને વર્તમાન  
મેં જૈસા કહા હૈ વૈસા હી ઉન્હોં ને યા અન્ય ભૂત કાલિક તીર્થકરોં  
ને ભૂત કાલ મેં મી કહા હૈ એવ આગામી કાલમે મી વે વૈસા હી કહેંગે ।  
હસી પ્રકાર “ ભાસતિ, પળ્લવેતિ ” ઇત્યાદિ ક્રિયાપદોં કે સાથ મી  
અતીત ઓર અનાગત કાલિક ક્રિયાદોંકા સબધ કર લેના ચાહિયે । હસ  
કથન સે સૂત્રકાર ને ઉનકે કથન મેં પરસ્પર મેં વિરુદ્ધ અર્થકી પ્રરૂપણા  
કા અભાવ પ્રદર્શિત કિયા હૈ જો કુછ ઉન્હો ને કહા હૈ । વહ ભૂત,  
ભવિષ્યત ઓર વર્તમાન કાલ મેં સે કિસી મી કાલ મેં કિસી મી

એણુ સમજીને પરિગ્રહ રૂપથી સગ્રહ કરવા યોગ્ય, કે અન્ન, પાન વગેરેનો  
નિરોધ અને ગર્મી, ઠંડી વગેરેમા રાખીને કોઈ પણ વખતે પીડિત કરવા યોગ્ય  
અને વિષ આપીને તેમજ શસ્ત્રના આઘાતથી વિનાશ કરવા યોગ્ય નથી

સૂત્રમા “ આદિક્ષતિ આણ્યાન્તિ ” આ વર્તમાનકાલિક ક્રિયાપદ અતીત  
તેમજ અનાગત કાલિક ક્રિયાપદનુ ઉપલક્ષક છે એથી એના વડે આ બીજાના  
અર્થની પ્રતીતિ થાય છે કે તે તીર્થકર પ્રભુઓએ વર્તમાનકાળમા જે પ્રમાણે  
કહ્યું છે, તે પ્રમાણે જ તેઓએ અથવા તે બીજા ભૂતકાલિક તીર્થકરોએ ભૂત  
કાળમા પણ કહ્યું છે અને ભવિષ્યકાળમા પણ તેઓ તે પ્રમાણે જ કહેશે આ  
રીતે “ ભાસતિ, પળ્લવેતિ ” વગેરે ક્રિયાપદોની સાથે પણ અતીત અને અના  
ગત કાલિક ક્રિયાપદોનો સબધ જોડવો જોઈએ આ કથનથી સૂત્રકારે તેમના  
કથનમા પરસ્પરમા વિરુદ્ધ અર્થની પ્રરૂપણાનો અભાવ બતાવ્યો છે તેમણે જે

દીપ્તિયાદિપદ્મોદયપર્યન્તાદસાધેત્યર્થઃ, દ્રિયાદિમાણાના યથાસમ્ભવધાર  
ણાત્ તેષુ પ્રાણિસ્વમસ્તીતિ ભાવઃ । તથા-સર્વે ' શૂયા ' શૂતાઃ=ભવન્તિ ભવિષ્ય-  
ન્ત્યશૂન્યિતિ શૂતાઃ-ચતુર્દશભૂતગ્રામરૂપાઃ, તથા-સર્વે જીવા=જીવન્તિ જીવિ-  
ષ્યત્યજીવિષુ રિતિ જીવાઃ-નારકતિર્યદ્મનુષ્યદેવાઃ, તથા-સર્વે "સત્તા" સત્ત્વાઃ=

પ્રમાણ દ્વારા ઘાઘિત નહીં હો સકને સે પૂર્વાપર વિરોધ રહિત હી કહા  
હે । " પ્રાણ " શબ્દ સે સૂત્રકાર ને ઘસ ઓર સ્થાવર પ્રાણિયો કા  
મરણ ક્રિયા હે । કયો કિ ૧૦ દ્રવ્ય પ્રાણો મેં સે ડનકો અપને ર  
યોગ્ય પ્રાણો કા સદ્ભાવ પાયા જાતા હે । અતઃ ડનકે સદ્ભાવ સે હી  
યે પ્રાણી કહે જાતે હે । " ભવન્તિ, ભવિષ્યન્તિ, અભૂવન્ "યહ  
ભૂત શબ્દ કી વ્યુત્પત્તિ હે । ડસકા ભાવ યહી હે કિ જો વર્તમાન  
મેં સત્તા વિશિષ્ટ હે, આગામી કાલ મેં સત્તા વિશિષ્ટ રહેંગે તવ ભૂત-  
કાલ મેં મી જો સત્તા વિશિષ્ટ યે । ડસ વ્યુત્પત્તિ સે સૂત્રકાર ને યહ  
પ્રદર્શિત ક્રિયા હે કિ પ્રત્યેક જીવાદિક પદાર્થ કિસી મી કાલ મેં ઉત્પાદ  
ઓર વ્યય ધર્મ વિશિષ્ટ હોતે હુગ મી અપની ૨ સત્તા સે રહિત નહીં  
હોતે હે । કયો કિ દ્રવ્ય કા " ઉત્પાદવ્યયધ્રોવ્ય સત્ " ઉત્પાદ, વ્યય  
ઓર ધ્રોવ્ય યે સ્વભાવ હે । ડસસે યહ વાત નિશ્ચિત કોટિ મેં આતા હે  
કિ કિસી મી નવીન પદાર્થ કા ઉત્પાદ નહીં હોતા હે ઓર ન સત્  
પદાર્થ કા વિનાશ હી હોતા હે । " સતો વિનાશ. અસતશ્ચોત્પાદો ન "  
" જીવન્તિ, જીવિષ્યન્તિ, અજીવિષુ " યહ જીવ શબ્દ કી વ્યુત્પત્તિ હે ।

કહ કહુ છે તે ભૂત ભવિષ્યત અને વર્તમાનકાળમાથી કોઈ પણ કાળમા ગમે  
તે પ્રમાણ દ્વારા ળાઘિત નહિ હોવા બદલ પૂર્વાપર વિરોધ રહિત જ કહુ છે,  
" પ્રાણ " શબ્દ વડે સૂત્રકારે ઘસ અને સ્થાવર પ્રાણીઓનુ બહુ કયુ છે  
કેમકે ૧૦ દ્રવ્ય પ્રાણીમાથી એમનામા પોતપોતાને યોગ્ય પ્રાણોના સદ્ભાવ  
મળે છે એથી એમના સદ્ભાવથી જ તેઓ પ્રાણી કહેવાય છે " ભવન્તિ,  
ભવિષ્યન્તિ, અભૂવન્ " આ ભૂત શબ્દની વ્યુત્પત્તિ છે એનો અર્થ આ પ્રમાણે  
છે કે વર્તમાનકાળમા જેઓ સત્તા વિશિષ્ટ છે, તેઓ ભવિષ્યકાળમા સત્તા  
વિશિષ્ટ રહેશે અને ભૂતકાળમા પણ જેઓ સત્તા વિશિષ્ટ હતા આ વ્યુત્પત્તિ  
વડે સૂત્રકારે એ બતાવ્યુ છે કે દરેકે દરેક જીવ વગેરે પદાર્થ કોઈ પણ કાળમા  
જેને વ્યયધર્મ વિશિષ્ટ હોવા છતાંએ પોતપોતાની સત્તાથી રહિત હોતા  
કે દ્રવ્યનો " ઉત્પાદવ્યયધ્રોવ્ય સત્ " ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રોવ્ય  
એથી એ વાત ચોક્કસ રીતે સ્પષ્ટ થાય છે કે કોઈ પણ નવીન  
, યતો નથી અને સત્ પદાર્થનો વિનાશ પણ યતો નથી  
અસતશ્ચોત્પાદો ન " " જીવન્તિ, જીવિષ્યન્તિ, અજીવિષુ " આ

स्वकृतकर्मजन्यसुखदुःसानुभविनः । अत्र सर्वप्राणिषु पुन पुनर्दयाकरणाय पर्यायशब्दप्रयोगः ।

‘न हतव्या’ न हन्तव्याः=दण्डादिभिर्न ताडयितव्या इत्यर्थः, “न अज्जा-वेयव्या” नानापयितव्याः=न पातयितव्या इत्यर्थः, “न परिघेत्तव्या” न परि-ग्रहीतव्या=इमे ममायत्ता इति कृत्वा परिग्रहरूपेण न स्वीकर्तव्या, “न परिता-

जो जीते हे, जीवेंगे और जिये है, इस कथन से सूत्रकार ने जीव में त्रिकाल में भी जीवनत्व वर्म का अभाव नहीं होता है यह प्रदर्शित किया है चाहे जीव एक इन्द्रिय अवस्थावाला भी हो तो भी वह जीवन अवस्था से रहित नहीं होता है इससे वृक्षादिको में अचेतनता मानने वाले बौद्ध आदिकों का मन्तव्य खंडित होता है ।

सूत्र में प्राणी, भूत, और सत्त्व इन एकार्थक पर्यायवाची शब्दों का जो सूत्रकार ने प्रयोग किया है उनका मुख्य प्रयोजन “समस्त जीवों में बारबार दया करनी चाहिये ” है ।

यह वीतरागप्रभु द्वारा प्रतिपादित प्राणातिपातविरमणरूप धर्मशुद्ध पापानुबन्ध रहित है । इस कथन से सूत्रकार ने इस बात की पुष्टि की है जो अवीतराग-शाक्य आदि द्वारा धर्मरूप से प्रतिपादित हुआ है तथा जिसे उन्होंने धर्मरूप से स्वीकार किया है वह वास्तविक धर्म नहीं है । कारण कि इनमें हिंसादिक दोषों का सद्भाव पाया जाता है इनके

જીવ શબ્દની વ્યુત્પત્તિ છે જેઓ જીવે છે, જીવશે અને જીવ્યા છે આ કથન વડે સૂત્રકારે જીવમા ત્રિકાળમા પણ જીવનત્વ ધર્મનો અભાવ થતો નથી આ વાત સ્પષ્ટ કરી છે ભલે તે જીવ એક ઇન્દ્રિય અવસ્થાવાળો હોય છતાંયે તે જીવન અવસ્થાથી રહિત થતો નથી આ કથનથી વૃક્ષ વગેરેમા અચેતનતા માનનારા બૌદ્ધ વગેરેના મતનુ ખડન થઈ જાય છે

સૂત્રકારે સૂત્રમા જે પ્રાણી, ભૂત અને સત્ત્વ આ બધા એકાર્થક પર્યાય વાચી શબ્દોનો જે પ્રયોગ કર્યો છે તેનુ ખાસ કારણ “ બધા જીવોમા વારવાર સદાય રહેવું જોઈએ ” તે જ છે

વીતરાગ પ્રભુ વડે પ્રતિપાદિત પ્રાણાતિપાત વિરમણ રૂપ આ ધર્મ શુદ્ધ પાપાનુબન્ધ રહિત છે આ કથનથી સૂત્રકારે એ વાતને પુખ્ત કરી છે કે જે અવીતરાગ-શાક્ય વગેરે દ્વારા ધર્મ-રૂપથી પ્રતિપદિત થયો છે તેમજ તેમણે જેને ધર્મ-રૂપથી સ્વીકાર્યો છે તે ખરેખર ધર્મ નથી કેમકે તેમા હિંસા વગેરે દોષોનો સદ્ભાવ છે અસર્વજ્ઞ તથા રાગયુક્ત લોકો દ્વારા પ્રતિપાદિત હોવાને

દ્વીન્દ્રિયાદિપન્થેન્દ્રિયપર્ય-તાત્ત્વસાથેત્યર્થઃ, ઇન્દ્રિયાદિપ્રાણાનાં યથાસમ્ભવધાર-  
ણાત્ તેપુ પ્રાણિત્વમસ્તીતિ ભાવઃ । તથા-સર્વે ' મૃયા ' મૃતાઃ=મરન્તિ મરિષ્ય-  
ન્ત્યમૃત્વનિતિ મૃતાઃ-ચતુર્દશભૂતગ્રામરૂપાઃ, તથા-સર્વે જીવા=જીવન્તિ જીવિ-  
ષ્યન્ત્યજીવિપુ રિતિ જીવાઃ-નારકતિર્યદ્મનુષ્યદેવાઃ, તથા-સર્વે 'સત્તા' સત્ત્વાઃ=

પ્રમાણ દ્વારા પ્રાધિત નહોતો સકને સે પૂર્વાપર વિરોધ રહિત હી કહ્યા  
હે । “ પ્રાણ ” શબ્દ સે સૂત્રકાર ને ત્રસ ઓર સ્થાવર પ્રાણિયો કા  
ગ્રહણ કિયા હે । ક્યો કિ ૧૦ દ્રવ્ય પ્રાણો મેં સે ઇનકો અપને ૨  
યોગ્ય પ્રાણો કા સદ્ભાવ પાયા જાતા હે । અતઃ ઇનકે સદ્ભાવ સે હી  
યે પ્રાણી કહે જાતે હે । “ મરન્તિ, મરિષ્યન્તિ, અમૃત્વન્ ” યહ  
મૃત શબ્દ કી વ્યુત્પત્તિ હે । ઇસકા ભાવ યહી હે કિ જો વર્તમાન  
મેં સત્તા વિશિષ્ટ હે, આગામી કાલ મેં સત્તા વિશિષ્ટ રહેંગે યવ મૃત-  
કાલ મેં મી જો સત્તા વિશિષ્ટ થે । ઇસ વ્યુત્પત્તિ સે સૂત્રકાર ને યહ  
પ્રદર્શિત કિયા હે કિ પ્રત્યેક જીવાદિક પદાર્થ કિસી મી કાલ મેં ઉત્પાદ  
ઓર વ્યય ધર્મ વિશિષ્ટ હોતે હુણ મી અપની ૨ સત્તા સે રહિત નહીં  
હોતે હે । ક્યો કિ દ્રવ્ય કા “ ઉત્પાદવ્યયધ્રોવ્ય સત્ ” ઉત્પાદ, વ્યય  
ઓર ધ્રોવ્ય યે સ્વભાવ હે । ઇસસે યહ વાત નિશ્ચિત કોટિ મેં આતા હે  
કિ કિસી મી નવીન પદાર્થ કા ઉત્પાદ નહીં હોતા હે ઓર ન સત્  
પદાર્થ કા વિનાશ હી હોતા હે । “ સતો વિનાશઃ અસતશ્ચોત્પાદો ન ”  
“ જીવન્તિ, જીવિષ્યન્તિ, અજીવિપુ ” યહ જીવ શબ્દ કી વ્યુત્પત્તિ હે ।

કઈ કહ્યુ છે તે ભૂત ભવિષ્યત અને વર્તમાનકાળમાથી કોઈ પણ કાળમા ગમે  
તે પ્રમાણ દ્વારા પ્રાધિત નહિ હોવા બદલ પૂર્વાપર વિરોધ રહિત જ કહ્યુ છે,  
“ પ્રાણ ” શબ્દ વડે સૂત્રકારે ત્રસ અને સ્થાવર પ્રાણીઓનુ ગ્રહણ કર્યુ છે  
કેમકે ૧૦ દ્રવ્ય પ્રાણોમાથી એમનામા પોતપોતાને યોગ્ય પ્રાણોને સદ્ભાવ  
મળે છે એથી એમના સદ્ભાવથી જ તેઓ પ્રાણી કહેવાય છે “ મરન્તિ,  
મરિષ્યન્તિ, અમૃત્વન્ ” આ ભૂત શબ્દની વ્યુત્પત્તિ છે એનો અર્થ આ પ્રમાણે  
છે કે વર્તમાનકાળમા જેઓ સત્તા વિશિષ્ટ છે, તેઓ ભવિષ્યકાળમા સત્તા  
વિશિષ્ટ રહેશે અને ભૂતકાળમા પણ જેઓ સત્તા વિશિષ્ટ હતા આ વ્યુત્પત્તિ  
વડે સૂત્રકારે એ બતાવ્યુ છે કે દરેકે દરેક જીવ વગેરે પદાર્થ કોઈ પણ કાળમા  
ઉત્પાદ અને વ્યયધર્મ વિશિષ્ટ હોવા છતાંયે પોતપોતાની સત્તાથી રહિત હોતા  
નથી કેમકે દ્રવ્યને “ ઉત્પાદવ્યયધ્રોવ્ય સત્ ” ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રોવ્ય  
સ્વભાવ છે એથી એ વાત ચોક્કસ ગીતે સ્પષ્ટ થાય છે કે કોઈ પણ નવીન  
પદાર્થને ઉત્પાદ થતો નથી અને સત્ પદાર્થને વિનાશ પણ નથી  
“ સતો વિનાશઃ અસતશ્ચોત્પાદો ન ” “ જીવન્તિ, જીવિષ્યન્તિ, અજીવિપુ ” આ



स्वकृतकर्मजन्यसुखदुःसानुभविनः । अत्र सर्वप्राणिषु पुन पुनर्दयाकरणाय पर्यायशब्दप्रयोगः ।

‘न हतव्या’ न हन्तव्याः=इण्डादिभिर्न ताडयितव्या इत्यर्थः, “न अज्जा-वेयव्या” नातापयितव्याः=न प्रातयितव्या इत्यर्थः, “न परिवेत्तव्या” न परि-ग्रहीतव्या=इमे ममायत्ता इति कृत्वा परिग्रहरूपेण न स्वीकर्तव्या, “न परिता-

जो जीते हं, जीवेंगे और जिये है, इस कथन से सूत्रकार ने जीव में त्रिकाल में भी जीवनत्व वर्म का अभाव नहीं होता है यह प्रदर्शित किया है चाहे जीव एक इन्द्रिय अवस्थावाला भी हो तो भी वह जीवन अवस्था से रहित नहीं होता है इससे वृक्षादिको में अचेतनता मानने वाले बौद्ध आदिकों का मन्तव्य खंडित होता है ।

सूत्र में प्राणी, भूत, और सत्त्व इन एकार्थक पर्यायवाची शब्दों का जो सूत्रकार ने प्रयोग किया है उनका मुख्य प्रयोजन “समस्त जीवों में बारबार दया करनी चाहिये ” है ।

यह वीतरागप्रभु द्वारा प्रतिपादित प्राणातिपातविरमणरूप धर्मशुद्ध पापानुबन्ध रहित है । इस कथन से सूत्रकार ने इस बात की पुष्टि की है जो अवीतराग-शास्त्र आदि द्वारा धर्मरूप से प्रतिपादित हुआ है तथा जिसे उन्होंने धर्मरूप से स्वीकार किया है वह वास्तविक धर्म नहीं है । कारण कि इनमें हिंसादिक दोषों का संश्लेष पाया जाता है इनके

જીવ શબ્દની વ્યુત્પત્તિ છે જેઓ જીવે છે, જીવશે અને જીવ્યા છે આ કથન વડે સૂત્રકારે જીવમા ત્રિકાળમા પણ જીવનત્વ ધર્મનો અભાવ થતો નથી આ વાત સ્પષ્ટ કરી છે ભવે તે જીવ એક ઇન્દ્રિય અવસ્થાવાળો હોય છતાંયે તે જીવન અવસ્થાથી રહિત થતો નથી આ કથનથી વૃક્ષ વગેરેમા અચેતના માનનારા બૌદ્ધ વગેરેના મતનુ ખંડન થઈ જાય છે

સૂત્રકારે સૂત્રમા જે પ્રાણી, ભૂત અને સત્ત્વ આ બધા એકાર્થક પર્યાય વાચી શબ્દોનો જે પ્રયોગ કર્યો છે તેનુ ખાસ કારણ “ બધા જીવોમા વારવાર સદાય રહેવુ જોઈએ ” તે જ છે

વીતરાગ પ્રભુ વડે પ્રતિપાદિત પ્રાણાતિપાત વિરમણ રૂપ આ ધર્મ શુદ્ધ પાપાનુબન્ધ રહિત છે આ કથનથી સૂત્રકારે એ વાતને પુષ્ટ કરી છે કે જે અવીતરાગ-શાસ્ત્ર વગેરે દ્વારા ધર્મ-રૂપથી પ્રતિપદિત થયો છે તેમજ તેમણે જેને ધર્મ-રૂપથી સ્વીકાર્યો છે તે ખરેખર ધર્મ નથી કેમકે તેમા હિંસા વગેરે દોષોનો સંશ્લેષ છે અસર્વજ્ઞ તથા રાગયુક્ત લોકો દ્વારા પ્રતિપાદિત હોવાને

વેયઘ્ના” ન પરિતાપયિતવ્યા = અન્નપાનાઘરોધનેન પ્રીત્માતપાદો સ્થાપનેન ચ ન પીડનીયાઃ, “ ન કિઞ્ચમેયઘ્ના ” ન ક્ષામયિતવ્યાઃ = ન સ્વેદયિતવ્યાઃ = ન ત્રિપ શસ્ત્રાદિના મારયિતવ્યાઃ ।

एषः=अनन्तरोक्तः सर्वार्हद्भगवत्प्ररूपितः, धर्मः=सर्वमाणिप्राणातिपातविरमण रूपः, शुद्धः=निर्मलः-पापानुबन्धरहित-इत्यर्थ । आर्हतसर्मादन्यस्तु धर्मत्वेन यः शाक्यादेरभिमतः स खलु असर्वज्ञसरागोपदिष्टत्वेन हिंसादिदोषसद्भावेन च न शुद्ध इति भावः । अत एव-एष नित्यः=अविनाशी, सर्वदा पञ्चषु महाविदेहेषु

સદ્ભાવ કા કારણ ઉસમેં અસર્વજ્ઞ ઓર સરાગિયોં દ્વારા પ્રણીતતા હી હૈ પૂર્ણ જ્ઞાનીયો દ્વારા પ્રદર્શિત માર્ગ હી શુદ્ધ હોતા હૈ ડસકા કારણ ઉનમેં રાગ દ્વેષ કા સર્વથા અભાવ હી હોતા હૈ । અસર્વજ્ઞ યા રાગદ્વેષકલુષિત-ચિત્તવાલોં દ્વારા પ્રદર્શિત માર્ગ ઇસલિયે શુદ્ધ નહીં હોતા હૈ કિ વે એક તો ઉસ વિષય કે પૂર્ણ જ્ઞાતા નહીં હોતે, દૂસરી અપની રાગદ્વેષમયી પ્રવૃત્તિ કો પુષ્ટ કરને કે લિયે ઉસકી અન્યથા મી પ્રરૂપણા કર દેતે હૈ । એસા ધર્મ શાશ્વતિક નિત્ય નહીં હોતા હૈ-ક્યોં કિ એસા ધર્મકા વિશિષ્ટ જ્ઞાનિયો-કેવલજ્ઞાનિયો દ્વારા જીવોં કા કલ્યાણ કી કામના સે નિરાકરણ કર દિયા જાતા હૈ । વીતરાગપ્રતિપાદિત ધર્મ હી અવિનાશી રહતા હૈ, ઓર ઉસીસે જીવોં કા સદા કલ્યાણ હોતા રહતા હૈ । ઇસમે અન્યથાપ્રરૂપણાકે લિયે થોડી સી મી જગત્ નહી મિલતી હૈ । પંચ મહાવિદેહ ક્ષેત્રોંમેં અવ મી ઇસ શુદ્ધ ધર્મકા સદ્ભાવ હૈ । ઇસી અપેક્ષા ઇસે સૂત્રકારને નિત્ય-અવિનાશી કહા હૈ । શાશ્વતગતિરૂપ મુક્તિ કા કારણ હોને સે

લીધેજ તેમા હિંસા વગેરે સદોષતા છે પૂર્ણજ્ઞાનીઓ વડે પ્રદર્શિત માર્ગેજ શુદ્ધ હોય છે કેમકે તેઓમા સપૂર્ણપણે રાગદ્વેષનો અભાવજ હોય છે અસર્વજ્ઞ કે રાગદ્વેષ કલુષિત ચિત્તવાળા લોકો વડે પ્રતિપાદિત માર્ગ શુદ્ધ એટલા માટે હોતો નથી કે તેઓ પ્રથમ તો તે વિષયને સપૂર્ણપણે જાણતા નથી અને બીજુ તેઓ પોતાની રાગદ્વેષમયી પ્રવૃત્તિને પુષ્ટ કરવા માટે તેની અન્યથા પ્રરૂપણા પણ કરી બેસે છે એવો ધર્મ શાશ્વતિક-નિત્ય હોતો નથી કેમકે એવા ધર્મનુ વિશિષ્ટ જ્ઞાનીઓ-કેવળજ્ઞાનીઓ-વડે જીવોની કલ્યાણ કામનાથી પ્રેરાઈને નિરાકરણ કરવામા આવે છે વીતરાગ પ્રતિપાદિત ધર્મજ અવિનાશી રહે છે, અને તેથી સર્વદા જીવોનુ કલ્યાણ થતુ રહે છે આમા અન્યથા પ્રરૂપણા માટે અવકાશજ નથી અત્યારે પણ પંચવિદેહ ક્ષેત્રમા આ શુદ્ધ ધર્મનો સદ્ભાવ છે આ ધર્મને આ દૃષ્ટિથીજ સૂત્રકારે નિ, ૧  
કહ્યો છે શાશ્વત ગતિ રૂપ મુક્તિનો હોવાથી આ ધર્મ

સદ્ભાવાત્ । તથા-શાશ્વતઃ=શાશ્વતગતિકારણત્વાત્ । યદ્વા-યતો નિત્યસ્તસ્માચ્છા-  
શ્વતઃ હતિ । અયમેવ ધર્મઃ શ્રદ્ધેયો ગ્રાહ્યથેત્યત્ર હેતુ પ્રદર્શયન્ વિશેષણાન્તરમાદ-  
સમેત્ય ઇત્યાદિ । લોક પદ્ જીવનિકાય દુઃસ્વદાવાનલ્પાન્ત,પતિત, સમેત્ય=કેવ-  
લજ્ઞાનેન પ્રત્યક્ષતયા વિજ્ઞાન, સ્વેદજૈઃ=સર્વપ્રાણિદુઃસ્વાભિજ્ઞેસ્તીર્થકરૈઃ પ્રવેદિતઃ=  
આદિષ્ટ । ' પ્રવેદિત ' ઇત્યનેન ધર્મોઽય મયા ન સ્વમનીપયા કલ્પિતઃ ' ઇતિ ચ  
સુધર્મસ્વામિના શિષ્યમુદિષ્ય સૂચિતમ્ । અનુયોગદ્વારે—

યદ્ શાશ્વત માના ગયા હૈ અથવા હેતુ હેતુમદ્ભાવ સે મી યો કહ  
સકતે હૈ કિ જિસ કારણ સે યદ્ નિત્ય હૈ હસી કારણ સે યદ્ શાશ્વત  
માના ગયા હૈ । અતઃ પ્રત્યેક સુમુદ્ધુ જીવો દ્વારા યદ્ ધર્મ શ્રદ્ધેય શ્રદ્ધા  
કરને યોગ્ય એવ ગ્રાહ્ય-આરાધન કરને યોગ્ય હૈ હસ વિષય સે પૂર્વોક્ત-  
રૂપ સે સૂત્રકાર હેતુ કા કથન કર ઉસ ધર્મ કી પ્રરૂપણા કરને કે  
કારણ કા પ્રદર્શન કરતે હુએ “ સમેત્ય લોક સ્વેદજૈઃ પ્રવેદિતઃ ” કહતે  
હૈ કિ સમસ્ત પ્રાણીયો કે દુઃખો કે વેત્તા કેવલજ્ઞાની પ્રભુ ને હસ પદ્ જીવ  
નિકાયરૂપ લોક કો પ્રત્યક્ષરૂપ સે સાક્ષાત્ દુઃસ્વરૂપી દાવાનલ સે જલતા  
હુઆ દેખકર હસ શુદ્ધ, શાશ્વતિક ધર્મ કા કથન કિયા હૈ ।

ભાવાર્થ-અનંત સાસારિક દુઃખો સે સતત સમસ્ત સસારી જીવો  
કો સાક્ષાત્ હસ્તામલકવત્ દેખકર દુઃખો સે ઉનકે ઉદ્ધાર કે નિમિત્ત  
વોતરાગ કેવલજ્ઞાનિયોને હી હસ ધર્મ કી પ્રરૂપણા કી હૈ । મૈ ને અપની  
ઓર સે હસકા કથન નહીં કિયા હૈ । હસ પ્રકાર શ્રી સુધર્માસ્વામી  
અપને શિષ્ય જમ્બૂસ્વામી કો સમજાતે હૈ ।

વામા આગ્યો છે અથવા હેતુ-હેતુ મદ્ભાવથી પણ એમ કહી શકાય છે કે  
જે કારણને લઈને આ નિત્ય છે તે કારણથી જ આ શાશ્વત માનવામા આગ્યો  
છે એથી દરેક મોક્ષને ઇચ્છનારા જીવો વડે આ ધર્મ શ્રદ્ધેય-શ્રદ્ધા કરવા  
યોગ્ય અને ગ્રાહ્ય આરાધવા યોગ્ય છે આ વિષે સૂત્રકાર પૂર્વોક્ત રૂપે હેતુનુ  
કથન કરીને તે ધર્મની પ્રરૂપણા કરતા “ સમેત્ય લોક સ્વેદજૈઃ પ્રવેદિત ” કહે  
છે કે બધા પ્રાણીઓના હૃદયોને જાણનારા કેવળજ્ઞાની પ્રભુએ આ પદ્ જીવ  
નિકાય રૂપ લોકને પ્રત્યક્ષ રૂપમા સાક્ષાત્ દુઃખ રૂપી દાવાનળમા સળગતા  
જોઈને શુદ્ધ, શાશ્વતિક ધર્મનું કથન કર્યું છે—

ભાવાર્થ—સસારના બધા જીવોને અનંત સાસારિક દુઃખોથી હસ્તા  
મલકવત્ સતત જોઈને તેમના ઉદ્ધાર માટે વોતરાગ કેવળજ્ઞાનીઓ એ જ આ  
ધર્મનું નિરૂપણ કર્યું છે મે પોતાની મેળે આ કથન કર્યું નથી શ્રી સુધર્મા  
સ્વામી પોતાના શિષ્ય જમ્બૂસ્વામીને આ પ્રમાણે સમજાવે છે

વેયઢ્યા" ન પરિતાપયિતવ્યા = અન્નપાનાઘરોધનેન ધીન્માતપાદો સ્થાપનેન ચ ન પીડનીયાઃ, " ન કિન્નામેયઢ્યા " ન ક્ષામયિતવ્યાઃ = ન રોદયિતવ્યાઃ = ન ત્રિષ શસ્ત્રાદિના મારયિતવ્યાઃ ।

एषः=अनन्तरोक्तः सर्वार्हद्भगवत्परूपितः, धर्मः=मर्मपाणिप्राणातिपातत्रिमण रूपः, शुद्धः=निर्मलः-पापानुबन्धरहित-इत्यर्थ । आर्हतमर्मादन्यस्तु धर्मत्वेन यः शाक्यादेरभिमतः स खलु असर्वतसरागोपदिष्टत्वेन हिंसादिदोषसद्भावेन च न शुद्ध इति भावः । अत एव-एव नित्यः=अविनाशी, सर्वदा पञ्चसु महाविदेहेषु

સદ્ભાવ કા કારણ ઉસમેં અસર્વજ્ઞ ઓર સરાગિયોં દ્વારા પ્રણીતતા હી હૈ પૂર્ણ જ્ઞાનીયો દ્વારા પ્રદર્શિત માર્ગ હી શુદ્ધ હોતા હૈ ડસકા કારણ ઉનમેં રાગ દ્વેષ કા સર્વથા અભાવ હી હોતા હૈ । અસર્વજ્ઞ યા રાગદ્વેષકલુષિત-ચિત્તવાલોં દ્વારા પ્રદર્શિત માર્ગ ડસલિયે શુદ્ધ નહીં હોતા હૈ કિં વે એક તો ઉસ વિષય કે પૂર્ણ જ્ઞાતા નહીં હોતે, દસરી અપની રાગદ્વેષમયી પ્રવૃત્તિ કો પુટ કરને કે લિયે ઉસકી અવધા મી પ્રરૂપણા કર દેતે હૈ । એસા ધર્મ શાશ્વતિક નિત્ય નહીં હોતા હૈ-ક્યોં કિ એસા ધર્મકા વિશિષ્ટ જ્ઞાનિયો-કેવલજ્ઞાનિયો દ્વારા જીવોં કા કલ્યાણ કો કામના સે નિરાકરણ કર દિયા જાતા હૈ । વીતરાગપ્રતિપાદિત ધર્મ હી અવિનાશી રહતા હૈ, ઓર ઉમીસે જીવોં કા મદા કલ્યાણ હોતા રહતા હૈ । ડસમે અન્ય થાપ્રરૂપણાકે લિયે ધોડી સી મી જગદ નહી મિલતી હૈ । પંચ મહાવિદેહ ક્ષેત્રોંમેં અવ મી ડસ શુદ્ધ ધર્મકા સદ્ભાવ હૈ । ડસી અપેક્ષા ડસે સૂત્રકારને નિત્ય-અવિનાશી કહા હૈ । શાશ્વતગતિરૂપ મુક્તિ કા કારણ હોને સે

લીધે જ તેમા હિંસા વગેરે સદોષતા છે પૂર્ણજ્ઞાનીઓ વડે પ્રદર્શિત માર્ગે જ શુદ્ધ હોય છે કેમકે તેઓમા મપૂર્ણપણે રાગદ્વેષનો અભાવ જ હોય છે અસર્વજ્ઞ કે રાગદ્વેષ કલુષિત ચિત્તવાળા લોકો વડે પ્રતિપાદિત માર્ગ શુદ્ધ એટલા માટે હોતો નથી કે તેઓ પ્રથમ તો તે વિષયને સપૂર્ણપણે બાણુતા નથી અને બીજુ તેઓ પોતાની રાગદ્વેષમયી પ્રવૃત્તિને પુનઃ કરવા માટે તેની અન્યથા પ્રક્રિયા પણ કરી બેસે છે એવો ધર્મ શાશ્વતિક-નિત્ય હોતો નથી કેમકે એવા ધર્મનુ વિશિષ્ટ જ્ઞાનીઓ-કેવલજ્ઞાનીઓ-વડે જીવોની કલ્યાણ કામનાથી પ્રેરાઈને નિરાકરણ કરવામા આવે છે વીતરાગ પ્રતિપાદિત ધર્મ જ અવિનાશી રહે છે, અને તેથી સર્વદા જીવોનુ કલ્યાણ થતુ રહે છે આમા અન્યથા પ્રક્રિયા માટે અવકાશ જ નથી અત્યારે પણ પંચવિદેહ ક્ષેત્રમા આ શુદ્ધ ધર્મનો સદ્ભાવ છે આ ધર્મને આ દૃષ્ટિથી જ સૂત્રકાર નિ ૧ કહ્યો છે શાશ્વત ગતિ રૂપ મુક્તિનો કા હોવાથી આ ધર્મ

સદ્ધાવાત્ । તથા-શાશ્વતઃ=શાશ્વતગતિકારણત્વાત્ । યદ્વા-યતો નિત્યસ્તસ્માચ્છા-  
શ્વત ઇતિ । અયમેવ ધર્મઃ શ્રદ્ધેયો ગ્રાહ્યથેત્યત્ર હેતુ પ્રદર્શયન્ વિશેષણાન્તરમાહ-  
સમેત્ય ઇત્યાદિ । લોક પદ્ જીવનિકાય દુઃસ્વદાવાનલાન્ત.પતિત, સમેત્ય=કેવ-  
લજ્ઞાનેન પ્રત્યક્ષતયા વિજ્ઞાન, સ્વેદજ્ઞૈઃ=સર્વપ્રાણિદુઃસ્વાભિજ્ઞૈસ્તીર્થકરૈઃ પ્રવેદિતઃ=  
આદિષ્ટ । 'પ્રવેદિતઃ' ઇત્યનેન ધર્મોઽય મયા ન સ્વમનીપયા કલ્પિતઃ' ઇતિ ચ  
સુધર્મસ્વામિના શિષ્યમુદિષ્ય સૂચિતમ્ । અનુયોગદ્વારે—

યદ્ શાશ્વત માના ગયા હૈ અથવા હેતુ હેતુમદ્ધાવ સે મી યો કહ  
સકતે હૈ કિ જિસ કારણ સે યદ્ નિત્ય હૈ હસી કારણ સે યદ્ શાશ્વત  
માના ગયા હૈ । અતઃ પ્રત્યેક મુમુક્ષુ જીવો દ્વારા યદ્ ધર્મ શ્રદ્ધેય શ્રદ્ધા  
કરને યોગ્ય એવ ગ્રાહ્ય-આરાધન કરને યોગ્ય હૈ હસ વિષય મે પૂર્વોક્ત-  
રૂપ સે સૂત્રકાર હેતુ કા કથન કર ઉસ ધર્મ કી પ્રરૂપણા કરને કે  
કારણ કા પ્રદર્શન કરતે હુએ “સમેત્ય લોક સ્વેદજ્ઞૈઃ પ્રવેદિત” કહતે  
હૈ કિ સમસ્ત પ્રાણીયો કે દુઃખો કે વેત્તા કેવલજ્ઞાની પ્રભુ ને હસ પદ્જીવ  
નિકાયરૂપ લોક કો પ્રત્યક્ષરૂપ સે સાક્ષાત્ દુઃસ્વરૂપી દાવાનલ સે જલતા  
હુઆ દેખકર હસ શુદ્ધ, શાશ્વતિક ધર્મ કા કથન કિયા હૈ ।

ભાવાર્થ-અનંત સાસારિક દુઃખો સે સતત સમસ્ત સસારી જીવો  
કો સાક્ષાત્ હસ્તામલકવત્ દેખકર દુઃખો સે ઉનકે ઉદ્ધાર કે નિમિત્ત  
વીતરાગ કેવલજ્ઞાનિયોને હી હસ ધર્મ કી પ્રરૂપણા કી હૈ । મેં ને અપની  
ઓર સે હસકા કથન નહીં કિયા હૈ । હસ પ્રકાર શ્રી સુધર્માસ્વામી  
અપને શિષ્ય જમ્બૂસ્વામી કો સમજાતે હૈ ।

વામા આબ્યો છે અથવા હેતુ-હેતુ મદ્ધલાવથી પણ એમ કહી શકાય છે કે  
જે કારણને લઈને આ નિત્ય છે તે કારણથી જ આ શાશ્વત માનવામા આબ્યો  
છે એથી દરેક મોક્ષને ઇચ્છનારા જીવો વડે આ ધર્મ શ્રદ્ધેય-શ્રદ્ધા કરવા  
યોગ્ય અને ગ્રાહ્ય આરાધવા યોગ્ય છે આ વિષે સૂત્રકાર પૂર્વોક્ત રૂપે હેતુનુ  
કથન કરીને તે ધર્મની પ્રરૂપણા કરતા “સમેત્ય લોક સ્વેદજ્ઞૈઃ પ્રવેદિત” કહે  
છે કે બધા પ્રાણીઓના દુઃખોને જાણનારા કેવલજ્ઞાની પ્રભુએ આ પદ્જીવ  
નિકાય રૂપ લોકને પ્રત્યક્ષ રૂપમા સાક્ષાત્ દુઃખ રૂપી દાવાનળમા સળગતા  
જોઈને શુદ્ધ, શાશ્વતિક ધર્મનું કથન કર્યું છે—

ભાવાર્થ—સાસારના બધા જીવોને અનંત સાસારિક દુઃખોથી હસ્તા  
મલકવત્ સતત જોઈને તેમના ઉદ્ધાર માટે વીતરાગ કેવલજ્ઞાનીઓ એ જ આ  
ધર્મનું નિરૂપણ કર્યું છે એ જોતાની મેળે આ કથન કર્યું નથી શ્રી સુધર્મા  
સ્વામી જોતાના શિષ્ય જમ્બૂસ્વામીને આ પ્રમાણે સમજાવે છે



“ જહ મમ ણ પિય દુઃખ જાણિય એમેવ સર્વજીવાણ ।

ન હણહ ન હણાવેહ ય, સમમણહ તેણ સો સમણો । ઇતિ ”

છાયા—યથા મમ ન પ્રિય દુઃખ, જાત્વા એમેવ સર્વજીવાનામ્ ।

ન ઇન્તિ ન ઘાતયન્તિ ચ સમમ્ અણતિ તેન સ સમણઃ ॥

ચ શબ્દાત્ ઘનતથાન્યાન્ન સમણુજાનીત ઇત્યનેન પ્રકારેણ ‘સમમણતિ’ તિ સર્વજીવેષુ તુલ્ય વર્તેતે યતસ્તેનાસૌ શ્રમણ ઇતિ ગાથાર્થ ।

‘એસ ધમ્મે સુદ્ધે’ ઇત્યનેન આર્હત ધર્મસ્ય હિંસાદિ દોષાભાવાદ્ભગવતા શુદ્ધ સ્વમુક્તમ્ । શુદ્ધધર્મબોધકત્વાન્ચ દ્વાદશાઙ્ગયાઃ પ્રવચનત્વમાગમત્વ સર્વોત્કૃષ્ટત્વ ચ સિધ્યતિ । પ્રવચનસ્ય સ્વરૂપ માહાત્મ્ય ચાઽઽગમેષુ ભગવતાઽભિહિતમ્ ।

અનુયોગદ્વાર મેં—

જહ મમ ણ પિય દુઃખ જાણિય એમેવ સર્વજીવાણ ।

ન હણહ ન હણાવેહ ય સમમણહ તેણ સો સમણો ॥ ઇતિ ।

જિસ પ્રકાર દુઃખ મુદ્દે દ્રષ્ટ નહીં હૈ, उसी तरह वह दुःख किसी भी ससारी जीवो को द्रष्ट नहीं है ऐसा समझ कर जो जीवो की विराधना स्वयं नहीं करता और न दूसरों से करवाता है तथा समस्त जीवों में तुल्यता की भावना रखता है वही श्रमण है । श्रमण होने में ये पूर्वोक्त बातें हेतु-कारण हैं ।

“ એસ ધમ્મે સુદ્ધે ” इस सूत्राश से श्री सुधर्मास्वामी ने तीर्थंकर कथिन वर्म में हिंसादिक दोषों के अभाव से शुद्धता का कथन किया है । इस शुद्ध धर्म का बोधक-बोध करानेवाली होने से ही द्वादशांगी में प्रवचनता, आगमता एवं सर्वोत्कृष्टता सिद्ध होती है । भगवान ने

અનુયોગદ્વારમા—જહ મમ ણ પિય દુઃખ જાણિય એમેવ સર્વજીવાણ ।

ન હણહ ન હણાવેહ ય સમમણહ તેણ સો સમણે ॥ ઇતિ ।

જેમ મને દુઃખ ગમતું નથી તેમજ તે દુઃખ સસારના કોઈ પણ જીવને ગમે જ નહિ આમ સમજીને જેઓ જીવોની વિરાધના પોતે કરતા નથી અને બીજાઓથી કરાવતા નથી તેમજ બધા જીવોમાં તુલ્યતા (સમાનતા) ની દૃષ્ટિ રાખે છે તેઓ જ ‘શ્રમણ’ છે આ ઉપરની વાતો શ્રમણ થવા માટેહેતુ કારણ છે

“ એસ ધમ્મે સુદ્ધે ” આ સૂત્રાશથી શ્રી સુધર્માસ્વામીએ તીર્થંકર કથિત ધર્મમાં હિંસા વગેરે દોષોના અભાવથી શુદ્ધતાનું કથન કર્યું છે આ શુદ્ધ ધર્મનો બોધક-બોધ કરાવનારી હોવાથી જ દ્વાદશાંગીમાં પ્રવચનતા આગમ સર્વોત્કૃષ્ટતા સિદ્ધ થાય છે ભગવાને આગમોમાં પ્રવચનનું સ્વરૂપ

યથા ભગવતીસૂત્રે—

પવચન ભતે ! પવચન, પાવચની પવચન ? । “ ગોયમા ! અરહા તાવ ણિયમા પાવચની । પવચનં પુણ દુવાલસંગે ગણિપિટ્થમે । ત જહા-આયારોં જાવ દિટ્ઠિવાઓ । ઇતિ, ( શં ૨૦ ઉં ૮ )

ભતે ! હે મહન્ત ! “ પવચન ” પ્રવચન-કિ પ્રવચન, ઉત-“ પાવચની ” પ્રવચની પ્રવચનમ્ ? । “ ગોયમા ! ” હે ગૌતમ ! ‘ અરહા ’ અર્હન્ ‘ તાવ ’ તાવત્ નિયમાત્પ્રવચની । પ્રવચન પુન ‘ દુવાલસંગે ’ દ્વાદશાંગી “ ગણિપિટ્થમે ” ગણિપિટ્થકમ્ । તદ્ યથા-“ આયારો જાવ દિટ્ઠિવાઓ ” આચારાજ્ઞાદિ યાવત્ દૃષ્ટિવાદઃ । ઇતિ,

પુનસ્તત્રૈવ-“ સે નૂણ ભતે ! તમેવ સન્ન નીસક જ જિણેહિં પવેઝ્ય ? ।

પ્રવચન કા સ્વરૂપ ઓર ઉસકા પ્રભાવ-માહત્મ્ય આગમોં મેં કહા હૈ । જૈસે ભગવતી સૂત્ર મેં “ પવચન ભતે ! પવચન, પાવચની પવચન ? ગોયમા ! અરહા તાવ ણિયમા પાવચની । પવચન પુણ દુવાલસંગે ગણિપિટ્થમે । ત જહા-આયારે જાવ દિટ્ઠિવાઓ । ઇતિ ( શં ૨૦ ઉં ૮ )

ભાવાર્થ-ગૌતમસ્વામી પૂછતે હૈં હે ભગવન્ ! પ્રવચન પ્રવચન હૈ-યા પ્રવચની પ્રવચન હૈ ? ઇસ અશ કા સમાધાન કરતે હુણ ભગવાન્ કહતે હૈં-હે ગૌતમ ! ગણિપિટ્થક જો આચારાંગ સે લેકર દૃષ્ટિવાદ તક દ્વાદશાંગ આગમ હૈ વહ સમસ્ત પ્રવચન હૈ । ઇસ પ્રવચન કો અર્થત પ્રકટ કરનેવાલે શ્રી તીર્થકર પ્રભુ પ્રવચની હૈં । ઉસી ભગવતી સૂત્ર મેં ઓર ભી યહ કહા હૈ કિ-“ સે નૂણ ભતે ! તમેવ સન્ન નીસક જ જિણેહિં પવેઝ્ય ? । હતા ગોયમા ! તમેવ સન્ન સે નૂણ ભતે ! એવ મણે

માહાત્મ્ય કહ્યો છે જેમકે ભગવતી સૂત્રમા “ પવચન ભતે ! પવચન પાવચની પવચન ? ગોયમા ! અરહા તાવ ણિયમા પાવચની । પવચન પુણ દુવાલસંગે ગણિપિટ્થમે । ત જહા-આયારો જાવ દિટ્ઠિવાઓ । ઇતિ ( શં ૨૦ ઉં ૮ )

ભાવાર્થ-ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે કે હે ભગવન્ ! પ્રવચન પ્રવચન છે કે પ્રવચની પ્રવચન છે ? આ શંકાનું સમાધાન કરતા ભગવાન કહે છે-કે હે ગૌતમ ! ગણિપિટ્થક-કે જે આચારાંગથી માડીને દૃષ્ટિવાદ સુધી દ્વાદશાંગ આગમ છે તે સમસ્ત પ્રવચન છે અર્થત આ પ્રવચનને પ્રકટ કરનારા શ્રી તીર્થકર પ્રભુ પ્રવચની છે તે ભગવતી સૂત્રમા જ આ પ્રમાણે કહેવામા આવ્યું છે કે- ( સે નૂણ ભતે તમેવ સન્ન નીસક જ જિણેહિં પવેઝ્ય ? । હતા ગોયમા ! તમેવ સન્ન સે નૂણ ભતે ! એવ મણે ઘારેમાણે એવ પકરેમાણે આણાપ આરાહપ

“ જહ મમ ણ પિય દુઃખ જાણિય એમેવ સર્વજીવાણ ।  
 ન હણહ ન હણાવેહ ચ, સમમણહ તેણ સો સમણો । ઇતિ ”  
 છાયા-યથા મમ ન પ્રિય દુઃખ, ઘાત્વા એમેવ સર્વજીવાનામ્ ।  
 ન હન્તિ ન ઘાતયન્તિ ચ સમમ્ અણતિ તેન સ સમણઃ ॥  
 ચ શબ્દાત્ ઘનતથા-યાન્ન સમણુજાનીત ઇત્યનેન પ્રકારેણ ‘સમમણતિ’ તિ  
 સર્વજીવેષુ તુલ્ય વર્તેતે યતસ્તેનાસૌ શ્રમણ ઇતિ ગાથાર્થ ।  
 ‘એસ ધમ્મે સુદ્ધે’ ઇત્યનેન આર્હત ધર્મસ્ય હિંસાદિ દોષાભાસાદ્ભગવતા શુદ્ધ  
 ત્વમુક્તમ્ । શુદ્ધધર્મરોધકત્યાન્ન ચ દ્વાદશાન્નયાઃ પ્રવચનત્વમાગમત્વ મર્વોત્કૃષ્ટત્વ  
 ચ સિધ્ધયતિ । પ્રવચનસ્ય સ્વરૂપ માહાત્મ્ય ચાઽઽગમેષુ ભગવતાઽમિહિતમ્ ।

અનુયોગદ્વાર મેં-

જહ મમ ણ પિય દુઃખ જાણિય એમેવ સર્વજીવાણ ।  
 ન હણહ ન હણાવેહ ચ સમમણહ તેણ સો સમણો ॥ ઇતિ ।  
 जिस प्रकार दुःख मुझे इष्ट नहीं है, उसी तरह वह दुःख किसी भी  
 ससारी जीवो को इष्ट नहीं है ऐसा समझ कर जो जीवों की विराधना  
 स्वयं नहीं करता और न दूसरों से करवाता है तथा समस्त जीवों में  
 तुल्यता की भावना रखता है वही श्रमण है । श्रमण होने में ये  
 पूर्वोक्त बातें हेतु-कारण हैं ।

“ એસ ધમ્મે સુદ્ધે ” इस सूत्राश से श्री सुधर्मास्वामी ने तीर्थंकर  
 कथित धर्म में हिंसादिक दोषों के अभाव से शुद्धता का कथन किया  
 है । इस शुद्ध धर्म का बोधक-बोध करानेवाली होने से ही द्वादशांगी  
 में प्रवचनता, आगमता एवं सर्वोत्कृष्टता सिद्ध होती है । भगवान ने

અનુયોગદ્વારમા—જહ મમ ણ પિય દુઃખ જાણિય એમેવ સર્વજીવાણ ।

ન હણહ ન હણાવેહ ચ સમમણહ તેણ સો સમણે ॥ ઇતિ ।

જેમ મને દુઃખ ગમતું નથી તેમજ તે દુઃખ સસારના કોઈ પણ જીવને  
 ગમે જ નહિ આમ સમજીને જેઓ જીવોની વિરાધના પોતે કરતા નથી અને  
 બીજાઓથી કરાવતા નથી તેમજ બધા જીવોમાં તુલ્યતા (સમાનતા) ની દૃષ્ટિ  
 રાખે છે તેઓ જ ‘શ્રમણ’ છે આ ઉપરની વાતો શ્રમણ થવા માટેહેતુ કારણ છે

“ એસ ધમ્મે સુદ્ધે ” આ સૂત્રાશથી શ્રી સુધર્માસ્વામીએ તીર્થંકર કથિત  
 ધર્મમાં હિંસા વગેરે દોષોના અભાવથી શુદ્ધતાનું કથન કર્યું છે આ શુદ્ધ ધર્મના  
 બોધક-બોધ કરાવનારી હોવાથી જ દ્વાદશાંગીમાં પ્રવચનતા આગમતા અને સર્વો-  
 ત્કૃષ્ટતા સિદ્ધ થાય છે ભગવાને આગમોમાં પ્રવચનનું સ્વરૂપ અને વચ

છાયા—ઇદમેવ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન સત્યમ્ અનુત્તર, કેવલિક, પ્રતિપૂર્ણ, નૈયા-  
યિક, સશુદ્ધ, શલ્યકર્ત્તન, સિદ્ધિમાર્ગ, મુક્તિમાર્ગ, નિર્વાણમાર્ગ, નિર્વાણમાર્ગ,  
અવિતથમ્, અમન્દિગ્ધમ્, અત્ર સ્થિતા જીવાઃ સિદ્ધયન્તિ, વુદ્ધ્યન્તે, મુચ્યન્તે,  
પરિનિર્વાન્તિ, સર્વં દુઃખાનામન્ત કુર્મન્તિ ।

અન્યચ્ચ—ઇમં ચ ણ સન્નજગજીવરક્ષણદયદ્વાય પાવયણ ભગવયા સુક-  
હિય ” ઇતિ ( પ્રશ્ન૦ સંવર૦ )

છાયા—‘ ઇદ ચ સ્વલ્લુ સર્વજગજીવરક્ષણદયાર્થાય પ્રવચન ભગવતા  
સુરુથિતમ્ ’ ઇતિ ।

ધર્મધ્યાનસ્યાઽઽજ્ઞાવિચયાદિ ભેદેન ચાતુર્વિધ્ય પ્રદર્શયતા ભગવતા-પ્રાધાન્યા-  
દાજ્ઞાવિચયઃ પ્રાથમ્યેન પ્રોક્ત ।

ભાવાર્થ—ઇસ કા સ્પષ્ટ હૈ । ઇસમેં સૂત્રકાર ને મુખ્યરૂપ સે યંહી વાત  
પ્રકટ કી હૈ કિં ઇસ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન માર્ગ મેં સ્થિત જીવ અષ્ટ કર્મોંકા  
વિનાશ કર સિદ્ધદશાસપન્ન હો જાતે હૈ । ઇસ અવસ્થાકી પ્રાપ્તિ હોના  
હી જીવોં કે સમસ્ત દુઃખોં કા વિનાશ હૈ ।

અન્યચ્ચ—ઇમં ચ ણ સન્નજગજીવરક્ષણદયદ્વાય પાવયણ ભગવયા  
સુકહિય ” ઇતિ—( પ્રશ્ન સંવર૦ )

ઇસ પ્રવચન કી પ્રરૂપણા કરને કા શ્રી તીર્થકર પ્રશ્ન કા યંહી એક  
ઉદ્દેશ રહા હૈ કિ સમસ્ત સસારીજન ઇસ પ્રવચન કે અભ્યાસ સે સર્વ  
જગત કે જીવોં કી રક્ષા કરે ઓર ઉનકી દયા પાલે ।

ધ્યાન કા વર્ણન કરતે હુણ ભગવાન ને ઉસ ધ્યાન કે ૪ ભેદ કહે  
હૈ । ઉનમેં ધર્મધ્યાન કે આજ્ઞાવિચય આદિ જો ૪ પાયે પ્રકટ કિયે

આ ઉચ્ચનો ભાવાર્થ સ્પષ્ટ છે આમા ખાસ કરીને સૂત્રકારે એ જ  
વાત સ્પષ્ટ રીતે બતાવી છે કે આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન માર્ગમા સ્થિત જીવ અષ્ટ  
કર્મોના વિનાશ કરીને સિદ્ધિ દશા સપન્ન થઈ જાય છે આ અવસ્થા મેળ  
વવી એ જ જીવોના સઘળા દુખનો વિનાશ છે

અન્યચ્ચ—ઇમં ચ ણ સન્ન જગજીવરક્ષણદયદ્વાય પાવયણ ભગવયા સુકહીય  
” ઇતિ—( પ્રશ્ન૦ સંવર૦ )

શ્રી તીર્થ કર પ્રશ્નનો આ પ્રવચનની પ્રરૂપણા કરવાનો એ જ ઉદ્દેશ રહ્યો  
છે કે બધા સસારીજનો આ પ્રવચનના અભ્યાસથી જગતના સર્વ જીવોની  
રક્ષા કરે અને તેમની દયા પાળે

ધ્યાનનું વર્ણન કરતા ભગવાને તેના ચાર ભેદો વર્ણવ્યા છે તેઓમા  
ધર્મધ્યાનના આજ્ઞા-વિચય વગેરે ચાર ઉપભેદો સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યા છે

હતા ગોયમા ! તમેવ સચ્ચં । સે નૂન ભતે ! એવ મણે ધારેમાણે એવ પકરેમાણે આણાએ આરાહાએ ભવહ ? । હતા ગોયમા ! ત ચેવ ” તિ ।

છાયા—અથ નૂન ભદન્ત । તદેવ સત્ય નિશ્ચક્ક યજ્ઞિનૈઃ પ્રવેદિતમ્ ? । હન્ત ગૌતમ ! તદેવ સત્યમ્ । અથ નૂન ભદન્ત ? એવ મનસિ ધારયન એવ પ્રકુર્વન્ આજ્ઞાયા આરાધકો ભવતિ ? હન્ત ગૌતમ ! તદેવ ” ઇતિ ।

આવશ્ય સૂત્રેઽપિ—“ઇણમેવ નિગ્ગય પાવયણ સચ્ચ અણુત્તર કેવલિય પહિ-  
પુન્ન નેયાઉય સસુદ્ધ સહ્લગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગા મુત્તિમગ્ગા નિજ્જાણમગ્ગા નિવ્વાણમગ્ગા  
અવિત્તહમસદિદ્ધ । इत्थं ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाएति  
सव्वदु खाणमंत करति ।

ધારેમાણે એવ પકરેમાણે આણાએ આરાહાએ ભવહ । હતા ગોયમા ! ત  
ચેવ હતિ ” હસ સૂત્ર કા ભાવાર્થ યદ્દ હૈ કિ પ્રત્યેક મુમુક્ષુ ( મોક્ષાભિ-  
લાપી ) જન કો અપને હૃદય મેં હસ વાત કા પૂર્ણદૃઢ વિશ્વાસ રાખના  
ચાહિયે કિ જો જિનેન્દ્ર દેવ ને પ્રતિપાદિત કિયા હૈ વહી વાસ્તવિક તત્ત્વ  
હૈ—હસમેં કિસી ભી પ્રકાર કી શકા કે લિયે સ્થાન નહી હૈ હમ પ્રકાર  
કે દૃઢ વિશ્વાસ સે હસે અપને મન મેં ધારણ કરનેવાલા ઓર હસકે  
અનુસાર હી અપની પ્રવૃત્તિ કરનેવાલા મોક્ષાભિલાપીજન તીર્થંકરપ્રભુકી  
આજ્ઞાકા આરાધક હોતા હૈ આવશ્યક સૂત્રમેં ભી યહી વાત કહી ગઈ હૈ

“ ઇણમેવ નિગ્ગય પાવયણ સચ્ચ અણુત્તર કેવલિય પહિપુન્ન નેયા  
ઉય સસુદ્ધ સહ્લગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગં મુત્તિમગ્ગં નિજ્જાણમગ્ગા નિવ્વાણમગ્ગા  
અવિત્તહમસદિદ્ધ । इत्थं ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणि  
व्वाएति सव्वदु खाणमत करति ।

ભવહ ! હતા ગોયમા ! ત ચેવ હતિ ) આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે  
હરેક મોક્ષ ઇચ્છનારી વ્યક્તિને પોતાના હૃદયમાં સંપૂર્ણપણે આ વાતની ખાતરી  
થવી જોઈએ કે જે જીનેન્દ્ર દેવે પ્રતિપાદિત કર્યું છે તે જ વાસ્તવિક તત્ત્વ  
છે તેમાં લગીરે શંકા નથી આ જાતના દૃઢ વિશ્વાસથી તેને પોતાના મનમાં  
કરનાર અને તે મુજબ જ આચરણ કરનારી મોક્ષને ઇચ્છનારી વ્યક્તિ પ્રભુની  
આજ્ઞાની આરાધક હોય છે આવશ્યક સૂત્રમાં પણ એ જ વાત કહેવામાં આવી  
છે—( ઇણમેવ નિગ્ગય પાવયણ સચ્ચ અણુત્તર કેવલિય પહિપુન્ન નેયાઉય સસુદ્ધ  
સહ્લગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગા મુત્તિમગ્ગા નિજ્જાણમગ્ગા નિવ્વાણમગ્ગા અવિત્તહમસદિદ્ધ ।  
इत्थं ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिवाएति सव्वदु — કરતિ ।



छाया—इदमेव निर्ग्रन्थ प्रवचन सत्यम् अनुत्तर, कैवलिक, प्रतिपूर्ण, नैया-  
यिक, सशुद्ध, शल्यकर्त्तन, सिद्धिमार्गः, मुक्तिमार्गः, निर्वाणमार्गः, निर्वाणमार्गः,  
अवितथम्, अमन्दिग्यम्, अत्र स्थिता जीवाः सिद्ध्यन्ति, बुध्यन्ते, मुच्यन्ते,  
परिनिर्वायन्ति, सर्वे दुःखानामन्तं कुर्वन्ति ।

अन्यच्च—इमं च ण सव्वजगजीवरक्खणदयद्वयाए पावयण भगवया सुक-  
हिय ” इति ( प्रश्न० सवर० )

छाया—‘ इदं च खलु सर्वजगज्जीवरक्षणदयार्थाय प्रवचनं भगवता  
मुकथितम् ’ इति ।

धर्मध्यानस्याऽऽज्ञाविचयादि भेदेन चातुर्विध्यं प्रदर्शयता भगवता—प्राधान्या-  
दाज्ञाविचयः प्रोच्यते प्रोक्तः ।

भावार्थ—इस का स्पष्ट है । इसमें सूत्रकार ने मुख्यरूप से यही बात  
प्रकट की है कि इस निर्ग्रन्थ प्रवचन मार्ग में स्थित जीव अष्ट कर्मोंका  
विनाश कर सिद्धदशासपन्न हो जाते हैं । इस अवस्थाकी प्राप्ति होना  
ही जीवों के समस्त दुःखों का विनाश है ।

अन्यच्च—इमं च ण सव्वजगजीवरक्खणद्वयाए पावयण भगवया  
सुकहियं ” इति—( प्रश्न सवर० )

इस प्रवचन की प्ररूपणा करने का श्री तीर्थकर प्रभु का यही एक  
उद्देश रहा है कि समस्त सत्सारीजन इस प्रवचन के अभ्यास से सर्व  
जगत के जीवों की रक्षा करे और उनकी दया पावे ।

ध्यान का वर्णन करते हुए भगवान ने उस ध्यान के ४ भेद कहे  
हैं । उनमें धर्मध्यान के आज्ञाविचय आदि जो ४ पाये प्रकट किये

आ उथनने। भावार्थ स्पष्ट छे आमा भास करीने सूत्रकारे ओ न  
वात स्पष्ट रीते बतावी छे छे आ निर्ग्रन्थ प्रवचन मार्गमा स्थित जीव अष्ट  
कर्मोंने विनाश करीने सिद्धि दशा सपन्न थर् भय छे आ अवस्था भेण  
ववी ओ न भवेना सधणा दुःखोंने विनाश छे

अन्यच्च—इमं च ण सव्व जगज्जीवरक्खणद्वयाए पावयण भगवया सुकहिय  
” इति—( प्रश्न० सवर० )

श्री तीर्थकर प्रभुने आ प्रवचननी प्ररूपणा करवाने ओ न उद्देश रह्यो  
छे छे तथा सत्सारीजने आ प्रवचनना अभ्यासथी जगतना सर्वे भवेनी  
रक्षा करे अने तेमनी दया पावे

ध्याननुं वर्णन करता भगवाने तेना चार भेदो वर्णन्यो छे तेओमा

હતા ગોયમા ! તમેવ સચ્ચ । સે નૂન ભતે ! ત્વ મણે ધારેમાણે ત્વ પકરેમાણે આણાણ આરાદ્ધે ભવહ ? । હતા ગોયમા ! ત ચેવ ” તિ ।

છાયા—અથ નૂન ભદન્ત । તદેવ સત્ય નિશ્ચક્ક યજ્ઞિનૈઃ પ્રવેદિતમ્ ? । હન્ત ગૌતમ ! તદેવ સત્યમ્ । અથ નૂન ભદન્ત ? એવ મનસિ ધારયન એવ મકુર્વન્ આજ્ઞાયા આરાધકો ભવતિ ? હન્ત ગૌતમ ! તદેવ ” ઇતિ ।

આવશ્ય સૂત્રેઽપિ—“ઇળમેવ નિગ્ગથ પાવયણ સચ્ચ અણુત્તર કેવલિય પહિ-  
પુન્ન નેયાઉય સસુદ્ધ સલ્લગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગ મુત્તિમગ્ગ નિજ્જાણમગ્ગ નિવ્વાણમગ્ગ  
અવિત્તહમસદિદ્ધ । इत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिन्वाएति  
सव्वदु खाणमंत करति ।

ધારેમાણે એવ પકરેમાણે આણાણ આરોહણ ભવહ ! હતા ગોયમા ! ત  
ચેવ ઇતિ ” હસ સૂત્ર કા ભાવાર્થ યદ્દ હૈ કિ પ્રત્યેક મુમુક્ષુ ( મોક્ષાભિ-  
લાપી ) જન કો અપને હૃદય મેં હસ વાત કા પૂર્ણદૃઢ વિશ્વાસ રખના  
ચાહિયે કિ જો જિનેન્દ્ર દેવ ને પ્રતિપાદિત કિયા હૈ વહી વાસ્તવિક તત્ત્વ  
હૈ—ઉસમેં કિસી ભી પ્રકાર કી શકા કે લિયે સ્થાન નહી હૈ હસ પ્રકાર  
કે દૃઢ વિશ્વાસ સે ઉસે અપને મન મેં ધારણ કરનેવાલા ઓર ઉસકે  
અનુસાર હી અપની પ્રવૃત્તિ કરનેવાલા મોક્ષાભિલાપીજન તીર્થકરપ્રમુકી  
આજ્ઞાકા આરાધક હોતા હૈ આવશ્યક સૂત્રમેં ભી યહી વાત કહી ગઈ હૈ

“ ઇળમેવ નિગ્ગથ પાવયણ સચ્ચ અણુત્તર કેવલિય પહિપુન્ન નેયા  
ઉય સસુદ્ધ સલ્લગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગં મુત્તિમગ્ગં નિજ્જાણમગ્ગ નિવ્વાણમગ્ગ  
અવિત્તહમસદિદ્ધ । इत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणि  
वाएति सव्वदु.खाणमत करति ।

ભવહ ! હતા ગોયમા ! ત ચેવ ઇતિ ) આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે  
દરેક મોક્ષ ઇચ્છનારી વ્યક્તિને પોતાના હૃદયમા સંપૂર્ણપણે આ વાતની ખાતરી  
થવી જોઈએ કે જે જીનેન્દ્ર દેવે પ્રતિપાદિત કર્યું છે તે જ વાસ્તવિક તત્ત્વ  
છે તેમા લગીરે શકા નથી આ જાતના દૃઢ વિશ્વાસથી તેને પોતાના મનમા  
કરનાર અને તે મુજબ જ આચરણ કરનારી મોક્ષને ઇચ્છનારી વ્યક્તિ પ્રભુની  
આજ્ઞાની આરાધક હોય છે આવશ્યક સૂત્રમા પણ એ જ વાત કહેવામા આવી  
છે—( ઇળમેવ નિગ્ગથ પાવયણ સચ્ચ અણુત્તર કેવલિય પહિપુન્ન નેયાઉય સસુદ્ધ  
સલ્લગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગ મુત્તિમગ્ગ નિજ્જાણમગ્ગ નિવ્વાણમગ્ગ અવિત્તહમસદિદ્ધ !  
इत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिवाएति सव्व ८ કરતિ ।

છાયા—ઇદમેવ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન સત્યમ્ અનુત્તર, કૈવલિક, પ્રતિપૂર્ણ, નૈયા-  
યિક, સમૃદ્ધ, શલ્યકર્ત્તન, સિદ્ધિમાર્ગઃ, મુક્તિમાર્ગઃ, નિર્વાણમાર્ગઃ, નિર્વાણમાર્ગઃ,  
અવિતથમ્, અમન્દિગ્ધમ્, અત્ર સ્થિતા જીવાઃ સિદ્ધયન્તિ, બુદ્ધ્યન્તે, મુચ્યન્તે,  
પરિનિર્વાન્તિ, સર્વં દુઃખાનામન્ત કુર્વન્તિ ।

અન્યચ્ચ—ઇમ ચ ણ સન્નજગજીવરક્ષણદયદ્વાણ પાવયણ ભગવયા સુક-  
હિય ” ઇતિ ( પ્રશ્ન૦ સવર૦ )

છાયા—‘ ઇદ ચ ગ્વલુ સર્વજગજીવરક્ષણદયાર્યાય પ્રવચન ભગવતા  
સુકથિતમ્ ’ ઇતિ ।

ધર્મધ્યાનસ્યાઽઽજ્ઞાવિચયાદિ ભેદેન ચાતુર્વિધ્ય પ્રદર્શયતા ભગવતા—પ્રાધાન્યા-  
દાજ્ઞાવિચયઃ પ્રાથમ્યેન પ્રોક્ત ।

ભાવાર્થ—હસ કા સ્પષ્ટ છે । હસમે સૂત્રકાર ને મુરયરૂપ સે યહી ઘાત  
પ્રકટ કી છે કિં હસ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન માર્ગ મેં સ્થિત જીવ અષ્ટ કર્મોંકા  
વિનાશ કર સિદ્ધદશાસપન્ન હો જાતે હેં । હસ અવસ્થાકી પ્રાપ્તિ હોના  
હી જીવોં કે સમસ્ત દુઃખોં કા વિનાશ છે ।

અન્યચ્ચ—ઇમ ચ ણ સન્નજગજીવરક્ષણદયદ્વાણ પાવયણ ભગવયા  
સુકહિય ” ઇતિ—( પ્રશ્ન સવર૦ )

હસ પ્રવચન કી પ્રરૂપણા કરને કા શ્રી તીર્થકર પ્રભુ કા યહી એક  
ઉદ્દેશ રહા છે કિ સમસ્ત સસારીજન હસ પ્રવચન કે અભ્યાસ સે સર્વ  
જગત કે જીવોં કી રક્ષા કરે ઓર ઉનકી દયા પાલે ।

ધ્યાન કા વર્ણન કરતે હુમ્ ભગવાન ને ઉસ ધ્યાન કે ૪ ભેદ કહે  
હેં । ઉનમેં ધર્મધ્યાન કે આજ્ઞાવિચય આદિ જો ૪ પાવે પ્રકટ ક્રિયે

આ કથનનો ભાવાર્થ સ્પષ્ટ છે આમા ખામ કરીને સૂત્રકારે એ જ  
વાત સ્પષ્ટ રીતે બતાવી છે કે આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન માર્ગમા સ્થિત જીવ અષ્ટ  
કર્મોંનો વિનાશ કરીને સિદ્ધિ દશા સપન્ન થઈ જાય છે આ અવસ્થા મેળ  
વવી એ જ જીવોના સધળા દુખનો વિનાશ છે

અન્યચ્ચ—ઇમ ચ ણ સન્ન જગજીવરક્ષણદયદ્વાણ પાવયણ ભગવયા સુકહીય  
” ઇતિ—( પ્રશ્ન૦ સવર૦ )

શ્રી તીર્થ કર પ્રભુનો આ પ્રવચનની પ્રરૂપણા કરવાનો એ જ ઉદ્દેશ રહ્યો  
છે કે બધા સસારીજનો આ પ્રવચનના અભ્યાસથી જગતના સર્વે જીવોની  
રક્ષા કરે અને તેમની દયા પાળે

ધ્યાનનું વર્ણન કરતા ભગવાને તેના ચાર ભેદો વર્ણવ્યા છે તેઓમા  
ધર્મધ્યાનના આજ્ઞા-વિચય વગેરે ચા ૭ ઉપભેદો સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યા છે



હતા ગોયમા ! તમેય સચ્ચ । સે નૂળ ભતે ! ણ્ય મણે ધારેમાણે ણ્ય પકરેમાણે આણાણ આરાદ્દા ભવઈ ? । હતા ગોયમા ! ત ચેવ ” તિ ।

છાયા—અથ નૂન ભદન્ત । તદેવ સત્ય નિશ્ચક્ક યજ્ઞિનૈઃ પ્રવેદિતમ્ ? । હન્ત ગૌતમ ! તદેવ સત્યમ્ । અથ નૂન ભદન્ત ? એવ મનસિ ધારયન્ એવ પ્રકુર્વન્ આજ્ઞાયા આરાધકો ભવતિ ? દન્ત ગૌતમ ! તદેવ ” ઇતિ ।

આવશ્ય સૂત્રેઽપિ—“ઈણમેવ નિગ્ગય પાવયણ સચ્ચ અણુત્તર કેવલિય પડિ-  
પુન્ન નેયાઉય સસુદ્ધ સહ્મગ્ગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગ મુત્તિમગ્ગ નિજ્ઞાણમગ્ગ નિવ્વાણમગ્ગ  
અવિતહમસદિદ્ધ । इत्थं ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिच्चाएति  
सब्बदुःखाणमत करति ।

ધારેમાણે એવં પકરેમાણે આણાણ આરોદ્દા ભવઈ । હતા ગોયમા ! ત  
ચેવ ઇતિ ” હસ સૂત્ર કા ભાવાર્થ યદ્દ હૈ કિ પ્રત્યેક મુમુક્ષુ ( મોક્ષાભિ-  
લાષી ) જન કો અપને હૃદય મેં હસ વાત કા પૂર્ણદૃઢ વિશ્વાસ રાખના  
ચાહિયે કિ જો જિનેન્દ્ર દેવ ને પ્રતિપાદિત ક્રિયા હૈ વહી વાસ્તવિક તત્ત્વ  
હૈ—ઉસમેં કિસી મી પ્રકાર કી શકા કે લિયે સ્થાન નહી હૈ હમ પ્રકાર  
કે દૃઢ વિશ્વાસ સે ઉસે અપને મન મેં ધારણ કરનેવાલા ઓર ઉસકે  
અનુસાર હી અપની પ્રવૃત્તિ કરનેવાલા મોક્ષાભિલાષીજન તીર્થકરપ્રમુકી  
આજ્ઞાકા આરાધક હોતા હૈ આવશ્યક સૂત્રમેં મી યહી વાત કહી ગઈ હૈ

“ ઈણમેવ નિગ્ગય પાવયણ સચ્ચ અણુત્તર કેવલિય પડિપુન્ન નેયા  
ઉય સસુદ્ધ સહ્મગ્ગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગ મુત્તિમગ્ગં નિજ્ઞાણમગ્ગ નિવ્વાણમગ્ગ  
અવિતહમસદિદ્ધ । इत्थं ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणि-  
च्चाएति सब्बदुःखाणमत करति ।

ભવઈ । હતા ગોયમા ! ત ચેવ ઇતિ ) આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે  
દરેક મોક્ષ ઇચ્છનારી વ્યક્તિને પોતાના હૃદયમાં સંપૂર્ણપણે આ વાતની ખાતરી  
થવી જોઈએ કે જે જીનેન્દ્ર દેવે પ્રતિપાદિત કર્યું છે તે જ વાસ્તવિક તત્ત્વ  
છે તેમાં લગીરે શકા નથી આ જાતના દૃઢ વિશ્વાસથી તેને પોતાના મનમાં  
કરનાર અને તે મુજબ જ આચરણ કરનારી મોક્ષને ઇચ્છનારી વ્યક્તિ પ્રભુની  
આજ્ઞાની આરાધક હોય છે આવશ્યક સૂત્રમાં પણ એ જ વાત કહેવામાં આવી  
છે—( ઈણમેવ નિગ્ગય પાવયણ સચ્ચ અણુત્તર કેવલિય પડિપુન્ન નેયાઉય સસુદ્ધ  
સહ્મગ્ગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગ મુત્તિમગ્ગ નિજ્ઞાણમગ્ગ નિવ્વાણમગ્ગ અવિતહમસદિદ્ધ ।  
इत्थं ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिच्चाएति सब्बदुःखाणमत करति ।

છાયા—ઇદમેવ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન સત્યમ્ અનુત્તર, કેવલિક, પ્રતિપૂર્ણ, નૈયા-  
યિક, સમૃદ્ધ, શલ્યકર્ત્તન, સિદ્ધિમાર્ગઃ, મુક્તિમાર્ગઃ, નિર્વાણમાર્ગઃ, નિર્વાણમાર્ગઃ,  
અવિતથમ્, અમન્દિગ્ધમ્, અત્ર સ્થિતા જીવાઃ સિદ્ધયન્તિ, તુષ્યન્તે, મુચ્યન્તે,  
પરિનિર્વાન્તિ, સર્વે દુઃખાનામન્ત કુર્મન્તિ ।

અન્યન્થ—ઇમં ચ ણ સત્ત્વજગજીવરક્ષણદયદ્વાય પાવયણ ભગવયા સુક-  
હિય ” ઇતિ ( પ્રશ્ન૦ સવર૦ )

છાયા—‘ ઇદં ચ શ્વલુ સર્વજગજીવરક્ષણદયાર્થાય પ્રવચન ભગવતા  
મુકથિતમ્ ’ ઇતિ ।

ધર્મધ્યાનસ્યાઽઽજ્ઞાવિચયાદિ ભેદેન ચાતુર્વિધ્ય પ્રદર્શયતા ભગવતા—પ્રાધાન્યા-  
દાજ્ઞાવિચયઃ પ્રાથમ્યેન પ્રોક્ત ।

ભાવાર્થ—ઇસ કા સ્પષ્ટ છે । ઇસમેં સૂત્રકાર ને મુરયરૂપ સે યહી યાત  
પ્રકટ કી છે કે ઇસ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન માર્ગ મેં સ્થિત જીવ અષ્ટ કર્મોંકા  
વિનાશ કર સિદ્ધદશાસપન્ન હો જાતે છે । ઇમ અવસ્થાકી પ્રાપ્તિ હોના  
હી જીવોં કે સમસ્ત દુઃખોં કા વિનાશ છે ।

અન્યન્થ—ઇમં ચ ણ સત્ત્વજગજીવરક્ષણદયદ્વાય પાવયણ ભગવયા  
સુકહિય ” ઇતિ—( પ્રશ્ન સંવર૦ )

ઇસ પ્રવચન કી પ્રરૂપણા કરને કા શ્રી તીર્થંકર પ્રભુ કા યહી એક  
ઉદ્દેશ રહા છે કે સમસ્ત સસારીજન ઇસ પ્રવચન કે અભ્યાસ સે સર્વ  
જગત કે જીવોં કી રક્ષા કરે ઓર ઉનકી દયા પાલે ।

ધ્યાન કા વર્ણન કરતે હુણ ભગવાન ને ઉસ ધ્યાન કે ૪ ભેદ કહે  
છે । ઉનમેં ધર્મધ્યાન કે આજ્ઞાવિચય આદિ જો ૪ પાયે પ્રકટ કિયે

આ ડથનનો ભાવાર્થ સ્પષ્ટ છે આમા ખાસ કરીને સૂત્રકારે એ જ  
યાત સ્પષ્ટ રીતે બતાવી છે કે આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન માર્ગમા સ્થિત જીવ અષ્ટ  
કર્મોંનો વિનાશ કરીને સિદ્ધિ દશા સપન્ન થઈ જાય છે આ અવસ્થા મેળ  
વવી એ જ જીવોના સધળા દુખનો વિનાશ છે

અન્યન્થ—ઇમં ચ ણ સત્ત્વ જગજીવરક્ષણદયદ્વાય પાવયણ ભગવયા સુકહીય  
“ ઇતિ—( પ્રશ્ન૦ સવર૦ )

શ્રી તીર્થંકર પ્રભુનો આ પ્રવચનની પ્રરૂપણા કરવાનો એ જ ઉદ્દેશ રહ્યો  
છે કે બધા સસારીજનો આ પ્રવચનના અભ્યાસથી જગતના સર્વ જીવોની  
રક્ષા કરે અને તેમની દયા પાળે

ધ્યાનનું વર્ણન કરતા લગવાને તેના ચાર ભેદો વર્ણવ્યા છે તેઓમા  
ધર્મધ્યાનના આજ્ઞા-વિચય વગેરે ચાર ઉપભેદો સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યા છે



હતા ગોયમા ! તમેવ સત્ત્વ । સે નૂન ભતે ! ણ મણે ધારેમાણે ણ પકરેમાણે આણાણ આરાદ્દા ભવ્હ ? । હતા ગોયમા । ત ચેવ ” તિ ।

છાયા—અથ નૂન ભદન્ત । તદેવ સત્ય નિશ્શઙ્ક યજ્ઞિનૈઃ પ્રવેદિતમ્ ? । હન્ત ગૌતમ ! તદેવ સત્યમ્ । અથ નૂન ભદન્ત ? એવ મનસિ ધારયન્ એવ પ્રકુર્વન્ આજ્ઞાયા આરાધકો ભવતિ ? હન્ત ગૌતમ ! તદેવ ” ઇતિ ।

આવશ્ય સૂત્રેઽપિ—“ઇણમેવ નિગ્ગય પાવયણ સત્ત્વ અણુત્તર કેવલિય પહિ-  
પુન્ન નેયાઉય સસુદ્ધ સલ્લગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગ મુત્તિમગ્ગ નિજ્જાણમગ્ગ નિવ્વાણમગ્ગ  
અવિત્તહમસદિદ્ધ । इत्थं ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाएति  
सव्वदुःखाणमत करति ।

ધારેમાણે એવ પકરેમાણે આણાણ આરાદ્દા ભવહ । હતા ગોયમા । ત  
ચેવ ઇતિ ” હમ સૂત્ર કા ભાવાર્થ યહ હૈ કિ પ્રત્યેક મુમુક્ષુ ( મોક્ષાભિ-  
લાષી ) જન કો અપને હૃદય મેં હસ વાત કા પૂર્ણદૃઢ વિશ્વાસ રાખના  
ચાહિયે કિ જો જિનેન્દ્ર દેવ ને પ્રતિપાદિત કિયા હૈ વહી વાસ્તવિક તત્ત્વ  
હૈ—ઉસમેં કિસી ભી પ્રકાર કી શકા કે લિયે સ્થાન નહી હૈ હમ પ્રકાર  
કે દૃઢ વિશ્વાસ સે ઉસે અપને મન મેં ધારણ કરનેવાલા ઓર ઉસકે  
અનુસાર હી અપની પ્રવૃત્તિ કરનેવાલા મોક્ષાભિલાષીજન તીર્થકરપ્રભુકી  
આજ્ઞાકા આરાધક હોતા હૈ આવશ્યક સૂત્રમેં ભી યહી વાત કહી ગઈ હૈ

“ ઇણમેવ નિગ્ગય પાવયણ સત્ત્વ અણુત્તર કેવલિય પહિપુન્ન નેયા  
ઉય સસુદ્ધ સલ્લગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગ મુત્તિમગ્ગ નિજ્જાણમગ્ગ નિવ્વાણમગ્ગ  
અવિત્તહમસદિદ્ધ । इत्थं ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणि-  
वाएति सव्वदुःखाणमत करति ।

ભવહ ! હતા ગોયમા । ત ચેવ ઇતિ ) આ સૂત્રનેા ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે  
હરેક મોક્ષ ઇચ્છનારી વ્યક્તિને પોતાના હૃદયમા સંપૂર્ણપણે આ વાતની ખાતરી  
થવી જોઈએ કે જે જીનેન્દ્ર દેવે પ્રતિપાદિત કર્યું છે તે જ વાસ્તવિક તત્ત્વ  
છે તેમા લગીરે શકા નથી આ જાતના દૃઢ વિશ્વાસથી તેને પોતાના મનમા  
કરનાર અને તે મુજબ જ આચરણ કરનારી મોક્ષને ઇચ્છનારી વ્યક્તિ પ્રભુની  
આજ્ઞાની આરાધક હોય છે આવશ્યક સૂત્રમા પણ એ જ વાત કહેવામા આવી  
છે—( ઇણમેવ નિગ્ગય પાવયણ સત્ત્વ અણુત્તર કેવલિય પહિપુન નેયાઉય સસુદ્ધ  
સલ્લગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગ મુત્તિમગ્ગ નિજ્જાણમગ્ગ નિવ્વાણમગ્ગ અવિત્તહમસદિદ્ધ !  
इत्थं ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिवाएति सव्व दुःखाणमत करति ।

હૈ, અનવધ હૈ, ઇમ મેં પ્રત્યેક જીવાદિક પદાર્થ કા વિવેચન ઘટુત હી અચ્છી તરહ સે કિયા ગયા હૈ અતઃ ઘર મહાર્થ હૈ ઇસકા પ્રભાવ મી અદ્વિતીય હૈ ઇસકી છત્રછાયા મેં આને સે પ્રત્યેક ભવ્ય જીવ આત્મક લ્યાણ કે અપને અન્તિમ લક્ષ્ય કી મિદ્ધિ કર લિયા કરતે હૈં । ઇસ મેં પ્રતિપાદિત તત્વ સામાન્યજન નહી જાત કર સકતે હૈં-દ્રવ્યાર્થિક ઔર પર્યાયાર્થિક નયરૂપ દો દૃષ્ટિયા જિનકે પાસ હૈં-વે હી ઇસમેં પ્રતિપાદિત વિષય કો અચ્છી તરહ જાત કર સકતે હૈં । ઇસમેં જો મી કુઝ કથન સર્વજ ભગવાન્ ને કિયા હૈ વહ ઇન્દ્રી દો દૃષ્ટિયો કો સામને રલ્લકર કિયા ગયા હૈ યદિ ંક દૃષ્ટિ કો હી પ્રધાન રલ્લકર ઇસકે તત્વ કો સમજ્જને કી ચેષ્ટા કો જાય તો વહ પ્રતિપાદ્ય વિષય ટીક ર નહી સમ જ્ઞા જા સકતા હૈ । તયા ઇસ પ્રકાર કી પ્રરૂપણા અન્યયા મી જાત હોને લગતી હૈ ઇસલિયે દૂસરી દૃષ્ટિ કો સામને રલ્લકર હી વહ વિષય ટીક ર રીતિ સે સમજ્જ મેં આ સકતા હૈ, અતઃ ઇસી અભિપ્રાયસે ઇસે નિપુણ જનવેદ્ય કહા હૈ તયા ઇસ મેં પ્રત્યેક પદાર્થ કો ઉત્પાદન વ્યય ઔર ધ્રોવ્ય આત્મક કહા ગયા હૈ-વહ મી દ્રવ્ય ઔર પર્યાય કી અપેક્ષા સે હી કહા ગયા હૈ દ્રવ્ય કી અપેક્ષા સે પ્રત્યેક જીવાદિક પદાર્થ ધ્રોવ્યરૂપ

અતીવકુશળ છે દરેક દરેક જીવો નો આ હીતકારી છે અનવધ છે, એમા દરેક દરેક જીવ વગેરે પદાર્થનુ વિવેચન બહુજ સૂક્ષ્મતા પૂર્વક કરવામા આવ્યુ છે એથી આ મહાર્થ છે આનો પ્રભાવ પણ અદ્વિતીય છે, આની છત્ર-છાયામા આવવાથી દરેક ભવ્યજીવ આત્મકદયાણુ વિષયક પોતાની અતિમ લક્ષ્યની સિદ્ધિ પ્રાપ્તકરી લે છે આમા પ્રતિપાદિત તત્વ સામાન્ય લોકો બાણી શકતા નથી દ્રવ્યાર્થિક તેમજ પર્યાયાર્થિક નયરૂપ બે દૃષ્ટિઓ જેની પાસે છે તેઓ જ આમા પ્રતિપાદિત વિષયને સારી પેઠે સમજી શકે છે સર્વજ્ઞ ભગવાને આમા જે કંઈ કહ્યુ છે તે બધુ આ પૂર્વોક્ત બને દૃષ્ટિઓ ને પોતાની સામે રાખીને જ કહ્યુ છે ને એક-દૃષ્ટિને જ પ્રધાન સમજીને તેના તત્વને બાણીવાની ચેષ્ટા કરવામા આવે તો તે પ્રતિપાદ્ય વિષય યથાવત્ સમજી શકાય જ નહિ તેમજ આ જાતની પ્રરૂપણા અ યથા પણ માહુમ થવા માડે છે એથી બીજી દૃષ્ટિને પોતાની સામે રાખીને જ વિચાર કરીએ તો વિષય તરસ રીતે સમજી શકાય તેમ છે આ પ્રયોજનથી જ આને 'નિપુણજન-વેદ્ય' કહેવામા આવ્યો છે તેમજ આમા જો દરેક પદાર્થને ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રોવ્ય આત્મક કહેવામા આવ્યો છે તેથી પણ દ્રવ્ય અને પર્યાયની અપેક્ષાથી જ કહેવામા આવ્યો છે દ્રવ્યની

યથા ભગવતી સૂત્રે--( શ્લો ૨૫ ૩૦ ૭ )

“ ધર્મમે જ્ઞાણે ચતુર્વિદ્ધે પળ્લસે, ત જહા-આણાવિચર ” અવાયવિચર, વિવાગવિચર, સઠાણવિચર ॥

છાયા—ધર્મધ્યાન ચતુર્વિધ પ્રણમ્ । તદ્ યથા-આજ્ઞાવિચયઃ, અપાય વિચય, વિપાકવિચયઃ, સસ્થાનવિચયઃ ।

અત્ર પ્રસન્નવશાદ્ આજ્ઞાવિચય એવ વ્યારૂપાયતે—

આજ્ઞાવિચયશ્ચ-આજ્ઞાયાઃ પર્યાલોચન, આજ્ઞા-સર્વજ્ઞપ્રણીત આગમ, તમાજ્ઞા મિત્ય વિચિત્રુયાત્=પર્યાલોચયેત્ - પૂર્વાપરવિશુદ્ધમતિનિપુણામશેષજીવકાયહિતા

हैं उन में सर्व प्रथम आज्ञाविचय को जो कहा है उसका कारण यही है कि शेष तीन पायों ( भेदों ) में प्रधान है । भगवती सूत्र श. २५ उ-७ में देखो यह वर्णन इस प्रकार से हुआ है-धर्मे ज्ञाणे चतुर्विदे पल्लसे, त जहा-आणाविचर, अवायविचर, विवागविचर, सठाणविचर ॥

अर्थ—धर्मध्यान ४ प्रकार का है (१) आज्ञाविचय (२) अपायविचय (३) विपाकविचय (४) सस्थानविचय ।

प्रसगवश यहां आज्ञाविचय पर विवेचन किया जाता है-तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा का विचय-पर्यालोचन-विचार करना सो आज्ञाविचय है सर्वज्ञ कथित आगम का नाम आज्ञा है । उस आगमरूप आज्ञा का इस प्रकार से विचार करना चाहिये-यह प्रभु प्रतिपादित आगम पूर्वापर विरोध रहित होने से विशुद्ध है, प्रत्येक सूक्ष्म अन्तरित और दूरार्थ के प्रतिपादन करने में अतिनिपुण है, प्रत्येक जीवों का यह हितकारी

તેઓના જે સૌ પ્રથમ આજ્ઞા વિચયનો જે ઉલ્લેખ કરવામા આવ્યો છે તેનું કારણ એ જ છે કે બાકી રહેલા ત્રણ ઉપલેદોમા તે મુખ્ય છે ભગવતી સૂત્ર શ ૨૫ ઉ ૭ માં એના માટે જેવું લેખ્યું ત્યાં આનું વર્ણન કરવામા આવ્યું છે-ધર્મમે જ્ઞાણે ચતુર્વિદ્ધે પળ્લસે, ત જહા-આણાવિચર, અવાયવિચર, વિવાગવિચર, સઠાણવિચર ॥

અર્થ—ધર્મધ્યાનના ચાર પ્રકાર છે (૧) આજ્ઞા-વિચય, (૨) અપાય વિચય, (૩) વિપાક વિચય, (૪) સસ્થાન વિચય

પ્રસગવશ અહીં આજ્ઞાવિચય વિષે વર્ણન કરવામા આવે છે તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાનો વિચય-પર્યાલોચન-વિચાર કરવો તે આજ્ઞાવિચય છે સર્વ જ્ઞકથિત આગમનું નામ આજ્ઞા છે તે આગમરૂપ આજ્ઞાનો આ રીતે વિચાર કરવો લેખ્યું છે આ પ્રભુ પ્રતિપાદિત આગમ પૂર્વાપર વિરોધ રહિત અને દૂરાર્થના અર્થ વિશદ્ધ છે, દરેક સૂક્ષ્મ અન્તરિત અને દૂરાર્થના

હૈ, અનવધ હૈ, હમ મેં પ્રત્યેક જીવાદિક પદાર્થ કા વિવેચન વહુત હી અચ્છી તરહ સે કિયા ગયા હૈ અતઃ ગ્રહ મહાર્થ હૈ હસકા પ્રભાવ મી અઢિતીય હૈ હસકી છત્રછાયા મેં જાને સે પ્રત્યેક મન્ય જીવ આત્મક ત્યાગ કે અપને અન્તિમ લક્ષ્ય કી સિદ્ધિ કર લિયા કરતે હૈં । હસ મેં પ્રતિપાદિત તત્વ સામાન્યજન નહી જાત કર સકતે હૈં-દ્રવ્યાર્થિક ઓર પર્યાયાર્થિક નયરૂપ દો દૃષ્ટિયા જિનકે પાસ હૈં-વે હી હસમેં પ્રતિપાદિત વિષય કો અચ્છી તરહ જાત કર સકતે હૈં । હમમેં જો મી કુછ કયન સર્વજ મગગાન ને કિયા હૈ વહ ઇન્ની દો દૃષ્ટિયો કો સામને રલ્લકર કિયા ગયા હૈ યદિ ઇક દૃષ્ટિ કો હી પ્રમાન રલ્લકર હસકે તત્વ કો સમજને કી ચેષ્ટા કો જાય તો વહ પ્રતિપાદ્ય વિષય ટીક ૨ નહી સમજા જા સકતા હૈ । તયા હસ પ્રકાર કી પ્રરૂપણા અન્યથા મી જાત હોને લગતી હૈ હમલિયે દૂસરી દૃષ્ટિ કો સામને રલ્લકર હી વહ વિષય ટીક ૨ રીતિ સે સમજ મેં આ સકતા હૈ, અન હસી અભિપ્રાયસે હસે નિપુણ જનવેચ કહા હૈ તયા હસ મેં પ્રત્યેક પદાર્થ કો ઉત્પાદન વ્યય ઓર ધ્રોવ્ય આત્મક કહા ગયા હૈ-વહ મી દ્રવ્ય ઓર પર્યાય કી અપેક્ષા સે હી કહા ગયા હૈ દ્રવ્ય કી અપેક્ષા સે પ્રત્યેક જીવાદિક પદાર્થ ધ્રોવ્યરૂપ

અતીવકુશળ છે દરેકે દરેક જીવો નો આ હીતકારી છે અનવધ છે, એમા દરેકે દરેક જીવ વગેરે પદાર્થનુ વિવેચન બહુજ સૂક્ષ્મતા પૂર્વક કરવામા આવ્યુ છે એથી આ મહાર્થ છે આનો પ્રભાવ પણ અદ્વિતીય છે, આની છત્ર-છાયામા આવવાથી દરેક ભવ્યજીવ આત્મકદયાણુ વિષયક પોતાની અતિમ લક્ષ્યની સિદ્ધિ પ્રાપ્તકરી લે છે આમા પ્રતિપાદિત તત્વ સામાન્ય લોકો બહુ શકતા નથી દ્રવ્યાર્થિક તેમજ પર્યાયાર્થિક નયરૂપ બે દૃષ્ટિઓ જેની પાસે છે તેઓ જ આમા પ્રતિપાદિત વિષયને સારી પેઠે સમજી શકે છે સર્વજ લગવાને આમા જે કંઈ કહ્યુ છે તે બધુ આ પૂર્વોક્ત બને દૃષ્ટિઓ ને પોતાની સામે રાખીને જ કહ્યુ છે નો એક-દૃષ્ટિને જ પ્રધાન સમજીને તેના તત્વને જાણવાની ચેષ્ટા કરવામા આવે તો તે પ્રતિપાદ્ય વિષય યથાવત્ સમજી શકાય જ નહિ તેમજ આ જાતની પ્રરૂપણા અન્યથા પણ માલુમ થવા માટે છે એથી બીજી દૃષ્ટિને પોતાની સામે રાખીને જ વિચાર કરીએ તો વિષય સરસ રીતે સમજી શકાય તેમ છે આ પ્રયોજનથી જ આને 'નિપુણજન-વેદ' કહેવામા આવ્યો છે તેમજ આમાં જો દરેક પદાર્થને ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રોવ્ય આત્મક કહેવામા આવ્યો છે તે પણ દ્રવ્ય અને પર્યાયની અપેક્ષાથી જ કહેવામા આવ્યો છે દ્રવ્યની

મનવદ્યાં મહાર્થાં મહાનુભાવે નિપુણજનવિજ્ઞેયા દ્રવ્યપર્યાયપ્રપન્નવતીમનાગ્રનિ  
ધનામ્ । અસ્ય પ્રવચનસ્યાઽઽધન્તરહિતત્વ ચ ભગવતા નન્દીસૂત્રે નિગદિતમ્—

“ ઇચ્છેદ્ય દુગ્ધલસગ ગણિપિઙ્ગ ન કયાઈ નાસી ॥ ”

इत्येतद् द्वादशाङ्ग गणिपिटक न कदापि नासीत् ॥ इत्यादि ।

હૈ ઓર પર્યાય કી અપેક્ષા સે ઉત્પાદન વ્યયરૂપ હૈ, હસલિયે મી જિન પ્રતિપાદિત આગમરૂપ આજ્ઞા સ્વય દ્રવ્ય ઓર પર્યાય કે વિસ્તાર વાલી હૈ । અથવા જીવાદિક મમન્ત ૬ દ્રવ્યો કી ત્રિકાલવર્તી સમસ્ત પર્યાયે હસમે પ્રતિપાદિત હુઈ હૈ, અથવા કોઈ મી દ્રવ્ય કમી મી પર્યાય રહિત નહીં હો સકતા હૈ—સ્વભાવ પર્યાયે ઓર વ્યજન પર્યાયે, વિભાવ પર્યાયે ઓર અર્થપર્યાયે પ્રત્યેકક્ષણ મેં સમસ્તદ્રવ્યો મેં હોતી રહતી હૈ, હત્યાદિરૂપ સે દ્રવ્ય ઓર પર્યાયો કા પ્રતિપાદન હસ આજ્ઞા મેં ભગવાન ને પ્રદર્શિત કિયા હૈ હસ અપેક્ષા મી યહ દ્રવ્ય ઓર પર્યાય કે વિસ્તાર વાલી માની ગઈ હૈ તથા યહ અનાદિ અનન્ત હૈ ન કમી હસ આજ્ઞા કી આદિ હુઈ હૈ ઓર ન કમી હસકા વિનાશ હોગા । નદીસૂત્ર મેં મી પ્રવચન કી અનાદિ અનન્તતા કે વિષય મેં “ ઇચ્છેદ્ય દુગ્ધલસગ ગણિપિઙ્ગ ન કયાઈનાસી ” યહી કહા હૈ—એસા કોઈ સા મી કાલ નહીં થા કિ જિસ કાલ મેં હસ દ્વાદશાંગરૂપ ગણિપિટકકા સદ્ભાવ નહીં થા ।

અપેક્ષાથી દરેક જીવ વગેરે પદાર્થ ધ્રોવ્યરૂપ છે અને પર્યાયની અપેક્ષાથી ઉત્પાદ વ્યયરૂપ છે એટલા માટે પણ જિન પ્રતિપાદિત આગમરૂપ આજ્ઞા પોતે દ્રવ્ય અને પર્યાયના પ્રપન્ન ( વિસ્તાર ) વાળી છે અથવા તે જીવ વગેરે બધા ૬ દ્રવ્યોના ત્રિકાલ વર્તી સમસ્ત પર્યાયો આમા પ્રતિપાદિત થયા છે, અથવા કોઈ પણ દ્રવ્ય કોઈ પણ દિવસે પર્યાય રહિત થઈ શકતું નથી સ્વભાવ પર્યાયો અને વ્યજન પર્યાયો, વિભાવ પર્યાયો અને અર્થ પર્યાયો દરેક ક્ષણમા બધા દ્રવ્યોમા થતી રહે છે હત્યાદિ રૂપથી દ્રવ્ય અને પર્યાયોનું પ્રતિપાદન આ આજ્ઞામા ભગવાને બતાવ્યું છે આ અપેક્ષાથી પણ આ દ્રવ્ય અને પર્યાયના પ્રપન્ન ( વિસ્તાર ) વાળી માનવામા આવી છે તેમજ આ અનાદિ અનન્ત છે કોઈ દિવસ આજ્ઞાની આદિ થઈ નથી અને કોઈ પણ દિવસે આનો વિનાશ થશે નહિ નદીસૂત્રમા પણ પ્રવચનની અનાદિ અનન્તતાને લગતી ( ઇચ્છેદ્ય દુગ્ધલસગ ગણિપિઙ્ગ ન કયાઈનાસી ) એ જ વાત કહેવામા આવી છે એવો કોઈ પણ કાળ હતો નહિ કે તે કાળે આ દ્વાદશાંગ રૂપ ગણિપિટકનો સદ્ભાવ હતો નહિ આ રીતે આ આગમની મહત્તા અથવા તે



इत्थं चागममाहात्म्यपर्यालोचनरूपस्य धर्मध्यानस्याऽऽ - र्हताऽऽज्ञाविष-  
यत्वाद् धर्मध्यानस्य धर्मत्व सिद्धम् । तथा-हिंसादि-दोषलेशेनाप्यसंपृक्तस्य शुद्ध  
धर्मस्य बोधकत्वादहिंसाप्रधानस्य प्रवचनस्य श्रद्धेयत्व च सिद्धम् ।

अहिंसायामर्हतो भगवत आज्ञा प्रदर्शिता, एव सयमेपि तदाज्ञा वर्तते । यथा  
-ज्ञाताधर्मकथाऽङ्गसूत्रे-( प्रथमा ययने )

“ तएण समणे भगव महावीरे मेह कुमार सयमेव पव्वावेइ, जाव सयमेव  
आयार जाव धम्ममाइक्खइ एव खलु देवाणुप्पिया ! गतव्व चिट्ठियव्व णिसीइयव्व

इस प्रकार इस आगम की महत्ता अथवा उसके महात्म्य का विचार  
करना यही आज्ञाविषय नामक धर्मध्यान का प्रथम भेद है । इस ध्यान  
में अर्हतप्रभु की आज्ञा का ही विचार होता है-अतः इस ध्यान में उन  
की आज्ञा का विषय करनेवाला होने से धर्मरूपता सिद्ध है तथा हिंसा-  
दिक दोष के लेश से भी रहित ऐसे शुद्ध धर्म का बोधक होने से  
अहिंसाप्रधान इस प्रवचन में श्रद्धेयता सिद्ध होती है ।

इस पूर्वोक्त प्रकार से अहिंसा में अर्हत भगवान् की आज्ञा का  
प्रदर्शन कर अब सयममें भी उनकी आज्ञा इसी प्रकार की है यह प्रकट  
करने के लिये सर्व प्रथम ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्र से इस विषय की पुष्टि  
करते हुए सूत्रकार कहते हैं ।

“ तएण समणे भगव महावीरे मेहकुमार सयमेव पव्वावेइ, जाव  
धम्ममाइक्खइ, एव खलु देवाणुप्पिया ! गतव्व चिट्ठियव्व णिसी-

त्थने लगतो विचार करवो ओं न आज्ञा-विषय नामक धर्मध्यानने प्रथम  
लेह छे आ ध्यानमा अर्हत प्रभुनी आज्ञा विषे न विचार होय छे तेथी  
आ ध्यानमा तेमनी आज्ञानो विषय प्रतिपादित थयो छे माटे आमा धर्म  
रूपता सिद्ध छे तेमन हिंसा वगेरे दोषोथी पणु रहित शुद्ध धर्मनो बोधक  
होवाने कारणे अहिंसा प्रधान आ प्रवचनमा श्रद्धेयता सिद्ध थाय छे

आ प्रमाणे पूर्वाहुत रीते अर्हत लगवाननी अहिंसाना विषे आज्ञा  
भतावीने हवे आगण सूत्रकार सयम माटे पणु तेओश्रीनी आज्ञा आ रीते न  
छे आ बात स्पष्ट करवाने माटे सौ प्रथम ज्ञाता-धर्मकथाङ्ग सूत्रथी आ  
विषयनी पुष्टि करता कहे छे—

“ तए ण समणे भगव महावीरे मेहकुमार सयमेव पव्वावेइ, जाव सय  
मेव आयार जाव धम्ममाइक्खइ, एव खलु देवाणुप्पिया ! गतव्व चिट्ठि-

તુયદ્રિયઞ્ચ ભુજિયઞ્ચ માસિયઞ્ચ, एव उट्टाय उट्टाय पाणेहि भूयेहि जीवेहि सत्तेहि सजमेण सजमિયઞ્ચ, अस्सि च ण अट्ठे णो पमाएय-व " इति, ।

ततः खलु श्रमणो भगवान् महावीरो मेघ कुमार स्वयमेव प्रव्रजयति, यावत् स्वयमेव आचार यावद् धर्ममारयाति-एव खलु हे देवानुप्रिय ! गन्तव्य, स्थातव्य, निपत्तव्य, राग्वर्तयितव्य भोक्तव्य भाषितव्यत्, एवमुत्थाय उट्वाय पाणेषु भूतेषु जीवेषु सत्त्वेषु सयमेन सयन्तव्यम्, अस्मिन् खलु अर्थे नो प्रमादयितव्यम् । इति,

दशवैकालિક सूत्रे ऽपि—

“ जय चरे जय चिट्ठे जयमासे जय सए ।

जय भुंजतो भासतो पावरुम्म न वधई ॥ ”

इयञ्च तुयद્રિયञ्च भुजिયञ्ચ માસિયञ્ચ एव उट्टाय उट्टाय पाणेहि भूयेहि जीवेहि सत्तेहि सजमेण सजमિયञ्च, अस्सि च ण अट्ठे णो पमाएयञ्च ”

શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને સ્વયં અપને હી હાથોં સે મેઘકુમારકો જય ભાગવતી દીક્ષા પ્રદાન કી ઉનકે લિયે મુનિ વિષયક આચાર ઓદિ કા જય ઉન્હો ને ઉપદેશ દિયા તવ ઉન્હો ને ઉસે યહી સમજાયા કિ હે દેવાનુપ્રિય ! ચલતે, ઠહરતે, વેઠતે, લેટતે, આહારકરતે ઓર વાત ચિત કરતે સમય પ્રાણિયો, ભૂતો, જીવો, ઓર નત્વો મેં સદા સયમ સે હી પ્રવૃત્તિ કરની ચાહિયે । મુનિ કા યહી કર્તવ્ય હૈ કિ વહ પ્રત્યેક શારીરિક એવ વાચનિક ક્રિયાઓ મેં, સયમિત પ્રવૃત્તિ કરેં । હસ પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિશીલ હોને સે હી મુનિ દ્વારા અપને સયમ કી રક્ષા હોતી હૈ હસ વિષય મેં મુનિ કો કમી મો પ્રમાદ નહી કરના ચાહિયે । દશવૈકાલિક સૂત્ર મેં મી યહી કહા હૈ—“ જય ચરે જય ચિટ્ઠે જયમાસે જય

યઞ્ચ ણિસીદ્ધયઞ્ચ તુયદ્રિયઞ્ચ ભુજિયઞ્ચ, માસિયઞ્ચ, एव उट्टाय उट्टाय पाणेहि भूयेहि जीवेहि सत्तेहि सजमेण सजमिયञ्च अस्सि च ण अट्ठे णो पमाएयञ्च ”

શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે જાતે પોતાના હાથથી જ મેઘકુમારને જ્યારે ભાગવતી દીક્ષા આપી અને તેને મુનિવિષયક આચાર વગેરેને લગતો ઉપદેશ આપ્યો ત્યારે તેઓશ્રીએ તેને ઉપદેશમાં એ જ વાત સમજાવી કે હે દેવાનુપ્રિય ! ચાલતા, બેસતા, સૂઈ જતા, આહાર કરતા અને વાતચીત કરતા પ્રાણીઓ, ભૂતો, જીવો અને સર્વોમાં હું મેશા સયમથી જ પ્રવૃત્તિ કરતા રહેવું જોઈએ મુનિનીએ જ ફરજ છે કે તે દરેક શારીરિક અને વાચનિક ક્રિયાઓમાં સયમિત પ્રવૃત્તિ કરે આ રીતે પ્રવૃત્તિશીલ થઈને રહેવાથી જ મુનિઓ વડે સયમની રક્ષા થાય છે આ બાબતમાં મુનિએ કોઈ પણ દિવસે પ્રમાદ કરવો જોઈએ નહિ દશવૈકાલિક સૂત્રમાં પણ એજ વાત કહેવામાં છે જો જય ચિટ્ઠે જયમાસે જયસપ, જય ભુંજતો ભાસતો

छाया-यत् चरेत् यत् तिष्ठेत्, यत्मासीत् यत् शयीत् ।

यत् भुज्जानो भापमान पापकर्म न वप्नोति ॥ १ ॥ इति ।

तत्रैव-‘ संजम निहुओ चर ’ इत्यादि । छाया-सयम निभृतश्चर ’ इति ।

सयमे तीर्थंकरस्याज्ञा प्रदर्शिता, इदानीं तपसि तदाज्ञा प्रदर्श्यते । यथा-दश

वैकालिक सूत्रे-( द्वितीयाध्ययने )

“ आयावयाही चय सोगमल्ल ” इति । “ आयावयाही ” आतापय=आतापनारूपतपोधर्माराधनेन तनु शोषय, “ सोगमल्ल ” सौकुमार्यं “ चय ” त्यज=परिहर ।

सण, जय भुजतो भासतो पावकम्म न वधई” सकल सयमियो को पूर्ण सावधानता पूर्वक ही चलना चाहिये और पूर्ण सावधानता पूर्वक ही बैठना चाहिये । उठने बैठने में तथा आहारादि क्रिया करने और घोलने चालने में सदा उसे अपनी यत्नाचारमय प्रवृत्ति पर ही लक्ष्य रखना चाहिये । इस प्रकार की प्रवृत्ति करने से वह साधु पापकर्म का वध नहीं करता है । इसलिये हे मेघकुमार ! तुम “ सयम निभृतश्चर ” इस सकल सयम की अच्छी तरह से-यत्नाचारमय प्रवृत्ति से रक्षा करो-पालन करो । उस प्रकार से सयम की आराधना में तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा का प्रदर्शन सूत्रकार ने किया है । अब तप के आराधन करने में उनकी क्या आज्ञा है-वे यह स्पष्ट करते हैं “ आयावयाही चय सोगमल्ल ” ( दशवैकालिक द्वितीय अध्ययन ) ‘ हे मुने ! सुकुमालपने को छोड़ आतापनाछे ’ आतापनारूप तपधर्म की आराधना से मुनि को चाहिये

अथा सयमी लोकेण स पुरुषेण सावधान थधनेण आलवुं नेधेण अने पूर्ण सावधान थधने ण असवु नेधेण उठवा मेसवामा तेमण आहार वगेरे क्रिया उरवामा अने ओलवा आलवामा ह मेशा तेने पोतानी यत्नाचारमय प्रवृत्ति उपर ण लक्ष्य आपवु नेधेण आ गीते प्रवृत्ति उरवाथी ते साधु पाप-कर्मना षध उरतो नथी नेथी हे मेघकुमार ! तमे “ सयम निभृतश्चर ” आ सकल सयमनी सारी रीते यत्नाचारमयी प्रवृत्ति वडे रक्षा उरो-आनु पालन करो । आ रीते सूत्रकारे सयमनी आराधना विषे प्रभुनी आज्ञानु प्रदर्शन कथुं छे हने तपनी आराधना उरवामा तेओश्रीनी आज्ञा गी छे ? ते सूत्रकार अर्हो स्पष्ट करे छे-“ आयावयाही चय सोगमल्ल ” ( दशवैकालिक द्वितीय अध्ययन ) हे मुनि ! सुकुमालपने त्यजने आतापना न्वीजारे आतापना उप तपधर्मना आराधनाशी मुनि पोताना गरीरने कृश ( दुर्बल ) अनावे अने ग्राहीरि

તુયદ્વિયવ્ય ભુજિયવ્ય માસિયવ્ય, एव उट्टाय उट्टाय पाणेहिं भूयेहिं जीवेहिं सत्तेहिं  
सजमेण सजमियव्य, अस्मि च ण अट्ठे णो पमाएयव्य ” इति ।

ततः खलु श्रमणो भगवान् महावीरो मेव कुमार स्वयमेव प्रप्राजयति, यावत्  
स्वयमेव आचार यावद् धर्ममाख्याति-एव खलु हे देवानुप्रिय ! गन्तव्य, स्यात्तव्यं  
निपत्तव्य, तद्गुर्वर्तयितव्य भोक्तव्य भापितव्यत्, एवमुत्थाय उट्थाय पाणेषु भूतेषु  
जीवेषु सत्त्वेषु सयमेन सयन्तव्यम्, अस्मिश्च खलु अर्थे नो प्रमादयितव्यम् । इति,

दशवैकालिक सूत्रे ऽपि--

“ जय चरे जय चिट्ठे जयमासे जय सए ।

जय भुजतो भासतो पावरुम्म न वधई ॥ ”

इयव्य तुयद्वિયવ્ય ભુજિયવ્ય માસિયવ્ય एव उट्टाय उट्टाय पाणेहिं भूयेहिं  
जीवेहिं सत्तेहिं सजमेण सजमियव्य, अस्मिच ण अट्ठे णो पमाएयव्य”

श्रमण भगवान् महावीर ने स्वय अपने ही हाथों से मेवकुमारको  
जय भागवती दीक्षा प्रदान की उनके लिये मुनि विषयक आचार  
आदि का जय उन्हो ने उपदेश दिया तब उन्हो ने उसे यही समझाया  
कि हे देवानुप्रिय ! चलते, ठहरते, बैठते, लेटते, आहार करते और बात  
चित्त करते समय प्राणिओ, भूतो, जीवो, और नत्वो में सदा सयम  
से ही प्रवृत्ति करनी चाहिये । मुनि का यही कर्तव्य है कि वह प्रत्येक  
शारीरिक एव वाचनिक क्रियाओ में, सयमित प्रवृत्ति करें । इस प्रकार  
की प्रवृत्तिशील होने से ही मुनि द्वारा अपने सयम की रक्षा होती है  
इस विषय में मुनि को कभी भी प्रमाद नहीं करना चाहिये । दशवै  
कालिक सूत्र में भी यही कहा है--“ जय चरे जय चिट्ठे जयमासे जय

यव्य णिसीइयव्य तुयद्वિયવ્ય ભુજિયવ્ય, માસિયવ્ય, एव उट्टाय उट्टाय पाणेहिं  
भूयेहिं जावेहिं सत्तेहिं सजमेण सजमियव्य अस्मि च ण अट्ठे णो पमाएयव्य ”

શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે જાતે પોતાના હાથથી જ મેઘકુમારને જ્યારે  
ભાગવતી દીક્ષા આપી અને તેને મુનિવિષયક આચાર વગેરેને લગતો ઉપદેશ  
આપ્યો ત્યારે તેઓશ્રીએ તેને ઉપદેશમાં એ જ વાત સમજાવી કે હે દેવાનુ  
પ્રિય ! ચાલતા ઊભા રહેતા, બેસતા, સૂઈ જતા, આહાર કરતા અને વાતચીત  
કરતા પ્રાણીઓ, ભૂતો, જીવો અને સત્ત્વોમાં હમેશા સયમથી જ પ્રવૃત્તિ કરતા  
રહેવું જોઈએ મુનિનીએ જ ફરજ છે કે તે દરેક શારીરિક અને વાચનિક ક્રિયા  
ઓમાં સયમિત પ્રવૃત્તિ કરે આ રીતે પ્રવૃત્તિશીલ થઈને રહેવાથી જ મુનિઓ  
પડે સયમની રક્ષા થાય છે આ બાબતમાં મુનિએ કોઈ પણ દિવસે પ્રમાદ  
કરવો જોઈએ નહિ દશવૈકાલિક સૂત્રમાં પણ એજ વાત કહેવામાં આવી છે  
(જય ચરે જય ચિટ્ઠે જયમાસે જયસણ, જય ભુજતો ભાસતો

છાયા-યતં ચરેત્ યત તિષ્ઠેત્, યતમાસીત યત શયીત ।

યત ભુજાનો ભાપમાન પાપકર્મ ન વધ્નાતિ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

તત્રૈવ-‘ સંજમ નિહુઓ ચર ’’ ઇત્યાદિ । છાયા-સયમ નિમૃતશ્વર ’ ઇતિ ।

સયમે તીર્થંકરસ્યાજ્ઞા પ્રદર્શિતા, દ્વાદાશી તપમિ તદાજ્ઞા પ્રદર્શ્યતે । યથા-દશ-  
દૈકાલિક સૂત્રે-( દ્વિતીયાધ્યયને )

“ આયાવયાહી ચય સોગમલ્લ ” ઇતિ । “ આયાવયાહી ” આતાપય=આતા-  
પનારૂપતપોધર્મારાધનેન તન્નુ શોપય, “ સોગમલ્લ ” સૌકુમાર્યં “ ચય ” ત્યજ=  
પરિહર ।

સપ્ત, જયં ભુજતો ભાસતો પાવકર્મ ન વધર્હ” સકલ સયમિયો કો પૂર્ણ  
સાવધાનતા પૂર્વક હી ચલના ચાહિયે ઓર પૂર્ણ સાવધાનતા પૂર્વક હી વૈઠના  
ચાહિયે । ઉઠને વૈઠને મેં તથા આહારાદિ ક્રિયા કરને ઓર ઘોલને ચોલને  
મેં સદા ઉસે અપની યાનાચારમય પ્રવૃત્તિ પર હી લક્ષ્ય રખના ચહિયે ।  
હસ પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિ કરને સે વહ સાધુ પાપકર્મ કા વધ નહીં કરતો  
હૈ । હસલિયે હે મેઘકુમાર ! તુમ “ સયમ નિમૃતશ્વર ” હસ સકલ  
સયમ કી અચ્છી તરહ સે-યતનાચારમય પ્રવૃત્તિ સે રક્ષા કરો-પાલન  
કરો । હસ પ્રકાર સે સયમ કી આરાધના મેં તીર્થંકર પ્રભુ કી આજ્ઞા  
કા પ્રદર્શન સૂત્રકાર ને કિયા હૈ । અવ તપ કે આરાધન કરને મેં ઉનકી  
કયા આજ્ઞા હૈ-વે ગ્રહ સ્પષ્ટ કરતે હૈં “ આયાવયાહી ચય સોગમલ્લ ”  
( દશવૈકાલિક દ્વિતીય અધ્યયન ) ‘ હે મુને ! સુકુમાલપને કો છોડ  
આતાપનાલ્લે ’ આતાપનારૂપ તપધર્મ કી આરાધના સે મુનિ કો ચાહિયે

બધા મયમી લોડોએ સ પૂર્ણપણે સાવધાન થાનેજ આલણુ લેઈએ અને પૂર્ણ  
સાવધાન થઈને જ બેમણુ લેઈએ ઉઠવા બેસવામા તેમજ આહાર વગેરે ક્રિયા  
કરવામા અને બોલવા ચાલવામા હુ મેશા તેને પોતાની યતનાચારમય પ્રવૃત્તિ  
ઉપર જ લક્ષ્ય આપણુ લેઈએ આ ગીતે પ્રવૃત્તિ કરવાથી તે માધુ પાપ-કર્મનો  
બધ કરતો નથી એવી હે મેઘકુમાર ! તમે “ સયમ નિમૃતશ્વર ” આ સકલ  
સયમની સારી રીતે યતનાચારમયી પ્રવૃત્તિ વડે ગથા કરો-આનુ પાલન કરો  
આ ગીતે સૂત્રકારે સયમની આરાધના વિષે પ્રભુની આજ્ઞાનુ પ્રદર્શન કર્યું છે  
હવે તપની આરાધના કરવામા તેઓશ્રીની આજ્ઞા શી છે ? તે સૂત્રકાર અહીં  
સ્પષ્ટ કરે છે-“ આયાવયાહી ચય સોગમલ્લ ” ( દશવૈકાલિક દ્વિતીય અધ્યયન )  
હે મુનિ ! સુકુમાળતાને ત્યજીને આતાપના સ્વીકારો આતાપના ઉપ તપધર્મના  
આરાધનની મુનિ પોતાના શરીરને કૃશ ( હુબળા ) બનાવે અને શારીરિક



કિંચ શ્રમણસ્ય શાન્ત્યાદિદશવિધે ધર્મે તપસઃ પાઠો વર્તતે, તસ્માત્ તપોધર્મ  
ઈતિ વિશાયતે । તથાચોક્તં સમવાયાગસૂત્રે—( સમવાય ૧૦ )

“ દસવિધે સમણધર્મે વણત્તે, ત જહા—( ૧ ) સ્વંતી, ( ૨ ) મુત્તી (૩) અઙ્ગવે  
( ૪ ) મહવે ( ૫ ) લાઘવે ( ૬ ) સચ્ચે ( ૭ ) સંજમે ( ૮ ) તવે ( ૯ ) ચિયાણ  
( ૧૦ ) વંમચેરવાસે ।

અહિંસાદીના જિનાશાપ્રયોજ્યપ્રવૃત્તિકત્પરૂપસ્ય ધર્મલક્ષણસ્ય સદ્ભાવાદ્  
ધર્મત્વ સિદ્ધ ।

ઉક્ત ધર્મસ્ય લક્ષણ, લક્ષ્યા અહિંસાદયમ્ પ્રોક્તાઃ, તત્રાહિંસાસયમતપોરૂપો ધર્મ  
ઉત્કૃષ્ટ મઙ્ગલ બોધ્યમ્ ।

તથાચોક્તં દશવૈકાલિકમૂત્રે—( પ્ર૦ અ૦ ૧ )

“ ધર્મો મગલમુક્ષિટ્વ 'અહિંસા સંજમો તવો ।

દેવાવિ ત નમસતિ જસ્સ ધર્મે સયા મણો ॥ ”

કિં વહ અપને શરીર કો કૃશ કરેં એવ શારીરિક સુકુમારતા કા મોહ  
છોડે । ઉત્તમ ક્ષમા આદિક જો શ્રમણોં કે દશપ્રકાર કે ધર્મ કહે ગયે  
હૈં, ઉનમેં તપ કા મો કથન આયા હૈં, અતઃ તપ મેં ધર્મરૂપતા સિદ્ધ હી  
હોતી હૈં । સમવાયાગ સૂત્ર મેં શ્રમણ કે દશ પ્રકાર કે ધર્મોં કા કથન  
કરતે હુણ સૂત્રકાર ને યહી કહા હૈં—“ દસવિધે સમણધર્મે વણત્તે,  
ત જહા—સ્વંતી, મુત્તી, અઙ્ગવે, મહવે, લાઘવે, સચ્ચે, સંજમે, તવે,  
ચિયાણ વંમચેરવાસે ।

इन अहिंसादिक महाव्रतों में धर्मरूपता इसलिये सिद्ध होनी है कि  
वहा पर जिनेन्द्र प्रभु की आज्ञा प्रयोज्य प्रवृत्तिरूप धर्म के लक्षण का  
सद्भाव पाया जाता है इस प्रकार धर्म का लक्षण और उसके लक्ष्यभूत  
अहिंसादिकों का कथन है । ये अहिंसा, सयम और तपरूप धर्म ही

સુકુમારતાનો મોહ ત્યજી દે ઉત્તમ ક્ષમા વગેરે શ્રમણોના દશ પ્રકારના ધર્મ  
કહેવામા આવ્યા છે તેઓમા તપનુ કથન છે એથી તપમા ધર્મરૂપતા સિદ્ધ  
થાય જ છે સૂત્રકારે સમવાયાગ સૂત્રમા શ્રમણના દશ પ્રકારના ધર્મનુ કથન  
કરતા આ પ્રમાણે જ કહ્યું છે—

“ દસવિધે સમણધર્મે વણત્તે —ત જહા—સ્વંતી, મુત્તી, અઙ્ગવે, મહવે, લાઘવે,  
સચ્ચે’ સંજમે, તવે ચિયાણ વંમચેરવાસે । ”

આ અહિંસા વગેરે મહાવ્રતોમા ધર્મરૂપતા એટલા માટે સિદ્ધ થાય છે  
કે તેઓમા જિનેન્દ્ર પ્રભુની આજ્ઞા પ્રયોજ્ય પ્રવૃત્તિ રૂપ ધર્મના લક્ષણને સદ્-  
ભાવ છે આ રીતે ધર્મનુ લક્ષણ અને તેના લક્ષ્યભૂત અહિંસા -  
અહિંસા, સયમ અને તપ રૂપ ધર્મ —ઉત્કૃષ્ટ મગલ

છાયા—ધર્મો મગ્ગલમુત્કૃષ્ટમ્ અહિંસા સંયમસ્તપઃ ।

દેવા અપિ ત નમસ્યન્તિ, યસ્ય ધર્મે સદા મનઃ ॥

નન્વહિંસા-સંયમ-તપો-રૂપો ધર્મો મગ્ગલમુત્કૃષ્ટમિત્યેતદ્વચઃ ત્રિમાજ્ઞાસિદ્ધમ્  
આહોસ્વિદ્ યુક્તિસિદ્ધમપિ ?

અત્રોચ્યતે—ઉભયસિદ્ધમપિ, તથાહિ-જિનવચનત્યા-દાજ્ઞાસિદ્ધમ્ અનુમાનમ-  
પ્યત્રવર્તતે—‘ અહિંમાસયમતપોરૂપો-ધર્મો મગ્ગલમુત્કૃષ્ટમ્’ इति प्रतिज्ञा, ‘ દેવાદિ

ઉત્કૃષ્ટ મગલરૂપ હૈં દશવૈકાલિકસૂત્ર મેં યહી કહા હૈ “ ધમ્મો મગલ-  
મુક્ષિટ્ઠ અહિંસા સજમો તવો । દેવા વિ ત નમસતિ જસ્સ ધમ્મે સયા-  
મણો ” ધર્મ હી ઉત્કૃષ્ટ મગલ હૈ । અહિંસા સયમ ઓર તપ યે હી ધર્મ  
હૈં । જિસકા અન્તઃ કરણ હસ ધર્મ સે સદા યુક્ત રહતા હૈ ઉસકે લિયે  
દેવ ઓ નમસ્કાર કરતે હૈ ।

શકા-અહિંસા, સંયમ ઓર તપરૂપ ધર્મ મેં જો ઉત્કૃષ્ટ મગલરૂપતા  
કહી હૈ વહ આજ્ઞાસિદ્ધ હૈ હસલિયે કહી હૈ કિ યુક્તિ સે સિદ્ધ હૈ હસ-  
લિયે કહી હૈ ? ભાગ્યર્થ-અહિંસાદિકોં મેં ઉત્કૃષ્ટમગલતા કિસ પ્રમાણ સે  
સિદ્ધ હૈ ? આગમ સે યા અનુમાન સે ?

ઉત્તર-इनमें उत्कृष्ट मगलरूपता आगम और युक्ति दोनोंसे सिद्ध  
है । जिनेन्द्र के वचन होने से इनमें आज्ञासिद्धता है तथा अनुमान से  
प्रसिद्ध होने से युक्ति सिद्धता है । “ धम्मो મગલમુક્ષિટ્ઠ ” इत्यादि  
गाथा द्वारा इनमें जिनेन्द्रवचनरूप आगमता पूर्व में ही प्रदर्शित की जा  
चुकी है अनुमान प्रसिद्धता इस प्रकार है-अनुमान के पांच अंग होते

સૂત્રમા એ જ વાત કહેવામા આવી છે—“ ધમ્મો મગલમુક્ષિટ્ઠ-અહિંસા સજમો  
તવો । દેવા વિ ત નમસતિ જસ્સ ધમ્મે સયા મણો ” ધર્મ જ ઉત્કૃષ્ટ મગળ  
છે અહિંસા સયમ અને તપ એ જ ધર્મ છે જેનુ અન્ત ડરણુ આ ધર્મથી  
સદા યુક્ત રહે છે તેને દેવો પણ નમન કરે છે

શકા—અહિંસા, સયમ અને તપ રૂપ ધર્મને જે ઉત્કૃષ્ટ મગળ રૂપ  
કહેવામા આવ્યો છે તે આજ્ઞાસિદ્ધ છે માટે કહેવામા આવેલ છે કે યુક્તિથી  
સિદ્ધ છે એટલા માટે કહેવામા આવે છે ? ભાગ્યર્થ-અહિંસા વગેરેમા ઉત્કૃષ્ટ  
મગળતા કયા પ્રમાણથી સિદ્ધ છે ? આગમથી કે અનુમાનથી ?

ઉત્તર—આમા ઉત્કૃષ્ટ મગલરૂપતા આગમ અને યુક્તિ બનેથી સિદ્ધ છે  
જિનેન્દ્રનાવચનો હોવાથી આમા આજ્ઞા સિદ્ધતા છે તેમજ અનુમાનથી પ્રસિદ્ધ  
હોવા બદલ યુક્તિ સિદ્ધતા છે “ ધમ્મો મગલમુક્ષિટ્ઠ ” વગેરે ગાથા વડે  
આમા જિનેન્દ્ર પ્રવચનરૂપ આગમતા પહેલા બતાવવામા આવી જ છે અને અનુ-

કિંચ શ્રમણસ્ય શાન્ત્યાદિદશવિધે ધર્મે તપસઃ પાઠો વર્તતે, તસ્માત્ તપોધર્મ  
ઈતિ વિજ્ઞાયતે । તથાચોક્ત સમવાયાગસૂત્રે—( સમવાય ૧૦ )

“ દસવિદે સમણધર્મે પળ્લન્તે, ત જહા—( ૧ ) સ્વત્તી, ( ૨ ) મુત્તી (૩) અજ્જવે  
( ૪ ) મદ્ધવે ( ૫ ) લાઘવે ( ૬ ) સચ્ચે ( ૭ ) સજમે ( ૮ ) તવે ( ૯ ) ચિયાણ  
( ૧૦ ) વંભચેરવાસે ।

અહિંસાદીનાં જિનાજ્ઞાપયોજ્યપ્રવૃત્તિકાર્યરૂપસ્ય ધર્મલક્ષણસ્ય સદ્ધાવાદ  
ધર્મત્વ સિદ્ધ ।

ઉક્ત ધર્મસ્ય લક્ષણ, લક્ષ્યા અહિંસાદયમ્ પ્રોક્તાઃ, તન્નાહિંસાસયમતપોરૂપો ધર્મ  
ઉત્કૃષ્ટ મગ્ગલ વોધ્યમ્ ।

તથાચોક્ત દશવૈકાલિકસૂત્રે—( પ્ર૦ અ૦ ૧ )

“ ધર્મો મગલમુક્ષિદ્ધિ, અહિંસા સંજમો તવો ।

દેવાવિ ત નમસતિ જસસ ધર્મે સયા મણો ॥ ”

કિં વહ અપને શરીર કો કૃશ કરેં એવ શારીરિક સુકુમારતા કા મોહ  
છોડે । ઉત્તમ ક્ષમા આદિક જો શ્રમણોં કે દશપ્રકાર કે ધર્મ કહે ગયે  
હેં, ઉનમેં તપ કા મો કથન આયા હૈ, અતઃ તપ મેં ધર્મરૂપતા સિદ્ધ હી  
હોતી હૈ । સમવાયાગ સૂત્ર મેં શ્રમણ કે દશ પ્રકાર કે ધર્મોં કા કથન  
કરતે હુણ સૂત્રકાર ને યહી કહા હૈ—“ દસવિદે સમણધર્મે પળ્લન્તે,  
તં જહા—સ્વત્તી, મુત્તી, અજ્જવે, મદ્ધવે, લાઘવે, સચ્ચે, સજમે, તવે,  
ચિયાણ વંભચેરવાસે ।

इन अहिंसादिके महाव्रतों में धर्मरूपता इसलिये सिद्ध होनी है कि  
वहा पर जिनेन्द्र प्रभु की आज्ञा प्रयोज्य प्रवृत्तिरूप धर्म के लक्षण का  
सद्भाव पाया जाता है इस प्रकार धर्म का लक्षण और उसके लक्ष्यभूत  
अहिंसादिकों का कथन है । ये अहिंसा, सयम और तपरूप धर्म ही

સુકુમારતાનો મોહ ત્યજી દે ઉત્તમ ક્ષમા વગેરે શ્રમણોના દશ પ્રકારના ધર્મ  
કહેવામા આવ્યા છે તેઓમા તપનુ કથન છે એથી તપમા ધર્મરૂપતા સિદ્ધ  
થાય જ છે સૂત્રકારે સમવાયાગ સૂત્રમા શ્રમણના દશ પ્રકારના ધર્મનુ કથન  
કરતા આ પ્રમાણે જ કહ્યું છે—

“ દસવિદે સમણધર્મે પળ્લન્તે —ત જહા—સ્વત્તી, મુત્તી, અજ્જવે, મદ્ધવે, લાઘવે,  
સચ્ચે’ સજમે, તવે ચિયાણ વંભચેરવાસે । ”

આ અહિંસા વગેરે મહાવ્રતોમા ધર્મરૂપતા એટલા માટે સિદ્ધ થાય છે  
કે તેઓમા જિનેન્દ્ર પ્રભુની આજ્ઞા પ્રયોજ્ય પ્રવૃત્તિ રૂપ ધર્મના લક્ષણનો સદ્  
ભાવ છે આ રીતે ધર્મનુ લક્ષણ અને તેના લક્ષ્યભૂત અહિંસા વગેરે છે  
અહિંસા, સયમ અને તપ રૂપ ધર્મ જ ઉત્કૃષ્ટ મગ્ગલ

“ ધર્માધર્મવ્યવસ્થાયા, શાસ્ત્રમેવ નિયામકમ્ ।  
તદુક્તાઽઽસેવનાદ્ ધર્મસ્ત્વધર્મસ્તદ્વિપર્યયાત્ ॥ ” ઇતિ,

આગમ સે હી જાત કર સકતે હૈં । ઘટપટાદિકો કી તરહ ઉસે સ્પષ્ટ રૂપ સે દેખનહીં સકતે હૈં । ડસીલિયે વહ દુર્જેય હૈ । જો અનુમાન ઓર આગમ સે ગમ્ય હોતા હૈ વહ અગ્નિ આદિ કી તરહ કિસી ન કિસી કે પ્રત્યક્ષ હોતા હૈ યહ સ્પષ્ટ સિદ્ધાન્ત હૈ । તીર્થંકર પ્રભુ ને કિ જો રાગ ઓર દ્વેષ સે સર્વથા રહિત હૈં, ત્રિકાલવર્તી સમસ્ત પદાર્થોંકો જો હસ્તામલક વત્ સ્પષ્ટ જાનતે હૈં, ૩૫ વાણી કે અતિશય સે જો યુક્ત હૈં અપને કેવલજ્ઞાન રૂપી આલોક સે ઉસે વિશદરૂપ સે જાન લિયા હૈ । હમ છદ્મસ્થોં કે લિયે હનકે વચનોં કે સિવાય હસ વિષય કા નિયામક ઓર કુછ નહીં હૈ । અતઃ ઉનકે કથનાનુસાર હી ધર્મ ઓર અધર્મ કા સ્વરૂપ હમ સસારી જીવ જાન સકતે હૈં યા જાનતે હૈં । “ ધર્માધર્મવ્યવસ્થાયા શાસ્ત્રમેવ નિયામક, તદુક્તા સેવનાત્ ધર્મસ્ત્વધર્મસ્તદ્વિપર્યયાત્ ”-ધર્મ ઓર અધર્મ કે સ્વરૂપ કી વ્યવસ્થા કરને વાલે કેવલ સર્વજ્ઞભગવાન કે વચન સ્વરૂપ આગમ હી હૈ । અતઃ ઉનકે દ્વારા પ્રદર્શિત માર્ગ કા સેવન કરના ધર્મ ઓર ઉસસે વિપરીત માર્ગ કા સેવન કરના અધર્મ હૈ

ભાવાર્થ-જીવોકો ધર્મકી પ્રાપ્તિ સર્વજ્ઞ ભગવાન દ્વારા પ્રદર્શિત માર્ગ

સમજી શકીયે છીએ ‘ ઘટ પટ ’ વગેરેની જેમ તેને સ્પષ્ટ પણે જોઈ શકતા નથી એથી જ તે દુર્જેય છે જે અનુમાન અને આગમથી ગમ્ય હોય છે તે અગ્નિ વગેરેની જેમ કોઈને કોઈને પ્રત્યક્ષ હોય છે આ એક સ્પષ્ટ સિદ્ધાન્ત છે રાગ અને દ્વેષથી સંપૂર્ણ પણે રહિત એવા તીર્થંકર પ્રભુએ-કે જેઓ ત્રિકાળવર્તી બધા પદાર્થોંને હસ્તામલકવત્ સ્પષ્ટ રીતે જાણે છે, ૩૫ વાણીના અતિશયથી જેઓ યુક્ત છે-પોતાના કેવળજ્ઞાન રૂપી આવોડથી તેને વિશદ રૂપથી જાણી લીધું છે અમારા જેવા છદ્મસ્થોંને માટે એમના વચનો સિવાય આ વિષયનો નિયામક બીજો કોઈ નથી એથી અમે તેમના કહ્યા મુજબ જ ધર્મ અને અધર્મનું સ્વરૂપ જાણી શકીયે છીએ “ ધર્માધર્મ-વ્યવસ્થાયા શાસ્ત્ર મેવ નિયામક, તદુક્તાસેવનાત્ ધર્મસ્ત્વધર્મસ્તદ્વિપર્યયાત્ ” ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપની વ્યવસ્થા કરનાર ફક્ત સર્વજ્ઞ ભગવાનના વચન સ્વરૂપ આગામો જ છે એથી તેમના વડે દર્શાવવામા આવેલા માર્ગનું સેવન કરવું એજ ધર્મ અને તેથી વિરુદ્ધ માર્ગનું સેવન કરવું અધર્મ છે ભાવાર્થ-સર્વજ્ઞ ભગવાન દ્વારા

માન્યત્વાત્, इति हेतुः । अर्हदादिवत् इति दृष्टान्तः इह यो यो देवादिमान्यः स स उत्कृष्ट मङ्गल यथाऽर्हदादयः, 'तथा चाय धर्मः' इत्युपनयः, तस्माद् देवादि मान्यत्वादुत्कृष्ट मङ्गलमिति निगमनम् ।

वस्तुतस्तु धर्मधर्मस्वरूप सू. मत्याच्छरथैर्दुर्ज्ञेय, केवल सर्वेण रागादिदोष रहितेन पञ्चत्रिंशद्वचनातिशयसप नेन केवलिना तीर्थकोण केवलालोकेन सुज्ञेय भवति । छद्मस्थानां तु भगवद्वचनमेव नियामक, तथाचोक्तम्—

हैं—१ प्रतिज्ञा, २ हेतु, ३ दृष्टान्त, उपनय ४ और ५ निगमन । अर्हन्त भगवान की तरह देवादिकों द्वारा मान्य होने से अहिंसा, तप और सयमरूप धर्म उत्कृष्ट मंगल हैं ।

इस अनुमान वाक्य में “अहिंसा, सयम और तप रूप धर्म उत्कृष्टमंगल है” यह प्रतिज्ञा है “देवादिकों द्वारा मान्य होने से” यह हेतु है । “अर्हन्त की तरह” यह दृष्टान्त है पक्ष में हेतु के दुहराने से उपनय और प्रतिज्ञा के दुहराने से निगमन सिद्ध हैं जैसे—“जो जो देवादिकों द्वारा मान्य होता है वह २ उत्कृष्ट मंगल होता है जैसे अर्हन्त प्रभु—ये भी देवादिकों द्वारा मान्य हैं । इस प्रकार पक्ष में हेतु के दुहराने रूप उपनय है इसलिये “वे भी उत्कृष्ट मंगल स्वरूप हैं” इस प्रकार प्रतिज्ञा के दुहराने रूप निगमनवाक्य है ।

वास्तव में तो धर्म और अधर्म का स्वरूप सूक्ष्म होने से हम उद्ग-  
स्थों के लिये अत्यंत परोक्ष है—इस लिये हम उसे सिर्फ अनुमान या

માન પ્રસિદ્ધતા આ પ્રમાણે સમજવી જોઈએ અનુમાનના પાંચ અંગો હોય છે—પ્રતિજ્ઞા ૧, હેતુ ૨, દૃષ્ટાન્ત ૩, ઉપનય ૪, અને નિગમન ૫,

અહીં ત ભગવાનની જેમ દેવ વગેરે દ્વારા માન્ય હોવા બદલ અહિંસા, તપ અને સયમ રૂપ ધર્મ ઉત્કૃષ્ટ-મંગલ છે

આ અનુમાન વાક્યમાં “અહિંસા, સયમ અને તપ રૂપ ઉત્કૃષ્ટ મંગલ છે” આ પ્રતિજ્ઞા છે ‘દેવ વગેરે દ્વારા માન્ય હોવાથી આ હેતુ છે અહીં તની જેમ” આ દૃષ્ટાન્ત છે પક્ષમાં હેતુને ઊંચડાવવાથી ઉપનય અને પ્રતિજ્ઞાને ઊંચડાવવાથી નિગમન સિદ્ધ છે જેમકે “દેવ વગેરે દ્વારા જે જે માન્ય હોય છે તે તે ઉત્કૃષ્ટ-મંગલ હોય છે જેમ અહીં ત પ્રભુ પણ દેવ વગેરે દ્વારા માન્ય છે આરીતે પક્ષમાં હેતુને ઊંચડાવવાથી ઉપનય છે, માટે “તેઓ પણ ઉત્કૃષ્ટ મંગલ સ્વરૂપ છે” આરીતે પ્રતિજ્ઞાને ઊંચડાવવા રૂપ નિગમન વાક્ય છે

વસ્તુતઃ ધર્મ તેમજ અધર્મનું સ્વરૂપ સૂક્ષ્મ હોવાથી અમારા જેવા છદ્મસ્થો માટે તે અતીવ પરોક્ષ છે એથી અમે ફક્ત તેને અનુમાન કે આગમથી



સ્વયમેવ ભગવતા-અહિંસાસંયમતપસાં વર્મત્વ, તથા - તેપામુત્કૃષ્ટમદ્ગલસ્વરૂપ-  
ત્વેન પ્રાધાન્ય ચ ગર્ણિત, તત્રાપ્યહિંસાયા.-સર્વવર્મમૂલત્વેન પ્રગાન્યાત્ પ્રથમ સ્થાન  
પદત્તમ્ । તસ્ય સર્વપ્રધાનસ્યાઽહિંસાધર્મસ્ય પટ્ટકાયોપમર્દનસાધ્યે મૂર્તિપૂજને  
મૂલતઃ સમુચ્છેદ કેવલાન્ત્રોકેન સાક્ષાત્ પશ્યન્ ભગવાનર્હન્ મૂર્તિપૂજનાર્થમાજ્ઞા પ્રદ  
દ્યાદિત્યાકાશકુસુમમિત્યાત્યન્તમસદેવ વોધ્યમ્ ।

સ્પષ્ટ રૂપ સે જ્ઞાન કે વિષય નહીં હો સકતે હૈં । અતઃ, એસે વિષયો  
મેં સર્વજ્ઞ કે વચન હી પ્રમાણ કોટિ મેં અગીકાર કરનાં ચાહિયે ।

ભગવાન ને સ્વયં હી અહિંસા, સયમ ઓર તપ મેં ધર્મરૂપતા તથા  
ઉત્કૃષ્ટ મગલરૂપ હોને સે પ્રધાનતા કહી હૈં । અહિંસા મેં જો પ્રધાન  
રૂપતા કહી ગઈ હૈં ઉસકા મુખ્ય કારણ યહ હૈં કિ વહ સમસ્તવર્મો  
કા મૂલ હૈં ઓર હસીલિયે ઉસે ઉન્હો ને સર્વપ્રથમસ્થાન દિયા હૈં જત્ર  
યહ વાત હૈં તો વિચારના ચાહિયે કિ ભગવા મૂર્તિપૂજા કી આજ્ઞા કૈસે  
દે સકને હૈં । વર્ગોં કિ વહ પૂજા પટ્ટકાય કે જીયો કી વિરાધના સે  
સા ય હોતી હૈં । હસ વિરાધના મેં અહિંસા ધર્મ કા મૂલતઃ હી અભાવ  
સમાયો હુઆ હૈં । અર્થાત્ મૂર્તિપૂજા મેં ઉસ પ્રભુપ્રતિપાદિત અહિંસા ધર્મ  
કા સર્વથા ઉચ્છેદ હો હો જાતા હૈં-મૂર્તિપૂજા કરને વાલા પૂજક અહિંસા  
ધર્મ કા રક્ષક નહીં હો સકતા હૈં-પ્રત્યુત ઉસે હિંસા કા હી દોષ લગતા  
હૈં હસ પ્રકાર સ્વયં ભગવાન જથ અપને કેવલ જ્ઞાન સે હસ વાત કો

તેમ નથી એથી એવી બાબતોમા સર્વજ્ઞ ના વચનો જ પ્રમાણ રૂપમા સ્વીકારવા બેઠ્યો

ભગવાનને પોતે જ અહિંસા, સયમ અને તપમા ધર્મ રૂપતા તેમજ  
ઉત્કૃષ્ટ મગલરૂપ હોવાથી પ્રધાનતા બતાવી છે અહિંસામા જે પ્રધાન રૂપતા  
દર્શાવવામા આવી છે, મુખ્યત્વે તેનું કારણ આ પ્રમાણે છે કે તે બધા ધર્મોનું  
મૂળ છે અને એથી તેને મોઝે સૌ પ્રથમ સ્થાન અર્જ્યું છે બ્યારે એવી  
વાત છે ત્યારે આપણે વિચારવું બેઠ્યો કે ભગવાન મૂર્તિપૂજાની આજ્ઞા ઢેવી રીતે  
આપી શકે તેમ છે ? કેમ કે તે પૂજા તો પટ્ટકાયના જીવોની વિરાધનાથી સાધ્ય  
હોય છે આ વિરાધનામા અહિંસા ધર્મનો મુખ્યત્વે અભાવનો જ સમાવેશ  
થયો છે તેમ કહી શકાય છે એટલે કે મૂર્તિપૂજામા તે પ્રભુ પ્રતિપાદિત અહિંસા  
ધર્મનો સંપૂર્ણ પણે ઉચ્છેદ જ થઈ જાય છે મૂર્તિપૂજા કરનાર પૂજારી અહિંસા  
ધર્મનો રક્ષક થઈ શકતો નથી અને બીજી રીતે તો તેને હિંસાનો દોષ જ  
ઓઢવો પડે છે આ રીતે બ્યારે પોતે ભગવાન પોતાના કેવલજ્ઞાનથી આ

પર ચલનેસે હી હો સકતી હૈ, હસસે વિપરીત માર્ગ પર ચલને સે નહીં ।  
 અતઃ જો જીવ ધર્મ કો સાક્ષાત્કાર કરના ચાહતે હૈ ઉનકા કર્તવ્ય હૈ  
 કિ વે સર્વજ્ઞ ભગવન દ્વારા કથિત માર્ગ કા સેવન કરે ઓર ઉસ સે  
 ભિન્ન માર્ગ કા પરિત્યાગ કરે । હસ પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિ સે વે ધર્મ ઓર  
 અધર્મ કે સ્વરૂપ કે જ્ઞાતા ઘન જાતે હૈ । હસ કથન સે શકાકાર કી  
 હસ આશકાકા ઘર્ષ પરિહાર ક્રિયા ગયા હૈ કિ જો ઉસમેં પહિલે યદ્ પ્રશ્ન  
 ક્રિયા કિ અર્હિસાદિકોં મેં જો ઉત્કૃષ્ટ મગલરૂપતા હૈ વહ કિસ પ્રમાણ  
 સે હૈ । સૂત્રકારને આગમ ઓર અનુમાન દોનો પ્રમાણોં સે ઉનમેં ઉત્કૃષ્ટ  
 મગલતા સિદ્ધ કી હૈ હસ કથન સે ઇક યાત ઓર હમેં યદ્ જાત હોતી  
 હૈ કિ સર્વજ્ઞ કથિત સિદ્ધાન્ત કી જાચ કે લિયે જયતક તર્ક કા જોર  
 ચલતા રહે બુદ્ધિમાન તયતક અપની તર્કણા કી કસોટી પર ઉસે કસતા  
 રહે-પર જય તર્ક કી સમાપ્તિ હો જાવે-તર્કણા શક્તિ કુઠિત હો જાવે-  
 તો ઉસ વ્યક્તિ કા કર્તવ્ય હૈ વહ આગમ પ્રમાણ સે હી ઉસ સિદ્ધાન્ત  
 કા અનુસરણ કરે । ફિર ઉસે ઉસ વિષય મેં તર્ક કરને કી આવશ્ય  
 કતા નહીં હૈ ક્યોં કિ સૂક્ષ્માદિક પદાર્થ સર્વજ્ઞ કે સિવાય છદ્મસ્થોં કે

પ્રદર્શિત માર્ગ ઉપર ચાલવાથી જ જીવો ને ધર્મની પ્રાપ્તિ થઈ શકે તેમ છે ,  
 એનાથી વિરુદ્ધ માર્ગના સેવન થી નહિ એથી જ જીવો ધર્મનું પ્રત્યક્ષ દર્શન  
 ઇચ્છતા હોય તેમની ફરજ છે કે તેઓ સર્વજ્ઞ ભગવાન દ્વારા કથિત માર્ગનું  
 સેવન કરે અને તેના વિરુદ્ધ માર્ગનો ત્યાગ કરે આ જાતની પ્રવૃત્તિથી તેઓ  
 ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપને જાણનારા થઈ જાય છે આ કથનથી શકાકારની  
 એ આશકાનો અહીં પરિહાર કરવામા આવ્યો છે કે જે તેમા પહેલા આ  
 પ્રશ્ન કરવામા આવ્યો છે કે અહિસા વગેરે મા જે ઉત્કૃષ્ટ મગલ રૂપતા છે તે  
 કયા પ્રમાણના આધારે છે ? સૂત્રકારે આગમ તેમજ અનુમાન બંને-પ્રમાણો થી  
 તેઓમા ઉત્કૃષ્ટ મગલતા સિદ્ધ કરી છે એ કથન વડે બીજી આ વાતનું પણ  
 જ્ઞાન થાય છે કે સર્વજ્ઞ-કથિત સિદ્ધાન્તની પરીક્ષા માટે જ્યાં સુધી તર્કની  
 શક્તિ કાયમ રહે બુદ્ધિમાનો ત્યાં સુધી પોતાની તર્કણાની કસોટી ઉપર કસતા  
 રહે-પણ જ્યારે તર્કની શક્તિ મદ થઈ જાય-તર્કણા શક્તિ કુઠિત થઈ જાય  
 ત્યારે તે વ્યક્તિ ની ફરજ છે કે તે આગળ પ્રમાણથી જ તે સિદ્ધાન્ત નું અનુ  
 સરણ કરે પછી તે વિષયમા જ તેને મીનમેષ કરવી જોઈએ નહિ કેમ કે  
 સૂક્ષ્મ વગેરે પદાર્થો સર્વજ્ઞ સિવાય છદ્મસ્થોના માટે સ્પષ્ટ રૂપથી જાણી શકાય

સ્વયમેવ ભગવતા-અહિંસાસંયમતપસાં ધર્મત્વ, તથા - તેષામુત્કૃષ્ટમગ્નલસ્વરૂપ-  
ત્વેન પ્રાધાન્ય ચ વર્ણિત, તત્રાપ્યહિંસાયા.-સર્વધર્મમૂલત્વેન પ્રાધાન્યાત્ પ્રથમ સ્થાન  
પદત્તમ્ । તસ્ય સર્વપ્રધાનન્યાઽહિંસાધર્મસ્ય પટ્ટકાયોપમર્દનસાધ્યે મૂર્તિપૂજને  
મૂલતઃ સમુચ્છેદ કેવલાલોકેન સાક્ષાત્ પશ્યન્ ભગવાનર્હન્ મૂર્તિપૂજનાર્થમાજ્ઞા પ્રદ-  
ધાદિત્યાકાશકુસુમમિત્રાત્યન્તમસદેવ નોધ્યમ્ ।

સ્પષ્ટ રૂપ સે જ્ઞાન કે વિષય નહીં હો સકતે હૈ । અતઃ એસે વિષયોં  
મેં સર્વજ્ઞ કે વચન હી પ્રમાણ કોટિ મેં અગીકાર કરનાં चाहिये ।

ભગવાન ને સ્વયં હી અહિંસા, સયમ ઓર તપ મેં ધર્મરૂપતા તથા  
ઉત્કૃષ્ટ મગ્નલરૂપ હોને સે પ્રધાનતા કહી હૈ । અહિંસા મેં જો પ્રધાન  
રૂપતા કહી ગઈ હૈ ઉસકા મુખ્ય કારણ યહ હૈ કિ વહ સમસ્તધર્મોં  
કા મૂલ હૈ ઓર હસીલિયે ઉસે ઉન્હો ને સર્વપ્રથમસ્થાન દિયા હૈ જય  
યહ વાત હૈ તો વિચારનાં चाहिये કિ ભગવા મૂર્તિપૂજા કી આજ્ઞા કેસે  
દે સકને હૈ । કયોં કિ વહ પૂજા પટ્ટકાય કે જીયોં કી વિરાધના સે  
સાધ્ય હોતો હૈ । ઇસ વિરાધના મેં અહિંસા ધર્મ કા મૂલતઃ હી અભાવ  
સમાધા હુઆ હૈ । અર્થાત્ મૂર્તિપૂજા મેં ઉસ પ્રભુપ્રતિપાદિત અહિંસા ધર્મ  
કા સર્વથા ઉચ્છેદ હો હો જાતા હૈ-મૂર્તિપૂજા કરને વાલા પૂજક અહિંસા  
ધર્મ કા રક્ષક નહીં હો સકના હૈ-પ્રત્યુત ઉસે હિંસા કા હી દોષ લગતા  
હૈ ઇસ પ્રકાર સ્વયં ભગવાન જય અપને કેવલ જ્ઞાન સે ઇસ વાત કો

તેમ નથી એથી એવી બાબતોમા સર્વજ્ઞ ના વચનો જ પ્રમાણ રૂપમા સ્વીકાર-  
વા જોઈએ

ભગવાનને પોતે જ અહિંસા, સયમ અને તપમા ધર્મ રૂપતા તેમજ  
ઉત્કૃષ્ટ મગ્નરૂપ હોવાથી પ્રધાનતા બનાવી છે અહિંસામા જે પ્રધાન રૂપતા  
દર્શાવવામા આવી છે, મુખ્યત્વે તેનું કારણ આ પ્રમાણે છે કે તે બધા ધર્મોંનું  
મૂળ છે અને એથી તેને મોઝે સૌ પ્રથમ સ્થાન અર્થુ છે જ્યારે એવી  
વાત છે ત્યારે આપણે વિચારવું જોઈએ કે ભગવાન મૂર્તિપૂજની આજ્ઞા ટેવી રીતે  
આપી શકે તેમ છે ? કેમ કે તે પૂજા તો પટ્ટકાયના જીવોની વિરાધનાથી સાધ્ય  
હોય છે આ વિરાધનામા અહિંસા ધર્મતો, મુખ્યત્વે અલાવનો જ સમાવેશ  
થયો છે તેમ કહી શકાય છે એટલે કે મૂર્તિપૂજામા તે પ્રભુ પ્રતિપાદિત અહિંસા  
ધર્મનો સંપૂર્ણ પણે ઉચ્છેદ જ થઈ જાય છે મૂર્તિપૂજા કરનાર પૂજારી અહિંસા  
ધર્મનો રક્ષક થઈ શકતો નથી અને બીજી રીતે તો તેને હિંસાનો દોષ જ  
ઓડવો પડે છે આ રીતે જ્યારે પોતે ભગવાન પોતાના કેવલજ્ઞાનથી આ

પર ચલનેસે હી હો સકતી હૈ, દસસે વિપરીત માર્ગ પર ચલને સે નહીં ।  
 અતઃ જો જીવ વર્મ કો સાક્ષાત્કાર કરના ચાહતે હૈં ઉનકા કર્તવ્ય હૈ  
 કિ વે સર્વજ્ઞ ભગવન દ્વારા કથિત માર્ગ કા સેવન કરે ઓર ઉસ સે  
 ભિન્ન માર્ગ કા પરિત્યાગ કરે । દસ પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિ સે વે ધર્મ ઓર  
 અધર્મ કે સ્વરૂપ કે જ્ઞાતા ઘન જાતે હૈં । દસ કથન સે શકાકાર કી  
 દસ આશકાકા ઘર્ષ પરિહાર કિયા ગયા હૈ કિ જો ઉસમેં પહિલે ઘટ પ્રશ્ન  
 કિયા કિ અહિંસાદિકોં મેં જો ઉત્કૃષ્ટ મગલરૂપતા હૈ વહ કિસ પ્રમાણ  
 સે હૈ । સૂત્રકારને આગમ ઓર અનુમાન દોનો પ્રમાણોં સે ઉનમેં ઉત્કૃષ્ટ  
 મગલતા સિદ્ધ કી હૈ દસ કથન સે એક યાત ઓર હમેં ઘટ જ્ઞાત હોતી  
 હૈ કિ સર્વજ્ઞ કથિત સિદ્ધાન્ત કી જાચ કે લિયે જયતક તર્ક કા જોર  
 ચલતા રહે બુદ્ધિમાન તયતક અપની તર્કના કી કસૌટી પર ઉસે કસતા  
 રહે-પર જય તર્ક કી સમાપ્તિ હો જાવે-તર્કના શક્તિ કુઠિત હો જાવે-  
 તો ઉસ વ્યક્તિ કા કર્તવ્ય હૈ વહ આગમ પ્રમાણ સે હી ઉસ સિદ્ધાન્ત  
 કા અનુસરણ કરે । ફિર ઉસે ઉસ વિષય મેં તર્ક કરને કી આવશ્ય-  
 કતા નહીં હૈ ક્યોં કિ સૂક્ષ્માદિક પદોર્થ સર્વજ્ઞ કે સિવાય છદ્મસ્થોં કે

પ્રદર્શિત માર્ગ ઉપર ચાલવાથી જ જીવો ને ધર્મની પ્રાપ્તિ થઈ શકે તેમ છે ,  
 એનાથી વિરુદ્ધ માર્ગના સેવન થી નહિ એથી જે જીવો ધર્મનું પ્રત્યક્ષ દર્શન  
 ઇચ્છતા હોય તેમની ફરજ છે કે તેઓ સર્વજ્ઞ ભગવાન દ્વારા કથિત માર્ગનું  
 સેવન કરે અને તેના વિરુદ્ધ માર્ગનો ત્યાગ કરે આ જાતની પ્રવૃત્તિથી તેઓ  
 ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપને જાણનારા થઈ જાય છે આ કથનથી શકાકારની  
 એ આશકાનો અહીં પરિહાર કરવામા આવ્યો છે કે જે તેમા પહેલા આ  
 પ્રશ્ન કરવામા આવ્યો છે કે અહિંસા વગેરે મા જે ઉત્કૃષ્ટ મગળ રૂપતા છે તે  
 કયા પ્રમાણના આધારે છે ? સૂત્રકારે આગમ તેમજ અનુમાન બંને-પ્રમાણો થી  
 તેઓમા ઉત્કૃષ્ટ મગળતા સિદ્ધ કરી છે એ કથન વડે ખીજી આ વાતનું પણ  
 જ્ઞાન થાય છે કે સર્વજ્ઞ-કથિત સિદ્ધાન્તની પરીક્ષા માટે જ્યાં સુધી તર્કની  
 શક્તિ કાયમ રહે બુદ્ધિમાનો ત્યાં સુધી પોતાની તર્કણાની કસોટી ઉપર કસતા  
 રહે-પણ જ્યારે તર્કની શક્તિ મદ થઈ જાય-તર્કણા શક્તિ કુઠિત થઈ જાય  
 ત્યારે તે અકિત ની ફરજ છે કે તે આગળ પ્રમાણથી જ તે સિદ્ધાન્ત નું અનુ-  
 સરણ કરે પછી તે વિષયમા જ તેને મીનમેળ કરવી જોઈએ નહિ કેમ કે  
 સૂક્ષ્મ વગેરે પદાર્થો સર્વજ્ઞ સિવાય છદ્મસ્થોના માટે સ્પષ્ટ રૂપથી જાણી શકાય

સ્વયમેવ ભગવતા-અહિંસાસંયમતપસાં ધર્મત્વ, તથા - તેષામુત્કૃષ્ટમંગલસ્વરૂપ  
ત્વેન પ્રાવાન્ય ચ વર્ણિત, તત્રાપ્યહિંસાયા -સર્વધર્મમૂલત્વેન પ્રધાન્યાત્ પ્રથમ સ્થાન  
પ્રદત્તમ્ । તસ્ય સર્વપ્રધાનન્યાઽહિંસાધર્મસ્ય પટ્ટકાયોપમર્દનસાધ્યે મૂર્તિપૂજને  
મૂલતઃ સમુચ્છેદ કેવલાલોકેન સાક્ષાત્ પશ્યન્ ભગવાનર્હન્ મૂર્તિપૂજનાર્થમાજ્ઞા પ્રદ-  
દ્યાદિત્યાકાશકુસુમમિત્રાત્યન્તમસદેવ વોધ્યમ્ ।

સ્પષ્ટ રૂપ સે જ્ઞાન કે વિષય નહીં હો સકતે હે । અતઃ એસે વિષયો  
મેં સર્વજ્ઞ કે વચન હી પ્રમાણ કોટિ મેં અગીકાર કરનાં चाहिये ।

ભગવાન ને સ્વયં હી અહિંસા, સંયમ ઓર તપ મેં ધર્મરૂપતા તથા  
ઉત્કૃષ્ટ મંગલરૂપ હોને સે પ્રધાનતા કહી હૈ । અહિંસા મેં જો પ્રધાન  
રૂપતા કહી ગઈ હૈ ઉસકા મુખ્ય કારણ યહ હૈ કિ વહ સમસ્તધર્મો  
કા મૂલ હૈ ઓર હસીલિયે ઉસે ઉન્હો ને સર્વપ્રથમસ્થાન દિયા હૈ જય  
યહ વાત હૈ તો વિચારનાં चाहिये કિ ભગવા મૂર્તિપૂજા કી આજ્ઞા કેસે  
દે સકતે હે । કયોં કિ વહ પૂજા પટ્ટકાય કે જીયો કી વિરાધના સે  
સાધ્ય હોતી હૈ । હસ વિરાધના મેં અહિંસા ધર્મ કા મૂલતઃ હી અભાવ  
સમાધા હુમા હૈ । અર્થાત્ મૂર્તિપૂજા મેં ઉસ પ્રભુપ્રતિપાદિત અહિંસા ધર્મ  
કા સર્વથા ઉચ્છેદ હો હો જાતા હૈ-મૂર્તિપૂજા કરને વાલા પૂજક અહિંસા  
ધર્મ કા રક્ષક નહીં હો સકતા હૈ-પ્રત્યુત ઉસે હિંસા કા હી દોષ લગતા  
હૈ હસ પ્રકાર સ્વયં ભગવાન જય અપને કેવલ જ્ઞાન સે હસ વાત કો

તેમ નથી એથી એવી બાબતોમા સર્વજ્ઞ ના વચનો જ પ્રમાણ રૂપમા સ્વીકારવા બેઠ્યો

ભગવાનને પોતે જ અહિંસા, સંયમ અને તપમા ધર્મ રૂપતા તેમજ  
ઉત્કૃષ્ટ મંગલરૂપ હોવાથી પ્રધાનતા બનાવી છે અહિંસામા જે પ્રધાન રૂપતા  
દર્શાવવામા આવી છે, મુખ્યત્વે તેનું કારણ આ પ્રમાણે છે કે તે બધા ધર્મોનું  
મૂળ છે અને એથી તેને મોટે મો પ્રથમ સ્થાન અર્જ્યું છે બ્યારે એવી  
વાત છે ત્યારે આપણે વિચારવું બેઠ્યો કે ભગવાન મૂર્તિપૂજાની આજ્ઞા કેવી રીતે  
આપી શકે તેમ છે ? કમ કે તે પૂજા તો પટ્ટકાયના જીવોની વિરાધનાથી સાધ્ય  
હોય છે આ વિરાધનામા અહિંસા ધર્મનો મુખ્યત્વે અભાવનો જ સમાવેશ  
થયો છે તેમ કહી શકાય છે એટલે કે મૂર્તિપૂજામા તે પ્રભુ પ્રતિપાદિત અહિંસા  
ધર્મનો સંપૂર્ણ પણે ઉચ્છેદ જ થઈ જાય છે મૂર્તિપૂજા કરનાર પૂજારી અહિંસા  
ધર્મનો રક્ષક થઈ શકતો નથી અને બીજી રીતે તો તેને હિંસાનો દોષ જ  
આવે પડે છે આ રીતે બ્યારે પોતે ભગવાન પોતાના કેવલજ્ઞાનથી આ



एव लक्ष्याः समालोचिताः, इदानीमलक्ष्या उच्यन्ते—हिंसादौ जिनाज्ञाविरुद्धा प्रवृत्तिर्भवति लोकाना तस्मादधर्मा हिंसादय एव तस्य धर्मलक्षणस्यालक्ष्या भवन्ति।

धर्माधर्मस्वरूपबोधनाय हि भगवताऽऽवश्यमेव नाम-स्थापनाद्रव्यभावभेदेन चतुर्विधो निक्षेपः प्रदर्शितः । तत्र भाष्यकाराणां एव तीर्थकराणां सद्भावाद्

साक्षात् जानते हैं तो फिर वे ही मूर्तिपूजा करने की आज्ञा देंगे यह मान्यता आकाशपुष्पकी तरह सर्वथा असत्य ही है यह स्वयं समझने जैसी बात है जहाँ हिंसा है वहाँ धर्म नहीं है अहिंसामें ही सच्चा धर्म है ।

इस प्रकार धर्म के लक्षणभूत अहिंसा आदि का यहाँ तक विचार किया । अब उससे विपरीत हिंसादिकों का विचार करते हैं—

हिंसा आदि पाप हैं—इन में प्रवृत्ति करने की आज्ञा जिन भगवान ने नहीं दी है फिर भी जो प्रवृत्ति करते हैं वे उस आज्ञा से बहिर्भूत हैं । अतः जिनाज्ञा से विरुद्ध प्रवृत्ति होने से जीवों के लिये धर्म प्राप्ति के बदले इनसे अधर्म की ही प्राप्ति होती है । जिन से जीवों को अधर्म की प्राप्ति होती हो, वे स्वयं अधर्म हैं । हिंसादिक पापों में अधर्मता होने का कारण उनमें धर्म के लक्षण का अभाव है । इसीलिये ये धर्म के लक्षण के अलक्ष्य हुए हैं । इस धर्म और अधर्म के स्वरूप को समझाने के लिये भगवान ने आवश्यकसूत्र में नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव

વાતને સ્પષ્ટપણે પ્રત્યક્ષરૂપમાં જાણે છે તો પછી તેઓ જ મૂર્તિપૂજા કરવાની આજ્ઞા આપે એવી માન્યતા આકાશ પુષ્પની જેમ સંપૂર્ણપણે અસત્ય જ સિદ્ધ થાય છે આપણે પોતે પણ આ વાત સમજી શકીએ તેમ છીએ કે જ્યાં હિંસા છે ત્યાં ધર્મ નથી અહિંસામાં જ સાચો ધર્મ છે

આ રીતે ધર્મના લક્ષ્યભૂત અહિંસા વગેરે ને માટે અહીં સુધી વિચાર કરવામાં આવ્યો છે હવે આગળ તેથી વિરુદ્ધ હિંસા વગેરેની બાબતમાં વિચાર કરવામાં આવે છે—

હિંસા વગેરે પાપ છે—આમાં પ્રવૃત્ત થવાની આજ્ઞા જિન ભગવાનને કોઇને પણ આપી નથી છતાં જેઓ તેમાં પ્રવૃત્તિ કરે છે તેઓ તે આજ્ઞાથી બહિર્ભૂત છે એથી જિનાજ્ઞાની પ્રતિકૂળ પ્રવૃત્તિ હોવાથી જીવોને ધર્મ પ્રાપ્તિના સ્થાને એમનાથી અધર્મની જ પ્રાપ્તિ થાય છે જીવોને જેનાથી અધર્મની પ્રાપ્તિ થાય છે તે પોતે અધર્મ છે હિંસા વગેરે પાપોમાં અધર્મતા હોવાને લીધે તેઓમાં ધર્મના લક્ષણનો અભાવ છે એટલા માટે જ તેઓ ધર્મના લક્ષણથી અલક્ષ્ય થયા છે આ ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપને સમજાવવા ; ને

धर्मलक्षण, अन्यविधेष्ववश्यकेषु रागद्वेषहिंसादिदोषसद्भावेन मोक्षमार्गोपदेशे प्रवृत्तरय तीर्थंकररय चाऽऽज्ञाया अभावेन न तत्र धर्मलक्षण समनुगच्छति, तेषां मोक्षसाधकत्वाभावाज्जैनधर्मपद लब्धु-मनर्हत्वात् । तथाचोक्तमनुयोगद्वारे--

“से किं त नामावस्सय ? । नामावस्सयं जस्स ण जीवस्स वा अजीवस्स वा

के भेद से ४ चार निक्षेपों का कथन किया है उनमें नाम स्थापना और द्रव्यरूप धर्म निक्षेप के आराधन करने की भगवान ने जीवों को आज्ञा नहीं दी है वयो कि इनसे जीवों को धर्म की प्राप्ति नहीं होती है । धर्म की प्राप्ति कराने वाला केवल भाव निक्षेपरूप आवश्यक है । इसकी आराधना से ही जीवों को धर्म प्राप्त हुआ करता है-अतः इस में ही धर्मरूपता प्रकट की गई है चाकी के इसके अतिरिक्त निक्षेपों में-आवश्यकों में रागद्वेष और हिंसा आदि दोषों का सद्भाव होने से एव मोक्ष मार्ग के उपदेशप्रदान करने में प्रवृत्त तीर्थंकरों की इनके आराधन करने में आज्ञा का अभाव होने से धर्म के लक्षण का समन्वय ही नहीं होता है । मुक्ति का जो साधक होता है वही जैन-धर्म है । इन ३ निक्षेपरूप आवश्यकों में मुक्ति की साधकता का अभाव है-इसलिये ये जैनधर्म के पदको स्वप्न में भी प्राप्त नहीं कर सकते हैं ।

अनुयोगद्वार में यही बात कही गई है—

से किं त नामावस्सय ? नामावस्सय जस्स ण जीवस्स अजीवस्स वा

आवश्यकसूत्रमा नाम, स्थापना द्रव्य अने लावना भेदधी चार निक्षेपो नु कथन कथुं छे तेजोभा नाम, स्थापना, अने द्रव्यरूप धर्म निक्षेपने आराधवानी भगवाने जेवने आज्ञा आपी नथी केम के अभिनाथी जेवने धर्मनी प्राप्ति थती नथी धर्मनी प्राप्ति उरावनारे केवण लावनिक्षेपरूप आवश्यक छे जेनी आराधनाथी न जेवने धर्मनी प्राप्ति थाय छे जेथी आमा न धर्मरूपता अताववामा आवी छे जेना सिवायना जीव निक्षेपोमा-आवश्यकोमा-रागद्वेष अने हिंसा वगेरे दोषोने सद्भाव होवाथी अने मोक्ष मार्गना उपदेश आप वामा प्रवृत्त तीर्थंकरोनी अभिनी आराधना करवानी आज्ञाने अभाव होवाथी धर्मना लक्षणने समन्वय न थतो नथी मुक्तिने न साधक होय छे ते न जैन-धर्म छे आ उ निक्षेपरूप आवश्यकोमा मुक्तिनी साधकताने अभाव छे माटे जेजो जैन धर्मना पदने स्वप्नमाये भेजवा शके नेम नथी

अनुयोगद्वारमा जे न बात कहेवामा आवी छे—

से किं त नामावस्सय ? नामावस्सय जस्स ण जीवस्स अजीवस्स वा जीवाण वा

જીવાણ વા અજીવાણ વા તદુભયસ્મ વા તદુભયાણ વા આવસ્સપ્પત્તિ નામં કજ્જહ, સે ત નામાવસ્સય ।

અથ કિં તત્ નામાવશ્યક ? નામાદર્શયકં—યસ્ય સ્વલ્લુ જીવસ્ય વા અજીવસ્ય વા જીવાના વા અજીવાનાં વા, તદુભયસ્ય વા તદુભયેર્પા વા આવશ્યકમિતિ નામ ક્રિયતે તદેતન્નામાવશ્યકમ્ ।

“ સે કિં ત ઠવણાવસ્સય ? જણ્ણ કટ્ટકમ્મે વા પોત્થકમ્મે વા ચિત્તકમ્મે વા લેપ્પકમ્મે વા ગથિમે વા વેદિમે વા પૂરિમે વા સઘાદ્દમે વા અવસે વા વરાહણ વા એગો વા અણેગો વા સઘ્ભાવઠવણા વા અસઘ્ભાવઠવણા વા આવસ્સપ્પત્તિ ઠવણા ઠવિજ્જહ, સે ત ઠવણાવસ્સય ।

છાયા—અથ કિં તત્ સ્થાપનાવશ્યકમ્ ? સ્થાપનાવશ્યક યત્ સ્વલ્લુ કાષ્ઠકર્મ વા પુસ્તકર્મ વા ચિત્રકર્મ વા લેપ્પકર્મ વા ગ્રંથિમ વા વેદિમ વા પૂરિમ વા સઘ્ઘાતિમ વા જીવાણ વા અજીવાણ વા તદુભયસ્સ વા તદુભયાણ વા આવસ્સપ્પત્તિ નામ કજ્જહ સે ત નામાવસ્સય ।

સે કિં ત ઠવણાવસ્સય ? જણ્ણ કટ્ટકમ્મે વા પોત્થકમ્મે વા ચિત્તકમ્મે વા લેપ્પકમ્મે વા ગથિમે વા વેદિમે વા પૂરિમે વા સઘાદ્દમે વા અવસે વા વરાહણ વા એગો વા સઘ્ભાવઠવણા વા અસઘ્ભાવઠવણા વા આવસ્સપ્પત્તિ ઠવણા ઠવિજ્જહ, સે ત ઠવણાવસ્સય

ભાવાર્થ—જીવ, અજીવ અથવા તદુભય સ્વરૂપ આદિ પદાર્થોં મેં “ યહ આવશ્યક હૈ ” હસ પ્રકાર નામ સસ્કાર કરના વહ જીવ અજીવ આદિ નામ આવશ્યક હૈ હસ નામ આવશ્યક મેં આવશ્યક કે વાસ્તવિક ગુણાદિ કુછ મી નહીં હોતે હૈં—સિર્ફ લોક વ્યવહાર કે લિયે હી હસ પ્રકાર કી વહા પર નિક્ષેપવિધિ કરલી જાતી હૈ કાષ્ઠ, પુસ્તક ચિત્ર

અજીવાણ વા તદુભયસ્સ વા તદુભયાણ વા આવસ્સપ્પત્તિ નામ કજ્જહ સે ત નામાવસ્સય ।

સે કિં ત ઠવણાવસ્સય ? જણ્ણ કટ્ટકમ્મે વા પોત્થકમ્મે વા ચિત્તકમ્મે વા લેપ્પકમ્મે વા ગથિમે વા વેદિમે વા પૂરિમે વા સઘાદ્દમે વા અવસે વા વરાહણ વા એગો વા અણેગો વા સઘ્ભાવઠવણા વા અસઘ્ભાવઠવણા વા આવસ્સપ્પત્તિ ઠવણા ઠવિજ્જહ, સે ત ઠવણાવસ્સય ।

ભાવાર્થ—જીવ, અજીવ અથવા તદુભય સ્વરૂપ વગેરે પદાર્થોંમા “ આ આવશ્યક છે ” આ રીતે નામ સસ્કાર કરવો ને જીવ અજીવ વગેરે ‘ નામ આવશ્યક ’ છે આ નામ આવશ્યકમા આવશ્યક ના વાસ્તવિકગુણ વગેરે કુછ જ હોતા નથી ફક્ત લોકવ્યવહાર ના માટે જ આ જાતની લા નિક્ષે

વા અક્ષ વા ચરાટક વા એકો વા અનેકો વા સદ્ભાવસ્થાપના વા અસદ્ભાવસ્થાપના વા 'આવશ્યક'—મિતિ સ્થાપના સ્થાપ્યતે, તદેતત્ સ્થાપનાવશ્યકમ્ ।

ભાવાવશ્યકસ્વરૂપશૂન્યે ગોપાલદારકાદૌ આવશ્યકેતિ નામકરણે નામના-  
નામમાત્રેણાવશ્યક નામાવશ્યક ગોપાલદારકાદિર્ભવતિ । સ્થાપનાઽપિ ભાવાવશ્યક

एव अक्ष-शतरज की गोटी आदि में एक अथवा अनेक आवश्यक क्रिया करने वाले श्रावक आदि का तदाकार अथवा अतदाकार लिखित चित्र स्थापना आवश्यक (निक्षेप) है यह स्थापना दो प्रकार की है एक सद्भाव स्थापना और २ दूसरी असद्भावस्थापना । सद्भाव स्थापना में जिसकी स्थापना की जाती है उसकी सर्व आकृति कोतरी रहती है असद्भूत स्थापना में इस प्रकार की आकृति आदि नहीं रहती है वहां पर केवल श्रवक ही है जैसे शतरज की गोटिया में यह प्यादा है यह घजीर है, यह हाथी है इत्यादि मिर्फ कल्पना ही कल्पना रहती है—वहां उनका कोई भी आकार कोतरा नहीं रहता है । नाम निक्षेप में जिस प्रकार भाव आवश्यक शून्यता रहती है उसी प्रकार स्थापना में भी यही बात रहती है किसी गोपाल (गुवालिचे) के लड़के का "आवश्यक" इस प्रकार का नाम जिस प्रकार भाव आवश्यक रहित नाम निक्षेप में है उसी प्रकार भाव आवश्यक के स्वरूप से शून्य स्थापना निक्षेप में भी "यह आवश्यक है" यह स्थापना निक्षेप है ।

આવે છે, કાષ્ઠ, પુસ્તક, ચિત્ર અને અક્ષ-શતરજ ની સોગઠી વગેરેમાં એક કે અનેક આવશ્યક ક્રિયા કરનાર શ્રાવક વગેરેનું તદાકાર કે અતદાકાર લેખિત ચિત્ર-સ્થાપન આવશ્યક (નિક્ષેપ) છે આ સ્થાપના બે પ્રકારની છે એક સદ્ભાવ સ્થાપના અને બીજી અસદ્ભાવ સ્થાપના સદ્ભાવ સ્થાપનામાં જેની સ્થાપના કરવામાં આવે છે તેની આકૃતિ સંપૂર્ણપણે કોતરેલી હોય છે અસદ્ભૂત સ્થાપનામાં આ બાતની આકૃતિ વગેરે રહેતી નથી ત્યાં ફક્ત શ્રવક જ છે જેમ શતરજની સોગઠીઓમાં આ પાયદળ છે, આ વજીર છે, આ હાથી છે વગેરે ફક્ત કોરી કલ્પના જ હોય છે તેમાં તેમની કોઈપણ બાતની આકૃતિ કોતરેલી હોતી નથી નામ નિક્ષેપમાં જેમ ભાવ આવશ્યક શૂન્યતા રહે છે તેમજ સ્થાપનામાં પણ એ જ વાત હોય છે કોઈ ગોવાળિયાના પુત્રનું 'આવશ્યક' આ બાતનું નામ જેમ ભાવ આવશ્યક રહિત નામ નિક્ષેપમાં છે તે પ્રમાણે જ ભાવ આવશ્યકતા સ્વરૂપથી શૂન્ય સ્થાપના નિક્ષેપમાં પણ "આ આવશ્યક છે" આ સ્થાપના નિક્ષેપ છે

સ્વરૂપશૂન્યે કાષ્ઠકર્માદૌ ક્રિયતે । અતો મા-શૂન્યે ત્રિયમાણત્વાદિશેષાદનયો  
નાસ્તિ કથિદ્ ભેદ इत्याशयेनाह—

“નામઢવણાણ કો પડવિસેસો ? । છાયા-નામરથાપનયોઃ યઃ પ્રતિવિશેષઃ ? ।  
અત્રોત્તરમુચ્યતે—

‘નામ આવકહિઅ, ઠવણા ઇત્તરિઆ ઘા હોજ્જા આવકહિઆ યા ’ ॥ છાયા-  
નામ-યાવત્કથિક, સ્થાપના-ઇત્તરિકા યા ભવેદ્ યાવત્કથિકા ઘા ।

‘ નામ આવકહિય ’ નામ યાવત્કથિક-સ્વાશ્રયદ્રવ્યસ્યાસ્તિત્વકથા યાવ  
દનુવર્તતે इत्यर्थः, સ્થાપના તુ ‘ ઇત્તરિયા યા ’ ઇત્તરિકા યા સ્વલ્પકાલસ્થાયિની  
યા ‘ હોજ્જા ’ સ્યાત્, યાવત્કથિકા યા, અય ભાવઃ—કાચિત્-સ્થાપના સ્વાશ્રય  
દ્રવ્યસ્ય સદ્ભાવેऽपि, મધ્યકાલ એવ નિવર્તતે, કાચિત્-તત્સત્તા યાવદ્ પ્રતિષ્ઠતે

શકા—જિસ પ્રકાર ભાવ આવશ્યક કે સ્વરૂપ સે શૂન્ય ગાપાલ કે  
લઢકે આદિ મેં “ આવશ્યક ” હસ પ્રકાર કા નામનિશેષરૂપ આવશ્યક  
હે હસી પ્રકાર ભાવ આવશ્યકકે સ્વરૂપસે શૂન્ય કાષ્ઠધર્મ આદિકોં મેં મી  
ઘહી ઘાત હે । અતઃ ભાવ આવશ્યકકે સ્વરૂપકી શૂન્યતાકી અપેક્ષા સે  
હન દોનોમેં કોઈ મી અન્તર નહી હે । તો ફિર હન દોનોમેં કયા ભેદ હે !

ઉત્તર—“નામ આવકહિય ઠવણા ઇત્તરિયા યા હોજ્જા આવકહિઆ-  
યા ” હસ પ્રકાર કી શકા ઠીક નહીં—કયોં કિ નામ યાવત્કથિત હોતા  
હે સ્થાપના ઇત્તરિકા ઓર યાવત્કથિક દોનોં પ્રકાર કી હોતી હે । અપને  
આશ્રયભૂત દ્રવ્યકા જવતક અસ્તિત્વ-સદ્ભાવ રહતા હે તવતક નામનિ  
શેષ રહતા હે ! ઇત્તરિકા શબ્દ કા અર્થ અલ્પકાલીન હે ચિત્ર એવ અક્ષ  
આદિકોં મેં ઘહ સ્થાપના અલ્પકાલીન હોતી હે । હસ પ્રકાર નામ ઓર

શકા—એમ ભાવ આવશ્યકના સ્વરૂપથી શૂન્ય ગોવાળિયાના પુત્ર વગે  
રેમા “ આવશ્ય ” આ જાતનુ નામ નિશેષ રૂપ આવશ્યક છે તેમજ ભાવ  
આવશ્યકના સ્વરૂપથી શૂન્ય કાષ્ઠકર્મ વગેરેમા પણ એ જ વાત છે એથી ભાવ  
આવશ્યકના સ્વરૂપની શૂન્યતાની દૃષ્ટિએ આ બનેમા કોઈ પણ જાતનો તફાવત  
નથી, ત્યારે આ બનેમા ભેદ શો છે ?

ઉત્તર—( નામ આવકહિય ઠવણા ઇત્તરિયા યા હોજ્જા આવકહિઆ યા )  
શકા યોગ્ય નથી કેમકે નામ યાવત્ કથિત હોય છે સ્થાપના ઇત્તરિકા અને  
યાવત્કથિત બને પ્રકારની હોય છે પોતાને આશ્રયભૂત દ્રવ્યનુ જથ્થા સુધી સદ્  
‘ ભાવ-અસ્તિત્વ રહે છે ત્યા લગી નામ નિશેષ રહે છે । ઇત્તરિકા શબ્દનો અર્થ  
અલ્પકાલીન છે ચિત્ર અને અક્ષ ( રમવાના પાસા ) વગેરેમા એ સ્થાપના  
અલ્પકાળ માટે હોય છે આ રીતે નામ અને સ્થાપનામા



इति । एव च—नामस्थापनयोर्भाष्यशून्यत्वेनाधारसाम्येऽपि भेदः स्वस्वावस्थानकाल-  
कृत एव भगवता प्रदर्शित । यद्यपि गोपालदारकादौ विद्यमानेऽपि कदाचिद-  
नेकनामपरिवर्तन लोके कचिद् दृश्यते, तथा च कालकृतोऽपि भेदो नास्ति,  
तथापि—उद्गुशः स्थले नाम्नो यावत्कथिक्तत्वमेव दृश्यते, नाम्नः परावर्तन तु  
क्वचिद्विरलतयोपलभ्यते । अतोऽल्पस्थलव्यापित्वेन नाम्न इत्वरिकता भगवता  
न विरक्षिता । नाम्नोऽल्पकालिकताकल्पने तृप्सुत्रप्ररूपणापत्तिरिति बोध्यम् ।

स्थापनामें भावनिक्षेपकी शून्यताकी अपेक्षासे समानता आती है तो भी  
अपने२ कालकी अपेक्षासे इनमें हम प्रकार भेद—अन्तर माना गया है ।

शका—नामनिक्षेप में जो यावत्कथिकता प्रदर्शित की गई है, वह  
ठीक नहीं है—कारण कि हम देखते हैं नामवान् द्रव्य—गोपालदारक  
आदि के विद्यमान रहते हुए भी उस में अनेक नामों का परिवर्तन  
होता रहता है । कभी उसका “आवश्यक” यह नाम होता है, तो  
“इन्द्र” यह नाम रख लिया जाता है । फिर “आवश्यक” इस नाम  
निक्षेप में यावत्कथिकता कैसे आ सकती है ?

उत्तर—शका ठीक है इस प्रकार से विचार करने पर कालकृत  
अन्तर यद्यपि उन दोनों में नहीं मालूम होता है—तौ भी इस बात की  
यहां पर विवक्षा नहीं है इसका कारण यही है कि यह नामपरिवर्तन  
अल्पस्थलवर्ती होनेसे व्याप्य है । यह बात सब जगह नहीं होती । कहीं  
२ ही होती है यहा सामान्यकथन है—विवक्षे नहीं । सामान्यरूप से नाम

શૂન્યતાની અપેક્ષાથી સમાનતા આવી જાય છે, છતાંયે પોતપોતાના કાળની  
અપેક્ષાથી તેઓમા આ જાતનો ભેદ અન્તર માનવામા આવ્યો છે

શકા—નામ નિક્ષેપમા જે યાવત્કથિકતા જતાવવામા આવી છે, તે ઉચિત  
નથી કારણ કે નામવાળુ ગોપાલદારક વગેરેના વિદ્યમાન રહેતા પણ તેમા  
અનેક નામોનુ પરિવર્તન થતુ રહે છે કોઈ વખતે તેનુ નામ ‘આવશ્યક’  
રાખવામા આવે છે તો કોઈ વખત ‘ઇન્દ્ર’ નામ રાખવામા આવે છે તો  
પછી ‘આવશ્યક’ આ નામ નિક્ષેપમા યાવત્કથિત કેવી રીતે આવી શકે છે ?

ઉત્તર—શકા ઉચિત છે આ રીતે વિચાર કરવાથી જો કે કાળકૃત અન્તર  
તેઓ જાનેમા જણાતુ નથી છતાંયે આ વાતની અહીં વિવક્ષા નથી એનુ  
કારણ આ પ્રમાણે છે કે આ નામ પરિવર્તન અલ્પ—સ્થલવર્તી હોવાથી વ્યાપ્ય  
છે, આ વાત બધે સ્થાને હોતી નથી કોઈક કોઈક સ્થાને જ હોય છે અહીં

યત્ત-ઉપલક્ષણમાત્ર ચેદ ધાલમદનૈતયોર્ભેદકવનમ્-અપરસ્યાપિ વદુમકાર-  
ભેદસ્ય સમ્ભવાત્, ઇત્યુક્ત, તદુત્તમ્નપ્રસ્થાપનમ્ યથોત્તમ્નપ્રસ્થાપનમિયાનામનિક્ષેપે  
ઇત્વરિકતાયા. વચિત્ સમવેડપિ મગરતાડુક્તયાદુપલક્ષણમિતિ ન સ્વીકૃત તથૈવ  
સ્થાપનાયા કાલાતિરિક્તસ્ય ભેદહેતોઃ કલ્પનેડપ્યુત્તમ્નપ્રસ્થાપન પ્રસજ્યેત કાલાન્યકૃત

યાવત્કથિક હી હોતા હૈ । હસી અપેક્ષા કો લક્ષ્ય મેં રલ્લકર મગવાન ને  
ઁસમે ઇત્વરિકતા કા કવન ન કર કેવલ યાવત્કથિકતા કા હી કથન  
કિયા હૈ યદિ નામ મેં જો કેવલ ઇત્વરિકતા હી માની જાવેગી-તો યહ  
લાત સિદ્ધાન્ત સે યહિર્ભૂત હોને સે માનને લાલે કે લિયે ઉત્તમ્નપ્રસ્થાપના  
કરને કી આપત્તિ કા દોષ આવેગા-કયોં કિ શાસ્ત્ર મેં મગવાન ને નામ  
નિક્ષેપ મેં કેવલ યાવદ્રવ્ય મલિતા હી પ્રદર્શિત કી હૈ ।

જો વ્યક્તિ હસ શકા કા ડસ પ્રકાર સે સમાધાન કરતે હૈં કિ  
“ કાલ કે ભેદ સે જો નામ ઔર સ્થાપના મે ભેદ કહા ગયા હૈ વહ  
કેવલ ઉપલક્ષણ માત્ર હૈ-હસસે અન્ય અનેક પ્રકારોં સે મી હન દોનોં મેં  
પરસ્પર ભેદ હૈ યહ લાત જાની જોતી હૈ ” સો ઁનકા યહ કથન શાસ્ત્ર-  
મર્યાદા કે વિરુદ્ધ હૈ જિલ પ્રકાર નામ નિક્ષેપ મેં કહી ૨ ઇત્વરિકતા  
હોને પર મી મગવાન દ્વારા સ્વીકૃત ન હોને સે વહ ઉપલક્ષણરૂપ સે  
સ્વીકૃત નહીં કી ગઈ હૈ-ઁસી પ્રકાર સ્થાપના મેં મી કાલકૃત ભેદ કે

સામાન્ય કથન છે વિશેષ નહિ સામાન્ય રૂપથી નામ યાવત્ કથિત જ હોય  
છે આ લાતને સામે રાખીને જ ભગવાને તેમા ઇત્વરિકતાનુ કથન ન કરતા  
ફક્ત યાવત્કથિકતાનુ કથન કર્યું છે જે નામમા ફક્ત ઇત્વરિકતા જ માનવામા  
આવશે તો આ લાત સિદ્ધાન્તની ખડાર હોલાથી માનનાર માટે ઉત્તમ્ન પ્ર  
પણા કરવા રૂપ દોષ આવશે કેમકે શાસ્ત્રમા ભગવાને નામ નિક્ષેપમા ફક્ત  
યાવદ્-દ્રવ્ય-ભાલિતા જ બતાવી છે

જે માણસો આ શકાનુ સમાધાન આ પ્રમાણે કરે છે કે “ કાલના  
લેહથી જે નામ અને સ્થાપનામા તલ્લાવત બતાવવામા આવ્યો છે તે ફક્ત  
ઉપલક્ષણ માત્ર છે એથી ખીજા અનેક પ્રકારોથી પણ આ બનેમા પરસ્પર  
તલ્લાવત છે આ લાત સ્પષ્ટ થાય છે ” જેથી તેમનુ આ કહેલું શાસ્ત્ર-મર્યાદાથી  
વિપરીત છે જેમ નામ-નિક્ષેપમા કોઈક કોઈક ઠેકાણે ઇત્વરિકતા હોવા છતાયે  
ભગવાન વડે સ્વીકૃત ન હોલાથી તે ઉપલક્ષણ રૂપથી સ્વીકારવામા આવી નથી,  
તેમ સ્થાપનામા પણ કાલકૃત ભેદ સિવાય ખીજા વડે

ભેદસ્ય ભગવતાઽનુક્તત્વાત્ । एतेन-“ यत् कैश्चिदुक्तं यथा प्रतिमा रूपस्थापनादर्शनाद् भावः समुल्लसति नैव नामश्रवणमाणादिति नामस्थापनयोर्भेदः, यथा चेन्द्रादेः प्रतिमारूपस्थापनाया, लोकास्योपयाचितेच्छा पूजाप्रवृत्ति समीहितलाभादयो-दृश्यन्ते, नैव नामेन्द्रादौ, इत्यपि तयोर्भेदः । एवमन्यदपि प्राच्यमिति तदुत्सृજप्ररू

સિવાય અન્ય દ્વારા અન્તર ભેદ માનને મેં ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા કરને કા દોષ આતા હૈ, કારણ કિ ભગવાન ને કાલકૃત ભેદકે સિવાય સ્થાપના નિક્ષેપ મેં અન્ય ઓર કિસી દૂસરી અપેક્ષા સે ભેદ કા કથન નહીં કિયા હૈ ઇસ પ્રકાર કે કથન સે “યહ વાત બી જો દૂસરોં ને કહી હૈ કિ નામ ઓર સ્થાપના મેં ઇસ પ્રકાર સે બી ભેદ હૈ-કિ “જિસ પ્રકાર અર્હત કી પ્રતિમારૂપસ્થાપના કે દેવને-દર્શન કરને સે ભાવોં કી જાગૃતિ હોતી હૈ, ડસ પ્રકાર નામ નિક્ષેપરૂપ અર્હત નામ કે સુનને સે ભાવોં કી જાગૃતિ નહોં હોતી હૈ । અથવા-ઇન્દ્રાદિક કી પ્રતિમારૂપ સ્થાપના મેં જિસ પ્રકાર સે લૌકિકજનોં કી ડસ પ્રતિમા સે છુઝ માગને કી ઇચ્છા ડરૂકે પૂજન કરને કી ભાવના ઓર ડસ પ્રતિમા દ્વારા ડનકે અભિલપિત મનોરથોં કી પૂર્તિ હોતી હુઈ દેખી જાતી હૈ ડસ પ્રકાર નામરૂપ ઇન્દ્ર મેં ડનકી ઇસ પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિ ઓર અભિલપિત મનોરથો કી પૂર્તિ હોતી હુઈ નહોં દેખી જાતી હૈ । ઇસી તરહ ઓર બી ઁસી કઈ વાને હૈં જો નામ ઓર સ્થાપના મેં અન્તર કરાતી હૈ । યહ સવ કાલકૃત ભેદ કે સિવાય

ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણ રૂપ દોષ થઈ જાય છે કારણ કે ભગવાને કાલકૃત ભેદ સિવાય સ્થાપના નિક્ષેપમા બીજી કોઈ અન્ય દૃષ્ટિએ ભેદ-કથન કર્યું નથી આ જાતના કથનથી “આ વાત પણ જે બીજાઓએ કહી છે કે નામ અને સ્થાપનામા આ રીતે પણ તફાવત છે કે “જેમ અર્હતની પ્રતિમા રૂપ સ્થાપનાને લેવા એટલે કે દર્શન કરવાથી ભાવોની જાગૃતિ થાય છે, તેમ નામ નિક્ષેપ રૂપ અર્હતના નામને સાંભળવાથી પણ ભાવોની જાગૃતિ હોતી નથી અથવા તે ઇન્દ્ર વગેરેની પ્રતિમા રૂપ સ્થાપનામા જેમ લૌકિક માણુઓની તે પ્રતિમાથી કંઈક માગણી કરવાની ઈચ્છા, તેની પૂજા કરવાની ભાવના અને તે પ્રતિમા વડે તેમના અભિલપિત મનોરથોની પૂર્તિ થતી દેખાય છે તેમ નામ રૂપ ઇન્દ્રમા તેમની આ જાતની પ્રવૃત્તિ અને અભિલપિત મનોરથોની પૂર્તિ થતી લેવામા આવતી નથી આ પ્રમાણે બીજી પણ ઘણી બાબતો છે જે નામ અને સ્થાપનામા અતર કરાવે છે.

પણા જનિતાનન્તસમારજનકમ્ । આગમે યદિદમુચ્યતે—“ તદ્વાચ્ચાણ અરહતાણ ભગવતાણ નામગોયસવળયાણ મહાફલં ।” ઇતિ, તત્ર નાસ્તિ નામનિક્ષેપસ્ય વિષયઃ । “ અરહતાણ ભગવતાણ ” ઇત્યુક્ત્યા તસ્મિન્નર્થે પ્રયુક્તસ્ય નામ્ન ઇત્ર શ્રવણેન મહા ફલસમવાત્, ગોપાલદારકાદૌ પ્રયુક્તસ્ય નામ્ન શ્રવણેન તુ ગોપાલદારકાદર્થ સ્યૈવ વોધાદાત્મપરિણામધુદ્ધિહેતુત્વ તસ્ય નાસ્તીતિ । નામનિક્ષેપસ્થલે ભગવતોઽ ઈતઃ સ્મરણાસમવ., તસ્ય ભાવરૂપ્યત્વાત્, અત્ર તુ નામગોત્રાભ્યા મગવદર્હતઃ સમ્બન્ધ પઠ્યન્તપદપ્રયોગાદેવ દર્શયતા ભગવતા નામનિક્ષેપો ન વિવક્ષિતઃ । ભાવજિન

નામ ઓર સ્થાપના મેં ભેદ કત્પના કા કથન ઉત્સૂત્ર પ્રલપક રોને સે અનન્ત સસાર કા જનક હૈ અતઃ હેય હૈ । “ તદ્વાચ્ચાણ અરહતાણ ભગવતાણ નામગોયસવળયાણ મહાફલ ” આગમ મેં જો યહ સૂત્ર લિખા હુઆ દેખા હૈ ઉસકા અભિપ્રાય નામનિક્ષેપ પરક નહીં હૈ । અર્થાત્-હસ સૂત્ર સે નામ નિક્ષેપ કી પુષ્ટિ નહીં હોતો હૈ । યદિ સૂત્રકાર કો હસ સૂત્ર સે જો નામનિક્ષેપ કી પુષ્ટિ કરના ઇષ્ટ હોતા તો “ અરહતાણ ભગવ તાણ હસ પદ કે સ્વતન્ત્ર દેને કી કોઈ યાસ આવશ્યકતા નહી થીં । અતઃ યહ યાન માનની ચાહિયે કિ અરહત ભગવાન કે હી નામગોત્ર કે શ્રવણ સે મહાફલ હોતા હૈ । કિસી ગોપાલ કે લડકે મેં નિક્ષિપ્ત “ અરહત ” હસ નામ કે સુનને સે નહીં । ઉસ મેં પ્રયુક્ત મી ઉસ નામ કે શ્રવણ સે તો કેવલ ઉસ ગોપાલ દારકરૂપ અર્થ કા હી વોધ હોતા હૈ । “ અરહત ” યહ નામ જિસરૂપ કે સકેત સે અરિ-

આ બધુ કાલકૃત લેહ સિવાય નામ અને સ્થાપનામા લેહ કલ્પનાનુ કથન ઉત્સૂત્ર પ્રલપક હોવાથી અનત સસારનુ જનક છે એથી ત્યાજ્ય છે “ તદ્વાચ્ચાણ અરહતાણ ભગવતાણ નામ ગોયસવળયાણ મહાફલં ” આગમમા જે આ સૂત્ર મળે તેનો અભિપ્રાય નામનિક્ષેપપરક નથી એટલે કે આ સૂત્ર વડે નામ નિક્ષેપ-પુષ્ટિ થતી નથી જે સૂત્રકારને આ સૂત્ર વડે નામ-નિક્ષેપની પુષ્ટિ કરવું ઇષ્ટ લાગતુ હોત તો “ અરહતાણ ભગવતાર્ણ ” આ પદને સ્વતન્ત્ર રૂપમા મૂકવાની કોઈ ખાસ આવશ્યકતા હતી નહિ એથી આ વાત માની લેવી જોઈએ કે અરહત ભગવાનના નામ ગોત્ર-શ્રવણથી મહાફળ પ્રાપ્ત હોય છે કોઈ ગોપાળના પુત્રમાં નિક્ષિપ્ત “ અરહત ” આ નામને સાભળવાથી નહિ તેમા પ્રયુક્ત પણ તે નામના શ્રવણથી તો ફક્ત તે ગોપાળના પુત્ર રૂપ અર્થ-નો જ વોધ હોય છે “ અરહત ” આ નામ જે રૂપના સકેતથી અનિહિત પ્રભુમા સકેતિત થયુ છે-તે રૂપના સકેતથી જ ગોપાળના

હંત પ્રભુ મેં મકેતિત હુઆ હૈ-ઉસી રુપ સે સકેત સે ગોપાલ કે પુત્ર મેં મકેતિત નહીં હુઆ હૈ । લૌકિક વ્યવહારકે લિયે હી કેવલ “અરહત” યેસા ઉસકા નામ કરલિયા ગયા હૈ । નામ નિક્ષેપ મેં જિસકા નિક્ષેપ કિયા જાતા હૈ ઉસ જાતિ કે દ્રવ્ય, ગુણ ઓર કર્મ-ક્રિયા આદિ નિમિત્ત કી અનપેક્ષા રહતી હૈ હમ નિમિત્ત કે સદ્ભાવ મેં વહ નામ નિક્ષેપ કા વિષય નહીં માના જાતાહૈ । ભાવ નિક્ષેપ કા હી વહ વિષય હોતા હૈ અતઃ યહ નિશ્ચિત હોતા હૈ કિ અરહત ભગવાન કે હી નામ ગોત્ર કે શ્રવણ કે મહાફલ સૂત્રકાર ને પ્રકટ કિયાહૈ યદિ નામનિક્ષેપ સે યહ ફલ પ્રાપ્ત હોને લગતા તો ફિર ભાવનિક્ષેપ કી આવશ્યકતા હી કયા થી । ઉસકે શ્રવણ માત્ર સે હી જીવોં કે આત્મિક ભાવોં મેં શુદ્ધિરુપ મહાફલ કા લાભ હોને લગતા । તથા જિસકા “અરિહત” યહ નામ હૈ વહ સ્વયં અરિહત પ્રભુ કી તરહ મહાપવિત્ર, ૩૪ અતિશયોં સહિત ૮ પ્રાતિહાર્ય આદિ વિભૂતિ સપન્ન હો જાના । પરન્તુ ઇંસા નહીં હોતા હૈ અતઃ યહ માનના ચાહિયે કિ યહ સૂત્ર ભાવનિક્ષેપ કી હી પુષ્ટિ વિધાયક હૈ-નામનિક્ષેપ કા નહીં । નામનિક્ષેપ સે ભગવાન અરિહત કી સ્મૃતિ ભી નહીં કરાઈ જાતી હૈ-કારણ કિ વહ નામનિક્ષેપ સ્વયં ઉસ પ્રકાર કે ભાવોં સે શૂન્ય હૈ । અનુભૂત પદાર્થ કી સ્મૃતિ હુઆ કરતી

થયુ નથી લૌકિક વ્યવહાર માટે કૃત “અરહત” આવુ નામ પાડવામા નામનિક્ષેપમા જેનો નિક્ષેપ કરવામા આવે છે તે જાતિના દ્રવ્ય, ગુણ અને કર્મ-ક્રિયા વગેરે નિમિત્તની અપેક્ષા રહે છે આ નિમિત્તના મહાભાવમા તે નામ-નિક્ષેપનો વિષય માનવામા આવતો નથી ભાવ નિક્ષેપનો જ તે વિષય હોય છે એથી એ મિદ્ધ થાય છે કે અરહત ભગવાનના જ નામ ગોત્રના શ્રવણથી જ સૂત્રકારે મહાફળ બતાવ્યું છે જો નામનિક્ષેપથી આ ઋણ મળી શક્યુ હોત તો પછી ભાવનિક્ષેપની આવશ્યકતા જ, શી હતી ? તેના શ્રવણ માત્રથી જ જીવોની આત્મિક ભાવોમા શુદ્ધિ રૂપ મહાફળનો લાભ થવા માડતો તેમજ જેનુ “અરિહત” આ નામ છે તે પોતે અરિહત પ્રભુની જેમ મહા પવિત્ર, ૩૪ અતિશયો સહિત, ૮ પ્રાતિહાર્ય વગેરે વિભૂતિઓથી સપન્ન થઈ જાત, પણ આવું થયુ નથી એથી એમ સમજી લેવુ જોઈએ કે આ સૂત્રથી ભાવનિક્ષેપની જ પુષ્ટિ થાય છે-નામ નિક્ષેપની નહિ નામ નિક્ષેપથી ભગવાન અરિહતની સ્મૃતિ પણ કરવામા આવતી નથી કારણ કે તે નામ-નિક્ષેપ જાતે તે જાનના ભાવોથી રહત છે અનુભૂત પદાર્થનુ સ્મરણ થયા કરે છે જેનુ



હે जिसका “अरिहंत” यह नाम रखा गया है उसके देने से अरिहंत की स्मृति हो भी कैसे सकती है-स्मृति तो अरिहंत की जब हो सकती कि जब उसमें उनकी स्मृति के बिहू होते-वह स्वयं उस प्रकार के हेतु हो सकती है माना कि श्रवण कर्त्ता शास्त्र आदिको में अरिहन्प्रभु के गुणों का वर्णन पढ़कर चित्त में उकेर कर भले ही “अरिहंत” हम नामके श्रवण से उनका स्मरण कर सकता है। परन्तु गोपालदारकादी में कृत् नाम से उनका स्मरण उसे नहीं हो सकता-उस नाम से तो उसमें ही संकेतित उस शब्द से उस गोपाल दारूप अर्थ का ही उसे बोध होगा। यदि अरिहंत नाम के सुनने से सुनने वाले को अरिहंत पदार्थ का भान होता है तो वह नाम निक्षेप का विषय नहीं माना गया है भावनिक्षेप का ही वह विषय है। थोड़ा बहुत भी किसी अपेक्षा से सादृश्य होने पर एक पदार्थ को देखकर सदृश दूसरे पदार्थ का स्मरण हो जाता है परन्तु प्रकृत में गोपालदारूप अरिहंत नामनिक्षेप में ऐसा कौन सा सादृश्य है जो वह अरिहंत का स्मरण करा सके। अतः नाम और गोत्र के साथ साक्षात् भगवान् अरिहंत का सब प्रपञ्ची विभक्ति द्वारा प्रदर्शित करने वाले सूत्रकार ने इस सूत्र में नामनिक्षेप का कोई

“अरिहंत” આ નામ રાખવામાં આવ્યું છે તેને જોવાથી અરિહંત સ્મૃતિ પણ કેવી રીતે થઈ શકે તેમ છે? સ્મૃતિ તો અરિહંતની ત્યારે જ થઈ શકે કે ત્યારે તેમાં તેમની સ્મૃતિના બિહૂ હોય, તે પોતે આ જાતના ભાવોથી રહિત થયેલો હોય ત્યારે તે કેવી રીતે તેમની સ્મૃતિનું કારણ થઈ શકે છે? આ વાત આપણે સ્વીકારી રાખીએ તેમ છીએ કે શ્રવણ-કર્તા શાસ્ત્ર વગેરેમાં અરિહંત પ્રભુના ગુણોનું વર્ણન વાંચીને ચિત્તમાં ધારણ કરીને ભવે ‘અરિહંત’ આ નામના શ્રવણથી તેમનું સ્મરણ કરી શકે છે પણ ગોપાળદારક વગેરેમાં કૃત નામથી તેનું સ્મરણ થઈ શકતું નથી તે નામ વડે તો તેમાં જ સંકેતિત તે શબ્દથી તે ગોપાળદારક રૂપ અર્થનો જ તે બોધ થશે જો અરિહંત નામ શ્રવણથી સાંભળનારને અરિહંત પદાર્થનું જ્ઞાન થાય છે ત્યારે તે નામનિષેપનો વિષય માનવામાં આવ્યો નથી ભાવનિષેપનો જ તે વિષય છે કોઈ પણ રીતે થોડું પણ સરખાપણું હોવાથી એક પદાર્થને જોઈને તેના સરખા ખીજ પદાર્થનું સ્મરણ થઈ જાય છે પણ પ્રકૃતમાં ગોપાળદારક રૂપ અરિહંત નામનિષેપમાં એવું કંઈ જાતનું સરખાપણું છે કે જે તે અરિહંતનું સ્મરણ કરાવી શકે? એથી નામ અને ગોત્રની સાથે સાક્ષાત્ ભગવાન અરિહંતનો સબધ પછી વિવક્ષિત વડે દર્શાવનારા સૂત્રકારે આ સૂત્રમાં નામનિષેપનો કોઈ પણ વિષય પ્રતિપાદિત કર્યો નથી

બોધકસ્ય નામ્ન એવ શ્રવણેન મહાકલમમયઃ । એવ સ્થાપનાપિ ભાવરૂપાર્થશૂન્યા,  
સ્થાપનયા ભાવરૂપાર્થસ્ય નાસ્તિ કોઽપિ મમ્યન્ય । ભાવજિનશરીરવર્તિની યાઽઽ-  
કૃતિરામીત્ , તસ્યા આશ્રયાશ્રયિમાભ્યવમ્યન્યો ભાવજિનેન સદ્ તદાની વિશ્ર-  
માન આસીન । ય યા ભાવજિન પદ્યાસ્તદાની ભાવોહ્યાસોઽપિ કસ્યચિત્ સજાતઃ,

भी विषय प्रतिपादित नहीं किया है । भावनिक्षेप का ही विषय इसमें कहा है इसलिये भावजिन का बोध कराने वाले जिन 'अरिहत' आदि नामों के सुनने से ही महाकल होता है ऐसा मानना चाहिये ।

इसी प्रकार स्थापना निक्षेप भी भावरूप अर्थ से शून्य है कारण कि इसका उसके साथ कोई सम्बन्ध नहीं है भावजिन की अवस्था की आकृति पापाण आदि की मूर्ति में “ यह वही है ” इस प्रकार की कल्पना करने का नाम स्थापना है तीर्थंकर प्रकृति के उदयसे सम्बन्ध रणादि विभूति सहित आत्मा का नाम भाव जिन है इस भाव जिन के शरीर की जो आकृति है उसका सम्बन्ध विचारिये उस पापाण आदि की प्रतिमा में कैसे आसक्तता है । क्योंकि इस आकृति का सम्बन्ध आश्रय आश्रयी भावसे वे जिन जिसकाल में थे उसी काल में उनके साथ या । उनके नहीं रहने पर पापाण आदि में इस तरह का आश्रय आश्रयी भाव सम्बन्ध मानना उचित कैसे कहा जा सकता है, भावजिन के सङ्घात में जिम्मे प्रकार उनके साक्षात् दर्शन से प्राणियों को एक प्रकार

નો જ વિષય તેમા બતાવ્યો છે એથી જાનના બોધ કરાવનાર જાન “ અરિ હત ” વગેરે નામ શ્રવણથી મહાકલ પ્રાપ્ત હોય છે આમ મમજવુ જોડ્યો

આ પ્રમાણે સ્થાપના નિક્ષેપ પણ ભાવ રૂપ અર્થથી રહિત છે કારણ કે જાનો તેની સાથે કોઈ પણ જાતનો સંબંધ નથી ભાવજાનની અવસ્થાની આકૃતિ પથ્થર વગેરેની મૂર્તિમા “ આ તેજો જ છે ” આ જાતની કલ્પના ડરવાનુ નામ સ્થાપના છે તીર્થ કરની પ્રકૃતિના ઉદયથી સમવત્તરણ વગેરે વિભૂતિ સહિત આત્માનુ નામ ભાવજાન છે આ ભાવજાનના શરીરની જે આકૃતિ છે તેના વિષે આપણે પણ વિચાર કરીએ કે પથ્થર વગેરેની પ્રતિમામા તેનો સંબંધ કેવી રીતે આવી શકે છે ? કેમકે તે આકૃતિનો સંબંધ આશ્રય આશ્રયી ભાવથી તે જાન જે કાળમા હતા તે કાળમા જ તેમની સાથે હતો તેમની ગેરહાજરીમા પથ્થર વગેરેમા આ જાતનો આશ્રય-આશ્રયી ભાવ સંબંધ માન્ય રાખ્યો કેવી રીતે યોગ્ય કહી શકાય તેમ છે ? ભાવજાનના સદ્ભાવમા જેમ તેમના સહાત દર્શનથી પ્રાપ્તિઓમા એક જાતનો ભાવોદયારા ઉદ્ભવે

તથા ભક્ત્યા તામાકૃતિ સ્મરતો જનસ્ય ભાવોદ્ધાસઃ સમચતુ, તદાઽઽકૃતેર્ભાવજિનેન સમન્ધાત્, પરંતુ સ્થાપનાયા આશ્રયાશ્રયિભાવસમ્બન્ધો નાસ્તિ ભાવજિનેન સઠ । ભાવજિનાત્મનસ્તત્રાગ્રાહન સ્થાપનંતુ જિનાગ્રાહ્ય પ્રચનખિન્નઃ કર્તુમશક્ય, કથ તર્હિ-ભાવજિનસમ્બન્ધાભાવે પ્રતિમા ભાવજિન તદ્ગુણ યા સ્મારયિતુ શક્તા મહેત ।

કા ભાવોદ્ધાસ હોતા હૈ, ઉમી પ્રકાર સે ભક્તિ કે આવેશ સે ખી ઉનકી ઉસ આકૃતિ કા ઉસ સમય સ્મરણ કરને ચાલે પ્રાણી કો ઉસ પ્રકાર કે ભાવોદ્ધાસ કા સદ્ભાવ હો મકતા હૈ । ઇસકા નિષેધ નહી હૈ । ક્યોં કિ સ્મૃતિ કે આધારભૂત જિન પરમાત્મા ઉસ કાલ મેં સ્વય વિદ્યમાન હૈ । ઉન કે અભાવ મેં ઉન્હેં નહી દેખને ચાલે પ્રાણિયોંકો ખી ઉનકી ઉસ પ્રતિમા સે ઉસી પ્રકાર કા ભાવોદ્ધાસ હોતા હૈ યહ માન્યતા કેવલ ઇક કલ્પના માત્ર હૈ વાસ્તવિક નહીં । ઇસકે સમાધાન કે નિમિત્ત જો યહ કહા જાતા હૈ કિ ઉસ પાપાણ પ્રતિમા મેં જિન ભગવાન કી આત્મા કા મત્રાદિકોં દ્વારા આહ્વાન કિયા જાતા હૈ અતઃ. ઉસ પ્રતિમા કે દર્શન સે સાક્ષાત્ ભાવ જિનકે હી દર્શન હોતે હૈ સો યહ માન્યતા સર્વથા અસત્ય હૈ-કારણ કિ મોક્ષ મેં પ્રાપ્ત આત્માઓં કા પાપાણ આદિ પ્રતિમાઓં મેં અપની માન્યતા સિદ્ધ કરને કે લિયે આહ્વાન આદિ માનના સર્વથા જિનસિદ્ધાન્ત સે વિરુદ્ધ હૈ મોક્ષ પ્રાપ્ત આત્માઁ કહી પર ખી કિસી ખી કાલ મેં આહ્વાન કરને સે નહી આતી હૈં ઇસી જિન શાસન કી આજ્ઞા હૈ ઇસ તરહ સે ઉસ પાપાણ આદિ કી આત્માઓં કા

છે, તેમ જાડિતના આવેશથી પણ તેમની એ આકૃતિનુ તે સમયે સ્મરણ કરનાર પ્રાણીને તે જાતના ભાવોદ્ધાસની અનુભૂતિ થઈ શકે છે અને નિષેધ નથી કેમકે સ્મૃતિમા તે આકૃતિના આધારભૂત જન પરમાત્મા તે કાળમા જાતે વિદ્યમાન છે તેમના અભાવમા તેમને નહિ જોનારા પ્રાણીઓને પણ તેમની તે પ્રતિમાથી તે પ્રમાણેનો જ ભાવોદ્ધાસ થાય છે, આ માન્યતા કૃત્ત એક કોરી કલ્પના જ છે, વાસ્તવિક નથી એના સમાધાન માટે જે આમ કહેવામા આવે છે કે તે પથ્થરની પ્રતિમામા જન ભગવાનના આત્માનુ મત્રો વગેરેથી આવાહન કરવામા આવે છે, એથી તે પ્રતિમાના દર્શનથી પ્રત્યક્ષ ભાવજન ના જ દર્શન થાય છે, તો આ માન્યતા સાવ અસત્ય છે કારણ કે મોક્ષમા પ્રાપ્ત આત્માઓનુ પથ્થર વગેરે પ્રતિમાઓમા પોતાની માન્યતા સિદ્ધ કરવા માટે આહ્વાહન વગેરે માનવુ તે તો જન સિદ્ધાન્તથી સાવ વિરુદ્ધ છે મોક્ષ પ્રાપ્ત આત્માઓ કોઈ પણ સ્થાને અને કોઈ પણ કાળે આવાહન કરવાથી આવતા નથી, એવી જન શાસનની આજ્ઞા છે આ રીતે તે પથ્થર ના

સર્વથા કુપ્રાવચનિકદ્રવ્યાવશ્યકવત્ પ્રતિમાપૂજન કુર્વન્તઃ કારયન્તશ્ચ મિથ્યા-  
દૃષ્ટિત્વ પ્રાપ્નુવન્તિ ન તુ સમ્યક્ત્વમિતિ ।

દ્રવ્યાવશ્યક-દ્વિવિધ-આગમતો નોઆગમતશ્ચ । યસ્ય જન્તોરાવશ્યકશાસ્ત્ર  
શિક્ષિતાદિગુણોપેત ભવતિ, સ જન્તુસ્ત્રાવશ્યકશાસ્ત્રે શિષ્યાધ્યાપનરૂપયા વાચનયા  
ગુરુ પ્રતિપ્રશ્નશ્રવણયા પ્રચ્છનયા, પુનઃ પુનઃ સૂત્રાર્થાભ્યાસરૂપયા પરાવર્તનયા, તથા

અહ્વાન હોને સે આના માન લિયા જાય તો ફિર ઉસ પ્રતિમા મેં સજી-  
વતા માનને મેં કયા દોષ હૈ ઇસલિયે યહ સ્વીકાર કરના હી ચાહીયે ।  
કિ ભાવજિન કે અભાવ મેં વહ પ્રતિમા ભાવજિન ણવ ઉનકે ગુણોં કા  
સ્મરણ કરવાને મેં સર્વથા સમર્થહી હૈ । જય યહ નિશ્ચિત મિદ્ધાન્ત હૈ તો  
ફિર ઇસકી પૂજનાદિ કરને કરાને સે જો મનુષ્ય સમક્તિ કી પ્રાપ્તિ  
હોના માનતે હૈં વે ઉસ વિધવા કિ દશા જૈસે હૈં જો અપને પતિ કી  
ફોટો યા મૂર્તિ કે દર્શન ણવ સહવાસ આદિ સે સન્તાન કી ઉત્પત્તિ કી  
કામના કરતી હો । ઇસલિયે કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યક કી તરહ  
યહ પ્રતિમાપૂજનાદિ કર્મ કરને કરાને વાલે દોનોં હી જન મિથ્યાત્વરૂપ  
દૃષ્ટિ કે હી પાત્ર હૈં, સમ્યક્ત્વ કે નહીં ।

દ્રવ્ય નિક્ષેપરૂપ આવશ્યક, આગમ ઓર નોઆગમ કે ભેદ સે દો  
પ્રકાર કા હૈં । ઉસમે જિસ પ્રાણી કે આવશ્યક શાસ્ત્ર શિક્ષિતાદિગુણોં  
સે યુક્ત હૈં વહ પ્રાણી ઉસ આવશ્યક શાસ્ત્ર મેં, શિષ્યોં કા પઢાનેરૂપ

તે આત્માઓનુ આવાહન હોવાથી આવવુ માની લઇએ તો પછી તે પ્રતિ  
માને સજીવ માનવામા શો વાધો છે ? એટલા માટે આપણે આ વાત સ્વીકાર  
વી જ લેણે કે ભાવજીનના અભાવમા તે પ્રતિમા ભાવજીન અને તેમના  
ગુણોનુ સ્મરણ કરાવવામા મ પૂર્ણપણે સમર્થ જ છે જ્યારે આ મિદ્ધાન્ત નિશ્ચિત  
રૂપે માન્ય થયેલો છે ત્યારે તેનુ પૂજન વગેરે કરાવવાથી જે લોકો સમક્તિની  
પ્રાપ્તિ થવી માને છે તેમની તો વિધવા જેવી દશા છે કે જે પોતાના પતિની  
છબી કે મૂર્તિના દર્શન અને સહવાસ વગેરેથી સતાન મેળવવાની ઇચ્છા કરતી  
હોય । એટલા માટે કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યકની જેમ આ પ્રતિમા પૂજન  
વગેરે કાર્ય કરનાર તેમજ કરાવનાર અને માણસો મિથ્યાત્વ રૂપ દૃષ્ટિના જ  
પાત્ર છે, સમ્યક્ત્વના નથી

દ્રવ્ય નિક્ષેપ રૂપ આવશ્યક આગમ તેમજ નોઆગમના ભેદથી જે  
પ્રકાર છે તેમા જે પ્રાણી આવશ્યક શાસ્ત્ર શિક્ષિત વગેરે ગુણોથી યુક્ત છે તે  
પ્રાણી તે આવશ્યક શાસ્ત્રમા ગિર્યોત્તે ભણાવવા રૂપ વાચનાથી, શુદ્ધ-પ્રતિ તદ્

ધર્મકથા વર્તમાનોપયુગોગે સતિ આગમતો દ્રવ્યાવશ્યકઃ, 'અનુપયોગો દ્રવ્ય' इति वचनात् । अनुपयोगो भावगुण्यता ।

વાચના સે, ગુરુ કે પ્રતિ તદ્વિષયક પ્રશ્ન લક્ષણરૂપ પૃચ્છના સે ચાર ચાર સૂત્ર ઓર અર્થ કે અભ્યાસરૂપ પરાવર્તન સે તથા ધર્મકથા સે વર્તમાન હોતા હુઆ મી અનુપયુક્ત અવસ્થાસપન્ન હોને સે આગમ કી અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક હૈ । અનુપયોગ કા નામ હી દ્રવ્ય હૈ ।

ભાવાર્થ—“ ભૂતસ્ય ભાવિનો વા ભાવસ્ય હિ કારણ તુ યલ્લોકે તદ્-વ્યમ્ ” યહ દ્રવ્યનિક્ષેપ કા લક્ષણ હૈ । ભૂતપર્યાય યા ભવિષ્યત્ પર્યાય કા જો કારણ આધાર હોતા હૈ, વહ દ્રવ્ય હૈ જિસ પ્રકાર કિસી રાજા કે યુવરાજ કો રાજા કહ દિયા જાતા હૈ યદ્યપિ વહ અમી વર્તમાન મેં રાજારૂપપર્યાય સે યુક્ત નહીં હૈ—આગે ઉસે રાજપર્યાય પ્રાપ્ત હોગી, પરન્તુ ફિર મી ઉસે વ્યવહાર મેં લોગ રાજા કહતે હૈ । યહ ભવિષ્યત્ પર્યાય કી અપેક્ષા દ્રવ્ય નિક્ષેપકા વિષય હૈ । જો પહિલે રાજા થા—કારણ વગ જય વહ રાજાગદી કા પરિત્યાગ કર દેતા હૈ—તવ મી લોગ ઉસે રાજા કહતે હૈ । યહા ઉસ રાજા મેં યદ્યપિ વર્તમાન સમય મે રાજપર્યાય સે યુક્તતા નહીં હૈ તો મી ભૂતકાલ કી અપેક્ષા સે હી ઉસે રાજા કહા જાતા હૈ । યહ ભૂતકાલ કી અપેક્ષા સે રાજપર્યાય કા આધાર હોને કે કારણ દ્રવ્ય નિક્ષેપ કા વિષય હૈ પ્રકૃત મે હસ નિક્ષેપ કી આયોજના હસ પ્રકાર સે

વિષયક પ્રશ્ન લક્ષણ રૂપ પૃચ્છનાથી, વારવાર સૂત્ર અને અર્થના અભ્યાસ રૂપ પરાવર્તનથી તથા ધર્મકથાથી વર્તમાન હોવા છતાંયે અનુપયુક્ત અવસ્થા સપન્ન હોવાથી આગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક છે, અનુપયોગનું નામ જ દ્રવ્ય છે

ભાવાર્થ—“ ભૂતસ્ય ભાવિનો વા ભાવસ્ય હિ કારણ તુ યલ્લોકે તદ્ દ્રવ્યમ્ ” આ દ્રવ્ય નિક્ષેપનું લક્ષણ છે ભૂત-પર્યાય કે ભવિષ્યત્ પર્યાયનો જે કારણ આધાર હોય છે, તે દ્રવ્ય છે જેમ કેઈ રાજાના યુવરાજને રાજા કહી દેવામા આવે છે જો કે તે વર્તમાનમા રાજા રૂપ પર્યાયથી યુક્ત નથી આગળ તેને રાજા પર્યાય પ્રાપ્ત થશે, છતાંયે તેને વ્યવહારના લોકો રાજા કહે છે આ ભવિષ્યત્ પર્યાયની અપેક્ષા દ્રવ્ય નિક્ષેપનો વિષય છે જે પહેલા રાજા હતો—પણ કેઈ કારણસર રાજગાદિનો તે પરિત્યાગ કરી દે છે, ત્યારે પણ લોકો તેને રાજા કહે છે અહીં તે રાજામા જો કે વર્તમાન સમયમા રાજા પર્યાયથી યુક્તતા નથી છતાંયે ભૂતકાળની અપેક્ષાથી તેને રાજા કહેવામા આવે છે આ ભૂતકાળની અપેક્ષાથી તેને રાજા કહેવામા આવે છે આ ભૂતકાળની અપેક્ષાથી રાજાપર્યાયનો આધાર હોવા બદલ દ્રવ્ય નિક્ષેપનો વિષય છે પ્રકૃતમા આ



જવ નો આગમતો દ્રવ્યાવશ્યકગુણ્યતે-અત નો શબ્દ સર્વથા પ્રતિપેદ્યે દેશતઃ પ્રતિપેદ્યેડપિ ચ વર્તતે । તથા ચ સર્વથા-આગમાભાવમાશ્રિત્ય દ્રવ્યાવશ્યક, તથા હોતી હૈ કિ જો વર્તમાન મેં આવશ્યક શાસ્ત્ર કા જાતા નહીં હૈ આગે ભવિષ્યત્ કાલ મેં હસ શાસ્ત્ર કા જાતા હોંગે હસે તથા જો ભૂતકાલ મેં હસ શાસ્ત્ર કા જાતા થા અત વર્તમાન કાલ મેં હસકા જાતા નહોં હૈ-હસે આવશ્યક હમ પ્રકાર જાનના યા કહના યદ્રવ્યનિક્ષેપ કી અપેક્ષા આવશ્યક હૈ । હમકે મૂલ મેં દો ભેદ હૈ ? આગમ દ્રવ્ય નિક્ષેપ ઓર દૂસરા નોઆગમદ્રવ્યનિક્ષેપ । આવશ્યક શાસ્ત્ર આદિ કા જો જાતા હો, શિષ્યોં કો જો હસે પઢાતા હો, હસ વિષયક ગુરુ આદિ કે નિકટ જો તાત્ત્વિક ચર્ચા આદિ ભી કરતા હો હસ પ્રકાર વાચના, પ્રચ્છના-પર્યટના અનુપ્રેક્ષા ઓર ધર્મોપદેશરૂપ પાંચો પ્રકાર કે સ્વાધ્યાય સે જો હસકી પર્યાલોચના કર રહા હૈ-પરંતુ હસમે હપયોગ નહોં હૈ-અનુપયુક્ત હૈ વહ આગમ કી અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક હૈ । હસમે આવશ્યક શબ્દ કે અર્થ કા જાન હી આગમરૂપ સે વિવક્ષિત હૈ । અતઃ આવશ્યક શાસ્ત્ર કા જાતા હોતા હુઆ ભી હસમે અનુપયુક્ત આત્મા આગમ કી અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક હૈ યહ વાત નિશ્ચિત હુઈ ।

નો આગમ કી અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક હસ પ્રકાર હૈ-જહા આગમ કા સર્વથા અભાવ યા આગમ કે ઇક દેશ કા અભાવ વિવક્ષિત હોતા

જના એ રીતે હોય છે કે વર્તમાનમા જે આવશ્યક શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા નથી, ભવિષ્યકાળમા તે જાસ્ત્રનો જ્ઞાતા થશે તેને તેમજ જે ભૂતકાળમા તે જાસ્ત્રનો જ્ઞાતા હતો હમણા વર્તમાનકાળમા તેનો જ્ઞાતા નથી તેને, ' આવશ્યક ' આ રીતે જાણવું કે કહેવું આ દ્રવ્યનિક્ષેપની અપેક્ષાએ આવશ્યક છે એના મૂળ રૂપે જે લેદો છે-૧ આગમ દ્રવ્ય નિક્ષેપ અને બીજો નોઆગમ દ્રવ્ય નિક્ષેપ આવશ્યક શાસ્ત્ર વગેરેનો જે જ્ઞાતા હોય, જે શિષ્યોને લણાવતો હોય, તદ્દ વિષયક ગુરુ વગેરેની પાસે જઈને જે તાત્ત્વિક અર્થા વગેરે થણું કરતો હોય, આ રીતે વાચના, પ્રચ્છના, પર્યટના, અનુપ્રેક્ષા અને ધર્મોપદેશ રૂપ પાંચે જાતના સ્વાધ્યાયથી જે તેની પર્યાલોચના કરી રહ્યો છે, પણ તેમા તેનો ઉપયોગ નથી, અનુપયુક્ત છે, તે આગમની અપેક્ષાદ્રવ્ય ' આવશ્યક ' છે એમા આવશ્યક સમ્બંધના અર્થનું જ્ઞાન જ આગમ રૂપથી વિવક્ષિત છે એવી આવશ્યક શાસ્ત્રના જ્ઞાતા હોવા છતાંયે તેમા અનુપયુક્ત આત્મા આગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક છે, આ વાત સિદ્ધ થઈ છે

નોઆગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક એ પ્રમાણે છે કે જ્યાં આગમનો સંપૂર્ણપણે અભાવ કે આગમના એક દેશનો અભાવ વિવક્ષિત હોય છે તે નો

ધર્મકથયા વર્તમાનોપ્યનુપયોગે સતિ આગમતો દ્રવ્યાવશ્યકમ્, 'અનુપયોગો દ્રવ્ય' इति रचनात् । अनुपयोगो भावगुण्यता ।

વાચના સે, ગુરુ કે પ્રતિ તદ્વિષયક પ્રક્ષ લક્ષણરૂપ પૃચ્છના સે ચાર ચાર સૂત્ર ઓર અર્થ કે અભ્યાસરૂપ પરાવર્તન સે તથા ધર્મકથા સે વર્તમાન હોતા હુઆ મી અનુપયુક્ત અવસ્થાસપન્ન હોને સે આગમ કી અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક હૈ । અનુપયોગ કા નામ હી દ્રવ્ય હૈ ।

ભાવાર્થ—“ ભૂતસ્ય ભાવિનો વા ભાવસ્ય હિ કારણ તુ યલ્લોકે તદ્ દ્રવ્યમ્ ” યહ દ્રવ્યનિક્ષેપ કા લક્ષણ હૈ । ભૂતપર્યાય વા ભવિષ્યત્ પર્યાય કા જો કારણ આધાર હોતા હૈ, વહ દ્રવ્ય હૈ જિસ પ્રકાર કિસી રાજા કે યુવરાજ કો રાજા કહ દિયા જાતા હૈ યન્યપિ વહ અમી વર્તમાન મેં રાજારૂપપર્યાય સે યુક્ત નહીં હૈ—આગે ઉસે રાજપર્યાય પ્રાપ્ત હોગી, પરંતુ ફિર મી ઉસે વ્યવહાર મેં લોગ રાજા કહતે હૈ । યહ ભવિષ્યત્ પર્યાય કી અપેક્ષા દ્રવ્ય નિક્ષેપકા વિષય હૈ । જોપહિલે રાજા થા—કારણ વગ જય વહ રાજાગદી કા પરિત્યાગ કર દેતા હૈ—તવ મી લોગ ઉસે રાજા કહતે હૈ । યહાં ઉસ રાજા મેં યદ્યપિ વર્તમાન સમય મે રાજપર્યાય સે યુક્તતા નહીં હૈ તો મી ભૂતકાલ કી અપેક્ષા સે હી ઉસે રાજા કહા જાતા હૈ । યહ ભૂતકાલ કી અપેક્ષા સે રાજપર્યાય કા આધાર હોને કે કારણ દ્રવ્ય નિક્ષેપ કા વિષય હૈ પ્રકૃત મેં હસ નિક્ષેપ કી આયોજના હસ પ્રકાર સે

વિષયક પ્રશ્ન લક્ષણ રૂપ પૃચ્છનાથી, વારવાર સૂત્ર અને અર્થના અભ્યાસ રૂપ પરાવર્તનથી તથા ધર્મકથાથી વર્તમાન હોવા છતાંયે અનુપયુક્ત અવસ્થા સપન્ન હોવાથી આગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક છે, અનુપયોગનું નામ જ દ્રવ્ય છે

ભાવાર્થ—“ ભૂતસ્ય ભાવિનો વા ભાવસ્ય હિ કારણ તુ યલ્લોકે તદ્ દ્રવ્યમ્ ” આ દ્રવ્ય નિક્ષેપનું લક્ષણ છે ભૂત-પર્યાય કે ભવિષ્યત પર્યાયનો જે કારણ આધાર હોય છે, તે દ્રવ્ય છે જેમ કેઈ રાજાના યુવરાજને રાજા કહી દેવામા આવે છે જો કે તે વર્તમાનમા રાજા રૂપ પર્યાયથી યુક્ત નથી આગળ તેને રાજ પર્યાય પ્રાપ્ત થશે, છતાંયે તેને વ્યવહારમા લોકો રાજા કહે છે આ ભવિષ્યત પર્યાયની અપેક્ષા દ્રવ્ય નિક્ષેપનો વિષય છે જે પહેલા રાજા હોતો—પણ કેઈ કારણસર રાજગાદિનો તે પરિત્યાગ કરી દે છે, ત્યારે પણ લોકો તેને રાજા કહે છે અહીં તે રાજામા જો કે વર્તમાન સમયમા રાજ પર્યાયથી યુક્તતા નથી છતાંયે ભૂતકાળની અપેક્ષાથી તેને રાજા કહેવામા આવે છે આ ભૂતકાળની અપેક્ષાથી તેને રાજા કહેવામા આવે છે આ ભૂતકાળની અપેક્ષાથી રાજપર્યાયનો આધાર હોવા બદલ દ્રવ્ય નિક્ષેપનો વિષય છે પ્રકૃતમા આ

જય નોઆગમતો દ્રવ્યાવશ્યકમુચ્યતે-જા નો ગન્દ\* સર્વથા પ્રતિપેદ્યે દેશતઃ પ્રતિપેદ્યેડપિ ચ વર્તતે । તથા ચ સર્વથા-જાગમાભાવમાશ્રિત્ય દ્રવ્યાવશ્યક, તથા હોતી હૈ કિ જો વર્તમાન મે આવશ્યક શાસ્ત્ર કા જાતા નહી હૈ આગે મદિવ્યત્ કાલ મેં વસ શાસ્ત્ર કા જાતા હોંગે ઉસે તથા જો ભૂતકાલ મેં વસ શાસ્ત્ર કા જાતા યા અવ વર્તમાન કાલ મેં વસકા જાતા નહોં હૈ-ઉસે આવશ્યક ઇસ પ્રકાર જાનના યા કહના યહદ્રવ્યનિક્ષેપ કી અપેક્ષા આવશ્યક હૈ । ઇસકે મ્મલ મેં દો ભેદ હૈ ? આગમ દ્રવ્ય નિક્ષેપ ઓર દૂસરા નોઆગમદ્રવ્યનિક્ષેપ । આવશ્યક શાસ્ત્ર આદિ કા જો જાતા હો, શિષ્યોં કો જો ઉસે પઢાતા હો, ઉસ વિષયક ગુરુ આદિ કે નિકટ જો તાત્વિક ચર્ચા આદિ મી કરતા હો ઇસ પ્રકાર વાચના, પ્રચ્છના-પર્ય-ટના અનુપ્રેક્ષા ઓર ધર્મોપદેશરૂપ પાંચો પ્રકાર કે સ્વાધ્યાય સે જો ઉસકી પર્યાલોચના કર રહા હૈ-પરન્તુ ઉસમે ઉપયોગ નહોં હૈ-અનુપયુક્ત હૈ વહ આગમ કી અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક હૈ । ઇસમે આવશ્યક શબ્દ કે અર્થ કા જ્ઞાન હી આગમરૂપ સે વિવક્ષિત હૈ । અતઃ આવશ્યક શાસ્ત્ર કા જાતા હોતા હુઆ મી ઉસમે અનુપયુક્ત આત્મા આગમ કી અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક હૈ યહ વાત નિશ્ચિત હુઈ ।

નો આગમ કી અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક ઇસ પ્રકાર હૈ-જહા આગમ કા સર્વથા અભાવ યા આગમ કે ઇક દેશ કા અભાવ વિવક્ષિત હોતા

જના એ રીતે હોય છે કે વર્તમાનમા જે આવશ્યક શાસ્ત્રને જાતા નથી, ભવિષ્યકાળમા તે શાસ્ત્રને જાતા થશે તેને તેમજ જે ભૂતકાળમા તે શાસ્ત્રને જાતા હતો હમણા વર્તમાનકાળમા તેને જાતા નથી તેને, ' આવશ્યક ' આ રીતે બાણુ કે કહેવું આ દ્રવ્યનિક્ષેપની અપેક્ષાએ આવશ્યક છે એના મૂળ રૂપે એ લેદો છે-૧ આગમ દ્રવ્ય નિક્ષેપ અને બીજો નોઆગમ દ્રવ્ય નિક્ષેપ આવશ્યક શાસ્ત્ર વગેરેનો જે જાતા હોય, જે શિષ્યોને ભણાવતો હોય, તદ્દ વિષયક ગુરુ વગેરેની પાસે જઈને જે તાત્વિક અર્થ વગેરે પણ કરતો હોય, આ રીતે વાચના, પ્રચ્છના, પર્યટના, અનુપ્રેક્ષા અને ધર્મોપદેશ રૂપ પાંચે જાતના સ્વાધ્યાયથી જે તેની પર્યાલોચના કરી રહ્યો છે, પણ તેમા તેનો ઉપયોગ નથી, અનુપયુક્ત છે, તે આગમની અપેક્ષાદ્રવ્ય ' આવશ્યક ' છે એમા આવશ્યક રાખના અર્થનું જ્ઞાન જ આગમ રૂપથી વિવક્ષિત છે એવી આવશ્યક શાસ્ત્રના જાતા હોવા છતાંયે તેમા અનુપયુક્ત આત્મા આગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક છે, આ વાત સિદ્ધ થઈ છે

નોઆગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક એ પ્રમાણે છે કે જ્યાં આગમનો સંપૂર્ણપણે અભાવ કે આગમના એક દેશનો અભાવ વિવક્ષિત હોય છે તે નો

દેશત આગમાભાવમાશ્રિત્ય દ્રવ્યાવશ્યક વ-ના જાગમનો દ્રવ્યાવશ્યકમ્ । તત્-ત્રિવિ-  
ધમ્-જ્ઞશરીરદ્રવ્યાવશ્યક, ભવ્યશરીરદ્રવ્યાવશ્યક, તદ્વ્યતિરિક્ત દ્રવ્યાવશ્યક ચેતિ ।

હૈ-વહ નો આગમ કી અપેક્ષા સે દ્ર-વ્ય આવશ્યક માના ગયા હૈ । “ નો  
આગમ ” મેં નો શબ્દ સર્વથા આગમ કે અભાવ કા અન્યા ઉસકે एक  
દેશ કે અભાવ કા યોધક હૈ । હમકે જ્ઞશરીરદ્રવ્યાવશ્યક, ભવ્યશરીર-  
દ્રવ્યાવશ્યક, ઓર તદ્વ્યતિરિક્ત દ્રવ્યાવશ્યક, હન પ્રકાર ત્રીન ભેદ હૈ ।  
આવશ્યક શાસ્ત્ર કા જો પહિલે ( ભૂતકાલ મેં ) જ્ઞાતા યા-તથા દૂસરોં કે  
લિધે હસ શાસ્ત્ર કા ઉપદેશ આદિ ભી જિસને પહિલે દિયા હૈ તેસે  
જીવ કા અચેતન શરીર જ્ઞશરીરદ્રવ્યાવશ્યક હૈ જો જીવ હસ સમય  
આવશ્યક શાસ્ત્ર કા જ્ઞાતા નહીં હૈ ભવિષ્યત્ કાલ મેં ઉમકા જ્ઞાતા  
બનેગા ઉસકા વહ સચેતન શરીર ભવિષ્યત્ કાલ મેં આવશ્યક શાસ્ત્ર  
કે જ્ઞાન કા આધાર હોને કી અપેક્ષા સે, ભવ્યશરીરદ્રવ્યાવશ્યક હૈ ।  
તદ્વ્યતિરિક્તદ્રવ્યાવશ્યક લૌકિક કુપ્રાચનિક ઓર લોકોત્તર કે ભેદ  
સે ૩ પ્રકાર કા હૈ । લૌકિકજનોં દ્વારા આચરિત આવશ્યક કર્મ લૌકિક  
દ્રવ્યઆવશ્યક હૈ । જૈસે રાજસભા મેં જાને વાલે રાજા, યુવરાજ, તલ  
વર ( કોટપાલ ) આદિ જન પ્રાતઃ કાલ મેં ઉઠકર રાજસભા મેં જાને કે  
લિધે પ્રથમ પ્રાભાતિક વિધિયો સે નિપટતે હૈ-મુઘ ધોતે હૈ, દાંતોં કો

આગમની અપેક્ષાથી દ્રવ્ય આવશ્યક માનવામા આવ્યો છે “ નોઆગમ ” મા  
નો શબ્દ આગમના સંપૂર્ણપણે અભાવનો કે તેના એક દેશના અભાવનો  
બોધક છે તેના જ્ઞશરીર દ્રવ્યાવશ્યક, ભવ્યશરીર દ્રવ્યાવશ્યક અને તદ્વ્યતિ  
રિક્ત દ્રવ્યાવશ્યક આ પ્રમાણે ત્રણ ભેદો છે આવશ્યક શાસ્ત્રનો જે પહેલા  
( ભૂતકાળમા ) જ્ઞાતા હોતો તેમજ બીજાઓ માટે આ શાસ્ત્રનો ઉપદેશ વગેરે  
પણ જેણે પહેલા આવ્યો છે એવા જીવનુ અચેતન શરીર જ શરીર દ્રવ્યાવશ્યક  
છે જે જીવ અત્યારે આવશ્યક શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા નથી, ભવિષ્યકાળમા તેનો  
જ્ઞાતા થશે તેનુ તે સચેતન શરીર ભવિષ્યકાળમા આવશ્યક શાસ્ત્રના જ્ઞાનનો  
આધાર હોવાને કારણે ભવ્ય શરીર દ્રવ્યાવશ્યક છે તદ્વ્યતિરિક્ત દ્રવ્યાવશ્યક  
લૌકિક કુપ્રાવચનિક અને લોકોત્તર એમ ત્રણ પ્રકારનો છે લૌકિક માણસો  
વડે આચરિત આવશ્યક કર્મ લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક છે જેમ રાજસભામા  
જનારા રાજા, યુવરાજ, તલવર ( કોટપાલ ) વગેરે લોકો સવારે ઉઠીને રાજ  
સભામા જવા માટે પ્રથમ પ્રાભાતિક વિધિયોથી પરવારે છે, મુખ ધુએ છે,

જ્ઞાતયાનિતિ-જ, તસ્ય શરીર જગરીર તદેવ દ્રવ્યાવશ્યકમિતિ વિગ્રહઃ । જીવ પરિત્યક્તમાવશ્યકગાસ્ત્રવાનવતઃ જરીર જગરીરદ્રવ્યાવશ્યકમ્ । યઃ કશ્ચિદ્ જીવઃ જન્મકાળાદારભ્ય અતેનૈવ આત્મેન - ગૃહીતેન શરીરસમુન્નયેન, ત્રિનોપદિપ્તેન ભાવેન આવશ્યકમિત્યેતત્ પદ=શાન્ત આગામિનિ કાલે શિથિપ્રયતે ન તાવન્નિશ્ચતે, તજ્જીવાવિઘ્નિત શરીર ભવ્યશરીરદ્રવ્યાવશ્યકમિતિ । જગરીર-ભવ્યશરીરવ્યતિ રિત્ત દ્રવ્યાવશ્યક ત્રિવિધમ્-લૌકિક, કુપ્રાવચનિક, લોકોત્તરિક ચેતિ ।

લૌકિક દ્રવ્યાવશ્યકમ્ ' યે રાજેશ્વરતલવરાદય પ્રભાતસમયે-મુખધાવન-દન્તપ્રક્ષાલન-તૈલ-રુદ્ધતક-મર્પપ-દૂર્વા-દર્પણ-ધૂપ-પુષ્પ-માલ્ય-ગન્ધ-તામ્બૂલ-વસ્ત્રાદિકાનિ દ્રવ્યાવશ્યકાનિ કુર્વન્તિ, કૃત્વા પશ્ચાદ્ રાજકુલદેવકુલાદૌ ગચ્છન્તિ, તત્-તેષા સમ્પન્ધિમુખધાવનાદિ ।

કુપ્રાવચનિક દ્રવ્યાવશ્યકમ્ ' યે ઇમે ચરકચીરિકાદયઃ પાપણ્ડસ્થા, ઇન્દ્ર-સ્કન્દ-રુદ્ર-શિવ-વૈશ્રવણ-દેવ-નાગ-યક્ષ-ભૂત-મુકુન્દાઽઽર્યા-દુર્ગા- કોટિક્રિયા ણામ્ - ઉપલેપનસમાર્જનાઽઽવર્પણધૂપપુષ્પગન્ધમાલ્યાદિકાનિ દ્રવ્યાવશ્યકાનિ કુર્વન્તિ તેષા તદ્ ઇન્દ્રસ્કન્દાદેરુપલેપનાદિ । કુત્સિત પ્રવચન યેષા તે કુપ્રવચના સ્તેષામિદ્ કુપ્રાવચનિકમ્ । ઉપલેપન ચન્દનપદ્ધેન, સમાર્જન-સ્નપનાનન્તર વસ્ત્રેણ જલપ્રોચ્છનમ્ આવર્પણ-ગન્ધોદકેન, ' ગુલાવજલ ' રત્યાદિ ભાષાપ્રસિદ્ધેન ।

નામાવશ્યકમ્-આવશ્યકનામકો ગોપાલદારકાદિઃ, સ્થાપનાવશ્યકમ્-આવ સાફ કરતે હ, સ્નાન કરતે હૈ । સુગંધિત તૈલ લગાતે હૈ રત્યાદિ આવ-શ્યક કાર્ય કરતે હૈ । પીછે રાજસભા મે યા દેવકુલ મે જાતે હૈ । ડનકા યહ મુખ ધાવન આદિ કાર્ય લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક હૈ । ચરક ચીરિક આદિ પાલ્લડિયો દ્વારા જો ઇન્દ્ર, સ્કન્દ, રુદ્ર, વૈશ્રવણ, દેવ, નાગ ઓર યક્ષાદિકોં કી મૂર્તિયો કા ચ્દન સે લેપન, અભિષેક કરાને કે બાદ વસ્ત્ર સે મૂર્તિસ્થ જલ કા પોછના મદિર મેં યા ડન મૂર્તિયો પર ગુલાવ જલ કા ઊડકાવ આદિ કરના યે સવ કુપ્રાવચનિક દ્રવ્યાવશ્યક હૈ ।

જ્ઞાત સાફ કરે છે, સ્નાન કરે છે, સુગંધિત તૈલ લગાવે છે, વગેરે આવશ્યક કાર્યો કરે છે ત્યારપછી રાજસભામાં અથવા તો દેવકુળમાં જાય છે તેમનું મુખ ધોવું વગેરે કામ લૌકિક-દ્રવ્ય આવશ્યક છે ચરક ચીરિક વગેરે પાળ ડીઓ વડે જે ઇન્દ્ર, સ્કન્દ, રુદ્ર, શિવ, વૈશ્રવણ દેવ, નાગ અને યક્ષો વગેરેની મૂર્તિઓનું ચદનથી અભિષેક કરાવ્યા બાદ વસ્ત્રથી મૂર્તિના પાણીને લૂછવું, મદિરમાં કે તે મૂર્તિઓ ઉપર ગુલાબજળનું સિંચન વગેરે કરવું આ બધું કુપ્રાવચનિક દ્રવ્યાવશ્યક છે આ પ્રમાણે નામ સ્થાપના અને દ્રવ્યના લેખથી આ



અવશ્યકરૂપાત્ કસ્યનિત્ કાંટસ્માદિપુ પ્રતિકૃતિઃ, દ્રવ્યાવશ્યક ચ આવશ્યકોપયોગગન્યા દેહાગમક્રિયા, અવશ્યકેષુ ઉપયોગાભાવેન ચણગુણરહિતત્વેન ચ કર્મનિર્જરાગમકત્યામાયાદાગમ્યત્વન જિનાગા નાસ્તિ, તસ્માદેતન્ ત્રિવિધમાવશ્યક ધર્મપદવાચ્ય ન ભવતીતિ નિશ્ચયાદઅન્યમેવ । ઓક્તોત્તરિકદ્રવ્યાવશ્યક પ્રવ

હસ પ્રકાર નામ, સ્થાપના ઓર દ્રવ્ય કે ભેદ સે ઘટ આવશ્યક ત્રીન પ્રકાર કા હોતા હૈ । કિસી ગોપાલ કે પુત્ર કા “ આવશ્યક ” હમ પ્રકાર કા કૃતનામ સસ્કાર નામ આવશ્યક હૈ । આવશ્યક ક્રિયાઓ સે યુક્ત કિસી વ્યક્તિ કી કાષ્ટ આદિ મેં તદાકાર રૂપ સે યા અતદાકારરૂપ સે પ્રતિકૃતિની કલ્પના કરના યા ઉસે ઘનાલેના ઘટ સ્થાપના આવશ્યક હૈ । આવશ્યક મેં ઉપયોગ સે શૂન્ય પ્રાણી કી જો ભી આગમ ઓર નો આગમ કી અપેક્ષા સે ક્રિયાઈ હૈ વે સવ દ્રવ્ય આવશ્યક હૈં । હન ત્રીનો આવશ્યકો મે ઉપયોગ-ભાવરૂપ-આવશ્યક કે અભાવ સે તયા ચારિત્રગુણ તદનુકૂલ પ્રવૃત્તિ કે આચરણ સે રહિત હોને સે કર્મો કી નિર્જરા કરાને મેં સાધકપના નહી હૈ । અતઃ જિનેન્દ્રદેવ ને હનકે આરાધન કરને કી આજ્ઞા પ્રદાન નહી કી હૈ । ધર્મ કો હી આરાધન કરને કી ઉન્હોને આજ્ઞા દી હૈ કયોં કિ વહી કર્મો કી નિર્જરા કરાને મેં સાધક હૈ । હન ત્રીનો મેં કર્મો કી નિર્જરા કરાને કા અભાવ હોને સે ધર્મસ્વરૂપતા નહી હૈ । ધર્મપદ વાચ્ય ભી યે નહી હૈં । હસીલિયે યે ત્રીનો ધર્મ કે લક્ષણ સે શૂન્ય હોને સે ઉસકે અલબ્ધ હૈ, એસા સમજના ચાહિયે । લોકોત્તરિક દ્રવ્ય

આવશ્યક ત્રણ પ્રકારનુ હોય છે કેઈ ગોપાળના પુત્રનો ‘ આવશ્યક ’ આ રીતે કરેલો સસ્કાર નામ આવશ્યક છે આવશ્યક ક્રિયાઓથી યુક્ત કેઈ વ્યક્તિની કાષ્ટ વગેરેમા તદાકાર રૂપથી કે અતદાકાર રૂપથી પ્રતિકૃતિની કલ્પના કરવી કે પ્રતિકૃતિનુ નિર્માણ કરવુ તે સ્થાપના આવશ્યક છે આવશ્યકમા ઉપયોગથી રહિત પ્રાણીની જે કદાપણ આગમ અને નો આગમની અપેક્ષાથી ક્રિયાઓ છે તે બધી દ્રવ્ય આવશ્યક છે આ ત્રણે આવશ્યકોમા ઉપયોગ ભાવ રૂપ આવશ્યકના અભાવથી તેમજ ચારિત્રગુણ તદનુકૂળ પ્રવૃત્તિના આચરણ વગર થઈ જવાથી કર્મોની નિર્જરા કરાવવામા સાધકપણુ નથી તેથી જીનેન્દ્ર દેવે તેમના આરાધનની આજ્ઞા આપી નવી ધર્મની આરાધના કરવાની જ તેઓ શ્રીઓ આજ્ઞા આપી છે કેનડે વર્મજ કર્મોની નિર્જરા કરાવવામા સાધક છે આ ત્રણેમા કર્મોની નિર્જરા કરાવવાનો અભાવ હોવાને કારણે ધર્મસ્વરૂપતા નથી એ ધર્મપદ વાચ્ય પણુ નથી તેથી આ ત્રણે ધર્મના લક્ષણથી રહિત હોવાને કારણે તેના અલબ્ધ છે એમ સમજવુ જોઈએ આભાયિક વગેરે લોકો

ચનોક્ત સદપિ જિનાજ્ઞાયાલૈ સ્વચ્છન્દપિહારિભિર્મૂલોત્તરગુણરહિતૈ પટ્કાયનિરતુ  
કમ્પૈરતુપયોગપૂર્વક ક્રિયમાણ ગામાયિકાદિકમ્ તચ ધર્મપદવાચ્ય ન ભવિતુમર્હતિ,  
તત્રાપિ નિર્જરાજનકત્વાભાવેન વિવેચતયા જિનાજ્ઞાયા આભાવાત્ ।

एवमेव—नामजिनः स्थापनाजिनस्तथा द्रव्यजिनश्च निर्जराजनकत्वाभावा  
दाराध्यत्वेन जिनाज्ञाया अभावात् । तदाराजन धर्मपदवाच्य न भवितुमर्हति ।

આવશ્યક સમાયિક આદિ હે ઢનકે કરને કા ચિવાન ચદ્યપિ પ્રવચન  
શાસ્ત્ર મેં વિદિત હૈ તો મી ડસે જો ધર્મ કા અલક્ષ્ય ચતાયા ગયા હૈ  
ઉસકા કારણ યહ હૈ કિ યે જન જિનદેવ કી આજ્ઞા સે રહિભૂત બને  
હુણ, સ્વેચ્છાચારી, મૂલગુણ ઓર ઉત્તર ગુણો સે રહિત ઇવ પટ્કાય  
કે જીવોં કી રક્ષા કરને મેં આસાવધાન મનુષ્યો દ્વારા અનુપયોગપૂર્વક  
કરને મેં આતે હેં તત્ર યે દ્રવ્ય આવશ્યકરૂપ સે કહે જાતે હેં । ઓર  
હસીલિયે યે ધર્મપદ કે વાચ્ય નહીં હેં અર્થાત્ ધર્મરૂપ નહીં હેં । જહા  
ધર્મરૂપતા નહીં હૈ વહા કર્મોં કી નિર્જરા કારકત્વ મી નહીં હૈ । યહ  
સર્વ સમ્મત સિદ્ધાન્ત હૈ । મગ્ધાન ને જો ડમ અવસ્થા મેં ડન્હેં વિધેય  
નહોં કહા હૈ ઉસકા યહી કારણ હૈ । અતઃ જિસ પ્રકાર નામ આવ-  
શ્યક, સ્થાપના આવશ્યક ઓર દ્રવ્ય આવશ્યક યે ત્રીન નિક્ષેપ આરા-  
યરૂપ સે તીર્યકર પ્રભુ ને અનવિધેય કહે હેં, ઉસી પ્રકાર સે નામજિન  
સ્થાપનાજિન તથા દ્રવ્યજિન મી આરાય નહીં હેં । ડનકી આરાધના  
કરને મેં જો ધર્મ કી પ્રાપ્તિ હોના કહતે હૈ યા માનતે હેં ડન્હેં જિન

તર દ્રવ્ય આવશ્યક છે પ્રવચન શાસ્ત્રમા એમના આચરણતુ વિધાન વિહિત  
છે છતાયે એને જે ધર્મના અલક્ષ્ય રૂપમા બતાવવામા આવ્યો છે તેની મત  
લબ્ધ એ છે કે ત્યારે તે જનદેવની આજ્ઞાથી બહિર્ભૂત બનેલા સ્વેચ્છાચારી,  
મૂળગુણ તેમજ ઉત્તર ગુણોથી રહિત અને પટકાય જોડોની રક્ષા  
કરવામા અસાવધાન માણ્યો વડે અનુપયોગ પૂર્વક આચરવામા આવે  
ત્યારે તે દ્રવ્ય આવશ્યક રૂપમા ડહેવાય છે એથી તે ધર્મપદ વાચ્ય  
નથી એટલે કે ધર્મ રૂપ નથી ત્યા ધર્મરૂપતા નથી ત્યા કર્મોની નિર્જરા  
કારકતા પણ નથી આ સર્વમાય સિદ્ધાન્ત છે લગવાને જે આ અવસ્થામા  
એમને વિધેય કહ્યા નથી તેતુ કારણ પણ એ જ છે એટલા માટે જેમ નામ  
આવશ્યક, સ્થાપના આવશ્યક અને દ્રવ્ય આવશ્યક આ ત્રણ નિક્ષેપોને આરાધ્ય  
રૂપથી તીર્યકર પ્રભુએ અવિધેય કહ્યા છે, તેમજ નામ જિન, સ્થાપના જિન  
તેમજ દ્રવ્યજિન પણ આરાધ્ય નથી એમની આરાધના કરવામા જે ધર્મની  
પ્રાપ્તિ થવી બતાવવામા આવે છે કે માનવામા આવે છે, તેમને જિન લગવાનની

एव च प्रतिमापूजनमपि धर्मलक्षणस्य लक्ष्यं न भवति, तत्र धर्मत्वाभाव निश्चयात् । 'मोक्षकामो जिनप्रतिमा पूजयेत्' इत्येवमर्हतो भगवन् आज्ञायाः प्रवचने-  
ऽनुपलब्धेः । धर्मविषये सर्वत्र भगवदाज्ञोपलभ्यते-दृश्यते हि आदयवार्थं भगव  
भगवान की आज्ञा से घटिभूत ही समझना चाहिये । यदि इन निक्षेपों  
की या स्थापनानिक्षेप की आराधना करने से आराधक जीवों को धर्म  
का लाभ होता तो वे उनकी आराधना करने का मग्य जीवों को अब  
इस २ उपदेश देते । इस प्रकार की स्वमनः कल्पित प्रवृत्ति से उनकी  
पूजा आदि करने में पट्टकाय के जीवों की कितनी विरागना होती है  
यह एक स्वानुभवगम्य बात है । अतः जहाँ आरम्भ है वहाँ धर्म नहीं  
है । जहाँ धर्म नहीं है उसकी आराधना से कर्मों की निर्जरा भी नहीं  
हो सकती है । इस प्रकार से नाम स्थापना और द्रव्यजिन आदि तीन  
निक्षेप भी धर्म के लक्षण से शून्य होने से उसके अलक्ष्य माने गये  
हैं । जब स्थापना जिन ही उसका अलक्ष्यभूत है, तो फिर जिन की  
प्रतिमा बनाकर उसकी पूजा आदि कार्य भी धर्मलक्षण से शून्य होने  
से वह भी उसका अलक्ष्य है ऐसा निश्चित हो जाता है भगवाने ने  
इस प्रकार की आज्ञा शास्त्र में कहीं भी नहीं दी है " मोक्षकामो जिन  
प्रतिमा पूजयेत् " कि मुक्ति की अभिलाषा वाला प्राणी जिन प्रतिमा  
की पूजा करें । धर्मकी आराधना करने की ही उन्होंने ने आगम में आज्ञा

આજ્ઞાથી બહિર્ભૂત જ સમજવા જોઈએ આ નિક્ષેપોની કે સ્થાપના નિક્ષેપોની  
આરાધના કરવાથી આરાધક જીવોને ધર્મનો લાભ થતો હોય ત્યારે તો તેઓ  
તેમની આરાધના કરવા માટે ભગ્ય જીવોને ચોક્કસ ઉપદેશ આપતા આ રીતે  
ચોતાના મનથી જ કલ્પના કરીને તેમની પૂજા વગેરે કરવામાં પટ્ટકાય જીવોની  
કેટલી બધી વિરાધના હોય છે તે જાતેજ અનુભવવા જેવી વાત છે એટલા  
માટે જ્યાં આરંભ છે ત્યાં ધર્મ તો નથી જ અને જ્યાં ધર્મ નથી તેની આરા  
ધનાથી કોર્મોની નિર્જરા પણ થઈ શકે તેમ નથી આ રીતે નામ સ્થાપના અને  
દ્રવ્ય જિન વગેરે પણ નિક્ષેપો પણ ધર્મના લક્ષણથી રહિત હોવા બદલ તેને  
અલક્ષ્ય માનવામાં આવ્યા છે જ્યારે સ્થાપના જિન જ તેના માટે અલક્ષ્યરૂપ  
છે, ત્યારે જિનની પ્રતિમા બનાવીને તેની પૂજા વગેરે કાર્યો પણ ધર્મલક્ષણથી  
રહિત હોવાથી તે પણ તેના માટે અલક્ષ્યરૂપ છે આવી ચોક્કસ ખાત્રી થઈ  
જાય છે ભગવાને આ જાતની આજ્ઞા શાસ્ત્રમાં કોઈ પણ સ્થાને કરી નથી  
“ મોક્ષકામો જિનપ્રતિમા પૂજયેત્ ” કે મોક્ષની ઇચ્છા રાખનારો પ્રાણી જિન  
પ્રતિમાનું પૂજન કરે ધર્મની આરાધના કરવાની જ તેઓશ્રીએ

આજ્ઞા

દાજ્ઞા, દર્શનાર્થે જ્ઞાનાર્થે ચ ભગવદાજ્ઞા પુનરહિંસાસયમતપઃસવરાદિવિધિરપિ  
શાસ્ત્રે પ્રદર્શિતઃ પરતુ પ્રતિમાપૂજનાર્થમાજ્ઞા ક્વાપિ નોપલભ્યતે શાસ્ત્રેષુ, પ્રત્યુત  
કુપ્રાવચનિકદ્રવ્યાવશ્યકલક્ષણાક્રાન્તત્વેન પ્રતિમાપૂજન જૈનાગમવિરુદ્ધમિતિ  
સૂચિતમ્ । ઇન્દ્રાદિપૂજન ઠિ કુપ્રાવચનિકસ્ય નોઆગમતો દ્રવ્યાવશ્યકસ્યોદાહ-  
રણતયા ભગવતા પ્રદર્શિતમ્ । તેન સર્વ પ્રતિમાપૂજન કુપ્રાવચનિક તાદૃશદ્રવ્યાવ-  
શ્યકે ભગવતા નિશ્ચિત્તમિતિ સુસ્પષ્ટ પ્રતીયતે । પટ્કાયદિમાસાઽયાયાઃ પૂજાયા

પ્રદાન કી હૈ જૈસે-આવશ્યક, દર્શન ઓર જ્ઞાન કી આરાધના પ્રત્યેક  
મોક્ષાભિલાષી ભવ્ય જન કો કરના ચાહિયે-હસ પ્રકાર કે આવશ્યક  
આદિ કી આરાધના કરને કા સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ આગમો મેં મિલતા હૈ-તથા  
જિસ પ્રકાર ડન્હોને અહિંસા, સયમ, તપ ઓર સવર આદિ કી વિધિ  
શાસ્ત્રોં મેં પ્રદર્શિત કી હૈ-હસ પ્રકાર ન તો ડન્હોને પ્રતિમા પૂજન કી  
કહોં ન આજ્ઞા પ્રદાન કી હૈ ઓર ન હસ કી વિધિ હી કહી હૈ કુપ્રા-  
વચનિક દ્રવ્ય આવશ્યક કે લક્ષણ સે યુક્ત હોને સે પ્રત્યુત પ્રતિમાપૂજન  
કો જૈન આગમ સે વિરુદ્ધ હી સૂચિત કિયા હૈ । કુપ્રાવચનિયોં દ્વારા  
માન્ય ઇન્દ્રાદિકોં કે પૂજન કો ભગવાન નો આગમ કી અપેક્ષા સે દ્રવ્ય  
આવશ્યક કે ઉદાહરણ રૂપ મેં પ્રકટ કિયા હૈ હસસે હી યહ યાત સ્પષ્ટ  
હો જાતી હૈ કિ ડન્હોને અન્ય સમસ્ત પ્રતિમા પૂજન કો ભી હસી કુપ્રા-  
વચનિક દ્રવ્ય આવશ્યક કી તરહ દ્રવ્ય આવશ્યક મેં રખા હૈ । પ્રવચન  
મેં કુત્સિતતા-હોટાપન કુશાસ્ત્રતા હિંમાદિક સાધ્ય પૂજા આદિ કાર્યો

કરી છે જેમ આવશ્યક, દર્શન અને જ્ઞાનની આરાધના દરેકે દરેક મોક્ષ  
ધર્મનારા ભવ્ય જનને કરવી ઘટે છે જેમ આવશ્યક વગેરેની આરાધના કરવા  
વિધેનો ઉલ્લેખ આગમોમા મળે છે, તેમજ જેમ તેમણે અહિંસા, સયમ, તપ  
અને સવર વગેરેની વિધિ શાસ્ત્રોમા બતાવી છે તેમ તેમણે ડોઘ પણ સ્થાને  
પ્રતિમા પૂજનની આજ્ઞા કરી નથી અને તેની વિધિ પણ બતાવી નથી  
પ્રતિમા પૂજને કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યકના લક્ષણથી યુક્ત હોવા બદલ જૈન  
આગમોથી વિરુદ્ધ બતાવવામા આવી છે કુપ્રાવચનીઓ વડે માન્ય ઇન્દ્ર  
વગેરેના પૂજનને ભગવાને આગમની અપેક્ષાએ દ્રવ્ય આવશ્યકના ઉદાહરણ  
રૂપમા બતાવ્યું છે એથી આ વાત સ્પષ્ટ સમજી શકાય તેમ છે કે તેમણે  
બીજી પણ બીજી પ્રતિમા પૂજને પણ આ કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યકની જેમ  
દ્રવ્ય આવશ્યકમા જ સ્થાન આપ્યું છે પ્રવચનમા કુત્સિતતા કુશાસ્ત્રતા હિંમા  
વગેરે સાધ્ય પૂજા વગેરે કાર્યોની પુષ્ટિ કરવાથી જ સભવે છે બીજા ચરદ

વિધાયકત્વયા પ્રવચનસ્ય કુત્સિતત્ત્વ, તેનૈવ ચેન્દ્રાદિપૂજનસ્ય કુપ્રાવચનિકત્વં  
ભવતિ । એવ પ્રરૂપયતો ભગવતોઽર્હતઃ પ્રતિમાયા પૂજનસ્ય પ્રમદ્ગ પર તદાનો  
નાસીત્-હિંસામયત્વાત્પૂજનસ્ય, તેન પ્રવચને ભગવતા પ્રતિમાપૂજનપ્રતિષેધો ત્રિગિષ્ય  
નોક્ત । પ્રતિષેધવાક્ય હિ તદૈવ સાર્થકં, યદાપ્રતિષેધરૂપોઽર્થઃ કથચિત્ પ્રસક્તો  
મત્તિ । જિનપ્રતિમાપૂજન હિ ન તાત્કાલિકદ્રવ્યાવશ્યક, નાપિ લોકોત્તરિક  
દ્રવ્યાવશ્યક, જિનો હિ લોકોત્તરો દેવસ્તત્પૂજનમપિ સ્યાન્ચેત્ લોકોત્તરિકમેવ

કી પુષ્ટિ કરને સે હી આતી હૈ । અન્ય ચરક આદિ સમસ્ત પ્રવચનો મેં  
હન્હી હિંસાદિક કર્મો કે કરને કા વિધાન સ્પષ્ટરૂપ સે પાયા જાતા હૈ ।  
હસીલિયે યે કુપ્રવચન માને ગયે હૈ । હનકે ઢારા પ્રદર્શિત હન્દ્રાદિક  
પૂજન મી હસી નિમિત્ત સે કુપ્રાવચનિક કહા ગયા હૈ । જૈન શાસ્ત્રો મેં  
પ્રતિમાપૂજન કે નિષેધ કા સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ જો દેખને મેં નહીં આતા હૈ,  
લસકા યહ કારણ હૈ કિ જિસ સમય પ્રમુ ને હન્દ્રાદિક કે પૂજન કા  
કુપ્રાવચનિક રૂપ માનકર નિષેધ કિયા ઉસ સમય ઉનકે સમક્ષ અર્હત  
કી પ્રતિમા કે પૂજન કા પ્રસંગ હી નહીં થા, નહીં તો ડસકા મી વે  
સ્વતન્ત્ર રૂપ સે નિષેધ કરતે-દૂસરે-પ્રતિમા પૂજન કાર્ય હિંસામય કાર્ય  
હૈ-ભગવાન ને ધર્મ કે લિયે મી હિંસા કરને કા આદેશ નહીં દિયા હૈ  
અતઃ જબ વીતરાગ શાસ્ત્ર મેં હિંસા કા વિધાન હી નહીં હૈ-તવ હસકા  
મી વિધાન કૈસે વે કરતે પ્રતિષેધ વાક્ય ઉસી સમય સાર્થક માના  
જાતા હૈ જબ પ્રતિષેધરૂપ પદાર્થ કિસી મી રૂપ સે પ્રસક્ત હોતા હૈ ।

ચીરિક વગેરે બધા પ્રવચનોમા એ જ હિંસા વગેરે કર્મોને કરવાનું વિધાન  
સ્પષ્ટ રૂપ જોવામા આવે છે એથી આ બધા કુપ્રાવચનિક માનવામા આવે છે  
એમના વડે પ્રદર્શિત ઇન્દ્ર વગેરેનું પૂજન પણ આ કારણને લીધે જ કુપ્રાવચ  
નિક કહેવાય છે જૈન શાસ્ત્રોમા પ્રતિમા પૂજનના નિષેધનો સ્પષ્ટપણે જે ઉલ્લેખ  
જોવામા આવતો નથી તેનું કારણ પણ એ છે કે જ્યારે પ્રભુએ ઇન્દ્ર વગેરેના  
પૂજનને કુપ્રાવચનિક રૂપ માનીને નિષેધ કર્યો ત્યારે તેમની સામે અહંતની  
પ્રતિમાના પૂજનની વાત જ ન હતી, નહિતર તેઓશ્રી એ તેનો પણ સ્વતન્ત્ર  
રૂપથી નિષેધ કર્યો હોત બીજી વાત એ છે કે પ્રતિમા પૂજનનું કાર્ય હિંસા  
મય છે, ભગવાને ધર્મના માટે પણ હિંસા કરવાની આજ્ઞા કરી નથી એટલા  
માટે જ્યારે વીતરાગ શાસ્ત્રમા હિંસા વિધેનું વિધાન જ નથી ત્યારે આનું  
વિધાન પણ તેઓ કેવી રીતે કરે પ્રતિષેધ વાક્ય ત્યારે જ સાર્થક છે  
જ્યારે પ્રતિષેધરૂપ પદાર્થ કોઈ પણ રૂપથી પ્રસક્ત હોય છે



સ્વાત્ લોકે તુ તસ્ય સમાવેશાનર્હતયા લૌકિકત્વાસમગ્રાત્ । પ્રવચને ભગવતા યત્  
સામાયિકાદિ પદ્ધિધાવશ્યક પ્રસ્થિત તદેવ સ્વચ્છન્દવિહારિભિઃ પટ્કાયર્દિ-  
સકૈર્જિનાજ્ઞાગૃહ્યૈ ક્રિયમાણ લોકોત્તરિક-દ્રવ્યાવશ્યકમ્ । તત્ર પદ્ધિધાવશ્યકે  
નિનપ્રતિમા પૂજનસ્ય પ્રવેશાત્ તસ્ય લોકોત્તરિક-દ્રવ્યાવશ્યકે સમાવેશો ન સમગ્રતિ ।

યદ્ પ્રતિમાપૂજનરૂપ કાર્ય ન લૌકિક દ્રવ્ય અવશ્યક હૈ ઓર ન લોકો  
ત્તર દ્રવ્ય અવશ્યક હી હૈ ।

શકા—પ્રતિમા પૂજન લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક નહી હૈ યદ્ તો આપ  
કા કહના ઠીક હૈ, કયો કિ યદ્ લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યકો સે સર્વથા  
ભિન્ન હૈ । પરન્તુ ઇસે લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક માનને મેં આપકો ક્યા  
વિવાદ હૈ । ક્યો કિ પ્રભુ સ્વય લોકોત્તર દેવ માને જાતે અતઃ ડનકા  
પૂજન ભી લોકોત્તરિક હી માનના ચાહિયે ?

ઉત્તર—પ્રવચન મેં ભગવાન જો સામાયિક આદિ છદ્ પ્રકાર કે  
આવશ્યકો કા વર્ણન કિયા હૈ—વે જય જિન આજ્ઞા બાહ્ય-સ્વચ્છન્દવિ-  
હારી ઓર પટ્કાય કી વિરાધના કરને મેં નિરત અનુપયુક્ત પુરુષો દ્વારા  
કરને મેં આતે હૈ લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક રૂપ સે પ્રતિપાદિત કિયે  
ગયે હૈ । ડન પદ્ધિપ્રકાર કે આવશ્યકો મેં પ્રતિમાપૂજન કા કોઈ અધિકાર  
હી નહી હૈ । અતઃ ઇસે કેસે લોકોત્તરિક આવશ્યક માના જા સકતા હૈ ।

પૂજનરૂપ કાર્ય માટે ન તો લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક છે અને ન તો લોકોત્તર  
દ્રવ્ય આવશ્યક છે

શકા —પ્રતિમા પૂજન લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક નથી તમારી આ વાત  
તો ઉચિત છે કેમ કે આ લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યકોથી અપૂર્ણપણે ભિન્ન છે  
પણ અને લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક માનવામા તમને શો વાધો છે ? કેમકે  
પ્રભુ જાતે લોકોત્તર દેવ મનાય છે ત્યારે તેમનું પૂજન પણ લોકોત્તરિક જ  
માનવું જોઈએ ?

ઉત્તર—પ્રવચનમા ભગવાને જે સામાયિક વગેરે છ જાતના આવશ્યકોનું  
વર્ણન કર્યું છે તેઓ ત્યારે જિન-આજ્ઞા બાહ્ય સ્વચ્છન્દ વિહારી અને પટ્-  
કાયની વિરાધના કરવામા નિરત અનુપયુક્ત પુરુષો વડે આચરવામા આવે છે  
લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક રૂપથી પ્રતિપાદિત કરવામા આવે છે આ છ જાતના  
આવશ્યકોમા પ્રતિમા પૂજનનો કોઈ અધિકાર જ નથી એટલા માટે લોકો-  
ત્તરિક આવશ્યક કેવી રીતે માની શકાય ?

વિધાયકતયા પ્રવચનસ્ય કૃત્મિત્વ, તેનેવ ચેન્દ્રાદિપૂજનસ્ય કુપ્રાવચનિશ્વ  
ભવતિ । એવ પ્રરૂપયતો ભગવતોઽર્હતઃ પ્રતિમાયા પૂજનસ્ય પ્રગદ્ગ એવ તદાનીં  
નાસીત્-હિંસામયત્વાત્પૂજનસ્ય, તેન પ્રવચને ભગવતા પ્રતિમાપૂજનપ્રતિષ્ઠા વિશિષ્ટ  
નોક્ત । પ્રતિષ્ઠાપ્રાપ્ત્ય હિ તદૈવ સાર્થક, યદાપ્રતિષ્ઠાપ્રાપ્ત્યોઽર્થઃ કથચિત્ પ્રસક્તો  
ભવતિ । જિનપ્રતિમાપૂજન હિ ન તારહ્યૌકિકદ્રવ્યાવશ્યક, નાપિ લોકોત્તરિક  
દ્રવ્યાવશ્યક, જિનો હિ લોકોત્તરો દેવસ્તત્પૂજનમપિ સ્યાન્ચેત્ લોકોત્તરિકમેવ

કી પુષ્ટિ કરને સે હી આતી હૈ । અન્ય ચરક આદિ સમસ્ત પ્રવચનોં મેં  
હન્દી હિંસાદિક કર્મોં કે કરને કા વિધાન સ્પષ્ટરૂપ સે પાયા જાતા હૈ ।  
હસીલિયે યે કુપ્રવચન માને ગયે હૈં । હનકે દ્વારા પ્રદર્શિત હન્દ્રાદિક  
પૂજન બી હસી નિમિત્ત સે કુપ્રાવચનિક કહા ગયા હૈ । જૈન શાસ્ત્રોં મેં  
પ્રતિમાપૂજન કે નિષેધ કા સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ જો દેખને મેં નહીં આતા હૈ,  
હસકા યહ કારણ હૈ કિ જિસ સમય પ્રભુ ને હન્દ્રાદિક કે પૂજન કા  
કુપ્રાવચનિક રૂપ માનકર નિષેધ કિયા હસ સમય હનકે સમક્ષ અર્હત  
કી પ્રતિમા કે પૂજન કા પ્રસંગ હી નહીં યા, નહીં તો હસકા બી વે  
સ્વતન્ત્ર રૂપ સે નિષેધ કરતે-દુસરે-પ્રતિમા પૂજન કાર્ય હિંસામય કાર્ય  
હૈ-ભગવાન ને ધર્મ કે લિયે બી હિંસા કરને કા આદેશ નહીં દિયા હૈ  
અતઃ જબ વીતરાગ શાસ્ત્ર મેં હિંસા કા વિધાન હી નહીં હૈ-તબ હસકા  
બી વિધાન કૈસે વે કરતે પ્રતિષ્ઠા વાક્ય હસી સમય સાર્થક માના  
જાતા હૈ જબ પ્રતિષ્ઠાપ્રાપ્ત્ય પદાર્થ કિસી બી રૂપ સે પ્રસક્ત હોતા હૈ ।

ચીરિક વગેરે બધા પ્રવચનોમા એજ હિંસા વગેરે કર્મોને કરવાનું વિધાન  
સ્પષ્ટ રૂપ જોવામા આવે છે એથી આ બધા કુપ્રાવચનિક માનવામા આવે છે  
એમના વડે પ્રદર્શિત ઇન્દ્ર વગેરેનું પૂજન પણ આ કારણને લીધે જ કુપ્રાવચ  
નિક કહેવાય છે જૈન શાસ્ત્રોમા પ્રતિમા પૂજનના નિષેધનો સ્પષ્ટપણે જે ઉલ્લેખ  
જોવામા આવતો નથી તેનું કારણ પણ એ છે કે જ્યારે પ્રભુએ ઇન્દ્ર વગેરેના  
પૂજનને કુપ્રાવચનિક રૂપ માનીને નિષેધ કર્યો ત્યારે તેમની સામે અર્હતની  
પ્રતિમાના પૂજનની વાત જ ન હતી, નહિતર તેઓશ્રી એ તેનો પણ સ્વતન્ત્ર  
રૂપથી નિષેધ કર્યો હોત બીજી વાત એ છે કે પ્રતિમા પૂજનનું કાર્ય હિંસા  
મય છે, ભગવાને ધર્મના માટે પણ હિંસા કરવાની આજ્ઞા કરી નથી એટલા  
માટે જ્યારે વીતરાગ શાસ્ત્રમા હિંસા વિષેનું વિધાન જ નથી ત્યારે આનું  
વિધાન પણ તેઓ કેવી રીતે કરે પ્રતિષ્ઠા વાક્ય ત્યારે જ સાર્થક ગણાય છે  
જ્યારે પ્રતિષ્ઠાપ્રાપ્ત્ય પદાર્થ કોઈ પણ રૂપથી પ્રસક્ત હોય છે /

ચિત્રાદય इति प्रवृत्तम् । एव च जिनपूजन-कुप्रावचनिक-नोआगमतो द्रव्या-  
वश्यक प्रतिमाया क्रियमाणत्वात् , इन्द्रादिपूजनवत् , अन्यनुमानेनापि कुप्रावचनिक  
द्रव्यावश्यकतया धर्मपदवाच्य न भवतीति ।

उत्तर—यद्यपि कुप्रावचन में प्रतिमा पूजा का विधान स्वतन्त्ररूप  
से नहीं किया गया है, तो भी कामपूजक प्रणियों के मनोरथ को पूर्ण  
करने वाले-मनुष्य के मृत-निर्जीव देह की पूजा की तरह प्रतिमा में  
होनी हुई पूजा भी कुप्रावचनकी है ।

इस प्रकार हम अनुमानसे कह सकते हैं । उसमें प्रवचनमें पूजाके  
आधार का निर्णय करते समय सामान्यरूप से पूजा के आधारभूत  
जितने भी प्रतिमा चित्र आदि पूज्य हैं वे सब गृहीत हुए हैं । इस  
प्रकार प्रतिमा की सर्व पूजा का आधार प्रतिमा और चित्र आदि है ।  
इसलिये वह कुप्रावचनिक है । इस प्रकार हम कहते हैं । हम कथन से  
यह व्याप्ति सिद्ध होती है कि इन्द्रादिक पूजन की तरह प्रतिमा में जो  
जो पूजाएँ की जाती हैं वे सब कुप्रावचनिकी हैं । अतः जिन पूजन भी  
प्रतिमा में किये जाने पर नोआगम की अपेक्षा से कुप्रावचनिक द्रव्य  
आवश्यक ही है, और इसीलिये वह धर्मपद का वाच्य नहीं है यह बात  
स्पष्टरूप से सिद्ध हो जाती है इसमें अनुमान प्रयोग उस प्रकार से  
करना चाहिए ।

ઉત્તર —જો કે કુપ્રવચનમા પ્રતિમા પૂજનનું વિધાન સ્વતંત્ર રૂપમા કર  
વામા આવ્યું નથી છતાંય માનવીના મનોરથોને પૂર્ણ કરનારા-માણુમના મૃત  
નિર્જીવ શરીરની પૂજાની જેમજ પ્રતિમાની કરવામા આવેલી પૂજા પણ કુપ્રા  
વચનિકી છે આમ અમે અનુમાનથી કહી શકીએ છીએ તે કુપ્રવચનમા  
પૂજના આધારનો નિર્ણય કરતી વખતે સામાન્ય રૂપથી પૂજના આધારભૂત  
જેટલા પ્રતિમા ચિત્ર વગેરે પૂજ્ય છે તેઓ સર્વેનું ગ્રહણ થયું છે

આ રીતે પ્રતિમાની સર્વ પૂજનો આધાર પ્રતિમા અને ચિત્ર વગેરે છે  
જેટલા માટે તે કુપ્રાવચનિક છે આમ અમે કહી શકીએ છીએ આ કથનથી એ  
વ્યક્તિસિદ્ધ થાય છે કે ઈન્દ્ર વગેરેના પૂજનની જેમ પ્રતિમાઓમા જે જે  
પૂજાઓ કરવામા આવે છે તેઓ સર્વે કુપ્રાવચનિકી છે જેટલા માટે જિન  
પૂજા પણ પ્રતિમામા આવતી હોવાથી આગમની અપેક્ષાથી કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય  
આવશ્યક છે અને એથી તે ધર્મપદ વાચ્ય નથી આ વાત સ્પષ્ટપણે સિદ્ધ  
થઈ ગયું છે આમા અનુમાનપ્રયોગ આ પ્રમાણે કહી શકાય તેમ છે

કુપ્રવચનેઽર્હત પૂજાવિધાન વિશિષ્ટનામ તથાપિ શામપૂરકમૃતમનુષ્યપૂજનવત્  
તસ્ય પૂજા પ્રતિમાયા ક્રિયમાણા કુપ્રાવચનિકીતિ ચક્રુઃ શ્રવ્યતે । તસ્મિન્ કુપ્ર  
વચને હિ પૂજાધારનિર્ણયાવગરે સામાન્યનં પૂજ્યમ્ય મર્તસ્યાપિ પૂજાધારઃ પ્રતિમા

ભાવાર્થ—શકાકાર ને પ્રતિમાપૂજન કો લોકોત્તરિક આવશ્યક માનકર દ્રવ્ય આવશ્યક મેં જો उसका समावेश करना चाह है सो उसकी इस आशका का समाधान करते हुए सूत्रकारने यह कहा है कि जिन आज्ञा बाह्य एव सामायिक आदि में अनुपयुक्त पुरुषों द्वारा किये गये सामायिक आदि पद विध आवश्यक कार्य ही लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक में परिगणित किये गये हैं । इनमें प्रतिमा पूजा को कोई संवध ही नहीं है—प्रतिमा पूजा पद विध आवश्यक कार्यों में परिगणित ही नहीं हुई है । अतः उसका वहां पर किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं होने से उसे लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक में नहीं गिना जा सकता है अतः इसका समावेश केवल कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक में ही हुआ है ऐसा मानना चाहिये ।

શકા—કુપ્રવચન મેં હન્દ્રાદિકોં કી પૂજા કરને કે વિધાન કી તરહ પ્રતિમા પૂજા કા વિધાન તો પાયા નહીં જાતા હૈ ફિર આપ હસે કુપ્રાવચનનિક મેં અન્તર્ભૂત કૈસે કહ સકતે હૈ ?

ભાવાર્થ — શકાકારે પ્રતિમા પૂજનને લોકોત્તરિક આવશ્યક માનીને દ્રવ્ય આવશ્યકમાં તેનો સમાવેશ કરવાની જે ઈચ્છા બતાવી છે તેની તે શકાતુ સમાધાન કરતા સૂત્રકારે આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે જિન આજ્ઞા બાહ્ય અને સામાયિક વગેરેમાં અનુપયુક્ત પુરુષો વડે કરવામાં આવેલા સામાયિક વગેરે છ બાતના આવશ્યક કાર્યો જ લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યકમાં પરિગણિત કરવામાં આવ્યા છે એનાથી પ્રતિમા પૂજનને કોઈ સંબધ જ નથી પ્રતિમા પૂજા પદવિધ આવશ્યક કાર્યોમાં પરિગણિત જ થઈ નથી એટલા માટે ત્યાં તેનો કોઈ પણ રીતે સંબધ નહિ હોવાથી લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યકમાં તેની ગણના થઈ શકે તેમ નથી એથી ફક્ત દ્રવ્ય આવશ્યકમાં જ થયો છે આમ માની લેવું જોઈએ

શકા — કુપ્રવચનમાં ઈન્દ્ર વગેરેની પૂજા કરવાના વિધાનની જેમ પ્રતિમા પૂજનનું વિધાન તો મળતું નથી ત્યારે તમે એને કુપ્રવાચનિકમાં કેવી રીતે સમાવિષ્ટ કરી શકો ?

ચિત્રાદય ઇતિ પ્રસ્થિતમ્ । એવં ચ જિનપૂજન-કુપ્રાવચનિક-નોઆગમતો દ્રવ્યા-વશ્યક પ્રતિમાયા ક્રિયમાણત્વાત્ , ઇન્દ્રાદિપૂજનત્વત્ , સ્ત્યનુમાનેનાપિ કુપ્રાવચનિક દ્રવ્યાવશ્યકતયા ધર્મપદવાચ્ય ન ભવતીતિ ।

ઉત્તર—યદ્યપિ કુપ્રવચન મેં પ્રતિમા પૂજા કા વિધાન સ્વતન્ત્રરૂપ સે નહીં ક્રિયા ગયા હૈ, તો ઓ કામપરક પ્રણિયોં કે મનોરથ કો પૂર્ણ કરને વાલે-મનુષ્ય કે મૃત-નિર્જીવ દેહ કી પૂજા કી તરહ પ્રતિમા મેં હોની હુઈ પૂજા ઓ કુપ્રાવચનનિ કી હૈ ।

હસ પ્રકાર હમ અનુમાનસે કર સકતે હૈં । ડસમેં પ્રવચનમેં પૂજાકે આધાર કા નિર્ણય કરતે સમય સામાન્યરૂપ સે પૂજા કે આધારભૂત જિતને ઓ પ્રતિમા ચિત્ર આદિ પૂજ્ય હ વે સવ ગૃહીત હુઅ હ । ડસ પ્રકાર પ્રતિમા કી સર્વ પૂજા કા આધાર પ્રતિમા ઓર ચિત્ર આદિ હૈ । ડસલિયે વહ કુપ્રાવચનિક હૈ । ડસ પ્રકાર હમ કહતે હૈ । ડમ કથન સે યહ વ્યાસિ સિદ્ધ હોતી હૈ કિ ઇન્દ્રાદિક પૂજન કી તરહ પ્રતિમા મેં જો જો પૂજાઈ કી જાની હૈં વે સવ કુપ્રાવચનિકી હૈ । અત જિન પૂજન ઓ પ્રતિમા મેં કિયે જાને પર નોઆગમ કી અપેક્ષા સે કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યક હી હૈ, ઓર હમોલિયે વહ ધર્મપદ કા વાચ્ય નહીં હૈ યહ વાત સ્પષ્ટરૂપ સે સિદ્ધ હો જાતી હૈ હમમેં અનુમાન પયોગ ડસ પ્રકાર સે કરના ચાહિળ ।

ઉત્તર — જો કે કુપ્રવચનમા પ્રતિમા પૂજનનુ વિધાન સ્વતન્ત્ર રૂપમા કરવામા આવ્યુ નથી છતાય માનવીના મનોરથોને પૂર્ણ કરનારા-માણુમના મૃત નિર્જીવ શરીરની પૂજાની જેમજ પ્રતિમાની કરવામા આવેલી પૂજા પણ કુપ્રાવચનિકી છે આમ અમે અનુમાનથી કહી શકીએ છીએ તે કુપ્રવચનમા પૂજના આધારનો નિર્ણય કરતી વખતે સામાન્ય રૂપથી પૂજના આધારભૂત જેટલા પ્રતિમા ચિત્ર વગેરે પૂજ્ય છે તેઓ સર્વેનુ ગ્રહણ થયુ છે

આ રીતે પ્રતિમાની સર્વ પૂજનો આધાર પ્રતિમા અને ચિત્ર વગેરે છે એટલા માટે તે કુપ્રાવચનિક છે આમ અમે કહી શકીએ છીએ આ કથનથી એ વ્યક્તિસિદ્ધ થાય છે કે ઇન્દ્ર વગેરેના પૂજનની જેમ પ્રતિમાઓમા જે જે પૂજાઓ કરવામા આવે છે તેઓ સર્વે કુપ્રાવચનિકી છે એટલા માટે જિન પૂજા પણ પ્રતિમામા આવતી હોવાથી આગમની અપેક્ષાથી કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યક છે અને એથી તે ધર્મપ વાચ્ય નથી આ વાત સ્પષ્ટપણે નિદ્ધર્થ જન છે આમા અનુમાનપ્રયોગ આ પ્રમાણે કહી શકાય તેમ છે



અથ ભાવાવશ્યકમુચ્યતે-વિચિત્રક્રિયાનુભવયુક્તો ચોઽર્થ' ન માત્ર, ભાવ તદ્વતોરભેદોપચારાદ્ ભાવઃ । યથા-ऐश्वर्यरूपायाइन्द्रनक्रियाया अनुभवात्इन्द्रो भाव उच्यते । ભાવશાસી આવશ્યક ચ, ભાવમાશ્રિત્ય તા આવશ્યક ભાવાવશ્યકમ્ ।

“ જિનપૂજન નો આગમતો કુપ્રાવચનિક દ્રવ્યાવશ્યક પ્રતિમાયાં ક્રિયમાણત્વાન્ ઇન્દ્રાદિપૂજનવત્ ” । અતઃ હમ સમસ્ત પ્રવૃત્તિ કથન સે યહ વાત સ્પષ્ટ હો જાતી હૈ કિ વત્ પ્રતિમાપૂજન કાર્ય લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક રૂપ સે ભી પ્રસક્ત હોતા તો ભગવાન્ હસકા અવશ્યક પ્રતિ પેધ કરતે ।

અથ ભાવાવશ્યકમુચ્યતે - અથ ભાવ આવશ્યક કયા હૈ હસકા કથન સૂત્રકાર કરતે હૈ-વર્તમાન સમય મેં ઉસ વિવક્ષિતરૂપ પર્યાય સે યુક્ત દ્રવ્ય કા નામ ભાવ હૈ । ભાવ યત્પિ વર્તમાન ક્રિયા રૂપ માના ગયા હૈ, ફિર ભી યહાં પર ઉસ ક્રિયા સે યુક્ત દ્રવ્ય કો જો ભાવ કહા હૈ ઉસકા કારણ દ્રવ્ય ઔર પર્યાય કા અભેદ સબધ હૈ । ભગવાન દ્રવ્ય કે વિના નહી રહ સકતા હૈ । ભાવ દ્રવ્ય કો ણક પર્યાય હૈ, વહ નિરાશ્રય હોતી નહીં હૈ-અતઃ જિસ દ્રવ્ય કે આશ્રય વહ રહેગી ઉન દોનો મેં અભેદોપચાર સે ઉસ પર્યાય સે ઉપલક્ષિત ઉસ દ્રવ્ય કો હી ભાવ કહ દિયા હૈ । જિસ પ્રકાર ऐश्वर्यरूप इन्द्रन (देदीप्यमान होना)

“ જિનપૂજન નો આગમતો કુપ્રાવચનિક દ્રવ્યાવશ્યક પ્રતિમાયા ક્રિયમાણ ત્વાત્ ઇન્દ્રાદિપૂજનવત્ ”

એટલા માટે આ પૂર્વોક્ત કથનથી આ વાત સ્પષ્ટ થાય છે કે તે પ્રતિમા પૂજન કાર્ય લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક પણ નથી જો તે લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યકરૂપે પણ પ્રસક્ત હોત તો ભગવાન તેનો ચોક્કસ પ્રતિપેધ કરત

‘ અથ ભાવાવશ્યકમુચ્યતે ’ —હવે આવશ્યક શુ છે એનું સ્પષ્ટીકરણ સૂત્રકાર કરે છે-વર્તમાન સમયમા તે વિવક્ષિત રૂપ પર્યાયથી યુક્ત દ્રવ્યનું નામ ભાવ છે જો કે ભાવ વર્તમાન ક્રિયારૂપ માનવામા આવ્યો છે, છતાંય અહીં તે ક્રિયાથી યુક્ત દ્રવ્યને જ ભાવ બતાવ્યો છે તેનું કારણ દ્રવ્ય અને પર્યાયનો અભેદ સબધ છે ભાવ ભગવાન દ્રવ્ય વગર રહી શકતો નથી ભાવ દ્રવ્યની એક પર્યાય છે, તે નિરાશ્રય હોતીજ નથી એથી જ દ્રવ્યના આશ્રયે તે રહેશે તેઓ બનેમા અભેદોપચારથી તે પર્યાયથી ઉપલક્ષિત તે દ્રવ્યને જ ભાવ કહી દીધો છે જેમ ऐश्वर्य इन्द्रन ( देदीप्यमान થવું ) ક્રિયાના અનુભ

તદ્ દ્વિવિધમ્- (૧) આગમત્ = આગમમાશ્રિત્ય, (૨) નોઆગમત્ = આગમમાભાવમાશ્રિત્ય ।

આગમતો ભાવાવશ્યકમાદ—

“ સે કિં ત આગમયો ભાવાસ્તય ? આગમયો ભાવાવસ્તય જાણે ઉવઉત્તે, સેત આગમયો ભાવાવસ્તય ” । ( અનુયોગ૦ )

અથ કિં ત આગમતો ભાવાવશ્યકમ્ ?, ઉત્તરમાદ—“ જ્ઞાયક ઉપયુક્ત ” આગમતો ભાવાવશ્યકમ્ ।

અર્થ—આવશ્યકપદાર્થજ્ઞાન્તજનિતસવેગેન વિશુદ્ધમાનપરિણામસ્તા ચોપયુક્ત સાધ્વાદિરાગમતો ભાવાવશ્યકમ્, અવાવશ્યકાર્થજ્ઞાનરૂપન્યાગમસ્યાત્ર

ક્તિયા કે અનુભવ સે ઉપલક્ષિત શચીપતિ ભાવ ઇન્દ્ર કહા જાતા હૈ । હસી પ્રકાર જો આવશ્યક રૂપ ક્તિયા કે અનુભવસે યુક્ત હૈ વહી આત્મા ભાવાવશ્યક કહાજાતા હૈ । ભાવરૂપ જો આવશ્યક હૈ વહ, અથવા ભાવ કો આશ્રય કરકે જો આવશ્યક હૈ વહ ભાવાવશ્યક હૈ ।

યહ ભાવ આવશ્યક મ્હો દો પ્રકાર કા હૈ—૧ આગમ કી અપેક્ષા ભાવ આવશ્યક ઔર દુસરા નો આગમ કી અપેક્ષા ભાવ આવશ્યક । इनमें “ ज्ञायक उपयुक्त ” आगमतो भावावश्यक ” ज्ञायक उपयुक्त आत्मा आगम की अपेक्षा से भाव आवश्यक माना गया है । आवश्यकरूप पदार्थ का जो ज्ञाता है उसका नाम ज्ञायक है । आवश्यकरूप पदार्थ के ज्ञान से जनित सवेग द्वारा विशुद्ध हुए परिणामों का नाम उपयोग है । इस उपयोग से विशिष्ट जो साधु आदि जन हैं वे आगम की अपेक्षा से भाव आवश्यक हैं । क्योंकि कि इनमें आवश्यकरूप पदार्थ

વધી ઉપલક્ષિત શચીપતિ ભાવ ઇન્દ્ર કહેવાય છે તેમજ ને આવશ્યકરૂપ ક્રિયાના અનુભવથી યુક્ત છે તે આત્મા ભાવાવશ્યક કહેવાય છે ભાવરૂપ ને આવશ્યક છે તે અથવા ભાવને આશ્રય કરીને ને આવશ્યક છે તે ભાવાવશ્યક છે

આ ભાવ આવશ્યક પણ બે પ્રકારનો છે—૧, આગમનની અપેક્ષા ભાવ આવશ્યક અને ૨, નો આગમનની અપેક્ષા ભાવ આવશ્યક એમનામાં “જ્ઞાયક ઉપયુક્ત આગમતો ભાવાવશ્યક” જ્ઞાયક ઉપયુક્ત આત્મા આગમની અપેક્ષાથી ભાવ આવશ્યક માનવામાં આવ્યો છે આવશ્યકરૂપ પદાર્થનો ને જ્ઞાતા છે તેનું નામ જ્ઞાયક છે આવશ્યકરૂપ પદાર્થના જ્ઞાનથી જનિત સવેગવડે વિશુદ્ધિ પામેલા પરિણામોનું નામ ઉપયોગ છે આ ઉપયોગથી વિશિષ્ટ ને સાધુ વગેરે લોકો છે તેઓ આગમની અપેક્ષાથી ભાવ આવશ્યક છે કેમકે તેઓમાં આવ

સત્ત્વાત્, ભાવાવશ્યકતા ચાત્રાવશ્યકાર્થજ્ઞાનજનિતોપયોગપરિણામવત્ત્વાદ્મા - માશ્રિત્યાવશ્યકમિતિ વ્યુત્પત્તે. । इन्मुक्त भवति आश्रयकार्थगस्य आश्रयकोप योगपरिणाम आगमतो भावावश्यक, मा-गादिस्तु तादृशपरिणामवत्त्वाद्वागमतो भावावश्यकमुच्यते । इदमावश्यकोपयोगपरिणामस्य भावावश्यक धर्मपदवाच्य, श्रुतधर्मान्तर्गतत्वात्, अत्र जिनाज्ञायाः सत्त्वात् ।

નો આગમતો ભાવાવશ્યક ત્રિવિધ-લૌકિક, કુમાવચનિક, લોકોત્તરિક ચેતિ  
લૌકિક ભાવાવશ્યક પૂર્વાહ્ને ભારતસ્ય વાચન શ્રવણ વા, અપરાહ્ને રામાયણસ્ય

કે જ્ઞાનરૂપ આગમ કા સદ્ભાવ પાયા જાતા હૈ । ફસલિયે સાધુ આદિ જનોં મેં આગમ કી અપેક્ષા સે આવશ્યકતા ઓર દસ આવશ્યક કે અર્થ જ્ઞાન સે જનિત ઉપયોગરૂપ પરિણામોં કી વિશિષ્ટતા હોને સે ભાવ રૂપતા આતી હૈ । અતઃ “ ભાવ કો આશ્રિત કરકે જો આવશ્યક હૈ વહ ભાવ આવશ્યક હૈ ” યહ કથન સુસગત હો જાતા હૈ

ભાવાર્થ-“આવશ્યક” ફસ પદ કે અર્થજ્ઞાન સે વિશિષ્ટ તથા તદ નુકૂલ ઉપયોગ પરિણતિ સપત્ર આત્મા હી આગમ કી અપેક્ષા સે ભાવાવશ્યક કહા ગયા હૈ । યે ભાવાવશ્યક સાધુ આદિ હૈ । ક્યોં કિ યે હી ઉસ પ્રકાર કી પરિણતિ વાલે હોતે હૈ । અતઃ શ્રુતધર્મ કે અન્તર્ગત હોને સે યહ ભાવાવશ્યક હી ધર્મ પદ કા વાચ્ય કહા ગયા હૈ ઓર એસે હી ધર્મ કી આરાધના કરને કી ભગવાનને આજ્ઞા પ્રદાન કી હૈ ।

નો આગમ કી અપેક્ષા સે ભાવ આવશ્યક ત્રીન પ્રકાર કા માના ગયા હૈ । (૧) લૌકિક (૨) કુમાવચનિક ઓર લોકોત્તરિક । પૂર્વાહ્ને મેં

શ્યકરૂપ પદાર્થના જ્ઞાનરૂપ આગમને સદ્ભાવ મળે છે એટલા માટે સાધુ વગેરે લોકોમા આગમની અપેક્ષાથી આવશ્યકતા અને આ આવશ્યકતાના અર્થ જ્ઞાનથી જનિત ઉપયોગરૂપ પરિણામોની વિશિષ્ટતા હોવાથી ભાવરૂપતા આવે છે એટલા માટે “ ભાવને આશ્રિત કરીને જે આવશ્યક છે તે ભાવ આવશ્યક છે ” આ કથ સુસગત થઈ પડે છે

ભાવાર્થ — “ આવશ્યક ” આ પદના અર્થ જ્ઞાનથી વિશિષ્ટ તેમજ તદ નુકૂળ ઉપયોગ પરિણતિ સપત્ર આત્મા જ આગમની અપેક્ષાએ ભાવ આવશ્યક સાધુ વગેરે છે કેમકે એ લોકો જ આ જ્ઞાનની પરિણતિવાળા હોય છે એથી શ્રુતધર્મના અતર્ગત હોવા બદલ આ ભાવાવશ્યક જ ધર્મ પદવાચ્ય કહેવામા આવ્યો છે અને આ જ્ઞાનના ધર્મની આરાધના કરવાની ભગવાને પણ આજ્ઞા કરી છે

નો આગમની અપેક્ષાએ ભાવ આવશ્યકતા ત્રણ પ્રકારો છે - (૧) લૌકિક (૨) કુમાવચનિક (૩) અને લોકોત્તરિક પૂર્વાહ્નમા ભારતનુ વા , શ્રવણ

વાચનં શ્રવણ યા । લોકે હિ ભારતસ્ય વાચન શ્રવણ પૂર્વાહ્નિ એવ ક્રિયમાણં દૃશ્યતે,  
તથા રામાયણસ્ય વાચન શ્રવણમપરાહ્ન એવ ક્રિયમાણં દૃશ્યતે, ત્રિપરીત્યે દોષદર્શ  
નાત્ । તતથેત્ય લોકેઽવશ્યકરણીયતયાઽઽવશ્યકત્વ તદ્વાચકસ્ય શ્રોતુશ્ચ તદર્થો-  
પયોગપરિણામસત્ત્વાદ્ ભાવત્વ, તદ્વાચક પુસ્તકપત્રાદિપરાવર્તનરૂપયા હસ્તાભિ-  
નયરૂપયા ચ ક્રિયયા યુક્તો ભવતિ, શ્રોતાપિ ચ ગાત્રસયતત્વ-કરસંપુટીકરણાદિ

ભારત કા વાચના અથવા સુનના, અપરાહ્ન મેં રામાયણ કા વાચના યા  
સુનના યે સઘ લૌકિક ભાવ આવશ્યક હૈ । લોક મેં ભારત કા વાચના  
અથવા સુનના પૂર્વાહ્નિ મેં હી ક્રિયા જાતા હૈ । રામાયણકા વાચન ઔર  
શ્રવણ અપરાહ્ન મેં હી હોતા હુઆ દેખા જાતા હૈ । હસસે વિરુદ્ધ  
પ્રવૃત્તિ કરને સે અનેક પ્રકાર કે દોષો કા ભાજન વનના પડતા હૈ, હસ  
પ્રકાર લોક મેં ભારતાદિક ગ્રન્થો કા વાચના આદિ કાર્ય નિયમિત  
સમય મેં અવશ્ય કરને યોગ્ય હોને કી વજહ સે આવશ્યક રૂપમેં માના  
ગયા હૈ । અતઃ હસમે હસ પ્રકાર સે અવશ્યરૂપના આ જાતા હૈ । તથા  
હનકે વાચને વાલો મે યા સુનને વાલો મેં હનકે અર્થ કે પ્રતિ ઉપયો-  
ગાત્મક પરિણામ કે સદ્ભાવ સે ભાવરૂપતા આતી હૈ । ક્યોં કિ જબતક  
હનકે વાચને વાલે મેં હનકે અર્થ કે પ્રતિ ઉપયોગાત્મક પરિણામ કી  
જાગૃતિ નહીં હોગી તત્તરુ વે હન પુસ્તકો કે પત્રો આદિ કા પરાવ-  
ર્તન કરને રૂપ ક્રિયા ઔર શ્રોતાઓ કો અનેક અર્થ કી સંગતિ ચેઠાને  
કે લિયે હસ્ત આદિ કે સચાલનરૂપ અભિનય ક્રિયા કા ઉપયોગ હી

અપરાહ્નમા રામાયણનુ વાચન કે શ્રવણ યા યધુ લૌકિક ભાવ આવશ્ય છે  
લોકમા ભારતનુ વાચન અથવા તેા શ્રવણ પૂર્વાહ્નિમા જ કરવામા આવે છે  
રામાયણનુ વાચન અને શ્રવણ અપરાહ્નમા જ થતુ જોવામા આવે છે એથી  
વિરુદ્ધ આચરણ કરવાથી માણસ ઘણી જાતના દોષોને પાત્ર થઈ પડે છે આ  
પ્રમાણે ભારત વગેરે ગ્રંથોનુ વાચન વગેરે કાર્ય નિયમિત સમયમા આવશ્યક  
કરવા યોગ્ય હોવા બદલ આવશ્યક રૂપમા માનવામા આવે છે એથી આમા આ  
ગીતે આવશ્યકપણુ આવી જાય છે તેમજ એમનુ વાચન કરનારાઓમા તેમના  
તરફ ઉપયોગાત્મક પરિણામના સદ્ભાવથી ભાવરૂપતા આવે છે કેમકે જ્યાસુધી  
તેમનુ વાચન કરનારાઓમા તેમના અર્થ પ્રત્યે ઉપયોગાત્મક પરિણામની જાગૃતિ  
થશે નહિ, ત્યા સુધી તેઓ તે પુસ્તકના પત્રો વગેરેના પરાવર્તન કરવારૂપ  
ક્રિયા અને શ્રોતાઓના માટે અનેક જાતના અર્થની સંગતિ બેસાડવા માટે  
હાથ વગેરેના હલનચલનરૂપ અભિનય ક્રિયા ઉપયોગ જ કેવી રીતે કરી શકે.

ક્રિયાગ્રાન્ ભગતિ, એવ તયોઃ ક્રિયાગ્રત્તેન નોગમત્ત, “કિરિયાઽગમો નહોઈ”  
 હતિ વચનાત્ । ક્રિયારૂપે દેશે આગમાભાગાદ્ નોગમત્તમપિ, અત્ર નો શબ્દસ્ય  
 દેશનિપેધગ્રોધકત્વાત્ । લોકે ભારતાદ્યાગમત્ત વ્યવચિયતે, તસ્માદ્દેશત આગમો  
 ઽસ્ત્યપિ । તસ્માદ્ પૂર્વાહ્નેઽપરાહ્ને યથાનિર્દિષ્ટકાલે ભારતાદ્યુપયુક્તો યદન્યથ ભારતાદિ  
 વાચયતિ શૃણોતિ તા, તદ્ વાચન શ્રવણ ચ લોકિક માત્રાગ્રવ્યયમિતિ ગ્રોધ્યમ્ ।

કેસે કર સકતે હૈ । પરન્તુ હસ સમય હસ પ્રકાર કી તે સમસ્ત ક્રિયાઈ  
 હનમે પ્રત્યક્ષ હી દેખને મેં આતી હૈ । હસી પ્રકાર શ્રોતાજન મી અટલ  
 હોકર હનકે સુનને મે તન્મય હો જાતે હૈ । સમય ૨ પર હાથ જોડને  
 રૂપ ક્રિયાઈ મી કરતે હૈ । હસ પ્રકાર કી ક્રિયાઈ મે યુક્ત હોને સે હન  
 સુનને વાચને વાલો મેં નો આગમતા મી હૈ ત્યો કિ “ કિરિયા આગમો  
 ન હોઈ ” ક્રિયા આગમ નહી માની જાતી હૈ એસા સિદ્ધાન્ત કા કથન  
 હૈ । “ નો આગમ ” મેં નો શબ્દ આગમ કે એક દેશ કા વાચક હૈ ।  
 હસલિયે ક્રિયારૂપ એક દેશ મેં પૂર્ણરૂપ સે આગમ કા અભાવ હોને સે  
 આગમ કી એક દેશતા હસમેં માનને મેં આતી હૈ । ભારતાદિક પુસ્તકોં  
 મેં આગમતા કા કથન લોક કી અપેક્ષા સે હી ક્રિયા ગયા જાનના  
 ચાહિયે । ત્યો કિ લોક મેં અન્ય વ્યવહારી જન હનમેં આગમતા કા  
 વ્યવહાર કરતે હુએ દેખે જાતે હૈ । હસ પ્રકાર પૂર્વાહ્ન યા અપરાહ્ન મેં  
 કિસી મી નિર્દિષ્ટ સમય મે ભારતાદિક ગ્રન્થો કા જ્ઞાતા હનમેં ઉપર્યુક્ત  
 હોકર જો હનકા વાચના આદિ કાર્ય કરતા હૈ—યા જો શ્રોતાજન ઉપ

પણુ તે વખતે આ જાતની આ બધી ક્રિયાઓ તેઓમા પ્રત્યક્ષરૂપે જોવામા  
 આવે છે આ રીતે શ્રોતાઓ પણ તટલીન થઈને સાલજવા માટે છે એવું  
 સમયે તેઓ હાથ જોડવારૂપ ક્રિયાઓ પણ કરે છે આ જાતની ક્રિયાઓથી  
 યુક્ત હોવા બદલ તે વાચનારા તેમજ સાલજનારાઓમા નો આગમતા પણ  
 છે કેમકે “ કિરિયા આગમો ન હોઈ ” ક્રિયા આગમ માનવામા આવતી નથી  
 આ સિદ્ધાન્તનુ કથન છે “ નો આગમ ” મા નો શબ્દ આગમતા એક દેશનો  
 વાચક છે એટલા માટે ક્રિયારૂપ એકદેશમા આગમનો સંપૂર્ણપણે અભાવ  
 હોવાથી તેમા આગમની એકદેશતા માનવામા આવે છે ભારત વગેરે ગ્રંથોમા  
 આગમતાનુ કથન લોકની અપેક્ષાથી જ કરવામા આવ્યું છે કેમકે લોકમા  
 બીજી વ્યવહારી લોકો પણ એમા આગમતારૂપ વ્યવહાર કરતા જોવાય છે આ  
 રીતે પૂર્વાહ્ન કે અપરાહ્નમા કેમ પણ નિર્દિષ્ટ સમયમા ભારત વગેરે ગ્રંથો નો  
 જ્ઞાતા તેઓમા ઉપયુક્ત થઈને જે તેમનું વાચન વગેરે કાર્ય કરે છે । તે



કુપાવચનિક ભાવાવશ્યકમુન્યતે—યે ઇમે ચરકચીરિકાદયો યાવત્ પાપણ્ડસ્થા  
ઉપયુક્તો યથાવસર યદવશ્યમ્—ઈજ્યા-ઝલિ-હોમ-જપો-ન્દુરુક્ક-નમસ્કારાદિક ભાવ  
રૂપમાવશ્યક કુર્વન્તિ તેષા તત્ કુપાવચનિક ભાવાવશ્યકમ્ ।

તત્ર-ઈજ્યા-સન્ધ્યોપાસનમ્, અઝલિ-જલાઝલિ સૂર્યાય દીપતે, હોમ-  
નિત્યહવનમ્, જપ-ગાયત્રી, ઉન્દુરુક્ક-અય દેશીયઃ શબ્દ ધૂપાર્યકઃ, નમ-  
સ્કારઃ=વન્દનમ્, एतेषा ચરકાદિભિ પાપણ્ડસ્યૈરવશ્ય ક્રિયમાણત્વાદાવશ્ય-  
કત્વમ્ । તદર્થોપયોગશ્રદ્ધાદિપરિણામસદ્ભાવાત્ માતૃત્વમ્ । ચરકાદીના તદર્થોપ-

યુક્ત હોકર ઉન્હેં સુનતે હેં વહ સત્ર વાચના સુનના આદિ કાર્ય નો  
આગમ કી અપેક્ષા સે લોકિક ભાવ આવશ્યક હૈ ।

જો ચરક ચીરિકાદિ જન ઉપયુક્ત હોકર અપને આવશ્યક કાર્ય  
સ્વરૂપ ઇજ્યા, ઝજલિ, હોમ જપ, ઉન્દુરુક્ક, ઓર નમસ્કાર આદિ ભાવ  
રૂપ આવશ્યક કરતે હેં, ડનકે ચે સત્ર કાર્ય કુપાવચનિક ભાવ આવ  
શ્યક હૈ સત્ર-યા કી ઉપાસના કરના ઇજ્યા હૈ, સૂર્ય કે લિયે જલકી  
અજલિ દેના અઝલિ હૈ, નિત્ય હવન કરના હોમ, ગાયત્રી કા પાઠ  
કરના જપ, ધૂપ કા રેના ઉન્દુરુક્ક ઓર નમસ્કાર કરના વન્દના  
કર્મ હ । યે સત્ર કાર્ય ચરકાદિ જનો દ્વારા પ્રતિદિન અવશ્ય કરને  
યોગ્ય હોને હેં-અતઃ ડનમેં ડન્હી કી માન્યતાનુસાર આવશ્યકપના  
કહા ગયા હૈ ડનકે કરને મેં ડનકે અન્તઃ કારણ મં ડનકે અર્થ કે પ્રતિ  
ઉપયોગ ઇવ શ્રદ્ધા ઓદિરૂપ પરિણતિ કા સદ્ભાવ પાયા જાતા હૈ । ઇસ

જે શ્રોતાઓ ઉપયુક્ત થઈને તેમનું શ્રવણ કરે છે તે બધું વાચન શ્રવણ  
વગેરે કાર્ય નો આગમની અપેક્ષાએ લોકિક ભાવ આવશ્યક છે

જે ચરક ચારિક વગેરે લોકો ઉપયુક્ત થઈને આવશ્યક કાર્યસ્વરૂપ  
ઇજ્યા, અઝલિ, હોમ, જપ, ઉન્દુરુક્ક અને નમસ્કાર વગેરે ભાવરૂપ  
આવશ્યકો કરે છે, તેઓના આ બધા કાર્યો કુપાવચનિકભાવ આવશ્યક  
છે મધ્યાની ઉપાસના કરવી એ ઇજ્યા છે, સૂર્યને માટે પાણીની અઝલિ  
આપવી તે અઝલી છે, દરરોજ હવન કરવો તે હોમ, ગાયત્રી પાઠ કરવો  
તે જપ અને ધૂપ કરવો તે ઉન્દુરુક્ક અને નમસ્કાર એ વન્દના કર્મ છે  
આ બધા કાર્યો ચરક વગેરે લોકો વડે હમેશા અવશ્ય કરવાયોગ્ય હોય છે  
એટલા માટે આમા તેમની માન્યતા મુજબ જ આવશ્યકપણું કહેવામા આવ્યું  
છે એમના આચરણથી તેમના હૃદયમા તેના અર્થ પ્રત્યે ઉપયોગ અને શ્રદ્ધા  
વગેરે રૂપ પરિણતિ નો સદ્ભાવ મળે છે આ અપેક્ષાએ ત્યા ભાવતા અને

યોગરૂપો દેશ આગમ, કરશિરઃ સયોગાદિદ્રિયારૂપો દેશસ્તુ નોઆગમ, તથા  
ચ દૈશિકાગમાભાવમાશ્રિત્ય નો આગમત્વમપિ, નોશબ્દસ્યાત્વાપિ દેશનિષ  
ધપરત્વાત્ ।

લૌકિક કુપ્રાવચનિક ચ નોઆગમતો ભાવાવશ્યક ન ધર્મપદવાચ્યમ્, તત્ર  
જિનાજ્ઞાયા અભાવાદિતિ ચોક્ત્યમ્ ।

અથ કિં લોકોત્તરિક નોઆગમતો ભાવાવશ્યકમ્ ? ઉચ્યતે અનુયોગદ્વારે ।

“ જળ્લ ઇમે સમણે વા સમણી વા સાવઓ વા સાવિયા વા તચ્ચિત્તે તમ્મણે

અપેક્ષા સે વહાં ભાવતા ઔર ંકદશ સે આગમતા ખી હૈ । ક્યોં કિ  
હાથોં કા જોડના નમસ્કાર કરના આદિ રૂપ જો ખી ક્રિયાઈ હૈ યે મથ  
નો આગમ હૈ । હસ અપેક્ષા હનમેં પૂર્ણરૂપ સે આગમપના ન હોકર  
આગમ કી ંક દેશતા હી હૈ ચરક ચીરીકાદિ દ્વારા માન્ય ગ્રન્થોં કી  
નિર્દિષ્ટ ક્રિયાઓં કા હી વહાં સદ્ભાવ હૈ ઔર ંઠ્ઠી કે અર્થ મે ંનકા  
ઉપયોગાદિરૂપ પરિણામ હૈ । હસલિયે યે મથ ચરક ચીરીકાદિ કી  
ક્રિયાઈ નો આગમ કી અપેક્ષા સે ભાવ આવશ્યક હૈ । યહા પર ખી નો  
શબ્દ દેશ નિષેધ પરક હૈ અર્થાત્ આગમ કે ંક દેશ કા વાચક હૈ યે  
લૌકિક ઔર કુપ્રાવચનિક જિન્હેં નો આગમ કી અપેક્ષા સે ભાવાવશ્ય  
કરૂપ મેં પ્રકટ ક્રિયા ગયા હૈ ધર્મપદ કે વાચ્ય નહીં હૈ । ક્યોં કિ હન  
કી આરાધના સે જીવોં કે કર્મોં કી નિર્જરા નહીં હોતી હૈ । અતઃ તીર્થ  
કર પ્રભુ મેં હનકે આરાધન કરને કી આજ્ઞા પ્રદાન નહીં કી હૈ ।

નો આગમ કી અપેક્ષા સે લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક હસ પ્રકાર

એકદેશથી આગમતા પણ છે કેમકે હાથ જોડવા, નમસ્કાર કરવા વગેરે રૂપ  
જે ક્રિયાઓ છે તે સર્વે નોઆગમ છે આ દૃષ્ટિએ એમનામા આગમતા  
સપૂર્ણપણે નથી રૂકત આગમ ॥ એકદેશતા જ છે ચરક ચીરિક વગેરે વડે  
માન્ય ગ્રંથોની નિર્દિષ્ટ ક્રિયાઓનો જ ત્યાં સદ્ભાવ છે અને તેમના જ અર્થમા  
તેમનો ઉપયોગ વગેરેરૂપ પરિણામ છે એટલા માટે આ બધા ચરક ચીરિકા  
વગેરેની ક્રિયાઓ નો આગમની અપેક્ષાથી ભાવ આવશ્યક છે અહીં પણ નો  
શબ્દ દેશનિષેધ પરક છે એટલે કે આગમના એકદેશનો વાચક છે આ લૌકિક  
અને કુપ્રાવચનિકો જેમને નો આગમની દૃષ્ટિએ ભાવાવશ્યક રૂપમા પ્રગટ કર  
વામા આવ્યા છે-ધર્મપદના વાચ્ય નથી કેમકે એમની આરાધનાથી જીવોના  
કર્મોની નિર્જરા થતી નથી, એટલા માટે તીર્થંકર પ્રભુએ એમને આરાધવાની  
આજ્ઞા કરી નથી

નો આગમની અપેક્ષાએ લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક આ પ્રમાણે છે —  
જળ્લ ઇમે સમણે વા સમણી વા સાવઓ વા સાવિયા વા તચ્ચિત્તે તલ્લેસે

તલ્લેસે તદ્વજ્જવમિષ્ણ તત્તિવ્વજ્જવમાણે તદ્દોપપ્પત્તે તદ્દપ્પિયકરણે તવ્માવગા  
માવિષ્ણ અણ્ણત્થ કત્થહ મણ અકરેમાણે ઉમ્મઓકાલ આવસ્સય કરેહ, સે ત લોગુ  
ત્તરિય ભાવાવસ્સય, સે ત નોઆગમતો ભાવાવસ્સય, સે ત ભાવાવસ્સય ॥'

ઝાયા-યત્પલુ શ્રમણો ના શ્રમણી ના શ્રાવકો ના શ્રાવિકા ના તચ્ચિત્તસ્તન્મ-  
નસ્કસ્તલ્લેશ્યસ્તદ્ધ વસિતસ્તત્તીત્રા યસાયસ્તદર્યોપિયુક્તસ્તદર્પિતકરણસ્તદ્ધાવના-  
માવિત અન્નવ કુવચિન્મનોડકુર્ણે ઉમ્મઓકાલ યત્ આવશ્યક સામાયિકાદિ કરોતિ  
તેપાં તલ્લોગ્ગોત્તરિક ભાવાવસ્સયમ્ । તેપાં તદ્ નોઆગમતો ભાવાવસ્સયમ્ તદે-  
તદ્ભાવાવસ્સયમ્ ।

અત્રાપ્યવશ્ય કરણીયતાદ્વાવશ્યક વ, તત્તર્યોપયોગશ્રદ્ધાદિપરિણામન્ય મદ્ધા-  
વાદ્ માવત્વમ્, રજોન્નરણપમાર્જિકાવ્યાપારયથારાત્તિકવન્દનરણાનન્તર સત્તિધિ

હૈ-જણા હમે સમ્મણે વા સમ્મગી વા સાવજો વા સાવિયા વા તચ્ચિત્તે  
તમ્મણે તલ્લેસે તદ્વજ્જવમિષ્ણ તત્તિવ્વજ્જવમાણે તદ્દોપપ્પત્તે તદ્દપ્પિઅ-  
કરણે તવ્માવગામાવિષ્ણ અણ્ણત્થ કત્થહ મણ અકરેમાણે ઉમ્મઓકાલ  
આવસ્સય કરેતિ, સે ત લોગુત્તરિય ભાવાવસ્સય, સે ત નો આગમતો  
ભાવાવસ્સય સે ત ભાવાવસ્સય (અનુયોગદ્વાર)

શ્રમણ અથવા શ્રમણી શ્રાવક અથવા શ્રાવિકા જો સામાયિક આદિ  
આવશ્યક ક્રિયાઓં કો તચ્ચિત્ત છોકર (ઉનમેં હી ચિત્ત લગાકર) તશ્ચન  
હોકર ઉનમેં હી અન્ત કરણકો છકાગ્રસ્ત વ્ત્યાદિ સૂત્રમે કથિત વિધિકે  
અનુમાર દોનોં વાલોં મે કરતેહેં વહ ઉનકોં કાર્ય નો આગમ કી અપેક્ષા  
સે લોકોત્તરિક માવ આવશ્યક હૈ । યે સામાયિક આદિ ક્રિયાઓં  
અવશ્ય કરને યોગ્ય હોને સે આવશ્યક હૈ । કર્તાં કા ઉનકે અર્થ મેં  
ઉપયોગ રૂપ ઇવ શ્રદ્ધા આદિ રૂપ પરિણામ કા મદ્ધાવ હોને સે ઉનમેં

તદ્વજ્જવમિષ્ણ તત્તિવ્વજ્જવમાણે તદ્દોપપ્પત્તે તદ્દપ્પિઅકરણે તવ્માવગામાવિષ્ણ  
અણ્ણત્થ કત્થહ મણ અકરેમાણે ઉમ્મઓકાલ આવસ્સય કરેતિ, સે ત લોગુત્તરિય  
ભાવાવસ્સય, સે ત નો આગમતો ભાવાવસ્સય, સે ત ભાવાવસ્સય (અનુયોગદ્વાર) ।

શ્રમણ અથવા શ્રમણી શ્રાવક અથવા શ્રાવિકા જે સામાયિક વગેરે આવ-  
શ્યક ક્રિયાઓને તચ્ચિત્ત થઈને (તેમનામાં મન પડેલીને) તચ્ચીન વાને  
તેમનામાં જ મન લગાવીને વગેરે સૂત્રમાં કથિત વિધિ મજ્જિમ સૂત્તે વા  
કર છે તેમણે તે કાર્ય નો આગમની અપેક્ષાએ લોનેનન્તરિ આવશ્યક  
છે આ સામાયિક વગેરે ક્રિયાઓ અવશ્ય હોવા યોગ્ય હોવાની અવગત છે  
કર્તાનો તેમના અર્થમાં ઉપયોગરૂપ પરિણામનો મદ્ધાવ હોવાની અવગત  
ભાવતા પણ છે રત્નેહરણ્યા ભૂમિ વગેરેનું પ્રમાણેનું દર્શન, વદન, દર્શન

યોગરૂપો દેશ આગમ, કરશિરઃ મયોગાદિત્યાદ્યો દેશસ્તુ નોઆગમ, તથા  
ચ દૈશિકાગમાભાવમાત્રિત્ય નો આગમત્વમપિ, નોશબ્દમ્યાત્રાપિ દેશનિષ  
ધપરત્યાત્ ।

લૌકિક કુપ્રાવચનિક ચ નોઆગમતો ભાવાવશ્યક ન ધર્મપદવાન્યમ્, તત્ર  
જિનાજ્ઞાયા અભાવાદિતિ ચોધ્યમ્ ।

અથ કિં લોકોત્તરિક નોઆગમતો ભાવાવશ્યકમ્ ? ઉચ્યતે અનુયોગદારે ।

“ જળ્ણ ઇમે સમણે વા સમણી વા સાવઓ વા સાવિયા વા તચ્ચિત્તે તમ્મણે

અપેક્ષા સે વહાં ભાવતા ઔર ંકદશ સે આગમતા ખી હૈ । ક્યોં કિ  
હાથોં કા જોડના નમસ્કાર કરના આદિ રૂપ જો ખી ક્રિયાઈ હૈ વે મથ  
નો આગમ હૈ । હસ અપેક્ષા હનમેં પૂર્ણરૂપ સે આગમપના ન હોકર  
આગમ કી ંક દેશતા હી હૈ ચરક ચીરીકાદિ દ્વારા માન્ય ગ્રન્થોં કી  
નિર્દિષ્ટ ક્રિયાઓં કા હી વહા સદ્ભાવ હૈ ઔર ઉન્હીં કે અર્થ મેં ઉન્કા  
ઉપયોગાદિરૂપ પરિણામ હૈ । હસલિયે વે મત્ર ચરક ચીરીકાદિ કી  
ક્રિયાઈ નો આગમ કી અપેક્ષા સે ભાવ આવશ્યક હૈ । યહા પર ખી નો  
શબ્દ દેશ નિષેધ પરક હૈ અર્થાત્ આગમ કે ંક દેશ કા વાચક હૈ વે  
લૌકિક ઔર કુપ્રાવચનિક જિન્હેં નો આગમ કી અપેક્ષા સે ભાવાવશ્ય  
કરૂપ મેં પ્રકટ કિયા ગયા હૈ ધર્મપદ કે વાચ્ય નહીં હૈ । ક્યોં કિ હન  
કી આરાધના સે જીવોં કે કર્મોં કી નિર્જરા નહીં હોતી હૈ । અતઃ તીર્થ  
કર પ્રભુ ને ઉન્કે આરાધન કરને કી આજ્ઞા પ્રદાન નહીં કી હૈ ।

નો આગમ કી અપેક્ષા સે લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક હસ પ્રકાર

એકદેશથી આગમતા પણ છે કેમકે હાથ જોડના, નમસ્કાર કરવા વગેરે રૂપ  
જે કિયાઓ છે તે સર્વે નોઆગમ છે આ દૃષ્ટિએ એમનામા આગમતા  
સપૂર્ણપણે નથી ફક્ત આગમ ॥ એકદેશના જ છે ચરક ચીરિક વગેરે વડે  
માન્ય ગ્રંથોની નિર્દિષ્ટ કિયાઓનો જ ત્યા સદ્ભાવ છે અને તેમના જ અથ મા  
તેમનો ઉપયોગ વગેરેરૂપ પરિણામ છે એટલા માટે આ બધા ચરક ચીરિકા  
વગેરેની કિયાઓ નો આગમની અપેક્ષાથી ભાવ આવશ્યક છે અહીં પણ નો  
શબ્દ દેશનિષેધ પરક છે એટલે કે આગમના એકદેશનો વાચક છે આ લૌકિક  
અને કુપ્રાવચનિકો જેમને નો આગમની દૃષ્ટિએ ભાવાવશ્યક રૂપમા પ્રગટ કર  
વામા આવ્યા છે—ધર્મપદના વાચ્ય નથી કેમકે એમની આરાધનાથી જીવોના  
કર્મોની નિર્જરા થતી નથી, એટલા માટે તીર્થકર પ્રભુએ એમને આરાધવાની  
આજ્ઞા કરી નથી

નો આગમની અપેક્ષાએ લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક આ પ્રમાણે છે —  
જળ્ણ ઇમે સમણે વા સમણી વા સાવઓ વા સાવિયા વા તચ્ચિત્તે તમ્મણે તલ્લેસે

તલ્લેસે તદ્વ્યવસિષ્ઠ તત્તિવ્યવસાણે તદ્દ્વોપત્તે તદપિપ્રકરણે તદ્ભાવના  
માર્ગિણ અણ્ણત્ય કત્થડ મણ અરુરેમાણે ઉમ્મોકાલ આવસ્સય કરેડ, સે ત લોગુ  
ત્તરિય ભાવાવસ્સય, સે ત નોઆગમતો ભાવાવસ્સય, સે ત ભાવાવસ્સય ॥ ૧

છાયા-ચત્તુલ્લુ શ્રમણો વા શ્રમણી વા શ્રાવકો વા શ્રાવિકા વા તચ્ચિત્તસ્તન્મ-  
નસ્કસ્તલ્લેશ્યસ્તદ્ધર્મપરમિતન્તત્તીત્રા -યદસાયસ્તદ્યોપિયુક્તસ્તદર્શિતકરણરતદ્ધાવના-  
માર્ગિત અન્નપ્ર કુત્રચિન્મનોડુર્ગન્ ઉમ્મકાલ યત્ આરુપક સામાયિકાદિ કરોતિ  
તેપાં તલ્લોક્કોત્તરિક ભાવાવસ્સયમ્ । તેપા તદ્ નોઆગમતો ભાવાવસ્સયમ્ તદે-  
તદ્ભાવાવસ્સયમ્ ।

આપ્યવશ્ય કરણીત્વાદારુપક વ, તદ્યોપયોગશ્રદ્ધાદિપરિણામન્ય મદ્ધા-  
વાદ્ ભાવત્વમ્, રજોરુણપમાર્જિત્વાવ્યાપારયથારાત્તિકવન્દનકરણાનન્તર સત્તિપિ

હૈ-જણાં હમે ભમણે વા ભમણી વા સાવજો વા સાવિયા વા તચ્ચિત્તે  
તમ્મણે તલ્લેસે તદ્વ્યવસિષ્ઠ તત્તિવ્યવસાણે તદ્દ્વોપત્તે તદપિપ્ર-  
કરણે તદ્ભાવનામાર્ગિણ અણ્ણત્ય કત્થડ મણ અરુરેમાણે ઉમ્મકાલ  
આવસ્સય કરેતિ, સે ત લોગુત્તરિય ભાવાવસ્સય, સે ત નો આગમતો  
ભાવાવસ્સય સે ત ભાવાવસ્સય (અનુયોગદ્વાર)

શ્રમણ અથવા શ્રમણી શ્રાવક અથવા શ્રાવિકા જો સામાયિક આદિ  
આવશ્યક ક્રિયાઓ જો તચ્ચિત્ત દોકર ( ઉનમેં હી ચિત્ત લગાકર ) તદ્ધન  
દોકર ઉનમેં હી અન્ત કરણકો ણકાગ્રકર વ્ત્યાદિ સૂત્રમે કથિત વિધિકે  
અનુસાર દોનોં કાલોં મેં કરતેહ વહ ઉનકો કાર્ય નો આગમ કી અપેક્ષા  
સે લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક હે । યે સામાયિક આદિ ક્રિયાઈ  
અવશ્ય કરને યોગ્ય હોને સે આવશ્યક હૈ । કર્તાં કા ઉનકે અર્થ મે  
ઉપયોગ રૂપ એવ શ્રદ્ધા આદિ રૂપ પરિણામ કા મદ્ધાવ હોને સે ઉનમે

તદ્વ્યવસિષ્ઠ તત્તિવ્યવસાણે તદ્દ્વોપત્તે તદપિપ્રકરણે તદ્ભાવનામાર્ગિણ  
અણ્ણત્ય કત્થડ મણ અરુરેમાણે ઉમ્મકાલ આવસ્સય કરેતિ, સે ત લોગુત્તરિય  
ભાવાવસ્સય, સે ત નો આગમતો ભાવાવસ્સય, સે ત ભાવાવસ્સય (અનુયોગદ્વાર) ।

શ્રમણ અથવા શ્રમણી શ્રાવક અથવા શ્રાવિકા જે સામાયિક વગેરે આવ-  
શ્યક ક્રિયાઓને તચ્ચિત્ત થઈને ( તેમનામા મન પડેલીને ) તદ્ગતિન વડે  
તેમનામા જ મન લગાવીને વગેરે સૂત્રમા કથિત નિધિ મુજબ અને વળત  
કર છે તેમનું તે કાર્ય નો આગમની અપેક્ષાએ લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક  
છે આ સામાયિક વગેરે ક્રિયાઓ અવશ્ય કરવા યોગ્ય હોવાથી આવશ્યક છે  
કર્તાનો તેમના અર્થમા ઉપયોગરૂપ પરિણામનો સદ્ભાવ હોવાથી તેમનામા  
ભાવતા પણ છે રજોરુણધી ભૂમિ વગેરેનું પ્રમાર્જન કરવું, વદના વગેરે કૃતિ



પદ્ધતિચાર્યકરણરૂપાયાઃ ક્રિયાયા અનાગમતાન નોભાગમત્ત મોખ્યમ્, અત્રાપિ  
નો-ગદ્ધ્ય ડેગાઃ પ્રતિષેધસ્ત્યાન્ । ડદ્ધમ્ ઓરોગરિક નો આગમતો ભાગમ્  
ડગ્ધ ધર્મપદવા-પમ્ તત્ર વિવેચતયા મગમતોડદેત આતાયાઃ મદ્ધારાન્ । મન્યેડપિ  
ધર્મલક્ષણમેરમાદુ—

“વાચનાદવિરુદ્ધાચ-રુણાન યથોદિતમ્ ।

મૈઝ્યાદિમાત્રમિશ્રં તદ્ધર્મં ઇતિ કીર્ત્યતે ” ॥ ૧ ॥

માત્રના બી છે રજોતરણ સે ભૂમિ આદિ કા પ્રમાર્જન કરના, વડના  
આદિ કૃતિ કર્મ કરના આદિ વિધિ પૂર્વક જો પદ્ધતિ આવડ્યક કરને  
રૂપ ક્રિયાઈ છે તે નવ “ક્રિયા આગમો ન હોડ” ઇમ નિયમ કે  
અનુસાર આગમ નથી છે । અતઃ ઇન મેં આગમ કે ણક દેશ અભાવ  
થી અપેક્ષા સે નો આગમતા છે । ઘર્મા પર બી નો રુદ્ધ સમ્પૂર્ણ રૂપ સે  
આગમતા પ્રતિષેધ વગર ન હોતર ડમકે ણક દેશ કા હી પ્રતિષેધક છે ।  
અતઃ યે સામાયિક માત્રિ પદ્ધતિ આવડ્યક નોભાગમ સી અપેક્ષા સે  
લોકાત્તરીક માત્ર આવડ્યક છે । ઓર ઇનકે હી આરાધન કરને કી  
જિનેન્દ્ર દેવને મળ્ય જીવો કો આજ્ઞા દી છે । કારણ કિ યે ધર્મપદ કે  
વાચ્ય છે ઇનકી આરાધના સે મળ્યજીવો કે કર્મો કી નિર્જરા હોતી છે ।

દૂમરોં ને બી ઇમ પ્રકાર ધર્મ કા લક્ષણ કહા છે—

વાચનાદવિરુદ્ધાચરુણાન યથોદિતમ્ ।

મૈઝ્યાદિમાત્રમિશ્રં તદ્ધર્મં ઇતિ કીર્ત્યતે ॥

કર્મ આચ વા વગેરે વિધિપૂર્વક જે પદ્ધતિ આવશ્યક કરવારૂપ ક્રિયાઓ છે  
તેઓ સર્વે “ક્રિયા આગમો ન હોડ” આ નિયમ મુજબ આગમ નથી એટલ  
માટે એમનામા આગમના એકદેશ અભાવની અપેક્ષાથી નો આગમતા છે  
અહીં પણ નો રુદ્ધ સમ્પૂર્ણ રૂપથી આગમનો પ્રતિષેધ પરડ નથી પણ તેના  
એકદેશનો જ પ્રતિષેધક છે એટલા માટે સામાયિક વગેરે આ પદ્ધતિ આવ  
શ્યકો નો આગમની અપેક્ષા એ લોકોત્તરિષ્ઠ ભાવ આવશ્યક છે અને જિનેન્દ્ર  
દેવે એમની આરાધના કરવાની જ ભવ્ય ભુવોને આજ્ઞા કરી છે ડમકે આ  
બધા ધર્મપદના વાચ્ય છે એમની આરાધનાથી ભવ્ય ભુવોના કર્મોની  
નિર્જરા થાય છે

જો એ પણ આ રીતે ધર્મનું લક્ષણ બતાવ્યું છે —

વાચનાદવિરુદ્ધાચરુણાન યથોદિતમ્ ।

માત્રમિશ્રં તદ્ધર્મં ઇતિ કીર્ત્યતે ॥

અસ્યવ્યારણા વચનાદિતિ ન્યપ્તોપે પશ્ચમી, વચનમનુસ્યત્યેત્યર્થઃ । વચનમ્= અમાગઃ । કીદશાદ વચનાદિત્યા—અવિરુદ્ધાત્-વપન્હેદતાપેષુ અવિપટમાનાત્, તત્ર વિધિપ્રતિષેધયોર્ગાદુત્પન્નેનોપર્ણત નવશુદ્ધિઃ, પદે પદે તદ્યોગક્ષેમકારિક્રિયોપદર્શન છેદશુદ્ધિઃ, વિધિપ્રતિષેધતદ્વિવચાણા જીવાદિપદાર્થાના ચ સ્યાદ્વાદપરીક્ષયા યાથાત્મ્યેન સમર્થન તાપશુદ્ધિઃ । તન્વાવિરુદ્ધ વચન જિતપ્રણીતમેવ, નિમિત્તશુદ્ધેઃ

અવિરુદ્ધ આગમ સે વ્યવહિત એવ મૈત્રી આદિ ભાવનાઓ સે મિશ્રિત જો અનુષ્ઠાન છે તે ધર્મ છે । અપર્ણાર્થ—વચન શબ્દ કા અર્થ આગમ છે । આગમ મેં અવિરુદ્ધતા કપ, તાપ, ઓર છેદ દ્વારા પરીક્ષિત હોને પર હી આતી છે । જિસ પ્રકાર સુવર્ણ કી પરીક્ષા કપ-કસોટી પર કરને સે તાપ-અગ્નિ મે તપાને સે ઓર છેદ-છેની વગેરજ દ્વારા કાઢને સે હોતી છે, ઉસી પ્રકાર આગમ કી શુદ્ધિ કી પરીક્ષા મી ઇન ત્રીન ઉપાયો દ્વારા કી જાતી છે । વિધિ ઓગ પ્રતિષેધ કા વટુલતા સે જિસ શાસ્ત્ર મેં વર્ણન છે, વહ શાસ્ત્રકપ સે શુદ્ધ કલા જાતા છે । પદ પદ પર જિસ શાસ્ત્ર મેં ઇનકે યોગ ઓર ક્ષેમકરિ ક્રિયાઓ કા કથન ક્રિયા ગયા મિલતા છે વહ શાસ્ત્ર છેદસે શુદ્ધમાના જાતા છે । વિધિ એવ પ્રતિષેધ ત યા ઇન કે વિષયભૂત જીવાદિક પદાર્થો કા સ્યાદ્વાદ ઢગ સે જહા પર ચચાર્ય સમર્થન ક્રિયા જાતા છે સમ્ભગી દ્વારા જહા પર ઇનકા સુન્દર શૈલી સે વિવેચન કરને મેં આના છે વહ શાસ્ત્ર તપ ઉપાયદ્વારા શુદ્ધ માના જાતા

અવિરુદ્ધ આગમથા વ્યવહિત અને મૈત્રી વગેરે ભાવનાઓથી મિશ્રિત જે અનુષ્ઠાન છે તે ધર્મ છે અપર્ણાર્થ—વચન શબ્દનો અર્થ આગમ છે આગમમાં અવિરુદ્ધતા, કપ, તાપ અને છેદ વડે પરીક્ષિત થયા પછી જે આવે છે જેમ મોનાની પરીક્ષા કપ-કસોટી ઉપર કરવાથી તાપ અગ્નિ ઉપર તપાવવાથી અને છેદ-છીણી વગેરેથી કાપવાથી હોય છે, તેમજ આગમની શુદ્ધિની પરીક્ષા પણ આ ત્રણે ઉપાયો વડે કરવામાં આવે છે વિધિ અને પ્રતિષેધનું મોટા પ્રમાણમાં જે શાસ્ત્રમાં વર્ણન છે, તે શાસ્ત્ર કપથી શુદ્ધ ઠહેવાય છે કાલે ને પગલે જે શાસ્ત્રમાં એમના યોગ અને ક્ષેમકરિ ક્રિયાઓનું કથન કરવામાં આવ્યું છે તે શાસ્ત્ર છેદથી શુદ્ધ માનવામાં આવે છે વિધિ અને પ્રતિષેધ તેમજ એમના વિષયભૂત જીવ વગેરે પદાર્થોનો સ્યાદ્વાદના રૂપથી ન્યાયધર્મ વર્ણન કરવામાં આવે છે, સમ્ભલગી વડે ન્યાય સુન્દર શૈલીમાં એમનું વિવેચન કરવામાં આવે છે, તે શાસ્ત્ર તપ ઉપાયવડે શુદ્ધ માનવામાં આવે છે આ ત્રણે

પદ્ધતિધારણકરણરૂપાયાં ક્રિયાયા અનાગમતાન નોભાગમત્વ મોખ્યમ્, અપિ નો-શબ્દમ્ દેશતઃ પ્રતિષેધસ્ત્વાત્ । તદમ્ લોકોત્તરિક નો આગમતો ભાવાવશ્યક ધર્મપદવાચ્યમ્ તત પ્રિયતયા મગતોઽર્હત આત્મા ગદ્યાત્ । અન્યેઽપિ ધર્મલક્ષણમેવમાહુઃ—

“ વાચનાદવિરુદ્ધાદ્ય-દનુષ્ઠાન યથોદિતમ્ ।

મૈત્ર્યાદિભાવસમિશ્રં તદ્ધર્મં ઇતિ કીર્ત્યતે ” ॥ ૧ ॥

ભાવતા મી હૈ રજોતરણ સે ભૂમિ આદિ કા પ્રમાર્જન કરના, વદના આદિ કૃતિ કર્મ કરના આદિ વિધિ પૂર્વક જો પદ્ધતિ આવશ્યક કરને રૂપ ક્રિયાઈ હે વે સ્વ “ કિરિયા આગમો ન હોઈ ” હમ નિયમ કે અનુમાર આગમ નથી હૈ । અત્ત ઇન મેં આગમ કે જગ દેશ અમાત્ર કી અપેક્ષા સે નો આગમતા હૈ । યહાં પર મી નો શબ્દ સમ્પૂર્ણ રૂપ સે આગમકા પ્રતિષેધ પરક ન હોત્તર ડસકે જગ દેશ કા હી પ્રતિષેધક હૈ । અત્ત યે સામાયિક આદિ પદ્ધતિ આવશ્યક નો આગમ કી અપેક્ષા સે લોકોત્તરીક ભાવ આવશ્યક હૈ ’ ઓર ઇનકે હી આરાધન કરને કી જિનેન્દ્ર દેવને મન્ય જીવોં કો આજ્ઞા દી હૈ । કારણ કિ યે ધર્મપદ કે વાચ્ય હૈ ઇનકી આરાધના સે મન્યજીવોં કે કર્મોં કી નિર્જરા હોતી હૈ ।

હમરોં ને મી હસ પ્રકાર ધર્મ કા લક્ષણ ગ્રહા હૈ—

વાચનાદવિરુદ્ધાદ્યદનુષ્ઠાન યથોદિતમ્ ।

મૈત્ર્યાદિભાવસમિશ્રં તદ્ધર્મં ઇતિ કીર્ત્યતે ॥

કર્મ આથ વા વગેરે વિધિપૂર્વક જે પદ્ધતિ આવશ્યક કરવારૂપ ક્રિયાઓ છે તેઓ સર્વે “કિરિયા આગમો ન હોઈ” આ નિયમ મુજબ આગમ નથી એટલા માટે એમનામા આગમના એકદેશ અભાવની અપેક્ષાથી ના આગમતા છે અહીં પણ નો શબ્દ સંપૂર્ણ રૂપથી આગમનો પ્રતિષેધ પરક નથી પણ તેના એકદેશનો જ પ્રતિષેધક છે એટલા માટે સમાયિત વગેરે આ પદ્ધતિ આવશ્યકો નો આગમની અપેક્ષા એ લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક છે અને જિનેન્દ્ર દેવે એમની આરાધના કરવાની જ લબ્ય જીવોને આજ્ઞા કરી છે હમકે આ બધા ધર્મપ ના વાચ્ય છે એમની આરાધનાથી લબ્ય જીવોના કર્મોની નિર્જરા થાય છે

બીજાઓએ પણ આ રીતે ધર્મનું લક્ષણ બતાવ્યું છે —

વાચનાદવિરુદ્ધાદ્યદનુષ્ઠાન યથોદિતમ્ ।

મૈત્ર્યાદિ ભવસમિશ્રં તદ્ધર્મં ઇતિ કીર્ત્યતે ॥

કારણસ્વરૂપાનુવિધાયિ કાર્ય, તન્ન દુષ્ટકારણાઽઽરબ્ધ કાર્યમદુષ્ટ ભવિતુમર્હતિ, નિમ્વત્રીજાદિક્ષુ યપ્તિરિવેતિ । અન્યથા-કારણવ્યવસ્થોપરમપ્રસજ્ઞાત્ ।

યચ્ચ-યદૃચ્છાપ્રણયનપટ્ટેષુ તીર્થાન્તરીયેષુ રાગાદિમત્સ્વપિ ઘુણાક્ષરોત્કરણ રાગદ્વેષમોહરૂપાન્ અન્તરગરિપૂન્ ઇતિ જિનઃ ” રાગ દ્વેષ આદિક જો અન્તરગ શત્રુ હૈં ઇન પર જિસને વિજય પાચી હૈં વે હી જિન કહલાતે હૈં જિસ પ્રકાર તપન ( સૂર્ય ) દહન ( અગ્નિ ) આદિ શબ્દ યથાનામ તથા ગુણ વાલે હુઆ કરતે હૈં, ઇસી પ્રકાર “ જિન ” યહ નામ મી યથા નામ તથા ગુણ વાલા હૈં યથા નામ તથા ગુણ કા હોના હી નામ કી સાર્થકતા હૈં । જિન્હોં ને ઇન અન્તરગ શત્રુઓં કો પરાસ્ત નહીં કિયા ડનકે વચનો મેં પરસ્પર અવિરુદ્ધાર્થતા નહીં આસકતી હૈં-જ્યો કિ વહા પર નિમિત્ત કી શુદ્ધિ નહિં હૈં । ઇમીલિયે અજિન પ્રણીત વચન અવિરુદ્ધ નહીં હોતે હૈં । લોક મેં મી જિસ પ્રકાર નીમ કે વીજ સે ઇંદ્રુ કી ઉત્પત્તિ દેખ્તને મેં નહીં આતી ડસી પ્રકાર સદોષ કારણ સે ઉત્પન્ન હુઆ કાર્ય મી નિર્દોષ નહીં હોના હૈં । કાર્ય મેં નિર્દોષતા કારણ કિ નિર્દોષતા પર આધાર રખતી હૈં । ન્યાય શાસ્ત્ર કા મી યહી સિદ્ધાન્ત હૈં “ કારણ સ્વરૂપાનુવિધાયિ કાર્ય ” કિ કાર્ય, કારણ કે સ્વરૂપ કા અનુવિધાયક હોતા હૈં । યદિ હસ પ્રકાર કી વ્યવસ્થા ન માની જાવે તો ફિર કાર્ય કારણ ભાવ કી વ્યવસ્થા હી નહીં વન સકતી હૈં । હર ઇક પદાર્થ

“ જયતિ રાગદ્વેષમોહરૂપાન્ અન્તરગરિપૂન્ ઇતિ જિન ” રાગદ્વેષ વગેરે જે અતરગ શત્રુઓ છે તેમના ઉપર જેમણે વિજય મેળવ્યો છે તેઓ જ જિન કહેવાય છે જેમ તપન ( સૂર્ય ) દહન ( અગ્નિ ) વગેરે શબ્દો નામ જેવા જ ગુણવાળા હોય છે, તે પ્રમાણે જ “ જિન ” આ નામ પણ નામ પ્રમાણે જ ગુણવાળું છે જેવું નામ તેવા ગુણો હોવા એ જ નામની સાર્થકતા છે જેમણે આ અતરગ શત્રુઓને હરાવ્યા નથી તેમના વચનોમા પરસ્પર અવિરુદ્ધાર્થતા આવી શકતી નથી કેમ કે ત્યાં નિમિત્તની શુદ્ધિ નથી એટલા માટે અજિન પ્રણીત વચનો અવિરુદ્ધ હોતા નથી લોકમા પણ જેમ લીમડાના ખીજથી શેરડીની ઉત્પત્તિ જેવામા આવતી નથી તેમજ સદોષ કારણથી ઉત્પન્ન થયેલું કાર્ય પણ નિર્દોષ હોતું નથી કાર્યમા નિર્દોષતા કારણની નિર્દોષતા ઉપર આધારિત હોય છે ન્યાયશાસ્ત્રનો પણ એજ સિદ્ધાન્ત છે, “ કારણસ્વરૂપાનુવિધાયિકાર્ય ” કે કાર્ય કારણના સ્વરૂપનો અનુવિધાતા હોય છે એ આ જાતની વ્યવસ્થા માનવામા આવે

વચનસ્ય ઠિ વક્તા નિમિત્તમન્તરદ્વયમ્, તસ્ય ન રાગદ્વેષમોહપારતન્ત્ર્યમશુદ્ધિઃ, તેભ્યો વિતથવચનપટ્ટે, ન ચૈવાશુદ્ધિર્જિને મગતિ, જિનત્વપરોધાત્, જયતિ રાગદ્વેષ મોહરૂપાન્તરજ્ઞાન રિપૂનિતિ શબ્દાર્થાનુવપત્તે. તપનદહનાદિશબ્દાત્, અન્વર્થતયા ચાસ્યાભ્યુપગમાત્, નિમિત્તશુદ્ધ્યભાવાદ નાજિનપ્રણીતવચનમવિરુદ્ધમ્ । યત —  
 હૈ । इन तीनों उपायों से परीक्षित आगम ही परिशुद्ध कहा गया है ।  
 अविरुद्ध वचन का नाम ही आगम है ।

इन कथादिकों से जो आगम में शुद्धता आती है उसका कारण निमित्त की शुद्धि है । निमित्त शुद्ध जिन प्रणीत वचन ही हैं । अन्य प्रणीत वचन नहीं । निमित्त में भी शुद्धि का कारण राग, द्वेष और मोह का अभाव है । वचन का अन्तरंग कारण वक्ता ही हुआ करता है वक्ता की प्रमाणता से ही वचन-आगम में प्रमाणता आती है इसी लिये राग द्वेष आदि से कलुषित व्यक्तियों के वचन प्रमाण कोटि में नहीं आते हैं । क्यों कि राग द्वेष आदिक सद्भाव में वचनों में परस्पर विरुद्ध अर्थ की प्ररूपकता स्वयं ही आ जाती है अतः यह निश्चित सिद्धान्त है कि जहां पर इनका सर्वथा अभाव है वही सच्चा आगम का प्रणेता हो सकता है । और उसी आगम में अविरुद्धता है । ऐसा अविरुद्ध आगम जिन प्रणीत ही हो सकता है क्यों कि उनमें पूर्वोक्त राग द्वेष आदि द्वारा अशुद्धि का सर्वथा अभाव हो चुका है इस के सर्वथा दूर होने से ही वे “जिन” इस प्रकार की सज्ञा वाले हुए हैं । “जयति

ઉપાયોથી પરીક્ષિત આગમ જ પરિશુદ્ધ કહેવામા આવ્યો છે અવિરુદ્ધ વચનનું નામ જ આગમ છે કષ વગેરેથી આગમમા જે શુદ્ધતા આવે છે તેનું કારણ નિમિત્તની શુદ્ધિ છે જિન પ્રણીત વચનો જ નિમિત્તશુદ્ધ છે બીજાઓ વડે પ્રણીત વચનો નહિ નિમિત્તમા પણ શુદ્ધિનું કારણ રાગ દ્વેષ અને મોહનો અભાવ છે વચનનું અંતરંગ કારણ બોલનાર જ હોય છે બોલનારા (વક્તા) ની પ્રમાણુતાથી જ વચન-આગમમા પ્રમાણુતા આવે છે એટલા માટે જ રાગ દ્વેષ વગેરેથી કલુષિત માણસોના વચનો પ્રમાણુ કેટિમા આવતા નથી કેમકે રાગદ્વેષ વગેરે મદ્દભાવ વચનોમા પરસ્પર વિરુદ્ધ અર્થની પ્રરૂપકતા બાતે જ આવી બાય છે એટલા માટે આ નિશ્ચિત સિદ્ધાંત છે કે જ્યાં એમનો સંપૂર્ણ અભાવ છે તે જ સાચા આગમનો પ્રણેતા થઈ શકે છે અને તે આગમમા જ અવિરુદ્ધતા છે એવું અવિરુદ્ધ આગમ જિનપ્રણીત જ થઈ શકે છે કેમકે તેમનામા પૂર્વોક્ત રાગદ્વેષ વગેરે વડે અશુદ્ધિને મ પૂર્ણપણે અભાવ થઈ ચૂક્યો છે અશુદ્ધિ સર્વ રીતે મટી જવાથી તેઓ ‘જિન’ સંજ્ઞા છે



કોટ્ઠગમનુષ્ઠાન ધર્મ ? ક્ત્યાહ—‘યથોદિતમ્’ યથા યેન પ્રકારણ કાઠાઘા  
રાયનાનુસારરૂપેણ—ઉદિત=પ્રતિપાદિત, તત્રૈવાપિરુદ્ધચને ક્તિ ગમ્યમ્ ।

અન્યન્ન—

જો જહયાય ન કુણહ, મિચ્છાદિટ્ટી તજો ઉ કો ખનો ? ।  
વહેદ મિન્નુત્ત, પરસ્સ સક જણેમાણો ॥ ક્તિ ।

ઝાયા—યો યથાવાદ ન કરોતિ, મિચ્છાદિષ્ટિસ્તતસ્તુ કોડન્યઃ ।  
વર્વયતિ મિચ્છાત્વ, પરસ્ય શક્ષ્માજનયન્ ॥ ક્તિ ।

પુનરપિ કોટ્ઠશમિત્પાટ—‘મેત્ર્યાદિભાવસમિશ્રમ્’ ક્તિ । મેત્ર્યાદયઃ=મૈત્રી  
મુદિતા કરુણા માધ્યસ્થલક્ષણા યે ભાવાઃ=અન્તઃસ્પર્શપરિણામા, તત્પૂર્વકાશ્વ

ન્યાય સે કહી ૨ અવિરુદ્ધ અર્થ પ્રતિપાદકતા સો વહ ડનકી નિજ કી  
ઘર કી વસ્તુ નહી હૈ—ડસકા મૂલ સ્તોત અવિરુદ્ધ અર્થ કા પ્રસ્પક જિન  
પ્રણિત આગમ હી હૈ । યહી વાત માર્ગાનુસારી બુદ્ધિવાલે વ્યક્તિ મે મી  
સમજ લેનો ઇચ્છાયે । વહ જો કુછ ની સત્યાર્થ કહતા હૈ ડસકા મૂલ  
કારણ જિનપ્રણીત આગમ કા મહારા હી હૈ । શ્લોક કથિત “યથોદિત”  
પદ ઇસ વાત કા સમર્થન કરતા હૈ કિ દેશ કાલ આદિ કી આરાધના  
કે અનુસાર જો આચાર-અનુષ્ઠાન પ્રતિપાદિત કિયા ગયા હૈ । ડસસે જો  
અવિરુદ્ધ કહા ગયા હૈ—વહી ધર્મ હૈ ઇસસે વિપરીત નહી । “મેત્ર્યાદિ  
ભાવ સમિશ્રમ્” ઇસ પદ ઢારા સૂત્રકાર યહ પ્રતિપાદિત કરતે હૈ કિ  
વહ અનુષ્ઠાન મૈત્રી, મુદિતા, કરુણા ઓર માધ્યસ્થ ઇન ચાર લક્ષણો સે  
યુક્ત હોતા હૈ । યે ધર્મ કે વાહ્ય ચિહ્ન હૈ । ઇનકે સદ્વાચ સે આત્મા મે

અર્થ પ્રતિપાદકતા પણ ડે તે તેમની પોતાની વસ્તુ તો નથી જ ડેમકે તેના  
મૂળિયા તો અવિરુદ્ધ અર્થના પ્રસ્પક જિનપ્રણીત આગમમા જ છે એ જ વાત  
માર્ગાનુસારી બુદ્ધિવાળી વ્યક્તિમા પણ સમજ લેવી જોઇએ તે જે કંઈ પણ  
સત્યાર્થ કહે ડે તેનુ મૂળ કારણ જિન પ્રણીત આગમ જ ડે શ્લોક કથિત  
“યથોદિત” પદ આ વાત ને સ્પષ્ટ કરે છે ડે દેશકાળ વગેરેની આરાધના  
મુજબ જે આચાર-અનુષ્ઠાન-પ્રતિપાદિત કરવામા આવ્યા છે, તેનાવી જે અ-  
વિરુદ્ધ કહેવામા આવ્યુ છે તે ધર્મ છે એનાથી વિપરીત નહિ “મેત્ર્યાદિ  
ભાવસમિશ્રમ્” આ પંચડે સૂત્રકાર આ વાત સ્પષ્ટ કરે છે કે તે અનુષ્ઠાન  
મૈત્રી, મુદિતા, કરુણા અને માધ્યસ્થ આ ચાર લક્ષણોથી યુક્ત હોય છે આ  
બધા ધર્મના બાહ્ય ચિહ્નો છે એમના સદ્વાચથી આત્મામા ધર્મનુ અસ્તિત્વ

વ્યવહારેણ વ્યવચિત્ કિંચિદવિરુદ્ધમપિ વચનમુપલબ્યતે, માર્ગાનુસારિનુદ્ધૌ વા પ્રાણિનિ વ્યવચિત્, તદપિ જિનપ્રણીતમેય, તન્મૂલકત્વાત્ તમ્ય ।

હર એક કા કાર્ય ઓર કારણ હો જાયગા । અતઃ આગમરૂપ કાર્ય કી શુદ્ધિ કે લિયે નિમિત્ત રૂપ કારણ શુદ્ધિ કા હોના અવઙ્ગ્ય આવઙ્ગ્યકીય માના ગયો હૈ ।

પ્રશ્ન—આપને જો કહા કિ આગમ મેં અવિરુદ્ધતા ઉસકે કારણભૂત પ્રણેતા કે અધીન હૈ—મો યત્ વાત હમેં માન્ય હૈ । પરંતુ ઇસસે યહ વાત તો સિદ્ધ નહીં હોતી હૈ કિ વે અવિરુદ્ધ વચન જિન ભગવાન કે હી હૈ’ અન્ય કે નહીં—કારણ કિ અન્ય સિદ્ધાન્તકારોં કે વચનોં મેં મી કિસી અશસે અવિરુદ્ધાર્થતા દેખી જાતી હૈ । અતઃ, ઉન્હેં સદોષ માન કર આપ જો ઉનમેં અનાપ્તતા સિદ્ધ કરતે હૈ મો યત્ વાત કેસે માન્ય હો સકતી હૈ ?

ઉત્તર—શકા તો ઠીક હૈ—પરંતુ વિચાર કરને સે ઇવના ઉત્તર મી સહજરૂપ મેં મિલ જાતા હૈ । અન્ય સિદ્ધાન્તકારો ને જો કુઝ રચનાઈ કી હૈ—વે સવ ઉન્હોં ને અપની ઇચ્છાનુસાર હી કી હૈ । અપની નિજ કલ્પના મેં જો કુઝ ઉન્હેં સૂઝા વહી ઉન્હોં ને લિપ્યા હૈ । ઉનકી રચનાઓ મેં પૂર્વાપર વિરોધ સ્પષ્ટ પ્રતીત હોતા હૈ ઇસસે ઉનમેં રાગાદિક દોષોં કા અસ્તિત્વ સિદ્ધ હોતા હૈ । અવ રહી ઉનકે વચનોં મેં ઘુણાક્ષર

નહિ તો કાર્ય કારણ લાવની વ્યવસ્થા બની શકે તેમ નથી દરેક પદાર્થ દરેક કલ્પ કાર્ય અને કારણ થઈ જશે એટલા માટે આગમરૂપ કાર્યની શુદ્ધિ માટે નિમિત્તરૂપ કારણ શુદ્ધિ થવી ચોક્કસપણે આવશ્યકીય માનવામાં આવી છે

પ્રશ્ન —તમે કહ્યું કે આગમમાં અવિરુદ્ધતા તેના કારણભૂત પ્રણેતાના આધીન છે—એ વાત એમને માન્ય છે પણ એનાથી આ વાત તો સિદ્ધ થતી નથી કે તે અવિરુદ્ધ વચનો જિન ભગવાનના જ છે, બીજાઓના નહિ કેમકે બીજા સિદ્ધાન્તકારોના વચનોમાં પણ કોઈ પણ અશે અવિરુદ્ધાર્થતા જોવામાં આવે છે એટલા માટે તેમને દોષયુક્ત માનીને તમે જો તેમનામાં અનાપ્તતા સિદ્ધ કરો છો આ વાત કેવી રીતે માન્ય થઈ શકે તેમ છે !

ઉત્તર —શકા તો ઠીક છે, પણ વિચાર કરવાથી આનો જવાબ પણ સરળ રીતે મળી શકે તેમ છે બીજા સિદ્ધાન્તકારોએ જે રચનાઓ કરી છે તે બધી તેમણે પોતાની ઈચ્છા મુજબ જ કરી છે પોતાની કલ્પનાથી જે કંઈ તેમને યોગ્ય લાગ્યું તે તેમણે લખ્યું છે તેમની રચનાઓમાં પૂર્વાપર વિરોધ સ્પષ્ટ રીતે દેખાઈ આવે છે એનાથી તેઓમાં રાગ વગેરે દોષો છે એવી વાત સિદ્ધ થાય છે હવે ઘુણાક્ષર ન્યાયથી કોઈક કોઈક ક્વાને તેમના

પશ્ચમી, તથા ચ-વચનપ્રયોજ્યપ્રવૃત્તિત્વ લક્ષણમિતિ ન કુત્રાપ્યન્યાસિદોષાવમાશઃ  
પ્રીતિમત્ત્યસદ્ધાનુષ્ઠાનાનામપિ વચનપ્રયોજ્યત્વાડનપાયાદિતિ ।

કિં ચ--હિંસાદિપાપપરિહારો વર્મસિદ્ધિર્લિઙ્ગમિત્યાર્દતા સ્વીકુર્વતિ ।  
તથા ચોક્તમ્-

ઔદાર્યં દાક્ષિણ્યં પાપજુગુપ્સાઽથ નિર્મલો વ્રોધઃ ।

લિઙ્ગાનિ ધર્મસિદ્ધેઃ, પ્રાયેણ જનપ્રિયત્વં ચ ॥ ઇતિ ।

પાપજુગુપ્સા=પાપપરિહારઃ ।

પદ્માયવધમાધ્ય પ્રતિમાપૂજન કુર્વતા ધર્મસિદ્ધિ કથ સ્યાદિતિ વિચારયન્તુ  
સુધિય । અપર ચ—

પ્રતીત નહીં હોતા હું વર્ગો કિં વચનાનુષ્ઠાન ધર્મ કા અર્થ વચન કે  
અનુસાર હોને વાલા અનુષ્ઠાન ધર્મ હૈં ઉસમે કોઈ જાતકા દોષ  
નહીં આતા હૈં । ”

કિંચ--હિંસાદિક પાંચ પાપો કા પરિત્યાગ વર્મ સિદ્ધિ તા ચિહ્ન  
હૈં ઇસ પ્રકાર કી માન્યતા જૈનિયો કી હૈં । શાસ્ત્રાન્તર મે ચહી વાત  
પ્રકટ કી ગઈ હૈં-

ઔદાર્યં દાક્ષિણ્યં પાપજુગુપ્સાઽથ નિર્મલો વ્રોધઃ ।

લિઙ્ગાનિ ધર્મસિદ્ધેઃ પ્રાયેણ જનપ્રિયત્વં ચ ॥ ( પોડશ-ગ્રંથ ૪ પ્રકરણ )

ઉદારતા-હૃદય કી વિપાલતા, દાક્ષિણ્ય-સર્વ જીવો કે અનુગ્રહ  
પ્રવૃત્તિ, પાપજુગુપ્સા-પાપ કા પરિત્યાગ, નિર્મલવ્રોધ-તત્ત્વજ્ઞાન, ઓર  
જન પ્રિયત્વ યે ૫ ધર્મસિદ્ધિ કે લક્ષણ હૈં । અવ યહા પર વિચારને કી  
વાત યહ હૈં કિં જય પાપ કા પરિહાર કરના યહ વર્મસિદ્ધિ કા લક્ષણ

આવશ્યકતા જણાતી નથી કેમકે વચનાનુષ્ઠાન ધર્મનો અર્થ વચન મુજબ થનાર  
અનુષ્ઠાન ધર્મ છે આમા ડોષ પણ જાતનો દોષ નથી

કિંચ--હિંસા વગેરે પાપ પાપોનો પરિત્યાગ ધર્મસિદ્ધિનું ચિહ્ન છે આ  
જાતની માન્યતા જૈનીઓની છે શાસ્ત્રા તરમા પણ એ જ વાત સ્પષ્ટ  
કરવામા આવી છે —

ઔદાર્યં દાક્ષિણ્યં પાપજુગુપ્સાઽથ નિર્મલો વ્રોધઃ ।

લિઙ્ગાનિ ધર્મસિદ્ધેઃ પ્રાયેણ જનપ્રિયત્વં ચ ॥ ( પોડશગ્રંથ ૪ પ્રકરણ )

ઉદારતા--હૃદયની વિશાલતા, દાક્ષિણ્ય-બધા જીવોને અનુકૂળ થઈ પડે  
તેવી પ્રવૃત્તિ, પાપ જુગુપ્સા-પાપનો ત્યાગ, નિર્મળ વ્રોધ-તત્ત્વજ્ઞાન, અને  
જનપ્રિયત્વ આ પાંચે ધર્મસિદ્ધિના લક્ષણો છે, હવે આપણી સામે આ વાત  
વિચાર કરવાયોગ્ય છે કે જ્યારે પાપનો પરિહાર કરવો એ વર્મસિદ્ધિનું લક્ષણ

વાઙ્મયચેષ્ટાવિશેષાઃ, તૈઃ સમિશ્ર=સપ્રુક્ત, મૈત્ર્યાદિમાયાના નિ શ્રેયસામ્યુદયધર્મમ્  
લત્વેન શાસ્ત્રાન્તરેષુ પ્રતિપાદનાત્ । તત્તેયપિયમનુષ્ઠાન ધર્મ ઇતિ કીર્ત્યતે  
શબ્દ્યતે સુધીભિરિતિ ।

નન્વેવ વચનાનુષ્ઠાન ધર્મ ઇતિ પ્રાપ્ત, તથા વ પ્રીતિભક્ત્યસાદ્ધાનુષ્ઠાનેષ્વ  
વ્યાપ્તિરિતિ ચેન્ન-ઇદં તુ વચનાદિત્યત્ર વેદાત્ પ્રવૃત્તિગિત્યત્રેવ પ્રયોજ્યત્વાર્થિકા

ધર્મ કા અસ્તિત્વ જાના જાતા હૈ અન્ય મિદ્ધાન્તકારો ને ખી ઇન્હે નિ.  
શ્રેયસ ઓર સ્વર્ગ કે કારણભૂત ધર્મ કા મૂલ કહા હૈ । અતઃ જો  
આગમ સે અવિરુદ્ધ હૈ, કાલ ઓદિ કી આરાધના કે અનુસાર જો  
આરાધિત હોતા હૈ ઓર જો મૈત્રી આદિ ચાર ભાવનાઓ સે ગર્ભિત હૈ  
એસા અનુષ્ઠાન હી ધર્મ હૈ । એસે હી ધર્મ કી આરાધના કરને કા ગણ  
ધર આદિ કા આદેશ હૈ ।

ભાવાર્થ-તીર્થકર કથિત આગમ કે અનુસાર હોને વાલે અનુષ્ઠાન કા  
નામ ધર્મ હૈ । હસકા ફલિતાર્થ યહી હૈ કિ જિસ અનુષ્ઠાન મે તીર્થકર  
પ્રભુ દ્વારા કથિત આગમ સે વિરોધ નહીં આના હૈ વહી ધર્મ હૈ । તથા  
ચ-પ્રીતિ ભક્તિ ઓર અસંગ રૂપ અનુષ્ઠાનો મેં હસ લક્ષણ કી અપ્રાપ્તિ  
નહીં હોતી હૈ ક્યોં કિ વહા પર ખી હસ લક્ષણ કા સદ્ભાવ પાયા જાતા  
હૈ “ વાચનાનુષ્ઠાન ધર્મઃ ” હન પ્રકાર કે કથન મે “ વેદાત્ પ્રવૃત્તિઃ ”  
કી તરહ પ્રયોજ્ય અર્થ મેં પચમી વિભક્તિ હુઈ હૈ અતઃ જિસ પ્રવૃત્તિ કા  
પ્રયોજ્ય વચન હૈ વહ ધર્મ હૈ । ( વચનાનુષ્ઠાન ધર્મ ) યહા સે લેકર  
( પ્રીતિ ભક્તિ અસંગાનુષ્ઠાન ઇત્યાદિ તક ) લિખને કી આવશ્યકતા

જાણવામા આવે છે ખીજા સિદ્ધાંતકારોએ પણ આ જાણને નિ શ્રેયસ અને  
સ્વર્ગના કારણભૂત ધર્મનું મૂળ બતાવ્યું છે એથી જે આગમથી અવિરુદ્ધ છે  
કાળ વગેરેની આરાધના મુજબ જે આરાધિત હોય છે અને જે મૈત્રી વગેરે  
ચાર ભાવનાઓથી યુક્ત છે એવું અનુષ્ઠાન જ ધર્મ છે એવા જ ધર્મની  
આરાધના કરવા માટે ગણધર વગેરેનો આદેશ છે

ભાવાર્થ —તીર્થકર કથિત આગમમુજબ આશ્રયેલા અનુષ્ઠાનનું નામ  
ધર્મ છે એનો અર્થ આ પ્રમાણે કથિત થયો છે કે જે અનુષ્ઠાનમા તીર્થકર પ્રભુ  
વડે કથિત આગમથી વિરોધ જણાતો નથી તે જ ધર્મ છે તેમજ પ્રીતિ,  
ભક્તિ અને અસંગ રૂપ અનુષ્ઠાનોમા આ લક્ષણની અપ્રાપ્તિ પણ હોતી નથી  
કેમકે ત્યાં પણ આ લક્ષણનો સદ્ભાવ મળે છે “ વાચનાનુષ્ઠાન ધર્મ ” આ  
જાતના કથનમા “ વેદાત્ પ્રવૃત્તિ ” ની જેમ પ્રયોજ્ય અર્થમા પચમી વિભક્તિ  
થઈ છે એટલા માટે જે પ્રવૃત્તિનું પ્રયોજ્ય વચન છે તે ધર્મ છે ( વચના  
નુષ્ઠાન ધર્મ ) અહીંથી માંડીને પ્રીતિ ભક્તિ અસંગાનુષ્ઠાન વગેરે

પશ્ચમી, તથા ચ-વચનપ્રયોજ્યપ્રવૃત્તિત્વ લક્ષણમિતિ ન કુત્રાપ્યવ્યાસિદોષાવસાશઃ  
પ્રીતિભક્ત્યસદ્ધાનુષ્ઠાનાનામપિ વચનપ્રયોજ્યત્વાજ્ઞપાયાદિતિ ।

કિં ચ--હિંસાદિપાપપરિહારો ધર્મસિદ્ધેર્લિઙ્ગમિત્યાર્હતા' સ્વીકુર્વતિ ।  
તથા ચોક્તમ્-

ઔદાર્યં દાક્ષિણ્યં પાપજુગુપ્સાઽથ નિર્મલો વોધઃ ।

લિઙ્ગાનિ ધર્મસિદ્ધે', પ્રાયેણ જનપ્રિયત્વં ચ ॥ ઇતિ ।

પાપજુગુપ્સા=પાપપરિહારઃ ।

પદ્મકાયવધમાધ્ય પ્રતિમાપૂજન કુર્વતા ધર્મસિદ્ધિ કપ સ્યાદિતિ વિચારયન્તુ  
સુધિય । અપર ચ--

પ્રતીત નહીં હોતા હૈં વર્ષોં કિં વચનાનુષ્ઠાન ધર્મ કા અર્થ વચન કે  
અનુસાર હોને વાલા અનુષ્ઠાન ધર્મ હૈં ડસમે કોઈ જાતકા દોષ  
નહોં આતા હૈં । ”

કિંચ--હિંસાદિક પાંચ પાપોં કા પરિત્યાગ ધર્મ સિદ્ધિ તા ચિહ્ન  
હૈં ઇસ પ્રકાર કી માન્યતા જૈનિયો કી હૈં । શાસ્ત્રાન્તર મેં ચહીં વાત  
પ્રકટ કી ગઈ હૈં-

ઔદાર્યં દાક્ષિણ્યં પાપજુગુપ્સાઽથ નિર્મલો વોધઃ ।

લિઙ્ગાનિ ધર્મસિદ્ધે' પ્રાયેણ જનપ્રિયત્વં ચ ॥ (પોહશ-ગ્રંથ ૪ પ્રકરણ)

ઉદારતા-હૃદય કી વિપાલતા, દાક્ષિણ્ય-સર્વ જીવોં કે અનુકૂલ  
પ્રવૃત્તિ, પાપજુગુપ્સા-પાપ કા પરિત્યાગ, નિર્મલવોધ-તત્ત્વજ્ઞાન, ઔર  
જન પ્રિયત્વ યે ૬ ધર્મસિદ્ધિ કે લક્ષણ હૈં । અવ યહા પર વિચારને કી  
વાત યહ હૈં કિં જવ પાપ કા પરિહાર કરના યહ ધર્મસિદ્ધિ કા લક્ષણ

આવશ્યકતા જણાતી નથી કેમકે વચનાનુષ્ઠાન ધર્મનો અર્થ વચન મુજબ થનાર  
અનુષ્ઠાન ધર્મ છે આમા ડોઘ પણ જાતનો દોષ નથી

કિંચ--હિંસા વગેરે પાપ પાપોનો પરિત્યાગ ધર્મસિદ્ધિનું ચિહ્ન છે આ  
જાતની માન્યતા જૈનીઓની છે શાસ્ત્રા તરમા પણ એ જ વાત સ્પષ્ટ  
કરવામા આવી છે --

ઔદાર્યં દાક્ષિણ્યં પાપજુગુપ્સાઽથ નિર્મલો વોધઃ ।

લિઙ્ગાનિ ધર્મસિદ્ધે' પ્રાયેણ જનપ્રિયત્વં ચ ॥ ( પોહશગ્રંથ ૪ પ્રકરણ )

ઉદારતા-હૃદયની વિશાલતા, દાક્ષિણ્ય-બધા જીવોને અનુકૂળ થઈ પડે  
તેવી પ્રવૃત્તિ, પાપ જુગુપ્સા-પાપનો ત્યાગ, નિર્મળ વોધ - તત્ત્વજ્ઞાન, અને  
જનપ્રિયત્વ આ પાંચે ધર્મસિદ્ધિના લક્ષણો છે, હવે આપણી સામે આ વાત  
વિચાર કરવાયોગ્ય છે કે જ્યારે પાપનો પરિહાર કરવો એ ધર્મસિદ્ધિનું લક્ષણ



एकेन्द्रियात्पट्टजीवनिर्वायजीवाना रक्षणं धर्मस्य मूलमिति यन्तामर्त्ता  
पट्टकायविराधनासाध्यायाः प्रतिमापूजाया अतीवारे जनतामेव नश्यति, जैन  
धर्मस्य मूलतस्तत्र समुच्छेदात् ।

तथा चोक्तम्-जीवदयसच्चवयण, परधनपरिवज्जण सुसील च ।

સ્વતી પર્વિન્યનિ-ગ્ગહો ચ ધમ્મસ્સ મૂલાઈ ॥ દર્શનશુદ્ધિ-૨ તત્ત્વ)

है तो प्रति मा का पूजन करने वाले के इसका परिहार कैसे हो सकता  
है । क्यों कि यह पहिले ही प्रकट किया जा चुका है कि यह प्रतिमा  
पूजन धार्मिक पट्ट काय के आरम्भ के बिना सम्भव हो ही नहीं सकता ।  
अतः प्रतिमापूजन वाले को धर्मसिद्धि का लाभ मानना यह एक मनग  
हून कल्पना ही है-शास्त्रोप कल्पना नहीं । शास्त्र में तो यही जिनेन्द्र  
देव की आज्ञा है कि एकेन्द्रिय आदि पट्ट निकाय के जीवों की रक्षा  
करना ही प्रत्येक जैन मात्र का कर्तव्य है, और यही धर्म का मूल है  
जब इस प्रकार की वीतराग प्रभु की आज्ञा है-तो फिर यह तो सोचो  
की पट्टनिकाय की विराचना से सम्भव इस प्रतिमापूजन की मान्यता में  
जैनत्व का रक्षण ही कैसे हो सकता है-। प्रत्युत जैनधर्म का इस प्रकार  
की मान्यता से सम्पूर्ण नाश ही हो जाता है ।

जीवदयसच्चवयण परधनपरिवज्जण सुसीलच ।

સ્વતી પર્વિદિય નિગ્ગહોય ધમ્મસ્સ મૂલાઈ ॥ (દર્શન શુ ૨ તત્ત્વ)

છે ત્યારે પ્રતિમાની પૂજા કરનારાઓ માટે આનો પરિહાર કેવી રીતે થઈ શકે  
તેમ છે, કેમકે આ વાત પહેલા જ પ્રગટ કરવામાં આવી છે કે આ પ્રતિમા  
પૂજન ધાર્મિક પટ્ટકાયના આરંભ વગર સાધ્ય થઈ શકે તેમ નથી એથી પ્રતિમા  
પૂજનવાળા માટે ધર્મસિદ્ધિનો લાભ સમજી લેવો આ એક ખોટી કલ્પના  
માત્ર છે સામ્રીય કલ્પના નથી સામ્રમા તો જિનેન્દ્રદેવની એ જ આજ્ઞા છે કે  
એકેન્દ્રિય વગેરે પટ્ટકાયના જીવોની રક્ષા કરવી જ દરેકે દરેક જૈનનું કર્તવ્ય  
છે અને એ જ ધર્મનું મૂળ છે જ્યારે આ જાતની વીતરાગ પ્રભુની આજ્ઞા છે  
ત્યારે આ વાત ઉપર તો વિચાર કરીએ કે પટ્ટકાય નિકાયની વિરાધનાથી સાધ્ય  
આ પ્રતિમા પૂજનની માન્યતામાં જૈનત્વનું રક્ષણ જ કેવી રીતે થઈ શકે છે  
આ જાતની માન્યતાથી તો જૈન ધર્મનો મૂળરૂપે વિનાશ જ થઈ જાય છે

जीवदयसच्चवयण परधनपरिवज्जण सुसील च ।

સ્વતી પર્વિદિયનિગ્ગહોય ધમ્મસ્સ મૂલાઈ ॥ (દર્શન - તત્ત્વ)

जीवाश्चेतनादिलिङ्गव्यङ्ग्या एकेन्द्रियादय तेषा दया=रक्षणं जीवदयेति ।  
हस्वत्व प्राकृतप्रभम् । धर्ममूल भवति ति सर्वत्र क्रियाऽध्याहारः कार्यः ।

प्रतिमापूजन विशुद्धपरिणामजन-रत्नादुपादेयमितिकथन निर्मूलम्--

धर्माङ्गेषु दयायाः प्रावान्यात् प्राथम्य वर्तते । हिंसासाध्याया प्रतिमापूजाया  
दयाया अभावाद् धर्माङ्गत्व न सिध्यति । तथा च विशुद्धात्मपरिणामरूप धर्म  
प्रति कारणत्व प्रतिमापूजनस्य न सम्भवति । अन्यच्च--

इस लोक में यही बात कही गई है । जीवों की दया करना सत्य  
बोलना, पर धन के हरण करने का त्याग करना, कुशील का त्यागना,  
क्षमाभाव रखना, पाचों इन्द्रियों को वश में रखना ये सब धर्म के मूल  
हैं । जिस प्रकार दिना मूल-जड़ के वृक्ष की स्थिति आदि नहीं हो  
सकती है-उसी प्रकार उनके बिना भी धर्मरूपी महावृक्ष की जीवात्मा  
ओ में स्थिरता नहीं हो सकती है जो व्यक्ति "प्रतिमा के पूजने से  
विशुद्ध परिणामों की आत्मा में जागृति होती है " इस बात का सम-  
र्थन करते हुए उपयोगिता सिद्ध करते हैं उनका यह कथन बिलकुल ही  
निर्मूल है क्योंकि धर्म में सर्वप्रथम स्थान दया को ही दिया गया है  
जीवों की हिंसा से साध्य इस प्रतिमापूजन में उस दया का संरक्षण  
ही नहीं होता है-इसलिये इसे धर्म का अंग कैसे माना जा सकता है  
जो धर्म का ही अंग नहीं बनता है उससे कैसे परिणामों में विशुद्धता  
की जागृति हो सकती है अतः यह प्रतिमापूजन धर्म प्राप्ति में कारण  
नहीं है ऐसा मानना चाहिये ।

આ પ્રયોગમાં એ જ વાત બતાવવામાં આવી છે કે જીવ ઉપર દયા  
કરવી, સત્ય બોલવું, પારકાના ધનને લઈ લેવાની વૃત્તિને દૂર કરવી, કુશીલનો  
ત્યાગ કરવો, ક્ષમાભાવ રાખવો, પાંચ ઇન્દ્રિયોને વશમાં રાખવી આ બધા  
ધર્મના મૂળ છે જેમ મૂળ-જડ વગરના વૃક્ષની સ્થિતિ વગેરે જ થઈ શકે  
તેમ નથી તેમજ એમના વગર પણ ધર્મરૂપી મહાવૃક્ષની જીવાત્માઓમાં સ્થિરતા  
થઈ ગડે તેમ નથી જે વ્યક્તિ "પ્રતિમાના પૂજનથી વિશુદ્ધ પરિણામોની  
આત્મામાં જાગૃતિ થાય છે " આ વાતને યોગ્ય માનીને આની ઉપયોગિતા  
નિષ્કર્ષ કરે છે, તેમજ આ કથન સાવ નિર્મૂળ-વ્યર્થ છે એમને ધર્મમાં સૌ  
પ્રથમ સ્થાન દયાનેજ આપવામાં આવે છે જીવોની હિંસાથી સાધ્ય આ પ્રતિમા  
પૂજનમાં તે દયાની રક્ષા જ થતી નથી એટલા માટે આને ધર્મનું અંગ કેવી  
રીતે માની શકીએ અને જે ધર્મનું જ અંગ થઈ શકતું નથી તેનાથી કેવી રીતે  
પરિણામોમાં વિશુદ્ધતાની જાગૃતિ થઈ શકે એટલા માટે આ પ્રતિમાપૂજન  
ધર્મપ્રાપ્તિમાં કારણ નથી આમ માની લેવું જોઈએ

ધર્માલમ્બનાનિ સ્થાનાઙ્ગસૂત્રે ભગવતા પ્રજ્ઞાનિ--

“ધમ્મ ણ ચરમાણસ્સ પચ નિસ્સાઠાણા પળ્લતા ।

ત જહા-હકાયા, ગણો, રાયા, ગિહવર્હ, સરીર ” ॥ ૩તિ ।

ભગવતા ધર્માલમ્બનાનિ પશ્ચિત્ત કથિતાનિ । તત્ર “હકાયા” ઇત્યુક્ત્યા ગણરાજાદીનામપિ સગ્રહે સત્યપિ પુનસ્તેષા ત્રિશિષ્યોપન્યાસઃ પ્રાધાન્યરત્નોપનાથઃ

અન્યથ-“ધમ્મ ચરમાણસ્સ પચ નિસ્સાઠાણા પળ્લતા-તજહા-હકાયા, ગણો, રાયા, ગિહવર્હ, સરીર” હતિ-ભગવાન ને ધર્મ કે હકાયા, ગણ, રાજા, ગાથાપતિ ઓર શરીર હસ પ્રકાર યે હક આલમ્બન સ્થાન સ્થાનાઙ્ગસૂત્ર મેં કહે હે । इनमें जिन प्रतिमा का कथन नहीं किया है-इससे यह भलीभांति विदित हो जाता है कि जिन प्रतिमा और उसका पूजन धर्म का अवलम्बन रूप नहीं है यदि जिन प्रतिमा का पूजन कार्य धर्म का अवलम्बनरूप सिद्धान्तकारों की दृष्टि में मान्य होता तो वे अवश्य इन स्थानों के कथन करते-जिस प्रकार हककाय, गण, राजा इत्यादि का कथन किया है । यद्यपि “हककाय” इस एक पद से ही गण, राजा आदि का स्वतः कथन सिद्ध हो जाता है, क्योंकि इन सब का समावेश उसी एक पद में हो जाता है । फिर भी इनका भिन्न २ रूप से जो नाम निर्देश किया है उसका कारण ये धर्म के प्रधान आलम्बन रूप हैं इस बात को प्रकट करने के लिये ही किया गया है । इसी प्रकार

અને ખીજુ પણ કહ્યું છે કે “ધમ્મ ચરમાણસ્સ પચ નિસ્સાઠાણા પળ્લતા-ત જહા હકાયા, ગણો, રાયા, ગિહવર્હ, સરીર ” હતિ, લગવાને ધર્મના છ કાય, ગણ, રાજા, ગાથાપતિ અને શરીર આ રીતે છ આલબનસ્થાન સ્થાનાઙ્ગ સૂત્રમાં કહ્યા છે આ બધામાં જિન પ્રતિમાનું કથન કરવામાં આવ્યું નથી એનાથી આ સ્પષ્ટ રીતે જણાય છે કે જિનપ્રતિમા અને તેનું પૂજન ધર્મનું અવલબન નથી બે સિદ્ધાન્તકારોની દૃષ્ટિમાં જિન પ્રતિમાના પૂજનનું કાર્ય ધર્મના અવલબન રૂપમાં માન્ય હોત તો તેઓ ચોક્કસ આ સ્થાનોના કથનની સાથે સાથે તેમનું પણ કથન જેમ છ કાય, ગણ રાજા વગેરેનું કથન કર્યું છે તેમ કર્યું હોત બે કે “પદકાય” આ એક પદથી જ ગણ, રાજા વગેરેનું સ્વતઃ કથન સિદ્ધ થઈ જાય છે, કેમકે આ બધાનો સમાવેશ તે એક પદમાં જ થઈ જાય છે, હકાયા આ બધાનો સ્વતઃ રૂપમાં જે નામ નિર્દેશ કરવામાં આવ્યો છે તેનું કારણ આ છે કે તે સર્વે ધર્મના પ્રધાન આલબનરૂપ છે, આ વાતને પ્રગટ કરવા માટે જ કરવામાં આવ્યો છે આ પ્રમાણે બે

દર્શનવન્દનપૂજનાદિના જિનપ્રતિમાયાઃ સમ્યક્ત્વશુદ્ધિહેતુત્વાઽષ્ટકર્મક્ષયહેતુત્વ સ્વીકારે તુ અસ્યા અપિ નિશ્રાસ્થાનત્વેન નિશ્રાસ્થાનેષુ વિશિષ્ય તદુપન્યાસમકૃત્વા “પચ નિસ્સાઠાણા પણ્ણત્તા” ઇતિ કથન પ્રિરુદ્ધયતે । તસ્માત્ જિનપ્રતિમાયા નિશ્રાસ્થાનેષ્વનભિધાનાત્ પ્રતિમાયા ઝર્માલમ્બનત્વ ન સિદ્ધયતિ । એવ ચ તત્પૂજન કુશલાત્મપરિણામવિશેષસ્ય ધર્મસ્ય કારણ નાસ્તીતિ વિશ્વસનીયમ્ ।

પ્રતિમાપૂજાયમારમ્ભઃ પરિગ્રહશ્ચાવશ્ય ભાવી । તાભ્યા વિના પૂજાયા અસ ભવાત્ તથાઽપિ-પ્રતિમાપૂજોપદેશકાઃ એવ વદન્તિ—

યદિ જિન પ્રતિમા મી દર્શનવન્દના ઑર પૂજાદિક ઢારા સમ્યક્ત્વશુદ્ધિ એવ અષ્ટકર્મોં કે ક્ષય કા કારણ હોતી તો ઉસકા મી ધર્મ કા આલમ્બનરૂપ હોને સે યહા પર વિશેષરૂપ સે શાસ્ત્રકાર કો કથન કરના ચહિયે થા ! પરન્તુ એસા તો સૂત્રકાર ને કિયા નહીં હૈ । ફિર મી યદિ ઉસે ધર્મ કા અવલમ્બનરૂપ સ્વીકાર કિયા જાય તો ડસ સૂત્ર મેં પ્રતિપાદિત ‘ પાચ હી નિશ્રાસ્થાન હૈં ’ હસ કથન સે વિરોધ આતા હૈ કારણ કિ ઉન સ્થાનોં સે અતિરિક્ત એક ઑર જિનપ્રતિમાપૂજન ધર્મ કા આલમ્બન રૂપ સ્થાન વઢ જાતા હૈ અતઃ ‘ પચ નિસ્સાઠાણા પણ્ણત્તા ’ હસ સૂત્ર પ્રદર્શિત ઉપન્યાસ સે યહ વાત પુન્ટ હોતી હૈ કિ જિન પ્રતિમા ધર્મ કો આલમ્બન સ્થાન નહી હૈ । યહ તો ઉસ કે પક્ષપાતિયો કે હી દિમાગ કી એક ઉટપટાગ સૂઝ હૈ યહ જાનતે હુએ મી કિ જિનપ્રતિમાપૂજન મેં આરમ્ભ ઑર પરિગ્રહ અવઙ્ગ્યભાવી હૈ, ડનકે વિના વહ કથમપિ સાધ્ય હો નહી સકતી હૈ, તો મી જિનપૂજાકે ઉપદેશક સ્વેદ હૈ કિ જનતા કો

દર્શન વન્દના અને પૂજા વગેરે વડે સમ્યક્ત્વ શુદ્ધિ અને અષ્ટ કર્મોના ક્ષયનુ કારણ હોત તો ધર્મના આલબનરૂપ હોવા બદલ અહી વિશેષરૂપમા શાસ્ત્ર ઢારો વડે તેનુ કથન કરવુ જોઈએ પણ સૂત્રઢારે આલુ કંઈ કંથુ નથી છતાય જો તેને ધર્મના અવલબનરૂપે સ્વીકારીયે તો આ સૂત્રમા પ્રતિપાદિત “ પાચ જ નિશ્રાસ્થાનો છે ” આ કથનથી વિરોધ જોલો થાય છે કેમકે તે સ્થાનોથી અતિરિક્ત એક બીજા જિનપ્રતિમા પૂજન ધર્મના આલબનરૂપ સ્થાનની વૃદ્ધિ થઈ જાય છે એથી “ પચ નિસ્સાઠાણા પણ્ણત્તા ” આ સૂત્ર પ્રદર્શિત ઉપન્યાસથી આ વાત પુન્ટ થાય છે કે જિનપ્રતિમા ધર્મનુ આલબન સ્થાન નથી આ તો ફક્ત તેના તરફદારીઓના મસ્તિષ્કની જ વ્યર્થની કલ્પના છે જિનપ્રતિમા પૂજનમા આરભ અને પરિગ્રહ અવશ્ય ભાવી છે એના વગર તે કોઈ પણ સજોગે સાધ્ય થઈ શકે તેમ નથી આલુ જાણવા છતા બહુ ડબ સાયે કહેવુ પડે છે કે જિન પૂજના ઉપદેશકો સમાજને “ પૂયાણ કાય

ધર્માલમ્બનાનિ સ્થાનાઙ્ગસૂત્રે ભગવતા પ્રણતાનિ--

“ધમ્મ ણ ચરમાણસ્સ પચ નિસ્સાઠાણા પણ્ણત્તા ।

ત જહા-ઉપ્પાયા, ગણો, રાયા, ગિહવર્દ, સરીર ” ॥ ઇતિ ।

ભગવતા ધર્માલમ્બનાનિ પશ્ચેત્ત કથિતાનિ । તત્ર “ ઉપ્પાયા ” ઇત્યુક્ત્યા ગણરાજાદીનામપિ સગ્રહે સત્યપિ પુનસ્તેષા વિશિષ્ટોપન્યાસઃ પ્રાધાન્યરચોપનાર્થઃ

અન્યત્ર-“ ધમ્મ ચરમાણસ્સ પચ નિસ્સાઠાણા પણ્ણત્તા-તજજહા-ઉપ્પાયા, ગણો, રાયા, ગિહવર્દ, સરીર ” ઇતિ-ભગવાન ને ધર્મ કે છઠ્ઠકાય, ગણ, રાજા, ગાથાપતિ ઓર શરીર ઇમ પ્રકાર યે છઠ આલમ્બન સ્થાન સ્થાનાઙ્ગસૂત્ર મેં કહે હૈં । इनमें जिन प्रतिमा का कथन नहीं किया है-इससे यह भलीभांति विदित हो जाता है कि जिन प्रतिमा और उसका पूजन धर्म का अवलम्बन रूप नहीं है यदि जिन प्रतिमा का पूजन कार्य धर्म का अवलम्बनरूप सिद्धान्तकारों की दृष्टि में मान्य होता तो वे अवश्य इन स्थानों के कथन करते-जिस प्रकार छट्ठकाय, गण, राजा इत्यादि का कथन किया है । यद्यपि “ छट्ठकाय ” इस एक पद से ही गण, राजा आदि का स्वतः कथन सिद्ध हो जाता है, क्योंकि इन सब का समावेश उसी एक पद में हो जाता है । फिर भी इनका भिन्न २ रूप से जो नाम निर्देश किया है उसका कारण ये धर्म के प्रधान आलम्बन रूप हैं इस बात को प्रकट करने के लिये ही किया गया है । इसी प्रकार

અને ખીજુ પણ કહ્યું છે કે “ધમ્મ ચરમાણસ્સ પચ નિસ્સાઠાણા પણ્ણત્તા-ત જહા ઉપ્પાયા, ગણો, રાયા, ગિહવર્દ, સરીર ” ઇતિ, ભગવાને ધર્મના છ કાય, ગણ, રાજા, ગાથાપતિ અને શરીર આ રીતે છ આલબનસ્થાન સ્થાનાંગ સૂત્રમાં કહ્યા છે આ બધામાં જિન પ્રતિમાનું કથન કરવામાં આવ્યું નથી એનાથી આ સ્પષ્ટ રીતે જણાય છે કે જિનપ્રતિમા અને તેનું પૂજન ધર્મનું અવલબન નથી જે સિદ્ધાન્તકારોની દૃષ્ટિમાં જિન પ્રતિમાના પૂજનનું કાર્ય ધર્મના અવલબન રૂપમાં માન્ય હોત તો તેઓ ચોક્કસ આ સ્થાનોના કથનની સાથે સાથે તેમનું પણ કથન જેમ છ કાય, ગણ રાજા વગેરેનું કથન કર્યું છે તેમ કર્યું હોત જે કે “ છટ્ઠકાય ” આ એક પદથી જ ગણ, રાજા વગેરેનું સ્વતઃ કથન સિદ્ધ થઈ જાય છે, કેમકે આ બધાનો સમાવેશ તે એક પદમાં જ થઈ જાય છે, છતાં આ બધાનો સ્વતઃ રૂપમાં જે નામ નિર્દેશ કરવામાં આવ્યો છે તેનું કારણ આ છે કે તે સર્વે ધર્મના પ્રધાન આલબનરૂપ છે, આ વાતને પ્રગટ કરવા માટે જ કરવામાં આવ્યો છે આ પ્રમાણે જે ને પણ



‘દો દ્વાળાઈ’ દે સ્થાને=દે રસ્તુની ‘અપરિયાણિતા’ અપરિવાર=રૂપરિતયા  
‘પ્રત્યાર્થપરિગ્રહાવનર્થયિ’ ઇત્યવિજ્ઞાય અલ મમામ્યામિતિ પરિહારાભિમુખ્ય-  
દ્વારેગ પ્રત્યાર્થપરિવરિયા અપ્રત્યાર્થયાય ચ વ્રત્તદત્તન્ તયો પ્રવૃત્તઃ, ‘આયા’  
આત્મા=જીવ, નો કેવલિપ્રજ્ઞત્વ=જિનોક્ત ધર્મ લભેત શ્રવણતયા-શ્રવણમાત્રેન  
શ્રોતુમિત્યર્થ. । જૈન ધર્મશ્રવણાનર્હો ભવતીતિ માયઃ । તદ્ યથા આરમ્ભઃ-પ્રાણા  
તિપાતાદિરૂપ, પાપસ્થાનમ્ પરિગ્રહ.-વનધાન્યાદિસગ્રાઃ ।

દે સ્થાને અપરિજ્ઞાય - રૂપરિવરિયાડનર્થકારણમજ્ઞાત્વા પ્રત્યાર્થપરિગ્રહયા  
અપ્રત્યાર્થયાય ચ તત્ર પ્રવૃત્તઃ ‘આયા’ આત્મા-જીવઃ કેવલ વૌર્ધિ=અર્થાત્  
સમ્યક્ત્વ ન વૃદ્ધ્યેત=ન પ્રાપ્નુયાદિત્યર્થ ।

પાને કે બી યોગ્ય વન સક્તી હૈ ” યહ સૂત્ર હમે યહ શિક્ષા દેતા હૈ કિ  
ભલો જિસ પરિગ્રહ ઓર આરમ્ભયુક્ત આત્મામેં કેવલિ પ્રજ્ઞસ વર્મ સુનને  
તક કી બી યોગ્યતા નહી હૈ ઓર ન જિસમેં સમ્યક્ત્વ કા અનુભવ હૈ,  
હૈ હમ આત્મા મેં “ વહ પ્રતિમા સમ્યક્ત્વ કી શુદ્ધિ કા કારણ હોતા  
” હસ પ્રકાર કી માન્યતા આકાશ કે ફૂલ કે સમાન ઇક કલ્પના  
માત્ર હી હૈ । અતઃ યહ સિદ્ધાન્ત નિશ્ચિત્ત હોતા હૈ કિ હસ પ્રતિમાપૂજન  
મે ન તો ધર્મ કે કોઈ મૌલિકતત્ત્વ કા સમાવેશ હૈ ઓર ન વર્મ કા કોઈ  
અગ હી હૈ । યહ ન તો ધર્મ કા આલમ્બનરૂપ હૈ ઓર ન ધર્મ કે લક્ષણ  
સે હી યુક્ત હૈ । ફિર બી હસે ધર્મ પદ કા વાચ્ય માનના કેવલ સ્પષ્ટ  
રૂપ સે ઉત્પન્ન ગરૂપણામાત્ર હૈ હસ પ્રકાર શાસ્ત્રીયમર્યાદા કે વિરુદ્ધ હસ  
પ્રતિમા પૂજન કા ઉપદેશ દેને વાલે તથા પ્રતિમાપૂજન કરાને વાલે ઉપ-

બની શકે તેમ નથી “ આ સૂત્ર અમને આ જાતની ભલામણ કરે છે કે જે  
પરિગ્રહ અને આરભયુક્ત આત્મામા કેવલિ પ્રજ્ઞત્વ ધર્મ માલખવા સુધીની  
પણુ યોગ્યતા નથી અને જેમા સમ્યક્ત્વની અનુભૂતિ પણુ નથી તે આત્મામા  
“ તે પ્રતિમા સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિનુ કારણ હોય છે, ” આ જાતની માન્યતા આકા-  
શના પુખ્તની જેમ એક જોટી કલ્પના માત્ર જ નથી તે બીજુ શુ છે ? એટલા  
માટે એ સિદ્ધાન્ત નિશ્ચિત થાય છે કે આ પ્રતિમાપૂજનમા ધર્મના ન કોઈ  
મૌલિક તત્ત્વોનો સમાવેશ છે અને ન તો તે વર્મનુ કોઈ પણુ એક અગ છે આ  
ધર્મનુ આલમ્બનરૂપ નથી અને ધર્મના લક્ષણથી યુક્ત પણુ નથી છતાં ય તેને  
ધર્મ પદવાચ્ય માનવુ તે સ્પષ્ટ રીતે ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા માત્ર છે આ રીતે શાસ્ત્રની  
મર્યાદાથી વિપરીત આ પ્રતિમા પૂજનનો ઉપદેશ આપનારાઓ તેમજ પ્રતિમા

અપિ ચ-“ પૂયાણ કાયવહો, પઠિકુટ્થો સો ડ કિં તુ જિણપૂયા ।

સમ્મત્તસુદ્ધિહેડ, તિ ભાવણીયા ડ ગિરવજ્જા ” ॥ ૧ ॥

ઝાયા-પૂજાયા કાયવધઃ પ્રતિકુટ્થ' સતુ રિન્તુ જિનપૂજા ।

સમ્પક્ત્વબુદ્ધિહેતુ-રિતિ ભાવનીયા ત નિરવધા ॥ ૧ ॥

સર્વમેતદુત્સૂત્રપરુપણમ્--શ્રૂયતાં પ્રવચન તાત્પર્ય--

દો ટ્ઠાણાહ અપરિયાગિત્તા આયા ણો કેવલિપણ્ણત્ત ધમ્મ લમેજ્જ સવણયાણ ।  
ત જહા-આરમે ચેવ પરિગ્ગહે ચેવ । દો ટ્ઠાણાહ અપરિયાગિત્તા આયા ણો કેવલ  
વોર્ધિ બુદ્ધિજ્જા । ત જહા-આર મે ચેવ પરિગ્ગહે ચેવ ॥ (મ્યા ૨ ઠા ૧૩.) રિતિ

“ પૂયાણ કાયવહો પઠિકુટ્થો સો ડ કિં તુ જિણપૂયા । સમ્મત્તસુદ્ધિહેડ,  
તિ ભાવણીયા ડ ગિરવજ્જા ॥ ૧ ॥ ” હસ પ્રકાર કી ઉત્સૂત્ર પ્રરુપણા દ્વારા  
અમ મેં હી ઢાલતે રહતે હેં । હમેં તો બુદ્ધિ પર તરસ આતા હૈ કિં વે ક્યોં  
નહીં હસ સિદ્ધાન્ત કો સમક્ષને કી ચેપ્પા કરતે હૈ કિ-“ દો ટ્ઠાણાહ અપ  
રિયાગિત્તા આયા ણો કેવલિપણ્ણત્ત ધમ્મ લમેજ્જ સવણયાણ । ત જહા-  
આરમે ચેવ પરિગ્ગહે ચેવ । દો ટ્ઠાણાહ અપરિયાગિત્તા આયા ણો કેવલ  
વોર્ધિ બુદ્ધિજ્જા ત જહા-આરમે ચેવ પરિગ્ગહે ચેવ (સ્થા ૨ ઠા ૧૩.)  
ચે દો ધનધાન્ય આદિ રૂપ પરિગ્રહ ઓર પ્રાણાતિપાત આદિ રૂપ આરમ્ભ  
સ્થાન અનર્થ કે કારણ હૈ । જય તક આત્મા જ પરિજ્ઞા સે હન્નેં જાન કર  
ઓર પ્રત્યાખ્યાન પરિજ્ઞા સે હનકા પરિત્યાગ નહીં કર દેતી હે તચ વહ  
બ્રહ્મદત્ત કી તરહ કેવલિ દ્વારા કથિત ધર્મ કે સુનનેકા અધિકારી નહીં  
હો સકતી હૈ ઓર ન હન દોનોં કે ત્યાગ કિયે વિના વક્ર સમ્પક્ત્વ કો

વહો પઠિકુટ્થો સોડ કિં તુ જિણપૂયા । સમ્મત્તસુદ્ધિહેડ, તિ ભાવણીયા ડ ગિર  
વજ્જા ॥ ૧ ॥ આ જાતની ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા વડે અમમા જ નાખી રાખે છે  
અમને તો તેમની બુદ્ધિ ઉપર દયા આવે છે કે તેઓ આ સિદ્ધાન્તને સમ  
જાવવાની ડોશિશ કેમ નહિ કરતા હોય ? કેમકે “ દો ટ્ઠાણાહ અપરિયાગિત્તા  
આયાણો કેવલિપણ્ણત્ત ધમ્મ લમેજ્જ સવણયાણ । ત જહા-આરમે ચેવ પરિગ્ગહે  
ચેવ । દો ટ્ઠાણાહ અપરિયાગિત્તા આયા ણો કેવલિવોર્ધિ બુદ્ધિજ્જા ત જહા-  
આરમે ચેવ પરિગ્ગહે ચેવ (સ્થા ૦ ૨ ઠા ૦ ૧ ૩૦ ) આ બે ધન ધાન્ય વગેરે  
રૂપ પરિગ્રહ અને પ્રાણાતિપાત વગેરે રૂપ આરભ સ્થાન અનર્થના કારણ છે  
જ્યા સુધી આત્મા જ પરિજ્ઞા વડે એમને જાણીને અને પ્રત્યાખ્યાન પરિજ્ઞાવડે  
એમનો પરિત્યાગ કરતી નથી ત્યા સુધી તે બ્રહ્મદત્તની જેમ કેવલિવડે કથિત  
ધર્મને સાંભળવા માટે અધિકારી ( યોગ્ય પાત્ર ) ગણાઈ ને નથી અને  
તે બનેનો જ્યા સુધી ત્યાગ કરે નહિ ત્યા સુધી તે સમ્યક્

‘ દો દ્વાળાઙ ’ દ્વે સ્થાને=દ્વે રસ્તુની ‘ અપરિયાણિતા’ અપરિજ્ઞાય=રૂપરિજ્ઞયા  
‘ એતાવારમ્ભપરિગ્રહાવનર્થયિ ’ इत्यविज्ञाय अल ममाभ्यामिति परिहाराभिमुख्य  
દ્વારેણ પ્રત્યાખ્યાનપરિજ્ઞયા અપ્રત્યાખ્યાય ચ વ્રત્તદત્તાન્ તથો પ્રવૃત્તઃ, ‘ આયા ’  
આત્મા=જીવ, નો કેવલિગ્જ્ઞપ્ત=જિનોક્ત ધર્મ લમેત અગતયા-અગ્નમાવેન  
ઓતુમિત્યર્થઃ । જૈન ધર્મશ્રવણાનર્હો મરતીતિ ભાવઃ । તદ્ યથા આરમ્ભઃ-પ્રાણા  
તિષ્ઠાતાદિરૂપ, પાપસ્થાનમ્ પરિગ્રહઃ-અન્યાન્યાદિસગ્રહઃ ।

દ્વે સ્થાને અપરિજ્ઞાય - રૂપરિજ્ઞયાનર્થકારણમજ્ઞાત્વા પ્રત્યાખ્યાનપરિજ્ઞયા  
અપ્રત્યાખ્યાય ચ તત્ર પ્રવૃત્તઃ ‘ આયા ’ આત્મા-જીવઃ કેવલ ઓર્મિ=અર્થાત્  
સમ્યક્ત્વ ન વુદ્ધ્યેત=ન પ્રાપ્નુયાદિત્યર્થ ।

પાને કે બી યોગ્ય વન સક્રતી હે ” યદ સૂત્ર હમેં યદ શિક્ષા દેતા હે કિ  
મલો જિસ પરિગ્રહ ઓર આરમ્ભયુક્ત આત્મામેં કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મ સુનને  
તક કી બી યોગ્યતા નથી હે ઓર ન જિસમેં સમ્યક્ત્વ કા અનુભવ હે,  
હે હસ આત્મા મેં “ વદ પ્રતિમા સમ્યક્ત્વ કી શુદ્ધિ કા કારણ હોતા  
” હસ પ્રકાર કી માન્યતા આકાશ કે ફલ કે સમાન ઇક કલ્પના  
માત્ર હી હે । અતઃ યદ સિદ્ધાન્ત નિશ્ચિત હોતા હે કિ હસ પ્રતિમાપૂજન  
મેં ન તો ધર્મ કે કોઈ મૌલિકત્ત્વ કા સમાવેશ હે ઓર ન ધર્મ કા કોઈ  
અગ હી હે । યદ ન તો ધર્મ કા આલમ્બનરૂપ હે ઓર ન ધર્મ કે લક્ષણ  
સે હી યુક્ત હે । ફિર બી હસે ધર્મ પદ કા વાચ્ય માનના કેવલ સ્પષ્ટ  
રૂપ સે હસૂત્ર રૂપણામાત્ર હે હસ પ્રકાર શાસ્ત્રીયમર્યાદા કે વિરુદ્ધ હસ  
પ્રતિમા પૂજન કા ઉપદેશ દેને વાલે તથા પ્રતિમાપૂજન કરાને વાલે ઉપ-

બની શકે તેમ નથી “ આ સૂત્ર અમને આ જાતની ભલામણ કરે છે કે જે  
પરિગ્રહ અને આરભયુક્ત આત્મામા કેવલિ પ્રજ્ઞત્વ ધર્મ માલખવા સુધીની  
પણ યોગ્યતા નથી અને જેમા સમ્યક્ત્વની અનુભૂતિ પણ નથી તે આત્મામા  
“ તે પ્રતિમા સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિનું કારણ હોય છે, ” આ જાતની માન્યતા આકા-  
શના પુષ્પની જેમ એક ખોટી કલ્પના માત્ર જ નથી તો બીજું શું છે ? એટલા  
માટે એ બિદ્વાન્ત નિશ્ચિત થાય છે કે આ પ્રતિમાપૂજનમા ધર્મના ન કોઈ  
મૌલિક તત્વોનો સમાવેશ છે અને ન તો તે ધર્મનું કોઈ પણ એક અગ છે આ  
ધર્મનું આલમ્બનરૂપ નથી અને ધર્મના લક્ષણથી યુક્ત પણ નથી છતાં ય તેને  
ધર્મપદવાચ્ય માનવું તે સ્પષ્ટ રીતે ઉત્સૂત્ર પ્રકરણા માત્ર છે આ રીતે શાસ્ત્રની  
મર્યાદા-વિપરીત આ પ્રતિમા પૂજનનો ઉપદેશ આપનારાઓ તેમજ પ્રતિમા

અપિ ચ-“ પૂયાણ કાયરહો, પઢિકુટ્ટો સો ડ કિં તુ જિણપૂયા ।

સમ્મત્તસુદ્ધિહેડ, ત્તિ ભાવણીયા ડ ગિરવજ્જા ” ॥ ૧ ॥

ઢાયા-પૂજાયા કાયવધઃ પ્રતિરુઘઃ સનુ કિન્તુ જિનપૂજા ।

સમ્પક્ત્વબુદ્ધિહેતુ-રિતિ ભાવનીયા ત નિરવયા ॥ ૧ ॥

સર્વમેતદુત્સૂત્રપરૂપણમ્--શ્રૂયતાં પ્રવચન તાત્-

દો દ્વાળાઈ અપરિયાણિત્તા આયા ણો કેવલિપણ્ણત્ત ધમ્મ લમેજ્જ સવળયાણ ।

ત જહા-આરભે ચેવ પરિગ્ગહે ચેવ । દોદ્વાળાઈ અપરિયાણિત્તા આયા ણો કેવલ  
બોધિં બુદ્ધિજ્જા । ત જહા-આરભે ચેવ પરિગ્ગહે ચેવ ॥ (સ્થા. ૨ ઠા ૧૩) ઇતિ

“ પૂયાણ કાયરહો પઢિકુટ્ટો સો ડ કિં તુ જિણપૂયા । સમ્મત્તસુદ્ધિહેડ,  
ત્તિ ભાવણીયા ડ ગિરવજ્જા ॥ ૧ ॥ ડસ પ્રકાર કી ડત્સૂત્ર પ્રરૂપણા દ્વારા  
અમ મેં હી ઢાલતે રહ્તે હેં । હમેં તો બુદ્ધિ પર તરસ જાતા હૈ કિ વે કયો  
નહી ડસ સિદ્ધાન્ત કો સમજ્જને કી ચેવ્ઠા કરતે હૈ કિ-“ દોદ્વાળાઈ અપ  
રિયાણિત્તા આયા ણો કેવલિપણ્ણત્ત ધમ્મ લમેજ્જ સવળયાણ । ત જહા-  
આરભે ચેવ પરિગ્ગહે ચેવ । દોદ્વાળાઈ અપરિયાણિત્તા આયા ણો કેવલ  
બોધિં બુદ્ધિજ્જા ત જહા-આરભે ચેવ પરિગ્ગહે ચેવ (સ્થા ૨ ઠા ૧૩.)  
ચે દો ધનધાન્ય આદિ રૂપ પરિગ્રહ ઓર પ્રાણાતિપાત આદિ રૂપ આરભ  
સ્થાન અનર્થ કે કારણ હૈ । જલ્લ તલ્લ આત્મા જ પરિજ્ઞા સે હન્નેં જાન કર  
ઓર પ્રત્યાખ્યાન પરિજ્ઞા સે ડનકા પરિત્યાગ નહી કર દેતી હૈ તલ્લ લલ્લ  
બ્રહ્મદત્ત કી તરહ કેવલિ દ્વારા કથિત ધર્મ કે સુનનેકા અધિકારી નહી  
હો સકતી હૈ ઓર ન ડન દોનોં કે ત્યાગ કિયે લિના લલ્લ સમ્પક્ત્વ કો

લહો પઢિકુટ્ટો સોડ કિં તુ જિણપૂયા । સમ્મત્તસુદ્ધિહેડ, ત્તિ ભાવણીયા ડ ગિર  
વજ્જા ॥ ૧ ॥ આ જાતની ડત્સૂત્ર પ્રરૂપણા લડે અમમા જ નાખી રાખે છે  
અમને તો તેમની બુદ્ધિ ડપર દયા આવે છે કે તેઓ આ સિદ્ધાન્તને સમ  
જાવવાની ડેશિશ કેમ નહિ કરતા હોય ? કેમકે “ દો દ્વાળાઈ અપરિયાણિત્તા  
આયાણો કેવલિપણ્ણત્ત ધમ્મ લમેજ્જ સવળયાણ । ત જહા-આરભે ચેવ પરિગ્ગહે  
ચેવ । દો દ્વાળાઈ અપરિયાણિત્તા આયા ણો કેવલિબોધિ બુદ્ધિજ્જા ત જહા-  
આરભે ચેવ પરિગ્ગહે ચેવ (સ્થા. ૨ ઠા. ૧૩) આ બે ધન ધાન્ય લગેરે  
રૂપ પરિગ્રહ અને પ્રાણાતિપાત લગેરે રૂપ આરભ સ્થાન અનર્થના કારણ છે  
જ્યા સુધી આત્મા જ પરિજ્ઞા લડે એમને જાણીને અને પ્રત્યાખ્યાન પરિજ્ઞાલડે  
એમનો પરિત્યાગ કરતી નથી ત્યા સુધી તે બ્રહ્મદત્તની જેમ કેવલિલડે કથિત  
ધર્મને સાલળવા માટે અધિકારી ( યોગ્ય પાત્ર ) ગણાઈ રાડે તેમ નથી અને  
તે બનેનો જ્યા સુધી ત્યાગ કરે નહિ ત્યા સુધી તે સમ્પક્ત્વ ૨ યોગ્ય

તથા-સમ્યક્ત્વશુદ્ધ્યર્થં કર્મક્ષયાર્થં ચ પ્રતિમાપૂજને પ્રવૃત્તસ્ય જીવસ્ય પદ્મકાયો  
પમર્દનસાધ્યપૂજયા જ્ઞાનાવરણીયસ્ય દર્શનમોહનીયસ્ય ચ કર્મણો વૃદ્ધો સત્યા સમ્ય-  
ક્ત્વમ્ય કેવલિ પ્રજ્ઞસ ધર્મવ્યાપિ પ્રાપ્તિઃ કાલત્રયેઽપિ ન સમપતિ કિંપુન કર્મક્ષયાશા  
સમ્યક્ત્વમાત્મનઃ ક્ષાયોપશમિકો ભાવઃ । પ્રતિમા તુ ન ક્ષયોપશમસ્વરૂપા, ન  
ચાપિ ક્ષયોપશમહેતુ, જ્ઞાનાવરણીયદર્શનમોહનીયકર્મનિર્જરાજનકત્વાભાવાત્,  
દેશતઃ કર્મક્ષયો હિ નિર્જરા તા પ્રતિતપસ એવ કારણત્વાત્ । ઉક્ત ચોત્તરાધ્યયનમુત્તે-

પ્રકાર સમ્યક્ત્વ કી શુદ્ધિ અથવા કર્મોં કા વિનાશ પ્રતિમાપૂજનસે નહીં  
હોતા હૈ, પ્રત્યુત જિમ પ્રકાર વહ નિરયુક્ત વસ્ત્રરુધિર સે સાફ કિયે  
જાને પર અધિક મલિન હો જાતા હૈ ડસી પ્રકાર પદ્મકાય કી વિરાધના  
સાધ્ય ડસ પ્રતિમાપૂજન મેં લવલીન જીવ મી જ્ઞાનાવરણીય ઓર દર્શન  
મોહનીય કર્મ કી વૃદ્ધિ કરતા હુઆ અધિકાવિક મલિન હોતા રહતા હૈ  
વહ કમી મી ઇનકી વૃદ્ધિમેં સમ્યક્ત્વ ઓર કેવલિ પ્રજ્ઞસ ધર્મ કા પાને  
વાલા નહીં બન સકતા હૈ । ઇસલિયે કર્મોં કે ક્ષય કરને મી આશા સે  
પ્રતિમાપૂજન મેં લવલીન મનુષ્ય અપને કર્મોં કા ઇસ કાર્યસે ક્ષય કરતા  
હૈ યહ એક દુરાશામાત્ર હૈ અરે ! જય ઇસ કાર્ય સે જીવ સમ્યક્ત્વ ઓર  
કેવલિપ્રજ્ઞસ ધર્મ તક કે મી લાભ સે સદા વચિત રહતા હૈ તો ડસસે  
ફિર કર્મ ક્ષય માનના યહ કોરી કલ્પના માત્ર હી હૈ । સમ્યક્ત્વ યહ  
જીવ કા ક્ષાયોપશમિક ભાવ હૈ । પ્રતિમા ન ક્ષયોપશમ સ્વરૂપ હૈ ઓર  
ન ડસ ક્ષયોપશમ મેં કારણ રૂપ હી હૈ । કારણ કિ ઇસ સે જ્ઞાનાવર-  
ણીય ઓર દર્શનમોહનીય કર્મ કી નિર્જરા નહીં હોતી હૈ । કર્મોં કા

ખરડાયેલુ વસ્ત્ર લોહીવડે આદિ ડરવાથી મલિન થઈ જાય છે તેમજ પદ્મકાયની  
વિરાધના સાધ્ય આ પ્રતિમાપૂજનમા તદલીન થયેલો જીવ પણ જ્ઞાનાવરણીય  
દર્શન મોહનીય કર્મની વૃદ્ધિ કરતો કરતોવધારે વધારે મલિન થતો જાય છે તે  
કોઈ પણ સમયે એમની વૃદ્ધિમા સમ્યક્ત્વ અને કેવલિપ્રજ્ઞસ ધર્મને મેળવી  
શકનાર થઈ શકતો નથી એટલા માટે કર્મોંને ક્ષય કરવાની આશાથી પ્રતિમા  
પૂજનમા તદલીન માણસ પોતાના કર્મોંને આ કાર્ય ( પ્રતિમાપૂજન ) થી ક્ષય  
કરવા માગે છે તે રૂઢા દુરાશા માત્ર છે જ્યારે આ કાર્યથી જીવ સમ્યક્ત્વ  
અને કેવલિપ્રજ્ઞસ ધર્મના લાભથી પણ સદા દૂર રહે છે ત્યારે તેનાથી કર્મ  
ક્ષયની આશા રાખવી તે જોટી દૃષ્ટિના માત્ર જ છે સમ્યક્ત્વ જીવને ક્ષયો  
પશમિત લાવ છે હવે ન તો પ્રતિમા ક્ષયોપશમ સ્વરૂપ છે અને ન તે ક્ષયો  
પશમમા કારણ રૂપ છે એમકે એનાથી જ્ઞાનાવરણીય અને દર્શનમોહનીય



યત્ર કેવલિપ્રજ્ઞધર્મસ્ય શ્રવણાયાપિ યોગ્યતા ન ભવતિ, સમ્યક્ત્વમ્ ચ નાનુ  
ભવ., તત્ર સમ્યક્ત્વથુદ્ધિદેતુત્વ ગગનકુસુમપદ્મનોરિત્તપમાત્રમ્ । यस્ય પ્રતિમા  
પૂજનસ્ય નાસ્તિ ધર્મમૂલત્વ ન ચાસ્તિ ધર્માદ્વિત્વ, નાપિ ધર્માલમ્બનત્વ, ન ચાપિ  
ધર્મલક્ષણસમન્વિત, તસ્ય ધર્મપદરાન્યત્વરૂત્તપને — સુસ્પષ્ટમેવોત્કૃષ્ટપરૂપણમ્ ।  
ભગવતાઽર્હતા-પ્રવચને અનુપદિષ્ટસ્ય પ્રતિમાપૂજનસ્યોપદેશકરણેન ભ્રાન્તિ જનયતાં  
પ્રતિમાપૂજન કારયતા ચ કા ગતિઃ સ્યાદિતિ સમાલોચનીય મુધીમિ' । અપર ચ—

દોહિં ઠાણેહિં આયા કેવલિપન્નત્ત ધમ્મ લભેજ્જા સવણયાણ ત જહા સ્વણ  
ચેવ ઉવસમેણ ચેવ ઇવ જાત મણપજ્જનાણ ઉપ્પાદેજ્જા ત જહા—સ્વણ ચેવ ઉવ  
સમેણ ચેવ । ( સ્થા° ૨ ઠા° ૪ ૩૦ )

“સ્વણ ચેવ” इति ज्ञानावरणीयस्य दर्शनमोहनीयस्य च कर्मण उदय  
प्राप्तस्य क्षयण, अनुदितस्य चोपशमेन=क्षयोपशमेनेत्यर्थ' । अत्र पदद्वयेन क्षयोप  
शमरूपोऽर्थो गृह्यते । यावत् करणात्—“केवल दोहिं सुज्झेज्जा ।”

કેવલિપ્રજ્ઞધર્મસ્ય શ્રવણ તથા સમ્યક્ત્વ ચ જ્ઞાનાવરણીયસ્ય દર્શનમોહનીયસ્ય  
ચ કર્મણ, ક્ષયોપશમાદેવ લભ્યતે इति भगवता प्रतिप्रोधितम् । इदमत्र बोध्यम्  
नहि रुधिरलिप्तवस्त्रस्य रुधिरेण प्रक्षालने शुद्धिर्भवति प्रत्युत मलिनतरत्त्वमेव,

देशक तथा प्रेरक की वास्तविक वस्तुस्थिति से जनता को अधिकार में  
रखने के कारण क्या गति होगी यह स्वयं बुद्धिमानों को विचार ने  
जैसी बात है ।

अपर च—दोहिं ठाणेहिं आयाके वलिपन्नत्त धम्म लभेज्जा सवण  
याए-त जहा इत्यादि सूत्र—

इसका भावार्थ यह है—जीव केवलियों द्वारा प्रज्ञप्त धर्म का श्रवण  
तथा सम्यक्त्व का लाभ ज्ञानावरणीय और दर्शनमोहनीय कर्म के क्षय  
और क्षयोपशम से ही करता है प्रतिमापूजन से नहीं । जिस प्रकार  
रुधिर से मैले वस्त्र की सफाई रुधिर में ही धोने से नहीं होती, उसी

પૂજન કરાવનારા ઉપદેશકો પ્રેરકરૂપ થઈને યથાર્થ વસ્તુસ્થિતિથી સમાજને  
અધારામા રાખે છે તે બદલ તેમની શી દશા થશે તે વિદ્વાનો મમણ શકે છે

અને બીજી પણ કે—દોહિ ઠાણેહિં આયા કેવલિપન્નત્ત ધમ્મ લભેજ્જા  
સવણયાણ-ત જહા—ઇત્યાદિ સૂત્ર—

આનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે કેવલિએ વડે પ્રજ્ઞા ધર્મ તુ શ્રવણ  
તેમજ સમ્યક્ત્વનો લાભ એવ જ્ઞાનાવરણીય અને દર્શન મોહનીય કર્યના ક્ષય  
અને ક્ષયોપશમથી ડરે છે પ્રતિમાપૂજનથી નહિ જેમ લોહીથી ખરડાએલા  
વસ્ત્રની સાફસૂફી લોહી વડે ધોવાથી થતી નથી તેમજ સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિ  
અથવા તે કમોનો વિનાશ પ્રતિમાપૂજનથી થતો નથી બલકે જેમ તે લોહીથી

તથા-સમ્યક્ત્વશુદ્ધ્યર્થ કર્મક્ષયાર્થ ચ પ્રતિમાપૂજને પ્રવૃત્તસ્ય જીવસ્ય પદ્મકાયો  
પમર્દનસાધ્યપૂજયા જ્ઞાનાવરણીયસ્ય દર્શનમોહનીયસ્ય ચ કર્મણો વૃદ્ધૌ સત્યાં સમ્ય-  
ક્ત્વમ્ય કેવલિ પ્રજ્ઞસ ધર્મસ્યાઽપિ પ્રાપ્તિઃ કાલત્રયેઽપિ ન સમપ્રતિ કિંપુન કર્મક્ષયાશા

સમ્યક્ત્વમાત્મનઃ ક્ષાયોપશમિકો ભાવઃ । પ્રતિમા તુ ન ક્ષયોપશમસ્વરૂપા, ન  
ચાપિ ક્ષયોપશમદેત , જ્ઞાનાવરણીયદર્શનમોહનીયકર્મનિર્જરાજનકૃત્વાભાવાત્ ,  
દેશતઃ કર્મક્ષયો હિ નિર્જરા તા પ્રતિ તપસ એવ કારણત્વાત્ । ઉક્ત ચોત્તરાધ્યયનમુને-

પ્રકાર સમ્યક્ત્વ કી શુદ્ધિ અથવા કર્મોં કા વિનાશ પ્રતિમાપૂજનસે નહીં  
હોતા હૈ, પ્રત્યુત જિમ પ્રકાર વહ ક્ષયિરયુક્ત વસ્ત્રરુધિર સે સાફ કિયે  
જાને પર અધિક મલિન હો જાતા હૈ ઉસી પ્રકાર પદ્મકાય કી વિરાધના  
સાધ્ય ઇસ પ્રતિમાપૂજન મેં લવલીન જીવ બી જ્ઞાનાવરણીય ઔર દર્શન  
મોહનીય કર્મ કી વૃદ્ધિ કરતા હુઆ અધિકાધિક મલિન હોતા રહતા હૈ  
વહ કમી બી હનકી વૃદ્ધિમે સમ્યક્ત્વ ઔર કેવલિ પ્રજ્ઞસ ધર્મ કા પાને  
વાલા નહીં બન સકતા હૈ । ઇસલિયે કર્મોં કે ક્ષય કરને કી આશા સે  
પ્રતિમાપૂજન મેં લવલીન મનુષ્ય અપને કર્મોં કા ઇસ કાર્યસે ક્ષય કરતા  
હૈ યહ એક દુરાશામાત્ર હૈ અરે ! જવ ઇસ કાર્ય સે જીવ સમ્યક્ત્વ ઔર  
કેવલિપ્રજ્ઞસ ધર્મ તક કે બી લાભ સે સદા વચિત રહતા હૈ તો ઉસસે  
ફિર કર્મ ક્ષય માનના યહ કોરી કલ્પના માત્ર હી હૈ । સમ્યક્ત્વ યહ  
જીવ કા ક્ષાયોપશમિક ભાવ હૈ । પ્રતિમા ન ક્ષયોપશમ સ્વરૂપ હૈ ઔર  
ન ઉસ ક્ષયોપશમ મેં કારણ રૂપ હી હૈ । કારણ કિ ઇસ સે જ્ઞાનાવર-  
ણીય ઔર દર્શનમોહનીય કર્મ કી નિર્જરા નહીં હોતી હૈ । કર્મોં કા

ખરડાયેલુ વસ્ત્ર લોહીવડે માત્ર ડરવાથી મલિન થઈ જાય છે તેમજ પદ્મકાયની  
વિરાધના સાધ્ય આ પ્રતિમાપૂજનમા તલલીન થયેલો જીવ પણ જ્ઞાનાવરણીય  
દર્શન મોહનીય કર્મની વૃદ્ધિ કરતો કરતોવધારે વધારે મલિન થતો જાય છે તે  
કોઈ પણ સમયે એમની વૃદ્ધિમા સમ્યક્ત્વ અને કેવલિપ્રજ્ઞસ ધર્મને મેળવી  
શકનાર થઈ શકતો નથી એટલા માટે કર્મોંને ક્ષય ડરવાની આશાથી પ્રતિમા  
પૂજનમા તલલીન માણસ પોતાના કર્મોંને આ કાર્ય ( પ્રતિમાપૂજન ) થી ક્ષય  
કરવા માગે છે તે ક્રૂર દુરાશા માત્ર છે જ્યારે આ કાર્યથી જીવ સમ્યક્ત્વ  
અને કેવલિપ્રજ્ઞસ ધર્મના લાભથી પણ સદા દૂર રહે છે ત્યારે તેનાથી કર્મ  
ક્ષયની આશા રાખવી તે ખોટી કલ્પના માત્ર જ છે સમ્યક્ત્વ જીવનો ક્ષયો  
પશમિત્ત લાભ છે હવે ન તો પ્રતિમા ક્ષયોપશમ સ્વરૂપ છે અને ન તે ક્ષયો  
પશમમા કાળજી રૂપે છે કેમકે એનાથી જ્ઞાનાવરણીય અને દર્શનમોહનીય

“ભવકોડીસંચિય કમ્મ તપસા નિઙ્ગરિઙ્ગહ ।” (અ ૩૦, ગા ૬) તત્ત્વાર્થ સૂત્રેઽપિ—

“તપસા નિર્જરા ચ” (જ ૦ ૧ સૂ ૦ ૪) ।

અત્ર ચક્રારઃ સવરમુચ્યવાર્થઃ । મમિતિગુપ્તિધર્માનુગ્રંથાપરીપદનયચારિત્રૈઃ સવરો ભવતિ, તપસા તુ નિર્જરા સવરોઽપિ ચેતિ શાયઃ સમ્યક્ત્વગામ સમ્યગ્દર્શન, તચ્ચ સ્થાનાગ્નસૂત્રમ્— (સ્થા ૦ ૨૩૦ ૨) દ્વિવિત્ર પ્રોક્ત । નિર્મર્ગસમ્યગ્દર્શનમ્ અભિગમમસ્યગ્દર્શન ચેતિ । નિર્મર્ગતઃ=સ્વભાવતઃ—ન પરોપદેશતો ચદુત્પન્નતે, તનિર્મર્ગસમ્યગ્દર્શનમ્ । અભિગમાત્ — મદ્ગુરુપદેશતો ચદુત્પન્નતે, તદભિગમ સમ્યગ્દર્શનમ્ ।

एक देश क्षय होना निर्जरा है । इस निर्जरा के प्रति कारणता तो तप में बतालाई गई है । देखो उत्तराध्ययन सूत्र में यही बात कही है—

‘ भवकोडी सचिध कम्म तपसा निङ्गरिङ्गह ’ करोड़ों भवों में संचित कर्मों की जीव तप से निर्जरा कर दता है । तत्त्वार्थ सूत्र में भी “ तपसा निर्जरा च ” इस सूत्र द्वारा यही बात कही गई है—तप से निर्जरा और सवर दोनों होते हैं । सूत्रम्य “ च ” शब्द से सवर का ग्रहण हुआ है ।

भावार्थ—इसका यही है कि पाच समिति, ३ गुप्ति, १० यतिधर्म १२, अनुपेक्षा, २२ परीषदों का जीतना एव ५ प्रकार का चारित्र्य पालना—इनसे सवर होता है और तप से सवर एव निर्जरा दोनों ही हाते हैं । स्थानाग्नसूत्र में सम्मगदर्शन दो प्रकार का कहा गया है—१ निसर्ग

કર્મના નિર્જરા થઈ રાકે તેમ નથી કર્મોના એકદેશનો ક્ષય થવો તે નિર્જરા પ્રત્યે ડારણતા તો તપમા બતાવવામા આવી છે, જુઓ ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમા એ જ વાત સ્પષ્ટ કરી છે —

“ ભવકોડી સચિય કમ્મ તપસા નિઙ્ગરિઙ્ગહ ” કરોડો ભવોમા સચિત કર્મોની નિર્જરા જીવ તપથી કરી નાખે છે તત્ત્વાર્થ સૂત્રમા ખજી “ તપસા નિર્જરા ચ ” આ સૂત્રવડે એ જ વાત કહેવામા આવી છે કે તપથી નિર્જરા તેમજ સવર બને થાય છે “ સૂત્રમા આવેલ “ ચ ” શબ્દથી સવરનુ ગ્રહણ કરવામા આવ્યું છે

ભાવાર્થ—આનો આ પ્રમાણે છે કે પાચ સમિતિ, ૩ ગુપ્તિ, ૧૦ યતિધર્મ, ૧૨ અનુપેક્ષા ૨૨ પરીષદોને જીતવા અને ૫ પ્રકારના ચારિત્રનુ પાલન કરવું આ બધાથી સવર થાય છે અને તપથી સવર અને નિર્જરા બને થાય છે સ્થાનાગ્નસૂત્રમા સમ્યગ્દર્શન બે પ્રકારનું બતાવવામા આવ્યું

केचित्तु--अत्राभिगमशब्दार्थो निमित्तमपि, तच्च प्रतिमादि उति  
यदन्ति, तन्मोहनीयकर्मोदयवित्तिम् -- अभिगमसम्यग्दर्शने हि प्रतिमानि-  
मित्तकत्वं न सम्भवति श्रवणादिना त्रयोपशमहेतौरेण सद्गुण्यपदेशम्यात्राभिगमन  
और दूसरा अभिगम । जो सम्यग्दर्शन जीवों को स्वभाव से ही होता  
है । सद्गुरु के उपदेश से जो जीव को प्राप्त होता है वह अभिगम  
सम्यग्दर्शन है । निस्सर्ग और अभिगम में अन्तरग कारणदर्शन मोह  
नीय कर्म का क्षयोपशम आदि समान है परन्तु इसके होने पर भी जो  
जीव को सद्गुरु के उपदेश से प्राप्त होता है वह अभिगम और जो  
इसके बिना प्राप्त होता है वह निस्सर्ग सम्यग्दर्शन है कोई २ व्यक्ति  
अभिगम शब्द का अर्थ निमित्त परक भी करते हैं और वह निमित्त  
“प्रतिमा आदि है” ऐसा मानते हैं । परन्तु यह उनका कथन केवल  
मोह कर्म का ही प्रमाण है क्योंकि अभिगम सम्यग्दर्शन में प्रतिमा  
रूप निमित्त कला सम्भवित नहीं होती है--वहा तो श्रवण आदि से  
दर्शन मोहनीय कर्म के क्षयोपशम के कारणरूप सद्गुण के उपदेश का  
ही अभिगम शब्द से ग्रहण हुआ है । यदि सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति  
में वह कारण होना तो उस का ग्रहण निमित्तरूप से होता परन्तु ऐसा  
तो होता नहीं है--कारण कि वह अचेतन है उस से प्रवचन के अर्थ  
का उपदेश होता नहीं है । प्रवचन के अर्थ के उपदेश सनेबिना श्रोता-  
ओं को प्रवचन का अर्थ ज्ञान कैसे हो सकता है ? अर्थज्ञान हुए बिना

छे १ निस्सर्ग અને ૨ અભિગમ સદ્ગુરુના ઉપદેશથી નહિ પણ જીવને  
સ્વભાવથી જ તે સમ્યગ્દર્શન થાય છે તે નિસ્સર્ગ સમ્યગ્દર્શન છે સદ્ગુરુના  
ઉપદેશથી જે જીવને સમ્યગ્દર્શન પ્રાપ્ત થાય છે તે અભિગમ સમ્યગ્દર્શન છે  
નિસ્સર્ગ અને અભિગમમાં અતરંગ કારણ દર્શનમોહનીય કર્મનો ક્ષયોપશમ  
વગેરે સમાન જ છે પણ એના હોવા છતાં જીવને જે સદ્ગુરુના ઉપદેશથી  
મળે છે તે અભિગમ અને જે એના વગર મળે તે નિસ્સર્ગ સમ્યગ્દર્શન છે  
કેટલીક વ્યક્તિઓ અભિગમ શબ્દનો અર્થ નિમિત્ત પરક પણ કરે છે અને તે  
નિમિત્ત “પ્રતિમા વગેરે છે” એવું માને છે પણ આવું કથન તેમના ઝૂકત  
મોહ કર્મનો જ વિલાસ છે કેમકે અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમાં પ્રતિમા કે નિમિ  
ત્તના સંભવિત થઈ શકે તેમ નથી ત્યાં તો શ્રવણ વગેરેથી દર્શનમોહનીય  
કર્મના ક્ષયોપશમના કારણરૂપ સદ્ગુણના ઉપદેશનું જ અભિગમ શબ્દથી અહણ  
થયું છે જે સમ્યગ્દર્શનની ઉત્પત્તિમાં તે કારણ હોત તો તેનું અહણ નિમિત્ત  
રૂપથી થાત પણ આવું તો નથી કેમકે તે અચેતન છે તેનાથી પ્રવચનના  
અર્થનો ઉપદેશ થઈ શકે નથી પ્રવચનના અર્થનો ઉપદેશ માલખ્યા વિના

શબ્દેન ગ્રહણાત્ સમ્યક્ત્વં हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूपं, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञानं च निर्जरामूलकं, निर्जरा च विनयवैयावृत्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्यः, तत्र च सद्गुरुरूपदेशः कारणः न तु प्रतिमा । सा हि सद्गुरुयत् प्रवचनार्थमुपदेष्टुमसमर्था, तस्या जडत्वात्, । नापि सा निर्जराहेतुः, विनयादितपोरूपकर्म की निर्जरा नहीं हो सकती है । निर्जरा के अभाव में दर्शन मोहनीय कर्म के क्षय उपशान आदि रूप सम्यक्त्व की उत्पत्ति सम्भवित नहीं है । अतः अभिगम सम्यग्दर्शन में सद्गुरु का उपदेश ही निमित्त माना गया है और उसीका ग्रहण वहा पर उस शब्द से हुआ है प्रतिमा का नहीं-इसी का खुलाशा “सम्यक्त्व हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूप, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञानं च निर्जरामूलक - निर्जरा च विनयवैयावृत्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्यः, तत्र च सद्गुरुरूपदेशः कारणः न तु प्रतिमा ” अर्थ इन पक्तियों में लिखा गया है । तत्त्वार्थ का श्रद्धान करना सम्यक्त्व है । वह श्रद्धान प्रवचन के अर्थज्ञान से ही होता है और उस अर्थज्ञानका मूल कारण निर्जरा मानी गई है अपना प्रतिपक्षी कर्मों की निर्जरा हुए विना तत्त्वज्ञान हो ही नहीं सकता है विनय, वैयावृत्य, स्वाध्यायरूपतप विशेष निर्जरा के कारण हैं तप की आराधना में सद्गुरु का उपदेश कारण है इस प्रकार परम्परा सबंध से अभिगम सम्यग्दर्शन में सद्गुरु का उपदेश ही निमित्तरूप से गृहीत हुआ है प्रतिमा नहीं-कारण वह सद्गुरु के उपदेश की तरह प्रवचन

શ્રોતાઓને પ્રવચનનું અર્થજ્ઞાન કેવી રીતે થઈ શકે? અર્થજ્ઞાન વગર કોઈની નિર્જરા પણ થઈ શકતી નથી નિર્જરા વિના દર્શનમોહનીય કર્મના ક્ષય ઉપશમ વગેરે રૂપ સમ્યક્ત્વની ઉત્પત્તિ સંભવિત નથી એટલા માટે અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમા સદ્ગુરુનો ઉપદેશ જ નિમિત્તરૂપે માનવામા આવ્યો છે અને તે શબ્દથી તેનું જ ગ્રહણ થયું છે પ્રતિમાનું નહિ આનું જ સ્પષ્ટીકરણ “સમ્યક્ત્વ हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूप, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञानं च निर्जरामूलकं निर्जरा च विनयवैयावृत्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्यः, तत्र च सद्गुरुरूपदेशः कारणः न तु प्रतिमा ” આનો અર્થ આ પ્રમાણે છે, કે તે તત્ત્વર્થનું શ્રદ્ધાન કરવું તે સમ્યક્ત્વ છે તે શ્રદ્ધાન પ્રવચના અર્થજ્ઞાનનું મૂળ કારણ નિર્જરા જ માનવામા આવે છે પોતાના પ્રતિપક્ષી કર્મોની નિર્જરા થયા વગર તત્ત્વજ્ઞાન થઈ જ શકતું નથી વિનય, વैयाવૃત્ય, સ્વાધ્યાય રૂપ તપ વિશેષ નિર્જરાના કારણ છે તપની આરાધનામા સદ્ગુરુનો ઉપદેશ કારણ છે આ રીતે પરપરા સંબંધથી અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમા સદ્ગુરુનો ઉપદેશ જ નિમિત્ત રૂપમા ગૃહીત થયો છે નહિ કે પ્રતિમા કેમકે તે સદ્ગુરુના ઉપદેશની જેમ



ત્યાભાવાત્, કથ તદ્દિ સમ્યક્ત્વ પ્રતિમાયાઃ સમ્ભવતિ ? કથમપિ નહિ । અત એવો પદેશસ્ય સમ્યક્ત્વ પ્રતિ કારણત્વ પ્રદર્શયન્ ભગવાનવાદીત્-ઉત્તરાધ્યયનસૂત્રે-  
(અ૦ ૨૮ ગા૦ ૧૫)

“ તદ્દિયાણ તુ ભાવાણ સઘ્ભાવે ઉવણ્ણમણ ।

ભાવેણ સદ્દહતસ્સ સમ્મત્ત ત વિયાહિય ॥ ઇતિ ।

ઝાયા—તયાના તુ ભાવાના સઘ્ભાવ ઉપદેશનમ્ ।

ભાવેન શ્રદ્ધધત્ સમ્યક્ત્વ તદ્ વ્યાર્યાતમ્ ॥

જીવાજીવાદિપદાર્થાના સઘ્ભાવે યદ્ ઉપદેશન=ગુરોરુપદેશઃ, તદ્ ભાવેન-  
અન્તઃકરણેન ચન્ત મોહનીયકર્મણ ક્ષયેણ ક્ષયોપશમેન વા યાઽભિરુચિરુત્પદ્યતે,  
તત્ સમ્યક્ત્વ તીર્યકરૈર્વ્યાખ્યાતમ્ ।

કે અર્થ કા ઉપદેશ કરને મેં અચેતન હોને સે સર્વથા અસમર્થ હે કર્મો  
કી નિર્જરા મેં મી વદ્દ હેતુ રૂપ નહી હોતી હૈ-કારણ કિ કર્મો કી  
નિર્જરા કે હેતુ તો વિનયાદિક તપ હી માને ગયે હેં, પ્રતિમા વિનયાદિ  
તપ સ્વરૂપ નહી હૈ । અત પ્રતિમા મેં સમ્યક્ત્વ કી ઉત્પત્તિ મે કારણતા  
કિસી મી પ્રકાર સમ્ભવિત નહી હોતી હૈ-ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર મેં સદ્ગુરુ  
કે ઉપદેશ કો સમ્યક્ત્વ કે પ્રતિ કારણ પ્રકટ કરતે હુવ સિદ્ધાન્તકાર  
કહતે હૈ કિ-તદ્દિયાણ તુ ભાવા ણ સઘ્ભાવે ઉવણ્ણમણ ।

ભાવેણ સદ્દહતસ્સ સમ્મત્ત ત વિયાહિય ॥ ઇતિ ॥

જીવ ઓર અજીવ આદિ પદાર્થો કા સદ્ગુરુ ને જો યથાવસ્થિત  
સ્વરૂપ પ્રકટ કિયા હૈ, ઉમકા ઉસીરૂપ સે અન્તઃ કારણ સે શ્રદ્ધાન  
કરને વાલે પ્રાણી કે દર્શન મોહનીય કર્મ કે ક્ષય અથવા ક્ષયોપશમ

પ્રવચનના અર્થનેા ઉપદેશ કરવામા અચેતન હોવા બદલ સંપૂર્ણપણે અસમર્થ  
છે કારણ કે કર્મોની નિર્જરાના હેતુ તો વિનય વગેરે તપોજ્ઞ માનવામા આવ્યા  
છે પ્રતિમા વિનય વગેરે તપ સ્વરૂપ નથી, એટલા માટે પ્રતિમામા સમ્યક્ત્વની  
ઉત્પત્તિમા કારણતા કોઈ પણ રીતે સંભવી શકે તેમ નથી ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમા  
સદ્ગુરુના ઉપદેશને સમ્યક્ત્વના પ્રતિ કારણ બતાવતા સિદ્ધાન્તકાર કહે છે—

તદ્દિયાણ તુ ભાવાણ સઘ્ભાવે ઉવણ્ણમણ ।

ભાવેણ સદ્દહતસ્સ સમ્મત્ત ત વિયાહિય ॥ ઇતિ ॥

જીવ અને અજીવ વગેરે પદાર્થોનું જે યથાવસ્થિત સ્વરૂપ સદ્ગુરુએ પ્રકટ  
કર્યું છે તેનું તે રૂપથી અતઃકરણથી શ્રદ્ધા ન કરનારા પ્રાણીના દર્શન મોહ  
નીય કર્મના ક્ષય કે ક્ષયોપશમથી જે રૂચિ ઉત્પન્ન થાય છે, તેનું નામ જ

શબ્દેન ગ્રહણાત્ સમ્યક્ત્વ દિ તત્ત્વાર્થશ્રદ્ધાનરૂપ, તત્ત્વ પ્રવચનાર્થજ્ઞાનાદેવ, પ્રવચનાર્થજ્ઞાનં ચ નિર્જરામૂલક, નિર્જરા ચ વિનયવૈયાવૃત્ત્યસ્વાધ્યાયરૂપતપોવિશેષેભ્ય, તત્ર ચ સદ્ગુરુપદેશ કારણ, ન તુ પ્રતિમા । સા દિ સદ્ગુરુર્વા પ્રવચનાર્થ મુપદેશ્ચ સમર્થા, તસ્યા જડત્વાત્, । નાપિ સા નિર્જરાતેતુ' । વિનયાદિતપોમ્પ કર્મોં કી નિર્જરા નહીં હો સક્તી હૈ । નિર્જરાં કે જમાવ મેં દર્શન મોહનીય કર્મ કે ક્ષય ઉપશમ આદિ રૂપ સમ્યક્ત્વ કી ઉત્પત્તિ સંભવિત નહીં હૈ । અતઃ અભિગમ સમ્યગ્દર્શન મેં સદ્ગુરુ કા ઉપદેશ હી નિમિત્ત માના ગયા હૈ ઓર ઉસીકા ગ્રહણ વદા પર ઉમ જાગ્રડ સે જુઆ હૈ પ્રતિમા કા નહીં-હસી કા खुलाशा "सम्यक्त्व हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूप, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञानं च निर्जरामूलक - निर्जरा च विनयवैयावृत्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्यः, तत्र च सद्गुरूपदेशः कारणं न तु प्रतिमा " अर्थ इन पक्तियों में लिखा गया है । तत्त्वार्थ का श्रद्धान करना सम्यक्त्व है । वह श्रद्धान प्रवचन के अर्थज्ञान से ही होता है और उस अर्थज्ञानका मूल कारण निर्जरा मानी गई है अपना प्रतिपक्षी कर्मों की निर्जरा हुए बिना तत्त्वज्ञान हो ही नहीं सकता है विनय, वैयावृत्य, स्वाध्यायरूपतप विशेष निर्जरा के कारण हैं तप की आराधना में सद्गुरु का उपदेश कारण है इस प्रकार परम्परा सबंध से अभिगम सમ્યग्दर्शन में सद्गुरु का उपदेश ही निमित्तरूप से गृहीत हुआ है प्रतिमा नहीं-कारण वह सद्गुरु के उपदेश की तरह प्रवचन

શ્રોતાઓને પ્રવચનનું અર્થજ્ઞાન કેવી રીતે થઈ શકે? અર્થજ્ઞાન વગર કોઈની નિર્જરા પણ થઈ શકતી નથી નિર્જરા વિના દર્શનમોહનીય કર્મના ક્ષય ઉપશમ વગેરે રૂપ સમ્યક્ત્વની ઉત્પત્તિ સંભવિત નથી એટલા માટે અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમાં સદ્ગુરુનો ઉપદેશ જ નિમિત્તરૂપે માનવામાં આવ્યો છે અને તે શબ્દથી તેનું જ શ્રદ્ધા થયું છે પ્રતિમાનું નહિ આનું જ સ્પષ્ટીકરણ "સમ્યક્ત્વ દિ તત્ત્વાર્થશ્રદ્ધાનરૂપ, તત્ત્વ પ્રવચનાર્થજ્ઞાનાદેવ, પ્રવચનાર્થજ્ઞાન નિર્જરામૂલક નિર્જરા ચ વિનયવૈયાવૃત્ત્યસ્વાધ્યાયરૂપતપોવિશેષેભ્ય, તત્ર ચ સદ્ગુરુપદેશ કારણ ન તુ પ્રતિમા" આનો અર્થ આ પ્રમાણે છે, કે તે તત્ત્વાર્થનું શ્રદ્ધાન કરવું તે સમ્યક્ત્વ છે તે શ્રદ્ધાન પ્રવચનના અર્થજ્ઞાનનું મૂળ કારણ નિર્જરા જ માનવામાં આવે છે પોતાના પ્રતિપક્ષી કર્મોની નિર્જરા થયા વગર તત્ત્વજ્ઞાન થઈ જ શકતું નથી વિનય, વૈયાવૃત્ય, સ્વાધ્યાય રૂપ તપ વિશેષ નિર્જરાના કારણ છે તપની આરાધનામાં સદ્ગુરુનો ઉપદેશ કારણ છે આ રીતે પરપરા સંબંધથી અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમાં સદ્ગુરુનો ઉપદેશ જ નિમિત્ત રૂપમાં ગૃહીત થયો છે નહિકે પ્રતિમા કેમકે તે સદ્ગુરુના ઉપદેશની જેમ

ત્વાભાવાત્, કથ તદ્દિ સમ્યક્ત્વ પ્રતિમાયાઃ મભવતિ ? કથમપિ નહિ । અત એવો પદેશસ્ય સમ્યક્ત્વ પ્રતિ કારણત્વ પ્રદર્શયન્ ભગવાનવાદીત્-ઉત્તરાધ્યયનસૂત્રે-  
(અ૦ ૨૮ ગા૦ ૧૫ )

“ તદ્દિયાણ તુ ભાવાણ સઘ્ભાવે ઉવણ્મણ ।

ભાવેણ સદ્દહતસ્સ સમ્મત્ત ત વિચાહિય ॥ ઇતિ ।

ઝાયા—તવ્યાના તુ ભાવાના સઘ્ભાવ ઉપદેશનમ્ ।

ભાવેન શ્રદ્ધતઃ સમ્યક્ત્વ તદ્ વ્યાર્યાતમ્ ॥

જીવાજીવાદિપદાર્થાના સઘ્ભાવે યદ્ ઉપદેશન=ગુરોરુપદેશ., તદ્ ભાવેન-  
અન્તઃકરણેન શ્રદ્ધાત મોહનીયકર્મણઃ ક્ષયેણ ક્ષયોપશમેન વા યાઽભિરુચિરુત્પદ્યતે,  
તત્ સમ્યક્ત્વ તીર્થકરૈર્વ્યાખ્યાતમ્ ।

કે અર્થ કા ઉપદેશ કરને મેં અચેતન હોને સે સર્વથા અસમર્થ હૈ કર્મો  
કી નિર્જરા મેં મી વહ હેતુ રૂપ નહી હોતી હૈ-કારણ કિ કર્મો કી  
નિર્જરા કે હેતુ તો વિનયાદિક તપ હી માને ગયે હૈ, પ્રતિમા વિનયાદિ  
તપ સ્વરૂપ નહી હૈ । અત પ્રતિમા મેં સમ્યક્ત્વ કી ઉત્પત્તિ મે કારણતા  
કિસી મી પ્રકાર સમ્બવિત નહી હોતી હૈ-ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર મેં સદ્ગુરુ  
કે ઉપદેશ કો સમ્યક્ત્વ કે પ્રતિ કારણ પ્રકટ કરતે હુણ સિદ્ધાન્તકાર  
કહતે હૈ કિ-તદ્દિયાણ તુ ભાવા ણ સઘ્ભાવે ઉવણ્મણ ।

ભાવેણ સદ્દહતસ્સ સમ્મત્ત ત વિચાહિય ॥ ઇતિ ॥

જીવ ઓર અજીવ આદિ પદાર્થો કા સદ્ગુરુ ને જો યથાવસ્થિત  
સ્વરૂપ પ્રકટ કિયા હૈ, ડસકા ડસીરૂપ સે અન્તઃ કરણ સે શ્રદ્ધાન  
કરને વાલે પ્રાણી કે દર્શન મોહનીય કર્મ કે ક્ષય અથવા ક્ષયોપશમ

પ્રવચનના અર્થનેા ઉપદેશ ડરવામા અચેતન હોવા બદલ સ પૂર્ણપણે અસમર્થ  
છે કારણ કે ડર્મોની નિર્જરાના હેતુ તો વિનય વગેરે તપોજ્ઞાનવામા આવ્યા  
છે પ્રતિમા વિનય વગેરે તપ સ્વરૂપ નથી, એટલા માટે પ્રતિમામા સમ્યક્ત્વની  
ઉત્પત્તિમા કારણતા ડોઢ પણ રીતે મલવી શકે તેમ નથી ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમા  
સદ્ગુરુના ઉપદેશને સમ્યક્ત્વના પ્રતિ કારણ બતાવતા સિદ્ધાન્તકાર કહે છે—

તદ્દિયાણ તુ ભાવાણ સઘ્ભાવે ઉવણ્મણ ।

ભાવેણ સદ્દહતસ્સ સમ્મત્ત ત વિચાહિય ॥ ઇતિ ॥

જીવ અને અજીવ વગેરે પદાર્થોનુ જે યથાવસ્થિત સ્વરૂપ સદ્ગુરુએ પ્રકટ  
કયું છે તેનુ તે રૂપથી અત કરણથી શ્રદ્ધા ન કરનારા પ્રાણીના દર્શન મોહ  
નીય કર્મના ક્ષય કે ક્ષયોપશમથી જે રૂચિ ઉત્પન્ન થાય છે, તેનુ નામ જ

યદિ પ્રતિમાઽપિ સમ્યક્ત્વગ્રામે નિમિત્ત સ્વાત્તર્કિ ભગવાત્ સ્થાનાઙ્ગમૂળે પ્રતિમાનિમિત્તત્વેન સમ્યક્ત્વગ્રામસ્ય તૃતીયભેદોઽપિ ગાન્ય., તસ્યાનુક્તત્વાત્ પ્રતિમાયાઃ સમ્યક્ત્વગ્રામે નિમિત્તત્વ નાસ્તીતિ યો યમ્ । કિં ચ—

પ્રાણાતિપાતસા યાયા. પ્રતિમાપૂજાયાઃ સમ્યક્ત્વશુદ્ધિદેવત્વ વચ્ચંતઃ સ્વ દુર્ગતિં ન પશ્યન્તિ મોહાન્ધાઃ, સ્થાનાઙ્ગમૂળે हि प्राणातिपातस्य दुर्गतिहेतुत्व प्रदर्शितम्—

पचहिं ठाणेहिं जीवा दुग्गइ गच्छति । त तदा-प्राणाऽप्राण, मुसावाएण, अदिन्नादाणेण, मेहुणेण, परिग्गहेण ” इति । (स्था ५ ठा १ उ )

સે જો કુચિ ઉત્પન્ન होती है उसी का नाम सम्यग्दर्शन है ऐसा तीर्थंकर प्रभुने कहा है यदि सम्यक्त्व की प्राप्ति में प्रतिमा निमित्त होती तो स्थानाङ्ग सूत्र में जो “ दोहिं ठाणेहिं आया केवल्लि पन्नत्त वम्म लभेज्जा सवणयाण ” ऐसा कहा है वहा यदि सम्यक्त्व के लाभ में प्रतिमा भी निमित्त होती तो उसके निमित्त होने से दो स्थानों की जगह सम्यक्त्व की प्राप्ति में तीन स्थानों का कथन सूत्रकार को करना चाहिये या परन्तु वहा दो स्थानों के अतिरिक्त तृतीयस्थान का कथन हुआ नहीं है, अतः इससे यह सिद्धान्त निश्चित होता है कि सम्यक्त्व के लाभ में प्रतिमा निमित्त नहीं है । फिर भी प्राणातिपात द्वारा साध्य प्रतिमा पूजन को मोह के आवेश से ऊधे हुए व्यक्ति सम्यक्त्व की शुद्धि का कारण बत लाते हुए अपनी दुर्गति का कुछ भी ख्याल नहीं करते ह यही एक बड़े आश्चर्य की बात है देखो प्राणातिपात को स्थानाङ्ग सूत्र में दुर्गति

સમ્યક્દર્શન છે, આમ તીર્થંકર પ્રભુએ કહ્યું છે એ સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિમા નિમિત્ત રૂપે હોત તો સ્થાનાંગ-સૂત્રમા જે “ દોહિ ઠાણેહિં આયા કેવલ્લિપન્નત્ત વમ્મ લભેજ્જા સવણયાણ ” આ પ્રમાણે કહ્યું છે, ત્યાં એ સમ્યક્ત્વના લાભમા પ્રતિમા પણ નિમિત્ત થઈ શકત તો તેને નિમિત્ત રૂપે થવા બદલ જે સ્થાનોની જગ્યાએ સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિમા ત્રણ સ્થાનોનું કથન સૂત્રકારે કરવું જોઈતું હતું, પણ ત્યાં તો એ સ્થાનો સિવાય ત્રીજા સ્થાનનું કથન થયું જ નથી એથી આ સિદ્ધાંતની ખાત્રી થાય છે કે સમ્યક્ત્વના લાભમા પ્રતિમા નિમિત્ત નથી છતાંયે પ્રાણાતિપાત વડે ‘સાધ્ય પ્રતિમા પૂજનને અજ્ઞાનની નિદ્રામા પડેલી વ્યક્તિઓ સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિનું કારણ બતાવતી પોતાની દુરવસ્થા તરફ સહેજ પણ જોતી નથી તે એક બહુ નવાઈ જેવી વાત છે જુઓ પ્રાણાતિપાતને સ્થાનાંગસૂત્રમા દુર્ગતિનું જ કારણ બતાવવામા આવ્યું છે—( પચહિં ઠાણેહિં

કિં ચ-યથા લોકે સુગાતા સુવર્ણમાત્રસામ્યેના શુદ્ધસુવર્ણેઽપિ પ્રવૃત્તિમત્રલોક્ય  
શુદ્ધાશુદ્ધપરીક્ષણાત્ર ત્રિચક્ષણઃ કપચ્છેદતાપા આદ્રિયન્તે તથાઽત્રાપિ પરીક્ષણીયે  
શ્રુતચારિત્રરૂપે વર્મે તપાદય સમાદરણીયા ભવન્તિ ।

પ્રાણિચાદીના પાપસ્થાનાના યસ્તુ શાસ્ત્રે પ્રતિપેદ્ય, તથા સ્વાધ્યાયધ્યાનાદીના  
યથ તત્ર વિધિ સ ધર્મરૂપ । પ્રાણિચત્તમપર્કમતિ પૂજને તુ ધર્મત્વપુદ્ધિર્મોહવશાદેવ  
ભવતિ, શાસ્ત્રે પ્રાણિચસ્ય પ્રતિપેદ્યાત્ । અતસ્તત્ર નાસ્તિ કવશુદ્ધિઃ ।

કા હી કારણ કહા છે “પચર્હિ ઠાણેર્હિ જીવા દુર્ગાહ ગચ્છતિ-ત  
જહા-પાણાઢવાણ, મુનાવાણ, અદિન્નાદાણેણ, મેહુણેણ, પરિગ્ગહેણ  
ઇતિ । (સ્થા ૫ ઠા ૧૩) ઠન પાચો સ્થાનો સે જીવ દુર્ગતિ કે પાત્ર  
વનતે છે - પ્રાણાતિપાત સે, મૃષાવાદ સે. અદત્તાદાન સે મૈથુન સે  
ઔર પરિગ્રહ સે । કિન્ન-લોક મેં જિસ મેં જિસ પ્રકાર મોઢે માલે વ્ય-  
ક્તિયો કી સુવર્ણમાત્ર કી સમાનતા સે અશુદ્ધ સ્વર્ણ મેં મી યહ સચ્ચા  
સુવર્ણ છે ઇત્ત પ્રકારકી પ્રવૃત્તિ કો દેખકર સુવર્ણપરીક્ષક જન ઉસકે  
સમ્યક્ત્વ ઔર અસમ્યક્ત્વ પરીક્ષાકે લિયે કપ છેદ ઔર તપ રૂપ ઉપાયો  
કા અવલમ્બન કરતે છે ઉસી પ્રકાર પરીક્ષણીય ઇસ શ્રુતચારિત્રરૂપ વર્મ  
કી પરીક્ષા કે લિયે સૂત્રકારોં ને કપાદિક પરીક્ષા કે સાધનો કા ઉપયોગ  
કિયા છે પ્રાણિચવાદિક પાપસ્થાનો કા શાસ્ત્ર મેં જો નિષેધ કા વિધાન  
હુઆ છે તથા સ્વાધ્યાય યથ અધ્યયન આદિ કા જો વહા પર વિધાન  
કિયા ગયા છે યહી વર્મ કા રૂપ છે પૂજન મેં યહ ધર્મ કપ નહી છે કયોં  
કિ વહ પ્રાણિ વધ કે સપર્ક સે દૂષિત છે-અતઃ ફિર મી જો ઉસમે ધર્મ

જીવા દુર્ગાહ ગચ્છતિ-ત જહા-પાણાઢવાણ, મુનાવાણ, અદિન્નાદાણેણ, મેહુ  
ણેણ પરિગ્ગહેણ ઇતિ ) (સ્થા ૫, ઠા ૧૩) આ પાચે સ્થાનોથી જીવ દુર્ગ  
તિને યોગ્ય ઠરે છે-પ્રાણાતિપાતથી, મૃષાવાદથી, અદત્તાદાનથી, મૈથુનથી અને  
પરિગ્રહથી અને ખીજી પણ કે લોકમા જેમ લોણા માણસોની સુવર્ણમાત્રની  
સમાનતાથી અશુદ્ધ સુવર્ણમા પણ ‘આ સોનુ ખર છે,’ આ બાતની પ્રવૃત્તિ  
જોધને સુવર્ણ પરીક્ષકો તેના ખરા-ખોટાની પરીક્ષા માટે કપ, છેદ અને તાપ  
રૂપ ઉપાયોનો આસરો લે છે તેમજ પરીક્ષણીય આ શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મની  
પરીક્ષા માટે સૂત્રકારોએ કપ વગેરે પરીક્ષાના સાધનોનો ઉપયોગ કર્યો છે  
પ્રાણિ વધ વગેરે પાપસ્થાનોનું શાસ્ત્રમા જે નિષેધ રૂપ વિધાન થયું છે તેમજ  
સ્વાધ્યાય અને અધ્યયન વગેરેનું જે ત્યાં વિધાન કરવામા આવ્યું છે તે જ  
ધર્મની ડસોટી-રૂપ છે પૂજનમા આ ધર્મ કપ નથી કેમકે તે પ્રાણિવધના  
સપર્કથી દૂષિત છે છતાંય તેમા ધર્મત્વની શુદ્ધિ રાખવામા આવે છે તે દ્રઢ



યત્ર વિધિ' પ્રતિષેધયતિ દ્વય કદાચિન્ સ્વરૂપતો વિપરીત્ય ન યાતિ, અર્થાત્-  
સ્વાધ્યાય યાનાદો નિયમતઃ પ્રવૃત્ત્યા વિધિપરિશુદ્ધિઃ, તથા હિંસાદો નિયમતો  
નિવૃત્ત્યા પ્રતિષેધપરિશુદ્ધિર્ભવતિ, સ ધર્મ-ઉદ્ ઉચ્યતે । પ્રતિમાપૂજાયા તુ નાસ્તિ  
ચ્છેદશુદ્ધિઃ, તસ્યાઃ પટ્ટકાયોપમર્દનતાપ્યત્વેન પ્રતિપક્ષપરિશુદ્ધ્યભાગાત્ ।

પ્રવચને જીવાજીવાદીના તત્ત્વાના યથાવસ્થિતસ્વરૂપનિરૂપણ મોક્ષમાધક  
મિત્યેવ નિશ્ચયસ્તાપશુદ્ધિઃ । યથા વહ્ની તાપનેન દુર્ગરસ્ય યથાવસ્થિતસ્વરૂપાવિ  
ર્ભાવ તથા-પ્રવચનોક્તતત્ત્વાનુમન્યાનેન ધર્મસ્ય સ્વરૂપમાવિર્ભવતિ । એવ પ્રતિમા  
પૂજાયાં પ્રવચનોક્તસત્ત્વરનિર્જરાતચલસળાનાકાન્તત્ત્વાનાસ્તિ તાપશુદ્ધિઃ ।

ત્વકી શુદ્ધિ હોતી હૈ વહ કેવલ મોલકા હી આવેજા હૈ । પ્રાણિવધ શાસ્ત્ર  
સે નિષિદ્ધ હૈ । જહાં પર વિધિ ઓર પ્રતિષેધ યે દોનોં કમી મી અપને  
સ્વરૂપ સે વિપરીતપને કો પ્રોષ નહીં હોતે હૈ વહા પર ઉદ સે શુદ્ધિ  
માની જાતી હૈ જિસ પ્રકાર સ્વાધ્યાય ઓર અધ્યયન આદિ શુભ કાર્યો  
મેં નિયમ સે શાસ્ત્ર મેં પ્રવૃત્તિ પ્રદર્શિત કી ગઈ હૈ ઓર હિંસાદિ કાર્યો  
સે ઉસમે નિયમ સે નિવૃત્તિ કહી ગઈ હૈ । પ્રતિમા પૂજન મેં વહ છેદ  
શુદ્ધિ નહી હૈ । કયો કિ રસમેં પ્રતિષેધ સે પરિશુદ્ધિ કા અભાવ હૈ રસ  
કાં કારણ વહ હૈ કિ વત્ પટ્ટકાય કે જીવોં કે ઘાત સે સાધ્યકાર્ય હૈ ।  
પ્રવચન મેં જીવ ઓર અજીવ આદિ તત્ત્વો કે યથાવસ્થિત સ્વરૂપ કા  
વર્ણન હી મોક્ષકા સાધક હૈ રસ પ્રકાર કા નિશ્ચય હી તાપ શુદ્ધિ હૈ ।  
જિસ પ્રકાર અગ્નિ મેં તપાને સે સ્વર્ણ કા યથાવસ્થિત સ્વરૂપ પ્રકટ હોતા  
હૈ । ઉસી પ્રકાર પ્રવચન કથિત તત્ત્વો કે અનુમન્યાન સે ધર્મ કે સ્વરૂપ  
કા અવિર્ભાવ હોતા હૈ રસ પ્રતિમાપૂજન મેં ધર્મતત્ત્વકે અવિર્ભાવ કરને

અજ્ઞાનનો જ ઊલસો છે પ્રાણિ વધ શાસ્ત્રનિષિદ્ધ છે જ્યા વિધિ અને પ્રતિષેધ  
આ બંને કોઈ પણ વખતે પોતાના સ્વરૂપથી વિપરીતાવસ્થામાં પરિવર્તિત થતા  
નથી ત્યાં છેદથી શુદ્ધિ માનવામાં આવે છે જેમ સ્વાધ્યાય અને અધ્યયન  
વગેરે શુભ કાર્યોમાં નિયમથી શાસ્ત્રમાં પ્રવૃત્તિ બતાવવામાં આવી છે અને  
હિંસા વગેરે કાર્યોથી તેમાં નિયમથી નિવૃત્તિ બતાવવામાં આવી છે પ્રતિમા  
પૂજનમાં આ છેદ શુદ્ધિ નથી કેમકે આમાં પ્રતિષેધથી પરિશુદ્ધિનો અભાવ છે  
આનુ કારણ આ પ્રમાણે છે કે તે પટ્ટકાયના ભવેના ઘાતથી સાધ્ય કાર્ય છે  
પ્રવચનમાં જીવ અને અજીવ વગેરે તત્ત્વોના યથાવસ્થિત સ્વરૂપનું વર્ણન જ  
મોક્ષનું સાધક છે આ બંનેનો નિશ્ચય જ તાપ શુદ્ધિ છે જેમ અગ્નિમાં તથા  
વવાથી સોનાનું યથાવસ્થિત સ્વરૂપ પ્રગટ થાય છે તેમજ પ્રવચન કથિત તત્ત્વોના  
અનુમન્યાનથી ધર્મના સ્વરૂપનો અવિર્ભાવ થાય છે આ નિ । ધર્મ

એમિઃ કૃપાદિભિઃ પરિશુદ્ધસ્યૈવ ધર્મત્વ સમયતિ તાદૃશસ્યૈવ ધર્મફલ  
જનરત્વાત્ ।

યથા-આચાર્યકર્માદિદોષદૂષિતાદારાદિદાને ધર્મશુદ્ધિયા ત્રિયમાણે ધર્મ-  
વ્યાપ્રાત્, યથા યા ઇન્દ્રાદિપૂજાદૌ ધર્મવ્યાપ્રાતઃ, તથૈવ ધર્મશુદ્ધિયા પ્રતિમાપૂજનેઽપિ  
ધર્મવ્યાપ્રાતઃ સ્વાત્, તસ્ય જીવોપપ્રાતહેતુત્વાત્ ।

“ પ્રતિમાપૂજા-ધર્મવ્યાપ્રાતપ્રતી, આગમોક્તન્યાયનિગદ્યતત્વાત્, અયોગ્ય-  
પ્રવચ્યાદાનપત્, ઇન્દ્રાદિપૂજાવદ્ વા ” इत्याद्यनुमानेनापि प्रतिमापूजाया धर्म-  
व्याप्रातो भवतीति विश्रमणीयम् । उक्त च—

કી યોગ્યતા તક્રુ ભી નહીં છે । કારણ કિ યહ પ્રવચન કથિત મચ્છ  
ઔર નિર્જરા તત્ત્વ કે લક્ષણ સે યુક્ત નહીં છે-અતઃ ઉસમેં તાપ શુદ્ધિ  
ભી નહીં છે । ઇન કૃપાદિઓ દ્વારા પરિશુદ્ધ હુઈ વસ્તુ મે હી ધર્મતા  
આતી છે ઔર વહી ચર્ચા મે ધર્મ કે ફલકા પ્રદાન હોતા છે । પ્રતિમાપૂ  
જન મે યહ વ્રાત નહીં છે-અતઃ વહ ધર્મરૂપ નહીં છે ।

કિંચ-ધર્મશુદ્ધિ સે પ્રનાયે ગયે, પરંતુ આચાર્યકર્મ આદિદોષો સે  
દૂષિત એસે આહાર કે દાન મેં તથા ઇન્દ્ર આદિકો કા પૂજન કરને મેં જિસ  
પ્રકાર ધર્મ કા વ્યાપ્રાત માના ગયા છે, ઉસી પ્રકાર ધર્મશુદ્ધિ સે કી ગઈ  
પ્રતિમા કા પૂજન મેં ભી જીવો કા વ્રાત હોને સે ધર્મ કા વ્યાપ્રાત હોતા  
છે । ઇમલિયે આગમ કથિત સિદ્ધાન્ત કે અનુમાર યહ પ્રતિમાપૂજન ઉપો-  
દેય કોટિ મેં નહીં આના છે । ફિર ભી જો હસે કરતે હૈ-કરાતે હૈ-વે  
આગમ કથિત સિદ્ધાન્ત સે સર્વથા વાત્ત હ-ઔર ધર્મ કા વ્યાપ્રાત કર-

તત્ત્વને આવિર્ભૂત કરવા સુધીની પણ ક્ષમતા નથી, કેમકે આ પ્રવચન કથિત  
સવર અને નિર્જરા તત્ત્વના લક્ષણથી યુક્ત નથી એટલા માટે આમા તાપ  
શુદ્ધિ પણ નથી આ ક્ષય વગેરે વડે પરિશુદ્ધ થયેલી વસ્તુમા જ ધર્મતા આવે  
છે અને તે જ માત્રા અવરૂપમા ધર્મના ફળને આપનાર છે પ્રતિમા પૂજનમા  
આ વ્રાત નથી એથી તે ધર્મ રૂપ નથી

ધર્મશુદ્ધિથી તૈયાર કરવામા આવેલા, પણ આધાર્મ્ય વગેરે દોષો વડે  
દૂષિત એવા આહારના દાનમા તેમજ ઇન્દ્ર વગેરેની પૂજા કરવામા જેમ ધર્મનો  
વ્યાપ્રાત માનવામા આવ્યો છે, તેમ જ ધર્મશુદ્ધિ રાખીને કરવામા આવેલા  
પ્રતિમા પૂજનમા પણ જીવોનો વ્રાત હોવાથી ધર્મનો વ્યાપ્રાત હોય છે એટલા  
માટે આગમ કથિત સિદ્ધાન્ત મુજબ આ પ્રતિમા પૂજન ઉપાદેય કોઈમા  
આવતુ નથી છતાં યે જે આને કરે છે, કરાવે છે તેઓ આગમ કથિત સિદ્ધા  
તથી મર્ચ્યા બાદ્ય છે અને ધર્મના વ્યાપ્રાતક છે એવી અયોગ્યને આપેલી

“ પ્રવ્રજ્યાદિવિધાને ચ, શાસ્ત્રોક્તન્યાયવાધિતે ।

દ્રવ્યાદિભેદતો જ્ઞેયો, ધર્મ-વ્યાપ્ત ઇવ હિ ” ॥ દારિમદ્રાષ્ટકમ્

યત્તુ-જિનપ્રતિમાયા દર્શન ચન્દન ચાવશ્યમંત્ર માયુનામિતિ ચન્દનાથકૃત્યા  
મક્તપાન ન વર્ત્તને તેવામિત્યાદૃસ્તધ્મિર્મલમ્—

અહોરાત્રકૃત્યેષુ માયુરત્ત્વેષુ જિનગતિમાર્શનાદેરનુક્તત્વાત્ । શૃણુ તાવદ્દોરાત્ર-  
કૃત્ય માધુનામ્—

નેવાલે છે અતઃ અયોગ્ય કો દીક્ષા દાન કો તરહ અથવા ઇન્દ્રાદિક ક  
પૂજન કો તરહ યત્ પ્રતિમાપૂજન આગમોક્ત ન્યાય સે નિરાકૃત્ત હોને સે  
ધર્મ કા વ્યાધાત કરનેવાલા હે જેમા ત્રિ-ગ્રામ કરના ચાહિયે । તથા ચ  
અનુમાનપ્રયોગોડય-પ્રતિમાપૂજા ધર્મવ્યાધાતવતી આગમોક્તન્યાયનિરાકૃ  
તત્વાત્ અયોગ્યપ્રવ્રજ્યાદોન્વત્ત ઇન્દ્રાદિપૂજનવદ્ધા । ઇમ અનુમાન મેં દિયા  
ગયા હેતુ અસિદ્ધ નથી હૈ-કયો કિ “ પ્રવ્રજ્યાદિવિધાને ચ શાસ્ત્રોક્તન્યા  
યવાધિતે - દ્રવ્યાદિભેદતો જ્ઞેયો ધર્મવ્યાધાત ઇવ હિ ” દૃષ્ટાન્ત મેં ઇસ  
હેતુ કા ઇસ શ્લોક દ્વારા કથિત પ્રકાર સે સદ્ભાવ પાયા હી જાતા હૈ ।

જો યત્ કતા જાનો હૈ કિ જિનપ્રતિમા કે દર્શન ચન્દન ક્રિયે વિના  
સાધુઓં કો આહાર પાની કરના કલ્પનીય નથી હૈ-અતઃ, ઇસકા દર્શન  
ચન્દન કરના સાધુઓં કે લિયે આવશ્યક હૈ વહ બિલકુલ નિર્મૂલ હૈ-  
કારણ કિ દિનરાત સવધી જિતને મી સાધુઓં કે કલ્પ હે ઇન મેં ઇસ  
વાત કા કહી મી કથન કિયા હુઆ નથી મિલતા હૈ-દિનરાત સવધી  
સાધુઓં કે ચે કૃત્ય હૈ—

દીક્ષાની જેમ અથવા તો ઇન્દ્ર વગેરેની પૂજાની જેમ આ પ્રતિમાપૂજન આગમ  
કથિત ન્યાયથી નિરાકૃત હોવા બદલ ધર્મનો નાશ કરનાર છે આમ માની જ  
લેવું જોઈએ “ તથા ચ અનુમાનપ્રયોગોડય પ્રતિમાપૂજા ધર્મવ્યાધાતવતી આગમો  
ક્તન્યાયનિરાકૃતત્વાત્ અયોગ્ય-પ્રવ્રજ્યાદાનવત્ ઇન્દ્રાદિપૂજનવદ્ધા । આ અનુમાનમા  
આપેલ હેતુ અસિદ્ધ નથી, કારણ કે-પ્રવ્રજ્યાદિવિધાને ચ શાસ્ત્રોક્તન્યાયવાધિતે  
-દ્રવ્યાદિભેદતો જ્ઞેયો ધર્મવ્યાધાત ઇવ હિ । દૃષ્ટાન્તમા આ હેતુનો આ શ્લોક  
વડે જે કથિત પ્રકાર છે તેનો સદ્ભાવ મળે છે

જે એમ કહેવામા આવે છે કે જીન પ્રતિમાના દર્શન કર્યા વગર સાધુ  
ઓને આહાર પાણી કરવું ચોગ્ય નથી એથી તેના દર્શન ચન્દન કરવા સાધુ  
ઓના માટે આવશ્યક છે તે માવ ખોટી વાત છે કેમકે દિવસ અને રાત્રિને  
લગતા સાધુઓને માટે જેટલા કલ્પ છે તેમા આ વાતનું કથન કયાયે નથી  
દિવસ અને રાત્રિના સાધુઓના આ નીચે લખ્યા મુજબ કૃત્યો

पढम पोरिसि सज्झायं, नीए ज्ञाण झियायए ।

तइयाए भिवस्वायरिय, चउत्थीए पुणो वि सज्झाय ॥

पढम पोरिमि सज्झाय, नीए ज्ञाण झियायए ।

तइयाए निम्मोक्ख च, चउत्थीए पुणो वि सज्झाय ॥ इति,

( उत्तराध्ययनसूत्रे २६ अ )

किं च-सामायिकाद्यापश्यकेष्वपि प्रतिमादर्शनादेरनुक्तत्वाद् जिनाज्ञाया एव च धर्ममूलत्वात्तस्य धर्मत्व न सि यति ।

यत्तु-पुष्पादिसमभ्यर्चनरक्षणो द्रव्यस्तवः सागुना हेय एव श्रावकेण तु उपादेयोऽपि तथा चाह-भाष्यकारः-

अकसिणपवत्तगाण, विरयाविरयाण एस खलु जुत्तो ।

ससारपयणुकरणो दव्वत्थए क्वदिट्ठतो ( भाष्यकारः ४२ )

पढम पोरिसि सज्झाय बीए ज्ञाण झियायए ।

तइयाए भिवस्वायरिय चउत्थीए पुणो वि सज्झाय ॥

पढम पोरिसि सज्झाय बीए ज्ञाण झियायए ।

तइयाए निम्मोक्ख च चउत्थीए पुणो वि सज्झाय ॥

( उत्तरा सूत्र २६ अ- )

अर्थस्पष्ट है । इसी प्रकार साधुओं के जो सामायिक आदि आवश्यक कृत्य हैं, उनमें भी प्रतिमा के दर्शन आदि करना नहीं कहा है । धर्म का मूल तो जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा की आराधना करने में है इसलिये दर्शन वगैरह ये धर्म के मूल नहीं हैं । भाष्यकारने जो इस गाथा द्वारा " अकसिण पवत्तगाण विरयोविरयाण एस खलु जुत्तो । ससार पयणुकरणो दव्वत्थए क्वदिट्ठतो " ( भाष्यकार ४२ ) यह कहा है कि

पढमे पोरिसि सज्झाय बीए ज्ञाण झियायए ।

तइयाए भिवस्वायरिय चउत्थीए पुणो वि सज्झाय ॥

पढमे पोरिसि सज्झाय बीए ज्ञाण झियायए ।

तइयाए निम्मोक्ख च चउत्थीए पुणो वि सज्झाय ॥ ( उत्तरासूत्र-२६ अ )

अर्थ अरण्य छे आ शीते आधुओना जे सामायिक वगेरे आवश्यक कृत्यो जे तेभनामा पणु प्रतिमाना दर्शन वगेरे करवानी बात उड़ी नथी धर्मनु भूण तो जिनेन्द्र भगवाननी आज्ञाने आराधवामा आवे जे माटे दर्शन वगेरे आ जधा धर्मना भूण नथी भाष्यकारे जे आ गाथा वडे-( अकसिण पवत्तगाण विरयाविरयाण एस खलु जुत्तो । ससारपयणुकरणो दव्वत्थए





લોકા જલેન સુરિનો ભવન્તિ एव द्रव्यस्तत्र तद्यप्यसयमो भवति तथापि तत एव सा परिणामशुद्धिर्भवति, या तद् असयमोपार्जितमन्यच्च निरवशेष क्षपयति इति ।

“ तम्माद्वિરતાविरतैः श्रावकैरेव द्रव्यस्तत्र वर्तव्य ।

शुभानुगन्धी प्रभूतनिर्जराफल इति कृत्वा ” इत्युक्तम्-

તદસત્-અત્ર દિ ક્રપદૃષ્ટાન્તો ન સઘટતે કૃપાવનનેન જલમુત્પદ્યતે ઇતિ સફલ લોકપ્રત્યક્ષ, કિન્તુ પદ્મકાચવચ્ચ કુર્વતઃ કારયતશ્ચ વર્મમૂલભૂતાયા દયાયા એવ

કી રક્ષા નહીં હોતી હૈ, તો મી યદ્ કર્તા કો પરિણામો મે શુદ્ધિ કા હેતુ હોતા હૈ । ડસસે કર્તા ડસ દ્રવ્યસ્તવ કે કરને મે ડદ્ભૂત અસયમ ઢારા ડપાર્જિત પાપો કા સમ્પૂર્ણરૂપ સે વિનાશ કર દેતા હૈ । ડસલિયે વિરતાવિરત ( એકદેશ સયમ ની આરાવના કરનેવાલે પચમગુણસ્થાન-વર્તી શ્રાવકો ઢારા યદ્ દ્રવ્યસ્તવ વર્તવ્ય કોટિ મેં આને સે ડપાદેય હૈ । કારણ કિ યદ્ ડનકે નિયે શુભાનુગંધી ડૌર કર્મો કી અધિક નિર્જરા રૂપ ફલ કા પ્રદાતા હોતા હૈ ” યદ્ સવ ભાષ્યકાર કા કવન ઢીક નહીં હૈ । કારણ કિ ડન્હો ને જો કૃપ કા દૃષ્ટાન્ત દેકર ડસ વિષય કી પુષ્ટિ કરની ઑહિયે, ડસસે પ્રકૃત વિષય કી વાસ્તવિક પુષ્ટિ નહીં હોતી હૈ । યદ્ તો પ્રત્યેક લૌકિક જન કે પ્રત્યક્ષ અનુભવ મે આને જૈસી વાત હૈ કિ કૃપ કે ઓદને સે જલ નિકલતા હૈ ડમ મેં તો ત્રિવાદ કી કોઈ જરૂરત હી નહીં હૈ, કિન્તુ પ્રતિમા કી પૂજા કરને ડૌર કરાનેવાલો સે ષદ્

ખોદનાર લોડાને તેમજ ખીજા પણ ઘણા માણુમોને વળતો વખત ઘણી રીતે લાભ થતા રહે છે ઢીઠ આ પ્રમાણે જ દ્રવ્યસ્તવમા જે કે સયમની રક્ષા થતી નથી, છતાં ય તે ડર્તાના માટે પરિણામમા શુદ્ધિનુ ડગ્ગુ હોય છે તેનાથી કર્તા તે દ્રવ્યસ્તવના કવ્વામા ઉદ્ભૂત અસયમ વડે મેળવેલા પાપોનો અપૂર્ણ પણે વિનાશ કરી નાખે છે એથી વિરતાવિરત ( એકદેશ સયમની આરાધના કરનાર પચમ ગુણુસ્થાનવર્તી ) શ્રાવકો વડે આ દ્રવ્યસ્તવ ડર્તવ્ય ડોટિમા આવવાથી ઉપાદેય છે ડારણ કે તે તેમના માટે શુભાનુગંધી અને કર્મોની વધારે નિર્જરા ફળને આપનાર છે ભાષ્યકારનુ આ બધુ ડથન યોગ્ય નથી, ડારણ કે તેઓએ જે વાવનુ દૃષ્ટાન્ત આપીને આ વિષયની પુષ્ટિ ડરવા પ્રયત્ન કર્યો છે, તેનાથી પ્રકૃત વિષયની વાસ્તવિક રૂપમા પુષ્ટિ વતી જોવામા આવતી નથી દરેકે દરેક માણુસના માટે આ તો એક પ્રત્યક્ષ અનુભવ કરી શકાય તેવી હડીઢત છે કે વાવ ખોદવાથી પાણી નીકળે છે, આમા તો અર્થાની ડોઢ વાત જ નિખળી થતી નથી પણ પ્રતિમાની પૂજા કરનાર અને કરાવનારાઓથી

કાય કે જીવો કી રક્ષા નહીં હો સકની હૈ-ઉનસે ઉનકી વિરાધના હોતી હૈ । ऐसी परिस्थिति में धर्म के मूलभूत सिद्धान्त का ही जय वहां अभाव हॆ तब उस पूजन कार्य के उनके परिणामों मे शुद्धि मानना यह कथन शास्त्र से विरुद्ध और प्रत्यक्ष आदि समस्त प्रमाणों से बाधित होता हुआ किसी भी समझदार व्यक्ति को मान्य नहीं हो सकता है प्रतिमा पूजनके पक्षपाती जो इस प्रकार अपने पक्षमें तर्क करते हैं कि-

सम्यक् स्नात्वोचिते काले सस्नाप्य च जिनान् क्रमात् ।

पुष्पाहारस्तुतिभिश्च पूजयेदिति तद्विधिः ॥

तथा-जिनप्रभसूरिकृतपूजाविधौ-सरससुगर्हिचदणेण अगेसु पूअ काऊण पचगकुसुमेहिं गधवासेहिं च पूएइ सद्वणे सुगधिभिः सरसैरभૂपतितैर्विकाशिभिरसहितदलैः प्रत्यग्रैश्च प्रकीर्णैर्नानાપ્રકારગથિ તૈર્વા પુષ્પૈ પૂજયેત્ ” इति-तथा—कुसुमक्वलयगधपर्द्वधूयनेवेज्जफलज लेहिं पुणो अट्टविहकम्मदलनी अट्टुययारा हवइ पूया ” इति किञ्च-

जिनभवन जिनविम्ब जिनपूजा जिनमत च यः कुर्यात् ।

तस्य नरामरशिवसुखफलानि करपल्लवस्थानि ॥

પદ્મકાય જીવોની રક્ષા થઈ શકતી નથી, તે કાર્યથી તો તેમની વિરાધના જ હોય છે આવી પરિસ્થિતિમાં ધર્મના મૂળભૂત સિદ્ધાન્તોનો જ બ્યારે અભાવ છે ત્યારે તે પૂજા રૂપ કાર્યથી તેમના પરિણામોમાં શુદ્ધિ માનવી આ વાત શાસ્ત્રથી વિરુદ્ધ અને પ્રત્યક્ષ વગેરે બીજા બધા પ્રમાણોથી બાધિત થતી કોઈ પણ સમજી માણસના માટે તો માન્ય થઈ શકે તેમ નથી પ્રતિમા પૂજનની તરફદારી કરનારાઓ પોતાની વાતને પુષ્ટ કરવા માટે જે આ બાતની ખોટી દલીલો સામે મૂકે છે કે—

सम्यक् स्नात्वोचिते काले सस्नाप्य च जिनान् क्रमात् ।

पुष्पाहारस्तुतिभिश्च पूजयेदिति तद्विधिः ॥

તથા-જિનપ્રભસૂરિકૃતપૂજાવિધૌ-સરસ-સુરહિચદણેણ અગેસુ પૂઅ કાઉણ પચગકુસુમેહિ ગધવાસેહિ ચ પૂએइસદ્વણે સુગધિભિ સરસૈરભૂપતિતૈર્વિકાશિભિરસહિત દલૈ પ્રત્યગ્રૈશ્ચ પ્રકીર્ણૈર્નાનાપ્રકારગથિતૈર્વા પુષ્પૈ પૂજયેત્ । इति तथा कुसु-मक्वलयगधपर्द्वधूयनेवेज्जफलजलेहि પૂણો અટ્ટવિહકમ્મદલની અટ્ટુયયારા હવइ પૂયા ” इति किञ्च—

जिनभवन जिनविम्ब जिनपूजा जिनमत च यः कुर्यात् ।

तस्य नरामरशिवसुखफलानि करपल्लवस्थानि ॥

સમુન્હેદાત્ પરિણામશુદ્ધિરૂપઘત્ત ઇતિ પ્રવચનવિરુદ્ધ વલ્પન સર્વપ્રમાણપ્રાધિત્ત  
કસ્યાનુમત ભવેત્ । અપિ તુ ન યસ્યાપિ ।

( આચારાઙ્ગસૂત્રે ભગવતાઽભિહિતમ્ ( જ ૧ ૩ ૧ )

“ ઇમસ્મ ચેવ જીવિયસ્સ પરિવદ્ધમાણણપૂયણાણ જાહમરણમોયણાણ દુક્ખપ-  
રિધાયહેઉ સે સયમેવ પુઠ્ઠવિસત્થ સમારમહ, અણ્ણેહિં વા પુઠ્ઠવિમત્થ સમારમાવેહ,

ભાવાર્થ—પૂજક યોગ્ય સમય મેં અચ્છી તરફ સ્નાન કરકે જિનેન્દ્ર  
કા અભિષેક કર પુષ્પ આદિકોં સે ઉન કી પૂજા કરે । જિનપ્રભસૂરિ દ્વારા  
વિરચિત પૂજાવિધિ મેં મી પૂજા કે વિષય મેં યહી વિધિ પ્રદર્શિત કી  
ગઈ હે સરસ સુગંધિત ચંદન સે ભગવાન કે નવ અંગો મેં તિલકરૂપ  
પૂજન કર પૂજક સુગંધિત, જમીન પર નહીં ગિરે દુળ, પત્ર વિનાકે તાજે  
પંચ જાતિ તે પુષ્પોં દ્વારા પ્રભુ કી પૂજા કરે । પુષ્પ, અક્ષત, ગંધ, પ્રદીપ,  
ધૂપ, નૈવેદ્ય ફળ ઓર જલ ઇતિ આઠ દ્રવ્યો સે આઠ કર્મોં કો નાશ કર  
નેવાલી અષ્ટપ્રકારી પૂજા હોતી હૈ । જિનમંદિર, જિનપ્રતિમા જિનપૂજા  
ઓર જિનમત કો જો કરતા હૈ, ઉસ મનુષ્ય કે દ્વાર મેં મનુષ્યગતિ દેવ-  
ગતિ ઓર મોક્ષ કે સુખ આ જાતે હૈ—અર્થાત્ વહ મનુષ્ય ઇતિ ગતિયો  
કે સર્વોત્તમ સુખ ભોગ કર મોક્ષસુખ કા ભોક્તા બન જાતા હૈ—સો ઇસ  
પ્રકાર કા યહ પૂજન વિષયક સમસ્ત કથન પ્રવચન સિદ્ધ હી હૈ ક્યોંકી  
આચારાંગસૂત્ર મેં ભગવાન ને “ઇમસ્સ ચેવ જીવિયસ્સ પરિવદ્ધમાણણ  
પૂયણાણ જાહમરણમોયણાણ દુક્ખપરિધાયહેઉ સે સયમેવ પુઠ્ઠવિસ-

ભાવાર્થ—પૂજા કરનાર યોગ્ય સમયે સારી રીતે સ્નાન કરીને જિનેન્દ્રને  
અભિષેક કરે તેમજ પુષ્પ વગેરેથી તેમની પૂજા કરે જિનપ્રભાસૂરિ વડે વિર-  
ચિત પૂજાવિધિમા પણ પૂજના વિષયમા આ વિધિ જ બતાવવામા આવી છે  
સરસ સુગંધિત ચંદનથી ભગવાનના નવ અંગોમા તિલક રૂપ પૂજન કરી પૂજા  
કરનાર સુવાસયુક્ત, જમીન ઉપર પડેલા નહિ, પત્ર વગરના તાજા, પાત્ર જાતિના  
પુષ્પોથી પ્રભુની પૂજા કરે પુષ્પ, અક્ષત, ગંધ, પ્રદીપ, ધૂપ, નૈવેદ્ય, ફળ અને  
પાણી આ આઠ દ્રવ્યોથી આઠ કર્મોને નષ્ટ કરનારી અષ્ટ પ્રકારની પૂજા હોય  
છે જિન મંદિર, જિન પ્રતિમા, જિન પૂજા અને જિન મતને જે કરે છે, તે  
માણુમની પાસે મનુષ્ય ગતિ, દેવગતિ અને મોક્ષના સુખો આવી જાય છે  
એટલે કે તે માણુસ આ ગતિઓના સર્વોત્તમ સુખો ભોગવીને મોક્ષ સુખને  
ભોગવનાર બની જાય છે, માટે આ જાતનુ આ પૂજનને લગતુ બધુ યથા  
પ્રવચન સિદ્ધ જ છે, કેમકે આચારાંગ સૂત્રમા ભગવાને—( ઇમસ્સ ચેવ જીવિ-  
યસ્સ પરિવદ્ધમાણણપૂયણાણ જાહમરણમોયણાણ દુક્ખપરિધાયહેઉ સે

અળે ત્રા પુઢવિસત્થ સમારભતે સમણુજાણહ । ત સે અહિયાણ ત સે અગોહિણ ।”ઈતિ

જીવઃ કસ્મૈ પ્રયોજનાય પૃથિવીકાયસ્ય સમારમ્ભ કરોતીત્યાઃ—“ ઇમસ્સ ચેવ ” ઇત્યાદિ । અસ્યૈવ=ક્ષણભગુરસ્ય, “ જીવિયસ્સ ” જીવનસ્વ-જીવનસ્યાર્થે, તથા પરિવન્દનમાનનપૂજનાય=પરિવ દન પ્રશંસા, તદર્થે યથાઽઽર્થગૃહાદિકરણે, માનન=સત્કારઃ તદર્થે, યથા કીર્તિસ્તમ્ભાદિકરણે, પૂજન=સાપૂજન । પ્રતિમાપૂજન ચ, તત્ર સ્વપૂજન-વસ્ત્રરત્નાદિપુરસ્કારલાભસ્તદર્થે, તથા-પ્રતિમાપૂજના િ ચ પ્રતિ માદિરચને તથા-જાતિમરણમોચનાય, તથા દુઃખપ્રતિપાતરેતુ-દુઃખપ્રતિવર્તમાય ।

ત્વ સમારમ્ભ, અળેહિં ત્રા પુઢવિસત્થ સમારભાવેહ, અળે ત્રા પુઢવિ સત્થ સમારભતે સમણુજાણહ । ત સે અહિયાણ ત સે અગોહિણ ” ઇતિ—  
 હસ સૂત્ર મેં “ જીવ કિસ પ્રયોજન કે લિયે પૃથિવીકાય કા સમારમ્ભ કરતા હે ” હસ પ્રશ્ન કા ઉત્તર દેતે હુણ યહ કહા હે કિ યહ જીવ હસ ક્ષણભગુર જીવન કે લિયે પરિવન્દન-પ્રશંસા કે લિયે-આશ્ચર્યોત્પાદક ગૃહ આદિ બનવા ન દે માન-સત્કાર કે લિયે કીર્તિસ્તમ્ભ આદિ કરાને મેં, અપની પ્રતિષ્ઠા કે લિયે વસ્ત્ર રત્નકમ્પાલ આદિ પુરસ્કાર મેં તથા પ્રતિમાપૂજન કે લિયે પ્રતિમાદિ બનવાને મે તથા જાતિ-પરલોક મેં સુખ કે લિયે દેવમન્દિર આદિકે બનવાનેમે, મરણ-જિનકી સ્મૃત્યુ હો ચુકી હે એસે અપને પિતા આદિ કી સ્મૃતિ કે લિયે સ્તૂપ આદિ કી રચના કરાને ને મે, મોચન-મુક્તિ પ્રાપ્તિ કે લિયે દેવ પ્રતિમા આદિ બનવાનેમે અથવા અનેક પ્રકારકે દુઃખોકે વિનાશકે લિયે વર્તમાનકાલમે સ્વયં મી પૃથિવી

સમમેવ પુઢવિસત્થ સમારમ્ભ, અળેહિં ત્રા પુઢવિસત્થ સમારભાવેહ, અળે ત્રા પુઢવિસત્થ સમારભતે સમણુજાણહ ત સે અહિયાણ ત સે અગોહિણ ) ઇતિ—  
 “ જીવ શા માટે પૃથિવીકાયને સમારભા કરે છે ” એ અવાલને જવાબ આપતા આ પ્રમાણે કહેવામા આવ્યું છે કે આ જીવ આ ક્ષણભગુર જીવન માટે પરિવદન-પ્રશંસા માટે આશ્ચર્યોત્પાદક ઘર વગેરે બનાવવામા, માન-સત્કાર માટે કીર્તિસ્તભો વગેરે તૈયાર કરાવવામા, પોતાની પ્રતિષ્ઠા માટે વસ્ત્ર, રત્ન, કામળા વગેરે રૂપ પુરસ્કાર તેમજ પ્રતિમા પૂજન માટે પ્રતિમા વગેરે બનાવવામા જાતિ પરલોકમા સુખ પ્રાપ્તિ થાય તેના માટે દેવ-મન્દિરો વગેરે તૈયાર કરાવવામા, મરણ-જેઓ મરણ પામ્યા છે તેવા પોતાના પિતા વગેરેની યાદમા સ્તૂપ, સમાધિ વગેરે બનાવવામા, મોચન-મુક્તિ મેળવવા માટે દેવ-પ્રતિમા વગેરે બનાવવામા અથવા તો ઘણી જાતના દુઃખોના વિનાશ માટે વર્તમાન કાળમા પોતે પણ પૃથિવીકાયના વિનાશ સ્વરૂપ દ્રવ્યભાવ વ્યાપાર

સઃ જીવનપરિવન્દનમાનનપૂજનાદ્યર્થ જનઃ સ્વયમેવ પૃથિવીશસ્ત્ર સમારભતે  
=પૃથિવ્યુપમર્દન દ્રવ્યભાવશસ્ત્ર વ્યાપારયતિ । અન્યૈર્મા પૃથિવીશસ્ત્ર સમારમ્ભયતિ  
=ઉગ્રોજયતિ । પૃથિવીશસ્ત્ર સમારમ્ભમાણાન્ અન્યાન સમનુજાનાતિ અનુમોદયતિ ।  
एवमतीतानागताभ्या, तथा मनोवाक्यैश्च पृथिवीशस्त्रसमारम्भभेदा अवगन्तव्याः ।  
पृथिवीशस्त्र समारम्भमाणः किं फल प्राप्तोतीत्याह—“ त से अद्विधाए ” इत्यादि ।  
“ त ’ तत्=पृथिवीकायसमारम्भण, “ से ” तस्य=पृथिवीशस्त्र समारम्भमाणस्य  
“ अद्विधाए ” अद्विधाय=अकृत्याणाय भवतीति शेषः । ‘ त ’ तत् = तदेव च  
पृथिवीकायसमारम्भणमेव च “ से ” तस्य पृथिवीशस्त्र समारम्भमाणस्य “ अग्री-  
हीए ” अग्रोऽग्रे सम्यक्त्यालाभाय जिनवर्मप्राप्त्यभावाय च भवति ।

પૃથિવીકાયસમારમ્ભણ દિ-કૃતકારિતાનુમોદિતભેદેન ત્રિવિદમ્, તરયાતીત-  
કાય કે વિનાશસ્વરૂપ દ્રવ્ય ભાવ ગત્ત્વકા વ્યાપાર કરતા હૈ, કુસરોં સે  
કરાતા હૈ ઓર ડમ્ શસ્ત્ર કા પ્રયોગ કરને વાલે પ્રાણિયોકી અનુમોદના  
કરતા હૈ इसी प्रकार भूत और भविष्यत काल में जनवचन और काय  
से(त्रियोग और त्रिकरणके सवधसे) यह जीव पृथिवी कायका समारम्भ  
करने वाला हुआ है और होगा । अतः जिस प्रकार वर्तमान में त्रियोग  
और त्रिकरण के सवध से इस पृथिवी काय समारम्भ के भेद होते हैं  
उसी प्रकार भूत और भविष्यत काल में भी उनके सवध इसके भेद  
जानलेना चाहिये । यह पृथिवी काय का समारम्भरूप शस्त्रका प्रयोग  
प्रयोक्ता जीवको कभी भी कल्याण एव सम्यक्तत्व के लाभ जिनवर्म  
की प्राप्ति की प्राप्ति कराने वाला नहीं होता है ।

ભાવાર્થ—પૃથિવીકાય કા સમારમ્ભ તૂન, કારિત ઓર અનુમોદના  
( કાય ) કરે છે, બીજાઓ પાસે કરાવે છે અને આ ગત્ત્વનો પ્રયોગ કરનાર  
પ્રાણીઓની અનુમોદના કરે છે આ પ્રમાણે ભૂત અને ભવિષ્યકાળમાં મન,  
વચન અને કાયથી ( ત્રિયોગ અને ત્રિકરણના મળધથી ) આ જીવ પૃથિવ  
કાયનો સમારભ કરનાર થયો છે અને થશે એટલા માટે જેમ વર્તમાનકાળમાં  
ત્રિયોગ અને ત્રિકરણના મળધથી આ પૃથિવકાય સમારભના ભેદ ( પ્રકાર )  
હોય છે તેમજ ભૂત અને ભવિષ્યત કાળમાં પણ તેમના મળધ તેમજ ભેદ  
બાણી લેવા લેઈએ આ પૃથિવકાયના સમારભ રૂપ શસ્ત્રનો પ્રયોગ પ્રયોક્તા  
જીવના માટે કદાપિ કદ્યાણુ સમ્યક્ત્વનો લાભ તેમજ જન ધર્મની પ્રાપ્તિ  
કરાવનાર થતો નથી

ભાવાર્થ—પૃથિવકાયનો સમારભ કૃત, કારિત અને અનુમોદનાના લેદથી  
પણ પ્રકારનો છે અતીત અને અનાગત કાળના લેદથી તેના બીજા ત્રણ ત્રણ



अण्णे वा पुढ्विसत्थ समारभते समणुजाणइ । त से अहियाण त से अबोहीए ।” इति  
 जीवः कस्मै प्रयोजनाय पृथिवीकायस्य समारम्भ करोतीत्याह—“ इमस्स  
 चेव ” इत्यादि । अस्यैव=क्षणभगुरस्य, “ जीवियस्म ” जीवनस्य-जीवनम्यार्थे,  
 तथा परिवन्दनमाननपूजनाय=परिवन्दन प्रशंसा, तदर्थं यथाऽऽथर्वेण्टादिकरणे,  
 मानन=सत्कारः तदर्थं, यथा कीर्तिस्तम्भादिकरणे, पूजन=स्वपूजन प्रतिमापूजन  
 च, तत्र स्वपूजन-वस्त्ररत्नादिपुरस्कारलाभस्तदर्थं, तथा-प्रतिमापूजनार्थं च प्रति  
 मादिरचने तथा-जातिमरणमोचनाय, तथा दुःसमविधातरेणु-दुःखान्निवारणाय ।

तस्य समारम्भः, अण्णेहिं वा पुढ्विसत्थ समारभावेइ, अण्णे वा पुढ्वि  
 सत्थ समारभते समणुजाणइ । त से अहियाण त से अबोहिए ” इति—  
 इस सूत्र में “ जीव किस प्रयोजन के लिये पृथिवीकाय का समारम्भ  
 करता है ” इस प्रश्न का उत्तर देते हुए यह कहा है कि यह जीव इस  
 क्षणभगुर जीवन के लिये परिवन्दन-प्रशंसा के लिये-आश्चर्योत्पादक  
 गृह आदि बनवाने में मान-सत्कार के लिये कीर्तिस्तम्भ आदि कराने  
 में, अपनी प्रतिष्ठा के लिये वस्त्र रत्नकमल आदि पुरस्कार में तथा  
 प्रतिमापूजन के लिये प्रतिमादि बनवाने में तथा जाति-परलोक में सुख  
 के लिये देवमन्दिर आदिके बनवाने में, मरण-जिनकी मृत्यु हो चुकी है  
 ऐसे अपने पिता आदि की स्मृति के लिये स्तूप आदि की रचना कराने  
 में, मोचन-मुक्ति प्राप्ति के लिये देव प्रतिमा आदि बनवाने में अथवा  
 अनेक प्रकारके दुःखोंके विनाशके लिये वर्तमानकालमें स्वयं भी पृथिवी

सममेव पुढ्विसत्थ समारभइ, अण्णेहिं वा पुढ्विसत्थ समारभावेइ, अण्णे वा  
 पुढ्विसत्थ समारभते समणुजाणइ त से अहियाण त से अबोहिए ) इति—  
 “ एव शा भाटे पृथिवीकायने समारभा उरे ” ओ मवालने जवाण  
 आपता आ प्रभाणे उडेवामा आण्यु छे डे आ एव आ क्षणुल गुर एवन  
 भाटे परिवन्दन-प्रशंसा भाटे आश्चर्योत्पादक घर वगेरे बनाववामा, मान-सत्कार  
 भाटे कीर्तिस्तम्भ वगेरे तैयार कराववामा, पोतानी प्रतिष्ठा भाटे वस्त्र, रत्न,  
 कामण वगेरे इप पुरस्कार तेमज प्रतिमा पूजन भाटे प्रतिमा वगेरे बना  
 ववामा जाति परलोकमा सुख प्राप्ति थाय तेना भाटे देव-मन्दिर वगेरे तैयार  
 कराववामा, मरण-जो मरण पाव्या छे तेवा पोताना पिता वगेरेनी यादमा  
 स्तूप, समाधि वगेरे बनाववामा, मोचन-मुक्ति भेजववा भाटे देव-प्रतिमा  
 वगेरे बनाववामा अथवा तो धर्णी जतना दुःखोना विनाश भाटे वर्तमान  
 काणमा पोते पणु पृथिवीकायना विनाश स्वइप द्रव्यलाव

મલમ્બ, કિં પુનસ્તત્ર પટ્કાયસમારમ્ભણે સ્વર્ગાપવર્ગલાભસ્ય સમ્ભવ । પરિવન્દન-  
માનનપૂજનાર્થ જાતિમરણમોચનાર્થ દુઃસ્વપ્રતિવાતોર્થ ચ યે જીવાઃ પૃથિવીકાયાદિ-  
સમારમ્ભ કુર્વન્તિ, તે તત્ફલ વિપરીતમેવ લભન્તે યતોઽસૌ સમારમ્ભઃ અબોધિમહિત  
ચોત્પાદયતીત્યુક્ત મગ્નતા । પરતુ તત્ર પ્રતિમાપૂજના શાસ્ત્રવિરુદ્ધમેવ કથયતિ-  
પ્રતિમાપૂજાયા સ્વાભ્યુદયમોક્ષાર્થ ક્રિયમાણઃ પટ્કાયસમારમ્ભઃ સ્વલુ અબોધિમ-  
જીવ કે લિયે યહ અકેલા પૃથિવીકાય કા સમારમ્ભ હી અહિત કા કર્તા  
ઔર મોક્ષ કે માર્ગ સે વચિત રગ્વનેવાલા કહા ગયા હૈ તો મલા કિસ  
કાર્ય મેં પટ્કાય કે જીવોં કા સમારમ્ભ હોતા હૈ, ઉસ કાર્ય સે અથવા  
ઉસ પ્રકાર કે સમારમ્ભ સે જીવોં કો સ્વર્ગ ઔર અપવર્ગ ( મોક્ષ ) કા  
લાભ કેસે હો સકતા હૈ ? અર્થાત્ કિમી તરહ નહીં હો સકતા ।

જો મનુષ્ય પરિવદન માનન ઔર પૂજન કે નિમિત્ત તથા જાતિ ઔર  
મરણ કે મોચન કે નિમિત્ત ણ્વ દુઃગ્વો કે વિનાશ કરને કે નિમિત્ત  
પૃથિવીકાય આદિ કા સમારમ્ભ કરતે હૈ, વે ઉસકા વિપરીત હી ફલ  
મોગતે હૈ યહ વાત અઠ્ઠી તરહ સે પ્રકટ કી જા ચુકી હૈ । ક્યોં કિ  
પ્રતિમાપૂજા યોધ ણ્વ હિત પ્રાપ્તિ કે લક્ષ્ય કો હેકર કે હી કી જાતી હૈ  
-પરન્તુ હસ લક્ષ્ય કી સિદ્ધિ ન હોકર ઉસસે ઉલટા કર્તા જીવ અબોધ  
ણ્વ અહિત કા પ્રાપ્ત હી હોતા હૈ એસા શ્રી મહાવીર પ્રભુ કા કથન હૈ ।  
ફિર મી હસકે પક્ષપાતી જન હસ વાત પર ધ્યાન ન દેકર શાસ્ત્ર વિરુદ્ધ  
હી કથન કરતે હૈ-વે યહ કહતે હૈ “ કિ હસ પ્રતિમાપૂજન મેં માના કિ

માર્ગથી દૂર દેડી દેનાર બતાવવામા આવ્યો છે ત્યારે કયા કાર્યમા પટ્કાયના  
ભવેનો સમારભ હોય છે, તે કાર્યથી અથવા તો તે બતાવના સમારભથી  
ભવને સ્વર્ગ અને અપવર્ગ ( મોક્ષ ) નો લાભ કેવી રીતે સંભવી શકે તેમ  
છે ? એટલે કે ડોઠ પણ કાળે ભવને આ કાયથી સ્વર્ગ કે મોક્ષનો લાભ  
થઈ શકતો નથી

જે માણસ પરિવદન, માનન અને પૂજનના માટે તેમજ જાતિ અને  
મરણના મોચન માટે અને દુઃખોના વિનાશ માટે પૃથિવિકાય વગેરેનો સમા-  
રભ કરે છે, તેઓ તેનું ઉત્કૃષ્ટ ફળ ભોગવે છે આ વાત સારી રીતે સમ-  
જાવવામા આવી છે, કેમકે પ્રતિમા પૂજા યોધ તેમજ હિત પ્રાપ્તિના લક્ષ્યને  
લઈને જ કરવામા આવે છે પણ આ લક્ષ્યની સિદ્ધિ ન થતા તેનાથી સાવ  
વિપરીત કર્તા ભવ અબોધ અને અહિતને મેળવે છે એવું જ શ્રી મહાવીર  
પ્રભુએ કહ્યું છે જનાય પ્રતિમા પૂજના ઉલટાડ તરફાગીઓ આ વાતને લક્ષ્યમા  
ન રાખતા શાસ્ત્ર વિરુદ્ધ જ કથનને વળગી રહે છે તેઓ આ પ્રમાણે કહે છે

વર્તમાનાનાગતભેદેન પ્રત્યેક ધૈર્યિયે નવધા ભવતિ । નવધિસ્યાપિ પૃથિવીકાય  
સમારમ્ભણસ્ય મનોવાકાયયોગભેદેન પ્રત્યેક ધૈર્યિ ૩ મત્સર્ગિનિર્ભજા ભવતિ । ણ્વ  
વિધપૃથિવીકાયસમારમ્ભપ્રવૃત્તઃ સદૃષ્ટ પટકાયારમ્ભસંપાતજન્યઘોરતત્કુરિતાર્જનન  
દુરન્તસસારદાશનલજ્વાલાન્તઃપાત પ્રાપ્યાનત્તનરકનિગોદાદિદુઃખમનુભવન્ ન  
કદાચિત્ કલ્યાણ શાશ્વતમુલ્લસદ મોક્ષમાર્ગ મામોતીતિભાવ ॥

મગરતા પૃથિવીકાયસમારમ્ભણવદપ્રકાયાદિસમારમ્ભણમપ્યહિતાયાયોધયે  
ચ ભવતીત્યપિ તત્રૈવ પ્રસ્વિતમ્ । યત્રૈકસ્ય પૃથિવીકાયસ્ય સમારમ્ભણે સમ્યક્ત્વ  
કે ભેદ સે ત્રીન પ્રકાર વા છે-હમકે અતીત ઓર અનાગત કાલ કે ભેદ  
સે ત્રીન ૩ પ્રકાર વા ઓર હો જાતે હે ડમ પ્રકાર યદ ત્રીનો કાલોં કી  
અપેક્ષા સે ૯ પ્રકાર વા છે । હન નવ પ્રકારોં કે સાવ-મન વચન ઓર  
કાય હન ત્રીનો વા ગુણા કરને સે યદ ૨૭ પ્રકાર વા માના ગયો હે ડસ  
પ્રકાર ત્રિકરણ ઓર ત્રિયોગ કે સવય સે ૨૭ પ્રકાર કે હસ પૃથિવીકાય  
કે સમારમ્ભ મેં પ્રવૃત્ત જીવ પટકાય કે આરમ્ભ કે સપાત જન્ય ઘોરતર  
પાપોં કે અર્જન સે દુરન્ત સમાર રૂપી દાવાનલ કી જ્વાલા કે મલ્ય મેં  
નિમગ્ન બન અ ત મેં અનન્ત નરક નિગોદાદિકોં કે દુઃખો વા અનુભવ  
કરતા હુઆ કમી મી નિજ કલ્યાણ વા મોક્ષા ણ્વ શાશ્વત સુલ્લ કો  
પ્રદાન કરને વાલે મોક્ષ કે માર્ગ વા પથિક નહીં બન સકતા હે પૃથિવી  
કાય કે સમારમ્ભ કી તરહ અપ્રકાય આદિ વા સમારમ્ભ મી હસ  
જીવાત્મા કો સદાં અહિતકારી ઓર અઘોધ વા દાતા હે યદ વાત મી  
વર્ણ પર ( આચારાગ સૂત્ર મેં ) મગવાન ને કહી હે અવ વિચારિય-જવ

લેદો થઈ જાય છે આ રીતે આ ત્રણે કાળોની અપેક્ષાએ નવ પ્રકારનો છે  
આ નવ પ્રકારોની સાથે મન, વચન અને કાય અને ત્રણેનો ગુણાકાર કરવાથી  
આ ૨૭ પ્રકારનો માનવામા આવ્યો છે આ પ્રમાણે ત્રિકરણ અને ત્રિયોગના  
સબધથી ૨૭ પ્રકારના આ પૃથિવિકાયના સમારભમા પ્રવૃત્ત ણ્વ પટકાયના  
આરભના સ પાત જન્મ ઘોરતર ( ભયકર ) પાપોને કારણે દુરત સસાર રૂપી  
દાવાનલના અગ્નિમા પડીને છેવટે અનન્ત નરક નિગોદ વગેરે દુ જોને અનુ  
ભવતો કદ પિ પોતાના ડલ્યાણનો લોકતા થઈને અને શાશ્વત-સુખને આપનાર  
મોક્ષ માર્ગનો પથિક ( વટેમાર્ગ ) બની શકતો નથી પૃથિવિકાયના સમારભની  
જેમ અપ્રકાય વગેરેનો સમારભ પણ આ જીવાત્મા માટે હમેશા અહિતકારી  
અને અઘોધ ( અજ્ઞાન ) આપનારો છે આ વાત પણ આચારાગ સૂત્રમા  
મગવાને કહી છે હવે આટલું તો આપણે પણ ગમજી શકીએ છીએ કે જ્યારે  
જીવના માટે ક્ષુદ્ર પૃથિવિકાયનો સમારભ જ જ્યારે અહિત કરનાર અને મોક્ષના

સમારંભમાણ' અન્યાન્ અનેકરૂપાન્ પ્રાણાન્ ત્રિવિંસતિ । એષઃ=પૃથિવીશસ્ત્રસમાર-  
મ્ભઃ સ્વલુ નિશ્વસેન ગ્રન્થઃ=ગ્રન્થયતે=અધ્યયતે જીવોઽનેનેતિ ગ્રન્થઃ, અષ્ટવિધકર્મગ્રન્થઃ,  
ગ્રન્થજનકરત્વાદ્ ગ્રન્થ ઇત્યુચ્યતે । તથા-એષ મોહઃ ત્રિપર્યાસ ત્રીપરીતવાનરૂપ  
ઇત્યર્થ તથા-એષ મારઃ=નિગોદાદિમરણરૂપઃ । તથા-એષ સ્વલુ નરકઃ=નારક  
જીવાના દશવિધયાતનાસ્થાનમ્ । ઇત્યર્થમ્-એતદર્થ કર્મગ્રન્થ-મોહ મરણ-નરક-  
રૂપ ગોર દુઃસ્વફલં પ્રાપ્ય પુન પુનરેતદર્થમેવ લોકઃ=અજ્ઞાનગણતીર્થી જીવઃ  
ગૃહ્ઃ-લિપ્તુરસ્તિ । યદ્યપિ ત્રિપયભોગાસક્તો લોક શરીરાદિપરિપોષણાર્થ  
પરિવંદનમાનનપૂજનાર્થ જાતિમરણમોચનાર્થ દુઃસ્વપ્રતિઘાતાર્થ ચ પૃથિવી-  
શસ્ત્રમારંભ કરોતિ, તથાપિ તત્કલ કર્મગ્રન્થમોહમરણનરકરૂપમેવ લભતે, અતઃ  
પૃથિવીકર્મસમારંભસ્ય તદેવ ફલ મયતીતિ માત્ર' । તદેવ પ્રવચનવિરુદ્ધપ્રરૂપણ

કરારને ચાલા હોને સે ગ્રન્થસ્વરૂપ, ત્રિપરીત જ્ઞાન કા જનક હોને સે મોહ-  
રૂપ, નિગોદાદિ જીવોં કા ઇસ મે મરણ હોતા હૈ-ઇસલિયે માર સ્વરૂપ  
તથા નારકિયો કી દશ પ્રકાર કી યાતનાં કા હેતુ હોને સે યહ નરકરૂપ  
માના ગયા હૈ । ઇસ પ્રકાર યહ જીવ ઇમ પૃથિવીકાય કે સમારંભરૂપ  
શસ્ત્ર કે ફલસ્વરૂપ કર્મગ્રન્થ, મરણ ઓર નરકરૂપ ઘોરતર દુઃસ્વોં કો  
ભોગતા હુઆ મી અજ્ઞાન કે આધીન હોકર ઉસી શસ્ત્ર કે પ્રયોગ કરને  
કા ફિર મી અમિલાપી હો રહા હૈ । યદ્યપિ ત્રિપય ભોગોં મેં આસક્ત  
ચના હુઆ યહ જીવ શરીર આદિ કી પુષ્ટિ પરિવંદન, માનન, પૂજન એવ  
જાતિ ઓર મરણ કે મોચન કે લિયે તથા દુઃસ્વોં કે વિનાશ કે લિયે  
પૃથિવીકાય કે સમારંભરૂપ શસ્ત્ર કા પ્રયોગ કરતા હૈ-પરંતુ ફિર મી  
ઇસકા યહ કર્મગ્રન્થ, મોહ, મરણ, નરકરૂપ ફલ કા હી ભોક્તા ચનતા

જ્ઞાનાવરણીય વગેરે ડર્મોનો બધ કરાવનાર હોવા બદલ ગ્રન્થ સ્વરૂપ, વિરુદ્ધ  
જ્ઞાનને ઉત્પન્ન કરનાર હોવાથી મોહ રૂપ, નિગોદ વગેરે જીવોના આમા મરણ  
કાય છે માટે માર સ્વરૂપ તેમજ નારકીઓની દશ પ્રકારની યાતનાનું કારણ  
રૂપ હોવાથી આ નરક રૂપ માનવામા આવ્યું છે આ રીતે આ જીવ આ  
પૃથિવિકાયના સમારંભ રૂપ શસ્ત્રના રૂપ સ્વરૂપ ડર્મગ્રન્થ, મરણ અને નરક રૂપ  
ઘોરતર હુ જોને ભોગવવા છતાં પણ અજ્ઞાનવશ થઈને તે જ શસ્ત્રનો પ્રયોગ  
કરવા માટે રૂઝી તૈયાર થઈ રહ્યો છે જો કે ત્રિપય ભોગોમા આસક્ત બનેલો  
આ જીવ શરીર વગેરેની પુષ્ટિ પરિવંદન, માનન, પૂજન અને જાતિ મરણના  
મોચન માટે તેમજ હુ જોને દૂર કરવા માટે પૃથિવિકાયના સમારંભ રૂપ શસ્ત્રનો  
પ્રયોગ કરે છે પણ છતાંયે તે ડર્મગ્રન્થ, મોહ, મરણ અને નરક રૂપ રૂપને  
ભોગવનાર જ બને છે એટલા માટે આપણે ચોક્કસ કહી શકીએ તેમ છીએ

હિત નોત્પાદયતિ, પ્રત્યુત ચોધિ નરામરણિયસુતારપ દિત ચ સમ્યગ્, જનયતીતિ, તદેતત્ સાક્ષાત્ પરચનપ્રિદ્ધમિતિ ।

કિં ચ આચારાદ્ગુને પૃથિવીકાયસમારમ્ભસ્ય કન્નમુત્તયા મગયતા પુનરભિદિ તમ્—‘ એમ સલુ ગયે, એસ સલુ મોહે એસ સલુ મારે, એસ સલુ નરયે, ઇચ્છત્ય ગઢિણ લોણ, જમિણ વિરુવરુવેહિં સત્થેહિં પુઢવિકમ્મસમારંભેણ પુઢવિસત્થ સમા રમમાણે અણ્ણે અણેગરુવે પાણે વિહિંસહ । ’ ( આ ૧ અ ૨ ૩૦ )

છાયા- એપ સલુ ગ્રન્થઃ, એપ સલુ મોહ , એપ સલુ મારઃ, એપ સલુ નરક’

ઇત્યર્થ ગૃહો લોકઃ, યદિમ વિરુપરુપૈઃ શતૈઃ પૃથિવીર્મમમારમ્ભેણ પૃથિવીશસ્ત્ર પદ્ધકાય કા સમારમ્ભ હોતા હૈ-પરન્તુ યદ્ મમારમ્ભ સ્વાશ્યુદય ઇવ મુક્તિ પ્રાપ્તિ કે નિમિત્ત હી ક્રિયા જાતા હૈ-અતઃ યદ્ કર્તા જીવોં કો ન અહિત કા હી ઉત્પાદક હોતા હૈ ઓર ન ચોધિ કે લાભ સે વચિત રહ્વતા હૈ પ્રત્યુત યદ્ ઉન્હેં ચોધિ ઇવ નર અમર ઓર મોક્ષ કે સુખ સ્વરૂપ દિત કા પ્રદાન કરને વાલા હી હોતા હૈ ” સો હિમ પ્રકાર કા ઉત્ક્રા યદ્ કચન સાક્ષાત્ શાસ્ત્ર સે વિરુદ્ધ હી હૈ-યદ્ વાન આચારાગ સૂત્ર સે મલી માંતિ પુષ્ટ હોતી હૈ ઉમ્મં પૂર્વોક્તરીતિ સે પૃથિવીકાય કે સમારમ્ભ કા ફલ કર કર ફિર યદ્ કહા ગયા હૈ—“ એમ સલુ ગયે, એસ સલુ મોહે, એસ સલુ મારે, એમ સલુ નરયે, ઇચ્છત્ય ગઢિણ લોણ, જમિણ વિરુવરુવેહિં સત્થેહિં પુઢવિકમ્મસમારંભેણ પુઢવિસત્થ સમારમ્ભમાણે અણ્ણે અણેગરુવે પાણે વિહિંસહ ” ( આ ૧ અ- ૨ ૩- ) યદ્ પૃથિવીકાય કા સમારમ્ભરૂપ શસ્ત્ર નિશ્ચય સે જીવોં કો અષ્ટપ્રકાર કે જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મોં કા બન્ધ

કે-આપણે થોડા વખત માટે આમ પણ માની લઈએ કે આ પ્રતિમા પૂજ નમા પટકાયનો સમારભ થાય છે-પણ આ સમારભ સ્વાશ્યુદય અને મુક્તિની પ્રાપ્તિ માટે જ કરવામા આવે છે એટલા માટે આ કર્તા જીવોના માટે અહિ તનો ઉત્પાદક પણ હોતો નથી અને બોધિના લાભથી પણ તેઓને વચિત રાખનો નથી આ તો તેમને બોધિ અને નર અમર અને મોક્ષના સુખ સ્વરૂપ હિતને આપનાર જ હોય છે પણ તેમનુ આ ડ્યન પ્રત્યક્ષ રૂપમા શાસ્ત્રથી વિરુદ્ધ જ છે આ વાત આચારાગ સૂત્રથી સારી પેઠે પુષ્ટ થઈ જાય છે તેમા પૂર્વોક્ત રીતથી પૃથ્વિકાયના સમારભનુ ફળ જતાવીને આ પ્રમાણે કહ્યુ છે—

‘ એસ સલુ ગયે, એસ સલુ મોહે, એસ સલુ મારે એસ સલુ નરયે, ઇચ્છત્ય ગઢિણ લોણ જમિણ વિરુવરુવેહિં સત્થેહિં પુઢવિકમ્મસમારંભેણ પુઢવિસત્થ સમારમ્ભમાણે અણ્ણે અણેગરુવે પાણે વિહિંસહ ” ( આ ૧ અ ૨ ૩ )

આ પૃથ્વિકાયનુ સમારભ રૂપ શસ્ત્ર થોડાસા જીવોના

પ્રકારના



યત્તુ-બ્રાહ્મીલિપિરિત્વ પ્રતિમા વન્ધ્યા, ' નમો વમીએ લિવીએ ' ઇતિપદ યદ્ વ્યાખ્યાપનમેરાદાપુપન્યસ્ત તત્ર બ્રાહ્મીલિપિરક્ષરવિન્યાસ', સા યદિ શ્રુતજ્ઞાનસ્યાઽઽ કારસ્થાપના, તદા તદ્વન્ધ્યત્વે સાકારસ્થાપનાયા ભગવત્પ્રતિમાયા. સ્પષ્ટમેત્ર વન્ધ્યત્વમ્ તુલ્યન્યાયાદિત્યુક્તં, તન્મોહનોચકર્મોદયવિલમિતમ્-

શ્રુતજ્ઞાનરૂપસ્ય ભાવશ્રુતસ્ય સ્થાપના-શ્રુતજ્ઞાનવતઃ, શ્રુતપઠનાદિક્રિયાવતઃ સા ચાદેશ્ચિત્રાદિક ભવતિ, શ્રુતતદ્વતોરભેદોપચારાત્ સા ચાદિ શ્રુતમુન્યતે । સ્થાપનાવશ્યકસ્ય સ્થાપનાશ્રુતસ્ય ચ તથૈવાનુયોગદ્વારે ભગવતા વર્ણનાત્ । યદેવ લિપિઃ શ્રુતજ્ઞાનસ્ય સ્થાપનારૂપત્વ ન મામોતિ । તસ્માત્ પ્રતિમાયા બ્રાહ્મીલિપિદૃષ્ટાન્ત પ્રદર્શનમુત્સૃજપ્રરૂપણમ્ ।

કિન્ચ-પ્રતિમાપૂજન કી પુષ્ટિ કે લિયે " નમો વમીએ લિવીએ " વ્યાખ્યાપ્રજ્ઞપ્તિ કી આદિ મેં લિયે હુણ ડસ સૂત્ર કે વલ પર જો ઉસકે પક્ષપાતી જન યહ કહતે હૈં-" કિ અક્ષર વિન્યાસરૂપ બ્રાહ્મીલિપિ જિસ પ્રકાર શ્રુતજ્ઞાન કે આકાર કી સ્થાપનારૂપ હોકર વન્ધ્ય-વન્દનીય માની ગઈ હૈ ઉસી પ્રકાર સાકાર સ્થાપનારૂપ ભગવાન કી પ્રતિમા મેં ભી વન્દનીયતા સ્પષ્ટ હી હૈ " સો યહ કવન વિચાર કરને પર ઠીક નહી વૈઠતા હૈ ।

તથાહિ-શ્રુતજ્ઞાનરૂપ ભાવશ્રુત કી સ્થાપના-શ્રુતજ્ઞાનસપત્ર, ઔર શ્રુત કે પઠન કી ક્રિયા વિગિષ્ટ એસે જો સાધુ આદિજન હૈ ઉનકે ચિત્ર આદિ સ્વરૂપ પડતી હૈ અર્થાત્ શ્રુતજ્ઞાની સાધુ આદિ કે ચિત્રસ્વરૂપ હી શ્રુતજ્ઞાનરૂપ ભાવશ્રુતકી સ્થાપના હોતી હૈ । બ્રાહ્મીલિપિ અક્ષર વિન્યાસ હૈ । વહ શ્રુતજ્ઞાન કી સ્થાપના હૈ । યર્હા શ્રુતજ્ઞાની સાધુ આદિ કો જો

અને બીજી પણ કે-પ્રતિમા પૂજનની પુષ્ટિ માટે " નમો વમીએ-લિવીએ " વ્યાખ્યા પ્રજ્ઞપ્તિની ગરૂઆતમા આવેલા આ સૂત્ર મુજબ જે તેની તરફદારી કરનારા માણુમે આમ કહે છે કે " અક્ષર વિન્યાસ રૂપ બ્રાહ્મી લિપિ જેમ શ્રુતજ્ઞાનના આકારની સ્થાપના રૂપ થઈને વન્ધ્ય-વન્દનીય માનવામા આવી છે, તેમજ આકાર-સ્થાપના રૂપ ભગવાનની પ્રતિમામા પણ વન્દનીયતા અપ્પટ દેખીતી વાત જ છે પરંતુ આ કવનનો પણ વિચાર કર્યા બાદ યોગ્ય લાગતું નથી તેમજ શ્રુતજ્ઞાન રૂપ ભાવશ્રુતની સ્થાપના-શ્રુતજ્ઞાન સ પત્ર અને શ્રુતના પઠનની ક્રિયા વિગિષ્ટ એવા જે સાધુ વગેરે લોકો છે તેમના ચિત્ર વગેરે સ્વરૂપ હોય છે એટલે કે શ્રુતજ્ઞાની સાધુ વગેરેના સ્વરૂપ જ શ્રુતજ્ઞાન રૂપ ભાવશ્રુતની સ્થાપના હોય છે બ્રાહ્મી-લિપિ અક્ષર વિન્યાસ છે તે શ્રુતજ્ઞાનની સ્થાપના છે અહીં શ્રુતજ્ઞાની સાધુ વગેરેને જે ભાવશ્રુત રૂપ કહેવામા આવ્યો છે તે શ્રુતજ્ઞાન

પરાઃ સર્વદોષનિર્મુક્ત શુદ્ધમદ્વિતીયમનન્ત્ર જૈનધર્મ સાત્ત્વપૂજોપદેશેન કુપ્રાવચનિ  
કોપમેય કુર્વન્તઃ સસારદામાનલે જનાન્ પાતયન્તઃ સ્વય ચ મોહનીયકર્મોદયવશા  
દન્ધા इव सन्मार्गतो निपतन्तः स्यात्मानमहितेन मिथ्यात्वेन च पुनः पुनः सयो  
जयन्ति । यदि मृगतृष्णाऽपि केषांचित् पिपासातुलानां स्वच्छजलधारायादिनी  
भवेत्, तदा प्रतिमापूजापि तेषा द्रव्यलिङ्गिना परिणामशुद्धि संपादिनी अष्टवि  
धकर्मदलनी नरामरशिवसुखप्रियायिनी भवेदिति शोभयम् ।

હૈ । અતઃ પ્રતિમાપૂજન કા ઉપદેશ નિશ્ચિત છે કિ પ્રવચનમાર્ગ સે વિરુદ્ધ  
હૈ । હસ વિરુદ્ધ પ્રરૂપણા કરને મેં તત્પર મનુષ્ય સર્વ દોષોં સે રહિત, શુદ્ધ  
ઔર અદ્વિતીય એવ અનવશ્ય હસ જૈનધર્મ કો સાત્ત્વ પૂજા કે ઉપદેશ  
સે કુપ્રાવચનિક કી તરહ કલકિત-સદોષ કર સસારરૂપી દાવાનલ મેં  
મોલે મોલે પ્રાણિયો કો ડાલ રહે હૈ ઔર સ્વય મી મોહનીય કર્મ કે  
ઉદય સે અન્ધ કી તરહ ઘન કર સન્માર્ગ સે વિમુક્ત હોતે હુએ અપની  
આત્મા કો અહિત ઔર મિથ્યાત્વ કે કલક સે કલુપિત કર રહે હૈ ।  
અરે-કહીં મૃગતૃષ્ણા સે મી પ્યાસે વ્યક્તિયોં કી પ્યાસ વુઝતી હૈ ? યદિ  
નહીં, ફિર મૃગતૃષ્ણા તુલ્ય હસ પ્રતિમા પૂજન સે કર્તા કી સમ્યક્ત્વ  
ઔર હિત કી પ્રાપ્તિ હોને રૂપ પ્યાસ કૈસે વુઝ સકતી હૈ-સોચો । હા ।  
યદિ એમા હોતા કિ મૃગતૃષ્ણા સ્વચ્છજલ કી ધારા વહાકર પ્યાસે  
પ્રાણિયો કી તૃપ્તા કો શાંત કરતી-તો યહ પ્રતિમા પૂજન મી દ્રવ્યલિંગિ  
યોં કે પરિણામો મેં શુદ્ધિ કરતી હુઈ ઉનકે અષ્ટકર્મોં કો દલને વાલી  
ઔર ઉન્હેં નર, અમર એવ શિવસુખ પ્રદાન કરને વાલી મી હો સકતી ।

કે પ્રતિમા પૂજનનો ઉપદેશ પ્રવચન માર્ગથી વિરુદ્ધ છે આ જાતની વિરુદ્ધ  
પ્રરૂપણા કરવામા તત્પર માણસ બધા દોષોથી રહિત, શુદ્ધ અદ્વિતીય અને  
અનવશ્ય આ જૈન ધર્મને આવશ્ય પૂજના ઉપદેશથી કુપ્રાવચનિકની જેમ કલકિત  
હોયુક્ત બનાવીને સસાર રૂપી દાવાનલમા લોળા પ્રાણીઓને ન ખી રહ્યો છે  
અને જાતે પણ મોહનીય કર્મના ઉદયથી આધજાની જેમ થઈને સન્માર્ગથી  
દૂર થતા પોતાના આત્માને અહિત અને મિથ્યાત્વના કલકથી કલુપિત કરી  
રહ્યો છે મૃગજળથી પણ કેઈ દિવસે તરસ્યા માણસોની તરસ મટી શકી છે ?  
જો આવું નથી તો પછી મૃગજળ જેવી આ પ્રતિમા પૂજનથી કર્તાની સમ્ય  
ક્ત્વ અને હિતની પ્રાપ્તિ થવા રૂપ તરસ કેવી રીતે મટી શકે તેમ છે જોમૃગજળ  
નિર્મળ પ્રાણીનો ઝરો થઈને તરસ્યા પ્રાણીઓની તરસ મટાડી શકત તો આ  
પ્રતિમા પૂજા પણ દ્રવ્યલિંગિઓના પરિણામોમા શુદ્ધિ કરનારી તેમના આઠ કર્મોને  
નષ્ટ કરનારી અને નર, અમર અને શિવ-સુખ આપનારી

ચારાક્ષાદિક પ્રતિપૂર્ણપ્રોપ ક્ષ્ણોષ્ટનિપ્રમુક્ત પઠિતવત સાચાદેસ્તદર્થજ્ઞાનાભાવે સતિ દ્રવ્યશ્રુતત્વ મયતિ, તથેવાનુયોગદ્વારે દ્રવ્યશ્રુતસ્ય વર્ણનાત્ । વર્ણસકેતરૂપા લિપિસ્તુ ન શબ્દાત્મિકા, યતો વર્ણસ્યેરોચ્ચારણમુપપન્નતે, ન તુ તત્સકેતસ્ય લિપિમત પુસ્તકાદેસ્તુ શ્રુત ગિણિત યાવદ્ વાચનોપગત ન મપિતુમર્હતિ અતસ્તસ્ય દ્રવ્યશ્રુતત્વ ન સમગતિ ઋય પુનસ્તદ્ગતઞ્ચિપેસ્તત્સભયઃ ? કયમપિ નહિ ।

કિં ચ-દ્રવ્યશ્રુતસ્ય વ્યવસ્થામેવ નાસ્તિ, અનુપયુક્તત્વાચ્ચરણગુણશૂન્યત્વાન્ચ, તસ્માદ્ ભાવશ્રુતસ્યૈવાવ્યવસ્થાપાત્તૌ દ્રવ્યશ્રુતનમસ્કારકલ્પન ભ્રાન્તિમૂલકમેવ । 'નમો વમીએ લિવીએ' અસ્થાયમર્ચ-વર્ણાત્મકભાષાસકેતરૂપા લિપિર્વાહ્મીલિપિઃ

પ્રકાર દ્રવ્યશ્રુત કા વર્ણન અનુયોગદ્વાર મેં ક્રિયા ગઘા મિલતા હૈ । અકાર આદિ વર્ણરૂપ સે સકેતિત લિપિ મે શબ્દાન્મકના આમી નહી સકતી હૈ-કયો કિ વર્ણ કા હી ઉચ્ચારણ હોતા હૈ-ઉસકે સકેત કા નહી । લિપિયુક્ત પુસ્તકાદિ મેં મી વાચના આદિ કુઝ નહી હોતા હૈ । વયોં કિ વહ જહ હૈ-ચેતન મેં હી યે વાચના પૃચ્છના આદિ હોતે હૈ । અતઃ ઉસ મેં દ્રવ્યશ્રુતતા માનના સર્વથા અયુક્ત હૈ ઇસલિચે વહ નિશ્ચિત હોતા હૈ કિ અકાર આદિ વર્ણરૂપ સે સકેતિત લિપિ મેં ઓર ઇસ લિપિ વિશિષ્ટ પુસ્તકાદિક મેં દ્રવ્યશ્રુતતા કિંચિત માત્ર મી સભવિત નહી હૈ ।

કિંચ-અનુપયુક્ત હોને સે ઓર ચરણગુણ શૂન્ય હોને સે દ્રવ્યશ્રુત મેં વધતા આ હી નહી સકતી હૈ । ભાવશ્રુત મેં હી ઉપયોગ સહિત ઓર ચરણગુણ યુક્તતા હોને સે વધતા આતી હૈ-અત દ્રવ્યશ્રુત મે નમસ્કાર કરને કી કલ્પના કરના કેવલ ભ્રાન્તિમૂલક હી હૈ "નમો વમીએ

આ ગીને દ્રવ્યશ્રુતનુ વર્ણન અનુયોગ દ્વારમા કવ્વામા આબ્યુ છે અકાર વગેરે વર્ણરૂપથી સ કેતિત લિપિમા શબ્દાત્મકતા આવી શકે તેમ નથી કેમકે ઉચ્ચારણ તેા દ્રવ્યનુજ થાય છે, તેના સ કેતનુ નહિ લિપિ યુક્ત પુસ્તકેા વગેરેમા પણ વાચના વગેરે કઈજ હોતુ નથી કેમકે તે જડ છે, ચેતનમા જ વાચના પૃચ્છના વગેરે થાય છે એથી તેમા દ્રવ્યશ્રુતતા માનવી આવ અયોગ્ય છે એથી એ વત થોડસ થાય છે કે અકાર વગેરે વર્ણરૂપથી સ કેતિત લિપિમા અને આ લિપિ વિશિષ્ટ પુસ્તક વગેરેમા દ્રવ્યશ્રુતતા યોડી પણ સભવિત નથી

અને બીજુ પણ કે-અનુપયુક્ત હોવાથી અને ચરણગુણ શૂન્ય હોવાથી દ્રવ્યશ્રુતમા વધતા આવી જ સકતી નથી ભાવશ્રુતમા જ ઉપયોગ સહિત અને ચરણગુણ યુક્તતા હોવાથી વધતા આવે છે એટલા માટે દ્રવ્યશ્રુતમા નમસ્કાર કરવાની કલ્પના કરવી ભ્રાન્તિમૂલક જ છે "નમો વમીએ લિવીએ" આનો અર્થ

યતુ-અભયદેવીયવૃત્તા સજ્ઞાક્ષરરૂપ દ્રવ્ય શ્રુત નમસ્કૃત્વનાટ-’ ણમો વમીષ્ણ લિપીષ્ણ ’ ઇત્યુક્ત તદ્ ભ્રાન્તિમૂલકમ્ પુસ્તકવર્તિન્યા અકારાદિવર્ણસકેતરૂપાયા લિપેર્દ્રવ્યશ્રુતત્વ ન સમયતિ યત શ્રુત નામ દ્વાદશાગ્નીરૂપમર્હત્પ્રવચન શાસ્ત્ર યસ્ય કસ્યચિજ્જીવસ્ય સિંહિત સ્થિત જિત યાવદ્ યાચનોપગત મયતિ ન જન્તુમ્તત્ર વાચનાપચ્છનાદિમિર્વર્તમાનોઽપિ શ્રુતોપયોગાભાષાદાગમમાશ્રિત્ય દ્રવ્યશ્રુતમ્, આ

ભાવશ્રુતરૂપ કહા ગયા છે-વહ શ્રુતજ્ઞાન ઓર શ્રુતવાન મેં અભેદ કે ઉપચાર સે હી કહા ગયા સમજાના ચાશિયે । ઠસી રૂપ સે હી મગવાન ને અનુયોગ દ્વાર મેં રખોપના આવડ્યક ઓર સ્થાપના શ્રુત કા કથન કિયા હૈ । અતઃ લિપિ મેં ભાવશ્રુત કી કલ્પના સે શ્રુતજ્ઞાન કી સ્થાપના માનના કથમપિ યુક્તિ સમત નહીં હૈ । ઠસી પ્રકાર લિપિ મેં દ્રવ્યશ્રુતતા મી નહીં આતી હૈ । કયો કિ દ્વાદશાગ્નીરૂપ અર્હત પ્રવચન કા નામ શ્રુત હૈ । શ્રુતજ્ઞાન કા જ્ઞાના જય ઉસમે અનુપયુક્ત અવસ્થાનવાલા હૈ । તય વહી આગમ કી અપેક્ષા દ્રવ્યશ્રુત કહા જાના હૈ । સજ્ઞા અક્ષરરૂપ આકૃતિ કો દ્રવ્યશ્રુત નહીં કહા હૈ । હમ કથન સે હસ વાત કી પુષ્ટિ હોતી હૈ કિ-અભયદેવ ચિરચિત વૃત્તિ મે “ ણમો વમીષ્ણ લિપીષ્ણ ” હસ પદ કા અર્થ સજ્ઞા અક્ષરરૂપ દ્રવ્યશ્રુત પરક માનકર જો નમસ્કાર કિયા ગયા હૈ -વહ ભ્રાન્તિમૂલક હૈ, કયો કિ પુસ્તક મેં રહી હુઈ સકેતિત અકાર આદિ વર્ણ કી આકૃતિ મે દ્રવ્યશ્રુતતા સમવિત નહીં હોતી હૈ । વાચના, પૃચ્છના આદિ સે અધિગત શ્રુત મે અનુપયુક્તજ્ઞાતા હી દ્રવ્યશ્રુત હૈ હસી

અને શ્રુતવાનમા અભેદોપચારથી જ કહેવાયેલો સમજવો જોઈએ આ રૂપથી જ લગવાને અનુયોગદ્વારમા સ્થાપના આવશ્યક અને સ્થાપના શ્રુતનુ કથન કર્યું છે એટલા માટે લિપિમા ભાવશ્રુતની કલ્પનાથી શ્રુતજ્ઞાનની સ્થાપના માનવી કોઈ પણ રીતે યોગ્ય નથી આ પ્રમાણે જ લિપિમા દ્રવ્યશ્રુતતા પણ આવતી નથી કેમકે દ્વાદશાગ્ની રૂપ અર્હત પ્રવચનનુ નામ શ્રુત છે આ શ્રુતજ્ઞાનનો જ્ઞાતા જ્યારે તેમા અનુપયુક્ત અવસ્થાવાળો હોય છે ત્યારે તે આગમની અપેક્ષાએ દ્રવ્યશ્રુત કહેવાય છે સજ્ઞા અક્ષર રૂપ આકૃતિને દ્રવ્યશ્રુત કહી નથી આ કથનથી આ વાતની પુષ્ટી થાય છે કે અભયદેવ વિરચિત વૃત્તિમા “ ણમો વમીષ્ણ લિપીષ્ણ ” આ પદનો અર્થ સજ્ઞા અક્ષર રૂપ દ્રવ્ય શ્રુતપરક માનીને જે નમસ્કાર કરવામા આવ્યા છે તે બ્રાતિમય છે, કેમકે પુસ્તકમા રહેલી સ કેતિત અકાર વગેરે વર્ણની આકૃતિમા દ્રવ્યશ્રુતતા સમવિત નથી હોતી વાચના, પૃચ્છના વગેરેથી અધિગત શ્રુતમા અનુપયુક્ત જ્ઞાતા જ શ્રુત છે

ભાવલિપિ પ્રતિ સમુપજાતભક્તિઃ શ્રીસુધર્મા સ્વામી લિપિજ્ઞાનરય માહાત્મ્ય પ્રકટ-  
યન્ ભાવશ્રુત પ્રતિ ભાવલિપેઃ કારણતયાઽભ્યર્થિતત્વેન તત પૂર્વ ભાવલિપિવન્દન  
કૃતવાન્, તત્પશ્યાદ્ ભાવશ્રુત નમસ્કુર્વન્વગાદીત્ ' નમઃ સુયસ્મ ' ઇતિ ।

યત્તુ-અભયદેવસૂરિણા સ્વકૃતટીકાયામુક્તમ્ ' જિણપટ્ટિમાણ અચ્ચણ કરેદ્ '   
તિ એકસ્યા વાચનાયામેતાવદેવ દૃશ્યતે । વાચનાન્તરે તુ-' પઢાયા જાવ સઘ્વાલ  
કારવિભૂસિય મજ્જણઘરાઓ પટ્ટિનિસ્સમઈ પટ્ટિનિસ્સમિત્તા જેણામેવ જિણવરે  
તેણામેવ ઉવાગચ્છટ્ટ ઉવાગચ્છિત્તા જિણવર અણુપવિસઈ ૨ ત્તા, જિણપટ્ટિમાણ  
સમ્મહસ્પ શ્રુત કો લિપિવદ્ધ કરને કી ઇચ્છા સે શ્રી સુધર્માસ્વામી કિ  
જિન કી ભક્તિ શ્રુતનો રક ભાવલિપિ કે પ્રતિ જાગૃત હુઈ હૈ લિપિજ્ઞાન  
કે માહાત્મ્ય કો પ્રકટ કરતે હુગ ભાવશ્રુત કો નમસ્કાર કરને કે પહિલે  
ભાવલિપિ કો હી નમસ્કાર કરતે હે ક્યોં કિ ભાવશ્રુત કે પ્રતિ ભાવ  
લિપિ કો હી કારણતા હૈ, ઓર ઇસી નિમિત્ત સે યહ ઉમકી અપેક્ષા  
પૂજ્ય માની ગઈ હૈ ભાવલિપિ કો નમસ્કાર કરને કે પશ્ચાત્ હી ઉન્હો ને  
" નમ-સુયસ્મ " ભાવશ્રુત કો નમસ્કાર ઇસ સૂત્ર દ્વારા કિયા  
હૈ । " જિણપટ્ટિમાણ અચ્ચણ કરેદ્ " ઇસ પાઠ કો લેકર જો ટીકાકાર  
અભયદેવ સૂરિ ને જિનપ્રતિષ્ઠા કિ પૂજન કરને કી વાત કહી હે-સો ઠીક  
નહી હૈ । ક્યોં કિ માલૂમ હોતા હૈ, કિ ઉન્હેં મૂલ પાઠ કા નિશ્ચય હી  
નહી હુઆ હૈ-કારણ કિ એક વાચના મે તો યહી પાઠ મિલ્તા હૈ-તવ  
કિ દૂસરી વાચના મેં " પઢાયા જાવ સઘ્વાલકારવિભૂસિયા મજ્જણવ  
રાઓ પટ્ટિનિસ્સમઈ, ૨ જેણામેવ જિણવરે તેણામેવ ઉવાગચ્છટ્ટ, ૨

પ્રતિપાદન કરનારા શબ્દોના સમૂહરૂપ શ્રુતને લિપિબદ્ધ કરવાની ઇચ્છાથી શ્રીસુધર્મા  
સ્વામી-કે જેમની શ્રુતબોધક ભાવલિપિ પ્રત્યે લક્ષિત ઉત્પન્ન થઈ છે-લિપિ  
જ્ઞાનના માહાત્મ્યને પ્રગટ કરતા ભાવશ્રુતને નમસ્કાર કરતા પહેલા ભાવલિપિ  
ને જ નમસ્કાર કર્યા છે કેમકે ભાવશ્રુત પ્રત્યે ભાવલિપિ જ કાગ્યુતા છે અને  
આ કારણથી જ આ તેના કરતા પૂજ્ય માનવામાં આવી છે ભાવલિપિને નમ  
સ્કાર કર્યા બાદ જ તેમણે " નમ સુયસ્મ " આ સૂત્ર વડે ભાવશ્રુતને નમ  
સ્કાર કર્યા છે " જિણપટ્ટિમાણ અચ્ચણ કરેદ્ " આ પાઠના આધારે જે ટીકા-  
કાર અભયદેવસૂરિએ જિનપ્રતિમાની પૂજાની વાત કહી છે તે યોગ્ય નથી કેમકે  
તેમને મૂળ પાઠનો નિશ્ચય જ થયો નથી એમ જણાઈ આવે છે કારણ કે એક  
વાચનામાં તો એ જ પાઠ મળે છે ત્યારે બીજી વાચનામાં —

( પઢાયા જાવ સઘ્વાલકારવિભૂસિયા મજ્જણઘરાઓ પટ્ટિનિસ્સમઈ ૨ જેણા  
મેવ જિણવરે તેણામેવ ઉવાગચ્છટ્ટઈ, ૨ જિણવર અણુપવિસઈ, જિણપટ્ટિમાણ આલોપ



બ્રાહ્મીશબ્દસ્ય ભાવાર્થકત્વાત્, ઉત્તર ચામરકોષે-‘બ્રાહ્મી તુ ભારતી ભાષા ગીર્વાં  
ગ્વાણી સરસ્વતી’ इति । यद्वा-अष्टादशपरकारा लिपि श्रीमन्नाभेयजिनेन ब्राह्मीना  
मिका स्वमुता पदार्गिता तस्मात् सा लिपिर्ब्राह्मीत्युच्यते । त्रिपिज्ञानस्य श्रुतज्ञा  
नोपयोगितया भावश्रुतहेतु लिपिज्ञानरूप भावलिपि रन्दमान श्रीगुरुर्मा स्वा  
मी प्राह-‘ नमो वभीए लिवीए ’ इति । श्रुतज्ञान प्रति त्रिपिज्ञान कारण, यतो  
लिपिज्ञानेन तत्सकेतितशब्दस्मरण, तवस्तदर्थज्ञान जायते । तस्माद् भगवदुक्ता  
र्थस्य प्रतिबोधनाय तद्बोधकशब्दजातरूप श्रुत लिपिरद्ध कर्तुं कामः श्रुतयोधिका

લિવીળ ” હસકા અર્થ હસ પ્રકારસે સગત થેટના છે-અક્ષર જાદિ વર્ણ  
ત્મક ભાષા કે સકેતરૂપ લિપિ કા નામ બ્રાહ્મી લિપિ છે-બ્રાહ્મી શબ્દ  
હસ અર્થ મેં પ્રયુક્ત હુઆ છે અમર કોષ મેં બી ગદી ઘાત કહી છે-“ બ્રાહ્મી  
તુ ભારતી ભાષા ગીર્વાંગ્વાણી સરસ્વતી ” । અથવા-શ્રી આદિનાથ  
પ્રભુ ને અપની બ્રાહ્મી નામ કી પુત્રી કો ૧૮ પ્રકાર કી લિપિ કહી ચી  
હસલિયે બી ઉસ લિપિ કા નામ બ્રાહ્મી લિપિ હસ પ્રકાર સે પડ ગયા  
છે । શ્રુતજ્ઞાન મેં ઉપયોગી હોને સે હમ લિપિ કે જ્ઞાન કો ભાવશ્રુત કા  
કારણ માના છે । હસલિયે લિપિ જ્ઞાનરૂપ ભાવ લિપિ કો વદન કરતે  
હુએ શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહતે હે “ નમો વમીળ લિવીળ ” । શ્રુતજ્ઞાન કે  
પ્રતિ લિપિ જ્ઞાન કારણ છે-ક્યોં કિ લિપિ કે જ્ઞાન સે અક્ષરાદિ વર્ણ  
ત્મક લિપિ રૂપ સે સકેતિત ઉસ ઉસ શબ્દ કા સ્મરણ હોતા છે ઓર  
ઉસસે ઉસકે અર્થ કા જ્ઞાન હોતા છે । અતઃ ભગવાન દ્વારા પ્રતિપાદિત  
અર્થ કો સમજાને કે લિયે ઉસ અર્થ કા પ્રતિપાદન કરને વાલે શબ્દોં કે

આ પ્રમાણે સુસગત બેસી શકે છે કે-અક્ષર વગેરે વર્ણાત્મક ભાષાના સ કેત  
રૂપ લિપિનું નામ બ્રાહ્મી લિપિ છે બ્રાહ્મી શબ્દ ‘ ભાષા ’ આ અર્થમાં પ્રયુક્ત  
થયો છે અમરકોશમાં પણ એ જ વાત કહેવામાં આવી છે કે “ બ્રહ્મી તુ  
ભારતી ભાષા ગીર્વાંગ્વાણી સરસ્વતી ” અથવા તો શ્રી આદિનાથ પ્રભુએ પોતાની  
બ્રાહ્મી નામની પુત્રીને અઢાર પ્રકારની લિપિઓ બતાવી હતી એટલા માટે  
પણ આ લિપિનું નામ બ્રાહ્મી લિપિ પડી ગયું છે શ્રુતજ્ઞાનમાં ઉપયોગી હોવાથી  
આ લિપિના જ્ઞાનને ભાવશ્રુતનું કારણ માનવામાં આવ્યું છે એથી લિપિજ્ઞાન  
રૂપ ભાવલિપિને વદન કરતા શ્રીસુધર્માસ્વામી કહે છે કે “ નમો વમીળ લિવીળ ”  
શ્રુતજ્ઞાનના પ્રતિ લિપિજ્ઞાન કારણ છે કેમકે લિપિના જ્ઞાનથી અક્ષર વગેરે વર્ણાત્મક  
લિપિ રૂપથી સ કેતિત તે શબ્દનું અમરણ થાય છે અને તેનાથી તેના અર્થનું જ્ઞાન  
થાય છે એટલા માટે ભગવાન દ્વારા પ્રતિપાદિત અર્થને સમજાવવા

તદનન્તર પુનઃ પ્રતિમાપૂર્ણકૈઃ સ્વીકૃતે-મૂલપાઠે-‘ તિસ્સુત્તો મુદ્ધાણ વરણિ-  
યલ્લસિ નમેઢ ’ ઇતિ દ્વયતે, ‘ નમેઢ ’ ઇત્યાદીકાકારઃ-‘ નિવેસેઢ ’ ઇતિલિખિત્વા  
નિવેશયતીત્યર્થ ઉક્તઃ, તેનાત્ર-મૂલપાઠસ્ય સ્વસ્વકપોલકલ્પિતત્વ સિ-યતિ, ટ્રોપ-  
દ્યાચરિતે ટીકાકૃતાઽમયદેવસૂરિણા પુનરીદ્વશઃ પાઠો લઙ્ગઃ-

‘ ઈસિ પચ્ચુત્તમતિ રત્તા, કરયલ્લ ૦ જાવ કદ્દુ એવ વયાસી-નમોત્થુ ણ અરિ-  
હતાણ મગવતાણ જાવ સપત્તાણ વદ્ધ નમસદ્દ ૨ જિણવરાઓ પહિનિસ્સલ્લમદ્ધ ’ ઇતિ  
ઇમ પાઠ ટીકાયા ત્રિલિખ્ય ટીકાકાર પ્રાહ-

‘ તત્ર વન્દતે=ચૈત્યવન્દનવિધિના પ્રસિદ્ધેન, નમસ્યતિ=પશ્ચાત્ પ્રણિયાનાદિયોગે-  
નેતિ વૃદ્ધા ’ । ન ચ ટ્રોપદ્યા પ્રણિપાતદણ્ડકામાત્ર ચૈત્યવન્દનમસિદ્ધિત સૂત્રે ઇતિ સૂત્ર-

મેં જેસા પાઠ રુચા હેં ઉમને ઉસી પ્રકાર સૂલ પાઠ મેં જિન કલ્પના કા  
પાઠ પ્રદાસ કરકે પાઠ ભેદ કર દિયા હેં । અતઃ સ્વકપોલકલ્પિત હોને  
સે અસલી સૂલ પાઠ કા નિશ્ચય હી નહીં હોતા હેં, ટ્રોપદી કે ચરિત મેં  
ટીકાકાર અમયદેવસૂરિ કો ઇસ પ્રકાર કો પાઠ ઉપલબ્ધ હુઆ-ઈસિ  
પચ્ચુત્તમતિ ૧, કરયલ્લ ૦ જાવ કદ્દુ એવ વયાસી-નમોત્થુણ અરિહતાણ  
મગવતાણ જાવ સપત્તાણ વદ્ધ, નમસદ્ ૨, જિણવરાઓ પહિનિસ્સલ્લમદ્ધ  
ઇતિ ” પાઠ વો લિખકર ઉન્હો ને ટીકા કી । વન્દતે-નમસ્યતિ પદ કે  
અર્થ કા સુલાસા કરતે હુએ વે કહતે હેં નિ પ્રસિદ્ધ ચૈત્યવન્દન વિધિ કે  
અનુસાર નમન કરના વદના ઓર ઇસકે વાદ પ્રણિવાન આદિ કે યોગ  
સે નમસ્કાર કરના નમન હે જેસા સિદ્ધાન્ત વૃદ્ધોં કા હેં । સૂત્ર મેં જવ  
ટ્રોપદી કા પ્રણિપાત દણ્ડકા માત્ર ચૈત્યવદન કહાં હેં-અર્થાત્ દણ્ડ કી  
તરહ પ્રણામ કરને રૂપ ચૈત્યવદન કહાં ગયા હેં-તો ઇસી સે યહ

કઈક ઉમેરો ડરીને પા ૦ લેદ ડરી નાખ્યો છે એટલા માટે સ્વકપોલકલ્પિત  
હોવા બદલ અસલ મૂળપાઠનો નિશ્ચય જ થઈ ગયે તેમ નથી ટ્રોપદી ચરિતમા  
ટીકાકાર અભયદેવસૂરિનો આ જાતનો પા ૦ મળ્યો છે કે-( ઈસિ પચ્ચુત્તમતિ  
૧, કરયલ્લ ૦ જાવ કદ્દુ એવ વયાસી-નમોત્થુણ અરિહતાણ મગવતાણ જાવ  
સપત્તાણ વદ્ધ, નમસદ્ ૨, જિણવરાઓ પહિનિસ્સલ્લમદ્ધ ઇતિ ) આ પાઠને લખીને  
તેમણે ટીકા કરી છે ‘ વન્દતે ’ ‘ નમસ્યતિ ’ પદના અર્થતુ સ્પષ્ટીકરણ કરતા  
તેઓ કહે છે કે પ્રસિદ્ધ ચૈત્ય વદન વિધિ મુજબ નમન કરવું વદના અને  
ત્યારપછી પ્રણિવાન વગેરેના યોગથી નમસ્કાર કરવો નમન છે, વૃદ્ધોનો આ  
જાતનો સિદ્ધાન્ત છે મૂળમા જ્યારે પ્રણિપાત દણ્ડ માત્ર ચૈત્યવદન કહ્યું છે  
ત્યારે એનાથી જ આ વાત સિદ્ધ થઈ જાય છે કે બીજા આવકોને પણ આ

આલોણ પગામ કરેઈ ૨ તા, લોમહત્યય પરામુસઠ ૨ તા, ૯૪ જહા સૂરિયામો જિનપહિમાઓ અન્નેઈ તહેવ માણિયવ્વ જાવ ધૂવ હહઈ ' તિ । તેન મૂળપાઠસ્ય નિશ્ચયસ્તસ્ય નાભૂતિતિ વિશાયતે ।

અતઃ પર ચ—' વામ જાણુ અન્નેઈ દાહિણ જાણુ ધરણિયલ્લમિ ણિવેસેઈ ૨ ' इति प्रतिमापूजकै स्वीकृतो मूलपाठस्तत्र वर्तते, टीकाकारस्तु—' दाहिण जाणु धरणीतलसि निहद्दु ' इति पाठ टीकाया विविच्य निगदति—' निहद्दु ' निहत्य स्थापयित्वा इत्यर्थः, ' णिवेसेइ ' इत्यत्र—' निहद्दु ' इति पाठभेदः कृतः । तेनाप्येतद् विदित भवति—यस्य यादृश मनस्यभिरुचित स तादृगमिदं मूलपाठं प्रल्पयति स्म इति ।

જિનધર અણુપવિસઠ જિનપહિમાણ આલોણ પગામ કરેઈ, ૨ લોમહત્યય પરામુસઠ, ૨ ૯૪ જહા સૂરિયામો જિનપહિમાઓ અન્નેઈ તહેવ માણિ યવ્વ જાવ ધૂવ હહઈ ' તિ યહ પાઠ મિલતા હૈ । इसके बाद " वाम जाणु धरणीतलसि निहद्दु २ " ऐसा पाठ मिलता है—और यही पाठ प्रतिमा पूजको को समत है । परन्तु टीकाकार श्री अभयसूरि ने " दाहिण जाणु धरणीतलसी निहद्दु " ऐसा पाठ टीकामें रखकर ' निहद्दु ' इस पद की टीका " स्थापना करके " ऐसी की है । इस प्रकार " णिवेसेइ " की जगह ' निहद्दु ' ऐसा पाठ भेद किया गया है । इसी प्रकार प्रतिमा पूजको द्वारा स्वीकृत " तिस्रुत्तो मुद्धानं धरणीतलसि नमेइ " इस मूल पाठ में भी परिवर्तन " नमेइ " क्रिया पद में " निवेशयति " इस रूप से कर दिया है । इससे यह बान निश्चित होती है कि जिस के मन

પગામ કરેઈ, ૨ લોમહત્યય પરામુસઠ, ૨ ૯૪ જહા સૂરિયામો જિનપહિમાઓ અન્નેઈ તહેવ માણિયવ્વ જાવ ધૂવ હહઈ ) તિ,

આ પાઠ મળે છે ત્યારપછી " વામ જાણુ ધરણિયલ્લસિ ણિવેસેઈ ૨ " આ બીજા પાઠ મળે છે અને એ જ પાઠ પ્રતિમા પૂજના તરફદારીએને માટે સમત રૂપ છે પણ ટીકાકારશ્રી અભયદેવસૂરિએ " દાહિણ જાણુ ધરણીતલસી નિહદ્દુ " આ બીજા પાઠ ટીકામાં કહીને " નિહદ્દુ " આ પદની ટીકા—સ્થાપના કરીને આ પ્રમાણે કહી છે આ રીતે " ણિવેસેઈ " ના અર્થને " નિહદ્દુ " આ બીજા પાઠ ભેદ કરવામાં આવ્યો છે આ રીતે જ પ્રતિમા પૂજના તરફદારીએ વડે સ્વીકૃત ( તિસ્રુત્તો મુદ્ધાણ ધરણીતલસિ નમેઈ ) આ મૂળપાઠમાં પણ " નમેઈ " ક્રિયાપદમાં " નિવેશયતિ " આ બીજા પાઠ પરિવર્તન કરી નાખ્યું છે આથી આ વાતની ખાતરી થાય કે જેના મનમાં જેવો પાઠ ગમ્યો તેણે તે પ્રમાણે જ શ્રવે તેમ પોતાની કૃપા પાઠમાં

નાનિ વિધિનિપેક્ષાધકાનિ ભવન્તિ અન્યથા સૂર્યાદેવાદિવક્તવ્યતાયા પૂર્ણા  
શસ્ત્રાદિયસ્તૂનામર્ચન શ્રૂયતે ઇતિ તદપિ વિવેચ સ્યાત્ ' ।

અત્રેદ મો ચમ્—' ન ચ દ્રૌપદ્યા પ્રણિપાતદણ્ડકમાત્ર ચૈત્યવદનમભિહિત સૂત્રે  
ઇત્યાદિ માન્યસન્દર્ભેણ ટીકાકારેણાભયદેવસૂરિણા દ્રૌપદ્યા વન્દનમેવ કૃત ન તુ  
પૂજનાદિકમિતિ મોધયતા તાવાનેય પાઠઃ સ્વીકૃત ઇતિ । તરમાદ્ વિધિરૂપેણ પ્રતિ  
માપૂજનાય ભગવતોઽર્હત આજ્ઞા ન લભ્યતે ઇતિ વાદસ્તાપદાસ્તામ્ , ચરિતાનુવાદ-  
રૂપેણાપિ શાસ્ત્રે ભગવતાઽર્હતપ્રતિમાપૂજન કાપિ નોક્તમિતિ સિદ્ધમ્ । એવ ચાયમે-

હૈ ચરિતાનુવાદરૂપ વાક્ય મેં વિધિ ઓર નિપેધ વોધકતા સભવિત  
નહી હોતી હૈ ઇસી વ્યેય સે " ન ચ ચરિતાનુવાદવચનાનિ વિધિનિપેધ  
સાધકાનિ ભવન્તિ " એમા માના જાતા હૈ નહી તો ફિર, સૂર્યાભદેવ  
દ્વારા જિસ પ્રકાર વહુત શસ્ત્ર આદિ વસ્તુઓં કા પૂજન કરના સુના  
જાતા હૈ ડસી પ્રકાર પ્રતિમા પૂજકોં કે લિયે મી ઇનકા પૂજન વિવેચ  
માન લેના ચાહિયે ।

માવાર્થ—“ ન ચ દ્રૌપદ્યાઃ પ્રણિપાતદણ્ડકમાત્ર ચૈત્યવદનમભિહિત  
સૂત્રે ” ઇત્યાદિ વાક્ય કે દ્વારા ટીકાકાર અભયસૂરિ ને ઇતના હી પાઠ  
સ્વીકૃત કિયા હૈ કિ દ્રૌપદી ને મિર્ફ વદના હી કી હૈ, પ્રતિમાપૂજન નહી  
ઇસલિયે હમસે ઘટ વાત સિદ્ધ હો જાતી હૈ જવ ચરિતાનુવાદ રૂપ સે  
મી શાસ્ત્ર મેં કહી મી ભગવાન ને અર્હત કી પ્રતિમા કા પૂજન નહી  
કહા હૈ । તવ વિધિરૂપ સે પ્રતિમા પૂજન કે લિયે ભગવાન અર્હત કી  
આજ્ઞા હૈ એસી માન્યતા કોરી કલ્પનામાત્ર હી હૈ । ઇસ પ્રકાર સ્થાનક-

કાઠ પશુ સ્થાને ડગી નથી ચરિતાનુવાદ રૂપ વાક્યના વિધિ અને નિપેધ  
બોધકતા સભવિત થતી નથી આ વ્યેયથી ( ન ચ ચરિતાનુવાદવચનાનિ વિધિ  
નિપેધસાધકાનિ ભવન્તિ ) એમ માનવામા આવે છે નહિતર પછી સૂર્યાભદેવ  
વડે જેમ ઘણા શસ્ત્રો વગેરે વસ્તુઓની પૂજા કરેલી વાત સંભળાય છે તેમજ  
પ્રતિમા પૂજકોના માટે પણ એમની પૂજા વિધેય રૂપમા માની લેવી જોઈએ

ભાવાર્થ—“ ન ચ દ્રૌપદ્યા પ્રણિપાતદણ્ડકમાત્ર ચૈત્યવદનમભિહિત સૂત્રે ”  
વગેરે વાક્ય દ્વારા ટીકાકાર અભયદેવસૂરિએ આટલા પાઠનો જ સ્વીકાર કર્યો  
છે કે દ્રૌપદીએ ફક્ત વદના જ કરી છે પ્રતિમા પૂજા નહીં એથી આ વાત  
સ્પષ્ટ રીતે સિદ્ધ થઈ જાય છે કે જ્યારે ચરિતાનુવાદ રૂપથી પણ શાસ્ત્રમા  
કોઈ પણ સ્થાને ભગવાને અર્હતની પ્રતિમાના પૂજન વિષે કંઈ નથી ત્યારે  
વિધિ રૂપથી પ્રતિમા પૂજન માટે ભગવાન અર્હતની આજ્ઞા છે એવી માન્યતા  
ફક્ત કે માત્ર જ છે આ પ્રમાણે સ્થાનકવાસી સંપ્રદાયની આ માન્યતા

પ્રમાણ્યાદન્યસ્વાપિ શ્રાવકાદેસ્તાવદત્તત્તિ મન્તવ્ય, ચરિતાનુસારરૂપત્વાદસ્ય,  
 इति । न चैत्यस्य मन्तव्यमित्यत्रान्ययः । द्रौपदी प्रणिपातदण्डरूपात्र-दण्डरूपणा  
 ममात्ररूप चैत्यवन्दन-प्रतिमावन्दन कृतवतीत्यर्थं पुद्गलाऽप्यपि श्रावक एतत्सूत्र  
 प्रमाणमाश्रित्य तावदेव तत् प्रणिपातदण्डरूपात्र वन्दन कुर्यादिति न मन्तव्यम्,  
 तत्र कारणमाह ' चरितानुसારरूपत्वादस्य ' इति । अस्य एतत्सूत्रस्य चरितानु  
 साररूपत्वात् ज्ञातप्रदर्शकतया यथावृत्तस्य तत्तन्वर्तितस्यानुसારरूपत्वात्, न तु  
 भगवता ' जय चरे जय चिट्ठ ' इत्यादिनत् कचिदात्ता प्रदत्ता ।

तस्मादस्य विधिनिषेधगोचरस्य न समवतीत्याह - ' न च चरितानुસારવચ

વાત મી સિદ્ધ હો જાતી છે કે અન્ય શ્રાવકોં કો મી હસી પ્રકાર  
 વન્દન નમન કરના ચાહિયે-સો હસ પ્રકાર કા કન ઠીક નહી  
 છે । કારણ કિ યહ ચરિતાનુસાર રૂપ છે ।

ભાવાર્થ-કોઈ અન્ય શ્રાવક જન એસા સમજકર કિ સૂત્રમે જય દ્રૌપદી  
 ને દણ્ડકી તરહ હોકર ચૈત્યવદન કિયા છે તો હમી સૂત્રકી પ્રમાણતા લેકર  
 હમેં મી હસી તરહસે પ્રણામ કરના ચાહિયે સો હસ પ્રકાર કી માન્યતા  
 ડનકી ઠીક નહી છે કારણ કિ યહ ચરિત કા હી અનુવાદક છે । ચરિતકા  
 અનુવાદક વાક્ય વિધેયરૂપ સે માન્ય નહીં હોતા છે । યહ સૂત્ર ચરિત કા  
 અનુવાદક રૂપ છે-હસકા યહ ભાવ છે કિ યહ વાક્ય જ્ઞાત અર્થ કા  
 પ્રદર્શક હોને સે પહિલે જો જો વાતે ૨ જિસ ૨ રૂપમેં હો ચુકી છે ડન  
 સબ કા અનુવાદક રૂપ છે । “ જય ચરે જય ચિટ્ટે ” ઇત્યદિ સૂત્ર કી  
 તરહ યહ વિધિ વાક્ય નહી છે । હસીલિયે ભગવાન ને પ્રતિમા કે પૂજન  
 ઔર વદના, નમન કરને આદિ કી આજ્ઞા કહી મી સૂત્ર મેં નહી દી

પ્રમાણે જ વદન નમન કરવા જોઈએ તો આ જ્ઞાતનુ કથન યોગ્ય નથી, કેમકે  
 આ ચરિતાનુવાદ રૂપ છે

ભાવાર્થ-ગમે તે શ્રાવક આમ સમજીને કે સૂત્રમા જય રે દ્રૌપદીએ  
 દડાકારે થઈને ચૈત્ય વદન કર્યું છે તો આ સૂત્રને જ પ્રમાણ સ્વરૂપ માનીને  
 અમારે પણ આ પ્રમાણે જ પ્રણામ કરવા જોઈએ તો તેમની આ વાત પણ  
 ઠીક ડહી શકાય તેમ નથી, કેમકે આ ચરિતનો જ અનુવાદક છે ચરિતનું  
 અનુવાદક વાક્ય વિધેય રૂપમા માન્ય હોતું નથી આ સૂત્ર ચરિતનો અનુ  
 વાદક રૂપ છે આનો ભાવ એ છે કે આ વાક્ય જ્ઞાત અર્થનો પ્રદર્શક  
 હોવાથી જે જે વાતો જે રૂપમા થઈ ચૂકી છે તે બધાનું અનુવાદક રૂપ છે-  
 ‘ જય ચરે જય ચિટ્ટે ’ ઇત્યાદિ સૂત્રની જેમ આ વિધિવાકર



નાનિ વિધિનિપેદસાધકાનિ ભવન્તિ અન્યથા સૂર્યાદેવાદિવ્રત્તવ્યતાયા વહુના શસ્ત્રાદિયસ્તૂનામર્ચન શ્રૂયતે ઇતિ તદપિ વિવેચ સ્યાત્ ' ।

અત્રેદ મો યમ્—' ન ચ દ્રૌપદ્યા પ્રણિપાતદણ્ડકમાત્ર ચૈત્યવદનમભિહિત સૂત્રે' ઇત્યાદિ વાક્યસન્દર્ભેણ ટીકાકારેણાભયદેવસૂરિણા દ્રૌપદ્યા વન્દનમેવ કૃત ન તુ પૂજનાદિકમિતિ વોધયતા તાવાનેય પાઠઃ સ્વીકૃત ઇતિ । તસ્માદ્ વિધિરૂપણ પ્રતિ માપૂજનાય ભગવતોઽર્હત આજ્ઞા ન લભ્યતે ઇતિ પ્રાદસ્તાપદાસ્તામ્, ચરિતાનુવાદ-રૂપેણાપિ શાસ્ત્રે ભગવતાઽર્હતપ્રતિમાપૂજન કાપિ નોક્તમિતિ સિદ્ધમ્ । એવ ચાયમે-

હૈ ચરિતાનુવાદરૂપ વાક્ય મેં વિધિ ઓર નિપેદ વોધકતા સભવિત નહોં હોતી હૈ ઇસી વ્યેય સે “ ન ચ ચરિતાનુવાદવચનાનિ વિધિનિપેદ-માધકાનિ ભવન્તિ ” એમા માના જાતા હૈ નહીં તો ફિર, સૂર્યાભદેવ દ્વારા જિસ પ્રકાર વહુત શસ્ત્ર આદિ વસ્તુઓં કા પૂજન કરના સુના જાતા હૈ ડસી પ્રકાર પ્રતિમા પૂજકોં કે લિયે ભી ડનકા પૂજન વિધેય માન લેના ચાહિયે ।

ભાવાર્થ—“ ન ચ દ્રૌપદ્યા પ્રણિપાતદણ્ડકમાત્ર ચૈત્યવદનમભિહિત સૂત્રે ” ઇત્યાદિ વાક્ય કે દ્વારા ટીકાકાર અભયસૂરિ ને ડતના હી પાઠ સ્વીકૃત ક્રિયા હૈ જિ દ્રૌપદી ને સિર્ફ વદના હી કી હૈ, પ્રતિમાપૂજન નહોં ઇસલિયે હમસે યહ વાત સિદ્ધ હો જાતી હૈ જય ચરિતાનુવાદ રૂપ સે ભી શાસ્ત્ર મેં કહો ભી ભગવાન ને અર્હત કી પ્રતિમા કા પૂજન નહોં કહા હૈ । તવ વિધિરૂપ સે પ્રતિમા પૂજન કે લિયે ભગવાન અર્હત કી આજ્ઞા હૈ એમી માન્યતા કોરી કલ્પનામાત્ર હી હૈ । ઇસ પ્રકાર સ્થાનક-

કાડ પણ મ્યાને ડગી નથી ચરિતાનુવાદ રૂપ વાક્યમા વિધિ અને નિપેદ વોધ તા સભવિત થતી નથી આ વ્યેયથી ( ન ચ ચરિતાનુવાદવચનાનિ વિધિ-નિપેદસાધકાનિ ભવન્તિ ) એમ માનવામા આવે છે નહિતર પછી સૂર્યાભદેવ વડે જેમ ઘણા શસ્ત્રો વગેરે વસ્તુઓની પૂજા કરેલી વાત સભળાય છે તેમજ પ્રતિમા પૂજકોના માટે પણ એમની પૂજા વિધેય રૂપમા માની લેવી જોઈએ

ભાવાર્થ—“ ન ચ દ્રૌપદ્યા પ્રણિપાતદણ્ડકમાત્ર ચૈત્યવદનમભિહિત સૂત્રે ” વગેરે વાક્ય દ્વારા ટીકાકાર અભયદેવસૂરિએ આટલા પાઠનો જ સ્વીકાર કર્યો છે કે દ્રૌપદીએ ફક્ત વદના જ કરી છે પ્રતિમા પૂજા નહિ એથી આ વાત સ્પષ્ટ રીતે સિદ્ધ થઈ જાય છે કે જ્યારે ચરિતાનુવાદ રૂપથી પણ શાસ્ત્રમા કોઈ પણ મ્યાને ભગવાને અર્હતની પ્રતિમાના પૂજન વિષે કહ્યું નથી ત્યારે વિધિ રૂપથી પ્રતિમા પૂજન માટે ભગવાન અર્હતની આજ્ઞા છે એવી માન્યતા ફક્ત કલ્પના માત્ર જ છે આ પ્રમાણે સ્થાનકવાસી સમ્રદાયની આ માન્યતા

તદ્વૃષ્ણં સ્થાનકયાસિના મિદ્ધાન્તઃ શાસ્ત્રાનુકૂલં સત્યં ઇતિ નિર્ણયતામ્ । અર્હંતં  
નમપિ દ્રૌપદા ન કૃતમિત્યગ્રે સપ્રમાણ નિશ્ચયિષ્યામ્ ।

કિં ચ-પ્રતિમાપૂજનાના પ્રમાણભૂતે મહાનિશીઘગૂત્રેડપિ ‘ પ્રતિમાપૂજાયાઃ  
સાવત્રતયા તદ્યં જિનાલયપ્રિધાન નાવત્ર ભવતીતિ મત્વા દ્રવ્યલિંગિભિઃ પૃષ્ટેન  
કુવલયપ્રભનામ્નાડનગારેણ નિગન્તિત ગાવત્રમિદ નાદ નાદમાત્રેણાપિ કુર્વે ’ ઇતિ ।  
તદેવમનેન ભણતાસતા તીર્થરનામગોત્ર કર્માર્નિતમ્ । ઇકમવાવતારીકૃતશ્ચ  
ભગોદધિઃ । તતસ્તૈઃ સર્વેરેકમત કૃત્વા તસ્ય નાવત્રાચાર્ય ઇતિ નામ દત્ત પ્રસિ  
દ્ધિનીત ચ । ઇતિ પ્રતિનોધિતમ્ ।

વાસી સપ્રદાય કી યદ માન્યતા નિર્દોષ ણ શાસ્ત્રાનુકૂલ ઓર સત્ય હૈ  
કિ અર્હંત કી પ્રતિમા બનારૂર પૂજના ગાન્ત્ર જિનમાર્ગ સે વિપરીત માર્ગ  
હૈ । અર્હંત કી પ્રતિમા કી ચન્દના ભી દ્રૌપદી ને નહી કી હૈ ઇસ વાત  
કો ભી હમ આગે પ્રમાણ દેરૂર પુષ્ટ કરેંગે ।

કિન્ચ—પ્રતિમાપૂજકો દ્વારા પ્રમાણરૂપ સે સ્વીકૃત મહાનિશીઘ સૂત્ર  
મેં ભી યહી સમજાયા ગયા હૈ કિ પ્રતિમાપૂજન સ્વય ઇક સાવચક્રમ્ હૈ,  
ઉસકે નિમિત્ત જનાલય આદિ બનવાના ભી સાવચક્રમ્ હ । એસા સમ  
જ્ઞકર-કુવલયપ્રભનામક આચાર્ય ને દ્રવ્ય લિંગિયોં દ્વારા પૂઠે જાને પર  
યહી ઉત્તર દિયા હૈ કિ યે સઘ સાવચક્રમ્ હૈ, મે અપને વચની સે ભી  
ઇસ વિષય કા જરા ભી મડન નહીં કર સકના હૈ ” ઇસ પ્રકાર કરને  
વાલે ઉન કુવલયપ્રભનામક આચાર્યને તીર્થકર નામ ગોત્ર કર્મ ઉપાર્જન  
કરકે ઇકમવાવતારી બને । સાવચક્રમ્ નિષેધ કરને વાલે હોને સે

નિર્દોષ તેમજ શાસ્ત્રાનુકૂલ અને સત્ય છે કે અર્હંતની પ્રતિમા બનાવીને પૂજવી  
શાસ્ત્રવિહિત માર્ગથી ઉલટો માર્ગ છે અર્હંતની પ્રતિમાની વદના પણ દ્રૌપ  
દીએ કરી નથી, આ વાતને પણ અમે આગળ સપ્રમાણુસિદ્ધ કરવા પ્રયત્ન કરીશુ

અને બીજી પણ કે-પ્રતિમા પૂજકો વડે પ્રમાણુ રૂપે સ્વીકૃત મહાનિશીઘ  
સૂત્રમા પણ એ જ વાત સમજાવવામા આવી છે કે પ્રતિમા પૂજન બીજે એક  
સાવધ કર્મ છે તેના નિમિત્તે જનાલય વગેરે બનાવવા તે પણ સાવધ કર્મ છે  
એમ બીજીને જ કુવલયપ્રભ નામના આચાર્યે દ્રવ્યલિંગિઓ વડે પૂછાએલા  
પ્રશ્નના ઉત્તરમા આ પ્રમાણુ જ કહ્યું છે કે આ બધું સાવચક્રમ્ છે હું મારા  
વચનોથી પણ આ વિષયનું જરાય પણ મડન કરી શકું તેમ નથી આ રીતે  
કહેનાર તે કુવલયપ્રભ નામક આચાર્યે તીર્થ કર નામ ગોત્રકર્મ ઉપાર્જન કરીને  
એકમવાવતારી બન્યા સાવચક્રમ્ નિષેધ કરનાર હોવાથી તે એ

भगवान् श्री वर्धमानस्वामी गौतम प्रति कथयति—‘अस्या ऋषभादिचतुर्विंशतिशयाः प्राक् अतीतकालेन याऽतीता चतुर्विंशतिका, तस्या मत्सदृश सप्तद्वस्त-तनुर्धर्मशीलामा चरमतीर्थङ्करो अभून् तस्मिन् तीर्थङ्करे सप्ताश्वर्याणि अभूवन् । असयत्पूजाया प्रवृत्तायामनेके आश्वर्यो दृहीतद्रव्येण स्वस्वकारितचैत्यनिवासि नोऽभूदन्, तत्रैको मरुतच्छविः कुवलयप्रभनामाऽनगारो महातपस्वी उग्रविहारी शिष्यगणपरिवृतः समागतः, तैर्नन्दितोक्तम्, तदेव तत्त्वप्रकरणं प्रदर्श्यते, तथा हि—महानिगीयमत्रे पञ्चमाययने—

जहा ण भयव । जड तुममिहाऽ एगवानारत्तिय चाउम्पासिय पउजियताण-मिन्त्राण अणेगे चेइयालया भवति नूण तज्झाणणत्तीए ता कीरउ अणुगमहमम्हाण

उन चैत्यवासियो ने मित्रर उनका नाम ‘सावयाचार्य’ रख दिया, और प्रसिद्ध भी कर दिया । जैसे—भगवान् श्री वर्धमानस्वामी गौतम प्रति कहते हैं—इस ऋषभादि चौबीसी के पढ़े भूतकालमें जो चौबीसी होगई है उस चौबीसीमें मेरे जैसा सात हाथप्रमाण शरीर वाला धर्म श्री नामका अतिम तीर्थंकर हो गया है, उस तीर्थंकर के समयमें सात आश्चर्य हुए थे, उनमें “असयत्पूजा” नामका एक आश्चर्य था । उस असयत्पूजाकी प्रवृत्ति होनेपर बहुतसे साधु श्रावको के पैसों से अपने अपने बनवाये हुये चैत्योंमें निवास करते थे अर्थात् चैत्यवासी हो गये थे, वहा पर एक उग्रम कांतिवाले कुवलयप्रभ नाम के मुनि महानपस्वी उग्रविहारी शिष्यपरिवार सहित प्यारे थे, उनको उन चैत्यवासियो ने वदना कर के जो कहा सो इस प्रकार है । जिस पाठ का यह कथानक है वह पाठ इस प्रकार है—

तेमनु नाम “सावधाचार्य” ओ प्रमाणे राभ्यु अने प्रसिद्ध पणु उर्यु जेभडे लगवान् श्री वर्धमानस्वामी गौतमने उडे ठे ठे—आ ऋषभादि चौबीसीना पड़ेला भूतकालमा जे चौबीसी थई गछ छे ते चौबीसीमा भारा जेवा सान हाथ प्रमाणे शरीरवाणा धर्मश्री नामना छेवता तीर्थंकर थई गया ठे ते तीर्थंकरना समयमा मात आश्चर्यो थया छता, तेमा “असयत्पूजा” नामनु ओउ आश्चर्य छतु ते असयत् पूजाकी प्रवृत्ति थई तयारे अनेक साधु-श्रावकेना पैसाथी पोतपोताना भाटे जनावरावेला चैत्योमा वास करता छता अर्थात् चैत्यवासी थई गया छता त्या ओउ ग्राम वलुवाणा कुवलयप्रभ नामना मुनिमहागज के जेओ महा तपस्वी, उग्र विहारी छता, तेओ पोताना शिष्य परिवार सहित त्या पधार्या छता तेमने ते चैत्यवासीजोओ वदना करीने जे कह्यु ते आ प्रमाणे छे—

इहेव चाउम्मासिय । ताहे भणिय तेण महानुभागेण - गोयमा ! जहा भो भो पियवए ! जइ वि जिणालए तहा वि सावज्जमिण णाह वायामित्तेण पि आयरिज्जा । एव च समयसारपर तत्त जहट्टिय अविपरीत णीसक भणमाणेण तेसिं मिच्छदिट्ठिलिंणीण साहुवेसधारीण मज्जे गोयमा ! आसकलिय तित्थयर नामरुम्मगोय तेणं कुवलयप्पमेण, एगभवावसेसीकओ भवोयही ॥ इति ।

છાયા-યથા સ્વલુ ભગવન્ ! તદિ ત્વમિદાપિ ઇકવર્ષારાત્રિકચાતુર્માસિક પ્રયોક્ત્વામિચ્છયા અનેકે ચેત્સ્યાલયા ભવન્તિ નૂન । તદ્ધ્યાનાતપ્તયા તસ્માન્ કરોતુ અનુગ્રહમસ્માકમ્ 'ઈવ ચાતુર્માસિકમ્' । તદા મણિત તેન મહાનુભાગેન - ગૌતમ ! યથા ભા ભો પિયવદા' । યદ્વપિ જિનાલય , તથાપિ સાવધમિદ નાહ વાહમાને ણાપિ આચરામિ । એવ ચ સમયમારપર તત્ત્ર યથામ્થિતમ્ અવિપરીત નિશદ્ધ ભણતા તેણ મિચ્છાદિટ્ઠિલિંઘિના સાહુવેસધારિણ મજ્જે ગૌતમ ! આસકલિત તીર્થ કરનામરુમગોત્ર તેન કુવલયપ્પમેણ એકભવાવસેસીકઔ ભવોદધિ' ॥ ઇતિ

“જહા ણ ભયવ ? જહ તુમમિહાઈ ઇકવર્ષારાત્રિય ચાઉમ્માસિય પડજિયતાળમિચ્છાણ અળેગે ચેહ્યાલયા ભવતિ નૂળ તજ્ઞાણ ણત્તીણ, તા કીરડ અણુગ્ગહમ્માણ ઇહેવ ચાઉમ્માસિય । તાહે મણિય તેણ મહાણુભાગેણ ગોયમા ! જહા ભો ભો પિયવણ જઈવિ જિણાલણ તહા વિ સાવજ્જમિણ ણાહ વાયામિત્તેણ પિ આયરિજ્જા । એવ ચ સમયમારપર તત્ત જહટ્ઠિય અવિપરીત ણીસક ભણમાળેણ તેસિં મિચ્છદિટ્ઠિલિંઘીણ સાહુવેસધારીણ મજ્જે ગોયમા ! આસકલિય તિત્થયરનામ ગોત્ત તેણ કુવલયપ્પમેણ એગભવાવસેસીકઔ ભવોયહી । ઇતિ ( મહા નિશીથ પચ્ચમ અધ્યયન ) ઇસ સૂત્રકા ભાવાર્થ ઇસ પ્રકાર હૈ-

હે ભગવન્ ! આપ યહા ઇક વર્ષારાત્રિક ચારમહિને ઠરે

“જહા ણ ભયવ ! જહ તુમમિહાઈ ઇકવર્ષારાત્રિય ચાઉમ્માસિય પડજિયતાળ મિચ્છાણ, અળેગે ચેહ્યાલયા ભવતિ નૂળ તજ્ઞાણતિણ તા કીરડ અણુગ્ગહમ્માણ ઇહેવ ચાઉમ્માસિય । તાહે મણિય તેણ મહાણુભાગેણ ગોયમા ! જહા ભો ભો પિયવણ જઈવિ જિણાલણ તહાવિ સાવજ્જમિણ ણાહ વાયામિત્તેણ પિ આયરિજ્જા । એવ ચ સમયમારપર તત્ત જહટ્ઠિય અવિપરીત ણીસક ભણમાળેણ તેસિં મિચ્છદિટ્ઠિલિંઘીણ સાહુવેસધારીણ મજ્જે ગોયમા ! આસકલિય તિત્થયરનામગોત્ત તેણ કુવલયપ્પમેણ એગભવાવસેસીકઔ ભવોયહી । ઇતિ (મહાનિશીથ પચ્ચમ અધ્યયન) આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે ~ ~ ~

હેમગત્ત ! ઝહ ચદિ યયા સલુ ત્તમ્ એકવર્ષારાત્રિક ચાતુર્માસિક તિષ્ઠસિ પ્રયોક્તૃણામ્=પ્રવર્તકાનામ્ રન્-યા-આજ્ઞયા અનેકે ચૈત્યાલયા નૂન ભવન્તિ=ભવિ-  
પ્યન્તિ, તત્ તસ્માદ્ નિવાસાર્યમાણામુપાદાય ફદેય ચાતુર્માસિક કુરુ તાવદસ્માક  
મનુગ્રહ કુરુ મયઙીયાજ્ઞયા વદ્યચૈત્યાલયા ભવિપ્યન્તિ । તતથ્વાસ્માકમુપકારઃ ક્રિય-  
તામિતિ માવ\* । તદા તેષા સામ્યવજાયા પ્રવૃત્તાના દ્રવ્યલિંગિના વચન શ્રુત્યા તેન  
મહાનુભાવેન કુવલયપ્રભનામ્નાઽનગારેણ મળિતમ્=ઉક્તમ્, યયા-મો મો પ્રિય  
વદા । મો દેવાનુપ્રિયા\* । યદ્યપિ જિનાલય, તથાપિ સાવધમિદ્ જિનભવને કૃતે

-અર્થાત્ યહી પર ચૌમાસા વ્યતીત કરે । પ્રવર્તકોં કી આજ્ઞા સે  
યહાં પર અનેક ચૈત્યાલય વન જાએગે । ડસ લિયે આપ યહી પર  
ચૌમાસા વ્યતીત કરને કા અનુગ્રહ કરે । હમારે ઉપર આપકા વડા  
હી અનુગ્રહ હોગા । આપકે ઉપદેશ સે નિશ્ચય સમજિયે અનેક  
ચૈત્યાલયોં કા નિર્માણ હો જાયગા । હન્ન પ્રકાર સે ડન દ્રવ્યલિંગિયો  
સે પ્રાર્થિત હોને પર મહાનુભાવ કુવલયપ્રભ આચાર્ય ને કહા કિ હે દેવા  
નુપ્રિય ! યદ્યપિ તુમ જિનાલય કે વિષય મે કહતે હો-પરન્તુ-મેં હસ  
કાર્ય કો ડરવાને મેં શ્રેય નહીં દેખતા હું-કારણ કિ યહ સાવધકાર્ય  
હે જિન ભવન વનવાના ઓર ડસકે વનવાને કી પ્રેરણા કરના હન  
ડોનોં પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિયોં મેં પૃથિવીકાય આદિ છહ પ્રકારકે જીવોં કી  
વિરાધના હોતી હે હસી પ્રકાર સે પૂજન કરને મેં મી પદ્કાય કે જીવ  
નિકાયોં કા આરમ્બ અવઠ્યભાવી હે । હસલિયે અનેક પ્રકાર કે પદ્-  
કાય કે જીવોં કે વિષાત કા હેતુ હાને સે પૂજન કે નિમિત્ત મી જિન  
ભવન કા વનવાના સાવધતર કાર્ય હે એસે સાવધતર કાર્ય કા મેં કિમી  
મી પ્રકારસે ઉપદેશ નહીં દૂગા । મેં કમી મીએસા ઉપદેશ નહીં દૂગા કિ

તમે અહીં એકવર્ષારાત્રિક-ચાર માસ-રોકાઓ-એટલે કે અહીં તમે ચોમાસુ પુર  
કરો પ્રવર્તકોની અજાણી અહીં ઘણા ચૈત્યાલયો બની જશે એથી તમે અહીં જ  
ચોમાસુ પુર કરવાની કૃપા કરો, અમારા ઉપર તમારો ભાર અનુગ્રહ થશે  
તમારા ઉપદેશથી અમને ચોક્કસ ખાતરી છે કે ઘણા ચૈત્યાલયોનું નિર્માણ થઈ  
જશે આ રીતે દ્રવ્ય લિંગિઓની પ્રાર્થના સાલગીને મહાનુભાવ કુવલયપ્રભ  
આચાર્યે ડહુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! જો કે તમે જનાલયના વિષે ડહો છો, પણ  
મને આ ડામ કરાવવામા શ્રેય લાગતું નથી, કેમકે આ સાવધકર્મ છે જન  
ભવન બનાવવું અને તેને બનાવવાની પ્રેરણા આપવી આ બંને જાતની પ્રવૃ  
ત્તિઓમા પૃથિવિકાય વગેરે છ જાતના જીવોની વિરાધના થાય છે આ રીતે  
પૂજા કરવામા પણ પદ્કાયના જીવનિકાયોનો આરભ અવશ્યભાવી છે એટલા  
માટે ઘણી જાતના પદ્કાયના જીવોના વિધાતના માટે હેતુરૂપ હોવા બદલ  
પૂજના માટે પણ જનભવન બનાવવું સાવધતર કાર્ય છે એવા સાવધતર કાર્ય



કારિતે ચ પૃથિવીકાયાન્નિર્જીવનિકાયમિગધના, નૈવૈવ જિન્નપૂજાયામપિ તસ્માન્  
 પૂજાર્થસ્ત્રાત્તિજનભવનવિધાન સારથતર, વત્તરપટ્ટાયાતીતોપવાતદેતુત્થાત્ નાદ  
 વાહ્માત્રેણાઽપિ ઉપદેશદાનરૂપેણ સામ્યોગમાત્રેણાપિ આરગમિ=ર્તે નિનાગ્ય વર્તુ  
 મુપદેશ ન કરિષ્યામીત્યર્થઃ । ય ચ=એનેન વસ્તુરૂપેણ, મમયમારપર ગાત્રસિદ્ધાત  
 સારાઽશેષઞ્ચેઠ તત્ત્રવિકરણત્રિયોગ\* પ્રાણાતિપાતો વર્જનીય इत्यान्तिरप यमस्थित  
 યથાવસ્થિતસ્વરૂપ પ્રમાણભૂત, ત્રિવિપરીત=ત્રિવિધપ્રજ્ઞાનાત્રિવિધ, ત્રિવિગત=સત્ત્વગતિ  
 વચન ભણતા=ચ વચતા, તેષા મિત્યાદિપિન્નિજ્ઞિના મિત્યાદિપિ. કૃતીર્થિત્તમ્ભવજ્ઞો  
 વોપવાતકાગ્નિસાધુત્રેપારિણા=મમ્યે હે ગૌતમ । યામસ્લિતમ્=સન્યસ્ સટ  
 હીતમ્ ઉપાર્જિતમિત્યર્થ । ત્રિમુપાર્જિતમિત્યાદિ-ત્રીવિકરનામગોત્ર તેન કુવલ્યપ્ર  
 મેણ, એકમવાચશેષી કૃતો મયોદધિ' । સુગમમેતત્ ।

जिस में जिनालय बनवाने का विधान हो । इस प्रकार प्रवचन सिद्धा  
 न्त की सारभूत वस्तुस्थिति को यथार्थ रूप से चित्ता किसी संकोच के  
 प्रकट करने वाले उन मुनिराज ने उन साधुत्रेप धारी द्रव्यलिंगियों के  
 बीच कि जो मिथ्यादृष्टियों की तरह जीवों की हिंसा करने में प्रवृत्त  
 थे उनके सामने इस प्रकार शुद्ध प्ररूपणा करनेसे हे गौतम ! तीर्थंकर  
 नाम गोत्र कर्म का बंध किया-और संसार भी उनका एक भव मात्र  
 बाकी रह गया इस उद्घरण से यही भवभ्रमना चाहिये-कि जब प्रतिमा  
 पूजन के लिये भी मंदिर बनवाना सावध्य कर्म है और इस सावध्यकार्य  
 का उपदेश देना भी साधु के लिये वर्जनीय है-इसी अभिप्राय से  
 कुवलयप्रभ सूरि ने इस कार्य को निषेध किया-इस निषेध से उन्हें  
 तीर्थंकर नाम-गोत्र कर्म का बंध हुआ और संसार भी उनका एकभव  
 मात्र बाकी बचा-तो फिर सर्व प्रकार से सावध्य कर्मों का परित्याग

માટે હું કોઈ પણ રીતે ઉપદેશ આપવા તૈયાર નથી, હું આ જાતનો ઉપદેશ  
 કોઈપણ વખતે આપવા તૈયાર નથી કે જેમા જીનાયજ બતાવવાનું વિધાન  
 સરખુય હોય આ રીતે પ્રવચન સિદ્ધાતની સારભૂત વસ્તુસ્થિતિને માથા રૂપમા  
 વગર કોઈ પણ જાતના સ કેચે-પ્રગટ કરનારા તે મુનિરાજે તે માધુ વેષધારી  
 દ્રવ્ય લિંગિઓની સામે કે જેઓ મિથ્યાદૃષ્ટિવાળાઓની જેમ જીવોની હિંસા  
 કરવામા પ્રવૃત્ત હતા-શુદ્ધ પ્રરૂપણા કરી આ રીતે શુદ્ધ પ્રરૂપણા કરવાથી હે  
 ગૌતમ ! તીર્થંકર નામ-ગોત્રકર્મનો બંધ ડૂબી અને સંસાર પણ એક ભવ  
 જેટલો જ શેષ રહ્યો આ ઉદાહરણથી આપણે એજ વાત મમજવી જોઈએ કે  
 જ્યારે પ્રતિમા પૂજન માટે પણ મંદિર બનાવવું સાવધકર્મ છે અને આ  
 સાવધકાર્યનો ઉપદેશ કરવો પણ સાધુના માટે ત્યાગ્ય છે આ હેતુથી જ  
 કુવલયપ્રભસૂરીએ આ કાર્યનો નિષેધ કર્યો છે આ નિષેધથી તે

અત્રેદ પ્રોધ્યમ્-યન પ્રતિમાપૂજાર્થ ક્રિયમાણસ્ય જિનાલ્પસ્ય પાત્રોપદેશત્તરણ સાધ્યમિતિ જાનતા તત્પરિવર્જને કૃતે તીર્થકર નામગોત્ર કર્મ મધુપાર્જિત, તત્ર સર્વથા સાધ્યમાર્ગ પરિવર્જયતા સર્વપ્રાણિરક્ષણાર્થમર્હિસાયમં સર્વતઃ પ્રચારયતા પ્રવચન-સિદ્ધાન્તસાર વિજાનતાં સયમમાર્ગે પ્રવૃત્તિમતા સમ્યક્ત્વશુદ્ધિમતા પ્રતિ-માપૂજામકુર્વતા તન્નિપેદયતા ચિં નામાત્મનઃ કલ્યાણકર કાર્યમનશિષ્ટમ્, ઇતિ ।

અવ વિવાહસમયે દ્રૌપદી સમ્યક્ત્વાતી નાસોદિતિ ચર્ચયતે-જૈનાગમાના વિદ્વાસ = સમ્યગ્નિદ વદન્તિ-સનિદાનમ્ય જીવસ્ય નિદાનફલપ્રાપ્તિર્ધાવન ભવતિ, તાયદસો સમ્યક્ત્વવશ્ચિતો જૈનવર્માદ્ દૂર ઇવાવતિષ્ઠતે ।

કરને વાલે, સમસ્ત પ્રાણિયો કો રક્ષા કે નિમિત્ત અહિંસાધર્મ કા પ્રચાર કરને વાલે, પ્રવચન સિદ્ધાન્ત કે સાર કો જાનને વાલે, સયમમાર્ગ મે પ્રવૃત્તિ વાલે, સમ્યક્ત્વ કી શુદ્ધિ સે વિશિષ્ટ ઓર પ્રતિમા કી પૂજા નહી કરને વાલે ઇવ ઉસકા નિપેદ કરને વાલે એસે સધમિયોં કા અવ ઓર કૌનસા એસા કાર્ય નાકી રહા હૈ જો ઉનકી આત્મા કે લિયે કલ્યાણ કા સાધન ન હો ।

અવ પ્રજ્ઞા હસ વાત કા વર્ણન કિયા જાતા હૈ કિ વિવાહ કે સમય દ્રૌપદી સમ્યક્ત્વવાલી નહી થી ।

જૈન આગમોં કા ખલીખાંતિ પરિશીલન કરને વાલે વિદ્વાન્ દસ વાતકો અચ્છી તરફ જાતે હ કિ જિમ જીવ ને જો નિદાન કિયા હૈ-જવતક ઉસકે ફલ કી પ્રાપ્તિ ઉસ જીવ કો નહી હો જાતી-તવતક વહ જીવ સમ્યક્ત્વ સે વચિત રાકર જિનવર્મ સે દૂર હી રહતા હૈ ।

નામ-ગોત્ર ડર્ખનો બધ વયો અને મસાર પશુ તેમને માટે એકલવ બેટ લોજ શેષ રહો હતો તો પછી સર્વ ગીતે સાવધકર્મોનો પરિત્યાગ કરનારા બધા પ્રાણીઓની રક્ષાના નિમિત્તે અહિંસા ધર્મનો પ્રચાર કરનારા પ્રવચન સિદ્ધાન્તના ખરને જાણનારા, સયમ મારગમા પ્રવૃત્તિ કરનારા, સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિથી વિશિષ્ટ અને પ્રતિમા પૂજા નહિ કરનારા અને તેને નિપેદ કરનારા એવા સયમીઓનું એવું કયું કામ શેષ રહ્યું છે કે જે તેમના આત્માના કલ્યાણનું સાધનરૂપ ન હોય ?

હવે અહીં આ વાતનું વર્ણન કરવામા આવે છે કે લક્ષ્મણ વખતે દ્રૌપદી સમ્યક્ત્વવાળી ન હતી

જૈન આગમોનું સારી રીતે પરિશીલન કરનારા વિદ્વાનો આ વાતને આગ પેઠે જાણે છે કે જે જીવે જે નિદાન કર્યું છે-જ્યાં સુધી તેના શુભની પ્રાપ્તિ તે જીવને થઈ જતી નથી ત્યાં સુધી તે જીવ સમ્યક્ત્વથી વચિત રહીને જીન ધર્મથી દૂર રહે છે

“ પુન્યકથનિયાયેણ ચોઽજ્જમાણી ૨ જેણેવ પચ પઢવા તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા તે પચ પઢવે તેણ દસદ્વચ્છણેણ કુસુમદામેણ આવેદિયપરિવેદિય કરેહ, કરિત્તા, એવ વયાસી-एण ण मए पच पडवा वरिया । ’ इति सूत्रपाठ प्रामाण्याद् विवाहसमये पूर्वकृतनिदानाधीनतया सम्यक्त्वरहित्य द्रौपद्या आसीत् अतस्तस्यास्तदानीं श्राविकात् न सिध्यति युगपत् पञ्चाना पत्नीना वरणेन तस्योः पूर्वसंस्कारोदयशब्दाद् विपुलसुखभोगलालसाऽपि स्वाभाविकी, अतः सा कौमारे वयसि श्राविका नासीदिति युक्तिसिद्धस्यार्थस्यापलापः केन शक्यते कर्तुम् ।  
द्रौपदी यस्य पूजनं कृतवतीति जिज्ञासाया निर्णीयते—

“ પુન્યકથનિચ્છાણેણ ચોઽજ્જમાણી ૨ જેણેવ પચ પઢવા તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા તે પચ પઢવે તેણ દસદ્વચ્છણેણ કુસુમદામેણ આવેદિય પરિવેદિય કરેહ । કરિત્તા એવ વયાસી-एण ण मए पंच पडवा वरिया ” इस प्रकार के इस प्रमाणिक सूत्र पाठ से यह स्पष्टरीति से विदित हो जाता है कि विवाह के समय पूर्वकृत निदान के अधीन होने से द्रौपदी सम्यक्त्व रहित थी इसी लिये उस समय उस में श्राविकापना भी सिद्ध नहीं होता है । तथा एक ही साथ पांच पांडवों को पतिरूप से वरण करने से उसके पूर्व संस्कार के उदय से विपुल सुख भोगने की लालसा भी स्वाभाविकी ज्ञात होती है इसलिये वह कुमार अवस्था में श्राविका नहीं थी इस युक्ति सिद्ध अर्थ का अपलाप कौन कर सकता है ।

द्रौપदी ने किस की पूजा की इस प्रकार की जिज्ञासा होने पर

“ પુન્યકથનિયાણેણ ચોઽજ્જમાણી ૨ જેણેવ પચ પઢવા તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા, તે પચ પઢવે તેણ દસદ્વચ્છણેણ કુસુમદામેણ આવેદિયપરિવેદિય કરેહ । કરિત્તા એવ વયાસી-एण ण मए पच पडवा वरिया ”

આ જાતના આ પ્રામાણિક સૂત્રપાઠથી આ અષ્ટ રૂપમા માલુમ થઈ જાય છે કે લક્ષ્મી વખતે પૂર્વકૃત નિદાનને સ્વાધીન હોવાને કારણે દ્રૌપદી સમ્યક્ત્વ રહિત હતી એટલા માટે તે સમયે તેમા શ્રાવિકાપણુ સિદ્ધ થઈ શકે તેમ નથી તેમજ એકી સાથે પાંચે પાંડવોને પતિરૂપમા વરણ કરવાથી તેના પૂર્વ સંસ્કારોના ઉદયથી વિપુલ સુખ ભોગવવાની ઇચ્છા પણુ સ્વાભાવિકી માલુમ થાય છે એથી તે કુમાર અવસ્થામા શ્રાવિકા હતી નહિ આ યુક્તિ અર્થનો પરિહાર કોણુ કરી શકે તેમ છે

દ્રૌપદીએ કોની પૂજા કરી ? આ જાતની જીજ્ઞાસાને સામે

ટીકા-

અલ્પહસૌભાગ્યપ્રચુરભોગકામનયા કામદેવસ્યૈવ પૂજન તદાનીમુપપદ્યતે ।  
કામપૂજન વિવાદોત્સવે નિસ્તરતો ભવતીતિ લોકે પ્રસિદ્ધમસ્તીતિ પ્રતિમાપૂજકોઽપિ  
શ્રી વર્ધમાનમૂરિઃ પ્રોક્તયાન્ । સ્પષ્ટ ચૈતત્ તદ્વિચિતે આચારદિનકરે દ્વિતીય-  
વિભાગે—“ પરસમયે ગણપતિકન્દર્પસ્થાપનમ્ । ગણપતિકન્દર્પસ્થાપન સુગમ  
લોકપ્રસિદ્ધમ્ । ” ઇતિ ।

ટીકાકાર નિર્ણય કરતે હે—

અલ્પહ સૌભાગ્ય એવ પ્રચુર ભોગ કી ઇચ્છા સે કામદેવ કા હી  
પૂજન ઉમ સમય ટ્રૌપદી ને ક્રિયા હૈ—યહી વાત સગત ચેઠતી હૈ । લોક  
મેં भी यही व्यवहार देखा जाता है कि विवाह के समय अच्छी तरह  
गाजे बाजे के साथ कામ દેવકા પૂજન લોગ ક્રિયા કરતે હૈ । ઇસ વાત  
કો વર્ધમાન મૂરિ भी जो प्रतिमापूजन के पक्षपाती है स्वीकार करते  
हैं और ऐसा ही कहते हैं । इमी बात का स्पष्टीकरण उन्होंने ने स्वनि-  
र्मित आचारदिनकर के द्वितीय विभाग में किया है—वे लिखते हैं कि—  
“ परसमये गणपतिकद्वर्पस्थापनम् । गणपतिकद्वर्पस्थापन सुगम  
लोकप्रसिद्धम् ” इति ।

લૌકિક શાસ્ત્રમેં ગણપતિ એવ કદર્પ ( કામદેવ ) કી સ્થાપના હોતી  
હૈ અતઃ ગણપતિ ઓર કન્દર્પકા સ્થાપન કરના સુગમ ઓર લોકપ્રસિદ્ધ હૈ ।

કાર નિર્ણય કરતા કહે છે કે—

અલ્પહ સૌભાગ્ય તેમજ પ્રચુર ભોગની ઇચ્છાથી જ તે સમયે ટ્રૌપદીએ  
કામદેવનું જ પૂજન કર્યું છે, આ વાત જ ચોક્કસ લાગે છે લોકમાં પણ આ  
જાતનો જ વહેવાર જોવામાં આવે છે કે લગ્નના વખતે વાત્રીઓની સાથે સારી  
રીતે કામદેવનું પૂજન લોકો કરતા રહે છે આ વાતને વર્ધમાનમૂરિ પણ કે  
તેઓ પ્રતિમા પૂજનના તરફદાર છે—સ્વીકાર કરે છે અને આ પ્રમાણે જ કહે  
છે આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ તેમણે સ્વનિર્મિત આચાર દિનકરના બીજા વિભા  
ગમાં કર્યું છે તેઓ લખે છે કે—

“ પરસમયે ગણપતિકદર્પસ્થાપનમ્ । ગણપતિકદર્પસ્થાપનસુગમ લોક  
પ્રસિદ્ધમ્ ” ઇતિ ।

લૌકિક શાસ્ત્રમાં ગણપતિ અને કદર્પ (કામદેવ) ની સ્થાપના થાય છે તેથી  
ગણપતિ કદર્પની સ્થાપના કરવી તેજ સુગમ અને લોકપ્રસિદ્ધ છે

“ જિનપટિમાણ અચ્ચણ કરેહ ” એવ જિતશબ્દ કામદેવપર : । જિનશબ્દસ્ય  
બહવોઽર્થા. કોશાદો પ્રસિદ્ધા. સન્તિ । યથા—

અર્હન્નપિ જિનશ્ચૈવ, જિન સામાન્યકેવલી ।

કન્દર્પોઽપિ જિનશ્ચૈવ, જિનો નારાયણો હરિઃ ॥ ઇતિ ( હૈમી નામમાળા )

વિજયગચ્છીયઃ શ્રીગુણસાગરપ્રરિરપિ દ્વાત્માગરનામકે કાવ્યે વપ્તવ્યં  
દ્રૌપદ્યા પૂજ્યદેવ નિર્ણયવાન્ । ઉક્ત ચ તેન—

કરિ પૂજા કામદેવની ભાલે દુષ્ટી નાર ।

દેવ દયા કરી મુક્તને મળો દેજો ભરતાર ॥ ૧ ॥

અર્હન્ સકલકર્મ કપાયમોહપરીપમાન્ અપર્તીતિ જિન ઉચ્યતે । સામાન્ય

“ જિનપટિમાણ અચ્ચણ કરેહ ” એવ સૂત્ર મેં જિન શબ્દ જિનેન્દ્ર  
ભગવાન કા વાચક નથી હે, કિન્તુ કામદેવ કા વાચક હે ક્યોં કિ જિન  
શબ્દ કે અનેક અર્થ કોષાદિક ગ્રન્થોં મેં પ્રસિદ્ધ હ-યથા—

અર્હન્નપિ જિનશ્ચૈવ જિન સામાન્યકેવલી ।

કન્દર્પોઽપિ જિનશ્ચૈવ જિનો નારાયણો હરિઃ ॥

ઇતિ ( હૈમીય નામમાળા )

વિજય ગચ્છીય શ્રી ગુણસાગર સૂરિ ને શ્રી “ દાલસાગર ” નામ  
કે કાવ્ય મેં ઢઠવેં સહ મેં દ્રૌપદી કે આરાધ્ય દેવ કા નિર્ણય ક્રિયા  
હૈ । અર્હોને લિખા હૈ—

કરિ પૂજા કામદેવ ની ભાલે દુષ્ટી નાર ।

દેવ ! દયા કરી મુક્તને મળો દેજો ભરતાર ॥ ૧ ॥

હસ સૂત્ર મેં અર્હન્ત ભગવાન કો ‘ જિન ’ હસ્તિથે કહા ગયા હૈ

“ જિનપટિમાણ અચ્ચણ કરેહ ”

આ સૂત્રમા જીન શબ્દ જીનેન્દ્ર ભગવાનને વાચક નથી પણ કામદેવને  
વાચક છે કેમકે જીન શબ્દના ઘણા અર્થો હોય વગેરે અન્યોમા પ્રસિદ્ધ છે જેમકે—

અર્હન્નપિ જિનશ્ચૈવ જિન સામાન્યકેવલી ।

કન્દર્પોઽપિ જિનશ્ચૈવ જિનો નારાયણો હરી ॥ ઇતિ ( હૈમીય નામમાળા )

વિજયગચ્છીય શ્રી ગુણસાગરસૂરિએ પણ ‘ દાલસાગર ’ નામના કાવ્યના  
છઠ્ઠા ખંડમા દ્રૌપદીના આરાધ્યદેવને નિર્ણય કરતા તેમણે કહ્યું છે કે—

કરિ પૂજા કામદેવની ભાલે દુષ્ટિનર ।

દેવ ! દયા કરી મુક્તને મળો દેજો ભરતાર ॥ ૧ ॥

આ સૂત્રમા અર્હન્ત ભગવાનને ‘ જીન ’ એટલા માટે ~ કે તેમણે



કેવલી પ્રતિષ્ઠાતકકર્મનુષ્ટય જયતીતિ જિન ઉચ્યતે । વિષ્ણુઃ સ્વમુજવલેન સ્વપ્ન-  
ત્રય જયતીતિ જિન ઉચ્યતે । જિનગદ્ગદસ્ય નામદેવોઽર્થશ્ચાપિ મગતઃ, યત' સસા-  
રિણા કામદેવગતિત્વેન લોકજગત્કારિત્વાઽજિનત્વ કામસ્યોપપદ્યતે । રૂપરહિત  
મ્યાપિ સિદ્ધમ્ય પ્રતિમા પૂજાન્નેન શાસ્ત્રાનુક્તામપિ પ્રતિમાપૂજકાઃ પ્રકલ્પયન્તિ,  
તદ્વદનજ્ઞસ્યાપિ કામસ્ય લોકિજ્ઞશાસ્ત્રમનિદ્ધ તદ્વચાનમનુસૂત્રત્વ પ્રતિમા પ્રકલ્પયત ઇતિ

કિં ઉર્હાં ને મનમ્ન કપાય, વર્મ, મોટાં ઓર પરીપહોં કો જીતા હૈ ।  
સામાન્ય કેવલી 'જિન' ઇસલિયે કહે ગયે હૈં કિં ઉર્હોં ને ચાર ઘનવો  
નિયા કસો કો અપની આત્મા સે સમ્મલ નષ્ટ કર દિયા હૈ । વિષ્ણુ  
'જિન' ઇસલિયે કહલાયે નિં ઉર્હોં ને અપને મુજવલ સે મરતરસલ  
કે છલ સલોં મે સે તીન સલોં કો અપને વશ કિયા હૈ રમી લિયે યે  
અર્ધચક્રી મો કહલાયે હૈ । કામદેવ કો 'જિન' ઇસ લિયે કરા ગયા હૈ  
કિં ઇસને વશ સમગ્ર ત્રિલોક હૈ ત્રિલોક મેં કોઈ મી પ્રાણી મેમા નહીં  
વચા કિં જિસે ઇસ ને અપને વશ મે ન કિયા હો ।

શ્લોક—દ્રૌપદી ને કામદેવ કી મૂર્તિ કી પૂજા કી—આપ કી યહ  
ગત હમ સમય માની જા સકની—જવ કિં કામદેવ કી મૂર્તિ બન  
સકતી હોતી ? પરન્તુ કામદેવ કી મૂર્તિ તો બન નહીં સકતી ક્યોં કિ  
વહ તો અમૂર્તિ—અશરીર—અગદ્દ હૈ । અગવાલે કી ની મૂર્તિ બનતી  
હૈ—અનગ કી નહીં ।

જવા ઇયાય કમ, મોહ અને પરિપહોને જિત્યા છે સામાન્ય દેવલી "જન"  
એટલા માટે હોવામા આવ્યા છે કે તેમણે ચાર ધનપતિઓના ડોમોને પોતાના  
આત્માથી મમળ નષ્ટ કરી નાખ્યા છે વિષ્ણુ 'જન' એટલા માટે હોવાય  
છે કે તેમણે પોતાના ભુજ ગળથી ભગ્તઅડના છ ખડોમાથી ગળુ ખડોને  
પોતાને વશ કર્યા છે એથા તેઓ અર્ધચક્રી પણ હોવાય છે કામદેવને 'જન'  
એટલા માટે હોવામા આવ્યા છે કે તેના વશમા ત્રો લોકો છે ત્રણે લોકોમા  
એણે કોડ પ્રાણી રહ્યું નથી કે જેને કામદેવે પોતાના વશમા કર્યું ન હોય

શ્લોક—દ્રૌપદીએ કામદેવની મૂર્તિની પૂજા કરી તે તમારી આ વાત ત્યારેજ  
ચોગ્ય હોઈ શકાય કે જ્યારે કામદેવની મૂર્તિ બની શકતી હોય ? પણ કામદેવની  
મૂર્તિ તો તૈયાર થઈ શકે તેમ નથી કેમકે તે તો અમૂર્તિ—અશરીર અનગ  
છે અગવાળાની જ મૂર્તિ બને છે, અનગની નહિ

નાસ્ત્યત્ત સસય । લક્ષ્મીગૌર્યાદિદેવ્યા ંપિ સ્વામીષ્ટપતિપ્રાપ્તિયામનયા પૂજન  
લોકે પ્રસિદ્ધમસ્તિ । લૌકિકમન્ત્રશાસ્ત્રે મન્ત્રરત્નમઽજૂયાયા કામદેવાસ્યત્સ્યામી  
ષ્ટપતિર્ગમહેતુત્તર નિગદિતમ્—

“ કન્યામિષ્ટામવાપ્નોતિ, સામીષ્ટ પતિમાપ્નુયાત્ ॥ ” ઇતિ ।

અધુનાઽપિ પરિણયનગમયે કુલદેવપૂજન લોકે ક્રિયમાપ દશ્યતે । કામદેવોઽપિ

ઉત્તર—યદ્દ કહના ઠીક નથી છે ક્યો કિ મૂર્તિ પ્રજક જન અનન્ન  
-સિદ્ધોં કી ખી તો મૂર્તિ ઘનાકર ઉત્તરી પ્રજા ક્રિયા કરતે હે । યપિ  
સિદ્ધોં કી મૂર્તિ ઘનાને કી આજ્ઞા જાલ્લો મેં નહીં કરી ગઈ હૈ-તો ખી  
મૂર્તિપ્રજક જન અપની કલ્પના સે ઉત્તરી ખી મૂર્તિ ઘનાકર પ્રજા  
કરતે હી હૈ—

ઉત્તરી પ્રજાર લૌકિકશાસ્ત્ર પ્રસિદ્ધ અનન્ન કામદેવ કી ખી લોક અપની  
કલ્પનાસુર મૂર્તિ ઘનાકર પૂજતે હે । ઇસ મેં આપ્તિ કી કૌનસી વાત હૈ ।

લક્ષ્મી, ગૌરી આદિ દેવિયોં કી ખી પૂજા લોક મેં અપને કો અભિ  
લષિત પતિ પ્રાપ્તિ કી વામના સે સ્ત્રિયો દ્વારા કી રી જાની હૈ । લૌકિક  
મન્ત્ર જાલ્લ મેં મન્ત્રરત્નમઽજૂયા મેં કામદેવ કા આરાધન—“ કન્યામિષ્ટા  
મવાપ્નોતિ સામીષ્ટ પતિમાપ્નુયાત્ ” ઇમ શ્લોકાર્થદ્વારા ઇચ્છિત પતિ પ્રાપ્તિ  
કા કારણ કહા ગયા હૈ ।

વર્તમાન સમય મેં ખી દેખો ! વિવાહ કે સમય મેં લોક મેં કુલ  
દેવતા કા પૂજન ક્રિયા રી જાતા હૈ યદ્દ કુલ દેવતા કા પૂજન રી એક

ઉત્તર—આ વાત યોગ્ય નથી, કેમકે મૂર્તિ પૂજા કરનારા લોકો અનન્ન  
સિદ્ધોની મૂર્તિ ઘનાવીને તેની પૂજા કરતા રહે છે જો કે શાસ્ત્રોમા સિદ્ધોની  
મૂર્તિ ઘનાવવાની આજ્ઞા કરવામા આવી નથી છતાય મૂર્તિ પૂજક લોકો પોતાની  
કલ્પનાથી તેમની પણ મૂર્તિ ઘનાવીને પૂજા કરે જ છે તેમજ લૌકિક શાસ્ત્ર  
પ્રસિદ્ધ અનન્ન કામદેવની પણ લોકો પોતાની કલ્પના મુજબ મૂર્તિ ઘનાવીને  
તેને પૂજે છે, આમા વાધા જેવી કોઈ વાત નથી

લક્ષ્મી, ગૌરી વગેરે દેવીઓની પૂજા લોકમા પોતાની ઇચ્છા મુજબ પતિ  
મેળવવાની કામનાથી સ્ત્રીઓ વડે કરવામા આવે જ છે લૌકિક મન્ત્ર શાસ્ત્રમા  
મન્ત્ર રત્ન મઽજૂયામા કામદેવનુ આરાધન “ કન્યામિષ્ટામવાપ્નોતિ સામીષ્ટ પતિ  
માપ્નુયાત્ ” આ અર્ચ્છાશ્લોક વડે ઇચ્છિત પ્રતિપ્રાપ્તિનુ કારણ ઘતાવવામા આવ્યું છે

વર્તમાન સમયમા પણ આપણે જોઈએ તો લક્ષ્મી સમયે લોકમા કુળ  
દેવતાનુ પૂજન કરવામા આવે જ છે આ કુળદેવતાનુ પૂજન \* રીતે

રાગવતા ગૃહસ્થાના કુલદેવત્વેન વ્યાપ્તિમાણ આસીત્ । દ્રૌપદ્યાઽપિ સ્વકુલદેવઃ પૂજિત ઇતિ યુક્તમુત્પશ્યામઃ ।

અત્ર—“ નમોઽત્યુ ણ અરિહતાણ ” ઇતિ પાઠસ્તુ પ્રવચનચિન્દ્દ એવ વર્તતે, લૌકિકકુલદેવપ્રતિમાઽર્ચનપ્રકરણે લોકોત્તરસ્ય ભગવતોઽર્હતઃ પ્રમદ્ગાભાવાત્ । પૂર્વભવકૃતનિદાનવત્યા નામભોગાનુરવત્યા દ્રૌપદ્યા નામદેવાર્ચનસમયે કામભોગ વિરતસ્ય વીતરાગમાર્ગોપદેશકમ્ય વીતરાગમ્ય ભગવતોઽર્હતો વદન નેવ શાસ્ત્રાનુ-કૂલમ્ । અત્ર પરિણયાપસરે કુલદેવપૂજનપ્રસદે ભગવતોઽર્હત પ્રસન્નએવ નાસ્તિ,

તરહ સે કામદેવ તા પૂજન અનુસરણ હૈ । એક સમય યા કિ જવ કામ-દેવ હી, રાગજાલી ગૃહસ્થ જનો કે લિયે કુલ દેવતા કે રૂપ સે વૈવાહિક વ્યવહાર મેં માન્ય હોતા યા । દ્રૌપદીને ખી ઉસ સમય જો કુલ દેવતા કા પૂજન કિયા—વહ કામદેવ કા હી પૂજન કિયા યહી યુક્તિ મગન બૈઠતી હૈ । ઇસ પૂજન કે પ્રકરણ મેં જો “ નમોત્યુણ અરિહતાણ ” યહ પાઠ આતા હૈ વહ પ્રવચન ચિન્દ્દ હી હૈ ત્યોં કિ લૌકિક કુલદેવતા કી પ્રતિમા કે અર્ચન-પ્રકરણ મેં લોકોત્તર અર્હત ભગવાન કે પ્રકરણ કા સબધ હી ક્યા હૈ । ઉસ સમય જવ કિ વહ પૂર્વ ભવ મેં કિયે ગયે નિદાન સે યુક્ત થી—ઔર કામભોગ મેં અનુરક્ત હૃદયવાલી થી ઉસ કે લિયે કામદેવકા અર્ચન(પૂજન) કરનેકા સમય હી સ્પષ્ટરૂપસે જ્ઞાત હોતા હૈ કામભોગોં સે વિરત વીતરાગ માર્ગ કે ઉપદેશક વીતરાગપ્રભુ અર્હત ભગવાન કી પૂજન વદના કા નહીં । યહી સિદ્ધાન્ત શાસ્ત્રાનુકૂલ હૈ—અન્ય નહીં । અરે કહીં

કામદેવના પૂજનનુ અનુસરણ છે એક વખત એવો હતો કે બ્યારે કામદેવજ, રાગજાળી ગૃહસ્થ લોકોને માટે કુળ દેવતાના રૂપમા લગ્ન-સબધી વ્યવહારમા માન્ય ગણાતો હતો. દ્રૌપદીએ પણ તે સમયે જે કુળ દેવતાનુ પૂજન કર્યું તે કામદેવનુ જ પૂજન કર્યું હતું એ જ વાત ખરોખર લાગે છે આ પૂજનના પ્રકરણમા જે “ નમોત્યુણ અરિહતાણ ” આ પાઠ આવે છે તે પ્રવચન વિરૂદ્ધ જ છે કેમકે લૌકિક કુળદેવતાની પ્રતિમાના અર્ચન-પ્રકરણમા લોકોત્તર અર્હત ભગવાનના પ્રકરણનો સબધ જ શી રીતે યોગ્ય કહી શકાય તે વખતે કે બ્યારે તે પૂર્વ ભવમા કરેલા નિદાનથી યુક્ત હતી અને કામભોગમા અનુ રક્ત હૃદયવાળી હતી એવી નિયતિમા તો તેના માટે કામદેવની અર્ચના કરવાનો વખત જ સ્પષ્ટ રૂપે જણાઈ આવે છે કામભોગોથી વિરત વીતરાગ માર્ગના ઉપદેશક વીતરાગ પ્રભુ અર્હત ભગવાનની પૂજા વદના માટે તે વખત યોગ્ય કહી શકાય નહિ આ સિદ્ધાન્ત જ શાસ્ત્રાનુકૂળ છે બીજો નહિ યુધ્ધમા

નાસ્ત્યત્ર સશય । લક્ષ્મીગૌર્યાદિદેવ્યા અપિ સ્વામીષ્ઠપતિપ્રાપ્તિશામનયા પૂજન  
લોકે પ્રસિદ્ધમસ્તિ । લાકિદમન્ત્રશાસ્ત્રે મન્ત્રરત્નમઝજપાયા કામદેવાગધનસ્યામી  
ષ્ઠપતિશામહેતુત્વ નિગદિતમ્—

“ કન્યામિષ્ટામવાપ્નોતિ, સામીષ્ઠ પતિમાપ્નુયાત્ ॥ ” ઇતિ ।

અગુનાઽપિ પરિણયનમમયે કુલદેવપૂજન લોકે કિરમાપ દદ્યતે । કામદેવોઽપિ

ઉત્તર—યહ કહના ટીક નહીં હૈ કયો કિ મૂર્તિ પૂજક જન અનન્ન  
-સિદ્ધોં કી भी तो मूर्ति बनाकर उसकी पूजा किया करते हैं । यद्यपि  
सिद्धों की मूर्ति बनाने की आज्ञा शास्त्रों में नहीं मिली गई है-तौ भी  
मूर्तिपूजक जन अपनी कल्पना से उनको भी मूर्ति बनाकर पूजा  
करते ही हैं—

उसी प्रकार लौकिकशास्त्र प्रसिद्ध अनन्त कामदेव की भी लोग अपनी  
कल्पनासुर मूर्ति बनाकर पूजते हैं । इस में आपत्ति की कौनसी बात है ।

लक्ष्मी, गौरी आदि देवियों की भी पूजा लोक में अपने को अभि  
लपित पनि प्राप्ति की कामना से स्त्रियों द्वारा की ही जाती है । लौकिक  
मन्त्र शास्त्र में मन्त्ररत्नमज्जूपा में कामदेव का आराधन—“ कन्यामिष्टा  
मवाप्नोति सामीष्ठ पतिमाप्नुयात् ’ इमं श्लोकार्धद्वारा इच्छित पति प्राप्ति  
का कारण कहा गया है ।

वर्तमान समय में भी देखो ! विवाह के समय में लोक में कुल  
देवता का पूजन किया ही जाता है यह कुल देवता का पूजन ही एक

ઉત્તર—આ વાત યોગ્ય નથી, કેમકે મૂર્તિ પૂજા કરનારા લોકો અનન્ન  
સિદ્ધોની મૂર્તિ બનાવીને તેની પૂજા કરતા રહે છે એ કે શાસ્ત્રોમાં મિથ્યોની  
મૂર્તિ બનાવવાની આજ્ઞા કરવામાં આવી નથી છતાંય મૂર્તિ પૂજક લોકો પોતાની  
કલ્પનાથી તેમની પણ મૂર્તિ બનાવીને પૂજા કરે જ છે તેમજ લૌકિક શાસ્ત્ર  
પ્રસિદ્ધ અનન્ન કામદેવની પણ લોકો પોતાની કલ્પના મુજબ મૂર્તિ બનાવીને  
તેને પૂજે છે, આમાં વાધા જેવી કંઈ વાત નથી

લક્ષ્મી, ગૌરી વગેરે દેવીઓની પૂજા લોકમાં પોતાની ઇચ્છા મુજબ પતિ  
મેળવવાની કામનાથી સ્ત્રીઓ વડે કરવામાં આવે જ છે લૌકિક મત્ર શાસ્ત્રમાં  
મત્ર રત્ન મજૂપામાં કામદેવનું આરાધન “ કન્યામિષ્ટામવાપ્નોતિ સામીષ્ઠ પતિ  
માપ્નુયાત્ ” આ અર્ધશ્લોક વડે ઇચ્છિત પ્રતિપ્રાપ્તિનું કારણ બતાવવામાં આવ્યું છે

વર્તમાન સમયમાં પણ આપણે જોઈએ તો લક્ષ્મી સમયે લોકમાં કુળ  
દેવતાનું પૂજન કરવામાં આવે જ છે આ કુળદેવતાનું પૂજન રીતે

રાગવ્રતા ગૃહસ્થાના કુલદેવત્વેન વ્યાપ્તિમાણ આસીત્ । દ્રૌપદ્યાઽપિ સ્વકુલદેવઃ  
પૂજિત ઇતિ યુક્તમુત્પશ્યામઃ ।

અત્ર—“ નમોઽયુ ણં અરિહતાણ ” ઇતિ પાઠસ્તુ પ્રવચનવિરુદ્ધ એવ વર્તેતે,  
લૌકિકકુલદેવપ્રતિમાઽર્ચનપ્રકરણે લોકોત્તરસ્ય ભગવતોઽર્હતઃ પ્રમદ્ગ્રાભાવાત્ ।  
પૂર્વભવકૃતનિદાનવત્યા નામભોગાનુરવત્યા દ્રૌપદ્યા નામદેવાર્ચનસમયે કામભોગ-  
વિરતસ્ય વીતરાગમાર્ગોપદેશકસ્ય વીતરાગસ્ય ભગવતોઽર્હતો વદન નેવ શાસ્ત્રાનુ-  
કૂલમ્ । અત્ર પરિણયાપસરે કુલદેવપૂજનપ્રસારે ભગવતોઽર્હત પ્રસન્નપ્રવ નાસ્તિ,

તરહ સે કામદેવ તા પૂજન અનુસરણ હૈ । ઇક સમય યા કિ જવ કામ-  
દેવ હી, રાગશાલી ગૃહસ્થ જનો કે લિયે કુલ દેવતા કે રૂપ સે વૈવાહિક  
વ્યવહાર મેં માન્ય હોતા યા । દ્રૌપદીને ખી ઉમ સમય જો કુલ દેવતા કા  
પૂજન કિયા—વહ કામદેવ કા હી પૂજન કિયા યહી યુક્તિ મગન બૈઠતી  
હૈ । ઇસ પૂજન કે પ્રકરણ મેં જો “ નમોઽયુ ણં અરિહતાણ ” યહ પાઠ  
આતા હૈ વહ પ્રવચન વિરુદ્ધ હી હે ક્યો કિ લૌકિકકુલદેવતા કી પ્રતિમા  
કે અર્ચન-પ્રકરણ મેં લોકોત્તર અર્હત ભગવાન કે પ્રકરણ કા સબધ હી  
ક્યા હૈ । ઉસ સમય જવ કિ નહ પૂર્વ ભવ મેં કિયે ગયે નિદાન સે યુક્ત  
ધી-ઑર કામભોગ મેં અનુરક્ત હૃદયવાલી ધી ઉસ કે લિયે કામદેવકા  
અર્ચન(પૂજન) કરનેકા સમય હી સ્પષ્ટરૂપસે જ્ઞાત હોતા હૈ કામભોગોં સે  
વિરત વીતરાગ માર્ગ કે ઉપદેશક વીતરાગપ્રભુ અર્હત ભગવાન કી પૂજન  
વદના કા નહીં । યહી સિદ્ધાન્ત શાસ્ત્રાનુકૂલ હૈ—અન્ય નહીં । અરે કહીં

કામદેવના પૂજનનુ અનુસરણ છે એક વખત એવો હતો કે બ્યારે કામદેવજ,  
રાગશાળી ગૃહસ્થ લોકોને માટે કુળ દેવતાના રૂપમા લક્ષ-સબધી વ્યવહારમા  
માન્ય ગણાતો હતો દ્રૌપદીએ પણ તે સમયે જે કુળ દેવતાનુ પૂજન કર્યું તે  
કામદેવનુ જ પૂજન કર્યું હતુ એ જ વાત ખરોખર લાગે છે આ પૂજનના  
પ્રકરણમા જે “ નમોઽયુ ણં અરિહતાણ ” આ પાઠ આવે છે તે પ્રવચન  
વિરુદ્ધ જ છે કેમકે લૌકિક કુળદેવતાની પ્રતિમાના અર્ચન-પ્રકરણમા લોકોત્તર  
અર્હત ભગવાનના પ્રકારણુને સબધ જ શી રીતે યોગ્ય કહી શકાય તે વખતે  
કે બ્યારે તે પૂર્વ ભવમા કરેલા નિદાનથી યુક્ત હતી અને કામભોગમા અનુ-  
રક્ત હૃદયવાળી હતી એવી નિયતિમા તે તેના માટે કામદેવની અર્ચના કર  
વાનો વખત જ સ્પષ્ટ રૂપે જણાઈ આવે છે કામભોગોથી વિરત વીતરાગ  
માર્ગના ઉપદેશક વીતરાગ પ્રભુ અહ ત ભગવાનની પૂજા વદના માટે તે વખત  
યોગ્ય કહી શકાય નહિ આ સિદ્ધાન્ત જ શાસ્ત્રાનુકૂળ છે ખીજો નહિ યુક્તમા



દ્રૌપદ્યાઃ પૂર્વમગ્નનિદાનફલપ્રાપ્ત્યભાવેન સમ્યક્તરહિતત્વાત્ । યસ્ય પૂજનં તસ્યૈવ વન્દનં તુ ન્યાયોપપન્ન મયતિ, અત્ર પૂજનં કુલદેવતાયાઃ, વન્દનં તુ શ્રીતરાગસ્યાર્હતં ઇતિ લોકન્યાયવિરુદ્ધમ્ । તસ્માન્ દ્રૌપદ્યા શ્રીતરાગસ્યાર્હતો વન્દનમપિ તદાનોં ન કૃતમિતિ સર્વપ્રમાણસિદ્ધમ્ ।

અત્રાભયદેવધુરિણા સ્વકૃતકૃત્યો યદુક્તમ્ પદ્યમ્પ્યાં રાવનાયામેતાવદેવ દ્રુપદે  
“ જિણપટિમાણ અચ્ચણ કરેડ ” ઇતિ ।

વીરરસકે સિવાય યુદ્ધમાં જાનેવાળે વીરકે લિયે મનહારરાગ મી આનદદાયી હો સકતા હૈ ? । કમી નહીં પરિણય-ચિવારકે અપસર મેં કુલદેવતા કી હી પૂજા કરને કા પ્રસંગ હોતા હૈ-ન કિ ભગવાન અર્હત કી । અતઃ હસ પ્રકાર કા પ્રસંગ માનનાં ણક મનગઢત કલ્પના માધ હી હૈ ! વધોં કિ હસ સમય દ્રૌપદી પૂર્વમય મેં કિયે હુણ નિદાન કી ફલ પ્રાપ્તિ કે અભાવ સે સમ્યક્ત્વ રહિત થી, ફિર ઉસે ઉસ સમય કામદેવ કી હી ઇચ્છિત ફલ પ્રાપ્તિ કે લિયે પૂજા કી સૂઝેગી, યા ઉસકે અભાવ કો કરને વાળે જિન ભગવાન કી પૂજા કી । યદ સ્વય ચિવારને જૈસી વાત હૈ જિસ કા પૂજન કિયા જાતા હૈ ઉસી કી વદના કી જાતી હૈ-પૂજન તો હો કુલદેવતારૂપ કામદેવ કા ઓર વદનાં કી જાય વીતરાગ પ્રમુ શ્રી અરિહત દેવ કી । હસ પ્રકાર કી માન્યતા તો લૌકિકરીતિ સે મી વિરુદ્ધ પડતી હૈ । હસલિયે સર્વ પ્રમાણોં સે યદ સિદ્ધ હોતા હૈ કિ દ્રૌપદી ને જિનપ્રતિમા કા પૂજન નહીં કિયા ।

જનાર લડવૈયા માટે વીર રસ સિવાયનો મહાર રાગ પણ શુ આનંદ ખમા ઉનાર થઈ શકે છે ? નહીં જ લગના સમયે તો ભગવાન અહીં તની પૂજા કરતા તો કુળદેવતાની પૂજા કરવાનો પ્રસંગ જ યોગ્ય લેખાય છે એટલા માટે આ જાતના પ્રસંગની વાત માનવી એ મનમાની કલ્પના માત્ર જ છે કેમકે આ સમયે દ્રૌપદી પૂર્વલવમા કરેલા નિદાનની ફળ પ્રાપ્તિના અભાવને લીધે સમ્યક્ત્વથી રહિત હતી અને એવી સ્થિતિમા ઇચ્છિત ફળ પ્રાપ્તિ માટે તેને કામદેવની પૂજા કરવાની ઇચ્છા થાય કે તેનાથી વિરુદ્ધ ફળ આપનાર જીન ભગવાનની પૂજાની ? આ જાતે વિચાર કરવા યોગ્ય વાત છે જેની પૂજા કરવામા આવે છે તેને જ વદના કરવામા આવે છે પૂજા તો કુળ દેવતારૂપ કામદેવની થાય અને વદના વીતરાગ પ્રમુ શ્રી અરિહત દેવની કરવામા આવે આ જાતની માન્યતા તો લૌકિક રીતિથી પણ વિરુદ્ધ છે આ પ્રમાણે બધી રીતે વિચારતા આ સિદ્ધ થાય છે કે દ્રૌપદીએ જીન પ્રતિમાનુ પૂજન કર્યું નથી.

વાચનાન્તરે તુ 'ળાયા' इत्यादि, तथा-द्रौपद्याः प्रणिपातदण्डकमात्रं चैव चन्दनमभिहितं सूत्रे इति, तदप्यत्र पाठे सिद्धान्तविरुद्धपाठप्रक्षेपसम्भावनां प्रयोक्तव्यं । अत्र यद्वाच्यं तत्प्रागेव निगदितम् ।

मूलम्-तएण तं दोवइरायवरकन्नं अतेउरियाओ सव्वा-  
लंकारविभूसिय करेति कि ते ? वरपायपत्तणेउरा जाव चेडिया-  
चकवालमयहरगविदपरिविखत्ता अतेउराओ पडिणिक्खमइ-  
पडिनिक्खमित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउ-  
ग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता किङ्खावियाए  
लेहियाए सद्धि चाउग्घटं आसरह दुरूहइ, तएण से धट्टज्जुणे  
कुमारे दोवईए कण्णाए सारत्थं करेइ, तएण सा दोवई राय-  
वरकण्णा कंपिल्लपुरं नयर मज्झ मज्झेण जेणेव सयवरमडवे तेणेव  
उवागच्छइ उवागच्छित्ता रह ठवेइ रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरु-

અભયદેવ સૂરિ ને સ્વરચિત વૃત્તિ મેં જો યહ કહા હૈ કિ એક વાચના મેં “ જિનપહિમાર્ણ અચ્ચળ કરેહ ” દૂસરી અન્ય વાચના મેં “ ળાયા इत्यादि-तथा द्रौपद्याः प्रणिपातदण्डकमात्रं चैव चन्दनमभिहितं सूत्रे इति ” સો યહ ઉનકા કયન હસ યાન કી સમાવના કો પ્રકટ કરતા હૈ કિ હસ પાઠ મેં સિદ્ધાન્ત સે વિરુદ્ધ પાઠ કા પ્રક્ષેપ હુઆ હૈ । હસ વિષય મેં જો કુઝ હમેં સમાયાન કાના યા વહ હમને પહિલે હી કર દિયા હૈ ।

॥ દ્રૌપદી પૂજાચર્ચા સમાપ્ત ॥

અભયદેવસૂરિએ સ્વરચિત વૃત્તિમા જે એ કહ્યું છે કે એક વાચનામા “ જિનપહિમાર્ણ અચ્ચળ કરેહ ” બીજી વાચનામા ‘ ળાયા इत्यादि-तथा द्रौपद्याः प्रणिपातदण्डकमात्रं चैव चन्दनमभिहितं सूत्रे इति । ” તો તેમનું આ કથન આ વાતને પ્રકટ કરે છે કે આ પાઠમા સિદ્ધાન્તથી વિરુદ્ધ એવા પાઠનો પ્રક્ષેપ થયો છે આ વિષે જે કંઈ ચોગ્ય સ્પષ્ટીકરણ કરવાનું હતું તે અમે પહેલા કરી દીધું છે

દ્રૌપદી પૂજા ચર્ચા સમાપ્ત

हिता किङ्गावियाए लोहियाए य सद्धि सयंवरमंडपं अणुप-  
 विसड अणुपविसित्ता करयल तेसि वामुदेवपामुग्गवाण वट्ठणं  
 रायवरसहस्साणं पणाम करेइ, तएण सा दोवई रायवर० एग  
 मह सिरिदामगंड किं ते ? पाडलमहियचपय जाव सत्तच्छया-  
 ईहि गंधद्धाणि सुयत परमसुहफास दरिसणिज्जं गिण्हइ, तएण  
 सा किङ्गाविया जाव सुरूवा जाव वामहत्थेणं चिह्णं दप्पण  
 गहेऊण सललिय दप्पणसकतविवसदसिण य से दाहिणेण  
 हत्थेण दरिसए पवररायसीहे फुडविसयविसुद्धरिभियगभीर महु-  
 रभणिया सा तेसि सुव्वेसि पत्थिवाण अम्मापिऊण वससत्तसा  
 मत्थगोत्तविक्रतिकंति बहुविह आगममाहप्परूवजोव्वणगुण  
 लावणकुलसीलजाणिया कित्तण करेइ, पढम ताव वणिहपुग्गवाणं  
 दसदसारवीरपुरिसाण तेलोक्कवलवगाण सत्तुसयसहस्समाणा-  
 वमह्गगाण भवसिद्धिपवरपुडरीयाण चिह्णगाण वलवीरियरूव-  
 जोव्वणगुणलावन्नकित्थिया कित्तण करेइ, ततो पुणो उग्गसेण-  
 माईणं जायवाण, भणइ य—सोहग्गरूवकल्लिए वरेहि वरपुरिस-  
 गधहत्थीणं । जो हु ते होइ हिययदइओ, तएणं सा दोवई  
 रायवरकन्नगा वट्ठण रायवरसहस्साणं मज्झ मज्झेण समतिच्छ-  
 माणी२ पुव्वकयणियाणेण चोइज्जमाणी २ जेणेव पच पडवा  
 तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ते पचपडवे तेण दसद्ववण्णेण  
 कुसुमदामेण आवेढियपरिवेढिय करेइ करित्ता एव वयासी-  
 एएण मए पच पडवा वरिया, तएणं तेसि

वहूणि रायसहस्राणि मह्यारसद्वेषं उग्घोसेमाणाः एव वयति  
 सुवर्ग्य खलु भो । दोवइए रायवरकन्नाएः त्तिःहु सयवरमड-  
 वाओ पडिनिक्खमति पडिनिक्खमिता जेणेव सयाः आवासा  
 तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता, तएण धट्टज्जुण्णे कुमारे पच  
 पडवे दोवइं रायवरकण्ण चाउग्घट आतरह दुरूहइ दुरूहिता  
 कपिल्लपुर मज्झ मज्झेण जाव सय भवण अणुपविसइ, तएणं  
 दुवए राया पच पडव देवइ रायवरकन्ना पट्ठय दुरूहेइ दुरूहिता  
 सेया पीएहि कलसेहि मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्निहोम कारवेइ  
 पचण्ह पडवाण दोवइए य पाणिग्गण करावेइ तएण  
 से दुवए राया दोवइए रायवरकण्णयाए इम एयारूवं  
 पीईदाण दलयइ, त जहा — अट्ट हिरण्णकोडीओ जाव अट्ट  
 पेसणकारीओ दासचेडीओ, अण्ण च विउल धणक्कणग जाव  
 दलयइ तएण से दुवए राया ताइ वासुदेवपामोक्खाणं विउ-  
 लेणं असण्ठ वत्थगय जाव पडिविसज्जेइ ॥ सू० २१ ॥

टीका—‘तएण त’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु ता द्रौपदी राजवरकन्या  
 ‘अतेउरियाओ’ आन्तः पुरिक्कय’= अन्तःपुरवर्तिन्य स्त्रियः सर्वालकारविभू-  
 पितां कुर्वन्ति, ‘किं ते’ तन्-तत्सौन्दर्यं किं वर्णयामि तइ वाचाऽभिलषितु न

तए ण त दोवइ रायवरकन्ना इत्यादि ।

टीकार्थ—(तए ण) इसके बाद (त दोवइ रायवरकन्ना) उस राजवर कन्या  
 द्रौपदी को (अतेउरियाओ मन्वालकारविभूसिय करेति) अतः पुर  
 की स्त्रियो ने समस्त अलकारो से विभूषित किया । (किंते) उस समय

तएण त दोवइ रायवरकन्ना इत्यादि—

टीकार्थ—(तए ण) त्याग्यती (त दोवइ रायवरकन्ना) ते राजवर कन्या

द्रौपदीने (अते उरियाओ-मन्वाल कारविभूसिय करेति) शय्यामनी स्त्रीओओ

समस्त अलकारोयी शय्यागारी (किं ते) ते समयना तेना मोदयन्तु वधूने

શક્યત્ત્વમ્ इत्यर्थः । ' वरपायपत्तणेउरा ' वरपादमाप्तनूपुरा=वरणम्यापित मन्त्रस्त  
नूपुरा यावत्-चेडियाचणशळमयहरगविन्दपरिविखत्ता चेडिकाचकपालमहतरक  
चन्द्रेण-अनेकदासीमहत्तरममूहेन परिसिक्ता-परिटृता, अन्तःपुरात् प्रतिनिष्क्रामति  
-निः सरति, प्रतिनिष्क्रम्य यज्ञेय वाद्या=गदिः प्रदेशस्था ' उवद्वाणसाला ' उप  
स्थानशाला=आस्थानमण्डप -सभामण्डलइत्यर्थः, यत्रैव चातुर्घटोऽश्वरथस्तर्गोपाग  
च्छति, उपागत्य ' किड्वावियाए ' क्रीडिकया-क्रीडनधात्र्या क्रीडया क्रीडिकया  
इत्याह ' लेहियाए ' इति लेखिकया=राजकुलवशनामादिपरिचारिकया साथ

કે ઉસકે સૌન્દર્ય કા હમ કયા વર્ણન કરે । વર વાળી દ્વારા કહને કે  
યોગ્ય નહીં છે અર્થાત્ વાળી સે ઉસકા વર્ણન નહીં હો સકતા છે । (વર  
પાયપત્તણેઝરા જાવ , ચેડિયાચક્રવાલમયહરગવિન્દપરિવિખત્તા અતે  
ઝરાઓ પડિણિસ્વમઢ ) વરણોં મેં સ્થાપિત કિયે ગયે હૈ-પહિરાયે ગયે  
હૈ-મન્ત્રસ્તનૂપુર જિસકો એસી વર દ્રૌપદી યાવત અનેક સમજદાર  
દાસિયોં કે મહોમહિમ સમૂહ સે પરિક્ષિત હોકર-અંત.પુર સે બાહિર  
નિકલી । ( પડિણિસ્વમિત્તા જેણેવ બાહિરિયા ઉવદ્વાણસાલા જેણેવ  
ચાઝઘટે આસરહે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા કિડ્વાવિયાએ લેહિ  
યાએ સર્દિ ચાઝઘટ આસરહ દુરુહહ ) બાહિર નિકલકર વહ જહાં  
બાહિર મેં સભામણ્ડપ ઓર ઉસમેં બી જહા ચારઘટો વાલા અશ્વરથ થા  
બહા આઈ । વહા આકર વહ અપની ક્રીડનધાત્રી કે કિ જો લેખિકા  
રાજકુલ, વશ નામ આદિ કી પરિચાયિકા બી સાથે ઉસ ચારઘટોવાળે

આપણે કેવી રીતે કરી શકીયે વાણી વડે તેનું વર્ણન અશક્ય છે એવો  
કે વાણીમા એટલી શક્તિ નથી કે તેના સૌંદર્યનું સચોટ વર્ણન કરી શકે  
(વરપાયપત્તણેઝરા જાવ ચેડિયાચક્રવાલમયહરગવિન્દપરિવિખત્તા અતેઝરાઓ  
પડિણિસ્વમઢ )

પગોમા જેણે સુદર નૂપુર પહેર્યા છે એવી તે દ્રૌપદી ઘણી ચતુર દાસી  
ઓથી વીંટળાઈને રણુવાસથા બહાર નીકળી  
( પડિણિસ્વમિત્તા જેણેવ બાહિરિયા ઉવદ્વાણમાલા જેણેવ ચાઝઘટે આસરહે તેણેવ  
ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા કિડ્વાવિયાએ લેહિયાએ સર્દિ ચાઝઘટ આસરહ દુરુહહ )

બહાર નીકળીને તે જ્યાં બહારના સભા-મંડપમા ચાર ઘટવાળો અશ્વ  
રથ હતો ત્યાં આવી ત્યાં આવીને તે પોતાથી ક્રીડન ધાત્રી-કે જે લેખિકા  
રાજકુલ, વશ નામ વગેરેની પરિચાયિકા હતી-તેની સાથે તે ચાર ઘટવાળા  
અશ્વરથ ઉપર સવાર થઈ ગયું



चातुर्घण्टमश्वरथं ' दुरुहड ' दूरोहति=आरोहति । ततस्तदनन्तरं धृष्टद्युम्नः कुमारो द्रौपद्याः कन्यायाः ' सारथ्य ' सारथ्य-सारथिर्म करोति, ततः खलु सा द्रौपदी राजवरकन्या कापिल्यपुरस्य नगरस्य मध्यमध्येन यज्ञैव स्वयम्बरमण्डपस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य रथं स्थापयति रथात् प्रत्यगरोहति प्रत्यग्रह्य क्रीडिकया लेखिकया च सार्धं स्वयवरमण्डपम् अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य करतलपरिगृहीत दशनख शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा तेषां वासुदेवप्रमुखाणा वहूण राजवरसह-

अश्वरथ में सवार हो गई । ( तएण से धट्टज्जुण्णे कुमारे दोवईए कन्नाए सारथ्य करेइ, तएण सा दोवइ रायवरकण्णा कपिल्लपुर नगर मज्झमज्झेण जेणेव सयवरमंडवे तेणेव उवागच्छइ ) उस के सवार होते ही धृष्टद्युम्न कुमार ने उस द्रौपदी कन्या का सारथ्य किया-उसके रथ पर सारथि का काम किया-द्रौपदी के रथ को हाका । इस तरह धृष्टद्युम्न के द्वारा हाके गये रथ पर बैठी हुई वह राजवर कन्या द्रौपदी कापिल्य पुर नगर के बीच से होकर जहा स्वयवर-मंडप था उस ओर चल दी । ( उवागच्छित्ता रह ठवेइ रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता किड्ढावियाए लेहियाए सद्धि सयवरमंडव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता करयल तेसिं वासुदेवपामुक्खाण वहूण रायवरसहस्साण पणाम करेइ ) वहां पहुंचकर उसने रथ को खड़ा करवा दिया-रथके खड़े होते ही वह उससे नीचे उतरी, नीचे उतर कर वह उस लेखिका क्रीडन धात्री के साथ स्वयवर मंडप में प्रविष्ट हुई । प्रविष्ट होकर के उसने अपने दोनों हाथों को जोड़ कर उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं को प्रमाण

( तएण से धट्टज्जुण्णे कुमारे दोवईए कन्नाए सारथ्य करेइ, तएण सा दोवइ रायवरकण्णा कपिल्लपुर नगर मज्झमज्झेण जेणेव सयवरमंडवे तेणेव उवागच्छइ )

कन्यारे ते अवार थर् अर्ध त्यारे कुमार धृष्टद्युम्ने ते द्रौपदी राजवर कन्याना रथ उपर जेसीने सारथीनु काम सलाज्जु आ प्रमाणे धृष्ट मन वडे हाकवाभा आवेला ते रथ उपर सवार थधने ते राजवर कन्या द्रौपदी कपिल्लपुर नगरनी वग्गे थधने कन्या स्वयवर मंडप हुते। त्या रवाना थर्

( उवागच्छित्ता रह ठवेइ रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता किड्ढावियाए लेहियाए सद्धि सयवरमंडव अणुपविसइ, अणुवविसित्ता करयल तेसिं वासुदेव पामुक्खाण वहूण रायवरसहस्साण पणाम करेइ )

त्या पडोचीने तेले रथने थोलावडाव्यो, नगारे रथ थोले। त्यारे ते रथ उपरथी नीचे उतरी, नीचे उतरीने ते लेखिका क्रीडन धात्रीनी साथे स्वयवर मंडपमा प्रविष्ट थर् प्रविष्ट थधने तेले वासुदेव प्रमुख हजारो राजाओने पोताना जने हाथ जोडीने नमस्कार कया

જાણા મળામં કરોતિ, તતઃ ચતુ મા દ્રૌપદી રાજવરકન્યા ત્વમહત્ શ્રીદામકાણ્ડં  
 ' કિં તે ' કિં તત્-તત્સોન્દર્યમૌગ-સ્વર્ણન કિં કરોમિ ? તદ્ અર્ધમિતિમાત્રઃ ।  
 ' પાટલમલ્લિયચપય જાત્ત ચત્તચ્ચાર્દદિ ' પાટલમલ્લિકાનમ્પક-યાત્ત સમચ્છ  
 દાદિભિઃ ' ગધદ્ધાર્ણિ ' ગન્ધધ્ર્વાર્ણિ ગન્ધતત્તિ ' મુયત્ત ' મુઘ્ધત્=મદત્ પ્રકાગ્રયદિત્યર્થઃ  
 પર્મસુત્વસ્પર્શ દર્શીય ગૃહ્ણતિ । તતઃ ચતુ મા ત્રીટિકા=ત્રીટનવાથી યાત્ત-  
 સુરૂપા જાત્ત ' ચામહત્થેણ ચિલ્લગ દપ્પણ ' યાત્ત ચામહસ્તેન ચિલ્લગ દર્પણમ્ અત્ર  
 યાવચ્છઞ્ચેનેદ ગો યમ્-સામારિયધસ ચોદ્ધનનમ્મ ઉસ્સુયકર વિચિત્તમણિરયણ  
 વદ્ધચ્છઞ્ચ ' ઇતિ । ચામારિયધર્પ=ચામારિકો નૈસર્ગિકો ધર્પો ધર્પણ યત્ર સ તથા  
 ત દર્પણમિત્યન્યયઃ । ચમાયાદેવ વિષ્ણમિત્યર્થઃ, તથા-પતુર્દગજનસ્યોત્સવ્યાર=  
 તરુણલોચરય પ્રેક્ષણાભિટાપજનક, તથા-વિચિત્રમણિરત્નવદ્ધચ્છક=વિચિત્રમણિ  
 સ્તનૈર્વદ્ધઃ છરુકો-મુષ્ટિ ગ્રહણધરાન, યમ્ય સ તથા ત, તથા-' ચિલ્લગ ' દેદીપ્ય  
 માન, દર્પણ-ચામહસ્તેન " ગદ્ધેઝ્ઞ " ગૃહીત્વા ' સલ્લિય ' મલલિત ' દપ્પણ

ક્રિયા (તણ ણ સા દોવડે રાયવરકન્યા ત્વમહ નિરિદામગઢ કિંતે ?  
 પાટલમલ્લિયચપય જાત્ત સત્તચ્ચાર્દદિ ગધદ્ધાર્ણિ મુયત્ત પર્મસુદ્ધાસ  
 દરિસણિજ્જ ગેણ્હ ) ટસકે વોદ્ ટસ રાજવર કન્યા દ્રૌપદી ને ત્વ  
 વદ્ધા વિસ્તૃત શ્રી દામકાઢ-જિસ કી સુન્દરતા ઓર સુગધિ કા હમ કયા  
 વર્ણન કરે-જો અપૂર્વ થા-પાટલ-ગુલાબ કે પુષ્પોં સે, મલ્લિકા-મોઘરા કે  
 પુષ્પોં સે યાવત્ સસચ્છદ વૃક્ષ કે પુષ્પોં કે ગૃથા ગયા થા ઓર જિસ મેં  
 સે નાસિકા કો તૃપ્તિ કરને વાલી ગય નિકલ રહી થી ।

જિસકા સ્પર્શ પરમ સુત્વ તાત્ક થા-તથા જો દર્શનીય થા અપને હાથ  
 મેં લિયા (તણ ણ સા કિહ્વારિયા જાત્ત સુરૂવા જાત્ત ચામહત્થેણ ચિલ્લગ  
 દપ્પણ ગદ્ધેઝ્ઞ મલલિય દપ્પણસકતવિંસદસિણ ય સે દાદિણેર્ણ

( તણ ણ સા દોવડે રાયવરકન્યા ત્વમહ નિરિદામગઢ કિંતે ! પાટલમ  
 લિય ચપય જાત્ત સત્તચ્ચાર્દદિ ગધદ્ધાર્ણિ મુયત્ત પરમસુદ્ધાસ દરિસણિજ્જ ગેણ્હ )

ત્યારપછી તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદીએ એક બહુ મોટો ભારે શ્રીદામકાઢને  
 કે જેની સુન્દરતાનું વર્ણન થઈ શકે તેમ નથી અને જે અપૂર્વ હતો-પાટલ  
 ગુલાબના પુષ્પોથી, મલ્લિકા-મોઘરાના પુષ્પોથી, અમ્પાના પુષ્પોથી યાવત્  
 સમચ્છદ વૃક્ષના પુષ્પોથી તે તૈયાર કરવામાં આવ્યો હતો અને જેમાંથી  
 નાસિકાને તૃપ્તિ થાય તેવી સુવાસ પ્રમત્તી રહી હતી જેનો સ્પર્શ અત્યંત  
 મુખકારી તેમજ જે દર્શનીય હતો-હાથમાં લીધો

( તણ ણ સા કિહ્વારિયા જાત્ત સુરૂવા જાત્ત ચામહત્થેણ ચિલ્લગ દપ્પણ ગદ્ધે  
 ઝ્ઞ મલલિય દપ્પણસકતવિંસદસિણ ય સે દાદિણેર્ણ હત્થેણ દરિસણ પવર

सकृत्प्रियसदसि ए य ' दर्पणमक्रान्तविम्बसदृशितान्=दर्पणे संक्रान्तानि यानि  
राजा विम्बानि-प्रतिविम्बानि, तैः सदृशिताः=प्रतिबोधितास्ताश्च प्रवरराजसिंहान  
सिंहसदृशशूरान् श्रेष्ठनृपान् दक्षिणेन हस्तेन ' से ' तस्या ' द्रौपद्या ' दरिसि ए '  
दर्शयति इह कर्मणः सम्बन्धमात्रविवक्षाया पृष्ठी । तथा-' फुडविसयविसुद्ध-  
रिभियगभीरमहुरभणिया ' स्फुटविशदविशुद्धरिभितगम्भीरमधुरभणिता= अर्थत'

इत्येण दरिसि ए प्रवरराजसीहे फुडविसयविसुद्धरिभियगभीरमहुर-  
भणिया सा तेसिं नव्वेसिं पत्थिवाणं अम्मापिऊण वससत्तसामत्य-  
गोत्तविक्कतिकतिबहुविहआगममहप्परुवजोव्वणगुणलावणण कुल  
जाणिया कित्तण करेइ ) इसके बाद उस फ्रीडन धाय ने अपने हाथ  
में एक चमकना हुआ दर्पण लिया । यहा दर्पण के इन और विशेषणों  
का यावत् शब्द से ग्रहण हुआ है वे विशेषण ये हैं ' सामाविघघसं  
चोद्धजणस्स उस्सुयकर विचित्तमणिरयणवद्धच्छरुह " इनका अर्थ उस  
प्रकार है-यह दर्पण स्वभावतः चिकना था । तथा तरुणजनों के चित्त  
में अपने को देखने की अभिलाषा का जनक था । मुष्टि से पकड़ने का  
जो इसका स्थान था वह विचित्र मणि-रत्नों से निर्मित था । उस  
दर्पण में जिन २ सिंह जैसे शूरवीर राजाओं के उस समय प्रतिविम्ब  
पड़े हुए थे उन प्रतिविम्बों को लेकर उस धायने उन श्रेष्ठ राजाओं को  
उस द्रौपदी के लिये अपने दक्षिण हाथ से बतलाया । बतलाते समय  
उन्हें दिखाते समय-वह रात्री बिलकुल अर्थ की अपेक्षा स्फुट एव वर्ण

राजसीहे फुडविसयविसुद्धरिभियगभीरमहुरभणिया सा तेसिं नव्वेसिं पत्थि  
वाण अम्मापिऊण वससत्तसामत्यगोत्तविक्कतिकतिबहुविहआगममहप्परुवजोव्वण  
गुणलावणण कुलजाणिया कित्तण करेइ )

त्यारपणी ते फ्रीडनधात्रीये पोताना हाथमा अेक थमकतो अरीसो लीधो  
अही ' अरीसा ' भाटे य वत् शब्दथी नीये लब्ध्या मुञ्जण विशेषणोनु पण  
अहणु समज्जु लेधये ( सामाविघघस चोद्धजणस्स उस्सुयकर विचित्त  
मणिरयणवद्धच्छरुह ) आ विशेषणोनु स्पष्टीकरण आ प्रमाणे छे-ते अरीसो  
स्वाभाविक रीते लीयो हुतो, तेमज्ज तरुण श्रीओना चित्तमा तेने लेवानी  
सहज आवे धिया जअत थाय तेयो हुतो ते अरीसानो हाथो विचित्र  
मणीरत्नोथी जडेसो हुतो ते अरीसामा सिंहु जेवा शूरवीर जे जे राजाओ  
देखाया ते धात्रीये ते राजाओने पोताना जमणु हाथथी सकेत कनीने  
अताव्या अतावती वणने अने समज्जवती वणते ते धाय अर्थनी अपेक्षाथी

સ્ફુટ, ઋણિયો વિગત સ્ફુટવિગત-ગ-દાર્થદોષરહિત, રિમિત-સ્વરયુક્ત ગમ્भीર-  
મેઘધ્વનિયત્, મધુર-મિય શ્રવણગુણદ, મણિત માપિત ચમ્યા ક્રીડિકાયા સા  
તથા, સા ક્રીડિકા તેવા મર્વેવા પાર્થિયાનાં ' અમ્માપિઝણ ' માતાપિત્રોઃ  
' વસસત્તસામત્વગોત્તવિગતિકૃતિવદ્ધિદાગમમાદાત્મ્યગોત્રગુણલાવણ્યકુન્સી  
લજાણિયા ' વશસત્તસામ યગોત્રવિકાન્તિશાન્તિવદ્ધિદાગમમાદાત્મ્યપયોવનગુ  
ણલાવણ્યકુન્સીલજાયાિકા=વશ-વરિવગાદિક, સત્ત્વમ્-આપત્તુ વૈર્યમ્ સામર્થ્ય=  
વલ ગોત્ર=ગૌતમગોત્રાદિ, વિકાન્તિ-વિક્રમ, શાન્તિ-પ્રમા, વદ્ધિદાગમ અનેક  
શાસ્ત્રવિજારદ, માદાત્મ્ય-મદાનુભાવતા, તથા-રૂપયૌવનગુણલાવણ્યાનિ ચ તથા-  
કુલ-વશસ્યાયાન્તરભેદ, શીલ ચ-સ્વમાત્ર ચ જાનાતિ યા મા ' કૃત્તણ ' કીર્તન=  
વશાદિવર્ણન કરોતિ સ્મ । પ્રથમ તાવત્-' વણ્ઠિપુગવાણ ' વૃષ્ણિપુદ્ગવાના ' દસ  
દસારવીરપુરિસાણ ' દશાના દશાર્હાણા સમુદ્રવિજયાદોના ત્રીરપુરુષાણા, ' તેલોગ  
વલવગાણ ' ત્રેલોક્યવલવતા ' સત્તુમયસહસ્સમાણાવમદગાણ ' શત્રુશતસહસ્સમાનાવ  
મદકાના, તથા-' ભવસિદ્ધિપવરપુડરીયાણ ' ભવસિદ્ધિપવરપુણ્ડરીકાણા=ભવતિ

કો અપેક્ષા વિશદ એસી વિશુદ્ધ-શબ્દાર્થ દોષ રહિત-સ્વર યુક્ત મેઘ  
ધ્વનિ સમાન ગમ્भीર મધુર વાણી સે માપણ કરતી જાતી થી । ઉસ  
માપણ મે વહ ઉન સવ રાજાઓં કે માતા, પિતા, વશ, સત્ત્વ, સામર્થ્ય,  
ગોત્ર, વિક્રમ, કાતિ, અનેક શાસ્ત્રોં કા જ્ઞાતૃત્વ, માદાત્મ્ય, તથા રૂપ,  
યૌવન ગુણ, લાવણ્ય, કુલ એવ શીલ કો જ્ઞાતા હોને કે કારણ ઇન સવ  
કા વર્ણન કરતી જાતી થી । વશ સે હરિવશ આદિ કા ઓર કુલ  
સે વશકે અવાન્તર ભેદ કા કથન હોતા હૈ । ( પદમ તાવ વણ્ઠિપુ  
ગવાણ દસદસારવીરપુરિસાણ તેલોક્કવલવગાણ સત્તુસયસહસ્સમાણાવ  
મદગાણ ભવસિદ્ધિપવરપુડરીયાણ ચિત્તલગાણ વલવીરિયરૂવજોવ્વણ

એકદમ સ્ફુટ અને વણ્ઠીની અપેક્ષાથી વિશદ એવી વિશુદ્ધ એટલે કે શબ્દાર્થ  
દોષરહિત-સ્વરયુક્ત, મેઘધ્વનિ જેવી ગમ્भीર મધુરવાણીનું ઉચ્ચારણ કરી રહી  
હતી પોતાના લાવણ્ય વડે તે ધાય બધા રાજાઓના માતા પિતા વશ, સત્ત્વ,  
સામર્થ્ય, ગોત્ર, વિક્રમ, કાતિ, શાસ્ત્રજ્ઞાન, માદાત્મ્ય તેમજ રૂપ, યૌવન, ગુણ,  
લાવણ્ય, કુળ અને શીલ વગેરેની બાબતમાં બાણુદાર હતી એટલે બધું વણ્ઠીનું  
કરતી જતી હતી વશથી હરિવશ વગેરે અને કુળથી વલનો અવાન્તર ભેદનું  
કથન થયું છે

( પદમ તાવ વણ્ઠિપુગવાણ દસદસારવીરપુરિસાણ તેલોક્કવલવગાણ સત્તુ  
સયસહસ્સમાણાવમદગાણ ભવસિદ્ધિપવરપુડરીયાણ ચિત્તલગાણ વલવીરિયરૂવ

ભાવિની સિદ્ધિરેષા, તે ભવસિદ્ધિકાસ્તેષા મધ્યે પરપુન્ડરીકાણીત્ર ચે શ્રેષ્ઠાસ્તે તથા તેષા, તથા 'ચિહ્નમાણં' તેજસા દેદીપ્યમાનાના 'ચિહ્ન' इति देशी शब्दः । तथा— 'वलपीरियरૂવજોવ્વણગુણલાવણકિત્તિયા' वलपीर्यरूपयौवन-गुणलावण्य कीर्तिका=वल-कायिक, वीर्यम्-उत्साहः, रूप-सौन्दर्य, यौवन-तारुण्य, गुणान्-औदार्यगाभीर्यादीन्, लावण्य-यौवनयोजन्य कान्तिविशेष, कीर्तयति या सा तथा, सा कीर्तिकायात्री कीर्तन करोति स्मेत्यर्थ । अत्र पूर्वोक्तमपि विशेषण किंचिद् विशेषप्रोधनार्थं पुनः कथितम् ।

તતસ્તદનન્તર પુનઃ સા ક્રીડનધાત્રી 'ઉગ્ગસેણમાર્ણ જાયવાણ' ડગ્ગસેના દીના યાદનાના વલપીર્યાદિ કીર્તન કરોતિ કૃત્વા મળતિ ચ=સા યાત્રી દ્રોપદી

ગુણલાવણ કિત્તિયાકિત્તણં કરેડ ) સવસે પહિલે ઉસ ક્રીડન ધાત્રી ને વૃષ્ણિવશ કે પુગવ સમુદ્રવિજય આદિદગ દશાર્હોં કે કિ જો ત્રૈલોક્ય મેં મી વિશિષ્ટ વલશાલી માને જાતે થે, લાગ્વો શત્રુઓ કે માન કો મર્દન કરને વાલે થે, ભવસિદ્ધિક પુરુષોં મેં જો શ્રેષ્ઠ કમલ કે જૈસે માને ગયે હૈં, ઓર જો અપને સ્વાભાવિક તેજ સે સદા દમકતે રહતે થે વલ કા, વીર્ય કા, રૂપ કા, યૌવન કા, ગુણો કા, લાવણ્ય કા, કીર્તિકા હોને કે કારણ કીર્તન-વર્ણન ક્રિયા । શારીરિક શક્તિકા નામ વલ, ઉત્સાહ કા નામ વીર્ય, સૌન્દર્ય કા નામ રૂપ તારુણ્ય કા નામ યૌવન હૈ । ઓદાર્ય ગામ્भीર્ય આદિ ગુણ હૈ । યૌવન વય સે જય જો કાંતિ શરીર મેં આતી હૈ વહ લાવણ્ય હૈ ( તઓ પુણો ઉગ્ગસેણમાર્ણ જાયવાણ મળહ ય સોહગ્ગરૂવકલિષ વરેહિ વર પુરિસગધહત્યીણ જો હુ તે હોહ દિયય દહઓ, તણ સા દોવર્ડ રાયવરકન્નગા વર્ણ રાયવરસહસ્સાણ મજ્જ

જોવ્વણગુણલાવણકિત્તિયા કિત્તણ કરેડ )

તે ક્રીડન ધાત્રીએ સૌ પહેલા વૃષ્ણિ વશમા પુગવ ( શ્રેષ્ઠ ) સમુદ્ર વિજય વગેરે દશ દશાર્હાનુ-કે જેઓ ત્રણે લોકોમા પણ વિશિષ્ટ શક્તિરાણી ગણાતા હતા, લાખો શત્રુઓના માનનુ મર્દન કરનારા હતા, ભવસિદ્ધિક પુરુષોમા જેઓ ડમણી જેમ શ્રેષ્ઠ ગણાતા હતા અને જેઓ પોતાના સ્વાભાવિક તેજથી હમેશા પ્રકાશતા રહેતા હતા, બળ, વીર્ય, રૂપ, યૌવન, ગુણો, લાવણ્ય, કીર્તિ વગેરેથી સપન્ન હતા-વર્ણન કયુ ગાત્રીરિક શક્તિનુ નામ બળ, ઉત્સાહનુ નામ વીર્ય, સૌન્દર્યનુ નામ રૂપ અને તારુણ્યનુ નામ યૌવન છે ઓદાર્ય, ગામ્भीર્ય ગુણો છે યુવાવસ્થામા જે શરીર કાંતિવાળુ થાય છે તેને લાવણ્ય કહેવામા આવે છે

( તઓ પુણો ઉગ્ગસેણમાર્ણ જાયવાણ મળહ ય સોહગ્ગરૂવકલિષ વરેહિ વરપુરિસગધહત્યીણ જો હુ તે હોહ દિયયદહઓ તણ તં દોવર્ડ રાયવરકન્નગા



પુનરાહ— ‘સોદગ્ગસ્વકલિષ્ઠ’ ઇત્યાદિ, પરમપ્રાન્નપમુલ્લેખનવ્યાખ્યા—‘વરપુરિ  
સગધહસ્થીણ’ ત્રીરપુરુષગન્ધહસ્તિના=હસ્તિપુ ગન્ધહસ્તિન ડ્રા યે વિશિષ્ટગુણસદ્ધા  
વાત્ પુરુષેષુ સર્વતઃ શ્રેષ્ઠાસ્તે ત્રરપુરુષગન્ધહસ્તિનસ્તેષા મ યે ‘સોદગ્ગસ્વકલિષ્ઠ’  
સૌભાગ્યરૂપસ્ફલિતઃ—અતિશયેન સૌભાગ્યમૌન્દર્યસમન્વિત, યઃ સ્વલુ ન તત્ત્વ હમ્ય  
દયિત =હૃદયમિયઃ ‘હોઢ’ ભવતિ, ત ‘વરેદિ’ ત્રય=પતિમાત્રેન સ્ત્રીકુરુ ઇત્યર્થે ।

તતસ્તદનન્તર સ્વલુ દ્રૌપદી રાજવરકન્યા યદૂના રાજવરસહસ્રાણા મધ્યમધ્યન  
‘સમશ્ચ્છમાણી ૨’ સમતિક્રામન્તી=ગન્ઢન્તી ‘પુન્નકયણિયાણેણ’ પૂર્વકૃતનિ  
દાનેન=સુકુમારિકામવે ભર્તૃપશ્ચકાભિલાપરૂપ નિગ્ધાન કૃત તેન, ‘ચોદ્ગ્જમાણી ૨’  
પ્રેર્યમાણા ૨ યત્રોત્ત પશ્ચ પાણ્ડવાસ્તત્રૈરોપાગન્ઢતિ, ઉપાગત્ય તાન્ દશાર્ધવર્ણેન-  
પશ્ચવર્ણેન કુસુમદામ્ના ‘આવેદિયપરિવેદિય’ આપેદિતપરિવેદિતાન્ કરોતિ,  
મજ્જેણ સમતિચ્છમાણી ૨ પુન્નકયણિયાણેણ ચોદ્ગ્જમાણી ૨ જેણેવ  
પચ્ચપડવા તેણેવ ઉવાગચ્છડ્ઢ ) હસકે યાદ ઉમ ક્રીડન ધાય ને યાદવ  
વશવાલે ઉગ્રસેન આદિ યાદવો કે વલ્લીર્ય આદિ કા વર્ણન કિયા-  
ઉસને દ્રૌપદી સે કહા યે જૈસે હાથિયોં મેં ગધહસ્તી શ્રેષ્ઠ હોતા હૈં ઉસી  
તરહ યે પુરુષોં મેં વિશિષ્ટ ગુણોંકે સદ્ધાચ કે કારણ સર્વ પ્રકાર સે શ્રેષ્ઠ  
હૈં—ઉનકે વીચ મેં જો તુજે સૌભાગ્યરૂપ સ્ફલિત પ્રતીત હોં ઓર તેરે  
હૃદય કો પ્યારા લગે—ઉસે ત્ત્વ પનિરૂપ સે વરલે । હસકે યાદ વહ રાજવર  
કન્યા દ્રૌપદી ઉન હજારોં રાજાઓ કે વીચ સે હોતો હુઈ સુકુમારિકા કે  
મવ મેં કૂન નિદાન કે પ્રભાવ સે ચાર ૨ પ્રેરિત હોકર જટા પાચ પાડવ  
થે—વહા પહૂંચી—( ઉવાગચ્છિત્તા તે પચ પાડવે તેણ દસદ્વયણેણ કુસુમ  
દામેણ આવેદિયપરિવેદિય કરેહ, કરિત્તા એવ વયાસી, એણ મણ પચ  
વહૂણ રાજવરસહસ્રાણ મજ્જ મજ્જેણ સમતિચ્છમાણી ૨ પુન્નકયણિયાણેણ ચોદ્-  
ગ્જમાણી ૨ જેણેવ પચ પડવા તેણેવ ઉવાગચ્છડ્ઢ )

ત્યારપછી ક્રીડન ધાત્રીએ ઉગ્રસેન વગેરેનુ વર્ણન કર્યું અને કહ્યું કે—  
હાથીઓમા જેમ ગધ હસ્તી ઉત્તમ ગણાય છે તેમજ પુરુષોમા સર્વિશેષ  
ગુણવાન એવા એઓ બધી રીતે સારા છે, આ બધામા તને જે સૌભાગ્ય  
શાળી લાગતા હોય અને તને જેઓ ગમતા હોય તેઓને તુ પતિ રૂપમા  
સ્ત્રીકારી લે ત્યારપછી તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદી તે હજારો રાજાઓની વચ્ચેથી  
પસાર થઈને પોતાના સુકુમારિકાના લવમા કહેલા અભિલાષથી પ્રેરાઈને જ્યા  
પાચ પાડવો હતા ત્યા પહોંચી

(ઉવાગચ્છિત્તા તે પચ પાડવે તેણ દસદ્વયણેણ કુસુમદામેણ આવેદિય  
પરિવેદિય કરેહ, કરિત્તા એવ વયાસી, એણ મણ પચપડવા

કૃતા એવમવાદીત્-એતે સહુ પશ્ચ પાન્ડવા મયા વૃતા ઇતિ । તતઃ સ્વલુ 'તાડ  
વાસુદેવપામોક્ષવાઃ વહૂણિ રાયસહસ્તાણિ' તાનિ વાસુદેવપ્રમુખાણિ વહૂણિ રાજ-  
સહસ્રસરયકા વાસુદેવપ્રમુખા રાજાન ઇત્યર્થઃ । મદતા ૨ ગન્ટેનોદ્ધોપયન્ત એવ  
વદન્તિ-સુવૃત્ર સ્વલુ ભોઃ ! દ્રૌપદ્યા રાજવરકન્યયા ઇતિ કૃત્વા-ઇત્યુક્ત્યા સ્વયવર-  
મણ્ડપાત્ પ્રતિનિષ્ક્રામન્તિ, નિર્ગચ્છન્તિ, પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય યગ્નેય સ્વમા સ્વમા આવા-  
સાન્તગૌત્રોપાગચ્છન્તિ । તતઃ સહુ ધૃષ્ટદ્યુમ્નઃ કુમારઃ પશ્ચ પાન્ડવાન્ દ્રૌપદીં  
રાજવરકન્યા ચાતુર્વૃંટમશ્વરથ 'દુરુહદઃ' દુરોદયતિ=આરોહયતિ દુરોલ કામ્પિ-

પન્ડવા ચરિયો, તત્તણ તેસિ વાસુદેવપામોક્ષવાણ વહૂણિ રાયસહસ્તાણિ,  
મહ્યા ૨ મહેણ ઉગ્ધોસેમાણા ૨ એવ વયતિ, સુવરિય સ્વલુ ભો ! દોવ  
ઢળ રાયવરકન્નાણ ત્તિ કદ્દુ સયવરમહવાઓ પડિનિક્કલમતિ, પડિ  
નિક્કલમિત્તા જેણેવ સયા ૨ આવાસા તેણેવ ઉવાગચ્છડ ) વહા પદ્ધ  
કર ઉસને ઉન પાચો પાડવોં કો ઉસ પચવર્ણવાલી માલા સે અવેષ્ટિન  
પરિવેષ્ટિન કર દિયા । કરકે ફિર વહ ઇસ પ્રકાર કહને લગી-યે પાંચ  
પાડવ મેંને પતિરૂપ સે વર લિયે હેં । ઇસકે વાદ ઉન વાસુદેવ પ્રમુખ  
હજારો રાજાઓં ને વહે ૨ જોર કે શબ્દો સે એસા કહા ઇસ રાજવર  
કન્યા દ્રૌપદીને વહુત અચ્છે વર વરે એસા કહકર વે ઉસ સ્વયવર મહપ  
સે ગાહિર હો ગયે । ગાહિર આકર ફિર વે જહા અપને ૨ આવાસ સ્થાન  
થે વહા ચલે આયે । ( ઉવાગચ્છિત્તા તત્તણ ધૃષ્ટજ્યુષ્ણે કુમારે પચ પડવે  
દોવડ રાયવરકણ્ણ વાઝગ્ધટ આસરહ દુરુહદઃ, દુરુહિત્તા કપિલ્લપુર  
તેસિ વાસુદેવપામોક્ષવાણ વહૂણિ રાયસહસ્તાણિ, મહ્યા ૨ મહેણ ઉગ્ધોસેમાણા ૨  
એવ વયતિ, સુવરિય સ્વલુ ભો ! દોવડ રાયવરકન્નાણ ૨ ત્તિ વદ્ધુ સયવરમહ  
વાઓ પડિનિક્કલમતિ, પડિનિક્કલમિત્તા જેણેવ સયા ૨ આવાસા તેણેવ ઉવાગચ્છડ )

ત્યા પહેાચીને તેણે તે પાચ પાડવોને પાચ વર્ણવાળી માળાથી અવે  
ષ્ટિત, પરિવેષ્ટિત કરી લીધા ત્યારપછી તેઓને કહેવા લાગી કે હે પાચ  
પાડવો ! મેં તમને પતિ રૂપમાં વરી લીધા છે ત્યારબાદ તે વાસુદેવ પ્રમુખ  
હજારો રાજાઓએ બહુ મોટા સાદથી આ પ્રમાણે કહ્યું કે આ રાજવર કન્યા  
દ્રૌપદીએ બહુ જ સારા વરો પસંદ કર્યા છે આમ કહીને તેઓ સર્વે સ્વયં વર  
મહપમાંથી બહાર નીકળી ગયા બહાર નીકળીને તેઓ ન્યા પોતાના આવાસ  
સ્થાનો હતા ત્યાં જતા રહ્યા

( ઉવાગચ્છિત્તા તત્તણ ધૃષ્ટજ્યુષ્ણે કુમારે પચપડવે દોવડ રાયવરકણ્ણ વાઝ  
ગ્ધટ આસરહ દુરુહદઃ, દુરુહિત્તા કપિલ્લપુર મજ્જ મજ્જે ન જાવ સય મવળ અણ-

त्यपुरस्य मन्त्रमभ्येन यावत् स्वकं भानमनुपविशति, ततः खलु द्रुपदो राजा  
 पञ्च पाण्डवान् द्रौपदीं राजवरकन्यां 'पट्य' पट्य=पट्यकोपरि 'दुरुहेड' दूरो  
 द्यति=भारोदयति, दूरोप श्वेतर्षातः कन्यैः 'मज्जावेड' मज्जयति=स्नपयति  
 अग्निहोमं विवाहरिधिनाऽग्नौ होमं कारयति, पञ्चानां पाण्डवानां द्रौपद्याश्च पाणि  
 ग्रहणं कारयति, अत्र पञ्चानां पाण्डवानामिति सम्बन्धसामान्ये पण्ठी । ततः खलु  
 स द्रुपदो राजा द्रौपद्यां राजवरकन्यायाः इममेतद्रूपं मीतिदानं योतुमिदं ददाति,  
 मज्जं मज्जेण जात्रं सयभक्षणं अणुपविसड्, तण्णं द्रुवणं राया पच पडवे  
 दोवडं रायवरकन्नं पट्यं दुरुहेडं, दुरुहित्तां सेयापीण्हिं कलसेहिं  
 मज्जावेडं, मज्जावित्तां अग्निहोमं कारवेडं, पचण्हं पडवाणं दोवडं य  
 पाणिग्गहणं करावेडं, ) इमके वादं धृष्टद्युम्नकुमार ने उन पाच पाडवो  
 को गव राजवर कन्या द्रौपदी को चारघटो से चुक्त उस अश्वरथ पर  
 बैठाया-बैठाकर कापिलपुर नगर के बीच से होता हुआ वह जहा  
 अपना भवन था वहाँ आया वहाँ आकर वह उसमें उन सब के साथ  
 प्रविष्ट हुआ । इसके बाद द्रुपद राजा ने उन पांचो पांडवों को और  
 राजवर कन्या उस द्रौपदी को एक पट्य पर बैठा दिया-बैठाकर फिर  
 उसने उनका श्वेत पीत कलशों से चादी सोने के घड़ों से-अभिषेक  
 करवाया अभिषेक करवा कर फिर उसने अग्नि होम करवाया-और  
 उसकी साक्षी पूर्वक पाचो-पाडवो के साथ अपनी कन्या द्रौपदी का  
 पाणि ग्रहण संस्कार करवा दिया । ( तण्ण से द्रुवणं राया दोवडणं राय

पविसड्, तण्णं द्रुवणं राया पच पडवे दोवडं रायवरकन्नं पट्यं दुरुहेडं, दुरुहित्तां  
 सेयापीण्हिं कलसेहिं मज्जावेडं मज्जावित्तां अग्निहोमं कारवेडं, पचण्हं पडवाणं  
 दोवडं य पाणिग्गहणं करावेडं )

त्यारपछी धृष्टद्युम्न कुमारि ते पाच पाडवोने अने राजवर कन्या द्रौप  
 दीने आर धटवाणा ते अश्वरथ उपर जेसाडया अने जेसाडीने उ पि थपुर  
 नगरनी पन्थे थछने जया पोतानु लवन छनु त्ना गया त्या जर्जने तेओ  
 सवे तेमा प्रविष्ट थया त्यारपछी उपर राजाते ते पाचे पाडवोने अने राज  
 वर कन्या ते द्रौपदीने ओक पट्य उपर जेसाडी दीया अने जेसाडीने तेहे  
 तेमने सहेड, अने पीणा कणशोथी-ओटले के याही अने सोनाना कणशोथी  
 अलिषेक करावडाव्ये अलिषेक करावीने तेहे अग्निहोम करावराव्ये अने तेनी  
 साक्षीमा पोतानी कन्या <sup>२</sup> <sup>१</sup> छस्तमेणाप तेओनी साथे करावी दीया

( तण्ण से )

तद् यथा-अष्ट हिरण्यकोटीः, यावत्=अष्ट रजतकोटी, अष्ट सुवर्णकोटी, अष्ट  
'पेयणकारीओ' प्रेषणकारिणीः, आज्ञाकारिणीः दासचेटीः-दासपुत्रीः, अन्न च  
विपुल धनरत्नक-यावत् धन-गणिमादिक, कनकम् अघटितस्वर्ण, यावच्छब्देन-  
रत्ननि-कर्कतनादीनि, मणयश्चन्द्रकान्ताद्याः मौक्तिकानि च शङ्खश्च मतीत एव  
शिलाप्रवालानि च विद्रुमाणि रत्तरत्नानि-पद्मरागादीनि तान्येव सद् विद्यमान  
यत् सार=प्रधान स्थापतेयं द्रव्यं तद् ददाति स्म ।

ततः खलु स द्रुपदो राजा तान् वासुदेवप्रमुखान् बहुसहस्रमरयकान् रानः  
विपुलेन अशनपानग्वाद्यस्वाद्येन भोजयति, भोजयित्वा वस्त्रगन्धादिभिर्यावत् सत्का-  
रयति समानयति, सत्कार्यं समान्य प्रतिविसर्जयति ॥ सू० २२ ॥

वरकणयाए टम गयास्व पीईटाण दलयड, त जहा-अट्टहिरण  
कोडीओ जाव अट्टपेसणकारिओ दासचेडीओ, अण्ण च विउल  
धणकणग जाव दलयड, तण्ण से दुवए राया ताइ वासुदेव पामोक्खाणं  
विउलेण असण ४ वत्थगध जाव पडिविसज्जेइ) इसके बाद द्रुपद राजाने  
राजवर कन्या उस द्रौपदी के लिये इतना इस प्रकार प्रीति दान दिया  
आठ हिरण्य कोटि-चादी के बने हुए आठ करोड आभूषण, सुवर्ण के  
बने हुए आठ करोड आभूषण यावत् आज्ञा कारिणी ८ आठ दासियों  
और भी बहुत सा गणिमादिक रूप धन, अघटित सुवर्ण, कर्कतनादि  
रत्न, चन्द्रकान्त आदि मणि, मौक्तिक, शङ्ख, विद्रुम, पद्मरागादि रक्त  
रत्न । यह सब सारभूत द्रव्य उसके लिये प्रदान किया । इसके बाद  
द्रुपदराजा ने उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं को अशन, पान,  
खाद्य एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार एवं वस्त्र गंध आदि से सत्कृत  
सन्मानित कर अपने यहाँ से विदा कर दिया ॥ सू० २२ ॥

दलयड, त जहा अट्ट हिरण्यकोडीओ जाव अट्ट पेसणकारीओ दासचेडीओ,  
अण्ण च विउल धणकणग जाव दलयड, तण्ण से दुवए राया ताइ वासुदेव  
पामोक्खाणं विउलेण अमण ४ वत्थ गध जाव पडिविसज्जेइ )

त्यारपणी द्रुपद राज्ञे राजवर कन्या द्रौपदीने आ प्रभाणे प्रीतिदान  
आभ्यु के आ० हिरण्य-कोटि-चादीना आ० करोड आभूषणो यावत् आज्ञा मा  
रहेनारी आ० दासीओ अने पीण्डु पणु धणु गणिम वगेरे रुप धन, अघ-  
टित सुवर्ण, कर्कतना वगेरे रत्न, चन्द्रकान्त वगेरे मणि, मौक्तिक, शङ्ख,  
विद्रुम, पद्मराग वगेरे रक्त रत्नो आभ्या आ अधु सारभूत धन द्रौपद ने  
आभ्यु त्याग्यणी द्रुपद राज्ञे ते वासुदेव प्रमुख हुन्नरो राज्ञेने अशन,  
पान, आद्य अने स्वाद्य रुप आर नतना आहारो अने वस्त्र, गंध वगेरेथी  
स दूत सन्मानित कर्णीने पौताना नगरथी विदाय कर्था ॥ सूत्र २२ ॥

લ્યપુરસ્ય મધ્યમધ્યેન યાત્ સ્વઃ ભવનમનુપવિશતિ, તતઃ સ્વલુ દ્રુપદો રાજા  
 પન્ન પાન્ડવાન્ દ્રૌપદીં રાજવરકન્યાં 'પટ્ય' પટક=પટકોપરિ 'દુરુહેઃ' દુરો  
 હયતિ=મારોહયતિ, દુરોય 'ચેતર્પાતૈઃ' કન્યૈઃ 'મજ્જાવેહ' મજ્જયતિ=મ્નયતિ  
 અગ્નિહોમ વિગાહરિધિનાઽગ્નીં હોમ કારયતિ, પન્નાના પાન્ડવાના દ્રૌપદાશ્ર પાણિ  
 ગ્રહણ કારયતિ, અત્ર પન્નાના પાન્ડવાનામિતિ સમ્યન્ધસામાન્યે પટ્ટી । તતઃ સ્વલુ  
 સ દ્રુપદો રાજા દ્રાપદા રાજવરકન્યાયાઃ । ઇમેતદ્વૃષ પ્રીતિદાન યૌતુમદાન દત્તાતિ,  
 મજ્જ મજ્જેણ જાત્ર સયમ્ભવણ અણુપવિશદ્, તર્ણાં દુવ્વણ રાયા પચ પઢવે  
 દોવઢ રાયવરકન્ન પટ્ય દુરુહેઃ, દુરુહિત્તા સેયાપીર્ણિ કલસેહિ  
 મજ્જાવેહ, મજ્જાવિત્તા અગ્નિહોમ કારવેહ, પચ્છ પઢવાણ દોવઢણ ય  
 પાણિગ્ગહર્ણ કરાવેહ, ) હસકે પાદ ધૃષ્ટદ્યુમ્નકુમાર ને ઉન પાચ પાઢવો  
 કો ણચ રાજવર કન્યા દ્રૌપદી કો ચારઘટો સે યુક્ત ઉસ અન્વરથ પર  
 બેઠાયા-બેઠાકર કાપિત્થપુર નગર કે ઘીચ સે હોતા હુઆ વહ જહા  
 અપના ભવન યો વહાં આયા વહાં આકર વહ ઉસમેં ઉન સત્ર કે સાથ  
 પ્રવિષ્ટ હુઆ । હસકે વાદ દ્રુપદ રાજા ને ઉન પાચો પાંડવો કો ઓર  
 રાજવર કન્યા ઉસ દ્રૌપદી કો એક પટક પર બેઠા દિયા-બેઠાકર ફિર  
 ઉસને ઉનકા શ્વેત પીત કલશોં સે ચાદી સોને કે ઘઢો સે-અભિષેક  
 કરવાયા અભિષેક કરવા કર ફિર ઉસને અગ્નિ હોમ કરવાયા-ઓર  
 ઉસકી સાક્ષી પૂર્વક પાચો-પાટવો કે સાથ અપની કન્યા દ્રૌપદી કા  
 પાણિ ગ્રહણ સસ્કાર કરવા દિયા । ( તર્ણ સે દુવ્વણ રાયા દોવઢણ રાય

પવિસદ્, તર્ણ દુવ્વણ રાયા પચ પઢવે દોવઢ રાયવરકન્ન પટ્ય દુરુહેઃ, દુરુહિત્તા  
 સેયાપીર્ણિ કલસેહિ મજ્જાવેહ મજ્જાવિત્તા અગ્નિહોમ કારવેહ, પચ્છ પઢવાણ  
 દોવઢણ ય પાણિગ્ગહર્ણ કરાવેહ )

ત્યારપછી ધૃષ્ટદ્યુમ્ન કુમારે તે પાચ પાંડવોને અને રાજવર કન્યા દ્રૌપ  
 દીને ચાર ઘટવાળા તે અન્વરથ ઉપર બેસાડ્યા અને બેસાડીને ડાબે પુર  
 નગરની વચ્ચે થઈને જ્યાં પોતાનું ભવન હતું ત્યાં ગયા ત્યાં જઈને તેઓ  
 સર્વે તેમાં પ્રવિષ્ટ થયા ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ તે પાચે પાંડવોને અને રાજ  
 વર કન્યા તે દ્રૌપદીને એક પટક ઉપર બેસાડી દીધા અને બેસાડીને તેણે  
 તેમનો સફેદ, અને પીળા કળશોથી-એટલે કે ચાદી અને સોનાના કળશોથી  
 અભિષેક કરાવડાવ્યો અભિષેક કરાવીને તેણે અગ્નિહોમ કરાવડાવ્યો અને તેની  
 સાક્ષીમાં પોતાની કન્યા દ્રૌપદીનો હસ્તબેળાપ તેઓની સાથે કરાવી દીધો

( તર્ણ સે દુવ્વણ રાયા દોવઢણ રાયવરકન્યાયાઃ ઇમ



सयाइं२ आवासाइ तेणेव उवा० तहेव जाव विहरंति, तएणं  
से पंडुराया हत्थिणाउरणयरं अणुपविसइ अणुपविसित्ता  
कोडुविय० सदावेइ सहावित्ता एव वयासी-तुब्भेण देवाणु-  
प्पिया । विउल असण४ तहेव जाव उवणेति, तएण ने  
वासुदेवपामोक्खा वहवे राया पहाया कयवलिकम्मा तं  
विउल असणं४ तहेव जाव विहरति, तएणं से पंडुराया  
पच्च पडवे दोवडं च देवि पट्टयं दुरुहेइ दुरुहित्ता सेयपी-  
एहिं कलत्तेहि पहावेति पहावित्ता कल्लाणकारि करेइ करित्ता  
ते वासुदेवपामोक्खे वहवे रायसहस्से विउलेण असण४  
पुप्फन्नत्थेण राद्धारेइ सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएण ताइ  
वासुदेवपामोक्खाइ वहूहि जाव पडिगयाइ ॥ सू० २३ ॥

टीका-‘तएण से’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु पाण्डु राजा तेषां वासुदेव  
प्रमुखाणां बहूनां राजमहत्तानां करतलपरिगृहीतं दशनखं शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं  
कृत्वा एवमवादीत्-एव खलु हे देवानुप्पिया ! इस्तिनापुरे नगरे पञ्चानां पाण्ड-  
वानां द्रौपद्याश्च देव्याः कल्याणकरो भविष्यति तत्-तस्मात् यूयं खलु हे देवानु-  
प्पियाः-मामनुगृह्यत, अकालपरिहीनः=कालविलम्बरहितः-शीघ्रं समयसरतः=आग-

‘तएण से पंडुराया’ इत्यादि ।

टीकार्थ-‘तएण’ इसके बाद (से पंडुराया) उस पांडुराजा ने (तेसिं  
वासुदेव पामोक्खा ण) उन वासुदेव प्रमुख (पट्टण राय० करयल  
एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पियां ! हत्थिणाउरे नयरे पच्चण्ह पडवाण  
दोवडए देवीए कल्लाणकरे भविस्सइ त तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! मम

तएण से पंडुराया इत्यादि—

टीकार्थ-‘तएण’ त्यापणी (से पंडुराया) ते पांडु राजाणे (ते सिं  
वासुदेवपामोक्खाण) ते वासुदेव प्रमुख

(वहूण राय० करयल एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे  
नयरे पच्चण्ह पडवाणं दोवडए, देवीए कल्लाणकरे भविस्सइ त तुब्भेण देवाणु-  
प्पिया ! मम अनुगृह्यमाणा अकालपरिहीणां समयसरतः)

मूलम्—तएण से पड्ड राया तेसि वासुदेवपामोक्खाण बहूणं  
 राय० करयल एव वयासी- एवं खल्ल देवाणुप्पिया । हत्थि-  
 णाउरे नयरे पंचण्ह पंडवाणं दोवइए य देवीए कल्लाणकरे  
 भविस्सइ तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया । मम अणुगिण्हमाणा  
 अकालपरिहीण समोसरह, तएण वासुदेवपामोक्खा पत्तेयर  
 जाव पहारेत्थ गमणाए । तएणं से पंडुराया कोडुवियपुरिसे  
 सदा० २ एव वयासी-गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया । हत्थि-  
 णाउरे पचण्ह पडवाणं पच पासायवडिसए कारेह अब्भु-  
 गयमूसिय वण्णओजावपडिरुवे, तएण ते कोडुवियपुरिसा  
 पडिसुणेति जाव करावेंति, तएण से पंडुए पचहि पडवेहि  
 दोवईए देवीए सद्धिं हयगयसपरिवुडे कपित्तपुराओ पडि-  
 निक्खमइ२ जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए, तएणं से  
 पंडुराया तेसि वासुदेवपामोक्खाणं आगमण जाणित्ता  
 कोडुंवि० सदावेड सदावित्ता एव वयासी-गच्छह ण तुब्भे  
 देवाणुप्पिया । हत्थिणाउरस्स नयरस्स वहिया वासुदेवपा-  
 मुक्खाणं बहूण रायसहस्साण आवासेकारेह अणेगखभसय  
 तहेव जाव पच्चप्पिणत्ति, तएणं ते वासुदेवपामोक्खावहवे  
 रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छइ, तएणं  
 से पंडुराया तेसि वासुदेवपामोक्खाण आगमण जाणित्ता  
 हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयवलि० जहा दुवए जाव जहारिह आवासे  
 दलयइ, तएण ते वासुदेव पा० बहवे . . . जेणेव

मेघकुमार-प्रासादवद् वर्णन विज्ञेयम् यावद् अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टान् प्रति रूपान्=शोभासौन्दर्यसम्पन्नान् । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः-‘तथाऽस्तु’ इत्युक्त्वा प्रतिशृण्वन्ति=आज्ञां स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य हस्तिनापुरं गत्वा पञ्च प्रासादावतसकान् यावत् कारयन्ति । ततस्तदनन्तरं पाण्डुराजा पञ्चभिः पाण्डवै द्रौपद्या देव्या च सार्धं हयगजरथपदातिसपरिवृतः काम्पिल्यपुरात् प्रतिनिष्क्रामति-प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव हस्तिनापुरं नगरं तत्रैवोपागतः ।

ततः खलु स पाण्डुराजा तेषां वासुदेवममुखाणामागमनं ज्ञात्वा कौटुम्बिक-पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुग्रियाः ।

बहुत ऊँचे हों । इन प्रासादों का वर्णन प्रथम अध्ययन में उक्त मेघ कुमार के प्रासादों जैसा जानना चाहिये । यावत् ये प्रासाद अनेक स्तम्भशत से युक्त हों-शोभा सौन्दर्य से सपन्न हों । (तएण ते कौटुम्बिक पुरिसा पडिसुणेति, जा करावेति) राजा की इस प्रकार की आज्ञा को उन कौटुम्बिक पुरुषों ने मान लिया और हस्तिनापुर जाकर उन्होंने पांच प्रासाद कथित रूपसे बनवा दिये । (तएण से पडुण पचहिं पडवेहि दोवइए देवीए सद्धि हय गय सपरिवुडे कपिलपुराओ पडिनिक्खमइ २ जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए) इसके बाद वे पाण्डुराजा पाण्डवों और द्रौपदी देवी को साथ लेकर हय, गज, आदि चतुरगिणी सेना के साथ २ काम्पिल्यपुर नगर से चल दिये-चलकर जहाँ हस्तिनापुर नगर था-वहाँ आये (तएण से पडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाण आगमणं

पाये पाडवो भाटे पाय उत्तम भडेल जनावडावो भडेल जिया डोवा जेधये आ भडेलोनु वर्णन पडेला अध्ययनमा वर्णववाभा आवेला मेघ कुमारेना भडेलो जेवु जाली देवु जेधये यावत् आ जधा भडेलो धरु से उडा थालला ओथी युक्त तेमज शोभा तथा सौंदर्य सपन्न डोवा जेधये (तएण ते कौटुम्बिकपुरिसा पडिसुणेति जाव करावेति) आ जतनी राजनी आज्ञाने कौटुम्बिक पुरुषोअे स्वीकारी लीधी अने हस्तिनापुर जठने तेओअे डडेवा मुज्जज पाय भडेलो तैयार करावी दीधा

(तएण से पडुण पचहिं पडवेहिं दोवइए देवीए सद्धि हयगयसपरिवुडे कपिलपुराओ पडिनिक्खमइ २ जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए)

त्यारपछी ते पाडु राज पाये पाडवो अने द्रौपदी देवीने लधने साथे घोडा, हाथी वगैरेनी चतुरगिणी सेनानी साथे काम्पिल्यपुर नगरनी जडार नीकज्या अने नीकजीने ज्या हस्तिनापुर नगर डेतुं त्या पडेअ्या

(तएण से पडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाण आगमणं जाणित्ता कौटुम्बिक०

મન કુસ્ત । તતઃ સ્વલુ વાસુદેવપ્રમુખા પ્રત્યેક ૨ યાવત્ પ્રાધારયદ્ ગમનાય=  
હસ્તિનાપુર નગર ગતુ મટતા ઇત્યર્થઃ ।

તતઃ સ્વલુ સ પાન્ડનામકો રાજા કૌટુમ્બિકપુરુષાન્ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા  
એવમવાદીત્-ગચ્છત સ્વલુ યુય હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! હસ્તિનાપુરે પશ્ચાન્નાં પાન્ડવાન્નાં  
પશ્ચ ' પાસાયવડિસણ ' પ્રાસાદાવતંસકાન્ વારયત । કિં ભૂતાનિત્યાહ-' અબ્ધુ-  
ગાયમુસિય ' અબ્યુદ્ભવોચ્છિન્નાન્-અત્યુન્ચાનિત્યર્થઃ । વર્ણક-પ્રથમાધ્યયનોક્ત-

અણુગિહ્માણા અકાલપરિહીણ સમોસરહ ) હજારોં રાજાઓં સે અપને  
દોનોં હાથોં કી અજલિ કરકે ઓર ઉસે શિર પર રમ્પકર કે ઘડી નમ્રતા  
કે સાથ નમસ્કોર કરકે-ઇસ પ્રકાર કહા હે દેવાનુપ્રિયો ! હસ્તિનાપુર  
નગર મેં પાચ પાડવોં ઓર દ્રૌપદી દેવી કા કલ્યાણકાંગી ઉત્સવ હોગા  
હસલિયે હે દેવાનુપ્રિયો ! આપ સથ મેરે ઉપર અનુગ્રહ કરકે શીઘ્ર સે  
શીઘ્ર પધારેં । ( તણ વાસુદેવપામોક્સા પત્તેય ૨ જાવ પહારેત્થ ગમ  
ણ ) હમ કે વાદ કે વાસુદેવ પ્રમુખ પ્રત્યેક જન વર્હા હાસ્તિના પુર  
જાને કે લિયે પ્રસ્થિત હો ગયે । ( તણ સે પહુરાયા કૌટુમ્બિકપુરિસ  
સદાવેદ્ ૨ એવ વયાસી-ગચ્છહ નતુન્મે દેવાણુપ્પિયા હત્થિણાઉરે પચ્છહ  
પહવાણ પચ પાસાયવડિસણ કારેહ, અબ્ધુગાયમુસિય વણઓ જાવ પડિ  
રુવે ) હતને મેં પાહુરાજા ને કૌટુમ્બિકપુરુષોં કો બુલાયા ઓર બુલાકર  
ઉનસે એસા કહા-હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ હસ્તિના પુર જાઓ વહા  
જાકર પાચોં પાડવોં કે લિયે પાંચ શ્રેષ્ઠ પ્રાસાદ બનવાઓ । યે પ્રાસાદ

હજારો રાજાઓને પોતાના બંને હાથોની અજલિ બનાવીને અને તેને  
મસ્તકે મૂકીને ખૂબજ નમ્રપણે નમસ્કાર કર્યા અને આ પ્રમાણે વિનંતી કરી  
કે હે દેવાનુપ્રિયો ! હસ્તિનાપુર નગરમાં પાંચે પાડવો તેમજ દ્રૌપદી દેવીને  
કલ્યાણકારી ઉત્સવ થશે એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સૌ મારા ઉપર દુપા  
કરીને સત્વરે ત્યાં પધારો । ( તણ વાસુદેવપામોક્સા પત્તેય ૨ જાવ પહારેત્થ  
ગમણ ) ત્યારપછી તે વાસુદેવ પ્રમુખ દરેક રાજા ત્યાંથી હસ્તિનાપુર બધા  
ઉપડી ગયા

તણ સે પહુરાયા કૌટુમ્બિકપુરિસ સદાવેદ્ ૨ એવ વયાસી-ગચ્છહ ન  
તુન્મે દેવાણુપ્પિયા હત્થિણાઉરે પચ્છહ પહવાણ પચ પાસાયવડિસણ કારેહ,  
અબ્ધુગાયમુસિય વણઓ જાવ પડિરુવે )

તે વખતે પાહુ રાજાએ કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવ્યાને  
તેઓને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે હસ્તિનાપુર જાઓ - - - જઈને

उपागत्य तथैव यावद् विहरन्ति । ततः खलु स पाण्डु राजा हस्तिनापुर नगर-  
मनुपविशति, अनुपविश्य कौटुम्बिकपुरुषान् शङ्कयति, शङ्कयित्वा एवमवादीत-  
युय खलु हे देवानुमियाः । निपुणम् अग्नपानपानखाद्यस्वाग्र, उपस्कारयत,  
उपस्कार्य यज्ञेन वासुदेवप्रमुखाम्स्तर्जोपनयत । तथैव यावद् उपनयन्ति, ततस्ते  
कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव निपुलमगनादि चतुर्विधाऽऽहारमुपस्कारयन्ति उपस्कार्य  
यावद् वासुदेवादीनामन्तिके-उपनयन्ति=उपस्थापयन्ति ।

नगर था चहा आगये । ( तएण से पडुराया तेसि वासुदेवपामोक्त्वा  
ण आगमण जाणित्ता हट्टतुट्टे ण्हाण कयवलिकम्मे जहा दुवण जाव जहा  
रिह आवासे दलयति, तएण ते वासुदेव पा० बहवे रायसहस्मा जेणेव  
सयाइ २ आयासाइ तेणेव उवाग० तहेव जाव विहरति ) वासुदेव  
प्रमुख उन हजारों राजाओं का आगमन जानकर पाडुराजाने हर्षित एव  
संतुष्ट होकर स्नान किया वायसादि पक्षियों के लिये अन्नादि का देने  
रूप वलि कर्म किया- जिस प्रकार इपद राजाने यथा योग्य आवास-  
स्थान इन्हीं के लिये दिये थे उसी तरह पाडुराजा ने भी उन्हें जो जिस  
के योग्य स्थान था वह आवासस्थान दिया । पश्चात् वे वासुदेव प्रमुख  
हजारों राजा जहा अपने २ ठहरने के लिये आवासस्थान थे वहा गये  
वहा जाकर वे उसी तरह से ठहर गये । ( तएण से पडुराया हत्थिणा  
उर नयर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता, कोडु विय० सदावेइ, सदावित्ता  
एव वयासी-तुब्भेण देवाणुप्पिया । विउल असण ४ तहेव जाव उव

( तएण से पडुराया तेसि वासुदेवपामोक्त्वा आगमण जाणित्ता हट्टतुट्टे  
ण्हाण कयवलिकम्मे जहा दुवण जाव जहारिह आवासे दलयति, तएण ते वासुदेव  
पा० बहवे रायसहस्मा जेणेव सयाइ २ आयासाइ तेणेव उवाग० तहेव  
जाव विहरति )

वासुदेव प्रमुख ते इन्द्रो राज्ञोऽनु आगमन आलणीने इर्पिन तेमज्ज  
संतुष्ट वधने पाडु राज्ञो स्नानं कथुं कागडा वगेरे पक्षीओना भाटे अन्न  
वगेरेना लाग अपीने वलिकर्मं कथुं इपद गन्तव्ये जेम ते राज्ञोने यथा  
योग्य आवास स्थाने रडेवा भाटे आप्या इत्ता तेमज्ज पाडु राज्ञो पणु  
तेओ अधाने उचित आवासे आप्या त्थारपणी तेओ वासुदेव प्रमुख इन्द्रो  
राज्ञो न्था पोतपोताना रोकावाना आवानो इत्ता त्था गया, त्था पडोथीने  
तेओ त्था रोकाई गया

( तएण से पाडुराया हत्थिणाउर' नयर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता,  
कोडुविय० सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-तुब्भेण देवाणुप्पिया ! विउल असण



હસ્તિનાપુરસ્ય નગરસ્ય ચદ્વિઃ પ્રદેશે વાસુદેવપ્રમુખાણાં વહ્નના રાજમાસ્રાણામાશા  
સાન્ કારયત, કોટ્યાનાસાન્ ૬ યાદ-‘ અણેગમ્ભ ’ ઇત્યાદિ । અનેકસ્તમ્પ  
શતમનિરિપ્તાન્ , તથૈવ-યથાડસાસાન્ કારયિતુ પાણ્ડના કથિત, તથૈવ કારયિત્વા  
કૌટુમ્બિકપુરુષા યાત્ પ્રત્યર્પયન્તિ=રાજે નિવેદયન્તિ સ્મ । નત્ વયુ વાસુદેવ  
પ્રમુખા વહુ સહસ્તમગ્નયા રાજાનો યજીય સ્વકાઃ સ્વકા આયમાસ્તગ્રીવોપાગચ્છન્તિ,

જાણિત્તા કૌટુમ્બિક૦ મહાવેદ સદાવિત્તા ૫૪ વયાસી-ગચ્છહ ૫ તુમ્હે  
દેવાણુપિયા ! રત્થિણાઊરસ્સ નયરસ્સ વહિયા વાસુદેવપામોક્ષાણ  
વહ્નના રાયસહસ્તમાણ આવાસે કરહ ) વત્તાં આકર ડન પાંડુગજા ને ડન  
વાસુદેવ પ્રમુખ હજારોં રાજાઓં કા આગમન જાનકર કૌટુમ્બિક પુરુષોં  
કો ઘુલાયા ઓર ઘુલાકર ડનસે હમ પ્રકાર કતા-દે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ  
લોગ જાઓ ઓર હસ્તિનાપુર નગર કે વાહિર વાસુદેવ પ્રમુખ હજારોં  
રાજાઓં કો ઠહરને કે લિયે આવાસોં કો વનવાઓ ( અણેગમ્ભસય  
તહેવ જાવ પચ્ચપ્પિણતિ, તણ ને વાસુદેવપામોક્ષા વહવે રાયસહસ્ત  
જેણેવ હત્થિણાઊરે તેણેવ ડવાગચ્છન્તિ ) યે આવાસ અનેક સેકડોંસ્તમોં  
સે યુક્ત હો । હસ પ્રકાર જૈસે આવાસોં કો વનવાને કે લિયે પાંડુ રાજા  
ને ડન કૌટુમ્બિક પુરુષોં સે કતા યા-વૈસે હી આવાસ ડન કૌટુમ્બિક  
પુરુષોં ને વનવાદિયે ઓર વનવાકર પીટે ડસકી ચવર મી રાજા કો  
કરદી । હમકે યાદ વે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારોં રાજા જહા હસ્તિનાપુર

સદાવેદ, સદાવિત્તા ૫૪ વયાસી-ગચ્છહ ૫ તુમ્હે દેવાણુપિયા ! હત્થિણાઊરસ્સ  
નયરસ્સ વહિયા વાસુદેવપામોક્ષાણ વહ્નના રાયસહસ્તમાણ આવાસે કરેહ )

ત્યા આવીને તે પાંડુ રાજાએ તે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારોં રાજાઓંને  
આવી ગયેલા જાણીને પોતાના કૌટુમ્બિક પુરુષોંને બોલાવ્યા અને બોલાવીને  
તેમને આ પ્રમાણે ડહુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોડો જાઓ અને હસ્તિનાપુર  
નગરની બહાર વાસુદેવ પ્રમુખ હજારોં રાજાઓંને રહવા માટે આવાસો બનાવો

( અણેગમ્ભસય૦ તહેવ જાવ પચ્ચપ્પિણતિ, તણ ને વાસુદેવપામોક્ષા  
વહવે રાયસહસ્તમા જેણેવ હત્થિણાઊરે તેણેવ ડવાગચ્છન્તિ )

આ બધા આવાસો સેકડો સ્તલોથી યુક્ત હોવા જોઈએ આ રીતે પાંડુ  
રાજાએ જે જાતના આવાસો બનાવડાવવાનો હુકમ કર્યો હતો તે કૌટુમ્બિક  
પુરુષોંએ તે જ જાતના આવાસો બનાવડાવી દીધા અને બનાવડાવીને કામ પુર  
થઈ જવાની રાત્રીને બંધર આવી ત્યારપછી તે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારોં રાજાઓં  
ત્યા હસ્તિનાપુર નગર હતું ત્યા આવી ગયા

स्नपयित्वा ' कल्याणकारि ' कल्याणकारि-शुभकारकं कर्म कारयति, कारयित्वा तान् वासुदेवप्रमुखान् बहुसहस्रसंख्यकान् राज्ञो विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन भोजयति, भोजयित्वा पुष्पवस्त्रादिभिः सत्कारयति, समानयति, सत्कार्यं समान्य यावत् प्रतिविसर्जयति । ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसंख्यका राजानो यावत् प्रतिगताः ॥ सू० २३ ॥

मूलम्-तएण ते पच पडवा दोवईए देवीए सद्धि कल्ला-  
कल्लिं वारवारेण ओरालाइ भोगभोगाइं जाव विहरति, तएण  
से पडू राया अन्नया कयाइं पचहि पडवेहि कोंतीए देवीए

को और द्रौपदी देवी को एक पट्टक पर बैठाया-बैठाकर उन का श्वेत पीत कलशों से चादी और सोने के घड़ों से स्नान करवाया स्नान कर-  
वाकर फिर उसने उनका शुभकारक कर्म करवाया । ( करित्ता ते वासु-  
देव पामोक्खे वहवे रायसहस्से विउलेण असण ४ पुप्फवत्थेण सक्कारेइ  
सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएण ताइ वासुदेवपामोक्खाइ बहूहि  
जाव पडिगयाइ ) शुभकारक कर्म करवाकर बाद में उन वासुदेव प्रमुख  
हजारों राजाओं का उस पाटुगज ने विपुल अशन पान आदिरूप  
चतुर्विध आहार से एवं पुष्प वस्त्रादि से खूब सत्कार किया सम्मान  
किया । यावत् फिर उन्हें अपने यहासे अच्छी तरह से निदा कर दिया ।  
इसके बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा जहा २ से जो २ आये थे  
वहा २ चले गये ॥ सू० २३ ॥

पाये पाडवे अने द्रौपदी देवीने ओइ पट्टक डिये जेसाउथा अने जेसाडीने  
सद्धे तेभज पीणा उणशेथी ओटले डे थादी अने सोनाना उणशेथी तेभने  
स्नान उणव्यु स्नान कराव्या जाइ तेभजे तेभनी पासेथी शुल कर्मा करावडाव्या

( करित्ता ते वासुदेवपामोक्खे वहवे रायसहस्से विउलेण असण पुप्फवत्थेण  
सक्कारेइ, सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ तएण ताइ वासुदेवपामोक्खाइ बहूहि  
जाव पडिगयाइ )

शुल कर्मा कराव्या जाइ ते वासुदेव प्रमुख उणरे राजाओने ते पाडु  
राजाओ विपुल अशन-पान वगेरे इप चतुर्विध आडाव्या तेभज पुष्प वस्त्र  
वगेरेथीभूण न सत्कार कर्मा अने सम्मान कर्मा यावत् तयारपछी तेओने त्याथी  
सारी रीते निदाय कर्मा वासुदेव प्रमुख उणरे राजाओ पण न्याथा आव्या  
उता त्या जता रक्षा ॥ सूत्र २३ ॥

તત સ્વલ્પ તે વાસુદેવપ્રમુખા વદ્યો રાજાનઃ સ્નાતાઃ કૃતચલિકર્માણઃ =  
કાકાદિર્જીવેભ્યઃ કૃતાન્નાદિસપ્તિભાગાઃ, તદ્ વિપુલમ્ અશન પાન ગાય સાય  
તથૈવ-આસ્યાદયન્તો વિશ્વાદયન્ત પરિમુક્તાના ગાયદ્ વિહરન્તિ=આસતેસ્મ ।  
તતસ્તદનન્તર મ પાણ્ડરાના તાન્ પચ્ચ પાણ્ડયાન્ દ્રીપદી ચ દેવી 'પટ્ટય' પટ્ટક=  
પટ્ટકોપરિ 'દુરુહેદ' દુરોદયન્તિ=આરોદયતિ । આરોગ્ય એતવીતૈઃ વલગ્નૈઃ સ્નપયતિ,

ળેતિ, તળ્લ તે વાસુદેવપામોક્ત્વા વદ્યે રાયા પ્હાયા કયચલિકર્મા ત  
વિડલ અસળ ૪ તહેવ જાવ વિહરતિ-તળ્લ સે પડુરાયા પચપડવે દોવદ  
ચ દોર્વિ પટ્ટય દુરુહેદ, દુરુહિત્તા સેયપીર્ણિ પ્હાર્વેતિ, પ્હાવિસાં કલ્લાળ  
કારિ કરેદ ) ઇસ કે વાદ પાડુરાજા ને હસ્તિનાપુર નગર મેં પ્રવેશ ક્રિયા  
પ્રવેશ કર કૌટુમ્બિક પુરુષોં કો વુલાયા ઘુલાકર ઉનસે તેસા કરા હે  
દેવાનુપ્રિયો । તુમ લોગ વિપુલ માત્રામેં અશનાદિ રૂપ ચતુર્વિધ આહાર  
ચનવાઓ ચનવાકર ફિર ઉસે જહા વાસુદેવ પ્રમુખ રાજા ઠહરે હુળ હે  
વહા લેજાઓ । હસ પ્રકાર કી અપને રાજાકી આજ્ઞાનુમાર ઉન્હોને વૈસા  
હી ક્રિયા-ચતુર્વિધ આહાર ચનવાયા ઓર ફિર ઉસે વાસુદેવ આદિ  
રાજાઓ કે પાસ પહુંચા દિયા । આહાર કે પહુંચને પર ઉન વાસુદેવ  
પ્રમુખ રાજાઓં ને સ્નાન ક્રિયા ચલિકર્મ ક્રિયા-કાકા આદિ જીવોં કે  
લિયે કૂન અન્નમેં સે વિભાગ દેનેરૂપ ક્રિયાકી-વાદમેં ઉન્હોં ને ઉસ ચતુ  
ર્વિધ આહાર કો ક્રિયા । ઇસકે પશ્ચાત્ પાડુરાજા ને ઉન પાચોં પાડવોં

૪ તહેવ જાવ ઉવળેતિ, તળ્લ તે વાસુદેવપામોક્ત્વા વદ્યે રાયા પ્હાયા કયચલિ  
કર્મા ત વિડલ અસળ ૪ તહેવ જાવ વિહરતિ-તળ્લ સે પડુરાયા પચ પડવે દોવદ  
ચ દોર્વિ પટ્ટય દુરુહેદ, દુરુહિત્તા સેયપીર્ણિ કલસેર્ણિ પ્હાર્વેતિ પ્હાવિત્તા  
કલ્લાળકારિ કરેદ )

ત્યારપછી પાડુરાજા હસ્તિનાપુર નગરમા પ્રવિષ્ટ થયા પ્રવિષ્ટ થઈને  
તેઓએ કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યું  
હે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો વિપુલ માત્રામા અશન વગેરે રૂપ ચાર જાતનો  
આહાર ખનાવડાવો ખનાવડાવીને તમે તે આહારને જ્યાં વાસુદેવ પ્રમુખ  
રાજાઓ રોકાયા છે ત્યાં લઈ જાઓ, આ રીતે પોતાના રાજાની આજ્ઞા સાલ  
ખીને તે લોકોએ તે પ્રમાણે જ કયું તેઓએ ચાર જાતના આહારો ખના  
વડાવ્યા અને ત્યારપછી તે આહારોને વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓની પાસે પહોં  
ચાડી દીધા આહાર પહોંચાડી દીધા બાદ તે વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓએ સ્નાન  
કયું અને કાગડા વગેરે પક્ષીઓને અન્ન લાગ અર્પીને બલિકર્મ કયું ત્યાર  
પછી તેઓએ તે ચાર જાતના આહારને જમ્યા ત્યારબાદ રાજાઓ તે

तो आयाहिणपयाहिणं करेइ करित्ता वदइ णमसइ महारिहेण  
आसणेणं उवणिमतेइ, तएण से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए  
दम्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पडुरायं  
रज्जे जाव अतेउरेय कुसलोदतं पुच्छइ, तएण से पंडूराया कौंती-  
देवी पच य पडवा कच्छुल्लणारय आढति जाव पज्जुवासंति,  
तएणं सा दोवई कच्छुल्लनारय असजय अविरय अपडिहयप-  
च्चक्खायपावकम्मे त्तिकट्टु नो आढाइ नो परिचाणइ नो अब्भु-  
ट्टेइ नो पज्जुवासइ ॥ सू० २४ ॥

टीका—‘ तएण ते ’ इत्यादि । ततस्तन्तदनन्तर खलु ते पञ्चपाण्डवा  
द्रौपद्या देव्या सार्धं ‘ कल्लाकल्लि ’ कल्याकल्ये प्रतिदिनम् वारवारेण उदारान्  
भोगभोगान् यावद् भुञ्जाना विहरन्ति । तत खलु स पण्डु राजाऽन्यदा कदाचित्  
पञ्चभिः पाण्डवैः कुन्त्या देव्या द्रौपद्या देव्या च सार्धं ‘ अतो अतेउरपरियाल ’

‘ तएण ते पच पडवा ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (ते पच पडवा) वे पाँचों पांडव (दोवईए  
देवीए) द्रौपदी देवी के साथ—(कल्लाकल्लि वारवारेण ओरालाड भोग  
भोगाड जाव विहरति—तएण से पडूराया अन्नया कयाई पचई पडवेई  
कौंतीए देवीए दोवईए देवीए य सद्धि अतेउरपरियालसद्धि सपरिवुडे  
सीहासणवरगए यावि विहरइ) प्रतिदिन घारी गारी से उदारकाम  
भोगों को भोगने लगे एक दिन की बात है—कि पांडु राजा किसी एक  
समय पाँचों पांडवों एवं अपनी पत्नी कुन्ती देवी और पुत्रवधू द्रौपदी

टीकार्थ—“ तएण ते पच पडवा इत्यादि—

टीकार्थ—( तएण ) त्थाप्य ग्री ( ते पच पडवा ) ते पाथ पाडवे। (दोवईए  
देवीए ) द्रौपदी देवीनी साथे

( कल्लाकल्लि वारवारेण ओरालाड भोगभोगाड जाव विहरति—तएण  
से पडूराया अन्नया कयाई पचई पडवेई कौंतीए देवीए दोवईए देवीए य  
सद्धि अतेउरपरियालसद्धि सपरिवुडे सीहासणवरगए यावि विहरइ )

हरनैः नानाश्रुती उदार भोग भोगनवा लाग्या, ओक दिनसनी बात

दोवइए देवीए य सद्धि अंतो अंतेउरपरियालसद्धि सपरिवुडे  
 सीहासणवरगए यावि विहरइ, इम च ण कच्छुल्लणारए दस  
 णेण अइभइए विणीए अतो२ य कल्लसहियाए मज्झन्थोवत्थिए  
 य अल्लीणसोमपियदसणे सुम्भवे अमइलसगलपरिहिए काल  
 मियचम्मउत्तरासगरट्ठयवच्छे दण्डकमण्डलुहत्थे जडामउडदि-  
 त्तसिरए जल्लोवइयगणेत्तियमुंजमेहलवागलघरे हत्थकयकच्छभीए  
 पियगवव्वे धरणिगोयरप्पहाणे सुवरणावरणिओवयणिउप्पयणि  
 लेसणीसु य सकामणिअभिओगपणत्ति गमणीथभणीसु य  
 वहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे इट्ठे रामस्स य वेस  
 वरस य पज्जुन्नपईवसवअनिरुद्धणिसट्ठ—उम्सुयसारणगयसुमुह  
 दुम्सुयहातीण जायवाणं अद्धुट्ठाण कुमारकोडीण हिययदइए  
 सथवए कलहजुद्धकोलाहलप्पिए भडणाभिलासी वहुसु य सम  
 रसयसपराएसु दसणारए समतओ कलहसदक्खण अणुगवेस  
 माणे असमाहिकरे दसारवरवीरपुरिसतिलोक्कवलवगाणआम  
 तेऊण त भगवई पक्कमणिं गगणगमणदच्छ उप्पइओ गगणमभि  
 लघयतो गामागरनगरनिगमखेडकव्वडमडवदोणमुहपट्टणासम  
 सवाहमहस्समडिय थिमियमेइणीतल वसुह ओलोइतो रम्म हत्थि-  
 णाउर उवागए पडुरायभवणपि अइवेगेण समोवइए, तएणं से  
 पडुराया कच्छुल्लनारय एज्जमाण पासइ पासित्ता पव्वहि पड-  
 वेहि कुतीए य देवीए सद्धि आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता  
 कच्छुल्लनारय सत्तइपयाइं पच्चुग्गच्छइ • ।



रइयवच्छे' कालमृगचर्मोत्तरासगरचितवक्षाः-कृष्णमृगचर्मोत्तरासङ्गेन रचित शोभित  
वक्षो यस्य स तथा, कृष्णमृगचर्मोत्तरीपवस्त्रधारकः । तथा-'दण्डकमण्डलुहस्त्ये'  
दण्डकमण्डलुहस्तः-'जडामण्डदित्तसिरए' जटामुकुटदीप्तशिरः, जण्णोवइयगणे-  
त्तियमुजमेहलावागलधरे' यज्ञोपवीतगणेत्रिकामुञ्जमेखलावलकलधरः-तत्र यज्ञो-  
पवीत यज्ञसूत्र गणेत्रिका-रुद्राक्षकृत कलाचिकाभरण, मुञ्जमेखला-मुञ्जमय कटि  
बन्धनसूत्र वल्कल वृक्षत्वक्, तेषां धारकः स्कन्धोपरियज्ञसूत्रधारी, करमूले धृत  
रुद्राक्षमालः, मुञ्जमयकटिसूत्रधारी, शरीरे परिधृत वल्कल इत्यर्थः । 'हत्थकयकच्छ  
भीए' हस्तकृतकच्छपिकः-हस्ते कृता कच्छपिका-वीणा येन स तथा, 'पियग-  
धन्वे' पियगन्धर्वः-गानप्रियः, 'धरणिगोयरप्पहाणे' धरणिगोचरप्रधान-  
धरणिगोचराणा-भूमिचारिणा जनाना मध्ये प्रधानस्तस्या काशेऽपि विहरणशीलत्वात्

चम्मउत्तरासगरइयवच्छे दण्डकमण्डलुहस्त्ये, जडामण्डदित्तसिरए, जन्नो  
वइयगणेत्तिय मुजमेहलवागलधरे, हत्थकयकच्छभीए, पियगंधन्वे, धर-  
णिगोयरप्पहाणे, सवरणावरणिओवयणिउप्पयणी लेसणीसुयसकामणि  
अभिओगपणत्ति गमणीयभणीसु य बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु  
विस्सुयजसे ) इनका वक्षस्थल काले मृग के चर्म रूप उत्तरासग से  
सुशोभित था । दण्ड और कमण्डलु इनके हाथों में था । जटारूपी मुकुट  
से इनका मस्तक दीप्त हो रहा था । यज्ञसूत्र-जनेऊ, गणेत्रिका कलाई  
का आभरण रूप रुद्राक्ष की माला, मुञ्जमेखला-मुज का बना हुआ  
कटि बन्धन सूत्र, और वृक्ष की छाल इन्होंने धारण कर रखी थी ।  
हाथमें कच्छपिका-वीणा ले रखी थी । गान इन्हें बहुत प्रिय था । भूमि  
गोचरियों के बीच में ये प्रधान थे-क्यों कि ये आकाश में भी विहार

( कालमियचम्मउत्तरासगरइयवच्छे दण्डकमण्डलुहस्त्ये जडामण्डदित्तसिरए,  
जन्नोवइय गणेत्तियमुजमेहलवागलधरे, हत्थकयकच्छभीए पियगंधन्वे, धरणि-  
गोयरप्पहाणे, सवरणावरणिओवयणिउप्पयणिलेसणीसु य सकामणि अभि-  
ओगपणत्ति गमणीयभणीसुय बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे )

तेमनु वक्षस्थल काणा हरणुना चर्मइय उत्तरासगथा शोभतु उतु  
दण्ड अने कमण्डल तेमना हाथोमा उता जटा इपी मुकुटथी तेमनु मस्तक  
प्रकाशित थई रह्यु उतु यज्ञ सूत्र-जनेऊ, गणेत्रिका-काडामा पडेरवानी आल  
रह्यु इय रुद्राक्षनी माला, मुञ्ज-मेखला-मुञ्जनु जनेतु डेडमा पडोवानु जधन  
सूत्र अने वृक्षकनी छाल तेओओ धारण करेली उता हाथमा तेओओ कच्छ  
पिका-वीणा धारण करेली उती संगीत तेमने जूमज गमतु उतु भूमि  
गोचरीओओ तेओओ प्रधान उता केमके तेओओ आकाशमा विहरण करता

અન્તઃ=અન્તઃપુરસ્ય પ્રાસાદમખ્યે અન્તઃપુરપરિચારેણ 'પરિચાલ' ઇતિ લુપ્તવૃત્તી  
 યાન્ત સાધં સપરિવૃત્તઃ સિંહાસનરમતશ્ચાપિ ચિદ્રતિ । 'ઇમ ચ' અસ્મિન્ સમયે  
 સ્વલુ 'કચ્છુલ્લનારણ' કચ્છુલ્લનામ્નામસિદ્ધો નારદઃ દર્શનૈન 'અહમદણ'  
 અતિભદ્રકઃ=મદ્રદર્શનઃ 'વિણીણ' વિનીતઃ=નમ્રો યાદ્યત 'અતો ય' અન્તઃ-  
 કલુપદયઃ, 'મજ્જત્યોવત્થિય ય' માધ્યસ્થયોપસ્થિત =યાદ્યતો મધ્યસ્થભાવ પ્રાપ્તઃ  
 'અલ્લીણસોમપિયદસણે' આત્મીનમૌમ્યમિયદર્શનઃ આલીનાનામાશ્રિતાના સૌમ્યમ્  
 =આહાદકં, મિય = પ્રીતિચારક દર્શન યસ્ય મ તથા, સુરુપઃ - સુન્દરાકૃતિક,  
 તથા-'અમહલસગલપરિહિણ' અમલિનસફટપરિહિત.=અમલિન સ્વલમ્-અસ્વ  
 ણ્ડમ્ પરિહિત-ચલ્કલસ્વરૂપ પરિધાન યસ્ય સ તથા, 'કાલમિયચમ્મઉત્તરાસગ

કે સાથ અન્તઃપુર કે પ્રાસાદ કે ખીતર અન્ત પુરપરિચાર કે સાથ  
 સિંહાસન પર વૈઠે છુન થે-કિ ( ઇમચ ણ ) ઇસી સમય ( કચ્છુલ્લનારણ  
 પહુરાયભવણસિ અહવેગેણ સમોવહણ દસણે ણ અહમદણ, વિણીણ,  
 અતોય કલુસહિયણ મજ્જત્યોવત્થિય ય, અલ્લીણસોમપિયદસણે સુરુવે  
 અમહલસગલપરિહિણ ) પાહુરાજા કે ભવન મેં કચ્છુલ્લનામ સે પ્રસિદ્ધ  
 નારદ ગગન-આકાશ-માર્ગ સે વહે વેગસે ઉત્તર કર આયે । નારદ દેખને  
 મેં અતિ ભદ્ર થે । ઉપર સે વહે વિનીત થે । પરન્તુ ખીતર મેં इनका  
 હૃદય બહુત અધિક કલુપિત થા । કેવલ ઉપર સે યે માધ્યસ્થ ભાવ  
 સપન્ન થે । અપને આશ્રિત વ્યક્તિયોં કો इनका દર્શન આહાદક એવ  
 પ્રીતિ કારક હોતા યા । આકૃતિ उनकी વહી સુન્દર થી । इनका ચલ્કલ  
 રૂપ પરિધાન અમલિન-સોફ સ્વચ્છ ઔર સ્વણ્ડ રહિત થા । ( કાલમિય

છે કે તે પાહુ રાજા કોઈ એક વખતે પાચે પાડવો, પોતાની પત્ની કુતી દેવી  
 અને પુત્ર વધુ દ્રૌપદીની સાથે રણુવાસના મહેલની અદર પોતાના પરિવારની  
 સાથે સિંહાસન ઉપર બેઠા હતા ( ઇમ ચ ણ ) તે વખતે

( કચ્છુલ્લનારણ પહુરાયભવણસિ અહવેગેણ, સમોવહણ દસણે ણ અહમદણ  
 વિણીણ અતોય કલુસહિયણ મજ્જત્યોવત્થિય ય, અલ્લીણસોમપિયદસણે સુરુવે  
 અમહલસગલપરિહિણ )

પાહુ રાજાના ભવનમા કચ્છુલ્લ નામથી પકાયેલા નારદ ગગન-આકાશ  
 માર્ગથી બહુ જ વેગથી ઉતરીને આવ્યા નારદ દેખાવમા અત્યંત ભદ્ર હતા  
 ઉપર ઉપરથી તેઓ એકદમ વિનમ્ર હતા પણ અતર તેમનું મન ખૂબ જ  
 કલુષિત હતું કેટલા ઉપર ઉપરથી જ તેઓ માધ્યસ્થ ભાવ સપન્ન હતા  
 આશ્રિત વ્યક્તિઓને તેમનું દર્શન આહ્વાદક અને પ્રીતિકારક હતું તેમની  
 આકૃતિ ખૂબ જ સુદર હતી તેમનું વસ્ત્ર રૂપ પરિધાન, એકદમ સ્વચ્છ-નિર્મળ  
 હતું અને ખડકહિત હતું

रइयवच्छे' कालमृगचर्मोत्तरासगरचितवक्षाः-कृष्णमृगचर्मोत्तरासङ्गेन रचित शोभित  
वक्षो यस्य स तथा, कृष्णमृगचर्मोत्तरीयवस्त्रधारकः । तथा- 'दण्डकमण्डलुहस्त्ये'  
दण्डकमण्डलुहस्तः- 'जडामण्डलुहस्तसिरए' जटामुकुटदीप्तशिरस्कः, जण्णोवइयगणे-  
त्तियमुजमेहलावागलधरे ' यज्ञोपवीतगणेत्रिका मुज्जमेखलावलकलधरः-तत्र यज्ञो-  
पवीत यज्ञसूत्र गणेत्रिका-रुद्राक्षकृत कलाचिकाभरण, मुज्जमेखला-मुज्जमय कटि  
बन्धनसूत्र वलकल वृक्षत्वक्, तेषां धारकः सकन्धोपरियज्ञसूत्रधारी, करमूले धृत  
रुद्राक्षमालः, मुज्जमयकटिसूत्रधारी, शरीरे परिधृतयलकल इत्यर्थः । 'हत्थकयकच्छ  
भीए' हस्तकृतकच्छपिकः-हस्ते कृता कच्छपिका-वीणा येन स तथा, 'पियग  
घन्वे' पियगन्धर्वः-गानमियः, 'धरणिगोयरप्पहाणे' धरणिगोचरप्रधान-  
धरणिगोचराणा-भूमिचारिणा जनाना मध्ये प्रधानस्तस्या काशेऽपि विहरणशीलत्वात्

चम्मउत्तरासगरइयवच्छे दण्डकमण्डलुहस्त्ये, जडामण्डलुहस्तसिरए, जण्णो  
वइयगणेत्तिय मुजमेहलवागलधरे, हत्थकयकच्छभीए, पियगंघन्वे, धर-  
णिगोयरप्पहाणे, सवरणावरणिओवयणिउप्पयणी लेसणीसुयसकामणि  
अभिओगपणत्ति गमणीयमणीसु य बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु  
विस्सुयजसे ) इनका वक्षस्थल काले मृग के चर्म रूप उत्तरासग से  
सुशोभित था । दण्ड और कमण्डलु इनके हाथोंमें था । जटारूपी मुकुट  
से इनका मस्तक दीप्त हो रहा था । यज्ञसूत्र-जनेऊ, गणेत्रिका कलाई  
का आभरण रूप रुद्राक्ष की माला, मुज्जमेखला-मुज का बना हुआ  
कटि बन्धन सूत्र, और वृक्ष की छाल इन्होंने धारण कररक्खी थी ।  
हाथमें कच्छपिका-वीणा ले रक्खी थी । गान इन्हें बहुत प्रिय था । भूमि  
गोचरियों के बीच में ये प्रधान थे-क्यों कि ये आकाश में भी विहार

( कालमियचम्मउत्तरासंगरइयवच्छे दण्डकमण्डलुहस्त्ये जडामण्डलुहस्तसिरए,  
जण्णोवइय गणेत्तियमुजमेहलवागलधरे, हत्थकयकच्छभीए पियगंघन्वे, धरणि-  
गोयरप्पहाणे, सवरणावरणिओवयणिउप्पयणिलेसणीसु य सकामणि अभि-  
ओगपणत्ति गमणीयमणीसुय बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे )

तेमनु वक्षस्थल काणा हरणुना यमंइय उत्तरासगथा शोभतु इतु  
दण्ड अने कमण्डलु तेमना हाथोभा इता जटा रूपी मुकुटथी तेमनु मस्तक  
प्रकाशित थई रह्यु इतु यज्ञ सूत्र-जनेऊ, गणेत्रिका-जडामा पहरेवानी आल  
रह्यु इय रुद्राक्षनी माला, मुज्ज-मेखला-मुजनु अनेतु केडमा पहोवानु अ धन  
सूत्र अने वृक्षकनी छाल तेओओ धारणु करेली इता हाथमा तेओओ कच्छ  
पिका-वीणा धारणु करेली इती संगीत तेमने प्रमज्ज गमर्तु इतु भूमि  
गोचरीओने वन्थे-तेओ प्रधान इता केमके तेओ आकाशमा विथणु करता

“ સવરણારણિઓત્રવણિઉપ્પવણિભેસળીયુ ય ” મંચરણ્યારણ્યવપતન્યુત્પતની  
 શ્લેષળીયુ ચ ’ સવરળી-સમ્પાન્તર્ધાનકારિણી વિદ્યા, આવરળી-પરમ્પાન્તર્ધાન  
 કારિણી વિદ્યા, અવપતનીઅધોઽવતરળી વિદ્યા, ઉત્પતની-ઉર્વગમનકારિણી વિદ્યા,  
 શ્લેષળી-વજ્રલેષાદિયન્ મન્થાનકારિણી વિદ્યા, તામુ, તથા-‘ સક્રામણિ અભિ  
 ઓગણ્ણત્તિ ગમળીથમળીયુ ય ’ મક્રમણ્યભિયોગમણ્ણત્તિગમનીસ્તમ્મનીયુ ચ-  
 સક્રામળી-વિદ્યા-વિશેષઃ યયા-પરશરીરાદૌ પ્રવેદ્ધુ ગવનોતિ, સા વિદ્યા, અભિ  
 યોગ, સ્વર્ણાદિનિર્માણવિદ્યા વશીકરણવિદ્યા ચ, પ્રજ્ઞસિ.=અવિદિતાર્થબોધિની ગમની

કરતે થે । સવરળી, આવરળી અવપતની, ઉત્પતની, શ્લેષળી ઢન વિદ્યા  
 ઓ મેં તથા સક્રમળી, અભિયોગ, પ્રજ્ઞસિ, ગમનો સ્તમ્મિની ઢન નાના  
 પ્રકાર કી વિદ્યા પર સબન્ધી વિદ્યાઓ મેં ઢનકી કીર્તિ વિરખાત થી ।  
 જિસ વિદ્યા કે પ્રભાવ સે અપને આપકો અન્તર્ધાન કર દિયા જાતા  
 જાતા હૈ ઉસકા નામ સવરળી વિદ્યા હૈ । દૂસરા જિસ વિદ્યા સે અન્ત  
 ધાન કરદિયા જાતા હૈ ઉસ વિદ્યા કા નામ આવરળી વિદ્યા હૈ । જિસ  
 વિદ્યા કે પ્રભાવ સે ડપર સે નીચે ઉતરા જાતા હૈ ઉસકા નામ અવ  
 પતની ઓર જિસકે પ્રભાવ સે ઉર્વ મેં ગમન કિયા જાતા હૈ ઉસકા  
 નામ ઉત્પતની વિદ્યા હૈ । વજ્રલેષ આદિ કી તરહ જો ચિપકા દેતી હૈ  
 વહ શ્લેષળી વિદ્યા હૈ । જિસ વિદ્યા કે બલ સે દૂસરે કે શરીરમેં પ્રવિષ્ટ  
 હોના હોતા હૈ-એસી પરશરીરપ્રવેશકારિણી વિદ્યાકા નામ સક્રમળી  
 વિદ્યા હૈ । સ્વર્ણ આદિ કે વનાને કી જો નિપુણતા હૈ-ગવ પરકો

હતા સવરણી, આવરણી, અવપતની, ઉત્પતની, શ્લેષણી આ બધી વિદ્યા  
 ઓમા તેમજ સક્રમણી, અભિયોગ, પ્રજ્ઞસિ, ગમની, સ્તમ્ભની આ અનેક  
 જાતની વિદ્યાધર સબધી વિદ્યાઓમા તેમની કીર્તિ ઓમેર પ્રસરેલી હતી જે  
 વિદ્યાના પ્રભાવથી પોતાની જાતને અદૃશ્ય કરી શકાય છે તે સવરણી વિદ્યા  
 છે જે વિદ્યાથી બીજને અદૃશ્ય કરી શકાય છે તે આવરણી કહેવાય છે જે  
 વિદ્યાના પ્રભાવથી ઉપરથી નીચે ઉતરી શકાય છે તે અવપતની અને જેના  
 પ્રભાવથી ઉર્વ ( આકાશ ) મા ગમન કરી શકાય છે તે વિદ્યાનુ નામ ઉત્પ  
 તની છે । વજ્રલેષની જેમ જે ચોટાડી દે છે તે શ્લેષણી વિદ્યા છે જે  
 વિદ્યા । ના શરીરમા પ્રવેશી શકાય એવી પરકાય પ્રવેશ કરિણી







“ સરણાચરણિઓરપણિઉપ્પવણિલેસણીસુ ય ” મરણ્યાચરણ્યવપતન્યુત્પતની  
 શ્લેષણીપુ ચ ’ સરણી-સ્વપ્પાન્તર્ધાનકારિણી વિદ્યા, આચરણી-પરસ્પાન્તર્ધાન  
 કારિણી વિદ્યા, અવપતનીઅપ્પોડવતરણી વિદ્યા, ઉત્પતની-ઉર્ગમનકારિણી વિદ્યા,  
 શ્લેષણી-વજ્રલેપાદિયત્ મન્થાનકારિણી વિદ્યા, તામ્ર, તથા-‘ મક્રામણિ અભિ  
 ઓગવણ્ણત્તિ ગમણીયમણીસુ ય ’ મક્રમણ્યભિયોગપ્રણ્ણત્તિગમનીસ્તમ્મનીપુ ચ-  
 સક્રામણી-વિદ્યા-વિશેષઃ યથા-પરશરીરાદૌ પ્રવેદ્યુ ગચ્છનોત્તિ, સા વિદ્યા, અભિ  
 યોગઃ સ્વર્ણાદિનિર્માણવિદ્યા યજ્ઞીકરણવિદ્યા ચ, પ્રણ્ણત્તિ-અવિદિતાર્થચોધિની ગમની

કરતે થે । સવરણી, આચરણી અવપતની, ઉત્પતની, શ્લેષણી ઇતિ વિદ્યા  
 ઓં મેં તથા મક્રમણી, અભિયોગ, પ્રણ્ણત્તિ, ગમનો સ્તમ્મની ઇતિ નાના  
 પ્રકાર કી વિદ્યાચર સ્વબન્ધી વિદ્યાઓ મેં ઇતિ કીર્તિ વિખ્યાત થી ।  
 જિમ વિદ્યા કે પ્રભાવ સે અપને આપકો અન્તર્ધાન કર દિયા જાતા  
 જાતા હૈં ઉસકા નામ સવરણી વિદ્યા હૈં । દૂસરા જિમ વિદ્યા સે અન્ત  
 ધાન કરદિયા જાતા હૈં ઉમ વિદ્યા કા નામ આચરણી વિદ્યા હૈં । જિસ  
 વિદ્યા કે પ્રભાવ સે ઊપર સે નીચે ઉતરા જાતા હૈં ઉસકા નામ અવ  
 પતની ઓર જિમકે પ્રભાવ સે ઉર્ધ્વ મેં ગમન કિયા જાતા હૈં ઉસકા  
 નામ ઉત્પતની વિદ્યા હૈં । વજ્રલેપ આદિ કી તરહ જો ચિપકા દેતી હૈં  
 વહ શ્લેષણી વિદ્યા હૈં । જિમ વિદ્યા કે વલ સે દૂસરે કે શરીરમેં પ્રવિષ્ટ  
 હોના હોતા હૈં-એમી પરશરીરપ્રવેશકારિણી વિદ્યાકા નામ સક્રમણી  
 વિદ્યા હૈં । સ્વર્ણ આદિ કે બનાવે કી જો નિપુણતા હૈં-તવ પરકો

હતા સવરણી, આચરણી, અવપતની, ઉત્પતની, શ્લેષણી આ બધી વિદ્યા  
 ઓમાં તેમજ સક્રમણી, અભિયોગ, પ્રણ્ણત્તિ, ગમની, સ્તમ્મની આ અનેક  
 જાતની વિદ્યાધર સબધી વિદ્યાઓમાં તેમની કીર્તિ ઓમેર પ્રસરેલી હતી જે  
 વિદ્યાના પ્રભાવથી પોતાની જાતને અદૃશ્ય કરી શકાય છે તે સવરણી વિદ્યા  
 છે જે વિદ્યાથી બીજાને અદૃશ્ય કરી શકાય છે તે આચરણી કહેવાય છે જે  
 વિદ્યાના પ્રભાવથી ઉપરથી નીચે ઉતરી શકાય છે તે અવપતની અને જેના  
 પ્રભાવથી ઉપર ( આકાશ ) માં ગમન કરી શકાય છે તે વિદ્યાનું નામ ઉત્પ  
 તની છે વજ્ર લેપ વગેરેની જેમ જે ચોટાલી દે છે તે શ્લેષણી વિદ્યા છે જે  
 વિદ્યાના બધી બીજાના શરીરમાં પ્રવેશી શકાય એવી પરકાય પ્રવેશ કરિણી  
 વિદ્યાનું નામ સક્રમણી વિદ્યા છે સોનું વગેરે બનાવવામાં જે નિપુણતા છે  
 અને બીજાને વશવર્તી કરવાની જે શક્તિ છે તે

वीराः पुरुषास्त्रैलोक्ये वलयन्त नेमिनाथापेक्षया तेषाम्, 'आमतेऊण त भगवई' आमन्त्र्य=प्रयुज्य ता भगवतीं-विद्या, कीदृशीं विद्यामित्याह—'पक्कमणि' प्रक्रमणीं=प्रकृष्टगमनशक्ति शालिनीं 'गगणगमणदच्छ' गगनगमनदक्षाम्=आकाशे गमने समर्थाम् 'उप्पडओ' उत्पतितः, गगनमभिलङ्घयन् उड्डीय गमनेनाकाशतलमुल्लङ्घयन् 'गामागरनगरनिगमखेटकर्वटमडवद्रोणमुखपत्तनाश्रमसवाहसहस्रमण्डित' ग्रामावरनगरनिगमखेटकर्वटमडवद्रोणमुखपत्तनाश्रमसवाहसहस्रमण्डित, तत्र अष्टादशकरग्राह्यो ग्रामः, आकरः=स्वर्गाद्युत्पत्तिभूमिः, अविद्यमानकरं नगर, निगम=वणिग्राम खेट=धूलीप्रकार, कर्वट=कुत्सितनगर, यत्र योजनान्तराले ग्रामादिनास्ति तन्मडम्ब यत्र जलस्थलमार्गाभ्या, भाण्डान्यागच्छति तत् द्रोणमुख, पत्तन=द्वधा-जलपत्तन स्थलपत्तन, यत्र पर्वतादिदुर्गे लोका धान्यानि संवहति स सवाह एतैः सहस्रैर्मण्डितं, स्तिमितमेदिनीतल, 'वसुह' वसुधा भूमि 'ओलोइतो' अवलोकयन्=पश्यन् रम्य हस्तिनापुर नगरमुपागतः पाण्डुराजभवनेऽतिवेगेन समुपेतः=गगनादवतीर्ण इत्यर्थः ।

तत रल्लु स पाण्डुराजा कच्छुल्लनारय 'कच्छुल्लनारदम् आगच्छन्त पश्यति-दृष्ट्वा पञ्चभि पाण्डवैः कुन्त्या च देव्यासार्धमासनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय दशार्हं ये उनके ये सदा चित्त के विक्षेप कारक बने रहते थे । गमन में विशिष्ट शक्ति प्रदान करने वाली एव आकाश में उठाकर ले चलने वाली उस भगवती प्रक्रमणी विद्या को प्रयुक्त करके ये आकाश में उड़ा करते थे । ये नारद, गमन से आकाशतल को उल्लघन करते हुए ग्राम, आकर, नगर, निगम खेट, कर्वट, मडव, द्रोणमुख, पत्तन, सवाह इनके सहस्रों से मण्डित हुई ऐसी स्तिमितमेदनीतलवाली वसुधा-भूमि को देखते हुए रम्य हस्तिनापुर नगर में आये और वहां से गगनमार्ग से होकर फिर ये पाण्डुराज के भवन में पहुँचे । ऐसा सन्ध यहां लगाना (तर्ण से पंडुराया कच्छुल्लनारय एज्जमाण पासइ) इस के बोद पाण्डुराजा ने कच्छुल्ल इन नारद को आते हुए जब देखा (पामित्ता) तो

गमनमा विशिष्ट शक्ति आपनारी अने आकाशमा उडाडीने लछ जनार ते भगवती प्रक्रमणी विद्याना गणथी तेओ आकाशमा उडता रहेता डता आरीते आ नारद गमनथी आकाशने ओगगीने मडओ ग्राम, आकर नगर, निगम खेट कर्वट, मडव, द्रोणमुख, पत्तन, सवाहोथी, मण्डित अने स्तिमित पृथ्वीने जेता गमणीय हस्तिनापुर नगरमा आव्या अने त्याथी आकाश मार्गमा थधने पाण्डुराजना लवनमा पडोआया (तर्ण से पाण्डुराया कच्छुल्ल नारय एज्जमाण पासइ) त्यारभाह पाण्डुराजने कच्छुल्लनारदने न्यारे आवता जेया (पामित्ता) त्यारे जेधने (पचहि पडवेहि कुवीए देवीए सद्धि आसणाओ

સારણ', ગજસુકુમાલ', યુગુત્વઃ, દુર્મુત્ય, इत्यादयो यादवकुमारास्तेषा 'अद्भुतान्  
 कुमारकोटीण' अर्धचतुर्थीनां कुमारकोटीनां च सार्धत्रिकोटिममिताना यादव  
 कुमाराणामित्यर्थः 'द्विपदक्ष' इदयदयितः=हृदयप्रियः, 'सथाव' सस्ता  
 वरः-यादवाना प्रशसकः, तथा-कलहयुद्धकोलाहलप्रियः=कलहो=विवाद, युद्ध=  
 शस्त्रादिभिः प्रहरण, कोलाहलो=जनाना महाध्वनिः, एते प्रियाः प्रमोदजनका  
 यस्य स तथा, 'भट्टणामिलासी' भण्डनाभिलाषी=भण्डन राटि-कच्छ 'राइ'  
 इति भाषाया तस्याभिलाषी तथा-बहुषु च समरशतसपरायेषु=समरशतसंग्रामेषु  
 दर्शनरत=दर्शनाऽऽसक्तः, 'समतभो' समन्ततः सर्वप्रकारेण-परस्पर च कलह  
 'सदस्वण' सदाक्षण=सर्वस्मिन् क्षणे 'अणुगवेसमाणे' अनुगवेषयन्=अन्वेष  
 यन्, 'असमाधिकरे' असमाधिकरः-चित्तविक्षेपकारकः चित्तस्यास्वैर्यकर केषा  
 चित्तस्य विक्षेपकइत्याह—'दसारवरवीरपुरिसतिलोचयलगमाण' दशार्हवरवीर  
 पुरुषत्रैलोक्ययलगना-दशार्हा-समुद्रविजयादयो दशसख्यका त एव वरा श्रेष्ठाः

इत्यादि यादवकुमारों के लिये ये हृदय दयित थे-अत्यन्त प्रिय थे। इसी  
 कारण यादवों के प्रशसक थे। कलहविवाद युद्ध एवं मनुष्यों का कोलाहल  
 ये सब इन्हें बहुत अधिक अच्छे लगते थे। आनन्द जनक होते थे। राइ  
 (लडाई) के ये अभिलाषी बने रहते थे। अर्थात् हर एक जगह किसी न  
 किसी रूप में परस्पर में लोगों में तकरार, कजिया कैसे उत्पन्न हो इस  
 घात का इन्हें विशेष ध्यान रहता था। समर शतसंग्राम के देखने में  
 इन्हें विशेष हर्षोल्लास होता था। सब प्रकार से परस्पर में सब समय  
 में ये कलह की गवेषणा करने में ही लगे रहते थे। नेमिनाथ की अपेक्षा  
 त्रैलोक्य में विशिष्ट बलवाली जो श्रेष्ठ वीर पुरुष समुद्र विजयादि दश

માટે જ તેઓ યાદવોના વખાણ કરનારા હતા કલહ-કકાસ, વિવાદ, યુધ્ધ  
 અને માણસોનો શોરબકાર આ બધું તેમને બહુ જ ગમતું હતું આ બધાથી  
 તેમને ખૂબ જ મજા પડતી હતી, કહ્યો તેમને ખૂબ જ ગમતો હતો એટલે  
 કે હરેક સ્થાને ગમે તે કારણને લીધે વચ્ચે પરસ્પર કલહ-કકાસ કહ્યો  
 કેવી રીતે શરૂ થાય આ વાતની તેઓ તક લેતા રહેતા હતા એકઠો યુદ્ધોના  
 ખીલતસ દશ્ય લેવામા તેમને ખૂબ જ આનંદનો અનુભવ થતો હતો તેઓ  
 બધી રીતે રાત અને દિવસ એકબીજાને લડાવવાની શોધમા જ ચોટી રહેતા  
 હતા નેમિનાથની અપેક્ષા ત્રૈલોક્યમા સર્વિશેષ બજાવાન શ્રેષ્ઠ વીર પુરુષ સમુદ્ર  
 વિજય વગેરે દશ દશાહો હતા તેમના ચિત્તને તેઓ કષ્ટ તા.

वीराः पुरुषास्त्रैलोक्ये बलवन्त नेमिनाथापेक्षया तेषाम्, 'आमतेऊण त भगवई' आमन्त्र्य=प्रयुज्य ता भगवतीं-विद्या, कीदृशीं विद्यामित्याह—'प्रक्रमणी' प्रक्रमणी=प्रकृष्टगमनशक्ति शालिनी 'गगणगमणदण्ड' गगनगमनदक्षाम्=आकाशे गमने समर्थाम् 'उप्पडओ' उत्पतितः, गगनमभिलङ्घयन् उड्डीय गमनेनाकाशतलमुल्लङ्घयन् 'ग्रामावरनगरनिगमखेटकर्मटमडवद्रोणमुहपट्टणासमसवाहसहस्रमण्डिय' ग्रामावरनगरनिगमखेटकर्मटमडवद्रोणमुखपत्तनाश्रमसवाहसहस्रमण्डित, तत्र अष्टादशकरग्राह्यो ग्रामः, आकरः=स्वर्गाद्युत्पत्तिभूमिः, अविद्यमानकरं नगर, निगम=वणिग्ग्राम खेट=धूलीप्रकार, कर्मट=कुत्सितनगर, यत्र योजनान्तराले ग्रामादिनास्ति तन्मडम् यत्र जलस्थलमार्गाभ्या, भाण्डान्यागच्छति तत् द्रोणमुख, पत्तनं=द्वधा-जलपत्तन स्थलपत्तन, यत्र पर्वतादिदुर्गे लोका धान्यानि संवहति स संवाह एतैः सहस्रैर्मण्डित, स्तिमितमेदिनीतल, 'वसुध' वसुधा भूमि 'ओलोइतो' अवलोकयन्=पश्यन् रम्य हस्तिनापुर नगरमुपागतः पाण्डुराजभवनेऽतिवेगेन समुपेतः=गगनाद्वतीर्ण इत्यर्थः ।

तत सख स पाण्डुराजा कच्छुल्लनारय 'कच्छुल्लनारदम् आगच्छन्त पश्यति-दृष्ट्वा पञ्चभिः पाण्डवैः कुन्त्या च देव्यासार्धमासनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय दशार्हं ये उनके ये सदा चित्त के विक्षेप कारक बने रहते थे । गमन में विशिष्ट शक्ति प्रदान करने वाली एव आकाश में उठाकर ले चलने वाली उस भगवती प्रक्रमणी विद्या को प्रयुक्त करके ये आकाश में उड़ा करते थे । ये नारद, गमन से आकाशतल को उल्लघन करते हुए ग्राम, आकर, नगर, निगम खेट, कर्मट, मडव, द्रोणमुख, पत्तन, संवाह इनके सहस्रों से मण्डित हुई ऐसी स्तिमितमेदिनीतलवाली वसुधा-भूमि को देखते हुए रम्य हस्तिनापुर नगर में आये और वहा से गगनमार्ग से होकर फिर ये पाण्डुराज के भवन में पहुँचे । ऐसा समय यहां लगाना (तर्ण से पंडुराया कच्छुल्लनारय एज्जमाणं पासइ) इस के बाद पाण्डुराजा ने कच्छुल्ल इन नारद को आते हुए जब देखा (पामित्ता) तो

गमनमा विशिष्ट शक्ति आपनारी अने आकाशमा उडाडीने लछ जनार ते भगवती प्रक्रमणी विद्याना अणथी तेओ आकाशमा उडता रडेता हुता आरीते आ नागद गमनथी आकाशने ओणगीने मछओ ग्राम, आकर नगर, निगम खेट कर्मट, मडव, द्रोणमुख, पत्तन, संवाहथी, मण्डित अने स्तिमित पृथ्वीने लेता रमणीय हस्तिनापुर नगरमा आव्या अने त्याथी आकाश मार्गमा थधने पाण्डुराजना भवनमा पछोआया (तर्ण से पाण्डुराया कच्छुल्ल नारय एज्जमाण पासइ) त्थारणाद पाण्डुराजने कच्छुल्लनारदने त्थारे आवता लेया (पामित्ता) त्थारे लेधने (पचहि पडवेदि कुवीए देवीए सद्धि आसणाओ

મારણઃ, ગજસુકુમાલઃ, સુગુપ્તઃ, દુર્મુખ, इत्यादयो यादवकुमारास्तेषा 'अद्भुतान्  
 कुमारकोटीण ' अर्धचतुर्णीनां कुमारकोटीनां च सार्धत्रिकोटिप्रमिताना यादव-  
 कुमाराणामित्यर्थः ' द्विपदक्ष ' हृदयदयितः=हृदयप्रियः, ' सधानप ' सस्ता-  
 प्रकः-यादवाना प्रशसकः, तथा-कलहयुद्धकोलाहलप्रियः=कलहो=विवाद, युद्ध-  
 शस्त्रादिभिः प्रहरण, कोलाहलो=जनाना महांस्त्रनिः, एते प्रियाः प्रमोदजनका  
 यस्य स तथा, ' भट्टणामिलासी ' मण्डनामिलापी=मण्डन राटि-कलह. ' राइ '   
 इति भाषाया तम्यामिलापी तथा-बहुषु च समरशतसम्रायेषु=समरशतसम्रायेषु  
 दर्शनरत =दर्शनाऽऽसक्तः, ' समतभो ' समन्ततः सर्वप्रकारेण-परस्पर च कलह  
 ' सदस्त्रण ' सदाक्षण=सर्वस्मिन् क्षणे ' अणुगवेममाणे ' अनुगवेपयन्=अन्वेष  
 यन्, ' असमाधिकरे ' असमाधिकर-चित्तविक्षेपकारकः चित्तस्यास्वैर्यकर. केषा  
 चित्तस्य विक्षेपकइत्याह—' दशारवरवीरपुरिसतिलोकवलवमाण ' दशार्हवरवीर  
 पुरुषत्रीलोक्यवलवता-दशार्हा.-समुद्रविजयादयो दशसख्यका त एव वरा श्रेष्ठाः

इत्यादि यादवकुमारों के लिये ये हृदय दयित थे-अत्यन्त प्रिय थे। इसी  
 कारण यादवों के प्रशसक थे। कलहविवाद युद्ध एव मनुष्यों का कोलाहल  
 ये सब इन्हें बहुत अधिक अच्छे लगते थे। आनन्द जनक होते थे। राइ  
 (लडाई) के ये अभिलाषी बने रहते थे। अर्थात् हर एक जगह किसी न  
 किसी रूप में परस्पर में लोगों में तकरार, कजिया कैसे उत्पन्न हो इस  
 बात का इन्हें विशेष ध्यान रहता था। समर शतसम्राज के देखने में  
 इन्हें विशेष हर्षोल्लास होता था। सब प्रकार से परस्पर में सब समय  
 में ये कलह की गवेषणा करने में ही लगे रहते थे। नेमिनाथ की अपेक्षा  
 त्रैलोक्य में विशिष्ट बलवाली जो श्रेष्ठ वीर पुरुष समुद्र विजयादि दश

માટે જ તેઓ યાદવોના વખાણ કરનારા હતા કલહ-કકાસ, વિવાદ, યુધ્ધ  
 અને માણસોનો શોરબકોર આ બધું તેમને બહુ જ ગમતું હતું આ બધાથી  
 તેમને ખૂબ જ મજા પડતી હતી, કહ્યો તેમને ખૂબ જ ગમતો હતો એવે  
 કે હરેક સ્થાને ગમે તે કારણને લીધે વચ્ચે પરસ્પર કલહ-કકામ કહ્યો  
 કેવી રીતે શરૂ થાય આ વાતની તેઓ તક લેતા રહેતા હતા સેકડો યુદ્ધોના  
 ખીલતસ દશ્ય લેવામા તેમને ખૂબ જ આનંદનો અનુભવ થતો હતો તેઓ  
 બધી રીતે રાત અને દિવસ એકબીજાને લડાવવાની શોધમા જ ચોટી રહેતા  
 હતા નેમિનાથની અપેક્ષા ત્રૈલોક્યમા સર્વિશેષ બળવાન શ્રેષ્ઠ વીર પુરુષ સમુદ્ર  
 વિજય વગેરે દશ દશાહો હતા તેમના ચિત્તને તેઓ કષ્ટ તા.



सयतस्तथा विधो न भवति यः सोऽसयतः=सयमरहित इत्यर्थः, अविरत=अतीत  
कालिन्पापाज्जुगप्सापूर्वक, भविष्यति च सवरपूर्वकमुपरतो निवृत्तो विरतस्तथा  
विधो न भवति यः सोऽविरतः, निरतिरहितः, अप्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा  
प्रतिहत=वर्तमानकाले स्थित्यनुभागहासेन नाशित तथा प्रत्याख्यात=पूर्वकृताति-

उनके लिये तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिण किया-करके उनको वंदनाकी  
नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके फिर उन्होंने उनसे महान्  
पुरुषों के बैठने योग्य आसन पर बैठने के लिये प्रार्थना की-इस के  
बाद वे कच्छुल्ल नारद जल के छीटों से सिक्त हुए आसन पर कि जो  
दर्भ के ऊपर आस्तीर्ण या बैठ गये। बैठकर उन्होंने पांडु राजा से  
राज्य की यावत् अतः पुर की कुशल चर्चा पूछी। उनके पूछने पर पांडु  
राजाने कुन्ती देवी ने एवं पाँचों पांडवों ने उन कच्छुल्ल नारद को खूब  
आदर किया यावत् अच्छी तरह से उनकी पर्युपासना की। द्रौपदी ने  
उन्हें असयत, अविरत एवं अप्रतिहत प्रत्याख्यतपापकर्मा जानकर  
उनका आदर नहीं किया, उनके आगमन की अनुमोदना नहीं की  
और न वह उनके आने पर उठी। वर्तमान कालिक सर्व सावध्य  
अनुष्ठान से जो निवृत्त होता है वह सयत है-ऐसा सयत जो नहीं  
होता है वह असयत कहलाता है। अतीत काल में हुए पापों से जुगु-  
प्सा पूर्वक और भविष्यकाल में उनसे सवर पूर्वक जो उपरत होता

सामे જઘને તેમણે ત્રણવાર તેમની ચોમેર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરી  
ત્યારપછી તેમણે વદન તેમજ નમન કર્યા અને પછી તેમને પોતાના કરતા  
મોટા માણ્યોને જેમવા યોગ્ય આસન ઉપર બેસવાની વિનંતી કરી ત્યારબાદ  
તે કચ્છુલ્લ નારદ પાણીના છાટાઓથી ભીના પાથરેલા દર્ભના આસન ઉપર  
જેમી ગયા જેસીને તેઓએ પાડુરાજાને રાજ્યની યાવત રણુવાસની કુશળવાર્તા  
પૂછી પાડુરાજા, કુતીદેવી અને પાંચે પાંડવોએ કચ્છુલ્લ નારદનો ખૂબજ આદર  
કર્યો યાવત સારી રીતે તેમની પર્યુપાસના કરી તેમને અસયત, અવિરત  
અને અપ્રતિહતપ્રત્યાખ્યાતપાપકર્મા ભણીને દ્રૌપદીએ તેમનો આદર કર્યો  
નહિ તેમના આગમનની અનુમોદના કરી નહિ અને જ્યારે તેઓ આવ્યા  
ત્યારે પણ તે બીજી થઈ નહિ વર્તમાનકાલિક સર્વ સાવધ અનુષ્ઠાનથી જે  
નિવૃત્ત હોય છે તે સયત છે, આ બ્યાખ્યા મુજબ જે સયત નથી તે અસ  
યત કહેવાય છે ભૂતકાળમાં થઈ ગયેલા પાપકર્મોની જુગુપ્સાપૂર્વક અને ભવિષ્ય  
કાલમાં તેમનાથી સવરપૂર્વક જે ઉપરત હોય છે તે વિરત છે, એવો જે  
નથી તે અવિરત છે, એટલે કે વિગતથી રહિત છે વર્તમાનકાળમાં જેમાં

कच्छुल्लनारद सप्ताष्टपदानि प्रत्युद्गच्छति, नारदाभिमुखमायाति, प्रत्युद्गच्छति 'तिक्खुत्तो'  
 त्रि. कृत्वः - निवार, 'आयाहिणपयाहिण' आरुहिणप्रदक्षिण करोति, कृत्वा  
 वन्दते, नमस्यति इदित्या, नत्था, महारिहेण-महता योग्येन आसनेन उपनिमन्त्र  
 यति । उश्वेशनार्थं प्रार्थयति । ततः खलु स कच्छुल्लनारदः 'उदगपरिफासियाण'  
 उदकपरिस्पृष्टायां जलच्छटेन भिक्षायां 'दम्भोपरिपचत्तुयाए' दम्भोपरिप्रयवस्तु  
 तायां कुशोपर्यास्तीर्णाया 'भिसियाए' दृष्ट्या आमनत्रिशेषे निपीदति=उपविशति,  
 निपद्य पाण्डु राजान राज्ये यावदन्तः पुरे च कुसलोदन्त-कुसलमार्ता पृच्छति,  
 ततः खलु स पाण्डुराजा कुन्तीदेवीं पञ्च च पाण्डवा, कच्छुल्लनारद 'आढति'  
 आद्रियन्ते यावत् पर्युपासते=सेवन्ते स्म । ततः खलु सा द्रौपदी कच्छुल्लनारदम्  
 'असजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु' असयतारिताप्रतिष्ठा  
 प्रत्याख्यातपापकमेति कृत्वा, तत्र-अगगतः-वर्तमानकालिकसर्वमायधानुष्ठाननिवृत्तः

देवकर ( पचहिं पडवेहिं कुन्तीण देवीण सद्धि आसणाओ अब्भुट्ठेइ )  
 ये पाचो पाडवो एव कुन्ती के साथ अपने आमन से उठे । ( अब्भुट्ठित्ता  
 कच्छुल्लनारय सत्तट्ठययाइ पच्चुग्गच्छइ ) और उठकर सात आठ पैर  
 कच्छुल्लनारद के सामने स्वागत निमित्त गये ( पच्चुग्गच्छित्तो तिकखु  
 त्तो आयाहिणपयाहिण करेइ, करित्ता वदइ नमसइ, महारिहेण आस  
 णेण उवणिमतेइ तएण से कच्छुल्लनारण उदगपरिफासियाए दम्भोवरि  
 पच्चत्तुयाए भिसीयाए गिसीयइ, गिसीयित्ता पडुराय रज्जे जाव अते  
 उरेय कुसलोदन्त पृच्छइ, तएण से पडुराया कौन्तीदेवी पचय पडवा  
 कच्छुल्लनारय आढति जाव पज्जुवासति, तएण सा दोवई कच्छुल्ल  
 नारय असजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु नो  
 आढाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ, नो पज्जुवासइ ) जाकर के इन्होंने

अब्भुट्ठेइ ) तेषां पांचे पाडवो अने कुन्तीनी साथे पोताना आसन उपरथी  
 छिला थया ( अब्भुट्ठित्ता कच्छुल्लनारय सत्तट्ठययाइ पच्चुग्गच्छइ ) अने छिला  
 थयने कच्छुल्ल नारदना स्वागत आठे सात आठ उगला साथे गया।

( पच्चुग्गच्छित्तो तिकखुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ, करित्ता वदइ नमसइ,  
 महारिहेण आसणेण उवणिमतेइ, तएण से कच्छुल्लनारण उदगपरिफासियाए  
 दम्भोपरिपच्चत्तुयाए भिसीयाए गिसीयइ, गिसीयित्ता पडुराय रज्जे जाव अते  
 उरेय कुसलोदन्त पृच्छइ तएण से पडुराया कौन्तीदेवी पचय पडवा कच्छुल्लनारय  
 आढति जाव, पज्जुवासति, तएण सा दोवई कच्छुल्लनारय असजयअविरयअपडि-  
 हयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ, नो  
 पज्जुवासइ )

सयतस्तथा विधो न भवति यः सोऽसयतः=संयमरहित इत्यर्थः, अविरत=अतीत कालिन्पापाज्जुगुप्सापूर्वक, भविष्यति च सवरपूर्वकमुपरतो निवृत्तो विरतस्तथा विधो न भवति यः सोऽविरतः, निरतिरहितः, अप्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा प्रतिहत=वर्तमानकाले स्थित्यनुभागहासेन नाशित तथा प्रत्याख्यात=पूर्वकृताति-  
उनके लिये तीन चार आदक्षिण प्रदक्षिण किया-करके उनको वंदनाकी नमस्कार किया। वदना नमस्कार करके फिर उन्होंने उनसे महान् पुत्रों के बैठने योग्य आसन पर बैठने के लिये प्रार्थना की-इस के बाद वे कच्छुल्ल नारद जल के छीटों से सिक्त हुए आसन पर कि जो दर्भ के ऊपर आस्तीर्ण या बैठ गये। बैठकर उन्होंने पांडु राजा से राज्य की यावत् अतः पुर की कुशल वर्ता पूछी। उनके पूछने पर पांडु राजाने कुन्ती देवी ने एवं पांचों पांडवों ने उन कच्छुल्ल नारद को खूब आदर किया यावत् अच्छी तरह से उनकी पर्युपासना की। द्रौपदी ने उन्हें असयत, अविरत एवं अप्रतिहत प्रत्याख्यतपापकर्मा जानकर उनका आदर नहीं किया, उनके आगमन की अनुमोदना नहीं की और न वह उनके आने पर उठी। वर्तमान कालिक सर्व सावध अनुष्ठान से जो निवृत्त होता है वह सयत है-ऐसा सयत जो नहीं होता है वह असयत कहलाता है। अतीत काल में हुए पापों से जुगुप्सा पूर्वक और भविष्यत्काल में उनसे सवर पूर्वक जो उपरत होता

माझे जेधने तेमझे त्रणुवार तेमनी येमेर आदक्षिण प्रदक्षिण करी त्थारपछी तेमझे वदन तेमजे नमन कर्या अने पछी तेमने पोताना करता मोटा माणुमेने जेअवा योग्य आसन उपर जेसवानी विनती करी त्थारणाद ते उच्छुल्ल नारद पाणीना छाटाओधी बीना पाथरेला दर्भना आसन उपर जेभी गया जेसीने तेओओ पाडुराजने राज्यनी यावत् रणुवामनी कुशलवार्ता पूछी पाडुराज, कुतीदेवी अने पाथे पाडवेओ उच्छुल्ल नारदने। पूणज आदर ज्यो यावत् सागी रीते तेमनी पर्युपासना करी तेमने असयत, अविरत अने अप्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा जेणीने द्रौपदीओ तेमने आदर कर्यो नहि तेमना आगमननी अनुमोदना करी नहि अने ज्यारे तेओ आओया त्थारे पण ते जेसी थय नहि वर्तमानकालिक सर्व सावध अनुष्ठानथी जे निवृत्त होय छे ते सयत छे, आओयाओ भुज्ज जे सयत नथी ते असयत उडेवाय छे लूतकाणमा थय गयेला पापजमेधी जुगुप्सापूर्वक अने भविष्यत्कालमा तेमनाथी सवरपूर्वक जे उपरत होय छे ते विरत छे, जेवे जे नथी ते अविरत छे, जेटवे जे विरतिथी रहित छे वर्तमानकालमा जेमा

कच्छुल्लनारद सप्ताष्टपदानि प्रत्युद्गच्छति, नारदाभिमुखमायाति, प्रत्युद्गच्छति 'तिक्खुत्तो' नि. कृत्वः - निवारं, 'आयाहिणपयाहिण' आदक्षिणप्रदक्षिण करोति, कृत्वा वन्दते, नमस्यति इदित्या, नरया, महारहेण-महता योग्येन आसनेन उपनिमन्त्रयति । उन्नेशनार्थं प्रार्थयति । ततः खलु स कच्छुल्लनारदः 'उदगपरिफासियाए' उदकपरिस्पृष्टाया जलच्छटेन भिक्षाया 'दम्भोपरिपच्चथुयाए' दम्भोपरिपच्यवस्तु ताया कुशे पर्याप्तीर्णाया 'भिसियाए' वृष्या आसनत्रिगेषे निपीदति=उपविशति, निपद्य पाण्डु राजान राज्ये यावदन्तः पुरे च कुसलोदन्त-कुण्डायातां पृच्छति, ततः खलु स पाण्डुराजा कुन्ती देवी पञ्च च पाण्डवा, कच्छुल्लनारद 'आदति' आद्रियन्ते यावत् पर्युपासते=सेवन्ते स्म । ततः खलु सा द्रौपदी कच्छुल्लनारदम् 'असजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु' असयताविरताप्रतिष्ठा प्रत्याख्यातपापकर्मणि कृत्वा, तत्र-अपगत-रत्नमानकालिकसर्पमायधानुष्ठाननिवृत्तः

देवकर ( पञ्चहिं पडवेहिं कुन्तीण देवीण सद्धि आसणाओ अब्भुट्ठेइ ) ये पाचो पाडवो एव कुन्ती के साथ अपने आसन से उठे । ( अब्भुट्ठित्ता कच्छुल्लनारय सत्तट्ठपयाइ पच्चुगगच्छइ ) और उठकर सात आठ पैर कच्छुल्लनारद के सामने स्वागत निमित्त गये ( पच्चुगगच्छित्तो तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ, करित्ता वदइ नमसइ, महारहेण आसणेण उवणिमतेइ तएण से कच्छुल्लनारण उदगपरिफासियाए दम्भोवरि पच्चथुयाए भिसियाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पडुराय रज्जे जाव अते उरे य कुसलोदत पुच्छइ, तएण से पडुराया कोतीदेवी पच्च पडवा कच्छुल्लनारय आदति जाव पज्जुवासति, तएण सा दोवई कच्छुल्लनारय असजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ, नो पज्जुवासइ ) जाकर के इन्होंने

अब्भुट्ठेइ ) तेथो पाचे पाडवो अने कुन्तीनी साथे पोताना आसन उपरथी गेला थया ( अब्भुट्ठित्ता कच्छुल्लनारय सत्तट्ठपयाइ पच्चुगगच्छइ ) अने गेला थयने कच्छुल्लनारदना स्वागत भाटे सात आठ उगला साथे गया ।

( पच्चुगगच्छित्तो तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ, करित्ता वदइ नमसइ, महारहेण आसणेण उवणिमतेइ, तएण से कच्छुल्लनारण उदगपरिफासियाए दम्भोपरिपच्चथुयाए भिसियाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पडुराय रज्जे जाव अते उरेय कुसलोदत पुच्छइ तएण से पडुराया कोतीदेवी पच्च पडवा कच्छुल्लनारय आदति जाव, पज्जुवासति, तएण सा दोवई कच्छुल्लनारय असजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ, नो पज्जुवासइ )

जाव सरीरा त इच्छामिण देवाणुप्पिया । दोवई देवीं इहमा-  
 णिय, तएणं पुव्वसंगइए देवीए पउमनाभं एव वयासी - नो  
 खलु देवाणुप्पिया ! एयं भूयं वा भव वा भविस्स वा जण्ण  
 दोवई देवी पचपंडवे मोत्तूण अन्नेण पुरिसेणं सद्धि ओरालाईं  
 जाव विहरिस्सइ, तहा वि य णं अह तव पियट्ठतयाए दोवई  
 देवि इहं हव्वमाणेमि त्तिक्कहु पउमणाभं आपुच्छइ आपुच्छित्ता  
 ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुद्दे मज्झंमज्झेण जेणेव हत्थिणा-  
 उरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तेण कालेणं तेणं समएण  
 हत्थिणाउरे जुहिट्ठिल्ले राया दोवईएसद्धि उप्पि आगासतलंसि  
 सुहपसुत्ते यावि होत्था, तएण से पुव्वसंगइए देवे जेणेव जुहि-  
 ट्ठिल्ले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता  
 दोवईए देवीए ओसोवणियं दलयइ दलित्ता दोवईं देवीं  
 गिण्हइ गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकका जेणेव  
 पउमणाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पउमणा-  
 भस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवइ देवीं ठावेइ ठावित्ता  
 ओसोवणि अवहरइ अवहारित्ता जेणेव पउमणाभे तेणेव उवा-  
 गच्छइ उवागच्छित्ता एव वयासी-एसणं देवाणुप्पिया मए  
 हत्थिणाउराओ दोवई इह हव्वमाणीया तव असोगवणियाए  
 चिट्ठइ, अतो पर तुमं जाणसित्तिक्कहु जामेव दिसि पाउवभूए  
 तामेव दिसि पडिगए ॥ सू० २५ ॥



एउजमाणं पासइ पासित्ता आसणाओ अम्भुट्टेइ अम्भुट्टित्ता  
 अग्घेणं जाव आसणेणं उवणिमतेइ, तएण से कच्छुल्लनारए  
 उदगपरिफासियाए दम्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ  
 जाव कुसलोदंत आपुच्छइ, तएणं से पउमनाभे राया णियग  
 ओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लनारयं एवं वयासी-तुम्भं देवाणु  
 प्पिया । वहूणि गामाणि जाव गेहाइ अणुपविससि, त अत्थि  
 आइं ते कहिंचि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे जा  
 रिसए ण मम ओरोहे ?, तएणं से कच्छुल्लनारए पउमनाभेण  
 रत्ता एव वुत्ते समाणे ईसिं विहसियं करेइ करित्ता एव वयासी  
 -सरिसे णं तुम पउमणाभा । तस्स अगडदइदुरस्स, के ण  
 देवाणुप्पिया । से अगडदइदुरे ?, एव जहा मल्लिणाए एव खलु  
 देवाणुप्पिया । जवूदीवे दीवे भारहेवासे हत्थिगाउरे दुवयस्स  
 रण्णो धूया चूलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा पच्चण्हं पंड-  
 वाणं भारिया दोवई देवी रूवेण य जाव उक्किड्ढसरीरा दोवईए  
 णं देवीए छिन्नस्सवि पायंगुट्ठयस्स अथ तव ओरोहो सत्तिमंपि  
 कल ण अग्घत्तिक्किट्ठु, पउमणाभं आपुच्छइ आपुच्छित्ता जाव  
 पडिगए, तएणं से पउमणाभे राया कच्छुल्लनारयस्स अंतिए  
 एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म दोवईए देवीए रूवे यइ मुच्छिए ४  
 दोवइए अज्झोववन्ने जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ  
 उवागच्छित्ता पोसहसाल जाव पुव्वसगइय देव एवं वयासी-  
 एवं खलु देवाणुप्पिया ! जवूदीवे दीवे भारहेवासे

जाव सगीरा त इच्छामिणं देवाणुप्पिया । दोवई देवीं इहमा-  
 णिय, तएणं पुव्वसंगइए देवीए पउमनाभं एवं वयासी - नो  
 खलु देवाणुप्पिया । एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्स वा जणं  
 दोवई देवी पचपंडवे सोत्तूण अन्नेणं पुरिसेणं सद्धि ओरालाइ  
 जाव विहरिस्सइ, तहा वि य ण अह तव पियट्ठतयाए दोवई  
 देवि इहं हव्वमाणेमि त्तिरुहु पउमणाभं आपुच्छइ आपुच्छित्ता  
 ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुदे मज्झंमज्जेण जेणेव हत्थिणा-  
 उरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तेण कालेणं तेणं समएणं  
 हत्थिणाउरे जुहिट्ठिल्ले राया दोवईएसद्धि उप्पि आगासतलंसि  
 सुहपसुत्ते यावि होत्था, तएणं से पुव्वसंगइए देवे जेणेव जुहि-  
 ट्ठिल्ले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता  
 दोवईए देवीए ओसोवणियं दलयइ दलित्ता दोवइ देवीं  
 गिण्हइ गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकका जेणेव  
 पउमणाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पउमणा-  
 भस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवइ देवीं ठावेइ ठावित्ता  
 ओसोवणि अवहरइ अवहारित्ता जेणेव पउमणाभे तेणेव उवा-  
 गच्छइ उवागच्छित्ता एव वयासी-एसणं देवाणुप्पिया मए  
 हत्थिणाउराओ दोवई इह हव्वमाणीया तव असोगवणियाए  
 चिट्ठइ, अतो पर तुमं जाणसित्तिरुहु जामेव दिसि पाउव्वभूए  
 तामेव दिसि पडिगए ॥ सू० २५ ॥

ટીકા-‘તણ તસ’ કચ્છાદિ । તત્. તત્તુ તમ્ય કચ્છુલનારયસ્ય અયમત  
 નુપઃ આધ્યાત્મિકગિન્નિતત. પ્રાર્થિતઃ કલિદો મનાગત. માત્ર્ય મનુષ્યત, અહો !  
 સ્વલુ દ્રૌપદી દેવી રૂપેગ યાવત્ ગાયત્રેન ચ પશ્યમિ. પાડૌરનુરદામતી મા નો  
 આદ્રિયતે યાવત્ નો પર્યુપાસતે, તત્=અસ્માં નેચ સ્વલુ મમ દ્રૌપદા દવ્યા. ‘વિ  
 પ્રિય કરિત્તણ’ વિપ્રિય કર્નુ, પાડૌરનુરદામતીના વિપ્રિયક્રિતા જાતા

-:તણ તસ કચ્છુલનારયસ્ય કચ્છાદિ ।

ટીકાર્થ-(તણ) ઉસકે ત્રાદ (તમ્ય કચ્છુલનારયસ્ય) ડગ કચ્છુલ  
 નારદકો (હમેચારુદે) યદ્ ટસ રચ (અઝ્ઞતિય, ચિનિય, પતિય, મળો  
 ગણ, સકલ્પે સમુપજિજ્ઞાસ્યા) આ ધાત્મિક, ચિન્નિત, પ્રાર્થિત, મનોગત  
 સકલ્પ ઉત્પન્ન હુઆ । (અહો ણ દોવર્દેદ્રી રૂપેગ જાવ લાવળેગ ય પચહિ  
 પડવેહિ અણુવદ્ધા સમાળી મમ ણો આઠાઠ, જાવ નો પજ્જુવાસહ ત  
 સેય સ્વલુ મમ દોવર્દેદ્રી દેવીય વિપ્રિય કરિત્તણ ત્તિ કદ્દુ ણવ સપેહેદ,  
 સપેહિત્તા પટુરાય આપુચ્છઠ આપુચ્છિત્તા ઉપ્પયણિ વિજ્ઞ આવાહેદ  
 આવાહિત્તા તાણ ઉક્કિદ્ધાણ જાવ વિજ્ઞાહરગર્દેણ લયણસમુદ્ધ મઝ્ઞ  
 મઝ્ઞેણ પુરત્થાભિસુદ્ધે વીહવહુ પયસે યાવિ હોત્થા) દેલો-યદ્ કિતને  
 આશ્ચર્યની વાત છે કે દ્રૌપદી દેવી ને સ્વયં યાવત્ લાવળ્ય સે પાવો  
 પાડવો કે સાથ ભોગાસક્ત બનકર મેરા કોઈ આદર નહીં ક્રિયા છે યાવત્  
 કિસી મી પ્રકારની પર્યુપાસના નથી કરી છે । ફસલિયે અવ મુદ્ધે યદી  
 ઉચિત-શ્રેયસ્કર છે કે મેં ફસ દ્રૌપદી દેવી કા વિપ્રિય કરું-અનિષ્ટકરું

તણ તસ કચ્છુલનારયસ્ય કચ્છાદિ ॥

ટીકાર્થ-(તણ) ત્યાંપછી (તસ કચ્છુલનારયસ્ય) તે કચ્છુલ નારદને  
 (હમેચારુદે) આ જાતને । (અઝ્ઞતિય, ચિતિય, પતિય, મળોગણ, સકલ્પે  
 સમુપજિજ્ઞાસ્યા) આધ્યાત્મિક, ચિન્નિત, પ્રાર્થિત, મનોગત સકલ્પ ઉત્પન્ન છે  
 (અહો ણ દોવર્દે દેવી રૂપેગ જાવ લાવળેગ ય પચહિ પડવેહિ અણુવદ્ધા  
 સમાળી મમ ણો આઠાઠ, જાવ નો પજ્જુવાસહ ત સેય સ્વલુ મમ દોવર્દેદ્રી  
 વિપ્રિય કરિત્તણ ત્તિ કદ્દુ ણવ સપેહેદ, સપેહિત્તા પટુરાય આપુચ્છઠ આપુચ્છિત્તા  
 ઉપ્પયણિ વિજ્ઞ આવાહેદ આવાહિત્તા તાણ ઉક્કિદ્ધાણ જાવ વિજ્ઞાહરગર્દેણ લયણ  
 સમુદ્ધ મઝ્ઞ મઝ્ઞેણ પુરત્થાભિસુદ્ધે વીહવહુ પયસે યાવિ હોત્થા)

બુઝો, આ દેવી નવાઈની વાત છે કે દ્રૌપદી દેવીએ રૂપ યાવત્ લાવ  
 લયથી પાચે પાડવોની સાથે ભોગાસક્ત થઈને મારો કોઈ પણ રીતે આદર  
 કર્યો નથી યાવત્ કોઈ પણ જાતની પર્યુપાસના કરી નથી એથી હવે મને  
 એ જ યોગ્ય જણાય છે કે મને તે રીતે દ્રૌપદીનું વિ

तस्मान्मदापहरणेन अस्याः प्रतिक्रलाचरणं श्रेयः इति भावः । इति कृत्वा=इति मनसि निधाय एव सगेक्षते=पर्यालोचयति, समेक्ष्य पाण्डु राजानमापृच्छ 'उप्य यणि विज्ज' उत्पतनीम्-विद्याम् 'आवाहेड' आवाहयति स्मरति आवाह्य, मत्वा तथा उत्कृष्टया यावद् विद्याधरगत्या लक्षणसमुद्रस्य मध्यमध्येन पौरस्त्याभिमुखः=पूर्वदिगभिमुखः, 'वीडपड पयत्ते' व्यतिव्रजितु प्रवृत्तः=गमनतत्परश्चाप्यभवत् ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'धायईसडे' धातुकीपण्डे धातुकीपण्डनामके, द्वीपे 'पुरत्थिमद्वदाहिण्डुभरहवासे' पौरस्त्यार्धदक्षिणार्ध-भारतवर्षे=पूर्वदिग्वा-  
र्तिनि दक्षिणार्धभरतवर्षे अमरकका नाम राजधानी आसीत् । तत खलु अमर-  
ककाया राजधान्या पडमणाभे नाम राजाऽभवत् । स कीदृश इत्याह-'महया हिम  
वतमहतमलयमदग्महिंदसारे' महा-हिमवन्मलमन्दरमहेन्द्रसारः=महाहिम-  
वानिष तथा-महामलयमन्दरमहेन्द्रवत् सार=प्रधान । अन्यनृपापेक्षयाऽधिकम्  
हत्यादिगुणविभूतैश्वर्यसम्पन्न इत्यर्थः, विस्तरतस्तु व्याख्यानं प्रथमाध्ययने कृतम्,

यह इस समय पांडवों द्वारा कृत सत्कार सम्मान से गर्विष्ठ बनी हुई है-सो विवेक रहित बन गई है-इसलिये इसके मद को उतारना चाहिये  
अतः इसके प्रतिकूल आचरण करना यही मुझे श्रेयस्कर है । इस प्रकार  
मन में रखकर उन्होंने विचार किया-विचार करके फिर उन्होंने पांडु-  
राज से पूछा हे राजन् हम जाते हैं-पूछकर उन्होंने उत्पतनी नाम की  
विद्या का आह्वान किया स्मरण किया-स्मरण कर के उस उत्कृष्ट यावत्  
विद्याधर सन्धी गति से बहा से पूर्व दिशा की तरफ मुख कर के वे  
उड़ने में प्रवृत्त भी हो गये-(तेण कालेण तेण समण्ण धायईसडे द्वीपे  
पुरत्थिमद्वदाहिण्डुभरहे वासे अमरकका नाम रायहाणी होत्वा-तएणं  
अमरककाण रायहाणीण पडमणाभे नाम राजा होत्वा, महया हिमवतः

ते आ पांडवो वडे महत्त तेमञ्ज मन्मानीत वणि गर्विष्ठा बनी गई थे तेथी  
ते अविवेकी थड पडी छे, अथी हुवे अना मदने उतारयो जेअे, अना  
विद्ध आचरणु जेअे, आ प्रमाणे तेअेअे मनमा विचार कर्यो विचार उगीने  
तेमणे पांडुरायने पूछु डे डे गजन् । अमे जेअे, अे प्रमाणे पूछीने तेअेअे  
उत्पतनी नामनी विद्या आह्वान कर्यु, स्मरणु कर्यु -स्मरण करीने ते उत्कृष्ट  
यावत् विद्याधर सन्धी गतियी त्याथी पूर्व दिशा अणी मुख करीने उडवा लाग्या

(तेण कालेण तेण समण्ण धायईसडे द्वीपे पुरत्थिमद्वदाहिण्डुभरहे वामे अम-  
रककाण रायहाणीण पडमणाभे नाम राया

વર્ણક = વર્ણનં પૂર્વોક્તિરદ્ યોધ્યમ્, તસ્ય ચલુ પદ્મનાભસ્ય રાજાઃ 'સત્તદેવીસયાઈ' સત્તદેવીશતાનિ = દેવીના રાણીનાં શતાનિ - સત્તશતાનિમાર્ગાઃ 'ઓરોહે' અવરોધે = અન્તઃ પુરે આસન્ તસ્ય ચલુ પદ્મનાભસ્ય રાજાઃ સુનામો નામ પુત્રો યુવરાજશ્રાવ્ય ભવત્ । તતઃ ચલુ સ પદ્મનામો રાજા અન્તઃ પ્રદેશે 'અતેઽરસિ' અન્ત પુરે 'ઓરોહસંપરિબુદે' અવરોધસપરિવૃતઃ - સ્ત્રીપરિચારમપરિવૃત્ત', સિંહાસનવરગતો વિહરતિ - આસ્તેસ્મ ।

ઘણગો તસ્સણ પડમનાભસ્સ રણ્ણો સત્તદેવીસયાઈ ઓરોહે હોત્થા તસ્સ ણ પડમનાભસ્સ રણ્ણો સુનામે નામ પુત્તે જુવરાયા યાવિ હોત્થા તણ્ણ સે પડમણામે રાયા અતો અતેઽરસિ ઓરોહમપરિબુદે સિંહાસણ વરગણ વિહરઈ ) ઉસ કાલ ઓર ઉસ સમય મેં ધાતકી પડ નામ કે દ્વીપ મેં પૂર્વ દિગ્વર્તી દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્ર મેં અમરકકા નામ કી રાજધાની થી । ઉસ અમરકકા નામ કી રાજધાની મેં પદ્મનાભ નામ કો રાજા રહતા થા । યહ રાજા મહા હિમવાન્ પર્વત કી તરહ તથા મહા મલય, મન્દર એવં માહેન્દ્ર કી તરહ અન્ય રાજાઓં કી અપેક્ષા અધિક મહત્ત્વાદિગુણોં સે વિભવ સે ણં એશ્વર્ય સે સપન્ન થા । इन पदों का विस्तार पूर्वक वर्णन प्रथम मेघकुमार अध्ययन में किया जा चुका है । इस राजा का वर्णन पहिले की तरह जानना चाहिये । उस पद्मनाभ राजा के अन्तःपुर में ७०० सात सौ रानिया थीं । सुनाभ नाम का पुत्र था जो युवराज था, पद्मनाभ राजा के यहां एक दिन की बात है

હોત્થા, મહયા હિમવતઃ ० ३ ॥ ગો, તસ્સણ પડમનાભસ્સ રણ્ણો સત્તદેવી સયાઈ ઓરોહે હોત્થા તસ્સ ણ પડમનાભસ્સ રણ્ણો સુનામે નામ પુત્તે જુવરાયા યાવિ હોત્થા તણ્ણ સે પડમણામે રાયા અતો અતે ઽરસિ ઓરોહસપરિબુદે સિંહાસણવરગણ વિહરઈ )

તે કાળે અને તે સમયે ધાતકી પડ નામે દ્વીપમા પૂર્વ દિશા તરફના દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્રમા અમરકકા નામે રાજધાની હતી તે અમરકકા નામે રાજધાનીમા પદ્મનાભ નામે રાજા રહેતો હતો તે રાજા મહા હિમાચલ પર્વ તની જેમ તેમજ મહામલય, મદર અને મહેન્દ્રની જેમ બીજા ગળાઓ કરતા વધારે મહત્તર વગેરે ગુણોથી, વૈભવથી અને ઐશ્વર્યથી સપન્ન હતો આ પદોનું સવિસ્તાર વર્ણન પ્રથમ મેઘકુમાર અધ્યયનમા કરવામા આંચુ છે આ રાજાનું વર્ણન પણ પહેલાની જેમ જ સમજવું જોઈએ તે પદ્મનાભ રાજાના રણવાસમા ૭૦૦ રાણીઓ હતી, સુનાભ નામે તેને પુત્ર હતો, જે યુવરાજ હતો એક દિવસની વાત છે કે તે પદ્મનાભ રાજા રણવાસમા સ્ત્રી પરિવારની સાથે સિંહાસન ઉપર બેઠા હતા



तत खलु स कच्छुल्लनारदो यत्रैवामरकङ्काराजधानी यत्रैव पद्मनाभस्य भवन तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पद्मनाभस्य राज्ञो भवने ' झत्ति ' झटिति वेगेन ' समोवइए ' समुपेत = आकाशादवतीर्णः । ततः खलु स पद्मनाभो राजा कच्छुल्लं नारद एजमानम्-आगच्छन्त पश्यति, दृष्ट्वा आसनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थायाध्यैण यापदासनेन उपनिमन्त्रयति-जलमासन च ग्रहीतु प्रार्थयति । ततः खलु स कच्छुल्ल

कि अत पुर के भीतर स्त्री परिवार के साथ सिंहासन पर बैठे हुए थे । ( तएण से कच्छुल्लनारए जेणेव अमरकका रायहाणी जेणेव पउम नामस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमणाभस्स रण्णो भवणंसि झत्तिवेगेणं समोवइए, तएण से पउमनाभे राया कच्छुल्ल नारय एज्जमाण पासइ, पामित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता अग्घेणं जाव आमणेण उवणिमतेइ, तएण से कच्छुल्लनारए उदग परिफासियाए दब्भोवरिपच्चत्तुयाए भिसियाए निसीयइ जाव कुसलोदत आपुच्छइ ) वे कच्छुल्ल नारद जहा अमर कका राजधानी थी, जहा पद्मनाभ का भवन था वहाँ आये । आकर के वे पद्मनाभ राजा के भवन में बहुत शीघ्र वेग से उतरे । पद्मनाभ राजा ने जैसे ही कच्छुल्ल नारद को आते हुए देखा तो देखकर के अपने आसन से उठे और उठकर के उन्हो ने उन्हें अर्घ्य यावत् आसन से आमन्त्रित किया ।

( तएण से कच्छुल्लनारए जेणेव अमरकका रायहाणी जेणेव पउमनाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमणाभस्स रण्णो भवणंसि झत्तिवेगेण समोवइए, तएण से पउमनाभे राया कच्छुल्ल नारय एज्जमाण पासइ, पामित्ता आमणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता अग्घेण जाव आमणेण उवणिमतेइ, तएण से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए दब्भोपरिपच्चत्तुयाए भिसियाए निसीयइ जाव कुसलोदत आपुच्छइ )

ते कच्छुल्ल नारद जथा अमरकका राजधानी હતી, જથા પદ્મનાભનું ભવન હતું ત્યાં આવ્યા, આવીને તે પદ્મનાભ રાજાના ભવનમાં ગીત્ર વેગથી ઉતર્યા પદ્મનાભ રાજાએ જ્યારે કચ્છુલ્લ નારદને આવતા જોયા ત્યારે તેઓ પોતાના આસન ઉપરથી ઊભા થયા અને ઊભા થઈને તેમણે તેઓને અર્ધ યાવત

વર્ણક = વર્ણનં પૂર્વેક્તરદુ રોધ્યમ્, તસ્ય સ્વતુ પદ્મનાભસ્ય રાજઃ 'સત્તદેવીસયાઃ' સત્તદેવીશતાનિ = દેવીના રાણીનાં શતાનિ - સત્તગતાનિમાર્ગાં 'ઓરોહે' અવરોધે = અન્તઃ પુરે આસન્ તસ્ય સ્વતુ પદ્મનાભસ્ય રાજઃ સુનામો નામ પુત્રો યુવરાજશ્રાવ્ય ભવત્ । તતઃ સ્વતુ સ પદ્મનામો રાજા અતઃ પ્રદેશે 'અતેઊરસિ' અત પુરે 'ઓરોહસંપરિવુઢે' અવરોધસપરિવૃતઃ - સ્ત્રીપરિવારમપરિવૃત, સિંહાસનવરગતો વિહરતિ - આસ્તેસ્મ ।

વર્ણઓ તસ્સણ પડમનાભસ્સ રણ્ણો સત્તદેવીસયાઃ ઓરોહે હોત્યા તસ્સ ણ પડમનાભસ્સ રણ્ણો સુનામે નામ પુત્તે જુવરાયા યાવિ હોત્યા તણ્ણ સે પડમણામે રાયા અતો અતેઊરસિ ઓરોહસપરિવુઢે સિંહાસણ વરગણ વિહરઈ ) ઉસ કાલ ઓર ઉસ સમય ને ધાતકી પડ નામ કે દ્વીપ મે પૂર્વ દિગ્વર્તી દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્ર ને અમરકકા નામ કી રાજધાની થી । ઉસ અમરકકા નામ કી રાજધાની ને પદ્મનાભ નામ કો રાજા રહતા થા । યહ રાજા મહા હિમવાન્ પર્વત કી તરહ તથા મહા મલય, મન્દર એવં માહેન્દ્ર કી તરહ અન્ય રાજાઓ કી અપેક્ષા અધિક મહત્વાદિગુણો સે વિભવ સે એવં તેશ્વર્ય સે સંપન્ન થા । इन पदों का विस्तार पूर्वक वर्णन प्रथम मेघकुमार अध्ययन में किया जा चुका है । इस राजा का वर्णन पहिले की तरह जानना चाहिये । उस पद्मनाभ राजा के अतःपुर में ७०० सात सौ रानियां थीं । सुनाभ नाम का पुत्र था जो युवराज था, पद्मनाभ राजा के यहां एक दिन की बात है

હોત્યા, મહયા હિમવતઃવર્ણઓ,તસ્સણ પડમનાભસ્સરણ્ણો સત્તદેવી સયાઃ ઓરોહે હોત્યા તસ્સ ણ પડમનાભસ્સરણ્ણો સુનામે નામ પુત્તે જુવરાયા યાવિ હોત્યા તણ્ણ સે પડમણામે રાયા અતો અતે ઊરસિ ઓરોહસપરિવુઢે સિંહાસણવરગણ વિહરઈ )

તે કાળે અને તે સમયે ધાતકી પડ નામે દ્વીપમા પૂર્વ દિશા તરફના દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્રમા અમરકકા નામે રાજધાની હતી તે અમરકકા નામે રાજધાનીમા પદ્મનાભ નામે રાજા રહેતો હતો તે ગળ મહા હિમાચલ પર્વ તની જેમ તેમજ મહામલય, મદર અને મહેન્દ્રની જેમ બીજા ગળઓ કરતા વધારે મહત્તર વગેરે ગુણોથી, વૈભવથી અને ઐશ્વર્યથી સંપન્ન હતો આ પદોનુ સંવિસ્તાર વર્ણન પ્રથમ મેઘકુમાર અધ્યયનમા કરવામા આવ્યું છે આ રાજાનુ વર્ણન પણ પહેલાની જેમ જ સમજવું જોઈએ તે પદ્મનાભ રાજાના રણવાસમા ૭૦૦ રાણીઓ હતી, સુનાભ નામે તેને પુત્ર હતો, જે યુવરાજ હતો એક દિવસની વાત છે કે તે પદ્મનાભ રાજા રણવાસમા સ્ત્રી પરિવારની સાથે સિંહાસન ઉપર બેઠા હતા

देवानुप्रिय ! ईदृशोऽवरोधो दृष्टपूर्वो यादृशः खलु समावरोधः ? ममान्तः पुरे  
यादृश्यः स्त्रियो वर्तन्ते, तादृश्य स्त्रियः कुत्रापि भवता दृष्टा इति पृच्छतीत्यर्थः ।  
ततः खलु स कच्छुल्लनारदः पद्मनाभेन राजा एवमुक्त सन् ' ईषद् विहसित '   
मन्दहास करोति, कृत्वा एवमवादीत्—हे पद्मनाभ ! सदृशस्त्वं खलु तस्य ' अग-  
डददुर्दुरस्त ' अगडददुर्दुरस्त=कूपमण्डूकस्य यथा कूपमण्डूकः कूपाद् वहिः प्रदेशे  
विद्यमान न किमपि जानाति, तद्वत् त्वमपि स्वभवनाद् बहिरन्यत्रानस्थित किमपि  
वस्तु न वेत्सीति भावः । कच्छुल्लनारदस्य वचन श्रुत्वा पद्मनाभः कच्छुल्लनारद  
पृच्छति—' के ण देवाणुप्रिया ! से अगडददुर्दुरे ' इति । हे देवानुप्रिय ! कः खलु  
सोऽगडददुर्दुरः ? एव पद्मनाभेन राजा पृष्ठः सन् कच्छुल्लनारदः प्राह—' एव यथा  
मल्लिणाए ' यथा मल्लिज्ञाने वर्णितमेवमत्र बोध्यम् समुद्रददुर्दुरकूपददुर्दुरयोः  
परस्परवार्तालापो यथा सजातस्तथा कच्छुल्लनारदेन कथित इत्यर्थः । पुनः कच्छुल्ल-

कहा—हे देवानुप्रिय ! तुम अनेक ग्राम यावत् से घरों में आते जाते  
रहते हो—तो क्या हे देवानुप्रिय ! तुमने कहीं पर क्या ऐसा  
अतः पुर पहिले कभी देखा है—जैसा मेरा अन्तः पुर है ? पद्मनाभ  
राजा के द्वारा इस प्रकार पूछे गये वे कच्छुल्ल नारद कुछ हँसने लगे—  
हँसकर तब उन्होंने ने उनसे इस प्रकार कहा—हे पद्मनाभ ! तुम उस  
कूपम डूक के समान हो—जो अपने निवासस्थान भूत कुए से बाहिरी  
प्रदेश में विद्यमान कुछभी नहीं जानते हो । कच्छुल्ल नारद के वचन  
सुनकर के पद्मनाभ ने उन कच्छुल्ल नारद से पूछा—देवानुप्रिय ! वह  
अगडददुर्दुर का आख्यान कैसा है ? तब नारद ने उनसे कहा—मल्लि  
नाम के अध्ययन में कूपमडूक और समुद्र मडूक के परस्पर में वार्ता-  
लाप के रूप में यह आख्यान वर्णित किया हुआ है—सो नारद ने यह  
आख्यान जैसे का तैसा उन्हें सुना दिया— पुनः कच्छुल्ल नारद उनसे

कोई पक्ष स्थाने अने कोई पक्ष दिवसे आवे। भारा जेवे। रणवास जेये।  
छे ? पद्मनाभ राजा बडे आ रीते प्रश्न पूछायेला। ते कच्छुल्ल नारद इसवा  
लाग्या, छुभीने तेज्याजे तेमने आ प्रमाणे उहु डे डे पद्मनाभ ! तमे ते कूप  
मडूक जेवा छे डे जे चोताना निवासस्थान कूपथी बहारना प्रदेश विषे थोडु  
पक्ष ज्ञान धरावतो नथी कच्छुल्ल नारदना वचन सावणीने पद्मनाभे ते कच्छुल्ल  
नारदने पूछ्यु डे डे देवानुप्रिय ! ते अगड ददुर्दुरकतु आख्यान केवी रीते छे ?  
त्यारे नारद तेमने मल्लि नामे अध्ययनमा वर्णववाभा आवेला। कूप मडूक अने  
समुद्र मडूकना वार्तालाप रूपे ते संपूर्ण आख्यान तेमने छुडी सलजाव्यु

नारदः उदरपरिस्पृष्टायां-जलाभिपिक्तायां दर्भोपरि प्रत्यरत्तायां वृष्याम् आस  
नशेषे निपीदति, यावत् कुशलोदन्त=कुशलवार्ताम् आपृच्छति=पुत्रोपविष्टं तं  
कच्छुल्लनारद पद्मनाभः कुशलवार्ता पृच्छतीत्यर्थः । ततः खलु स पद्मनाभो राजा  
निजकारोरे स्त्रीपरिवारे जातविस्मयः=समुत्पन्नगर्भः, कच्छुल्लनारदम् एव-  
वक्ष्यमाणक्रमेण, अगादीत्-हे देवानुप्रिय । त्वं बहून् ग्रामान् यावत् गृहाणि अनु-  
प्रविशति, तत्=तस्माद् अस्ति 'आइ' इति रात्र्याच्छङ्कारे ते=त्वया कुत्रचिद् हे

इसके बाद वे कच्छुल्लनारद जल के त्रोटो से सिंचित आसन पर जो  
दर्भ के ऊपर बिठा हुआ था बैठ गये-बैठकर उन्होंने ने पद्मनाभ राजा  
से कुशलवार्ता पूछा । पद्मनाभ राजा ने भी सुगम पूर्वक बैठे हुए उन  
कच्छुल्ल नारद से उन के कुशल समाचार पूछे । ( तएण से पउमनाभे  
राया णियगओरो हे जायविम्हए कच्छुल्लणारयं एवं वयासी-तुम्भ  
देवाणुप्पिया ! बहूणि गामाणि जाव गेहाइ अणुपविससि त अत्थि आइ  
ते कहिं चि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुब्बे, जारिसए णं मम  
ओरोहे ? तएण से कच्छुल्लणारए पउमनाभेण रत्ता एव वुत्ते समाणे ईसिं  
विहसिय करेइ, करित्ता एव वयासी-सरिसेण तुम पउमणाभा ! तस्स  
अगड ददुदुरस्स, केणं देवाणुप्पिया ! से अगडददुदुरे ! एव जहा मल्लि  
णाए एव खलु देवाणुप्पिया ! ) इसके बाद पद्मनाभ राजा ने अपने  
अंतःपुर में विस्मित बनकर कच्छुल्लनारद से इस प्रकार

आसन उपर ओसवा भाटे विनती करी त्वारपछी ते कच्छुल्ल नारद पाणीना  
छाटाओथी सिंचित दर्भना उपर पाथरेला आसन उपर ओसीने पद्मनाभ राजाने  
तेओना परिवारनी कुशलताना समाचारे पूछया पद्मनाभ राजाओ पणु आसन  
उपर सुओथी ओठेला ते कच्छुल्लनारदने कुशल समाचारे पूछया

( तएण से पउमनाभे राया णियगओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लणारय  
एव वयासी-तुम्भ देवाणुप्पिया ! बहूणि गामाणि जाव गेहाइ अणुपविससि, त  
अत्थि आइ ते कहिं चि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपूब्बे जारिसए णं मम  
ओरोहे ? तएण से कच्छुल्लणारए पउमनाभेण रत्ता एव वुत्ते समाणे ईसिं विह  
सिय करेइ, करित्ता एव वयासी-सरिसेण तुम पउमणाभा ! तस्स अगडददुदुरस्स  
केण देवाणुप्पिया ! से अगडददुदुरे ? एव जहा मल्लिणाए एव खलु देवाणुप्पिया ! )

त्वारपछी पद्मनाभ राजाओ पोताना रणुवासना वैलवने ओछने आश्रय  
थछने कच्छुल्ल नारदने आ प्रभाणु कछु के हे देवानुप्रिय ! तमे धण्णा ग्राम  
यावत् धरोभा आवण करता रहेछा ते हे देवानुप्रिय ! , -पडेला

देवानुप्रिय ! ईदृशोऽवरोधो दृष्टपूर्वो यादृशः खलु ममावरोधः ? ममान्तः पुरे  
यादृश्यः स्त्रियो वर्तन्ते, तादृश्य स्त्रियः कुत्रापि भवता दृष्टा इति पृच्छतीत्यर्थः ।  
ततः खलु स कच्छुल्लनारदः पद्मनाभेन राज्ञा एवमुक्त सन् ' ईपद् विहसित '   
मन्दहास करोति, कृत्वा एवमवादीत्—हे पद्मनाभ ! सदृशस्त्वं खलु तस्य ' अग-  
डदददुरस्स ' अगडददुरस्य=कूपमण्डूकस्य यथा कूपमण्डूकः कूपाद् वहिः प्रदेशे  
विद्यमान न किमपि जानाति, तद्वत् त्वमपि स्वभवनाद् बहिरन्यत्रावस्थित किमपि  
वस्तु न वेत्सीति भावः । कच्छुल्लनारदस्य वचन श्रुत्वा पद्मनाभः कच्छुल्लनारदं  
पृच्छति—' के ण देवाणुप्पिया ! से अगडदददुरे ' इति । हे देवानुप्रिय ! कः खलु  
सोऽगडददुरः ? एव पद्मनाभेन राज्ञा पृष्ठः सन् कच्छुल्लनारदः प्राह—' एव यथा  
मल्लिणाए ' यथा मल्लिज्ञाने वर्णितमेवमत्र गोध्यम् समुद्रददुरकूपददुरयोः  
परस्परवार्तालापो यथा सजातस्तथा कच्छुल्लनारदेन कथित इत्यर्थः । पुनः कच्छुल्ल-

कहा—हे देवानुप्रिय ! तुम अनेक ग्राम यावत् से घरों में आते जाते  
रहते हो—तो क्या हे देवानुप्रिय ! तुमने कहीं पर क्या ऐसा  
अतः पुर पहिले कभी देखा है—जैसा मेरा अन्तः पुर है ? पद्मनाभ  
राजा के द्वारा इस प्रकार पूछे गये वे कच्छुल्ल नारद कुछ हँसने लगे—  
हँसकर तब उन्होंने उनसे इस प्रकार कहा—हे पद्मनाभ ! तुम उस  
कूपम डूक के समान हो—जो अपने निवासस्थान भूत कुए से बाहिरी  
प्रदेश में विद्यमान कुछभी नहीं जानते हो । कच्छुल्ल नारद के वचन  
सुनकर के पद्मनाभ ने उन कच्छुल्ल नारद से पूछा—देवानुप्रिय ! वह  
अगडददुर का आख्यान कैसा है ? तब नारद ने उनसे कहा—मल्लि  
नाम के अध्ययन में कूपमडूक और समुद्र मडूक के परस्पर में वार्ता-  
लाप के रूप में यह आख्यान वर्णित किया हुआ है—सो नारद ने यह  
आख्यान जैसे का तैसा उन्हें सुना दिया— पुनः कच्छुल्ल नारद उनसे

કોઈ પણ સ્થાને અને કોઈ પણ દિવસે આવો મારા જેવો રણવાસ ભેયો  
છે ? પદ્મનાભ રાજા વડે આ રીતે પ્રશ્ન પૂછાએલા તે કચ્છુલ નારદ હસવા  
લાગ્યા, હુમીને તેઓએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પદ્મનાભ ! તમે તે કૂપ  
મડૂક જેવા છો કે જે પોતાના નિવાસસ્થાન કૂપથી બહારના પ્રદેશ વિષે થોડું  
પણ જ્ઞાન ધરાવતો નથી કચ્છુલ નારદના વચન સાંભળીને પદ્મનાભે તે કચ્છુલ  
નારદને પૂછ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તે અગડ દદુરકુ આખ્યાન કેવી રીતે છે ?  
ત્યારે નારદે તેમને મલ્લિ નામે અધ્યયનમાં વર્ણવવામાં આવેલા કૂપ મડૂક અને  
સમુદ્ર-મડૂકના વાર્તાલાપ રૂપે તે સંપૂર્ણ આખ્યાન તેમને કહી સંભળાવ્યું



નારદોવદતિ-एव प्रक्षयमाणप्रकारेण सल्ल हे देवानुप्रिय । जम्बूद्वीपे द्वीप भारते  
वर्षे हस्तिनापुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञो दुहिता चूलन्या देव्या आत्मजा पाण्डोः  
स्तुषा पश्चान्ना पाण्डवाना भार्या द्रौपदी देवी रूपेण च यावद् उत्कृष्ट शरीरा वर्तते  
द्रौपद्याः खलु देव्याश्चित्रस्यापि पादादुत्पत्तस्यैव तयासरोध. तयात्त.पुर्ववर्तिनी  
काचिदपि देवी ' सयतमपि कठ ' शततमामपि कर्त्ता नाहति, इति कृत्वा=एव  
ज्ञात्वा कथयामि-द्रौपदीसदृशी नास्ति काचिदपीति । ततः कच्छुल्लनारदोगन्तुकाम.

કહેતે હું કિ હે દેવાનુપ્રિય । સુનો-ચાત હમ પ્રકાર હૈ-(જમ્બૂ દીવે દીવે  
ભારહે વાસે હસ્તિનાગરે દ્રુપદસસ રણ્ણો ધૂયા, ચૂલનીળ દેવીળ અત્તયા  
પદુસસ સુપ્તા, પચળ્હ પડવાળ ભારિયા દોવર્દે દેવી રૂવેળ ચ જાવ ઉક્ષિટ  
સરીરા, દોવર્દેળ ણ દેવીળ ચિત્રસસ વિ પાયગુટ્ટયસસ અય તવ અવરોહો સય  
ન્નમપિ કલ ણ અગર્વે ત્તિ કટ્ટુ પડમળામ આપુચ્છહ આપુચ્છિત્તા જાવ પડિ  
ગણ, તણ્ણ સે પડમળામે રાયા કચ્છુલ્લગારયસસ અતિણ્ણયમઠ્ઠ સોચ્ચા  
ણિસમ્મ દોવર્દેળ, દેવીણ રૂવે ચ ચ્છિટ્ઠે ૪ દોવર્દેળ અજ્જોવવન્ને જેણેવ પોસ  
હસાલા તેણેવ ઉવાગચ્છહ) જમ્બૂદ્વીપ નામ કે પ્રથમ દ્વીપ ( મધ્ય જમ્બૂદ્વીપ  
મેં ) મેં ભારતવર્ષ મેં, હસ્તિનાપુર નામ કે નગર મેં દ્રુપદ રાજા કી પુત્રી  
ચુલની દેવી કી આત્મજા, પાંડુ રાજા કી સ્તુષા-પુત્રવધૂ-પાંચ પાંડવો  
કી ભાર્યા દ્રૌપદી દેવી હૈ । યહ રૂપ સે યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીર હૈ । તુમ્હારા  
યહ અતઃપુર ઉસકે કટે હુળ પૈર કે અગૂઠે કે સૌવે અશ કે વરાવર

અને ત્યારપછી કચ્છુલ્લ તેમને કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય । જ્ઞાત્વો,  
ચાત એવી છે કે—

( જમ્બૂ દીવે દીવે ભારહેવાસે હસ્તિનાગરે દ્રુપદસસ રણ્ણો ધૂયા, ચૂલનીળ  
દેવીળ અત્તયા પદુસસ સુપ્તા, પચળ્હ પડવાળ ભારિયા દોવર્દે દેવી રૂવેળ ચ જાવ  
ઉક્ષિટસરીરા, દોવર્દેળ ણ દેવીળ ચિત્રસસ વિ પાયગુટ્ટયસસ અય તવ અવરોહો  
સયન્નમપિ કલ ણ અગર્વે ત્તિ કટ્ટુ પડમળામ આપુચ્છહ, આપુચ્છિત્તા જાવ પડિ  
ગણ, તણ્ણ સે પડમળામે રાયા કચ્છુલ્લગારયસસ અતિણ્ણયમઠ્ઠ સોચ્ચા ણિસમ્મ  
દોવર્દેળ, દેવીણ રૂવેચ ચુચ્છિટ્ઠે ૪ દોવર્દેળ અજ્જોવવન્ને જેણેવ પોસહસાલા  
તેણેવ ઉવાગચ્છહ )

જમ્બૂ દ્વીપ નામના પ્રથમ દ્વીપમાં ભારત વર્ષમાં હસ્તિનાપુર નામે નગર  
રમાં દ્રુપદ રાજાની પુત્રી યુવની દેવીની આત્મજા, પાંડુ રાજાની સ્તુષા-પુત્રવધૂ  
પાંચ પાંડવોની પત્ની દ્રૌપદીદેવી છે તે રૂપથી યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે  
તમારો આ રણુવાસ તેના કપાયેલા અગૂઠાના સોમાં ભાગની બરોબર પછ  
નથી, આ બધું હું વિચારપૂર્વક કહી રહ્યો છું દ્રૌપદી દેવી ૧ ૫૫

पद्मनाभमापृच्छति, पृष्ट्वा यावत् पद्मनाभेन राज्ञा सत्कार माप्य प्रतिगतः=उत्पतनी विप्रया गगनमुङ्गयन् प्रतिगत इत्यर्थः ।

तत खलु स पद्मनाभो राजा कञ्छुल्लनारदस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा= आकर्ष्य निशम्य हृत्प्रधार्य द्रौपद्या देव्या रूपे च यौवने च लावण्ये च मूर्च्छितः= आसक्तः, गृद्धः = लोलुपः, ग्रथितः=निबद्धचित्तः, अयुपपन्नः = एकाग्रचित्त सन् यत्रैव पौषधशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पौषधशाला प्रमार्ज्य यावदष्टम भक्त कृत्वा ' पूर्वमगतिक ' पूर्वमित्र देवम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् एव खलु हे देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारत वर्षे हस्तिनापुरे पाण्डवभार्या द्रौपदी देवी यावत्-उत्कृष्टशरीरा वर्तते, तत्=तस्माद् इच्छामि खलु हे देवानुप्रिय !

भी नहीं है । ऐसा मैं जानकर ही कह रहा हूँ । द्रौपदी के जैसी कोई भी नारी नहीं है । उस प्रकार कहकर वे कच्छुल्ल नारद वहा से चलने के लिये अभिलाषी बन गये-तब उन्होंने पद्मनाभ राजा से जाने के लिये पूछा पूछकर यावत् वे वहा से पद्मनाभ राजा से सत्कृत होकर उत्पतनी विद्या के प्रभाव से गगन तल को उल्लंघन करते हुए वापिस चले गये । इसके बाद वे पद्मनाभ राजा कच्छुल्ल नारद के मुख से इस समाचार रूप अर्थ को सुनकर और उसे हृदय में धारण कर द्रौपदी देवी के रूप, यौवन एवं लावण्य में मूर्च्छित ४ बन गये, यावत् उनका चित्त उन में विलकुल एकाग्र हो गया । इस तरह होकर, वे जहा पौषधशाला थी वहा गये । ( उवागच्छित्ता पौमहसालं जाव पुव्वसगइय देव एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! जम्बूदीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे जाव सरीरा त इच्छामि ण देवाणुप्पिया !

नथी आ प्रभाणु कहीने ते कञ्छुल्ल नारद त्याथी आलवा भाटे तैरया थछ गया तेमणु पद्मनाभ राजाने जवा भाटे पूछयु, पूछीने यावत् त्याथी तेओ पद्मनाभ राजानी पासेथी सत्कृत थछने उत्पतनी विधाना प्रभावथी आका शने ओजगता जता रह्या तयारपछी ते पद्मनाभ राजा कञ्छुल्ल नारदना मुणथी आ समाचारने मालणीने अने तेने हृदयमा धारणु उरीने द्रौपदी देवीना रूप, यौवन अने लावण्यथी मूर्च्छित ४ थछ गया, यावत् तेमनु मन तेमा ओकदम ओदी गयु आ स्थितिमा तेओ जवा पौषधशाणा छती त्या गया

( उवागच्छित्ता पौमहसालं जाव पुव्वसगइय देव एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! जम्बू दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे जाव सरीरा त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! दोवई देवी इहमाणिय तएण पुव्वसगइय देवे पद्मनाभ एवं

નારદોત્તદતિ-એવ પ્રક્ષમાણપ્રકારેણ સ્વલુ દે દેવાનુપ્રિય । જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે ભારતે  
વર્ષે હસ્તિનાપુરે નગરે દ્રુપદસ્ય રાજો દુહિતા ચૂલ્યા દેવ્યા આત્મજા પાન્ડોઃ  
સ્તુષા પશ્ચાન્ના પાન્ડરાના ભાર્યા દ્રૌપદી દેવી રૂપેણ ચ યાવદ્ ઉત્કૃષ્ટ શરીરા વર્તતે  
દ્રૌપદ્યાઃ સ્વલુ દેવ્યાશ્ચિન્નસ્યાપિ પાદાનુષ્ઠાસ્યાય તયાપરોધઃ તયાન્તઃપુરવર્તિની  
કાચિદપિ દેવી 'સયતમપિ કઞ્ચ' શતતમામપિ કન્થા નાર્દતિ, ઇતિ કૃત્વા=એવ  
જ્ઞાત્વા કથયોમિ-દ્રૌપદીસદશી નાસ્તિ કાચિદપીતિ । તતઃ કચ્છુલ્લનારદોગન્તુકામઃ

કહતે હું કિ દેવાનુપ્રિય । સુનો-ઘાત હમ પ્રકાર હૈ-(જમ્બૂ દ્વીપે દીવે  
ભારહે વાસે હત્થિનાઝરે દુવયસ્સ રણ્ણો ધૂયા, ચૂલનીય દેવીય અત્તયા  
પહુસ્સ સુળ્હા, પચળ્હ પહવાળ ભારિયા દોવર્હ દેવી રૂવેળ ય જાવ ઉક્કિઠ્ઠ  
સરીરા, દોવર્હેય ણ દેવીય છિન્નસ્સ વિ પાયગુટ્ટયસ્સ અય તવ અવરોહો સય  
ન્નમપિ કલ ણ અગ્વર્હ ત્તિ કટ્ટુ પડમણા મ આપુચ્છહ આપુચ્છિત્તા જાવ પડિ  
ગણ, તણ્ણ સે પડમણામે રાંયો કચ્છુલ્લનારયસ્સ અતિણ્ણયમઠ્ઠ સોચ્ચા  
ણિસમ્મ દોવર્હણ, દેવીય રૂવે ય ચ્છિઠ્ઠણ ૪ દોવર્હેય અજ્જોવવન્ને જેણેવ પોમ  
હસાલા તેણેવ ઉવાગચ્છહ) જમ્બૂદ્વીપ નામ કે પ્રથમ દ્વીપ (મધ્ય જમ્બુદ્વીપ  
મેં) મેં ભારતવર્ષ મે, હસ્તિનાપુર નામ કે નગર મેં દ્રુપદ રાજા કી પુત્રી  
ચુલની દેવી કી આત્મજા, પાંડુ રાજા કી સ્તુષા-પુત્રવધૂ-પાંચ પાડવો  
કી ભાર્યા દ્રૌપદી દેવી હૈ । યહ રૂપ સે યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીર હૈ । તુમ્હારા  
યહ અતઃપુર ઉસકે કટે હુણ પૈર કે અગૂઠે કે સૌવે અશ કે વરાચર

અને ત્યારપછી કચ્છુલ્લ તેમને કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય । સાંભળો,  
ઘાત એવી છે કે—

( જમ્બૂ દ્વીપે દીવે ભારહેવાસે હત્થિનાઝરે દુવયસ્સ રણ્ણો ધૂયા, ચૂલનીય  
દેવીય અત્તયા પહુસ્સ સુળ્હા, પચળ્હ પહવાળ ભારિયા દોવર્હ દેવી રૂવેળ ય જાવ  
ઉક્કિઠ્ઠસરીરા, દોવર્હેય ણ દેવીય છિન્નસ્સ વિ પાયગુટ્ટયસ્સ અય તવ અવરોહો  
સયન્નમપિ કલ ણ અગ્વર્હ ત્તિ કટ્ટુ પડમણામ આપુચ્છહ, આપુચ્છિત્તા જાવ પડિ  
ગણ, તણ્ણ સે પડમણામે રાંયો કચ્છુલ્લનારયસ્સ અતિણ્ણયમઠ્ઠ સોચ્ચા ણિસમ્મ  
દોવર્હેય, દેવીય રૂવેય મુચ્છિઠ્ઠણ ૪ દોવર્હેય અજ્જોવવન્ને જેણેવ પોમહસાલા  
તેણેવ ઉવાગચ્છહ )

જમ્બૂ દ્વીપ નામના પ્રથમ દ્વીપમાં ભારત વર્ષમાં હસ્તિનાપુર નામે નગર  
રમાં દ્રુપદ રાજાની પુત્રી ચૂલની દેવીની આત્મજા, પાંડુ રાજાની સ્તુષા-પુત્રવધૂ  
પાંચ પાડવોની પત્ની દ્રૌપદીદેવી છે તે રૂપથી યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે  
તમારો આ રણુવાસ તેના કપાયેલા અગૂઠાના સોમા ભાગની બરાબર પશુ  
નથી, આ બધું હું વિચારપૂર્વક કહી રહ્યો છું દ્રૌપદી દેવી નારી કેઈ પશુ

पद्मनाभमापृच्छति, पृष्ट्वा यावत् पद्मनाभेन राज्ञा सत्कारं प्राप्य प्रतिगतः=उत्पतनी विद्यया गगनमुद्गमयन् प्रतिगत इत्यर्थः ।

ततः खलु स पद्मनाभो राजा कच्छुल्लनारदस्यान्तिके एतमयं श्रुत्वा= आकर्ष्य निशम्य हृत्प्रधार्य द्रौपद्या देव्या रूपे च यौवने च लावण्ये च मूर्च्छितः= आसक्तः, गृद्धः= लोलुपः, ग्रथितः=निबद्धचित्तः, अयुपपन्नः= एकाग्रचित्तः सन् यत्रैव पौपधशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पौपधशाला प्रमार्ज्य यावदाष्टमं भक्तं कृत्वा 'पूर्वसगतिक' पूर्वमित्रं देवम् एव=वस्थमाणप्रकारेण अरादीत् एव खलु हे देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वे पे भारते वर्षे हस्तिनापुरे पाण्डवभार्या द्रौपदी देवी यावत्-उत्कृष्टशरीरा वर्तते, तत्=तस्माद् इच्छामि खलु हे देवानुप्रिय !

भी नहीं है। ऐसा मैं जानकर ही कह रहा हूँ। द्रौपदी के जैसी कोई भी नारी नहीं है। उस प्रकार कहकर वे कच्छुल्ल नारद वहाँ से चलने के लिये अभिलाषी बन गये-तब उन्होंने पद्मनाभ राजा से जाने के लिये पूछा पूछकर यावत् वे वहाँ से पद्मनाभ राजा से सत्कृत होकर उत्पतनी विद्या के प्रभाव से गगन तल को उल्लंघन करते हुए वापिस चले गये। इसके बाद वे पद्मनाभ राजा कच्छुल्ल नारद के मुख से इस समाचार रूप अर्थ को सुनकर और उसे हृदय में धारण कर द्रौपदी देवी के रूप, यौवन एवं लावण्य में मूर्च्छित ४ बन गये, यावत् उनका चित्त उन में विलकुल एकाग्र हो गया। इस तरह होकर, वे जहाँ पौपधशाला थी वहाँ गये। ( उवागच्छित्ता पौमहसाल जाव पुव्वसगइय देव एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! जम्बूद्वीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे जाव सरीरा त इच्छामि ण देवाणुप्पिया !

नथी आ प्रमाणे क्खीने ते उच्छुल्ल नारद त्याथी जम्बूद्वीपे माटे तैरया  
थय गया तेमणे पद्मनाभ राजाने जवा माटे पूछयु यावत् त्याथी  
तेओ पद्मनाभ राजानी पासैथी सत्कृत थयने उत्पतनी ( वथी आका


शने ओणगता जता रह्या त्थारपछी ते पद्मनाभ  
भुण्ठथी आ समाचारने सालणीने अने तेने हृदयम  
देवीना रूप, यौवन अने लावण्यथी मूर्च्छित ४ थय  
तेमा ओकदम ओटी गयु आ स्थितिमा तेओ जया पो

( उवागच्छित्ता पौमहसाल जाव पुव्वसगइय देव  
देवाणुप्पिया ! जम्बू द्वीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे  
ण देवाणुप्पिया ! दोवई देवी इहमाणिय तण्णं

દ્રૌપદીં દેરીમ્ ' હ્ર માણિય ' ઇદાનેતુમ્ । તતઃ સત્ત્વ પૂર્વમગતિકો દેવઃ પદ્મનાભ  
નૃપમ્ એવમયાદીત્-હે દેવાનુપ્રિય ! નો સત્ત્વ ગતદ્ ભૂત વા ભવદ્ વા ભવિષ્યદ્ વા,  
યત્ સ્વલુ દ્રૌપદી દેવી પથ પાઠ્યાન સુતરાડ્યેન પુરુષેણ સાર્વમુદ્યાન મોગાન્  
યાવદ્ વિહરતિ, તથાપિ ચ સત્ત્વ અદ્ તત્ત્વ પ્રીત્યર્થ દ્રૌપદી દેવીમિદં હવ્યપ્રાનયામીતિ

દોઢે દેવોં હ્રમાણિય તળળ પૂર્વસગઠળ દેવે પડમનાભ ગ્વ વયાસી-નો  
સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! ગ્વ ભૂય વા મઞ્ય વા મવિસ્મ વા જળળ દોઢે  
દેવી પચ પડવે મોત્તુગ અન્નેળ પુરિસેળ સદ્ધિ ઓરાલાઢ જાવ વિહરિ  
સ્સહ ) વહાં જાકર ઉન્હોં ને ઉમ પોપથ શાલા કો રજોહરણ  
સે સાફ ક્રિયા યાવન્ અષ્ટમ ભક્ત ફર કે પૂર્વ સગતિ દેવ કા આગહન  
ક્રિયા દેવોં કે આનેપર પૂર્વ સગતિક દેવ સે હસ પ્રકાર કહા હે દેવાનુ  
પ્રિય ! જમ્બૂદ્વીપ નામ કે દ્વીપ મેં ભારત વર્ષ મેં હસ્તિનાપુર નગર મેં  
પાંડવો કો માર્યા દ્રૌપદી દેવી હે । યદ યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીર હે । હસલિયે  
હે દેવાનુપ્રિય ! મેં ઉસ દ્રૌપદી દેવી કો તુમસે યદા હે આને કે લિયે  
ચાહતા હું । પદ્મનાભ કો હસ વાત કો સુનકર પૂર્વભવ કે મિત્ર ઉસ  
દેવ ને ઉસ સે તત્ત્વ એસા કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! એસી વાત દ્રૌપદી કે સાથ  
ન પહિલે હુઈ હે, ન આગે હોગી-ઑર ન અવ વર્તમાન મેં હો સકતી હે,  
જો દ્રૌપદી દેવી પાચ પાંડવો કો છોડકર અન્ય કિસી દૂમરે પુરુષ કે  
સાથ ઉદાર યાવત્ મનુષ્ય ભવ સઘન્યી કામ સુત્રો કો ભોગે ( તદાવિ

વયાસી નો સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! એય ભૂય વા મઞ્ય વા મવિસ્મ વા જળળ દોઢે  
દેવો પચ પડવે મોત્તુગ અ નેળ પુરિસેળ સદ્ધિ ઓરાલાઢ જાવ, વિહરિસ્સહ )

ત્યા જીને તેમણે તે પોપથશાળાને રજોહરણથી સાફ કરી યાવત્ અષ્ટમ  
ભક્ત કરીને પૂર્વ સગતિ દેવનુ આવાહન કર્યું દેવ જ્યારે આવી ગયો ત્યારે  
તેમણે પૂર્વસગતિક દેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! જમ્બૂદ્વીપ  
નામના દ્વીપમા ભરત વર્ષમા હસ્તિનાપુર નગરમા પાંડવોની પત્ની દ્રૌપદીદેવી  
છે, તે યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તે દ્રૌપદી દેવીને  
તમે અહીં લઈ આવો એવી મારી ઇચ્છા છે પદ્મનાભની આ વાતને સાલળીને  
પૂર્વલવના મિત્ર  તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! દ્રૌપદી  
દેવીની સાથે

ન વર્ત

ચરણ ન પડેવા થયું છે ન ભવિષ્યમા થશે અને

છે દ્રૌપદી દેવી પાચે પાંડવો સિવાય બીજા

નવ સમધી કામસુખો ભોગવે આ



कृत्वा=उक्त्वा पद्मनाभम् आपृच्छति आपृच्छ्य तथा उत्कृष्टया देवसम्पन्धिन्या गत्या यावत् लवणसमुद्रस्य मध्यम-येन=उपरिभागेन गगनमार्गेण, यत्रैव हस्तिनापुर नगर तत्रैव प्राधारयद् गमनाय ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये हस्तिनापुरे नगरे युधिष्ठिरो राजा द्रौपद्या सार्धमुपरि आकाशतले=प्रासादादालिकोपरि सुरमसुप्तश्चाप्यासीत्, ततः खलु स पूर्वसगतिको देवो यत्रैव युधिष्ठिरो राजा यत्रैव द्रौपदीदेवी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य द्रौपद्यै

य ण अह तव पियद्वतयाए दोवई देवीं इह हव्वमाणेमि त्तिकट्टु पउमणाभ आपुच्छइ, आपुच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुद्ध मज्झं मज्झेणं जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ) फिर भी मैं तुम्हारी प्रीति के निमित्त द्रौपदी देवी को यहाँ शीघ्र लेकर आता हूँ । ऐसा कहकर उसने जाने के लिये उन पद्मनाभ से पूजा, पूजकर फिर वह उस उत्कृष्ट देवभवसम्बन्धी गति से यावत् लवण समुद्र के बीच से होकर जहा हस्तिनापुर नगर था उस और चल दिया ! (तेण कालेण तेण समएण हत्थिणाउरे जुहिद्विले राया, दोवईए सद्धि उप्पि आगासतलसि सुहपसुत्ते यावि होत्था, तएण से पुव्वसगइए देवे जेणेव जुहिद्विले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ ) उस काल और उस समय में हस्तिनापुर नगरमें युधिष्ठिर राजाके साथ द्रौपदी आकाशतलमें-प्रासाद की अट्टालिका के ऊपर सोये हुए थे । वह पूर्व सगतिक देव जहा वे युधिष्ठिर राजा और जहां वह द्रौपदी देवी थी वहां आया-(उवागच्छित्ता

( तद्वापि य ण अह तव पियद्वतयाए दोवई देवीं इह हव्वमाणेमि त्ति ऋदु पउमणाभ आपुच्छइ, आपुच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुद्ध मज्झं मज्झेण जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए )

छताये तमने पुश उरवा माटे हु द्रौपदी देवीने शीघ्र अच्छी लछ आवु छु आम कहीने तेले जवा माटे पद्मनाभ राजने पूछथु पूत्रीने ते पोतानी उत्कृष्ट देवलव सम्बन्धी गतिथी यावत् लवण समुद्रनी वर्ये थधने ज्या हस्तिनापुर नगर छतुं ते तरइ खाना थये।

( तेण कालेण तेण समएण हत्थिणाउरे जुहिद्विले राया, दोवईए सद्धि उप्पि आगासतलसि सुहपसुत्ते यावि होत्था तएण से पुव्वसगइए देवे जेणेव जुहिद्विले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ )

ते काले अने ते समये हस्तिनापुर नगरमा युधिष्ठिर राजा अने द्रौपदी देवी भडेलनी अगाशी उपर सूता छता ते पूर्व सगतिक देव ज्या ते युधिष्ठिर राजा अने ज्या ते द्रौपदी देवी छती ज्या आव्यो।

દ્રૌપદીં દેવીમ્ ' હૃદ માણિય ' ઇદાનેતુમ્ । તતઃ સત્ત્વ પૂર્વસગતિમો દેવઃ પદ્મનાભઃ  
નૃપમ્ એવમવાદીત્-હે દેવાનુપ્રિય ! નો ત્વતુ ઇતદ્ ભૂત તા મન્વદ્ તા મવિન્ધ્યદ્ વા,  
યત્ સ્વતુ દ્રૌપદી દેવી પદ્મ પાંડરાત્ન મુરત્યાઽન્યેન પુરુષેણ સાર્ધમુદાગત મોગાન્  
યાતદ્ વિહરતિ, તથાપિ ચ ત્વતુ અહ તત્ત્વ મીત્યર્પ્ય દ્રૌપદી દેવીમિદઃ દ્રવ્યપ્રાનયામીતિ

દોવઈ દેવોં હૃદમાણિય તત્ત્વ પૂર્વસગતિમ દેવે પદ્મનાભ ઇત્ત વયાસી-નો  
સ્વતુ દેવાણુપ્પિયા ! ઇત્ત ભૂય વા મન્વ વા મવિન્ધ્ય વા જળગ દોવઈ  
દેવી પચ પડવે મોત્ત્ત્વ અન્નેણ પુરિસેણ સદ્ધિ ઓરાઝાઠ જાત્ત વિહરિ  
સ્સહ ) વહાં જાકર ઉન્નોં નેં ઉસ પોપધ શાલા કો રજોહરણ  
સે સાફ ક્રિયા યાવત્ અષ્ટમ ભક્ત કર કે પૂર્વ સગતિ દેવ કા આવાહન  
ક્રિયા દેવોં કે આનેપર પૂર્વ સગતિક દેવ સે હસ પ્રકાર કહા હે દેવાનુ  
પ્રિય ! જંબૂદ્વીપ નામ કે દ્વીપ મેં ભારત વર્ષ મેં હસ્તિનાપુર નગર મેં  
પાંડવો કી માર્યા દ્રૌપદી દેવી હૈ । યદ યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીર હૈ । હસલિયે  
હે દેવાનુપ્રિય ! મેં ઉસ દ્રૌપદી દેવી કો તુમસે યદા હે આન કે લિયે  
ચાહતા હૂં । પદ્મનાભ કી હસ વાત કો સુનકર પૂર્વભવ કે મિત્ર ઉસ  
દેવ ને ઉસ સે તત્ત્વ એસા કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! એસી વાત દ્રૌપદી કે સાથ  
ન પહિલે હુઈ હૈ, ન આગે હોગી-ઔર ન અવ વર્તમાન મેં હો સકતી હૈ,  
જો દ્રૌપદી દેવી પાચ પાંડવો કો છોડકર અન્ય કિસી દૂમરે પુરુષ કે  
સાથ ઉદાર યાવત્ મનુષ્ય ભવ સઘની કામ સુવોં કો ભોગે ( તદાવિ

વયાસી નો સ્વતુ દેવાણુપ્પિયા ! ઇત્ત ભૂય વા મન્વ વા મવિન્ધ્ય વા જળગ દોવઈ  
દેવી પચ પડવે મોત્ત્ત્વ અ નેણ પુરિસેણ સદ્ધિ ઓરાઝાઠ જાત્ત, વિહરિસ્સહ )

ત્યા જીને તેમણે તે પોપધશાળાને રજોહરણથી સાફ કરી યાવત્ અષ્ટમ  
ભક્ત કરીને પૂર્વ સગતિ દેવનુ આવાહન કર્યું દેવ જ્યારે આવી ગયો ત્યારે  
તેમણે પૂર્વસગતિક દેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! જંબૂદ્વીપ  
નામના દ્વીપમાં ભારત વર્ષમાં હસ્તિનાપુર નગરમાં પાંડવોની પત્ની દ્રૌપદીદેવી  
છે, તે યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તે દ્રૌપદી દેવીને  
તમે અહીં લઈ આવો એવી મારી ઇચ્છા છે પદ્મનાભની આ વાતને સાંભળીને  
પૂર્વભવના મિત્ર તે દેવે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! દ્રૌપદી  
દેવીની સાથે આ જાતનુ આચરણ ન પડેવા થયું છે ન ભવિષ્યમાં થશે અને  
ન વર્તમાનમાં થવાની શક્યતા છે દ્રૌપદી દેવી પાચે પાંડવો મિવાય બીજા  
કોઈ પુરુષની સાથે ઉદાર યાવત્ મનુષ્યભવ સઘની કામસુખો ભોગવે આ  
વાત તદ્દત્ત અસંભવિત છે.

यत्रैव पद्मनाभस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य एवमवादीत्-एषा खलु हे देवानुप्रिय ! मया हस्तिनापुराद् द्रौपदी इह हव्यमानीता तयाशोकवनिकाया तिष्ठति, अतः पर त्व जानासि ' इति कृत्वा=उक्त्वा, यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः ॥ सू० २५ ॥

मूलम्-तएणं सा दोवई देवी तओ मुहुत्तरस्स पडिबुद्धा समाणी त भवणं असोगवणियं च अपच्चभिजाणमाणी एव वयासी-नो खलु अम्हं एसे सए भवणे णो खलु एसा अम्हं सगा असोगवणिया, तं ण णज्जइ णं अहं केणइ देवेण वा दाणवेण वा किं पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधवेण वा अन्नस्स रण्णो असोगवणिय साहरियत्तिकट्टु ओहयमणसकप्पा जाव झियायइ, तएणं से पउमणाभे राया पहाए जाव सव्वालंकार विभूसिए अतेउरपरियालं संपरिवुडे जेणैव असोगवणिया जेणैव दोवई देवी तेणैव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दोवई देवी ओहय० जाव झियायमाणी पासइ पासित्ता एव वयासी-किण्णं तुम देवाणुप्पिया । ओहय जाव झियाहि, एवं

दिया-गाढ निद्रा से रहित कर फिर वह वहाँ से जहा पद्मनाभ राजा थे वहा गया-वहा जाकर उसने उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! मैं हस्तिनापुर नगर से द्रौपदी को यहा ले आया हूँ । वह तुम्हारी अशोक चाटिका में ठहरी है, अतः अब तुम जानो । ऐसा कहकर वह देव जिस दिशा से प्रकट हुआ था-उसी दिशा की और वापिस चला गया । सू-२५

करीने ते जया पद्मनाभ राजा हुता त्या गये । त्या जधने तेणे तेमने आ प्रभाणे उद्यु के छे देवानुप्रिय ! हस्तिनापुर नगरथी द्रौपदी देवीने हु अडीं लउ आव्यो छु ते तमारी अशोक-वाटिकाभा छे, अथी हवे तमे जणु । आ प्रभाणे कडीने ते देव जे दिशा तरक्षी प्रकट थये हुतो ते ज दिशा तरक्ष पाछे जतो रह्यो ॥ सूत्र २५ ॥

देव्यै 'आसोवणिय' अग्र्यापनीं निशं 'दलयः' ददाति सुप्रमृष्टां द्रौपदीं  
गादनिद्रयाऽऽक्रान्ता कृतानित्यर्थः । दद्या-गादनिद्रायती कृत्या द्रौपदीं देवीं  
गृहीत्वा तया उत्कृष्टया देवमग्र्यन्यागत्या यावत् यज्ञीयमरकका राजधानी  
यज्ञीय पद्मनाभस्य भवनं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पद्मनाभस्य भवने 'असोगव  
णियाए' अशोकवनितायाम् अशोकवाटिकाया द्रौपदीं देवीं स्थापयति,  
स्थापयित्वा 'आतोवणि अग्रहः' अग्र्यापनीं निद्रामपहरति, अपहरत्य

दोवईए देवीए ओसोवणिय दलयः, दलित्ता दोवई देवि गिण्ड, गिण्डत्ता  
तीए उक्किट्टाए जाव जेणेव अमरकका जेणेव पउमणाभस्स भवणे  
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमणाभस्स भवणसि असोगवणि  
याए दोवइ देवीं ठवेइ ठावित्ता ओसोवणि अग्रहः, अग्रहत्ता जेणेव  
पउमणाभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एव वयासी-एस ण देवाणु  
प्पिया ! मए हत्थिणाउराओ दोवई इह इव्वमाणीया, तव असोगवणियाए  
चिद्धइ, अतोपुर तुम जाणिसि त्तिरुद्धजामेव दिस्सि पाउब्भूए तामेव  
दिस्सि पडिगए ) वहा आकर उसने द्रौपदी देवी को गाढ निद्रा में सुला  
दिया, सुलाकर फिर उसने उस द्रौपदी को वहा से उठाया-और उठा  
कर फिर वह उस उत्कृष्ट देवभवसन्धी गति से चलकर यावत् जहा  
अमरकका नगरी और जहा पद्मनाभ राजा का भवन था वहा आया-।  
वहा आकर के उसने पद्मनाभ के भवन में अशोकवाटिका में द्रौपदी  
देवी को रखदिया । रखकर के फिर उसने उसे गाढ निद्रा से रहित कर

( उवागच्छित्ता दोवईए देवीए ओसोवणिय दलयः, दलित्ता दोवई देवि  
गिण्डइ, गिण्डित्ता ताए उक्किट्टाए जाव जेणेव अमरकका जेणेव पउमणाभस्स  
भवणे-तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पउमणाभस्स भवणसि असोगवणियाए  
दोवइ देवीं ठवेइ ठावित्ता ओसोवणि अग्रहः, अग्रहत्ता जेणेव पउमणाभे तेणेव  
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एव वयासी-एसण देवाणुप्पिया मए हत्थिणाउराओ  
दोवई इह इव्वमाणीया, तव असोगवणियाए चिद्धइ, अतोपुर तुम जाणिसि त्ति वहु  
जामेव दिस्सि पाउब्भूए तामेव दिस्सि पडिगए )

त्या आवीने तेणे द्रौपदीने गाढ निद्रामा सुवाडी दीधी, सुवाडीने तेणे  
ते द्रौपदीने त्याधी उवावी अने उडावीने ते उत्कृष्ट देवलव सन्धी गतिथी  
यादीने यावत् त्या अमरकका नगरी अने त्या पद्मनाभ राजानु का भवन छे  
त्या आव्यो त्या आवीने तेणे पद्मनाभना लवनमा अशोक-वाटिकाभा द्रौपदी  
देवीने राखी दीधी । राखीने तेणे गाढ निद्रा से रहित कर दीधी ।

मेतद् भवन नो खलु एषाऽस्माक 'सगा' स्वका=स्वकीया, अशोकनिका, तद् न ज्ञायते खलु-अह केनापि देवेन वा दानवेन वा किं पुरुषेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गन्धर्वेण वा अन्यस्य राज्ञोऽशोकनिकाया 'साहरिया' संहता-आनीताऽस्मि' इति कृत्वा=इति विचार्य, अपहतमनःसकल्पा=अनिष्टयोगेन भग्न-मनोरथा निपादमुपगतेत्यर्थः यावद् ध्यायति=आर्त-ध्यान करोति ।

ततः खलु पद्मनाभो राजा स्नातो यावत् सर्वालकारविभूषितोऽन्तःपुरपरि-  
वारसपरिवृतो यत्रैवाशोकनिका यत्रैव द्रौपदी देवी, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य

एसा अम्ह सगा असोगवणिया, त ण णज्जइ, ण अह केणई देवेणवा दाणवेण वा किं पुरिसेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गवव्वेण वा अन्नस्स रण्णो असोगवणिय साहरियत्ति कट्ठु ओहयमणसकप्पा जाव झियायइ) यह मेरा निज का भवन नहीं है, यह मेरी निज की अशोक वाटिका नहीं है। तो पता नहीं पड़ता क्या मैं किसी दूसरे राजा की अशोकवाटिका में किसी देव, दानव, किंपुरुष, किन्नर महो-  
रग अथवा, गन्धर्व के द्वारा हरण कर लाई गई हूँ। इस प्रकार के विचार से उस का मनः सकल्प अपहत हो गया-अनिष्ट के योग से उस का मनोरथ भग्न हो गया और वह खेदखिन्न हो गई यावत् आर्त-ध्यान करने लगी। (तएण से पडमणाभे राया ण्हाए जाव सव्वालकारविभू-  
सिए अतेउरपरियाल सपिवुडे, जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवई देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता दोवई देवी ओहय० जाव झिया-

(नो खलु अम्ह एसे सएभरणे णो खलु एसा अम्ह सगा असोगवणिया, त ण णज्जइ ण अह केणई देवेण वा दाणवेण वा किंपुरिसेण वा किन्नरेण वा महो-  
रगेण वा गवव्वेण वा अन्नस्स रण्णो असोगवणिय साहरियत्ति कट्ठु ओहयमण सकप्पा जाव झियायइ)

आ भाइ लवन नहीं, आ भारी अशोक वाटिका नहीं कुछ भणर पडती नहीं, शुं हु भीज्ज केरि राजनी अशोक वाटिकाभा केरि देव, दानव, किंपुरुष किन्नर, महोरग अथवा तो गन्धर्व वडे अपहृत थयने लई जवामा आवी छु आ जतना विचारोथी तेनु मन उदास थई गयु, अनिष्टना योगथी तेना मनोरथ लभ थई गयो अने ते जेद-भिन्न थई गई यावत् आर्तध्यान करवा लागी

(तएण से पडमणाभे राया ण्हाए जाव सव्वालकारविभूसिए अतेउरपरियाल सपिवुडे, जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवई देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवाग-



खलु तुमं देवाणुप्पिया ! मम पुट्वसंगडएणं देवेणं जंबूदी-  
वाओ २ भारहाओ वासाओ हत्थिणापुराओ नयराओ जुहिदि  
हस्स रण्णो भवणाओ साहरिया त मा णं तुम देवाणुप्पिया !  
ओहय० जाव झियाहि, तुमं मए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं  
जाव विहराहि, तएणं सा दोवई देवी पउमणाभं एव वयासी  
—एव खलु देवाणुप्पिया ! जंबूदीवे दीवे भारहे वासे बारवइए  
णयरीए कण्हे णाम वासुदेवे ममप्पियभाउए परिवसइ, त णं  
से छण्हं मासाण मम कूप्प नो हव्वमागच्छइ तएणं अह देवा  
णुप्पिया ! जं तुम वदसि तस्स आणाओवायवयणाणिदेसे चिद्धि  
स्सामि, तएणं से पउमे दोवईए एयमट्टं पडिसुणित्ता २ दोवईं  
देवि कण्णंतेउरे ठवेइ, तएणं सा दोवई देवी छट्टु छट्टेणं अनि  
विखत्तेणं आयांविळपरिग्गहिएणं तवोकम्मेषं अप्पाणं भावेमाणे  
विहरइ ॥ सू० २६ ॥

टीका—‘ तएण सा ’ इत्यादि । तत खलु सा द्रौपदी देवी ततो मुहूर्त्तान्तरे  
प्रतिबुद्धा=जागरिता सती तद् भवनम् अशोकवटिका च ‘ अपच्चभिजाणमाणी ’  
अप्रत्यभिजानन्ती भवनादिकमपरिचित जानन्ती एवमवादीत्—नो खलु अरमाव

— तएण सा दोवई देवी इत्यादि ॥

टीકાર્થ—(તएણ) હસકે વાદ (સા દોવઈદેવી) વહ દ્રૌપદીદેવી (તાઓ  
મુહુત્તરસ્સ પડિબુદ્ધા સમાણી) ૧ મુહૂર્ત્ત કે વાદ જગી સો જગ કર  
ઉસને ( ત ભવણ અસોગવાણિય ચ અપચ્ચભિજાણમાણી એવ વયાસી )  
ઉસ ભવન કો એવ ઉસ અશોકવાટિકા કો અપરિચિત જાનકર અપને  
મન મેં એસા વિચાર કિયા—( નો ખલુ અમ્હ એસે સપ્પભવણે, ણો ખલુ

તएण सा दोवई देवी इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—(તएણ) ત્યારપછી (સા દોવઈ દેવી) તે દ્રૌપદી દેવી (તાઓ મુહુત્તરસ્સ  
પડિબુદ્ધા સમાણી) એક મુહૂર્ત પછી જાગી અને જાગીને તેણે ( ત ભવણ  
અસોગવાણિય ચ અપચ્ચભિજાણમાણી એવ વયાસી ) તે ભવન અને તે અશોક  
વાટિકાને અપરિચિત જાણીને પોતાના મનમાં આ જાતનો

खलु त्व हे देवानुप्रिये ! अपहृतमनःसकल्पा यावद् ध्याय, आर्त-यान मा कुरु  
त्व मया सार्धं विपुलान् भोगभोगान् यावद् भुञ्जाना विहर=मदीयमासादे तिष्ठ' इति ।

तत खलु सा द्रौपदी देवी पद्मनाभमेवमयादीत्-एव खलु हे देवानुप्रिय !  
जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे द्वावत्ये नगर्यां कृष्णो नाम वासुदेवो मम प्रियभातृक'=  
ममप्रियस्य भर्तुर्भाता परिव्रमति, तद् यदि खलु म पण्णा मामाना मध्ये 'मम' मा  
'कूव' देशीशब्दोऽयम्, अन्वेयितुं ग्रहीतुं वा नो शीघ्रमागच्छति-तत खलु

गई हो । इमलिये हे देवानुप्रिये ! तुम आपहतमनःसकल्प बनकर  
यावत् आर्तध्यान मत करो । तुम तो अब मेरे साथ विपुल कामभोगों  
को भोगती हुई मेरे प्रासाद में रहो । (तएण सा दोवई देवी पडमणाभ  
एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! जम्बूद्वीवे दीवे भारहे वासे वारवइए  
णयरीए कण्णे णामं वासुदेवे ममप्पियभाउए परिवसइ, त जइण से  
छण्ह मासाण मम कूव णो हव्व मागच्छइ तएण अह देवाणुप्पिया !  
ज तुम वदसि तस्स आणाओवायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामि तएण से  
पडमे दोवईए एयमट्ट पडिस्सुणेइ २ दोवइ देवी कण्णतेउरे ठवेइ,  
तएण सा दोवई देवी छट्ट छट्टेण अणिविखत्तेण आयविलपरिग्गहिण  
तवोक्कम्मेण अप्पाण भावेमाणे विहरइ ) इसके बाद उस द्रौपदी देवी  
ने पद्मनाभ से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! सुनो-जम्बूद्वीप नाम के  
द्वीप में भारतवर्षमें द्वावती नगरी में कृष्ण वासुदेव मेरे प्रिय पतिके  
भाता रहते हैं । वे यदि छह मासके भीतर मुझे अन्वेयण करनेके लिये या

आवी छे अवी छे देवानुप्रिये ! तमे अपहृतमन सकल्पा थधने यावत्  
आर्तध्यान न करे तमे भनुप्पलव सणधी काम लेगे लोगता भारा  
भडेलभा रहे ।

( तएण सा दोवई देवी पडमणाभ एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! जम्बू  
द्वीवे दीवे, भारहे वासे वारवइए णयरीए कण्णे णाम वासुदेवे मम प्रियभाउए  
परिवसइ, त जइण से छण्ह मासाण मम कूव णो हव्व मागच्छइ, तएण अह  
देवाणुप्पिया ! ज तुम वदसि तस्स आणाओवायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामि  
तएण से पडमे दोवईए एयमट्ट पडिस्सुणित्ता २ दोवई देवी कण्णतेउरे ठवेइ,  
तएण सा दोवई देवी छट्ट छट्टेण अणिविखत्तेण आयविलपरिग्गहिण तवोक्क-  
म्मेण अप्पाण भावेमाणे विहरइ )

त्यारपछी द्रौपदी देवीअ पद्मनाभने आ प्रभावे उछु छे देवानुप्रिय !  
सालणे, जम्बूद्वीप नामना द्वीपमा भारत वर्षमा द्वावती नगरीमा कृष्ण  
वासुदेव भारा प्रिय पतिना लार्छ रहे छे तेअ छे महीनानी अहर भारी तपास

દ્રૌપદીં દેવીમપહતમન સકલ્પાં યાવદ્ધ્યાયન્તીં=ભાર્તધ્યાન કરતીં પડ્યતિ શ્લુ  
 એવ=વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ, અગ્રાદીત્-હે દેવાનુપ્રિયે ! કિં સ્વલુ ત્વ ' ઓહયં જાત્ર  
 શ્રિયાહિ ' અપહતમનઃ સકલ્પા યાવદ્ધ્યાયસિ=ચિંતીતીશ્ચિ એવ સ્વલુ ત્વ હે દેવાનુ  
 પ્રિયે ! મમ પૂર્વસગતિકેન દેવેન જમ્બૂદ્વીપાદ્ દ્વીપાદ્ ભારતાદ્ વર્ષાદ્ હસ્તિના  
 પુરાદ્ નગરાદ્ યુધિષ્ઠિરસ્ય રાજો ભવનાત્ સંહતા=અપહતાઽસિ, તતસ્તસ્માદ્ મા

યમાણી પાસહ, પાસિત્તા ણ્વ વયાસી, ક્રિણ્ણ તુમ દેવાણુપ્પિયા ! મમ  
 પુન્નસગદ્ધણ દેવેણ જમ્બૂદ્વીપાઓ ૨ મારહાઓ વાસાઓ હથિણાપુ  
 રાઓ નયરાઓ જુહિદ્વિલ્લસસ રણ્ણો મયણાઓ સાહરિયા, ત માણ તુમ  
 દેવાણુપ્પિયા ! ઓહયં જાત્ર શ્રિયાહિ તુમ મમ સદ્ધિં વિપુલાહ મોગ  
 મોગાહ જાત્ર વિહરાહિ ) હસકે યાદ વહ પદ્મનાભ રાજા નહા ધોકર  
 યાવત્ સર્વાચ્કારો સે વિભૂષિત હો અપને અતઃપુર પરિવાર સે સપરિ  
 ઘટ હોકર જહા વહ અગ્રોક વાટિકા થી-ઑર ઉસમેં મી જહાં વહ  
 દ્રૌપદી દેવી બેઠી થી-વહા આયા-વહા આકર કે ઉસને દ્રૌપદી દેવી સે  
 અપહત મનઃ સકલ્પવાલી યાવત્ આર્તધ્યાન કરતી હુઈ દેસકર હસ  
 પ્રકાર કહા-હે દેવાનુપ્રિયે ! તુમ કયોં અપહત મનઃ સકલ્પ હોકર યાવત્  
 ભાર્ત ધ્યાન કર રહી હો-સ્વેદ ચિન્ન હો રહી હો તુમ યહા હે દેવાનુપ્રિય !  
 મેરે પૂર્વ ભવ કે મિત્ર દેવ કે દ્વારા જમ્બૂદ્વીપ નામ કે દ્વીપ સે ભારતવર્ષ  
 કે હસ્તિનાપુર નગર સે યુધિષ્ઠિર રાજા કે ભવન સે હરણ કર લે આઈ

ચ્છિત્તા દોઢઈ દેવો ઓહયં જાત્ર શ્રિયાયમાણી પાસહ, પાસિત્તા એવ વયાસી  
 ક્રિણ્ણ તુમ દેવાણુપ્પિયા ! મમપુન્નસગદ્ધણ દેવેણ જમ્બૂદ્વીપાઓ ૨ મારહાઓ  
 વાસાઓ હથિણાપુરાઓ નયરાઓ જુહિદ્વિલ્લસસ રણ્ણો મયણાઓ સાહરિયા, ત  
 માણ તુમ દેવાણુપ્પિયા ! ઓહયં જાત્ર શ્રિયાહિ તુમ મમ સદ્ધિં વિપુલાહ મોગ  
 મોગાહ જાત્ર વિહરાહિ )

ત્યારપછી તે પદ્મનાભરાજા સ્નાન કરીને યાવત્ સર્વાલંકારોથી વિભૂષિત  
 થઈને પોતાના રણુવાસ-પરિવારને સાથે લઈને જ્યાં અશોકવાટિકા હતી અને  
 તેમા પણ જ્યાં તે દ્રૌપદી દેવી બેઠી હતી ત્યાં આવ્યો ત્યાં આવીને તેણે  
 દ્રૌપદી દેવીને અપહતમન સકલ્પવાળી યાવત્ આર્તધ્યાન કરતી જોઈને આ  
 પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે શા માટે અપહતમન સકલ્પ થઈને  
 યાવત્ આર્તધ્યાન કરી રહી છો ? ખેદ-ખિન્ન થઈ રહ્યા છો ? હે દેવાનુપ્રિયે !  
 મારા પૂર્વભવના મિત્ર દેવ વડે તમે જ જમ્બૂદ્વીપ નામના દ્વીપના, ભારત વર્ષના  
 હસ્તિનાપુર નગરના યુધિષ્ઠિર રાજાના ભવનથી અપહત થઈને

दोवइ देवी ण णज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण  
 वा किं पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधर्वेण वा हिया वा णीया वा  
 अवक्खित्ता वा ?, इच्छामि णं ताओ । दोवईए देवीए सब्बओ  
 समता मग्गणगवेसणं कयं, तएण से पंडुराया कोडुंवियपुरिसे  
 सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया ।  
 हत्थिणाउरे नयरे सिघाडगतियच्चउक्कच्चरमहापहपहेसु महया२  
 सदेण उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ।  
 जुहिट्ठिहस्स रण्णो आगासतलगसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई  
 देवी ण णज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा कि-  
 पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधर्वेण वा हिया वा नीया वा  
 अवक्खित्ता वा तं जो णं देवाणुप्पिया । दोवईए देवीए सुइं  
 वा जाव पवित्ति वा परिकहेइ तस्स णं पंडुराया विउल अत्थ-  
 सपयाण दाणं दलयइ त्तिक्कट्टु घोसणं घोसावेहर एयमाणत्तिय  
 पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुवियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति,  
 तएणं से पंडुराया दोवईए देवीए कत्थइ सुइ वा जाव अलभ-  
 माणे कोती देवी सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं  
 तुम देवाणुप्पिया । वारवइ णयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठ  
 णिवेदेहि कण्ह णं पर वासुदेवे दोवईए मग्गणगवेसणं करेज्जा  
 अन्नहा न नज्जइ दोवईए देवीए सुती वा खुती वा पवत्ती वा  
 उवलभेज्जा, तएण सा कोती देवी पडुरण्णा एव वुत्ता समाणी  
 जाव पडिसुणेइ पडिसुणित्ता णहाया कयवलिकम्मा हत्थिखध-

अह हे देवानुप्रिय । यत् त्वं वदसि=वदियसि ' तस्मै ' तत्र ' आणाओवायवय  
णनिहेसे ' आज्ञापातवचननिर्देशे स्वास्यामि, तयाज्ञाकारिणी वशवर्तिनी भवि  
ष्यामीत्यर्थ, आज्ञा-अवश्य विधेयतया आदेशः, उपवातयान सेवायान, निर्देश-  
कायाणि प्रति प्रश्ने कृते यन्निपतर्गस्तस्मै, एता समाहारद्वन्द्वः तत्र, ततः खलु  
स पद्मनाभो राजा द्रौपदीं एतमर्थं प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य द्रौपदीं देया ' कथ्यतेउरे'  
कन्यान्तः पुरे स्थापयति, ततः खलु सा द्रौपदीदेया ' छट् छट्टेण ' षष्ठ्यष्टेन  
षष्ठ्यभक्तानन्तर पुनः षष्ठ्यभक्तेन, ' अनिश्चितेण ' अनिश्चितेन=विरामरहितेन  
अन्तरहितेनेत्यर्थः, ' आयविलपरिगृहीण ' आयविलपरिगृहीतेन तपः कर्मणा  
आत्मानं भावयन्ती विहरति ॥ सू० २६ ॥

मूलम्-तएणं से जुह्वद्विष्टे रायातओ सुहुत्तंतरस्त पडिबुद्धे  
समाणे दोवइ देविपासे अपासमाणो सयणिजाओ उट्टेइ उट्टित्ता  
दोवईए देवीए सब्बओ समता मग्गणगवेसण करेइ करित्ता  
दोवईए देवीए कथइ सुइ वा खुइ वा पवत्ति वा अलभमाणे  
जेणेव पडुराया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पडुरायं एवंवयासी  
एवं-खलु ताओ । मम आगासतलगसि सुहपसुत्तस्त पासाओ

लेने के लिये यहा जल्दी से नहीं आयेगे तो उसके बाद हे देवानुप्रिय !  
जैसा तुम कहोगे वैसा मैं करूंगी-तुम्हारी आज्ञा कारिणी वशवर्तिनी  
बन जाऊंगी । ऐसा अर्थ " आणाओवायवयणनिहेसे " इन पदों का  
निकलता है । इसके बाद पद्मनाभ राजा ने द्रौपदी के इस कथन को  
स्वीकार करके उसे कन्या के अन्तः पुर में रख दिया । वहा वह द्रौपदी  
देवी आयविल परिगृहीत छट् छट्ट की अन्तर रहित तपस्या से अपने  
आप को भावित करती हुई रहने लगी । सू० २६

करता करता अहाँ नहि आवी शकै तो त्थारपणी छे देवानुप्रिय । तमे नेम  
कडेशे । तेम करीश, हु तमारी आज्ञाकारिणी वशवर्तिनी भनी जडश " अणा  
ओवायवयणाणिहेसे " आ पडोथी आ जतने । अर्थ नीकणे छे त्थारपणी  
पद्मनाभ राजाके द्रौपदीना ते कथनने स्वीकारी लीधु अने तेने कयाना अन्त  
पुरमा भूडी दीधी त्था ते द्रौपदी देवी आयविल परिगृहीत छट् छट्टनी अन्तर  
रहित तपस्याथी पोतानी जतने भावित करती रहैवा ल ॥



दोवइ देवी ण णज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण  
वा किं पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधर्वेण वा हिया वा णीया वा  
अवप्पित्ता वा ? इच्छामि णं ताओ । दोवइए देवीए सब्बओ  
समता मग्गणगवेसणं कय, तएण से पडुराया कोडुंवियपुरिसे  
सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया ।  
हत्थिणाउरे नयरे सिघाडगतियचउक्खचच्चरमहापहपहेसु महया२  
सद्देण उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ।  
जुहिद्विहस्स रणो आगासतलगसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवइ  
देवी ण णज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा कि-  
पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधर्वेण वा हिया वा नीया वा  
अवप्पित्ता वा तं जो णं देवाणुप्पिया । दोवइए देवीए सुइं  
वा जाव पवित्ति वा परिकहेइ तस्स णं पडुराया विउल अत्थ-  
सपयाणं दाणं दलयइ त्तिक्कट्टु घोसणं घोसावेहर एयमाणत्तिय  
पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुवियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति,  
तएणं से पडुराया दोवइए देवीए कत्थइ सुइ वा जाव अलभ-  
माणे कोत्ती देवीं सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं  
तुम देवाणुप्पिया । वारवइ णयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठ  
णिवेदेहि कण्ह णं पर वासुदेवे दोवइए मग्गणगवेसणं करेज्जा  
अन्नहा न नज्जइ दोवइए देवीए सुतीं वा खुती वा पवत्तीं वा  
उवलभेज्जा, तएण सा कोत्ती देवी पडुरण्णा एव बुत्ता समाणी  
जाव पडिसुणेइ पडिसुणित्ता ण्हाया कयवलिकम्मा हत्थिखध-

वरगया हत्थिणाउरं मज्झमज्झेणं णिग्गच्छइ णिग्गच्छित्ता कुरु  
जणवये मज्झमज्झेण जेणेव सुग्गुजणयए जेणेव वारवई णयरी  
जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिखधाओ  
पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता कोडुवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं  
वयासी-गच्छह णं तुव्भे देवाणुप्पिया । जेणेव वारवई णयरी  
तेणेव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता कण्हं वासुदेव करयल० एव  
वयह-एवं खलु सामो । तुव्भं पिउच्छा कोत्ती देवी हत्थिणा  
उराओ.नयराओ इह हव्वमागया तुव्भ दसणं कंखइ, तएणं  
ते कोडुवियपुरिसा जाव कहेंति, तएणं कण्हे वासुदेवे कोडुवि  
यपुरिसाणं अतिए सोच्चा णिसम्म हत्थिखंधवरगए हयगय  
वारवईए य मज्झमज्झेणं जेणेव कोत्ती देवी तेणेव उवागच्छइ  
उवागच्छित्ता हत्थिखधाओ पच्चोरुह पच्चोरुहित्ता कोत्तीए देवीए  
पायग्गहण करेइ करित्ता कोत्तीए देवीए सद्धि हत्थिखंध दुरुहइ  
दुरुहित्ता वारावइए णयरीए मज्झमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव  
उवागच्छइ उवागच्छित्ता सय गिह अणुपविसइ । तएणं से  
कण्हे वासुदेवे कोत्ती देवि णहाय कयवलिकम्म जिमियभुत्तुत्त-  
रागय जाव सुहासणवरगय एव वयासी सदिसउ णं पिउच्छा ।  
किमागमणपओयणं ?, तएणं सा कोत्ती देवी कण्ह वासुदेव  
एव वयासी-एव खलु पुत्ता । हत्थिणाउरे णयरे जुहिद्विल्लस्स  
आगासतले सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ केणइ  
अवहिया जाव अवविस्सित्ता वा, त इच्छामि ण

देवीए मगगणगवेसणं करित्तए, तएणं से कणहे वासुदेवे कौंती  
पिउच्छि एव वयासी-जं णवरं पिउच्छा । दोवइए देवीए कत्थइ  
सुइं वा जाव लभामि तो णं अहं पायालाओ वा भवणाओ  
अद्धभरहाओ वा समंतओ दोवइं साहत्थि उवणैमित्तिकहु कौंती  
पिउत्थि सक्कारेइ समाणेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएणं सा कौंती  
देवी कणहेणं वासुदेवेणं पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसि  
पाउ० तामेव दिसिं पडिगया ॥ सू० २५ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः खलु स युधिष्ठिरो राजा ततो मुहूर्ता-  
न्तरे प्रतिबुद्धः सन् द्रौपदीं देवीं पार्श्वे ‘अपासमाणो’ अपश्यन्=अनवलोकयन्  
शयनीयादुत्तिष्ठति, उत्थाय द्रौपद्या देव्या सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेपण करोति,  
कृत्वा द्रौपद्या देव्या ‘कत्थइ’ कुत्रापि ‘सुइ’ श्रुतिं सामान्यवृत्तान्त वा,  
‘सुइ’ श्रुतिं छिकादि शब्द वा ‘पवत्ति’ प्रवृत्तिं वा विशेषवृत्तान्त अलभमानो

तएण से जुहिठिल्ले राया इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से जुहिठिल्ले राया) वे युधिष्ठिर राजा  
(तओ मुहुत्ततरस्स) एक मुहूर्त के बाद (पडिबुद्धे समाणे) जगे-और  
जगकर उन्होंने (दोवई देवीं) द्रौपदी देवी को (पासे अपासमाणो सयणि  
ज्जाओ उट्टेइ, उट्टित्ता दोवईए सव्वओ समता मगगणगवेसण करेइ)  
अपने पास जय नहीं देखा तो वे अपनी शय्या से उठे और उठकर  
द्रौपदी देवीकी सबओरसे उन्होंने मार्गणा गवेपणाकी (करित्ता दोवईए  
देवीए कत्थइ सुइ वा सुइ वा पवत्ति वा अलभमाणे जेणेव पडुराया

‘तएण से जुहिठिल्ले राया’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (से जुहिठिल्ले राया) ते युधिष्ठिर राजा (तओ  
मुहुत्ततरस्स) ओके मुहूर्त आद (पडिबुद्धे समाणे) जाग्या अने जागीने  
तेभण्णे (दोवई देवी) द्रौपदी देवीने,

(पासे अपासमाणो सयणिज्जाओ उट्टेइ, उट्टित्ता दोवईए सव्वओ समता  
मगगणगवेसण करेइ)

ज्यारे पोतानी पासे ओध नडि ज्यारे पोतानी शय्या उपरथी ओला  
थया अने ओला थधने द्रौपदी देवीनी योमेर मार्गणा गवेपणा उरी

(करित्ता दोवईए देवीए कत्थइ सुइ वा सुइ वा पवत्ति वा अलभमाणे

वरगया हत्थिणाउरं मज्झमज्झेणं णिग्गच्छइ णिग्गच्छित्ता कुरु-  
जणवये मज्झमज्झेण जेणेव सुरट्टजणयए जेणेव वारवई णयरी  
जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ  
पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता कोडुवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एव  
वयासी—गच्छह णं तुव्भे देवाणुप्पिया ! जेणेव वारवई णयरी  
तेणेव अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्हं वासुदेवं करयल० एव  
वयह—एवं खलु सामी ! तुव्भं पिउच्छा कोती देवी हत्थिणा-  
उराओ नयराओ इह हव्वमागया तुव्भं दसणं कंखइ, तएणं  
ते कोडुवियपुरिसा जाव कहेंति, तएणं कण्हे वासुदेवे कोडुवि-  
यपुरिसाणं अतिए सोच्चा णिसम्म हत्थिखंधवरगए हयगय  
वारवईए य मज्झमज्झेणं जेणेव कोती देवी तेणेव उवागच्छइ  
उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुह पच्चोरुहित्ता कोतीए देवीए  
पायग्गहण करेइ करित्ता कोतीए देवीए सच्चि हत्थिखंध दुरुहइ  
दुरुहित्ता वारावइए णयरीए मज्झमज्झेण जेणेव सए गिहे तेणेव  
उवागच्छइ उवागच्छित्ता सयं गिहं अणुपविसइ । तएणं से  
कण्हे वासुदेवे कोती देविं ण्हाय कयवलिकम्म जिमियभुत्तुत्त  
रागय जाव सुहासणवरगय एव वयासी सदिसउ णं पिउच्छा !  
किमागमणपओयणं ?, तएणं सा कोती देवी कण्ह वासुदेव  
एव वयासी—एव खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे णयरे जुहिद्विल्लस्स  
आगासतले सुहपसुत्तस्स पासाओ टोवई देवी ण णज्जइ केणइ  
अवहिया जाव अवविस्सित्ता वा, त इच्छामि णं

ततः खलु स पाण्डुराजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवा-  
दीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! हस्तिनापुरे नगरे शृङ्गाटकत्रिकचतुष्क-  
चत्वरमहापथपथेषु महता महता शब्देनोद्घोषयन्त एव वदत-एव खलु हे देवानु  
प्रिया ! युधिष्ठिरस्य राज्ञ आकाशतलके सुखप्रसुप्तस्य पार्श्वे द्रौपदी देवी न  
ज्ञायते केनापि देवेन वा दानवेन वा किं पुरुषेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा

और सब प्रकार से मार्गणा और गवेषणा करना चाहता हूँ । ( तए ण  
से पटुराया कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी गच्छहाण  
तुम्हे देवाणुप्रिया ! हत्थिगाउरे नगरे, सिंघाडगतीय चउक्कचच्चर महा  
पहपहेसु महया २ सहेण उग्घोसेमाणा २ एव वयासी-एव खलु देवा-  
णुप्रिया ! जुहिठिल्लस्स रण्णो आगासतलगसि सुहपसुत्तस्स पासोओ  
दोवई देवी ण णज्जइ, केणइ, देवेण वा दानवेण वा किन्नरेण वा किंपुरि-  
सेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा )  
इस बात को सुनकर के उन पाण्डुराजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया  
और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो ! तुम लोग हस्तिनापुर  
नगर में जाओ-और वहा के शृङ्गाटक, त्रिक चतुष्क, चत्वर, महापथ  
इन समस्त मार्गों में बडे जोर २ से ऐसी घोषणा बार २ करो कि हे  
देवाणुप्रियो ! सुनो प्रासादकी अट्टालिका पर सुखपूर्वक सोये हुए युधिष्ठिर  
राजा के पास से न मालूम किसी देवने, या दानवने, किसी, किन्नरने,

गवेषण कय ) अथवा भाटे डे तात ! हु थोभेर अधी रीने द्रौपदी देवीनी  
मार्गणा अने गवेषणा करवा धम्मु धु

(तए ण से पटुराया कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी गच्छह ण  
तुम्हे देवाणुप्रिया ! हत्थिगाउरे नगरे, सिंघाडगतीयचउक्कचच्चरमहापह-  
पहेसु महया २ सहेण उग्घोसेमाणा २ एव वयासी-एव खलु देवाणुप्रिया !  
जुहिठिल्लस्स रण्णो आगासतलगसि सुहपसुत्तस्स पासोओ दोवई देवी ण  
णज्जइ, केणइ देवेण वा दानवेर वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा  
गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा )

आ बातने सालणीने पाडु रान्णये कौटुम्बिक पुरुषोने ओलाव्या अने  
ओलावीने तेमने आ प्रभाणु कलु डे डे देवानुप्रियो ! तमे लोके हस्तिनापुर  
नगरमा लण्णे अने त्याना शृङ्गाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर, महापथ आ अधा  
मार्गोमा मोटा साहे आ लतनी घोषणा करो डे डे देवानुप्रियो ! सालणो,  
महेलनी अगाशी उपर सुजेथी सूता युधिष्ठिर रान्णनी पासोथी न लण्णे कोइ  
देवे डे दानवे अथवा तो कोइ किन्नरे डे किंपुरुषे अथवा कोइ महोरगे डे



યજીવ પાણ્ડુરાજા તર્જોપાગચ્છતિ, ઉપાગચ પાણ્ડુ રાજાનમેદમવાદીત્—હે તાત !  
 એવ સ્વલુ મમાકાશતલે પાસાદાદ્યાન્કિપરિ ' સુષ્પસુત્તસ્સ ' સુષ્પસુત્તસ્ય પાર્શ્વદ્  
 દ્રૌપદી દેવી ' ણ ણજ્જહ ' ન જાયતે કેનાપિ દેવેન વા દાનવેન વા કિન્નરેણ વા  
 કિંપુરુપેણ વા ગન્ધર્વેણ વા દ્વિતા વા નીતા=અગ્નિ પ્રાપિતા વા અવક્ષિપ્તા વા= ?  
 કૂપગર્તાદૌ કુચિત્ પાતિતા વા ક્વચિત્, તત્-તસ્માદ્ ઇચ્છામિ સ્વલુ હે તાત !  
 દ્રૌપદ્યા દેવ્યાઃ સર્વેત સમન્તાદ્ માર્ગણગવેષણ કર્તુમ્ ।

તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા પહુરાય એવ વયામી એવ સ્વલુ તાઓ  
 મમ આગાસતલગસિ સુષ્પસુત્તસ્મ પાસાઓ દોવઈ દેવી ણ ણજ્જહ,  
 કેણહ દેવેણ વા દાણવેણ વા કિન્નરેણ વા કિંપુરિસેણ વા મહોરગેણ વા  
 ગધર્વેણ વા દિયા વા પીયા વા અવક્ષિપ્ત્તા વા ) માર્ગણા ગવેષણા  
 કરકે જય ઉસને દ્રૌપદી દેવી કી કહી મી શોધ, સામાન્ય સ્વર કો  
 ઉસ કે ચિહ્નસ્વરૂપ ઝિઘા આદિ કે શબ્દ કો, અથવા પ્રવૃત્તિ-વિશેષ  
 વૃત્તાન્ત કો નહીં પાયા તથ વે જર્હા પાંડુરાજા યે વર્હાં ગયે-વર્હા જાકર  
 કે ઉન્હોને પાંડુરાજા સે હસ પ્રકાર કહા-હે તાત ! જય મેં પ્રાસાદ કી  
 અદાલિકાકે ઉપર સુખસે સો રહા થા-તથ મેરે પાસસે ન માલૂમ દ્રૌપદી  
 દેવી કો કિસી દેવને, દાનવને, કિન્નરને, કિંપુરુપને, મહોરગને, ગધર્વને  
 હરણ કર કહાં રખ દિયા હૈ ।-યા ઉસે કિસી કુપ મેં યા સ્વદુ મેં ડાલ  
 દિયા હૈ ( ઇચ્છામિ ણં તાઓ દોવઈદ દેવીણ સન્નવઓ સમતા મગ્ગણ  
 ગવેસણ કય ) હસ લિણ હે તાત ! મેં દ્રૌપદી દેવી કી સબ તરફ સે

જેણેવ પહુરાયા તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા પહુરાય એવ વયામી એવ સ્વલુ  
 તાઓ મમ આગાસતલગસિ સુષ્પસુત્તસ્સ પાસાઓ દોવઈ દેવી ણ ણજ્જહ, કેણહ  
 દેવેણ વા દાણવેણ વા કિન્નરેણ વા કિંપુરિસેણ વા મહોરગેણ વા ગધર્વેણ વા  
 દિયા વા પીયા વા અવક્ષિપ્ત્તા વા )

માર્ગણા ગવેષણા કયાં બાદ પણ બ્યારે તેમણે દ્રૌપદી દેવીની કોઈપણ  
 રીતે, સામાન્ય બીજર અને ચિહ્ન સ્વરૂપ છીંક વગેરે શબ્દને અથવા તે  
 પ્રવૃત્તિ-વિશેષ વૃત્તાન્ત-ની પણ બાબત થઈ નહિ ત્યારે તેઓ બ્યા પાંડુરાજા  
 હતા ત્યા ગયા, ત્યા જઈને તેમણે પાંડુરાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે તાત !  
 બ્યારે હું મહેલની અગાશીમા સૂઈ રહ્યો હતો ત્યારે મારી પાસે ન બાબત  
 કોણે દ્રૌપદી દેવીનું કોઈ દેવે, દાનવે કે કિન્નરે કે કિંપુરુપે કે મહોરગે કે  
 ગધર્વે હરણ કર્યું છે અથવા તે દ્રૌપદી દેવીને કોઈએ કૂવામા કે બાડામા  
 નાખી દીધી છે ( ઇચ્છામિ ણ તાઓ દોવઈદ દેવીણ સન્નવઓ મગ્ગણ-

તતઃ સ્વલુ સ પાણ્ડુ રાજા દ્રૌપદ્યા દેવ્યાઃ કુત્તાપિ શ્રુતિં વા યાવત્ પ્રવૃત્તિમ્  
અલભમાનઃ કુન્તીં દેવીં શબ્દયતિ શબ્દયિત્વા એવમવાદીત્-ગચ્છ સ્વલુ ત્વં હે  
દેવાનુપ્રિયે ! દ્વારવતીં નગરી કૃષ્ણસ્ય વાસુદેવસ્ય એતમર્થં નિવેદય=સુસપસુપ્તા  
દ્રૌપદી કેનાઽપિ હતા નીતા કૂપાદૌ પ્રક્ષિપ્તા વેતિ ન જ્ઞાયતે इत्येतદ્રૂપ વૃત્તાન્ત વથય,  
કૃષ્ણઃ સ્વલુ પર વાસુદેવો દ્રૌપદ્યા માર્ગણગવેપણ કુર્યાત્ અન્યથા ન જ્ઞાયતે દ્રૌપદ્યા  
દેવ્યાઃ શ્રુતિં વા પ્રવૃત્તિં વા ક્ષુત્તિં વા ઉપલભેત ।

પાસ ભેજદી ! ઇસકે વાદ જવ પાટુરાજા ને દ્રૌપદી દેવી કી કહી પર  
ભી શ્રુતી યાવત્ પ્રવૃત્તિ નહીં પાઈ તવ ઉન્હો ને કુતિ દેવી કો બુલાયા-  
( સદાવિ० એ० વયાસી ) ઓર બુલાકર ઉન સે એસા કહા-(ગચ્છહણ તુમ  
દેવાણુપ્પિયા ! વારવદ્ નયરિં કળ્હસ્સ વાસુદેવસ્સ એયમઠ્ઠ ણિવેદેહિ,  
કળ્હેણ પર વાસુદેવે દોવર્દેણ મગ્ગણગવેસણ કરેજ્જા-અન્નહા ન નજ્જર્દ,  
દોવર્દેણ દેવીણ સુતી વા સુતી વા પવત્તીં વા ઉવલભેજ્જા ) હે દેવાનુપ્રિ  
યો ! તુમ દ્વારાવતી નગરી મેં કૃષ્ણ વાયુદેવ કે પાસ જાઓ-ઓર ઉનસે  
ઇસ અર્થકા નિવેદન કરો કિ સુખ પ્રસુપ્ત દ્રૌપદી કો કિસી ને હરલિયા  
હે । હરણ કર ઉસે કહીં પહુચા દિયા હે યા કિસી કુઈ મેં યા સ્વહ્મકે મેં  
ડાલ દિયા હે । પતા નહી પડતા હે । વે કૃષ્ણ વાસુદેવ અવશ્ય ૨ હી  
દ્રૌપદી કી માર્ગણા ગવેપણા કરેંગે । નહી તો દ્રૌપદી દેવી કી શ્રુતિ, ક્ષુતિ  
અથવા પ્રવૃત્તિ હમેં પ્રાપ્ત હો જાવેગી-યહ નહી કહા જા સકતા હે ।

શ્રુતિ યાવત્ પ્રવૃત્તિ મેળવી નહિ ત્યારે તેમણે કુતી દેવીને બોલાવી ( સદા  
વિ० એ० વયાસી ) અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું—

( ગચ્છહણ તુમ દેવાણુપ્પિયા ! વારવદ્ નયરિં કળ્હસ્સ વાસુદેવસ્સ એયમઠ્ઠ  
ણિવેદેહિ, કળ્હેણ પર વાસુદેવે દોવર્દેણ મગ્ગણગવેસણ કરેજ્જા અન્નહા ન નજ્જર્દ,  
દોવર્દેણ દેવીણ સુતી વા સુતી વા પવત્તીં વા ઉવલભેજ્જા )

હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે દ્વારાવતી નગરીમા કૃષ્ણવાસુદેવની પાસે જાઓ  
અને તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કરો કે સુખથી સુતેલી દ્રૌપદીનુ કોઈએ  
હરણ કરી લીધુ છે હરણ કરીને તેને ક્યાક મૂકી દીધી છે અથવા તો કોઈ  
ફવામા કે ખાડામા નાખી દીધી છે ન જાણે શુ થઈ ગયુ છે ? કૃષ્ણવાસુદેવ  
મને ખાતરી છે કે ચોક્કસ દ્રૌપદી દેવીની માર્ગણા ગવેપણા કરશે નહિતર દ્રૌપદી  
દેવીની શ્રુતિ, ક્ષુતિ અથવા પ્રવૃત્તિની જાણ અમને થશે એવી શક્યતા જણાતી નથી.

ગન્ધર્વેણ વા હતા વા નીતા વા અગ્નિપ્તા વા, તત્=તસ્માદ્ યઃ સ્વત્તુ હે દેવાનુ  
પ્રિયા ! દ્રૌપદ્યા દેવ્યાઃ શ્રુતિં વા ધ્રુતિં વા પ્રતૃતિં વા પરિકથયતિ, તસ્ય સહુ  
પાણ્ડુ રાજા ત્રિપુલ્લમર્ચસમ્પદાન દાનં દદાતિ=તિ કૃત્વા-સ્ત્યુત્વા ઘોષણાં ઘોષ-  
યત, ઘોષયિત્વા एतावदશक्तિઃ પરતર્પયત । તતઃ સહુ તે કૌટુમ્બિકપુરુષાસ  
થેવ ઘોષણા કૃત્વા યાગદાતાં મત્યર્થયન્તિ=હે સ્વામિન્ ! મયદાણ્યા ઘોષણા  
કૃતાઽસ્માભિરિતિ નિવેદયન્તિ ।

વા કિસી કિપુરુષ ને વા કિસી મહોરગ ને વા કિસી ગન્ધર્વ ને દ્રૌપદી  
દેવી કો હરણ કર લિયા હૈ-વા હરણકર ઉસે કહીં રસ દિયા હૈ અથવા  
કિસી કુર્ષે મેં વા પદ્મે મેં ઢાલ દિયા હૈ (ત જો ન દેવાણુપ્પિયા । દોવ  
ઈણ દેવીણ સુહ વા જાવ પવત્તિ વા પરિકહેહ, તસ્સ ન પડુરાયા વિઝલ  
અત્થસપયાણ દાણ દલયહ, ત્તિ કદ્દહ ઘોમણ ઘોસાવેહ ૨ ય્યમાણત્તિય  
પચ્ચપ્પિણહ, તણ્ણ તે કોટુવિય પુરિસા જાવ પચ્ચપ્પિણતિ-તણ્ણ સે  
પડુરાયા દોવર્ણ દેવીણ કત્થહ સુહ વા જાવ અલભમાણે કોતીં દેવીં  
સહાવેહ ) તો હે દેવાનુપ્રિયો ! જો કોઈ મનુષ્ય દ્રૌપદી દેવી કી શોધ  
કરેગા યાવત્ ઉસકે વિશેષવૃત્તાન્ત કો લાકર દેગા-હમ સે આકર  
કહેગા, ઉસકો પાડુરાજા વહુત અધિક માત્રા મેં અર્થ મપ્પદાન-દાન-  
દેગા । હસ પ્રકાર કી તુમ ઘોસપણા કરો, ઓર ઘોષણા કર કે ફિર  
હમેં હસકી પીઠે સ્વર દો । હસ પ્રકાર રાજા કી આજ્ઞા પાકર ઉન  
કૌટુમ્બિક પુરુષોં ને હસો પ્રકારકી ઘોષણા કરકે હમ કી સ્વર રાજાકે

ગન્ધર્વે દ્રૌપદી દેવીનુ અપહરણુ કથું છે કે હરણુ કરીને તેને કથાક મૂકી દીધી  
છે કે કોઈ ક્વામા અથવા તો ખાડામા નાખી દીધી છે

(ત જો ન દેવાણુપ્પિયા । દોવર્ણ દેવીણ સુહ વા જાવ પવત્તિ વા પરિકહેહ,  
તસ્સ ન પડુરાયા વિઝલ અત્થસપયાણ દાણ દલયહ, ત્તિ કદ્દહ ઘોમણ ઘોસાવેહ ૨  
હ્યમાણત્તિય પચ્ચપ્પિણહ, તણ્ણ તે કોટુવિયપુરિસા જાવ પચ્ચપ્પિણતિ-તણ્ણ સે  
પડુરાયા દોવર્ણ દેવીણ કત્થહ સુહ વા જાવ અલભમાણે કોતીં દેવી સહાવેહ )

તો હે દેવાનુપ્રિયો ! જે કોઈ પણ માણસ દ્રૌપદી દેવીની શોધ કરશે યાવત  
તેના વિષે સવિશેષ સમાચાર જાણીને અમને ખબર આપશે, અમને કહેશે,  
તેને પાડુ રાજા ખૂબ જ દ્રવ્ય-ધન આપશે આ રીતે તમે ઘોષણા કરો અને  
ઘોષણા થઈ જવાની અમને ખબર પણ આપો આ રીતે રાજાની આજ્ઞા  
સાલગીને તે કૌટુમ્બિક પુરુષોએ આ પ્રમાણે જ ઘોષણા કરીને તેની ખબર  
રાજાને આપી ત્યારપછી જ્યારે પાડુ રાજાએ દ્રૌપદી દેવીની કોઈ સ્થાને

ततः खलु स पाण्डू राजा द्रौपद्या देव्याः कुत्रापि श्रुतिं वा यावत् प्रवृत्तिम्  
अलभमानः कुन्तीं देवीं शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हे  
देवानुप्रिये ! द्वारावतीं नगरीं कृष्णस्य वासुदेवस्य एतमर्थं निवेदय-सुखप्रसुप्ता  
द्रौपदी केनाऽपि हता नीता कूपादौ प्रक्षिप्ता वेति न ज्ञायते इत्येतद्रूपं वृत्तान्तं कथय,  
कृष्णः खलु परं वासुदेवो द्रौपद्या मार्गणगवेपणं कुर्यात् अन्यथा न ज्ञायते द्रौपद्या  
देव्याः श्रुतिं वा प्रवृत्तिं वा क्षुत्तिं वा उपलभेत ।

पास भेजदी ! इसके बाद जब पांडुराजा ने द्रौपदी देवी की कही पर  
भी श्रुती यावत् प्रवृत्ति नहीं पाई तब उन्होंने ने कुत्ति देवी को बुलाया-  
( सहावि० ए० वयासी ) और बुलाकर उन से ऐसा कहा-(गच्छहण तुम  
देवाणुप्पिया ! वारवड नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठ णिवेदेहि,  
कण्हेण परं वासुदेवे दोवईए मग्गणगवेसणं करेज्जा-अन्नहा न नज्जई,  
दोवईए देवीए सुती वा खुती वा पवत्ती वा उवलभेज्जा ) हे देवानुप्रि  
यो ! तुम द्वारावती नगरी में कृष्ण वासुदेव के पास जाओ-और उनसे  
इस अर्थका निवेदन करो कि सुख प्रसुप्त द्रौपदी को किसी ने हरलिया  
है । हरण कर उसे कही पहुंचा दिया है या किसी कुएँ में या खड्डे में  
डाल दिया है । पता नहीं पड़ता है । वे कृष्ण वासुदेव अवश्य २ ही  
द्रौपदी की मार्गणा गवेपणा करेंगे । नहीं तो द्रौपदी देवी की श्रुति, क्षुत्ति  
अथवा प्रवृत्ति हमें प्राप्त हो जावेगी-यह नहीं कहा जा सकता है ।

श्रुति यावत् प्रवृत्ति भेजवी नडि त्थारे तेमहे कुती देवीने भोलावी ( सहा  
वि० ए० वयासी ) अने भोलावीने तेमने आ प्रभाहे क्खु—

( गच्छहण तुम देवाणुप्पिया ! वारवड नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठ  
णिवेदेहि, कण्हेण परं वासुदेवे दोवईए मग्गणगवेसणं करेज्जा अन्नहा न नज्जई,  
दोवईए देवीए सुती वा खुती वा पवत्ती वा उवलभेज्जा )

हे देवानुप्रिये ! तमे द्वारावती नगरीमा कृष्णवासुदेवनी पासो जाओ  
अने तेमने आ प्रभाहे विनती करो के सुभथी सुतेली द्रौपदीनु डोछओ  
छरए करी दीधु छे छरए करीने तेने कयाक भूडी दीधी छे अथवा तो डोछ  
इवामा के भाडामा नाभी दीधी छे न जाओ शुं थध गयु छे ? कृष्णवासुदेव  
भने भात्री छे के बोक्कस द्रौपदी देवीनी मार्गणा गवेपणा करशे नडितर द्रौपदी  
देवीनी श्रुति, क्षुत्ति अथवा प्रवृत्तिनी जाए अमने थशे ओवी शक्यता जाएती नथी.

ગન્ધર્વેણ યા હતા યા નીતા યા અગ્નિપ્તા યા, તન્=તસ્માદ્ યઃ સ્વત્તુ હે દેવાનુ પ્રિયા ! દ્રોપદા દેવ્યાઃ શ્રુતિ યા શ્રુતિ યા પ્રતિ યા પરિકથયતિ, તસ્ય સ્વત્તુ પાણ્ડુ રાજા ત્રિપુલ્લમર્થસપ્રદાન દાન દદાતિ=ઇતિ કૃત્વા-અન્યુવત્વા ઘોષણાં ઘોષ યત, ઘોષયિત્વા પતામણ્ણિકા મત્સર્પયત । તતઃ સ્વત્તુ તે કૌટુમ્બિકપુરુષાસ્ત યેઽ ઘોષણા કૃત્વા યાસદાણાં મત્સર્પયન્તિ=હે સ્વામિન્ ! મયદાઙ્ગયા ઘોષણા કૃતાઽસ્માભિરિતિ નિવેદયન્તિ ।

યા કિસી કિંપુરુષ ને યા કિસી મહોરગ ને યા કિસી ગધર્વ ને દ્રોપદી દેવી કો હરણ કર લિયા હૈ-યા હરણકર ઉસે કહીં રસ દિયા હૈ અથવા કિસી કુર્ષ મેં યા સુઢે મેં ઢાલ દિયા હૈ (ત જો ણ દેવાણુપ્પિયા । દોવ હૈ દેવીણ સુઢ વા જાવ પવત્તિ યા પરિકહેહ, તસ્સ ણ પડુરાયા વિઝલ અત્થસપયાણં દાણ દલયહ, ત્તિ કહુઢુ ઘોસણ ઘોસાવેહ ૨ હયમાણત્તિય પચ્ચપ્પિણહ, તણ્ણ તે કૌટુમ્બિય પુરિસા જાવ પચ્ચપ્પિણતિ-તણ્ણ સે પડુરાયા દોવર્હણ દેવીણ કત્થહ સુઢવા જાવ અલભમાણે કોંતીં દેવીં સદાવેહ ) તો હે દેવાનુપ્રિયો ! જો કોઈં ભી મનુષ્ય દ્રોપદી દેવી કી શોધ કરેગા યાવત્ ઉસકે વિશેષવૃત્તાન્ન કો લાકર દેગા-હમ સે આકર કહેગા, ઉસકો પાડુરાજા વહુત અધિક માત્રા મેં અર્થ સપ્રદાન-દાન-દેગા । હસ પ્રકાર કી તુમ ઘોસપણા કરો, ઓર ઘોષણા કર કે ફિર હમેં હસકી પીછે સ્વર દો । હસ પ્રકાર રાજા કી આજ્ઞા પાકર ઉન કૌટુમ્બિક પુરુષોં ને હસી પ્રકારકી ઘોષણા કરકે હસ કી સ્વર રાજાકે

ગધર્વે દ્રોપદી દેવીનુ અપહરણુ કરુ' છે કે હરણુ કરીને તેને ક્યાક મૂકી દીધી છે કે કોઈં ક્ષમા અથવા તો ખાડામા નાખી દીધી છે

(ત જો ણ દેવાણુપ્પિયા । દોવર્હણ દેવીણ સુઢ વા જાવ પવત્તિ વા પરિકહેહ, તસ્સ ણ પડુરાયા વિઝલ અત્થસપયાણ દાણ દલયહ, ત્તિ કહુ ઘોસણ ઘોસાવેહ ૨ હયમાણત્તિય પચ્ચપ્પિણહ, તણ્ણ તે કૌટુમ્બિયપુરિસા જાવ પચ્ચપ્પિણતિ-તણ્ણ સે પડુરાયા દોવર્હણ દેવીણ કત્થહ સુઢ વા જાવ અલભમાણે કોંતી દેવીં સદાવેહ )

તો હે દેવાનુપ્રિયો ! જે કોઈં પણ માણુસ દ્રોપદી દેવીની શોધ કરશે યાવત્ તેના વિષે સવિશેષ સમાચાર જાણીને અમને ખબર આપશે, અમને કહેશે, તેને પાડુ રાજા ખૂબ જ દ્રવ્ય-ધન આપશે આ રીતે તમે ઘોષણા કરો અને ઘોષણા થઈ જવાની અમને ખબર પણ આપો આ રીતે રાજાની આજ્ઞા સાલળીને તે કૌટુમ્બિક પુરુષોએ આ પ્રમાણે જ ઘોષણા કરીને તેની ખબર રાજાને આપી ત્યારપછી ત્યારે પાડુ રાજાએ દ્રોપદી દેવીની કોઈંપણુ સ્થાને



देवानुमियाः । यत्रैव द्वारवती नगरी तत्रैवानुप्रविशत, अनुप्रविश्य कृष्णं वासुदेव  
करतलपरिगृहीतदशनम् शिर आवर्त मरतकेऽञ्जलिं कृत्वा एव वदत एव खलु हे  
स्वामिन् ! युष्माक पितृप्यसा कुन्ती देवी हस्तिनापुराद् नगराद् इह हव्यमागता  
युष्माक दर्शनं काङ्क्षति । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषा यावत् कथयन्ति=कृष्ण-  
वासुदेवस्य समीपे कुन्तीकथितं वचनं निवेदयन्तीत्यर्थः । ततः खलु कृष्णो वासु-

वह हाथी से नीचे उतरी और उतर कर के उम्मेने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया- बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-( गच्छह ण तुब्भे देवाणु पिया ! जेणेव चारवईणयरी, तेणेव अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्ह वासुदेव करयल० एव वयह, एवं खलु सामी ! तुब्भ पिउच्छा कीती देवी हत्थिणाउराओ नयराओ इह हव्वमागया, -तुब्भ दंसण कखड, तएण ते कोटुविय पुरिसाण जतिए सोच्चा णिसम्म हत्थिस्सववरगए हयगयचारवईए य मज्झ मज्झेण जेणेव कीती देवी-तेणेव उवागच्छह ) हे देवानुप्रियो ! तुम द्वारावती नगरी में जाओ-वहा जाकर कृष्ण वासुदेव को दोनों हाथोंकी अजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रख-कर शिर झुकाते हुए नमस्कार करना-बादमे उनसे ऐसा कहना-कि हे स्वामिन् ! आपकी पितृव्वसा-भुआ-कुती देवी हस्तिनापुर नगर से यहा अभी -आई है-वे आपके दर्शन करना चाहती है। उन कौटु-म्बिक पुरुषोंने कुती देवी की इस आज्ञा को शिरोधार्य कर श्री कृष्ण

રોકાઈ ત્યાં જઈને તે હાવી ઉપરથી નીચે ઉતરી અને ઉતરીને તેણે કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! जेणेव बारवई णयरी, तेणेव अणुरविसह,  
अणुपविसित्ता कण्ह वासुदेव करयल० एव वयह एव खलु सामी ! तुब्भ पिउच्छा  
कोंती देवी हात्थणाउराओ नयराओ इह इच्चमागया, तुब्भ दसण करइ,  
तए ण ते कोडुत्रियपुरिसा जाव कहेति, तएण कण्हे वासुदेवे कोडुत्रिय पुरि  
साण अतिए सोच्चा णिसम्म हत्थिराधनरगए हयगयनारवइए य मब्ब  
मज्जेण जेणेव कोंती देवी-तेणेव उवागच्छइ )

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે દ્વારાવતી નગરીમા જાઓ, ત્યાં જઈને કૃષ્ણવાસુ  
દેવને બંને હાથોની અજલિ ણનાવીને અને તેને મન્ત્રકે મૃદીને માયુ નીચે  
નમાવીને નમસ્કાર કરજો ત્યારપછી તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કરજો કે હે  
શ્રામિન્ ! તમારી પિતૃવંશ-કેાડ કુતી દેવી હસ્તિનાપુર નગરમાં અત્યારે  
અહીં આવી છે તેઓ તમને જોવા માગે છે તે ડોહુ બિંક પુરૂષોએ કુતી  
દેવીની આ આજ્ઞાને સ્વીકારીને શ્રીકૃષ્ણ વાસુદેવને આ નમાયાગની યાગર આપી

તત સ્વલ્પ સા કૃત્તી દેવી પાદુના ગત્તા પદગુક્તા મતી યામન્ પ્રતિશ્રુતોતિ=  
 પાદગુક્તપદગત્તાં સ્વીકરોતિ. મતિશ્રુત્ય-સ્વીકૃત્ય મ્નાતા કૃતમતિમ્ના હસ્તિસ્વન્ન  
 પરગાતા હસ્તિનાપુરમ્ મ યમધવા નિર્ગન્તિ, નિર્ગત્ય કુરુનનપદમ્ય=કુરુનામ  
 કમ્ય દેશસ્ય મ યમ્નેન યૌર સૌરાષ્ટ્રનપદઃ, યૌર દ્વારવતી નગરી, યૌવાપ્રો  
 ઘાત=યત્રાન્યમ્પાનાદાગતાનાં સ્થિત્યર્થમાશાનો રિધને તાદગ વદિ પ્રત્યર્થ્યુપવ  
 નમ્, તૌરોપાગન્તિ, ડાગત્ય હસ્તિમ્પન્ધાત્ મત્યસ્રોતિ=મત્યસ્રતરતિ, મત્ય  
 વસ્થ કૌટુમ્બિરપૃષ્ઠાન્ન મન્દયતિ, મન્દયિત્વા પદમસાધીત્-ગન્તત સ્વલ્પ યુષ ફે

(તપ્ત સા કૌતી દેવી પદુરણા એવ યુક્તા સમાળી જાવ પડિસુણેડ,  
 પડિસુણિત્તા, પદાયા કયવલિકમ્મા હસ્થિવધવરગયા હસ્થિનાઠર મજ્જ મજ્જેણ  
 ણિગચ્છદ્ધ ણિગચ્છિત્તા કુરુજાણવય મજ્જ મજ્જેણ જેણેવ સુરદ્ધ  
 જણવય જેણેવ ધારવદ્ધ ણયરી જેણેવ અગ્ગુજાણે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ધ ઉવા  
 ગચ્છિત્તા હતિસ્ય યાઓ પચ્ચોરુહદ્ધ, પચ્ચોરુહિત્તા કોટ્ટુવિયપુરિસે સદા  
 વેદ્ધ, સદાવિત્તા એવ વયાસી) હન કે વાદ પાદુરાજા દ્વારા હસ પ્રકાર  
 કહી ગઈ કૃત્તી દેવી ને પાદુરાજા કી આજ્ઞા કો સ્વીકાર કર લિયા-ઔર  
 સ્વીકાર કર કે ઉસને સ્નાનકિયા-કાક આદિ પક્ષિયોં કે લિયે અન્નદેને  
 રૂપ વલિ કર્મ કિયા । વાદ મેં વહ દાથી કે ડપર વેઠકર હસ્તિનાપુર  
 નગર કે વીચ સે હોકર નિકલી -નિકલકર વહ કુરુદેશ કે વીચ સે  
 હોતી હુઈ જહાં સૌરાષ્ટ્ર જનપદ થા ઔર ઉસમેં મી જહા દ્વારવતી  
 નગરી થી-વહા પર મી જહાં વહ અગ્રઉદ્યાન થા કિ જિસમેં વાહરસે  
 આયે હુએ પથિક વિશ્રામ કે લિયે ઠહર જાતે થે-વહાં ગઈ । વહા જાકર

(તપ્ત સા કૌતી દેવી પદુરણા એવ યુક્તા સમાળી જાવ પડિસુણેડ,  
 પડિસુણિત્તા, પદાયા કયવલિકમ્મા હસ્થિવધવરગયા હસ્થિનાઠર મજ્જ મજ્જેણ  
 ણિગચ્છદ્ધ, ણિગચ્છિત્તા કુરુજાણવય મજ્જ મજ્જેણ જેણેવ સુરદ્ધજણવય જેણેવ  
 ધારવદ્ધ ણયરી જેણેવ અગ્ગુજાણે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ધ, ઉવાગચ્છિત્તા હતિસ્ય યાઓ  
 પચ્ચોરુહદ્ધ, પચ્ચોરુહિત્તા કોટ્ટુવિયપુરિસે સદાવેદ્ધ, સદાવિત્તા એવ વયાસી)  
 ત્યારપછી પાદુરાજા વડે આ પ્રમાણે આજ્ઞાપિત થયેલી કૃત્તી દેવીએ  
 પાદુરાજાની આજ્ઞાને સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તેણે સ્નાન કર્યું કાગડા  
 વગેરે પક્ષીઓને અન્નભાગ અર્પીને બલિઠમ કર્યું ત્યારપછી તે હાથી ઉપર  
 સવાર થઈને હસ્તિનાપુર નગરની વચ્ચે થઈને નીકળી નીકળીને તે કુરુદેશની  
 વચ્ચે થઈને જ્યાં સૌરાષ્ટ્ર જનપદ હતું અને તેમા પણ જ્યાં અગ્ર ઉદ્યાન  
 હતું-કે જેમા બહારથી આવનારા પથિકો વિશ્રામ માટે

-તેમા

તતઃ સ્વલુ સ કૃષ્ણો વાસુદેવઃ કુન્તી દેવી સ્નાતા કૃતચલિર્માણ કાકાદિભ્યઃ  
કૃતાન્નસવિભાગા જિમિત્તશુક્તોત્તરાગતા જિમિતા-ભોજન કૃતવતી શુક્તોત્તરાગતા-  
શુક્તોત્તરકાલ-ભોજનોત્તરકાલમ્-આગતા, તા તયા, યાવન્ સુલામનવરગતા-સુલ  
પૂર્વક વિનિષ્ઠાસનોપવિષ્ઠામ્ એમવાદીત્-હે પિતૃપ્રસઃ ! સદિગન્તુ કિમાગમનપયો-  
જનમ્ ? તતઃ સ્વલુ સા કુન્તી દેવી કૃષ્ણ વાસુદેવમેમવાદીત્-એવ સ્વલુ હે પુત્ર !  
હસ્તિનાપુરે નગરે યુધિષ્ઠિરસ્યાકાશતલે સુલપસુપ્તસ્ય પાર્શ્વાદ્ દ્રૌપદી દેવી ન  
જ્ઞાયતે કેનાપિ અશ્વતા યાવદ્ અવસિપ્તા વા, તત્ તસ્માદ્ ઇચ્છામિ સ્વલુ હે પુત્ર !

ચલે ગયે । કુન્તી ને વહા જાકર સ્નાન કિયા ચલિકર્મ કિયા । વાદ મેં  
ચતુર્વિધ આહાર કો જીમકર જવ વે સુલપૂર્નક વૈઠ ગઈ તવ કૃષ્ણ  
વાસુદેવ ને ઉનસે કહા ( સદિસડ ણ પિડચ્છા ! કિમાગમણપઓયણ ?  
તણ સા કોતી દેવી કણ વાસુદેવ ણવ વયાસી એવ સ્વલુ પુત્તા ! હત્થિ  
ણાડરે જુહિદ્વિહસ્સ અગાસતલે સુલપસુત્તસ્સ પાસાઓ દોવઈ દેવી ણ  
જ્ઞહ, કેણહ અવહિયા જાવ અવસિપ્ત્તા વા ત ઇચ્છામિણ પુત્તા ! દોવઈ  
એ દેવીએ મગ્ગણગવેસણ કરિત્તણ ) હે શુઆજી ! કહિયે-કિસ કારણ  
સે આપ યહા પવારી હૈં ? હસ પ્રકાર કૃષ્ણ વાસુદેવ કે પૂછને પર હસ  
કુન્તીને ઉન કૃષ્ણ વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કહો-પુત્ર ! સુનો-આને કા  
કારણ હસ પ્રકાર હૈ-હસ્તિનાપુર નગરમેં પ્રાસાદ કી અદાલિકા કે  
ઉપર સુલકે સાવ મોયે હુણ યુધિષ્ઠિર કે પાસ સે દ્રૌપદી દેવી ન માલૂમ  
કિસીને હરણ કરલી હૈ-યાવત્ કિસી કુણ મે યા સ્વલુ મેં ડાલ દી હૈ ।

અદર ગયા કુન્તીએ ત્યા પહોચીને સ્નાન કર્યું અને બલિકર્મ કર્યું ત્યાર  
પછી ત્યાર બાતના આહારો બીનીને ત્યારે તે સુખેથી સ્વસ્થ થઈને બેઠી  
ગયા ત્યારે કૃષ્ણ વાસુદેવે તેમને કહ્યું કે —

( સદિસડ ણ પિડચ્છા ! કિમાગમણપઓયણ ? તણ સા કોતી દેવી  
કણ વાસુદેવ એવ વયાસી એવ સ્વલુ પુત્તા ! હત્થિણાડરે ણયરે જુહિદ્વિહસ્સ  
આગાસતલે સુલપસુત્તસ્સ પાસાઓ દોવઈ દેવીણ જ્ઞહ, કેણહ અવહિયા જાવ  
અવસિપ્ત્તા વા ત ઇચ્છામિણ પુત્તા ! દોવઈએ મગ્ગણગવેસણ કરિત્તણ )

હો, શા ડારણથી તમે અહીં આવ્યા છો ? આ રીતે કૃષ્ણ વાસુદેવના  
પ્રશ્નને સાંભળીને કુન્તી દેવીએ કૃષ્ણ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પુત્ર !  
સાંભળો, હું એટલા માટે અહીં આવી છું કે હસ્તિનાપુર નગરમા મહેલની  
અગાશી ઉપરથી સુખેથી સૂતેલા યુધિષ્ઠિરની પાસેથી ન બાંધે ડાંધે દ્રૌપદી દેવીનું  
હરણ કરી લીધું છે યાવત કોઈ દુવામા એ કે ખાડામા નાખી દીધી છે એથી  
હે પુત્ર ! હમરુ ૨૦ કે — દ્રૌપદી દેવીની શોધખોળ થવી જોઈએ

દેવઃ કૌટુમ્બિકપુરુષાણામતિકે શ્રુત્યા નિશમ્ય હસ્તિસ્થાનગતો હયગજાય  
પદાતિસયરિતો દ્વારવત્યા નગર્યા મધ્યમધ્યેન યજ્ઞૈર ટુન્તી દેવી તર્જોપાગચ્છતિ,  
ઉપાગત્ય હસ્તિસ્થાન્યાત્ પ્રત્યવરોહતિ, પ્રપયરુદ્ધ કુન્ત્યા દેવ્યાઃ પાદમ્બુજ કસોતિ,  
ક્રત્યા કુન્ત્યા દેવ્યા સાર્થ હસ્તિસ્થાન્ય 'દુરુદ્ધ દુરોહતિ-આરોહતીત્યર્થઃ । દુસ્થ  
દ્વારવત્યા નગર્યા મધ્યમધ્યેન યજ્ઞૈર સ્વક ગૃહે તર્જોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સ્વક  
ગૃહમનુપ્રવિશતિ ।

વાસુદેવ કે લિયે હમ સમાચાર કી સ્વર કરદી કૃષ્ણ વાસુદેવ કૌટુ  
મ્બિક પુરુષોં કે પાસ સે હસ સમાચાર કો સુનકર ઓર વસે હૃદય મેં  
ધારણ કર હાથી પર પેઠ, હયગજ, રથ ત્થ પદાતિયો કે સાથ ૨ દ્વાર  
વતી નગરી કે ધોંચ સે હોતે દુગ જહાં કુતીદેવી યી વસા આયે । (ઉવા  
ગચ્છિત્તા હતિસ્થાઓ પચ્ચોરુદ્ધ, પચ્ચોરુહિત્તા કોતીદેવીય પાય  
મ્બુજ કરેહ, કરિત્તા કોતીદેવીય સર્વિ હતિસ્થા ટુરુદ્ધ, ટુરુહિત્તા  
વારવર્દેય ણયરીય મજ્ઞ મજ્ઞેણ જેણેવ સર્ગિહે તેણેવ ઉવાગચ્છહ,  
ઉવાગચ્છિત્તા સય ગિહ અણુપવિસહ, તણ્ણ સે કળ્હે વાસુદેવે કોતીદર્શી  
પહાય કમ્બલિકમ્મ જિમિયમુત્તરાગય જાવ સુહાસણવરગય ત્થ  
વયાસી ) વસા આકર વે હાથી પર સે નીચે ઉતરે ઓર ઉતરકર કુતી  
દેવી કે ચરણો મેં નમન ક્રિયા-ચરણ સ્પર્શ કરકે કુતીદેવી કે સાથ ૨  
હાથી પર વેઠ ગયે-વેઠ કર કે દ્વારવતી નગરી કે ઠીક બીતર સે હોકર  
જહાં અપના ગૃહ-પ્રાસાદ-થા વર્હા આયે-વહા આકર પ્રાસાદ કે બીતર

હીધી કૃષ્ણવાસુદેવે કૌટુમ્બિક પુરુષોની પાસેથી આ સમાચારો સાંભળીને તેને  
હૃદયમાં ધારણ કરાવે, હાથી ઉપર સવાર થઈને, ઘોડા, હાથી, રથ અને પાય  
દળોની સાથે દ્વારવતી નગરીની વચ્ચે થઈને જ્યાં કુતી દેવી હતા ત્યાં આગમ્ય  
( ઉવાગચ્છિત્તા હતિસ્થાઓ પચ્ચોરુદ્ધ પચ્ચોરુહિ ૧ કોતીદેવીય પાયમ્બુજ  
કરેહ, કરિત્તા કોતીદેવીય સર્વિ હતિસ્થા ટુરુદ્ધ, ટુરુહિત્તા વારવર્દેય ણયરીય  
મજ્ઞ મજ્ઞેણ જેણેવ સર્ગિહે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા, સય ગિહ અણુ  
પવિસહ, તણ્ણ સે કળ્હે વાસુદેવે કોતી દેવી પહાય કમ્બલિકમ્મ જિમિયમુત્તર  
રાગય જાવ સુહાસણવરગય ત્થ વયાસી )

ત્યાં પહોંચીને તેઓ હાથી ઉપરથી નીચે ઉતરીને કુતી  
દેવીને પગે લાગ્યા અને પગે લાગીને કુતી દેવીની સાથે હાથી ઉપર સવાર  
થઈ સવાર થઈને જ્યાં પોતાના ભવન હતા ત્યાં આગમ્ય ત્યાં

ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कुती देवीं स्नाता कृतवर्लिर्माणं काकादिभ्यः कृतान्नसविभागा जिमित्तभुक्तोत्तरागता जिमिता-भोजन कृतवती भुक्तोत्तरागता-भुक्तोत्तरकाल-भोजनोत्तरकालम्-आगता, ता तथा, यावत् सुखामनसरगता=सुख-पूर्वकं त्रिगिष्टासनोपविष्टाम् एवमवादीत्-हे पितृप्रसः ! सदृशन्तु किमागमनप्रयोजनम् ?, ततः खलु सा कुन्ती देवी कृष्ण वासुदेवमेवमवादीत्-एव खलु हे पुत्र ! हस्तिनापुरे नगरे युधिष्ठिरस्याकाशतले सुखप्रसुप्तस्य पार्थाद् द्रौपदी देवी न ज्ञायते केनापि अपहता यावद् अवशिष्टा वा, तत् तस्माद् इच्छामि खलु हे पुत्र !

चले गये । कुती ने कहा जाकर स्नान किया बलिकर्म किया । बाद में चतुर्विध आहार को जीमकर जब वे सुखपूर्वक बैठ गई तब कृष्ण वासुदेव ने उनसे कहा ( सदृशउ ण पिउच्छा ! किमागमणपओयण ? तएणं सा कोती देवी कण्ह वासुदेव एवं वयासी एव खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे जुहिट्ठिहस्स अगासतले सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ, केणइ अवहिया जाव अवक्खित्ता वा त इच्छामिण पुत्ता ! दोवई ए देवीए मग्गणगवेसण करित्तए ) हे भुआजी ! कहिये-किस कारण से आप यहां पवारी हैं ? इस प्रकार कृष्ण वासुदेव के पूछने पर उस कुतीने उन कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा-पुत्र ! सुनो-आने का कारण इस प्रकार है-हस्तिनापुर नगरमें प्रासाद की अट्टालिका के ऊपर सुखके साथ सोये हुए युधिष्ठिर के पास से द्रौपदी देवी न मालूम किसीने हरण करली है-यावत् किसी कुएं में या खड्डे में डाल दी है ।

अदर गया कुतीने त्या पडोथीने स्नान कयुं अने बलिकर्म कयुं त्या पछी थार जतना आहारो जमीने ज्यारे ते सुजेथी स्वन्थ थधने जेभी गया त्यारे कृष्ण वासुदेवे तेभने कहु के —

( सदृशउ ण पिउच्छा ! किमागमणपओयण ? तएणं सा कोती देवी कण्ह वासुदेव एव वयासी एव खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे जयरे जुहिट्ठिहस्स अगासतले सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवीण णज्जइ, केणइ अवहिया जाव अवक्खित्ता वा त इच्छामिण पुत्ता ! दोवईए मग्गणगवेसण करित्तए )

कहो, शा कारणथी तमे अहाँ आन्या छे ? आ रीते कृष्ण वासुदेवना प्रश्नने साभणीने कुती देवीने कृष्ण वासुदेवने आ प्रभाते कहु के छे पुत्र ! साभणो, हु ओटला भाटे अहाँ आवी छु के हस्तिनापुर नगरमा भडेवनी अगाशी उपरधी सुजेथी सूतेला युधिष्ठिरनी पासेथी न जाले डाले द्रौपदी देवीनु हरण करी लीधु छे यावत डोढ इवामा ओ के आडामा नाभी दीधी छे ओथी छे पुत्र ! हु धन्धु छु के —द्रौपदी देवीनी शोधजोण थवी जेधओ



द्रौपद्या देव्या मार्गणमवेपणं 'परित्याग' इति । ततः स कृष्णो वासु  
देवः कुन्ती 'पिउच्छि' पितृव्यागमेवमवासीन्-या नगरं ते पितृव्याम' । यदि  
द्रौपद्या देव्या कुरापि श्रुतिं वा धृतिं वा प्रवृत्तिं वा गान् कुरु, 'तो ण' तर्हि  
खलु, अह पातालाद् गमनाद् वा अर्धभरताद् वा=पातलमप्यान् समन्तान्=सर्वतः  
स्थानाद्, द्रौपदी देवी 'साहस्य' म्हास्तेन 'उपणेमि' उपनयामि, इति  
कृत्वा=इत्युक्त्वा कुन्ती 'पिउच्छि' पितृव्याग मत्प्रापति समानपति, सत्कार्य

इस लिये हे पुत्र ! मैं चाहती हूँ कि द्रौपदी की मार्गणा एवं गवेषणा  
होनी चाहिये । ( तपण से कहें वासुदेवे कोनी पिउच्छि एव वयासी-  
ज णवर पिउच्छी दोवडण देवीण कत्थइ सुइ वा जाव लभामि तो ण अह  
पायालाओ वा भवणाओ अह भरहाओ वा, समतओ दोवड साहस्य  
उवणेमि त्ति कद्दु कोती पिउच्छि सफारेइ सम्माणेइ, जाव पडिविस  
ज्जेइ, तपणं सा कोती देवी कण्हेण वासुदेवेण पडिविसज्जिया, समा  
णी जामेव दिसि पाउ० तामेव दिसि पडिगया ) तत्र कृष्ण वासुदेव ने  
अपनी भुआ कुती देवी से इस प्रकार कहा-हे भुआ ! मैं और अधिक  
तो क्या कहूँ-द्रौपदी देवी की यदि मैं कहीं पर भी श्रुतिधृति, और  
प्रवृत्ति पा लेता हूँ तो मैं चाहे वह पाताल में हो, या किसीके भवन में  
हो, या अर्ध भरत क्षेत्र में से कहीं पर भी क्यों न हो-उस द्रौपदी देवी  
को सब जगह से अपने हाथों से ला कर दूँगा । इस प्रकार कहकर  
उन कृष्ण वासुदेव ने अपनी पितृवसा कुती देवी का सत्कार किया।

( तपण से कहें वासुदेवे कोत पिउच्छि एव वयासी ज णवर पिउच्छा  
दोवडण देवीण कत्थइ सुइ वा जाव लभामि तो ण अह पायालाओ वा भवणाओ  
अह भरहाओ वा, समतओ दोवड साहस्य उवणेमि त्ति कद्दु कोती पिउच्छि  
सफारेइ सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ, तपणं सा कोती देवी कण्हेण वासुदेवेण  
पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसि पाउ० तामेव दिसि पडिगया )

त्यारे कृष्ण वासुदेवे पोताना इधं कुती देवीने आ प्रमाणे उहुं के  
इधं । हु वधारे शुं भु, द्रौपदी देवीनी जे हु उधं पण स्थाने श्रुति, धृति  
अने प्रवृत्ति मेणवी लक्ष तो भले ते पातालमा डाय, उधना लवनमा डाय  
के अर्ध भरत क्षेत्रमा गमे त्या उम न डाय ते द्रौपदी देवीने गमे त्याथी हु  
लावी आपने आपीश तेम हु आ प्रमाणे उहीने ते कृष्ण वासुदेवे पोताना इधं  
पितृवसा-कुतीदेवीने सत्कार उर्थे अने सम्मान उर्थे सत्कार ने

समान्य यावत्-प्रतिविसर्जयति । ततः खलु सा कुन्ती देवी कृष्णेन वासुदेवेन प्रतिविसर्जिता सती यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता तामेव दिशः प्रतिगता । सू० २७ ॥

मूलम्-तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया । वार-वइ एवं जहा-पडू तहा घोसणं घोसावेति जाव पच्चप्पिणंति, पंडुस्स जहा तएण से कण्हे वासुदेवे अन्नया अतो अंतेउ-रगए ओरोहे जाव विहरइ, इमं च णं कच्छुल्लए जाव समो-वडए जाव णिसोइत्ता कण्ह वासुदेवं कुसलोदत पुच्छइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्ल एवं वयासी-तुम ण देवा-णुप्पिया । बहूणि गामा जाव अणुपविससि, त अत्थि याइं ते कहिं वि दोवडए देवीए सुती वा जाव उवलद्धा ?, तएणं से कच्छुल्ले कण्हं वासुदेव एवं वयासी-एव खलु देवाणु-प्पिया । अन्नया कयाइं धायडंसंडे दीवे पुरत्थिमद्धं दाहिण-बुभरहवास अवरककारायहाणि गए, तत्थ णं मए पउमना-भस्स रत्तो भवणसि दोवई देवी जारिसिया दिट्ठपुव्वा यावि होत्था तएण कण्हे वासुदेवे कच्छुल्ल एव वयासी-तुब्भ चेव ण देवाणुप्पिया । एव पुव्वकम्म, तएणं से कच्छुल्ल-नारए कण्हेण वासुदेवेणं एव वुत्ते समाने उप्पयणि विज्जं

सन्मान किया, सत्कार सन्मान कर यावत् उन्हें प्रति विसर्जित कर दिया । इसके बाद वे कुन्ती देवी वहा से प्रतिविसर्जित होकर जिस दिशा से प्रकट हुई थी-उसी दिशा की ओर चली गई ॥ सू० २७ ॥

क्षीने तेभने विदाय उर्या, त्थारपणी ते कुन्तीदेवी त्थाथी विदाय भेणवीने जे दिशा तरइथी आव्या उता ते ज तरइ पाछा रवाना थया ॥ सूत्र २७ ॥

तएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ॥ सूत्र २८ ॥

आवाहेइ आवाहिता जामेव दिसि पाउन्भूण तामेव दिसि  
 पडिगए, तएणं से कण्हे वासुदेवे दूयं सदावेइ सदावित्ता  
 एव वयासी-गच्छहणं तुम देवाणुप्पिया । हत्थिणाउरपंडुस्स  
 रत्तो एयमट्ट निवेदेहि एवं सल्लु देवाणुप्पिया । धायइसंडे  
 दीवे पुरच्छिमञ्जे अवरकंकाए रायहाणीए पउमणाभभवणंसि  
 दोवइए देवीए पउत्ती उवलळा, त गच्छंतु पंच पडवा  
 चाउरगिणीए तेणाए सद्धिं सपरिवुडा पुरत्थिमवेयालीए  
 मम पडिवालेमाणा चिट्ठत्तु, तएण से दूए जाव भणइ,  
 पडिवालेमाणा चिट्ठह ते वि जाव चिट्ठति, तएणं से कण्हे  
 वासुदेवे कोडुवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-  
 गच्छहणं तुम्हे देवाणुप्पिया । सन्नाहियं भेरिताडेह, ते वि  
 -तालेति, तएणं तेसि सण्णाहियाए भेरीए सद् सोच्चा  
 समुद्विजयपामोक्खा दसदसारा जाव छप्पणं वलवयसा-  
 हस्सीओ सन्नद्धवद्ध जाव गहियाउहपहरणा अप्पेगइया  
 हयगया गयगया जाव वग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव सभा सु-  
 हम्मा जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता  
 करयल जाव वच्चावेति, तएण कण्हे वासुदेवे हत्थिखधवर-  
 गए सकोरटमल्लदामेण छत्तेण० सेयवर० हयगय० सहया  
 भडचडगरपहकरेण वारवईए णयरीए मज्झ मज्झेण णिग-  
 च्छइ, जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता  
 पचहि पडवेहि सद्धि एगयओमिलित्ता न्वय ॥ १८ ॥ करेइ

करित्ता पोसहसाल अणुपविसइ अणुपविसित्ता सुद्विय देवं  
मणसि करेमाणेर चिट्ठइ, तएण कणहस्स वासुदेवस्स अट्ठ-  
मभत्तंसि परिणममाणसि सुद्विओ आगओ, भणदेवाणु-  
प्पिया । ज मए कायव्व, तएण से कणहे वासुदेवे सुद्विय  
एवं वयासी-एव खल्ल देवाणुप्पिया । दोवई देवी जाव पउ-  
मणाभस्स भवणसि साहरिया तणं तुमं देवाणुप्पिया । मम  
पंचहि पंडवेहि सद्धि अप्पच्छट्ठस्स छण्ह रहाणं लवणसमुद्दे  
मग्गं वियरेहि, जण्ण अह अमरकंकारायहाणा दोवईए कूवं  
गच्छामि, तएण से सुद्विए देवे कण्ह वासुदेव एव वयासी-  
किण्ह देवाणुप्पिया । जहा चेव पउमणाभस्स रत्तो पुव्वसं-  
गइएणं देवेण दोवई जाव संहरिया तहा चेव दोवई देविं  
धायइसंडाओ दीवाओ भारहाओ जाव हत्थिणापुर साह-  
रामि, उदाहु पउमणाभ राय सपुरबलवाहण लवणसमुद्दे  
पक्खिवामि ? , तएण कणहे वासुदेवे सुद्विय देव एव वयासी-  
मा ण तुम देवाणुप्पिया । जाव साहराहि तुम णं देवा-  
णुप्पिया । लवणसमुद्दे अप्पच्छट्ठस्स छण्ह रहाण मग्गं विय-  
राहि, सयमेव ण अह दोवईए कूवं गच्छामि, तएण से  
सुद्विए देवे कण्ह वासुदेव एव वयासी-एव होउ, पचहिं  
पंडवेहिं अप्पच्छट्ठस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्दे मग्गं वियरइ,  
तएण से कणहे वासुदेवे चाउरगिणासेण पडिविमज्जेइ-पडिवि-  
सजित्ता पचहिं पंडवेहिं सद्धि अप्पच्छट्ठे छहि रहेहि लवणसमुद्दे

आवाहेइ आवाहिता जामेव दिसि पाउठभूए तामेव दिसि  
 पडिगए, तएण से कणहे वासुदेवे दूरं सदावेइ सदावित्ता  
 एव वयासी-गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! हरिथणाउरपंडुस्स  
 रत्तो एयमदुं निवेदेहि एवं खलु देवाणुप्पिया । धायइसंडे  
 दीवे पुरच्छिमछे अवरककाए रायहाणीए पउसणाभभत्रणंसि  
 दोवइए देवीए पउत्ती उवलछा, त गच्छंतु पंच पंडवा  
 चाउरगिणीए तेणाए सद्धि सपरिवुडा पुरत्थिमवेयालीए  
 मम पडिवालेमाणा चिट्ठु, तएण से दूए जाव भणइ,  
 पडिवालेमाणा चिट्ठह ते वि जाव चिट्ठति, तएणं से कणहे  
 वासुदेवे कोळुविचपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-  
 गच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया । सन्नाहियं भेरिताडेह, ते वि  
 -तालेंति, तएण तेमि सण्णाहियाए भेरीए सदं सोच्चा  
 समुद्विजयपामोक्खा दसदसारा जाव छप्पणं वलवयसा  
 हस्सीओ सन्नद्धवद्ध जाव गहियाउहपहरणा अप्पेगइया  
 हयगया गयगया जाव बग्गुरापरिवित्ता जेणैव सभा सु-  
 हस्मा जेणैव कणहे वासुदेवे तेणैव उवागच्छइ उवागच्छित्ता  
 करयल जाव वच्चावेति, तएण कणहे वासुदेवे हत्थिखंधवर-  
 गए सकोरटमल्लदामेण छत्तेण० सेयवर० हयगय० महया  
 भडचडगरपहकरेण चारवईए णयरीए मज्झं मज्झेण णिग-  
 च्छइ, जेणैव पुरत्थिमवेयाली तेणैव उवागच्छइ उवागच्छित्ता  
 पचहि पडवेहि सद्धि एगयओमिलित्ता ॥ १२ ॥ करेइ



वासुदेवस्स दोवई, एसणं अहं सयमेव जुञ्जसज्जो णिग्गच्छामि  
त्तिकट्ठु दारुयं सारहि एव वयासी-केवलं भो ! रायसत्थेसु दूये  
अवज्जे त्तिकट्ठु असक्कारिय असम्माणिय अवहारेणं णिच्छुभा-  
वइ, तएणं से दारुए सारही पउमणाभेणं असक्कारिय जाव  
णिच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवा-  
गच्छित्ता करयल० कण्हं जाव एव वयासी-एवं खलु अह  
सामी ! तुव्वं वयणेण जाव णिच्छुभावेइ ॥ सू० २८ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिकपु-  
रुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत् गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रिय ! द्वा-  
वतीं नगरीम्, ‘एव यथा पाण्डुस्तथा घोषणां वोपयत’-यथा पाण्डु राजा हस्ति  
नापुरे घोषणा कारितवान् तद्वदित्यर्थः । तेऽपि कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव घोषणा

—तएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) उन कृष्ण वासुदेव  
ने (कौटुम्बिकपुरिसे सदावेइ) कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सदाविता)  
बुलाकर (एव वयासी) उन से ऐसा कहा (गच्छइ ण तुव्वे देवाणुप्पिया  
वारवइ) हे देवानुप्रियो ! तुम द्वारावती नगर में जाओ (एव जहा पडु  
तहा घोसण घोसावेति जाव पच्चप्पिणति पडुस्स जहा) वहा पांडु  
राजाकी तरह घोषणा करो—अर्थात् पांडु राजाने जिस प्रकार द्रौपदी की  
खबर लानेवाले के लिये अर्थ प्रदान का घोषणा अपने कौटुम्बिक पुरुषों  
द्वारा हस्तिनापुर नगर में करवाई थी—इसी प्रकार की घोषणा करने के

‘तएण से कण्हे वासुदेवे’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (से कण्हे वासुदेवे) ते कृष्ण वासुदेवे (कौटु बिय  
पुरिसे सदावेइ) कौटु णिउ पुरुषोने ओलाव्या (सदाविता) ओलावीने (एव  
वयासी) तेभने आ प्रभाणु उलु डे—(गच्छइ ण तुव्वे देवाणुप्पिया वारवई)  
हे देवानुप्रियो ! तमे द्वारावती नगरीमा ज्ञाओ (एव जहा पडु तहा घोसण  
घोसावेति जाव पच्चप्पिणति पडुस्स जहा) त्या पांडु राजानी जेम ज घोषणा  
करे ओटवे डे पांडु राजाओ जेम द्रौपदीनी शोध करवा भाटेनी द्रव्य आप  
वानी घोषणा हस्तिनापुर नगरमा करावी डती ते प्रभाणु ज घोषणा करवा

मज्झमज्जेणं वीडवयइ वीडवडत्ता जेणेव अमरकंका राय  
हाणी जेणेव अमरकंकाण अणुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवा  
गच्छित्ता रह ठवेइ ठवित्ता दारुयं सारहिं सदावेइ सदावित्ता  
एवं वयासी-गच्छह णं तुम देवाणुप्पिया ! अमरकंकारायहाणीं  
अणुपविसाहिं पउमणाभस्स रण्णो वामेण पाएणं पायपीढ  
अक्कमित्ता कुतग्गेणं लेहं पणामेहि तिवलिय भिउडिं निडाले  
साहट्टु आसुरुत्ते रुट्टे कुट्टे कुविए चाडिक्किए एव वयासी-हं भो  
पउमणाहा ! अपत्थियपत्थिया दुरतपंतलक्खणा हीणपुन्नचा  
उदसा सिरीहिरिधी परिवज्जिया अज्ज ण भवसि किन्न तुम ण  
याणासि कणहस्स वासुदेवस्स अहव णं जुद्धसज्जे णिग्गच्छाहि  
एस ण कणहे वासुदेवे पंचहि पडवेहि अप्पच्छट्टे दोवई देवीए  
कूवं हव्वमागए, तएणं से दारुए सारही कणहेणं वासुदेवेण  
एवं वुत्ते समाणे हट्टुट्टे जाव पडिसुणेइ पडिसुणित्ता अमरकका  
रायहाणि अणुपविसइ अणुपविसित्ता जेणेव पउमनाहे  
तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेत्ता एव  
वयासी-एस ण सामी ! मम विणयपडिवित्ती इमा अन्ना मम  
सामिस्स समुहाणत्तित्तिक्कहु आसुरुत्ते वामपाएणं पायपीढ  
अणुक्कमइ अणुक्कमित्ता कुतग्गेणं लेह पणामइ पणामित्ता  
जाव कूव हव्वमागए, तएणं से पउमणाभे दारुणेणं सारहिणा  
एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते तिवलि भिउडि निडाले साहट्टु  
एव वयासी-णो अप्पिणामि णं अह देवाणुप्पिया !

वासुदेवस्स दोवई, एसणं अहं सयमेव जुज्झसज्जो णिग्गच्छामि  
त्तिकट्ठु दारुय सारहि एव वयासी-केवलं भो । रायसत्थेसु दूये  
अवज्जे त्तिकट्ठु असक्कारिय असम्माणिय अवहारेणं णिच्छुभा-  
वइ, तएणं से दारुए सारही पउसणाभेणं असक्कारिय जाव  
णिच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवा-  
गच्छित्ता करयल० कण्हं जाव एव वयासी-एवं खलु अहं  
सामी । तुव्वम वयणेण जाव णिच्छुभावेइ ॥ सू० २८ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिकपु-  
रुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत् गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रिय । द्वा-  
वतीं नगरीम्, ‘एव यथा पाण्डुस्तथा प्रोपणां प्रोपयत’-यथा पाण्डु राजा हस्ति  
नापुरे घोषणा कारितवान् तद्वदित्यर्थः । तेऽपि कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव घोषणा

—तएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) उन कृष्ण वासुदेव  
ने (कौटुम्बिकपुरिसे सदावेइ) कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (महावित्ता)  
बुलाकर (एव वयासी) उन से ऐसा कहा (गच्छइ ण तुव्वमे देवाणुप्पिया  
वारवइ) हे देवानुप्रियो । तुम द्वारावती नगर में जाओ (एव जहा पडु  
तहा घोसण घोसावेति जाव पच्चप्पिणति पडुस्स जहा) वहा पांडु  
राजाकी तरह घोषणा करो—अर्थात् पांडु राजाने जिस प्रकार द्रौपदी की  
खबर लानेवाले के लिये अर्थ प्रदान का घोषणा अपने कौटुम्बिक पुरुषों  
द्वारा हस्तिनापुर नगर में करवाई थी—इसी प्रकार की घोषणा करने के

‘तएण से कण्हे वासुदेवे’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्वारपणी (से कण्हे वासुदेवे) ते कृष्ण वासुदेवे (कौटु बिय  
पुरिसे सदावेइ) कौटु बिय पुरुषाने ओलाव्या (सदावित्ता) ओलावीने (एव  
वयासी) तेमने आ प्रभावे उहु डे—(गच्छइ ण तुव्वमे देवाणुप्पिया वारवई)  
हे देवानुप्रियो । तमे द्वारावती नगरीमा गयो (एव जहा पडु तहा घोसण  
घोसावेति जाव पच्चप्पिणति पडुस्स जहा) त्या पांडु राजानी नेम न घोषणा  
करो ओटवे डे पांडु राजाओ नेम द्रौपदीनी शोध कवा माटेनी द्रव्य आप  
वानी घोषणा हस्तिनापुर नगरमा करावी डती ते प्रभावे न घोषणा करवा

ક્તરા 'જાર પચ્ચપિણંતિ' યાત્ મત્પર્પયન્તિ-ગોપણાં કૃષ્ણા-કૃષ્ણસ્ય વાસુદેવ-  
સ્થાન્તિકે તે કૌટુમ્બિકપુરુષા નિવેદયન્તિ-દ્વારવત્યાં નગર્યાં સર્વેષાં ઘોષણાકૃતા  
ડસ્માભિરિતિ । 'પદુમ્સ જહા' પાંડુર્ગૃધ્યા યથા પાંડુઃ ટૃપ્સ્ય વર્ણકસ્તથાડ્રાપિ  
ધો યઃ । યથા પાંડુરાજા દ્રૌપદ્યાઃ શુભિં યાત્ મટ્ટિં ન લબ્ધવાન, તથા કૃષ્ણા  
સુદેવોઽપિ દ્રૌપદ્યાઃ શ્રુત્યારિક ન પ્રાપ્તવાનિતિ ભાવઃ । તતઃ મહુઃ કૃષ્ણો વાસુદેવઃ  
અન્યદા=અન્યસ્મિન્ વર્મિનિત્ સમયે 'જતો' જન્તઃ-મ્યમામાદ જન્તઃપુરગતો  
ડવરોધે યાત્ વિહરતિ । 'ઇમ ચ ણ' અસ્મિન્ સમયે ચ મહુઃ 'કચ્છુલ્લણ' કચ્છુ  
લ્લકો નારદો યાત્ સમયસૂતઃ=ગગનતલાદતરન્ન કૃષ્ણમગ્નિ મમાગત યાત્  
નિપથ=ઉપવિશ્ય ગગનાલાદતરન્ન કૃષ્ણમગ્નિ મમાગતઃ, યાત્ નિપથ=ઉપવિશ્ય

લિયે કૃષ્ણ વાસુદેવ ને અરને કૌટુમ્બિક પુરુષોં કો અટંશ દિયા કિ વે  
મી દ્વારાવતી મેં હસી તરહ કી ઘોષણા કરેં । અપને રાજા કી આજાતુ  
સાર ઝન્હોં ને દ્વારાવતી મેં ઘોષણા કરદી ઓર હસ કી સ્વધર પીઠે કૃષ્ણ  
વાસુદેવ કો કર દો । યથા અવશિષ્ટ વર્ણન પાંડુ રાજા કે જેસા વર્ણન  
હે વેસા હી જાનના ચાહિયે । અર્થાત્ ઘોષણા કરાને પર મી દ્રૌપદી કી  
કિસી મી પ્રકાર કી સ્વધર વગૈરહ કા કોઈ મી સમાચાર પાંડુ રાજા કો  
નહીં મિલા વેસા કૃષ્ણ વાસુદેવ કો મી નહીં મિલા (તણ) તબ (સે  
કળહે વાસુદેવે અન્નયા અતો અતેરગણ ઓરોહે જાવ વિહરહ હમ ચ  
ણ કચ્છુલ્લણ જાવ સમોસરણ) વે કૃષ્ણ વાસુદેવ એક દિન કી બાત હૈ  
કિ અપને અન્ત પુર કે પ્રાસાદ કે મીતર અન્ત પુર કી સ્ત્રિયોં કે સાથ  
બેઠે હુણ થે કિ હસી સમય વે કચ્છુલ્લ નામે નારદ આકાશ માર્ગ સે

માટે કૃષ્ણ વાસુદેવે પોતાના કૌટુમ્બિક પુરુષોને આજ્ઞા કરી કે તેઓ પણ  
દ્વારાવતી નગરીમાં આ પ્રમાણે જ ઘોષણા કરે પોતાના રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે  
તે લોકોએ દ્વારાવતી નગરીમાં ઘોષણા કરી અને ઘોષણાનું કામ થઈ ગયું છે  
તેની બાબત પણ કૃષ્ણ વાસુદેવની પાસે પહોંચાડી હીધી અહીં અવશિષ્ટ વર્ણન  
પાંડુ રાજાનું જેવું છે તે પ્રમાણે જ સમજી લેવું જોઈએ એટલે કે ઘોષણા કર્યા  
પછી પણ પાંડુ રાજાને દ્રૌપદી દેવીની કોઈ પણ જાતની બાબત કે સમાચાર  
મળ્યા નહિ તે પ્રમાણે કૃષ્ણ વાસુદેવને પણ કોઈ પણ સમાચારો ઘોષણા  
બાદ મળ્યા નહિ (તણ) ત્યારે (સે કળહે વાસુદેવે અન્નયા અતો અતે  
રગણ ઓરોહે જાવ વિહરહ, હમચ ણ કચ્છુલ્લણ જાવ સમોસરણ) એક દિવસની  
વાત છે કે તે કૃષ્ણ વાસુદેવ પોતાના મહેલની અંદર રણુવાસની સ્ત્રીઓની  
સાથે બેઠા હતા તે વખતે કચ્છુલ્લ નામે નારદ આકાશ મા

કૃષ્ણ વાસુદેવં કુશલોદન્ત=કુશલવાર્તા પૃચ્છતિ, તત્. સ્વલુ સ કૃષ્ણો વાસુદેવઃ કચ્છુલ્લ  
નારદમેમવાદીત્-હે દેવાનુપ્રિય ! ત્વ સ્વલુ વહ્નિ ગ્રામાકરાદીનિ પરિભ્રામ્યસિ,  
તત્ર વહ્નિ ગૃહાણિ યાવદનુપવિશસિ તત્ તસ્માદસ્તિ ' આહ ' ઇતિ વાક્યાલકારે તે  
ત્વયા યદિ કુત્રચિદ્ દ્રૌપદ્યાદેવ્યા શ્રુતિર્યા યાવદ્ ઉપલબ્ધા=નાતા ? તર્હિ કથય'  
ઇતિ ભાવઃ । તતઃ સ્વલુ સ કચ્છુલ્લનારદ કૃષ્ણ વાસુદેવમેવમવાદીત્-એવ સ્વલુ  
હે દેવાનુપ્રિયાઃ અહમન્યદાકદાચિદ્ ધાતકીપણ્ડે દ્વીપે પૌરસ્ત્યાર્થે=પૂર્વદિગ્ભાગવ  
વર્તિન્નિ, દક્ષિણાર્ધમસ્તવર્ષે-અમરકક્ષાનામ્ની રાજધાની ગત । તત્ર સ્વલુ મયા

ઉત્તરકર વદા આયે-(જાવ ણિસી ઇત્તા કણ્ઠ વાસુદેવ કુસલોદત પુચ્છહ,  
તણ્ણ સે કણ્ઠે વાસુદેવે કચ્છુલ્લ એવ વયાસી-તુમ ણ દેવાણુપ્પિયા !  
વહ્નિ ગામાગર જાવ અણુપવિસસિ ત અત્થિ આહ તે કહિં વિ દોવર્દેણ  
દેવીણ સુતીવા જાવ ઉવલદ્વા તણ્ણ સે કચ્છુલ્લે કણ્ઠ વાસુદેવ એવ  
વયાસી ) યાવત્ વૈઠકર ઉન્હો ને કૃષ્ણ વાસુદેવ સે કુશલ વૃત્તાન્ત પૂઝા  
-કૃષ્ણવાસુદેવ ને તવ કચ્છુલ્લ નારદ સે એસા કહો-હે દેવાનુપ્રિય !  
તુમ અનેક ગ્રામ આકર આદિસ્થાનોં મેં પરિભ્રમણ કરતે રહતે હો-અનેક  
ગૃહાદિકો મેં આતે જાતે રહતે હો તો કહો-કહી પર વયા તુમ્હેં દ્રૌપદી  
દેવી કી શ્રુતિ ઉપલબ્ધ હુઈ હૈ-ઉસકી તુમ્હેં કિસી પ્રકાર કી કોઈ સ્વર  
મિલી હૈ-ઉસકા કિસી મી પ્રકાર કા કોઈ ચિન્હ ઉપલબ્ધ હુઆ હૈ ?  
ઇસ પ્રકાર કૃષ્ણ વાસુદેવ કે પૂઝને પર કચ્છુલ્લ નારદ ને ઉત્ત કૃષ્ણ  
વાસુદેવ સે ઇસ પ્રકાર કહા-( એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! અન્નયા કયાહ

આવ્યા ( જાવ ણિસીઇત્તા કણ્ઠ વાસુદેવ કુસલોદત પુચ્છહ, તણ્ણ સે કણ્ઠે  
વાસુદેવે કચ્છુલ્લ એવ વયાસી, તુમ ણ દેવાણુપ્પિયા ! વહ્નિ ગામાગર જાવ અણુ  
પવિસસિ ત અત્થિ આહ તે કહિં વિ દોવર્દેણ દેવીણ સુતીં વા જાવ ઉવલદ્વા-  
તણ્ણ સે કચ્છુલ્લે કણ્ઠ વાસુદેવ એવ વયાસી ) ત્યા આવીને બેઠા અને બેઠીને  
તેમણે કૃષ્ણ વાસુદેવને કુશળ વાર્તા પૂઝી વાસુદેવે ત્યારે કચ્છુલ્લ નારદને આ  
પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે ઘણા ગ્રામ, આકર વગેરે સ્થાનોમા પરિ  
ભ્રમણ કરતા રહો છો, ઘણા ઘરો વગેરેમા આવજા કરતા રહો છો તો કહો,  
કોઈ પણ સ્થાને તમને દ્રૌપદી દેવીની શ્રુતિ મળી છે-તેના તમને કોઈ પણ  
જાતના મમાચારો મળ્યા છે, તેનું કોઈ પણ જાતનું ચિન્હ તમને મળ્યું છે ?  
આ રીતે કૃષ્ણ વાસુદેવના પ્રશ્નને આલખીને કચ્છુલ્લ નારદે તે કૃષ્ણ વાસુદેવને  
આ પ્રમાણે કહ્યું કે —

( એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! અન્નયા કયાહ ધાયર્દસડે દીવે પુરત્થિમદ્ધ  
કા ૬૩



पद्मनाभस्य राज्ञो भवने द्रौपदीदेवी यादृशी ऋष्यां चाप्यगम्, अयं भावः-  
काचिद्द्रौपदीमदृशी दृशी पद्मनाभस्य राज्ञो भवने दृष्टा हि नृणां मया न सम्पन्न  
ज्ञाता नापि सम्पन्नपरिनिता, इति । ततः गच्छ कृष्णो वासुदेवः कच्छुल्लनारदमेव  
मया दीत्-हे देवानुप्रियाः युष्माकमेव गच्छ 'पश्य' इदं 'पुत्रकर्म' पूर्वकर्म  
-पूर्वकृतं कर्म, युष्माकिरेवेदं शर्म पूर्व कृतमित्यर्थः । ततः गच्छ स कच्छुल्लनारदः  
कृष्णेन वासुदेवेनैव मुक्तः स न उरतनां प्रियामायायति । आयाय यस्याः एव दिशः  
मादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः । ततः गच्छ स कृष्णो वासुदेवो दत्तं श्रवयति-

धायर्हसहे दीवे पुरत्थिमद्व दार्हिणद्वभरहवास अमरकका रायहाणि गए  
तत्थ ण मए पडमनाभस्स रण्णो भवणसि दोयर्ह देवी जारिमिया दिट्ठ  
पुब्बा यावि होत्था, तण्ण कण्हे वासुदेवे कच्छुल्ल एव वयासी-तुम्भ  
चेव ण देवाणुप्पिया ! एव पुत्रकम्म-तण्णं से कच्छुल्लनारद कण्हेण  
वासुदेवेण एव वुत्ते समाणे उत्पयणिं विज्ज आवाहेइ, आवाहिता  
जामेव दिसि पाउम्भुए तामेव दिसि पडिगए ) सुनो मे तुम्हे बताता हं  
-हे देवाणुप्रिय ! मैं किसी एक समय द्वितीय धातकी खड्ग द्वीप में पूर्व  
दिग्भागवर्ती दक्षिणार्ध भरतक्षेत्र में अमरकका नाम की राजधानी में  
गया हुआ था वहाँ मैंने पद्मनाभ राजा के भवन में द्रौपदी देवी जैसी  
एक नारी देखी थी-परन्तु मैं उसे अच्छी तरह नहीं जान सका-और  
न उससे परिचित ही हो सका-। नारद की ऐसी बात सुनकर कृष्ण  
वासुदेव ने उनसे कहा हे देवानुप्रिय ! आपने ही ऐसा कार्य सब से  
पहिले किया है-इसके बाद उन कच्छुल्ल नारदने कृष्ण वासुदेवके द्वारा

दार्हिणद्वभरहवास अमरकका रायहाणि गए, तत्थण मए पडमनाभस्स रण्णो  
भवणसि दोयर्ह देवी, जारिमिया दिट्ठपुब्बा यावि होत्था, तण्ण कण्हे वासुदेवे  
कच्छुल्ल एव वयासी-तुम्भ चेवण देवाणुप्पिया ! एव पुत्र कम्म-तण्ण से कच्छुल्ल  
नारद कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ते समाणे उत्पयणिं विज्ज आवाहेइ, आवाहिता  
जामेव दिसि पाउम्भुए तामेव दिसि पडिगए )

सालणो, तमने हु अधी विगत अतावुं छु हे देवानुप्रिय ! कोय ओक  
वणते हु धातकी पडद्वीपमा, पूर्व दिशा तरइना दक्षिणार्ध भरत क्षेत्रमा,  
अमरकका नामे राजधानीमा गयो हुतो त्या मे पद्मनाभ राजना भवनमा  
द्रौपदी देवी नारी जेह हुती पणु हु तेने सारी चेठ ओणभी  
शक्यो नहि परिचित थछ शक्यो नारदनी आ वात सालणाने  
कृष्णवाहुत्त नयि ! सौ पडेला तमे न आ काम कथुं छे  
त्यार

आह्वयति, शब्दयित्वा-एवमवादीत्-गच्छ खलु त्व हे देवानुप्रियाः ! हस्तिनापुर  
पाण्डोराज्ञ एतमर्थं निवेदय-एव खलु हे देवानुप्रिय ! धातकीपण्डे द्वीपे ' पुर-  
त्थिमद्वे ' पौरस्त्यार्धे पूर्वदिग्भागवर्तिनि अमरककाया राजधान्या पद्मनाभभवने  
द्रौपद्या देव्याः प्रवृत्तिरूपलब्धा, तत्=तस्मात् गच्छन्तु पञ्च पाण्डवाश्चतुरङ्गिण्या  
सेनया सार्धं सपरिवृता ' पुरत्थिमवेयालीए ' ' पौरस्त्यवेलायां-पूर्वदिग्भर्तिनि  
लवणसमुद्रे मा ' पडिवालेमाणा ' प्रतिपालयन्तः-प्रतीक्षमाणा स्तिष्ठन्तु, ततस्त  
दनन्तरं स दूतो यावत् पाण्डोरग्रे गत्वा कृष्णवासुदेवोक्तं वचनं भणति=कथयति=  
' पडिवालेमाणा चिद्वह ' अयं भावः- ' धातकीपण्डे द्वीपे पूर्वदिग्भागवर्तिनि अम-  
रककाया राजधान्या पद्मनाभभवने द्रौपद्या ' प्रवृत्तिरूपलब्धा, तस्मात् पञ्च पाण्ड-

इस प्रकार कहे जाने पर अपनी उत्पत्तनीविद्याका स्मरण किया। स्मरण  
करके फिर वे जिस दिशा से प्रकट हुए थे उसी दिशा की ओर चले  
गये। (तएण से कण्हे वासुदेवे दूय सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी  
गच्छण तुम देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउर पडुरस रण्णो एयमट्ठ निवेदेहि)  
इसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने दूत को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा  
कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम हस्तिनापुर नगर जाओ-वहाँ पांडु राजा से  
ऐसा कहना-(एव खलु देवाणुप्पिया ! घायइमडे दीवे पुरत्थिमद्वे  
अमरककाए रायहाणीए पडमणाभभवणसि दोवईए देवीए पउत्ती  
उवलद्धा-त गच्छतु पच पडवा चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा  
पुरत्थिमवेयालीए मम पडिवालेमाणा चिद्वतु) हे देवानुप्रिय ! वह वक्तव्य  
विषय यह है-धातकी पंड नाम के द्वीप में पूर्व दिग्भागवर्ती दक्षिणार्ध  
भरत क्षेत्र में वर्तमान अमरकका नाम की राजधानी में पद्मनाभ राजा

विधानु स्मरणं कर्तुं स्मरणं करीने पछी तेओ ने दिशा तरक्ष्थी आओ  
हुता ते ने दिशा तरक्ष् पाछा खाना थछ गया ( तएण से कण्हे वासुदेवे दूय  
सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी-गच्छण तुम देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउर पडुरस  
रण्णो एयमट्ठ निवेदेहि ) तयारपछी ते कृष्ण वासुदेवे हुतने ओलाओया अने  
ओलावीने तेने आ प्रभाणे कहु के हे देवानुप्रिय ! तमे हस्तिनापुर नगरमा  
जओ-अने त्या पांडु राजाने आ प्रभाणे कहे के—

( एव खलु देवाणुप्पिया ! घायइसडे दीवे पुरत्थिमद्वे अमरककाए राय  
हाणीए पडमणाभा भवणसि दोवईए देवीए पउत्ती उवलद्धा-त गच्छतु पच पडवा  
चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा पुरत्थिमवेयालीए मम पडिवाले माणा  
चिद्वतु ) हे देवानुप्रिय ! धातकी पंड नामे द्वीपमा पूर्व दिशा तरक्ष्ना दक्षिणार्ध  
भरत क्षेत्रमा विद्यमान अमरकका नामनी राजधानीमा पद्मनाभ राजाना जय

पद्मनाभस्य राशो भवने द्रौपदीदेवी यादृशी नृपूरा चाप्यभयम्, अयं भावः-  
 काचिद्द्रौपदीमदृशी दृशी पद्मनाभस्य राशोभवने इष्टा हि न मा मया न सम्पन्न  
 शाता नापि सम्पन्नपरिणिता, इति । ततः गच्छ कृष्णो वासुदेवः कच्छुल्लनारदमेव  
 मवादीत्-हे देवानुप्रियाः युष्माकमेव गच्छ 'पश्य' उच्यते 'पुनरुत्तम' पूर्वकर्म  
 -पूर्वकृत कर्म, युष्मागिरवेष्टा कर्म पूर्व कृतमित्यर्थः । ततः सत्तु स कच्छुल्लनारदः  
 कृष्णेन वासुदेवेनेत्युक्तं गच्छ उच्यते ततो विद्यामाराधयति । आवाहय यस्याः एवदिशः  
 मादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो दत्तं शब्दयति-

धातुर्हस्ये दीवे पुरत्थिमद्व दारिणद्धभरहवास अमरकका रायहाणि गए  
 तत्थ ण मए पडमनाभस्स रण्णो भवणसि दोरई देवी जारिमिया दिठ्ठ  
 पुब्बा यावि होत्ता, तएणं कण्हे वासुदेवे कच्छुल्ल एव वयासी-तुम्भ  
 चेव ण देवाणुप्पिया ! एव पुनरुत्तम-तएण से कच्छुल्लनारद कण्हेण  
 वासुदेवेण एव वुत्ते समाणे उत्पयणिं विज्ज आवाहेइ, आवाहिता  
 जामेव दिसिं पाउब्भुए तामेव दिसिं पडिगए ) सुनो मे तुम्हे यताता हं  
 -हे देवाणुप्रिय ! मैं किसी एक समय छितीय धातकी ग्वह द्वीप में पूर्व  
 दिग्भागवर्ती दक्षिणार्ध भरतक्षेत्र में अमरकका नाम की राजधानी में  
 गया हुआ था वहाँ मैंने पद्मनाभ राजा के भवन में द्रौपदी देवी जैसी  
 एक नारी देखी थी-परन्तु मैं उसे अच्छी तरह नहीं जान सका-और  
 न उससे परिचित ही हो सका-। नारद की ऐसी बात सुनकर कृष्ण  
 वासुदेव ने उनसे कहा हे देवानुप्रिय ! आपने ही ऐसा कार्य सब से  
 पहिले किया है-इसके बाद उन कच्छुल्ल नारदने कृष्ण वासुदेवके द्वारा

दारिणद्धभरहवास अमरकका रायहाणि गए, तत्थण मए पडमनाभस्स रण्णो  
 भवणसि दोरई देवी, जारिमिया दिठ्ठपुब्बा यावि होत्ता, तएणं कण्हे वासुदेवे  
 कच्छुल्ल एव वयासी-तुम्भ चेवण देवाणुप्पिया ! एव पुनरुत्तम-तएण से कच्छुल्ल  
 नारद कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ते समाणे उत्पयणिं विज्ज आवाहेइ, आवाहिता  
 जामेव दिसिं पाउब्भुए तामेव दिसिं पडिगए )

सालणी, तमने हु जधी विगत जतावुं छु हे देवानुप्रिय ! कोछ ओक  
 वज्जते हु धातकी पडद्वीपमा, पूर्व दिशा तरङ्गना दक्षिणार्ध भरत क्षेत्रमा,  
 अमरकका नामे राजधानीमा गये हुते । त्या मे पद्मनाभ राजना भवनमा  
 द्रौपदी देवी जेवी ओक नारी जेछ हुती पणु हु तेने सारी चेठ ओजभी  
 शक्यो नहि अने न तेनाथी परिचित थछ शक्यो । नारदनी आ वात सालणीने  
 कृष्णवासुदेवे तेमने कछु के छे देवानुप्रिय ! सौ पडेला तमे ज आ काम कथुं छे  
 त्यारपछी ते कच्छुल्लनारदे कृष्ण वासुदेवनी आ वात सालणीने ॥

શબ્દયિત્વા એવમવાદીત્-ગચ્છતિ સ્વલુ યૂય હે દેવાનુપ્રિયા સાનાહિકી સૈનિકાનાં સજ્જીભવનાર્થે નાદો યસ્યાસ્તા ભેરીં તાડયત તેઽપિ તાડયન્તિ, તતઃ સ્વલુ તસ્યા સાનાહિક્યા ભેર્યાઃ શબ્દ શ્રુત્વા સમુદ્રવિજયપ્રમુખા દશ દશાર્હા યાવત્ 'ઉપ્પણ્ણ વલવયસાહસીઓ' પટ્ટ પશ્ચાશદ્ વલવત્સાહસ્રયાઃ=પટ્ટપશ્ચાશત્સહસ્રપ્રમિતા વલ-વન્તિ इत्यर्थः 'સન્નદ્ધવદ્ધ-જાવ ગાહિયાઉહપહરણા' અત્ર યાવન્ત્ત્વદેનૈવ દ્રષ્ટવ્યમ્-સન્નદ્ધવદ્ધવર્મિતકવચા ઉત્પીડિતશરાસનપટ્ટકાઃ પિનદ્વગ્રૈવેયક્રવદ્ધાવિદ્ધવિમલ વરચિહ્નપટ્ટાઃ ગૃહીતાયુગ્મપહરણા इति । व्याख्याऽस्मिन्नेवा ययने पूर्वमुक्ता अप्ये-किकाः=केचिद् हयगताः केचिद् गजगता यानद् वागुरापरिक्षिप्ताः=मनुष्यवृन्दैः परिवृताः, यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैवोपागच्छन्ति उपागत्य करतलं यानद् जयेन विजयेन वर्धयन्ति । ततः स्वलु कृष्णो वासुदेवो हस्तिस्कन्धवरगतः सको

उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों ! तुम सुधर्मा सभा में जाओ वहाँ जाकर तुम सानाहिकी भेरी बजाओ-। कौटुम्बिक पुरुषोंने ऐसा ही किया सुधर्मा सभामें जाकर उस सानाहिकी भेरीको बजाया-। इस सानाहिकी भेरीकी गर्जनाको सुनकर समुद्रविजय आदि दश दशार्ह यावत् ५६, हजार प्रमित बलवीर पुरुष सन्नद्ध बद्धर्मितकवच होकर, यावत् आयुध प्रह-रणों को लेकर तैयार सुसज्जित हो गये । यहाँ यावत् शब्द से उत्पी डितशरासन पट्टकाः, “ पिनद्धाग्रैवेयकवद्धविद्धविमलवर्चिह्नपट्टाः ” इस पाठ का संग्रह हुआ है । इन शब्दों की व्याख्या इसी अ ययन में पहिले की जा चुकी है । इनमें कितनेक घोड़ों पर, कितनेक हाथियों पर, बैठकर अन्य मनुष्यों के समूह से परिवृत्त हो जहा वह सुधर्मा सभा और जहा वे कृष्णवासुदेव थे वहाँ आये । ( उवागच्छित्ता करतल जाव

કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સુધર્મા સભામાં જાઓ, ત્યાં જઈને તમે સાનાહિકી ભેરી વગાડો, તે કૌટુમ્બિક પુરુષોએ પણ તે પ્રમાણે જ આજ્ઞાનુ પાલન કર્યું સુધર્મા સભામાં જઈને તેઓએ સાનાહિકી ભેરી વગાડી સાનાહિકી ભેરીના અવાજ સાંભળીને સમુદ્રવિજય વગેરે દશ દશાર્હો યાવત્ ૫૬ હજાર પ્રમિત બળવીર પુરુષો ઉપરો વગેરેથી સુસજ્જ થઈને યાવત્ આયુધ પ્રહરણોને લઈને તૈયાર થઈ ગયા અર્હો યાવત્ શબ્દથી “ ઉત્પીડિતશરાસનપટ્ટકા, પિનદ્વ ગ્રૈવેયક્ર વદ્ધાવિદ્ધવિમલવરચિહ્નપટ્ટા ” આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે આ શબ્દોની વ્યાખ્યા આ અધ્યયનમાં જ પહેલા કરવામાં આવી છે આમાં કેટલાક ઘોડાઓ ઉપર, કેટલાક હાથીઓ ઉપર જેમીને તેમજ કેટલાક માણસોના સમૂહોથી પરિવૃત્ત થઈને જ્યાં તે સુધર્મા, સભા અને જ્યાં કૃષ્ણ-વાસુદેવ હતા ત્યાં આવ્યા

ચતુરગિણી સેનયા સાથે સપરિહૃતા પૌરસ્ત્રયગ્રેયાયા માં પ્રતિવાલ્યન્તસ્થિ  
 ઇન્દુ ' રૂતિ । એવ દૂતમુલાત્ કૃષ્ણચાણુદેવોક્ત વાન શ્રુત્યા તેડવિ=પદ્મ પાણ્ડ્યા  
 ચાણુ તિષ્ઠન્તિ । તતઃ સ્વલ્લ સ કૃષ્ણો ચાણુદેવઃ કૌટુમ્બિકપુરુષાન્ શબ્દયતિ,  
 કે ભવન મેં દ્રૌપદી દેવી કો સપર મિલી છે-હમલિયે પાચો પાઠ્ય  
 ચતુરગિણી સેના કે સાથ યુક્ત હોકર લવણ સમુદ્ર કી પૂર્વ દિગ્ભાગ  
 વર્તિની વેલા પર જાકર વહાં મેરી પ્રતીક્ષા કરે । ( તણ્ણ સે દૂર જાવ  
 મળહ, પડિવાલેમાળા ચિટ્ઠહ, તે વિ જાવ ચિટ્ઠતિ, તણ્ણ સે કળ્હે વાસુ  
 દેવે કોટુચિયપુરિસે સદાવેદ સદાવિત્તા એવ વચાસી-ગચ્છહ ણ તુમે  
 દેવાણુપિયા । સન્નાહિય મેરિં તાઢેહ તે વિ તાટતિ, તણ્ણં તીસે સણ્ણા  
 હિયાએ મેરિં સદ સોચ્ચા વિજયપામોક્ત્યા, દસ દસારા જાવ છપ્પણ  
 ઘલવયસાહસ્સીઓ સન્નદ્વયદ્વ જાવ ગહિયાઉપહરણા અપ્પેગહ્યા  
 હયગયા, ગયગયા, જાવ વગ્ગુરા પરિક્ષિત્તા જેનેવ સમા સુહમ્મા જેનેવ  
 કળ્ણે વાસુદેવે તેનેવ ઉવાગચ્છહ ) હસ પ્રકાર અપને રાજા કૃષ્ણવાસુ  
 દેવ કો આજ્ઞા લેકર વહ દૂત દસ્તિનાપુર ગયા વહાં જાકર ઉસને હસ  
 સમાચાર કો પાડુરાજા સે કહ દિયા । વે પાચોં પાટવ હસ સમાચાર કો  
 દૂત કે મુખ સે સુનકર ચતુરગિણી સેના કે સાથ લવણ સમુદ્ર કે પૂર્વ  
 દિગ્ભાગવર્તીં તટ પર જાકર કૃષ્ણ વાસુદેવ કી પ્રતીક્ષા મેં ઠહર ગયે-  
 હસકે વાદ કૃષ્ણ વાસુદેવ ને કૌટુમ્બિક પુરુષોં કો બુલાયા-બુલાકર

નમા દ્રૌપદી દેવીના વાવડ મળ્યા છે તો હવે પાચે પાડવો ચતુરગિણી સેનાની  
 સાથે પ્રયાણ કરીને લવણ સમુદ્રના પૂર્વ કિનારા ઉપર પહોંચીને ભારી પ્રતીક્ષા કરે

( તણ્ણ સે દૂર જાવ મળહ, પડિવાલે માળા ચિટ્ઠહ તે વિ જાવ ચિટ્ઠતિ,  
 તણ્ણ સે કળ્હે વાસુદેવે કોટુચિય પુરિસે સદાવેદ સદાવિત્તા એવ વચાસીં ગચ્છહ  
 ણ તુમે દેવાણુપિયા । સન્નાહિય મેરિં તાઢેહ તે વિ તાઢેતિ, તણ્ણ સે સણ્ણા  
 હિયાએ મેરીં સદ સોચ્ચા સમુદ્ધવિજયપામોક્ત્યા, દસ દસારા જાવ છપ્પણ  
 સહસ્સીઓ સન્નદ્વયદ્વજાવ ગહિયાઉપહરણા અપ્પેગહ્યા હયગયા, ગયગયા, જાવ  
 વગ્ગુરાપરિક્ષિત્તા જેનેવ સમા સુહમ્મા જેનેવ કળ્ણે વાસુદેવે તેનેવ ઉવાગચ્છહ )

આ રીતે પોતાના રાજા કૃષ્ણ વાસુદેવની આજ્ઞા મેળવીને તે દૂત હસ્તિ  
 નાપુર તરફ રવાના થયો ત્યા પહોંચીને તેણે પાડુ રાજાને બધા સમાચારો  
 કહી સંભળાવ્યા પાચે પાડવો હૂતના મુખથી આ સમાચાર સાંભળીને પોતાની  
 ચતુરગિણી સેના સાથે ત્યાથી પ્રયાણ કરીને લવણ સમુદ્રના પૂર્વ કિનારા ઉપર  
 પહોંચીને ત્યા કૃષ્ણ વાસુદેવની પ્રતીક્ષા કરતા રોકાઈ ગયા ત્યારપછી કૃષ્ણ  
 વાસુદેવે કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને



एकतः एकस्मिन् स्थाने मिलति, मिलित्वा स्कन्धावारनिवेश=सैनिकानामावास  
करोति कृत्वा पौपधशालामनुप्रविशति, अनुप्रविश्य " सुद्विय देव " सुस्थित-  
सुस्थितनामान देव लवणसमुद्राधिपति मनसि कुर्वन्=स्मरन् तिष्ठति, ततः खलु  
कृष्णस्य वासुदेवस्याष्टमभवते परिणममाणे सुस्थितो देव आगतः, आगत्य वदति-  
हे देवानुप्रियाः ! भणन्तु कथयन्तु चन्मया कर्तव्यमिति ततः खलु स कृष्णो  
वासुदेव सुस्थितदेवमेवमवादीत्-एव खलु हे देवानुप्रिय ! द्रौपदी देवी यावत्  
पद्मनाभस्य भवने सहता, तत्=तस्मात् खलु त्व हे देवानुप्रिय ! मम पञ्चभिः  
पाण्डवैः सार्धं ' अप्पउट्टस्स ' आत्मपण्डस्य-आत्मा-अह पण्ठो यत्र तस्य समुदा-  
यस्य-अस्माकं पण्णामित्यर्थः, पण्णा रवाना लवणसमुद्रे मार्गं वितर=देहि,  
येनाहममरकङ्का राजधानीं द्रौपद्या देव्याः ' क्व ' प्रत्यानयनकर्तुं गच्छामि ।

वहा पहुँचकर वे पाँच पांडवों के साथ एक स्थान पर समिलित हुए ।  
समिलित होकर उन्होंने अपनी सेना को ठहरने का स्थान नियत  
किया-स्थान नियतकर के फिर वे पौपधशाला में प्रविष्ट हो गये वहाँ  
प्रविष्ट होकर उन्हो ने लवण समुद्र के अधिपति सुस्थित देव का स्मरण  
किया-। इसके बाद जब कृष्णवासुदेव का अष्टमभक्त समाप्त हो रहा  
था-तब वह सुस्थित देव उनके पास आया-और कहने लगा-हे देवा-  
नुप्रिय ! कहिये-मेरे लायक क्या काम है ? ( तण्ण से कण्हे वासुदेवे  
सुद्विय एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया । दोवई देवी, जाव पउमना-  
भस्स भवणसि साहरिया, तएण तुम देवाणुप्पिया मम पवहि पडवेहि  
सद्धि अप्पउट्टस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्रे मग्गं वियरेहि, जण्ण अह  
अमरककारायहाणी दोवईए क्वं गच्छामि, तएण से सुद्विए देवे कण्हं

डतो त्या पडोअ्या त्या पडोअीने तेअो पाअे पाडवेअी साथे अेक स्थाने  
अेकत्र थया अेकत्र थअेने तेमअे पोताना सैन्यना पडावनु अ्यान नळी कथुं  
स्थान नळी करीने तेअो पौपधशाणाभा प्रविष्ट थया त्या जअेने तेअोअे लवण  
समुद्रना अधिपति सुस्थित देवनु स्मरणु कथुं त्याअेनाह अ्यारे कृष्णवासुदेवने।  
अष्टम लकत पूरे थअे रह्यो डतो, त्यारे ते सुस्थित देव तेमनी पामे आअे।  
अने डडेवा लाअे। हे हे देवानुप्रिय ! ओलो, मारा लायक शुं काम छे ?

( तण्ण से कण्हे वासुदेवे सुद्विय एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ।  
दोवईदेवी, जाव पउमनाभस्स भवणसि साहरिया, तएण तुम देवाणुप्पिया मम  
पवहि पडवेहि सद्धि अप्पउट्टस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्रे मग्गं वियरेहि, जण्ण  
अह अमरकका रायहाणीं दोवईए क्वं गच्छामि, तएण से सुद्विए देवे कण्हं

રુષ્ટમાતૃદામ્ના હ્રેણ ધાર્યમાણેન શ્વેતારત્નામરેરુદ્રપૂષ્પમાનૈઃ, હયગવરથપદાતિ  
સપરિવૃતો મહામટપટપરપ્રકરણ દ્વારત્યા નગર્વા મ યમત્રન નિગચ્છતિ,  
યર્જેવ પૌરસ્ત્યવેલા તત્રાયોપાગત્તિ ઉપાગત્ય પદ્મભિ. પાટૈઃ સહ 'એગયઓ'  
ઘદ્ધાવેતિ, તણ્ણ કણ્ઠે વાસુદેવે હત્થિચ્ચધરમાણ મ્મકોરટમલ્લદામેણ  
હત્તેણં સેયવરં હયગયં મહયા મહચ્ચડગરપહ્કરેણ વારવર્દેણ ણયરીણ  
મજ્ઝ મજ્ઝેણ ણિગચ્છહ, જેણેવ પુરતિમવેયાલી તેણેવ ઉવાગચ્છહ,  
ઉવાગચ્છિત્તા પચહિં પટવેહિ સદ્ધિં ણમયઓ મિલહ, મિલિત્તા સ્વધાવા  
રણિવેસ કરેહ, કરિત્તા પોમહમાલ અણુપવિસહ, અણુપવિસિત્તા સુદ્ધિય  
દેવ મણસિં કરેમાણે ૨ ચિટ્ઠહ, તણ્ણ કણ્ઠમ્મ વાસુદેવસ્સ અટ્ટમમત્તસિ  
પરિણમમાણસિ સુદ્ધિઓ આગઓ મળ દેવાણુપ્પિયા ! જ મણ કાયવ્વ )  
વહા આકર ઉન મયને કુળ્ણવાસુદેવ કો દોનો હાથ જોડકર વહે વિનય  
કે સાથ નમસ્કાર કરતે છૂળ જય વિજય શબ્દો દ્વારા વધાર્દ દો । હસકે  
વાદ વે કુળ્ણવાસુદેવ હાથી પર સવાર છૂળ । સવાર હોતે હી છત્રધારિયો  
ને ઉન પર કોરટ પુષ્પોં કી માલા સે વિરાજિત છત્ર તાના, ઘોમર ઢોરને  
વાલોં ને ઉનપર શ્વેત ચામર ઢોરના પ્રારમ્ભ કરદિયા । હસ પ્રકાર હય,  
ગજ, રથ, એવ પૈદલસેના સે ઘિરે હુણ વે કુળ્ણવાસુદેવ મહામટોં કે  
સમૂહ કે સાથ ૨ દ્વારાવતી નગરી કે ધીચ સે હોકર નિકલે, નિકલકર  
જહા વહ લવગસમુદ્ર કી પૂર્વ દિગ્ભાગવર્તિની વેલા યી વહા પહુંવે ।

( ઉવાગચ્છિત્તા કરચલ જાવ યદ્ધાવેતિ, તણ્ણ કણ્ઠે વાસુદેવે હત્થિ સ્વધ  
વરગણ સકોરેટમલ્લદામેણ હત્તેણં સેયવરં હયગય મહયા મહચ્ચડગરપહ્કરેણ  
વારવર્દેણ ણયરીણ મજ્ઝ મજ્ઝેણ ણિગચ્છહ જેણેવ પુરતિમવેયાલી તેણેવ ઉવા  
ગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા પચહિં પટવેહિ સદ્ધિં એગયઓ મિલહ, મિલિત્તા સ્વધાવા  
ણિવેસ કરેહ, કરિત્તા પોમહમાલ અણુપવિસહ, અણુપવિસિત્તા, સુદ્ધિય દેવ મણસિં  
કરેમાણે ૨ ચિટ્ઠહ, તણ્ણ કણ્ઠમ્મ વાસુદેવસ્સ અટ્ટમમત્તસિ પરિણમમાણસિ સુદ્ધિઓ  
આગઓ મળદેવાણુપ્પિયા ! જ મણ કાયવ્વ )

ત્યા પહોચીને તે બધાએ બને હાથ ભેડીને બહુ જ વિનમ્રતાથી નમ  
સ્કાર કરતા જયવિજય શબ્દોથી તેમને વધામણી આપી ત્યારપછી તે કુળ્ણ  
વાસુદેવ હાથી ઉપર સવાર થયા સવાર થતા જ છત્રધારીઓએ તેમની ઉપર  
કોરટ પુષ્પોની માળાથી શોભતું છત્ર તાણ્યું તેમજ આમર ઢાળનારાઓએ  
આમર ઢાળવાની શરૂઆત કરી આ પ્રમાણે ઘોડા, હાથી, રથ અને પાયદળથી  
પરિવૃત્ત થયેલા તે કુળ્ણ-વાસુદેવ મહાભટોના સમૂહની સાથે સાથે દ્વારાવતી  
નગરીની વચ્ચે થઈને પસાર થયા અને જ્યાં તે લવણ

मवादीत्-मा खलु त्व हे देवानुप्रिय । यावत् सहर, त्व खलु हे देवानुप्रिय ।  
लवणसमुद्रे आत्मपण्डस्य पण्णा रथानां मार्गं ' वियराहि ' वितर=देहि, स्वयमेव  
खल्वह द्रौपद्या देव्या ' क्रव ' मत्यानयनकर्तुं गच्छामि, ततः खलु स सुस्थितो

अथवा-आपनी आज्ञा हो तो नगर, सैनिक, और वाहन सहित पद्म  
नाभ राजा को लवण समुद्र में डुबा दे सकता हूँ ( तएण कण्हे वासुदेवे  
सुद्विय देव एव वयासी ) जब कृष्णवासुदेव ने उस स्वस्तिक देव से इस  
प्रकार कहा-( माण तुम देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि तुम ण देवाणु  
प्पिया ! लवणसमुद्रे अप्पउट्टस्स उण्ह रहाण लवणसमुद्रे मग्ग विय-  
राहि सयमेव ण अह दोवर्डेण क्रव गच्छामि, तएण से सुद्विए देवे कण्ह  
वासुदेव एव वयासी, एव होउ, पचहिं पडवेहिं सद्धि अप्पउट्टस्स उण्ह  
रहाणं लवणसमुद्रे मग्ग वियरइ तएण से कण्हे वासुदेवे चाउरगिणी  
सेणं पडिविसज्जेइ, पडिविमज्जिता पचहिं पडवेहिं मद्धि अप्पउट्टे छहिं  
रहेहिं लवणसमुद मज्झ मज्झेण वीइवयइ, वीइवइत्ता जेणेव अमर  
कका रायहाणी, जेणेव अमरककाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ ) हे  
देवानुप्रिय ! तुम ऐसा मत करो-अर्थात् पद्मनाभ के भवन से द्रौपदी  
देवी को हरण मत करो, और न पद्मनाभ राजा को नगर,  
सैनिक एवं वाहन सहित लवणसमुद्र में प्रक्षिप्त करो, तुम तो केवल  
हे देवानुप्रिय ! हमारे छहों रथों को लवणसमुद्र में मार्ग दे दो । मैं

तमारी आज्ञा होय तो नगर, सैनिक अने वाहन सहित पद्मनाभ राजाने  
लवणसमुद्रमा डुमाडी राहु तेम छु ( तएण कण्हे वासुदेवे सुद्विय देव एव  
वयासी ) त्वारे कृष्ण-वासुदेवे ते स्वस्तिक देवने आ प्रभाणु कहु डे—

( माण तुम देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि तुम ण देवाणुप्पिया ! लवण-  
समुद्रे अप्पउट्टस्स उण्ह रहाण लवणसमुद्रे मग्ग वियराहि सयमेव ण अह दोवर्डेण  
क्रव गच्छामि, तएण से सुद्विए देवे कण्ह वासुदेव एव वयासी, एव होउ,  
पचहिं पडवेहिं सद्धि अप्पउट्टस्स उण्ह रहाण लवणसमुद्रे मग्ग वियरइ, तएण से  
कण्हे वासुदेवे चाउरगिणी सेण पडिविसज्जेइ, पडिविमज्जिता पचहिं पडवेहिं  
सद्धि अप्पउट्टे छहिं रहेहिं लवणसमुद मज्झ मज्झेण वीइवयइ, वीइवइत्ता जेणेव  
अमरकका रायहाणी, जेणेव अमरककाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ )

हे देवानुप्रिय ! तमे आ प्रभाणु करवानी तस्सी लो नहिं छोटवे डे  
पद्मनाभना लवनभायी द्रौपदी देवीनु डुरणु करे नहिं तेमज पद्मनाभ गल्लने  
नगर, सैनिक अने वाहन सहित लवण समुद्रमा डे डे पणु नहिं तमे तो  
हे देवानुप्रिय ! इत्ता अमारा छओ रथो भाटे लवण समुद्रमा मार्ग आपो

તત સ્વલુ સ સુસ્થિતો દેવઃ કૃષ્ણ વાસુદેવમેવમગ્રાદીત્—હે દેવાનુપ્રિય ! કિં સ્વલુ  
યથૈવ પદ્મનાભસ્ય રાજઃ પૂર્વસગતિકેન દેવેન દ્રૌપદી યાવત્ મહતા, તથૈવ દ્રૌપદી  
દેવી ધાતકીપન્ડાદ્ દ્વીપાદ્ ભારતાદ્ યાવત્ હસ્તિનાપુર સહરામિ । ‘ઉદાહુ’  
ઉતાહો ! =અથવા, કથય, પદ્મનાભ ગજાન મપુરચલચારનં=નગરસંનિક્ષાહન  
સહિત લવણસમુદ્રે મલિપામિ ? તતઃ રાટુ કૃગો વાસુદેવઃ સુસ્થિત દેવમ્ એવ  
વાસુદેવ તત્ર વયાસી કિણ્હ દેવાણુપિયા ! જહા ચેવ પત્મનાભસ્સ રત્નો  
પુન્વસગદ્ગુણ દેવેણ દોવર્દ જાત્ર સહરિયા, તહા ચેવ દોવર્દ દેવિ ધાયર્દસડાઓ  
દીવાઓ ભારહાઓ જાત્ર હતિ ણાપુર સાહરામિ, ઉદાહુ પત્મનાભ  
રાયમપુરચલચારણ લવણસમુદ્રે પલ્લિખામિ ? ) તત્ર કૃષ્ણવાસુદેવ ને  
હસ સુસ્થિત દેવ સે હસ પ્રકાર કહા—હે દેવાનુપ્રિય ! સુનો—દ્રૌપદી દેવી  
ચોવત્ પદ્મનાભ કે મયન મેં હરણ કર રગી ગર્હ હે હમલિયે હે દેવાનુ  
પ્રિય ! તુમ આત્મપષ્ટ મેરે પાચ પાડવો કે સાથ ઝરોં રથોં કો લવણ  
સમુદ્ર મેં માર્ગ પ્રદાન કરો । અર્વાત્ પાચ પાડવોં કે ઓર છટે મેરે હસ  
પ્રકાર હમારે ઝહ રથોં કો જાને કે લિયે રાસ્તા દો—કિં જિસસે મેં અમ  
રકકા રાજધાની મેં દ્રૌપદીદેવી કો વાપિસ લે આને કે લિયે જા સકૂ ।  
તથ સુસ્થિત દેવ ને હન કૃષ્ણ વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કહા—હે દેવાનુ  
પ્રિય ! જિસ પ્રકાર પદ્મનાભ રાજા કે પૂર્વ સગતિક દેવને દ્રૌપદીદેવી કા  
ચાવત્ હરણ ક્રિયા હૈ, હસી તરહ મેં ઓ દ્રૌપદી દેવી કો ધાતકી સ્વહ  
દ્વીપ કે ભરત ક્ષેત્ર સે યાવત્ હસ્તિનાપુર મેં હરણકર લા સકતા હૈ—

વાસુદેવ એવ વયાસી કિણ્હ દેવાણુપિયા ! જહા ચેવ પત્મનાભસ્સ રત્નો પુન્વ  
સગદ્ગુણ દેવેણ દોવર્દ જાત્ર સહરિયા, તહા ચેવ દોવર્દ દેવિ ધાયર્દસડાઓ  
દીવાઓ ભારહાઓ જાત્ર હતિ ણાપુર સાહરામિ, ઉદાહુ પત્મનાભ રાય સપુરચલ  
વાહણ લવણમુદ્રે પલ્લિખામિ ? )

ત્યારે કૃષ્ણ—વાસુદેવે તે સુસ્થિત દેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુ  
પ્રિય ! સાલળો, દ્રૌપદી દેવી યાવત્ પદ્મનાભના લવણમાં હરણ કરાઈને રાખ  
વામાં આવી છે એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે ‘આત્મપષ્ટ’ મારા તેમજ  
પાંચે પાડવોના છ રથોને લવણ સમુદ્રમાં થઈને પસાર થવા માટે માર્ગ આપો  
એટલે કે પાંચે પાડવોના અને છઠ્ઠા મારા આમ છએ રથોને પસાર થવા  
માટે રસ્તો આપો જેથી હું દ્રૌપદી દેવીને પાછા લાવવા માટે અમરકકા  
રાજધાનીમાં જઈ શકું ત્યારે સુસ્થિત દેવે તે કૃષ્ણ—વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું  
કે હે દેવાનુપ્રિય ! પદ્મનાભ રાજાના પૂર્વસગતિક દેવે જેમ દ્રૌપદી દેવીનું  
યાવત્ હરણ કર્યું છે, તેમજ હું પણ દ્રૌપદી દેવીને ધાતકી ખડકદ્વીપના ભરત  
ક્ષેત્રમાંથી યાવત્ હસ્તિનાપુરમાં હરણ કરીને લાવી શકું અને ને

मवादीत्-मा खलु त्व हे देवानुप्रिय । यावत् सहर, त्व खलु हे देवानुप्रिय ।  
लवणसमुद्रे आत्मपण्डस्य पण्णा रवानां मार्गं ' पियराहि ' वितर=देहि, स्वयमेव  
खल्वह द्रौपद्या देव्या ' क्रव ' प्रत्यानयनकृतं गच्छामि, ततः खलु स सुस्थितो

अथवा-आपकी आज्ञा हो तो नगर, सैनिक, और वाहन सहित पद्म  
नाभ राजा को लवण समुद्र में डुबा दे सकती हूँ ( तएण कण्हे वासुदेवे  
सुद्विय देव एव वयासी ) जब कृष्णवासुदेव ने उस स्वस्तिक देव से इस  
प्रकार कहा-( माण तुम देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि तुम ण देवाणु  
प्पिया ! लवणसमुद्रे अप्पउट्ठस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्रे मग्ग विय  
राहि सयमेव ण अह दोवईए क्रव गच्छामि, तएण से सुद्विए देवे कण्ह  
वासुदेव एव वयासी, एव होउ, पचहिं पडवेहिं सद्धि अप्पउट्ठस्स उण्ह  
रहाणं लवणसमुद्रे मग्ग वियरइ तएण से कण्हे वासुदेवे चाउरगिणी  
सेण पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जिता पचहिं पडवेहिं मद्धि अप्पउट्ठे छहिं  
रहेहिं लवणसमुद मज्झ मज्झेण वीडवयइ, वीडवइत्ता जेणेव अमर  
कका रायहाणी, जेणेव अमरककाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ ) हे  
देवानुप्रिय ! तुम ऐसा मत करो-अर्थात् पद्मनाभ के भवन से द्रौपदी  
देवी को हरण मत करो, और न पद्मनाभ राजा को नगर,  
सैनिक एवं वाहन सहित लवणसमुद्र में प्रक्षिप्त करो, तुम तो केवल  
हे देवानुप्रिय ! हमारे छहों रथों को लवणसमुद्र में मार्ग दे दो । मैं

तमारी आना डोय तो नगर, सैनिक अने वाहन सहित पद्मनाभ राजाने  
लवणसमुद्रमा डुमाडी गछु तेम छु ( तएण कण्हे वासुदेवे सुद्विय देव एव  
वयासी ) त्वारे कृष्ण-वासुदेवे ते स्वस्तिक देवने आ प्रमाणे कछु ठे—

( माण तुम देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि तुम णं देवाणुप्पिया ! लवण-  
समुद्रे अप्पउट्ठस्स उण्ह रहाण लवणसमुद्रे मग्ग वियराहि सयमेव ण अह दोवईए  
क्रव गच्छामि, तएण से सुद्विए देवे कण्ह वासुदेव एव वयासी, एव होउ,  
पचहिं पडवेहिं सद्धि अप्पउट्ठस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्रे मग्ग वियरइ, तएण से  
कण्हे वासुदेवे चाउरगिणी सेण पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जिता पचहिं पडवेहिं  
सद्धि अप्पउट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद मज्झ मज्झेण वीडवयइ, वीडवइत्ता जेणेव  
अमरकका रायहाणी, जेणेव अमरककाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ )

हे देवानुप्रिय ! तमे आ प्रमाणे करवानी तस्दी ले नडि कोटये ठे  
पद्मनाभना लवनमाथी द्रौपदी देवीनु डुरणु करे नडि तेमज पद्मनाभ गलने  
नगर, सैनिक अने वाहन सहित लवण समुद्रमा डेके पणु नडि तमे तो  
हे देवानुप्रिय ! .....छमे रथो माटे लवण समुद्रमा मार्ग आये।



તત્ સ્વલ્પ સં સુસ્થિતો દેવઃ કૃષ્ણ વાસુદેવમેવમયાદીત્—હ દેવાનુપ્રિય ! કિં સ્વલ્પ  
યથૈવ પદ્મનાભસ્ય રાજાઃ પૂર્વસગતિકૈન ન્યેન ટ્રોપદી યાવત્ મંદુતા, તથૈવ ટ્રોપદી  
દેવો ધાતકીપન્થાદ્ દ્વીપાદ્ ભારતાદ્ યાવત્ હસ્તિનાપુર સંહરામિ । ‘ ઉદાહુ ’  
ઉતાહો ! =અથવા, કયમ, પદ્મનાભ રાજાન મપુરચલવાહન=નગરનિક્કવાહન  
સહિત ન્યણસમુદ્રે મલિપામિ ? તત્ રાટુ કૃષ્ણો વાસુદેવઃ સુસ્થિત દેવમ્ એવ  
વાસુદેવ એવ વયાસી ક્ષિણ દેવાણુપિયા ! જહા ચેવ પત્તમણામસ્સ રત્નો  
પુવ્વમગઢણ્ણ દેવેણ દોવર્ઢ જાવ મહરિયા, તહા ચેવ દોવર્ઢ દેવિં ધાયઈસ  
હાઓ દીવાઓ ભારતાઓ જાવ હસ્તિનાપુર મહરામિ, ઉદાહુ પત્તમણામ  
રાયસપુરચલવાહણ લવણસમુદ્રે પલિપામિ ? ) તપ્ કૃષ્ણવાસુદેવ ને  
હસ સુસ્થિત દેવ સે હસ પ્રકાર કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! સુનો-ટ્રોપદી દેવી  
યાવત્ પદ્મનાભ કે મયન મેં હરણ કર રમી મઢ હે હમલિયે હે દેવાનુ  
પ્રિય ! તુમ આત્મપષ્ઠ મેરે પાચ પાડવો કે માથ ઝરોં રથોં કો લવણ  
સમુદ્ર મેં માર્ગ પ્રદાન કરો । અર્થાત્ પાંચ પાડવોં કે ઓર હટે મેરે હસ  
પ્રકાર હમારે ઝહ રથોં કો જાને કે લિયે રાસ્તા દો-કિ જિસસે મેં અમ  
રકકા રાજધાની મેં ટ્રોપદીદેવી કો વાપિસ હે આને કે લિયે જા સકૂ ।  
તપ્ સુસ્થિત દેવ ને હન કૃષ્ણ વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કહા-હે દેવાનુ  
પ્રિય ! જિસ પ્રકાર પદ્મનાભ રાજા કે પૂર્વ સગતિક દેવને ટ્રોપદીદેવી કા  
યાવત્ હરણ ક્રિયા હૈ, હસી તરહ મેં મી ટ્રોપદી દેવી કો ધાતકી સ્વહ  
દ્વીપ કે ભરત ક્ષેત્ર સે યાવત્ હસ્તિનાપુર મેં હરણકર લા સકતા હૈ-

વાસુદેવ એવ વયાસી ક્ષિણ દેવાણુપિયા ! જહા ચેવ પત્તમણામસ્સ રત્નો પુવ્વ  
સગઢણ્ણ દેવેણ દોવર્ઢ જાવ મહરિયા, તહા ચેવ દોવર્ઢ દેવિં ધાયઈસહાઓ  
દીવાઓ ભારતાઓ જાવ હસ્તિનાપુર મહરામિ, ઉદાહુ પત્તમણામ રાય સપુરચલ  
વાહણ લવણસમુદ્રે પલિપામિ ? )

ત્યારે કૃષ્ણ-વાસુદેવે તે સુસ્થિત દેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુ  
પ્રિય ! સાલજો, ટ્રોપદી દેવી યાવત્ પદ્મનાભના લવનમા હરણ કરાઇને રાખ  
વામા આવી છે એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે ‘ આત્મપષ્ઠ ’ મારા તેમજ  
પાચે પાડવોના છ રથોને લવણ સમુદ્રમા થઇને પસાર થવા માટે માર્ગ આપો  
એટલે કે પાચે પાડવોના અને છઠ્ઠા મારા આમ છએ રથોને પસાર થવા  
માટે રસ્તો આપો । જેથી હું ટ્રોપદી દેવીને પાછા લાવવા માટે અમરકકા  
રાજધાનીમા જઈ શકું ત્યારે સુસ્થિત દેવે તે કૃષ્ણ-વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું  
કે હે દેવાનુપ્રિય ! પદ્મનાભ રાજાના પૂર્વસગતિક દેવે જેમ ટ્રોપદી દેવીનું  
યાવત્ હરણ કર્યું છે, તેમજ હું પણ ટ્રોપદી દેવીને ધાતકી ખડકીપના ભરત  
ક્ષેત્રમાથી યાવત્ હસ્તિનાપુરમા હરણ કરીને લાવી શકું કે

પ્રવિશ્ય પદ્મનાભસ્ય રાજો વામેન પાદેન ' પાયપીઠ ' પાદપીઠમ્ સિંહાસનસલગ્ન-  
સોપાનમ્ આક્રમ્ય કુન્તાગ્રેણ લેખ પ્રત્રિકા ' પળામેહિ ' અર્પય=ટેહિ અર્પયિત્વા  
' તિવલિય ' ત્રિવલિકાં રેલાત્રયયુક્તા ' મિઝડિં ' મૂકુટિ- ' ગિઢાલે ' લલાટે  
' સાહદ્રુદુ ' સંહત્ય-ઉન્નીય ' આસુરુત્તે ' આશુરુત્તઃ=શીઘ્ર ક્રોધાવિષ્ટઃ ' રુદ્ધ '  
રુષ્ટઃ ' કુદ્ધે ' ક્રુદ્ધઃ ' કુપિણ ' કુપિતઃ ચડિક્ષિણ ' ચાણ્ડિક્ષિતઃ-રોપયુક્તઃ,  
એવમવાદીત્-હ મો ! પદ્મનાભ ! ' અપત્થિયપત્થિયા ' અપ્રાર્થિતપ્રાર્થિત !-મર-  
ણવાઝઝક ! ' દુરતપતલલક્ષણ ! ' દુરન્તપ્રાન્તલક્ષણ ! {પૂર્વે વ્યાખ્યાતમેતત્,

પાયપીઠ અક્રમિત્તા કુન્તાગ્રેણ લેહ પળામેહિ, તિવલિયં મિઝડિં ગિઢાલે  
સાહદ્રુદુ આસુરુત્તે રુદ્ધે કુદ્ધે કુપિણ ચડિક્ષિણ એવ વયાસી હ મો પડમણાહા  
અપત્થિયપત્થિયા ! દુરતપતલલક્ષણા ! હીણપુણચાઉદસા ! સિરિહિરિ  
ધી પરિવર્જિયા ! અજ્ઞ ણ મવસિ કિન્ન તુમ ણ યાણાસિ, કણ્ઠસ્સ  
વાસુદેવસ્સ અહવણ જુદ્ધસજ્જે ણિગન્ઠાહિ ) રથ કો રોકકર વહાં  
સ્થાપિત કર-દારુક સારથિ કો બુલાયા બુલાકર કે ઉસસે એસા કહા-  
હે દેવાનુપ્રિય તુમ જાઓ-અમરકકા રાજધાની મેં જાઓ વહાં જાકર  
પદ્મનાભ રાજાકે પાદપીઠકો વામ પાદસે આક્રમિત કર, કુન્ત (ભાલા)કે  
અગ્રભાગ સે ઉસે પત્રિકા દો દેકર કે અપની મૂકુટી કો માલપર ચઢા-  
કર, ઇકદમ ગુસ્સે મેં આકર, રુષ્ટ, કુપિત એવ ક્રુદ્ધ હોકર ક્રોધ કે  
આવેશ સે તમ તમાતે હુણ તુમ ઉસસે એસા કહો-અરે ઓ પદ્મનાભ !  
અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! મરણવાઝઝક-! દુરતપ્રાન્ત લક્ષણ ! મોલુમ હોતા હૈ

પાણ પાયપીઠ અક્રમિત્તા કુન્તાગ્રેણ લેહ પળામેહિ, તિવલિયં મિઝડિં ગિઢાલે  
સાહદ્રુદુ આસુરુત્તે રુદ્ધે કુદ્ધે કુપિણ ચડિક્ષિણ એવ વયાસી હ મો પડમણાહા !  
અપત્થિયપત્થિયા ! દુરતપતલલક્ષણા ! હીણપુણચાઉદસા ! સિરિ હિરિધી  
પરિવર્જિયા ! અજ્ઞ ણ મવસિ કિન્ન તુમ ણ યાણાસિ, કણ્ઠસ્સ વાસુદેવસ્સ  
અહવણ જુદ્ધસજ્જે ણિગન્ઠાહિ )

રથને ઊભો રાખીને, ત્યા જ રથને મૂકીને ઠાઠક સારથિને બોલાવ્યો  
અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે અમરકકા  
રાજધાનીમા જાઓ અને ત્યા જઈને પદ્મનાભ રાજાના પાદપીઠને ડામા પગથી  
આક્રમિત કરીને કુન્તા અથવા લાગથા તેને પત્રિકા આપો પત્રિકા આપીને  
તમે પોતાની ભમ્મરો ચઢાવીને, એકદમ લાલચોળ થઈને રુષ્ટ, કુપિત અને  
ક્રુદ્ધ થઈને ક્રોધના આવેશમા આવીને તેને આ પ્રમાણે કહો કે અરે ઓ  
પદ્મનાભ ! અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! મરણ વાઝક ! દુરત પ્રાન્ત લક્ષણ ! ( નીચ

देव कृष्णवासुदेवमेवमवादीत्-एव भाव इति, ततोऽगो पञ्चभिः पाण्डुभिः सार्धम्  
आत्मपष्टस्य पण्णा रथानां अगममुद्रे मार्गं विनरति ततः स्वदु म कृष्णो वासु  
देवश्चतुरङ्गिणीं सेनां प्रतिनिर्गमयति, प्रतिनिर्गम्य पञ्चभिः पाण्डुभिः सार्धमात्म  
पष्टं पद्मीरथेणममुद्रं मध्यमेन 'सीरयः' यतिव-ति-गच्छति, व्यति  
व्रज्य यज्ञीरामरमङ्गा राजधानी, यज्ञीरामरमङ्गाया अप्रोदानं तत्रोपागच्छति,  
उपागत्य रथं स्थापयति, स्थापयित्वा दारुणं सारहिं गच्छयति, गच्छयित्वा एव  
मवादीत्-गच्छ खलु त्वं ते देवानुपिय । अमरककाराजधानीमनुपविश, अनु

स्वयं ही द्रौपदी देवी को चरा से वापिस ले आऊंगा । अथवा मैं स्वयं  
ही द्रौपदी देवी को लेने के लिये जाऊंगा तब उस सुस्थित देव ने कृष्ण  
वासुदेव से इस प्रकार कहा-अच्छा ऐसा ही हो-इस प्रकार कह  
कर उसने आत्म पष्ट के छहों रथों को लवणसमुद्र में मार्ग विनरित  
कर दिया । तब कृष्णवासुदेव ने अपनी चतुरङ्गिणी सेना को वरा से  
वापिस करदिया वापिस कर फिर वे पांच पाण्डवों के साथ उहो रथों  
को-१ एक अपने रथको और पांच पाण्डवोंके रथोंको-लेकर लवणसमुद्रके  
भीतरसे होकर चलने लगे । चलते २ वे जहां अमरककाराजधानी थी-  
और उसमें भी जहां वह अशोधान था वहां पहुँचे । ( उवागच्छित्ता रह  
ठवेइ ) वहा पहुँच कर उन्होंने अपने रथ को रोक दिया-(ठवित्ता दारुण  
सारहिं सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी गच्छह ण तुम देवानुपिया ।  
अमरककारायहाणी अणुपविमाहि २, पउमणाभस्स रण्णो वामेण पाएण

त्यां जधने हु जते ४ द्रौपदी देवीने त्याथी पाछी लध आवीश ओटले के  
हु जते ४ द्रौपदी देवीने लेवा भाटे जधश त्यारे ते सुस्थित देवे कृष्ण-  
वासुदेवने कहु के साइ, आभ ४ कुरे आ प्रभावे कहीने तेले आत्मपष्ठना  
छये रथाने लवण समुद्रमा रस्से आये त्यारपछी कृष्ण-वासुदेवे पोतानी  
चतुरङ्गिणी सेनाने त्याथी पाछी वणावी हीथी अने पाछी वणावीने तेओ पाये  
पाउवानी साथे छये रथाने-ओके पोताना रथने अने पाच पाउवोना रथाने-  
लधने लवण समुद्रनी वरये थधने पसार थवा लाग्या आभ पसार थता तेओ  
ज्या अमरकका राजधानी अने तेमा पणु ज्या ते अशोधान हुतु त्या पडोअ्या  
( उवागच्छित्ता रह ठवेइ ) त्या पडोअ्यीने तेमले पोताना रथने जले शओ.

( ठवित्ता दारुण सारहिं सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी, गच्छह ण तुम  
देवानुपिया ! अमरकका रायहाणीं अणुपविसाहि २ वामेण

પ્રવિશ્ય પદ્મનાભસ્ય રાજ્ઞો વામેન પાદેન ' પાયપીઠ ' પાદપીઠમ્ સિંહાસનસલગ્ન-  
સોપાનમ્ આક્રમ્ય કુન્તાયેણ લેખ પ્રતિકા ' પળામેહિ ' અર્પય=દેહિ અર્પયિત્વા  
' તિવલિય ' તિવલિકા રેલાત્રયયુક્તા ' મિડડિ ' મૂકુટિ- ' ણિડાલે ' લલાટે  
' સાહદ્રુડુ ' સહત્ય-ઉન્નીય ' આસુરુત્તે ' આશુરુપ્તઃ=શીઘ્ર ક્રોધાવિપ્તઃ ' રુદ્ધ '  
રુપ્તઃ ' કુદ્ધે ' ક્રુદ્ધઃ ' કુવિણ ' કુપિતઃ ચડિક્વિણ ' ચાણ્ડિક્વિતઃ-રોપયુક્તઃ,  
એવમવાદીત્-હ મો ! પદ્મનાભ ! ' અપતિયપતિયા ' અપ્રાર્થિતપ્રાર્થિત !-મર-  
ણવાઝઝક ! ' દુરતપતલલક્ષણ ! ' દુરન્તપ્રાન્તલક્ષણ ! ' પૂર્વ વ્યાખ્યાતમેતત્ ,

પાયપીઠ અક્રમિત્તા કુન્તાયેણ લેહ પળામેહિ, તિવલિય મિડડિ ણિડાલે  
સાહદ્રુડુ આસુરુત્તે રુદ્ધે કુદ્ધે કુવિણ ચડિક્વિણ એવ વયાસી હ મો પડમણાહા  
અપતિયપતિયા ! દુરતપતલલક્ષણ ! હીણપુણચાઉદસા ! સિરિહિરિ  
ધી પરિવજ્જિયા ! અજ્ઞ ણ ભવસિ કિન્ન તુમ ણ યાણાસિ, કણ્ઠસ્સ  
વાસુદેવસ્સ અહવણ જુદ્ધસજ્જે ણિગચ્છાદિ ) રથ કો રોકકર વહાં  
સ્થાપિત કર-દાસક સારથિ કો બુલાયા બુલાકર કે ડસસે એસા કહા-  
હે દેવાનુપ્રિય તુમ જાઓ-અમરકકા રાજધાની મેં જાઓ વહાં જાકર  
પદ્મનાભ રાજાકે પાદપીઠકો વામ પાદસે આક્રમિત કર, કુન્ત (ભાલા)કે  
અગ્રભાગ સે ડસે પત્રિકા દો દેકર કે અપની મૂકુટી કો ભાલપર ચઢા  
કર, હકદમ શુસે મેં આકર, રુદ્ધ, કુપિત એવ ક્રુદ્ધ હોકર ક્રોધ કે  
આવેશ સે તમ તમાતે દુણ તુમ ડસસે એસા કહો-અરે ઓ પદ્મનાભ !  
અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! મરણવાઝઝક-! દુરતપ્રાન્ત લક્ષણ ! મોલુમ હોતા હૈ

પાણ પાયપીઠ અક્રમિત્તા કુન્તાયેણ લેહ પળામેહિ, તિવલિય મિડડિ ણિડાલે  
સાહદ્રુ આસુરુત્તે રુદ્ધે કુદ્ધે કુવિણ ચડિક્વિણ એવ વયાસી હ મો પડમણાહા !  
અપતિયપતિયા ! દુરતપતલલક્ષણ ! હીણપુણચાઉદસા ! સિરિ હિરિધી  
પરિવજ્જિયા ! અજ્ઞ ણ ભવસિ કિન્ન તુમ ણ યાણાસિ, કણ્ઠસ્સ વાસુદેવસ્સ  
અહવણ જુદ્ધસજ્જે ણિગચ્છાદિ )

રથને ઊભો રાખીને, ત્યા જ રથને મૂકીને ઠાઠ સારથિને બોલાવ્યો  
અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે અમરકકા  
રાજધાનીમા બન્યો અને ત્યા જઈને પદ્મનાભ રાજાના પાદપીઠને ડાખા પગથી  
આક્રમિત કરીને ડુતના અગ્ર ભાગથી તેને પત્રિકા આપો. પત્રિકા આપીને  
તમે પોતાની લખ્મરો ચઢાવીને, એકદમ લાલચોળ થઈને રુદ્ધ, કુપિત અને  
ક્રુદ્ધ થઈને ક્રોધના આવેશમા આવીને તેને આ પ્રમાણે ડહો કે અરે ઓ  
પદ્મનાભ ! અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! મરણ વાઝક ! દુરત પ્રાન્ત લક્ષણ ! ( નીચ

देव कृष्ण वासुदेवमेवमशीर-एव भवतु इति, ततोऽमौ पञ्चमि पाण्डुः सार्धम्  
आत्मपण्डस्य पण्णा रथाना उदगममुद्रे मार्ग विनरतिः तत स्वदु स दृणो वासु  
देवचतुरङ्गिणीं सेना प्रतिनिगर्जयति, प्रतिविसर्ज्य पञ्चमिः पाण्डुः, सार्धमात्म  
पण्ड पद्भीर्यैर्गणममुद्र गच्छध्वेन 'रीडयत' -यतिव=नि-गच्छति, व्यति  
व्रज्य यज्ञीरामरसद्गा राजधानी, यज्ञीरामरसद्गाया अग्रोधान नर्गरोपागच्छति,  
उपागत्य रथ स्थापयति, स्थापयित्वा दारुक सारहिं गच्छयति, गच्छयित्वा एव  
मवादीत्—गच्छ स्वतु त्व हे देवानुपिय ! अमरककाराजधानीमनुपविश, अनु

स्वय ही द्रौपदी देवी को वहा से वापिस ले आऊंगा । अबत्रा मैं स्वय  
ही द्रौपदी देवी को लेने के लिये जाऊंगा तब उस सुस्थित देव ने कृष्ण  
वासुदेव से इस प्रकार कहा-अच्छा ऐसा ही हो-इस प्रकार कह  
कर उसने आत्म पण्ड के चहों रथो को लवणसमुद्र में मार्ग विनरित  
कर दिया । तब कृष्णवासुदेव ने अपनी चतुरङ्गिणी सेना को वहा से  
वापिस करदिया वापिस कर फिर वे पांच पांडवों के साथ छह रथों  
को-१ एक अपने रथको और पांच पांडवोंके रथोंको-लेकर लवणसमुद्रके  
भीतरसे होकर चलने लगे । चलते २ वे जहा अमरककाराजधानी थीं-  
और उसमें भी जहा वह अग्रोधान था वहा पहुँचे । ( उवागच्छित्ता रह  
ठवेइ ) वहा पहुँच कर उन्होंने अपने रथ को रोक दिया-(ठवित्ता दारुय  
सारहिं सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया !  
अमरककारायहाणी अणुपविसाहि २, पउमणाभस्स रण्णो वामेण पाण्ण

त्यां जधने हु नते ज द्रौपदी देवीने त्याथी पाछी लध आपीश ओटवे डे  
हु नते ज द्रौपदी देवीने देवा भाटे जधश त्यारे ते सुस्थित देवे कृष्ण-  
वासुदेवने कछु डे साइ, आभ ज करे आ प्रभावे कहीने तेले आत्मपण्डना  
छओ रथाने लवण समुद्रमा रहने आये। त्यारपछी कृष्ण-वासुदेवे पोतानी  
चतुरङ्गिणी सेनाने त्याथी पाछी वणावी दीधी अने पाछी वणावीने तेओ पाथे  
पांडवोनी साथे छओ रथाने-ओक पोताना रथने अने पाथ पांडवोना रथाने-  
लधने लवण समुद्रनी वर्ये थधने पसार थवा लाय्या आभ पसार थता तेओ  
ज्या अमरकका राजधानी अने तेमा पण्ड ज्या ते अग्रोधान डतु त्या पडोय्या  
( उवागच्छित्ता रह ठवेइ ) त्या पडोय्यीने तेमा पोताना रथने जले। राय्ये

( ठवित्ता दारुय सारहिं सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी, गच्छह ण तुम  
देवाणुप्पिया ! अमरकका रायहाणीं अणुपविसाहि २ । वामेण



તત્ સ્વલ્પ સ્વારુઢ સારથિઃ કૃષ્ણેન વાસુદેવેનૈવમુક્તઃ સન્ હૃષ્ટતુષ્ટો યાત્ પ્રતિશ્રુણોતિ ' તથાઽસ્તુ ' ઇતિ કૃત્વાઽઽઞ્ઞાં સ્વીકરોતિ પ્રતિશ્રુત્ય=અમર-કઢ્ઢારાજધાનીમનુપ્રવિશતિ, અનુપ્રવિશ્ય યત્રૈવ પદ્મનાભસ્તૈવોપાગન્ઢતિ, ઉપાગત્ય કરતલપરિગૃહીતદશનઘ્વ શિરઆવૃત્તં મસ્તકેઽઞ્જલિં કૃત્વા યાત્ વર્ધવતિ-જયેન વિજયેન ચાભિનન્દયતિ । વર્ધયિત્વા-અતિનઘ્વ એવમવાદીત્-એવા સ્વલ્પ હે સ્વામિન્ ! મમ વિનયપ્રતિપત્તિઃ ઇયમન્યા મમ સ્વામિનો વિનયપ્રતિપત્તિઃ, " સમુ-

સમાણે હૃદ્દતુષ્ટે જાત્ર પડિસુણેહ, પડિસુણિત્તા, અમરકકા રાયઢાર્ણિ અણુ પવિસહ, અણુપવિસિત્તા જેણેવ પડમનાહે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગ-ચ્છિત્તા, કરયલ જાત્ર વઢ્ઢાવેત્તા એવ વયાસી-એસણ સામી મમ વિણ યપડિવિત્તી, હમા અન્ના મમ સામિસ્સ સમુઢાણત્તિ ત્તિ કદ્દહુ અસુરુત્તે નામ પાણ પાયપીઢ અણુકમઢ ) પાચ પાડવોં કે સાધ આત્મ પઢ્ઢ હોકર દ્રૌપદી દેવી કો લેને કે લિયે અમી અમી આયે હુએ હૈ । હસ પ્રકાર કૃષ્ણવાસુદેવ કે ઢારા કહે ગયે ઉસ દોરુક સારથિ ને હૃષ્ટ તુષ્ટ હોકર કૃષ્ણવાસુદેવ કી આજ્ઞા સ્વીકાર કરલી । સ્વીકાર કર કે ફિર વહ અમરકકા રાજધાની મેં પ્રવેશ ક્રિયા વહા પ્રવેશ કર વહ વહા પહુંચા જહા પદ્મનાભ રાજા થે । ઉનકે સમીપ જાકર ઉસ ને પહિલે ઉન્હેં દોનોં હાયોં કી અજલિ વના કર ઓર ઉસે મસ્તક પર રલ્લકર નમસ્કાર ક્રિયા-જય વિજય શબ્દોં સે ઉન્હેં વંઢાયા-વાદ મેં ઉસને હસ પ્રકાર કહના પ્રારમ ક્રિયા-હે સ્વામિન્ ! યહ તો મેરી વિનય પ્રતિપત્તિ હૈ-દૂત

સારઢી કૃષ્ણેણ વાસુદેવેણ એવ વુત્તે સમાણે હૃદ્દતુષ્ટે જાત્ર પડિસુણેહ પડિસુણિત્તા, અમરકકા રાયઢાર્ણિ અણુપવિસહ, અણુપવિસિત્તા જેણેવ પડમનાહે તેણેવ ઉવાગ-ચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા, કરયલ જાત્ર વઢ્ઢાવેત્તા એવ વયાસી-એસણ સામી મમ વિણય-પડિવિત્તી, હમા અન્ના મમ સામિસ્સ સમુઢાણત્તિ ત્તિ કદ્દહુ આસુરુત્તે વામપાણ પાયપીઢ અણુકમઢ )

પાયે પાડવોની સાથે આત્મપઢ્ઢ થઇને દ્રૌપદી દેવીને લેવા માટે અત્યારે આવી ગયા છે આ પ્રમાણે કૃષ્ણ-વાસુદેવ વડે કહેવામા આવેલા વચનેા સાલણીને હૃષ્ટ-તુષ્ટ થઈને તે દારુક સારથીએ તેમની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી સ્વીકારીને તે અમરકકા રાજધાનીમા પ્રવિષ્ટ થયો પ્રવિષ્ટ થઇને તે જ્યા પદ્મ નાલ રાજા હતા તેમની પાસે જઇને ઓ પહેલા તેણે બને હાથોની અજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યો અને જય વિજય શબ્દોથી રાજાને વધામણી આપી ત્યારપછી તેણે આ પ્રમાણે કહેવાની રાજઆત દરી કે હે સ્વામી ! આ તો મારી વિનય પ્રતિપત્તિ છે હવેની ક્ષરજ બળવતા મે

‘ હીનપુન્યાત્મકા ! ’ હીનપુન્યવાતુર્દશિકઃ — અલ્પપુન્યવાતુર્દશિકજન્મા, ચતુર્દશીનાતો હિ ભાગ્યવાન મરતિ । તથા—‘ મિત્રો તિરિધી પરિવર્તિતયા ! ’ શ્રી શ્રી શ્રી પરિવર્તિત ! લક્ષ્મી રજ્જા પુદ્ધિ રહિત !, અપ ન ભવમિ, કિં સ્વલુત્ત ન જાનાસિ, કૃષ્ણસ્ય વાસુદેવસ્ય મગિનીં દ્રોપદી દેવીમિદ ‘ દ્વય આળમાણે ’ દ્વ્યમાનયત્, ‘ત’ તન્-તસ્માન્ ‘ એવમપિ ’ પતામપિ=શ્રાનીતામપિ આદ્ પૂર્વ કાદ્ દ્વિગતૌ ’ इत्यस्मात्કृत मत्पयः, ‘ મદ્ય ’ અથવા સ્વલુ ‘ જુદ્ધ સન્જે ’ યુદ્ધ સન્જઃ-યુદ્ધાય સન્જઃ=સન્નદઃ સન્ ‘ મિગ્ગન્ઝાદિ ’ નિર્મલ-વદિર્નિ.મર એ સ્વલુ કૃષ્ણો વાસુદેવઃ પશ્ચાદિઃ પાણ્ડવૈ. મદ ‘ અપ્પઝદે ’ આત્મવપ્ત =આત્મા વપ્તો યત્ સ સમૂહે, દ્રોપદી દેવ્યા. ‘ કુર ’ મત્યાનયન કરું દ્વ્યમાગત ।

તૂ અલ્પ પુણ્ય ચાતુર્દશિક જન્મ ચાલા છે-તૂ-ચતુર્દશી મેં ઉત્પન્ન हुआ नहीं हैं-क्यों कि चतुर्दशी के दिन उत्पन्न हुआ व्यक्ति भाग्यशाली होता है किन्तु तू ऐसा नहीं है अर्थात् अभाग्य है तू श्री ह्री, बुद्धि से रहित है । याद रख-या तो आज तू नहीं है या मैं नहीं हू तुझे यह ख्याल नहीं है-कि यह द्रौपदी देवी कृष्ण वासुदेव की बहिन है जिसे तूने यहा हरण करवा कर मगवाई है । अतः यदि अपनी कुशल चाहता है, तो तू इस हरण करवा कर अपने यहा मगवाई गई द्रौपदी देवी को कृष्ण वासुदेव के पास जाकर पीछे वापिस पहुँचा दे । नहीं तो युद्ध के लिये सज्जित होकर घर से बाहर निकल आ । ( एसण कण्हे वासुदेवे ) ये कृष्ण वासुदेव ( पचहिं पडवेहिं अप्पज्जे दोवई देवीए कूब इव्वमागण, तएण से दारुए सारही कण्हे ण वासुदेवे ण एव बुत्ते

વિચારો તેમજ નીચ લક્ષણો યુક્ત ) અમને એમ લાગે છે કે તું અલ્પ પુણ્ય ચાતુર્દશિક જન્મવાળો છે, એટલે કે તુ ચૌદશને દિવસે જન્મ્યો નથી કેમકે ચૌદશને દિવસે ઉત્પન્ન થનારી વ્યક્તિ ભાગ્યશાળી હોય છે તુ શ્રી, હ્રી અને બુદ્ધિ વગરનો છે બરોબર સાલળી લે કે આજે કા તો તું નહિ કે કા હું નહિ તને એટલી પણ ખબર નથી કે આ દ્રૌપદી દેવી કૃષ્ણ-વાસુદેવની બહેન છે-કે જેને તે હરણ કરાવીને અહીં મગાવી છે હવે જો તું પોતાનું ભલું ધ્યાનમાં લે તો તુ આ હરણ કરાવીને પોતાને ત્યાં રાક્ષી રાખેલી દ્રૌપદી દેવીને કૃષ્ણ-વાસુદેવની પાસે જઈને પાછી સોંપી દે નહિતર યુદ્ધના માટે તૈયાર થઈને બહાર મેદાનમાં આવી જા (એસ ણ કણ્હે વાસુદેવે) આ કૃષ્ણવાસુદેવ

( પચહિં પડવેહિં અપ્પજ્જે દોવઈ દેવીએ કૂબ હવ્વ

દારુણ

दारुक सारथिमेवमवादीत्—

केवल भोः ! ' रायसत्येसु ' राजशास्त्रेषु-राजनीतिषु दूतः ' अवज्ज्ञे ' अवध्यः= न हन्तव्यः, इत्युक्तमस्ति तस्मात् त्वा मुञ्चामि इति कृत्वा=इत्युक्त्वा त दूतम् असत्कार्यं, असम्मान्य अपहारेण ' णिच्छुभावेइ ' निक्षोभयति-निष्कासयति, तत् खलु म दारुकः सारथिः पद्मनाभेनासत्कार्यं यावत्-' णिच्छुदे ' निक्षोभितः- निःसारितः समाणे ' सन्, यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीतदशनख शिरावर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा कृष्ण यावद् एवमवादीत्—

जुद्धसज्जो णिगच्छामि, त्ति कट्टु दारुय सारथ एव वयासी-केवल भो रायसत्येसु दूये अवज्ज्ञे त्ति कट्टु असत्कारिय असम्मानिय अवहारेण णिच्छुभावेइ ) तद्य चह पद्मनाभ जय दारुक सारथि ने इस प्रकार कहा तो इकदम क्रोधित होकर त्रिवलि युक्त भ्रुकुटि को माथे पर चढ़ा कर इस प्रकार कहने लगा हे देवानुप्रिय ! मैं द्रौपदी को कृष्णवासुदेव के लिये अर्पित नहीं करता हूँ-पीड़ी नहीं देता हूँ—। इसके लिये मैं अभी स्वयं ही युद्ध करने को तैयार हूँ—। इस प्रकार कहकर फिर उसने उस दारुक सारथि से ऐसा कहा अरे ! राजनीति के शास्त्रों में दूत अवध्य कहा गया है-इस लिये तुझे छोड़ देना हूँ । इस तरह कहकर उसने दूत को असत्कृत और असमानित कर पीछे के दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया । ( तएण दारुण सारथी पउमणाभे ण असत्कारिय जाव णिच्छुदे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा

कण्हस्स वासुदेवस्स दोवई, एसण अह सयमेव जुद्धसज्जो णिगच्छामि त्ति कट्टु दारुय सारहि एव वयासी-केवल भो ! रायसत्येसु दूये अवज्ज्ञे त्ति कट्टु असत्कारिय असम्मानिय अवहारेण णिच्छुभावेइ )

दारुक सारथिना आ प्रमाणे वचने साक्षणीने पद्मनाभ अकहम क्रोधमा लास्योण थर्ध गयो अने लभभरे अढावीने आ प्रमाणे कडेवा लाग्यो के डे देवानुप्रिय ! हु कृष्ण-वासुदेवने द्रौपदी केधपण स्थितिमा सोपवा तैयार नथी अेना भाटे हु अत्यारे पण युद्ध करवा तैयार हु आ प्रमाणे कहीने तेणे दारुक सारथीने उहु के अरे ! राजनीतिना शास्त्रोभा इत अवध्य कडेवामा आये छे अथी तने जतो कर हु आ प्रमाणे कहीने तेणे इतने अभत्कृत अने असमानित करीने पाछला पारण्येथी पडार कढावी भूक्ये।

( तएण दारुण सारथी पउमणाभेण असत्कारिय जाव णिच्छुदे समाणे जेणेव कृष्णे वासुदेवे तेणेव उपागच्छइ, उपागच्छित्ता करयल्ल० कण्ह जाव एव

દાણતિ " ત્રગુમાપિ.-ત્રગુતેન કથિતા ભાતપિ:-આજ્ઞા ' ઇતિ કૃત્વા ' આસુ  
 રુત્તે ' આશુરુપ્તઃ શીઘ્ર ક્રોધાપિષ્ટ', વામપાદેન પાદપીઠ ' અશુકમઃ ' અનુકા  
 મતિ, અનુક્રમ્ય કુન્તામોગ લેવ-પત્રિકા ' પળામઃ ' અર્પયતિ । અર્પયિત્વા યાવત્  
 ' કૃત ' પ્રત્યાનયન કરું હવ્યમાગાઃ । તત મલુ મ પમનામો દારુકેન સાર  
 થિના પરમુક્ત' સન્ અશુરુપ્ત'==શીઘ્રઃ ક્રોધાક્રાન્ત, ત્રિરલિંગા રેત્વાત્રયયુક્તા  
 ધુકુટિ-' નિડાલે ' ત્રાટ્ટે-ગાલપદેઝે 'સાહદ્દુ' મહત્વ-ઉદ્ગોષ, એવમવાદીત્-  
 નો અર્પયામિ ચલુ અહ દે દેતાનુપિય કૃણાસ્ય વાસુદેવમ્ય દ્રૌપદીમ્, એ સલુ  
 અઃ સયમેવ યુદ્ધમન્નો નિર્ગન્ત્રામિ=મરુતૌય યુદ્ધાર્થે વહિર્નિ મરામિ ઇતિકૃત્વા

કે કર્તવ્ય અનુમાર મેને ચલ આપકો નમસ્કાર ક્રિયા છે જય વિજય આદિ  
 શબ્દો દ્વારા ચ ગર્હ દી છે-પરન્તુ મેરે સ્વામીકી उनके मुखसे आपके लिये  
 जो आज्ञा दी गई है वह दूसरी है-और वह इस प्रकार है-इस प्रकार  
 अपने मुख से कहकर वह शीघ्र क्रोध से भर गया, और वामपाद से  
 उसके पादपीठ पर चढ़ गया । ( अवमिता ) चढ़कर फिर ( कौतुगेण  
 लेह पणामह ) फिर उसने उसके लिये कुन्त के अग्रभाग से पत्रिका  
 अर्पित की । ( पणामिता जाव कृच हव्यमागए ) पत्रिका अर्पित करके  
 यावत् कृष्णवासुदेव पांचो पादों के साथ यहा द्रौपदी देवी को वापिस  
 लेने के लिये हव्य-अभी अभी-आये हैं यह मय समाचार उसे सुना  
 दिया । ( तएण से पउमणाभे दारुएण सारहिणा एववुत्ते समाणे आसु  
 रुत्ते त्रिवर्लिं भिउडिं निडाले साहदु एव वयासी णो अप्पिणामि, ण  
 अह देवाणुप्पिया ! कण्हस्म वासुदेवस्स दोवई, एस ण अह सयमेव

વિનયોપચાર માટે નમસ્કાર કર્યો છે તેમજ જય વિજય વિજય શબ્દો દ્વારા  
 તમને વધામણી આપી છે પરંતુ મારા સ્વામીએ તેમના મુખથી તમારે માટે  
 જે કંઈ આજ્ઞા આપી છે તે કંઈક બીજું જ છે અને તે આ પ્રમાણે છે કે-  
 હવે આમ કહીને એકદમ ક્રોધમાં લાલચોળ થઈ ગયો અને ડાબા પગથી  
 તેના પાદાસન ઉપર ચઢી ગયો ( અવક્રમિતા ) ચઢીને ( કૌતુગેણ લેહ પના  
 મહ ) તેણે રાજાને કુત ( ભાલા ) ના અગ્રભાગથી પત્રિકા આપી ( પનામિતા  
 જાવ કૃચ હવ્યમાગ૯ ) પત્રિકા આપીને યાવત કૃષ્ણ-વાસુદેવ પાંચે પાડવોની  
 સાથે અહીં દ્રૌપદી દેવીને લેવા માટે અત્યારે આવ્યા છે આ જાતના બધા  
 સમાચારો તેને કહી સંભળાવ્યા

( તएण से पउमणाभे दारुयेण सारहिणा एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते त्रि  
 वर्लिं भिउडिं निडाले साहदु एव वयासी-णो अप्पिणामि )

एव वयासी-ह भो दारगा । किन्न तुवमे पउसनाभेण सद्धिं  
जुज्झहिह उयाहु पेच्छहिह ? , तएण ते पंच पंडवा कण्ह  
वासुदेव एवं वयासी--अम्हे णं सामी । जुज्झामो तुवमे पेच्छह  
तएणं पंच पंडवे सण्णद्ध जाव पहरणा रहे दुरुहति दुरुहत्ता  
जेणेव पउसनाभे राया तेणेव उवागच्छह उवागच्छित्ता एव  
वयासी--अम्हे वा पउसणाभे वा रायत्तिकट्टु पउसनाभेणं सद्धिं  
सपलग्गा यावि होत्था, तएण से पउसनाभे राया तं पंच पंडवे  
खिप्पाभेव हयमहिय पवर निवडिय चिन्धदधूयपडागा जाव  
दिसोदिसि पडिसेहेइत्ति, तएणं ते पंच पंडवा पउसनाभेण रन्ना  
हयमहियपवरनिवडिय जाव पडिसेहिया समाणा अत्थामा  
जाव आधारणिज्जत्तिकट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०,  
तएण से कण्हे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वयासी--कहणं  
तुवमे देवाणुप्पिया । पउसणाभेण रन्ना सद्धिं संपलग्गा ? ,  
तएण ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेव एव वयासी-एवं खलु  
देवाणुप्पिया । अम्हे तुवमेहि अब्भणुन्नाया समाणा सन्नद्ध०  
रहे दुरुहामो२ जेणेव पउसनाभे जाव पडिसेहेइ, तएणं से  
कण्हे वासुदेवे तं पंच पंडवे एवं वयासी-जड णं तुवमे देवाणु  
प्पिया । एव वयता अम्हे णो पउसणाभे रायत्तिकट्टु पउसना-  
भेण सद्धिं सपलग्गा ताओ णं तुवमे णो पउसणाहे हयमहिय  
पवर जाव पडिसेहते, त पेच्छह ण तुवमे देवाणुप्पिया । अहं  
नो पउसणाभे रायत्तिकट्टु पउसनाभेण रन्ना सद्धिं जुज्झामि रहं



एव खलु अहं हे स्वामिन् । युष्माकं वचनेन यावत् 'णिच्छुभावेऽ' निशोमयति-  
पद्मनाभः लोधाग्रिष्टः तत्र द्रौपदी न दास्यामीत्युक्त्वा दूतो न हन्तव्य इति कृत्वा  
माममत्कार्यं, जमगान्यापद्वारेण निःसारयति सा ' इत्यर्थः ॥ २८ ॥

मूलम्—तएण से पउमणाभे चलवाउय सदावेइ सदावित्ता  
एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । आभिसेक्क हत्थिर-  
यणं पडिक्कप्पेह, तयाणंतरं च ण से चलवाउए छेयायरियउव  
देममइविकप्पणा विगप्पेहिं निउणेहिं जाव उवणेइ, तएणं से  
पउमणाहे सन्नद्धं अभिसेयं दूरुहइ दूरुहित्ता हयगय जेणेव  
कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएण मे कण्हे वासु  
देवे पउमणामं रायाण एजमाण पासइ पासित्ता त पंच पडवे

गच्छइ उयागच्छित्ता करयलं कण्ठं जाव एव वयासी-एव खलु अहं  
सामी ? तुभं वयणेण जाव णिच्छुभावेइ ) इस प्रकार जब वह दारुक  
सारथि पद्मनाभ के द्वारा असत्कृत यावत् होकर बाहिर निकला दिया,  
तब वह वहा से चलकर जहाँ कृष्णवासुदेव थे वहा आया । वहा आकर  
उसने दोनों हाथों की अजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर  
कृष्णवासुदेव से इस प्रकार कहा—हे स्वामिन् ? मैंने पद्मनाभ राजा से  
आपके वचन जैसे ही कहे वैसे ही उसने “क्रोध में आकर” मैं नहीं  
दूंगा दूतमार्गने योग्य नहीं होता है—इत्यादि कहकर मुझे असत्कृत एवं  
असमानित कर अपने यहाँ से पीछे के दरवाजे से बाहिर निकलवा  
दिया है ॥ सूत्र २८ ॥

वयासी-एव खलु अहं सामी ! तुभं वयणेण जाव णिच्छुभावेइ )

आ प्रभाणु न्यारे ते दारुक सारथि पद्मनाभ राजा वडे असत्कृत यावत  
असमानित थधने णडार कडावी भूकथे। त्यारे ते त्याथी णडार आवीने न्या  
कृष्ण-वासुदेव उता त्या आवे। त्या आवीने तेणे अने डाथेथी अजलि अनावीने  
अने तेने मस्तके भूकीने कृष्ण-वासुदेवने आ प्रभाणु कहुं के हे स्वामी ! पद्म  
नाभ राजने मे न्यारे तमारो स देश कही सलणाव्ये। त्यारे साभणतानी  
साथे न ते क्रोधमा लरावने “हु द्रौपदी देवी पछी आपीश नडि, यावत दूत  
अवध्य डाय छे ” वगेरे वयनेथी असत्कृत तेमज असमानित करीने अने  
तेणे पोताना लवनना पाछला नारवैथी णडार कडावी भूकथे ।

एवं वयासी--ह ओ दारगा । किन्न तुव्मे पउमनाभेण सद्धिं  
जुज्झहिह उयाहु पेच्छहिह ? , तएण ते पंच पंडवा कण्ह  
वासुदेवं एवं वयासी--अम्हे णं सामी । जुज्झामो तुव्मे पेच्छह  
तएणं पंच पंडवे सण्णद्ध जाव पहरणा रहे दुरुहति दुरुहिता  
जेणेव पउमनाभे राया नेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता एव  
वयासी--अम्हे वा पउमणाभे वा रायत्तिकट्टु पउमनाभेणं सद्धिं  
संपलग्गा चावि होत्था, तएण से पउमनाभे राया त पंच पंडवे  
खिप्पामेव हयमहिय पवर निवडिय चिन्धद्धूयपडागा जाव  
दिसोदिसि पडिसेहेइत्ति, तएणं ते पंच पंडवा पउमनाभेण रत्ता  
हयमहियपवरनिवडिय जाव पडिसेहिया समाणा अत्थामा  
जाव आधारणिज्जत्तिकट्टु जेणेव कणहे वासुदेवे तेणेव उवा०,  
तएण से कणहे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वयासी--कहणं  
तुव्मे देवाणुप्पिया । पउमणाभेण रत्ता सद्धिं संपलग्गा ? ,  
तएण ते पंच पंडवा कण्ह वासुदेव एव वयासी--एवं खलु  
देवाणुप्पिया । अम्हे तुव्मेहि अवभणुन्नाया समाणा सन्नद्ध०  
रहे दुरुहामो२ जेणेव पउमनाभे जाव पडिसेहेइ, तएणं से  
कणहे वासुदेवे तं पंच पंडवे एव वयासी--जइ णं तुव्मे देवाणु  
प्पिया । एव वयता अम्हे णो पउमणाभे रायत्तिकट्टु पउमना-  
भेण सद्धिं संपलग्गं ताओ णं तुव्मे णो पउमणाहे हयमहिय-  
पवर जाव पडिसेहते, त पेच्छह णं तुव्मे देवाणुप्पिया । अहं  
नो पउमणाभे रायत्तिकट्टु पउमनाभेण रत्ता सद्धिं जुज्झामि रहं

दुरुहइ दुरुहिता जेणेव पउमनाभे गया तेणेव उवागच्छइ  
 उवागच्छिता सेय गोपीरत्नारधवल तणत्ताहियसिंदुवारकुट्टेदुम  
 निगासं निययनलस्स हरिसजणणं रिउमेणणविणासकर पञ्च  
 जणं सख परामुसइ परामुसिता मुहवात्रपुरिय करेइ, तएण तस्स  
 पउमणाहस्स तेणं सखसहेणं वलइभाए हयजाव पडिसेहिए, तएणं  
 सेकण्हे वासुदेवे धणु परामुसइ वेढो धणु पूरेइ पूरिता धणुसहं करेइ,  
 तएण तस्स पउमनाभस्स दोन्ने वलइभाए तेण धणुसहेण  
 हयमहिय जाव पडिसेहिए, तएण से पउमणाभेराया तिभाग  
 बलावसेसे अरथामे अवले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे  
 आधारणिज्जत्तिकट्टु सिग्धं तुरिय जेणेव अमरकका तेणेव उवा-  
 गच्छइ उवागच्छिता अमरकक रायहाणि अणुपवित्तइ अणुप  
 विसित्ता दाराइ पिहेइ पिहिता रोहसज्जे चिट्टइ, तएण से कण्हे  
 वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता रह  
 ठवेइ ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहिता वेउव्वियसमु  
 ग्घाएणसमोहणइ, एगं मह णरसीहरूव विउव्वइ विउव्वित्ता महया  
 महया सहेणं पाददहरयं करेइ, तएण से कण्हेण वासुदेवेण  
 महया महया सहेणं पाददहरण कएण समाणेणं अमरकका  
 रायहाणी सभग्गपागारगोपुराट्टालयच्चरियतोरणपल्हत्थियपव-  
 रभवणसिरिधरा सरस्सरस्स धरणियले सन्निवइया, तएण  
 से पउमणाभे राया अमरकक रायहाणि सभग्ग जाव  
 पासित्ता भीए दोवईए देवीए सुरणं उवेइ सा

दोवईदेवी पउमनाभ रायं एव वयासी - किण्णं तुम देवा-  
 णुप्पिया ! न जाणसि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स  
 विप्पियं करेमाणे मम इहं हव्वमाणेसि, तं एवमवि गए  
 गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए अवचूलग-  
 वत्थणियत्थे अतेउरपरियालसपरिवुडे अग्गाइ वराइं रयणाइं  
 गहाय मम पुरओ काउं कण्ह वासुदेवं करयलपायपडिए सरणं  
 उवेहि, पणिवइयवच्छला ण देवाणुप्पिया ! उत्तमपुरिसा, तएणं  
 से पउसनाभे, दोवइए देवीए एयमट्ट पडिसुणेइ पडिसुणित्ता  
 ण्हाए जाव सरणं उवेइ उवित्ता करयल० एवं वयासी-दिट्ठाण  
 देवाणुप्पियाण इड्डी जाव परक्कमे तं खामेमि णं देवाणुप्पिया !  
 जाव खमंतु णं जाव णाह भुज्जो२ एवं करणयाएत्तिकट्टु पंज-  
 लिवुडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइ देवि साहत्थि  
 उवणेइ, तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभ एव वयासी-ह  
 भो पउमणाभा ! अप्पत्थियपत्थिया४ किण्ण तुम ण जाणसि  
 मम भगिणि दोवइदेवी इह हव्वमाणमाणेत एवमवि गए णत्थि  
 ते ममाहितो इयाणि भयमत्थि त्तिकट्टुपउमणाभं पडिविसज्जेइ  
 पडिविसज्जित्ता दोवइ देवि गिण्हइ गिण्हित्ता रहदुरूहेइ दुरूहित्ता  
 जेणेव पच पडवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पचण्हं पडवाणं  
 दोवइ देवि साहत्थि उवणेइ, तएण से कण्हे पचहि पंडवेहि सट्ठि  
 अप्पच्छे छहि रहेहि लवणसमुद मज्झ मज्जेण जेणेव जवूदीवे  
 दीवे जेणेव भारहे वासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० २९ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः गलु रा पञ्चनामः ‘बलवाउय’ बलवा-  
पृत-सैन्यनायक शब्दयति, शब्दयित्वा एवमरादीन्—क्षिप्रमेव-शीघ्रमेव भो  
देवानुप्रिय ! ‘आभिसेक’ आभिप्रेत्य प्रगान हस्तिरत्न ‘पडिकप्पेह’ प्रतिक  
ल्पय सुसज्जित कुरु, तदनन्तर च स बलवापृत गलु “छेयायरियउवदेसमह  
विकप्पणाविगप्पेहि” छेकाचार्योपदेशमतिविरल्पनाविश्लेषः—तत्र छेकः—निपुणः,  
आचार्य—कलाशिक्षक, तस्योपदेशाद् या मति ‘हस्तिरत्नया विरल्पना-विचारणा,  
तज्जनितो विरल्प-विशिष्ट रचनाशक्तिर्येषां तः, ‘जाव उवणेइ’ यावद् उपत-

—तएण से पउमणामे इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से पउमणामे) उन पञ्चनाम राजा ने  
(बलवाउय सहावेह) अपने सैन्य नायक को गुलाया (सहावित्ता) और  
घुलाकर फिर उनसे (एव बयासी) इस प्रकार कहा—(विप्पामेव भो  
देवाणुप्पिया ! आभिसेक हस्तिरत्न पडिकप्पेह) हे देवानुप्रिय ! तुम  
शीघ्र ही प्रधान हस्तिरत्न को सुसज्जित करो । (तयाणतर च ण से  
बलवाउय छेयायरिय उवदेसमह विकप्पणा विगप्पेहि निउणेहि जाव  
उवणेइ) इसके बाद उस सैन्य नायक ने निपुणकला शिक्षक के उपदेश  
से प्राप्त बुद्धि की कल्पना से उत्पन्न हुई है विशिष्ट रचना की शक्ति  
जिन्हों को ऐसे मनुष्य से कि जो जोभा करने में अत्यन्त निपुण थे उस  
हस्तिरत्न को सुसज्जित करवाया । जब उन्हो ने उस हस्तिरत्न को चम  
कीले निर्मल वेष से शीघ्र परिवस्त्रित-करदिया । बल्लाच्छादन द्वारा

तएण से पउमणामे इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (से पउमणामे) ते पञ्चनाम राजाणे (बलवाउय  
सहावेह) पोताना सैन्य नायकने बोलाव्यो (सहावित्ता) अने बोलावीने तेने  
(एव बयासी) आ प्रभाणु कहु के (विप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक  
हस्तिरत्न पडिकप्पेह) हे देवानुप्रिय ! तमे सत्तरे प्रधान हस्तिरत्नने  
सुसज्ज करे । (तयाणतर च ण से बलवाउय छेयायरियउवदेसमहविकप्पणा  
विगप्पेहि निउणेहि जाव उवणेइ) त्थारपणी ते सैन्य नायके निपुण कलाशिक्ष  
कना उपदेशथी जेभणु विशिष्ट रचना भाटे बुद्धि तेमज्ज कल्पना शक्ति भेजवी  
छे, तेमज्ज शृंगार कलाभा जेओ अतीव यत्तुर छे तेवा भाणुसो वडे  
हस्तिरत्नने सुसज्जित कसव्यो ज्यारे सत्तरे तेभणु ते हस्तिरत्नने यमकता  
निर्माण वेषथी परिवस्त्रित करी दीयो—बल्लाच्छादन वडे आच्छादित गेने सुथो



यति-अत्र यावच्छब्देनैव गोध्यम्-सुनिउणेहि नरेहि हस्तिरयण परिकल्पेत्, उज्ज-  
लनेवत्थ इवपरिवर्तिय सुसज्ज इत्यादि परिकल्पित्ता ' इति सुनिपुणैः=गोभा  
करणचतुरैः, नरैर्हस्तिरत्न परिकल्पयति-शोभयति किं भूतं हस्तिरत्न-उज्ज्वल-  
नेपथ्यहव्यपरिवर्तित उज्ज्वलनेपथ्येन-द्युतिमन्निर्मलवेपेण शीघ्र परिवर्तितः  
वस्त्राच्छादनसुशोभितः, तथा-सुसज्ज-घण्टाभरणादिभिः समलङ्कृत, एव परि-  
कल्प्य सज्जलव्यापृतः पद्मनाभनृपस्यान्तिके त हस्तिरत्नमुपनयति, आनयति ।  
तत खलु स पद्मनाभः सन्नद्धवद्धवर्मितकवच - आभिषेक्य हस्तिरत्न दूरोहति-  
आरोहति दूरुह्य हयगजरथपदातिपरिवृत यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैव प्रापारयद्  
गमनाय ।

तत खलु स कृष्णो वासुदेवः पद्मनाभ राजानम् एजमानम्=आगच्छन्त  
पश्यति । दृष्ट्वा च तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवदत्-ह भो ! दारकाः भो वत्सा !

आच्छादित कर सुशोभित करदिवा-अर्थात्-झूल वगीरह डालकर उसे  
बहुत अच्छी तरह सजा दिया, तथा घटा आभरण आदि से उसे अल-  
कृत करदिया, तब वह सैन्य नायक उस हस्ति रत्न को लेकर पद्मनाभ  
राजा के पास पहुँचा ( तएण से पउमणाभे सन्नद्ध० अभिसेय० दूरुहइ,  
दूरुहत्ता हयगय जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं  
से कण्हे वासुदेवे पउमणाभरायाण एजमाण पासइ पासित्ता ते पच पडवे  
एव वयासी ) इसके बाद वह पद्मनाभ राजा सन्नद्ध, वद्ध, वर्मित कवच  
वाला होकर उस प्रधान हस्तिरत्न पर आरूढ़ हो गया और आरूढ़  
होकर हय, गज, रथ, एव पैदल सैन्य को साथ लेकर जहाँ कृष्णवासुदेव  
थे उस और चल दिया । जब कृष्णवासुदेव ने पद्मनाभ राजा को आता  
हुआ देखा तो देखकर उन्हो ने पाच पांडवों से ऐसा कहा-( ह भो

लित करी दीधो अटले के झूल वगेरे नाभीने गहुँ सरस रीते सुसज्जित  
करी दीधो तेमन् घट, आभरलो वगेरेथी तेने अलङ्कृत करी दीधो त्थारे ते  
सैन्य नायक ते हस्तिरत्नने लधने पद्मनाभ राजानी पासो गये।

( तएण से पउमणाभे सन्नद्ध० अभिसेय० दूरुहइ दूरुहत्ता हयगय जेणेव  
कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभरायाण  
एजमाण पासइ, पासित्ता ते पच पडवे एव वयासी )

त्यारपछी ते पद्मनाभ राजा कवच तेमन् भीन राओथी सज्ज थधने  
ते प्रधान हस्तिरत्न उपर सवार थध गये। अने सवार थधने घोडा, डायी,  
रथ अने पायदण मेनाने माधे लधने कृष्ण-वासुदेव हुता ते तरइ रवाना  
थये। कृष्ण-वासुदेवे ज्यारे पद्मनाभ राजाने आवतो ज्ये। त्थारे तेने जेधने पांथे

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः गलु स पडमनामः ‘बलवाउय’ बलव्या-  
पृत-सैन्यनायक शब्दयति, शब्दपित्वा पयमरादीन्—क्षिप्रमेव-शीघ्रमेव भो  
देवानुप्रिय ! ‘आभिसेक’ आभिप्रेत्य प्रमान हस्तिरत्न ‘पडिकप्पेह’ प्रतिक  
ल्पय सुसज्जित कुरु, तदनन्तर च स बलव्यापृत गलु “छेयायरियउवदेसमह  
विकप्पणाविगप्पेहि” छेकाचार्योपदेशमतिविरल्पनाविरल्पे—तत्र छेकः—निपुणः,  
आचार्यः—कलाशिक्षक, तस्योपदेशाद् या मति ‘द्विस्तस्या विरल्पना-विचारणा,  
तज्जनितो विरल्प-विशिष्ट रचनाशक्तिर्येषा तः, ‘जाव उवणेइ’ यावद् उपत

—तएण से पडमणामे इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) उसके बाद (से पडमणामे) उन पडमनाम राजा ने  
(बलवाउय सदावेइ) अपने सैन्य नायक को बुलाया (सहावित्ता) और  
बुलाकर फिर उससे (एव वयासी) इस प्रकार कहा—(विप्पामेव भो  
देवाणुप्पिया ! आभिसेक हत्थिरयण पडिकप्पेह) हे देवानुप्रिय ! तुम  
शीघ्र ही प्रधान हस्तिरत्न को सुसज्जित करो । (तयाणतर च ण से  
बलवाउय छेयायरिय उवदेसमह विकप्पणा विगप्पेहि निउणेहि जाव  
उवणेइ) इसके बाद उस सैन्य नायक ने निपुणकला शिक्षक के उपदेश  
से प्राप्त बुद्धि की कल्पना से उत्पन्न हुई है विशिष्ट रचना की शक्ति  
जिन्हों को ऐसे मनुष्य से कि जो जोभा करने में अत्यन्त निपुण थे उस  
हस्तिरत्न को सुसज्जित करवाया । जब उन्हो ने उस हस्तिरत्न को चम  
कीले निर्मल वेप से शीघ्र परिवस्त्रित-करदिया । बल्लाच्छादन द्वारा

तएण से पडमणामे इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारपछी (से पडमणामे) ते पडमनाम राजा ने (बलवाउय  
सदावेइ) पोताना सैन्य नायक ने बोलाव्यो (सहावित्ता) अने बोलावीने तेने  
(एव वयासी) आ प्रभाणे उछु के (विप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक  
हत्थिरयण पडिकप्पेह) छे देवानुप्रिय ! तमे सत्तरे प्रधान हस्तिरत्नने  
सुसज्ज करे (तयाणतर च ण से बलवाउय छेयायरियउवदेसमहविकप्पणा  
विगप्पेहि निउणेहि जाव उवणेइ) त्थारपछी ते सैन्य नायके निपुण कलाशिक्ष  
कना उपदेशथी नेमणे विशिष्ट रचना माटे बुद्धि तेमज्ज कल्पना शक्ति मेजवी  
छे, तेमज्ज शृंगार उलाभा नेओ अतीव यत्तुर छे तेवा भाणुसो वडे  
हस्तिरत्नने सुसज्जित कराव्यो न्थारे सत्तरे तेमछे ते हस्तिरत्नने यमकता  
निर्माण वेपथी परिवस्त्रित करी दीयो—बल्लाच्छादन वडे आच्छादित - सुथे

यति—अत्र यावच्छब्देनैव बोध्यम्—सुनिउणेहि नरेहि हस्तिरयण परिकल्पेत्, उज्ज-  
लनेवत्थ हव्वपरिवत्थिय सुसज्ज इत्यादि परिकल्पित्ता ' इति सुनिपुणैः=शोभा  
करणचतुरैः, नरैर्हस्तिरत्न परिकल्पयति—शोभयति किं भूत हस्तिरत्न—उज्ज्वल-  
नेपथ्यहव्वपरिवत्थित उज्ज्वलनेपथ्येन—द्युतिमन्निर्मलवेपेण शीघ्र परिवत्थितः  
वस्त्राच्छादनसुशोभितः, तथा—सुसज्ज—ग्रन्थाभरणादिभिः समलङ्कृत, एव परि-  
कल्प्य सज्जलव्यापृतः पद्मनाभनृपस्यान्तिके त हस्तिरत्नमुपनयति, आनयति ।  
तत खलु स पद्मनाभः सन्नद्धवद्धवर्मितकवच — आभिषेक्य हस्तिरत्न दूरोहति—  
आरोहति दूरुह्य हयगजव्यपदातिपरिवृत यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैव प्रायारयद्  
गमनाय ।

तत खलु स कृष्णो वासुदेवः पद्मनाभं राजानम् एजमानम्=आगच्छन्त  
पश्यति । दृष्ट्वा च तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवदत्—हं भो ! दारकाः भो वत्सा !

आच्छादित कर सुशोभित करदिया—अर्थात्—झूल वगैरह डालकर उसे  
बहुत अच्छी तरह सजा दिया, तथा घटा आभरण आदि से उसे अल-  
कृत करदिया, तब वह सैन्य नायक उस हस्ति रत्न को लेकर पद्मनाभ  
राजा के पास पहुँचा ( तएण से पउमणाभे सन्नद्ध० अभिसेय० दूरुह्ह,  
दूरुह्हित्ता हयगय जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएण  
से कण्हे वासुदेवे पउमणाभरायाण एज्जमाण पासइ पासित्ता ते पच पडवे  
एव वयासी ) इसके बाद वह पद्मनाभ राजा सन्नद्ध, वद्ध, वर्मित कवच  
वाला होकर उस प्रधान हस्तिरत्न पर आरूढ़ हो गया और आरूढ़  
होकर रथ, गज, रथ, एव पैदल सैन्य को साथ लेकर जहाँ कृष्णवासुदेव  
थे उस और चल दिया । जब कृष्णवासुदेव ने पद्मनाभ राजा को आता  
हुआ देखा तो देखकर उन्हो ने पांच पाण्डवों से ऐसा कहा—( हं भो

लित करी दीधो अटले के जूझ वगेरे नाभीने गहुञ्ज सरत्त रीते सुसज्जित  
करी दीधो तेमञ्च घट, आभेरणो वगेरेथी तेने अलङ्कृत करी दीधो त्थारे ते  
सैन्य नायक ते हस्तिरत्नने लधने पद्मनाल राजानी पामे गये।

( तएण से पउमणाभे सन्नद्ध० अभिसेय० दूरुह्ह दूरुह्हित्ता हयगय जेणेव  
कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभरायाण  
एज्जमाण पासइ, पासित्ता ते पच पडवे एव वयासी )

त्यारपडी ते पद्मनाल राजा कवच तेमञ्च भीम राओथी सन्नद्ध थउने  
ते प्रधान हस्तिरत्न उपर सवार थउ गये। अने सवार थउने घोडा, डायी,  
रथ अने पायदण मेनाने आवे लधने कृष्ण-वासुदेव उता ते तरङ्ग खाना  
थये। कृष्ण-वासुदेवे न्यारे पद्मनाल राजाने आवतो जेथे। त्थारे तेने जेधने पांथे

किं खलु यूय पद्मनाभेन सार्धं ' जुञ्जिहिह ' गुपय । ' उयाहू ' उताहो-अथवा  
' पेच्छिहिह ' मेक्ष मे, ? ततः सद्यः त पञ्च पाण्डवाः तान् वासुदेवमेवमवा  
दीत्-यय खलु हे स्वामिन् । गुपय, यूय मेक्ष यम् । ततः सद्यः पञ्च पाण्डवाः  
सन्नद्धवर्धर्मितकवचा यारुः पृथीतायुधमद्वयानाः रथान्=रथः स्य रथोपरि दूतो  
हन्ति=भारोहति दूतोग यज्ञेय पद्मनाभो राजा तर्जोपागच्छन्ति, उपागत्य एव  
मनदन्-अम्हे वा पउमणाभे वा राया ' वयं वा गयाम' पद्मनाभो वा राजा, इति

दारगा ! किन्न तुम्हे पउमनाभेण सद्धि जुञ्जिहिह उयाह पेच्छिहिह ?  
तएण ते पडवा कण्णं वासुदेव एव ययामी ) हे वत्सो ! क्या तुमलोग  
पद्मनाभ के साथ युद्ध करोगे-या युद्ध को देखोगे ? तब उन पाण्डवों ने  
कृष्णवासुदेव से इस प्रकार कहा-(अम्हेण सामी ! जुञ्जामो, तुम्हे  
पेच्छह, तएण पच पडवे सन्नद्ध जाव पहरणा रहे दुरुहति, दुरुहिता  
जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छति उवागच्छिता एव वयासी,  
अम्हे वा पउमणाभे वा रायत्ति कट्टट्ट पउमणाभेण सद्धि सपलगा यावि  
होत्था ) हे स्वामिन् ! हम तो युद्ध करेंगे-आप उस का निरीक्षण करें ।  
इसके बाद वे पांचो पाण्डव सन्नद्धवर्धर्मित कवचवाले होकर यावत्  
आयुध प्रहरणों को ले २ कर अपने २ रथों पर सवार हो गये । सवार  
होकर फिर वे जहा पद्मनाभ राजा थे-उस और गये-वहां जाकर वन्हों  
ने पद्मनाभ राजा से इस प्रकार कहा-यां तो आज हम नहीं या पञ्च

पाण्डवाने आ प्रभावे कहु-(ह भो दारगा ! किन्न तुम्हे पउमनाभेण सद्धि  
जुञ्जिहिह उयाह पेच्छिहिह ? तएण ते पच पडवा कण्ह वासुदेव एव वयासी)  
हे वत्स ! शु तमे पद्मनाभ राजानी साथे मेदाने उतरशे ? के क्खता युद्धने  
लेशे ? त्थारे ते पाण्डवाने कृणु-वासुदेवने आ प्रभावे कहु के—

( अम्हेण सामी ! जुञ्जामो, तुम्हे पेच्छह, तएण पच पडवे सन्नद्ध जाव  
पहरणा रहे दुरुहति, दुरुहिता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छति, उवा  
गच्छिता एव वयासी, अम्हे वा पउमणाभे वा रायत्ति कट्टट्ट पउमणाभेण सद्धि  
सपलगा यावि होत्था )

हे स्वामी ! अमे तो युद्ध जेडीशु, तमे अमारा युद्धने बुझो त्थार  
पछी ते पांचे पाण्डवा उवयथी सुसन्नद्ध थाने आयुध प्रहरणोंने लड़ने पोत  
पोताना रथो उपर सवार थछ गया सवार थछने तेओ पद्मनाभ राजा तरश्  
रवाना थथा पद्मनाभ राजानी पासो पडोथीने तेले आ प्रभावे कहु के—  
' आने का तो अमे नहिं अने का पद्मनाभ नहिं ' आभ कहुने तेओ  
पद्मनाभ राजानी साथे युद्ध करवा लाय्या

कृत्वा=इत्युत्तवा-पद्मनाभेन साधं योद्धु संपलग्नाश्चाप्यभवन्, तत खलु स पद्म  
नाभो राजा तान् पञ्च पाण्डवान् क्षिप्रमेव 'हयमहियपवरनिग्रडियचिन्धद्वयपङ्कागा'  
हयमथितपवरनिपतितचिह्नध्वजपताकान्-तत्र हया-अथवा मथिता-पीडिताः,  
पवराः-प्रशस्ताः, चिह्न-ध्वजपताका निपातिता येषा तान्, शस्त्रास्त्रप्रहारजनित  
प्राप्तान् इत्यर्थः, यावद् दिशो दिशः=सर्वतः 'पडिसेहेइ' प्रतिपेययति=प्रतिनिवर्त-  
यति स्मेत्यर्थः । ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः पद्मनाभेन राजा हयमथितपवरनिप  
तित यावत् प्रतिपेधिताः सन्तः 'अत्थामा' अस्थामानः-बलरहिता, 'जाव  
अधारणिज्जा' अत्र यावच्छब्देन-'अवला अगीर्या' इत्यनयोः समग्रः । अत्रलाः-

नाभ राजा ही नहीं " ऐसा कहकर वे पद्मनाभ राजा के साथ युद्ध करने  
में सलग्न हो गये । ( तएणं से पउमनाभे राया ते पच पडवे खिप्पामेव  
हयमहियपवर निवडिय जाव पडिसेहिया, समाणा, अत्थामा जाव  
अधारणिज्ज त्ति कट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०, तएण से  
वासुदेवे ते पच पडवे एवं वयासी कट्ठणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! पउमना-  
भेण रत्ता सद्धि सपलगा ? तएण ते पच पडवा कण्ह वासुदेव एव  
वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं अब्भणुत्ताया समाणा  
सन्नद्ध० रहे दुरुहामो २ जेणेव पउमणाभे जाव पडिसेहेइ ) तव पद्म  
नाभ राजा ने उन पांचो पांडवों को बहुत जल्दी पीडित घोड़ों वाला  
एव निपातित प्रशस्त चिह्नध्वज पताका वाला घर दिया । यावत् एक  
दिशा से दूसरी दिशा में जाने से भी उन्हें रोक दिया अथवा-एक  
दिशा से दूसरी दिशा में खदेड़ दिया । इस तरह वे पांचो पांडव पद्म  
नाभ राजा के द्वारा पीडित घोड़ोवाले, एव निपातित प्रशस्त चिह्न ध्वज  
पताका वाले जत्र बन गये और एक दिशा से दूसरी दिशा में जाने  
से रोक दिये गये-अथवा खदेड़ दिये गये तव बलरहित बनकर यावत्

( तएण से पउमनाभे राया ते पच पडवे खिप्पामेव हयमहियपवर निग्र-  
डिय जाव पडिसेहिया समाणा, अत्थामा जाव अधारणिज्ज त्ति कट्टु जेणेव  
कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०, तएण से कण्हे वासुदेवे ते पच पडवे एव वयासी  
कट्ठण तुब्भे देवाणुप्पिया ! पउमनाभेण रत्ता सद्धि सपलगा ? तएण ते पच-  
पडवा कण्ह वासुदेव एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं अब्भणु-  
त्ताया समाणा सन्नद्ध० रहे दुरुहामो २ जेणेव पउमणाभे जाव पडिसेहेइ )

त्यारपछी पद्मनाभ राजाએ તે પાચે પડવોને ઘોડા વળતમાજ પીડિત  
ઘોડાઓવાળા તેમજ નિપાતિત પ્રશસ્ત ચિહ્નધ્વજ પતાકાવાળા બનાવી દીધા  
યાવત એક દિશામાંથી બીજી દિશા તરફ જઈ શકે નહિ તેમ તેઓએ રસ્તો રોકી  
લીધો અથવા તેા એક દિશામાંથી બીજી દિશા તરફ ભગાડી મૂક્યા આવી



સન્યહીનાં અગ્રીપાં - આન્તરિક્ષગતિરક્ષિતાઃ, ઉત્સાહહીનાર્થર્થઃ, તથા-અગ્રા  
 રણીયાઃ=આત્માન રણભૂમો ભાર્યિતુમગત્તાઃ, ઇતિ ઋત્વા-ઇતિ વિચાર્ય, યગૈવ  
 કાળો વાસુદેવસ્તૈર્ગૌણાગન્ઠનિ । તતઃ સત્ત્વ મ કૃષ્ણો વાસુદેવસ્તાન્ પન્થ  
 પાન્ડરાન્ એવ સદયમાણપ્રકારેણ, અગ્રીન્-‘ વઃષ્ણ ’ કથ્ય સત્ત્વ યુવ દે દેવાનુ  
 પ્રિયાઃ ! પદ્મનાભેન રાજા સાર્થિ ગોદૂનુ મમચ્ચના. ? , તતઃ સત્ત્વ તે પન્થ પાન્ડવાઃ  
 કૃષ્ણ વાસુદેવોમયસાન્-પ્રવ સત્ત્વ હે દેવાનુપ્રિયા ! મય યુદ્ધમામિરભ્યનુજ્ઞાતાઃ  
 સતઃ સન્નદ્રવદ્વર્ણિતકરયાઃ સ્થાન્ ‘ દુરુહામો ’ દુરોહામઃ-આરોહામઃ આરુઢો,  
 આસ્ત્ય યગૈવ પદ્મનામસ્તૈર્ગૌણ ગન્ધા યુદ્ધાય સપચ્ચનાઃ તતઃ પરાજય માપ્તા યાવત્  
 પ્રતિપેધિતા ’ ઇતિ । તતઃ સત્ત્વ ત કૃષ્ણો વાસુદેવસ્તાન્ પન્થ પાન્ડરાન્ એવમવા

રણભૂમિ મેં અપને આપકો ટીકા ને મેં બી અસમર્થ જાનકર જહા કૃષ્ણ  
 વાસુદેવ થે વહા આવે । વહા પહુંચ તેહી કૃષ્ણવાસુદેવને ડનસે-ડન પાંચો  
 પાંડવો સે-ડન પ્રકાર કહા- જવ આપલોગ પરાજિત હો ગયે તો પદ્મ  
 નામ રાજા કે સાથ યુદ્ધરત છુ-લહે-તવ ડન પાંચો પાંડવો ને કૃષ્ણ  
 વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કહા, હે દેવાનુપ્રિય ! હમલોગો ને આપ સે અભ્ય  
 નુજ્ઞાત હોકર હી કવચ આદિ સે સુસજ્જિત હો રધો પર આરોહણ  
 કિયા, ઓર આગેહગ કર જહા પદ્મનામ રાજા થા વહાં હમલોગ પહુંચે ।  
 વહા પહુંચકર હમલોગ ડનકે સાથ યુદ્ધરત હો ગયે । વાદ મેં પરાજિત  
 હો ગયે । ઓર પરાજિત હોકર ફિર એસે ઘન ગયે જો ડસને હમેં એક  
 દિશા સે દુસરી દિશા મેં લવેહ દિયા યા જાને સે રોક દિયા । ( તણ  
 સે કળહે વાસુદેવે તે પ પ ) તવ કૃષ્ણવાસુદેવ ને ડન પાંચો પાંડવો સે

પરિસ્થિતિમાં લાચાર થઈને યાવત્ યુદ્ધભૂમિમાં પોતાની જાતને ટકાવી શક  
 વામાં પણ અસમર્થ જાણીને પાંચે પાંડવો જ્યાં કૃષ્ણ-વાસુદેવ હતા ત્યાં  
 આવ્યા ત્યાં પહોંચતા જ કૃષ્ણ-વાસુદેવે પાંચે પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે  
 તમે લોકો પદ્મનાભ રાજાની સાથે યુદ્ધરત થઈને પરાજિત થઈ ગયા છો ? ત્યારે  
 તે પાંચે પાંડવોએ કૃષ્ણ-વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! અમે  
 બધા આપની આજ્ઞા મેળવીને કવચ વગેરેથી સુસજ્જિત થઈને રથો ઉપર  
 સવાર થયા સવાર થઈને અમે જ્યાં પદ્મનાભ રાજા હતા ત્યાં ગયા ત્યાં  
 પહોંચીને અમે બધા તેની સાથે યુદ્ધ કરવા લાગ્યા અને તેને પરિણામે અમે  
 હારી ગયા છીએ હાર પામીને અમે એવી ભયંકર પરિસ્થિતિમાં સપડાઈ  
 ગયા હતા કે જેથી એક દિશા તરફથી બીજી દિશા તરફ જવામાં પણ અસર્થ  
 થઈ ગયા અથવા તો તેણે અમને એક દિશામાંથી બીજી દિશા તરફ ભગાડી  
 મૂક્યા છે ( તણ સે કળહે વાસુદેવે તે પ પ ) ત્યારે કૃષ્ણ-વાસુદેવે તે પાંચ  
 પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

दीत्-यदि खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! पूर्वमेव वक्तारो भवत, ' अम्हे, ' णो पउमाभे राया ' इति ' वय भवामः, नो पञ्चनाभो राजा ' इति " वयमेव जेण्यामो न तु पञ्चनाभो राजा ' इत्यर्थः तथा-यदि पूर्वम्-इति कृत्वा=इत्येव निश्चय मनसि निधाय, पञ्चनाभेन सार्व ' सपल्लगता ' युद्धाय सपल्लगा भवत, ' तो ण तर्हि खलु ' तुम्हे, णो पउमणाहे ' यूय नो पञ्चनाभ = यूयमेव जेतारो भवेत, न तु पञ्चनाभः, तथा यूय त हयमथितश्वरनिपतित चिह्न पञ्जपताक यावत्-पञ्चनाभ ' पडिसेहते ' प्रतिपेयेत=प्रतिनिवर्तयेत । तत्=तस्मात् ' पेच्छह ' प्रेक्षध्व, खलु

इस प्रकार कहा-( जइण तुम्हे देवाणुप्पिया ! एव वयता अम्हे णो पउमणाभे राय त्ति कइहु पउमनाभेण सद्धि सपल्लगताओ णं तुम्हे णो पउमणाहे, हय-महिय-पवर-जाव पडिसेहते, त पेच्छह ण तुम्हे देवाणुप्पिया । अह णो पउमणाभे राय त्ति कइहु पउमनाभेण रन्ना सद्धि जुज्झामि, रह दुरुहइ, दुरुहित्ता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सेय गोप्पीरहारधवलतणसोल्लियसिंदुवारकुदेहु सन्निगास निययवलरम हरिसजणण रिउसेण्णविणासकर पचजण्ण सख परामुसइ ) हे देवानुप्रिय ! तुम तो पहिले ऐसा कहते थे कि हम जीतेंगे, पद्मनाभ राजा नहीं जीतेगा-और ऐसा ही मन में विचार कर-निश्चय कर-तुम लोगों ने पद्मनाभ राजा के साथ युद्ध करना प्रारभ किया-तो तुम लोगो को ही जीतना चाहिये था । पद्मनाभ राजा को नहीं-और तुम्हीं लोग उसे पीड़ित छोड़ो वाला एव निपातितप्रश-

( जइण तुम्हे देवाणुप्पिया ! एव वयता अम्हे णो पउमणाभे राय त्ति कइहु पउमनाभेण सद्धि सपल्लगताओ णं तुम्हे णो पउमणाहे, हयमहियपवर जाव पडिसेहते, त पेच्छह ण तुम्हे देवाणुप्पिया । अह णो पउमणाभे राय त्ति कइहु पउमनाभेण रन्ना सद्धि जुज्झामि, रह दुरुहइ, दुरुहित्ता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेय गोप्पीरहारधवलतणसोल्लियसिंदुवार कुदेहु सन्निगास निययवलरम हरिमजणण रिउसेण्णविणासकर पचजण्ण सख परामुसइ )

हे देवानुप्रिय ! तमे तो पडेलेथी न आ प्रमाणे छेता छता हे अमे न एतीशु, पञ्चनाभ राजा एतथे नहि अने आ प्रमाणे विचार करीने न तमे बोडोअे पञ्चनाभ राजानी माये युद्धनी शङ्कात करी छती, आवी परिस्थिमा तो तभारे एत भेजववी नेछेअे पञ्चनाभ राजानी एत नहि थवी नेछेअे तमे बोडो तेने पीडित बोडाओवाणो जनावत, तभने ते नहि पणु आ जभी तभागी मननी छेअ सक्ष्ण थछ शक्ती नहि ओथी हे देवानुप्रियो । एवे जेओ,

युध हे देवानुप्रियाः । ' अहं नो पद्मनाभ राजा ' ' अहं नो पद्मनाभो राजा ' =  
अहमेव जेता भवामि, न तु पद्मनाभो राजा, इति ज्ञात्वा पद्मनाभेन राजा सार्धं  
युध्यामि, इत्युत्त्वा २५ ' दुन्दुह ' दूरोदति-आरोगि-ग रुष्ण वासुदेवः पद्म  
नाभेन सह योद्धु रथमान्द्रवान् उत्पर्वः । आरुण यत्र पद्मनाभो राजा तत्रैवो  
पागच्छति, उपागत्य ' मेघ ' श्वेत-गोपीगद्गारधवल=गोदुग्धात्-दारुच धवल  
शुक्ल ' तगमोद्विपरिदुहारहरेदुमनिगास ' ' तगमोद्विपा ' मल्लिका अथ  
देशीयः शब्दः मिन्दुसारो=निर्गुण्ठी, कुन्द-कुन्दनाम्ना ममिदः श्वेतपुष्पविशेषः  
इन्दुश्वन्द्रस्तद्वत् सनिकाश -प्रभा यम्प न तं, निययलम्प ' निजकयत्रम्प शकी  
यसेनाय ' हरिगजण ' हर्षननन-हर्षोत्पादक, ' रिउमेण विणासकर' रिपुमेन्य  
विनाशकर=शत्रुसैन्यवलहारक पाञ्चनन्यशत्रु पाञ्च रथनामक शत्रु ' परामुषः परा  
मृशति हस्ते मृहति, परामृश्य ' मुहवायपूरिय करेः ' मुहवातपूरितमुपमानेन आत  
करोति-गादयतीत्यर्थः । ततः खलु तस्य पद्मनाभस्य तेन शत्रुशब्देन ' वज्र

स्त चिह्नध्वज पताका वाला घनाते-वह तुम्हें ऐसा नहीं घनाता-परन्तु  
ऐसा तुम लोगों का मन में धारा विचार सकली भूत नहीं हुआ अतः  
देवानुप्रियो । अब देवों-में उसके साथ युद्धरत होता हूँ इसमें मैं ही  
जीतूंगा पद्मनाभ राजा नहीं । ऐसा कहकर वे कृष्णवासुदेव रथपर  
सवार हो गये । और सवार होकर वे वहाँ पहुँचे जहाँ पद्मनाभ राजा  
था । वहाँ पहुँच कर उन्होंने ने अपने पाचजन्य श्वेतशस्त्र को जो अपनी  
सेनाको हर्ष का जनक एवं शत्रु सेना का सहारक था एवं गोक्षीर तथा  
हार के जैसा धवल वर्णवाला था उठाया । इसकी प्रभा मल्लिका निर्गुण्ठी  
कुदपुष्प एवं चन्द्रमाके जैसी उज्ज्वल थी । (परामुसित्ता मुहवायपूरिय करेइ)  
उसे उठाकर उन्होंने ने मुँह से बजाया-( तण्ण तस्स पडमणाहस्स तेण  
सखसहेण वलहभाए हय जाव पडिसेहिण ) तब उस पद्मनाभ की सेना

तेनी साथे हु डवे मेढाने पडु छु आभा विजय भने ज प्राप्त थसे, पद्म  
नाभ राजने नडि आभ डहीने कृष्ण-वासुदेव रथ उपर सवार थउ गया  
अने सवार थडने जया पद्मनाभ राज हुतो त्या पडोअ्या त्या पडोअीने  
तेमणे पोताना पाचजन्य सहेइ ग अने-डे जे तेमनी सेना भाटे डयोत्पाडके  
तेमज शत्रुओंनी सेना भाटे सडार इप हुतो तथा गायना हय अने डारना  
जेवे सहेइ हुतो-डाथभा दीधो ते श अनी डति मल्लिका निर्गुं ठी कुद पुष्प  
अने चन्द्र जेवी हुती ( परामुसित्ता मुहवायपूरिय करेइ ) डडने तेमणे  
मुअथी वगाडथो ( तस्स पडमणाहस्स तेण सखसहेण  
जाव पडिसेहिण ते राजनी सेना )

तिभाए हते ' वलत्रिभागो हतः-सैन्यस्य तृतीयांशो हतमथित यावत् दिशोदिश  
प्रतिपेयित -प्रतिनिवृत्तः पलायित इत्यर्थः । ततस्तदनन्तर खलु स कृष्णो वासु-  
देवो धनु परामृशति गृह्णाति, परामृश्य ' वेढो ' वेष्ट वर्णकः धनुर्विषयक वर्णन  
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिनो विज्ञेयमित्यर्थः, ' धणु पूरेड ' धनुः पूरयति धनुषि गुणमारो-  
पयति पूरयित्वा धनुः शब्द करोति तत खलु तस्य पद्मनाभस्य द्वितीयवार ' वल  
तिभाए ' वलत्रिभाग तस्य सैन्यस्य तृतीयभागस्तेन धनुः शब्देन ' ह्यमहिय  
परनिगडिय चिन्मद्वयपडागे ' ह्यमथितप्रवरनिपतितचिह्न-वज्रपताको यावद्

का त्रिभाग उस शास्त्र के शब्द से हत हो गया मथित हो गया यावत्  
एक दिशा से दूसरी दिशा की तरफ भाग गया । तएण से कण्हे वासु-  
देवे धणु परामुसइ, वेढो धणु पूरेड, पूरित्ता धणुसइ करेइ ) इसके बाद  
कृष्ण वासुदेवने धनुष को उठाया । इस धनुष का वर्णन जम्बूद्वीप प्रज्ञ-  
प्ति में किया गया है । सो वहा से जानना चाहिये उठाकर उन्होंने उस  
पर ज्या का आरोपण किया फिर उसे चढाया-सो उससे शब्द हुआ  
( तएण तस्स पडमनाभस्स दोच्चे वलडभाए तेण धणुसइण ह्यमहिय  
जाव पडिसेहिए, तएण से पडमणाभे राया तिभागवलावसेसे अत्था  
मे अबळे, अवीरिण अपुरिस्सकारपरक्कमे अधारणिज्जत्ति कट्ठु सिग्घ  
तुरिय जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छइ ) तब उस पद्मनाभ राजा  
की सैन्य का तृतीयभाग उस धनुष के शब्द से हत हो गया, मथित  
हो गया, उस की प्रवर चिह्न स्वरूप ध्वजापताकाएँ सब गिर गई यावत्

शब्दथी न हत थई गयो, मथित थई गयो यावत् ओइ दिशा तच्छथी भील  
शिा तरइ नाही गयो ( तएण से कण्हे वासुदेवे धणु परामुसइ, वेढो धणु  
पूरेइ, पूरित्ता धणुसइ करेइ ) त्थारपणी कृष्ण-वासुदेवे धनुष उठाव्यु आ  
धनुषनु वर्णन न जम्बूद्वीप प्रज्ञप्तिमा करवाभा आव्यु छे जिहासुओओ त्थाथी  
जाली लेवु लेओओ उठावीने तेओओ तेनी उपर प्रत्यथा चढावी त्थारपणी  
धनुषने चढाव्यु अने तेनाथी शब्द थयो—

( तएण तस्स पडमनाभस्स दोच्चे वलडभाए तेण धणुसइण ह्यमहिय जाव  
पडिसेहिए, तएण से पडमणाभे राया तिभागवलावसेसे अत्थामे अबळे,  
अवीरिण अपुरिस्सकारपरक्कमे अधारणिज्जत्ति कट्ठु सिग्घ तुरिय जेणेव अमर-  
कंका तेणेव उवागच्छइ )

ते पद्मनाभ राजानी नेनाने त्रीजे लाग ते धनुषना शब्दथी न हत थई  
गयो, मथित थई गयो, तेनी प्रवर चिह्न-स्वरूप ध्वजा पताकाओ अधी पड़ी

युय हे देवानुमियाः । ' अह नो पउमणां राया ' ' अह नो पञ्चनाभो राजा '=  
अहमेव जेता भवामि, न तु पञ्चनाभो राजा, इति राजा पञ्चनामेन राजा मार्गं  
पुष्पामि, इत्युक्त्वा रथ ' दुग्ध ' दूरोदति-आरोहति-ग रुद्रा वासुदेवः पञ्च  
नामेन सह योद्धु रथमान्दयान इत्यर्थः । आम्न यन्त्रे पञ्चनाभो राजा तत्रैवो  
पागच्छति, उपागत्य ' सेव ' श्वेत-गोभीगदाश्वरत्न-गोदुग्धान्-दासश्च धवल  
शुक्ल ' तगमोद्विगतिद्वारकृद्देवनिगात ' ' तगमोद्विग ' मल्लिका अथ  
देशीयः शब्द. सिन्दुरारो=निर्गुण्ठी, रुद्र-रुद्रनाम्ना प्रसिद्धः श्वेतपुष्पविशेषः,  
इन्दुश्चन्द्रस्तद्वत् सनिकाग-प्रभा यम्प स त, नियमालम्प ' निजकयस्य स्वकी  
यसेनाय ' हरिमज्ज ' हर्षजनन-हर्षोत्पादक, ' रिउमेज्ज विणासकर ' रिपुमेन्य  
विनाशकर=शत्रुसेन्यवलहारक पाञ्चनन्यशः, पाञ्चनन्यनामक शब्द ' परामुपः परा  
मृशति हस्ते गृह्णाति, परामृश्य ' मुहवायपूरिय करेइ ' मुहवातपूरितमुत्रयानेन मात  
करोति-वाद्यतीत्यर्थः । ततः खलु तस्य पञ्चनाभस्य तेन शब्दशब्देन ' वर

स्त चिह्नध्वज पताका घाला घनाते-वह तुम्हें ऐसा नती घनाता-परन्तु  
ऐसा तुम लोगों का मन में धारा विगार सकली भूत नहीं हुआ अतः  
देवानुप्रियो । अब देखो-मैं उसके साथ युद्धरत होता हूँ इसमें मैं ही  
जीतूंगा पद्मनाभ राजा नहीं । ऐसा कहकर वे कृष्णवासुदेव रथपर  
सवार हो गये । और सवार होकर वे वहाँ पहुँचे जहाँ पद्मनाभ राजा  
था । वहाँ पहुँच कर उन्होंने ने अपने पाचजन्य श्वेतशस्त्र को जो अपनी  
सेनाको हर्ष का जनक एवं शत्रु सेना का सहारक था एवं गोक्षीर तथा  
हार के जैसा धवल वर्णवाला था उठाया । इसकी प्रभा मल्लिका निर्गुण्ठी  
कुदपुष्प एवं चन्द्रमाके जैसी उज्ज्वल थी । (परामुसित्ता मुहवायपूरिय करेइ)  
उसे उठाकर उन्होंने ने मुँह से बजाया-(तएण तस्स पउमणाहस्स तेण  
सखसहेण बलहभाए हय जाव पडिसेहिए ) तब उस पद्मनाभ की सेना

तेनी साथे छु छवे मेदाने पडु छु आभा विजय भने न प्राप्त थसे, पञ्च  
नाभ राजाने नडि आभ छडीने कृष्ण-वासुदेव रथ उपर सवार थल गया  
अने सवार थधने न्या पञ्चनाभ राजा छतो त्या पडोअ्या त्या पडोअ्यीने  
तेमणे पोताना पाचजन्य सहेइ शअने-के ने तेमनी सेना भाटे हर्षोत्पादक  
तेमज्ज शत्रुओनी सेना भाटे सडार इप छतो तथा गायना ह्व अने डारना  
नेवे सहेइ छतो-छाथभा लीधो ते शअनी छति मल्लिका निर्गुण्ठी कुद पुष्प  
अने चन्द्र नेवी छती ( परामुसित्ता मुहवायपूरिय करेइ ) लधने तेमणे  
मुभथी वगाउथो ( तएण तस्स पउमणाहस्स तेण सखसहेण बलहभाए हय  
जाव पडिसेहिए ) ते वअते ते पञ्चनाभ राजानी सेनानो ।



वासुदेवो यत्रैवामरुद्धा तत्रोपागच्छति, उपागत्य रथं स्थापयति, रथात् प्रत्यव  
रोहति प्रत्यवरुह्य, 'वेउव्वियसमुग्घाएण' वैक्रियसमुद्घातेन वैक्रियशरीरं निर्मातुं  
मात्मप्रदेशानां उद्दिष्टं सारणेन खलु 'समोहणइ' समुद्घातं करोति समुद्गन्ति  
एकं महत् 'णरसोहरूव' नरसिंहरूपं 'विउव्वइ' विकुर्वते दिव्यसामर्थ्येन  
करोति विकुर्व्यं महता २ शब्देन 'पादददरय' पाददर्दरक=भूमौ चरणाघातं  
करोति, ततः खलु स कृष्णेन वासुदेवेन महता २ शब्देन पाददर्दरकेण=भूमौ  
चरणाघातेन कृतेन सता अमरकङ्काराज्यानी 'सभग्गपागारगोपुराट्ठालयचरिय-  
तोरणपलहत्थियपवरभवणसिरिधरा' सम्भग्नप्राकारगोपुराट्ठालकचरिकातोरणपर्य-  
स्तितपवरभग्नश्रीगृहा=तत्र सभग्नानि-प्राकारश्च गोपुराणि च अट्ठालकाश्च चरिका

जहावह अमरकका श्री वहा गये ( उवा० ) वहा जाकर के ( रह ठवेइ,  
ठवित्ता रहाओ पचोरुहइ, पचोरुहित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोह-  
णइ ) उन्होंने अपने रथको खड़ा किया-खड़ा करके फिर वे उससे नीचे  
उतरे । नीचे उतर कर वैक्रिय समुद्घात किया । वैक्रियशरीरको निर्माण  
करने के लिये जो आत्मप्रदेशों का बाहिर निकालना होना है-उसका  
नम वैक्रिय समुद्घात है । ( एग मह णरसिहरूव विउव्वइ विउव्वित्ता  
महया २ सदेण पादददरण कएण समाणेण अमरकका रायहाणी सभग्ग  
पागारगोपुराट्ठालचरियतोरण पलहत्थियपवरभवणसिरिधरा सरस्स  
रस्स धरणियले सन्निवइया ) इस समुद्घातके छरा उन्होंने एक विशाल  
काय नरसिंहरूप की विकुर्वणा की नरसिंहरूप की विकुर्वणा करके  
अपनी भयकर गर्जना से भूमि पर चरणों द्वारा आघात किया । इस  
तरह गर्जना पूर्वक किये गये चरणाघात से अमरकका राजधानी की

गया ( उवा० ) त्या जहने ( रह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पचोरुहइ, पचोरुहित्ता  
वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणइ ) तेमणे पोताना रथने जेले राख्ये, जेले  
राखीने तेजे तेमाथी नीचे उतया नीचे उतरीने तेमणे वैक्रिय समुद्घात क्यो  
वैक्रिय शरीरने जनाववा माटे जे आत्मप्रदेशोने जडार डाढवाभा आवे छे ते  
वैक्रिय समुद्घात कडेवाथ छे

( एग मह णरसिहरूव विउव्वइ, विउव्वित्ता महया २ सदेण पादददरण  
कएण समाणेण अमरकका रायहाणी सभग्गपागारगोपुराट्ठालयचरियतोरण  
पलहत्थियपवरभवणसिरिधरा सरस्सरस्स धरणियले सन्निवइया )

आ समुद्धान वडे तेमणे जेक विशाल काय नरसिंह अपनी विकुर्वणा  
करी नरसिंह अपनी विकुर्वणा करीने पोतानी लय कर गर्जनाथी भूमि उपर  
थरखोने आघात क्यो आ रीते गर्जनापूर्वक करायेला थरखाधातथी अमर-

દિશો દિશા પ્રતિવેધિતઃ, તત મત્તુ મ પદ્મનાભૌ રાજા ' ત્રિમાગવજાવસેસે ' ત્રિમાગવજાવસેવઃ તત્રીયાશાવશિષ્ઠસેન્યાન્ મત્તુ અસ્થામા, અવઙ્ગઃ, અર્ધૈર્ધઃ, અસ્થામેત્થાદિ માગ્યાર્યાતમ્ અપુન્યકારપરાક્રમ'—પૌરુષપરાક્રમરહિતઃ, અગ્રાર ણીયઃ—પ્રાણાન્ પારાપિતુમગ્ન', ઇતિ કૃત્વા=ઇતિ વિચાર્ય શીઘ્ર ત્વરિત યત્રૈવા મરુકકા તત્રૈવોપાગન્નતિ, ઉપાગત્ય અમરુકકા રાજધાનીમનુપ્રવિશતિ, અનુપવિશ્ય દ્વારાણિ ' પિહેઈ ' પિથિતે, રોપમઙ્ગ'—દુર્ગ નિગ્મ્ય તિષ્ઠતિ, તતઃ મત્તુ સ કૃષ્ણો

વહુ એકદિશા સે દૂસરી દિશા મેં ભાગ ગયા અથવા ભાગને મેં અસમર્થ થન ગયા । ઇસ કે ઘાટ તૃતીયાશાવશિષ્ઠ સેના ચાલા હોકર વહુ પદ્મ નાભરાજા વલ રહિત હો ગયા, પર્યાસ સૈન્ય રહિત હો ગયા એવ અન્તરિક શક્તિ-ઉત્સાહ હીન હો ગયા । અતઃ વહુ પૌરુષ પરાક્રમ સે રહિત હોને કે કારણ રણભૂમિ મેં ઠહરને કે યોગ્ય નહીં રહ્યા । અથવા પ્રાણોં કો ધારણ કરને મેં મીં અસમર્થ થન ગયા । ઇસલિયે વહુ વહા સે શીઘ્ર વઢી ઉતાવળી સે જહાં અમરુકકો નગરી મીં વહા આ ગયા । ( ઉવાગ ચ્ચિત્તા અમરુકક રાયહાણિ અણુપવિસઙ્, અણુપવિસિત્તા દારાઈ પિહેઈ પિહિત્તા રોહસજ્જે ચિટ્ઠહ, તણ સે કળ્હે વાસુદેવે, જેણેવ અમરુકકા તેણેવ ઉવાગચ્છઙ્ ) વહા આકર વહુ અમરુકકા રાજધાની મેં ગયા । જાકર ઉસને દરવાજોંકો વદ કરવા દિયા । વદ કરવાકર ફિર વહુ અપને દુર્ગ (કિલ્લા) કો રક્ષા કરતા હુઆ વહા ઠહરા । ઇસકે બાદકૃષ્ણવાસુદેવ

ગઈ યાવત્ તે એનાનો ભાગ એક દિશા તરફથી બીજીદિશા તરફ નાશી ગયો અથવા તેા તે નાશી જવામા પણ અસમર્થ થઈ ગયો ત્યારપછી ત્રીજા ભાગ જેટલી સેના જ જેની પાસે રહી છે એવો તે પદ્મનાભ રાજા સાવ નિબળ થઈ ગયો, પર્યાસ સૈન્ય રહિત થઈ ગયો અને આતરિક શક્તિ-ઉત્સાહ રહિત થઈ ગયો તે પૌરુષ પરાક્રમ વગરનો થઈ તે રણભૂમિમા ટકી શકે તેમ પણ રહ્યો નહિ અથવા તેા તે પ્રાણોને ધારણ કરવામા પણ અસમર્થ થઈ ગયો એથી તે સત્વરે જ્યાં અમરુકકા નગરી હતી ત્યાં આવી ગયો

( ઉવાગચ્ચિત્તા અમરુકક રાયહાણિ અણુપવિસઙ્, અણુપવિસિત્તા-દારાઈ પિહેઈ, પિહિત્તા રોહસજ્જે ચિટ્ઠહ, તણ સે કળ્હે વાસુદેવે, જેણેવ અમરુકકા તેણેવ ઉવાગચ્છઙ્ )

ત્યાં આવીને તે અમરુકકા રાજધાનીમા ગયો, ત્યાં જઈને તેણે દરવાજાઓને બંધ કરાવી દીધા બંધ કરાવીને તે ચોતાના દુર્ગની રક્ષા કરતા ત્યાંજ રોકાયો ત્યારપછી કૃષ્ણ-વાસુદેવ જ્યાં તે અમરુકકા નામે ન ' ત્યાં

वासुदेवो यत्रैवामरुद्धा तत्रोपागच्छति, उपागत्य रथं स्थापयति, रथात् प्रत्यत्र रोहति प्रत्यवरुह्य, ' वेउन्विषसमुग्धाएण ' वैक्रियसमुद्घातेन वैक्रियशरीरं निर्मातुं मात्मप्रदेशानां वदित्तिं सारणेन खलु ' समोहणइ ' समुद्घातं करोति समुद्गन्ति एकं महत् ' णरसीहरुव ' नरसिंहरूपं ' विउव्वइ ' विकुर्वते दिव्यसामर्थ्येन करोति विकुर्व्यं महता २ शब्देन ' पाददहरय ' पाददर्दरक=भूमौ चरणाघातं करोति, ततः खलु स कृष्णेन वासुदेवेन महता २ शब्देन पाददर्दरकेण=भूमौ चरणाघातेन कृतेन सता अमरकङ्काराज्यानी ' संभग्गपागारगोपुराट्टालयचरिय तोरणपलहत्थियपवरभवणमिरिधरा ' सम्भग्गपाकारगोपुराट्टालकचरिकातोरणपर्यस्तितपवरभवणश्रीगृहा=तत्र सम्भगानि-पाकारश्च गोपुराणि च अट्टालकाश्च चरिका

जहावह अमरकका श्री वहा गये ( उवा० ) वहा जाकर के ( रह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वेउन्विषसमुग्धाएण समोहणइ ) उन्होंने अपने रथको खड़ा किया-खड़ा करके फिर वे उससे नीचे उतरे । नीचे उतर कर वैक्रिय समुद्घात किया । वैक्रियशरीरको निर्माण करने के लिये जो आत्मप्रदेशों का बाहिर निकालना होना है-उन्को नम वैक्रिय समुद्घात है । ( एग मह णरसिंहरुव विउव्वइ विउव्वित्ता महया २ सदेण पाददहरण कएण समाणेण अमरकका रायहाणी संभग्ग पागारगोपुराट्टालचरियतोरण पलहत्थियपवरभवणसिरिधरा सरस्सरस्स धरणियले सन्निवडया ) इस समुद्घातके द्वारा उन्होंने एक विशाल काय नरसिंहरूप की विकुर्वणा की नरसिंहरूप की विकुर्वणा करके अपनी भयकर गर्जना से भूमि पर चरणों द्वारा आघात किया । इस तरह गर्जना पूर्वक किये गये चरणाघात से अमरकका राज्यानी की

गया ( उवा० ) त्या जेधने ( रह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वेउन्विषसमुग्धाएण समोहणइ ) तेमणे पोताना रथने जिले राख्ये, जिले राखीने तेओ तेमाथी नीचे उतर्या नीचे उतरीने तेमणे वैक्रिय समुद्घात कर्ये वैक्रिय शरीरने जनाववा भाटे जे आत्मप्रदेशोने जेडार डाढवाभा आवे छे ते वैक्रिय समुद्घात कडेवाय छे

( एग मह णरसिंहरुव विउव्वइ, विउव्वित्ता महया २ सदेण पाददहरण कएण समाणेण अमरकका रायहाणी संभग्गपागारगोपुराट्टालयचरियतोरण पलहत्थियपवरभवणसिरिधरा सरस्सरस्स धरणियले सन्निवडया )

आ समुद्धान वडे तेमणे जेक विशाल काय नरसिंह अपनी विकुर्वणा करी नरसिंह अपनी विकुर्वणा करीने पोतानी लयकर गर्जनाथी भूमि उपर थरछोने आघात कर्ये आ रीते गर्जनापूर्वक करायेला थरछाधातथी अमर-

च तोरणानि च यस्यां सा तथा, तत्र गोपुराणि-मतीत्यः अट्टाक्रा-प्राकारो-  
परिस्थान् विशेषाः, चरिका-नगरमागमन्तरऽष्टासोमार्गः । तथा-पर्यमितानि-  
सर्वतः क्षिप्तानि मरमनानि श्रीगृहाणि-भण्डागाराणि कोशगाराणि च यस्यां सा  
तथा, ततो द्विपदः कर्मधारयः । कृष्णवासुदेवन भूमौ चरणाघातशब्देन अमर-  
ककाराजधान्याः मासारगोपुरादिक विनमितमित्यर्थः, तथा-'सरस्सरस्स'  
अनुरणशब्दोऽयम् निपतनक्रियाविशेषण धरणितले सनिपतिता=अमरककां  
राजधानी सरस्सरस्सेति शब्द कृपाणा भूमौ पतितेत्यर्थः । ततः खलु स पद्मनाभो  
राजा अमरककां राजधानीं समग्नप्राकारादिसा यावत्-धरणितले सनिपतिता  
दृष्ट्वा भीतः प्रस्त, उद्धिग्नः, सजातभय, द्रौपद्या देव्या शरणमुपैति प्राप्नोति,  
ततः खलु सा द्रौपदी देवी पद्मनाभ राजानमेवमवादीत्-किं खलु त्व हे देवानु-  
प्रिय ! न जानासि कृष्णस्य वासुदेवस्योत्तमपुरुषस्य विप्रिय कुर्वन् मामिह अत्र

गलियों को अटारियों को, चरिकाओं को, श्री गृहों को कोशगारों को  
श्री कृष्ण ने ध्वस्त कर दिया। तथा वह अमरकका राजधानी भी सरसर  
शब्द करती हुई उस गर्जना पूर्वक क्रिये गये चरणाघात से जमीन पर  
गिर पड़ी। (तएण से पडमणाभे राया, अमरकका रायहाणि समग्न  
जाव पासित्ता, भीए दोवईए देवीए सरण उवेइ) तब पद्मनाभ राजा  
अमरकका राजधानी को प्राकार गोपुर आदि की ध्वस्त अवस्थावाली  
देखकर अत्यन्त भीत हुआ घ्रस्त हुआ, उद्धिग्न हुआ। और सजात  
भय सपन्न होकर द्रौपदी देवी की शरण में पहुँचा। (तएण सा दोवई  
देवी, पडमनाभ राय एव वयासी) तब उस द्रौपदी देवी ने पद्मनाभ  
राजा से इस प्रकार कहा-(किण्ण तुम देवाणुप्पिया ! न जानासि कण्ह

कका राजधानीनी शेरीओने, अगगीओने चरिकाओने, श्रीगृहोने, कोश  
गारोने श्रीकृष्णे नष्ट उरी नाभ्या तेमज्जे ते अमरकका राजधानी पथु स सर  
शब्द करती गर्जनापूर्वक करवाभा आवेला चरणाघातथी जमीनहोस्त थर्ध गर्ध

(तएण से पडमणाभे राया, अमरकका रायहाणि समग्न जाव पासित्ता,  
भीए दोवईए देवीए सरण उवेइ)

पद्मनाभ राजा अमरकका राजधानीता प्राकार, गोपुर वगेरेने विनाश  
लेधने भूजज्ज लयलीत थर्ध गये, प्रस्त थर्ध गये। तेमज्ज उद्धिग्न थर्ध गये।  
अने समतलय सपन्न थधने द्रौपदी देवीनी शरणे पडोये। (तएण सा  
दोवई देवी पडमनाभ राय एव वयासी) त्यारे ते द्रौपदी देवीओ पद्मनाभ  
राजाने आ प्रमाणे कहुं के-

हव्य-शीघ्रम् आनयमि-आनीतवानसि तत्-तस्मात्-‘ एवमपि गए ’ एवमपि गते-इत्थंममापहरणे कृतेऽपि, गच्छ खलु त्व हे देवानुप्रिय ! स्नातः ‘ उल्लपड-साडए ’ आर्द्रपट्टसाटकः स्नानेनाऽऽर्द्रकृतोत्तरीयपरिधानवस्त्रगारी ‘ अवचूलग-वत्यणियत्ये ’ अवचूलकवस्त्रणियत्यः=अवचूलकम्-अयोमुग्य नीचैर्लम्पमान चूल-वस्त्राञ्चल-वस्त्रप्राप्त यथा भवति तथा ‘ णियत्ये ’ परिहित वस्त्र येन स तथा-स्त्रीणा परिवानमिव चरणपर्यन्तलम्पितवस्त्रान्त यथास्यात्तथा परिहितवस्त्र इत्यर्थः । ‘ अतेउरपरियालसपरिवुडे ’ अन्त पुरपरिवारमपरिवृतः=स्त्री परिवारेण सहितः, ‘ अग्गाइ ’ अग्र्याणि वराणि रत्नानि गृहीत्वा मा पुरतः ‘ काउ ’ कृत्वा कृष्ण

स्स वा सुदेवस्स उत्तमपुरिसस्म विप्पि व करेमाणे मम इह हव्वमाणेसि ) हे देवानुप्रिय ! क्या तुम उत्तम पुण्य कृष्णवासुदेव को नहीं जानते हो जो उनको अनिष्ट कर तुम मुझे यहां ले आये हो । ( त एव-मविगए गच्छहण तुम देवानुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए अव-चूलगवत्यणियत्ये अतेउरपरियालसपरिवुडे, अग्गाइ वराइ रयणाइ गहाय, मम पुरओ, काउ कण्ह वासुदेव करयलपायपडिए सरण उवेहि ) खैर अय इस घात को जाने दो-हे देवानुप्रिय ! तुम स्नान करो, और गीले वस्त्र पहिने हुए ही श्री कृष्णवासुदेव की शरण में जाओ । जाते समय तुम स्त्रियों के परिवान के समान चरण पर्यन्त लटकते हुए वस्त्र पहिनकर जाना । अकेले मत जाना किन्तु अपने अंत पुर की समस्त स्त्रियों को साथ में ले जाना । रीते हाथ भी मत जाना किन्तु भेट निमित्त वेश कीमती रत्नों को लेकर और मुझे आगे करके चलना ।

( णिण्ण तुम देवाणुप्पिया ! न जाणासि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पिय करेमाणे मम इह हव्वमाणेसि )

हे देवानुप्रिय ! शु तमे उत्तम पुण्य कृष्ण-वासुदेवने ओणधता नथी भने अर्द्धी लावीने तमे तेमनु न अनिष्ट कथुं छे

( त एवमविगए गच्छहण तुम देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए अव-चूलगवत्यणियत्ये अतेउरपरियालसपरिवुडे अग्गाइ वराइ रयणाइ गहाय, मम पुरतो, काउ कण्ह वासुदेव करयलपायपडिए सरण उवेहि )

भेर, छोडा ओ वातने हे देवानुप्रिय ! तमे छवे स्नान करे। अने भीना वस्त्रोथी न श्रीकृष्ण वासुदेवनी शरणमा न्हाओ। नती वधते तमे श्रीओना परिधान ( अस्त्रिया ) नी नेमन पग सुधी लटकता वस्त्रो पडेरने तमे ओकला नता नडि परतु रघुवासनी नधी ओओने साये लधने नने तमे भाली हाये तेमनी पाये नता नडि पणु कर्छि सेट स्वयं किमती वस्त्रोने लधने



વાસુદેવ ' કરચલપાયપટિળ ' કરતલપાદપતિઃ-સંયોજિતકરતચ્છવઃ, પાદયોઃ  
પતિતઃ મન્ ગણ ઉપૈદિ-પ્રાયમ્મમામિતિયદ્ શર ઉપગતો મયેત્યર્થઃ । દે દેવાનુ  
પ્રિય ! ' પણિયડયચ્છલા ' પ્રણિવૃત્તિતત્સમઃ-ચાગોપગિનિવૃત્તિતાનો વત્સલાઃ  
સ્નેહાન્તે સ્વલુ ઉત્તમપુરુષા મયન્તિ મળામમાગેણ મહાપુરુષાઃ પ્રમીદન્તીત્યર્થઃ ।  
તતસ્તદનન્તર મ મગ્નનામો રાજા દ્રૌપદ્યા દ-પા એતમર્થ=ઉક્તકથનરૂપમર્થ પ્રતિ-  
શ્રુગોતિ-મ્મીકમેતિ, પ્રતિશ્રુત્ય સ્નાતો યાવત્ શરણમુપૈતિ દ્રૌપદીવચનમનુસૃત્ય  
પદ્મનાભો રાજા કૃષ્ણવાસુદેવમ્પ શરણમુપગમ્ય ઇત્યર્થઃ । ઉપેત્ય કરતલપરિગૃહીત  
દશનખ ગિર આરતે મમ્નકેઽઞ્જિ ક્ર યા પર=૧.૫માગપ્રકારેણ, આદીટ=દૃષ્ટા

ઘટ્ટા પહુંચ કર તુમ દોનો હાથ જોડ કર ઉનકે ચરણો મેં ગિર જાના  
( પણિયડયચ્છલા ણ દેવાણુપ્પિયા ઉત્તમપુરિસા તણ્ણ સે પડમનામે  
દોવઈણ દેવીણ ઇયમટ્ટ પહિસુણેહ, પહિસુણિત્તા ણ્ઢાણ જાવ સરણ ઉવેહ,  
ઉવિત્તા, કરચલ૦ણ્ણ વયાસી દિટ્ઠાણ દેવાણુપ્પિયાણ ઇહી, જાવ પરવકમે  
ત સ્વામેમિ ણ દેવાણુપ્પિયા । ) હે દેવાણુપ્રિય ! ઉત્તમ પુરુષ જો હુઆ  
કરતે હું વે પ્રણિવૃત્તિતત્સલ હુઆ કરતે હું-પ્રણામમાત્રસે મહાપુરુષ પ્રસન્ન  
હો જાયા કરતે હું-અર્થાત્ નમન કરનેવાલેકો વે નહીં મારતે તથ પદ્મનાભ  
રાજાને દ્રૌપદી દેવીકે હસ શિક્ષાપ્રદ કથનરૂપ અર્ચકો સ્વીકાર કર લિયા ।  
સ્વીકાર કર બાદમેં ઉસને સ્નાન ક્રિયા, યાવત્ વહ દ્રૌપદીકે કહે અનુસાર  
કૃષ્ણવાસુદેવ કી શરણમેં પહુચ ગયા । શરણ મેં પહુંચ કર ઉસને અપને  
દોનો હાથો કો જોડકર અજલિ પનાઈ ઓર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરકે  
ઉસે શિરપર રગ્વા । ફિર હસ પ્રકાર બોલા-આપ દેવાણુપ્રિયકી મેંને ઋદ્ધિ

તેમજ મને આગળ રાખીને ચાલજો ત્યા પહોચીને તમે બંને હાથ જોડીને  
તેમના પગે પડજો

( પણિયડય ચ્છલાણ દેવાણુપ્પિયા ઉત્તમપુરિસા, તણ્ણ સે પડમનામે દોવઈ  
દેવીણ ઇયમટ્ટ પહિસુણેહ, પહિસુણિત્તા ણ્ઢાણ જાવ સરણ ઉવેહ, ઉવિત્તા કરચલ૦  
ણ વયાસી, દિટ્ઠા ણ દેવાણુપ્પિયાણ ઇહી જાવ પરવકમે ત સ્વામેમિ ણ દેવાણુપ્પિયા )

હે દેવાણુપ્રિય ! ઉત્તમ પુરુષો તેમની સામે વિનમ્ર થયેલા માણસો પ્રત્યે  
એકદમ વત્સલ થઈ જાય છે કેટલા નમસ્કાર કરવાથીજ તેઓ પ્રસન્ન થઈ જાય  
છે આ બધું સાલળીને પદ્મનાભ રાજાએ દ્રૌપદીના આ શિક્ષાપ્રદ કથન રૂપ  
અર્થને સ્વીકારી લીધો સ્વીકાર કરીને તેણે સ્નાન કર્યું યાવત્ તે દ્રૌપદીના  
કથા સુજળ જ કૃષ્ણ-વાસુદેવની શરણુમાં ગયો શરણુમાં જઈને તેણે પોતાના  
બંને હાથ જોડીને અજલિ બનાવી અને આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ  
ઉપર મૂકી અને ત્યારબાદ તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો

સ્વલુ દેવાનુપ્રિયાણામ્ ઋદ્ધિર્ચાગત્ પરાક્રમઃ-તત્=તસ્માત્ ક્ષમયામિ સ્વલુ હે દેવા-  
નુપ્રિયાઃ ! યાવત્ ક્ષમન્તુ સ્વલુ યાવત્ નાહ ભૂયો ભૂયઃ એવ કરણતયા=પુનરેવ  
ન રરિપ્યામિ, ઇતિ કૃત્વા-ઇત્યુવત્વા-‘ પજલિવુડે ’ પ્રાઙ્ગલિપુટ-સયોજિત-  
કારતલદ્વયઃ પાદપતિતેઃ કૃષ્ણસ્ય વાસુદેવસ્ય દ્રૌપદીં ‘ સાહત્થિ ’ સ્પહસ્તેન, ઉપ-  
નયતિ । તતઃ રાલુ સ કૃષ્ણો વાસુદેવ પદ્મનાભમેવમનાદીત્-હ ભોઃ ! પદ્મનાભ !  
અપ્રાર્થિતપ્રાર્થિત !-હે મરણવાઝઠક ! ૪ કિં સ્વલુ ત્વ ન જાનાસિ મમ ભગિનીં  
દ્રૌપદી દેવીમિહહવ્યમાનયન્, ‘ ત ’ તત્-તસ્માત્ ‘ એવમપિ ગણ ’ એવમપિગતે  
અનેનપ્રસારેણ શરણ પ્રાપ્તે સતિ, નાસ્તિ તે તવ મદ્ભયમિદાનીમિતિ કૃત્વા પ્રતિ  
વિસર્જયતિ । પ્રતિપિસૃજ્ય દ્રૌપદીં દેવીં ગૃહ્ણતિ, ગૃહીત્વા રથ દૂરોઢતિ=આરોહયતિ

દેવલી, યાવત્ પરાક્રમ દેવ્ય લિયા । હે દેવાનુપ્રિય ! મે અપને અપરાધ  
કી ક્ષમા માંગતા છું । ( જાવ સ્વમતુ ) યાવત્ આપ મુજે ક્ષમા દે । ( જ  
જાવ ણા હ મુજો ૨ એવ કરણાણ ) અવ મે પુનઃ એમા નહીં કરુગા ।  
( ત્તિ કદ્દુ પજલિવુડે પાયવડિણ કણહસ્સ વાસુદેવસ્સ દોવડ દેવિં સા  
હત્થિ ઉવણેહ ) હસ પ્રકાર કહકર વહ દોનોં હાથ જોડ ઉન કૃષ્ણવા-  
સુદેવ કે પૈરોં પર ગિર પડા ઓર અપને હાથ સે હી ઉસને ફિર ઉનકે  
લિયે દ્રૌપદી સૌ પદી । ( તણ સે કણે વાસુદેવે પડમણાભ એવ વયાસી  
-હ ભો ! પડમણાભા ! અપત્થિયપત્થિયા ૪ કિણ્ણ તુમ ણ જાણાસિ  
મમ ભગિણિ દોવડ દેવિં હહ હવ્વ માણમાણે ત એવમવિગણ, ણત્થિ તે  
મમાર્હિતો ડયાણિં મયમત્થિ ત્તિ કદ્દુ પડમણાભ પડિવિસજ્જેહ, પડિ  
વિસજ્જિત્તા દોવડ દેવિં ગિણ્ણહ, ગિણ્ણિત્તા રહ દુરુહેહ, દુરુહિત્તા જેણેવ

મે ઋદ્ધિ ભેદ લીધી છે, યાવત્ તમાર પરાક્રમ પણ મે ભેદ લીધુ છે હે  
દેવાનુપ્રિય ! હુ મારા અપરાધ બદલ ક્ષમા માગુ છુ ( જાવ સ્વમતુ ) યાવત્  
તમે મને ક્ષમા કરો । ( જ જાવ ણાહ મુજો ૨ એવ કરણાણ ) હવે ફરી હુ  
આવુ કદાપિ નહિ કર ( ત્તિ કદ્દુ પજલિવુડે પાયવડિણ કણહસ્સ વાસુદેવસ  
દોવડ દેવિ સાહત્થિ ઉવણેહ ) આ પ્રમાણે કહીને તે બને હાથ ભેડીને  
કૃષ્ણ-વાસુદેવના પગેમા આજોટી ગયો અને ત્યારપછી તેણે પોતાના હાથથીજ  
દ્રૌપદી તેમને સોંપી દેધી

( તણ સે કણે વાસુદેવે પડમણાભ એવ વયાસી-હ ભો ! પડમણાભા !  
અપત્થિયપત્થિયા ૪ કિણ્ણ તુમ ણ જાણાસિ મમ ભગિણિં દોવડ દેવિં હહ, હવ્વ  
માણમાણે ત એવમપિ ગણ, ણત્થિ તે મમાર્હિતો ડયાણિં મયમત્થિ ત્તિકદ્દુ પડમ-  
ણાભ પડિવિસજ્જેહ પડિવિસજ્જિત્તા દોવડ દેવિં ગિણ્ણહ, ગિણ્ણિત્તા રહ દુરુહેહ,

वहा पहुँच कर तुम दोनों हाथ जोड़ कर उनके चरणों में गिर जाना  
 ( पणिउडयउच्छला ण देवानुप्पिया उत्तमपुरिमा तण्ण से पडमनाभे  
 दोउईण देवीण एयमहु पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता पहाण जाउ मरण उवेइ,  
 उवित्ता, करमल ० णववयासी दिट्ठाण देवानुप्पियाण इड्डी, जाउ परक्कमे  
 त स्वामेमि ण देवानुप्पिया । ) हे देवानुप्रिय ! उत्तम पुरुष जो हुआ  
 करते हैं वे प्रणि रतितवत्सल हुआ करते हैं—प्रणाममात्रसे महापुरुष प्रमत्त  
 हो जाया करते हैं—अर्थात् नमन करनेवालेको वे नहीं मारते तब पद्मनाभ  
 राजाने द्रौपदी देवीके इस शिक्षाप्रद कथनरूप अर्थको स्वीकार कर लिया ।  
 स्वीकार कर बादमें उसने स्नान किया, यावत् वह द्रौपदीके ऊँहें अनुसार  
 कृष्णवासुदेव की शरणमें पहुँच गया । शरण में पहुँच कर उसने अपने  
 दोनों हाथों को जोड़कर अजलि बनाई और आदक्षिण पदक्षिण करके  
 उसे शिरपर रखा । फिर इस प्रकार बोला—आप देवानुप्रियकी मैंने ऋद्धि

( पणिउइय वरुउलाण देवाणुप्पिा उत्तमपुरिसा, तएण से पउमनाभे दोवइए देवीए एयमद्व पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता ण्हाए जाव सरण उवेइ, उवित्ता करयळ० एय वयासी,दिट्ठा ण देवाणुप्पियाण इट्ठी जाय परवक्रमे त खामेमि ण देवाणुप्पिया!)

હું દેવાનુપ્રિય । ઉત્તમ પુરૂષો તેમની સામે વિનમ્ર થયેલા માણસો પ્રત્યે એકદમ વતસલ થઈ જાય છે કેન્દ્ર નમસ્કાર કરવાથીજ તેઓ પ્રસન્ન થઈ જાય છે આ બધું સાલજીને પદ્મનાભ રાજાએ દ્રૌપદીના આ શિક્ષાપદ કથન રૂપ અર્થને સ્વીકારી લીધો સ્વીકાર કરીને તેણે સ્નાન કર્યું યાવત્ તે દ્રૌપદીના કહ્યા મુજબ જ કૃષ્ણ-વાસુદેવની શરણુમા ગયો શરણુમા જઈને તેણે પોતાના બંને હાથ જોડીને અજલિ બનાવી અને આદક્ષિણુ પ્રદક્ષિણુ કરી ઉપર મૂકી અને ત્યારબાદ તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો

સહ દેવાનુપ્રિયાણામ્ ઋદ્ધિર્ચાગત્ પરાક્રમઃ-તત્=તસ્માત્ ક્ષમયામિ શ્વલુ હે દેવા  
નુપ્રિયાઃ । યાવત્ ક્ષમન્તુ શ્વલુ યાવત્ નાહ ભૂયો ભૂયઃ એવ કરણતયા=પુનરેવ  
ન કરિષ્યામિ, ઇતિ કૃત્વા-ઇત્યુક્ત્વા-‘ પજલિબુદે ’ પ્રાજ્ઞલિપુટ-સયોજિત-  
કરતલદ્વયઃ પાદપતિતેઃ કૃષ્ણસ્ય વાસુદેવસ્ય દ્રૌપદીં ‘ સાહત્થિ ’ સ્પહસ્તેન, ઉપ-  
નયતિ । તતઃ શ્વલુ સ કૃષ્ણો વાસુદેવ પદ્મનાભમેવમનાદીત્-હ ભોઃ । પદ્મનાભ ।  
અપ્રાર્થિતપ્રાર્થિત ! =હે મરણવાઝઝક ! ૪ કિં શ્વલુ ત્વ ન જાનાસિ મમ મગિનીં  
દ્રૌપદીં દેવીમિદ્દહ્યમાનયન્, ‘ ત ’ તત્-તસ્માત્ ‘ એવમપિ ગણ ’ એવમપિગતે  
અનેનપ્રસારેણ શરણ પ્રાપ્તે સતિ, નાસ્તિ તે તવ મદ્ધ્યમિદાનીમિતિ કૃત્વા પ્રતિ  
વિસર્જયતિ । પ્રતિવિસૃજ્ય દ્રૌપદીં દેવીં ગૃહ્ણતિ, ગૃહીત્વા રથ દૂરોઽસ્તિ=આરોહયતિ

દેવલી, યાવત્ પરાક્રમ દેવ લિયા । હે દેવાનુપ્રિય ! મેં અપને અપરાધ  
કી ક્ષમા માંગતા છું । ( જાવ શ્વલુ ) યાવત્ આપ મુજે ક્ષમા દે । ( જ  
જાવ ણા હ મુજો ૨ એવ કરણાણ ) અવ મેં પુનઃ એસા નહીં કરુના ।  
( ત્તિ કદ્દુ પજલિબુદે પાયવડિણ કણ્ઠસ્સ વાસુદેવસ્સ દોવડ દેવિં સા  
હત્થિ ઉવણેહ ) હસ પ્રકાર કહકર વહ દોનોં હાથ જોડે ઉન કૃષ્ણવા  
સુદેવ કે પેરોં પર ગિર પડા ઓર અપને હાથ સે હી ઉસને ફિર ઉનકે  
લિયે દ્રૌપદી સૌ પદી । ( તણ સે કણ્ઠે વાસુદેવે પડમણાભ એવ વચાસી  
-હ ભો ! પડમણામા ! અપત્તિયપત્તિયા ૪ કિણ્ણ તુમ ણ જાણાસિ  
મમ મગિણિ દોવડ દેવિં હહ હવ્વ માણમાણે ત એવમવિગણ, ણત્થિ તે  
મમાર્હિતો ઇયાણિં મયમત્થિ ત્તિ કદ્દુ પડમણાભ પડિવિસજ્જેહ, પડિ  
વિસજ્જિત્તા દોવડ દેવિં ગિણ્ઠહ, ગિણિત્તા રહ દુરુહેહ, દુરુહિત્તા જેણેવ

મેં ઋદ્ધિ નેધ લીધી છે, યાવત્ તમારૂં પરાક્રમ પણ મેં નેધ લીધું છે હે  
દેવાનુપ્રિય ! હું મારા અપરાધ બદલ ક્ષમા માગુ છું ( જાવ શ્વલુ ) યાવત્  
તમે મને ક્ષમા કરો ( જ જાવ ણાહ મુજો ૨ એવ કરણાણ ) હવે શ્રી હું  
આવું હદાપિ નહિ કર ( ત્તિ કદ્દુ પજલિબુદે પાયવડિણ કણ્ઠસ્સ વાસુદેવસ  
દોવડ દેવિં સાહત્થિ ઉવણેહ ) આ પ્રમાણે કહીને તે બંને હાથ બેડીને  
કૃષ્ણ-વાસુદેવના પગોમા આળોટી ગયો અને ત્યારપછી તેણે પોતાના હાથથીજ  
દ્રૌપદી તેમને ઓપી દેધી

( તણ સે કણ્ઠે વાસુદેવે પડમણાભ એવ વચાસી-હ ભો ! પડમણામા !  
અપત્તિયપત્તિયા ૪ કિણ્ણ તુમ ણ જાણાસિ મમ મગિણિં દોવડ દેવિં હહ, હવ્વ  
માણમાણે ત એવમપિ ગણ, ણત્થિ તે મમાર્હિતો ઇયાણિં મયમત્થિ ત્તિ કદ્દુ પડમ-  
ણાભ પડિવિસજ્જેહ પડિવિસજ્જિત્તા દોવડ દેવિં ગિણ્ઠહ, ગિણિત્તા રહ દુરુહેહ,  
૬૭

વાસુદેવ 'કરચલપાયપટિપ' કરતરૂપાદપતિઃ-મયોજિતકરતરૂપઃ, પાદયો:  
પતિતઃ મનુશરણ ઉપૈદિ-ત્રાયસ્વમામિતિપદન ઉપગતો મયેત્યર્થઃ । હે દેવાનુ  
પ્રિય । 'પણિપદયચ્છલા' પ્રણિપતિતવત્સલ-ચળોપરિવિપતિતાના વત્સલા:  
સ્નેહાત સ્વત્તુ ઉત્તમપુરુષા મયતિ પ્રણામમાગ્રેણ મહાપુરુષા પ્રસીદન્તીત્યર્થઃ ।  
તતસ્તદનન્તર મ પ્રવ્રજનામો રાજા દ્રૌપદ્યા દેવ્યા ધર્માર્થ=ઉત્તમુચ્ચનન્પમર્થ પતિ-  
શ્રુગોતિ-સ્ત્રીક્રોતિ, પ્રતિશ્રુત્ય સ્નાતો યાવત્ શરણમુપૈતિ દ્રૌપદીયમનમનુશ્રુત્ય  
પદ્મનામો રાજા કૃષ્ણમસુદમસ્ય શરણમુપગત ઇત્યર્થઃ । ઉપૈત્ય કરતરૂપરિગૃહીત  
દશનવ ગિર આરતે મમ્નકેઽઙ્ગઠિ કૃ યા ધર્માર્થ=વિમાગપ્રકારેણ, અગાદીદ્=દૃઢા

વહા પહુંચ કર તુમ દોનોં હાથ જોડ કર અનેકે ચરણોં મેં ગિર જાના  
(પણિપદયચ્છલા ણ દેવાણુપ્પિયા ઉત્તમપુરિસા તણ્ણ સે પડમનામે  
દોવરૂં દેવીં ણ યમદ્ધ પડિસુણેદ્, પડિસુણિત્તા ણ્હાં જાવ સરણ ઉવેદ્,  
ઉવિત્તા, કરચલં ણ ચયાસી દિટ્ઠા ણ દેવાણુપ્પિયા ણ દ્ઢી, જાવ પરવકમે  
ત સ્વામેમિ ણ દેવાણુપ્પિયા । ) હે દેવાણુપ્રિય ! ઉત્તમ પુરુષ જો હુઆ  
કરતે હેં વે પ્રણિવૃત્તિતવત્સલ હુઆ કરતે હેં-પ્રણામમાત્રસે મહાપુરુષ પ્રમદ્ધ  
હો જાયા કરતે હેં-અર્થાત્ નમન કરનેવાલેકો વે નહીં મારતે તથ પદ્મનામ  
રાજાને દ્રૌપદી દેવીકે હસ શિક્ષાપ્રદ કથનરૂપ અર્થકો સ્વીકાર કર લિયા ।  
સ્વીકાર કર વાદમેં ઉસને સ્નાન ક્રિયા, યાવત્ વહ દ્રૌપદીકે કહે અનુસાર  
કૃષ્ણવાસુદેવ કી શરણમેં પહુંચ ગયા । શરણ મેં પહુંચ કર ઉસને અપને  
દોનોં હાથો કો જોડકર અજલિ ઘનાઈ ઓર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરકે  
ઉસે શિરપર રખા । ફિર હસ પ્રકાર બોલા-આપ દેવાણુપ્રિયકી મેંને શ્રદ્ધિ

તેમજ મને આગળ રાખીને ચાલજો ત્યા પહોચીને તમે બને હાથ બેડીને  
તેમના પગે પડજો

(પણિપદયચ્છલા ણ દેવાણુપ્પિયા ઉત્તમપુરિસા, તણ્ણ સે પડમનામે દોવરૂં  
દેવીં ણ યમદ્ધ પડિસુણેદ્, પડિસુણિત્તા ણ્હાં જાવ સરણ ઉવેદ્, ઉવિત્તા કરચલં  
ણ ચયાસી, દિટ્ઠા ણ દેવાણુપ્પિયા ણ દ્ઢી જાવ પરવકમે ત સ્વામેમિ ણ દેવાણુપ્પિયા ।)

હે દેવાણુપ્રિય ! ઉત્તમ પુરુષો તેમની સામે વિનમ્ર થયેલા માણસો પ્રત્યે  
એકદમ વત્સલ થઈ જાય છે કૃત નમસ્કાર કરવાથીજ તેઓ પ્રસન્ન થઈ જાય  
છે આ બધું સાલળીને પદ્મનાભ રાજાએ દ્રૌપદીના આ શિક્ષાપ્રદ કથન રૂપ  
અર્થને સ્વીકારી લીધો સ્વીકાર કરીને તેણે સ્નાન કર્યું યાવત્ તે દ્રૌપદીના  
કહ્યા મુજબ જ કૃષ્ણ-વાસુદેવની શરણુમાં ગયો શરણુમાં જઈને તેણે પોતાના  
બંને હાથ બેડીને અજલિ ઘનાવી અને આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરીને તમાથા  
ઉપર મૂકી અને ત્યારબાદ તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો કે



मूलम्-तेणं कालेण तेणं समएणं धायइसडे दीवे पुरत्थि-  
मिछे भारहे वासे चंपाणामं णयरी होत्था, पुण्णभदे चेइए, तत्थ  
णं चंपाए नयरीए कविले णामं वासुदेवे राया होत्था, महिया  
हिमवंत० वण्णओ, तेण कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए  
अरहा चंपाए पुण्णभदे समोसडे, कपिले वासुदेवे धम्म सुणेइ  
तएण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहओ धम्म सुणे-  
माणे कण्हस्स वासुदेवस्स सखसहं सुणेइ, तएण तस्स कवि-  
लस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था - किं  
मण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे ?  
जस्स ण अय संखसहे ममपिव मुहवायपूरिए वीय भवइ, तएण  
मुणिसुव्वए अरहा कविल वासुदेवं एवं वयासी-से णूण ते  
कविला वासुदेवा । मम अत्थिए धम्म णिसामेमाणस्स सखसह  
आकण्णिता इमेयारूवे अज्झत्थिए कि मन्ने जाव वीय भवइ, से  
णूण कविला वासुदेवा । अयमट्ठे समट्ठे ? हता । अत्थि, नो  
कविला । एव भूय वाइ जन्न एगे खेत्ते एगे जुगे समए दुवे  
अरहता वा चक्कवट्ठी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा उप्पज्जिसु  
उप्पज्जित्ति उप्पज्जिजस्सति वा, एव खलु वासुदेवा । जबूदीवाओ  
भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ पंडुस्स रण्णो पुव्व-

धीच हो जहा जबूदीप नाम का द्वीप, जहा भरतक्षेत्र नाम का क्षेत्र था  
उस ओर चल दिये ॥ सू० २९ ॥

रथोने लधने लवणु समुद्रनी वन्थे थधने न्या ज पूदीप नामे द्वीप, अने  
तेमा पणु न्या लारतवर्ष नामे क्षेत्र छतु ते तरइ रवाना थया ॥ सूत्र २९ ॥

आसीत यज्ञे पञ्च पाण्डवास्तर्जोरोपाम इति, उपागम्य पञ्चानां पाण्डवानां द्रौपदीं  
देवीं 'साहस्यि' स्वहस्तेन, उपनयति=इति । ततः सप्तमं कृष्णः पञ्चमि-  
पाण्डवे मार्धवात्मनः पद्मभीरुर्गैर्लग्नमुद्रम्य मयमयेन यज्ञेन जम्बूद्वीपो  
द्वीपः, यज्ञेन भारतं वर्षं तत्रैव मापागम्य गमनाय=गन्तुं प्रवृत्तः ॥ मृ० २९॥

पञ्च पद्वये तेणेव उवागच्छद्, उवागच्छित्ता पचण्ड पडवाण दोवइ देवि  
साहस्यि उपणेइ ) तस्य कृष्णवासुदेव ने पद्मनाभ से इस प्रकार कहा  
अरे ओ पद्मनाभ ! तुम इस तरह से अकाल में ही मरण के अभिलाषी  
क्यों बने ? क्या तुझे यह पता नहीं था कि द्रौपदी मेरी बहिन है । क्यों तू  
इस को यहाँ ले आया । फिर-जब तू इस रूप में मेरी शरण में आ चुका  
है-तो अब तुझे किसी भी प्रकार का मेरी तरफ से भय नहीं रहा-ऐसा  
कहकर कृष्णवासुदेव ने उसे विसर्जित कर दिया-अपने स्थान पर उसे  
जाने की आज्ञा दे दी-। घाट में द्रौपदी को साथ में लिया और लेकर वे  
रथ पर आरुढ़ हुए । आरुढ़ होकर फिर वे, यहाँ आये-जहाँ पाँचों  
पाण्डव थे वहाँ आकर उन्होंने द्रौपदी को अपने हाथों से पाँचों पाण्डवों  
के सुपुर्द कर दिया । ( तत्रण कण्ठे पचेहिं पटवेहिं सद्धि अप्पड्डे छहिं  
रहेहिं लवणसमुद्द मज्झ मज्जेण जेणेव जम्बूद्वीवे दीवे जेणेव भारहे  
वासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ) इसके बाद वे कृष्णवासुदेव पाँचों  
के साथ आत्मपट्ट होकर उही रथों को ले लवण समुद्र से बीचों

५ पडवे तेणेव उवागच्छद् उवागच्छित्ता पचण्ड पडवाण दोवइ

)

મહેવે પદ્મનાભને આ પ્રમાણે કહ્યું કે અરે ઓ ! પદ્મનાભ !

મયમા જ મરણના અભિલાષી કેમ બની ગયા છો, શું

કે દ્રૌપદી મારી બહેન છે તુ એને અહીં શા માટે લઈ

ારે આ સ્થિતિમા મારી પાસે આવ્યો છે તો હવે તારે

જાતનો ભય રાખવો જોઈએ નહિ આમ કહીને કૃષ્ણ

ે ત્યારપછી દ્રૌપદીને સાથે લઈને તેઓ રથ ઉપર

તેઓ જ્યાં પાંચે પડવો હતા ત્યાં આવ્યા ત્યાં

ની દ્રૌપદીને પાંચે પાડવોને સોપી દીધી

ે સદ્ધિ અપ્પ હદ્દે છહિં રહેહિં લવણસમુદ્ર

જેણેવ ભારહેવાસે તેણેવ પહારેત્થ ગમણાए )

ે પાડવોની સાથે આત્મ પટ્ટ લઈને હશે

मूलम्-तेणं कालेण तेणं समएण धायइसंडे दीवे पुरत्थि-  
मिद्धे भारहे वासे चंपाणामं णयरी होत्था, पुण्णभदे चेइए, तत्थ  
णं चपाए नयरीए कविले णामं वासुदेवे राया होत्था, महिया  
हिमवंतं वण्णओ, तेण कालेण तेण समएण मुणिसुव्वए  
अरहा चपाए पुण्णभदे समोसढे, कपिले वासुदेवे धम्म सुणेइ  
तएणं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहओ धम्म सुणे-  
माणे कण्हस्स वासुदेवस्स सखसहं सुणेइ, तएण तस्स कवि-  
लस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था - किं  
मण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे ?  
जस्स णं अय संखसहे ममंपिव मुहवायपूरिए वीयं भवइ, तएणं  
मुणिसुव्वए अरहा कविल वासुदेवं एव वयासी-से णूण ते  
कविला वासुदेवा । मम अत्थिए धम्म णिसामेमाणस्स सखसह  
आकणित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए किं मन्ने जाव वीयं भवइ, से  
णूणं कविला वासुदेवा । अयमट्ठे समट्ठे ? हता । अत्थि, नो  
कविला । एव भूय वाइ जन्न एगे खेत्ते एगे जुगे समए दुवे  
अरहता वा चक्कवट्ठी वा वलदेवा वा वासुदेवा वा उप्पज्जिसु  
उप्पज्जित्ति उप्पज्जिजस्सति वा, एवं खलु वासुदेवा । जवूदीवाओ  
भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ पडुस्स रण्णो पुव्व-

वीच हो जहा जवूद्वीप नाम का द्वीप, जहा भरतक्षेत्र नाम का क्षेत्र था  
उस ओर चल दिये ॥ सू० २९ ॥

रथाने लज्जे लवणु समुद्रनी वन्धे थर्धने न्या जवूद्वीप नामे द्वीप, अने  
तेमा पणु न्या लारतवर्ध नामे क्षेत्र छुत्तु ते तरइ रवाना थया ॥ सूत्र २६ ॥

આરોગ યત્રૈવ પશ્ચ પાણ્ડ્યાસ્તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય પશ્ચાન્નાં પાંડુનાનાં દ્રૌપદીં  
 દેવીં ' સાહર્તિથ ' સ્પદસ્તેન, ઉપનયતિ=દદાતિ । તતઃ ચતુ સ કૃષ્ણ પશ્ચમિ  
 પાણ્ડૈર્માર્ધમાત્મપથ પદ્મભીરયૈર્લવણસમુદ્રમ્ય મધ્યમધ્યેન યત્રૈવ જમ્બૂદ્વીપો  
 દ્વીપઃ, યત્રૈવ ભારત વર્ષ તત્રૈવ પ્રાધારયદ્ ગમનાય=ગતુ મટતઃ ॥ મૃ૦૨૯॥

પંચ પદ્મવે તેણેવ ઉવાગચ્છડ, ઉવાગચ્છિત્તા પચળ પદ્મવાળ દોવડ દેવિ  
 સાહર્તિથ ઉવણેઢ ) તથ કૃષ્ણવાસુદેવ ને પદ્મનાભ સે ઢસ પ્રકાર કહા  
 અરે ઓ પદ્મનાભ ! તુમ ઢસ તરફ સે અકાલ મેં હી મરણ કે અભિલાષી  
 વયો વને ડમ્પાતુજ્ઞે યદ પતા નહી થા કિ દ્રૌપદી મેરી યજ્ઞિન હૈ । ક્યોં ત  
 ઢસ કો યર્હા હે આયા ! સૈર-જય ત્ત ઢસ રૂપ મેં મેરી જારણ મેં આચુકા  
 હૈ-તો અથ તુજ્ઞે કિસી ખી પ્રકાર કા મેરી તરફ સે મય નહી રહા-એસા  
 કહકર કૃષ્ણવાસુદેવ ને ઉસે વિસર્જિત કર દિયા-અપને સ્થાન પર ઉસે  
 જાને કી આજ્ઞા દેદી-। ઘાદ મેં દ્રૌપદી કો સાંચ મેં લિયા ઓર લેકર વે  
 રથ પર આરૂઢ હુળ । આરૂઢ હોકર ફિર વે, વર્હા આયે-જહાં પાંચો  
 પાંડવ થે વહા આકર ઉન્હોં ને દ્રૌપદી કો અપને હાથોં સે પાંચો પાંડવો  
 કે સુપુર્વ કર દિયા । ( તણ્ણ કળ્હે પચેર્હિ પડવેર્હિ સદ્ધિ અપ્પછદ્ધે છર્હિ  
 રહેર્હિ લવણસમુદ્ધ મજ્ઞ મજ્ઞેણ જેણેવ જમ્બૂદીવે દીવે જેણેવ ભારહે  
 વાસે તેણેવ પહારેત્થ ગમણાણ ) ઢસકે યાદ વે કૃષ્ણવાસુદેવ પાંચો  
 પાંડવોં કે સાંચ આત્મપથ્થ હોકર છહો રથોં કો હે લવણ સમુદ્ર સે ઘીચોં

દુરુહિત્તા જેણેવ પચ પડવે તેણેવ ઉવાગચ્છડ ઉવાગચ્છિત્તા પચળ પડવાળ દોવડ  
 દેવિ સાહર્તિથ ઉવણેઢ )

ત્યારે કૃષ્ણ-વાસુદેવે પદ્મનાભને આ પ્રમાણે કહ્યું કે અરે ઓ ! પદ્મનાભ !  
 તમે આ પ્રમાણે અસમયમાં જ મરણના અભિલાષી કેમ બની ગયા છો, શું  
 તમને ખબર નહોતી કે દ્રૌપદી મારી બહેન છે તું એને અહીં શા માટે લઈ  
 આવ્યો ? ખેર, તું જ્યારે આ સ્થિતિમાં મારી પાસે આવ્યો છે તો હવે તારે  
 મારા તરફથી કેઈ પણ બાતનો ભય રાખવો જોઈએ નહિ આમ કહીને કૃષ્ણ  
 વાસુદેવે તેને વિદાય કર્યો ત્યારપછી દ્રૌપદીને સાથે લઈને તેઓ રથ ઉપર  
 સવાર થયા સવાર થઈને તેઓ જ્યાં પાંચે પાડવો હતા ત્યાં આવ્યા ત્યાં  
 આવીને તેમણે પોતાના હાથથી દ્રૌપદીને પાંચે પાડવોને ઓપી દીધી

( તણ્ણ સે કળ્હે પચેર્હિ પડવેર્હિ સદ્ધિ અપ્પછદ્ધે છર્હિ રહેર્હિ લવણસમુદ્ધ  
 મજ્ઞ મજ્ઞેણ જેણેવ જમ્બૂદીવે દીવે જેણેવ ભારહેવાસે તેણેવ પહારેત્થ ગમણાણ )

ત્યારબાદ તે કૃષ્ણ-વાસુદેવ પાંચે પાડવોની સાથે આત્મપથ થઈને છએ

मायारि करेइ, तएण से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव  
उवागच्छइ उवागच्छिता अमरककं रायहाणि सभग्गतोरणं जाव  
पासइ पासित्ता पउमणाभं एवं वयासी—किन्नं देवाणुप्पिया ।  
एसा अमरकका सभग्ग जाव सन्निवइया ?, तएण से पउम-  
णाहे कविलं वासुदेवं एवं वयासी—एव खलु सामी । जबूदी-  
वाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इह हव्वमागम्म कणहेणं  
वासुदेवेणं तुव्वमे परिभूए अमरकका जाव सन्निवाडिया, तएण  
से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अंतिए एयमट्ट सोच्चा पउम-  
णाह एव वयासी हं भो । पउमणाभा । अपत्थियपत्थिया किन्न  
तुम न जाणसि मम सरिसपुरिसस्स कणहस्स वासुदेवस्स विप्पियं  
करेमाणे ?, आसुरुत्ते जाव पउमणाहं णिव्विसयं आणवेइ, पउ-  
मणाहस्स पुत्ते अमरकका रायहाणीए महया महया रायाभि-  
सेएण अभिसिचइ जाव पडिगए ॥ सू० ३० ॥

टीका—‘ तेणं कालेण ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये धातकी-  
पण्डे द्वीपे पौरस्त्यार्थे भारते वर्षे चम्पा नाम नगरी आसीत् । तस्या वह्निभागे  
पूर्णभद्र नाम चैत्यम्=उद्यानम्, आसीत् । तत्र=तस्या खलु चम्पानगर्या

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस कालमें और उस समयमें  
( धायइसडे दीवे, पुरत्थिमद्धे भारहेवासे चपा णाम णयरी होत्था, पुण्ण  
भहे चेइए ) धातकी षड द्वीप मे पूर्व दिग्भागवर्ती भरत क्षेत्र में चपा

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये (धायइ स डे  
दीवे, पुरत्थिमद्धे भारहेवासे चपा णाम णयरी होत्था, पुण्णभहे चेइए ) धातकी  
षडद्वीपभा पूर्व दिग्भागवर्ती भरतक्षेत्रभा च पा नगरी छती, तेभा पूर्णभद्र  
नामे उद्यान छतु



संगइएणं देवेण अमरकंकाणयरिं साहरिया, तएणं से कणहे  
वासुदेवे पंचहि पंडवेहिं सद्धि अप्पच्छे छहिं रहेहि अमरकं  
रायहाणि दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए, तएण तस्स कणहस्स  
वासुदेवस्स पउमणाभेण रणणा सद्धि सगामे सगामेमाणस्स  
अय संखसहे तव सुहवाया० इव वीइ भवइ, तएण से कविले  
वासुदेवे मुणिसुव्वयं वदइ२ एवं वयासी-गच्छामि णं अह  
भंते । कणहे वासुदेवे उत्तमपुरिस सरिसपुरिस पासामि, तएण  
मुणिसुव्वए अरहा कविले वासुदेवे एव ययामी - नो खलु  
देवाणुप्पिया । एव भूय वा३ जण अरहतो वा अरहतं पासइ  
चक्खट्ठी वा चक्खट्ठि पासइ वलदेवा वा वलदेव पासइ वासु  
देवो वा वासुदेव पासइ, तहविय ण तुम कणहस्स वासुदेवस्स  
लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ  
पासिहिसि, तएण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वदइ नमसइ  
वांदित्ता नमंसित्ता हत्थिखध दुरूहइ दुरूहित्ता सिग्घ२ जेणेव वेला  
उले तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कणहस्स वासुदेवस्स लवण  
समुद्द मज्झमज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ पासइ  
पासित्ता एवं वयइ एसण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कणहे वासु  
देवे लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइत्तिकहु पचजन्न सख  
परामुसइ परामुसित्ता सुहवायपूरिय करेइ, तएण से कणहे  
वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स सखसद्द आयन्नेइ आयन्नित्ता  
पचजन्न जाव पूरियं करेइ, तएण दोवि

मायारि करेइ, तएण से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव  
उवागच्छइ उवागच्छिता अमरकंकरायहाणिं संभग्गतोरणं जाव  
पासइ पासिता पउमणाभं एव वयासी—किन्न देवाणुप्पिया ।  
एसा अमरकंका संभग्ग जाव सन्निवइया ?, तएणं से पउम-  
णाहे कविलं वासुदेवं एव वयासी—एव खलु सामी । जंबूद्वी-  
वाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इहं हव्वमागम्म कणहेणं  
वासुदेवेण तुव्वमे परिभूए अमरकंका जाव सन्निवाडिया, तएणं  
से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा पउम-  
णाह एवं वयासी ह भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया किन्न  
तुम न जाणसि मम सरिसपुरिसस्स कणहस्स वासुदेवस्स विप्पियं  
करेमाणे ?, आसुरुत्ते जाव पउमणाहं णिविसय आणवेइ, पउ-  
मणाहस्स पुत्ते अमरकंका रायहाणीए महया महया रायाभि-  
सेएण अभिसिंचइ जाव पडिगए ॥ सू० ३० ॥

टीका—‘ तेण कालेण ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये धातकी-  
पण्डे द्वीपे पौरस्त्यार्थे भारते वर्षे चम्पा नाम नगरी आसीत् । तस्या वहिर्भागे  
पूर्णभद्र नाम चैत्यम्=उद्यानम्, आसीत् । तत्र=तस्यां खलु चम्पानगर्यां

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएणं) उस कालमें और उस समयमें  
( वायव्यसिद्धे दीवे, पुरत्थिमद्वे भारहेवासे चपा णाम नगरी होत्था, पुण्ण  
भदे चेइए ) धातकी पड द्वीप मे पूर्व दिग्भागवर्ती भरत क्षेत्र में चपा

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये (वायव्य स डे  
दीवे, पुरत्थिमद्वे भारहेवासे चपा णाम नगरी होत्था, पुण्णभदे चेइए ) धातकी  
पड द्वीपभा पूर्व दिग्भागवर्ती भरतक्षेत्रभा चपा नगरी छती, तेभा पूर्णभद्र  
नामे उद्यान छतु

संगइएणं देवेण अमरकंकाणयरिं साहरिया, तएणं से कण्हे  
वासुदेवे पंचहि पडवेहिं सद्धि अप्पछट्टे छहिं रहेहि अमरकक  
रायहाणि दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए, तएण तस्स कण्हस्स  
वासुदेवस्स पउमणाभेणं रण्णा सद्धि संगामे संगामेमाणस्स  
अय सखसद्दे तव मुहवाया० इव वीइ भवइ, तएणं से कविले  
वासुदेवे मुणिसुव्वय वंदइ२ एवं वयासी-गच्छामि णं अहं  
भते । कण्हे वासुदेवे उत्तमपुरिस सरिसपुरिस पासामि, तएण  
मुणिसुव्वए अरहा कविले वासुदेवे एव वयासी - नो खलु  
देवाणुप्पिया । एव भूय वा३ जण्ण अरहंतो वा अरहत पासइ  
चक्खवट्ठी वा चक्खवट्ठि पासइ वलदेवा वा वलदेव पासइ वासु  
देवो वा वासुदेव पासइ, तहविय ण तुम कण्हस्स वासुदेवस्स  
लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ  
पासिहिसि, तएण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वंदइ नमसइ  
वदित्ता नमसित्ता हत्थिखध दुरुहइ दुरुहित्ता सिग्घ२ जेणेव वेला  
उले तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवण  
समुद्द मज्झमज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ पासइ  
पासित्ता एवं वयइ एसण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासु  
देवे लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइत्तिकट्ठु पचजन्न सख  
परामुसइ परामुसित्ता मुहवायपूरिय करेइ, तएण से कण्हे  
वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स सखसद्द आयन्नेइ आयन्नित्ता  
पचजन्नं जाव पूरियं करेइ, तएण दोवि - ५३२

समुत्पन्न ? यस्य वासुदेवस्य सल्ल अयं शङ्खशब्दो ममेव मुखयातपूरित -मद्वादित-  
शङ्ख-वनिरिवेत्यर्थः, ' वीय भवइ ' द्वितीयो भवति । तत खल्ल मुनिसुव्रतोऽहं  
कपिल वासुदेवम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-' से णूण इत्यादि—' से '  
नून ते तत्र हे कपिल वासुदेव ! ममान्तिके धर्म 'णिमामेमाणस्स' निशामयतः=  
शृण्वतः, शङ्खशब्दम् ' आकणित्ता ' आकर्ण्य=श्रुत्या ' इमेयारुवे ' अयमेतद्रूपः  
आ यात्तिकः सङ्कल्पो विचारः समुदपद्यत-किमन्यो वासुदेवः समुत्पन्नः, यस्याय  
शङ्खशब्दो यावद् द्वितीयो भवति ' से ' अथ नून हे कपिलवासुदेव ! अयमर्थः  
समर्थः=किं सत्य ? , कपिल वासुदेवः प्राह-हता ! अत्थि इति हन्त ! हे प्रभो !  
अयमर्थः सत्योऽस्ति । मुनिसुव्रतो भगवानाह-हे कपिल वासुदेव ! नो खल्ल एवम्=  
ईदृश, ' भूय वा ' भूत वा=अतीत वा, भवद् वा=वर्तमान वा भविष्यद् वा अना-  
गत वा कालत्रयेऽप्येव न भवतीत्यर्थः, ' जन्न ' यत् सल्ल एकस्मिन् क्षेत्रे, एक

भवइ) उनके पास वे कपिल वासुदेव धर्मका उपदेश सुन रहे थे । सो उस  
कपिल वासुदेवने मुनि, सुव्रतप्रभुके पास धर्मका उपदेश सुनते हुए कृष्ण  
वासुदेवकी शङ्खध्वनि सुनि । तब उस कपिल वासुदेवको इस प्रकार  
आध्यात्मिक यावत् मनोगत विचार उत्पन्न हुआ-क्या वातकीपड नामके  
द्वीपमें वर्तमान भरतक्षेत्र में कोई और दूसरा वासुदेव उत्पन्न हुआ है ?  
कि जिसके शङ्खका यह शब्द मेरे द्वारा बजाये गये शङ्खके शब्द जैसा  
हुआ है ? (तएण मुणि सुव्वण अरहा कविल वासुदेव एव वयासी-से णूणं  
ते कविला वासुदेवा ! मम अत्ति ए धम्म णिसामेमाणस्स सखसह आक-  
णित्ता इमेयारुवे अज्झत्थिए किं मण्णे जाव वीय भवइ से णूण कविला  
वासुदेव ! अयमट्ठे समट्ठे ? हता अत्थि, नो खल्ल कविला एय भूय वा ३ जन्नं

तेमनी पासे ते कपिल वासुदेव धर्मोपदेश सालणी रह्या हता ते कपिल  
वासुदेवे मुनिसुव्रत प्रभुनी पासे धर्मोपदेश स लणता ७ कृष्णवासुदेवना शय्थनो  
ध्वनि स लण्यो । त्थारे ते कपिल वासुदेवने आ जतनो आध्यात्मिक यावत्  
मनोगत सङ्कल्प उत्पन्न थयो के शुं वातकी पड नामना द्वीपमा विद्यमान  
भरतक्षेत्रमा केअं भीजे वासुदेव उत्पन्न थयो छे ? केमडे तेना शय्थनो आ  
ध्वनि भारा वडे वगाडवाभा आवेला शय्थना ध्वनि जेयो ७ छे

(तएण मुणि सुव्वण अरहा कविल वासुदेव एव वयासी-से णूण ते कवि-  
लावासुदेवा ! मम अत्ति ए धम्म णिसामेमाणस्स सखसह आकणित्ता इमेयारुवे  
अज्झत्थिए किं मण्णे जाव वीय भवइ, से णूण कविला वासुदेवा ! अयमट्ठे  
समट्ठे ? हता, अत्थि, नो खल्ल कविला एय भूयं वा ३ जन्न एगखेत्ते एगे जुगे

‘ कविले णाम’ कपिलो नाम वासुदेवो राजाऽऽसीत् ‘ महया हिमवत० ’ वण्णओ’ महाहिमवानित्यादि वर्णकः=वर्णनं पूर्वोक्तम् यो यम् ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये मुनिसुव्रतोऽर्हः चम्पाया नगर्या पूर्णभद्रे नाम्नि चैत्ये समसृतः । तस्य ममीपे कपिलो नाम वासुदेवो धर्मं शृणोति । ततः खलु स कपिलो वासुदेवः मुनिसुव्रतस्यार्हतोऽन्तिके धर्मं शृण्वन् कृष्णस्य वासुदेवस्य शब्दशब्दं शृणोति ततः खलु तस्य कपिलस्य वासुदेवस्य अयमेतद्गुणः=वक्ष्यमाणस्वरूपः, ‘ अज्झत्थिए ’ आध्यात्मिकः=आत्मगतः सत्त्वो=विचारः, यावद् समुदपयत-किम्-अन्यो धातकोपण्ठे द्वीपे भारते र्पे द्वितीयो वासुदेव

नामकी नगरी यी । उसमें पूर्णभद्र नाम का उद्यान था । ( तत्थण चपाए नयरीए कपिले नाम वासुदेवे राया होत्था, महया हिमवत वण्णओ तेण कालेण तेण समएण मुनिसुव्वए अरहा, चपाए पुण्णभदे समोसडे ) उस चपानगरीमें कपिल नाम के वासुदेव राज्य करते थे । ये महा हिमवान् पर्वत जैसे गुणोंसे पूर्ण थे । पहिले जैसा वर्णन राजाओंका भिन्न २ जगह किया गया है वैसा ही वर्णन इसका भी जानना चाहिये । उस काल और उस समय में मुनि सुव्रत तीर्थकर चपा नगरी में इस पूर्ण भद्र उद्यान में आये हुए थे ( कविले वासुदेवे धम्म सुणेइ, तएण से कविले वासुदेवे मुनिसुव्वयस्स अरहाओ धम्म सुणेमाणे कण्हस्स वासुदेवस्स सखसह सुणेइ, तएण तस्स कविलस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था-किं मण्णे धायइसडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे ? जस्स ण अय सखसहे ममपिव मुहवायपूरिए बीय

( तत्थण चपाए नयरीए कपिले नाम वासुदेवे राया होत्था, महया हिमवत वण्णओ, तेण कालेण तेण समएण मुनिसुव्वए अरहा, चपाए पुण्णभदे समोसडे )

ते यथा नगरीमा कपिल नामे वासुदेव राज करता हुता तेओ भडा डिमवान वगेरे लेवा जगवान हुता पडेला जुहा जुहा राजओनु के प्रभाणे वरुन उरवामा आओ छे ते प्रभाणे आ राजनु पण वरुन जाली देवु जेसओ ते काले अने ते समये मुनिसुव्रत तीर्थकर यथा नगरीमा ते पूर्ण-लद्र उद्यानमा धार्या हुता

( कविले वासुदेवे धम्म सुणेइ, तएण से कविले वासुदेवे मुनि सुव्वयस्स अरहाओ धम्म सुणेमाणे, कण्हस्स वासुदेवस्स सखसह सुणेइ, तए ण तस्स कवि-लस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था-किं मण्णे धायइसडे दीवे भारहेवासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे ? जस्स ण अय सखसहे मम पिव मुहवाय पूरिए बीय भवइ )



समुत्पन्न ? यस्य वासुदेवस्य खलु अयं शङ्खशब्दो ममेव मुखमातपूरित -मद्वादित-  
शङ्ख-निरिवेत्यर्थः, 'वीथ भवइ' द्वितीयो भवति । ततः खलु मुनिसुव्रतोऽहं  
कपिल वासुदेवम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अयादीत्-'से' पूण इत्यादि—'से'  
नून ते तव हे कपिल वासुदेव ! ममान्तिके धर्म 'णिसामेमाणस्स' निशामयतः=  
शृण्वतः, शङ्खशब्दम् 'आकणित्ता' आकर्ष्य=श्रुत्या 'इमेयारुवे' अयमेतद्रूपः  
आ-यात्मिकः सत्त्वो विचारः समुदपद्यत-किमन्यो वासुदेवः समुत्पन्नः, यस्याय  
शङ्खशब्दो यावद् द्वितीयो भवति 'से' अथ नून हे कपिलवासुदेव ! अयमर्थः  
समर्थ=किं सत्य ? कपिल वासुदेवः प्राह-हता ! अत्थि इति हन्त ! हे प्रभो !  
अयमर्थः सत्योऽस्ति । मुनिसुव्रते भगवानाह-हे कपिल वासुदेव ! नो खलु एवम्=  
ईदृश, 'भूय वा' भूत वा=अतीत वा, भवद् वा=वर्तमान वा भविष्यद् वा अना-  
गत वा कालत्रयेऽप्येव न भवतीत्यर्थः, 'जन्न' यत् खलु एकस्मिन् क्षेत्रे, एक

भवत्) उनके पास वे कपिल वासुदेव धर्मका उपदेश सुन रहे थे । सो उस  
कपिल वासुदेवने मुनिसुव्रतप्रभुके पास धर्मका उपदेश सुनते हुए कृष्ण  
वासुदेवकी शङ्खध्वनि सुनि । तब उस कपिल वासुदेवको इस प्रकार  
आध्यात्मिक यावत् मनोगत विचार उत्पन्न हुआ-क्या धातकीपड नामके  
द्वीपमें वर्तमान भरतक्षेत्र में कोई और दूसरा वासुदेव उत्पन्न हुआ है ?  
कि जिसके शङ्खका यह शब्द मेरे द्वारा बजाये गये शङ्खके शब्द जैसा  
हुआ है ? (तएण मुणि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी-से पूण  
ते कविला वासुदेवा ! मम अतिण धम्म णिसामेमाणस्स सखसद्द आक-  
णित्ता इमेयारुवे अज्झत्थिए किं मण्णे जाव वीथ भवइ से पूण कविला  
वासुदेव ! अयमद्वे समद्वे ? हता अत्थि, नो खलु कविला एय भूय वा ३ जन्न

तेमनी पासे ते कपिल वासुदेव धर्मोपदेश साधणी रह्या हुता ते कपिल  
वासुदेवे मुनिसुव्रत प्रभुनी पासे धर्मोपदेश साधणता ॥ कृष्णवासुदेवना श्रवणे  
ध्वनि साधये। त्वारे ते कपिल वासुदेवने आगतने आध्यात्मिक यावत्  
मनोगत सकल्प उत्पन्न थये के शुं धातकी पड नामना द्वीपमा विद्यमान  
भरतक्षेत्रमा केउं भोजे वासुदेव उत्पन्न थये छे ? केमके तेना श्रवणे आ  
ध्वनि मारा वडे वगाडवामा आवेला श्रवणा ध्वनि लेवे ॥ छे

(तएण मुणि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी-से पूण ते कवि-  
लावासुदेवा ! मम अतिए धम्म णिसामेमाणस्स सखसद्द आकणित्ता इमेयारुवे  
अज्झत्थिए किं मण्णे जाव वीथ भवइ, से पूण कविला वासुदेवा ! अयमद्वे  
समद्वे ? हता, अत्थि, नो खलु कविला एय भूय वा ३ जन्न एगखेत्ते एगे जुगे

સ્મિન્ યુગે, અસ્મિન્ સમયે દ્વાપર્યન્તો યા ચક્રવર્તિનો યા ચલદેવો યા વાસુદેવો યા  
 ' ઉપ્પજ્જિસુ ' ઉદપન્નેતામ્, ' ઉપ્પજ્જિતિ ' ઉત્પન્નેતે ' ઉપ્પજ્જિસસતિ ' ઉત્પત્સ્યેતે  
 વા, એવ સ્વલુ હે વાસુદેવ ! જમ્બૂદ્વીપાદ્ મારતાદ્ ર્ષાદ્ હસ્તિનાપુરનગરાત્ પાણ્ડો  
 રાજઃ ' સુળ્હા ' સ્તુત્વા=પુત્રપૃથુઃ, પશ્ચાન્ના પાણ્ડવાનાં માર્યાં દ્વીપદી દેવી તત્ત્વ પથ  
 એગે સ્વેત્તે એગે જુગે એગે સમય દુવે અરહતા યા, ચક્રવર્તી વા, ચલદેવા વા,  
 વાસુદેવા વા ઉપ્પજ્જિસુ, ઉપ્પજ્જિતિ, ઉપ્પજ્જિસસતિ વા, ) તત્ત્વ મુનિસુવ્રત  
 તીર્થ કર પ્રભુને ઉન કપિલ વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કહા હે કપિલ વાસુ  
 દેવ ! મેરે પાસ ધર્મ કો સુનતે સમય તુમ્હ શાપ શબ્દ શ્રવણ કર ઇસ  
 પ્રકાર કા ગર આધ્યાત્મિક સકલ્પ-વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ હૈ, કિ કયા  
 કોઈ દૂમરા વાસુદેવ ઉત્પન્ન હો ગયા હૈ-જિસકે શાપ કા શબ્દ મુખે  
 સુનાઈ દિયા હૈ । કહો કપિલ વાસુદેવ ! યહી વાત હૈ ન ? તત્ત્વ કપિલ  
 વાસુદેવને કહા-હા પ્રભો ! યહી વાત હૈ-એસા હી વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ  
 હૈ-તત્ત્વ મુનિસુવ્રત ભગવાનને કપિલ વાસુદેવસે કહા-હે કપિલ વાસુદેવ  
 એસી વાત ન ભૂતકાલ મેં હુઈ હૈ ઓર ન ભવિષ્યકાલ મેં હોગી-ન વર્ત  
 માન્ મેં હોતી હૈ કિ જો એક હી ક્ષેત્રમેં એક હી યુગમેં એક હી સમય મેં  
 દો અર્હત પ્રભુ, દો ચક્રવર્તી, દો ચલદેવ, દો વાસુદેવ, ઉત્પન્ન હો રહે હો,  
 ઉત્પન્ન હુઈ હો ઓર આગે ઉત્પન્ન હો ! ( એવ સ્વલુ વાસુદેવા ! જમ્બૂદ્વીવા  
 ઓ મારહાઓ વામાઓ હત્થિનાઝરણયરાઓ, પદુસસરણ્ણો સુળ્હા  
 એગે સમય દુવે અરહતા યા ચક્રવર્તી વા, વાસુદેવા વા ઉપ્પજ્જિસુ, ઉપ્પજ્જિતિ,  
 ઉપ્પજ્જિસસતિ વા )

ત્યારે મુનિસુવ્રત તીર્થ કર પ્રભુએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું  
 કે હે કપિલવાસુદેવ મારી પાસે ધર્મને સાલળતા શબ્દ-શબ્દ સાલળીને તમને  
 આ જાતનો આધ્યાત્મિક સકલ્પ-વિચાર ઉત્પન્ન થયો છે કે, શું કોઈ બીજો  
 વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયો છે-જેના શબ્દનો ધ્વનિ મને સાલળાઈ રહ્યો છે બાહ્ય,  
 કપિલ વાસુદેવે કહ્યું કે હા પ્રભુ ! એ જ વાત છે મારા મનમાં એ જ જાતનો  
 વિચાર ઉદ્ભવ્યો છે ત્યારે મુનિસુવ્રત ભગવાને કપિલ વાસુદેવને કહ્યું કે હે  
 કપિલ વાસુદેવ ! આવી વાત ભૂતકાળમાં થઈ નથી અને ભવિષ્યકાળમાં થશે  
 નહિ અને વર્તમાનકાળમાં સંભવી શકે તેમ પણ નથી કે જે એક જ ક્ષેત્રમાં,  
 એક જ યુગમાં, એક જ સમયમાં બે અર્હત પ્રભુ, બે ચક્રવર્તી, બે બળદેવ, બે વાસુ  
 દેવ ઉત્પન્ન થયા હોય, ઉત્પન્ન થઈ રહ્યા હોય અને આગળ ઉત્પન્ન થવાના હોય

( એવ સ્વલુ વાસુદેવા ! જમ્બૂ દ્વીવાઓ મારહાઓ વામાઓ હત્થિનાઝરણયા  
 રાઓ, પદુસસરણ્ણો, સુળ્હા પચન્હ પડવાળ મારિયા દોવડે દેવી તત્ત્વ

नाभस्य राज्ञः पूर्वसगतिकेन देवेनामरकङ्कानगरीं ' साहरिया ' सहता=भानीता,  
ततः खलु सः कृष्णो वासुदेवः पञ्चभिः पाण्डवैः सधं आत्मपष्ठः पङ्कभीरथैरमर-  
कका राजधानीं द्रौपद्या देव्याः ' क्व ' देशी शब्दोय प्रत्यानयनार्थकः प्रत्या-  
नयनं कर्तुं हव्यमागतः, ततः खलु तस्य कृष्णस्य वासुदेवस्य पद्मनाभेन राज्ञा  
सार्धं ' सगाम ' संग्राम=युद्ध ' सगामेमाणस्स ' युध्यत, अयं शङ्खशब्दस्तत्रमु-  
खवातपूरित इव द्वितीयो भवति । ततः खलु स कपिलो वासुदेवो मुनिसुव्रत  
वन्दते, नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्-गच्छामि खलु अहं हे

पचण्ह पडवाण भारिया दोवईदेवी तव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसगई-  
ण्ण देवेण अमरकका नयरिं साहरिया, तएण से कण्हे वासुदेवे  
पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पउठ्ठे छहिं रहेहिं अमरकक रायहाणि दोवईए  
देवीए क्व हव्वमागए, तएण तस्स कण्णस्स वासुदेवस्स पउमणाभेण  
रण्णा सद्धिं सगाम, सगामेमाणस्स अयं सखसहे तव मुहवाया० इव-  
वीय भवइ ) सुनो वात इम प्रकार है जवूद्रीप के भरत क्षेत्र में वर्तमान  
हस्तिनापुर नगर से पांडुराजा की पुत्रवधू पाच पांडवों की पत्नी द्रौपदी  
देवी को तुम्हारे पद्मनाभ राजा का पूर्व भवीय मित्र कोई देव हरण  
कर अमरकका नगरी में ले आया । तब भरत क्षेत्र के वासुदेव कृष्ण  
पाच पांडवों के साथ आत्मपष्ठ होकर छह रथों से उस अमरकका  
नगरी में द्रौपदी देवी को वापिस ले जाने के लिये बहुत जल्दी आये ।  
तब उन कृष्ण वासुदेव के, पद्मनाभ राजा के साथ युद्ध करते समय  
शंख का यह शब्द तुम्हारे शंख के शब्द जैसा हुआ है । ( तएण से  
कविले वासुदेवे सुणिसुव्वय वदति, २ एव वयासी गच्छामि ण

रण्णो पुव्वसगइण्ण देवेण अमरकका नयरिं साहरिया तएण से कण्हे वासुदेवे  
पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पउठ्ठे छहिं रहेहिं अमरकक रायहाणि दोवईए देवीए  
क्व हव्वमागए, तएण तस्स कण्णस्स वासुदेवस्स पउमणाभेण रण्णा सद्धिं सगाम,  
सगामे माणस्स अयं सखसहे तव मुहवाया० इव वीय भवइ )

स लणो, विगत ओवी छे के जू धूद्रीपना भरतक्षेत्रमा विद्यमान हस्ति  
नापुर नगरथी पांडुराजनी पुत्रवधू पाये पांडवोनी पत्नी द्रौपदी देवीने तभारा  
पद्मनाभ राजाना पूर्वभवने मित्र केई देव हरीने अमरकका नगरीमा लई  
आओये हतो । तयारपछी भरतक्षेत्रना वासुदेव कृष्ण पाये पांडवोनी साथे आत्म  
पष्ठ थजिने छ रथो उपर सवार थया अने सत्वर द्रौपदी देवीने पाछा भेण  
पवा भाटे त्या पडोसी जया पद्मनाभ राजनी साथे युद्ध करता कृष्णवासुदेवे  
जे शंखध्वनि हथी छे ते तभारा शंखना ध्वनि जेवे छे

( तएण से कविले वासुदेवे सुणि सुव्वय वदति, २ एव वयासी, गच्छामि

સ્મિન્ યુગે, એકસ્મિન્ સમયે દ્વાર્હન્તો યા ચક્રવર્તિનો યા ચલદેવો યા વાસુદેવો યા  
 ‘ ઉપ્પજ્જિસુ ’ ઉદપન્નેતામ્, ‘ ઉપ્પજ્જિનતિ ’ ઉત્પન્નેતે ‘ ઉપ્પજ્જિસ્સતિ ’ ઉત્પત્સ્યેતે  
 વા, એવ સ્વલુ હે વાસુદેવ ! જમ્બૂદ્વીપાદ્ ભારતાદ્ સ્પર્શદ્ હસ્તિનાપુરનગરાત્ પાન્ડો  
 રાજ. ‘ સુપ્પા ’ સ્તુત્વા=પુત્રપ્રભુઃ, પશ્ચાન્ના પાન્ડવાના ભાર્યા દ્રૌપદી દેવી તવ પથ  
 ણગે સ્વેત્તે ણગે જુગે ણગે સમણ દુવે અરહતા વા, ચક્રવર્તી વા, ચલદેવા વા,  
 વાસુદેવા વા ઉપ્પજ્જિસુ, ઉપ્પજ્જિતિ, ઉપ્પજ્જિસ્મતિ વા, ) તથ મુનિસુવ્રત  
 તીર્થ કર પ્રભુને ઉન કપિલ વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કતા હે કપિલ વાસુ  
 દેવ ! મેરે પાસ ધર્મ કો સુનતે સમય તુમ્હ શામ્ શાન્દ શ્રવણ કર હસ  
 પ્રકાર કા ઘર આધ્યાત્મિક સકલ-વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ હૈ, કિ કયા  
 કોઈ દૂસરા વાસુદેવ ઉત્પન્ન હો ગયા હૈ-જિસકે શામ્ કા ઝાદ મુખે  
 સુનાઈ દિયા હૈ । કહો કપિલ વાસુદેવ ! ઘટી વાત હૈ ન ? તથ કપિલ  
 વાસુદેવને કતા-હા પ્રભો ! ઘટી વાત હૈ-એસા હી વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ  
 હૈ-તથ મુનિસુવ્રત ભગવાનને કપિલ વાસુદેવસે કતા-હે કપિલ વાસુદેવ  
 એસી વાત ન ભૂતકાલ મેં હુઈ હૈ ઓર ન ભવિષ્યકાલ મેં હોગી-ન વર્ત  
 માન્ મેં હોતી હૈ કિ જો એક હી ક્ષેત્રમેં એક હી યુગમેં એક હી સમય મેં  
 દો અર્હત પ્રભુ, દો ચક્રવર્તી, દો ચલદેવ, દો વાસુદેવ, ઉત્પન્ન હો રહે હો,  
 ઉત્પન્ન હુએ હો ઓર આગે ઉત્પન્ન હો ! ( એવ સ્વલુ વાસુદેવા ! જમ્બૂદ્વીપા  
 ઓ ભારહાઓ વાસાઓ હત્થિનાઝરણયરોઓ, પદુસ્મરણ્ણો સુપ્પા  
 ણગે સમણ દુવે અરહતા વા ચક્રવર્તી વા, વાસુદેવા વા ઉપ્પજ્જિસુ, ઉપ્પજ્જિતિ,  
 ઉપ્પજ્જિસ્સતિ વા )

ત્યારે મુનિસુવ્રત તીર્થ કર પ્રભુએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું  
 કે હે કપિલવાસુદેવ મારી પાસે ધર્મને સાલળતા શખ-શખ સાલળીને તમને  
 આ જાતનો આધ્યાત્મિક સકલ-વિચાર ઉત્પન્ન થયો છે કે, શું કોઈ બીજો  
 વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયો છે-જેના શખનો ધ્વનિ મને સાલળાઈ રહ્યો છે બોલો,  
 કપિલ વાસુદેવે કહ્યું કે હા પ્રભુ ! એ જ વાત છે મારા મનમા એ જ જાતનો  
 વિચાર ઉદ્ભવ્યો છે ત્યારે મુનિસુવ્રત ભગવાને કપિલ વાસુદેવને કહ્યું કે હે  
 કપિલ વાસુદેવ ! આવી વાત ભૂતકાળમા થઈ નથી અને ભવિષ્યકાળમા થશે  
 નહિ અને વર્તમાનકાળમા સંભવી શકે તેમ પણ નથી કે જે એક જ ક્ષેત્રમા,  
 એક જ યુગમા, એક જ સમયમા બે અર્હત પ્રભુ, બે ચક્રવર્તી, બે બળદેવ, બે વાસુ  
 દેવ ઉત્પન્ન થયા હોય, ઉત્પન્ન થઈ ગયા હોય અને આગળ ઉત્પન્ન થવાના હોય

( એવ સ્વલુ વાસુદેવા ! જમ્બૂદ્વીપાઓ ભારહાઓ વાસાઓ હત્થિનાઝરણયા  
 રાઓ, પદુસ્મરણ્ણો, સુપ્પા પચન્દ પહાણ મારિયા દોવડે દેવી તવ

नाभस्य राज्ञः पूर्वसगतिकेन देवेनामरकङ्कानगरी ' साहरिया ' सहता=भानीता,  
ततः खलु सः कृष्णो वासुदेवः पञ्चभिः पाण्डवैः सर्वं आत्मपष्ठः पङ्कभीरयैरमर-  
कका राजधानीं द्रौपद्या देव्याः ' ऊव ' देशी शब्दोयं प्रत्यानयनार्थकः प्रत्या-  
नयनं कर्तुं हव्यमागतः, ततः खलु तस्य कृष्णस्य वासुदेवस्य पद्मनाभेन राज्ञा  
सार्धं ' सगाम ' संग्राम=युद्ध ' सगामेमाणस्स ' यु यत, अयं शङ्खशब्दस्तत्रमु-  
खवातपूरित इव द्वितीयो भवति । ततः खलु सः कपिलो वासुदेवो मुनिसुत्रत-  
वन्दते, नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्-गच्छामि खलु अहं हे

पचण्ह पडवाण भारिया दोवईदेवी तव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसगई-  
एण देवेण अमरकका नयरिं साहरिया, तएण से कण्हे वासुदेवे  
पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पउठ्ठे उहिं रहेहिं अमरकक रायहाणि दोवईए  
देवीए कूव हव्वमागए, तएण तस्स कण्णस्स वासुदेवस्स पउमणाभेण  
रण्णा सद्धिं सगाम, सगामेमाणस्स अयं सखसद्धे तव मुहवाया० इव-  
वीय भवइ ) सुनो वात इत्थं प्रकारं है जवूद्रीप के भरत क्षेत्र में वर्तमान  
हस्तिनापुर नगर से पांडुराजा की पुत्रवधू पाच पाडवो की पत्नी द्रौपदी  
देवी को तुम्हारे पद्मनाभ राजा का पूर्व भवीय मित्र कोई देव हरण  
कर अमरकका नगरी में ले आया । तब भरत क्षेत्र के वासुदेव कृष्ण  
पाच पांडवों के साथ आत्मपष्ठ होकर छह रथों से उस अमरकका  
नगरी में द्रौपदी देवी को वापिस ले जाने के लिये बहुत जल्दी आये ।  
तब उन कृष्ण वासुदेव के, पद्मनाभ राजा के साथ युद्ध करते समय  
शख का यह शब्द तुम्हारे शंख के शब्द जैसा हुआ है । ( तएण से  
कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वदति, २ एव वयासी गच्छामि णं

रण्णो पुव्वसगइएण देवेण अमरकका नयरिं साहरिया तएण से कण्हे वासुदेवे  
पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पउठ्ठे उहिं रहेहिं अमरकक रायहाणि दोवईए देवीए  
कूव हव्वमागए, तएण तस्स कण्णस्स वासुदेवस्स पउमणाभेण रण्णा सद्धिं सगाम,  
सगामे माणस्स अयं सखसद्धे तव मुहवाया० इव वीय भवइ )

स लणो, विगत एवी छे के जूधूद्रीपना भरतक्षेत्रमा विद्यमान इस्ति  
नापुर नगरथी पाडुराजानी पुत्रवधू पाये पाडवोनी पत्नी द्रौपदी देवीने तभारा  
पद्मनाभ राजाना पूर्वभवने मित्र केई देव इरीने अमरकका नगरीमा लई  
आव्यो इतो तयारपणी भरतक्षेत्रना वासुदेव कृष्ण पाये पाडवोनी साथे आत्म  
पष्ठ थईने छ रथो उपर सवार थया अने सत्तरे द्रौपदी देवीने पाछा भेण  
ववा भाटे त्या पडोयी गया पद्मनाभ राजानी साथे युद्ध करता कृष्णवासुदेवे  
जे शंखध्वनि क्यो छे ते तभारा शंखना ध्वनि जेवो छे

( तएण से कविले वासुदेवे मुणि सुव्वय वदति, २ एव वयासी, गच्छामि



સ્મિન્ યુગે, એસ્મિન્ સમયે દ્યૌર્હન્તી યા ચક્રવર્તિની યા ચલદેવી યા વાસુદેવી યા  
 'ઉપ્પજિજસુ' ઉદપન્નેતામ્, 'ઉપજિનતિ' ઉત્પન્નેતે 'ઉપજિજસસતિ' ઉત્પત્સ્યેતે  
 વા, એવ સ્વલુ હે વાસુદેવ ! જમ્બૂદ્વીપાશ્ચ ભારતાદ્ વર્ષાદ્ હસ્તિનાપુરનગરાત્ પાણ્ડો  
 રાજઃ 'સુળ્હા' સ્તુતા=પુનરધૂઃ, પશ્ચાન્ના પાણ્ડવાનાં માર્યાં દ્રૌપદી દેવી તત્ર પથ  
 એગે સ્વેત્તે એગે જુગે એગે સમય દુવે અરહતા યા, ચક્રવર્તી વા, ચલદેવા વા,  
 વાસુદેવા વા ઉપ્પજિજસુ, ઉપ્પજિનતિ, ઉપ્પજિજસસતિ વા, ) તત્ર મુનિસુવ્રત  
 તીર્થ કર પ્રભુને ઉન કપિલ વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કહા હે કપિલ વાસુ  
 દેવ ! મેરે પાસ ધર્મ કો સુનતે સમય તુમ્હ શંખ શબ્દ શ્રવણ કર ઈસ  
 પ્રકાર કા યદ્ આધ્યાત્મિક સકલ્પ-વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ હૈ, કિ કયા  
 કોઈ દૂસરા વાસુદેવ ઉત્પન્ન હો ગયા હૈ-જિસકે શંખ કા શબ્દ સુન્ને  
 સુનાઈ દિયા હૈ । કહો કપિલ વાસુદેવ ! યહી વાત હૈ ન ? તત્ર કપિલ  
 વાસુદેવને કહા-હા પ્રભો ! યહી વાત હૈ-એસા હી વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ  
 હૈ-તત્ર મુનિસુવ્રત ભગવાનને કપિલ વાસુદેવસે કહા-હે કપિલ વાસુદેવ  
 એસી વાત ન ભૂતકાલ મેં હુઈ હૈ ઓર ન ભવિષ્યકાલ મેં હોગી-ન વર્ત  
 માન્ મેં હોતી હૈ કિ જો ઇક હી ક્ષેત્રમેં ઇક હી યુગમેં ઇક હી સમય મેં  
 દો અર્હત પ્રભુ દો ચક્રવર્તી, દો ચલદેવ, દો વાસુદેવ, ઉત્પન્ન હો રહે હો,  
 ઉત્પન્ન હુએ હો ઓર આગે ઉત્પન્ન હો ! ( એવ સ્વલુ વાસુદેવા ! જમ્બૂદ્વીપા  
 ઓ ભારતાઓ વાસાઓ હસ્તિનાપુરનગરાઓ, પદુસ્મરણો સુળ્હા  
 એગે સમય દુવે અરહતા યા ચક્રવર્તી વા, વાસુદેવા વા ઉપ્પજિજસુ, ઉપ્પજિનતિ,  
 ઉપ્પજિજસસતિ વા )

ત્યારે મુનિસુવ્રત તીર્થ કર પ્રભુએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું  
 કે હે કપિલવાસુદેવ મારી પાસે ધર્મને સાલળતા શખ-શબ્દ સાલળીને તમને  
 આ જાતનો આધ્યાત્મિક સકલ્પ-વિચાર ઉત્પન્ન થયો છે કે, શું કોઈ બીજો  
 વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયો છે-જેના શખનો ધ્વનિ મને સાલળાઈ રહ્યો છે બોલો,  
 કપિલ વાસુદેવે કહ્યું કે હા, પ્રભુ ! એ જ વાત છે મારા મનમાં એ જ જાતનો  
 વિચાર ઉદ્ભવ્યો છે ત્યારે મુનિસુવ્રત ભગવાને કપિલ વાસુદેવને કહ્યું કે હે  
 કપિલ વાસુદેવ ! આવી વાત ભૂતકાળમાં થઈ નથી અને ભવિષ્યકાળમાં થશે  
 નહિ અને વર્તમાનકાળમાં સંભવી શકે તેમ પણ નથી કે જે એક જ ક્ષેત્રમાં,  
 એક જ યુગમાં, એક જ સમયમાં બે અર્હત પ્રભુ, બે ચક્રવર્તી, બે બાલદેવ, બે વાસુ  
 દેવ ઉત્પન્ન થયા હોય, ઉત્પન્ન થઈ રહ્યા હોય અને આગળ ઉત્પન્ન થવાના હોય

( એવ સ્વલુ વાસુદેવા ! જમ્બૂદ્વીપાઓ ભારતાઓ વાસાઓ હસ્તિનાપુરનગરા  
 ઓ, પદુસ્મરણો, સુળ્હા પચ્છ પડવાળ મારિયા દોઢે દેવી તત્ર

कृष्णस्य वासुदेवस्य लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन व्यतिव्रजत श्वेतपीतानि-ध्वजा-  
ग्राणि 'पासिहिसि' द्रक्ष्यसि । ततः खलु स कपिलो वासुदेवो मुनि सुत्रत वन्दते,  
नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा हस्तिस्कन्ध दूरोहति=आरोहति आरुह्य शीघ्र २  
यत्रैव 'वेलाउले' वेलाकूलं=समुद्रवेला तट वर्तते, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य  
कृष्णस्य वासुदेवस्य लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन 'वीडवयमाणस्स' व्यतिव्रजत=  
गच्छत, श्वेतपीतानि ध्वजाग्राणि पश्यति, दृष्ट्वा एव वदति एसण मम सदृशपुरुषः  
उत्तमपुरुषः कृष्णो वासुदेवो लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन 'वीडवयइ' व्यतिव्रजति=  
गच्छति, इति कृत्वा पाञ्चजन्यं शङ्ख परामृशति=गृह्णाति, गृहीत्वा मुखयातपूरित  
करोति=कपिलवासुदेवः स्वशङ्खं वादयति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कपि

चक्रवर्ती का दूसरे और चक्रवर्ती से बलदेव का दूसरे और किसी बल-  
देव से, वासुदेव का दूसरे और वासुदेव से कभी भी मिलाप नहीं होता  
है । (तह वि य ण तुम कणहस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण  
वीडवयमाणस्स सेया पीयाइ धयग्गाइ पासिहिसि) हा, इतना हो सकता  
हैं कि जब वे कृष्णवासुदेव लवणसमुद्रके बीचसे होकर जा रहे हों तब  
तुम उनकी श्वेत पीत ध्वजाओंके अग्र भाग को देख सकते हो । (तएण  
से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वदइ, नमसइ, वदित्ता, नमसित्ता, हत्थि-  
खध दुरुहइ, दुरुहित्ता सिग्घ २ जेणेव वेलाउले, तेणेव उवागच्छइ, उवा  
गच्छित्ता कणहस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीडवयमाणस्स  
सेयापीयाहिं धयग्गाइ पासइ, पासित्ता एव वयइ-एसण मम सरिसपुरिसे  
उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीडवयइत्ति कट्टु

तीर्थ करने की साथे भी तीर्थ करने में भी कोई पक्ष सन्तोषोभा यतो नथी  
ऐक्यवर्तीने भी ऐक्यवर्तीनी साथे, ऐक्यवर्तीने भी ऐक्यवर्तीनी साथे  
तेमन् ऐक्यवर्तीने भी कोई पक्ष वासुदेवनी साथे कदापि मेणाप यतो  
नथी (तह वि य ण तुम कणहस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीड  
वयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ पासिहिसि) हा, ऐक्य थो शके छे के व्यापरे  
ते कृष्णवासुदेव लवण समुद्रनी वन्धे थोने पसार थना होय व्यापरे तमे तेमनी  
सहेइ, पीणी ध्वज्योना अग्रभागने लेइ शके छे (तएण से)

कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता हत्थिखध दुरुहइ,  
दुरुहित्ता सिग्घ २ जेणेव वेलाउले, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कणहस्स  
वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीडवयमाणस्स सेयापीयाहिं धयग्गाइ  
पासइ, पासित्ता एव वयइ, एसण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे

ભદન્ત ! કૃષ્ણ વાસુદેવમુત્તમપુરુષ પશ્યામિ તત્ત્વં સ્વલુ મુનિસુવ્રતોઽર્હન્ કપિલં  
વાસુદેવમ્ એવમવાદીત્—નો સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિય ! એવ ભૂત વા, ભવતિ વા  
મવિષ્યતિ ચા યત્ સ્વલુ અર્હન્ અર્હન્ત પશ્યતિ, ચક્રવર્તી વા ચક્રવર્તિન પશ્યતિ  
ચલદેવો વા ચલદેવ પશ્યતિ વાસુદેવો વા વાસુદેવ પશ્યતિ, તથા ઽપિ ચ સ્વલુ ત્વ

અહ ભત્તે ! કણ્ઠ વાસુદેવ ઉત્તમપુરિસ સરિસપુરિસ પાસામિ )  
હસ પ્રકાર સુનકર ઉસ કપિલ વાસુદેવ ને મુનિ સુવ્રત પ્રમુ કો વદના  
કી-નમસ્કાર કિયા વદના નમસ્કાર કરકે ફિર ઉનસે ઇસ પ્રકાર કહા  
—હે ભદન્ત ! મેં જાતા છું ઓર ઉત્તમ પુરુષ ઉન કૃષ્ણવાસુદેવ સે કિ જો  
મેરે જૈસે પુરુષ હૈં—વાસુદેવ પદ કે ધારક હૈં—જાકર મિલતા છું । ( તણ્ણ  
મુનિ સુવ્વણ અરહા કવિલ વાસુદેવ એવ વચાસી ) તથ મુનિ સુવ્રત પ્રમુ  
ને ઉસ કપિલ વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કહા—( નો સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા !  
એવ ભૂય વા ૬ જણ્ણ અરહતો, વા અરહન્ત પાસહ, ચક્રવટ્ટી વા ચક્રક  
વટ્ટિ પામહ, ચલદેવો વા, ચલદેવ પાસહ, વાસુદેવો વા વાસુદેવ પાસહ )  
હે દેવાનુપ્રિય ! એસી વાત ન હુઈ હૈં, વર્તમાનમેં ન હોતી હૈં ઓર ન ભવિ  
ષ્યત્કાલ મેં હોનેવાલી હૈં કિ જો એક તીર્થંકર દૂસરે તીર્થંકર સે મિલેં,  
એક ચક્રવર્તી દૂસરે ચક્રવર્તી સે મિલે, એક ચલદેવ દૂસરે ચલદેવ સે મિલેં,  
એક વાસુદેવ દૂસરે વાસુદેવ સે મિલેં । એસા સિદ્ધાન્ત કા નિયમ હૈં  
કિ એક તીર્થંકર કા દૂસરે તીર્થંકર સે કમી મી મિલાપ નહીં હોતા હૈં ।

જં અહ્મત્તે ! કણ્ઠ વાસુદેવ ઉત્તમપુરિસ સરિસપુરિસ પાસામિ )

આ પ્રમાણે સાલણીને તે કપિલવાસુદેવે મુનિસુવ્રત પ્રભુને વદન તેમજ  
નમન કર્યા વદન અને નમન કરીને તેમની સામે આ પ્રમાણે વિનતી કરતા  
કહ્યું કે હે ભદન્ત ! હું જાઉં છું અને જઈને મારા જેવા તે ઉત્તમ પુરુષ કૃષ્ણ  
વાસુદેવ કે જેઓ વાસુદેવ પદને શોભાવે છે—તેમને મળું છું ( તણ્ણ મુનિ  
સુવ્વણ અરહા કવિલ વાસુદેવ એવ વચાસી ) ત્યારે મુનિસુવ્રત પ્રભુએ તે કપિલ  
વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

( નો સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! એવ ભૂય વા ૩ જણ્ણ અરહતો વા અરહન્ત પાસહ,  
ચક્રવટ્ટી વા ચક્રવટ્ટિ પાસહ, ચલદેવો વા, ચલદેવ પાસહ, વાસુદેવો વા  
વાસુદેવ પાસહ )

હે દેવાનુપ્રિય ! એવી વાત કોઈ પણ દિવસે સંભવી નથી, વર્તમાનમા  
પણ સંભવી શકે તેમ નથી અને ભવિષ્યકાળમા પણ સંભવી શકશે નહિ કે  
એક તીર્થંકર બીજા તીર્થંકરને મળે, એક ચક્રવર્તી બીજા ચક્રવર્તીને મળે,  
એક બળદેવ બીજા બળદેવને મળે આ જાતનો સિદ્ધાન્તનો છે કે એક

कृष्णस्य वासुदेवस्य लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन व्यतिव्रजत श्वेतपीतानि-ध्वजा-  
ग्राणि 'पासिहिसि' द्रक्ष्यसि । ततः खलु स कपिलो वासुदेवो मुनि सुत्रत वन्दते,  
नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा हस्तिस्कन्ध दूरोहति=आरोहति आरुह्य शीघ्र २  
यत्रैव 'वेलाउले' वेलाकूलं=समुद्रवेला तट वर्तते, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य  
कृष्णस्य वासुदेवस्य लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन 'वीडवयमाणस्स' व्यतिव्रजत =  
गच्छत, श्वेतपीतानि ध्वजाग्राणि पश्यति, दृष्ट्वा एव वदति एसण मम सदृशपुरुषः  
उत्तमपुरुषः कृष्णो वासुदेवो लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन 'वीडवयड्' व्यतिव्रजति=  
गच्छति, इति कृत्वा पाञ्चजन्य शङ्ख परामृशति=गृह्णाति, गृहीत्वा मुखप्रातपूरित  
करोति=कपिलवासुदेवः स्वशङ्ख वादयति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कपि

चक्रवर्ती का दूसरे और चक्रवर्ती से बलदेव का दूसरे और किसी बल-  
देव से, वासुदेव का दूसरे और वासुदेव से कभी भी मिलाप नहीं होता  
है । (तह वि य ण तुमं कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण  
वीडवयमाणस्स सेया पीयाइ धयग्गाइ पासिहिसि) हा, इतना हो सकता  
हैं कि जब वे कृष्णवासुदेव लवणसमुद्रके बीचसे होकर जा रहे हों तब  
तु मउनकी श्वेत पीत ध्वजाओके अग्र भाग को देख सकते हो । (तएण  
से कविछे वासुदेवे मुणिसुव्वय वदइ, नमसइ, वदित्ता, नमसित्ता, हत्थि-  
खध दुरुहइ, दुरुहित्ता सिग्घ २ जेणेव वेलाउले, तेणेव उवागच्छइ, उवा  
गच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीडवयमाणस्स  
सेयापीयाहिं धयग्गाइ पासइ, पासित्ता एव वयड्-एसण मम सरिसपुरिसे  
उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीडवयड्ति कट्टु

तीर्थ करने की साथे भी तू तीर्थ करने । मेणाप डोछ पणु सल्लेगेभा थतो नथी  
अेक अकवर्तीने । भील अकवर्तीनी साथे, अेक णणदेवने । भील णणदेवनी साथे  
तेमअ अेक वासुदेवने । भील डोछ पणु वासुदेवनी साथे कदापि मेणाप थतो  
नथी (तह वि य ण तुम कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीड  
वयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ पासिहिसि) हा, अेभ थछ राके छे के ल्यादे  
ते कृष्णवासुदेव लवण समुद्रनी वन्धे थछने पसार थता डोछ त्यादे तमे तेम नी  
सहेइ, पीगी ध्वजालेना अग्रभागने लेछ राके छे ( तएण से )  
कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता हत्थिखध दुरुहइ,  
दुरुहित्ता सिग्घ २ जेणेव वेलाउले, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्हस्स  
वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीडवयमाणस्स सेयापीयाहिं धयग्गाइ  
पासइ, पासित्ता एव वयड्, एसण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे

ભદન્ત ! કૃષ્ણ વાસુદેવમુત્તમપુરુષ પશ્યામિ તત્ત્વં સ્વલુ મુનિસુવ્રતોઽર્હન્ કપિલં  
વાસુદેવમ્ એવમગ્રાદીત્—નો સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિય ! એવ ભૂત વા, ભવતિ વા  
મત્રિષ્યતિ યા યત્ સ્વલુ અર્હન્ અર્હન્ત પશ્યતિ, ચક્રવર્તી વા ચક્રવર્તિન પશ્યતિ  
ચલદેવો વા ચલદેવ પશ્યતિ વાસુદેવો યા વાસુદેવ પશ્યતિ, તથા ઽપિ ચ સ્વલુ ત્વ

અહ ભતે ! કણ્ઠં વાસુદેવ ઉત્તમપુરિસં સરિસપુરિસ પાસામિ )  
હસ પ્રકાર સુનકર ઉસ કપિલ વાસુદેવ ને મુનિ સુવ્રત પ્રમુ કો વદના  
કી—નમસ્કાર કિયા વદના નમસ્કાર કરકે ફિર ઉનસે હસ પ્રકાર કહા  
—હે ભદત ! મેં જાતા હું ઓર ઉત્તમ પુરુષ ઉન કૃષ્ણવાસુદેવ સે કિ જો  
મેરે જૈસે પુરુષ હૈ—વાસુદેવ પદ કે ધારક હૈ—જાકર મિલતા હું । ( તણ  
મુનિ સુવ્વણ અરહા કવિલ વાસુદેવ એવ વયાસી ) તથ મુનિ સુવ્રત પ્રમુ  
ને ઉસ કપિલ વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કહા—( નો સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા !  
એવ ભૂય વા ૬ જણ અરહતો, વા અરહત પાસહ, ચક્રવટ્ટી વા ચક્રક  
વર્ટિ પામહ, ચલદેવો વા, ચલદેવ પાસહ, વાસુદેવો વા વાસુદેવ પાસહ )  
હે દેવાનુપ્રિય ! એસી વાત ન છુઈ હૈ, વર્તમાનમેં ન હોતી હૈ ઓર ન ભવિ  
ષ્યત્કાલ મેં હોનેવાલી હૈ કિ જો એક તીર્થંકર દૂસરે તીર્થંકર સે મિલે,  
એક ચક્રવર્તી દૂસરે ચક્રવર્તી સે મિલે, એક ચલદેવ દૂસરે ચલદેવ સે મિલે,  
એક વાસુદેવ દૂસરે વાસુદેવ સે મિલે । એસા સિદ્ધાન્ત કા નિયમ હૈ  
કિ એક તીર્થંકર કા દૂસરે તીર્થંકર સે કમી મી મિલાપ નહીં હોતા હૈ ।

ળ અહમતે ! કણ્ઠ વાસુદેવ ઉત્તમપુરિસ સરિસપુરિસ પાસામિ )

આ પ્રમાણે સાભળીને તે કપિલવાસુદેવે મુનિસુવ્રત પ્રભુને વદન તેમજ  
નમન કર્યા વદન અને નમન કરીને તેમની સામે આ પ્રમાણે વિનતી કરતા  
કહ્યું કે હે ભદત ! હું જાઉં છું અને જઈને મારા જેવા તે ઉત્તમ પુરુષ કૃષ્ણ  
વાસુદેવ કે જેઓ વાસુદેવ પદને શોભાવે છે—તેમને મળું છું ( તણ મુનિ  
સુવ્વણ અરહા કવિલ વાસુદેવ એવ વયાસી ) ત્યારે મુનિસુવ્રત પ્રભુએ તે કપિલ  
વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

( નો સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! એવ ભૂય વા ૩ જણ અરહતો વા અરહત પાસહ,  
ચક્રવટ્ટી વા ચક્રવર્ટિ પાસહ, ચલદેવો વા, ચલદેવ પાસહ, વાસુદેવો વા  
વાસુદેવ પાસહ )

હે દેવાનુપ્રિય ! એવી વાત કોઈ પણ દિવસે સંભવી નથી, વર્તમાનમા  
પણ સંભવી શકે તેમ નથી અને ભવિષ્યકાળમા પણ સંભવી શકશે નહિ કે  
એક તીર્થંકર બીજા તીર્થંકરને મળે, એક ચક્રવર્તી બીજા ચક્રવર્તીને મળે,  
એક બળદેવ બીજા બળદેવને મળે આ જાતનો સિદ્ધાન્તનો નિયમ છે કે એક



ततस्तदनन्तर स कपिलो वासुदेवो यत्रैवामरकका राजधानी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्यामरकका राजधानी सभग्नतोरणां यावत् पश्यति, दृष्ट्वा पद्मनाभमेवमवादीत्-किं-कस्मात् खलु हे देवानुप्रिय ! एषा अमरकका सभग्नतोरणा यावत्-सन्निपतिता ? ततः खलु स पद्मनाभः कपिल वासुदेवमेवमवादीत्-एव खलु हे स्वामिन् ! जम्बूद्वीपाद् द्वीपाद् भारताद् वर्षाद् इह हव्यमागत्य कृष्णेन वासुदेवेन 'तुम्हे परिभूए' युष्मान् परिभूय=अनादृत्य कपिलवासुदेवेन मम काऽपि हानिर्न शक्यते कर्तुमिति मनमि निधायेत्यर्थः, अमरकका यावत् सन्निपतिता ।

से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता अमरककं रायहाणि सभग्नतोरण जाव पामह, पासित्ता पडमणाभ एव वयासी ) तत्र कृष्ण वासुदेव ने कपिल वासुदेव के शख शब्द को सुना सुनकर उन्हो ने भी पांचजन्य शख को अपने मुख की वायु से पूरित किया-यजाया-इस तरह वे दोनों वासुदेव साक्षात् रूप में न मिलकर शख के शब्द से परस्पर में मिले । अब वे कपिल वासुदेव जहा वह अमरकका नगरी थी वहां आये । वहां आकर उन्होंने अमरकका राजधानी को सभग्न तोरण आदि वाला देखा । देखकर तत्र पद्मनाभ राजा से इस प्रकार कहा-( कृष्ण देवाणुप्पिया ! एमा अमरकका सभग्न जाव सन्निवड्या ? तएण से पडमणाहे कविलं वासुदेव एव वयासी-एव खलु सामी ? जम्बूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इह हव्यमागम्म कण्हेण वासुदेवेण तुम्हे परिभूए अमरकका जाव सन्निवाडिया ) हे देवानुप्रिय ! यह अमरकका नगरी क्या कारण है-जो

अमरककारायहाणि सभग्नतोरण जाव पासह, पासित्ता पडमणाभ एव वयासी )

ज्यारे कृष्णवासुदेवे कपिल वासुदेवना शयने ध्वनि सालये त्यारे तेमणे पण पोताना पायजन्य शयने मुथना पवनथी पूरित कर्यो अने वगाड्यो आ रीते तेयो अने वासुदेव प्रत्यक्ष रीते नडि पण शयना ध्वनिथी परस्पर भज्या त्थारपछी ते कपिल वासुदेव ज्या ते अमरकका नगरी डती त्या आव्या त्या आवीने तेमणे अमरकका राजधानीने धज्यो वगे रेथी नष्ट थयेली नेध, नेधने तेमणे पद्मनाभ राजने आ प्रभाणे कह्यु के—

( कृष्ण देवाणुप्पिया एमा अमरकका सभग्न जाव सन्निवड्या ? तएण से पडमणाहे कपिल वासुदेव एव वयासी-एव खलु सामी ! जम्बूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इह हव्यमागम्म कण्हेण वासुदेवेण तुम्हे परिभूए अमरकका जाव सन्निवाडिया )

लस्य वासुदेवस्य शङ्खशब्दम् 'आयन्नेह' आकर्णयति=नृणोति, आकर्ण्य पाञ्च  
जन्य यावत् मुखपातपूरित करोति=कृष्णो वासुदेव स्वीय शङ्ख वादयति, ततः  
खलु द्वात्रिंश वासुदेवौ 'सखसहसामायारि' शङ्खशब्दमामाचारि=शङ्खशब्देन  
परस्परमिलन कुरुतः ।

पचयन्न सख परामुसह, परामुसित्ता मुहवायपूरिय करेइ ) इस प्रकार  
प्रभु का आदेश सुनकर उन कपिलवासुदेव ने उन प्रभु मुनिसुव्रत  
भगवत् को वदना की, नमस्कार किया । वदना नमस्कार करके फिर वे  
अपने प्रधान हस्ती पर आरुढ़ हुए । और आरुढ़ होकर शीघ्र जहाँ  
लवणसमुद्र का वेलातट था -वहाँ पहुँचे । वहाँ पहुँचकर उन्होंने लवण  
समुद्र के बीच से होकर जाते हुए कृष्णवासुदेव की श्वेत पीत ध्वजाओं  
के अग्रभाग को देखा देखकर तब मनमें विचार-किया ये ही मेरे जैसे  
उत्तम पुरुष कृष्णवासुदेव लवणसमुद्र के बीच से होकर जा रहे हैं-  
ऐसा विचार कर उन्होंने अपने पाचज व शख को उठाया और उठा  
कर उसे अपने मुख की वायु से पूरित किया (तएण से कण्हे वासुदेवे  
कविलस्स वासुदेवस्स सखसह आयन्नेह, आयन्नित्ता, पचजन्ने, जाव  
पूरिय करेइ, तएण दो वि वासुदेवा सखसहसामायारि करेइ, तएण

लवणसमुद्र मज्झ मज्झेण वीइवयइत्ति कट्टु पचजन्न सख परामुसइ परामुसित्ता  
मुहवायपूरिय करेइ )

आ रीते प्रभुनी आशा सावणीने ते कपिल वासुदेवे ते प्रभु मुनिसुव्रत  
लगवतने वदन अने नमस्कार कय्यो वदन अने नमस्कार करीने तेओ पोताना  
प्रधान हाथी उपर सवार थया अने सवार थधने जट्टी जया लवण समु  
द्रने किनारे छतो त्या पडोआ त्या पडोआने तेमणे 'लवणसमुद्रनी वन्ने  
थधने पसार थता कृष्णवासुदेवनी सङ्केह-पीणी ध्वज्जओना अग्रभागने जेथो  
अने जेधने मनमा विचार कयो के भारा जेवा उत्तम पुरुष कृष्णवासुदेव  
ओ ज छे के जेओ लवण-समुद्रनी वन्ने थधने पसार थध रक्षा छे आभ  
विचार करीने तेमणे पाथ अन्य श धने उठाओ अने उठावीने पोताना मुपना  
पवनथी तेने पूरित कयो

( तएण से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स सखसह आयन्नेह, आय  
न्नित्ता, पचजन्न जाव पूरिय करेइ तएण दो वि वासुदेवा सखसह सामायारि  
करेइ, तएण से कविले वासुदेवे जेणेअ अमरकका तेणेअ

ततस्तदनन्तर स कपिलो वासुदेवो यत्रैवामरकङ्काराजधानी तत्रैवोपागच्छति,  
उपागत्यामरकङ्का राजधानी सभग्नतोरणां यावत् पश्यति, दृष्ट्वा पद्मनाभमेवमवा  
दीत्-किं-कस्मात् खलु हे देवानुप्रिय ! एषा अमरकका सभग्नतोरणा यावत्-  
सन्निपतिता ? ततः खलु स पद्मनाभः कपिल वासुदेवमेवमवादीत्-एव खलु हे  
स्वामिन् ! जम्बूद्वीपाद् द्वीपाद् भारताद् उपाद् इह हव्यमागत्य कृष्णेन वासुदेवेन  
'तुम्हे परिभूए' युग्मान् परिभूय=अनादृत्य कपिलवासुदेवेन मम काऽपि हानिर्न  
शक्यते कर्तुमिति मनसि निधायेत्यर्थः, अमरकङ्का यावत् सन्निपतिता ।

से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता  
अमरककं रायहाणि सभग्नतोरण जाव पामह, पासित्ता पउमणाभ  
एव वयासी ) तत्र कृष्ण वासुदेव ने कपिल वासुदेव के शख शब्द को  
सुना सुनकर उन्होंने ने भी पांचजन्य शख को अपने मुख की वायु से  
पूरित किया-बजाया-इस तरह वे दोनों वासुदेव साक्षात् रूप में न  
मिलकर शख के शब्द से परस्पर में मिले । अब वे कपिल वासुदेव  
जहा वह अमरकका नगरी थी वहाँ आये । वहा आकर उन्होंने अमर-  
कका राजधानी को सभग्न तोरण आदि वाला देखा । देखकर तब पद्म-  
नाभ राजा से इस प्रकार कहा-(किण्ण देवाणुप्पिया ! एसा अमरकका  
सभग्न जाव सन्निवड्या ? तएण से पउमणाहे कविल वासुदेव एव  
वयासी-एव खलु सामी ? जम्बूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ  
इह हव्वमागम्म कण्हेण वासुदेवेण तुम्हे परिभूए अमरकका जाव  
सन्निवाडिया ) हे देवानुप्रिय ! यह अमरकका नगरी क्या कारण है-जो

अमरककारायहाणि सभग्नतोरण जाव पासह, पासित्ता पउमणाभ एव वयासी )

न्यारे कृष्णवासुदेवे कपिल वासुदेवना शब्दो ध्वनि सालोये। त्वादे  
तेमहे पणु पोताना पाचजन्य शब्दो भुजना पवनथी पूरित कर्यो अने  
वगाड्यो। आ रीते तेयो अने वासुदेव प्रत्यक्ष रीते नडि पणु शब्दना  
ध्वनिथी परस्पर भज्या त्वात्पणी ते कपिल वासुदेव न्या ते अमरकका नगरी  
डती त्या आव्या त्या आवीने तेमहे अमरकका राजधानीने धनयो वजे  
रेथी नष्ट थयेली जेष्ठ, जेष्ठने तेमहे पद्मनाभ राजने आ प्रभावे कहु के—

( किण्ण देवाणुप्पिया ऐसा अमरकका सभग्न जाव सन्निवड्या ? तएण से  
पउमणाहे कपिल वासुदेव एव वयासी-एव खलु सामी ! जम्बूदीवाओ दीवाओ  
भारहाओ वासाओ इह हव्वमागम्म कण्हेण वासुदेवेण तुम्हे परिभूए अमरकका  
जाव सन्निवाडिया )

તતઃ સ્વલુ સ કપિલો વાસુદેવઃ પદ્મનાભસ્યાન્તિકે એતમર્થ શ્રુત્વા પદ્મનામ્  
 એવ=વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ, અગ્રાદીત્-હ ભો ! પદ્મનામ ! અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! =મરણ  
 વાઙ્મુક !, કિં સ્વલુ સ્વ ન જાનાસિ મમ સદશપુરુષસ્ય વાસુદેવસ્ય વિષ્ણુ=વિરુદ્ધ  
 કુર્વેત્, ક્યુત્ત્વા આશુરુસઃ=શીઘ્ર ક્રોધાડકાન્ત, યાત્ પદ્મનામં ' ણિવિસયં '  
 નિર્વિષય=વિષયોત્ સ્વરાજ્યાદ્ નિર્ગત-નિષ્કામિત કર્તુમ્ ' આણવેહ ' આજ્ઞાપયતિ  
 પદ્મનામસ્ય પુત્રમમરકદ્વારાજધાન્યા મહતા મહતા રાજ્યાભિષેકેણ અભિષિચ્છતિ,

સમગ્ર તોરણ આદિ વાલી હોકર ભૂમિસાત્ હો ગઈ છે । તથ પદ્મનાભ  
 રાજા ને उस कपिल वासुदेव से इस प्रकार कहा-हे स्वामिन् ! इसका  
 कारण इस प्रकार है-जबूद्रीप नाम के प्रथम द्वीप से भरतक्षेत्र में यहाँ  
 बहुत ही शीघ्र आकर कृष्ण वासुदेव ने आपकी कुछ भी परवाह न  
 करके-कपिल वासुदेव हमारी कुछ भी हानि नहीं कर सकते हैं-ऐसा  
 अपने मन में समझ करके-अमरकका में आकर-उसे पहिले सभग्र  
 तोरण वाली किया-और बाद में विध्वस्तकर दिया । ( तएण से कविले  
 वासुदेवे पउमणाहस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चए पउमणाह एव वयासी )  
 तथ पद्मनाभ राजा के मुख से इस समाचार को सुनकर के उस कपिल  
 वासुदेव ने उस पद्मनाभ राजा से इस प्रकार कहा-( ह भो ! पउम-  
 णाभा ! अपत्थियपत्थिया ! किन्न तुम न जाणासि मम सरिसपुरिस  
 स्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पिय करेमाणे ? असुरुत्ते जाव पउमणाह  
 णिविसय आणवेह, पउमणाहस्स पुत्त अमरकका रायहाणीए महया

હે દેવાનુપ્રિય ! શા કારણથી આ અમરકકા નગરીની ધન્યતા વગેરે  
 પણ તૂટી ગઈ છે અને સપૂર્ણ નગરી વિનષ્ટ થઈ ગઈ છે ! ત્યારે પદ્મનાભ  
 રાજાએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામી ! વાત એવી છે  
 કે જબૂદ્રીપ નામના પ્રથમ દ્વીપના ભરતક્ષેત્રથી અહીં બહુ જ જલદી આવીને  
 કૃષ્ણવાસુદેવે તમારી જગ્યાએ હરકાર કર્યા વગર “ કપિલ વાસુદેવ અમારૂં કંઈજ  
 કરી શકશે નહિ ” આ જાતનો પોતાના મનમાં વિચાર કરીને પહેલાં તે  
 અમરકકાના તોરણો નષ્ટ કર્યા અને ત્યારપછી આ નગરીને પણ જમીનદોસ્ત  
 કરી નાખી છે ( તएण से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चए  
 पउमणाह एव वयासी ) ત્યારે પદ્મનાભ રાજાના મુખથી આ બધી વિગત સાંભ  
 ળીને તે કપિલવાસુદેવે તે પદ્મનાભ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

( ह भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया ! किन्न तुम न जाणासि मम सरिस  
 पुरिसस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पिय करेमाणे ? असुरुत्ते जाव

यावत् प्रतिगत = पद्मनाभस्य पुत्र राज्येऽभिषिच्य कपिलवासुदेवो यस्यादिशः  
मादुर्भूतस्ता दिश प्रतिगत इति भावः ॥ सू० ३० ॥

मूलम्—तए णं से कण्हे वासुदेवे लवणसमुद् मज्झं मज्झेणं  
वीडवयइ, त पच पडवे एवं वयासी-गच्छह ण तुब्भे देवानु-  
प्पिया । गंगामहानइ उत्तरह जाव ताव अह सुट्ठियं लवणा-  
हिवइं पासामि, तए णं त पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं  
वुत्ता समाणा जेणेव गंगामहानइ तेणेव उवागच्छति उवाग-  
च्छित्ता एगट्ठियाए णावाए मग्गणगवेसणं करेति करित्ता एग-  
ट्ठियाए नावाए गंगामहानइ उत्तरति उत्तरित्ता अणमणं एवं  
वयंति—पहू णं देवाणुप्पिया । कण्हे वासुदेवे गंगामहाणइं वाहाहि  
उत्तरित्तिए उदाहु णो पभू उत्तरित्तिएत्ति कट्टु एगट्ठियाओ नावाओ

महया रायाभिसेएण अभिसिंचइ जाव पडिगए ) अरेओ मरणवाञ्छक  
पद्मनाभ ! मेरे जैसे पुरुष कृष्ण वासुदेव का विप्रिय-अनिष्ट-करते हुए  
तुमने मेरा कुछभी ख्याल नहीं किया ? इस प्रकार कह कर वे उस पर  
बहुत अधिक कुपित हो गये । यावत् उस पद्मनाभ राजा को उन्होंने ने  
अपने देश से बाहिर भी निकाल दिया । तथा-उसका जो पुत्र सुनाभ  
था । उस को बड़े भारी उत्सवके साथ राज्य में अभिषिक्त किया । इस  
प्रकार पद्मनाभ के पुत्र को राज्य में अभिषिक्त करके वे कपिल वासु-  
देव जिस दिशासे आये थे उस दिशाकी ओर वापिस चले गये ॥ सू० ३० ॥

सय आणवेइ, पउमणाहस्स पुत्त अमरकका रायहाणीए महया महया रायाभिसे-  
एण अभिसिंचइ, जाव पडिगए )

अरे, ओ मृत्युने छन्दनार पद्मनाभ ! मारा जेवा पुरुष कृष्णवासुदेवनु  
पुत्र करता ते भारी पणु दरकार करी नहि ? आ प्रभाणु कहीने तेओ भूणज  
होषित थछ गया यावत् ते पद्मनाभ राजने पोताना देशथी णहार पणु नसाडी  
भूक्ये । त्थारपछी तेना पुत्र सुनाभनो लारे उत्सवनी साथे राज्याभिषेक कर्यो  
आ रीते पद्मनाभना पुत्रने राज्यासने अभिषिक्त करीने कपिल वासुदेव जे  
दिशा तरक्षथी आव्या हुता ते दिशा तरक्ष पाछा जता रक्षा ॥ सूत्र ३० ॥



णूमेति णूमित्ता कण्हं वासुदेवं पडिवालेमाणार चिट्ठंति, तएणं  
 से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं पासइ पासित्ता जेणेव  
 गंगामहाणइं तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ  
 समता मग्गणगवेसणं करेइ करित्ता एगट्ठियं अपासमाणे एगाए  
 वाहाए रहं सत्तुरगं सत्तारहिं गेण्हइ एगाए वाहाए गंगं महाणइं  
 वासट्ठिं जोयणाइ अद्धजोयणं च विच्छिन्न उत्तरिउ पयत्ते यावि  
 होत्था, तएण से कण्हे वासुदेवे गंगामहाणइं बहुमज्झदेस-  
 भागं सपत्ते समाणे सते तते परितते वद्धसेए जाए यावि होत्था  
 तएण कण्हस्स वासुदेवस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव  
 समुप्पज्जित्था अहो ण पंच पंडवा महावलवगा जेहि गंगा-  
 महाणइं वासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च विच्छिण्णा वाहाहिं  
 उत्तिण्णा, इत्थ भूएहि णं पचहि पंडवेहि पउमणाभे राया जाव  
 णो पडिसेहिए, तएण गंगादेवी कण्हस्स वासुदेवस्स इम एया-  
 रूव अज्झत्थिय जाव जाणित्ता थाह वितरइ, तएण से कण्हे  
 वासुदेवे सुहुत्तर समासासइ समासासित्ता गंगामहाणइं वावट्ठिं  
 जाव उत्तरइ उत्तरित्ता जेणेव पच पंडवा तेणेव उवागच्छइ उवा-  
 गच्छित्ता पच पंडवे एव वयासी—अहो णं तुब्भे देवाणुप्पिया ।  
 महावलवगा जेण तुब्भेहिं गंगामहाणइं वासट्ठिं जाव उत्तिण्णा,  
 इत्थ भूएहि तुब्भेहि पउम जाव णो पडिसेहिए, तएण ते पच  
 पंडवा कण्हेण वासुदेवेणं एव वुत्ता समाणा कण्हं वासुदेव एव  
 वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । अम्हे तुब्भेहि विसज्जिया समाणा

जेणेव महाणई तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता एगद्वियाए  
मग्गणगवेसण त चेव जाव णूमेमोतुब्भे पडिवालेमाणा चिट्ठामो  
तएण से कण्हे वासुदेवे तेसि पंचण्हं पांडवाणं एयमट्ठ सोच्चा  
णिसम्म आसुरुत्ते जाव तिवालियं एव वयासी—अहो णं जया  
मए लवणसमुद्धं दुवे जोयणसयसहस्सा विच्छिण्ण वीइवइत्ता  
पउमणाभ हयमहिय जाव पडिसेहिता अमरकका संभग्गं दोवई  
साहत्थि उवणीया तथा ण तुब्भेहि मम महप्पं ण विण्णायं  
इयाणि जाणिस्सहत्तिकट्ठ लोहदंडं परासुसइ, पंचण्हं पांडवाणं  
रहे चूरेइ चूरित्ता णिव्विसए आणवेइ आणवित्ता तत्थ ण रह  
महणे णाम कोड्डे णिव्विट्ठे, तएण से कण्हे वासुदेवे जेणेव सए  
खधावारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता सएणं खधावारेणं सद्धि  
अभिसमन्नागए यावि होत्था, तएण से कण्हे वासुदेवे जेणेव चार-  
वई णयरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता अणुपविसइ ॥सू० ३१॥

टीका—‘ तएण से इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु स कृष्णो वासुदेवो लवण  
समुद्रस्य मध्यमध्येन व्यतिप्रजति=गच्छति व्यतिप्रज्य तान् पञ्च पाण्डवान् एव  
मवादीत्—गच्छत खलु यूय हे देवानुप्पिया । गङ्गामहानदीमुत्तरत्त=उत्तीर्णा भवत,

तएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) उन कृष्णवासुदेवने  
( लवणसमुद्र ) जब लवण समुद्र में ( मज्झ मज्झेण वीइवयइ ) बीच से  
होकर वे चले जा रहे थे । ( ते पच पडवे एव वयासी ) तब पाच पांडवों  
से ऐसा कहा—(गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! गंगामहानइ उत्तरह जाव

तएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (से कण्हे वासुदेवे) ते कृष्णवासुदेवे (लवणसमुद्र)  
के म्थारे तेओ लवण समुद्रनी ( मज्झ मज्झेण वीइवयइ ) म्थे थण्णे पसार  
थता उता त्थारे ( ते पच पडवे एव वयासी ) पाचे पांडवाने आ प्रभाणे  
उधु ( गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! गंगा महानदि उत्तरह जाव ताव अह सुद्धिय

यावत् तारदह सुस्थित देव लवणाधिपतिं पश्यामि, सुस्थितेन देवेन सह मिलित्वा तमापृच्छ्यागच्छामि, ततः खलु ते पञ्चपाण्डवा ऋणेन वासुदेवेन एवमुक्ताः सन्तो यत्रैव गङ्गामहानदी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य ' एगट्टियाए ' एकार्थि कायाः=महानौकासमानकार्यकारिणा ' णावाए ' नावः=नौकाया मार्गणगवेपण कुर्वन्ति । कृत्वा=मार्गणगवेपण कृत्वा नौकायामारुह्य ते पञ्च पाण्डवा एकार्थि-कया नावा गङ्गामहानदी मुत्तरन्ति, उत्तीर्य अन्योन्यम्=परस्परमेव वदन्ति-' पहु ' प्रभु.=समर्थ, खलु हे देवानुप्रियाः ! कृष्णो वासुदेवो गङ्गामहानदी ' बाहार्हि ' बाहुभ्या=भुजाभ्याम् ' उत्तरित्तए ' उत्तरीतुम् ' उवाहु ' उताहो-अथवा नो

ताव अह सुद्विग लवणाहिवड पासामि ) हे देवानुप्रिया ! तुमलोग जाओ-और गगानदी को पार करो तबतक मैं लवणसमुद्राधिपति सुस्थित देव से मिलकर और उनकी आज्ञा लेकर आता हूँ । ( तएण ते पच पडवा कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ता समाणा जेणेव गगा महानई तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता एगट्टियाए णावाए मग्गणगवेसण करेति, करित्ता एगट्टियाए गगामहानइ उत्तरति ) इस तरह कृष्ण वासु देव द्वारा कहे गये वे पाचों पांडव जहां गगा महानदी थी-वहा आये । वहा आकर के उन्होंने एकार्थिक-महानौकासे जैसी कार्य साधक-नौका मार्गणा एव गवेपणा की, मार्गणा गवेपणा कर के वे पांचो पांडव नौका पर चढ गगा महानदीसे पार हो गये । ( उत्तरित्ता अण्णमण्ण एव वयति पहुण देवाणुप्पिया ! कण्हे वासुदेवे गगा महानई बाहार्हि उत्तरि-

लवणाहिवइ पासामि ) हे देवानुप्रियो ! तमे लोके डवे नान्हे अने गगा नदीने ओणगे त्यासुधी हु लवणु समुद्रना अधिपति सुस्थित देवने भणीने अने तेभनी आज्ञा प्राप्त करीने आबुं हु

( तएण ते पच पडवा कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ता समाणा, जेणेव गगा महानई तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता एगट्टियाए णावाए मग्गणगवेसण करेति, करित्ता एगट्टियाए नावाए गगा महानइ उत्तरंति )

आ रीते कृष्णवासुदेव वडे आज्ञापित थयेला ते पांचे पांडवो ज्या गगा भडा नदी छती त्या आज्ञा त्या आवीने तेभणु ओकार्थिक भडानौका जेवी काममा आवी शके तेवी नौकानी मार्गणा तेभण गवेपणा करी मार्गणा तेभण गवेपणा करीने ते पांचे पांडवो नौका उपर सवार थयने गगा भडा नदीने पार छतरी गया

( उत्तरित्ता अण्णमण्ण एव वयति पहुण देवाणुप्पिया ! कण्हे वासुदेवे गगा-

प्रभुः=समर्थ उत्तरीतुम्, इति कृत्वा गङ्गामहानद्या वाहुभ्यामुत्तरणे कृष्णवासु-  
वदेस्य सामर्थ्यमस्ति, नास्ति वा तद् विजानामीति विचार्य एकार्थिका नाव=  
नौका 'णूमेति' गोपयन्ति । गोपयित्वा कृष्ण वासुदेव 'पडिवालेमाणा' प्रति-  
पालयन्त =प्रतीक्षमाणाः तिष्ठन्ति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः सुस्थित देव  
लवणाधिपतिं पश्यति=सुस्थितेन साक मिलति दृष्ट्वा तमापृच्छथ यत्रैव गङ्गामहा-  
नदी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य एकार्थिकाया नावः=नौकाया मार्गणगवेषणं  
करोति, कृत्वा, एकार्थिकां नावमपश्यन् एकेन वाहुना रथ सतुरग=सहाश्व,

तए उदाहृणो पभू उत्तरित्तए त्तिकट्टु एगट्टियाओ णावाओ णूमेति,  
णूमित्ता कण्हं वासुदेव पडिवाले माणा २ चिट्ठति, तएण से कण्हे वासु-  
देवे सुट्ठिय लवणाहिवइ, पासइ, पासित्ता जेणेव गगा महानई तेणेव  
उवागच्छइ ) जय पार होकर वे तट पर पहुँच चुके-तब परस्पर में  
उन्होंने ने ऐसा विचार किया-हे देवानुप्रियो ! देखो कृष्ण वासुदेव गंगा  
महानदी को हाथों से तैरकर पार करने में समर्थ हो सकते हैं  
या नहीं हो सकते हैं ? इस प्रकार विचार करके उन्होंने ने उस एकार्थि  
नौका को कृष्ण वासुदेव के आने के लिये वापिस उस पार भेजा नहीं  
वहीं पर छिपा दिया । और छिपाकर कृष्ण वासुदेव की प्रतीक्षा करते  
वे वही ठहरे रहे । उधर-कृष्ण वासुदेव लवणसमुद्राधिपति सुस्थित  
देव से जाकर मिले और उसकी आज्ञा लेकर जहाँ गंगा नदी थी वहाँ  
आये । (उवागच्छित्ता एगट्टियाए सव्वओ समता मग्गणगवेसण करेइ,  
करित्ता एगट्टिय अपासमाणे एगाए वाहाए रह सतुरगं ससारहिं गेण्हइ

महानई वाहाहिं उत्तरित्तए, उदाहृ णो पभू उत्तरित्तए त्तिकट्टु एगट्टियाओ णावाओ  
णूमेति, णूमित्ता कण्हं वासुदेव पडिवालेमाणार २ चिट्ठति, तए ण से कण्हे वासुदेवे  
सुट्ठिय लवणाहिवइ, पासइ, पासित्ता जेणेव गगा महानई तेणेव उवागच्छइ )

पार उतरीने न्यारे तेओ किनारे पडोयी गया त्यारे तेभणु परस्पर  
विचार क्यो के हे देवानुप्रियो ! कृष्णवासुदेव गंगा महानदीने डाथो वडे  
तरीने पार करी शके के नडि ? आम विचार करीने तेभणु ते 'एकार्थि'  
नौकाने कृष्णवासुदेवने लाववा भाटे पाछी भोडली नडि पणु त्याज छुपावी  
दीधी अने छुपावीने तेओ त्याज कृष्णवासुदेवनी प्रतीक्षा करता रोकाई गया  
कृष्णवासुदेव लवण समुद्राधिपति सुस्थितदेवने भज्या अने तेनी आज्ञा प्राप्त  
करीने न्या गंगा नदी छती त्या आन्या

( उवागच्छित्ता एगट्टियाए सव्वओ समता मग्गणगवेसण करेइ, करित्ता  
एगट्टिय अपासमाणे एगाए वाहाए रह सतुरगं ससारहिं गेण्हइ, एगाए वाहाए

ससारथिं गृह्णाति एकेन ग्राह्युना गङ्गा महानदीं ' वासट्ठि ' द्वापट्ठि योजनानि  
अर्धयोजनं च ' वित्थिन्न ' विस्तीर्णम्, उत्तरितुं प्रवृत्तथाप्यभवत्, ततः खलु  
स कृष्णो वासुदेवो गङ्गामहानद्या बहुमज्झदेशभागं संप्राप्तः सन् ' सते ' श्रान्तः=  
श्रमप्राप्तः, ' तते ' तान्तः=खिन्न ' परितते ' परितान्तः=पर्वथा खिन्नः ' बद्ध-  
सेए ' समाप्तस्वेदः, जातथाप्यभवत् ।

ततः खलु कृष्णस्य वासुदेवस्यापमेतद्वृत्तं आध्यात्मिको यावत् मनोगत  
सकल्पः समुदपद्यत-अहो खलु पञ्च पाण्डवा महाबलवन्तः, यैर्गङ्गामहानदी द्वापट्ठि  
योजनानि अर्धयोजनं च वित्थिना-विस्तीर्णा ग्राह्युनामुत्तीर्णा, ' इत्थभूएहिं '  
इत्थभूतैः-ईदृशपराक्रमशालिभिः खलु पञ्चभिः पाण्डवैः पञ्चनाभो राजा यावत् नो

एगाए घाहाण गग महान्ह वासट्ठि जोयणाइ अद्धजोयण च विच्छिन्न उत्त  
रिपयत्ते यावि होत्था ) चहा आकर के उन्हीं ने एकार्थिक नौका की सब  
तरफ सब प्रकारसे मार्गणा गवेषणा की 'मार्गणागवेषण करके जब उनके  
देखने में एकार्थिक नौका नहीं आई, तब सारथि और घोड़ों से युक्त  
रथ को उन्हीं ने एक हाथ से पकड़ा और एक हाथ से दूर, माढ़े  
वासठ, योजन विस्तीर्ण उस गंगा महानदी को तैरकर पार करना  
प्रारम्भ किया । ( तएण से कण्हे वासुदेवे गगा महान्हए बहुमज्झदेस  
भागं सपत्ते समाणे सते, तते, परितते, बद्धसेए जाए यावि होत्था,  
तएण कण्हस्स वासुदेवस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था  
-अहोण पच पडवा महाबलवगा, जेहिं गगामहान्ह वासट्ठि जोयणाइ  
अद्धजोयण च विच्छिण्णा वाहाहिं उत्तिण्णा इत्थभूएहिं ण पचहिं पड

गग महान्ह वासट्ठि जोयणाइ अद्धजोयण च विच्छिन्न उत्तरिपयत्ते यावि होत्था)

त्या आवीने तेमण्णे ' ऐकार्थिक ' नौकानी येमेर अधी रीते मार्गणा  
गवेषणा करी मार्गणा तेमण्ण गवेषणा करीने न्यारे ' ऐकार्थिक ' नौका तेमना  
जेवामा आवी नहिं त्यारे सारथि अने घोडाथी युक्त रथने तेमण्णे ऐक  
हाथमां उपाडये। अने ऐक हाथ वडे दूर" योजन विस्तीर्ण ते गंगा महा  
नदीने तरीने पार करवा लाग्य।

( तएण से कण्हे वासुदेवे गगा महान्हए बहुमज्झदेस भागं सपत्ते समाणे  
सते, तते, परितते, बद्धसेए जाए यावि होत्था, तएण कण्हस्स वासुदेवस्स  
इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-अहोण पच पडवा महाबलवगा जेहिं  
गगा महान्ह वासट्ठि जोयणाइ अद्धजोयण च विच्छिण्णा वाहाहिं



प्रतिषेधितः=नो पराजितः, इदमाश्चर्यम्, ततः खलु गङ्गादेवी कृष्णस्य वासुदेवस्य  
इममेतद्रूपमाध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प ज्ञात्वा 'थाह' स्ताव-गाधवित-  
रति,=ददाति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो मुहूर्तान्तरे 'समासासइ' समाश्व  
सिति-विश्राम प्राप्नोति समाश्वस्य गङ्गामहानदीं द्वापर्णिष्ठ यावद् उत्तरति, उत्तीर्य

वेहिं पद्मणाभे राया जाव णो पडिसेहिए-तएण गङ्गादेवी कण्हस्स  
वासुदेवस्स इम एयारुव अज्झत्थिए जाव जाणित्ता थाह वितरइ ) तैरते  
२ जव वे कृष्णवासुदेव गङ्गा महानदी के ठीक मज्झ-मध्य भाग में  
आये-तब वहा तक आते २ वे श्रम प्राप्त हो गये, खेदखिन्न बन गये,  
और सर्वथा थक गये । यहा तक कि उनके शरीर भर में थकावट की  
बजह से पसीना २ हो गया । तब उन कृष्णवासुदेव को इस प्रकार का  
यह आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ । देखो-ये पाचो  
पाडव बड़े बलिष्ठ है-जिन्होंने ६२॥, योजन विस्तीर्ण इस गङ्गा महा-  
नदी को हाथों से तैरकर पार कर दिया परन्तु यह बड़े आश्चर्य की बात  
है-कि ऐसे पराक्रम से युक्त होते हुए भी इन पाडवों से वह पद्मनाभ  
राजा प्रतिषेधित नहीं हो सका-जीता नहीं जा सका । इस प्रकार के उन  
कृष्णवासुदेव के इस रूप इस आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प को  
गङ्गादेवी ने जानकर उन्हें थाह दे दी (अधार दिया) । (तएण से कण्हे  
वासुदेवे मुहुत्तत्तर समासासइ) थाह प्राप्त कर कृष्णवासुदेव ने वहा

भूएहिं ण पचहिं पडवेहिं पडमणाभे राया जाव णो पडिसेहिए-तएण गङ्गादेवी  
कण्हस्स वासुदेवस्स इम एयारुव अज्झत्थिए जाव जाणित्ता थाह वितरइ )

तरता तरता न्यारे कृष्णवासुदेव गङ्गा महानदीना ओकहम मध्यमा  
आन्था-त्यासुधी आवता आवता तो तेओ थाडी गया, जेहणित्त थर्छ गया,  
अने ओकहम थाडी गया थाडने लीधे तेमनु स पूर्ण शरीर परसेवाथी तरओण  
थर्छ गयु त्यारे ते कृष्णवासुदेवने आ जतने आध्यात्मिक यावत् मनोगत  
सकल्प उद्भव्यो के नुओ आ पाये पाडवो डेटला जधा जलिष्ठ छे के जेमणे  
६२" योजन विस्तीर्ण आ गङ्गा महानदीने डायो वडे तरीने पार डरी छे  
)। ओनी साथे आ पणु ओक नवार्छ जेवी वात छे के ओवा पराक्रमी डोवा  
छताओ आ पाडवोथी ते पद्मनाभ राजा यावत् पराजित करी सकाये। नहि  
कृष्णवासुदेवना गङ्गा महानदीओ आ जतना आध्यात्मिक यावत् मनोगत  
सकल्प जालीने तेमना भाटे थाड आपी (तएण से कण्हे वासुदेवे मुहुत्तत्तर  
समासासइ) थाड भेजवीने कृष्णवासुदेवे थोडीवार त्या विश्राम कर्यो (समासा०)  
विश्राम कर्यो जाह तेमणे

યજ્ઞૈવ પશ્ચ પાણ્ડવાસ્તર્જનોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય પશ્ચ પાણ્ડવાન એમવાદીત—  
અહો સ્વલુ યુય હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! મહાવદ્યત્ત યેન યુષ્માભિર્ગત્ત્રા મહાનદી દ્વાષ્ટિ  
યોજનાનિ ધર્ધયોજન ચ વિસ્તીર્ણા યાત્વ ઉત્તીર્ણા, इत्थभूतैर्युष्माभिः पञ्च-  
नाभो यावत् नो प्रतिपेक्षितः पराजय न प्रापितः, ततः स्वलु ते पश्च पाण्डवाः

થોડી દેર તકવિશ્રામ કિયા (સમાસાં) વિશ્રામ કરકે ફિર ડન્હોને (ગગા  
મહાણઈ ઘાવઢિં જાવ ઉત્તરઈ, ઉત્તરિત્તા જેણેવ પચ પડવા તેણેવ ઉવાગચ્છઈ,  
ઉવાગચ્છિત્તા પચ પડવે એવ વયાસી-અહોણ તુઁમે દેવાણુપ્રિયા ! મહા  
બલવગા જેણ તુઁમેહિં ગગા મહાણઈ વાસઢિં જાવ ઉત્તિણ્ણા, इत्थभूएहिं  
તુઁમેહિં પડમ જાવ ણો પડિસેહિણ, તણ તે પચ પડવા કળ્હે ણ વાસુ  
દેવેણ એવ ઘુત્તા સમાણા કળ્હ વાસુદેવ ણ્વં વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુ-  
પ્રિયા ! અમ્હે તુઁમેહિં વિસજ્જિયા સમાણા જેણેવ ગગા મહાણઈ તેણેવ  
ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા એગઢિયાણ મગ્ગણગવેસણં ત ચેવ જાવ  
ણૂમેમો તુઁમે પડિવાલે માણા ચિઢ્ઢામો ) સાઢે વાસઠ યોજન વિસ્તીર્ણ  
ઉસ ગગા મહાનદી કો તૈરકર પાર કર દિયા ! પાર કરકે ફિર વે વહાં  
આયે-જર્હા યે પાચો પાડવ થે ! વહા આકર ડન્હોં ને ડન પાંચો પાડવો  
સે હસ પ્રકાર કહા-હે દેવાનુપ્રિયોં ! તુમલોગ વહુત હી અધિક બલશાલી  
હો જો તુમલોગોં ને ૬૨॥ યોજન વિસ્તીર્ણ હસ ગગા મહાનદી કો વાહુઓં  
સે તૈરકર પાર કર દિયા ! પરન્તુ યહ આશ્ચર્ય કી વાત હેં કિ હતને બલ  
શાલી હોકર ખી જો તુમ સે પદ્મનાભ રાજા પરાજિત નહી હો સકા !

( ગગા મહાણઈ ઘાવઢિં જાવ ઉત્તરઈ, ઉત્તરિત્તા જેણેવ પચ પડવા તેણેવ  
ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા પચ પડવે એવ વયાસી-અહોણ તુઁમે દેવાણુપ્રિયા !  
મહાબલવગા જેણ તુઁમેહિં ગગા મહાણઈ વાસઢિં જાવ ઉત્તિણ્ણા इत्थ भूएहिं તુઁમેહિં  
પડમ જાવ ણો પડિસેહિણ, તણ તે પચ પડવા કળ્હે ણ વાસુદેવેણ એવ ઘુત્તા  
સમાણા કળ્હ વાસુદેવ એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપ્રિયા ! અમ્હે તુઁમેહિં વિસ  
જ્જિયા સમાણા જેણેવ ગગા મહાણઈ તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા એગઢિયાણ  
મગ્ગણ ગવેસણ ત ચેવ જાવ ણૂમેમો તુઁમે પડિવાલે માણા ચિઢ્ઢામો )

૬૨" યોજન વિસ્તીર્ણ તે ગગા મહાનદીને તરીને પાર પહોચી ગયા  
પાર પહોચીને તેઓ જ્યા પાચે પાડવો હતા ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે  
પાચે પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બહુ જ બળવાન છો  
કેમકે તમે લોકોએ ૬૨" યોજન વિસ્તીર્ણ આ ગગા મહાનદીને હાથે વડે  
તરીને પાર કરી છે પણ એની સાથે આ એક નવાઈ જેવા વાત ~ ~ તમે  
આટલા બધા બળવાન હોવા છતા પણ પદ્મનાભ રાજાને ૨

कृष्णेन वासुदेवेनैवमुक्ताः सन्तः कृष्ण वासुदेवमेवमवादीत्—एव खलु हे देवानु-  
प्रियाः ! वयं युष्माभिविस्मिताः सन्तो यत्रैव गङ्गा महानदी तत्रैवोपागच्छामः,  
उपागत्य 'एगद्वियाए' एकार्थिकाया नावो मार्गणगवेपणं कृत्वा 'तं चेव  
जाव णूमेमो' तदेव=यदुक्तं पूर्वं तदेवात्र बोध्यमित्यर्थः—ता नावमधिरुह्य वयं  
गङ्गामहानदीमुत्तीर्णाः, ततः खलु हे देवानुप्रियाः ! गङ्गा महानदीं बाहुभ्या-  
मुत्तरितुं भवन्तः शक्नुवन्ति नगा, इति ज्ञातुं वयमेकार्थिका नौका यावद् 'णूमेमो'  
गोपयामः, युष्मान् 'पडियालेमाणा' प्रतिपालयन्तः—प्रतीक्षमाणा वयं तिष्ठामः ।

ततः खलु स कृष्णो वासुदेवस्तेषां पञ्चानां पाण्डवानाम् एतमर्थं श्रुत्वा  
आकर्ष्य निशम्य हृद्यवधार्य आशुरुताः—शीघ्रं सजातकोपः, यावत् त्रिपलिकां=रेखा

इस प्रकार जब कृष्णवासुदेवने उन पांचो पांडवों से कहा तब उन्हो ने  
कृष्णवासुदेव से ऐसा कहा हे देवानुप्रिय ! सुनिये—यात इस प्रकार है  
जब हमलोगों को आपने वहां से विसर्जित कर दिया—तब हमलोग  
जहां गंगा महानदी थी—वहां आये—वहां आकर हमलोगों ने एकार्थिक  
नौका की मार्गणा गवेपणा की—नाव के मिलते ही हमलोग उसपर चढ़-  
कर यहाँ गंगा नदी को पार कर आये हैं । हमलोगों ने यहाँ आकर  
फिर हे देवानुप्रिय ! ऐसा विचार किया — कि — कृष्णवासुदेव गंगा  
महानदी को हाथों से पार कर सकते हैं या नहीं—इसी बात को जानने  
के लिये हमलोगो ने उस एकार्थिक नौका को यही छिपा कर रख दिया  
है । और आपकी प्रतीक्षा में यहाँ ठहरे हुए हैं । ( तएण से कण्हे वासु-  
देवे तेसि पचण्हं पाडवाण एयमद्व सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव तिव-

आ रीते न्यारे कृष्णवासुदेवे ते पाये पाडवोने कहुं त्थारे तेमण्णे कृष्णवासु  
देवने आ प्रभाण्णे कहुं के डे देवानुप्रिय ! सालणो, यात अेवी छे के अभने  
अधाने तमे न्यारे विहाय कयां त्थारे अमे लोके न्या गंगा महानदी छती  
त्था आन्या त्था आवीने अधाअे अेकार्थिक नौकानी मार्गणा गवेपणा करी  
नौका प्राप्त थता न अमे अधा तेमा अेसीने गंगा महानदीने पार करीने आ  
तरङ्ग आवी गया आ तरङ्ग आवीने डे देवानुप्रिय ! अमे लोकेअे आ प्रभाण्णे  
विचार कर्यो के—कृष्णवासुदेव गंगा महानदीने हाथो वडे तरीने पार करी शकथे  
के केम ? आ यात नालुवा भाटे न अमे लोकेअे ते अेकार्थिक नौकाने छुपावीने  
तमारी प्रतीक्षा करता अमे अहीं न अेसी रक्षा छता

( तए ण से कण्हे वासुदेवे तेसि पचण्ह पाडवाण एयमद्व सोच्चा णिसम्म  
आसुरुत्ते जाव तिवलिय एव वयासी—अदोण जया मए लवणसमुद दुवे जोयण

યગૌં પશ્ચ પાણ્ડવાસ્તર્જીવોપાગન્ઠતિ, ઉપાગત્ય પશ્ચ પાણ્ડયાન્ એવમવાદીત્—  
અહો સ્વલુ યુય હે દેવાનુપ્રિયાઃ । મહાબલચત્ર યેન યુષ્માભિર્ગદ્ગા મહાનદી દ્વાવદ્ઢિ  
યોજનાનિ અર્ધયોજન ચ વિસ્તીર્ણાં યાચ્છ ઉત્તીર્ણાં, ઇત્યંભૂતૈર્યુષ્માભિઃ પદ્મ-  
નાભો યાચ્છ નો મતિપેધિત પરાજય ન પ્રાપિતઃ, તતઃ સ્વલુ તે પશ્ચ પાણ્ડવાઃ

થોડી દેર તક વિશ્રામ કિયા (સમાસાં) વિશ્રામ કરકે ફિર ડન્હોને (ગગા  
મહાણઈ વાવદ્ઢિ જાવ ઉત્તરઈ, ઉત્તરિત્તા જેણેવ પચ પડવા તેણેવ ઉવાગચ્છઈ,  
ઉવાગચ્છિત્તા પચ પડવે એવ વયાસી-અહોણ તુઁમે દેવાણુપ્રિયા । મહા-  
બલવગા જેણ તુઁમેહિં ગગા મહાણઈ વાસદ્ઢિ જાવ ઉત્તિણ્ણા, ઇત્યંભૂઈ તુઁમેહિં  
પડમ જાવ ણો પડિસેહિણ, તણે તે પચ પડવા કળ્હે ણ વાસુ  
દેવેણ એવ ઘુત્તા સમાણા કળ્હ વાસુદેવ એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુ  
પ્રિયા । અમ્હે તુઁમેહિં વિસજ્જિયા સમાણા જેણેવ ગગા મહાણઈ તેણેવ  
ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા એગદ્ઢિયાણ મગ્ગણગવેસણ ત ચેવ જાવ  
ળૂમેમો તુઁમે પડિવાલે માણા ચિદ્દામો ) સાઢે વાસઠ યોજન વિસ્તીર્ણ  
ઉસ ગગા મહાનદી કો તૈરકર પાર કર દિયા । પાર કરકે ફિર વે વહાં  
આયે-જહાં યે પાચો પાડવ થે । વહા આકર ડન્હોં ને ડન પાંચો પાડવોં  
સે ઇસ પ્રકાર કહા-હે દેવાનુપ્રિયોં । તુમલોગ વહુત હી અધિક બલશાલી  
હો જો તુમલોગોં ને ૬૨ ॥ યોજન વિસ્તીર્ણ ઇસ ગગા મહાનદી કો બાહુઓં  
સે તૈરકર પાર કર દિયા । પરન્તુ યહ આશ્ચર્ય કી વાત હૈં કિ ઇતને બલ  
શાલી હોકર બી જો તુમ સે પદ્મનાભ રાજા પરાજિત નહીં હો સકા ।

( ગગા મહાણઈ વાવદ્ઢિ જાવ ઉત્તરઈ, ઉત્તરિત્તા જેણેવ પચ પડવા તેણેવ  
ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા પચ પડવે એવ વયાસી-અહોણ તુઁમે દેવાણુપ્રિયા !  
મહાબલવગા જેણ તુઁમેહિં ગગા મહાણઈ વાસદ્ઢિ જાવ ઉત્તિણ્ણા ઇત્યં ભૂઈ તુઁમેહિં  
પડમ જાવ ણો પડિસેહિણ, તણે તે પચ પડવા કળ્હે ણ વાસુદેવેણ એવ ઘુત્તા  
સમાણા કળ્હ વાસુદેવ એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપ્રિયા ! અમ્હે તુઁમેહિં વિસ-  
જ્જિયા સમાણા જેણેવ ગગા મહાણઈ તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા એગદ્ઢિયાણ  
મગ્ગણ ગવેસણ ત ચેવ જાવ ળૂમેમો તુઁમે પડિવાલે માણા ચિદ્દામો )

૬૨” યોજન વિસ્તીર્ણ તે ગગા મહાનદીને તરીને પાર પડોચી ગયા  
પાર પડોચીને તેઓ જરા પાચે પાડવો હતા ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે  
પાચે પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બહુ જ બળવાન છો  
કેમકે તમે લોકોએ ૬૨” યોજન વિસ્તીર્ણ આ ગગા મહાનદીને હાથે વડે  
તરીને પાર કરી છે પણ એની સાથે આ એક નવાઈ જેવા વાત છે કે તમે  
આટલા બધા બળવાન હોવા છતાં પણ પદ્મનાભ રાજાને

प्रतिषेध-इतमथितप्रररीरघातितनिपतितचिह्नजपताक यावत् प्रतिषेध्य =  
सग्रामात् प्रतिनिरत्य-पक्षनाभ विजित्येत्यर्थः, अमरकका राजधानी सभग्नतोरणा  
यावद् विनिपातिता-विध्वसिता, तथा-द्रौपदी स्वहस्तेनोपनीता=मवृद्धयः प्रदत्ताः,  
'तयाण' तदा=तस्मिन् समये खलु युष्माभिर्मम 'माहृष्य' माहात्म्य=महत्त्वं  
चलं, 'ण विष्णाय' न विज्ञातम् 'इयार्णि' इदानीम्-अस्मिन् समये 'जाणि-  
स्सह' ज्ञास्यथ, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा, लोहदण्ड 'परामुसइ' परामृशति-गृह्णाति  
पञ्चाना पाण्डवाना रथान् चूर्णयति, चूर्णयित्वा 'णिर्विसए आणवेइ' निर्विष-  
यान् आज्ञापयति-विषयात् स्वदेशतो निर्गताः बहिर्याता इति निर्विषयास्तान्,  
युय मम देशात् निर्विगच्छत, इत्याज्ञापयति स्म 'इत्यर्थ' । आज्ञाप्य तत्र खलु  
'रथमदणे णाम कोट्टे णिविद्धे' रथमर्दननामा कोष्ठो निविष्ट-रथमर्दनपुर नाम  
नगर स्थापितम् ।

ततस्तदनन्तर स कृष्णो वासुदेवो यत्रैव स्वक =निज, 'स्वधावारे' स्कन्धा-  
वारः-सेनानिवेशस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्वकेन स्कन्धावारेण-सोपकरण-  
सैनिकेन सार्वम् अभिममन्वागतः=मिलितश्चाप्यभवत् । ततः खलु स कृष्णो वासु-  
देवो यत्रैव द्वारवती नगरी, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, अनुप्रविशति ॥मु० ३१॥

प्रशस्त ध्वजा पताकाओं को जमीन में मिलादिया-उस की राजधानी  
अमरकका नगरी को ध्वस्त कर दिया, तथा उससे द्रौपदी को अपने  
हाथ से लाकर तुम लोगों को दिया उस समय तुम लोगो ने मेरे चल को  
नहीं जाना ? जो अत्र जानोगे-ऐसा कहकर उन वासुदेव कृष्ण ने लोह  
दंडे को उठाया-और उससे पांचो पाडवों के रथों को चूर २ कर दिया।  
चूर २ कर के फिर उन्हें देश से बाहिर हो जाने की आज्ञा देदी । आज्ञा  
देकर उन कृष्ण वासुदेव ने वहीं पर एक रथमर्दन नाम का नगर बसा  
दिया । इस के बाद वे कृष्ण वासुदेव जहाँ अपना स्कन्धावार था वहाँ

जमीनदेस्त उरी नाभी तेनी राजधानी अमरकका नगरीने नष्ट उरी नाभी  
अने तेनी पात्रेथी द्रौपदीने लावीने तमने सोपी दीधी ते वण्णते तमे छोडा  
भारा अणने जाली शक्या नहि तो हुवे भारा अणने तमे जुओ-आम डहीने  
ते कृष्णवासुदेवे छोड्डडने हाथमा लीधो अने तेनाथी तेमणे पाये पाडवोना  
रथोना भूडेभूडा उडावी दीधा रथोने नष्ट उरीने तेमणे पाये पाडवोने देशथी  
अहार जना रडेवानी आज्ञा आपी आज्ञा आपीने ते कृष्णवासुदेवे ते स्थणे  
ओक रथमर्दन नामे नगर बसाव्यु त्यारपछी ते कृष्णवासुदेव जथा पोताना  
सैन्यनी छावणी छती त्या आव्या त्या आवीने तेओ पोताना सैनिकोने



प्रयुक्ता भृकुटि ललाटे उन्नीय मदर्थ, एवमादीत्-अहो-आश्चर्य खलु ' जया ' यदा-यस्मिन् समये, मया लवणसमुद्र ' दुवे जोयणसयसहस्मा त्रिणिष्णं ' द्वियो जनशतसहस्रिस्तीणं द्विलभ्योजनपरिमित विस्तीर्ण ' वीइवइत्ता ' व्यतिव्रज्य-समुल्लङ्घ्य, पञ्चनाभ राजान ' हयमहिय-जात्र पडिसेहिता ' हतमथित-यावत्

लिय एव वयासी-अहोण जया मग लवणसमुद्र दुवे जोयणसयसहस्मा विच्छिन्न वीइवइत्ता पञ्चनाभ हयमहिय जात्र पडिसेहिता अमरकका सभग० दोवई साहर्त्थि उवणीया तथा ण तुम्हेहिं मम माहप्प ण विण्णाय इयाणि जाणिससह, त्ति कट्टु लोहदड परामुसइ, पचण्ह पड घाणं रहे चूरेइ, चूरित्ता णिव्विसण आणवेइ आणवित्ता तत्थ ण रह मइणे णाम कोइडे णिवेडे, तएण से कण्हे वासुदेवे जेणेव सण खधावारे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सएण खधावारेण सद्धि अभिसमन्ना गए यावि होत्था, से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवईण णयरी तेणेव उवा गच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपविसइ ) उन पाचो पाडवों के मुख से इस कथन रूप अर्थ को सुनकर और उसे अपने हृदय में अवधारित कर उन कृष्णवासुदेव को इकदम क्रोध आ गया । त्रिवलियुक्त उनकी दोनों भृकुटिधा ललाटतट पर चढ़ गई । उसी समय उन्होंने ने उन पाडवों से कहा यह बड़े आश्चर्य की बात है-जिस समय मैंने २ दो लाख योजन विस्तारवाले लवणसमुद्र को उल्लङ्घन कर पञ्चनाभ राजा को संग्राम में जीता-उस की सेना को हत मथित किया-राजचिन्हस्वरूप उसकी

सयसहस्मा विच्छिन्न वीइवइत्ता पञ्चनाभ हय महिय जात्र पडिसेहिता अमर कका सभग० दोवई साहर्त्थि उवणीया तथाण तुम्हेहिं मम माहप्प ण विण्णाय इयाणि जाणिससह, त्ति कट्टु लोहदड परामुसइ, पचण्ह पडघाण रहे चूरेइ, चूरित्ता णिव्विसण आणवेइ आणवित्ता तत्थण रहमइणे णाम कोइडे णिवेडे, तएण से कण्हे वासुदेवे जेणेव सण खधावारे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सएण खधा वारेण सद्धि अभिसमन्नागए यावि होत्था तएण से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपविसइ )

ते पांचे पाडवोना भुअधी आ कथनइय अर्थने साभणीने अने तेने पोताना इइयमा अवधारित करीने ते कृष्णवासुदेव अकदम क्रोधविष्ट थई गया त्रिवलियुक्त तेमना जने लभइ वई थई गया तेमणे ते ज समय पाडवोने आ प्रभाणे कहु के आ अरेअर नवाछ जेवी बात छे के न्यारे मे २ लाख योजन विस्तीर्ण लवण समुद्रने ओणजीने पञ्चनाभ राजाने युद्धमा छत्थे, तेनी सेनाने मथी नाभी, राजचिह्न स्वरूप तेनी प्रशस्त भवण पताकाओने

प्रतिषे य-इतमथितप्रररीरघातितनिपतितविह्वजपताक यायन् प्रतिषेध्य =  
सग्रामात् प्रतिनिवर्त्य-पञ्चनाभ विजिन्येत्यर्थः, अमरकका राजधानी सभग्नतोरणा  
यावद् विनिपातिता-विध्वसिता, तथा-द्रौपदी स्वहस्तेनोपनीता=भवद्भयः प्रदत्ता.,  
'तयाण' तदा=तस्मिन् समये खलु युष्माभिर्मम 'माह्व्य' माहात्म्य=महत्त्वं  
बल, 'ण विण्णाय' न विज्ञातम् 'इयार्णि' इदानीम्-अस्मिन् समये 'जाणि  
स्सह' ज्ञास्यथ, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा, लोहदण्ड 'परामुसइ' परामृशति-गृह्णाति  
पञ्चाना पाण्डवाना रथान् चूर्णयति, चूर्णयित्वा 'णिन्विसए आणवेइ' निर्विप  
यान् आज्ञापयति-प्रिपयात् स्वदेशतो निर्गताः बहिर्याता इति निर्निपयास्तान्,  
युय मम देशात् निर्विगच्छत, इत्याज्ञापयति स्म 'इत्यर्थ' । आज्ञाप्य तत्र खलु  
'रथमदणे णाम कोट्टे णिविट्टे' रथमर्दननामा कोष्ठो निविष्टः-रथमर्दनपुर नाम  
नगर स्थापितम् ।

ततस्तदनन्तर स कृष्णो वासुदेवो यत्रैव स्वक =निज, 'खगावारे' स्कन्धा-  
वारः-सेनानिवेशस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्वकेन स्कन्धावारेण-सोपकरण-  
सैनिकेन सार्वम् अभिममन्वागतः=मिलितश्चाप्यभनत् । ततः खलु स कृष्णो वासु-  
देवो यत्रैव द्वारवती नगरी, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, अनुपविशति ॥मृ० ३१॥

प्रशस्त ध्वजा पताकाओं को जमीन में मिलादिया-उस की राजधानी  
अमरकका नगरी को ध्वस्त कर दिया, तथा उससे द्रौपदी को अपने  
हाथ से लाकर तुम लोगों को दिया उस समय तुम लोगों ने मेरे बल को  
नहीं जाना ? जो अब जानोगे-ऐसा कहकर उन वासुदेव कृष्ण ने लोह  
दण्ड को उठाया-और उससे पांचो पाण्डवों के रथों को चूर २ कर दिया।  
चूर २ कर के फिर उन्हें देश से बाहिर हो जाने की आज्ञा देदी । आज्ञा  
देकर उन कृष्ण वासुदेव ने वहीं पर एक रथमर्दन नाम का नगर बसा  
दिया । इस के बाद वे कृष्ण वासुदेव जहाँ अपना स्कन्धावार था वहाँ

जमीनदोस्त करी नाभी तेनी राजधानी अमरकका नगरीने नष्ट करी नाभी  
अने तेनी पामेथी द्रौपदीने लावने तमने सोपी दीधी ते वणते तमे लोको  
भारा षणने जल्ली शक्या नडि तो डवे भारा षणने तमे जुओ-आम कहीने  
ते कृष्णवासुदेवे लोहदण्डने डायभा लीधा अने तेनाथी तेमणे पाये पाउवोना  
रथोना भूकेभूमा उडावी दीधा रथोने नष्ट करीने तेमणे पाये पाउवोने देशथी  
बहार जता रडेवानी आज्ञा आपी आज्ञा आपीने ते कृष्णवासुदेवे ते स्थणे  
ओक रथमर्दन नामे नगर बसाव्यु त्यारपछी ते कृष्णवासुदेव जथा पोताना  
सैन्यनी धावली छती त्या आ-या त्या आवीने तेओ पोताना सैनिकोने

मूलम्—तएणं ते पंच पडवा जेणं हुरियणाउरे तेणेव उवा-  
गच्छति उवागच्छिता जेणं पट्ट तेणेव उवागच्छति उवाग-  
च्छिता करयल एवं वयासी—एव खलु ताओ । अम्हे कणहेणं  
णिठिवसया आणत्ता, तएणं पडुराया ते पंच पडवे एव वयासी—  
कहण पुत्ता । तुम्हे कणहेण वासुदेवेण णिठिवसया आणत्ता,  
तएण ते पंच पडवा पडुराय एव वयानी—एव खलु ताओ ।  
अम्हे अमरककाओ पडिणियत्ता लवणसमुद्द दोन्नि जोयणसय-  
सहस्साइ बीइवउत्ता तएण से कह अम्हे एव वयासी—गच्छह  
णं तुम्हे देवाणुप्पिया । गंगामहाणट उत्तरह जाव चिट्ठह ताव  
अहं एवं तहेव जाव चिट्ठामो, तएण से कहे वासुदेवे सुट्ठियं  
लवणाहिवइं दट्ठण त चेव सव्वं नव्वं कणहस्स चिंता ण जुज्झइ  
जाव अम्हे णिठिवसए आणवेइ, तएणं से पडुराया ते पंच पडवे एव  
वयासी—दुट्ठु णं पुत्ता । कय कणहस्स वासुदेवस्स विप्पिय करेमा-  
णेहिं, तएण से पडुराया कोत्ति देवि सदावेइ सदावि ता एव  
वयासी गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया । बारवइ कणहस्स वासुदे-  
वस्स णिवेदेहि—एव खलु देवाणुप्पिया । तुम्हे पंच पडवा णिठिव-  
सया आणत्ता तुम च णं देवाणुप्पिया । दाहिणद्वभरहस्स सामी  
त सदिसतु ण देवाणुप्पिया पंच पडवा कयर दिसिं वा विदिस

आये । वहाँ आकर वे अपने सैनिकों के साथ मिले । बाद में जहाँ  
द्वारावती नगरी थी उस ओर चल दिये वहाँ पहुँच कर वे द्वारावती  
नगरी में प्रविष्ट हुए ॥ सू० ३१ ॥

म०या, त्यागणाइ तेओ जे तम्हे द्वारावती नगरी छती ते तरङ्ग खाना थया  
त्या पडोन्निने तेओ द्वारावती नगरीमा प्रविष्ट थया ॥ २

वा गच्छंतु ? , तएण सा कोती पंडुणा एवं पुत्ता समाणी हत्थि-  
खंध दुरुहइ दुरुहित्ता जहा हेट्टा जाव सदिसत्तु णं पिउत्था ।  
किमागमणपओयणं ? , तएण सा कोती कण्ह वासुदेव एवं  
वयासी-एव खलु पुत्ता । तुम पच्च पंडवा णिविसया आणत्ता  
तुम च णं दाहिणद्धुभरह जाव विदिस वा० गच्छंतु ? , तएण  
से कण्हे वासुदेवे कोति देवि एव वयासी-अपूर्इवयणाण पिउ-  
त्था । उत्तमपुरिसा वासुदेवा बलदेवा चक्रवट्ठी त गच्छंतु ण  
देवाणुप्पिया । पंच पडवा दाहिणिह वेलाऊल तत्थ पडुमहुर  
णिवेसंतु मम अदिट्ठसेवगा भवतु त्तिकट्ठ कोति देवि सक्कोरेइ  
सम्माणेइ जाव पडिविन्नजेइ, तएण सा कोती देवी जाव पडुस्स  
एयमट्ठ णिवेदेइ, तएणं पडू पच्च पडवे सदावेइ सदावित्ता एव  
वयासी गच्छह ण तुव्भे पुत्ता । दाहिणिह वेलाऊल तत्थ ण  
तुव्भे पडुमहुरं णिवेसेह, तएण पच्च पडवा पडुस्स रण्णो जाव  
तहात्ति पडिसुणेति सवलवाहणा हयगय० हत्थिणाउराओ पडि  
णिमखमति पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिह वेयाली तेणेव उवा-  
गच्छइ उवागच्छित्ता पडुमहुर नगरि निवेसेति निवेसित्ता तत्थ  
णं ते विपुलभोगसमिति समण्णागया यावि होत्था ॥ सू० ३२ ॥

टीका—‘ तएण ते इत्यादि । तत्तरतदनन्तर खलु ते पञ्च पाण्डवा यत्रैव  
हस्तिनापुर नगर तत्रैवोपागच्छन्ति, उपगत्य यत्रैव पाण्डू राजा तत्रैवोपागच्छन्ति,

- . तएण ते पच्च पडवा इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (ते पच्च पडवा) वे पांच पांडव (जेणेव  
हत्थिणा उरे ) जहा हस्तिनापुर नगर या (तेणेव उवागच्छति ) वहां

तएण ते पच्च पडवा इत्यादि—

, टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (ते पच्च पडवा) ते पांच पांडव (जेणेव हत्थिणा  
उरे ) तथा हस्तिनापुर नगर उतु ( तेणेव उवागच्छति ) तथा आगया ( यथा

ઉપાગત્ય કરતલપરિઘટીતદશનત્વ શિરઆવર્તે મસ્તકેડતલિ કૃત્વા, એવમશ્ય માણમકારેણ, અગાદિપુઃ-એવ સ્વહુ છે તાત ! યય કૃષ્ણેન નિર્વિપયાઃ=વિપયાદ મમ દેશાદ્ વહિર્નિર્ગતાઃ આશ્મતાઃ=કૃષ્ણોડસ્માન્ દેશાદ્ વહિર્ નિર્ગન્તુમાશ્મતાવાનિ ત્યર્થઃ । તતઃ સ્વહુ પાણ્ડુ રાજા તાન્ પશ્ચ પાણ્ડયાઃ એવમગ્રાદીન્-‘કહ્ણ’ કથ કેન કારણેન સ્વહુ છે પુત્ર ! યુય કૃષ્ણેન નિર્વિપયા આશ્મતાઃ ? તતઃ સ્વહુ તે પશ્ચ પાણ્ડયાઃ પાણ્ડુ રાજાન્ એવમગ્રાદીન્-એવ સ્વહુ છે તાત ! યયમમરકક્રાતઃ પ્રતિ નિવૃત્તા લવણસમુદ્ર ‘દોન્નિનોયણસય સહસ્તાઃ’ દ્વિયોજનશતસહસ્રાણિ દ્વિલક્ષ યોજનપરિમિત ‘વીહ્વહ્તા’ વ્યતિવ્રજિતાઃ-ઉલ્લહ્વિતાઃ । તતઃ સ્વહુ સ કૃષ્ણો

આગણ (ઉવાગચ્છિત્તા) વહા આકર કે (જેણેવ પદ્ધ) વે જહા પાંડુ રાજા થે (તેણેવ ઉવાગચ્છિત્તિ) વહાં ગયે (ઉવાગચ્છિત્તા) વહા જાકર (કરયલ૦ એવ વયાસી) ઉન્હોં ને અપને ૨ દોંનોં હાથોં કો જોડકર ઉનસે હસ પ્રકાર કહા-(એવ સ્વહુ તાઓ ! ) હે પિતાજી ! સુનો-(અમ્હે કળ્હે ણ ણિવ્વિસયા આણત્તા) હમલોગોં કો કૃષ્ણ વાસુદેવ ને દેશ સે નિકલ જને કો કહા હૈ (તણ પડુરાયા પચ પડવે એવ વયાસી) તવ પાંડુ રાજા ને ઉન પાંચો પાડવો સે હસ પ્રકાર કહા-(કહ્ણણ પુત્તા તુમ્હે કળ્હેણ વાસુદેવેણ ણિવ્વિસયા આણત્તા) હે પુત્રો ! કિમ્ કારણ કો લેકર કૃષ્ણ વાસુદેવ ને તુમલોગોં કો દેશ સે બાહિર નિકલ જને કો કહા હૈ (તણ તે પચ પડવા પડુરાયા એવ વયાસી) તવ ઉન પાંચો પાડવોં ને પાંડુ રાજા સે હસ પ્રકાર કહા-(એવ સ્વહુ તાઓ ! અમ્હે અમરકકાઓ પડિ ણિયત્તા લવણસમુદ્ર દોન્નિ જોયણસયસહસ્તાઃ વીહ્વહ્તા) હે તાત !

ગચ્છિત્તા ) ત્યા આવોને (જેણેવ પદ્ધ) તેઓ ત્યા પાંડુ રાજા હતા (તેણેવ ઉવાગચ્છિત્તિ) ત્યા ગયા (ઉવાગચ્છિત્તા) ત્યા જઈને (કરયલ૦ એવ વયાસી) તેમણે પોતપોતાના બંને હાથો બેડીને તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કરી કે (એવ સ્વહુ તાઓ) હે પિતા ! સાબળો, (અમ્હે કળ્હેણ ણિવ્વિસયા આણત્તા) કૃષ્ણવાસુદેવે અમને દેશથી બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી છે (તણ પડુ રાયા પચ પડવે એવ વયાસી) ત્યારે પાંડુ રાજાએ પાંચે પાડવોંને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-(કહ્ણણ પુત્તા તુ-મે કળ્હેણ વાસુદેવેણ ણિવ્વિસયા આણત્તા) હે પુત્રો ! કૃષ્ણવાસુદેવે શા કારણથી તમને દેશમાંથી બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી છે ? (તણ તે પચ પડવા પડુરાયા એવ વયાસી) ત્યારે તે પાંચે પાડવોંએ પાંડુ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-(એવ સ્વહુ તાઓ ! અમ્હે અમરકકાઓ પડિ ણિયત્તા લવણ-સમુદ્ર દોન્નિ જોયણસયસહસ્તાઃ વીહ્વહ્તા) હે ' સાબળો,



ऽस्मान् एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! गङ्गामहानदीमुत्तरत, यावत् तिष्ठत । ताव अह एव तद्देव ' जाव चिट्ठामो ' एवं यथा कृष्णवासुदेवस्य वाक्य पूर्वमुक्त तथैवात्र बोध्यम्-तावदह सुस्थित लवणाधिपतिं पश्यामीति । ' जाव चिट्ठामो ' यावत्तिष्ठामः-अत्र यावच्छब्देनैवं योजनीयम्-ततः खलु वय कृष्णवासुदेवेनैवमुक्ताः सन्तो नौकया गङ्गामहानदीमुत्तीर्य, कृष्णो बाहुभ्यां गङ्गा महानदीमुत्तरितु समर्थो न वेति विज्ञातु ता नौका सगोपितान्त, ततः कृष्ण प्रतीक्षमाणास्तिष्ठाम इति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः सुस्थित लवणाधिपतिं दृष्ट्वा, ' त चेव सव्व ' तदेव सर्व-गङ्गामहानद्यास्तटे समागत्य, एकार्थिका नाव-

सुनो-जान इस प्रकार है-जब हमलोग अमरकका नगरी से पीछे आकर २, दो लाख योजन विस्तार वाले लवणसमुद्र को पार कर चुके (तएण) तब (से कण्हे अम्हें एव वयासी) उन कृष्ण वासुदेव ने हमलोगों से इस प्रकार कहा-( गच्छह ण तुव्भे देवाणुप्पिया ! गगा महानइ उत्तरह जाव चिट्ठह-ताव-अह एव तद्देव जाव चिट्ठामो ) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग चलो और गगा महानदी को पारकरो-तब तक मैं सुस्थित देव से मिलकर और आज्ञा प्राप्तकर आता हूँ । कृष्ण वासुदेव द्वारा इस प्रकार आज्ञा हुए हमलोगों ने नौका से गगा महानदी को पार करके वही पर उस नौका को छुपा दिया-इस अभिप्रायसे कि देखें कृष्ण वासुदेव अपने हाथों से तैर कर इस गगा महानदी को पार कर ने में समर्थ हो सकते हैं या नहीं । नौका को छिपाकर हमलोग वही पर उनकी प्रतीक्षा करते हुए ठहरे । ( तएण से कण्हे वासुदेवे सुद्धिय लवणाहिवइ

पात आ प्रमाणे छे के ज्यारे अमे अमरकका नगरीवी पाछा वगता २ लाख योजन जेटला विस्तारवाणा लवण समुद्रने पार करी चुक्या ( तएण ) त्यारे ( से कण्हे अम्हें एव वयासी ) ते कृष्णवासुदेवे अमने आ प्रमाणे कहु के- ( गच्छइण तुव्भे देवाणुप्पिया ! गगा महानइ उत्तरह जाव चिट्ठह-ताव अह एव तद्देव जाव चिट्ठामो ) हे देवानुप्रियो ! तमे ज्ञाओ अने गगा महानदीने पार करे तेटलाभा हु सुस्थित देवने भणीने अने तेभनी पासेथी आज्ञा भेजवीने आबु छु आ प्रमाणे कृष्णवासुदेव वडे आज्ञापित थयेला अमे नौका वडे गगा महानदीने पार करीने त्या ज ते नौजाने छुपावी दीधी नौकाने छुपाववा पाछा अमारो ओ जतनो आशय छतो के कृष्णवासुदेव पोताना डायोथी तरीने गगा महानदीने पार करी शके छे के नहि ? नौकाने छुपावीने अमे त्या ज तेभनी प्रतीक्षा करता रोडार्थ गया ( तएण से कण्हे वासुदेवे सुद्धिय

ઉપાગત્ય કરતલપરિવૃત્તીતદશનસ્ય શિરઆવર્ત મસ્તકેડ-અર્ચિ કૃત્વા, પચ=પચ્ચ માણમકારેણ, અયાદિપુઃ-એવ સ્વલુ હે તાત ! યય કૃષ્ણેન નિર્વિપયાઃ=નિવિપયા મમ દેશાદ્ વહિર્નિર્ગતાઃ આજ્ઞાઃ=કૃષ્ણોડસ્માદ્ દેશાદ્ વહિ નિર્ગન્તુમાશ્નવાનિ ત્યર્થઃ । તતઃ સ્વલુ પાણ્ડુ રાજા તાન્ પચ પાણ્ડયાઃ યયમયાદીત-‘વહ્ણ’ કથ્ય કેન કારણેન સ્વલુ હે પુત્ર ! યૂય કૃષ્ણેન નિર્વિપયા આજ્ઞાઃ ? તતઃ સ્વલુ તે પચ પાણ્ડયાઃ પાણ્ડુ રાજાનમ્ યયમયાદ-એવ સ્વલુ હે તાત ! યયમમરકક્રાતઃ પ્રતિ નિવૃત્તા લવણસમુદ્ર ‘દોન્નિનોયણસય સહસ્સાઃ’ ઢિયોજનશતસહસ્રાણિ દ્વિલક્ષ યોજનપરિમિત ‘વીશ્વદક્ષા’ વ્યતિવ્રજિતાઃ-ઉલ્લહિતાઃ । તતઃ સ્વલુ સ કૃષ્ણો

આગણ (ઉવાગચ્છિત્તા) વહા આકર કે (જેણેવ પદ્) વે જહા પાંડુ રાજા થે (તેણેવ ઉવાગચ્છતિ) વહા ગયે (ઉવાગચ્છિત્તા) વહા જાકર (કરયલ૦ એવ વયાસી) ઉન્હોં ને અપને ૨ દોનોં દ્વારોં કો જોડકર ઉનસે હસ પ્રકાર કહા-(એવ સ્વલુ તાઓ ! ) હે પિતાજી ! સુનો-(અમ્હે કળ્હે ણ ણિવિસયા આણત્તા) હમલોગોં કો કૃષ્ણ વાસુદેવ ને દેશ સે નિકલ જને કો કહા હે (તણ પડુરાયા પચ પડવે એવ વયાસી) તવ પાંડુ રાજા ને ઉન પાચોં પાંડવો સે હસ પ્રકાર કહા-(કહ્ણણ પુત્તા તુમ્હે કળ્હેણ વાસુદેવેણ ણિવિસયા આણત્તા) હે પુત્રો ! કિસ કારણ કો લેકર કૃષ્ણ વાસુદેવ ને તુમલોગોં કો દેશ સે વાહિર નિકલ જાને કો કહા હે (તણ તે પચ પડવા પડુરાયા એવ વયાસી) તવ ઉન પાચો પાંડવોં ને પાંડુ રાજા સે હસ પ્રકાર કહા-(એવ સ્વલુ તાઓ ! અમ્હે અમરકકાઓ પડિ ણિયત્તા લવણસમુદ્દ દોન્નિ જોયણસયસહસ્સાઃ વીશ્વદક્ષા) હે તાત !

ગચ્છિત્તા ) ત્યા આવીને (જેણેવ પદ્) તેઓ કથા પાંડુ રાજા હતા (તેણેવ ઉવાગચ્છતિ) ત્યા ગયા (ઉવાગચ્છિત્તા) ત્યા જઈને (કરયલ૦ એવ વયાસી) તેમણે પોતપોતાના બને હાથો બેડીને તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કરી કે (એવ સ્વલુ તાઓ) હે પિતા ! સાભણે, (અમ્હે કળ્હેણ ણિવિસયા આણત્તા) કૃષ્ણવાસુદેવે અમને દેશથી બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી છે (તણ પડુ રાયા પચ પડવે એવ વયાસી) ત્યારે પાંડુ રાજાએ પાથે પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-(કહ્ણણ પુત્તા તુમ્હે કળ્હેણ વાસુદેવેણ ણિવિસયા આણત્તા) હે પુત્રો ! કૃષ્ણવાસુદેવે શા કારણથી તમને દેશમાંથી બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી છે ? (તણ તે પચ પડવા પડુરાયા એવ વયાસી) ત્યારે તે પાથે પાડવોએ પાંડુ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-(એવ સ્વલુ તાઓ ! અમ્હે અમરકકાઓ પડિ ણિયત્તા લવણ-સમુદ્દ દોન્નિ જોયણસયસહસ્સાઃ વીશ્વદક્ષા) હે પિતા ! સાભણે,

नगरीं, कृष्णस्य वासुदेवस्य निवेदय, एव खलु हे देवानुप्रियाः । युष्माभिः पञ्च पाण्डवा निर्विपयाः देशनिष्कासिताः आश्रिताः, यूय च खलु हे देवानुप्रियाः ! दक्षिणार्धभरतस्य स्वामिन । 'त' तन्=तस्मात् सद्विगन्तु=कथयन्तु हे देवानुप्रिया । ते पञ्च पाण्डवाः कतरा दिश विदिश या गच्छन्तु ? मनतामेव सर्वे देशाः, तर्हि इमे कुत्र गमिष्यन्तीति कथयन्तु भवत । ततः खलु एषा कुन्ती पाण्डुना गतैवमुक्ता सती हस्तिस्कन्ध दूरोदति-आरोढयति-दूय 'जहाहेष्टा'

देवानुप्रिया । वारवड कण्हस्स वासुदेवस्स निवेदेहि एव खलु देवानुप्रिया । तुम्हे पंच पडवा णिविसया आणत्ता, तुम च ण देवानुप्रिया ! दाहिणडूभरहस्स सामी, त सदिसत्तु ण देवानुप्रिया । ते पंच पडवा कयर दिसि वा विदिस वा गच्छत्तु ? ) तत्र पांडु राजा ने उन पाचों पांडवों से इस प्रकार कहा तुम लोगो ने यह सुन्दर काम नहीं किया जो इस प्रकार से कृष्ण वासुदेव का अनिष्ट किया-उन्हें नहीं रुचने वाला काम किया इस प्रकार कहकर पांडु राजा ने उसी समय कुन्ती देवी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये ! तुम द्वारावती नगरी में कृष्ण वासुदेव के पास जाओ और उनसे निवेदन करो-कि आपने पाच पांडवों को देश से बाहर निकल जानेके लिये आज्ञा दी है-मो हे देवानुप्रिय । आप दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र के अधिपति हैं-अतः कहें कि वे कौनसी दिशा अथवा विदिशा की ओर जावें । जब आपके ही सर्व देश हैं-तो ये कहाँ जावें आप कहें । (तण्ण सा कोत्ती

वित्ता एव वयासी-गच्छहइ ण तुम देवानुप्रिया । वारव कण्हस्स वासुदेवस्स निवेदेहि एव खलु देवानुप्रिया । तुम्हे पंच पडवा णिविसया आणत्ता, तुम च ण देवानुप्रिया । दाहिणडूभरहस्स सामी, त सदिसत्तु ण देवानुप्रिया । ते पंच पडवा कयर दिसि वा विदिस वा गच्छत्तु ? )

त्यारे पाडु राज्ञे ते पाथे पाडवोने आ प्रभाण्णे उह्यु उ तेमे लोकेश्णे कृष्णवासुदेवस्य पुत्र करीने साइ उथुं नथी तेमने अणुगमतु काम तेमे उथुं छे आ प्रभाण्णे उहीने पाडु राज्ञे तेज वण्णते कुती देवीने ओलावी ओलावीने तेमने आ प्रभाण्णे उह्यु, उ हे देवानुप्रिये । तेमे द्वारावती नगरीमा कृष्णवासुदेवनी पाथे ज्ञाओ अने तेमने निनती उरो उ तेमे पाथे पाडवोने देशथी जहाइ नीकणी ज्ञानी आज्ञा आपी उ हे देवानुप्रिय । तेमे दक्षिणार्ध भरतक्षेत्रना अधिपति उा तो बतावो उ तेओ कथं दिशा उ विदिशा तरइ ज्ञय ज्ञयारे ज्ञधा देशे तमारा ज छे त्यारे ज्ञतावो के आ लोकेश कथा ज्ञय ?

મદદા એકેન ગાદુના રૂ મતુરગ મસારથિ ગૃતીત્વા, એકેન ગાદુના ગદ્ગામહાનદી  
 મુત્તીર્ય, સમાગત. । ‘ નર કળ્હસ્ત પિતા ન જુજ્ઞઃ ’ નર કળ્હસ્ય ચિન્તા ન  
 બુધ્યતે નર=વિશેષસ્તુ હે તાત ! નૌનાયા સગોપિતાયા તસ્યા કૃષ્ણઃ કેનોપાયેન  
 ગદ્ગામહાનદી તરિપ્યતિ ઇતિ ચિન્તાઽસ્માભિર્ન બુધ્યતે=ન ક્રિયતેસ્મ, અનેનાપરા  
 ધેન ‘ જાવ અમ્હે ણિવિસસે આણવેહ ’ યાવત્-રવાશ્ચૂર્ણોઽસ્ત્વાજ્ઞમાર નિર્વિપયાત્  
 આજ્ઞાપયતિ । તતસ્તદનન્તર સ પાણ્ડુ રાજા તાન પદ્મપાણ્ડુવાનેયમવાદીત્-  
 ‘ દુદ્ધુળ ’ દુદ્ધુ=મનોમન ચલુ હે પુત્રાઃ । કૃત યુમાભિઃ કૃષ્ણસ્ય વાસુદેવસ્ય  
 વિપ્પિય ’ વિપ્પિયમ્-અનિષ્ટમ્ કુર્વિઃ, તત ચલુ સ પાણ્ડુ રાજા કુર્ત્તી દેવી  
 શન્દયતિ, શન્દયિત્વા, એમવાદીત્-ગન્ત્ ચલુ ત્વ હે દેવાસુપ્રિયે ! દાસવર્તી

દદ્ધુળ તત્તેવ સવ્ય-નચર કળ્હસ્મ ચિન્તા ન જુજ્ઞતિ જાવ અમ્હે ણિવિ  
 સયે આણવેહ ) ગાદ મેં કૃષ્ણ વાસુદેવ લવણનસુદ્રાધિપતિ સુસ્થિત દેવ  
 સે મિલકર જ્યો હી ગગા મહાનદી કે તટ પર આયે-તો ઉન્હેં વહ નૌકા  
 નહીં મિલી-ઇસ કારણ વે ૧ એક હાથ સે તુરગ એ સારથિ યુક્ત રથ  
 કો ઠે દૂસરે હાથ સે ગગા મહાનદી કો તૈર કર જહા હમલોગ થે-વહા  
 આ ગયે । “ કૃષ્ણજી કિસ તરહ ગગા મહાનદી કો પાર કરેંગે ” યહ  
 વિચાર હમચોગો ને નૌકા કો ઊપાતે સમય નહીં કિયા । ઇસી અપરાધ  
 સે ઉન્હોં ને હમારે રથોં કો ચક્રના ચૂર કર દેશ સે બહિર નિકલ જાને  
 કે લિયે આજ્ઞા દી હૈ । ( તણ સે પહુરાયા તે પચ પહવા એ વયાસી-  
 દુદ્ધુળ પુત્તા ! કય કળ્હસ્સ વાસુદેવસ્સ વિપ્પિયં કરેમાણેહિ-તણ સે  
 પહુરાયા કોર્તિ દેવિ સદાવેહ સદાવિન્તા એ વયાસી-ગચ્છહ ણ તુમ

લવણાહિવહ દદ્ધુળ તત્તેવ સવ્ય-નચર કળ્હસ્સ ચિન્તા ન જુજ્ઞતિ જાવ અમ્હે  
 ણિવિસયે આણવેહ ) ત્યારપછી કૃષ્ણવાસુદેવ લવણ સમુદ્રના અધિપતિ સુસ્થિત  
 દેવને મળીને જ્યારે ગગા મહાનદીના કિનારા ઉપર આવ્યા ત્યારે તેમને નૌકા  
 જડી નહિ ત્યારે તેઓ એક હાથમા ઘોડા અને સારથિ સહિત રથને ઉઘ  
 ડીને ખીજા હાથથી ગગા મહાનદીને તરીને જવા અમે હતા ત્યાં આવી ગયા  
 “ કૃષ્ણવાસુદેવ કેવી રીતે ગગા મહાનદીને પાર કરશે ” નૌકાને છુપાવતા  
 અમે આ વિષે વિચાર જ ઠર્યો નહોતો આ અપરાધથી તેમણે અમારા રથોને  
 નષ્ટ કરી નાખ્યા અને અમને દેશની બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા કરી છે

( તણ સે પહુરાયા તે પચ પહવા એ વયાસી-દુદ્ધુળ પુત્તા ! કય કળ્હસ્સ  
 વાસુદેવસ્સ વિપ્પિય કરેમાણેહિ-તણ સે પહુરાયા કોર્તિ દેવિ સદાવેહ, સદા

नगरीं, कृष्णस्य वासुदेवस्य निवेदय, एव खलु हे देवानुप्रियाः । युष्माभिः पञ्च  
पाण्डवा निर्दिष्टाः देशनिष्कासिताः आनृणाः, यूय च खलु हे देवानुप्रियाः ।  
दक्षिणार्धभरतस्य स्वामिन । ' त ' तत्=तस्मात् सदिसन्तु=कथयन्तु हे देवानु-  
प्रिया । ते पञ्च पाण्डवाः कतरा दिश विदिश या गच्छन्तु ? भनतामेव सर्वे  
देशाः, तर्हि इमे कुत्र गमिष्यन्तीति कथयन्तु भवन्त । ततः खलु सा कुन्ती  
पाण्डुना गङ्गायमुक्ता सती हस्तिस्कन्ध दूरोहति-आरोहयति-दूय ' जहाहेडा '

देवाणुप्रिया । नारवह कण्टस्स वासुदेवस्स निवेदेहि एव खलु देवाणु-  
प्रिया । तुम्हे पच पडवा णिन्विसया आणत्ता, तुम च ण देवाणुप्रिया ।  
दाहिणद्धुभरहस्स मामी, त सदिसत्तु ण देवाणुप्रिया । ते पच पडवा  
कयर दिसि वा विदिस वा गच्छतु ? ) तत्र पाण्डु राजा ने उन पाचों  
पांडवों से इस प्रकार कहा तुम लोगो ने यह सुन्दर काम नहीं किया  
जो इस प्रकार से कृष्ण वासुदेव का अनिष्ट किया-उ-हे नहीं रुचने  
वाला काम किया इस प्रकार कहकर पाण्डु राजा ने उसी समय कुन्ती  
देवी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये । तुम द्वा-  
वती नगरी में कृष्ण वासुदेव के पास जाओ और उनसे निवेदन करो  
-कि आपने पाच पांडवों को देश से बाहर निकल जानेके लिये आज्ञा  
दी है-मो हे देवानुप्रिय । आप दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र के अधिपति हैं-  
अतः कहें कि वे कौनसी दिशा अथवा विदिशा की ओर जावें । जय  
आपके ही सर्व देश हैं-तो ये कहाँ जावें आप कहें । ( तण्ण सा कोत्ती

वित्ता एव ययासी-गच्छहह ण तुम देवाणुप्रिया । नारव कण्टस्स वासुदेवस्स  
निवेदेहि एव खलु देवाणुप्रिया । तुम्हे पच पडवा णिन्विसया आणत्ता, तुम  
च ण देवाणुप्रिया । दाहिणद्धुभरहस्स मामी, त सदिसत्तु ण देवाणुप्रिया । ते  
पच पडवा कयर दिसि वा विदिस वा गच्छतु ? )

त्यारे पाडु राजन्हे ते पाये पाडवोने आ प्रमाणे कहु के तमे लोकोन्हे  
दृष्टुवासुदेवनु भुइ उरीने साइ उरुं नथी तेभने अणुगमतु काम तमे कथुं  
छे आ प्रमाणे कहीने पाडु राजन्हे तेज वणते कुती देवीने भोलावी  
भोलावीने तेभने आ प्रमाणे कहु,उ छे देवानुप्रिये । तमे द्वागवती नगरीमा  
दृष्टुवासुदेवनी पासे जणो अने तेभने निनती उरो उ तेमे पाये पाडवोने  
देशथी भडार नीकणी जवानी आज्ञा आपी छे छे देवानुप्रिय । तमे दक्षिणार्ध  
भरतक्षेत्रना अधिपति छे तो बतावो के तेन्ना कथं दिगा के विदिशा तरइ  
जय न्यारे भधा देशो तभारा ज छे न्यारे बतावो के आ लोको कथा जय ?



यथा अधः, यथापूर्वं द्वारवतीमागता तथाऽत्रापि वो यम् यावत् सदृशन्तु-अत्र यावदित्यनेनैव बोध्यम्-द्वारवतीं नगरीमागत्य कृष्णेन गच्छता स्नाता कृतमोजना सुम्वासनपरगताऽभवत् इति, ततस्तां कृष्ण पृच्छति सदृशन्तु=स्थयन्तु खलु हे

पटुणा एव वृत्ता समाणी, इत्थिस्वध दुरुहः, दुरुहिता जहा हेट्टा जाव सदिसत्तु ण पिउत्था । किमागमणपओयण ? तण्ण सा कोती कण्ह वासुदेव एव वयासी-एव खलु पुत्ता ! तुमे पच पडवा णिविसया आणत्ता, तुम च ण दाहिणद्धु भरह जाव विदिस वा गच्छतु ? तण्ण से कण्हे वासुदेवे कोतीदेवि एव वयासी अपूर्हवयणा ण पिउत्था ! उत्तम पुरिसा वासुदेवा, वलदेवा, चक्रवट्टी त गच्छतु ण देवाणुप्पिया ! पच पडवा दाहिणिल्ल वेलाउल तत्थ पडुमहुर णिवेसत्तु मम अदिट्ठसेवगा भवत्तु त्ति कट्ठु कोतीदेवि सक्कारेह, सम्माणेह, जाव पडिविसज्जेह ) पाडु के द्वारा इस प्रकार कही गई वह देवी रात्री पर चढ़ी और चढ़ कर जिस प्रकार पहिले यह द्वारवती आई थी उसी तरह अब भी यह वहा पहुँची । यहा यावत् शब्द से इस प्रकार पाठका सवन्व लगा लेना चाहिये-जब कुन्ती द्वारवती नगरी में आई-तब कृष्ण वासुदेवने उनका खूब मनमाना सत्कार किया । बड़े ठाट बाट से उनका प्रवेशोत्सव मनाया-। कुन्तीने स्नान आदि दैनिक कार्यों से निवट कर आनन्द के साथ चतुर्विध आहार किया बाद में विश्राम के निमित्त सुम्वासन पर

( तण्ण सा कोती पटुणा एव वृत्ता समाणि, इत्थिस्वध दुरुहः, दुरुहिता जहा हेट्टा जाव सदिसत्तु ण पिउत्था । किमागमणपओयण ? तण्ण सा कोती कण्ह वासुदेव एव वयासी-एव खलु पुत्ता ! तुमे पच पडवा णिविसया आणत्ता, तुम च ण दाहिणद्धु भरह जाव विदिस वा गच्छतु ? तण्ण से कण्हे वासुदेवे कोती देवि एव वयासी-अपूर्हवयणा ण पिउत्था उत्तमपुरिसा देवा, वलदेवा, चक्रवट्टी त गच्छतु ण देवाणुप्पिया ! पच पडवा दाहिणिल्ल वेलाउल्लतत्थ पडुमहुर णिवेसत्तु मम अदिट्ठसेवगा भवत्तु त्ति कट्ठु कोती देवि सक्कारेह, सम्माणेह, जाव पडिविसज्जेह )

आ प्रभाणु पाडु वडे आशापित थयेली कुन्ती देवी हाथी उपर सवार थई अने सवार थईने पडेला जेभ ते द्वारवती नगरी गई हती तेभज अत्यारे पणु पडेयी अहाँ यावत् शब्दथी आ जातने पाठ समज्जे। जेधजे के अत्यारे कुन्ती द्वारवती नगरीमा आवी त्यारे कृष्णवासुदेवे तेभने भूमज सत्कार क्यो पाडु ज हाठथी तेभने प्रवेशोत्सव उज्जये। कुन्तीजे पणु स्नान वगेरे नित्यकर्मोधी परवारीने सुजेधी अतुर्विध आहार क्यो त्य

पितृप्सः ! किमागमनप्रयोजनम् ? ततः खलु सा कुन्ती कृष्णं वासुदेवमेवमवा-  
दीत्—एव खलु हे पुत्र ! त्वया पञ्च पाण्डवा निर्विपया आज्ञाः त्व च खलु  
दक्षिणार्धभरतस्य यावत् स्वामी, तत् कथय ते पञ्च पाण्डवाः कतरा दिश विदिश  
वा गच्छन्तु ? । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कुन्तीं देवीमेवमवादीत्—‘अपू-  
व्यणा ण’ अपूतिवचनाः=सकृद्वचनाः खलु हे पितृप्सः ! उत्तमपुरुषाः वासु  
देवा वन्देयाश्चक्रवर्तिनः, ‘त’ तत्-तस्मात् गच्छन्तु खलु हे देवानुप्रिये ! पञ्च  
पाण्डवाः ‘दाहिणिल्ल’ वेलाऊल ‘दाक्षिणात्य वेलाकूल-दक्षिणसमुद्रतटम्, तत्र  
‘पडुमहुर’ पाण्डुमथुरा नगरीं ‘णिवेसतु’ निवेशयन्तु, ममादृष्टसेवका भवन्तु,

उन्होंने आराम किया। इतने में कृष्ण वासुदेव ने जब वे वि प्राम कर  
चुकीं उन से पूछा-कहिये भुआ जी ! किस प्रयोजन को लेकर यहां  
आपका आगमन हुआ है तब कुन्ती ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा  
हे पुत्र ! आनेका प्रयोजन इस प्रकार है-तुमने जो पाचों पांडवों को  
अपने देश से बाहिर निकल जाने की आज्ञा दी है-सो इस विषय में  
यह पूछना है कि तुम तो दक्षिणार्ध भरत के अधिपति हो अतः हमें  
समझाइये कौनसी दिशा या विदिशा में जावें ? इस प्रकार कुन्तीदेवीके  
मुखसे सुनकर कृष्ण वासुदेव ने उससे ऐसा कहा-हे भुआ जी-उत्तम  
पुरुष, वासुदेव, बलदेव, एव चक्रवर्ती ये सब अपूतिवचन वाले होते  
हैं-जो कुछ कहते हैं वह एक ही बार कहते हैं-उसमें परिवर्तन नहीं  
होता है-इसलिये हे देवानुप्रिय ! पाचों पांडव दक्षिणसमुद्र पर जावे और  
वहां पांडु मथुरा नगरी को बसावें-स्थापित करें-और मेरे अदृष्ट सेवक

भाटे तेमणे सुणासान छपर आराम कर्यो न्यारे तेओ सारी रीने विश्राम  
करी यूज्या त्यारे तेमने कृष्णवासुदेवे पूछ्यु के-ओलो, झाधणा, शा नारण्यधी  
तमे अर्धी पधार्या छे ! त्यारे कुतीओ कृष्णव सुदेवने आ प्रमाणे कहु के छे  
पुत्र ! छु ओटला भाटे आवी छु के तमे पाये पांडवोने पोताना देशभाथी  
जहार नीकणी नवानी आज्ञा करी छे तो आ विवे भारे आ पातनु अपधी  
करणु करवुं छे के तमे तो दक्षिणार्ध भरतना अधिपति छे, तो आवी परि  
स्थितिमा तमे न अभने जतावे के तेओ कछ दिशा के विदिशा तरङ्ग नय ?  
आ प्रमाणे कुती देवीना मुण्यधी जधी वान सालणीने कृष्णवासुदेवे तेमने  
आ प्रमाणे कहु के छे झाधणा ! वासुदेव, जणदेव अने चक्रवर्ती आ जधा  
उत्तम पुरुषो अपति वयनवाणा डाय छे-तेओ जे कछ पणु कहे छे ते ओकर  
वार कहे छे तेमा कछ पणु नतने इरक्षार थछ शकतो नथी ओटला भाटे  
हे देवानुप्रिये ! पाये पांडवो दक्षिण समुद्र तरङ्ग नय अने त्या पांडु मथुरा

યથા અધઃ, યથાપૂર્વ દ્વારવતીમાગતા તથાઽપિ ત્રો યમ્ યાવત્ સદિશન્તુ-અથ  
યાવદિત્યનેનૈવ ત્રોધ્યમ્-દ્વારવતીં નગરીમાગત્ય કૃષ્ણેન મત્સ્યતા સ્નાતા કૃતમોજના  
સુગ્રાસનપરગતાઽમયત્ ઇતિ, તતસ્તા કૃષ્ણ પૃચ્છતિ સદિશન્તુ=અથયન્તુ સ્વલુ હે

પદુણા ણ્વ યુત્તા સમાણી, હત્થિગ્રધ દુરુહઢ, દુરુહિત્તા જહા હેટ્ઠા જાવ  
સદિસતુ ણ પિઉત્થા ! કિમાગમણપઓયણ ? તણ્ણ સા કોંતી કણ્ઠ  
વાસુદેવ એવ વયાસી-એવ ચ્છલ્લ પુત્તા ! તુમે પચ પહવા ણિવિસયા  
આણત્તા, તુમ ચ ણ દાહિણદુભરહ જાવ વિદિમ વા ગચ્છતુ ? તણ્ણ સે  
કણ્ઠે વાસુદેવે કોંતીદેવિં એવ વયામી અપૂર્ઠવયણા ણ પિઉત્થા ! ઉત્તમ  
પુરિસા વાસુદેવા, વલદેવા, ચક્કવટ્ટી ત ગચ્છતુ ણ દેવાણુપ્પિયા ! પચ  
પહવા દાહિણિલ્લ વેલાઉલ્લ તત્થ પહમહુર ણિવેસતુ મમ અદિદ્ધસેવગા  
ભવતુ ત્તિ કહ્હુ કોંતીદેવિં સકારેહ, સમ્માણેહ, જાવ પહિવિસજ્જેહ )  
પાહુ કે દ્વારા હસ પ્રકાર કહી ગઈ વહ દેવી હાથી પર ચઢી ઓર ચઢ  
કર જિસ પ્રકાર પહિલે યહ દ્વારવતી આઈ થી ઉસી તરહ અથ મી યહ  
વહા પહુંચી । યહા યાવત્ શબ્દ સે હસ પ્રકાર પાઠકા સબન્ધ લગા લેના  
ચાહિયે-જવ કુતી દ્વારાવતી નગરી મેં આઈ-તપ કૃષ્ણ વાસુદેવને ઉનકા  
સ્ત્રૂવ મનમાના સત્કાર ક્રિયો । વહે ઠાટ વાટ સે ઉનકા પ્રવેશોત્સવ  
મનાયા-। કુતીને સ્નાન આદિ દૈનિક કાર્યોં સે નિવટ્ઠ કર આનન્દ કે  
સાચ ચતુર્વિધ આહાર ક્રિયા વાદ મેં વિશ્રામ કે નિમિત્ત સુગ્રાસન પર

( તણ્ણ સા કોંતી પદુણા એવ યુત્તા સમાણિ, હત્થિગ્રધ દુરુહઢ, દુરુહિત્તા  
જહા હેટ્ઠા જાવ સદિસતુ ણ પિઉત્થા ! કિમાગમણપઓયણ ? તણ્ણ સા કોંતી કણ્ઠ  
વાસુદેવ એવ વયાસી-એવ ચ્છલ્લ પુત્તા ! તુમે પચ પહવા ણિવિસયા આણત્તા, તુમ  
ચ ણ દાહિણદુ ભરહ જાવ વિદિસ વા ગચ્છતુ ? તણ્ણ સે કણ્ઠે વાસુદેવે કોંતી  
દેવિં એવ વયાસી-અપૂર્ઠ વયણા ણ પિઉત્થા ઉત્તમપુરિસા દેવા, વલદેવા, ચક્કવટ્ટી  
ત ગચ્છતુ ણ દેવાણુપ્પિયા ! પચ પહવા દાહિણિલ્લ વેલાઉલ્લ તત્થ પહમહુર ણિવેસતુ  
મમ અદિદ્ધસેવગા ભવતુ ત્તિ કહ્હુ કોંતી દેવિં સકારેહ, સમ્માણેહ, જાવ પહિવિસજ્જેહ )

આ પ્રમાણે પાહુ વહે આજ્ઞાપિત થયેલી કુતી દેવી હાથી ઉપર સવાર  
થઈ અને સવાર થઈને પહેલા જેમ તે દ્વારાવતી નગરી ગઈ હતી તેમજ  
અત્યારે પણ પહેાથી અહીં યાવત્ શબ્દથી આ જાતનો પાઠ સમજ્યો નેઈએ  
કે જ્યારે કુતી દ્વારાવતી નગરીમા આવી ત્યારે કૃષ્ણવાસુદેવે તેમનો ખૂબ જ  
સત્કાર કર્યો બહુ જ ઠાઠથી તેમનો પ્રવેશો સ્વ ઉજવ્યો કુતીએ પણ સ્નાન  
વગેરે નિત્યકર્મોથી પરવારીને સુખેથી ચતુર્વિધ આહાર કર્યો ર વિશ્રામ



इति कृत्वा कुन्ती देवीं सत्कारयति समानयति, सत्कार्यं, समान्य यावद् विमर्जयति । ततः खलु सा कुन्ती देवी हस्तिन ममारय हस्तिनापुरमागता यावत् पाण्डो राज एतमर्थं निवेदयति । ततः खलु पाण्डु राज पञ्च पाण्डवान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमयादीत्-गच्छत खलु यूय हे पुत्रा ! ' दक्षिणिल्ल वेलाऊल ' दक्षिणात्यवेलाऊल-दक्षिणसमुद्रतट, तत खलु यूय पाण्डुमथुरा नगरी निवेशयत ।

होकर रहें । इस प्रकार कहकर उन्होंने ने कुन्तीदेवी का सत्कार किया सम्मान किया । सत्कार सम्मान करके फिर उन्हें अपने यहाँ से विदा दिया । ( तएण सा कौंती देवी जाय पडुस्स एयमट्ठ निवेदेइ, तएण पडू पच पडवे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-गच्छह ण तुम्हे पुत्ता ! दाहिणिल्ल वेलाऊल तत्थण तुम्हे पडुमहुर निवेसेह तएण पच पडवा पडुस्स रण्णो जाय तहत्ति पडि सुणेंति, सबलवाहणा हय गजं हत्थिणाउराओ पडिणिकखमति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडुमहुर नगरिं निवेसेंति, निवेसित्ता तत्थ ण ते विउलभोगसमितिसमण्णागया याचि होत्था ) वहाँ से दाही के ऊपर बैठ कर कुन्तीदेवी हस्तिनापुरमें आ गई, यावत् पांडुराजासे कृष्णवासुदेव के कथितआदेश को उन्हो ने सुना दिया । इसके बाद पांडु राजा ने पांचों पांडवों को बुलाया-और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-हे पुत्रों-तुम यहाँ से दक्षिण दिग्दर्शी समुद्र तट पर जाओ और वहाँ पांडु मथुरा

નગરીને વસાવે અને મારા અદૃષ્ટ સેવકો થઈને ત્યાં નિવાસ કરે આ પ્રમાણે કહીને તેમણે કુન્તી દેવીને સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેમણે કુન્તીદેવીને ત્યાંથી વિદાય કર્યા

( તएण सा कौंती देवी जाय पडुस्स एयमट्ठ निवेदेइ, तएण पडू पच पडवे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-गच्छह ण तुम्हे पुत्ता ! दाहिणिल्ल वेलाऊल तत्थण तुम्हे पडुमहुर निवेसेह तएण पच पडवा पडुस्स रण्णो जाय तहत्ति पडि सुणेंति, सबलवाहणा हय गजं हत्थिणाउराओ पडिणिकखमति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडुमहुर नगरिं निवेसेंति निवेसित्ता, तत्थण ते विउलभोगसमितिसमण्णागया याचि होत्था )

ત્યાંથી હાથી ઉપર સવાર થઈને કુન્તીદેવી હસ્તિનાપુર આવી ગયાં યાવત્ કૃષ્ણવાસુદેવની જે કંઈ આજ્ઞા હતી તે પાંડુ રાજાને કહી સંભળાવી ત્યારપછી પાંડુ રાજાએ પાંચે પાંડવોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પુત્રો ! તમે અહીંથી દક્ષિણ દિશા તરફના સમુદ્રના કિનારા ઉપર જાઓ અને ત્યાં પાંડુ-મથુરા નગરીને વસાવો પિતા પાંડુ રાજા આ પ્રમાણે



तत खलु पञ्च पाण्डवाः पाण्डो रात्रौ वन यावत्-‘तद्वत्ति’ तथाऽस्तु’ इति  
कृत्वा प्रतिशृण्वन्ति = स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य सबलवाहनाः-सैन्ययानसहिताः,  
इयगजरूपदातिसपरिवृताः, हस्तिनापुरात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रनिनिष्क्रम्य  
यत्रैव ‘दाहिणिल्लं वेलाऊल’ दाक्षिणात्य वेलाकूल तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य  
पाण्डुमथुरा नगरीं निवेशयन्ति निवेश्य तत्र खलु ते विपुलभोगममिति ममत्या-  
गताश्चाप्यभवन् ॥ सू० ३२ ॥

मूलम्-तएणं सा दोवई देवी अन्नया कयाइ आवणणसत्ता  
जाया यावि होत्था, तएण सा दोवई देवी णवण्हं मासाणं  
जाव सुरुव दारगं पयाया सूमालणिव्वत्तवारसाहस्स इमं  
एयाखव गुणनिष्फन्न नामधिज्ज करेति जम्हाण अम्हं एस  
दारए पचण्ह पडवाणं पुत्ते दोवईए अत्तए त होउ अम्हं  
इमस्स दारगस्स णमधेज्ज पडुसेणे, तएणं तस्स दारगस्स  
अम्मापियरो णामधेज्ज करेति पडुसेणत्ति, वावत्तरिं कलाओ  
जाव भोगसमत्थे जाए जुवराया जाव विहरइ, थेरा समो-  
सढा परिसा निग्गया पडवा निग्गया धम्म सोच्चा एव  
ज णवर देवाणुप्पिया । दोवइ देवि आपुच्छामो पडुसेण च

नगरी को बसाओ । पिता पांडु राजा की इस आज्ञा को उन पाचों  
पांडवों ने “तद्वत्ति” कहकर स्वीकार कर लिया । स्वीकार करके फिर  
वे हय, गज, रथ, एवं पदातिरूप चतुरगिणी सेना से परिवृत्त होकर  
हस्तिनापुर नगर से निकले और निकलकर जहा दाक्षिणात्य वेलाकूल  
था वहां आये-वहां आकर उन्होंने पांडु मथुरा नगरी को बसाया ।  
बसाकर वहा के विपुल भोगों को भोगते हुए रहने लगे ॥ सू० ३२ ॥

आज्ञाने ते पांच पांडवोअ “तद्वत्ति” कहीने स्वीकारी लीधी स्वीकार करीने  
तेओ घोडा, हाथी, रथ अने पायदणवाणी चतुरगिणी सेनानी साथे हस्तिना-  
पुर नगरथी णडार नीकल्या-अने नीकणीने जया दक्षिण दिशाने समुद्रने  
किनारे छते। त्या पडोव्या, त्या पडोव्याने तेमणे पांडु-मथुरा नगरी बसावी .  
बसावीने तेओ त्या पुण्ड्र कामसेगे। लोगवता रडेवा लाग्या ॥ सूत्र ३२ ॥

इति कृत्वा कुन्ती देवीं सत्कारयति संमानयति, सन्कार्ये, संमान्य यावद् विमर्जयति । ततः खलु सा कुन्ती देवी हस्तिन गमारुह्य हस्तिनापुरमागता यावत् पाण्डो राज्ञ एतमर्थं निवेदयति । ततः खलु पाण्डु राजा पञ्च पाण्डवान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे पुत्राः ! ' दाहिणिल्ल वेलाऊल ' दाहिणात्यवेलाऊलं-दक्षिणसमुद्रतट, ता खलु यूय पाण्डुमधुरा नगरीं निवेशयत ।

होकर रहें । इस प्रकार कहकर उन्होंने ने कुन्तीदेवी का सत्कार किया सम्मान किया । सत्कार सम्मान करके फिर उन्हें अपने यहाँ से विदा दिया । ( तएण सा कुन्ती देवी जाव पटुस्स एयमट्ठ निवेदेइ, तएण पडू पच पडवे सदावेइ, सदावित्ता एवंचयासी-गच्छह णं तुम्हे पुत्ता ! दाहिणिल्ल वेलाऊल तत्थण तुम्हे पटुमहुर निवेसेह तएणं पच पडवा पटुस्स रण्णो जाव तहत्ति पटिसुणेंति, सबलवाहणा हय गज० हत्थिणाउराओ पडिणिकखमति, पडिणिकखमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवा गच्छइ, उवागच्छित्ता पटुमहुर नगरिं निवेसेति, निवेसित्ता तत्थ णं ते विउलभोगसमितिसमण्णागया यावि होत्था ) यहाँ से हाथी के ऊपर बैठ कर कुन्तीदेवी हस्तिनापुरमें आगई, यावत् पाण्डुराजासे कृष्णवासुदेव के कथितआदेश को उन्होंने ने सुना दिया । इसके बाद पाण्डु राजा ने पाँचों पाण्डवों को बुलाया-और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-हे पुत्रों-तुम यहाँ से दक्षिण दिग्बर्नी समुद्र तट पर जाओ और यहाँ पाण्डु मधुरा

नगरीने वसावे अने मारा अट्ट सेवके थउने त्या निवास करे आ प्रभावे कहीने तेमणे कुन्ती देवीने सत्कार क्यो अने सम्मान क्यु सत्कार तेमण सम्मान करीने तेमणे कुन्तीदेवीने त्याथी विदाय क्यो

( तएण सा कुन्ती देवी जाव पटुस्स एयमट्ठ निवेदेइ, तएण पडू पच पडवे सदावेइ, सदावित्ता एवंचयासी-गच्छह णं तुम्हे पुत्ता ! दाहिणिल्ल वेलाऊल तत्थण तुम्हे पटुमहुर निवेसेह तएण पच पडवा पटुस्स रण्णो जाव तहत्ति पडि सुणेंति, सबलवाहणा हय गज० हत्थिणाउराओ पडिणिकखमति, पडिणिकखमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पटुमहुर नगरिं निवेसेति निवेसित्ता, तत्थण ते विउलभोगसमितिसमण्णागया यावि होत्था )

त्याथी हाथी ऊपर सवार थउने कुन्तीदेवी हस्तिनापुर आवी गयी यावत् कृष्णवासुदेवनी ने कथ आशा कही ते पाण्डु राजा ने कही सबलगावी त्यारपछी पाण्डु राजा ने पावे पाण्डवों ने जोलाव्या अने जोलावीने तेमने आ प्रभावे कहु के हे पुत्रो । तमे अहीथी दक्षिण दिशा तरङ्गना समुद्रना डिनारा ऊपर जाओ अने त्या पाण्डु-मधुरा नगरीने वसाओ पिता पाण्डु र आ प्रभावे

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि । ततः खलु सा द्रौपदीदेवी अन्यदा कदाचित् ‘आवणसत्ता’ आपन्नसत्ता=गर्भवती जाता चाप्यभवत् । ततः खलु सा द्रौपदीदेवी नवसु मासेषु संपूर्णेषु सार्धाष्टमदिवसेषु व्यतिक्रान्तेषु सत्सु यावत् सुखं सुन्दर दारक=गालक ‘पयाया’ प्रजाता=प्रजनितवती, किं भूत दारक=सुमाल=सुकुमारपाणिपाद, ‘णिव्वत्तवारसाहस्स’ निर्वृत्तद्वादशाहस्स=सप्ताद्वादशदिवसस्य दारकस्य इदमेतद्रूपं गुणनिष्पन्न नामधेय कुर्वन्ति यस्मात् खलु अस्माकमेव दारकः पञ्चानां पाण्डवानां पुत्रो द्रौपद्या आत्मजः, ‘त’ तत्-तस्माद्

—तएण सा दोवई देवी इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (सा दोवई देवी) वह द्रौपदीदेवी (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (आवणसत्ता जाया यावि होत्या) गर्भावस्थासे सपन्न हुई । (तएण सा दोवई देवी णवण्ह मासाण जाव सुखं दारगं पयाया) जब गर्भ ९ नौमास ७॥ दिन का हो गया तब उस द्रौपदी देवी ने पुत्र को जन्म दिया । यह बालक बहुत ही अधिक सुन्दर था । (सुमालणिव्वत्तवारसाहस्सइम एयारुव गुणनिष्पन्न नामधिज्ज करेति जम्हाण अम्हं एस दारए पचण्ह पडवाण पुत्ते दोवईए अत्तए तं होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णामवेज्ज पडुसेणे) इसके करचरण आदि अवयव सब ही अधिक सुकुमार थे । जब बारहवां दिन लगा-तब माता पिताओ ने इस पुत्र का गुणनिष्पन्न होने से यह नाम रक्खा यस्मात्-यह पुत्र हम पांचो पांडवों का है तथा द्रौपदी की कुक्षि से

तएण सा दोवई देवी इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) तारुण्यी (सा दोवई देवी) ते द्रौपदी देवी (अन्नया कयाइ) कैधं ओक वपते (आवणसत्ता जाया यावि होत्या) सगलां थध (तएण सा दोवई देवी णवण्ह मासाण जाव सुखं दारगं पयाया) न्यारे गलं नव मास ७॥ दिवसने थध गये। त्थारे ते द्रौपदी देवीओ पुत्रने जन्म आय्ये, ते आणक भूण न सुन्दर हुतु

(सुमालणिव्वत्तवारसाहस्स इम एयारुव गुणनिष्पन्न नामधिज्ज करेति, जम्हाण अम्हं एसदारए पचण्ह पडवाणं पुत्ते दोवईए अत्तए तं होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णामवेज्जे पडुसेणे)

तेना हाथ पग वजेरे गधा अवयवो भूण न सुकोमल हुता न्यारे भारमे दिवस आय्ये। त्थारे माता-पिताओ ते पुत्रनु नाम तेना शुभो विधे विचार करता आ प्रभावे राख्यु के आ पुत्र अभावा पाये पाडवेना छे,

कुमार रज्जे ठावेमो तओ पच्छा देवाणुप्पिया ! अतिए मुडे  
 भवित्ता जाव पव्वयामो, अहासुहं देवाणुप्पिया !, तएणं  
 ते पंच पंडवा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवाग-  
 च्छित्ता दोवइ देविं सदावेति सदावित्ता एवं वयासी—एवं  
 खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं थेराणं अंतिए धम्मं गिसंते  
 जाव पव्वयामो तुमं देवाणुप्पिए ! किं करेसि ?, तएण सा  
 दोवइ देवी ते पंच पडवे एव वयासी—जइणं तुव्भे देवाणु-  
 प्पिया ! संसारभउव्विग्गा पव्वयहं मम के अण्णे आलवे  
 वा जाव भविस्सइ ?, अहपि य णं संसारभउव्विग्गा देवा-  
 णुप्पिएहिं सद्धिं पव्वइस्सामि, तएण ते पंच पडवा पडुसे-  
 णस्स अभिसेओ राया जाए जाव रज्जे पसाहेमाणे विहरइ,  
 तएण ते पंच पडवा दोवइ य देवी अन्नया कयाइ पडुसेणं  
 रायाण आपुच्छति, तएण से पडुसेण राया कोडुवियपुरिसे  
 सदावेइ सदावित्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणु-  
 प्पिया ! निक्खमणाभिसेय जाव उवट्टवेह पुरिससहस्सवाहि-  
 णीओ सिवियाओ जाव पच्चोरुहति पच्चोरुहित्ता जेणेव थेरा  
 तेणेव० आलिच्छे णं जाव समणा जाया चोदस्स पुव्वाइ अहि-  
 उजंति अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं  
 मासद्धमासखमणेहिं अप्पाण भावेमाणा १२१ ॥ २॥

टीका—‘तएणं सा’ इत्यादि । ततः खलु सा द्रौपदीदेवी अन्यदा कदाचित् ‘आवणसत्ता’ आपन्नसत्ता=गर्भरती जाता चाप्यभवत् । ततः खलु सा द्रौपदीदेवी नवसु मासेषु सपूर्णेषु सार्धाष्टमदिवसेषु व्यतिक्रान्तेषु सत्सु यावत् सुरूप सुन्दर दारक=गालकं ‘पयाया’ प्रजाता=प्रजनितवती, किं भूत दारक=सूमाल=सुकुमारपाणिपाद, ‘णिव्वत्तवारसाहस्स’ निर्वृत्तद्वादशाहस्स=सप्ताहद्वादशदिवसस्य दारकस्य इदमेतद्रूप गुणनिष्पन्न नामधेयं कुर्वन्ति यस्मात् खलु अस्माकमेव दारकः पञ्चाना पाण्डवाना पुत्रो द्रौपद्या आत्मजः, ‘त’ तत्-उस्माद्

—तएण सा दोवई देवी इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (सा दोवई देवी) वह द्रौपदीदेवी (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (आवणसत्ता जाया यावि होत्या) गर्भावस्थासे सपन्न हुई । (तएणं सा दोवई देवी णवण्ह मासाण जाव सुरूप दारग पयाया) जब गर्भ ९ नौमास ७। दिन का हो गया तब उस द्रौपदी देवी ने पुत्र को जन्म दिया । यह बालक बहुत ही अधिक सुन्दर था । (सूमालणिव्वत्तवारसाहस्सइम एयारूप गुणनिष्पन्नं नामधिज्ज करेति जम्हाण अम्हं एस दारए पचण्हं पडवाण पुत्ते दोवईए अत्तए त होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णामवेज्ज पडुसेणे) हमके करचरण आदि अवयव सब ही अधिक सुकुमार थे । जब बारहवां दिन लगा-तब माता पिताओ ने इस पुत्र का गुणनिष्पन्न होने से यह नाम रखवा यस्मात्-यह पुत्र हम पाचो पांडवो का है तथा द्रौपदी की कुक्षि से

तएण सा दोवई देवी इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारपछी (सा दोवई देवी) ते द्रौपदी देवी (अन्नया कयाइ) कैधं ओउ वण्णते (आवणसत्ता जाया यावि होत्या) सगलो थधं (तएण सा दोवई देवी णवण्ह मासाण जाव सुरूप दारग पयाया) न्थारे गलं नव भास ७। दिवसने। थधं गये। त्थारे ते द्रौपदी देवीओ पुत्रने जन्म आये। ते आणउ भूण न सुन्दर छे।

(सूमालणिव्वत्तवारसाहस्स इम एयारूप गुणनिष्पन्नं नामधिज्ज करेति, जम्हाण अम्ह एसदारए पचण्ह पडवाण पुत्ते दोवईए अत्तए त होउ अम्ह इमस्स दारगस्स णामवेज्जे पडुसेणे)

तेना छाय पग वगेरे जधा अवयवे। भूण न सुकोमल छता न्थारे आरमे दिवस आये। त्थारे माता-पिताओ ते पुत्रनु नाम तेना शुणे। विधे विचार करता आ प्रभाणे राखु के आ पुत्र अभास पाये पाडवेने। छे,



कुमार रज्जे ठावेमो तओ पच्छा देवाणुप्पिया ! अतिए मुंडे  
 भवित्ता जाव पव्वयामो, अहासुह देवाणुप्पिया !, तएणं  
 ते पंच पडवा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवाग-  
 चित्ता दोवइं देविं सदावेति सदावित्ता एवं वयासी-एवं  
 खल्ल देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं थेराणं अतिए धम्मं गिसंते  
 जाव पव्वयामो तुम देवाणुप्पिए ! किं करेसि ?, तएण सा  
 दोवइं देवी ते पंच पडवे एवं वयासी-जइणं तुव्वमे देवाणु-  
 प्पिया ! ससारभउव्विग्गा पव्वयह मम के अण्णे आलवे  
 वा जाव भविस्सइ ?, अहपि य णं संसारभउव्विग्गा देवा-  
 णुप्पिएहिं सद्धि पव्वइस्सामि, तएण ते पंच पडवा पडुसे-  
 णस्स अभिसेओ राया जाए जाव रज्जे पसाहेमाणे विहरइ,  
 तएण ते पंच पडवा दोवइं य देवी अन्नया कयाइ पडुसेणं  
 रायाण आपुच्छंति, तएण से पंडुसेण रायाकोडुवियपुरिसे  
 सदावेइ सदावित्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणु-  
 प्पिया ! निक्खमणाभिसेय जाव उवट्ठवेह पुरिससहस्सवाहि-  
 णीओ सिवियाओ जाव पच्चोरुहति पच्चोरुहित्ता जेणेव थेरा  
 तेणेव० आलित्ते णं जाव समणा जाया चोदस्स पुव्वाइ अहि-  
 ज्जति अहिज्जित्ता वट्ठुणि वासाणि छट्ठुमदसमदुवालसेहिं  
 मासद्धमासखमणेहिं अप्पाण भावेमाणा ॥ ६१ ॥

अथ कदाचित् तत्र—‘ येरा समोसडा ’ स्वयिगः समरसुताः, परिपन्निगता, पाण्डवा अपि स्वयिराणा वन्दनार्थं निर्गताः, धर्मं श्रुत्वा ते पाण्डवा प्रतिबुद्धाः सन्त एवमदन्—यत् नर हे देवानुप्रिया. द्रौपदी देवीमापृच्छामः, पाण्डुमेव च कुमार राज्ये स्थापयाम, ततः पश्चात् देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डाभूत्वा यावत् प्रजामः प्रज्या गृहीमः, तदा स्वयिरा उचुः—‘ अहासुह देवानुप्रिया ! ’ हे देवानुप्रिया यथासुख=सुख यथा भवति तथा कुरुत, अल विलम्बेन इति भाव । तत खलु ते पञ्च पाण्डवा यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवापागच्छन्ति, उपागत्य द्रौपदी देवीं शब्दयन्ति, शब्दयित्वा, एवमदन्—एव खलु हे देवानुप्रिये ! वयं स्वयिरा-

व्यतीत करने लगा । एक समय की बात है कि पाण्डु मथुरा नगरी में स्थविरो का आगमन हुआ । स्थविरो का आगमन सुनकर नगरी का समस्त जन उनकी वदना एवं धर्मोपदेश सुनने के निमित्त अपने-अपने घर से निकले पाँचों पांडव भी निकले—परिषद को आयी हुई देखकर स्थविरो ने उसे धर्म का उपदेश दिया । उपदेश श्रवण कर परिषद पीछे चली गई । पांडव लोग उस धर्म के उपदेश का पानकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गये—उसी समय उन्होंने उन स्थविरो से कहा—हे देवानुप्रियो ! हमलोग द्रौपदी देवी को पूजकर और पाण्डुमेव कुमार को राज्य में स्थापित कर आप देवानुप्रियो के समीपसुद्धित होकर यावत् प्रज्या अगीकार करना चाहते हैं । पांडवों की इस प्रकार हार्दिक भावना देखकर उन स्थविरो ने पांडवों से इस प्रकार कहा—( अहासुह देवानुप्रिया ! तएण ते पच पडवा जेणेव सएगिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवइ देवि सदावेति, सदावित्ता एव वयासी एवं खलु देव पुप्पिया !

स्थविरो पधार्या स्वविरोना आगमननी जणु थता नगरीना जधा लोकें तेमनी वदना तेमज तेमनी पासेथी धर्मोपदेश सालणवा भाटे पोतपोताना घेरथी निकल्या, पाये पाडवो पणु त्या पडोआ परिषदने आवेनी जेधने स्थविरोअ धर्मने उपदेश आय्यो उपदेश सालणीने परिषद जाती रही पाडवो ते धर्मने उपदेश सालणीने प्रतिबोधित थय गया तेमणे तेज समये स्थविरोने विनती करता कछु के हे देवानुप्रियो ! अमे द्रौपदी देवीने पूछी तेमज पाण्डुमेव कुमरने राज्यासने अभिषिक्ता उगीने तमारी पामे सुद्धित थयने यावत् प्रज्या अहणु करवानी अलिवाया राभीअ छीअ पाडवोनी आ जतनी हार्दिक धरणा जणीने ते स्थविरोअ ते पाये पाडवोने आ प्रभावे कछु हे—

( अहासुह देवानुप्रिया ! तएण ते पच पडवा जेणेव सएगिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवइ देवि सदावेति, सदावित्ता एव वयासी, एव

યતુ અસ્માકમસ્ય દારુમ્ય નામધેય ' પાણ્ડુમેન ' રૂતિ । તતઃ સ્વત્રુ તમ્પ દારુમ્યમ્યાપિતરી નામધેય કુર્યન્તિ- ' પાણ્ડુસેન ' રૂતિ । ' વાવત્તરિં કઢાઓ ' દ્રામ મર્તિ કલાઃ શિસિતાઃ, યાવત્ મોગમમર્થો જાતઃ, રાજકન્યા પરિણીય યુવરાજો યાવત્ માનુષ્યકાન્ મોગાન્ શુજ્ઞાનો વિહરતિ-ઓમ્તે ।

ઉત્પન્ન હુઆ હૈ-અતઃ હમારે હમ પુત્ર કા નામ પાણ્ડુસેન હોના ચાહિયે (તણ તસ્મ દારુમસ્મ અમ્માપિયરો નામધેજ્જ કરેતિ પણ્ડુસેણત્તિ) હસ રૂયાલ સે હન્નો ને હસ નવજાત પુત્ર કા નામ પાણ્ડુસેન રમ્વ દિયા । (વાવત્તરિં કલાઓ જાવ મોગમમત્થે જાણ જુવરાયા જાવ વિહરહ થેરા સમોસઢા, પરિસા નિગયા, પહવા નિગયા, ધમ્મ સોચ્ચા ઇવ વયાસી જ જવર દેવાનુપ્પિયા ! દોવહ દેવિ આપુચ્છામો પણ્ડુસેણં ચ કુમાર રજ્જે ઠાવેમો તઓ પચ્છા દેવાનુપ્પિયા ! અતિણ મુઢે મવિત્તા જાવ પન્વયામો) પાણ્ડુસેન કુમાર કો ૭૨ કલાઓ મેં નિપુણ ઘનાને કે લિયે માતા પિતાને હસે કલાચાર્ય કે પાસ મેજ દિયા । ધીરે ૨ વહ ૭૨, કલાઓ મેં નિષ્ણાત ઘન ગયા । યાવત્ મોગ મોગને કે લાયક અવસ્થા સપન્ન મી હો ગયા । રાજકન્યાઓ કે સાથ હમકા વૈવાહિક સબન્ધ કર કે પિતાઓ ને હસે યુવરાજ પદ પ્રદાન મી કર દિયા-યાવત્ ઘહ મનુષ્યમવ સબન્ધી કામ સુખો કો અનુમવ કરતા હુઆ અપને સમય કો આનન્દ કે સાથ

તેમજ દ્રૌપદી દેવીના ગલથી તેનો જન્મ થયો છે, બેટલા માટે અમારા આ પુત્રનું નામ પાણ્ડુસેન હોવું જોઈએ

( તણ તસ્મ દારુમસ્મ અમ્માપિયરો નામધેજ્જ કરેતિ પણ્ડુસેણત્તિ )

આ ત્રિચારથી તેમણે તે નવજાત પુત્રનું નામ પાણ્ડુસેન રાખ્યું

( વાવત્તરિં કલાઓ જાવ મોગમમત્થે જાણ જુવરાયા જાવ વિહરહ, થેરા સમોસઢા, પરિસા નિગયા, પહવા નિગયા ધમ્મ સોચ્ચા ઇવ વયાસી જ જવર દેવાનુપ્પિયા ! દોવહ દેવિ આપુચ્છામો પણ્ડુસેણ ચ કુમાર રજ્જે ઠાવેમો તઓપચ્છા દેવાનુપ્પિયા ! અતિણ મુઢે મવિત્તા જાવ પન્વયામો )

પાણ્ડુસેન કુમારને ૭૨ કલાઓના નિપુણ ઘનાવવા માટે માતાપિતાઓએ કલાચાર્યની પાસે મોકલ્યો. આમ ધીમે ધીમે તે ૭૨ કલાઓના નિષ્ણાત બની ગયો. યાવત્ તે સ સારના લોગો લોગવવા ચોગ્ય અવસ્થાવાળો પણ થઈ ગયો. રાજકન્યાઓની સાથે લગ્નો કરાવીને પિતાઓએ તેને યુવરાજ પદ પણ સોંપી દીધું. યાવત્ તે મનુષ્ય-મવ સબન્ધી કામસુખોને અનુભવનો પોતાના વખતને સુખેથી પસાર કરવા લાગ્યો. એક વખતની વાત છે કે પાણ્ડુ-મગગ નગરીમા

अथ कदाचित् तत्र—' येरा समोसडा ' स्थविराः समवसृताः, परिपन्निगता, पाण्डवा अपि स्थविराणा वन्दनार्थं निर्गताः, धर्मं श्रुत्वा ते पाण्डवा प्रतिबुद्धाः सन्त एवमदन्—यत् नवर हे देवानुप्रियाः द्रौपदी देवीमापृच्छामः, पाण्डुमेव च कुमार राज्ये स्थापयाम, ततः पश्चात् देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डाभूत्वा यावत् प्रव्रजामः प्रव्रज्या गृह्णीमः, तदा स्थविरा उचुः—' अहासुह देवानुप्रिया ! ' हे देवानुप्रिया यथासुख=सुख यथा भवति तथा कुरुत, अल विलम्बेन इति भावः । ततः खलु ते पञ्च पाण्डवा यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवापागच्छन्ति, उपागत्य द्रौपदी देवीं शब्दयन्ति, शब्दयित्वा, एवमदन्—एव खलु हे देवानुप्रिये ! वयं स्थविरा-

व्यतीत करने लगा । एक समय की बात है कि पांडु मथुरा नगरी में स्थविरो का आगमन हुआ । स्थविरो का आगमन सुनकर नगरी का समस्त जन उनकी वदना एवं धर्मोपदेश सुनने के निमित्त अपने-अपने घर से निकले पाँचों पांडव भी निकले—परिषद को आयी हुई देखकर स्थविरो ने उसे धर्म का उपदेश दिया । उपदेश श्रवण कर परिषद पीछे चली गई । पांडव लोग उस धर्म के उपदेश का पानकर प्रतियोग को प्राप्त हो गये—उसी समय उन्होंने उन स्थविरो से कहा—हे देवानुप्रियो ! हमलोग द्रौपदी देवी को पूजकर और पांडुसेन कुमार को राज्य में स्थापित कर आप देवानुप्रियो के समीपमुडित होकर यावत् प्रव्रज्या अमी-कार करना चाहते हैं । पांडवों की इस प्रकार हार्दिक भावना देखकर उन स्थविरो ने पांडवों से इस प्रकार कहा—( अहासुह देवानुप्रिया ! तएण ते पच पडवा जेणेय सएगिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवइ देविं सदावेति, सदावित्ता एव वयासी एवं खलु देव णुप्पिया !

स्थविरो पधार्या स्थविरोना आगमननी जणु थता नगरीना जधा लोके तेमनी वदना तेमज तेमनी पासेथी धर्मोपदेश सालणवा भाटे पोतपोताना घेरथी निज्या, पाये पाडवे पणु त्या पडोव्या पण्डितने आवेनी जेधने स्थविरोजे धर्मने उपदेश आप्थे । उपदेश सालणीने परिषद जती रही पाडवे ते धर्मने उपदेश सालणीने प्रतिभाधित थध गया तेमणे तेज समये स्थविरोने विनती उरता कहु के हे देवानुप्रियो ! अमे द्रौपदी देवीने पूछी तेमज पांडुसेन कुमारने राज्यासने अभिषिक्त करीने तमारी पाये मुडित थधने यावत् प्रव्रज्या अणु करवानी अलिवापा राभीजे छीजे पाडवेनी आ जतनी हार्दिक धर्मण जणीने ते स्थविरोजे ते पाये पाडवेने आ प्रभावे कहु के—

( अहासुह देवानुप्रिया ! तएण ते पच पडवा जेणेय सए गिहे, तेणेय उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवइ देविं सदावेति, सदावित्ता एव वयासी, एव

ણામન્તિકે ધર્મે શ્રુતવન્તો યાવત્ પ્રવ્રજામઃ, ત્વ હે દેવાનુપ્રિયે ! કિં કરોષિ કિં કરિષ્યમિ ? । તતઃ સ્વલુ સા દ્રૌપદી તાન્ પન્ન પાન્ડ્યાન્ પૃથ્વિયાદીન્-યદિ સ્વલુ યૂય હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! સસારભયોદ્વિગ્ના-જન્મમરણાદિ રૂપાદ મીતાઃ સન્તો યાવત્ પ્રવ્રજથ, મમ કોડન્ય આજ્ઞયો યા યાવદ્ મરિષ્યમિ ?, અહમપિ ચ સ્વલુ સસારભયોદ્વિગ્ના દેવાનુપ્રિયૈ સાધૈ પ્રવ્રજિષ્યામિ, તત સ્વલુ તે પન્ન પાન્ડ્યાઃ પાન્ડુસેનસ્ય અભિષેક-સા-યાભિષેક ક્રત્વા સ્વરાજ્યે સ્થાપિતવન્તઃ, યાવદ્ રાજા જાતઃ, યાવદ્ રાજ્ય પ્રમાપ્યન્-સત્ત્વન્ વિહરતિ-આસ્તેસ્મ ।

અમ્હેર્હિ થેરાણ અતિણ ધર્મે ણિમતે જાવ પવ્વયામો-તુમ દેવાણુપ્પિણ ! કિં કરેસિ ) હે દેવાનુપ્રિયો ! જિમ પ્રકાર તુમ્હે સુગ્ગ મિલે વૈમા તુમ કાળો ! અન્નઠે કામ મે વિલમ્મ મત કાળો ! હસકે વાદ-વે પાંચો પાડવ જહા અપના ઘર થા વહા આયે-વન્ના આકર કે ઉન્નો ને દ્રૌપદી દેવી કો બુલાયા-બુલાકર હસસે જેમા રહા-હે દેવાનુપ્રિયે ! સુનો યાન હસ પ્રકાર હૈ-હમલોગો ને સ્થવિરોંકે પામ ધર્મના શ્રવણ કિયા હૈ । અન હમલોગોં કી ભાવના સુહિન હોકર ઉનકે પાસ પ્રવ્રજિત હોને કી હૈ । અથ-તુમ્હારી ભાવના રૂપા હૈ-હે દેવાનુપ્રિયે કાળે તુમ હમારે વાદ વયા કાળેગી-( તણ્ણ સા દોવર્હ દેવો તે પન્ન પડવે એવ વયાસી-જહ્ણ ન તુમ્હે દેવાણુપ્પિયા ! સસારભયોદ્વિગ્ના પવ્વયહ મમ કે અણ્ણે આલવે વા જાવ મવિસ્સહ ? અહ પિ ય ન સસારભયોદ્વિગ્ના દેવાણુપ્પિણ્હિ સદ્ધિ પવ્વહસ્સામિ, તણ્ણ તે પન્ન પડવા પહુસેણસ્મ અભિસેઓ જાવ રાયા જાણ, જાવ રજ્જ પસાહે

સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હેર્હિ થેરાણ અતિણ ધર્મે ણિમતે જાવ પવ્વયામો તુમ દેવાણુપ્પિણ ! કિં કરેસિ )

હે દેવાનુપ્રિયો ! જેમ તમને સુખ મળે તેમ કરો સારા કામમા મોડું કરો નહિ ત્યારપછી તેઓ પાચે પાડવો જ્યા પે તાનુ ઘર હતું ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે દ્રૌપદી દેવીને બોલાવી બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! સાલળો, વાત એવી છે કે અમેાએ સ્થવિરોની પાસેથી ધર્મનું શ્રવણ કર્યું છે, એટલા માટે અમારી ઇચ્છા સુહિત થઈને તેમની પાસેથી પ્રવ્રજ્યા શ્રદ્ધા કરવાની છે હવે તમારી શી ઇચ્છા છે ? હે દેવાનુપ્રિયે ! અમને કહો અમે પ્રવ્રજ્યા શ્રદ્ધા કરી લઈશું ત્યારબાદ તમે શું કરશો ?

( તણ્ણ સા દોવર્હ દેવી તે પન્ન પડવે એવ વયાસી-જહ્ણ તુમ્હે દેવાણુપ્પિયા ! સસારભયોદ્વિગ્ના પવ્વયહ, મમ કે અણ્ણે આલવે વા જાવ મવિસ્સહ ? અહ પિ ય ન સસારભયોદ્વિગ્ના, દેવાણુપ્પિણ્હિ સદ્ધિ પવ્વહસ્સામિ, તણ્ણ તે પન્ન પડવા પહુસેણસ્મ અભિસેઓ જાવ રાયા જાણ, જાવ રજ્જ પસાહેમાણે વિહરહ )



ततः खलु ते पञ्च पाण्डवा द्रौपदी च देवी अन्यदा कदाचित् पाण्डुसेन राजा-  
नमापुच्छन्ति, तत खलु स पाण्डुसेनो राजा कौटुम्भिकपुरुषान् शब्दयति, शब्द-  
यित्वा, एवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो ! देवानुप्रियाः । निष्क्रमणामिषेक=दीक्षोपयोग  
वस्तूनि यावद् उपस्थापयत, पुरुषसहस्रवाहिनीः शिविका उपस्थापयत, ' यावत्  
प्रत्यवरोहन्ति=अत्र यावच्छब्देनेद वोच्यम्, तत पाण्डुसेनस्य राजोवचनमारुर्ण्य ते

माणे विहरइ ) इस प्रकार पांडवों का कहना सुनकर द्रौपदी देवी ने  
उन पांचों पांडवों से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! तुमलोग यदि  
ससार भय से उद्विग्न होकर प्रव्रजित होना चाहते हो, तो फिर मेरे  
लिये आप के सिवाय और कौन दूसरा आलवन अथवा आधार होगा ।  
अतः मैंभी आप देवानुप्रियों के साथ ससार भय से उद्विग्न होकर  
दीक्षित होऊँगी । इस प्रकार द्रौपदी देवी का कथन सुनकर उन पांचों  
पांडवों ने पाण्डुसेन कुमार का राज्याभिषेक करके उसे राज्यपद में स्था-  
पित किया । इस तरह पांडुकुमार राजा हो गया । यावत् राज्य का वह  
अच्छी तरह पालन करने लगा । ( तएण ते पच पडवा दोवईय देवी  
अन्नया कयाइ पडुसेणरायाण आपुच्छति, तएण से पडुसेणे राया कोडुं-  
पिय पुरिसे सदावेह, सदावित्ता, एव वयासी खिप्पामेव भो देवाणु-  
प्पिया । निक्खमणाभिसेयं जाव उवट्ठवेह, पुरिससहस्मवाहणीओ  
सिवियाओ उवट्ठवेह, जाव पच्चोरुहति, पच्चोरुहत्ता जेणेव थेरा उवा-

आ प्रभाणु पाडवोनु कथन सालणीने द्रौपदी देवीणे ते पाये पाडवोने  
आ प्रभाणु कथु ते हे देवानुप्रियो ! तमे न्यारे ससारलयथी उद्विग्न थधने  
प्रवत्था थडणु करवा छुटो छो त्यारे तमारा पगर भारा भाटे आ ससारभा  
जीणु कथु आलवन अथवा तो जीने कथे आधार थथे ? ओटला भाटे हु  
पणु तमारी साथे ससारलयथी उद्विग्न थधने दीक्षा थडणु करवा छुट्ठु छु  
आ प्रभाणु द्रौपदी देवीनु कथन सालणीने ते पाये पाडवोणे पाडुसेन कुमारने  
राज्याभिषेक करीने तेने राज्यामने जेसाडी दीधे आ प्रभाणु पाडुसेन कुमार  
राज थध गये। यावत् ते राज्यनु सारी रीते रक्षणु करवा लाज्ये।

(तएण ते पच पडवा दोवईय देवी अन्नया कयाइ पडुसेणरायाण आपुच्छति,  
तएण से पडुसेणे राया कोडु वियपुरिसे सदावेह, सदावित्ता एवं वयासी, खिप्पामेव  
भो देवाणुप्पिया । निक्खमणाभिसेयं जाव उवट्ठवेह, पुरिससहस्मवाहणीओ  
सिवियाओ उवट्ठवेह, जाव पच्चोरुहति, पच्चोरुहत्ता जेणेव थेरा तेणेव उवाग०  
आलित्तेण जाव समणा जाया, चोदस्सपुग्वाइ अहिज्जति, अहिज्जित्ता यहणि

कौटुम्बिकपुम्पास्तथास्तु' इत्युक्त्वा तथैव यावदुपस्थापयन्ति, तदा ते पञ्च पाण्डवा पुरुषसहस्रवाहिनीः शिबिका आम्ना, पाण्डुमथुराया नगर्या मध्यमन्थेन निर्गच्छति, निर्गत्य शिबिकाभ्यः प्रत्यगरोहति=प्रत्यगतरति । प्रत्यगरुह्य, 'जेणेव' यत्रैव स्थविरास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य परमयादिषुः—' आलिप्ते ण जाव समणा

गच्छइ आलिप्तेण जाव समणा जाया, चोदसपुण्याइ अहिज्जति, अहिज्जित्ता, घट्टणि वासाइ छट्टमदसमदुवालसेहिं मामद्धमासखमणेहिं अप्पाण भावेमाणा विहरति ) इसके बाद पांचो पांडवों ने और द्रौपदी देवी ने किसी एक समय पांडुसेन राजा से दीक्षित होने के लिये पूजा । तब पांडुसेन राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा—भो देवानुप्रियो ! तुमलोग शीघ्र ही दीक्षा में उपयोग आनेवाली वस्तुओं को लाकर उपस्थित करो—तथा पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं को भी उपस्थित करो—इस प्रकार पांडुसेन राजा के बचन सुनकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने “ तथास्तु ” कहकर उनकी आज्ञा को स्वीकार कर लिया—और दीक्षा में उपयोगी समस्त सामग्री को एक पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं को लाकर उपस्थित कर दिया । तब वे पांचो पांडव उन पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं पर आरुढ़ होकर पांडु मथुरा नगरी के बीच से होकर निकले । वहां से निकलकर वे जहां स्थविर ठहरे हुए थे—वहां—आये—वहां आकर सबके सब शिबिकाओं से

वासाइ छट्टमदसमदुवालसेहिं मामद्धमासखमणेहिं अप्पाण भावेमाणा विहरति)

त्यारपणी पाये पाडवोये अने द्रौपदी देवीये केहिं ओके वખते पाडुसेन राजाने दीक्षा अडणु करवा भाटे पूछ्यु त्यारे पाडुसेन राजाये कौटुम्बिक पुरुषोने जोलाव्या जोलावीने तेमने आ प्रमाणे कछु के हे देवानुप्रियो । तमे लोके दीक्षा वખते उपयोगमा आवनारी जधी वस्तुओ नदही लध आवे तेमज पुरुष सहस्रवाहिनी पालभी पणु लध आवे आ प्रमाणे पाडुसेन राजाना वयन साभणीने ते कौटुम्बिक पुरुषोये ' तथास्तु ' कहीने तेमनी आज्ञा स्वीकारी लीधी अने दीक्षा भाटे उपयोगी ओवी जधी वस्तुओ तेमज पुरुष-सहस्रवाहिनी पालभी लध आव्या त्यारपणी ते पाये पाडवो ते पुरुष सहस्रवाहिनी पालभीओ उपर सवार थधने पांडु-मथुरा नगरीनी वन्थे थधने नीकल्या त्याथी नीकणीने तेओ न्यां स्थविर हुता त्यां पडोव्या, त्या पडोवीने तेओ जधा पालभीओमाथी नीचे हुता, नीचे हुतरीं-स्थविरानी

जाया ' आदीप्तोऽयं लोक खलु इत्यादि । यावद् श्रमणा जाताः, चतुर्दशपूर्वाणि अधीयते स्म, अधीत्य बहूनि वर्षाणि पष्ठाष्टमदशम द्वादशैर्मासार्धमासक्षपणैस्तपोभिरात्मान भावयन्तो विहरन्ति ॥ सू९ ३३ ॥

मूलम्—तएणं सा दोवई देवी सीयाओ पच्चोरुहइ जाव पव्वइया सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयइ, इक्का-रस अंगाइ अहिज्जइ बहूणि वासाणि छट्ठमदसमदुवाल-सेहि जाव विहरइ ॥ सू० ३४ ॥

टीका—' तएणं सा ' इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु सा द्रौपदी देवी शिविकातः प्रत्यवतीरति प्रत्यवतरति, प्रत्यवतीर्य यावत् प्रव्रजिता-दीक्षा गृहीतवती । ' सुव्वयाए ' सुत्रतायै=सुव्रतानामधेयायै ' अज्जाए ' आर्यायै ' सिस्सिणीयत्ताए'

नीचे उतरे । नीचे उतरकर स्थविरो के पास पहुँचे । वहाँ पहुँचकर उन्होंने ने स्थविरो से इस प्रकार कहा—हे भदत ! यह समस्त लोक आदीप्त-हो रहा है इत्यादिरूप से अपनी भावना प्रदर्शित कर यावत् वे श्रमण हो गये । चौदह पूर्वों का उन्होंने ने अध्ययन किया । अध्ययन करके अनेक वर्षों तक पष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश, मास अर्धमास की तपस्याओं को वे करते हुए विचरने लगे ॥ सू० ३३ ॥

‘ तएण सा दोवई ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (दोवई देवी) द्रौपदीदेवी (सीयाओ पच्चोरुहइ) अपनी शिविका से नीचे उतरी—( जा पव्वइया, सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयइ, इक्कारसअगाइ अहिज्जइ, बहूणि वासाइ

पासे पडोअ्या त्या पडोअीने तेमहे स्थविरोने विनती करता आ प्रभावे कहुं के छे लहन्त । आ स पूरुं जगत सणगी रह्यु छे वगेरे रुपथी पोतानी लावना प्रकट करीने यावत् तेओ श्रमण थर गथा चौद पूर्वानु तेमहे अध्ययन कयुं, अध्ययन करीने धणु वर्षो सुधी तेओ पष्ठ, अष्टम दशम, द्वादश, मास अर्धमासनी तपस्याओ करता रह्यु ॥ सूत्र ३३ ॥

तएण सा दोवई इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्पारपथी (दोवई देवी) द्रौपदी देवी (सीयाओ पच्चोरुहइ) पोतानी पावणीमा नीचे उतरी

(जा पव्वइया, सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयइ, इक्कारसअगाइ

कौटुम्बिकपुरुषास्तथास्तु ' इत्युक्त्वा तथैव यावदुपस्थापयन्ति, तदा ते पञ्च पाण्डवा पुरुषसहस्रवाहिनीः शिबिका आम्ना, पाण्डुमथुराया नगर्या मध्यमयेन निर्गच्छति, निर्गत्य शिबिकाभ्यः प्रत्यवरोहति=प्रत्यवतरति । प्रत्यवरोह, 'जेणेव' यत्रैव स्थविरास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य एवमयादिषुः—' आलिप्ते णं जाव समणा

गच्छह आलिप्तेण जाव समणा जाया, चोदसपुत्राह अहिज्जति, अहिज्जित्ता, यद्दणि यामाह छट्ठमदसमदुवालसेहि मासद्वमासवमणेहि अप्पाण भावेमाणा विहरति ) इसके बाद पाचो पाण्डवों ने और द्रौपदी देवी ने किसी एक समय पाण्डुसेन राजा से दीक्षित होने के लिये पूछा । तब पाण्डुसेन राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा—भो देवानुप्रियो ! तुमलोग शीघ्र ही दीक्षा में उपयोग आनेवाली वस्तुओं को लाकर उपस्थित करो—तथा पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं को भी उपस्थित करो—इस प्रकार पाण्डुसेन राजा के वचन सुनकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने “ तथास्तु ” कहकर उनकी आज्ञा को स्वीकार कर लिया—और दीक्षा में उपयोगी समस्त सामग्री को एव पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं को लाकर उपस्थित कर दिया । तब वे पाचो पाण्डव उन पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं पर आरुढ़ होकर पाण्डु मथुरा नगरी के बीच से होकर निकले । वहाँ से निकलकर वे जहाँ स्थविर ठहरे हुए थे—वहाँ—आये—वहाँ आकर सबके सब शिबिकाओं से

वासह छट्ठमदसमदुवालसेहि मासद्वमासवमणेहि अप्पाण भावेमाणा विहरति)

त्यारपणी पाचे पाण्डवोअे अने द्रौपदी देवीअे डोअेअे वणते पाण्डुसेन राजने दीक्षा अडणु करवा माटे पूछथु तयारे पाण्डुसेन राजअे कौटुम्बिक पुरुषोने जोलाव्या जोलावीने तेमने आ प्रमाणे कह्यु के डे देवानुप्रियो ! तमे डोअे दीक्षा वणते उपयोगमा आवनारी अधी वस्तुअे जहदी लथ आवे। तेमज पुरुष सहस्रवाहिनी पालणी पणु लथ आवे। आ प्रमाणे पाण्डुसेन राजना वचन सामणीने ते कौटुम्बिक पुरुषोअे ‘ तथास्तु ’ कह्ये तेमनी आज्ञा स्वीकारी लीधी अने दीक्षा माटे उपयोगी अेवी अधी वस्तुअे तेमज पुरुष—सहस्रवाहिनी पालणी लथ आव्या। तयारपणी ते पाचे पाण्डवो ते पुरुष सहस्रवाहिनी पालणीअे उपर सवार थयने पाण्डु—मथुरा नगरीनी वण्ये थयने नीकल्या। तयाथी नीकणीने तेअे न्या स्थविर हुता त्यां पडोअ्या, त्या पडोअीने तेअे अधा पालणीअेमाथी नीचे उतयां, नीचे उतरीने स्थविराणी

अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति पडिसुणित्ता जेणेव थेरा  
 भगवंतो तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता थेरं भगवंतं वंदंति  
 णमंसंति वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामो णं तुव्वभेहिं  
 अब्भणुन्नाया संमाणा अरहं अरिट्ठनेमि जाव गमित्तए,  
 अहासुहं देवाणुप्पिया । तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच  
 अणगारा थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुन्नाया समाणा । थेरे  
 भगवंते वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अतियाओ  
 पडिणिक्खमंति मासंमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं गा-  
 माणुगाम दूईज्जमाणा जाव जेणेव हत्थिकप्पे नयरे तेणेव  
 उवा० हत्थिकप्पस्स वहिया सहसववणे उज्जाणे जाव विह-  
 रति, तएणं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा मासख-  
 मणपारणए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेंति वीयाए एव  
 जहा गोयमसामी णवरं जुहिट्ठिल्लं आपुच्छंति जाव अड-  
 माणा बहुजणसहं णिसामेंति, एव खलु देवाणुप्पिया ।  
 अरहा अरिट्ठनेमी उज्जितसेल्लसिहरे मासिएणं भत्तेणं  
 अपाणएणं पंचहि छत्तीसेहि अणगारसएहि सद्धि कालगए  
 जाव पहीणे, तएणं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा  
 बहुजणस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणि-  
 क्खमति पडिणिक्खमित्ताजेणेव सहसववणे उज्जाणे जेणेव  
 जुहिट्ठिल्ले अणगारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता भत्तपाणं  
 पच्चक्खंति पच्चक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमति पडि-



शिष्यातया ददाति पाण्डसेनो राजा द्रौपदी सुव्रताये शिष्यारूपेण दत्तवानिति भावः । एकादशाहानि अधीते, बहूनि वर्षाणि पष्टाष्टमदशमद्वादशैस्तपोभिर्वा तदात्मानं भावयन्ती विहरति ॥ सू० ३४ ॥

मूलम्—तएण थेरा भगवंतो अन्नया कयाई पडुमदुराओ णयरीओ सहसंववणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरति, तेण कालेण तेणं समएण अरिहा अरिट्टनेमी जेणेय सुरट्टाजणवए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सुरट्टाजणवयंसि संजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ, तएणं बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ०—एवं खलु देवाणुप्पिया । अरिहा अरिट्टनेमी सुरट्टाजणवए जाव वि०, तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पच अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमहं सोच्चा अन्नमन्नं सहावेति सहावित्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । अरहा अरिट्टनेमी पुव्वाणु० जाव विहरइ, त सेयं खलु अम्ह थेरा आपुच्छित्ता अरह अरिट्टनेमि वदणाए गमित्तए

छट्ठमदसमदुवालसेहिं जाव विहरइ ) नीचे उतरकर यावत् वह भी प्रव्रजित हो गई । पांडुसेन राजा ने उसे—द्रौपदी को सुव्रता नाम की साध्वी के शिष्यारूप से प्रदान किया । द्रौपदी आर्या ने ग्यारह अर्गों का अध्ययन किया । बाद में अनेक वर्षों तक छट्ठ अष्टम, दशम, द्वादश तपस्याओं से अपने आपको उसने भावित किया ॥ सू० ३४ ॥

अदिज्जइ, बहूणि वासाइ छट्ठमदसमदुवालसेहिं जाव विहरइ )

नीचे उतरीने यावत् ते पणु प्रव्रजित थई गइ पांडुसेन राजाओ द्रौपदीने सुव्रता नामनी साध्वीने शिष्याना इपमा अपिंन करी द्रौपदी आर्याओ अगियार अगोनु अध्ययन कयुं त्थारपछी घणुा वर्षा सुधी छट्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश तपस्याओथी पोताना आत्माने तेणु लावित गे ॥ सू ३४ ॥

तस्मिन् काले तस्मिन् समयेऽर्हन् अरिष्टनेमिर्यत्रैव सौराष्ट्रजनपदस्तत्रैवोपा-  
गच्छति, उपागत्य सौराष्ट्रजनपदे संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरति । ततः  
खलु बहुजनोऽन्योन्यमेवमाख्याति=वक्ति, एव भाषते, एव प्ररूपयति एव प्रज्ञाप-  
यति-एव खलु हे देवानुप्रिय ! अर्हन् अरिष्टनेमि सौराष्ट्रजनपदे यावद् विहरति ।  
ततः खलु ते युधिष्ठिरप्रभुवा पञ्चानगारा बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वाऽन्योन्य  
शब्दयन्ति, शब्दयित्वा एवमादन्, एव खलु हे देवानुप्रिय ! अर्हन् अरिष्टनेमिः पूर्वा

णाओ ) उद्यान से ( पडिणिक्खमति ) विहार किया ( पडिणिक्खमित्ता )  
विहार करके ( वहिया जणवयविहार विहरति ) बाहिर के जनपदों  
में विचरने लगे ( तेण कालेण तेणं समएण अरिहा अरिष्टनेमी जेणेव  
सुरट्ठा जणवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठा जणवयंसि  
सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ, तएण बहुजणो अन्नमन्नस्स  
एवमाइक्खइ ) उस काल में और उस समय में अर्हन् अरिष्टनेमि  
प्रभु विहार करते हुए जहाँ सौराष्ट्र जनपद था-वहाँ आये वहाँ आकर  
के वे उस सौराष्ट्र जनपद में संयम और तप से अपने आत्मा को  
भावित करते हुए विचरने लगे । जब वहाँ के अनेक लोगो को इसकी  
खबर हुई तब वे परस्पर में इस प्रकार कहने लगे ( एव खलु देवाणु-  
प्पिया ! अरिहा । अरिष्टनेमी सुरट्ठा जणवए जाव वि० तएण ते जुहि-  
ट्टिल्लपामोक्खा पच अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा अन्न-

णिकसमति ) विहार किये ( पडिणिक्खमित्ता ) विहार करीने तेओ ( वहिया  
जणवयविहार विहरति ) अहारना जनपदोभा विहार करवा लाग्या

( तेण कालेण तेणं समएण अरिहा अरिष्टनेमी जेणेव सुरट्ठा जणवए  
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठा जणवयसि सजमेण तवसा अप्पाण भावे-  
माणे एवमाइक्खइ )

ते काले अने ते समये अर्हन् अरिष्टनेमि प्रभु विहार करता करता न्या  
सौराष्ट्र जनपद हुतो त्या आव्या त्या आवीने तेओ ते सौराष्ट्र जनपदभा  
संयम अने तपशी पोताना आत्माने भावित करता विचरखु करवा लाग्या  
न्यारे त्याना धणु लोकेने आ वातनी नखु थर्ह त्यारे तेओ परस्पर आ  
प्रमाणे कडेवा लाग्ये के—

( एव खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिष्टनेमी सुरट्ठाजणवए जाव वि० तएण  
ते जुहिट्टिल्लपामोक्खा पच अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा अन्नमन्नं  
सहावेति, सहावित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिष्टनेमी

कमिता एसणमणेसणं आलोएंति आलोइत्ता भत्तपाणं  
 पडिदसेंति पडिदंसित्ता एवं वयासी-एवं खल्ल देवाणुप्पिया ।  
 जाव कालगए तं सेयं खल्ल अम्ह देवाणुप्पिया ! इमं  
 पुव्वगहियं भत्तपाणं परिट्टवेत्ता सेत्तुजं पव्वयं सणियं सणियं  
 दुरुहत्तिए 'संलेहणा झूसणा झूसियाणं' कालं अणवकख-  
 माणाणं विहरत्तिएत्तिकु अणमण्णास्स एयमट्ठ पडिसुणेति  
 पडिसुणित्ता तं पुव्वगहियं भत्तपाणं एगंते परिट्टवेत्ति परि-  
 ट्टवेत्ता जेणेव सेत्तुजे पव्वए तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता  
 सेत्तुजं पव्वय दुरुहंति दुरुहित्ता जाव कालं अणवकखमाणा  
 विहरति । तएण ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पच अणगारा  
 सामाइयमाइयाइ चोदसपुव्वाइ० वहुणिं वासाणि० दोमा-  
 सियाए संलेहणाए अत्ताण झोसित्ता जस्सट्ठाए कीरइणग्ग-  
 भावे जाव तमट्ठमारहेति तमट्ठमाराहित्ता अणते जाव  
 केवलवरणाणदंसणे समुप्पन्ने जाव सिद्धा ॥ सू० ३३ ॥

टीका—' तएण थेरा ' इत्यादि । ततस्तदनन्तर खल्ल स्थविरा भगवन्तोऽ-  
 न्यदाकदाचित् पाण्डुमथुरातो नगरीतो सहस्राम्रवणादुद्यानात् प्रतिनिष्क्रामन्ति=  
 निर्गच्छन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य निर्गत्य, बहिर्जनपदविहार विहरन्ति ।

—तएण थेरो भगवता इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (थेरा भगवतो) उन स्थविर भगवतोने  
 (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (पडुमहुराओ) पाण्डु मथुरा (णय-  
 रीओ) नगरी से (सहस्रववणाओ) सहस्राम्रवन नाम के (उज्जा

तएण थेरा भगवता इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) तथारणाइ (थेरा भगवतो) ते स्थविर भगवतोओ (अन्नया  
 कयाइ) के।ओ ओक वणते (पडु महुराओ) पाण्डु मथुरा (णयरीओ) नगरीथी  
 (सहस्रववणाओ) सहस्राम्रवन नामना (उज्जाणाओ) उवा 'वहि

तस्मिन् काले तस्मिन् समयेऽर्हन् अरिष्टनेमिर्यत्रैव सौराष्ट्रजनपदस्तत्रैवोपा-  
गच्छति, उपागत्य सौराष्ट्रजनपदे संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरति । ततः  
खलु बहुजनोऽन्योन्यमेवमाख्याति=वक्ति, एव भाषते, एव प्ररूपयति एव प्रज्ञाप-  
यति-एव खलु हे देवानुप्रिय ! अर्हन् अरिष्टनेमि सौराष्ट्रजनपदे यावद् विहरति ।  
ततः खलु ते युधिष्ठिरप्रभुवा पञ्चानगारा बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वाऽन्योन्य  
शब्दयन्ति, शब्दयित्वा एवमयदन्, एव खलु हे देवानुप्रिय ! अर्हन् अरिष्टनेमिः पूर्वा

णाओ ) उद्यान से ( पडिणिक्खमति ) विहार किया ( पडिणिक्खमित्ता )  
विहार करके ( वहिया जणवयविहार विहरति ) बाहिर के जनपदों  
में विचरने लगे ( तेण कालेण तेणं समएण अरिहा अरिष्टनेमी जेणेव  
सुरट्ठा जणवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठा जणवयसि  
सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ, तएण बहुजणो अन्नमन्नस्स  
एवमाइक्खइ ) उस काल में और उस समय में अर्हन् अरिष्टनेमि  
प्रभु विहार करते हुए जहाँ सौराष्ट्र जनपद था-वहा आये वहाँ आकर  
के वे उस सौराष्ट्र जनपद में संयम और तप से अपने आत्मा को  
भावित करते हुए विचरने लगे । जब वहाँ के अनेक लोगो को इसकी  
खबर हुई तब वे परस्पर में इस प्रकार कहने लगे ( एव खलु देवाणु-  
प्पिया ! अरिहा । अरिष्टनेमी सुरट्ठा जणवए जाव वि० तएण ते जुहि-  
ट्ठिल्लपामोक्खा पच अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा अन्न-

णिकसमति ) विहार क्यो ( पडिणिक्खमित्ता ) विहार करीने तेओ ( वहिया  
जणवयविहार विहरति ) गडारना जनपदोभा विहार करवा लाग्या

( तेण कालेण तेणं समएण अरिहा अरिष्टनेमी जेणेव सुरट्ठा जणवए  
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठा जणवयसि सजमेण तवसा अप्पाण भावे-  
माणे एवमाइक्खइ )

ते काले अने ते समये अर्हन् अरिष्टनेमि प्रभु विहार करता करता न्या  
सौराष्ट्र जनपद हुतो त्या आया त्या आवीने तेओ ते सौराष्ट्र जनपदभा  
संयम अने तपशी पोताना आत्माने भावित करता विचरथु करवा लाग्या  
न्यारे त्याना धणु लोडोने आ वातनी लणु थई त्यारे तेओ परस्पर आ  
प्रमाणे कडेवा लाग्यो हे—

( एव खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिष्टनेमी सुरट्ठाजणवए जाव वि० तएण  
ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पच अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा अन्नमन्नं  
सदावेति, सदावित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिष्टनेमी

ત્રુપૂર્વ્યા=તીર્થકરાણાં મર્યાદયા યાવદ્ વિહરતિ, 'ત' તત્-તસ્માદ્ 'સેય' શ્રેયઃ સ્વલ્પ  
અસ્માક યત્ સ્થવિરાન્ આપૃચ્ચાર્હન્તમરિષ્ટનેમિ ચન્દનાયૈ ગન્તુમ્ । અન્યોન્યસ્થ  
=પરસ્પરસ્યૈતમર્થ સર્વે પશ્ચાન્નગારાઃ પ્રતિશૃણ્વન્તિ, સ્વીકૃર્વન્તિ પ્રતિશ્રુત્ય યૌત્ર સ્થ  
વિરા ભગવન્તસ્તૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય તાન્ સ્થવિરાન્ ભગવતો વન્દન્તે નમ-  
સ્યન્તિ ચ ચન્દિત્યા નમસ્યિત્યા ઇત્યાદિષુ -ઈચ્છામઃ સ્વલ્પયુષ્મામિરભ્યનુજ્ઞાતાઃ  
સન્તોઽર્હન્તમરિષ્ટનેમિ યાવદ્ ગન્તુમ્ । સ્થવિરા ઋચુઃ યયામુસ્વ દે દેવાનુપ્રિયા !

મન્ન સદ્ધર્ષેતિ, સદ્ધાવિત્તા એવં વયાસી-અથ સ્વલ્પ દેવાણુપ્રિયા । અરિહા  
અરિષ્ટનેમી પુન્વાણુ જાવ વિહરહ, ત સેય સ્વલ્પ અમ્હ થેરા આપુચ્છિત્તા  
અરહ અરિષ્ટનેમિ વદનાળ ગમિત્તણ ) દે દેવાનુપ્રિયો ! સુનો-અર્હત અરિ  
ષ્ટનેમિ પ્રભુ તીર્થકર પરમ્પરાનુસાર વિહાર કરતે હુણ યાવત્ સૌરાષ્ટ્ર જન  
પદ મેં આયે હુણ હેં । લોગોં કે મુખ સે હસ યાત કો ડન પાંચ યુધિષ્ઠિર  
આદિ અનગારો ને સુના-તથ આપસ મેં એક દૂસરે કો-બુલાયા-ઔર  
બુલાકર હસ પ્રકાર કહા-દેવાનુપ્રિયો ! સૌરાષ્ટ્ર જનપદ મેં તીર્થકર પર-  
મ્પરા કે અનુસાર ભગવાન્ અરિષ્ટનેમિ વિહાર કર રહે હેં-અતઃ હમલોગોં  
કો સ્થવિરો કી આજ્ઞા લેકર અર્હત અરિષ્ટનેમિ કો વદના કરને કે લિયે  
ચલના વહુત અચ્છા હૈ-ઉચિત્ત હૈ-(અન્નમન્નસ્સ ઇયમદ્ધ પડિસુર્ણેતિ,  
પડિસુણિત્તા જેણેવ થેરા ભગવતો, તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા થેરે  
ભગવતે વદતિ ણમસતિ, વદિત્તા ણમસિત્તા એવ વયાસી-ઈચ્છામો ણ

પુન્વાણુ૦ જાવ વિહરહ, ત સેય સ્વલ્પ અમ્હ થેરા આપુચ્છિત્તા અરહ અરિષ્ટનેમિ વદ-  
નાળ ગમિત્તણ )

હે દેવાનુપ્રિયો ! સામળો, અર્હત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુ તીર્થકર પરપરા  
મુજબ વિહાર કરતા યાવત્ સૌરાષ્ટ્ર જનપદમાં પધારેલા છે લોકોના મુખથી  
આ વાતને તે પાચે યુધિષ્ઠિર વગેરે અનગારોએ સામળી ત્યારે તેઓએ  
પરસ્પર એક બીજાઓને બોલાવ્યા અને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે  
દેવાનુપ્રિયો ! સૌરાષ્ટ્ર જનપદમાં તીર્થકર પરપરા મુજબ લગવાન અરિષ્ટનેમિ  
વિહાર કરી રહ્યા છે એથી સ્થવિરોની આજ્ઞા મેળવીને અરિષ્ટનેમિને વદન  
કરવા માટે અમારે જવું જોઈએ

(અન્નમન્નસ્સ ઇયમદ્ધ પડિસુર્ણેતિ, પડિસુણિત્તા જેણેવ થેરા ભગવતો, તેણેવ  
ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા થેરે ભગવતે વદતિ ણમસતિ, વદિત્તા ણમસિત્તા એવ  
વયાસી-ઈચ્છામો ણ તુમ્હેરિં અન્નપુષ્પાયા સમાણા અરહ અરિષ્ટનેમિ જાવ ગમિત્તણ



तवः खलु ते युगिष्ठिरप्रमुखाः पञ्चानगाराः स्थविरैर्भगवद्भिरभ्यनुज्ञाताः सन्त  
स्थविरान् भगवतो वन्दन्ते नमस्यन्ति, वन्दित्वा, नमस्यित्वा स्थविराणामन्तिकात्  
प्रतिनिष्क्रामन्ति, माम-मासेन 'अणिक्खित्तेण' अनिक्खित्तेन=अन्तररहितेन तपः

तुम्हेहि अब्भणुन्नाया समाना अरह अरिद्वेनेमि जाव गमित्तए अहासुह  
देवाणुप्पिया ! तएण ते जुहिद्विल्लपामोक्खा पच अणगारा थेरेहि भग  
वतेहि अब्भणुन्नाया समाना थेरे भगवते वदइ णममइ वदित्ता णम-  
सित्ता थेराण अतियाओ पडिणिक्खमति, मास मासेण अणिक्खित्ते  
ण त । कम्मेण गामाणुगाम दूईज्जमाणा जाव जेणेव हत्थिकप्पे नयरे  
तेणेव उवा० हत्थिकप्पस्स वहिया सहस्रवणे उज्जाणे जाव  
विहरति-तएण ते जुहिद्विल्लज्जा चत्तारि अणगारा मासखमणपार-  
णए पढमाण पोरमीए सज्झाय करेति, वीयाए जहा गोयमसामी,  
णवर जुहिद्विल आपुच्छति जाव अडमाणा वहुजणसद णिसामेति ) इस  
प्रकार का परस्पर का यह विचार उन्होंने ने स्वीकार कर लिया-स्वीकार  
करके फिर वे जहा स्थविर भगवत थे-वहा गये-वहा जाकर उन्होंने ने  
उन स्थविर भगवतो को वंदना की नमस्कार किया । वदना नमस्कार  
कर फिर उनसे इस प्रकार कहा हमलोग आप भगवतो से आज्ञा प्राप्त  
कर अर्हत नेमिनाथ प्रभु को वदना करने के लिये सौराष्ट्र जनपद जाना  
चाहते हैं । तब उन स्थविर भगवतो ने उनसे कहा हे देवानुप्रियो !  
यथासुखम्-तुम्हें जैसे सुख हो-वैसा करो इस प्रकार उनस्थविर भग

अहासुह देवाणुप्पिया ! तएण ते जुहिद्विल्लपामोक्खा पच अणगारा, थेरेहि भग  
वतेहि अब्भणुन्नाया समाना थेरे भगवते वदइ णमसइ, वदित्ता णममित्ता थेराण  
अतियाओ पडिणिक्खमति, मासमासेण अणिक्खित्तेण तवोक्कमेण गामाणुगाम  
दूईज्जमाणा जाव जेणेव हत्थिकप्पे नयरे तेणेव उवा० हत्थिकप्पस्स वहिया सह  
स्रवणे उज्जाणे जाव विहरति तएण ते जुहिद्विल्लज्जा चत्तारि अणगारा मास  
खमणपारणए पढमाण पोरसीए सज्झाय करेति, वीयाए एव जहा गोयमसामी,  
णवर जुहिद्विल आपुच्छति जाव अडमाणा वहुजणसद णिसामेति )

आ गीते तेओओ ओओभीज्जना विचारोने स्वीकारी लीधा, स्वीकारीने  
तेओओ ज्या स्थविर भगवत हुता त्या गया त्या जधने तेभले ते स्थविर  
भगवतोने वदन अने नमस्कार उर्या वदन अने नमस्कार करीने तेभने आ  
प्रभाले विनती करी डे अमे आप भगवतनी आज्ञा भेगवने अर्हत नेमि  
नाथ प्रभुना वदन भाटे सौ । १०४ जनपदमा जवा धरणीओ छीओ तयार ते  
स्थविर भगवतोओ तेभने आ प्रभाले आज्ञा ठरी डे डे देवानुप्रियो । ' यथा  
सुखम् ' तभने ने काममा आनंद प्राप्त थाय ने करे आ प्रभाले ते स्थविर

नुपूर्या=तीर्थकराणां मर्यादया यावद् विहरति, 'त' तत्-तस्माद् 'सेय' श्रेय' खलु  
अस्माकं यत् स्थविरान् आपृच्छ्यार्हन्तमरिष्टनेमिं वन्दनायै गन्तुम् । अन्योन्यस्य  
=परस्परस्यैतमर्थं सर्वे पञ्चानगाराः प्रतिशृण्वन्ति, स्वीकुर्यन्ति प्रतिश्रुत्य यत्रैव स्थ  
विरा भगवन्तस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तान् स्थविरान् भगवतो वन्दन्ते नम-  
स्यन्ति च वन्दित्या नमस्यित्या परमादिषु -इच्छामः खलु युष्मामिरभ्यनुज्ञाताः  
सन्तोऽर्हन्तमरिष्टनेमिं यावद् गन्तुम् । स्थविरा ऊचुः यथासुखं हे देवानुप्रिया ।

मन्न सद्यैवेति, सद्यचित्ता एव वयासी-एव खलु देवानुप्रिया । अरिहा  
अरिष्टनेमी पुन्वाणु जाव विहरइ, त सेय खलु अम्ह थेरा आपुच्छित्ता  
अरह अरिष्टनेमि वदणाए गमित्तए ) हे देवानुप्रियो । सुनो-अर्हत अरि-  
ष्टनेमि प्रभु तीर्थकर परस्परांनुसार विहार करते हुए यावत् सौराष्ट्र जन-  
पद में आये हुए हैं । लोगों के मुख से इस यात को उन पाँच युधिष्ठिर  
आदि अनगारो ने सुना-तब आपस में एक दूसरे को-बुलाया-और  
बुलाकर इस प्रकार कहा-देवानुप्रियो । सौराष्ट्र जनपद में तीर्थकर पर-  
स्परा के अनुसार भगवान् अरिष्टनेमि विहार कर रहे हैं-अतः हमलोगों  
को स्थविरो की आज्ञा लेकर अर्हत अरिष्टनेमि को वदना करने के लिये  
चलना बहुत अच्छा है-उचित है-( अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति,  
पडिसुणित्ता जेणेव थेरा भगवतो, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे  
भगवते वदति णमसति, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी-इच्छामो ण

पुन्वाणु० जाव विहरइ, त सेय खलु अम्ह थेरा आपुच्छित्ता अरह अरिष्टनेमि वद  
णाए गमित्तए )

हे देवानुप्रियो । साधजो, अर्हत अरिष्टनेमि प्रभु तीर्थकर परपरा  
मुज्ज्व विहार करता यावत् सौराष्ट्र जनपदमा पधारेला छे दोडोना मुज्ज्वी  
आ वातने ते पाथे युधिष्ठिर वगेरे अनगारोअये साधजी त्यारे तेओअये  
परस्पर ओक जीलओने ओलाओया अने ओलावीने आ प्रभाणे कहुं के हे  
देवानुप्रियो । सौराष्ट्र जनपदमा तीर्थकर परपरा मुज्ज्व भगवान् अरिष्टनेमि  
विहार करी रहा छे ओथी स्थविरोनी आज्ञा भेजवीने अरिष्टनेमिने वदन  
करवा भाटे अभादे जवु नेधओ

( अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव थेरा भगवतो, तेणेव  
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति णमसति, वदित्ता णमसित्ता एव  
वयासी-इच्छामो ण तुम्हेहि अन्नमुभाया समाणा अरह अरिष्टनेमि जाव गमित्तए

हस्तिकल्पे नगरे उच्चनीचमध्यमकुलानि ' अडमाणा ' अटन्त बहुजनशब्द निशा  
मयन्ति-शृण्वन्ति=किं शृण्वन्तीत्याह- ' एव खलु हे देवानुप्रियाः ! अहंन् अरिष्ट  
नेमिः ' उज्जितसेलसिहरे ' उज्जयन्तशैलशिखरे-गिरनारपर्वतोपरिभागे मासि  
केन भक्तेन भक्तप्रत्यारयानेन पानकेन-पानीयरहितेन चतुर्विधाहारपरित्यागेने-  
त्यर्थः ' पञ्चहिं उत्तीसेहिं अणगारसएहिं ' पञ्चभि पद्त्रिंशताऽनगारशतैः=शट्त्रिं  
शदधिरूपश्चशतसख्यकैरनगारैः सार्धं कालगतो यावत्-सिद्धोबुद्धः परिनिवृत्त  
सर्वदुःखप्रहीणो जात ' ।

' तएण ' ति ' तत खलु ते युधिष्ठिरवर्जाश्चत्वारोऽनगारा बहुजनस्यातिके  
एतमर्थं श्रुत्वा हस्तिकल्पाद् नगरात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सहस्रा-

कल्प नगर में उच्च, नीच एवं मध्यम कुलों में गोचरी के लिये आये।  
उस समय इन्होंने अनेक मनुष्यों के मुख से इस प्रकार समाचार सुने  
( एवं देवाणुप्रिया ! अरहा अरिष्टनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएण भक्तेण  
अपाणएण पचहिं उत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव  
पहीणे, तएण ते जुहिद्विल्लवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए  
एयमद्ध सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणिक्खमति ) देवानुप्रियों ! अहंत  
अरिष्टनेमि उज्जयन्तशैल शिखर पर-गिरनार पर्वत के ऊपर एक मास  
के चतुरविध आहार के परित्यागरूप भक्तप्रत्याख्यान से ५३६ अनगा-  
रों के साथ कालगत यावत् सिद्ध, बुद्ध, परिनिवृत्त हो कर सर्व  
दुखों से रहित हो गये हैं। इस प्रकार अनेक मनुष्यों के मुख से इस  
समाचार को सुनकर वे युधिष्ठिर वर्ज चारों अनगार उस हस्तिकल्पन  
गर से निकले ( पडिनिक्खमिन्ता जेणेव सहस्रवणे उज्जाणे जेणेव

अने मध्यम बुद्धोभा गोचरी भाटे आण्णा ते सभये तेमणे धण्णा भाणुसेना  
मुण्णथी ये जतना समाचारो सालय्या के—

( एवं देवाणुप्रिया ! अरहा अरिष्टनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएण भक्तेण  
अपाणएण पचहिं उत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तएण ते  
जुहिद्विल्लवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमद्ध सोच्चा हत्थिकप्पाओ  
पडिणिक्खमति )

हे देवानुप्रियो ! अहंत अरिष्टनेमि उज्जयन्त शैलशिखर ऊपर-गिरनार  
पर्वत ऊपर-अहं मासना आरे जतना आधारना परित्याग रूप लक्ष्य प्रत्या  
ख्यानथी ५३६ अनगारोनी साथे कालगत यावत् सिद्ध, बुद्ध, परिनिवृत्त  
थधने सर्व दुखोत्थी मुक्त थध गया छे आ प्रमाणे धण्णा भाणुसेना मुण्णथी  
आ जतना समाचारो सालणीने ते युधिष्ठिर वगरना आरे अनगारो ते  
हस्तिकल्प नगरथी नीत्तया

કર્મણા ગ્રામાનુગ્રામ ' દુષ્ક્રમણા ' દ્રવન્તઃ=ગન્ડવન્તઃ, યાવત્ યત્રૈવ ' હસ્તિકર્પે નયરે ' હસ્તિકર્પ નગર તત્રૈયોપાગન્ઠન્તિ, ઉપાગત્ય હસ્તિકર્પસ્ય વહિઃ સહસ્રાશ્રવણે ઉદ્યાને યાવદ્ વિહરન્તિ । તતઃ ગત્વ તે યુધિષ્ઠિરવર્જનાશ્રિતારોડનગારા માસક્ષપણપારણકે પ્રથમાયા પૌરુષ્યા સ્વાધ્યાય કુર્વન્તિ, ' ધૌયાપ્ ' દ્વિતીયાયા પૌરુષ્યા ધ્યાન ધ્યાયન્તિ તૃતીયાયા પૌરુષ્યામત્વગ્નિમત્રપત્રમમશ્રાન્તપદોરકમુખવલ્લિકા પ્રતિલેખયન્તિ, ભાજનવસ્ત્રાણિ પ્રતિલેખયન્તિ, ભાનનાનિ ચ-પાત્રાણિ પ્રમાર્જયન્તિ, ભાજનાન્યવગૃહ્ણન્તિ, યદીત્યા એવં યથા ગૌતમસ્વામી શ્રમણ મહાવીર માપૃચ્છતિ નગર-અયમત્ર વિશેષઃ અત્ર પત્યારોડનગારાઃ યુધિષ્ઠિરમાપૃચ્છન્તિ યાવત્

વર્તો સે આજ્ઞા પ્રાપ્ત કર વે યુધિષ્ઠિર પ્રમુખ પાન્ન અનગાર ઉન્ સ્થવિર ભગવત્ત્વ કો વંદના નમસ્કાર કરકે ઉન્કે પાસ સે ચલે આયે ઔર નિરન્તર માસ માસ શ્રમણ કરતે હુન્ન ઁક ગ્રામ સે દૂમરે ગ્રામ મેં વિહાર કરને લગે । ઇસ તરહ ગ્રામાનુગ્રામ વિહાર કરતે હુન્ન વે પાંચો અનગાર જહા હસ્તિકર્પનામ કા નગર થા વહા આયે । વહા આકર વે હસ્તિકર્પ નગર કે બાહિર સહસ્રાશ્રવન ઉદ્યાન મેં જાકર ઠહર ગયે । ઇસકે પાદ વે યુધિષ્ઠિર કે સિવાય ચારો અનગાર માસક્ષપણ કે દિન પ્રથમ પૌરુષી મેં સ્વાધ્યાય કરતે, દ્વિતીય પૌરુષી મેં ધ્યાન કરતે, ઔર તૃતીય પૌરુષી મેં અત્વરિત, અચપલ એવ અસમ્રાન્ત હોકર સદોરકમુખવલ્લિકાકી પ્રતિલેખના કરતે, ભાજન ઔર વસ્ત્રોંકી પ્રતિલેખના કરતે-ફિર ઉન્હેં ઉઠાતે-ઔર લેકર જિસ પ્રકાર ગૌતમ સ્વામી શ્રમણ મહાવીર સ્વામી સે પૂછકર ગોચરી કે લિયે નિકલતે ઉસી પ્રકાર યે મો યુધિષ્ઠિર સે પૂછ કર હસ્તિ

ભગવતોની આજ્ઞા મેળવીને તે યુધિષ્ઠિર પ્રમુખ પાચે અનગારો તે સ્થવિર ભગવતોને વંદન તેમજ નમસ્કાર કરીને તેમની પાસેથી આવતા રહ્યા અને સતત માસ અમણ કરતા એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરવા લાગ્યા આ રીતે ગ્રામાનુગ્રામ વિહાર કરતા તે પાચે અનગારો જ્યા હસ્તિકર્પ નામે નગર હતું ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓ હસ્તિકર્પ નગરની બહાર સહસ્રાશ્રવન ઉદ્યાનમાં જઈને મુકામ કર્યો ત્યારબાદ તે યુધિષ્ઠિર સિવાયના ચારે અનગારો માસક્ષપણ પારણના દિવસે પ્રથમ પૌરુષીમાં સ્વાધ્યાય કરતા, દ્વિતીય પૌરુષીમાં ધ્યાન કરતા અને તૃતીય પૌરુષીમાં ગોચરી માટે નીકળતી વખતે પણ અચપલ અસમ્રાત થઈને સદોરકમુખવલ્લિકાની પ્રતિલેખના કરતા, ભાજન અને વસ્ત્રોની પ્રતિલેખના કરતા, ત્યારબાદ તેમને ઉપાડતા અને ઉપાડીને જેમ ગૌતમ સ્વામી શ્રમણ ભગવાન મહાવીર સ્વામીની આજ્ઞા મેળવીને ગોચરી માટે નીકળતા તેમજ તેઓ પણ યુધિષ્ઠિરની આજ્ઞા મેળવીને હસ્તિકર્પ નગરમાં ઉચ્ચ, નીચ,



हस्तिकल्पे नगरे उच्चनीचमयमकुलानि 'अडमाणा' अटन्त बहुजनगण्ड निशामयन्ति-शृण्वन्ति=किं शृण्वन्तीत्याह-'एव खलु हे देवानुप्रियाः ! अहंन अरिष्टनेमिः 'उज्जितसेलसिहरे' उज्जयन्तशैलशिखरे-गिरनारपर्वतोपरिभागे मासिकेन भक्तेन भक्तप्रत्याख्यानं पानकेन-पानीयरहितेन चतुर्विधाहारपरित्यागेनेत्यर्थः 'पचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं' पञ्चभिः पट्त्रिंशताऽनगारशतैः=शट्त्रिंशदधिकपञ्चशतसन्त्यक्तेरनगारैः सार्धं कालगतो यावत्-सिद्धोबुद्धः परिनिर्वृत सर्वदुःखप्रहीणो जातः ।

'तएण' ति 'ततः खलु ते युधिष्ठिरवर्जाश्चत्वारोऽनगारा बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा हस्तिकल्पाद् नगरात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सहस्रा-

कल्प नगरं मे उच्च, नीच एव मध्यम कुलों मे गोचरी के लिये आये। उस समय इन्होंने अनेक मनुष्यों के मुख से इस प्रकार समाचार सुने (एव देवाणुप्रिया ! अरहा अरिष्टनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएण भक्तेण अपाणएण पचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तएण ते जुहिद्विल्लवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणिक्खमति) देवानुप्रियो ! अहंत अरिष्टनेमि उज्जयन्तशैल शिखर पर-गिरनार पर्वत के ऊपर एक मास के चतुर्विध आहार के परित्यागरूप भक्तप्रत्याख्यान से ५३६ अनगारों के साथ कालगत यावत् सिद्ध, बुद्ध, परिनिर्वृत हो कर सर्व दुखों से रहित हो गये हैं। इस प्रकार अनेक मनुष्यों के मुख से इस समाचार को सुनकर वे युधिष्ठिर वर्ज चारों अनगार उस हस्तिकल्पनगर से निकले (पडिनिक्खमित्ता जेणेव सहस्रवणे उज्जाणे जेणेव

अने मध्यम कुलोभा गोचरी भाटे आणा ते समये तेभण्णे धणा भाणुसेना भुञ्जथी ये जतना समाचारे सालया के—

(एव देवाणुप्रिया ! अरहा अरिष्टनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएण भक्तेण अपाणएण पचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तएण ते जुहिद्विल्लवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणिक्खमति)

हे देवानुप्रियो ! अहंत अरिष्टनेमि उज्जयन्त शैलशिखर पर-गिरनार पर्वत पर-एक मासना आरे जतना आहारना परित्याग रूप लक्ष्य प्रत्याख्यानथी ५३६ अनगारोनी साथे कालगत यावत् सिद्ध, बुद्ध, परिनिर्वृत भवने सर्व दुःखोधी मुक्त भव गया छे आ प्रमाणे धणा भाणुसेना भुञ्जथी आ जतना समाचारे सालणीने ते युधिष्ठिर वगरना आरे अनगारो ते हस्तिकल्प नगरथी नीकया



અગ્નિમુદ્યાન યત્રેવ યુધિષ્ઠિરોઽનગારસ્તત્રેવોપાગ-ઠન્તિ, ઉપાગત્ય ભક્તપાન 'પન્ચ  
 વલ્લતિ' પ્રત્યારયાન્તિ=પ્રત્યારયાય 'ગમનાગમનસ્ત' ગમનાગમન પ્રતિક્રામન્તિ  
 ર્દયાપથિકીં કુર્વન્તિ પ્રતિક્રમ્ય 'અમણમણેસણ' અમણામનેપણામ્ આલોચયન્તિ,  
 આલોચ્ય ભક્તપાન-પ્રતિદર્શયન્તિ-યુધિષ્ઠિરસ્ય પુરોઽયસ્થાપ્ય પ્રતિદર્શયન્તિ, પ્રતિ  
 દર્શ્ય એવમવાદિષુઃ-એવ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિય ! યાત્ર કાલગતઃ=અર્હન્ અરિષ્ટનેમિ  
 મોક્ષમાસઃ, 'ત' તસ્માત્ શ્રેયઃ સ્વલુ અસ્માક હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! इम पूर्ववृत्तीत

જુહિષ્ઠિલે અગ્નિગારે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા ભક્તપાણ પન્ચ  
 વલ્લતિ, પન્ચવિલ્લત્તા ગમનાગમનસ્ત પઢિક્રમતિ પઢિક્રમિત્તા એસણમ  
 નેસણ આલોચન્તિ, આલોચિત્તા ભક્તપાણ પઢિદર્સેતિ પઢિદર્સિત્તા એવ  
 વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! જાત્ર કાલગત્ ત સેય સ્વલુ અમ્હ દેવા  
 ણુપ્પિયા ! इम पुनर्वगहिय भक्तपाण परिद्वेत्ता सेतुंज पन्वय सणिय  
 सणिय दुरुहित्तण ) નિકલકર વે જર્હાં સહસ્રામ્રવન નામ કા ઉદ્યાન થા  
 ઓર ઉસ મેં મી જહા યુધિષ્ઠિર અનગાર વિરાજમાન થે, વહા આયે ।  
 વહાં આકર ઉન્હોં ને ઉનકી સાક્ષી સે ભક્ત પ્રત્યાખ્યાન કરદિયા ઓર  
 ભક્ત પ્રત્યાખ્યાન કરકે ફિર ઉન્હોં ને ર્દયાપથ શુદ્ધિ કી । શુદ્ધિ કરકે  
 અમણા અનેપણા કી આલોચના કરકે ફિર ઉન્હોંને લાયે હુએ ઉસ  
 આહાર કો યુધિષ્ઠિર અનગાર કે સમક્ષ રાખ કર દિખલાયા । દિખલાકર  
 ફિર વે હસ પ્રકાર કહને લગે । હે દેવાનુપ્રિય ! અર્હન્ અરિષ્ટનેમિ મુક્તિ  
 કો પ્રાપ્ત હો ચુકે હૈ-હસલિયે હે દેવાનુપ્રિય ! हमको अब यही उचित

( પઢિનિસ્ખમિત્તા જેણેવ સહસ્રવ્રણે ઉજ્જાણે જેણેવ જુહિષ્ઠિલે અગ્નિગારે  
 તેણેવ ઉવાગચ્છતિ ઉવાગચ્છિત્તા ભક્તપાણ પન્ચવલ્લતિ પન્ચવિલ્લત્તા ગમનાગમનસ્ત  
 પઢિક્રમતિ, પઢિક્રમિત્તા એસણમનેસણ આલોચન્તિ, આલોચિત્તા ભક્તપાણ પઢિદર્સેતિ  
 પઢિદર્સિત્તા એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! જાત્ર કાલગત્ ત સેય સ્વલુ  
 અમ્હ દેવાણુપ્પિયા ! इम पुनर्वगहिय भक्तपाण परिद्वेत्ता सेतुंज पन्वय सणिय  
 सणिय दुरुहित्तण )

નીકળીને તેઓ જ્યાં સહસ્રામ્રવન નામે ઉદ્યાન હતું અને તેમાં પણ  
 જ્યાં યુધિષ્ઠિર અનગાર હતા ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેમણે તેમની સામે  
 ભક્ત પાનનું પ્રત્યાખ્યાન કરી દીધું પ્રત્યાખ્યાન કરીને તેમણે ઈર્ષ્યાપથની શુદ્ધિ  
 કરી શુદ્ધિ કરી અને અનેપણા કરી, આલોચના કરી આલોચના  
 કરીને તેમણે । તે આહારને યુધિષ્ઠિર અનગારની સામે મૂકીને  
 ખતાવ્યો । પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે હે !  
 અર્હન્ છે એટલા માટે

भक्तपानपरिष्ठाप्य 'सेत्तुज' शत्रुजय-शत्रुजयनामक पर्वत शनैः शनैर्दूरोहितुम् = आरोहितुम्, तथा—'सलेहणाञ्जसणाञ्जसियाण' सलेखना जोषणाजुष्टाना=सलेखनाया कषायशरीरकृपीकरणे या जोषणा-प्रीतिः सेवा वा तथा जुष्टा-सेवितास्तेषा=सलेखनातपःकारिणामित्यर्थः—कालम्—अनवकाङ्क्षमाणानाम्—अनिच्छताम् विहर्तुम्, इति कृत्वाऽन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, प्रति श्रुत्य तद् पूर्वगृहीत भक्तपानम् एकान्ते=प्रासुके स्थाने परिष्ठापयन्ति, परिष्ठाप्य यत्रैव शत्रुजयः पर्वतस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य शत्रुजय पर्वत शनैः शनैर्दूरोहन्ति आरोहन्ति, दूरुह्य यावत्—कालमनवकाङ्क्षमाणा विहरन्ति ।

है कि हम इस पूर्व गृहीत भक्त पान का परिष्ठापन कर शत्रुजय नामके पर्वत पर धीरे धीरे चढ़े (सलेहणाञ्जसणाञ्जसियाण काल अणवकखमाणान विहरित्तए त्तिकट्टु अणमणस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणित्ता तं पुव्वगहिय भत्तपाण एगते परिट्ठ्वेति, परिट्ठवित्ता जेणेव सेत्तुज पव्वए तेणेव उवागच्छति) और वहाँ काय और कषाय को कृश करनेवाली सलेखना मरणाशसा से रहित होकर प्रीति पूर्वक धारण करे इस प्रकार विचार करके उन्होंने ने परस्पर के इस विचार रूप अर्थ को स्वीकार कर लिया । स्वीकार करके फिर उस पूर्व गृहीत भक्त पान को उन्होंने एकान्त स्थान में परिष्ठापित कर दिया और परिष्ठापित करके वे सब जहाँ शत्रुजय पर्वत था वहाँ चले गये (उवागच्छित्ता) वहाँ जाकर के (सेत्तुज पव्वए दूरुहति, दूरुहित्ता जाव काल अणव-

હવે અમે એ જ વાત યોગ્ય લાગે છે કે અમે આ પૂર્વગૃહીત ભક્તપાનનું પરિષ્ઠાપન કરીને શત્રુજય નામના પર્વત ઉપર ધીમે ધીમે ચઢીએ

(સલેહણા અજસણા અસિયાણ કાલ અણવકલ્પમાણાણ વિહરિત્તણ ત્તિકટ્ટુ અણમણસ્સ એયમટ્ઠ પડિસુણેતિ, પડિસુણિત્તા ત પુવ્વગહિય ભક્તપાણ એગતે પરિટ્ઠ્ઠેતિ, પરિટ્ઠવિત્તા જેણેવ સેત્તુજ પવ્વણ તેણેવ ઉવાગચ્છતિ)

અને ત્યાં કાય અને કષાયને કૃશ કરનારી સલેખનાને મરણાશ સાથી રહિત થઇને પ્રેમપૂર્વક ધારણ કરીએ આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેમણે એક બીજાના આ વિચાર રૂપ અર્થને સ્વીકારી લીધો સ્વીકાર કરીને તેમણે તે પૂર્વગૃહીત ભક્તપાનને એકાંત સ્થાને પરિષ્ઠાપિત કરી દીધું અને પરિષ્ઠાપિત કરીને તેઓ સર્વે જ્યાં શત્રુજય પર્વત હતો ત્યાં ચાલ્યા ગયા (ઉવાગચ્છિત્તા) ત્યાં જઇને—

(સેત્તુજ પવ્વણ દુરુહતિ, દુરુહિત્તા જાવ કાલ અણવકલ્પમાણા વિહરંતિ,

મ્રણમુધાન યત્રૈવ યુધિષ્ઠિરોડનગારસ્તત્રૈવોપાગ-ઽન્તિ, ઉપાગમ્ય ભક્તપાન 'પચ્ચ  
વત્તિ' પ્રત્યાહવાન્તિ=પ્રત્યાહવાય 'ગમનાગમનસ્સ' ગમનાગમન પ્રતિક્રામન્તિ  
ઈર્યાપથિકીં કુર્વન્તિ પ્રતિક્રમ્ય 'એષણમનેષણ' એષણામનેષણામ્ આલોચયન્તિ,  
આલોચ્ય ભક્તપાન-પ્રતિદર્શયન્તિ-યુધિષ્ઠિરસ્ય પુરોડયસ્થાપ્ય પ્રતિદર્શયન્તિ, પ્રતિ  
દર્શ્ય એવમવાદિપુઃ-એવ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિય ! યાત્ કાલગતઃ=અર્હન્ અરિષ્ટનેમિ  
મોક્ષમાસ., 'ત' તસ્માત્ શ્રેયઃ સ્વલુ અસ્માક હે દેવાનુપ્રિયા ! હમ પૂર્વગૃહીત

જુહિઢિલ્લે અણગારે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા મત્તપાણ પચ્ચ  
વત્તિ, પચ્ચક્ષિત્ત્વા ગમણાગમણસ્સ પઢિક્કમતિ પઢિક્કમિત્તા એસણમ  
નેસણ આલોએતિ, આલોહિત્તા મત્તપાણ પઢિદસેતિ પઢિદસિત્તા એવ  
વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! જાત્ર કાલગણ ત સેય સ્વલુ અમ્હ દેવા  
ણુપ્પિયા ! હમ પુવ્વગઠિય મત્તપાણ પરિટ્ઠવેત્તા સેત્તુજ પવ્વય સણિય  
સણિય દુરુહિત્તણ ) નિકલકર વે જહાં સહસ્રામ્રવન નામ કા ઉદ્યાન થા  
ઔર ઉસ મેં મી જહા યુધિષ્ઠિર અનગાર વિરાજમાન થે, વહા આયે ।  
વહાં આકર ઉન્હો ને ઉનકી સાક્ષી સે મત્ત પ્રત્યાહવાન કરદિયા ઔર  
મત્ત પ્રત્યાહવાન કરકે ફિર ઉન્હો ને ઈર્યાપથ શુદ્ધિ કી । શુદ્ધિ કરકે  
એષણા અનેષણા કી આલોચના કરકે ફિર ઉન્હોને લાયે હુણ ઉસ  
આહાર કો યુધિષ્ઠિર અનગાર કે સમક્ષ રત્ત કર દિસલાયા । દિસલાકર  
ફિર વે હસ પ્રકાર કહને લગે । હે દેવાનુપ્રિય ! અર્હન્ અરિષ્ટનેમિ મુક્તિ  
કો પ્રાપ્ત હો ચુકે હૈ-હસલિયે હે દેવાનુપ્રિય ! હમકો અવ યહી ઉચિત

( પઢિનિમ્મલમિત્તા જેણેવ સહસ્રવ્રણે ઉજ્જાણે જેણેવ જુહિઢિલ્લે અણગારે  
તેણેવ ઉવાગચ્છતિ ઉવાગચ્છિત્તા મત્તપાણ પચ્ચવત્તિ પચ્ચક્ષિત્ત્વા ગમણાગમણસ્સ  
પઢિક્કમતિ, પઢિક્કમિત્તા એસણમનેસણ આલોએતિ, આલોહિત્તા મત્તપાણ પઢિદસેતિ  
પઢિદસિત્તા એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! જાત્ર કાલગણ ત સેય સ્વલુ  
અમ્હ દેવાણુપ્પિયા ! હમ પુવ્વગઠિયમત્તપાણં પરિટ્ઠવેત્તા સેત્તુજ પવ્વય સણિય  
સણિય દુરુહિત્તણ )

નીકળીને તેઓ જ્યા સહસ્રામ્રવન નામે ઉદ્યાન હતું અને તેમા પણ  
જ્યા યુધિષ્ઠિર અનગાર હતા ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે તેમની સામે  
ભક્ત પાનનું પ્રત્યાખ્યાન કરી દીધું પ્રત્યાખ્યાન કરીને તેમણે ઈર્યાપથની શુદ્ધિ  
કરી શુદ્ધિ કરીને એપણા અને અનેપણા કરી, આલોચના કરી આલોચના  
કરીને તેમણે લઈ આવેલા તે આહારને યુધિષ્ઠિર અનગારની સામે મૂકીને  
ખતાવ્યો ખતાવ્યા બાદ તેઓ આ પ્રમાણે ડહવા લાગ્યા કે હે  
અર્હન્ અરિષ્ટનેમિ પ્રભુએ મુક્તિ મેળવી છે એટલા માટે

भक्तपान परिष्ठाप्य 'सेत्तुज' शत्रुजय-शत्रुजयनामकं पर्वत शनैः शनैर्दूरोहितुम् = आरोहितुम्, तथा-'सलेहणाञ्जसणाञ्जसियाण' सलेहणा जोषणाजुष्टाना=सलेखनाया कषायशरीरकृपीकरणे या जोषणा-प्रीतिः सेवा या तथा जुष्टा-सेवितास्तेषा=सलेखनातपःकारिणामित्यर्थ-कालम्-अनवकाङ्क्षमाणानाम् - अनिच्छताम् विदुर्त्तुम्, इति कृत्वाऽन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिश्रृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य तद् पूर्वगृहीत भक्तपानम् एकान्ते=मासुके स्थाने परिष्ठापयन्ति, परिष्ठाप्य यत्रैव शत्रुजयः पर्वतस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य शत्रुजय पर्वत शनैः शनैर्दूरोहन्ति आरोहन्ति, दूरं यावत्-कालमनवकाङ्क्षमाणा विहरन्ति ।

है कि हम इस पूर्व गृहीत भक्त पान का परिष्ठापन कर शत्रुजय नामके पर्वत पर धीरे धीरे चढ़े (सलेहणा झूसणा झूसियाण काल अणवकखमाणान विहरित्तए त्तिकट्टु अणमणस्स एयमट्ठ पडिस्सुणेति, पडिस्सुणित्ता तं पुव्वगहिय भत्तपाणं एगते परिद्वेवेति, परिद्ववित्ता जेणेव सेत्तुज पव्वए तेणेव उवागच्छति) और वहाँ काय और कषाय को कृश करनेवाली सलेखना मरणाशसा से रहित होकर प्रीति पूर्वक धारण करे इस प्रकार विचार करकेउन्होंने ने परस्पर के इस विचार रूप अर्थ को स्वीकार कर लिया । स्वीकार करके फिर उस पूर्व गृहीत भक्त पान को उन्होंने एकान्त स्थान में परिष्ठापित कर दिया और परिष्ठापित करके वे सब जहाँ शत्रुजय पर्वत या वहाँ चले गये (उवागच्छित्ता) वहाँ जाकर के (सेत्तुज पव्वए दुरुहति, दुरुहित्ता जाव काल अणव-

उवे अमं अे न वात येज्ज लागे छे के अमे आ पूर्वगृहित लभतपाननु परिष्ठापन करीने शत्रुजय नामना पर्वत उपर धीमे धीमे चढीये

(सलेहणा झूसणा झूसियाण काल अणवकखमाणान विहरित्तए त्तिकट्टु अणमणस्स एयमट्ठ पडिस्सुणेति, पडिस्सुणित्ता त पुव्वगहिय भत्तपाण एगते परिद्वेवेति, परिद्ववित्ता जेणेव सेत्तुज पव्वए तेणेव उवागच्छति)

अने त्या जाय अने कषायने कृश करनारी सलेखनाने मरणाश साथी रहित थामने प्रेमपूर्वक धारण करीये आ प्रमाणे विचार करीने तेमळे अेक भीमना आ विचार रूप अर्थने स्वीकारी लीधो स्वीकार करीने तेमळे ते पूर्वगृहीत भक्तपानने अेकान्त स्थाने परिष्ठापित करी दीधु अने परिष्ठापित करीने तेअे। अवे' न्या शत्रुजय पर्वत उतो त्या आख्या गया (उवागच्छित्ता) त्या नधने—

(सेत्तुज पव्वए दुरुहति, दुरुहित्ता जाव काल अणवकखमाणान विहरति,

ततः खलु ते युधिष्ठिरमहर्ष्याः पञ्चानगाराः 'सामाड्यमाइयाड' सामायि  
कादीनि चतुर्दशपूर्वाणि अरीत्य वह्नि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायपालयि या पष्ठाष्ट  
मादितपः कृत्या द्विमासिकया सलेखनयाऽऽत्मान 'क्षोसित्ता' जुष्टा सेवित्वा  
यस्यार्थाय क्रियते नग्नमानो=निर्ग्रन्थभाव यावत् तमर्धमारायति, आराध्य  
अनन्तम् अनन्तार्थविषयक यावत् 'केवलवरणाणदसणे' केवलवरज्ञानदर्शनं समु  
त्पन्नं यावत् सिद्धा=सिद्धिगतिं प्राप्ता इत्यर्थः ॥ सू० ३५ ॥

कखमाणा विहरति, तण्ण ते जुहिद्विल्लपामोक्खा पच अणगारा सामा  
इयमाइयाड चोदसपुव्वाड वह्णि वासाणि० दो मासियाण सलेहणाए  
अत्ताण क्षोसित्ता जस्सट्ठाए कीरइ, णग्गभावे जाव तमट्ठमारोहति,  
तमट्ठमाराहित्ता अणत्ते जाव केवलवरणादसणे समुत्पन्ने जाव सिद्धा )  
वे शत्रुजय पर्वत पर चढे चढकर के उन्होंने मरणाकाशा से रहित होकर  
सलेखना धारण करली । इस तरह उन युधिष्ठिर प्रमुख पच अनगारों ने  
सामायिक आदिचतुर्दश पूर्वों का अध्ययन करके अनेक वर्षों तक श्राम  
ण्य पर्याय का पालन करके तथा पष्ठ, अष्टम, आदि तपस्याओं को  
करके अन्त में दो मास की सलेखना से अपने आप की प्रीति पूर्वक  
सेवित किया और जिस निमित्त नग्न भाव-निर्ग्रन्थ अवस्था धारण की  
थी उस अर्थ को उन्होंने सिद्ध कर लिया । सिद्ध करके-आराधित कर  
के अनन्त अर्थ को विषय करने वाले केवलवरज्ञानदर्शन को उत्पन्न कर  
यावत् वे सिद्धि गति को प्राप्त हो गये ॥ सूत्र ३५ ॥

तण्ण ते जुहिद्विल्लपामोक्खा पच अणगारा सामाइयमाइयाड चोदसपुव्वाड०  
वह्णि वासाणि० दोमासियाए सलेहणाए अत्ताणे क्षोसित्ता जस्सट्ठाए कीरइ,  
णग्गभावे जाव तमट्ठमारोहति, तमट्ठमाराहित्ता अणत्ते जाव केवलवरणाण  
दसणे समुत्पन्ने जाव सिद्धा )

तेज्जो शत्रुजय पर्वत उपर चढया अने चढीने तेमहे मरणासाथी  
रहित थडने सलेखना धारण करी लीधी आ प्रमाणे ते युधिष्ठिर प्रमुख  
पांचे अनगारो जे सामायिक वगेरे चतुर्दश पूर्वोतु अध्ययन करीने धण्डा वर्षो  
सुधी श्रामण्य-पर्यायनु पालन करीने तेमज पष्ठ अष्टम वगेरे तपस्याजोने  
करीने छेवटे जे मासनी सलेखनाथी प्रेमपूर्णक पोतानी जतने सेवित करी  
अने जे निमित्तने लधने नग्नभाव-निर्ग्रन्थ अवस्था धारण करी छती ते  
अर्थने तेमहे सिद्ध करी लीधी सिद्ध करीने आराधित करीने अनन्त अर्थने  
विषयरूप जनावनार देवज्ञान दर्शनने उत्पन्न करीने यावत् तेज्जो जे सिद्धगति  
मेजवी लीधी ॥ सूत्र ३५ ॥



मूलम्—तएणं सा दोवई अज्जा सुव्वयाण अज्जियाण अंतिए  
सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइ अहिज्जइ अहिज्जित्ता वहूणि  
वासाणि० मासियाए सलेहणाए० आलोइयपडिक्कता कालमासे  
कालं किच्चा वंभलोए उव्वन्ना, तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं  
दस सागरोवमाइं ठिई पणत्ता तत्थ णं दुवयस्स देवस्स दस  
सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, से णं भत्ते । दुवए देवे ताओ जाव  
महाविदेहे वासे सिज्जइ जाव काहिइ । एवं खलु जंबू । सम  
णेणं जाय सपत्तेणं सोलमस्स णायज्जयणस्स अयमट्ठे पणत्ते  
त्तिवेमि ॥ सू० ३४ ॥ सोलसमं नायज्जयणं समत्त ॥ १६ ॥

टीका—‘तएण मा’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु मा द्रौपदी आर्या  
साध्वी सुव्रतानामार्यिकाणामन्तिके सामायिकादिकानि एकादशाङ्गानि अधीते,  
अधीत्य वहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयित्वा मासिक्या सलेखनया आलोचित  
प्रतिक्रान्ता कालमासे काल कृत्वा ‘वंभलोए पचमे ब्रह्मलोके देवत्वेन’ उव्वन्ना’

‘तएणं सा दोवई’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (सा दोवई अज्जा) उस द्रौपदी आर्यानि  
(सुव्वयाण अज्जियाण अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहि  
ज्जइ) सुव्रता आर्या के पास सामायिक आदि ११ अंगों का अध्ययन  
किया (अहिज्जित्ता वहूणि वासाणि० मासियाए सलेहणाए० आलोइय  
पडिक्कता कालमासे काल किच्चा वंभलोए उव्वन्ना) अध्ययन करके  
अनेक वर्ष तक श्रामण्य पर्याय का पालन कर एक मास की सलेखना

तएण सा दोवई इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (सा दोवई अज्जा) ते द्रौपदी आर्याणे (सुव्व  
याण अज्जियाण अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहिज्जइ) सुव्रता  
आर्यानी पासे आमायिक वगेरे ११ अंगोनु अध्ययन कथुं

(अहिज्जित्ता वहूणि वासाणि० मासियाए सलेहणाए० आलोइय पडिक्कता  
कालमासे कालकिच्चा वंभलोए उव्वन्ना)

अध्ययन करीने धण्णा वर्षो सुधी श्रामण्य पर्यायनु पालन कथुं त्थार

ઉત્તરના, તર તસ્મિન્ દેવઓકે-અલ્પ અસ્ત્યેકેવા=કેવાવિદ્યાનામ્ દશસાગરોપ  
માનિ સ્થિતિ પ્રશ્નતા, તર ચલુ દ્રૌપદેરમ્યમ્ય દશસાગરોપમાનિ સ્થિતિ: પ્રશ્નતા તર  
ચલુ ગૌતમ: પૂન્નતિ-હે ભદ્રન્ત ! ર ચલુ દ્રૌપદો દેવ આયુર્મરન્થિતિસ્યેણ 'તાઓ'  
તસ્માદ્ દેવલોકાન્ન્યુત્થા કુત્રગમિષ્યતિ કુત્રોત્પત્સ્યતે ? ભગવાન્ પ્રાઢ-‘ જાત્ર ’  
શ્ચિતિ યાત્રન્મહાવિદેહે ર્થે સેત્સ્યતિ, યાત્રત્ સર્વદુઃખાનામન્ત કરિષ્યતિ ।

સે આલોચિત પ્રતિક્રાન્ત વન વે કાલ અવસર કાલ કર કે પાચર્થે વ્રહ્મ  
લોક મેં દેવ કો પર્યાય સે ઉત્પન્ન હુઈ । ( તત્થ ણ અત્થે ગદ્ધયાણ દેવાણ  
દસ સાગરોવમાહ ઠિઈ પળ્લગ્ગા, તત્થ ણ દુવયસ્સ દવસ્સ દસ સાગરો  
વમાહ ઠિઈ પળ્લગ્ગા, સેણ ભત્તે ! દુવણ દેવે તાઓ જાત્ર મહાવિદેહે વાસે  
સિજ્ઞહ, જાત્ર કાહિહ । એવ ચલુ જતૂ ! સમણેણ જાત્ર સપત્તેણ સોલસમ  
સ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્ધે પળ્લગ્ગે ત્તિવેમિ ) ઉસ દેવલોક મેં કિતનેક  
દેવોં કો દશ સાગર કો સ્થિતિ પ્રશ્નત્ત હુઈ હે । સો વહા દ્રૌપદી દેવ કો  
દશ સાગર કો સ્થિતિ હુઈ । અય ગૌતમ પૂત્તે હે હે ભદ્રત ! વહ દ્રૌપદી  
દેવ આયુ ણ્વ ભવસ્થિતિ કે ક્ષય હોને પર વહા સે ચવ કર કહાં જાવે  
મા-કહા ઉત્પન્ન હોમા ? ઉત્તર મેં ભગવાન કહતે હે-હે ગૌતમ ! વહ  
દ્રૌપદી દેવ વહાં સે ચવ કર મહાવિદેહ ક્ષેત્ર મેં ઉત્પન્ન હોમા ઓર વહીં  
સે સિદ્ધ બનેમા યાત્રત્ સમસ્ત દુઃખોં કા અત કરેમા ।

પછી એક માસની સલેખનાથી આલોચિત પ્રતિક્રાત બનીને તેઓ કાળ અવ  
સરે કાળ કરીને પાચમા બ્રહ્મલોકમા દેવના પર્યાયથી જન્મ પામી

( તત્થ ણ અત્થેગદ્ધયાણ દેવાણ દસ સાગરોવમાહ ઠિઈ પળ્લગ્ગા, તત્થ ણ  
દુવયસ્સ દેવસ્સ દસ સાગરોવમાહ ઠિઈ પળ્લગ્ગા, સેણ ભત્તે ! દુવણ દેવે તાઓ  
જાત્ર મહાવિદેહે વાસે સિજ્ઞહ, જાત્ર કાહિહ । એવ ચલુ જતૂ ! સમણેણ જાત્ર  
સપત્તેણ સોલસમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્ધે પળ્લગ્ગે ત્તિવેમિ )

તે દેવલોકમા કેટલાક દેવે ની દશ સાગરની સ્થિતિ પ્રશ્ન થઈ છે આ  
પ્રમાણે દ્રૌપદી દેવીની ત્યા દશ સાગરની સ્થિતિ પ્રશ્ન થઈ

હવે ગૌતમ સ્વામી પ્રશ્ન કરે છે કે હે ભદ્રન્ત ! તે દ્રૌપદી દેવીની આયુ  
અને ભવસ્થિતિ પૂરી થયા બાદ અવીને ક્યા જશે ? ક્યા ઉત્પન્ન થશે ?

તેના ઉત્તરમા ભગવાન કહેવા લાગ્યા કે હે ગૌતમ ! તે દ્રૌપદી દેવ  
ત્યાથી અવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા ઉત્પન્ન થશે અને ત્યાંથી જ સિદ્ધ બનશે  
યાવતૂ તેઓ પોતાના સમસ્ત દુઃખોના અત કરશે

सुधर्मास्वामी कथयति—‘ एव खलु ’ इत्यादि । एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामत्रेय स्थान संप्राप्तेन षोडशस्य ज्ञाताध्ययनस्यायं=पूर्वकथितः अर्थः=द्रौपदीदृष्टान्तरूपो भावः प्रज्ञप्तः, प्ररूपितः, इति व्रजामि व्याख्यापूर्ववत् ॥ ३४ ॥

इति श्री-विश्वप्रख्यात-जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचस्पत्यश्वदशभाषाकलितललितक-  
लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-यादिमानमर्दक-श्रीगार्हस्थ्य-  
अपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित-कोल्हापुरराज-  
गुरु-बालप्रह्लादचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलाल-  
प्रतिविरचिताया ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्या, नगारधर्माभृतवर्षि-  
ण्यारयाया व्याख्याया षोडशमध्ययन समाप्त ॥ १६ ॥

सुधर्मा स्वामी कहते हैं हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने जो सिद्धि गतिनामक स्थान को प्राप्त हो चुके हैं इस षोडश ज्ञानाध्ययन का यह पूर्वोक्त द्रौपदी दृष्टान्त रूप भाव अर्थ प्ररूपित किया है । ऐसा मैं उन्हीं श्रमण भगवान महावीर के द्वारा कहे श्रुत उपदेश के अनुसार कहता हूँ ॥ सूत्र ३६ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराज कृत  
“ ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र ” की अनगारधर्माभृतवर्षिणी व्याख्याका  
सोलहवा अध्ययन समाप्त ॥ १६ ॥

सुधर्मा स्वामी कहते हैं हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने जो सिद्धिगति नामक स्थानने मेजरी चूकना छे आ सोजभा ज्ञाताध्ययननो आ पूवे वषुवेको द्रौपदी दृष्टान्त उप लाव अर्थ प्ररूपित कथो छे ते श्रमण भगवान महावीर वडे कडेवाओला श्रुत उपदेश मुज्जम न तमने छु कही हो छु ॥ सूत्र ३६ ॥  
श्री जैनाचार्य घासीलालजी महाराज कृत ज्ञातासूत्रनी अनगारधर्माभृतवर्षिणी  
व्याख्यानु मेजमु अध्ययन समाप्त ॥ १६ ॥

नाए जाव उवायमाणार चिट्ठति, तएण से णिज्जामए तओ मुहुत्ततरस्स लद्धमइए३ अमूढदिसाभाए जाए यावि होत्था, तएणं से णिज्जामए ते वहवे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी-एव खलु अह देवाणुप्पिया । लद्धमइए जाव अमूढदिसाभाए जाए, अम्हे ण देवाणुप्पिया । कालियदीवे तेणं सबूढा एसण कालियदीवे आलोक्कइ, तएणं ते कुच्छिधारा य ४ तस्स णिज्जामगस्स अतिए एयमट्ट सोच्चा हट्टुट्टा पयस्विणाणुकूलेण वा-एणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छति उवागच्छिता पोय वहणं लवेति लवित्ता एगट्ठियार्हि कालियदीव उत्तरति, तत्थ ण ते वहवे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य वहवे तत्थ आसे पासति, कि ते ?, हरिरेणुसोणिसुत्तगा आइण्णवेढा, तएण ते आसा ते वाणियए पासति पासित्ता तेसि गंध अग्घायंति अग्घायित्ता भीया तत्था उव्विग्गमणा तओ अणेगाइ उव्वममति, तेण तत्थ पउरत्तणपाणिया निव्वभया निरुव्विग्गा सुह सुहेण विहरति ॥ सू० १ ॥

टीका—जम्बूस्वामी पृच्छति—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामत्रेय स्थान सम्प्राप्तेन षोडशस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः=

—जइण भते ! इत्यादि ।

टीकार्थ—(भते ! हे भदन्त ! (जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण) यदि श्रमण भगवान् महावीरने किजो सिद्धिगति नामकस्थान को प्राप्तकर चुके हैं ( सोलसमस्स णायज्झयणस्स अघमट्ठे पणत्ते सत्तर-

जइण भते ! इत्यादि—

टीकार्थ—( भते ! ) हे भदन्त ! ( जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण ) जे श्रमण भगवान् महावीरे के-जेओ सिद्धिगति नामका स्थानने भेणवी थूक्या छे

पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीप्राह—एव खलु हे जम्त्रः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये हस्तिशीर्षं नाम नगरमासीत् । ‘ वण्णओ ’ वर्णकः=‘ ऋद्धे ’ इत्यादि-नगरवर्णनम् पूर्ववद् विज्ञेयम् । तत्र खलु कनककेतुर्नाम राजाऽऽसीत् ‘ वण्णओ ’ वर्णकः—‘ महयाहिमवते ’ इत्यादि राजवर्णनं पूर्ववद् बोध्यम् । तत्र खलु हस्तिशीर्षं

मस्स ण भते । णायज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते ) सोलहवें जाताध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ प्ररूपित किया है—तो सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने सत्रहवें जाताध्ययन का क्या अर्थ प्ररूपित किया है ( एव खलु जम्त्र ! ) इस प्रकार जम्त्र स्वामी के पूछने पर सुधर्मा स्वामी अब उन्हें समझाते हैं—वे कहते हैं हे जम्त्र ! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है—

( तेण कालेण तेण समएण हत्थिसीसे नयरे होत्था, वण्णओ, तत्थ, ण कणगकेऊणाम राया होत्था, वण्णओ, तत्थ, ण हत्थिसीसे णयरे बहवे सजत्ता णावा वाणिगया परिवसति, अड्डा जाव बहुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था ) उस काल और उस समय में हस्तिशीर्ष नाम का नगर था । “ ऋद्ध ” इत्यादि रूपसे पूर्व अध्ययनों में वर्णित पाठ की तरह इस नगर का वर्णन जानना चाहिये । उस नगर में कनक केतु नामका राजा रहता था । इसका भी वर्णन “ महया हिमवत ” इत्यादिरूप से पहिले के अध्ययनोंमें वर्णित राजाओंके वर्णन जैसा ही जानना चाहिये । उस

( सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते सत्तरमस्स ण भते ! णायज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते )

सोणमा जाताध्ययनने। पूर्वोक्त इमे अर्थ प्ररूपित किये छे त्थारे सिद्ध गति स्थानने भेणवी थुडेला तेज श्रमणु लगवान भडावीरे सत्तरमा जाताध्ययनने। शे। अर्थ प्ररूपित किये छे

( एव खलु जम्त्र ) आ रीते जज्झूना प्रश्नने सालणीने तेभने समज्जवता सुधर्मा स्वामी कडेवा लाग्या के डे जज्झू ! तभारा प्रश्नने जवाण आ प्रभाणु छे के —

( तेण कालेण तेण समएण हत्थिसीसे नयरे होत्था, वण्णओ, तत्थ ण कणगकेऊणाम राया होत्था, वण्णओ, तत्थ ण हत्थिसीसे णयरे बहवे सजत्ता णावा वाणिगया परिवसति, अड्डा जाव बहुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था )

ते जाणे अने ते समये हस्तिशीर्ष नामे नगर डुनु “ ऋद्ध ” वगैरे इपमा पडेला ना अध्ययनमा वर्णन करवा मा आवेला पाठनी जेभ आ नगरनु वर्णन पणु जण्णी लेवु जेधअ ते नगरमा कनककेतु नामे राजा रहितो डुतो



टीका—जम्बूस्वामी पृच्छति—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनाम त्रेय रथान सम्प्राप्तेन षोडशस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः=

टीका- (भते ! हे भदत ! (जहण समणेण भगवथा महावीरेण जाव संपत्तेण) यदि अमण भगवान् महावीरने किजो सिद्धिगति नामकस्थान को प्राप्त कर चुके हैं ( सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तर-

ટીકાર્થ-(મતે!) હે ભદ્રન્ત ! (જહ્ણ સમણેણ મગ્ગયા મહાવીરેણ જાવ  
સપત્તેણ ) ને શ્રમણુ લગવાન મહાવીરે કે-જેઓ સિદ્ધગતિ નામના સ્થાનને  
મેળવી ચૂકયા છે

माना 'सखोहिज्जमाणी २' सक्षोभ्यमाणा २ पुनः पुनः क्षोभ प्राप्यमाणा सती तत्रैव=एतस्यान एवेतस्ततः परिभ्राम्यति किन्तु ततः परं गन्तुं न प्रभवतीति भावः । ततः खलु स नियामकः=नाविक 'णट्टमइए' नष्टमतिक-मतिज्ञानरहितः 'णट्टसुइए' नष्टश्रुतिक-विस्मृतनियामकशास्त्रः दिग्निर्णयं कर्तुंमशक्तत्वात् 'णट्टसण्णे' नष्टसंज्ञः=मार्गज्ञानरहितः 'मूढदिसाभाए' मूढदिग्भागः=पूर्वादि दिग्भिर्भागज्ञानरहितः जातश्चप्यासीत्, पुनश्च स न जानाति यत् कतर=क देश

२ तत्त्येव परिभ्रमइ, तएण से णिज्जामए णट्टमइए णट्ट सुइए णट्ट सण्णे मूढदिसभाए जाए यावि होत्था ) एक दिनकी रात है कि जब ये सायात्रिक पोत वणिक एक जगह मिलकर बैठे हुए थे तब अष्टम अध्ययन में वर्णित अरहन्नक सेठ की तरह इनका लवण समुद्रसे होकर परदेश में व्यापार निमित्त जाने का विचार हुआ । विचार स्थिर होते ही ये जब नौका द्वारा लवण समुद्र में सैकड़ों योजन तक निकल चुके तब इनके लिये जिन रक्षित और जिनपालितकी तरह आकस्मिक अनेक उत्पातशत (सैकड़ों) हुए । उस समय प्रलय कालकी तरह प्रचण्ड वायु उठी । उससे उनकी नौका बार २ डगमगा ने लगी इधर से उधर फिर ने लगी । बार २ चञ्चल होकर बार २ क्षुब्ध होकर एक ही स्थान पर नीची ऊँची होने लगी-उससे आगे वह नहीं बढ़ी । इससे नियामिक-नाविक-मतिज्ञान से रहित हो गया । दिशाओं का निर्णय करने का ज्ञान उसका जाता रहा । वह मार्ग ज्ञान रहित होकर दिग्मूढ बन गया । ( ण जेणइ

२ सखोहिज्जमाणी १ तत्त्ये उपरिभमइ, तएण से णिज्जामए णट्टमइए णट्टसुइए णट्टसण्णे मूढ दिसाभाए जाए यावि होत्था )

एक दिवसनी रात छे डे ज्यारे तेओ सवे सायात्रिक पोतवणिके ओठ स्थाने ओकत्र थधने ओठा छता त्यारे आठमा अध्ययनमा वर्णित अरहन्नक शेठनी जेम तेमनो पणु लवण समुद्रमा थधने परदेशमा वेपार भाटे जवानो विचार थयो विचार स्थिर थता ज तेओ ज्यारे नौका वडे लवण समुद्रमा सेकडो योजन सुधी पडोथी गया त्यारे अनपालित अने अनरक्षितनी जेमज तेमना भाटे पणु सेकडो ओचिता उपद्रवे उत्पन्न थया ते वण्णते प्रलय जणना जेवे प्रचण्ड वायु कुडावा लाग्यो तेथी तेमनी नौका बार बार उग मजवा लागी, आभथी तेम क्रवा लागी वारेधडीओ अचण थधने, बार बार क्षुब्ध थधने ओक ज स्थान उपर नीचे उपर थवा लागी, तेनाथी आगण वधी नडि तेथी नियामिक-नाविक मतिज्ञानथी रहित चर्ज गयो दिसा ओने जणुवानु तेनु ज्ञान जतुं रह्यु मार्गज्ञानथी रहित थधने दिग्मूढ जनी

નગરે વહરઃ ' સજ્જાણાયાણિયમા ' સયાત્રાનોકાયાણિજકા' = સ = સજ્જા  
 યાત્રા = દેશાન્તરગમન સયાત્રા, તત્પ્રધાના નોકાયાણિજકા: = પોતવણિજ. - સયાત્રા  
 નોકા યાણિજકા: પરિસસિત કીદ્દશા: ? ઇત્યાદિ-આદ્યા યાત્ર ' વહુજણસ્મ '   
 વહુજનસ્ય સમ્યન્ધમામાન્યે પઘીજનમમુદાયેનેત્યર્થઃ ' અરિભૂયા ' અપરિભૂતા: =  
 પરાભવરહિતા ચાપ્યાસન્ । તત્ સ્વલુ તેષા સયાત્રાનોકા યાણિજકાનામ્ અન્યદા =  
 અન્યસ્મિન્ કર્મિત્થિત્સમય ' એગયાઓ ' એકત્વ એકત્રમિલિત્વા ' જહા અરહણઓ '  
 યથા અર્હન્તક = અત્રેગાદમા યયનોક્તાર્હન્તકન્ યાત્ર લવણસમુદ્રમનેકાનિ યોજન  
 શતાનિ ' ઓગાઢા ' અગાઢા: = ઉત્તીર્ણાથપ્યાગન્ । તત્ = તત્ર સ્વલુ તેષા યાત્ર  
 વહુનિ ' ઉપ્પાહયસયાહ ' ઔત્પાતિકશતાનિ = આકસ્મિચોત્પાતશતાનિ યથા માક  
 ન્દિકદારકયો: - જિનરક્ષિતજિનપાલિતયો: સજ્જાતાનિ તથૈવાસ્યાપિ યાત્ર ' કાલિ  
 યવાણ ' કાલિકયાતઃ પ્રલયકાલિકરુત્પચ્ચન્ડયાતથ તત્ર સમુત્થિતઃ । તત્ = તદન  
 ન્તર સ્વલુ સા નોકા તેન કાલિકયાતેન ' આઘોલિજ્જમાણી ૨ ' આઘૂર્ણમાના  
 ૨ પુનઃ પુનઃપ્રામિયન્તી ' સચાલિજ્જમાણી ૨ ' સચાલ્યમાના ૨ પુનઃ પુનઃથાલ્ય

હસ્તિશીર્ષં નગરમેં અનેક પોત વણિક (નાવસે વ્યાપાર કરને વાલે) રહેતે  
 થે । એ એક સાથ મિલકર હી પરદેશ મે જાકર વ્યાપાર ક્રિયા કરતે થે ।  
 હનકી ઉસ નગર મેં અચ્છી પ્રતિષ્ઠા થી-કારણ એ સબ કે સબ લક્ષ્મીદેવી  
 કે વિશેષ રૂપ સે કૃપાપાત્ર થે । ( તણ્ણ તેસિં સજ્જા ણાવા વાણિયમાણ  
 અન્નયા એગયાઓ જહા અરહણઓ જાત્ર લવણસમુદ્ધ અણેગાઢ જોયણ  
 સયાહ ઓગાઢા યાવિ હોત્થા, તણ્ણ તેસિં જાવ વહુણિ ઉપ્પાહયસયાહ  
 જહા માગદિયદારમાણ જાવ કાલિયવાણ ય તત્થ સમુત્થિણ, તણ્ણ સા  
 તેણ કલિયવાણ આઘોલિજ્જમાણી ૨ સચાલિજ્જમાણી ૨ સચોલિજ્જમાણી

આ રાજાનું વર્ણન પણ “ મહ્યા હિમવત ” વગેરે રૂપમાં પહેલાના અધ્ય  
 યનોમાં વર્ણિત રાજાઓના વર્ણન જેવું જ બાણી લેવું બેઠ્યું તે હસ્તિશીર્ષ  
 નગરમાં ઘણું પોતવણિકો ( વહાણ વડે વેપાર કરનારા ) રહેતા હતા તેઓ  
 સર્વે એકી સાથે મળીને પરદેશમાં જતા અને ત્યાં વેપાર કરતા હતા તે  
 નગરમાં તેમની સારી એવી પ્રતિષ્ઠા હતી કેમકે ખાસ કરીને તેઓ સર્વે  
 લક્ષ્મીના કૃપાપાત્ર હતા

( તણ્ણ તેસિં સજ્જા ણાવા વાણિયમાણ અન્નયા એગયાઓ જહા અરહણઓ  
 જાત્ર લવણસમુદ્ધ અણેગાઢ જોયણસયાહ ઓગાઢા યાવિ હોત્થા, તણ્ણ તેસિં જાવ  
 વહુણિ ઉપ્પાહયસયાહ જહા માગદિયદારમાણ જાવ કાલિયવાણ ય તત્થ સમુ  
 ત્થિણ તણ્ણ સા ણાવા તેણ કલિયવાણ આઘોલિજ્જમાણી ૨ . . . . . )

प्रविशन्ति, अनुप्रविश्य यत्रैव कनककेतु राजा तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य यावत्  
तत्प्राभृतम् 'उपगच्छन्ति' उपनयन्ति भूपसमीपे स्थापयन्ति ॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएणं से कणगकेऊ राया तेसि सजत्ताणावावाणि-  
यगाण त सहत्थ जाव पडिच्छइ पडिच्छित्ता त सजत्ताणावा-  
वाणियगा एवं वयासी तुब्भेणं देवाणुप्पिया । गामागार जाव  
अहिंढह लवणसमुद च अभिक्खणर पोयवहणेणं ओगाहह  
तं अत्थि आइं केइ भे कहिन्नि अच्छेरए दिट्ठुप्पवे ? , तएणं ते  
सजत्ताणावावाणियगा कणगकेऊ एव वयासी—एव खलु अम्हे  
देवाणुप्पिया । इहेव हत्थिसीसे नयरे परिवसामो त चेव जाव  
कालियदीव तेणं सबूढा, तत्थ ण वहवे हिरण्णागरा य जाव

कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव उववेति ) वहाँ  
आकर के वे लोग उस हस्तिशीर्ष नगर के बाहर के प्रवान उद्यान में  
ठहर गये वहा ठहर उन्हो ने वही पर शकटी-गाडी शाकटो-गाडों की  
ढील-ठहरा दिया । ढीलकर के राद में महार्थ-महाप्रयोजन साधक भूत  
-यावत् प्राभृत भेट को उन्हों ने अपने २ हाथो में लिया-और लेकर के  
वे हस्तिशीर्ष नगर में प्रविष्ट हुए नगर में प्रविष्ट होकर वे जहा कनक  
केतु राजा ये वहा पहुँचे । वहा पहुँचकर उन्हो ने उस महाप्रयोजन साधक  
भूत प्राभृत को राजा के पास रख दिया ॥ सू० २ ॥

हत्थिसीस नगर अणुपविसति, अणुपविसित्ता, जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवा  
गच्छइ, उवागच्छित्ता जाव उववेति )

त्या आवीने तेओ। णधा ते हस्तिशीर्ष नगरणी णडारना मुज्ज उद्या  
नमा रेकाध गया, त्या रेकाधने तेमणे त्या न शकटी-गाडी अने शाकटो-  
गाडाओने छोडी भूडया त्यारणाह तेमणे महार्थ-महाप्रयोजन साधक भूत  
यावत् भेटने पोतपोताना छाथोमा दीधी अने लउने तेओ। हस्तिशीर्ष नगर  
रमा प्रविष्ट थया नगरमा प्रविष्ट थधने तेओ। ज्या कनककेतु राजा हतो। त्या  
पडोअ्या त्या पडोअीने तेमणे ते महाप्रयोजन साधक ३५ भेटने राजनी  
साभे भूडी दीधी ॥ सूत्र २ ॥

वा दिश वा विदिश वा प्रति मे पोतयदनम् नौकायान 'अवहिण्' अपहतम् महा  
यानेन नीतम्, इति । इति कृत्या=इतिमनसि निधाय अपहतमनः सकल्पो यावत्  
भ्यायति=भार्तभ्यान करोति । तत खलु ते बहवः कुक्षिधाराश्च=पार्श्वतो नौका  
चालकाः कर्णधाराश्च=नाविकाः । 'गम्भीरगाय' गार्भेयकाश्च नौमध्ये यथाव  
सर कर्मकराः, सयात्रानौका वाणिजकाः=भाण्डवतयश्च यत्रैव स निर्यामकः=नौका  
धिपतिस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उवागत्य एवमादिपुः-किं खलु यूय हे देवानुमियाः ।  
अपहतमनःसकल्पाः निरुत्साहमनस्का यावत् 'झियायह' भ्यायथ आर्तध्यान  
कुरुथ, आन्तरार्थे बहुवचनम् । तत खलु स निर्यामकस्तान् बहून् कुक्षिधाराश्च ४

कयर देम वा दिम वा विदिस वा पोयवहणे अवहिण् ति कट्टु) अतः  
जब उसे इस बात का भी ज्ञान नहीं रहा कि यह महावात मेरी नौका  
को किस दिशा अथवा विदिशा की ओर ले गया है-तब इस प्रकार  
मन में विचार कर के वह (ओहयमणसकप्पे जाव झियायह) अपहत  
मन, सकल्पवाला बनकर यावत् आर्तध्यान करने लगा । (तएण ते  
बह्वे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गम्भीरलगा य सजत्ता णावा वाणि  
यगा य जेणेव से णिज्जामए तेणेव उवागच्छइ) इतने में अनेक कुक्षि  
धर-पार्श्व में बैठकर नौका चलाने वाले कर्णधार-नाविक, गार्भेयक-नौका  
के भीतर यथावसर काम करने वाले और सांघात्रिक पोत वणिक जहां  
वह निर्यात्रिक था-वहां आये । (उवागच्छित्ता एव वयासी-किन्न तुम  
देवाणुप्पिया ओहयमणसकप्पा जाव झियायह-तएण से णिज्जामए

गये। (ण जाणाइ कयर देस वा दिस वा विदिस वा पोयवहणे अवहिण्ति कट्टु)  
ऐसी ल्यारे तेने आ वातनी पणु भगर रही नडि के आ भडावात अभासी  
नौकाने कछ दिशा अथवा तो विदिशा तरफ लई गये। छे ल्यारे मनमा आ  
लतने विचार करीने ते (ओहयमणसकप्पे जाव झियायह) अपहतमन  
सकल्पवाणे। थछने यावत् आर्तध्यान करवा लाग्ये।

(तएण ते बह्वे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गम्भीरलगा य सजत्ता  
णावा वाणियगा य जेणेव से णिज्जामए तेणेव उवागच्छइ)

ओटलाभा धणु। कुक्षिधर-पार्श्वमा ऐसीने नौका अलावनारा, कर्णधार  
नाविक, गार्भेयक-नौकाभा यथा समय काम करनारा अने सांघात्रिके-पोत  
वणिके ल्या ते निर्यामके हुते। त्या गया।

(उवागच्छित्ता एव वयासी-किन्न तुम देवाणुप्पिया ओहयमणसकप्पा  
जाव झियायह-तएण से णिज्जामए ते बह्वे कुच्छिधारा य ४ एव वयासी-



य पावरणाण य नवतयाण य मलयाण य मसूराण य सिला-  
वट्टाण य जाव हंसगवभाण य अन्नेसि च फासिदिय पाउग्गाणं  
दव्वाणं सगडीसागड भरेति भरित्ता सगडीसागडं जोएति  
जोइत्ता जेणेव गंभीरए पोयट्टाणे तेणेव उवागच्छति उवाग-  
च्छित्ता सगडीसागडं मोएति मोइत्ता पोयवहणं सज्जेति सज्जित्ता  
तेसि उक्किट्टाणं सदफरिसरसरूवगंधाणं कट्टुस्स य तणस्स य  
पाणियस्स य तदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसि  
च वहूण पोयवहणपाउग्गाण पोयवहणं भरेति भरित्ता दक्खि  
णाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ उवा-  
गच्छित्ता पोयवहणं लवेति लंवित्ता ताइ उक्किट्टाइ सदफरिसरस  
रूवगधाडं एगट्टियाहि कालियदीवे उत्तारेति । जहि २ च णं  
ते आसा आसायति वा सयति वा चिट्ठति वा तुयट्टति वा  
तहि २ च णं ते कोडुंवियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव वित्त  
वीणाओ य अन्नाणि य वहूणि सोइदियपाउग्गाणि य दव्वाणि  
समुदीरेमाणा चिट्ठति तेसि परिपरंतेण पासए ठवेति ठवित्ता  
णिच्चला णिप्फदा तुसिणीया चिट्ठति, जत्थ २ ते आसा आसयंति  
वा जाव तुयट्टति वा तत्थ तत्थ णं ते कोडुवियपुरिसा वहूणि  
किण्हाणि य ५ कट्टकम्माणि य जाव सघाइमाणि य अन्नाणि  
य वहूणि चक्खिदियपाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेति तेसि परि-  
पेरतेण पासए ठवेति ठवित्ता णिच्चला णिप्फदा तुसिणीया  
चिट्ठति जत्थ २ ते आसा आसयति ४ तत्थ २ ण तेसि वहूणं

वहवे तत्थ आसा किं ते ?, हरिरेणु जाव अणेगाइं जोयणाइ  
 उब्भमंति, तएणं सामी अन्हेहिं कालियदीवे ते आसा अच्छे-  
 रए दिट्ठपुब्बे, तएण से कणगकेऊ राया तेसिं सजत्तगाणं  
 अंतिए एयमट्ठं सोच्चा ते सजत्तए एवं वयासी-गच्छहणं तुब्भे  
 देवाणुप्पिया मम कोडुंविषपुरिसेहि सद्धिं कालियदीवाओ ते  
 आसे आणेह, तएण ते संजत्ताणावावाणियगा कणगकेऊ रायं  
 एवं वयासी-एवं सामि त्तिरुहु आणाए पडिसुणेंति,  
 तएणं कणगकेऊ राया कोडुविषपुरिमे सद्दावेड सद्दावित्ता  
 एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संजत्तिएहि सद्धिं  
 कालियदीवाओ मम आसे आणेह, ते वि पडिसुणेंति, तएणं  
 ते कोडुविष० सगडीसागडं सज्जेति सज्जित्ता तत्थ ण बहूणं  
 वीणाण य वल्लकीण य भामरीण य कच्छभीण य भंभाण य  
 छब्भामरीण य वित्तवीणाण य अन्नेसि च बहूण सोतिदिय-  
 पाउग्गाण दब्बाण सगडीसागडभेरेंति भरित्ता बहूणं किण्हाण  
 य जाव सुक्किलाण य कट्टुकम्माण य ४ गंथिमाण य ४ जाव  
 सघाइमाण य अन्नेसिं च बहूणं चक्खिदियपाउग्गाणं दब्बाणं  
 सगडीसागड भेरेंति बहूणं कोट्टपुडाण य केयईपुडाण य जाव  
 अन्नेसि च बहूणं घाणिदियपाउग्गाणं दब्बाण सगडीसागड  
 भेरेंति बहुस्स खडस्स य गुलस्स य सक्कराए य मच्छंडियाए  
 य पुप्फुत्तर पउमुत्तराण य अन्नेसि च जिब्भिदियपाउग्गाणं  
 दब्बाणं सगडीसागड भेरेंति । बहूण कोयवियाण य कबलाण

ટીકા—‘ તણ સે ’ इत्यादि । ततः खलु स कनककेतु राजा तेषां सयात्र-  
नौकावाणिजकानां तन्महार्थं यावत् प्राप्नुत ‘ पडिच्छइ ’ प्रतीच्छति=स्वीकरोति  
प्रतीप्य तान् सयात्रनौकावाणिजकान् एवमासीत्-यूय खलु हे देवानुप्रियाः !  
‘ गामागर जाव अहिंडह ’ ग्रामाकर यावत् - ग्रामाकरनगरादिषु आहिण्डथ=  
गच्छत, लवणसमुद्र च अभीक्ष्ण २ पोतवहनेन अवगाहये ‘ त ’ तत्=तर्हि  
अस्ति ‘ आइ ’ इतिवाक्यालङ्कारे किमपि ‘ भे ’ युष्माभिः ‘ कर्हिचि ’ कुत्रचिद्  
‘ अच्छेए ’ आश्चर्यकर्म=आश्चर्यजनकमस्तु ‘ दिट्ठपुव्वे ’ दृष्टपूर्वम् ? यदि दृष्टमस्ति  
तर्हि कथयतेतिभावः । ततः खलु ते सयात्रनौकावाणिजका कनककेतुमेवमव

—तण से कणगकेऊ राया इत्यादि ।

टीकार्थ—(तण) इसके बाद (से कणगकेऊ राया) उस कनककेतु राजा  
ने (तेसिं सजत्ता णाया वाणियगाण त महत्थ जाव पडिच्छइ, पडि-  
च्छित्ता—ते सजत्ता णाया वाणियगा एव वयासी—तुव्वे ण देवाणुप्पिया !  
गामगर जाव अहिंडह लवणसमुद्र च अभिक्खण २ पोयवहणेण  
ओगाहह त अत्थिआइ केइ भे कर्हिचि अच्छेए दिट्ठपुव्वे ?) उन  
सायात्रिक पोतवणिक जनों की उस महार्थसाधक भेंट को स्वीकार कर  
लिया और स्वीकार करके फिर उन सायात्रिक पोतवणिक जनों से इस  
प्रकार कहा हे देवानुप्रियो तुमलोग अनेक ग्राम आकर नगर आदि  
स्थानों में जाते रहते हो और बार २ पोतवहन द्वारा लवणसमुद्र में  
अवगाहन करते रहते हो तो करो कही पर तुम ने यदि कोई आश्चर्य  
कारी वस्तु देखी हो तो कहो—(तण्णं ते सजत्ता णाया वाणियगा कण

तण से कणगकेऊ राया इत्यादि—

टीकार्थ—( तण ) त्याરપછી (સે કણગકેઊ રાયા) તે કનકકેતુ રાજાએ

( તેસિં સજત્તા ણાયા વાણિયગાણ ત મહત્થ જાવ પડિચ્છઈ, પડિચ્છિત્તા—  
તે સજત્તા ણાયા વાણિયગા એવ વયાસી—તુવ્વેણ દેવાણુપ્પિયા ! ગામાગર જાવ  
આહિંડહ લવણસમુદ્ર ચ અભિક્કલ્લણ ૨ પોયવહણેણ ઓગાહહ ત અત્થિ આઈ કેઈ  
મે કર્હિચિ અચ્છેરેણ દિટ્ઠપુવ્વે ? )

તે સાયાત્રિક પોતવણિકજનોની તે મહાર્થ સાધક ભેટને સ્વીકારી લીધી  
અને સ્વીકારીને તે સાયાત્રિક પોતવણિકજનોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુ  
પ્રિયો ! તમે લોકો ઘણા ગામ, આકર, નગર વગેરે સ્થાનોમા આવળ કરતા  
રહો છો અને વહાણ વડે લવણ સમુદ્રની વારવાર યાત્રા કરતા રહો છો તો  
અમને કહો કે તમે કોઈ નવાઈ પ્રમાણે તેવી અદ્ભુત વસ્તુ જોઈ છે ?

कोट्टुपुडाण य जाव अन्नेसि च बहूणं घाणिदियपाउग्गाणं  
 दब्बाणं पुंजे य णियरे य करेंति करित्ता तेसिं परिपेरंतेणं जाव  
 चिट्ठति जत्थ २ णं ते आसा आसयति ४ तत्थ २ णं गुलस्स  
 जाव अन्नेसि च बहूणं जिठ्ठिभदियपाउग्गाय दब्बाणं पुंजे य  
 निकरे य करेंति करित्ता विचरणं खणंति खणित्ता गुलपाणगस्स  
 खंडपाणगस्स जाव अन्नेसि च बहूण पाणगाण वियरे भेरेंति  
 भरित्ता तेसिं परिपेरतेण पासए ठवेति जाव चिट्ठति, जहिं २  
 च णं ते आसा आस० तहिं २ च णं ते बहवे कोयविया य  
 जाव हसगव्भा य अण्णाणि य बहूणि फासिंदिय पाउग्गाइं  
 अत्थुयपच्चत्थुयाइ ठवेति ठवित्ता तेसिं परिपेरंतेणं जाव चिट्ठति,  
 तएणं ते आसा जेणेव एते उक्किट्ठा सदफरिसरसरूवगंधा तेणेव  
 उवागच्छति उवागच्छित्ता तत्थण अत्थेगइया आसा अपुब्बा  
 णं इमे सदफरिसरसरूवगंधा इतिकट्टु तेसु उक्किट्ठेसु सदफरिस-  
 रसरूवगंधेसु अमुच्छिया ४ तेसिं उक्किट्ठाण सद जाव गंधाणं  
 दूरदूरेणं अवक्कमति, तेणं तत्थ पउरगोयरा पउरतणपाणिया  
 णिठभया गिरुव्विग्गा सुहसुहेण विहरति, एवामेव समणाउसो।  
 जो अम्ह णिग्गथो वा णिग्गथी वा जाव सदफरिसरसरूवगंधेसु  
 णो सज्जइ णो रज्जइ णो गिज्जइ, णो मुज्जइ णो अज्झोववज्जेइ  
 से णं इहलोए चेव बहूण समणाण ४ अच्चणिज्जे जाव बीइ-  
 वइस्सइ ॥ सू० ३ ॥

कनककेतु राजा तेषा 'सजत्तिगाण' सायात्रिकाणामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा तान् सायात्रिकान् एवमवदत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! मम कौटुम्बिक-पुरुषैः सार्द्धं कालिकद्वीपात्तानश्वानानयत । ततः खलु ते सयात्रानौशाणिजका कनककेतु राजानमेवमयादिषुः हे स्वामिन् ! एवमस्तु 'त्ति कट्टु' इति कृत्वा= इत्युक्त्वा 'आणाए' आज्ञायाः=आज्ञामित्यर्थः,—'पडिसुणेति' प्रतिश्रवयन्ति=

कर चहासे कह योजन दूरतक जगलमें भाग गये । अनः हे देवानुप्रिय "कालिकद्वीप में हमलोगों ने उन घोड़ों रूपी आश्चर्य को देखा है । (तएण से कणगकेऊ राया तेसिं सजत्तिगाण अतिए एयमद्व सोच्चा ते सजत्तए एवं वयासी-गच्छह णं तुव्भे देवाणुप्पिया ! मम कोडुबिय पुरि-सेहिं सद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह तएण ते सजत्ता णावा वाणिगया कणगकेऊ राय एव वयासी एव सामित्ति कट्टु आणाए पडिसुणेति, तएण कणगकेऊ राया कोडुबियपुरिसे सदावेह, सदावित्ता एव वयासी-गच्छह णं तुव्भे देवाणुप्पिया ! सजत्तिणहिं सद्धिं कालिय दीवाओ मम आसे आणेह, ते वि पडिसुणेति ) हमके बाद कनक केतु राजा ने उन सायात्रिक पोतवणिकजनो के मुख से इस अर्थ को सुन-कर उन सायात्रिकों से इस प्रकार कहा हे देवानुप्रियो ! तुमलोग जाओ और मेरे कौटुम्बिक पुरुषों के साथ कालिकद्वीप से उन अश्वों को लाओ । इस प्रकार सुनकर पोतवणिक जनो ने कनक केतु राजा से ऐसा कहा

वनभा नासी गया हे देवानुप्रिय ! अमोअे कालिक द्वीपभा ते अश्व इपी अद्भुत वस्तुने लेई छे

( तएण से कणगकेऊ राया तेसिं सजत्तिगाण अंतिए एयमद्व सोच्चा ते सजत्तए एव वयासी-गच्छहण तुव्भे देवाणुप्पिया ! मम कोडुबियपुरिसेहिं सद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह, तएण ते सजत्ता णावा वाणियगा कणग केऊ राय एव वयासी एव सामी त्ति कट्टु आणाए पडिसुणेति, तएण कणगकेऊ राया कोडुबियपुरिसे सदावेह, सदावित्ता एव वयासी-गच्छहण तुव्भे देवाणु-प्पिया ! सजत्तिणहिं सद्धिं कालियदीवाओ मम आसे आणेह, ते वि पडिसुणेति )

त्यारणाह कनककेतु राजाअे ते सायात्रिक पोतवणिकजनोना अण्यथी आ वातने सावणीने ते सायात्रिकोने आ प्रमाणे कहुं के हे देवानुप्रियो ! तमे दोके मारा कौटुम्बिक पुरुषोनी साथे कालिक द्वीपभा लअेअे अने त्याथी ते अश्वोने लावेअे आ प्रमाणे कनककेतुनी आशा सावणीने ते पोतवणिकजनोअे तेमने आ प्रमाणे कहुं के हे स्वामी ! तमारी आशा अमारा भाटे प्रमाणे स्वइय छे आभ कहीने तेमणे कनककेतु राजानी आशा स्वीकारी लीधी त्यार



दन्-एव खलु वय हे देवानुप्रियाः । इहेव हस्तिशीर्ष नगरे परिसामः, 'तथेव'  
तदेव पूर्वोक्तवर्णन सर्वमत्र गान्धर्म् 'जाव' यावन् कात्रिकद्वीपान्ते=कालिक  
द्वीपसमीपे खलु 'समूढा' सन्पूढाः-मासाः, तत्र खलु बहवो हिरण्यागराश्च यावद्  
बहवस्त्राभ्याः सन्ति, किंते' किम्भूतास्ते ? इत्याह- 'हरिरेणु जाव' हरिद्रेणु शोभि  
सुत्रताः यावद्-तेऽस्मद्गन्धमात्राय भीताः सन्तः अनेकानि योजनानि दूरम् 'उब्भ  
मति' उद्भ्रमन्ति पलायन्ते स्म, तत्र खलु हे स्वामिन् ! अस्माभि " कालिक-  
द्वीपे तेऽभ्याः सन्ति " तदेव 'अच्छेरए' आश्चर्यक दृष्टपूर्वमिति । ततः खलु स

गकेऊ एव वयामी एव गत्रु अम्हे देवाणुप्पिया । इहेव हत्थिसीसे नयरे  
वसामो त चेव जाव कालियदीव तेण समूढा तत्थ ण बहवे हिरण्णागरा  
य जाव बहवे तत्थ आसा किंते ? हरिणेणु जाव अणेगाइ जोयणाइ उब्भ  
मति-तएण सामी अम्हे हि कालियदीवे ते आसा अच्छेरए दिट्ठपुब्बे )  
इस प्रकार राजा की बात सुनकर उन सांघात्रिक पोतवणिग्जनों ने  
उन कनककेतु राजा से कहा हे देवानुप्रिय ! हमलोग इसी हस्तिशीर्ष  
नगर में रहते हैं । हमलोग यहा से लवणसमुद्र में होकर व्यापार के  
निमित्त बाहर परदेश गये हुए थे-। मार्ग में हमलोगों को अनेक प्रकार  
के सैकड़ो उपद्रव हुए-उनसे जिस किसी तरह सुरक्षित हो हमलोग  
कालिकद्वीप के समीप पहुँच गये । वहाँ हमने अनेक हिरण्य आदि की  
खानों को एव अनेक अभ्यों को कि जिनका कटिभाग हरिद्वर्णवाली धूलि  
से रचित कटिसूत्रसे चिह्नित था देखा, वे हमलोगों की गंध को सूघ

( तएण ते सज्जा णाम वाणियगा कणगकेऊ एव वयामी-एव खलु  
अम्हे देवाणुप्पिया ! इहेव हत्थिसीसे नयरे वसामो त चेव जाव, कालिय दीव  
तेण समूढा, तत्थ ण बहवे हिरण्णागरा य जाव बहवे तत्थ आसा किं ते ? हरि-  
रेणु जाव अणेगाइ जोयणाइ उब्भमति-तएण सामी अम्हेहि कालियदीवे ते  
आसा अच्छेरए दिट्ठपुब्बे )

आ प्रभाणु राजनी बात साधणीने ते सांघात्रिक पोतवणिग्जनोअे ते  
कनककेतु राजने कह्यु हे हे देवानुप्रिय ! अमे जधा आ हस्तिशीर्ष नगर  
भाज रहीअे छीअे अमे जधा व्यापार जेडवा भाटे अड्डीथी लवण समुद्रभा  
धर्धने जहार परदेशमा गया छता रस्तामा धण्णी जतना सेकडो उपद्रवो  
धया जेनटे जमे तेम करीने सुरक्षित रुपमा अमे जधा कालिकद्वीपनी पास  
गया त्या अमेअे धण्णी हिरण्य वगेरे ॥ आणोने अने धण्णा अश्वोने-के  
जेमना कटिभागो लीला रजनी भाटीथी जनावेला कटिसूत्रथी चिह्नित छता-  
जेया अभासी गंधने सूधीने ते अश्वो त्याथी केटलाक थो ॥ इर सुधी

‘वित्तरीणाणय’ वृत्तवीणाना=गोलाकार वीणाना च-अन्येषा च बहूनां नानाविधानां  
 ‘सोडदियपाउग्गाण’ श्रोत्रेन्द्रिय प्रायोग्याणा=कर्णेन्द्रियसुखजनकाना द्रव्याणां=  
 तन्व्यादिरूपाणा शकटीशाकट भरन्ति तैर्वीणादिभिरित्यर्थ, भूत्वा बहूना ‘किण्हा-  
 णय जाव सुक्काणय’ कृष्णाना यावत्-नीलाना पीताना रक्ताना शुक्लाना च  
 कृष्णादिपञ्चवर्णयुक्ताना ‘वट्ठकम्माण य’ काष्ठकर्मणा=काष्ठनिर्मितपुत्तलिकादी-  
 नाम्, ‘पोत्थकम्माणय’ पुस्तपु कर्मणा-पुस्तपु=गुह्यताडपत्रकर्मलादिषु कर्माणि=  
 लेखनकर्माणि, तेषाम्, ‘चित्तकम्माण य’ चित्रकर्मणा=पट्टकादिषु चित्ररूपा-  
 णाम्, ‘लेप्पकम्माणय’ लेप्पकर्मणा=मृत्तिकासेटिकादिना वल्ल्याद्याकाररचना  
 विशेषरूपाणाम्, तथा-‘ग्रथिमाण य’ ग्रन्थिमाना=कौशलातिशयेन ग्रन्थिसमु-  
 दायनिष्पादितानाम्-यावत्-‘वेढिमाण य’ वेष्टिमाना=लतादि वेष्टनतो निष्पा-  
 दितानाम्, ‘पूरिमाण य’ पूरिमाणा=कनकादिषु पुत्तलिकावत् छिद्रादिपूरणेन

के आकार जैसी वीणाओं को, भभाओं भेरियो-को, पड् भ्रामरियों को  
 -गोलाकार वीणाओं को, तथा और भी अनेक विधश्रोत्रेन्द्रिय सुखज-  
 नक तन्त्री आदिरूप द्रव्यों को, भरा-भर करके फिर नीले, पीले, रक्त,  
 शुक्ल और कृष्ण रंग से रंगे हुए काठ के बने हुए खिलौनों को, पुस्त-  
 कर्मों को-वल्ल, ताडपत्र एवं कागज आदि पर लिखे विविध प्रकार के  
 लेखों को, निग्रन्धों को उपदेश पूर्ण-दोहे चौपाइ आदि में लिखी हुई  
 कविता आदि को को-चित्रकर्मों को-पट्टिया आदि पर उकेरे गये विविध  
 चित्रों को-लेप्पकर्मों को-मृत्तिका सेटिका आदि से बल्ली आदि रूप में  
 बनाये गये चित्रों को, ग्रन्थियों को विशेष चतुराई के साथ गांठों से  
 बनाये गये खिलौनों को, लताओं आदि द्वारा वेष्टित करके २ रचीं गई  
 चीजों को,-टोपियों को, हाथों की पैरों की अगुलियों में पहिरने योग्य

जेवी वीणाओ, ललाओ-लेरीओ ( नगाराओ ) पड्-भ्रामरीओ, गोण आकार  
 वाणी वीणाओ तेमज् जील पण धणु कण्ठेन्द्रियने सुख आये तेवा तन्त्री  
 वगेरे साधनेने लया लरीने लीला, पीणा, राता, सङ्केह अने काणा रगोथी  
 रगाओला लाडाना जनेला रमकडाने, पुस्तकर्मोने-वल्ल ताडपत्र अने कागण  
 वगेरे उपर लणाओला जतजतना लेजोने, निजधोने, दूडा, चोपाइ वगेरेभा  
 लणाओली उपदेशक कविताओ वगेरेने, चित्र कर्मोने-इलड वगेरे उपर चित्रित  
 करेला धणु चित्रोने लेप्प कर्मोने, माटी सेटिका वगेरेथी लता वगेरे रुपमा  
 जनाववामा आवेला चित्रोने, ग्रन्थिओने-विशे। आतुर्यथी गाठोथी जनाववामा  
 आवेला रमकडाने, लताओ वगेरे वडे वेष्टित करीने जनाववामा आवेला वस्तु

स्वीकृत्यन्ति । ततः खलु कनककेतु राजा कौटुम्भिकपुरुषान् शब्दयन्ति, शब्दयित्वा  
परमनादीत्-गच्छन्त खलु गृध्र हे देवानुमित्राः । मायात्रिके माद्रे काञ्चिद्वीपात्  
मत्तम् अश्वानानयत । तेऽपि=कौटुम्भिकपुरुषाः 'पट्टिगुणेति' प्रतिगृह्यन्ति 'तथास्तु'  
इत्युक्त्वा राजाज्ञा स्वीकृत्यन्ति । ततः खलु ते कौटुम्भिकपुरुषाः शकटीशाकटं  
'सज्जेति' सज्जयन्ति=कालिङ्गद्वीपे गमनार्थं मज्जीकृत्यन्ति, सज्जयित्वा तत्र खलु  
शकटीशाकटे वह्ना च वह्नीनां च, आमरीणां च 'कच्छभीण य' कच्छभीणा च-  
'कच्छभी' इति कच्छभाकारणीणाभिधेयः, भभाना=भेरीणा च, पद्भ्रामरीणां च,

हे-स्वामिन् । हमें आपकी आज्ञा प्रमाण है-ऐसा कह कर उन्होंने ने कनक  
केतु राजा की आज्ञा को स्वीकार कर लिया । इसके बाद कनक केतु  
राजा ने अपने कौटुम्भिक पुरुषों को बुलाया-और बुलाकर उनसे ऐसा  
कहा-हे देवानुमित्रों ! तुम मायात्रिक पोतत्रिक जनों के साथ जाओ  
-और कालिङ्गद्वीप से मेरे लिये घोड़ों को ले आओ । राजा की इस  
आज्ञा को उन लोगों ने भी स्वीकार कर लिया । ( तएण ते कौटुम्भिकपु  
रिसा सगडीसागड सज्जेति, सज्जित्ता तत्थण वह्ण वीणाण य वल्ल  
कीण य भामरीण य कच्छभीण य भभान य छब्भामरीण य वित्तवीणाण  
य अन्नेसि च वह्ण सोइदिय पाउग्गाण दव्वाण सगडी सागड भरेति,  
भरित्ता वह्ण किण्हाण य जाव सवाइमाण य अन्नेसि च वह्ण  
चक्खिदियपाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड भरेति ) इसके बाद उन  
कौटुम्भिक पुरुषों ने गाड़ी और गाड़ों को सज्जित किया-सज्जित करके  
उनमें उन्होंने ने अनेक वीणाओं को, वल्लकियों को, भ्रामरियों को, कच्छप

भाइ कनककेतु नाम्ने पोताना कौटुम्भिक पुरुषोन्ने बोलाव्या अन्ने बोलावीन्ने  
तेभन्ने आ प्रमाणे कहु के हे देवानुमित्रो ! तम्मे सायात्रिक पोतत्रिकजनानी  
माथे लभ्यो अन्ने कालिङ्ग द्वीपमाथी भारा भाटे घोडाओन्ने लावे । राजानी  
आ आशाने ते बोडोओ पणु स्वीकारी लीधी

( तएण ते कौटुम्भिकपुरिसा सगडीसागड सज्जेति, सज्जित्ता तत्थण  
वह्ण वीणाण य वल्लकीण य भामरीण य कच्छभीण य भभान य छब्भामरीण य  
वित्तवीणाण य अन्नेसि च वह्ण सोइदियपाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड  
भरेति, भरित्ता वह्ण किण्हाण य जाव सवाइमाण य अन्नेसि च वह्ण चक्खि  
दियपाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड भरेति )

त्यारपणी ते कौटुम्भिक पुरुषोन्ने जाडी अन्ने गाडाओन्ने नेतया नेत  
रीन्ने तेमा तेमण्णे धणी वीणाओ, वल्लकीओ, भ्रामरीओ, कायणाना आकार

‘वित्तवीणाणय’ वृत्तवीणाना=गोलाकार वीणाना च-अन्येषा च बहूनां नानाविधानां  
 ‘सोइदियपाउग्गाण’ श्रोत्रेन्द्रिय प्रायोग्याणा=कर्णेन्द्रियसुखजनकाना द्रव्याणां=  
 तन्त्र्यादिरूपाणा शकटीशाकट भरन्ति तैर्वीणादिभिरित्यर्थ, भृत्वा बहूना ‘विष्हा-  
 णय जाव सुक्काणय’ कृष्णाना यावत्-नीलाना पीताना रक्ताना शुक्लाना च  
 कृष्णादिपञ्चवर्णयुक्ताना ‘वट्ठकम्माण य’ काष्ठकर्मणा=काष्ठनिर्मितपुत्तलिकादी-  
 नाम्, ‘पोत्थकम्माणय’ पुस्तपु कर्मणा-पुस्तेपु=यस्त्रताडपत्रकर्मलादिपु कर्मणि=  
 लेखनकर्मणि, तेषाम्, ‘चित्तकम्माण य’ चित्रकर्मणा=पट्टकादिपु चित्ररूपा-  
 णाम्, ‘लेप्पकम्माणय’ लेप्पकर्मणा=मृत्तिकासेटिकादिना बल्लयाद्याकाररचना  
 विशेषरूपाणाम्, तथा-‘ग्रथिमाण य’ ग्रन्थिमाना=कौशलातिशयेन ग्रन्थिसमु-  
 दायनिष्पादितानाम्-यावत्-‘वेट्ठिमाण य’ वेष्टिमाना=लतादि वेष्टनतो निष्पा-  
 दितानाम्, ‘पूरिमाण य’ पूरिमाणा=रुनकादिपु पुत्तलिकावत् छिद्रादिपूरणेन

के आकार जैसी वीणाओं को, भभाओं भेरियो-को, पड् भ्रामरियों को  
 -गोलाकार वीणाओं को, तथा और भी अनेक विधश्रोत्रेन्द्रिय सुखज-  
 नक तंत्री आदिरूप द्रव्यों को, भरा-भर करके फिर नीले, पीले, रक्त,  
 शुक्ल और कृष्ण रंग से रंगे हुए काठ के बने हुए खिलौनों को, पुस्त-  
 कर्मों को-यस्त्र, ताडपत्र एवं कागज आदि पर लिखे विविध प्रकार के  
 लेखों को, निबन्धों को उपदेश पूर्ण-दोहे चौपाइ आदि में लिखी हुई  
 कविता आदि को को-चित्रकर्मों को-पट्टिका आदि पर उकेरे गये विविध  
 चित्रों को-लेप्पकर्मों को-मृत्तिका सेटिका आदि से बल्ली आदि रूप में  
 बनाये गये चित्रों को, ग्रन्थियों को विशेष चतुराई के साथ गाठों से  
 बनाये गये खिलौनों को, लताओं आदि द्वारा वेष्टित करके २ रचीं गई  
 चीजों को,-रोपियों को, हाथों की पैरों की अगुलियों में पहिरने योग्य

जेवी वीणाओ, ललाओ-लेरीओ ( नगाराओ ) पड्-भ्रामरीओ, गोण आकार  
 वाणी वीणाओ तेमन् भीन् पण् धण् कर्णेन्द्रियने सुख आये तेवा तंत्री  
 वगेरे साधनेने लया लरीने लीला, पीणा, राता, सङ्केद अने डाणा रगोथी  
 रगाओला लाकडाना अनेला रमडडाने, पुस्तकभेने-यस्त्र ताडपत्र अने कागण  
 वगेरे उपर लणाओला नतनतना लेणेने, निबधेने, दूडा, चौपाछ वगेरेभा  
 लणाओली उपदेशक कविताओ वगेरेने, चित्र कर्मेने-इलक वगेरे उपर चित्रित  
 करेला धण् चित्राने लेप्प कर्मेने, भाटी सेटिका वगेरेथी लता वगेरे रुपमा  
 अनाववाभा आवेला चित्राने, ग्रन्थिमेने-विशेष आतुर्यथी गाठोथी अनाववाभा  
 आवेला रमडडाने, लताओ वगेरे वडे वेष्टित करीने अनाववाभा आवेली वस्तु

નિષ્પાદિતાનામ્, 'સપાટમાણ ય' સદ્ધાતિમાનાં=લોહકાષ્ઠાટિમી રથાદિશ્ચ વસ્તુ-  
સમૂહૈર્નિષ્પાદિતાનામ્, તથા-અન્યેષાં ચ વહના 'ચર્ચિત્તિયપાઙ્ગમાણ' ચન્ધુરિ  
ન્દ્રિયપ્રાયોગ્યાણાન્નયનાનન્દજનકાના દ્રવ્યાણા શસ્ત્રીશાકટ ભરન્તિ । તથા  
વહના 'કોટ્ટપુટાણ ય' કોટ્ટપુટાના = સુગન્ધિદ્રવ્યવિશેષાણાં ચ કેતમીપુટાનાં  
ચ યાવત્-અણપુટાનાં ચ, કુતુમપુટાનાં ચ, ઉગીરપુટાનાં='રમ' રમિતિમાપા  
પ્રસિદ્ધસુગન્ધિદ્રવ્યાણા ચ, ત્વદ્વપુટાના ચેત્યાદિ । અન્યેષાં ચ વહના ઘ્રાણેન્દ્રિય  
પ્રાયોગ્યાણા દ્રવ્યાણા શસ્ત્રીશાકટ ભરન્તિ । તથા વહોઃ સ્વપ્તસ્ય ચ ગુહસ્ય ચ  
શર્કરાયાથ 'મિસરી' રિતિ ભાષા પ્રસિદ્ધાયા. 'મચ્છડિયાણ ય' મત્સ્યઙ્ડિકાયા='  
'કાલ્પીમિસરી' રિતિ ભાષા પ્રસિદ્ધાયા, પુષ્પોત્તર-પદ્મોત્તરાણા=ગુલકન્દ' રિતિ  
પ્રસિદ્ધાના ચ, અન્યેષાં ચ જિહ્વેન્દ્રિયપ્રાયોગ્યાણા દ્રવ્યાણા શસ્ત્રીશાકટ ભરન્તિ ।  
તથા વહનાં 'કોયવિયાણ ય' કોયવિયાના = સ્વત્પૂરિતપાવરણવિશેષાણાં  
'રજાઈ' રિતિ પ્રસિદ્ધાનામ્, કમ્બલાના=રત્નકમ્બલાનામ્, પાવરણાના=શાટિકાનાં  
'ચદર' રિતિ પ્રસિદ્ધાનામ્, 'નવતયાણ ય' નવતયાનામ્=ઝર્ણમયપર્યાણાનાં

આભૂષણ આદિ કોં કો-પુત્તલિકા કી તરહ જો સુવર્ણ આદિ કે પતરોં  
પર કૃત ઝિદ્રાદિકોં કે પૂરને સે ચિત્ર ઘનાયે જાતે હૈં વે પૂરિમ હૈં રન  
પૂરિમોં કો ઓર સઘાતિમોં કો-લોહકાષ્ઠ આદિ કી તરહ અનેક વસ્તુઓં  
કે સમુદોય સે નિષ્પાદિત ચિત્રો કો તથા ઓર મી નેત્ર હન્દ્રિય કો  
સુહાવને લગને વાલે દ્રવ્યોં કો મરા । (વહૂણ કોટ્ટપુટાણ ય, કેયઈ પુટા-  
ણ ય જાવ અન્નેમિ ચ વહૂણ ઘર્ષિદિયપાઙ્ગમાણ દવ્વાણ સગડીસાગડ  
મરેતિ, વહુસ્સ સ્વડસ્સ ય ગુલસ્સ સકરાણ ય મચ્છડિયાણ ય પુષ્પુત્તર  
પદ્મુત્તરાણ ય અન્નેસિ ચ જિર્વિમદિય પાઙ્ગમાણ દવ્વાણ સગડીમાગડ  
મરેતિ વહૂણ કોયવિયાણ ય કેવલાણ ય પાવરણાણ ય નવતયાણ ય

ઓને-ટોપીઓને, હાથો, પગો અને આગળીઓમા પહેરવાના આભૂષણ વગે  
રેને પૂતળીની જેમ જે સુવર્ણ વગેરેના પતરા ઉપર કાણા પાડીને તેમને  
પૂરીને બનાવવામા આવેલા ચિત્રો એટલે કે પૂરિઓને અને સઘતિઓને  
લોખંડ, કાષ્ઠ વગેરેથી બનાવવામા આવેલા રથ વગેરેની જેમ ઘણી વસ્તુઓને  
એકત્રિત કરીને તેમના વડે બનાવવામા આવેલા ચિત્રોને તેમજ ખીબ પથુ  
ઘણા નેત્ર હન્દ્રિયને ગમે તેવા દ્રવ્યોને લયા

(વહૂણ કોટ્ટપુટાણ ય, કેયઈ પુટાણ ય જાવ અન્નેસિ ચ વહૂણ ઘર્ષિદિય  
પાઙ્ગમાણ દવ્વાણ સગડીસાગડ મરેતિ, વહુસ્સ સ્વડસ્સ ય ગુલસ્સ સકરાણ ય  
મચ્છડિયાણ ય પુષ્પુત્તરપદ્મુત્તરાણ ય અન્નેસિ ચ જિર્વિમદિયપાઙ્ગમાણ દવ્વાણ  
સગડીસાગડ મરેતિ વહૂણ કોયવિયાણ ય કેવલાણ ય પાવરણાણ



‘जीन’ इति प्रसिद्धानाम्, मलयाणा च=मलयदेशोत्पन्नवस्त्रविशेषाणाम्, ‘मसूराण य’ मसूरकाणा=वस्त्रादिनिर्मित वृत्ताकारासनविशेषाणाम्, ‘सिलावट्टाण य’ शिलापट्टानां=पट्टाकारचिकणशिलानां यावत् हंसगर्भाणां=हंसः=चतुरिन्द्रियकृमि-विशेषः, गर्भः=तन्निर्वर्तित कोसि तारोत्तरूपः, तन्मयवस्त्राण्यपि हंसगर्भाणीत्यु-

मलयाण य मसूराण य सिलावट्टाण य जाव हंसगव्भाण य अन्नेसिं च फासिंदियपाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड भरेति ) इसी तरह अनेक कोष्ठपुटो को-सुगंधित द्रव्य विशेषों को केतकीपुटो को-सुगंधित पुष्पों यावत् एलापुटो को-इलायचियों को, उखीरपुटों को, खश के समुदाय को-कुकुमपुटों को तथा और भी अनेक, घ्राणेन्द्रिय को तृप्ति कारक द्रव्यों को उन लोगो ने गाड़ी और गाडो में भरा। बहुत सी खाड, बहुत से गुड बहुत सी शर्करा-मिनरी-बहुत सी मत्स्यण्डी-कालपी मिसरी बहुत से गुलकद, बहुतसे पद्मपाक को तथा और भी जिह्वाह-न्द्रिय को तृप्ति करने वाले द्रव्यों को उन लोगों ने गाड़ी और गाडों में भरा। इसी तरह स्पर्शन इन्द्रिय को आनददेने वाले कोयविको को-रूई कपास-से भरे हुए प्रावरण विशेषों को-रजाहयो को-कम्बलों को-रत्न कम्बलों को-प्रावरणो को-चदरो को-नवलको को-ऊन के बने हुए पल्लेचों को-जीनो को-मलयदेश के बने हुए वस्त्रों को, मसूरकों को-वस्त्रों से बनाये हुए गोलकार आसनों को-शिलापट्टो को-पट्टाकार चिकनी

य मलयागव मसूराण य सिलावट्टाण य जाव हंसगव्भाण य अन्नेसिं च फासि-दियपाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड भरेति )

आ प्रभाणु धप्पा डोण्ट पुट्टोने-सुगंधित द्रव्य-विशेषोने, केतकी पुटोने केवडाना पुष्पोने यावत् एलापुटोने, एलायचियोने, उखीर पुटोने-खशना समुदायोने, कुकुम पुटोने तेमज्जी नील पणु धणु घणु घ्राणेन्द्रिय (नाड) ने तृप्ति प्रभाडनारा द्रव्योने तेओओ गाडी अने गाडाओमा लया - णडु ७ पुण्डण प्रभाणुमा णाड, गोण, साकर मिश्री, मत्स्य डी कालपी मिश्री, (उची जतनी आकर) गुलकद, पद्मपाडो तेमज्जी नील पणु धणु लहार्थ इन्द्रिय (लभ) ने तृप्ति आप नार द्रव्योने ते लोकोओ गाडी अने गाडाओमा लया आ प्रभाणु स्पर्शेन्द्रियने सुण आपनारी डायविकोने इथी लरेला प्रावरण विशेषोने-रत्नओओने, काम जोने, रत्न कामजोने, प्रावरणोने, आदरोने, नवलकोने, जिनयी जनाववामा आवेला धवेयाओने-ओओने-मलय देशना वस्त्रोने, मसूरकोने-वस्त्रो वडे जनाववामा आवेला गोण आकार आसनोने, शिलापट्टोने-पट्टना आदरनी

निष्पादितानाम्, 'संघाटमाण य' सहातिमानां=लोहकाष्टादिमी तथादि यद् वस्तु-  
समूहैर्निष्पादितानाम्, तथा-अ येषा च वह्ना ' चण्डिदियपाउग्गाण ' चक्षुरि  
न्द्रियप्रायोग्याणां=नयनानन्दजनकानां द्रव्याणां शरटीशाकट भरन्ति । तथा  
वह्ना ' कोट्टपुडाण य ' कोट्टपुटानां = सुगन्धिद्रव्यविशेषाणां च केतरीपुटानां  
च यामत्-एलापुटानां च, कुङ्कुमपुटानां च, उशीरपुटानां= ' स्वम ' इतिभाषा  
प्रसिद्धसुगन्धिद्रव्याणां च, लङ्गपुटानां चेत्यादि । अन्येषां च वह्ना घ्राणेन्द्रिय  
प्रायोग्याणां द्रव्याणां शरटीशाकट भरन्ति । तथा उटोः खण्डस्य च गुडस्य च  
शर्करायाश्च ' मिसरो ' इति भाषा प्रसिद्धाया ' मच्छडियाण य ' मत्स्यण्डिकायाः=  
' काल्पीमिसरी ' इति भाषा प्रसिद्धाया, पुष्पोत्तर-पद्मोत्तराणां=गुलकन्द ' इति  
प्रसिद्धानां च, अन्येषां च जिह्वेन्द्रियप्रायोग्याणां द्रव्याणां शरटीशाकट भरन्ति ।  
तथा वह्ना ' कोयवियाण य ' कोयविकानां = रूतपूरितपावरणविशेषाणां  
' रजाई ' इति प्रसिद्धानाम्, कम्बलानां=रत्नकम्बलानाम्, पावरणानां=शाटिकानां  
' चदर ' इति प्रसिद्धानाम्, ' नवतयाण य ' नवतयानाम्=ऊर्णमयपर्याणानां

आभूषण आदि कों को-पुत्तलिका की तरह जो सुवर्ण आदि के पतरों  
पर कृत छिद्रादिकों के पूरने से चित्र बनाये जाते हैं वे पूरिम हैं इन  
पूरिमों को और सघातिमों को-लोहकाष्ट आदि की तरह अनेक वस्तुओं  
के समुदाय से निष्पादित चित्रों को तथा और भी नेत्र इन्द्रिय को  
सुहावने लगने वाले द्रव्यों को भरा । ( वह्ण कोट्टपुडाण य, केयई पुडा  
ण य जाव अन्नेसि च वह्ण घाणिदियपाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड  
भरेति, बहुस्स खडस्स य गुलस्स सक्कराए य मच्छडियाए य पुष्फुत्तर  
पउमुत्तराणय अन्नेसि च जिह्वेन्द्रिय पाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड  
भरेति वह्ण कोयवियाण य केवलाणय पावरणाण य नवतयाण य

ओने-टोपीओने, डाथो, पगो अने आगणीओमा पडेरवाना आभूषण वगे  
रेने पूतणीनी जेम जे सुवर्ण वगेरेना पतरा उपर डाथो पाडीने तेमने  
पूरीने बनाववामा आवेला चित्रो ओटले डे पूरिओने अने सध तिओने  
लोण्ड, डाध वगेरेथी बनाववामा आवेला रथ वगेरेनी जेम धली वस्तुओने  
ओकनित करीने तेमना वडे बनाववामा आवेला चित्रोने तेमज भील पणु  
धणु नेत्र इन्द्रियने गमे तेवा द्रव्योने लया

( वह्ण कोट्टपुडाण य, केयई पुडाण य जाव अन्नेसि च वह्ण घाणिदिय  
पाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड भरेति, बहुस्स खडस्स य गुलस्स सक्कराए य  
मच्छडियाए य पुष्फुत्तगपउमुत्तराण य अन्नेसि च जिह्वेन्द्रियपाउग्गाण दव्वाण  
सगडीसागड भरेति वह्ण कोयवियाण य केवलाण य पावरणाण य नवतयाण

गोधूमादीनामद्वृकस्य 'आटा' इति प्रसिद्धस्य, 'गोरसस्म य' गोरसस्म=घृता-  
दिकस्य च यावत् अन्येषां च बहूनां पोतवहनप्रायोग्याणां द्रव्याणां पोतवहन  
भरन्ति, भूत्वा 'दक्खिणाणुकूलेण' दक्षिणानुकूलेन=सानुकूलेन वातेन यत्रैव  
कालिकद्वीपस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तत्र पोतवहन 'लवेति' लम्पयन्ति=  
तीरस्थापितशङ्कुषु पतन्ति, पद्व्या तान्=नौकास्थितान् उत्कृष्टान्=उत्तमोत्तमान्  
शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान् 'एगट्टियार्हि' एगट्टिकाभिः=लघुनौकाभिः 'कालिय-  
दीवे' कालिकद्वीपे 'उत्तारेति' उत्तारयन्ति=नाकातो निस्सार्य भूमौ स्थापयति ।

यावत् और अनेक पोतवहन प्रायोग्य द्रव्यो को उम नौका में भरदिया ।  
( भरित्ता दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ  
उवागच्छित्ता पोयवहन लवेति, लवित्ता ताड उक्किट्ठाइ सदफरिसरस  
रूप गधाइ एगट्टियार्हि कालियदीवे उत्तारेति । जहिं २ च ण ते आसा  
आसायति वा सयति वा चिट्ठति वा तुयट्ठति वा तहिं २ च ण ते कोडु  
वियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव वित्तवीणाओ य अन्नाणि य बहूणि  
सोइदिय पाउग्गाणि समुदीरेमाणा चिट्ठति ) भर करके फिर ये लोग जत्र  
पीछे से आनेवाला अनुकूल वायु वहा तब वहा से चलकर जहा  
कालिक द्वीप था वहा आये-वहा आकर के इन लोगों ने  
लगर डाल दिया-लगर डालकर पोत में से शब्द के साधन भूत वीणा  
आदिको को, अच्छे स्पर्श के साधनभूत रुई से भरे हुए रजाई आदि  
वस्त्रों को रसनाइन्द्रिय को सुहावने लगनेवाले खाड आदि पदार्थों को

धडना डोटने, गोरस घी वगेरेने यावत् भील पणु धणु पडाणु यात्रामा  
काम लागे तेवा द्रव्योने ते नौकाभा लया

( भरित्ता दक्खिणाणुकूले ण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ,  
उवागच्छित्ता पोयवहन लवेति, लवित्ता ताड उक्किट्ठाइ सदफरिमरमरूपगधाइ  
एगट्टियार्हि कालियदीवे उत्तारेति । जहिं २ च ण ते आसा आसायति वा  
सयति वा चिट्ठति वा तुयट्ठति वा तहिं २ च ण ते कोडुवियपुरिसा ताओ  
वीणाओ य जाव वित्तवीणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोइदिय पाउग्गाणि य  
दब्बाणि समुदीरेमाणा चिट्ठति )

लरीने तेओ भधा ल्यारे पाछजधी वडेते। अनुकूल पवन वडेवा लाग्ये।  
त्यारे त्याथी खाना थधने ल्या कालिक द्वीप डते। त्या आव्या त्या आवीने  
ते लोकोओ लगर नाभ्यु लगर नाभीने पडाणुमाथी शब्दना साधन रुप  
वीणा वगेरेने, कामण स्पर्शना साधनभूत रुथी लरेला रजध वगेरे वस्त्रोने,  
रसना ( लल ) इन्द्रियने गभता पाड वगेरे पदार्थोने, नेत्र इन्द्रियने आन ६

ચ્યન્તે, તેણાં કૌશેયવદ્ધાણાં ' રેશમીવદ્ધ ' ઇતિ માયા પ્રસિદ્ધાનાં ચ, તથા-  
અન્યેષા ચ સ્પર્શેન્દ્રિયપાયોગ્યાણાં દ્રવ્યાણાં શકટીશાકટ મરન્તિ, મૃત્વા શકટીશાકટ  
યોજયન્તિ, યોજયિત્વા યજૈવ ગમ્મીરવ = ગમ્મીરનામક પોતસ્થાન તન્નૈવોપાગચ્છન્તિ,  
ઉપાગત્ય શકટીશાકટ મોચયન્તિ, મોચયિત્વા ' પોયવહ્ણં ' પોતવહ્ણનં = નૌકાં  
સજ્જયન્તિ, સજ્જયિત્વા તેષામ્ ' ઉક્કિદ્ધાણ ' ઉત્કિદ્ધાણા = શ્રેષ્ઠાનાં શબ્દસ્પર્શરસરૂપ  
ગન્ધાના કાણ્ઠસ્ય ચ પાનીયસ્ય ચ તદ્દુલાનાં ચ ' સામિયમ્મ ય ' સમીતસ્ય =

શિલાઓં કો, હસ ગમ્મોં કો-રેશમી વદ્ધોં કો, તથા ઔર મી સ્પર્શન  
ઇન્દ્રિય કો આનન્દ દેને ચાલી વસ્તુઓં કો ઉન લોગો ને ગાડી ઔર  
ગાડોં મેં ભરા । ( મરિત્તા સગડીસાગડ જોણતિ, જોહત્તા જેણેવ ગમ્મી-  
રવ પોયદ્ધાણે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા મગડીસાગડ મોણતિ,  
મોહત્તા પોયવહ્ણે સજ્જેતિ, સજ્જિત્તા તેસિં ઉક્કિદ્ધાણ સદ્ધફરિસરસ-  
રૂવગધાણ કદ્ધસ્સ ય તણસ્સ ય પાણિયસ્સ ય તદ્દુલાણય સમિયસ્સ  
ય ગોરસસ્સ ય જાવ અન્નેસિં ચ વહ્ણ પોયવહ્ણપાઝગા ણ પોયવહ્ણ  
મરેતિ ) મરકર કે ફિર ઉન લોગોં ને ગાડી ઔર ગાડોં કો જોત દિયા ।  
જોતકર કે ફિર વે વર્હાં આયે-જહાં ગમ્મીર નામ કા પોતસ્થાન ધા-વદ-  
રગાહ ધા । વહા આકર કે ઉન લોગોં ને ગાડી ઔર ગાડોં કો ઢીલ-રોક  
દિયા । ઔર ફિર નૌકાઓંકો સજાયા-તૈયાર કિયા । ઔર તૈયાર કરકે  
ઘાદમેં ઉન્હોંને ઉન શ્રેષ્ઠ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ, એવ ગધોંકો કાઠકો તૃણ  
કો પાનીય દ્રવ્ય કો તદ્દુલોં કો, મોહું કે આટે કો, ગોરસ ઘૃતાદિક-કો

લીસી શિલાઓને, હસ ગમ્મોને-રેશમી વદ્ધોને તેમજ ખીણ પણ ઘણી સ્પર્શે  
ન્દ્રિયને સુખ પમાડે તેવી ઘણી વસ્તુઓને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓમા ભરી

( મરિત્તા સગડીસાગડ જોણતિ, જોહત્તા જેણેવ ગમ્મીરવ પોયદ્ધાણે તેણેવ  
ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા મગડીસાગડ મોણતિ મોહત્તા પોયવહ્ણ સજ્જેતિ,  
સજ્જિત્તા તેસિં ઉક્કિદ્ધાણ સદ્ધફરિસરસરૂપગધાણ કદ્ધસ્સ ય તણસ્સ ય પાણિ  
યસ્સ ય તદ્દુલાણ ય સમિયસ્સ ય ગોરસસ્સ ય જાવ અન્નેસિં ચ વહ્ણ પોયવહ્ણ  
પાઝગાણ પોયવહ્ણ મરેતિ )

ભરીને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓને ભેતર્યા ભેતરીને તેઓ  
ત્યાથી જ્યા ગમ્મીર નામે પોતસ્થાન ( બદર ) હતું ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને  
તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓને છોડી મૂક્યા અને ત્યારપછી નૌકાઓને  
સુસજ્જિત કરી સુસજ્જિત કર્યા બાદ તેમણે તે ઉત્તમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ,  
રૂપ અને ગધોને, કાષ્ઠને, ઘાસને, પાણીવાળા દ્રવ્યોને, તદ્દુલો ( પાંખા ) ને,



गोधूमादीनामट्टकस्य 'आटा' इति प्रसिद्धस्य, 'गोरसस्त य' गोरसस्य=घृता-  
दिकस्य च यावत् अन्येषां च बहूनां पोतवहनप्रायोग्याणां द्रव्याणां पोतवहन  
भरन्ति, भूत्वा 'दक्षिणाणुकूलेण' दक्षिणाणुकूलेन=मानुकूलेन वातेन यत्रैव  
कालिकद्वीपस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तत्र पोतवहन 'लवेति' लम्बयन्ति=  
तीरस्थापितशङ्कुषु व्रजन्ति, यद्वा तान्=नौकास्थितान् उत्कृष्टान्=उत्तमोत्तमान्  
शब्दस्पर्शरसस्पर्शगन्धान् 'एगट्टियार्हि' एकार्थिकाभिः=लघुनौकाभिः 'कालिय-  
दीवे' कालिकद्वीपे 'उत्तारेति' उत्तारयन्ति=नाकातो निस्सार्य भूमौ स्थापयति ।

यावत् और अनेक पोतवहन प्रायोग्य द्रव्यो को उस नौका में भरदिया ।  
( भरित्ता दक्षिणाणुकूलेण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छड  
उवागच्छित्ता पोयवहन लवेति, लवित्ता ताइ उक्किट्ठाइ सदफरिसरस  
रूप गधाइ एगट्टियार्हि कालियदीवे उत्तारेति । जहिं २ च ण ते आसा  
आसायति वा सयति वा चिट्ठति वा तुयट्ठति वा तहिं २ च ण ते कोडु  
वियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव वित्तवीणाओ य अन्नाणि य वहूणि  
सोइदिय पाउग्गाणि समुदीरेमाणा चिट्ठति ) भर करके फिर ये लोग जत्र  
पीछे से आनेवाला अनुकूल वायु बहा तत्र बहा से चलकर जहा  
कालिक द्वीप था वहा आये-वहा आकर के इन लोगों ने  
लगर डाल दिया-लगर डालकर पोत में से शब्द के साधन भूत वीणा  
आदिको को, अच्छे स्पर्श के साधनभूत रुई से भरे हुए रजाई आदि  
वस्त्रों को रसनाइन्द्रिय को सुहावने लगनेवाले खाड आदि पदार्थों को

धडना डोटने, गोरस धी वगेरेने यावत् भील पण धण्डा वडाणु यात्रामा  
क्षम लागे तेवा द्रव्येने ते नौकाभा लया

( भरित्ता दक्षिणाणुकूले ण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छड,  
उवागच्छित्ता पोयवहन लवेति, लवित्ता ताइ उक्किट्ठाइ सदफरिसरमरूपगधाइ  
एगट्टियार्हि कालियदीवे उत्तारेति । जहिं २ च ण ते आसा आसायति वा  
सयति वा चिट्ठति वा तुयट्ठति वा तहिं २ च ण ते कोडुवियपुरिसा ताओ  
वीणाओ य जाव वित्तवीणाओ य अन्नाणि य वहूणि सोइदिय पाउग्गाणि य  
दब्बाणि समुदीरेमाणा चिट्ठति )

लरीने तेओ भधा ल्यारे पाछणधी वडेते अनुकूल पवन वडेवा लाग्यो  
त्यारे त्याधी रवाना थधने ल्या कालिक द्वीप डते त्या आव्या त्या आवीने  
ते डोडेओ लगर नाण्यु लगर नाभीने वडाणुमाथी शण्डना साधन रुप  
वीणा वगेरेने, डोमण स्पर्शना साधनभूत इथी लरेला रजार्थ वगेरे वस्त्रोने,  
रसना ( लल ) इन्द्रियने गभता भाड वगेरे पदार्थोने, नेत्र इन्द्रियने आनड



જ્યન્તે, તેણાં કૌશેયસ્નાણાં ' રેશમીવદ્ ' इति भाषा मभिधानां च. तथा-  
अन्येषा च स्पर्शेन्द्रियमायोग्याणां द्रव्याणां शकटीशाकट भरन्ति, भृत्वा शकटीशाकटं  
योजयन्ति, योजयित्वा यत्रैव गम्भीरक=गम्भीरनामक पोतस्थान तत्रैवोपागच्छन्ति,  
उवागत्य शकटीशाकट मोचयन्ति, मोचयित्वा ' पोयवहण ' पोतवहन=नौकां  
सज्जयन्ति, सज्जयित्वा तेषाम् ' उक्लिष्टाण ' उत्कृष्टाना=श्रेष्ठाना शब्दस्पर्शरसरूप  
गन्धाना काष्ठस्य च पानीयस्य च तन्दुलानां च ' सामियस्स य ' समीतस्य=

શિલાઓં કો, હસ ગભોં કો-રેશમી વદ્ઓં કો, તથા ઓર મી સ્પર્શન  
ઇન્દ્રિય કો આનન્દ દેને વાલી વસ્તુઓં કો ઉન લોગો ને ગાડી ઓર  
ગાડોં મેં ભરા । ( ભરિત્તા સગડીસાગડ જોઈતિ, જોઈત્તા જેનેવ ગમ્भी-  
રણ પોયદ્વાણે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા સગડીસાગડ મોઈતિ,  
મોઈત્તા પોયવહણે સજ્જેતિ, સજ્જિત્તા તેસિ ઉક્લિષ્ટાણ સદ્ધરિસરસ  
રૂવગધાણ કઢ્ઢસ્સ ય તણસ્સ ય પાણિયસ્સ ય તદુલાણય સમિયસ્સ  
ય ગોરસસ્સ ય જાવ અન્નેસિં ચ વહૂણ પોયવહણપાઝગ્ગા ણ પોયવહણ  
મરેતિ ) ભરકર કે ફિર ઉન લોગોં ને ગાડી ઓર ગાડોં કો જોત દિયા ।  
જોતકર કે ફિર વે વહોં આયે-જહાં ગમ્भीર નામ કા પોતસ્થાન થા-વદ-  
રગાહ થા । વહા આકર કે ઉન લોગોં ને ગાડી ઓર ગાડોં કો ઢીઠ-રોક  
દિયા । ઓર ફિર નૌકાઓંકો સજાયા-તૈયાર કિયા । ઓર તૈયાર કરકે  
ઘાદમેં ઉન્હોંને ઉન શ્રેષ્ઠ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ, ઇવં ગધોંકો કાષ્ઠકો તૂળ  
કો પાનીય દ્રવ્ય કો તદુલોં કો, ગેહું કે આદે કો, ગોરસ ઘૃતાદિક-કો

લીસી શિલાઓને, હસ ગભોને-રેશમી વદ્ઓને તેમજ ખીણ પણ ઘણી સ્પર્શે  
ન્દ્રિયને સુખ પમાડે તેવી ઘણી વસ્તુઓને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓમા ભરી

( ભરિત્તા સગડીસાગડ જોઈતિ, જોઈત્તા જેણેવ ગમ્भीરણ પોયદ્વાણે તેણેવ  
ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા સગડીસાગડ મોઈતિ મોઈત્તા પોયવહણ સજ્જેતિ,  
સજ્જિત્તા તેસિં ઉક્લિષ્ટાણ સદ્ધરિસરસરૂપગધાણ કઢ્ઢસ્સ ય તણસ્સ ય પાણિ  
યસ્સ ય તદુલાણ ય સમિયસ્સ ય ગોરમસ્સ ય જાવ અન્નેસિં ચ વહૂણ પોયવહણ  
પાઝગ્ગાણ પોયવહણ મરેતિ )

ભરીને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓને જોતર્યાં જોતરીને તેઓ  
ત્યાથી જ્યાં ગભીર નામે પોતસ્થાન ( ખદર ) હતું ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને  
તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓને છોડી મૂક્યા અને ત્યારપછી નૌકાઓને  
સુસજ્જિત કરી સુસજ્જિત કર્યા બાદ તેમણે તે ઉત્તમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ,  
રૂપ અને ગધોને, કાષ્ઠને, ઘાસને, પાણીવાળા દ્રવ્યોને, તદુલો ( તૌળ ) ને,

गोधूमादीनामदृक्स्य 'आटा' इति प्रमिद्धस्य, 'गोरसस्म य' गोरसस्म=घृता-  
दिकस्य च यावत् अन्येषा च गृह्णा पोतवहनप्रायोग्याणां द्रव्याणां पोतवहन  
भरन्ति, भृत्मा 'दक्खिणाणुकूलेण' दक्षिणानुकूलेन=सानुकूलेन वातेन यत्रैव  
कालिकद्वीपस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तत्र पोतवहन 'लवेति' लम्बयन्ति=  
तीरस्थापितगङ्गुषु व्रजन्ति, वद्ध्वा तान्=नौकासितान् उत्कृष्टान्=उत्तमोत्तमान्  
शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान् 'एगद्धियाहिं' एगार्थिकाभिः=लघुनौकाभिः 'कालिय-  
दीवे' कालिकद्वीपे 'उत्तारेति' उत्तारयन्ति=नौकातो निस्सार्य भूमौ स्थापयति ।

यावत् और अनेक पोतवहन प्रायोग्य द्रव्यो को उम नौका में भरदिया ।  
( भरित्ता दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ  
उवागच्छित्ता पोयवहन लवेति, लवित्ता ताइ उक्किट्ठाइ सहफरिसरस  
रूप गधाइ एगद्धियाहिं कालियदीवे उत्तारेति । जहिं २ च ण ते आसा  
आसायति वा सयति वा चिट्ठति वा तुयट्ठति वा तहिं २ च ण ते कोडु  
त्रियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव वित्तवीणाओ य अन्नाणि य वहूणि  
सोइदिय पाउग्गाणि समुदीरेमाणा चिट्ठति ) भर करके फिर ये लोग जत्र  
पीछे से आनेवाला अनुकूल वायु वहा तब वहा से चलकर जहा  
कालिक द्वीप था वहा आये-वहा आकर के इन लोगों ने  
लगर डाल दिया-लगर डालकर पोत में से शब्द के साधन भूत वीणा  
आदिको को, अच्छे स्पर्श के साधनभूत रुई से भरे हुए रजाई आदि  
वस्त्रों को रसनाइन्द्रिय को सुहावने लगनेवाले खाड आदि पदार्थों को

धड़ना डोटने, गोरस धी वगेरेने यावत् भील पणु धणु वडाणु यात्राभा  
काम लागे तेवा द्रव्येने ते नौकाभा लया

( भरित्ता दक्खिणाणुकूले ण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ,  
उवागच्छित्ता पोयवहन लवेति, लवित्ता ताइ उक्किट्ठाइ सहफरिसरमरूपगधाइ  
एगद्धियाहिं कालियदीवे उत्तारेति । जहिं २ च ण ते आसा आसायति वा  
सयति वा चिट्ठति वा तुयट्ठति वा तहिं २ च ण ते कोडुत्रियपुरिसा ताओ  
वीणाओ य जाव वित्तवीणाओ य अन्नाणि य वहूणि सोइदिय पाउग्गाणि य  
दव्वाणि समुदीरेमाणा चिट्ठति )

लरीने तेओ पधा न्यारे पाछणधी वहेतो अनुकूल पवन वहेवा लाग्ये।  
त्यारे त्याथी रवाना थधने न्या कालिक द्वीप डेतो त्या आव्या त्या आवीने  
ते डोकेओ लगर नाण्यु लगर नाणीने वडाणुभाथी शब्दना साधन उप  
वीणा वगेरेने, कामण स्पर्शना साधनभूत रूथी लरेला रजध वगेरे वस्त्रोने,  
रसना ( श्रुति ) इन्द्रियने गमता खाड वगेरे पदार्थोने, नेत्र इन्द्रियने आनड

च्यन्ते, तेषां कौशेयरस्त्राणां ' रेशमीवस्त्र ' इति भाषा पसिद्धानां च, तथा-  
अन्येषां च स्पर्शेन्द्रियप्रायोग्याणां द्रव्याणां शकटीशकट भ्रमन्ति, भृत्वा शकटीशकटं  
योजयन्ति, योजयित्वा यत्रैव गम्भीरक=गम्भीरनामक पोतस्थानं तत्रैवोपागच्छन्ति,  
उपागत्य शकटीशकटं मोचयन्ति, मोचयित्वा ' पोयवहण ' पोतवहन=नौकां  
सज्जयन्ति, सज्जयित्वा तेषाम् ' उक्लिष्टाण ' उक्लिष्टानां=श्रेष्ठानां शब्दस्पर्शरूप  
गन्धानां काष्ठस्य च पानीयस्य च तन्दुलानां च ' सामियस्स य ' समीतस्य=

शिलाओं को, हस गभों को-रेशमी वस्त्रों को, तथा और भी स्पर्शन  
इन्द्रिय को आनन्द देने वाली वस्तुओं को उन लोगो ने गाड़ी और  
गाड़ों में भरा। ( भरित्ता सगढीसागडं जोएति, जोइत्ता जेणेव गभी-  
रए पोयवहणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सगढीसागडं मोएति,  
मोइत्ता पोयवहणे सज्जेति, सज्जित्ता तेसिं उक्लिष्टाण सदफरिसरस  
रूपगधाण कट्टस्स य तणस्स य पाणियस्स य तदुलाणय समियस्स  
य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च वहूण पोयवहणपाउग्गा ण पोयवहण  
भरेति ) भरकर के फिर उन लोगों ने गाड़ी और गाड़ों को जोत दिया।  
जोतकर के फिर वे वहाँ आये-जहाँ गभीर नाम का पोतस्थान था-घद-  
रगाह था। वहाँ आकर के उन लोगों ने गाड़ी और गाड़ों को ढील-रोक  
दिया। और फिर नौकाओंको सजाया-तैयार किया। और तैयार करके  
घादमें उन्होंने उन श्रेष्ठ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, एवं गंधोंको काष्ठको तृण  
को पानीय द्रव्य को तदूलों को, गोहूँ के आटे को, गोरस घृतादिक-को

लीली शिलाओंने, हस गभोंने-रेशमी वस्त्रोंने तेमन् नील पल्लु घली स्पर्श  
न्द्रियने सुख पमाडे तेवी घली वस्तुओंने ते ढोकेओ गाडी अने गाडाओमा लरी

( भरित्ता सगढीसागडं जोएति, जोइत्ता जेणेव गभीरए पोयवहणे तेणेव  
उवागच्छति, उवागच्छित्ता सगढीसागडं मोएति मोइत्ता पोयवहणे सज्जेति,  
सज्जित्ता तेसिं उक्लिष्टाण सदफरिसरसरूपगधाण कट्टस्स य तणस्स य पाणि  
यस्स य तदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च वहूण पोयवहण  
पाउग्गाण पोयवहण भरेति )

लरीने ते ढोकेओ गाडी अने गाडाओने जेतर्था जेतरीने तेओ।  
त्याथी न्या गभीर नामे पोतस्थान ( पहर ) हुतुं त्या आव्या। त्या आवीने  
ते ढोकेओ गाडी अने गाडाओने छोडी भूक्या अने त्यारपछी नौकाओने  
सुसज्जित करी सुसज्जित करी आद तेमण्णे ते उत्तम शब्द, स्पर्श, रस,  
रूप अने गंधेने, काष्ठने, घासने, पाणीवाणा द्रव्येने, तदुलो ( त आ ) ने,

कर्माणि यावत् स प्राप्तिमानि च अन्यानि च ग्रहनि चक्षुरिन्द्रियप्रायोग्याणि च द्रव्याणि स्थापयति=एकत्री कुर्वन्ति, तेषामश्वाणा परिपर्यन्तेन=सर्वत्र समन्तात् पार्श्वे स्थापयन्ति च, स्थापयित्वा ते निश्चलाः, निस्पन्दाः, तूष्णीकास्तिष्ठन्ति२ ।

तथा-यत्र यत्र तेऽश्वा आसते स्वपन्ति तिष्ठन्ति त्वग्वर्तयन्ति च तत्र तत्र खलु तेषा ग्रहणा कोष्ठपुटाना च यावद् अन्येषा च ग्रहणा घ्राणेन्द्रियप्रायोग्याणा

जाव सघाट्माणि य अन्नाणि य ग्रहणि चक्विखदिय पाउग्गाणि य दब्बाणि ठवेति, ठवित्ता तेसि परिपेरतेण पासण ठवेति, ठवित्ता णिचचला णिप्फदा तुसिणीया चिट्ठति ) उस के चारों तरफ चारो दिशाओं में- वीणा आदिको को स्थापित करते रहे । स्थापित करके फिर वे वही पर निश्चल-चलन क्रिया से रहित होकर हस्तादि अवयव को कपित किये बिना ही चुपचाप बैठ गये ।

इस तरह-जिस २ धनमें वे अश्व बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहा २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उस आनीत बहुतसी कृष्ण, नील, पीत, रक्त, शुक्ल वर्णवाली काष्ठकर्म आदि सघातिम पर्यंत की सामग्री को जो चक्षुइन्द्रिय को आनन्दप्रद थी, तथा और भी चक्षुइन्द्रि को सुहावनी लगनेवाली जो वस्तुएँ थी उन को एकत्रित किया और उन्हें उन अश्वो की चारो दिशाओ मे रख दिया । रखकर के फिर वे निश्चल, निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये । (जत्थ २ ते आसा आसयति ४ तत्थ

विय पुरिसा ग्रहणि ऋण्हाणि य ५ कट्टकम्माणिय जाव सघाट्माणि य अन्नाणि य ग्रहणि चक्विखदिय पाउग्गाणि य दब्बाणि ठवेति, ठवित्ता तेसि परिपेरतेण पासण ठवेति ठवित्ता णिचचला, णिप्फदा तुसिणीया चिट्ठति )

तेमनी योमेर, यारे यार दिशाओमा वीणाओ वगेरे भूमी भूमीने तेओ त्या ७ निश्चल-डवन चलननी क्रियाथी रहित थधने अगेने डलाव्वा वगर चुपचाप त्यां भेसी गया आ प्रमाणे जे जे वनमा अश्वो (घोडाओ) भेसता डता, सूता डता, रडेता डता, आराम करता डता ते ते वनमा ते कौटुम्बिक पुरुषोओ साथे लावेली धणी काणी, नीली, पीणी राती, सदेह रगनी काष्ठकर्म वगेरे सघातिम सुधीनी भूमी वस्तुओने डे जेओ यक्षु (आण) धन्द्रियने सुण आपनारी डती तेम ४ णीण पणु यक्षु धन्द्रियने सुण आपनारी जेटली सारी वस्तुओ डती तेमने लेगी करी अने अश्वोनी योमेर तेमने गोडवी दीधी गोडवीने तेओ त्या ७ निश्चल, निस्पन्द थधने चुपचाप त्या ७ भेसी गया

( जत्थ २ ते आसा आमयति ४ तत्थ २ ण तेसि ग्रहण फोडपुटान य जाव अन्नेसि च ग्रहण घाणिदियपाउग्गाण दब्बाण पुजेय णियरे य करेति,

‘ જર્હિ ૨ ચ ણ ’ યત્ર યત્ર ચ ગ્ને સ્વલુ તે ‘ આમા ’ અઘ્રાઃ=તારયા અઘ્રાઃ ‘ આસયતિ યા ’ આસતે=ઉપરિશન્તિ ‘ સયંતિ યા ’ ઘેરતેસ્વપન્તિ વા ‘ ચિટ્ઠતિ વા ’ તિષ્ઠન્તિ યા, ‘ તુયદ્ઠતિ યા ’ ત્વગ્ચર્તયન્તિ=શરીર પ્રસાર્ય સ્વપન્તિ વા ‘ તર્હિ ૨ તત્ર તત્ર ચ સ્વલુ તે કૌદુમ્બિકપુરુષાઃ ‘ તામો ’ તાઃ=દક્ષિતીર્ષનગરાદાનીતા વીણાશ્ચ યાત્-વૃત્તવીણાશ્ચ, તથા અન્યાનિ ચ ગૃહ્ણિ શ્રોત્રેન્દ્રિયપ્રાયોગ્યાણિ ચ દ્રવ્યાણિ ‘ સમુદીરેમાણા ’ મમુદીરયન્ત=મધુરધ્વનિના પ્રાદયન્તઃ તિષ્ઠન્તિ, ઠેષા મધ્વાના ‘ પરિપેરતેણ ’ પરિપર્યન્તેન=સર્વતઃ સમ તાત્ ચતુર્દિશુ इत्यर्थ ‘ પાસપ્ ’ પાર્થે સમીપે વીણાદીનિ સ્થાપયન્તિ, સ્થાપયિત્વા તે પુરુષાઃ ‘ નિચ્ચલા ’ નિચ્ચલાઃ=ચલનક્રિયારહિતાઃ ‘ ગિપ્ફદા ’ નિઃ સ્પન્દા =હસ્તાગ્રયવમચારરહિતાઃ ‘ તુસિણીયા ’ યત્ર ચ વ્યાપારરહિતાઃ ‘ ચિટ્ઠતિ ’ તિષ્ઠન્તિ ।

તથા-યત્ર યત્ર તેઽઘ્રાઃ આસતે વા યાત્ ત્વગ્ચર્તયન્તિ=લુટન્તિ તત્ર તત્ર સ્વલુ તે કૌદુમ્બિકપુરુષાઃ ગૃહ્ણિ કૃષ્ણાણિ ચ ૫=કૃષ્ણનીલપીતરક્તશુભ્રાણીનિ કાષ્ઠ-

નેત્ર હન્દ્રિય કો આનન્દ દેનેવાછે નીલે પીલે આદિ રંગવાલે ચિત્રો કો એવ ઘ્રાણહન્દ્રિયો કો સુલ્લકારક કાષ્ઠપુટ્ર આદિ સુગંધિત દ્રવ્યો કો છોટી ૨ નૌકાઓ દ્વારા પોત મેં સે ઉતાર કર કાલિક દ્વીપ મેં રલ્લ દિયા । બાદ મેં જહા ૨ વે જ્ઞાતિ અશ્વ ચેઠતે થે સોતે થે, ઠહરતે થે, લેટતે થે, વહા ૨ વે કૌદુમ્બિક પુરુષ ઉન્ન હસ્તિશીર્ષ નગર સે લાયે હુણ વીણા સે લેકર વૃત્તવીણા પર્યન્ત કે સાધનો કો તથા ઓર ખી શ્રોત્ર હન્દ્રિય કો સુહા વની લગનેવાલી સાધન સામગ્રી કો મધુર ધ્વનિ સે વજાતે હુણ ઠહર ગયે । ઓર (તેસિં પરિપેરતેણ પાસપ્ ઠવેતિ, ઠવિત્તા ગિચ્ચલા, ગિપ્ફદા, તુસિણીયા ચિટ્ઠતિ, જત્ય ૨ તે આસા આસયતિ વા જાવ તુયદ્ઠતિ વા તત્ય ૨ ણ તે કૌદુમ્બિક પુરિસા ગૃહ્ણિ કિણ્હાણિ ચ ૫ કટ્ટકમ્માણિ ચ

પનાડનાર નીલા, પીળા વગેરે રંગના ચિત્રોને અને ઘ્રાણ ( નાક ) હન્દ્રિયને સુખ આપે તેવા કાષ્ઠપુટ્ર વગેરે સુગંધિત દ્રવ્યોને વહાણુમાથી નાની નાની હોડીઓમા મૂકીને કાલિક દ્વીપ ઉપર મૂકી દીધી ત્યારપછી જ્યાં તે જાતિ અશ્વો બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા ત્યાં તે કૌદુમ્બિક પુરુષો તે હસ્તિશીર્ષ નગરથી લઈ આવેલા વીણાથી માંડીને વૃત્ત વીણા સુધીના સાધનોને તેમજ ખીજા પણ શ્રોત્ર ( કાન ) હન્દ્રિયને ગમે તેવી સાધન સામગ્રીને મધુર ધ્વનિથી વગાડતા ત્યાં રોકાઈ ગયા અને—

( તેસિં પરિપેરતેણ પાસપ્ ઠવેતિ, ઠવિત્તા ગિચ્ચલા, ગિપ્ફદા, તુસિણીયા ચિટ્ઠતિ, જત્ય ૨ તે આસા આસયતિ વા જાવ તુયદ્ઠતિ વા તત્ય ૨ કોડ-



कर्माणि यावत् स यातिमानि च अन्यानि च बहूनि चक्षुरिन्द्रियप्रायोग्याणि च द्रव्याणि स्थापयति=एकत्री कुर्वन्ति, तेषामश्वाणा परिपर्यन्तेन=सर्वतः समन्तात् पार्श्वे स्थापयन्ति च, स्थापयित्वा ते निश्चलाः, निस्पन्दाः, तूष्णीकास्तिष्ठन्ति २ ।

तथा-यत्र यत्र तेऽश्वा आसते स्वपन्ति तिष्ठन्ति त्वग्वर्त्तयन्ति च तत्र तत्र खलु तेषा बहूना कोष्ठपुटाना च यावद् अन्येषा च बहूना घ्राणेन्द्रियप्रायोग्याणा

जाव संघाडमाणि य अन्नाणि य बहूणि चर्त्विषदिय पाउग्गाणि य द्रव्याणि ठवैति, ठवित्ता तेसि परिपरतेण पासए ठवैति, ठवित्ता णिचत्ता णिप्फदा तुसिणीया चिट्ठति ) उस के चारों तरफ चारो दिशाओं में-वीणा आदिको को स्थापित करते रहे । स्थापित करके फिर वे वही पर निश्चल-चलन क्रिया से रहित होकर हस्तादि अवयव को कपित किये बिना ही चुपचाप बैठ गये ।

इस तरह-जिस २ वनमें वे अश्व बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहा २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उस आनीत बहुतसी कृष्ण, नील, पीत, रक्त, शुक्ल वर्णवाली काष्ठकर्म आदि संघातिम पर्यंत की सामग्री को जो चक्षुइन्द्रिय को आनन्दप्रद थी, तथा और भी चक्षुइन्द्रि को सुहावनी लगानेवाली जो वस्तुएँ थी उन को एकत्रित किया और उन्हें उन अश्वों की चारो दिशाओं में रख दिया । रखकर के फिर वे निश्चल, निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये । ( जत्थ २ ते आसा आसयति ४ तत्थ

विय पुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्टकम्माणिय जाव सयाडमाणि य अन्नाणि य बहूणि चर्त्विषदिय पाउग्गाणि य द्रव्याणि ठवैति, ठवित्ता तेसि परिपरतेण पासए ठवैति ठवित्ता णिचत्ता, णिप्फदा तुसिणीया चिट्ठति )

तेमनी योमेर, चारे चार दिशाओमा वीणाओ वगेरे भूमी भूमीने तेओ त्या ७ निश्चल-इतन चलननी क्रियाथी रहित थधने अगेने हलाव्या वजर चुपचाप त्या जेसी गया आ प्रमाणे जे जे वनमा अश्वो (घोडाओ) जेसता हता, सूता हता, रहेता हता, आराम करता हता ते ते वनमा ते कौटुम्बिक पुरुषोओ साथे लावेली घण्टी काणी, नीली, पीली राती, सदेह रगनी काष्ठकर्म वगेरे संघातिम सुधीनी अथी वस्तुओने के जेओ यशु (आभ) इन्द्रियने सुभ आपनारी हती तेम ७ जीण पणु यशु इन्द्रियने सुभ आपनारी जेटली सारी वस्तुओ हती तेमने लेगी करी अने अश्वोनी योमेर तेमने गोठवी छिधी गोठवीने तेओ त्या ७ निश्चल, निस्पन्द थधने चुपचाप त्या ७ जेमी गया

( जत्थ २ ते आसा आसयति ४ तत्थ २ ण तेसि बहूण फोडुपुडान य जाव अन्नेसि च बहूण घाणिदियपाउग्गाण द्रव्याण पुजेय णियरे य करेति,

‘ જર્ઠિ ૨ ચ ણ ’ યત્ર યત્ર ચ ગ્ને સ્વલુ તે ‘ આગા ’ અઘાઃ=જાત્યા અઘાઃ  
 ‘ આસયતિ યા ’ આસતે=ઉપરિશન્તિ ‘ સયંતિ યા ’ યેરતેસ્પન્નિ વા ‘ ચિટ્ઠતિ યા ’  
 તિષ્ઠન્તિ યા, ‘ તુયદ્ઠતિ યા ’ ત્વગ્મર્તયન્તિ=શરીર મસાર્ય સ્પન્નિ વા ‘ તર્ઠિ ૨  
 તત્ર તત્ર ચ સ્વલુ તે કૌદુમ્બિકપુરુષાઃ ‘ તામો ’ તાઃ=દક્ષિતશીર્ષનગરાદાનીતા  
 વીણાશ્ર યાત્-વૃત્તવીણાશ્ર, તથા અન્યાનિ ચ ગ્હનિ શ્રોત્રેન્દ્રિયપ્રાયોગ્યાણિ ચ  
 દ્રવ્યાણિ ‘ સમુદોરેમાણા ’ મમુદીરયન્ત=મધુરધ્વનિના પ્રાદય-તઃ તિષ્ઠન્તિ, ઠેવા  
 મશ્વાના ‘ પરિપેરતેણ ’ પરિપર્યન્તેન=સર્વતઃ સમ-તાત્ ચતુર્દિશુ इत्यर्थ ‘ પાસણ ’  
 પાર્શ્વે સમીપે વીણાદીનિ સ્થાપયન્તિ, સ્થાપયિત્વા તે પુરુષાઃ ‘ નિચ્ચલા ’  
 નિચ્ચલાઃ=ચલનક્રિયારહિતાઃ ‘ ણિપ્ફદા ’ નિઃ સ્પન્દા =હસ્તાદ્યયવમચારરહિતાઃ  
 ‘ તુસિણીયા ’ વચન વ્યાપારરહિતાઃ ‘ ચિટ્ઠતિ ’ તિષ્ઠન્તિ ।

તથા-યત્ર યત્ર તેઽઘાઃ આસતે વા યાત્ ત્વગ્મર્તયન્તિ=લુઠન્તિ તત્ર તત્ર સ્વલુ  
 તે કૌદુમ્બિકપુરુષાઃ ગ્હનિ કૃષ્ણાણિ ચ ૫=કૃષ્ણનીલપીતરક્તશુદ્ધાણિ કાઠ-

નેત્ર હન્દ્રિય કો આનન્દ દેનેવાછે નીલે પીલે આદિ રંગવાલે ચિત્રો કો એવ  
 ઘ્રાણહન્દ્રિયો કો સુખકારક કાઠપુટ્ર આદિ સુગંધિત દ્રવ્યો કો છોટી ૨  
 નૌકાઓ દ્વારા પોત મેં સે ઉતાર કર કાલિક દ્વીપ મેં રગ્વ દિયા । બાદ  
 મેં જહા ૨ વે જાતિ અશ્વ ઘેઠતે થે મોતે થે, ટહરતે થે, લેટતે થે, વહા ૨  
 વે કૌદુમ્બિક પુરુષ ઉન દક્ષિતશીર્ષ નગર સે લાયે હુણ વીણા સે લેકર  
 વૃત્તવીણા પર્યન્ત કે સાધનો કો તથા ઓર ખી શ્રોત્ર હન્દ્રિય કો સુદા  
 વની લગનેવાલી સાધન સામગ્રી કો મધુર ધ્વનિ સે બજાતે હુણ ટહર  
 ગયે । ઓર (તેસિં પરિપેરતેણ પાસણ ઠવેતિ, ઠવિત્તા ણિચ્ચલા, ણિપ્ફદા,  
 તુસિણીયા ચિટ્ઠતિ, જત્ય ૨ તે આસા આસયંતિ વા જાવ તુયદ્ઠતિ વા  
 તત્ય ૨ ણ તે કૌદુમ્બિક પુરિસા ગ્હનિ કિણ્હાણિ ચ ૫ કટ્ટકમ્માણિ ચ

પમાડનાર નીલા, પીળા વગેરે રંગના ચિત્રોને અને ઘ્રાણુ ( નાક ) હન્દ્રિયને  
 સુખ આપે તેવા કાઠપુટ્ર વગેરે સુગંધિત દ્રવ્યોને વહાણુમાથી નાની નાની  
 હોડીઓમા મૂકીને કાલિક દ્વીપ ઉપર મૂકી દીધી ત્યારપછી જ્યાં તે જાતિ  
 અશ્વો ખેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા ત્યાં તે  
 કૌદુમ્બિક પુરુષો તે દક્ષિતશીર્ષ નગરથી લઈ આવેલી વીણાથી માડીને વૃત્ત  
 વીણા સુધીના સાધનોને તેમજ ખીજા પણ શ્રોત્ર ( કાન ) હન્દ્રિયને ગમે  
 તેવી સાધન સામગ્રીને મધુર ધ્વનિથી વગાડતા ત્યાં રોકાઈ ગયા અને—

( તેસિં પરિપેરતેણ પાસણ ઠવેતિ, ઠવિત્તા ણિચ્ચલા, ણિપ્ફદા, તુસિણીયા  
 ચિટ્ઠતિ, જત્ય ૨ તે આસા આસયંતિ વા જાવ તુયદ્ઠતિ વા તત્ય ૨ કોડ-

कर्माणि यावत् सप्तातिमानि च अन्यानि च गृह्णन्ति चक्षुरिन्द्रियप्रायोग्याणि च द्रव्याणि स्थापयन्ति=एकत्री कुर्वन्ति, तेषामश्वाना परिपर्यन्तेन=सर्वतः समन्तात् पार्श्वे स्थापयन्ति च, स्थापयित्वा ते निश्चलाः, निस्पन्दाः, तूष्णींवास्तिष्ठन्ति २ ।

तथा-यत्र यत्र तेऽश्वा आसते स्वपन्ति तिष्ठन्ति त्वग्वर्त्तयन्ति च तत्र तत्र खलु तेषां गृह्णन्तां कोष्ठपुटानां च यावद् अन्येषां च गृह्णन्तां घ्राणेन्द्रियप्रायोग्याणां

जाव सघाडमाणि य अन्नाणि य गृह्णन्ति चक्खिदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेति, ठवित्ता तेसिं परिपेरतेण पासए ठवेति, ठवित्ता णिचल्ला णिप्फदा तुसिणीया चिट्ठति ) उस के चारों तरफ चारों दिशाओं में-वीणा आदिको को स्थापित करते रहे । स्थापित करके फिर वे वहीं पर निश्चल-चलन क्रिया से रहित होकर हस्तादि अवयव को कपित किये बिना ही चुपचाप बैठ गये ।

इस तरह-जिस २ वनमें वे अश्व बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहा २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उस आनीत बहुतसी कृष्ण, नील, पीत, रक्त, शुक्ल वर्णवाली काष्ठकर्म आदि सघातिम पर्यंत की सामग्री को जो चक्षुइन्द्रिय को आनन्दप्रद थी, तथा और भी चक्षुइन्द्रि को सुहावनी लगनेवाली जो वस्तुएँ थी उन को एकत्रित किया और उन्हें उन अश्वों की चारों दिशाओं में रख दिया । रखकर के फिर वे निश्चल, निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये । (जत्थ २ ते आसा आसयति ४ तत्थ

विय पुरिसा गृह्णन्ति किण्हाणि य ५ कट्टकम्माणिय जाव सप्तादमाणि य अन्नाणि य गृह्णन्ति चक्खिदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेति, ठवित्ता तेसिं परिपेरतेण पासए ठवेति ठवित्ता णिचल्ला, णिप्फदा तुसिणीया चिट्ठति )

तेमनी योमेर, थारे थार दिशाओमा वीणुओ वगेरे भूमी भूमीने तेओ त्या ७ निश्चल-इतन चलननी क्रियाथी रहित थधने अ गेने डलावा वगर चुपचाप त्या भेसी गया आ प्रभाणे ने ने वनमा अश्वो (घोडाओ) भेसता डता, सूता डता, रडेता डता, आराम करता डता ते ते वनमा ते कौटुम्बिक पुरुषोओ साथे लावेली धणी काणी, नीली, पीली राती, सदेह रगनी काष्ठकर्म वगेरे सघातिम सुधीनी जमी वस्तुओने डे नेओ अशु (आज) इन्द्रियने सुभ आपनारी डती तेमने भीण पणु अशु इन्द्रियने सुभ आपनारी नेटली सारी वस्तुओ डती तेमने लेगी करी अने अश्वोनी योमेर तेमने गोठवी दीधी गोठवीने तेओ त्या ७ निश्चल, निस्पन्द थधने चुपचाप त्या ७ भेसी गया

( जत्थ २ ते आसा आसयति ४ तत्थ २ ण तेसिं गृह्णन्तां कोष्ठपुटानां य जाव अन्नेसिं च गृह्णन्तां घ्राणिदियपाउग्गाणि दव्वाणि पुजेय णियरे य करेति,

‘ जहि २ च णं ’ यत्र यत्र च गने खलु ते ‘ आमा ’ अघ्राः=उत्पा अघ्राः  
 ‘ आसयंति वा ’ आसते=उपविशन्ति ‘ सयंति वा ’ शेरतेस्पन्नि वा ‘ चिद्वृत्ति वा ’  
 तिष्ठति वा, ‘ तुयद्वृत्ति वा ’ त्वग्रत्तयति=शरीर प्रसार्य स्पन्नि वा ‘ तहि २  
 तत्र तत्र च खलु ते कौटुम्भिकपुरुषाः ‘ तामो ’ ताः=हस्तिशीर्षनगराक्षणीता  
 वीणाश्च यावत्-वृत्तवीणाश्च, तथा अन्यानि च गृह्णन्ति श्रोत्रेन्द्रियप्रायोग्यानि च  
 द्रव्याणि ‘ समुदीरेमाणा ’ समुदीरयन्तः=मधुरध्वनिना गायन्तः तिष्ठन्ति, तेषां  
 मन्थानां ‘ परिपेरतेण ’ परिपर्यन्तेन=सर्वतः समन्तात् चतुर्दिशु इत्यर्थे ‘ पासए ’  
 पार्श्वे समीपे वीणादीनि स्थापयन्ति, स्थापयित्वा ते पुरुषाः ‘ निच्चला ’  
 निश्चलाः=चलनक्रियारहिताः ‘ निष्फंदा ’ निःस्पन्दा =हस्ताद्ययनमचाररहिताः  
 ‘ तुसिणीया ’ पचन व्यापाररहिता, ‘ चिद्वृत्ति ’ तिष्ठन्ति ।

तथा-यत्र यत्र तेऽग्वाः आसते वा यावत् त्वग्रत्तयन्ति=लुठन्ति तत्र तत्र खलु  
 ते कौटुम्भिकपुरुषाः गृह्णन्ति कृष्णानि च ५=कृष्णनीलपीतरक्तशुक्लवर्णानि काष्ठ

नेत्र इन्द्रिय को आनंद देनेवाले नीले पीले आदि रंगवाले चित्रों को एवं  
 घ्राणहृद्रियों को सुखकारक काष्ठपुट आदि सुगंधित द्रव्यों को छोटी २  
 नौकाओं द्वारा पोत में से उतार कर कालिक द्वीप में रख दिया । बाद  
 में जहा २ वे जाति अश्व बैठते थे मोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहा २  
 वे कौटुम्भिक पुरुष उन हस्तिशीर्ष नगर से लाये हुए वीणा से लेकर  
 वृत्तवीणा पर्यन्त के साधनों को तथा और भी श्रोत्र इन्द्रिय को सुहा  
 वनी लगनेवाली साधन सामग्री को मधुर ध्वनि से बजाते हुए ठहर  
 गये । और (तेसिं परिपेरतेण पासए ठवेति, ठवित्ता निच्चला, निष्फंदा,  
 तुसिणीया चिद्वृत्ति, जत्य २ ते आसा आसयति वा जाव तुयद्वृत्ति वा  
 तत्य २ ण ते कौटुम्भिक पुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कटुकम्माणि य

पमाडना २ नीला, पीला वगैरे रंगना चित्राने अने घ्राण ( नाक ) इन्द्रियने  
 सुगंध आये तेवा काष्ठपुट वगैरे सुगंधित द्रव्यों ने बड़ा सुभासी नानी नानी  
 छोड़ीआभा भूझीने कालिक द्वीप उपर भूझी दीधी तयारपछी नया ते नति  
 अश्वो जेसता डता, सूता डता, रडेता डता, आराम करता डता त्या ते  
 कौटुम्भिक पुरुषो ते हस्तिशीर्ष नगरथी लव आवेली वीणाथी भाडीने वृत्त  
 वीणा सुधीना साधनाने तेमज्ज पीज्ज पणु श्रोत्र ( कान ) इन्द्रियने गये  
 तेवी साधन सामग्रीने मधुर ध्वनिथी बगाडता त्या दैकाध गथा अने—

( तेसिं परिपेरतेण पासए ठवेति, ठवित्ता निच्चला, निष्फंदा, तुसिणीया  
 चिद्वृत्ति, जत्य २ ते आसा आसयति वा जाव तुयद्वृत्ति वा तत्य २ = कौटु-

ए ' विवराणि=गर्तानि स्रनन्ति, खनित्वा गुडपानकस्य खण्डपानकस्य यावद् अन्येषा च बहूना पानकाना विवराणि भरन्ति, भृत्वा तेषा परिपर्यन्तेन पार्श्वे स्थापयन्ति यावत् तूष्णीकास्तिष्ठन्ति ४ ।

यत्र यत्र च खलु तेऽश्वा आसते ४ तत्र तत्र च खलु ते=कौटुम्बिकपुरुषाः बहून् कोयविकान्=रुतपूरितप्रावरणविशेषान् यावत् हसगर्भान्=कौशेयवस्त्रविशेषान् अन्यानि च बहूनि स्पर्शेन्द्रियप्रायोग्याणि वस्त्रादीनि ' अत्युय पञ्चत्युयाट ' आस्तृतप्रत्यवस्तृतानि=श्लक्ष्णप्रावरणप्रावृतानि कृत्वा स्थापयन्ति, स्थापयित्वा तेषा परिपर्यन्तेन यावत् तूष्णीकास्तिष्ठन्ति ५ ।

ततः खलु तेऽश्वा यत्रैव एते उत्कृष्टाः शब्दस्पर्शरसरूपगन्धास्तत्रैवोपागच्छन्ति,

द्रव्योंके पुज एव निकर लगाकर खड़े कर दिये । एक ही वस्तुओंकी जो राशि होती है उसका नाम पुज तथा भिन्न वस्तुओं की राशि का नाम निकर है । बाद में वही पर उन्होंने ने अनेक गर्त खड़े किये । गर्त करके उनमें गुडपानक खडपानक यावत् और भी अनेक पानक भर दिये । बाद में वहा पर उनकी चारो दिशाओं में निश्चल-निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये । इसी तरह जिन २ वनो में वे घोड़े बैठते थे, सोते थे, टहरते थे, एव लेटते थे, वहा २ उन कौटुम्बिक पुरुषो ने अनेक रूई के भरे हुए प्रावरणों को यावत् हसगर्भों को-रेशमी वस्त्रों को तथा-और भी अनेक स्पर्शनइन्द्रिय को सुखदायक वस्त्रो को चिकने प्रावरणों से ढककर रख दिया । बाद में वे उनके चारों ओर यावत् चुपचाप बैठ गये ( तएण ते आसा जेणेव एए उक्किट्ठा सदफरिसरसरुवगंधा तेणेव उवा-

भिक पुरुषोअे गोणना यावत् जीन धण्णा रसनेन्द्रिय (७७) ने सुअ पमाडे तेवा द्रव्योंना पुजे अने निकरे लगावीने अड्डी दीधा अेड अ वस्तुना ढगलाने पुअ तेमअ जुही जुही वस्तुअेना ढगलाअेने निकर डडे छे त्याअपी ते लोडेअे त्या अ धण्णा आडाअे तैयार ड्या ते आडाअेमा तेअेअे गोण पानड, आडपानड, यावत् जीन पणु धण्णी जतना पानके जरी दीधा त्थार आड तेअे त्या अ तेमनी थारे तरड निश्चल-निस्पड थअने सुपथाप जेसी गया आ प्रमाणे जे जे वनेमा ते घोडाअे जेमता डता, सूता डता, रडेता डता अने आराम डरता डता त्या त्या ते डोटुभिक पुरुषोअे धण्णा इना प्राव अेने यावत् डसगभेनि, रेशमी वस्त्रांने तेमअ जीन पणु धण्णा स्पर्शेन्द्रियने सुअ आये तेवा वस्त्रोने लीमा प्रावअेथी आअादित डरी दीधा त्थारपधी तेअे अधा सुपथाप तेनी थारे तरड जेसी गया

( तएण ते आसा जेणेव एए उक्किट्ठा सदफरिसरसरुवगवा तेणेव उवाग-



દ્રવ્યાણાં પુઆશ્ર ફરુસ્તુમમૂહસ્વાન નિરરાંશ નાનાશિયમુરાશિસ્વાન કુર્વન્તિ,  
ફરુત્વા તેપામશ્વાનાં પરિવર્યન્તેન=સર્ગાન્નિયુ યાત્ તૂળીકામ્નિવ્રન્તિ ૩ ।

યત્ર યત્ર ચ ચલુ તેઽશ્વા આગતે ૪ તત્ર તત્ર ચલુ શુદ્ધસ્ય યાતદ્ અન્યેષાં ચ  
ચલુના જિહ્વેન્દ્રિયપ્રાયોગ્યાના દ્રવ્યણા પુજાંશ્ર નિરરાંશ્ર કુર્વન્તિ. કન્વા ' ત્રિય  
૨ ણ તેર્મિ ચલુણ કોટ્ટપુટાણં ચ જાત્ર અન્નેર્મિ ચ ચલુણ ઘ્રાણિદિય પાડ  
ગ્માણ દ્રવ્યાણ પુજેય ણિયરે ચ કરન્તિ કરિત્તા તેર્મિ પરિપેરતેણ જાત્ર  
ચિદ્વતિ, જત્ર જત્ર ણ તે આસા આસયતિ ૪ તત્ર ૨ ણ શુલ્કસ્મ જાત્ર  
અન્નેર્મિ ચ ચલુણ જિર્મિદિય પાડગ્માણ દ્રવ્યાણ પુજે ચ ણિયરે ચ કરન્તિ,  
કરિત્તા ત્રિયરણ સ્વણતિ, સ્વણિત્તા શુલ્કપાણગસ્સ સ્વડપાણગસ્સ જાત્ર  
અન્નેર્મિ ચ ચલુણ પાણગાણ ત્રિયરે ભરન્તિ-ભરિત્તા તેર્મિ પરિપેરતેણ  
પાસપ ઠવેતિ જાત્ર ચિદ્વતિ જર્મિ ૨ ચ ણ તે આસા આસ૦ તર્મિ ૨ ણ તે  
ચલુવે કોયવિયા ચ જાત્ર ગઘ્માય અણ્ણાણિ ચ ચલુણિ ફાસિદિયપાડ  
ગ્માઈ અત્થુય પચ્ચત્થુયાઈ ઠવેતિ, ઠવિત્તા તેર્મિ પરિપેરતેણ જાત્ર  
ચિદ્વતિ ) જહા જહા વે ઘોડે બેઠતે થે, સોતે થે, ઠહરતે થે, લેટતે થે, વહા  
૨ ડન કૌટુમ્મિક પુરુષોં ને ડન અનેક કોટ્ટ પુટોં કે યાવત્ અન્ય ઔર  
ઘ્રાણેન્દ્રિય પ્રાયોગ્ય દ્રવ્યો, કે પુજોં વો નિરુરો કો ણ્કાત્રિત કર દિયા  
ઔર કરકે ફિર વે ડન અશ્વોં કી ચારોં દિશાઓં મેં યાવત્ ચુપચાપ બેઠ  
ગયે । જહા ૨ વે ઘોડે બેઠતે થે, સોતે થે, ઠહરતે થે, લેટતે થે, વહા ૨ ડન  
કૌટુમ્મિક પુરુષોં ને શુડ કે યાવત્ દૂસરે ઔર રસનેન્દ્રિય આલ્હાદક  
કરિત્તા તેર્મિ પરિપેરતેણ જાત્ર ચિદ્વતિ, જત્ર જત્ર ણ તે આસા આસયતિ ૪  
તત્ર ૨ ણ શુલ્કસ્મ જાત્ર અન્નેર્મિ ચ ચલુણ જિર્મિદિય પાડગ્માણ દ્રવ્યાણ પુજે ચ  
ણિયરે ચ કરન્તિ, કરિત્તા ત્રિયરણ સ્વણતિ, સ્વણિત્તા શુલ્કપાણગસ્સ સ્વડપાણગસ્સ  
જાત્ર અ નેર્મિ ચ ચલુણ પાણગાણ ત્રિયરે ભરન્તિ-ભરિત્તા તેર્મિ પરિપેરતેણ પાસપ  
ઠવેતિ જાત્ર ચિદ્વતિ જર્મિ ૨ ચ ણ તે આસા આસ૦ તર્મિ ૨ ચ ણ તે ચલુવે કોય  
વિયા ચ જાત્ર ગઘ્માય અણ્ણાણિ ચ ચલુણિ ફાસિદિય પાડગ્માઈ અત્થુયપચ્ચત્થુ  
યાઈ ઠવેતિ, ઠવિત્તા તેર્મિ પરિપેરતેણ જાત્ર ચિદ્વતિ )

જ્યા જ્યા તે ઘોડાઓ બેસતા હતા સૂતા હતા રહેતા હતા, આરામ  
કરતા હતા ત્યા ત્યા તે કૌટુમ્મિક પુરુષોએ તે ઘણા કોષ પુટકોને યાવત્ ખીલ  
પણ ઘણી ઘ્રાણેન્દ્રિય ( નાક ) ને સુખ પમાડે તેવી વસ્તુઓને પુષ્કળ પ્રમા  
ણમાં ત્યા ગોઠવી દીધી, એકઠી કરી દીધી અને એકઠી કરીને તેઓ તે ઘોડા  
ઓને ચારે તરફ યાવત્ ચુપચાપ થઈને બેસી ગયા તે ઘોડાઓ જ્યા જ્યા  
બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા ત્યા ત્યા તે કૌટુ

ए ' विवराणि=गर्तानि सनन्ति, खनित्वा गुडपानकस्य खण्डपानकस्य यावद् अन्येषां च बहूनां पानकानां विवराणि भरन्ति, भृत्वा तेषां परिपर्यन्तेन पार्श्वे स्थापयन्ति यावत् तूष्णीकास्तिष्ठन्ति ४ ।

यत्र यत्र च खलु तेऽथा आसते ४ तत्र तत्र च खलु ते=कौटुम्बिकपुरुषाः बहून् कौयपिकान्=रुतपरितप्रावरणविशेषान् यावत् हसगर्भान्=कौशेयवस्त्रविशेषान् अन्यानि च बहूनि स्पर्शेन्द्रियमायोग्याणि वस्त्रादीनि ' अत्युय पञ्चत्युयाड ' आस्तृतप्रत्यवस्तृतानि=श्लक्ष्णप्रावरणप्रावृतानि कृत्वा स्थापयन्ति, स्थापयित्वा तेषां परिपर्यन्तेन यावत् तूष्णीकास्तिष्ठन्ति ५ ।

ततः खलु तेऽश्वा यत्रैव एते उत्कृष्टाः शब्दस्पर्शरसरूपगन्धास्त्वैवोपागच्छन्ति,

द्रव्योंके पुज एव निकर लगाकर खड़े कर दिये । एक ही वस्तुओकी जो राशि होती है उसका नाम पुज तथा भिन्न वस्तुओं की राशि का नाम निकर है । बाद में वही पर उन्होंने ने अनेक गर्त खड़े किये । गर्त करके उनमें गुडपानक खण्डपानक यावत् और भी अनेक पानक भर दिये । बाद में वहाँ पर उनकी चारो दिशाओं में निश्चल-निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये । इसी तरह जिन २ वनों में वे घोड़े बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, एव लेटते थे, वहाँ २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने अनेक रुई के भरे हुए प्रावरणों को यावत् हसगर्भों को-रेशमी वस्त्रों को तथा-और भी अनेक स्पर्शेन्द्रिय को सुखदायक वस्त्रों को चिकने प्रावरणों से ढककर रख दिया । बाद में वे उनके चारो ओर यावत् चुपचाप बैठ गये ( तएण ते आसा जेणेव एए उक्किट्ठा सदफरिसरसरुवगंधा तेणेव उवा-

भिक पुरुषोऽप्ये गोणना यावत् भीज्ज धण्ण रसनेन्द्रिय (७७) ने सुअ पमाडे तेवा द्रव्योंना पुज्जे अने निडरे लगावीने अडकी दीधा अेड ज वस्तुना ढगलाने पुज तेमज जुही जुही वस्तुओना ढगलाओने निकर उडे छे त्थारपछी ते लोकोऽप्ये त्या ज धण्ण आडाओ त्थार उर्या ते आडाओमा तेओऽप्ये गोण पानक, आडपानक, यावत् भीज्ज पण्ण धण्णी जतना पानका लरी दीधा त्थार आद तेओ त्या ज तेमनी थारे तरक्क निश्चल-निस्पन्द थअने चुपथाप जेसी गया आ प्रमाणे जे जे वनोमा ते घोडाओ जेसता छता, सूता छता, रडेता छता अने आराम उरता छता त्या त्या ते कौटुभिक पुरुषोऽप्ये धण्ण इना प्रावरणोने यावत् हसगर्भेनि, रेशमी वस्त्रोने तेमज भीज्ज पण्ण धण्ण स्पर्शेन्द्रियने सुअ आपे तेवा वस्त्रोने लीसा प्रावरणोथी आच्छादित करी दीधा त्थारपछी तेओ जधा चुपथाप तेनी थारे तरक्क जेमी गया

( तएण ते आसा जेणेव एए उक्किट्ठा सदफरिसरसरुवगंधा तेणेव उवाग-

ઉપાગત્ય તત્ર સ્વલ-‘અત્યેગઃ’ અત્યેકે=કેચિદ્ અથા --‘અપૂર્વાઃ=અદૃષ્ટપૂર્વાઃ  
સ્વલક્ષ્મે શબ્દસ્પર્શરસરુપગન્ધાઃ સન્તિ’ ઇતિ ઋત્યા=ઇતિ વિચિત્ર્ય તેષુ ઉત્કૃષ્ટેષુ=  
આકર્ષકેષુ શબ્દસ્પર્શરસરુપગન્ધેષુ ‘અગુન્ઙિયા’ અમૂર્ચિત્તા=મૂર્છારહિતા,  
માત્રહેયોપાદેયવિરેક્ષાઃ અદૃઢા=અપક્તિરહિતાઃ, અવધિતાઃ=લોભતન્તુમિરચદ્વાઃ,  
અનધ્યુપપન્ના=તદેશપ્રતારહિતાઃ કિંચિન્માત્રમપિ તેષાસક્તિમકુર્યાણાઃ સન્તઃ  
તેષામુત્કૃષ્ટાના ‘સદ્ જાત્ર ગંધાળ’ શબ્દસ્પર્શરસરુપગન્ધાના દૂરદૂરેણ=અતિદૂરત  
એવ ‘અચક્રમતિ’ અપક્રામન્તિ=પલાયન્તે સ્મ । તે ચ સત્ત્વ તત્ર પ્રચુરગોચરાઃ=  
પ્રચુરચરણભૂમયઃ પ્રચુરનૃણપાનોયા, નિર્મયાઃ, નિરુદ્ધિગ્નાઃ ‘સુહ સુહળ’ સુખ  
સુખેન=સુતપૂર્વક વિહરન્તિ ।

ગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા તત્થ ણ અરથે ગદ્ધયા આસા અપુગ્વા ણ હમે સદ્-  
ફરિસરસરુવગધાહ સિ કદદ્ધ તેસુ ઉચ્ચિકદ્ધેસુ સદ્ફરિસરસરુવગધેસુ  
અમુચ્છિયા ૪ તેસિ ઉચ્ચિકદ્ધાળ સદ્ જાત્ર ગંધાળ દૂરં દૂરેણ અચક્રમતિ )  
ઘાદમે વે અશ્વ જરા ચે પૂર્વોક્તિ ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ ગધ ઓર  
સ્પર્શવાલે પદાર્થે વે વહા પર આયે વહા આકર કે હનમેં કિતનેક અશ્વ  
“ વે શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ, ગધ અદૃષ્ટપૂર્વ હે ” એસા વિચાર કર ઉન  
આકર્ષક શબ્દ રૂપ, રસ, સ્પર્શ ણચ ગધો મેં-ઉન પદાર્થો મેં-મૂર્ચિત  
નહીં વને । હેય ઉપાદેય કે વિવેક સે યુક્ત વને હુળ વે કિતનેક અશ્વ ઉન  
મેં આસક્તિ સે રહિત હી રહે લોભરપતન્તુ સે વન્ધે નહીં । તથા કિંચિ  
ન્માત્ર મી ઉનમે આસક્તિ નહીં કરતે હુળ વે ઉન શબ્દ, સ્પર્શ રૂપ, ઓર  
ગધોં કો વહુત હી દૂર સે છોડકર ચલ દિયે । ( તેણ તત્થ પડરગોપરા

ચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા તત્થ ણ અત્યેગઃ આસા અપુગ્વા ણ હમે સદ્ફરિસરસરુવ  
તિ કદ્ધ તેસુ ઉચ્ચિકદ્ધેસુ સદ્ફરિસરસરુવગધેસુ અમુચ્છિયા ૪ તેસિ ઉચ્ચિકદ્ધાળ સદ્  
જાત્ર ગંધાળ દૂર દૂરેણ અચક્રમતિ )

ત્યારપછી તે ઘોડાઓ આ બધા પૂર્વે મૂકેલા ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ  
રૂપ અને ગંધવાળા પદાર્થો હતા ત્યાં આ બધા ત્યાં આવીને તેઓમાંથી કેટ  
લાક ઘોડાઓ ‘ આ શબ્દ સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધ અદૃષ્ટપૂર્વ છે ” આમ  
વિચાર કરીને તે આકર્ષક શબ્દ, રૂપ, રસ, સ્પર્શ અને ગંધવાળા તે પદાર્થો  
માં મૂર્ચિત ( મોહાધ-લોભુપ ) થયા નહિ હેય અને ઉપાદેયના વિવેકથી  
સાવધ બનેલા કેટલાક ઘોડાઓ તે પદાર્થોમાં નિરાસક્ત જ રહ્યા તેઓ લોભ  
રૂપી દારીથી બધાયા નહિ થોડી પણ આસક્તિ બતાવ્યા વગર તેઓ તે  
શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધવાળા પદાર્થોને ખૂબ દૂરથી જ છોડીને જતા  
રહ્યા ( તેણ તત્થ પડરગોપરા પડરત્તળગણિયા ગિન્નયા ગિરુદ્ધિગ્ના સુહ

अथोपनय प्रदर्शयति,—‘एवामेव’ एवमेव=शब्दाद्यमूर्छिताकीर्णाश्चवत् ‘सम  
णाउसो’ हे आयुष्मन्त श्रमणा ! योऽस्माक निर्ग्रन्थी वा यावत्-आचार्योपा-  
ध्यायानामन्तिके प्रव्रजितः सन् शब्दस्पर्शरसरूपगन्धेषु ‘नो सज्जह’ नो सज्जते=  
आसक्तिमान् न भवति ‘नो रज्जह’ नो रज्यते अनुरक्तो न भवति, नो गृयति,  
न वाञ्छति, नो मुषति=न मृच्छति, नो अयुषपद्यते=न तल्लीनो भवति, स खलु  
इह लोके एव गृह्णा श्रमणादीना चतुर्विधसङ्घस्य अर्चनीयः=संमाननीय. यावत्  
चातुरन्तससारकान्तार ‘वीद्वहस्मह’ व्यतिप्रजिष्यति=उल्लङ्घयिष्यति-पारं  
गमिष्यतीत्यर्थ ॥ सू० ३ ॥

पउरत्तणपाणिआ णिब्भया णिरुव्विग्गा सुह सुहेण विहरति) और  
जंगल में ही जो प्रचुरचरने की जमीन थी-जिममें अधिक से अधिक  
मात्रा में तृण और पानी भरा हुआ रहता था उसमें ही निर्भय, निरु-  
द्विग्न होकर सुखपूर्वक रहे। अब इस दृष्टान्त का उपनय प्रदर्शित करने  
के लिये सूत्रकार कहते हैं-। (एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह णिग्गथो  
वा णिग्गथी वा जाव सह फरिसरसरुव्वगवेसु णो सज्जह णो  
णो रज्जह, जो गिज्झह, णो मुज्झह, णो अज्झोववज्जेह, से ण इह  
लोए चेव बहूण समणाण ४ अच्चणिज्जे जाव वीद्वहस्सह) हे आयु-  
ष्मन्त श्रमणो ! इसी तरह जो हमारा निर्ग्रन्थ साधुजन एव निर्ग्रन्थी  
साध्वी जन आचार्य उपाधय के पास प्रव्रजित होकर शब्द स्पर्श, रस,  
रूप, और गन्ध इन पांचों इन्द्रियों के विषयों में आसक्ति युक्त नहीं  
होता है, अनुरक्त नहीं बनता है, उन्हें चाहता नहीं है, उनमें मूर्छित  
नहीं होता है, उनमें तल्लीन नहीं होता है, वह इस लोक में ही अनेक

सुहेण विहरति) અને વનમાં જ પ્રચુર ચરવાની જમીન હતી, જ્યાં વધારેમાં  
વધારે ઘાસ અને પાણી હતા ત્યાં જ નિર્ભય, નિરુદ્વિગ્ન થઈને સુખથી રહેવા  
લાગ્યા હવે આ દૃષ્ટાન્તનો ઉપનય સ્પષ્ટ કરવા માટે સૂત્રકાર કહે છે કે —

(એવમેવ સમણાઉસો જો અમ્હ ણિગ્ગથો વા ણિગ્ગથી વા જાવ સહફરિસ-  
રસરુવ્વગધેસુ ણો સજ્જહ ણો રજ્જહ, જો ગિજ્ઝહ, ણો મુજ્ઝહ, ણો અજ્ઝોવવજ્જેહ,  
સે ણ હિહલોએ ચેવ વહૂણ સમણાણ ૪ અચ્ચણિજ્જે જાવ વીદ્વહસ્સહ)

હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! આ પ્રમાણે જ જે અમારા નિર્ગ્રન્થ સાધુઓ  
કે નિર્ગ્રન્થ સાધ્વીઓ આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને શબ્દ,  
સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગન્ધ આ પાંચે ઈન્દ્રિયોના વિષયોમાં આસક્ત થતા  
નથી અનુરક્ત થતા નથી, તેમને ઇચ્છતા નથી, તેઓમાં મૂર્છિત થતા નથી.

શબ્દસ્પર્શરસસ્વગન્ધાર ' આસેવમાણા ' આસેવમાનાઃ તત્કૃપ્યાનુભવ કુર્યાન્નાઃ તેર્વ  
દુભિ કૂટેથ વન્ધનવિશેષૈઃ, પાંચેય રજ્જ્વાદિરૂપૈઃ મલપ્પુ=મળેપુ=મળેપુ પાટેપુ ચ  
' વજ્જતિ ' વખનતે-તે કૌદુમ્બિકપુરુષાસ્તાનધાન વખનન્તિ સ્મેર્યર્થઃ । તત

ઘોડોં મે સે કિનનેક ઘોડેં તેસે મી ઘે જો જરા ઘે ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ સ્પર્શ  
રસ, રૂપ એવ ગંધ ઘે પાંચો ઇન્દ્રિયો કે આકર્ષક વિષય ઘે જરા આકર  
વન ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ સ્પર્શ આદિ વિષયો મેં મૂર્છિત યાવત્ તહીન ઘનગયે।  
ઑર ઉન્હેં સેવન કરને મેં પ્રવૃત્ત મી હો ગયે । ( તણ તે આસા તે  
ઉચ્છિદ્ધે સદ્ ૫ આસેવમાણા તેસિં વહૂર્હિ કૂડેહિં ય પાસેહિં ય મલપ્પુ ય  
પાપ્પુ ય વજ્જતિ, તણ તે કૌદુમ્બિકપુરિમા તે આસે મિળ્હતિ મિળ્હિત્તા  
એગદ્ધિયાર્હિં ય પોયવહણે સચારેંતિ, સચારિત્તા તણસ્સ વટ્ઠસ્સ જાવ  
મરેંતિ, તણ તે સજ્જા ણાવા વાણિયગા દક્ખિણાણુકૂલેણ વાણ જેણેવ  
મમીરપોયપટ્ટણે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા પોયવહણ લબેંતિ-  
લવિત્તા તે આસે ઉત્તારેંતિ ) હસકે વાદ ઘે ઘોડેં ઉન ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ સ્પર્શ  
રસ, રૂપ, એવ ગંધ હન પાંચો ઇન્દ્રિયો કે વિષયોં કો સેવન કરતે હુણ  
રજ્જ્વાદિરૂપવન્ધન વિશેષોં દ્વારા કઠોં ઑર પેરોંમેં ઘાંચ લિયે ગયે । અર્થાત્  
ઉન કૌદુમ્બિક પુરુષોં ને હન ઘોડોં કો ઉસ સમય રક્ષિયો દ્વારા બાંધ  
લિયા । બાંધ કરકે ફિર ઉન કૌદુમ્બિક પુરુષોંને ઉન્હેં પકડ લિયા પકડ

જ્યા તે ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધ આ પાંચે ઇન્દ્રિયોના  
આકર્ષક વિષયો હતા ત્યા આવીને તે ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ વગેરે વિષયોમા  
મૂર્છિત ( આસકત ) યાવત્ તહીન થઈ ગયા અને તેમના સેવનમા પ્રવૃત્ત  
પણ થઈ ગયા

( તણ તે આસા તે ઉચ્છિદ્ધે સદ્ ૫ આસેવમાણા તેસિં વહૂર્હિ કૂડેહિં ય  
પાસેહિં ય મલપ્પુ ય પાપ્પુ ય વજ્જતિ, તણ તે કૌદુમ્બિકપુરિમા તે આસે  
મિળ્હતિ મિળ્હિત્તા એગદ્ધિયાર્હિં ય પોયવહણે સચારેંતિ, સચારિત્તા તણસ્સ વટ્ઠસ્સ  
જાવ મરેંતિ, તણ તે સજ્જા ણાવા વાણિયગા દક્ખિણાણુકૂલેણ વાણ જેણેવ  
મમીરપોયપટ્ટણે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા પોયવહણ લબેંતિ-લવિત્તા તે  
આસે ઉત્તારેંતિ )

ત્યારપછી તે ઘોડાઓ ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધ આ  
પાંચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોનું સેવન કરતા દોરડાઓ વગેરે રૂપ ગંધન વિશેષથી  
ડોકો અને પગોમા બાંધી ગયા એટલે કે તે કૌદુમ્બિક પુરુષોએ તે ઘોડા  
ઓને દોરડાઓથી બાંધી લીધા બાંધીને તે કૌદુમ્બિક પુરુ



खलु ते कोटुम्बिकपुरुषास्तान्वाहन्ति, गृहीत्वा 'एगद्वियाहिं एकार्थिनाभि' = लघुनौकाभि पोतग्रहणे = वृद्धनौकाया 'सचारैति' सञ्चारयन्ति = आरोग्ययन्ति सञ्चार्य तृणस्य माण्डस्य च यावत् पोतग्रहणं भरति तृणकाष्ठादिभिरिति भावः । ततः खलु ते सयात्रनौकावाणिजकाः दक्षिणानुकूलेन = स्वानुकूलेन यातेन यत्रैव गम्भीरपोतपत्तनं = पोतलम्पनस्थानं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य पोतग्रहणं 'लपेति' लम्पयन्ति = शकुपु वद्ध्वा स्थापयन्ति, लम्पयित्वा तान् = अश्वान् 'उत्तारैति' उत्तारयन्ति, उत्तार्य यत्रैव हस्तिशीर्षं नगरं यत्रैव कनककेतू राजा तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य 'करयल जाव' करतलपरिगृहीत शिरआयत्तं दशनखं मस्तके-

कर फिर उन्हें छोटी २ नौकाओ द्वारा लाकर बड़ी नौका में चढाया-  
चढा करके फिर उसमें तृण और काष्ठ आदि को भरा। इसके बाद वे  
सांयात्रिक पोतवणिक दक्षिणानुकूल वायु के चलने पर जहा गम्भीर  
नामका पोतपट्टण ( नन्दरगाह ) था वहा आये। वहां आकर के उन्होंने ने  
अपने पोत को लगर डालकर ठहरा दिया। ठहरा कर उन अश्वों को  
उस पोत से फिर उन्होंने ने नीचे उतार लिया। ( उत्तारित्ता जेणेव  
हत्थिस्सीसे णयरे जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छति उवाग-  
च्छित्ता करयल जाव चढावैति, वद्धावित्ता ते आसे उवणेति, तएण  
से कणगकेऊ तेसिं सजत्ता णावावाणिजगाण उस्सुक्क विपरह, विय  
रित्ता सक्कारेइ समाणेइ सक्कारित्ता समाणित्ता पडिविसज्जेइ ) उतार  
कर फिर वे वहां उन्हें ले गये जहा हस्तिशीर्षं नगर और उसमें भी

पकडी लीधा पकडीने तेमणे नानी नानी छोडीओ वडे भोग वडाणुमा यढाव्या  
यढाव्या आह तेओओ तेमा धाम ओने डाष्ठ लया त्थारपणी ते सायात्रिक  
पोतवणिके दक्षिणने अनुकूल पवन वडेवा लाग्यो त्यादे त्याथी रवाना थधने  
न्या गभीर नामे पोतपट्टण ( नन्दर ) हेतु त्या आव्या त्या आवीने तेमणे  
पोताना वडाणुने लगर नाणीने डाक्यु त्य रणाह तेमणे धोडाओने वडाणु  
माथी नीचे उतार्या

( उत्तारित्ता जेणेव हत्थिस्सीसे णयरे जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उपा-  
गच्छति, उवागच्छित्ता करयल जाव चढावैति, वद्धावित्ता ते आसे उवणेति, तएण  
से कणगकेऊ तेसिं सजत्ता णावा वाणिजगाण उस्सुक्क विपरह, वियरित्ता  
सक्कारेइ, समाणेइ, सक्कारित्ता, समाणित्ता पडिविसज्जेइ )

नीचे उतारीने तेओ ते धोडाओने हस्तिशीर्षं नगरमा न्या कनककेतु  
राजा हेतो त्या लघु गया त्या नधने पडेला तेमणे णने डाथ जेडीने राजा

ऽञ्जलिं कृत्वा ' वद्वारंति ' पद्वयति जयविजयशब्देनाभिनन्दन्ति, नर्दयित्वा तान् अध्वान् राशः समीपे ' उवर्णंति ' उपनयन्ति । ततः खलु स कनककेतु राजा तेषां सयाग्रनौकायाणिजरानाम् ' उस्तृफा ' उस्तृफम् = ' पश्य केनापि परो न ग्राह्य ' इत्येवम्पमाज्ञापनं वितरति=ददाति, विनीय सत्करोति-मधुर वचनादिभिः, सुमानयति-वस्त्रादिभिः, सत्कार्यं सम्मान्य प्रतिविसर्जयति ।

ततः खलु स कनककेतु राजा ' आसमदम् ' अभ्यमर्दकान्=प्रथमशिक्षकान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमादीत्-यूय खलु हे देवानुपियाः ! ममाध्वान ' विण एह ' विनयत=शिक्षयत-गत्यादिकृत्वाकुशलान् कुरुतेत्यर्थः । ततः खलु तेऽभ्यमर्दकाः ' तदत्ति ' तथेति ' तथाऽस्तु ' इत्युक्त्वा प्रतिशृण्वन्ति=नृपाणां स्वीकुर्वन्ति,

जहाँ कनककेतु राजा थे । वहाँ जाकर उन्होंने पहिले दोनों हाथ जोड़ कर राजा कनककेतु को नमस्कार किया-जय विजय शब्दों द्वारा उन्हें बधाई दी-बधाई देकर बाद में उन घोड़ों को उनके समक्ष उपस्थित कर दिया इसके बाद कनककेतु राजा ने उन सांघात्रिक पोतवणिकजनों के लिये निःशुल्क ( कररहित ) अवस्था वितरित की इन्हों से कोई भी राज्यकर्मचारी टेकस न लेवे इस प्रकार का आज्ञापत्र उन्हें लिखकर दे दिया । आज्ञापत्र लिखकर देने के बाद राजाने उनका मधुर वचनों द्वारा सत्कार किया । वस्त्रादि प्रदान पूर्वक उनका सम्मान किया । फिर सत्कार ममान करके उन्हें विसर्जित कर दिया । ( तएण से कणककेऊ कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता सवकारेति० पडिविसज्जेइ, तएण से कणगकेऊराया आसमदम् सदावेइ सदावित्ता एव वयासी तुम्हेण देवानुपिया ! मम आसे विणएह ) इस के बाद कनककेतु राजाने कौड

कनककेतुने नमस्कार कर्वा अने जय-विजय शब्दों वडे तेमने वधाभणी आपी वधाभणी आपीने तेमणे ते अधा घोड़ाने तेमनी सामे उपस्थित कर्वा त्थारपणी कनककेतु राजाणे ते सांघात्रिक पोतरणिकेने भाटे कर भाई करी आपी तेमनी पासेथी केई पणु राज्य कर्मचारी कर ( टेकस ) ले नहि तेउ आज्ञापत्र तेमने लणी आप्थु आज्ञापत्र आपीने राजाणे तेमने मधुर वचने वडे सत्कार कर्वा अने वस्त्रो वगेरे आपीने तेमनु सम्मान कर्थु त्थारपणी तेमने विहाय कर्वा

( तएण से कणगकेऊ कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता सवकारेति० पडिविसज्जेइ, तएण से कणगकेऊ राया आसमदम् सदावेइ सदावित्ता एव वयासी तुम्हेण देवानुपिया ! मम आसे विणएह )

प्रतिश्रुत्य तान् अश्वान् बहुभिर्मुखान्धैश्च कर्णवैश्च नासावैश्च बालान्धैश्च  
केशान्धैरित्यर्थः खुरान्धैश्च 'खलिणवधेहि य' खलीनान्धैः 'लगाम' इति  
प्रसिद्धान्धैः, 'अहिलाणेहि य' अभिलानैः= 'जीन' इति प्रसिद्धैः, पडिया-  
णेहि 'पर्याणकैः= 'तग' इति प्रसिद्धैश्चर्ममयैरश्वोपकरणविशेषैः, 'अकणाहि य'  
अङ्गनाभिः=तप्तलोहशलाकादिभिरङ्गनकरणैश्च 'वित्तप्पहारेहि य' वेत्रप्रहारैश्च-

भ्रिक पुरुषो को बुलाया, बुलाकर उनका आदर सत्कार किया। फिर  
उन्हें विसर्जित कर दिया। इसके पश्चात् कनककेतु राजा ने अश्वशिक्ष  
कों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों! तुम  
इन हमारे इन घोड़ों को शिक्षित बनाओ-गत्यादिकला में निपुण करो।  
(तएण ते आसमद्दगा तहत्ति पडिसुणेंति, पडिसुणिच्चा ते आसे वहहि  
मुह वधेहि य कण्णवधेहि णासा वधेहि य बालवधेहि य खुरवधेहि य  
खलिणवधेहि य अहिलाणेहि य पडियाणेहि य अकणाहि य वित्तप्पहारेहि  
य कसप्पहारेहि य छिवप्पहारेहि य विणयति) राजा कनककेतु की इस  
आज्ञा को उन अश्वमर्दकों ने "तहत्ति" कहकर स्वीकार कर लिया।  
स्वीकार करके फिर उन्होंने ने अनेक विध मुख वधनों से, कर्णवधनों से  
नासावधनों से लगामरूप वधनों से अभिलानों से-पलेचाओ से-पर्या  
णकों से तगों के कत्तने से-अकनों से-तप्त हुई लोहकी शलाकाओं  
द्वारा डाम लगाने से वेत्र के प्रहारों से, लताओंके प्रहारोंसे, चाबुकों के

त्यारपणी कनककेतु राजाએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા, બોલાવીને  
તેમનો સત્કાર કર્યો અને પછી તેમને વિદાય કર્યા ત્યારબાદ કનકકેતુ રાજાએ  
અશ્વશિક્ષકોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવા  
નુપ્રિયો! તમે અમારા આ ઘોડાઓને શિક્ષિત બનાવો, દોડવા વગેરેની કળા-  
ઓમાં નિપુણ બનાવો.

(તણ તે આસમદ્દગા તહત્તિ પડિસુણેંતિ, પડિસુણિચ્ચા તે આસે વહહિં મુહ  
વધેહિં ય કણ્ણ વધેહિં ણાસા વધેહિં ય બાલવધેહિં ય ખુર વધેહિં ય ખલિણ  
વધેહિં ય અહિ લાણેહિં ય પડિયાણેહિં ય અકણાહિં ય વિત્તપ્પહારેહિં ય કસપ્પહારે-  
હિં ય કસપ્પહારેહિં ય છિવપ્પહારેહિં ય વિણયતિ)

રાજા કનકકેતુની આજ્ઞાને તે અશ્વમર્દકોએ "તહત્તિ" કહીને સ્વીકારી  
લીધી સ્વીકાર કરીને તેમણે ઘણી બાતના મુખ બધનોથી, કર્ણ બધનોથી,  
નાસા બધનોથી, વાળ બધનોથી, ખુર બધનોથી, લગામ રૂપ બધનોથી,  
અભિલાનોથી, પલેચાઓથી, પર્યાણકોથી, તગોને કસવાથી, અકનોથી, તપા  
વવામાં આવેલી લોખંડની શળીઓ વડે ડામવાથી, લેતાના આઘાતોથી લતા

‘ लघुष्पहारेहि य ’ लघुष्पहारेऽथ, ‘ वगष्पहारेहि य ’ वगष्पहारेऽथ ‘ वशा ’-  
चायुक ’ इति भाषायां, ‘ त्रिष्पहारेहि य ’ त्रिष्पहारे = त्रिमयचित्रकशा  
पहारेऽथ ‘ विणयंति ’ विनयति = शिक्षयन्ति, विनीय = शिक्षयित्वा कनककेतु राज्ञ  
उपनयन्ति । ततः सलु सः कनककेतु राजा तान् अश्वमर्दकान् मत्करोति मग्ना  
नयति, सत्कृत्य सम्मान्य प्रतिवितर्जयति । ततः सलु तेऽवाः बहुभिर्मुत्पन्नैश्च  
यावत्-त्रिष्पहारेऽथ बहूनि शरीरमानसानि दुःखानि प्राप्नुयन्ति ।

‘ एवामेव ’ एवमेव = शब्दादिविषयमूर्तितात्पर्याश्वत् ‘ समणाउसो ’ हे  
आयुष्मन्तः श्रमणा । योऽस्माकं निर्गम्यो वा निर्गम्यो वा आचार्यो वा यायानाम-  
न्तिके प्रव्रजितः सन् इष्टेषु शब्दरक्षितरूपेण तेषु ‘ मज्जइ ’ सज्जते = आसक्तो

प्रहारो से, त्रिष्प-चर्म की घनी हुई चिकनी कज्जाओं के प्रहारों से उन  
घोड़ों को शिक्षित बना दिया । ( विगयित्ता कणगकेऊम्म रण्णो उवणेति  
तएण से कणगकेऊराया ते आसमदण सक्कारेइ सक्कारित्ता पडिविस  
जेइ, तएण ते आसा वड्हि मुह वधेहि जाव त्रिष्पहारेहि य बहूणि  
सारीरमानसाणि दुक्खाइ पावेति ) शिक्षित बनाकर फिर वे उन  
घोड़ों को कनककेतु राजा के पास ले गये । बादमे राजा कनककेतु ने  
उन अश्वमर्दकों का सत्कार सम्मान किया । सत्कार सम्मान करके फिर  
उन्हें विसर्जित कर दिया । वे घोड़े लेकर अनेक विध उन सुख व धनों  
से यावत् चर्ममय चित्रकणकशाओं के प्रहारों से नाना प्रकार के शा-  
रीरिक एवं मानसिक दुःखों को पाने लगे । ( एवामेव समणाउसो ।  
जो अम्ह निग्गयो वा निग्गयी वा पव्वण समणे इट्ठेसु बद्धफरिसरस

ओना प्रहारेथी आयुक्ता प्रहारेथी, त्रिष्प आमडाना अनेवा लीसा आयु  
केना प्रहारेथी ते घोडाओने केणवा

( विगयित्ता कणगकेऊ राया ते आसमदण सक्कारेइ, सक्कारित्ता पडिविस  
जेइ तएण ते आसा वड्हि मुह वधेहि जाव त्रिष्पहारेहि य बहूणि सारीर-  
मानसाणि दुक्खाइ पावेति )

केणवाने-शिक्षित बनावीने ते घोडाओने तेओ कनककेतु राजा पास  
लभ गया त्थारपणी कनककेतुओ ते अश्वमर्दकेओ सत्कार तेमज्ज सम्मान उयु  
सत्कार अने सम्मान करीने तेमने विसर्जित उया ते घोडाओ धणु सुअ  
अधनोथी यावत् आमडाना लीसा आयुकेना प्रहारेथी अनेक जतना शारी-  
रिक अने मानसिक दुःखों को भोगना लाग्या

( एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गयो वा निग्गयी वा पव्वण समणे  
इट्ठेसु सद्धफरिसरसरुवगधेसु य सज्जइ, रज्जइ, गिज्जइ, मुज्जइ,

भवति, ' रज्जइ ' रज्यते=अनुक्तो भवति, ' गिज्जइ ' गृह्यति=तद्वाञ्छासक्तो भवति, ' मुज्जइ ' मुह्यति=मूर्छितो भवति, ' अज्जोवज्जइ ' अ-युपपद्यते=सर्वथा तल्लीनो भवति, स खलु इह लोक एव वहना श्रमणानां च यावत्-श्रमणीनां श्रावकाणां श्राविकाणां च ' हीलणिज्जे ' हीलनीय यावत् चातुरन्तससारकान्ता-रम् ' अणुपरियट्ठिस्सइ ' अनुपर्यट्टियति=भ्रमिष्यतीति भावः ॥सू०४॥

मूलम्-कलरिभियमहुर ततीतलतालवंसकउहाभिरामेसु ।

सहेसु रज्जाणा रमति सोइंदियवसट्ठा ॥ १ ॥

सोइंदियदुहन्तत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।

दीविगरुयमसहसो वहवध तित्तिरो पत्तो ॥ २ ॥

टीका-अयेन्द्रियासरणदोगान् गाथामिः प्रदर्शयति-' कलरिभिय० ' इत्यादि कलरिभितमपुरतन्नी तल तालवसककुदाभिरामेषु ।

रुच्यगंधेषु य सज्जइ, रज्जइ, गिज्जइ, मुज्जइ, अज्जोवज्जइ, सेणं इहलाहे चेव वह्ण समणाण य जाव सावियाण य हीलणिज्जे जाव अणुपरियट्ठिस्सइ ) इसी प्रकार हे आयुष्मन् श्रमणो ! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधुजन अथवा साध्वीजन आचार्य उपाध्याय के पास प्रव्रजित होता हुआ इष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध इन पांचों इन्द्रियों के विषयों में आसक्त होता है, अनुरक्त होता है, उनकी चाह से बधता है, उनमें मूर्च्छित बनता है, सर्व प्रकार से उनमें तल्लीन होता है वह इस लोक में ही अनेक श्रमणजनों द्वारा श्रमणी, श्रावक और श्राविकाओं द्वारा हीलनीय-निन्दा का पात्र-होता है यावत् वह चतुर्गतिरूप इस ससार कान्तार में भटकता है ॥ सू०४ ॥

सेण इहलोए चेવ વહ્ણ સમાણા ય જાવ સાવિયાણ ય હીલણિજ્જે જાવ અણુ પરિયટ્ઠિસ્સઈ )

આ પ્રમાણે હે આયુષ્મત શ્રમણે ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુજનો કે સાધ્વીજનો આચાર્ય અથવા ઉપધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને ઈષ્ટ, શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધ આ પાંચે ઈન્દ્રિયોના વિષયોમાં આસક્ત હોય છે, અનુરક્ત હોય છે, તેમની ઈચ્છા કરીને તેઓમાં બંધાયેલ છે, તેઓમાં મૂર્છિત બની જાય છે, બધી રીતે તેઓમાં તલ્લીન બની જાય છે તે આ લોકમાં જ ઘણા શ્રમણો વડે તેમજ ઘણી શ્રમણી, શ્રાવક અને શ્રાવિકાઓ વડે હીલનીય-નિન્દનીય-હોય છે યાવત્ તે ચતુર્ગતિ રૂપ આ સસાર-કાંતારમાં ચડકતો રહે છે ॥ સૂત્ર ૪ ॥



શબ્દેષુ રજ્યમાના, રમન્તે શ્રોત્રેન્દ્રિયચાર્તા ॥ ૧ ॥

શ્રોત્રેન્દ્રિયદુર્દાન્તિત્વસ્ય અથ એતાયાન મત્તિ દોષઃ ।

દ્વીપિકાસ્તમસહમાનો, - વધવન્થ તિત્તિર પ્રાપ્તઃ ॥ ૨ ॥

શ્રોત્રેન્દ્રિયચાર્તાઃ = કર્ણેન્દ્રિયચાર્તિન. ધ્વજાઃ શ્રવણસુખદાઃ રિભિતાઃ સ્વર  
ઘોલનાવિશેષયુક્તા મધુરાઃ - પ્રિયાઃ કલરિભિતમપુરુષનિનનક્ત્વાત્ તદ્દ્રુપા યે તન્ત્રી-  
તલતાલવશા - વીણા - કરતાલ વેણસ્તૈ સમુદ્ધાવિતલાત્ - કુદ - પ્રાનાઃ, અભિ  
રામાઃ - મનોહરાસ્તેષુ - શબ્દેષુ રજ્યમાનાઃ = અનુક્તાઃ સન્તઃ રમન્તે = મોદન્તે ॥ ૧ ॥  
' સોહદિયે ' ત્યાદિ । ' સોહદિયદુદ્ધત્તણસ્મ ' શ્રોત્રેન્દ્રિયદુર્દાન્તિત્વસ્ય શ્રોત્રેન્દ્રિય  
દુર્દાન્તિત્વ યસ્ય સ શ્રોત્રેન્દ્રિયદુર્દાન્તિત્વ = શ્રોત્રેન્દ્રિયસ્ય જેતુમશ્ચયતયા તદ્વશચર્તીત્યર્થઃ,  
તસ્ય ભાવસ્તસ્ય, તસ્ય, શ્રોત્રેન્દ્રિયાધીનતાયાઃ, ' એતિઓ ' એતાયાન = વક્ષ્યમાણ  
મકારકઃ દોષો મત્તિ । ત સદૃષ્ટાન્તં પ્રદર્શયતિ - ' દીપિકારુપમસહતો ' દ્વીપિકારુ  
તમસહમાન - દ્વીપિકા = વ્યાધ પજરસ્યતિત્તિર, તસ્યાઃ રુત શબ્દમ્ અસહમાન =

‘ કલરિભિય ’ इत्यादि ।

અથ સૂત્રકાર, ઇન્દ્રિયોં કે અસવરણ સે જો દોષ ઉત્પન્ન હોતે હે  
ઉન્હેં ઇન ગાથાઓં દ્વારા પ્રદર્શિત કરતે હે - કર્ણેન્દ્રિય કે વશચર્તી બને હુણ  
પ્રાણી કલ-શ્રવણ સુખદ, રિભિત-સ્વરોં કે ઘોલના વિશેષ સે યુક્ત એસે  
મધુરપ્રિય, તન્ત્રી-વીણા, તલતાલ-કરતાલ, વશપ્રાસુરી ઇન સે ઉત્પન્ન  
હોને કી વજહ સે કુદ-અત્યન્ન, અભિરામ-મનોહર એસે શબ્દો મેં  
અનુરક્ત હોતે હુણ યદ્યપિ મુદિતમન હોતે હેં પરન્તુ શ્રોત્રેન્દ્રિય ડનકી  
દુર્દમન હોનેકે કારણ-શ્રોત્રેન્દ્રિય ડનકી જિતનેમે અશક્ય હોનેકે કારણ  
તદ્વશચર્તી બને હુણ વે પ્રાણી જિસ તરહ વ્યાધ કે પજર મેં રહી હુઈ  
તિત્તિરી કે શબ્દ કો સુનકર તીતરપક્ષી-કામરાગ કે વશ સે આકૃષ્ટ

‘ કલરિભિય ’ इत्यादि —

સૂત્રકાર હવે ઇન્દ્રિયોના અસવરણથી જે દોષો ઉત્પન્ન થાય છે તેમને  
આ ગાથાઓ વડે પ્રદર્શિત કરે છે કર્ણેન્દ્રિયના વશમા થયેલા પ્રાણીઓ કલ-  
શ્રવણ સુખદ, રિભિત સ્વરોને વિશેષ રૂપમા મેળવવાથી ઉત્પન્ન થયેલો ધ્વનિ,  
મધુર-પ્રિય, તન્ત્રી-વીણા, તલતાલ-કરતાળ, વશ-વાસળી એમનાથી ઉત્પન્ન  
હોવા બદલ કુદ-અત્યંત, અભિરામ-મનોહર એવા શબ્દોમા અનુરક્ત થતા  
જે કે તેઓ મુદિતમન-પ્રસન્ન થાય છે પરંતુ તેમની શ્રોત્રેન્દ્રિય (કાન) હદ  
મનીય હોવા બદલ એટલે કે મશ્રોત્રેન્દ્રિય ઉપર કાણુ મેળવવાનું કામ તેમના  
માટે અશક્ય હોવા બદલ તેને વશ થયેલા પ્રાણીઓ જેમ વ્યાધા-શિકારીના  
પીંજરામા સપડાઈ ગયેલી તિત્તિરીના શબ્દને સાંભળીને તીતર પક્ષી

તિત્તિર વધ=મરણ વન્ધ=પજ્જરાદિ ગ્ન્યન પ્રાપ્તિ:-પ્રાપ્નોતીત્યર્થઃ 'અથ'  
વાક્યાલક્ષારે ॥ ૨ ॥

મૂલમ્-થળજહળવયળકરચરળળયળગઠિવયવિલાસિયગર્હસુ ।

રૂપેસુ રજ્જમાણા રમંતિ ચક્ષિદિયવસદ્વા ॥ ૩ ॥

ચક્ષિદિયદુદ્ધતત્તળસ્સ અહ એત્તિઓ ભવદ્દોસો ।

જં જલળંમિ જલતે પડદ્દ પયંગો અવુદ્ધોઓ ॥ ૪ ॥

ટીકા-સ્તનજઘનવદનકરચરળળયળગર્વિતવિલાસિતગતિષુ ।

રૂપેષુ રજ્જમાના, -રમન્તે ચક્ષુરિન્દ્રિયવશાર્ત્તાઃ ॥ ૩ ॥

ચક્ષુરિન્દ્રિયદુર્દાન્તત્ત્વસ્ય અથ એતાવાન્ ભવતિ દોષઃ ।

યદ્જ્વલને જ્વલતિ, પતતિ પતદ્ગઃ અનુદ્ધિકઃ ॥ ૪ ॥

'થળે' ત્યાદિ । ચક્ષુરિન્દ્રિયવશાર્ત્તાઃ સ્ત્રીણા સ્તનજઘનાદિ રૂપેષુ રજ્જમાનાઃ  
=અનુરક્તા રમન્તે ॥ ૩ ॥

જ્વલને=અગ્નૌ । ઝેષ સુગમમ્ ॥ ૪ ॥

હોકર વધ ઓર વધન કો પાતા હૈ ઉસી તરહ નાના પ્રકાર કે વધ વધનો  
કો પાયા કરતે હૈ ॥ ગા. ૧-૨ ॥

'થળજહળ, ચક્ષિદિય' ઇત્યાદિ ।

યદ્યપિ ચક્ષુન્દ્રિય કે વિષય કી પ્રાપ્તિ કરને મે વ્યાકુલ હુળ પ્રાણી  
ઉસ વિષય કી પ્રાપ્તિ હોને પર આનન્દમગ્ન બન જાયા કરતે હૈ-વે સ્ત્રિયો  
કે સ્તન, જઘન, વદન, કર, ચરળ, નયન, ગર્વિત વિલાસયુક્ત ગમના  
દિરૂપ ચક્ષુન્દ્રિય કે વિષય કો વાર વાર દેલકર આસક્ત હોતે હૈ-  
પરન્તુ યહ ઇન્દ્રિય જન દુર્દાન્ત બન જાયા કરતી હૈ-તથ એસે પ્રાણી જિસ

આવેશમા આવને મૃત્યુ તેમજ બધનને પ્રાપ્ત કરે છે, તેમ જ અનેક જાતના  
વધબધનો મેળવે છે " ગા ૧-૨ "

થળ જહળ ચક્ષિદિય ઇત્યાદિ—

જે કે ચક્ષુન્દ્રિયોના વિષયોને મેળવવા માટે અત્યંત ઉત્સુક બનેલા  
પ્રાણીઓ તે વિષયોની પ્રાપ્તિ થઈ જવા બાદ આનન્દમગ્ન થઈ જાય છે-તેઓ  
સ્ત્રીઓના સ્તન, જઘન, મુખ, હાથ, ચરણ, નયન ગર્વિત વિલાસ-યુક્ત ગમન  
વગેરે રૂપ ચક્ષુન્દ્રિયોના વિષયોને વાર વાર જોઈને આસક્ત થઈ જાય છે, પરંતુ આ  
ઇન્દ્રિય બ્યારે દુર્દાન્ત બની જાય છે ત્યારે એવા પ્રાણીઓ અસાની પતંગની

મૂલ્ય-અગુરુવરપવરધૂપન ઝડપ મહાણુલેપનવિહીસુ ।

ગંધેસુ રજ્યમાના રમતિ ઘાણિદિયવસટ્ટા ॥ ૫ ॥

ઘાણિદિયદુદ્ધતત્તળસ્સ અહં પત્તિઓ હઝ્ઝ દોસો ।

જ ઓસહિગધેણં વિલાઓ નિઠાવડ ડરગો ॥ ૬ ॥

ટીકા-અગુરુવરપવરધૂપન ઋતુજમાલ્યાનુલેપનવિધિયુ ।

ગંધેસુ રજ્યમાના, -રમન્તે ઘ્રાણેન્દ્રિયવસાર્તાઃ ॥ ૫ ॥

ઘ્રાણેન્દ્રિયદુર્દાન્તત્તસ્ય અય એતામાર મત્તિ દોષઃ ।

યદ્ ઔપધિગન્ધેન વિલાદ્ધ નિર્ધારતિ ડરગ' ॥ ૬ ॥

ઘ્રાણેન્દ્રિયવસાર્તા અગુરુવરઃ=કૃષ્ણાગુરુઃ, પવરધૂપન=દશાદ્ધાદિરૂપો ધૂપઃ,  
' ઝડપમહુ ' ઋતુજમાલ્યાનિ=તત્તદ્ઋતુનાત્તુ પાણિ, અનુલેપનાનિ=ચન્દનકુકુ  
માદિરૂપાણિ, તેષા વિધયઃ=પ્રકારા યેષુ ગન્ધેષુ તત્ત રજ્યમાના=અનુરક્તા, સન્તો  
રમન્તે ॥ ૫ ॥

‘ ઓસહિગ્રેણ ’ ઔપધિગન્ધેન=કેતવ્યાદિયનસ્પતિસુગન્ધાનુરાગવશેન

પ્રકાર અજ્ઞાની પતંગ અપને પ્રાણોં કો અગ્નિ મેં ઢાલ દેતા હૈં ડસી પ્રકાર  
ડસી વિષય મેં અપને પ્રાણોં કા નાશ કરતે હૈં ॥ ગા૦ ॥ ૩-૪ ॥

અગુરુવર, ઘ્રાણિય ઇત્યાદિ ।

ઘ્રાણેન્દ્રિય કે વશવર્તી રને હુણ પ્રાણી અગુરુવર-કૃષ્ણાગુરુ, પવર,  
ધૂપન, -દશાદ્ધાદિરૂપ ધૂપ, ઋતુજમા-યે-તત્તદ્ઋતુ કે પુષ્પ, અનુલેપન-  
ચન્દન કુકુમ આદિ કે વિવિધ લેપ રૂપ ગંધ મેં અનુરક્ત હોતે હુણ હર્ષિત  
મન હોતે હૈં, પરન્તુ વે હસ ઇન્દ્રિય કી દુર્દમનતા કા કુઝ મી વિચાર  
નહીં કરતે હૈં । જવ યહ ઇન્દ્રિય દુર્દમન બન જાતી હૈ-તવ એસે પ્રાણી

જેમ પોતાના પ્રાણોને અગ્નિમા હોમી દે છે, તેમજ તે પણ તે વિષયમા જ  
પોતાના પ્રાણોને નષ્ટ કરી નાખે છે “ ગા ૩-૪ ”

અગુરુવર, ઘ્રાણિય ઇત્યાદિ ।

ઘ્રાણેન્દ્રિયના વશમા પડેલા પ્રાણીઓ અગુરુવર-કૃષ્ણાગુરુ, પવર, ધૂપન  
દશાદ્ધાદિ રૂપ ધૂપ ઋતુજ માલ્ય-તત્તદ્ઋતુના પુષ્પો, અનુલેપન ચન્દન-કુકુમ  
વગેરેના ભતભતના લેપના ગંધમા અનુરક્ત થઈને હર્ષિત થઈ જાય છે, પરંતુ  
હકીકતમા તો તેઓ તે ઇન્દ્રિયની દુર્દમતા વિષેનો કોઈ પણ ભતનો વિચાર  
કરતા જ નથી જ્યારે તે ઇન્દ્રિય દુર્દમ બની જાય છે

उरग = सर्पः तिलात् 'निधावई' निर्धावति = निस्सरति, ततो वयं वन्यन च प्राप्नो-  
तीति भावः । शेष स्पष्टम् ॥ ६ ॥

मूलम्—तित्तरुडुय कसायंवमहुखज्जपेज्जलेज्जेसु ।

आसाएसु य गिच्छा रमति जिहिमदियवसट्ठा ॥ ७ ॥

जिहिमदिय दुद्धतत्तणस्त अह एत्तिओ हवइ दोसो ।

ज गललगुक्खित्तो फुरइ थरविरल्लिओ मच्छो ॥ ८ ॥

उाया—तित्तरुडुय कपायाम्लमधुग्वहुखाद्यपेयलेह्येषु ।

आस्वादिषु च गृह्णा, रमते जिह्वेन्द्रियवशात् ॥ ७ ॥

जिह्वेन्द्रियदुर्दान्तत्वस्य, अथ एतावान् भवति दोषः ।

यद् गललग्नोत्क्षिप्तः, स्फुरति स्थलं विरलितो मत्स्यः ॥ ८ ॥

टीका—जिह्वेन्द्रियवशात्—तित्तरु=मरीचादिक, रुडुय=मारवेल्लादिक, कपाय.=  
आमलकादिकम्, अम्ल=काम्वादिक, मधुर=मोदकादिक, गहु=अनेकविध 'खज्ज'  
खाद्य-कदलीकादिक, 'पेज्ज' पेय=दुग्धादिक, 'लेज्ज' लेह्य=दण्डिशर्करादि-

केतकी आदि की गंध से आकृष्ट बनकर जिस प्रकार चिल से निबला  
सर्प वधवधन आदि कष्टा को पाता है वैसे कष्ट पाते हैं ॥ गा० ५-६ ॥

'तित्तरुडुय जिहिमय' इत्यादि ।

जो प्राणी जिह्वाइन्द्रिय के वशवर्ती बना रहता है वह मरीच आदि  
के जैसे तित्तरु स्वाद में करेला के जैसे रुडुय स्वाद में, आमल आदि के  
जैसे कपायरस में काम्वादिके जैसे अम्ल-खट्वरस में, मोदकादि के  
जैसे मधुर स्वाद में तथा विविध प्रकार के कदली फलादिक ग्वान्य पदार्थों  
में, दुग्धादि पेयपदार्थों में, एवं दधि और शक्कर आदि से निम्पन्न हुए

उतडी वगेरेनी गधथी आइए थउने जेम दरमाथी नीउजेयो साप वधवधन  
वगेरे कुट्टेने प्राप्त करे ते तेमज उए प्राप्त करे छे ॥ गा ५-६ ॥

तित्तरुडुय जिहिमदिय इत्यादि ।

जे प्राणी लुडुवा इन्द्रिय (लुल) ने वरा थयेयो डाय छे, ते मन्थु  
वगेरेना जेवा तीआ स्वादमा, करेला जेवा उडवा स्वादमा, आमली वगेरेना  
जेवा उपाय रसमा उरवादिना जेवा अम्ल-भाटा रसमा, लाडवा वगेरेना  
जेवा मधुर स्वादना तेमज नतनतना केणा वगेरेना भाद्य पदार्थमा, दूध  
वगेरे जेवा पेय पदार्थमा, अने दडी तेमज भाउ वगेरेवी तैयार वयेला





તેષુ તથોક્તેષુ તથા સપિમયાના-સપત્તિશાલિના હૃદયસ્ય મનસથ નિર્વૃત્તિકરેષુ  
સુખકરેષુ । એવં ભૂતેષુ સ્પર્શેષુ રજ્યમાનાઃ=અનુસ્ક્રાઃ રમન્તે ॥ ૯ ॥

‘ફાર્સિદિયે’ ત્યાદિ । કુઙ્ગરસ્ય=કરિણીસ્પર્શલુઙ્ગ્યસ્ય હસ્તિનો મસ્તક તીક્ષ્ણો-  
લોહાકુશઃ સ્વનતિ=વિદારયતિ । શેષ સુગમમ્ ॥ ૧૦ ॥ ૫ ॥ સૂ૦ ॥

મૂલ્મ-કલરિભિય મહુરતંતીતલતાલવસકઠહાભિરામેસુ ।

સદેસુ જં ન ગિદ્ધા વસટ્ટમરણં ન તે મરણ ॥ ૧૧ ॥

થળજહળવયળકરચરણનયળગઠિવયવિલાસિયગર્હસુ ।

રૂવેસુ ન રત્તા વસટ્ટમરણ ન તે મરણ ॥ ૧૨ ॥

અગુરુવરપવરધ્રૂવળ ઉડયમહ્લાણુલેવળવિહીસુ ।

ગધેસુ જે ન ગિદ્ધા વસટ્ટમરણં ન તે મરણ ॥ ૧૩ ॥

તિત્તકહુયકસાયવમહુરવહુલ્લજ્જપેજ્જલેજ્જેસુ ।

આસાણસુ ન ગિદ્ધા વસટ્ટમરણ ન તે મરણ ॥ ૧૪ ॥

( ઉડમયમાણ, ફાર્સિદિયદુદ્ધત ઇત્યાદિ,

ટીકાર્થ-જો પ્રાણી સ્પર્શન ઇન્દ્રિયકે વશવર્તી હોતે હૈં વે અપની સ્પર્શ-  
નેન્દ્રિયકી લોલુપતાસે હેમન્ત આદિ પ્રત્યેક ઋતુ સચન્ધી સુખ ભોગતે હૈં ।  
તથા સપત્તિશાલિયોં કે હૃદય મેં ઓર મન સુખકર સ્પર્શોં મેં અનુસ્ક્ર  
વને રહતે હૈં । ઇસ તરહ કાતે ૨ જવ ઇનકી યહ સ્પર્શન ઇન્દ્રિય દુર્દાન્ત  
વન જાતી હૈ તવ વે પ્રાણી જિસ પ્રકાર તીક્ષ્ણ લોહ કાં અકુશ કરિણી  
( હસ્તિની ) કે સ્પર્શ કરને મેં લુઙ્ગ્યક વને હુણ મત્ત ગજરાજ કે મસ્તક  
કો વિદાર દેતા હૈં ઊસી તરહ ઇસ સ્પર્શન ઇન્દ્રિય કે દ્વારા વિનષ્ટ કર  
દિયે જાતે હૈં ॥ ગા૦ ૯-૧૦ ॥

ઉ ડ મયમાણ, ફાર્સિદિયદુદ્ધત ઇત્યાદિ ।

જે પ્રાણી સ્પર્શેન્દ્રિયને વશ થાય છે, તેઓ પોતાની સ્પર્શેન્દ્રિયની  
લોલુપતાથી હેમન્ત વગેરે દરેકે દરેક ઋતુઓના સુખો ભોગવે છે તેમજ  
સપત્તિવાળાઓના હૃદય અને મનમુખદ સ્પર્શોમા આસક્ત બનીને રહે છે  
આમ કન્તા કરતા જ્યારે તેમની આ સ્પર્શેન્દ્રિય દુર્દાન્ત બની જાય છે ત્યારે  
તે પ્રાણીઓ ( હાથિણી ) ને સ્પર્શવામા લુઙ્ગ્ય બનેલા મત્ત ગજગજના  
મસ્તકને વિદીર્ણ કરી નાખે છે તેમજ આ સ્પર્શેન્દ્રિય વડે વિનષ્ટ કરી  
નાખવામા આવે છે ॥ ગા ૯-૧૦ ॥

उडभयमाणसुहेसु य सविभवहियमणनिव्वुडकरेसु ।

फासेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरण ॥ १५ ॥

टीका—शब्दादिष्विषयेष्वनामक्ताना वशार्त्तमरण न भवतीति पञ्चभिर्गाथाभिः प्राह—‘ कजरिभिय ’ इत्यादि ।

कलरिभिनमधुरतन्नीतलतावशकृदाभिरामेषु ।

शब्देषु ये न गृद्धा,—वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ ११ ॥

स्तनजघनयदनरचरणनयनगर्भितविन्यासिनगतिषु ।

रूपेषु ये न रक्ता,—वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १२ ॥

अगुरुवरप्रवरधूपन,—कुरुजमात्यानुलेपनप्रिधिषु ।

गन्धेषु ये न गृद्धा,—वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १३ ॥

तिक्तकटुककृपायाम्ल, मधुरमृदाघपेय लेखेषु ।

आस्वादेषु न गृद्धा,—वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १४ ॥

क्रतुभज्यमानसुखेषु च, सविभव हृदयमनोनिर्दृष्टिकरेषु ।

स्पर्शेषु ये न गृद्धा—वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १५ ॥

आसाम् व्याख्या सुगमा ॥ १५ ॥ सू० ६ ॥

( कलरिभिय, धणजहण, अगुरुवरपवर, तिक्तकटुय, उडभयमाण, इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि जो शब्दादि पांच इन्द्रियों के विषयो में आसक्त नहीं बनते हैं उनका वशार्त्तमरण नहीं होता है । इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है ।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द में, चक्षुइन्द्रिय के विषयभूत रूप में नासिका इन्द्रियके विषयभूत गंध में जिह्वाइन्द्रिय के विषयभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त—गृद्ध—नहीं होते हैं ॥ गा० ११—१५ ॥

कलरिभिय, धणजहण, अगुरुवरपवर, तिक्त कटुय उ ड भयमाण, इत्यादि ।

आ गाथाओ वडे सूत्रकार आ वात स्पष्ट करवा भागे छे के जे शब्द वगेरे पाये धन्द्रियोना विषयोभा आसक्त थता नथी, तेभनु वशात मरण थतु नथी, आ गाथाओनी व्याख्या सरण छे

जे प्राणी कर्णइन्द्रियना विषयभूत शब्दभा, नासिका धन्द्रियना, विषयभूत गंधभा, जिह्वा धन्द्रियना विषयभूत रसभा तेभज स्पर्शन धन्द्रियना विषयभूत स्पर्शभा अत्यंत आसक्त—गृद्ध थता नथी, तेओ वशार्त्तमरणने प्राप्त करता नथी ॥ गा ११—१५ ॥

मूलम्—सहेसु य भद्रपावएसु सोयविसयं उवागएसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १६ ॥

रूवेसुय भद्रपावएसु चवसुविसय उवगएसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ १७ ॥

गंधेसु य भद्रपावएसु घाणविसयं उवागएसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १८ ॥

रसेसु य भद्रपावएसु जिठभविसय उवगएसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ १९ ॥

फासेसु य भद्रपावएसु कायविसय उवगएसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण न समणेण सया ण होयव्व ॥ २० ॥

एव खलु जंबू । समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं  
सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते तिवेमि ।

॥ सत्तरसम नायज्झयणं समत्त ॥ १७ ॥

टीका—अनुकूल प्रतिकूलशब्दादिषु रागद्वेषवर्जन पञ्चभिर्गाथाभिः प्रतिबोध  
यति—'सहेसु य' इत्यादि ।

शब्देषु च भद्रकपापकेषु श्रोत्रविषयगुणगतेषु ।

तुष्टेन वा रुष्टेन वा, समणेन सदा न भवितव्यम् ॥ १६ ॥

सहेसुय, फासेसुय इत्यादि ।

एव खलु जंबू । समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सत्त  
रसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते तिवेमि ॥

अत्र सूत्रकार इन पाच गाथाओं द्वारा अनुकूल प्रतिकूल शब्दादि  
विषयों में श्रमणजन को कभी भी रागद्वेष नहीं करना चाहिये—इस

सहेसुय, फासेसुय इत्यादि

एव खलु जंबू । समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सत्तरसमस्स  
नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते तिवेमि ॥

सूत्रकार डूवे आ पाय गाथाओं वडे ओ वात स्पष्ट करवा छिछे छे  
के अनुकूल-प्रतिकूल शब्दादि विषयोभा श्रमणजनोने कदापि राग-द्वेष नहि

उडभयमाणसुहेसु य सविभ्रहिययमणनिवृद्धकरेसु ।

फासेसु जे न गिद्धा वसद्वमरणं न ते मरण ॥ १५ ॥

टीका—शब्दादिविषयेष्वनामक्ताना वशार्तमरण न भवतीति पञ्चभिर्गाथाभिः प्राह—‘कलरिभिय’ इत्यादि ।

कलरिभिनमधुरतन्त्रीतन्तावशकृदाभिरामेषु ।

शब्देषु ये न गृद्धा,—वशार्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ ११ ॥

स्तनजघनपदनरचरणनयनगर्भितत्रिन्नासिनगतिषु ।

रूपेषु ये न रक्ता,—वशार्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १२ ॥

अगुरुवरप्रवरधूपन,—कतुजमाल्यानुलेपनविधिषु ।

गन्धेषु ये न गृद्धा,—वशार्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १३ ॥

तिक्तकटुककृपायाम्ल, मधुरगुहाघपेय लेखेषु ।

आस्वादेषु न गृद्धा,—वशार्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १४ ॥

क्रतुभज्यमानसुखेषु च, सविभ्र हृदयमनोनिर्दृष्टिकरेषु ।

स्पर्शेषु ये न गृद्धा—वशार्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १५ ॥

आसाम् व्याख्या सुगमा ॥ १५ ॥ सू० ६ ॥

(कलरिभिय, धणजहण, अगुरुवरपवर, तिक्तकटुय, उडभयमाण, इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि जो शब्दादि पाँच इन्द्रियों के विषयों में आसक्त नहीं बनते हैं उनका वशार्तमरण नहीं होता है । इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है ।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द में, चक्षुइन्द्रिय के विषयभूत रूप में नासिका इन्द्रियके विषयभूत गंध में जिह्वाइन्द्रिय के विषयभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त—गृद्ध—नहीं होते हैं ॥ गा० ११—१५ ॥

कलरिभिय, धणजहण, अगुरुवरपवर, तिक्त कटुय उ ड भयमाण, इत्यादि ।

आ गाथाओ वडे सूत्रकार आ बात स्पष्ट करवा भागे छे के जे शब्द वगेरे पाये धन्द्रियोना विषयोभा आसक्त थता नथी, तेमनु वशार्तमरण थतु नथी, आ गाथाओनी व्याख्या सरण छे

जे प्राणी कर्णइन्द्रियना विषयभूत रूपभा, नासिका धन्द्रियना, विषयभूत गंधभा, जिह्वा धन्द्रियना विषयभूत रसभा तेमज स्पर्शन धन्द्रियना विषयभूत स्पर्शभा अत्यंत आसक्त—गृद्ध थता नथी, तेओ वशार्तमरणने प्राप्त करता नथी ॥ गा ११—१५ ॥





ઉડ્ભયમાણસુહેસુ ચ સવિભવહ્રિયમણનિવ્વુડકરેસુ ।

ફાસેસુ જે ન ગિદ્ધા વસદ્ધમરણં ન તે મરણ ॥ ૧૫ ॥

ટીકા—શબ્દાદિવિષયેષ્વનામક્તાના વર્ગાર્તમરણ ન ભયતીતિ પञ्ચમિર્ગા  
યામિઃ પ્રાહ—‘કલરિભિય’ इत्यादि ।

કલરિભિનમધુરતન્ત્રીતત્તાવશકદ્ધામિરામેષુ ।

શબ્દેષુ યે ન ગદ્ધા,—વર્ગાર્તમરણ ન તે મ્રિયન્તે ॥ ૧૧ ॥

સ્તનજઘનપદનરચરણનપનગર્જિતત્રિવ્યાસિતગતિષુ ।

રૂપેષુ યે ન રક્તા,—વર્ગાર્તમરણ ન તે મ્રિયન્તે ॥ ૧૨ ॥

અગુરુચરપ્રવરધૂપન,—ઋતુનમાલ્યાનુલેપનવિધિષુ ।

ગન્ધેષુ યે ન ગૃદ્ધા,—વર્ગાર્તમરણ ન તે મ્રિયન્તે ॥ ૧૩ ॥

તિત્તકદુકરુપાયામ્લ, મધુરપદુસાઘપેય લેયેષુ ।

આસ્વાદેષુ ન ગૃદ્ધા,—વર્ગાર્તમરણ ન તે મ્રિયન્તે ॥ ૧૪ ॥

ઋતુભજ્યમાનસુસેષુ ચ, સવિભવ હ્રદયમનોનિર્ટતિકરેષુ ।

સ્પર્શેષુ યે ન ગૃદ્ધા—વર્ગાર્તમરણં ન તે મ્રિયન્તે ॥ ૧૫ ॥

આસામ્ વ્યાખ્યા સુગમા ॥ ૧૫ ॥ સૂ૦ ૬ ॥

(કલરિભિય, ધળજહળ, અગુરુચરપદર, તિત્તકદુય, ઉડ્ભયમાણ,  
इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि जो शब्दादि  
पांच इन्द्रियों के विषयो में आसक्त नहीं बनते हैं उनका वर्गार्तमरण  
नहीं होता है । इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है ।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द में, चक्षुइन्द्रिय के विष-  
यभूत रूप में नासिका इन्द्रियके विषयभूत गंध में जिह्वाइन्द्रिय के विष-  
यभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त-  
गृद्ध-नहीं होते हैं ॥ गा० ११-१५ ॥

કલરિભિય, ધળજહળ, અગુરુચરપદર, તિત્તકદુય ઉડ્ભયમાણ, इत्यादि ।

આ ગાથાઓ વડે સૂત્રકાર આ વાત સ્પષ્ટ કરના માગે છે કે જે શબ્દ  
વગેરે પાંચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોમાં આસક્ત થતા નથી, તેમનું વર્ગાર્તમરણ થતું  
નથી, આ ગાથાઓની વ્યાખ્યા સરળ છે

જે પ્રાણી કર્ણઇન્દ્રિયના વિષયભૂત શબ્દમાં, નાસિકા ઇન્દ્રિયના, વિષયભૂત  
ગંધમાં, જિહ્વા ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રસમાં તેમજ સ્પર્શન ઇન્દ્રિયના વિષય  
ભૂત સ્પર્શમાં અત્યંત આસક્ત-ગૃદ્ધ થતા નથી, તેઓ વર્ગાર્તમરણને પ્રાપ્ત  
કરતા નથી ॥ ગા ૧૧-૧૫ ॥

मूलम्—सहेसु य भद्रपावएसु सोयविसयं उवागएसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १६ ॥

रूवेसुय भद्रपावएसु चक्खुविसय उवगएसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ १७ ॥

गधेसु य भद्रपावएसु घाणविसयं उवागएसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ १८ ॥

रसेसु य भद्रपावएसु जिब्भविसय उवगएसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ १९ ॥

फासेसु य भद्रपावएसु कायविसय उवगएसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ २० ॥

एव खलु जंबू । समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेणं  
सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते तिवेमि ।

॥ सत्तरसमं नायज्झयण समत्त ॥ १७ ॥

टीका—अनुकूल प्रतिकूलशब्दादिषु रागद्वेषवर्जन पञ्चभिर्गयाभिः प्रतिबोध  
यति—‘सहेसु य’ इत्यादि ।

शब्देषु च भद्ररूपापकेषु श्रोत्रविषयमुपगतेषु ।

तुष्टेन वा रुष्टेन वा, समणेन सदा न भवितव्यम् ॥ १६ ॥

सहेसुय, फासेसुय इत्यादि ।

एव खलु जंबू । समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेणं सत्त  
रसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते तिवेमि ॥

अत्र सूत्रकार इन पाच गाथाओ द्वारा अनुकूल प्रतिकूल शब्दादि  
विषयों में श्रमणजन को कभी भी रागद्वेष नहीं करना चाहिये—इस

सहेसुय, फासेसुय इत्यादि

एव खलु जंबू । समणेणं भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सत्तरसमस्स  
नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते तिवेमि ॥

सूत्रकार डोरे आ पाथ जाथाओ वडे ओ वात न्पण्ट करवा छिछे छे  
के अनुकूल-प्रतिकूल शब्दादि विषयोभा श्रमणजनोने कदापि राग-द्वेष नहि

ઉત્તમયમાણસુહેસુ ચ સવિભવહિયમણનિવ્વુડકરેસુ ।

ફાતેસુ જે ન ગિદ્ધા વસદ્દમરણં ન તે મરણ ॥ ૧૫ ॥

ટીકા—શબ્દાદિવિષયેષ્વનામક્તાનાં વશાર્તમરણ ન ભવતીતિ પચ્ચભિર્ગા  
યામિઃ પ્રાહ—‘કલરિભિય’ इत्यादि ।

કલરિભિમધુરતન્ત્રીતન્તાગ્વશકદ્ધાભિરામેપુ ।

શબ્દેપુ યે ન ગૃદ્ધા,—વશાર્તમરણ ન તે મ્રિયન્તે ॥ ૧૧ ॥

સ્તનજઘનચ્ચદનચરચરણનયનગર્જિતવિગ્ગાસિનગતિપુ ।

રૂપેપુ યે ન રક્તા,—વશાર્તમરણ ન તે મ્રિયન્તે ॥ ૧૨ ॥

અગુરુવરપ્રવરધૂપન,—ઋતુજમાલ્યાનુલેપનચિધિપુ ।

ગન્ધેપુ યે ન ગૃદ્ધા,—વશાર્તમરણ ન તે મ્રિયન્તે ॥ ૧૩ ॥

તિક્તકટુકરુપાયામ્લ, મધુરવહુતાઘપેય લેણેપુ ।

આસ્વાદેપુ ન ગૃદ્ધા,—વશાર્તમરણ ન તે મ્રિયન્તે ॥ ૧૪ ॥

ઋતુમજ્જમાનસુસેપુ ચ, સવિભવ હૃદયમનોનિર્વૃત્તિકરેપુ ।

સ્પર્શેપુ યે ન ગૃદ્ધા—વશાર્તમરણ ન તે મ્રિયન્તે ॥ ૧૫ ॥

આસામ્ વ્યાખ્યા સુગમા ॥ ૧૫ ॥ સૂ૦ ૬ ॥

(કલરિભિય, ધનજહ્ણ, અગુરુવરપદ્મ, તિક્તકટુય, ઉત્તમયમાણ, इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि जो शब्दादि पांच इन्द्रियों के विषयों में आसक्त नहीं बनते हैं उनका वशार्तमरण नहीं होता है । इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है ।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द में, चक्षुइन्द्रिय के विषयभूत रूप में नासिका इन्द्रियके विषयभूत गंध में जिह्वाइन्द्रिय के विषयभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त-गृद्ध-नहीं होते हैं ॥ गा० ११-१५ ॥

કલરિભિય, ધનજહ્ણ, અગુરુવરપદ્મ, તિક્ત કટુય ઉત્તમયમાણ, इत्यादि ।

આ ગાથાઓ વડે સૂત્રકાર આ વાત સ્પષ્ટ કરવા માગે છે કે જે શબ્દ વગેરે પાંચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોમાં આસક્ત થતા નથી, તેમનું વશાર્તમરણ થતું નથી, આ ગાથાઓની વ્યાખ્યા સરળ છે

જે પ્રાણી કર્ણઇન્દ્રિયના વિષયભૂત શ્વમાં, નાસિકા ઇન્દ્રિયના, વિષયભૂત ગંધમાં, જિહ્વા ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રસમાં તેમજ સ્પર્શન ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત સ્પર્શમાં અત્યંત આસક્ત-ગૃદ્ધ થતા નથી, તેઓ વશાર્તમરણને પ્રાપ્ત કરતા નથી ॥ ગા ૧૧-૧૫ ॥

मूलम्—सहेसु य भद्रपावएसु सोयविसयं उवागएसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १६ ॥

रूवेसुय भद्रपावएसु चक्खुविसय उवगएसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १७ ॥

गधेसु य भद्रपावएसु घाणविसयं उवागएसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १८ ॥

रसेसु य भद्रपावएसु जिब्भविसय उवगएसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १९ ॥

फासेसु य भद्रपावएसु कायविसय उवगएसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ २० ॥

एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं  
सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते तिवेमि ।

॥ सत्तरसम नायज्झयणं समत्त ॥ १७ ॥

टीका—अनुकूल प्रतिकूलशब्दादिषु रागद्वेषवर्जन पञ्चभिर्गायामिः प्रतिबोध  
यति—‘सहेसु य’ इत्यादि ।

शब्देषु च भद्ररूपापकेषु श्रोत्रविषयमुपगतेषु ।

तुष्टेन वा रुष्टेन वा, समणेन सदा न भवितव्यम् ॥ १६ ॥

सहेसुय, फासेसुय इत्यादि ।

एव खलु जवू । समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं सत्त  
रसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते तिवेमि ॥

अत्र सूत्रकार इति पाच गायामो द्वारा अनुकूल प्रतिकूल शब्दादि  
विषयों में श्रमणजन को कभी भी रागद्वेष नहीं करना चाहिये—इस

सहेसुय, फासेसुय इत्यादि

एव खलु जवू । समणेणं भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण सत्तरसमस्स  
नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते तिवेमि ॥

सूत्रकार ने आ पाच गायामो वडे ओ वात स्पष्ट करवा छिछे छे  
के अनुकूल-प्रतिकूल शब्दादि विषयोमा श्रमणजनोने कदापि राग-द्वेष नहि

उउभयमाणसुहेसु य सविभवहिययमणनिव्वुइकरेसु ।

फासेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरण ॥ १५ ॥

टीका—शब्दादिविषयेऽप्यनामक्ताना वशार्त्तमरण न भवतीति पञ्चभिर्गाथाभिः प्राह—‘ कलरिभिय ’ इत्यादि ।

कलरिभिनमधुरतन्त्रीतज्जतावशककुदाभिरामेषु ।

शब्देषु ये न गृद्धा,—वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ ११ ॥

स्तनजघनरदनरचरणनयनगर्भितत्रिज्जसितगतिषु ।

रूपेषु ये न रक्ता,—वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १२ ॥

अगुरुवरप्रवरधूपन,—ऋतुजमाट्यानुलेपनविधिषु ।

गन्धेषु ये न गृद्धा,—वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १३ ॥

तिक्तकडुककपायाम्ल, मधुरमहुत्ताघपेय लेह्येषु ।

आस्वादेषु न गृद्धा,—वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १४ ॥

ऋतुभज्यमानसुखेषु च, सविभर हृदयमनोनिर्दृष्टिकरेषु ।

स्पर्शेषु ये न गृद्धा—वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १५ ॥

आसाम् व्याख्या सुगमा ॥ १५ ॥ सू० ६ ॥

( कलरिभिय, थणजहण, अगुरुवरपवर, तिक्तकडुय, उउभयमाण, इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि जो शब्दादि पांच इन्द्रियों के विषयो में आसक्त नहीं बनते हैं उनका वशार्त्तमरण नहीं होता है । इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है ।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द में, चक्षुइन्द्रिय के विषयभूत रूप में नासिका इन्द्रियके विषयभूत गंध में जिह्वाइन्द्रिय के विषयभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त-गृद्ध-नहीं होते हैं ॥ गा० ११-१५ ॥

कलरिभिय, थणजहण, अगुरुवरपवर, तिक्त कडुय उ उ भयमाण, इत्यादि ।

आ गाथाओ वडे सूत्रकार आ बात स्पष्ट करवा भागे छे के जे शब्द वगेरे पाये छिन्द्रियोना विषयोमा आसक्त यता नथी, तेमनु वशार्त्तमरणु यतु नथी, आ गाथाओनी व्याख्या सरण छे

जे प्राणी कर्णइन्द्रियना विषयभूत शब्दमा, नासिका छिन्द्रियना, विषयभूत गंधमा, जिह्वा छिन्द्रियना विषयभूत रसमा तेमज स्पर्शन छिन्द्रियना विषयभूत स्पर्शमा अत्यंत आसक्त-गृद्ध यता नथी, तेओ वशार्त्तमरणुने प्राप्त करता नथी ॥ गा ११-१५ ॥



‘ સદેસુ ય ’ રૂપાદિ, ગાથા પશ્ચક મુગમમ્ ॥

સુધર્માસ્વામી માહ-‘ એવ સ્વલુ હે સ્વમ્નુઃ । શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાત્રસમાપ્તેન સપ્તદશસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય અયમર્થ,=પૂર્વોક્તો ભાવઃ પ્રજ્ઞપિતઃ=પ્રમુપિતઃ ।  
ઇતિ ત્રવીમિ-વ્યાખ્યા પૂર્વવત્ ॥ મૂ૦ ૭ ॥

ઇતિ શ્રી વિશ્વવિખ્યાત - જગદ્વલ્લભ-પ્રસિદ્ધવાચકપશ્ચદશભાષાકલ્પિત-  
લલિતકલાપાલાપક - પ્રવિશુદ્ધગયપત્રનૈકગ્રન્થનિર્માપક-વાદિમાનમર્દક  
શ્રીશાહુ ઉત્તરપતિકોલ્હાપુરરાજપ્રદત્ત ‘ જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય ’ પદમૂપિત-  
કોલ્હાપુરરાજગુરુ-વાલબ્રહ્મચારિ જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકરપૂજ્યશ્રી  
ઘાસીલાલવ્રતિવિરચિતાયા શ્રી જ્ઞાતાધર્મકથાદ્રમ્યસ્યાનગારધર્મામૃ-  
તવર્ણિણ્યારયાયા વ્યાખ્યાયા સપ્તદશમધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૭ ॥

૮ આઠ પ્રકાર કા સ્પર્શ ચાહે વહ અનુકૂલ હો ચાહે પ્રતિકૂલ હો-  
જવ ૨ સ્પર્શન ઇન્દ્રિય કા વિષય હો ઉસમે સાધુ કો કિસી મી તરહ સે  
કમી મી તુષ્ટ એવ રુષ્ટ નહીં હોનો ચાહિયે ॥ ૨૦ ॥

હસ પ્રકાર હે જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો સિદ્ધિગતિ  
નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત કર ચુકે હૈ હસ સત્રહવે જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ  
પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ પ્રમુપિત કિયા હૈ । એસા મેં ઉન્હી કે કહે અનુસાર  
કહ રહા હૈ ।

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત “ જ્ઞાતા  
ધર્મકથાદ્રમ્ય ” કી અનગાર ધર્મામૃતવર્ણિણી વ્યાખ્યા કા સત્રહવા  
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૭ ॥

૮ જાતનો સ્પર્શ—જમે તે અનુકૂળ કે પ્રતિકૂળ ગમે તેવો કેમ ન હોય  
જ્યારે જ્યારે તે સ્પર્શન ઇન્દ્રિયનો વિષય હોય તેમા સાધુને ડોઈ પણ રીતે  
કદાપિ તુષ્ટ અને રુષ્ટ થવુ જોઈએ નહિ ॥ ગા ૨૦ ॥

આ પ્રમાણે હે જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે સિદ્ધિગતિ  
નામક સ્થાનને મેળવ્યું છે-આ સત્તરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા  
અર્થ પ્રમુપિત કર્યો છે આવું હું તેમના કદા મુજબ જ તમને કહી રહ્યો છું

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘામીવાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ણિણી  
વ્યાખ્યાનુ સત્તરમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૭ ॥

રૂપેષુ ચ ભદ્રકપાપકેષુ, ચક્ષુર્વિષયમુપગતેષુ ।

તુષ્ટેન વા રુષ્ટેન વા, શ્રમણેન સદા ન મવિતવ્યમ્ ॥ ૧૭ ॥

૧-ભદ્રકપાપકેષુ=અનુકૂલ-પ્રતિકૂલેષુ ।

ગ ધેષુ ચ ભદ્રકપાપકેષુ, ઘ્રાણવિષયમુપગતેષુ ।

તુષ્ટેન વા રુષ્ટેન વા, શ્રમણેન સદા ન મવિતવ્યમ્ ॥ ૧૮ ॥

રસેષુ ચ ભદ્રકપાપકેષુ, જિહ્વાવિષયમુપગતેષુ ।

તુષ્ટેન વા રુષ્ટેન વા, શ્રમણેન સદા ન મવિતવ્યમ્ ॥ ૧૯ ॥

સ્પર્શેષુ ચ ભદ્રકપાપકેષુ, કાયવિષયમુપગતેષુ ।

તુષ્ટેન વા રુષ્ટેન વા, શ્રમણેન સદા ન મવિતવ્યમ્ ॥ ૨૦ ॥

વિષય કો સમજાતે હૈં યર્હા ભદ્રક શબ્દ કા અર્થ અનુકૂલ ઔર પાપક શબ્દ કા અર્થ પ્રતિકૂલ હૈ । જય શબ્દ રૂપ વિષય શ્રોત્રેન્દ્રિય કા હો તો उस समय चाहे वह मनोज हो या अमनोज हो कैसा ही क्यों न हो उसमें श्रमण-साधु-को कभी भी तुष्ट अथवा रुष्ट नहीं होना चाहिये ॥ गा० ॥ १६ ॥

ચક્ષુઃન્દ્રિય કા વિષયભૂતરૂપ જય उस इन्द्रिय द्वारा ग्रहण करने में आवे-तब वह चाहे मनोज हो या अमनोज हो उसमें श्रमण जन को कभी भी हर्ष विषाद-तुष्ट रुष्ट-नहीं होना चाहिये ॥ गा० १७ ॥

મનોજ એવ અમનોજ ગધ જય ઘ્રાણન્દ્રિય કા વિષય હો તવ સાધુ કો उस विषय में कभी भी तुष्ट रुष्ट नहीं होना चाहिये ॥ गा० १८ ॥

મનોજ અથવા અમનોજ રસ જિહ્વાન્દ્રિય કા વિષય હો-તવ उसमें श्रमण जन को कभी भी तुष्ट और रुष्ट नहीं होना चाहिये ॥ गा० १९ ॥

કરવો જોઈએ અહીં ભદ્રક શબ્દનો અર્થ અનુકૂળ અને પાપક શબ્દનો અર્થ પ્રતિકૂળ છે જ્યારે શબ્દરૂપ વિષય શ્રોત્ર ઈન્દ્રિયનો હોય તો ભલે તે મનોજ હોય કે અમનોજ હોય, ગમે તેવો કેમ ન હોય, તેમા શ્રમણ-સાધુ-ને કદાપિ તુષ્ટ કે રુષ્ટ થવું જોઈએ નહિ ॥ ગા ૧૬ ॥

ચક્ષુ ઈન્દ્રિયના વિષયભૂત રૂપ જ્યારે તે ઈન્દ્રિય વડે ગ્રહણ કરવામા આવે ત્યારે તે મનોજ હોય કે અમનોજ હોય, શ્રમણને કદાપિ તેમા હર્ષ વિષાદ-તુષ્ટ-રુષ્ટ નહિ થવું જોઈએ ॥ ગા ૧૭ ॥

મનોજ અને અમનોજ ગધ જ્યારે ઘ્રાણ ઈન્દ્રિયનો વિષય હોય ત્યારે સાધુને તે વિષયમા કદાપિ તુષ્ટ કે રુષ્ટ નહિ થવું જોઈએ ॥ ૧૮ ॥

મનોજ અથવા તે અમનોજ રસ જ્યારે જિહ્વા ઈન્દ્રિયનો વિષય હોય ત્યારે તેમા શ્રમણ-જનને કદાપિ તુષ્ટ અને રુષ્ટ થવું જોઈએ નહિ ૧૯ ॥

‘ સદેસુ ય ’ इत्यादि, गाथा पञ्चक सुगमम् ॥

સુધર્માસ્વામી પાઠ—‘ એવ સલુ હે સમ્બુઃ ! શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ  
યાત્સપ્રાપ્તેન સપ્તદશસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય અપમર્યઃ=પૂર્વોક્તો ભાવઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ=પ્રમુષિતઃ ।  
इति प्रवीमि—व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू० ७ ॥

इति श्री विश्वविख्यात — जगद्वल्लभ—प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकल्पित-  
ललितकलापालापक — प्रविशुद्धगयपत्रनैकग्रन्थनिर्मापक—वादिमानमर्दक  
श्रीशाहू उत्पतिकोल्हापुरराजप्रदत्त ‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित—  
कोल्हापुरराजगुरु—बालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री  
घासीलालप्रतिविरचिताया श्री ज्ञाताधर्मकथाज्ञसूत्रस्यानगारधर्मांमृ-  
तवर्षिण्याख्याया व्याख्याया सप्तदशमध्ययन समाप्त ॥ १७ ॥

૮ આઠ પ્રકાર કા સ્પર્શ ચાહે વહ અનુકૂલ હો ચાહે પ્રતિકૂલ હો—  
જવ ૨ સ્પર્શન ઇન્દ્રિય કા વિષય હો ઉસમં સાધુ કો કિસી મી તરહ સે  
કમી મી તુષ્ટ ણવ રુષ્ટ નહી હોનો ચાહિયે ॥ ૨૦ ॥

इस प्रकार है जबू ! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो सिद्धिगति  
नामक स्थान को प्राप्त कर चुके हैं इस सत्रहवें ज्ञाताध्ययन का यह  
पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है । ऐसा मैं उन्हीं के कहे अनुमार  
कह रहा हूँ ।

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત “ જ્ઞાતા  
ધર્મકથાજ્ઞસૂત્ર ” કી અનગાર ધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યા કા સત્રહવા  
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૭ ॥

૮ જાતનો સ્પર્શ—જયે તે અનુકૂળ કે પ્રતિકૂળ ગમે તેવો કેમ ન હોય  
જ્યારે જ્યારે તે સ્પર્શન ઇન્દ્રિયનો વિષય હોય તેમા સાધુને કોઈ પણ રીતે  
કદાપિ તુષ્ટ અને રુષ્ટ થવુ જોઈએ નહિ ॥ ગા ૨૦ ॥

આ પ્રમાણે હે જબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે સિદ્ધગતિ  
નામક સ્થાનને મેળવ્યું છે—આ સત્તરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા  
અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે આણુ હુ તેમના કહ્યા મુજબજ તમને કહી ગયો છું  
શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી  
વ્યાખ્યાનુ સત્તરમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૭ ॥

## ॥ अथाष्टादशमध्ययनम् ॥

अथाष्टादशमारभ्यते, अस्य च पूर्वेण महायममिगम्यन् - पूर्वस्मिन् अध्य-  
यने इन्द्रियवशवर्तिनाम् वशीकृतेन्द्रियाणां च अनर्थार्थौ मोक्तौ, इह तु लोभावि-  
ष्टानां लोभरहितानां च तावेवोच्येते, इत्येव पूर्वेण सह संवद्धमिदमध्ययनम्,  
तस्येदमादिमं सूत्रम्—‘ जइण भते’ इत्यादि—

मूलम्—जइ णं भंते । समणेण जाव सपत्तेणं सत्तरसमस्स णाय-  
ज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते, अट्टारमस्स ण भंते । णायज्झय-  
णस्स समणेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पणत्ते ? एवं खलु जंबू ।  
तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहं णामं णयरे होत्था ।  
वणणओ० । तत्थ णं धणणे णाम सत्थवाहे । भद्दाभारिया तस्स  
ण धणणस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए अत्तया पंचसत्थवाह-

अठारहवां अध्ययन प्रारम्भ

सुसमादारिका का वर्णन

सत्रहवां अध्ययन समाप्त हो चुका हैं। अब १८ वा अध्ययन  
प्रारम्भ होता है। इस अध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से  
संबंध है—कि पूर्व अध्ययन में इन्द्रियवशवर्ती तथा वशकृत इन्द्रियवाले  
जीवों को अर्थ की प्राप्ति होना कहा गया है। अब इस अध्ययन में  
सूत्रकार यह कहेंगे कि जो लोभ कषायसे युक्त तथा लोभ कषाय से  
रहित जीव होते हैं वे अनर्थ और अर्थ प्राप्ति से योग्य होते हैं। इस  
अध्ययन का सर्व प्रथम सूत्र यह है—‘ जइण भते ’ इत्यादि।

अठारमा अध्ययनने। प्रारम्भ

सुसमादारिकानु वर्णन

सत्तरवें अध्ययन पुरे थियु छे हवे अठारमा अध्ययननी शरूआत थाय  
छे आ अध्ययनने। पड़ेला अध्ययननी साथे आ जतने। स अथ छे के पड़ेला  
अध्ययनमा इन्द्रिय वशवर्ती तेमज वशीकृत इन्द्रियोवाणा जियेने अर्थनी  
प्राप्ति थाय छे, ते विषे कड़ेवामा आव्यु छे सूत्रकार हवे आ अध्ययनमा  
आ वातनु स्पष्टीकरवु करे के जे जेवे। लोभकषायथी तेमज लोभकषायथी  
रहित होय छे तेओ अनर्थ अने अर्थ प्राप्तिने लायक ठरे छे आ अध्य-  
यननु पड़ेलु सूत्र आ छे—जइण भते समणेण महावीरेण इत्यादि—

दारगा होत्था, तं जहा—धण्णे धणपाले, धणदेवे, धणगोवे, धणर-  
 विखए । तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्सधूया भद्दाए अत्तया  
 पंचण्हं पुत्ताण अणुमग्गजातीया सुंसुमाणामं दारिया होत्था,  
 सूमालपाणिपाया, तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स चिलाए नाम  
 दासचेडे होत्था, अहीणपचिदियसरीरे मसोवचिए चालकीलाव-  
 णकुसले यावि होत्था। तएणं से चिलाए दासचेडे सुसुमाए दारियाए  
 चालगाहे जाए यावि होत्था । सुंसुम दारिय कडीए गिण्हइ,  
 गिणिहत्ता, वहुहिं दारएहि य दारियाहि य वालेहि चालियाहि य  
 डिभएहि य डिंभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धि  
 अभिरममाणे २ विहरइ । तएणं से चिलाए दासचेडे तेसि वहुणं  
 दारियाण य जाव अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ, एव वट्टइ  
 आगेलियाओ, तेदुसए, पोतुल्लए, साडोल्लए, अप्पेगइयाणं  
 आभरणमल्लालकारं अवहरइ अप्पेगइए आउस्सइ, एव अवहसइ  
 निच्छोडेइ, निब्भच्छेइ तज्जेइ, अप्पेगइए तालेइ । तएणं ते  
 वहवे दारगा य ६ जाव रोयमाणा य कदमाणा य साण २  
 अस्मापिऊण णिवेदेति । तएणं तेसि वहुणं दारगाणय ६  
 जाव अस्मापियरो जेणेव धन्ने सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति,  
 उवागच्छित्ता धन्ने सत्थवाहे वहुहिं खिज्जणाहि य रुटणाहि  
 य उवलभणाहि य खिज्जमाणाहिय रुटमाणाहि य उवलभमाणा  
 य धणस्स एयमट्ट णिवेदेति ॥ सू० १ ॥



## ॥ अथाष्टादशमध्ययनम् ॥

अथाष्टादशमारभ्यते, अस्य च पूर्वेण महायमभिगम्यन् - पूर्वमिन् अन्य  
यने इन्द्रियवशवर्तिनाम् वशीकृतेन्द्रियाणां च अनर्थार्थी प्रोक्तौ, इह तु लोभादि  
ष्टाना लोभरहितना च तावेवोच्येते, इत्येव पूर्वेण सह संपद्विदम'ययनम्,  
तस्येदमादिम सूत्रम्—' जइ ण भते' इत्यादि—

मूलम्—जइ णं भते । समणेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स णाय-  
ज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते, अट्ठारमस्स ण भंते । णायज्झय-  
णस्स समणेणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पणत्ते ? एव खलु जंबू ।  
तेणं कालेणं तेण समएणं रायगिहं णाम णयरे होत्था ।  
वणओ० । तत्थ णं धणणे णाम सत्थवाहे । भदाभारिया तस्स  
ण धणणस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भदाए अत्तया पच्चमत्थवाह-

अठारहवा अध्ययन प्रारभ

सुसमादारिका का वर्णन

सत्रहवा अध्ययन समाप्त हो चुका है । अब १८ वा अध्ययन  
प्रारभ होता है । इस अध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से  
संबंध है—कि पूर्व अध्ययन में इन्द्रियवशवर्ती तथा वशकृत इन्द्रियवाले  
जीवों को अर्थ की प्राप्ति होना कहा गया है । अब इस अध्ययन में  
सूत्रकार यह कहेंगे कि जो लोभ कषायसे युक्त तथा लोभ कषाय से  
रहित जीव होते हैं वे अनर्थ और अर्थ प्राप्ति से योग्य होते हैं । इस  
अध्ययन का सर्व प्रथम सूत्र यह है—' जइ ण भते ' इत्यादि ।

अठारमा अध्ययनने। प्रारभ

सुसमादारिकानु वर्णन

सत्तरमं अध्ययन पुरं थयु छे छवे अठारमा अध्ययननी शरूआत थाय  
छे आ अध्ययनने। पडेला अध्ययननी साथे आ जतने। सअध छे के पडेला  
अध्ययनमा इन्द्रिय वशवर्ती तेमज वशीकृत इन्द्रियोवाणा एवेने अर्थनी  
प्राप्ति थाय छे, ते विवे कडेवामा आब्धु छे सूत्रकार छवे आ अध्ययनमा  
आ वातनु स्पष्टीकरण करशे के ने एवे। दोलकपायथी तेमज दोलकपायथी  
रहित होय छे तेओ अनर्थ अने अर्थ प्राप्तिने लायक ठरे छे आ अध्य-  
यननु पडेलु सूत्र आ छे—जइ ण भते समणेण महावीरेण इत्यादि—

धनः १ धनपाल २ धनदेवः ३ धनगोपः ४ धनरक्षितः ५ इति । तस्या स्वलु  
धन्यस्य सार्थवाहस्य दुहिता भद्रायाः सार्थवाहा आत्मजा धनादीना पञ्चाना  
पुत्राणाम् 'अणुमगजाइया' अनुमार्गजातिका=जाता एव जातिका, अनुमार्ग  
जातिका=अनुमार्गजातिका=पश्चाज्जाता सुसुमा नाम दारिमा आसीत् । कीदृशी  
सा ?—'सूमालपाणिपाया' सुकुमार पाणिपादा=कोमलकरचरणा । तस्य स्वलु  
धन्यस्य सार्थवाहस्य चिलातो नाम दासचेट=दासपुत्र आसीत् । योहि 'अहिण-

धण्णे २— धणपाले—२ धणदेवे ३, धणगोवे—४ धणरक्खिण—५) उस  
काल और उस समयमें राजगृह नाम का नगर था । इसका वर्णन पहले  
जैसा ही जानना चाहिये । उस नगर में धन्य नामका सार्थवाह रहता  
था । इसकी पत्नी का नाम भद्रा था । उस भद्रा भार्या से उत्पन्न हुए  
धन्य सार्थवाह के ये पाँच पुत्र थे—धन—१ धनपाल—२ धनदेव—३ धन-  
गोप—४ और धनरक्षित—५ ।

( तस्स ण धणस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पचण्ह पुत्ताण  
अणुमगजातीया सुसुमा णाम दारिया, होत्था, सूमालपाणिपाया, तस्स  
ण धणस्स सत्थवाहस्स चिलाएणाम दासचेडे होत्था, अह ण पचेदिय  
सरीरे मसोवचिए, बालकीलावणकुसले याचि होत्था ) इस धन्य सार्थ  
वाह के भद्रा भार्या की कुक्षि से उत्पन्न एक सुसुमा नामकी पुत्री थी—  
जो धनादिक पाँच पुत्रों के पीछे उत्पन्न हुई थी । उसके कर, चरण बड़े  
कोमल थे । इस धन्य सार्थवाह का एक दासचेट—दास पुत्र—था—जिस

अत्तया पच सत्थवाहदारगा होत्था, त जहा—ण्णे १, धणपाले २, धणदेवे ३,  
धणगोवे—४, धणरक्खिण—५ )

ते काणे अने ते सभये राजगृह नामे नगर હતુ તેનુ વર્ણન પહેલાની જેમ  
સમજી લેવું જોઈએ તે નગરમાં ધન્ય નામે સાર્થવાહ રહેતો હતો તેની પત્નીનું  
નામ ભદ્રા હતું તે ભદ્રા ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામેલા પાંચ પુત્રો હતા, તેમના  
નામ આ પ્રમાણે છે—ધન—૧, ધનપાલ—૨, ધનદેવ—૩, ધનગોપ—૪, અને ધનરક્ષિત—૫

( તસ્સ ણ ધણસ્સ સત્થવાહસ્સ ધૂયા ભદ્દાએ અત્તયા પચણ્હ પુત્તાણ અણુ  
મગજાતીયા સુસુમા ણામ દારિયા, હોત્થા, સૂમલપાણિપાયા, તસ્સ ણ ધણસ્સ  
સત્થવાહસ્સ ચિલાએ ણામ દાસચેડે હોત્થા, અહ ણ પચેદિય સરીરે મસોવચિએ,  
બાલકીલાવણકુસલે યાચિ હોત્થા )

તે ધન્ય સાર્થવાહની ભદ્રા—ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામેલી સુસુમા નામે  
એક પુત્રી હતી તે ધન વગેરે પોતાના ભાઈઓ બાદ ઉત્પન્ન થઈ હતી તેના  
હાથ—પગ ખુબ કોમળ હતા તે ધન્યસાર્થવાહનો એક દાસીપુત્ર હતો તેનું

ટીકા—' જડળ મન્તે ! ' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावन्मोक्ष सम्पाप्तेन सप्तदशस्य शाताध्ययनस्य अयमर्थः नितेन्द्रियाऽत्रितेन्द्रियाणामर्थानिर्वप्राप्तिरूपो भावः प्रशस्तः=प्ररूपितः, अष्टादशस्य तु शाताध्ययनस्य श्रमणेन यावन्मोक्ष सम्पाप्तेन कोऽर्थः प्रशस्तः ? सुधर्मास्वामी प्राह—एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नाम नगरमासीत्, ' वण्णओ ' वर्णकः=नगरवर्णनं पूर्वगद् विशेषम् । तत्र खलु धन्यो नाम भार्यवाहः परितसति । तस्य भद्रा नाम भार्याऽसीत् । तस्य खलु ग्रन्थस्य सार्धवाहस्य पुत्राः, भद्राया आत्मजाः पञ्च सार्धवाहदारका आसन् । तेषां नामान्प्राह—' त जहा ' तद्यथा—

ટીકાર્થ—જંબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્માસ્વામીસે પૂછતે હેં કિ—( જડળ મન્તે ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ સત્તરસમસ્સ ણાયઙ્ગયણસ્સ અયમદ્દે વણ્ણત્તે અટ્ટારસમસ્સ ણ મન્તે ણાયઙ્ગયણસ્સ સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે વણ્ણત્તે ? ) હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને જો કિ સિદ્ધિગતિ નામ ક સ્થાન કો પ્રાપ્ત કર ચુકે હેં મન્ત્રહવે જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કિયા હૈ—તો ઝઠ્ઠો સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુણ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને ૧૮ વેં જ્ઞાતાધ્યયન કા કર્યા અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હેં ? ( એવં સલ્લુ જંબૂ ! ) હસ પ્રકાર જંબૂ સ્વામી કે પૂછને પર સુધર્માસ્વામી ડનસે કહતે હેં કિ જંબૂ ! સુનો—તુમ્હારે પ્રશ્ન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈ—( તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાગગિહે ણામ ણયરે હોત્થા । વણ્ણઓં તત્થણ ધણે ણામં સત્થવાહે—ભદ્રામારિયા—તસ્સણ ધણસ્સ સત્થવાહસ્સ પુત્તા મહાણ અત્તયા પન્ન સત્થવાહદારમા હોત્થા, ત જહા—

પીઠાર્થ—જંબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે—

( જડળ મન્તે ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ સત્તરસમસ્સ ણાયઙ્ગયણસ્સ અયમદ્દે વણ્ણત્તે અટ્ટારસમસ્સ ણ મન્તે ણાયઙ્ગયણસ્સ સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે વણ્ણત્તે ? )

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે-એઓ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચુક્યા છે-મન્તરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કયો છે તો તે જ સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને મેળવી ચુકેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ૧૮ માં જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ પ્રરૂપિત કયો છે ?

( એવં સલ્લુ જંબૂ ! ) આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીએ પ્રશ્ન પૂછ્યો ત્યારબાદ શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જંબૂ ! સાલજો, તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે—

( તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાગગિહે ણામ ણયરે હોત્થા । વણ્ણઓં તત્થણ ધણે ણામ સત્થવાહે—ભદ્રા મારિયા—તસ્સણ ધણસ્સ સત્થવાહસ્સ પુત્તા મહાણ

धनः १ धनपाल २ धनदेवः ३ धनगोपः ४ धनरक्षितः ५ इति । तस्या खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य दुहिता भद्रायाः सार्थवाहा आत्मजा धनादीना पञ्चाना पुत्राणाम् 'अणुमगजाइया' अनुमार्गजातिका=जाता एव जातिका, अनुमार्ग जातिका=अनुमार्गजातिका=पश्चाज्जाता सुसुमा नाम दारिका आसीत् । कीदृशी सा ?—'सुमालपाणिपाया' सुकुमार पाणिपादा=कोमलकरचरणा । तस्य खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य चिलातो नाम दासचेटः=दासपुत्र आसीत् । योहि 'अहिण-

धणो २- धणपाले-२ धणदेवे ३, धणगोवे-४ धणरक्खिण-५) उस काल और उस समयमें राजगृह नाम का नगर था । इसका वर्णन पहले जैसा ही जानना चाहिये । उस नगर में धन्य नामका सार्थवाह रहता था । इसकी पत्नी का नाम भद्रा था । उस भद्रा भार्या से उत्पन्न हुए धन्य सार्थवाह के ये पाँच पुत्र थे-धन-१ धनपाल-२ धनदेव-३ धन गोप-४ और धनरक्षित-५ ।

( तस्स ण धणस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पचण्ह पुत्ताणं अणुमगजातीया सुसुमा णाम दारिया, होत्था, सुमालपाणिपाया, तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स चिलाएणाम दासचेडे होत्था, अह ण पचेदिय सरीरे मसोवचिए, बालकीलावणकुसले यावि होत्था ) इस धन्य सार्थवाह के भद्रा भार्या की कुक्षि से उत्पन्न एक सुसुमा नामकी पुत्री थी- जो धनादिक पाँच पुत्रों के पीछे उत्पन्न हुई थी । इसके कर, चरण बड़े कोमल थे । इस धन्य सार्थवाह का एक दासचेट-दास पुत्र-था-जिस

अत्तया पच सत्थवाहदारगा होत्था, त जहा-धणो १, धणपाले २, धणदेवे ३, धणगोवे-४, धणरक्खिण-५ )

ते धाणे अने ते सभये राजगृह नामे नगर હતુ તેનુ વર્ણન પહેલાની જેમ સમજી લેવું જોઈએ તે નગરમા ધન્ય નામે સાર્થવાહ રહેતો હતો તેની પત્નીનુ નામ ભદ્રા હતુ તે ભદ્રા ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પ મેલા પાંચ પુત્રો હતા, તેમના નામ આ પ્રમાણે છે-ધન-૧, ધનપાલ-૨, ધનદેવ-૩, ધનગોપ-૪, અને ધનરક્ષિત-૫

( તસ્સ ણ ધણસ્સ સત્થવાહસ્સ ધૂયા ભદ્દાએ અત્તયા પચણ્હ પુત્તાણ અણુ-મગ્ગજાતીયા સુસુમા ણામ દારિયા, હોત્થા, સુમાલપાણિપાયા, તસ્સ ણ ધણસ્સ સત્થવાહસ્સ ચિલાએ ણામ દાસચેડે હોત્થા, અહ ણ પચેદિય સરીરે મસોવચિણ, બાલકીલાવણકુસલે યાવિ હોત્થા )

તે ધન્ય સાર્થવાહની ભદ્રા-ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામેલી સુસુમા નામે એક પુત્રી હતી તે ધન વગેરે પોતાના ભાઈઓ બાદ ઉત્પન્ન થઈ હતી તેના હાથ-પગ ખડુ જ કેમળ હતા તે ધન્યસાર્થવાહનો એક દાસીપુત્ર હતો તેનું

पचिदियसरीरे ' अहीनपथेन्द्रियशरीरः=परिपूर्णसरेन्द्रियशरीरः, ' मासोपचित ' मासोपचितः=मासैरुपचित', पुष्टशरीर इत्यर्थः, पुनः ' बालक्रीडावणकुसले ' बालक्रीडनकुशलथापि आसीत् । ततः खलु स दासचेष्टः सुसुमाया दारिकायाः ' बालगाहे ' बालग्राहः यो हि बालक्रीडयितुं निपुक्तो भृत्यः स ' बालग्राहः ' इत्युच्यते जाताश्चाप्यभवत् । स हि चिलातः सुसुमां दारिका कट्यां गृह्णाति, गृहीत्वा, बहुभिर्दारिकैश्च दारिकामिथ वाग्यैश्च बालिकामिथ, डिम्भकैश्च डिम्भिकाभिश्च कुमारैश्च कुमारिकाभिश्च सार्द्धम्=दारकडिम्भकबालककुमाराणां अल्प, बहु, बहुतर कालकृतमेदो विज्ञेयः, अभिरममाणः २ = पुनः पुनः क्रीडन् विहरति । ततः खलु स चिलातो दामचेष्टः तेषां बहूनां ' दाराण जाव ' दारकाणां यावत्=दारकाणां दारिकाणां डिम्भकानां डिम्भिकानां कुमारानां कुमारिकाणां

का नाम चिलात था । जो प्रमाणोपेत पाचों इन्द्रियों से परिपूर्ण शरीर वाला था । मासोपचित था पुष्ट देहवाला था । यह बालकों को खिलाने में विशेष कुशल था । ( तएण से चिलाए दासचेडे सुसुमाए दारियाए बालगाहे जाए यावि होत्था सुसुमदारियं कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता बह्हि, दारएहि य दारियाहि य विहरइ-तेसि बहूण दारियाण य जाव अप्पेगइयाण खुल्लए अवहरइ, एव वइए आडोलियाओ तेदुरुए पोत्तुल्लए साडोल्लए, अप्पेगइयाण आभरणमल्लाल्कार अवहरइ, अप्पेगइए आउस्सइ, एव अवहरइ, निच्छेडेइ, निब्भच्छेइ तज्जेइ अप्पेगइए तालेइ ) इसलिये वह दासचेष्ट सुसुमा दारिकाके खिलाने के लिये नियुक्त हो गया । अतः वह चिलान दास चेष्टक सुसुमादारिका को गोदी में लेकर अनेक दारक दारिकाओं के साथ बालक बालिकाओं के साथ डिम्भक डिम्भिकों के साथ और कुमार कुमारिकों

नाम चिलात इत्तु ते सप्रभाणु पाथे छन्दियेथी परिपूणु शरीरवाणे इतो ते मासल तेमज्ज पुष्ट शरीरवाणे इतो ते आणकाने रमाडवाभा सविशेषवत्तु इतो ।

( तएण से चिलाए दासचेडे सुसुमाए दारियाए बालगाहे जाए यावि होत्था सुसुम दारिय कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता बह्हि, दारएहि य दारियाहि य विहरइ तेसि बहूण दारियाण य जाव अप्पेगइयाण खुल्लए अवहरइ, एव वइए आडोलि याओ तेदुरुए पोत्तुल्लए, साडोल्लए, अप्पेगइयाण आभरण मल्लाल्कार अवहरइ, अप्पेगइए, आउस्सइ, एव अवहरइ, निच्छेडेइ, निब्भच्छेइ, तज्जेइ, अप्पेगइए तालेइ )

तेथी ते दासचेर सुसुमा दारिकाने रमाडवा भाटे नियुक्त करवाभा आये । आ प्रभाणु ते चिलात दास चेष्टक सुसुमा दारिकाने जोणाभा जेसा दीने धणु । दारक दारिकाओंनी साथे आणक तेमज्ज आणाओंनी



ચ મધ્યે 'અપ્યેગદ્યાણ' અપ્યેકેપામ્ 'સુલ્લણ' કુલ્લકાન્=કપર્દકવિશેપાન્ 'કોડી' इति भाषा प्रसिद्धान् अपहरति=चोरयति। एव 'वट्टण' वर्तकान्=जत्वादिमयगोलकान् 'आडोलियाओ' आडोलिका इति नाम्ना प्रसिद्धान् बाल क्रीडनवस्तुविशेषान् 'तेंदूसण' देशीशब्दोऽयम्-गेन्दुकान् 'पोत्तुल्लण' वस्त्रमयपुत्तल्लिकाः, 'साडोल्लण' उत्तरीयवस्त्राणि चोरयति । तथा अप्येकેपाम् आभरणमाल्यालङ्कारान् अपहरति । अनन्तरम् 'अप्येगदण' अप्येककान् 'आउस्सड' आक्रुश्यति=निष्ठुरवचनेन 'एव' अवहमइ' अपहसति=अपशब्दमुच्चार्य हास्यं करोति, 'निच्छोडेइ' निश्छोटयति= 'यदि त्व किमपि वदिष्यसि तदा त्वा वहिर्निष्काशयिष्यामीत्यादि शब्दैस्तान् भीषयति, तथा 'णिब्भच्छेइ' निर्भर्त्सयति=तेषा निर्भर्त्सना करोति, एव 'तज्जेइ' तर्जयति 'मया कृत किमपिकार्यं यदि स्व मातापितृभ्यो यूय वदिष्यथ

કે સાથ ચાર ૨ खेलने में लगा रहता । खेलते २ वह चिलात दास चेदक उन अनेक दारक दारिका, डिम्भका, डिम्भिका, कुमार कुमारिकाभा में से कितनेक बच्चे के खेलने के साधन भूत कपर्दक विशेषों को कौडियो को चुरा लेता कितनेक के जतुके बने हुए चपेटो को, कितनेक के अडोलिक नाम से प्रसिद्ध खिलोनों को, कितनेक बच्चों की गेंदों को कितनेक बच्चे की वस्त्र के बनी हुई गुडियो को, तथा कितनेक बच्चे के उत्तरीयवस्त्रों-को फरियो को चुरालेता था । कितनेक बच्चों के आभरणों को मालाओं को और अलंकारों को भी चुरालिया करता था कितनेक बच्चे को गाली देता कितनेक बच्चे की वह निष्ठुर वचनों को उच्चारण कर हँसी मजाक करने लग जाता था । यदि तू कुछ कहेगाता मैं तुझे यहाँ से बाहिर निकाल दूँगा इत्यादि शब्दों से कितनेक बच्चों को वह डरा दिया करता था । कितनेक बच्चों को

અને ડિલિકાઓ સાથે અને કુમાર કુમારિકાઓની સાથે વારવાર રમવામા જ ચોટી રહેતો હતો તે ચિલાત દાસચેર રમતા રમતા ઘણા દારક-દારિક, ડિલક-ડિલિક, કુમાર-કુમારિકાઓમાથી કેટલાક બાળકોના રમવાના સાધન કપર્દક વિશેષોને-કોડીઓને ચોરી લેતો, કેટલાકના લાખના બનેલા ચપેટાઓને, કેટલાકના અડોલિક નામથી પ્રસિદ્ધ એવા રમકડાઓને, કેટલાક બાળકોની દડીઓને, કેટલાક બાળકોની વસ્ત્રથી બનેલી ઢીંગડીઓને તેમજ કેટલાક બાળકોના ઉત્તરીય વસ્ત્રોને ચોરી જતો હતો તે કેટલાક બાળકોના આભરણોને, માળાઓને અને ઘરેણાઓને પણ ચોરી જતો હતો તે કેટલાક બાળકોને ગાળો દેતો અને કેટલાક બાળકોની નિષ્ઠુર વચનો બોલીને ઠકા-મશકરી કરવા લાગતો હતો “ જો તું કંઈ પણ બોલશે તો હું તને અહીંથી બહાર કાઢી

पचिदियसरीरे ' अहीनपञ्चेन्द्रियशरीरः=पतिपूर्णसर्वेन्द्रियशरीरः, ' मांसोपचित ' मांसोपचितः=मांसैरुपचितः, पुष्टशरीर इत्यर्थः, पुनः ' बालक्रीडावणकुसले ' बालक्रीडनकुशलश्चापि आसीत् । ततः खलु स दासचेटः सुसुमाया दारिकायाः ' बालगाहे ' बालग्राहः यो हि बालक्रीडयितुं निपुक्तो भृत्यः स ' बालग्राहः ' इत्युच्यते जाताश्राप्यभवत् । स हि चित्रातः सुसुमा दारिका वट्यां गृह्णाति, गृहीत्वा, बहुभिर्दारिकैश्च दारिकामिथ बालकैश्च बालिकामिथ, डिम्भकैश्च डिम्भिकाभिश्च कुमारैश्च कुमारिकामिथ सार्द्धम्=दारकडिम्भकबालककुमाराणां अल्प, बहु, बहुतर कालकृतभेदो विज्ञेयः, अभिरममाणः २ = पुनः पुनः क्रीडन् विहरति । ततः खलु स चिलातो दासचेटः तेषां बहूना ' दाराण जाव ' दारकाणां यावत्=दारकाणां दारिकाणां डिम्भकानां डिम्भिकानां कुमारानां कुमारिकानां

का नाम चिलात था । जो प्रमाणोपेत पाचों इन्द्रियों से परिपूर्ण शरीर वाला था । मांसोपचित था पुष्ट देहवाला था । यह बालकों को खिलाने में विशेष कुशल था । ( तएण से चिलाए दासचेडे सुसुमाए दारियाए बालगाहे जाए यावि होत्था सुसुमदारियं कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता बहूहिं, दारएहि य दारियाहि य विहरइ-तेसिं बहूण दारियाण य जाव अप्पेगइयाण खुल्लए अवहरइ, एव बहए आडोलियाओ तेदुरुए पोतुल्लए साडोल्लए, अप्पेगइयाण आभरणमल्लालकार अवहरइ, अप्पेगइयाण आउस्सइ, एव अवहरइ, निच्छेडेइ, निब्भच्छेइ तज्जेइ अप्पेगइए तालेइ ) इसलिये वह दासचेट सुसुमा दारिकाके खिलाने के लिये नियुक्त हो गया । अतः वह चिलान दास चेटक सुसुमादारिका को गोदी में लेकर अनेक दारक दारिकाओं के साथ बालक बालिकाओं के साथ डिम्भक डिम्भिकों के साथ और कुमार कुमारिकों

नाम चिलात छतु ते सप्रमाण पाचे छन्द्रियोथी परिपूर्ण शरीरवाणे छतो ते भासल तेमज्ज पुष्ट शरीरवाणे छतो ते आणकाने रमाउवाभा सविशेषव्यतुर छतो ।

( तएण से चिलाए दासचेडे सुसुमाए दारियाए बालगाहे जाए यावि होत्था सुसुम दारिय कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता बहूहिं, दारएहि य दारियाहि य विहरइ तेसिं बहूण दारियाण य जाव अप्पेगइयाण खुल्लए अवहरइ, एव बहए आडोलि याओ तेदुरुए पोतुल्लए, साडोल्लए, अप्पेगइयाण आभरण मल्लालकार अवहरइ, अप्पेगइए, आउस्सइ, एव अवहरइ, निच्छेडेइ, निब्भच्छेइ, तज्जेइ, अप्पेगइए तालेइ )

तेथी ते दासचेर सुसुमा दारिकाने रमाउवा भाटे नियुक्त करवाभा

आव्ये । आ प्रमाणे ते चिलात दास चेटक सुसुमा दारिकाने जोजामा भेसा दीने धव्वा दारक दारिकाओंनी साथे आणक तेमज्ज आणाओंनी डिम्भक

કાદીના અમ્માપિતર યત્રેવ ધન્ય સાર્થવાદસ્ત્રૈવ ઉપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય ધન્ય સાર્થવાદ વહુભિઃ ' સ્વિજ્જનાહિ ય ' સ્વેદનાભિશ્ચ=સ્વેદજનકવાગ્મિઃ ' રુટનાહિ ય ' સ્વેદનાભિઃ માશ્રુરુદિતવાગ્મિઃ, ' ઉત્તલભનાહિ ' ઉપાલમ્ભનાભિ=ક્રિમેતરુચિતમ્ ? ભવાન્શામ્ ? इत्यादि वाग्भिश्च ' स्वेज्जमाणा ' स्वेदयन्तः स्वस्वेद ' प्रकाशयन्तः ' रुटमाणा य ' रुदन्त उत्तलभमाणा य ' उपालम्भयन्तश्च धन्याय सार्थवाहाय एतमर्थ=चिलातकृताऽपराधरूपमर्थ निवेदयन्ति ॥ सू० १ ॥

મૂલમ્-તણ્ણં સે ધણે સત્થવાહે ચિલાય દાસચેડ એ-  
મટ્ટ મુજ્જો મુજ્જો ણિવારેહં, ણો ચેવ ણં ચિલાય દાસચેડે  
ઉવરમહ્ । તણ્ણ સે ચિલાય દાસચેડે તેસિં વહૂણં દારગાણ  
ય ૬ અપ્પેગહ્યાણં છુલ્લણ અવહરહ્ જાવ તાલેહ્ । તણ્ણં તે  
વહવે દારગા ય જાવ રોયમાણા ય જાવ અમ્માપિઠ્ઠણં જાવ  
ણિવેદેતિ । તણ્ણં તે આસુરુત્તા જેણેવ ધણે સત્થવાહે તેણેવ

કી શિકાયત કરને લગે । અપને ૨ બાલકોં કે મુલ્લ સે દસ પ્રકાર કી  
દામચેટક યી હરકત સુનકર ડન દારક આદિ કો કે માતો પિતા જહા  
ધન્ય સાર્થવાહ હોતા યા વહા આતે ઓર આકર કે ધન્ય સાર્થવાહ કો  
અનેક સ્વેદજનક વચનોં દ્વારા રોતે ૨ ઉપાલમ્ભ=ઉલ્લહના દિયા કરતે-  
કયા આપ જૈસે વ્યક્તિયો કો યહ ઉચિત-હૈ-દસ તરહ સે ઉસસે કહા  
કરતે । દસ તરહ વે સ્વેદજનક તયાં અશ્રુ મરકર કહી ગઈ વાણિયોં દ્વારા  
અપના સ્વેદપ્રકાશિત કરતે હુણ રોતે હુણ એવ ઉલ્લહના દેતે હુણ ધન્યસાર્થ  
વાહ કે લિયે ચિલાતકૃત અપરાધ રૂપ અર્થ કી નિવેદના કરતે ॥સૂ૦ ૧॥

મુખેથી આ પ્રમાણે દામ ચેટકની ખરાબ વર્તણૂક વિષેની વિગત સાલગીને તે  
દારક વગેરેના માતાપિતા જ્યાં ધન્યમાર્થવાહ હોતો ત્યાં આવતા અને આવીને  
ધન્યમાર્થવાહને ઘણું કઠોર વચનોથી રડતાં રડતા ઠપકો આપતા રહેતા હતા  
' શું તમારી જેવી વ્યક્તિને આ વાત શોભે છે ? ' આ પ્રમાણે તે કહ્યા  
કરતા હતા આ પ્રમાણે તેઓ ખેદજનક તેમજ અશ્રુભીની હાલતમાં ડહેતી  
વાણીઓ વડે પોતાનું હૃદય પ્રકટ કરતા, રડતા તેમજ ઠપકો આપતા ધન્ય  
માર્થવાહને ચિલાતે જે કંઈ ખરાબ વર્તણૂક કરી હોય તે ખલ્લ કરિયાદો કરતાં  
રહેતા હતા ॥ સૂત્ર ૧ ॥

तदायुष्माक प्राणान् अहरित्यामीत्यैरुपैरायैरहुलिनिर्दगपूर्वक तेषु मीतिवृत्त्या दयति । तथा अप्येककान् बालकान् 'तालेः' ताडयति चपेटादिभि । ततः सलु ते बहवो दारकश्च यावत्-कुमारिकाश्च सर्वे याला 'रोयमाणा य' रुदन्तश्च 'कंद माणा य' क्रन्दन्तश्च=उच्चैः स्वरेण चीरहार कुर्वन्त 'माण २' स्वेषाम् २ 'अम्मापिऊण' अम्मापितृभ्यः दमर्थं निवेदयन्ति । ततः सलु तेषा बहूनां=दार-

घह निर्भर्त्सित कर देता "मेरा किया हुआ कुछ भी काम यदि तुम लोग अपने माता पिता से कहोगे-तो याद रखना मैं तुम्हारे प्राणों को ले लूंगा-तुम्हें जान से मार डालूंगा" इस तरह किननेक बालकों को वह अगुलि दिवा २ कर भयभीत कर दिया करता । किननेक बालकों को वह धप्पह आदि भी मार देता । (तएण ते बह्वे दारगा-य जाव रोयमाणा य कदमाणा य ४ साय २ अम्मापिऊण णिवेदेति, तएण तेस्मि बहूण दारगाण य ६ जाव अम्मापिउरो जेणेव धण्णे सत्थ-वाहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता धण्ण सत्थवाह वट्ठहि खिज्ज-णाहि य रुठणाहि य उवलभणाहि य खिज्जमाणा य रुटमाणा य उवल भेमाणा य धण्णस्स एयमट्ठ णिवेदेति) इस तरह वे अनेक दारक यावत् कुमारिकाँ सब ही रो रो कर के आक्रुद्धन करके-उच्चस्वर से चीत् कार करके-अपने २ माता पिताओं से उस दामचेटक की इस बर्ताव

भूझीश वगेरे वञ्चनार्थी डेटलाड भाण्डेने ते जीवडावी देतो डेतो डेटलाड भाण्डेनी ते लत्सना पणु करतो डेतो-भाजी डोछ पणु वात तमे तभारु भातापिताने डडेशो तो याद राणजे डु तमने अवता नडि छोडु तमने डु लनथी भारी नाभीश " आ प्रभाणु डेटलाड भाण्डेनी सामे ते आगणीओ थीधी थीधीने जीवडावी देतो डेतो डेटलाड भाण्डेने ते तभाथो वगेरे पणु लगावी देतो डेतो

(तएण ते बह्वे दारगा य ६ जाव रोयमाणा य कदमाणा य ४ साय २ अम्मापिऊण णिवेदेति, तएण तेस्मि बहूण दारगाण य ६ जाव अम्मापिउरो जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता धण्ण सत्थवाह वट्ठहि खिज्ज-णाहि य रुठणाहि य उवलभणाहि य खिज्जमाणा य रुटमाणा य उवल भेमाणा य धण्णस्स एयमट्ठ णिवेदेति)

आ प्रभाणु ते धणु दारक यावत् कुमारिकाओ रडता रडता, आकड न करता करता, भोगा साहे चीत्कार करीने पोतपोताना भातापिताने ते दास चेटकनी भरण वत्तुके विषे डेरियोडा करवा लाग्या पोताना

कादीना म ये अप्येकेषा 'खुल्लए' खुल्लकान्=रुपर्दकविशेषान् अपहरति  
'जाव तालेइ' यावत्ताडयति=पूर्वोक्तक्रमेण एव रुपर्दकाद्यपहरण यावत्तर्जनं  
ताडनं च करोति । ततः खलु बहवो दारकाश्च दारकादयो रुदन्तश्च यावत् स्वेपा  
२ अम्मापितृभ्यो निवेदयन्ति । ततः खलु ते आशुरुत्ताः=स्व पुत्रवचन श्रुत्वा झटिति  
क्रोधाविष्टमानसा यत्रैव धन्य सार्थवाहः तत्रैव उपागच्छन्ति उपागत्य बहूभिः  
'खेज्जणाहि जाव एयमट्ट' खेदनाभिर्यावत् एतमर्थम्=खेदसमूचनाभिर्यावत्  
उपालम्भनयुक्ताभिर्वाग्भिः चिलातदासचेटक कृताऽपराधलक्षणम् अर्थम् निवेदयन्ति ।  
ततः खलु धन्यः सार्थवाहो बहूना 'दारगाण' दारकाणा ६=दारकादीनाम्  
अम्मापितृणामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य आशुरुत्तः चिलात दासचेटम् 'उच्चा-  
वचाभिः=अनेकविधाभिः 'आउमणाहि' आक्रोशनाभिः=क्रोपजनवैवचनैः  
'आउसइ' आक्रुश्यति=आक्षिपति 'उद्धसइ' उद्धर्षयति=नामगोत्रादिनाऽधः  
पातयति-निन्दतीत्यर्थः । नेत्रमुखादि वक्रीकमणेन 'णिब्भच्छेइ' निर्भर्त्सयति=

अप्येगइयाण खुल्लए अवहरइ जाव तालेइ, तएण ते बहवे दारगा य  
जाव रोयमाणा य जाव अम्मापिऊण जाव णिवेदेति) इस तरह सम-  
झाने पर भी वह चिलात दासचेट उन अनेक दारको आदि में से  
कितनेक दारक आदिको के कपर्दक ( कौड़ी ) विशेषों को चुराता रहा  
यावत् उन्हें ताड़ित करता रहा-मारता पीटता रहा । और वे बालक  
आदि भी रोते हुए अपने २ माता पिताओं से उस के अपराध को जा  
२ कर कह देते रहे । ( तएण ते आशुरुत्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव  
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, बहूहिं खेज्जणाहिं जाव एयमट्ट णिवेदेति,  
तएण से धण्णे सत्थवाहे बहूण दारगाण अम्मापिऊण अतिए एयमट्ट  
सोच्चा आशुरुत्ते चिलायदासचेड उच्चावयाहिं आउमणाहिं आउसइ  
उद्धसइ णिब्भच्छेइ, ) इस प्रकार अपने २ बालकों के सुख से बार २

खुल्लए अवहरइ जाव तालेइ, तएण ते बहवे दारगा य जाव रोयमाणा य जाव  
अम्मापिऊण जाव णिवेदेति )

आ प्रमाणे समझववा छताये ते चिलात दासचेटक धण्णा दारके वगे  
रेमा डेटलाक दारके वगेरेनी डोडीओने थोरतो न रह्यो यावत् ते ण जकेने  
ताडित करतो रह्यो, तेभन मारतो पीटतो रह्यो अने ते आणके वगेरे पण  
रडता रडता पोतपोताना मातापिताने आनी इरियादो करता न रह्यो

( तएण ते आशुरुत्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
बहूहिं खेज्जणाहिं जाव एयमट्ट णिवेदेति, तएण से धण्णे सत्थवाहे बहूण दार  
गाण अम्मापिऊण अतिए एयमट्ट सोच्चा आशुरुत्ते चिलाय दासचेड उच्चावयाहिं  
आउमणाहिं आउसइ उद्धसइ, णिब्भच्छेइ )



उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहूहिं खेज्जणाहिं जाव एयमट्ठं  
 णिवेदेति । तएणं से धण्णे सत्थवाहे बहूणं दारगाणं ६  
 अम्मापिउण अंतिए एयमट्ठ सोच्चा आसुरुत्ते चिलाय दासचेडं  
 उच्चावयाहि आउसणाहिं आउसइ, उच्चसइ, णिब्भच्छेइ  
 निच्छोडेइ, तज्जेइ उच्चावयाहि तालणाहिं तालेइ, साओ  
 गिहाओ णिच्छुभइ । तएणं से चिलाए दासचेडे साओ  
 गिहाओ निच्छूढे समाणे रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव  
 पहेसु देवकुलेसु य सभासु य पवासु य जूयखलएसु य  
 वेसाघरेसु य पाणघरेसु य सुहं सुहेणंपरिवट्ठइ ॥सू० २॥

टीका—‘ तएणं से ’ इत्यादि । ततः खलु धन्य सार्थवाहः चिलात दास  
 चेष्टम् ‘ एयमट्ठ ’ एतमर्थम्=एतस्मादर्थान् दारकादीनां कपर्दकापहरणादिरूपाद  
 र्थान् भूयोभूयो निवारयति । नो चैव खलु दासचेष्ट एतस्माददुष्कृत्यादुपरमते ।  
 ततः खलु स चिलातो दासचेष्टः तेषां बहूना ‘ दारगाण य ’ दारकाणां चन्दार

तएण से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण से धण्णे सत्थवाहे) इसके बाद उस धन्यसार्थवाहने  
 ( चिलाय दासचेड ) चिलात दास पुत्र को ( एयमट्ठ भुज्जो २ णिवारेइ )  
 घालको के कपर्दक आदि चुराने रूप अर्थ से बार २ मना किया, परन्तु  
 ( णो चैव ण चिलाए दासचेडे उवरमइ ) वह चिलात दारक उस काम  
 से विरक्त नहीं हुआ । ( तएण से दासचेडे तेसिं बहूण दारगाण य ६

तएणं से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण से धण्णे सत्थवाहे) त्थारआह ते धन्य सार्थवाडे (चिलाय दास  
 चेड ) चिलात दासपुत्रने ( एयमट्ठ भुज्जो २ णिवारेइ ) आणओनी डोडीओ  
 वगेरेने थोरी जवा अहल बारवार मनाछ करी परतु ( णो चैव ण चिलाए  
 दासचेडे उवरमइ ) ते चिलात दारक पोतानी अर अवतालुड छोडीने सुधर्यो नडि

( तएण से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूण दारगाण य )

प्रपासु=पानीयशालासु च 'जूय खलएसु' द्यूतखलकेषु=द्यूतक्रीडनस्थानेषु च 'वेसाघरेसु' वेश्यागृहेषु च पाणघरेसु' पानगृहेषु=मद्यपानगृहेषु च सुख सुखेन परिवडूइ' परिवर्द्धते=वृद्धिं प्राप्नोति ॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएणं से चिलाए दासचेडे अणोहट्टिए अणिवा-  
रिए सच्छदमई सइरप्पयारी मज्जप्पसंगी चोज्जप्पसंगी मस-  
पसंगी जुयप्पसंगी वेसापसंगी परदारप्पसंगी जाए यावि

य पवासु य जूयखलएसु य वेसाघरेसु य पाणघरेसु य सुहसुहेण परि-  
वडूइ) और यहाँ तक हुआ कि कभी २ वह उसे छोड़ भी देता रहा  
और कभी २ तू मेरे घर में से निकल जा नहीं तो मैं तुझे मारूँगा इस  
तरह के वचनों से उस को तिरस्कार भी कर देते थे। परन्तु जब इस  
की शिक्षाओं का या भय प्रदर्शक चाक्यों का उस चिलात दासचेटक  
पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा तब अन्त में धन्य सार्थवाह ने हताश  
होकर उसे अनेक विध यष्टि मुष्टि आदिकी ताड़नाओं से ताड़ित कर  
अपने घर से बाहिर निकाल दिया। इस तरह जब धन्य सार्थवाह ने  
इसे अपने घर से बाहिर निकाल दिया—तब यह राजगृह नगरमें शृगा-  
टक आदि मार्गोंमें अवारा (स्वच्छन्दगामी) फिरने लगा और देवकुलों  
में सभास्थानों में, पानीय शालाओं में—प्याऊ घरो में, जुआ खेलने के  
स्थानों में वेश्याओं के घरोंमें, और शराब पीने की जगहों में घूम फिर  
कर जिस किसी भी तरह से अपना पालन पोषण करने लगा ॥सू० २॥

अने छेवटे आ वात त्या सुधी पडोअी के केअ केअ वणते ते तेने  
अहार पणु काढी भूकतो હતો અને કેઅ કેઅ વખતે તેને આ જાતના વચ-  
નોથી ઠપકો પણ આપતો રહેતો હતો કે તું મારા ઘરમાંથી નીકળી જ નહિ  
તર તને હું મારી નાખીશ પરંતુ બ્યારે આ જાતની શિક્ષાઓની કે બય  
પ્રદર્શનની તે દાસ ચેટક ઉપર કશી અસર થઈ નહિ ત્યારે છેવટે ધન્યસાર્થ  
વાહે હતાશ થઈને તેને લાકડી, મુઠ્ઠીઓ વગેરેથી તાડિત કરીને પોતાના ઘરથી  
બહાર કાઢી મૂક્યો આ પ્રમાણે બ્યારે ધન્ય સાર્થવાહે તેને પોતાના ઘરથી  
બહાર કાઢી મૂક્યો ત્યારે તે રાજગૃહ નગરના શૃંગાટક વગેરે રસ્તાઓમાં  
રખડેલની જેમ ભટકવા લાગ્યો અને દેવકુળોમાં, અભ્યાસથાનોમાં, પરબોમાં,  
લુગારના અડાઓમાં, વેશ્યાઓના ઘરોમાં અને શરાબખાતાઓમાં ભટકીને  
જેમ તેમ કરીને પોતાનું પાલન-પોષણ કરવા લાગ્યો ॥ સૂત્ર ૨ ॥

तिरस्करोति, ' निच्छोडेइ ' निच्छोटयति=त्यजति, ' तज्जेइ ' तज्जयति= ' निस्तर मग गृहात् नोवेत्तां ताडयिष्यामि ' इत्यादि वचनेन भर्त्सयति ' उच्चो वयाहिं तालणाहिं ' उच्चावचाभिर्यष्टिगुण्याद्येऽभिधाभिस्ताडनाभिः ' तालेइ ' ताडयति ' साओ गिहाओ ' स्वस्माद् गृहात् ' निच्छुमइ ' निक्षिपति=नि. सारयति । ततः खलु ' स चिण्णो दासचेटः तेन सार्वगादेन स्वस्माद् गृहात् ' निच्छुदे ' निक्षिप्त=नि. सारितः गन् राजगृहे नगरे सिंघाडग जाव गेहेसु श्रृङ्गाटक यावन्महापापयेषु चतुप्पथादिषु सर्वत्र स्थलेषु, देवकुलेषु च सभासु च

चिलात दासचेटक की पूर्वोक्त अपराधों को जय २ वे सुना करते तब वे गुस्से में भर २ कर जहाँ धन्यसार्थवाह होता वहाँ चले जाते रहे । और वहाँ जाकर बड़े खेद के साथ रोते हुए अपने २ दुःखों को प्रकट करते रहे इस तरह घर २ उन दारक आदि के माता पिताओं के मुख से इस दासचेटक के दुष्कृत्य को सुनकर वह धन्य सार्थवाह क्रोध में आकर उस दासचेटक चिलात को अनेक विधकोप जनक ऊँचे नीचे शब्दों से धिक्कार ने लगते थे उसका नाम गोत्र आदि की निंदा करने लग जाते थे । नेत्र, मुख, आदि को टेढ़ा करके उसका निरस्कार भी करते थे । ( निच्छोडेइ, तज्जेइ, उच्चावयाहिं तालणाहिं तालेइ, साओ गिहाओ निच्छुमइ, तण्ण से चिलाण दासचेडे साओ गिहाओ निच्छुदे समाणे रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु देवकुलेसु जाव सभासु

आ प्रमाणे पोतपोताना णाणजेने मुण्णथी वारवार चिलात दासचेटकनी इरियाहो न्यारे न्यारे तेओ सालगता त्यारे त्यारे तेओ गुस्से थठने न्या धन्यसार्थवाह उता त्या नता उता अने त्या नधने तेओ णडुण दु णनी साथे रडता रडता पोतपोताना दु जे ने प्रकट करता रडता उता आ प्रमाणे वारवार ते दारक वगेरेना मातापिताना मुण्णथी ते दासचेटकनी अरणि वतण्ण विघेनी विगत सालगाने ते धन्यसार्थवाह क्रोधमा लराधने ते दास चेटक चिलातने घेणु क्रोध उत्पन्न करे तेवा अरण वयनोधी धिक्कारवा लागतो उतो तेमज तेना नाम गोत्र वगेरेनी निंदा करवा लागतो उतो, आओ मुण्ण वगेरे णगाडीने तेना तिरस्कार पुण्ण करता रडता उता )

( निच्छोडेइ, तज्जेइ, उच्चावयाहिं तालणाहिं तालेइ, साओ गिहाओ निच्छुमइ, तण्ण से चिलाण दासचेडे साओ गिहाओ निच्छुदे समाणे रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु देवकुलेसु जाव सभासु य पवासु य जूय खलपसु य वेस्सा धरेसु य पाणधरेसु य सुह सुहेण परिवहइ )

प्रपासु=पानीयशालासु च 'जूय खलएसु' द्यूतखलकेषु=द्यूतक्रीडनस्थानेषु च 'वेसाघरेसु' वेश्यागृहेषु च पाणघरेसु' पानगृहेषु=मद्यपानगृहेषु च सुख सुखेन परिवड्ड' परिवर्द्धते=वृद्धिं प्राप्नोति ॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएणं से चिलाए दासचेडे अणोहट्टिए अणिवा-  
रिए सच्छदमई सइरप्पयारी मज्जप्पसंगी चोज्जप्पसंगी मस-  
पसंगी जुयप्पसंगी वेसापसंगी परदारप्पसंगी जाए यावि

य पवासु य जूयखलएसु य वेसाघरेसु य पाणघरेसु य सुहसुहेण परि-  
वड्ड' ) और यहाँ तक हुआ कि कभी २ वह उसे छोड़ भी देता रहा  
और कभी २ तू मेरे घर में से निकल जा नहीं तो मैं तुझे मारूँगा इस  
तरह के वचनों से उस को निरस्कार भी कर देते थे। परन्तु जब इस  
की शिक्षाओं का या भय प्रदर्शक वाक्यों का उस चिलात दासचेटक  
पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा तब अन्त में धन्य सार्थवाह ने हताश  
होकर उसे अनेक विध यष्टि मुष्टि आदिकी ताड़नाओं से ताड़ित कर  
अपने घर से बाहिर निकाल दिया। इस तरह जब धन्य सार्थवाह ने  
इसे अपने घर से बाहिर निकाल दिया—तब यह राजगृह नगरमें शृगा-  
टक आदि मार्गोंमें अवारा (स्वच्छन्दगामी) फिरने लगा और देवकुलों  
में सभास्थानों में, पानीय शालाओं में—प्याऊ घरो में, जुआ खेलने के  
स्थानों में वेश्याओं के घरोंमें, और शराब पीने की जगहों में घूम फिर  
कर जिस किसी भी तरह से अपना पालन पोषण करने लगा ॥सू० २॥

अने छेवटे आ वात त्या सुधी पडोअी के केअ केअ वणते ते तेने  
णहार पाणु काढी भूकतो हुतो अने केअ केअ वणते तेने आ जतना वय-  
नोअी कपडे पाणु आपतो रडेतो हुतो के तुं मारा घरमाथी नीकणी न नहि  
तर तने हु मारी नाभीश परतु न्यारे आ जतनी शिक्षाओनी के अय  
प्रदर्शननी ते दास चेटक उपर करी असर थर नहि त्यारे छेवटे धन्यसार्थ  
वाडे हुताश थधने तेने लाकडी, मुझ्ओ वगेरेथी ताडित करीने पोताना घेरथी  
णहार काढी भूकयो आ प्रभाणु न्यारे धन्य सार्थवाडे तेने पोताना घेरथी  
णहार काढी भूकयो त्यारे ते राजगृह नगरना शृगाटक वगेरे रस्ताओमा  
रणडेलनी नेम लटकवा लाग्यो अने देवकुलोमा, अलास्थानोमा, परओमा,  
जुगारना अष्टाओमा, वेश्याओना घरोमा अने शराणआनाओमा लटकीने  
नेम तेम करीने पोतानु पालन—पोषणु करवा लाग्यो ॥ सूत्र २ ॥

होत्था । तएणं रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामंते दाहिण-  
 पुरत्थिमे दिसीभाए सीहगुहा नाम चोरपट्ठी होत्था, विसम-  
 गिरिकडगकोडवसंनिविट्ठा, वसी कलंकपागारपरिक्खित्ता  
 छिपणसेलविसमप्पवायफलिहोवगूढा एगदुवारा अणेग-  
 खंडी विदियजणणिग्गमपचेसा अट्ठिभत्तरपाणिया सुदुल्ल-  
 भजलपेरंता सुचहुस्स वि कुवियवलस्स आयगस्स दुप्पहंसा  
 यावि होत्था । तत्थ सीहगुहाए चोरपट्ठीए विजए णामं  
 चोरसेणावई परिवसइ अहम्मिंए जाव अधम्मकेऊ समुट्ठिए  
 बहुणगरणिग्गयजसे सूरे दट्ठप्पहारी साहसिए सद्देही । से  
 णं तत्थ सीहगुहाए चोरपट्ठीए पंचणह चोरसयाणं आहेव-  
 च्च जाव विहरइ । तएणं से विजए तक्करे चोरसेणावई  
 बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य सधि-  
 च्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणधारगाण  
 य वालघायगाण य विसभघायगाण य जूयकाराण य  
 खडरक्खाण य अन्नेसि च बहूणं छिन्नभिन्नवहिराययाण  
 कुडगे यावि होत्था । तएणं से विजए तक्करे चोर-  
 सेणावई रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमे जणवय बहूहि  
 गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य वदिग्गहणेहि  
 य खत्तखणणेहि य पथकुट्टणेहि य उक्किलेमाणे २ विद्धंसे  
 माणे २ णित्थाणं णिद्धणं करेमाणे विहरइ । तएणं से  
 थिलाए दासचेडे रायगिहे बहूहि अत्थाभि सकीहि चोज्जामि



સંકીહિય દારામિસકીહિ ય ધણિણહિ ય જૂઝકરેહિ ય પર-  
ઘભવમાણેર રાયગિહાઓ નગરાઓ ણિગચ્છડ, ણિગચ્છિત્તા,  
જેણેવ સીહગુહા ચોરપછી તેણેવ ઉવાગચ્છડ ઉવાગચ્છિત્તા  
વિજય ચોરસેણાવડ ઉવસંપજિત્તાણં વિહરડ ॥ સૂ૦૩ ॥

ટીકા—‘તણ સે ઇત્યાદિ । તત’ ગ્વલુ સ ચિલાતો દાસચેટઃ ‘અણોહ-  
ટ્ટિણ’ અનપઘટ્ટિતઃ, યો હિ દુષ્કૃતૌ પ્રવર્તમાન કમપિ હસ્તો ધૃત્વા નિવારયતિ,  
સોઽપઘટ્ટકઃ, નિવાર્યમાણસ્તુ અપઘટ્ટિત’, અય હિ નિવારયિતુરભાવાત્ અનપઘટ્ટિતઃ=  
નિરજ્જુશ ‘અણિવારિણ’ અનિવારિત’, હિતોપદેશકસ્યાભાવાત્ અનિવારિતઃ,

‘તણ સે ચિલાણ દાસચેટે’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તણ) હસકે વાદ (સે ચિલાણ દાસચેટે) વહ ચિલાત દાસચે  
ટક (અણોહટ્ટિણ અણિવારિણ સચ્છદમઈ સહરપ્પચારી મજ્જપ્પસંગી ચોજ્જ-  
પ્પસંગી મસપ્પસંગી, જૂયપ્પસંગી, વેસાપસંગી, પરદારપ્પસંગી જાણ યાવિ  
હોત્યા) અનપઘટ્ટિત—નિરજ્જુશ બન ગયા—જો દુષ્કર્મ મેં પ્રવર્તમાન કિસી  
કો મી હાથ પકડકર ઉસસે નિવારિત કર દેતા હૈ ઉસકા નામ અપઘટ્ટક  
ઔર જો દૂર કિયા જાતા હૈ વહ અપઘટ્ટિત કહલાતો હૈ । નિવારણ કર  
નેવાલે કા અભાવ હોને સે યહ ચિલાત દાસચેટક અનપઘટ્ટિત હસા  
કારણ સે બન ગયા । હિતોપદેશક કોઈ ઉસકા રહા નહી અત યહ  
કુત્સિત કામ કરને સે પીછે નહી હટતા—હસલિયે યહ અનિવારિત હોકર  
જો મન મેં આતા ઉસે કર ડાલતા—અત’ ઉહણડ બન ગયા । સ્વચ્છન્દ

તણ સે ચિલાણ દાસચેટે ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—(તણ) ત્યારપછી (સે ચિલાણ દાસચેટે) તે ચિલાત દાસ ચેટક  
(અણોહટ્ટિણ અણિવારિણ સચ્છદમઈ, સહરપ્પચારી મજ્જપ્પસંગી, ચોજ્જપ્પસંગી મસ  
પ્પસંગી, જૂયપ્પસંગી, વેસાપસંગી, પરદારપ્પસંગી, જાણ યાવિ હોત્યા)

અનપઘટ્ટિત—સ્વચ્છદ બની ગયો, દુષ્કર્મમા પડેલા ગમે તેને જે હાથ  
પકડીને તેમાથી તેને દૂર કરે છે તેનું નામ અપઘટ્ટ અને જે દૂર  
કરવામા આવે છે તે અપઘટ્ટિત કહેવાય છે ચિલાત દાસચેટકને ખોળા કામોથી  
દૂર લઈ જનાર—તેને નિવારણ કરનાર કોઈ હતું નહિ એથી તે અનપઘટ્ટિત  
થઈ ગયો હતો તેને કોઈ હિતોપદેશક હતો નહિ તેથી તે કુત્સિત કામ કર  
વામા પણ પીછેહઠ કરતો ન હતો, ખરાબ કામોથી તેને રોકનાર નહિ હોવાને  
કારણે તે મનમા શાવે તેમ કરતો હતો એથી તે ઉદ્ડ બની ગયો હતો તે

‘ સચ્છદમર્દ ’ સચ્છદમતિઃ=સ્વામિશાયવર્તી-ઉદ્ગુહ્યત્યર્થઃ, અતएव ‘ સહરણ-  
યારી ’ સૈરપચારી = સચ્છદવિહારી ‘ મઙ્ગળપ્પસંગી ’ મઘમમઙ્ગી મઘપાયી,  
‘ ચોઙ્ગળપ્પસંગી ’ ચૌર્યપ્પસંગી=ચૌર્યકર્મણિ પરાયણ, ‘ મમપ્પસંગી ’ માંસપ્પસંગી=  
માંસમક્ષણશીલઃ, ‘ જૂયપ્પસંગી ’ છૂતપ્પસંગી છૂતક્રીડાપ્રસક્તઃ, ‘ વેસાપ્પસંગી ’  
વેશ્યાલમ્પટઃ, एव ‘ પરદારપ્પસંગી ’ પરદારપ્પસંગી=પરદારરતો જાતશ્રાપિ આસીત્ ।  
તતઃ સ્વહુ રાજગૃહસ્ય નગરસ્ય અદૂરસામન્તે દક્ષિણપૌરમ્યે દિશ્ચાગે અગ્નિકોણે  
સિંહગુહાનામ ચોરપત્ની આસીન્, યા દિ પત્ની ‘ વિસમગિરિકઢગકોડવસન્નિ-  
વિદ્ધા ’ વિપમગિરિકટકકોડવસન્નિવિદ્ધા=વિપમો નિમ્નોન્નતો યો ગિરિકટકઃ=  
પર્વત મધ્યમાગઃ, તમ્ય યઃ કોડવઃ પ્રાન્તમાગ, તત્ર સન્નિવિદ્ધા=સ્થિતા આસીત્ ।  
પુનઃ ‘ વસીકલકપાગારપરિચ્છિન્ના ’ વસીકલકપાકારપરિચ્છિન્ના=વસીકલક  
વંશજાલમયી વૃત્તિઃ, સૈવ પ્રાકાર, તેન પરિચ્છિન્ના=પરિવેષ્ટિતા=વશનિર્મિતજાલ  
મયપ્રાકારૈઃ સમન્તાત્-પરિવેષ્ટિતા, ‘ છિન્નાસેલવિસમપ્પગ્રાયફાલિહોવગૂઢા ’=  
છિન્નસૈલવિપમપ્રપાતપરિચ્છોપગૂઢા=છિન્નોઞ્ચયત્તરાપેક્ષયા વિમક્તો ય. શૈલ.=  
પર્વતઃ, તત્સમ્બન્ધિનો યે વિપમાઃ પ્રપાતા ગર્તા, ત एव પરિચ્છા. તયા ઉપગૂઢા=  
આશ્લિષ્ઠા પરિવેષ્ટિતા વિમક્તશૈલાત્રયનિર્ગતવિપમપ્રપાતરૂપપરિચ્છાપરિવેષ્ટિતેત્યર્થઃ  
‘ ઇગ્ગદુવારા ’ ઇગ્ગદુવારા=ઇક દ્વાર=પ્રવેશનિર્ગમરૂપ યસ્યા સા=ઇકપ્રવેશનિર્ગમા,  
‘ અણેગસઘડી ’ અણેગસઘડા=અણેકાણિ સઘડાણિ=વિભાગા રક્ષાદેતોર્યસ્યાં સા  
અણેકસઘડા, યત્ર=સ્વરક્ષાર્થે અણેકાણિ સ્થાનાણિ સન્તિ, ‘ વિદિયજણિગમપવેસા ’

વિહારી હો ગયા-મઘપ્રસંગી હો ગયા-મદિરા પીને લગ ગયા । માંસ  
ખાને લગ ગયા, ચોરી કરને લગા, જૂઆ खेलने લગા, વેશ્યાસેવન કરને  
લગા, ઔર परदार सेवन करने में भी लपट हो गया । ( तएण राय-  
गिहस्स नयरस्स अदूरसामन्ते दाहिणपुरत्थिमे ‘ दिसीभाए सीहगुहा  
नाम चोरपत्नी होत्या-विसमगिरिकडगकोडवसन्निविद्धा वसीकलक  
पागारपरिचिखत्ता छिण्णसेलविसमप्पग्रायफालिहोवगूढा रग्गदुवारा,  
अणेगसघडी, विदियजणणिग्गमपवेसा अर्द्धिभतरपाणिघा सुद्धलभजल

સ્વેચ્છદ વિહારી થઈ ગયો હતો, દારૂ પિનારો થઈ ગયો હતો તે માંસ  
ખાવાલાગ્યો, ચોરી કરવા લાગ્યો, જુગાર રમવા લાગ્યો, વેશ્યા-સેવન કરવા  
લાગ્યો અને પરચી સેવનમાં પણ લપટ થઈ ગયો હતો

(તएण रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामन्ते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए सीहगुहा नाम  
चोरपत्नी होत्या / गिरिकडगकोडवसन्निविद्धा वसीकलकपागारपरिचिखत्ता, छिण्णा  
सेल  
एगदुवारा, अणेगसघडी, विदियजणणिग्गमपवेसा

विदितजननिर्गमप्रवेशा=विदितजनानामेव=विश्वासवतामेव निर्गमप्रवेशौ यस्या सा=विश्वस्तजननिर्गमप्रवेशवती ' अर्द्धभतरपाणिया ' अभ्यन्तरपानीया=मध्यस्थित-

पेरता, सुग्रहस्त विकूवियवलस्त आगयस्त दुग्धहसा, यावि होत्था तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए णाम चोरसेणावई परिवसई, अहम्मिय जाव अहम्मकेऊसमुट्टिण बहुणगरणिगयजसे, सूरु दढप्पहारी साहसिए सद्वेही-सेण तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोर सयाण आह्वच्च जाव विहरइ ) उसी राजगृह नगर के न अधिक दूर पर और न अधिक पास में दक्षिण पौरस्त्य दिग्विभाग में-अग्निक्वण में-सिंहगुहा नाम की एक चोर पल्ली थी-यह चोरपल्ली विषम गिरिकटक के प्रान्त भाग में-निम्नोन्नतपर्वत के मध्यभाग के अन्त भाग में स्थित थी । इसके चारों ओर वासों की घाड़ थी-यह घाड़ ही इसका प्राकार ( किला ) था-उससे यह घिरी हुई थी । अवयवान्तरों की अपेक्षा से विभक्त जो पर्वत तत्सन्धी जो विषम प्रपात खड़ा उन विषम खड्डेरूप परिखा से यह परिवेष्टित थी । निकलने का और आने का इस में एक ही द्वार था । इसमें रक्षा के निमित्त चोरोने अनेक स्थान बना रखे थे । परिचित-विश्वासवाले-व्यक्ति ही इसमें आ जा सकते थे ।

अर्द्धभतरपाणिया, सुदुग्धभनलपेरता, सुग्रहस्त वि कूवियवलस्त आगयस्त दुग्धहमा, यावि होत्था तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए णाम चोरसेणावई परिवसई, अहम्मिय जाव अहम्मकेऊ समुट्टिए बहुणगरणिगयजसे, सूरु दढप्पहारी, साहसिए सद्वेही सेण तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाण अह्वच्च जाव विहरइ )

ते राजगृह नगरथी धणु इर पणु नडि अने धणु नल्ल पणु नडि अवी, दक्षिण पौरस्त्य दिग्विभागमा अग्निक्वणमा-सिंहगुहा नामे एक चोरपल्ली હતી તે ચોરપल्ली જીથી નીચી ગિરિમાળાઓના પ્રાત ભાગમા નિમ્નોન્નત પર્વતના મધ્યભાગના અંતભાગમા આવેલી હતી તેની ચોમેર વાનોની વાડ હતી તે વાડ જ તેનો કોટ ( કિલો ) હતો તેનાથી તે ઘેરા એલી હતી અવયવાતરોની અપેક્ષાએ વિભક્ત જે પર્વત અને તત્સન્ધી જે વિષમ પ્રપાત-ખાડો-તે વિષમ ખાડાકૂપી પરિખાથી તે પરિવેષ્ટિત હતી આવવા અને જવા માટે તેમા એક જ દરવાજો હતો ચોરોએ પોતાની રક્ષા માટે ઘણા સ્થાનો બનાવેલા હતા પરિચિત વિશ્વાસુ માણસો જ તેમા આવજા કરી શકતા હતા પાણી માટે તેની વચ્ચે એક જળાશય હતું, તેની બહાર

જલાશયા 'સુરુઝમજલપેરંતા' સુદુર્લભમપર્યન્તા=સુદુર્લભ જલં પર્યન્તે=પાન્ત-  
 માગે=વહિર્માગે યસ્યા સા=નલરહિતરહિર્માગા 'મુવદુમ્સ વિ' મુવદોરપિ  
 કૂવિપત્તલસ્સ 'કૂપિકત્તલસ્ય=ચોરગવેપકસેન્યસ્ય 'આગયસ્સ' આગતસ્ય 'દુપ્પ  
 હંસા' દુપ્પખપા દુર્ધર્પણીયા ચાપિ આસીત્ । તત્ર સલ્લ મિદ્દગુહાયા ચોરપલ્લીયા  
 વિજયો નામ ચોરસનાપતિ =ચોરનાયકઃ પરિવમતિ યો હિ 'અદમ્મિણ જાવ'   
 અધાર્મિકો યાવત્=અર્થમેળ ચરતિ અધાર્મિકઃ અધર્માચરણશીલઃ-અથ યાવત્પદેન-  
 હતઆરમ્બ 'ઘાયાણ વહાણ અઙ્ગાયણાણ' ક્વત્પન્તઃ પાઠો ગ્રાહ્યઃ, તથાહિ-'અધ-  
 મ્મિદ્દે' અધર્મિષ્ઠ=સર્વથા ધર્મરહિતઃ, 'અધર્મખલાઈ' અધર્માખ્યાયી-અધર્મક  
 થક, 'અધમ્માણુમે' અધર્માણુગ =અધર્માણુગામી 'અધર્મપલોઈ' અધર્મપ્રલોકી=  
 અધર્મદર્શી 'અધર્મવલઙ્ગણે' અધર્મપરઙ્ગન=અધર્માનુરક્ત, 'અધર્મસીલસમુ  
 દાયારે' અધર્મશીલવસુદાનાર =અધર્મ એવ શીલ સ્વમાત્ર સમુદાનારથ્થે યસ્ય સ,

પાની કે લિપે હસમેં વીચ મેં એક જલાશય થા-હસકે ચાહિરી ભાગ મેં  
 જલ નહી થા । અનેક બી ચોર ગવેપક સેનાજન યહા આજાવે તો બી  
 વે હસ પલ્લી ધા નાશ નહીં કર સકતે થે । હસ સિદ્ધગુહા નામકી ચોર  
 પલ્લી મેં વિજય નામ કા એક ચોર સેનાપતિ રહતા થા । યહ અધાર્મિ  
 ક યાવત્ અધર્મ કેતુગ્રહ જૈસા ઉદિત હુઆ થા । યહાં યાવત્ શબ્દ સે  
 "ઘાયાણ વહાણ અઙ્ગાયણાણ" યહાં તક કા પાઠ ગ્રહણ ક્રિયા ગયા  
 હૈ-હસ કા ખુલાશા ભાવ હસ પ્રકાર હૈ-અધાર્મિક શબ્દ કા અર્થ હોતા  
 હૈ અધર્માચરણશીલ-યહ વિજય નામકા ચોર અધર્માચરણશીલ થા । અધ  
 મિષ્ઠ થા-સર્વથા ધર્મસે રહિત થા, અધર્માખ્યાયી થા-અધર્મકા કથન કર  
 નેવાલા થા, અધર્માણુગ થા-અધર્મ કા અણુગામી થા, અધર્મપ્રલોકી થા-  
 અધર્મ કા હી દેખને વાલા થા-અધર્મપરઙ્ગન થા અધર્મ મેં અનુરક્ત થા

પાણી હતું નહિ ધણા ચોરાની શોધ કરતા મૈનિકો ત્યા આવે છતાંએ તે  
 પલ્લીનો નાશ કરી શકતા ન હતા તે સિદ્ધગુહા નામની ચોરપલ્લીમા વિજય  
 નામે એક ચોર સેનાપતિ રહેતો હતો તે અધાર્મિક યાવત્ અધર્મ કેતુગ્રહની  
 જેમ ઉદય પામ્યો હતો અહીં યાવત્ શબ્દથી "ઘાયાણ વહાણ અઙ્ગાયણાણ"  
 અહીં સુધીનો પાઠ ગ્રહણ કરવામા આવ્યો છે તેનુ સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે  
 છે-અધાર્મિક શબ્દનો અધર્મા-ચરણશીલ હોય છે તે વિજય નામે ચોર  
 અધર્માચરણશીલ હતો, અધર્મિષ્ઠ હતો, સાવ ધર્મરહિત હતો, અધર્માખ્યાયી  
 હતો, અધર્મની વાત કહેનાર હતો, અધર્માણુગામી હતો, અધર્મનો અણુગામી  
 એટલે કે અધર્મને અનુસરનાર હતો, અધર્મપ્રલોકી હતો, અધર્મને જ જોનાર  
 હતો, અધર્મપરઙ્ગન હતો, અધર્મમા આસક્ત હતો, અધર્મશીલ

अधर्मशीलोऽधर्माचरणश्चेत्यर्थः, 'अधर्मेण चेव वृत्तिं कप्पे माणे विहरइ' अधर्मे-  
णैव वृत्तिं कल्पयन् विहरति=अधर्मेणैव सावधानुष्ठानेनैव, वृत्तिं कल्पयन्=जीविका-  
मुपार्जयन् 'विहरइ' विहरति=आस्ते । पुनः 'हणञ्जिदभिदवियत्तए' जहिछिन्धि  
भिन्धि विकर्तकः='हण' जहि=मारय यष्ट्यादिना 'जिद' छिन्धि=छेदय-  
खड्गादिना, 'भिद' भिन्धि=भेदय भल्लादिना, इतिशब्दैः स्यान्नुयायिन प्रेरयन्  
प्राणिनो विकृन्तति यः सः, जहि छिन्धिभिन्धि विकर्तकः, इति, 'लोहियपाणी'  
लोहितपाणिः=लोहितौ पाणी यस्य सः, रक्तरञ्जितकरयुगलः 'चडे' चण्ड उत्कटरोपः  
'रुदे' रौद्रः=भयानकः 'लुल्ले' क्षुद्र=क्षुद्रकर्मचारी 'उक्कचणवचणमायानिय-  
डिकवडकूडसाइसपयोगवहुले' उत्कञ्चनवञ्चनमायानिकृतिरुपटकूटमाइसपयोग-

अधर्मशील समुदाचारवाला या-अर्थात् इसका स्वभाव और आचरण  
दोनों अधर्ममय थे-अधर्म ही इस का स्वभाव था और अधर्म ही इस  
का आचरण था । अतः अपनी जीविका का निर्वाह सावध अनुष्ठानों  
(अधर्म) द्वारा ही किया करता था । यष्ट्यादि द्वारा इसे मारो, खड्गादि  
द्वारा इसे छेदो भल्लादि द्वारा इसे भेदो इस प्रकार के शब्दों से यह  
अपने अनुयायियों को सदा प्रेरित करता हुआ स्वयं जीवों का छेदन  
भेदन न किया करता था । इसके दोनों हाथ रक्त से रञ्जित रहते थे ।  
इस का क्रोध बहुत प्रचण्ड था देखने में यह बड़ा भयानक दिखता था ।  
क्षुद्र कर्मकारी था । "उक्कचणवचणमायानियडिकवडकूडसाइसपओग  
वहुले" उत्कञ्चन, वचन, माया, निकृति, कपट, कूट, साइ, इनका व्यव-

हूतो-એટલે કે તેનો સ્વભાવ અને આચરણ બંને અધર્મમય હતા અધર્મ જ  
તેનો સ્વભાવ હતો અને અધર્મ જ તેનું આચરણ હતું એથી તે પોતાનું  
જીવન સાવધ અનુષ્ઠાનો વડે એટલે કે અધર્મનું આચરણ કરીને પુરૂ કરતો  
હતો લાકડી વગેરેથી એને મારો, તરવાર વગેરેથી એને કાપી નાખો, બાલાઓ  
વગેરેથી એને ભેદી નાખો આ જાતના શબ્દોથી તે પોતાના અનુયાયીઓને  
હુમ્મશા હુકમ કરતો રહેતો હતો તે પોતે પણ જીવોનું છેદન-ભેદન કરતો  
રહેતો હતો તેના બંને હાથો લોહીથી ખરડાએલા રહેતા હતા તેનો ક્રોધ  
અત્યંત પ્રચંડ હતો દેખાવમાં તે ખૂબ જ ભયાનક લાગતો હતો, તે ક્ષુદ્ર  
કર્મ કરનાર હતો

( ઉક્કચણવચણમાયાનિયડિકવડકૂડસાઇસપઓગવહુલે ) ઉત્કચન, વચન,  
માયા, નિકૃતિ, કપટ, કૂટ, સાઈ આ બધાનો વહેવાર તેના જીવનમાં



જલાશયા 'સુલ્લભજલપેરતા' સુદુર્લભજલપર્યન્તા=સુદુર્લભ જલ પર્યન્તે=પાન્ત-  
 માગે=પરિમાગે યસ્યા સા=જલરહિતપરિમાગા 'યુવદુમ્મ વિ' સુવરોરપિ  
 કૂવિપવલસ્સ 'કૂવિકવલસ્ય=ચોરગવેપકસૌયસ્ય 'આગવસ્સ' આગતસ્ય 'દુપ્પ-  
 હંસા' દુપ્પન્નમા દુર્ધર્પણીયા ચાપિ આસીત્ । તત્ર સલ્લુ સિદ્ધગુહાયા ચોરપલ્લ્યા  
 વિજયો નામ ચોરસનાપતિ=ચોરનાયકઃ પરિવસતિ યો ઠિ 'અદમ્મિણ જાવ'   
 અધાર્મિકો યાવત્=અધર્મેણ ચરતિ અધાર્મિકઃ અધર્માચરણશીલઃ-અથ યાવત્પદેન-  
 હતભારમ્ય 'ઘાયાણ વહાણ અચ્છાયણાણ' इत्यन्तः पाठो ग्राह्यः, तथाहि-'अध-  
 म्मिष्ठे' अधर्मिष्ठ=सर्वथा धर्मरहितः, 'अधम्मवत्ताह' अधर्माख्यायी-अधर्मक  
 थक, 'अधम्माणुगे' अधर्मानुग=अधर्मानुगामी 'अधम्मपलोद्ध' अधर्मप्रलोकी=  
 अधर्मदर्शी 'अधम्मवलज्जणे' अधर्मप्ररञ्जन=अधर्मानुरक्तः, 'अधम्मसीलसमु-  
 दायारे' अधर्मशीलसमुदाचार=अधर्म एव शील स्वभाव समुदाचारश्च यस्य स,

પાનો કે લિપે હસમેં વીચ મેં एक जलाशय था-इसके बाहरी भाग में  
 जल नहीं था । अनेक भी चोर गवेषक सेनाजन यहां आजावे तो भी  
 वे इस पल्ली का नाश नहीं कर सकते थे । इस सिद्धगुहा नामकी चोर  
 पल्ली में विजय नाम का एक चोर सेनापति रहता था । यह अधार्मि-  
 क यावत् अधर्म केतुग्रह जैसा उदित हुआ था । यहा यावत् शब्द से  
 "घायाए वहाए अच्चायणाए" यहां तक का पाठ ग्रहण किया गया  
 है-इस का खुलाशा भाव इस प्रकार है-अधार्मिक शब्द का अर्थ होता  
 है अधर्माचरणशील-यह विजय नामका चोर अधर्माचरणशील था । अध-  
 मिष्ठ था-सर्वथा धर्मसे रहित था, अधर्माख्यायी था-अधर्मका कथन कर  
 नेवाला था, अधर्मानुग था-अधर्म का अनुगामी था, अधर्मप्रलोकी था-  
 अधर्म का ही देखने वाला था-अधर्मप्ररञ्जन था अधर्म में अनुरक्त था

પાણી હતું નહિ ઘણા ચોરાની શોધ કરતા સૈનિકો ત્યા આવે છતાંયે તે  
 પલ્લીનો નાશ કરી શકતા ન હતા તે સિદ્ધગુહા નામની ચોરપલ્લીમાં વિજય  
 નામે એક ચોર સેનાપતિ રહેતો હતો તે અધાર્મિક યાવત્ અધર્મ કેતુગ્રહની  
 જેમ ઉચ્ચ પામેો હતો અહીં યાવત્ શબ્દથી "ઘાયાણ વહાણ અચ્છાયણાણ"  
 અહીં સુધીનો પાઠ અહણ કરવામાં આવ્યો છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે  
 છે-અધાર્મિક શબ્દનો અધર્મા-ચરણશીલ હોય છે તે વિજય નામે ચોર  
 અધર્માચરણશીલ હતો, અધર્મિષ્ઠ હતો, સાવ ધર્મરહિત હતો, અધર્માખ્યાયી  
 હતો, અધર્મની વાત કહેનાર હતો, અધર્માનુરાગી હતો, અધર્મનો અનુગામી  
 એટલે કે અધર્મને અનુસરનાર હતો, અધર્મપ્રલોકી હતો, અધર્મને જ જોનાર  
 હતો, અધર્મપ્રરજન હતો, અધર્મમાં આસક્ત હતો, અધર્મશીલ સમુદાયારી

विशेषप्रकारेण नाशाय, उत्सादनाय=द्विपदादिमकलजीयानां सर्वथा नाशाय च,  
'अधर्मकेतुः समुत्थितः' अधर्मकेतुः समुत्थितः-अधर्म पापप्रधानो यः केतुः=  
केतुग्रहः, अधर्मकेतुः=उत्पातरूपधूमकेतुमहाग्रहः तद्वत् समुत्थितः । बहुनगर-  
णिगयजसे 'बहुनगरनिर्गतयशः', बहुनगरेषु निर्गत जनमुखान्निःसृत यशः  
ख्यातिर्यस्य सः, प्रसिद्ध इत्यर्थः, सूरः 'दृढप्रहारी' दृढप्रहारी=दृढप्रहरण  
शीलः 'साहसिणः' साहसिक=अविमृश्यकारी 'सदवेधी' शब्दवेधी=शब्दश्रव-  
णेन लक्ष्यवेधी च आसीत् । 'से' सः = विजयचौर खलु तत्र सिंहगुह्यार्थं  
चोरपत्न्या पञ्चानाम् चोरशतानाम् 'आहेनच्च जाव' आधिपत्यं यावत्=  
स्वामित्वं कुर्वन् विहरति । ततः खलु स विजयस्तस्करः चोरसेनापति बहूनां  
चोराणां च 'पारदारियाणय' पारदारिकाणां=परस्त्रीगामिनां च 'गन्धिभेय-  
गाणय' ग्रन्थिभेदकानां 'सन्धिच्छेयगाणय' सन्धिच्छेदमाना=भित्तिसर्धिं छित्त्वा  
ये धनमपहरन्ति ते सन्धिच्छेदका उच्यन्ते, तेषाम्, 'खत्तखणगाणय' क्षात्र-  
खनकानां=सधिरहितभित्ति खनकानाम्, 'रायावगारीणय' राजाऽपकारिणां=

पशु, पक्षी, सरीसृप आदि प्राणियोंके घातके लिये, वधके लिये, तथा उनके  
सर्वथा विनाशके लिये, यह अधर्मकेतुग्रह जैसा उदित हुआ था । अनेक  
नगरों में यह कुख्यात हो चुका था । बड़ा शूरवीर था । इसका प्रहार  
बहुत गहरा होता था । विना विचारे काम करना ही इसका स्वभाव था  
शब्द श्रवण कर यह अपने लक्ष्य के वेधने में बड़ा निपुण था । वह  
विजय चौर सिंहगुफा नाम की उस चोरपत्नी में पाचसौ चोरों का  
आधिपत्य यावत् स्वामित्व करता हुआ रहता था । ( तएण से विजय  
तस्करे चोरसेणावर्द्ध बहूण चोराण य पारदारियाण य गन्धिभेयगाण य  
सन्धिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य, रायावगारीण य अणधारगाण य

धण्णा द्विपद, त्रुपुपद, भृग, पशु, पक्षी, सरीसृप ( साप ) वगैरे प्राणीभ्योना  
घात भाटे, वध भाटे तेभञ्ज तेभना सर्वनाश भाटे ते अधर्म केतुभङ्गनी  
नेभञ्ज उदय पाभ्यो हुतो धण्णा नगरोभा ते कुख्यात थर्धं युक्थो हुतो ते  
भारे शूरवीर हुतो, तेनो प्रहार भूणञ्ज भारे थतो हुतो वगर विचार्या काम  
करवाभाञ्ज तेनो स्वभाव हुतो शब्द श्रवणु करीने ते पोताना लक्ष्यने वीधी  
नाभवाभा भूणञ्ज निपुणु हुतो ते विजय चोर सिङ्ग गुहा नामनी ते चोर  
पत्नीभा पाचसो चोरानो स्वाभी-यावत् स्वामित्वं लोणवतो रहितो हुतो

( तएण से विजयतस्करे चोरसेणावर्द्ध बहूण चोराण य पारदारियाण य  
गन्धिभेयगाण य सन्धिच्छेयगाण य खत्तखणगाणय, रायावगारीण य ऊण

વહુલઃ, તત્ર-ઉત્તરશ્ચનમ્ યુગ્મજનયશ્ચનમટ્ટસ્ય સમીપાગતવિવક્ષણમયાત્ તત્સથે  
 વચ્ચનાકરણમ્ વચ્ચન=પ્રતારણમ્, માયા=પરવચ્ચનબુદ્ધિઃ, નિઃકૃતિઃ=માયાપચ્છાદ-  
 નાર્થ માયાન્તરકરણમ્, કપટમ્=વેપાદિરિપર્યયકરણમ્, કૃટમ્=નુન્યાતોલનકા  
 દીનામન્યથાકરણમ્, 'સાઃ' દેશી ગદ્યોઽયમ્, વિશ્વાસામાર, એવાં સમયોગો  
 વ્યવહારઃ સ એવ વહુલઃ પ્રચુરો यस્ય સાઃ, 'નિસ્તોલે' નિઃશીલ=શીલરહિતઃ,  
 'નિર્વર્ણ' નિર્વર્તિતઃ=અણુવ્રતરહિત, 'નિર્ગુણે' નિર્ગુણ=ગુણવ્રતરહિતઃ, 'નિષ્  
 ચ્ચવચ્ચાણપોસદ્દોવચાસે' નિષ્પ્રત્યાખ્યાન પૌષધોપવાસઃ = પ્રત્યાખ્યાનપૌષધોપ  
 વાસરહિતઃ 'વહૂણ દુપયચ્ચઉપ્પયમિયપસુપક્લિસરીસિવાળ ધાયાણ વહાણ ઉચ્ચાય  
 ણાણ' વહૂના દ્વિપદચતુષ્પદમૃગપથુપક્લિસરીઘવાળા ઘાતાય, વજાય=સામાન્ય

હાર હસકે પાસ પ્રચુર થા । ખોલેજનોં કે વચ્ચન કરને મેં પ્રવૃત્ત હુઆ  
 વચ્ચક જન જય પાસ મેં આવે હુજ જનકો ભય સે નહોં ઠગતા હૈં હસ  
 કા નામ ઉત્કચન હૈ । પ્રતારણ (ઠગના) કરના હસકા નામ વચ્ચન હૈ ।  
 દૂસરોં કો વચ્ચન કરને કો બુદ્ધિ કા નામ માયા હૈ । અપની માયાચારી  
 કો ઢિપા ને કે લિયે જો દૂસરી માયાચારરૂપ ક્રિયા કરની હોતી હૈ હસ  
 કા નામ નિઃકૃતિ હૈ । વેપ આદિ કે પરિવર્તન કરને કા નામ કપટ હૈ ।  
 તરાજૂ એવ તોલને આદિ કે વાટોં કો કમતી વઢતી રલ્લના હસકા નામ  
 કૃટ હૈ । “સાઃ” યહ દેશીય શબ્દ હૈ । હસકા અર્થ વિશ્વાસ કા  
 અભાવ હોતા હૈ । યહ નિઃશીલ થા-શીલરહિત થા-નિર્વર્ત થા-વ્રત  
 રહિત થા, નિર્ગુણ થા-ગુણ રહિત થા, “પ્રત્યાખ્યાન ઓર પૌષધોપવાસ  
 સે વર્જિત થા” વહૂણ દુપયચ્ચઉપ્પયમિયપસુપક્લિસરીસિવાળ ધાયાણ  
 વહાણ ઉચ્ચાયણાણ અધમ્મકેજ સમુદ્ધિણ ” અનેક દ્વિપદ, ચતુષ્પદ, મૃગ,

પુષ્કળ પ્રમાણમા હતો । ભોળા માણસોના વચ્ચનમા પ્રવૃત્ત થયેલો વચ્ચક ન્યારે  
 પાસે આવેલા માણસને ખીકથી ઠગતો નથી તેનું નામ ઉત્કચન છે । પ્રતારણ  
 નામ વચ્ચન છે । ખીજા માણસને ઠગવાની બુદ્ધિનું નામ માયા છે । પોતાની  
 માયાચારીને છુપાવવા માટે જે ખીજા માયાચાર રૂપ ક્રિયા કરવામા આવે છે  
 તેનું નામ નિઃકૃતિ છે । વેશ વગેરે બદલવું તે કપટ કહેવાય છે । ત્રાજવા તેમજ  
 ભેખવાના વજનોને હલકા અને ભારે કરવા તેનું નામ કૃટ છે । “સાઃ”  
 આ દેશીય શબ્દ છે । તેનો અર્થ વિશ્વાસનો અભાવ હોય છે । તે નિશીલ  
 હતો, -શીલ રહિત હતો, નિર્વર્ત વ્રત રહિત હતો । નિર્ગુણ હતો-ગુણ રહિત  
 હતો । પ્રત્યાખ્યાન અને પૌષધોપવાસથી વર્જિત હતો । “વહૂણ દુપયચ્ચઉપ્પય  
 મિયપસુપક્લિસરીસિવાળ ધાયાણ વહાણ - ઉચ્ચાયણાણ

विशेषप्रकारेण नाशाय, उत्सादनाय=द्विपदादिमकलजीवाना सर्वथा नाशाय च,  
'अधम्मकेऊ समुट्ठिए' अधर्मकेतुः समुत्थितः-अधर्म पापप्रधानो यः केतुः=  
केतुग्रहः, अधर्मकेतुः=उत्पातरूप मूढकेतुमहाग्रहः तद्वत् समुत्थितः । बहुणगर-  
णिग्गयजसे 'बहुनगरनिर्गतयशाः, बहुनगरेषु निर्गत जनमुखान्निःसृत यशः  
ख्याति र्यस्य सः, प्रसिद्ध इत्यर्थः, सूरः 'दढप्पहारी' दढप्रहारी=दढप्रहरण  
शीलः 'साहसिए' साहसिक=अविमृश्यकारी 'सद्वेधी' शब्दवेधी=शब्दश्रव-  
णेन लक्ष्यवेधी च आसीत् । 'से' सः = विजयश्चौर खलु तत्र सिंहगुहार्था  
चोरपत्न्या पञ्चानाम् चोरशतानाम् 'आहेवच्च जाव' आधिपत्य यावत्=  
स्वामित्व कुर्वन् विहरति । ततः खलु स विजयस्तस्करः चोरसेनापति बहूना  
चोराणां च 'पारदारियाणय' पारदारिकाणां=परस्त्रीगामिनां च 'गठिभेय  
गाणय' ग्रन्थिभेदकानां 'सधिच्छेयगाणय' सन्धिच्छेदमाना=भित्तिसर्धि छित्त्वा  
ये धनमपहरन्ति ते सधिच्छेदका उच्यन्ते, तेषाम्, 'खत्तखणगाण य' क्षात्र-  
खनकानां=सधिरहितभित्ति खनकानाम्, 'रायावगारीणय' राजाऽपकारिणां=

पशु, पक्षी, सरीसृप आदि प्राणियोंके घातके लिये, वधके लिये, तथा उनके  
सर्वथा विनाशके लिये, यह अधर्मकेतुग्रह जैसा उदित हुआ था । अनेक  
नगरों में यह कुख्यात होचुका था । बड़ा शूरवीर था । इसका प्रहार  
बहुत गहरा होता था । विना विचारे काम करना ही इसका स्वभाव था  
शब्द श्रवण कर यह अपने लक्ष्य के वेधने में बड़ा निपुण था । वह  
विजय चौर सिंहगुफा नाम की उस चोरपत्नी में पाचसौ चोरों का  
आधिपत्य यावत् स्वामित्व करता हुआ रहता था । (तएण से विजय  
तत्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य गठिभेयगाण य  
सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य, रायावगारीण य अणधारगाण य

धण्णा द्विपद, त्र्युष्पद, भृग, पशु, पक्षी, सरीसृप (साप) वगैरे प्राणीओना  
घात भाटे, वध भाटे तेभज तेभना सर्वनाश भाटे ते अधर्म केतुग्रहनी  
जेभज उदय पाभ्यो हुतो धण्णा नगरोभा ते कुख्यात थई चुक्यो हुतो ते  
भारे शूरवीर हुतो, तेनो प्रहार भूणज भारे थतो हुतो वगर विचार्या काम  
करवाभाज तेनो स्वभाव हुतो शब्द श्रवण उरीने ते पोताना लक्ष्यने वीधी  
नाभवाभा भूणज निपुण हुतो ते विजय चौर सिंह गुफा नामनी ते चोर  
पत्नीभा पाचसो चोरानो स्वाभी-यावत् स्वामित्व लोगवतो रहितो हुतो

(तएण से विजयतत्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य  
गठिभेयगाण य सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाणय, रायावगारीण य ऋण

બહુલઃ, તત્ર-ઉત્કચનમ્ મુખ્યજનચનમ્ પ્રવૃત્તસ્ય સમીપાગતવિનિસર્ગમયાત્ તત્સખે  
 વચ્ચનાકરણમ્ વચ્ચન=પ્રતારણમ્, ગાયા=પરચનનુદ્ધિઃ, નિકૃતિઃ=માયાપચ્છાદ  
 નાર્થ માયાન્તરકરણમ્, કપટમ્=વેપાદિરિપર્યયકરણમ્, કૂટમ્=નુગતોલનકા  
 દીનામન્યયાકરણમ્, 'સાહ' દેશી શબ્દોઽયમ્, વિશ્વાસામાય., ધર્મા સમયોગો  
 વ્યવહારઃ સ એવ પ્રહુતઃ પ્રચુરો यस્ય સ', 'નિસ્તોલે' નિઃશીલઃ=શીલરહિતઃ,  
 'નિર્વર્ણ' નિર્વર્તિઃ=અણુવ્રતરહિતઃ, 'નિર્ગુણે' નિર્ગુણ=ગુણવ્રતરહિતઃ, 'નિષ  
 ર્વચ્ચવાણપોસહોવજાસે' નિષ્પ્રત્યાખ્યાન પૌષધોપવાસ. = પ્રત્યાખ્યાનપૌષધોપ  
 વાસરહિતઃ 'બહૂણ દુષયચઉપ્પયમિયપસુપન્નિલસરીસિવાળ ધાયાણ વહાણ ઉચ્છાય  
 ણાણ' વહૂના દ્વિપદચતુષ્પદમૃગપશુપત્તિસરીષપાળા ઘાતાય, વજાય=સામાન્ય

હાર હસકે પાસ પ્રચુર થા । મોલેજનોં કે વચ્ચન કરને મેં પ્રવૃત્ત હુઆ  
 વચ્ચક જન જય પાસ મેં આધે હુણ જનકો મય સે નહીં ઠગતા હૈ હસ  
 કા નામ ઉત્કચન હૈ । પ્રતારણ (ઠગના) કરના હસકા નામ વંચન હૈ ।  
 દૂસરોં કા વચ્ચન કરને કી ધુદ્ધિ કા નામ માયા હૈ । અપની માયાચારી  
 કો છિપા ને કે લિયે જો દૂસરી માયાચારરૂપ ક્રિયા કરની હોતી હૈ હસ  
 કા નામ નિકૃતિ હૈ । વેપ આદિ કે પરિવર્તન કરને કા નામ કપટ હૈ ।  
 તરાજૂ એવ તોલને આદિ કે ઘાટોં કો કમતી વઢતી રલ્લના હસકા નામ  
 કૂટ હૈ । "સાહ" યહ દેશીય શબ્દ હૈ । હસકા અર્થ વિશ્વાસ કા  
 અભાવ હોતા હૈ । યહ નિઃશીલ થા-શીલરહિત થા-નિર્વર્ત થા-વ્રત  
 રહિત થા, નિર્ગુણ થા-ગુણ રહિત થા, "પ્રત્યાખ્યાન ઓર પૌષધોપવાસ  
 સે વર્જિત થા " બહૂણ દુષયચઉપ્પયમિયપસુપન્નિલસરીસિવાળ ધાયાણ  
 વહાણ ઉચ્છાયણાળ અધર્મકેઝ સમુદ્ધિણ " અનેક દ્વિપદ, ચતુષ્પદ, મૃગ,

પુષ્કળ પ્રમાણમા હોના લોળા માણુસોના વચ્ચનમા પ્રવૃત્ત થયેલો વચ્ચક બ્યારે  
 પાસે આવેલા માણુસને ખીકથી ઠગતો નથી તેનું નામ ઉત્કચન છે પ્રતારણ  
 નામ વચ્ચન છે ખીજા માણુસને ઠગવાની ધુદ્ધિનુ નામ માયા છે પોતાની  
 માયાચારીને છુપાવવા માટે જે ખીજા માયાચાર રૂપ ક્રિયા કરવામા આવે છે  
 તેનુ નામ નિકૃતિ છે-વેશ વગેરે બદલવુ તે કપટ કહેવાય છે ત્રાજવા તેમજ  
 ભોખવાના વજનોને હલકા અને ભારે કરવા તેનુ નામ કૂટ છે "સાહ"  
 આ દેશીય શબ્દ છે તેનો અર્થ વિશ્વાસનો અભાવ હોય છે તે નિશીલ  
 હોતો,-શીલ રહિત હોતો, નિર્વર્ત વ્રત રહિત હોતો નિર્ગુણ હોતો-ગુણ રહિત  
 હોતો પ્રત્યાખ્યાન અને પૌષધોપવાસથી વર્જિત હોતો "બહૂણ દુષયચઉપ્પય  
 મિયપસુપન્નિલસરીસિવાળ ધાયાણ વહાણ - ઉચ્છાયણાળ



विशेषप्रकारेण नाशाय, उत्सादनाय=द्विपदादिसकलजीवाना सर्वथा नाशाय च, 'अधम्मकेज्ज समुट्ठिए' अधर्मकेतुः समुत्थितः-अधर्म पापप्रधानो यः केतुः=केतुग्रहः, अधर्मकेतुः=उत्पातरूपधूमकेतुमहाग्रहः तद्वत् समुत्थितः। बहुणगरणिग्गयजसे 'बहुनगरनिर्गतयशा', बहुनगरेषु निर्गत जनमुखान्निःसृत यशःख्याति र्यस्य सः, प्रसिद्ध इत्यर्थः, शूरः 'दढप्पहारी' दढप्रहारी=दढप्रहरणशीलः 'साहसिए' साहसिक=अविमृश्यकारी 'सद्वेधी' शब्दवेधी=शब्दश्रवणेन लक्ष्यवेधी च आसीत्। 'से' सः=विजयश्चोर खलु तत्र सिंहगुहार्था चोरपल्ल्या पञ्चानाम् चोरशतानाम् 'आहेउच्च जाव' आधिपत्य यावत्=स्वामित्व कुर्वन् विहरति। ततः खलु स विजयस्तस्कर, चोरसेनापति बहूना चोराणा च 'पारदारियाणय' पारदारिकाणा=परस्त्रीगामिना च 'गठिभेयगाणय' ग्रन्थिभेदकानां 'सधिच्छेयगाणय' सन्निच्छेदमाना=मित्तिसर्धि छित्त्वा ये धनमपहरन्ति ते सधिच्छेदका उच्यन्ते, तेगाम्, 'खत्तखणगाण य' क्षात्रखनकाना=सधिरहितमित्ति खनकानाम्, 'रायावगारीणय' राजाऽपकारिणां=

पशु, पक्षी, सरीसृप आदि प्राणियोंके घातके लिये, वधके लिये, तथा उनके सर्वथा विनाशके लिये, यह अधर्मकेतुग्रह जैसा उदित हुआ था। अनेक नगरों में यह कुख्यात हो चुका था। बड़ा शूरवीर था। इसका प्रहार बहुत गहरा होता था। विना विचारे काम करना ही इसका स्वभाव था। शब्द श्रवण कर यह अपने लक्ष्य के वेधने में बड़ा निपुण था। वह विजय चौर सिंहगुफा नाम की उस चोरपल्ली में पाचसौ चोरों का आधिपत्य यावत् स्वामित्व करता हुआ रहता था। (तएण से विजय तस्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य गठिभेयगाण य सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य, रायावगारीण य अणधारगाण य

धणु। द्विपद, अतुप्पद, भृग, पशु, पक्षी, सरीसृप (माय) वगेरे प्राणीओना घात भाटे, वध भाटे तेमज्ज तेमना सर्वनाश भाटे ते अधर्म केतुभड्डी नेमज्ज उदय पाभ्यो हुतो धणु। नगराभा ते कुख्यात थर्ध् बुक्यो हुतो ते लारे शूरवीर हुतो, तेनो प्रहार भूणज्ज लारे थतो हुतो वजर विचार्या काम करवाभाज्ज तेनो स्वभाव हुतो शब्द श्रवणु करीने ते पोताना लक्ष्यने वीधी नाअवाभा भूणज्ज निपुणु हुतो ते विजय चोर सिंह गुफा नामनी ते चोर पक्षीभा पाचसे। चोरानो स्वाभी-यावत् स्वामित्व लोगवतो रहते। हुतो।

(तएण से विजयतस्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य गठिभेयगाण य सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाणय, रायावगारीण य कण

બહુલઃ, તત્ર-ઉત્તરશ્ચનમ્ મુગ્ધજનચશ્ચનપટ્તસ્ય સમીપાગતચિત્તસ્ય મયાન્ સમ્ભવે  
 વચ્ચનાકરણમ્ વચ્ચન=પ્રતારણમ્, ગાયા=પરચ્ચનવૃદ્ધિઃ, નિકૃતિ.=માયાપચ્છાદ  
 નાર્થ માયાન્તરકરણમ્, કપટમ્=વેપાદિચિત્તવર્તનકરણમ્, કૂટમ્=તુલ્યતોલનકા  
 લીનામન્યથાકરણમ્, 'સાહ' દેશી શબ્દોચ્ચમ્, વિશ્વાસામાર, ષ્પાં સપયોગો  
 વ્યવહારઃ સ એવ બહુઃ પ્રચુરો यस્ય સ', 'નિશીલે' નિઃશીલ=શીલરહિત,  
 'નિર્વત્' નિર્વત્=અણુવત્તરહિત, 'નિર્ગુણે' નિર્ગુણ=ગુણવત્તરહિત, 'નિષ  
 ચ્ચવચ્ચાણપોસહોવચ્ચાસે' નિષ્પત્ત્યાચ્ચાણ પૌષધોપવાસ = પ્રત્યાચ્ચાણપૌષધોપ  
 વાસરહિતઃ 'વહુણ દુપચ્ચઉપ્પચમિચ્ચપસુપચ્ચિત્તસરીસિવાણ ધાયાણ વહાણ ઉચ્ચાય  
 ણાણ' વહુના દ્વિપદચતુષ્પદમૃગપશુપચ્ચિત્તસરીસિવાણ ધાતાય, વધાય=સામાન્ય

હાર હસકે પાસ પ્રચુર થા । ખોલેજનોં કે વચ્ચન કરને મેં પ્રવૃત્તિ હુઆ  
 વચ્ચક જન જય પાસ મેં આવે હુજ જનકો ભય સે નહીં ઠગતા હૈ હસ  
 કા નામ ઉત્કચન હૈ । પ્રતારણ (ઠગના) કરના હસકા નામ વચ્ચન હૈ ।  
 દૂસરોં કા વચ્ચન કરને કી બુદ્ધિ કા નામ માયા હૈ । અપની માયાચારી  
 કો ઝિપા ને કે લિધે જો દૂસરી માયાચારરૂપ ક્રિયા કરની હોતી હૈ હસ  
 કા નામ નિકૃતિ હૈ । વેપ આદિ કે પરિવર્તન કરને કા નામ કપટ હૈ ।  
 તરાજૂ એવ તોલને આદિ કે વાટોં કો કમતી વઢતી રચના હસકા નામ  
 કૂટ હૈ । "સાહ" યહ દેશીય શબ્દ હૈ । હસકા અર્થ વિશ્વાસ કા  
 અભાવ હોતા હૈ । યહ નિઃશીલ થા-શીલરહિત યા-નિર્વત્ થા-વત્ત  
 રહિત થા, નિર્ગુણ થા-ગુણ રહિત થા, "પ્રત્યાચ્ચાણ ઓર પૌષધોપવાસ  
 સે વર્જિત થા " વહુણ દુપચ્ચઉપ્પચમિચ્ચપસુપચ્ચિત્તસરીસિવાણ ધાયાણ  
 વહાણ ઉચ્ચાયણાણ અધર્મકેજ સમુદ્ધિણ " અનેક દ્વિપદ, ચતુષ્પદ, મૃગ,

પુષ્કળ પ્રમાણમા હોતો । ભોળા માણસોના વચ્ચનમા પ્રવૃત્તિ થયેલો । વચ્ચક જ્યારે  
 પાસે આવેલા માણસને ખીકથી ઠગતો નથી તેનું નામ ઉત્કચન છે । પ્રતારણ  
 નામ વચ્ચન છે । ખીજા માણસને ઠગવાની બુદ્ધિનું નામ માયા છે । પોતાની  
 માયાચારીને છુપાવવા માટે જે ખીજા માયાચાર રૂપ ક્રિયા કરવામા આવે છે  
 તેનું નામ નિકૃતિ છે । વેશ વગેરે બદલવું તે કપટ કહેવાય છે । ત્રાજવા તેમજ  
 ભેળવાના વજનોને હલકા અને ભારે કરવા તેનું નામ કૂટ છે । "સાહ"  
 આ દેશીય શબ્દ છે । તેનો અર્થ વિશ્વાસનો । અભાવ હોય છે તે નિશીલ  
 હોતો, -શીલ રહિત હોતો, નિર્વત્ત વત્ત રહિત હોતો । નિર્ગુણ હોતો-ગુણ રહિત  
 હોતો । પ્રત્યાચ્ચાણ અને પૌષધોપવાસથી વર્જિત હોતો । "વહુણ દુપચ્ચઉપ્પચ  
 મિચ્ચપસુપચ્ચિત્તસરીસિવાણ ધાયાણ વહાણ - ઉચ્ચાયણાણ

विशेषप्रकारेण नाशाय, उत्सादनाय=द्विपदादिमकलजीयाना सर्वथा नाशाय च, 'अधम्मकेऊ समुट्ठिए' अधर्मकेतुः समुत्थितः-अधर्म पापप्रधानो यः केतुः=केतुग्रहः, अधर्मकेतुः=उत्पातरूप मूढकेतुमहाग्रहः तद्वत् समुत्थितः । बहुणगर-णिग्गयजसे 'बहुनगरनिर्गतयशाः, बहुनगरेषु निर्गत जनमुखान्निःसृत यशः ख्याति र्यस्य सः, प्रसिद्ध इत्यर्थः, शूरः 'दढप्पहारी' दढप्रहारी=दढप्रहरण शीलः 'साहसिए' साहसिक=अविमृश्यकारी 'सदवेही' शब्दवेधी=शब्दश्रवणेन लक्ष्यवेधी च आसीत् । 'से' सः = विजयश्चोर खलु तत्र सिंहगुहार्था चोरपत्न्या पञ्चानाम् चोरशतानाम् 'आहेयच्च जाव' आधिपत्य यावत्=स्वामित्व कुर्वन् विहरति । ततः खलु स विजयस्तस्करः चोरसेनापति बहूना चोराणा च 'पारदारियाणय' पारदारिकाणा=परस्त्रीगामिना च 'गठिभेयगाणय' ग्रन्थिभेदकानां 'सधिच्छेयगाणय' सन्धिच्छेदकानां=भित्तिसर्धि छित्त्वा ये धनमपहरन्ति ते संधिच्छेदका उच्यन्ते, तेगाम्, 'खत्तखणगाणय' क्षात्र-खनकानां=सधिरहितभित्ति खनकानाम्, 'रायावगारीणय' राजाऽपकारिणां=

पशु, पक्षी, सरीसृप आदि प्राणिघोके घातके लिये, वधके लिये, तथा उनके सर्वथा विनाशके लिये, यह अधर्मकेतुग्रह जैसा उदित हुआ था । अनेक नगरों में यह कुख्यात होचुका था । बड़ा शूरवीर था । इसका प्रहार बहुत गहरा होता था । विना विचारे काम करना ही इसका स्वभाव था । शब्द श्रवण कर यह अपने लक्ष्य के वेधने में बड़ा निपुण था । वह विजय चौर सिंहगुफा नाम की उस चोरपत्नी में पाचसौ चोरों का आधिपत्य यावत् स्वामित्व करता हुआ रहता था । (तएण से विजय तस्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य गठिभेयगाण य सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य, रायावगारीण य अणधारगाण य

धणा द्विपद, अतुप्पद, भृग, पशु, पक्षी, सरीसृप (साप) वगैरे प्राणीओना घात भाटे, वध भाटे तेमज तेमना सर्वनाश भाटे ते अधर्म केतुग्रहनी जेमज उदय पाभ्यो हुतो धणा नगराभा ते कुख्यात थउ युक्त्यो हुतो ते भारे शूरवीर हुतो, तेनो प्रहार भूण ज भारे थतो हुतो वगर विचारो काम करवाभा ज तेनो स्वभाव हुतो शब्द श्रवण करीने ते पोताना लक्ष्यने वीधी नाभवाभा भूण ज निपुण हुतो ते विजय चोर सिंह गुफा नामनी ते चोर पक्षीभा पायसे चोरानो स्वामी-यावत् स्वामित्व लोगवतो रहितो हुतो

(तएण से विजयतस्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य गठिभेयगाण य सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाणय, रायावगारीण य कण

રાજદ્રોહિણાં 'અણધારગાળય' ઋણધારકાણામ્ ચાત્યવાતકાનાં 'વીસમગાયગાળ  
ય' વિશ્વમ્પ્રાસકાનાં=વિશ્વામ્પ્રાતિના ધૂતકામકાણાં 'ચઢરકલાણય' સ્વઢર  
કાણાં=રાજપિરોધેન ભૂમિસપ્તધારિણામ્ ગમ્ અન્નેપાં ચ ગહનાં 'છિન્નભિન્નચરિ  
રાહયાણ' છિન્નભિન્નચરિરાતનામ્-છિન્ના=ચિન્નદસ્તાદિકા, ભિન્ના:=ભિન્નક  
ર્ણનાતિકાદિકાઃ, ચરિરાહતા=રાજાપરાધેન દેશનિકાશિતાઃ, એતેષા ઢ્વન્ઢઃ, તેષાં  
ચ 'કુટુગે' કુટુઢઃ=કુટુઢ્ઢુ ડવ કુટુઢ્ઢુ - ચગવન રક્ષાર્થમાશ્રયણીયત્વસામ્યાત્

ચાલધાયગાળય વીસમગાયગાળય જૂયકારાળય ચઢરકલાણય અ  
ન્નેસિં ચહૂણ છિન્નભિન્ન ચરિરાયગાળ કુટુગે ચાવિજોત્યા) ચહ વિજય  
તસ્કર ચોર સેનાપતિ અનેક ચોરોં કા અનેક પરસ્ત્રી લપટોં કા ચન્ધિ  
મેદ કો કા, સધિચ્છેદકો કા-મકાન કો ખીન ફોડકર ધનકા અપહ  
રણ કરનેવાલો કા, ક્ષાત્રચનકોં કા સધિ રહિત ખીત કો ફોડકર  
ચોરી કરનેવાલોં કા, રાજા કા અપકાર કરને ચાલોં કા-રાજદ્રોહિયોં  
કા, ઋણ કરને ચાલોં કા ચાલ તત્યા કરને ચાલોં કા વિશ્વાસઘાત કરને  
ચાલોં કા જુઆ ચેલનેવાલોં કા, રાજા કી આજ્ઞા લિયે વિના હી કુછ  
જમીન કો અપને અધિકાર મેં કરનેવાલો કા, તયા ઓર ખી અનેક  
છિન્ન, ભિન્ન ચરિરાહત વ્યક્તિયોં કા ચહ કુટક જૈસો ચા। જિન કે હાથ  
આદિ કાટદિયે ગયે હૈ એસે પ્રાણી, છિન્ન શબ્દ સે જિનકી નાક આદિ  
કાટ દી ગઈ હૈ એસે પ્રાણી ભિન્ન શબ્દ સે એવં રાજાપરાય કે કારણ જો  
દેશ સે ઘાહિર નિકાલ દિયે ગયે હૈ એસે મનુષ્ય યહાં ચહિ આહત શબ્દ

ધારગાળય ચાલધાયગાળય વીસમગાયગાળય જૂયકારાળય ચઢરકલાણય અ  
ન્નેસિં ચહૂણ છિન્નભિન્નચરિરાયગાળ કુટુગે ચાવિ હોત્યા)

તે વિજય તસ્કર ચોર સેનાપતિ ધણુ ચોરો, ધણુ પરસ્ત્રી લપટો,  
અધિચ્છેદકો, સધિચ્છેદકો-માકોર પાડીને ધનુ અપહરણ કરનારાઓ, ક્ષાત્ર  
ખનકો-સધિલાગ વગરની લીતમા બાકોર પાડીને ચોરી કરનારાઓ, રાજના  
અપકારકો-રાજદ્રોહીઓ, ઋણ કરનારાઓ (દેવાદારો) બાળહત્યા કરનારાઓ,  
બાળહત્યા કરનારાઓ, વિશ્વાસઘાત કરનારાઓ, જુગાર રમનારાઓ, રાજની  
આજ્ઞા લીધા વગર જ ચોડી જમીનને ચોતાના અધિકારમા લેનારાઓ તેમજ  
ખીન પણુ ધણુ છિન્ન, ભિન્ન ચરિરાહત લોકોના માટે તે કુટક જેવો હોનો  
જેમના હાથ પગ વગેરે કાપી નાખવામા આવ્યા છે એવા પ્રાણીઓ, છિન્ન  
શબ્દ વડે જેમના નાક વગેરે કાપવામા આવ્યા છે એવા પ્રાણીઓ, ભિન્ન શબ્દ  
વડે અને રાજાપરાધ બદલ જે દેશમાથી બહાર કાઢી મૂકવામા આવ્યા છે  
એવા માણસો અહીં-“બહિ આહત” શબ્દ વડે સંબોધિત । આવ્યા

ચાપિ અભૂત । તતઃ સ્વલુ સ વિજયસ્તસ્કરઃ ચોરસેનાપતિઃ રાજગૃહસ્ય ! દાહિણ પુરત્થિમ ' દક્ષિણપૌરસ્ત્ય અગ્નિકોણસ્થિત જનપદ વહુભિઃ ' ગામધાણ્ઠિ ' ગ્રામ ઘાતૈ =ગામવિનાશૈશ્વ, નગરઘાતૈશ્વ, ' ગોગ્ગહણેહિય ' ગો ગ્રહણે =ગવાં લુઠ્ઠનૈઃ, વદિગ્ગહણેહિય ' વન્દિગ્રહણે =લુઠ્ઠને યે જના ગૃહીતાસ્તે વન્દિનઽચ્યન્તે, તેષા ગ્રહણૈઃ =સ્વકારાયા સ્થાપનૈઃ, ' સ્વત્તસ્વણણેહિય ' ક્ષાત્રસ્વનનૈશ્વ એવં વિધૈષ્ડુકૃત્યૈ

સે પ્રતિબોધિત કિયે ગયે હૈં । રક્ષણાર્થ આશ્રયણીય હોને કી સમાનતા સે હસે કુટક-વસનાવન-જૈસા કહા ગયા હૈં । ( તણ સે વિજણ તક્કરે ચોરસેનાવઈ રાયગિહસ્સ દાહિણપુરત્થિમં જણવય વહ્હિં ગામધાણ્ઠિં ય નગરધાણ્ઠિં ય ગોગ્ગહણેહિ ય વદિગ્ગહણેહિ ય સ્વત્તસ્વણણેહિય, પથકુ હ્ણેહિ ય ડવીલે માણે ૨ વિદ્ધસણે માણે ૨ ણિથાણ, ણિદ્ધણ કરેમાણે વિહરહ, તણ સે ચિલાણ દાસચેડે રાયગિહે વહ્હિં અત્થામિસકીહિ ય ચોજ્ઞામિસકીહિ ય દારામિસકીહિ ય ધણિણિય જૂયકરેહિ ય પરબ્ભવમાણે ૨ રાયગિહાઓ નગરાઓ ણિગ્ગચ્છહ, ણિગ્ગચ્છિત્તા જેણેવ સીહગુહા ચોરપલ્લી તેણેવ ડવાગચ્છહ, ડવાચ્છિત્તા વિજય ચોરસેનાવઈ ડવસપલ્લિત્તાણ વિહરહ ) ચોરોં કા સેનાપતિ વહ વિજય તસ્કર રાજગૃહ નગર કે અત્તિકોણ મેં સ્થિત જનપદો કો, અનેક ગ્રામો કે વિનાશ સે નગરોં કે ઘાત સે, ગાવોં કે લૂટને સે, લૂટતે સમય પકડે ગયે મનુષ્ય કો અપને કારાગાર મેં વદ કરને સે, ક્ષત્રવનન સે-મકાનો મેં છાતડેને

છે રક્ષણ માટે આશ્રયણીય હોવાના સામ્યથી તેને કુટક-વાસનાવન'ની જેમ બતાવવામા આવ્યો છે

( તણ સે વિજણ તક્કરે ચોરસેનાવઈ રાયગિહસ્સ દાહિણપુરત્થિમ જણવય વહ્હિં ગામધાણ્ઠિં ય નગરધાણ્ઠિં ય ગોગ્ગહણેહિ ય વદિગ્ગહણેહિ ય સ્વત્તસ્વણણેહિ ય પથકુહણેહિ ય ડવીલેમણેર વિદ્ધસણે માણેર ણિથાણ, ણિદ્ધણ કરેમાણે વિહરહ, તણ સે ચિલાણ દાસ ચેડે રાયગિહે વહ્હિં અત્થામિસકીહિ ય ચોજ્ઞામિસકીહિ ય ધણિયેહિ ય જૂયકરેહિ ય પરબ્ભવમાણે ૨ રાયગિહાઓ નગરાઓ ણિગ્ગચ્છહ, ણિગ્ગચ્છિત્તા જેણેવ સીહગુહા ચોરપલ્લી તેણેવ ડવાગચ્છહ, ડવાગચ્છિત્તા વિજય ચોરસેનાવઈ ડવસપલ્લિત્તાણ વિહરહ )

ચોરોનો સેનાપતિ તે વિજય તસ્કર રાજગૃહ નગરના અગ્નિકોણના જનપદોને, ઘણા ગ્રામોનો વિનાશ કરીને નગરોનો ઘાત કરીને ગાવોને લૂટીને લૂટતી વખતે પકડી પાડેના માણસોને પોતાના કારાગારમા પૂરી દધને, ક્ષત્ર ખનન કરીને, મકાનોમા ખાતર પાડીને અને બુસાકરોને મારીને નિરતર



પવકુટ્ટણેદિય ' પાન્યકુટ્ટનેઃ=પથિકજનમાણેશ્વ ' ઉપીલેમાણે ૨ ' ઉત્પીડયન્  
 =સન્તતમુત્પીડન કર્તુન્, ' વિદ્વસેમાણે ૨ ' વિધ્વસયન્ ૨-સર્વદા વિધ્વસ  
 કર્તુન્, ' ણિસ્થાણ ' નિઃ સ્થાન=ગૃહરહિત, ' ણિદૂષણ ' નિર્ધનમ્=ધનરહિત કર્તુન્  
 વેહરતિ । તત્ સ્વલ્પ સ ચિત્રાતો દાસચેટઃ રાજગૃહે ઘટુમિઃ ' અર્થાભિશકીદિય'  
 અર્થાભિશક્તિભિઃ=અર્થ ચિલાતો મદીયમર્થ ગૃહોતયાન્, ગ્રહીદ્યતિ વા દત્યભિશક્ત  
 શીલૈ ' ચોઙ્ગાભિશકીદિય ' ચોર્ષાભિશક્તિભિઃ=અર્થ મમ ગૃહે ચોર્ષ કૃતવાન્  
 કરિષ્યતિ વેત્યભિશક્તુન શીલૈશ્વ ' દારાભિશકીદિ ' દારાભિશક્તિભિઃ=' અર્થ મમ  
 દારાન્ દૂપિતવાન્ દૂપયિષ્યતિ વેત્યભિશક્તુનશીલૈ તથા ધનિકૈશ્વ દ્યૂતકરૈશ્વ પરા  
 ભૂયમાણઃ ૨= પુનઃ પુન પરાભવ પ્રાપ્તમાણો રાજગૃહાત્ નગરાદ્ વહિ નિર્ગન્ઠતિ,  
 નિર્ગત્ય, યન્નૈવ સિંહગુહા ચોરપલ્લી તર્ગૈર ઉપાગન્ઠતિ, ઉપાગત્ય વિજય ચોરસેના  
 પતિમ્ ઉપસપદ્ય=પ્રાપ્ય વિહરતિ ॥ છૂં ૩ ॥

સે, એવ પથિકજનો કે મા/ને સે, નિરન્તર પીડિત કરતા વિધ્વસ કરતા  
 કરતા ઓર ગૃહ વિહિન કરતા રહતા ધા । હસ કે પશ્ચાત્ વહ દાસચેટક  
 ચિલાત રાજગૃહ નગર મેં અનેક અર્થાભિશક-હસ ચિલાત ને હમલોગોં  
 કે દ્રવ્ય કો હરણ ક્રિયા હૈ તથા હસી તરહ સે યહ આગે ખી કરેગા-  
 પ્રકાર કી શકા કરને વાલે, ચોર્ષાભિશકી હસને હમલોગોં કે ઘર મેં  
 ઘુસકર પહિલે ચોરી કી હૈ-તથા હસી તરહ યહ આગે ખી કરેગા-હસ  
 પ્રકાર કી આશકા કરને વાલે, દારાભિશકી-હસને પહિલે હમારી સ્ત્રિયો  
 કે સાથ બલાત્કાર ક્રિયા હૈ-હસી તરહ સે યહ આગે ખી કરેગા હસ  
 તરહ કી અપની સ્ત્રિયો કે સાથ બલાત્કાર કરને કી આશકાવાલે પુરુષો  
 કે દ્વારા તથા ધનિક વ્યક્તિયો કે દ્વારા, જુઆ खेलने વાલે જ્વારિયો  
 કે દ્વારા પુનઃ પુનઃ પરાભૂત હોતા હુઆ રાજગૃહ નગર સે બાહર નિકલા

પીડિત કરનો, વિધ્વસ કરનો અને ગૃહવિહીન બનાવી મૂકતો હતો ત્યારપછી  
 તે દાસચેટક ચિલાતે રાજગૃહ નગરમા ઘણા અર્થાભિશક-આ ચિલાતે અમારા  
 દ્રવ્યનુ હરણ કર્યું છે તેમજ આ પ્રમાણે ભવિષ્યમા પણ હરણ કરશે, આ  
 બાતની શકા કરનારાઓ વડે, ચોર્ષાભિશકી-એણે અમારા ઘરોમા પેસીને  
 પહેલા ચોરી કરી હતી તેમજ ભવિષ્યમા પણ તે ચોરી કરશે જ-આ બાતની  
 ચોરીની આશકા કરનારાઓ વડે, દારાભિશકી-એણે પહેલા અમારી સ્ત્રીઓ  
 ઉપર બલાત્કાર કર્યો છે, આ પ્રમાણે ભવિષ્યમા પણ તે ચોક્કસ આવું કર  
 શે જ, આ રીતે પોતાની સ્ત્રીઓ ઉપર બલાત્કારની આશકાવાળા પુરુષો વડે  
 તેમજ ધનવાનો વડે, જુગાર રમનારા જુગારીઓ વડે, વારંવાર

मूलम्-तएणं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणा-  
वइस्स अग्गे असिलट्टुगाहे जाए यावि होत्था, जाहे वि य णं  
से विजए चोरसेणावई गामघायं वा जाव पंथकोट्टि वा काउं  
वच्चइ ताहे वि य ण से चिलाए दासचेडे सुवहुपि हु कुवियवल  
हयविमहिय जाव पडिसेहेइ । पुणरवि लज्जे कयकज्जे अणह  
समग्गे सीहगुह चोरपल्लि हव्वमागच्छइ । तएण से विजए  
चोरसेणावई चिलायं तक्कर वहुईओ चोरविज्जाओ य चोरमते  
य चोरमायाओ चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ । तएणं से  
विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइ कालधम्मणा सजुत्ते यावि  
होत्था । तएणं ताइं पंचचोरसयाइ विजयस्स चोरसेणावइस्स  
महयार इड्ढीसक्कारस्समुदएणं णीहरणं करेति, करित्ता वहुइ  
लोइयाइं मयकिच्चाइ करेति, करित्ता जाव विगयसोया जाया  
यावि होत्था । तएण ताइ पच चोरसयाइं अन्नमन्नं सद्दोवेति,  
सद्दोवित्ता एव वयासी-एव खलु अम्ह देवाणुप्पिया । विजए  
चोरसेणावई कालधम्मणा संजुत्ते, अय च ण चिलाए तक्करे  
विजएण चोरसेणावइणा वहुईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खा  
विए, त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया । चिलाय तक्कर सीह-  
गुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिचित्तए त्तिकट्ठ  
अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणित्ता चिलाय तीए  
सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिचित्ति । तएणं से चिलाए

और निकल कर जहा वह सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली थी वहाँ आया  
वहा आकर वह चार सेनपति के बाद रहने लगा ॥ सूत्र-३ ॥

राजगृह नगरधी भक्षार नीकल्यो अने नीकलीने ल्या ते सिंहगुहा नामे चोरपल्ली

हुती त्या आये, त्या आवीने चार सेनापतिनी साथे रहेवा लाग्यो ॥सू०३॥

‘પવકુટ્ટણેહિય’ પાન્યકુટ્ટણેઃ=પથિકજનમાગેશ્ર ‘ઉવીલેમાણે ૨’ ઉત્પીડયન્  
 ૨=સન્તતમુત્પીડન કર્તુન, ‘વિઢસેમાણે ૨’ વિધ્વમયન્ ૨=સર્વદા વિધ્વસ  
 કર્તુન્, ‘ગિત્થાણં’ નિઃ સ્યાન=ગૃહરહિત, ‘ગિત્થાણં’ નિર્ધનમ્=ધનરહિત કર્તુન્  
 વિહરતિ । તતઃ સ્વલુ સ ચિચાતો દાસચેટઃ રાજગૃહે ગ્રહુમિઃ ‘અન્યામિમ કીઠિય’  
 અર્ધામિશક્લિમિ=અપ ચિલાતો મદ્રીયમર્ધં ગૃહીતયાન્, ગ્રહીત્યતિ વા ઇત્યમિશક્લન  
 શીલૈ ‘ચોજ્જામિસ કીઠિય’ ચૌર્ધામિશક્લિમિઃ=અપ મમ ગૃહે ચૌર્ધં કૃતયાન્  
 કરિષ્યતિ વેત્યમિશક્લન શીલૈશ્ર ‘દારામિમ કીઠિ’ દારામિશક્લિમિઃ=‘અપ મમ  
 દારાન્ દૂપિતયાન્ દૂપયિષ્યતિ વેત્યમિશક્લન શીલૈ તથા ધનિકૈશ્ચ ઘૃતકરૈશ્ચ પરા  
 ભૂયમાણઃ ૨=પુન. પુન પરાભવ પ્રાપ્તમાણો રાજગૃહાત્ નગરાદ્ વહિર્ નિર્ગન્છતિ,  
 નિર્ગત્ય, યત્રૈવ સિંહગુહા ચોરપલ્લી તન્નય ઉગાગન્છતિ, ઉગાગત્ય વિજય ચોરસેના  
 પતિમ્ ઉપસપ્ધ=પ્રાપ્ય વિહરતિ ॥ છૂં ૩ ॥

સે, એવ પથિકજનોં કે મારને સે, નિગન્તર પીડિત કરતા વિધ્વસ કરતા  
 કરતા ઓર ગૃહ વિહિન કરતા રહતા થા । હસ કે પશ્ચાત્ વહ દાસચેટક  
 ચિલાત રાજગૃહ નગર મેં અનેક અર્ધામિશક-હસ ચિલાત ને હમલોગોં  
 કે દ્રવ્ય કો હરણ ક્રિયા હૈ તથા હસી તરહ સે યહ આગે ભી કરેગા-  
 પ્રકાર કી શકા કરને વાલે, ચૌર્ધામિશકી હસને હમલોગોં કે ઘર મેં  
 છુસકર પહિલે ચોરી કી હૈ-તથા હસી તરહ યહ આગે ભી કરેગા-હસ  
 પ્રકાર કી આશકા કરને વાલે, દારામિશકી-હસને પહિલે હમારી સ્ત્રિયોં  
 કે સાથ ચલાત્કાર ક્રિયા હૈ-હસી તરહ સે યહ આગે ભી કરેગા હસ  
 તરહ કી અપની સ્ત્રિયોં કે સાથ ચલાત્કાર કરને કી આશકાવાલે પુરુષોં  
 કે દ્વારા તથા ધનિક વ્યક્તિયોં કે દ્વારા, જુઆ खेलने વાલે જ્વારિયો  
 કે દ્વારા પુનઃ પુનઃ પરાભૂત હોતા હુઆ રાજગૃહ નગર સે બાહર નિકલા

પીડિત કરનો, વિધ્વસ કરતો અને ગૃહવિહીન બનાવી મૂકતો હતો ત્યારપછી  
 તે દાસચેટક ચિલાતે રાજગૃહ નગરમાં ઘણા અર્ધામિશક-આ ચિલાતે અમારા  
 દ્રવ્યનું હરણ કર્યું છે તેમજ આ પ્રમાણે ભવિષ્યમાં પણ હરણ કરશે, આ  
 બાતની શકા કરનારાઓ વડે, ચૌર્ધામિશકી-એણે અમારા ઘરોમાં પેસીને  
 પહેલા ચોરી કરી હતી તેમજ ભવિષ્યમાં પણ તે ચોરી કરશે જ-આ બાતની  
 ચોરીની આશકા કરનારાઓ વડે, દારામિશકી-એણે પહેલા અમારી સ્ત્રીઓ  
 ઉપર બલાત્કાર કર્યો છે, આ પ્રમાણે ભવિષ્યમાં પણ તે ચોક્કસ આવું કર  
 શે જ, આ રીતે પોતાની સ્ત્રીઓ ઉપર બલાત્કારની આશકાવાળા પુરુષો વડે  
 તેમજ ધનવાનો વડે, જુગાર રમનારા જુગારીઓ વડે, વારંવાર

मूलम्—तएणं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणा-  
वइस्स अग्गे असिलट्ठगाहे जाए यावि होत्था, जाहे वि य णं  
से विजए चोरसेणावई गामघायं वा जाव पथकोट्टि वा काउं  
वच्चइ ताहे वि य ण से चिलाए दासचेडे सुवहुपि हु कुवियवल  
हयविमहिय जाव पडिसेहेइ । पुणरवि लच्छट्ठे कयकज्जे अणह  
समग्गे सीहिगुह चोरपल्लि हव्वमागच्छइ । तएण से विजए  
चोरसेणावई चिलायं तक्कर वहुईओ चोरविज्जाओ य चोरमते  
य चोरमायाओ चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ । तएणं से  
विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइ कालधम्मणा संजुत्ते यावि  
होत्था । तएण ताई पंचचोरसयाइ विजयस्स चोरसेणावइस्स  
महयार इट्ठीसक्कारसमुदएणं णीहरणं करेति, करित्ता वहुइ  
लोइयाइ मयकिच्चाइ करेति, करित्ता जाव विगयसोया जाया  
यावि होत्था । तएण ताइ पंच चोरसयाइ अन्नमन्नं सदावेति,  
सदावित्ता एव वयासी—एव खलु अम्हं देवाणुप्पिया । विजए  
चोरसेणावई कालधम्मणा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तक्करे  
विजएणं चोरसेणावइणावहुईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खा  
विए, त सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया । चिलाय तक्करं सीह-  
गुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिचित्तए त्तिकट्ठ  
अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणित्ता चिलाय तीए  
सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिचित्ति । तएण से चिलाए

और निकल कर जहा वह सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली थी वहाँ आया  
वहाँ आकर वह चार सेनपति के बाद रहने लगा ॥ सूत्र-३ ॥

राजगृह नगरधी भंडार नीकल्यो अने नीकणीने न्या ते सिंहगुहा नामे चोरपल्ली

हती त्या आये, त्या आवीने चार सेनापतिनी साथे रहेवा लाग्यो ॥सू०३॥

‘પથકુટ્ટોદિય’ પાન્યકુટ્ટને: = પથિકુજનમાળેય ‘ઉત્પીડયન્ ૨’ ઉત્પીડયન્ ૨ = સન્તતમુત્પીડન કર્વન્, ‘વિદ્ધસેમાણે ૨’ વિધ્વપયન્ ૨ = સર્વદા વિધ્વમ કર્વન્, ‘ણિસ્થાળ’ નિ: સ્થાન = ગૃહરહિત, ‘જિદ્ધપણં’ નિર્ધનમ્ = ધનરહિત કર્વન્ વિદ્ધરતિ । તત: સ્વલ્લ સ ચિન્નાતો દાસચેટ. રાજગૃહે ઘટુમિ: ‘અર્થાભિશક્કિય’ અર્થાભિશક્કિમિ = અય ચિલાતો મદીયમધં પૃહીતયાન્, પ્રહીપ્યતિ વા ઇત્યભિશક્કન શીલૈ ‘ચોજ્ઞાભિસકોદિય’ ચોર્થાભિશક્કિમિ: = અય મમ ગૃહે ચોર્થે કૃતયાન્ કરિષ્યતિ વેશ્યભિશક્કન શીલૈશ્ચ ‘દારામિમકોદિ’ દારામિશક્કિમિ: = ‘અય મમ દારાન્ દૂપિતયાન્ દૂપિષ્યતિ વેશ્યભિશક્કનશીલૈ તથા ધનિકૈશ્ચ ઘૃતકૈશ્ચ પરા ભૂયમાણ: ૨ = પુન: પુન: પરાભવ પ્રાપ્તમાણો રાજગૃહાત્ નગરાદ્ વઠિ નિર્ગન્ઝતિ, નિર્ગત્ય, યત્રૈવ સિદ્ધગૃહા ચોરપલ્લી તત્રૈવ ઉપાગન્ઝતિ, ઉપાગત્ય નિજય ચોરસેના પતિમ્ ઉપસપદ્ય = પ્રાપ્ય વિદ્ધરતિ ॥ છ૦૩ ॥

સે, એવ પથિકુજનો કે મારને સે, નિગન્તર પીડિત કરતા વિધ્વસ કરતા કરતા ઓર ગૃહ વિહિન કરતા રહતા થા । હસ કે પશ્ચાત્ વહ દાસચેટક ચિલાત રાજગૃહ નગર મેં અનેક અર્થાભિશક-હસ ચિલાત ને હમલોગોં કે દ્રવ્ય કો હરણ ક્રિયા હૈ તથા હસી તરહ સે યહ આગે ખી કરેગા-પ્રકાર કી શકા કરને વાલે, ચોર્થાભિશકી હસને હમલોગોં કે ઘર મેં ઘુસકર પહિલે ચોરી કી હૈ-તથા હસી તરહ યહ આગે ખી કરેગા-હસ પ્રકાર કી આશકા કરને વાલે, દારાભિશકી-હસને પહિલે હમારી સ્ત્રિયોં કે સાથ બલાત્કાર ક્રિયા હૈ-હસી તરહ સે યહ આગે ખી કરેગા હસ તરહ કી અપની સ્ત્રિયોં કે સાથ બલાત્કાર કરને કી આશકાવાલે પુરુષોં કે દ્વારા તથા ધનિક વ્યક્તિયોં કે દ્વારા, જુઆ खेलने વાલે જ્વારિયોં કે દ્વારા પુન: પુન: પરાભૂત હોતા હુઆ રાજગૃહ નગર સે બાહર નિકલા

પીડિત કરનો, વિધ્વસ કરનો અને ગૃહવિહીન બનાવી મૂકતો હતો ત્યારપછી તે દાસચેટક ચિલાતે રાજગૃહ નગરમા ઘણા અર્થાભિશક-આ ચિલાતે અમારા દ્રવ્યનુ હરણ કર્યું છે તેમજ આ પ્રમાણે લવિબ્યમા પણ હરણ કરશે, આ બાતની શકા કરનારાઓ વડે, ચોર્થાભિશકી-એણે અમારા ઘરોમા ખેસીને પહેલા ચોરી કરી હતી તેમજ લવિબ્યમા પણ તે ચોરી કરશે જ-આ બાતની ચોરીની આશકા કરનારાઓ વડે, દારાભિશકી-એણે પહેલા અમારી સ્ત્રીઓ ઉપર બલાત્કાર કર્યો છે, આ પ્રમાણે લવિબ્યમા પણ તે ચોક્કસ આવું કરશે જ, આ રીતે પોતાની સ્ત્રીઓ ઉપર બલાત્કારની આશકાવાળા પુરુષો વડે તેમજ ધનવાનો વડે, જુગાર રમનારા જુગારીઓ વડે, વારવાર



मूलम्-तएणं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणा-  
वइस्स अग्गे असिलट्ठगाहे जाए यावि होत्था, जाहे वि य ण  
से विजए चोरसेणावई गामघायं वा जाव पंथकोट्टि वा काउं  
वच्चइ ताहे वि य ण से चिलाए दासचेडे सुवहुपि हु कुवियवल  
हयविमहिय जाव पडिसेहेइ । पुणरवि लद्धे कयऊज्जे अणह  
समग्गे सीहगुह चोरपल्लि हव्वमागच्छइ । तएण से विजए  
चोरसेणावई चिलायं तक्कर वहुईओ चोरविज्जाओ य चोरमते  
य चोरमायाओ चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ । तएणं से  
विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइ कालधम्ममुणा संजुत्ते यावि  
होत्था । तएण ताइं पंचचोरसयाइं विजयस्स चोरसेणावइस्स  
महयार इड्ढीसक्कारसमुदएणं णीहरणं करेति, करित्ता वहुईं  
लोइयाइं मयकिच्चाइं करेति, करित्ता जाव विगयसोया जाया  
यावि होत्था । तएणं ताइ पंच चोरसयाइ अन्नमन्न सद्दवेति,  
सद्दवित्ता एव वयासी-एव खलु अम्हं देवाणुप्पिया । विजए  
चोरसेणावई कालधम्ममुणा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तक्करे  
विजएणं चोरसेणावइणा वहुईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खा  
विए, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया । चिलायं तक्कर सीह-  
गुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिचित्तए त्तिकट्ठ  
अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणित्ता चिलाय तीए  
सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिचित्ति । तएण से चिलाए

और निकल कर जहा वह सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली थी वहां आया  
वहां आकर वह चार सेनपति के घाद रहने लगा ॥ सूत्र-३ ॥

राजगृह नगरधी भंडार नीकल्ये। अने नीकलीने ज्या ते सिंहगुहा नामे चोरपल्ली

हुती त्या आये। त्या आवीने चार सेनापतिनी साथे रुडेवा लाग्ये ॥सू०३॥

चोरसेणावई जाण अहम्मिण जाव विहरइ । तएणं से चिलाए  
 चोरसेणावई चोराणय जाव कुटंगे यावि होरया । से ण तरय  
 सीहगुहाए चोरपल्लीए पचणहं चोरसयाण य एवं जहा विजओ  
 तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमिल्ल जणवयं  
 जाव नित्थाणं निज्जण करेमाणे विहरइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—'तएण' इत्यादि । ततः खलु स चिलातो दासचेटो विजयस्य  
 चोरसेनापतेरभ्यः=प्रधान 'असिन्दुग्गादे' अभियष्टिग्राह=असि=करवाल,  
 यष्टि=ग्रहदण्डः, तौ गृह्णातीति, असियष्टिग्राह=असियष्ट्यादिमचालनचतुरो  
 जातश्चापि अभूत् । 'जाहे वि यण' यदाऽपि च खलु स विजयश्चोर सेनापतिः

तएण से चिलाए दासचेडे इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से चिलाए दासचेडे) वह दासचेटक  
 चिलात (विजयस्स चोरसेणावइस्स) चोर सेनापति उस विजय तस्कर  
 का (अग्गे यावि हो०) सय से प्रधान असि, यष्टि, ग्रह-तलवार  
 और लाठी के चलाने में चतुर-बन गया । (जाहे वि य ण से विजए  
 चोरसेणावईगामघाय वा जाव पथकोट्टि वा काउ वच्चइ, ताहे वि य णं  
 से चिलाए दासचेडे सुबहु पि हु कवियवल हयविमहिय जाव पडिसेहेइ,  
 पुणरवि लद्धे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुह चोरपल्लि हव्वमाग  
 च्छइ) जब वह चोर सेनापति विजय, ग्रामो का घात करने के लिये,

(तएण स चिलाए दासचेडे इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (से चिलाए दासचेडे) ते दास चेटक चिलात  
 (विजयस्स चोरसेणावइस्स) चोर सेनापति ते विजय तस्करने। (अग्गे  
 यावि हो०) सौथी प्रधान आसि, यष्टि (लाकड़ी) आळ, तरवार अने लाठी  
 अलापवामा अतुर भनी गये।

(जाहे वि य ण से विजए चोरसेणावई गामघाय वा जाव पथकोट्टि वा  
 काउ वच्चइ, ताहे वि य ण से चिलाए दासचेडे सुबहु पि हु कवियवल हयविम  
 हिय जाव पडिसेहेइ, पुणरवि लद्धे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुह चोरपल्लि  
 हव्वमागच्छइ)

ज्याहे ते चोर सेनापति विजय ग्रामोना घात भाटे यावत् पधिकोने  
 लुटवा भाटे नीकणतो डतो त्याहे ते दास चेटक चिलात चोर।

ग्रामपात वा यावत् 'पथकोटि' पान्थकुटिम्=पथिकजनलुण्ठन वा 'काउ' कर्तुं 'वच्चइ' प्रजति=गच्छति 'ताहेवि य' तदाऽपि च खलु स चिन्तातो दासवेष्टः सुग्रहो अपि 'हु' इति यावत्पाठद्वारे कूत्रियपत्र 'कूपिकाल=चोरगवेष्टकसैन्य' 'हयविमहिय जाव' हतविमथित यावत्-सर्वथा विध्वस्त कृत्वा 'पडिसेहेइ' प्रतिषेधयति=निगारयति । पुनरपि 'लद्धुदुठे' लब्धार्थ=लब्धः प्राप्तः, अर्थ=स्वाभिलषित येन स=प्राप्तस्वाभिलषितः, अत एव 'कयकज्जे' कृतकार्यः=कृत कार्य येन स, कृतनिजकृत्यः 'अणहममग्गे' अनयसमग्रः=अनयम्=अक्षतम्-अन्तराले केनाप्यनपहत समग्र=समस्त चौर्याद्यपहतवस्तुजात यस्य सः=अलुण्ठित सर्वस्यः सिंहगुहा चोरपल्लि 'हव्व' शीघ्रमागच्छति । ततः खलु स विजयश्चोर-सेनापतिः चिलात तस्कर बहीः चोरविद्याश्च चोरमन्त्राश्च चोरमायाश्चोरनिकृतीश्च मायायाः प्रच्छादनाय या माया सा 'निकृतिः' उच्यते ता 'सिक्खावेड'

यावत् पथिक जनो को लूटने के लिये चलता था-तब वह दास चेटक चिलात भी चोर गवेष्टक सैन्य को हत, विमथित यावत् सर्वथा विध्वस्त करके पीछे भगा देता था-और स्वाभिलषित अर्थ को प्राप्तकर अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर लिया करता था । इस तरह वह चोरी में मिले हुए द्रव्य को सुरक्षित रखता हुआ-बीच में किसी के भी द्वारा द्रव्य की छीना छपटी से रहित होता हुआ उस सिंहगुहा नाम के चोरपल्ली में बहुत जल्दी लौट आता था । (तएव से विजय चोर सेनावर्द्ध चिलाय तस्कर बहूँओ चोरविज्ञाओ य चोरमते य चोर मायाओ चोर निगडीओ य सिक्खावेड) उस चोर सेनापति विजय तस्कर ने चिलात चोर के अनेक चोर विद्याओ को, अनेक चोरमन्त्रो को अनेक विध चोर सम्बन्धी मायाचारी को और माया को छिपाने के

आवेला सैन्यने हत, विमथित यावत् स पूर्ण रीते विध्वस्त करीने लगाडी भूकतो हुतो अने पोताना ध्विष्ट अर्थने प्राप्त करीने पोताना जरूमा सङ्ग जता भेजवतो हुतो आ प्रमाणे ते चोरीमा भेजवेला द्रव्यने सुरक्षित राखतो वन्धे डोर्ध पण भील वडे द्रव्यनी लूट-पाट न थाय-तेम पोतानी जतने सुरक्षित राखतो ते शीघ्र सिंहगुहा नामे चोरपल्लीमा पाछे आवतो रहितो हुतो ।

(तएव से विजय चारसेनावर्द्ध चिलाय तस्कर बहूँओ चोरविज्ञाओ य चोरमते य चोरमायाओ चोरनिगडीओ य सिक्खावेड)

ते चोर सेनापति विजय तस्करे चिलात चोरने धणी चोर विद्याओने, धणी चोरमन्त्रोने, धणी चोर सम्बन्धी मायाचारीओने अने मायाने छुपाववा भाटे भील मायाचारीओ शीजवाडी



चोरसेणावई जाण अहम्मिण जाव विहरइ । तएणं से चिलाए  
 चोरसेणावई चोराणय जाव कुटंगे यावि होत्था । से णं तरय  
 सीहगुहाए चोरपट्टीए पचण्ह चोरसयाण य एवं जहा विजओ  
 तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमिल्ल जणवयं  
 जाव निरथाणं निद्धणं करेमाणे विहरइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—‘तएण’ इत्यादि । ततः खलु स रिगतो दामचेटो विजयस्य  
 चोरसेनापतेरभ्यः=प्रधान ‘असिञ्जट्टगाहे’ अमियट्टिग्राहः=असि=करवालः,  
 यट्टि=ग्रहदण्डः, तौ गृह्णातीति, अमियट्टिग्राहः=असियट्ट्यादिप्रचालनचतुरो  
 जातश्चापि अभूत् । ‘जाहे वि यण’ यदाऽपि च खलु स विजयश्चोर सेनापतिः

तएण से चिलाए दामचेडे इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से चिलाए दासचेडे) वह दासचेटक  
 चिलात (विजयस्स चोरसेणावइस्स) चोर सेनापति उस विजय तस्कर  
 का (अगगे यावि हो०) सध से प्रधान असि, यट्टि, ग्रह-तलवार  
 और लाठी के चलाने में चतुर-बन गया । (जाहे वि य णं से विजए  
 चोरसेणावईगामघाय वा जाव पथकोट्टि वा काउ वच्चइ, ताहे वि य ण  
 से चिलाए दासचेडे सुबहु पि हु कूवियवल हयविमहिय जाव पडिसेहेइ,  
 पुणरवि लद्धे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुह चोरपल्लि हव्वमाग  
 च्छइ) जब वह चोर सेनापति विजय, ग्रामो का घात करने के लिये,

(तएण से चिलाए दासचेडे इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (से चिलाए दासचेडे) ते दास चेटक चिलात  
 (विजयस्स चोरसेणावइस्स) चोर सेनापति ते विजय तस्करने। (अगगे  
 यावि हो०) सौथी प्रधान आसि, यट्टि (लाकड़ी) आह, तलवार अने लाठी  
 बलाववाभा चतुर बनी गये।

(जाहे वि य ण से विजए चोरसेणावई गामघाय वा जाव पथकोट्टि वा  
 काउ वच्चइ, ताहे वि य ण से चिलाए दासचेडे सुबहु पि हु कूवियवल हयविम  
 हिय जाव पडिसेहेइ, पुणरवि लद्धे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुह चोरपल्लि  
 हव्वमागच्छइ)

अथारे ते चोर सेनापति विजय आभोना घात भाटे यावत् पघिओने  
 छुट्ठा भाटे नीकणतो छतो अथारे ते दास चेटक चिलात अथारे

खलु अस्माक हे देवानुप्रियाः । विजयश्चोरसेनापति कालधर्मेण संयुक्तः=मृत इत्यर्थः । अयं च खलु चिलातः तस्करो विजयेन चोरसेनापतिना ' बहूँओ चोर-विज्जाओ जाव ' बह्व्यः चोरविद्या यावत्-चोरविद्यादि चोरनिकृतिपर्यन्तासु सकलचोरशिक्षासु ' मिमिन्वए ' शिक्षितः=पारङ्गमितः, ' त ' तस्मात् कारणात् ' सेय ' श्रेयः खलु अस्माक हे देवानुप्रियाः ! चिलात तस्कर सिंहगुहायाश्चोर-पल्लयाश्चोरसेनापतितयाऽभिपिञ्चितुम्, अर्थात् अयं चिलात तस्करोऽम्माभिः चोर सेनापतिपदे नियोज्य, ' तिकदु ' इति कृत्या=इति मनसि विधाय ' अन्नमन्नस्स ' अन्योऽन्यस्य ' एयमदु ' एतमर्थम्=चिलातस्य चोरसेनापतिपदे नियोजनरूपमर्थम्

किया-( एव खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! विजण चोरसेणावई कालधम्म-  
णा सजुत्ते, अयं च ण चिलाण तक्करे विजणण चोरसेणावइणा बहूँ-  
ओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविण, त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया !  
चिलाय तस्कर सिंहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिमिचित्तए  
त्ति कदु अन्नमन्नस्स एयमदु पडिसुणेति, पडिसुणित्ता चिलाय तीसे  
सिंहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिचित्ति ) देवानुप्रियो ! देखो-हमारे  
नायक चोर सेनापति विजय तो अब मर चुके हैं । उन्होंने इस चिलात  
चोर को अनेक चोर विद्याएँ आदि सब कुछ सिखलाही दिया है । अतः  
हमलोगों को अब गरी उचित है कि हमलोग चिलात चोर को सिंह  
गुहा नामकी इस चोर पल्ली का चोर सेनापति के रूप में नियुक्त करले  
अर्थात् चोरसेनापति के पद पर इस चिलात चोर को नियुक्त करलें  
इस प्रकार विचार करके उन्होंने एक दूसरे के विचार रूप अर्थ को

( एव खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! विजण चोरसेणावई कालधम्म-  
णा सजुत्ते, अयं च ण चिलाण तक्करे विजणण चोरसेणावइणा बहूँओ चोरविज्जाओ  
य जाव सिक्खाविण, त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! चिलाय तक्कर सिंह  
गुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिचित्तए त्तिकदु अन्नमन्नस्स एयमदु  
पडिसुणेति, पडिसुणित्ता, चिलाय तीसे सिंहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिचित्ति )

हे देवानुप्रियो ! सुओ, अमारा नायक चोर सेनापति विजय तो अब  
मरण पाया है तेमहे आ यिलात चोरने धणी चोर विद्याओ वगेरे अधु  
शीअणु न है ओटवा माटे हवे अभने ओ न योग्य लागे छे हे अभे  
लोके यिलात चोरने आ सिंहगुहा नामनी योग्यदलीने। चोर सेनापति  
बनावी लछओ ओटवे हे चोर सेनापतिना भवाने आ यिलात चोरनी नीम  
एकओ लछओ आ प्रभावे विचार करीने तेमहे ओक भीलना विचार इय



शिक्षयति । ततः खलु स विजयो चोरसेनापतिः अन्यदा कदाचित् 'कालधम्मणा' कालधर्मेण=मृ.घुना सयुक्तश्चापि अभवत् मृत इत्यर्थः । ततः खलु तानि पञ्चचोर दत्तानि=पञ्चशतवर्गकाशोरा, विजयस्य चोरसेनापतेः महता = इन्द्रिसकार समुदण्ण 'कद्धिमत्कारसमुदयेन 'णीहरण' निर्हण=श्मशानभूमिनयन 'करेति' कुर्वति, कुन्ना गृह्णति लौकिकानि मृतकृत्यानि कुर्याति, कुन्ना यावत् विगत शोका जाताश्चापि अभवन् । ततः खलु तानि पञ्चचोरदत्तानि अन्योऽन्यं शब्द यति शब्दयित्वा एवमवादिषु-सर्वे मित्रिणा परस्परमेव विचारितवन्त इत्यर्थ एव

लिये दूसरी और माया चारी को मिलवा दिया । (तण्ण से विजण चोरसेणावई अत्रया कयाइ काळधम्मणा सजुत्ते यावि होत्था, तण्ण ताइ पचचोरसयाइ विजयस्स चोरसेणावइस्स महया २ इड्ढी सक्कार समुदण्ण णीहरण करेति करित्ता बह्इ लोइयाइ मयकिच्चाइ करेति, करित्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था । तण्ण ताइ पच चोर सयाइ अन्नमन्न सहावेति, सहावित्ता एव वयासी ) इस से बाद वह चोर सेनापति विजय किसी एक दिन कालधर्मगत हो गया । तब उन पांच सौ चोरो ने चोर सेनापति विजय तस्कर को बड़े ठाट बाट के साथ अर्थी-श्मशान यात्रा निकाली बादमें उन्होंने ने भृत्यसबन्धी जितने भी लौकिक कृत्य होते हैं वे सब किये । लौकिक कृत्य करके सबके सब धीरे २ शोक रहित जय बन चूके-तब उन पांच सौ चोरो ने परस्पर में एक दूसरे को बुलाया-और बुलाकर उन से इस प्रकार कहा-विचार

( तण्ण से विजण चोरसेणावई अत्रया कयाइ काळधम्मणा सजुत्ते यावि होत्था, तण्ण ताइ पच चोरसयाइ विजयस्स चोरसेणावइस्स महया २ इड्ढी सक्कारसमुदण्ण णीहरण करेति करित्ता बह्इ लोइयाइ मयकिच्चाइ करेति, करित्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था । तण्ण ताइ पच चोर सयाइ अन्नमन्न सहावेति, सहावित्ता एव वयासी )

त्यारपणी ते चोर सेनापति विजय केअ ओउ निसे भृत्य पाभ्यो त्यारे ते पायसेो चोरोओ चोर सेनापति विजय तस्करनी लारे ठाठथी श्मशानयात्रा काढी त्यारपणी तेभण्णे तेना भृत्य स मधी लौकिक कृत्यो कयो लौकिक कृत्यो पूरा कयो बाद धीमे धीमे न्यारे जधा शोक रहित थया त्यारे ते पायसेो चोरोओ परस्पर ओकणीजने ओवाव्या अने ओउ स्थाने ओकत्र थछने तेभण्णे आ प्रभाण्णे विचार कयो के—

खलु अस्माक हे देवानुप्रियाः ! विजयश्चोरसेनापतिः काल्पयमेण संयुक्तः=मृत इत्यर्थः । अयं च खलु विनातः तस्करो विजयेन चोरसेनापतिना ' बहूँओ चोर-विज्जाओ जाव ' बह्व्यः चोरविद्या यावत्-चोरविद्यादि चोरनिकृतिपर्यन्तासु सकलचोरशिक्षामु ' मिस्सिक्खए ' शिक्षितः=पारङ्गमितः, ' त ' तरमात् कारणात् ' सेय ' श्रेयः खलु अस्माक हे देवानुप्रिया ! चिनात तस्कर मिहगुहायाश्चोर-पल्लयाश्चोरसेनापतितयाऽभिपिञ्चितुम्, अर्थात् अयं चिलात तस्करोऽम्माभिः चोर सेनापतिपदे नियोज्य, ' चिकद्दु ' इति कृत्वा=इति मनसि विधाय ' अन्नमन्नस्स ' अन्योऽन्यस्य ' एयमद्द ' एतमर्थम्=चिलातस्य चोरसेनापतिपदे नियोजनरूपमर्थम्

किया-( एव खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालवम्मु णा सजुत्ते, अयं च ण चिलाए तक्करे विजएण चोरसेणावइणा बहूँओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविण, त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! चिलाय तस्कर सीहगुहाए चोरपट्ठीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्ति कद्दु अन्नमन्नस्स एयमद्द पडिसुणेति, पडिसुणित्ता चिलाय तीसे सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचति ) देवानुप्रियो ! देखो-हमारे नायक चोर सेनापति विजय तो अब मर चुके हैं । उन्होंने इस चिलात चोर को अनेक चोर विद्याए आदि सब कुछ सिखलाही दिया है । अतः हमलोगों को अब यही उचित है कि हमन्मोग चिलात चोर को सिंह गुहा नामकी इस चोर पट्ठी का चोर सेनापति के रूप में नियुक्त करले अर्थात् चोरसेनापति के पद पर इस चिलात चोर को नियुक्त करले इस प्रकार विचार करके उन्होंने एक दूसरे के विचार रूप अर्थ को

( एव खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालवम्मुणा सजुत्ते, अयं च ण चिलाए तक्करे विजएण चोरसेणावइणा बहूँओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविण, त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! चिलाय तक्कर सीह गुहाए चोरपट्ठीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्ति कद्दु अन्नमन्नस्स एयमद्द पडिसुणेति, पडिसुणित्ता, चिलाय तीसे सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचति )

हे देवानुप्रियो ! जुओ, अमारा नायक चोर सेनापति विजय तो हुवे भरलु पाभ्या छे तेभण्णे आ यिलात चोरने धण्णी चोर विद्याओ वगेरे णधु शीणन्थु ७ छे ओन्ना भाटे हुवे अभने ओ ७ योअ्य लागे ७ छे अभे दोके यिलात चोरने आ मिहगुहा नामनी चोरपट्ठीने। चोर सेनापति बनावी लधओ ७ छे के चोर सेनापतिना न्थाने आ यिलात चोरनी नीम लुठ करी लधओ आ प्रभाण्णे विचार करीने तेभण्णे ओक भीजना विचार ३५

‘ पट्टिसुगोति ’ प्रतिशृण्वन्ति=सीतुर्वन्ति, प्रतिश्रुय, चिन्तात तस्कर चोरसेना पतितया अर्थात् चोरसेनापतिपदे भगिनिश्चानि । ततः खलु स चिन्तातः चोरसेना पतिर्जातः, कीदृशः ? इत्याह—‘ अहम्मिण गाव ’ अधार्मिको यावत्-विजयचोर सेनापतिवदधार्मिको यावदधर्मकेतुर्भवति विहरति । ततः खलु स चिन्तातः चोर सेनापति ‘ चोराण य जाव ’ चोराणां च यावत्=चोरपारदारिकादीनां च ‘ कुडगे ’ कुडङ्गः आश्रयस्थान चाऽपि आसीत् । स खलु तत्र सिंहगुहायां चोर पत्न्या पञ्चानां चोरशतानां च एव यथा विजयस्तथैव सर्वं यावत्=विजयवत् पञ्च- शतानां चोराणामुपरि आधिपत्यं कर्तुं, राजगृहस्य दक्षिणपौरस्त्यम्=अग्निकोणस्य

स्वीकार कर लिया । और स्वीकार करके उस चिलात चोर को अन्त में उस सिंहगुहा नामकी चोर पत्नी का उन्होंने ने चोर सेनापति के रूप में अभिषेक कर दिया । (तएण से चिलाण चोरसेणावई जाण अहम्मिण जाव विहरइ तएण से चोर से० चोराण य जाव कुडगे यावि होत्था, से ण तत्थ सीहगुहाण चोरपत्नीण पचण्ह चोरसयाण य एवं जहा विजओ तद्देव सव्व जाव रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमिल्ल जणवय जाव णित्थाण निद्धण करेमाणे विहरइ ) इस तरह वह चिलात चोर सेनापति बन गया । चोरसेनापति बनकर वह विजय चोर सेनापति की तरह अधार्मिक यावत् अधर्मकेतु जैसा हो गया । अतः वह चिलात चोर सेनापति चोरों का यावत् पारदारिक आदिकों का कुडग की तरह वासों के वन के समान-आश्रयस्थान बन गया और उस सिंहगुहा नामकी पत्नी में पाचसौ चोरों का आधिपत्य करता हुआ विजय तस्कर

अर्थने स्वीकारी दीधे। अने स्वीकारीने छेवटे ते चिलात चोरने। ते सिंहगुहा नामनी चोरपत्नीने। तेभण्णे चोर सेनापतिना इपमा अभिषेक करी दीधे।

( तएण से चिलाण चोरसेणावई जाण अहम्मिण जाव विहरइ तएण से चोर से० चोराण य जाव कुडगे यावि होत्था, सेण तत्थ सीहगुहाण चोरपत्नीण पचण्ह चोरसयाण य एवं जहा विजओ तद्देव सव्व जाव रायगिहस्स दाहिण पुरत्थिमिल्ल जणवय जाव णित्थाण निद्धण करेमाणे विहरइ )

आ प्रभाण्णे ते चिलात चोर चोर सेनापति थध गये। चोर सेनापति णनीने ते विजय चोर सेनापतिनी नेम अधार्मिक यावत् अधर्मकेतु नेवे। थध गये। तेथी ते चिलात चोर सेनापति चोरने। यावत् पारदारिक-वृत्तेने। कुडगनी नेम-वासोना वननी नेम-आश्रयस्थान णनी गये।



जनपद 'नित्याण निद्वण' निस्थान निर्धन गृहरहित धनरहित च कुर्वन्  
विहरति ॥ सू० ४ ॥

मूलम्—तएणं से चिलाए चोरसेणावई अन्नया कयाइ विउल  
असणपाणखाइमसाइम उवक्खडावेत्ता पचचोरसए आमतेइ ।  
तओ पच्छा पहाए कयवलिकम्मेभोयणभंडवंसि तेहि पचहि  
चोरसएहि सद्धि विउल असणं पाणं खाइमं साइम सुर च  
जाव पसण च आसाएमाणे४ विहरइ, जिमिय भुत्तुत्तरागए  
ते पच चोरसए विउलेण धूवपुप्फगंधमल्लालकारेणं सक्कारेइ,  
सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता एव वयासी—एवं खलु देवा-  
णुप्पिया । रायगिहे णयरे धण्णे णाम सत्थवाहे अड्डे०, तस्स  
णं धूया, भद्दाए अत्तया पचण्ह पुत्ताणंअणुमग्गजाइया सुसुमा  
णाम दारिया यावि होत्था, अहीण जाव सुरूवा, त गच्छामो  
णं देवाणुप्पिया । धणस्स सत्थवाहस्स गिह विलुंयामो, तुव्भं  
विउले धणकणग जाव सिलप्पवाले मम सुसुमा दारिया । तएणं ते  
पंच चोरसया चिलायस्स चोरसेणावइस्स एयमट्ठं पडिसुणेति ।  
तएणं से चिलाए चोरसेणावई तेहि पचहि चोरसएहि सद्धि  
अल्लचम्म दुरूहइ, दुरूहित्ता पुव्वावरण्हकालसमयसि पंचहि  
चोरसएहि सद्धि सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे माइयगोमु-  
हिणहि फलएहि णिकट्टाहि असिलट्टीहि असगएहि तोणेहि

की तरह राजगृह नगर के बाहिर के अग्निकोणस्थ जनपदों को गृह  
रहित और धन रहित करने लग गया । सूत्र ४ ॥

नामनी चोरपट्टीमा पायसे। ओरोने। अधिपति धधने विजय तस्करनी जेम  
राजगृह नगरनी णडारना अग्निकोण तरङ्गना जनपदोने गृहरहित अने धन  
रहित ओटले के अरणाह उरवा लाग्या ॥ सूत्र ४ ॥

‘ पट्टिगुणेति ’ प्रतिभृगन्ति=सीकुर्यन्ति, प्रतिभृत्य, चिन्तात तस्कर चोरसेना पतितया अर्थात् चोरसेनापतिपदे अभिनिश्चयति । ततः खलु स चिन्तात चोरसेना पतिर्जातः, कीदृशः ? इत्याह—‘ अहम्मिण जाव ’ अधार्मिको यावत्-विजयचोर सेनापतिवदधार्मिको यावदधर्मकेतुर्मेव विहरति । ततः खलु स चिन्तातः चोर-सेनापति ‘ चोराण य जाव ’ चोराणां च यावत्=चोरपारदारिकादीनां च ‘ कुडगे ’ कुडङ्गः आश्रयस्थान चाऽपि गामीन् । स खलु तत्र सिंहगुहायां चोर पत्न्या पञ्चानां चोरशतानां च एव यथा विजयस्तथैव सर्वं यावत्=विजयवत् पञ्च शतानां चोराणामुपरि आधिपत्यं कुर्वन्, राजगृहस्य दक्षिणपौरस्त्यम्=अग्निकोणस्य

स्वीकार कर लिया । और स्वीकार करके उस चिन्तात चोर को अन्त में उस सिंहगुहा नामकी चोर पत्नी का उन्होंने ने चोर सेनापति के रूप में अभिषेक कर दिया । (तएण से चिन्तात चोरसेणावई जाए अहम्मिण जाव विहरइ तएण से चोर से० चोराण य जाव कुडगे यावि होत्था, से ण तत्थ सीहगुहाए चोरपत्नीए पचण्ह चोरसयाण य एव जहा विजओ तद्देव सब्ब जाव रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमिल्ल जणवय जाव णित्थाण निद्धण करेमाणे विहरइ ) इस तरह वह चिन्तात चोर सेनापति बन गया । चोरसेनापति बनकर वह विजय चोर सेनापति की तरह अधार्मिक यावत् अधर्मकेतु जैसा हो गया । अतः वह चिन्तात चोर सेनापति चोरों का यावत् पारदारिक आदिकों का कुडग की तरह वासों के वन के समान-आश्रयस्थान बन गया और उस सिंहगुहा नामकी पत्नी में पाचसौ चोरों का आधिपत्य करता हुआ विजय तस्कर

अर्थने स्वीकारी दीधे। अने स्वीकारीने छेवटे ते चिन्तात चोरने। ते सिंहगुहा नामनी चोरपत्नीने। तेमछे चोर सेनापतिना रुपमा अभिषेक करी दीधे।

( तएण से चिन्तात चोरसेणावई जाए अहम्मिण जाव विहरइ तएण से चोर से० चोराण य जाव कुडगे यावि होत्था, सेण तत्थ सीहगुहाए चोरपत्नीए पचण्ह चोरसयाण य एव जहा विजओ तद्देव सब्ब जाव रायगिहस्स दाहिण पुरत्थिमिल्ल जणवय जाव णित्थाण निद्धण करेमाणे विहरइ )

आ प्रभाछे ते चिन्तात चोर चोर सेनापति थछ गये। चोर सेनापति अपनीने ते विजय चोर सेनापतिनी जेम अधार्मिक यावत् अधर्मकेतु जेवे। थछ गये। तेथी ते चिन्तात चोर सेनापति चोरने। यावत् पारदारिक वगेरेने। कुडगनी जेम-वासोना बननी जेम-आश्रयस्थान अपनी गये।



भुत्तुत्तरागए ' जिमितभुत्तोत्तरागत = जिमितः = कृतभोजनः भुत्तोत्तरकालमागत  
यावत् परमशुचिभूत. सुवासनवरगतः सन् तानि पञ्च चोरशतानि विपुलेन = अत्य  
र्थेन ' धूपपुष्पगन्धमल्लालकारेण ' = धूप पुष्पगन्धमाल्यालकारेण = धूपः = सुगन्धित  
द्रव्येण उत्पन्नो धूमः, पुष्प = कुसुमम्, गन्धः = चन्दनादि माल्यम्-माला, अलङ्का-  
राणि = आभरणानि, एतेषा च समाहारद्वन्द्वः, तेन सत्करोति, सम्मानयति,  
सत्कृत्य सम्मान्य एवम्-अवदत्-एव खलु हे देवानुमिया ! राजगृहे नगरे धन्यो

ल्लालकारेण सत्कारेण, सम्माणेन, सत्कारित्वा सम्माणित्वा एव दयासी) विपुल मात्रो मे, अशन पान, खादिम एव स्वादिमरूप चारो प्रकार का आहार बनवा कर उन पांचसौ चोरो को आमन्त्रित किया। जब वे सब आचुके-तब उस चिलात चोर ने स्नान से निवट कर और वायसादि को अन्नादिका भाग देनेरूपवलिकर्म आदि कर भोजन मंडपमें बैठकर उन पांच सौ चोरो के साथ उस विपुलमात्रा में निष्पन्न हुए अशन, पान, खादिम, एव स्वादिमरूप चारो प्रकार के आहार को तथा सुरा, यावत् प्रसन्न मदिरा को खूद मनमाने रूप में पिया खाया जब वे सब के सब अच्छी तरह भोजन कर उत्तर काल में परमशुचिभूत होकर आनन्द के साथ एक स्थान पर आकर बैठचुके तब उस चिलात चोर सेनापति ने उनका धूप से-सुगन्धित द्रव्य से निष्पन्न हुए धूप से, पुष्पो से, चंदन आदि से, मालाओ से, और आभरणो से सत्कार किया सम्मान किया। सत्कार सम्मान करके फिर उनसे उसने इस प्रकार

पुष्पेण प्रमाणुमा अशन, पान, खादिम अने स्वादिम चारे जतने आहार जनावडावीने ते पाचसो चोरोने आमन्त्रित कर्था ज्यारे तेज्जो जधा आवी गया त्यारे ते चिलात चोरे स्नान कर्तुं अने तयारपछी तेले डागडा वगेरे पक्षीज्जोने अन्न वगेरेने लाग अर्पीने जलिकर्म वगेरे कर्तुं तयारजाह तेले लोअन मंडपमा भेसीने ते पाचसो चोरोनी साथे ते पुष्पेण प्रमाणुमा जनावडावेला, अशन, पान, खादिम अने स्वादिम रूप चारे प्रकारना आडा रने तेमज सुरा यावत् प्रसन्न मदिराने पूण धराध धराधने जाधा-पीधा ज्यारे तेज्जो जधा सारी रीते जमीने परमशुचीभूत थधने आनन्दपूर्वक ओक स्थान उपर आवीने ओकठा थथा-भेसी गया, त्यारे ते चिलात चोर सेना पतिजे तेमनो धूपथी, पुष्पोथी, चंदन वगेरेथी, भाजाज्जोथी अने आभर ज्जोथी सत्कार कर्था अने सम्मान कर्तुं सत्कार तेमज सम्मान करीने तेले तेमने आ प्रमाणे ज्जुं के—

सजीवेहि धणूहि समुत्तिरात्तेहि सरेहि समुल्लालियाहि दीहाहि  
 ओसारियाहि उरुघंटयाहि छिप्पतुरेहि वज्रमाणेहि महया महया  
 उक्किहसीहणायचोरकलकलरत्र समुदरवभूय करेमाणे सीहगु-  
 हाओ चोरपल्लीओ पडिणिस्समइ पडिनिक्खमिन्ता जेणेव राय-  
 गिहे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहस्स नयरस्स  
 अदूरसामते एग महं गहण अणुपविसइ, अणुपविसित्ता, दिवस  
 खवेमाणे चिट्ठइ ॥ सू० ५ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः खलु म चिन्तातश्चोरसेनापतिः अन्यदा  
 कदाचित् विपुलम् अशनपानखादिमन्वादिमम् ‘उपस्सवेत्ता’ उपस्मार्य=निष्पाद्य  
 पञ्च चोश्शतानि आमन्त्रयति । ततः पश्चात् स्नात ‘कयवलिकम्मे’ कृतबलि  
 कर्मा=कृत बलिकर्म येन सः, काकादीना कृतेदत्त भोजनोपहारो भोजनमण्डपे तैः  
 पञ्चभि चोरशतैः सार्धं ‘विउल’ विपुलम्=अत्यर्थम्, अशन पान खाद्यस्वाद्य सुरां  
 च यावत् प्रसन्ना च ‘आसाएमाणे’ आस्वादयन् विहरति । पुनश्च ‘जिमिय

‘तएण से चिलाए चोरसेणावई’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (चोर सेणावई चिलाए) चोर सेना  
 पति चिलात चोर ने (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (विउल असण  
 पाणखाइमसाइम उवक्खडावेत्ता पचचोरसए आमतेइ—तओ पच्छा  
 ण्हाए कयवलिकम्मे, भोयणमडवसि तेहि पचहिं चोरसएहि सद्धि विउल  
 असण पाण खाइम साइम सुर च जाव पसण च ओसाए माणे ४  
 विहरइ, जिमिय भुत्तुत्तरागए ते पच चोरसए विउलेण वूवपुप्फगधम

तएण से चिलाए चोरसेणावई इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्या२५४ (चोरसेणावई चिलाए) ये २ सेनापति  
 चिलात चोरे (अन्नया कयाइ) के१४ थो३ वधते (विउल असण पाणखाइमसाइम  
 उवक्खडावेत्ता पच चोरसए आमतेइ—तओ पच्छा ण्हाए कयवलिकम्मे, भोयण  
 मडवसि तेहि पचहिं चोरसएहि सद्धि विउल असण पाण खाइम साइम सुर  
 च जाव पसण च ओसाए माणे ४ विहरइ, जिमिय भुत्तुत्तरागए ते पच चोरसए विउ  
 लेण धूवपुप्फगधमल्लालकारेण सकारेइ, सम्माणेइ, सकारित्ता सम्मानित्ता (वयासी)

यावत् शिलप्रवाल, मम सुसुमा दारिका-लुण्ठितेषु वस्तुषु मध्ये धनकनकमणि-  
मौक्तिकशिलाप्रवालादि वस्तुजातानि पुष्पाक भवन्तु, मम तु एका सुसुमा दारिका  
भविष्यति । ततः खलु तानि पञ्च चोरशतानि चिलातस्य चोरसेनापतेः एतमर्थं  
प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति । ततः खलु स चिलातश्चोरसेनापतिः तैः पञ्चभिः  
चोरशतैः सार्द्धं 'अलुचम्म' आर्द्रचर्मं दूरोदति, लुण्ठकाहि लुण्ठनप्रस्थानात्  
पूर्वं माङ्गल्यार्च्यमार्द्रचर्मप्यारोहन्तीति तेषां व्यवहार, दूरस्थ, 'पुष्पावरणकालसम-  
यसि' पूर्वापराङ्गकालसमये '=दिनस्य चतुर्थप्रहरे पञ्चमिथोरशतैः सार्द्धं  
'सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे' सन्नद्ध यावत् गृहीतायुधप्रहरण.=मन्नद्धवद्ध  
वर्मितकवचः=सनद्ध'=सज्जीकृतः, वद्धः=कशावन्धनेन सन्नद्धः, वर्मितः=जङ्गे परि-  
हितः कवचो येन स तथोक्तः, 'गृहीतायुधप्रहरण' गृहीतानि आयुधप्रहरणानि

लूट-जो वस्तु हम तुम लूटेंगे उनमें से तुम्हारी तो धन, कनक, मणि,  
मौक्तिक शिलाप्रवाल आदि चीजें होगी-और मेरी केवल एव वह सुसु-  
मादारिका होगी-। इस तरह उन पांचसौ चोरों ने अपने सेनापति  
चिलात चोर की इस बात को मान लिया । इसके बाद यह चोर सेना-  
पति चिलात, उन पांचसौ चोरों के साथ गीले चमड़े पर बैठ गया ।  
लुटेरे लूटने के लिये जब प्रस्थान करते हैं तब वे पहिले गीले चमड़े पर  
शुभ शकुन मानने के निमित्त बैठते हैं ऐसा उनमें व्यवहार है बैठकर  
फिर वह दिन के चतुर्थप्रहर में पांचसौ चोरों के साथ (सीहगुहाओ  
चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ) उस मिहगुहा नाम की चोरपल्ली से  
निकला । (सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे माइयगोमुहिएहिं फलएहिं

એટલા માટે ચાલો તૈયાર થાઓ, હે દેવાનુપ્રિયો ! આપણે બધા ત્યા જઈએ  
અને ધન્ય સાર્થવાહના ઘરને લુટી લઈએ, જે વસ્તુઓ આપણે બધા લુટીશું  
તેમાંથી ધન, કણુડ, મણિ, મૌક્તિક, શિલાપ્રવાલ વગેરે વસ્તુઓ તમારી થશે  
અને ફક્ત તે સુસમા દારિકા મારી થશે આ પ્રમાણે તે પાંચસો ચોરોએ  
પોતાના સેનાપતિ ચિલાત ચોરની આ વાત સ્વીકારી લીધી ત્યારપછી તે ચોર  
સેનાપતિ ચિલાત, તે પાંચસો ચોરોની સાથે સાથે ભીના ચામડા ઉપર બેઠી  
ગયો લુટારાઓ લુપ્ત થા માટે જ્યારે ઘેરથી નીકળે છે ત્યારે તેઓ પહેલા શુભ  
શકુન માટે ભીના ચામડા ઉપર બેસે છે, આ જાતનો તેઓમાં રિવાજ છે  
ભીના ચામડા ઉપર બેસીને તે દિવસના ચોથા પહોરમાં પાંચસો ચોરોની  
સાથે (સીહગુહાઓ ચોરપલ્લીઓ પડિનિક્કમઈ) તે સિહગુહા નામની  
ચોરપલ્લીમાંથી નીકળે.



નામ સાર્થવાહ આદ્યોઽસ્તિ । તસ્ય ચ્વલુ દુહિતા મદ્રાયા શ્રાત્મજા પશ્ચાન્નાં પુત્રા  
 ણામનુભર્ગજાતિતા=પશ્ચાન્ના પુત્રાણા જનનાન્તર સમુપપન્ના સુસુમા નામ દારિકા  
 ચાપિ અસ્તિ, ષીદશી મા ? ' જહોણ જાવ સુરુવા ' અહીન યાવત્ સુરુવા=અહીન  
 પશ્ચેન્દ્રિયશરીરા યાવત્ સુરુવરતી, ' ત ' તત્=તસ્માદ્ ગન્ઠામઃ ચ્વલુ હે દેવાનુ  
 પ્રિયાઃ । ધન્યસ્ય સાર્થવાહમ્ય ગૃહ વિલુપ્ત્યામ=લુપ્તામઃ, યુષ્માક ધનકનક

કહા--(એવ ચ્વલુ દેવાણુપ્પિયા । રાયગિહે ણયરે ધણે ણામ સત્થવાહે  
 અદ્ધેઽઽ તસ્સ ણ ધૂયા ભદ્દાણ અત્તયા પચ્છણ પુત્તાણ અણુમગ્ગજાહયા  
 સુસમા ણામ દારિયા યાવિ હોત્થા, અહીણ જાવ સુરુવા ત ગન્ઠામોણ  
 દેવાણુપ્પિયા । ધણસ્સ સત્થવાહસ્સ ગિહ વિલુપ્ત્યામો તુલ્લમ વિઝલે  
 ધણકણમ જાવ સિલપ્પવાલે, મમ સુસુમા દારિયા । તણ તે પચ  
 ચોરસયા ચિલાયસ્સ ચોરસેણવર્હસ્મ ઇયમદ્ધ પઢિસુણેતિ । તણ સે-  
 ચિલાય ચોરસેણવર્હ તેહિં પચહિં ચોરસહિં સદ્ધિ અલ્લચમ્મ દુરુહ્હ,  
 દુરુહિત્તા પુન્નાવરણ્ણકાલસમયસિ પેચહિં ચોરસહિં સદ્ધિ ) હે દેવાનુ  
 પ્રિયો ! સુનો-એક વાત કહના હૈ-વહ્નુ હસ પ્રકાર હૈ-રાજગૃહ નગર મેં  
 ધન્ય નામ કા એક ધનિક એવ સર્વજન માન્ય સાર્થવાહ રહતા હૈ । હસ  
 કી એક લલકી હૈ । જિસકા નામ સુસુમા હૈ । યહ્નુ હસકી પત્ની ભદ્રા  
 ભાર્યા સે પાંચ પુત્રોં કૈ વાદ ઉત્પન્ન હુઈ હૈ । યહ્નુ અહીન પાંચોં ઇન્દ્રિયોં સે  
 યુક્ત શરીરવાલી હૈ તથા વહ્નુત અધિક સુકુમાર એવ સુન્દર હૈ । હસલિયે  
 -ચલો હૈ દેવાનુપ્રિયો ! હમ સવ ચલેં ઓર ધન્ય સાર્થવાહ કૈ ઘર કો

( એવ ચ્વલુ દેવાણુપ્પિયા । રાયગિહે ણયરે ધણે ણામ સત્થવાહે અદ્ધેઽઽ  
 તસ્સ ણ ધૂયા ભદ્દાણ અત્તયા પચ્છણ પુત્તાણ અણુમગ્ગજાહયા સુસમા ણામ દારિયા  
 યાવિ હોત્થા અહીણ જાવ સુરુવા ત ગન્ઠામો ણ દેવાણુપ્પિયા । ધણસ્સ સત્થ  
 વાહસ્સ ગિહ વિલુપ્ત્યામો, તુલ્લમ વિઝલે ધણકણમ જાવ સિલપ્પવાલે, મમ સુસમા  
 દારિયા । તણ તે પચ ચોરસયા ચિલાયસ્સ ચોરસેણવર્હસ્સ ઇયમદ્ધ પઢિ  
 સુણેતિ । તણ સે ચિલાય ચોરસેણવર્હ તેહિં પચહિં ચોરસહિં સદ્ધિ અલ્લ ચમ્મ  
 દુરુહ્હ, દુરુહિત્તા પુન્નાવરણ્ણકાલસમયસિ પેચહિં ચોરસહિં સદ્ધિ )

હે દેવાનુપ્રિયો ! સાલણો, તમને મારે એક વાત કહેવી છે તે આ  
 પ્રમાણે છે કે રાજગૃહ નગરમાં ધન્ય નામે એક ધનિક અને સર્વજનમાન્ય  
 સાર્થવાહ રહે છે તેને એક પુત્રી છે, તેનું નામ સુસુમા છે ધન્યની પત્ની  
 ભદ્રાભાર્યાના ગર્ભથી તે પુત્રી પાંચે ભાઈઓ બાદ જન્મ પામી છે તે અહીન  
 પાંચે ઇન્દ્રિયોથી યુક્ત શરીરવાળી છે તેમજ ખૂબ જ સુંદર છે

यावत् गिलप्रवालः, मम सुसुमा दारिका-लुण्ठितेषु वस्तुषु मध्ये धनकनकमणि-  
मौक्तिकशिलाप्रवालादि वस्तुजातानि युष्माक भवन्तु, मम तु एका सुसुमा दारिका  
भविष्यति । तत खलु तानि पञ्च चोरशतानि चिलातस्य चोरसेनापतेः एतमर्थं  
प्रतिभृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति । ततः खलु स चिलातश्चोरसेनापतिः तै पञ्चभिः  
चोरशतैः सार्द्धं 'अलुचम्प' आर्द्रचर्मं दूरोहति, लुण्ठकाहि लुण्ठनप्रस्थानात्  
पूर्वं माङ्गल्यार्थमार्द्रचर्मण्यारोहन्तीति तेषा व्यवहार, दूस्व, 'पुष्पावरणकालसम  
यसि' पूर्वापराहकालसमये 'दिनस्य चतुर्थप्रहरे पञ्चमिश्चोरशतैः सार्द्धं  
'सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे' सन्नद्ध यावत् गृहीतायुधप्रहरणः=सन्नद्धवद्ध  
वर्मितकवचः=सन्नद्ध=सज्जीकृतः, वद्धः=कशावन्धनेन समद्धः, वर्मितः=अग्ने परि-  
हितः कवचो येन स तथोक्तः, 'गृहीतायुधप्रहरणः' गृहीतानि आयुधप्रहरणानि

लूट-जो वस्तु हम तुम लूटेंगे उनमें से तुम्हारी तो धन, कनक, मणि,  
मौक्तिक शिलाप्रवाल आदि चीजें होगी-और मेरी केवल एव वह सुस-  
मादारिका होगी-। इस तरह उन पांचसौ चोरों ने अपने सेनापति  
चिलात चोर की इस बात को मान लिया । इसके बाद यह चोर सेना-  
पति चिलात, उन पांचसौ चोरों के साथ गीले चमड़े पर बैठ गया ।  
लुटेरे लूटने के लिये जय प्रस्थान करते हैं तब वे पहिले गीले चमड़े पर  
शुभ शकुन मानने के निमित्त बैठते हैं ऐसा उनमें व्यवहार है बैठकर  
फिर वह दिन के चतुर्थप्रहर में पांचसौ चोरों के साथ (सीहगुहाओ  
चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ) उस सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली से  
निकला । (सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे माइयगोमुहिण्हिं फलएहिं

એટલા માટે ચાલો તૈયાર થાઓ, હે દેવાનુપ્રિયો ! આપણે બધા ત્યા બંધાએ  
અને ધન્ય સાર્થવાહના ઘરને લુટી લઈએ, જે વસ્તુઓ આપણે બધા લુટીશું  
તેમાંથી ધન, કણક, મણિ, મૌક્તિક, શિલાપ્રવાલ વગેરે વસ્તુઓ તમારી થશે  
અને ફક્ત તે સુસમા દારિકા મારી થશે આ પ્રમાણે તે પાંચસો ચોરોએ  
ખેતાના સેનાપતિ ચિલાત ચોરની આ વાત સ્વીકારી લીધી ત્યારપછી તે ચોર  
સેનાપતિ ચિલાત, તે પાંચસો ચોરોની સાથે સાથે બીના ચામડા ઉપર બેસી  
ગયો લુટારાઓ લુટવા માટે બ્યારે ઘેરથી નીકળે છે ત્યારે તેઓ પહેલા શુભ  
શકુન માટે બીના ચામડા ઉપર બેસે છે, આ બંધતનો તેઓમાં રિવાજ છે  
બીના ચામડા ઉપર બેસીને તે દિવસના ચોથા પહોરમાં પાંચસો ચોરોની  
સાથે (સીહગુહાઓ ચોરપल्लीઓ પડિનિક્કમइ) તે સિંહગુહા નામની  
ચોરપल्लीમાંથી નીકળે.



ચેન સ', ગૃહીતાગ્રગચ્છઃ ' માઝયગોમુદિયેદિ ' માઝયગોમુવિત્તે = માઝકાનિ =  
પક્ષ્મકાનિ, ગોમુગિતાનિ = ગોમુવાકાસાનિ = માઝકાનિ ૭ તાનિ ગોમુસ્થિતાનિ  
તૈ' = ઉદરરક્ષાર્થ મત્તરુરોમાર્ગેર્ગોમુવાકારૈઃ ' પલ્લવદિ' પલ્લવે' = પલ્લવેતિ પ્રસિદ્ધ'  
' ગિકટ્ટાદિ અસિલટ્ટીદિ ' નિકટ્ટામિ' અસિલપટ્ટિમિ', કોગ્ગવદિપ્પત્તિઃ સ્વપ્પેઃ,  
' અસગપદિ તોણેદિ ' અસગતૈસ્તૂગી' = અન્નસ્થિતૈસ્તૂગીરૈઃ, ' સજીવેદિ ધનૂદિ '  
સજીવૈર્ધનુભિઃ = કોટખારોપિતમત્પર્ધનુભિ', ' સમુક્ષિવત્તેદિ સરેદિ ' સમુક્ષિસૈઃ  
શરૈઃ = તૂળીરસક્ષાન્નિકાશિતૈર્ગાણૈઃ, ' સમુલ્લાલિયાદિ દીહાદિ ' સમુલ્લાલિ  
તામિ દીહામિ' = સમુચ્છાલિતૈઃ શસ્ત્રવિશેષે ' ઓમારિયાદિ ' અપસ્વરિતામિ' =  
નાદિતામિ ' ઉરુપટ્ટિયાદિ ' ઉરુપટ્ટિયામિ = ત્રિશાલપટ્ટિયામિ ' ટિપ્પતૂરેદિ

ગિકટ્ટાદિ અસિલટ્ટીદિ અસગપદિ તોણેદિ સજીવેદિ ધનૂદિ, સમુક્ષિ  
વત્તેદિ સરેદિ સમુલ્લાલિયાદિ દીહાદિ, ઓમારિયાદિ ઉરુપટ્ટિયાદિ ટિપ્પ  
તૂરેદિ વજ્રમાણેદિ મહયાર ઉક્કિટ્ટી સીહણાયે ચોરકલકલ રવ સમુદરવ  
ભૂય કરેમાણે ) ચોરપલ્લી સે વહ કિમ તરહ કી સ્થિતિ મેં નિકલા-યહી  
ઘાત સૂત્રકાર હન પક્તિયો મેં કહ રહે હે-વે કહતે હે કિ જબ વહ અપની  
ચોરપલ્લી મેં સે નિકલા તો ઉસ સમય ઉસને અપને શરીર પર કવચ  
કો સજ્જિત કરકે કશાખધન સે અચ્છી તરહ વાધ રખા થા " ગૃહી  
તાયુધપ્રહરણ " આયુધ ઓર પ્રહરણ ઉસકે દોનોં હાથોં મેં થે । રીછ કે  
રોમ સે યુક્ત ગોમુવાકાર પટ્ટિકા સે, મ્યાન સે બાહિર સ્વેચ્છી હુઈ તલવારોં  
સે, કધો પર લટકતે હુએ ભાવોંતૂળીરોં-સે ડ્યાપર ચઢે હુએ ધનુષોં સે,  
તૂળીર સે નિકાલે ગયે વાળોં સે ડ્યાપર ઉઠાલેગયે શસ્ત્ર વિશેષોં સે,

( સળગ્ન જાવ ગહિયાવહપહરણે માઝયગોમુદિયેદિ પલ્લવદિ ગિકટ્ટાદિ  
અસિલટ્ટીદિ અસગપદિ તોણેદિ સજીવેદિ ધનૂદિ સમુક્ષિવત્તેદિ સરેદિ સમુલ્લા  
લિયાદિ દીહાદિ ઓમારિયાદિ ઉરુપટ્ટિયાદિ ટિપ્પતૂરેદિ વજ્રમાણેદિ મહયા  
ઉક્કિટ્ટીસીહણાયે ચોરકલકલરવ સમુદરવ ભૂય કરેમાણે )

ચોરપલ્લીમાથી તેઓ કેવા રીતે બહાર નીકળ્યા એ જ વાત સૂત્રકાર  
આ પક્તિઓમા સ્પષ્ટ કરી રહ્યા છે તેઓ કહે છે કે જ્યારે તે પોતાની  
ચોરપલ્લીમાથી નીકળ્યો ત્યારે તેણે પોતાના શરીર ઉપર કવચ ધારણ કરીને  
તેને કશાખધનથી સારી રીતે બાંધી રાખ્યું હતું " ગૃહિતાયુધપ્રહરણ "  
આયુધ અને પ્રહરણ તેના બંને હાથોમા હતા રીંછના રોમથી યુક્ત ગોમુ  
બાકાર પટ્ટિકાથી, મ્યાનમાથી બહાર કાઢેલી તખ્તારોથી બંધાઓ ઉપર લટ  
કતા તૂળીરોથી, જ્યાં ઉપર ચઢેલા ધનુષોથી, તૂળીરમાથી કાંઈમાં આવેલા  
બાણોથી, ઉપર ફેંડવામાં આવેલા શસ્ત્ર વિશેષોથી, "

વજ્રમાણેર્હિ ' ક્ષિપતૃયૈઃ પ્રાઘમાનૈઃ=દ્રુત પ્રાગ્માનૈઃ તૃયૈઃ ઉપલક્ષિતઃ સન્ ' મહયા-  
મહયા ઉક્ષિપ્તસીંહનાયે ચોરકલ્કલરવ ' મહામહોત્ક્રુષ્ટસિંહનાદચોરકલ્કલરવ-  
અત્યન્તોત્ક્રુષ્ટસિંહનાદચોરકલ્કલશબ્દં સમુદ્રસ્વભૂત=સમુદ્રવેલાવૃદ્ધિસમયે ધ્વનિ  
મિવકુર્ષન્, યદ્વા મન્તા મહતા ઉત્ક્રુષ્ટસિંહનાદેન-' લુપ્તતૃતીયાન્ત પદમ્ '  
સ્વકૃતોત્ક્રુષ્ટસિંહનાદેનેત્યર્થઃ, શેષ પૂર્વવત્ । સિંહગુહાતશ્ચોરપલ્લીતઃ પ્રતિનિષ્ક્રા-  
મ્યતિ, પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય યત્રૈવ રાજગૃહ નગર તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય રાજગૃહસ્ય  
નગરસ્ય અદૂરસામન્તે એક મહદ્ ' ગહણ ' ગહનમ્=વનમ્ અનુપવિગતિ, અનુપવિશ્ય,  
દિવસમ્=શેષદિવસભાગ ક્ષપયન્=વ્યતિયન્ તિષ્ઠતિ ॥ સૂ૦૫ ॥

શબ્દાયમાન-વહે ૨ ઘટોં સે જલ્દી ૨ વજતે હુએ બાજોંસે વહ ઉપલક્ષિત  
-યુક્ત યા । તયા ઉસકે નિકલને પર જો ચોરોં કા કલકલ રવ હુઆ-વહ  
સિંહ કી ગર્જના કે જૈસા મહાન ઉચ્ચસ્વર થા-। તથા જિસ સમય સમુદ્ર  
બહતા હૈ ઉસ સમય જૈસા ઉસકા શબ્દ હોતા હૈ-વૈસા હી વહ કલ ૨  
રવ ગંભીર યા । ( પહિનિક્કલમિત્તા જેણેવ રાયગિહે નયરે તેણેવ ઉવાગ  
ચ્છડ, ઉવાગચ્છિત્તા રાયગિહસ્સ નયરસ્સ અદૂર સામતે એગં મહ ગહણ  
અણુપવિસહ, અણુપવિસિત્તા દિવસ સ્વેમાણે ચિટ્ઠહ ) ચોરપલ્લી સે  
નિકલકર વહ જહા રાજગૃહ નગર યા વહાં આયા-વહાં આકર કે વહ  
રાજગૃહ નગર કે અદૂરસામત-ન અતિ દૂર ન અતિ સમીપ રહે હુએ એક  
મહાન જગલ મે ઊપ રહે વહા ઊપકર ઉસને અપના વહ દિવસ વહી  
પર ઠહર કર સમાસ કર દિયા ॥ સૂ૦૫ ॥

જલ્દી જલ્દી વાગતા વાજાઓથી તે યુક્ત હતો । તેમજ જ્યારે તે નીકળ્યો  
ત્યારે ચોરોને જે ઘોઘાટ થયો તે સિંહની ગર્જના જેવો મહા ધ્વનિ હતો  
તેમજ જ્યારે સમુદ્રમાં ભરતી આવે છે અને ત્યારે જેવો તેનો ધ્વનિ હોય  
છે, તે માણસોનો ધ્વનિ પણ તેવો જ ગભીર હતો । ( પહિનિક્કલમિત્તા જેણેવ  
રાયગિહે નયરે તેણેવ ઉવાગચ્છડ, ઉવાગચ્છિત્તા રાયગિહસ્સ નયરસ્સ અદૂરસામતે  
એગ મહ ગહણ અણુપવિસહ, અણુપવિસિત્તા દિવસ સ્વેમાણે ચિટ્ઠહ ) ચોરપલ્લીમાંથી  
નીકળીને જ્યાં રાજગૃહ નગર હતું ત્યાં તે આવ્યો ત્યાં આવીને તે રાજગૃહ  
નગરથી ઘણે દૂર પણ નહિ અને ઘણા નજીક પણ નહિ એવા એક મોટા વનમાં  
છુપાઈને રહ્યા ત્યાં છુપાઈને તેણે પોતાનો તે દિવસ ત્યાં જ પસાર કરી દીધો ॥ સૂ૦૫ ॥

मूलम्—तएण से चिलाए चोरसेणावई अछरत्तकालसमयसि  
निसत पडिनिसतसि पचहिं चोरसएहिं सडिं माइयगोमुहिणहि  
फलएहि जाव मृदआहि उरुघंटियाहि जेणेव रायगिहस्स  
नयरस्स पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
उदगवत्थिं परामुसइ, आयते चोक्खे सुइभूए तालुग्घाडणिविज्जं  
आवाहेइ, आवाहित्ता, रायगिहस्स दुवारकवाडे उद-  
एण अच्छोडेइ, कवाड विहाडेइ विहाडित्ता रायगिह अणुप-  
विसइ, अणुपविसित्ता, महयार सदेणं उग्घोसेमाणे२ एवं वयासी  
—एव खलु अह देवाणुप्पिया । चिलाए णाम चोरसेणावई  
पचहि चोरसएहि सद्धि सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमाणए  
धणस्स सत्थवाहस्स गिह घाउकामे, त जोणं णवियाएमाउ  
याएदुद्ध पाउकामे से णं णिगच्छउ त्तिकट्टु जेणेव धणस्स सत्थ  
वाहस्स गिह तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धणस्स गिह विहा  
डेइ। तएणसे धणे चिलाएणं चोरसेणावइणा पचहि चोरसएहि  
सद्धि गिह घाइजमाण पासइ, पासित्ता भीए तत्थे४ पचहि  
पुत्तेहि सद्धि एगंत अवक्कमइ । तएणं से चिलाए चोरसेणावई  
धणस्स सत्थवाहस्स गिह घाएइ घाइत्ता, सुबहु धणकणग  
जाव सावएज्ज सुसुम च दारिय गेणहइ, गेणित्ता, रायगिहाओ  
पडिणिव्वमइ, पडिणिव्वमित्ता, जेणेव सीहगुहा तेणेव  
पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ६ ॥



टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः खलु स चिलातश्चोरसेनापतिः ‘अद्व  
रत्तकालसमयसि’ अर्धरात्रकालसमये=मध्यरात्रे, कीदृशे ‘निसतपडिनिसते’ निशान्त-  
प्रतिनिशान्ते=निशान्त=जन वनिरहित प्रतिनिशान्त=प्रत्येकगृह यस्मिन् तस्मिन्,  
जने प्रसुप्ते सतीत्यर्थः, पञ्चभिश्चोरशतै सार्द्धम् ‘माइयगोमुहिएहिं’ माइयगोमु-  
खितैः, उदररक्षार्थं भल्लूकरोमावृतैर्गोमुखाकारैः ‘फलएहिं’ फलकैः=पट्टकैः उदरव-  
द्धकाष्ठफलकैरित्यर्थः, यावत् ‘मूइआहिं उरुघटियाहिं’ मूकिताभिरुरुघण्टिकाभिः=  
निःशब्दी कृताभि विशालघण्टाभिर्युक्तः यत्रैव राजगृहस्य नगरस्य पौरस्य द्वार  
तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, ‘उदगवत्थि’ उदगवत्तिष्ठति=चर्ममयजलपात्रम्, ‘ममक’  
इति प्रसिद्धम् ‘परामुसइ’ परामृशति=गृह्णाति, अनन्तरम् ‘आयते’ आचान्त =  
कृतमुखादि प्रक्षालनः ‘चोक्खे’ चोक्षः=स्वच्छः अतएव ‘तालुग्घाडणिं विज्ज’

‘तएण से चिलाण चोरसेणावई’ इत्यादि ।

टीका—(तएण) इसके बाद (चोरसेणावई से चिलाए) चोरसेनापति  
वह चिलात चोर (निसतपडिनिसते अद्वरत्तकालसमयसि) जब जन  
ध्वनिरहित प्रत्येक घर हो गया ऐसे मध्यरात्रिके समयमें (पचहिं चोर  
सएहिं सद्धि) उन पांचसौ चोरों के साथ (माइय गोमुहिएहिं फलएहिं  
जाव मूइआहिं उरुघटियाहिं जेणेव रायगिहस्स नयरस्स पुरत्थिमिल्ले  
दुवारे तेणेव उवागच्छइ) अपने उदर की रक्षा के निमित्त बद्धभल्लूक  
के रोमों से आवृत हुए गोमुखाकार काष्ठफलकों से यावत् निःशब्दीभूत  
विशाल घटिकाओं से युक्त होकर जहां राजगृह नगर का पूर्वदिशा का  
द्वार था वहां आया । (उवागच्छित्ता उदगवत्थि परामुसइ, आयते,  
चोक्खे, सुइभूए, तालुग्घाडणिंविज्ज आवाहेइ, आवाहित्ता रायगिहस्स

‘तएण से चिलाण चोरसेणावई’ इत्यादि—

टीका—(तएण) तयारभाइ (चोरसेणावई से चिलाए) चोर सेनापति ते  
चिलात चोर (निसतपडिनिसते अद्वरत्तकालसमयसि) ज्यारे दरेडे दरेडे  
धरमा भाणुयेने। अवाज्जे अउदम गध थउ गये, जेवा ते मध्यरात्रिना  
समये (पचहिं चोरमएहिं सद्धि) ते पाथये। जेरेनी साथे

(माइय गोमुहिएहिं फलएहिं जाव मूइआहिं उरुघटियाहिं जेणेव राय  
गिहस्स नयरस्स पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ)

पोताना पेटनी रक्षा भाटे रीछना रेभेथी आवृत्त थयेला गोमुआडार  
काष्ठ इलडेथी यावत् सात थउ गयेदी भेटी घटिकाओथी युक्त थईने ज्यारे  
राजगृह नगरनु पूर्व दिशानु द्वार छतु त्या आव्या (उवागच्छित्ता उदगवत्थि  
परामुसइ आयते चोक्खे सुइभूए, तालुग्घाडणिं विज्ज आवाहेइ, आवाहित्ता

मूलम्—तएणं से चिलाए चोरसेणावई अठ्ठरत्तकालसमयांसि  
 निसत पडिनिसतंसि पचहि चोरसएहि सडि माइयगोमुहिणहि  
 फलएहि जाव मृदआहि उरुणटियाहि जेणेव रायगिहस्स  
 नयरस्स पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
 उदगवत्थि परामुसइ, आयंते चोक्खे सुइमूए तात्तुग्घाडणिविज्जं  
 आवाहेइ, आवाहित्ता, रायगिहस्स दुवारकवाडे उद-  
 एण अच्छोडेइ, कवाड विहाडेइ विहाडित्ता रायगिह अणुप-  
 विसइ, अणुपविसित्ता, महयार सद्देणं उग्घोसेमाणेर एव वयासी  
 -एव खलु अहं देवाणुप्पिया । चिलाए णामं चोरसेणावई  
 पचहि चोरसएहि सद्धि सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमाणए  
 धणस्स सत्थवाहस्स गिह घाउकामे, त जोण णवियाएमाउ  
 याए दुद्धं पाउकामे से णं णिगच्छउ त्तिकट्टु जेणेव धणस्स सत्थ  
 वाहस्स गिह तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धणस्स गिह विहा-  
 डेइ। तएणं से धण्णे चिलाएणं चोरसेणावइणा पचहि चोरसएहि  
 सद्धि गिह घाइज्जमाण पासइ, पासित्ता भीए तत्थे४ पचहि  
 पुत्तेहि सद्धि एगंत अवक्कमइ । तएणं से चिलाए चोरसेणावई  
 धणस्स सत्थवाहस्स गिह घाएइ घाइत्ता, सुबहु धणकणग  
 जाव सावएज्ज सुसुम च दारिय गेणहइ, गेणित्ता, रायगिहाओ  
 पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता, जेणेव सीहगुहा तेणेव  
 पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ६ ॥



शीघ्रम् आगतः धन्यस्य सार्धवाहस्य गृह 'वाउकामे' गानयितुकामः=लुण्ठयितुकामः  
हे देवानुप्रियाः । यूयं शृणुत, पञ्चशतचौरैः सदाह चिलातश्चोरमेनापतिरन्यस्य  
सार्धवाहस्य गृह लुण्ठयितुमागतोऽस्मीति भावः, 'त' तत्=तस्मात् कारणात्  
'जो ण' यः खलु 'णवियाए माउआए' नव्याया मातृकाया 'दुद्ध पाउकामे'  
दुग्ध पातुकाम=यः खलु मदीयहस्तान्मृत्यु प्राप्य पुनर्भाविभवभाविन्या नूतनाया  
मातृदुग्धाभिलाषीभवेत् 'सेण' स खलु 'णिग्गच्छउ' निर्गच्छतु मम समुत्तम  
मागच्छतु 'त्ति कट्टु' इतिकृत्वा=इत्यमुक्त्वा यत्रैव धन्यस्य सार्धवाहस्य गृह तत्रैव

पाचसौ चोरों के साथ यहा सिंहगुहा नाम की चोरपटली से आया हुआ  
हूँ। मेरी इच्छा धन्यसार्धवाह के घर को लूटने की है-(त) इसलिये  
-(जो ण णवियाए, माउआए, दुद्ध पाउकामे सेण णिग्गच्छउ, त्तिकट्टु  
जेणेव धणस्स सत्यवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
गिह विहाडेइ। तएण से धण्णे चिलाएण चोरसेणावडणा पचहिं चोर-  
सएहिं सद्धि गिह घाइजमाण पासइ, पासित्ता भीए तत्थे ४ पचहिं  
पुत्तेहिं सद्धि एगत अवक्कमइ,। तएण से चिलाए चोरसेणावई वणस्स  
सत्यवाहस्स गिह घाएइ, घाइत्ता सुवट्टुधणक्कणग जाव सावएज्ज सुसमं  
च दारिय गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ पडिणिकखमइ, पडिणिकखमित्ता  
जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए) जो नवीन माता का दूध  
पीना चाहता हो-मेरे हाथ से मृत्यु को प्राप्त कर पुनः भाविभव में  
होनेवाली जननी का दुग्ध पान करने का जो अभिलाषी बन रहा हो

चिलात नामे चोर छु डमण्णा ४ छु पांचसो चोरानी साथे अही सिंहगुहा  
नामनी चोरपटलीथी आये। छु धन्य सार्धवाहना घरने लूटवानी भारी  
धन्य छे (त) भाटे

(जोण णवियाए, माउआए, दुद्ध पाउकामे सेण णिग्गच्छउ, त्ति कट्टु  
जेणेव धणस्स सत्यवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वणस्स गिह  
विहाडेइ, तएण से धण्णे चिलाएण चोरसेणावडणा पचहिं चोरसएहिं सद्धि गिह  
घाइजमाण पासइ, पासित्ता भीए तत्थे ४ पचहिं पुत्तेहिं सद्धि एगत अवक्कमइ।  
तएण से चिलाए चोरसेणावई वणस्स सत्यवाहस्स गिह घाएइ, घाइत्ता सुवट्टु  
धणक्कणग जाव सावएज्ज सुसमं च दारिय गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ पडि  
णिकखमइ, पडिक्खमित्ता जेणेव सीह गुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

जे नवी मातानु दूध पीवा धन्य छे अट्ठे छे भारी हाथवी मृत्यु  
पाभीने इरीणील अवभा बनारी मातानु दूध पीवा जे धन्यतो होय ते

तालोद्घाटिनी विद्याम् ' जागहेड ' आवाहयति=स्मरति ' आवाहति ' आवाह=  
 स्मृत्या राजगृहस्य द्वारकपाटानि उदकेन ' आन्त्रोदडे ' आन्त्रोदयति=अग्निपि  
 श्रुति, ' आन्त्रोदित्ता ' आन्त्रोदय=अग्निपिन्ध, पपाट ' विहाडेड ' विहाटयति=  
 उद्घाटयति, विहाटय सकृच्चोरैः सहितः राजगृहमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य महता  
 महता=अतिमहता शब्देन ' उग्योसमाणे २ ' उद्रोपयन २=पुद्गुर्मुद्गुर्योपणा कुर्वन्  
 एवमवदत्, घोषणामकारमाह-एव खलु अह हे देवानुप्रिया ! चिलातो नाम  
 चोरसेनापतिः पञ्चभिः चोरशतैः सार्द्धम् सिंहगुहातथोरपल्लीत इह ' हव्य ' हव्य=

दुवारे कवाडे उदण्ण अच्छोडेड कवाड विहाडेड, विहाटित्ता रायगिह  
 अणुपविसह अणुपविसित्ता महया २ सहेण उग्योसेमाणे २ एव वयासी  
 -एव खलु अह देवानुप्रिया चिलाण नाम चोरसेणावेई पचहि चोरस  
 एहि सद्धि सिंहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्यमागए धण्णस्स सत्थवा  
 हस्स गिह घाउकामे ) वहां आकर के उसने चर्ममय जलपात्र को-मसक  
 को-अपने हाथ में लिया-और उसके जल से आचमन किया-आचमन  
 करके जब वह शुद्ध परमशुचीभूत हो चुका-तब उसने तालोद्घाटिनी  
 विद्या का आवाहन किया-स्मरण किया-और स्मरण करके राजगृह के  
 द्वार कपाटों को उदक के छीटों से सिञ्चित किया । सिञ्चित करके फिर  
 उसने उन फिवाडों को खोला और खोल करके फिर वह समस्त चोरों  
 के साथ राजगृह नगर के भीतर प्रविष्ट हो गया । प्रविष्ट होकर के  
 उसने वहां बड़े-आवाजसे बार-बार घोषणा करते हुए इस प्रकार कहा-हे  
 देवानुप्रियों ! सुनो-मैं चोरसेनापति चिलात नाम का चोर हूँ-अभी २

रायगिहस्स दुवारकवाडे उदण्ण अच्छोडेड कवाड विहाडेड, विहाटित्ता रायगिह  
 अणुपविसह, अणुपविसित्ता महया २ सहेण उग्योसेमाणे २ एव वयासी-एव खलु  
 अह देवानुप्रिया चिलाण नाम चोरसेणावेई पचहि चोरसएहि सद्धि सिंहगुहाओ  
 चोरपल्लीओ इह हव्यमागए धण्णस्स सत्थवाहस्स गिह घाउकामे )

त्या आनीने तेणे आमडानी थेली-भशक-ने पोताना हाथमा लीधी  
 अने तेना पाणीथी आचमन कयु आचमन करीने ज्यारे ते शुद्ध परम  
 शुचीभूत थर् थूक्यो त्यारे तेणे तालोद्घाटिनी विद्यानु आवाहन कयु-स्मरण  
 कयु, अने स्मरण करीने राजगृहना दरवाजना कमाडाने पाणीथी सिञ्चित  
 करीने तेणे ते कमाडाने उघाडया उघाडीने ते जधा चोरानी साथे राजगृह  
 नगरनी अहर प्रविष्ट थर् गयो प्रविष्ट थर्ने तेणे त्या मोटा साहे बार-बार  
 घोषणा करता आ प्रमाणे कहु के डे देवानुप्रियो ! सालणे चोर सेनापति

शीघ्रम् आगतः धन्यस्य सार्थवाहस्य गृह 'घाउकामे' पानयितुकामः=लुण्ठयितुकामः  
हे देवानुमियाः । यूय भृणुत, पञ्चशतचौरैः सहाह चिलातश्चोरसेनापतिरत्रधन्यस्य  
सार्थवाहस्य गृह लुण्ठयितुमागतोऽस्मीति भावः, 'त' तत्=तस्मात् कारणात्  
'जो ण' यः खलु 'णवियाए माउआए' नव्याया मातृकाया 'दुद्ध पाउकामे'  
दुग्ध पातुकाम=यः खलु मदीयदस्तान्मृत्यु प्राप्य पुनर्भाविभवभाविन्या नूतनाया  
मातृदुग्धाभिलाषीभवेत् 'सेण' स खलु 'णिग्गच्छउ' निर्गच्छतु मम समुख  
मागच्छतु 'त्ति कट्टु' इतिकृत्वा=इत्यमुक्त्वा यत्रैव धन्यस्य सार्थवाहस्य गृह तत्रैव

पाचसौ चोरों के साथ यहां सिंहगुहा नाम की चोरपटली से आया हुआ  
हूँ। मेरी इच्छा धन्यसार्थवाह के घर को लूटने की है-(त) इसलिये  
-(जो ण णवियाए, माउयाए, दुद्ध पाउकामे सेण णिग्गच्छउ, त्तिकट्टु  
जेणेव धणस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
गिह विहाडेइ। तएण से धण्णे चिलाएण चोरसेणावडणा पचहिं चोर-  
सएहिं सद्धि गिह घाइज्जमाण पासइ, पासित्ता भीए तत्थे ४ पचहिं  
पुत्तेहिं सद्धि एगतं अवक्कमइ,। तएणं से चिलाए चोरसेणावई धणस्स  
सत्थवाहस्स गिहं घाएइ, घाइत्ता सुवहुधणकणग जाव सावएज्ज सुसम  
च दारिय गेणइ, गेणित्ता रायगिहाओ पडिणिकखमइ, पडिणिकखमित्ता  
जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए) जो नवीन माता का दूध  
पीना चाहता हो-मेरे हाथ से मृत्यु को प्राप्त कर पुनः भाविभव में  
होनेवाली जननी का दुग्ध पान करने का जो अभिलाषी बन रहा हो

चिलात नामे चोर छु डमण्ण ४ डु पांयसे। चोरोनी साथे अही सिङ्गुडा  
नामनी चोरपटलीथी आव्ये। छु धन्य सार्थवाहना घरने लूटवानी भारी  
धृच्छा छे (त) भाटे

(जोण णवियाए, माउयाए, दुद्ध पाउकामे सेण णिग्गच्छउ, त्ति कट्टु  
जेणेव धणस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धणस्स गिह  
विहाडेइ, तएण से धण्णे चिलाएण चोरसेणावडणा पचहिं चोरसएहिं सद्धि गिह  
घाइज्जमाण पासइ, पासित्ता भीए तत्थे ४ पचहिं पुत्तेहिं सद्धि एगतं अवक्कमइ।  
तएण से चिलाए चोरसेणावई धणस्स सत्थवाहस्स गिह घाएइ, घाइत्ता सुवहु  
धणकणग जाव सावएज्ज सुसम च दारिय गेणइ, गेणित्ता रायगिहाओ पडि  
णिकखमइ, पडिक्खमित्ता जेणेव सीह गुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

जे नवी मातानु दूध पीवा धृच्छे छे अटवे छे भारा हाथवी मृत्यु  
पाभीने इरी भील अवमा यतारी मातानु दूध पीवा जे धृच्छतो डाय ते



उपागच्छति, उपाग प धन्यस्य गृह ' विहाट्टेऽ ' विघाटयति=उद्घाटयति । ततः खलु स धन्यः सार्ववाहः चित्रातेन चोरसेनापतिना पञ्चभिः चोरशतैः सार्धं गृहं ' घाड्जमाण ' घात्यमान=उण्ठयमान पश्यति इष्टा, गीतः=भय प्राप्तः, व्रस्तः=प्राप्तगतः, व्रसितः=विशेषतः प्राप्तः ' उद्भिग्ने ' उद्भिन्नः=अयमस्माक सर्वस्व मपहरति अहमस्य किमपि कर्तुं न शक्नोमीति हेतोः परमविन्तामापन्नः, पञ्चभिः पुत्रैः सार्धम् ' एगत ' एकान्तम्=भयरहित स्थानम् ' अरयमइ ' अपक्राम्यति=अपगच्छति । ततः खलु स चित्रातः चोरसेनापतिः धन्यस्य सार्ववाहस्य गृहं घातयति=लुण्ठयति घातयित्वा लुण्ठयित्वा गुराहु ' गणगणग जात्र सावएज्जं ' धनरुनरु यावत् स्वापतेयम्=धनरुनरु मणिमौक्तिकादिक द्रव्य सुमुमा च दारिका गृह्णाति, गृहीत्वा राजगृहात् प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सिंहगृहा तत्रैव प्राधारयद् गमनाय=गन्तुमुद्यतोऽभूत् ॥ सू०६ ॥

-वही मेरे सम्मुख आवे-इस प्रकार कहकर वह जहा धन्यसार्ववाह का घर था वहा गया-वहा जाकर उसने धन्यसार्ववाह के घर को खोला जब धन्यसार्ववाह ने पाचसौ चोर के साथ चोरों सेनापति चिलात के द्वारा अपने घर को लुटता हुआ देखा-तो देखकर वह भय को प्राप्त हो गया-और व्रस्त एव व्रसित-विशेष प्राप्त को प्राप्त होकर अन्त में वह उद्भिन्न बन गया यह हमारा सर्वस्व हरण कर रहा है और मैं इसका कुछ भी नहीं कर सकता हूँ-इस गान से वह चिन्ताकुल हो गया-और चिन्ताकुल होकर अपने पाचो पुत्रों के साथ वहा से निर्भय स्थान में चला गया । चोर सेनापति चिलात ने धन्य सार्ववाह को खूब मनमाना लूटा और लूट करके उसमेंसे बहुत सा धन रुनरु, मणि, मौक्तिक आदि द्रव्यो को एव सुसमादारिका को ले लिया-। लेकर वह राजगृह नगर से

भारी सामे आवे आ प्रमाणे कडीने ते ज्या धन्य सार्थवाडनु घर डेतु त्या गये। त्या जधने तेले धन्य सार्थवाडना घरने उघाड्यु ज्यारे धन्य सार्थवाडे पाचसो चोरानी साथे चोर सेनापति चिलात वडे पोताना घरने लुटतु नेथु त्यारे जेधने ते लयभीत थध गये। अने व्रस्त तेमज प्राप्त ( विशेष प्राप्त ) प्राप्त करीने छेवटे उद्भिन्न थध गये। आ अमाइ सर्वस्व हरण करी रह्यो छे अने हु जेनु कधज जगाडी शकतो नथी आ जतने। विचार करीने ते चिन्ताकुल थध गये। अने चिन्ताकुल थधने ते पोताना पाचे पुत्रानी साथे त्याथी निर्भय स्थानमा जतो रह्यो चोर सेनापति चिलाते धन्य सार्थवाडना घरने जूण धरुण मुण्ण लूट्यु अने लूटीने तेमाथी धरु धन, रुनरु, मणि, मोती वगेरे द्रव्यो तेमज सुसमा दारिकाने लध लीधी । गृह

मूलम्—तएण से धन्ने सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवहुं धणकणगं सुसुमं च दारियं अवहरियं जाणित्ता, महत्थ महग्घं महरिह पाहुड गहाय जेणेव णगरगुत्तिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, त महत्थं महग्घं महरिह पाहुड जाव उवणेंति, उवणित्ता, एवं वयासी—एवखलु देवाणुप्पिया । चिलाए चोरसेणावई सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागम्म पच्चहि चोरसएहि सद्धि ममगिह घाएत्ता धणकणगं सुसुमं च दारिय गहाय जाव पडिगए । त इच्छामो ण देवाणुप्पिया । सुसुमा दारियाए कूव गमित्तए, तुब्भ णं देवाणुप्पिया । से विउले धणकणगे, ममं सुसुमा दारिया । तएणं ते णगरगुत्तिया धणस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पीडसुणित्ता संनद्ध जाव गहियाउहपहरणा महयार उक्किट्ठं जाव समुहरवभूयं पिव करेमाणा रायगिहाओ णिग्गच्छति, णिग्गच्छित्ता, जेणेव चिलाए चोरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता, चिलाएणं चोरसेणाव-इणा सद्धि संपलग्गा यावि होत्था । तएणं ते णगरगुत्तिया चिलायं चोरसेणावइ हयमहिय जाव पडिसेहेति । तएण ते पच्च चोरसया णयरगोत्तिएहि हयमहिय जाव पडिसेहिया समाणा त विउल धणकणगं विच्छड्ढेमाणा य विप्पकिरेमाणा य सव्वओ

वापिम निकला—और निकल करके जहा सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली थी—उस ओर चलने के लिये उद्यत हो गया ॥ सू० ६ ॥



समंता विप्पलाइत्था । तएणं ते णगरगुत्तिया ते विउलं धण  
 कणगं गेणहति, गेणित्ता जेणेव रायगित्ते तेणेव उवागच्छंति ।  
 तएण से चिलाए त चोरसेणं तेहि णयरगुत्तिएहि हयमहिय  
 जाव भीए तत्थे सुसुम दारियं गहाय एगं महं अग्गामियं दीह-  
 मद्ध अडवि अणुप्पविट्ठे । तएणं धण्णे सत्थवाहे सुंसुमं दारिय  
 चिलाएणं अडवीमुह अवहीरमाणि पासित्ताणं पंचहि पुत्तेहि  
 सद्धि अप्पउट्ठे सन्नद्धवद्धं चिलायस्स पदमग्गवीहि अणुगच्छ-  
 माणे अभिगज्जते हक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे' अभितज्जेमाणे  
 अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छइ । तएण से चिलाए तं धणं  
 सत्थवाहं पंचहि पुत्तेहि सद्धि अप्पछट्ठं सन्नद्धवद्धं समणुगच्छ  
 माण पासइ, पासित्ता अत्थामे अवले अवीरिए अपुरिसक्कार-  
 परक्कमे जाहे णो सचाएइ सुसुम दारिय णिव्वाहित्तए, ताहे  
 सत्ते तत्ते परितत्ते नीलुप्पलं असि परामुसइ, परामुसित्ता  
 सुसुमाए दारियाए उत्तमगं छिदइ, छिदित्ता, त गहाय त  
 अग्गामियं अडवि अणुप्पविट्ठे । तएण से चिलाए तीसे अगा-  
 मियाए अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठ दिसाभाए,  
 सीहगुह चोरपल्लि असपत्ते अतरा चेव कालगए ।

एवामेव समणाउसो । जाव पव्वइए समाणे इमस्स ओ-  
 रालियसरीरस्स वतासवस्स जाव विद्धसणधम्मस्स वण्णहेउ  
 जाव आहार आहारेइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं ४  
 हिलणिज्जे ३ जाव अणुपरियट्ठिस्सइ, जहा व से चिलाए  
 तक्करे ॥ सू० ७ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । तत् खलु स धन्यः सार्थगो यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य सुबहु वनकनक सुसुमा च दारिकाम् अपहृता ज्ञात्वा ‘महत्थं महग्घं महरिहं’ महार्थं महार्घं महार्हम्=महानर्थः प्रयोजनं यस्मिन् तत्=महार्थं=महाप्रयोजनम्, बहुमूल्यं पुनः महत्ता योग्यम् ‘पाहुडं’ प्राभूतम्=उपायनं गृहीत्वा यत्रैव ‘णगरगुत्तिया’ नगरगोप्तृकाः=नगररक्षकाः कोट्टपालादयः तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तत् महार्थं यावत्=महार्घं महार्हं प्राभूतम् ‘उरणेडं’ उवनयति=समर्पयति, उपनीय=समर्प्य एवमदत्-एव खलु हे देवानु-

‘तएण से धन्ने सत्थवाहे’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से धन्ने सत्थवाहे) वह धन्य सार्थगो (जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ) जहां अपना घर था वहां आया (उवागच्छित्ता सुबहु वणकणग सुसम च दारिय अवहरियं जाणित्ता महत्थं महग्घं महरिय पाहुडं गहाय जेणेव नगर गुत्तिया तेणेव उवागच्छइ) वहां आकरके उसने अपने घरमें से बहुत सा धन कनक एवं सुसुमा दारिका को हरण किया हुआ जब जाना तब वह महार्थ बहुमूल्य एवं महापुरुषों के योग्य भेंट लेकर जहां नगर रक्षक-कोट्टपाल-आदि थे वहां गया—(उवागच्छित्ता त महत्थं महग्घं महरिहं पाहुडं जाव उवणेति, उवणित्ता एव वयासी) वहां जाकर उसने उस महाप्रयोजन साधक भूत बहुमूल्य तथा महापुरुषों के योग्य भेंट को उनके समक्ष रखदिया—और रखकर उनसे उसने इस प्रकार कहा—(एव

‘तएण से धन्ने सत्थवाहे’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (से धन्ने सत्थवाहे) ते धन्य सार्थगो (जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ) तथा पोतानु घरं इत्तु तथा आये।

(उवागच्छित्ता सुबहु वणकणग सुसम च दारिय अवहरियं जाणित्ता महत्थं महग्घं महरिय पाहुडं गहाय जेणेव नगर गुत्तिया तेणेव उवागच्छइ)

तथा आवीने तेत्ते पोताना घरमाथी पुण्डण प्रमाणमा धनं, कनकं अने सुसमा दारिकानु हरण करवाभा आवेल्लु जणीने ते महार्थं, जहु किमती अने महापुरुषोने योग्य लेट लधने जना नगर-रक्षक-कोट्टपाल-वगेरे इत्ता तथा गये। (उवागच्छित्ता त महत्थं महग्घं महरिहं पाहुडं जाव उवणेति, उवणित्ता एव वयासी) तथा जधने तेत्ते ते महाप्रयोजन साधकभूत जहु किमती तेमज्ज महा पुरुषोने ये य लेने तेमनी आमे भूरी दीधी अने भूरीने तेमने तेत्ते आ प्रमात्ते विनती करी। इत्थं—

પ્રિયા: ! ચિલાતશોરસેનાપતિ: સિંહગુહાચોરપત્ન્યા: ૩૩ હવ્વમાગમ્મ પચ્ચમિશ્વોર  
 ગતૈ: સાર્દ્ધં મમ ગૃહ ' ઘાપ્ત્તા ' યાતપિત્ત્વા=કુળ્લપિત્ત્વા સુવહુ ધનકનક સુસમા  
 ચ દારિકા ગૃહીત્વા ' જાવ પહિગ્ગ' યાવન્ પ્રતિગત: =પચ્ચમિશ્વોરગતૈ: સાર્ધં  
 સિંહગુહા ચોરપત્ની પ્રતિનિવૃત્ત ઇત્યર્થ, ' ત ' તન્=તસ્માન્ કારણાત્ ઇચ્છામઃ  
 સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિયા. ! ' સુસમા દારિયાણ સુસમા દારિયાયા ' કૂવ ' પ્રત્યાન  
 યને ' ગમિત્તણ ' ગન્તુમ્. ! ' તુબ્ભેણ દેવાણુપ્પિયા ! ' યુષ્માક મન્તુ હે દેવાનુ  
 પ્રિયા ! તત્=અપહત વિપુલ ધનકનકમ્=હે દેવાનુપ્રિયા: ! ચોરાપહત ધનકના  
 દિક સર્વે યુષ્માક ભવન્, મમ સુસમા દારિકા ભવતુ. તત: સ્વલુ તે નગરગોપ્ત્રકા

સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! ચિલાત ચોરસેનાવર્ધ સિંહગુહાઓ ચોરપલ્લીઓ  
 હહ હવ્વમાગમ્મ પચ્ચિં ચોરસણ્હિં સર્દ્ધિં મમ ગિહ ઘાપ્ત્તા, સુવહુ ધન  
 કણગ સુસમ ચ દારિય ગહાય જાવ પહિગ્ગ-ત ઇચ્છામો ણ દેવાણુ  
 પ્પિયા ! સુસમા દારિયાણ કૂવ ગમિત્તણ-તુબ્ભ ણ દેવાણુપ્પિયા ! સે વિઝલે  
 ધણકણગે મમ સુસમા દારિયા ) હે દેવાનુપ્રિયોં સુનો ચોર સેનાપતિ  
 ચિલાત ચોર ને સિંહગુહા નામ કી ચોરપલ્લી સે યહાં ઝીઘ આકર  
 પાંચસૌ ચોરોં કે સાથ મેરે ઘર પર ડાકા ડાલા હૈ. ઉસમેં ઉસને બહુત  
 સા ધન, કનક ણવ સુસમા દારિકા કો લૂટા હૈ ઓર-લૂટકર વહ વહાં  
 વાપિસ અપને સ્થાન પર ચલા ગયા હૈ. અતઃ હે દેવાનુપ્રિયો ! મૈ ચાહતા  
 હૂં કિ આપ લોગ ઉસ સુસમા દારિકા કો લેને કે લિયે જાવેં, મિલને પર  
 વહ હન ધનકનક આદિ મવ આપકા રહે-ઓર સુસમા દારિકા મેરી

( એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! ચિલાત ચોરસેનાવર્ધ સિંહગુહાઓ ચોરપલ્લીઓ  
 હહ હવ્વમાગમ્મ પચ્ચિં ચોરસણ્હિં સર્દ્ધિં મમ ગિહ ઘાપ્ત્તા, સુવહુ ધનકણગ સુસમ  
 ચ દારિય ગહાય જાવ પહિગ્ગ ત ઇચ્છામો ણ દેવાણુપ્પિયા ! સુસમા દારિયાણ  
 કૂવ ગમિત્તણ-તુબ્ભ ણ દેવાણુપ્પિયા ! સે વિઝલે ધણકણગે મમ સુસમા દારિયા )

હે દેવાનુપ્રિયો ! સાભળો, ચોર સેનાપતિ ચિલાત ચોરે સિંહગુહા નામની  
 ચોરપલ્લીથી એકદમ અહીં આવીને પાંચસૌ ચોરોની સાથે મારા ઘરમા ધાડ  
 પાડી છે તેમા તેણે ધણું ધન, કનક અને સુસમા દારિકાની લૂટ કરી છે  
 લૂટ કરીને તે પાછો પોતાના સ્થાને જતો રહ્યો છે એથી હે દેવાનુપ્રિયો !  
 મારી ઈચ્છા છે કે તમે સુસમા દારિકાને પાછી લેવા માટે જાઓ અને તેને  
 મેળવી લીધા બાદ તે અપહત કરાયેલું ધન કનક વગેરે બધું તમે રાખજો અને  
 સુસમા દારિકાને મને મોપી દેજો



પુરુષા ધન્યસ્ય એતમર્થ પ્રતિશ્રુવન્તિ=સ્વીકૃવન્તિ, પ્રતિશ્રુત્ય=સ્વીકૃત્ય ' સન્નદ્ધ જાવ ગહિયાઝહપહરણા ' સન્નદ્ધ યાવત્ ગૃહીતાયુધપ્રહરણાઃ=સન્નદ્ધપદ્ધત્તમિતકવચા યાવદ્ ગૃહીતાયુધપ્રહરણા इत्यस्य व्याख्या पूर्ववद् बोध्या, ' મહયા ૨ ઉક્કિદ્ધ જાવ સમુદ્રવભૂયપિવ ' મહા મહોત્ક્રુષ્ટ યાવત્ સમુદ્રવભૂતમિવ, વેલાટ્ટદ્ધિસમયે સમુદ્રધ્વનિમિવ મહાઘ્વનિ ' કરેમાણા ' કુર્વન્તો રાજગૃહાત્ નિર્ગચ્છન્તિ, નિર્ગત્ય

રહે । ( તણ તે નગરગુત્તિયા ધણસ્સ સત્થવાહસ્સ એમદ્ધ પડિસુણેતિ, પડિસુણિત્તા સન્નદ્ધ જાવ ગહિયાઝહપહરણા મહયા ૨ ઉક્કિદ્ધ૦ જાવ સમુદ્રવભૂયં પિવકરેમાણા રાયગિહાઓ નિગગચ્છતિ નિગચ્છિત્તા જેણેવ ચિલાણ ચોરે-તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા ચિલાણ ચોરસેણાવહરણા સદ્ધિં સપલગ્ગા યાવિ હોત્થા તણ તે નગરગુત્તિયા ચિલાય ચોરસેણાવહર હયમહિય જાવ પડિસેહેતિ, તણ તે પચ ચોરસયા નયરગોત્તિ એહિં હયમહિય જાવ પડિસેહિયા સમાણા ત વિહલ ધણકણગ વિચ્છદ્ધેમાણા ય વિપ્પકિરેમાણા ય સન્વઓ સમતા વિપ્પલાહિત્થા ) ધન્ય સાર્યવાહ કી હસ વાત કો સુનકર ઉન નગર રક્ષકોં ને સ્વીકાર કર લિયા । ઔર સ્વીકાર કરકે ઉસી સમય ઉન્હો ને અપને ૨ શરીરપર કવચ કો સજિત કરકે કશાવધન સે વાધ લિયા યાવત્ આયુધ ઔર પ્રહરણો કો લે લિયા-। વેલાટ્ટદ્ધિકે સમય મેં જિસ પ્રકાર સમુદ્ર કી ધ્વનિ હોતી હૈ-ઉસી પ્રકાર કી મહાધ્વનિ કરતે દુણ ફિર વે રાજગૃહ નગર

( તણ તે નગરગુત્તિયા ધણસ્સ સત્થવાહસ્સ એમદ્ધ પડિસુણેતિ, પડિસુણિત્તા સન્નદ્ધ જાવ ગહિયાઝહપરણા મહયા ૨ ઉક્કિદ્ધ૦ જાવ સમુદ્રવભૂય પિવકરેમાણા રાયગિહાઓ નિગગચ્છતિ, નિગચ્છિત્તા જેણેવ ચિલાણ ચોર-તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા ચિલાણ ચોરસેણાવહરણા સદ્ધિં સપલગ્ગા યાવિ હોત્થા-તણ તે નગરગુત્તિયા ચિલાય ચોરસેણાવહર હયમહિય જાવ પડિસેહેતિ, તણ તે પચ ચોરસયા નયરગોત્તિ એહિં હયમહિય જાવ પડિસેહિયા સમાણા ત વિહલ ધણકણગ વિચ્છદ્ધેમાણા ય વિપ્પકિરેમાણા ય સન્વઓ સમતા વિપ્પલાહિત્થા )

ધન્ય માથવાહની તે વાતને માલળીને નગર રક્ષકોએ તેને સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તેમણે તરત જ પોતપોતાના શરીરો ઉપર કવચો પહેરીને ડશા બધનોથી બાધ્યા યાવત્ આયુધ અને પ્રહરણોને સાથે લઈ લીધા ભરતીના સમયે જેવો સમુદ્રનો ધ્વનિ હોય છે તેવો જ મહાધ્વનિ ઊરતા તેઓ રાજગૃહ નગરમાંથી બહાર નીકળ્યા અને નીકળીને ત્યાં ચોર એનાપતિ તે

મિયા: ! ચિલાતથોરસેનાપતિ: સિંહગુહાયાઓરપયા: ૩૬ હવમાગમ્મ પચ્ચમિથોર  
 શત્તે: માર્દ્દિમ્ મમ ગૃહ ' ઘાણ્તા ' ઘાતપિત્તા=લુપ્પિત્તયા સુયહુ ધનકનક સુસમા  
 ચ દારિકા ગૃહીત્તા ' જાવ પડિગણ ' યાન્ મતિગા: =પચ્ચમિથોરશત્તે: સાર્થ  
 સિંહગુહા ચોરપલ્લી પ્રતિનિવૃત્ત ઇત્યર્થ, ' ત ' તન્=તસ્માન્ કારણાન્ ઇચ્છામ:  
 સલ્લ હે દેવાનુપિયા: ! ' સુસમા દારિયાણ સુસમા દારિયાયા ' કૃચ ' મત્યાન  
 યને ' ગમિત્તણ ' ગન્તુમ્ । ' તુબ્બેણ દેવાણુપ્પિયા । ' યુપ્પાક સલ્લ હે દેવાનુ  
 પિયા ! તત્=અપહૃત ત્રિપુલ ધનકનકમ્=હે દેવાનુપિયા: ! ચોરાઅપહૃત ધનકના  
 દિક સર્વ યુપ્પાક મયન્, મમ સુસમા દારિકા મયતુ । તત. સલ્લ તે નગરગોપ્ત્રકા

સલ્લ દેવાણુપ્પિયા ! ચિલાણ ચોરસેનાવર્ડ સિંહગુહાઓ ચોરપલ્લીઓ  
 હહ હવ્વમાગમ્મ પચ્ચિં ચોરસણ્હિં સદ્ધિં મમ ગિહ ઘાણ્તા, સુયહુ ધન  
 કણગ સુસમ ચ દારિય ગહાય જાવ પડિગણ-ત ઇચ્છામો ન દેવાણુ  
 પ્પિયા ! સુસમા દારિયાણ કૃચ ગમિત્તણ-તુબ્બેણ દેવાણુપ્પિયા ! સે વિઝલે  
 ધણકણગે મમ સુસમા દારિયા ) હે દેવાનુપ્રિયો સુનો ચોર સેનાપતિ  
 ચિલાત ચોર ને સિંહગુહા નામ કી ચોરપલ્લી સે યહાં ઝીઘ આકર  
 પાચસૌ ચોરોં કે સાથ મેરે ઘર પર ટાકા ઢાલા હૈ । ઉસમેં ઉસને ઘહુત  
 સા ધન, કનક એવ સુસમા દારિકા કો લૂટા હૈ ઓર-લૂટકર વહ વહા  
 વાપિસ અપને સ્થાન પર ચલા ગયા હૈ । અતઃ હે દેવાનુપ્રિયો ! મૈં ચાહતા  
 હૂં કિ આપ લોગ ઉસ સુસમા દારિકા કો હેને કે લિયે જાવેં, મિલને પર  
 વહ હન ધનકનક આદિ સવ આપકા રહે-ઓર સુસમા દારિકા મેરી

( એવ સલ્લ દેવાણુપ્પિયા ! ચિલાણ ચોરસેનાવર્ડ સિંહગુહાઓ ચોરપલ્લીઓ  
 હહ હવ્વમાગમ્મ પચ્ચિં ચોરસણ્હિં સદ્ધિં મમ ગિહ ઘાણ્તા, સુયહુ ધનકણગ સુસમ  
 ચ દારિય ગહાય જાવ પડિગણ ત ઇચ્છામો ન દેવાણુપ્પિયા ! સુસમા દારિયાણ  
 કૃચ ગમિત્તણ-તુબ્બેણ દેવાણુપ્પિયા ! સે વિઝલે ધણકણગે મમ સુસમા દારિયા )

હે દેવાનુપ્રિયો ! સાલજો, ચોર સેનાપતિ ચિલાત ચોરે સિંહગુહા નામની  
 ચોરપલ્લીથી એકદમ અહીં આવીને પાચસો ચોરોની સાથે મારા ઘરમા ધાડ  
 પાડી છે તેમા તેણે ઘણું ધન, કનક અને સુસમા દારિકાની લૂટ કરી છે  
 લૂટ કરીને તે પાછો પોતાના સ્થાને જતો રહ્યો છે એથી હે દેવાનુપ્રિયો !  
 મારી ઇચ્છા છે કે તમે સુસમા દારિકાને પાઠી લેવા માટે જાઓ અને તેને  
 મેળવી લીધા બાદ તે અપહૃત કરાયેલું ધન કનક વગેરે બધું તમે રાખજો અને  
 સુસમા દારિકાને મને સોંપી દેજો



नगरगोष्ठकाः=नगररक्षकाः=त विपुल धनकनक०=अनकनकादिक गृह्णन्ति, गृहीत्वा, यत्रैव राजगृह नगर तत्रैव उपागच्छन्ति । ततः खलु स चिन्तातः ता चोरसेना ' हयमहिय जाव ' हतमथित यावत्=हतमथितप्रवरवीरघातितनिपतित चिह्नज्वजपताकाम् यावद् दृष्ट्वा भीतस्त्रस्तः सुसुमा दारिका गृहीत्वा एका मःतीम् ' अगमामिय ' अग्रामिकाम्=ग्रामरहिताम् ' दीहमद्र ' दीर्घा=दीर्घमार्गाम् ' अडवि ' अटवीम्-अनुप्रविष्टः । ततः खलु वन्य सार्ववाह. सुसुमा दारिका चिलातेन ' अडवीमुह ' अटवीमुखम्=अरण्यममुखम् ' अवहीरमार्णि ' अपह्रियमाणाम्-नीयमाना ' पासित्ता ' दृष्ट्वा पञ्चभि पुत्रै सार्द्धम् ' अप्पछ्छे ' आत्मपाठ. ' सन्नद्धवद्ध० ' सन्नद्धवद्धवर्मितकनचः चिन्तातस्य ' पदमग्गवीहि ' पद

गेण्हति, गेण्हित्ता, जेणेव रायगिहे तेणेव उवागच्छन्ति । तएण से चिलाए त चोरसेणं तेहिं णयरगुत्तिएहिं हयमहिय जाव भीए तत्थे सुसम दारिय गहाय एग मह अगमामिय दीहमद्र अडविं अणुप्पविद्धे) उन नगर रक्षको ने उस विपुल धन कनक आदिको ले लिया और लेकर राजगृह नगर में वापिस आ गये । इस के बाद वह चिलात चोर अपनी उस सेना को नगर रक्षकों द्वारा हत मथित प्रवल वीरवाली एव घातित तथा निपतित चिह्न ज्वज पताका वाली देखकर त्रस्त हो गया और सुसमादारिका को लेकर एक बड़ी भारी ग्रामरहित अटवी में घुस गया ( तएण धण्णे सत्थवाहे सुसम दारियं चिलाएण अडवीमुह अवहिरमार्णि पासित्ता ण पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछ्छे सन्नद्धवद्ध चिलायस्स पदमग्गवीहिं अणुगच्छमाणे अभिगज्जते हाक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे

( तएण ते णयर गुत्तिया त विउल धणकणग गेण्हति, गेण्हित्ता, जेणेव रायगिहे तेणेव उवागच्छन्ति । तएण से चिलाए त चोरसेण तेहिं णयरगुत्तिएहिं हयमहिय जाव भीए तत्थे सुसम दारिय गहाय एग मह अगमामिय दीहमद्र अडविं अणुप्पविद्धे)

ते नगर रक्षकों ने ते पुच्छण प्रमाणमा पडेला धन, कनक वगैरेने लध लीधु अने लधने राजगृह नगरमा पाछा आवी गया त्थारपछी ते चिलात थारे पोतानी ते थोर सेनाने नगर रक्षकों वडे डत, मथित तेमज घातित अने निपतित चिह्नज्वज पताकाओवाणी नेधने त्रस्त थर्ग गये अने सुसमा दारिकाने लधने ओक लारे मोटी ग्रामरहित अटवीमा पेशी गये।

( तएण धण्णे सत्थवाहे सुसम दारिय चिलाएण अडवीमुह अवहीरमार्णि पासित्ता ण पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछ्छे सन्नद्धवद्धचिलायस्स पदमग्गवीहिं अणुगच्छमाणे अभिगज्जते हाक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे अभिहासे-

यत्रैव चिलातशोर', तत्रैव उपागन्गति, उपागन्ग चिलातेन चोरसेनापतिना  
 साथे 'सपङ्गमा' सप्रङ्गनाः=युद्धं कर्तुं प्रयत्नाश्चापि भगवन् । ततः खलु नगर  
 गोष्ठकाः चिलात चोरसेनापति 'हयमहियं जाय' हतमयित यावत्=हतम  
 यित प्रवरगीरघातितनिपतितचिह्नत्रजपताक=हता=मारिता, मयिताः=निशेषता  
 प्राप्तिताः, प्रवरगीरा=श्रेष्ठगीरा यस्यामी हतमयितप्रवरगीरः, घातितः=घातः  
 शस्त्रादिप्रदारेण क्षतिः, स सजातोऽस्य घातितः क्षत इत्यर्थः, निपतिता=भूमौ  
 पतिता चिह्नत्रज पताका यस्याऽसा, निपतितचिह्नत्रजपताकः, एतेषां कर्म  
 धारयः, तम्, यावत् प्रतिपेधयन्ति=निराग्यन्ति । ततः खलु ते 'पञ्चचोरसया'  
 पञ्चशतचोरा 'नगरगोतिपर्दि' नगरगोष्ठकैः=नगररक्षकैः पुरुषैः 'हयमहिय  
 जाय पडिसेहिया' हतमयितयावत्प्रतिपेधिताः=प्रतिपेधिता सन्तः तन् विपुल  
 धनकनक=धनकनकमणिमौक्तिकादिक 'विन्डूढेमागा' विन्डूढयन्त=प्रक्षिपन्तः  
 'विप्पकिरेमागा य' विप्रकिरन्तश्च=उत्तस्ततो विप्रिरण कुर्वन्तः 'सब्बओ समता'  
 सर्वतः समन्तात्=चतुर्दिशु 'विप्पलाड्या' विप्लायन्त=परायिताः ततः खलु ते

से बाहर निकले-और निकलकर जहाँ चोर सेनापति वह चिलात चोर  
 था वहाँ गये-वहाँ पहुँचते ही उनका चोर सेनापति उस चिलात चोर  
 के साथ युद्ध होना प्रारम्भ हो गया-उस युद्ध में उन्होंने ने उस चिलात  
 के सैन्य को पहिले खून मारा-पीटा-बाद में उन्हें बिलकुल नष्ट भ्रष्ट कर  
 दिया । कितनेक चोरो को उन्होंने ने क्षत किया । उसकी चिह्न ध्वजपता  
 काओं को जमीन पर डाल दिया । इस प्रकार उसे हरतरह परास्त कर  
 दिया । जब वे पाचसौ चोर नगररक्षक पुरुषों द्वारा हर प्रकारसे हतमयित  
 यावत् प्रतिपेधित हो चुके तब वे उस विपुल धनकनक मणिमौक्तिक  
 आदिको छोड़कर तथा इधर उधर डालकर सर्व प्रकारसे चारों दिशाओंमें  
 इधर उधर भाग गये । (तएव ते नगरगुत्तिया त विपुल धनकणम

चिलात चोर हतो त्या गया त्या जतानी साथे ज चोर सेनापति चिलातनी  
 साथे तेमनु युद्ध शरु थरु गथु युद्धमा तेमणे पडेला तो चिलातनी सेना  
 साथे शूल मार-पीट करी अने तयारपणी तेने नष्ट-भ्रष्ट करी नाणी केटलाक  
 चोराने तो तेमणे क्षत ( घवायेला ) कर्या तेमनी चिह्नभूत ध्वज पताकाओंने  
 जमीनदोस्त करी नाणी आ अभाले तेने जधी गीते डरावी दीधे । ज्यारे ते  
 पांचसो चोर नगर रक्षक पुरुषो वडे सर्व रीते हत, मयित यावत् प्रतिपेधित  
 थरु गया तयारे तेओ ते पुष्कण धन, कनक, मणी, मोती वगैरेने त्या ज  
 भूडीने आभतेम नाणीने थारे दिशाओमा आभतेम पलायन ।

पुरुषकारः=पौरुषम्, पराक्रमः=मामर्थ्यं, तद्रहितः सन् 'जाहे' यदा नो शक्नोति  
सुसुमा दारिका 'णिन्वाहित्तए' निर्वाहयितु=बोद्धुम्, 'ताहे' तदा 'सते'  
श्रान्तः=परिश्रम गतः, 'तते' तान्तः=ग्लानिं प्राप्तः, 'परितते' परितान्तः=  
सर्वतोभावेन खिन्नतामुपगतः, 'नीलुप्पल०' नीलोत्पल०=नीलोत्पलगवलगुलि  
कादि विशेषणविशिष्टमतितीक्ष्णम् 'असिं' करवालं 'परामुसइ' परामृशति=  
कोशान्निःसारयति, परामृश्य, सुसुमाया दारिकायाः 'उत्तमग' उत्तमाङ्ग=शिरः

अवीरिण अपुरिसकारपरक्कमे जाहे णो सचाण्ड सुसम दारिय णिन्वा  
हित्तए, ताहे सते तते पणितते निलुप्पल० असिं परामुसइ, परामुसित्ता  
सुसमाए दारियाए उत्तमग छिदइ, छिदित्ता, त गहाय त अग्गामिय  
अडविं अणुपविट्ठे, तएण से, चिलाए तीसे आग्गामियाए अडवीए  
तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीह गुहं चोरपल्लिं अस  
पत्ते अतराचेव कालगए ) जब चिलात चोर ने उस वन्यसार्थवाह को  
पांचो पुत्रों के साथ आत्मपष्ठ होकर एव कवच आदि से सुसज्जित  
होकर अपने पीछे २ आता हुआ देखा-तब वह देख कर आत्मबल  
रहित हो गया । इस तरह सैन्य रहित, उत्साह रहित तथा पौरुष और  
पराक्रम रहित बना हुआ वह जब सुसुमा दारिका को अपने पास रखने  
के लिये शक्तिशाली नहीं हो सका तब उसने श्रान्त, तान्त-ग्लानि  
युक्त और परितात सर्वतोभावेन खिन्नता को प्राप्त होकर नीलोत्पल,  
गवलगुलिका, आदि विशेषणो वाली अपनी तलवार को उठाया-म्यान

परक्कमे जाहे णो सचाण्ड सुसम दारिय णिन्वाहित्तए, ताहे सते तते परितते  
नीलुप्पल० असिं परामुसइ, परामुसित्ता सुसमाए दारियाए उत्तमग छिदइ,  
छिदित्ता, त गहाय त अग्गामिय अडविं अणुपविट्ठे, तएण से, चिलाए तीसे  
आग्गामियाए अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीहगुह  
चोरपल्लिं असपत्ते अतरा चेव कालगए )

ज्यारे चिलात चारे ते धन्य सार्थवाहने पाये पुत्रोनी साथे आत्मपष्ठ  
थधने तेमज्ज कवच वगेरथी सुसज्जित थधने पोतानी पाछण पाछण आवतो  
जेथे। त्यारे ते जेधने आत्मपष्ठ वगरने थउ गये। आ प्रमाणे सेना रक्षित  
उत्साह रक्षित तेमज्ज पौरुष अने पराक्रम रक्षित थउ गयेले। ते ज्यारे सुसुमा  
दारिकाने पोतानी पासे राखवाभा पणु असमर्थ थध गये। त्यारे तेणे श्रात,  
तात, ग्लानि युक्त अने पणितत तेमज्ज अधी रीते खिन्नता प्राप्त करीने  
नीलोत्पल, गवलगुलिका वगेरे विशेषणोवाणी पोतानी तरवारने उपाडी अने  
म्यानमाथी पछार काढी अने पछार काढीने सुसुमा दारिकानु माथु कापी



मार्गविधि=पदमार्गप्रचारम्=गणनिष्ठम् 'अणुगच्छमाणे' अनुगच्छन्=पृष्ठतो वाक्  
 'अणुगज्जेमाणे' अनुगर्जन्=मेघरज्जर्जना कुर्यात् 'ह्यारेमाणे' 'हो' दुष्ट !  
 तिष्ठ-तिष्ठ ' इत्यादि, वाक्यैः प्रकाशयन्=प्रकाशयन् 'पुतारेमाणे' प्रकाशयन्  
 ' तिष्ठ २, नोचेर्या इतिप्यामीत्यान्विताये' तमाद्यन् 'अभितज्जेमाणे' अभि  
 तर्जन्=' रे निर्लज्ज ' इत्यादि वाक्यैस्तर्जनां कुर्यात्, 'अभितासेमाणे' अभि  
 त्रासयन्=भस्त्रशस्त्रादिदर्शनेन त्रासमुत्पादयन् 'पिट्ठाओ' पृष्ठतः=चिन्तातचोरस्य  
 पृष्ठदेशतः अनुगच्छति=यथाद्वावति । तत्र, गच्छ स चिन्तातः त धन्य सार्थवाह  
 पञ्चभि पुत्रैः सादृश्यं 'अप्पउट्ठ' आत्मपट्ट 'मन्नद्वयद्वयमितकवच यावत्  
 समनुगच्छत=यथाद्वावन्त पश्यति, पट्टा 'अत्थामे ४' अत्थामा=आत्मवल  
 रहितः, अयत्तः=सैन्यरहितः, अरीर्य' = उत्साहरहितः, अपुरुषकारपराक्रम सन्

अभितासेमाणे पिट्ठाओ अणुगच्छइ ) धन्यसार्थवाह ने जय सुसमा  
 दारिका को चिलात चोर ठारा अटवी के मध्य में हरणकर ले जाई गई  
 जय जाना-तय वह अपने पाचों पुत्रों के साथ आत्मपट्ट होकर कवच  
 बाध उस चिलात के पीछे २ पद चिह्नों का अनुसरण करता हुआ, मेघ  
 के जैसी गर्जना करता हुआ, अरे ओ दुष्ट ! ठहर ठहर इस प्रकार से  
 कहता हुआ, पुकार करता हुआ ठहर जा ठहर जा-नहीं तो मैं तुझे  
 मार डालूंगा इस प्रकार के वाक्यों से उसे बुलाता हुआ रे निर्लज्ज !  
 इस प्रकार से उसे तर्जित करता हुआ, तयो अस्त्र शस्त्र आदि के  
 दिखाने से उसे त्रास उत्पन्न करता हुआ चला ।

( तण्ण से चिलाए त धण्ण सत्थवाह पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं  
 अप्पउट्ठ अन्नद्वयद्व० समणुगच्छमाण पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले

माणे पिट्ठाओ अणुगच्छइ )

ज्यारे धन्य सार्थवाहे सुमभा दारिकाने चिलात चोर वडे अटवीमा  
 डरण करीने लई जवायेली जाली, ज्यारे ते चोताना पाये पुत्रोनी साथे आत्म  
 पट्ट थधने कवच बाधने ते चिलात चोरनी पाछण तेना पद चिह्नों अनु  
 सरण करतो मेघना जेवी ध्वनि करे " अरे ओ दुष्ट ! जलोरे, जलोरे, "  
 आ प्रभाणे डडेते " जलोरे, जलोरे, नडितर भरी गयेवे जलुजे " आ  
 प्रभाणे डाकल करतो, तेने जोलावतो ' अरे निर्लज्ज ! ' आभ तर्जित करतो  
 तेमज शस्त्र अस्त्र वजेरेने जतावीने तेने त्रसित करतो आदये।

( तण्ण से चिलाए त धण्ण सत्थवाह पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पउट्ठ सन्नद्व  
 वद्व० समणुगच्छमाण पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले रिसवकार

पुरुषकारः=पौरुषम्, पराक्रमः=मामर्ष्यं, तद्रहितः सन् 'जाहे' यदा नो शक्नोति  
सुसुमा दारिकां 'णिन्वाहित्तए' निर्वाहयितुं=बोद्धुम्, 'ताहे' तदा 'सते'  
श्रान्तः=परिश्रम गतः, 'तते' तान्तः=ग्लानिं प्राप्तः, 'परितते' परितान्तः=  
सर्वतोभावेन खिन्नतामुपगतः, 'नीलुप्पल०' नीलोत्पल०=नीलोत्पलगवलगुलि  
कादि विशेषणविशिष्टमतितीक्ष्णम् 'असिं' करवाल 'परामुसइ' परामृशति=  
कोशान्निःसारयति, परामृश्य, सुसुमाया दारिकायाः 'उत्तमग' उत्तमाङ्ग=शिरः

अवीरिण अपुरिसकारपरक्रमे जाहे णो सचाण्ड सुसम दारिय णिन्वा  
हित्तए, ताहे सते तते पणितते निलुप्पल० असिं परामुसइ, परामुसित्ता  
सुसमाए दारियाए उत्तमग छिदइ, छिदित्ता, त गहाय त अग्गामिय  
अडविं अणुपविट्ठे, तएण से, चिलाए तीसे आग्गामियाए अडवीए  
तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीह गुहं चोरपल्लिं अस  
पत्ते अतराचेव कालगए ) जव चित्तात चोर ने उस वन्यसार्थवाह को  
पाचो पुत्रों के साथ आत्मपष्ट होकर एव कवच आदि से सुसज्जित  
होकर अपने पीछे २ आता हुआ देखा-तब वह देव कर आत्मबल  
रहित हो गया । इस तरह सैन्य रहित, उत्साह रहित तथा पौरुष और  
पराक्रम रहित बना हुआ वह जब सुसुमा दारिका को अपने पास रखने  
के लिये शक्तिशाली नहीं हो सका तब उसने श्रान्त, तान्त-ग्लानि  
युक्त और परितात सर्वतोभावेन खिन्नता को प्राप्त होकर नीलोत्पल,  
गवलगुलिका, आदि विशेषणों वाली अपनी तलवार को उठाया-म्यान

परक्रमे जाहे णो सचाण्ड सुसम दारिय णिन्वाहित्तए, ताहे सते तते परितते  
नीलुप्पल० असिं परामुसइ, परामुसित्ता सुसमाए दारियाए उत्तमग छिदइ,  
छिदित्ता, त गहाय त अग्गामिय अडविं अणुपविट्ठे, तएण से, चिलाए तीसे  
आग्गामियाए अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीहगुह  
चोरपल्लिं असपत्ते अतरा चेव कालगए )

ज्यारै चित्तात चोर ते धन्य साथवाडने पाये पुत्रोनी साथे आत्मपष्ट  
थधने तेमज कवच वगेरेथी सुमज्जित थधने पोतानी पाछण पाछण आवतो  
लेथे। त्यारे ते लेधने आत्मपष्ट वगरने। थर् गये। आ प्रमाणे सेना रहित  
उत्साह रहित तेमज पौरुष अने पराक्रम रहित थध गयेले। ते ज्यारै सुसमा  
दारिकाने पोतानी पासे राखवाभा पणु असमर्थ थध गये। त्यारे तेले श्रात,  
तात, ग्लानि युक्त अने परितात तेमज अधी रीते खिन्नता प्राप्त करीने  
नीलोत्पल, गवलगुलिका वगेरे विशेषणोवाणी पोतानी तरवारने उपाडी अने  
म्यानमाथी गडार काटी अने गडार काटीने सुसमा दारिकानु माथु कापी



मार्गविधि=पदमार्गप्रचारम्=गणनिष्ठम् 'अणुगच्छमाणे' अनुगच्छन्=पृष्ठतो गच्छन्  
 'अणुगज्जेमाणे' अनुगर्जन्=मेघगदगर्जनां कर्तृन् 'द्वाररेमाणे' 'द्वारो' दुष्ट !  
 तिष्ठ-तिष्ठ ' इत्यादि, वाक्यैः द्वारस्य=भारारयन् 'द्वाररेमाणे' पूरकारयन्  
 'तिष्ठ २, नोचेत्यादिनिष्पामीत्यान्त्रिवाक्यैः तमाद्यन् 'अभितज्जेमाणे' अभि  
 तर्जन्='रे निर्लज्ज' इत्यादि गार्ग्यैस्तर्जनां कर्तृन्, 'अभितासेमाणे' अभि  
 त्रासयन्=भस्त्रशस्त्रादिदर्शनेन त्रासमुत्पादयन् 'पिष्टाओ' पृष्ठतः=चिलातचोरस्य  
 पृष्ठदेशतः अनुगच्छति=यथाद्वावति । तत्र गच्छन् चिलातः त धन्य सार्थवाह  
 पञ्चभि पुत्रै सादृश्यं 'अप्पच्छ' आत्मपष्ट 'मन्नद्वयद्वयमितकवच यावत्  
 समनुगच्छन्त=यथाद्वावन्त पश्यति, इष्टा 'अत्थामे ४' अत्थामा=आत्मवल  
 रहितः, अगलः=सैन्यरहितः, अरीर्यः=उत्साहरहितः, अपुरुषपरपराक्रम सन्

अभितासेमाणे पिष्टाओ अनुगच्छन् ) धन्यसार्थवाह ने जब सुसमा  
 दारिका को चिलात चोर द्वारा अटवी के मध्य में हरणकर ले जाई गई  
 जब जाना-तब वह अपने पांचों पुत्रों के साथ आत्मपष्ट होकर कवच  
 घाघ उस चिलात के पीछे २ पद चिह्नों का अनुसरण करता हुआ, मेघ  
 के जैसी गर्जना करता हुआ, अरे ओ दुष्ट ! ठहर ठहर इस प्रकार से  
 कहता हुआ, पुकार करता हुआ ठहर जा ठहर जा-नहीं तो मैं तुझे  
 मार डालूंगा इस प्रकार के वाक्यों से उसे घुलाता हुआ रे निर्लज्ज !  
 इस प्रकार से उसे तर्जित करता हुआ, तथा अस्त्र शस्त्र आदि के  
 दिखाने से उसे त्रास उत्पन्न करता हुआ चला ।

(तण्ण से चिलाए त धण्ण सत्थवाह पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं  
 अप्पच्छ अन्नद्वयद्वं समणुगच्छमाण पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले

माणे पिष्टाओ अनुगच्छन् )

ज्यारे धन्य सार्थवाहे सुभभा दारिकाने चिलात चोर वडे अटवीमा  
 हरण करीने लई जवायेली जण्णी, त्यारे ते पोताना पाये पुत्रोनी साथे आत्म  
 पष्ट थधने कवच आधीने ते चिलात चोरनी पाछण तेना प, चिलीनु अनु  
 सरण करतो। मेघना जेवी ध्वनि करे। "अरे ओ दुष्ट ! जलोरे, जलोरे,"  
 आ प्रमाणे कहते। "जलोरे, जलोरे, नडितर मरी गयेयो जयजे" आ  
 प्रमाणे डाकल करतो, तेने जोलावतो 'अरे निर्लज्ज !' आभ तर्जित करतो।  
 तेभज शस्त्र अस्त्र वगेरेने जतावीने तेने त्रसित करतो। आदये।

( तण्ण से चिलाए त धण्ण सत्थवाह पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पच्छ सन्नद्व  
 वद्धं समणुगच्छमाण पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले

बलहेतु=शरीरबलवर्धनार्थम्, 'वीरियहेतु' वीर्यहेतुम्=आन्तरिकशक्तिसम्पादनार्थम्, आहारम् आहारयति, स गलु इह लोके एव बहूना श्रमणानां श्रमणीनां श्रावकाणां श्राविकाणां च 'हीलणिज्जे जाव' हीलनीयो यावत्, यावत्पदेन, निन्दनीय, खिसनीय गर्हणीयो भवेत्, परलोकेऽपि दुःखं प्राप्नोति, यावत्-चातुरन्तससारकान्तारम् 'अणुपरियट्टिस्सइ' अनुपर्यटिष्यति=भ्रमिष्यति, यथा स चिलातस्तस्करः-चिलाततस्करवदिति भावः ॥ सू० ७ ॥

मूलम्-तएण सेधण्णे सत्थवाहे पच्चहिं पुत्तेहि सद्धि अप्प-छट्टे चिलाय परिधाडेमाणेऽ तण्हाए लुहाए य सत्ते तत्ते परित्तंते

णाण ४ हीलणिज्जे ३ जाव अणुपरियट्टिस्सइ जहाव से चिलाए तकरे) अत्र प्रभु इस चिलात के दृष्टान्त से निर्ग्रन्थ आदिको को सवोधित कर प्रतिबोधित करते हैं-हे आयुष्मत श्रमणों! इसी तरह जो हमारा निर्ग्रन्थ श्रमण अथवा श्रमणीजन आचार्य उपाध्याय के पास प्रव्रजित होकर वातास्रववाले यावत् विध्वंसन धर्मवाले इस औदारिक शरीर में कान्ति विशेष प्राप्ति के लिये सौन्दर्य आदिरूप विशेष के लिये, बलवर्धन के लिये तथा आन्तरिक शक्ति वृद्धिके लिये आहार को लेता है-करता है - वह इस लोक में अनेक श्रमण श्रमणी, श्रावक तथा श्राविका जनों द्वारा हीलनीय यावत् निन्दनीय, खिसनीय गर्हणीय तो होता ही है-परन्तु पर भवमें भी वह दुःखो कोही पाता है। यावत् ऐसा जीव इस चतुर्गतिरूप ससार कान्तार में चिलात चोर की तरह परिभ्रमण ही करता रहता है ॥ सूत्र ७ ॥

चेव बहूण समणाण ४ हीलणिज्जे २ जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहाव से चिलाए तकरे)

इसे प्रभु ते चिलातना दृष्टान्तने सामे राखीने निर्ग्रन्थ वगेरेने म जो-धित करीने आता करे छे के छे आयुष्मत श्रमणो! आ प्रमाणे जे अमारा निर्ग्रन्थ श्रमण अथवा श्रमणीजन आचार्य के उपाध्यायनी पामे प्रव्रजित थईने वान्तास्रववाणा यावत् विध्वंसन धर्मवाणा आ औदारिक शरीरमा कान्ति विशेषनी प्राप्ति माटे, सौन्दर्य वगेरे रूप विशेषना माटे, बलवर्धन माटे तेभज आन्तरिक शक्तिने वधाग्वा माटे आहार ग्रहण करे छे ते आ दोउमा धणु श्रमण, श्रमणी, श्रावक तेभज श्राविकाओ वडे हीलनीय यावत् निन्दनीय, खिसनीय अने गर्हणीय तो होय ज छे पण साथे साथे ते परलवमा पण दुःख ज भेजवे छे यावत् ओवो श्रव आ चतुर्गति उप ससार कान्तारमा चिलात चोरनी जेम सट्कतो ज रहे छे ॥ सूत्र ७ ॥

छिनत्ति, त्रिरा, 'त' तत्=उत्तमाह यदीत्या ताम् अप्राप्तिसाम्=जनानामसहि  
ताम् अटवीमनुपरिष्ट=प्रवेश करान । ततः गतु निजात तस्यामप्राप्तिकाया  
मद्व्या 'तण्डाए' तृणया=पिपासया अभिभूत सत् 'सिंहगुहा चोरपट्टीम्' विस्म-  
तदिग्भागः=पूर्वादिदिशाविशेषविरल. सत् सिंहगुहा चोरपट्टीम् 'अगच्छे' अस-  
म्यासः 'अतराचेर' अन्तरा एर=म प एर 'कालगण' कागगत=असौ चोरो  
मृत्यु प्राप्तवान् । अस्य शेरचरितं ग्रन्थातराश्वसेयम्, शास्त्रेण-उपयोगि चरित  
तारन्मात्र भगवतोपदिष्टम् ।

अथ चिलातट्टान्तेन मगरान निर्ग्रन्थादीन् सरोज्य प्रतियोधयति — 'एवा  
मेव' एवमेव=अनेन प्रकारेणैव 'समणाउसो' आयुज्जः व्रजणाः । 'जाव पव्व  
इए समाणे' यावत् प्रव्रजितः सन्=योऽस्माक निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा आचार्यो  
पाध्यायानां समीपे प्रव्रजितः सन् 'इमस्स' अस्य 'ओरालियसरीस्स'  
ओदारिस्सरीरस्य चान्तासवस्स यावद् विवसनधम्मस्य 'वणहेउ' वर्णहेतु =  
कान्तिविशेषप्राप्त्यर्थम्, यावत्- 'रुवहेउ' रूपहेतु=सौन्दर्यार्थम्, 'वज्जहेउ'

से बाहर किया और उठाकर सुममा दारिका के मस्तक को काट डाला।  
उस कटे हुए मस्तक को लेकर फिर निर्जन अटवी में प्रवेश कर गया।  
उस अटवी में पिपासा से व्याकुल होकर वह पूर्वादि दिशाओं के  
विवेक से रहित हो गया—इस तरह वह पुनः वहाँ से पीछे वापिस  
अपनी सिंहगुहा नामकी चोर पट्टी में नहीं आ सका—और बीच ही में  
काल कवलित बन गया। इनका अवशिष्ट चरित्र ग्रथान्तर से जान  
लेना चाहिये। यहाँ तो भगवान् ने जितना चरित्र इसका उपयोगी  
जाना उननाही उपदिष्ट किया है।—(एवामेव समणाउसो ! जाव पव्व  
इए समाणे इमस्स ओरालियसरीस्स वतासवस्स जाव विद्वसण  
धम्मस्स वणहेउ जाव आहार आहारेइसे ण इहलोए चेव बह्वण सम

नाभ्यु ते कपाब्जेला माधाने लब्धने ते निज्जन-लय कर अटवीमा चेसी गये।  
अटवीमा ते तरयथी व्याकुल थधने पूर्व वगेरे दिशाओला विवेकथी रहित  
थध गये। अने आ प्रमाणे ते इनी त्याथी ते चोतानी सिंहगुहा नामनी चोर  
पट्टीमा केध पणु द्विमे पाछा आवी शब्धे नहि अने वग्धे न मृत्यु पाभ्ये।  
तेनु आदीनु चरित्र जीला ग्रथमाथी न्हाणी लेवु लेधजे, अही तो लगवाने  
लेटलु चरित्र तेनु उपयुक्त न्हायु तेटलु उल्लु छे

( एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे इमस्स ओरालियसरीस्स  
वतासवस्स जाव विद्वसणधम्मस्स वणहेउ जाव आहार



तुम्हे ममं देवाणुप्पिया । जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणिय  
च आहारेइ, आहारित्ता, तेण आहारेणं अविद्धत्था समाणा  
तओ पच्छा इम अग्गामिय अडवि णित्थरिहिह, रायगिह च  
संपावेहिह, मित्तणाइ० य अभिसमागच्छिहिह, अत्थस्स य  
धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह । तएण से जेट्ठपुत्ते  
धण्णेणं सत्थवाहेण एवं तुत्ते समाणे धण्ण सत्थवाहं वयासी-  
तुब्भे ण ताओ । अम्हे पिया गुरुजण य देवभूया ठावगा पइ-  
ट्ठावगा सरक्खगा सगोवगा तं कहणं अम्हे ताओ । तुब्भे जीवि-  
याओ ववरोवेमो, तुब्भे णं मस च सोणिय च आहारेमो ? त  
तुब्भे ण तातो । मम जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणिय च  
आहारेह, अग्गामिय अडवि णित्थरह, त चेव सव्व भणइ जाव  
अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह । तएण धण्ण सत्थ-  
वाह दोच्चे पुत्ते एव वयासी-मा णं ताओ । अम्हे जेट्ठ भायर  
गुरुदेवयं जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भे ण ताओ । मम जीवि-  
याओ ववरोवेह जाव आभागी भविस्सह । एव पचमेपुत्ते तएण  
से धण्णे सत्थवाहे पचण्ह पुत्ताण हियइच्छिय जाणित्ता, त पच  
पुत्ते एव वयासी-मा ण अम्हे पुत्ता । एगमविजीवियाओ वव-  
रोवेमो, एसण सुसुमाए दारियाए णिप्पाणे णिच्चेहे जाव विप्प-  
जडे, त सेयं खलु पुत्ता । अम्हे सुसुमाए दारियाए मस च  
सोणिय च आहारेत्तए । तएण अम्हे तेण आहारेण अविद्ध,  
त्थासमाणा रायगिह सपाउणिस्सामो । तएण त पंच पुत्ता

नो संचाएइ चिलाय चोरसेणावडं साहर्तिय गिणिहत्तण । से णं  
तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुसुमा दारिया  
चिलाएण जीवियाओ ववरोविया तेणेव उवागच्छइ, उवाग-  
च्छित्ता, सुसुमं दारिय चिलाएणं जीवियाओ ववरोवियं पासइ,  
पासित्ता परसुनियत्तेव चपगवरपायवे धसत्तिधरणियलसि निव-  
डइ । तएण से धण्णे सत्थवाहे पंचहि पुत्तेहि सद्धिं अप्पछट्टे  
आसत्थे कूयमाणे कदमाणे विलवमाणे महयार सदेणं कुहूर  
सुपरुत्ते सुचिर काल वाहमोक्ख करेइ । तएणं से धण्णे सत्थवाहे  
पंचहि पुत्तेहि सद्धिं अप्पछट्टे चिलायंतीसे अग्गामियाए अडवीए  
सव्वओ समंता परिधाडेमाणे तण्हाए लुहाए य परिभूए समाणे  
तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समता उदगस्स मग्गण-  
गवेसण करेइ, करित्ता सत्ते तत्ते परितत्ते, णिव्विन्ने, तीसे अग्गा-  
मियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसण करेमाणे नो चेव णं  
उदग आसादेइ । तएणं से धण्णे सत्थवाहे अप्पछट्टे उदग  
अणासाएमाणे जेणेव सुसुमा जीवियाओ ववरोविया तेणेव  
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जेठ पुत्त धणदत्त सद्दावेइ, सद्दावित्ता  
एव वयासी—एव खलु पुत्ता । अम्हे सुसुमाए दारियाए अट्टाए  
चिलाय तक्कर सव्वओ समता परिधाडेमाणा तण्हाए लुहाए  
य अभिभूया समाणा इमीसे अग्गामियाए अडवीए उदगस्स  
मग्गणगवेसण करेमाणा णो चेव ण उदगं आसादेमो, तएणं  
उदग, अणासाएमाणा णो संचाएमो रायगिह सपा ॥ तएण



तुम्हे ममं देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह, मसं च सोणियं  
च आहारेइ, आहारित्ता, तेणं आहारेणं अविद्धत्था समाणा  
तओ पच्छा इमं अग्गामियं अडवि णित्थरिहिह, रायगिह च  
संपावेहिह, मित्तणाड० य अभिसमागच्छिहिह, अत्थस्स य  
धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह । तएण से जेट्ठपुत्ते  
धण्णेणं सत्थवाहेण एवं वुत्ते समाणे धण्ण सत्थवाहं वयासी-  
तुव्भे ण ताओ । अम्हे पिया गुरुजण य देवभूया ठावगा पइ-  
ट्ठावगा सरक्खगा सगोवगा तं कहणं अम्हे ताओ । तुव्भे जीवि-  
याओ ववरोवेमो, तुव्भे ण मसं च सोणियं च आहारेमो ? त  
तुव्भे णं तातो । मम जीवियाओ ववरोवेह, मसं च सोणियं च  
आहारेह, अग्गामिय अडवि णित्थरह, त चेव सव्व भणइ जाव  
अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह । तएण धण्ण सत्थ-  
वाह दोच्चे पुत्ते एव वयासी-मा णं ताओ । अम्हे जेट्ठ भायर  
गुरुदेवय जीवियाओ ववरोवेमो, तुव्भे णं ताओ । मम जीवि-  
याओ ववरोवेह जाव आभागी भविस्सह । एव पच्चमेपुत्ते तएण  
से धण्णे सत्थवाहे पच्चण्ह पुत्ताण हियइच्छिय जाणित्ता, त पच्च  
पुत्ते एव वयासी-मा ण अम्हे पुत्ता । एगमविजीवियाओ वव-  
रोवेमो, एसण सुसुमाए दारियाए णिप्पाणे णिच्चेहे जाव विप्प-  
जडे, त सेय खलु पुत्ता । अम्हे सुसुमाए दारियाए मस च  
सोणियं च आहारेत्तए । तएण अम्हे तेण आहारेण अविद्ध,  
त्थासमाणा रायगिह सपाउणिस्सामो । तएण त पंच पुत्ता

ધળેણં સત્થવાહેણં ણ્વ વુત્તા સમાણા ણ્વમટ્ઠં પડિસુર્ણેતિ ।  
 તણ્ણં ધળે સત્થવાહે પંચહિંપુત્તેહિં સદ્ધિં અરણિં કરેદ્, કરિત્તા,  
 સરગં ચ કરેદ્, કરિત્તા, સરણ્ણં અરણિં મહેદ્, મહિત્તા અર્ગિ-  
 પાડેદ્, પાડિત્તા, અર્ગિ સંધુક્ખેદ્, સવુન્નિસત્તા દારુયાદ્ પરિ-  
 વ્વેવેદ્, પરિવ્વેવિત્તા, અર્ગિપજ્જાલેદ્, પજ્જાલિત્તા, સુંસુમાણ  
 દારિયાણ મંસ ચ સોણિયં ચ આહારેતિ । તે ણં આહારેણ અવિ-  
 હ્ધત્થા સમાણા રાયગિહં નયર સંપત્તા મિત્તણાદ્ અભિસમણા-  
 ગયા તસ્સ ય વિઝલસ્સ ધળકળગરયણ જાવ આભાગી જાયા  
 યાવિ હોત્થા । તણ્ણ સે ધળે સત્થવાહે સુંસુમાણ દારિયાણ  
 વહૂદ્ લોહ્યાદ્ જાવ વિગયસોણ જાણ યાવિ હોત્થા ॥ સૂ. ૮ ॥

ટીકા—‘તણ્ણ સે’ ઇત્યાદિ । તતઃ સ્વલ્લુ સ ધન્ય’ સાર્થવાહઃ પશ્ચભિઃ પુત્રૈ  
 સહ આત્મપટ્ઠઃ ચિલાત ‘પરિધાડેમાણે ૨’ પરિધાવન્ ૨=ચિલાત ગ્રહીતુકામસ્ત  
 સ્પૃષ્ઠતોઽનુધાવન્ ‘તળ્હાણ છુહાણ ય’ તળ્ણયા ક્ષુધયા ચ ‘સતે’ શ્રાન્ત, =મનસા  
 સ્થિન્નઃ, ‘તતે’ તાન્ત =શરીરેણ ક્ષાત, ‘પરિતતે’ પરિતાન્તઃ=મનસા શરીરેણ ચ

—:તણ્ણ સે ધળે સત્થવાહે । ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તણ્ણ) ઇસકે બાદ (પંચહિં પુત્તેહિં સદ્ધિ અપ્પછટ્ટે સે  
 ધળે સત્થવાહે) પાંચો પુત્રોં કે સાથ ઝઠા બના હુઆ વહ ધન્યસાર્થવાહ  
 (ચિલાય પરિધાડેમાણે ૨) ચિલાતચોર કો પકડ ને કી ઇચ્છા સે ઉસ  
 કે પીછે ૨ બાર બાર દોડતા હુઆ, (તળ્હાણ છુહાણ ય સતે તતે પરિતતે  
 નો સચાહણ ચિલાય ચોરસેણાવદ્ સાહર્થિ ગિણિહત્તણ) પિપાસા ઓર

‘તણ્ણ સે ધળે સત્થવાહે’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—(તણ્ણ) ત્યારપછી (પંચહિં પુત્તેહિં સદ્ધિ અપ્પછટ્ટે સે ધળે  
 સત્થવાહે) પાચે પુત્રોની સાથે છટ્ટો તે ધન્ય સાર્થવાહ (ચિલાય પરિધાડેમાણે ૨)  
 ચિલાત ચોરની પાછળ પાછળ તેને પકડી પાડવા માટે વારવાર દોડતા દોડતા  
 (તળ્હાણ છુહાણ ય સતે તતે પરિતતે નો સચાહણ ચિલાય ચોરસેણાવદ્ સાહર્થિ  
 ગિણિહત્તણ) તસ્મ અને ભૂખથી શ્રાંત થઈ ગયો, બિન્ન બની ગયો. થઈ

खिन्नः, 'नो सचाण्ड' नो शक्नोति चिलात चोरसेनापति 'साहसि' स्वहस्तेन ग्रहीतुम् । तदा स खलु 'तओ' तत = चिलातग्रहणव्यापारात्, 'पडि-नियत्तड' प्रति निवर्तते, प्रतिनिवृत्य, यत्रैव सा सुसुमा दारिका चिलातेन जीविताद् 'ववरोनिया' व्यपरोपिता = पृथक्कृता = मारिता सती पतिता आसीत् तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य सुसुमा दारिका चिलातेन जीविताद् व्यपरोपिता पश्यति, दृष्ट्वा 'परसुनियत्तेव' परशुनिकृत्त इव = परशुच्छिन्नो यथा चम्पकवरपादपस्तद्वत्

क्षुधा से श्रान्त हो गया-खिन्न बन गया, तान्त हो गया-शरीर से मुरझा गया-परितान्त हो गया-इन्द्रदम उत्साह रहित बन गया-सो वह उसे अपने हाथ से पकड़ने के लिये शक्तिशाली नहीं हो सका-(सेण तओ पडिनियत्तड, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुसुमा दारिया चिलाएण जीवियाओ ववरोविया-तेणेव उवागच्छइ) अतः-वह वहा से लौट आया-और लौटकर वहाँ गया जहा वह अपनी पुत्री सुसुमा चिलातचोर के द्वारा-जीवन से रहित की गई पड़ी थी। (उवागच्छित्ता सुसुमा दारिय चिलाएण जीवियाओ ववरोविय पासइ, पासित्ता परसुनियत्तेव चपगवरपायवे धसत्ति धरणियलसि निवडइ-तएण से धण्णे सत्थवाहे पवहिं पुत्तेहिं सद्धि अप्पड्ढे आसत्थे कूयमाणे कदमाणे विलवमाणे महया २ सद्देण कुहू २ सुपरुन्ने सुचिर कालवाहमोक्ख करेइ) वहा जाकर उसने सुसुमा दारिका को चिलातचोर के द्वारा जीवन से रहित की गई देखा। देखते ही वह पुत्रों सहित परशु से काटे गये उत्तम

गये।-शरीर तेनु बिभडाई गथु परितात थई गये।-साव निइत्साडी णनी गये। अेवी डालतमा ते पोताना हाथथी तेने पडडी पाडवामा ममर्थ थई शक्ये। नडि (से ण तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुसुमा दारिया चिलाएण जीवियाओ ववरोविया तेणेव उवागच्छइ) तेथी ते त्याथी पाछे इरी गये। अने पाछे इरीने ते न्या चिलात चोर वडे डुण्णायेली पोतानी पुत्री सुसुमा दारिका पडी डुती त्या गये।

(उवागच्छित्ता सुसुमा दारिय चिलाएण जीवियाओ ववरोविय पासइ पासित्ता परसुनियत्तेव चपगवरपायवे धसत्ति धरणियलसि निवडइ,-तएण से धण्णे सत्थवाहे पवहिं पुत्तेहिं सद्धि अप्पड्ढे आसत्थे कूयमाणे कदमाणे विलवमाणे महया २ सद्देण कुहू २ सुपरुन्ने सुचिर काल वाहमोक्ख करेइ)

त्या न्धने तेणे सुसुमा दारिकाने चिलात चोर वडे डुण्णायेली नेई नेतानी साथे न ते पुत्रोनी साथे परशु वडे क्कपाअेला उत्तम थ पड वृक्षनी



ધણેણં સત્થવાહેણ ણ્ણ વુત્તા સમાણા ણ્ણમટ્ટં પડિસુર્ણેતિ ।  
 તણ્ણં ધણે સત્થવાહે પચહિંપુત્તેહિં સદ્ધિં અરણિં કરેદ્ધ, કરિત્તા,  
 સરગં ચ કરેદ્ધ, કરિત્તા, સરણ્ણં અરણિં મહેદ્ધ, મહિત્તા અર્ગિ-  
 પાડેદ્ધ, પાડિત્તા, અર્ગિ સંધુમ્પેદ્ધ, સંધુમ્પિત્તા દારુયાદ્ધ પરિ-  
 વ્વેવેદ્ધ, પરિવ્વેવિત્તા, અર્ગિપજ્જાલેદ્ધ, પજ્જાલિત્તા, સુંસુમાણ  
 દારિયાણ મંસ ચ સોણિયં ચ આહારેતિ । તે ણં આહારેણ અવિ-  
 હ્હત્થા સમાણા રાયગિહ નયરં સપત્તા મિત્તણાદ્ધં અભિસમણા-  
 ગયા તસ્સ ચ વિહલસ્સ ધણકુળગરયણ જાત્ર આભાગી જાયા  
 યાત્રિ હોત્થા । તણ્ણ સે ધણે સત્થવાહે સુંસુમાણ દારિયાણ  
 વહ્હુદ્ધ લોદ્ધયાદ્ધ જાત્ર વિગયસોણ જાણ યાત્રિ હોત્થા ॥ સૂ. ૮ ॥

ટીકા—‘તણ્ણ સે’ इत्यादि । ततः सल्लु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चभिः पुत्रै  
 सह आत्मपटुः चिलात ‘परिधाडेमाणे २’ परिधावन् २=चिलात ग्रहीतुकामस्त  
 स्पृष्टतोऽनुधावन् ‘तण्हाए छुहाए य’ तृणया क्षुधया च ‘सते’ श्रान्त,=मनसा  
 खिन्नः, ‘तते’ तान्त=शरीरेण क्लान्तः, ‘परितते’ परितान्तः=मनसा शरीरेण च

—:તણ્ણ સે ધણે સત્થવાહે । इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(તણ્ણ) इसके बाद (पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे से  
 धण्णे सत्थवाहे) पांचो पुत्रों के साथ उठा बना हुआ वह धन्यसार्थवाह  
 (चिलाय परिधाडेमाणे २) चिलातचोर को पकड़ ने की इच्छा से उस  
 के पीछे २ बार बार दौड़ता हुआ, (तण्हाए छुहाए य सते तते परितते  
 नो सचाइए चिलाय चोरसेणावई साहत्थि गिण्हत्तए) पिपासा और

‘તણ્ણ સે ધણે સત્થવાહે’ इत्यादि—

ટીકાર્થ—(તણ્ણ) तयारपछी (पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे से धण्णे  
 सत्थवाहे) पांचे पुत्रोनी साथे छट्ठे ते धन्य सार्थवाह (चिलाय परिधाडेमाणे २)  
 चिलात चोरनी पाछण पाछण तेने पकड़ी पाउवा भाटे बारबार होउता होउता  
 (तण्हाए छुहाए य सते तते परितते नो सचाइए चिलाय चोरसेणावई साहत्थि  
 गिण्हत्तए) तस्स अने भूषथी श्रात थई गयो, भिन्न अनी ॥ ८ ॥

माणे ' परिधावन् तृणया क्षुधया च ' परिभूए ' परिभूतः सन् तस्यामग्रामि  
कायामटव्या सर्वतः समन्तात्=चतुर्दिक्षु ' उदगस्स ' उदकस्य=जलस्य ' मग्गण-  
गवेसण ' मार्गणगवेपणम्=अन्वेपण करोति, कृत्वा श्रान्तः, तान्त, परितान्त  
' णिव्विन्ने ' निर्विण्ण=ओदासीन्य प्राप्तः । तस्यामग्रामिकायामटव्यामुदकस्य  
मार्गणगवेपणं कुर्वन् नो चैव खलु उदकम् ' आसादेइ ' आसादयति=प्राप्नोति ।  
ततः खलु स धन्यः सार्थवाह आत्मपष्ठ उदकमनासादयन् पानीयमप्राप्नुवन्  
यत्रैव सुसुमा जीविताद् व्यपरोपिता मारिता सती पतिताऽऽसीत् तत्रैव उपाग-  
च्छति, उपागत्य ज्येष्ठ पुत्र धनदत्त शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवदत्-एव खलु  
में चारो दिशाओ में जल की मार्गणा और गवेपणा करने लगा ( करित्ता।  
सते तते परितते णिव्विन्ने तीसे अग्रामियाए अडवीए उदगस्स मग्गण  
गवेसण करेमाणे णो चेव ण उदग आसाएइ ) मार्गणा गवेपणा करके  
वह श्रान्त, मन से खिन्न, तान्तशरीर से खिन्न और परितान्त-बन  
गया शरीर एव मन इन दोनों से खिन्न हो गया इस तरह उस अग्रा-  
मवाली अटवी में उदकपानी की मार्गणा और गवेपणा करते हुए भी  
उसे जल नहीं मिला ( तएण से धण्णे सत्थवाहे अप्पच्छे उदग अणा-  
साएमाणे जेणेव सुसुमा दारिया जीवियाओ ववरोविया-तेणेव उवाग-  
च्छइ ) तब आत्मपष्ठ बना हुआ वह धन्यसार्थवाह उदक प्राप्त नहीं  
करता हुआ जहाँ सुसुमादारिका का शव पड़ा हुआ-या वहा आया  
-( उवागच्छित्ता जेठु पुत्त धणदत्त सहावेइ, सहावित्ता एव वयासी )

अने क्षुधा ( तरस अने भूख ) थी पीडाधने ते गाभ वगरनी अटवीमा  
शोभेर पाणीनी मार्गणा अने गवेपणा करवा लाग्ये।

( करित्ता सते तते परितते णिव्विन्ने तीसे अग्रामियाए अडवीए उदगस्स  
मग्गणगवेसण करेमाणे णो चेव ण उदग आसाएइ )

मार्गणा तेमज गवेपणा करीने ते श्रात, मनथी भिन्न, तात शरीरथी  
भिन्न अने परितात भनी गये। शरीर तेमज मन आ भनेथी ते भिन्न थई  
गये। आ प्रभाणे ते गाभ वगरनी अटवीमा उदक-पाणी-नी मार्गणा गवे  
पणा करता तेने पाणी भज्यु नडि।

( तएण से धण्णे सत्थवाहे अप्पच्छे उदग अणासाएमाणे जेणेव सुसुमा  
दारिया जीवियाओ ववरोविया तेणेव उवागच्छइ )

त्यादे आत्मपष्ठ भनेदो ते धन्य सार्थवाह पाणी न भेजवता न्या  
सुसुमा दारिकानु भउहु पउयु उतु त्या आये। ( उवागच्छित्ता जेठु पुत्त धण  
दत्त सहावेई सहावित्ता एव वयासी ) त्या आवीने तेणे पोताना मोटा पुत्र  
धनदत्तने ओलाये। अने ओलावीने तेणे आ प्रभाणे कछु डे—





मटवीं ' गित्थरिहिह ' निस्तरिष्यथ=पारङ्गमिष्यथ, राजगृह च ' सपाविहिह ' समाप्स्यथ ' मित्ताणाइ० य ' मित्रज्ञातिश्च=मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनान् ' अभिसमागच्छिहिह ' अभिसमागमिष्यथ=मित्रज्ञातिप्रभृतिभिः सह सगता भविष्यथ, तथा च ' अत्थस्स ' अर्थस्य=धनस्य च धर्मस्य च पुण्यस्य च ' आभागी ' अभागिनो = भोक्तारो भविष्यथ । ततः खलु स ज्येष्ठपुत्रो धन्येन सार्थवाहेन एव मुक्तः = अनेन प्रकारेण कथितः सन् धन्यं सार्थवाहमेव मवदत्-हे तात ! यूयं खलु अस्माकं पिता ' गुरुजणदेवयभूया ' गुरुजन-दैवतभूताः=देवगुरुजनसदृशाः ' ठावका ' स्थापकाः नीतिधर्मादौ ' पइट्ठावका ' प्रतिष्ठापका = राजादिसमक्ष स्वपदस्थापनेन प्रतिष्ठाकारकाः तथा ' संरक्खगा '

रिहिह रायगिह च सपावेहिह ) इसलिये हे देवानुप्रियो ! तुम मुझे मार डालो और मेरे मांस और रक्त से तुम अपने प्राणोंकी रक्षाकर शरीर के विनाश होने से बचाकर इस अग्रामिक अटवी से पार हो जाओगे-एव राजगृह नगर पहुँच जाओगे । ( मित्ताणाइ० य अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह, तएण से जेट्ठे पुत्ते ) वहाँ पहुँचकर तुम अपने मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सम्बन्धी परिजनो के साथ मिलोगे तथा धन, धर्म और पुण्य के भोक्ता भी बनोगे-इसके बाद उस ज्येष्ठ पुत्र धनदत्त ने ( धण्णेण सत्थवाहेण एव वुत्ते समाणे धण्ण सत्थवाह एव वयासी ) धन्यसार्थवाह के द्वारा इस प्रकार कहे जाने पर उन अपने पिता धन्यसार्थवाह से इस प्रकार कहा ( तुव्भे ण ताओ ! अम्ह पिआ गुरुजणयदेवभूया ठावगा

अडविं गित्थरिहिह रायगिह च सपावेहिह )

अथी छे देवानुप्रिय ! तमे मने मारी नाणे अने मारा मांस अने रक्तने आवो, पीवो । आधा पीधा पछी तमे शरीरना विनाशथी छिगरी जशे । अने तृप्ति भेजवीने आ गामवगरनी अटवीने पार करी जशे । अने छेवटे राजगृह नगरमा पडोथी जशे ।

( मित्ताणाइ य अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह, तएण से जेट्ठे पुत्ते )

त्या पडोथीने तमे पो । ना मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सम्बन्धी परिजनोनी साथे भजशे । तेमज धन, धर्म अने पुण्योने उपभोग करशे । त्यापछी भोटा पुत्र धनदत्ते

( धण्णेण सत्थवाहेण एव वुत्ते समाणे धण्ण सत्थवाह एव वयासी

धन्य सार्थवाह वडे आ प्रभाणे कडेवाया भाइ पोताना पिता धन्य सार्थवाहने आ प्रभाणे कहु छे—

હે પુત્રાઃ ! ત્વં સુસુમાયા દારિકાયાઃ ' અઘ્વાણ ' અઘ્વાણ=નિમિત્તં ચિન્તાતં તત્કરં  
 મતિ ' સન્વઓ સમતા ' સર્વાઃ સમન્તાન્=મટ્-યાં ચતુર્દિશ્વ ' પરિધાદેમાણા '   
 પરિધારન્તઃ ' તળ્હાણ ' તળ્હાયા=પિપામયા, ' તુળાણ ' શ્રુધયા ચ અભિભૂતા  
 સન્તઃ અસ્થામગ્રામિકાયામટ્ન્યામુદગમ્ય માર્ગણગવેષણ કર્મન્તો નો ચૈવ સ્વલુ  
 ઉદગમાસાદયામ', તત સ્વલુ ઉદગમ્ અનોમાદયન્તઃ=અભ્યભમાનાઃ નો શ્વનુમો  
 રાજગૃહ સમાપ્તમ્, ' તળ્હા ' તત્ત્વલ્હ=તસ્માન્ ધારણાન્ સ્વલુ ગ્રૂય મા હે દેવાન્  
 પ્રિયાઃ ! જીવિતાન્ વ્યપરોપયત, માસ ચ સોનિત ચ ' આહારેહ ' આહારયત,  
 આહાર્ય=શુવત્સા, ' તેણ આહારેણ ' તેન આહારેણ ' અવિદ્વત્થા ' અવિદ્વસ્તાઃ=  
 શરીરનાશમમાપ્તા' સન્તઃ ત્સા સતઃ ' તમ્હોપન્છા ' તત પથાત્ ઇમામગ્રામિકા

વહા આકર કે ઉસને અપને જેષ્ટ પુત્ર ધનદક્ષા કો બુલાયા-ઔર બુલાકર  
 ઉસસે ઇસ પ્રકાર કહા-( એવ સ્વલુ પુત્તા ! અમ્હે સુસમાણ દારિયાણ  
 અઘ્વાણ ચિલાય તત્કર સન્વઓ સમતા પરિધાદેમાણા તળ્હાણ છુહાણ ચ  
 અભિભૂયા સમાણા ઇમી સે અગ્ગામિયાણ અડવીણ ઉદગસ્મ મગ્ગણ  
 ગવેસણ કરેમાણા ણો ચૈવ ણ ઉદગ આસાણમો-તળ્હાણ ઉદગ અણાસા  
 ણમાણા ણો સચાણમો રાયગિહ સપાવિત્તણ ) હે પુત્ર સુનો અપને લોગ  
 સુસમા દારિકા કે નિમિત્ત ચિલાતચોર કે પીછે ૨ સબ તરફ સબ પ્રકાર  
 સે દોહતે ૨ પ્યાસ ઔર ખૂલ્લ સે ડુ ગ્રી હો ગયે હૈં હમને ઇસ અગ્રામ  
 ચાલી અડવી મેં પાની કી માર્ગણા ઔર ગવેષણા ખી કી-પરન્તુ વહ મિલા  
 નહીં અતઃ પાની કી પ્રાપ્તિ કે અભાવ મેં અવ રાજગૃહ નગર મેં પહુંચને  
 કે લિયે હમ અસમર્થ બન ચુકે હૈં । ( તણ તુમ્હે મમ દેવાણુપ્પિયા !  
 જીવિયાઓ વવરોવેહ મસ ચ સોણિય ચ આહારેહ, આહારિત્તા તેણ  
 આહારેણ અવિદ્વત્થા સમાણા તઓ પન્છા ઇમ અગ્ગામિય અડવિં નિત્થ

( એવ સ્વલુ પુત્તા ! અમ્હે સુસમાણ દારિયાણ અઘ્વાણ ચિલાય તત્કર સન્વઓ  
 સમતા પરિધાદેમાણા તળ્હાણ છુહાણ ચ અભિભૂયા સમાણા ઇમીસે અગ્ગામિયાણ  
 અડવીણ ઉદગસ્મ મગ્ગણગવેસણ કરેમાણા ણો ચૈવ ણ ઉદગ આસાણ મો-તણ  
 ઉદગ અણાસાણમાણા ણો સચાણમો રાયગિહ સપાવિત્તણ )

હે પુત્ર ! સાલણ, અમે સુસમા દારિકાને મેળવવા માટે ચિલાત ચોરની  
 પાછળ પાછળ આમતેમ ચારે તરફ ભટકતા ભટકતા તરસ અને ભૂખથી ડૂબી  
 થઈ ગયા છીએ અમેાએ આ ગામ વગરની અડવીમા પાણીની માર્ગણા અને  
 ગવેષણા પર કરી છે, પણ અમે હજી મેળવી શક્યા નથી એથી હવે પાણીના  
 અભાવમા અમે રાજગૃહ નગરમા પહોંચી શકીશુ તેમ લાગતું નથી

( તણ તુમ્હે મમ દેવાણુપ્પિયા ! જીવિયાઓ વવરોવેહ, મસ ચ સોણિય ચ  
 આહારેહ, આહારિત્તા તેણ આહારેણ અવિદ્વત્થા સમાણા તઓ અગ્ગામિયં



मटवीं ' गित्थरिहिह ' निस्तरिण्यथ=पारङ्गमिण्यथ, राजगृह च ' सपाविहिह ' समाप्स्यथ ' मित्तणाई० य ' मित्रज्ञातिश्च=मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनान ' अभिसमागच्छिहिह ' अभिसमागमिष्यथ=मित्रज्ञातिप्रभृतिभिः सह सगता भविष्यथ, तथा च ' अत्थस्म ' अर्थस्य=जनस्य च धर्मस्य च पुण्यस्य च ' आभागी ' अभागिनो = भोक्तारो भविष्यथ । ततः खलु स ज्येष्ठपुत्रो धन्येन सार्थवाहेन एव मुक्तः = अनेन प्रकारेण कथितः सन् धन्य सार्थवाहमेव मवदत्-हे तात ! यूय खलु अस्माक पिता ' गुरुजनदेवयभूया ' गुरुजन-देवतभूताः=देवगुरुजनसदृशाः ' ठावका ' स्थापकाः नीतिधर्मादौ ' पइठावका ' प्रतिष्ठापका = राजादिसमक्ष स्वपदस्थापनेन प्रतिष्ठाकारकाः तथा ' सरक्खगा '

रिहिह रायगिह च सपावेहिह ) इसलिये हे देवानुप्रियो ! तुम मुझे मारडालो और मेरे मांस और रक्त से तुम अपने प्राणोंकी रक्षाकर शरीर के विनाश होने से बचाकर इस अग्रामिक अटवी से पार हो जाओगे-एव राजगृह नगर पहुँच जाओगे । ( मित्तणाई० य अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह, तएण से जेद्वे पुत्ते ) वहाँ पहुँचकर तुम अपने मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सम्बन्धी परिजनो के साथ मिलोगे तथा धन, धर्म और पुण्य के भोक्ता भी बनोगे-इसके बाद उस ज्येष्ठ पुत्र धनदत्त ने ( धण्णेण सत्थवाहेण एव वुत्ते समाणे धण्ण सत्थवाह एव वयासी ) धन्यसार्थवाह के द्वारा इस प्रकार कहे जाने पर उन अपने पिता धन्यसार्थवाह से इस प्रकार कहा ( तुम्हे ण ताओ ! अम्ह पिता गुरुजणयदेवभूया ठावगा

अडवि गित्थरिहिह रायगिह च सपावेहिह )

अथी हे देवानुप्रिय ! तमे मने भारी नाणो अने भारा मांस अने रक्ताने आवो, पीवो आधा-पीधा पछी तमे शरीरना विनाशथी छिगरी जशे। अने तृप्ति भेजवीने आ गामवगरनी अटवीने पार करी जशे। अने छेवटे राजगृह नगरमा पडोथी जशे।

(मित्तणाई य अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह, तएण से जेद्वे पुत्ते )

त्या पडोथीने तमे पो । ना मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सम्बन्धी परिजनोनी साथे भजशे। तेमज धन, धर्म अने पुण्योने उपभोग करशे। त्थारपछी मोटा पुत्र धनदत्ते

( धण्णेण सत्थवाहेण एवे वुत्ते समाणे धण्ण सत्थवाह एव वयासी

धन्य सार्थवाह वडे आ प्रमाणे उडेवाया आह पोताना पिता धन्य सार्थवाहने आ प्रमाणे उछु डे—

હે પુત્રાઃ ! મય મુંઝુમાયા દારિકાયાઃ ' અટ્ટાણ ' અર્થાત્=નિમિત્ત વિશ્રાન્ત તત્કરે  
પ્રતિ ' સન્વઓ સમતા ' સર્વતઃ મમન્તાન્=મટયા ચતુર્દિશુ ' પરિધાદેમાણા '  
પરિધારન્તઃ ' તળ્હાણ ' તળ્હાયા=પિપામયા, ' મુટ્ટાણ ' ત્રયા ચ અભિભૂતા  
સન્તઃ અસ્થામગ્રામિષાયામટ્ટયામુદગમ્ય માર્ગણગવેષણ કુર્વન્તો નો ચેવ સ્વલુ  
ઉદગમાસાદયામ', તત સ્વલુ ઉદગમ્ અનોસાદયન્ત'=મમ્મમાનાઃ નો અવનુમો  
રાજગૃહ સમાપ્તમ્, ' તળ્હા ' તત્સલ્હ=નરમાન્ કારણાત્ સ્વલુ મૂય મા હે દેવાનુ  
પ્રિયાઃ ! જીરિતાન્ વ્યપરોપયત, માસ ચ સોણિત ચ ' આહારેહ ' આહારયત,  
આહાર્ય=મુરત્યા ' તેણ આહારેણ ' તેન આહારેણ ' અવિદ્ધત્યા ' અવિધ્વસ્તાઃ=  
શરીરનાશમમાપ્તા' સન્તઃ ત્સા સન્તઃ ' તથોપચ્છા ' તત પશ્ચાત્ હમામગ્રામિકા

વહા આકર કે ઉસને અપને જેષ્ટ પુત્ર ધનદત્ત કો બુલાયા-ઔર બુલાકર  
ઉસસે હસ પ્રકાર કહા-(એવ સ્વલુ પુત્તા ! અમ્હે સુસમાણ દારિયાણ  
અટ્ટાણ ચિલાય તત્કર સન્વઓ સમતા પરિધાદેમાણા તળ્હાણ છુહાણ ચ  
અભિભૂયા સમાણા હમી સે અગ્ગામિયાણ અડવીણ ઉદગસ્સ મગ્ગણ  
ગવેસણ કરેમાણા ણો ચેવ ણ ઉદગ આસાણમો-તળ્હાણ ઉદગ અણાસા  
ણમાણા ણો સચાણમો રાયગિહ સપાવિત્તણ ) હે પુત્ર સુનો અપને લોગ  
સુસમા દારિકા કે નિમિત્ત ચિલાતચોર કે પીઠે ૨ સવ તરફ સવ પ્રકાર  
સે દૌહતે ૨ પ્યાસ ઔર મૂવ સે ડુગ્ધી હો ગયે હૈં હમને હસ અગ્રામ  
વાલી અટવી મેં પાની કી માર્ગણા ઔર ગવેષણા મી કી-પરન્તુ વહ મિલા  
નહીં અતઃ પાની કી પ્રાપ્તિ કે અભાવ મેં અવ રાજગૃહ નગર મેં પહુંચને  
કે લિયે હમ અસમર્થ ઘન ચુકે હૈં । ( તળ્હાણ તુમ્હે મમ દેવાણુપ્પિયા !  
જીવિયાઓ વવરોવેહ મસ ચ સોણિય ચ આહારેહ, આહારિત્તા તેણ  
આહારેણ અવિદ્ધત્યા સમાણા તઓ પચ્છા હમ અગ્ગામિય અડવિં નિત્થ

( એવ સ્વલુ પુત્તા ! અમ્હે સુસમાણ દારિયાણ અટ્ટાણ ચિલાય તત્કર સન્વઓ  
સમતા પરિધાદેમાણા તળ્હાણ છુહાણ ચ અભિભૂયા સમાણા હમીસે અગ્ગામિયાણ  
અડવીણ ઉદગસ્સ મગ્ગણગવેસણ કરેમાણા ણો ચેવ ણ ઉદગ આસાણ મો-તળ્હાણ  
ઉદગ અણાસાણમાણા ણો સચાણમો રાયગિહ સપાવિત્તણ )

હે પુત્ર ! સાલણ, અમે સુસમા દારિકાને મેળવવા માટે ચિલાત ચોરની  
પાછળ પાછળ આમતેમ ચારે તરફ ભટકતા ભટકતા તરસ અને ભૂખથી ડૂબી  
થઈ ગયા છીએ. અમેએ આ ગામ વગરની અટવીમાં પાણીની માર્ગણા અને  
ગવેષણા પર કરી છે, પણ અમે હજી મેળવી શક્યા નથી એથી હવે પાણીના  
અભાવમાં અમે રાજગૃહ નગરમાં પહોંચી શકીશું તેમ લાગતું નથી.

( તળ્હાણ તુમ્હે મમ દેવાણુપ્પિયા ! જીવિયાઓ વવરોવેહ, મસ ચ સોણિય ચ  
આહારેહ, આહારિત્તા તેણ આહારેણ અવિદ્ધત્યા સમાણા તઓ પચ્છા અગ્ગામિય



રહ ' નિસ્તરત=પારગચ્છત, ' તચેવ સઽવ્વ મળહ ' તદેવસર્વ મળતિ=યથા ધન્ય સાર્થવાહો જ્યેષ્ઠ પુત્રમવદત્, તથૈનાયમપિ તદેવ સર્વે ઋચયતિ, યાવત્ અર્થસ્ય ઝર્મ-સ્ય પુણ્યસ્ય ચ આભાગિનો મપિણ્યથ । તતઃ સ્વલુ ધન્ય સાર્થવાહ ' દોઁચ્વે ' દ્વિ-તીય' પુત્રધનપાલનામા એવમવદત્-મા સ્વલુ હે તાત ! અસ્માક જ્યેષ્ઠ ભ્રાતર 'ગુરુ દેવય ' ગુરુદૈવત=દેવ-ગુરુસદૃશમ્, જીવિતાદ્ વ્યપરોપયામ.=મારયામ', યૂય સ્વલુ હે તાત ! ' મમ ' મા=પુત્રપાલનામાન જીવિતાદ્ વ્યપરોપયત યાવત્ અર્થા-દિફલભાજો મપિણ્યથ । ' એવ =એનેન પ્રકારેણ ' જાવ પચમેપુત્તે ' યાવત્

પહુચ કર વહા અપને મિત્રાદિ પરિજનોં કે સાથ મિલ સકે । તથા ધન ધર્મ એવ પુણ્ય કે ભોક્તા બન સકે । " ત ચેવ સઽવ્વ મળહ " ઇસકા તાત્પર્ય યહી હૈ કિ જિસ પ્રકાર ધન્યસાર્થવાહ ને અપને જ્યેષ્ઠ પુત્ર, ધન-દત્ત સે કહા-ઉસી પ્રકાર ધનદત્ત ને બી અપને પિતા સે વૈસાહી કહા- (તણ ધણ સત્થવાહ દોઁચ્વે પુત્તે એવ વયાસી-માણ તાઓ ! અમ્હે જેઠે ભાયર ગુરુદેવય જીવિયાઓ વવરોવેમો-તુઁમેણ તાઓ ! મમ જીવિ યાઓ વવરોવેહ, મસ ચ મોણિય ચ આહારેહ, અગ્ગામિય અડર્વિ ણિત્થ-રહ ત ચેવ સઽવ્વ મળહ જાવ અત્થસ્સ જાવ પુણ્ણસ્સ આભાગી મવિ સ્સહ ) ઇસકે વાદ ધન્યસાર્થવાહ સે હસકે દ્વિતીય પુત્ર ને ઇસ પ્રકાર કહા-હે તાત ! આપ હમારે ગુરુ દેવતાતુલ્ય જ્યેષ્ઠ ભાઈ કો જીવન સે રહિત મત કીજિયે કિન્તુ આપ તો હે તાત ! મુઝે હી જીવિતસે રહિતકર દીજિયે-ઔર મેરે હી રક્ત એવ માસ કો આપ ત્વાઈયે પીઈયે-તાકિ ઇસ અગ્ગામિક અટવી સે પાર હો સકે ઇત્યાદિ પહિલે જૈસા હી ઇસને

પોતાના મિત્રો વગેરે પરિજનોની સાથે મળી ગયો તેમજ ધન ધર્મ અને પુણ્યના ભોક્તા બની શકે । " ત ચેવ સઽવ્વ મળહ " આનો અર્થ આમ થાય છે કે જેમ ધન્ય સાર્થવાહે પોતાના મોટા પુત્ર ધનદત્તને કહ્યું તેમજ ધનદત્તે પણ પોતાના પિતાને કહ્યું

( તણ ધણ સત્થવાહ દોઁચ્વે પુત્તે એવ વયાસી-માણ તાઓ ! અમ્હે જેઠે ભાયર ગુરુદેવય જીવિયાઓ વવરોવેમો, તુઁમેણ તાઓ ! મમ જીવિયાઓ વવરોવેહ, મસ ચ મોણિય ચ આહારેહ, અગ્ગામિય અડર્વિ ણિત્થરહ ત ચેવ સઽવ્વ મળહ જાવ અત્થસ્સ જાવ પુણ્ણસ્સ આભાગી મવિસ્મહ )

ત્યારપછી ધન્ય સાર્થવાહને તેના બીજા પુત્રે આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે તાત ! તમે અમારા ગુરુદેવતા જેવા ભોગ ભાઈને જીવન રહિત ન કરો પણ હે તાત ! તમે મને જ મારી નાખો અને મારા જ લોહી અને માસને તમે ખાઓ પીઓ જેથી તમે આ ગામ વગરની અટવીને પાર કરી શકો, આમ

સરક્ષકાઃ પદ્મગ્રામપટ્ટે: ' સગોવગા ' સગોવગા દુશ્વરિતપટ્ટે: , 'તં' તત્=તમ્માદ્  
 કારણાત્ ' કઠ્ઠણં ' કથમ્ ગ્વલુ=કેન પ્રકારેણ ગ્વલુ હે તાત ! વયં ગુમાન્ જીવિ  
 તાદ્ વ્યપરોપયામઃ=મારયામઃ, ગુમાકં ગ્વલુ માંમ ચ શોણિત ચ કથમ્ આહાર-  
 યામ ? ' ત ' તત્=તમ્માદ્ ગુપ ગ્વલુ હે તાત ! માં ધનદત્તનામાન જીવિતાદ્ વ્ય  
 પરોપયત=મારયત મમ માંસ ચ શોણિત ચ આહારયત. અગ્રામિશામટ્ટીં ' નિત્ય  
 પદ્મગ્રામગા સંરક્ષ્યગા સગોવગા તં કઠ્ઠણ અમ્હે તાઓ ! તુબ્ધે જીવિયાઓ  
 વવરોવેમો તુબ્ધ ણ મમ ચ સોણિય ચ આહારેમો અગમિય અઢવિ  
 નિત્યરહ ત ચેવ સવ્યમ્ભણહ જાવ અત્યસ્મ જાવ પુણ્ણસ્સ આમાગી ભવિ  
 સ્સહ ) હે માત ! આપ હમારે પિતા હૈ હસલિયે આપ મેરે લિયે દેવ, ગુરુ  
 જન કે સ્થાન ભૂત હૈં । નીતિ ધર્મ આદિ મેં મુક્ષે સ્થાપિત કરતે રહતે હૈં ।  
 રાજ આદિ સમક્ષ આપ અપને પદ પર મુક્ષે ઘેટાતે હૈં હસલિયે આપ મેરે  
 લિયે સ્થાપક ણવ પ્રતિષ્ઠાપક હૈં યથેચ્છા પ્રવૃત્તિ સે આપ હમારી સદા  
 રક્ષા કરતે રહતે હૈં હસલિયે આપ મેરે સરક્ષક હૈં, દુશ્વરિત-પ્રવૃત્તિ સે  
 આપ હમે રોકતે રહતે હૈં હસલિયે આપ મેરે સગોવક હૈં, તો કૈસે મેં હે  
 તાત ! આપ કો જીવન સે રહિત કર સકતા હૈં । ઓર કૈસે આપ કે  
 શોણિત ઓર માંસ કો ખા સકતા હૈં । હસલિયે હે તાત ! આપ હી મુક્ષે  
 જીવન સે રહિત કર દીજીયે ઓર મેરે રૂબ ઓર માંસ કો આપ લાહ્યે  
 તાકિ આપ હસ અગ્રામિક અટવી કો પાર કર સકે ઓર રાજગૃહ નગર

( તુબ્ધેણ તાઓ ! અમ્હ પિયા ગુરુજણયદેવભૂયા ઠાવગા પદ્મગ્રામગા સરક્ષગા  
 સગોવગા ત કઠ્ઠણ અમ્હે તાઓ ! તુબ્ધે જીવિયાઓ વવરોવેમો તુબ્ધ ણ મમ ચ  
 સોણિય ચ આહારેમો અગમિય અઢવિ નિત્યરહ ત ચેવ સવ્યમ્ભણહ જાવ અત્યસ્સ  
 જાવ પુણ્ણસ્સ આમાગી ભવિસ્સહ )

હે તાત ! તમે અમારા પિતા છો, એથી તમે અમારા દેવ અને ગુરુના  
 સ્થાને છો તમે મને નીતિ ધર્મ વગેરેમાં પ્રવૃત્તિ પણ કરતા રહો છો રાજ  
 વગેરેની સામે તમે યોતાના સ્થાને મને બેસાડો છો એથી તમે મારા સ્થાપક  
 અને પ્રતિષ્ઠાપક છો યથેચ્છા પ્રવૃત્તિથી તમે મારી રક્ષા કરતા રહો છો એથી  
 તમે મારા સરક્ષક છો, દુશ્વરિત પ્રવૃત્તિથી તમે મને રોકતા રહો છો, એથી  
 તમે મારા સગોવક છો તો આવી પરિસ્થિતિમાં હે તાત ! હું તમને કેવી  
 રીતે જીવન રહિત બનાવી શકું અને કેવી રીતે તમારા શોણિત અને માંસનું  
 લક્ષણ કરી શકું ! એથી હે તાત ! તમે મુજ ધનદત્તને જ જીવન રહિત  
 બનાવી દો અને મારા ખૂન અને માંસનું તમે લક્ષણ કરો એથી તમે આ  
 ગામ વગરની અટવીને પાર કરી શકો અને રાજગૃહ નગરમાં - ત્યાં

રહ ' નિસ્તરત=પારગજીવ, ' તચેવ સઘ્વ મળઈ ' તદેવસર્વ મળતિ=યથા ધન્ય સાર્થવાહો જ્યેષ્ઠ પુત્રમવદત્, તથૈવાયમપિ તદેવ સર્વ કથયતિ, યાવત્ અર્થસ્ય વર્મ-સ્ય પુણ્યસ્ય ચ આભાગિનો મવિષ્યથ । તતઃ સ્વલુ ધન્ય સાર્થવાહ ' દોઢ્વે ' દ્વિ-તીય પુત્રધનપાલનામા એવમવદત્-મા સ્વલુ હે તાત ! અસ્માકુ જ્યેષ્ઠ ભ્રાતર 'ગુરુ દેવય ' ગુરુદૈવત=દેવ-ગુરુસદૃશમ્, જીવિતાદ વ્યપરોપયામ.=મારયામ', યુય સ્વલુ હે તાત ! ' મમ ' મા=પુત્રપાલનામાન જીવિતાદ વ્યપરોપયત યાવત્ અર્થ-દિફલભાજો મવિષ્યથ । ' એવ =અનેન પ્રકારેણ ' જાવ પચમેપુત્તે ' યાવત્

પહુચ કર વહા અપને મિત્રાદિ પરિજનોં કે સાથ મિલ સકે । તથા ધન ધર્મ એવ પુણ્ય કે મોક્તા બન સકે । " ત ચેવ સઘ્વ મળઈ " હસકા તાત્પર્ય યહી હૈ કિ જિસ પ્રકાર ધન્યસાર્થવાહ ને અપને જ્યેષ્ઠ પુત્ર, ધન-દત્ત સે કહા-ઁસી પ્રકાર ધનદત્ત ને મી અપને પિતા સે વૈસાહી કહા- (તણ ધણ સત્થવાહ દોઢ્વે પુત્તે એવ વયાસી-માણ તાઓ ! અમ્હે જેઢે માયર ગુરુદેવય જીવિયાઓ વવરોવેમો-તુબ્મેણ તાઓ ! મમ જીવિ-યાઓ વવરોવેહ, મસ ચ સોણિય ચ આહારેહ, અગ્ગામિય અડર્વિ ગિત્થ-રહ ત ચેવ સઘ્વ મળઈ જાવ અત્થસ્સ જાવ પુણ્ણસ્સ આભાગી મવિ-સ્સહ ) હસકે વાદ ધન્યસાર્થવાહ સે ઁસકે દ્વિતીય પુત્ર ને હસ પ્રકાર કહા-હે તાત ! આપ હમારે ગુરુ દેવનાતુલ્ય જ્યેષ્ઠ માઈ કો જીવન સે રહિત મત કીજિયે કિન્તુ આપ તો હે તાત ! મુઝે હી જીવિતસે રહિતકર દીજિયે-ઁરે મેરે હી રક્ત એવ માસ કો આપ ગ્વાઈયે પીઈયે-તાકિ હસ અગ્ગામિક અટવી સે પાર હો સકે હલ્યાદિ પહિલે જૈસા હી હસને

પોતાના મિત્રો વગેરે પરિજનોની સાથે મળી શકે । તેમજ ધન ધર્મ અને પુણ્યના ભોક્તા બની શકે । " ત ચેવ સઘ્વ મળઈ " આનો અર્થ આમ થાય છે કે જેમ ધન્ય સાર્થવાહે પોતાના મોટા પુત્ર ધનદત્તને કહ્યું તેમજ ધનદત્તે પણ પોતાના પિતાને કહ્યું

( તણ ધણ સત્થવાહં દોઢ્વે પુત્તે એવં વયાસી-માણ તાઓ ! અમ્હે જેઢે માયર ગુરુદેવય જીવિયાઓ વવરોવેમો, તુબ્મેણ તાઓ ! મમ જીવિયાઓ વવરોવેહ, મસ ચ સોણિય ચ આહારેહ, અગ્ગામિય અડર્વિ ગિત્થરહ ત ચેવ સઘ્વ મળઈ જાવ અત્થસ્સ જાવ પુણ્ણસ્સ આભાગી મવિસ્મહ )

ત્યારપછી ધન્ય સાર્થવાહને તેના બીજા પુત્રે આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે તાત ! તમે અમારા ગુરુદેવતા જેવા મોટા ભાઈને જીવન રહિત ન કરો પણ હે તાત ! તમે મને જ મારી નાખો અને મારા જ લોહી અને માસને તમે ખાઓ પીઓ જેથી તમે આ ગામ વર્ગની અટવીને પાર કરી શકો, આમ



પન્નમઃ પુત્રઃ=તૃતીયો ધનદેવગતુર્થો ધનગોપઃ, પન્નમો ધનરક્ષિતશ્રાડપ્યવદત્ । તતઃ  
 इत्य तेषां वचनश्रवणानन्तरं, खलु स धन्यः सार्धवाहः पञ्चपुत्राणां 'हियइच्छिय'  
 हृदयेष्टम्=हृदयेषित श्रुत्या तान् पुत्रान् परमयात्रीत्-मा खलु वयं हे पुत्राः ।  
 एवमपि अस्माकं मण्येष्टमपि जीरिताद् व्यपरोपयाम एतत् खलु सुसुमाया  
 दारिकायाः शरीर 'णिष्पाण' निष्पाण=माणरहितम्, 'णिच्चेष्ट' निश्चेष्ट=  
 चेष्टारहितम् 'जीवविप्पजडे' जीवविप्रत्यक्तम्=जीवहीनम्, सर्वथा मृतमस्ती  
 त्यर्थः, तच्चेष्ट्य=उचित खलु हे पुत्राः 'अम्ह' अस्माकम् सुसुमाया दारिकाया  
 मास च शोणित च आहर्त्तुम्, ततः=तदनन्तर च खलु वयं तेन आहारेण 'अ

सय कदा (एव पचमे पुत्ते) इसी तरह उससे तृतीय धनदेवने चतुर्थ  
 धनगोपने एव पाचवे धनरक्षित ने भी कहा-(तएण से धण्णे सत्थवाहे  
 पचण्ह पुत्ताण हियइच्छिय जाणित्ता त पच पुत्ते एव वयासी) इस के  
 बाद उस धन्यसार्धवाह ने पाचों पुत्रों के अभिप्राय को जानकर उन  
 अपने पाचों ही पुत्रों से इस प्रकार कहा-(माण अम्हे पुत्ता ! एगमवि  
 जीवियाओ ववरोवेमो एसण सुसमाए दारियाए सरीरए णिष्पाण णि-  
 च्चेष्टे जीवविप्पजडे-त सेय खलु पुत्ता ! अम्ह सुसमाए दारियाए मस  
 च सोणिय च अहारेत्तए) हे मेरे पुत्रों ! मैं एक को भी जीवन से  
 रहित नहीं करना चाहता हूँ किन्तु यह सुसमादारिका का शरीर जो  
 कि निष्पाण, निश्चेष्ट, और जीवन से रहित बन गया है-इसलिये हमें  
 उचित है कि हे पुत्रों ! हम इस सुसमादारिका का मास एव शोणित

તેણે પહેલાની જેમ જ બધું કહ્યું (એવ પચમે પુત્તે) આ પ્રમાણે જ તેને  
 ત્રીજા ધનદેવે, ચોથા ધનગોપે અને પાંચમા ધનરક્ષિતે પણ કહ્યું  
 (તણે સે ધણે સત્થવાહે પચણ્હ પુત્તાણ હિયઇચ્છિય જાણિત્તા ત પચ પુત્તે એવ વયાસી)  
 ત્યારપછી તે ધન્ય સાર્ધવાહે પાંચે પુત્રોની હૃદયની અભિલાષા બાંધીને  
 પોતાના તે પાંચે પુત્રોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

( માણ અમ્હે પુત્તા ! એગમવિ જીવિયાઓ વવરોવેમો એસણ સુસમાએ દારિ  
 યાએ સરીરએ ણિષ્પાણે ણિચ્ચેષ્ટે જીવવિપ્પજડે-ત સેય ખલુ પુત્તા ! અમ્હ સુમ  
 માએ દારિયાએ મસ ચ સોણિય ચ અહારેત્તએ )

હે મારા પુત્રો ! તમારામાથી એકને પણ હું મારવા માગતો નથી  
 પરંતુ આ સુસમા દારિકાનું શરીર કે જે નિષ્પાણ, નિશ્ચેષ્ટ અને નિર્જીવ  
 બની ગયું છે-એવા માટે અમારા માટે હે પુત્રો ! એ જ યોગ્ય છે કે આપણે  
 આ સુસમા દારિકાના માસ અને શોણિતને ખાઈએ

विद्वत्था समाणा ' अवि-वस्ताः=शरीरनाशमप्राप्ताः सन्त राजगृह ' सपाउणि  
स्तामो ' सप्राप्स्याम । ततः खलु ते पञ्चपुत्रा धयेन सार्थवाहेन एवमुक्ताः  
सन्तः ' एयमद्व ' एतमर्थम् पूर्वोक्तरूपम् ' पडिसुणेति ' प्रतिभृष्वन्ति=स्वीकु  
र्वन्ति । तत खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चभिः पुत्रै सार्द्धम् ' अरणि ' अरणि  
यस्मिन् मध्यमानेऽग्निरुत्पद्यते तत्काष्ठम् ' करेड ' करोति=सगृह्णाति, कृत्वा ' सरग'  
सरगम्=निर्मन्थनकाष्ठ करोति=आनयति कृत्वा, सरकेण अरणि मय्नाति=घर्षयति  
मथित्वा, ' अग्नि पाडेइ ' पातयति=मन्थनवशादग्निमुत्पादयति ' पाडित्ता ' पात

खावे । (तएण अम्हे तेण आहारेण अविद्वत्था समाणा रायगिह सपाउ-  
णिस्तामो-तएण ते पच पुत्ता धण्णेण सत्थवाहेण एवमुक्ता समाणा  
एयमद्व पडिसुणेति ) इस से हमलोग उस आहार से शरीर नाश को  
अप्राप्त होकर राजगृह नगर में पहुँच जावेंगे । इस प्रकार धन्यसार्थवाह  
के द्वारा कहे गये उन पाँचों पुत्रों ने धन्यसार्थवाह के इस कथन को स्वी  
कार कर लिया । ( तएण धण्णे सत्थवाहे पचहिं पुत्तेहिं सद्धि अरणि क-  
रेइ, करित्ता सरगच करेइ, करित्ता सरण्ण अरणि महेइ, महित्ता अ  
ग्नि पाडेइ, पाडित्ता अग्नि सधुक्खेइ, सधुक्खित्ता दारुयाइ परिकखवेइ  
परिकखवित्ता अग्नि पज्जालेइ पज्जालित्ता सुसमाए मस च सोणिय  
च आहारेति ) इस के बाद धन्यसार्थवाह ने पाँचों पुत्रों के साथ मिल-  
कर अरणिकाष्ठ को एकत्रित किया । एकत्रित कर के फिर वह सरक  
काष्ठ को निर्मन्थनकाष्ठ को ले आया-उसे लेकर के उसने उससे अरणि  
का घर्षण किया । इस तरह घर्षण से अग्नि उत्पन्न हो गई । अग्नि के

( तएण अम्हे तेण आहारेण अविद्वत्था समाणा रायगिह सपाउणिस्तामो  
तएण ते पच पुत्ता धण्णेण सत्थवाहेण एव मुक्तासमाणा एयमद्व पणिसुणेति )

એથી આપણે બધા આ આહારથી શરીર નાશથી બિગરી જઈને રાજ-  
ગૃહ નગરમાં પહોંચી જઈશું આ પ્રમાણે ધન્ય સાર્થવાહ વડે ડહેવાયેલા પાંચે  
પુત્રોએ ધન્ય સાર્થવાહની તે વાતને સ્વીકારી લીધી

( તएण धण्णे सत्थवाहे पचहिं पुत्तेहिं सद्धि अरणि करेइ, करित्ता, सरग च  
करेइ, करित्ता सरण्ण अरणि महेइ, महित्ता अग्नि पाडेइ, पाडित्ता अग्नि सधु  
क्खेइ, सधुक्खित्ता दारुपाइ परिकखवेइ, परिकखवित्ता अग्नि पज्जालेइ, पज्जा  
लित्ता सुसमाए दारियाए मस च सोणिय च आहारेति )

ત્યારપછી ધન્ય સાર્થવાહે પાંચે પુત્રોની સાથે મળીને અરણિ કાષ્ટને  
એકઠું કર્યું એકઠું કરીને તેઓ સરક કાષ્ટને-નિર્મથન કાષ્ટને લઈ આવ્યા  
તેને લઈને તેણે તેથી અરણિકા કાષ્ટનું ઘર્ષણ કર્યું આ પ્રમાણે ઘર્ષણથી અગ્નિ



પચ્ચમઃ પુત્રઃ=તૃતીયો ધનદેવગતુર્યો ધનગોપઃ, પચ્ચમો ધનરક્ષિતશ્ચાપ્યવદ્ । તતઃ  
 इत्यं तेषां त्रयनश्रयणानन्तर, खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चपुत्राणां 'द्वियश्चिञ्चय'  
 हृदयेष्टम्=हृदयेप्सित श्रुत्वा तान् पुत्रान् एवमादीत्-मा खलु वयं हे पुत्रा !  
 एरुमपि अस्माक मप्येकमपि जीरिताद् व्यपरोषयाम एतत् खलु सुसुमाया  
 दारिकायाः शरीर 'णिष्पाण' निष्पाण=माणरहितम्, 'णिच्चेष्ट' निश्चेष्ट=  
 चेष्टारहितम् 'जीवविप्पजडे' जीवविप्रत्यक्तम्=जीवहीनम्, सर्वथा मृतमस्ती  
 त्यर्थः, तच्चेष्ट्य=उचित खलु हे पुत्राः 'अम्ह' अस्माकम् सुसुमाया दारिकाया  
 मास च शोणित च आहर्तुम्, ततः=तदनन्तर च खलु वयं तेन आहारेण 'अ

सप कहा ( एव पचमे पुत्ते ) इसी तरह उससे तृतीय धनदेवने चतुर्थ  
 धनगोपने एव पांचवे धनरक्षित ने भी कहा-(तएण से धण्णे सत्थवाहे  
 पचण्हं पुत्ताण द्वियश्चिञ्चय जाणित्ता त पचपुत्ते एव वयासी ) इस के  
 बाद उस धन्यसार्थवाह ने पाचों पुत्रों के अभिप्राय को जानकर उन  
 अपने पाचों ही पुत्रों से इस प्रकार कहा-(माण अम्हे पुत्ता ! एगमवि  
 जीवियाओ ववरोवेमो एसण सुसमाण दारियाए सरीरए णिष्पाण णि  
 च्चेष्टे जीवविप्पजडे-त सेय खलु पुत्ता ! 'अम्ह सुसमाण दारियाए मस  
 च सोणिय च आहारेत्ताए ) हे मेरे पुत्रों ! मैं एक को भी जीवन से  
 रहित नहीं करना चाहता हूँ किन्तु यह सुसमादारिका का शरीर जो  
 कि निष्पाण, निश्चेष्ट, और जीवन से रहित बन गया है-इसलिये हमें  
 उचित है कि हे पुत्रों ! हम इस सुसमादारिका का मास एव शोणित

તેણે પહેલાની જેમ જ ગયું કહ્યું (એવ પચમે પુત્તે) આ પ્રમાણે જ તેને  
 ત્રીજા ધનદેવે, ચોથા ધનગોપે અને પાંચમા ધનરક્ષિતે પણ કહ્યું  
 (તएण से धण्णे सत्थवाहे पचण्हं पुत्ताण द्वियश्चिञ्चय जाणित्ता त पच पुत्ते एव वयासी)  
 ત્યારપછી તે ધન્ય સાર્થવાહિ પાંચે પુત્રોની હૃદયની અલિલાયા બાણીને  
 યોતાના તે પાંચે પુત્રોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

( માણ અમ્હે પુત્તા ! એગમવિ જીવિયાઓ વવરોવેમો એસણ સુસમાએ દારિ  
 યાએ સરીરએ ણિષ્પાણે નિચ્ચેષ્ટે જીવવિપ્પજડે-ત સેય ખલુ પુત્તા ! અમ્હ સુસ-  
 માએ દારિયાએ મસ ચ સોણિય ચ આહારેત્તાએ )

હે મારા પુત્રો ! તમારામાથી એકને પણ હું મારવા માગતો નથી  
 પરંતુ આ સુસમા દારિકાનું શરીર કે જે નિષ્પાણ, નિશ્ચેષ્ટ અને નિર્જીવ  
 બની ગયું છે-એવલા માટે અમારા માટે હે પુત્રો ! એ જ યોગ્ય છે કે આપણે  
 આ સુસમા દારિકાના માસ અને શોષિતને ખાઈએ

मृतकृत्यानि कृत्वा कालान्तरे ' विगयसोगे ' विगतशोक = सुसुमामरणजनितशोक-  
रहितो जातश्चास्यभूत् ॥ सू० ८ ॥

मूलम्—तेण कालेणं तेणं समएणं समणे भगव महावीरे  
गुणसिलए चेइए समोसढे । से णं धणणे सत्थवाहे सपुत्ते धम्मं  
सोच्चा पठवइए, एक्कारसंगवी । मासियाए संलेहणाए सोहम्मे  
उववण्णो, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ । जहा वि य णं जम्बू ।  
धण्णेण सत्थवाहेणं णो वण्णहेउ वा नो रूवहेउ वा नो वलहेउ  
वा नो विसयहेउ वा सुसुमाए मससोणिए आहारिए, नन्नत्थ  
एगाए रायगिहं सपावणट्टयाए । एवामेव समणाउसो । जो  
अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा इमस्स ओरालियसरीरस्स वता-  
सवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स जाव अवस्सं  
विप्पजहियव्वस्स वा नो वण्णहेउ वा नो रूवहेउ वा नो वल-  
हेउ वा नो विसयहेउ वा आहारे आहारेइ, नन्नत्थ एगाए  
सिद्धिगमणसपावणट्टयाए, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं  
बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण अच्चणिजे  
जाव वीइवइस्सइ ।

एव खलु जम्बू । समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं  
अट्टारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते त्तिवेमि ॥ सू० ९ ॥

॥ अट्टारसम अज्झयण समत्तं ॥

टीका—' तण कालेण ' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो  
भगवान् महावीरो गुणशिलके चेत्ये ' समोसढे ' समयसृत = तीर्थकरपरम्परया

सुसुमादारिका के मरणोत्तर काल में जो भी लौकिक कृत्य किये जाते  
—वे सब भी उन्होंने किये और धीरे २ विगत शोक भी हो गए ॥ सू० ८ ॥

लौकिक कृत्यो करवा लेधये ते सर्वे तेमण्णे पताव्या अने धीमे धीमे तेओ  
शोकरहित पण्णु भनी गया ॥ सूत्र ८ ॥

યિત્યા=ઉત્પાદ્ય અગ્નિ 'સપુરતે' મનુસ્યતિ=ઉદ્ગીપયતિ, સપુર્ય=ઉદ્ગીપ્ય 'દાહ-  
યાદ' દાહતાણિ=રન્ધનાનિ તથા 'પરિશ્રિયત' પરિશ્રિયતિ, પરિશ્રિપ્ય, અગ્નિ  
મજ્જાલયતિ, મજ્જાલ્ય, સુમુખાયા દારિકાયા મર્જિત માંસ ચ શોણિત ચ 'આહા-  
રે' આહારયતિ । અનંતર તેન આહારેણ 'અવિદ્વત્યા' અવિદ્વસ્તાઃ=શરીરના  
શમપ્રાપ્તાઃ સન્તો રાજગૃહ નગર સપ્રાપ્તાઃ 'મિત્તળાઈ૦ અભિસમખ્યાગયા' મિત્ર-  
જ્ઞાતિ=મિત્રજ્ઞાતિમ્વજનસમ્યન્નિપરિજ્ઞે મદ્ 'અભિસમખ્યાગયા' અભિસમન્વાગતા=  
સમિક્ષિતાઃ સન્તઃ તસ્ય ચ ત્રિપુલસ્ય 'ધનકનકગરયણ જાત' યનકનક રત્ન યાક્ત  
=ધનકનકરત્નાદિકસ્ય 'આભાગી જાયા યાત્રિ હોત્યા' આભાગિનો જાતાશ્ચ  
પ્યમયન્ । તતઃ સ્વલ્પ સ ધન્ય' સાર્થગઢ સુમુખાયા દારિકાયા બહુનિ લોકિકાનિ

ઉત્પન્ન હોને પર ઉસને ફિર ઉસે ધોંકા-ઉદ્ગીપિત ક્રિયા-જય વહ ઉદ્ગી-  
પિત હો ચુકી-તથા ઉસને ઉસમેં લકડિયોં કો લગાયા-। इस तरह की  
क्रिया से जय अग्नि अच्छी तरह प्रज्वलित हो चुकी-तथ उस्मे सुसमा  
दारिका के मांस को और खून को भुजा-भुजकर उसे सबने खाया  
पीया (तेण आहारेण अविद्वत्था समाणा रायगिह नयर सपत्ता मित्र  
णाइ० अभिसमणागया तस्स य विउलस्स धनकणगरयण जाव  
आभागी-जाया यावि होत्था तण्ण से धण्णे सत्थवाहे सुसमाण दारिया  
ए बहूइ लोइयाइ जाव विगयसोए याविहोत्था) इस प्रकार उस आहार  
की सहायता से अविद्वस्त शरीर होकर वे वहां से चल कर राजगृह  
नगर में आ गये । वहां अकार वे अपने मित्रजाति आदि परिजनों से  
स्वयं हिले मिले । एवं धनकनक आदि द्रव्य के भोक्ता भी बन गये ।

ઉત્પન્ન થઈ ગયો અગ્નિ ઉત્પન્ન થયા બાદ તેણે તેને ઉદ્ગીપિત કર્યો જ્યારે તે  
ઉદ્ગીપિત થઈ ગયો ત્યારે તેણે તેમાં લાકડીઓ મૂકી આ રીતે જ્યારે સારી  
રીતે અગ્નિ પ્રજ્વલિત થઈ ગયો ત્યારે તેમાં સુસમા દારિકાના માંસને અને  
લોહીને શેક્યા, શેક્યા બાદ તેને બધાએ ખાધા-પીધા

( તેણ આહારેણ અવિદ્વત્યા સમાણા રાયગિહ નયર સપત્તા, મિત્તળાઈ૦  
અભિસમણા ગયા, તસ્સ ય વિઉલસ્સ ધનકનકગરયણ જાવ આભાગીજાયા યાત્રિ  
હોત્યા તણ્ણ સે ધણ્ણે સત્થવાહે સુસમાણ દારિયાણ બહૂઈ લોહ્યાઈ જાવ વિગય  
સોણ યાત્રિ હોત્યા )

આ પ્રમાણે તે આહારની સહાયતાથી અવિનષ્ટ શરીરવાળા થઈને તેઓ  
ત્યાથી રવાના થઈને રાજગૃહ નગરમાં આવી ગયા ત્યાં આવીને તેઓ પોતાના  
મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજ્ઞનોની સાથે ખૂબ આનંદ-પૂર્વક મળ્યા, અને ધન,  
કનક વગેરે દ્રવ્યોને લોગવવા લાગ્યા સુસમા દારિકાના ન . બેટલા



મૃતકૃત્યાનિ કૃત્વા કાલાન્તરે ' વિગયસોગે ' વિગતશોક = સુસુમામરણજનિતશોક-  
રહિતો જાતશ્વાસ્યભૂત ॥ સૂ૦ ૮ ॥

મૂલમ્—તેણ કાલેણં તેણં સમણં સમણે ભગવ મહાવીરે  
ગુણસિલે ચેદ્દે સમોસદે । સે ણં ધણે સત્થવાહે સપુત્તે ધમ્મં  
સોચ્ચા પઠ્ઠેદ્દે, એકારસંગવી । માસિયાણ સંલેહણાણ સોહમ્મે  
ઉવવણ્ણો, મહાવિદેહે વાસે સિઙ્ગિહિદ્દે । જહા વિ ય ણં જમ્બૂ ।  
ધણેણ સત્થવાહેણં ણો વણ્ણહેત્ત વા નો રૂવહેત્ત વા નો વલહેત્ત  
વા નો વિસયહેત્ત વા સુસુમાણ મસસોણિણ આહારિણ, નન્નત્થ  
એગાણ રાયગિહં સપાવણટ્ટયાણ । એવામેવ સમણાઉસો । જો  
અમ્મં નિગ્ગંથો વા નિગ્ગંથી વા ઇમસ્સ ઓરાલિયસરીરસ્સ વંતા-  
સવસ્સ પિત્તાસવસ્સ સુક્કાસવસ્સ સોણિયાસવસ્સ જાવ અવસ્સં  
વિપ્પજહિયઠ્ઠવસ્સ વા નો વણ્ણહેત્ત વા નો રૂવહેત્ત વા નો વલ-  
હેત્ત વા નો વિસયહેત્ત વા આહારે આહારેદ્દે, નન્નત્થ એગાણ  
સિદ્ધિગમણસપાવણટ્ટયાણ, સે ણં ઇહભવે ચેવ વહૂણં સમણાણં  
વહૂણં સમણીણં વહૂણં સાવયાણં વહૂણં સાવિયાણ અચ્ચણિજ્જે  
જાવ વીડિવડ્ડસ્સદ્દે ।

એવ સ્વલુ જમ્બૂ । સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં જાવ સપત્તેણં  
અટ્ટારસમસ્સ ણાયઙ્ગયણસ્સ અયમટ્ટે પણત્તે ત્તિવેમિ ॥ સૂ૦ ૯ ॥

॥ અટ્ટારસમ અઙ્ગયણ સમત્તં ॥

ટીકા—' તણ કાલેણ ' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो  
भगवान् महावीरो गुणशिलके चेत्ये ' समोसद्वे ' समयसृत' = तीर्थकरपरम्परया

સુસુમા દારિકા કે મરણોત્તર કાલ મેં જો મી લૌકિક કૃત્ય કિયેજાતે  
—વે સવ મી ડન્હોને કિયે ઓર ધીરે ૨ વિગત શોક મી હો ગણે ॥ સૂ૦ ૮ ॥

લૌકિક કૃત્યો કરવા ભ્રમણ તે સર્વે તેમણે પતાવ્યા અને ધીમે ધીમે તેઓ  
શોકરહિત પણ બની ગયા ॥ સૂત્ર ૮ ॥

समागतः । अनन्तर स धन्यः सार्धं गच्छ सपुत्रो धर्मं श्रुत्वा प्रव्रजितः, प्रव्रज्यान-  
न्तरम् 'एकारसगरी' एकादशाङ्गविन्=एकादशाङ्गामिन्नो जानः 'मासियाए'  
मासिया सलेखनया कालं कृत्वा 'सोहम्मे' सौधर्मं कल्पे 'उपपन्नः' । पुनः तत  
भ्रूयुतः महाविदेहं गे' तिज्झहिइ' सेत्स्यति-मुक्तिं प्राप्स्यति । सम्प्रति धन्यसार्धं  
वाहट्टणान्तेन जम्भूस्वामिनः सम्योप्य श्रीसुधर्मास्वामीप्राद 'जहा वि इत्यादिना-

‘तेण कालेण तेण समणण इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समणण) उस काल और उस समय  
में (समणे भगवं महावीरे) भ्रमण भगवान् महावीर (गुणसिलण  
चेइए समोसडे, से ण धण्णे सत्थवाहे सुपुत्ते धम्म सोच्चा पव्वइए-एक्का  
रसगवी-मासियाए सलेहणाए सोहम्मे उववण्णे, महाविदेहे वासे सि  
ज्झहिइ) गुणशिलक उद्यान में आये । उनसे धर्म का उपदेश सुनकर  
वह धन्यसार्धवाह अपने पाचों पुत्रों सहित उनके पास प्रव्रजित हो  
गया । प्रव्रजित होकर धीरे २ वह एकादशाङ्गों का ज्ञाता भी हो गया ।  
अन्त समय में उसने एक मास की सलेखना धारणकर काल अवसर  
काल किया-तो उसके प्रभाव से वह सौधर्म कल्प में उत्पन्न हो गया-  
वहा से चक्कर कर अब वह महाविदेह क्षेत्र में मुक्ति को प्राप्त करेगा ।  
इस धन्यसार्धवाह के दृष्टान्त से जम्भू स्वामीको संबोधितकर के श्री

तेण कालेण तेण समण' इत्यादि—

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समणण) ते ठाणे अने ते समये (समणे  
भगव महावीरे) भ्रमणु लगवान भडावीर

(गुणसिलए चेइए समोसडे । सेण धण्णे सत्थवाहे सुपुत्ते धम्म सोच्चा  
पव्वइए-एक्कारसगवी-मासियाए स लेहणाए सोहम्मे उववण्णे, महाविदेहे वासे  
सिज्झहिइ )

गुणशिलक उद्यानमा आग्या तेमनी पासेथी धर्मोपदेश सालणीने ते  
धन्य सार्धवाह पेत्ताना पाथे पुत्रोनी साथे तेमनी पासे प्रव्रजित थछ गये।  
प्रव्रजित थछने ते धीमे धीमे ऐकादश (अगियार) अ गोनो ज्ञाता पणु  
थछ गये। छेवटे भूयु समये ऐक भासनी सलेखना धारणु करीने ठाण अव  
सरे तेले ठाण क्यो ते तेना प्रभावथी सौधर्म उत्पमा उत्पन्न थछ गये।  
त्याथी अवीने छेवे ते भडाविदेह क्षेत्रमा मुक्ति प्राप्त करशे आ धन्य सार्ध  
वाहना दृष्टान्तने सामे राणीने श्री सुधर्मा स्वामीअे जम्भू स्वामीने संबोधित



જહાવિ ય ણ' યથાઽપિ ચ સ્વલુ=યેન પ્રકારેણ સ્વલુ હે જમ્બૂઃ ! ધન્યેન સાર્થવાહેન નો વર્ણહેતોઃ = નો રૂપહેતો. વલહેતોઃ=નો વિષયહેતો. સુસુમાયા દારિકાયા માસ-શોણિતમાદારિતમ્, એગાએ રાયગિહસંપાવણદ્વયાએ' એકસ્ય રાજગૃહ સપ્રાપ્તાર્થતાયા અન્યત્ર ન, કિન્તુ-અહ રાજગૃહ સપ્રાપ્તુગમ્ इति હેતોરેવ તેન પુત્રૈઃ સહ તદ્ આદારિતમિતિ ભાવ ।

ભગવાનાહ—' એવામેવ ' એવમેવ=મનેન પ્રકારેણૈવ ' સમણાઉસો ' હે આયુષ્મન્તઃ શ્રમણાઃ યોઽસ્માક નિર્ગ્રન્થો વા નિર્ગ્રન્થી વા અસ્ય વાન્તાસ્રવસ્ય પિત્તા-

સુધર્મા સ્વામી ને ઉનસે કહા—(જહાં વિ ય ણ જન્નુ ! ધણેણ સત્થવાહેણ ણો વણહેઉ વા નો રૂવહેઉ વા નો વલહેઉ વા નો વિસયહેઉ વા સુસુમાએ મંસસોણિએ આહારિએ નન્નત્થ એગાએ રાયગિહં સંપાવણદ્વયાએ—એવામેવ સમગાઉસો ! જો અમ્હ નિગ્ગયો વા નિગ્ગંથીવા હમસ્સ ઓરાલિયસરીર સ્સ વતાસવસ્સ પિત્તાસવસ્સ સુવકાસવસ્સ સોણિયાસવસ્સ જાવ અવ-સ્સ વિપ્પજહિયવ્વસ્સ નો વણહેઉ વા નો રૂવહેઉ વા નો વલહેઉ વા નો વિસયહેઉ આહર અહારેહ, નન્નત્થ એગાએ સિદ્ધિગમણસપાવણદ્વયાએ) હે જન્નુ ! જિસ તરહ ધન્યસાર્થવાહ ને અપને શરીર મેં કાન્તિ વિશેષ વઢાને કે લિયે, વલ વઢાને કે લિયે, અથવા વિષય સેવન કી શક્તિ વઢાને કે લિયે સુસુમા દારિકા કા માસ એવ શોણિત નહીં લાયા । કિન્તુ મેં પુત્રોં કે સહિત રાજગૃહ નગર મેં પહુંચ જાઉં હસી એક અભિ પ્રાય સે સુસુમા દારિકા કા અપને પુત્રોં સહિત માસ શોણિત સેવન ક્રિયા—હસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમરા નિર્ગ્રન્થ શ્રમણ જન અથવા શ્રમણી જન હૈ—વહ હસ વાન્તાસ્રવવાલે, પિત્તાસ્રવવાલે, શુક્રાસ્ર-

કરીને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(જહા વિ ય ણ જન્નુ ! ધણેણ સત્થવાહેણ ણો વણહેઉ વા નો રૂવહેઉ વા નો વલહેઉ વા નો વિસયહેઉ વા સુસુમાએ મંસસોણિએ આહારિએ નન્નત્થ એગાએ રાય-ગિહ, સંપાવણદ્વયાએ એવામેવ સમણાઉસો ! જો અમ્હ નિગ્ગયો વા નિગ્ગંથી વા હમસ્સ ઓરાલિયસરીર સ્સ વતાસવસ્સ પિત્તાસવસ્સ સુવકાસવસ્સ સોણિયાસવસ્સ જાવ અવસ્સે વિપ્પજહિયવ્વસ્સ નો વણહેઉ વા નો રૂવહેઉ વા નો વલહેઉ વા નો વિસયહેઉ વા આહાર આહારેહ, નન્નત્થ એગાએ સિદ્ધિગમણસપાવણદ્વયાએ )

હે જમ્બૂ ! જેમ ધન્ય સાર્થવાહે પોતાના શરીરમાં કાંતિ વિશેષની વૃદ્ધિ કરવા માટે બળની વૃદ્ધિ માટે અથવા વિષય સેવનની શક્તિના વર્ધન માટે સુસુમા દારિકાના માસ અને શોણિત નહિ ખાધા, પણ પુત્રો સહિત હું રાજ ગૃહ નગરમાં પહોંચી બહુ આ એક જ મતલબથી પોતાના પુત્રોની સાથે સુસુમા દારિકાના માસ-શોણિત સેવન કર્યા આ પ્રમાણે હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રન્થ શ્રમણજન અથવા શ્રમણીજનો છે તેઓ આ વાતા

समागतः । अनन्तर स धन्यः सार्धं ग्राहः सपुत्रो धर्मं श्रुत्वा प्रव्रजितः, प्रज्ज्यानन्तरम् 'एकारसगरी' एकादशाहमिन्=एकादशाहामिन्नां जातः 'मासियाण' मासिया सलेखनया कालं कृत्वा 'सोहम्मे' सौधर्मे कल्पे 'उपपन्नः' । पुनः ततश्च्युतः महाविदेहे नरे 'सिज्झिहिइ' सेत्स्यति-मुक्तिं प्राप्स्यति । सम्प्रति धन्यसार्थं चाहदृष्टान्तेन जम्बूस्वामिनः सम्बोध्य श्रीसुधर्मास्वामीप्राह 'जहा वि इत्यादिना-

'तेण कालेण तेण समणं इत्यादि ।

टीका—(तेण कालेण तेण समणं) उस काल और उस समय में (समणे भगव महावीरे) श्रमण भगवान् महावीर (गुणसिलण चेट्ण समोसटे, से णं धण्णे सत्थवाहे सुपुत्ते धम्म सोच्चा पव्वइए-एकारसगवी-मासियाण सलेहणाण सोहम्मे उववण्णे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ) गुणशिलक उद्यान में आये । उनसे धर्म का उपदेश सुनकर वह धन्यसार्थवाह अपने पाचों पुत्रों सहित उनके पास प्रव्रजित हो गया । प्रव्रजित होकर धीरे २ वह एकादशाहों का ज्ञाता भी हो गया । अन्न समय में उसने एक मास की सलेखना धारणकर काल अवसर काल किया-तो उसके प्रभाव से वह सौधर्म कल्प में उत्पन्न हो गया-। वहा से चक्कर कर अब वह महाविदेह क्षेत्र में मुक्ति को प्राप्त करेगा । इस धन्यसार्थवाह के दृष्टान्त से जम्बू स्वामीको संबोधितकर के श्री

तेण कालेण तेण समणं' इत्यादि—

टीका—(तेण कालेण तेण समणं) ते काले अने ते समये (समणे भगव महावीरे) श्रमणु लगवान भडावीर

(गुणसिलण चेट्ण समोसटे । सेण धण्णे सत्थवाहे सुपुत्ते धम्म सोच्चा पव्वइए-एकारसगवी-मासियाण सलेहणाण सोहम्मे उववण्णे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ )

गुणशिलक उद्यानमा आव्या तेमनी पासेथी धर्मेपिदेश सालणीने ते धन्य सार्थवाह चेताना पाये पुत्रोनी साथे तेमनी पासे प्रव्रजित थय गये । प्रव्रजित थयने ते धीमे धीमे ऐकादश (अगियार) अ गोनो ज्ञाता पय थय गये । छेवटे मृत्यु समये अक भामनी सलेखना धारणु करीने काल अवसरे तेले काल कये । ते तेना प्रभावथी सौधर्म कल्पमा उत्पन्न थय गये । त्याथी अवीने हुवे ते भडाविदेह क्षेत्रमा मुक्ति प्राप्त करशे । आ धन्य सार्थवाहना दृष्टान्तने सामे राभीने श्री सुधर्मा स्वामीअे जम्बू स्वामीने...संबोधित

સુધર્માસ્વામીપ્રાહ— એવ ' અનેન પૂર્વોક્તપ્રકારેણ સ્વલુ હે જન્મુ ! શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ 'જાવ સપત્તેણ 'યાવત્ સપ્રાપ્તેન=મોક્ષગતેન અષ્ટાદશસ્ય જ્ઞાતા-ધ્યયનસ્ય ' અયમદ્વે ' અયમર્થ =પૂર્વોક્તરૂપોઽર્થઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ=પરૂપિતઃ, ' ત્તિ વેમિ ' इति ब्रवीमि=अस्य व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू० ९ ॥

इति श्री-विश्वविरयात-जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचरूपश्चदशभाषाकलितललितक-  
लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छ  
त्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुरराज-  
गुरु-बालत्रयचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-  
प्रतिरिचिताया-ज्ञाताधर्मकथाज्ञसूत्रस्यानंगारधर्मामृतवर्षि  
व्याख्याया व्याख्यायामष्टादशमः पद्यन समाप्तं ॥ १८ ॥

જન્મુ ! સમણેણ ભગવતા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ અઢારસમસ્સ ણાય-  
જ્ઞયણસ્સ અયમદ્વે પણ્ણતેત્તિવેમિ ) इस प्रकार से हे जन्म ! श्रमण भग-  
वान् महावीरने जो सिद्धि गति नमक स्थान को प्राप्त हो चुके हैं इस  
अठारहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ प्ररूपित किया है ।  
ऐसा जो मैंने कहा है वह उन्हीं के श्री मुख निर्गतवाणी को सुनकर  
ही कहा है-अपनी और से इसमें कुछ भी मिलाकर नहीं कहा है ॥ सू० ९ ॥  
श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराज कृत  
“ ज्ञाताधर्मकथाज्ञसूत्र ” की अनंगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्याका  
अठारहवां अध्ययन समाप्त ॥ १८ ॥

एव स्वलु जन्म ! समणेषु भगवता महावीरेण जाव सपत्तेण अठारसमस्स  
णायज्झयणस्स अयमद्वे पण्णणेत्तिवेमि )

આ પ્રમાણે હે જન્મુ ! શ્રમણુ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ સિદ્ધગતિ  
નામક સ્થાનને મેળવી ચુક્યા છે-આ અઠારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત  
રૂપથી અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે આણુ જે મેં કહ્યું છે, તે તેમના જ શ્રીમુખથી  
નીકળેલી વાણીને સાંભળીને જ કહ્યું છે પોતાના તરફથી ઉમેરીને મેં  
કહ્યું નથી ॥ સૂત્ર ૯ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘામીલાલજી મહારાજ કૃત

“ જ્ઞાતાધર્મકથાજ્ઞસૂત્ર ” ની અનંગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ

અઠારમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૮ ॥



સ્રવણ શુક્રાસ્રવણ 'જાત આસ્રવ વિપ્રવદિવચસ' યાત્ર અપયં વિપત્યા  
 ડ્યસ્ય ઔદારિકશરીરસ્ય નો ધર્ણહેતોર્ધા, નો રુપહેતોર્ધા નો ધલહેતોર્ધા, નો  
 વિપયહેતોર્ધા, આહારમાહરતિ=આહાર કરોતિ, 'એગાપ મિદ્ધિગમણસપાવણદુયાપ'  
 એકસ્યા: સિદ્ધિગમણસપાવણાર્થતાયા: 'નન્નત્વ' અન્યત્ર ન, મોક્ષપ્રાપ્તિરુપ પ્રયો  
 જન વિદ્યાય ણ્ણાદિપ્રયોજનેન આહાર નાહરતીતિ માય: । સ=નિર્ગ્રન્થો વા નિર્ગ્રન્થી  
 યા સ્વલ્લ, 'ઇહમ્ભવે ચેવ' ઇહમ્ભવે એવ=અસ્મિન્ જન્મન્યેવ ઘટ્ટના શ્રમણાનાં વહુનાં  
 શ્રમણીના વહુના શ્રાવકાણા વહુના શ્રાવિકાણામ્ 'અચ્ચણિજ્જે' અર્ચનીય=  
 આદરણીય 'જાત વીડવહસસહ યાત્રદુ વ્યતિત્તિત્યતિ=ચાતુરન્તસસારકાન્તાર  
 મુલ્લહુવિપ્પતિ-સસારપાર ગમિપ્પતીત્યર્થ: ।

વાલે, યાવત્ અવશ્ય પરિત્યાગ હોને કી યોગ્યતાવાલે હસ ઔદારિક  
 શરીર મેં કાન્તિ વિશેષ ઘટ્ટાને કે લિયે ઘલ ઘટ્ટાને કે લિયે, અથવા  
 વિપય કી પ્રવૃત્તિ ચાલૂ રાવને કે લિયે આહાર નહીં લેતા હૈ વિન્તુ-એક-  
 કેવલ સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત કરને કે લિયે હી આહાર લેતા  
 હૈ । મોક્ષ પ્રાપ્તિરુપ પ્રયોજન કો ટોડકર ઔર કિસી કાન્તિ આદિ ઘટ્ટાને  
 કે અભિપ્રાકરુપ પ્રયોજન સે નિર્ગ્રન્થ શ્રમણ શ્રમણી જન અહાર નહીં  
 લિયા કરતે હૈ-(સેણ) એસે નિર્ગ્રન્થ શ્રમણ શ્રમણી જન (ઇહમ્ભવે ચેવ  
 વહુણ સમણાણ વહુણ સમણીણ વહુણ સાવયાણ વહુણ સાવિયાણ અચ્ચ  
 ણિજ્જે જાત વીડવહસસહ) હસ ભવ મેં હી અનેક શ્રમણ, શ્રમણી, જનોં  
 દ્વારા તથા શ્રાવક શ્રાવિકાઓ દ્વારા અર્ચનીય-આદરણીય યાવત્ હસ  
 ચતુર્ગતિરુપ સસાર કાન્તાર કો પારકરને વાલે હોતે હૈ । (એવ સ્વલ્લ

સ્રવણા, પિત્તાસ્રવણા, શુક્રાસ્રવણા યાવત્ ચોક્કસ નષ્ટ થનારા આ  
 ઔદારિક શરીરમાં કાન્તિ વિશેષની વૃદ્ધિ માટે, બળની વૃદ્ધિ માટે અથવા તે  
 વિષયની પ્રવૃત્તિ ચાલુ રાખવા માટે આહાર લેતો નથી પણ ક્ષુદ્ર એક જ  
 સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને મેળવવા માટે જ આહાર ગ્રહણ કરે છે મોક્ષપ્રાપ્તિ  
 રૂપ પ્રયોજન વગર [ખીણ કોઈ કાન્તિ વગેરેની વૃદ્ધિની અભિલાષા રાખીને  
 નિર્ગ્રન્થ-શ્રમણીજન આહાર ગ્રહણ કરતા નથી (સેણ) એવા નિર્ગ્રન્થ  
 શ્રમણ શ્રમણીજનો—

(ઇહમ્ભવે ચેવ વહુણ સમણાણ સમણીણ વહુણ સાવયાણ વહુણ સાવિયાણ  
 અચ્ચણિજ્જે જાત વીડવહસસહ)

આ ભવમાં જ ધણા શ્રમણ શ્રમણીજનો વડે તેમજ શ્રવક-શ્રાવિકાઓ  
 વડે અર્ચનીય, આદરણીય યાવત્ આ ચતુર્ગતિ રૂપ સસાર કાન્તારને પાર  
 કરી જનારા હોય છે

मूलम्—जइणं भते । समणेणं भगवया महावीरेणं जाव  
संपत्तेणं अट्टारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्टे पणत्ते, एगूण  
वीसइमस्स णायज्झयणस्स के अट्टे पणत्ते ? एवं खलु जंबू ।  
तेणं कालेणं तेण समएण इहेव जवूदीवे दीवे पुव्वविदेहेवासे  
सीयाए महाणईए उत्तरिह्हे कूले नीलवंतस्स दाहिणेण उत्तरि-  
ह्हस्स सीयामुहवणसंडस्स पच्चत्थिमेणं एगसेलगस्स वक्खारपव्व-  
यस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं पुक्खलावई णाम विजए पन्नत्ते ।  
तत्थ ण पुडरिगिणी णाम रायहाणी पन्नत्ता णवजोयणवित्थि  
ण्णा दुवालसजोयणायामा जाव पच्चक्ख देवलोगभूया पासार्इया  
दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । तीसेण पुडरिगिणीए णयरीए  
उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णलिणिवणे णाम उज्जाणे । तत्थ णं  
पुंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे णाम राया होत्था, तस्स  
ण पउमावई णाम देवी होत्था । तस्स णं महापउमस्स रत्नो  
पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था, त जहा—  
पुडरीए य कडरीए य, सुकुमालपाणिपाया० । पुडरीए जुव-  
राया । तेणं कालेणं तेणं समएण थेरागमणं, महापउमे राया  
णिग्गए धम्म सोच्चा, पोंडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वइए पोडरीए  
राया जाए, कडरीए जुवराया, महापउमे अणगारे चोदसपुव्वाइं  
अहिज्जइ, तएण थेरा वहिया जणवयविहार विहरति, तएण  
से महापउमे वहूणि वासाइं जाव सिद्धे ॥ सू० १ ॥



## अथ एकोनविंशतितममध्ययनम्—

गतमष्टादशमध्ययनम्, साम्प्रतमेकोनविंशतितम व्याख्यायते, अस्य च पूर्वेण सह अयमभिसम्बन्धः—पूर्वस्मिन्मध्ययने अमृतास्रस्य तदितरस्य च अनर्थार्थौ उक्ता, इदं चिरस्रतास्रोऽपि यः पश्चादप्यथा स्यात्तस्य अल्पकालस्रतास्रस्य च अनर्थार्थौ मोच्येते, इत्येव सम्बन्धेनायातस्यास्येदमादिमूत्रम्—‘जङ्घ भते’ इत्यादि ।

॥ पुण्डरीक-कण्डरीक नाम का उन्नीसवा अध्ययन प्रारम्भ ॥

अठारहवां अध्ययन समाप्त हो चुका—अब १९ वां अध्ययन प्रारम्भ होता है—इस अध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार का सम्बन्ध है पूर्व अध्ययन में अस्रुतास्रव अथवा स्रुतास्रव वाले प्राणी को अर्थ एव अनर्थ की प्राप्ति होना समर्थित किया गया है—अर्थात् अस्रुत वाले को अनर्थ की प्राप्ति होती है और स्रुत वाले को इष्ट अर्थ की प्राप्ति होती है । अब इस अध्ययन में सूत्रकार यह प्रदर्शित कर रहे हैं कि जिस प्राणी ने चिरकाल से आस्रव को स्रुत कर दिया है—परन्तु यदि वह पीछे से अस्रुतास्रव वाला बन जाता है तो उसके अनर्थ की प्राप्ति तथा अल्प काल भी जिसने आस्रव को स्रुत कर दिया है उसके अर्थ की प्राप्ति होती है । इस संबंध को लेकर प्रारम्भ किये गये इस अध्ययन का यह सर्व प्रथम सूत्र है ।

पुण्डरीक-कण्डरीक नामे ओगणीसमु अध्ययन प्रारम्भ

अठारहवें अध्ययन पुरं थर्ग गयु छे हवे ओगणीसमु अध्ययन शङ्क थाय छे आ अध्ययननो ओना पूर्वना अध्ययननी साथे आ ज्ञतनो सम्बन्ध छे के पूर्व अध्ययनमा अस्रुतास्रव अथवा स्रुतास्रववाणा प्राणीने अर्थ अने अनर्थनी प्राप्ति थाय छे, ते वातनु समर्थन करवाभा आन्यु छे ओटवे के अस्रुतवाणाओने अनर्थनी प्राप्ति होय छे अने स्रुतवाणाओने इष्ट-अर्थनी प्राप्ति होय छे हवे आ अध्ययनमा सूत्रकार आ वातनु स्पष्टीकरण करी रह्या छे के जे प्राणीओ चिरजानथी ओटवे के जडु लाभा वञ्चतथी आस्रवने स्रुत करी दीधो छे, परतु जे ते पाछजथी ओटवे के लविष्यमा अस्रुतास्रववाणा जनी जय छे तो तेने अनर्थनी प्राप्ति तेभज थोडा वञ्चत सुधी पञ्च जेणे आस्रवने स्रुत करी दीधो छे तेने अर्थनी प्राप्ति थाय छे आ वातने लधने आरम्भाओला आ अध्ययननु आ पडेलु सूत्र छे—

પાશ્ચાત્યે=પશ્ચિમેભાગે 'એગસેલગસ્સ' એકશૈલકસ્ય=મધ્યજમ્બૂદ્વીપમેરુપર્વતસમીપ  
સ્થસ્ય એક શૈલકનામકસ્ય 'વવસ્વારપન્વયસ્મ' વક્ષસ્કારપર્વતસ્ય 'પુરત્થિમેળ'  
પૌરસ્ત્યે=પૂર્વસ્યા દિશિ 'એત્યળ' અત્ર સ્વલુ પુષ્કલાવતી નામ વિજયઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ।  
તત્ર સ્વલુ પુણ્ડરીગિણી નામ રાજધાની પ્રજ્ઞપ્તા, સા 'ળવજોયળવિત્થિળ્ળા'  
નવયોજનવિસ્તીર્ણા = નવયોજનવિસ્તારવતી 'દુગાલસજોયળાયમા' દ્વાદશ  
યોજનાયામા=દ્વાદશયોજનાનિ આયામો દૈર્ઘ્યે યસ્યાઃ સા=દ્વાદશયોજનદીર્ઘેત્યર્થ,  
પુન 'જાવ પન્ચવક્ષ દેવલોચભૂયા યાત્ પ્રત્યક્ષદેવલોકભૂતા=સાક્ષાત્ સ્વર્ગસદૃશા  
પુનઃ માસાદીયા, દર્શનીયા, અભિરૂપા, પ્રતિરૂપા । તસ્યા સ્વલુ પુણ્ડરીગિણ્યાઃ

પુરત્થિમેળ એત્યળ પુષ્કલાવતીનામ વિજય પળ્ળત્તે ) હસ પ્રકાર જમ્બૂદ્વીપ  
કે પૂછને પર સુધર્મા સ્વામી ઉનસે કહતે હૈં-સુનો-તુમ્હારે પ્રશ્ન કા  
ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈં ઉસ કાલ-ઔર ઉસ સમય મેં હસ જમ્બૂદ્વીપ નામ કે  
દ્વીપ મેં પૂર્વ વિદેહ ક્ષેત્રમેં, શીતા મહાનદી કે ઉત્તરદિગ્વર્તી તીર પર સ્થિત  
નીલ પર્વત કે દક્ષિણ દિગ્ભાગ મેં, તથા ઉત્તર દિગ્વર્તી શીતામુખવનપડ  
કે પશ્ચિમ ભાગ મેં, તથા એક શૈલક નામ વાલે વક્ષસ્કાર પર્વત કી પૂર્વ  
દિશા મેં પુષ્કલાવતી હસ નામ કા વિજય હૈં । શીતામુખવનપડ  
કા તાત્પર્ય યહ હૈં-કિ જહાં સે શીતાનદી નીકળી હૈં ઉસ ઉદ્ગમસ્થાન  
પર એક વનપડ હૈં । મધ્ય જમ્બૂદ્વીપ ઔર મેરુપર્વત કે સમીપ મેં રહા  
હુઆ એક શૈલક નામ કા વક્ષસ્કાર પર્વત હૈં ।-(તળ્ળ પુણ્ડરિગિણીનામ  
રાયદાળી પન્નત્તા, ળવજોયળવિત્થિળ્ળા દુગાલસજોયળાયમા, જાવ પન્ચ  
વક્ષ દેવલોચભૂયા પાસાઈયા, દરસણિજ્જા અભિરૂવા પઢિરૂવા ) ઉસ

સીયામુદ્ગવળસડસ્ત પન્ચત્થિમેળ એગસેલગસ્સ વક્ષસ્કારપન્વયસ્મ પુરત્થિમેળ  
એત્યળ પુષ્કલાવતી નામ વિજય પળ્ળત્તે )

આ પ્રમાણે જ જૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાલળીને શ્રી સુધર્મા તેમને કહેવા  
લાગ્યા કે હે જ જૂ ! સાલળો, તમારા સવાલનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે  
તે કાળે અને તે સમયે આ જ જૂદ્વીપ નામક દ્વીપમા પૂર્વ વિદેહ ક્ષેત્રમા,  
શીતા મહા નદીના ઉત્તર દિશા તરફના કિનારા ઉપર આવેલા નીલ પર્વતના  
દક્ષિણ દિગ્ભાગમા તેમજ ઉત્તર દિશામા આવેલા શીતા મુખવનપડના પશ્ચિમ  
ભાગમા, તેમજ એક શૈલક નામવાળા વક્ષસ્કાર પર્વતની પૂર્વ દિશામા પુષ્ક  
લાવતી નામે એક વિજય છે । શીતા મુખવન-પડનો અર્થ આમ સમજવો  
જોઈએ કે જ્યાંથી શીતા નદી નીકળી છે, તે ઉદ્ગમ સ્થાન ઉપર એક વનપડ છે  
મધ્ય જ જૂદ્વીપ અને મેરુપર્વતની પાસે આવેલો એક શૈલક નામે વક્ષસ્કાર પર્વત છે

(તત્યળ પુણ્ડરિગિણીનામ રાયદાળી પન્નત્તા, ળવ જોયળવિત્થિળ્ળા દુગાલસજો  
યળાયમા, જાવ પન્ચવક્ષ દેવલોચભૂયા પાસાઈયા, દરસણિજ્જા અભિરૂવા પઢિરૂવા)

ટીકા—‘ જહ્ણ ભતે ’ इत्यादि । यदि खलु हे भदन्त ! भ्रमणेन भगवता महावीरेण यास्तसमाप्तेन अष्टादशस्य ज्ञाताऽध्ययनस्य अयमर्थः प्रव्रत्तः, पुनः खलु हे भदन्त ! एकोनविंशतितमस्य ज्ञाताऽध्ययनस्य कोऽर्थः प्रव्रत्तः ? इति जम्बूस्वामी प्रश्नान्तरं सुधर्मास्वामी कथयति—एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहेव ‘ जम्बूदीवे दीवे ’ जम्बूदीपे द्वीपे=मध्यजम्बूद्वीपे ‘ पुर्वविदेदेवासे ’ पूर्वविदेहे वपे शीताया महानद्याः ‘ उत्तरीये=उत्तरदिक् स्थिते कूले=तीरे ‘ नीलवतस्स दाहिणेन ’ नीलवतो दक्षिणे=नीलवतः परितः दक्षिणेभागे ‘ उत्तरिल्लस्स ’ उत्तरीयस्य=उत्तरदिक् स्थितस्य ‘ सीयामुहवणसडस्स ’ सीयामुहवणपण्डस्य=शीताया नद्या यन्मुखमुहमस्थान, तत्र यद् वनपण्डम् तस्य, ‘ पच्चत्थिमेण ’

‘ જહ્ણ ભતે ! સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ —જન્નુ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામી સે પૂછતે હૈં કિ ( જહ્ણ ભતે સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં જાવ સપત્તેણ અઢારસમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમઢ્ઠે પણ્ણત્તે એગૂણવીસહમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ કે અઢ્ઠે પણ્ણત્તે ? ) હે ભદન્ત ! યદિ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરને કિ જો સિદ્ધિ ગતિ નામક મુક્તિસ્થાન કો પ્રાપ્ત કર ચુકે હૈં અઠારહવે જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્તરૂપ સે અર્થ નિરૂપિત કિયા હૈ—તો ઉન્હોં શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરને ૧૯ વે જ્ઞાતાધ્યયન કા કયા ભાવ-અર્થ નિરૂપિત કિયા હૈ ? ( એવં જલુ જન્નુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણેણં હહેવ ‘ જન્નુદીવે દીવે પુવ્વવિદેહવાસે સીયાએ મહાણઈએ ઉત્તરિલ્લે કૂલે નીલવતસ્સ દાહિણેણ ઉત્તરિલ્લસ્સ સીયામુહવણસડસ્સ પચ્ચત્થિમેણ એગસેલગસ્સ વન્નવારપન્વયસ્સ

‘ જહ્ણ ભતે ! સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ —

ટીકાર્થ—જન્નુ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે

( જહ્ણ ભતે ! સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ અઢારસમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમઢ્ઠે પણ્ણત્તે એગૂણવીસહમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ કે અઢ્ઠે પણ્ણત્તે ? )

હે ભદન્ત ! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે—કે જોમણે સિદ્ધિગતિ નામક મુક્તિસ્થાનને મેળવી લીધું છે—અઠારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ત્યારે તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે એગણીસમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો ભાવ-અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ?

( એવં જલુ જન્નુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણેણં હહેવ જન્નુ દીવે દીવે પુવ્વવિદેહવાસે સીયાએ મહાણઈએ ઉત્તરિલ્લે કૂલે નીલવતસ્સ ઉત્તરિલ્લસ્સ



પાશ્ચાત્યે=પશ્ચિમેભાગે ' એગસેલગસ્સ ' એકશૈલકસ્ય=મધ્યજમ્બૂદ્વીપમેરુપર્વતસમીપ  
સ્થસ્ય એક શૈલકનામકસ્ય ' વવસ્વારપન્ચયસ્મ ' વક્ષસ્કારપર્વતસ્ય ' પુરત્થિમેણ '   
પૌરસ્ત્યે=પૂર્વસ્યા દિશિ ' એત્થળ ' અત્ર સ્વલુ પુષ્કલાવતી નામ વિજયઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ।  
તત્ર સ્વલુ પુન્ડરીવિણી નામ રાજધાની પ્રજ્ઞપ્તા, સા ' ણવજોયણવિત્થિણ્ણા '   
નવયોજનવિરત્તીર્ણા = નવયોજનવિસ્તારવતી ' દુવાલસજોયણાયમા ' દ્વાદશ  
યોજનાયામા=દ્વાદશયોજનાનિ આયામો દૈર્ઘ્યં યસ્યાઃ સા=દ્વાદશયોજનદીર્ઘત્યર્થ ,  
પુન ' જાવ પન્ચવક્ષ દેવલોચભૂયા યાવત્ પ્રત્યક્ષદેવલોકભૂતા=સાક્ષાત્ સ્વર્ગસદૃશા-  
પુનઃ પાસાદીયા, દર્શનીયા, અભિરૂપા, પ્રતિરૂપા । તસ્યા સ્વલુ પુન્ડરીકિણ્યાઃ

પુરત્થિમેણ એત્થળ પુક્કલ્લાઢણામ વિજય વણ્ણત્તે ) હમ પ્રકાર જન્મસ્વામી  
કે પ્રગ્ઢને પર સુધર્મા સ્વામી હનસે કહતે હૈં-સુનો-તુમ્હારે પ્રગ્ઢન કા  
ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈં હસ કાલ ઓર હસ સમય મેં હસ જમ્બૂદ્વીપ નામ કે  
દ્વીપ મેં પૂર્વ વિદેહ ક્ષેત્રમેં, શીતા મહાનદી કે ઉત્તરદિગ્વર્તી તીર પર સ્થિત  
નીલ પર્વત કે દક્ષિણ દિગ્ભાગ મેં, તથા ઉત્તર દિગ્વર્તી શીતામુખવનપડ  
કે પશ્ચિમ ભાગ મેં, તથા એક શૈલક નામ વાલે વક્ષસ્કાર પર્વત કી પૂર્વ  
દિશા મેં પુષ્કલાવતી હસ નામ કા વિજય હૈં । શીતામુખવનપડ  
કા તાત્પર્ય યહ હૈં-કિ જહાં સે શીતાનદી નીકળી હૈં હસ ઉદ્ગમસ્થાન  
પર એક વનપડ હૈં । મધ્ય જમ્બૂદ્વીપ ઓર મેરુપર્વત કે સમીપ મેં રહ્યા  
હુઆ એક શૈલક નામ કા વક્ષસ્કાર પર્વત હૈં ।-( તણ્ણ પુન્ડરિગિણીનામ  
રાયદાણી પન્નત્તા, ણવજોયણવિત્થિણ્ણા દુવાલસજોયણાયમા, જાવ પન્ચ  
વક્ષ દેવલોચભૂયા પાસાઈયા, દરસણિજ્જા અભિરૂપા પટિરૂપા ) હસ

સીયામુદ્ગવણસહસ્સ પન્ચત્થિમેણ એગસેલગસ્સ વવસ્વારપન્ચયસ્સ પુરત્થિમેણ  
એત્થળ પુક્કલ્લાવડ ણામ વિજય વણ્ણત્તે )

આ પ્રમાણે જ જૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાભળીને શ્રી સુધર્મા તેમને કહેવા  
લાગ્યા કે હે જ જૂ ! સાભળો, તમારા સવાલને જવાબ આ પ્રમાણે છે કે  
તે કાળે અને તે સમયે આ જ જૂદ્વીપ નામક દ્વીપમા પૂર્વ વિદેહ ક્ષેત્રમા,  
શીતા મહા નદીના ઉત્તર દિશા તરફના કિનારા ઉપર આવેલા નીલ પર્વતના  
દક્ષિણ દિગ્ભાગમા તેમજ ઉત્તર દિશામા આવેલા સીતા મુખવનપડના પશ્ચિમ  
ભાગમા, તેમજ એક શૈલક નામવાળા વક્ષસ્કાર પર્વતની પૂર્વ દિશામા પુન્ડ  
લાવતી નામે એક વિજય છે સીતા મુખવન-પડનો અર્થ આમ સમજવો  
જોઈએ કે ત્યાંથી શીતા નદી નીકળી છે, તે ઉદ્ગમ સ્થાન ઉપર એક વનપડ છે  
મધ્ય જ જૂદ્વીપ અને મેરુપર્વતની પાસે આવેલો એક શૈલક નામે વક્ષસ્કાર પર્વત છે

(તત્થળ પુન્ડરિગિણીનામ રાયદાણી પન્નત્તા, ણવ જોયણવિત્થિણ્ણા દુવાલસજો  
યણાયમા, જાવ પન્ચવક્ષ દેવલોચભૂયા પાસાઈયા, દરસણિજ્જા અભિરૂપા પટિરૂપા)

નગર્યાં: ઉત્તરપૌરસ્ત્યે દિગ્ભાગે નલિનીવનં નામ ઉદ્યાનમ્ । તપ્ત સ્વલુ પુન્ડરીકિણ્યાં  
રાજધાન્યાં મહાપદ્મો નામ રાજાઽઽસીન્ । તસ્ય સ્વલુ પદ્માવતી નામ દેવી આસીન્ ।  
તસ્ય સ્વલુ મહાપદ્મસ્ય રાજા પુત્રો પદ્માવત્યા દેવ્યા આત્મજૌ દ્વૌ કુમારૌ આસતામ્ ।  
'ત જહા' તથા તયોર્નામરૂપે, તદાહ—' પુન્ડરીણ ય કન્ડરીણ ય સુકુમાલ-  
પાણિપાયા ' પુન્ડરીકથ કન્ડરીકથ સુકુમારપાણિપાદૌ કોમલકરચરણૌ । તયો  
ર્મધ્યે પુન્ડરીકો યુરરાજાઽઽસીન્ । તન્મિન્ ફાલે તન્મિન સમયે ' ચેરાગમણ '

પુષ્કલાવતી વિજય મેં પુન્ડરી કિની નામ રાજધાની થી । યહ નવ યોજન  
વિસ્તારવાલી તથા ૧૨ યોજન કી લંબી હૈ યહ સાક્ષાત સ્વર્ગ જેસી પ્રતીત  
હોતી હૈ । પ્રાસાદીયચિત્ત એવ અન્તઃકરણ કો યહ પ્રમદ્ધ કરને વાલી હૈ,  
દર્શનીય-નેત્રો કો તૃપ્તિ કરને વાલી હૈ, અભિરૂપ-અસાધારણ રચના સે  
યુક્ત હૈ એવ પ્રતિરૂપ હૈ-હસકે જેસી ઓર દૂસરી કોઈ નગરી નહીં હૈ  
એસી । ( તીસેણ પુન્ડરિગિણીણ ણયરીણ ઉત્તરપુરત્થિમે દિસિભાણ  
ળલિણિવણે ણામ ઉજ્જોણે-તત્થ ણ પુન્ડરિગિણીણ રાયહાણીણ મહાપડમે  
ણામ રાયા હોત્થા-તસ્સણ પડમાવર્દ્ધણામ દેવી હોત્થા, તસ્સ ણ મહાપડ  
મસ્સ રણ્ણો પુત્તા પડમાવર્દ્ધણ દેવીણ અત્તયા દુવે કુમારા હોત્થા )  
પુન્ડરીકિણી નગરી કે ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્ભાગ મેં નલિનીવન નામ કાં એક  
ઉદ્યાન થા । ઉસ પુન્ડરીકિણી રાજધાની મેં મહાપદ્મનામ કા એક રાજા  
રહતા થા । ઉસકી દેવી કા નામ પદ્માવતી થો । ઉસ મહાપદ્મ રાજા કે  
યહા પદ્માવતી કી કુક્ષિ સે ઉત્પન્ન હુણ દો કુમાર થે ( તં જહા પુન્ડરી  
ય, કન્ડરીણ ય-સુકુમાલપાણિ પાયાં । પુન્ડરીણ જુવરાયા તેણ કાલેણ

તે પુષ્કલાવતી વિજયમા પુન્ડરીકિની નામે રાજધાની હતી તે નવ યોજન  
જેટલા વિસ્તારવાળી તેમજ ૧૨ યોજન જેટલી લાંબી છે તે પ્રત્યક્ષ સ્વર્ગ  
જેવી જ લાગે છે તે પ્રાસાદીયચિત્ત અને અન્તઃકરણને તે પ્રમદ્ધ કરનારી છે,  
દર્શનીય-આખોને તે તૃપ્ત કરનારી છે, અભિરૂપ તે અસાધારણ ( અપૂર્વ )  
રચનાવાળી છે, અને પ્રતિરૂપ-એના જેવી બીજી કોઈ નગરી નથી એવા છે

( તીસેણ પુન્ડરિગિણીણ ણયરીણ ઉત્તરપુરત્થિમે દિસિભાણ ળલિણિવણે ણામ  
ઉજ્જોણે-તત્થણ પુન્ડરિગિણીણ રાયહાણીણ મહાપડમે ણામ રાયા હોત્થા-તસ્સણ  
પડમાવર્દ્ધણામ દેવી હોત્થા, તસ્સણ મહાપડમસ્સ રણ્ણો પુત્તા પડમાવર્દ્ધણ દેવીણ  
અત્તયા દુવે કુમારા હોત્થા )

તે પુન્ડરીકિણી નગરીના ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્વિભાગમા નલિનીવન નામે  
એક ઉદ્યાન હતો તે પુન્ડરીકિણી રાજધાનીમા મહાપદ્મ નામે એક રાજા રહેતો  
હતો તેની રાણીનું નામ પદ્માવતી હતું તે મહાપદ્મ રાજાને ત્યાં પદ્માવતી  
દેવીના ગર્ભથી ઉત્પન્ન થયેલા બે રાજકુમાર હતા



स्थविरागमन=तस्या राजान्या नलिनीवने उद्याने स्थविराणामागमनमभूत् । महा-  
पद्मो राजा धर्म श्रोतु निर्गतः, धर्म श्रुत्वा सजातवैराग्यः पुण्डरीक राज्ये स्थाप-  
यित्वा प्रवर्जितः । अनन्तर पुण्डरीको राजा जातः, कण्डरीको युवराजः । महा-  
पद्मऽनगार चतुर्दशपूर्वाणि अगीते । ततः खलु स्थविरा वहिर्जपदविहार विहरन्ति ।  
ततः खलु स महापद्मो ग्रहनि वर्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयित्वा यावद् सिद्धः॥सू० १॥

तेण समण थेरागमण, महापडमे राया णिग्गए, धम्म सोच्चा पोंडरीय  
रज्जे ठवेत्ता पव्वडए । पोंडरीए राया जाए, कडरीए जुवराया । महाप  
डमे अणगारे चौदसपुव्वाइ अहिज्जइ, तएण थेरा वहिया जणवयविहार  
विहरति, तएण से महापडमे ग्रहणि वासाइ जाव सिद्धे ) उनके नाम  
इस प्रकार है-१ पुडरीक और दूसरा कडरीक-ये दोनों पुत्र सुकुमार  
करचणवाले थे । पुडरीक को पिता ने युवराज पदप्रदान किया था । उस  
काल में और उस समय में वहां स्थविरो का आगमन हुआ । महाप-  
द्मराजा धर्म का व्याख्यान सुनने के लिये अपने महल से निकलकर  
नलिनीवन उद्यान में आये । वहां धर्म का उपदेश सुनकर उन्हें वैराग्यभाव  
उत्पन्न हो गया-सो वे पुडरीक को राज्य में स्थापित कर दीक्षित हो गये ।  
पुडरीक राजा बन गया-और कडरीक युवराज हो गया । महापद्मराजर्षि  
ने चौदह पूर्वों का अध्ययन कर लिया । इसके बाद वहां से स्थविरो ने

( त जहा-पुडरीए य, कडरीए य-सुकुमालपाणिपाया० । पुडरीए जुव  
राया तेण कालेण तेण समण थेरागमण, महापडमे राया णिग्गए, धम्म सोच्चा  
पोंडरीय रज्जे ठवेत्ता पव्वडए । पोंडरीए राया जाए, कडरीए जुवराया । महा  
पडमे अणगारे चौदसपुव्वाइ अहिज्जइ, तएण थेरा वहिया, जणवयविहार विह-  
रति, तएण से महापडमे ग्रहणि वासाइ जाव सिद्धे )

तेमना न भो आ प्रभाणु छे-१ पुडरीक, अने २ कडरीक आ जने  
पुत्रो सुकुमार डाय-पगवाणा हुता राजाये पुडरीकने युवराजपद प्रदान कथुं  
हुतुं ते काले अने ते समये त्या स्थविरोतु आगमन थयु महापद्म राजा  
धर्मतु व्याख्यान साधणवा भाटे पोताना भडेलथी नीकणीने नलिनीवन उद्या  
नमा आव्यो त्या धर्मोपदेश साधणीने तेने वैराग्यभाव उत्पन्न थयु गये  
छेवटे पुडरीकने राज्यासने स्थापित करीने तेयो दीक्षित थयु गया पुडरीक  
राजा थयु गये अने कडरीक युवराज थयु गये । महापद्म राजर्षिने चौ  
पूर्वोतु अध्ययन करी लीधु तयारपछी स्थविरो त्याथो जडार जनपटोमा विहार

નગર્યાં: ઉત્તરપૌરસ્ત્યે દિગ્ભાગે નલિનીવન નામ ડધાનમ્ । તમ્ સ્વલુ પુષ્કરીકિણ્યાં  
રાજધાન્યાં મહાપદ્મો નામ રાજાઽઽસીન્ । તસ્ય સ્વલુ પદ્માવતી નામ દેવી આસીન્ ।  
તસ્ય સ્વલુ મહાપદ્મસ્ય રાત્રઃ પુત્રો પદ્માવત્યા દેવ્યા આત્મજૌ દ્વૌ કુમારૌ આસ્તામ્ ।  
'ત જહા' તથા તયોર્નામરૂપે, તદાહ—'પુઢરીણ ચ કઢરીણ ચ સુકુમાલ  
પાણિપાયા' પુણ્ડરીકશ્ચ કણ્ઢરીકશ્ચ સુકુમારપાણિપાદૌ કોમલકરચર્ણૌ । તયો  
ર્મધ્યે પુણ્ડરીમૌ યુવરાજાઽઽસીન્ । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે 'થેરાગમણ'

પુષ્કલાવતી વિજય મેં પુઢરી કિની નામ રાજધાની થી । યહ નવ યોજન  
વિસ્તારવાલી તથા ૧૨ યોજન કી લંબી હૈ યહ સાક્ષાત્ સ્વર્ગ જેસી પ્રતીત  
હોતી હૈ । પ્રાસાદીયચિત્ત એવ અન્તઃકરણ કો યહ પ્રસન્ન કરને વાલી હૈ,  
દર્શનીય-નેત્રોં કો તૃપ્તિ કરને વાલી હૈ, અભિરૂપ-અસાધારણ રચના સે  
યુક્ત હૈ એવ પ્રતિરૂપ હૈ—હસકે જેસી ઓર દૂસરી કોઈ નગરી નહીં હૈ  
એસી । ( તીસેણ પુઢરિગિણીણ જયરીણ ઉત્તરપુરત્થિમે દિસિમાણ  
જાલિણિવણે જામ ઉજ્જાણે-તત્થ જા પુઢરિગિણીણ રાયહાણીણ મહાપડમે  
જામં રાયા હોત્થા—તસ્સણ પડમાવર્દ્ધજામ દેવી હોત્થા, તસ્સ જા મહાપડ  
મસ્સ રણ્ણો પુત્તા પડમાવર્દ્ધે દેવીણ અત્તયા દુવે કુમારા હોત્થા ) ઉસ  
પુઢરીકિણી નગરી કે ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્ભાગ મેં નલિનીવન નામ કાં એક  
ઉદ્યાન થા । ઉસ પુઢરીકિણી રાજધાની મેં મહાપદ્મનામ કા એક રાજા  
રહતા થા । ઉસકી દેવી કા નામ પદ્માવતી થા । ઉસ મહાપદ્મ રાજા કે  
યહા પદ્માવતી કી કુક્ષિ સે ઉત્પન્ન હુણ દો કુમાર થે ( ત જહા પુઢરીણ  
ચ, કઢરીણ ચ—સુકુમાલપાણિ પાયાં । પુઢરીણ જુવરાયા તેણ કાલેણ

તે પુષ્કલાવતી વિજયમા પુઢરીકિની નામે રાજધાની હતી તે નવ યોજન  
જેટલા વિસ્તારવાળી તેમજ બાર યોજન જેટલી લાંબી છે તે પ્રત્યક્ષ સ્વર્ગ  
જેવી જ લાગે છે તે પ્રાસાદીયચિત્ત અને અન્તઃકરણને તે પ્રસન્ન કરનારી છે,  
દર્શનીય—આખોને તે તૃપ્ત કરનારી છે, અભિરૂપ તે અસાધારણ (અપૂર્વ)  
રચનાવાળી છે, અને પ્રતિરૂપ—એના જેવી બીજી કોઈ નગરી નથી એવી છે

( તીસેણ પુઢરિગિણીણ જયરીણ ઉત્તરપુરત્થિમે દિસિમાણ જાલિણિવણે જામ  
ઉજ્જાણે—તત્થજા પુઢરિગિણીણ રાયહાણીણ મહાપડમે જામ રાયા હોત્થા—તસ્સજા  
પડમાવર્દ્ધજામ દેવી હોત્થા, તસ્સજા મહાપડમસ્સ રણ્ણો પુત્તા પડમાવર્દ્ધે દેવીણ  
અત્તયા દુવે કુમારા હોત્થા )

તે પુઢરીકિણી નગરીના ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્ભાગમા નલિનીવન નામે  
એક ઉદ્યાન હતો તે પુઢરીકિણી રાજધાનીમા મહાપદ્મ નામે એક રાજા રહેતો  
હતો તેની રાણીનું નામ પદ્માવતી હતું તે મહાપદ્મ રાજાને ત્યાં પદ્માવતી  
દેવીના ગર્ભથી ઉત્પન્ન થયેલા બે રાજકુમાર હતા

સ્થવિરાગમન=નસ્યા રાજ ગાન્ધા નલિનીવને ઉગાને સ્થવિરાણામાગમનમભૂત । મહા-  
પદ્મો રાજા ધર્મ શ્રોતુ નિર્ગતઃ, ધર્મ શ્રુત્વા સજાતવૈરાગ્યઃ પુઢરીક રાજ્યે સ્થાપ-  
યિત્વા પ્રવ્રનિતઃ । અનન્તર પુઢરીકો રાજા જાતઃ, કઢરીકો યુવરાજઃ । મહા-  
પદ્મઽનગાર ચતુર્દશપૂર્વાણિ અગ્રીતે । તતઃ સ્વલુ સ્થવિરા વહિર્જપદપિહાર વિહરન્તિ ।  
તતઃ સ્વલુ સ મહાપદ્મો ગૃહ્ણિ વર્ષાણિ શ્રામણ્યપર્યાય પાલયિત્વા યાવદ્ સિદ્ધઃ॥મૂ૦ ૧॥

તેણં સમણ થેરાગમણ, મહાપડમે રાયા ણિગ્ગણ, ધમ્મ સોચ્ચા પોંડરીય  
રજ્જે ઠવેત્તા પવ્વહણ । પોંડરીય રાયા જાણ, કઢરીય જુવરાયા । મહાપ  
ડમે અણગારે ચોદસપુવ્વાહ અહિજ્જહ, તણ થેરા વહિયા જણવયવિહાર  
વિહરતિ, તણં સે મહાપડમે ગૃહ્ણિ વાસાહ જાવ સિદ્ધે ) ઉત્તરે નામ  
હસ પ્રકાર હૈ-૧ પુઢરીક ઓર દૂસરા કઢરીક-યે દોનો પુત્ર સુકુમાર  
કરચણવાલે થે । પુઢરીક કો પિતા ને યુવરાજ પદપ્રદાન કિયા થા । ઉત્ત  
કાલ મેં ઓર ઉત્ત સમય મેં વહા સ્થવિરોં કા આગમન હુઆ । મહાપ-  
દ્મરાજા ધર્મ કા વ્યાખ્યાન સુનને કે લિયે અપને મહલ સે નિકલકર  
નલિનીવન ઉદ્યાન મેં આયે । વહા ધર્મ કા ઉપદેશ સુનકર ઉન્હે વૈરાગ્યભાવ  
ઉત્પન્ન હો ગયા-સો વે પુઢરીક કો રાજ્ય મેં સ્થાપિતકર દીક્ષિત હો ગયે ।  
પુઢરીક રાજા બન ગયા-ઓર કઢરીક યુવરાજ હો ગયા । મહાપદ્મરાજર્ષિ  
ને ચોદહ પૂર્વો કા અધ્યયન કર લિયા । હસકે બાદ વહાં સે સ્થવિરો ને

( ત જહા-પુઢરીય ય, કઢરીય ય-સુકુમાલપાણિપાયા૦ । પુઢરીય જુવ-  
રાયા તેણ કાલેણ તેણ સમણ થેરાગમણ, મહાપડમે રાયા ણિગ્ગણ, ધમ્મ સોચ્ચા  
પોંડરીય રજ્જે ઠવેત્તા પવ્વહણ । પોંડરીય રાયા જાણ, કઢરીય જુવરાયા । મહા  
પડમે અણગારે ચોદસપુવ્વાહ અહિજ્જહ, તણ થેરા વહિયા, જણવયવિહાર વિહ-  
રતિ, તણ સે મહાપડમે ગૃહ્ણિ વાસાહ જાવ સિદ્ધે )

તેમના નામે આ પ્રમાણે છે-૧ પુઢરીક, અને ૨ કઢરીક આ બંને  
પુત્રો સુકોમળ હાથ-પગવાળા હતા રાજાએ પુઢરીકને યુવરાજપદ પ્રદાન કર્યું  
હતું તે કાળે અને તે સમયે ત્યા સ્થવિરોનું આગમન થયું મહાપદ્મ રાજા  
ધર્મનું વ્યાખ્યાન સાંભળવા માટે પોતાના મહેલથી નીકળીને નલિનીવન ઉદ્યા-  
નમાં આવ્યો ત્યા ધર્મોપદેશ સાંભળીને તેને વૈરાગ્યભાવ ઉત્પન્ન થઈ ગયો  
છેવટે પુઢરીકને રાજ્યાસને સ્થાપિત કરીને તેઓ દીક્ષિત થઈ ગયા પુઢરીક  
રાજા થઈ ગયો અને કઢરીક યુવરાજ થઈ ગયો મહાપદ્મ રાજર્ષિએ ચો-  
પૂર્વોનું અધ્યયન કરી લીધું ત્યારપછી સ્થવિરો ત્યાથી બહાર જનપદોમાં વિહાર



मूढम्—तर्पणं थेरा अन्नया कयाडं पुणरवि पुंडरिगिणीए  
 रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसटा, पोंडरीए राया  
 णिग्गए । कंडरीए महाजणसइ सोच्चा जहा महाबलो जाव  
 पज्जुवासइ । थेरा धम्म परिकहेति पुडरीए समणोवासए जाए  
 जाव पडिगए । तएण से कडरीए उट्टाए उट्टेइ, उट्टाए उट्टित्ता  
 जाव से जहेयं लुब्भे वदह जं णवर पुण्डरीय रायं आपुच्छामि,  
 जाव पव्वयामि । अहासुह देवाणुप्पिया । तएण से कडरीए  
 जाव थेरे वदइ णमसइ वंदित्ता णमसित्ता थेराण अंतियाओ  
 पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तमेव चाउग्घट आसरह दुरु  
 हइ जाव पच्चोरुहइ, जेणेव पुण्डरीए राया तेणेव उवागच्छइ  
 करयल जाव पुडरीयं एव वयासी—एवं तल्लु देवाणुप्पिया । मए  
 थेराण अतिए जाव धम्मे निसस्ते से धम्मे जाव अभिरुइए  
 तर्पणं देवाणुप्पिया । जाव पव्वइत्तए । तएण से पुडरीए कड-  
 रीए एवं वयासी—माणं तुम देवाणुप्पिया । इयाणि मुडे जाव  
 पव्वयाहि, अह णं तुमं महयार रायाभिसेएणं अभिसिंचामि ।  
 तएण से कडरीए पुडरीयस्स रण्णो एयमट्ठ णो आढाइ णो  
 परिजाणइ तुसिणीए सच्चिट्ठइ । तएण पुण्डरीए राया कडरीय  
 दोच्चपि तच्चपि एव वयासी—जाव तुसिणीए सच्चिट्ठइ । तएणं  
 पुण्डरीए कडरीय कुमार जाहे नो सचाएइ, वहुहिं आघवणाहि

बाहिर जनपदों में विहार कर दिया । महापद्म अनगार ने अनेक वर्षों तक  
 श्रामण्य पर्याय का पालनकर योवत् सिद्धपद को प्राप्त कर लिया ॥ सू० १ ॥

भाटे नीकणी पड्या महापद्म अनगारे धर्या वर्षी सुधी श्रामण्य पर्यायतु  
 पालन करीने यावत् सिद्धपदने प्राप्त करी दीधु ॥ सूत्र १

य पणवणाहि य४ ताहे अकामए चेव एयमट्टु अणुमन्नित्था  
जाव णिक्खमणाभिसेएण अभिसिचइ जाव थेराण सीसभिक्खं  
दलयइ । पवइए अणगारे जाए एगारसगविऊ । तएण थेरा  
भगवंतो अन्नया कयाइं पुडरिणिणीओ नयरीओ णलिणीवणाओ  
उज्जाणाओ पडिणिक्खमति पडिणिक्खमिक्खं वहिया जणवय-  
विहारं विहरति ॥ सू० २ ॥

टीका—‘तएण ते’ इत्यादि । ततः खलु ते स्वयिरा अन्यदा कदाचित्  
पुण्डरीकिण्या राजधान्या नलिनीवने उद्याने समगता = समगताः । तेषा समा-  
गमनं श्रुत्वा पुण्डरीको राजा तान् वन्दितुं निर्गतः । अनन्तरम्—कण्डरीको ‘महा-  
जणसद’ महाजनसद = स्थविरान् वन्दितुं कामाना गच्छता बहूना जनानां  
कोलाहलं श्रुत्वा ‘जहा महान्नो जाव पज्जुगामइ’ यथामहाबलो यावत्पर्यु-  
पास्ते । महाबल इव स्वयिराणां समीपे गत्वा तान् वन्दित्वा नमस्सित्वा सेवते ।  
स्थविरा धर्मं ‘परिक्रहेति’ परिक्रययन्ति = उपदिशन्तीत्यर्थः । तेरुपदिष्टं धर्मं श्रुत्वा  
पुण्डरीकः श्रमणोपासको जातः ‘जाव पडिगए’ यावत्प्रतिगतः = स्थविरान् वन्दित्वा

‘तएण ते थेरा अन्नया कयाइ’ इत्यादि ।

टीकार्थः—(तएण) इसके बाद (ते थेरा) वे स्वविर (अन्नया  
कयाइ किसी एक समय (पुणरवि) फिर से (पुडरिणीणीए रायहाणीए  
णलिणिवणे उज्जाणे समोसदा, पोंडरीए रायाणिग्गए) पुडरीकिणी राज-  
धानी में आये । वहा वे नलिनीवन उद्यान में ठहरे । पुडरीक राजा  
उनका आगमन सुनकर धर्म सुनने की इच्छा से वहा जाने के लिये  
अपने महल से निकले । (कडरीए महाजणसद सोचा जहा महबलो  
जाव पज्जुवासइ, थेरा धम्म परिक्रहेति, पुडरीए समणोवासए जाए जाव

‘तएण ते थेरा अन्नया कयाइ’ इत्यादि—

टीकार्थः—(तएण) त्थापली (ते थेरा) ते स्थविरो (अन्नया कयाइ)  
के।धं ओ३ वप्पते (पुणरवि) इगी (पुडरिणीणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे  
समोसदा, पोंडरीए रायाणिग्गए) पुडरीकिणी राजधानीमा आब्बा त्था तेओ  
नलिनीवन उद्यानमा रोजाया पुडरीक राजा तेमनु आगमनं भासणीने धर्मंनु  
व्याब्धानं सासणवानीं विट्ठाथी त्था ज्वा माटे पोताना भडेलथी नीक्कया  
(कडरीए महाजणसद सोचा जहा महान्नो जाव पज्जुवासइ, थेरा धम्म परि



मूलम्—तएणं थेरा अन्नया कयाइ पुणरवि पुडरिगिणीए  
 रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए राया  
 णिगए । कंडरीए महाजणसइ सोच्चा जहा महाबलो जाव  
 पज्जुवासइ । थेरा धम्म परिकहेति पुडरीए समणोवासए जाए  
 जाव पडिगए । तएण से कंडरीए उट्टाए उट्टेइ, उट्टाए उट्टित्ता  
 जाव से जहेयं तुब्भे वदह ज णवर पुण्डरीय राय आपुच्छामि,  
 जाव पठ्वयामि । अहासुहं देवाणुप्पिया । तएणं से कंडरीए  
 जाव थेरे वंदइ णमसइ वंदित्ता णमसित्ता थेराण अंतियाओ  
 पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तमेव चाउग्घट आसरह दुरु  
 हइ जाव पच्चोरुहइ, जेणेव पुण्डरीए राया तेणेव उवागच्छइ  
 करयल जाव पुंडरीय एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया । मए  
 थेराण अतिए जाव धम्मे निसंते से धम्मे जाव अभिरुइए  
 तएणं देवाणुप्पिया । जाव पठ्वइत्तए । तएण से पुडरीए कड-  
 रीए एव वयासी—माणं तुम देवाणुप्पिया । इयाणि मुंडे जाव  
 पठ्वयाहि, अह णं तुमं महयार रायाभिसेएणं अभिसिंचामि ।  
 तएण से कंडरीए पुंडरीयस्स रण्णो एयमह णो आढाइ णो-  
 परिजाणइ तुसिणीए सचिट्ठइ । तएण पुण्डरीए राया कंडरीय  
 दोच्चपि तच्चपि एव वयासी—जाव तुसिणीए सचिट्ठइ । तएणं  
 पुण्डरीए कंडरीय कुमार जाहे नो सचाएइ, बहूहि आघवणाहि

बाहिर जनपदों में विहार कर दिया । महापद्म अनगार ने अनेक वर्षों तक  
 श्रामण्य पर्याय का पालनकर योवत् सिद्धपद को प्राप्त कर लिया ॥ सू० १ ॥

भाटे नीकणी पड्या महापद्म अनगारे धरुा वर्षो सुधी श्रामण्य पर्यायनु  
 पालन करीने यावत् सिद्धपदने प्राप्त करी लीधु ॥ सूत्र १ ॥

य पणवणाहि य४ ताहे अकामए चेव एयमट्ट अणुमन्नित्था  
जाव णिक्खमणाभिसेएणं अभिसिचइ जाव थेराणं सीसभिक्ख  
दलयइ । पवइए अणगारे जाए एगारसंगविऊ । तएण थेरा  
भगवतो अन्नया कयाइं पुंडरिगिणीओ नयरीओ णलिणीवणाओ  
उज्जाणाओ पडिणिक्खमति पडिणिक्खमिन्ता वहिया जणवय-  
विहारं विहरंति ॥ सू० २ ॥

टीका—‘ तएण ते ’ इत्यादि । ततः खलु ते स्थविरा अन्यदा कदाचित्  
पुण्डरीकिण्या राजधान्या नलिनीवने उद्याने समसृता-समगताः । तेषा समा-  
गमन श्रुत्वा पुण्डरीको राजा तान् वन्दितु निर्गतः । अनन्तरम्—कडरीको ‘ महा-  
जणसद ’ महाजनशब्द=स्थविरान् वन्दितु कामाना गच्छता बहूना जनाना  
कोलाहल श्रुत्वा ‘ जहा महाबलो जाव पज्जुवासइ ’ यथामहाबलो यावत्पर्यु-  
पास्ते । महाबल इव स्थविराणा समीपे गत्वा तान् वन्दित्वा नमस्यित्वा सेवते ।  
स्थविरा धर्म ‘ परिकुहंति ’ परिकथयन्ति=उपदिशन्तीत्यर्थः । तैरुपदिष्ट धर्मं श्रुत्वा  
पुण्डरीकः श्रमणोपासको जातः ‘ जाव पडिगए ’ यावत्प्रतिगतः=स्थविरान् वन्दित्वा

‘ तएण ते थेरा अन्नया कयाइ ’ इत्यादि ।

टीकार्थः—( तएण ) इसके बाद ( ते थेरा ) वे स्थविर ( अन्नया  
कयाइ किसी एक समय ( पुणरवि ) फिर से ( पुंडरिगीणीए राघहाणीए  
णलिनिवणे उज्जाणे समोसढा, पुंडरीए रायाणिग्गए ) पुंडरीकिणी राज-  
धानी में आये । वहा वे नलिनीवन उद्यान में ठहरे । पुंडरीक राजा  
उनका आगमन सुनकर धर्म सुनने की इच्छा से वहा जाने के लिये  
अपने महल से निकले । ( कडरीए महाजणसद सोचा जहा महाबलो  
जाव पज्जुवासइ, थेरा धम्म परिकहेति, पुंडरीए समणोवासए जाए जाव

‘ तएण ते थेरा अन्नया कयाइ ’ इत्यादि—

टीकार्थः—( तएण ) त्थारपणी ( ते थेरा ) ते स्थविरो ( अन्नया कयाइ )  
कैध अेक वज्जते ( पुणरवि ) इगी ( पुंडरिगीणीए राघहाणीए णलिनिवणे उज्जाणे  
समोसढा, पुंडरीए रायाणिग्गए ) पुंडरीकिणी राजधानीमा आव्या त्या तेओ  
नलिनीवन उद्यानमा रोजाया पुंडरीक राजा तेभनु आगमन सालणीने धर्मनु  
व्याख्यान सालणवानी धियाथी त्या जवा भाटे पोताना मडेलथी नीकल्या  
( कडरीए महाजणसद सोचा जहा महाबलो जाव पज्जुवासइ, थेरा धम्म परि

नमस्यित्वा प्रतिनिवृत्तः । ततः खलु कडरीक ' उट्टाण ' उत्थया=उत्थानशक्त्या उत्तिष्ठति, उत्थया उत्थाय ' जाय ' यावत् स्थविरान् वन्दित्वा नमस्यित्वा एव मवदत्—' से जहेय तुब्भे वदह ' तद्यवेदं वृय वदथ=हे देवानुमियाः ! वृय यथा वद वदथ, तत्तथैव, ' ज णवर ' जणवर=यो विशेष सचैवम्—यदहं पूर्वं पुण्डरीक राजानम् आपृच्छामि । ततः खलु ' जाय पव्वयामि ' पावन् प्रव्रजामि ।

पडिगाण ) इसके बाद कडरीक युवराज स्थविरों को वदना करने के लिये जानेवाले अनेक मनुष्यों का कोलाहल सुनकर महाबल राजा की तरह स्थविरों के पास गया—वहा जाकर उसने उनकी वदना की—नमस्कार किया । वदना नमस्कार कर फिर उसने उनकी पर्युपासना की । स्थविरों ने धर्म का उपदेश दिया । उस उपदेश को सुनकर पुडरीक श्रमणोपासक बन गया । बाद में वह स्थविरों को वदना और नमस्कार कर अपने स्थान पर वापिस वहा से लौट आया । ( तएण से कडरीए उट्टाए उट्टेइ, उट्टाए उट्टित्ता जाव से जहेय तुब्भे वदह, ज णवर पुडरीय राय आपु च्छामि, तएण जाव पव्वयामि—अहासुह देवाणुप्पिया । तएण से कडरीए जाव थेरे वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता थेराण अतियाओ पडि-निक्खमइ ) इसके बाद कडरीक उत्थानशक्ति से उठा—उत्थानशक्ति—उठने की शक्ति से उठकर उसने स्थविरों को वदना की—नमस्कार किया । वदना नमस्कार करके फिर उसने उनसे इस प्रकार कहा—हे

कहेति, पुडरीए समणोवासए जाए जाव पडिगाए ) त्थारपणी कडरीक युवराज स्थविरोनी वदना करवा भाटे उपडेला अनेक भाणुसोने। धोधाट सालणीने भडाअय राजनी जेम स्थविरोनी पासे गये। त्था जधने तेणे तेमने वदन अने नमस्कार कर्था वदना अने नमस्कार करीने तेणे तेमनी पर्युपासना करी स्थविरोओ धर्मोपदेश आण्यो, ते उपदेशने सालणीने पुडरीक श्रमणे। पासक णनी गये। त्थारपणी ते स्थविरोने वदन तेमज नमन करीते पोताना निवास—स्थाने पाछो आवतो रह्यो

( तएण से कडरीए उट्टाए उट्टेइ, उट्टाए उट्टित्ता जाव से जहेय तुब्भे वदह ज णवर पुडरीय राय आपुच्छामि, तएण जाव पव्वयामि—अहासुह देवाणु प्विया । तएण से कडरीए जाव थेरे वदइ, नमसइ, वदित्ता, नमसित्ता थेराण अतियाओ पडिनिक्खमइ )

त्थारपणी कडरीक उत्थान शक्ति वडे जिले। थये, उत्थान शक्ति—उभा थवानी शक्ति वडे जिले। थधने तेणे स्थविरोने वदन तेमज नमस्कार कर्था वदना अने नमस्कार करीने तेणे तेमने आ प्रभाणे विनती

इति तद् वचन श्रुत्वा ते स्थविरा' प्रोचु. ' अहासुह देवाणुप्पिया ' यथासुख हे देवानुप्पिया । हे देवानुप्पिय । यथा तव सुखकर भवेत् तथा कुरु । ततः खलु स कण्डरीको यावत् स्थविरान् पन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा स्थविराणामन्तिके=ममीपात् प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य, तमेव ' चाउग्घट ' चतुर्घट=चतस्रो घण्टा यस्मिन् स तम्=घण्टा चतुष्टयोपेतम् अश्वरथ दूरोहति, यावत् प्रत्यवरोहति=स्थादवतरति । अवतरणानन्तर यत्रैव पुण्डरीको राजा तत्रैव उपागच्छति, ' करयल जाव ' करतल यावत्=करतलपरिगृहीत शिर आवत्तं दशनख मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा पुण्डरीकमेवमवादीत्-एव खलु हे देवानुप्पिय ! मया स्थविराणामन्तिके यावद्दर्मो निशान्त=श्रुत', स धर्मः=स्थविरप्रोक्तो धर्मः यावत् अभिरुचित' । तत् खलु हे देवानुप्पिय ! ' जाव पव्वत्तए ' यावत् प्रव्रजितुम्=हे देवानुप्पियाः ! भवद्भिरभ्यनुज्ञातो स्थविराणामन्तिके प्रव्रजितुमिच्छामीतिभावः ।

देवानुप्पियो ! आप जैसा कहते हैं-वह वैसा ही है-मेरी भावना उसे सुनकर सयम लेने की हो गई है-अतः सयम धारण करने के पहिले मैं पुडरीक राजा से इस विषय में पूछ आता हूँ उसके बाद सयम धारण करना चाहता हूँ । इस प्रकार उसके वचन सुनकर उन स्थविरो ने उससे कहा-हे देवानुप्पिय ! तुम्हे जैसे सुख हो-तुम वैसा करो-इसके बाद कण्डरीक ने स्थविरो को वदना की-नमस्कार किया और वदना नमस्कारकर वह उनके पास से चला आया ( पडिनिक्खमिच्चा ) आकर के ( तमेवचाउग्घट आसरह दुरुहइ, जाव पच्चोरुहइ, जेणेव पुडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, करयल जाव पुडरीय एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराण अतिए जाव धम्मे निसते से धम्मे जाव अभिरुइए

हे देवानुप्पियो ! तमे जेम कडो छो ते थरेणर तेम छे आ थधु सालणीने सयम थडणु करवानी भारी धम्म थड गड छे ओटवा भाटे सयम धारणु करता पडेवा हु पुडरीक राजने आ विषे पूजी आवु छु त्थारपछी हु सयम धारणु करवा आवु छु आ प्रमाणे तेना वयनेा सालणीने ते स्थविरेअ तेने कहु के हे देवानुप्पिय ! तमने जेमा सुथ भणे तेम करे त्थारपछी उडरीके स्थविरेने वदन तेमज नमस्कार करीने ते तेमनी पासेथी आवतो रहो ( पडिनिक्खमिच्चा ) आवीने,

( तमेव चाउग्घट आसरह दुरुहइ, जाव पच्चोरुहइ, जेणेव पुडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, करयल पुडरीय एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराण अतिए जाव धम्मे निसते से धम्मे जाव अभिरुइए-तण्ण देवाणुप्पिया !

તતઃ પુન્ડરીકઃ પન્ડરીકમેશમચારીન્-મા ચ્વતુ તં હે દેવાનુપ્રિય ! ભ્રાતઃ શ્વર્ગી  
 મુન્ડો યાત્ પ્રવ્રજ અહ ચ્વતુ ત્વા મહતા ૨ ' રાયામિસેળ્લ ' રાજામિષકેષ  
 ' અભિસિન્ચામિ=મમિપેચયામિ । તતઃ ચ્વતુ ત પન્ડરીકો યુગ્મજઃ પુન્ડરીકસ્ય  
 રાજ એતમર્થ નો જાદ્રિયતે=તસ્ય રાજ્યામિષ્કરૂપમર્થ નો મનુતે,  
 ' નો પરિજાણઃ ' નો પ્રતિજ્ઞાનાતિ=ન સ્વીકરોતિ ' તુમિળીષ સન્નિઠ્ઠઃ ' તૂળીકઃ

-તળ્લ દેવાણુપ્પિયા ! પવ્વટ્તણ ! તળ્લ સે પુન્ડરીક કડરીક એવ વયાસી  
 -માળ તુમ દેવાણુપ્પિયા ! હયાણિ મુઢે જાવ પવ્વયાહિ-અહ ણ તુમ  
 મહયા ૨ રાયામિસેળ્લ અભિસિન્ચામિ ) વહ વહા આયા-જહા ચતુર્થદો  
 પેત અપના અશ્વરથ રગ્ગા જુઆ યા । વહા આકર વહ ઉસપર ચ્ચ ગયા  
 -ચ્ચઢકર વહ જહા પુન્ડરીક રાજા થે વહા આયા-પહાં અત્તે હી વહ રથ  
 સે નીચે ઉત્તરા । નીચે ઉત્તરકર પુન્ડરીક રાજા કે પાસ ગયા-  
 વહા જાકર ઉસને પુન્ડરીક રાજા કો દોનાં હાથ (જોઢકર નમ  
 સ્કાર કિયા-વાદ મેં હસ પ્રકાર કહને લગા-હે દેવાનુપ્રિય મેં સ્થ  
 વિરો કે પાસ ધર્મ કા ઉપદેશ સુના હૈ-વહ મુઢે વહુન રુચા હૈ હસલિપે  
 હે દેવાનુપ્રિય ! મેં આપસે આજ્ઞાપિત હોકર ઉન સ્થવિરો કે પાસ સયમ  
 લેના ચાહતા હૈ-હસ પ્રકાર કડરીક કી વાત સુનકર પુન્ડરીકને ઉસસે  
 હસ પ્રકાર કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! તુમ હસ મમય મુઢિત હોકર સ્થવિરો  
 કે પાસ સયમ ધારણ મતકરા મેં બઢે જોર શોર કે ઉત્સવ કે સાથ  
 તુમ્હારા રાજ્યામિષેક કરના ચાહતા હૈ । ( તળ્લ સે કડરીક પુન્ડરીયસ

જાવ પવ્વહત્તણ ! તળ્લ સે પુન્ડરીક કડરીક એવ વયાસી-માળ તુમ દેવાણુપ્પિયા !  
 હયાણિમુઢે જાવ પવ્વયાહિ અહ ણ તુમ મહયા ૨ રાયામિસેળ્લ અભિસિન્ચામિ )

તે ત્યા આવ્યો જ્યા ચતુર્થ દવાળો પોતાનો અશ્વરથ હતો ત્યા આવીને  
 તે તેમા બેસી ગયો, અને બેસીને તે જ્યા પુન્ડરીક રાજા હતો ત્યા ગયો ત્યા  
 પહોચતા જ તે રથ ઉપરથી નીચે ઉતર્યો, નીચે ઉતરીને પુન્ડરીક રાજાની પાસે  
 ગયો ત્યા જઈને તેણે ણને હાથ બેઠીને પુન્ડરીક રાજાને નમસ્કાર કર્યો અને  
 ત્યારપછી તેણે તેમને વિનતી કરતા આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! મે  
 સ્થવિરોની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાંભળ્યો છે તે મને ખૂબ જ ગમી ગયો છે  
 એથી હે દેવાનુપ્રિય ! હું તમારી આજ્ઞા મેળવીને સ્થવિરોની પાસેથી સયમ  
 ગ્રહણ કરવા ઇચ્છુ છું આ પ્રમાણે પુન્ડરીકની વાત સાંભળીને પુન્ડરીકે તેને આ  
 પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે હમણા મુઢિત થઈને સ્થવિરોની પાસેથી સયમ  
 ધારણ કરો નહિ હું મોટા ઉત્સવ સાથે તમારો રાજ્યાભિષેક કરવા



સતિષ્ઠતે=તમર્થ ન સ્વીકૃતવાન્ કેવલ મૌનમવલમ્બ્ય મ્થિતઃ । તતઃ સલુ પુણ્ડ-  
રીકો રાજા કણ્ડરીક ભ્રાતર દ્વિતીયમપિ તૃતીયમપિ વારમ્ ' એવ 'પૂર્વોક્તરૂપેણ  
અવાદીત્-' જાવ તુસિણીંણ સચિદ્વઢ ' યાવત્-તુણ્ણીકઃ સતિષ્ઠતે । તત્ સલુ  
પુણ્ડરીકઃ કણ્ડરીક યદા ' નો સચાણ્ઠ ' નો ગત્તોતિ = ન સમર્થો ભવતિ  
વહુમિ ' આઘવણાહિ ય ' આરુપાપનામિશ્ચ-આરુપાપનામિ -પત્રજ્યાવિગેવિમિ  
રારુપાપનામિઃ ' પણ્ણવણાહિ ય ' પ્રતાપનામિશ્ચ ' અહ તવ જ્યેષ્ઠભ્રાતાઽસ્મિ, તવ હિતં  
યેન ભવતિ, તદેવ કથયામિ, ઇત્યાદિ રૂપૈઃ પ્રતાપનામિશ્ચ-આરુપાપનામિઃ એવ ' વિણ્ણવણાહિ ય '  
વિજ્ઞાપનામિઃ વિનિતમૃદુવચનાવલિરૂપર્વાક્રમવચ્ચૈઃ, તથા ' સણ્ણવણાહિ ય '  
સજ્ઞાપનામિઃ ' પ્રત્રજ્યાયા મહાન્ કપ્ટો ભવતિ ' ઇત્યાદિ સ્વામીપ્સિતસજ્ઞાપકૈર્વાક્યૈશ્ચ

રણ્ણો ણમમદ્દ ણો આઢાહ, ણો પજિાણહ, તુસિણીંણ સચિદ્વઢ, તણ્ણ પુઢ-  
રીંણ રાયા કઢરીયં દોચ્ચપિ તચ્ચપિ એવ વયાસી જાવ તુમિણીંણ સચિ-  
દ્વઢ, તણ્ણ પુઢરીંણ કઢરીય કુમાર જાહે નો સચાણ્ઠ, વહુહિં આઘવણાહિ  
ય પણ્ણવણાહિ ય ૪ તાહે અકામણ ચેવ ણમમદ્દ અણુમન્નિત્થા જાવ  
ણિક્કલમણામિસેણ અભિસિચ્છ જાવ થેરાણ સીસમિલ્લ દલય્ઢ )  
કઢરીક કુમારને પુઢરીક રાજા કી હસ વાત કો આદર કી દૃષ્ટિ સે  
નહીં દેલા-નહીં માના-ઑર ન ઉસે સ્વીકાર હી ક્રિયા-કેવલ ચુપચાપ  
હી રહા । પુઢરીક રાજા ને જવ કઢરીક કુમાર કો ચુપચાપ દેલા-તવ  
ઉસને દુવારા ઑર તિવારા મી ઉસસે એસા હી કહા-પરન્તુ ઉમને હસ  
વાત પર ચિલકુલ હી ધ્યાન નહીં દિયા કેવલ ચુપચાપ હી રહા-। અતઃ  
જવ પુઢરીક રાજા કઢરીક કુમાર કો ઉસકે ધ્યેય સે વિચલિત કરને

( તણ્ણ સે કઢરીંણ પુઢરીયસ્સ રણ્ણો ણમમદ્દ ણો આઢાહ, ણો પરિજાણહ,  
તુસિણીંણ સચિદ્વઢ, તણ્ણ પુઢરીંણ રાયા કઢરીયં દોચ્ચપિ તચ્ચપિ એવ વયાસી  
જાવ તુસિણીંણ સચિદ્વઢ, તણ્ણ પુઢરીંણ કઢરીય કુમાર જાહે નો સચાણ્ઠ, વહુહિં  
આઘવણાહિ ય પણ્ણવણાહિ ય ૪ તાહે અકામણ ચેવ ણમમદ્દ અણુમન્નિત્થા જાવ  
ણિક્કલમણામિસેણ અભિસિચ્છ જાવ થેરાણ સીસમિલ્લ દલય્ઢ )

કઢરીક કુમારે પુઢરીક રાજાની આ વાતનુ સન્માન કર્યું નહિ-માની  
નહિ અને તેના સ્વીકાર પણ કર્યો નહિ, ફક્ત તે મૂગો થઈને બેઠી જ રહ્યો  
પુઢરીક રાજાએ જ્યારે કઢરીક કુમારને મૂગો મૂગો બેઠી રહેલો જોયો ત્યારે  
તેમણે બીજી વાર અને ત્રીજી વાર પણ તેને આ પ્રમાણે જ કહ્યું પરંતુ તેણે  
આ વાતની સંજ્ઞા પણ દરકાર કરી નહીં, ફક્ત મૂગો થઈને બેઠી જ રહ્યો  
છેવટે જ્યારે પુઢરીક રાજા કઢરીક કુમારને તેના ધ્યેયથી મક્કમ વિચારથી

‘आयचित्तर’ आग्यापयितु ष=गर्वापनिरोधयितु न शक्नोतीति पूर्वश सम्बन्धः,  
 ‘ताहे’ तदा ‘अनामव चेत्’ अनामकः एव=अनिष्ट एव ‘एवमह’ एतम-  
 र्थम्-कण्डरीकागिलपित प्रवज्याह्वम्, ‘अणुमन्निरथा’ अवमन्यत=स्वीकृत  
 चान्, ‘जाय निरुचमणामिसेण्ण’ यायन् निरुचमणामिपेकेण’ स्वीकरणानन्तर  
 निष्क्रमणोपयोगि यस्तुजातगुपनीय सविधि दीक्षामिपेकेण अभिपिञ्चति, ‘जाव  
 थेराण सीमभिरव दलयड’ यायत्-स्थविरंभ्य शिष्यभिक्षाम्=अभिपेक्षानन्तर स  
 पुण्डरीकी राजा कण्डरीक शिषिकाया समुपवेद्य महता समारोहेण सह नलिनी  
 यने उद्याने समायाति, तत्र स्थितेभ्य’ स्थविरैभ्यः स्यदुभ्रातर शिष्यभिक्षा  
 ददाति । अनन्तर स कण्डरीकः प्रवजित सन् अनगारो जातः । तथा ‘एका  
 रसगविज्ज’ एकादशाह्वित्=एकादशाह्वानयात् जातः । तत’ खलु स्थविरा भग

के लिये आग्यापनाओं द्वारा, प्रज्ञापनाओं द्वारा विज्ञापनाओं द्वारा  
 सज्ञापनाओं द्वारा, समर्थ नहीं हो गये-तब उन्होंने बिना इच्छा के ही  
 कडरीक कुमार को दीक्षा ग्रहण करने रूप अर्थ की स्वीकृति देने के  
 बाद निष्क्रमणोपयोगी समस्त वस्तुओं को उन्होंने मंगवाया-जब वे आ  
 चुकी-तब उन्होंने उसका सविधि दीक्षामिपेक से अभिसिचन किया ।  
 अभिपेक के बाद पुण्डरीक राजा कडरीक को शिषिका में बैठाकर बड़े  
 समागोह के साथ नलिनीवन में आये । वहा आकर उन्होंने स्थविरों के  
 लिये अपने लघुभाई को शिष्य की भिक्षा रूप से प्रदान किया । इसके  
 बाद कडरीक ( पव्वइए अणगारेजाए ) प्रवजित होकर अनगारावस्था  
 सरत्र हो गये । ( एगारसगविज्ज, -तएण थेरा भगवतो अन्नया कयाइ  
 पुडरिगिणीओ नयरीओ णलिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमति,

वित्तित करवा भाटे आग्यापनाओ, प्रज्ञापनाओ, विज्ञापनाओ, सज्ञाप  
 नाओ वडे पणु समर्थ थर् शक्या नहि त्थारे तेमणे छिछा न ड्डोवा छताओ  
 उडरीक कुमारने दिक्षाग्रहण करवानी स्वीकृति आपी दीधी स्वीकृति आग्या  
 आइ तेमणे निष्क्रमणने लगती णधी वस्तुओ मंगावी न्थारे वस्तुओ आपी  
 गर्ह त्थारे तेमणे तेनु विधिसर दीक्षामिपेक वडे अभिसिचन कयुं अभिपेक  
 कया आइ पुण्डरीक राजा उडरीकने पालणीमा जेसाडीने लारे समारोहनी साथे  
 नलिनी वनमा आव्या त्था आवीने तेमणे स्थविराने पोताना नाना लाघने  
 शिष्यना रूपमा आपी दीधो त्थारपणी उडरीक ( पव्वइए अणगारे जाए )  
 प्रवजित थधने अनगारावस्था सपन्न थध गये।

( एगारसगविज्ज-तएण थेरा भगवतो अन्नया कयाइ पु नय

वतो ज्यदा कदाचित् पुण्डरीकिण्या नगर्या नलिनीवनात् उद्यानात् प्रतिनिष्क्राम्यन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य वहिर्जनपदविहारं विहरन्ति ॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएणं तस्स कडरीयस्स अणगारस्स तेहि अतेहि य पंतेहि य जहा सेलागस्स जाव दाहवक्कतिए यावि विहरइ । तएणं थेरा अन्नया कयाइ जेणेव पोंडरिगिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, णलिणिवणे समोसढा, पोंडरीए णिग्गए धम्मं सुणेइ । तएणं पोंडरीए राया धम्म सोच्चा जेणेव कडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कडरीय अणगार वंदइ णमसइ वदित्ता णमंसित्ता कडरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वावाहं सरोय पासइ, पासित्ता, जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, थेरे भगवते वंदइ, णमंसइ, वदित्ता णमंसित्ता एव वयासी—अहण्णं भते । कडरीयस्स अणगारस्स अहा पवत्तेहि ओसहभेसज्जेहि जाव तेडच्छं आउट्टामि, त तुब्भे ण भते । सम जाणसालासु समोसरह । तएण थेरा भगवतो पुंडरीयस्स पडिसुणेति, पडिसुणित्ता, जाव उवसपज्जित्ताणं

पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरति ) धीरे २ वे ग्यारह अगोंके पाठी भी जनगये इसके बाद उन स्थविर भगवतों ने किसी एक दिन पुंडरीकिणी नगरी के उम नलिनीवन नामके उद्यान से विहार किया सो विहार कर वे बाहिर के जनपदों में विचरने लगे ॥ सू० २ ॥

रीओ णलिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरति )

धीमे धीमे तेमए अगियाओ अगोनु अधयन करी लीयु त्थारणाह ते स्थविर लगवतोअे केअ अेअ द्विसे पुंडरीकिणी नगरीना ते नलिनीवन नामना उद्यानथी विहार कये, विहार करीने तेओ णउरना जनपदेभा विचरण करवा लाय्या ॥ सूत्र २ ॥

‘आप्रचित्’ आग्यापयितुं ४=मर्त्यपानिरोधयितुं न शक्नोतीति पूर्वेण मन्त्रेण,  
‘ताहे’ तदा ‘अकामव चेव’ अकामक एव=अनिच्छ एव ‘प्रयमद्’ एतम-  
र्थम्-कण्डरीकामिलपित मन्त्रव्याख्यम्, ‘अणुमन्निस्था’ अत्रमन्यत=स्वीकृत  
वान्, ‘जाय निरुत्वमणामिमेण’ यायन् निष्क्रमणामिपकेण’ स्वीकरणानन्तर  
निष्क्रमणोपयोगि वस्तुजातमुपनीय सविधि दीक्षामिपेकेण अभिषिञ्चति, ‘जाव  
थेराण सीमभिन्व दलयड’ यायन्-स्थविरेभ्य शिष्यभिक्षाम्=अभिषेकानन्तर स  
पुण्डरीको राजा कण्डरीक शिबिकाया समुपवेद्य महता समारोहेण सह नलिनी  
वने उद्याने समायाति, तत्र स्थितेभ्यः स्थविरेभ्यः स्वच्छुभ्रातर शिष्यभिक्षा  
ददाति । अनन्तर स कण्डरीकः प्रव्रजित सन धनगारो जातः । तथा ‘एका  
रसंगविज्ज’ एकादशाहवित्=एकादशाहसानवान् जातः । ततः सल्लु स्थविरा भग

के लिये आग्यापनाओं द्वारा, प्रज्ञापनाओं द्वारा विज्ञापनाओं द्वारा  
सज्ञापनाओं द्वारा, समर्थ नहीं हो गये-तब उन्होंने बिना इच्छा के ही  
कण्डरीक कुमार को दीक्षा ग्रहण करने रूप अर्थ की स्वीकृति देने के  
बाद निष्क्रमणोपयोगी समस्त वस्तुओं को उन्होंने मंगवाया-जब वे आ  
चुकी-तब उन्होंने उसका सविधि दीक्षामिपेक से अभिषिञ्चन किया।  
अभिषेक के बाद पुण्डरीक राजा कण्डरीक को शिबिका में बैठाकर बड़े  
समारोह के साथ नलिनीवन में आये। वहाँ आकर उन्होंने स्थविरो के  
लिये अपने लघुभ्राई को शिष्य की भिक्षा रूप से प्रदान किया। इसके  
बाद कण्डरीक (पञ्चइए अणगारेजाए) प्रव्रजित होकर अनगारावस्था  
सरत हो गये। (एगारसंगविज्ज, -तएण थेरा भगवतो अन्नया कयाइ  
पुडरिगिणीओ नयरीओ णालिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमति,

विखलित करवा भाटे आग्यापनाओ, प्रज्ञापनाओ, विज्ञापनाओ, सज्ञाप  
नाओ वडे पणु समर्थ थय शक्या नहि त्थारे तेमणे छिछा न पुडोवा छताओ  
कण्डरीक कुमारने दिक्षाग्रहण करवानी स्वीकृति आपी दीधी स्वीकृति आग्या  
आइ तेमणे निष्क्रमणने लगती जधी वस्तुओ मंगावी ज्थारे वस्तुओ आवी  
गय त्थारे तेमणे तेनु विधिसर दीक्षालिषेक वडे अभिषिञ्चन कयुं अभिषेक  
कर्या आइ पुण्डरीक राजा कण्डरीकने पालणीमा जेसाडीने जारे समारोहनी साथे  
नलिनी वनमा आग्या त्था आवीने तेमणे स्थविरेने पोताना नाना लार्थने  
शिष्यना रूपमा आपी दीधो त्थारपछी कण्डरीक (पञ्चइए अणगारे जाए)  
प्रव्रजित थयने अनगारावस्था सपन्न थय गये।

(एगारसंगविज्ज-तएण थेरा भगवतो अन्नया कयाइ पु० ० ० नय-

टीका—‘ तएण तस्स ’ इत्यादि । तत खलु तस्य कण्डरीकस्य अनगारस्य तैः ‘ अतेहि य ’ अन्तैश्च=वल्लचणकादिभिः, ‘ पतेहि य ’ प्रान्तैश्च=पर्युषिते, नीरसैः स्वादवर्जितैर्वा अशनादिभिः यथा शैलकस्य राजर्षेस्तथा ऽस्याऽपितथा-विवमाहार कुर्वतो यावत्प्रकृतिमुकुमारकस्य सुखोपचितस्य शरीरे वेदना प्रादुर्भूता, कीदृशीत्याह — उज्ज्वला यावद् दुरधिसत्त्वा = सोढुमशक्या पुन सुखलेशरहिता कण्डरीकः ‘ दाहवक्कतिण् ’ दाहव्युत्क्रान्तिक = दाहस्य शरीरसन्तापरूपरोगस्य व्युत्क्रान्ति = उत्पत्तिर्यस्यासौ दाहव्युत्क्रान्तिक = करचरणादिज्वलनवान् चापि विहरति । तत खलु स्थविरा अन्यदा कदाचित् यत्रैव पुण्डरीकिणी नगरी तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य, नलिनीवने समवसृताः । पुण्डरीकस्तद्दर्शनार्थं स्वभवना-

‘ तएण तस्स कडरीयस्स ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तस्स कडरीयस्स अनगारस्स तेहि अतेहि पतेहि य जहासेलगस्स जाव दाहवक्कतिण् यावि विहरइ) उस कडरीक अनगारके वल्लचणक आदि रूप अन्ताहार करनेसे तथा पर्युषित अथवा नीरस आहार रूप प्रान्ताहार करनेसे शैलक राजर्षिकी तरह प्रकृतिसे सुकुमार सुखोपचित होने के कारण शरीरमें वेदना उत्पन्न हो गई । जो उज्ज्वला एव सोढुमशक्या थी । इस तरह शरीर सन्तापरूप रोग की उत्पत्ति से वे कडरीक अनगार कर चरण आदि में जलन होने के कारण सुख के लेश से भी वर्जित हो गये । ( तएण येरा अन्नया कयाइ जेणेव पोडरिगिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नलिणिवणे समोसदा पोडरीए

तएण तस्स कडरीयस्स इत्यादि—

टीकार्थ—( तएण ) त्थारपछो,

( तस्स कडरीयस्स अनगारस्स तेहि अतेहि पतेहि य जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कतिण् यावि विहरइ )

ते कडरीक अनगारना शरीरमा णट्ठयणुड वगेरे इप अताहार करवाथी तेमज पर्युषित अथवा नीरस आहार इप प्रान्ताहार करवाथी शैलक राजर्षिनी जेम प्रकृतिथी सुकुमार अने सुखोपचित होवा णट्ठ वेदना उत्पन्न थई गछ ते वेदना अत्यत उग्र अने असह्य छती आ प्रमाणे शरीर सन्ताप इप शरीर उ पत्तिथी ते कडरीक अनगार हाथ पगमा णगतशने लीधे थोडी सुभशाति पणु भेगवी शक्या नहि

( तएण येरा अन्नया कयाइ जेणेव पोडरिगिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नलिणिवणे समोसदा पोडरीए निगाए धम्म मुणेड, तएण पोडरीए राया



विहरन्ति। तएणं पुंडरीए राया जहा मडुण सेलागस्स जाव  
 वलियसरीरे जाए । तएणं थेरा भगवतो पोंडरीय राय पुच्छंति,  
 पुच्छित्ता वहिया जणवयविहारं विहरति । तएण से कंडरीए  
 ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णांसि अस-  
 णपाणखाइमसाइमसि मुच्छिण गिद्धे गट्टिए अज्जोववण्णे णो  
 संचाएइ पोंडरीय रायं आपुच्छित्ता वहिया अब्भुज्जएण जण  
 वयविहारं विहरित्तए । तत्थेव ओसण्णे जाए । तएण से पोंड-  
 रीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अतेउरपरियालसंप-  
 रिबुडे राया जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवा-  
 गच्छित्ता, कंडरीयं अणगार तिवखुत्तो आयाहिणं पयाहिण  
 करेइ करित्ता वदइ णमसइ वदित्ता णमंसित्ता, एवं वयासी-  
 धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया । तव माणुस्सए जम्मजीवियफले  
 जे णं तुम रज्ज ध्व जाव अतेउर चावि छड्डयित्ता जाव विगो  
 वइत्ता जाव पठवइए । अहण्णं अहण्णे अकथपुत्ते रज्जे जाव  
 अन्तेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झो  
 ववस्से नो सत्त्वाएमि जाव पठ्वइत्तए । त धन्नेसि णं तुमं देवा  
 णुप्पिया । जाव जीवियफले । तएणं से कंडरीए अणगारे पुड-  
 रीयस्स एयमट्ठ णो आढाइ जाव सच्चिट्ठइ । तएणं कंडरीए पोंड-  
 रीएणं दोच्चपि तच्चंपि एव वुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे  
 लउजाए गारवेणय पोंडरीय राय आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहि  
 सद्धिं वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ सू०३ ॥

अनगारस्य 'अहापवत्तेहि' यथा प्रवृत्तैः=प्रासुकैरित्यर्थः 'ओसहभेसज्जेहि' औप-  
धभैषज्यैः 'जावतेइच्छ' यावत् चिकित्ताम् 'आउट्टामि' आवर्तयामि=कारयामि,  
'त' तत्=तस्मात् कारणात् यूय खलु हे भदत् ! मम यानशालासु समोसरत्=  
आगच्छत । ततः खलु स्थविरा भगवन्त पुण्डरीकस्य एतमर्थं प्रतिश्रुयन्ति=एत-  
द्वचनं स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य यावत्-उपसपद्य=यानशाला समाश्रित्य  
विहरति । ततः खलु पुण्डरीको राजा 'जहा मडुए सेलगस्स जाव  
वलियसरीरे जाए' यथा मण्डकः शौलकस्य यावद् उलिफशरीरो जातः =

कडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहि ओसहभेसज्जेहि जाव तेइच्छ  
आउट्टामि-त तुव्वे णं भते ! मम जाणशालासु समोसरत्-तएण थेरा  
भगवतो पुण्डरीयस्स पडिसुणेति, पडिसुणिता जाव उपसपज्जित्ताण  
विहरति ) देखकर जहा स्थविर भगवत विराजमान थे-वहा पर वे आये  
वहा आकर उन्होंने ने स्थविर भगवतों को वदना एवं नमस्कार किया-  
वदना नमस्कार करके फिर उन्होंने ने उनसे इस प्रकार कहा हे भदत् !  
मैं कडरीक अनगार की यथा प्रवृत्त-प्रासुक-औपध, भैषज्यों द्वारा  
यावत् चिकित्सा करवाऊंगा-अतः हे भदत् ! आपलोग मेरी यानशाला  
में यहा से विहार कर पधारें-वही ठहरें-। इस प्रकार पुण्डरीक राजा की  
प्रार्थना को उन स्थविर भगवतो ने स्वीकार कर लिया-और वहा से  
विहार कर वे पुण्डरीक राजा की यानशाला में आकर ठहर गये । ( तएण  
पुण्डरीए राया जहामडुए सेलगस्स जाव वलियसरीरे जाए तएण थेरा

गारस्स अहापवत्तेहि ओसहभेसज्जेहि जाव तेइच्छ आउट्टामि त तुव्वेण भते  
मम जाणशालासु समोसरत्-तएण थेरा भगवतो पुण्डरीयस्स पडिसुणेति, पडि  
सुणिता जाव उपसपज्जित्ताण विहरति )

नेधने तेओ न्या स्थविर भगवत विराजमान होता त्या आया त्या  
आवीने तेभणे स्थविर भगवतोने वदन अने नमस्कार कया वदन अने  
नमस्कार उरीने तेभणे तेभने आ प्रभाणे विनती करी के छे लहन्त । हु  
कडरीक अनगारनी यथाप्रवृत्त-प्रासुक-औपध-भैषज्ये ( दवाओ ) वडे यावत्  
चिकित्सा ( इलाज ) करवा भागु छु ओटला भाटे छे लहन्त ! तमे सौ  
अडुथी विहार उरीने भारी यानशालाभा आवे अने त्याज रोकाओ आ  
प्रभाणे पुण्डरीक राजनी विनतीने ते स्थविर भगवतोओ स्वीकार करी लीघे  
अने त्याथी विहार करीने तेओ पुण्डरीक राजनी यानशालाभा आवीन रोकाछ गया

( तएण पुण्डरीए राया जहा मडुए सेलगस्स जाव वलियसरीरे जाए तएण थेरा

નિર્ગત તત્ર ગત્વા ધર્મ ધ્રજોતિ । તત્ર ચતુ પુઢરીકો રાજા ધર્મ શ્રુત્વા યત્રેવ  
કણ્ડરીકોઽનગારસ્તગત્ર ઉપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય, યણ્ડરીક ચન્દતે નમસ્યતિ,  
ચન્દિત્વા નમસ્યિત્વા યણ્ડરીકસ્ય અનગારમ્ય શરીર 'સર્વાવાહ' સર્વાવાહ=  
પીડાસહિત 'સરોય' સરોય=રોગસન્નિત 'વાયઃ' વાયનિ, સ્થિરા યત્રેવ સ્થિરા  
ભગવ તત્રગત્રેવ ઉપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સ્થિરા ભગવતો ચન્દત નમસ્યતિ, ચન્દિત્વા  
નમસ્યિત્વા યમમાદીત્- 'અહણ મતે !' અહ ચતુ હે મદન્ત ! કણ્ડરીકસ્ય

નિર્ગત ધર્મ સુણેઢ, તત્રણ પોઢરીક રાયા ધર્મ સોચા જેણેવ કઢરીક  
અણગારે તેણેવ ઉપાગચ્છત્ત્વ ઉપાગચ્છિત્તા કઢરીય અણગાર વદઢ નમ  
સઢ, વદિત્તા નમસિત્તા કઢરીયસ્સ અણગારસ્સ સરીરગ સર્વાવાહ  
સરોય પાસઢ ) કિસી ણક મમય વે સ્થવિર પુઢરીકિણી નગરી મેં વિહાર  
કરતે હુણ આયે । રહા આકર વે નલિનીવન નામ કે ઉદ્યાન મેં ઠહર  
ગયે । આગમન સુનકર પુઢરીક રાજા ડન કો વદના ણવ ડનસે ધર્મશ્ર  
વણ કરને કી ભાવના સે અપને રાજમહલ સે નિકલકર ડસ નલિનીવન  
ઉદ્યાન મેં આયે-સ્થવિરોં ને ડન્હે ધર્મ કા ઉપદેશ દિયા । ધર્મ કા ઉપ  
દેશ શ્રવણ કર ફિર વે જહા કઢરીક અનગાર થે ડનકે પાસ આયે ।  
વહા આકર ડન્હોં ને ડનકો વદના કી નમસ્કાર કિયા- । વદના નમસ્કાર  
કરકે ડન્હોં ને કઢરીક અનગારકે શરીર કો પીડાસહિત એવ રોગસહિત  
દેહ્વા-( પાસિત્તા જેણેવ થેરા ભગવતો તેણેવ ઉપાગચ્છત્ત્વ, ઉપાગચ્છિત્તા  
થેરે ભગવતે વદઢ ણમસઢ, વદિત્તા ણમસિત્તા એવ વયાસી-અહણ મતે !

ધર્મ સોચા જેણેવ કઢરીક અણગારે તેણેવ ઉપાગચ્છત્ત્વ, ઉપાગચ્છિત્તા કઢરીય  
અણગાર વદઢ નમસઢ, વદિત્તા નમસિત્તા કઢરીયસ્સ અણગારસ્સ સરીરગ સર્વા  
વાહ સરોય પાસઢ )

કેાઈ એક વખતે તે સ્થવિર પુઢરીકિણી નગરીમ વિહાર કરતા કરતા આવ્યા  
ત્યા આવીને તેઓ નલિનીવન નામના ઉદ્યાનમા રોકાયા તેમનુ આગમન  
સાભળીને પુઢરીક રાજા તેમને વદન કરવા માટે તૃપ્ત । તેમની પાસેથી ધર્મો  
પદ્દેશ માલળવા માટે પોતાના રાજમહેલથી નીકળીને તે નલિનીવન ઉદ્યાનમા  
આવ્યો સ્થવિરોએ તેમને ધર્મોપદેશ આપ્યો, ધર્મોપદેશ સાભળીને તેઓ  
ત્યા કઢરીક અનગાર હતા તેમની પાસે ગયા ત્યા જઈને તેમણે તેમને વદન  
અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને નમસ્કાર કરીને તેમણે કઢરીક અનગારના  
શરીરને પીડા સહિત અને રોગયુક્ત જોયુ

( પાસિત્તા જેણેવ થેરા ભગવતો તેણેવ ઉપાગચ્છત્ત્વ, ઉપાગચ્છિત્તા થેરે ભગ  
વતે વદઢ, ણમસઢ, વદિત્તા ણમસિત્તા એવ વયાસી-અહણ મતે ! ) અણ

अनगारस्य 'अहापवत्तेहि' यथा प्रवृत्तैः=प्रासुरैरित्यर्थः 'ओसहभेसज्जेहि' औप-  
धैयज्यैः 'जावतेडच्छ' यावत् चिकित्साम् 'आउट्टामि' आवर्तयामि=कारयामि,  
'त' तत्=तस्मान् कारणात् यूयं खलु हे भदत् ! मम यानशालासु समवसरत=  
आगच्छत । ततः खलु स्थविरा भगवन्त पुण्डरीकस्य एतमर्थं प्रतिश्रवन्ति= एत  
द्वचनं स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य यावत्-उपसपद्य=यानशाला समाश्रित्य  
विहरति । ततः खलु पुण्डरीको राजा 'जहा मडुए सेलगस्स जाव  
वलियसरीरे जाए' यथा मण्डकः शौलकस्य याम्दं वलिकशरीरो जातः =

कडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहि ओसहभेसज्जेहि जाव तेदच्छ  
आउट्टामि-त तुम्हे ण भते । मम जाणशालासु समोसरह-तण्ण थेरा  
भगवतो पुण्डरीयस्म पडिसुणेति, पडिसुणिता जाव उपसपज्जित्ताण  
विहरति ) देखकर जहा स्थविर भगवत विराजमान थे-वहा पर वे आये  
वहा आकर उन्होंने ने स्थविर भगवतों को वदना एव नमस्कार किया-।  
वदना नमस्कार करके फिर उन्होंने ने उनसे इस प्रकार कहा हे भदत् !  
मैं कडरीक अनगार की यथा प्रवृत्त-प्रासुक-औपध, भैयज्यों द्वारा  
यावत् चिकित्सा करवाऊंगा-अतः हे भदत् ! आपलोग मेरी यानशाला  
में यहा से विहार कर पधारें-वहीं ठहरें-। इस प्रकार पुण्डरीक राजा की  
प्रार्थना को उन स्थविर भगवतो ने स्वीकार कर लिया-और वहा से  
विहार कर वे पुण्डरीक राजा की यानशाला में आकर ठहर गये । ( तण्ण  
पुण्डरीए राया जहामडुए सेलगस्स जाव वलियसरीरे जाए तण्ण थेरा

गारस्स जहापवत्तेहि ओसहभेसज्जेहि जाव तेदच्छ आउट्टामि त तुम्हेण भते  
मम जाणशालासु समोसरह-तण्ण थेरा भगवतो पुण्डरीयस्म पडिसुणेति, पडि  
सुणिता जाव उपसपज्जित्ताण विहरति )

जेधने तेओ न्या स्थविर भगवत विराजमान होता त्या आवा त्या  
आवीने तेभण्णे स्थविर भगवतोने वदन अने नमस्कार कर्था वदन अने  
नमस्कार करीने तेभण्णे तेमने आ प्रभाण्णे विनती करी के डे लहन्त । हु  
कडरीक अनगारनी यथाप्रवृत्त-प्रासुक-औपध-लैयज्ये ( दवाओ ) वडे यावत्  
चिकित्सा ( उलाह ) करवा भाग्य छु ओटला भाटे डे लहन्त । तमे सौ  
अडीधा विहार करीने भागी यानशालाभा आवे अने त्याज्जेकाओ आ  
प्रभाण्णे पुण्डरीक राजानी विनतीने ते स्थविर भगवतोअे स्वीकार करी लीधा  
अने त्याथी विहार करीने तेओ पुण्डरीक राजानी यानशालाभा आवीन दोकाध गया

( तण्ण पुण्डरीए राया जहा मडुए सेलगस्स जाव वलियसरीरे जाए तण्ण थेरा

નિર્ગત તત્ર ગત્વા ધર્મ ધ્રુજોતિ । તત્ર ચલુ પુઢરીકો રાજા ધર્મ શ્રુત્વા યત્રે  
કણ્ઢરીકોઽનગારસ્તત્રોઽપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય, ઇન્દ્રીક ચન્દ્રતે નમસ્યતિ,  
ચન્દ્રિયા નમસ્યતા કણ્ઢરીકસ્ય અનગારસ્ય શરીર 'સ-સાગ્રહ' મઘ્યાવાય=  
પીડાસહિત 'સરોય' સરોય=રોગમન્તિ 'પામઃ' વચ્ચનિ, દૃષ્ટ્વા યત્રેવ સ્થવિરા  
ભગવત્તત્રોઽપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સ્થવિરાઽભગવતો ચન્દ્રતે નમસ્યતિ, ચન્દ્રિયા  
નમસ્યતા ણમસાગ્રીત્-અહ્ણ મતે !' અહ ચલુ હે મદન્ત ! કણ્ઢરીકસ્ય

નિગ્ગણ ધમ્મ સુણેહ, તણ્ણ પોઢરીણ રાયા ધમ્મ સોચ્છા જેણેવ કહરીણ  
અણગારે તેણેવ ઉપાગચ્છહ ઉપાગચ્છિત્તા કહરીય અણગાર વદહ નમ  
સહ, વદિત્તા નમસિત્તા કહરીયસ્સ અણગારસ્સ સરીરગ સઘ્વાવાહ  
સરોય પાસહ ) કિસી ણ્ક સમય વે સ્થવિર પુઢરીકિણી નગરી મેં વિહાર  
કરતે હુણ આયે । યહા આકર વે નલિનીવન નામ કે ઉદ્યાન મેં ઠહર  
ગયે । આગમન સુનકર પુઢરીક રાજા ડન કો વદના ણવ ડનસે ધર્મશ્ર  
વણ કરને કી માવના સે અપને રાજમહલ સે નિકલકર ડસ નલિનીવન  
ઉદ્યાન મેં આયે-સ્થવિરોં ને ડન્હે ધર્મ કા ઉપદેશ દિયા । ધર્મ કા ઉપ  
દેશ શ્રવણ કર ફિર વે જહા કહરીક અનગાર યે ડનકે પાસ આયે ।  
વહા આકર ડન્હોં ને ડનકો વદના કી નમસ્કાર કિયા-। વદના નમસ્કાર  
કરકે ડન્હોં ને કહરીક અનગારકે શરીર કો પીડાસહિત ણવ રોગસહિત  
દેખા--( પાસિત્તા જેણેવ યેરા ભગવતો તેણેવ ઉપાગચ્છહ, ઉપાગચ્છિત્તા  
થેરે ભગવતે વદહ ણમસહ, વદિત્તા ણમસિત્તા ણવ વયાસી-અહ્ણ મતે !

ધમ્મ સોચ્છા જેણેવ કહરીણ અણગારે તેણેવ ઉપાગચ્છહ, ઉપાગચ્છિત્તા કહરીય  
અણગાર વદહ નમસહ, વદિત્તા નમસિત્તા કહરીયસ્સ અણગારસ્સ સરીરગ સઘ્વા  
વાહ સરોય પાસહ )

કોઈ એક વખતે તે સ્થવિર પુઢરીકિણી નગરીમ વિહાર કરતા કરતા આવ્યા  
ત્યા આવીને તેઓ નલિનીવન નામના ઉદ્યાનમા રોકાયા તેમનુ આગમન  
સાભળીને પુઢરીક રાજા તેમને વદન કરવા માટે તથા તેમની પાસેથી ધર્મો  
પદેશ સાભળવા માટે પોતાના રાજમહેલથી નીકળીને તે નલિનીવન ઉદ્યાનમા  
આવ્યો સ્થવિરોએ તેમને ધર્મોપદેશ આપ્યો, ધર્મોપદેશ સાભળીને તેઓ  
જ્યા કહરીક અનગાર હતા તેમની પાસે ગયા ત્યા જઈને તેમણે તેમને વદન  
અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને નમસ્કાર કરીને તેમણે કહરીક અનગારના  
શરીરને પીડા સહિત અને રોગયુક્ત જોયુ

( પાસિત્તા જેણેવ યેરા ભગવતો તેણેવ ઉપાગચ્છહ, ઉપાગચ્છિત્તા થેરે ભગ  
વતે વદહ, ણમસહ, વદિત્તા ણમસિત્તા ણવ વયાસી-અહ્ણ મતે ! )



अनंगारस्य 'अहापवत्तेहि' यथा प्रवृत्तैः=प्रासुकैरित्यर्थः 'ओसहभेसज्जेहि' औप-  
धभैषज्यैः 'जावतेइच्छ' यावत् चिकित्साम् 'आउट्टामि' आवर्तयामि=कारयामि,  
'त' तत्=तस्मात् कारणात् यूय खलु हे भदन्त ! मम यानशालासु समवसरत=  
आगच्छत । ततः खलु स्थविरा भगवन्त पुण्डरीकस्य एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति= एत  
द्वचन स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य यावत्-उपसपद्य=यानशाला समाश्रित्य  
विहरति । ततः खलु पुण्डरीको राजा 'जहा मडुए सेलगस्स जाव  
वलियसरीरे जाए' यथा मण्डकः शौलकस्य यावद् मलिकशरीरो जातः =

कडरीयस्स अनंगारस्स अहापवत्तेहि ओसहभेसज्जेहि जाव तेइच्छ  
आउट्टामि-त तुब्भे ण भते । मम जाणसालासु समोसरह-तएण थेरा  
भगवतो पुण्डरीयस्स पडिसुणेति, पडिसुणिता जाव उपसपज्जित्ताण  
विहरति ) देखकर जहा स्थविर भगवत विराजमान थे-वहा पर वे आये  
वहा आकर उन्होंने ने स्थविर भगवतों को वदना एव नमस्कार किया-  
वदना नमस्कार करके फिर उन्होंने ने उनसे इस प्रकार कहा हे भदन्त !  
मैं कडरीक अनंगार की यथा प्रवृत्त-प्रासुक-औपध, भैषज्यों द्वारा  
यावत् चिकित्सा करवाऊंगा-अतः हे भदन्त ! आपलोग मेरी यानशाला  
में यहा से विहार कर पधारें-वही ठहरें-। इस प्रकार पुण्डरीक राजा की  
प्रार्थना को उन स्थविर भगवतो ने स्वीकार कर लिया-और वहा से  
विहार कर वे पुण्डरीक राजा की यानशाला में आकर ठहर गये । ( तएण  
पुण्डरीए राया जहामडुए सेलगस्स जाव वलियसरीरे जाए तएण थेरा

गारस्स अहापवत्तेहि ओसहभेसज्जेहि जाव तेइच्छ आउट्टामि त तुब्भेण भते  
मम जाणसालासु समोसरह-तएण थेरा भगवतो पुण्डरीयस्स पडिसुणेति, पडि  
सुणिता जाव उपसपज्जित्ताण विहरति )

नेधने तेओ न्या स्थविर भगवत विराजमान हुता त्या आणा त्या  
आवीने तेभण्णे स्थविर भगवतोने वदन्त अने नमस्कार कर्था वदन्त अने  
नमस्कार करीने तेभण्णे तेभने आ प्रभाण्णे विनती करी के डे लहन्त । हु  
कडरीक अनंगारनी यथाप्रवृत्त-प्रासुक-औपध-भैषज्ये ( दवाओ ) वडे यावत्  
चिकित्सा ( इलाज ) करवा भागु छु ओटला भाटे डे लहन्त । तमे सौ  
अडीथा विहार करीने भारी यानशालाभा आवे अने त्याज्ये दोकाओ आ  
प्रभाण्णे पुण्डरीक राजानी विनतीने ते स्थविर भगवतोओ स्वीकार करी लीधे  
अने त्याथी विहार करीने तेओ पुण्डरीक राजानी यानशालाभा आवीन दोकाध गया  
( तएण पुण्डरीए राया जहा मडुए सेलगस्स जाव वलियसरीरे जाए तएण थेरा

यथा मण्डरीको राजा शैलकराय राजर्षे मासुरीरायभैषज्यैश्चिकित्सामकारयत्,  
तथैव पुण्डरीकोऽपि कण्डरीरस्यानगरस्य यथा योग्यैरायभैषज्यैश्चिकित्सा  
कारयतिस्म यावत् कनिषदैर्दिने. कण्डरीको वलितशरीर = निरामयो जातः । ततः  
खलु स्थविरा भगवन्तः पुण्डरीक राजान् आपृच्छन्ति, आपृच्छ्य बहिर्जनपदवि  
हारं विहरन्ति । ततः खलु स कण्डरीकः तस्मान् 'रोगायकाओ' रोगातङ्काद्  
विप्रमुक्तः सन् तस्मिन् 'मनुगगवि' मनोज्ञे = मणीये अशनपानवायस्वाये चतु  
र्विधे आहारे 'मुच्छिष्ट' मूर्च्छितः = मूर्च्छा प्राप्तः = आमक्त इत्यर्थः, 'गिद्धे' गृद्धः =  
आकाङ्क्षावान्, 'गदिए' ग्रन्थितः = रसास्वादो नियतमानसः, 'अज्झोववण्णे'  
भगवतो पौण्डरीय राय पुच्छति, पुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विह  
रति, तण्ण से कण्डरीए ताओ रोगायकाओ विप्रमुक्के समणे तसि  
मणुण्णसि असणपाणग्वाइमसाइमसि मुच्छिष्ट गिद्ध गदिए अज्झोववण्णे  
णो सचाएइ पौण्डरीय राय आपुच्छित्ता बहिया अज्झुज्जण जणवय  
विहारं विहरित्ताण ) इसके बाद महरू ने जिस प्रकार शैलकराजर्षि की  
प्राप्तुक औषध, भैषज्यों द्वारा चिकित्सा करवाई थी उसी प्रकार पुण्डरीक  
राजा ने भी कण्डरीक अनगर की यथायोग्य औषध भैषज्यों द्वारा  
चिकित्सा करवाई—इस से वे वलितशरीर निरोग हो गये । इसके अन  
न्तर उन स्थविर भगवतो ने वहाँ से विहार करने के लिये पुण्डरीक राजा  
से पूछा—। बाद में वे वहाँ से बाहिर जनपदों में विहार कर गये । कण  
डरीक अनगर कि जो रोगातकसे निर्मुक्त हो चुके थे मनोज्ञ अशन, पान,  
स्वाद्य, एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार में इतने अधिक आसक्त हो गये

भगवतो पौण्डरीय राय पुच्छति, पुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरति, तण्ण  
से कण्डरीए ताओ रोगायकाओ विप्रमुक्के समणे तसि मणुण्णसि—असणपाण  
ग्वाइमसाइमसि मुच्छिष्ट गिद्ध गदिए अज्झोववण्णे णो सचाएइ पौण्डरीय राय  
आपुच्छित्ता बहिया अज्झुज्जण जणवयविहारं विहरित्ताण )

त्यारपछी मड़के जेभ शैलक राजर्षिनी प्राप्तुक, औषध अने लैषज्यो  
वडे चिकित्सा करावडावी हुती तेमज पुण्डरीक राजाये पणु कण्डरीक अनगरनी  
हुयित औषध-लैषज्यो ( दवाओ ) वडे चिकित्सा करावडावी तेथी तेओ  
निरोग-सण्ण णनी गय। त्यारपछी ते स्थविर भगवतोओ त्याथी विहार  
करवा भाटे पुण्डरीक राजाने पूछथु त्यारभाह तेओ णडारना जनपदोभा विहार  
करी गया रोगातगोथी निर्मुक्त थछ गयेला कण्डरीक अनगर ते मनोस,  
अशन, पान, आद्य अने स्वाद्यरूप आर जतना आहारभा ओटला अधा  
आसक्त थछ गया—गृद्ध णनी गया, अथित-रसना आस्वादनभा निजद्ध भान

अध्युपपन्नः=सर्वथा आसक्तः सन् नो शक्नोति पुण्डरीके राजानमापृच्छन् 'महिया'  
बहि 'अभ्युज्जएण' अभ्युद्यतेन=उग्रविहारेण खलु विहर्तुम्, किन्तु 'तत्थेव'  
तत्रैव=यानशालायामेव 'ओसण्णे' अपसन्नः,=शिथिलसाधुसमाचारीवान् जातः।  
तत खलु स पुण्डरीको राजा 'इमीसे कहाए' अस्या, कथायाः=कण्डरीकोऽनगारो-  
ऽवसन्नो जातः ' इति वृत्तान्तस्य लब्धार्थः सन् स्नातः ' अतेउरपरियालसपरि-  
वुडे ' अन्तःपुरपरिवारसपरिवृतः, यत्रैव कण्डरीकोऽनगारस्तत्रैव उवागच्छति,  
उवागत्य, कण्डरीकं त्रिः कृत्वा आदक्षिणं प्रदक्षिणं करोति, कृत्वा, वन्दते नमस्यति,  
वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्-धन्योऽसि खलु त्वं हे देवानुमिय ! यतस्तम्  
' कयट्ठे ' कृतार्थः=विहितजीवनकृत्य ' कयपुन्ने ' कृतपुण्यः=विहितप्रवृत्तितत्त्वैः।  
पुनः सुलद्धे ' सुलब्ध=सुष्ठुतया प्राप्त खलु हे देवानुमिय ! ' तव ' त्वया ' माणु-  
स्सए ' मानुष्यक=मनुष्यसम्बन्धि, ' जम्मजीवियफले ' जन्मजीवितफलम्-जन्म-

-गृह्य वन गये ग्रथित-रसास्वाद मे निवद्धमानसवाले हो गये, और  
अध्युपपन्न वन गये-अर्थात् सर्वथा आसक्त वन गये कि वहाँ से बाहिर  
उग्र विहार करने के लिये उनका मन ही नहीं हुआ-अतः उन्हो ने  
पुण्डरीक नरेश से विहार करने की कोई बात ही नहीं पूछी किन्तु  
( तत्थेव-ओसन्ने जाए ) वही पर वे रहते २ शिथिल साधुसमाचारीवाले  
वन गये। ( तएण से पोंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समणे ण्हाए अंते  
उरपरियालसपरिवुडे राया जेणेव कण्डरीए अणगारे तेणेव उवागच्छड,  
उवागच्छित्ता कण्डरीय अणगार त्तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ,  
करित्ता वदइ, णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी-धन्नेसिण तुम  
देवाणुप्पिया ! कयत्थे कयपुन्ने कयलक्खणे सुलद्धेण देवाणुप्पिया ! तव  
माणुस्सजन्मजीवियफले जेण तुम रज्जं च जाव अतेउर चावि छड्डित्ता

सवाणा थछ गया अने अध्युपपन्न णनी गया अट्ठे डे तेओ। अकम्म आसक्ता  
थछ गया डे त्यामी णडार उग्र विहार करवा भाटे पणु तेओ। तैय २ थया  
नडि अथी तेमणे पुण्डरीक राजाने विहार करवानी आणतमा डधञ्च पूछथु  
नडि पणु ( तत्थेव ओसन्ने जाए ) त्याञ्च गडेटा रडेटा तेओ। शिथिल साधु  
समाचारी थछ गया अट्ठे डे साधुओना आचारमा तेओ। शिथिन थछ गया

( तएण से पोंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समणे ण्हाए अतेउरपरियाल-  
सपरिवुडे राया जेणेव कण्डरीए अणगारे तेणेव उवागच्छड, उवागच्छित्ता कण्डरीय  
अणगार त्तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ, करित्ता वदइ णमसइ, वदित्ता  
णमसित्ता एव वयासी-धन्नेसि ण तुम देवाणुप्पिया ! कयत्थे कयपुन्ने कयलक्खणे

यथा मण्डको राजा शौलकस्य राजर्षे मापुर्त्तरीय रभैपज्यैश्चिकित्सामकारयत्,  
 तथैव पुण्डरीकोऽपि कण्डरीकस्यानगारस्य यथा योग्यैर्गोप्यमैषज्यैश्चिकित्सां  
 कारयतिस्म यान् कतिपयैर्दिने कण्डरीको वलितगिर = तिरामयो जातः । ततः  
 खलु स्थविरा भगवन्तः पुण्डरीक राजान् आपृच्छन्ति, आपृच्छ्य बहिर्जनपदवि  
 हारं विहरन्ति । ततः खलु स कण्डरीकः तस्मात् 'रोगायकाओ' रोगातङ्काव  
 विप्रमुक्तः सन् तस्मिन् 'मनुग्गति' मनोक्षे = मणीये जशनपानवाद्यस्वाद्ये चतु  
 र्विधे आहारे 'मुच्छिष्टे' मूर्च्छितः = मूर्च्छा प्राप्तः = आसक्त इत्यर्थः, 'गिद्धे' गृद्धः =  
 आकाङ्क्षावान्, 'गद्विष्टे' ग्रन्थितः = रसास्वादो निरुद्धमानसः, 'अज्झोववण्णे'  
 भगवतो पौंडरीय राय पुच्छति, पुच्छित्ता वहिया जणवयविहारं विहरति,  
 तएण से कण्डरीए ताओ रोगायकाओ विप्पमुक्के समणे तसि मणुण्णसि  
 असणपाणग्गमसाहमसि मुच्छिष्टे गिद्धे गद्विष्टे अज्झोववण्णे णो सचाएइ  
 पौंडरीय राय आपुच्छित्ता वहिया अभुज्जएण जणवयविहारं विहरित्तए )  
 इसके बाद मण्डक ने जिस प्रकार शौलकराजर्षि की  
 प्राप्नुक औषध, भैषज्यों द्वारा चिकित्सा करवाई थी उसी प्रकार पुण्डरीक  
 राजा ने भी कण्डरीक अनगार की यथायोग्य औषध भैषज्यों द्वारा  
 चिकित्सा करवाई—इस से वे वलितशरीर निरोग हो गये । इसके अन  
 न्तर उन स्थविर भगवतो ने वहाँ से विहार करने के लिये पुण्डरीक राजा  
 से पूछा— बाद में वे वहाँ से बाहिर जनपदों में विहार कर गये । कण  
 डरीक अनगार कि जो रोगातकसे निर्मुक्त हो चुके थे मनोज्ञ अशन, पान,  
 स्वाद्य, एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार में इतने अधिक आसक्त हो गये

भगवतो पौंडरीय राय पुच्छति, पुच्छित्ता वहिया जणवयविहारं विहरति, तएण  
 से कण्डरीए ताओ रोगायकाओ विप्पमुक्के समणे तसि मणुण्णसि—असणपाण  
 ग्गमसाहमसि मुच्छिष्टे गिद्धे गद्विष्टे अज्झोववण्णे णो सचाएइ पौंडरीय राय  
 आपुच्छित्ता वहिया अभुज्जएण जणवयविहारं विहरित्तए )

त्यारपणी मण्डके जेम शौलक राजर्षिनी प्राप्नुक, औषध अने लैषज्यो  
 वडे चिकित्सा करावडावी हुती तेमज पुण्डरीक राजाणे पणु कण्डरीक अनगारनी  
 हुथित औषध-लैषज्यो ( दवाओ ) वडे चिकित्सा करावडावी तेथी तेओ  
 निरोग-सणण णनी गमा त्यारपणी ते स्थविर भगवतोणे त्याथी विहार  
 करवा माटे पुण्डरीक राजा ने पूछ्यु त्यारणाह तेओ णडारना जनपदोभा विहार  
 करी गया रोगातगोथी निर्मुक्त थछ गयेला कण्डरीक अनगार ते मनोज्ञ,  
 अशन, पान, आद्य अने स्वाद्यरूप चार जतना आहारभा ओटला अधा  
 आसक्ता थछ गया—गृद्ध णनी गया, ग्रन्थित—रसना आस्वादनभा निरुद्ध मान

કારણાત્ સ્વલુ વ્રમીમિ યન્ ધન્યોઽમિ ત્વ હે દેવાનુપ્રિય ! ' જાવ સુલભ જન્મ  
જીવિતફલમ્ , તતઃ સ્વલુ સ કણ્ડરીકોઽનગાર' પુણ્ડરીકસ્ય એતમર્થ=વિહારાભિ  
પ્રાયકમર્થ, નો આદિયતે યાવત્ તૂળીકઃ સતિષ્ઠતે મૌનમવલમ્બ્ય તિષ્ઠતિ । તતઃ  
સ્વલુ કણ્ડરીકઃ પુણ્ડરીકેણ દ્વિતીયમપિ તૃતીયમપિ=દ્વિતિગારમ્ , એવ=પૂર્વોક્ત-  
પ્રકારેણ, ઉક્તઃ સન્ ' અકામએ ' અકામક=કામનારહિતઃ ' અવસ્મવસે ' અવ-

દેવાણુપ્રિયા ! જાવ જીવિયફલે તણ્ણ સે કંડરીએ અણગારે પુંડરીયસ્સ  
એયમદ્દ ણો આઢાઙ્ઙ જાવ સચ્ચિદ્દહ, તણ્ણ કંડરીએ પોંડરીએણ દોચ્ચપિ  
તચ્ચપિ એવં વુત્તે સમાણે અકામએ અવસ્મવસે લજ્જાણ ગારવેણ ય પોંડ  
રીય આપુચ્છઙ્ઙ, આપુચ્છિત્તાથેરેહિં સદ્ધિં વહિયા જણવયવિહાર વિહરઙ્ઙ )  
મેં અધન્ય હું અકૂનપુણ્ય હું । જો રાજ્ય મે યાવત્ અન્તઃપુર મેં તથા મનુષ્ય  
સપ્તધી કામભોગો'મેં સ્મૃતિત યાવત્ અધ્યુપપન્ન વન્તા દુઆ હું । હમીલિયે  
પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરને મેં અસમર્થ હો રહ્યા હું । હસી કારણ સે મેં યહ કહ  
રહ્યા હું કિ તુમ ધન્ય હો, હે દેવાનુપ્રિય ! તુમને હી જન્મ ઓર જીવન  
કા ફલ જો પ્રવ્રજ્યા કા ગ્રહણ કરના હૈ-વહ અચ્છી તરહ પા લિયા હૈ ।  
પુંડરીક રાજા કી વિહાર કરને કે અભિપ્રાયવાલી હસ વાત કો સુનકર  
કંડરીક અનગાર ને ડસ પર હુન્ન ધ્યાન નહીં દિયા-ડસે આદર કી દૃષ્ટિ  
સે નહીં દેખા-કિન્તુ વે ડસે સુનકર બી ચુપચાપ બૈઠ રહે । કંડરીક  
અનગાર કી હસ સ્થિતિ કો દેખકર પુંડરીક ને દૂસરી ચાર ઓર ત્રીસરી

તુમ દેવાણુપ્રિયા ! જાવ જીવિયફલે તણ્ણ સે કંડરીએ અણગારે પુંડરીયસ્સ  
એયમદ્દ ણો આઢાઙ્ઙ, જાવ સચ્ચિદ્દહ, તણ્ણ કંડરીએ પોંડરીએણ દોચ્ચપિ તચ્ચપિ  
એવવુત્તે સમાણે અકામએ અવસ્મવસે લજ્જાણ ગારવેણ ય પોંડરીય રાય આપુચ્છઙ્ઙ,  
આપુચ્છિત્તાથેરેહિં સદ્ધિં વહિયા જણવયવિહાર વિહરઙ્ઙ )

હુ તો અધન્ય અને અકૂતપુણ્ય છું કેમકે હુ તો રાજ્યમા યાવત્  
રણુવાસમા તેમજ મનુષ્યલવના કામભોગોમા મૂર્છિત યાવત્ અધ્યુપપન્ન બની  
રહ્યો છું, એવા માટેજ પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરવામા અસમર્થ થઈ રહ્યો છું  
એથીજ હુ આ કહી રહ્યો છું-કે તમે ખજેખર ધન્ય છો હે દેવાનુપ્રિય !  
તમેજ જન્મ અને જીવનનુ ફળ કે જે પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરના રૂપ છે-તે સારી  
રીતે મેળવી લીધુ છે તેઓ ત્યાથી વિહાર કરી જાય તે આશયથી કહેવા તે  
પુંડરીકના વચનો સાંભળીને કંડરીક અનગારે તેની કશીજ દરકાર કરી નહિ  
તે વાતને તેમણે સન્માનની દૃષ્ટિએ સ્વીકારી નહિ આ બધુ સાંભળીને પણ  
તેઓ ત્યાજ મૂગા થઈને બેસીજ રહ્યા કંડરીક અનગારની આ સ્થિતિ જોઈને





कारणात् खलु व्रगीमि यन् धन्योऽमि त्व हे देवानुप्रिय ! ' जाव सुलब्धं जन्म-  
जीवितफलम् , ततः खलु स कण्डरीकोऽनगार' पुण्डरीकस्य एतमर्थं=विहाराभि-  
प्रायकमर्थं , नो आद्रियते यावत् तूष्णीकः सतिष्ठते मौनमवलम्ब्य तिष्ठति । ततः  
खलु कण्डरीक' पुण्डरीकेण द्वितीयमपि तृतीयमपि=द्वित्रिवारम् , एव=पूर्वोक्त-  
प्रकारेण, उक्तः सन् ' अकामए ' अकामक'=कामनारहितः ' अवस्सवसे ' अप-

देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले तएण से कडरीए अणगारे पुडरीयस्स  
एयमद्व णो आढाइ जाव सच्चिद्वइ, तएण कडरीए पौडरीएण दोच्चपि  
तच्चपि एवं वुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे लज्जाए गारवेण य पौड-  
रीय आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं वहिया जणवयविहार विहरइ )  
मैं अवन्य हूँ अकूनपुण्य हूँ । जो राज्य में यावत् अन्तःपुर में तथा मनुष्य  
सम्बन्धी कामभोगों में मूर्छित यावत् अधुपपन्न बना हुआ हूँ । इमीलिये  
प्रवज्या ग्रहण करने में असमर्थ हो रहा हूँ । इसी कारण से मैं यह कह  
रहा हूँ कि तुम धन्य हो, हे देवानुप्रिय ! तुमने ही जन्म और जीवन  
का फल जो प्रवज्या का ग्रहण करना है-वह अच्छी तरह पा लिया है ।  
पुडरीक राजा की विहार करने के अभिप्रायवाली इस बात को सुनकर  
कडरीक अनगार ने उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया-उसे आदर की दृष्टि  
से नहीं देखा-किन्तु वे उसे सुनकर भी चुपचाप बैठ रहे । कडरीक  
अनगार की इस स्थिति को देखकर पुडरीक ने दूसरी बार और तीसरी

तुम देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले तएण से कडरीए अणगारे पुडरीयस्स  
एयमद्व णो आढाइ, जाव सच्चिद्वइ, तएण कडरीए पौडरीएण दोच्चपि तच्चपि  
एववुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे लज्जाए गारवेण य पौडरीय राय आपुच्छइ,  
आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं वहिया जणवयविहार विहरइ )

હુ તો અધન્ય અને અકૂતપુણ્ય છું કેમકે હુ તો રાજ્યમાં યાવત્  
રણુવાસમાં તેમજ મનુષ્યભવના કામભોગોમાં મૂર્છિત યાવત્ અધુપપન્ન બની  
રહ્યો છું, એવા માટેજ પ્રવજ્યા ગ્રહણ કરવામાં અસમર્થ થઈ રહ્યો છું  
એથીજ હુ આ ઠહી રહ્યો છું-કે તમે ખરેખર ધન્ય છે હે દેવાનુપ્રિય !  
તમેજ જન્મ અને જીવનનું ફળ કે જે પ્રવજ્યા ગ્રહણ કરનાર પા છે-તે સારી  
રીતે મેળવી લીધું છે તેઓ ત્યારથી વિહાર કરી જાય તે આશયથી કહેના તે  
પુડરીકના વચનો સાંભળીને કડરીક અનગારે તેની કશીજ દરકાર કરી નહિ  
તે વાતને તેમણે સન્માનની દૃષ્ટિએ સ્વીકારી નહિ આ બધું સાંભળીને પણ  
તેઓ ત્યાજ મૂક્યા થઈને બેઠીજ રહ્યા કડરીક અનગારની આ સ્થિતિ જોઈને

સ્વરશઃ=અપગતમ્માન-જ્ય. સત્ત્વ ' લજ્જાવ ' લજ્જયા, ' ગારવેણ ' ગૌરવેણ= સાધુત્વગૌરવેણ ચ પુંડરીક ગમ્માનમાપૂન્નતિ, આપૂન્નત સ્થવિરેઃ માદ્દે વર્ણિતેન મદવિહાર વિહરતિ ॥ સુ૦ ૩ ॥

મૂલ્મ- તપ્પણં સે કંડરીણ થેરેહિં સલ્લિં કિંચિકાલ ઉગ્ગં  
ઉગ્ગેણં વિહરહ્ । તઓ પચ્છા સમણત્તણપરિતંતે સમણત્તણ  
ણિવ્વિણ્ણે સમણત્તણણિવ્વમચ્છિણ સમણગુણમુક્કજોગી,  
થેરાણં અતિયાઓ સણિયર પચ્ચોસદ્ધહ, પચ્ચોસક્કિત્તા, જેણેવ  
પુંડરિગિણી ણયરી જેણેવ પુંડરીયસ્સ ભવ્વણે તેણેવ ઉવાગચ્છહ,  
ઉવાગચ્છિત્તા, અસોગવણિયાણ અસોગવરપાયવસ્સ અહે  
પુઠ્ઠવિસિલાપદ્ધયાસિ ણિસીયહ્ ણિસીહ્ ત્તા, ઓહયમણસંકપ્પે  
જાવ દ્ધિયાયમાણે સંચિટ્ઠહ । તણ્ણ તસ્સ પોંડરીયસ્સ અમ્મ-  
ધાઈ જેણેવ અસોગવણિયા તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા  
કંડરીય અણગાર અસોગવરપાયવસ્સ અહે પુઠ્ઠવિસિલાવદ્ધ-  
યાસિ ઓહયમણસકપ્પ જાવ દ્ધિયાયમાણં પાસહ, પાસિત્તા  
જેણેવ પોંડરીણ રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા  
પોંડરીય રાય ઇવ-વયાસી-ઇવ સ્વલ્લુ દેવાણુપ્પિયા । તવ  
પિટ્ઠમાહુણ કંડરીણ અણગારે અસોગવણિયાણ અસોગવર

વાર જ્યેહ ઉનસે પૂર્વોક્ત પ્રકારસે કહા-તવ હન્હો ને નહીં હચ્છા હોને પર  
મી સ્વચ્ચશતાકા અભાવ હોનેકે કારણ લજ્જાવશ હોકર સાધુત્ત્વકે ગૌરવકે  
લ્લ્યાલ સે-પુંડરીક રાજા સે વિહાર કરનેકી વાત પૂછી-પૂઝકર ફિર વે  
વહા સે સ્થવિરોકે સાથ વાહિરકે જનપદોં મે વિહાર કર ગયે ॥ સુ૦ ૩ ॥

પુંડરીકે બીજ અને ત્રીજ વાર પણ બ્યારે પડેલા મુજબ જ વાત કહી ત્યારે  
તેમણે પોતાની ઈચ્છા નહિ હોવા છતાંએ લાચાર થઈને, લક્ષિત થઈને,  
સાધુત્વના ગૌરવને લક્ષ્યમા રાખીને પુંડરીક રાજાને વિહાર કરવાની વાત પૂછી  
પૂછીને તેઓ ત્યાથી સ્થવિરોની સાથે જહારના જનપદોમા વિહાર કરી ગયા સુ ૩

पायवस्स अहे पुढविसिलावहे ओहयमणसंकप्पे जाव झिया-  
यइ । तएणं पोंडरीए अम्मधाईए एयमट्ट सोच्चा णिसम्म  
तहेव संभते समाणे उट्टाए उट्टेइ, उट्टित्ता, अंतेउरपगियाल-  
सपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कडरीयं तिवखुत्तो  
आयाहिणं पयाहिणं करेइ करित्ता, एव वयासी-धण्णेसि णं  
तुम देवाणुप्पिया । जाव पव्वइए । अहण्णं अधण्णेइ जाव  
नो पव्वइत्तए । त धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया । जाव  
जीवियफले । तएणं कडरीए पुडरीएणं एवं वुत्ते समाणे  
तुसिणीए संचिट्टइ, दोच्चपि तच्चपि जाव संचिट्टइ । तएणं  
पोडरीए कडरीय एव वयासी अट्टो भते । भोगेहि ? हंता  
अट्टो तएण से पोण्डरीए राया कोडुवियपुरिसे सदावेइ,  
सदावित्ता, एव वयासी-खिप्पामेव भो देवानुप्पिया । कंड-  
रीयस्स महत्थ जाव रायाभिसेअ उवट्टवेह जाव रायाभिसे-  
एणं अभिसिचइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । तत् खलु स कण्डरीक स्थविरैः सार्धं  
किञ्चित् कालम् ‘उग्ग उग्गेण’ उग्रोग्रेण-अत्युग्रेण विहारेण विहरति । तत्  
पश्चात् ‘समणत्तणपरित्तते’ श्रमणत्तपरित्तान्तः=श्रमणधर्मपरिपालने खिन्नः पुनः

‘तएण से कडरीए थेरेहि सद्धि’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से कडरीए) वे कडरीक (थेरेहि  
सद्धि) स्थविरो के साथ (किचिकाल) कुछ काल पर्यन्त (उग्ग उग्गेण)  
अत्युग्रविहार करने में (विहरइ) लग गये (तओपच्छा समणत्तण

‘तएण से कडरीए थेरेहि सद्धि’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (से कडरीए) ते कडरीक (थेरेहि सद्धि)  
स्थविशैली सार्ध (किचिकाल) थोडा बहुत सुधी तो (उग्गउग्गेण) अतीव  
उग्र विहार करवाभा (विहरइ) प्रवृत्त तथा (तओ पच्छा समणत्तण परित्तते)

‘સમણત્તણનિવ્વિણ્ણે’ શ્રમણત્તરનિર્વિણ્ણ = સાધુભાવે ઔદાસીન્ય પ્રાપ્ત: ‘સમણ  
ત્તણનિવ્વિણ્ણે’ શ્રમણત્તરનિર્મર્ત્તિસત્ = શ્રમણત્તર નિર્મર્ત્તિસત્ એન મ = સાધુભાવ  
નાદરપરાયણ:, અતઃપર ‘સમણગુણમુક્તજોગી’ શ્રમણગુણમુક્તજોગી = શ્રમણગુણે  
મુક્ત: = રહિતો યોગ. યોગ: = મનોચાકાવચ્ચ, સોડસ્યાસ્તીતિત્યક્તશ્રમણગુણત્યર્થ:,  
સ્થવિરાણામન્તિકાત્ શનૈ: શનૈ પ્રત્યવપ્વસ્કત્તે = પશ્ચાદાગ ઓતિ, પ્રત્યવપ્વસ્વય,  
યત્તૈવ પુણ્ડરીકિણી નગરી યત્તૈવ પુણ્ડરીકસ્ય ભવન તત્તૈવ ઉપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય  
અશોકવનિકાયા. = અશોકવાટિકાયા અશોકવરપાદપમ્પ્ય યત્ત. પૂર્વોચ્છિલ્લાપટ્ટકે  
નિપીદતિ = ઉપવિશતિ, નિપથ, ‘ઓદયમણસકપ્પે’ અદ્યતમન: સકલ્પ: = અવહતો  
મન સકલ્પ = મનોવ્યાપારો यस્ય સ: = અવગતમાનસિકલ્પાપાર, ‘જાવ ક્ષિયાય

પરિતત્તે) વાદ મેં વે શ્રમણધર્મ કે પરિપાલન કરને મેં મિન્ન ચિત્ત થન  
ગયે (સમણત્તણનિવ્વિણ્ણે સમણત્તણનિવ્વિણ્ણે સમણગુણમુક્તજોગી  
થેરાણ અતિયાઓ સણિય ૨ પચ્ચોસકકહ, પચ્ચોસકિક્કતા જેણેવ પુહ  
રિગિણી ણયરી જેણેવ પુહરીયસ્સ મરણે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ધ) સાધુભાવ  
કે નિર્વાહ કરને મેં ઉદાસીનતા કો પ્રાપ્ત હો ગયે-સાધુભાવ કે પ્રતિ ઉનમેં  
અનાદર ભાવ આ ગયા અતઃ ણવ વે શ્રમણ ગુણોં સે મુક્ત યોગવાળે થન  
ગયે-શ્રમણ કે ગુણો કા ઉન્હોં ને પરિત્યાગ કર દિયા। હસ તરહ વે ધીરે  
૨ સ્થવિરોં કે પાસ સે સિસકકર ઇક દિન જહાં પુહરીકિણી નગરી થી  
ઔર ઉસમેં મી જહાં પુહરીક રાજા કો ભવન થા વહા પર આ ગયે-  
(ઉવાગચ્છિત્તા અસોગવણિયાણ અસોગવરપાયવસ્સ અહે પુહવિસિલા  
પટ્ટયસિ ણિસીયદ્ધ, ણિસીહત્તા ઓદયમણસકપ્પે જાવ ક્ષિયાયમાણે

ત્યારપછી તેઓ શ્રમણ ધર્મના પાલનમાં બિન્નચિત્ત-ઉદાસ બની ગયા

(સમણત્તણનિવ્વિણ્ણે સમણત્તણનિવ્વિણ્ણે સમણગુણમુક્તજોગી થેરાણ  
અતિયાઓ સણિય ૨ પચ્ચોસકકહ, પચ્ચોસકિક્કતા જેણેવ પુહરાગિણી ણયરી જેણેવ  
પુહરીયસ્સ મરણે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ધ)

તેઓ સાધુભાવને નભાવવામાં ઉદાસ બની ગયા સાધુભાવ પ્રત્યે તેમ  
નામાં અનાદર ભાવ ઉત્પન્ન થઈ ગયો, એથી તેઓ શ્રમણ-શુભ્રાથી મુક્ત  
યોગવાળા બની ગયા એટલે કે શ્રમણના શુભ્રાને તેમણે ત્યજી દીધા આ પ્રમાણે  
તેઓ ધીમે ધીમે સ્થવિરોની પાસેથી ચુપચાપ નીકળીને એક દિવસ જ્યાં પુહરિકિણી  
નગરી હતી અને તેમાં પણ જ્યાં પુહરીક રાજાનું ભવન હતું, ત્યાં આવી ગયા

(ઉવાગચ્છિત્તા અસોગવણિયાણ અસોગવરપાયવસ્સ અહે પુહવિસિલાપટ્ટ  
યસિ, ણિસીયદ્ધ, ણિસીહત્તા ઓદયમણસકપ્પે જાવ ક્ષિયાયમાણે અવિદ્ધ, તપ્પણ



माणे ' यावद्ध्यायन्=आर्त्तयानं कुर्वन् सतिष्ठते । तत खलु तस्य पुण्डरीकस्य राज्ञोऽम्बधात्री यत्रैव अशोकवनिना तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य कण्डरीकमन गारम् अशोकवरपादपस्य अधः पृथिवीशिलापट्टकेऽपहतमनःसरूप यावद् ध्यायन्त पश्यति, दृष्ट्वा, यत्रैव पुण्डरीको राजा तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पुण्डरीक राजानमेवमवादीत्-एव खलु देवानुप्रिय । तव ' पिउमाउए ' प्रियभ्राता कण्डरीकोऽनगारोऽशोकवनिनाया अशोकवरपादपस्य अधः पृथिवीशिलापट्टके अपहतमनः सरूपो यावद्-यायति । तत खलु पुण्डरीकः अम्बधात्र्या एतमर्थं=कण्डरीकस्य

सचिद्वद्, तएण तस्स पोंडरीयस्स अम्मधाई जेणेव असोगवणिग्या तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कडरीय अणगार असोगवरपायस्स अहे पुढ-विसिलावट्टयसि ओहयमणसकप्प जाव झियायमाण पासइ, पासित्ता जेणेव पोंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोंडरीय राय एव वयासी ) वहा आकर वे अशोक वाटिका मे अशोक वृक्ष के नीचे पृथिवीशिला पट्टक पर बैठ गये । बैठकर अपहत मानसिक व्यापारवाले होकर वे वहा आर्त्तध्यान करने लगे । इनने मे पुण्डरीक राजा की अम्बधात्री-धायमाता उस अशोक वाटिका मे आई-वहा आकर उसने कडरीक अनगार को अशोक पादप के नीचे पृथिवीशिला पट्टक पर चिन्तामग्न देखा-देखकर वह जहा पुण्डरीक राजा थे वहा आई-वहा आकर उसने पुण्डरीक राजा से इस प्रकार कहा-( एव खलु देवानुप्रिया ! तव पिउमाउए कडरीए अणगारे असोगवणिग्याए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टे ओहयमणसकप्पे जाव झियायइ ) हे देवानुप्रिय !

तस्स पोंडरीयस्स अम्मधाई जेणेव असोगवणिग्या तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कडरीय अणगार असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टयसि ओहयमणसकप्प जाव झियायमाण पासइ, पासित्ता जेणेव पोंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोंडरीय राय एव वयासी )

त्या आवीने तेओ अशोक वाटिकाभा अशोक वृक्षनी नीचे पृथिविशिला पट्टक उपर भेभी गया त्या भेसीने तेओ अपहत मानसिक व्यापारवाणा ( उदास ) थईने आर्त्तध्यान करवा लाग्या ओटलाभा पुण्डरीक राजानी अम्बधात्री धायमाता-अशोक वाटिकाभा आवी त्या आवीने तेणे कडरीक अनगारने अशोक वृक्षनी नीचे पृथिविशिला उपर आर्त्तध्यान करता जेया जेधने ते जया पुण्डरीक राजा हुता त्या आवीने तेणे पुण्डरीक राजाने आ प्रभाणे कहु के

( एव खलु देवानुप्रिया ! तव पिउमाउए कडरीए अणगारे असोगवणिग्याए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टे ओहयमणसकप्पे जाव झियायइ )

अशोकानिकामपगतानोरुक्षायः स्थितमार्तयानमपमर्थं श्रुत्वा निरुध्य-  
वधार्य 'तद्देव' तर्ध्व=यथास्थिततयेव 'समते समाणे' मन्त्रान्ताः सन्-  
'कव पुनरसौ समागत' इति गङ्गितः सन् उत्थाय उत्तिष्ठति=प्रति उत्तिष्ठती-  
त्यर्थः, उत्थाय अतः पुनरिगारसपरिवृत यत्रैव अशोकानिका यत्रैव कण्डरीको-  
ऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य 'निवसुतो' त्रि कृत्वः=वारम्भम् आद-  
क्षिणमदक्षिण करोति, कृत्वा एवमवादीत्- 'धण्येसि ण तुमं देवाणुप्पिया । जाव  
पव्वइए' धन्योऽसि खलु त्व हे देवानुप्पिय ! यावत् मज्जित । अह खलु  
'अधण्ये' ३ अधन्यः ३ यावत् नो गत्तोमि मज्जितुम् । 'त' तस्मात्कारणात्  
'धन्नेसि' धन्योऽसि खलु त्व हे देवानुप्पिय ! 'जाव जीवियफले' यावत्  
जीवितफलम्=तस्या जन्मजीवितफल सुखम् इति भावः । ततः खलु कण्डरीकेण  
एव=वशासापरवचनैरुक्तः सन् तूष्णीकं सतिष्ठते, 'दोच्चपि तच्च ति' द्वितीय-  
मपि तृतीयमपि तार पूर्वप्रकारेण उक्तः सन् 'जाव सच्चिद्दह' यावत् सतिष्ठते=  
मौनमवलम्ब्य स्थित इति भावः । ततः खलु कण्डरीकः कण्डरीकमेवमवादीत्-अट्टो

सुनिये-तुम्हारे प्रिय भाई कण्डरीक अनगार अशोक वाटिका में अशोक  
वृक्षके नीचे पृथिवीशिलापट्टक पर अपहतमनःसकल्प होकर यावत् चिन्ता  
मग्न बैठे हुए हैं (तएण पोंडरीए अम्मधोईए एयमद्व सोच्चा णिसम्म  
तद्देव समते समाणे उट्ठाए उट्टेइ, उट्टिता अतेउरपरिवालसपरिवुडे  
जेणेव असोगवणिया जाव कडरीय त्तिकखुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ,  
करित्ता एव वयासी धण्येसि ण तुम देवाणुप्पिया ! जाव पव्वइए  
अहण्ण अधण्ये ३ जाव नो पव्वइत्तए त धन्नेसि ण तुम देवाणुप्पिया ।  
जाव जीवियफले-तएण कडरीए पुडरीएण एव वुत्ते समाने तुसिणीए  
सच्चिद्दह, दोच्चपि तच्चपि जाव सच्चिद्दह, तएण पोंडरीए कडरीय एव  
वयासी अट्टो भते ! भोगेहिं ! हता अट्टो ! तएण से पोंडरीए राया कोडु

हे देवानुप्पिय ! साधुजो, तमारा प्रिय भाई कण्डरीक अनगार अशोक  
वाटिका में अशोक वृक्षकी नीचे पृथिवीशिला पट्टक उपर अपहतमन सकल्प  
थधने यावत् चिन्तामग्न थधने ऐसे रह्य छे

(तएण पोंडरीए अम्मधोईए एयमद्व सोच्चा णिसम्म तद्देव समते समाणे  
उट्ठाए उट्टेइ, उट्टिता अतेउरपरिवालसपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कड-  
रीय त्तिकखुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ, करित्ता एव वयासी धण्येसि ण तुम  
देवाणुप्पिया ! जाव पव्वइए अहण्ण अधण्ये २ जाव नो पव्वइत्तए त धन्नेसि  
तुम देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले तएण कडरीए पुडरीएण एव वुत्ते समाने  
तुसिणीए सच्चिद्दह, दोच्चपि तच्चपि जाव सच्चिद्दह, तएण पोंडरीए कडरीय एव  
वयासी, अट्टो / ता अट्टो ! तएण से १०२ - या कोडु बिय

विद्यपुरिसे मदावेह, सदावित्ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कडरीयस्स महत्थ जाव रायाभिसेअ उवट्टवेह, जाव रायाभिसेएण अभिसिचड ) इस प्रकार अम्बाधाय के मुख से इस बात को सुनकर और उसे चित्त में जमाकर जैसे बैठे हुए थे उसी तरह सभ्रान्त होते हुए-ये क्यों आये हैं-इस प्रकार शक्ति चित्त होते हुए-उत्थानशक्ति से उठे बहुत जल्दी सुनते ही प्रमाण-उठे और उठकर अन्नःपुर के परिवार को साथ लेकर जहां अशोक बनिका थी-वहां पर आये-वहां आकर कडरीक अनगार के पास पहुँचे-वहां पहुँच कर उन्हो ने उन्हें तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिण किया बाद में वे कहने लगे-हे देवानुप्रिय ! तुम्हें धन्यवाद है-जो तुम राज्य एवं अन्नःपुर का परित्याग कर प्रव्रजित हो गये हो इत्यादि जिस प्रकार पहिले उनसे कहा था इसी प्रकार अब भी कहा मैं अधन्य हूँ-३-जो यावत् दीक्षित होने के लिये शक्तिशाली नहीं हो रहा हूँ । इसलिये हे देवानुप्रिय ! आपके लिये धन्यवाद है-आपने जन्म और जीवन का फल अच्छी तरह प्राप्त कर लिया है । इस तरह प्रशंसा परक वचनों से पुण्डरीक राजा द्वारा कहे गये वे कडरीक अनगार कुछ भी नहीं बोले-किन्तु चुपचाप ही बैठे रहे-। जब पुण्डरीक राजा ने उनकी इस प्रकार की स्थिति देखी-तब दुवारा तिवारा भी उन्हो ने

पुरिसे सदावेह, सदावित्ता एव वयामी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कडरीयस्स महत्थ जाव रायाभिसेअ उवट्टवेह, जाव रायाभिसेएण अभिसिचड )

આ પ્રમાણે અબાધાયના મુખથી આ વાત સાંભળીને અને તેને મનમાં ધારણ કરીને જેવી સ્થિતિમાં તેઓ બેઠા હતા તેવી જ સ્થિતિમાં સ્તબ્ધ થઈને “ તેઓ કેમ આવ્યા છે ” આ પ્રમાણે શકાયુક્ત થતા-ઉત્થાન શક્તિ વડે તેઓ બિભા થયા અને બિભા થઈને જલ્દી રણવાસના પરિવારને સાથે લઈને જ્યાં અશોક વાટિકા હતી ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને કડરીક અનગારની પાસે પહોંચ્યા ત્યાં પહોંચીને તેમણે તેમને ત્રણવાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કર્યા બાદ કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમને ખરેખર ધન્યવાદ ઘટે છે કે જો તમે રાજ્ય અને રણવાસનો ત્યાગ કરીને પ્રવ્રજીત થઈ ગયા છો, વગેરે જેમ પહેલાં કહ્યું હતું તેમજ તે વખતે પણ કહ્યું હતું તે અધન્ય હું-૩-જે યાવત્ દીક્ષા અર્હણ કરવાનું પણ સામર્થ્ય ધરાવતો નથી એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમને ધન્ય છે તમોએ ખરેખર પોતાના જન્મ અને જીવનનું ફળ સારી રીતે પ્રાપ્ત કરી સીધું છે આ પ્રમાણે પ્રશંસાજનક વચનોથી પુણ્ડરીક રાજા વડે સંબોધિત કરાયેલા તે કડરીક અનગાર કંઈપણ બોલ્યા નહિ, તેઓ મૂંગા થઈને બેમીજ

अशोकानिकामपगतागोरुक्षाभः स्थितस्यातं यानरूपमर्थं श्रुत्वा निमग्नः=व्य-  
वधार्य 'तदेव' तर्ध्व=यथास्थिततथैव 'समते समाणे' मन्त्रान्तः सन्-  
'कथं पुनरसौ समागत' इति गदितः सन् उत्थाय उत्तिष्ठति=स्रष्टि उत्तिष्ठती-  
त्यर्थः, उत्थाय अतः पुरपरिहारसपरिगृह यत्रैव अगोक्षरनिष्ठा यत्रैव कण्डरीको-  
ऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य 'निमग्नो' वि हृत्वा=वारत्रयम् आद-  
क्षिणप्रदक्षिण करोति, हृत्वा गवमयादीन्-'धण्णेसि ण तुम देवाणुप्पिया ! जाव  
पव्वइए' धन्योऽसि खलु न्य हे देवानुप्पिय ! यावत् मयजित । अह खलु  
'अधण्णे ३ अधन्य' ३ यावत् नो गक्कोमि मयजितुम् । 'त' तम्मात्कारणा  
'धन्नेसि' धन्योऽमि खलु न्य हे देवानुप्पिय ! 'जाव जीवियफले' यावत्  
जीवितफलम्=तस्या जन्मजीवितफल सुखम् इति भावः । ततः खलु कण्डरीकेण  
एव=वशासापरवचनैरुक्तः सन् तूष्णीकं सतिष्ठते, 'दोच्चपि तच्च ति' द्वितीय-  
मपि तृतीयमपि तार पूर्वप्रकारेण उक्तः सन् 'जाव सच्चिद्वह' यावत् सतिष्ठते=  
मीनमवलम्ब्य स्थित इति भावः । ततः खलु पुण्डरीकः कण्डरीकमेवमयादीन्-अद्वो

सुनिये-तुम्हारे प्रिय भाई कडरीक अनगार अशोक वाटिका में अशोक  
वृक्षके नीचे पृथिवीशिलापट्टक पर अपहतमनःसकटप होकर यावत् चिन्ता  
मग्न बैठे हुए हैं (तएण पोंडरीए अम्मधाईए एयमद्व सोच्चा णिसम्म  
तदेव समते समाणे उट्टाए उट्टेइ, उट्टित्ता अतेउरपरियालसपरिवुडे  
जेणेव असोगवणिया जाव कडरीय त्तिखुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ,  
करित्ता एव वयासी धण्णेसि ण तुम देवाणुप्पिया ! जाव पव्वइए  
अहण्ण अधण्णे ३ जाव नो पव्वइत्तए त धन्नेसि ण तुम देवाणुप्पिया !  
जाव जीवियफले-तएण कडरीए पुडरीएण एव वुत्ते समाणे तुसिणीए  
सच्चिद्वह, दोच्चपि तच्चपि जाव सच्चिद्वह, तएण पोंडरीए कडरीय एव  
वयासी अद्वो भते ! भोगेहि ! हता अद्वो ! तएण से पोंडरीए राया कोडु

हे देवानुप्पिय ! सालणो, तमारा प्रिय भाई कडरीक अनगार अशोक  
वाटिकाभा अशोक वृक्षनी नीचे पृथिविशिला पट्टक उपर अपहतमन सकटप  
थधने यावत् चिन्तामग्न थधने ऐसी रह्या छे

(तएण पोंडरीए अम्मधाईए एयमद्व सोच्चा णिसम्म तदेव समते समाणे  
उट्टाए उट्टेइ, उट्टित्ता अतेउरपरियालसपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कड-  
रीय त्तिखुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ, करित्ता एव वयासी धण्णेसि ण तुम  
देवाणुप्पिया ! जाव पव्वइए अहण्ण अधण्णे ३ जाव नो पव्वइत्तए त धन्नेसि  
तुम देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले तएण कडरीए पुडरीएण एव वुत्ते समाणे  
तुसिणीए सच्चिद्वह, दोच्चपि, तच्चपि जाव सच्चिद्वह, तएण पोंडरीए कडरीय एव  
वयासी, अद्वो भते ! भोगेहि ? हता अद्वो ! तएण से पोंडरीए गया कोडु बिय

बियपुरिसे महावेह, सदावित्ता एव वयासी-निष्पामेव भो देवाणुप्पिया ।  
कडरीयस्स महत्थ जाव रायाभिसेअ उवट्टवेह, जाव रायाभिसेएण  
अभिसिचइ ) इस प्रकार अम्माधाय के मुख से इस बात को सुनकर  
और उसे चित्त में जमाकर जैसे बैठे हुए थे उसी तरह सभ्रान्त होते  
हुए-ये क्यों आये हैं-इस प्रकार शक्ति चित्त होते हुए-उत्थानशक्ति  
से उठे बहुत जल्दी सुनते ही प्रमाण-उठे और उठकर अन्तःपुर के परि-  
वार को साथ लेकर जहा अशोक बनिका थी-वहा पर आये-वहा  
आकर कडरीक अनगार के पास पहुँचे-वहा पहुँच कर उन्हो ने उन्हें  
तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिण किया बाद में वे कहने लगे-हे देवानुप्रिय ।  
तुम्हें धन्यवाद है-जो तुम राज्य एव अन्तःपुर का परित्याग कर प्रव्रजित  
हो गये हो इत्यादि जिस प्रकार पहिले उनसे कहा था इसी प्रकार अब  
भी कहा मैं अधन्य हूँ-३-जो यावत् दीक्षित होने के लिये शक्तिशाली  
नहीं हो रहा हूँ । इसलिये हे देवानुप्रिय । आपके लिये धन्यवाद है-आपने  
जन्म और जीवन का फल अच्छी तरह प्राप्त कर लिया है । इस तरह  
प्रशंसा परक वचनों से पुण्डरीक राजा द्वारा कहे गये वे कडरीक अन-  
गार कुछ भी नहीं बोले-किन्तु चुपचाप ही बैठे रहे-। जब पुण्डरीक राजा  
ने उनकी इस प्रकार की स्थिति देखी-तब दुवारा तिवारा भी उन्हो ने

पुरिसे सदावेह, सदावित्ता एव वयासी निष्पामेव भो देवाणुप्पिया । कडरीयस्स  
महत्थ जाव रायाभिसेअ उवट्टवेह, जाव रायाभिसेएण अभिसिचइ )

આ પ્રમાણે અબાધાયના મુખથી આ વાત સાંભળીને અને તેને મનમાં  
ધારણ કરીને જેવી સ્થિતિમાં તેઓ બેઠા હતા તેવી જ સ્થિતિમાં સ્તબ્ધ થઈને  
“ તેઓ કેમ આવ્યા છે ” આ પ્રમાણે શકાયુક્ત થતા-ઉત્થાન શક્તિ વડે  
તેઓ બિભા થયા અને બિભા થઈને જલ્દી રણવાસના પરિવારને સાથે લઈને  
જ્યાં અશોક વાટિકા હતી ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને કડરીક અનગારની પાસે  
પહોંચ્યા ત્યાં પહોંચીને તેમણે તેમને ત્રણવાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કર્યા બાદ  
કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમને ખરેખર ધન્યવાદ ઘટે છે કે જો તમે  
રાજ્ય અને રણવાસનો ત્યાગ કરીને પ્રવ્રજીત થઈ ગયા છો, વગેરે જેમ પહેલા  
કહ્યું હતું તેમજ તે વખતે પણ કહ્યું હતું તો અધન્ય હું-૩-જે યાવત્ દીક્ષા  
અર્હણ કરવાનું પણ સામર્થ્ય ધરાવતો નથી એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમને ધન્ય  
છે તમેજો ખરેખર પોતાના જન્મ અને જીવનનું ફળ સારી રીતે પ્રાપ્ત કરી  
સીધું છે આ પ્રમાણે પ્રશંસાજનક વચનોથી પુણ્ડરીક રાજા વડે સંબોધિત  
કરાયેલા તે કડરીક અનગાર કંઈપણ બોલ્યા નહિ, તેઓ મૂળા થઈને બેમીજ



मंते ' भोगेहि ' अर्थात् हे भदन्त ! भोगे ? = किं भोगेः प्रयोजनमस्ति ? इति,  
 कण्डरीकः प्राह—' हता ! अट्टो ' = हन्त ! अर्थः = भोगप्रपमोस्तुमानवोऽस्मीति  
 भावः । ततः खलु = कण्डरीकामिषायानानन्तरमित्यर्थः, स पुण्डरीको राजा  
 कौटुम्भिकपुरुषान् गच्छयति = माह्वयति, गच्छयित्वा, पञ्चमवदत् — सिषमेव भो  
 देवानुमिषाः । कण्डरीकस्य महार्थम् = मत्पर्यम् ' जाय रायाभिसेय ' यावत् राजा  
 भिषेकम् ' उगृह्ये ' उपस्थापयत = परिष्ठापयत, ' जाय रायाभिसेपण अभिसिं  
 चइ ' यावत् राज्याभिषेकेण अभिषिञ्चति स पुण्डरीको राजा कण्डरीक राजपदे  
 स्थापयति ॥ सू० ४ ॥

मृम-तण्णं पुडरीए सयमेव पंचमुट्टियं लोय करेइ,

उनसे ऐसा ही कहा परन्तु फिर भी उन्हीं ने कुछ नहीं ध्यान दिया  
 केवल मौन धारण कर ही बैठे रहे—तब पुनः पुण्डरीकने उन कण्डरीक  
 अनगार से इस प्रकार कहा—हे भदन्त ! क्या आप को भोगों से तात्पर्य  
 है ? तब कण्डरीक ने कहा हा—मेरा मन भोगों को उपभोग करने के  
 लिये हो रहा है । इस तरह कण्डरीक का अभिप्राय जानने के बाद पुण्डरीक  
 राजा ने कौटुम्भिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा  
 कहा—भो देवानुमिषो तुम लोग कण्डरीक के लिये राज्याभिषेक योग्य  
 सामग्री एकत्रित कर लेआओ पुण्डरीक राजा की इस आज्ञा के अनु  
 सार, उनलोगों ने वैसा ही किया—जब राज्याभिषेक सामग्री उपस्थित  
 हो चुकी—तब पुण्डरीकने कण्डरीक का राज्याभिषेक कर दिया—कण्डरीक  
 को राजपद में स्थापित कर दिया ॥ सूत्र ४ ॥

रह्या पुडरीक राज्ञे तेमनी आवी स्थिति जेधने जीण अने त्रीण वअत  
 पणु आ प्रभाणु ज कहु पणु तेमले तेनी कर्ह दरकार करी नहि तेओ कहु  
 भूगा थधने जेसी ज रह्या त्वारे करी पुडरीके ते कडरीक अनगारने आ  
 प्रभाणु उहु के डे लगवन् । तमने शु डण ' लोग उपलोगोनी धरिण छे ?  
 त्वारे कडरीके कहु के डा, जरेजर भाइ मन लोग उपभोगमा प्रुत्त थवा  
 मछे छे आ प्रभाणु कडरीकनी धरिण जालीने पुडरीक राज्ञे कौटुम्भिक  
 पुरुषोने जेलाव्या अने जेलावीने तेमने आ प्रभाणु कहु के डे देवानुमिषे ।  
 तमे लोके कडरीक भाटे—राज्याभिषेक योग्य सामग्री लेगी करे पुडरीक  
 राजनी आ प्रभाणु आज्ञा सावणीने ते लोकेअ तेमज कथुं ज्वारे राज्या  
 निषेकनी बधी वस्तुओ अकत्रित थध गध त्वारे पुडरीके कडरीकने राज्याभिषेक करी  
 दीधे अटले के कडरीकने राज्यासने जमाडी दीधे ॥ सूत्र ४ ॥

करित्ता, सयमेव चाउज्जाम धम्म पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता  
कडरीयस्स सतिय आचारभट्टय गेण्हइ, गेण्हित्ता, इम  
एयारुव्वं अभिग्गह अभिगिण्हइ-कप्पइ मे थेरे वंदित्ता  
णमंसित्ता थेराणं अतिए चाउज्जाम धम्म उवसपज्जित्ताणं  
तओ पच्छा आहार आहरित्तए त्तिक्कहु, इम च एयारुव्व  
अभिग्गह अभिगिण्हित्ता णं पोडरिगिणीए पडिणिक्खमइ,  
पडिणिक्खमित्ता, पुव्वाणुपुट्ठिचरमाणे गामाणुगाम दूइज्ज-  
माणे जेणेव थेरा भगवतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥सू०५॥

टीका—‘तएण पुडरीए’ इत्यादि । ततः खलु पुण्डरीकः स्वयमेव पञ्च  
मुष्टिकं लोच करोति, तथा स्वयमेव ‘चाउज्जाम’ चातुर्याम=चतुर्महाव्रतलक्षण  
धर्मं प्रतिपद्यते, प्रतिपद्य, ‘कडरीयस्स सतिय’ वण्डरीकस्य सत्कम्=वण्डरीक  
सम्बन्धि इत्यर्थः, ‘आचारभट्टय’ आचारभाण्डक आचाराय=माधोः पञ्चविधा  
चारपरिपालनाय यद्भाण्डक=स्त्रपात्रमदोकमुखवस्त्रिकारजोहरणादिरूपम् तद्

‘तएण पुडरीए सयमेव पचमुट्ठिय’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (पुडरीए) पुडरीक ने (सयमेव)  
अपने आप (पचमुट्ठिय लोच करेइ) अपना पचमुष्टिक लोच किया—  
(करित्ता सयमेव चाउज्जाम धम्म पडिवज्जइ पडिवज्जित्ता कडरीयस्स  
सतिय आचारभट्टय गेण्हइ) और लोच करके स्वयं ही उन्होंने—चातु  
र्याम—चतुर्महाव्रत रूप धर्म को धारण कर लिया । एवं कडरीक के  
अनगार अवस्था सन्धी आचार भाण्डक को—वस्त्र, पात्र सदोरक मुख  
वस्त्रिका, रजोहरण आदिरूप साधु चिह्नों को—ले लिया । (गेण्हित्ता  
इम एयारुव्व अभिग्गह अभिगिण्हइ, कप्पइ मे थेरे वंदित्ता णमंसित्ता

‘तएण पुडरीए सयमेव पचमुट्ठिय’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्पारपछी (पुडरीए) पुडरीके (सयमेव) पोतानी  
जाते ज (पचमुट्ठिय लोच करेइ) पोतानु पचमुष्टिक लुथन कहु

(करित्ता सयमेव चाउज्जाम धम्म पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कडरीयस्स  
सतिय आचारभट्टय गेण्हइ)

अने लुथन कराने जाते ज तेमछे चातुर्याम—चतुर्महाव्रत रूपधर्मने धारण  
करी लीधा अने कडरीकनी अनगार अवस्था सन्धी आचार भाण्डके—वस्त्र,  
पात्र, सदोरक मुखवस्त्रिका, रजोहरण वगेरे साधु चिह्नोंने लई लीधा

मंते । भोगेहि । अर्धे हे भदन्न ! भोगेः ?=हि भोगेः प्रयोजनमस्ति ? इति,  
 कण्डरीकः प्राह—‘ हता । अद्वो ’=हन्त । अर्थः=भोगमप्यभोक्तुमानसोऽस्मीति  
 भावः । ततः खलु=कण्डरीकमिषापायानानन्तरमित्यर्थः, स पुण्डरीको राजा  
 कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=भाषयति, शब्दयित्वा, एवमवदत् — भिषमेव भो  
 देवानुमिषा । कण्डरीकस्य महार्थम्=मह्यर्थम् ‘ जात राजाभिसेय ’ यावत् राजा  
 भिषेकम् ‘ उग्रद्वेष्ट ’ उपस्थापयत=परिष्कल्पयत्, ‘ जात राजाभिसेएण अभिसिं  
 चइ ’ यावत् राज्याभिषेकेण अभिषिञ्चति स पुण्डरीको राजा कण्डरीकं राजपदे  
 स्थापयति ॥ सू० ४ ॥

मृग्य-तण्ठां पुडरीए सयमेव पचमुट्टिय लोय करेइ,

उनसे ऐसा ही कहा परन्तु फिर भी उन्होंने ने कुछ नहीं ध्यान दिया  
 केवल मौन धारण कर ही बैठे रहे-तब पुनः पुडरीकने उन कडरीक  
 अनगार से इस प्रकार कहा-हे भदन्न ! क्या आप को भोगों से तात्पर्य  
 है ? तब कडरीक ने कहा हा-मेरा मन भोगों को उपभोग करने के  
 लिये हो रहा है । इस तरह कडरीक का अभिप्राय जानने के बाद पुड  
 रीक राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा  
 कहा-भो देवानुमिषो तुम लोग कडरीक के लिये राज्याभिषेक योग्य  
 सामग्री एकत्रित कर लेआओ पुडरीक राजा की इस आज्ञा के अनु  
 सार, उनलोगों ने वैसा ही किया-जब राज्याभिषेक सामग्री उपस्थित  
 हो चुकी-तब पुडरीकने कडरीक का राज्याभिषेक कर दिया-कडरीक  
 को राजपद में स्थापित कर दिया ॥ सूत्र ४ ॥

रह्या पुडरीक राजाणे तेमनी आवी स्थिति जेधने जीणु अने त्रीण वणत  
 पाणु आ प्रमाणे न कहु पण तेमणे तेनी कर्ध हरकार करी नहि तेओ इक्ष  
 भूगा यधने जेसी न रह्या त्यारे करी पुडरीके ते कडरीक अनगारने आ  
 प्रमाणे कहु के डे लगवन् । तमने शु डणु ‘ भोग उपभोगोनी ध्विछा छे ?  
 त्यारे कडरीके कहु के डा, जरेजर भार मत लोग उपभोगमा प्राप्त थवा  
 मच्छे छे आ प्रमाणे कडरीकनी ध्विछा जण्णीने पुडरीक राजाणे कौटुम्बिक  
 पुरुषोने जेलाव्या अने जेलावीने तेमने आ प्रमाणे कहु के डे देवानुमिषो ।  
 तमे दोडे कडरीक माटे-राज्याभिषेक योग्य सामग्री लेगी करे पुडरीक  
 राजनी आ प्रमाणे आज्ञा साजणीने ते दोडेणे तेमन कथुं ज्यारे राज्या  
 निषेकनी अधी वस्तुओ ऐकत्रित थछ गछ त्यारे पुडरीके कडरीकने राज्याभिषेक करी  
 दीघो अटवे के कडरीकने राज्याअने जेमाडी दीघो ॥ सूत्र ४ ॥

કરિત્તા, સયમેવ ચાઉજ્જામ ધમ્મ પડિવજ્જહ, પડિવજ્જિત્તા  
કંડરીયસ્સ સતિય આયારમહય ગેણ્હહ, ગેણિહત્તા, ઇમ  
એયારુવ અભિગ્ગહં અભિગિણ્હહ-કપ્પહ મે થેરે વંદિત્તા  
ળમંસિત્તા થેરાણં અતિએ ચાઉજ્જામ ધમ્મ ઉવસપજ્જિત્તાણં  
તઓ પચ્છા આહાર આહરિત્તએ ત્તિકટ્ટુ, ઇમ ચ એયારુવ  
અભિગ્ગહ અભિગિણ્હેત્તા ણં પોહરિગિણીએ પડિણિક્કલમહ,  
પડિણિક્કલમિત્તા, પુઠ્ઠાણુપુઠ્ઠિચરમાણે ગામાણુગામ દૂઝજ-  
માણે જેણેવ થેરા ભગવતો તેણેવ પહારેત્થ ગમણાણાસૂ. ૫।

ટીકા—‘તણ પુહરીએ’ ઇત્યાદિ । તતઃ સ્વલુ પુન્ટરીકઃ સયમેવ પંચ  
મુષ્ટિક લોચ કરોતિ, તથા સ્વયમેવ ‘ચાઉજ્જામ’ ચાતુર્યામ=ચતુર્મહાવ્રતલક્ષણ  
ધર્મ પ્રતિપદ્યતે, પ્રતિપદ્ય, ‘કંડરીયસ્મ સતિય’ કણ્ડરીકસ્ય સત્કમ્=કણ્ડરીક  
સમ્બન્ધિત્વ ઇત્યર્થઃ, ‘આયારમહય’ આચારમાળક આચારાધ=માધોઃ પંચત્રિધા  
ચારપરિપાલનાય યદ્માળક=સ્ત્રપાત્રસદોરકમુખવસ્ત્રિકારજોહરણાદિરૂપમ્ તદ્

‘તણ પુહરીએ સયમેવ પચમુષ્ટિય’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તણ) इसके बाद (पुहरीए) पुहरीक ने (सयमेव)  
अपने आप (पचमुष्टिय लोच करेइ) अपना पचमुष्टिक लोच किया—  
(करित्ता सयमेव चाउज्जाम धम्म पडिवज्जह पडिवज्जित्ता कडरीयस्स  
सतिय आयारमहय गेण्हह) और लोच करके स्वय ही उन्होंने—चातु  
र्याम—चतुर्महाव्रत रूप धर्म को धारण कर लिया । एव कडरीक के  
अनगार अवस्था सम्बन्धी आचार माण्डक को—वस्त्र, पात्र, सदोरक मुख  
वस्त्रिका, रजोहरण आदिरूप मायु चिह्नों को—ले लिया । (गेण्हित्ता  
इम एयारुव अभिगगह अभिगिण्हह, कप्पह मे थेरे वंदित्ता णमसित्ता

‘तण पुहरीए सयमेव पचमुष्टिय’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(તણ) ત્યારપછી (પુહરીએ) પુહરીકે (સયમેવ) પોતાની  
બાતે જ (પચમુષ્ટિય લોચ કરેइ) પોતાનુ પચમુષ્ટિક લુચન કરુ

(કરિત્તા સયમેવ ચાઉજ્જામ ધમ્મ પડિવજ્જહ, પડિવજ્જિત્તા કંડરીયસ્સ  
સતિય આયારમહય ગેણ્હહ)

અને લુચન કરાને બાતે જ તેમણે ચાતુર્યામ—ચતુર્મહાવ્રત રૂપધર્મને ધારણ  
કરી લીધો અને કંડરીકની અનગાર અવસ્થા સંબંધી આચાર માળકો—વસ્ત્ર,  
પાત્ર, સદોરક મુખવસ્ત્રિકા, રજોહરણ વગેરે સાધુ ચિહ્નોને લઈ લીધો

ગૃહાતિ, ગૃહોત્થા, ઇમમેતદ્વપ=વક્ષ્યમાણમભિગ્રહ=પ્રતિજ્ઞાવિશેષમ્ અભિગૃહાતિ=કરોતિ અભિગ્રહરૂપમાદ-કલ્પતે મે સ્થવિગત રન્દિત્વા નમસ્યત્વા સ્થવિરાણા મન્તિકે ચાતુર્યામ ધર્મમ્ ' ઉપસવજ્ઞિત્તાણ ' ઉપસવપચ=સ્વીકૃત્ય, તતઃ પચ્છાત્-આશરમાદર્તુમ્' इति कृत्वा निश्चित्य, इमं च एतद्वपम् अभिग્રहम्, अभिगृह्य खलु पुण्डरीकिण्या प्रतिनिष्क्राम्यति निम्परति, प्रतिनिष्क्रम्य ' पुष्वाणुपुर्व्व ' पूर्व्वાનુ પૂર્વ્વા ચરન્, ગામાનુગામ દ્રવન્ યત્ર સ્થવિમ્ ભગવન્તસ્તર્જૈવ પ્રાધારયદ્=ગમ નાય ગન્તુ પ્રશ્નિત' ॥ સુ૦૫ ॥

થેરાણ અતિણ ચાઉજ્જામ ધમ્મ ઉપસવજ્ઞિત્તાણ, તઓ પચ્છા આહાર આહરિત્તાણ) ઘાદ મેં ડન્હોને ડસ પ્રકાર અભિગ્રહ ધારણ કિયા કિ જયતકમેં સ્થવિર ભગવતો કો વદના નમસ્કાર કર અનેકે પાસસે ચાતુર્યામ ધર્મકો ધારણ નહીં કર લૂગા, તયતકમેં આહાર પાની ગ્રહણ નહીં કરુંગા અનેકે પાસ ચાતુર્યામ ધર્મ ધારણ કરકે હી આહાર ગ્રહણ કરુંગા (ત્તિ કદ્દુદ્દુ ઇમચ પચ્છાત્ત્વ અભિગ્રહ અભિગિણિહિત્તા ણ પોંડરિગિણીય પહિનિક્કલમહ, પહિનિક્કલમિત્તા પુષ્વાણુપુર્વ્વિ ચરમાણે ગામાણુગામ દ્વ ડ્વજ્જમાણે જેણેચ થેરા ભગવતો તેણેચ પહારેત્થ ગમણાણ) इस प्रकार का यह अभिग्रहण कर वे उस पुण्डरीकिणी नगरी से निकले-और निकल कर तीर्थकर परम्परानुसार विहार करते हुए एवं एक ग्राम से दूसरे ग्राम में विचरण करते हुए वे उस ओर प्रस्थित हुए कि जहा स्थविर भगवत विराजमान थे ॥ सूत्र ५ ॥

( ગેણિહિત્તા ઇમ પચ્છાત્ત્વ અભિગ્રહ અભિગિણિહિત્તા, કપ્પદ્વ, મે થેરે વદિત્તા ણમસિત્તા થેરાણ અતિણ ચાઉજ્જામ ધમ્મ ઉપસવજ્ઞિત્તાણ તઓપચ્છા આહાર આહરિત્તણ)

ત્યારમાદ તેમણે આ જાનનેા અભિગ્રહ ધારણ કર્યો કે જ્યાં સુધી હું સ્થવિર ભગવતોને વદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તેમની પાસેથી ચાતુર્યામ ધર્મને ધારણ નહિ કર ત્યાં સુધી હું આહાર પાણી ગ્રહણ કરીશ નહિ તેમની પાસેથી ચાતુર્યામ ધર્મને ધારણ કરીને જ હું આહાર ગ્રહણ કરીશ

(ત્તિ કદ્દુદ્દુ ઇમ ચ પચ્છાત્ત્વ અભિગ્રહ અભિગિણિહિત્તાણ પોંડરિગિણીય પહિનિક્કલમહ, પહિનિક્કલમિત્તા પુષ્વાણુપુર્વ્વિ ચરમાણે ગામાણુગામ દ્વ ડ્વજ્જમાણે જેણેચ થેરા ભગવતો તેણેચ પહારેત્થ ગમણાણ)

આ પ્રમાણે તે અભિગ્રહને મનમાં ધારણ કરીને તેઓ તે પુંડરીકિણી નગરીની બહાર નીકળ્યા અને નીકળીને તીર્થ કર પર પરા મુજબ વિહાર કરતા કરતા અને આ પ્રમાણે એક ગામથી બીજે ગામ વિચરણ કરતા કરતા તેઓએ જ્યાં સ્થવિર ભગવતો વિરાજમાન હતા તે તરફ પ્રસ્થાન કર્યું ॥સૂ૦૫॥



मूलम्--तएणं तस्स कडरीयस्स रण्णो त पणीय पाण-  
भोयणं आहारियस्स समाणस्स अतिजागरिणं य अइ  
भोयणप्पसगेण य से आहारे णो सम्मं परिणमइ । तएणं  
तस्स कडरीयस्स रण्णो तस्सि आहारसि अपरिणममाणंसि  
पुव्वरत्तावरत्तकलसमयसि सरीरसि वेयणा पाउव्वभूया  
उज्जला विउला पगाढा जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगय-  
सरीरे दाहवक्कतीए यावि विहरइ । तएणं से कडरीए राया  
रज्जे य रट्ठे य अतेउरे य जाव अज्जोववन्ने अट्ठदुहट्ठवसट्ठे  
अकामए अवस्सवसे कालमासे काल किञ्चा अहे  
सत्तमाए पुढवीए उक्कोसकाल ट्ठिइयसि नरयसि नेरइयत्ताए  
उववण्णे । एवामेव समणाउसो । जाव पव्वइए समाणे  
पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसाए जाव अणुपरियट्ठि-  
स्सइ, जहा व से कडरीए राया ॥ सू० ६ ॥

टीका—‘तएणं तस्स’ इत्यादि । तत खलु तस्य कण्डरीकस्य राज्ञस्त  
‘पणीय’ प्रणीतम् = सरस गरिष्ठ च पानभोजनम् ‘आहारियस्स समाणस्स’  
आहारितस्य सत’=आहार कुर्वतः सत’ ‘अज्जागरियेण य’ अतिजागरितेन च=

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तस्स कडरीयस्स रण्णो) उस कड  
रीक राजा के (त पणीय पाणभोयण आहारीयस्स समाणस्स अतिजा  
गरिणं य अइभोयणप्पसगेण य से आहारे णो सम्म परिणमइ) इस  
प्रणीत-सरस-गरिष्ठ पान भोजन के खाने से तथा विषयों की अधिक  
आसक्ति के कारण अतिजागरण करने से एव प्रमाणाधिक भोजन के

‘तएणं तस्स कडरीयस्स रण्णो’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (तस्स कडरीयस्स रण्णो) ते कडरीक राजाने

(त पणीय पाणभोयण आहारियस्स समाणस्स अतिजागरिणं य अइभो  
यणप्पसगेण य से आहारे णो सम्म परिणमइ)

ते प्रणीत-सरस-गरिष्ठ पान भोजनना आहारथी तेभन विषयोभा  
वधारे पडती आसक्तिना दीधे, वधारे जागरणु करवाथी, अने प्रमाणु उरता

વિપયાવસ્થાએરતિજાગરણયા ' આસોયણપ્પનાગ' ' અતિમોજનમસકેન=પમાબાધિક  
મોજનેન સ આહારો નો સમ્પરૂ પરિણમતિ=અથાપદાહારમ્પ પરિપાકો ન મન્વતિ ।  
તતઃ સ્વલુ તસ્ય કણ્ડરીયસ્ય રાણઃ ' તસિ ' આહારસિ ' તમ્મિન્ આહારે ' અપ  
રિણમમાણસિ ' અપરિણમતિ=પરિપાકમગન્તિ સતિ ' પુન્નરત્તાવરત્તકાલસમ  
યસિ ' પૂર્વતાપરરાત્રકા રૂપમમે=રાત્રોર્મધ્યમામે ' સરીરસિ ' સરીર વેદના પ્રાદુ  
ર્ભૂતા, કોદશીવેદના ? ઉજ્જલા=સુલ્લેશરહિતા, વિપુટા=વિષ્ણા-સર્વશરીરવ્યાપ્તા  
' પગાદા ' પગાદા ' જાર દુરહિયાસા ' યાવદ્ દુરધિસલ્લા=સોડુમશક્યા, પુનઃ  
સ કણ્ડરીકો રાજા ' પિત્તજ્વરપરિગયસરીરે ' પિત્તજ્વર પરિગતશરીર =પિત્તજ્વરેણ  
પરિગત=વ્યાપ્ત શરીર યસ્ય મ.=પિત્તજ્વરપરિવ્યાપ્તશરીર. ' દાહવક્કતીણ ' દાહ  
વ્યુત્ક્રાન્તિક્ક=દાહજ્વરજ્વાલાસમાક્રાન્ત ચાપિ વિહરતિ=આસ્તે । તતઃ સ્વલુ સ  
કણ્ડરીકો રાજા રાજ્યે ચ રાષ્ટ્રે ચ અન્નપુરે ચ ' જાવ અજ્ઞોત્રવન્ને ' યાવત્

પ્રસંગ સે કુન આહાર કા પરિપાક ઠીક ર નહીં હોતા રહ્યા-(તણ  
તસ્ય કણ્ડરીયસ્ય રણ્ણો તસિ આહારસિ અપરિણમમાણસિ પુન્નરત્તાવર  
ત્તકાલસમયસિ સરીરસિ વેયણા પાવન્નુયા ઉજ્જલા વિલ્લા પગાદા  
જાવ દુરહિયાસા પિત્તજ્વરપરિગયસરીરે દાહવક્કતીણ યાવિ વિહરદ્)  
હસલિયે એક દિન કી ઘાત હૈ કિ ઉન કણ્ડરીક રાજા કે જબ વહ કુન  
સરસ ગરિષ્ઠ આહાર અચ્છી તરહ નહી પન્ના તથા ઉનકે શરીર મે રાત્રિ  
કે મધ્યમાગમે વેદના પ્રાદુર્ભૂત હુઈ । જિમ વજહ સે વહ વેદના સુલ્લ  
કે લેશ સે વર્જિત થી ઉનકે સમસ્ત શરીર ખર મેં વ્યાપ્ત હો રહી થી  
વહુત અધિક થી-યાવન્ વહ ઉન્હેં દુરધિસલ્લ હો રહી થી । પિત્તજ્વર  
સે વ્યાપ્ત હૈ શરીર જિન કા એસે વે કણ્ડરીક રાજા દાહજ્વર કી ફવાલા

પણુ વધારે લોજન પ્રસંગોમા કરેલા આહારનુ પાચન ખરાખર થતું નહોતું

( તણ તસ્ય કણ્ડરીયસ્ય રણ્ણો તસિ આહારસિ અપરિણમમાણસિ પુન્નર  
ત્તાવરત્તકાલસમયસિ સરીરસિ વેયણા પાવન્નુયા ઉજ્જલા વિલ્લા પગાદા જાવ  
દુરહિયાસા પિત્તજ્વરપરિગયસરીરે દાહવક્કતીણ યાવિ વિહરદ્ )

એથી એક દિવસની વાત છે કે તે કણ્ડરીક રાજાને બધારે લોજન રૂપમા  
લીધેલા તે સરસ અને ગરિષ્ઠ આહારનુ સારી રીતે પાચન થયું નહિ ત્યારે  
રાત્રિના મધ્ય ભાગમા તેમના શરીરમા વેદના થવા માડી, તેથી તેઓ ખૂબ જ  
દુખી થયા આ વેદનામા માત્ર દુખ જ થતું હતું, તે વેદના તેમના સંપૂર્ણ  
શરીરમા વ્યાપ્ત થઈ રહી પ્રમાણમા તે બહુ જ વધારે હતી યાવત્ તે  
તેમના માટે દુર્ગતિ સહ્ય ) થઈ પડી હતી પિત્તજ્વરથી વ્યાપ્ત થયેલા  
શરીરવાળા તે

૨૫ બનાવાઓથી સળંગી ઉઠ્યા

અધ્યુપપન્નઃ-મૂર્ચ્છિતો મૃદ્ધઃ પ્રથિત અધ્યુપપન્નઃ રાજ્યાદિપુ સર્વથાસક્ત इत्यर्थः,  
' अट्टदुहट्टवसट्टे ' आर्तदुःखार्तवशार्तः=तत्र=आर्तः=मनसा दुःखितः, दुःखार्तः=  
देहदुःखयुक्तः, वशार्तः=राज्यराष्ट्रान्तः. पुराद्यासमतेन्द्रियरशेन विषयशृङ्खलियोग-  
सम्भावनया पीडित=आर्तध्यानोपगत इत्यर्थः । ' अकामए ' अकामकः=अनि-  
च्छक -मरणवाञ्छारहित , ' अवस्सवसे ' अपस्ववश =अपगतस्वातन्त्र्य. परा  
धीनः सन् कालमासे काल कृत्वा ' अहे सत्तमाए ' अधः सप्तम्या पृथिव्याम्  
तमस्तमः प्रभाख्ये सप्तमे नरके 'उक्कोसकालट्टिइयसि' उत्कृष्टकालस्थितिके नरके

સે મી યુક્ત હો ગયે । (તણ સે કહરીણ રાયા રજ્જે ય રદ્દે ય અતેઝરે  
ય જાવ અજ્ઞોવવન્ને અટ્ટદુહટ્ટવસટ્ટે અકામણ અવસ્સવસે કાલમાસેકાલ  
કિચ્ચા અહે સત્તમાણ પુઢવીણ ઉક્કોસકાલટ્ટિહ્યસિ નરયસી નેરહ્યત્તાણ  
ઉવવણ્ણે ) ઇસ તરહ દુઃખિત બને હુણ વે કહરીક રાજા રાજ્ય રાષ્ટ્ર, એવ  
અન્તપુર મેં અધ્યુપપન્ન હો ગયે ઇસ પ્રકાર રાજ્યાદિકો મેં સર્વથા આસ  
ક્તિભાવ સે વધે હુણ વે રાજા મન સે દુઃખિત હોકર, દેહ કે દુઃખ સે  
એકક્ષણ અર્તધ્યાન મેં પડ ગયે । અન્ત મેં વે, યે નહીં ચાહતે યે કિ મેરી  
મૃત્યુ હો જાવે-તૌ મી સાસારિક સ્થિતિ સે વન્ધે હુણ હોને કે કારણ  
યા વેદનાઓ સે પીડિત હોને કે કારણ વે સ્વવશ નહીં થે પરતન્ન થે,  
ઇસલિયે કાલ અવસરકાલ કરકે મર કર નીચે તમસ્તમ પ્રમા નામ કે  
સાતવે નરક મે કિ જો ઉત્કૃષ્ટ કાલ સ્થિતિ પ્રમાણ હૈ-અર્થાત્ ૩૩ સા

( તણ સે કહરીણ રાયા રજ્જે ય રદ્દે ય અતેઝરે ય જાવ અજ્ઞોવવન્ને  
અટ્ટદુહટ્ટવસટ્ટે અકામણ અવસ્સવસે કાલમાસે કાલ કિચ્ચા અહે સત્તમાણ  
પુઢવીણ, અક્કોસકાલટ્ટિહ્યસિ નરયસિ નેરહ્યત્તાણ ઉવવણ્ણે )

આ પ્રમાણે દુઃખિત થયેલા તે કહરીક રાજા રાજ્ય, રાષ્ટ્ર અને રણ  
માસમા અધ્યુપપન્ન થઈ ગયા એટલે કે વધારે પડતા આમક્રાંત થઈ ગયા.  
આ પ્રમાણે ગન્ધ વગેરેમા સંપૂર્ણપણે આસક્ત ભાવથી બંધાયેલા તે રાજા  
મનથી દુઃખિત થઈને, શારીરિક કષ્ટથી એક ક્ષણ માટે પણ મુક્તિ નહિ થવાને  
કારણે વિષય સુખોના વિયોગની સંભાવના બંધ તેમજ રાજ્ય, રાષ્ટ્ર, રણવાસ  
વગેરેમા આસક્ત ઇન્દ્રિયોના વશમા હોવાને કારણે આર્તધ્યાનમા મગ્ન થઈ  
ગયા છે. તેઓ મૃત્યુને ઇચ્છતા નહોતા છતાંએ સામાનિક વાતાવરણમા  
બંધાયેલા હોવાને કારણે અથવા વેદનાઓથી પીડિત હોવાને કારણે તેઓ  
સ્વવશ હતા નહિ, પરવશ-પરતન્ન હતા, એથી કાળ અવસરે કાળ કરીને,-  
મૃત્યુ પામીને-નીચે તમસ્તમપ્રભા નામના સાતમા નરકમાં કે જે ઉત્કૃષ્ટ કાલ

विषयामरतेरतिजागरणया ' असौ यणस्पन्ग ' अतिभोजनममर्केन=प्रमाणाधिक  
 भोजनेन स आहारो नो मम्यरु परिणमति=यथापदाहारस्य परिपाको न भवति ।  
 ततः खलु तस्य कण्ठरीयस्य रातः ' तसि ' आहारसि ' तस्मिन् आहारे ' अप  
 रिणममाणसि ' अपरिणमति=परिपाकमगच्छति सति ' पुञ्चरत्तावरत्तकालसम  
 यसि ' पूर्वरात्रापररात्रकावयमे=रात्रोर्मध्यमामे ' मरीरसि ' शरीरे वेदना प्रादु  
 र्भूता, कीदृशीवेदना ? उज्ज्वला=सुखलेशरहिता, विपुला=विशाला-मर्बश्चरीरव्याप्ता  
 ' पगाढा ' पगाढा ' जात्र दुरहियासा ' यावद् दुरधिसह्य=सौदुमशक्या, पुनः  
 स कण्ठरीको राजा ' पित्तज्वरपरिगयसरीरे ' पित्तज्वर परिगतशरीर=पित्तज्वरेण  
 परिगत=व्याप्त शरीर यस्य स.=पित्तज्वरपरिव्याप्तशरीरः ' दाहवक्तीए ' दाह  
 व्युत्क्रान्तिक=दाहज्वरज्वालासमाक्रान्त चापि विहरति=आस्ते । ततः खलु स  
 कण्ठरीको राजा राज्ये च राष्ट्रे च अन्तःपुरे च ' जात्र अज्झोमवन्ने ' यावत्

प्रसंग से कृत्त आहार का परिपाक ठीक २ नहीं होता रहा-(तएण  
 तस्स कण्ठरीयस्स रण्णो तसि आहारसि अपरिणममाणसि पुञ्चरत्तावर  
 त्तकालसमयसि सरीरसि वेयणा पाउब्भुया उज्जला विउला पगाढा जाव  
 दुरहियासा पित्तज्वरपरिगयसरीरे दाहवक्तीए यावि विहरइ)  
 इसलिये एक दिन की घात है कि उन कण्ठरीक राजा के जब वह कृत्त  
 सरस गरिष्ठ आहार अच्छी तरह नहीं पचा तब उनके शरीर में रात्रि  
 के मध्यभागमें वेदना प्रादुर्भूत हुई। जिस वजह से वह वेदना सुख  
 के लेश से वर्जित थी उनके समस्त शरीर भर में व्याप्त हो रही थी  
 बहुत अधिक थी-यावत् वह उन्हें दुरधिसह्य हो रही थी। पित्तज्वर  
 से व्याप्त है शरीर जिन का ऐसे वे कण्ठरीक राजा दाहज्वर की ज्वाला

पणु वधारे लोअन प्रस गोभा करेला आह रतु पायन अराअर थतु नडोतु

( तएण तस्स कण्ठरीयस्स रण्णो तसि आहारसि अपरिणममाणसि पुञ्च  
 रत्तावरत्तकालसमयसि सरीरसि वेयणा पाउब्भुया उज्जला विउला पगाढा जाव  
 दुरहियासा पित्तज्वरपरिगयसरीरे दाहवक्तीए यावि विहरइ )

ओथी ओइ हिवसनी पात छे के ते कण्ठरीक राजाने व्यापरे लोअन रुपमा  
 लीधेला ते सरस अने गरिष्ठ आहारतु सारी रीते पायन थयु नडि त्यारे  
 रात्रिना मध्य भागमा तेमना शरीरमा वेदना थवा भाडी, तेथी तेओ भूअअ  
 हु भी थया आ वेदनामा मात्र दुअअअ थतु छतु, ते वेदना तेमना स पूणु  
 शरीरमा व्याप्त थई रही छती प्रमाणमा ते अहुअ वधारे छती यावत् ते  
 तेमना भाटे दुरधिसह्य ( असह्य ) थई पडी छती पित्तज्वरथी व्याप्त थयेला  
 शरीरवाणा ते कण्ठरीक राजा दाहज्वरनी व्याप्ताओथी सजगी छया।

अध्युपपन्नः—मूर्च्छितो गृद्धः ग्रथित अध्युपपन्नः राज्यादिषु सर्वथासक्त इत्यर्थः,  
' अट्टदुहट्वसट्टे ' आर्तदुःखार्तवशात्=तत्र=आर्तः=मनसा दुःखितः, दुःखार्तः=  
देहदुःखयुक्तः, वशात्=राज्यराष्ट्रान्तः पुराद्यासक्तेन्द्रियवशेन विषयवृत्तवियोग-  
सम्भावनया पीडित=आर्तध्यानोपगत इत्यर्थः । ' अकामए ' अकामकः=अनि-  
च्छक—मरणवाञ्छारहितः, ' अवस्सवसे ' अपस्ववश=अपगतस्वातन्त्र्यः परा-  
धीनः सन् कालमासे कालं कृत्वा ' अहे सत्तमाए ' अयः सप्तम्या पृथिव्याम्  
तमस्तमः प्रभाख्ये सप्तमे नरके ' उक्कोसकालट्टिइयसि ' उत्कृष्टकालस्थितिके नरके

से भी युक्त हो गये । (तएण से कडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अतेउरे  
य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्वसट्टे अकामए अवस्सवसे कालमासे काल  
किन्वा अहे सत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्टिइयसि नरयसी नेरइयत्ताए  
उववण्णे ) इस तरह दुःखित बने हुए वे कडरीक राजा राज्य राष्ट्र, एवं  
अन्तपुर में अध्युपपन्न हो गये इस प्रकार राज्यादिको में सर्वथा आस-  
क्तिभाव से बंधे हुए वे राजा मन से दुःखित होकर, देह के दुःख से  
एकक्षण अर्तध्यान में पड़ गये । अन्त में वे, ये नहीं चाहते थे कि मेरी  
मृत्यु हो जावे—तौ भी नासारिक स्थिति से बन्धे हुए होने के कारण  
या वेदनाओं से पीडित होने के कारण वे स्ववश नहीं थे परतत्र थे,  
इसलिये काल अवसरकाल करके मर कर नीचे तमस्तम प्रभा नाम के  
सातवे नरक में कि जो उत्कृष्ट काल स्थिति प्रमाण है—अर्थात् ३३ सा

( तएण से कडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अतेउरे य जाव अज्झोववन्ने  
अट्टदुहट्वसट्टे अकामए अवस्सवसे कालमासे काल किन्वा अहे सत्तमाए  
पुढवीए, अक्कोसकालट्टिइयसि नरयसि नेरइयत्ताए उववण्णे )

आ प्रमाणे दुःखित थयेला ते कडरीक राजा राज्य, राष्ट्र अने रणु-  
वासमा अध्युपपन्न थई गया अट्टद्वे के वधारे पडता आसक्त थई गया।  
आ प्रमाणे राज्य वगेरेमा स पूर्णपणे आसक्त लावथी अघायेला ते राजा  
मनथी दुःखित थईने, शारीरिक कष्टथी अक क्षण भाटे पणु भुक्ति नहि थवाने  
कारणे विषय सुणोना वियोगनी स लावना अहल तेमज्ज राज्य, राष्ट्र, रणुवास  
वगेरेमा आसक्त धन्दिओना वशमा होवाने कारणे आर्तध्यानमा भग्न थई  
गया छेवटे तेओ मृत्युने धम्भिता नहोता छताओ सारिक वातावरणमा  
अघायेला होवाने कारणे अथवा वेदनाओथी पीडित होवाने कारणे तेओ  
अवश हुता नहि, परवश—परतत्र हुता, ओथी काण अवसरे काण करीने,—  
मृत्यु पाभीने—नीचे तमस्तमप्रभा नामना सातमा नरकमा हे जे उत्कृष्ट काल-



નૈરપિકતયા ઉપવગ્નઃ । एतद् दृष्टान्तं न भगवान् महावीरं साधुनुपदिशति-एवमेव  
=अने नैवप्रकारेण हे आयुष्मतः ! श्रमणाः यः कश्चिदस्माकं श्रमणो वा श्रमणी वा  
आचार्योपाध्यायागमतिके गारम्भजितः सन पुनरपि मानुष्यमान् कामभोगान्  
'आसाण्ड' आस्तादयति । स 'जाव अणुपरियट्टिस्मइ' गारदनुपर्यटिप्यति-  
यावत्-प्रातुरन्तससारकान्तार परिभ्रमिष्यति । 'जहरे से कडरीए राया' यथैव  
स कण्डरीको राजा ॥ सू० ६ ॥

મૂર્ખ-તણં સે પોઢરીણ અળગારે જેણેય થેરા ભગવંતો  
તેણેવ ઉવાગચ્છડ, ઉવાગચ્છિત્તા યેરે ભગવતે વદડ નમસઈ,  
વદિત્તા નમંસિત્તા થેરાણ અંતિણ દોઞ્ચપિ ઘાઉજ્ઞામ ધમ્મં  
પડિવજ્ઞઈ, છટ્ટવલ્લમણપારણગંસિ પઢમાણ પોરિસીણ સજ્ઞાય  
કરેઈ, કરિત્તા જાવ અહમાણે સીયલ્લુમ્મલ્લ પાળભોયણં પડિ-  
ગાહેઈ, પડિગાહિત્તા, અહાપડ્ડજત્તમિતિ કટ્ટુ પડિાણિયત્તઈ.

गर की जहा उत्कृष्ट स्थिति है-नारकी की पर्याय से उत्पन्न हो  
इसी बात को दृष्टान्त से श्री भगवान् महावीर प्रभु साधुओं को  
झाते हैं-( एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे पुणरवि  
स्सए कामभोगे आमाए जाव अणुपरियट्टिस्मइ, जहा व से कडरीए  
राया ) इसी तरह हे आयुष्मत श्रमणो ! जो कोई हमारा श्रमण अथवा  
श्रमणीजन आचार्य उपाध्याय के पास में दीक्षित होकर के पुन मानुष्य  
भव सन्धी कामभोगों को भोगता है वह कडरीक राजा की तरह  
यावत् इस चतुर्गति रूप ससार कान्तार में परिभ्रमण कयेगा ॥सूत्र ६॥

સ્થિતિ પ્રમાણુ છે-એટલે કે ૩૩ સાગરની જ્યાં ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ છે-નારકીની  
પર્યાયથી જન્મ પામ્યા એ જ વાતને શ્રી ભગવાન મહાવીર પ્રભુ દૃષ્ટાંત રૂપમાં  
સાધુઓને સમજાવે છે કે—

एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे पुणरवि मानुस्सए कामभोगे  
आसाए जाव अणुपरियट्टिस्मइ, जहा व से कडरीए राया )

આ પ્રમાણુ હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે કોઈ અમારા શ્રમણ અથવા  
શ્રમણીજન આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયની પાસે દીક્ષિત થઈને ફરી ને તે મનુષ્ય  
ભવના કામભોગોને ભોગવે છે, તે કડરીક રાજાની જેમ યાવત્ આ ચતુર્ગતિ  
રૂપ સસાર કાતારમાં પરિભ્રમણ કરશે ॥ સૂત્ર ૬ ॥

जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, भत्त-  
पाणं पडिदसेइ पडिदसित्ता, थेरेहि भगवतेहि अवभणुत्ताए  
समाणे अमुच्छिष्टे अगिद्धे अगठिष्टे अणज्जुववण्णे विल-  
मित्र पण्णगभूएणं अप्पाणेण तं फासुएसणिज्ज असेणपा-  
णखाइमसाइम सरीरकोट्ठुगंसि पक्खिवइ । तएणं तस्स  
पुडरीयस्स अणगारस्स त कालाइकतं अरस विसर सीय-  
लुक्ख पाणभोयण आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकाल-  
समयंसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स सेआहारे णो सम्मं  
परिणमइ । तएणं तस्स पुडरीस्स अणगारस्स सरीरगंसि  
वेयणा पाउव्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्जरप-  
रिगयसरीरे दाहवक्कंतिए विहरइ । तएणं से पुडरीए अण-  
गारे अत्थामे अवलं अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे करयल  
जाव एव वयासी-णमोत्थुणं अरिहताणं जाव सपत्ताणं  
णमोत्थुणं थेराण भगवताण मम धम्मायरियाणं धम्मोव-  
एसथाण पुव्वि पि य ण मए थेराण अतिष्टे सव्वे पाणाइ-  
वाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादसणसल्ले णं पच्चक्खाए जाव  
आलोइयपडिक्कते कालमासे काल किञ्चा सव्वट्ठसिद्धे उव-  
वन्ने । तओ अणतर उव्वट्ठित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ  
जाव सव्वदुक्खाणमत काहिइ । एवामेव समणाउसो । जाव  
पव्वइए समाणे माणुस्सएहि कामभोगेहि णो सज्जइ णो रज्जइ,  
जाव विप्पडिघायमावज्जइ, से ण इह भवे चेव वहुण सावगाणं०

નૈરપિકૃતયા ઉપપન્નઃ। एनद् दृष्टान्तेन भगवान् महावीर माधुन्यपटिष्यति-एवमेव  
=अने नैवप्रकारेण हे आयुष्मतः ! श्रमणाः यः पश्चिदस्माक श्रमणो वा श्रमणी वा  
आचार्योपाध्यायानामतिके यावत्प्रजितः सन् पुनरपि मानुष्यकान् कामभोगान्  
' आसाण्ड ' आरुदयति । स ' जाव अणुपरियट्ठिस्मइ ' यावदनुपर्यटिष्यति-  
यावत्-चातुरन्तससारकान्तार परिभ्रमिष्यति । ' जहेर से कडरीए राया ' यथैव  
स कण्डरीको राजा ॥ सू०६ ॥

મૂલમ્-તર્ણાં સે પોંડરીએ અળગારે જેણેવ થેરા ભગવંતો  
તેણેવ ઉવાગચ્છડ, ઉવાગાછિત્તાથેરે ભગવતે વદડ નમસડ,  
વદિત્તા નમંસિત્તા થેરાણં અંતિએ દોઢપિ બ્રાહ્મણામ ધર્મં  
પડિવજ્જડ, છટ્ઠકલ્લમણપારણગંસિ પઢમાએ પોરિસીએ સુજ્ઞાય  
કરેડ, કરિત્તા જાવ અડમાણે સીયલ્લકલ્લ પાણભોયણં પડિ  
ગાહેડ, પડિગાહિત્તા, અહાપલ્લજત્તમિતિ કદ્દુ પડિાણિયત્તડ,

गर की जहा उत्कृष्ट स्थिति है-नारकी की पर्याय से उत्पन्न हो गये।  
इसी बात को दृष्टान्त से श्री भगवान् महावीर प्रभु साधुओं को सम-  
झाते हैं-( एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे पुणरवि माणु-  
स्सए कामभोगे आसाए जाव अणुपरियट्ठिस्मइ, जहा व से कडरीए  
राया ) इसी तरह हे आयुष्मत श्रमणो ! जो कोई हमारा श्रमण अथवा  
श्रमणीजन आचार्य उपाध्याय के पास में दीक्षित होकर के पुनः मनुष्य  
भव सचन्धी कामभोगो को भोगता है वह कडरीक राजा की तरह  
यावत् इस चतुर्गति रूप ससार कान्तार में परिभ्रमण करेगा ॥सूत्र६॥

સ્થિતિ પ્રમાણુ છે-એટલે કે ૩૩ સાગરની જ્યાં ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ છે-નારકીની  
પર્યાયથી જન્મ પામ્યા એ જ વાતને શ્રી ભગવાન મહાવીર પ્રભુ દેખાત રૂપમાં  
સાધુઓને સમજાવે છે કે—

एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे  
आसाए जाव अणुपरियट्ठिस्मइ, जहा व से कडरीए राया )

આ પ્રમાણુ છે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે કોઈ અમારા શ્રમણ અથવા  
શ્રમણીજન આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયની પાસે દીક્ષિત થઈને ફરી જો તે મનુષ્ય  
ભવના કામભોગોને ભોગવે છે, તે કડરીક રાજાની જેમ યાવત્ આ ચતુર્ગતિ  
રૂપ સસાર કાતારમાં પરિભ્રમણ કરશે ॥ સૂત્ર ૬ ॥

पौरुष्या=प्रथमे पहरे स्वाध्याय करोति, कृत्वा 'अडमाणे' यावत् अटन् उच्चनीच-  
मध्यमकुलेषु भिक्षाय परिभ्राम्यन् 'सीयलुक्ख' शीतरूक्ष-शीत=पर्युषित, रूक्ष  
घृतादिरहित पान भोजन प्रतिगृह्णाति, प्रतिगृह्य 'अहापज्जत्तमितिकद्दु' यथापर्या-  
प्तमिति कृत्वा=उदरभरणपर्याप्तमिदमन्नमिति मनसि कृत्य 'पडिणियत्तइ' प्रति-

पडिवज्जइ, छद्दुक्खमणपारणगसि पढमाण पोरिसीण सज्झाय करेइ  
करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्ख पाणभोयण पडिगाहेइ, पडिगाहित्ता  
अहापज्जत्तमि त्ति कद्दु पडिनियत्तइ-जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवा  
गच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पडिदसेइ, पडिदसित्ता थेरेहिं भगवतेहिं  
अवभणुन्नाए समाणे अमुच्छिअ अगिद्धे अगठिए अणञ्जुववण्णे विल  
मिव पण्णगभूएण अप्पाणेण त फासुएसणिज्ज असणपाणखाइम  
साइम सरीरकोट्ठगसि पक्खिवइ) वहाँ आकर के उन्हो ने स्थविर भग-  
वतों को वदना नमस्कार किया। वदना नमस्कार करके बाद में उन्हो  
ने उनसे दुवाराचातुर्याम-चतुर्महाव्रतरूप धर्म को धारण किया। जब  
पष्ठक्षपण की पारणा का समय आया उस समय वे प्रथम पौरुषी में  
स्वाध्याय करते-और स्वाध्याय करके फिर वे उच्च नीच मध्यम कुलों  
में भिक्षा के लिये परिभ्रमण करते उस समय जो उन्हें शीत-पर्युषित,  
रूक्ष-घृतादिरहित पान भोजन मिलता-वह वे ले लेते-और यह अन्न-  
सामग्री उदरभरण के लिये पर्याप्त है ऐसा मन में विचार कर वहाँ से

पारिस्सीए सज्जाय करेइ करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्ख पाणभोयण पडिगाहेइ  
पडिगाहित्ता अहापज्जत्तमि त्ति कद्दु पडिनियत्तइ-जेणेव थेरा भगवतो तेणेव  
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाण पडिदसेइ, पडिदसित्ता थेरेहिं भगवतेहिं,  
अवभणुन्नाए समाणे अमुच्छिअ अगिद्धे अगठिए अणञ्जुववण्णे विलमिव पण्णगभूएण  
अप्पाणेण त फासुएसणिज्ज असणपाणखाइमसाइम सरीरकोट्ठगसि पक्खिवइ)

त्या आवीने तेमणे स्थविर भगवतोने वदना अने नमस्कार कर्था  
वदना अने नमस्कार करीने तेमणे तेमनी पासेथी जीअवर चातुर्याम-चतु  
र्महाव्रत रूप धर्मने धारण कर्था न्यारे पष्ठ क्षपणुनी पारणाने वअत  
आव्यो त्यारे तेओ प्रथम पौरुषीमा स्वाध्याय करता अने स्वाध्याय करीने  
तेओ उच्च, नीच अने मध्यम कुलोमा भिक्षा भाटे परिभ्रमण करता ते  
समये तेमने शीत-पर्युषित, रूक्ष-धी वगरने, पान आहार भणने। ते तेने  
तेओ स्वीकारी लेता अने 'आटले आहार उदर-पोषण भाटे पूरतो छे'  
आवे। मनमा विचार करीने त्याथी पाछा करी जता पाछा आवीने भिक्षामा

अच्छणिजे वदणिजे पूयणिजे सशकारणिजे सम्माणणिजे  
 कल्लाण मगलदेवय चेडय पज्जुवासणिजेत्तिकहु परलोप  
 वि य णं णो आगच्छइ वहुणि दडणाणि य मुंडणाणि य  
 तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरत ससारकतारं  
 जाव वीडवइस्सइ जहावसे पोंडरीए अणगारे । एवं खलु  
 जंबू । समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं  
 जाव सिद्धिगइणामधेज्ज ठाण संपत्तेण एगुणवीसइमस्स  
 नायज्झयणस्स अयमेट्टे पन्नत्ते । एव खलु जंबू । समणेणं  
 भगवया महावीरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्ज ठाण संपत्तेणं  
 छट्टस्स अंगरस पढमस्स सुयक्खधस्स अयमेट्टे पण्णेत्ते  
 त्तिवेमि ॥ सू० ७ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः खलु स पुण्डरीकोऽनगारो यत्रैव  
 स्थविराभगवन्तस्तत्रैव उवागच्छति, उवागत्य स्थविरान् भगवतो वन्दते नमस्यति,  
 वन्दित्वा नमस्यित्वा स्थविराणामन्तिके ‘दोच्चपि’ द्वितीयमपिवारम् चातुर्याम=  
 चतुर्महावतरूपधर्मं प्रतिपन्नते । तथा पष्ठक्षपणपारणाया सप्ताप्ताया प्रथमाया

‘तएण से पोंडरीए अणगारे’ इत्यादि ।

टीकार्थः—(तएण) इसके बाद (से पोंडरीए अणगारे) वे पुण्डरीक  
 अनगार (जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ) जहा स्थविर भग  
 वत विराजमान थे वहा आ गये । (उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदइ,  
 नमसइ, वदित्ता, नमसित्ता थेराणं अतिए दोच्चपि चाउज्जाम धम्म

(तएण से पोंडरीए अणगारे) इत्यादि ।

टीकार्थः—(तएण) त्याख्याद (से पोंडरीए अणगारे) ते पुण्डरीक अन  
 गारे (जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ) जहा स्थविर भगवत मिरा  
 जमान छता त्या गया

(उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदइ, नमसइ, वदित्ता, नमसित्ता थेराण  
 अतिए दोच्चपि चाउज्जाम, धम्म पडिक्कइ,



पौरुष्या=प्रथमे प्रहरे स्वाध्याय करोति, कृत्वा 'अडमाणे' यावत् अटन् उच्चनीच-  
मध्यमकुलेषु भिक्षार्थं परिभ्राम्यन् 'सीयलुक्ख' शीतरूक्ष-शीत=पर्युषित, रूक्ष  
घृतादिरहित पान भोजन प्रतिगृह्णाति, प्रतिगृह्य 'अहापज्जत्तमितिकट्टु' यथापर्या-  
प्तमिति कृत्वा=उदरभरणपर्याप्तमिदमन्नमिति मनसि कृत्य 'पडिणियत्तइ' प्रति-

पडिवज्जइ, छट्टकखमणपारणगसि पढमाण पोरिसीण सज्जाय करेइ  
करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्ख पाणभोगण पडिगाहेइ, पडिगाहित्ता  
अहापज्जत्तमि त्ति कट्टु पडिणियत्तइ-जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवा-  
गच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पडिदसेइ, पडिदसित्ता थेरेहिं भगवतेहिं  
अवभणुन्नाण समाणे अमुच्छिण अगिद्धे अगट्ठिण अणज्जुववण्णे विल  
मिव पणगगभूएण अप्पाणेण त फासुएसणिज्ज असणपाणग्वाइम  
साइम सरीरकोट्टगसि पक्खिवइ) वहाँ आकर के उन्हो ने स्थविर भग-  
वतों को वदना नमस्कार किया। वदना नमस्कार करके बाद में उन्हो  
ने उनसे द्वुवाराचातुर्याम-चतुर्महाव्रतरूप धर्म को धारण किया। जब  
षष्ठक्षपण की पारणा का समय आया उस समय वे प्रथम पौरुषी में  
स्वाध्याय करते-और स्वाध्याय करके फिर वे उच्च नीच मध्यम कुलों  
में भिक्षा के लिये परिभ्रमण करते उस समय जो उन्हें शीत-पर्युषित,  
रूक्ष-घृतादिरहित पान भोजन मिलता-वह वे ले लेते-और यह अन्न-  
सामग्री उदरभरण के लिये पर्याप्त है ऐसा मन में विचार कर वहाँ से

पोरिसीए सज्जाय करेइ करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्ख पाणभोगण पडिगाहेइ  
पडिगाहित्ता अहापज्जत्तमि त्ति कट्टु पडिणियत्तइ-जेणेव थेरा भगवतो तेणेव  
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाण पडिदसेइ, पडिदसित्ता थेरेहिं भगवतेहिं,  
अवभणुन्नाण समाणे अमुच्छिण अगिद्धे अगट्ठिण अणज्जुववण्णे विलमिव पणगगभूएण  
अप्पाणेण त फासुएसणिज्ज असणपाणग्वाइमसाइम सरीरकोट्टगसि पक्खिवइ)

त्या आनीने तेमणे स्थविर भगवतोने वदना अने नमस्कार कर्था  
वदना अने नमस्कार करीने तेमणे तेमनी पासैथी जीअवर चातुर्याम-चतु  
र्महाव्रत रूप धर्मने धारण कर्था ज्यारे षष्ठ क्षपणनी पारणाने वणत  
आव्ये। त्यारे तेणे प्रथम पौरुषीमा स्वाध्याय करता अने स्वाध्याय करीने  
तेणे उच्च, नीच अने मध्यम कुलोमा भिक्षा माटे परिभ्रमण करता ते  
समये तेमने शीत-पर्युषित, रूक्ष-धी वगरने, पान आहार भणने। ते तेने  
तेणे स्वीकरी लेता अने 'आट्ठे। आहार उदर-पोषण माटे पूरते। छे'  
आवे। मनमा विचार करीने त्याथी पाछा करी जता पाछा आनीने भिक्षामा

अच्छणिजे वटणिजे पूयणिजे सवकारणिजे सम्माणणिजे  
 कछाण मगलदेवय चेइय पज्जुवासणिजेत्तिकहु परलोप  
 वि य णं णां आगच्छइ वहुणि दडणाणि य मुंडणाणि य  
 तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरत ससारकतारं  
 जाव वीइवइस्सइ जहावसे पोंडरीए अणगारे । एव खलु  
 जंबू । समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तिथगरेणं  
 जात्र सिद्धिगइणामधेज्ज ठाण मपत्तेण एगूणवीसइमस्स  
 नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते । एव खलु जंबू । समणेणं  
 भगवया महावीरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्ज ठाणं सपत्तेणं  
 छट्ठस्स अंगरस पढमस्स सुयक्खधस्स अयमट्ठे पण्णेत्ते  
 त्तिवेमि ॥ सू० ७ ॥

टीका—‘ तएण से ’ इत्यादि । ततः खलु स पुण्डरीकोऽनगारो यत्रैव  
 स्थविराभगवन्तस्तत्रैव उवागच्छति, उपागत्य स्थविरान् भगवतो वन्दते नमस्यति,  
 वन्दित्वा नमस्यित्वा स्थविराणामन्तिके ‘ दोच्चपि ’ द्वितीयमपिचारम् चातुर्याम=  
 चतुर्महाव्रतरूपधर्मं प्रतिपन्नते । तथा पष्ठक्षपणपारणाया संपाप्ताया प्रथमाया

‘ तएण से पोंडरीए अणगारे ’ इत्यादि ।

टीकार्थः—( तएण ) इसके बाद ( से पोंडरीए अणगारे ) वे पुण्डरीक  
 अनगार ( जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ ) जहा स्थविर भग  
 वत विराजमान थे वहा आ गये । ( उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदइ,  
 नमसइ, वदित्ता, नमसित्ता थेराणं अतिए दोच्चपि चाउज नाम धम्म

( तएणं से पोंडरीए अणगारे ) इत्यादि ।

टीकार्थः—( तएण ) त्थारणाइ ( से पोंडरीए अणगारे ) ते पुण्डरीक अन  
 गार ( जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ ) जहा स्थविर भगवत विरा  
 जमान हैंता त्या गया

( उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदइ, नमसइ, वदित्ता, नमसित्ता थेराण  
 अतिए दोच्चपि चाउज नाम, धम्म पडिक्कज्जइ, छट्ठक्खमणपारणगोधि पढमाए

समयमुल्लङ्घ्य प्राप्तम्, अरस विरस शीतरूक्ष पान भोजनम् 'आहारियस्स' आहारितस्य सत पूर्वरात्रापररात्रकालसमये 'धम्मजागरियं जागरमाणस्स' धर्म जागारिका जाग्रत = धर्मचिन्तनार्थं जागरणा कुर्वतः स आहारो नो सम्यक् परिणमति = नो परिपाक गच्छति । ततः खलु तस्य पुण्डरीकस्य अनगारस्य शरीरे वेदना प्रादुर्भूता 'उज्जला जाव दुरहियासा' उज्ज्वला यावत् दुरजिसह्या, एषा व्याख्यापूर्ववत्, तथा स पुण्डरीकोऽनगारः पित्तज्वरपरिगतशरीरो दाहव्युत्क्रान्तिकः = दाहज्वरसमाकुलश्चापि विहरति । ततः खलु स पुण्डरीकोऽनगार 'अस्थामे' अस्थामा = शक्तिरहितः, अवल = शारीरिकबलरहितः, 'अवीरिए' अवीर्यः = उत्साहरहितः, अपुरिसक्कारपराक्रमः = पुरुषार्थपराक्रमरहितः 'करयल जाव' करतल यावत् = करतलपरिगृहीतं दशनख मस्तके अञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत् - नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो यावत्संप्राप्तेभ्यः = मोक्ष गतेभ्यः, नमोस्तु खलु स्थविरेभ्यो भगवद्भ्यो मम धर्माचार्येभ्यो धर्मोपदेशकेभ्यः, पूर्वमपि च खलु मया स्थविराणा

भोषण आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमइ ) इस तरह उन पुण्डरीक अनगार का कालातिक्रम से खाया हुआ वह अरस, विरस, शीत, रूक्ष, पानभोजन रात्रि के मध्यभाग में धर्मचिन्तन निमित्त जागरण करने के कारण अच्छी तरह से नहीं पचता था (तएण तस्स पुण्डरीयस्स अणगारस्स सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्वरपरिगतसरीरे दाहवक्कतिण विहरइ, तएण से पुण्डरीए अणगारे अस्थामे, अवले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरिक्कमे करयल जाव, एव वयासी-णमोत्थुण अरिहताण जाव सपत्ताण णमोत्थुण थेराण भगवताण मम धम्मायरियाण धम्मोवएसयाण पुब्बि पि य ण मए

लुस्स पानभोषण आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमइ )

आ प्रभावे ते पुण्डरीक अनगारोऽन्नालातिक्रमथी कुरेत्ते ते अरस, विरस, शीत, रूक्ष पान आहारं रात्रिना मध्य भागमा धर्मचिन्तन भाटे कुरेत्ता जागरणने लीये सारी रते पाथन थत्तु न इत्तु

( तएण तस्स पुण्डरीयस्स अणगारस्स सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्वरपरिगतसरीरे दाहवक्कतिण विहरइ, तएण से पुण्डरीए अणगारे अस्थामे, अवले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरिक्कमे करयल जाव, एव वयासी-णमोत्थुण अरिहताण जाव सपत्ताण थेराण भगवताण मम धम्मायरियाण

નિર્વર્તે=પ્રત્યાગત્તિ, પ્રતિનિર્ગમ્ય ચત્રીર મ્યગિભગવન્તસ્તત્રૈવ ઉપાગન્તિ,  
 ઉપાગત્ય, ભક્તપાન પ્રતિદર્શયતિ, પ્રતિદર્શ્ય, સ્થવિરૈર્ભગવદ્વિરશ્વનુદ્ધાતઃ સન્  
 અમૂર્ચિત્ત અગૃહ્ણ અગ્રયિત' એનધ્યુપપન્નઃ=ભામક્તિપરિગ્જિત ઇતિભાવ', ' ચિલ  
 મિત્ર પન્નગભૂષણ અપ્પાણેણ ' ચિલમિત્ર પન્નગભૂતેન આત્મના ઇવ=યથા પન્નગ  
 ભૂતેન=પન્નગભવમાગતેન આત્મના=નીતેન ચિલ પ્રવિચ્યતે, તથા ત ' કાષ્ટુણ્ણ  
 ણિજ્જં ' પ્રાસુકેપણીય=દ્વાચત્તારિણદુત્તોપરિગ્જિતમ્ અગ્નિ પાનં ચાગ્ર સ્યાગ્ર 'સરીર  
 કોઢ્ઢગસિ' શરીરકોષ્ટકે=ઉદરે પ્રવિષતિ, યથા મુનદ્વો વિગ્મ્ય પાર્શ્વભાગદ્વયમસપ્  
 શન્ મ યમાગત દયાત્માન ચિલે પ્રવેશયતિ તથા સ મુગમ્ય પાર્શ્વદ્વયસ્પર્શરહિત  
 માદાર કણ્ઠનાલાભિમુખ પ્રવેશ્ય આહારયતીતિ ભાવ' । તત ચલુ તસ્ય પુણ્ડરી  
 કસ્ય અનગારસ્ય ' કાલાઢ્ઢકત ' વાલાતિકાન્ત=કાચમતિક્રમ્ય પ્રાપ્તમ્-વૃશ્ચા

વાપિસ આ જાતે-વાપિસ આકર ફિર પ્રાપ્ત મિદ્ધાન્ન કો દિલ્લાને કે લિયે  
 વે જહા સ્થવિર ભગવત વિરાજમાન હોતે વર્હા આતે-વર્હાં આકર પ્રાપ્ત  
 મિદ્ધાન્ન કો એન સ્થવિર ભગવતો કો દિલ્લાતે-દિલ્લાલકર જલ્લ વે એસ  
 આદાર કો લાને કી આજ્ઞા દેતે-તત્ર વે અમૂર્ચિત્ત ભાવ સે અગૃહ્ણચિ  
 ત્તવૃત્તિ સે, એવ આસક્તિ રહિત પરિણતિ સે એસ પ્રાશુક ણ્ણીય-૪૨  
 દોષોં સે રહિત અગ્નિ, પાન, લાઘ, એવ સ્વાદ્યરૂપ-આદાર કો જિસ  
 તરહ સર્પ-ચિલ મેં પ્રવિષ્ટ હોતા હૈ એસી તરહ સે શરીર કોષ્ટક મેં-  
 ઉદર મેં ઢાલ દેતે થે । કારણ હસકા હસ પ્રકાર હૈ-જૈસે મુજગ ચિલ કે  
 પાર્શ્વદ્વય નહી છૂતા હુઆ સીધે મધ્યભાગ સે અપને કો ચિલ મેં પ્રવિષ્ટ  
 કરાતા હૈ એસી તરહ વે મુનિરાજ મુખ કે પાર્શ્વદ્વય કે સ્પર્શ સે રહિત  
 આદાર કો સીધે કણ્ઠનાલ મેં ધર કર આદાર કરતે થે (તણ તસ્સ  
 પુણ્ડરીયસ્સ અણગારસ્સ ત કાલાઢ્ઢકત અરસવિરસ સિયલુચ્ચ પાણ

પ્રાપ્ત આદારને બતાવવા માટે જ્યા તે સ્થવિર ભગવત વિરાજમાન હતા ત્યા  
 આવતા ત્યા આવીને મેળવેલા આદારને તે સ્થવિર ભગવતોને બતાવતા અને  
 બતાવીને જ્યારે તેઓ તે આદારને ગ્રહણ કરવાની આજ્ઞા કરતા ત્યારે તેઓ  
 અમૂર્ચિત-લાવથી, અગૃહ્ણ-ચિત્તવૃત્તિથી અને આસક્તિ રહિત પરિણતિથી તે  
 પ્રાસુક એપણીય-૪૨ દોષોથી રહિત અગ્નિ, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદરૂપ આદાર  
 રને જેમ સાપ દરમા પ્રવેશે છે તેમજ શરીર કોષ્ટકમા-પેટમા નાખી દેતા  
 હતા જેમ સાપ દરના બને પાર્શ્વને સ્પર્શ ન કરતા સીધો વચ્ચે ધઈને  
 પોતાની બાતને દરમા પ્રવિષ્ટ કરાવી લે છે તેમજ તે મુનિરાજ પણ મુખના બને  
 પાર્શ્વના સ્પર્શથી રહિત આદારને સીધો કઠનાળમા મૂકીને ઉદરસ્થ કરતા હતા

( તણ તસ્સ પુણ્ડરીયસ્સ અણગારસ્સ ત કાલાઢ્ઢકત અરસવિરસ સિય

समयमुल्लङ्घ्य प्राप्तम्, अरस विरस शीतरुक्ष पान भोजनम् 'आहारियस्स' आहारितस्य सत पूर्वरात्रापररानकालसमये 'धम्मजागरियं जागरमाणस्स' धर्म जागारिका जाग्रत = धर्मचिन्तनार्थं जागरणा कुर्वतः स आहारो नो सम्यक् परिणमति = नो परिपाक गच्छति । ततः खलु तस्य पुण्डरीकस्य अनगारस्य शरीरे वेदना प्रादुर्भूता 'उज्जला जाव दुरहियासा' उज्ज्वला यावत् दुरविसह्या, एषा व्याख्यापूर्ववत्, तथा स पुण्डरीकोऽनगारः पित्तज्वरपरिगतशरीरो दाहव्युत्क्रान्तिकः = दाहज्वरसमाकुलश्चापि विहरति । ततः खलु स पुण्डरीकोऽनगार 'अस्थामे' अस्थामा = गतिरहितः, अवल = शारीरिकबलरहितः, 'अवीरिए' अवीर्यः = उत्साहरहितः, अपुरुषकारपराक्रमः = पुरुषार्थपराक्रमरहितः 'करयल जाव' करतल यावत् = करतलपरिगृहीतं दगनख मस्तके अञ्जलि कृत्वा एवमवादीत् - नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो यावत्संप्राप्तेभ्यः = मोक्ष गतेभ्यः, नमोस्तु खलु स्थविरेभ्यो भगवद्भ्यो मम धर्माचार्येभ्यो धर्मोपदेशकेभ्यः, पूर्वमपि च खलु मया स्थविराणा-

भोयण आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमइ ) उस तरह उन पुण्डरीक अनगार का कालातिक्रम से खाया हुआ वह अरस, विरस, शीत, रुक्ष, पानभोजन रात्रि के मध्यभाग में धर्मचिन्तन निमित्त जागरण करने के कारण अच्छी तरह से नहीं पचता था (तएण तस्स पुण्डरीयस्स अणगारस्स सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्वरपरिगतशरीरे दाहवक्कतिए विहरइ, तएण से पुण्डरीए अणगारे अस्थामे, अवले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरिक्कमे करयल जाव, एव वयासी-णमोत्थुण अरिहताण जाव सपत्ताण णमोत्थुण येराण भगवताण मम धम्मायरियाण धम्मोच्चएसयाण पुर्व्वि पि य ण मए

लुक्ख पाणभोयण आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमइ )

आ प्रभाषे ते पुण्डरीक अनगारणे काणातिक्रमथी उदेवे ते अरस, विरस, शीत, रुक्ष पान आहारतु रात्रिना मध्य भागमा धर्मचिन्तन भाटे उदेवा नगारणुने दीधे सारी राते पायन थतु न इतु

(तएण तस्स पुण्डरीयस्स अणगारस्स सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्वरपरिगतशरीरे दाहवक्कतिए विहरइ, तएण से पुण्डरीए अणगारे अस्थामे, अवले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरिक्कमे करयल जाव, एव वयासी-णमोत्थुण अरिहताण जाव सपत्ताण येराण भगवताण मम धम्मायरियाण



મનિકે મર્વં પ્રાણાતિપાતઃ પ્રત્યાગ્યાતઃ યાવત્ મિ. યાદર્શનશ્ચત્વરં સ્વલુ પ્રત્યાગ્યા-  
તમ્=અષ્ટાદશપાપમ્યાનાનિ પ્રત્યાગ્યાતાનિ ઇતિ માર, ઇટાનીમપિ તેષામેવ  
ધેરાણ અતિઞ સઘ્વે પાણાદ્વાણ પચ્ચક્કયાણ જાવ મિચ્છાદ્મણસલ્લે ણં  
પચ્ચક્કયાણ જાવ આલોહ્યપહિક્કતે કાલમાસે કાલ કિચ્ચા સઘ્વદ્ધ-  
સિદ્ધે ઉવવન્ને ) હમ કારણ પુઠરીક અનગોગ કે શરીર મેં વેદના પ્રકટ  
હો ગઈ । જિમકે કારણ ઉન્ને ક્ષણમર મી જાતા નહી મિલતી । ધીરે ર  
યહ સમસ્ત શરીર મેં મી વ્યાપ્ત હો ગઈ । યાવત્ યહ ઉન્કે લિયે સહન  
હો સકે જેસી નહીં રહી-વે ઉસે ઘઢી કટિનતા સે મહતે । દાહજ્વર ને  
મી હનકે શરીર પર અપના પ્રભાવ જમા લિયા । હમ તરહ યે દાહજ્વર  
કો જ્વાલા સે મી આકુલ વ્યાકુલ રહને લગે । ધીરે ર હનકા શરીર  
શક્તિ રહિત હો ગયા । શારીરિક ઘલ મી હનકા જાતા રહા । ઉત્સાહ  
રહિત ણવ પુરુષાર્થ પરાક્રમ સે વિહીન જઘ યે હો ગયે તય કરતલ પરિ-  
ગૃહીત દશનત્વોવાલી અજલિ કો હન્હો ને અપને મસ્તક પર રલ્લકર હસ  
પ્રકાર કા પાઠ યોલના પ્રારમ્ભ કિયા યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત અર્હત ભગવતોં કે  
લિયે મેરા નમસ્કાર હો, મેરે ધર્માચાર્ય, ધર્મોપદેશક સ્થવિર ભગવતોં કે  
લિયે મેરા નમસ્કાર હો । મેંને પહિલે મી સ્થવિર ભગવતોં કે નિકટ સમ  
સ્ત પ્રાણાતિપાત પ્રત્યોલ્લખાન કર દિયા હૈ-યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્ય

ધમ્મોવસયાણ પુરિવ પિ ય ણ મણ ધેરાણ અતિણ સઘ્વે પાણાદ્વાણ પચ્ચક્કયાણ  
જાવ મિચ્છાદ્મણસલ્લેણ પચ્ચક્કયાણ જાવ આલોહ્યપહિક્કતે કાલમાસે કાલ  
કિચ્ચા સઘ્વદ્ધ સિદ્ધે ઉવવન્ને )

એથી તે પુઠરીક અનગારના શરીરમા વેદના પ્રકટ થઈ ગઈ તેથી તેમને  
એક ક્ષણ માટે પણ શાતા મળતી નહોતી ધીમે ધીમે આ વેદના સંપૂર્ણ  
શરીરમા પ્રસરી ગઈ યાવત્ તે તેમના માટે અસહ્ય થઈ ગઈ, ભારે મુશ્કેલીથી  
તેઓ તેને ખમતા હતા દાહજ્વરે પણ તેમના શરીર ઉપર પોતાનો પ્રભાવ  
જમાવી લીધો હતો, એથી તેઓ દાહજ્વરની જ્વાળાઓથી પણ આકુળ-વ્યાકુળ  
રહેવા લાગ્યા ધીમે ધીમે તેમનું શરીર અશક્ત થઈ ગયું શારીરિક બળ પણ  
તેમનું નષ્ટ થઈ ગયું હતું આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ ઉત્સાહ રહિત અને  
પુરુષાર્થ પરાક્રમ વિહીન થઈ ગયા ત્યારે ઉત્તલ-પરિગૃહીત દશ નખોવાળી  
અજલિને તેમણે પોતાના મસ્તકે મૂકીને આ પ્રમાણેના પાઠ યોલવા લાગ્યા  
કે યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત અર્હત ભગવતોને મારા નમસ્કાર છે, મારા ધર્માચાર્ય,  
ધર્મોપદેશક સ્થવિર ભગવતોને મારા નમસ્કાર છે મેં પહેલા પણ ભગવતોની  
પાસે સમસ્ત પ્રાણાતિપાત કરી દીધું છે યાવત્ મિથ્યાદર્શન

અન્તિકે પ્રાણાતિપાત યાવત્ મિત્યાદર્શનશલ્ય પ્રત્યાખ્યામિ, એવ ' જાવ આલો-  
ચ્ય પડિક્કતે ' યાવદાલોચિતપ્રતિક્રાન્ત' કાલમાસે કાલ કૃત્વા સર્વાર્થસિદ્ધે  
ઉપપન્નઃ । તતોઽનન્તરમ્=તત્પશ્ચાત્ સર્વાર્થસિદ્ધાત્ ' ઉવ્વટ્ઠિત્તા ' ઉદ્વૃત્ય=સર્વાર્થ-  
સિદ્ધેર્નિર્ગત્ય મહાવિદેહે વર્ષે સેત્સ્યતિ યાવત્ સર્વદુઃખાનામન્ત કરિષ્યતિ । પુણ્ડરી-  
કાનગારચરિત દૃષ્ટાન્તેનોપદર્શ્ય શ્રમણાનુપદિશતિ ભગવાન્ મહાવીરઃ- ' એવામેવ '   
અનેનૈવપ્રકારેણ હે આયુષ્મન્તઃ શ્રમણાઃ ' જાવ પવ્વહણ ' યાવત્પવ્રજિતઃ=યોઽસ્માક  
શ્રમણો વા શ્રમણી વા આચાર્યોપાધ્યાયાનામન્તિકે પ્રવ્રજિતઃ સન્ માનુષ્યકેષુ  
કામભોગેષુ નો સજ્જતે નો અસક્તિમાશ્રયતે ' નો રજ્જતે ' નો રજ્યતે=નો અનુ  
રાગવાન્ ભવતિ, ' જાવ નો વિપ્પહિઘાયમાવજ્જહ ' યાવત્ નો વિપ્રતિઘાતમાપ-  
ઘતે=સયમનાશ ન પ્રાપ્નોતિ, સ યલુ ઇહ ભવે એવ વહૂના શ્રમણાના વહૂના શ્રમ-  
ણીના વહૂના શ્રાવકાણા વહૂના શ્રાવિકાણામ્ અર્ચનીયો વન્દનીયઃ પૂજનીયઃ  
સત્કારણીયઃ સમ્માનનીયો ભવતિ, તથા ચ-સ સર્વેષા ' કલ્લાણ ' કલ્યાણ=  
કલ્યાણરૂપમ્ ' મગલ ' મઙ્ગલમ્=મઙ્ગલરૂપમ્, ' દેવય ' દૈવત=ધર્મદેવરૂપઃ,  
' ચેહય ' ચૈત્યમ્=જ્ઞાનરૂપ પર્યુપાસનીયશ્ચ ભવતિ ' ત્તિક્કહુ ' इति कृत्वा इति

કા અષ્ટાદશ પાપસ્થાનો કા, મૈને પ્રત્યાખ્યાન કર દિયા હૈ । ઓર અવ  
ભી ઉન્હી કે સાક્ષી સે પ્રાણાતિપાત યાવત્ મિત્યાદર્શન શલ્ય કા પ્રત્યા-  
ખ્યાન કરતા હૈ । ઇસ તરહ આલોચિત પ્રતિક્રાન્ત હોકર વે કાલઅવસર  
કાલકર સર્વાર્થ સિદ્ધ નામકે અનુત્તર વિમાન મૈં ઉત્પન્ન હો ગયે ।  
(તઓ અણતર ઉવ્વટ્ઠિત્તા મહાવિદેહે વાસે સિજ્ઞિહિહ, જાવ સવ્વદુક્ખા  
ણમત્ત કાહિહ, એવામેવ સમણાઉસો ! જાવ પવ્વહણ સમાણે માણુસ્સ  
एहि कामभोगेहि णो सज्जइ, णो रज्जइ, जાव नो विप्पहियायमावज्जइ  
सेण इह भवे चेव वहूण सावियाण अच्चणिज्जे, वदणिज्जे, पूयणिज्जे,  
सत्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे, कल्लाण मगल देवय चेहय पज्जुवास-

પાપસ્થાનોનુ મે પ્રત્યાખ્યાન કરી દીધુ છે અને હવે તેમની જ સાક્ષીમા  
પ્રાણુતિપાત યાવત્ મિત્યાદર્શન શલ્યનુ પ્રત્યાખ્યાન કરી છુ આ પ્રમાણે  
આલોચિત પ્રતિક્રાન્ત થઈને તેઓ કાળ અવસરે કાળ કરીને સર્વાર્થસિદ્ધ નામના  
અનુત્તર વિમાનમા ઉત્પન્ન થઈ ગયા અને ત્યા તેમની ૩૩ સાગરોપમની સ્થિતિ છે

( તઓ અણતર ઉવ્વટ્ઠિત્તા મહાવિદેહે વાસે સિજ્ઞિહિહ, જાવ સવ્વદુક્ખાણ-  
મત્ત કાહિહ, એવામેવ સમણાઉસો ! જાવ પવ્વહણ સમાણે માણુસ્સएहि काम  
भोगेहि णो सज्जइ, णो रज्जइ, जાव नो विप्पहियायमावज्जइ से ण इह भवे  
चेव वहूण सावियाण अच्चणिज्जे, वदणिज्जे, पूयणिज्जे, सत्कारणिज्जे, सम्माणणि  
ज्जे, कल्लाण मगल देवय चेहय पज्जुवासणिज्जे त्ति कट्ठु परलोए वि य णं णो

મન્તિકે મર્તઃ પ્રાણાતિપાતઃ પ્રત્યાર્ગ્યાતઃ યાવત્ મિથ્યાદર્શનશૂન્ય સ્વતુ પ્રત્યાસ્થા-  
તમ્=અષ્ટાદશપાપસ્થાનાનિ પ્રત્યાર્ગ્યાતાનિ ઇતિ માત્ર, ઇદાનીમપિ તેષામેવ  
ધેરાણ અતિત્વ મન્વે પાણાદ્વાપ પચ્ચક્ષ્ણાણ જાવ મિચ્છાદમણસલ્લેખં  
પચ્ચક્ષ્ણાણ જાવ આલોદ્યપલિક્ષકતે કાલમાસે કાલ કિચ્ચા સઙ્ગદ્ધ  
સિદ્ધે ઉવવન્ને ) હમ કારણ પુઢરીક અનગાર કે શરીર મેં વેદના પ્રકટ  
હો ગડ । જિમકે કારણ ઉન્હેં ક્ષણમર મી જાતા નહી મિલતી । ધીરે ર  
યત્ સમસ્ત શરીર મેં મી વ્યાપ્ત હો ગઈ । યાવત્ યત્ ઉનકે લિયે સહન  
હો સકે તેસી નહીં રહી-વે ઉસે યદ્દી કટિનતા સે મહતે । દાહજ્વર ને  
મી ઉનકે શરીર પર અપના પ્રમાત્ર જમા લિયા । હસ તરહ યે દાહજ્વર  
કો જ્વાલા સે મી આકુલ વ્યાકુલ રહને લગે । ધીરે ર ઉનકા શરીર  
શક્તિ રહિત હો ગયા । શારીરિક ઘલ મી ઉનકા જાતા રહા । ઉત્સાહ  
રહિત એવ પુરુષાર્થ પરાક્રમ સે વિહીન જત્ર યે હો ગયે તથ કરતલ પરિ  
ગૃહીત દશનર્થોવાલી અજલિ કો ઉન્હેં ને અપને મસ્તક પર રસ્થકર હસ  
પ્રકાર કા પાઠ ઘોલના પ્રારમ્ભ ક્રિયા યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત અર્હત ભગવતોં કે  
લિયે મેરા નમસ્કાર હો, મેરે ધર્મચાર્ય, ધર્મોપદેશક સ્થવિર ભગવતોં કે  
લિયે મેરા નમસ્કાર હો । મૈને પહિલે મી સ્થવિર ભગવતોં કે નિકટ સમ  
સ્ત પ્રાણાતિપાત પ્રત્યોઽધ્યાન કર દિયા હૈ-યાવત્ મિથ્યાદર્શન શૂન્ય

ધર્મોવસયાણ પુલ્લિં પિ ચ ણ મણ્ ધેરાણ અતિત્વ મન્વે પાણાદ્વાપ પચ્ચક્ષ્ણાણ  
જાવ મિચ્છાદમણસલ્લેખં પચ્ચક્ષ્ણાણ જાવ આલોદ્યપલિક્ષકતે કાલમાસે કાલ  
કિચ્ચા સઙ્ગદ્ધ સિદ્ધે ઉવવન્ને )

એથી તે પુઢરીક અનગારના શરીરમા વેદના પ્રકટ થઈ ગઈ તેથી તેમને  
એક ક્ષણ માટે પણ જાતા મળતી નહોતી ધીમે ધીમે આ વેદના સંપૂર્ણ  
શરીરમા પ્રસરી ગઈ યાવત્ તે તેમના માટે અસહ્ય થઈ ગઈ, ભારે મુશ્કેલીથી  
તેઓ તેને ખમતા હતા દાહજ્વરે પણ તેમના શરીર ઉપર પોતાનો પ્રભાવ  
જમાવી લીધો હતો, એથી તેઓ દાહજ્વરની જ્વાળાઓથી પણ આકુળ-વ્યાકુળ  
રહેવા લાગ્યા ધીમે ધીમે તેમનું શરીર અશક્ત થઈ ગયું શારીરિક બળ પણ  
તેમનું નષ્ટ થઈ ગયું હતું આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ ઉત્સાહ રહિત અને  
પુરુષાર્થ પરાક્રમ વિહીન થઈ ગયા ત્યારે કરતલ-પરિગૃહીત દશ નખોવાળી  
અજલિને તેમણે પોતાના મસ્તકે મૂકીને આ પ્રમાણેના પાઠ ઘોલવા લાગ્યા  
કે યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત અર્હત ભગવતોને મારા નમસ્કાર છે, મારા ધર્મચાર્ય,  
ધર્મોપદેશક સ્થવિર ભગવતોને મારા નમસ્કાર છે મે પહેલા પણ ભગવતોની  
પાસે સમસ્ત પ્રાણાતિપાત કરી દીધું છે યાવત્ મિથ્યાદર્શન

અન્તિકે પ્રાણાતિપાત યાવત્ મિથ્યાદર્શનશલ્ય પ્રત્યાખ્યામિ, એવ ' જાવ આલો-  
ઇય પડિકતે ' યાવદાલોચિતપ્રતિક્રાન્તઃ કાલમાસે કાલ કૃત્વા સર્વાર્થસિદ્ધે  
ઉપપન્નઃ । તતોઽનન્તરમ્=તત્પશ્ચાત્ સર્વાર્થસિદ્ધાત્ ' ઉવ્વટ્ઠિત્તા ' ઉદ્વૃત્ય=સર્વાર્થ-  
સિદ્ધેર્નિર્ગત્ય મહાવિદેહે વર્ષે સેત્સ્યતિ યાવત્ સર્વદુઃસ્વાનામન્ત કરિષ્યતિ । પુન્ડરી-  
કાનગારચરિત દૃષ્ટાન્તેનોપદ્રશ્ય શ્રમણાનુપદિશતિ ભગવાન્ મઠાગીરઃ--' એવામેવ '  
અનેનૈવપ્રકારેણ હે આયુષ્મન્તઃ શ્રમણાઃ ' જાવ પવ્વહ્ણ ' યાવત્પવ્રજિતઃ=યોઽસ્માક  
શ્રમણો વા શ્રમણી વા આચાર્યોપાધ્યાયાનામન્તિકે પ્રવ્રજિત' સન્ માનુષ્યકેપુ  
કામભોગેષુ નો સજ્જતે નો અસક્તિમાશ્રયતે ' નો રજ્જતે ' નો રજ્યતે=નો અનુ  
રાગવાન્ ભવતિ, ' જાવ નો વિપ્પહિઘાયમાવજ્જહ ' યાવત્ નો વિપ્રતિઘાતમાપ-  
ધતે=સયમનાશ ન પ્રાપ્નોતિ, સ સ્વલુ હહ ભવે એવ વહૂના શ્રમણાના વહૂના શ્રમ-  
ણીના વહૂના શ્રાવકાણા વહૂના શ્રાવિકાણામ્ અર્ચનીયો વન્દનીયઃ પૂજનીયઃ  
સત્કારણીયઃ સમ્માનનીયો ભવતિ, તથા ચ-સ સર્વેષા ' કલ્લાણ ' કલ્યાણ=  
કલ્યાણરૂપમ્ ' મગલ ' મઙ્ગલમ્=મઙ્ગલરૂપમ્, ' દેવય ' દૈવત=ધર્મદેવરૂપઃ,  
' ચેહય ' ચૈત્યમ્=જ્ઞાનરૂપ પર્યુપાસનીયશ્ચ ભવતિ ' ત્તિક્કહુ ' इति कृत्वा इति

કા અષ્ટાદશ પાપસ્થાનો કા, મૈને પ્રત્યાખ્યાન કર દિયા હૈ । ઓર અવ  
ભી ઉન્હીં કે સાક્ષી સે પ્રાણાતિપાત યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્ય કા પ્રત્યા  
ખ્યાન કરતા હૈ । હસ તરહ આલોચિત પ્રતિક્રાન્ત હોકર વે કાલઅવસર  
કાલકર સર્વાર્થ સિદ્ધ નામકે અનુત્તર વિમાન મેં ઉત્પન્ન હો ગયે ।  
(તઓ અણતર ઉવ્વટ્ઠિત્તા મહાવિદેહે વાસે સિઝ્ઝિહિહ, જાવ સવ્વદુક્કસા  
ણમત કાહિહ, એવામેવ સમણાઉસો ! જાવ પવ્વહ્ણ સમાણે માણુસ્સ  
એહિં કામભોગેહિં ણો સજ્જહ, ણો રજ્જહ, જાવ નો વિપ્પહિઘાયમાવજ્જહ  
સેણ હહ ભવે ચેવ વહૂણ સાવિયાણ અચ્ચણિજ્જે, વદણિજ્જે, પૂયણિજ્જે,  
સકકારણિજ્જે સમ્માણણિજ્જે, કલ્લાણ મગલ દેવય ચેહય પજ્જુવાસ-

પાપસ્થાનોનુ મે પ્રત્યાખ્યાન કરી દીધુ છે અને હવે તેમની જ સાક્ષીમા  
પ્રાણુતિપાત યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યનુ પ્રત્યાખ્યાન કરે ધુ આ પ્રમાણે  
આલોચિત પ્રતિક્રાન્ત થઇને તેઓ કાળ અવસરે કાળ કરીને સર્વાર્થસિદ્ધ નામના  
અનુત્તર વિમાનમા ઉત્પન્ન થઇ ગયા અને ત્યા તેમની ૩૩ સાગરોપમની સ્થિતિ છે

( તઓ અણતર ઉવ્વટ્ઠિત્તા મહાવિદેહે વાસે સિઝ્ઝિહિહ, જાવ સવ્વદુક્કસાણ-  
મત કાહિહ, એવામેવ સમણાઉસો ! જાવ પવ્વહ્ણ સમાણે માણુસ્સએહિં કામ  
ભોગેહિં ણો સજ્જહ, ણો રજ્જહ, જાવ નો વિપ્પહિઘાયમાવજ્જહ સે ણ હહ ભવે  
ચેવ વહૂણ સાવિયાણ અચ્ચણિજ્જે, વદણિજ્જે, પૂયણિજ્જે, સકકારણિજ્જે, સમ્માણણિ  
જ્જે, કલ્લાણ મગલ દેવય ચેહય પજ્જુવાસણિજ્જે તિ કદ્દહુ પરલોપ વિ ચ ણ ણો

हेतोः पण्डोकेऽपि च गल्लु सा नो आगच्छति = न प्राप्नोति बहूनि = बहुविधानि  
दण्डनानि च मुण्डनानि च तर्जनानि च ताडनानि च यावत् चतुरन्त संसार  
कान्तर 'रीइवइस्सइ' व्यतिग्नियति = उद्धट् वियिप्यति, यथा स पुण्डरीकोऽनगर

णिज्जे તિ કદ્દટ્ટ પરલોળ વિ ય ણ ણો આગચ્છઈ, બહુણિ દડણાણિ ય  
મુહણાણિ ય તજ્જણાણિ ય તાહણાણિ ય જાવ ચાઉરતસસારકતાર  
જાવ વીહવહસ્સઈ ) હમકે યાદ વે ઉસ સર્વાર્થ મિદ્ધ વિમાન સે ચવ ક  
મહાવિદેહક્ષેત્ર મેં જન્મ ધારણ કર વહોં સે સિદ્ધપદ કે ભોક્તા બનેંગે-  
યાવત્ સમસ્ત દુઃખોં કા અન્ત કરેંગે । હમ તરહ પુહરીક અંનગાર કે  
ચરિત્ર કો દૃષ્ટાન્ત રૂપ સે કરકર ભગવાન્ મહાવીર પ્રભુ શ્રમણજનોં કો  
ઉપદેશ કરતે હેં કિ હસી પ્રકાર સે હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જો હમારા  
શ્રમણ યા શ્રમણીજન આચાર્ય ઉપાધ્યાય કે પાસ પ્રવ્રજિત હોકર મનુ  
ષ્યભવ સયધી કામભોગોં મેં આસક્ત નહીં થનતા હે, રજિજત-અનુરાગ  
ભાવ સપન્ન-નહીં હોના હે, યાવત્ અપને સયમ કો નષ્ટ નહીં કરતા હે,  
વહ હસ ભવ મેં હી અનેક શ્રમણ શ્રમણી, શ્રાવક ઇવ શ્રાવિકાઓં  
દ્વારાં અર્ચનીય વદનીય પૂજનીય સત્કરણીય ઇવ સન્માનનીય હોતા હે ।  
તથોં જગત કે લિયે કલ્યાણરૂપ, મગલરૂપ, ધર્મ દેવરૂપ, ઔર જ્ઞાનરૂપ  
બન જાતા હે । લોગ ઉસકી ઉપાસના કરતે હેં । વહ પરલોક મેં બી  
એનેક પ્રકાર કે દડનરૂપ, દુ લો કો, મુહનોં કો તર્જનોં કો, તાહનાઓં

આગચ્છઈ, બહુણિ દડણાણિ ય મુહણાણિય તજ્જણાણિ ય તાહણાણિ ય જાવ  
ચાઉરતસસારકતાર જાવ વીહવહસ્સઈ )

ત્યારપછી તેઓ તે સર્વાર્થસિદ્ધ વિમાનમાથી થવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા  
જન્મ ધારણ કરીને ત્યાથીજ સિદ્ધપદ મેળવશે યાવત્ સમસ્ત દુખોના અંત  
કરશે આ રીતે પુહરીક અનગારના ચરિત્રને દૃષ્ટાંત રૂપે કહીને મહાવીર પ્રભુ  
શ્રમણજનોને ઉપદેશ કરતા કહે છે કે આ પ્રમાણેજ હે આયુષ્મત શ્રમણો !  
જે અમારા શ્રમણ કે શ્રમણીજનો આચાર્ય ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને  
મનુષ્ય ભવના કામભોગોમા આસક્ત થતા નથી રજિજત-અનુરક્ત થતા નથી,  
યાવત્ પોતાના સયમને નષ્ટ કરતા નથી તે આ ભવમાજ ધણા શ્રમણ-  
શ્રમણી અને શ્રાવક-શ્રાવિકાઓમા વડે અર્ચનીય, વદનીય, પૂજનીય, સત્કરણીય  
અને સન્માનનીય જગતના માટે કલ્યાણરૂપ, મગલરૂપ, ધર્મ  
દેવરૂપ અને જો તેની ઉપાસના કરે છે, તે પરલોકમા  
પણ ધણી નોને, તર્જનોં



સુધર્માસ્વામી કથયતિ-एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण आदिकरेण तीर्थकरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान संप्राप्तेन एकोनविंशतितमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः । ज्ञातश्रुतस्कन्ध समापयन् सुधर्मा पुनः कथयति-एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान संप्राप्तेन पष्ठस्य अङ्गस्य=पष्ठाङ्गसम्पन्निन प्रथमस्य श्रुतस्कन्धस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तरूपो भावः प्रज्ञप्तः=भगवता कथितः । ' त्ति वेमि' इति ब्रवीमि, व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू०७ ॥

કો નહીં પાતા હૈ ઓર ચતુર્ગતિવાલે હસ સમાર કાન્તાર કો પુડરીક અનગાર કી તરહ પાર કરનેવાલા હો જાતા હૈ । ( એવ સ્વલ્પ જન્મ ! સમ-  
જોણ ભગવયા મહાવીરે ણ આહગરેણ તિત્યગરેણ જાવ સિદ્ધ ગર્હ નામ-  
ઘેજ્જ ઠાળં સપત્તેણ ઇગૂણવીસઠમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે,  
एव खलु जम्बू ! समणेण भगवया महावीरे ण जाव सिद्धिगइणामधेज्ज  
ठाणं सपत्ते णं छट्ठस्स अगस्स पढमस्स सुयक्खधस्स अयमद्वे पण्णत्ते  
त्तिवेमि ) अब श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं कि हे जम्बू ! आदिकर तीर्थ-  
कर यावत् सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान  
महावीर ने १९ वे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया  
है । इस तरह हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने कि जो सिद्धिगति  
नामक स्थान को अच्छी तरह प्राप्त कर चुके हैं, उठे अग के प्रथम श्रुत-  
स्कन्ध का यह पूर्वोक्त रूप से भाव प्रतिपादित किया है । ऐमा मैंने प्रभु  
के कहे अनुसार ही यह हे जम्बू ! तुमसे निवेदित किया है ।

પ્રાપ્ત કરતો નથી અને ચતુર્ગતિવાળા આ સ સાર કાતારને પુડરીક અનગારની  
જેમ પાર કરનાર થઈ જાય છે

( એવ સ્વલ્પ જન્મ ! સમજોણ ભગવયા મહાવીરેણ આહગરેણ તિત્યગરેણ જાવ  
સિદ્ધગર્હ નામધેજ્જ ઠાળ સપત્તેણ ઇગૂણવીસ ઇમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે  
પણ્ણત્તે, એવ સ્વલ્પ જન્મ ! સમજોણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સિદ્ધિગઈણામધેજ્જ  
ઠાળં સપત્તેણ છટ્ઠસ્સ અગસ્સ પઢમસ્સ સુયક્કધસ્સ અયમ્ પણ્ણત્તે ત્તિવેમિ )

હવે શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જન્મ ! આદિકર તીર્થ કર યાવત  
સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચુકેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ઓગણીસમા  
જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રીતે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે આ પ્રમાણે હે જન્મ !  
શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને સારી રીતે પ્રાપ્ત  
કરી લીધું છે-છઠ્ઠા અંગના પ્રથમ શ્રુત-સ્કન્ધનો આ પૂર્વોક્ત ઉપમા ભાવ પ્રતિ  
પાદિત કર્યો છે હે જન્મ ! આવું મેં પ્રભુના કહ્યા મુજબ જ તમને કહ્યું છે "

हेतोः पग्लोकेऽपि च खलु सा नो आगच्छति = न प्राप्नोति बहूनि = बहुविधानि  
दण्डनानि च मुण्डनानि च तर्जनानि च ताडनानि च यावत् चतुरन्तं संसार  
कान्तर 'रीइउम्पइ' व्यतिव्रजिष्यति = उहट् प्रयिष्यति, यथा म पुण्डरीकोऽनगार

णिज्जे ति कट्टु परलोण धि य ण णो आगच्छइ, बहूणि दण्डणानि य  
मुण्डणानि य तज्जणानि य ताडणानि य जाव चाउरतससारकत्तारं  
जाव वीइवइस्सइ ) इसके बाद वे उस सर्वार्थ सिद्ध विमान से चब कर  
महाविदेहक्षेत्र में जन्म धारण कर वहीं से सिद्धपद के भोक्ता बनेंगे-  
यावत् समस्त दुःखों का अन्त करेंगे । इस तरह पुंडरीक अनगार के  
चरित्र को दृष्टान्त रूप से कहकर भगवान् महावीर प्रभु श्रमणजनों को  
उपदेश करते हैं कि इसी प्रकार से हे आयुष्मत श्रमणो ! जो हमारा  
श्रमण या श्रमणीजन आचार्य उपाध्याय के पास प्रव्रजित होकर मनु  
ष्यभव सयधी कामभोगों में आसक्त नहीं बनता है, रज्जित-अनुराग  
भाव सपन्न-नहीं होना है, यावत् अपने समय को नष्ट नहीं करता है,  
वह इस भव में ही अनेक श्रमण श्रमणी, श्रावक एवं श्राविकाओं  
द्वारा अर्चनीय वदनीय पूजनीय सत्करणीय एवं सन्माननीय होता है ।  
तथा जगत के लिये कल्याणरूप, मंगलरूप, धर्म देवरूप, और ज्ञानरूप  
बन जाता है । लोग उसकी उपासना करते हैं । वह परलोक में भी  
अनेक प्रकार के दण्डनरूप, दुःखों को, मुडनों को तर्जनों को, ताडनाओं

आगच्छइ, बहूणि दण्डणानि य मुण्डणानि य तज्जणानि य ताडणानि य जाव  
चाउरतससारकत्तारं जाव वीइवइस्सइ )

त्यारपणी तेओ ते सर्वार्थसिद्ध विमानमाथी यवीने महाविदेह क्षेत्रमा  
जन्म धारण करीने त्याथी ज सिद्धपद भेजवशे यावत् समस्त दुःखोने अंत  
करशे आ रीते पुंडरीक अनगारना चरित्रने दृष्टात इपे कहीने महावीर प्रभु  
श्रमणजनोने उपदेश करता कहे छे के आ प्रमाणे ज छे आयुष्मत श्रमणो !  
जे अमारा श्रमण के श्रमणीजोने आचार्य उपाध्यायनी पास प्रव्रजित यधने  
मनुष्य लवना कामलोगोमा आसक्त यता नथी रज्जित-अनुरक्त यता नथी,  
यावत् पोताना समयने नष्ट करता नथी ते आ लवमा ज धणु श्रमण-  
श्रमणी अने श्रावक-श्राविकाओ वडे अर्थनीय, वदनीय, पूजनीय, सत्करणीय  
अने सन्माननीय होय छे तेमज जगतना माटे कल्याणरूप, मंगलरूप, धर्म  
देवरूप अने ज्ञानरूप जनी जय छे लोको तेनी उपासना करे छे, ते परलोका  
पणु धणी जतना दण्डन रूप, दुःखोने, मुडनोने, तर्जनों

સુધર્માસ્વામી કથયતિ-એવ ચ્વલુ હે જન્મૂઃ ! શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ આદિકરેણ તીર્થકરેણ યાવત્ સિદ્ધિગતિનામધેય સ્થાન સપાપ્તેન એકોનર્વિગતિત મસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય અયમર્થઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ । જ્ઞાતશ્રુતસ્કન્ધ સમાપયન્ સુધર્મા પુનઃ કથયતિ-એવ ચ્વલુ હે જન્મૂઃ ! શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્ સિદ્ધિગતિનામ-ધેય સ્થાન સપાપ્તેન પઠસ્ય અગ્નસ્ય=પઠાગ્નસમ્વન્ધિન પ્રથમસ્ય શ્રુતસ્કન્ધસ્ય અયમર્થઃ=પૂર્વોક્તરૂપો ભાવઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ=ભગવતા કથિતઃ । 'તિ વેમિ' ઇતિ વ્રવીમિ, વ્યાખ્યા પૂર્વવત્ ॥ સૂ.૭ ॥

કો નહીં પાતા હૈ ઓર ચતુર્ગતિવાલે હસ સમાર કાન્તાર કો પુડરીક અનગાર કી તરહ પાર કરનેવાલા હો જાતા હૈ । ( એવં ચ્વલુ જન્મૂ ! સમ ણેણ ભગવયા મહાવીરે ણ આદિગરેણ તિત્થગરેણ જાવ સિદ્ધ ગઈ નામ-ધેજ્ઞ ઠાણ સંપત્તેણ ઇગૂણવીસહમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે, એવ ચ્વલુ જન્મૂ ! સમણેણ ભગવયા મહાવીરે ણ જાવ સિદ્ધિગઈનામધેજ્ઞ ઠાણ સપત્તે ણં છદ્ધસ્સ અગસ્સ પઢમસ્સ સુયસ્સધસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે તિવેમિ ) અવ શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહતે હૈ કિ હે જન્મૂ ! આદિકર તીર્થ-કર યાવત્ સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુએ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને ૧૯ વે જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ । હસ તરહ હે જન્મૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને કિ જો સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાન કો અચ્છી તરહ પ્રાપ્ત કર ચુકે હૈ, ડઠે અગ કે પ્રથમ શ્રુત-સ્કન્ધ કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે ભાવ પ્રતિપાદિત કિયા હૈ । તેસા મૈને પ્રમુ કે કહે અનુસાર હી યહ હે જન્મૂ ! તુમસે નિવેદિત કિયા હૈ ।

પ્રાપ્ત કરતો નથી અને ચતુર્ગતિવાળા આ સ સાર કાતારને પુડરીક અનગારની જેમ પાર ડરનાર થઈ જાય છે

( એવ ચ્વલુ જન્મૂ ! સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ આદિગરેણ તિત્થગરેણ જાવ સિદ્ધિગઈ નામધેજ્ઞ ઠાણ સપત્તેણ ઇગૂણવીસ હમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે, એવ ચ્વલુ જન્મૂ ! સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સિદ્ધિગઈનામધેજ્ઞ ઠાણ સપત્તેણ છદ્ધસ્સ અગસ્સ પઢમસ્સ સુયસ્સધસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે તિવેમિ )

હવે શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જન્મૂ ! આદિકર તીર્થ કર યાવત સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચુકેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ઓગણીઅમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રીતે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે આ પ્રમાણે હે જન્મૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને સારી રીતે પ્રાપ્ત કરી લીધું છે-છઠ્ઠા અગના પ્રથમ શ્રુત-સ્કન્ધનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા ભાવ પ્રતિ પાદિત કર્યો છે હે જન્મૂ ! આવું મેં પ્રમુના કહ્યા મુજબ જ તમને કહ્યું છે "

‘ તસ્સે ’ ત્યાદિ, તસ્ય ઘન્યુ પ્રથમસ્ય શ્રુતસ્કથમ્પ્ય ઇકોનવિંશતિર યયનાનિ  
‘ ઇગમરગાણિ ’ ઇત્સ્યગ્ગાણિ=ગમાનોન્ગારગાણિ=મ તાણે ઉદ્દેશરગ્ગિતાનિ ઇકોન  
વિંશતિ દિવસેષુ સમાપ્યન્તે ॥ મૂ૦ ૭ ॥

મગલ મગયાન યોઃ મગઝ ગૌતમ\* પ્રશ્ન\* ।

સુધર્મા મગલ, જર્ણુર્જનધર્મશ્ચ મગલમ્ ॥ ૧ ॥

इति श्री-विश्वनिष्पात-जगद्गुरुभ-प्रसिद्धाचरुपञ्चदशभाषाकलितकलितक  
लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैरुग्रन्यनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छ  
त्रपतिशोल्हापुरराजमदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित-कोल्हापुरराज  
गुरु-मालत्रयचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-रासीलार-  
प्रतिरिचिताया ‘ ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ’ सूत्रस्यानगारधर्ममृतव-  
र्णिण्याग्याया व्याख्याया प्रथमश्रुतस्कथ समाप्त\* ॥

इस कथन में मैंने अपनी तरफ से कोई भी कल्पना मिश्रित नहीं  
की है किन्तु प्रभु के मुख से जैसा मैंने इसे सुना है वैसा ही यह तुम  
से मैंने कहा है । “ तस्से ” त्यादि इस प्रथम श्रुतस्कथ के अन्तराल में  
उद्देश रहित १९ अध्ययन हैं । ये अध्ययन १९ दिनोंमें समाप्त होते हैं ।

टीकार्थः— सासारिक समस्त जीवों के लिये यदि मगलकारी पदार्थ  
है—तो ये हैं भगवान् महावीर प्रभु गौतमगणधर, सुधर्मास्वामी, जबू  
स्वामी और जैनधर्म ।

इस तरह ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्रके प्रथम श्रुतस्कथ संपूर्ण ।

આ કથનમાં મેં મારા તરફથી કોઈપણ ભૂતની કલ્પના મિશ્રિત કરી નથી,  
પણ પ્રભુના મુખથી જેણે મેં સાંભળ્યું છે તેણે જ મેં કહ્યું છે “ તસ્સે ” ત્ય દિ  
આ પ્રથમ શ્રુત-સ્કથના અંતરાલમાં ઉદ્દેશ રહિત એાગણીસ અધ્યયનો છે  
આ અધ્યયનો એાગણીસ દિવસોમાં સમાપ્ત હોય છે

टीकाथ —अथा सासारिक जीवोना भाटे जे भगणकारी पदार्थो छे ते  
ते जेण छे—भगवान् महावीर प्रभु, गौतम गणधर, सुधर्मा स्वामी, जबू  
स्वामी अने जैन धर्म

“ આ પ્રમાણે જ્ઞાતાધર્મ કથાગનો જ્ઞાતા-નામે પ્રથમ શ્રુતસ્કથ સમાપ્ત થયો ”



## ॥ अथ ज्ञातासूत्रे द्वितीयश्रुतस्कन्धविवरणम् ॥

मङ्गलाचरणम्-

( असन्ततिलकावृत्तम् )

आद्ये श्रुते भगवता रुचिरैरनेकै,-

ज्ञातैरदायि सकलार्तिहरः सुबोधः ।

स्मरन्ते द्वितीयश्च धर्मस्था च माक्षाद् ,

विज्ञापिता तमनिश वरद स्मरामि ॥ १ ॥

( मालिनीछन्दः )

गणधरगुणार, प्राप्तमसारपारम् ,

भविजनहितकार, दत्तसम्यक्त्वसारम् , ।

हृतसकलविशार भव्यचित्तैकहार ,

शिवसुखपदमार, नीमि चारित्रसारम्, ॥ २ ॥

-:द्वितीयश्रुतस्कन्धप्रारम्भ:-

आद्येश्रुते इत्यादि-—प्रथम श्रुतस्कन्धमे भगवान् सूत्रकार ने अनेक सुन्दर दृष्टान्तों द्वारा सकल आर्ति (दुःख) हारक सुबोध प्रदान किया है अथ वे इस द्वितीय श्रुतस्कन्ध में साक्षात् धर्मकथाएँ प्रकट करेंगे-अतः ऐसे भगवान को मैं कि जो भव्यजीवों को कल्याण करनेवाले होते हैं उनको निरन्तर नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥

गणधरइत्यादि-—जो गणधरो के गुणों को धारण करनेवाले हैं ससार को पार करनेवाले हैं, जो भव्यजनों को हितकारक है, सम्यक्त्वरूपी गुणके बोधक हैं-सकल विकारों से रहित है, इसलिये जो भव्यजीवों

द्वितीय श्रुतस्कन्ध प्रारम्भ

आद्ये श्रुतेत्यादि-—प्रथम श्रुतस्कन्धमा भगवान् सूत्रकारे धणा सुन्दर दृष्टान्तो वडे समस्त आर्ति ( दुःख ) हारक सुबोध प्रदान कयो छे हवे तेओ आ भीज श्रुतस्कन्धमा साक्षात् धर्मकथाओ प्रकट करथे ओटला भाटे ओवा भगवानने-क नेओ भव्य जीवोनु कल्याण करनारा छे-हु निरन्तर नमस्कार कर छु १

गणधर इत्यादि-—नेओ गणधरोना गुणोने धारण करनारा छे, म सा रने पार करनारा छे नेओ भव्यजनोना हितकारक छे, सम्यक्त्व रूपी गुणना बोधक छे, आ भधा विकारोधी रहित छे, ओटला भाटे न नेओ भव्य जीवोना



‘ તસ્સે ’ ત્યાદિ, તસ્ય રત્ન પ્રથમસ્ય શ્રુતસ્કથસ્ય ઇકોનવિંશતિરુપયનાનિ  
‘ પગવરગાણિ ’ ઇત્યસ્ય જ્ઞાનિ = ગમાનોજ્ઞારણાનિ = મ તસાલે ઉદેશરહિતાનિ ઇકોન  
વિંશતિ દિસસેષુ સમાપ્યસે ॥ મુ. ૭ ૧

મગલં મગરાન ચોરઃ મગલં ગૌતમં પ્રશ્નં ।

સુધર્મા મગજ, જનૂર્જનધર્મશ્ચ મગલમ્ ॥ ૧ ॥

इति श्री-विश्वनिष्ठात-जगद्गुरुम-प्रसिद्धराचरुपञ्चदशभाषाकलितकलितक  
लापालापरु-प्रविशुद्भगवपद्यनैरुग्रन्यनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहन्ध  
त्रपतिकोल्हापुरराजमदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पद्मभूषित-कोल्हापुरराज  
गुरु-गालत्रक्षचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिनाकरपृज्यश्री-रासीलाच-  
प्रतिरिरचिताया ‘ ज्ञाताधर्मकथाह ’ सूत्रस्यानगारधर्ममृतव-  
र्णिण्याख्याया व्याख्याया प्रथमश्रुतस्कथ समाप्तः ॥

इस कथन में मैंने अपनी तरफ से कोई भी कल्पना मिश्रित नहीं  
की है किन्तु प्रभु के सुग्न से जैसा मैंने इसे सुना है वैसा ही यह तुम  
से मैंने कहा है । “ तस्से ” त्यादि इस प्रथम श्रुतस्कथ के अन्तराल में  
उद्देश रहित १९ अध्ययन हैं । ये अध्ययन १९ दिनोंमें समाप्त होते हैं ।

टीका — सासारिक समस्त जीवों के लिये यदि मगलकारी पदार्थ  
है—तो ये हैं भगवान् महावीर प्रभु गौतमगणधर, सुधर्मास्वामी, जबू  
स्वामी और जैनधर्म ।

इस तरह ज्ञाताधर्मकथाह सूत्रके प्रथम श्रुतस्कथ संपूर्ण ।

આ કથનમાં મેં મારા તરફથી કોઈપણ જાતની કલ્પના મિશ્રિત કરી નથી,  
પણ પ્રભુના સુગ્નથી જેવું મેં સાંભળ્યું છે તેવું જ મેં કહ્યું છે “ તસ્સે ” ત્યાદિ  
આ પ્રથમ શ્રુત-સ્કથના અંતરાલમાં ઉદ્દેશ રહિત એાગણીસ અધ્યયનો છે  
આ અધ્યયનો એાગણીસ દિવસોમાં સમાપ્ત હોય છે

ટીકા — અથા સાસારિક જીવોના માટે જો મગજકારી પદાર્થો છે તો  
તે એજ છે—ભગવાન મહાવીર પ્રભુ, ગૌતમ ગણધર, સુધર્મા સ્વામી, જબૂ  
સ્વામી અને જૈન ધર્મ

“ આ પ્રમાણે જ્ઞાતાધર્મ કથાગનો જ્ઞાતા-નામે પ્રથમ શ્રુતસ્કથ સમાપ્ત થયો ”

નગારશતૈઃ સાર્દ્ધં સપરિવૃતાઃ ' પુઞ્ઞાણુપુર્વિ' પૂર્વાનુપૂર્વ્યા=તીર્થઢ્ઢરપરમ્પરયા  
' ચરમાણા' ચરન્ત =વિહરન્તઃ ગ્રામાનુગ્રામ એકગ્રામાદવ્યવધાનેનાન્ય ગ્રામમ્ ' દૂઢ  
ઢ્ઢમાણા ' દ્રવન્તઃ=સ્પૃશન્ત ' સુહ સુહેણ ' સુખ સુખેન=સુખપૂર્વક યથાવસર-  
મિત્યર્થઃ વિહરન્તો યગૈવ રાજગૃહ નગર યત્રૈવ ગુણશિલક ચૈત્ય યાત્-સયમેન  
તપસા આત્માન ભાવયન્તો વિહરન્તિ । અત્ર આદરાર્થે ત્રહુચનમ્ । પરિપન્નિર્ગતા ।  
ધર્મઃ કથિતઃ । પરિપદ્ યસ્યા એવ દિશઃ પ્રાદુર્ભૂતા તામેવ દિશં પ્રતિગતા ।  
તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે આર્યસુધર્મણોઢનગારસ્યાન્તેવાસી આર્ય જમ્બૂર્નામાન

ઢ્ઢમાણા સુહસુહેણ વિહરમાણા જેણેવ રાયગિહે ણયરે જેણેવ ગુણસિલણ  
ચેહણ જાવ સજમેણ તવસા અપ્પાણ ભાવેમાણા વિહરતિ ) ઢસ કાલ  
ઑર ઢમ સમય મેં શ્રમણ ભગવાન મહાવીર કે અતેવાસી આર્ય સુધર્મા  
નામ કે સ્યવિર ભગવત કિ જો વિશુદ્ધ માતૃવશવાલે થે વિશુદ્ધ પિતૃ-  
વશવાલે થે, યાવત્ બલ, રૂપ, વિનય, જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર એવ લાઘવ  
સપન્ન થે, ચૌદહપૂર્વ કે પાઠી થે-મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન એવ  
મન પર્યવ જ્ઞાન ઢન ચારોં જ્ઞાનોં કે ધારક થે-પાચસો અનગારોં કે સાથ  
તીર્થકર પરપરા કે અનુસાર વિહાર કરતે ૨ એક ગ્રામ સે દૂસરે ગ્રામ મેં  
વિના કિસી વ્યવધાનકે વિચરણ કરતે હુણ સુખ પૂર્વક સમય પર-જહા  
રાજગૃહ નગર ઑર ઢસ મેં મી જહાં વહ ગુણશિલક ચૈત્ય થા આયે ।  
વહા વે સયમ એવ તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુણ ઢતરે ( પરિસા  
નિગ્ગયા ધમ્મો કહિઑ પરિસા જામેવ દિસ પાઢબ્ભૂયા તામેવ દિસિં  
પહિગયા, તેણ કાલેણ તેણ સમણ અઢ્ઢસુહમ્મસ્સ અગગારસ્સ અતે-

ઢ્ઢમાણા સુહ સુહેણ વિહરમાણા જેણેવ રાયગિહે ણયરે જેણેવ ગુણસિલણ ચેહણ  
જાવ સજમેણ તવસા અપ્પાણ ભાવેમાણા વિહરતિ /

તે ડાણે = ને તે સમયે શ્રમણુ લગવાન મહાવીરના અતેવાસી આર્ય  
સુધર્મા નામના સ્યવિર લગવત કે જેઓ વિશુદ્ધ માતૃવશવાળા હતા-વિશુદ્ધ  
પિતૃવશવાળા હતા, યાવત્ બળ, રૂપ, વિનય, જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર અને  
લાઘવ-સપન્ન હતા ચૌદ પૂર્વના પાઠી હતા, મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન  
અને મન પર્યવજ્ઞાન એ ચારે જ્ઞાનોના ધારક હતા પાચસો અનગારોની સાથે  
તીર્થકર પરપરા સુજળ વિહાર કરતા કરતા એક ગામથી બીજે ગામ કોઈપણ  
જાતના વ્યવધાન વગર સુખેથી યથા સમય બધા રાજગૃહ નગર અને તેમા  
પણ બધા તે ગુણશિલક ચૈત્ય હતા ત્યા આબ્યા ત્યા તેઓ સયમ અને તપ  
દ્વારા પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા રોકાયા

( પરિસા નિગ્ગયા ધમ્મો કહિઑ પરિસા જામેવ દિસ પાઢબ્ભૂયા તામેવ  
દિસિં પહિગયા, તેણ કાલેણ તેણ સમણ અઢ્ઢસુહમ્મસ્સ અગગારસ્સ અતેવાસી

टीका—तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नाम नगरमासीत्, 'वण्णओ' वर्णकः—नगरवर्णन सर्वमत्र विज्ञेयम् । तस्य गच्छ राजगृहस्य नगरस्य बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे तत्र गच्छ गुणशिलक नाम चैत्यमासीत्, 'यण्णओ' वर्णकः=चैत्यवर्णन प्रकारः सर्वोऽत्र वाच्यः । तस्मिन् काले तस्मिन् समये भ्रमणस्य भगवतो महावीर स्यान्तेवासिन आर्यसुधर्माणो नाम स्थविरा भगवन्तः 'जाःसंपन्ना' जातिस पन्नाः=सुविशुद्धमावृत्ताः, कुलस पन्नाः=विशुद्धपिठवृत्ताः, 'जाय' यावत्-बल-रूप-विनय-ज्ञान-दर्शन-चारित्र-लाघव-सम्पन्ना, इत्यादि यावत्-चतुर्दशपूर्विणः 'चउणाणोवगया' चतुर्ज्ञानोपगता =मतिश्रुताधिमनः पर्यवज्ञानयुक्ताः पञ्चभिर

टीकार्थ—( तेण कालेण तेण समण ) उस काल और उस समय में ( रायगिहे नामं नगरे होत्था ) राजगृह नाम का नगर था । ( वण्णओ ) नगर का वर्णन औपपातिक सूत्र में वर्णित चपा नगरी के समान जानना चाहिये । ( तस्स ण रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए तत्थण गुणसिलण णाम चेहए होत्था, वण्णओ ) उस राज गृह नगर के बाहिर उत्तर पौरस्त्यदिग्भाग की ओर ( ईशानकोण में ) एक गुणशिलक नाम का चैत्य-उद्यान-था । यहा पर भी सब चैत्यवर्णन औपपातिक सूत्र की तरह जानना चाहिये—( तेण कालेण तेण समण भगवन्तस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी अज्ज सुहम्माणाम थेरा भग वतो जाइ सपन्ना कुल सपन्ना जाय चउदसपुव्वी चउणाणोवगया पंचहि अणगारसण्हि सद्धि सपरिवुट्टा पुव्वणुपुव्वि चरमाणा गामाणुगाम दूइ

टीकार्थ—( तेण कालेण तेण समण ) ते काले अने ते समये ( रायगिहे नाम नगरे होत्था ) राजगृह नामे नगर छुत्तु ( वण्णओ ) आ नगरतु वर्णन औपपातिक सूत्रमा वर्णववाभा आवेला यथा नगरीना वर्णननी जेम ज जणी देवु जेधअ

( तस्स ण रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए तत्थण गुणसिलण णाम चेहए होत्था, वण्णओ )

ते राजगृह नगरनी बडार उत्तर पौरस्त्य दिग्-भागनी तरह अवे के ईशान कोणमा एक गुणशिलक नामे चैत्य-उद्यान-छते । अही चैत्य विषेण अधु वर्णन औपपातिक सूत्रनी जेम ज जणुवु जेधअ

( तेण कालेण तेण समण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी अज्ज सुहम्माणाम थेरा भगवतो जाइसपन्ना कुलसपन्ना जाय चउदस पुव्वी चउणाणो वगया पंचहि अणगारसण्हि सद्धि सपरिवुट्टा पुव्वणुपुव्वि चरमाणा गामाणुगाम दूइ

નગારશતૈઃ સાર્દ્ધં સપરિવૃતાઃ ' પુવ્વાણુપુર્વિય ' પૂર્વાનુપૂર્વ્યા=તીર્થેક્કરપરમ્પરયા  
' ચરમાણા ' ચરન્ત =વિહરન્તઃ ગ્રામાનુગ્રામ એકગ્રામાદવ્યવધાનેનાન્ય ગ્રામમ્ ' દૂર-  
જ્જમાણા ' દ્રવન્તઃ=સ્પૃશન્ત ' સુહ સુહેણ ' સુખ સુખેન=સુખપૂર્વક યથાવસર-  
મિત્યર્થઃ વિહરન્તો યત્રૈવ રાજગૃહ નગર યત્રૈવ ગુણશિલક ચૈત્ય યાવત્-સયમેન  
તપસા આત્માન ભાવયન્તો વિહરન્તિ । અત્ર આદરાર્થં વહુચ્ચનમ્ । પરિપન્નિર્ગતા ।  
ધર્મઃ કથિતઃ । પરિપદ્ યસ્યા એવ દિશઃ પ્રાદુર્ભૂતા તામેવ દિશ પ્રતિગતા ।  
તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે આર્યસુધર્મણોઽનગારસ્યાન્તેવાસી આર્ય જમ્બૂર્નામાન

જ્જમાણા સુહસુહેણ વિહરમાણા જેણેવ રાયગિહે નયરે જેણેવ ગુણસિલણ  
ચેહણ જાવ સજમેણ તવસા અપ્પાણ ભાવેમાણા વિહરતિ ) ઉસ કાલ  
ઔર ઉમ સમય મેં શ્રમણ ભગવાન મહાવીર કે અતેવાસી આર્ય સુધર્મા  
નામ કે સ્થવિર ભગવત્ત કિ જો વિશુદ્ધ માતૃવશવાલે થે વિશુદ્ધ પિતૃ-  
વશવાલે થે, યાવત્ વલ, રૂપ, વિનય, જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર એવ લાઘવ  
સપન્ન થે, ચૌદહપૂર્વ કે પાઠી થે-મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન એવ  
મન પર્યવ જ્ઞાન ઇન ચારોં જ્ઞાનોં કે ધારક થે-પાચસૌ અનગારોં કે સાથ  
તીર્થંકર પરપરા કે અનુસાર વિહાર કરતે ૨ એક ગ્રામ સે દૂસરે ગ્રામ મે  
વિના કિસી વ્યવધાનકે વિચરણ કરતે હુણ સુખ પૂર્વક સમય પર-જહાં  
રાજગૃહ નગર ઔર ઉસ મેં મી જહાં વહ ગુણશિલક ચૈત્ય થા આયે ।  
વહા વે સઘમ એવ તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુણ ઉતરે ( પરિસા  
નિગ્ગયા ધમ્મો કહિઓ પરિસા જામેવ દિસ પાઠવ્ઘૂયા તામેવ દિસિં  
પહિગયા, તેણ કાલેણ તેણ સમણ અજ્જસુહમ્મસ્સ અનગારસ્સ અતે-

જ્જમાણા સુહ સુહેણ વિહરમાણા જેણેવ રાયગિહે નયરે જેણેવ ગુણસિલણ ચેહણ  
જાવ સજમેણ તવસા અપ્પાણ ભાવેમાણા વિહરતિ )

તે કાળે = તે તે સમયે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરના અતેવાસી આર્ય  
સુધર્મા નામના સ્થવિર ભગવત્ત કે જેઓ વિશુદ્ધ માતૃવશવાળા હતા-વિશુદ્ધ  
પિતૃવશવાળા હતા, યાવત્ બળ, રૂપ, વિનય, જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર અને  
લાઘવ-સપન્ન હતા ચૌદ પૂર્વના પાઠી હતા, મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન  
અને મન પર્યવજ્ઞાન એ ચારે જ્ઞાનોના ધારક હતા પાચસૌ અનગારોની સાથે  
તીર્થંકર પરપરા સુજળ વિહાર કરતા કરતા એક ગામથી બીજે ગામ કોઇપણ  
જાતના વ્યવધાન વગર સુખેથી યથા સમય જ્યાં રાજગૃહ નગર અને તેમા  
પણ જ્યાં તે ગુણશિલક ચૈત્ય હતું ત્યાં આવ્યા ત્યાં તેઓ સઘમ અને તપ  
દ્વારા પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા રોકાયા

( પરિસા નિગ્ગયા ધમ્મો કહિઓ પરિસા જામેવ દિસ પાઠવ્ઘૂયા તામેવ  
દિસિં પહિગયા, તેણ કાલેણ તેણ સમણ અજ્જસુહમ્મસ્સ અનગારસ્સ અતેવાસી

टीका—तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नाम नगरमासीत्, 'वण्णओ' वर्णकः—नगरवर्णन सर्वत्र विधेयम् । तस्य सत्त्वं राजगृहस्य नगरस्य बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे तत्र खलु गुणशिलक नाम चैत्यमासीत्, 'वण्णओ' वर्णकः=चैत्यवर्णन प्रकारः सर्वोऽत्र वाच्यः । तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तेवासिन आर्यसुधर्माणो नाम स्थविरा भगवन्तः 'जाइसपन्ना' जातिसम्पन्नाः=सुविशुद्धमात्रणा, कुलसपन्नाः=विशुद्धपितृवशाः, 'जाव' यावत्-बल-रूप-विनय-ज्ञान-दर्शन-चारित्र-लाघव-सम्पन्नाः, इत्यादि यावत्-चतुर्दशपूर्विणः 'चउणाणोवगया' चतुर्हानोपगता =मतिश्रुतायधिमनः पर्यवसानयुक्ताः पञ्चमिर

टीकार्थ—( तेण कालेण तेण समएण ) उस काल और उस समय में ( रायगिहे नाम नगरे होत्था ) राजगृह नाम का नगर था । ( वण्णओ ) नगर का वर्णन औपपातिक सूत्र में वर्णित चपा नगरी के समान जानना चाहिये । ( तस्स ण रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए तत्थणं गुणसिलए णाम चेइए होत्था, वण्णओ ) उस राजगृह नगर के बाहिर उत्तर पौरस्त्यदिग्भाग की ओर ( ईशानकोण में ) एक गुणशिलक नाम का चैत्य-उद्यान-था । यहा पर भी सब चैत्यवर्णन औपपातिक सूत्र की तरह जानना चाहिये—( तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी अज्ज सुहम्माणाम थेरा भगवतो जाइ सपन्ना कुल सपन्ना जाव चउहसपुव्वी चउणाणोवगया पंचहि अणगारसएहिं सद्धिं सपरिवुटा पुव्वाणुपुर्व्वि चरमाणा गामाणुगाम दूइ

टीकार्थ—( तेण कालेण तेण समएण ) ते काले अने ते समये ( रायगिहे नाम नगरे होत्था ) राजगृह नामे नगर હતુ ( વણ્ણઓ ) આ નગરતુ વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રમા વર્ણવવામા આવેલા ચપા નગરીના વણ્ણનની જેમ જ બણી લેવું જોઈએ

( તસ્સ ણ રાયગિહસ્સ ણયરસ્સ બહિયા ઉત્તરપુરત્થિમે દિસિભાએ તત્થણ ગુણસિલએ ણામ ચેહએ હોત્થા, વણ્ણઓ )

તે રાજગૃહ નગરની બહાર ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્-ભાગની તરફ એકે કે ઇશાન કોણમા એક ગુણશિલક નામે ચૈત્ય-ઉદ્યાન-હતો. અહીં ચૈત્ય વિષેનું બધું વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રની જેમ બણવું જોઈએ

( તેણ કાલેણ તેણ સમણ સમણસ્સ ભગવઓ મહાવીરસ્સ અતેવાસી અજ્જ સુહમ્માણામ થેરા ભગવતો જાહસપન્ના કુલસપન્ના જાવ ચઉહસ પુવ્વી ચઉણાણો વગયા પંચહિં અણગારસએહિં સદ્ધિં સપરિવુટા પુવ્વાણુપુર્વ્વિ ચરમાણા ગામાણુગામ દૂઈ



श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन धर्मकथाना दशवर्गाः प्रज्ञप्ताः, तत्रथा तानेव दर्शयति—  
 'चमरस्म चमरस्य=चमरेन्द्रस्य दाक्षिणात्यासुरकुमारेन्द्रस्य अग्रमहिषीणा प्रथमो-  
 वर्गः १ । 'वलिस्स' वलिनाम्नः 'वडरोयणिंदस्स' वैरोचनेन्द्रस्य=वि=विविध  
 प्रकारैः रोचन्ते=दीप्यन्ते दाक्षिणात्यासुरकुमारेभ्यो विशिष्टदीप्तिमत्त्वात् इति विरो-  
 चना, त एव वैरोचनाः=औदीन्यासुरकुमारास्तेषामिन्द्रः वैरोचनेन्द्रस्तस्य 'वडरो-  
 यणरन्नो' वैरोचनराजस्य=वैरोचनाधिपतेः अग्रमहिषीणा द्वितीयो वर्गः २ । असु-  
 रेन्द्रवर्जिताना 'दाहिणिल्लाण' दाक्षिणात्याना=दक्षिणदिक्सम्बन्धिना भवन-  
 वासिनामिद्राणामग्रमहिषीणा तृतीयो वर्गः ३ । 'उत्तरिल्लाण' उत्तरीयाणामसु-  
 रेन्द्रवर्जिताना भवनवासिनामिद्राणामग्रमहिषीणा चतुर्थो वर्गः ४ । दाक्षिणात्याना  
 वानव्यन्तराणामिन्द्राणामग्रमहिषीणा पञ्चमो वर्गः ५ । उत्तरीयाणां वानव्यन्तरा-  
 णामिन्द्राणामग्रमहिषीणा षष्ठो वर्गः ६ । चन्द्रस्याग्रमहिषीणा सप्तमो वर्गः ७ ।

स्वामी ने उनसे कहा—हे जन्म ! सुनो—यावत् मुक्तिस्थान को प्राप्त हुए  
 श्रमण भगवान् महावीर ने धर्मकथाओं के दश वर्ग प्रज्ञप्त किये हैं—(त  
 जहा) वे इस प्रकार हैं—(चमरस्स अग्रमहिषीणं पढमेवग्गे ? वलिस्स  
 वडरोयणिंदस्स वडरोयणरन्नो अग्रमहिषीण वीओ वग्गो २ असुरिंद-  
 वज्जियाण दाहिणिल्लाण भवणवासीण इदाण अग्रमहिषीणं तडओ  
 वग्गो ३ उत्तरिल्लाण असुरिंदवज्जियाण भवणवासीण इदाण अग्रम-  
 हिषीण चउट्यो वग्गो ४ दाहिणिल्लाण वाणमन्तराण—इदाण अग्रमहि-  
 सीण पचमो वग्गो, उत्तरिल्लाण वाणमन्तराण इदाण अग्रमहिषीण उट्टो  
 वग्गो ६, चदस्स अग्रमहिषीण सत्तमो वग्गो, सरस्स अग्रमहिषीण  
 अट्ठमो वग्गो सक्कस्स अग्रमहिषीण णवमो वग्गो, ईसाणस्स अग्रम  
 हिषीण दसमो वग्गो) चमरेन्द्र की—दाक्षिणात्य असुरकुमारेन्द्र की—

तेभने उहुं डे डे वणू । आलणे। यावत् मुक्तिस्थानने प्राप्त करी थुडेला  
 श्रमणु लगेवान महावीरे धर्मकथाओंना दश वर्गो प्रज्ञप्त किये डे (तजहा)  
 तेओ आ प्रभावे डे—

(चमरस्स अग्रमहिषीण पढमेवग्गे वलिस्स वडरोयणिंदस्स वडरोयणरन्नो  
 अग्रमहिषीण वीओ वग्गो २ असुरिंदवज्जियाण दाहिणिल्लाण भवणवासीण  
 इदाण अग्रमहिषीण तडओ वग्गो ३, उत्तरिल्लाण असुरिंदवज्जियाण भवण-  
 वासीण इदाण अग्रमहिषीण चउट्यो वग्गो ४ दाहिणिल्लाण वाणमन्तराण—  
 इदाण अग्रमहिषीण पचमो वग्गो, उत्तरिल्लाण वाणमन्तराण इदाण अग्रमहि-  
 सीण उट्टो वग्गो ६, चदस्स अग्रमहिषीण सत्तमो वग्गो, सरस्स अग्रमहिषीण अट्ठमो  
 वग्गो, सक्कस्स अग्रमहिषीण णवमो वग्गो, ईसाणस्स अग्रमहिषीण दसमो वग्गो)

ગાર. યાત્-‘પજ્જુરામમાણે’ પર્યુપાસીતઃ=સંવ્રમાન. પરમરદત્-યદિ સ્વલુ  
‘ભત્તે’ ભદન્ત=હે ભગવત્ ! શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્-મોક્ષ સમ્પ્રાપ્તેન  
પપ્થસ્યાન્નસ્ય પ્રથમસ્ય શ્રુતસ્કન્ધસ્ય ‘નાયાણ’ જ્ઞાતાનામ્=ઉદાહરણાનામ્ અયમર્થ  
પ્રાપ્તઃ દ્વિતીયસ્ય સ્વલુ હે ભદન્ત ! શ્રુતસ્કન્ધસ્ય ધર્મકથાના શ્રમણેન યાવત્ત્વમ્પ્રા  
પ્તેન=મોક્ષ ગતેન ભગવતા કીડર્યં પ્રાપ્તં ? । સુધર્માસ્વામીપ્રાહ-एव સ્વલુ હે જન્મ !

વાસી અજ્ઞ જન્મનામ અણગારે જાવ પજ્જુરામમાણે એવ યયાસી-જહ્ણ  
ભત્તે સમણેણ જાવ સપત્તેણ ડહસ્સ અગસ્સ પઢમસ્સ સુયચ્ચલધસ્સ  
નાયાણ અયમદ્દે પન્નત્તે દોચ્ચસ્સ ણ ભત્તે ! સુયચ્ચલધસ્સ ધમ્મકહાણ  
સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પણ્ણત્તે ? એવ સ્વલુ જન્મ ! સમણેણ જાવ  
સપત્તેણ ધમ્મકહાણ દસવગ્ગા પણ્ણત્તા ) રાજગૃહ નગર સે પરિષદ  
વદન કરને કે લિયે આઈ । સુધર્માસ્વામી વર્મ કા ઉપદેશ દિયા । ઉપદેશ  
સુનકર પરિષદ અપને ૨ સ્થાન પર પીઢે વહા સે ચલી ગઈ । उस काल में  
और उस समय में आर्य सुधर्मास्वामी के अतेवासी आर्य जन्म नामके  
अनगार ने यावत् उनकी पर्युपासना करते हुए उनसे इस प्रकार पूछा  
हे भदत ! यावत् मुक्तिको प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीरने उठेअगके  
ज्ञातासूत्र प्रथम श्रुतस्कंध के उदाहरणोका यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ निरूप  
पित किया है-तो हे भदत ! द्वितीय श्रुतस्कंधकी धर्मकथाओं का उन्हीं  
श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं क्या  
अर्थ निरूपित किया है ? इस प्रकार जन्म के प्रश्न को सुनकर श्री सुधर्मा

અજ્ઞજન્મનામ અણગારે જાવ પજ્જુરામમાણે એવ યયાસી-જહ્ણ ભત્તે સમણેણ  
જાવ સપત્તેણ ડહસ્સ અગસ્સ પઢમસ્સ સુયચ્ચલધસ્સ નાયાણ અયમદ્દે પન્નત્તે  
દોચ્ચસ્સ ણ ભત્તે ! સુયચ્ચલધસ્સ ધમ્મકહાણ સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે  
પણ્ણત્તે ? એવ સ્વલુ જન્મ ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ ધમ્મકહાણ દસવગ્ગા પણ્ણત્તા )

રાજગૃહ નગરથી પરિષદ વદન કરવા માટે ત્યા આવી સુધર્માસ્વામીએ  
ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. ઉપદેશ સાંભળીને પરિષદ પોતાના સ્થાને પાછી જતી  
રહી તે કાળે અને તે સમયે આર્ય સુધર્માસ્વામીના અતેવાસી (શિષ્ય)  
આર્ય જન્મ નામના અનગારે યાવત્ તેમની પર્યુપાસના કરતા તેમને આ  
પ્રમાણે પૂછ્યું કે હે ભદન્ત ! યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણ ભગવાન મહા  
વીરે છઠ્ઠા અગના પ્રથમ શ્રુતસ્કન્ધના ઉદાહરણોને આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ  
નિરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદન્ત ! તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર-કે જેમણે  
મુક્તિસ્થાનને મેળવી લીધું છે-દ્વિતીય શ્રુતસ્કન્ધની ધર્મકથાઓનો શો અર્થ  
નિરૂપિત કર્યો છે આ પ્રમાણે જન્મના પ્રશ્નને સાંભળીને

राईरयणी विज्जू मेहा, जडणं भते ! समणेणं जाव सपत्तेण  
 पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पणत्ता पढमस्स णं भते !  
 अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते ? एव खलु  
 जवू ! तेणं कालेण तेण समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए  
 चेइए सेणिए राया चेह्णणा देवी सामी समोसरिए परिसा  
 णिग्गया जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं  
 काली नाम देवी चमरचचाए रायहाणीए कालवडिसगभवणे  
 कालसि सीहासणसि चउहि सामाणियसाहस्सीहि चउहि मह-  
 त्तरियाहि सपरिवाराहि तिहि परिसाहि सत्तहि अणिएहि सत्तहि  
 अणियाहिवईहि सोलसहि आयरक्खदेवसाहस्सीहि अण्णेहि  
 बहुएहि य कालवडिसयभवणवासीहि असुरकुमारेहि देवीहि  
 य सद्धि सपरिवुडा महया हय जाव विहरइ, इमं च णं केवल-  
 कप्प जवुदीव दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी२ पासइ,  
 तत्थ समण भगव महावीर जवुदीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे  
 नगरे गुणसिलए चेइए अहापडिरुवं उग्गहं उग्गिण्हत्ता संज-  
 मेण तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ पासित्ता हट्टुट्टुचित्तमा-  
 णंदिया पीइमणा जाव हियया सीहासणाओ अव्वुट्ठेइ अव्वु-  
 ट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओसुयइ  
 ओसुइत्ता तित्थगराभिमुहा मत्तट्टुपयाइ अणुगच्छइ अणुग-  
 च्छित्ता वाम जाणु अचइ अचित्ता दाहिणं जाणु धरणियलसि  
 निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलसि निवेसेइ निवेसित्ता ईसिं

સુરસ=દુર્યસ્યાગ્રમહિષીણામષ્ટમો વર્ગઃ ૮ । ગન્ધર્યાગ્રમહિષીણાં નવમો વર્ગઃ ૯ ।  
ઈશાનસ્યાગ્રમહિષીણા દશમો વર્ગઃ ૧૦ ॥ ૬૦ ૧ ॥

મૂલમ્—જહ્ પાં ભંતે ! સમણેણં જાવ સંપત્તેણ ધમ્મકહાણં  
દસવગ્ગા પળણત્તા પઢમસ્સ ણ ભંતે । વગ્ગસ્સ સમણેણં જાવ  
સપત્તેણ કે અટ્ટે પન્નત્તં ? , एवं खलु जवू । समणेणं जाव सप  
त्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पणत्ता त जहा—काली

અગ્રમહિષિયોં કા-પટ્ટદેવિયોં કા-પ્રથમ વર્ગ, બલિ નામક વૈરોચનેન્દ્ર કી  
અગ્રમહિષિયોંકા ઈતીય વર્ગ, અસુરેન્દ્રકો ઓઢકર દક્ષિણ દિશા સવધી  
ભવનવાસિયોં કે ઇન્દ્રોં કી અગ્રમહિષિયોં કા તૃતીય વર્ગ, ઉત્તર દિશા  
સવધી ભવનવાસિયોં કે ઇન્દ્રોં કી કિ જિન મેં અસુરેન્દ્ર છોઢ દિયે ગયે  
હેં અગ્રમહિષોં કા ૪ ચતુર્થ વર્ગ, દક્ષિણ દિશા સવધી વાનવ્યતરોં કે  
ઇન્દ્રોં કી અગ્રમહિષિયોંકા પચમ વર્ગ, ઉત્તર દિશા સવધી વ્વાનવ્યતરોંકે  
ઇન્દ્રોં કી અગ્રમહિષિયોં કા ષઠા વર્ગ, ચન્દ્ર કી અગ્રમહિષિયોં કા ૭ વા  
વર્ગ, સૂર્યકો અગ્રમહિષિયોંકા આઠવા વર્ગ, શક્ર કી અગ્રમહિષિયોં કા  
નવમાં વર્ગ, ઔર ઈશાનકી અગ્રમહિષિયોં કા દશમાં વર્ગ । વૈરોચન ઉત્તર  
દિશાકે અસુરકુમાર હેં । યે દક્ષિણ દિશાસવધી અસુરકુમારોંકી અપેક્ષા  
વિશિષ્ટ દીપ્તિસપન હોતે હેં હસલિયે ઇન્હેં વરોચન કહા ગયા હેં ॥ સૂ. ૧ ॥

અમરેન્દ્રની-દક્ષિણના અસુરકુમારેન્દ્રની-અગ્રમહિષીઓના-પટ્ટદેવીઓના  
પહેલો વર્ગ, બલિ નામે વૈરોચનેન્દ્રની અગ્રમહિષીઓના બીજો વર્ગ, અસુરેન્દ્રને  
બાદ કરતા દક્ષિણ દિશાના ભવનવાસીઓના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓના ત્રીજો  
વર્ગ, ઉત્તર દિશા સવધી ભવનવાસીઓના ઇન્દ્રોની કે જેઓમાંથી અસુરેન્દ્રને  
બાદ કરી દીધા છે અગ્રમહિષીઓના ચોથો વર્ગ, દક્ષિણ દિશા સવધી વાન  
વ્યતરોના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓના પાંચમો વર્ગ, ઉત્તર દિશા સવધી વાન  
વ્યતરોના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓના સાતમો વર્ગ, સૂર્યની અગ્રમહિષીઓના  
આઠમો વર્ગ, શક્રની અગ્રમહિષીઓના નવમો વર્ગ અને ઈશાનની અગ્રમહિ  
ષીઓના દશમો વર્ગ વૈરોચન ઉત્તર દિશાના અસુરકુમાર છે એ દક્ષિણ દિશા  
સવધી અસુરકુમારો કરતા વિશિષ્ટ દીપ્તિ-સપ્ન હોય છે એથી જ એ  
વૈરોચન ઠહેવામાં આવ્યા છે ॥ સૂત્ર ૧ ॥

राईरयणी विज्जू मेहा, जइणं भते । समणेणं जाव सपत्तेण  
 पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पणत्ता पढमस्स णं भते ।  
 अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते ? एव खलु  
 जवू । तेणं कालेण तेण समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए  
 चेइए सेणिए राया चेह्णणा देवी सामी समोसरिए परिसा  
 णिग्गया जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेण तेणं समएणं  
 काली नामं देवी चमरचचाए रायहाणीए कालवडिसगभवणे  
 कालसि सीहासणसि चउहि सामाणियसाहस्सीहि चउहि मह-  
 त्तरियाहि सपरिवाराहि तिहि परिसाहि सत्तहि अणिएहि सत्तहि  
 अणियाहिवईहि सोलसहि आयरक्खदेवसाहस्सीहि अण्णैहि  
 बहुएहि य कालवडिसयभवणवासीहि असुरकुमारेहि देवीहि  
 य सद्धि सपरिवुडा महया हय जाव विहरइ, इमं च णं केवल-  
 कप्प जवुदीव दीव विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी२ पासइ,  
 तत्थ समण भगव महावीर जंबुदीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे  
 नगरे गुणसिलए चेइए अहापडिरुवं उग्गह उग्गिणिहत्ता संज-  
 मेण तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ पासित्ता हट्ठुट्ठुचित्तमा-  
 णंदिया पीडमणा जाव हियया सीहासणाओ अवभुट्ठेइ अवभु-  
 ट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ  
 ओमुइत्ता तित्थगराभिमुहा मत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ अणुग-  
 च्छित्ता वाम जाणु अचइ अचित्ता दाहिणं जाणुं धरणियलंसि  
 निहट्ठु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलसि निवेसेइ निवेसित्ता ईसि



સુરસ=પૂર્યસ્યાગ્રમહિષીનામષ્ટમો વર્ગઃ ૮ । ગમ્પસ્યાગ્રમહિષીનાં નવમો વર્ગઃ ૯ ।  
ઈશાનસ્યાગ્રમહિષીના દશમો વર્ગઃ ૧૦ ॥ ૪૦ ૧ ॥

પૂલમ્-જહ ણં મંતે ! સમણેણં જાવ સંપત્તેણ ધમ્મકહાણં  
દસવગ્ગા પપ્પણત્તા પઠમસ્સ ણ મંતે ! વગ્ગસ્સ સમણેણં જાવ  
સપત્તેણ કે અટ્ટે પત્તંતે ? , एवं खलु जघू । समणेणं जाव संप  
त्तेण पठमस्स वग्गस्स पच अट्ठयणा पपणत्ता त जहा-काली

અગ્રમહિષિયોં કા-પટ્ટદેવિયોં કા-પ્રથમ વર્ગ, પલિ નામક વૈરોચનેન્દ્ર કી  
અગ્રમહિષિયોંકા દ્વિતીય વર્ગ, અસુરેન્દ્રકો ઝોડકર દક્ષિણ દિશા સયધી  
ભવનવાસિયોં કે ઇન્દ્રોં કી અગ્રમહિષિયોં કા તૃતીય વર્ગ, ઉત્તર દિશા  
સયધી ભવનવાસિયોં કે ઇન્દ્રોં કી ત્રિ જિન મેં અસુરેન્દ્ર ઝોડ દિયે ગયે  
હેં અગ્રમહિષિયોં કા ૪ ચતુર્થ વર્ગ, દક્ષિણ દિશા સયધી વાનવ્યન્તરોં કે  
ઇન્દ્રોં કી અગ્રમહિષિયોંકા પચમ વર્ગ, ઉત્તર દિશા સયધી વ્વાનવ્યતરોંકે  
ઇન્દ્રોં કી અગ્રમહિષિયોં કા ૭ વા વર્ગ, ચન્દ્ર કી અગ્રમહિષિયોં કા ૭ વા  
વર્ગ, સૂર્યકો અગ્રમહિષિયોંકા આઠવા વર્ગ, શક્ર કી અગ્રમહિષિયોં કા  
નવમા વર્ગ, ઔર ઈશાનકી અગ્રમહિષિયોં કા દશમા વર્ગ । વૈરોચન ઉત્તર  
દિશાકે અસુરકુમાર હેં । યે દક્ષિણ દિશાસયધી અસુરકુમારોંકી અપેક્ષા  
વિશિષ્ટ દીસિસવન્ન હોતે હેં ઇસલિયે ઇન્દ્રેં વૈરોચન કહા ગયા હેં ॥ સૂ. ૧ ॥

અમરેન્દ્રની-દક્ષિણના અસુરકુમારેન્દ્રની-અગ્રમહિષીઓનો-પટ્ટદેવીઓનો  
પહેલો વર્ગ, પલિ નામે વૈરોચનેન્દ્રની અગ્રમહિષીઓનો બીજો વર્ગ, અસુરેન્દ્રને  
બાદ કરતા દક્ષિણ દિશાના ભવનવાસીઓના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓનો ત્રીજો  
વર્ગ, ઉત્તર દિશા સયધી ભવનવાસીઓના ઇન્દ્રોની કે જેઓમાથી અસુરેન્દ્રોને  
બાદ કમી હીધા છે અગ્રમહિષીઓનો ચોથો વર્ગ, દક્ષિણ દિશા સયધી વાન  
વ્યતરોના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓનો પાચમો વર્ગ, ઉત્તર દિશા સયધી વાન  
વ્યતરોના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓનો સાતમો વર્ગ, સૂર્યની અગ્રમહિષીઓનો  
આઠમો વર્ગ, શક્રની અગ્રમહિષીઓનો નવમો વર્ગ અને ઈશાનની અગ્રમહિ  
ષીઓનો દશમો વર્ગ વૈરોચન ઉત્તર દિશાના અસુરકુમાર છે એ દક્ષિણ દિશા  
સયધી અસુરકુમારો કરતા વિશિષ્ટ દીસિ-સવન્ન હોય છે એથી જ એ  
વૈરોચન કહેવામા આવ્યા છે ॥ સૂત્ર ૧ ॥

પ્રથમસ્ય સ્વલુ હે ભદન્ત ! વર્ગસ્ય શ્રમણેન યાત્રત્સમ્પ્રાપ્તેન કોડર્યઃ પ્રજ્ઞસઃ ? સુધર્માસ્વામીપ્રાઠ-એવ સ્વલુ હે જમ્બૂ ! શ્રમણેન યાત્રત્સમ્પ્રાપ્તેન પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પશ્ચ અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞતાનિ, તદ્વયા-કાલી ૧, રાત્રિ ૨, રજની ૩, વિદ્યુત્ ૪, મેઘા ૫ । જમ્બૂસ્વામી પૃચ્છતિ-યદિ સ્વલુ હે ભદન્ત ! શ્રમણેન યાત્રત્સમ્પ્રાપ્તેન પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પશ્ચ અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞતાનિ, તત્ર પ્રથમસ્ય સ્વલુ ભદન્ત ! અધ્યયનસ્ય શ્રમણેન યાત્રત્ સમ્પ્રાપ્તેન કોડર્યઃ પ્રજ્ઞસઃ ? । સુધર્મા સ્વામી કથયતિ—

એવ સ્વલુ હે જમ્બૂ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહ નગર ગુણશિલક ચૈત્યમ્, ત્રેણિકો રાજા, ચેલ્લના દેવી આસીન્ । સામી=સ્વામી શ્રીમહાવીરસ્વામી

સુધર્માસ્વામી સે પૂછતે હ કિ ( ભતે ) હે ભદત ! ( જહ્ણ ) યદિ ( સમ-  
ણેણ જાવ સપત્તેણ ધમ્મકઠાણ દસવગ્ગા પળ્લત્તા ) શ્રમણ ભગવાન્  
મહાવીર ને જો કિ મુક્તિસ્થાન કો પ્રાપ્ત હો ચુકે હૈં ધર્મકથા કે દશ વર્ગ  
પ્રરૂપિત કિયે હૈં તો ( ણ ભતે ) હે ભદત ! ( સમણેણ જાવ સપત્તેણ પઠમસ્સ  
વગ્ગસ્સ કે અદ્દે પન્નત્તે ) ઝઠ્ઠી શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો મોક્ષ  
મેં વિરાજમાન હો ચુકે હૈં પ્રથમ વર્ગ કા કયા અર્થ પ્રજ્ઞસ કિયા હૈં ?  
( એવ સ્વલુ જમ્બૂ સમણેણ જાવ સપત્તેણ પઠમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા  
પળ્લત્તા, ત જહા-કાલી રાઈ રયણી વિજ્જૂ મેહા જહ્ણ ભતે ! સમણેણ  
જાવ સંપત્તેણ પઠમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લત્તા પઠમસ્સ ણ ભતે  
અઙ્ગયણસ્સ સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પળ્લત્તે ? એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! તેણ  
કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણસિલ્લે ચેદ્દે સેણિયે રાયા ચેલ્લ-  
ણાદેવી ) હસ પ્રકાર જમ્બૂ સ્વામી કે પ્રશ્ન કો સુનકર સુધર્માસ્વામી ને

જમ્બૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે ( ભતે ) હે ભદન્ત !  
( જહ્ણ ) બે ( સમણેણ જાવ સંપત્તેણ ધમ્મકઠાણ દસવગ્ગા પળ્લત્તા ) શ્રમણ  
ભગવાન મહાવીરે કે બેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધુ છે ધર્મકથાઓના દશ  
વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો ( ણ ભતે ) હે ભદન્ત ! ( સમણેણ જાવ સપત્તેણ  
પઠમસ્સ વગ્ગસ્સ કે અદ્દે પન્નતે ) તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે બેઓ  
મોક્ષમા વિરાજમાન થઈ ચૂક્યા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞસ કર્યો છે ?

( એવ સ્વલુ જમ્બૂ સમણેણ જાવ સપત્તેણ પઠમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા  
પળ્લત્તા, ત જહા-કાલી રાઈ રયણી વિજ્જૂ મેહા જહ્ણ ભતે ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ  
પઠમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લત્તા । પઠમસ્સ ણ ભતે, અઙ્ગયણમ્ સમણેણ  
જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પળ્લત્તે ! એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે  
ણયરે ગુણસિલ્લે ચેદ્દે સેણિયે રાયા ચેલ્લણા દેવી )

पच्चुणमइ पच्चुणमित्ता कडयतुडियधंभियाओ भुयाओ  
 साहरइ साहरित्ता करयल जाव कहु एव वयासी-णमोत्थुणं  
 अरहताणं जाव सपत्ताणं नमोत्थुणं समणस्स भगवओ महा  
 वीरस्स जाव सपाविडकामस्स वंदामि ण भगवंतं तत्थगयं  
 इह गया पासउ म भगव तत्थ गए इह गयत्तिउट्टु वंदइ  
 नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुहा निस-  
 ण्णा, तएणं तीसे कालीएदेवीए इमेयारूवे जाव समुप्पजित्था  
 -सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वदित्ता जाव पज्जुवा-  
 सित्तएत्तिक्हु एव सपेहेइ सपेहित्ता आभिओगिए देवे सदावेइ  
 सदावित्ता एवं वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया । समणे भगव  
 महावीरे एव जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्व  
 सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्च  
 प्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण  
 सहस्सवित्थिणं जाणविमाण सेस तहेव, तहेव णामगोय  
 साहेइ तहेव नट्टविहि उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—‘जइण भते’ इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु ‘भते’  
 भदन्त !—हे भगवन् ! श्रेमणेन यावत्समाप्तेन धर्मकथाना दशवर्गा प्रज्ञानाः

—जइणं भते ! इत्यादि ।

टीकार्थ —(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेणं धम्मकहाण दसवर्गा  
 पणत्ता पढमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे  
 पणत्ते ? एव खलु जवु ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जम्बूस्वामी श्री

जइण भते ! इत्यादि—

(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवर्गा पणत्ता पढमस्स  
 णं भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते ? एव खलु जवु ! सम  
 णेण जाव सपत्तेण पढमस्स० )

પ્રથમસ્ય સ્વલુ હે ભદન્ત ! વર્ગસ્ય શ્રમણેન યાવત્સમ્પ્રાપ્તેન કોડર્યઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ? સુધર્માસ્વામીપ્રાઢ-એવ સ્વલુ હે જન્મૂઃ ! શ્રમણેન યાવત્સમ્પ્રાપ્તેન પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પચ્ચ અધ્યયનાનિ પ્રવક્તાનિ, તદ્વથા-કાલી ૧, રાત્રિ ૨, રજની ૩, વિદ્યુત્ ૪, મેઘા ૫ । જન્મૂસ્વામી પૃચ્છતિ-યદિ સ્વલુ હે ભદન્ત ! શ્રમણેન યાવત્સમ્પ્રાપ્તેન પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પચ્ચ અધ્યયનાનિ પ્રવક્તાનિ, તત્ર પ્રથમસ્ય સ્વલુ ભદન્ત ! અધ્યયનસ્ય શ્રમણેન યાવત્ સમ્પ્રાપ્તેન કોડર્યઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ? । સુધર્મા સ્વામી કથયતિ—

એવ સ્વલુ હે જન્મૂઃ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહ નગર ગુણશિલક ચૈત્યમ્, ટ્રેણિકો રાજા, ચેલ્હના દેવી આસીન્ । સામી=ત્વામી શ્રીમહાવીરસ્વામી

સુધર્માસ્વામી સે પૂછતે હે કિ ( ભતે ) હે ભદન્ત ! ( જહ્ણ ) યદિ ( સમણેણ જાવ સપત્તેણ ધમ્મકહાણ દસવગ્ગા પણ્ણત્તા ) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને જો કિ મુક્તિસ્થાન કો પ્રાપ્ત હો ચુકે હૈં ધર્મકથા કે દશ વર્ગ પ્રરૂપિત કિયે હૈં તો ( ણ ભતે ) હે ભદન્ત ! ( સમણેણ જાવ સપત્તેણ પઠમસ્સ વગ્ગસ્સ કે અદ્દે પન્નત્તે ) ડન્હી શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો મોક્ષ મેં વિરાજમાન હો ચુકે હૈં પ્રથમ વર્ગ કા કથા અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કિયા હૈં ? ( એવ સ્વલુ જન્મૂ સમણેણ જાવ સપત્તેણ પઠમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પણ્ણત્તા, ત જહા-કાલી રાઈ રયણી વિજ્જૂ મેહા જહ્ણ ભતે ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ પઠમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પણ્ણત્તા પઠમસ્સ ણં ભતે અઙ્ગયણસ્સ સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પણ્ણત્તે ? એવ સ્વલુ જન્મૂ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણસિલ્લે ચેહ્ણ સેણિયે રાયા ચેલ્હનાદેવી ) હસ પ્રકાર જન્મૂ સ્વામી કે પ્રશ્ન કો સુનકર સુધર્માસ્વામી ને

જન્મૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે ( ભતે ) હે ભદન્ત ! ( જહ્ણ ) બ્હે ( સમણેણ જાવ સપત્તેણ ધમ્મકહાણ દસવગ્ગા પણ્ણત્તા ) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધું છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો ( ણ ભતે ) હે ભદન્ત ! ( સમણેણ જાવ સપત્તેણ પઠમસ્સ વગ્ગસ્સ કે અદ્દે પન્નત્તે ) તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ મોક્ષમા વિરાજમાન થઈ ચૂક્યા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે ?

( એવ સ્વલુ જન્મૂ સમણેણ જાવ સપત્તેણ પઠમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પણ્ણત્તા, ત જહા-કાલી રાઈ રયણી વિજ્જૂ મેહા જહ્ણ ભતે ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ પઠમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પણ્ણત્તા । પઠમસ્સ ણં ભતે, અઙ્ગયણ સ સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પણ્ણત્તે ! એવ સ્વલુ જન્મૂ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણસિલ્લે ચેહ્ણ સેણિયે રાયા ચેલ્હના દેવી )

पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ  
 साहरइ साहरित्ता करयल जाव कट्टु एवं वयासी-णमोऽत्थुणं  
 अरहंताणं जाव सपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महा  
 वीरस्स जाव सपाविडकामस्स वंदामि णं भगवंत तत्थगयं  
 इह गया पासउ म भगव तत्थ गए इह गयत्तिरुहु वंदइ  
 नमसइ वदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निस-  
 ण्णा, तएणं तीसे कालीएदेवीए इमेयारूवे जाव समुप्पजित्था  
 -सेयं खलु मे समणं भगवं महावीर वदित्ता जाव पज्जुवा-  
 सित्तएत्तिकहु एव सपेहंइ सपेहित्ता आभिओगिए देवे सदावेइ  
 सदावित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया । समणे भगव  
 महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तिय देइ जाव दिव्वं  
 सुरवराभिगमणजोगं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्च  
 प्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण  
 सहस्सविट्थिणं जाणविमाणं सेस तहेव, तहेव णामगोय  
 साहेइ तहेव नट्टविहि उवदसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—‘जइणं भते’ इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु ‘भते’  
 भदन्त ! = हे भगवन् ! भ्रमणेन यावत्समाप्तेन धर्मकथानां दशवर्गाः प्रवृत्ताः

—जइणं भते । इत्यादि ।

टीकार्थः—(जइणं भते । समणेण जाव सपत्तेणं धम्मकहाण दसवगा  
 पणत्ता पढमस्स ण भते । वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे  
 पणत्ते ? एव खलु जवू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जम्बूस्वामी श्री

जइणं भते । इत्यादि—

(जइणं भते । समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवगा पणत्ता पढमस्स  
 णं भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते ? एव खलु जवू ! सम  
 णेण जाव सपत्तेण पढमस्स० )



પ્રથમસ્ય સ્વલુ હે ભદન્ત ! વર્ગસ્ય શ્રમણેન યાવત્સમ્પ્રાપ્તેન કોડર્યઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ? સુધર્માસ્વામીપ્રાહ-એવ સ્વલુ હે જમ્બૂ' ! શ્રમણેન યાવત્સમ્પ્રાપ્તેન પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પશ્ચ અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા-કાલી ૧, રાત્રિ ૨, રજની ૩, વિદ્યુત્ ૪, મેઘા ૫ । જમ્બૂસ્વામી પૂછતિ-યદિ સ્વલુ હે ભદન્ત ! શ્રમણેન યાવત્સમ્પ્રાપ્તેન પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પશ્ચ અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તત્ર પ્રથમસ્ય સ્વલુ ભદન્ત ! અ યય-નસ્ય શ્રમણેન યાવત્ સમ્પ્રાપ્તેન કોડર્યઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ? । સુધર્મા સ્વામી કવચતિ—

એવ સ્વલુ હે જમ્બૂ' । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહ નગર ગુણશિલક ચૈત્યમ્, શ્રેણિકો રાજા, ચેઢના દેવી આસીન્ । સામી=ત્વામી શ્રીમહાવીરસ્વામી

સુધર્માસ્વામી સે પૂછતે હ કિ ( ભતે ) હે ભદન્ત ! ( જહ્ણ ) યદિ ( સમ-  
ણેણ જાવ સપત્તેણ વમ્મકહાણ દસવગ્ગા પળ્લપ્પા ) શ્રમણ ભગવાન્  
મહાવીર ને જો કિ મુક્તિસ્થાન કો પ્રાપ્ત હો ચુકે હૈં ધર્મકથા કે દશ વર્ગ  
પ્રરૂપિત કિયે હૈં તો ( ણ ભતે ) હે ભદન્ત ! ( સમણેણ જાવ સપત્તેણ પઢમસ્સ  
વગ્ગસ્સ કે અદ્દે પન્નત્તે ) ઉન્હી શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો મોક્ષ  
મે વિરાજમાન હો ચુકે હૈં પ્રથમ વર્ગ કા કયા અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કિયા હૈં ?  
( એવ સ્વલુ જમ્બૂ સમણેણ જાવ સપત્તેણ પઢમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા  
પળ્લપ્પા, ત જહા-કાલી રાઈ રયણી વિજ્જૂ મેહા જહ્ણ ભતે ! સમણેણ  
જાવ સપત્તેણ પઢમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લપ્પા પઢમસ્સ ણ ભતે  
અઙ્ગયણસ્સ સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પળ્લપ્પે ? એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! તેણ  
કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણસિલ્લે ચેદ્દે સેણિય રાયા ચેલ્લ-  
ણાદેવી ) હસ પ્રકાર જમ્બૂ સ્વામી કે પ્રશ્ન કો સુનકર સુધર્માસ્વામી ને

જમ્બૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે ( ભતે ) હે ભદન્ત !  
( જહ્ણ ) ને ( સમણેણ જાવ સપત્તેણ વમ્મકહાણ દસવગ્ગા પળ્લપ્પા ) શ્રમણ  
ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધું છે ધર્મકથાઓના દશ  
વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો ( ણ ભતે ) હે ભદન્ત ! ( સમણેણ જાવ સપત્તેણ  
પઢમસ્સ વગ્ગસ્સ કે અદ્દે પળ્લપ્પે ) તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ  
મોક્ષમાં વિરાજમાન થઈ ચૂક્યા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે ?

( એવ સ્વલુ જમ્બૂ સમણેણ જાવ સપત્તેણ પઢમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા  
પળ્લપ્પા, ત જહા-કાલી રાઈ રયણી વિજ્જૂ મેહા જહ્ણ ભતે ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ  
પઢમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લપ્પા । પઢમસ્સ ણ ભતે, અઙ્ગયણ મ સમણેણ  
જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પળ્લપ્પે ! એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે  
ણયરે ગુણસિલ્લે ચેદ્દે સેણિય રાયા ચેલ્લણા દેવી )

पच्चुण्णमड पच्चुण्णमित्ता कडयतुडियथभियाओ भुयाओ  
 साहरइ साहरित्ता करयल जाव कहु एवं वयासी-णमोऽत्थुणं  
 अरहताणं जाव सपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महा-  
 वीरस्स जाव सपाविडकामस्स वंदामि णं भगवत तत्थगयं  
 इह गया पासउ म भगव तत्थ गए इह गयत्तिऱहु वंदइ  
 नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुहा निस-  
 ण्णा, तएणं तीसे कालीए देवीए इमेयारुवे जाव समुत्पज्जित्था  
 -सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वदित्ता जाव पज्जुवा-  
 सित्तएत्तिकहु एव सपेहंइ सपेहित्ता आभिओगिए देवे सहावेइ  
 सहावित्ता एवं वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया । समणे भगव  
 महावीरे एव जहा सूरियाओ तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं  
 सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्च  
 प्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण  
 सहस्सवित्थिणं जाणविमाणं सेस तहेव, तहेव णामगोय  
 साहेइ तहेव नट्टविहि उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—‘जइण भते’ इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु ‘भते’  
 भदन्त !—हे भगवन् ! श्रमणेन यावत्संपाप्तेन धर्मकथाना दशवर्गाः प्रज्ञप्ताः,

—जइण भते ! इत्यादि ।

टीकार्थ —(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा  
 पणत्ता पढमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अहे  
 पणत्ते ? एव खलु जब्बु ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जम्बूस्वामी श्री

जइण भते ! इत्यादि—

(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पणत्ता पढमस्स  
 ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अहे पणत्ते ? एव खलु जब्बु ! सम  
 णेण जाव सपत्तेण पढमस्स० )

પ્રથમસ્ય સ્વલુ હે ભદન્ત ! વર્ગસ્ય શ્રમણેન યાત્રત્સમ્પ્રાપ્તેન કોડર્યઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ? સુધર્માસ્વામીપ્રાઠ-એવ સ્વલુ હે જન્મુ ! શ્રમણેન યાત્રત્સમ્પ્રાપ્તેન પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પચ્ચ અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા-કાલી ૧, રાત્રિ ૨, રજની ૩, વિદ્યુત્ ૪, મેઘા ૫ । જન્મુસ્વામી પૃચ્છતિ-યદિ સ્વલુ હે ભદન્ત ! શ્રમણેન યાત્રત્સમ્પ્રાપ્તેન પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પચ્ચ અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તત્ર પ્રથમસ્ય સ્વલુ ભદન્ત ! અ યય-નસ્ય શ્રમણેન યાત્ર સમ્પ્રાપ્તેન કોડર્યઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ? । સુધર્મા સ્વામી કથયતિ—

એવ સ્વલુ હે જન્મુ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહ નગર ગુણશિલક ચૈત્યમ્, ઐણિકો રાજા, ચેલ્હના દેરી આસીન્ । સામી=સ્વામી શ્રીમદ્વારીસ્વામી

સુધર્માસ્વામી સે પૂછતે હે કિ ( ભતે ) હે ભદન્ત ! ( જહ્ણ ) યદિ ( સમ-ણેણ જાવ સપત્તેણ ધમ્મકઠ્ઠાણ દસવગ્ગા પળ્લપ્પા ) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને જો કિ મુક્તિસ્થાન કો પ્રાપ્ત હો ચુકે હે ધર્મકથા કે દશ વર્ગ પ્રરૂપિત કિયે હે તો ( ણ ભતે ) હે ભદન્ત ! ( સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ કે અદ્દે પન્નત્તે ) ઉન્હી શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો મોક્ષ મેં વિરાજમાન હો ચુકે હે પ્રથમ વર્ગ કા કયા અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કિયા હે ? ( એવ સ્વલુ જન્મુ સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લપ્પા, ત જહા-કાલી રાઈ રયણી વિજ્ઞૂ મેહા જહ્ણ ભતે ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લપ્પા પદમસ્સ ણં ભતે અઙ્ગયણસ્સ સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પળ્લપ્પા ? એવ સ્વલુ જન્મુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણસિલ્લે ચેડે સેણિયે રાયા ચેલ્લ-ણાદેવી ) હસ પ્રકાર જન્મુ સ્વામી કે પ્રશ્ન કો સુનકર સુધર્માસ્વામી ને

જન્મુ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે ( ભતે ) હે ભદન્ત ! ( જહ્ણ ) ને ( સમણેણ જાવ સપત્તેણ ધમ્મકઠ્ઠાણ દસવગ્ગા પળ્લપ્પા ) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધું છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો ( ણ ભતે ) હે ભદન્ત ! ( સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ કે અદ્દે પળ્લપ્પા ) તે જ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે કે જેઓ મોક્ષમા વિરાજમાન થઈ ચૂક્યા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે ?

( એવ સ્વલુ જન્મુ સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લપ્પા, ત જહા-કાલી રાઈ રયણી વિજ્ઞૂ મેહા જહ્ણ ભતે ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લપ્પા । પદમસ્સ ણં ભતે, અઙ્ગયણ મ સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પળ્લપ્પા ! એવ સ્વલુ જન્મુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે—સિલ્લે ચેડે સેણિયે રાયા ચેલ્લણા દેરી )

पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ  
 साहरइ साहरित्ता करयल जाव कहु एव वयासी-णमोऽत्थुणं  
 अरहताणं जाव सपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महा  
 वीरस्स जाव सपाविउकामस्स वंदासि णं भगवत तत्थगयं  
 इह गया पासउ म भगव तत्थ गए इह गयत्तिइहु वंदइ  
 नमसइ वदित्ता नमंसित्ता सीहासणप्रसि पुरत्थाभिमुहा निस-  
 ण्णा, तएणं तीसे कालीएदेवीए इमेयारूवे जाव समुप्पजित्था  
 -सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वदित्ता जाव पज्जुवा  
 सित्तएत्तिकहु एव सपेहेइ सपेहित्ता आभिओगिए देवे सदावेइ  
 सदावित्ता एवं वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया । समणे भगव  
 महावीरे एव जहा सूरियाओ तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं  
 सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्च  
 प्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण  
 सहस्सविट्थिणं जाणविमाणं सेस तहेव, तहेव णामगोय  
 साहेइ तहेव नट्टविहि उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—'जइण भते' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु 'भते'  
 भदन्त !—हे भगवन् ! श्रमणेन यावत्संपाप्तेन धर्मकथानां दशवर्गाः प्रज्ञप्ताः

—जइण भते । इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा  
 पणत्ता पढमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे  
 पणत्ते ? एव खलु जवू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जम्बूस्वामी श्री

जइण भते । इत्यादि—

(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पणत्ता पढमस्स  
 णं भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते ? एव खलु जवू ! सम  
 णेण जाव सपत्तेण पढमस्स० )

પ્રથમસ્ય खलु हे भदन्त । वर्गस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीप्राह-एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्राप्तानि, तद्यथा-काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, मेघा ५ । जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तत्र प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मा स्वामी कथयति—

एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगर गुणशिल्पक चैत्यम्, त्रेणिको राजा, चेष्टना देवी आसीत् । सामी=त्वामी श्रीमहावीरस्वामी

सुधर्मास्वामी से पृच्छते है कि ( भते ) हे भदन्त ! ( जइण ) यदि ( समणेण जाव सपत्तेण वम्मकहाण दसवग्गा पणत्ता ) श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथा के दश वर्ग प्ररूपित किये हैं तो ( ण भते ) हे भदन्त ! ( समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते ) उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्ष में विराजमान हो चुके हैं प्रथम वर्ग का कथा अर्थ प्रज्ञप्त किया है ? ( एव खलु जम्बू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच्च अज्झयणा पणत्ता, त जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच्च अज्झयणा पणत्ता पढमस्स ण भते अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते ? एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणादेवी ) इस प्रकार जम्बू स्वामी के प्रश्न को सुनकर सुधर्मास्वामी ने

જખૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે ( ભતે ) હે ભદન્ત ! ( જઈણ ) જો ( સમગેણ જાવ સપત્તેણ વમ્મકહાણ દસવગ્ગા પણત્તા ) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધું છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો ( ણ ભતે ) હે ભદન્ત ! ( સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ કે અટ્ઠે પન્નતે ) તેજ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ મોક્ષમાં વિરાજમાન થઈ ચૂક્યા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે ?

( એવ સ્વલ્પ જખૂ સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ્ચ અજ્ઞયણા પણત્તા, ત જહા-કાલી રાઈ રયણી વિજ્જૂ મેહા જઈણ ભતે ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ્ચ અજ્ઞયણા પણત્તા । પદમસ્સ ણ ભતે, અજ્ઞયણમ્ સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અટ્ઠે પણત્તે ! એવ સ્વલ્પ જખૂ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે—શિલ્પ ચેઈણ સેણિણ રાયા ચેલ્લણા દેવી )



पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता कडयत्तुडियथंभियाओ भुयाओ  
 साहरइ साहरित्ता करयल जाव कहु पत्रं वयासी-णमोऽत्थुणं  
 अरहताणं जाव सपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महा-  
 वीरस्स जाव सपाविउकामस्स वंदामि णं भगवत तत्थगयं  
 इह गया पासउ म भगवं तत्थ गए इह गयत्तिइहु वंदइ  
 नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुहा निस-  
 ण्णा, तएणं तीसे कालीएदेवीए इमेयारुवे जाव समुप्पज्जित्था  
 -सेयं खलु मे समणं भगवं महावीर वदित्ता जाव पज्जुवा-  
 सित्तएत्तिक्हु एव संपेहेइ सपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ  
 सद्दावित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया । समणे भगव  
 महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं  
 सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्च  
 प्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण  
 सहस्सविट्थिण्णं जाणविमाणं सेस तहेव, तहेव णामगोथ  
 साहेइ तहेव नट्टविहि उवदसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—‘जइण भते’ इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु ‘भते’  
 भदन्त ! हे भगवन् ! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन धर्मकथानां दशवर्गा, प्रज्ञाः

—जइण भते ! इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवर्गा  
 पणत्ता पढमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे  
 पणत्ते ? एव खलु जवू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जम्बूस्वामी श्री

जइण भते ! इत्यादि—

(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवर्गा पणत्ता पढमस्स  
 ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते ? एव खलु जवू ! सम  
 णेण जाव सपत्तेण पढमस्स० )

પ્રથમસ્ય સ્વલુ હે ભદન્ત ! વર્ગસ્ય શ્રમણેન યાત્રત્સમ્પ્રાપ્તેન કોઽર્થઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ? સુધર્માસ્વામીપ્રાઢ-એવ સ્વલુ હે જન્મુ ! શ્રમણેન યાત્રત્સમ્પ્રાપ્તેન પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પચ્ચ અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા-કાલી ૧, રાત્રિ ૨, રજની ૩, વિદ્યુત્ ૪, મેઘા ૫ । જન્મુસ્વામી પૃચ્છતિ-યદિ સ્વલુ હે ભદન્ત ! શ્રમણેન યાત્રત્સમ્પ્રાપ્તેન પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પચ્ચ અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તત્ર પ્રથમસ્ય સ્વલુ ભદન્ત ! અધ્યયનસ્ય શ્રમણેન યાત્ર સમ્પ્રાપ્તેન કોઽર્થઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ? । સુધર્મા સ્વામી કથયતિ—

એવ સ્વલુ હે જન્મુ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહ નગર ગુણશિલક ચૈત્યમ્, ટ્રેણિકો રાજા, ચેલ્લના દેવી આસીન્ । સામી=ત્વામી શ્રીમહાવીરસ્વામી

સુધર્માસ્વામી સે પૂછતે હ કિ ( ભતે ) હે ભદન્ત ! ( જહ્ણ ) યદિ ( સમણેણ જાવ સપત્તેણ ધમ્મકઢાણ દસવગ્ગા પણ્ણત્તા ) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને જો કિ મુક્તિસ્થાન કો પ્રાપ્ત હો ચુકે હૈં ધર્મકથા કે દશ વર્ગ પ્રરૂપિત કિયે હૈં તો ( ણ ભતે ) હે ભદન્ત ! ( સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ કે અટ્ટે પન્નત્તે ) ઉન્હી શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો મોક્ષ મેં વિરાજમાન હો ચુકે હૈં પ્રથમ વર્ગ કા કથા અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કિયા હૈં ? ( એવ સ્વલુ જન્મુ સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પણ્ણત્તા, ત જહા-કાલી રાઈ રયણી વિજ્જૂ મેહા જહ્ણ ભતે ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પણ્ણત્તા પદમસ્સ ણ ભતે અઙ્ગયણસ્સ સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અટ્ટે પણ્ણત્તે ? એવ સ્વલુ જન્મુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણસિલ્લે ચેદ્દણ સેણિણ રાયા ચેલ્લનાદેવી ) હસ પ્રકાર જન્મુ સ્વામી કે પ્રશ્ન કો સુનકર સુધર્માસ્વામી ને

જન્મુ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે ( ભતે ) હે ભદન્ત ! ( જહ્ણ ) ને ( સમણેણ જાવ સપત્તેણ ધમ્મકઢાણ દસવગ્ગા પણ્ણત્તા ) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે કે નેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધુ છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો ( ણ ભતે ) હે ભદન્ત ! ( સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ કે અટ્ટે પન્નત્તે ) તેજ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે કે નેમણે મોક્ષમા વિરાજમાન થઈ ચૂકયા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે ?

( એવ સ્વલુ જન્મુ સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પણ્ણત્તા, ત જહા-કાલી રાઈ રયણી વિજ્જૂ મેહા જહ્ણ ભતે ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પણ્ણત્તા । પદમસ્સ ણ ભતે, અઙ્ગયણ મ સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અટ્ટે પણ્ણત્તે ! એવ સ્વલુ જન્મુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણસિલ્લે ચેદ્દણ સેણિણ રાયા ચેલ્લના દેવી )

पच्चुणमइ पच्चुणमिक्का कडयतुडियधभियाओ भुयाओ  
 साहरइ साहरित्ता करयल जाव कट्टु एव वयासी-णमोऽत्थुणं  
 अरहताणं जाव सपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महा-  
 वीरस्स जाव सपाविडकामस्स वदामि णं भगवंत तत्थगयं  
 इह गथा पासउ म भगव तत्थ गए इह गयत्तिइहु वंदइ  
 नमसइ वदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुग्गथाभिमुहा निस-  
 पणा, तएणं तीसे कालीएदेवीए इमेयारूवे जाव समुप्पजित्था  
 -सेयं खलु मे समणं भगवं महावीर वदित्ता जाव पज्जुवा-  
 सित्तएत्तिकट्टु एव संपेहेइ सपेहित्ता आभिओगिए देवे सदावेइ  
 सदावित्ता एवं वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया । समणे भगव  
 महावीरे एव जहा सूरियाओ तहेव आणत्तिर्यं देइ जाव दिव्व  
 सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्च  
 प्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण  
 सहस्सविस्सिण जाणविमाण सेस तहेव, तहेव णामगोय  
 साहेइ तहेव नट्टविहि उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—‘जइण भते’ इत्यादि । जम्बूस्वामीपूत्र-उति-यदि खलु ‘भते’  
 भदन्त ! = हे भगवन् ! त्रमणेन यावत्संपाप्तेन धर्मकथाना दशवर्गाः प्रवृत्ताः

—जइण भते ! इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा  
 पणत्ता पढमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे  
 पणत्ते ? एव खलु जवू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जम्बूस्वामी श्री

जइण भते ! इत्यादि—

(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पणत्ता पढमस्स  
 ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते ? एव खलु जवू ! सम  
 नेण जाव सपत्तेण पढमस्स० )

પ્રથમસ્ય સ્વલુ હે ભદન્ત ! વર્ગસ્ય શ્રમણેન યાત્રત્સમ્પ્રાપ્તેન કોઽર્થઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ? સુધર્માસ્વામીપ્રાઠ-એવ સ્વલુ હે જન્મુ ! શ્રમણેન યાત્રત્સમ્પ્રાપ્તેન પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પચ્ચ અધ્યયનાનિ પ્રાપ્તાનિ, તદ્વથા-કાલી ૧, રાત્રિ ૨, રજની ૩, વિદ્યુત્ ૪, મેઘા ૫ । જન્મુસ્વામી પૃચ્છતિ-યદિ સ્વલુ હે ભદન્ત ! શ્રમણેન યાત્રત્સમ્પ્રાપ્તેન પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પચ્ચ અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તત્ર પ્રથમસ્ય સ્વલુ ભદન્ત ! અધ્યયનસ્ય શ્રમણેન યાત્ર સમ્પ્રાપ્તેન કોઽર્થઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ? । સુધર્મા સ્વામી કથયતિ—

એવ સ્વલુ હે જન્મુ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહ નગર ગુણશિલ્ક ચૈત્યમ્, શ્રેણિકો રાજા, ચેલ્લના દેવી આસીન્ । સામી=ત્વામી શ્રીમહાવીરસ્વામી

સુધર્માસ્વામી સે પૃચ્છતે હે કિ ( ભતે ) હે ભદન્ત ! ( જહ્ણ ) યદિ ( સમણેણ જાવ સપત્તેણ ધમ્મકઠ્ઠાણ દસવગ્ગા પળ્લપ્પા ) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને જો કિ મુક્તિસ્થાન કો પ્રાપ્ત હો ચુકે હૈં ધર્મકથા કે દશ વર્ગ પ્રરૂપિત કિયે હૈં તો ( ણ ભતે ) હે ભદન્ત ! ( સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ કે અદ્દે પન્નત્તે ) ઉન્હી શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો મોક્ષ મેં વિરાજમાન હો ચુકે હૈં પ્રથમ વર્ગ કા કથા અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કિયા હૈં ? ( એવ સ્વલુ જન્મુ સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લપ્પા, ત જહા-કાલી રાઈ રયણી વિજ્ઞૂ મેહા જહ્ણ ભતે ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લપ્પા પદમસ્સ ણ ભતે અઙ્ગયણસ્સ સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પળ્લપ્પા ? એવ સ્વલુ જન્મુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણસિલ્લે ચેડણ સેણિય રાયા ચેલ્લનાદેવી ) હસ પ્રકાર જન્મુ સ્વામી કે પ્રશ્ન કો સુનકર સુધર્માસ્વામી ને

જન્મુ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે ( ભતે ) હે ભદન્ત ! ( જહ્ણ ) બે ( સમણેણ જાવ સપત્તેણ ધમ્મકઠ્ઠાણ દસવગ્ગા પળ્લપ્પા ) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે બેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધુ છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો ( ણ ભતે ) હે ભદન્ત ! ( સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ કે અદ્દે પન્નત્તે ) તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે બેઓ મોક્ષમા વિરાજમાન થઈ ચૂક્યા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે ?

( એવ સ્વલુ જન્મુ સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લપ્પા, ત જહા-કાલી રાઈ રયણી વિજ્ઞૂ મેહા જહ્ણ ભતે ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લપ્પા । પદમસ્સ ણ ભતે, અઙ્ગયણસ્સ સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પળ્લપ્પા ! એવ સ્વલુ જન્મુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણસિલ્લે ચેડણ સેણિય રાયા ચેલ્લના દેવી )

पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ  
 साहरइ साहरित्ता करयल जाव कहु एवं वयासी-णमोऽत्थुणं  
 अरहताणं जाव सपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महा-  
 वीरस्स जाव सपाविउकामस्स वंदामि णं भगवत तत्थगयं  
 इह गया पासउ म भगव तत्थ गए इह गयत्तिउहु वंदइ  
 नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता सीहासणपरसि पुरत्थाभिमुहा निस-  
 ण्णा, तएणं तीसे कालीणदेवीए इमेयारुवे जाव समुप्पजित्था  
 -सेयं खलु मे समणं भगवं महावीर वदित्ता जाव पज्जुवा  
 सित्तएत्तिकहु एव संपेहेइ सपेहित्ता आभिओगिए देवे सहावेइ  
 सहावित्ता एवं वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव  
 महावीरे एवं जहा सूरियाओ तहेव आणत्तिर्यं देइ जाव दिव्वं  
 सुरवराभिगमणजोगं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्च  
 प्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण  
 सहस्सविट्थिणं जाणविमाणं सेस तहेव, तहेव णामगोय  
 साहेइ तहेव नट्टविहि उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—‘जइण भते’ इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु ‘भते’  
 भदन्त !—हे भगवन् ! श्रमणेन यावत्समाप्तेन धर्मकथाना दशवर्गा प्रज्ञा ।

—जइण भते ! इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवर्गा  
 पणत्ता पढमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे  
 पणत्ते ? एव खलु जव ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जम्बूस्वामी श्री

जइण भते ! इत्यादि—

(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवर्गा पणत्ता पढमस्स  
 ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते ? एव खलु जव ! सम  
 णेण जाव सपत्तेण पढमस्स० )





‘ સમોસરિણ ’ સમયસૂત્રઃ સમાગતયાન । ‘ પરિસા ’-પરિપદ્=રાજગૃહનગર  
 માસ્તવ્યો જનસમૂહ ‘ ણિગયા ’ નિર્ગતા=મગરદ્વન્દનાયં સ્વ સ્વસ્થાનાન્નિસ્સૃતા,  
 મગરતા ધર્મકથા કથિતા યાવદ્ પરિપદ્ મગરત ‘ પઞ્જુવાસઠ ’ પર્યુવાસ્તે=  
 સેવતે, તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે કાલી નામ દેવી ચમરચચાણ રાજધાન્યાં  
 ઉર્હે ઉત્તર દેને કે અભિપ્રાય સે કરા ક્કિ ( ઇય ચલુ જવૂ ! ) હે જવૂ !  
 તુમ્હારે પ્રશ્ન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈ સુનો યાવત્ સપ્રાપ્ત શ્રમણ મગ  
 વાન્ મહાવીર ને પ્રથમ વર્ગ કે પાંચ અધ્યયન પ્રશ્ન કિયે હૈ વે યે હૈ-  
 કાલી ૧, રાત્રિ ૨, રજની ૩, ત્રિષ્ટુત્ ૪, ઓર મેત્રા ૫। અથ પુનઃ જવૂ  
 સ્વામી પ્રશ્ન કરતે હૈ કિ હૈ ભદ્રત ! યાવત્ મુક્તિધ્યાન કો પ્રાપ્ત હુણ  
 શ્રમણ મગવાન્ મહાવીર ને પ્રથમ વર્ગ કે પાંચ અધ્યયન નિરૂપિત કિયે  
 હૈ તો મેં આપસે પૂછના હૈ કિ ભદ્રત યાવત્ મોક્ષ તો સપ્રાપ્ત ઉર્હૈ શ્રમણ  
 મગવાન્ મહાવીરને પ્રથમ અધ્યયનકા વયા, અર્થ નિરૂપિત કિયા હૈ ? હસકા  
 ઉત્તર ઉર્હે સુધર્માસ્વામી હસ પ્રકાર દેતે હૈ-હે જવૂ ! ઉસ કાલ ઓર  
 ઉસ સમય મેં રાજગૃહ નામકી નગરી થી-ઉમ મેં ગુણશિલક નામ કા  
 ઉદ્યાન થા-નગરી કે રાજા કા નામ શ્રેણિક યા । ઉસકી રાની કા નામ  
 ચેલ્લના થા । ( સામી સમોસરિણ પરિસા ણિગયા જાવ પરિસા પઞ્જુ  
 વાસઠ-તેણ કાલેણં તેણં સમણ્ણ કાલી નામ દેવી, ચમરચચાણ રાયહાણીણ

આ પ્રમાણે જ બૂ સ્વામી । પ્રશ્નને સાલણીને તેમને ઉત્તર આપવાના  
 ઉદ્દેશથી શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યું કે ( ઇય ચલુ જવૂ ! ) હે જ બૂ ! તમારા  
 પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે સાલણો, યાવત્ સપ્રાપ્ત શ્રમણુ લગવાન મહા  
 વીર પહેલા વર્ગના પાંચ અધ્યયનો પ્રશ્ન કર્યા છે તેઓ આ પ્રમાણે છે—  
 ૧ કાલી, ૨ રાત્રિ, ૩ રજની, ૪ ત્રિષ્ટુત, અને ૫ મેત્રા

હવે ફરી જ બૂ સ્વામી પ્રશ્ન કરે છે કે હે ભદ્રન્ત ! યાવત્ મુક્તિસ્થાનને  
 પ્રાપ્ત કરી ચુકેલા શ્રમણુ લગવાન મહાવીર પહેલા વર્ગના પાંચ અધ્યયનો  
 નિરૂપિત કર્યા છે તો હું તમને ફરી પૂછવા માગુ છું કે હે ભદ્રન્ત ! યાવત્  
 મોક્ષને પ્રાપ્ત કરી ચુકેલા તે જ શ્રમણુ લગવાન મહાવીર પહેલા અધ્યયનનો  
 શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ? શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેને ઉત્તર આપતા કહેવા  
 લાગ્યા કે જ બૂ ! તે કાળે અને તે વખતે રાજગૃહ નામે એક નગરી હતી  
 તેમાં ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતું નગરીના રામતુ નામ શ્રેણિક હતું તેની  
 રાણીનું નામ ચેલ્લના હતું

( સામી સમોસરિણ પરિસા ણિગયા જાવ પરિસા પઞ્જુવાસઠ-તેણ કાલેણં  
 તેણ સમણ્ણ કાલી નામ દેવી, ચમર ચચાણ રાયહાણીણ

‘कालवर्डिसगभवणे’ कालावतसकभवने काले=कालाख्ये सिंहासने चतसृभिः सामानिकसाहस्रीभिः, चतसृभिर्महत्तरिकाभिः, सपरिवाराभिस्तिसृभिः=गह्वाभ्यन्तरमध्यरूपाभिः ‘परिसाहिं’ परिपद्धिः पारिवारिकदेवीरूपाभिः, सप्तभिः ‘अणिर्हं’ अनीरैः=हयगजरथपदातिवृषभगन्धर्वनाट्यरूपैः, अत्राय विवेकः—

कालवर्डिसगभवणे कालसि, सीहासणसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महरियाहिं, सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिर्हं सत्तहिं अणियाहिंईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं वट्टण्हिं कालवर्डिसगभवणवासिहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडा महयाहय जाव विहरइ ) वहा पर श्री महावीर सामी का आगमन हुआ। लोगों को जब इनके आगमन की खबर लगी-तब समस्त राजगृह निवासी जन इन का वदना करने के अभिप्राय से गुणशिलक उद्यान में आये। भगवान् ने धर्मकथा कही-यावत् परिपदने भगवान् की पर्युपासना की। उस काल में और उस समय में काली नाम की देवी चमरचपा नाम की राजधानी में रहती थी। उसके भजन का नाम कालावतसक था। जिस सिंहासन पर यह बैठती थी उसका नाम काल था। यह उस भवन में चार हजार सामानिकों की परिषदां के साथ, चार हजार महत्तरिकाओं के साथ, अपने २ परिवारवाली तीन हजार पारिवारिक देवियों के साथ, मान अनीकोंके-हय, गज, रथ, पदाति, वृषभ, गन्धर्व एवं नाट्यरूपसैन्य के-

कालसि, सीहासणसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महरियाहिं, सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिर्हं सत्तहिं अणियाहिंईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं वट्टण्हिं कालवर्डिसगभवणवासिहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडा महयाहय जाव विहरइ )

त्या श्री महावीर स्वामीनु आगमन थयु जगारे लोकेने तेमना आगमननी जणु थयु त्यारे राजगृहना जधा लोके। तेमने वदन करवाना अलि प्रायथी गुणशिलक उद्यानमा आजा। लगवाने धर्मकथा कही स लगावी यावत् परिषदे लगवाननी पर्युपासना कगी ते काणे अने ते समये काणी नामनी देवी अमरयथा नामनी राजधानीमा रहेती હતી तेना लवनर्तु नाम કાલાવતસક હતુ જે સિંહાસન ઉપર તે બેસતી હતી તેનુ નામ કાળ હતુ તે લवनમા તે ચાર હજાર સામાનિકોની પરિષદાની સાથે, ચાર હજાર મહત્તરિકાઓની સાથે, પોતપોતાના પરિવારવાળી ત્રણ હજાર પારિવારિક દેવીઓની સાથે આન અનીકો-ધોડા, હાથી, રથ, પાયદળ, વૃષભ, ગન્ધર્વ અને નાટ્ય

आपदशक्तानि सद्यः प्राणाय, गन्धर्वाणां पुनरुपमोगायेति, सप्तभिर्नीकाधिप-  
तिभिः, षोडशभिः आत्मरक्षकदेवतादेवभिः, अन्यैर्देवैर्मिश्रकाम्यावनसकमवनशक्ति-  
भिरसुरकुमारैर्देवैरीभिश्च सादृशं सपरिहृता 'महयादय जाय विहरत' महताऽहव  
यायद् विहरति- 'महयाऽऽहव नटगीतयादित तन्त्रीताल शुद्धित यनमृदङ्गपदुप्रवादितवेग,  
वेणु' महताऽऽहतनाट्यगीतयादित तन्त्रीताल शुद्धित यनमृदङ्गपदुप्रवादितवेग,  
तत्र- 'महता' रवेणेति सम्यग्य, आहतानि=भग्पाहतानि यानि नाट्यगीतानि,  
तथा-वादितानि-तन्त्री=वीणा, तला=हस्तताल, तालाः=काश्यतालः, शुद्धि-  
तानि=शेषाणि तूर्यादिवाद्यानि, तथा यन इव मृदङ्गः=यनध्वनिमादृश्याद् यनमृदङ्गः=  
स चासौ पदु प्रवादितश्चेति यनमृदङ्गपदुप्रवादितः, ततस्त्रिपदो द्वन्द्वः, तेषां यो  
रस्तेन-उपलक्षितान् दिव्यान् भोगभोगान् सुन्दरीन् भुज्जाना विहरति । 'इम  
च ण' अस्मिन्नरसरे खलु केवलरूप=सपूर्णम् जम्बूद्वीप नाम द्वीप=म-पञ्चद्वीप  
विपुलेन 'ओहिणा' अग्निना=अग्निज्ञानेन 'अभोष्मणी २' अभोगयमाना २  
पश्यन्ति पुनः पुनरुपयोग ददती सती पश्यति । किं पश्यति ? इदं पाद- 'तत्थ' तत्र=  
अग्निज्ञानोपयोगे श्रमण भगवन्त महावीर जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे राजपट्टे

साथ अनीकाधिपतियों के साथ, सोलह हजार आत्मरक्षक देवों के साथ,  
तथा और भी बहुत से कालावतसक भवन में निवास करनेवाले असुर-  
कुमार देवों के एवं देवियों के साथ परिवृत्त होकर रहा करती थी ।  
अव्यहृत (सतत) नाट्यगीतों के एवं वादित तन्त्री, हस्त, ताल, काश्यताल,  
शुद्धित आदि तूर्यादिवाद्यों के एवं मेघ की ध्वनि जैसे अच्छी तरह  
घजाये गये मृदंगों के सुन्दर २ शब्दों से उपलक्षित दिव्य भोगों को  
भोगती हुई अपने समय को आनन्द के साथ व्यतीत किया करती थी ।  
( इम च ण केवलरूप जम्बूद्वीप द्वीप विपुलेन ओहिणा अभोष्मणी २  
पश्यन्ति, तत्थ समण भगव महावीर जम्बू द्वीपे द्वीपे भारते वर्षे राजपट्टे

इय मै-यनी साथे अनीकाधिपतिओनी साथे, सोण डंजर आत्मरक्षक देवोनी  
साथे तेमज्ज भील पथु धण्ण कालावतसक भवनोभा निवास करतारा असुर  
कुमारदेवो अने देवीओनी साथे परिवृत्त थधने रहैती छती ते अम्महत्त  
(सतत) नाट्य गीतो वादित तन्त्री, हस्तताल, काश्यताल, शुद्धित वगेरे तूर्य वगेरे  
वाद्यो, मेघना ध्वनिनी जेम सारी पेठे वगाडवामा आवेला, मृद गीता सुन्दर  
शब्दोथी उपलक्षित दिव्य भोगोने उपभोग करती थेताना समयने सुभेथी  
पसार करती रहैती छती

( इम च ण केवलरूप जम्बूद्वीप द्वीप विपुलेन ओहिणा अभोष्मणी २  
पश्यन्ति, तत्थ समण भगव महावीर जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे

નગરે ગુણશિલકે ચૈત્યે યથાપતિરૂપ-યથાકલ્પમ્ ' ઉગ્ગહ ' અગ્રહ=સતેરાજામ્  
' ઉગ્ગિઠિત્તા ' અગ્રહ સયમેન તવસા આત્માન ભાવયન્ત પશ્યતિ, દૃષ્ટા હૃષ્ટ  
તુષ્ટચિત્તાનન્દિતા ' પીશ્મણા ' પ્રીતિમનાઃ=પ્રસન્નમનસ્કાઃ ' જાવહિયયા ' યાવન્-  
હર્ષશનિસર્પદહદયા=હર્ષવશાદુલ્લસિતહૃદયા સિંહાસનાદ્ અભ્યુત્તિષ્ઠતિ, અભ્યુત્થાય

ળયરે ગુણસિલકે ચૈત્યે અહાપડિરૂપં ઉગ્ગહ ઉગ્ગિઠિત્તા સજમેણ  
તવસા અપ્પાણ ભાવેમાણ પાસહ, પાસિત્તા દૃષ્ટતુષ્ટચિત્તામાણદિયા  
પીશ્મણા જાવ હિયયા સીહાસનાઓ અબ્બુદ્દેહ, અબ્બુદ્ધિત્તા પાયવીઠાઓ  
પચ્ચોરુદ્દહ, પચ્ચોરુદ્ધિત્તા પાડયાઓ ઓમુયહ, ઓમુદ્ધિત્તા તિત્થગરાભિ-  
મુહી સત્તદ્વપયાહ અણુગચ્છહ, અણુગચ્છિત્તા વામ જાણુ અચેહ, અચિત્તા  
દાહિણ જાણુ ધરણિયલસિ નિહદ્દુ ત્તિક્કલુત્તો મુદ્ધાણ ધરણિયલસિ નિવે-  
સેહ, નિવેસિત્તા (કદ્દુ એવ વયાસી) હસ અવસર મેં ઉસને  
કેવલ કલ્પ-સમ્પૂર્ણ-જંબૂદ્વીપ નામકે દ્વીપકો-મઝ્ઝજંબૂદ્વીપ કો-વિપુલ  
અવધિજ્ઞાન કે દ્વારા વાર ૨ ઉપયોગ દેરુર દેલા-। ઉસ સમય ઉસને  
શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર કો જંબૂદ્વીપાન્તર્ગત ભરત ક્ષેત્ર મેં રાજગૃહ  
નગર મે ગુણશિલક ચૈત્ય મેં યથાકલ્પ વસતિ કી આજ્ઞા લેકર સંયમ  
એવ તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુએ સ્થિત દેલા। દેશ્વકર વહ વહુત  
અધિક હૃષ્ટ એવ તુષ્ટ હુઈ । ઉસકા મન પ્રીતિ સે ભર આયા। હર્ષ  
કે વશ સે હૃદય ઉલ્લસિત હો ઉઠા । વહ ઉસી સમય અપને સિંહાસન

ગુણસિલકે ચૈત્યે અહાપડિરૂપ ઉગ્ગહ ઉગ્ગિઠિત્તા સજમેણ તવસા અપ્પાણ ભાવે  
માણ પાસહ, પાસિત્તા દૃષ્ટ-તુષ્ટ ચિત્તામાણદિયા પીશ્મણા જાવ હિયયા સીહા  
સનાઓ અબ્બુદ્દેહ, અબ્બુદ્ધિત્તા પાયવીઠાઓ પચ્ચોરુદ્દહ, પચ્ચોરુદ્ધિત્તા પાડયાઓ  
ઓમુયહ, ઓમુદ્ધિત્તા તિત્થગરાભિમુહી સત્તદ્વપયાહ અણુગચ્છહ, અણુગચ્છિત્તા, વામ-  
જાણુ અચેહ, અચિત્તા દાહિણ જાણુ ધરણિયલસિ નિહદ્દુ ત્તિક્કલુત્તોમુદ્ધાણ ધરણિય-  
લસિ નિવેસેહ નિવેસિત્તા (કદ્દુ એવ વયાસી)

તે સમયે તેણે કેવલકલ્પ-સમ્પૂર્ણ-જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપને મઝ્ઝજંબૂ  
દ્વીપને વિપુલ અવધિજ્ઞાનના ઉપયોગથી વારવાર જોયો। તે સમયે તેણે શ્રમણ  
ભગવાન મહાવીરને જંબૂદ્વીપમાં આવેલા ભરતભંજના રાજગૃહ નગરના ગુણ  
શિલક ચૈત્યમાં યથાકલ્પ વસતીની આજ્ઞા લઈને સયમ અને તપ દ્વારા પોતાના  
આત્માને ભાવિત કરતા રહેતા જોયા। જોઈને તે ખૂબ જ હૃષ્ટ અને તુષ્ટ થઈ  
ગઈ તેનું મન પ્રેમથી તરબોળ થઈ ગયું। હર્ષાતિરેકથી હૃદય ઉલ્લાસિત થઈ  
ગયું તે તે જ વખતે પોતાના સિંહાસન ઉપરથી ઉઠી અને ઉઠીને તે પાદપીઠ



आधपञ्चकानि सद्ग्रामाय, गन्धर्वाणां पुनरुपमोगायेति, सप्तमिरनीकाधिप-  
तिभिः, पौलशभिः आत्मरक्षकदेवगाहव्योभिः, अन्यैर्देवभिश्च कालावनसकमवनवाक्कि-  
भिरसुरकुमारैर्देवैर्देवीभिश्च तादृशं सपरिवृता 'महयाहय जान विहर' महताऽहय  
यावद् विहरति- 'महयाऽऽहयनट्टगीययाइयतवीतत्ताततुदियवगमुगपहुप्पताइयर  
वेणं' महताऽऽहयनट्टगीययाइयतवीतत्ताततुदियवगमुगपहुप्पताइयर  
तत्र- 'महता' रयेणेतिसम्पन्न, आहतानि=भग्नाहानि यानि नाट्यगीतानि,  
तथा-वादितानि-तन्त्री=रीणा, तला=हस्तताल, तालाः=कास्यताल, त्रुडि-  
तानि=शेषाणि तूर्यादिवाद्यानि, तथा घन इव मृदङ्गः=घनध्वनिमाह्वयाद् घनमृदङ्गः=  
स चासौ पटु प्रवादितयेति घनमृदङ्गपटुप्रवादितः, ततस्त्रिपदो द्वन्द्वः, तेषा यो  
रस्तेन-उपलक्षितान् दिव्यान् भोगभोगान् सुन्दरीन् भुञ्जाना विहरति । 'इम  
च ण' अरिमन्नसरे खलु कैवल्यरूप=सपूर्णम् जम्बूद्वीप नाम द्वीप=मध्यजम्बूद्वीप  
विपुलेन 'ओहिणा' अरधिना=अरविज्ञानेन 'अभोगमाणी २' अभोगयमाना २  
पश्यन्ति पुनः पुनरुपयोग ददती मती पश्यति । किं पश्यति ? उत्पाह- 'तत्थ' तत्र=  
अवधिज्ञानोपयोगे श्रमण भगवन्त महावीर जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे राजपट्टे

साथ अनीकाधिपतियों के साथ, सोलह हजार आत्मरक्षक देवों के साथ,  
तथा और भी बहुत से कालावतसक भवन में निवास करनेवाले असु-  
रकुमार देवों के एवं देवियों के साथ परिवृत्त होकर रहा करती थी।  
अव्याहत (सतत) नाट्यगीनों के एवं वादित तन्त्री, हस्त, ताल, कास्य ताल,  
त्रुडित आदि तूर्यादिवाद्यों के एवं मेघ की ध्वनि जैसे अच्छी तरह  
घजाये गये मृदंगों के सुन्दर २ शब्दों से उपलक्षित दिव्य भोगों को  
भोगती हुई अपने समय को आनन्द के साथ व्यतीत किया करती थी।  
(इम च ण कैवल्यरूप जम्बूद्वीप दीव विपुलेण ओहिणा अभोगमाणी २  
पासइ, तत्थ समण भगव महावीर जम्बू द्वीपे द्वीपे भारते वासे राजपट्टे

उप सैन्यनी साथे अनीकाधिपतिओनी साथे, सोण छंजर आत्मरक्षक देवोंनी  
साथे तेमज्जीण पञ्च धण्डा कालावतसक भवनोमा निवास करनारा असुर  
कुमारदेवो अने देवीओनी साथे परिवृत्त थछने रहैती छती ते अत्राहुव  
(सतत) नाट्य गीनो, वादित तन्त्री, हुस्तताल, कास्यताल, त्रुडिन वगेरे तूर्य वगेरे  
वाद्यो, मेघना ध्वनिनी जेम सारी चेहे पयाउतामा आवेला मृदंगोना सुन्दर  
शब्दोथी उपलक्षित दिव्य भोगोना उपभोग करती पोताना समयने सुजेथी  
पसार करती रहैती छती

(इम च ण कैवल्यरूप जम्बूद्वीप दीव विपुलेण ओहिणा अभोगमाणी २  
पासइ, तत्थ समणभगर महावीर जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वासे राजपट्टे

નગરે ગુણશિલકે ચૈત્યે યથાપતિરૂપ=યથાસ્વપ્ ' ઉગ્ગહ ' અગ્રહ=વસતેરાજામ્  
' ઉગ્ગિણિત્તા ' અગ્રહ સયમેન તવસા આત્માન ભાવયન્ત પશ્યતિ, દૃષ્ટા હૃષ્ટ  
તુષ્ટચિત્તાનન્દિતા ' પીડમણા ' પ્રીતિમનાઃ=પ્રસન્નમનસ્કાઃ ' જાવદ્વિયયા ' યાવત્-  
હર્ષવશનિર્સર્પદ્હદયા=હર્ષવશાદુલ્લસિતહૃદયા તિહાસનાદ્ અભ્યુત્તિષ્ઠતિ, અભ્યુત્થાય

નગરે ગુણસિલકે ચૈત્યે અદાપડિરૂપં ઉગ્ગહ ઉગ્ગિણિત્તા સજમેણ  
તવસા અપ્પાણ ભાવેમાણ પાસહ, પાસિત્તા દૃદ્ધતુષ્ટચિત્તમાણદિયા  
પીડમણા જાવ દ્વિયયા સીહાસણાઓ અબ્બુદ્દેહ, અબ્બુદ્ધિત્તા પાયપીઢાઓ  
પચ્ચોરુદ્ધ, પચ્ચોરુદ્ધિત્તા પાડયાઓ ઓમુયહ, ઓમુદ્ધિત્તા તિત્થગરાભિ-  
મુહી સત્તદ્વપયાહ અણુગચ્છહ, અણુગચ્છિત્તા વામ જાણુ અચેહ, અચિત્તા  
દાહિણ જાણુ ધરણિયલસિ નિદ્દહુ ત્તિક્કલુત્તોમુદ્ધાણ ધરણિયલસિ નિવે  
સેહ, નિવેસિત્તા (કદ્દુ એવ વયાસી) इस अवसर में उसने  
केवल कल्प-सम्पूर्ण-जबूद्वीप नामके द्वीपको-मध्यजबूद्वीप को-विपुल  
अवधिज्ञान के द्वारा बार २ उपयोग देकर देखा-। उस समय उसने  
श्रमण भगवान् महावीर को जबूद्वीपान्तर्गत भरत क्षेत्र में राजगृह  
नगर में गुणशिलक चैत्य में यथाकल्प वसति की आज्ञा लेकर सयम  
एव तप से आत्मा को भावित करते हुए स्थित देखा। देखकर वह बहुत  
अधिक हृष्ट एवं तुष्ट हुई। उसका मन प्रीति से भर आया। हर्ष  
के वश से हृदय उल्लसित हो उठा। वह उसी समय अपने सिंहासन

ગુણસિલકે ચૈત્યે અદાપડિરૂપ ઉગ્ગહ ઉગ્ગિણિત્તા સજમેણ તવસા અપ્પાણ ભાવે  
માણ પાસહ, પાસિત્તા દૃદ્ધ-તુષ્ટ ચિત્તમાણદિયા પીડમણા જાવ દ્વિયયા સીહા  
સણાઓ અબ્બુદ્દેહ, અબ્બુદ્ધિત્તા પાયપીઢાઓ પચ્ચોરુદ્ધ, પચ્ચોરુદ્ધિત્તા પાડયાઓ  
ઓમુયહ, ઓમુદ્ધિત્તા તિત્થગરાભિમુહી સત્તદ્વપયાહ અણુગચ્છહ, અણુગચ્છિત્તા, વામ  
જાણુ અચેહ, અચિત્તા દાહિણ જાણુ ધરણિયલસિ નિદ્દહુ ત્તિક્કલુત્તોમુદ્ધાણ ધરણિય  
લમિ નિવેસેહ નિવેસિત્તા (કદ્દુ એવ વયાસી)

તે સમયે તેણે કેવલકલ્પ-સંપૂર્ણ-જબૂદ્વીપ નામના દ્વીપને મધ્ય જબૂ  
દ્વીપને વિપુલ અવધિજ્ઞાનના ઉપયોગથી વારવાર જોયો તે સમયે તેણે શ્રમણ  
ભગવાન મહાવીરને જબૂદ્વીપમાં આવેલા ભરતક્ષેત્રના રાજગૃહ નગરના ગુણ  
શિલક ચૈત્યમાં યથાકલ્પ વસતીની આજ્ઞા લઈને સયમ અને તપ દ્વારા પોતાના  
આત્માને ભાવિત કરતા રહેતા જોયા જોઈને તે ખૂબ જ હૃષ્ટ અને તુષ્ટ થઈ  
ગઈ તેનું મન પ્રેમથી તરબોળ થઈ ગયું હર્ષાતિરેકથી હૃદય ઉલ્લાસિત થઈ  
ગયું તે તે જ વખતે પોતાના સિંહાસન ઉપરથી ઉઠી અને ઉઠીને તે પાદપીઠ

आद्यपश्चात्तानि सद्ग्रामाय, गन्धर्वनाट्ये पुनरुपमो गायेति, सप्तभिरनीकाधिप-  
 तिभिः, षोडशभिः आत्मरक्षकदेवगोहवीभिः, अन्यैरेकमिश्रकायावनमकमवनवाक्त्रि-  
 भिरसुरकुमारैर्देवैर्देवीभिश्च सार्द्धं सपरिवृता 'महयाहय जात्र विहाय' महताऽहय-  
 यात्रां विहरति—'महयाऽऽहयनट्यगीतयाद्यतवीतज्जालतुडिघघगमुङ्गपट्टपराट्यर-  
 वेण' महताऽऽहतनाट्यगीतयादित तन्नीतज्जाल घुडित घनमृदङ्गपट्टपरादित (वेम,  
 तत्र—'महता' रवेणेति सम्बन्धः, आहतानि=अपाहगानि यानि नाट्यगीतानि,  
 तथा—वादितानि—तन्त्री=वीणा, ताला=हस्तताल, तालाः=कास्यतालः, तुडि-  
 तानि=शेषाणि तूर्यादिवाद्यानि, तथा घन इव मृदङ्गः=घनध्वनिमाह्वयाद् घनमृदङ्गः=  
 स चासौ पट्ट प्रवादितश्चेति घनमृदङ्गपट्टपरादितः, ततस्त्रिपदो ढण्डः, तेषां यो  
 रस्तेन—उपलक्षितान् दिव्यान् भोगभोगान् शब्दादीन् भुञ्जाना विहरति । 'इम-  
 च ण' अस्मिन्नवसरे खलु केवलरूप=सपूर्णम् जम्बूद्वीप नाम द्वीप=मध्यजम्बूद्वीप  
 विपुलेन 'ओहिणा' अरधिना=अवधिज्ञानेन 'अभोण्माणी २' अभोगयमाना २  
 पश्यन्ति पुनः पुनरुपयोग ददती सती पश्यति । किं पश्यति ? इत्याह—'तत्' तत्र=  
 अवधिज्ञानोपयोगे श्रमण भगवन्त महावीर जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे राजपट्टे

साथ अनीकाधिपतियों के साथ, सोलह हजार आत्मरक्षक देवों के साथ,  
 तथा और भी बहुत से कालावतसक भवन में निवास करनेवाले असुर-  
 कुमार देवों के एवं देवियों के साथ परिवृत होकर रहा करती थी ।  
 अव्याहत (सतत) नाट्यगीतों के एवं वादित तन्त्री, हस्त, ताल, कास्यताल,  
 घुडित आदि तूर्यादिवाद्यों के एवं मेघ की ध्वनि जैसे अच्छी तरह  
 घजाये गये मृदंगों के सुन्दर २ शब्दों से उपलक्षित दिव्य भोगों को  
 भोगती हुई अपने समय को आनन्द के साथ व्यतीत किया करती थी ।  
 ( इम च ण केवलरूप जम्बूद्वीप दीव विपुलेण ओहिणा अभोण्माणी २  
 पासइ, तत्थ समण भगव महावीर जम्बू द्वीपे द्वीपे भारते वासे रायगिहे

इय मैन्थनी साथे अनीकाधिपतिओनी साथे, सोण छत्तर आत्मरक्षक देवोनी  
 साथे तेमज्जीण पणु धणा कालावतसक लवनोमा निवास करनारा असुर  
 कुमारदेवो अने देवीओनी साथे परिवृत थधने रहैती छती ते अथाहत  
 (सतत) नाट्य गीतो, वादित तन्त्री, हस्तताल, कास्यताल, तुडित वगेरे तूर्य वगेरे  
 वाद्यो, मेघना ध्वनिनी जेम सारी पेठे वगाउनामा आवेला मृदंगोना सुर  
 शब्दोथी उपलक्षित दिव्य लोओनो उपलोग करती पोताना समयने सुजेथी  
 पसार करती रहैती छती

( इम च ण केवलरूप जम्बूद्वीप दीव विपुलेण ओहिणा अभोण्माणी २  
 पासइ, तत्थ समणभगव महावीर जम्बूद्वीपे दीव )

खलु श्रमणाय भगवते महावीराय यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान संप्राप्तुकामाय,  
वन्दे खलु भगवन्त 'तत्थ गय' तत्रगत=जम्बूद्वीपे राजगृहनगरस्य गुणशिलको  
धाने समनस्यतम् 'इह गया' इहगता=चमरवञ्चाराजधानी स्थिताऽहम्, पश्यतु  
मा भगवान् तत्रगत इहगतम्, 'त्ति कट्टु' इति कृत्वा=इत्थुवत्वा वन्दते नमस्यति,  
वन्दित्वा नमस्यित्वा सिंहासनवरे 'पुरत्थाभिमुही' पौरस्त्याभिमुखी पूर्वदिशाभि  
मुखी 'निमण्णा' निमण्णा=उपविष्टा । ततः खलु तस्या काल्या देव्या अयमेत-

जाव संपाविउकामस्स वदामि ण भगवत्त तत्थ गय इह गया पासउ म  
भगव तत्थ गए इह गय त्ति कट्टु वदइ नममइ, वदित्ता नमसित्ता  
सीहामणवरसि पुरत्थाभिमुही निसण्णा तएण तीसे कालीए देवीए  
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था) यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त  
हुए अर्हन्त भगवतो के लिये मेरा नमस्कार हो । सिद्धिगति नामक  
स्थान को प्राप्त करने की कामनावाले श्रमण भगवान् महावीर को मैं  
नमस्कार करती हूँ । जम्बूद्वीप में राजगृह नगर के गुणशिलक उद्यान में  
इस समय विराजमान उन भगवान् को मैं इस चमर चपा नाम की  
राजधानी में रही हुई नमस्कार कर रही हूँ । वहा पर रहे हुए वे प्रभु  
मुझे यहा पर रही हुई देखे । इस प्रकार कहकर उसने उनको वदना की  
-नमस्कार किया-वदना नमस्कार करके फिर वह अपने उत्तम सिंहा-  
सन पर आकर पूर्व दिशाकी ओर मुंह करके बैठ गई । इसके बाद उस  
काली देवी के यत् इस प्रकार का यावत् मनः सकल्प उत्पन्न हुआ-  
(सेय खलु मे समण भगव महावीर वदित्ता जाव पज्जुवासित्तए त्ति

तत्थ गए इह गय त्ति कट्टु वदइ नममइ, वदित्ता, नमसित्ता सीहामणवरमि  
पुरत्थाभिमुही निसण्णा-तएण तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था)

यावत् सिद्धगति नामक स्थानने प्राप्त थयेवा अर्हन्त भगवतोने भारा  
नमस्कार छे सिद्धगति नामक स्थानने भेजववानी कामनावाणा श्रमण भगवान्  
महावीरने हु नमस्कार कर छु जम्बू द्वीपना राजगृह नगरना गुणशिलक  
उद्यानमा अत्यारे विराजमान ते भगवानने हु आ चमरचपा नामनी राज  
धानीमा रहेती नमस्कार करी रही छु त्या विराजमान ते प्रभु अर्ही रहेती  
भने जुअे आ प्रभाए कहीने तेजे तेभने वदन कर्या अने नमस्कार कर्या  
वदन अने नमस्कार करीने ते चोताना उत्तम सिंहासन उपर आवीने पूर्व  
दिशा तरइ मुअ करीने जेअी गर्ध त्यारपणी ते काली देवीने आ जतने।  
यावत् मन सकल्प उत्पन्न थये। के—

पादपीठान् ' पञ्चोदहा ' प्रत्ययगोहति=भयतरति, प्रत्ययरुद्र=अवनोर्य ' पाउयातो ' पादुके ' ओगुयइ ' अयगुयति=गतिरिति, मुस्ता तीर्थकराभिपुष्पी सतीमप्ता एपदानि ' अणुग-उइ ' अनुग-उति=गम्यग-उति, अनुगम्य वाम जानु ' अवेइ ' अयति=उर्ध्वारोति, अजित्वा=उर्ध्वारुत्प दक्षिण जानु धरणीतले ' निदृष्टु ' निदृत्य=स्थापयित्वा ' त्रिरसुतो ' त्रिः कृत्य =त्रिवारम् ' मुद्राण ' मूर्धन=मस्तक धरणीतले निवेशयति=उगयति, निवेशय ईति प-चुणमइ ' इति स्वत्ययनमति=स्तोत्र शिरोनामयति, मत्ययनम्प ' कडपतुडियथमियाओ ' कटकटुटित स्तम्भिते कटके=करभूपणे तुत्रिते=यादुभूपणे तै ' म्भिमने=अवष्टम्भे ' भुयाओ ' भुजे ' गाहरइ ' सदरति=एकत्रोरुति, सहत्य ' कत्यल जाव कटु ' करतन्परि गृहीत शिर आरुत्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमयादीत्- ' नमोत्थुण ' इत्यादि- नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यः यावद् सिद्धिगतिनामयेव स्थान सम्पाप्तेभ्यः, नमोऽस्तु

से उठी-और उटकर वह पादपीठ से होकर नीचे आई-नीचे आकर उसने दोनों पादुकाओं को पैरों में से उतार दिया। उतार कर फिर वह तीर्थकराधिष्ठित दिशा की ओर सात आठ पद आगे गई। वहा आकर उसने अपने वाम जानु को ऊँचा किया-ऊँचा कर के फिर दक्षिण जानु को नीचे धरणीतल से रखा-रखकर फिर तीन बार अपने मस्तक को नीचे भूमिपर लगाया-लगाकर फिर वह कुछ झुकी-शिर को नीचे-नवाया। बाट में कटक और घुटित से भूपित भुजाओं को एकत्रित किया-एकत्रित करके फिर उसने उन दोनों हाथोंकी अजलि बनाई-और उसी मस्तक पर आदक्षिण प्रदक्षिण कर इस प्रकार कहा ( नमोत्थुण अरहताण जाव सपत्ताण नमोत्थुण समणस्स भगवओ महावीरस्स

उपर थधने नीचे आवा नीचे आवाने तेले जने पादुकाओने पगोभाथी उतारी हीथी उतारीने ते तीर्थ उर जे दिशा तरइ विरजमान हुता ते दिशा तरइ सात-आठ उगला आगण गध त्या जधने तेले चोताना उणा हीयणने जयो कथो जयो करीने पछी तेले जमणा तीयणने नीचे पृथ्वी उपर टेकव्यो टेकवने तेले पथ वपत चोताना स तजने नीचे पृथ्वी उपर टेकव, टेकवीने ते थोडी नमी-मस्तकने नीचे नमाव्यु त्यापछी तेले कटक अने घुटितथी विलुपित भुजओने लेगी करी, लेगी उरीने तेले तेओ जनेनी अजलि जनावी अने तेने मस्तक उपर आदक्षिण प्रदक्षिण-धूव उ देरवीने आ प्रभावे कहु

( नमोत्थुण अरहताण जाव सपत्ताण नमोत्थुण समणस्स भगवओ महा-  
वीरस्स जाव सपात्रिकामस्स उदामि ण भगवत तत्थगय ह गय म भगव



खलु श्रमणाय भगवते महावीराय यावत् सिद्धिगतिनामवेय स्थानं समाप्नुकामाय,  
वन्दे खलु भगवन्त 'तत्थ गय' तत्रगत=जम्बूद्वीपे राजगृहनगरस्य गुणशिलको  
धाने समसृजतम् 'इह गता' इहगता=चमरवञ्चाराजधानी स्थिताऽहम्, पश्यतु  
मा भगवान् तत्रगत इहगतम्, 'त्ति रुहु' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा वन्दते नमस्यति,  
वन्दित्वा नमस्यित्वा सिंहासनवरे 'पुरत्थाभिमुही' पोरस्त्याभिमुखी पूर्वदिशाभि  
मुखी 'निमण्णा' निपण्णा=उपविष्टा । ततः खलु तस्या काल्या देव्या अयमेत-

जाव सपाचिउकामस्स वदामि ण भगवत्त तत्थ गय इह गया पासउ म  
भगव तत्थ गए इह गय त्तिरुहु वदइ नममइ, वदित्ता नमसित्ता  
सीहामणवरसि पुरत्थाभिमुही निसण्णा तएण तीसे कालीए देवीए  
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था) यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त  
हुए अर्हत भगवतो के लिये मेरा नमस्कार हो । सिद्धिगति नामक  
स्थान को प्राप्त करने की कामनावाले श्रमण भगवान महावीर को मैं  
नमस्कार करती हूँ । जम्बूद्वीप में राजगृह नगर के गुणशिलक उद्यान में  
इस समय विराजमान उन भगवान को मैं इस चमर चपा नाम की  
राजधानी में रही हुई नमस्कार कर रही हूँ । वहा पर रहे हुए वे प्रभु  
मुझे यहा पर रही हुई देखे । इस प्रकार कहकर उसने उनको वदना की  
-नमस्कार किया-वदना नमस्कार करके फिर वह अपने उत्तम सिंहा-  
सन पर आकर पूर्व दिशाकी ओर मुंह करके बैठ गई । इसके बाद उस  
काली देवी के यह इस प्रकार का यावत् मनः सकल्प उत्पन्न हुआ-  
(सेय खलु मे समण भगव महावीर वदित्ता जाव पज्जुवासित्तए त्ति

तत्थ गए इह गय त्ति रुहु वदइ नममइ, वदित्ता, नमसित्ता सीहामणवरसि  
पुरत्थाभिमुही निसण्णा-तएण तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था)

यावत् सिद्धगति नामक स्थानने प्राप्त थयेदा अर्हत भगवतोने मेरा  
नमस्कार छे सिद्धगति नामक स्थानने भेजववानी कामनावाणा श्रमण भगवान  
महावीरने हु नमस्कार करे छु जम्बू द्वीपना राजगृह नगरना गुणशिलक  
उद्यानमा अत्यारे विराजमान ते भगवानने हु आ चमरवञ्चारा नामनी राज  
धानीमा रहेती नमस्कार करी रही छु त्या विराजमान ते प्रभु अर्हीं रहेती  
भने जुझे आ प्रभाए छडीने तेजे तेभने वदन कर्या अने नमस्कार कर्या  
वदन अने नमस्कार करीने ते पोताना उत्तम सिंहासन उपर आवीने पूर्व  
दिशा तरइ मुख करीने जेम्ही गर त्यारपत्री ते डाणी देवीने आ जतने।  
यावत् मन सकल्प उत्पन्न थये। के—

पादपीठान् 'पयोदह' प्र पयोदति=अयतरति, प्रत्ययरूप=अयतोय 'पाउयातो'  
 पादुके 'ओद्युय' अयमुअति=रित्यति, सुस्त्या तीर्थकरामिषुगी सतीमप्ता  
 एपदानि 'अणुग-उ' अनुगच्छति=सम्पुसंगच्छति, अनुगम्य वाम जानु  
 'अचेइ' अश्रति=उर्ध्वोर्गति, अश्रिता=उर्ध्वोर्गति दक्षिण जानु धरणीतले  
 'निदृष्टु' निदृष्ट्य=म्यापयित्वा 'तिवगुनो' त्रिः कृत्यः=त्रिवारम् 'मुद्राण'  
 मूर्धन=मस्तक धरणीतले निवेशयति=लगयति, निवेश्य ईमि पचुणमइ 'इप  
 स्तयनमति=स्तोक शिरोनामयति, प्रत्ययनम्प 'कडपवुडियथमियाओ' कटकवुडित  
 स्तम्भिते कटके=करभूषणे तुत्रिते=गद्गभूषणे तैः स्तम्भिते=अष्टव्ये 'भुयाओ'  
 भुजे 'साहरइ' सहरति=एकत्रोक्तोति, सह-य 'करयल जाय कहु' करतन्यरि  
 गृहीत शिर आचर्त्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-'नमोत्थुण' इत्यादि-  
 नमोऽस्तु खलु अर्हदम्प' यावद् सिद्धिगतिनामधेय स्थान सम्पाप्तेभ्यः, नमोऽस्तु

से उठी-और उठकर वह पादपीठ से होकर नीचे आई-नीचे आकर  
 उसने दोनों पादुकाओं को पैरों में से उतार दिया। उतार कर फिर वह  
 तीर्थकराधिष्ठित दिशा की ओर सात आठ पद आगे गई। वहा आकर  
 उसने अपने वाम जानु को ऊँचा किया-ऊँचा कर के फिर दक्षिण जानु  
 को नीचे धरणीतल में रखा-रखकर फिर तीन बार अरने मस्तक को  
 नीचे भूमिपर लगाया-लगाकर फिर वह कुछ झुकी-शिर को नीचे-  
 नवाया। पाद में कटक और वुडित से भूषित भुजाओं को एकत्रित  
 किया-एकत्रित करके फिर उसने उन दोनों हाथोंकी अजलि बनाई-और  
 उसे मस्तक पर आदक्षिण प्रदक्षिण कर इस प्रकार कहा (नमोत्थुण  
 अरहताणं जाव सपत्ताण नमोत्थुण समणस्स भगवओ महावीरस्स

उपर थछने नीचे आवा नीचे आवाने तेले जने पादुकाओने पगोमाथी  
 उतारी दीधी उतारीने ते तीर्थ कर ले दिशा तरइ विराजमान छता ते दिशा  
 तरइ सात-आठ उगला आगण गछ त्या जछने तेले चो-नाना उणा दीथछने  
 छयो छयो छयो करीने पछी तेले जमणा दीचछने नीचे पृथ्वी उपर टेकये  
 टेकवाने तेले त्रय वथत चोताना म तकने नीचे पृथ्वी उपर टेकये, टेकवाने  
 ते थोडी नमी-भन्तउने नीचे नमांथु तयारपछी तेले उठ अने वुडितथी  
 विलुपित बुन्तओने लेगी करी, लेगी करीने तेले तेओ जनेनी अजलि  
 जनावी अने तेने मस्तक उपर आदक्षिण प्रदक्षिण-पूव उ दैरवीने आ प्रमाणे छहु

(नमोत्थुण अरहताण जाव सपत्ताण नमोत्थुण समणस्स भगवओ महा  
 वीरस्स जाव सपाविउकामस्स वदामि ण भगवत्त तथगय ह गया ॥७७॥ म भगव

प्रत्यर्पयन्ति=तदाज्ञानुसारेण कार्यं कृत्वा निवेदयन्ति । ' णवर ' नवरं=विशेष  
स्त्वयम्-यत्-सूर्याभस्य यानविमानं योजनगतसहस्रविस्तीर्णमस्ति, अस्यास्तु-  
योजनसहस्रविस्तीर्णं यानविमानमस्ति, शेषं तथैव विनेयम् । तथैव-सूर्याभदेवदेव  
काली देवी स्वस्य नामगोत्रं साधयति=कथयति । तथैव=सूर्याभदेवदेव च नाट्य-  
विधिम् उपदर्शयति, उपदर्श्य यावत् प्रतिगता=यत आगता तत्रैव प्रतिनिवृत्ता ॥ मू० २ ॥

मूलम्-भतेत्ति भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ  
णमसइ वदित्ता णमसित्ता एव वयासी कालिए णं भंते ।  
देवीए सा दिव्वा देविद्धीर कहि गया० कूडागारसालादिट्ठतो,

कि जय वह विमानं नगरं तैयार हो जावे-तब उसकी पीछे हमें खबर  
कर देना । सो उन आभियोगिक देवों ने वैसा ही किया-और पीछे  
इसकी खबर उसे कर दी । इसमें ( जोगणसहस्रवित्तिण जाणविमाण  
सेस तहेव ) विशेषता इतनी रही कि सूर्याभदेव का यान विमान एक  
लाख योजन का विस्तारवाला था । तब कि हमका यह यान विमान १  
हजार योजन का विस्तारवाला था । बाकी सब रचना इसकी उसी  
सूर्याभ विमान की तरह जानना चाहिये । ( तहेव णामगोय साहेइ,  
तहेव नाट्यविहिं उवदसेइ जाव पडिगया ) सूर्याभ देव की तरह काली  
देवी ने अपने नाम गोत्र का कथन किया और सूर्याभ देव की तरह ही  
नाट्यविधि को दिखलाया दिखलाकर फिर वह जहां से आई थी वहीं  
पर पीछे गई सूत्र २ ॥

विमान तैयार थई जय तयारे तेनी भने जणु कवामा आवे तयारपछी ते  
आलियोगिक देवोअे तेमज कयुं अने विमान तैयार थई जवानी अणर  
देवीनी पासो भोडलावी दीध्री आ विमानमा ( जोगणसहस्रवित्तिण जाण  
विमाण सेस तहेव ) विशेषता आटली ४ डुती के जयारे सूर्याभदेवनु यान-  
विमान ओइ लाख योजन जेटु विस्तारवाणु डुतु तयारे तेनु आ यान-विमान  
ओइ हजार योजन जेटु विस्तारवाणु डुतु बाकी रचना समझी तेनी अधी  
विगत सूर्याभ-विमाननी जेम ४ जणुनी जेधअे ( तहेव णामगोय साहेइ,  
तहेव नाट्यविहिं उवदसेइ जाव पडिगया ) सूर्याभदेवनी जेम काणी देवीअे  
पोताना नाम-गोत्रनु कथन कयुं अने सूर्याभदेवनी जेम ४ नाट्यविधि अतावी  
अने अतावाने ते जयाथी आवी डुती तयान पाछी जती रही ॥ सूत्र २ ॥



મુપઃ યાવત્ મનઃ-સદ્ગુણ સમુદય-શ્રેયઃ ગત્યુ યમ શ્રમણ મગવન્ન મહાવીર  
 વન્દિત્વા યાવત્ ' પઞ્જુવાસિત્તણ ' પર્યુપાસિતુમ્=સંવિતુમ્, ઇતિ કૃત્વા=ઈતિમનસિ-  
 નિધાય દમ્=ઉક્તરીત્યા ' સપેહેઃ ' સમ્પ્રેવતે=વિગારયતિ સમ્પ્રેધ્ય=વિચાર્ય  
 ' આભિભોગિદેવે ' આભિયોગિકાન્ દેવાન્-મ-ગદંયાઃ પ્રવ્રવતિ=આહ્વયતિ,  
 શન્દયિત્વા=આહ્વય દમ્પદત્-પ્ર સત્તુ હે દેવાનુપિયાઃ ! શ્રમણો મગવાન્ મહા  
 વીરઃ એવ યથા સૂર્યામસ્તથૈવ આજ્ઞાપિતા દદાતિ યાવત્ દિવ્ય સુરવરાભિગમન  
 યોગ્ય ' જાણવિમાણ ' યાનવિમાન=યાનાય ગમનાર્થેવિમાન કુરુત, કૃત્વા યાવત્-  
 મમાજ્ઞા ' પચ્ચપ્પિણહ ' પ્રત્યર્પયત=મદા નિરેદયત । તેઽપિદેવાઃ તથૈવ કૃત્વા યાવત્

કદદુ એવ સપેહેઠ સપેહિત્તા આભિભોગિદેવે સદાવેઠ, સદાવિત્તા એવ  
 ઘયાસી એવ સલ્લુ દેવાણુપ્પિયા ! સમણે મગવ મહાવીરે એવ જહા સૂરિ  
 યામો તહેવ આણત્તિય દેહ જાવ દિવ્ય સુરવરાભિગમણજોગ્ગં જાણ  
 વિમાણ કરેહ, કરિત્તા જાવ પચ્ચપ્પિણહ ) સુલે ભવ યત્તી ઉચિત-શ્રય  
 સ્કર હૈ-કિ મૈ શ્રમણ મગવાન્ મહાવીર કો વદના કરકે યાવત્ ઉન્કી  
 પર્યુપાસના કરું હસ પ્રકાર ઉસને પૂર્વોક્તરૂપ સે વિચાર કિયા । વિચાર  
 કરકે ઉસને ઉસી સમય આભિયોગિક દેવોં કો બુલાયા-ઔર બુલાકર  
 ઉસસે હસ પ્રકાર કહા-હે દેવાનુપ્રિયોં ! શ્રમણ મગવાન્ મહાવીર રાજ  
 ગૃહ નગર કે ગુણશિલક ઉદ્યાન મેં પધારેહુણ હેં-મૈં ઉન્કો વદના કરને  
 કે લિયેં જાના ચાહતી હું-અતઃ તુમલોગ મેરે લિયે દિવ્ય સુરવરાભિગ  
 મન યોગ્ય ઇન્કયાન-વિમાન તૈયાર કરો હસ પ્રકાર કી ઉસને ઉન્હેં  
 સૂર્યામ દેવ કી તરહ આજ્ઞા દી । ઔર સ્થાન મેં ઉન્સે યહ સીં કહ દિયા

( સેય સલ્લુ મે સમણ મગવ મહાવીર વદિત્તા જાવ પઞ્જુવાસિત્તણ તિકદુ એવ  
 સપેહેઠ, સપેહિત્તા આભિભોગિદેવે સદાવેઠ, સદાવિત્તા એવ ઘયાસી એવ સલ્લુ  
 દેવાણુપ્પિયા ! સમણે મગવ મહાવીરે એવ જહા સૂરિયામો તહેવ આણત્તિય દેહ  
 જાવ દિવ્ય સુરવરાભિગમણજોગ્ગ જાણવિમાણ કરેહ, કરિત્તા જાવ પચ્ચપ્પિણહ )

મારા માટે હવે એ જ વાત યોગ્ય છે કે હું શ્રમણ ભગવાન મહા  
 વીરને વદના કરીને યાવત્ તેમની પર્યુપાસના કરું, આ પ્રમાણે તેણે વિચાર  
 કર્યો વિચાર કરીને તેણે તરત જ આભિયોગિક દેવોને બોલાવ્યા અને બોલા  
 વીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર  
 રાજગૃહ નગરના ગુણશિલક ઉદ્યાનમાં પધારેલા છે તેમને વદન કરવા માટે  
 હું ત્યાં જવા ઈચ્છુ છું એથી તમે બધા મારા માટે દિવ્ય સુરવરાભિગમન  
 યોગ્ય એક યાન-વિમાન તૈયાર કરો આ પ્રમાણે તે બોલ્યાને તેણે સૂર્યામદેવની  
 જેમ આજ્ઞા કરી, અને સાથે સાથે તેઓને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું કે બધારે

तएणं सा कालिया दारिया अम्मापिईहि अम्भणुन्नाया  
समाणी हट्टु जाव हियया पहाया कयवलिकम्मा कायकोउय  
मगलपायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइ मगल्लाइं वत्थाइ पवर परिहिया  
अप्पमहाग्घाभरणाळंकियसरीराचेडियाचक्कवालपरिकिण्णा साओ  
गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव वाहिरिया उव-  
ट्ठाणसाला जेणेव धम्मिण जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ उवा-  
गच्छित्ता धम्मिय जाणपवरं दूरुढा, तएण सा काली दारिया  
धम्मिय जाणपवरं एवं जहा दोवइ जाव पज्जुवासइ, तएणं  
पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य सहइ-  
महालयाए परिसाए धम्म कहेइ, तएणं सा काली दारिया  
पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतिए धम्म सोच्चा णिस-  
म्म हट्टु जाव हियया पास अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो  
वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता एववयासी-सदहामि ण भते !  
णिग्गंथ पावयण जाव से जहेय तुब्भं वयह, जं णवरं देवाणु-  
प्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएण अह देवाणुप्पियाण  
अतिए जाव पव्वयामि, अहासुह देवाणुप्पिए !, तएण सा  
काली दारिया पासेण अरहया पुरिसादाणीएण एववुत्ता समाणी  
हट्टु जाव हियया पास अरह वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता  
तमेव धम्मियं जाणपवर दूरुहइ दूरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरि-  
सादाणीयस्स अतियाओ अवसालवणाओ चेइयाओ पडिनि-  
क्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव



अहो णं भंते ! काली देवी महिष्ठिया३ कालिए ण भंते ! देवीए  
 सा दिव्वा देविट्ठी३ किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभि  
 समण्णागया ? एवं जहा सूरियाभस्स जाव एव खलु गोयमा !  
 तेण कालेणं तेणं समएण इहेव जवूदीवे दीवे भारहे वासे आम  
 लकप्पा णाम णयरी होत्था वण्णओ अंबसालवणे चेइए जिय  
 सत्तू राया तत्थ ण आमलकप्पाए नयरीए काले नामं गाहा  
 वइ होत्था अट्टे जाव अपरिभूए, तस्स णं कालस्स गाहावइस्स  
 कालसिरी णामं भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा, तस्स  
 ण कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली  
 णाम दारिया होत्था, बुद्धा बुद्धकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडि  
 यपुयत्थणी णिविन्नवरा वरपरिवज्जिया यावि होत्था, तेणं कालेणं  
 तेण समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमा-  
 णसामी णवरं णवहत्थुस्सेहे सोलसहिं समणसाहस्सीहि अट्टत्ती-  
 साए अज्जियासाहस्सीहि सद्धि सपरिवुडे जाव अंबसालवणे  
 समोसडे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ, तएणं सा काली  
 दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्टु जाव हियया जेणेव  
 अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव एवं  
 वयासी -एव खलु अम्मयाओ ! पासे अरहा पुरिसादाणीए  
 आइगरे जाव विहरइ, तं इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुब्भेहि  
 अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पाय-  
 वदिया गमित्तए ? अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवधू करेहि,

तएणं सा कालिया दारिया अस्मापिद्दिहि अम्भणुन्नाया  
समाणी हट्टु जाव हियया पहाया कयवलिकम्मा कायकोउय  
मंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिया  
अप्पमहाग्घाभरणालकियसरीराचेडियाचक्कवालपरिकिण्णा साओ  
गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव वाहिरिया उव-  
ठाणसाला जेणेव धम्मिण जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ उवा-  
गच्छित्ता धम्मिय जाणपवर दूरुढा, तएण सा काली दारिया  
धम्मिय जाणपवर एव जहा दोवइ जाव पज्जुवासइ, तएणं  
पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य सहइ-  
महालयाए परिसाए धम्मं कहेइ, तएण सा काली दारिया  
पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतिए धम्म सोच्चा णिस-  
म्म हट्टु जाव हियया पास अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो  
वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता एववयासी-सदहामि ण भते ।  
णिग्गंथ पावयण जाव से जहेय तुब्भ वयह, ज णवरं देवाणु-  
प्पिया । अस्मापियरो आपुच्छामि, तएणं अह देवाणुप्पियाण  
अतिए जाव पव्वयामि, अहासुह देवाणुप्पिए !, तएण सा  
काली दारिया पासेण अरहया पुरिसादाणीएण एववुत्ता समाणी  
हट्टु जाव हियया पास अरह वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता  
तमेव धम्मिय जाणपवर दूरुहइ दूरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरि-  
सादाणीयस्स अतियाओ अवसालवणाओ चेइयाओ पडिनि-  
क्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव

अहो णं भते । काली देवी सहिद्वियाः कालिण ण भते । देवीए  
सा दिव्वा देविद्वीः किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभि  
समण्णागया ? एव जहा सुरियाभस्स जाव एवं खलु गोयसा ।  
तेण कालेणं तेणं समण्ण इहेव जवूदीवे दीवे भारहे वासे आम  
लकप्पा णाम णयरी होत्था वण्णओ अंवसालवणे चेइए जिय  
सत्तू राया तत्थ णं आमलकप्पाए नयरीए काले नाम गाहा  
वइ होत्था अइ जे जाव अपरिभूए, तस्स णं कालस्स गाहावइस्स  
कालसिरी णाम भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा, तस्स  
ण कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाएअत्तया काली  
णामं दारिया होत्था, बुद्धा बुद्धकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडि-  
यपुयत्थणी णिविन्नवरा वरपरिवज्जियायावि होत्था, तेणं कालेणं  
तेण समण्णं पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमा-  
णसामी णवर णवहत्युस्सेहे सोलसहि समणसाहस्सीहि अट्टत्ती-  
साए अज्जियासाहस्सीहि सद्धि सपरिवुडे जाव अंवसालवणे  
समोसडे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ, तएणं सा काली  
दारिया इमीसे कहाए लद्धद्धा समाणी हट्ट जाव हियया जेणेव  
अम्मपियरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव एवं  
वयासी -एव खलु अम्मयाओ । पासे अरहा पुरिसादाणीए  
आइगरे जाव विहरइ, तं इच्छामि ण अम्मयाओ । तुब्भेहि  
अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पाय-  
वदिया गमित्तए ? अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिवध करोहि,

तएण सा कालिया दारिया अम्मापिईहि अम्भणुन्नाया  
समाणी हट्ठ जाव हियया ण्हाया कयवलिकम्मा कायकोउय  
मंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिया  
अप्पमहाग्घाभरणालकियसरीरा चेडिया चक्कवालपरिकिण्णा साओ  
गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव वाहिरिया उव-  
ठाणसाला जेणेव धम्मिय जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ उवा-  
गच्छित्ता धम्मिय जाणपवरं दूरुद्धा, तएण सा काली दारिया  
धम्मिय जाणपवर एवं जहा दोवइ जाव पज्जुवासइ, तएणं  
पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइ-  
महालयाए परिसाए धम्मं कहेइ, तएणं सा काली दारिया  
पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्म अतिए धम्म सोच्चा णिस-  
म्म हट्ठ जाव हियया पास अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो  
वदइ नमंसइ वदित्ता नमसित्ता एववयासी-सदहामि णं भते ।  
णिग्गंथ पावयण जाव से जहेय तुब्भ वयह, ज णवरं देवाणु-  
प्पिया । अम्मापियरो आपुच्छामि, तएण अह देवाणुप्पियाणं  
अतिए जाव पठवयामि, अहासुह देवाणुप्पिए !, तएण सा  
काली दारिया पासेण अरहया पुरिसादाणीएण एववुत्ता समाणी  
हट्ठ जाव हियया पास अरह वदइ नमंसइ वदित्ता नमसित्ता  
तमेव धम्मिय जाणपवर दूरुहइ दूरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरि-  
सादाणीयस्स अंतियाओ अवसालवणाओ चेइयाओ पडिनि-  
क्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव

उवागच्छइ उवागच्छिता आमलकप्पं णयरि मज्झमज्झेणं जेणेव  
 वाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता ध  
 म्मियं जाणप्पवर ठवेइ ठवित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ  
 पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरा तेणेव उवागच्छइ  
 उवागच्छिता करयल० एव वयासी-एव खलु अम्मयाओ ।  
 मए पासस्स अरहओ अंतिए धम्म णिसते सेऽवि य मे धम्मे  
 इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तएणं अह अम्मयाओ । ससार  
 भउविग्गा भीया जम्मणमरणाणं इच्छामि णं तुब्भेहि अब्भ  
 णुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ अंतिए मुडा भवित्ता अगा  
 राओ अणगारिय पवइत्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया । मा पडि-  
 वध करेह, तएण से काले गाहावई विपुलं असणं४ उवक्ख  
 डावेइ उवक्खडावित्ता मित्तणाइ णियगसयणसंबधिपरियण  
 आमतेइ आमत्तित्ता तओ पच्छा पहाए जाव विपुलेणं पुप्फव  
 त्थगंधमल्लालंकारेण सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणि  
 यगसयणसंबधिपरियणस्स पुरओ कालिय दारिय सेयापीएहि  
 कलसेहि पहावेइ पहावित्ता सव्वालकारविभूसिय करेइ करित्ता  
 पुरिससहस्सवाहिणिय सीय दुरोहेइ दुरोहित्ता मित्तणाइणियग  
 सयणसंबधिपरियणेणं सद्धिं सपरिवुडे सन्निव्वीए जाव रवेणं  
 आमलकप्प नयरि मज्झ मज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छिता  
 जेणेव अबसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता  
 छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ पासित्ता सीय ठावित्ता



कालियं दारिय सीयाओ पच्चोरुहइ तएणं त कालिय दारिय अम्मा-  
 पियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ  
 उवागच्छित्ता वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-  
 एव खलु देवाणुप्पिया । काली दारिया अम्ह धूया इट्ठा कत्ता  
 जाव किमग पुण पासणयाए ? एसणं देवाणुप्पिया । सत्तार  
 भउठ्विगा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अतिए मुडा भवित्ता जाव  
 पव्वइत्तए, त एय णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिवख, दल-  
 यामो पडिच्छतु णं देवाणुप्पिया । सिस्सिणिभिवख, अहासुह  
 देवाणुप्पिया । मा पडिवधं करेह तएणं काली कुमारी पास  
 अरह वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिस दिसिभागं  
 अवक्कमइ अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमहालकार ओमुयइ  
 ओसुइत्ता सयमेव लोय करेइ करित्ता जेणेव पासे अरहा पुरि-  
 सादाणीए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पास अरह तिक्खुत्तो  
 वंदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी-आलित्ते ण  
 भते । लोए एव जाव सयमेव पठ्वाविया, तएण पासे  
 अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए  
 सिस्सिणिचत्ताए दलयइ, तएण सा पुप्फचूला अज्जा कालि  
 दारिय सयमेव पठ्वावेइ, जाव उवसपज्जित्ताण विहरइ, तएणं  
 सा काली अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तवभयारिणी,  
 तएण सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अतिए सामाइय-  
 माइयाइ एक्कारसअगाइ अहिज्जइ वहुहि चउत्थ जाव विहरइ॥सू०३॥



कालियं दारिय सीयाओ पच्चोरुहइ तएणं त कालिय दारिय अम्मा-  
 पियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ  
 उवागच्छित्ता वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी-  
 एव खलु देवाणुप्पिया ! काली दारिया अम्ह धूया इट्ठा कत्ता  
 जाव किमग पुण पासणयाए ? एसणं देवाणुप्पिया ! संसार  
 भउठिवा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुडा भवित्ता जाव  
 पठवइत्तए, त एय णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिवख, दल-  
 यामो पडिच्छतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिवख, अहासुह  
 देवाणुप्पिया ! मा पडिवधं करेह तएणं काली कुमारी पास  
 अरह वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं  
 अवक्कमइ अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ  
 ओमुइत्ता सयमेव लोय करेइ करित्ता जेणेव पासे अरहा पुरि-  
 सादाणीए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पास अरह तिवखुत्तो  
 वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी-आलित्ते ण  
 भते ! लोए एवं जाव सयमेव पठ्वाविया, तएण पासे  
 अरहा पुरिसादाणीए कालि सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए  
 सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तएण सा पुप्फचूला अज्जा कालि  
 दारिय सयमेव पठ्वावेइ, जाव उवसपज्जित्ताण विहरइ, तएणं  
 सा काली अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तवभयारिणी,  
 तएणं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अतिए सामाइय-  
 माइयाइ एक्कारसअगाइंअहिज्जइ वहुहि चउत्थ जाव विहरइ॥सू०३॥

उवागच्छइ उवागच्छिता आमलकप्प णयरि मज्झमज्झेणं जेणेव  
 वाहिरिया उवट्टाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता ध  
 म्मिअं जाणप्पर ठवेइ ठवित्ता धम्मियाओ जाणप्परआओ  
 पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरा तेणेव उवागच्छइ  
 उवागच्छिता करयल० एव वयासी-एवं सल्लु अम्मयाओ ।  
 मए पासस्स अरहओ अतिए धम्म णिसंते सेऽवि य मे धम्मे  
 इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तएणं अह अम्मयाओ । संसार  
 भउविग्गा भीया जम्मणमरणणं इच्छामि णं तुव्भेहि अब्भ-  
 णुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ अतिए मुडा भवित्ता अगा  
 राओ अणगारियं पव्वइत्तए, अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडि  
 वध करेह, तएण से काले गाहावई विपुलं असणं४ उवक्ख  
 डावेइ उवक्खडावित्ता मित्तणाइ णियगसयणसंबधिपरियणं  
 आमंतेइ आमत्तित्ता तओ पच्छा पहाए जाव विपुलेणं पुप्फव  
 त्थगंधमल्लालकारेण सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणि  
 यगसयणसंबधिपरियणस्स पुरओ कालिय दारिय सेयापीएहि  
 कलसेहि पहावेइ पहावित्ता सव्वालकारविभूसियं करेइ करित्ता  
 पुरिससहस्सवाहिणिय सीय दुरोहेइ दुरोहित्ता मित्तणाइणियग-  
 सयणसंबधिपरियणेणं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्डीए जाव रत्तेणं  
 आमलकप्प नयरि मज्झ मज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छिता  
 जेणेव अबसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता  
 छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ पासित्ता सीय ७ ठावित्ता

कालिय दारिय सीयाओ पच्चोरुहइ तएणं त कालिय दारिय अम्मा-  
 पियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ  
 उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी-  
 एव खलु देवाणुप्पिया । काली दारिया अम्ह धूया इट्ठा कता  
 जाव किमग पुण पासणयाए ? एसणं देवाणुप्पिया । ससार  
 भउविगा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अतिए मुडा भवित्ता जाव  
 पठवइत्तए, त एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिवख, दल-  
 यामो पडिच्छतु णं देवाणुप्पिया । सिस्सिणिभिवख, अहासुहं  
 देवाणुप्पिया । मा पडिवधं करेह तएणं काली कुमारी पास  
 अरह वदइ नमंसइ वदित्ता नमसित्ता उत्तरपुरत्थिस दिसिभागं  
 अवक्कमइ अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ  
 ओसुइत्ता सयमेव लोय करेइ करित्ता जेणेव पासे अरहा पुरि-  
 सादाणीए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पास अरह तिवखुत्तो  
 वदइ नमंसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी-आलित्ते ण  
 भते । लोए एवं जाव सयमेव पठ्वाविया, तएण पासे  
 अरहा पुरिसादाणीए कालि सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए  
 सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तएण सा पुप्फचूला अज्जा कालि  
 दारिय सयमेव पठ्वावेइ, जाव उवसपज्जित्ताण विहरइ, तएणं  
 सा काली अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तवभयारिणी,  
 तएणं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अतिए सामाइय-  
 माइयाइ एक्कारस अगाड अहिज्जइ वहूहि चउत्थ जाव विहरइ॥सू०३॥



ટીકા—કાલીદેવીગમનાનન્તર ગૌતમઃ પૃચ્છતિ—‘ મંત્રતિ ’ इत्यादि ।  
‘ મતેતિ ’ હે મદન્ત । इति सम्बोधो य भगवान् गौतमः श्रमण भगवन्त महावीर  
वन्दते नमस्यति इन्द्रिया नमस्वित्या एवमासीत्—काल्या यत्तु हे भदन्त ! देव्या  
सांन्या साम्पत दर्शिता मा दि-या ‘ देविड्डी ’ देविड्डी = विमानपरिवारादिरूपा,  
‘ देवज्जुई ’ देवपुति = शरीरभरणादीनां दीप्तिरूपा ‘ देवणुभावे ’ देवानुभावः =  
शक्तिप्रभावादिरूपः, कुत्रगता ? कुत्र प्रविष्टा ? भगवानाह—शरीरगता, शरीरमनु

‘ મતેતિ મગવ ગોયમે ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—કાલીદેવી કે ચલે જાને કે પાદ ( મગવ ગોયમે ) મગ  
વાન ગૌતમ ને ( મતેતિ ) હે મદન્ત । इस प्रकार संबोधित कर (समणं  
भगव महावीर वदइ णमसइ ) श्रमण भगवान् को वदना की—नमस्कार  
क्रिया ( वदित्ता णमसित्ता एव वयासी ) वदना नमस्कार करके फिर  
उन्होंने उनसे इस प्रकार पूछा—( कालिएण भते ! देवीए सा दिव्वा  
देविड्डी ३ कहिं गया० कूडागारन्नालादिहत्तो, अहोण भते ! कालीदेवी  
महड्डिया ३, कालिएण भते ! देवीए सा दिव्वा देविड्डी ३ किण्णा लद्धा,  
किण्णा पत्ता, किण्णा अभिसमण्णा गया ? एव जहा सूरियाभस्स जाव )  
हे भदन्त ! कालीदेवी ने जो इस समय दिव्य विमान—परिवार आदिरूप  
ऋद्धि दिखलाई, शरीर, आभरण आदि की दीप्तिरूप जो देवपुति एव  
शक्ति प्रभाव आदिरूप जो देवानुभाव दिखलाया—यह सब कहा चला

‘ મતેતિ મગવ ગોયમે ’ इत्यादि—

ટીકાર્થ—કાળી દેવીના જતા રહ્યા પાદ ( મગવ ગોયમે ) ભગવાન ગૌતમે  
( મતેતિ ) હે ભદન્ત ! આ પ્રમાણે સંબોધન કરીને ( સમણ મગવ મહાવીર  
વદइ णमसइ ) श्रमण भगवान् महावीरने वदन्त अने नमस्कार कर्था ( वदित्ता  
णमसित्ता एव वयासी ) वदना अने नमस्कार करीने तेमए तेओश्रीने पूछयु કે  
( कालिएण भते ! देवीए सा दिव्वा देविड्डी ३ कहिं गया० कूडागार  
सालादिहत्तो, अहोण भते ! काली देवी महड्डिया ३, कालिएण भते ! देवीए सा  
दिव्वा देविड्डी ३ किण्णा लद्धा, किण्णा पत्ता, किण्णा अभिसमण्णा गया ? एव  
जहा सूरियाभस्स जाव )

હે ભદન્ત ! કાળી દેવીએ આત્યાદે જે દિવ્યવિમાન, પરિવાર વગેરેની  
ઋદ્ધિ બતાવી, શરીર, આભરણ વગેરેની દીપ્તિની જે દેવપુતિ તેમજ શક્તિ,  
પ્રભાવ વગેરેનો જે દેવાનુભાવ બતાવ્યો તે બધો કયા અદ્યથ થઈ ગયો ?  
કયા પ્રવિષ્ટ થઈ ગયો ?

प्रविष्टा, 'कूटाकारशालादिद्वतो' अत्र कूटाकारशाला दृष्टान्तो बोद्धव्यः ।  
 'अहो' आश्चर्ये खलु हे भदन्त ! कालीदेवी महर्द्धिका महाद्युतिका महानुभाव  
 वर्त्तते काल्या खलु हे भदन्त ! देव्या सा दिव्या देवर्द्धिः ३ 'किण्णा' कथ=  
 केन प्रकारेण 'लद्धा' लब्धा=अर्जिता, 'किण्णा' कथ=केन प्रकारेण 'पत्ता'  
 प्राप्ता=स्वाधीनीकृता 'किण्णा' कथ=केन प्रकारेण 'अभिममन्नागया' अभि  
 समन्वागता=उपभोगविषयतया समागता ? एव 'जहामूरियाभस्स जाव' यथा-  
 सूर्याभस्य यावत्=यथा सूर्याभदेवविषये गौतमस्वामिना प्रश्न कृतस्तथैवात्रापि  
 विज्ञेयः । अथ भगवान् कालीदेवीपूर्वभववृत्तान्त वर्णयति-'एव खलु' इत्यादि ।  
 एव खलु हे गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहेव=अस्मिन्नेव जम्बूद्वीपे  
 द्वीपे भारते वर्षे आमलकल्या नाम नगरी आसीत् । 'वण्णओ' वर्णकः=नगरी  
 वर्णनग्रन्थऔपपात्तिमुत्रादवसेय' । तत्र आम्रशालवन चैत्यं, जितशत्रू राजा

गया-? कहा प्रविष्ट हो गया ? इस प्रकार गौतम का प्रश्न सुनकर  
 भगवान् ने उनसे कहा-शरीर में चला गया-शरीर में प्रविष्ट हो गया ।  
 इस विषय में कूटाकारशाला का दृष्टान्त जानना चाहिये । हे भदन्त ! काली-  
 देवी महर्द्धिक, महाद्युतिक एव महानुभाववाली है । इस कालीदेवी ने वह  
 देवर्द्धि ३ किस प्रकार प्राप्त की अर्जित की किस प्रकार उसे अपने  
 आधीन किया ? और किस प्रकार से उसने उसे अपने भोग की विष-  
 यभूत बनाई ? इस तरह गौतमस्वामी ने सूर्याभदेव के विषय में जिस  
 तरह से प्रश्न किया उसी तरह से यहां पर भी जानना चाहिये-। अब  
 भगवान् कालीदेवी के पूर्वभव के वृत्तान्त का वर्णन करते हैं-(एवं खलु  
 गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण-इहेव जजुदीवे दीवे भारहे वासे  
 आमलकप्पा णाम णयरी होत्था-वण्णओ-अवसालवणे चेइए जियसत्तू

आ प्रभाणु गौतमनो प्रश्न सालणीने भगवाने तेमने कहु के शरीरमा  
 प्रविष्ट थछ गयो-शरीरमा नतो रह्यो आ विषे कूटाकार शालानु दृष्टान्त जणुवु  
 जेधओ हे भदन्त ! काली देवी महर्द्धिक महाद्युतिक अने महानुभाववाणी छे  
 आ काली देवीओ ते देवर्द्धि ३ देवी रीते प्राप्त करी छे, अर्जित करी छे,  
 देवी रीते स्वाधीन बनावी छे, अने तेणु तेने देवी रीते पोताना उपलोगनी  
 विषयभूता बनावी छे ? आ प्रभाणु गौतम स्वामीओ सूर्याभदेवना विषे जेभ  
 प्रश्न कर्यो हुतो तेमन अहाँ पणु जणुयो जेधओ भगवान हुवे काली देवीना  
 पूर्वभवना वृत्तान्तनु वर्णन करे छे-

( एवं खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जजुदीवे दीवे भारहे  
 वासे आमलकप्पा णाम णयरी होत्था-वण्णओ-अवसालवणे चेइए जियसत्तू राया

ટીકા—કાલીદેવીગમનાનન્તર ગૌતમઃ પૂનઃઉત્તિ—‘ ભંતેતિ ’ इत्यादि । ‘ भंतेति ’ हे भदन्त । इति सम्बोधय भगवान् गौतमः श्रमण भगवन्त महावीर वन्दते नमस्पति यन्दिता नमस्वित्वा एवमयादीन्—काल्या खलु हे भदन्त । देव्या सा=या साम्प्रत दर्शिता सा दिव्या ‘ देविडू ’ देवर्द्धि = विमानपरिवारादिरूपा, ‘ देवज्जुई ’ देवघुतिः=शरीरागणादीना दीप्तिरूपा ‘ देवणुभावे ’ देवानुभाव=शक्तिप्रभावादिरूप, कुत्रगता ? कुत्र प्रविष्टा ? भगवानाह—शरीरगता, शरीरमनु

‘ भंते त्ति भगव गोयमे ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ:—કાલીદેવી કે વળે જાને કે યાદ ( ભગવ ગોયમે ) ભગવાન ગૌતમ ને ( ભંતે ત્તિ ) હે ભદન્ત । ઇસ પ્રકાર સંબોધિત કર ( સમર્ણ ભગવ મહાવીર વદઃ ણમસઢ ) શ્રમણ ભગવાન્ કો વંદના કી-નમસ્કાર ક્રિયા ( વદિત્તા ણમસિત્તા એવ વયાસી ) વંદના નમસ્કાર કરકે ફિર ઉન્હો ને ઉનસે ઇમ પ્રકાર પૂઠા—( કાલિણ્ણ ભંતે ! દેવીણ સા દિવ્વા દેવિડૂ ૩ કહિં ગયાં । કૂઢાગારસાલાદિઢ્ઠનો, અદ્દોણ ભંતે ! કાલીદેવી મહલ્લિયા ૩, કાલિણ્ણ ભંતે ! દેવીણ સા દિવ્વા દેવિડૂ ૩ કિણ્ણા લદ્ધા, કિણ્ણા પત્તા, કિણ્ણા અભિસમણ્ણા ગયા ? એવ જહા સૂરિયામસ્સ જાવ ) હે ભદન્ત ! કાલીદેવી ને જો ઇસ મમય દિવ્ય વિમાન-પરિવાર આદિરૂપ ઋદ્ધિ દિપ્તિલાઈ, શરીર, આભરણ આદિ કી દીપ્તિરૂપ જો દેવઘુતિ એવ શક્તિ પ્રભાવ આદિરૂપ જો દેવાનુભાવ દિગ્વલાયા-વહ સવ કહા ચલા

‘ ભંતેત્તિ ભગવ ગોયમે ’ इत्यादि—

ટીકાર્થ—કાળી દેવીના જતા રહ્યા બાદ ( ભગવ ગોયમે ) ભગવાન ગૌતમે ( ભંતેત્તિ ) હે ભદન્ત ! આ પ્રમાણે સંબોધન કરીને ( સમર્ણ ભગવ મહાવીર વદઃ ણમસઢ ) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વદન અને નમસ્કાર કર્યા ( વદિત્તા ણમસિત્તા એવ વયાસી ) વદના અને નમસ્કાર કરીને તેમણે તેઓશ્રીને પૂછ્યું કે ( કાલિણ્ણ ભંતે ! દેવીણ સા દિવ્વા દેવિડૂ ૩ કહિં ગયાં । કૂઢાગાર-સાલાદિઢ્ઠનો, અદ્દોણ ભંતે ! કાલી દેવી મહલ્લિયા ૩, કાલિણ્ણ ભંતે ! દેવીણ સા દિવ્વા દેવિડૂ ૩ કિણ્ણા લદ્ધા, કિણ્ણા પત્તા, કિણ્ણા અભિસમણ્ણા ગયા ? એવ જહા સૂરિયામસ્સ જાવ )

હે ભદન્ત ! કાળી દેવીએ અત્યારે જે દિવ્યવિમાન, પરિવાર વગેરેની ઋદ્ધિ બતાવી, શરીર, આભરણ વગેરેની દીપ્તિની જે દેવઘુતિ તેમજ શક્તિ, પ્રભાવ વગેરેનો જે દેવાનુભાવ બતાવ્યો તે બધો કયા અદ્વત્ય થઈ ગયો ? કયા પ્રવિષ્ટ થઈ ગયો ?

पतितपूतस्तनी-अवनतनितम्बस्तनी, 'णिविन्नवरा' निर्विण्णवरा=वरवरणे  
विरक्ता, अतएव 'वरपरिवर्जिता' वरपरिवर्जिता=पतिरहिता चाप्यासीत् ।  
तस्मिन् काले तस्मिन् समये पार्श्वोर्ध्वं पुरुषादानीय=पुरुषश्रेष्ठः आदिकरः  
यथा वर्द्धमानस्योमी तथैव पार्श्वप्रभुरपि 'णवर' नवरम्-अयं विशेषः-श्रीवर्द्ध-  
मानस्योमी सप्तहस्तोन्मेषः, पार्श्वप्रभुः 'णवहस्त्युस्सेहे' नवहस्तोत्सेधः=नवहस्त-  
परिमितगरीरावगाहन, स षोडशभिः श्रमणसाहस्रीभिः, अष्टत्रिंशता आर्यिका-

जिया यावि होत्था) इस काल गाथापति की कालश्री नाम भार्या थी।  
इसके हाथ पैर आदि समस्त अंग उपांग विशेष सुकुमार थे। देखने में  
यह बड़ी सुन्दर थी काल गाथापति के इस काल श्री की कुक्षि से  
उत्पन्न हुई एक काली नाम की दारिका भी थी। जो बहुत बयस्का हो  
चुकी थी-इसका विवाह भी नहीं हुआ था। इसलिये कुमारी अवस्था  
में ही यह वृद्धा जैसी बहु उमरवाली हो गई थी। शरीर भी बहु अव-  
स्था सपन्न होने के कारण इसका जीर्ण हो चुका था। अतः  
अपरिणीतावस्था में ही यह जीर्ण कुमारी बन गई थी। इसके नितम्ब  
और स्तन दोनों ही बिलकुल ढीले हो गये थे नीचे झुक आये थे।  
वरके वरण करने रूप कार्य से यह विरक्त बन चुकी थी अतः यह वर-  
परिवर्जित थी-पति से सर्वथा रहित थी। (तेण कालेण तेण समएणं  
पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमाणसामी णवर णवह-  
त्युस्सेहे सोलसहि समणसाहस्सीहि अट्ठत्तीसाए अज्जिया साहस्सीहि

णिविन्नवरा, वरपरिवर्जिया यावि होत्था)

ते काल गाथापतिनी कालश्री नामे लायां હતી તેના હાથ-પગ વગેરે  
અને બધા અંગો તેમજ ઉપાંગો સર્વિશેષ સુકોમળ હતા દેખાવમાં તે બહુ જ  
સુંદર હતી કાલ ગાથાપતિની આ કાલશ્રીના ગર્ભથી જન્મ પામેલી એક કાલી  
નામે દારિકા (પુત્રી) પણ હતી તે મોટી ઉમરની થઈ ચૂકી હતી તેનું  
લગ્ન પણ થયું નહોતું એથી કુમારિકાની અવસ્થામાં જ તે ડોશી જેવી બહુ  
ઉમરે પહોંચેલી થઈ ગઈ હતી બહુ ઉમરે પહોંચેલી હોવા બદલ તેનું શરીર  
પણ જીર્ણ થઈ ચૂક્યું હતું એથી કુમારિકાની અવસ્થામાં જ તે જીર્ણ કુમારિકા  
બની ગઈ હતી તેના નિતમ્બ અને સ્તનો બંને આવ ઢીલા થઈ ગયા હતા,  
નીચે લટકવા લાગ્યા હતા વરને વરણ કરવા રૂપ કાર્યથી તે વિરક્ત બની  
ગઈ હતી એથી તે વર પરિવર્જિત હતી તે એકદમ પતિ વગરની હતી

( તેણે કાલેણ તેણ સમણ પાસે અરહા પુરિસાદાણીએ આગરે જહા વદ્ધ  
માણસામી ણવર ણવહત્યુસ્સેહે સોલસહિ સમણસાહસ્સીહિ અટ્ઠત્તીસાએ અજ્જિયા

पासीत् । तत्र खलु आमलक-रायां काञ्ची नाम गाथापतिगर्मात् कीदृशः ? इत्याह-  
 'अट्टे' आह्वयः=धनधान्यादि समृद्धि-समृद्धः, 'जाव' यावत् 'अपरिभूए'  
 अपरिभूतः=बहुजनैरपि परामर्शितुमशक्य । तस्य खलु कालस्य गाथापतेः काञ्च  
 श्रीर्नाम भार्याऽऽसीत्, कीदृशीत्याह-सुकुमारपाणिपादा यावत् सुरूपा । तस्य  
 खलु कालस्य गाथापतेर्दहिता कालत्रिप-भार्याया आत्मजा काली नाम  
 दारिका=पुत्री आसीत् । सा कीदृशी ? त्याह-'बुढा' बुढा=बहुयस्कृत्वात्,  
 बुढकुमारी=अपरिणीतत्वात्, 'जुण्णा' जीर्णा=जीर्णशरीरत्वात्, 'जुण्णकुमारी'  
 जीर्णकुमारी-अपरिणीतावस्थायामेव सजातजीर्णशरीरत्वात्, 'पडियपूयत्यणी'

राया तत्थ णं आमलकप्पाए नयरीए काळे नाम गाहावई होत्था, अट्टे  
 जाव अपरिभूए ) वे कहते हैं-गौतम सुनो-तुम्हारे प्रदेशों का उत्तर इस  
 प्रकार है-उस काल और उस समय में इसी जम्बूद्वीप नामके द्वीप में  
 भारतवर्षमें आमलकल्पा नामकी नगरी थी । नगरीका वर्णन करनेवाला  
 पाठ यहां पर औपपातिक सूत्र से योजित कर लेना चाहिये । उस नगरी  
 में उद्यान था जिसका नाम आम्रशालावन था । इस नगरी के राजा का  
 नाम जितशत्रु था । इस आमलकल्पा नगरी में काल नाम का गाथापति  
 रहता था । यह धन धान्यादिसे विशेष समृद्ध था और लोगोंमें भी इस  
 की अच्छी प्रतिष्ठा थी । ( तस्स ण कालस्स गाहावइस्स कालसिरी णाम  
 भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा, तस्स ण कालस्स गाहावइस्स  
 धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली णाम दारिया होत्था बुढा  
 बुढकुमारी, जुण्णा जुण्णकुमारी, पडियपूयत्यणी णिविन्नवरा वरपरिव

तत्थ ण आमलकप्पाए नयरीए काळे, नाम गाहावई होत्था अट्टे जाव अपरिभूए )

तेज्जो कळे छे के छे गौतम ! सालणो, तभारा प्रश्नोने उत्तर आ  
 प्रमाणे छे-के ते काणे अने ते अभये आ जम्बूद्वीप नामना द्वीपमा भारत  
 वर्षमा आमलकल्पा नामनी नगरी छती नगरीना वर्णन विवेने पाठ अर्द्धी  
 औपपातिक सूत्र वडे जण्णी देवे जेष्ठे ते नगरीमा ऐक उद्यान छतु  
 तेनु नाम आम्रशाल वन छतु, ते नगरीना राजतु नाम जितशत्रु छतु  
 ते आमलकल्पा नगरीमा काला नामे गाथापति रहितो छतो ते धनधान्य  
 वगेरेथी सविशेष समृद्ध छतो अने समाजमा ते ॥ सारी ऐवी प्रतिष्ठा छती

( तस्स ण कालस्स गाहावइस्स कालसिरीणाम 'भारिया होत्था, सुकुमाल  
 जाव सुरू वा, तस्स ण कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया  
 काली णाम दारिया होत्था बुढा बुढकुमारी, जुण्णा जुण्णकुमारी, पडि



हंतः पुरुषादानीयस्य पादवन्दिता=पादवन्दनाशया गन्तुम् । अम्मापितरौ कथं  
यतः-हे देवानुग्रहे ! पुत्रि यथा सुख तथा कुरु किन्तु अस्मिन् शुभकार्ये प्रति-  
बन्ध=प्रमाद मा कुरु । ततः खलु सा कालिका दारिका अम्मापितृभ्यामभ्यनु-  
ज्ञाता सती हृष्टयापद्हृदया स्नाता कृतवलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता शुद्ध-

अवभणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादानीयस्स पायवदिया  
गमित्तण ? ) लोगो को ज्योही पार्श्व प्रभु के आम्रशालवन में आने की  
खबर लगी-त्योही सब जनता प्रभु को वदना के लिये अपने २ स्थान  
से निकलकर उस आम्रशालवन में आने लगी। वहा आकर प्रभु का  
धार्मिक उपदेश सुन वह प्रभु की पर्युपासना करने लगी। इसके अन-  
न्तर जब यह समाचार काली दारिका को मिला तो वह बहुत अधिक  
हर्षित एवं सतुष्ट चित्त हुई। बाद में वह जहा अपने माता पिता ये वहा  
पहुँची वहा जाकर उसने माता पिता को दोनों हाथ जोड़कर चरण  
वदना की-और इस प्रकार कहा-हे माततात ! पुरुषश्रेष्ठ, आदिकर,  
ऐसे पार्श्वनाथ अर्हत प्रभु आम्रशालवन में पधारे हुए हैं-इसलिये मैं  
आपसे आज्ञापित होकर उन पुनपश्रेष्ठ अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ को वदना  
करने के लिये जाना चाहती हूँ। ( अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिअव  
करेहि, तएण सा कालिया दारिया अम्मापिईहि अवभणुन्नाया समाणी  
इद्वुट्ठ जाव हियया ण्हाया कयवलिकम्मा कयकोउयमगलपायच्चित्ता

पुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादानीयस्स पायवदिया गमित्तण ? )

पार्श्व प्रभुना आम्रशालवनमा पधारवानी ज्ञाणु यता न पधा दोडे  
प्रभुने वदन करवा माटे पोतपोताना स्थानेथी नीकणीने ते आम्रशाल वनमा  
आववा लाग्गा त्या आवीने प्रभुने धार्मिक उपदेश सामगीने तेओ प्रभुनी  
पर्युपासना करवा लाग्गा त्यारण्णाह काली दारिकाने आ समाचारो भण्णा त्यादे  
ते भूण न हर्षित तेभन सतुष्ट चित्तवाणी थर्ग गर्ग त्यारपत्री ते न्ना तेना  
माता-पिता हुता त्या पडोत्थी त्या न्नेने तेण्णे माता-पिताने जने हाथ  
जेडीने अरुण वदना करी अने त्यारपणी आ प्रमाणे चिन्ती करी डे डे माता  
पिता ! पुरुष श्रेष्ठ, आदिकर ओवा पार्श्वनाथ अर्हत प्रभु आम्रशाल वनमा  
पधायो छे ओटला माटे हु तमारी आशा भेगवीने ते पुरुष श्रेष्ठ अड त  
प्रभु पार्श्वनाथने वदन करवा माटे न्वा धुत्तु धु

( अहा सुह, देवाणुप्पिया ! मा पडिअव करेहि, तएण सा कालिया दारिया  
अम्मापिईहि अवभणुन्नाया समाणी इद्वुट्ठ जाव हियया ण्हाया कयवलिकम्मा कय

साहस्रीमि सार्द्धं सपरिवृतः यावत् आम्रशालवने समसृतः । परिषन्निर्गता  
यावत् पर्युपास्ते । ततः खलु सा काली दारिका अस्याः भगवत्पार्श्वप्रभुसमागमन  
रूपायाः कथायाः=प्रार्थनायाः ' लद्धट्टा ' लङ्गार्था भगवानत्रसमवसृतः, इत्येव  
स्पर्धमाप्ता ' हट्टु जार हियया ' हट्ट यावद्दृष्टया-हट्टुष्टुष्टुचित्तानन्दिता प्रीतमनस्का  
हर्षशशिसर्पदूहदया सती यज्ञेय अम्मापितरो तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य ' करयल  
जार ' करतलपरिवृहीत शिर आरतं दशनल मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-  
एव खलु हे अम्भ तातो ! पार्श्वेऽर्हन् पुरुषादानीयः आदिकरो यावत्-आम्रशाल  
वने चैत्ये यथा-प्रतिरूपमग्रहमगृण सयमेन तपमाऽऽन्मान मावयन् विहरति=  
आस्ते, तद्गच्छामि खलु हे अम्भतातो ! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती पार्श्वस्या

सद्धिं सपरिवृष्टे जाव अमलसालवणे समोसढे ) उस काल में और उस  
समय में पुरुषादानीय पुरुषश्रेष्ठ-आदिकर पार्श्वनाथ अर्हंत प्रभु जो श्री  
वर्द्धमान स्वामी जैसे थे-सोलह हजार श्रमणों के तथा ३८, हजार  
आर्थिकाओं के साथ तीर्थकर परपरानुसार विहार करते हुए उस  
आम्रशालवन में आये। भगवान् महावीर और पार्श्वनाथ प्रभु की शरी  
रावगाहना में विशेषता केवल इतनी ही थी कि उनका शरीर सात हाथ  
ऊँचा था और पार्श्व प्रभु का शरीर ९ हाथ ऊँचा था। (परिसा णिग्गया,  
जाव पज्जुवासइ, तण्णं सा दारिया इमीसे कहाए लद्धट्टा समाणी हट्ट  
जाव हियया जेणेअ अम्मापियरो तेणेअ उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
करयल जाव एव वयासी-एव खलु अम्मयाओ पासे अरहा पुरिसा  
दाणीए आइगरे जाव विहरइ, त इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुम्हेहि

साहस्सीहिं सद्धिं सपरिवृष्टे जाव अमलसालवणे समोसढे )

ते क्षणे अने ते समये पुरुषादानीय-पुरुष श्रेष्ठ-आदिकर पार्श्वनाथ-  
अर्हंत प्रभु-जैसे श्री वर्द्धमान स्वामी जेवा छता-सोण छनर श्रमणो  
तेमज्ज उट छनर आर्थिकाओनी साथे तीर्थकर परपरा भुज्ज विहार करता  
ते आम्रशाल वनमा आव्या भगवान् महावीर अने पार्श्वनाथ प्रभुनी शरी  
रावगाहनामा विशेषता इत्त आटली ज छे के तेमनु शरीर सात हाथ जेटु  
छाथु छतु अने पार्श्व प्रभुनु शरीर नव हाथ छाथु छतु

( परिसा णिग्गया, जाव पज्जुवासइ, तण्णं सा काली दारिया इमीसे  
कहाए लद्धट्टा समाणी हट्ट जाव हियया जेणेअ अम्मापियरो तेणेअ उवागच्छइ,  
उवागच्छित्ता करयल जाव एव वयासी-एव खलु अम्मयाओ ! पासे अरहा  
पुरिसादाणीए आइगरे जाव विहरइ, त इच्छामि ण अम्मयाओ !

‘जहा दोवई जाय’ यथा द्रौपदी यावत्-द्रौपदीयत् छादीन् तीर्थङ्करातिशयान् दृष्ट्वा धार्मिकाद् यानप्रवरोदवतरति, पञ्चाभिगमपूर्वक भगवत्समीपे गत्वा वन्दित्वा नमस्यित्वा च भगवन्त ‘पञ्जुपासड’ पर्युपास्ते । तत खलु पार्थोऽर्हन् पुरुषा-  
दानीयः काल्यै दारिकायै तस्या च महातिमहालयाया पर्पदि धर्मं कथयति ततः  
खलु सा काली दारिका पार्श्वस्यार्हत पुरुषादानीयस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य  
हृष्ट यावद् हृदया पार्श्वमर्हन्त पुरुषादानीय त्रिकृतो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा

वह उस पर आरुढ़ हो गई । आरुढ़ होकर वह वहाँ से चली । ज्योती  
उसने द्रौपदी की तरह तीर्थकरातिशयरूप छादी विभूति को देखा तो  
वह देखकर उस धार्मिक यानप्रवर से नीचे उतरी । और पञ्च अभिगमन  
पूर्वक भगवान् के पास जाकर उसने उनको वदना की, उन्हें नमस्कार  
किया-वदना नमस्कार करके फिर उसने उनकी पर्युपासना की । (तएण  
पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महमहालयाए  
परिसाए धम्मो कहिओ) पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथने उस काली  
दारिकाको उस विशाल परिषदाके बीचमें धर्मकथा सुनाई । (तएण सा  
काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतिए धम्म सोच्चा  
णिसम्म दृढ जाव हियया पास अरह पुरिसादाणीय तिरखुत्तो वदइ  
नमसइ) पुरुषादानीय उन अर्हत पार्श्वनाथ प्रभु से धर्म को सुनकर  
और हृदय में अवधारण कर वह काली दारिका बहुत अधिक हर्षित

त्यार्थी स्वाना यर्ध द्रौपदीनी जेम तेणे ज्यारे तीर्थ उरातिशय इय छत्र वगेरे  
विभूतिने जेध के जेतानी साथे ज ते धार्मिक यान-प्रवरभाथी नीचे उतरी  
पडी अने पञ्च अभिगमनपूर्वक भगवाननी पासे जधने तेभने वदना करी, तेभने  
नमस्कार कर्या वदना अने नमस्कार करीने तेणे तेभनी पर्युपासना करी त्यारपछी

( तएण पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महमहा  
लयाए परिसाए धम्मो कहिओ )

पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथे ते काली दारिकाने ते विशाल परि  
षदानी साथे धर्मकथा सलणावी

( तएण सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतिए धम्म  
सोच्चा णिसम्म दृढ जाव हियया पास अरह पुरिसादाणीय तिरखुत्तो वदइ नमसइ)

पुरुषादानीय ते अर्हत पार्श्वनाथ प्रभुनी पासेथी धर्मने सालणीने  
अने तेने हृदयमा अवधारित करीने ते काली दारिका जहु ज वधारे हर्षित

प्रवेशयानि माह्वयानि यस्याणि परपरिहिता भव्यमहाशोभनाम्भुवसरीरा चेदिका  
चक्रवालपरिधीणां स्वकार्मुक्याद् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यज्ञैव वाक्ता-  
उपस्थानशाला यज्ञैव धार्मिको यानपरस्त्वप्रेयोपागच्छति, उपागत्य धार्मिकं यान  
प्रवर दृष्ट्वाभारुदा । ततः खलु सा काली दारिका धार्मिकं यानप्रवरम्, एवं  
सुदृष्ट्वावेसाह मगलाह तथ्याह पवरपरिहिया अप्पमहग्गामरणालकिय  
सरीरा चेदिया चक्रवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ,  
पडिनिक्खमित्ता जेणेव याहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिय जाण  
प्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय जाणप्पवर दुरुद्धा,  
तएण सा काली दारिया धम्मिय जाण पवर जहा दोवई जाव पज्जुवासइ)  
तव माता पिता ने उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये । तुझे जिस प्रकार  
सुख मिले उस प्रकार तू कर-इस शुभकार्य में प्रतिषेध-प्रमाद मत  
कर । इस प्रकार माता पितासे अभ्यनुज्ञात हुई उस दारिका ने दृष्ट तुष्ट  
चित्त होकर स्नान किया वायसादि के लिये अन्नका भागरूप-बलिकर्म  
किया कौतुक, मगल एवं प्रायश्चित्त करके शुद्ध प्रवेश योग्य, मगलकारी  
वस्त्रों को अच्छी तरह पहिरा, और अल्पभार बहुमूल्य आभरणों से  
अलंकृत शरीर होकर वह चेदिका चक्रवाल से युक्त हो अपने घर से  
निकली । निकलकर वह वहाँ गई-जहाँ बाह्य उपस्थान शाला थी-उसमें  
जाकर वह जहाँ धार्मिक यानप्रवर रक्खा था-वहाँ पहुँची-वहाँ जाकर

कोउयमगलप्रायश्चित्त सुदृष्ट्वावेसाह मगलाह तथ्याह पवरपरिहिया अप्पमहग्गाम  
भरणालकियसरीरा चेदियाचक्रवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ,  
पडिनिक्खमित्ता जेणेव याहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिय जाणप्पवरे  
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, धम्मिय जाणप्पवर दुरुद्धा तएण सा काली  
दारिया धम्मिय जाणप्पवर एव जहा दोवई जाव पज्जुवासइ )

त्यारे मातापिताओ तेने आ प्रभाओ कहु के हे देवानुप्रिये । तने जेम  
सुख भजे तेम तू कर आ शुभ कार्यमा प्रतिषेध-प्रमाद नर नहि आ  
प्रभाओ मातापिता वडे आज्ञापित थयेदी ते दारिकाओ छुट-छुट चित्त थधने  
स्नान कथुं कागडा वगेरेने अन्नलाग आपीने बलिकर्म कथुं कौतुक, मगल  
अने प्रायश्चित्त करीने शुद्ध प्रवेश योग्य, मगलकारी वस्त्रोने सारी रीते पहिया  
अने वजनमा दुद्धा पलु किमतमा भुहु लारे ओवा आभरणोथी शरीरने  
अलंकृत करीने दासीओना समूहथी परिवेष्टित थधने पोताना घेरथी नीडणी  
नीडणीने ते त्या पडोथी जया बाह्य उपस्थान शाला छती तेमा जधने ते  
जया धार्मिक यानप्रवर जेहु छतु तेमा आइठ थध जध आइठ



‘जहा दोवई जाय’ यथा द्रौपदी यावत्-द्रौपदीयत् छादीन् तीर्थङ्करातिशयान् दृष्ट्वा धार्मिकाद् यानप्रवरादवतरति, पञ्चाभिगमपूर्वकं भगवत्समीपे गत्वा वन्दित्वा नमस्यित्वा च भगवन्त ‘पञ्जुपासड’ पर्युपास्ते । ततः खलु पार्श्वोऽर्हन् पुरुषा-दानीयः काल्यै दारिकायै तस्या च महातिमहालयाया पर्पदि धर्मं कथयति ततः खलु सा काली दारिका पार्श्वस्यार्हतं पुरुषादानीयस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्ट यावद् हृदया पार्श्वमर्हन्तं पुरुषादानीयं त्रिकृत्यो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा

वह उस पर आरूढ हो गई । आरूढ होकर वह वहाँ से चली । ज्योही उसने द्रौपदी की तरह तीर्थकरातिशयरूप छादि विभूति को देखा तो वह देखकर उस धार्मिक यानप्रवर से नीचे उतरी । और पञ्च अभिगमन पूर्वक भगवान् के पास जाकर उसने उनको वदना की, उन्हें नमस्कार किया-वदना नमस्कार करके फिर उसने उनकी पर्युपासना की । (तएण पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महम्महालयाए परिसाए धम्मो कहिओ) पुरुषादानीय अर्हतं प्रभु पार्श्वनाथने उस काली दारिकाको उस विशाल परिषदाके बीचमें धर्मकथा सुनाई । (तएण सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म दृढ जाव हियया पास अरह पुरिसादाणीय तिरखुत्तो वदह नममइ) पुरुषादानीय उन अर्हत पार्श्वनाथ प्रभु से धर्म को सुनकर और हृदय में अवधारण कर वह काली दारिका बहुत अधिक हर्षित

त्याधी खाना थर् द्रौपदीनी जेम तेणे ब्यारे तीर्थ उरातिराय इप छत्र वगेरे विभूतिने जेध के जेतानी साथे ज ते धार्मिक यान-प्रवरभाथी नीचे उतरी पडी अने पञ्च अभिगमनपूर्वकं भगवाननी पासे जधने तेमने वदना उरी, तेमने नमस्कार कर्था वदना अने नमस्कार करीने तेणे तेमनी पर्युपासना करी तयारपछी

( तएण पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महम्महा लयाए परिसाए धम्मो कहिओ )

पुरुषादानीय अर्हतं प्रभु पार्श्वनाथे ते काली दारिकाने ते विशाल परिषदानी साथे धर्मकथा सलणावी

( तएण सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म दृढ जाव हियया पास अरह पुरिसादाणीय तिरखुत्तो वदह नममइ )

पुरुषादानीय ते अर्हत पार्श्वनाथ प्रभुनी पासेथी धर्मने सालणीने अने तेने हृदयमा अवधारित करीने ते काली दारिका बहु ज वधारे हर्षित



નમસિત્તા પયમગાદીન્-શ્રદધામિ મત્તુ હે મનન્ત । નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનં યાવત્ તદ્  
તથૈતદ્ યુગ વદધ નરરન્નિગેરોડયમ્-યન્-મમ્ અમ્માપિતરો આપુન્ઝામિ, કત્ત =  
માતાપિતરો પદ્મા સત્તુ અહ દેવાનુપિયાણામન્તિકે યાવત્ પ્રવજામિ । મગવાનાહ-  
યથાસુલ્લ હે દેવાનુપિયે । । તતઃ મત્તુ મા કાલી દારિયા પાર્શ્વેન અર્હતા પુરુષા

હત્થ્ય હુર્હ । ઉમ્મને ઉન પુરુષાદાનીય પાર્શ્વનાથ અર્હત પ્રભુ કો તીન વાર  
વદના નમસ્કાર ક્રિયા । યાદ મેં ( વદિત્તા નમસિત્તા એવ ચયાસી સદ્  
દામિ ણ મત્તે ! ણિમ્મથ પાવયણ જાવ સે જહેય તુમ્મે વયહ, જ ણવર  
દેવાણુપ્પિયા ! અમ્માપિયરો આપુન્ઝામિ, તણ્ણ અહ દેવાણુપ્પિયાણ અતિપ  
જાવ પવ્વયામિ, અહાસુહ દેવાણુપ્પિય ! તણ્ણ સા કાલી દારિયા પાસેણ  
અરહયા પુરિસાદાણીણ્ણં એવ વુત્તા સમાણી હદ્ધ જાવ હિયયા પાસ  
અરહ વદહ, નમસહ, વદિત્તા નમસિત્તા તમેવ ધમ્મિય જાણવર દુરુ  
હહ, દુરુહિત્તા પાસસ્સ અરહઓ પુરિસાદાણીયસ્સ અતિયાઓ અવસા  
લવણાઓ વેદયાઓ પહિનિસ્સવમહ, પહિનિસ્સવમિત્તા જેણેર આમલકપ્પા  
નયરી, તેણેવ ઉવાગચ્છહ ) વંદના નમસ્કાર કરકે ઉમ્મને ઉન પ્રભુ સે  
એસા કરા-હે મનન ! મેં આપકે દ્વારા પ્રતિપાદિત નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન કો  
વિશેષ શ્રદ્ધા કો દૃષ્ટિ સે દેવની હું આપને જેસા યહ પ્રતિપાદિત ક્રિયા  
હૈ વહ વસ્તુતઃ વૈસા હી હૈ । યહ સુદ્ધે વદ્ધત રુચા હૈ । અતઃ મેં માતા  
પિતા સે પૂઠતી હું । ઉનસે પૂઠકર ફિર આપ દેવાનુપ્રિય કે પાસ આકર

હૃદય થઈ તેણે તે પુરુષાદાનીય પાર્શ્વનાથ અર્હત પ્રભુને ત્રણ વાર વંદના  
અને નમસ્કાર કર્યા ત્યારમાઠ

( વદિત્તા નમસિત્તા એવ ચયાસી સદ્દામિણ મત્તે ! ણિમ્મથ પાવયણ જાવ  
સે જહેય તુમ્મે વયહ, જ ણવર દેવાણુપ્પિયા ! અમ્માપિયરો આપુન્ઝામિ, તણ્ણ  
અહ દેવાણુપ્પિયાણ અતિપ જાવ પવ્વયામિ, અહા સુહ દેવાણુપ્પિય ! તણ્ણ સા  
કાલી દારિયા પાસે ણ અરહયા પુરિસાદાણીણ્ણં એવ વુત્તા સમાણી હદ્ધ જાવ હિયયા  
પાસ અરહ વદહ, નમસહ, વદિત્તા નમસિત્તા તમેવ ધમ્મિય જાણવર દુરુહહ  
દુરુહિત્તા પાસસ્સ અરહઓ પુરિસાદાણીયસ્સ અતિયાઓ અવસાલવણાઓ વેદયાઓ  
પહિનિસ્સવમહ, પહિનિસ્સવમિત્તા જેણેર આમલકપ્પા નયરી તેણેવ ઉવાગચ્છહ )

વંદના નમસ્કાર કરીને તેણે તે પ્રભુને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભદ્રન્ત !  
તમારા વડે પ્રતિપાદિત નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનને હું વિશેષ શ્રદ્ધાની દૃષ્ટિએ જોઉં  
છું તમે જોશું આ પ્રતિપાદિત કથું કે ખરેખર તે તેવું જ છે અને આ  
ખૂબ જ ગમી ગયું છે એથી હું માતાપિતાને પૂછી લઉં છું તેમને પૂછીને

दानीयेन एषमुक्ता सती हृष्ट यावद् हृदया पार्श्वमर्हन्त वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा तदेव धार्मिक यानप्रवर दूरोहति, दूरं पार्श्वस्यार्हत पुरुषादानीय स्यान्तिष्ठाद् आम्रशालानात् चैत्यात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव आमल-  
कल्पा नगरी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य आमलकल्पाया नगर्या मध्य-मध्येन यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य धार्मिक यानप्रवर स्थाप-  
यति, स्थापयित्वा धार्मिकाद् यानप्रवरात् प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुह्य यत्रैव अम्मा पितरो तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य ' करतल० ' करतलपरिगृहीत मस्तकेऽञ्जलिं

दीक्षित होना चाहती हूँ। काली दारिका के इस अभिप्राय को सुनकर प्रभुने उससे कहा देवानुप्रिये। यथासुखम्। इस प्रकार वह काली दारिका पुरुषादानीय उन अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ से अनुमोदित होकर चित्त में बहुत अधिक प्रसन्न हुई। उसने अर्हन्त पार्श्वनाथ प्रभु को वंदना नमस्कार किया-और वंदना नमस्कार करके वहा से आकर वह उसी अपने धार्मिक यान पर चढ़ गई चढ़कर वह फिर पुरुषादानीय, अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ के पास से और उस आम्रशालवन नामके उद्यान से बाहिर चली आई। बाहिर आकर वह जहा आमलकल्पा नगरी थी-वहा पर आ गई। (उवागच्छित्ता आमलकप्पं णयरि मज्झं मज्झेण जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय जाणपवर ठवेइ, ठवित्ता धम्मियाओ जाणपवरोओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कर-

आप देवानुप्रियनी पामे आवीने दीक्षित थवा आहु छु काली दारिकाना आ अलिप्रायने सालणीने प्रभुओ तेने कहु के डे देवानुप्रिये। ' यथासुखम् ' आ प्रभाणु ते काली दारिका पुरुषादानीय ते अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ वडे अनुमो-  
दित थधने चित्तमा भूगज प्रसन्न थध तेणु अर्हत पार्श्वनाथ प्रभुने वंदना नमस्कार उयां अने वंदना नमस्कार करीने त्याथी आवीने ते तेज पोताना धार्मिक यानमा जेमी गध अने जेमीने ते पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्व-  
नाथनी पासैथी अने ते आम्रशाल वन नामना उद्यानथी जडार आवी गध जडार आवीने ते त्या आमलकल्पा नगरी छती त्या आवी गध

(उवागच्छित्ता आमलकप्प णयरि मज्झं मज्जेण जेणेव बाहिरिया उवट्ठाण-  
साला-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय जाणपवर ठवेइ, ठवित्ता धम्मि-  
याओ जाणपवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता, जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवाग-  
च्छइ, उवागच्छित्ता करतल० एव वयासी-एवं खलु अम्मयाओ ! मए पासस्स

નમસિત્તા એવમગ્રાદીત્-શ્રદ્ધામિ ચતુ હે મદન્ત । નૈર્ગન્થ પ્રવચનં યાચત્ તદ્  
તથૈતદ્ યુય રદ્ધ નર-વિશેષોઽયમ્-યન્-અમ્ અમ્માપિતરૌ આપુન્ઝામિ, તત્-  
માતાપિતરૌ પૃષ્ઠા સ્વદુ અહ દેવાનુમિયાણામન્તિકે યાચત્ પ્રવ્રજામિ । મગવાનાહ-  
યથાસુત્વ હે દેવાનુમિયે । । તતઃ સત્ત્વ મા કાલી દારિયા પાર્શ્વેન અર્હતા પુરુષા

હૃદય હૃદ્ । ડસને ડન પુરુષાદાનીય પાર્શ્વનાથ અર્હત પ્રભુ કો તીન વાર  
વદના નમસ્કાર ક્રિયા । યાદ મેં ( વદિત્તા નમસિત્તા એવ વયામી સદ્  
હામિ ણ મતે ! ણિગ્ગથં પાવયણ જાવ સે જહેય તુઝમે વયહ, જ ણવર  
દેવાણુપ્પિયા ! અમ્માપિયરો આપુન્ઝામિ, તણ્ણ અહ દેવાણુપ્પિયાણ અતિણ  
જાવ પવ્વયામિ, અહાસુહ દેવાણુપ્પિય ! તણ્ણ સા કાલી દારિયા પાસેણ  
અરહયા પુરિસાદાણીણ્ણં એવ વુત્તા સમાણી હદ્ધ જાવ હિયયા પાસ  
અરહ વદહ, નમસહ, વદિત્તા નમસિત્તા તમેવ ધમ્મિય જાણવવર દુરુ  
હહ, દુરુહિત્તા પાસસ્સ અરહઓ પુરિમાદાણીયસ્સ અતિયાઓ અંબસા-  
લવણાઓ ચેહયાઓ પહિનિસ્સવમહ, પહિનિસ્સવમિત્તા જેણેવ આમલકપ્પા  
નયરી, તેણેવ ઉવાગચ્છહ ) વંદના નમસ્કાર કરકે ડસને ડન પ્રભુ સે  
એસા કહા-હે મદન્ત । મેં આપકે દ્વારા પ્રતિપાદિત નિર્ગન્થ પ્રવચન કો  
વિશેષ શ્રદ્ધા કો દૃષ્ટિ સે દેવતી હું આપને જેસા યહ પ્રતિપાદિત ક્રિયા  
હૈ વહ વસ્તુતઃ વૈસા હી હૈ । યહ સુદ્ધે વદ્ધત રુચા હૈ । અતઃ મેં માતા  
પિતા સે પૂઝતી હું । ડનસે પૂઝકર ફિર આપ દેવાનુમિય કે પાસ આકર

હૃદય યદ્ તેણે તે પુરુષાદાનીય પાર્શ્વનાથ અર્હત પ્રભુને ત્રણ વાર વદના  
અને નમસ્કાર કર્યા ત્યારમાહ

( વદિત્તા નમસિત્તા એવ વયામી સદ્દહામિણ મતે ! ણિગ્ગથ પાવયણ જાવ  
સે જહેય તુઝમે વયહ, જ ણવર દેવાણુપ્પિયા ! અમ્માપિયરો આપુન્ઝામિ, તણ્ણ  
અહ દેવાણુપ્પિયાણ અતિણ જાવ પવ્વયામિ, અહા સુહ દેવાણુપ્પિય ! તણ્ણ સા  
કાલી દારિયા પાસે ણ અરહયા પુરિસાદાણીણ્ણ એવ વુત્તા સમાણી હદ્ધ જાવ હિયયા  
પાસ અરહ વદહ, નમસહ, વદિત્તા નમસિત્તા તમેવ ધમ્મિય જાણવવર દુરુહહ  
દુરુહિત્તા પાસસ્સ અરહઓ પુરિસાદાણીયસ્સ અતિયાઓ અંબસાલવણાઓ ચેહયાઓ  
પહિનિસ્સવમહ, પહિનિસ્સવમિત્તા જેણેવ આમલકપ્પા નયરી તેણેવ ઉવાગચ્છહ )

વદના નમસ્કાર કરીને તેણે તે પ્રભુને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભદન્ત !  
તમારા વડે પ્રતિપાદિત નિર્ગન્થ પ્રવચનને હું વિશેષ શ્રદ્ધાની દૃષ્ટિએ જોઉં  
છું તમે જેવું આ પ્રતિપાદિત કર્યું છે ખરું જો તે તેવું જ છે અને આ  
ખૂબ જ ગમી ગયું છે એથી હું માતાપિતાને પૂજી લઉં છું તેમને પૂજીને

भ्यनुज्ञाता सती पार्श्वम्याहृतोऽतिके मुण्डाभूत्वा आगाराद् अनगारिता मव्रजितुम्= स्वीकर्तुम् । मातापितरौ कथयतः-यथाश्रुतं हे देवानुमिये !-यथा रोचते तथा- कुरु किन्तु अस्मिन् कार्ये प्रतिवन्द्य=प्रमाद मा कुरु । ततः=स्वपुत्र्या दीक्षानिश्चयान्तरं त्वलु स कालो गायपतिर्विपुलम् अशनम् ४ अशनादि चतुर्विधमाहारम् उपस्कारयति, उपस्कार्य मित्रजातिनिजस्वजनमम्भ्रिपरिजनम् आमन्त्रयति, आमन्त्र्य ततः पश्चात् स्नातः यावत् विपुलेन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्कृत्य सम्मान्य तस्यैव मित्रजातिनिजस्वजनमम्भ्रिपरिजनस्य पुरतः=भग्रे कालिका दारिका श्वेतपीतैः=रजतमुष्णमयै कलशैः स्नपयति, स्नपयित्वा सर्वालङ्कारविभूषिता करोति, कृत्वा पुष्पमहस्त्राहिनिका शिरिका दूरोहयति=आरोहयति, दूरोह्य मित्रजातिनिजस्वजनमम्भ्रिपरिजनेन सार्द्धं सपरिवृतः सर्वैर्द्वार्या यावत्-वाद्य

के भय से उद्विग्न होकर जन्ममरण से भयभीत हो चुकी हूँ-अतः मैं चाहती हूँ कि मैं आप से आज्ञा प्राप्त कर उन अर्हंत पार्वनाथ प्रभु के समीप मुडित होकर अगारावस्था से अनगारावस्था स्वीकार कर लू । इस प्रकार अपनी काली दारिका की बात सुनकर माता पिता ने उससे कहा-( अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडियध करेह, तएण से काले गाहा वई विपुल असण ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ णियग सयणसवधिपरियण आमतेइ आमत्तिता तओ पच्छा ण्हाए जाव विउलेण पुष्पवत्थगधमल्लालकारेण सक्कारेत्ता मम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणियगसयणसवधिपरिजणस्स पुरओ कालिय दारिय सेया पीएहि कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालकारविभूसिय करेइ, करित्ता पुरिससहस्सराहिणीय सीय दुरोहेइ, दुरोहित्ता मित्तणाइणियगसयण

श्रवणुथी हु आ स सारना लयथी उद्विग्न थधने जन्म-मरणुथी लयलीत थर्ध गध हु अयेयी भारी धन्ना छे डे हु तभारी आशा भोगवीने ते अर्द्धत पार्श्वनाथ प्रभुनी पास मुडित थउने अगारावस्था त्यउने अनगारावस्था स्वीकारी लउ आ प्रभाणु पोतानी काली दारिकानी बात साजगीने मातापिताअ तेने कहु —

( अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडियध करेह, तएण से काले गाहावई विपुल असणं ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइणियगसयणसवधिपरियण आमतेइ आमत्तिता तओ पच्छा ण्हाए जाव विपुलेण पुष्पवत्थगधमल्लालकारेण सक्कारेत्ता मम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणियगसयणसवधिपरिजणस्स पुरओ कालिय दारिय सेयापीएहि कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालकारविभूसिय करेइ, करित्ता

કૃત્વા એમવાદોત્-એ ચલુ દે અમ્મતાતો ! મયા પાર્શ્વમ્યાર્હતોઽન્તિકે ધર્મઃ  
' નિસંતે ' નિશાન્તઃ=શ્રુત', તોઽપિ ચ ધર્મ ' મે ' મમ ' ઇચ્છિત્ ' ઇષ્ટઃ=  
ઇચ્છાવિષયીભૂત, ' પટિચ્છિત્ ' પ્રતીત્ઃ=પુન પુનરમિલપિત ' અમિરુષ્ '   
અમિરુચિતઃ=આસ્વાદ્યવસ્તુત્તર્સવાધિયઃ, તત્=તસ્માન્ કારણાન્ ચત્ત અહ દે  
અમ્મતાતો ! સમારમયોદ્વિગ્ના મીતા જન્મમરણેભ્યોઽન ઇચ્છામિ ચલુ યુષ્માભ્યામ

ચલ૦ એવં વયાસી-એ ચલુ અમ્મયાઓ ! મમ પાસસ્મ અરહઓ અતિષ  
ધમ્મે નિસતે સે તિ ય મે ધમ્મે ઇચ્છિત્ પટિચ્છિત્ અમિરુષ્-તણ  
અહં અમ્મયાઓ ! સસારમડવિગ્ગા મીયા જન્મમરણાણ-ઇચ્છામિ  
ણં તુબ્હેતિં અબ્ભણુન્નાયા સમાણી પાસસ્મ અરહઓ અતિષ મુંઢા મવિસા  
અગારાઓ અણગારિય પન્વહસ્સણ ) વહાં આકર કે વહ આમલકલ્પ  
નગરી કે ધીચોં ધીચ સે હોકર જહાં વહ યાત્તા ઉપસગ્ગન શાલા થી-વહાં  
આઈ-વહા આકર વહ ઉમ ધાર્મિક યાનપ્રવર સે નીચે ઉતરી-નીચે  
ઉતર કર ફિર ઘાદ મેં વહ જહાં અપને માતા પિતા થે-વહા ગઈ-વહા  
જાકર ઉસને અપને દોનોં હાથોં કી અજલિ ઘનાકર ઓર ઉસે મસ્તક  
પર રલ્લકર ઉનસે હસ પ્રકાર વહા-હે માત તાત ! સુનો મેંને અહંત પ્રમુ  
પાર્શ્વનાથ કે મુખ સે ધર્મ સુના હૈ-વહ ધર્મ મુદ્ધે યદ્દુત અચ્છા લગા હૈ,  
ઘાર વાર ઉસ ધર્મ કો સુનને કી અમિલાપા હો રહી હૈ । જિસ પ્રકાર  
આસ્વાદ્ય વસ્તુ પ્રિય લગતી હૈ ઉસી પ્રકાર વહ ધર્મ મેરે લિયે સબ  
પ્રકાર સે પ્રિય લગા હૈ । ઉસકે સુનને સે મેં હે માત તાત ! હમ સસાર

અરહઓ અતિષ ધમ્મે નિસતે સે તિ ય મે ધમ્મે ઇચ્છિત્ પટિચ્છિત્ અમિરુષ્-તણ  
અહ અમ્મયાઓ ! સસારમડવિગ્ગા મીયા જન્મમરણાણી-ઇચ્છામિ ણ તુબ્હેતિં  
અબ્ભણુન્નાયા સમાણી પાસસ્મ અરહઓ અતિષ મુંઢા મવિસા જગારાઓ અણગા-  
રિય પન્વહસ્સણ )

ત્યા આવીને તે આમલકલ્પા નગરીની વચ્ચે થઇને જ્યાં તે બાહ્ય ઉપ-  
સ્થાન શાળા હતી ત્યાં આવી ત્યાં આવીને તે તે ધાર્મિક જ્ઞાન પ્રવરમાથી  
નીચે ઉતરી, નીચે ઉતરીને તે જ્યાં તેના માતાપિતા હતાં ત્યાં ગઈ ત્યાં જઈને  
પોતાના જને હાથોની અજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને તેમને આ  
પ્રમાણે કહ્યું કે હે માતાપિતા ! સામજો, અહંત પ્રમુ પાર્શ્વનાથના મુખથી  
મેં ધર્મનું શ્રવણ કર્યું છે, તે મને બહુ જ ગમી ગયું છે તે ધર્મને વારવાર  
સામજવાની ઇચ્છા થઈ રહી છે જેમ આસ્વાદ્ય વસ્તુ પ્રિય હોય છે તેમજ  
તે ધર્મ મારા માટે જીવી રીતે પ્રિય થઈ પડ્યો છે હે માતાપિતા ! તેના



भयनुज्ञाता सती पार्थम्यार्हतोऽतिके मुण्डाभूत्या आगाराद् अनगारिता प्रव्रजितुम् = स्वीकर्तुम् । मातापितरौ कथयतः—यमासुख हे देवानुपिषे !—यथा रोचते तथा- कुरु किन्तु अस्मिन् कार्ये प्रतिग्रन्थ=प्रमाद मा कुरु । ततः=स्वपुत्र्या दीक्षानिश्चया नंतर खलु स कालो गायपतिर्विपुलम् अशनम् ४ अशनादि चतुर्विधमाहारम् उपस्कारयति, उपस्कार्य मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्प्रन्निपरिजनम् आमन्त्रयति, आमन्त्र्य ततः पश्चात् स्नातः यावत् त्रिपुलेन पुष्पवत्तगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्कृत्य सम्मान्य तस्यैव मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्प्रन्निपरिजनस्य पुरतः=अग्रे कालिका दारिका श्वेतपीतैः=रजतमुष्णमयै कलशैः स्नपयति, स्नपयित्वा सर्वालङ्कारविभूषिता करोति, कृत्वा पुरुषमहस्रवाहिनीका शिविका दूरोहयति=भारोहयति, दूरोह्य मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्प्रन्निपरिजनेन सार्द्धं सपरिवृतः सर्वैर्द्वयं यावत्-वाद्य

के भय से उद्विग्न होकर जन्ममरण से भयभीत हो चुकी हूँ—अतः मैं चाहती हूँ कि मैं आप से आज्ञा प्राप्त कर उन अर्हत पार्वनाथ प्रभु के समीप मुडित होकर अगारावस्था से अनगारावस्था स्वीकार कर लू । इस प्रकार अपनी काली दारिका की बात सुनकर माता पिता ने उससे कहा—( अहासुह देवानुपिषा ! मा पडियध करेह, तएण से काले गाहावई विपुल असण ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ णियगसयणसवधिपरियण आमतेइ आमनित्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव विउलेण पुष्पवत्तगधमल्लालकारेण सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणियगसयणसवधिपरिजणस्स पुरओ कालिय दारिय सेया पीएहि कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालकारविभूसिय करेइ, करित्ता पुरिससहस्सवाहिणीय सीय दुरोहेइ, दुरोहित्ता मित्तणाइणियगसयण

श्रवणुथी हु आ ससारना लयथी उद्विग्न थधने जन्म-मरणुथी लयलीत थधं गधं छु अथी भारी ध्विजा छे डे हु तभारी आशा भेगवीने ते अर्हत पार्थनाथ प्रभुनी पासो मुडित थधने अगारावस्था त्यज्जने अनगारावस्था स्वीकारी लउ आ प्रभाणु पोतानी डाली दारिकानी बात साबगीने मातापिताओ तेने उहु —

( अहासुह देवानुपिषा ! मा पडियध करेह, तएण से काले गाहावई विपुल असण ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइणियगसयणसवधिपरियण आमतेइ आमनित्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव विपुलेण पुष्पवत्तगधमल्लालकारेण सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणियगसयणसवधिपरिजणस्स पुरओ कालिय दारिय सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालकारविभूसिय करेइ, करित्ता

मानानैकरिधरादिप्रवेण सह आमलकन्याया नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति,  
निर्गत्य यदीरात्रगालरने चैत्य तर्जोपागच्छति, उपागम्य उत्रादिकान तीर्थकराणि

सद्यधिपरियणेण सद्धि सपरिवुद्धे सन्निवृत्तीण जाय रवेण आमलकण  
नयरि मज्झ मज्जेणं गिगच्छइ ) हे देवानुप्रिये ! तुझे जिस तरह अच्छा  
होगे वैसा तू कर-इस कार्य में प्रमाद न कर । इस तरह उस काल  
गाथापति ने अपनी पुत्री को दीक्षा ग्रहण करने में हृद निश्चयवाली  
जानकर विपुल मात्रा में अन्ननादि रूप चतुर्विध आहार निष्पन्न कर  
घाया-घाद में मित्र, जाति, निजक, स्वजन, सघन्धी परिजनो को  
आमन्त्रित किया आमन्त्रित करके घाद में उसने स्नात होकर विपुल पुष्प,  
वस्त्र, गन्ध माल्य, गन्ध अलंकारों से सत्कार सम्मान करके उन मित्र,  
जाति, निजक, स्वजन, सघन्धी, परिजनो के साथ काली दारिका का  
श्वेत पीत कलशों द्वारा अभिषेक किया-घाद में उसे समस्त अलंकारों  
से विभूषित किया-फिर पुरुष सहस्रचाहिनी शिथिका पर उसे चढ़वाया ।  
चढ़वाकर फिर उन मित्र, जाति निजक, स्वजन सघन्धी परिजनो से  
घिरा हुआ होकर वह अपनी समस्त ऋद्धि के अनुसार, वाद्यमान  
अनेक विध वाजो की ध्वनि के साथ २ आमलकन्या नगरी के ठीक बीचों  
बीच से होकर निकला । ( गिगच्छित्ता जेजेव अवमालवणे चेइए

पुरिससहस्सचाहिणीय सीय दुरोहेह, दुरोहिता मित्तणाइ, गियगसयगसपधि परियणेण  
सद्धि सपरिवुद्धे सन्निवृत्तीण जाय रवेण आमलकण नयरि मज्झ मज्जेण गिगच्छइ )

हे देवानुप्रिये ! तने जेम साइ लागे तेम कर आ काममा प्रमाद  
करीश नहि आ प्रमाणे ते कालगाथापतिअ पोतानी पुत्रीने दीक्षा अर्द्ध  
करवाने मज्झम विचार जालीने पुब्बण प्रमाणमा अथन वजेरे आर जतना  
आडावे तैयार करावडाना तयारमाद मित्र, जाति, निजक, स्वजन, सघन्धी  
परिजनोने आमन्त्रित कया आमन्त्रित करीने तेले स्नान करीने पुब्बण पुष्प,  
वस्त्र, गन्ध, माल्य अने अलंकारे वडे सत्कार तेमज्ज सम्मान करीने ते मित्र,  
जाति, निजक, स्वजन, सघन्धी, परिजनोनी साथे काली दारिको सङ्केह, अने  
पीणा कणशे वडे अलिषेक कथे तयारणाह तेने समस्त अलंकारे वडे विभू  
षित करी अने तयारपणी पुरुष सहस्रचाहिनी पावणी उपर तेने चढावी  
चढावीने तेले मित्र जाति, निजक, स्वजन सघन्धी, परिजनोनी साथे परि  
वेष्टित थछने पोतानी समस्त ऋद्धिनी साथे, धणु वाज्जओना ध्वनिनी साथे  
साथे आमलकन्या नगरीनी परापर वञ्चे थछने नीकलथे ।

शयान् पश्यति, दृष्ट्वा शिविका स्थापयति, स्थापयित्वा कालिका दारिका शिवि-  
कातः प्रत्यवरोहयति । ततः खलु ता कालिका दारिकाम् अम्मापितरो पुरतः  
कृत्वा यत्रैव पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य वन्देते नमस्यतः,  
वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमादिष्टाम्—एव खलु हे देवानुप्रियाः ! काली दारिका  
आवयोर्दुहिता इष्टा कान्ता यावत् उदुम्बरपुष्पमिव श्रवणायापि दुर्लभा किमङ्ग ! पुनः  
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ ) निरु-  
लकर वह वहा गया कि जहा वह आम्रशालवन नाम का उद्यान था ।  
वहां जाकर उसने तीर्थंकर प्रकृति के उदय से होनेवाले छात्रादिक अति  
शयों को देखा । ( पासित्ता सीय ठावेइ, ठावित्ता कालियदारिय सीयाओ  
पच्चोरुइइ, तएण त कालीय दारिय अम्मापियरो पुरओ काउ जेणेव  
पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदइ, नमसइ,  
वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी ) देखकर उसने उस पुरुष सहस्रवाहिनी  
शिविका को खटी कर दिया । खड़ी करके उसमें से काली दारिका को  
नीचे उतारा बाद में वे माना पिता उस कालिक दारिका को आगे करके  
जहा पुम्पादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ विराजमान थे वहा गये । वहा  
जाकर उन्होंने ने उनको वदना की—नमस्कार किया । वदना नमस्कार करके  
बाद में उन्होंने ने इस प्रकार प्रभु से कहा—( एव खलु देवाणुप्पिया !  
काली दारिया अम्ह धूया इट्ठा कता, जाव किमगपुणपासणयाण ! एस

( णिगच्छित्ता जेणेव असालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ )

नीकणीने ते त्या गये के जहा ते आम्रशाल वन नामे उद्यान छे  
त्या जधने तेले तीर्थंकर प्रकृतिना उदयथी अस्तित्वमा आवता छत्र वगेरे  
अतिशयोने जेया

( पासित्ता सीय ठावेइ, ठावित्ता कालियदारिय सीयाओ पच्चोरुइइ, तएण  
त कालिय दारिय अम्मापियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव  
उवागच्छइ उवागच्छित्ता वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी )

जेधने तेले ते पुरुष सहस्रवाहिनी पादणीने शङ्की शङ्कीने तेमाथी  
काली दारिकाने नीचे उतारी त्यारपत्री ते मातापिता ते कालीक दारिकाने  
आगण करीने जया पुरुषदानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ विराजमान छता त्या  
गया त्या जधने तेमले तेमने वदना करी, नमस्कार करी वदना तेमज नमस्कार  
करीने तेमले प्रभुने विनती करता आ प्रभावे कछु डे—

( एव खलु देवाणुप्पिया ! कालीदारिया अम्ह धूया इट्ठा कता, जाव किमग-

मानानेकविधादित्रवेण सह आमलकल्याया नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति,  
निर्गत्य यत्रैवाग्रशालवन चैत्य तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य उत्रादिकान् तीर्थकरानि

सवधिपरियणेण सद्धि सपरिवुढे सव्विड्ढीण जाव रवेण आमलकण  
नयरि मज्झ मज्झेण णिगच्छइ ) हे देवानुप्रिये ! तुझे जिस तरह अच्छा  
लगे वैसा तू कर-इस कार्य में प्रमाद न कर । इस तरह उस काल  
गाथापति ने अपनी पुत्री को दीक्षा ग्रहण करने में दृढ़ निश्चयवाली  
जानकर विपुल मात्रा में अशनादि रूप चतुर्विध आहार निष्पन्न कर  
घाया-घाद में मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, सघन्धी परिजनों को  
आमन्त्रित किया आमन्त्रित करके घाद में उसने स्नात होकर विपुल पुष्प,  
वस्त्र, गन्ध माल्य, गन्ध अलंकारों से सत्कार सम्मान करके उन मित्र,  
ज्ञाति, निजक, स्वजन, सघन्धी, परिजनों के साथ काली दारिका का  
श्वेत पीत कलशों द्वारा अभिषेक किया-घाद में उसे समस्त अलंकारों  
से विभूषित किया-फिर पुरुषसहस्रवाहिनी शिथिका पर उसे चढ़वाया ।  
चढ़वाकर फिर उन मित्र, ज्ञाति निजक, स्वजन सघन्धी परिजनों से  
घिरा हुआ होकर वह अपनी समस्त ऋद्धि के अनुसार, वाद्यमान  
अनेक विध बाजों की ध्वनि के साथ २ आमलकल्या नगरी के ठीक बीचों  
बीच से होकर निकला । ( णिगच्छिउत्ता जेजेव अवत्तालवणे चेइए

पुरिससहस्सवाहिणीय सीय दुरोहेइ, दुरोहिउत्ता मित्तणाइ, णियगसयणसवधि परियणेण  
सद्धि सपरिवुढे सव्विड्ढीण जाव रवेण आमलकण नयरि मज्झ मज्झेण णिगच्छइ )

हे देवानुप्रिये ! तने जेभ साइ लागे तेभ कर आ काममा प्रमाद  
करीश नहि आ प्रमाणे ते कालगाथापतिजे पोतानी पुत्रीने दीक्षा अडधु  
करवाने भळ्ळम विचार जालीने पुण्डण प्रमाणमा अशन वगेरे चार जतना  
आडावे तैयार करावडाव्या तयारमाद मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, सघन्धी  
परिजनोने आमन्त्रित क्यो आमन्त्रित करीने तेणे स्नात करीने पुण्डण पुष्प,  
वस्त्र, गन्ध, माल्य अने अलंकारे वडे सत्कार तेभज सम्मान करीने ते मित्र,  
ज्ञाति, निजक, स्वजन, सघन्धी, परिजनोनी साथे काली दारिको सहेइ, अने  
पीणा कणशे वडे अभिषेक क्यो तयारणाइ तेने समस्त अलंकारे वडे विलू  
षित करी अने तयारपणी पुरुष सहस्रवाहिनी पावणी उपर तेने थढावी  
थढावीने तेणे मित्र ज्ञाति, निजक, स्वजन सघन्धी, परिजनोनी साथे परि  
वेष्टित थधने पोतानी समस्त ऋद्धिनी साथे, धणु वाज्जओना ध्वनिनी साथे  
साथे आमलकल्या नगरीनी अराअर वच्चे थधने नीकल्ये ।

शयान् पश्यति, दृष्ट्वा शिविका स्थापयति, स्थापयित्वा कालिका दारिकां शिवि-  
कातः प्रत्यगरोहयति । ततः खलु ता कालिका दारिकाम् अम्मापितरो पुरतः  
कृत्वा यत्रैव पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य वन्देते नमस्यतः,  
वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमयादिष्टाम्—एव खलु हे देवानुग्रियाः । काली दारिका  
आवयोर्दुहिता इष्टा कान्ता यावत् उदुम्बरपुष्पमिव श्रवणायापि दुर्लभा किमद्ग ! पुनः

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उत्ताइए तित्थगराइसए पासइ ) निरु-  
लकर वह वहा गया कि जहा वह आम्रशालवन नाम का उद्यान था ।  
वहाँ जाकर उसने तीर्थकर प्रकृति के उदय से होनेवाले छात्रादिक अति-  
शयो को देखा । ( पासित्ता सीय ठावेइ, ठावित्ता कालियदारियं सीयाओ  
पच्चोरुहइ, तएण त कालीय दारिय अम्मापियरो पुरओ काउ जेणेव  
पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदइ, नमसइ,  
वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी ) देखकर उसने उस पुरुष सहस्रवाहिनी  
शिविका को खटी कर दिया । खड़ी करके उसमें से काली दारिका को  
नीचे उतारा बाद में वे माना पिता उस कालिक दारिका को आगे करके  
जहा पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ विराजमान थे वहाँ गये । वहा  
जाकर उन्होंने ने उनको वदना की—नमस्कार किया । वदना नमस्कार करके  
बाद में उन्होंने ने इस प्रकार प्रभु से कहा—( एव खलु देवाणुप्पिया !  
काली दारिया अम्ह धूया इट्ठा कता, जाव किमगपुणपासणयाण ! एस

( णिग्गच्छित्ता जेणेव असालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ )

नीक्षणीने ते त्या गथो के ज्जा ते आम्रशाल वन नामे उद्यान इतु  
त्या जेधने तेणे तीर्थं उर प्रकृतिना उदयथी अस्तित्वमा आवता छात्र वगेरे  
अतिशयोने ज्ञेया

( पासित्ता सीय ठावेइ, ठावित्ता कालियदारिय सीयाओ पच्चोरुहइ, तएणं  
त कालिय दारिय अम्मापियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव  
उवागच्छइ उवागच्छित्ता वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी )

जेधने तेणे ते पुरुष सहस्रवाहिनी पालणीने शङ्गी शङ्गीने तेमाथी  
काली दारिकाने नीचे उतारी त्थारथी ते मातापिता ते कालीक दारिकाने  
आगण करीने ज्जा पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ विराजमान इता त्या  
गया त्या जेधने तेमणे तेमने वदना करी, नमस्कार करी वदना तेमज नमस्कार  
करीने तेमणे प्रभुने विनती करता आ प्रभाणे कहु डे—

( एव खलु देवाणुप्पिया ! कालीदारिया अम्ह धूया इट्ठा कता, जाव किमग



‘પાસળયાણ’ દર્શનાય ? એવા સ્વલ્પ હે દેવાનુપ્રિયા ! સમારભયોદ્વિગ્ના ઇચ્છતિ દેવાનુપ્રિયાણામન્તિકે મુળ્હાભૂત્યા ચાત્તમ્વજિતુ, તદ્ એતા સ્વલ્પ દેવાનુપ્રિયાણા શિષ્યાભિક્ષા દશઃ, ‘પડિચ્છતુ’ પ્રતીચ્છન્તુ=સ્વીકૃન્તુ સ્વલ્પ હે દેવાનુપ્રિયા ! શિષ્યાભિક્ષામ્ । મગનાનાઠ-યયાસુત્વ હે દેવાનુપ્રિયો ! મા પ્રતિવન્ધ્યુરુત્તમ્ । તતઃ સ્વલ્પ કાલી કુમારી પાર્શ્વમર્દન્ત કદતે નમસ્યતિ, ચન્દિત્યા નમસ્યિત્યા ઉત્તરપૌરસ્ય

ળ દેવાણુપ્પિયા ! સસારમહાન્વિગ્ના, ઇચ્છહ, દેવાણુપ્પિયાળ ! અતિણ મુટા મવિત્તા જાવ પવ્વહત્તણ, ત ણ્ય ણ દેવાણુપ્પિયાળ સિસિસણિમિક્કલ્લ દલયામો પડિચ્છતુ ણ દેવાણુપ્પિયા ! સિસિસણિમિત્તર ) હે દેવાનુપ્રિય ! યહ હમારી કાલી દારિકા નામકી પુત્રી હૈ । યહ હમેં વહુત્ત અધિક ઇષ્ટા, કાન્તા યાવત્ ઉદમ્મર પુપ્પ કે સમાન સુનને કે લિયે મી દુર્લભા હૈ-તો ફિર હે અગ ! હસકે દર્શન કી તો વાન હી વયા કહના હૈ । હે દેવાનુ પ્રિય ! યહ સમારભય સે ઉદ્વિગ્ન હો રહી હૈ અતઃ આપ દેવાનુપ્રિય કે પાસ મુહિત હોકર યાવત્ સયમ લેના ચાહની હૈ । હસ લિયે હમ દોનોં આપકે લિયે શિષ્યા કી ભિક્ષા દે રહે હૈ-આપ દેવાનુપ્રિય ! હમારી હસ શિષ્યારૂપ ભિક્ષા કો સ્વીકાર કરે ( અહાસુહ દેવાણુપ્પિયા ! મા પડિવધ કરેહ ) હસ પ્રકાર ઊન દોનોં કા કથન સુનકર પ્રમુ ને ઊનસે કહા હૈ દેવાનુપ્રિયો ! આપ કો જૈમા સુખ હો-વૈસા આપ કરો-હસમેં વિલમ્બ કરને સે લાભ નહીં હૈ । ( તણ ) હસકે વાદ ( કાલી કુમારી પાસ

પુળ પાસળયાણ ? એમણ દેવાણુપ્પિયા ! સમારભયોદ્વિગ્ના, ઇચ્છહ, દેવાણુપ્પિયાળ ! અતિણ મુટા મવિત્તા જાવ પવ્વહત્તણ, ત ણ્ય ણ દેવાણુપ્પિયાળ સિસિસણિ મિક્કલ્લ દલયામો પડિચ્છતુ ણ દેવાણુપ્પિયા ! સિસિસણિમિક્કલ્લ )

હે દેવાનુપ્રિય ! આ અમારી કાલી દારિકા નામે પુત્રી છે અમારા માટે આ બહુ જ વધારે ઈષ્ટા, કાતા યાવત્ ઉદમ્મર પુપ્પની જેમ નામ શ્રવણમા પશુ દુર્લભા છે તો પછી એના દર્શનની તો વાત જ શી કરવી ? હે દેવા નુપ્રિય ! આ સમાર ભયથી ઉદ્વિગ્ન થઈ રહી છે એથી આપ દેવાનુપ્રિય પાસેથી મુહિત થઈને યાવત્ સયમ શ્રદ્ધા કરવા ઇચ્છે છે એથી અમે બને આપના માટે આશિષ્યાની ભીક્ષા અર્પણ કરીએ છીએ આપ દેવાનુપ્રિય અમારી આ શિષ્યારૂપી ભિક્ષાનો સ્વીકાર કરો ( અહાસુહ દેવાણુપ્પિયા ! મા પડિવધ કરેહ ) આ પ્રમાણે તેઓ બંનેનું કથન સાંભળીને પ્રભુએ તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમને જેમ સુખ પ્રાપ્ત થાય તેમ કરો આમા વિલંબ કરવાથી લાભ નથી ( તણ ) ત્યારપછી

दिग्भागम् अग्रकामति, अग्रकाम्य स्वयमेव=स्वहस्तेनैव आभरणमाल्यालङ्कारम्  
अग्रमुञ्चति=अग्रतारयति, अग्रमुच्य स्वयमेव=स्वहस्तेनैव लोच=केशलुञ्चन करोति,  
कृत्वा यत्रैव पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पार्श्वमर्हन्त त्रिः  
कृत्वो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्-आदीप्तः खलु हे भद  
न्त ! लोके एवम्=अनेन प्रकारेण यावत्-एषाऽपि स्वयमेव पार्श्वप्रभुणा प्रव्राजिता ।

अरह वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता, उत्तरपुरत्थिम दिसिभागं  
अग्रकमट, अग्रकमिता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ,  
ओमुइत्ता, सयमेव लोच करेइ, करित्ता जेणेव पासे अरिहा पुरिसादा-  
णीए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पास अरह तिरुत्तो वदइ,  
नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी ) काली कुमारी ने पार्श्वनाथ  
अरिह त प्रभु को वदना एव नमस्कार किया-। वदना नमस्कार करके  
फिर वह उत्तर पौरस्त्य दिग्भाग ईशान कोण की ओर गई। वहा जाकर  
उसने अपने आप आभरण माल्य एव अलकारों को उतार दिया।  
उतार कर अपने हाथों से उसने वालो का लुचन किया-लुचन करके  
फिर वह जहां पुरुषादानीय पार्श्वनाथ प्रभु विराजमान थे वहां आई-  
वहां आकर उसने पार्श्वनाथ अर्हत को तीनवार वदन एव नमस्कार  
किया और वदना नमस्कार कर फिर वह उनसे इस प्रकार कहने लगी  
-( आलिच्छेण भते ! लोए एव जहा देवाणदा जाव सयमेव पञ्चाविया-

( काली कुमारी पास अरह वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता, उत्तरपुरत्थिम  
दिसिभाग अग्रकमट, अग्रकमिता, सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ, ओमुइत्ता  
सयमेव लोच करेइ, करित्ता जेणेव पासे अरिहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ,  
उवागच्छित्ता पास अरह तिरुत्तो वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी )

काली कुमारीने पार्श्वनाथ अरिह त प्रभुने वदना अने नमस्कार कया  
वदना अने नमस्कार करीने ते उत्तर पौरस्त्य दिग्भाग ईशान कोण की तरफ  
गई, तथा जहने तेले पोतानी भेजे ज आभरण, माल्य अने अलकारोने  
उतारयो उतारीने पोताना हाथो वडे ज तेले वाणोनु लुचन कयुं लुचन करीने  
ते जया पुरुषादानीय पार्श्वनाथ प्रभु विराजमान छता तथा आवी तथा आवीने  
तेले पार्श्वनाथ अर्हतने त्रय वार वदन अने नमस्कार कया वदना अने  
नमस्कार करीने ते तेभने आ प्रभाणे विनती करवा लागी के-

( आलिच्छेण भते ! लोए एव जहा देवाणदा जाव सयमेव पञ्चाविया-तएण

ततः खलु पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयः काली स्वयमेव पुष्पचूलायै आर्यायै शिष्यात्वेन ददाति । ततः खलु सा पुष्पचूला आर्या काली दारिका स्वयमेव प्रव्रजयति यावत्-सा काली तदागाम उपसम्पद्य स्रष्टु विहरति । ततः सा काली-आर्या जाता, कीदृशी ? त्याह-ईर्याममिता यावत्-गुप्तव्रजचारिणी । तत खलु सा काली अर्या पुष्पचूलाया आर्याया अन्तिके सामायिमादीनि एकादशाङ्गानि अवीते,

तण्णं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुष्पचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तण्ण मा पुष्पचूला अज्जा कालिं दारिय सयमेव पव्वावेइ-जाव उवसपजित्ताण विहरइ ) हे भदत्त ! यह लोक आदीप्त हो रहा है-इस प्रकार से पार्श्वनाथ प्रभु के द्वारा स्वय ही दीक्षित की गई । इसके बाद उन पुरुषादानीय पार्श्व प्रभु ने काली को दीक्षित करके पुष्पचूला आर्या को शिष्याणीरूप से प्रदान कर दिया । पुष्पचूला आर्या ने उसे काली को इस प्रकार दीक्षित करवा कर अपनी शिष्याणीरूप में उसे स्वीकार कर लिया-यावत् वह काली उस आर्या की आज्ञानुसार अपनी प्रवृत्ति करने लग गई । ( तण्ण सा काली अज्जा जाव ) इस तरह वह काली अब आर्या हो गई । ( ईरिया समिया जाव गुत्तवभयारिणी तण्णं सा काली अज्जा पुष्पचूलाए अज्जाए अतिए

पासे अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुष्पचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तण्ण सा पुष्पचूला अज्जा कालिं दारिय सयमेव पव्वावेइ-जाव उवसपजित्ताण विहरइ )

हे भदन्त ! आ लोक आदीप्त थर्ह रह्यो छे आ प्रभाणु आ पथु पार्श्वनाथ प्रभु वडे जते ज दीक्षित करवाभा आवी त्थारपछी ते पुरुषादानीय पार्श्व प्रभुओ कालीने दीक्षित करीने पुष्पचूला आर्याने शिष्याना इपमा आवी दीधी पुष्पचूला आर्याओ ते कालीने आ प्रभाणु दीक्षित करावीने पोतानी शिष्याना इपमा तेने स्वीड र डरी लाधे यावत् ते काली ते आर्यानी आज्ञा मुअअ पोतानी प्रवृत्ति करवा लागी ( तण्ण सा काली अज्जा जाव ) आ रीते ते काली डवे आर्या थर्ह गछ

( ईरिया समिया जाव गुत्तवभयारिणी, तण्ण सा काली अज्जा पुष्पचूलाए अज्जाए अतिए समाइयमाइयाइ एक्कासअगाइ अहिज्जइ, वहूर्हि पड विहरइ )

वहूभिः चतुर्थं यावत्-पष्ठाष्टमदशमद्वादशभिस्तपःकर्मभिरात्मानं भावयन्ती  
विहरति ॥ सू० ३ ॥

मूलम्-तएणं सा काली अज्जा अन्नया कयाइं सरीरवाउ-  
सिया जाया यावि होत्था, अभिक्खणं२ हत्थे धोवइ पाए धोवइ  
सीसं धोवइ मुहं धोवइ थणत्तराइं धोवइ कक्खं तराणि धोवइ  
गुज्झंत्तराइं धोवइ जत्थ२ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा णिसी-  
हियं वा चेइए त पुव्वामेव अवभुक्खेत्ता तओ पच्छा आसयइ  
वा सयइ वा, णिसीहइ वा, तएणं सा पुप्फचूला अज्ज कालि  
अज्जं एव वयासी-नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया । समणीणं णिग्गं  
थीणं सरीरवाउसियाण होत्तए तुमं च णं देवाणुप्पिया । सरी-  
रवाउसिया जाया अभिक्खणं२ हत्थे धोवसि जाव आसयाहि  
वा सयाहि वा णिसीहियाहि वा त तुमं देवाणुप्पिए । एयस्स  
ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्त पडिवज्जाहि, तएणं सा काली

सामाहयमाहयाह एक्कारसअगाइ अहिज्जइ, वहूहिं चउत्थ जाव विह-  
रइ) उसका रहन शयन आदि सब व्यवहार नियमित एवं सीमित हो  
गया । चलती तो वह ईर्ष्या समिति से मार्ग का संशोधन कर चलती ।  
यावत् वह शुभ ब्रह्मचरिणी बन गई । ९ नौ कोटी से ब्रह्मचर्यव्रत की  
सरक्षिका हो गई । इसके बाद उस काली आर्या ने पुष्पचूला आर्या के  
पास सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अध्ययन किया-और अनेक  
चतुर्थ, पष्ठ, अष्टम दशम, द्वादश, तपस्याओं की आराधना से अपने  
आपको भावित किया ॥ सूत्र ३ ॥

तेनु रहेवुं, सधु वगेरे णधु काम नियमित अने सीमित थय गधु  
-यावती त्यारे ते धर्मा-समितिथी मार्गंनु संशोधन करीने यावती यावत् ते  
शुभ ब्रह्मचारिणी भनी गधु ९ कोटिथी ब्रह्मचर्य व्रतनी ते सरक्षिका थय  
गधु त्यारपछी ते काली आर्याये पुष्पचूला आर्या । पास सामायिक वगेरे  
अगियार अंगोनु अध्ययन कयुं अने धरुा चतुर्थ, पष्ठ, अष्टम, दशम,  
द्वादश तपस्याओंनी आराधनाथी पोतानी जतने भावित करी ॥ सूत्र ३ ॥

अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्टु नो आढाइ जाव तुसिणीया  
संचिट्ठइ, तएणं ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्जंअभि-  
क्खणं२ हीलेंति णिदंति खिसंति गरिहंति अवमण्णंति अभि-  
क्खणं२ एयमट्टु निवारेंति, तएणं तीसे कालीए अज्जाए सम-  
णीहिं णिग्गंथीहिं अभिक्खणं२ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्ज-  
माणिए इमेयारूवे अज्झात्थिए जाव समुप्पज्जितथा जया-  
णं अह अगारवासमज्जे वसितथा तया णं अह सयवसा जप्पि-  
भिइं च णं अह मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया  
तप्पभिइं च णं अहं परवसा जाया, त सेयं खलु मम कल्लं  
पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलते पाडिक्का उवस्सय उवसप-  
ज्जित्ताणं विहरित्तएत्तिकट्टु एवसपेहेइ सपेहित्ता कल्ल जाव जलते  
पाडिक्कं उवस्सयं गिण्हइ, तत्थ णं सा अणिवारिया अणोहट्ठिया  
सच्छदमई अभिक्खणं२ हत्थे धोवइ जाव आसयइ वा सयइ वा,  
णीसेहेइ वा, तएण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी  
ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहाल्लदा अहा-  
ल्लदविहारी संसत्ता ससत्तविहारी बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं  
पाउणइ पाउणित्ता अद्धमसियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ झूसित्ता  
तीसंभत्ताइ अणसणाए छेएइ छेइत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय  
अपाडिक्कता कालमासे काल किच्चा चमरचपाए रायहाणीए कालव-  
डिंसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसतरिए अगुल-  
स्स असखेज्जइ भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीं १ १ वण्णा,



तएणं सा कालीदेवी आहुणोववण्णा समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए  
जहा सूरियाभो जाव भासामण पज्जत्तीए० । तएणं सा काली-  
देवी चउण्हं सामाणियसाहस्तीण जाव अण्णोसि च वहुणं काल-  
वेडेसगभवणवासिण असुरकुमाराण देवाण य देवीण य आहेवच्च  
जाव विहरइ, एवं खलु गोयमा । कालीए देवीए सा दिव्वा  
देविड्डी३ लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया, कालीए णं भते । देवीए  
केवइय काल ठिई पन्नत्ता १, गोयमा । अड्डाइज्जाइ पलिओवमाई  
ठिई पन्नत्ता, काली णं भते । देवी ताओ देवलोगाओ अणंतर  
उव्वट्ठित्ता कहि गच्छिहिइ कहि उव्वज्जिहिइ १, गोयमा । महा-  
विदेहे वासे सिज्झिहिइ, एव खलु जवू । समणेणं जाव संपत्तेणं  
पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिव्वेमि ।  
धम्मकहाणं पढमज्झयणं समत्त ॥ सू० ४ ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि—ततः खलु सा काली आर्या अन्यदा कदा-  
चित् ‘सरीरवाउसिया’ शरीरा वाक्कुशिका=शरीरसस्करणशीला जाता चाप्या-  
सीत् । अथ सा किं करोती ? त्याह—अभीक्षण२ वारवार हस्तौ धावति, पादौ धावति,

‘तएण सा काली अज्जा अन्नया कयाइ,’ इत्यादि ।

टीकार्थ — (तएण) इसके बाद (सा काली अज्जा) वह काली  
आर्या (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (सरीरवाउसिया) शरीर को  
सस्कारित करने के स्वभाववाली बन गई इसलिये वह (अभिक्खण २

‘तएण सा काली अज्जा अन्नया कयाइ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्या२५छी (सा काली अज्जा) ते काली आर्या  
(अन्नया कयाइ) के०४ अ०३ वण्णते (सरीरवाउसिया) शरीरने सस्कारित  
करवाना स्वभाववाणी णनी ग०४, अ०२६ भाटे ते—

(अभिक्खण२ हाथे धोवइ, पाए धोवइ सीस धोवइ, मुह धोवइ, थणतराइ धोवइ,

अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्टं नो आढाइ जाव तुसिणीया  
संचिट्टइ, तएण ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्जंअभि-  
क्खणं२ हीलेंति णिंदंति खिसंति गरिहंति अवमण्णंति अभि-  
क्खण२ एयमट्टु निवारेंति, तएणं तीसे कालीए अज्जाए सम  
णीहिं णिग्गंथीहिं अभिक्खणं२ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्ज  
माणिए इमेयारूवे अज्झातिए जाव समुप्पज्जितथा जया  
णं अहं अगारवासमज्झे वसितथा तया णं अहं सयवसा जप्पि-  
भिइं च णं अह मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया  
तप्पभिइं च णं अह परवसा जाया, त सेय खलु मम कल्ल  
पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलते पाडिक्का उवस्सय उवसंप-  
ज्जित्ताणं विहरित्तएत्तिकट्टु एवं सपेहेइ सपेहित्ता कल्ल जाव जलते  
पाडिएक्क उवस्सयं गिण्हइ, तत्थ णं सा अणिवारिया अणोहट्टिया  
सच्छदमई अभिक्खणं२ हत्थे धोवइ जाव आसयइ वा सयइ वा,  
णीसेहेइ वा, तएण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी  
ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहाछदा अहा-  
छंदविहारी संसत्ता ससत्तविहारी बहूणि वासाणि सामन्नपरियार्गं  
पाउणइ पाउणित्ता अद्धमसियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ झूसित्ता  
तीसंभत्ताइ अणसणाए छेएइ छेइत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय  
अपाडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरचपाए रायहाणीए कालव-  
डिसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसतरिए अगुल-  
स्स असखेज्जइ भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदे ि च उववण्णा,

નિર્ગ્રન્થીના શરીરવાકુશિકા જાતાડસિ, યતસ્ત્વમ્-અભીક્ષ્ણ ૨ હન્તૌ ધાવસિ  
યાવત્ ' આસયાહિ વા ' આસ્તે=ઉપવિગમિ, ' સયાહિ વા ' શેષે=શયનં કરોપિ  
' ણીમીહિયાહિ વા ' નિષેપયસિ=સ્વાધ્યાય કરોપિ, ' ત ' તત્=તસ્માત્ કાર-  
ણાત્ ત્વ હે દેવાનુપ્રિયે ! એતત્ સ્થાનમ્-' આલોએહિ ' આલોચય યાવત્ પ્રાય-  
શ્ચિત્ત પ્રતિપદ્યસ્વ । મૂલે-સમ્વન્ધમામાન્યે પૃષ્ઠી । તતઃ સ્વલુ સા કાલી આર્યા

દેવાણુપ્પિયા ! સમળી ણ ણિગ્ગથીણ સરીરવાડસિયાણં હોત્તણ-તુમ ચ  
ણ દેવાણુપ્પિયા ! સરીરવાડસિયા જાયા-અભિક્ષ્ણં ૨ હત્થે ધોવસિ,  
જાવ આસયાહિ વા સયાહિ વા ણિસીહિયાહિ વા ત તુમં દેવાણુપ્પિયાણ !  
એયસ્સ ઠાણસ્સ આલોએહિ જાવ પાયચ્છિત્તં પહિવજ્જાહિ ) હે દેવાનુપ્રિયે !  
નિર્ગ્રન્થ શ્રમણિયોં કો શરીરવકુશ હોના કલ્પિત નહીં હૈં । પરન્તુ તુમ  
તો હે દેવાનુપ્રિયે ! શરીરવકુશ ચન રહી હો । વાર ૨ હાથો કો ધોતી હો  
યાવત્ જહાં તુમ્હેં ઉઠના બેઠના હોતા હૈ, શયન કરના હોતા હૈ, સ્વાધ્યાય  
કરના હોતા હૈ ઉસ સ્થાન કો પહિલે સે હી સિંચિત કર લેતી હો તન  
જાકર વહાં ઉઠતી બેઠતી હો, શયન કરતી હો, સ્વાધ્યાય કરતી  
હો । હસલિયે હે દેવાનુપ્રિયે ! તુમ હસ સ્થાન કી આલોચના કરો યાવત્  
પ્રાયશ્ચિત્ત ગ્રહણ કરો । ( તણ સા કાલી અજ્જા પુપ્ફચૂલાણ અજ્જાણ  
એયમદ્ધ નો આઢાહ, જાવ તુસિણીયા સચ્ચિદ્દહ, તણ્ણ તાઓ પુપ્ફચૂલાઓ

( નો સ્વલુ કપ્પહ, દેવાણુપ્પિયા ! સમળીણ ણિગ્ગથીણ સરીરવાડસિયાણં  
હોત્તણ-તુમ ચ ણ દેવાણુપ્પિયા ! સરીર વાડસિયા જાયા અભિક્ષ્ણ ૨ હત્થે ધોવસિ,  
જાવ આસયાહિ વા સયાહિ વા, ણિસીહિયાહિ વા ત તુમ દેવાણુપ્પિયાણ ! એયસ્સ  
ઠાણસ્સ આલોએ હિ જાવ પાયચ્છિત્ત પહિવજ્જાહિ )

હે દેવાનુપ્રિયે ! નિર્ગ્રન્થ શ્રમણીએને શરીરવકુશ થલુ કલ્પિત નથી,  
પરંતુ તમે તો હે દેવાનુપ્રિયે ! શરીરવકુશ થઈ રહી છો વારવાર હાથોને  
ધૂએ છો યાવત્ જ્યા તમારે ઉઠવા બેસવાનું હોય છે, સ્વાપન હોય છે,  
સ્વાધ્યાય કરવો હોય છે તે સ્થાનને પહેલા તમે પાણીથી સિંચિત કરી લો છો,  
અને ત્યારપછી તમે ત્યાં ઉઠો-બેસો છો, સૂવો છો અને સ્વાધ્યાય કરો છો  
એથી હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે આ સ્થાનની આલોચના કરો યાવત્ પ્રાયશ્ચિત્ત ગ્રહણ કરો

( તણ સા કાલી અજ્જા પુપ્ફચૂલાણ અજ્જાણ એયમદ્ધ નો આઢાહ જાવ  
તુસિણીયા સચ્ચિદ્દહ, તણ તાઓ પુપ્ફચૂલાઓ અજ્જાઓ કાલિં અજ્જ અભિ-

शीर्षं धावति, मुखं धावति स्तनान्तराणि धावति, कक्षान्तराणि धावति, गुह्या-  
न्तराणि धावति, यत्र यत्रापि च खलु 'टाणं वा' स्थानम्=उपवेशनस्थलम्  
'सेज्जं वा' शय्या=शयनभूमिम्, 'णिसीहियं वा' निपेधिका=स्वाध्यायभूमिम्  
'चेण्ह' चेतयते=करोति 'त' तत्=स्थानादिक 'पु-गामेव' पूर्वमेव=उपवेश-  
नादि क्रियाया पूर्वं 'आसयइ वा' आस्ते=उपविशति, 'सयइ वा' शेते=  
शयनं करोति, 'णिसीहइ वा' निपेधयति=स्वाध्याय करोति वा । ततः खलु सा  
पुष्पचूलाऽऽर्या कालीमार्यामेवमवादीत्-नो खलु कल्पते हे देवाणुमिये । भ्रमणीनां

हृत्वे धोवइ पाण धोवइ, सीम धोवइ मुहं धोवइ थणत्तराह धोवइ,  
कक्खत्तराणि धोवइ, गुज्झत्तराह धोवइ, जत्थरं वि य ण टाणं वा सेज्जं  
वा णिसीहियं वा चेण्ह-त पुव्वामेव अब्भुक्खेत्ता तओपच्छा आसयइ,  
वा सयइ वा णिसीहइ वा) धारं २ हायों को धोने लग गई, पैरों को धोने  
लग गई, शिर को धोने लग गई, मुँह को धोने लग गई, स्तनान्तरों  
को-स्तनों के मध्यभाग को-धोने लग गई, कक्षान्तरों को-काखों के  
मध्यभाग को-धोने लग गई, गुह्यभागों को-गुह्यागों को धोने लग गई ।  
जहाँ २ वह बैठने का स्थान, शयन, स्थान, स्वाध्याय करने का स्थान  
नियत करती उसे पहिले से ही वह पानी से सिंचित कर देती-बाद में  
वह वहाँ बैठती शयन करती, स्वाध्याय करती, (तण्ण सा पुष्पचूला  
अज्जा कालिं अज्ज एव वयासी) उस काली आर्या की इस स्थिति को  
देखकर पुष्पचूला आर्या ने उसे इस प्रकार कहा-(नो खलु कप्पइ,

कक्खत्तराणी धोवइ, गुज्झत्तराह धोवइ, जत्थरं वि य ण टाणं वा सेज्जं वा णिसी-  
हियं वा चेण्ह त पुव्वामेव अब्भुक्खेत्ता तओपच्छा आसयइ, वा सयइ वा णिसीहइ वा)

बारबार डोहने धोवा लागी, पगोने धोवा लागी, माथाने धोवा लागी,  
मुणने धोवा लागी, स्तनान्तरने-स्तनना वरयेना स्थानने धोवा लागी, कक्षा-  
तरेने-मगलोना मध्य लागने धोवा लागी, गुह्य लागोने-गुह्यागोने धोवा  
लागी न्या न्या तेने जेसवानु स्थान, शयनस्थान, स्वाध्याय करवानु स्थान  
नक्की करती तो तेने पडेवेथी न ते पाण्णीथी सिंचित करी देती, त्थारपछी ते  
त्था जेसती, शयन करती, स्वाध्याय करती (तण्ण सा पुष्पचूला अज्जा कालिं  
अज्ज एव वयासी) ते काली आर्यानी आवी स्थिति जेधने पुष्पचूला आर्याने  
तेने आ प्रभाणुं कहुं के-

નિર્ગન્થીના શરીરવાકુશિકા જાતાડસિ, યતસ્ત્રમ્-અભીક્ષ્ણં ૨ હસ્તૌ ધાવસિ  
યાવત્ ' આસયાહિ વા ' આસ્સે=ઉપવિશસિ, ' સયાહિ વા ' શેષે=શયન કરોપિ  
' ણીસીહિયાહિ વા ' નિષેધયસિ=સ્વાધ્યાય કરોપિ, ' ત ' તત્=તસ્માત્ કાર-  
ણાત્ ત્વ હે દેવાનુપ્રિયે ! એતત્ સ્થાનમ્-' ,આલોએહિ ' આલોચય યાવત્ પ્રાય-  
શ્ચિત્ત પ્રતિપદ્યસ્વ । મૂલે-સમ્બન્ધમામાન્યે પઢી । તતઃ સ્વલુ સા કાલી આર્યા

દેવાણુપ્પિયા ! સમણી ણ ણિગ્ગયીણ સરીરવાડસિયાણ હોત્તણ-તુમ ચ  
ણ દેવાણુપ્પિયા ! સરીરવાડસિયા જાયા-અભિક્કલ્લણં ૨ હત્થે ધોવસિ,  
જાવ આસયાહિ વા સયાહિ વા ણિસીહિયાહિ વા ત તુમ દેવાણુપ્પિયાણ !  
એયસ્સ ઠાણસ્સ આલોએહિ જાવ પાયચ્છિત્તં પહિવજ્જાહિ ) હે દેવાનુપ્રિયે !  
નિર્ગન્થ શ્રમણિયોં કો શરીરવકુશ હોના કલ્પિત નહીં હૈં । પરન્તુ તુમ  
તો હે દેવાનુપ્રિયે ! શરીરવકુશ થન રહી હો । વાર ૨ હાથો કો ધોતી હો  
યાવત્ જહા તુમ્હે ઉઠના બેઠના હોતા હૈ, શયન કરના હોતા હૈ, સ્વાધ્યાય  
કરના હોતા હૈ ઉસ સ્થાન કો પહિલે સે હી સિંચિત કર લેતી હો ત્વ  
જાકર વર્હા ઉઠતી બેઠતી હો, શયન કરતી હો, સ્વાધ્યાય કરતી  
હો । હસલિયે હે દેવાનુપ્રિયે ! તુમ હસ સ્થાન કી આલોચના કરો યાવત્  
પ્રાયશ્ચિત્ત ગ્રહણ કરો । ( તણ સા કાલી અજ્જા પુપ્ફચૂલાણ અજ્જાણ  
એયમટ્ટ નો આઢાહ, જાવ તુસિણીયા સંચિટ્ટહ, તણ તાઓ પુપ્ફચૂલાઓ

( નો સ્વલુ કપ્પહ, દેવાણુપ્પિયા ! સમણીણ ણિગ્ગયીણ સરીરવાડસિયાણ  
હોત્તણ-તુમ ચ ણ દેવાણુપ્પિયા ! સરીર વાડસિયા જાયા અભિક્કલ્લણ ૨ હથે ધોવસિ,  
જાવ આસયાહિ વા સયાહિ વા, ણિસીહિયાહિ વા ત તુમ દેવાણુપ્પિયાણ ! એયસ્સ  
ઠાણસ્સ આલોએ હિ જાવ પાયચ્છિત્ત પહિવજ્જાહિ )

હે દેવાનુપ્રિયે ! નિર્ગન્થ શ્રમણીઓને શરીરવકુશ થવું કલ્પિત નથી,  
પરંતુ તમે તો હે દેવાનુપ્રિયે ! શરીરવકુશ થઈ રહી છો । વારવાર હાથોને  
ધૂઓ છો યાવત્ જ્યા તમારે ઉઠવા બેસવાનું હોય છે, સૂવાનું હોય છે,  
સ્વાધ્યાય કરવો હોય છે તે સ્થાનને પહેલા તમે પાણીથી સિંચિત કરી લો છો,  
અને ત્યારપછી તમે ત્યાં ઉઠો-બેસો છો, સૂવો છો અને સ્વાધ્યાય કરો છો  
એથી હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે આ સ્થાનની આલોચના કરો યાવત્ પ્રાયશ્ચિત્ત ગ્રહણ કરો

( તણ સા કાલી અજ્જા પુપ્ફચૂલાણ અજ્જાણ એયમટ્ટ નો આઢાહ જાવ  
તસિણીયા સંચિટ્ટહ, તણ તાઓ પુપ્ફચૂલાઓ અજ્જાઓ કાલિં અલ્લ અભિ



पुष्पचूलाया आर्याया एतमर्थं 'नो आढाइ' नो आद्रियते=न मन्यते यावत्  
'तुसिगौया' हूणीका=समौना सतिष्ठते । ततः खलु ताः पुष्पचूला आर्याः  
कालीमार्याय् 'अभिक्षण २' अभीक्षण २=वार वार 'हीलेंति' रिन्मिति=जन्मकर्मो-  
द्घाटनपूर्वक निर्भर्त्सन्ति गिदति' निन्दन्ति=कुत्सितशब्दपूर्वक दोषोद्घाटनेन अना-  
द्रियन्ते, 'खिसति' खिसन्ति=हस्तमुखादित्रिकारपूर्वकमपमन्यन्ते, अपमान कुर्वन्ती  
त्यर्थः 'गरिहति' गर्हन्ते=गुर्यादिममक्ष दोषात्रिकारणपूर्वक तिरस्कुर्वन्ति, 'अवमण-  
ति' अवमन्वन्ते=रुक्षवचनादिभिरपमान कुर्वन्ति, तथा-अभीक्षणमभीक्षणम् वारवार  
एतमर्थं=शरीरसस्करणरूप निवारयन्ति । ततः खलु तस्याः काल्या आर्यायाः भम

अज्जाओ कालिं अज्ज अभिक्षण २ हीलेंति, गिदति, खिसति, गरि-  
हति अवमणति, अभिक्षण २ एयमद्व निवारेंति, तण्णं तासे कालीए  
अज्जाए समणीहिं गिगथीहिं अभिक्षण २ हीलिज्जमाणीए जाव  
वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था ) उस काली  
आर्याने पुष्पचूला आर्याके इस कथन रूप अर्थको नहीं माना । केवल वह  
यावत् चुपचाप ही रही । उत्तरमें जब उसने उनसे कुछ नहीं कहा-तब उस  
पुष्पचूला आर्या 'हीलति' काली आर्याकी वार २ जन्मकर्म उद्घाटन पूर्वक  
भर्त्सना (तिरस्कार) करना प्रारम्भ कर दिया । 'निदति' कुत्सित शब्दोच्चारण  
पूर्वक दोषोद्घाटन करते हुए वे उसकी वार २ निंदा करने लगीं ।  
'खिसति' हस्त, मुख, आदि के विकार प्रदर्शन पूर्वक वे उसका  
अपमान करने लग गई । 'गरिहति' गुरु आदिजनों के समक्ष दोषों  
को प्रकट करके वे उसका तिरस्कार करने लगी । तथा "अवमणति"  
रुक्षवचन आदि बोल २ कर उसका अपमान भी करने लग गई ।

कल्लण २ हीलेंति गिदति, खिसति, गरिहति अवमणति, अभिक्षण २ एय  
मद्व निवारेंति, तण्णं तासे कालीए अज्जाए समणीहिं गिगथीहिं अभिक्षण २  
हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए ज व समुप्पजित्था )

ते काली आर्याओ पुष्पचूला आर्याना आ कथन उप अर्थनो स्वीकार  
कथो नडि इत्त ते भूगी थधने न ऐसी रडी नवाणमा नवारे तेणु तेमने  
कध न कधु नडि त्तारे पुष्पचूला आर्याओ काली आर्यानी वारवार जन्म,  
कर्म, उद्घाटनपूर्वक भर्त्सना करवा भाडी कुत्सित शब्दोच्चारणयुती दोषोद्घाटन  
करती ते तेनी वारवार निंदा करवा लागी छाय, सुअ वगेरेने विदुत करीने  
ते तेमनु अपमान करवा लागी शुइ वगेरेनी सामे दोषाने प्रकट करीने ते  
तेमनो तिरस्कार करवा लागी तेमन इक्ष वचनो वगेरे कालीने तेनु अप-  
मान पणु करवा लागी अने साथे साथे ते आर्या तेने वारवार शरीर-सस्कार  
करवानी मनार्थ पणु करती रडी आ प्रमाणे निर्धाय अभिप्रायो वडे वारवार

શીમિઃ નિર્ગ્રન્થીમિઃ અમીક્ષમમીક્ષણ દિશ્યમાનાયાઃ યાવત્-વાર્યમાણાયા અય-  
મેતદ્દૂષ 'અજ્ઞતિથિષ્' આધ્યાત્મિકઃ=આત્મગતવિચારઃ યાવત્-મનોગતઃ સકલ્પઃ  
સમુદપયત યદા સ્વલુ અહમ્ અગારવાસમખ્યે 'વસિત્થા' ઉપિદ્વા=ન્યવસ તદા સ્વલુ  
અહ 'સયવસા' સ્વયંવશા=સ્વતન્ત્રા આસમ્, લક્ષ્મણમૃતિ ચ સ્વલુ અહ મુણ્ડાભૂત્વા  
અગારાત્ અનગારિતાં પ્રવ્રજિતાઽભવ તત્પ્રમૃતિ ચ સ્વલુ અહ પરવશા જાતાઽસ્મિ  
'ત' તત્=તસ્માત્ શ્રેયઃ સ્વલુ મમ કલ્પે પ્રાદુષ્યમાતાયાં રજન્યા યાવત્ સૂર્યે જ્વ-  
લતિ=સૂર્યોદયે સતિ 'પાઢિક' પ્રત્યેકમ્=એકમાત્ર મિનમિત્યર્થઃ, ઉપાશ્રયમુપમં-  
પય સ્વલુ વિહર્તુમ્, 'તિક્કદ્દુ' ઇતિ કૃત્વા=ઇતિ મનસિ નિયાય એવ સમ્પ્રેક્ષતે,

સાથ ૨ મેં વે આર્યા ઉસે ઘાર ૨ શરીર સસ્કાર કરને સે મના મી  
કરતી રહી । હસ પ્રકાર ઉસ કાલી આર્યા કે નિર્ગ્રન્થ શ્રમણિયોં દ્વારા  
ઘાર ૨ ભર્તિસિત આદિ હોને પર તથા શરીર સસ્કાર કરને સે નિપિલ્લ હોને  
પર, હસે યહ હસ પ્રકાર કા આ યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ ઉત્પન્ન  
હુઆ । (જયા ણં અહ અગારવાસમજ્ઞે વસિત્થા તયા ણ અહ સયવસા,  
જપ્પિમિહ ચ ણ અહ મુહા મવિત્તા અગારાઓ, અણગારિય પવ્વહયા  
તપ્પમિહ ચ ણ અહ પરવસા જાયા, ત સેયં સ્વલુ મમ કલ્લ પાઉપ્પમાયાણ  
રયણીણ જાવ જલતે પાઢિકકાઠવસ્સય ઉવસપજ્જિત્તા ણ વિહરિત્તણ  
ત્તિક્કદ્દુ એવ સપહેહ સપેહિત્તા કરલં જાવ જલતે પાઢિએવક ઉવસ્સય  
ગિણ્હ ) જબ મેં અપને ઘર કે બીચ મેં રહતી થી-હસ સમય મેં સ્વતન્ત્ર  
થી । પરન્તુ જિસ દિન સે મુહિત્ત હોકર અગાર અવસ્થા સે હસ અનગાર  
અવસ્થા મેં આઈ હું હસ દિન સે મેં પરવશ-પરાધીન બન જુકી હું । અતઃ  
મુજ્ઞે વહી શ્રેયસ્કર હૈ કિ મેં દૂસરે દિન પ્રાત કાલ હોતે હી જબ સૂર્યો

ભર્તિસિત વગેરે થવાથી તેમજ શરીર સસ્કારની મનાઇ હોવા બદલ તે કાલી  
આર્યાને આ બતાવે । આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે—

(જયાણં અહ અગારવાસમજ્ઞે વસિત્થા તયા ણ અહ સયવસા જપ્પમિહ  
ચ ણ અહ મુહા મવિત્તા અગારાઓ અણગારિય પવ્વહયા તપ્પમિહ ચ ણ અહ  
પરવસા જાયા ત સેયં સ્વલુ મમ કલ્લ પાઉપ્પમાયાણ રયણીણ જાવ જલતે પાઢિકા  
ઠવસ્સય ઉવસપજ્જિત્તા ણ વિહરિત્તણ ત્તિક્કદ્દુ એવ સપહેહ, સપેહિત્તા કલ્લ જાવ  
જલતે પાઢિએવક ઉવસ્સય ગિણ્હ )

બ્યારે હું ધરમા રહેતી હતી ત્યારે હું સ્વતન્ત્ર હતી પરંતુ બ્યારથી મે  
મુહિત થઈને અગાર અવસ્થાને ત્યજીને અનગાર અવસ્થા સ્વીકારી છે ત્યારથી  
હું પરવશ-પરાધીન થઈ ગઈ છું એથી મારા માટે હવે એ જ શ્રેયસ્કર  
બીજે દિવસે સવાર થતા જ બ્યારે સૂર્ય ઉદય પામશે ત્યારે

सम्प्रेक्ष्य कल्पे यावत् सूर्ये उज्जति 'पाडिण्कं' प्रत्येकम्-उपाश्रय गृह्णाति । तत्र खलु सा 'अणिवारिया' अनिवारिता-निवारकाभावात्, 'अणोहट्टिया' अनवधट्टिका यदच्छा प्रवृत्तिप्रतिरोधकाभावात्, अतएव 'सच्छदमई' स्वच्छन्द मतिः अभीक्ष्णमभीक्ष्ण हस्तौ धारति यावत्-आस्ते वा जेते या निषेधयति वा । ततः खलु सा काली आर्या 'पासत्था' पार्श्वस्था-गाढकारणंविना नित्यपिण्ड भोक्त्री, अतएव पार्श्वस्थविहारिणि, 'ओसण्णा' अगमना समाचारीपालनेऽवसी

दय हो जावेगा-दूसरे उपाश्रय में चली जाऊँ । इस प्रकार का उसने अपने मन में विचार किया । विचार करके फिर वह दूसरे दिन प्रातः काल होते ही सूर्योदय होने पर दूसरे उपाश्रय में चली गई । (तत्थणं सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छदमई अभिक्खण २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा-तएण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसणविहारी, कुसीला कुसीलविहारी, अहाउदा अहाउदविहारी, ससत्ता ससत्तविहारी बहूणि वासाणि सा माण्णपरियागं पाउणइ) वहाँ वह बिना रोक टोक, यदच्छा प्रवृत्ति करने लग गई । इच्छानुसार चार २ हाथ पैर आदि धोने लग गई । उठने बैठने एव सोने के स्थान को तथा स्वाध्याय भूमि को पहिले से ही पानी से सिञ्चित कर वहाँ उठने बैठने एव स्वाध्याय करने लगी । इस तरह की स्वच्छन्द प्रवृत्ति से वह काली आर्या पासत्था-गाढकारण के विना नित्य पिण्ड भोक्त्री-बन गई, पार्श्वस्थ विहारिणी हो गई । समाचारी

भील उपाश्रयमा जती रहु आ प्रमाणे तेले मनमा विचार कर्यो विचार करीने ते भीले द्विसे सवार थता न सूर्योदय थता आह भील उपाश्रयमा जती रहो

(तत्थण सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छदमई अभिक्खण २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा तएण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसणविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहा दा अहाउद विहारी ससत्ता ससत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ)

त्या ते रोक-टोक बिना स्वच्छन्द थधने प्रवृत्ति करवा लागी धच्छा भुञ्ज वारवार हाथ-पग धोवा लागी, ठहवा-जेसवा अने सूवाना स्थानने तेमन स्वाध्याय भूमिने पडेलेथी न पाण्णी वडे सिञ्चित करीने त्या ठहवा जेसवा तेमन स्वाध्याय करवा लागी आ जतनी स्वच्छन्द प्रवृत्तिथी ते काली आर्या पासत्था-गाढ कारण वगर नित्य पिंड भोक्त्री

दन्ती, अतएव अवसन्नविहारिणी, 'कुसीला' कुशीला=उत्तरगुणसेवया संज्वलन-  
कपायोदये प्रवृत्ता, अतएव कुशीन्विहारिणी, 'अहाच्छदा' यथाच्छन्दा=  
स्वाभिप्रायपूर्वकस्वमति कल्पितमार्गे प्रवृत्ता, अतएव यथा छन्दविहारिणी, 'ससत्ता'  
ससक्ता गृहस्थादिप्रेमबन्धनेन शिथिलमामाचारीप्रवृत्ता सती बहूनि वर्षाणि श्रामण्य  
पर्याय पालयति, पालयित्वा अर्द्धमासिभ्यां संलेखनयाऽऽत्मान 'झूसेइ' जोष-  
यति=सेवते, झूसित्ता=जोषयित्वा त्रिंशद् भक्तानि 'अणसणाए' अनशनया 'छेणइ'  
छिनत्ति, छित्ता तस्य रथानस्य अनालोचिताऽ प्रतिक्रान्ता कालमासे  
काल कृत्वा चमरचञ्चाया राजधान्या कालावतसके भवने उपपातसभाया  
देवशयनीये देवदूष्यान्तरिते = देवदूष्यवस्त्राच्छादिते अङ्गुलस्याऽसख्येयभाग-  
मात्रायामवगाहनाया कालीदेवीतया उपपन्ना । ततः खलु सा कालीदेवी अधुनो-

पालन करने में शिथिलता दिखलाने लगी-अवसन्न विहारिणी हो गई ।  
कुशीला बन गई-संज्वलन कपाय के उदय होने से उत्तरगुणों की  
विराधना करने लगी-कुशील विहारिणी हो गई और अपनी इच्छानु-  
सार मार्ग की कल्पना कर उसमें प्रवृत्त रहने लग गई-इसलिये वह  
यथाच्छन्द विहारिणी भी बन गई । गृहस्थ आदि जनों के अधिक परि-  
चयजन्य प्रेमबन्धन से अपने आचार पालन में शिथिल बनी हुई उसने  
इस तरह होकर अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया-और  
( पाउणिक्ता ) पालनकर ( अर्द्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ,  
झूसित्ता तीस भक्ताइ अणसणाए छेणइ, छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणा  
लोइय अपडिक्कत्ता कालमासे काल किच्चा चमरचचाए रायहाणीए  
कालवडिंएस नवणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसतरिए अङ्गुल-

विहारिणी थई गछ सम थारी पालन करवामा शिथिलतावाणी गताववा लागी-  
अवसन्न विहारिणी थई गछ कुशीला थई गछ, संज्वलन कपायने उदय  
होवाथी उत्तर गुणोनी विराधना करवा लागी, कुशील विहारिणी थई गछ  
अने पोतानी छन्द मुज्ज मागोनी कल्पना करीने तेमा प्रवृत्त थवा लागी  
अथी ते यथाच्छन्द विहारिणी पणु जनी गछ गृहस्थ वगेरे लोकेना वधारे  
पडता परिचयजन्य प्रेमबन्धनथी पोताना आचार पालनमा शिथिल थई गछ  
तेणे आ प्रभाणे धणा वयो सुधी श्रामण्य-पर्यायनु पालन कथुं अने  
( पवणिक्ता ) पालन करीने

( अर्द्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसित्ता तीस भक्ताइ अणसणाए  
अणलोइयअपडिक्कत्ता कालमासे काल किच्चा चमर-

सम्प्रेक्ष्य कल्पे यावत् सूर्ये ज्वलति 'पाटिपकं' प्रत्येकम्-उपाश्रय गृह्णाति । तत्र खलु सा 'अणिवारिया' अनिवारिता-निवारकाभावात्, 'अणोहट्टिया' अनवधट्टिका यद्वच्छा प्रवृत्तिप्रतिरोधकाभावात्, अतएव 'सच्छन्दमई' स्वच्छन्द मतिः अभीक्ष्णमभीक्ष्ण हस्तौ धावति यावत्-आस्ते वा शेते वा निषेधयति वा । ततः खलु सा काली आर्या 'पासत्था' पार्श्वस्था-गाढकारणंविना नित्यपिण्ड भोक्त्री, अतएव पार्श्वस्थविहारिणि, 'ओसण्णा' अयमन्ना समाचारीपालनेऽवसी

दय हो जावेगा-दूसरे उपाश्रय में चली जाऊँ । इस प्रकार का उसने अपने मन में विचार किया । विचार करके फिर वह दूसरे दिन प्रातः काल होते ही सूर्योदय होने पर दूसरे उपाश्रय में चली गई । (तत्थणं सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छन्दमई अभिक्खण २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा-तएण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसणविहारी, कुसीला कुसीलविहारी, अहाछदा अहाछदविहारी, ससत्ता ससत्तविहारी बहूणि वासाणि सा माण्णपरियागं पाउणइ) वहाँ वह बिना रोक टोक, यद्वच्छा प्रवृत्ति करने लग गई । इच्छानुसार बार २ हाथ पैर आदि धोने लग गई । उठने बैठने एवं सोने के स्थान को तथा स्वाध्याय भूमि को पहिले से ही पानी से सिञ्चित कर वहा उठने बैठने एवं स्वाध्याय करने लगी । इस तरह की स्वच्छन्द प्रवृत्ति से वह काली आर्या पासत्था-गाढकारण के बिना नित्य पिण्ड भोक्त्री-बन गई, पार्श्वस्थ विहारिणी हो गई । समाचारी

भील उपाश्रयमा जती रहु आ प्रमाणे तेले मनमा विचार कर्यो विचार करीने ते भीले दिवसे सवार थता ज सूर्योदय थया जाह भील उपाश्रयमा जती रहु

( तत्थण सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छन्दमई अभिक्खण २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा तएण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसणविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहा दा अहाछद विहारी ससत्ता ससत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ )

त्या ते शोक-टोक विना स्वच्छन्द थधने प्रवृत्ति करवा लागी छच्छा भुञ्ज वारवार हाथ-पग धोवा लागी, ठठवा-भेसवा अने सुवाना स्थानने तेमज स्वाध्याय लूमिने पडेलेथी ज पाण्णी वडे सिञ्चित करीने त्या ठठवा भेसवा तेमज स्वाध्याय करवा लागी आ जतनी स्वच्छन्द प्रवृत्तिथी ते काली आर्या पासत्था-गाढ कारण वगर नित्य पिंड भोक्त्री



दन्ती, अतएव अवसन्नविहारिणी, 'कुशीला' कुशीला=उत्तरगुणसेवया संज्वलन-  
कपायोदये प्रवृत्ता, अतएव कुशीलविहारिणी, 'अहाच्छदा' यथाच्छन्दा=  
स्वाभिप्रायपूर्वकस्वमति कल्पितमार्गे प्रवृत्ता, अतएव यथा छन्दविहारिणी, 'ससत्ता'  
ससत्ता गृहस्थादिप्रेमयन्त्रेण शिथिलमामाचारीप्रवृत्ता सती बहूनि वर्षाणि श्रामण्य  
पर्याय पालयति, पालयित्वा अद्वैताभिरुचया सलेखनयाऽऽत्मान 'झूसेइ' जोप-  
यति=सेवते, झूसित्ता=जोपयिता त्रिशद् भक्तानि 'अणसणाए' अनशनया 'छेण्ड'  
छिनत्ति, छिन्ना तरय रथानस्य अनालोचिताऽ प्रतिक्रान्ता कालमासे  
काल कृत्वा चमरचञ्चाया राजधान्या कालावतसके भवने उपपातसभाया  
देवशयनीये देवदूष्यान्तरिते = देवदूष्यवस्त्राच्छादिते अङ्गुलस्याऽमंख्येयभाग-  
मात्रायामवगाहनाया कालीदेवीतया उपपन्ना । ततः खलु सा कालीदेवी अधुनो-

पालन करने में शिथिलता दिखलाने लगी-अवसन्न विहारिणी हो गई ।  
कुशीला बन गई-संज्वलन कपाय के उदय होने से उत्तरगुणों की  
विराधना करने लगी-कुशील विहारिणी हो गई और अपनी इच्छानु-  
सार मार्ग की कल्पना कर उसमें प्रवृत्त रहने लग गई-इमलिये वह  
यथाच्छन्द विहारिणी भी बन गई । गृहस्थ आदि जनों के अधिक परि-  
चयजन्य प्रेमबधन से अपने आचार पालन में शिथिल उनी हुई उसने  
इस तरह होकर अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया-और  
( पाउणिक्ता ) पालन कर ( अद्वैताभिरुचया सलेखना अत्ताण झूसेइ,  
झूसित्ता तीस भक्ताइ अणसणाए छेण्ड, छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणा  
लोइय अपडिक्कत्ता कालमासे काल किच्चा चमरचचाए रायहाणीए  
कालवडिंएस भवणे उववायम माण देवसयणिज्जसि देवदूसतरिण अङ्गुल-

विहारिणी यथ गच्छ सम चारी पालन करवामा शिथिलतावाणी जाताववा लागी-  
अवसन्न विहारिणी यथ गच्छ कुशीला थ] गच्छ, संज्वलन उपायने उदय  
होवाथी उत्तर गुणोनी विराधना करवा लागी, कुशील विहारिणी यथ गच्छ  
अने पोतानी छच्छा मुज्जम मार्गनी कल्पना करीने तेमा प्रवृत्त थवा लागी  
अथी ते यथाच्छन्द विहारिणी पणु गनी गच्छ गृहस्थ वगेरे लोडोना वधारे  
पडता परिचयजन्य प्रेमबधनथी पोताना आचार पालनमा शिथिल थथ गच्छ  
तेछे आ प्रमाणे धणुा वयो सुधी श्रामण्य-पर्यायनु पालन कथु' अने  
( पउणिक्ता ) पालन उगीने

( अद्वैताभिरुचया सलेखना अत्ताण झूसेइ, झूसित्ता तीस भक्ताइ अणसणाए  
छेण्ड छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कत्ता कालमासे काल किच्चा चमर-

સમ્પ્રેક્ષ્ય કલ્પે યાત્ત્વ સૂર્યે ડગ્ગતિ 'પાડિણ્ક' મત્યેકમ્-ઉપાશ્રય યદ્વાતિ । તત્ર  
 खलु सा 'अणिवारिया' अनिवारिता-निरारकाभावात्, 'अणोहद्विया' अन-  
 वधट्टिका यदृच्छा प्रवृत्तिमतिरोधनाभावात्, अतएव 'सच्छन्दमई' स्वच्छन्द  
 मतिः अभीक्ष्णमभीक्ष्ण हस्तौ धावति यातत्-आस्ते वा शेते वा निषेधयति वा ।  
 ततः खलु सा कात्री आर्या 'पासत्था' पार्श्वस्था-गाढकारणंविना नित्यपिण्ड  
 भोक्त्री, अतएव पार्श्वस्थविहारिणि, 'ओसण्णा' अवगन्ना समाचारीपालनेऽवसी

દય હો જાવેગા-દૂસરે ઉપાશ્રય મેં ચલી જાઉં । હસ પ્રકાર કા ઉસને  
 अपने मन में विचार किया । विचार करके फिर वह दूसरे दिन प्रातः  
 काल होते ही सूर्योदय होने पर दूसरे उपाश्रय में चली गई । ( तत्थणं  
 सा अणिवारिया अणोहद्विया सच्छन्दमई अभिक्खण २ हत्थे धोवेइ,  
 जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा-तएण सा काली अज्जा पासत्था  
 पासत्थविहारी ओसण्णा ओसणविहारी, कुसीला कुसीलविहारी,  
 अहाउदा अहाउदविहारी, ससत्ता ससत्तविहारी बहूणि वासाणि सा  
 माण्णपरियागं पाउणइ ) चर्हा वह विना रोक टोक, यदृच्छा प्रवृत्ति करने  
 लग गई । इच्छानुसार चार २ हाथ पैर आदि धोने लग गई । उठने  
 बैठने एव सोने के स्थान को तथा स्वाध्याय भूमि को पहिले से ही पानी  
 से सिञ्चित कर वहा उठने बैठने एव स्वाध्याय करने लगी । इस तरह  
 की स्वच्छन्द प्रवृत्ति से वह काली आर्या पासत्था-गाढकारण के विना  
 नित्य पिण्ड भोक्त्री-बन गई, पार्श्वस्थ विहारिणी हो गई । समाचारी

ખીજા ઉપાશ્રયમા જતી રહુ આ પ્રમાણે તેણે મનમા વિચાર કર્યો વિચાર  
 કરીને તે ખીજે દિવસે સવાર થતા જ સૂર્યોદય થયા બાદ ખીજા ઉપાશ્રયમા જતી રહી

( તત્થણ સા અણિવારિયા અણોહદ્વિયા સચ્છન્દમઈ અભિક્કલ્લ ૨ હત્થે  
 ધોવેઈ, જાવ આસયઈ વા સયઈ વા ણીસેહેઈ વા તણ સા કાલી અજ્જા પાસત્થા  
 પાસત્થવિહારી ઓસણ્ણા ઓસણવિહારી કુસીલા કુસીલવિહારી અહા દા અહાઉદ  
 વિહારી સસત્તા સસત્તવિહારી બહૂણિ વાસાણિ સામાણ્ણપરિયાગ પાઉણઈ )

ત્યા તે રોક-ટોક વિના સ્વચ્છન્દ થઈને પ્રવૃત્તિ કરવા લાગી ઇચ્છા  
 મુજબ વારવાર હાથ-પગ ધોવા લાગી, ઉઠવા-બેસવા અને સૂવાના સ્થાનને  
 તેમજ સ્વાધ્યાય ભૂમિને પહેલેથી જ પાણી વડે સિંચિત કરીને ત્યા ઉઠવા  
 બેસવા તેમજ સ્વાધ્યાય કરવા લાગી આ જાતની સ્વચ્છન્દ પ્રવૃત્તિથી તે  
 કાલી આર્યા પાસત્થા-ગાઢ કારણ વગર નિત્ય પિંડ ભોક્ત્રી થઈ

दन्ती, अतएव अवसन्नविहारिणी, 'कुसीला' कुशीला=उत्तरगुणसेवया संज्वलन-  
कपायोदये प्रवृत्ता, अतएव कुशीलविहारिणी, 'अहाच्छन्दा' यथाच्छन्दा=  
स्वाभिप्रायपूर्वकस्वमति कल्पितमार्गे प्रवृत्ता, अतएव यथा छन्दविहारिणी, 'ससत्ता'  
ससत्ता गृहस्थादिप्रेमबन्धनेन शिथिलमामाचारीप्रवृत्ता सती गृहनि वर्षाणि श्रामण्य  
पर्याय पालयति, पालयित्वा अद्धमासिया संश्लेषनयाऽऽत्मान 'झूसेइ' जोप  
यति=सेवते, झूसित्ता=जोपयित्वा त्रिशद भक्तानि 'अणसणाए' अनशनया 'छेएइ'  
छिनत्ति, छित्ता तरय रथानम्य अनालोचिताऽ प्रतिक्रान्ता कालमासे  
काल कृत्वा चमरचञ्चाया राजधान्या कालावतसके भवने उपपातसभाया  
देवशयनीये देवदूष्यान्तरिते = देवदूष्यवस्त्राच्छादिते अङ्गुलस्याऽमख्येयभाग-  
मात्रायामवगाहनाया कालीदेवीतया उपपन्ना । ततः खलु सा कालीदेवी अधुनो-

पालन करने में शिथिलता दिखलाने लगी-अवसन्न विहारिणी हो गई ।  
कुशीला बन गई-संज्वलन कपाय के उदय होने से उत्तरगुणों की  
विराधना करने लगी-कुशील विहारिणी हो गई और अपनी इच्छानु-  
सार मार्ग की कल्पना कर उसमें प्रवृत्त रहने लग गई-इसलिये वह  
यथाच्छन्द विहारिणी भी बन गई । गृहस्थ आदि जनों के अधिक परि-  
चयजन्य प्रेमबन्धन से अपने आचार पालन में शिथिल बनी हुई उसने  
इस तरह होकर अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया-और  
( पाउणिक्ता ) पालन कर ( अद्धमासियाए सछेहणाए अत्ताण झूसेइ,  
झूसित्ता तीस भक्ताइ अणसणाए छेएइ, छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणा  
लोइय अपडिवक्कत्ता कालमासे काल किच्चा चमरचचाए रायहाणीए  
कालवडिंएस भवणे उववायम माए देवसयणिज्जसि देवदूसतरिए अङ्गुल-

विहारिणी यथ गच्छ सम चारी पालन उरवामा शिथिलतावाणी गताववा लागी-  
अवसन्न विहारिणी यथ गच्छ कुशीला यथ गच्छ, संज्वलन उपायने उदय  
छोवाथी उत्तर गुणोनी विराधना करवा लागी, कुशील विहारिणी यथ गच्छ  
अने पोतानी छेएइ मुज्ज मागंणी उदयता करीने तेमा प्रवृत्त यथा लागी  
छेथी ते यथाच्छन्द विहारिणी पणु गनी गच्छ गृहस्थ वगेरे लोडोना वधादे  
पडता परिचयजन्य प्रेमबन्धनी पोताना आचार पालनमा शिथिल यथ गच्छ  
तेछे आ प्रभाछे धणु वपो सुधी श्रामण्य-पर्यायनु पालन उरु' अने  
( पवणिक्ता ) पालन उरीने

( अद्धमासियाए सछेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसित्ता तीस भक्ताइ अणसणाए  
छेएइ, छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिवक्कत्ता कालमासे काल किच्चा चमर-

पपन्ता=तत्कालसमुत्पन्तासती पञ्चविधयापर्याप्त्या यथासूर्यामः=सूर्यामदेववत्,  
 'जाव भासामणपज्जत्तीण' भावामन पर्याप्त्या-यावत्-आहारपर्याप्त्या १,  
 शरीरपर्याप्त्या २, इन्द्रियपर्याप्त्या ३, आनमाणपर्याप्त्या ४, भावामन पर्याप्त्या  
 ५, पर्याप्तिभाव गच्छति । पर्याप्तिरन्धशाले देवानामाहारशरीरादिपर्याप्तिसमाप्ति  
 कालान्तरापेक्षया भावामन पर्याप्त्योः स्तीरकालान्तरतया तयोरेकत्वेन विवक्ष  
 णात् पर्याप्तीनां पञ्चविधत्वम् । ततः खलु सा काली देवी चतसृणा सामानिक-  
 साहस्रीणां यावत्-अन्येषा च बहूना कालावतसकमवनवासिनामसुरकुमारणा

स्स असखेज्जइ, भागमेत्ताण ओगाहणाण कालीदेवीत्ताण उववण्णा)  
 अर्द्धमास की सलेखना से उसने अपनी आत्मा को युक्त किया । इस  
 प्रकार उसने अनशनों द्वारा ३० भक्तोंका छेदन करने पर भी उस स्थानकी  
 आलोचना नहीं की और न वह उन अतिचारों से पीछे ही रटी-अतः  
 अनालोचित अप्रतिक्रान्त बनकर वह जय उस काल अवसर-काल कर  
 चमरचपा नाम की राजधानी में, कालावतसक भवनमें, उपातातसभामें  
 देवदूष्यवस्त्रसे आच्छादित देवशयनीय 'शय्या' उपर अगुलके असख्यातवे  
 मात्र की अवगाहना से काली देवी के रूप में उत्पन्न हो गई (तएण सा  
 कालीदेवी अहुणोववण्णा समाणी पचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो  
 जाव भासामणपज्जत्तीए ०। तएण सा कालीदेवी चउण्हं समाणि य  
 साहस्सी ण अण्णेसिं च बहूणं कालवड्डेसकभवणवासीण असुरकुमाराण

चचाए रायहाणीए कालवड्डिस्सए भवणे सव्वायसभाए देवसयणिज्जसी देवदूस  
 तरिए अगुलस्स असखेज्जइ, भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवीत्ताए उववण्णा)

तेछे अर्द्धमासनी सलेखनार्थी पोताना आत्माने युक्त कर्ये आ प्रमाणे  
 तेछे अनशने वडे ३० भक्तोनु छेदन करीने पणु ते स्थाननी आयेयना करी  
 नडि अने ते अतिथारेना आयरणुथी पणु अट्टी नडि ऐथी अनालोचित  
 अप्रतिक्रान्त थधने ते न्यारे डाण अवसरै डाण उरीने अमरथथा नामनी  
 राजधानीमा कालावतसक भवनमा, उपपात सभामा देवदूष्य वस्त्रथी आच्छादित  
 देवशनीय उपर आगणीओना अभिज्यातमा मात्रनी अवगाहनागी काली देवीना  
 रूपमा उत्पन्न थध गध

(तएण सा काली देवी अहुणोववण्णा समाणी पचविहाए पज्जत्तीए  
 जहा सूरियाभो जाव भासामणपज्जत्तीए० । तएण सा काली देवी चउण्हं समा  
 णिवसहस्सीण जाव अण्णेसिं च बहूणं कालवड्डेसकभवणवासी ण असुरकुमा  
 राण देवाण य देवीणय आदेवच जाव विहरइ )

દેવાના ચ દેવીના ચ ' આહેવચ્ચ ' આધિપત્ય=સ્વામિત્વ કુર્વન્તીપાલયન્તી યાવદ્ વિહરતિ ।

एवम्=उक्तप्रकारेण खलु हे गौतम ! काल्या देव्या सा दिव्या देवर्द्धिः ३, लब्धा, प्राप्ता, अभिसमन्वागता ।

गौतमः पृच्छति-काल्या खलु हे भदन्त ! देव्यास्तत्र ' केवइय ' क्रियन्त

દેવાણ ય દેવીણ ય આહેવચ્ચ જાવ વિહરહ ) હસ પ્રકાર વહ કાલી દેવી અમી અમી ઉત્પન્ન હોકર પાચ પ્રકાર કી પર્યાસિયોં સે પર્યાસ વની હૈ । પર્યાસિયા ૬ હોતી હૈ પરન્તુ યહા પર જો વે પાચ કી સહ્યા મેં નિર્દિષ્ટ હુઈ હૈ—ઉસકા કારણ યહ હૈ કિ પર્યાસિ કે વધકાલ મેં દેવોં કે આહાર, શરીર આદિ પર્યાસિયોં કે સમાસિકાલ કી અપેક્ષા ભાષા ઓર મનઃ પર્યાય કા સાથ સાથ વધ હોતા હૈ, હસલિયે ઇન દોનો કો એક રૂપ સે યહા વિવક્ષિત ક્રિયા ગયા હૈ । વે પર્યાસિયાં હસ પ્રકાર હૈ—(૧) આહારપર્યાસિ (૨) શરીર પર્યાસિ (૩) ઇન્દ્રિયપર્યાસિ (૪) શ્વાસોચ્છ્વાસપર્યાસિ (૫) ભાષા એવં મનઃ પર્યાસિ । વહ કાલી દેવી ચાર હજાર સામાનિક દેવોકા યાવત્ ઓર દૂસરે અનેક કાલાવતસક ભવનવાસી અસુરકુમાર દેવો કા દેવિયો કા આધિપત્ય કર રહી હૈ । ( એવ સહુ ગોયમા । કાલીએ દેવીએ સા દિવ્વા દેવહૂં ૩ લહ્દાપત્તા અભિસમણ્ણા ગયા,

આ પ્રમાણે તે કાલી દેવી હમણા જ ઉત્પન્ન થઇને પાચ પ્રકારની પર્યાસિઓથી પર્યાસ બની છે પર્યાસિઓ છ હોય છે પણ અહીં જે પાચની સંખ્યામા જ બતાવવામા આવી છે તેનુ કારણ આ પ્રમાણે છે કે પર્યાસિના બધકાલમા દેવોના આહાર, શરીર વગેરે પર્યાસિઓના સમાસિકાળની અપેક્ષા ભાષા અને મન પર્યાસિનુ એકી સાથે બધ હોય છે એથી આ બનેને અહીં એક રૂપમા જ બતાવવામા આવી છે તે પર્યાસિઓ આ પ્રમાણે છે— (૧) આહાર પર્યાસિ, (૨) શરીર પર્યાસિ, (૩) ઇન્દ્રિય પર્યાસિ, (૪) શ્વાસોચ્છ્વાસ પર્યાસિ, (૫) ભાષા અને મન પર્યાસિ તે કાલી દેવી ચાર હજાર સામાનિક દેવો ઉપર યાવત્ બીજા પણ ઘણા કાલાવતસક ભવનવાસી અસુર કુમાર દેવો, દેવીઓ ઉપર શાસન કરી રહી છે

( एष खलु गोयमा । कालीए देवीए सा दिव्या देविइढी ३ लह्दा पत्ता अभिसमण्णागया, कालीए ण भवे ! देवीए केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा

इज्जाइ पलिओवमाई ठिई पण्णत्ता )



પપન્ના=તત્કાલસમુત્પન્નાસતી પશ્ચવિધ્યાપર્યાપ્ત્યા યથામૂર્ધમિઃ=મૂર્ધમદેવત્ર, 'જાવ ભાસામણપજ્જતી' માયામન પર્યાપ્તિયા-યાવત્-આહારપર્યાપ્ત્યા ૧, શરીરપર્યાપ્ત્યા ૨, ઇન્દ્રિયપર્યાપ્ત્યા ૩, આનમાણપર્યાપ્ત્યા ૪, માયામન પર્યાપ્ત્યા ૫, પર્યાપ્તિભાવ ગચ્છતિ । પર્યાપ્તિવન્ધશાલે દેવાનામાહારશરીરાદિપર્યાપ્તિસમાપ્તિ કાલાન્તરાપેક્ષયા માયામન પર્યાપ્તિયોઃ સ્તોકકાગ્નિન્તરતયા તયોરેકત્વેન વિવક્ષણાત્ પર્યાપ્તિના પશ્ચવિધત્વમ્ । તતઃ સ્વલ્પ સા કાલી દેવી ચતસ્રણા સામાનિક-સાહસ્રીર્ણા યાવત્-અન્યેષા ચ વૃદ્ધનાં કાલાવતસકમવનવાસિનામસુરકુમારણા

સ્સ અસલ્લેજ્જહ, ભાગમેક્ષાણ ઓગાહણાણ કાલીદેવીત્તણ ઉવવણ્ણા) અર્ધમાસ કી સલેલ્લના સે ઉસને અપની આત્મા કો યુક્ત ક્રિયા । હસ પ્રકાર ઉસને અનશનો દ્વારા ૩૦ ભક્તોંકા છેદન કરને પર મી હસ સ્થાનકી આલોચના નહી કી ઓર ન વહ ઉન અતિચારોં સે પીઢે હી હતી-અતઃ અનાલોચિત અપ્રતિક્રાન્ત ચનકર વહ જય હસ કાલ અવસર-કાલ કર ચમરચપા નામ કી રાજધાની મેં, કાલાવતસક ભવનમેં, ઉપાતાતસભામેં દેવદૂષ્યવસ્ત્રસે આચ્છાદિતદેવશયનીય 'શર્યા' ઉપર અગુલકે અસહ્યાતવે માત્ર કી અવગાહના સે કાલી દેવી કેરૂપ મેં ઉત્પન્ન હો ગઈ ( તણ સા કાલીદેવી અહુણોવવણ્ણા સમાળી પચવિહાણ પજ્જતીણ જહા સૂરિયામો જાવ ભાસામણપજ્જતીણ ૦ । તણ સા કાલીદેવી ચઉણ્ણ સમાળિ ય સાહસી ણ અણ્ણેસિં ચ વૃદ્ધનાં કાલવડેસકભવણવાસીણ અસુરકુમારણ

પચાણ રાયહાળીણ કાલવડિ સણ ભવણે સવવાયસભાણ દેવસયણિજ્જહી દેવદૂસ તરિણ અગુલસ્ર અસલ્લેજ્જહ, ભાગમેક્ષાણ ઓગાહણાણ કાલીદેવીત્તણ ઉવવણ્ણા) તેણે અર્ધમાસની સલેલ્લનાથી પોતાના આત્માને યુક્ત કર્યો આ પ્રમાણે તેણે અનશનો વડે ૩૦ ભક્તોતુ છેદન કરીને પણ તે સ્થાનની આયોચના કરી નહિ અને તે અતિચારોના આચરણથી પણ અટકી નહિ એથી અનાલોચિત અપ્રતિક્રાન્ત થઈને તે જ્યારે કાળ અવસરે કાળ કરીને અમરચપા નામની રાજધાનીમા કાલાવતસક ભવનમા, ઉપાતાતસભામા દેવદૂષ્ય વસ્ત્રથી આચ્છાદિત દેવશનીય ઉપર આગળીઓના અસહ્યાતમા માત્રની અવગાહનાગી કાલી દેવીના રૂપમા ઉત્પન્ન થઈ ગઈ

( તણ સા કાલી દેવી અહુણોવવણ્ણા સમાળી પચવિહાણ પજ્જતીણ જહા સૂરિયામો જાવ ભાસામણપજ્જતીણ ૦ । તણ સા કાલી દેવી ચઉણ્ણ સામા જિવસહસીણ જાવ અણ્ણેસિં ચ વૃદ્ધનાં કાલવડેસકભવણવાસી ણ અસુરકુમારણ દેવાણ ય દેવીણય આદેવચ જાવ વિહરહ )

श्रीसुधर्मास्वामी प्राह-एव सल्लु हे जम्बू ! श्रमणेन यावत्-मोक्ष सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य प्रथमाध्ययनस्य अयमर्थ = पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः । त्तिनेमि ' इति व्रत्तिमि, व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू० ४ ॥

॥ धर्मकथाना प्रथमवर्गस्य प्रथमाध्ययनं समाप्तम् ॥

विदेह क्षेत्र में उत्पन्न होगी और वही से सिद्ध होगी। अब सुधर्मा स्वामी श्री जम्बू ! स्वामी से कहते हैं कि हे जम्बू ! मुक्ति को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह पूर्वोक्त अर्थ प्रज्ञप्त किया है। ऐसा मैंने उन्हीं के मुख से सुनकर यह तुमसे कहा है ॥ सूत्र ४ ॥

-:प्रथम वर्ग का प्रथम अध्ययन समाप्त -

महाविदेह क्षेत्रमा उत्पन्न थये अने त्यावी ज सिद्ध थगे डये सुधर्मा स्वामी श्री जम्बू ! स्वामीने कहे छे के छे जम्बू ! मुक्तिप्राप्त श्रमणु भगवान् महावीरे प्रथम वर्गना प्रथम अध्ययनने आ पूर्वोक्त इये अर्थ प्रज्ञप्त कयौ छे आवु हु तेमना श्री भुजथी सासणीने तमने कही गये छु ॥ सूत्र ४ ॥

“ प्रथम वर्गनु प्रथम अध्ययन समाप्त ”

કાલ સ્થિતિ પ્રશ્ન ? મગવાનાદ-હે ગૌતમ ! ' અઢ્ઢાઝ્ઞાઝ ' અર્દનૃતીયે=સાદે  
દે પલ્યોપમે સ્થિતિઃ પ્રશ્ન ?

ગૌતમઃ પૃન્ઢતિ-કાલી હે મદન્ત ! દેવી તસ્માધેરઝોઠાદ્ અનન્તરમ્=આયુ  
ર્ભવસ્થિતિશ્ચાનન્તર ' ઉવ્ઢટ્ઢિતા ' ઉદ્ઢૃત્ય=નિષ્ઠૃત્ય કુત્ર ગમિત્યતિ કુત્ર-  
ઉત્પત્સ્યતે ?

મગવાનાદ-હે ગૌતમ ! સા કાલી દેવી દેવલોકાન્ન્યુત્તરા મહાવિદેહે વર્ષે  
ઉત્પદ્ય સેત્સ્યતિ, ।

કાલીં ણ મતે ! દેવીં કેવદ્ય કાલ ઠિર્હ પળગ્ગા ? ગોયમા અઢ્ઢાઝ  
ઝ્ઞાઝ પલિઓવમાર્હ ઠિર્હપળગ્ગા ) હસ તરહ સે હે ગૌતમ ! કાલી દેવી  
ને વહ દિવ્ય દેવર્દ્ધિ ૩, અર્જિત કી હે સ્વાધીન કી હે ઓર વસે અપને  
ઉપભોગ કે યોગ્ય ચનાયા હે । અવ ગૌતમ પુન પ્રમુ સે પૂઝતે હે-કિ હે  
મદત ! કાલીદેવી કી કિતની સ્થિતિ હે ? ઉત્તર મેં પ્રમુ ને વનસે કહા-હે  
ગૌતમ ! કાલીદેવી કી સ્થિતિ અઢ્ઢાઝ પલ્ય કી ( પ્રજ્ઞસ હુર્હ ) હે ( કાલી  
ં મતે ! દેવી તાઓ દેવલોગાઓ અળતર ઉવઢટ્ઢિતા કહિં ગચ્ઢહિઝ, કહિં  
ઉવવજ્ઞિહિઝ ? ગોયમા ! મહાવિદેહેવાસે સિજ્ઞિહિઝ એવ સ્વલુ જબૂ  
સમળેં જાવ સપત્તેં પઢમસ્સ વગ્ગસ્સ પઢમજ્ઞયણસ્સ અયમઢ્ઢે પળગ્ગત્તે  
ત્તિવેમિ, ધમ્મકહાણ પઢમજ્ઞયણ સમત્ત ) હે મદત ! કાલીદેવી ઉસ  
દેવલોક સે આયુ એવં ભવસ્થિતિ કે ક્ષય કે અનન્તર નિકલકર કહા  
જાવેગી, કહા ઉત્પ ન હોગી ? હસ ગૌતમ કે પ્રશ્ન કા ઉત્તર પ્રમુ ને ઉ  
હસ પ્રકાર દિયા-ગૌતમ ! વહ કાલી દેવી દેવલોક સે વવ કર મ

આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! કાલી દેવીએ તે દિવ્ય દેવર્દ્ધિ ૩ પ્રાપ્ત કરી  
છે સ્વાધીન બનાવી છે અને તેને ચોતાને માટે ઉપલોગ થોડા બનાવી  
હવે ગૌતમ શ્રી પ્રભુને પૂછે છે કે હે ભદ્રન્ત ! કાલી દેવીની સ્થિતિ કેવી  
જવાબમા પ્રભુએ તેમને કહ્યું કે હે ગૌતમ ! કાલી દેવીની સ્થિતિ અઢી પદ્યમા  
( પ્રજ્ઞસ થઈ ) છે

( કાલીં મતે ! દેવી તાઓ દેવલોગાઓ અળતર ઉવઢટ્ઢિતા કહિ ગચ્ઢિ  
હિઝ, કહિ ઉવવજ્ઞિહિઝ ? ગોયમા ! મહાવિદેહે વાસે સિજ્ઞિહિઝ, એવ સ્વલુ  
જબૂ ! સમળેં જાવ સપત્તેં પઢમસ્સ વગ્ગસ્સ પઢમજ્ઞયણસ્સ અયમઢ્ઢે પળગ્ગત્તે  
ત્તિ વેમિ, ધમ્મકહાણ પઢમજ્ઞયણ સમત્ત )

હે ભદ્રન્ત ! કાલી દેવી તે દેવલોકથી આયુ અને ભવસ્થિતિને પૂરી  
કરીને કયા જશે ? કયા ઉત્પન્ન થશે ? આ પ્રમાણે ગૌતમના પ્રશ્નને સાબળીને  
પ્રભુએ ઉત્તરમા તેને કહ્યું કે હે ગૌતમ ! તે કાલી દેવી તે દેવલોકથી

શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્ સિદ્ધિગતિનામમધ્યેયં સ્થાન સમ્પાત્તેન ધર્મકથાના પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પ્રથમાધ્યયનસ્યાયમર્થઃ=પૂર્વોક્તો ભાવઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, દ્વિતીયસ્ય સ્વલુ ભદન્ત ! અધ્યયનસ્ય શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્ મોક્ષ સમ્પ્રાપ્તેન કોઽર્થઃ= કો ભાવઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ?

સુધર્માસ્વામીપ્રાહ-એવ સ્વલુ હે જન્નુઃ ! તરિમન્ કાલે તરિમન્ સમયે રાજગૃહ નગરમ્ । ગુણશિલ્લક ચૈત્યમ્ । સ્વામી ભગવાન મહાવીરઃ સમવસૃતઃ । પરિપ

પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પદમજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે વિઙ્ગયસ્સ ણ ભત્તે ! અજ્ઞયણસ્સ સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણં જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પણ્ણત્તે ? એવં સ્વલુ જન્નુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણ સિલ્લક ચેદ્દે સામી સમોસદ્દે ) યદિ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને જો કિ મુક્તિ સ્થાન કો પ્રાપ્ત હો જુકે હે વર્મ્મકથાકે પ્રથમ વર્ગ કે પ્રથમ અધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ-તો હે ભદન્ત ! દ્વિતીય અધ્યયન કા ઉન્હી શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને જો કિ મુક્તિ કો પ્રાપ્ત કર જુકે હે કયા ભાવ અર્થ પ્રતિપાદિત કિયા હૈ ? હસ પ્રકાર જન્નુ સ્વામી કે પૂઠને પર સુધર્મા સ્વામી ઉનસે કહતે હે કિ હે જન્નુ ! સુનો -તુમ્હારે પ્રશ્ન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈ-ઉસ કાલ ઓર ઉસ સમય મેં રાજગૃહ નામ કા નગર થા । ઉસમેં ગુણશિલ્લક નામ કા ઉદ્યાન થા । ઉસમેં મહાવીર સ્વામી સમવસરે ।-( પરિસા નિગ્ગયા-જાવ પજ્જુવાસદ્દ,

વગ્ગસ્સ પદમજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે વિઙ્ગયસ્સ ણ ભત્તે ! અજ્ઞયણસ્સ સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ કે ૦ અદ્દે પણ્ણત્તે ? એવં સ્વલુ જન્નુ ? તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણસિલ્લક ચેદ્દે સામી સમોસદ્દે )

જે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર-કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધું છે ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમાં અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે તેા હે ભદન્ત ! તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર-કે જેમણે મુક્તિ સ્થાન મેળવી લીધું છે બીજા અધ્યયનનો શો ભાવ-અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે આ પ્રમાણે જ ખૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાલણીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જન્નુ ! સાલણો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તેમાં ગુણશિલ્લક નામે ઉદ્યાન હતું તેમાં મહાવીર સ્વામી પધાર્યા

( પરિસા નિગ્ગયા-જાવ પજ્જુવાસદ્દ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાઈ દેવી

अथ द्वितीयमध्ययनं प्रारभ्यते—

मूलम्—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अय-  
मट्ठे पणत्ते विइयस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भग-  
वया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के० अट्ठे पणत्ते ?, एव खलु  
जंबू । तेणं कालेण तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए  
चेइए सामी समोसढे परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ, तेण  
कालेण तेण समएणं राई देवी चमरचचाए रायहाणीए एव  
जहा काली तहेव आगया णट्ठविहि उवदसेत्ता पडिगया  
भंतेत्ति भगवं गोयमा । पुव्वभवपुच्छा, एवं खलु गोयमा ।  
तेण कालेण तेणं समएण आमलकप्पा णयरी अबसालवणे  
चेइए जियसत्तू राया राई गाहावई राईसिरी भारिया राई  
दारिया पासस्स समोसरण राई दारिया जहेव काली तहेव  
निक्खंता तहेव सरीरवाउसिया तं चेव सव्वं जाव अत  
काहिति । एवं खलु जंबू । विइयज्झयणस्स निक्खेवओ ॥

॥ पढमवग्गस्स वीयज्झयण समत्त ॥ सू० ५ ॥

टीका—‘ जइण भते ’ इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु हे भदंत ।

—द्वितीय अध्ययन प्रारभः—

—जइणं भते ! समणेण इत्यादि ।

टीकार्थ—जम्बू स्वामी श्री सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि ( भते ) हे  
भदंत ! ( जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण धम्मकहाण

भीष्म अध्ययन प्रारभ —

जइण भते ! समणेण इत्यादि—

टीकार्थ—भीष्म स्वामी श्री सुधर्मा स्वामीने पूछे छे के ( भते ) हे भदन्त !  
( जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण

पढमस्स



श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनाममधेय स्थान सम्प्राप्तेन धर्मकथाना प्रथमस्य वर्गस्य प्रथमाध्ययनस्यापर्यः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः, द्वितीयस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् मोक्ष सम्प्राप्तेन कोऽर्थः=को भावः प्रज्ञप्तः ?

सुधर्मास्वामीप्राह—एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगरम् । गुणशिलक चैत्यम् । स्वामी भगवान् महावीरः समवसतः । परिप

पठमस्स वग्गस्स पठमज्झयणस्स अयमद्वे पण्णत्ते विडयस्स ण भत्ते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेणं के अद्वे पण्णत्ते ? एवं खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसडे ) यदि श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्ति स्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथाके प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है—तो हे भदन्त ! द्वितीय अध्ययन का उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्ति को प्राप्त कर चुके हैं क्या भाव अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस प्रकार जम्बू स्वामी के पूछने पर सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं कि हे जम्बू ! सुनो—तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है—उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था । उसमें गुणशिलक नाम का उद्यान था । उसमें महावीर स्वामी समवसरे ।—( परिस्ता निग्गया—जाव पज्जुवासइ,

वग्गस्स पठमज्झयणस्स अयमद्वे पण्णत्ते विडयस्स ण भत्ते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के० अद्वे पण्णत्ते ? एवं खलु जम्बू ? तेण कालेण तेणं समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसडे )

ले श्रमण भगवान् महावीर—हे जेभण्णे मुक्तिस्थान भेणवी लीधु छे धर्मकथाना प्रथम वर्गना प्रथम अध्ययननो आ पूर्वोक्त रूपमा अर्थ प्ररूपित कथो छे तो हे भदन्त ! ते ज श्रमण भगवान् महावीर—हे जेभण्णे मुक्ति स्थान भेणवी लीधु छे भील अध्ययननो शे भाव—अर्थ प्रतिपादित कथो छे आ प्रमाणे जणू स्वामीना प्रश्नने सालणीने श्री सुधर्मा स्वामी तेभने हडे छे हे हे जणू ! सालणो, तभारा प्रश्नने उत्तर आ प्रमाणे छे हे ते काये अने ते समये राजगृह नामे नगर छे तेमा गुणशिलक नामे उद्यान छे तेमा महावीर स्वामी पधार्या

परिस्ता निग्गया—जाव पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएण राई देवी

अथ द्वितीयमध्ययनं प्रारभ्यते—

मूलम्—जइ णं भते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अय-  
मट्ठे पणत्ते विइयस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भग-  
वया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के० अट्ठे पणत्ते ? एव खलु  
जंबू । तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए  
चेइए सामी समोसढे परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ, तेण  
कालेणं तेणं समएणं राई देवीचमरचचाए रायहाणीए एव  
जहा काली तहेव आगया णट्ठविहिं उवदसेत्ता पडिगया  
भंतेत्ति भगवं गोयमा । पुब्बभवपुच्छा, एव खलु गोयमा ।  
तेण कालेण तेणं समएण आमलकप्पा णयरी अबसालवणे  
चेइए जियसत्तू राया राई गाहावई राईसिरी भारिया राई  
दारिया पासस्स समोसरण राई दारिया जहेव काली तहेव  
निक्खंता तहेव सरीरवाउसिया तं चेव सव्वं जाव अत  
काहिति । एवं खलु जंबू । विइयज्झयणस्स निक्खेवओ ॥

॥ पढमवग्गस्स वीयज्झयण समत्त ॥ सू० ५ ॥

टीका—‘ जइण भते ’ इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु हे भदंत ।

—द्वितीय अध्ययन प्रारम्भः—

—जइणं भते ! समणेण इत्यादि ।

टीकार्थ.—जम्बू स्वामी श्री सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि ( भते ) हे  
भदंत ! ( जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण

जीवु’ अध्ययन प्रारम्भ —

जइण भते ! समणेण इत्यादि—

टीकार्थ—जम्बू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामीने पूछे छे के ( भते ) हे भदन्त ।  
( जइण समणेणं भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण पढमस्स

શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્ સિદ્ધિગતિનામમધેય સ્થાન સમ્પાત્તેન ધર્મકથાના પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પ્રથમાધ્યયનસ્યાયમર્થઃ=પૂર્વોક્તો ભાવઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, દ્વિતીયસ્ય સ્વલુ ભદન્ત ! અધ્યયનસ્ય શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્ મોક્ષ સમ્પ્રાપ્તેન કોડ્યર્થઃ= કો ભાવઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ?

સુધર્માસ્વામીપ્રાહ—એવ સ્વલુ હે જંબૂઃ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહ નગરમ્ । ગુણશિલક ચૈત્યમ્ । સ્વામી ભગવાન્ મહાવીરઃ સમવસ્રતઃ । પરિપ

પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પદમજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે વિડ્ડયસ્સ ણ ભત્તે ! અજ્ઞયણસ્સ સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પણ્ણત્તે ? એવ સ્વલુ જંબૂ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણ સિલ્લ ચેદ્દે સામી સમોસદ્દે ) યદિ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને જો કિ મુક્તિ સ્થાન કો પ્રાપ્ત હો ચુકે હૈં ધર્મકથાકે પ્રથમ વર્ગ કે પ્રથમ અધ્યયન કા યદ્ પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ પ્રરૂપિત ક્રિયા હૈં—તો હે ભદન્ત ! દ્વિતીય અધ્યયન કા અન્હી શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને જો કિ મુક્તિ કો પ્રાપ્ત કર ચુકે હૈં કયા ભાવ અર્થ પ્રતિપાદિત ક્રિયા હૈં ? હસ પ્રકાર જંબૂ સ્વામી કે પૂછને પર સુધર્મા સ્વામી અન્હે કહતે હૈં કિ હે જંબૂ ! સુનો—તુમ્હારે પ્રશ્ન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈં—અસ કાલ ઓર અસ સમય મેં રાજગૃહ નામ કા નગર થા । અસમેં ગુણશિલક નામ કા ઉદ્યાન યા । અસમેં મહાવીર સ્વામી સમવસરે ।—( પરિસા નિગ્ગયા—જાવ પજ્જુવાસદ્દ,

વગ્ગસ્સ પદમજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે વિડ્ડયસ્સ ણ ભત્તે ! અજ્ઞયણસ્સ સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ કે ૦ અદ્દે પણ્ણત્તે ? એવ સ્વલુ જંબૂ ? તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણસિલ્લ ચેદ્દે સામી સમોસદ્દે )

જો શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર—કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધું છે ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદન્ત ! તે જ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર—કે જેમણે મુક્તિ સ્થાન મેળવી લીધું છે બીજા અધ્યયનનો શો ભાવ—અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે આ પ્રમાણે જ ખૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાલણીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જંબૂ ! સાલણો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તેમા ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતું તેમા મહાવીર સ્વામી પધાર્યા

( પરિસા નિગ્ગયા—જાવ પજ્જુવાસદ્દ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાઈ દેવી

## अथ द्वितीयमध्ययन प्रारभ्यते—

मूलम्—जइ णं भते । समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अय-  
मट्ठे पण्णत्ते विइयस्स णं भते । अज्झयणस्स समणेणं भग-  
वया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के० अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु  
जवू । तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए  
चेइए सामी समोसढे परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ, तेण  
कालेण तेण समएण राई देवी चमरचचाए रायहाणीए एव  
जहा काली तहेव आगया णट्ठविहि उवदसेत्ता पडिगया  
भंतेत्ति भगवं गोयमा । पुब्बभवपुच्छा, एव खलु गोयमा ।  
तेण कालेण तेण समएण आमलकप्पा णयरी अंबसालवणे  
चेइए जियसत्तू राया राई गाहावई राईसिरी भारिया राई  
दारिया पासस्स समोसरण राई दारिया जहेव काली तहेव  
निक्खंता तहेव सरीरवाउसिया तं चेव सव्वं जाव अत  
काहिति । एव खलु जवू । विइयज्झयणस्स निक्खेवओ ॥

॥ पढमवग्गस्स वीयज्झयण समत्तं ॥ सू० ५ ॥

टीका—' जइण भते ' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु हे भदंत ।

—:द्वितीय अध्ययन प्रारभः—

—:जइणं भते । समणेण इत्यादि ।

टीकार्थ —जवू स्वामी श्री सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि ( भते ) हे  
भदंत ! ( जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण

धीनु अध्ययन प्रारभ —

जइण भते । समणेण इत्यादि—

टीकार्थ—जवू स्वामी श्री सुधर्मास्वामीने पूछे छे के (भते) हे भदंत ।

( जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण

पढमस्स



रात्रिर्दारिकाऽऽसीत् । पार्श्वम् = पार्श्वप्रभो ममवमरणम् । रात्रिर्दारिका यथैव  
काली तथैव निष्क्रान्ता=तथैव शरीरवाकुशिका. तदेव सर्वं यावत्-सर्वदुःखाना-  
मन्तं हरिष्यति ।

दारिया पामस्म ममोमरणं राई दारिया जहेव काली- तहैव निष्क्रान्ता,  
तहेवमरीर वाउमिया त चेव सब्ब जाव अत काहिड एव खलु जवू ।  
विइयज्झयणस्स निक्खेवओ ) उसके चले जाने के बाद श्रमण भगवान्  
महावीर से गौतम ने रात्रिदेवी का पूर्वभव पूछा-प्रभु ने उनसे इस  
प्रकार कहा-हे गौतम ! उसकाल और उस समयमें आमलकल्पा नामकी  
नगरी थी । उसमें आम्रशालवन नामका उद्यान था । नगरीके राजा का  
नाम जितशत्रु था । वहां रात्रि नामका एक गाथापति रहता था । उस  
की भार्या का नाम रात्रिश्री था । इन दोनों के रात्रि नाम की एक  
पुत्री थी जिस प्रकार काली प्रभु का उपदेश सुनकर प्रतिबोध को  
प्राप्त हो गई थी ।-उसी प्रकार पार्श्वनाथ के वहां उद्यान में आने पर  
भी उनसे धर्मोपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई । अतः वह  
माता पिता से आज्ञा लेकर काली की तरह बड़े टाठ बाट के साथ  
शिविका में बैठकर प्रभु के समीप माता पिता ले गये । वहां वह  
दीक्षित हो गई । वीरे २ वह शरीर वाकुशिका बन गई । जिस प्रकार

जहेव काली-तहेव निष्क्रान्ता, तहेव शरीरवाउमिया त चेव सब्ब जाव अत  
काहिड एव खलु जवू ! विइयज्झयणस्स निक्खेवओ )

तेना गया आइ श्रमण भगवान् महावीरने गौतमे रात्रि देवीना पूर्व  
भवनी विगत पृथी प्रभुओ तेमने आ प्रभाणे कहुं के डे गौतम ! ते काणे  
अने ते अभये आमलकल्पा नामे नगरी छती तेमा आम्रशालवन नामे  
उद्यान छतु नगरीना राजानु नाम जितशत्रु छतु त्या रात्रि नामे ओक  
गाथापति रहते छते तेनी पत्नीनु नाम रात्रिश्री छतु तेओ गनेने रात्रि  
नामे ओक पुत्री छती जेम काली प्रभुने उपदेश श्रवण करीने प्रतिबोधने  
प्राप्त थछ तेमज त्या उद्यानमा पधारेला पार्श्वनाथनी पासैथी धर्मोपदेश  
सांख्यीने ते पण प्रतिबोधित थछ गछ ओथी कालीनी जेमज तेने पण  
पोताना मातापितानी पासैथी आज्ञा भेजवी अने त्यारपछी तेना मातापिताओ  
तेने पालणीमा जेसाडीने प्रभुनी पासै लछ गया, त्या ते दीक्षित थछ गछ  
धीमे धीमे ते पण शरीर वाकुशिका जनी गछ जेम काली दारिका पण आर्या  
थछने शरीर वाकुशिका जनी गछ छती त्यारपछी जेवी स्थिति काली आर्यानी



નિર્ગતા યાત્રુ ભગવન્ત પર્યુપાસ્તે । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે ' રાઈ ' રાત્રિ:-  
રાત્રિનામ્ની દેવી ચમરચચ્ચાયાં રાજધાન્યામ્, એવ યથા કાલી તથૈવ-આગતા,  
નાટ્યવિધિપ્રદર્શ્ય પ્રતિગતા । ' ભતે ત્તિ ' હે ભદન્ત ! ઇતિ સમ્બોધ્ય ભગવાન્  
ગૌતમઃ ' પુન્નભવપુચ્છા ' પૂર્વભવપૂન્ઝા રાત્રિ દેવ્યા પૂર્વભવ પૂચ્છતિ । ભગવાન્  
માહ-એવ સ્વલુ હે ગૌતમ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે આમલકલ્પા નગરી,  
આમ્રશાલવન ચૈત્યમ્, જિતશત્રૂ રાજા, રાત્રિર્ગાધાપતિઃ, રાત્રિશ્રીમાર્યા, તથોઃ

તેણ કાલેણ તેણ સમયણ રાઈ દેવી ચમરચચ્ચાણ રાયહાણીણ એવ જહા  
કાલી-તહેવ આ ગયા નટ્ટવિર્હિ ઉવદસેત્તા પહિગયા ) પ્રભુ કા આગમન  
સુનકર નગર નિવાસિની સમસ્ત જનતા ઉન પ્રભુ કે દર્શન કરને ઓર  
ઉનસે ધર્મોપદેશ સુનને કે લિયે ઉસ ગુણશિલક ઉચ્ચાન મેં આઈ ।  
પ્રભુ ને સવ કો ધર્મ કા ઉપદેશ દિયા । સચને પ્રભુ કી પર્યુપાસના  
કી । ઉસ કાલ મેં ઓર ઉસ સમય મેં રાત્રિનામ કી દેવી ચમર-  
ચચ્ચારાજધાની મેં રહતી થી-જૈસે વહાં કાલી દેવી રહતી થી । સો  
વહાં પ્રભુ કા આગમન સુનકર વહાં આઈ । વહાં આકર ઉસને નાટ્ય  
વિધિ દિખલાઈ-ઓર દિખલાકર ફિર વહાં વહાં સે વાપિસ અપને સ્થાન  
પર ચલી ગઈ । ( ભતે ત્તિ ભગવ ગોયમા ! પુન્નભવપુચ્છા-એવ સ્વલુ  
ગોયમા ! તેણ કાલેણ તેણ સમયણ આમલકલ્પા નગરી અવસાલ  
વણે ચેઈ-જિયસત્તૂ રાયા-રાઈ ગાહાવઈ, રાયસિરી મારિયા, રાઈ

ચમરચચ્ચાણ રાયહાણીણ એવ જહા કાલી-તહેવ આગયા નટ્ટવિર્હિ ઉવદસેત્તા  
પહિગયા )

પ્રભુનુ આગમન સાંભળીને નગરના બધા નાગરિકજનો તે પ્રભુના દર્શન  
કરવા માટે તેમજ તેમની ખાસેથી ધર્મોપદેશ સાંભળવા માટે તે ગુણશિલક  
ઉચ્ચાનમા આવ્યા । પ્રભુએ બધાને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો । બધાએ પ્રભુની  
પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે રાત્રિ નામે દેવી ચમરચચ્ચા રાત્રિ-  
ધાનીમા કાલી દેવીની જેમ રહેતી હતી । તે પ્રભુનુ આગમન સાંભળીને ત્યા  
આવી ત્યા આવીને તેણે નાટ્યવિધિ બતાવી અને બતાવીને તે ત્યાથી  
પાછી જતી રહી

( ભતે ત્તિ ભગવ ગોયમા ! પુન્નભવપુચ્છા-એવ સ્વલુ ગોયમા ! તેણ કાલેણ  
તેણ સમયણ આમલકલ્પા નગરી અવસાલવણે ચેઈ-જિયસત્તૂ રાયા-રાઈ  
ગાહાવઈ, રાયસિરી મારિયા, રાઈ દારિયા, પાસસ દારિયા

रात्रिर्दारिकाऽऽसीत् । पार्श्वस्य = पार्श्वप्रभोः समग्रपरणम् । रात्रिर्दारिका यथैव काली तथैव निष्क्रान्ता=तथैव शरीरवाकुशिका, तदेव सर्वं यावत्-सर्वदुःखानामन्त करिष्यति ।

दारिया पासस्स समोमरण राई दारिया जहेव काली- तहैव निक्खता, तहेवसरीर वाउसिया त चेव सव्व जाव अत काहिइ एव खलु जवू । विइयज्झयणस्स निक्खेवओ ) उसके चले जाने के बाद श्रमण भगवान् महावीर से गौतम ने रात्रिदेवी का पूर्वभव पूछा-प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा-हे गौतम ! उसकाल और उस समयमें आमलकल्पा नामकी नगरी थी । उसमें आम्रशालवन नामका उद्यान था । नगरीके राजा का नाम जितशत्रु था । वहां रात्रि नामका एक गाथापति रहता था । उसकी भार्या का नाम रात्रिश्री था । इन दोनों के रात्रि नाम की एक पुत्री थी जिस प्रकार काली प्रभु का उपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई थी ।-उसी प्रकार पार्श्वनाथ के वहां उद्यान में आने पर भी उनसे धर्मोपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई । अतः वह माता पिता से आज्ञा लेकर काली की तरह बड़े टाठ बाट के साथ शिविका में बैठकर प्रभु के समीप माता पिता ले गये । वहां वह दीक्षित हो गई । धीरे २ वह शरीर वाकुशिका बन गई । जिस प्रकार

जहेव काली-तहेव निक्खता, तहेव सरीरवाउसिया त चेव सव्व जाव अत काहिइ एव खलु जवू ! विइयज्झयणस्स निक्खेवओ )

तेना गमा आह श्रमणु लगवान भडावीरने गौतमे रात्रि देवीना पूर्व-  
भवनी विगत पूछी प्रभुओ तेमने आ प्रमाणे कहुँ के डे गौतम ! ते काले  
अने ते समये आमलकल्पा नामे नगरी હતી તેમાં આમ્રશાલવન નામે  
ઉદ્યાન હતું નગરીના રાજાનું નામ જિતશત્રુ હતું ત્યાં રાત્રિ નામે એક  
ગાથાપતિ રહેતો હતો તેની પત્નીનું નામ રાત્રિશ્રી હતું તેઓ બંનેને રાત્રિ  
નામે એક પુત્રી હતી જેમ કાલી પ્રભુનો ઉપદેશ શ્રવણ કરીને પ્રતિબોધને  
પ્રાપ્ત થઈ તેમજ ત્યાં ઉદ્યાનમાં પધારેલા પાર્શ્વનાથની પાસેથી ધર્મોપદેશ  
સાંભળીને તે પણ પ્રતિબોધિત થઈ ગઈ એથી કાલીની જેમજ તેને પણ  
પોતાના માતાપિતાની પાસેથી આજ્ઞા મેળવી અને ત્યારપછી તેના માતાપિતાએ  
તેને પાલખીમાં બેસાડીને પ્રભુની પાસે લઈ ગયા, ત્યાં તે દીક્ષિત થઈ ગઈ  
ધીમે ધીમે તે પણ શરીર વાકુશિકા બની ગઈ જેમ કાલી દારિકા પણ આર્યા  
થઈને શરીર વાકુશિકા બની ગઈ હતી ત્યારપછી જેવી સ્થિતિ કાલી આર્યાની

નિર્ગતા યાત્ ભગવન્તં પર્યુવાસ્તે । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે ' રાઈ ' રાત્રિઃ-  
રાત્રિનામ્ની દેવી ચમરચચ્ચાયા રાજધાન્યામ્, एवं यथा काली तथैव-आगता,  
नाट्यविधिमुपदर्श्य प्रतिगता । ' भते त्ति ' हे भदन्त ! इति सम्बोध्य भगवान्  
गौतमः ' पुण्वभवपुच्छा ' पूर्वभवपृच्छा रात्रि देव्या पूर्वभव पृच्छति । भगवान्  
माह-एव खलु हे गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये आमलकण्या नगरी,  
आम्रशालवन चैत्यम्, जितशत्रू राजा, रात्रिर्गाथापतिः, रात्रिश्रीभार्या, तयोः

તેણ કાલેણ તેણ સમયે રાઈ દેવી ચમરચચ્ચાણ રાયહાણીણ એવ જહા  
કાલી-તહેવ આ ગયા નટવિહિ ઉવદસેત્તા પઢિગયા ) પ્રભુ કા આગમન  
સુનકર નગર નિવાસિની સમસ્ત જનતા ઉન પ્રભુ કે દર્શન કરને ઓર  
ઉનસે ધર્મોપદેશ સુનને કે લિયે ઉસ ગુણશિલક ઉગ્યાન મેં આઈ ।  
પ્રભુ ને સવ કો ધર્મ કા ઉપદેશ દિયા । સયને પ્રભુ કી પર્યુવાસના  
કી । ઉસ કાલ મેં ઓર ઉસ સમય મેં રાત્રિનામ કી દેવી ચમર-  
ચચારાજધાની મેં રહતી થી-જેસે વહાં કાલી દેવી રહતી થી । સો  
વહુ બી પ્રભુ કા આગમન સુનકર વહા આઈ । વહા આકર ઉસને નાટ્ય  
વિધિ દિખલાઈ-ઓર દિખલાકર ફિર વહુ વહા સે વાપિસ અપને સ્થાન  
પર ચલી ગઈ । ( ભતે ત્તિ ભગવ ગોયમા ! પુવ્વભવપુચ્છા-એવ સ્વલુ  
ગોયમા ! તેણ કાલેણ તેણ સમયે આમલકળ્પા નગરી અવસાલ  
વળે ચેહણ-જિયસત્તુ રાયા-રાઈ ગાહાવઈ, રાયસિરી મારિયા, રાઈ

ચમરચચાણ રાયહાણીણ એવ જહા કાલી-તહેવ આગયા નટવિહિ ઉવદસેત્તા  
પઢિગયા )

પ્રભુનુ આગમન સાભળીને નગરના બધા નાગરિકજનો તે પ્રભુના દર્શન  
કરવા માટે તેમજ તેમની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાભળવા માટે તે ગુણશિલક  
ઉગ્યાનમા આવ્યા પ્રભુએ બધાને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો બધાએ પ્રભુની  
પર્યુવાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે રાત્રિ નામે દેવી ચમરચચા રાજ-  
ધાનીમા કાલી દેવીની જેમ રહેતી હતી તે પ્રભુનુ આગમન સાભળીને ત્યા  
આવી ત્યા આવીને તેણે નાટ્યવિધિ બતાવી અને બતાવીને તે ત્યાથી  
પાછી જતી રહી

( ભતે ત્તિ ભગવ ગોયમા ! પુવ્વભવપુચ્છા-એવ સ્વલુ ગોયમા ! તેણ કાલેણ  
તેણ સમયે આમલકળ્પા નગરી અવસાલવળે ચેહણ-જિયસત્તુ રાયા-રાઈ  
ગાહાવઈ, રાયસિરી મારિયા, રાઈ દારિયા, પાસસ્સ દારિયા

रात्रिर्दारिकाऽऽसीत् । पार्श्वस्य = पार्श्वप्रभोः समनमरणम् । रात्रिर्दारिका यथैव काली तथैव निष्क्रान्ता=तथैव शरीरवाकुशिका, तदेव सर्वं यावत्-मर्वद्दु खानामन्तं करिष्यति ।

दारिया पासस्स समोमरण राई दारिया जहेव काली- तहैव निक्खंता, तहेवसरीर वाउसिया त चेव सव्व जाव अत काहिइ एव खलु जवू । विइयज्झयणस्स निक्खेवओ ) उसके चले जाने के बाद श्रमण भगवान् महावीर से गौतम ने रात्रिदेवी का पूर्वभव पृथा-प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा-हे गौतम ! उसकाल और उस समयमें आमलकल्पा नामकी नगरी थी । उसमें आम्रशालवन नामका उद्यान था । नगरीके राजा का नाम जितशत्रु था । वहां रात्रि नामका एक गाथापति रहता था । उसकी भार्या का नाम रात्रिश्री था । इन दोनों के रात्रि नाम की एक पुत्री थी जिस प्रकार काली प्रभु का उपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई थी ।-उसी प्रकार पार्श्वनाथ के वहां उद्यान में आने पर भी उनसे धर्मोपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई । अतः वह माता पिता से आज्ञा लेकर काली की तरह बड़े टाठ बाट के साथ शिविका में बैठकर प्रभु के समीप माता पिता ले गये । वहां वह दीक्षित हो गई । वीरे २ वह शरीर वाकुशिका बन गई । जिस प्रकार

जहेव काली-तहेव निक्खंता, तहेव सरीरवाउसिया त चेव सव्व जाव अत काहिइ एव खलु जवू ! विइयज्झयणस्स निक्खेवओ )

तेना गया गाढ श्रमणु लगवान भडावीरने गौतमे रात्रि देवीना पूर्व-  
भवनी विगत पूछी प्रभुअे तेमने आ प्रभावे ढहुं डे डे गौतम ! ते काणे  
अने ते समये आमलकल्पा नामे नगरी હતી તેમા આમ્રશાલવન નામે  
ઉદ્યાન હતું નગરીના રાજાનુ નામ જિતશત્રુ હતું ત્યા રાત્રિ નામે એક  
ગાથાપતિ રહેતો હતો તેની પત્નીનુ નામ રાત્રિશ્રી હતું તેઓ બંનેને રાત્રિ  
નામે એક પુત્રી હતી જેમ કાલી પ્રભુને ઉપદેશ શ્રવણ કરીને પ્રતિબોધને  
પ્રાપ્ત થઈ તેમજ ત્યા ઉદ્યાનમા પધારેલા પાર્શ્વનાથની પાસેથી ધર્મોપદેશ  
સાંભળીને તે પણ પ્રતિબોધિત થઈ ગઈ એથી કાલીની જેમજ તેને પણ  
પોતાના માતાપિતાની પાસેથી આજ્ઞા મેળવી અને ત્યારપછી તેના માતાપિતાએ  
તેને પાલખીમા બેસાડીને પ્રભુની પાસે લઈ ગયા, ત્યા તે દીક્ષિત થઈ ગઈ  
ધીમે ધીમે તે પણ શરીર વાકુશિકા બની ગઈ જેમ કાલી દારિકા પણ આર્યા  
થઈને શરીર વાકુશિકા બની ગઈ હતી ત્યારપછી જેવી સ્થિતિ કાલી આર્યાની

‘ एवं खलु जम्बू ! ’ इत्यादि द्वितीयाध्ययनस्य निक्षेपकः=उपसंहारः= समाप्तिकाव्यमन्योऽत्र घोष्य ॥ सू० ५ ॥

इति प्रथमवर्गस्य द्वितीयाध्ययन समाप्तम् ॥-१-२ ॥

काली दारिका आर्या होकर शरीर वाकुशिका बन गई थी। इसके बाद जैसी स्थिति काली आर्या की हुई-वही सब स्थिति इस रात्रि दारिका की भी हुई-इस प्रकार सब सन्ध यहां पर इसके विषय में लगावेना चाहिये और वह सन्ध “महाविदेह में उत्पन्न होकर यह समस्त दुःखों का अन्त करेगी” यहां तक जानना चाहिये। इस प्रकार है जम्बू। यह प्रथमवर्ग के द्वितीय अध्ययन का उपसंहार है ॥ सू० ५ ॥

प्रथमवर्ग का द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

यद्य तेवीज स्थिति ते रात्रिदारिकानी पक्ष यद्य अर्धो आ प्रभावे कालिदारिकानो षधो स षध आना विधे समञ्ज लेवो नोधञ्जे अने ते स षध “महाविदेहमा उत्पन्न यधने ते षधा दुःखानो अत करशे” अर्धो सुधी समञ्जवे। नोधञ्जे. आ प्रभावे डे जम्बू ! प्रथम वर्गना जीज अध्ययनने। आ उपसंहार छे सू ५

“प्रथम वर्गनु जीजु अध्ययन समाप्त”



## અથ તૃતીયમધ્યયનમ્

મૂલમ્—જહ્ ણં ભંતે ! તદ્વયજ્ઞયણસ્સ ઉક્કલેવઓ, એવં સ્વલ્લુ  
જંબૂ ! રાયગિહે ણયરે ગુણસિલણ્ણે ચેદ્ધણ્ણે એવં જહેવ રાઈ તહેવ  
રયણી વિ, ણવરં આમલકપ્પા નયરી રયણી ગાહાવર્ડ રયણી-  
સિરી ભારિયા રયણી દારિયા સેસ તહેવ જાવ અંત કાહિદ્ધિ  
૩ । એવં વિજ્જૂ વિ આમલકપ્પા નયરી વિજ્જુગાહાવર્ડ વિજ્જુ-  
સિરીભારિયા વિજ્જુદારિયા સેસ તહેવ । ૪ એવ મેહા વિ આમ-  
લકપ્પાણ્ણે નયરીણ્ણે મેહેગાહાવર્ડ મેહસિરી ભારિયા મેહા દારિયા  
સેસં તહેવ ૫ । એવં સ્વલ્લુ જંબૂ ! સમણેણં જાવ સપત્તેણં ધમ્મ-  
કહાણં પઠમસ્સ વગ્ગસ્સ અયમદ્ધે પપ્પત્તે ॥ સૂ. ૬ ॥

ટીકા—‘ જહ્ ણં ભંતે ’ ઇત્યાદિ । યદિ સ્વલ્લુ ભદન્ત ! ઇત્યાદિ તૃતીયાધ્યયનસ્ય  
ઉત્કલેપકાઃ=જમ્બૂપ્રશ્નાદિરૂપઃ પ્રારમ્ભવાક્યપ્રયત્નોઽવગચ્યઃ । સુધર્માસ્વામી કથ

॥ તૃતીય અધ્યયન પ્રારભ ॥

( જહ્ ણં ભંતે ! તદ્વયજ્ઞયણસ્સ ઉક્કલેવઓ ) ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થઃ—( જહ્ ણં ભંતે ! તદ્વયજ્ઞયણસ્સ ઉક્કલેવઓ ) અથ જંબૂ  
સ્વામી પુનઃ પૂછતે હૈં કિં હે ભદન્ત ! યદિ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને  
દ્વિતીય અધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્તરૂપ સે અર્થ નિરૂપિત કિયા હૈ—તો  
તૃતીય અધ્યયન કા ઉન્હોને કયા અર્થ પ્રતિપાદિત કિયા હૈ ? હસ તરહ  
સે હસ તૃતીય અધ્યયન કા જમ્બૂ સ્વામી કા યહ પ્રશ્ન આદિરૂપ વાક્ય  
પ્રયત્ન ઉત્કલેપક હૈ—પ્રારમ્ભક હૈ—હસ પ્રશ્ન કા ઉત્તર શ્રી સુધર્મા સ્વામી

ત્રીજી અધ્યયન પ્રારભ —

‘ જહ્ ણં ભંતે ! તદ્વયજ્ઞયણસ્સ ઉક્કલેવઓ ’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થઃ—( જહ્ ણં ભંતે ! તદ્વયજ્ઞયણસ્સ ઉક્કલેવઓ ) હવે જંબૂ સ્વામી  
ફરી પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીર બીજા અધ્યયનનો  
આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો ત્રીજા અધ્યયનનો તેમણે શે  
અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે ? આ પ્રમાણે આ ત્રીજા અધ્યયનનો જંબૂ સ્વામીનો  
આ પ્રશ્ન વગેરે રૂપ વાક્ય પ્રયત્ન ઉત્કલેપક છે—પ્રારભ છે આ પ્રશ્નનો ઉત્તર  
શ્રી સુધર્માસ્વામી આ પ્રમાણે આપે છે કે—

‘ एवं खलु जम्भू ! ’ इत्यादि द्वितीयाध्ययनस्य निष्कर्षकः=उपसंहारः= समाप्तिवाक्यप्रबन्धोऽत्र बोध्यः ॥ सू० ५ ॥

इति प्रथमवर्गस्य द्वितीयाध्ययन समाप्तम् ॥-१-२ ॥

काली दारिका आर्या होकर शरीर चाकुशिका बन गई थी । इसके बाद जैसी स्थिति काली आर्या की हुई-वही सब स्थिति इस रात्रि दारिका की भी हुई-इस प्रकार सब सवन्ध यहां पर इसके विषय में लगा देने चाहिये और वह सवन्ध “महाविदेह में उत्पन्न होकर यह समस्त दुःखों को अन्त करेगी” यहां तक जानना चाहिये । इस प्रकार है जन्म । यह प्रथमवर्ग के द्वितीय अध्ययन का उपसंहार है ॥ सू० ५ ॥

प्रथमवर्ग का द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

यद्यं तेवीज स्थिति ते रात्रिदारिकानी पञ्च यद्यं अर्द्धा आ प्रभाषे कालिदारिकानां यद्यं स वध आना विषे समञ्ज देवे। नोद्यन्ते अने ते स वध “ महाविदेहमां उत्पन्न यद्यने ते वधा दुःखानां अत करणे ” अर्द्धा सुधी समञ्जवे। नोद्यन्ते आ प्रभाषे डे जन्म ! प्रथम वर्गना भीम अध्ययनने। आ उपसंहार छे सू ५

“ प्रथम वर्गनु भीम अध्ययन समाप्त ”

## અથ તૃતીયમધ્યયનમ્

મૂલ્મ—જહ ણં ભંતે ! તદ્વયજ્ઞયણસ્સ ઉક્ખેવઓ, એવ યલુ જંઘૂ ! રાયગિહે ણયરે ગુણસિલે ચેદ્દે એવં જહેવ રાઈ તહેવ રયણી વિ, ણવરં આમલકપ્પા નયરી રયણી ગાહાવર્ડ રયણી-સિરી ભારિયા રયણી દારિયા સેસ તહેવ જાવ અંત કાહિદ્ ૩ । એવ વિજ્જૂ વિ આમલકપ્પા નયરી વિજ્જુગાહાવર્ડ વિજ્જુ-સિરીભારિયા વિજ્જુદારિયા સેસ તહેવ । ૪ એવ મેહા વિ આમ-લકપ્પાએ નયરીએ મેહે ગાહાવર્ડ મેહસિરી ભારિયા મેહા દારિયા સેસં તહેવ ૫ । એવ યલુ જવૂ ! સમણેણં જાવ સપત્તેણં ધમ્મ-કહાણં પઠમસ્સ વગ્ગસ્સ અયમદ્દે પણત્તે ॥ સૂ. ૬ ॥

ટીકા—‘ જહ ણં ભંતે ’ ઇત્યાદિ । યદિ યલુ ભદન્ત ! ઇત્યાદિ તૃતીયા યયનસ્ય ઉત્તેષકઃ=જમ્બૂપ્રશ્નાદિરૂપઃ પ્રારમ્ભવાન્યપ્રવચ્ચોડયમાચ્યઃ । સુધર્માસ્વામી-કથ

### ॥ તૃતીય અધ્યયન પ્રારભ ॥

( જહ ણં ભંતે ! તદ્વયજ્ઞયણસ્સ ઉક્ખેવઓ ) ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થઃ—( જહ ણં ભંતે ! તદ્વયજ્ઞયણસ્સ ઉક્ખેવઓ ) અથ જંઘૂ સ્વામી પુનઃ પૂછતે હૈં કિ હે ભદન્ત ! યદિ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને દ્વિતીય અધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્તરૂપ સે અર્થ નિરૂપિત કિયા હૈ—તો તૃતીય અધ્યયન કા ઉન્હોને કયા અર્થ પ્રતિપાદિત કિયા હૈ ? હસ તરહ સે હસ તૃતીય અધ્યયન કા જંઘૂ સ્વામી કા યહ પ્રશ્ન આદિરૂપ વાક્ય પ્રવચ્ચ ઉત્તેષક હૈ—પ્રારમ્ભક હૈ—હસ પ્રશ્ન કા ઉત્તર શ્રી સુધર્મા સ્વામી

### ત્રીજી અધ્યયન પ્રારભ —

‘ જહ ણં ભંતે ! તદ્વયજ્ઞયણસ્સ ઉક્ખેવઓ ’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—( જહ ણં ભંતે ! તદ્વયજ્ઞયણસ્સ ઉક્ખેવઓ ) હવે જંઘૂ સ્વામી ફરી પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે બીજા અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો ત્રીજા અધ્યયનનો તેમણે શો અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે ? આ પ્રમાણે આ ત્રીજા અધ્યયનનો જંઘૂ સ્વામીનો આ પ્રશ્ન વગેરે રૂપ વાક્ય પ્રવચ્ચ ઉત્તેષક છે—પ્રારભ છે આ પ્રશ્નનો ઉત્તર શ્રી સુધર્માસ્વામી આ પ્રમાણે આપે છે કે —

यति-एव खलु हे जम्बूः । राजगृहं नगरं, गुणशिलक चैवम् । एव यथैव रात्रि  
स्त्वथैवरजनी अपि, नगरम् आमलकल्या नगरी, रजनीगाथापति, रजनीश्रीभार्या,  
रजनी दारिका । शेष तथैव । यावत्-सर्वदृग्मानामन्तं करिष्यति ॥

॥ इति प्रथमपर्वस्य तृतीयाध्ययनम् ॥ १-३ ॥

इस प्रकार से देते हैं-(एव खलु जम्बू ! रात्रिगृहे ण्यरे गुणशिलक  
चेइए एवं जहेव राई तहेव रयणी चि, णवर आमलकल्या नगरी, रयणी  
गाहावई रयणीसिरी भारिया रयणी दारिया सेस तहेव जाव अत  
काहिइ ३ ) जम्बू ! सुनो-उस काल में और उस समय में राजगृह नाम  
का नगर था । उसमें गुणशिलक नामका उद्यान था । जिस प्रकार रात्रि  
प्रभु का आगमन सुनकर, गुणशिलक उद्यान में गई थी उसी तरह  
रजनी भी वहां गई उसने प्रभु के मुख से धर्म का उपदेश सुना । सुन  
कर ससार शरीर और भोगों से वह विरक्त हो गई । दीक्षा लेने का  
अपना भाव उसने प्रभु से निवेदित किया । प्रभुने यथासुख देवानुप्रि  
ये कहकर उसके भाव की सराहना करतेहुए 'शुभस्य शीघ्र' करने की  
अपनी अनुमति प्रकट की-तब यह घर आई और मातासे अपना  
दीक्षा लेने का विचार प्रकट किया-इत्यादि सब सन्ध काली दारिका  
के कथानक अनुसार रजनी के साथ लगालेना चाहिये । जब रजनी  
देवी प्रभु को वदना करनेके लिये गुणशिलक उद्यान में आई और वहा

( एव खलु जम्बू ! रात्रिगृहे ण्यरे गुणशिलक चेइए एवं जहेव राई तहेव  
रयणी चि णवर आमलकल्या नगरी, रयणी-गाहावई रयणीसिरी भारिया रयणी  
दारिया सेस तहेव जाव अत काहिइ ३ ) ।

हे जम्बू ! सालणी, ते काणे अने ते समये राजगृह नामे नगर छु  
तेमा गुणशिलक नामे उद्यान छु जेम रात्रि प्रभु आगमन सालणीने  
गुणशिलक उद्यानमा गछ छती तेमज रजनी पणु त्या गछ तेणु प्रभुना  
मुअथी धर्मने उपदेश सालण्ये । सालणीने ते ससार, शरीर अने लोअथी  
विरक्त थई गछ तेणु पोताने दीक्षा अडणु करवाने लाव प्रभुनी सामे  
प्रकट कथी प्रभुअे 'यथासुअम्' देवानुप्रिये । उहीने तेना लावनी सराडना  
करी अने शुअ कार्यमा विलअ करे नहि अेची पोतानी अनुमती दयावी  
त्यारे ते पोताने घेर आनी अने मातापितानी सामे दीक्षा अडणु करवाने  
विचार प्रकट कथी-वगेरे अधी विगत काली दारिकानी जेमज रजनीनी सामे  
पणु समणु देवी जेअअे अत्यारे रजनीदेवी प्रभुने वदना करवा भाटे गुण  
शिलक उद्यानमा आवी अने त्या तेणु नाटयविधितु प्रवर्शने । तयारभाइ

‘ एव विज्जूवि ’ इत्यादि । एव विद्युदपि । आमलकल्पा नगरी, विद्युद् गाथापति, विद्युत् श्रीभार्या, विद्युदारिका । शेष तथैव ।

इति प्रथमवर्गस्य चतुर्था गयनम् ॥ १-४ ॥

उसने नाट्यविधिका प्रदर्शन किया बाट में वह जय वहा से प्रभु की पर्युपासना कर वापिस अपने स्थान पर चली गई-तब प्रभु से गौतम गणधर ने उसके पूर्वभव पृष्ठे तब प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा-उस काल और उस समय में आमलक कल्पा नामकी नगरी थी-उसमें रजनी नामका गाथापति रहता था । रजनी थी उसकी भार्या का नाम था । इन दोनों के एक पुत्री जिसका नाम रजनी था । उसके विषय का अवशिष्ट कथानक “ समस्त दुःखों का यह अन्त करेगी ” यहां तक का काली दारिका के जैसा ही जानना चाहिये ॥ सू० ६ ॥

॥ प्रथम वर्ग का तीसरा अध्ययन समाप्त ॥

एव विज्जूवि आमलकल्पा नगरी विज्जू गाहावई ॥

विज्जुसिरीभार्या विज्जुदारिया, सेस तहेव ॥ ४ ॥

एव मेहावि आमलकल्पाए नगरीए मेहे गाहावई ॥

मेहासिरी भारिया मेहा दारिया सेस तहेव ॥ ५ ॥

(एव खलु जव् ! समणेण जाव संपत्तेण धम्मकहाण पढमस्स वग्ग

प्रभुनी पर्युपासना करीने पाछी पोताना स्थाने जती रह्ति त्थारे गौतम गणधरे प्रभुने तेना पूर्वभवो पूछ्वा त्थारे प्रभुअे तेने आ प्रभाण्णे कहुं के ते क्खणे अने ते समये आमलकल्पा नामे नगरी હતી, તેમાં રજની નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો, રજની શ્રી તેની પત્નીનું નામ હતું તેઓ બંનેને એક પુત્રી હતી-જેનું નામ રજની હતું એના વિષેની બાકીની બધી વિગત “ સમસ્ત દુ ખોનો તે અન્ત કરશે ” અહીં સુધીની કાલી દારિકાની જેમજ સમજી લેવી જોઈએ ॥ સૂત્ર ૬ ॥

“ પ્રથમ વર્ગનું ત્રીજું અધ્યયન સમાપ્ત ॥

( એવ વિજ્જૂવિ આમલકળ્પા નયરી વિજ્જુ ગાહાવઈ ।

વિજ્જુસિરીભાર્યા વિજ્જુદારિયા, સેસ તહેવ ॥ ૪ ॥

એવ મેહા વિ આમલકળ્પાએ નયરીએ મેહે ગાહાવઈ ।

મેહાસિરી ભારિયા મેહા દારિયા સેસ તહેવ ॥ ૫ ॥

( એવ ખલુ જવ્ ! સમણેણ જાવ સંપત્તેણ ધમ્મકહાણ પઢમસ્સ વગ્ગસ્સ અય્-

મહે પપ્પત્તે ૬ )



‘ એવ મેદાનિ ’ इत्यादि । एव मेघाऽपि । आमलकल्पायां नगर्यां मेघो गाथापतिः, मेघश्रीभार्या, मेघा दारिका । दोष तथैव ।

શ્રીસુધર્માસ્વામીમાદ-एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन यावत् मोक्ष सम्पत्तेन धर्मकथानां प्रथमस्य वर्गस्यायमर्थः प्रसूतः ॥ सू० ६ ॥

॥ इति प्रथमवर्गस्य पञ्चमाध्ययनम् ॥ १-५ ॥

અથ દ્વિતીયો વર્ગઃ પ્રારંભ્યતે-‘ જડ્ડળ મંતે ’ इत्यादि ।

मूलम्-जड्ढणं भंते । समणेण जाव संपत्तेणं दोब्बस्स वग्गस्स उक्खेवओ, एव खलु जंबू । समणेणं जाव संपत्तेणं दोब्बस्स

સસ અઘમઠ્ઠે પળ્લત્તે ૬) ઇસી તરહ કા કથાનક વિદ્યુત્તકે વિષય મેં મી જાનના ચાહિયે । આમલકલ્પા નગરી વિદ્યુત ગાથાપતિ વિદ્યુત્ત શ્રી ભાર્યા હન દોનોં કે યહાં વિદ્યુત્ત દારિકા । ઇસ તરહ નામ આદિ મેં હી પરિવર્તન હુઆ હૈ । અભિધેય વિષય મેં કુઝ અન્તર નહીં હૈ । મેઘ કે વિષય મેં મી યહી વાત જાનની ચાહિયે । આમલકલ્પ નગરી, મેઘ ગાથાપતિ, મેઘ શ્રી ભાર્યા, મેઘા દારિકા-ઇસ પ્રકાર ઇસ કથાનક મેં હન નામોં મેં પરિવર્તન હુઆ હૈ-અભિધેય વક્તવ્ય-વિષય મેં નહીં । ઇસ પ્રકાર યહા તક પ્રથમ વર્ગ કે ૫, અધ્યયન સમાપ્ત હો જાતે હૈ । વિદ્યુદારિકા કા અધ્યયન ૪ ચૌથા, એવ મેઘા દારિકા કા અધ્યયન ૫ પચમ હૈ । ઇસ તરહ હે જબૂ । શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો મુક્તિ સ્થાન કે અધિપતિ બન ચુકે હૈ ધર્મકથા કે પ્રથમવર્ગ કા યહ અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ ?

આ પ્રમાણેનુ જ કથાનક વિદ્યુતતા વિષે પણ સમજી લેવું જોઈએ આમલકલ્પા નગરી, વિદ્યુત ગાથાપતિ અને વિદ્યુત શ્રી ભાર્યા આ બંનેને ત્યા વિદ્યુત દારિકા આ પ્રમાણે ફક્ત નામ વગેરેમા પરિવર્તન થયું છે અભિધેય વિષયમા કોઈ પણ જાતનો તફાવત નથી મેઘતા વિષે પણ એ જ વાત સમજી લેવી જોઈએ આમલકલ્પા નગરી, મેઘ ગાથાપતિ, મેઘ શ્રી ભાર્યા, મેઘ દારિકા આ પ્રમાણે આ કથાનકમા પણ નામોમા જ પરિવર્તન થયું છે-અભિધેય વક્તવ્ય વિષયમા નહિ આ પ્રમાણે અહીં સુધી પ્રથમ વર્ગના પાંચ અધ્યયનો પૂરા થઈ જાય છે વિદ્યુદારિકાનું અધ્યયન થોયું, અને મેઘ દારિકાનું અધ્યયન પાંચમું છે આ પ્રમાણે હે જ જબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ મુક્તિ સ્થાનના અધિપતિ થઈ ચૂક્યા છે-ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગનો આ અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે. ॥ ૬ ॥

वग्गस्स पंच अज्झयणा पणत्ता, तं जहा-सुभा निसुंभा रंभा  
निरभा मयणा, जइ ण भते । समणेणं जाव सपत्तेणं धम्मक-  
हाणं दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पणत्ता, दोच्चस्स णं  
भंते । वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पणत्ते ? एव खलु  
जवू । तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए  
सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ, तेणं कालेण  
तेणं समएणं सुभादेवी वलिचंचाए रायहाणीए सुभवडेसए  
भंवणे सुभसि सीहासणसि कालीगमएणं जाव णट्ठविहि उव-  
दसेत्ता जाव पडिगया, पुठ्वभवपुच्छा, सावत्थी णयरी कोट्टए  
चेइए जियसत्तू राया सुभेगाहावई सुंभसिरी भारिया सुभा  
दारिया सेसं जहा कालीए णवर अद्धुट्ठाइ पलिओवमाईं ठिईं  
एवं खलु जवू । निक्खेवओ अज्झयणस्स एव सेसावि चत्तारि  
अज्झयणा सावत्थीए नवरं माया पिया सरिसनामया, एवं  
खलु जवू । निक्खेवओ विईयवग्गस्सर ॥ सू० ७ ॥

॥ वीओ वग्गो समत्तो ॥

टीका—जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन  
द्वितीयस्य वर्गस्य उत्क्षेपकः । सुधर्मास्वामीप्राह—एव खलु हे जम्बूः श्रमणेन यावत्

—द्वितीयवर्गप्रारम्भः—

‘ जइण भते । समणेण ’ इत्यादि ।

टीकार्थः—जवू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं कि ( भते ।  
जइण समणेण जाव सपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ—एव खलु

भीजे वर्ग प्रारम्भ—

‘ जइण भते । समणेण ’ इत्यादि—

टीकार्थः—जवू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामीने पूछे छे ठे—

( भते । जइण समणेण जाव सपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ—एव खलु

‘ એવ મેદાત્રિ ’ ઇત્યાદિ । એવ મેદાડપિ । આમલકલ્પાયાં નગર્યાં મેઘો ગાથા-  
પતિઃ, મેઘશ્રીભાર્યા, મેઘા દારિકા । શેષ તથૈવ ।

શ્રીસુધર્માસ્વામીમાહ-એવ સ્વલુ હે જન્મુઃ । શ્રમણેન યાત્રત્ મોક્ષ સમ્પ્રાપ્તેન  
ધર્મકથાનાં પ્રથમસ્ય વર્ગસ્યાયમર્થ પ્રગ્નતઃ ॥ મુ. ૬ ॥

॥ ઇતિ પ્રથમવર્ગસ્ય પશ્ચમાભ્યયનમ્ ॥ ૧-૬ ॥

અથ દ્વિતીયો વર્ગઃ પ્રારભ્યતે-‘ જડ્ઞ મતે ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્-જડ્ઞ મતે । સમણેણં જાત્ર સપત્તેણ દોઢસ્સ વગ્મ-  
સ્મ ઉવ્વસેવઓ, એવ સ્વલુજંબૂ । સમણેણં જાત્ર સપત્તેણ દોઢસ્સ

સ્સ અયમદ્દે પળ્લત્તે ૬) ઇસી તરહ કા કથાનક વિદ્યુતકે વિષય મેં મી  
જાનના ચાહિયે । આમલકલ્પા નગરી વિદ્યુત ગાથાપતિ વિદ્યુત શ્રી ભાર્યા  
હન દોનોં કે યહાં વિદ્યુત દારિકા । ઇસ તરહ નામ આદિ મેં હી પરિવ  
ર્તન હુઆ હૈ । અભિધેય વિષય મેં કુઝ અન્તર નહી હૈ । મેઘ કે વિષય  
મેં મી યહી ઘાત જાનની ચાહિયે । આમલકલ્પ નગરી, મેઘ ગાથાપતિ,  
મેઘ શ્રી ભાર્યા, મેઘા દારિકા-ઇસ પ્રકાર ઇસ કથાનક મેં હન નામોં મેં  
પરિવર્તન હુઆ હૈ-અભિધેય વસ્તવ્ય-વિષય મેં નહી । ઇસ પ્રકાર યહા  
તક પ્રથમ વર્ગ કે ૬, અધ્યયન સમાપ્ત હો જાતે હૈં । વિદ્યુદારિકા કા  
અધ્યયન ૪ ચૌથા, એવ મેઘા દારિકા કા અધ્યયન ૫ પચમ હૈ । ઇસ  
તરહ હે જંબૂ । શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો મુક્તિ સ્થાન કે અધિ  
પતિ બન ચુકે હૈં ધર્મકથા કે પ્રથમવર્ગ કા યહ અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ ?

આ પ્રમાણેનુ જ કથાનક વિદ્યુતતા વિષે પણ સમજી લેવું જોઈએ  
આમલકલ્પા નગરી, વિદ્યુત ગાથાપતિ અને વિદ્યુત શ્રી ભાર્યા આ બંનેને ત્યા  
વિદ્યુત દારિકા આ પ્રમાણે ક્રુત નામ વગેરેમા પરિવર્તન થયું છે અભિધેય  
વિષયમા કોઈ પણ જાતનો તફાવત નથી મેઘતા વિષે પણ એ જ વાત સમજી  
લેવી જોઈએ આમલકલ્પા નગરી, મેઘ ગાથાપતિ, મેઘ શ્રી ભાર્યા, મેઘ દારિકા  
આ પ્રમાણે આ કથાનકમા પણ નામોમા જ પરિવર્તન થયું છે-અભિધેય  
વસ્તવ્ય વિષયમા નહિ આ પ્રમાણે અહીં સુધી પ્રથમ વર્ગના પાંચ અધ્યયનો  
પૂરા થઈ જાય છે વિદ્યુદારિકાનું અધ્યયન ચોથું, અને મેઘ દારિકાનું અધ્યયન  
પાંચમું છે આ પ્રમાણે હે જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ મુક્તિ  
સ્થાનના અધિપતિ થઈ ચૂક્યા છે-ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગને આ અર્થ  
પ્રરૂપિત કર્યો છે ॥ ૬ ॥

वग्गस्स पंच अज्झयणा पणत्ता, तं जहा—सुभा निसुंभा रंभा  
निरंभा मयणा, जइ ण भंते । समणेण जाव सपत्तेण धम्मक-  
हाण दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पणत्ता, दोच्चस्स णं  
भंते । वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अहे पणत्ते ? एवं खलु  
जवू । तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए  
सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ, तेणं कालेण  
तेणं समएणं सुंभादेवी वलिचंचाए रायहाणीए सुंभवडेसए  
‘भवणे सुभंसि सीहासणंसि कालीगमएणं जाव णट्टविहि उव-  
दसेत्ता जाव पडिगया, पुठवभवपुच्छा, सावत्थी णयरी कोट्टए  
चेइए जियसत्तू राया सुभेगाहावई सुंभसिरी भारिया सुंभा  
दारिया सेसं जहा कालीए णवर अद्रधुट्टाइ पलिओवमाइं ठिई  
एवं खलु जवू । निक्खेवओ अज्झयणस्स एव सेसावि चत्तारि  
अज्झयणा सावत्थीए नवर माया पिया सरिसनामया, एवं  
खलु जवू । निक्खेवओ विईयवग्गस्सर ॥ सू० ७ ॥

॥ वीओ वग्गो समत्तो ॥

टीका—जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु हे भदन्त । श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन  
द्वितीयस्य वर्गस्य उत्क्षेपकः । सुधर्मास्वामीप्राह—एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन यावत्

—द्वितीयवर्गप्रारम्भः—

‘ जइण भंते ! समणेण ’ इत्यादि ।

टीकार्थः—जवू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं कि ( भंते !  
जइण समणेण जाव सपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ—एव खलु

भीन्ने वर्ग प्रारम्भ—

‘ जइण भंते ! समणेण ’ इत्यादि—

टीकार्थः—जवू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं—

( भंते ! जइण समणेण जाव सपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ—एव खलु

‘ એવ મેઘાપિ ’ इत्यादि । एव मेघाऽपि । आमलकल्पायां नगर्यां मेघो गाथापतिः, मेघश्रीभार्या, मेघा दारिका । शेष तथैव ।

श्रीसुधर्मास्वामीप्राह-एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन यावत् मोक्ष सम्प्राप्तेन धर्मकथानां प्रथमस्य वर्गस्यायमर्थः प्रकृतः ॥ सू० ६ ॥

॥ इति प्रथमवर्गस्य पञ्चमाध्ययनम् ॥ १-५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः प्रारभ्यते-‘ जङ्घ मते ’ इत्यादि ।

मूलम्-जङ्घं मते । समणेण जाव संपत्तेण दोब्बस्स वग्गस्स उक्खेवओ, एवं खलु जवू ! समणेणं जाव संपत्तेणं दोब्बस्स

स्स અઘમદે પળણ્ણે ૬) ઢસી તરહ કા કથાનક વિદ્યુત્તકે વિષય મેં મી જાનના ચાહિયે । આમલકલ્પા નગરી વિદ્યુત્ત ગાથાપતિ વિદ્યુત્ત શ્રી ભાર્યા હન દોનોં કે યહાં વિદ્યુત્ત દારિકા । હસ તરહ નામ આદિ મે હી પરિવર્તન હુઆ હૈ । અભિધેય વિષય મેં કુઝ અન્તર નહીં હૈ । મેઘ કે વિષય મેં મી યહી ઘાત જાનની ચાહિયે । આમલકલ્પ- નગરી, મેઘ ગાથાપતિ, મેઘ શ્રી ભાર્યા, મેઘા દારિકા-હસ પ્રકાર હસ કથાનક મેં હન નામોં મેં પરિવર્તન હુઆ હૈ-અભિધેય વક્તવ્ય-વિષય મેં નહીં । હસ પ્રકાર યહા તક પ્રથમ વર્ગ કે ૫, અધ્યયન સમાપ્ત હો જાતે હૈ । વિદ્યુદારિકા કા અધ્યયન ૪ ચૌથા, એવ મેઘા દારિકા કા અધ્યયન ૫ પચમ હૈ । હસ તરહ હે જવૂ ! શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો મુક્તિ સ્થાન કે અધિપતિ બન ચુકે હૈ ધર્મકથા કે પ્રથમવર્ગ કા યહ અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ ?

આ પ્રમાણેનુ જ કથાનક વિદ્યુત્તા વિષે પણ સમજી લેવું જોઈએ આમલકલ્પા નગરી, વિદ્યુત ગાથાપતિ અને વિદ્યુત શ્રી ભાર્યા. આ બંનેને ત્યા વિદ્યુત દારિકા આ પ્રમાણે ક્રૂર નામ વગેરેમા પરિવર્તન થયું છે અભિધેય વિષયમા કોઈ પણ જાતનો તફાવત નથી મેઘના વિષે પણ એ જ વાત સમજી લેવી જોઈએ આમલકલ્પા નગરી, મેઘ ગાથાપતિ, મેઘ શ્રી ભાર્યા, મેઘ દારિકા આ પ્રમાણે આ કથાનકમા પણ નામોમા જ પરિવર્તન થયું છે-અભિધેય વક્તવ્ય વિષયમા નહિ આ પ્રમાણે અહીં સુધી પ્રથમ વર્ગના પાંચ અધ્યયનો પૂરા થઈ જાય છે વિદ્યુદારિકાનું અધ્યયન ચોથું, અને મેઘ દારિકાનું અધ્યયન પાંચમું છે આ પ્રમાણે હે જ બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ મુક્તિ સ્થાનના અધિપતિ થઈ ચૂક્યા છે-ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગનો આ અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે. ॥ ૬ ॥



खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगरम् । गुणशिलकं चैत्यम् । स्वामी=वर्द्धमानस्वामी सभवस्य । परिपन्निर्गता यावत्पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये शुम्भा देवी वलिचञ्चाया राजधान्या शुम्भावतमके भवने शुम्भे सिंहासने ' कालीगमण ' कालीगमेन=काली देवी सदृशपाठेन यावत्-नाट्यविधिमुपदर्श्य यावत्-प्रतिगता । ' पुव्वभवपुच्छा ' पूर्वभवपुच्छा=गौतम-स्वामी शुम्भा देव्या पूर्वभव पृच्छति । भगवान् कथयति-श्रावस्ती नगरी । कोष्ठक चैत्यम् । जितशत्रू राजा । शुम्भो गाथापतिः । शुम्भश्रीभार्या । शुम्भा दारिका । शेष यथा काल्या=काली दारिकाया वर्णन तथात्रापि विज्ञेयम् , नगर=विशेस्त्व-

के पांच अध्ययन प्ररूपित किये हैं-तो हे भदत ! द्वितीयवर्ग के प्रथम अध्ययन का उन्होंने क्या अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये सुधर्मा स्वामी उनसे इस प्रकार कहते हैं कि-हे जम्बू !-उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था-उसमें गुणशिलक नाम का उद्यान था-। उसमें वर्द्धमान स्वामी आये । प्रभु का आगमन सुनकर वहां की समस्त जनता उन्हें वदन के लिये अपने २ स्थान से चल कर उस गुणशिलक उद्यान में आई । प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया परिपद् उपदेश सुनकर प्रभु की यावत् पर्युपासना की । ( तेण कालेण तेण समण ) उसी काल और उसी समय में ( सुभादेवी वलिचचाए रायदाणीए सुभवडेसए भवणे सुभसि सीहा-सणसि कालीगमण जाव नट्टविहि उवदसेत्ता जाव पडिगया पुव्वभव पुच्छा, सावत्थी णयरी, कोट्टए चेइए जियसत्तू राया, सुभे गाहावई सुभ

स्थानने प्राप्त करेला श्रवणु लगवान भडावीरे भीम वर्गना पाय अध्ययनो प्ररूपित कर्या छे, तो हे भदन्त ! भीम वर्गना प्रथम अध्ययननो तेमणे शो अर्थ प्रतिपादित कर्यो छे ?

आ प्रश्नना उत्तरमा श्री सुधर्मा स्वामी तेमने आ प्रमाणे कहे छे कहे जम्बू ! ते काले अने ते समये राजगृह नामे नगर छत्तु तेमा गुणशिलक नामे उद्यान छत्तु तेमा वर्द्धमान स्वामी पधार्या प्रभुनु आगमन सालणीने त्याना अधा नागरिको तेमने वदना करवा भाटे पोतपोताने स्थानेथी नीकणीने ते गुणशिलक उद्यानमा आया प्रभुणे अधाने धर्मनो उपदेश आय्ये परिपदे धर्मोपदेश सालणीने प्रभुनी यावत् पर्युपासना करी ( तेण कालेण तेण समण ) ते काले अने ते समये

( सुभा देवी वलिचचाए रायदाणीए सुभवडेसए भवणे सुभसि सीहासणसि काली गमण जाव नट्ट विहि उवदसेत्ता जाव पडिगया, पुव्वभवपुच्छा सावत्थी णयरी, कोट्टए चेइए जियसत्तू राया, सुभे गाहावई, सुभसिरी भारिया, सुभा-

મોક્ષ સમ્પાદ્તેન દ્વિતીયસ્ય વર્ગસ્ય પચ્ચાધ્યયનાનિ પ્રાપ્તાનિ, તથા-શુભા ૧, નિશુભા ૨, રમ્ભા ૩, નિરમ્ભા ૪, મદના ૫, । યદિ ચલુ હે ભદન્ત । શ્રમણેન યોગસમ્પાદ્તેન દ્વિતીયસ્ય વર્ગસ્ય પચ્ચ-અ-ધ્યયનાનિ પ્રાપ્તાનિ, દ્વિતીયસ્ય ચલુ હે ભદન્ત । વર્ગસ્ય પ્રથમા ધ્યયનસ્ય કોડર્યઃ પ્રાપ્તઃ ? । સુધર્માસ્વામી પ્રાહ-એવ

જબૂ ! સમણેણ જાત્ર સપત્તેણ દોચસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લક્કા ) હે ભદત ! મુક્તિ સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુણ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને દ્વિતીય વર્ગ કા ઉત્તેપક પ્રારભ તિસ રૂપ સે પ્રરૂપિત ક્રિયા હૈ-તવ સુધર્મા સ્વામી ને ઉનસે કહા-હે જબૂ ! સુનો યાવત્ મુક્તિસ્થાન કો પ્રાપ્ત હુણ ઉન શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને હસ દ્વિતીય વર્ગ કે પાંચ અધ્યયન પ્રરૂપિત ક્રિયે હૈં-(ત જહા ) વે હસ પ્રકાર હૈં-(સુભા, નિસુભા, રમ્ભા, નિરમ્ભા મયણા, જહ્ણ મત્તે ! સમણેણ જાત્ર સપત્તેણ ધમ્મકહાણં દોચસ્સ વગ્ગ સ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લક્કા, દોચસ્સણ મત્તે વગ્ગસ્સ પદમઙ્ગયણસ્સ કે અદ્દે પળ્લક્કે ? એવ ચલુ જબૂ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે, ગુણસીલણ ચેહ્ણ-સામી સમોસદ્દે પરિસા ણિગ્ગયા જાવ પઙ્ગુવા સહ ) (૧) શુભા, (૨) નિશુભા (૩) રમ્ભા, (૪) નિરમ્ભા (૫) મદના, । અથ જબૂ સ્વામી પુનઃ સુધર્મા સ્વામી સે પૂછતે હૈં કિ હે ભદત ! યદિ યાવત્ મુક્તિ સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુણ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને દ્વિતીયવર્ગ

જબૂ ! સમણેણ જાત્ર સપત્તેણ દોચસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લક્કા )

હે ભદન્ત ! મુક્તિસ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણુ ભગવાન મહાવીરે બીજા વર્ગનો ઉત્તેપક-પ્રારભ-કયા રૂપથી પ્રરૂપિત કર્યો છે ? ત્યારે સુધર્મા સ્વામીએ, તેમને કહ્યું કે હે જબૂ ! સાભણો, યાવત્ મુક્તિસ્થાનને વરેલા તે શ્રમણુ ભગવાન મહાવીરે આ બીજા વર્ગના પાંચ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા છે (ત જહા) તે આ પ્રમાણે છે—

(સુભા, નિસુભા, રમ્ભા, નિરમ્ભા, મયણા, જહ્ણ મત્તે ! સમણેણ જાત્ર સપત્તેણ ધમ્મકહાણં દોચસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લક્કા, દોચસ્સ ણ મત્તે વગ્ગસ્સ પદમઙ્ગયણસ્સ કે અદ્દે પળ્લક્કે ! એવ ચલુ જબૂ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે, ગુણસીલણ ચેહ્ણ-સામી સમોસદ્દે પરિસા ણિગ્ગયા જાવ પઙ્ગુવાસહ )

(૧) શુભા, (૨) નિશુભા, (૩) રમ્ભા, (૪) નિરમ્ભા, (૫) મદના હવે જબૂ સ્વામી ફરી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! ને યાવત્ મુક્તિ

खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगरम् । गुणशिलकं चैत्यम् । स्वामी=वर्द्धमानस्वामी सभवसुत । परिपन्निर्गता यावत्पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये शुम्भा देवी वलिचञ्चाया राजधान्या शुम्भावतसके भवने शुम्भे सिंहासने ' कालीगमण ' कालीगमेन=काली देवी सदृशपाठेन यावत्-नाट्यविधिमुपदर्श्य यावत्-प्रनिगता । ' पुव्वभवपुच्छा ' पूर्वभवपुच्छा=गौतम-स्वामी शुम्भा देव्याः पूर्वभव पृच्छति । भगवान् कथयति-श्रावस्ती नगरी । कोष्ठक चैत्यम् । जितशत्रू राजा । शुम्भो गाथापतिः । शुम्भश्रीभार्या । शुम्भा दारिका । शेष यथा काल्या =काली दारिकाया वर्णन तथात्रापि विज्ञेयम् , नगर=विशेस्त्व-

के पांच अध्ययन प्ररूपित किये हैं-तो हे भदत ! द्वितीयवर्ग के प्रथम अध्ययन का उन्होंने क्या अर्थ प्रतिपादित किया हैं ? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये सुधर्मा स्वामी उनसे इस प्रकार कहते हैं कि-हे जम्बू !-उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था-उसमें गुणशिलक नाम का उद्यान था-। उसमें वर्द्धमान स्वामी आये । प्रभु का आगमन सुनकर वहां की समस्त जनता उन्हें वदन के लिये अपने २ स्थान से चल कर उस गुणशिलक उद्यान में आई । प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया परिपद् उपदेश सुनकर प्रभु की यावत् पर्युपासना की । ( तेण कालेण तेण समण ) उसी काल और उसी समय में ( सुभादेवी वलिचचाए रायदाणीए सुभवडेसए भवणे सुभसि सीहा सणसि कालीगमण जाव नट्टविहि उवदसेत्ता जाव पडिगया पुव्वभव पुच्छा, सावत्थी णयरी, कोट्टए चेइए जियसत्तू राया, सुभे गाहावई सुभ

સ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલા શ્રવણ ભગવાન મહાવીરે બીજા વર્ગના પાંચ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો હે ભદ્રન્ત ! બીજા વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો તેમણે શો અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે ?

આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને આ પ્રમાણે કહે છે કે હે જમ્બૂ ! તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તેમાં ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતું તેમાં વર્દ્ધમાન સ્વામી પધાર્યા પ્રભુનું આગમન સાંભળીને ત્યાંના બધા નાગરિકો તેમને વદના કરવા માટે પોતપોતાને સ્થાનેથી નીકળીને તે ગુણશિલક ઉદ્યાનમાં આવ્યા પ્રભુએ બધાને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો પરિવદે ધર્મોપદેશ સાંભળીને પ્રભુની યાવત્ પર્યુપાસના કરી ( તેણ કાલેણ તેણ સમણ ) તે કાળે અને તે સમયે

( સુભા દેવી વલિચચાએ રાયદાણીએ સુભવડેસએ ભવણે સુભસિ સીહાસણસિ કાલી ગમણ જાવ નટ્ટ વિહિ ઉવદસેત્તા જાવ પડિગયા, પુવ્વભવપુચ્છા સાવત્થી ણયરી, કોટ્ટુએ ચેઇએ જિયસત્તૂ રાયા, સુભે ગાહાવઈ, સુભસિરી ભારિયા, સુભા-

મોક્ષ સમ્પાત્તેન દ્વિતીયસ્ય વર્ગસ્ય પચ્ચાધ્યયનાનિ પ્રાપ્તાનિ, તથા-શુભા ૧, નિશુભા ૨, રમ્ભા ૩, નિરમ્ભા ૪, મદના ૫, । યદિ સ્વલુ હે ભદન્ત ! શ્રમણેન યોગસમ્પાત્તેન દ્વિતીયસ્ય વર્ગસ્ય પચ્ચ-અધ્યયનાનિ પ્રાપ્તાનિ, દ્વિતીયસ્ય સ્વલુ હે ભદન્ત ! વર્ગસ્ય મધ્યાધ્યયનસ્ય કોડર્યઃ પ્રાપ્તઃ ? । સુધર્માસ્વામી માહ-એવ

જતૂ । સમણેણ જાત્ર સપત્તેણ દોઢસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લસા ) હે ભદન્ત ! મુક્તિ સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુવ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને દ્વિતીય વર્ગ કા ઉત્તેપક પ્રારભ કિસ સ્વપ્પ સે પ્રરૂપિત કિયા હૈ-તથ સુધર્મા સ્વામી ને ઉનસે કહા-હે જતૂ । સુનો યાવત્ મુક્તિસ્થાન કો પ્રાપ્ત હુવ ઉન શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને હસ દ્વિતીય વર્ગ કે પાંચ અધ્યયન પ્રરૂપિત કિયે હૈ-(તં જહા ) વે હસ પ્રકાર હૈ--( સુભા, નિસુભા, રમ્ભા, નિરમ્ભા મયણા, જહણ ભત્તે । સમણેણ જાત્ર સપત્તેણ ધમ્મકહાણ દોઢસ્સ વગ્ગ-સ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લસા, દોઢસ્સણ ભત્તે વગ્ગસ્સ પદમઙ્ગયણસ્સ કે અદ્દે પળ્લસે ? એવ સ્વલુ જતૂ । તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે, ગુણસીલણ ચેહણ-સામી સમોસઢે પરિસા ણિગ્ગયા જાત્ર પઙ્ગુવાસહ ) (૧) શુભા, (૨) નિશુભા (૩) રમ્ભા, (૪) નિરમ્ભા (૫) મદના, । અથ જતૂ સ્વામી પુનઃ સુધર્મા સ્વામી સે પૂઝતે હૈ કિ હે ભદન્ત ! યદિ યાવત્ મુક્તિ સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુવ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરને દ્વિતીયવર્ગ

જતૂ । સમણેણ જાત્ર સપત્તેણ દોઢસ્સ વગ્ગસ્સ પચઅઙ્ગયણા પળ્લસા )

હે ભદન્ત ! મુક્તિસ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણુ લગવાન મહાવીરે બીજા વર્ગનો ઉત્તેપક-પ્રારભ-કયા રૂપથી પ્રરૂપિત કર્યો છે ? ત્યારે સુધર્મા સ્વામીએ તેમને કહ્યું કે હે જતૂ ! સાલણો, યાવત્ મુક્તિસ્થાનને વરેલા તે શ્રમણુ લગવાન મહાવીરે આ બીજા વર્ગના પાંચ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા છે (તજહા) તે આ પ્રમાણે છે—

( સુભા, નિસુભા, રમ્ભા, નિરમ્ભા, મયણા, જહણ ભત્તે । સમણેણ જાત્ર સપત્તેણ ધમ્મકહાણ દોઢસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લસા, દોઢસ્સ ણ ભત્તે વગ્ગસ્સ પદમઙ્ગયણસ્સ કે અદ્દે પળ્લસે । એવ સ્વલુ જતૂ । તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે, ગુણસીલણ ચેહણ-સામી સમોસઢે પરિસા ણિગ્ગયા જાત્ર પઙ્ગુવાસહ )

(૧) શુભા, (૨) નિશુભા, (૩) રમ્ભા, (૪) નિરમ્ભા, (૫) મદના હવે જતૂ સ્વામી ફરી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! ને યાવત્ મુક્તિ



‘ એવ સેસાત્રિ ’ ઇત્યાદિ-એવ શેષાણ્યપિ=નિશુમ્મા ૧-રમ્મા ૨-નિરમ્મા ૩-મદના ૪ નામકાનિ ચત્વારિ અધ્યયનાનિ શ્રાવસ્ત્યા નગર્યા વિજ્ઞેયાનિ, નવ રમ્-એતાવાન્ વિશેષ:-માતર પિતરઃ સદશનામાનઃ દારિકાસદશનામાનઃ, તથાહિ-નિશુમ્માયા માતા નિશુમ્મશ્રી, પિતા નિશુમ્મઃ । રમ્માયા માતા રમ્મશ્રીઃ, પિતા રમ્મઃ । નિરમ્માયા માતા નિરમ્મશ્રીઃ, પિતા નિરમ્મઃ । મદનાયા માતા મદનશ્રીઃ પિતા મદનઃ । એતે સર્વે ગાથાપતયઃ આસન્ ।

એવ સ્વલ્લુ હે જમ્બૂ । નિલ્લેપકો દ્વિતીયવર્ગસ્ય ॥ ૭ ॥

॥ ઇતિ ધર્મમ્થાના દ્વિતીયો વર્ગઃ સમાપ્તઃ ॥ ૨ ॥

કાલીદેવી કા હૈ વૈસા હી જાનના ચાહિયે । ડસમેં ઓર હસમે કેવલ અન્તર ડતના હી હૈ કિ કાલીદેવી કી સ્થિતિ ૨॥ પલ્લ્ય કી યી ઓર હસ શુભાદેવી કી ૩॥, પલ્લ્ય કી યી । ડસ પ્રકાર હે જમ્બૂ ! હસ દ્વિતીય વર્ગ કે પ્રથમ અ યયન કા યહ નિલ્લેપક હૈ । હસી તરહ નિશુમા, રમા નિરમ્મા ઓર મદના નામ કે ચાર અધ્યયન મી જાનના ચાહિયે । ડન મેં વિશેષતા કેવલ ડતની હી હૈ કિ યહાં જો માતા પિતા હૈ વે દારિકા સદશ નામવાલે હૈ-જૈસે નિશુમા કે પિતા કા નામ નિશુમ, માતા કા નામ નિશુમશ્રી, રમાકે પિતા કા નામ રમ્મ, માતાકા નામ રમ્મશ્રી, નિરમા કે પિતા નામ નિરમ્મા માતા કા નામ નિરમ્મશ્રી, મદના કે પિતા કા નામ મદન, ઓર માતાકા નામ મદનશ્રી । યે સબ હી ગાથાપતિ હૈ । હસ તરહ યહ દ્વિતીયવર્ગ કા નિલ્લેપક-ઉપસહાર-હ ।

॥ દ્વિતીયવર્ગ સમાપ્ત ॥

લો ૪ છે કે કાલી દેવીની સ્થિતિ ૨॥ પલ્લ્યની હતી અને આ શુભા દેવીની સ્થિતિ ૩॥ પલ્લ્યની હતી આ પ્રમાણે હે જમ્બૂ ! આ બીજા વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ નિલ્લેપક છે આ પ્રમાણે જ નિશુભા, રભા, નિરભા અને મદના નામના ચાર અધ્યયનો પણ બાણી લેવા જોઈએ એમનામાં વિશેષતા રૂઢા એટલી જ છે કે અહીં જે માતાપિતા છે તે પુત્રીના જેવા જ નામવાળા છે જેમકે નિશુભાના પિતાનું નામ નિશુભ, માતાનું નામ નિશુભશ્રી, રભા ના પિતાનું નામ રભ, માતાનું નામ રભશ્રી નિરભાના પિતાનું નામ નિરભ, માતાનું નામ નિરભશ્રી, મદનાના પિતાનું નામ મદન અને માતાનું નામ મદનશ્રી, આ બધા ગાથાપતિઓ છે આ પ્રમાણે બીજા વર્ગનો નિલ્લેપક ઉપસહાર છે

॥ બીજો વર્ગ સમાપ્ત ॥



યમ્-અસ્યાઃ શુભાદેવ્યાઃ 'અદ્ધુદ્ધાઈ' અર્થ ચતુર્થાનિ=સાર્દશ્રયાગિ પલ્યોષમાનિ સ્થિતિરસ્તિ । સુધર્માસ્વામીમાદ-હે જમ્મુ' । નિક્ષેપકઃ=ઉપહારોઽયયનસ્ય વાચ્યઃ ॥

॥ ઇતિ દ્વિતીયવર્ગસ્ય પ્રથમા યયનમ્ ॥

સિરી મારિયા સું માદારિયા, સેસ જળા કાલીળ નવર અદ્ધુદ્ધાઈ પલિઓવ માઈ ઠિઈ, ણવ સ્વલ્લુ જંત્રૂ ! નિસ્સેવઓ અજ્ઞયણસ્મ ણવ સેસા વિ ચ્ચસારિ અજ્ઞયણા સાવત્થીળ નવર માયા પિયા સરિસ નામયા ણવ સ્વલ્લુ જંત્રૂ । નિસ્સેવઓ ત્રિઈયવગ્ગસ્સ ઘીઓ વગ્ગો સમત્તો ) શુભાદેવી જો યલિચ્ચા નામકી રાજધાની મેં શુભાવતસક નામકે ભવન મેં રહતી થી-ઔર શુભનામ કે સિંહાસન પર બેઠતી થી-વહ કાલી દેવી કે પ્રકરણ મેં વર્ણિત પાઠ કે અનુસાર પ્રભુ કે સમીપ ડનકો વડના કરને કે લિયે આઈ । વહાં ડસને નાટ્યવિધિકા પ્રદર્શન ક્રિયા થાદમેં ફિર ઘટ વહાં સે પીછે અપને સ્થાન પર ચલી ગઈ । ડસકે ચલે જાને કે યાદ ગૌતમસ્વામી ને પ્રભુ સે ડસ શુભાદેવી કે પૂર્વભવ કી પૃચ્છા કી-તચ મગવાન ને ડન સે ડસ પ્રકાર કહા-આવસ્તી નામકી નગરી થી । ડસમેં કોઇક નામકા ઉદ્યાન થા, । નગરી કે રાજા કા નામ જિતશત્રુ થા ડસમેં ગાથા પતિ રહતા થા । જિસકા નામ શુભ થા । ડસકી શુભ શ્રી નામ કી માર્યા થી । દારિકા કા નામ શુભા થા । ડસકે યાદ કા ડસકા વર્ણન

દારિયા, સેસ જહા કાલીળ નવર અદ્ધુદ્ધાઈ, પલિઓવમાઈ ઠિઈ । ણવ સ્વલ્લુ જંત્રૂ ! નિસ્સેવઓ અજ્ઞયણસ્મ ણવ સેસા વિ ચ્ચત્તારિ અજ્ઞયણસ્મ સાવત્થીળ નવર માયા-પિયા સરિસનામયા, ણવ સ્વલ્લુ જંત્રૂ ! નિસ્સેવઓ-ત્રિઈયવગ્ગસ્સ પચ અજ્ઞયણા સમત્તા ઘીઓ વગ્ગો સમત્તો )

શુભા દેવી-કે જે બલિચ્ચથા નામે રાજધાનીમા શુભાવતસક નામના ભવનમા રહેતી હતી અને શુભ નામે સિંહાસન ઉપર બેસતી હતી-કાલી દેવીના પ્રકરણમા વર્ણુવેલા પાઠ મુજબ પ્રભુની પાસે તેમને વડના કરવા માટે આવી ત્યા તેણે નાટ્યવિધિનુ અર્શન કર્યું ત્યાગ્ગાં તે ત્યાથી પાછી પોતાના સ્થાને જતી રહી તેમના જતા રહ્યા બાદ ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુની શુભા દેવીના પૂર્વ ભવની પૃચ્છા કરી ત્યારે ભગવાને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે— આવસ્તી નામે નગરી હતી, તેમા કોઇક નામે ઉદ્યાન હતું નગરીના રાજાનું નામ જિતશત્રુ હતું તેમા શુભ નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો શુભશ્રી નામે તેની પત્ની હતી, તેની પુત્રીનુ નામ શુભા હતું ત્યારપછીનુ તેનું શેષ વર્ણુન કાલી દેવીની જેમજ સમજી લેવું જોઇએ તેમા અને આમા તદ્દાવત એટ

‘ એવ સેસાવિ ’ ઇત્યાદિ-એવ શેષાણ્યપિ=નિશુમ્ભા ૧-રમ્ભા ૨-નિરમ્ભા ૩-મદના ૪ નામકાનિ ચત્વારિ અધ્યયનાનિ શ્રાવસ્ત્યા નગર્યા વિજ્ઞેયાનિ, નવ-રમ્-એતાવાન્ વિશેષ:-માતર પિતરઃ સદૃશનામાનઃદારિકાસદૃશનામાનઃ, તથાહિ-નિશુમ્ભાયા માતા નિશુમ્ભશ્રી, પિતા નિશુમ્ભઃ । રમ્ભાયા માતા રમ્ભશ્રીઃ, પિતા રમ્ભઃ । નિરમ્ભાયા માતા નિરમ્ભશ્રીઃ, પિતા નિરમ્ભઃ । મદનાયા માતા મદનશ્રીઃ પિતા મદનઃ । એતે સર્વે ગાથાપતયઃ આમન્ ।

એવ સ્વલુ હે જમ્બૂ । નિક્ષેપકો દ્વિતીયવર્ગસ્ય ॥ ૭ ॥

॥ ઇતિ ધર્મશાના દ્વિતીયો વર્ગઃ સમાપ્તઃ ॥ ૨ ॥

કાલીદેવી કા હૈ વૈસા હી જાનના ચાહિયે । ઉસમેં ઓર હસમે કેવલ અન્તર ઇતના હી હૈ કિ કાલીદેવી કી સ્થિતિ ૨॥ પદ્ય કી યી ઓર હસ શુભાદેવી કી ૩॥, પદ્ય કી યી । હસ પ્રકાર હે જમ્બૂ ! હસ દ્વિતીય વર્ગ કે પ્રથમ અધ્યયન કા યહ નિક્ષેપક હૈ । હસી તરહ નિશુભા, રમ્ભા નિરમ્ભા ઓર મદના નામ કે ચાર અધ્યયન મી જાનના ચાહિયે । ઇન મેં વિશેષતા કેવલ ઇતની હી હૈ કિ યહાં જો માતા પિતા હૈ વે દારિકા સદૃશ નામવાલે હૈ-જૈસે નિશુભા કે પિતા કા નામ નિશુભ, માતા કા નામ નિશુભ શ્રી, રમ્ભાકે પિતા કા નામ રમ્ભ, માતાકા નામ રમ્ભશ્રી, નિરમ્ભા કે પિતા નામ નિરમ્ભ માતા કા નામ નિરમ્ભશ્રી, મદના કે પિતા કા નામ મદન, ઓર માતાકા નામ મદનશ્રી । યે સર્વ હી ગાથા-પતિ હૈ । હસ તરહ યહ દ્વિતીયવર્ગ કા નિક્ષેપક-ઉપસહાર-હે ।

॥ દ્વિતીયવર્ગ સમાપ્ત ॥

લો ૪ છે કે કાલી દેવીની સ્થિતિ ૨॥ પદ્યની હતી અને આ શુભા દેવીની સ્થિતિ ૩॥ પદ્યની હતી આ પ્રમાણે છે ૪૫૫ । આ બીજા વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ નિક્ષેપક છે આ પ્રમાણે ૪ નિશુભા, રભા, નિરભા અને મદના નામના ચાર અધ્યયનો પણ બાણી લેવા જોઈએ એમનામા વિશેષતા કૃષ્ણ એટલી ૪ છે કે અહીં જે માતાપિતા છે તે પુત્રીના જેવા ૪ નામવાળા છે જેમકે નિશુભાના પિતાનું નામ નિશુભ, માતાનું નામ નિશુભશ્રી, રભા ના પિતાનું નામ રભ, માતાનું નામ રભશ્રી નિરભાના પિતાનું નામ નિરભ, માતાનું નામ નિરભશ્રી, મદનાના પિતાનું નામ મદન અને માતાનું નામ મદનશ્રી, આ બધા ગાથાપતિઓ છે આ પ્રમાણે બીજા વર્ગનો નિક્ષેપક ઉપસહાર છે

॥ બીજો વર્ગ સમાપ્ત ॥

यम्-अस्याः शुभादेव्याः 'अद्भुता' अर्धं चतुर्थानि=साद्धत्रयाणि पल्योपमानि स्थितिरस्ति । सुधर्मास्वामीपाद-हे जम्बूः ! निक्षेपकः=उपहारोऽध्ययनस्य वाच्यः ॥

॥ इति द्वितीयवर्गस्य प्रथमा ययनम् ॥

सिरी भारिया सुभादारिया, सेस जहा कालीए णवर अद्भुता पलिओव माई ठिई, एव खलु जंबू ! निक्खेवओ अज्झयणस्स एवं सेसा वि चत्तारि अज्झयणस्स सावत्थीए नवर माया पिया सरिस नामया एव खलु जंबू ! निक्खेवओ चिईयवग्गस्स बीओ वग्गो समत्तो ) शुभादेवी जो पलिचच्चा नामकी राजधानी में शुभावतसरु नामके भवन में रहती थी-और शुभनाम के सिंहासन पर बैठी थी-वह काली देवी के प्रकरण में वर्णित पाठ के अनुसार प्रभु के समीप उनको वदना करने के लिये आई । वहाँ उसने नाट्यविधिका प्रदर्शन किया बादमें फिर वहाँ से पीछे अपने स्थान पर चली गई । उसके चले जाने के बाद गौतमस्वामी ने प्रभु से उस शुभादेवी के पूर्वभव की पृच्छा की-तब भगवान् ने उन से इस प्रकार कहा-श्रावस्ती नामकी नगरी थी । उसमें कोष्ठक नामका उद्यान था, । नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था उसमें गाथा पति रहता था । जिसका नाम शुभ था । इसकी शुभ श्री नाम की भार्या थी । दारिका का नाम शुभा था । इसके बाद का इसका वर्णन

दारिया, सेस जहा कालीए णवर अद्भुता, पलिओवमाई ठिई । एव खलु जंबू ! निक्खेवओ अज्झयणस्स एव सेसा वि चत्तारि अज्झयणस्स सावत्थीए नवर माया-पिया सरिसनामया, एव खलु जंबू ! निक्खेवओ-चिईयवग्गस्स पच अज्झयणा समत्ता बीओ वग्गो समत्तो )

शुभा देवी-हे जे अतिथिथा नामे राजधानीमा शुभावतसरु नामका भवनमा रहैती छती अने शुभ नामे सिंहासन उपर बैसती छती-काली देवीना प्रकरणमा वल्लुवेला पाठ मुज्जण प्रभुनी पास तेमने वदना करवा भाटे आवी त्या तेहे नाट्यविधिनु प्रदर्शन करुं तयारणां ते त्याथी पाछी पोताना स्थाने जती रही तेमना जता रह्या जाह गौतम स्वामीओ प्रभुनी शुभा देवीना पूर्व भवनी पृच्छा करी तयारे लगवाने तेमने आ प्रभाछे कह्युं के-श्रावस्ती नामे नगरी छती, तेमा कोष्ठक नामे उद्यान छतु नगरीना राजातु नाम जितशत्रु छतु तेमा शुभ नामे गाथापति रहैतो छतो शुभश्री नामे तेनी पत्नी छनी, तेनी पुत्रीतु नाम शुभा छतु तयारपछीतु तेनु शेष वल्लुन काली देवीनी जेमज समल देवु लेछ्ये तेमा अने आमा तक्षवत ओट

‘एव सेसावि’ इत्यादि—एव शेषाण्यपि=निशुम्भा १—रम्भा २—निरम्भा ३—मदना ४ नामकानि चत्वारि अध्ययनानि श्रावस्त्या नगर्या विज्ञेयानि, नव-  
रम्—एतावान् विशेषः—मातरः पितरः सदृशनामानः दारिकासदृशनामानः, तथाहि—  
निशुम्भाया माता निशुम्भश्री, पिता निशुम्भः । रम्भाया माता रम्भश्रीः, पिता  
रम्भः । निरम्भाया माता निरम्भश्री, पिता निरम्भः । मदनाया माता मदनश्रीः  
पिता मदनः । एते सर्वे गाथापतयः आसन् ।

एव खलु हे जम्बू । निक्षेपको द्वितीयवर्गस्य ॥ ७ ॥

॥ इति धर्मस्थाना द्वितीयो वर्गः समाप्तः ॥ २ ॥

कालीदेवी का है वैसा ही जानना चाहिये । उसमें और इसमें केवल  
अन्तर इतना ही है कि कालीदेवी की स्थिति २॥ पद्य की श्री और  
इस शुभादेवी की ३॥, पद्य की श्री । इस प्रकार हे जम्बू ! इस द्वितीय  
वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह निक्षेपक है । इसी तरह निशुभा, रम्भा  
निरम्भा और मदना नाम के चार अध्ययन भी जानना चाहिये । इन  
में विशेषता केवल इतनी ही है कि यहाँ जो माता पिता हे वे दारिका  
सदृश नामवाले हैं—जैसे निशुभा के पिता का नाम निशुभ, माता का  
नाम निशुभश्री, रम्भाके पिता का नाम रम्भ, माताका नाम रम्भश्री,  
निरम्भा के पिता नाम निरम्भ माता का नाम निरम्भश्री, मदना के  
पिता का नाम मदन, और माताका नाम मदनश्री । ये सब ही गाथा-  
पति हैं । इस तरह यह द्वितीयवर्ग का निक्षेपक—उपसंहार—है ।

॥ द्वितीयवर्ग समाप्त ॥

लो ७ छे के जाली देवीनी स्थिति २॥ पद्यनी छती अने आ शुभा देवीनी  
स्थिति ३॥ पद्यनी छती आ प्रभाछे छे ७ ७ । आ भील वर्गना प्रथम  
अध्ययनने आ निक्षेपक छे आ प्रभाछे ७ निशुभा, रला, निरला अने  
मदना नामना चार अध्ययनो पद्य जाली देवा लेखे अभिनामा विशेषता  
इच्छा अटली ७ छे के अर्धी ७ मातापिता छे ते पुत्रीना देवा ७ नामवाला  
छे जेभके निशुलाना पितानु नाम निशुल, मातानु नाम निशुलश्री, रला  
ना पितानु नाम रल, मातानु नाम रलश्री निरलाना पितानु नाम निरल,  
मातानु नाम निरलश्री, मदनाना पितानु नाम मदन अने मातानु नाम  
मदनश्री, आ जधा गाथापतिओ छे आ प्रभाछे भील वर्गने निक्षेपक  
प्रथम २॥ ७

॥ भील वर्ग समाप्त ॥

यम्-अस्याः शुभादेव्याः ' अद्भुद्वाइ ' अर्दं चतुर्गोनि=साद्वनयागि पत्योपमानि  
स्थितिरस्ति । सुधर्मास्वामीपाद-हे जम्भूः ! निक्षेपकः=उपहारोऽभ्ययनस्य राज्यः ॥

॥ इति द्वितीयवर्गस्य प्रथमा ययनम् ॥

सिरी भारिया सुंभादारिया, सेस जहा कालीए णवर अमुद्वाइ पलिओव  
माई ठिई, एव खलु जंबू ! निक्खेवओ अज्झयणस्स एव सेसा वि चत्ता  
रिअज्झयणा सावत्थीए नवर माया पिया सरिस नामया एव खलु जंबू ।  
निक्खेवओ विईयवग्गस्स वीओ वग्गो समत्तो ) शुभादेवी जो बलिचचा  
नामकी राजधानी में शुभावतसक नामके भवन में रहती थी-और  
शुभनाम के सिंहासन पर बैठती थी-वह काली देवी के प्रकरण में  
वर्णित पाठ के अनुसार प्रभु के समीप उनको वदना करने के लिये  
आई । वहाँ उसने नाट्यविधिका प्रदर्शन किया बादमें फिर बह बहा से  
पीछे अपने स्थान पर चली गई । उसके चले जाने के बाद गौतमस्वामी  
ने प्रभु से उस शुभादेवी के पूर्वभव की पृच्छा की-तब भगवान् ने  
उन से इस प्रकार कहा-आवस्ती नामकी नगरी थी । उसमें कोष्ठक  
नामका उद्यान था, । नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था उसमें गाथा  
पति रहता था । जिसका नाम शुभ था । इसकी शुभ श्री नाम की  
भार्या थी । दारिका का नाम शुभा था । इसके बाद का इसका वर्णन

दारिया, सेस जहा कालीए णवर अद्भुद्वाइ, पलिओवमाइ ठिई । एव खलु जंबू !  
निक्खेवओ अज्झयणस्स एव सेसा वि चत्तारि अज्झयणस्स सावत्थीए नवर माया  
पिया सरिसनामया, एव खलु जंबू ! निक्खेवओ-विईयवग्गस्स एव अज्झ  
यणा समत्ता वीओ वग्गो समत्तो )

शुभा देवी-के जे अवस्थिया नामे राजधानीमा शुभावतसक नामका  
भवनमा रहैती छती अने शुभ नामे सिंहासन उपर बैसनी छती-काली  
देवीना प्रकरणमा वल्लुवेला पाठ मुज्ज प्रभुनी पासै तेमने वदना करवा भाटे  
आवी त्या तेहे नाट्यविधितु प्रदर्शन कयुं तयारणा० ते त्याथी पाछी पोताना  
स्थाने जती रही तेमना जता रह्या बाद गौतम स्वामीजे प्रभुनी शुभा  
देवीना पूर्व अवस्थी पृच्छा करी तयारे लगवाने तेमने आ प्रभाहे कहुं के-  
आवस्ती नामे नगरी छती, तेमा कोष्ठक नामे उद्यान छतु नगरीना राजशत्रु  
नाम जितशत्रु छतु तेमा शुभ नामे गाथापति रहैतो छतो शुभश्री नामे  
तेनी पत्नी छती, तेनी पुत्रीनु नाम शुभा छतु तयारपत्नीनु तेनु शेष वल्लुन  
काली देवीनी जेमज समज देवु जेधजे तेमा अने आमा तावत अट



અદ્વપલિઓવમ ઠિર્દે સેસ તહેવ, એવ સ્વલુ ણિવસ્થેવઓ પદમજ્ઞયણસ્સ)   
 ઉસ કાલ ઓર ઉસ સમય મેં રાજગૃહ નામ કા નગર થા । વહાં ગુણ-   
 શિલક નામ કા ઉગ્ધાન થા । ઉસમેં તીર્થકર પરપરાનુસાર વિહાર કરતે   
 હુણ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર આકર ઠહરે હુણ થે । નગર કી પરિપદા   
 પ્રભુ કો વદના કે લિયે અપ્પે ૨ ઘર સે નિકલકર ઉસ ઉગ્ધાન મે આર્દ   
 પ્રભુ ને સવકો ધર્મ કા ઉપદેશ દિયા । સુનકર લોગો ને યાવત્ પ્રભુ કી   
 પર્યુપાસના કી । ઉસી સમય વહા પર ધરણેન્દ્ર કી અગ્રમહિષી અલાદેવી   
 જો ધરણા રાજધાની મેં અલાવતસક ઇસ નામ કે ભવન મે રહતી થી-   
 ઓર જિસકે વૈઠને કે સિંહાસન કા નામ અલા યા પ્રભુ કો વદના આદિ   
 કરને કે નિમિત્ત આર્દ । વહાં આકર ઉસ ને નાટયવિધિ દિલ્લાઈ ।   
 દિલ્લાકર વહ ફિર વહા સે પીઢે અપને સ્થાન પર ગર્દ । ઉસકે આતે હી   
 ગૌતમ સ્વામી ને શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર સે ઉસકા પૂર્વભવ પૂઝા તથ   
 ભગવાન્ ને ઉનસે હસ પ્રકાર કહા વાણારસી નામકી નગરી થી-ઉસમેં   
 કામ મહાવન નામ કા ઉગ્ધાન થા । ઉસમે અલનામ કા ગાયાપતિ રહતા   
 થા । ઉસકી ભાર્યા “ અલ શ્રી ” ઇસ નામકી થી । ઇસ કી એક પુત્રી થી   
 જિસકા નામ અલા યા । ઇસકા-અલા કા શેષ કથાનક, કાલીદેવી કા

વાઓ, સાંરેગ અદ્વપલિઓવમ ઠિર્દે સેસ તહેવ, એવ સ્વલુ ણિવસ્થેવઓ પદમજ્ઞયણસ્સ )

તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તેમા ગુણશિલક   
 નામે ઉગ્ધાન હતું તેમા તીર્થકર પરપરા મુજબ વિહાર કરતાં પધારીને   
 શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે મુકામ કર્યો હતો નગરની પરિવદ પ્રભુને વદન   
 કરવા માટે પોતપોતાને ઘેરથી નીકળીને તે ઉગ્ધાનમા આવી પ્રભુએ સૌને   
 ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો ઉપદેશ સાંભળીને લોકોએ યાવત્ પ્રભુની પર્યુપાસના   
 કરી, તે વખતે ત્યાં ધરણેન્દ્રની અગ્રમહિષી ( પગરાણી ) અલાદેવી કે જે   
 ધરણા રાજધાનીમા અલાવતસક આ નામના ભવનમા રહેતી હતી, અને જેને   
 એમવાના સિંહાસનનું નામ અલા હતું-પ્રભુને વદના કરવા માટે આવી ત્યાં   
 આવીને તેણે નાટયવિધિનું પ્રદર્શન કર્યું, પ્રદર્શન કરીને તે ત્યાંથી પાછી   
 પોતાના મથાને જતી રહી તેના ગયા પછી તરત જ ગૌતમ સ્વામીએ શ્રમણ   
 ભગવાન મહાવીરને તેનો પૂર્વભવ પૂછ્યો ત્યારે ભગવાને તેમને આ પ્રમાણે   
 કહ્યું કે વાણારમી નામે નગરી હતી, તેમા કામમહાવન નામે ઉગ્ધાન હતું,   
 તેમા અલ નામે ગાયાપતિ રહેતો હતો તેની ભાર્યાનું નામ અલશ્રી હતું   
 તેની પુત્રી હતી તેનું નામ અલા હતું અલા વિષેનું શેષ કથાનક પહેલા

મદન્ત ! શ્રમણેન યાત્ મોક્ષ સમ્પ્રાપ્તેન ધર્મકથાના તૃતીયસ્ય વર્ગમ્ ચતુષ્પચ્ચા  
શદ્ અ યયનાનિ પ્રશ્નતાનિ, તેષુ પ્રથમસ્ય સ્વલુ હે મદન્ત ! અ યયનમ્પ શ્રમણેન  
યાત્ મોક્ષ સમ્પ્રાપ્તેન કોઽર્થઃ પ્રશ્નતઃ ? સુધર્મસ્વામી કથયતિ—

एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगरम्, गुण  
शिलक चैत्यम्, स्वामी समवन्ता, परिपन्निर्गता यातु-भगवन्त पशुवास्ते ।  
तस्मिन् काले तस्मिन् समये अलादेवी=वरणेन्द्रस्याग्रमहिषी धरणाया राजयान्याम्  
आलावतसके भवणे अले सिंहासणे, एव ' कालीगमण ' कालीगमेन=काली  
सदृशपाठेन यातु नाट्यविधमुपदर्शय प्रतिगता । ' पुण्यभवपुच्छा ' पूर्वभवपृच्छा-  
गोतमस्वामी अलादेव्याः पूर्वभव पृच्छति, भगवान् कथयति-वाणारसी नगरी ।  
काममहावन चैत्यम् । ' अले ' अलनामा गावापतिः । अठश्रीभार्या । अला  
दारिका । शेष ' जहाकालीए ' यथा काल्याः=कालीदेव्या वर्णन तथैव अला  
देव्या वर्णन विज्ञेयम्, नवरम्-वरणस्याग्रमहिषीतयाऽस्या उपपातः, सातिरेक=

યાવત્ મુક્તિ કો પ્રાપ્ત હુએ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને ધર્મકથા કે  
તૃતીયવર્ગ કે ૬૪ અધ્યયન પ્રજ્ઞ ક્રિયે હિં તો उनमे से हे भदत !  
उन्हीं यावत् मुक्ति प्राप्त श्रमण भगवान् महावीर ने प्रथम अध्ययन  
का क्या अर्थ प्ररूपित किया है ? इस प्रश्न के समाधान निमित्त सुधर्मा  
स्वामी उनसे कहते हे कि-( एव खलु जम्बू ! ) हे जम्बू ! तुम्हारे प्रश्न का  
उत्तर इस प्रकार है( तेण कालेण तेण समएण अलादेवी धरणाए राय  
हाणीए अलावडसए भवणे अलंसि सीहासणसि एव कालीगमण  
जाव णट्ठविहिं उवदसेत्ता पडिगया, पुण्वभवपुच्छा, वाणारसी णयरी,  
काममहावणे चेइए अल गाहावई, अलासिरी भारिया, अलादारियासेस  
जहा कालीए णवर धरणस्म अग्गमहिसित्ताए उववाओ, साइरेग

છે કે હે ભદન્ત ! યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણુ ભગવાન મહાવીરે ધર્મ ક  
થાના ત્રીજા વર્ગના ૫૪ શોધનઅધ્યયનો પ્રજ્ઞ કયા છે, તો તેઓમાથી હે ભદત !  
તેજ યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત શ્રમણુ ભગવાન મહાવીરે પહેલા અધ્યયનનો શો  
ધર્મ પ્રરૂપિત કર્યો છે ? આ પ્રશ્નના સમાધાનમા શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને  
કહે છે કે ( એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! ) હે જમ્બૂ ! તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે

(તેણ કાલેણ તેણ સમણ અલાદેવી ધરણાए रायहाणीए अलावडसए  
भवणे अलंसि सीहासणसि एव काली गमएग जाव णट्ठविहिं उवदसेत्ता पडिगया,  
पुण्वभवपुच्छा, वाणारसी णयरी, काममहावणे चेइए, अल गाहावई, अलासिरी  
भारिया, अलादारिया सेस जहा कालीए णवर धरणस्म

एव यावत् घोषस्यापि=घोषेन्द्रस्यापि, एतान्येव पङ् अध्ययनानि सन्ति । एवमे  
तानि दाक्षिणात्यानामिन्द्राणा चतुष्पञ्चाशद् अध्ययनानि भवन्ति । सर्वा अपि पूर्वो  
क्तादेव्य पूर्वभवे वाणारस्या जाताः काममहावने चैत्ये भगवतः पार्श्वस्यार्हतः  
समीपे प्रवृजिताः, तृतीयवर्गस्य निक्षेपकः=समाप्तिवाक्यप्रबन्धो विज्ञेयः ॥ सू०८ ।

॥ इति धर्मकथानां तृतीयो वर्गः समाप्तः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः प्रारभ्यते—‘ चउत्थस्म ’ इत्यादि ।

મૂલમ્—ચઉત્થસ્મ ઉત્થસ્મૌ, એવં ચલુ જવૂ । સમણેણં જાવ  
સંપત્તેણં ધમ્મકથાણં ચઉત્થવગ્ગસ્મ ચઉપ્પણં અજ્ઞયણા  
પણત્તા, ત જહા—પઠમે અજ્ઞયણે જાવ ચઉપ્પણદ્વમે અજ્ઞયણે  
પઠમસ્મ અજ્ઞયણસ્મ ઉત્થસ્મૌ એવ ચલુ જવૂ । તેણં કાલેણં  
તેણ સમણ રાયગિહે સમોસરણં જાવ પરિસા પજ્જુવાસદ્, તેણં  
કાલેણ તેણ સમણં રૂયા દેવી રૂયાણદા રાયહાણી રૂયગવ-  
વહિસણ ભવણે રૂયગંસિ સીહાસણસિ જહા કાલીણ તહા નવરં  
પુઠ્ઠભવે ચંપાણ પુણ્ણભદ્દે ચેદ્દણ રૂયગે ગાહાવદ્દે રૂયગસિરી  
મારિયા રૂયા દારિયા સેસ તહેવ, ણવર ભૂયાણદઅગ્ગમહિસિ-

વર્ણન મી ધરણેન્દ્ર કે વર્ણન જૈસા હી હૈ । ઘોષેન્દ્ર કે મી યે હી ૬ અધ્ય  
યન હસી તરહ કે હૈ । હસ તરહ દક્ષિણ દિશા સચ્ચી હન્દ્રોં કે ૦ ૫૪  
અધ્યયન હો જાતે હૈ । યે સચ દેવિયાં પૂર્વભવમેં વાણારસી મેં ઉત્પન્ન હુઈ  
ઔર કામમહાવન ઉદ્યાનમે ભગવાન્ પ્રાર્થનાય અર્હત પ્રભુકે સમીપ દીક્ષિત  
હુઈ । હસ તરહસે વર્મકથાકા યહ “તૃતીય વર્ગ સમાપ્ત હુઆ હૈ ।”

વર્ણન જેવુ જ છે ઘોષેન્દ્રના પણ આ જાતના જ ૬ અધ્યયનો છે આ  
પ્રમાણે દક્ષિણ દિશા સચ્ચી હન્દ્રોના ૫૪ અધ્યયનો થઈ જાય છે આ બધી  
દેવીઓ પૂર્વભવમા વાણારસીમા ઉત્પન્ન થઈ હતી અને કામમહાવન ઉદ્યાનમા  
ભગવાન પાર્શ્વનાથ અર્હત પ્રભુની પાસે દીક્ષિત થઈ આ પ્રમાણે ધર્મકથાનો  
આ ત્રીજો વર્ગ પૂરો થયો છે

સાધિકમ્ અર્ધપલ્લયોપમ સ્થિતિ । શેષ તથૈવ । एव सत्य निक्षेपकः प्रथमाध्ययनस्य ।  
एव क्रमात् शक्रा २, सतेरा ३, सौदामनी ४, इन्द्रा ५, घनविद्युदपि ६ । सर्वा  
एता धरणस्य=धरणेन्द्रस्य अग्रमहिष्य एव । एतानि पञ्च अध्ययनानि वेणुदेव-  
स्यापि । ' अविसेसिया ' अविशेषितानि=निर्विशेषानि सदृशानि भणितव्यानि ।

જૈસા કથાનક પીઠે વર્ણિત ક્રિયા જાણુકા હૈ વૈમા હી જાનના ચાહિયે ।  
ઉસકે વર્ણન મેં ઓર ઇસકે વર્ણન મેં કેવલ અન્તર ઇતના હી હૈ કિ યહ  
ધરણેન્દ્ર કી અગ્રમહિષી કે રૂપ મેં ઉત્પન્ન છુઈ ઓર ઇસકી સ્થિતિ ૧॥  
પલ્લવ સે કુછ અધિક હૈ । ઘાકી કા ઇસકા ઘૃત્તાન્ત કાલીદેવી કે જૈસા  
હી હૈ । હસ તરહ યહ દ્વિતીયવર્ગ કે પ્રથમ અધ્યયન કા નિક્ષેપક-૩૫-  
સહાર-હૈ ।-( एव क्रमा सक्रा, सतेरा, सोयामणी, इदा, घणविज्जुया  
वि, सब्बओ एयाओ धरणस्त अगमहिप्सीओ, एव, एते ६ अज्झयणा  
वेणुदेवस्स वि अविसेसिया भाणियच्चा, एव जाव घोसस्स वि एए चेव  
६ अज्झयणा, एवमेते दाहिणिरत्ताण इदाण-चउप्पण्ण अज्झयणा  
भवति, सब्बओ वि चाणारसीए काममहावणे चेइए तइयवग्गस्स  
णिवखेवओ ८ ॥

( તહઓ વગ્ગો સમત્તો ) હસી ક્રમ સે શક્રા ૨, સતેરા ૩, સૌદા  
મની ૪, ઇન્દ્રા ૫, ઘનવિદ્યુત્ ૬, યે સત્ર દેવિયા ધરણેન્દ્ર કી હી અગ્ર  
મહિષિયા થીં । હસ તરહ કે ૬ અધ્યયન વેણુદેવ કે ભી હૈં । ઓર ઇનકા

વર્ણપેલા કાલી દેવીના કથાનકની જેમજ સમજી લેવું જોઈએ તેના અને  
આના વર્ણનમા તદ્દશવત ફક્ત એટલો જ છે કે આ ધરણેન્દ્રની અગ્રમહિષીના  
રૂપમા ઉત્પન્ન થઈ અને આની સ્થિતિ ૧॥ પલ્લવ કરતા કંઈક વધારે છે  
આનું ઘાકીનું વર્ણન કાલી દેવી જેવું જ છે આ પ્રમાણે આ બીજા વર્ગના  
પહેલા અધ્યયનનો નિક્ષેપક ઉપસહાર છે

( एव क्रमा सक्रा सतेरा, सोयामणी, इदा, घणविज्जुया वि, सब्बओ  
एयाओ धरणस्त, अगमहिप्सीओ एव एते ६ अज्झयणा वेणुदेवस्स वि अविसे  
सिया भाणियच्चा, एव जाव घोसस्स वि एए चेव ६ अज्झयणा, एवमेते दाहिणि  
रत्ताण इदाण-चउप्पण्ण अज्झयणा भवति, सब्बओ वि चाणारसीए काम महा  
वणे चेइए तइयवग्गस्स णिवखेवओ ॥ ८ ॥ तइओ वग्गो समत्तो )

આ અનુક્રમ પ્રમાણે જ શક્રા ૨, સતેરા ૩, સૌદામની ૪, ઇન્દ્રા ૫,  
ઘનવિદ્યુત ૬, આ બધી દેવીઓ ધરણેન્દ્રની જ અગ્રમહિષીઓ હતા આ  
પ્રમાણે જ ૬ અધ્યયનો વેણુ દેવીના પણ છે અને એમનું વર્ણન ધરણેન્દ્રના

વસરણ=ભગવતઃ શ્રી મહાવીરસ્વામિન. સમાગમન સજ્ઞાત, યાવત્ પરિપદ્ ભગવન્ત પર્યુપાસતે । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રૂપાદેવી=ભૂતાનન્દેન્દ્રસ્યાગ્રમહિણી રૂપ કાવતસકે મરને રૂપકે સિંહાસને યથા કાલ્યાઃ=કાલીદેવ્યા વર્ણનં તથા=તદ્વત્

સમણ રાયગિદે સમોસરણ જાવ પરિમા પજ્જુયામહ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ રૂયા દેવી, રૂયાણદા રાયહાણી રૂયગર્હિસણ ભવણે રૂયગમ્મિ સીહાસણંસિ જહા કાલીં તહા નવર પુવ્વમ્ભવે ચપાણ પુણ્ણમદે ચેદ્દે રૂયગે ગાહાવર્દે રૂયગમ્મિરી મારિયા, રૂયા દારિયા, સેસ તહેવ, ણવર મૂયાણદ અગ્ગમહિસિત્તાણ ઉવવાઓ દેમૂણં પલિઓવમ ઠિઈ નિચ્છેવઓ, એવ સુરુવયા વિ, રૂયસાવિ, રૂયગાહાવર્દે વિ રૂયકતા વિ રૂયપ્પમાવિ, ણયાઓ ચેવ ઉત્તરિલ્લાણ ઇદાણ માણિયવ્વાઓ, જાવ મહાધોસસ્સ ણિચ્છેવઓ ચઉત્થવગ્ગસ્સ ચઉત્થો વગ્ગો સમત્તો )

પ્રથમ અધ્યયન કા હે જન્નુ ! ઉત્કેષક હસ પ્રકાર હૈ-ઉસકાલ મેં ઓર ઉસ સમય મેં રાજગૃહ નગર મેં મહાવીર સ્વામી કા આગમન હુઆ । પરિપદ પ્રભુ કો વદના કરને કે લિયે અપને ૨ સ્થાન સે નિકલકર જહા પ્રભુ વિરાજમાન થે વર્હા આઈ । પ્રભુ ને ધર્મ કા ઉપદેશ દિયા । યાવત્ સમને પ્રભુ કી પર્યુપાસના કી । ઉસ કાલ ઓર ઉસ સમય મેં ભૂતાનદ હન્દ્ર કી અગ્રદેવી જિસકા નામ રૂપાદેવી યા વહ પ્રભુ કો વદના કે લિયે

( પઠમસ્સ અજ્ઞયગસ્સ ઉચ્છેવઓ-એવ સ્વલુ જન્નુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિદે સમોસરણ જાવ પરિમા પજ્જુયામહ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ રૂયાદેવી, રૂયાણદા, રાયહાણી રૂયગર્હિસણ ભવણે રૂયગમ્મિ સીહાસણંસિ જહા કાલીં તહા નવર પુવ્વમ્ભવે ચપાણ પુણ્ણમદે ચેદ્દે રૂયગે ગાહાવર્દે રૂયગમ્મિરી મારિયા, રૂયા દારિયા, સેસ તહેવ, ણવર મૂયાણદ અગ્ગમહિસિત્તાણ ઉવવાઓ દેમૂણ પલિ ઓવમ ઠિઈ નિચ્છેવઓ, એવ સુરુવયા વિ, રૂયસાવિ, રૂયગાહાવર્દે, વિ રૂયકતા વિ રૂયપ્પમાવિ, ણયાઓ ચેવ ઉત્તરિલ્લાણ ઇદાણ માણિયવ્વાઓ, જાવ મહાધોસસ્સ ણિચ્છેવઓ ચઉત્થવગ્ગસ્સ ॥ ૯ ॥ ચઉત્થો વગ્ગો સમત્તો )

હે જન્નુ ! પહેલા અધ્યયનનો ઉત્કેષક આ પ્રમાણે છે-તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમાં મહાવીર સ્વામીનું આગમન થયું પ્રભુને વદના કરવા માટે પરિપદ પોતપોતાને આનેથા નીકળીને જ્યાં પ્રભુ વિરાજમાન હતા ત્યાં આવી, પ્રભુએ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો યાવત્ સૌએ પ્રભુની પર્યુપાસના કરી. તે કાળે અને તે સમયે ભૂતાનદ હન્દ્રની અગ્રદેવી ( પટરાણી ) જેનું નામ રૂપા દેવી હતું-પ્રભુને વદના કરવા માટે આવી તેના રહેવાના ભવનનું



તાણ ઉવવાઓ દેસૂણં પાલિઓવમ ટિર્ઠં ણિવસેવઓ એવ સુરુ-  
યાવિ રુયસાવિ રુયગાવર્ઠવિ રુયકતાવિ રુયપ્પભાવિ, ણ્યાઓ  
એવ ઉત્તરિણ્ણાણં ઇંદાણં ભાણિયવ્યાઓ જાપ મહાધોસસ્સ,  
ણિવસેવઓ ચઉત્થવગ્ગસ્સ ॥ સૂ. ૧ ॥

॥ ચઉત્થો વગ્ગો સમત્તો ॥ ૪ ॥

ટીકા—‘ ચઉત્થસ્સ-ચતુર્થવર્ગસ્ય ‘ ઉવસેવઓ ’ ઉત્કેષક = પ્રારંભવાક્ય  
પાઠોડગવાન્ય । સુધર્મસ્વામી પ્રાહ-એવ સ્વલુ જન્નુઃ ! શ્રમણેન યાવત્સમ્પા-  
પ્તેન ધર્મકથાના ચતુર્થવર્ગસ્ય ચતુષ્પચ્ચાશત્ અ યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ તથા પ્રથમ  
અધ્યયન યાવત્-ચતુષ્પચ્ચાશત્તમમ યયનમ્ ! તેષુ પ્રથમસ્યા યયનસ્ય ઉત્કેષક. ।  
સુધર્મસ્વામીપ્રાહ-એવ સ્વલુ હે જન્નુ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાત્રયુદ્ધે સમ

—:ચતુર્થ વર્ગ પ્રારંભ:-

‘ ચઉત્થસ્સ ઉવસેવઓ ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ.—( ચઉત્થસ્સ ઉવસેવઓ ) ચતુર્થ વર્ગ કા પ્રારંભ કિસ  
તરહ સે હુઆ હૈ-હસ પ્રકાર-જન્નુસ્વામી કે પૂઝને પર શ્રી સુધર્મસ્વામી  
ઉંનસે કહતે હૈ કિ ( એવ સ્વલુ જન્નુ ) હે જન્નુ ! સુનો-( સમણેણ જાવ  
સપત્તેણ ધમ્મકથાણ ચઉત્થવગ્ગસ્સ ચઉપ્પણ્ણ અજ્ઞયણા પણ્ણત્તા ત  
જહા પદ્ધમે અજ્ઞયણે જાવ ચઉપ્પણ્ણાહ મે અજ્ઞયણે ) યાવત્ મુક્તિસ્થાન  
કો પ્રાપ્ત હુણ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને ધર્મકથા કે ચતુર્થ વર્ગ કે ૫૪  
અધ્યયન પ્રજ્ઞપ્ત કિયે હૈ-વે પ્રથમ અધ્યયન સે લેકર ૫૪ વે અધ્યયન તક  
હૈ-( પદ્ધમસ્સ અજ્ઞયણસ્સ ઉવસેવઓ એવ સ્વલુ જન્નુ ! તેણ કાલેણ તેણ

ચોથો વર્ગ પ્રારંભ

‘ ચઉત્થસ્સ ઉવસેવઓ ’ इत्यादि—

ટીકાર્થ.—( ચઉત્થસ્સ ઉવસેવઓ ) ચોથા વર્ગની શરૂઆત કેવી રીતે  
થઈ છે ? આ જાતનો જન્નુ સ્વામીએ પ્રશ્ન કર્યા બાદ શ્રી સુધર્મ સ્વામી  
તેમને કહે છે કે ( એવ સ્વલુ જન્નુ ) હે જન્નુ ! સાહેબો,

( સમણેણ જાવ સપત્તેણ ધમ્મકથાણ ચઉત્થવગ્ગસ્સ ચઉપ્પણ્ણ અજ્ઞયણા  
પણ્ણત્તા ત જગ પદ્ધમે અજ્ઞયણે જાવ ચઉપ્પણ્ણાહ મે અજ્ઞયણે )

યાવત્ મુક્તિસ્થાનને પામેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ધર્મ કથાના ચોથા  
વર્ગના ૫૪ અધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યા છે તેઓ પહેલા અધ્યયનથી માંડીને ૫૪  
મા અધ્યયન સુધી છે

वसरण=भगवतः श्री महावीरस्यामिनः समागमन सजात, यावन् परिपद् भगवन्त  
पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये रूपादेवी=भूतानन्देन्द्रस्याग्रमहिषी रूप  
कावतसके भवने रूपके सिंहासने यथा काल्याः=कालीदेव्या वर्णन तथा=तद्वत्

समण्णं रायगिहे समोसरण जाव परिसा पज्जुयामइ, तेण कालेण तेण  
समण्णं रूया देवी, रूयाणंदा रायहाणी रूयगवडिसण भवणे रूयगसि  
सीहासणसि जहा कालीए तहा नवर पुव्वभवे चपाए पुण्णभदे चेइए  
रूयगे गाहावई रूयगसिरी भारिया, रूया दारिया, सेस तहेव, णवर  
भूयाणद अग्गमहिसित्ताए उववाओ देसूणं पलिओवम ठिई निक्खेवओ,  
एव सुरुयया वि, रूयसावि, रूयगाहावई वि रूयकता वि रूयप्पभावि,  
एयाओ चेव उत्तरिल्लाण इदाण भाणियव्वाओ, जाव महाघोसस्स  
णिक्खेवओ चउत्थवग्गस्स चउत्थो वग्गो समत्तो )

प्रथम अध्ययन का हे जवू । उत्क्षेपक इस प्रकार हैं-उसकाल में  
और उस समय में राजगृह नगर में महावीर स्वामी का आगमन हुआ ।  
परिपद प्रभु को वदना करने के लिये अपने २ स्थान से निकलकर जहा  
प्रभु विराजमान थे वहां आई । प्रभु ने धर्म का उपदेश दिया । यावत्  
सबने प्रभु की पर्युपासना की । उस काल और उस समय में भूतानन्द  
इन्द्र की अग्रदेवी जिसका नाम रूपादेवी था वह प्रभु को वदना के लिये

( पढमस्स अज्झयगस्स उक्खेवओ-एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समण  
रायगिहे समोसरण जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समण रूयादेवी,  
रूयाणदा, रायहाणी रूयगवडिसण भवणे रूयगसि सीहासणसि जहा कालीए  
तहा नवर पुव्वभवे चपाए पुण्णभदे चेइए रूपगे गाहावई रूयगसिरी भारिया,  
रूया दारिया, सेस तहेव, णवर भूयाणद अग्गमहिसित्ताए उववाओ देसूण पलि  
ओवम ठिई निक्खेवओ, एव सुरुयया वि, रूयसावि, रूयगाहावई, वि रूयकता  
वि रूयप्पभावि, एयाओ चेव उत्तरिल्लाण इदाण भाणियव्वाओ, जाव महाघोसस्स  
णिक्खेवओ चउत्थवग्गस्स ॥ ९ ॥ चउत्थो वग्गो समत्तो )

हे जवू ! पड़ेला अध्ययनने उत्क्षेपक था प्रमाण छे-ते काले अने  
ते समये राजगृह नगरमा महावीर स्वामीनु आगमन थयु प्रभुने वदना  
करवा भाटे परिपद पोतपोताने स्थानेथा नीकणीने जना प्रभु विराजमान हुता  
था आवी, प्रभुअ धर्मने उपदेश आय्ये यावत् सौअे प्रभुनी पर्युपासना  
करी ते काले अने ते समये भूतानन्द इन्द्रनी अग्रदेवी ( पट्टराणी ) नेतु  
रूपा देवी हुतु-प्रभुने वदना करवा भाटे आवी तेना रहैवाना लवननु

રૂપાદેવ્યા અપિ વિજ્ઞેયમ્, નચર=વિશેષોડશાયમ્-પૂર્વમપે ચમ્યાયા નગર્યા પૂર્ણ  
ભદ્ર ચૈત્યમ્, રૂપકો ગાથાપતિઃ, રૂપશ્રીભાર્યા, રૂપાદારિકા, ગ્રેષ્ઠ તથૈવ નચર  
ભૂતાનન્દાગ્રમહિષીતયા તસ્યા ઉપપાતઃ જન્મ । દેશોન પલ્યોપમ સ્થિતિઃ । નિક્ષે  
પકઃ=સમાપ્તિરાવ્યરૂપઃ પ્રચન્ધોડત્ર વિજ્ઞેય' । એવ ચુરુપાડપિ ૨, રૂપાશાડપિ ૩,  
રૂપકાવત્યપિ ૪, રૂપકાન્તાપિ ૫, રૂપપ્રમાપિ ૬ । એતાર્થેવ ઉત્તરીયાણામિન્દ્રાણાં

આઈ । હસકે રહેને કે ભવન કા નામ રૂપકાવતસક યા । ઓર જિસ  
સિંહાસન પર યહ બેઠતી થી હસકા નામ રૂપક યા । પીઠે જિસ પ્રકાર  
કા વર્ણન કાલીદેવી કા ક્રિયા ગયા હૈ-હસી પ્રકાર કા ઢનકા ભી વર્ણન  
જાનના ચાહિયે । હસકે પૂર્વભવ કા વર્ણન હસ પ્રકાર હૈ-યહ પૂર્વભવ મેં  
અપા નામકી નગરી મેં કિ જિસમેં પૂર્ણભદ્ર નામ કા હવાન યા ઓર  
રૂપક ગાથાપતિ જિસ મેં રહતા યા હસ ગાથાપતિ કી યહ રૂપશ્રી ભાર્યા  
સે " રૂપા દારિકા " હસ નામ સે પુત્રી ઉત્પન્ન હુઈ થી । યાદ મેં પ્રભુ કા  
ઉપદેશ સુનકર યહ પ્રતિબોધ કો પ્રાપ્ત હો ગઈ ઓર કાલીદેવી કી તરહ  
યહ આર્યા બન ગઈ હસકે આગે જિસ તરહ કા કાલી દેવી કા વૃત્તાન્ત  
બના હસી તરહ સે હસકા ભી જાનના ચાહિયે । જબ યહ કાલ અવસર  
કાલ કર ગઈ તબ યહ ભૂતાનદ ઇન્દ્ર કી અગ્રમહિષીરૂપ સે ઉત્પન્ન હુઈ ।  
ઘર્યાં હસકી કુઝકમ ૧, પલ્ય કી સ્થિતિ હૈ । હસ પ્રકાર રૂપા દેવી કે  
કથાનક કા યહ નિક્ષેપક હૈ । હસી તરહ સે (૨) સુરૂપા (૩) રૂપાશા  
(૪) રૂપકાવતી (૫) રૂપકાન્તા ઓર ૬ રૂપપ્રમા કા ભી વર્ણન જાનના

નામ રૂપકાવતસક હંતુ અને જે સિંહાસન ઉપર તે બેસતી હતી તેનું નામ  
રૂપક હતું જેમ પહેલા કાલી દેવીનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે તેમજ આવું  
વર્ણન પણ સમગ્ર લેખો બેઠાને તેના પૂર્વલવનું વર્ણન આ પ્રમાણે છે—  
આ પૂર્વલવમા અપા નામની નગરીમા-કે જેમા પૂર્ણલદ્રા નામે હવાન હતું  
અને રૂપક ગાથાપતિ જેમા રહેતો હતો તે ગાથાપતિની આ રૂપશ્રી ભાર્યોથી  
' રૂપાદારિકા ' આ નામથી પુત્રી રૂપે ઉત્પન્ન થઈ હતી ત્યારપછી પ્રભુને  
ઉપદેશ સાંભળીને એ બોધને પ્રાપ્ત થઈ અને કાલી દેવીની જેમ આર્યા થઈ  
ગઈ એના પછીની વિગત કાલી દેવીની હતી તેવી જ એની પણ સમગ્ર લેખી  
બેઠાને બ્યારે તેણે કાળ અવસરે કાળ કર્યો ત્યારે આ ભૂતાનદ ઇન્દ્રની  
અગ્રમહિષી ( પટરાણી ) ના રૂપમા ઉત્પન્ન થઈ ત્યાં તેની થોડી ઓછી  
એક પલ્યની સ્થિતિ છે આ પ્રમાણે રૂપાદેવીના કથાનકનો આ નિક્ષેપક છે  
આ પ્રમાણે જ (૨) સુરૂપા, (૩) રૂપાશા, (૪) રૂપકાવતી, (૫) રૂપકાન્તા અને

મણિતવ્યા\* = અગ્રમહિષ્યો વક્ત્ર્યા યાવત્ મહાઘોષસ્ય । મહાઘોષેન્દ્રસ્ય । નિક્ષેપ-  
કથતુર્થવર્ગસ્ય ॥ સૂ. ૦૯ ॥

॥ इति धर्मकृतानां चतुर्गो वर्गं समाप्तः ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमो वर्गः प्रारभ्यते—पंचमवर्गस्य ' इत्यादि ।

મૂલમ્—પંચમવર્ગસસ ઉવ્લેવઓ, એવ સ્વલુ જવ્ । જાવ  
વત્તીસં અઙ્ગયણા પણ્ણત્તા, તજહા—કમલા ૧ કમલપ્પમાર  
ચેવ, ઉપ્પલા ૩ ય સુદસણા ૪ । રૂવવર્ડ ૫ વહુરૂવા ૬, સુરૂવા ૭  
સુભગાવિય ૮ ॥ ૧ ॥ પુણ્ણા ૯ વહુપુત્તિયા ૧૦ ચેવ, ઉત્તમા ૧૧  
તારયાવિય ૧૨ । પડમા ૧૩ વસુમતી ૧૪ ચેવ, કણગા ૧૫ કણ-  
ગપ્પમા ૧૬ ॥ ૨ ॥ વડેસા ૧૭ કેડમર્ડ ૧૮ ચેવ, વડરસેણા ૧૯  
રડ્ડપ્પિયા ૨૦ । રોહિણી ૨૧ નવમિયા ૨૨ ચેવ, હિરી ૨૩ પુપ્ફ-  
વર્ડ્ડય ૨૪ ॥ ૩ ॥ મુયગા ૨૫ મુયગવર્ડ ૨૬ ચેવ, મહાકચ્છા-  
પરાડ્ડયા ૨૮ । સુઘોસા ૨૯ વિમલા ૩૦ ચેવ, સુસ્સરા ૩૧ યસર-  
સવર્ડ ૩૨ ॥ ૪ ॥ ઉવ્લેવઓ પઢમઙ્ગયણસસ, એવ સ્વલુ જવ્ ।  
તેણં કાલેણં તેણં સમણં રાયગિહેસમોસરણ જાવ પરિસા  
પઙ્ગુવાસડ્ડ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ કમલાદેવી કમલાણ  
રાયહાણીણ કમલવડેસણ ભવણે કમલસિ સીહાસણાસિ સેસં  
જહા કાલીણ તહેવ ણવરં પુઢવભવે નાગપુરે નયરે સહસવ

ચાહિયે । યે દેવિયા ભૂતાનદ્દ ઇન્દ્ર કી તરહ ઉત્તરીય ઇન્દ્રો કી બી અગ્ર-  
મહિષિયા હૈ । ઓર યે હી મહાઘોષેન્દ્ર કી બી હૈ । હસ પ્રકાર યહ ચતુર્થ  
વર્ગ કા નિક્ષેપક ( સ્વરૂપ ) હૈ ।

॥ ચતુર્થવર્ગ સમાપ્ત ॥

(૬) રૂપપ્રભાનુ વર્ણન પણ સમજી લેવું જોઈએ આ બધી દેવીઓ ભૂતાનદ્દ  
ઈન્દ્રની જેમ ઉત્તરીય ઇન્દ્રોની પણ અગ્રમહિષીઓ ( પટરાણીઓ ) છે અને  
મહાઘોષેન્દ્રની પણ તેઓજ પટરાણીઓ છે આ પ્રમાણે આ ચોથા વર્ગનો  
નિક્ષેપક છે

ઉત્ત્તેપકઃ પ્રથમાધ્યયનમ્પ । જમ્બૂસ્વામિના પૃષ્ઠે સુધર્માસ્વામીપ્રાહ-एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे 'समोसरण' समवसरण=भग

૩૧, સરસ્વતી ૩૨, । ( ઉત્તેવઓ પદમજ્ઞયણસ્સ એવ ચલુ જમ્બૂ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે સમોસરણ જાવ પરિસા પજ્જુવાસઈ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ કમલા દેવી, કમલાણ રાયહાણીણ કમલચંદેસણ ભવણે કમલસિ સીહાસણમિ સેસ જહા કાલીણ તહેવ ણવર પુવ્વભવે નાગપુરે નયરે સહસવવણે ઉજ્જાણે કમલસ્સ ગાહાવહસ્સ કમલસિરીણ ભારિયાણ કમલા દારિયા પાસસ્સં અતિણ નિચ્ચતા કાલસ્સ પિસાયકુ-મારિંદસ્સ અગ્ગમહિસી અદ્દપલિઓવમ ઠિઈ, એવ સેસા ત્રિ અજ્ઞયણા દાહિણિલ્લાણ વાણમતરિંદાણ માણિયવ્વાઓ, સવ્વઓ ણાગપુરે સહસ-વવણે ઉજ્જાણે માયા પિયા ધૂયા સરિસનામયા, ઠિઈ અદ્દપલિઓવમ )  
 હસકે વાદ જમ્બૂસ્વામી ને શ્રી સુધર્માસ્વામી સે પૂઝા કિ ઇનમેં સે કમલા નામકા જો પ્રથમ અધ્યયન હૈ ઉસકા ઉત્તેપક કિસ તરહ સે હૈ-હસ પ્રકાર જમ્બૂસ્વામી કે પૂછને પર ઉનસે સુધર્માસ્વામી ને કહા-કિ હૈ જમ્બૂ ! સુનો-તુમ્હારે પ્રશ્ન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈ-ઉસ કાલ મેં ઓર ઉસ સમય મેં રાજગૃહ નામકા નગર યા । ઉસમેં ભગવાન્ મહાવીર કા આગ-મન હુઆ । યાવત્ વરા કી પરિપદ પ્રભુ કો વદના કરને કે લિયે આઈ ।

( ઉત્તેવઓ પદમજ્ઞયણસ્સ, એવ ચલુ જમ્બૂ । તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે સમોસરણ જાવ પરિસાપજ્જુવાસઈ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ કમલા દેવી કમલાણ રાયહાણીણ કમલચંદેસણ ભવણે કમલસિ સીહાસણસિ સેસ જહા કાલીણ તહેવ ણવર પુવ્વભવે નાગપુરે નયરે સહસવવણે ઉજ્જાણે કમલસ્સ ગાહા વહસ્સ કમલમિરીણ ભરિયાણ કમલા દારિયા પાસસ્સં અતિણ નિચ્ચતા કાલસ્સ પિસાય કુમારિંદસ્સ અગ્ગમહિસી અદ્દપલિઓવમઠિઈ, એવ સેસા ત્રિ અજ્ઞયણા દાહિણિલ્લાણ વાણમતરિંદાણ માણિયવ્વાઓ, સવ્વાઓ ણાગપુરે સહસવવણે ઉજ્જાણે માયાપિયા ધૂયા સરિસનામયા, ઠિઈ અદ્દપલિઓવમ )

ત્યારપછી જમ્બૂ સ્વામીએ શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછ્યું કે આ બધામા કમલા નામે જે પહેલું અધ્યયન છે તેનો ઉત્તેપક કેવી રીતે છે ?

આ પ્રમાણે જમ્બૂ સ્વામીએ પ્રશ્ન ઠર્યા બાદ તેમને શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યું કે હે જમ્બૂ ! સાલજો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તેમા ભગવાન મહાવીરનું આગમન થયું યાવત્ નગરની પરિવદ તેમને વદના કરવા માટે આવી પ્રભુએ સૌને



चन् महागौरस्वामी समागमन सजात, यावत् परिपद् भगवन्त पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये कमला देवी कमलाया राजधान्या, कमलावतसके भवने कमले सिंहासने, शेष यथा-काल्या=कालीदेव्या वर्णन तथैवाऽस्या अपि, नगर=विशेषोऽयम्-पूर्वभवे नागपुर नगर, सहस्राश्रवनमुद्यानम्, कमलस्य गाथापतेः कमलत्रियो भार्यायाः कमला दारिका पार्श्वस्यार्हतः पुरुषादानीयस्य अन्तिके 'निखता' निष्क्रान्ता=प्रव्रजिता, कालस्य पिशाचकुमारेन्द्रस्य अग्रमहिषी । अर्द्धपल्योपम स्थितिः । एव शेषाण्यपि कमलप्रभादिनामकान्यपि एकत्रिंशद् अद्य-

प्रभु ने सत्रको धर्म का उपदेश दिया । परिपदे ने प्रभु की पर्युपासना की । उस काल में और उस समय में कमला नाम की देवी, कमला राजधानी में कमलावतसक भवन में रहती थी । उस के सिंहासन का नाम कमला था । इसके आगे का समस्त वर्णन कालीदेवी के वर्णन जैसा ही जानना चाहिये । परन्तु हममें जो विशेषता है वह इस प्रकार है-जब गौतमस्वामी ने उसके-अर्थात् देवी के चले जाने के बाद उसके पूर्वभव का वृत्तान्त पूछा-तब प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा-पूर्वभव के इसके नगर का नाम नागपुर था-उसमें सहस्राश्रवन नाम का उद्यान था । उस नगर में कमल नामका गाथापति रहता था ।-उसकी भार्या का नाम कमला श्री था । इनके एक पुत्री थी जिस का नाम कमला था । वह काललब्धि के आनेपर पुरुषदानीय-पुरुष श्रेष्ठ-पार्श्वनाथ अर्हत प्रभु के समीप प्रव्रजित हो गई । बाद में मरने पर वह काल नाम के पिशाच कुमारेन्द्र की अग्रमहिषी बनी । वहा इसकी स्थिति अर्द्धपल्य की है ।

धर्मना उपदेश आये । परिपदे प्रभुनी पर्युपासना करी ते काले अने ते समये कमला नामनी देवी, कमला राजधानीमा कमलावतसके भवनमा रहेती छती तेना सिंहासननु नाम कमला छतु अने पछीनु अधु वर्णन काली देवीना वर्णननी जेम न समल देवु जेधये परतु आमा जे के विशेषता छे ते अे प्रमाणे छे-के ज्यारे गौतम स्वामीअे देवीना गमा पछी तेना पूर्व लव विषेनी विगत पूछी त्यारे प्रभुअे तेमने आ प्रमाणे उछु-के आना पूर्व लवना नगरनु नाम नागपुर छतु तेमा सहस्राश्रवन नामे उद्यान छतु ते नगरमा कमल नामे गाथापति रहेना छे । तेनी पत्नीनु नाम कमलाश्री छतु अेमने अेक छिक्की छती तेनु नाम कमला छतु, ते जेज्य काललब्धिना अव सरे पुरुषदानीय-पुरुष श्रेष्ठ-पार्श्वनाथ अर्हत प्रभुनी पाने प्रव्रजित थधे गधे त्यारपछी भृत्य थया जादे ते काल नागना पिशाच कुमारेन्द्रनी अथ

યજ્ઞાનિ દક્ષિણાત્યાનાં વાનવ્યન્તરેન્દ્રાણામગ્રમહિષીણા મણિતજ્યાનિ । સર્વાશ્રિતાઃ  
પૂર્વભવે નાગપુરે નગરે સજાતાઃ, સહસ્રાબ્રવને ઉદ્યાને મગવત્પાર્શ્વમમોઃ સમીપે પ્રવ્ર-  
જિતાઃ । માતાપિતા દુરિતા સદૃશનામકઃ । આસા સ્થિતિરર્ધપલ્યોપમમ્ ॥ સૂ. ૧૦ ॥

॥ इति धर्मकथानां पञ्चमो वर्गः समाप्तः ॥ ५ ॥

મૂલમ્—છટ્ટોવિ વગ્ગો પંચમવગ્ગસરિસો, ણવરં મહાકાલા-  
દીપં ઉત્તારિહ્ણાણં ઇદાણં અગ્ગમહિસીઓ પુઠ્ઠવભવે સાગેય-  
નયરે ઉત્તરકુરુ ઉજ્જાણે માયા પિયા ધૂયા સરિસણામયા  
સેસં તં ચેવ ॥ સૂ. ૧૧ ॥

॥ छट्टो वग्नो समत्तो ॥ ६ ॥

ઘાકી જો ૩૧, કમલપ્રભા નામકે અધ્યયન હૈં વે દક્ષિણ દિશા સબન્ધી  
વાનવ્યતરેન્દ્રોં કી અગ્રમહિપિયોં કૈ હૈં એસા જાનના ચાહિયે । યે સબ  
હી પૂર્વભવ મેં નાગપુર નગર મેં ઉત્પન્ન હુઈ-ઑર સહસ્રાબ્રવન નામકે  
ઉદ્યાન મેં મગવાન્ પાર્શ્વનાથ કૈ સમીપ પ્રવ્રજિત હુઈ । इन अध्ययनों में  
माता पिता तथा पुत्री ये सब एक सरीखे नामवाली है । जैसे कमलप्रभा  
नामक अध्ययन में माता का नाम कमलप्रभा श्री, पिता का नाम कम-  
लप्रभ एव पुत्री का नाम कमलप्रभा है-इसी तरह से और अध्ययनों में  
भी जानना चाहिये । इन सब देविघों की स्थिति अर्धपल्य की है ॥ सू. १० ॥

-:पचमवर्ग समाप्त:-

મહિષી ( પટરાણી ) બની ત્યા તેની સ્થિતિ અર્ધપલ્યની છે શેષ જે ૩૧  
કમલપ્રભા નામના અધ્યયનો છે તે દક્ષિણ દિશા સબન્ધી વાનવ્યતરેન્દ્રોની  
અગ્રમહિષીઓ ( પટરાણીઓ ) ના સમજવા જોઈએ આ બધી પૂર્વભવમા  
નાગપુર નગરમાં ઉત્પન્ન થઈ અને સહસ્રાબ્રવન નામના ઉદ્યાનમાં ભગવાન  
પાર્શ્વનાથની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ ગઈ આ બધા અધ્યયનોમાં માતાપિતા તેમજ  
પુત્રી આ સર્વે એક સરખા નામવાળા છે જેમકે કમલપ્રભા નામના અધ્યય-  
નમાં માતાનું નામ કમલપ્રભાશ્રી, પિતાનું નામ કમલપ્રભ અને પુત્રીનું નામ  
કમલપ્રભા છે એ પ્રમાણે બીજા અધ્યયનો વિષે પણ જાણી લેવું જોઈએ આ  
બધી દેવીઓની સ્થિતિ અર્ધપલ્યની છે ॥ સૂ. ૧૦ ॥

ટીકા—‘ છટ્ટો વિ ’ इत्यादि पष्ठोऽपि वर्गः पञ्चमवर्गसदृशः । नवरम्-एतावान् विशेष-अत्र महाकालादीनाम् उत्तरीयाणामिन्द्राणामग्रमहिष्यः । एताः सर्वाः पूर्वभवे साकेतनगरे उत्तरकुरुक्षेत्रे पार्श्वप्रभुसमीपे प्रव्रजिताः मातरः पितरो दुहितरः सदृशनामकाः । शेष तदेव सर्वं वाच्यम् ॥ सू० ११ ॥

इति धर्मकथाना पष्ठो वर्गः समाप्तः ॥ ६ ॥

—:षष्ठवर्ग प्रारम्भः—

‘ છટ્ટો વિ વગ્ગો પચમવગ્ગસરિસો ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ —( છટ્ટો વિ વગ્ગો પચમવગ્ગસરિસો, ણવર મહાકાલાદીણ ઉત્તરિલ્લાણ ઇદાણ અગ્ગમહિસીઓ પુન્નવભવે સાગેયનયરે ઉત્તરકુરુઝ જ્ઞાણે માયા પિયા ધૂયા સરિસણામયા સેસ ત ચેવ ૧૧ ) છઠા વર્ગ મ્હી પચમવર્ગ કે જૈસે હી હૈ । પરન્તુ હસમેં જો ડસકી અપેક્ષા વિશેષતા હૈ —વહ હસ પ્રકાર હૈ—હસ અધ્યયન મેં ઉત્તર દિશા કે ઇન્દ્ર મહાકાલ આદિકોં કી અગ્રમહિષિયોં કા વર્ણન હૈ । યે સબ અગ્રમહિષિયા પૂર્વભવ મેં સાકેત નગર (અયોધ્યા) મેં ઉત્તર કુરુ નામકે ઉદ્યાન મે પાર્શ્વપ્રભુ કે સમીપ પ્રવ્રજિત હુઈ હૈ । માતા પિતા એવ પુત્રિયા યે સબ એક જૈસા નામવાલે હૈ । ઘાકી કા હનકે વિષય કા સમસ્ત કથન કાલીદેવી કે વર્ણન જૈસા જાનના ચાહિયે ।

—:षष्ठवर्ग समाप्तः—

છટ્ટો વર્ગ પ્રારભ —

‘ છટ્ટો વિ વગ્ગો પચમ વગ્ગસરિસો ’ इत्यादि—

( છટ્ટો વિવગ્ગો પચમવગ્ગસરિસો, ણવર મહાકાલાદીણ ઉત્તરિલ્લાણ ઇદાણ અગ્ગમહિસીઓ પુન્નવભવે સાગેય નયરે ઉત્તરકુરુ ઝજ્ઞાણે માયાપિયા ધૂયા સરિસણામયા સેસ ત ચેવ ૧૧ )

છટ્ટો વર્ગ પણ પાચમા વર્ગના જેવો જ છે પરંતુ આમા જે તેના કરતા વિશેષતા છે, તે એ પ્રમાણ છે કે આ અધ્યયનમા ઉત્તર દિશાના ઇન્દ્ર મહાકાલ વગેરેની અગ્રમહિષીઓ ( પટરાણીઓ ) નું વર્ણન છે આ બધી અગ્રમહિષીઓ પૂર્વભવમા સાકેત નગરમા ઉત્તરકુરુ નામના ઉદ્યાનમા પાર્શ્વ પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ છે માતાપિતા અને પુત્રીઓ બધા એક સરખા નામવાળા છે એમના વિષેનું બાકીનું બધું કથન કાલી દેવીના વર્ણન જેવું બાણુવું ભેઈએ

છટ્ટો વર્ગ સમાપ્ત,

યનાનિ દાક્ષિણાત્યાનાં વાનવ્યન્તરેન્દ્રાણામગ્રમહિષીણાં મણિતઙ્ગાનિ । સર્વાશ્રૈતા  
પૂર્વભવે નાગપુરે નગરે સંજાતાઃ, સહસ્રામ્રવને ઉદ્યાને ભગવત્પાર્શ્વપ્રમોઃ સમીપે પ્રવ-  
જિતાઃ । માતાપિતા દુહિતા સદૃશનામકઃ । આતા સ્થિતિરર્ધપલ્લયોપમમ્ ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

॥ ઇતિ ધર્મકથાનાં પચ્ચમો વર્ગઃ સમાપ્તઃ ॥ ૫ ॥

મૂલમ્—છટ્ટોવિ વગ્ગો પચ્ચમવગ્ગસરિસો, ણવરં મહાકાલા-  
દીણં ઉત્તરિહ્ણાણં ઇદાણં અગ્ગમહિસીઓ પુઠ્ઠભવે સાગેય-  
નયરે ઉત્તરકુરુ ઉજ્જાણે માયા પિયા ધૂયા સરિસણામયા  
સેસં તં ચેવ ॥ સૂ૦ ૧૧ ॥

॥ છટ્ટો વગ્ગો સમત્તો ॥ ૬ ॥

ઘાકી જો ૩૧, કમલપ્રભા નામકે અધ્યયન હૈં વે દક્ષિણ દિશા સબન્ધી  
વાનવ્યતરેન્દ્રોં કી અગ્રમહિપિયોં કૈં હૈં એસા જાનના ચાહિયે । યે સબ  
હી પૂર્વભવ મેં નાગપુર નગર મેં ઉત્પન્ન હુઈ-ઑર સહસ્રામ્રવન નામકે  
ઉદ્યાન મેં ભગવાન્ પાર્શ્વનાથ કૈ સમીપ પ્રવ્રજિત હુઈ । इन अध्ययनों में  
माता पिता तथा पुत्री ये सब एक सरीखे नामवाली है । जैसे कमलप्रभा  
नामक अध्ययन में माता का नाम कमलप्रभा श्री, पिता का नाम कम-  
लप्रभ एव पुत्री का नाम कमलप्रभा है-इसी तरह से और अध्ययनों में  
भी जानना चाहिये । इन सब देवियों की स्थिति अर्धपल्लय की है ॥ सू१० ॥

—:પચમવર્ગ સમાપ્ત:—

મહિષી ( પટરાણી ) બની ત્યા તેની સ્થિતિ અર્ધપલ્લયની છે શેષ જે ૩૧  
કમલપ્રભા નામના અધ્યયનો છે તે દક્ષિણ દિશા સબન્ધી વાનવ્યતરેન્દ્રોની  
અગ્રમહિષીઓ ( પટરાણીઓ ) ના સમજવા જોઈએ આ બધી પૂર્વભવમાં  
નાગપુર નગરમાં ઉત્પન્ન થઈ અને સહસ્રામ્રવન નામના ઉદ્યાનમાં ભગવાન  
પાર્શ્વનાથની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ ગઈ આ બધા અધ્યયનોમાં માતાપિતા તેમજ  
પુત્રી આ સર્વે એક સરખા નામવાળા છે જેમકે કમલપ્રભા નામના અધ્યય-  
નમાં માતાનું નામ કમલપ્રભાશ્રી, પિતાનું નામ કમલપ્રભ અને પુત્રીનું નામ  
કમલપ્રભા છે એ પ્રમાણે બીજા અધ્યયનો વિષે પણ જાણી લેવું જોઈએ આ  
બધી દેવીઓની સ્થિતિ અર્ધપલ્લયની છે ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

પાંચમો વર્ગ સમાપ્ત

यथासूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिर्मालि ३, प्रभङ्गकरा ४ । प्रथमाध्ययनस्योत्क्षेपकः । सुधर्मस्वामीप्राह-एव खलु हे जम्बू । तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे समवसरणम्=भगवद्वर्धमानस्वामिसमागमनम् यावत् परिपत् पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये सूरप्रभादेवी, सूरविमाने, सूरप्रभे सिंहासने, शेष

भगवान् महावीर ने इस सातवें वर्ग के चार अध्ययन प्ररूपित किये हैं - (त जहा-सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभकरा, पढमज्झयणस्स, उक्खेवओ एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समण्ण रायगिहे समोसरण जाव परिमा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समण्ण सूरप्पभा देवी, सूरसि विमाणसि सूरप्पमसि सीहासणसि सेस जहा कालीए तहा) वे चार अध्ययन इस प्रकार हैं सूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिमाली ३, प्रभङ्गकरा ४, इनमें प्रथम अध्ययन का उत्क्षेपक हे जम्बू ! इस प्रकार है- उस काल और उस समय में राजगृह नाम के नगर में भगवान् वर्धमानस्वामी का आगमन हुआ था-प्रभु का आगमन सुनकर वहा की परिपद उनको वदना करने के लिये उनके समीप गई-प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया । उपदेश सुनकर सबने प्रभु की पर्युपासना की । उस काल और उस समय में सूरप्रभा नाम की एक देवी जो सूरविमान में रहती थी-और सूरप्रभ सिंहासन पर बैठती थी प्रभु को वदना करने के लिये आई । इसके बाद का इसका वृत्तान्त जैसा पहिले कालीदेवी

( त जहा-सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभकरा, पढमज्झयणस्स, उक्खेवओ एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समण्ण रायगिहे समोसरण जाव परिमा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समण्ण सूरप्पभादेवी, सूरसि विमाणसि सूरप्पमसि सीहासणसि सेस जहा कालीए तहा )

તે ચાર અધ્યયનો આ પ્રમાણે છે -સૂરપ્રભા ૧, આતપા ૨, અર્ચિમાલી ૩, પ્રભડકરા ૪, હે જમ્બૂ ! આ બધામાં પહેલા અધ્યયનનો ઉત્કેષક આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામના નગરમાં ભગવાન વર્ધમાન સ્વામીનું આગમન થયું પ્રભુનું આગમન સાંભળીને ત્યાંની પરિપદ તેમને વદના કરવા માટે તેમની પાસે ગઈ પ્રભુએ સૌને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો ઉપદેશ સાંભળીને સૌએ પ્રભુની પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે સૂરપ્રભા નામની એક દેવી-જે સૂર વિમાનમાં રહેતી હતી અને સૂરપ્રભ સિંહાસન ઉપર બેસતી હતી-પ્રભુની વદના કરવા માટે આવી એના પછીનું



અથ સપ્તમો વર્ગઃ પ્રારભ્યતે—‘ સત્તમસ્સે ’ ત્યાદિ ।

મૂલ્ક—સત્તમસ્સ વર્ગસ્સ ઉચ્ચેવઓ, એવં સ્વલુ જંવૂ ।  
જાવ ચત્તારિ અઙ્ગયણા પળ્લત્તા, ત જહા—સૂરપ્પમા આયવા  
અન્નિચમાલી પમકરા, પઢમઙ્ગયણસ્સ ઉચ્ચેવઓ, એવ સ્વલુ  
જવૂ । તેણં કાલેણં તેણ સમણં રાચગિહે સમોસરણં જાવ  
પરિસા પજ્જુવાસદ્ધ, તેણં કાલેણં તેણ સમણં સૂરપ્પમા દેવી  
સૂરસિ વિમાણંસિ સૂરપ્પમસિ સીહાસણંસિ સેસ જહા કાલીએ  
તહાણવર પુઠ્ઠભવે અરક્કુરીએ નયરીએ સૂરપ્પમસ્સ ગાહાવ  
દ્ધસ્સ સૂરસિરીએ મારિયાએ સુરપ્પમા દારિયા સૂરસ્સ અગ્ગ-  
મહિસી ઠિઈ અહ્ધપલિઓવમ પચહિ વાસસણ્હિ અઠ્ઠમહિય  
સેસં જહા કાલીએ, એવ સેસાઓવિ સઠ્ઠાઓ અરક્કુરીએ  
પયરીએ ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥ ॥ સત્તમો વર્ગો સમત્તો ॥ ૭ ॥

ટીકા—‘ સત્તમસ્સે ’ તિ-સપ્તમસ્ય વર્ગસ્ય ઉત્કેષકઃ । સુધર્મસ્વામીરુથ  
યતિ-એવ સ્વલુ હે જંમ્બૂઃ । યાત્ ચત્તારિ અઘ્યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા=તાનિ

—સત્તમવર્ગ પ્રારભઃ—

‘ સત્તમસ્સવર્ગસ્સ ઉચ્ચેવઓ ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થઃ—( સત્તમસ્સ વર્ગસ્સ ઉચ્ચેવઓ એવ સ્વલુ જવૂ ! જાવ  
ચત્તારિ અઙ્ગયણા પળ્લત્તા ) હે ભદ્ર ! સાતવે વર્ગ કા ઉત્કેષક કિસ  
પ્રકાર હૈ ? હસ જંમ્બૂસ્વામી કે પ્રશ્ન કરને પર ગૌતમસ્વામી ઉનસે કહતે  
હૈ—કિ હે જવૂ ! સુનો, તુમ્હારે પ્રશ્ન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈ—શ્રમણ

સાતમો વર્ગ પ્રારભ—

‘ સત્તમસ્સ વર્ગસ્સ ઉચ્ચેવઓ ’ इत्यादि—

ટીકાર્થઃ—( સત્તમસ્સ વર્ગસ્સ ઉચ્ચેવઓ એવ સ્વલુ જવૂ ! જાવ ચત્તારિ અઙ્ગ  
યણા પળ્લત્તા ) હે ભદ્ર ! સાતમા વર્ગનો ઉત્કેષક કેવી રીતે છે ?

જ ખૂ સ્વામીના આ પ્રશ્ને સાભળીને ગૌતમ સ્વામી તેમને કહે છે કે  
હે જ ખૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે શ્રમણુ ભગવાન  
મહાવીરે આ સાતમા વર્ગના ચાર અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા છે

યયાસૂરપ્રભા ૧, આતપા ૨, અર્ધિર્માલિઃ ૩, પ્રભદ્ધકરા ૪ । પ્રથમા યયનસ્યોત્ક્રે  
પ્રકઃ । સુધર્મસ્વામીપ્રાહ-एव खलु हे जम्बू । तस्मिन् काले तस्मिन् समये राज  
गृहे समवसरणम्=भगवद्वर्धमानस्वामिसमागमनम् यावत् परिपत् पर्युपास्ते ।  
तस्मिन् काले तस्मिन् समये सूरप्रभादेवी, सूरविमाने, सूरप्रभे सिंहासने, शेष

भगवान महावीर ने इस सातवें वर्ग के चार अध्ययन प्ररूपित किये हैं  
-(त जहा-सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभकरा, पढमज्झयणस्स,  
उम्मेवओ एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समण्ण रायगिहे समोस-  
रण जाव परिमा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समण्ण सूरप्पभा देवी,  
सूरसि विमाणसि सूरप्पभसि सीहासणसि सेस जहा कालीए तहा) वे  
चार अध्ययन इस प्रकार हैं सूरप्रभा १, आतपा २, अर्धिमाली ३,  
प्रभद्वरा ४, इनमें प्रथम अध्ययन का उत्क्षेपक हे जम्बू ! इस प्रकार है-  
उस काल और उस समय में राजगृह नाम के नगर में भगवान् वर्ध  
मानस्वामी का आगमन हुआ या-प्रभु का आगमन सुनकर वहा की  
परिपद उनको वदना करने के लिये उनके समीप गई-प्रभु ने सबको  
धर्म का उपदेश दिया । उपदेश सुनकर सबने प्रभु की पर्युपासना की ।  
उस काल और उस समय में सूरप्रभा नाम की एक देवी जो सूरविमान  
में रहती थी-और सूरप्रभ सिंहासन पर बैठती थी प्रभु को वदना करने  
के लिये आई । इसके बाद का इसका वृत्तान्त जैसा पहिले कालीदेवी

( तं जहा-सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभकरा, पढमज्झयणस्स,  
उम्मेवओ एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समण्ण रायगिहे समोसरण जाव  
परिमा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समण्ण सूरप्पभादेवी, सूरसि विमाणसि  
सूरप्पभसि सीहासणसि सेस जहा कालीए तहा )

તે ચાર અધ્યયનો આ પ્રમાણે છે -સૂરપ્રભા ૧, આતપા ૨, અર્ધિમાલી  
૩, પ્રભદ્ધકરા ૪, હે જમ્બૂ ! આ પદ્ધતિ પહેલા અધ્યયનનો ઉત્ક્રેષ્ઠ આ  
પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામના નગરમાં ભગવાન  
વર્ધમાન સ્વામીનું આગમન થયું પ્રભુનું આગમન સાંભળીને ત્યાંની પરિપદ  
તેમને વદના કરવા માટે તેમની પાસે ગઈ પ્રભુએ સૌને ધર્મનો ઉપદેશ  
આપ્યો ઉપદેશ સાંભળીને સૌએ પ્રભુની પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે  
સમયે સૂરપ્રભા નામની એક દેવી-જે સૂર વિમાનમાં રહેતી હતી અને સૂરપ્રભ  
સિંહાસન ઉપર બેસતી હતી-પ્રભુની વદના કરવા માટે આવી એના પછીનું

અથ સપ્તમો વગઃ પ્રારંભ્યતે—‘ સત્તમસ્સે ’ ત્યાદિ ।

મૂળ—સત્તમસ્સ વગ્ગસ્સ ઉચ્ચેવઓ, એવ સ્વલુ જન્નુ ।  
જાવ ચત્તારિ અઙ્ગયણા પળ્લતા, ત જહા—સૂરપ્પમા આયવા  
અચ્ચિમાલી પમકરા, પઢમઙ્ગયણસ્સ ઉચ્ચેવઓ, એવ સ્વલુ  
જન્નુ । તેણં કાલેણં તેણં સમણં રાચગિહે સમોત્તરણં જાવ  
પરિસા પઙ્ગુવાસદ્ધ, તેણં કાલેણ તેણ સમણં સૂરપ્પમા દેવી  
સૂરસિ વિમાણંસિ સૂરપ્પમંસિ સીહાસણંસિ સેસ જહા કાલીણ  
તહાણવર પુવ્વમ્ભવે અરવ્વહુરીણ નયરીણ સૂરપ્પમસ્સ ગાહાવ  
ઇસ્સ સૂરસિરીણ મારિયાણ સુરપ્પમા દારિયા સૂરસ્સ અગ્ગ-  
મહિસી ઠિઈ અહ્ધપલિઓવમ પચ્ચહિ વાસસણ્ણહિ અઠ્ઠમહિય  
સેસં જહા કાલીણ, એવ સેસાઓવિ સઘ્વાઓ અરવ્વહુરીણ  
નયરીણ ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥ ॥ સત્તમો વગ્ગો સમત્તો ॥ ૭ ॥

ટીકા—‘ સત્તમસ્સે ’ તિ—સપ્તમસ્ય ‘ વર્ગસ્ય ઉત્ક્ષેપકઃ । સુધર્મસ્વામીકથ  
યતિ—એવ સ્વલુ હે જન્નુઃ ! યાત્ ચત્વારિ અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા—તાનિ

—:સત્તમવર્ગ પ્રારંભ:—

‘ સત્તમસ્સવગ્ગસ્સ ઉચ્ચેવઓ ? ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ:—( સત્તમસ્સ વગ્ગસ્સ ઉચ્ચેવઓ એવ સ્વલુ જન્નુ । જાવ  
ચત્તારિ અઙ્ગયણા પળ્લતા ) હે ભદ્રત ! સાતવે વર્ગ કા ઉત્ક્ષેપક કિસ  
પ્રકાર હૈ ? ’ इस जन्नुस्वामी के प्रश्न करने पर गौतमस्वामी उनसे कहते  
हैं—कि हे जन्नु ! सुनो, तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है—श्रमण

સાતમો વર્ગ પ્રારંભ—

‘ સત્તમસ્સ વગ્ગસ્સ ઉચ્ચેવઓ ’ इत्यादि—

ટીકાર્થ:—( સત્તમસ્સ વગ્ગસ્સ ઉચ્ચેવઓ એવ સ્વલુ જન્નુ । જાવ ચત્તારિ અઙ્ગ  
યણા પળ્લતા ) હે ભદ્રત ! સાતમા વર્ગનો ઉત્ક્ષેપક કેવી રીતે છે ?

જન્નુ સ્વામીના આ પ્રશ્નને સાલળીને ગૌતમ સ્વામી તેમને કહે છે કે  
હે જન્નુ ! સાલળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે શ્રમણુ ભગવાન  
મહાવીરે આ સાતમા વર્ગના ચાર અધ્યયનો પ્રજ્ઞપિત કર્યા

अथाष्टमो वर्गः प्रारभ्यते—‘ अष्टमस्से ’ इत्यादि ।

मूलम्—अष्टमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जम्बू । जाव चत्तारि अज्झयणा पणत्ता, त जहा—चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चि-माली पभंकरा, पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जम्बू । तेणं कालेणं तेण समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं चंद-प्पभा देवी चदप्पभंसि विमाणसि चदप्पभंसि सीहासणंसि सेस जहा कालीए, णवर पुव्वभवे महुराए णयरीए भंडीर-वडेंसए उज्जाणे चदप्पभे गाहावई चंदसिरी भारिया चंद-प्पभा दारिया चंदस्स अगमहिंसी ठिई अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अट्ठमहिय सेस जहा कालीए, एवं सेसाओवि महुराए णयरीए मायापियरोवि धूयासरि-सणामा ॥ सू० १३ ॥ अष्टमो वर्गो समत्तो ॥ ८ ॥

टीका—‘ अष्टमस्से ति—अष्टमस्य उत्क्षेपकः । सुधर्मास्वामी प्राह—एव खलु हे जम्बू ! यावत् चत्वारि अ-ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा=तानि यथा—चन्द्रप्रभा १, ज्योत्स्नाभा २, अर्चिर्मालिः ३, प्रभङ्गुरा ४ । प्रथमस्या-ययनस्योत्क्षेपक । एव

—:अष्टमवर्ग प्रारभ—:

‘ अष्टमस्स उक्खेवओ ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—‘ (अष्टमस्स उक्खेवओ—एव खलु जम्बू । जाव चत्तारि अज्झयणा पणत्ता त-जहा—चदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभंकरा,

आठमो वर्ग प्रारभ

‘ अष्टमस्स उक्खेवओ , इत्यादि—

‘ ( अष्टमस्स उक्खेवओ—एव खलु जम्बू । जाव चत्तारि अज्झयणा पणत्ता—तं जहा—चदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभंकरा, पढमस्स अज्झयणस्स उक्खे-



યથા કાલ્યા' = કાલી દેવ્યા વર્ણન તથા વિનંયમ્ , નગરમ્ = મય વિશેષઃ = પૂર્વભવે  
અરક્ષુર્યા નગર્યા સૂરપ્રભસ્ય ગાથાપતેઃ, સૂરશ્રિયો માર્યાયાઃ સૂરપ્રમા દારિકા,  
સૂરસ્ય અગ્રમહિષી સ્થિતિરદ્વપલ્યોપમ પત્રમિર્નિર્ણયતૈરભ્યધિકમ્ । શેષ યથા કાલ્યા ।  
एव शेपा अपि = आतपादिकाः देव्यो गान्या । सर्वा पूर्वभवे अरक्षुर्या  
नगर्यामासन् ॥ सू० १२ ॥

॥ इति धर्मकथाना सप्तमो वर्गः समाप्तः ॥ ७ ॥

કા ઘૃત્તાન્ત લિલા જા ચુકા હૈ-વૈસા હી હૈ । ઉસમેં કુછ અન્તર નહીં હૈ  
( જગર ) પરન્તુ જિન ગાતોં મેં અન્તર હૈ-વહ હસ પ્રકાર હૈ-( પુર્વભવે )  
યહ પૂર્વભવ મેં (અરક્ષુરીઃ નગરીઃ સૂરપ્રભસ્ય ગાથાવહસ્ય સૂરસિરીઃ  
મારિયાઃ સૂરપ્રમા દારિકા સૂરસ્ય અગ્રમહિસી ઠિઈ અદ્વપલિઓવમ  
પચહિં વાસસઈ અભહિય સેસ જહા કાલીઃ એવ સેસાઓ વિ સઘાઓ  
અરક્ષુરીઃ જગરીઃ ૧૨ ) અરક્ષુર નામકી નગરી મેં નિવાસ કરનેવાલે  
સૂરપ્રમા ગાથાપતિ કી સૂર શ્રી માર્યા કી કુક્ષિ સે અવતરી થી । હસકા  
નામ સૂરપ્રમા થા । યહ સૂર કી અગ્રમહિષી હૈ । હસકી વહા પાંચસૌ  
વર્ષ સે અધિક અર્ધપલ્ય કી સ્થિતિ હૈ । ઓર હસકા હસ અવસ્થા કા  
સમસ્ત વર્ણન કાલી સમાન હી હૈ । હસી તરહ કા આતપાઆદિક ૩  
દેવિયોં કા મી જીવન ઘૃત્તાન્ત હૈ । યે ૩ તીનોં હી દેવિયાં અપને ૨ પૂર્વ  
ભવ મેં અરક્ષુર નગરી મેં જન્મી થી ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

- સસમવર્ગ સમાપ્ત:-

આનુ વર્ણન કાલી દેવીના વર્ણન જેવું જ સમગ્ર લેવું જોઈએ, તેમા કોઈ  
પણ જાતનો તફાવત નથી ( જગર ) પરંતુ જે વાતમા તફાવત છે, તે આ  
પ્રમાણે છે ( પુર્વભવે ) આ પૂર્વભવમા

( અરક્ષુરીઃ નગરીઃ સૂરપ્રભસ્ય ગાથાવહસ્ય સૂરસિરીઃ મારિયાઃ સૂરપ્રમા  
દારિકા સૂરસ્ય અગ્રમહિસી ઠિઈ અદ્વપલિઓવમ પચહિં વાસસઈ અભહિય  
સેસ જહા કાલીઃ, એવ સેસાઓ વિ સઘાઓ અરક્ષુરીઃ જગરીઃ ૧૨ )

અરક્ષુરી નામની નગરીમા રહેનારી સૂરપ્રભા ગાથાપતિની સૂરશ્રીમાર્યાના  
ગર્ભથી જન્મ પામી હતી, તેનું નામ સૂરપ્રભા હતું તે સૂરની અગ્રમહિષી  
( પટરાણી ) થઈ તેની ત્યા પાંચસૌ વર્ષ કરતા વધારે અર્ધપલ્યની સ્થિતિ  
છે તેનું આ અવસ્થા વિષેનું બધું વર્ણન કાલીના જેવું જ છે એ પ્રમાણે જ  
આતપા વગેરે ૩ દેવીઓનું પણ જીવનવૃત્તાંત છે આ ત્રણે દેવીઓ પોતા  
પોતાના પૂર્વભવમા અરક્ષુર નગરમા જન્મ પામી હતી ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

સાતમો વર્ગ સમાપ્ત



વિજ્ઞેયમ્, નગર=વિશેષસ્ત્રયમ્-પૂર્વભવે મથુરાયા નગર્યા મળ્ડીરાવતસકમુગ્રાનમ્, ચન્દ્રપ્રભો ગાથાપતિઃ, ચન્દ્રશ્રીભાર્યા, ચન્દ્રપ્રભા દારિકા, ચન્દ્રસ્યાગ્રમહિષી, સ્થિતિરદ્વિપલ્યોપમ પચ્ચાશદ્ધિર્વર્ષપદસૈભ્યત્રિકમ્ । શેષ યથા કાલ્યાઃ । એવ

ચદ્રપ્રભ વિમાન મે રહતી થી ઓર ચદ્રપ્રભ સિંહાસન પર વૈઠતી થી-શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર કો વદના કરને એવ ડનસે ધર્મ કા ઉપદેશ સુનને કે લિયે ડનકે નિકટ આઈ-। ડસકે વાદ કા ડસકા વૃત્તાન્ત કાલીદેવી કે વૃત્તાન્ત જૈસા હી હૈ । ડસમેં કોઈ અન્તર નહી હૈ । જહાં અન્તર હૈ-ડસકા ચુલાગા ડસ પ્રકાર હૈ-પૂર્વભવ મે યહ મથુરા નગરી મેં જન્મી થી । વહા મળ્ડીરાવતસક ઉદ્યાન થા । ડસ નગરી મેં ચદ્રપ્રભ નામ કા ગાથાપતિ રહતા થા । ડસકી ભાર્યા થી જિસકા નામ ચદ્રશ્રી થા । ડનકે યહ યહ ચદ્રપ્રભા નામકી પુત્રી થી । યહ ચન્દ્ર કી અગ્રમ-હિષી ગ્ની । ( ઠિઈ અદ્વપલિઓગમ, પળ્ળાસાએ વાસસહસ્સેહિં અગ્મહિય સેસ જહા કાલીએ એવ સેસાઓવિ ચદ્રસ અગ્મહિસી ) પચાસ હજાર વર્ષ સે અધિક ડસકી સ્થિતિ આધેપલ્ય કી હૈ । ડસકે વાદ કા ડસકા જીવન વૃત્તાન્ત કાલી દારિકા કે જીવન વૃત્તાન્ત જૈસા હી જાનના ચાહિયે । ડસી તરહ ડ્યોત્સ્નામા આદિશેષ ૩ દેવિયો કે સગન્ધ કો લેકર જો અધ્યયન કહે ગયે હૈ-વે જાનના ચાહિયે યે સવ ડ્યોત્સ્નામા

વિમાનમા રહેતી હતી અને ચદ્રપ્રભ વિમાનમા બેસતી હતી-શ્રમણુ ભગવાન મહાવીરની વદના કરવા માટે અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળવા માટે તેમની પાસે આવી તેના પછીનુ તેનુ વૃત્તાત કાલી દેવીના વૃત્તાત બેવુ જ છે તેમા કેઇ પણ જાતનો તક્ષવત નથી જ્યા તક્ષવત છે-તેનુ અપીઝરણુ આ પ્રમાણે છે કે પૂર્વભવમા તે મથુરા નગરીમા જન્મી હતી, ત્યા ભડીરાવતમક ઉદ્યાન હતુ તે નગરીમા ચદ્રપ્રભનામે ગાથાપતિ રહેતો હતો ચદ્રશ્રી તેની ભાર્યાનુ નામ હતુ તેને ચન્દ્રપ્રભા નામે પુત્રી હતી આ ચન્દ્રની અગ્રમહિષી ( પટરાણી ) થઈ

( ઠિઈ અદ્વપલિઓગમ, પળ્ળાસાએ વાસમહસ્સેહિં અગ્મહિય સેસ જહા કાલીએ એવ સેસાઓવિ ચદ્રસ અગ્મહિસી )

પચાસ હજાર વર્ષ કરતા આની સ્થિતિ અડધા પદ્યની છે એના પછીનુ આનુ જીવન વિષેનુ વર્ણન કાલી દારિકાના જીવન બેવુ જ સમજી લેવુ જોઇએ આ પ્રમાણે ડ્યોત્સ્નામા વગેરે બાકી ત્રણ દેવીઓના અજાધને લગતે અધ્યયનો કહેવામા આવ્યા છે તેમને પણ સમજી લેવા જોઇએ

લલુ હે જન્નુ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહે શ્રીમહાવીરસ્વામિનઃ સમવ  
સરણ, યાવત્-પરિપત્ પર્યુપાસ્તે । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે ચન્દ્રપ્રભા દેવી  
ચન્દ્રપ્રભે વિમાને ચન્દ્રપ્રભે મિહાસને શેષ યથા કાલ્યાઃ=કાલીદેવ્યા વર્ણનં તદ્વદ્

પદ્મસ્સ અજ્ઞયણસ્સ ઉચ્ચેયઓ-એવ ચલુ જન્ન ! તેણ કાલેણ તેણ  
સમણ રાયગિદે સમોસરણ-જાવ પરિસા પઞ્જુવાસહ, તેણ કાલેણ તેણ  
સમણ ચદપ્પમાદેવી ચદપ્પમસિ વિમાણસિ સીહાસણમિ સેસ જહા  
કાલીણ, ણવર પુવ્વમવે મહુરાણ ણયરીણ મહીરવહેંસણ ઉજ્જાણે ચદ-  
પ્પમે ગાહાવર્દે ચદસિરી મારિયા ચદપ્પમા દારિયા ) હે મદત ! આઠવે  
વર્ગ કા ઉત્તેપક કૈસા હૈ ? હસ પ્રકાર જન્નુસ્વામી કે પૂછને પર સુધર્મા-  
સ્વામી ને ડનસે કહા-હે જન્નુ ! સુનો તુમ્હાને પ્રહન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર  
હે-શ્રમણ મગવાન્ મહાવીર ને હસ વર્ગ કે ચાર અધ્યયન પ્રજ્ઞસ ક્રિયે હૈ  
-વે હસ પ્રકાર સે હૈ-ચદ્રપ્રભા ૧, ડ્યોત્સનામા ૨, અર્ચિમાલી ૩, પ્રભ-  
કરા ૪, । હનમે હે જન્નુ ! પ્રથમ ચન્દ્રપ્રભા અધ્યયન કા ઉત્તેપક હસ પ્રકાર  
સે હૈ-હસ કાલ મે ઓર હસ સમય મે રાજગૃહ નામકે નગર મે શ્રી  
મહાવીર સ્વામી કા આગમન હુઆ થા-। ડનસે ધર્મ કા ઉપદેશ પ્રાપ્ત  
કરને કે લિયે વહા કી સમસ્ત ધાર્મિક જનતા ડનકે પાસ આઈ ધી પ્રભુ  
ને સત્ર કે લિયે ધર્મ કા ઉપદેશ સુનાયા-સુનાકર સવો ને ડનકી યાવત્  
પર્યુપાસના કી । હસ કાલ ઓર હસ સમય મે ચન્દ્રપ્રભા દેવી જો ક્રિ

વઓ-એવ ચલુ જન્નુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિદે સમોસરણ-જાવ  
પરિસા પઞ્જુવાસહ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ ચદપ્પમાદેવી ચદપ્પમસિ વિમાણસિ  
ચદપ્પમસિ સીહાસણસિ સેસ જહા કાલીણ, ણવર પુવ્વમવે મહુરાણ ણયરીણ  
મહીરવહેંસણ ઉજ્જાણે ચદપ્પમે ગાહાવર્દે ચદસિરી મારિયા ચદપ્પમા દારિયા )

હે ભદન્ત ! આઠમા વર્ગનો ઉત્તેપક કેવો છે ?

આ પ્રમાણે જન્નુ સ્વામીના પ્રશ્ન કર્યા બાદ સુધર્મા સ્વામીએ તેમને  
હલુ કે હે જન્નુ ! સાભણો તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે શ્રમણ  
ભગવાન મહાવીરે આ વર્ગના ચાર અધ્યયનો પ્રજ્ઞ કર્યા છે, તે આ પ્રમાણે  
છે-ચદ્રપ્રભા ૧ જ્યોત્સનામા ૨, આર્ચિમાલી ૩, પ્રભકરા ૪ હે જન્નુ !  
આ ચારેમા પહેલા ચન્દ્રપ્રભા નામે અધ્યયનનો ઉત્તેપક આ પ્રમાણે છે કે તે  
કાળે અને સમયે રાજગૃહ નામના નગરમા શ્રી મહાવીર સ્વામીનું આગમન  
થયું તેમની પાસેથી ધર્મકથા સાંભળવા માટે ત્યાની બધી ધાર્મિક જનતા ત્યા  
આવી પ્રભુએ ધર્મનો ઉપદેશ સંભળાવ્યો માંભળીને બધાએ તેમની યાવત્  
પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે ચદ્રપ્રભા દેવી-કે વ્રજ

વિજેયમ્, નર=વિશેષસ્ત્રયમ્-પૂર્વભવે મયુરાયા નગર્યા મળ્ડીરાવતસકમુગ્રાનમ્, ચન્દ્રપ્રભો ગાથાપતિઃ, ચન્દ્રશ્રીભાર્યા, ચન્દ્રપ્રભા દારિકા, ચન્દ્રસ્યાગ્રમહિષી, સ્થિતિરદ્વપલ્યોપમ પન્નાગદ્વિર્વર્ષપદસૈભ્યત્રિકમ્ । શેષ યથા કાલ્યાઃ । એવ

ચદ્રપ્રભ વિમાન મે રહતી થી ઓર ચદ્રપ્રભ સિંહાસન પર વેઠતી થી-શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર કો વદના કરને એવ ડનસે ધર્મ કા ઉપદેશ સુનને કે લિયે ડનકે નિકટ આઈ-। હસકે વાદ કા હસકા વૃત્તાન્ત કાલીદેવી કે વૃત્તાન્ત જૈસા હી હૈ । ડસમેં કોઈ અન્તર નહી હૈ । જહા અન્તર હૈ-ડસકા રુલાગા હસ પ્રકાર હૈ-પૂર્વભવ મે યહ મયુરા નગરી મેં જન્મી થી । વહા મહીરાવતસક ઉગ્રાન યા । ડસ નગરી મેં ચદ્રપ્રભ નામ કા ગાથાપતિ રહતા થા । ડસકી ભાર્યા થી જિસકા નામ ચદ્રશ્રી થા । ડનકે યહા યહ ચદ્રપ્રભા નામકી પુત્રી થી । યહ ચન્દ્ર કી અગ્રમ-હિષી પત્ની । ( ઠિઠે અદ્વપલિઓવમ, પળ્ળાસાણ વાસસહસ્સેહિં અઞ્ઞમહિય સેસ જહા કાલીએ એવ સેસાઓવિ ચદસ્સ અગ્ગમહિસી ) પચાસ હજાર વર્ષ સે અધિક હસકી સ્થિતિ આધેપલ્ય કી હૈ । હસકે વાદ કા હસકા જીવન વૃત્તાન્ત કાલી દારિકા કે જીવન વૃત્તાન્ત જૈસા હી જાનના ચાહિયે । હસી તરહ ડ્યોત્સ્નામા આદિશેષ ૩ દેવિયો કે સબન્ધ કો લેકર જો અધ્યયન કહે ગયે હૈ-વે જાનના ચાહિયે યે સવ ડ્યોત્સ્નામા

વિમાનમા રહેતી હતી અને ચદ્રપ્રભ વિમાનમા બેસતી હતી-શ્રમણુ ભગવાન મહાવીરની વદના કરવા માટે અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળવા માટે તેમની પાસે આવી તેના પછીનુ તેનુ વૃત્તાત કાલી દેવીના વૃત્તાત જેવુ જ છે તેમા કોઈ પણ ભતનો તક્ષવત નથી જ્યા તક્ષવત છે-તેનુ અપહીરણુ આ પ્રમાણે છે કે પૂર્વભવમા તે મયુરા નગરીમા જન્મી હતી, ત્યા ભડીરાવતમક ઉગ્રાન હતુ તે નગરીમા ચદ્રપ્રભનામે ગાથાપતિ રહેતો હતો ચદ્રશ્રી તેની ભાર્યાનુ નામ હતુ તેને ચન્દ્રપ્રભા નામે પુત્રી હતી આ ચન્દ્રની અગ્રમહિષી ( પટરાણી ) થઈ

( ઠિઠે અદ્વપલિઓવમ, પળ્ળાસાણ વાસમહસ્સેહિં અઞ્ઞમહિય સેસ જહા કાલીએ એવ સેસાઓવિ ચદસ્સ અગ્ગમહિસી )

પચાસ હજાર વર્ષ કરતા આની સ્થિતિ અડધા પડ્યની છે એના પછીનુ આનુ જીવન વિષેનુ વર્ણન કાલી દારિકાના જીવન જેવુ જ સમજી લેવુ ભેદજ્ઞે આ પ્રમાણે જ્યોત્સ્નામા વગેરે બાકી ત્રણ દેવીઓના સબધને લઈને જે અધ્યયનો કહેવામા આવ્યા છે તેમને પણ સમજી લેવા ભેદજ્ઞે

સલુ હે જમ્બુઃ । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ ગમયે રાજગૃહે શ્રીમદ્દેવીસ્વામિનઃ સમન્  
સરણ, યાવત્-પરિપત્ પર્યુપાસતે । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ ગમયે ચન્દ્રપ્રભા દેવી  
ચન્દ્રપ્રભે વિમાને ચન્દ્રપ્રભે સિંહાસને શેષ યથા કાલ્યાઃ=કાલીદેવ્યા યર્ણન તદ્વદ્

પદ્મસસ અજ્ઞયણસસ ઉચ્ચેત્રઓ-૯૪ જમ્બુ ! તેણ કાલેણ તેણ  
સમણ રાયગિદે સમોસરણ-જાવ પરિસા પજ્જુવાસદ, તેણ કાલેણ તેણ  
સમણ ચદપ્પમાદેવી ચદપ્પમસિ વિમાણસિ સીંહાસણસિ સેસ જહા  
કાલીણ, ણવર પુન્નમવે મહુરાણ ણયરીણ મટીરવડેસણ ઉજ્જાણે ચદ-  
પ્પમે ગાહાવર્દ ચદસિરી મારિયા ચદપ્પમા દારિયા ) હે મદત ! આટવે  
વર્ગ કા ઉત્તેપક કેસા હે ? હસ પ્રકાર જમ્બુસ્વામી કે પૂત્રને પર સુધર્મા-  
સ્વામી ને ડનસે કહા-હે જમ્બુ ! સુનો તુમ્હાને પ્રઠન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર  
હે-શ્રમણ મગધાન્ મહાવીર ને હસ વર્ગ કે ચાર અધ્યયન પ્રજ્ઞસ કિયે હે  
-વે હસ પ્રકાર સે હે-ચદ્રપ્રમા ૧, ડ્યોત્સનામા ૨, અર્ચિમાલી ૩, પ્રમ-  
કરા ૪, । હનમે હે જમ્બુ ! પ્રથમ ચન્દ્રપ્રમા અધ્યયન કા ઉત્તેપક હસ પ્રકાર  
સે હે-હસ કાલ મે ઓર હસ સમય મે રાજગૃહ નામકે નગર મે શ્રી  
મહાવીર સ્વામી કા આગમન હુમા થા-। ડનસે ધર્મ કા ઉપદેશ પ્રાપ્ત  
કરને કે લિયે વહા કી સમસ્ત ધાર્મિક જનતા ડનકે પાસ આઈ થી પ્રમુ  
ને સચ કે લિયે ધર્મ કા ઉપદેશ સુનાયા-સુનાકર સચો ને ડનકી યાવત્  
પર્યુપાસના કી । હસ કાલ ઓર હસ સમય મે ચન્દ્રપ્રમા દેવી જો કિ

વઓ-૯૪ સલુ જમ્બુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિદે સમોસરણ-જાવ  
પરિસા પજ્જુવાસદ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ ચદપ્પમાદેવી ચદપ્પમસિ વિમાણસિ  
ચદપ્પમસિ સીંહાસણસિ સેસ જહા કાલીણ, ણવર પુન્નમવે મહુરાણ ણયરીણ  
મટીરવડેસણ ઉજ્જાણે ચદપ્પમે ગાહાવર્દ ચદસિરી મારિયા ચદપ્પમા દારિયા )

હે ભદ્રન્ત ! આઠમા વર્ગનો ઉત્તેપક કેવો છે ?

આ પ્રમાણે જમ્બુ સ્વામીના પ્રશ્ન કર્યા બાદ સુધર્મા સ્વામીએ તેમને  
હલુ કે હે જમ્બુ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે શ્રમણ  
ભગવાન મહાવીરે આ વર્ગના ચાર અધ્યયનો પ્રજ્ઞસ કર્યા છે, તે આ પ્રમાણે  
છે-ચદ્રપ્રમા ૧ જ્યોત્સનામા ૨, આર્ચિમાલી ૩, પ્રલકરા ૪ હે જમ્બુ !  
આ ચારેમા પહેલા ચન્દ્રપ્રમા નામે અધ્યયનનો ઉત્તેપક આ પ્રમાણે છે કે તે  
કાળે અને સમયે રાજગૃહ નામના નગરમાં શ્રી મહાવીર સ્વામીનું આગમન  
થયું તેમની પાસેથી ધર્મકથા સાંભળવા માટે ત્યાંની બધી ધાર્મિક જનતા ત્યાં  
આવી પ્રભુએ ધર્મનો ઉપદેશ સંભળાવ્યો । માંભળીને બધાએ તેમની યાવત્  
પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે ચદ્રપ્રમા દેવી-હે જે દ્રપ્રમા



વિનેયમ્, નર=વિશેષસ્ત્રયમ્-પૂર્વભવે મથુરાયા નગર્યા મળ્ડીરાવતસકમુગ્રાનમ્, ચન્દ્રપ્રભો ગાથાપતિઃ, ચન્દ્રશ્રીભાર્યા, ચન્દ્રપ્રભા દારિકા, ચન્દ્રસ્યાગ્રમહિષી, સ્થિતિરદ્વપલ્યોપમ પચ્ચાશઙ્ઘિર્પિપાશ્ચૈભ્યપિકમ્ । શેષ યથા કાલ્યાઃ । એવ

ચદ્રપ્રભ વિમાન મેં રહતી થી ઓર ચદ્રપ્રભ સિંહાસન પર પૈઠતી થી-  
શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર કો વદના કરને એવે અનેસે વર્મ કા ઉપદેશ  
સુનને કે લિયે અનેકે નિકટ આઈ-। હમને ચાદ કા હસકા વૃત્તાન્ત  
કાલીદેવી કે વૃત્તાન્ત જૈસા હી હૈ । ઉસમેં કોઈ અન્તર નહી હૈ । જહા  
અન્તર હૈ-ઉસકા છુલાગા હસ પ્રકાર હૈ-પૂર્વભવ મેં યહ મથુરા નગરી  
મેં જન્મી થી । વહાં મહીરાવતસક ઉદ્યાન થા । ઉસ નગરી મેં ચદ્રપ્રભ  
નામ કા ગાથાપતિ રહતા થા । ઉસકી ભાર્યા થી જિસકા નામ ચદ્રશ્રી  
થા । અનેકે યહ યહ ચદ્રપ્રભા નામકી પુત્રી થી । યહ ચન્દ્ર કી અગ્રમ-  
હિષી બની । ( ઠિઠં અદ્વપલિઓવમ, પળ્ળાસાણ વાસસહસ્સેહિં અઞ્ઞમહિય  
સેસ જહા કાલીણ એવ સેસાઓવિ ચદસ્સ અગ્ગમહિસી ) પચાસ હજાર  
વર્ષ સે અધિક હસકી સ્થિતિ આધેપલ્ય કી હૈ । હસકે ચાદ કા હસકા  
જીવન વૃત્તાન્ત કાલી દારિકા કે જીવન વૃત્તાન્ત જૈસા હી જાનના  
ચાહિયે । હસી તરહ જ્યોત્સ્નામા આદિઓપ ૩ દેવિયો કે સબ્બ કો  
લેકર જો અધ્યયન કહે ગયે હૈ-વે જાનના ચાહિયે યે સવ જ્યોત્સ્નામા

વિમાનમા ગહેતી હતી અને ચદ્રપ્રભ વિમાનમા બેસતી હતી-શ્રમણુ લગવાન  
મહાવીરની વદના કરવા માટે અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળવા  
માટે તેમની પાસે આવી તેના પછીનું તેનું વૃત્તાન્ત કાલી દેવીના વૃત્તાન્ત  
જેવું જ છે તેમા કોઈ પણ જાતનો તફાવત નથી જ્યાં તફાવત છે-તેનું  
અપ્રીકરણ આ પ્રમાણે છે કે પૂર્વભવમા તે મથુરા નગરીમા જન્મી હતી,  
ત્યાં મહીરાવતમક ઉદ્યાન હતું તે નગરીમા ચદ્રપ્રભનામે ગાથાપતિ રહેતો  
હતો ચદ્રશ્રી તેની ભાર્યાનું નામ હતું તેને ચન્દ્રપ્રભા નામે પુત્રી હતી  
આ ચન્દ્રની અગ્રમહિષી ( પટરાણી ) થઈ

( ઠિઠં અદ્વપલિઓવમ, પળ્ળાસાણ વાસસહસ્સેહિં અઞ્ઞમહિય સેસ જહા  
કાલીણ એવ સેસાઓવિ ચદસ્સ અગ્ગમહિસી )

પચાસ હજાર વર્ષ કરતાં આની સ્થિતિ અડધા પડ્યની છે એના  
પછીનું આનું જીવન વિષેનું વર્ણન કાલી દારિકાના જીવન જેવું જ સમજી  
લેવું જોઈએ આ પ્રમાણે જ્યોત્સ્નામા વગેરે બાકી ત્રણ દેવીઓના સબ્બને



શેષાઃ=જ્યોત્સ્નામાદિ દેવ્યોઽપિ ત્રિગેયા । સર્ગાઃ પૂર્વભવે મથુરાયાં નગરી  
જાતાઃ, પાર્શ્વપ્રભુસમીપે ચ પ્રવ્રજિતા । માતાપિતરોઽપિ દુહિતૃસદૃશનામાનઃ ॥મૂ૦૧૩॥

इति धर्मकथानामाष्टमो वर्गः समाप्तः ॥ ८ ॥

अथ नवमो वर्गः प्रारभ्यते—' णवमम् ' इत्यादि ।

મૂલમ્—ણવમસ્સ ઉવસેવઓ, એવં સ્વલુ જંવૂ ! જાવ અટ્ટુ-  
અઙ્ગયણા પપ્પત્તા, ત જહા—પડમા સિવા સર્દે અંજુ રોહિણી  
ણવામિયા, અચલા અચ્છરા, પઠમઙ્ગયણસ્સ ઉવસેવઓ, એવં  
સ્વલુ જંવૂ । તેણં કાલેણ તેણં સમણેણ રાયગિહે સમોસરણં  
જાવ પરિસા પઙ્ગુવાસઙ્, તેણં કાલેણ તેણં સમણં પડમાવર્દે  
દેવી સોહમ્મે કપ્પે પડમવડેસેણ વિમાણે સમાણે સુહમ્માણે  
પડમંસિ સીહાસણંસિ જહા કાલોણે એવ અટ્ટુવિ અઙ્ગયણા  
કાલીગમણે નાચઠ્ઠા, ણવર સાવર્થીણે દો જણીઓ હત્થિણા-  
ડરે દોજણીઓ કપિલ્લપુરે દોજણીઓ સામેયનચરે દોજણીઓ  
પડમે પિયરો વિજયા માચરાઓ સઠ્ઠાઓઽવિ પાસસ્સ અંતિણે  
પઠ્ઠઙ્ગયાઓ સક્કસ્સ અગ્ગમહિસીઓ ઠિઙ્ગે સત્ત પલિઓવમાઙ્  
મહાવિદેહે વાસે સિઙ્ગિહિતિ જાવ અત કાહિતિ ॥ સૂ૦૧૪ ॥

॥ णवमो वर्गो समप्तो ॥ ९ ॥

આદિ દેવિયા પૂર્વભવ મેં ( મહુરાણે ણગરીણે ) મથુરા નગરી મેં ઉત્પન્ન  
હુઈં ઔર પાર્શ્વનાથ પ્રભુ કે સમીપ દીક્ષિત હુઈં । ( માયા પિયરો વિ૦ ધૂયા  
સરિસણામા ) इन पुत्रियों का नाम वैसा ही नाम इनके माता पिता का है ।

—' भष्टमवर्ग समाप्तः—

આ ણધી જ્યોત્સ્નામા વગેરે દેવીઓ પૂર્વભવમા ( મહુરાણે ણગરીણે ) મથુરા  
નગરીમા ઉત્પન્ન થઈ અને પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસેથી દીક્ષિત થઈ ( માયાપિયરો  
વિઠ ધૂયા સરિસણામા ) આ પુત્રીઓના નામો જેવા જ તેમના માતાપિતાઓના  
નામો પણ છે

આઠમો વર્ગ સમાપ્ત

ટીકા—‘ જવમસે ’ તિ-નવમમ્ય વર્ગસ્યોત્કેષકઃ । એવ સ્વલુ હે જમ્બૂઃ । યાવત્-અષ્ટ-અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞાનિ, તદ્યથા-પદ્મા ૧, શિવા ૨, શચી ૩ અઙ્ગૂઃ ૪, રોહિણી ૫, નવમિકા ૬, અચલા ૭, અપ્સરા ૮ । એવ પ્રથમાધ્યયનસ્યોત્કે-

—:નવમવર્ગ પ્રારંભ -

જવમસસ ઉત્તરેવઓ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(જવમસસ ઉત્તરેવઓ-એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! જાવ અઢ અઙ્ગ-યણા પળણત્તા-ત જહા-પડમા, સિવા, સર્દ, અજૂ, રોહણી, જવમિયા, અચલા, અઙ્ગૂરા, -પઢમઙ્ગયણસસ ઉત્તરેવઓ-એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! તેણ કાલેણ તેણં સમણ રાયગિહે સમોસરણ જાવ પરિસા પઙ્ગુવાસઢ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ પડમાવર્દ, દેવી સોહમ્મે કપ્પે પડમવર્ડેસણ વિમાણે સમાણ સુહમ્માણ પડમસિ-સીહાસણસિ જહા કાલીણ એવ અઢવિ અઙ્ગ-યણા કાલીગમણ નાયવ્વા ) હે ભદત ! નૌવે વર્ગ કા ઉત્કેષક કિસ પ્રકાર સે હૈ ? હસ પ્રકાર જમ્બૂ સ્વામી કે પ્રશ્ન કરને પર સુધર્મા સ્વામી ડનસે કહતે હૈ કિ હે જમ્બૂ ! સુનો-તુમ્હારે પ્રશ્ન કા ઉત્તર હસ તરહ સે હૈ-શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને હસ વર્ગ કે યાવત્ આઠ અધ્યયન પ્રરૂપિત કિયે-વે હસ પ્રકાર સે હૈ-પદ્મા ૧, શિવા, ૨, શચી ૩, અજૂ ૪, રોહિણી ૫, નવમિકા ૬, અચલા ૭, ઓર અપ્સરા । હનમેં હે જમ્બૂ ! પ્રથમ

નવમેા વર્ગ પ્રારંભ

( જવમસસ ઉત્તરેવઓ-એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! જાવ અઢ અઙ્ગયણા પળણત્તા-ત જહા પડમા, સિવા, સર્દ, અજૂ, રોહિણી, જવમિયા, અચલા, અઙ્ગૂરા, પઢમઙ્ગયણસસ ઉત્તરેવઓ-એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે સમોસરણ જાવ પરિસા પઙ્ગુવાસઢ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ પડમાવર્દ દેવી સોહમ્મે કપ્પે પડમ વર્ડેસણ વિમાણે સમાણ સુહમ્માણ પડમસિ-સીહાસણસિ જહા કાલીણ એવ અઢ વિ અઙ્ગયણા કાલી ગમણ નાયવ્વા )

હે ભદન્ન ! નવમા વર્ગનો ઉત્કેષક કેવી રીતે છે ?

આ પ્રમાણે જમ્બૂ સ્વામીના પ્રશ્ન કર્યા બાદ સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જમ્બૂ ! સાલણો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે—શ્રમણુ ભગવાન મહાવીરે આ વર્ગના યાવત્ આઠ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા છે, તે આ પ્રમાણે છે—પદ્મા ૧, શિવા ૨, શચી ૩, અજૂ ૪, રોહિણી ૫, નવમિકા ૬, અચલા ૭ અને અપ્સરા ૮

પ્રકઃ । એવ સ્વલ્પ હે જન્મૂઃ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહે સમયસરણમ્= ભગવતો મહાવીરસ્ય સમાગમનમભૂત્, યાવત્ પરિણત્ પર્યુપાસ્તે । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે પદ્માવતી દેવી, સૌધર્મે કલ્પે પદ્માવતસકે વિમાને સમાયા સુધર્માયા પદ્મે સિંહાસને, યથા કાલ્યાઃ । એવમ્ અઘ્ટાપિ અધ્યયનાનિ કાલોગમકેન=કાલી-દેવીસદૃશપાઠેન જ્ઞાતવ્યાનિ, નવર=વિશેષસ્ત્રયમ્-પૂર્વભવે શ્રાવસ્ત્યા નગર્યાં 'દોજ-

અધ્યયન કા ઉત્તેષ ક હસ પ્રકાર સે હૈ-ઉસ કાલ મેં ઓર ઉમ સમય મેં રાજગૃહ નગર મેં ભગવાન્ મહાવીર કા અગમન હુઆ થા । લોગોં કો જય હનકે શુભાગમન કી ગવર પઢી તો વે સવ કે સવ ઉનકો વદના કરને કે લિયે ઓર ઉનસે ધર્મોપદેશ કા કામ લેને કે લિયે ઉનકે સમીપ પહુંચે । પ્રભુ ને આયે હુગ પરિપદ્ કો શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મ કા ઉપદેશ દિયા । ઉપદેશ સુનને કે વાદ ઉમને પ્રભુ કી યાવત્ પર્યુપામના કી । ઉસ કાલ મે ઓર ઉસ સમય મેં પદ્માવતી દેવી જો કિ સૌધર્મકલ્પ મેં પદ્માવતસક વિમાન મે, સુધર્મા સમામેં રહતી થી ઓર જિસકે સિંહાસન કા નામ પદ્મ યા શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર કો વદના કરને ઓર ઉનસે ધર્મ કા ઉપદેશ સુનને કે લિયે વહા આઈ । હસકે વાદ કા સમ્બન્ધ કાલીદેવી કા જૈસા વર્ણન પહિલે કિયા ગયા હૈ વેસા હી જાનના ચાહિયે । હસી તરહ સે અવશિષ્ટ સાત અધ્યયન મી જાનના ચાહિયે । હન આઠોં હી અધ્યયનોં કો પાઠ જૈસા કાલીદેવી કા પાઠ હૈ વૈસા હી હૈ । કોઈ અન્તર નહી હેં (જવર) પરન્તુ જહા અન્તર હૈ વહ-

હે જ જૂ ! આમા પહેલા અધ્યયનનો ઉત્તેષક આ પ્રમાણે છે-તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમા ભગવાન મહાવીરનું આગમન થયું લોકોને તેમના શુભાગમનની જ્યારે જાણ થઈ ત્યારે તેઓ સર્વે તેમને વદન કરવા માટે અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળવા માટે તેમની પાસે ગયા. પ્રભુએ આવેલા સર્વ લોકોને શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ સંભળાવ્યો. ઉપદેશ સાંભળીને લોકોએ પ્રભુની યાવત્ પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે પદ્માવતી દેવી-કે જે સૌધર્મ કલ્પમા, પદ્માવતસક વિમાનમા સુધર્મા સભામા રહેતી હતી અને જેના સિંહાસનનું નામ પદ્મ હતું-શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વદન કરવા અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળવા ત્યાં આવી એના પછીનું વર્ણન પહેલા કરવામા આવેલા કાલી દેવીના વર્ણનની જેમ સમજી લેવું જોઈએ આ પ્રમાણે જ બાકીના સાત અધ્યયનો વિષે પણ જાણી લેવું જોઈએ એ આઠે આઠ અધ્યયનોનો પાઠ કાલી દેવીના જેવો જ

ળીઓ ' દ્વે જન્યૌ=પદ્મા-શિવાભિવે દ્વે દારિકે સજાતે । એવ હસ્તિનાપુરે દ્વે જન્યૌ  
શ્રુતિઃ-અઙ્ગઃ ચેતિ, કામ્પિલ્યપુરે દ્વે જન્યૌ રોહિણીનવમિકાનામ્ન્યૌ, સાકેતનગરે  
દ્વે જન્યૌ અચલા-અપ્સરા ઇતિ સજાતે । સર્વેષામ્ ' પૃથમે ' પદ્મઃ પદ્મેતિ નામાનઃ  
પિતરઃ, વિજયા=વિજયાનામ્નો માતર આસન્ । સર્વા અપિ પાર્શ્વસ્ય=પાર્શ્વપ્રભોર-  
ન્તિકે પ્રવ્રજિતાઃ, શક્રસ્યાગ્રમહિણ્યો જાતા । તાસા સ્થિતિઃ સપ્તપલ્યોપમાનિ ।  
એતાઃ સર્વા મહાવિદેહે વર્ષે સેત્સ્યન્તિ યાવત્સર્વદુઃખાનામન્તઃ કરિષ્યન્તિ ॥મૂ૦ ૧૪॥

॥ ઇતિ યમકથાના નવમો વર્ગઃ સમાપ્તઃ ॥ ૯ ॥

હસ પ્રકાર સે હૈ-(સાવત્રીએ દોજળીઓ) પદ્મા ઓર શિવા યે દો  
કન્યાએ પૂર્વે ભવમે શ્રાવસ્તી નગરી મેં ઉત્પન્ન હુઈ (હતિયળાઝરે દોજળી  
ઓ, કમ્પિલ્લપુરે દો જળીઓ સામેયનયરે દો જળીઓ પૃથમે પિયરો  
વિજયાભાયરાઓ સવ્વાઓવિ પાસસ્સ અતિએ પવ્વહયાઓ સક્કસ્સ અગ્ગ-  
મહિસીઓ ઠિઈ સત્તપલિઓવમાહ મહાવિદેહે વાસે સિઙ્ગિહિતિ જાવ  
અત કાહિતિ '૧૪') શ્રુતિ ઓર અઙ્ગ યે દો હસ્તિનાપુરમેં, રોહિણી,  
નવમિકા યે દો કામ્પિલ્યપુરમેં, અચલા એવ અપ્સરા યે દો સાકેત નગર  
મેં, ઉત્પન્ન હુઈ । ઇન સવ કન્યાઓકે પિતા કા નામ પદ્મ ઓર માતા કા  
નામ વિજયા થા । યે સવ કન્યાએ પાર્શ્વનાથ પ્રભુ કે પાસ પ્રવ્રજિત હુઈ  
હૈ । શક્ર કી અગ્રમહિપિયા વની હૈ । ઇન કી સ્થિતિ સાતપલ્ય થી । યે

છે તેમ સમજી લેવું જોઈએ તેમા કોઈ પણ જાતનો તક્ષવત નથી (જયર)  
પરંતુ જ્યા તક્ષવત છે-તે આ પ્રમાણે છે (સાવત્રીએ દોજળીઓ) પદ્માવતી  
અને શિવા આ બંને કન્યાઓ પૂર્વભવમા શ્રાવસ્તી નગરીમા ઉત્પન્ન થઈ

(હતિયળાઝરે દો જળીઓ, કપિલ્લપુરે દો જળીઓ સામેય નયરે દો જળીઓ  
પૃથમે પિયરો વિજયા ભાયરાઓ સવ્વાઓવિ પાસસ્સ અતિએ પવ્વહયાઓ સક્કસ્સ  
અગ્ગમહિસીઓ ઠિઈ, સત્ત પલિઓવમાહ મહાવિદેહે વાસે સિઙ્ગિહિતિ જાવ અત  
કાહિતિ " ૧૪ " ।)

શ્રુતિ અને અઙ્ગ આ બંને હસ્તિનાપુરમા, રોહિણી અને નવમિકા આ  
બંને કામ્પિલ્યપુરમા, અચલા અને અપ્સરા આ બંને સાકેત નગરમા ઉત્પન્ન  
થઈ આ બધી કન્યાઓના પિતાનું નામ પદ્મ અને માતાનું નામ વિજયા હતું  
આ બધી કન્યાઓ પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ છે અને શક્રની  
અગ્રમહિપીઓ (પટરાણીઓ) બની છે એમની સ્થિતિ સાત પલ્ય જેટલી

અથ દશમો વર્ગ પ્રારંભ્યતે-દસમસ્મ ' ઇત્યાદિ ।

મૂલ્મ-દસમસ્મ ઉત્ત્રેવઓ, એવ સલુ જવૂ । જાવ અટ્ટ  
અજ્ઞયણા પળણતા, ત જહા-કળહા ય કળહરાઈ રામા તહરામ-  
રવિલ્લયા વસૂ ય । વસુગુત્તા વસુમિત્તા વસુધરા ચેવ ઈસાણે ॥૧॥  
પઢમજ્ઞયણસ્મ ઉત્ત્રેવઓ, એવં સલુ જવૂ । તેળં કાલેળં તેળં  
સમણં કળહાદેવી ઈસાણે કપ્પે કળહવડેસણ વિમાણે સમાણ  
સુહમ્માણ કળહસિ સીહાસણંસિ સેસ જહા કાલીણ એવં અટ્ટવિ  
અજ્ઞયણા કાલીગમણં ણેયઢ્વા, ણવર પુઢ્વભવે વાણારસીણ  
નયરીણ દો જળીઓ રાયગિહે નયરે દો જળીઓ સાવત્થીણ  
નયરીણ દો જળીઓ કોસલીણ નયરીણ દો જળીઓ, રામે  
પિયા ધમ્મા માયા સઠ્ઠઓઽવિ પાસસ્મ અરહઓ અંતિણ પઢ્વ-  
ઢ્યાઓ પુપ્ફચૂલાણ અજ્ઞાણ સિસ્સિણીયત્તાણ ઈસાણસ્મ અગ્ગ-  
મહિસીઓ ઠિઈ ણવ પલિઓવમાઈ મહાવિદેહે વાસે સિઙ્ગિ-  
હિતિ બુઙ્ગિહિતિ સુચ્ચિહિતિ સઠ્ઠદુક્ખાણં અત કાહિતિ । એવં  
સલુ જવૂ । ણિત્ત્રેવઓ દસમવગ્ગસ્મ ॥ સૂ૦ ૧૫ ॥

॥ દસમો વર્ગો સમાપ્તો ॥ ૧૦ ॥

ટીકા—‘ દસમસ્મે ’ તિ દશમસ્ય ઉત્ક્ષેપકઃ । એવ સલુ હે જવૂ । યાવત્  
અટ્ટ-અભ્યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ તદ્વથા-તાનિ ગાથયા પ્રદર્શ્યન્તે ‘ કળહે ’ ત્યાદિ ।

સઘ મહાવિદેહ ક્ષેત્ર સે સિદ્ધ અવસ્થા પ્રાપ્ત કરેગી-યાવત્ સર્વ દુઃખો  
કા અન્ત કરેગી ॥ સૂ૦ ૧૪ ॥

॥ નવમવર્ગ સમાપ્ત ॥

છે આ બધી મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાથી સિદ્ધ અવસ્થા પ્રાપ્ત કરશે યાવત્ સર્વ  
દુ ખોનો અત કરશે ॥ સૂ૦ ૧૪ ॥

નવમો વર્ગ સમાપ્ત



“ કૃષ્ણા ૧ ચ કૃષ્ણરાજિઃ ૨, રામા ૩ તથા રામરક્ષિકા ૪ વસૂ ૫ વસુગુપ્તા ૬, વસુમિત્રા ૭, વસુન્ધરા ૮ ચૈવ ર્દશાને ॥ ૧ ॥ ”

તત્તન્નામભિરધ્યયનાનિ પ્રસિદ્ધાનિ । તત્ર પ્રથમાધ્યયનસ્યોત્કેષકઃ । એવ સ્વલુ  
હે જમ્બૂ । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહે નગરે ભગવત શ્રીમહાવીર-

॥ દશમવર્ગ પ્રારંભ ॥

‘ દસમસ્સ ઉક્ષેવઓ ’ इत्यादि० “ ૧૫ ”

ટીકાર્થ—( દસમસ્સ ઉક્ષેવઓ—એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! જાવ અદ્વ અજ્ઞયણા પણ્ણત્તા—ત જહા કણ્ઠાય કણ્ઠરાઈ, રામા, તદ્દ રામરક્ષિકા વસૂ ય । વસુગુપ્તા વસુમિત્તા વસુધરા ચૈવ ર્દશાણે “ ૧ ”—પદ્મજ્ઞયણસ્સ ઉક્ષે-  
વઓ—એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! ) હે ભદન્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને દશવે  
વર્ગકા ઉત્કેષક કિસ પ્રકાર સે કહા હૈ ? ઇસ તરહ કા જમ્બૂ ! સ્વામી  
કે પ્રશ્ન કા સમાધાન કરને કે નિમિત્ત સુધર્મા સ્વામી ઉનસે કહતે હૈ  
કિ હે જમ્બૂ ! સુનો તુમ્હારે પ્રશ્ન કા ઉત્તર ઇસ પ્રકાર હૈ—શ્રમણ ભગ-  
વાન્ મહાવીરને ઇસ દશવે વર્ગ કે આઠ અધ્યયન પ્રજ્ઞસ કિયે હૈ—વે યે  
હૈ—કૃષ્ણા ૧, કૃષ્ણરાજિ ૨, રામા ૩, રામરક્ષિકા ૪, વસૂ ૫, વસુગુપ્તા  
૬, વસુમિત્રા ૭, ઓર વસુધરા । ઇન ૨ નામો દ્વારા ઇન ૨ નામ વાલે  
અધ્યયન પ્રસિદ્ધ હુએ હૈ । ઇનમે પ્રથમ અધ્યયન કા હે જમ્બૂ ! ઉત્કેષક

દશમે વર્ગ પ્રારંભ—

‘ દસમસ્સ ઉક્ષેવઓ ’ इत्यादि—

( દસમસ્સ ઉક્ષેવઓ—એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! જાવ અદ્વ અજ્ઞયણા પણ્ણત્તા—ત  
જહા—કણ્ઠાય કણ્ઠરાઈ, રામા તદ્દ રામરક્ષિકા વસૂ ય । વસુગુપ્તા વસુમિત્તા  
વસુધરા ચૈવ ર્દશાણે ॥ ૧ ॥ પદ્મજ્ઞયણસ્સ ઉક્ષેવઓ—એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! )

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે દશમા વર્ગનો ઉત્કેષક  
કેવી રીતે કહ્યો છે ?

આ પ્રમાણેના જમ્બૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાલણીને તેના સમાધાન માટે  
શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જમ્બૂ ! સાલણો, તમારા પ્રશ્નનો  
ઉત્તર આ પ્રમાણે છે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ દશમા વર્ગના આઠ  
અધ્યયનો પ્રજ્ઞા કર્યા છે, તે આ પ્રમાણે છે—કૃષ્ણા ૧, કૃષ્ણારાજિ ૨, રામા  
૩, રામરક્ષિકા ૪, વસૂ ૫, વસુગુપ્તા ૬, વસુમિત્રા ૭ અને વસુધરા ૮

આ ઉક્ત જુદા જુદા નામો વડે એ જ નામના જુદા જુદા અધ્યયનો  
પ્રસિદ્ધ થયા છે હે જમ્બૂ ! આ બધામાથી પહેલા અધ્યયનનો ઉત્કેષક

સ્થામિનઃ સમયમરણં યાત્ પરિપત્ પર્યુપાસ્તે, તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે કૃષ્ણા દેવીઈશાને કલ્પે કૃષ્ણાવતસકે વિમાને સભાયાં યુર્માયા, કૃષ્ણ સિંહામને, શેષ

હસ તરહ સે હૈ—( તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે સમોસરણ જાવ પરિસા પજ્જુવાસહ ) ઉસ કાલ એવ ઉસ સમયમેં રાજગૃહ નગરમેં મગવાન્ મહાવીર કા શુભાગમન હુઆ થા । પરિપત્ ઉન કો વદના આદિ કરને કે લિયે ઉનકે સમીપ પહુંધી । પ્રભુને સચકે લિયે ધર્મ કા ઉપદેશ સુનાયા । લોગોને ઉપદેશ સુનકર પ્રભુ કી પર્યુપાસના કી ( તેણ કાલેણ તેણ સમણ કળ્હા દેવી ઈસાણે કપ્પે કળ્હવડેસણ વિમાણે સમાણ સુહમ્માણ કળ્હસિ સીહાસણસિ સેસ જહા કાલિણ એવ અવિટ્ઠાઅજ્ઞ ઘણા કાલીગમણ ખેયવ્વા, ણવર પુવ્વમ્ભવે વાણારસીણ નયરીણ દો જળીઓ રાયગિહે નયરે દો જળીઓ, સાવત્થીણ નયરીણ દો જળીઓ, કોસરીણ નયરીણ દો જળીઓ રામે પિયા ધમ્મા માયા સવ્વઓઽવિ પાસસ્સ અરહઓ અતિણ પવ્વહયાઓ પુપ્પાચૂલાણ અજ્ઞાણ સિસ્સિણીયત્તાણ ઈસાણસ્સ અગ્ગમહિસીઓ ઠિઈ, ણવપાલિઓવમાહ, મહાવિદેહે વાસે સિજ્ઞિહિંતિ, બુજ્ઞિહિંતિ, મુચ્ચિહિંતિ, સવ્વદુક્ખાણ, અતકાહિંતિ, એવ સ્વલુ જન્નૂ ! ણિક્કસેવઓ દસમવગ્ગસ્સ ) ઉસી કાલ ઓર ઉસી સમય વહા કૃષ્ણાદેવી જો ઈશાન કલ્પ મેં કૃષ્ણાવતસક વિમાન મેં રહતી થી—ઓર

આ પ્રમાણે છે ( તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે સમોસરણ, જાવ પરિસા પજ્જુવાસહ ) તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમા ભગવાન મહાવીરનુ શુભાગમન થયુ તેમને વદન કરવા માટે પરિવ્રત તેમની પાસે પહોચી મૌને પ્રભુએ ધર્મપદેશ સભાઓ ધર્મપદેશ સાભળીને પરિવ્રતે પ્રભુની પર્યુપાસના કરી

( તેણ કાલેણ તેણ સમણ કળ્હા દેવી ઈસાણે કપ્પે કળ્હેવડેસણ વિમાણે સમાણ સુહમ્માણ કળ્હસિ સીહાસણસિ સેસ જહા કાલીણ એવ અવિટ્ઠા અજ્ઞ ઘણા કાલીગમણ ખેયવ્વા, ણવર પુવ્વમ્ભવે વાણારસીણ નયરીણ દો જળીઓ રાયગિહે નયરે દો જળીઓ, સાવત્થીણ નયરીણ દો જળીઓ, કોસરીણ નયરીણ દો જળીઓ રામે પિયા ધમ્મા માયા સવ્વઓઽવિ પાસસ્સ અરહઓ અતિણ પવ્વહયાઓ પુપ્પાચૂલાણ અજ્ઞાણ સિસ્સિણીયત્તાણ ઈસાણસ્સ અગ્ગમહિસીઓ ઠિઈ, ણવપાલિ ઓવમાહ, મહાવિદેહે વાસે સિજ્ઞિહિંતિ બુજ્ઞિહિંતિ, મુચ્ચિહિંતિ, સવ્વદુક્ખાણ, અતકાહિંતિ એવ સ્વલુ જન્નૂ ! ણિક્કસેવજો દસમવગ્ગસ્સ )

તે કાળે અને તે સમયે ત્યા કૃષ્ણા દેવી—કે જે ઈશાન—કલ્પમા કૃષ્ણા વતસક વિમાનમા રહેતી હતી અને જેની સભાનુ નામ ' ' તેમજ સિંહાસનનુ નામ કૃષ્ણા હતુ—આવી એના પછીને

યથા કાર્યાઃ । એવમણા કૃષ્ણરાજિપ્રભૃતીં અધ્યયનાનિ કાલીગમકેન=કાલી-  
દેવીસદૃશપાઠેન જ્ઞાતવ્યાનિ નવર=વિશેષ યત્-પૂર્વભવે વાણારસ્યા નગર્યાં દ્વે=  
કૃષ્ણ-કૃષ્ણરાજિનામ્ન્યૌ જન્યૌ=દારિકે સજાતે । એવ રાજગૃહે નગરે દ્વે=વસુ-  
વસુગુપ્તા નામ્ન્યૌ જન્યૌ, કૌશામ્બ્યા નગર્યાં દ્વે=વસુમિત્રા-વસુન્ધરા નામ્ન્યૌ  
જન્યૌ=દારિકે સમુત્પન્ને । સર્વાસા રામઃ=રામામિધઃ પિતા, ધર્મા=ધર્માઽમિધા  
માતા । સર્વા અપિ પાર્શ્વસ્યાર્હતોઽન્તિકે પ્રવ્રજિતાઃ, પુષ્પચૂલાયા આર્યાયાઃ શિષ્યા-  
સ્વેન પાર્શ્વપ્રભુણા સ્વય પ્રદત્તા । ઈશાનસ્ય=ઈશાનેન્દ્રસ્ય અગ્રમહિષ્યો જાતાઃ । તત્ર  
તાસા સ્થિતિર્નવ પલ્યોપમાનિ વર્તતે । તતશ્ચ્યુત્વા મહાવિદેહે વર્ષે સમુત્પદ્ય સેત્સ્યન્તિ,

જિસકી સભા કા નામ સુધર્મ તથા સિંહાસન કા નામ કૃષ્ણ થા આઈ ।  
હસ કે આગે કા પાઠ કાલીદેવી કે વર્ણન મેં જૈસા પાઠ કહા ગયા હૈ  
વૈસા હી હૈ । હસી તરહ સે કૃષ્ણરાજિ પ્રભૃતિ-અધ્યયન મી-કાલીદેવી  
વર્ણન મેં પઠિત પાઠ કે સદૃશ હી જાનના ચાહિયે । કાલીદેવી કે પાઠ  
મેં ઓર હન આઠ અધ્યયનોક્ત પાઠોં મેં જો અન્તર હૈ વહ હસ પ્રકાર  
સે હૈ-પૂર્વભવ મેં વાણારસી નગરીમેં કૃષ્ણા ઓર કૃષ્ણરાજિ યે દો જની  
-ઉત્પન્ન હુઈ, રાજગૃહનગર મેં રામા ઓર રામરક્ષિકા આવસ્તી નગરી મેં  
વસુ, વસુગુપ્તા ઓર કૌશામ્બી નગરી મેં વસુમિત્રા એવં, વસુધરા ઉત્પન્ન  
હુઈ । હન સવ કે પિતા કા નામ રામ ઓર માતાઓં કા નામ ધર્મા થા ।  
યે સઘકી સઘ પાર્શ્વનાથ પ્રભુ કે પાસ પ્રવ્રજિત હુઈ । પ્રભુને હન સઘ  
કો દીક્ષિત કરકે પુષ્પચૂલા આર્યાં કી શિષ્યારૂપ સે દિયા । યે સઘ  
હસ ઈશાનેન્દ્રકી અગ્રમહિષી હુઈ । વહાં હનકી સ્થિતિ નૌ પલ્યોપમ કી  
હૈ । વહાં સે ચવકર યે મહાવિદેહ ક્ષેત્ર મેંઉત્પન્ન હોંગી ઓર વહીં સે

વર્ણનમા જે પ્રમાણે પાઠ કહેવાયો છે તે પ્રમાણે જ સમજી લેવો  
જોઈએ આ પ્રમાણે જ કૃષ્ણરાજિ વગેરે અધ્યયનો પણ કાલી દેવીના  
પાઠમા અને આ ઉક્ત આઠ અધ્યયનોના પાઠોમા જે કઈ તફાવત છે તે  
આ પ્રમાણે છે-પૂર્વભવમા વાણારસી નગરીમા કૃષ્ણા અને કૃષ્ણરાજિ  
આ બંને ઉત્પન્ન થઈ, રાજગૃહ નગરમા રામા અને રામરક્ષિકા આવસ્તી  
નગરીમા વસુ, વસુગુપ્તા અને કૌશામ્બી નગરીમા વસુમિત્રા અને વસુધરા  
ઉત્પન્ન થઈ એમના પિતાનું નામ રામ અને માતાનું નામ ધર્મા હતું એ  
બધીએ પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજ્યા શ્રદ્ધા કરી હતી પ્રભુએ સર્વેને  
દીક્ષિત કરીને પુષ્પચૂલા આર્યાને શિષ્યાઓના રૂપમા સોંપી હતી એ બધી  
ઈશાનેન્દ્રની અગ્રમહિષીઓ થઈ ત્યાં તેમની સ્થિતિ નવ પલ્યોપમની છે  
ત્યાથી ચલીને એ બધી મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા ઉત્પન્ન થશે અને ત્યાંથી જ સિદ્ધ-

મોક્ષ્યન્તિ, મોક્ષ્યન્તિ સર્વ દુઃખાનામન્ત કરિષ્યન્તિ । એન મન્તુ હે જમ્બૂ ! નિષ્કે-  
પકો દશમવર્ગસ્ય ॥ સૂ. ૧૫ ॥

॥ ઇતિ ધર્મકથાનાં દશમો વર્ગઃ સમાપ્ત ॥ ૧૦ ॥

મૂલમ્--એવં ચલુ જંબૂ સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં આદિ-  
ગરેણં સયંસબુદ્ધેણં પુરિસોત્તમેણ જાવ સપત્તેણ ધમ્મકહાણં  
અયમદ્દે પણ્ણત્તે ॥

॥ ધમ્મકહાસુયવલ્લધો સમત્તો દસહિ વગ્ગેહિ ॥

॥ ણાયાધમ્મકહાઓ સમત્તાઓ ॥

ટીકા—સુધર્માસ્વામી કથયતિ—‘ એવં ચલુ ’ इत्यादि । एव चलु हे जम्बू !  
श्रमणेन भगवता महावीरेण आदिकरेण तीर्थकरेण स्वयं सम्बुद्धेन पुरुषोत्तमेन

સિદ્ધ પદ કી, મોક્ષા ઘનૈગી કેવલજ્ઞાનરૂપ આલોક સે સમસ્ત ચરાચર  
પદાર્થો કી જ્ઞાતા ઘને ગી । દ્રવ્ય એવ ભાવરૂપ સમસ્ત કર્મો સે છૂટજાવૈગી  
હસ તરહ યે વહી સે સમસ્ત દુઃખો કા અન્ત કરને વાલી હૌગી । હસ  
પ્રકાર હે જંબૂ ! યહ દશવૈવર્ગ કા નિક્ષેપક હૈ ।

॥ દસમવર્ગ સમાપ્ત ॥

‘ એવં ચલુ જંબૂ ! ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—( એવં ચલુ જંબૂ ! સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણં આદિ-  
ગરેણ, તિથ્યગરેણ સયંસબુદ્ધેણં પુરિસોત્તમેણં જાવ સપત્તેણં ધમ્મકહાણં  
અયમદ્દે પણ્ણત્તે ) એવ જંબૂસ્વામી સે શ્રી સુધર્માસ્વામી કરતે હૈ, કિ હે

પદ મેળવશે એ બધી કેવળજ્ઞાન રૂપ આલોકથી સમસ્ત ચર અને અચર  
પદાર્થોનું જ્ઞાન મેળવશે દ્રવ્ય અને ભાવરૂપ બધા કર્મોથી મુક્ત થઈ જશે  
આ પ્રમાણે એ બધી ત્યાથી જ બધા હું જોને અન્ત કરનારી થશે આ પ્રમાણે  
હે જંબૂ ! આ દશમો વર્ગનો નિક્ષેપક છે

દશમો વર્ગ સમાપ્ત

। એવં ચલુ જંબૂ ! इत्यादि—

( એવં ચલુ જંબૂ ! સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણં આદિગરેણ તિથ્યગરેણં સય-  
સબુદ્ધેણ પુરિસોત્તમેણ જાવ સપત્તેણ ધમ્મ કહાણ અયમદ્દે પણ્ણત્તે )

યાવત્ સિદ્ધિગતિનામધેય સ્થાન સંપ્રાપ્તેન ધર્મકથાનામયમર્થ પ્રજ્ઞપ્તઃ ॥

॥ ધર્મકથાનામકો દ્વિતીયઃ શ્રુતસ્કન્ધઃ સમાપ્ત ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितक-

लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छ-

॥ अपतिकोल्हापुरेराजप्रदत्त-‘जैनशास्त्राचार्य’ पदभूषित-कोल्हापुरराज-

गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलाल-

॥ ६ ॥ प्रितिविरचिताया-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्माમૃતવર્ષિ-

વ્યાખ્યા વ્યાખ્યા સમાપ્તા ॥

જવૃ! આદિકર, 'તીર્થંકર, સ્વયં સવુદ્ધ' પુરુષોત્તમ, યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુએ એસે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને ધર્મકથા નામક દ્વિતીય શ્રુતસ્કંધ કા પૂર્વોક્તરૂપ સે અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કિયા હૈ। ( ધમ્મ-કહોસુયક્કલ્લધો સમત્તો દસહિં વગ્ગેહિ ) ધર્મકથા નામકા યહ દ્વિતીય શ્રુતસ્કંધ દશવર્ગો મેં સમાપ્ત હુઆ હૈ। ઇસ તરહ ( ણાયાધમ્મકહાઓ સમત્તાઓ ) યહ જ્ઞાતાધર્મકથાઙ્ગ સૂત્ર સમાપ્ત હુઆ।

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાંસીલાલજી મહારાજ કૃત “જ્ઞાતાધર્મકથાઙ્ગસૂત્ર”ની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યા સમાપ્ત ॥

હવે જુઓ સ્વામીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જુઓ! આદિકર તીર્થંકર, સ્વયં સવુદ્ધ, પુરુષોત્તમ યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને પ્રાપ્ત કરી ચૂકેલા એવા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ધર્મકથા નામના બીજા શ્રુતસ્કંધને પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ પ્રજ્ઞપિત કર્યો છે ( ધમ્મકહા સુયક્કલ્લધો સમત્તો દસહિ વગ્ગેહિ ) ધર્મકથા નામનો આ બીજો શ્રુતસ્કંધ દશ વર્ગોમાં પૂરો થયો છે આ પ્રમાણે ( ણાયાધમ્મકહાઓ સમત્તાઓ ) આ જ્ઞાતા ધર્મકથાક સૂત્ર પૂરું થયું છે

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર, પૂજ્ય શ્રી ઘાંસીલાલજી મહારાજ કૃત

“જ્ઞાતાધર્મકથાઙ્ગસૂત્ર” ની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યા સમાપ્ત



—:શાસ્ત્રપદ્ધતિ:—

કાઠિયાવાડદેશેઽસ્તિ, રાજકોટપુરે શુભે

કોઠારીહરગોવિન્દ કાકાનામ પ્રસિદ્ધિમાન ।

તસ્યાસ્તિમાયાપરમા સુશીલા, ધર્માનુરક્તાગૃહકાર્યદક્ષા ।

શાન્તિપ્રિયા દીનદયાર્દ્રમાત્રા, નામ્ના પ્રસિદ્ધા કિલ્લકિલ્લનીતા ॥ ૧ ॥

— દિનેશચન્દ્રસ્તનયોઽસ્તિ યસ્ય, કુલસ્ય દીપઃ સરલસ્વમાયઃ ।—

કન્યા સુશીલા સલા જિતુશ્ચ-સદા-પ્રમોદાય ચકાસ્તિચિત્રોઃ ॥ ૩ ॥

વ્યાખ્યાનભવને તસ્ય, શાતાધર્મકથાશ્રુતે ।

ઘાસીલાલેન મુનિના કૃતા ટીકા સર્તા મુદે ॥ ૪ ॥

દ્વિસદ્વચતુ સરુચે, વિક્રમાન્દે રત્નો દિને ।

માધે શુક્લે ચ પશ્ચમ્યાં, સમ્પૂર્ણા ધર્મવર્ણિણી ॥ ૫ ॥

— કાઠિયાવાડદેશ મેં રાજકોટ નામકા અઠ્ઠા નગર હૈ ।—જસમે—  
કોઠારી હરગોવિન્દકાકા રહેતે હૈ । હનકા સુશીલમાયાકા નામ રક્ષિણી  
હૈ । યહ ગૃહકાર્ય મેં બહુત ચતુર હૈ । ધર્માત્મા હૈ, શાન્તિ પ્રિયા હૈ એવ  
દીન દુઃખિયોં કે ઉપર સદા દયા ભાવ રાખતી હૈ । કાકા કા કુલ દીપક  
એક દિનેશચન્દ્ર નામ કા પુત્ર ઓર જિતુ નામ કી-કન્યા હૈ । યે દોનો  
માતા પિતા કે પ્રમોદ કે સ્થાન ભૂત હૈ ।

મુજ ઘાસીલાલ મુનિરાજ ને ઉન્હી કે વ્યાખ્યાન ભવન મેં ઠહર કર  
વિક્રમ સવત ૨૦૦૪ દિન રવિવાર માધશુક્લા પચમી કે દિન શાતા  
ધર્મકથાશ્રુત, સૂત્ર કી યહ ટીકા રચકર સમાપ્ત કી હૈ ।

કાઠિયાવાડ પ્રાંતમા રાજકોટનામે એક સરસ રમ્ય નગર છે, તેમજ  
કોઠારી હરગોવિન્દ કાકા રહે છે તેમની સુશીલ પત્નીનુ નામ રક્ષિણી છે  
તેઓ ગૃહકાર્યમા બહુજ ચતુર છે, ધર્માત્મા તેમજ શાન્તિ પ્રિયાપણુ છે  
તેઓ ગરીબ દુખીઓના ઉપર હમેશા દયાભાવ રાખે છે કાકાનો કુળદીપક  
એક દિનેશચન્દ્ર નામે પુત્ર અને જિતુ નામે એક કન્યા છે આ બંને માતા  
પિતાના પ્રમોદના આશ્રયસ્થાનો છે ।

મે ઘાસીલાલ મુનિરાજે તેમના જ વ્યાખ્યાન ભવનમા રહીને વિક્રમ  
સવત ૨૦૦૪ રવિવાર માધ શુક્લા પચમીના દિવસે શાતાધર્મકથાન  
સૂત્રની આ ટીકા રચીને પૂરી કરી છે





